संक्षिप्त

# हिंदी-शब्द-सागर

अर्थात्

## हिंदी-शब्दसागर का संक्षिप्त संस्करण

संपादक
रामचंद्र वर्मा

प्रकाशक
काशी नागरीप्रचारिणी सभा

पाँचवाँ संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण
१०००० प्रतियाँ

संवत् २००८ वि०

मूल्य १५)

मुद्रक :
राय आनन्दकृष्ण,
शारदा मुद्रण, बनारस

# संकेताक्षर

अं०=अंगरेजी भाषा
अ०=अरबी भाषा
अनु०=अनुकरण शब्द
अप०=अपभ्रंश
अल्पा०=अल्पार्थक प्रयोग
अव्य०=अव्यय
इब०=इब्रानी भाषा
उप०=उपसर्ग
क्रि०=क्रिया
क्रि० अ०=क्रिया अकर्मक
क्रि० वि०=क्रिया विशेषण
क्रि० स०=क्रिया सकर्मक
क्व०=क्वचित् अर्थात् इसका प्रयोग बहुत कम होता है।
गुज०=गुजराती भाषा
तु०=तुर्की भाषा
दे०=देखो
देश०=देशज
पं०=पंजाबी भाषा
पा०=पाली भाषा
पुं०=पुंलिंग
पुं० क्रि०=[illegible]
पुर्त०=पुर्तगाली भाषा
प्रत्य०=प्रत्यय
प्रा०=प्राकृत भाषा
प्रे०, प्रेर०=प्रेरणार्थक
फा०=फारसी भाषा

बँग=बँगला भाषा
बहु०=बहुवचन
भाव०=भाववाचक
मि०=मिलाओ
मुहा०=मुहावरा
यू०=यूनानी भाषा
यौ०=यौगिक, अर्थात् दो या अधिक शब्दों के पद
लश० लशकरी भाषा
लै०=लैटिन भाषा
वि०=विशेषण
व्या०=व्याकरण
सं० संस्कृत
संयो० क्रि०=संयोज्य क्रिया
स०=सकर्मक
सर्व०=सर्वनाम
[illegible] प्रयुक्त
[illegible]
[illegible] भाषा
[illegible] चिह्न

* यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

† यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि इस शब्द का प्रयोग प्रांतिक है।

‡ यह चिह्न इस बात को सूचित करता है कि शब्द का यह रूप आर्ष है।

—:○:—

# पंचम संस्करण की भूमिका

संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर का यह पाँचवाँ संस्करण है। चतुर्थ संस्करण की पाँच सहस्र प्रतियाँ जो संवत् २००२ में प्रकाशित हुआ था, संवत् २००३ में ही बिक गईं। राष्ट्रभाषा के सर्वाधिक लोकप्रिय और श्रेष्ठ कोष की काया में व्युत्पत्ति, अर्थ विचार आदि की अनेक व्याधियों—भूलों और त्रुटियों के उपचार की आवश्यकता का अनुभव कर इसके आद्योपान्त संशोधन का भार इसके संपादक श्री रामचन्द्र वर्मा को दिया गया। उन्होंने संवत् २००३ में यथा सामर्थ्य इसका प्रति संस्कार और परिवर्द्धन किया। किन्तु दुर्भाग्य अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों से निरन्तर संघर्ष तथा कागज और छपाई की व्यवस्था सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण अबतक सभा इसे प्रकाशित करने में असमर्थ रही। पाँच वर्षों के इस अन्तराल में सभा के शब्द कोश के अभाव ने भले बुरे अनेक शब्द कोषों को जन्म दिया। निरस्त पादप देश में एरण्ड या रेंड़ को सहज ही महा विटप की प्रतिष्ठा का लाभ होता है। इस अवधि में हिंदी के आकाश में शब्द कोशों के जितने धूमकेतु प्रगट हुए प्रायः उन सब में शब्दों का अन्धाधुन्ध चयन सभा के बृहत् शब्दसागर से ही हुआ है। अधिकांश ने थोड़े हेर-फेर के साथ इसी शब्दसागर को बड़े कई रूपों में नए नाम से छपवाकर खूब धन कमाया है। अपनी ओर से शब्दों के रूप और भेद तथा उनकी व्युत्पत्तियों के ठीक आकार स्थिर करने का प्रयास मौलिक ढंग पर, अपवाद स्वरूप, जिन कोशों में हुआ है, उनकी संख्या बहुत ही परिमित है। हमारी अराजीर्ण, काल जर्जर और खोखली सामाजिक व्यवस्था का यह अत्यंत क्लेशजनक सत्य है कि जिनको नव रचना की शक्तिसम्पन्न प्रतिभा है, धनाभाव और साधनहीनता उनकी भागधेयता के चिन्तन अंग से बन गए हैं। इसी से एक आदर्श-कोश संशोधित होकर भी वर्षों अर्थाभाव के कारण छपने तथा हिन्दी जनता की सेवा करने से वंचित रहा। इस कोश के दीर्घ कालीन अप्रकाशन से दुःखी और विवश होकर अन्ततोगत्वा उसके प्रकाशन के लिए उत्तरप्रदेश की सरकार से ऋण की याचना की गई। उसने उदारता पूर्वक इस कार्य के लिए सभा को पैंतीस सहस्र रूपये उधार प्रदान किये जिससे यह नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इस अनुग्रह के लिये सभा वर्तमान शिक्षा मंत्री माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी तथा उनकी सरकार के प्रति कृतज्ञ है।

इस नवीन संस्करण में कोश के आकार तथा शब्दों की समृद्धि में परिवर्तन हुआ है। बाबू श्यामसुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा श्री रामचन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित बृहत् शब्द कोश का संक्षिप्त अंश होने के नाते यह कोश भी श्रेष्ठता, प्रामाणिकता तथा आदर्श की उसी परंपरा का उत्तराधिकारी है। सभा ने परंपरा की उस मर्यादा का मान रखने का सतत प्रयत्न किया है। प्रस्तुत संस्करण में भी परिशिष्ट रूपेण कोश कलेवर का जो परिवर्द्धन हुआ है उसका उद्देश्य यही है।

हिन्दी के इस संक्षिप्त शब्दसागर के पिछले संस्करणों में कुछ ऐसे प्राचीन (अवधी तथा ब्रजभाषा के) कवियों की रचनाओं में प्रयुक्त होनेवाले असहज बोधगम्य शब्दों की छूट रह गई थी जो प्रायः पाठ्य पुस्तकों में आते रहते हैं। यह एक खटकनेवाली बात थी। इसके अतिरिक्त द्विवेदी तथा विशेषतया प्रसाद युग के इधर के कवियों द्वारा नये अर्थों में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों की कमी की पूर्ति भी ग्रन्थ की उपादेयता की दृष्टि से परमावश्यक थी। इसमें यथासाध्य दोनों का समावेश सम्पन्न करने का ध्यान रखा गया है।

राजभाषा का पद प्राप्त होने के कारण राजकीय प्रयोगों में इस भाषा के नए शब्दों की सद्योजात अपेक्षा हुई। अतः स्थानिक (लोकल बोर्ड) आरक्षिक (पुलिस) तथा न्याय के अन्तर्गत अन्य राज-

कीय विभागों में प्रयुक्त होनेवाले निर्विवाद शब्दों का संकलन भी अनिवार्य रूप से परिशिष्ट में करना पड़ा। ऐसे शब्दों के चयन में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि जहाँ तक हो सके शब्द वे ही आवें जो सामान्यतया बहुत से विद्वानों द्वारा मान्य हो चुके हैं। इसमें सर्व श्री रामचन्द्र वर्मा, गोपाल चन्द्र सिंह द्वारा निर्मित पारिभाषिक शब्दों को प्रमाण माना गया है। शब्दों के मानक रूप की स्थिरता में उसी पद्धति का अवलम्बन किया गया है जो वर्मा जी ने पहले स्थिर की थी।

कोश के अंत में सर्व साधारण की सुविधा के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत विधान शब्दावली भी लगा दी गई है।

कोश के प्रकाशन में आवश्यकता से अधिक विलम्ब हुआ इसका सभा को खेद है। संतोष की बात है कि आज सारी कठिनाइयों का उल्लंघन कर इतने बड़े आकार प्रकार तथा पृष्ठों का कोश अपेक्षाकृत इतने कम मूल्य में सभा हिन्दी जगत के सम्मुख पुनः उपस्थित कर रही है। आशा है हिन्दी जगत सभा के अन्य महत्व पूर्ण प्रकाशनों की भाँति इसका भी समुचित आदर करेगा।

शब्द कोश के अगले संस्करण में परिशिष्ट भाग में आए हुए शब्दों का समावेश यथास्थान मूल शब्द-सरणि में कर लिया जायगा। अगले संस्करण में सहस्रों नये उपयोगी शब्दों, मुहावरों के सन्निवेश के साथ साथ शब्दों के लिंग, रूप, भेद, व्युत्पत्ति तथा अर्थ विचार की अद्यतन व्याख्या से एक बार समूचे शब्द-संग्रह को छानकर श्रेष्ठता के उच्चतर मानदण्ड पर ले आने का सभा का संकल्प है। सभा का उद्देश्य है कि विश्व-साहित्य के श्रेष्ठतम कोशों की श्रेणी में इसका स्थान अक्षुण्ण बना रहे।

अन्त में परिशिष्टभाग के संकलन में जो शुभ आयास श्री प्रद्युम्न प्रसाद पाण्डेय ने किया है उसका आभार मानना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

राजेन्द्र नारायण शर्मा
साहित्य मंत्री

रथयात्रा, २०१८

—:*:—

संक्षिप्त

# हिंदी-शब्दसागर

## अ



**अ**—संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहला अक्षर । इसका उच्चारण कंठ से होता है, इससे यह कंठ्य वर्ण कहलाता है । व्यंजनों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना अलग नहीं हो सकता, इसी से वर्णमाला में क, ख, ग आदि वर्ण अकार संयुक्त लिखे और बोले जाते हैं ।

**अंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चिह्न । निशान । छाप । आँक । २. लेख । अक्षर । लिखावट । ३. संख्या के सूचक चिह्न, जैसे १, २, ३ । आँकड़ा । अदद । ४. लिखन । भाग्य । किस्मत । ५. काजल की बिंदी जो नजर से बचाने के लिये बच्चों के माथे पर लगा देते हैं । डिठौना । ६. दाग । धब्बा । ७. नौ की संख्या ( क्योंकि अंक नौ ही तक होते हैं ) । ८. नाटक का एक अंश जिसके अंत में जवनिका गिरा दी जाती है । ९. दस प्रकार के रूपकों में से एक । १०. गोद । अँकवार । क्रोड़ । ११. शरीर । अंग । देह । १२. पाप । दुःख । १३. बार । दफा । मर्तबा ।
**मुहा०**—अंक देना या लगाना = गले लगाना । आलिंगन करना । अंक भरना या लगाना = हृदय से लगाना । लिपटाना । गले लगाना ।

**अंककार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] युद्ध या बाजी में हार और जीत का निर्णय करनेवाला ।

**अंकगणित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १, २, ३ आदि संख्याओं का हिसाब । संख्या की मीमांसा ।

**अँकटा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० अँकरा ] [ स्त्री० अल्पा० अँकटी ] कंकड़ का छोटा टुकड़ा ।

**अँकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंकुर = अँखुआ, टेढ़ी नोक ] १. कटिया । हुक । २. तीर का मुड़ा हुआ फल । टेढ़ी गाँसी । ३. बेल । लता । ४. पेड़ों से फल तोड़ने का बाँस का डंडा । लग्गी ।

**अंकधारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अंकधारी ] तप्त मुद्रा के चिह्नों का दगवाना । शंख, चक्र, त्रिशूल आदि के चिह्न गरम धातु से छपवाना ।

**अंकन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अंकनीय, अंकित, अंक्य ] १. चिह्न करना । निशान लगाना । २. लेखन । लिखना । ३. शंख, चक्र या त्रिशूल के चिह्न गरम धातु से बाहु पर छपवाना । ( वैष्णव, शैव ) ४. गिनती करना । गिनना ।

**अंकना**—क्रि० अ० [ सं० अंकन ] आँका या कूता जाना ।

**अंकपल्लई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंकपल्लव ] वह विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रखते हैं और उनके समूह से वाक्य की तरह तात्पर्य निकालते हैं ।

**अंकपाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धाय । दाई ।

**अंकमाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आलिंगन । परिरंभण । गले लगाना । २. भेंट ।

**अंकमालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा हार । छोटी माला । २. आलिंगन । भेंट ।

**अँकरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अंकुर ] [ स्त्री० अल्पा० अँकरी ] एक खर जो गेहूँ के पौधों के बीच जमता है ।

**अँकरोरी, अँकरौरी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्कर = कंकड़ ] कंकड़ या खपड़े का बहुत छोटा टुकड़ा ।

**अँकवार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंकपालि, अंकमाल ] गोद । छाती ।
**मुहा०**—अँकवार देना = गले लगाना । छाती से लगाना । आलिंगन करना । भेंटना । अँकवार भरना = १. आलिंगन करना । गले मिलना । हृदय से लगाना । २. गोद में बच्चा रहना ।

आदि के साथ रहकर उनके शरीर की रक्षा करनेवाले सेवक या सैनिक।

**अंगरक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शरीर की रक्षा। देह का बचाव। बदन की हिफाजत।

**अँगरखा**—संज्ञा पुं० [ सं० अंग=देह +रक्षक=बचानेवाला ] एक पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है और जिसमें बाँधने के लिए बंद टँके रहते हैं। बंददार अंगा। चपकन।

**अँगरा**‡—संज्ञा पुं० [ सं० अंगार ] १. दहकता हुआ कोयला। अंगारा। २. बैलों के पैर का एक रोग।

**अंगराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चंदन आदि का लेप। उबटन। बटना। २. केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित द्रव्यों से मिला हुआ चंदन जो अंग में लगाया जाता है। ३ वस्त्र और आभूषण। ४. शरीर की शोभा के लिए महावर आदि रँगने की सामग्री। ५. स्त्रियों के शरीर के पाँच अंगों की सजावट—माँग में सिंदूर, माथे में रोली, गाल पर तिल की रचना, केसर का लेप, हाथ पैर में मेंहदी या महावर। ६. एक प्रकार की सुगंधित देशी बुकनी जिसे मुँह पर लगाते हैं।

**अँगराना***—क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

**अँगरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंग+रक्षा ] कवच। झिलम। बकतर।

संज्ञा स्त्री० [ सं० अंगुलीय ] अंगुलित्राण।

**अंगरेज**—संज्ञा पुं० [ पुर्त० इंगलेज़ ] [ वि० अँगरेज़ी ] इंगलैंड देश का निवासी।

**अँगरेजियत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अँगरेज+इयत ( प्रत्य० )] अँगरेजीपन। अँगरेजी रंग-ढंग।

**अँगरेजी**—वि० [ हिं० अँगरेज़ ] अँगरेज़ों का। इंगलैंड देश का। विलायती।

संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ लोगों की बोली। इँगलैंड निवासियों की भाषा।

**अँगलेट**—संज्ञा पुं० [ सं० अंगलता ] शरीर की गठन। देह का ढाँचा। काठी। उठान।

**अँगवना***—क्रि० सं० [ सं० अंग ] १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. ओढ़ना। अपने सिर पर लेना। ३. बरदाश्त करना। सहना। उठाना।

**अँगवारा**—संज्ञा पुं० [ सं० अंग= भाग, सहायता+कार ] १. गाँव के एक छोटे भाग का मालिक। २. खेत की जोताई में एक दूसरे की सहायता।

**अंगविकृति**—सं० स्त्री० [ सं० ] अपस्मार। भिरगी या मिरगी रोग। मूर्छा रोग।

**अंगविक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चमकना। मटकना। २. नृत्य। ३. कलाबाजी।

**अंगविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सामुद्रिक विद्या।

**अंगशोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें शरीर सूखता है। सुखंडी रोग।

**अंग संग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मैथुन। संभोग।

**अंग संस्कार**—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का शृंगार या सजावट।

**अंगसिहरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंग= शरीर+हर्ष=कंप ] ज्वर आने के पहले। देह की कँपकँपी। कंप। कँपकँपी।

**अंगहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंगविक्षेप। चमकना मटकना। २. नृत्य। नाच।

**अंगहीन**—वि० [ सं० ] जिसका कोई एक अंग न हो।

संज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम।

**अंगांगीभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अवयव और अवयवी का परस्पर संबंध। अंश का संपूर्ण के साथ संबंध। २. गौण और मुख्य का परस्पर संबंध। ३. अलंकार में संकर का एक भेद।

**अंगा**—संज्ञा पुं० [ सं० अंग ] अँगरखा।

**अंगाकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंगार+हिं० करी ] अँगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी। लिट्टी। बाटी।

**अँगाना***—क्रि० सं० [ सं० अंग+आना [ पुं० ] अपने अंग में अथवा ऊपर लेना।

**अंगार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दहकता हुआ कोयला। अच्छी तरह जलती हुई लकड़ी आदि का टुकड़ा। बिना धुएँ की आग। निर्धूम अग्नि। २. चिनगारी।

**अंगारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंगारा। २. मंगल ग्रह। ३. भृंगराज। भँगरैया। भँगरा। ४. कटसरैया का पौधा।

**अंगारधानिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अँगीठी। बोरसी। आतिशदान।

**अंगारपाचित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंगार या दहकती हुई आग पर पकाया हुआ खाना जैसे, कबाब, नानखताई इत्यादि।

**अंगारपुष्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंगुदी वृक्ष। हिंगोट का पेड़।

**अंगारमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मूँगा।

**अंगारवल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गुंजा। घुँघची या चिरमटी।

**अंगारा**—संज्ञा पुं० [ सं० अंगार ] दहकता हुआ कोयला अंगार।

**मुहा०**—अंगारे उगलना=कड़ी-कड़ी बातें मुँह से निकालना। अंगारों पर पैर रखना=१. जान बूझकर हानिकारक कार्य करना। अपने को खतरे में

डालना। २. ज़मीन पर पैर न रखना। इतराकर चलना। अंगारों पर लोटना=१. अत्यंत रोष प्रकट करना। आग-बबूला होना। २. दाह से जलना। ईर्ष्या से व्याकुल होना। लाल अंगारा=१. बहुत लाल। अत्यंत क्रुद्ध।

**अंगारिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अँगीठी। बोरसी। अंगार। २ आतिशदान। ३. ऐसी दिशा जिस पर डूबे हुए सूर्य की लाली छाई हो।

**अंगारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ छोटा अंगारा। २. चिनगारी। ३. लिट्टी। बाटी। अंगाकड़ी। ‡ ४. बोरसी।

**अँगारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंग.रिका] १. ईख के सिर पर की पत्तियाँ २. गन्ने के छोटे कटे टुकड़े। गँडेरी। गँडी।

**अंगिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्त्रियों की कुरती। अँगिया। चोली। कंचुकी।

**अँगिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंगिका, प्रा० अँगिया ] १ स्त्रियों की चोली। कुरती। कंचुकी। २. मैदा या आटा छानने की छलनी।

**अंगिरस**—संज्ञा पु० [ सं० अङ्गिरस् ] १. प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २. बृहस्पति। ३. साठ संवत्सरों में से छठा। ४ कतीला गोंद। कतीरा।

**अंगिरा**—संज्ञा पु० दे० "अंगिरस"।

**अँगिराना***—क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना"।

**अंगी**—संज्ञा पु०[ सं० अङ्गिन् ] १ शरीरी। देहधारी। शरीरवाला। २. अवयवी। उपकार्य। अंशी। समष्टि। ३. प्रधान। मुख्य। ४. चौदह विद्याएँ। ५. नाटक का प्रधान नायक। ६. नाटक में प्रधान रस।

**अंगीकरण**—संज्ञा पु० दे० "अंगीकार।"

**अंगीकार**—संज्ञा पु० [ सं० ] [वि० अंगीकृत ] स्वीकार। मंजूर। ग्रहण।

**अंगीकृत**—वि० [ सं० ] स्वीकृत। मंजूर। स्वीकार किया हुआ। ग्रहण किया हुआ।

**अँगीठा**—संज्ञा पु० [ सं० अग्नि = आग + स्थ = ठहरना ] आग रखने का बरतन। बड़ी अँगीठी। बड़ी बोरसी।

**अँगीठी**—संज्ञा स्त्री० [ अँगीठा का अल्प० ] आग रखने का बरतन। बोरसी।

**अंगुर**†—संज्ञा पु० दे० "अंगुल"।

**अँगुरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

**अंगुल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ आठ जौ की लंबाई। आठ यवोदर का परिमाण। २ गज़ या बारहवाँ भाग। (ज्यो०) ३ हाथ की उँगली।

**अंगुलित्राण**—संज्ञा पु० [ सं० ] गोह के चमड़े का बना हुआ दस्ताना जिसे बाण चलाते समय उँगलियों में पहनते हैं।

**अंगुलिपर्व**—संज्ञा पु० [ सं० ] उँगलियों की पोर। उँगली की गाँठों के बीच का भाग।

**अंगुलित्राण**—संज्ञा पु० दे० "अंगुलित्राण।"

**अँगुली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अँगुली ]† १ हाथ या पैर की उँगली। २ हाथी के सूँड़ का अगला भाग।

**अंगुल्यादेश**—संज्ञा पु० [ सं० ] उँगली से अभिप्राय प्रकट करना। इशारा। संकेत।

**अंगुल्यानिर्देश**—संज्ञा पु० [ सं० ] बदनामी। कलंक। लांछन। अंगुश्तनुमाई।

**अंगुश्तनुमाई**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] बदनामी। कलंक। लांछन। दोषारोपण।

**अंगुश्तरी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] अँगूठी, मुँदरी। मुद्रिका।

**अंगुश्ताना**—संज्ञा पु० [ फा० ] १ उँगली पर पहनने की लोहे या पीतल की एक टोपी जिसे दरजी सीते समय एक उँगली में पहन लेते हैं। २ हाथ के अँगूठे की एक प्रकार की मुँदरी।

**अंगुष्ठ**—संज्ञा पु० [ सं० ] हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली। अँगूठा

**अँगुसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंकुश ] १ हल का फाल। २ सुनारों की बकनाल या टेढ़ी नली जिससे दीये की लौ को फूँककर टाँका जोड़ते हैं।

**अँगूठा**—संज्ञा पु० [ सं० अंगुष्ठ, प्रा० अंगुट्ठ ] मनुष्य के हाथ की सबसे छोटी और मोटी उँगली। पहली उँगली।

**मुहा०**—अँगूठा चूमना=१ खुशामद करना। शुश्रूषा करना। २. अधीन होना। अँगूठा दिखाना=१. किसी वस्तु को देने से अवज्ञापूर्वक नाहीं करना। २ किसी कार्य को करने से हट जाना। किसी कार्य का करना अस्वीकार करना। अँगूठे पर मारना=तुच्छ समझना। परवा न करना।

**अँगूठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अँगूठा + ई ] १ उँगली में पहनने का एक गहना। छल्ला। मुँदरी। मुद्रिका। २ उँगली में लिपटाया हुआ तागा। (जुलाहे)।

**अंगूर**—संज्ञा पु० [फा०] एक लता। और उसके फल का नाम जो बहुत मीठा और रसीला होता है। दाख। द्राक्षा।

**मुहा०**—अंगूर का मंडवा या अंगूर की टट्टी=१ अंगूर की बेल के चढ़ने और फैलने के लिए बाँस की फट्टियों

का बना हुआ मंडप । २ एक प्रकारकी आतिशबाजी ।

संज्ञा पुं० [ सं० अंकुर ] १ मांस के छोटे-छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पड़ते हैं । घाव का भराव ।

**मुहा०**—अंगूर तड़कना या फटना = भरते हुए घाव पर बँधी हुई मांस की झिल्ली फटना ।

२. अंकुर । अँखुवा ।

**अंगूरशेफा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] हिमालय में होनेवाली एक जड़ी ।

**अँगूरी**—वि० [ फा० अंगूर+ई ] १ अंगूर से बना हुआ । २ अंगूर के रंग का । संज्ञा पुं० हलका हरा रंग ।

**अँगेजना***—क्रि० स० [ सं० अंग = शरीर+एज=हिलना, काँपना । ] १ सहना । बरदाश्त करना । उठाना । २ अंगीकार करना । स्वीकार करना ।

**अँगेट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंग+एट (प्रत्य०) ] अंग की दीप्ति या कांति ।

**अँगेठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अँगीठी"।

**अँगेरना***—क्रि० स० [ सं० अंगीकार ] १ स्वीकार करना । मंजूर करना । २ बरदाश्त करना । सहना ।

**अँगोछना**—क्रि० अ० [ सं० अंगप्रोञ्छन ] गीले कपड़े से देह पोंछना । गीला कपड़ा फेरकर बदन साफ करना ।

**अँगोछा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अँगोछना] १ देह पोंछने का कपड़ा । गमछा । २ उपरना । उपवस्त्र उत्तरीय ।

**गोछी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अँगोछा ] १ देह पोंछने के लिये छोटा कपड़ा । २ छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय ।

**अंगोजना***—क्रि० स० दे० "अंगेजना"।

**अँगोरा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] मच्छड़ ।

**अँगौगा**—संज्ञा पुं० [ सं० अग्रायण ] धर्मार्थ बाँटने या चढ़ाने के लिये अलग निकाला हुआ अन्न आदि । अगऊ । पुजारी ।

**अँगौछा**—संज्ञा पुं० दे० "अँगोछा।"

**अँगौरिया**—संज्ञा पुं० [ सं० अंगवल] वह हलवाहा जिसे कुछ मजदूरी न देकर हल बैल उधार देते हैं ।

**अँघड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० अंघ्रि ] काँसे का छल्ला जिसे छोटी जाति की स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहनती हैं ।

**अंघस**—संज्ञा पुं० [ सं० अंघस् ] पाप । पातक ।

**अँघिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अँगिया] आटा या मैदा चालने की छलनी । अँगिया । आखा ।

**अंघ्रि**—संज्ञा पुं० [सं०] पैर । चरण । पाँव ।

**अंघ्रिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वृक्ष । पेड़ ।

**अँचरा**—संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।

**अंचल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ साड़ी का छोर । आँचल । पल्ला । छोर । दे० 'आँचल'। २ देश का वह भाग या प्रांत जो सीमा के समीप हो । ३ किनारा । तट ।

**अँचला**—संज्ञा पुं० [ सं० अंचल ] १ दे० "आँचल"। २ कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधू धोती के स्थान पर लपेट रहते हैं ।

**अँचवना**—क्रि० अ० [ सं० आचमन ] १ भोजन के उपरान्त हाथ और मुँह धोना । २ आचमन करना ।

**अँचवाना**—वि० स० [ हिं० अँचवना ] भोजन के उपरांत हाथ-मुँह धुलाना ।

**अंचित**—वि० [ सं० ] पूजित । आराधित ।

**अंछर**—संज्ञा पुं० [ सं० अक्षर ] १ मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें काँटे से उभर आते हैं । †२ अक्षर । ३ टोना । जादू ।

**मुहा०**—अंछर मारना=जादू करना । टोना करना । मंत्र का प्रयोग करना ।

**अंज** संज्ञा० पुं० दे० "कंज"।

**अंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुरमा । काजल । २ रात । रात्रि । ३ स्याही । रोशनाई । ४ पश्चिम का दिग्गज । ५ छिपकली । ६ एक प्रकार का बगला । नटी । ७ एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है । ८. सिद्धांजन जिसके लगाने से कहा जाता है कि जमीन में गड़े खजाने दिखाई पड़ते हैं । ९. एक पर्वत । १० कद्रू से उत्पन्न एक सर्प का नाम । ११ लेप । १२ माया । १३. शब्द की वह वृत्ति जिसमें कई अर्थोंवाले किसी शब्द का अभिप्रेत अर्थ दूसरे शब्दों के योग या प्रसंग से खुले ।

वि० काला । सुरमई रंग का ।

**अंजनकेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दीपक । दीया ।

**अंजनकेशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नख नामक सुगंध द्रव्य ।

**अंजन-शलाका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अंजन या सुरमा लगाने की सलाई । सुरमचू ।

**अंजनसार**—वि० दे० [ सं० अंजन+सारित] सुरमा लगा हुआ । अंजनयुक्त ।

**अंजनहारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अंजना] १ आँख की पलक के किनारे की फुनसी । बिलनी । गुहजनी । अंजना । २. एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा । कुम्हारी । बिलनी । भृंग ।

**अंजना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. केशरी नामक एक बंदर की स्त्री जिसके

गर्भ से हनुमान् उत्पन्न हुए थे। २ बिलनी। गुहांजनी। दो रंग की छिप-कली।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा धान। * क्रि० स० दे० "आँजना"।

**अंजनानंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] अंजना के पुत्र हनुमान्।

**अंजनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हनुमान् की माता अंजना। २ माया। ३. चंदन लगाए हुई स्त्री। ४ कुटकी। ५. आँख की पलक की फुड़िया। बिलनी।

**अँजबार**—संज्ञा पुं० [फा०] एक पौधा जिसकी जड़ का काढ़ा और शरबत हकीम लोग सरदी और कफ के रोग में देते हैं।

**अंजर पंजर**—संज्ञा पुं० [सं० पंजर] देह के बंद। शरीर के जोड़। ठठरी। **मुहा०**—अंजर पंजर ढीला होना = शरीर के जोड़ों का उखड़ना या हिल जाना। देह का बंद बंद टूटना। शिथिल होना। लस्त होना। क्रि० वि० अगल बगल। पार्श्व में।

**अंजल**—संज्ञा पुं० दे० "अंजली"। संज्ञा पुं० दे० "अन्नजल"।

**अंजलि, अंजली**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंजलि] १. दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट या गड्ढा। २. उतनी वस्तु जितनी एक अंजुली में आवे प्रस्थ। कुडव। हथेलियों से दान देने के लिये निकाला हुआ अन्न। ३. दो पसर। ४. एक नाप जो सोलह तोले के बराबर होती है।

**अंजलिगत**—वि० [सं०] १. अँजली में आया हुआ। हथेलियों पर रखा हुआ। २ हाथ में आया हुआ। प्राप्त।

**अंजलिपुट**—संज्ञा पुं० [सं०] अंजली।

**अंजलिबद्ध**—वि० [सं०] हाथ जोड़े हुए।

**अँजवाना**—क्रि० स० [सं० अंजन] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

**अंजसा+**—क्रि० वि० [?] शीघ्रता से जल्दी से।

**अंजहा**—वि० हिं० [हिं० अनाज+हा] [स्त्री० अंजही] अनाज के मेल से बना हुआ।

**अंजही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंजहा] वह बाजार जहाँ अन्न बिकता है। अनाज की मंडी।

**अँजाना**—क्रि० स० [सं० आञ्जन] अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।

**अंजाम**—संज्ञा पुं० [फा०] १ समाप्ति। पूर्ति। अंत। २ परिणाम। फल।

**मुहा०**—अंजाम देना=पूर्ण करना।

**अंजित**—वि० [सं०] जिसमें अंजन लगा हो। अंजनसार। आँजा हुआ।

**अंजीर**—संज्ञा पुं० [फा०] एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।

**अंजुमन**—संज्ञा स्त्री० [फा०] सभा। मजलिस।

**अँजुरी, अँजुली***†—संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि"।

**अँजोर***†—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

**अँजोरना***†—क्रि० स० [हिं० अँजुरी] १ बटोरना। २. छीनना। हरण करना। क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] जलाना। प्रकाशित करना। बालना जैसे दीपक अंजोरना।

**अँजोरा**†—वि० [सं० उज्ज्वल] उजेला। प्रकाशमान।

**यौ०**—अँजोरा पाख=शुक्ल पक्ष।

**अँजोरी***†संज्ञा स्त्री० [हिं० अँजोर+ई] १ प्रकाश। रोशनी चमक। उजाला। २ चाँदनी। चंद्रिका। वि० स्त्री० उजाली। प्रकाशमयी।

**अंझा**—संज्ञा पुं० [सं० अनध्याय, प्रा० अनज्झा] नागा। तातील। छुट्टी।

**अँटना**—क्रि० अ० [सं० अन्तर्या] १. समाना। किसी वस्तु के भीतर आना। २. किसी वस्तु के ऊपर सटीक बैठना। ठीक चिपकना। ३ भर जाना। ढँक जाना। ४. पूरा पड़ना। काफी होना। बस होना। काम चलना। ५. पूरा होना। खपना।

**अंटा**—संज्ञा पुं० [सं० अण्ड] १ बड़ी गोली। गोला। २ सूत या रेशम का लच्छा। ३ बड़ी कौड़ी। ४ एक खेल जिसे अंग्रेज हाथीदाँत की गोलियों से मेज पर खेल करते हैं। बिलियर्ड।

**अंटागुड़गुड़**—वि० [हिं० अंटा+गुड़गुड़] नशे में चूर। बेहोश। बेसुध। अचेत।

**अंटाघर**—संज्ञा पुं० [हिं० अंटा+घर] वह घर जिसमें गोलों का खेल खेला जाय।

**अंटा-चित**—क्रि० वि० [हिं० अंटा+चित] पीठ के बल। सीधा। पीठ ज़मीन पर किए हुए। पट और औंधा का उलटा।

**मुहा०**—अंटाचित होना=१. स्तंभित होना। अवाक् होना। सन्न होना। २ बेकाम होना। बरबाद होना। किसी काम का न रह जाना। ३ नशे में बेसुध होना। बेखबर होना। अचेत होना। चूर होना।

**अंटाबंधू**—संज्ञा पुं० [सं० अन्नबंधक] जुए में फेंकी जानेवाली कौड़ी।

**अँटिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंटी] घास, खर या पतली लकड़ियों आदि

का बँधा हुआ छोटा गट्ठा। गठिया। पूला। मुट्ठी।

**अँटियाना**—क्रि० स० [ हिं० अटी ] १. उँगलियों के बीच में छिपाना। हथेली में छिपाना। २. चारो उँगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना। ३. घास, खर या पतली लकड़ियों का मुट्ठा बाँधना। ४. गायब करना। हज़म करना।

**अंटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अन्तरा = बीच ] [ क्रि० अँटियाना ] १ उगलियों के बीच का स्थान या अंतर। घाई।

**मुहा०**—अंटी करना=किसी का माल उड़ा लेना। धोखा देकर कोई वस्तु ले लेना। अंटी मारना=१ जुआ खेलते समय कौड़ी को उगलियों के बीच में छिपा लेना। २ आँख बचाकर धीरे से दूसरे की वस्तु को खिसका लेना। धोखा देकर कोई चीज़ उड़ा लेना। ३ तराजू की डाँड़ी को इस ढंग से पकड़ना कि तौल में चीज़ कम चढ़े। कम तौलना। डाँड़ी मारना। २. तर्जनी के ऊपर मध्यमा को चढ़ाकर बनाई हुई मुद्रा। डोड़ैया। डड़ोइया। ( जब कोई लड़का अत्यज या अपवित्र वस्तु को छू लेता है तब और लड़के छूत से बचने के लिये ऐसी मुद्रा बनाते हैं। ) ३. विरोध। बिगाड़। लड़ाई। ४. सूत या रेशम का लच्छा। अट्टी। ५ अटेरन। सूत लपेटने की लकड़ी। ६. विरोध। विगाड़। लड़ाई। शरारत। ७ कान में पहनने की छोटी बाला। मुरकी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्ठी ] गाँठ। ग्रंथि। संज्ञा स्त्री० [ हिं० ऐंठन ] धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

**अँटौतल**—संज्ञा पुं० [ हिं० अटना ] तेली के बैल की आँख का ढकन।

**अँठई**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्टपदी ] किलनी।

**अंठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्ठि=गुठली, गाँठ ] १ चीयाँ। गुठली। बीज। २ गाँठ। गिरह। ३ गिलटी। कड़ापन।

**अंड**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ अंडा २ अंडकोश। फोता। ३ ब्रह्मांड। लोक। मंडल। विश्व। ४ वीर्य्य। शुक्र। ५ कस्तूरी का नाफ़ा। मृगनाभि। ६. पंच आवरण। दे० "कोश"। ७ कामदेव। ८ पिंड। शरीर। ९ मकानों की छाजन के ऊपर के गोल कलश।

**अंडकटाह**—संज्ञा पु० [ सं० ] ब्रह्मांड। विश्व।

**अंडकोश**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ फोता। खुसिया। आँड। बैजा। वृषण। २ ब्रह्मांड। लोकमंडल संपूर्ण विश्व। ३ सीमा। हद। ४. फल का छिलका।

**अंडज**—संज्ञा पु० [ सं० ] अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव, जैसे, सर्प, पक्षी, मछली।

**अँडना**—क्रि० अ० दे० "अड़ना।"

**अंडबंड**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. असंबद्ध प्रलाप। बे सिर पैर की बात। ऊटपटाँग। अनाप शनाप। व्यर्थ की बात २ गाली। वि० असंबद्ध। बे सिर पैर का। इधर उधर का। अस्त व्यस्त। व्यर्थ का।

**अँडरना**†—क्रि० अ० [ सं० आदलन ] धान के पौधे का उस अवस्था में पहुँचना जब बाल निकलने पर हो। रेड़ना। गर्भना।

**अंडवृद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक रोग जिसमें अंडकोश या फोता फूलकर बहुत बढ़ जाता है। फोते का बढ़ना।

**अंडस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अन्तर ] कठिनाई। मुश्किल। संकट। असुविधा।

**अंडा**—संज्ञा पु० [ सं० अंड ] [ वि० अंडैल ] १ वह गोल वस्तु जिसमें से पक्षी, जलचर और सरीसृप आदि अंडज जीवों के बच्चे फूटकर निकलते हैं। बैजा।

**मुहा०**—अंडा ढीला होना=१. नस ढीली होना। थकावट आना। शिथिल होना। २ खुक्ख होना निर्द्रव्य होना। दिवालिया होना। अंडा सरकना=हाथ पैर हिलना। अंग डोलना। उठना। चेष्टा या प्रयत्न होना। अंडा सरकाना। हाथ पैर हिलाना। अंग डोलाना। उठना। उठकर जाना। अंडा सेना=१. पक्षियों का अपने अंडों पर गर्मी पहुँचाने के लिये बैठना। २ घर में बैठे रहना। बाहर न निकलना।

२. शरीर। देह। पिंड।

**अंडाकार**—वि० [ सं० ] अंडे के आकार का। लंबाई लिए हुए गोल।

**अंडाकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अंडे का आकार। अंडे की शकल।

वि० अंडाकार। लंबाई लिए गोल।

**अंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० एरंड ] १. रेंडी। रेंड के फल का बीज २ रेंड या एरंड का पेड़। ३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**अँडुआ**—संज्ञा पु० दे० "आँड"।

**अँडुआना**—क्रि० स० [ सं० अंड ] बधिया करना। बछड़े के अंडकोश को कुचलना।

**अँडुआ बैल**—संज्ञा पु० [ हिं० अँडुआ बैल ] १ बिना बधियाया हुआ बैल। साँड़। २ बड़े अंडकोशवाला आदमी जो उसके बोझ से चल न सके। ३. सुस्त आदमी।

**अंडैल**—वि० [ हिं० अंडा ] जिसके पेट में अंडे हों। अंडेवाली।

**अंत**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० अंतिम, अंत्य ] १ समाप्ति। आखीर। अवसान।

इति। २. शेष या अंतिम भाग। पिछला अंश।

मुहा०—अंत बनना=परिणाम अच्छा होना। अंत बिगड़ना=परिणाम बुरा होना। ३. सीमा। हद। अवधि। पराकाष्ठा। ४. अंतकाल। मरण। मृत्यु। ५. परिणाम। फल। नतीजा। ६. समीप। निकट। ७. बाहर। दूर। ८. प्रलय।

संज्ञा पुं०। [सं० अन्तस्] १. अंतःकरण। हृदय। जी। मन। जैसे अंत की बात। २. भेद। रहस्य। गुप्त भाव। मन की बात। *संज्ञा पुं० [सं० अन्त्र] आँत। अंतड़ी। क्रि० वि० अंत में। आखिरकार। निदान। क्रि० वि० [सं० अन्यत्र, हि० अनत] और जगह। दूर। अलग।

**अंतक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंत करनेवाला। नाश करनेवाला. २ मृत्यु जो प्राणियों के जीवन का अंत करती है। मौत। ३. यमराज। काल। ४. सन्निपात ज्वर का एक भेद। ५. ईश्वर, जो प्रलय में सबका संहार करता है। ६. शिव।

**अंतकर**—वि० दे० "अंतकारी"।

**अंतकारी**—अंत करनेवाला। संहारक। मार डालनेवाला।

**अंतकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतिम समय। मरने का समय। आखिरी वक्त। २. मृत्यु। मौत। मरण।

**अंतक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंत्येष्टि कर्म्म। मरने के पीछे का क्रिया कर्म्म।

**अंतग**—संज्ञा पुं० [सं०] पारगामी। पारगत। जानकारी में पूरा। निपुण।

**अंतगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंतिम दशा। मृत्यु। मरण। मौत।

**अंतघाई***—वि० [सं० अन्तघाती] विश्वासघाती। धोखा देनेवाला। दगाबाज।

**अंतश्छद**—संज्ञा पुं० [सं० अन्तश्छद] अंदर से ढकनेवाला। आच्छादन।

**अँतड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अन्त्र] आँत।

मुहा०—अँतड़ी जलना=पेट जलना। बहुत भूख लगना। अँतड़ी गले में पड़ना=किसी आपत्ति में फँसना। अँतड़ियों का बल खोलना=बहुत दिन के बाद भोजन मिलने पर खूब पेट भर खाना।

**अंततः**—क्रि० वि० [सं०] १ अंत में। २ कम से कम।

**अंतपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। पहरू। दरबान। २. राज्य की सीमा पर का पहरेदार।

**अंतरंग**—वि० [सं०] १. भीतरी। बहिरंग का उलटा। २ अत्यंत समीपी। घनिष्ट। ३. गुप्त बातों को जाननेवाला। जिगरी। दिली। ४. मानसिक। अंतःकरण का। संज्ञा पुं० मित्र। दिली दोस्त। आत्मीय।

**अंतरंग-सभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी संस्था की वह चुनी हुई छोटी सभा या समिति जो उसकी व्यवस्था करती है। प्रबंध कारिणी।

**अंतरंगी**—वि० दे० 'अंतरंग"।

**अंतर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ फ़र्क। भेद। विभिन्नता। अलगाव। २. बीच। मध्य। फ़ासला। दूरी। अवकाश। दो वस्तुओं के बीच में का स्थान। ३. मध्यवर्ती काल। दो घटनाओं के बीच का समय। बीच। ४. ओट। आड़। व्यवधान। परदा। दो वस्तुओं के बीच में पड़ी हुई चीज। ५ छिद्र। छेद। रंध्र।
संज्ञा पुं० [सं० अंतस्] अंतःकरण। हृदय। वि० १. संज्ञा पुं० [सं० अन्तम्] अंतर्द्धान गायब। लुप्त। २. दूसरा। अन्य। और जैसे, कालांतर। क्रि० वि० दूर। अलग। जुदा। पृथक्। ३. भीतर। अंदर।

**अंतरअयन**—संज्ञा पुं० [सं० अन्तर्+अयन] अंतर्गृही। तीर्थों की एक परिक्रमाविशेष।

**अंतरगत**—संज्ञा पुं० और वि० दे० 'अंतर्गत।

**अंतरचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दिशाओं और विदिशाओं के बीच के अंतर को चार चार भागों में बाँटने से बने हुए ३२ भाग। २. दिग्विभागो में चिड़ियों की बोली सुनकर शुभाशुभ फल बताने की विद्या। ३ तंत्र के अनुसार शरीर के भीतर माने हुए मूलाधार आदि कमल के आकार के छः चक्र। षट्चक्र। ४ आत्मीय वर्ग। भाई। बंधु।

**अंतरजामी**†—संज्ञा पुं० दे० "अंतर्यामी"।

**अंतरतम**—संज्ञा पुं० [सं० अन्तस्+तम (प्रत्य०)] १. हृदय का सबसे भीतरी भाग। २. विशुद्ध अंतःकरण। ३. किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग।

**अंतरदिशा**†—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

**अंतरपट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. परदा। आड़ करने का कपड़ा। २. आड़। ओट। ३ विवाह-मंडप में मृत्यु की आहुति के समय अग्नि और वर-कन्या के बीच में डाला हुआ परदा। ४. परदा। छिपाव। दुराव। ५ धातु या ओषधि को फूंकने के पहले उसकी लुगदी व संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़मिट्टी। कपड़ौटी। ६ गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ कपड़ा।

**अंतरराष्ट्रीय**—वि० दे० "अंतर्राष्ट्रीय"।

**अंतरसंचारी**—संज्ञा पुं० [सं०] संचारी भाव। (साहित्य)

**अंतरस्थ**—वि० [सं०] १ भीतर का।

अंदर का। २. बीच का। मध्य का।

**अँतरा**—संज्ञा पुं० [सं० अंतर] १. अंतर। नागा। अंतर। बीच। २. वह ज्वर जो एक दिन नागा देकर आता है। ३. कोना।

यौ० कोना-अँतरा।

वि० एक बीच में छोड़कर दूसरा।

**अंतरा**—क्रि० वि० [सं० अन्तर] १ मध्य। २ निकट। ३ अतिरिक्त। सिवाय। ४. पृथक्। ५ विना।

संज्ञा पु० १ किसी गीत में स्थायी या टेक के अतिरिक्त बाकी और पद या चरण। २ प्रातःकाल और सध्या के बीच का समय। दिन।

**अंतरात्मा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीवात्मा। २ अंतःकरण।

**अँतराना**—क्रि० स० [सं० अन्तर] १. अलग करना। पृथक् करना। २. अंदर करना।

**अंतराय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विघ्न। बाधा। २. ज्ञान का बाधक। ३ योग की सिद्धि के विघ्न जो नौ हैं।

**अंतराल**—संज्ञा पु० [सं०] १ घेरा। मंडल। आवृत स्थान। २ मध्य। बीच।

**अंतरिक्ष**—संज्ञा पु० [सं०] १ पृथिवी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान। दो ग्रहों या तारों के बीच का शून्य स्थान। आकाश। अधर। शून्य। २ स्वर्गलोक। ३ तीन प्रकार के केतुओं में से एक।

वि० अंतर्द्धान। गुप्त। अप्रकट। गायब।

**अंतरिक्ष विज्ञान**—संज्ञा पु० [सं०] वह विज्ञान जिसमें वायु-मंडल की गतियों और विक्षोभों आदि का विवेचन होता है।

**अंतरिख, अंतरिच्छ***—संज्ञा पु० संज्ञा दे० "अंतरिक्ष"।

**अंतरित**—वि० [सं०] १. भीतर किया हुआ। भीतर रक्खा हुआ। छिपा हुआ। २. अंतर्द्धान। गुप्त। गायब। तिरोहित ३ आच्छादित। ढका हुआ।

**अंतरिम**—वि० [सं० अन्तर् मि० अं० इन्टेरिम] दो कालों या कार्यों आदि के बीच का। मध्यवर्ती। अन्तवर्ती।

**अँतरिया**—संज्ञा पु० [हिं० अंतर] एक दिन का अंतर देकर आनेवाला ज्वर। पारी का बुखार। इकतरा।

**अंतरीप**—संज्ञा पु० [सं०] १ द्वीप। टापू। २ पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया हो। रास।

**अंतरीय**—संज्ञा पु० [सं०] अधोवस्त्र। कमर में पहनने का वस्त्र। धोती।

**अँतरौटा**—संज्ञा पु० [सं० अन्तर+पट] साड़ी के नीचे पहनने का महीन कपड़ा।

**अंतर्गत**—वि० [सं०] [संज्ञा अंतर्गति] १. भीतर आया हुआ। समाया हुआ। शामिल। अंतर्भूत। सम्मिलित। २ भीतरी। छिपा हुआ। गुप्त। ३ हृदय के भीतर का। अंतःकरणस्थित।

*संज्ञा पु० मन। जी। हृदय। चित्त।

**अंतर्गति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मन का भाव। चित्तवृत्ति। भावना। २ चित्त की अभिलाषा। हार्दिक इच्छा। कामना।

**अंतर्गृही**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीर्थ-स्थान के भीतर पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा।

**अंतर्घट**—संज्ञा पु० [सं०] अंतःकरण। हृदय।

**अंतर्जानु**—वि० [सं०] हाथों को घुटनों के बीच किए हुए।

**अंतर्ज्ञात**—संज्ञा पु० [सं०] मन के अंदर होनेवाला ज्ञान। अंतर्बोध। प्रज्ञा।

**अंतर्दशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में ग्रहों के नियत भोगकाल

**अंतर्दशाह**—संज्ञा पुं० [सं०] मरने के पीछे दस दिनों के भीतर होनेवाले कर्मकांड।

**अंतर्दाह**—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय का दाह या जलन। मन का घोर कष्ट।

**अंतर्धान**—संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अदर्शन। छिपाव। तिरोधान।

वि० गुप्त। अलक्ष। गायब। अदृश्य। अंतर्हित। अप्रकट। लुप्त। छिपा हुआ।

**अंतर्नयन**—संज्ञा पुं० [सं०] भीतरी या ज्ञान के नेत्र।

**अंतर्निविष्ट**—वि० [सं०] १. भीतर बैठा हुआ। अंदर रक्खा हुआ। २. अंतःकरण में स्थित। मन में जमा हुआ। हृदय में बैठा हुआ।

**अंतर्निहित**—वि० [सं०] अंदर छिपा हुआ।

**अंतर्पट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आड़। ओट। २. परदा। ३. अंतच्छद।

**अंतर्बोध**—संज्ञा पु० [सं०] १. आत्मज्ञान। २. आंतरिक अनुभव।

**अंतर्भाव**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० अंतर्भावित, अंतर्भूत] १. मध्य में प्राप्ति। भीतरी। समावेश। अंतर्गत होना। शामिल होना। २. तिरोभाव। विलीनता। छिपाव। ३. नाश। अभाव। ४ भीतरी मतलब। आंतरिक अभिप्राय। आशय। मंशा।

**अंतर्भावना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ध्यान। सोच विचार। चिंता। २. गुणन-फल के अंतर से संख्याओं को ठीक करना।

**अंतर्भावित**—वि० [सं० १ अंतर्भूत] अंतर्गत। शामिल हुआ। भीतर। २ भीतर किया हुआ। छिपाया। लुप्त।

**अंतर्भुक्त**—वि० [सं०] भीतर आया हुआ। शामिल। अंतर्भूत।

**अंतर्भूत**—वि० [सं०] अंतर्गत। शामिल। संज्ञा पु० जीवात्मा।

प्राण। जीव।

**अंतर्मना**—वि० [सं० अन्तः+मन] अनमना। उदास।

**अंतर्मल**—संज्ञा पुं० [सं०] मन का कलुष या बुराई।

**अंतर्मुख**—वि० [सं०] जिसका मुँह भीतर की ओर हो। भीतर मुँहवाला। जिसका छिद्र भीतर की ओर हो। जैसे, अंतर्मुख फोड़ा। क्रि० वि० भीतर की ओर प्रवृत्त। जो बाहर से हटकर भीतर ही लीन हो।

**अंतर्यामी**—वि० [सं० अन्तर्यामिन्] १ भीतर जानेवाला। जिसकी गति मन के भीतर तक हो। २ अंतःकरण में स्थित होकर प्रेरणा करनेवाला। चित्त पर दबाव या अधिकार रखनेवाला। ३ भीतर की बात जाननेवाला। मन की बात का पता रखनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर।

**अंतर्राष्ट्रीय**—वि० [सं० अंतर्+राष्ट्रीय] संसार के सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला। सार्वराष्ट्रीय।

**अंतर्लंब**—संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लंब गिरा हो।

**अंतर्लापिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो।

**अंतर्लीन**—वि० [सं०] मग्न। भीतर। छिपा हुआ। डूबा हुआ। गर्क। विलीन।

**अंतर्वती**—वि० स्त्री० [सं०] १ गर्भवती। गर्भिणी। हामिला। २ भीतरी। अंदर की।

**अंतर्वर्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] अंतिम वर्ण का। चतुर्थ वर्ण का। शूद्र।

**अंतर्वर्ती**—वि० [सं० अन्तर्वर्तिन्] भीतर रहनेवाला। २. अन्तर्गत। अन्तर्भुक्त।

**अंतर्वाणी**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शास्त्रज्ञ। २ पंडित। विद्वान्।

**अंतर्विकार**—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का धर्म। जैसे, भूख, प्यास, पीड़ा इत्यादि।

**अंतर्वेगी ज्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें रोगी को पसीना नहीं आता।

**अंतर्वेद**—पुं० [सं०] [वि० अन्तर्वेदी] १ देश जिसके अंतर्गत यज्ञों की वेदियाँ हों। २ गंगा और यमुना के बीच का देश। ब्रह्मावर्त। ३. दो नदियों के बीच का देश। दोआब।

**अंतर्वेदना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंतःकरण की वेदना। भीतरी या मानसिक कष्ट।

**अंतर्वेदी**—वि० [सं० अंतर्वेदीय] अंतर्वेद का निवासी। गंगा-यमुना के दोआब में बसनेवाला।

**अंतर्वेशिक**—संज्ञा पुं० [सं०] अंतःपुररक्षक। ख्वाजा सरा।

**अंतर्हित**—वि० [सं०] १. तिरोहित। अंतर्द्धान। गुप्त। गायब। २ छिपा हुआ। अदृश्य।

**अंतशय्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्युशय्या। मरनखाट। भूमिशय्या। २ श्मशान। मसान। मरघट। ३ मरण। मृत्यु।

**अंतश्छद**—संज्ञा पुं० दे० "अंतश्छद"।

**अंतस्**—संज्ञा पुं० [सं०] अंतःकरण। हृदय।

**अंतसद्**—संज्ञा पुं० [सं०] शिष्य। चेला।

**अंतसमय**—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्युकाल।

**अंतस्तल**—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर का भीतरी या मध्यवर्ती स्थान। मन।

**अंतस्ताप**—संज्ञा पुं० [सं०] मानसिक कष्ट।

**अंतस्थ**—वि० [सं०] १. भीतर का। भीतरी। २. बीच में स्थित। मध्य का। मध्यवर्ती। बीचवाला। ३ य, र, ल, व, ये चारों वर्ण।

**अंतस्थित**—वि० दे० "अंतस्थ"।

**अंतस्नान**—संज्ञा पुं० [सं०] अवभृथ स्नान। वह स्नान जो यज्ञ समाप्त होने पर हो।

**अंतस्सलिल**—वि० [सं०] [स्त्री० अंतस्सलिला] (नदी) जिसके जल का प्रवाह बाहर न देख पड़े, भीतर हो। जैसे अंतस्सलिला सरस्वती।

**अंतस्सलिला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरस्वती नदी। २. फल्गू नदी।

**अंताराष्ट्रिय**—वि० दे० "अंतर्राष्ट्रीय"।

**अंतावरी**—संज्ञा स्त्री [सं० अंत्रावलि] अँतड़ी। आँतों का समूह।

**अंतवसायी**—संज्ञा पुं० [सं०] अस्पृश्य १ ग्राम की सीमा के बाहर रहनेवाले।

**अंतावसायी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाई। हज्जाम। २. हिंसक। चांडाल।

**अंतिम**—वि० [सं०] १. जो अंत में हो। अंत का आखिरी। सबके पीछे का। २ चरम। सबसे बढ़कर। हद दरजे का।

**अंतिमेत्थम्**—संज्ञा पुं० [सं० मि० अँ० अल्टिमेटम] विवादास्पद विषय के निपटारे के लिए रक्खी हुई अंतिम माँग या शर्त।

**अंतेउर, अंतेवर***—संज्ञा पुं० [सं० अंतःपुर] अंतःपुर। जनानखाना।

**अंतेवासी**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुरु के समीप रहनेवाला। शिष्य। चेला। २ ग्राम के बाहर रहनेवाला। चांडाल। अंत्यज।

**अंतःकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह भीतरी इंद्रिय जो संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुःखादि का अनुभव करती है। मन। २. विवेक। नैतिक बुद्धि।

**अंतःपटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी चित्रपट में नदी, पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य। २.

नाटक का परदा। संज्ञा स्त्री० सोमरस जब वह छानने के लिये छनने में रक्खा हो।

**अंतःपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ संज्ञा अंतःपुरिक ] जनानखाना। भीतरी महल। रनिवास।

**अंतःपुरिक**—संज्ञा पु० [ स० ] अंतः-पुर का रक्षक। कंचुकी।

**अंतःराष्ट्रीय**—वि० दे० "सार्वरा-ष्ट्रीय"।

**अंतःशरीर**—संज्ञा पु० [ स० ] लिंग-शरीर।

**अंतःसंज्ञ**—संज्ञा पु० [ सं० ] जो जीव अपने सुख दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सके। जैसे वृक्ष।

**अंत्य**—वि० [स०] आखिरी। अंतिम। आखिरी। सबसे पिछला।
संज्ञा पुं० १ वह जिसकी गणना अंत में हो। जैसे, लग्नो में मीन, नक्षत्रो में रेवती। २. दस सागर की संख्या ( १०००,०००,०००,०००,००० ) यम।

**अंत्यकर्म**—संज्ञा पु० [सं० ] अंत्येष्टि-क्रिया।

**अंत्यज**—संज्ञा पु० [ स० ] वह जो अंतिम वर्ण में उत्पन्न हो। वह शूद्र जो छूने योग्य न हो या जिसका छुआ जल द्विज ग्रहण न कर सकें, जैसे, धोबी, चमार।

**अंत्यवर्ण**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. अंतिम वर्ण। शूद्र। २. अंत का अक्षर 'ः'। ३. पद के अंत में आनेवाला अक्षर।

**अंत्यविपुला**—संज्ञा० स्त्री० [ सं० ] आर्या छंद का एक भेद।

**अंत्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चांडाली। चांडाल की स्त्री। चंडालिनी।

**अंत्याक्षर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी शब्द या पद के अंत का अक्षर। २ वर्णमाला का अंतिम अक्षर 'ह'।

**अंत्याक्षरी**—संज्ञा स्त्री० [स० ] किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाला दूसरा श्लोक पढ़ना। ( विद्यार्थियों में प्रच-लित )।

**अंत्यानुप्रास**—संज्ञा पु० [ स० ] पद्य के चरणो के अंतिम अक्षरों का मेल। तुक।

**अंत्येष्टि**—संज्ञा पु० [ स० ] मृतक का शवदाह से सपिंडन तक कर्म्म। क्रिया कर्म्म।

**अंत्र**—संज्ञा पु० [ स० ] आंत। अँतड़ी।

**अंत्रकूजन**—संज्ञा पु० [ स० ] आँतो का शब्द। आँतों की गुड़गुड़ाहट।

**अंत्रवृद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँत उतरने का रोग।

**अंत्रांडवृद्धि**—संज्ञा स्त्री० [स०] एक रोग जिसमें आँतें उतरकर फोते में चली आती है और फोता फूल जाता है।

**अंत्री***—संज्ञा स्त्री०[स० अन्त्र ]अँतड़ी।

**अँथऊ**—संज्ञा पु० [ ? ] सूर्यास्त से पहले का भोजन। ( जैन )

**अंदर**—क्रि० वि० [ फा० ] किसी प्रकार के सीमा के अन्तर्गत। भीतर।

**अँदरसा**—संज्ञा पु० [सं० अन्त+ रस] एक प्रकार की मिठाई।

**अंदरी**—वि० [फा० अन्दर+ई प्रत्य०] भीतरी।

**अंदरूनी**—वि०[फा०] भीतरी भीतर का।

**अंदाज़**—संज्ञा पु० [ फा० ] [ संज्ञा अंदाज़ी, क्रि० वि० अंदाज़न ] १ अटकल। अनुमान। मान। नाप-जोख। कूत। तख़मीना। दे० "अंदाजा"। २. ढब। ढंग। तौर। तर्ज। ३. मटक। भाव। चेष्टा।

**अंदाज़न**—क्रि० वि० [ फा० ] १ अन्दाज से। अटकल से। २ लगभग। क़रीब।

**अंदाज़पट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० अंदाज+पट्टी ( भूभाग ) ] खेत में लगी हुई फ़सल के मूल्य का कूतना। कनकूत।

**अंदाज़ा**—संज्ञा पु० [फा०] अटकल। अनुमान। कूत। तख़मीना।

**अँदाना**—क्रि० स० [ सं० अन्तर ? ] कतराना। बचाना।

**अंदु, अंदुक**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पाजेब। पैरी। पैजनी। २. हाथी को बाँधने का साँकड़ा या रस्सी।

**अंदुआ**—संज्ञा पु० [ सं० अदुक ] हाथियों के पिछले पैर में डालने के लिए लकड़ी का बना काँटेदार यंत्र।

**अंदेशा**—संज्ञा पु० [फा०] १ सोच। चिंता। फ़िक्र। २ संशय। अनुमान। सदेह। शक। ३ खटका। आशंका। भय। डर। ४ हरज। हानि। ५ दुबिधा। असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश।

**अँदेस***—संज्ञा पु० दे० "अंदेशा"।

**अँदोर***—संज्ञा पु० [सं० आंदोल= झूलना, हलचल] शोर। हल्ला। हुल्लड़।

**अंदोह**—संज्ञा पु० [फा०] १ शोक। दुःख। रंज। खेद। २ तरद्दुद। खटका।

**अंध**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अंधता अंधत्व ] १ नेत्रहीन। बिना आँख का। अंधा। जिसकी आँखों में ज्योति न हो। जिसमें देखने की शक्ति न हो। २ अज्ञानी। जो जानकार न हो। अनजान। मूर्ख। बुद्धिहीन। अविवेकी। ३. असावधान। अचेत। ग़ाफ़िल ४. उन्मत्त। मतवाला। मस्त।
संज्ञा पुं० १ वह व्यक्ति जिसे आँखें न हों। नेत्रहीन प्राणी। अंधा। २. जल। पानी। ३. उल्लू। ४. चमगा-

दश। ५. अँधेरा। अंधकार। ६ कवियों के बाँधे हुए पथ के विरुद्ध चलने का काव्य-संबंधी दोष।

**अंधक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नेत्रहीन मनुष्य। दृष्टिरहित व्यक्ति। अंधा। २. कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य।

**अंधकार**—संज्ञा पुं० [सं०] अँधेरा।

**अंधकाल**—संज्ञा पुं० दे० "अंधकार"।

**अंधकूप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधा कूँआ। सूखा कूँआ। वह कूँआ जिसका जल सूख गया हो और जो घास पात से ढका हो। २. एक नरक का नाम। ३ अँधेरा।

**अंधखोपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंध+ हिं० खोपड़ी] जिसके मस्तिष्क में बुद्धि न हो। मूर्ख। भोंदू। नासमझ।

**अंधड़**—संज्ञा पुं० [सं० अंध] गर्द लिए हुए झोंके की वायु। आँधी। तूफ़ान।

**अंधतमस**—संज्ञा पुं० [सं०] महा अंधकार। गहरा अँधेरा। गाढ़ा अँधेरा।

**अंधता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंधापन। दृष्टिहीनता।

**अंधतामिस्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ घोर अंधकारयुक्त नरक। बड़ा अँधेरा नरक। २१ बड़े नरकों में दूसरा। २ सांख्य में इच्छा के विघात या विपर्यय के पाँच भेदों में से एक। जीने की इच्छा रहते भी मरने का भय। ३ पाँच क्लेशों में से एक। मृत्यु का भय। (योग)

**अंधत्व**—संज्ञा पुं० दे० "अँधता"।

**अंधधुंध***—संज्ञा स्त्री० दे० "अंधाधुंध"।

**अंधपरंपरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिना समझे बूझे पुरानी चाल का अनुकरण। एक को कोई काम करते देखकर दूसरे का बिना किसी विचार के उसे करना। भेड़ियाधँसान।

**अंधपूतना ग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों का एक रोग।

**अंधबाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० अंधवायु] आँधी। तूफ़ान।

**अँधरा†***—वि० दे० "अंधा"।

**अँधरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधरा+ई प्रत्य०] १ अंधी। अंधी स्त्री। २ पहिए की पुट्ठियों अर्थात् गोलाई को पूरा करनेवाला धनुषाकार लकड़ियों की चूल।

**अंधविश्वास**—संज्ञा पुं० [सं०] बिना विचार किए किसी बात का निश्चय। विवेकशून्य धारणा।

**अंधस**—संज्ञा पुं० [देश०] भात।

**अंधसैन्य**—संज्ञा पुं० [सं०] अशिक्षित सेना।

**अंधा**—संज्ञा पुं० [सं० अंध] [स्त्री० अंधी] बिना आँख का जीव। वह जिसको कुछ सूझता न हो। दृष्टिरहित जीव।

वि० १. बिना आँख का। दृष्टिरहित। जिसे देख न पड़े। २. विचाररहित। अविवेकी। भले बुरे का विचार न रखनेवाला।

**मुहा०**—अंधा बनना=जान-बूझकर किसी बात पर ध्यान न देना।—अंधे की लकड़ी या लाठी=१ एकमात्र आधार। सहारा। आसरा। २ एक लड़का जो कई लड़कों में बचा हो। इकलौता लड़का। अंधा दीया=वह दीपक जो धुँधला या मंद जलता हो। अंधा भैंसा=लड़कों का एक खेल। ३ जिसमें कुछ दिखाई न दे। अँधेरा।

**यौ०**—अंधा शीशा या आईना=धुँधला शीशा। वह दर्पण जिसमें चेहरा साफ़ न दिखाई देता हो। अंधा कुँआँ=१. सूखा कुँआँ। वह कुँआँ जिसमें पानी न हो और जिसका मुँह घास पात से ढका हो। २. लड़कों का एक खेल।

**अंधाधुंध**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अंधा+धुंध] १. बड़ा अँधेरा। घोर अंधकार। २ अंधेर। अविचार। अन्याय। गड़बड़। धींगाधींगी। वि० १ बिना सोच विचार का। विचाररहित। २ अधिकता से। बहुतायत से।

**अंधाधुंधी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अंधाधुंधी"।

**अंधार*†**—संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा"। संज्ञा पुं० [सं० आधार] रस्सी का जाल जिसमें घास भूसा आदि भरकर बैल पर लादते हैं।

**अंधाहुली**—संज्ञा स्त्री० दे० "चोरपुष्पी"।

**अँधियार†**—संज्ञा पुं० वि० दे० "अँधेरा"।

**अँधियारा*†**—संज्ञा पुं० वि० दे० "अँधेरा"।

**अँधियारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरी] १ उपद्रवी घोड़ों, शिकारी पक्षियों और चीतों की आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी। २. अंधकार। अँधेरा।

**अँधियाली**—संज्ञा स्त्री० दे० "अँधियारी"।

**अंधेर**—संज्ञा पुं० [सं० अंधकार] १ अन्याय। अत्याचार। जुल्म। २ उपद्रव। गड़बड़। कुप्रबंध। अंधाधुंध। धींगाधींगी।

**अंधेरखाता**—संज्ञा पुं० [हिं० अंधेर+ खाता] १ हिसाब किताब और व्यवहार में गड़बड़ी। व्यतिक्रम। २ अन्यथाचार। [भाव० अंधापन] अन्याय। कुप्रबंध। अविचार।

**अंधेरना***—क्रि० स० [हिं० अँधेर] अंधकारमय करना। तमाच्छादित करना।

**अँधेरा**—संज्ञा पुं० [सं० अंधकार, प्रा० अंधयार] [स्त्री० अँधेरी] १. अंधकार। तम। प्रकाश का अभाव। उजाले का उलटा। २. धुँधलापन। धुंध।

**यौ०**—अँधेरा गुप=ऐसा अँधेरा जिसमें कुछ दिखाई न दे। घोर अंधकार।

३. छाया। परछाईं। ४. उदासी। उत्साहहीनता।
वि० अंधकारमय। प्रकाशरहित।
मुहा०—अँधेरे घर का उजाला=१. अत्यंत कांतिमान्। अत्यंत सुदर। २. सुलक्षण। शुभ लक्षणवाला। कुलदीपक। वंश की मर्यादा बढ़ानेवाला। ३. इकलौता बेटा। अँधेरा पाख या पक्ष=कृष्ण पक्ष। बदी। मुँह अँधेरे या अँधेरे मुँह=बड़े तड़के। बड़े सबेरे।

**अँधेरा, उजाला**—संज्ञा पु० [हिं० अँधेरा+उजाला] कागज मोड़कर बनाया हुआ लड़कों का एक खिलौना।

**अँधेरिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरी] १. अंधकार। अँधेरा। २. अँधेरी रात। काली रात। अँधेरा पक्ष। अँधेरा पाख। संज्ञा स्त्री० [देश०] ऊख की पहली गोड़ाई।

**अँधेरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अँधेरा+ई] १. अंधकार। तम। प्रकाश का अभाव। २ अँधेरी रात। काली रात। ३. आँधी। अंधड़। ४ घोड़ों या बैलों की आँख पर डालने का परदा।
मुहा०—अँधेरी डालना या देना=१. किसी की आँखें मूँदकर उसकी दुर्गति करना। २ उसकी आँख में धूल डालना। धोखा देना। वि० प्रकाशरहित। तमाच्छादित। बिना उजेले की। जैसे—अँधेरी रात।
मुहा०—अँधेरी कोठरी=१. पेट। गर्भ। धरन। कोख। २. गुप्त भेद। रहस्य।

**अँधोटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंध+पट; प्रा० अंधवट्टी, अंधौटी] बैल या घोड़े की आँख बंद करने का ढक्कन या परदा।

**अंध्यार***—संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा।"

**अँध्यारी***—संज्ञा स्त्री० दे० "अँधेरी"।

**अंध्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहेलिया। व्याध। शिकारी। २. वैदेहक पिता और करावर माता से उत्पन्न नीच जाति।

**अंध्रभृत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मगध देश का एक प्राचीन राजवंश।

**अंब**—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबा"।
संज्ञा पु० [सं० आम्र] आम का पेड़।

**अंबक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ आँख। नेत्र। २. ताँबा। ३. पिता।

**अंबर**—संज्ञा पु० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। पट। स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की एकरंगी किनारेदार धोती। ३. आकाश। आसमान। ४. कपास। ५. एक सुगंधित वस्तु जो ह्वेल मछली की अँतड़ियों में जमी हुई मिलती है। ६ एक इत्र। ७. अभ्रक धातु। अबरक। ८ राजपूताने का एक पुराना नगर। ९ अमृत। १० प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार उत्तरीय भारत का एक देश।
संज्ञा पु० [सं० अभ्र] बादल। मेघ।

**अंबराडंबर**—संज्ञा पु० [सं० अंबर+आडम्बर] सूर्यास्त के समय की लाली।

**अंबरबारी**—संज्ञा पु० [सं०] एक झाड़ी जिसकी जड़ और लकड़ी से रसवत या रसौत निकलता है। चित्रा। दारु हल्दी।

**अंबरबेलि**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंबर-बेलि] आकाशबेल।

**अँबराई**—संज्ञा स्त्री० (सं० आम्र=आम+राजी=पंक्ति] आम का बगीचा। आम की बारी।

**अँबराव***—संज्ञा पु० दे० "अँबराई"।

**अंबरांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कपड़े का छोर। २ वह स्थान जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला हुआ दिखाई देता है। क्षितिज।

**अंबरी**—संज्ञा वि० [सं० अम्बर+ई (प्रत्य०)] जिसमें अंबर (सुगंधित द्रव्य) पड़ा या मिला हो।

**अंबरीष**—संज्ञा पु० [सं०] १. भाड़। २. वह मिट्टी का बरतन जिसमें भड़भूजे गरम बालू डालकर दाना भूनते हैं। ३. विष्णु। ४. शिव। ५. सूर्य। ६. किशोर अर्थात् ग्यारह वर्ष से छोटा बालक। ७. एक नरक का नाम। ८. अयोध्या का एक सूर्यवंशी परम वैष्णव राजा। ९ आमड़े का फल और पेड़। १० अनुताप। पश्चात्ताप। ११. समर। लड़ाई।

**अंबरीक**—संज्ञा पु० [सं०] देवता।

**अंबल**—संज्ञा पु० १ दे० "अम्ल"। २ दे० "अमल"।

**अंबष्ठ**—संज्ञा पु० [सं०] स्त्री० अंबष्ठा] १ पंजाब के मध्य भाग का पुराना नाम। २ अंबष्ठ देश में बसने वाला मनुष्य। ३ ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न एक जाति। (स्मृति)। ४ महावत। हाथीवान। फीलवान।

**अंबष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अंबष्ठ की स्त्री। २ एक लता। पाढ़ा। ब्राह्मणी लता।

**अंबा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ माता। जननी। मा। अम्मा। २. पार्वती। देवी। दुर्गा। ३ अंबष्ठा। पाढा। ४ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में सबसे बड़ा जिन्हें भीष्म पितामह अपने भाई विचित्रवीर्य+ के लिये हरण कर लाए थे।
संज्ञा पु० दे० "आम"।

**अँबाड़ा**—संज्ञा स्त्री० दे० "आमड़ा"।

**अंबापोली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आम+सं० पोली=रोटी] अमावट। अमरस।

**अंबार**—संज्ञा पुं० [फा०] ढेर। समूह।

**अंबारी**—संज्ञा स्त्री० [अ० अमारी] १. हाथी की पीठ पर रखने का हौदा जिसके ऊपर एक छज्जेदार मंडप होता है। २ छज्जा।

**अंबालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। मा। २. अंबष्ठा लता। पाढ़ा ३ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की तीन कन्याओं में से सबसे छोटी जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हर लाए थे।

**अंबिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. माता। मा। २ दुर्गा। भगवती। देवी पार्वती। ३ जैनियों की एक देवी। ४ कुटकी का पेड़। ५ अंबष्ठा लता। पाढ़ा। ६ काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में मझली जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हर लाये थे।

**अंबिकेय**—संज्ञा पु० [सं०] १. अंबिका के पुत्र। २ गणेश। ३ कार्तिकेय। ४ धृतराष्ट्र।

**अंबिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्र, प्रा० अंब] आम का छोटा कच्चा फल जिसमें जाली न पड़ी हो। टिकोरा। केरी।

**अंबिरथा***—वि० [सं० वृथा] वृथा। व्यर्थ।

**अंबु**—संज्ञा पु० [सं०] १. जल। पानी। २. सुगंध वाला। ३. जन्मकुंडली के बारह स्थानों या घरों में चौथा। ४. चार की संख्या।

**अंबुज, अंबुजात**—संज्ञा पुं० [सं] [स्त्री० अंबुजा] १. जल से उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. बेंत। ४ वज्र। ५ ब्रह्मा। ६ शंख।

**अंबुद**—वि० [सं०] जो जल दे। संज्ञा पु० १. बादल। २. मोथा।

**अंबुधर**—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

**अंबुधि**—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र। **अंबुनिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**अंबुप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। सागर। २ वरुण। ३ शतभिष नक्षत्र।

**अंबुपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. वरुण।

**अंबुभृत**—संज्ञा पुं० [संज्ञा] १. बादल। २. मोथा। ३ समुद्र।

**अंबुरुह**—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

**अंबुवाह**—संज्ञा पु० [सं०] बादल।

**अंबुवेतस**—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का बेंत जो पानी में होता है।

**अंबुशायी**—संज्ञा पु० [सं० अम्बुशायिन्] विष्णु।

**अंबोधि***—संज्ञा पु० दे "अंबुधि"।

**अंबोह**—संज्ञा पु० [फा०] भीड़भाड़। जमघट। झुंड। समाज। समूह।

**अंभ**—संज्ञा पु० [सं० अम्भस्] १. जल। पानी। २. पितरलोक। ३ लग्न से चौथी राशि। ४. चार की संख्या। ५ देव। ६. असुर। ७. पितर।

**अंभनिधि**—संज्ञा पुं० दे० "अंभोनिधि"।

**अंभसार**—संज्ञा पु० [सं० अंभः+सार] मोती।

**अंभस्तुष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सांख्य में चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक।

**अंभोज**—वि० [सं०] जल से उत्पन्न। संज्ञा पु० १ कमल। २ सारस पक्षी। ३. चंद्रमा। ४ कपूर। ५ शंख।

**अंभोद, अंभोधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बादल। मेघ। २. मोथा।

**अंभोनिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

**अंभोराशि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**अंभोरुह**—संज्ञा पु० [सं०] कमल।

**अँवरा, अँवला**†—संज्ञा पु० दे० "आँवला"।

**अँवासना**†—क्रि० स० दे० "अनवासना"।

**अंश**—संज्ञा पुं० [सं०] १ भाग। विभाग। २. हिस्सा। बखेरा। बाँट। ३. भाज्य अंक। ४. भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ५. चौथा भाग। ६. कला। सोलहवाँ भाग। ७ वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग जिसे एकाई मानकर कोण या चाप का परिमाण बतलाया जाता है। ८. कारबार या लाभ का हिस्सा। ९. कंधा। १० बारह आदित्यों में से एक।

**अंशक**—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अंशिक] १. भाग। टुकड़ा। २. दिन। दिवस। ३. हिस्सेदार। साझीदार। पट्टीदार। वि० १. अंश धारण करनेवाला। अंशधारी। २. बाँटनेवाला। विभाजक।

**अंशतः**—क्रि० वि० [सं०] किसी अंश में।

**अंशपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज़ जिसमें पट्टीदारों का अंश या हिस्सा लिखा हो।

**अंशसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना

**अंशावतार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अवतार जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ भाग ही आया हो। वह जो पूर्णावतार न हो।

**अंशी**—वि० [सं० अंशिन्] [स्त्री० अंशिनी] १. अंशधारी। अंश रखनेवाला। २. देवता की शक्ति या सामर्थ्य रखने वाली। अवतारी। संज्ञा पु० हिस्सेदार। अवयवी।

**अंशु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। प्रभा। २. लता का कोई भाग। ३. सूत। तागा। ४. बहुत सूक्ष्म भाग। ५. सूर्य।

**अंशुक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पतला या महीन कपड़ा। २. रेशमी कपड़ा। ३. उपरना। दुपट्टा। ४ ओढ़नी। ५. तेजपात।

**अंशुनाभि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह

बिंदु जिस पर समानांतर प्रकाश की किरणें तिरछी और इकट्ठी होकर मिलें।

**अंशुमान्**—संज्ञा पु० [ सं० अंशुमत ] १. सूर्य्य । २ अयोध्या के एक सूर्य्य वंशीय राजा ।

वि० १. किरणोंवाला । २. चमकीला ।

**अँशुमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सूर्य्य की किरणें या उनका जाल ।

**अंशुमाली**—संज्ञा पु० [ सं० अंशुमालिन् ] सूर्य्य ।

**अंस**—संज्ञा पु० दे० । "अंश" ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] स्कंध । कंधा ।

**अँसुआ अँसुवा***†—संज्ञा पु० दे० "आँसू" ।

**अँसुवाना***—क्रि०अ० [ हिं० आँसू ] अश्रुपूर्ण होना आँसू से भर जाना ।

**अंह**—संज्ञा पु० [ सं० अंहस् ] १. पाप । दुष्कर्म । अपराध । २ दुःख । व्याकुलता । ३ विघ्न । बाधा ।

**अँहड़ा**—संज्ञा पुं० [देश०] तौलने का बाट । बटखरा ।

**अँहस**—संज्ञा पु० दे० "अंह" ।

**अंहस्पति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षय मास ।

**अँहुड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक लता । बाकला ।

**अ**—उप० संज्ञा और विशेषण शब्दों से पहले लगकर यह उनके अर्थों में फेरफार करता है । जिस शब्द के पहले यह लगाया जाता है । उस शब्द के अर्थ का प्रायः अभाव सूचित करता है जैसे अधर्म, अन्याय, कहीं कहीं यह अक्षर शब्द के अर्थ को दूषित भी करता है । जैसे—अभागा, अकाल । स्वर से आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब यह उपसर्ग लगाना होता है, तब उसे "अन" कर देते हैं । जैसे-अनंत, अनेक, अनीश्वर ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १ विष्णु । २. विराट । ३. अग्नि । ४. विश्व । ५. ब्रह्मा । ६ इंद्र । ७. ललाट । ८ वायु । ९ कुबेर । १० अमृत । ११ कीर्त्ति । १२ सरस्वती ।

वि० १ रक्षक । २ उत्पन्न करनेवाला ।

**अउर***—संयो० दे० "और" ।

**अऊत***—वि० [ सं० अपुत्र, प्रा० अउत्त ] [ स्त्री० अऊती ] बिना पुत्र का । निपूता ।

**अऊलना***—क्रि० अ० दे० "औलना" ।

क्रि०अ० [सं० शूलन] छिलना । छिदना ।

**अएरना***—क्रि० स० [ सं० अंगीकरण, प्रा० अंगीअरण हिं० अंगेरना ] अंगीकार करना । अंगेरना । स्वीकार करना । धारण करना ।

**अकंटक**—वि० [ सं० ] १ बिना काँटे का । कंटकरहित । २ निर्विघ्न । बाधारहित । बिना रोक-टोक का । ३ शत्रु-रहित ।

**अकंपन**—वि० [ सं० ] [ वि० अकंपित, अकंप्य ] न काँपनेवाला । स्थिर ।

**अक**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ पाप । २. दुःख ।

**अकच्छ**—वि० [ सं० अ+कच्छ=धोती ] १. नग्न । नंगा । २. । व्यभिचारी । परस्त्रीगामी ।

**अकड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आ=अच्छी तरह×कड़=कड़ा होना ] १ ऐंठ । तनाव । मरोड़ । बल । २ कड़ाई के साथ ऐंठ । । ३. घमंड । अहंकार । शेखी । ४ धृष्टता । ढिठाई । ५ हठ । अड़ । जिद ।

**अकड़ना**—क्रि० अ० [ सं० आ=अच्छी तरह+ कड़=कड़ापन ] [ संज्ञा अकड़, अकड़ाव ] १ सूखकर सिकुड़ना और कड़ा होना । ऐंठना । २. ठिठुरना । सुन्न होना । ३. छाती को उभाड़कर डील को थोड़ा पीछे की ओर झुकाना । तनना । ४. शेखी करना । घमंड दिखाना । ५. ढिठाई करना । ६. हठ करना । जिद करना । ७. मिजाज बदलना । चिटकना ।

**अकड़बाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं अकड़ + बाई ऐंठन । कुड़ल । शरीर की नसों का पीड़ा के सहित खिंचना ।

**अकड़बाज़**—वि० [ हिं० अकड़ +फा० बाज़ ] ऐंठदार । शेखीबाज़ । अभिमानी ।

**अकड़बाज़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अकड़ + फा० बाज़ी ] ऐंठ । शेखी । अभिमान ।

**अकड़ाव**—संज्ञा पु० [ हिं० अकड़ ] ऐंठन । खिंचाव ।

**अकड़ू**†—संज्ञा पुं० दे० 'अकड़बाज़" ।

**अकड़ैत**—वि० दे० "अकड़बाज़" ।

**अकत***—वि० [ सं० अक्षत ] सारा । समूचा । क्रि० वि० बिलकुल । सरासर ।

**अकत्थ**—वि० दे० "अकथ" ।

**अकथ**-वि० [ सं० ] १ जो कहा न जा सके । अनिर्वचनीय । २. न कहने योग्य ।

**अकथनीय**—वि० [ सं० ] न कहे जाने योग्य । अनिर्वचनीय । अवर्णनीय ।

**अकथ्य**—वि० दे० "अकथनीय" ।

**अकधक***†—संज्ञा [ पुं० अनु० धक ] आशंका । आगा पीछा । सोच-विचार । भय । डर ।

**अकनना**†—क्रि० स० [ सं० आकर्णन ] १ कान लगाकर सुनना । आहट लेना । २. सुनना । कर्णगोचर करना ।

**अकना**—क्रि० अ० [ सं० आकुल ] ऊबना । घबराना ।

**अकबक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बकना ] १. निरर्थक वाक्य । अनाप शनाप । असंबद्ध प्रलाप । २ घबराहट । धड़का । खटका । ३ छक्का पंजा । चतुराई ।

वि० [ सं० अवाक् ] १ अंड बंड । ऊटपटाँग । २ भौचक्का । निःस्तब्ध ।

**अकबकाना** क्रि० अ० [ सं० अवाक् ] चकित होना । भौचक्का होना ।

पकाना ।

**अकबरी**-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ एक प्रकार की मिठाई । २. लकड़ी पर की एक नक्काशी ।

वि० [ अ० अकबर ] अकबर बादशाह का। अकबर-संबंधी ।

**अकबाल**—संज्ञा पुं० दे० "इकबाल"।

**अकर**—वि० [सं०]१. न करने योग्य। कठिन। विकट। २ बिना हाथ का। हस्तरहित। ३ बिना कर या महसूल का।

**अकरकरा**-संज्ञा पुं० [ सं० आकरकरभ ] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

**अकरखना***-क्रि० स० [ सं० आकर्षण ] १. खींचना। तानना। २ चढ़ाना।

**अकरण***—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अकरणीय ] १ कर्म का अभाव। २. कर्म का न किए हुए के समान या फलरहित होना। ३. इंद्रियों से रहित, ईश्वर। परमात्मा।

वि० न करने योग्य। कठिन।

*वि० [सं० अकारण] बिना कारण का।

**अकरणीय**—वि० [ सं० ] न करने योग्य। न करने लायक। करने के अयोग्य।

**अकरा**†—वि० [सं० अक्रय्य][ स्त्री० अकरी ] १. न मोल लेने योग्य महँगा। अधिक दाम का। २ खरा। श्रेष्ठ। उत्तम।

**अकराथ**—वि० दे० "अकारथ"।

**अकराल**-वि० [ सं० अ+कराल ] १ जो कराल या भीषण न हो। २ सुंदर।

**अकरास**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० अकड़ ] अँगड़ाई। देह टूटना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० अकर ] आलस्य सुस्ती।

**अकरासू**—वि० स्त्री० [हिं० अकरास] गर्भवती।

**अकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आ=अच्छी तरह+किरण=बिखरना ] हल में लगा लकड़ी का चोंगा जिसमें बीज डालते जाते हैं।

**अकरुण**—वि० [ सं० ] जिसमें करुणा न हो। कठोर-हृदय।

**अकर्तव्य**-वि० [ सं० ] न करने योग्य जिसका करना उचित न हो।

**अकर्ता**-वि० [ सं० ] १ कर्म का न करने वाला। कर्म से अलग। २. सांख्य के अनुसार पुरुष जो कर्मों से निर्लिप्त है।

**अकर्तृक**-संज्ञा पु० [ सं० ] बिना कर्त्ता का। जिसका कोई कर्त्ता या रचयिता न हो।

**अकर्तृत्व**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कर्त्तृत्व का न होना। २ कर्त्तृत्व का अभिमान न होना।

**अकर्म**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १ न करने योग्य कार्य। बुरा काम। २ कर्म का अभाव।

**अकर्मक**-संज्ञा पुं० [ सं०] वह क्रिया जिसे किसी कर्म की आवश्यकता न हो। (व्या०)

**अकर्मण्य**-वि० [ सं० ] कुछ काम न करने वाला। आलसी।

**अकर्मण्यता**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अकर्मण्य होने का भाव। निकम्मापन। आलस्य।

**अकर्मा**—वि० दे० "अकर्मण्य"।

**अकर्मी**-संज्ञा पु० [ सं० अकर्मिन् ] [ स्त्री० अकर्मिणी ] बुरा कर्म करने वाला। पापी। दुष्कर्मी। अपराधी।

**अकर्षण**-संज्ञा पु० दे० "आकर्षण"।

**अकलंक**—वि० [ सं० ] निष्कलंक। दोष रहित। निर्दोष। बेऐब। बेदाग़।

संज्ञा पु० [ सं० कलंक ] दोष। लांछन।

**अकलंकता**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निर्दोषता। कलंक हीनता।

**अकलंकित**-वि० [ सं० ] निष्कलंक। निर्दोष। बे-ऐब।

**अकलंकी**-वि० [सं० अकलंकित] जिस पर कोई कलंक न हो। निर्दोष।

**अकल**-वि० [सं० ] १. अवयव रहित। जिसके अवयव न हों। २. जिसके खंड न हों। सर्वांगपूर्ण। समूचा। ३. परमात्मा का एक विशेषण। *४. बिना कला या चतुराई का।

वि० [ सं० अ=नहीं+हिं० कल=चैन ] विकल। व्याकुल। बेचैन।

संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

**अकलखुरा**-वि० [ हिं० अकेला +फा० खोर ] १. अकेला खानेवाला अर्थात् स्वार्थी मतलबी। २ रूखा। मनहूस। जो मिलनसार न हो। ३. ईर्ष्यालु। डाही।

**अकलबीर**-संज्ञा पुं० [ सं० करवीर ? ] भाँग की तरह का एक पौधा। कलवीर। बस्र।

**अकलुष**-वि० [ सं० ] १. जिसमें किसी प्रकार का कलुष न हो। २. पवित्र। शुद्ध। ३. निर्मल। साफ।

**अकवन**-संज्ञा पुं० [ हिं० आक ] मदार।

**अकस**—संज्ञा पुं० [ सं० आकर्ष ] १. बैर। शत्रुता। अदावत। २. बुरी उत्तेजना।

**अकसना**-क्रि० सं० [ हिं० अकस ] १. अकस रखना। बैर करना। २. बराबरी करना। ऐंठ करना।

**अकसर**—क्रि० वि० दे० "अक्सर"।

*क्रि० वि०, वि० [ सं० एक+सर (प्रत्य०) ] अकेले। बिना किसी के साथ।

**अकसीर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० अक्सीर ] १. वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन। कीमिया

२. वह औषधि जो प्रत्येक रोग को नष्ट करे।

वि० अव्यर्थ। अत्यंत गुणकारी।

**अकस्मात्**—क्रि० वि० [ सं० ] १. अचानक। अनायास। एकबारगी। सहसा। २. दैवयोग से। संयोगवश। आपसे आप।

**अकह***—वि० दे० "अकथ"।

**अकहुवा*†**—वि० दे० "अकथ"।

**अकांड**—वि० [ सं० ] बिना शाखा का। क्रि० वि० अकस्मात्। सहसा।

**अकांडतांडव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्यर्थ की उछल-कूद। व्यर्थ की बकवाद। वितंडावाद।

**अकाज**—संज्ञा पुं० [ सं० अ+हिं० काज ] [ क्रि० अकाजना, वि० अकाजी] १. कार्य्य की हानि। नुकसान। हर्ज। विघ्न। बिगाड़। २. बुरा कार्य्य। दुष्कर्म। खोटा काम।

*क्रि० वि० व्यर्थ। बिना काम। निष्प्रयोजन।

**अकाजना†***—क्रि० अ० [ हिं० अकाज ] १. हानि होना। २. गत होना। मरना। क्रि० स० हानि करना। हर्ज करना।

**अकाजी***—वि० [ हिं० अकाज ] [ स्त्री० अकाजिन ] अकाज करनेवाला। हर्ज करनेवाला। कार्य्य की हानि करनेवाला।

**अकाट्य**—वि० [ सं० अ + हिं० काटना ] जिसका खंडन न हो सके। दृढ़। मज़बूत।

**अकाथ***—क्रि० वि० दे० "अकारथ"।

**अकाम**—वि० [ सं० ] बिना कामना का। कामनारहित। इच्छाविहीन। निःस्पृह। क्रि० वि० [ सं० अकर्म्म ] बिना काम के। निष्प्रयोजन। व्यर्थ।

**अकामी**—वि० दे० "अकाम"।

**अकाय**—वि० [ सं० ] १. बिना शरीरवाला। देहरहित। २ शरीर न धारण करनेवाला। जन्म न लेनेवाला। ३. निराकार।

**अकार**—संज्ञा पुं० "अ" अक्षर।

संज्ञा पुं० दे० "आकार"।

**अकारज***—संज्ञा पुं० [ सं० अकार्य्य] कार्य की हानि। हानि। नुकसान। हर्ज।

**अकारण**—वि० [ सं० ] १. बिना कारण का। बिना वजह का। २. जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो। स्वयंभू। क्रि० वि० बिना कारण के। बेसबब।

**अकारथ*†**—क्रि० वि० [ सं० अकार्यार्थ ] बेकाम। निष्फल। निष्प्रयोजन। वृथा। फजूल। लाभरहित।

**अकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अकालिक] १. अनुपयुक्त समय। अनवसर। कुसमय। २ दुष्काल। दुर्भिक्ष। महँगी।

क्रि० प्र०— पड़ना।

३ घाटा। कमी।

वि० अविनाशी। नित्य।

**अकालकुसुम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बिना समय या ऋतु में फूला हुआ फूल। ( अशुभ )। २. बेसमय की चीज़।

**अकालमूर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नित्य या अविनाशी पुरुष।

**अकालमृत्यु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] असामयिक मृत्यु। थोड़ी अवस्था में मरना।

**अकालिक**—वि० [ सं० ] असमय में होनेवाला। बेमौका।

**अकाली**—संज्ञा पुं० [ सं० अकाल+ हिं० ई ] वे सिक्ख जो सिर में चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं।

**अकाव†**—संज्ञा पुं० दे० "आक"।

**अकास***—संज्ञा पुं० दे० "आकाश"।

**अकासदीया**—संज्ञा पुं० [ हिं० आकास+दीया ] वह दीपक जो बाँस के ऊपर आकाश में लटकाया जाता है।

**अकासबानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

**अकासबेल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अकासबौर ]

**अकासी*†**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आकाश ] चील। २. ताड़ी।

**अकिंचन**—वि० [ सं० ] १ निर्धन। कंगाल।

**अकिंचनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दरिद्रता। गरीबी। निर्धनता।

**अकिंचित्कर**—वि० [ सं० ] जिससे कुछ न हो सके। अशक्य। असमर्थ।

**अकि***—अव्य० [ हिं० कि० ] कि। या। अथवा।

**अकिल†**—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

**अकिलदाढ़**—संज्ञा पुं० [अ० अक्ल+ हिं० दाढ़] पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत।

**अकीक़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार का लाल पत्थर जिस पर मुहर खोदी जाती है।

**अकीर्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कीर्ति का अभाव। २ अयश। अपयश बदनामी।

**अकुंठ**—वि० [ सं० ] १ तीक्ष्ण। चोखा। २ तीव्र। तेज। ३ खरा। उत्तम।

**अकुताना***—क्रि० अ० दे० "उकताना"।

**अकुल**—वि० [ सं० ] १ जिसके कुल में कोई न हो। २ बुरे या नीच कुल का। संज्ञा पुं० बुरा कुल। नीच कुल।

**अकुलाना**—क्रि० अ० [ सं० आकुलन ] १ जल्दी करना। उतावला होना। २ घबराना। ३ मग्न होना। लीन होना।

**अकुलीन**—वि० [सं०] [ स्त्री० अकु-

छोना ] तुरुक वंश में उत्पन्न। कमीना। क्षुद्र।

**अकूत**—वि० [ सं० अ० + हिं० कूतना ] जो कूता न जा सके। बे अंदाज़। अपरिमित।

**अकूल**—वि० [ सं० ] जिसका किनारा या अंत न हो।

**अकूहल*** - वि० [ देश० ] बहुत। अधिक।

**अकृत**—वि० [ सं० ] १ बिना किया हुआ। २. बिगाड़ा हुआ। ३ जो किसी का बनाया न हो। नित्य। स्वयंभू। ४. प्राकृतिक। ५. निकम्मा। बेकाम। ६. बुरा। मंदा।

**अकृतकार्य**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अकृतकार्यता ] जो किसी कार्य को करने में सफल न हुआ हो।

**अकृतज्ञ**—वि० [ सं० ] जो कृतज्ञ न हो। कृतघ्न।

**अकृती**—वि० [सं० अ+कृती ] जिससे कुछ न हो सके। अकर्मण्य।

**अकेला**—वि० [ सं० एकल ][स्त्री० अकेली ] १. जिसके साथ कोई न हो। तनहा। २ अद्वितीय। निराला।

**यौ०**—अकेला दम=एक ही प्राणी। अकेला दुकेला=एक या दो। अधिक नहीं।

संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

**अकेले**—क्रि० वि० [ हिं० अकेला ] १. किसी साथी के बिना। एकाकी। तनहा। २ सिर्फ। केवल।

**अकेया**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बोरा। गोन।

**अकोट***—वि० [ सं० अ+कोटि ] १. करोड़ों। २ बहुत अधिक।

**अकोतर सौ***—वि० [ सं० एकोत्तर-शत ] सौ के ऊपर एक। एक सौ एक।

**अकोर**—संज्ञा पुं० दे० "अँकोर"।

**अकोसना***—क्रि० स० दे० "कोसना"।

**अकौवा**—संज्ञा पुं० [ सं० अर्क ] १. आक। मदार। २ गले में का कौआ। घंटी।

**अक्खड़**—वि० [ हिं० अड़+खड़ा ] १ किसी का कहना न माननेवाला। उद्धत। उच्छृंखल। २ बिगड़ैल। झगड़ालू। ३. निर्भय। बेडर। ४ असभ्य। अशिष्ट। ५ उजड्ड। जड़। ६ खरा। स्पष्टवक्ता।

**अक्खड़पन**—संज्ञा पुं० [ हिं० अक्खड़+पन ] १ अशिष्टता। उजड्डपन। २ कलहप्रियता। ३ निःशंकता। ४ स्पष्टवादिता।

**अक्खर***—संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

**अक्खा**—संज्ञा पुं० [ सं० अक्ष=संग्रह करना ] बैलों पर अनाज आदि लादने का दोहरा थैला। खुरजी। गोन।

**अक्खो मक्खो**—संज्ञा पुं० [ सं० अक्ष+मुख ] दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुंह तक 'अक्खो मक्खो' कहते हुए फेरना। ( नज़र से बचाने के लिये )

**अक्त**—वि० [ सं० ] व्याप्त। संयुक्त। युक्त। ( प्रत्यय के रूप में, जैसे, विषाक्त। )

**अक्रम**—वि० [सं०] बिना क्रम का अंड बंड। बे सिलसिले।

संज्ञा पुं० क्रम का अभाव। व्यतिक्रम।

**अक्रम संन्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह संन्यास जो क्रम से ( ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य और वानप्रस्थ के पीछे ) न लिया गया हो, बीच ही में धारण किया गया हो।

**अक्रमातिशयोक्ति**-संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य्य कहा जाता है।

**अक्रिय**—वि० [ सं० ] १ जो कर्म्म न करे। क्रियारहित। २. निश्चेष्ट। जड़। स्तब्ध।

**अक्रूर**—वि० [ सं० ] जो क्रूर न हो। सरल। संज्ञा पुं० श्वफल्क का पुत्र एक यादव जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था।

**अक्ल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बुद्धि। समझ।

**मुहा०**—अक्ल का दुश्मन=(व्यंग)मूर्ख। बेवकूफ। अक्ल का पूरा= (व्यंग) मूर्ख। जड़। अक्ल खर्च करना=समझ को काम में लाना। सोचना। अक्ल का चरने जाना=समझ का जाता रहना। बुद्धि नष्ट होना।

**अक्लमंद**—संज्ञा पुं० [ फा० ] [संज्ञा अक्लमंदी ] बुद्धिमान्। चतुर। समझदार।

**अक्लमंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] समझदारी। चतुराई। विज्ञता।

**अक्लिष्ट**—वि० [ सं० ] १ कष्ट-रहित। २ सुगम। सहज। आसान।

**अक्ली**—वि० [ अ० ] १. अक्ल या बुद्धि संबंधी। २ तर्क-सिद्ध। वाजिब।

**अक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०][ स्त्री० अक्षा ] १ खेलने का पासा २ पासों का खेल। चौसर। ३. छकड़ा। गाड़ी। ४ धुरी। ५ वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। ६. तराजू की डाँड़ी। ७. मामला। मुकदमा। ८ इंद्रिय। ९. आँख। १०. रुद्राक्ष। ११. साँप। १२. गरुड़। १३. आत्मा।

**अक्षकूट**—संज्ञा पुं० [ सं०] आँख का तारा।

**अक्षक्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पासे का खेल। चौसर। चौपड़।

**अक्षत**—वि० [सं०] बिना टूटा हुआ। अखंडित। समूचा।

संज्ञा पु० १. बिना टूटा हुआ चावल जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है। २ धान का लावा। ३ जौ।

**अक्षतयोनि**—वि० स्त्री० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

**अक्षता**—वि० स्त्री० [सं०] जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो (स्त्री)।

संज्ञा स्त्री० वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

**अक्षपाद**—संज्ञा पु० [सं०] १ न्यायशास्त्र के प्रवर्त्तक गौतम ऋषि। २ नैयायिक।

**अक्षम**—वि० [सं०] [संज्ञा अक्षमता] १ क्षमारहित। असहिष्णु। २. असमर्थ।

**अक्षमता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ क्षमा का अभाव। असहिष्णुता। २ ईर्ष्या। डाह। ३ असामर्थ्य।

**अक्षय**—वि० [सं०] १ जिसका क्षय न हो। अविनाशी। अनश्वर। २ कल्प के अंत तक रहनेवाला।

**अक्षयतृतीया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल-तृतीया। आखा तीज। (स्नान-दान)

**अक्षयनवमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला नवमी। (स्नान-दान)

**अक्षयवट**—संज्ञा पु० [सं०] प्रयाग और गया में एक बरगद का पेड़, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते।

**अक्षय्य**—वि० [सं०] अक्षय। अविनाशी।

**अक्षर**—वि० [सं०] अविनाशी। नित्य। संज्ञा पु० १. अकारादि वर्ण। हरफ। २. आत्मा। ३ ब्रह्म। ४. आकाश। ५ धर्म। ६. तपस्या। ७. मोक्ष। ८ जल।

**अक्षरन्यास**—संज्ञा पु० [सं०] १ लेख। लिखावट। २ मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर नाक, कान आदि छूना। (तंत्र)

**अक्षरशः**—क्रि० वि० [सं०] एक एक अक्षर। बिल्कुल। सब। (कथन या लेख)

**अक्षरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षर+ई] शब्द में आये हुए अक्षर। वर्त्तनी। हिज्जे।

**अक्षरेखा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केंद्र से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे।

**अक्षरौटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षर + वर्त्तन] १. वर्णमाला। २. लेख। लिपि का ढंग। ३ वे पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं।

**अक्षांश**—संज्ञा पु० [सं०] १ भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व-पश्चिम मानी गई हैं। २ वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। ३ भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थान के बीच में याम्योत्तर का पूरा झुकाव या अंतर। ४ किसी नक्षत्र का क्रांति वृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणांतर।

**अक्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] आँख। नेत्र।

**अक्षिगोलक**—संज्ञा पु० [सं०] आँख का टेंटर।

**अक्षितारा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख की पुतली।

**अक्षिपटल**—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का परदा।

**अक्षोभ**—वि० [सं०] सहनशील। शांत।

**अक्षुण्ण**—वि० [सं०] १ बिना टूटा हुआ। समूचा। २ अनाड़ी।

**अक्षोट**—संज्ञा पु० [सं०] अखरोट।

**अक्षौनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

**अक्षोभ**—संज्ञा पु० [सं०] क्षोभ का अभाव। शांति।

वि० १ क्षोभरहित। गंभीर। शांत। २ मोहरहित। ३. निडर। निर्भय। ४ जिसे बुरा काम करते हिचक न हो।

**अक्षौहिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० हाथी होते थे।

**अक्स**—संज्ञा पु० [अ०] १ प्रतिबिंब। छाया। परछाईं। २ तसवीर। चित्र।

**अक्सर**—क्रि० वि० [अ०] बहुत करके। प्रायः।

वि० बहुत। अधिक।

**अक्सीर**—संज्ञा स्त्री० दे० "अकसीर"।

**अखंग***—वि० [सं० अ+हिं० खगना] न खँगनेवाला। न चुकने वाला। अविनाशी।

**अखंड**—वि० [सं०] १ जिसके टुकड़े न हों। संपूर्ण। समग्र। पूरा। २ जो बीच में न रुके। लगातार। ३ बेरोक। निर्विघ्न।

**अखंडनीय**—वि० [सं०] १ जिसके टुकड़े न हो सकें। २ जिसका विरोध या खंडन न किया जा सके। पुष्ट। युक्तियुक्त।

**अखंडल***—वि० [सं० अखंड] १. अखंड। २ समूचा। सारा।

संज्ञा पुं० दे० "आखंडल"।

**अखंडित**—वि० [सं०] १. जिसके टुकड़े न हुए हों। अविच्छिन्न। २. सम्पूर्ण। समूचा। ३ निर्विघ्न। बाधा-रहित। ४. जिसका क्रम न टूटा हो। लगातार।

**अखज**—वि० [सं० अखाद्य] १. अखाद्य। न खाने योग्य। २ बुरा। खराब।

**अखड़ैत**—संज्ञा पुं० [हिं० अखाड़ा+ऐत (प्रत्य०)] मल्ल। बलवान् पुरुष।

**अखती, अखतीज**—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षयतृतीया"।

**अखनी**—संज्ञा स्त्री० [अ० यखनी] मांस का रसा या शोरबा।

**अखबार**—संज्ञा पुं० [अ०] समाचार-पत्र। सबादपत्र। खबर का कागज।

**अखय***—वि० दे० "अक्षय"।

**अखर***—संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

**अखरना**—क्रि० स० [सं० खर] खलना। बुरा लगना। कष्टकर होना।

**अखरा***—वि० [सं० अ+ हिं० खरा=सच्चा] झूठा। बनावटी। कृत्रिम। संज्ञा पुं० [सं० अक्षर=समूचा] भूसी मिला हुआ जौ का आटा।

**अखरावट, अखरावटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षरौटी"।

**अखरोट**—संज्ञा पुं० [सं० अक्षोट] एक फलदार ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफगानिस्तान तक होता है।

**अखर्व**—वि० [सं०] जो खर्व या छोटा न हो। बहुत बड़ा।

**अखा**†—संज्ञा पुं० दे० "आखा"।

**अखात**—संज्ञा पुं० [सं०] १ उप-सागर। खाड़ी। २ झील। बड़ा तालाब।

**अखाड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० अक्षवाट] १ कुश्ती लड़ने या कसरत करने के लिए बनाई हुई चौखूँटी जगह। २ साधुओं की सांप्रदायिक मंडली। जमा-यत। ३ तमाशा दिखानेवाला और गाने बजानेवालों की मंडली। जमायत। दल। ४. सभा। दरबार। रंगभूमि।

**अखाड़िया**—वि० [हिं० अखाड़ा+इया (प्रत्य०)] बड़े बड़े अखाड़ों में अपना कौशल दिखलानेवाला।

**अखाद्य***—संज्ञा पुं० [सं०] न खाई जाने योग्य वस्तु।

**अखाद्***—वि० [सं०] न खाने योग्य।

**अखिल**—वि० [सं०] १ सम्पूर्ण। समग्र। पूरा। २ सर्वांगपूर्ण। अखंड।

**अखिलेश**—संज्ञा पुं० [सं०] अखिल जगत का स्वामी। ईश्वर।

**अखिलेश्वर**—संज्ञा पुं० दे० "अखिलेश्वर"।

**अखीन***—वि० दे० "अक्षीण"।

**अखीर**—संज्ञा पुं० [अ०] १ अंत। छोर। २ समाप्ति।

**अखूट**—वि० [सं० अ=नहीं+खुड़=तोड़ना] जो न घटे या चुके। अक्षय। बहुत।

**अखेट***—संज्ञा पुं० दे० "आखेट"।

**अखै***—वि० दे० "अक्षय"।

**अखैवर**—संज्ञा पुं० [सं० अक्षयवट] अक्षयवट।

**अखोर***—वि० [हिं० अ+खोर=बुरा] १ भद्र। सज्जन। २ सुंदर। ३ निर्दोष।

वि० [फा० आखोर] निकम्मा। बुरा। संज्ञा पुं० १ कूड़ा करकट। निकम्मी चीज। २ खराब घास। बुरा चारा। बिचाली।

**अखोह**—संज्ञा पुं० [हिं० खोह] ऊँचा नीचा या ऊबड़ खाबड़ भूमि।

**अखौड़ा, अखौटा**—संज्ञा पुं० [सं० अक्ष+कूट] १ जाँते या चक्की के बीच की खूँटी। जाँते की किल्ली। २. लकड़ी या लोहे का डंडा जिस पर गड़ारी घूमती है।

**अख्खाह!**—अव्य [अनु०] उद्वेग या आश्चर्यसूचक शब्द।

**अख्तियार**—संज्ञा पुं० दे० "इख्ति-यार"।

**अख्यान***—संज्ञा पुं० दे० "आख्यान"।

**अगंड**—संज्ञा पुं० [सं०] वह धड़ जिसका हाथ पैर कट गया हो। कबंध।

**अग**—वि० [सं०] १. न चलनेवाला। स्थावर। अचल। २ टेढ़ा चलनेवाला। संज्ञा पुं० १ पेड़। वृक्ष। २ पर्वत। ३. सूर्य। ४ साँप।

**अगज**—वि० [सं०] पर्वत से उत्पन्न। संज्ञा पुं० १ शिलाजीत। २. हाथी।

**अगटना**†—क्रि० अ० [हिं० इकट्ठा] इकट्ठा होना। जमा होना।

**अगड़***—संज्ञा पुं० [हिं० अकड़] अकड़। ऐंठ। दर्प।

**अगड़धत्ता**—वि० [सं० अग्रोद्धत] १ लंबा तड़ंगा। ऊँचा। २. श्रेष्ठ। बड़ा।

**अगड़बगड़**—वि० [अनु०] अंड बंड। बे सिर पैर का। क्रमविहीन। संज्ञा पुं० १ बे सिर पैर की बात। प्रलाप। २. अंड बंड काम। अनुपयोगी कार्य।

**अगड़ा**†—संज्ञा पुं० [सं० अग्रण] अनाजों की बाल जिसमें से दाना झाड़ लिया गया हो। खुखड़ी। अखरा।

**अगण**—संज्ञा पुं० [सं०] छंद-शास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण।

**अगणनीय**—वि० [सं०] १ न गिनने योग्य। सामान्य। २. अनगि-नत। असंख्य।

**अगणित**—वि० [सं०] जिसकी गणना न हो। अनगिनत। असंख्य।

बहुत।

**अगण्य**—वि० [ सं० ] १. न गिनने योग्य। २. सामान्य। तुच्छ। ३ असंख्य। बेशुमार।

**अगत***—संज्ञा स्त्री० दे० "अगति"।

**अगता**—क्रि० [ सं० अग्रतः ] अग्रिम। पेशगी।

**अगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी गति। दुर्गति। दुर्दशा। खराबी। २. मृत्यु के पीछे की बुरी दशा। नरक। ३. मरने के पीछे शव दाह आदि की क्रिया। ४. गति का अभाव। स्थिरता।

वि० १. अचल। अटल। २. दे० "अगतिक"।

**अगतिक**—वि० [ सं० ] १. जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो। अशरण। निराश्रय। २ मरने पर जिसकी अन्त्येष्टि क्रिया आदि न हुई हो।

**अगती**—वि० [ सं० अगती ] १ बुरी गति वाला। २. पापी। दुराचारी। ३. दे० "अगति"।

†वि० स्त्री० [ सं० अग्रतः] अगाऊ। पेशगी।

क्रि० वि० आगे से। पहले से।

**अगद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] औषधि। दवा। वि० जिसे कोई रोग न हो। नीरोग।

**अगन**—संज्ञा पुं० दे० "अगण"।

**अगत्या**—क्रि० वि० [ सं० ] १ जब कोई और गति न हो। लाचारी हालत में २ सहसा। अचानक।

**अगनिउ**†—संज्ञा पुं० [ सं० आग्नेय ] उत्तर-पूर्व का कोना।

**अगनित***—वि० दे० "अगणित"।

**अगनी***—वि० दे० "अगणित"।

**अगनेउ, अगनू***—संज्ञा पुं०[ सं० आग्नेय ] आग्नेय दिशा। अग्नि-कोण।

**अगनेत***—संज्ञा पुं० [सं० आग्नेय ] आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

**अगम**—वि० [ सं० ] १ जहाँ कोई जा न सके। दुर्गम। अवघट। २ विकट। कठिन। मुश्किल। ३ दुर्लभ। अलभ्य। ४. बहुत। अत्यंत। ५ बुद्धि के परे। दुर्बोध। ६ अथाह। बहुत गहरा।

संज्ञा पुं० दे० "आगम"।

**अगमन, अगमने***—क्रि० वि०[सं० अग्रम् ] १. आगे। पहले। प्रथम। २ आगे से। पहले से।

वि० आगे। पहले।

**अगमनीया**—वि० स्त्री० [ सं० ] जिस (स्त्री) के साथ संभोग करने का निषेध हो।

**अगमानी***—संज्ञा पुं० [ सं० अग्रगामी ] अगुआ। नायक। सरदार।

†संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

**अगमासी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अगवाँसी"।

**अगम्य**—वि० [ सं० ] १ जहाँ कोई न जा सके। अवघट। गहन। २. कठिन। मुश्किल। ३. बहुत। अत्यंत। ४. जिसमें बुद्धि न पहुँचे। अज्ञेय। दुर्बोध। ५ अथाह बहुत गहरा।

**अगम्या**—वि० स्त्री० [ सं० ] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो। जैसे, गुरुपत्नी, राजपत्नी, सौतेली माँ आदि।

**अगर**—संज्ञा पुं० [ सं० अगुरु ] एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है। अव्य० [फा० ] यदि। जो।

**मुहा०** अगर मगर करना=१. हुज्जत करना। तर्क करना। २. आगा पीछा करना।

**अगरई**—वि० [ हिं० अगर ] श्यामता लिए हुए सुनहले सदली रंग का।

**अगरचे**—अव्य० [ फा० ] गोकि। यद्यपि। बावजूदे कि।

**अगरना***,—क्रि० अ० [ सं० अग्र ] आगे होना। बढ़ना।

**अगरपार**—संज्ञा पुं० [ सं० अग्र ] क्षत्रियों का एक जाति या वर्ग।

**अगर-बगर**—क्रि० वि दे० "अगल-बगल"।

**अगरबत्ती**—संज्ञा स्त्री० सं० अगरु-वर्तिका ] सुगंध के निमित्त जलाने की पतली बत्ती।

**अगरसार**—संज्ञा पुं० दे० "अगर"।

**अगरा***—वि० [ सं० अग्र ] १.अगला। प्रथम। २. बढ़कर। श्रेष्ठ। उत्तम। ३. अधिक। ज्यादा। बड़ा या भारी।

**अगराना***—क्रि० स० [ सं० अग+राग ] दुलार दिखाना।

**अगरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की घास। २. दे० "आगल"। संज्ञा स्त्री० [ सं० अर्गल ] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोढ़ा लगाकर डाला रहता है। ब्योड़ा।

संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र ] फूस का छाजन का एक ढंग। *संज्ञा स्त्री० [ सं० अगिर्=अवाच्य ] अंडबंड। बुरी बात। अनुचित बात।

**अगरु**—संज्ञा पुं० [सं०] अगर लकड़ी। ऊद।

**अगरो***—वि० [ सं० अग्र ] १ अगला। आगे का। २. बड़ा। ३ निपुण। चतुर।

**अगल बगल**—क्रि० वि० [ फा० ] इधर उधर। दोनो ओर। आसपास।

**अगला**—वि० [ सं० अग्र ] [ स्त्री० अगली ] १. आगे का। सामने का। "पिछला" का उलटा। २. पहले का। पूर्ववर्ती। ३. प्राचीन। पुराना। ४ आगामी। आनेवाला। ५. अपर। दूसरा।

संज्ञा पुं० १. अगला। प्रधान २. चतुर आदमी। ३. पूर्वज। पुरखा। (बहु०)

**अगवना**—क्रि० अ० [ हिं० आगे+ना ] आगे बढ़ना। उद्यत होना।

**अगवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आगा+अवाई ] अगवाई। अभ्यर्थना।

संज्ञा पु० [ स० अग्रगामी ] आगे चलनेवाला। अगुआ। अग्रसर।

**अगवाड़ा**—संज्ञा पु० [ स० अग्रवाट् ] घर के आगे का भाग। "पिछवाड़ा" का उलटा।

**अगवान**—संज्ञा पुं० [ स० अग्र+यान ] १. अगवानी या अभ्यर्थना करनेवाला। २ विवाह में कन्यापक्ष के लोग जो बरात को आगे से जाकर लेते हैं।

संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

**अगवानी**—संज्ञा स्त्री० [ स० अग्र+यान ] १. अतिथि के निकट पहुँचने पर उससे सादर मिलना। अभ्यर्थना। पेशवाई। २ बरात को आगे से लेने की रीति।

*संज्ञा पु० [ स० अग्रगामी ] अगुआ। नेता।

**अगवार**—संज्ञा पु० [ स० अग्र+वार या ढेर ] १. अन्न का वह भाग जो हलवाहे आदि के लिये अलग कर दिया जाता है। २. वह अन्न जो बरसाने में भूसे के साथ चला जाता है। ३. दे० "अगवाड़ा"।

**अगवाँसी**—संज्ञा स्त्री० [ स० अग्र-अंश ] १ हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। २. पैदावार में हलवाहे का भाग।

**अगसार, अगसारी***—क्रि० वि० [ सं० अग्रसारि ] आगे।

**अगस्त**—संज्ञा पु० दे० "अगस्त्य"।

**अगस्त्य**—संज्ञा पुं० [ स० ] १. एक ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २. एक तारा जो भादों में सिंह के सूर्य्य के १७ अंश पर उदय होता है। ३. एक पेड़ जिसके फूल अर्द्धचंद्राकार लाल या सफेद होते हैं।

**अगह***—वि० [ सं० अ+गहना ] १. हाथ में न आने लायक। चंचल। २. जो वर्णन और चिंतन के बाहर हो। ३ कठिन। मुश्किल।

**अगहन**—संज्ञा पु० [ स० अग्रहायण ] [ वि० अगहनिया, अगहनी ] हेमंत ऋतु का पहला महीना। मार्गशीर्ष। मगसिर।

**अगहनिया**—संज्ञा पु० [ स० अग्रहायणिक ] अगहन में होनेवाला (धान)।

**अगहनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अगहन ] वह फसल जो अगहन में काटी जाती है।

**अगहर***†—क्रि० वि० [ स० अग्रसर ] १ आगे। २ पहले। प्रथम।

**अगहार**—संज्ञा पुं० [ स० अग्राह्य ] वह भूमि जिसे बेचने का अधिकार न हो।

**अगहुँड़**—क्रि० वि० [ स० अग्र+हिं० हुँत ] आगे। आगे। की ओर।

**अगाउनी***—क्रि० वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "अगौनी"।

**अगाऊ**—क्रि० वि० [ स० अग्र ] अग्रिम। पेशगी। समय के पहले।

*वि० अगला। आगे का।

*क्रि० वि० आगे। पहले। प्रथम।

**अगाड़***—क्रि० वि० [ स० अग्र ] १ आगे। सामने। २. पहले पूर्व।

**अगाड़ा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० अगाड़ ] कछार।

संज्ञा पु० [ सं० अग्र ] यात्री का वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।

**अगाड़ी**—क्रि० वि० [ हिं० अगाड़ ] १. आगे। २. भविष्य में। ३. सामने समक्ष। ४. पूर्व। पहले।

संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के आगे या सामने का भाग। २. घोड़े के गराँव में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर उधर दो खूँटों से बँधी रहती हैं। ३. सेना का पहला धावा। हल्ला।

**अगाड़ू**—क्रि० वि० दे० "अगाड़ी"।

**अगाध**—वि० [ सं० ] १. अथाह। बहुत गहरा। २ अपार। असीम। बहुत। ३ समझ में न आने योग्य। दुर्बोध।

संज्ञा पु० छेद। गड्ढा।

**अगान***—वि० दे० "अज्ञान"।

**अगामै***—क्रि० वि० [ हिं० अग्रिम ] आगे।

**अगार**—स० पुं० दे० "आगार"।

क्रि० वि० [ स० अग्र ] आगे पहले।

**अगारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अगाड़ी"।

**अगाव**—संज्ञा पु० दे० "अगौरा"।

**अगास***—स० पु० [ सं० अग्र+अश ] द्वार के आगे का चबूतरा।

**अगाह***—वि० [ स० अगाध ] १ अथाह। बहुत गहरा। २ अत्यंत। बहुत।

क्रि० वि० आगे से। पहले से।

*वि० [ फा० आगाह ] विदित। प्रकट।

**अगाही**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अगाह ] किसी बात के होने का पहले से संकेत या सूचना।

**अगिन***—संज्ञा स्त्री० [ स० अग्नि ] [ क्रि० अगियाना ] १ आग। २. गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया। ३. अगिया घास।

वि० [ स० अ० = नहीं+हिं० गिनना ] अगणित।

**अगिन गोला**—संज्ञा पु० [ हिं० अगिन+गोला ] वह गोला जो फटने पर

आग लगा दे।

**अगिन बोट**—सं० पुं० [सं० अग्नि+अं० बोट] वह बड़ी नाव जो भाप के अंजन के जोर से चलती है। स्टीमर। धूआँकश।

**अगिनित***—वि० दे० "अगणित"।

**अगिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि प्रा० अग्गि] १ एक घास या घास। २ नीली चाय। धराकुश। अगिन घास। ३ एक पहाड़ी पौधा जिसके पत्तों और डंठलों में ज़हरीले रोएँ होते हैं। ४ घोड़ों और बैलों का एक रोग। ५ एक ज़हरीला कीड़ा।

**अगिया कोइलिया**—संज्ञा पु० [हिं० आग+कोयला] दो कल्पित बैताल जिन्हें विक्रमादित्य ने सिद्ध किया था।

**अगियाना**—क्रि० अ० [सं० अग्नि] आग का तरह उठना। जलन या दाह-युक्त होना।

**अगिया बैताल**—सं० पु० [सं० अग्नि+बैताल] १ विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक। २. मुँह से लूक या लपट निकालनेवाला भूत। ३. क्रोधी आदमी।

**अगियार, अगियारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्निकार्य] आग में सुगंध-द्रव्य डालने की पूजन-विधि। धूप देने की क्रिया।

**अगिया सन**—संज्ञा पु० [हिं० आग+सन] १ सन की जाति का एक पौधा। २ एक कीड़ा जिसके छूने से जलन होती है। ३. एक चर्मरोग जिसमें झलकते हुए फफोले निकलते हैं।

**अगिरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आगे] घर का अगला भाग।

**अगिला**†—वि० दे० "अगला"।

**अगिलाई***—संज्ञा स्त्री० [हिं० आग+लगना] १. आग लगने या लगाने की क्रिया या भाव। अग्नि-दाह। २. ज्वाला या लपट।

**अगीठा***—संज्ञा पुं० [सं० अग्रस्थित] आगे का भाग।

**अगीत पछीत***—क्रि० वि० [सं० अग्रतः पश्चात्] आगे और पीछे की ओर।

संज्ञा पु० आगे का भाग और पीछे का भाग।

**अगुआ**—संज्ञा पु० [हिं० आगा] [क्रि० अगुआना, भाव० अगुआई] १. आगे चलनेवाला। अग्रगर। नेता। २ मुखिया। प्रधान। नायक। ३. पथ-प्रदर्शक। ४ विवाह की बातचीत ठीक करानेवाला।

**अगुआई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आगा+आई (प्रत्य०)] १ अगुआ होने की क्रिया। अग्रसरता। २ प्रधानता। सरदारी। ३ मार्ग-प्रदर्शन।

**अगुआना**—क्रि० स० [हिं० आगा] अगुआ बनाना। सरदार नियत करना।

क्रि० अ० आगे होना। बढ़ना।

**अगुवानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

**अगुण**—वि० [सं०] १ रज, तम आदि गुण रहित। निर्गुण। २. निर्गुणी। मूर्ख।

संज्ञा पु० अवगुण। दोष।

**अगुताना***†—क्रि० अ० दे० "उकताना"।

**अगुरु**—वि० [सं०] १ जो भारी न हो। हलका। २ जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो।

संज्ञा पु० १ अगर वृक्ष। ऊद। २. शीशम।

**अगुवा**—संज्ञा पु० दे० "अगुवा"।

**अगुसरना**—[सं० अग्रसर+ना (प्रत्य०)] आगे बढ़ना। अग्रसर होना।

**अगुसारना***—क्रि० स० [सं० अग्रसर] आगे बढ़ाना। आगे करना।

**अगूठना**†—क्रि० स० [सं० अवगुंठन] १. ढाकना। २. घेरना। छेकना।

**अगूठा**—[सं० अगूढ़] घेरा।

**अगूढ़**—वि० [सं०] १ जो छिपा न हो। २ स्पष्ट। प्रकट। ३ सहज। आसान।

संज्ञा पु० साहित्य में गुणीभूत व्यंग के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है।

**अगूना**—क्रि० वि० [हिं० आगे] आगे। सामने।

**अगेह**—वि० [सं० अ+हिं० गेह] जिसका घरबार न हो।

**अगोचर**—वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो। अव्यक्त।

**अगोई**—वि० स्त्री० [सं० अ+गोय] प्रकट।

**अगोट**—संज्ञा पु० [सं० आगुंठ] १ ओट। आड़। २ आश्रय। आधार।

**अगोटना**—क्रि० स० [हिं० अगोट+ना (प्रत्य०)] १ रोकना। छेकना। २ पहरे में रखना। कैद करना। ३ छिपाना। ४ चारों ओर से घेरना।

क्रि० स० [सं० अग+हिं० ओट+ना (प्रत्य०)] १ अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. पसंद करना। चुनना।

क्रि० अ० १ रुकना। ठहरना। २. फँसना।

**अगोता**†*—क्रि० वि० [सं० अग्रतः] आगे। सामने।

**अगोरदार**—संज्ञा पुं० [हिं० अगोरना+फ़ा० दार] [भाव० अगोरदारी] अगोरने या रखवाली करनेवाला। रखवाला।

**अगोरना**—क्रि० स० [सं० आगूरण] १. राह देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली या चौकसी करना।
क्रि० स० [हिं० अगोरना] रोकना। छेंकना।

**अगोरा**—संज्ञा पुं० दे० "अगोरदार"।

**अगोरिया**—संज्ञा पुं० दे० "अगोरदार"।

**अगौढ़**—संज्ञा पुं० [हिं० आगे] पेशगी। अगाऊ।

**अगौनी***—क्रि० वि० [सं० अग्र] आगे।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

**अगौरा**—संज्ञा पुं० [सं० अग्र+हिं० और] ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग।

**अगौहैं***—क्रि० वि० [सं० अग्रमुख] आगे की ओर।

**अग्नि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग। ताप और प्रकाश। (आकाश आदि पंच भूतों में से एक) २. वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३ जठराग्नि। पाचनशक्ति। ४ पित्त। ५. तीन की संख्या। ६. सोना।

**अग्निकर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अग्निहोत्र। हवन। २ शवदाह।

**अग्निकीट**—संज्ञा पुं० [सं०] समंदर कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।

**अग्निकुमार**—संज्ञा पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

**अग्निकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों का एक कुल या वंश।

**अग्निकोण**—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्व और दक्षिण का कोना।

**अग्निक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।

**अग्निक्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आतिशबाजी।

**अग्निगर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतिशी शीशा।
वि० जिसके भीतर अग्नि हो।

**अग्निज**—वि० [सं०] १. अग्नि से उत्पन्न। २ अग्नि . उत्पन्न करनेवाला। ३. अग्नि दीपक। पाचक।

**अग्निजिह्वा**—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

**अग्निजिह्वा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट। (अग्नि देवता की सात जिह्वाएँ कही गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपी।)

**अग्निज्वाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आग की लपट।

**अग्निदाह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ जलाना। २. शवदाह। मुर्दा जलाना।

**अग्निदीपक**—वि० [सं०] जठराग्नि को बढ़ानेवाला।

**अग्निदीपन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाचनशक्ति की बढ़ती। २. पाचनशक्ति को बढ़ानेवाली दवा।

**अग्निपरीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी तेल या लोहा छुलाकर किसी व्यक्ति के दोषी या निर्दोष होने की जाँच (प्राचीन)। २ सोने चाँदी आदि को आग में तपाकर परखना।

**अग्निपुराण**—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में एक।

**अग्निपूजक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि को देवता मानकर उसकी पूजा करनेवाला। २ पारसी।

**अग्निबाण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसमें से आग की ज्वाला प्रकट हो। २ दे० "उड़न बम"।

**अग्निवात**—संज्ञा पुं० [सं० अग्नि+वायु] पित्ती या जुड़-पित्ती नामक रोग।

**अग्निबीज**—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ण। सोना।

**अग्निमंथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अरणी वृक्ष। २. दो लकड़ियाँ जिन्हें रगड़कर यज्ञ के लिये आग निकाली जाती है। अरणी।

**अग्निमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यकांत मणि। आतशी शीशा।

**अग्निमांद्य**—संज्ञा पुं० [सं०] भूख न लगने का रोग। मंदाग्नि।

**अग्निमुख**—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवता। २ प्रेत। ३ ब्राह्मण। ४ चीते का पेड़।

**अग्निलिंग**—संज्ञा पुं० [सं०] आग की लपट का रंगत और उसके झुकाव को देखकर शुभाशुभ फल बतलाने की विद्या।

**अग्निवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] अग्निकुल।

**अग्निवर्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार के मेघ।

**अग्निशाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह घर जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो।

**अग्निशिखा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। २. कलियारी।

**अग्निशुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आग छुलाकर किसी वस्तु को शुद्ध करना। २. अग्निपरीक्षा।

**अग्निष्टोम**—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो ज्योतिष्टोम नामक यज्ञ का रूपांतर है।

**अग्निसंस्कार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ तपाना। जलाना। २ शक्ति के लिये अग्निस्पर्श करना। ३. मृतक का दाहकर्म।

**अग्निहोत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की

**अग्निहोत्री**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अग्निहोत्र करनेवाला।

**अग्न्यस्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह अस्त्र जिससे आग निकले। आग्नेयास्त्र। २. वह अस्त्र जो आग से चलाया जाय। बंदूक।

**अग्न्याधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अग्नि की विधानपूर्वक स्थापना। २. अग्निहोत्र।

**अग्य**—वि० दे० "अज्ञ"।

**अग्या***—संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।

**अग्यारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अग्नि+कारिका ] १ अग्नि में धूप आदि सुगंध द्रव्य देना। धूपदान। २. अग्निकुण्ड।

**अग्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आगे का भाग। अगला हिस्सा।
क्रि० वि० आगे।
वि० १. प्रथम। श्रेष्ठ। उत्तम।

**अग्रगण्य**—वि० [ सं० ] जिसकी गिनती सबसे पहले हो। प्रधान। श्रेष्ठ।

**अग्रगामी**—संज्ञा पुं० [ सं० अग्रगामिन् ] [ स्त्री० अग्रगामिनी ] आगे चलनेवाला। अगुआ। नेता।

**अग्रज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अग्रजा ] १ बड़ा भाई। २ नायक। नेता। अगुआ। ३ ब्राह्मण।
*वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

**अग्रजन्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बड़ा भाई। २. ब्राह्मण। ३. ब्रह्मा।

**अग्रणी**—वि० [सं०] १ अगुआ। श्रेष्ठ। २. नेता। ३. प्रमुख।

**अग्रदूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो आगे बढ़कर किसी के आने की सूचना दे।

***अग्रभव**—संज्ञा पुं० वि० दे० "अग्रज"।

**अग्रलिखित**—वि० [ सं० ] आगे लिखा हुआ।

**अग्रलेख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दैनिक और साप्ताहिक समाचार पत्रों में सम्पादक द्वारा लिखित लेख।

**अग्रशोची**—संज्ञा पुं० [सं० अग्रशोचिन्] पहले विचार करनेवाला। दूरदर्शी।

**अग्रसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ आगे जानेवाला। अगुआ। २. आरंभ करनेवाला। ३ मुखिया। प्रधान व्यक्ति।

**अग्रसोची***—दे० "अग्रशोची"।

**अग्रहायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अगहन। मार्गशीर्ष मास।

**अग्रहार**—संज्ञा० [ सं० ] १. राजा की ओर से ब्राह्मण को भूमि का दान। २ ब्राह्मण को दी हुई भूमि।

**अग्राशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भोजन का वह अंश जो देवता के लिये पहले निकाल दिया जाता है।

**अग्रासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सबसे आगे का या मानपूर्ण आसन।

**अग्राह्य**—वि० [ सं० ] १ न ग्रहण करने योग्य। न लेने लायक। २ त्याज्य। ३ न मानने लायक।

**अग्रिम**—वि० [सं०] १ अगाऊ। पेशगी। २ आगे आनेवाला आगामी। ३ प्रधान। श्रेष्ठ। उत्तम।

**अग्र्य**—वि० [ सं० ] १ अगला। २ श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० अग्रज। बड़ा भाई।

**अघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पाप। पातक। २ दुःख। ३ व्यसन। ४ अघासुर।

**अघट**—वि० [सं० अ=नहीं+घटना] १. जो घटित न हो। न होने योग्य। २ दुर्घट। कठिन। * ३ जो ठीक न घटे। अनुपयुक्त। बेमेल।
वि० [ हिं० घटना ] १ जो कम न हो। अक्षय। २ एकरस। स्थिर।

**अघटित**—वि० [ सं० ] जो घटित न हुआ हो। २. असंभव। न होने योग्य। * ३. अवश्य होनेवाला। अमिट। अनिवार्य। ४. अनुचित।
* वि० [ हिं० अ+हिं० घटना ] बहुत अधिक। घटकर न हो।

**अघमर्षण**—वि० [ सं० ] पापनाशक।

**अघवाना**—क्रि० स० [ हिं० अघाना का प्रेर० ] पेट भर खिलाना। २. संतुष्ट करना।

**अघाउ***—संज्ञा पुं० [ हिं० अघाना ] अघाने की क्रिया या भाव। तृप्ति।

**अघाट**—संज्ञा पुं० दे० "अगहाट"।

**अघात***—संज्ञा पुं० दे० "आघात"।
वि० [ हिं० अघाना ] १ खूब। अधिक। २ भरपेट।

**अघाती**—वि० [ हिं० अ+घाती ] घात न करनेवाला।

**अघाना**—क्रि० अ० [ सं० अग्रह ] १ भोजन से तृप्त होना। पेट भर खाना या पीना। २ संतुष्ट होना। तृप्त होना। ३ प्रसन्न होना। ४ थकना।
**मुहा०**—अघाकर=मन भर। यथेष्ट।

**अघारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पाप का शत्रु। पापनाशक। २ श्रीकृष्ण।

**अघासुर**—संज्ञा पुं० [सं०] कंस का सेनापति एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

**अघी**—वि० [ सं० ] पापी। पातक।

**अघोर**—वि० [ सं० ] १ सौम्य। सुहावना। २ अत्यंत घोर। बहुत भयंकर।
संज्ञा पुं० १ शिव का एक रूप। २. एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मद्य-मांस का व्यवहार करते हैं और मल-मूत्र आदि से घृणा नहीं करते।

**अघोरनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**अघोरपंथ**—संज्ञा पुं० [ सं० अघोर-

पंथ ] अघोरियों का मत या सम्प्रदाय।

**अघोरपंथी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अघोर मत का अनुयायी। अघोरी। औघड़।

**अघोरी**—संज्ञा पुं० [ सं० अघोर ] [ स्त्री० अघोरिन ] १ अघोर मत का अनुयायी। औघड़। २ भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करनेवाला।

वि० घृणित। घिनौना।

**अघोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण का एक वर्णसमूह जिसमें प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा अक्षर तथा श, ष और स भी हैं।

**अघौघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पापों का समूह।

**अघ्रान***—संज्ञा पुं० दे० "आघ्राण"।

**अघ्रानना***—क्रि० स० [ सं० आघ्राण ] आघ्राण करना। सूँघना।

**अचंचल**—वि० [ सं० ] १ जो चंचल न हो। स्थिर। २ धीर। गंभीर।

**अचंभव***—संज्ञा पुं० [सं० अत्यद्भुत] अचंभा।

**अचंभो***—संज्ञा पुं० [सं० अत्यद्भुत] १ आश्चर्य। अचरज। विस्मय। २ अचरज की बात।

**अचंभित***—वि० [ हिं० अचंभा ] आश्चर्यित। चकित। विस्मित।

**अचंभो***—संज्ञा पुं० दे० "अचंभा"।

**अचक**—वि० [ सं० चक्र = समूह ] भरपूर। पूर्ण। खूब। बहुत।

संज्ञा पुं० [ सं० चक्र=भ्रांत होना ] घबराहट। भौचक्कापन। विस्मय।

**अचकन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कंचुक ] एक प्रकार का लंबा अंगा।

**अचकाँ***—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

**अचक्का**—संज्ञा पुं० [ सं० आ=भले प्रकार+चक्र=भ्रांति ] अनजान।

**अचगरा***—वि० [ सं० अत्याचार ] छेड़छाड़ करनेवाला। शरारती। नटखट।

**अचगरी***—संज्ञा स्त्री० नटखटी। शरारत। छेड़छाड़।

**अचना***—क्रि० स० [सं० आचमन] आचमन करना। पीना।

**अचपल**—वि० [ सं० ] १. अचंचल। धीर। गंभीर। २ बहुत चंचल। शोख।

**अचपली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अचपल ] अठखेली। किलोल। क्रीड़ा।

**अचभौन***—संज्ञा पुं० दे० "अचंभा"।

**अचमन***—संज्ञा पुं० दे० "आचमन"।

**अचर**—वि० [ सं० ] न चलनेवाला। स्थावर। जड़।

**अचरज**—संज्ञा पुं० [ सं० आश्चर्य ] अचंभा। तअज्जुब।

**अचल**—वि० [ सं० ] १ जो न चले। स्थिर। ठहरा हुआ। २ चिरस्थायी। सर्वदिन रहनेवाला। ३ ध्रुव। दृढ़। पक्का। मजबूत। ४ जो नष्ट न हो।

संज्ञा पुं० पर्वत। पहाड़।

**अचलधृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**अचला**—वि० स्त्री० [ सं० ] जो न चले। स्थिर। ठहरा हुई।

संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

**अचला सप्तमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] माघ शुक्ला सप्तमी।

**अचवन**—संज्ञा पुं० [ सं० आचमन ] [ क्रि० अचवना ] १ आचमन। पीना। २ भोजन के पीछे हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना।

**अचवना**—क्रि० स० [ सं० आचमन ] १. आचमन करना। पीना। २ भोजन के पीछे हाथ-मुँह धोकर कुल्ली करना। ३ छोड़ देना। खो बैठना।

**अचवाना**—क्रि० स० [ हिं० अचवना का प्रेर० ] १. आचमन कराना। पिलाना। २. भोजन के बाद हाथ मुँह धुलाना।

**अचांचक**—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

**अचाक, अचाका***—क्रि० वि० [ सं० आ=अच्छी तरह+चक=भ्रांति ] अचानक। सहसा।

**अचान***—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

**अचानक**—क्रि० वि० [ सं० अज्ञानात् ] एकबारगी। सहसा। अकस्मात्।

**अचार**—संज्ञा पुं० [ फा० ] मसाला के साथ तेल में कुछ दिन रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी। कचूमर। अथाना।

*संज्ञा पुं० दे० "आचार"।

संज्ञा पुं० [सं० चार ] चिरौंजी का पेड़।

**अचारज***—संज्ञा पुं० दे० "आचार्य"।

**अचारी***—संज्ञा पुं० [सं० आचारी ] १ आचार विचार से रहनेवाला आदमी। नित्यकर्म विधि करनेवाला। २ रामानुजसम्प्रदाय का वैष्णव।

संज्ञा स्त्री० [ फा० अचार ] छिले हुए कच्चे आम की धूप में सिझाई फाँक।

**अचाह**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अ+चाह] चाह या इच्छा का अभाव। अरुचि।

वि० जिसे चाह या इच्छा न हो।

**अचाहा***—वि० [ सं० अ+हिं० चाहना ] जिस पर रुचि या प्रीति न हो।

संज्ञा पुं० १ वह व्यक्ति जो प्रेमपात्र न हो। *२ प्रीति न करनेवाला। निर्मोही।

**अचाही***—वि० [ सं० अ+हिं० चाह ] कुछ इच्छा न रखनेवाला। निष्काम।

**अचिंत***—वि० [ सं० अचिंत ] चिंतारहित। निश्चिंत। बेफ़िक्र।

**अचिंतनीय**—वि० [सं०] जो ध्यान में न आ सके। अज्ञेय। दुर्बोध।

**अचिंतित**—वि० [सं०] १. जिसका चिंतन न किया गया हो। बिना सोचा विचारा। २. आकस्मिक। ३. निश्चिंत। बेफ़िक्र।

**अचिंत्य**—वि० [सं०] १ जिसका चिंतन न हो सके। अज्ञेय। कल्पनातीत। २ जिसका अंदाज़ा न हो सके। अतुल। ३ आशा से अधिक। ४. आकस्मिक।

**अचितवन**—वि० क्रि० वि० दे० "अनिमेष"।

**अचित्**—संज्ञा पुं० [सं०] जड़ प्रकृति।

**अचिर**—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्दी।

वि० [सं०] १. थोड़ा। अल्प। २. थोड़े समय तक रहनेवाला।

**अचिरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] "अचिर" का भाव।

**अचिरत्व**—संज्ञा पुं० दे० "अचिरता"।

**अचिरात्**—क्रि० वि० [सं०] जल्दी।

**अचीता**—वि० [सं० अ + हिं० चीता] [स्त्री० अचीती] १ जिसका पहले से अनुमान न हो। आकस्मिक। २ बहुत।

वि० [सं० अचिंत] निश्चिंत। बेफ़िक्र।

**अचूक**—वि० [सं० अच्युत] १. जो न चूके। जो अवश्य फल दिखावे। २. ठीक। भ्रमरहित। पक्का।

क्रि० वि० १. सफ़ाई से। कौशल से। २ निश्चय। अवश्य। जरूर।

**अचेत**—वि० [सं०] १ चेतनारहित। बेसुध। बेहोश। मूर्च्छित। २. व्याकुल। विकल। ३. अनजान। बेखबर। ४. नासमझ। मूढ़। ५ जड़।

*संज्ञा पुं० [सं० अचित्] जड़ प्रकृति। जड़त्व। माया। अज्ञान।

**अचेतन**—वि० [सं०] १ जिसमें सुख दुःख आदि के अनुभव की शक्ति न हो। चेतनारहित। जड़। २ संज्ञा-शून्य। मूर्च्छित।

**अचेतन्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो ज्ञानस्वरूप न हो। अनात्मा। जड़। २ चेतना का अभाव। अज्ञान।

**अचैन**—संज्ञा पुं० [सं० अ + हिं० चैन] बेचैनी। व्याकुलता। विकलता।

वि० बेचैन। व्याकुल। विकल।

**अचौना***—संज्ञा पुं० [सं० आचमन] आचमन करने या पीने का बरतन। कटोरा।

**अचौन***—संज्ञा पुं० दे० "आचमन"।

**अच्छ**—वि० [सं०] स्वच्छ। निर्मल। संज्ञा पुं० दे० "अक्ष"।

**अच्छत**—संज्ञा पुं० दे० "अक्षत"।

**अच्छर**—संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

**अच्छरा, अच्छरी***—संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा] अप्सरा।

**अच्छा**—वि० [सं० अच्छ] १ उत्तम। बढ़िया।

**मुहा०**—अच्छे आना = ठीक या उपयुक्त अवसर पर आना। अच्छा दिन = सुख संपत्ति का दिन। अच्छा लगना = १. भला जान पड़ना। सजना। सोहना। २ रुचिकर होना। पसंद आना।

२ स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग।

संज्ञा पुं० १ बड़ा आदमी। श्रेष्ठ पुरुष। २. गुरुजन। बड़े बूढ़े। (बहुवचन)।

क्रि० वि० अच्छी तरह। खूब।

अव्य० प्रार्थना या आदेश के उत्तर में स्वीकृतिसूचक शब्द।

**अच्छाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "अच्छापन"। (प्रत्य०)

**अच्छापन**—संज्ञा पुं० [हिं० अच्छा + पन] अच्छे होने का भाव। उत्तमता।

**अच्छाबिच्छा**—वि० [हिं० अच्छा + बिच्छा (अनु०)] १ चुना हुआ। २. भला चंगा। नीरोग।

**अच्छि***—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्ष] आँख। नेत्र।

**अच्छे**—क्रि० वि० [हिं० अच्छा] ठीक तौर से। अच्छी तरह।

**अच्छोत***—वि० [सं० अच्छत] अधिक। बहुत।

**अच्छोहिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

**अच्युत**—वि० [सं०] १ जो गिरा न हो। २ अचल। स्थिर। ३. नित्य। अविनाशी। ४. जो विचलित न हो। संज्ञा पुं० १ विष्णु। २. श्रीकृष्ण

**अच्युताग्रज**—संज्ञा पुं० [सं०] १ इन्द्र। २ श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम।

**अच्युतानंद**—वि० [सं०] जिसका आनंद नित्य हो।

संज्ञा पुं० परमात्मा। ईश्वर।

**अछक**—*वि० [सं० अ + चक्] बिना छका हुआ। अतृप्त। भूखा।

**अछकना**—*क्रि० वि० [हिं० अछक] तृप्त न होना। न अघाना।

**अछत***—क्रि० वि० ['आछना' का कृदंत रूप] १. रहते हुए। उपस्थिति में। सम्मुख। सामने। २. सिवाय। अतिरिक्त।

वि० [सं० अ = नहीं + अस्ति] न रहता हुआ। अनुपस्थित। अविद्यमान।

**अछताना पछताना**—क्रि० अ० [हिं० पछताना] पछताना। पश्चात्ताप करना।

**अछन***—संज्ञा पुं० [सं० अ + क्षण ] बहुत दिन । दीर्घकाल । चिरकाल ।
क्रि० वि० धीरे धीरे । ठहर ठहरकर ।

**अछना***—क्रि० अ० [सं० अस् ] विद्यमान रहना । मौजूद रहना । रहना ।

**अछप***—वि० [ अ + छप = छिपना ] न छिपने योग्य । प्रकट । जाहिर ।

**अछय***—वि० दे० "अक्षय" ।

**अछरा***—संज्ञा स्त्री० [सं० अप्सरा ] अप्सरा ।

**अछरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अछरा" ।

**अछरौटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षर + औटी ( प्रत्य० ) ] वर्णमाला ।

**अछवाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० अच्छ ] १ सफाई । स्वच्छता । २. अच्छाई । अच्छापन ।

**अछवाना***—क्रि० स० [सं० अच्छ = साफ ] साफ करना । सँवारना ।

**अछवानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अजवाइन ] अजवाइन सोंठ तथा मेवों का पाग कर घी में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है ।

**अछाम***—वि० [सं० अक्षाम ] १. मोटा । २ बड़ा भारी । ३ हृष्ट पुष्ट । बलवान् ।

**अछूत**—वि० [सं० अ = नहीं + छुप्त ] १ जो छुआ न गया हो । अस्पृश्य । २ जो काम में न लाया गया हो । नया । ताजा । ३ जिसे अपवित्र मानकर लोग न छुएँ । अस्पृश्य । ( आधुनिक )
संज्ञा पुं० उस जाति का मनुष्य जिसे लोग छूना ठीक न समझें । अस्पृश्य । अन्त्यज ।

**अछूता**—वि० [सं० अ = नहीं + छुप्त = छुआ हुआ ] [ स्त्री० अछूती ] १ जो छुआ न गया हो । अस्पृष्ट । २. जो काम में न लाया गया हो । नया । कोरा । ताजा ।

**अछूतोद्धार**—संज्ञा पुं० [हिं० अछूत + सं० उद्धार ] अछूतों या अस्पृश्य जातियों का उद्धार और सुधार ।

**अछेद***—वि० [सं० अच्छेद्य ] जिसका छेदन न हो सके । अभेद्य । अखण्ड्य ।
संज्ञा पुं० अभेद । अभिन्नता ।

**अछेद्य**—वि० [सं०] १ जिसका छेदन न न हो सके । अभेद्य । २. अविनाशी ।

**अछेव***—वि० [सं० अछिद्र ] छिद्र या दूषण रहित । निर्दोष । बेदाग ।

**अछेह***—वि० [सं० अच्छेद्य ] १ निरंतर । लगातार । २ अखंड । समूचा । ३ अपार । ४ बहुत अधिक । ज्यादा ।

**अछोप***—वि० [सं० अ + हिं० छोपन ] १ आच्छादन-रहित । नंगा । २ तुच्छ । दीन । ३ पुराना और अप्रचलित ( राग ) ।

**अछोभ**—वि० [ दे० "अक्षोभ" ।

**अछोर**—वि० [हिं० अ + छोर ] १ जिसका ओर छोर न हो । २ बेहद । बहुत । अधिक ।

**अछोह**—संज्ञा पुं० [सं० अक्षोभ ] १ क्षोभ का अभाव । शांति । स्थिरता । २ दयाशून्यता । निर्दयता ।

**अछोही**—वि० दे० "अछोह" ।

**अजंगम**—संज्ञा पुं० [सं० ] छप्पय का एक भेद ।

**अज**—वि० [सं० ] जिसका जन्म न हो । अजन्मा । स्वयंभू ।
संज्ञा पुं० १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३. शिव । ४ कामदेव । ५ सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे । ६ बकरा । ७ भेंड़ा । ८ माया । शक्ति ।
*क्रि० वि० [सं० अद्य ] अब । अभी तक । ( यह शब्द "हूँ" के साथ आता है । )

**अजगंधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा ।

**अजगर**—संज्ञा पुं० [सं० ] बहुत मोटी जाति का साँप जो अपने शरीर के भारीपन के लिए प्रसिद्ध है ।

**अजगरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अजगरीय] अजगर की सी बिना परिश्रम की जीविका ।
*वि० १ अजगर का सा । २. बिना परिश्रम का ।

**अजगव**—संज्ञा पुं० [सं० ] शिवजी का धनुष । पिनाक ।

**अजगुत**—संज्ञा पुं० [सं० अयुक्त, पुं० हिं० अजुगुति ] १ युक्ति-विरुद्ध बात । २. अनुचित बात । असंगत बात ।
वि० आश्चर्यजनक । असंगत ।

**अज़ग़ैब***—संज्ञा पुं० [फ़ा० अज़ + ग़ैब] अलक्षित स्थान से । अदृष्ट स्थान । परोक्ष ।

**अजगैबी**—वि० [ हिं० अजगैब ] १. छिपा हुआ । गुप्त । २. आकस्मिक । अचानक आया हुआ ।

**अजड़**—वि० [सं० ] जो जड़ न हो । चेतन ।
संज्ञा पुं० चेतन पदार्थ ।

**अजदहा**—संज्ञा पुं० दे० "अजगर" ।

**अजन**—वि० [सं० ] जन्म के बंधन से मुक्त । अनादि । स्वयंभू ।
वि० [सं० ] निर्जन । सुनसान ।

**अजनबी**—वि० [अ० ] १. अज्ञात । अपरिचित । २ नया आया हुआ । परदेसी । ३. अनजान ।

**अजन्म**—वि० दे० "अजन्मा" ।

**अजन्मा**—वि० [सं० ] जो जन्म के बंधन में न आवे । अनादि । नित्य ।

**अजपा**—वि० [सं० ] १ जिसका उच्चारण न किया जाय । २. जो न जपे या भजे ।
संज्ञा पुं० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का एक मंत्र ।

**अजपाल**-संज्ञा पु० [ सं० ] गड़ेरिया।

**अजब**- वि० [ अ० ] विलक्षण। अद्भुत। विचित्र। अनोखा।

**अजमाना**-क्रि० स० दे० "आज़माना"

**अजमोद**-संज्ञा पु० [ सं० अजमोदा ] अजवायन की तरह का एक पेड़।

**अजय**-संज्ञा पु० [ सं० ] १. पराजय। हार। २ छप्पय छंद का एक भेद।
वि० जो जीता न जा सके। अजेय।

**अजया**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विजया। भाँग।
*संज्ञा स्त्री० [ सं० अजा ] बकरी।

**अजय्य**—वि०[सं०]जो जीता न जा सके। अजेय।

**अजर**-वि० [ सं० ] १. जरारहित। जो बूढ़ा न हो। २ जो सदा एकरस रहे।
वि० [सं० अ=नहीं + जॄ =पचना] जो न पचे। जो न हज़म हो।

**अजरायल***-वि० [ सं० अजर ] जो जीर्ण न हो। पक्का। चिरस्थायी।

**अजराल**-वि० [सं० अ + जरा ] बलवान्।

**अजवायन**-संज्ञा स्त्री० [ सं० यवानिका ] एक पौधा जिसके सुगन्धित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं। यवानी।

**अजस***—संज्ञा पुं० [अयश] अयश। अपकीर्ति। बदनामी।

**अजसी**—वि० [ हिं० अजस ] अयशी। बदनाम। निंद्य। २ जिन यश न मिले।

**अजस्र**—क्रि० वि० [ सं० ] सदा। हमेशा।
वि० [स्त्री० अजस्रा] सदा रहनेवाला।

**अजहत्स्वार्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक लक्षणा जिसमें लक्षक शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़कर कुछ भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रकट करे। उपादान लक्षणा।

**अज़ हद**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] हद से ज्यादा। बहुत अधिक।

**अजहुँ, अजहूँ***-क्रि० वि० [हि०आज + हूँ ( प्रत्य०) ]। १ आज तक। अभी तक।

**अजा**—वि० स्त्री० [ सं० ] जिसका जन्म न हुआ हो। जन्मरहित।
संज्ञा स्त्री० १. बकरी। २ सांख्य मतानुसार प्रकृति या माया। ३. शक्ति। दुर्गा।

**अजाचक**-संज्ञा पु० दे० "अयाचक"।

**अजाची**-संज्ञा० पु० दे० "अयाची"।

**अजात**-वि० [ सं० ] जो पैदा न हुआ हो। जन्मरहित। अजन्मा।
वि० दे० "अज्ञाती"।

**अजातशत्रु**-वि० [ सं० ] जिसका कोई शत्रु न हो। शत्रुविहीन।
संज्ञा पु० १ राजा युधिष्ठिर। २ शिव। ३ उपनिषद् में आया काशी का एक ज्ञानी राजा। ४ राजगृह ( मगध ) के राजा बिंबसार का पुत्र जो गौतम बुद्ध के समकालीन था।

**अजाती**—वि० [ सं० अ + जाति ] जाति से निकाला हुआ। पंक्तिच्युत।

**अजान**—वि० [ हिं० अ + जानना ] १. जो न जाने। अनजान। अबोध। नासमझ। २ अपरिचित। अज्ञात।
संज्ञा पु० १ अज्ञान। अनभिज्ञता। जानकारी का अभाव। ( 'में' के साथ ) २ एक पेड़ जिसके नीचे जाने से लोग समझते हैं कि बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
संज्ञा पु० [ अ० अज़ान ] नमाज की पुकार जो मसजिदों में होती है। बाँग।

**अजानता***—संज्ञा स्त्री० दे० 'अजानपन'।

**अजानपन**—संज्ञा पु० [ सं० अज्ञान+ हिं० पन ] अनजानपन। नासमझी।

**अज़ाब**—संज्ञा पु० [ अ० ] १ दुःख। कष्ट। २. विपत्ति। आफ़त। ३ पाप के कारण होनेवाली पीड़ा।

**अजामिल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणों के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम पुकारने से तर गया था।

**अजाय***—वि० [ अ=नहीं + फ़ा० जा ] बेजा। अनुचित।

**अजायब**—संज्ञा पु० [ अ० ] अजब का बहुवचन। विलक्षण पदार्थ या व्यापार।

**अजायबख़ाना**—संज्ञा पु० [ अ० ] वह स्थान जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखते हैं। अद्भुत-वस्तु संग्रहालय। म्यूज़ियम।

**अजायबघर**-संज्ञा पु० दे० "अजायबख़ाना"।

**अजार***—संज्ञा पु० दे० "आजार"।

**अजारा**—संज्ञा पु० दे० "इजारा"।

**अजिऔरा***—संज्ञा पु० [ हिं० आजा + सं० पुर ] आजा या दादी के पिता का घर।

**अजित**—वि० [ सं० ] जो जीता न गया हो।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २ शिव। ३ बुद्ध।

**अजितेन्द्रिय**—वि०[सं०] जो इंद्रियों के वश में हो। इंद्रियलोलुप। विषयासक्त।

**अजिन**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ काले मृग की खाल। २ चमड़ा।

**अजिर**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ आँगन। सहन। २ वायु। हवा। ३. शरीर। ४. इंद्रियों का विषय।

**अजी**—अव्य० [ सं० अयि ] संबोधन शब्द। जी।

**अज़ीज़**—वि० [ अ० ] प्यारा। प्रिय।
संज्ञा पु० संबंधी। सुहृद्।

**अंजीत**—वि० दे० "अजित"।

**अजीब**—वि० [ अ० ] विलक्षण। विचित्र। अनोखा।

**अजीरन**—संज्ञा पुं० दे० "अजीर्ण"।

**अजीर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपच। अध्यशन। बदहजमी। अन्न न पचने का दोष। २ अत्यन्त अधिकता। बहुतायत। जैसे बुद्धि का अजीर्ण। (व्यंग्य) वि० जो पुराना न हो। नया।

**अजीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अचेतन। जीवतत्त्व से भिन्न जड़ पदार्थ।
वि० बिना प्राण का। मृत।

**अजुगुत**—संज्ञा पुं० दे० "अजगुत"।

**अजू***—अव्य दे० "अजौं"।

**अजूजा***—संज्ञा पुं० [ देश० ] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुर्दा खाता है।

**अजूबा**—वि० [ अ० ] अद्भुत। अनोखा।

**अजूरा***—संज्ञा पुं० [ हिं० अ + जुड़ना ] जो जुड़ा न हो। पृथक्। अलग।
संज्ञा पुं० [ अ० ] १ मजदूरी। २ भाड़ा।

**अजूह***—संज्ञा पुं० [ सं० युद्ध ]। लड़ाई।

**अजेय**—वि० [ सं० ] जिसे कोई जीत न सके।

**अजोग**—वि० दे० "अयोग्य"।

**अजोता**—संज्ञा पुं० [सं० अ० + हिं० जोतना ] चैत्र की पूर्णिमा। ( इस दिन बैल नहीं नाधे जाते। )

**अजोरना***—क्रि० स० [हिं० जोड़ना] इकट्ठा करना। जमा करना।
क्रि० वि० दे० "अँजोरना"।

**अजौं***—क्रि० वि० [ सं० अद्य ] अब भी। अब तक।

**अज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मूर्ख। नासमझ।

**अज्ञता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मूर्खता। जड़ता। नादानी। नासमझी।

**अज्ञा**—संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।

**अज्ञाकारी***—वि० दे० "आज्ञाकारी"।

**अज्ञात**—वि० [ सं० ] १ बिना जाना हुआ। अविदित। अप्रकट। अपरिचित। २ जिसे ज्ञान न हो। जैसे—अज्ञातयौवना।
क्रि० वि० बिना जाने। अनजान में।

**अज्ञातनामा**—वि० [ सं० ] १ जिसका नाम विदित न हो। २ अविख्यात। तुच्छ।

**अज्ञातवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके। छिपकर रहना।

**अज्ञातयौवना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन आगमन का ज्ञान न हो।

**अज्ञान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बोध का अभाव। जड़ता। मूर्खता। २ जीवात्मा को गुण और गुण के कार्यों से पृथक् न समझने का अविवेक। ३ न्याय में एक निग्रह स्थान।
वि० जिसे कुछ भी ज्ञान न हो। मूर्ख। जड़। नासमझ।

**अज्ञानी**—वि० [सं० अज्ञान ] मूर्ख। नासमझ।

**अज्ञेय**—वि० [ सं० ] जो समझ में न आ सके। ज्ञानातीत। बोधागम्य।

**अज्यौं***—क्रि० वि० दे० "अजौं"।

**अझर***—वि० [सं० अ = नहीं + झर] जो न झरे। जो न गिरे। जो न बरसे।

**अझूना***—वि० [ हिं० अ + झूना = जीर्ण ] जो कभी जीर्ण न हो। स्थायी।

**अझोरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "झोली"।

**अटंबर**—संज्ञा पुं० [सं० अट्ट + फा० अंबार ] अटाला। ढेर। राशि।

**अट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अटक ] १ शर्त। कैद। २. रुकावट। प्रतिबंध।

**अटक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अटकना ] [ क्रि० अटकना। वि० अटकाऊ ] १. रोक। रुकावट। अड़चन। बाधा। २. संकोच। हिचक। ३ सिंध नदी। ४ अकाज। हर्ज।

**अटकन***—संज्ञा पुं० दे० "अटक"।

**अटकन-बटकन**—संज्ञा पुं० [देश०] छोटे लड़कों का एक खेल।

**अटकना**—क्रि० अ० [ सं० आटक्कन ] १ रुकना। फँसना। लगा रहना। २ प्रेम में फँसना। विवाद करना। झगड़ना।

**अटकर***—संज्ञा स्त्री० दे० "अटकल"।

**अटकरना***—क्रि० स० [ हिं० अटकर ] अंदाज करना। अटकल लगाना।

**अटकल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अट = घूमना + कल = गिनना ] १. अनुमान। कल्पना। २ अंदाज़। कूत।

**अटकलना**—क्रि० स० [ हिं० अटकल ] अटकल लगाना। अनुमान करना।

**अटकलपच्चू**—संज्ञा पुं० [ हिं० अटकल + पचाना (सिर) ] मोटा अंदाज़। कल्पना। स्थूल अनुमान।
वि० खयाली ऊटपटाँग।
क्रि० वि० अंदाज़ से। अनुमान से।

**अटका**—संज्ञा पुं० [ उड़ि० आटिका ] जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात और धन।

**अटकाना**—क्रि० स० [हिं० अटकना] १ रोकना। ठहराना। अड़ाना। २. उलझाना। ३. पूरा करने में विलंब करना।

**अटकाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० अटकना] १ रोक। रुकावट। प्रतिबंध। बाधा। विघ्न।

**अटखट***—वि० [ अनु० ] अटसट। अंडबंड।

**अटखेली**—संज्ञा स्त्री० दे० "अठ-

खोली" ।

**अटन**—संज्ञा पु० [ सं० ] घूमना। फिरना।

**अटना**—क्रि० अ० [ सं० अटन ] १. घूमना। फिरना। यात्रा करना। सफर करना।

क्रि० अ० [ हिं० ओट ] आड़ करना। ओट करना। छेकना।

क्रि० अ० दे० "अटना"।

**अटपट**—वि० [ सं० अट्=चलना + पत्=गिरना ] [स्त्री० अटपटी ] १. विकट। कठिन। २ दुर्गम। दुस्तर। ३. गूढ़। जटिल। ४ ऊटपटाँग। बेठिकाने।

**अटपटाना**—क्रि० अ० [ हिं० अटपट ] १. अटकना। लड़खड़ाना। २. गड़बड़ाना। चूकना। ३ हिचकना। संकोच करना।

**अटपटी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अटपट ] नटखटी। शरारत। अनरीति।

**अटम्बर**—संज्ञा पु० [ सं० आडम्बर ] १. आडम्बर। २. दर्प।

संज्ञा पुं० [ प० टब्बर=परिवार ] खानदान। परिवार। कुटुम्ब। कुनबा।

**अटरनी**—संज्ञा पुं० [ अ० एटारनी ] एक प्रकार का मुख्तार जो कलकत्ता और बंबई हाईकोर्टों में मुअक्किलों के मुकदमे लेकर पैरवी के लिए बैरिस्टर नियुक्त करता है।

**अटल**—वि० [ सं० ] १ जो न टले। स्थिर। २ जो सदा बना रहे। नित्य। चिरस्थायी। ३ जिसका होना निश्चित हो। अवश्यंभावी। ४ ध्रुव। पक्का।

**अटवाटी खटवाटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट=पाटी] खाट खटोला। साज-समाज।

**मुहा०** अटवाटी खटवाटी लेकर पड़ना = काम काज छोड़ रूठकर अलग पड़ रहना।

**अटवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वन। जंगल।

**अटहर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अट्ट= अटाला ] १. अटाला। ढेर। २ फेंटा। पगड़ी।

संज्ञा पु० [ हिं० अटक ] कठिनाई।

**अटा**—संज्ञा स्त्री० [सं० अट्ट=अटारी] घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।

संज्ञा पु० [ सं० अट्ट=अतिशय ] अटाला। ढेर। राशि। समूह।

**अटाउ***—संज्ञा पु० [सं० अट्ट=अतिक्रमण ] १ बिगाड़। बुराई। २ नटखटी। शरारत।

**अटाटूट**—वि० [ सं० अट्ट ] नितांत। बिल्कुल।

**अटारी**—संज्ञा पु० [ सं० अट्टाल ] घर के ऊपर की कोठरी या छत। चौबारा। कोठा।

**अटाल**—संज्ञा पु० [ सं० अट्टाल ] बुर्ज। धरहरा।

**अटाला**—संज्ञा पुं० [ सं० अट्टाल ] १ ढेर। राशि। २ सामान। असबाब। ३ कसाइयों की बस्ती।

**अटित**—वि० [ सं० अटा ] जिसमें अटा या अटारी हो। अटारीवाला।

वि० [ सं० अटन ] घुमक्कड़।

**अटूट**—वि० [ सं० अ=नहीं + हिं० टूटना ] १ न टूटने योग्य। दृढ़। पुष्ट। मजबूत। २ जिसका पतन न हो। अजेय। ३ अखंड। लगातार। ४ बहुत अधिक।

**अटेरन**—संज्ञा पु० [ सं० अति + ईरण ] [ क्रि० अटेरना ] १. सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का यन्त्र। ओंयना। २ घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति।

**अटेरना**—क्रि० स० [ हिं० अटेरन ] १. अटेरन से सूत की आँटी बनाना। २. मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना।

**अटोक***—वि० [ सं० अ + टोक ] बिना रोकटोक का।

**अट्ट**—संज्ञा पु० [सं०] १. अट्टालिका। अटारी। २. मकान में सबसे ऊपर का कोठा। ३ हाट। बाजार।

वि० १. ऊँचा। २. जिसमें जोर का शब्द हो।

**अट्ट सट्ट**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] अनाप शनाप। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

**अट्टहास**—संज्ञा पु० [ सं० ] जोर की हँसी। ठठाकर हँसना।

**अट्टालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अटारी। कोठा।

**अट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अटी ] अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन। लच्छा।

**अट्ठा**—संज्ञा पु० [सं० अष्ट] ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।

**अट्ठाइस, अट्ठाईस**—वि० [ सं० अष्टाविंशति ] बीस और आठ। २८।

**अट्ठानबे**—वि० [ सं० अष्टानवति ] संख्या। नब्बे और आठ। ९८।

**अट्ठावन**—वि० [ सं० अष्टपञ्चाशत ] पचास और आठ। ५८।

**अट्ठासी**—वि० दे० "अठासी"।

**अठंग***—संज्ञा पु० [ सं० अष्टांग ] अष्टांग योग।

**अठ***—वि० दे० 'आठ'। (समास में)

**अठइसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० 'अट्ठाइस' २८ गाहीं अर्थात् १४० फलों की संख्या जिसे फलों के लेन-देन में सैकड़ा मानते हैं।

**अठई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्टमी ] अष्टमी तिथि।

**अठकौशल**—संज्ञा पुं० [ सं० अष्टकौशल] १. गोष्ठी। पंचायत। २. सलाह। मंत्रणा।

**अठखेली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्टकेलि ] १. विनोद । क्रीड़ा । २ चपलता । चुलबुला-पन । ३. मतवाली या मस्तानी चाल ।

**अठत्तर**—वि० दे० "अठहत्तर" ।

**अठन्नी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आठ + आना ] आठ आने का चाँदी का सिक्का ।

**अठपहला**—वि० [ सं० अष्टपटल ] आठ कोनेवाला । जिसमें आठ पार्श्व हों ।

**अठपाव***—संज्ञा पुं० [ सं० अष्टपाद ] उपद्रव । ऊधम । शरारत ।

**अठमासा**-संज्ञा पुं० दे० "अठवाँसा" ।

**अठमासी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आठ+ माशा ] आठ माशे का सोने का सिक्का । सावरिन । गिनी ।

**अठलाना*** क्रि० अ० [ सं० अस्थिर ] १ ऐंठ दिखलाना । इतराना । ठसक दिखाना । २ चोचला करना । नखरा करना । ३ मदोन्मत्त होना । मस्ती दिखाना । ४ छेड़ने के लिए जान बूझ-कर अनजान बनना ।

**अठवना**-क्रि० अ० [ सं० आस्थान ] जमना । ठनना ।

**अठवाँस**-- वि० [ सं० अष्टपार्श्व ] अठपहला ।

**अठवाँसा** - वि० [ सं० अष्टमास ] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाय ।

संज्ञा पुं० १ सीमंत संस्कार । २ वह खेत जो असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय ।

**अठवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० आठ + सं० वार ] आठ दिन का समय । सप्ताह । हफ्ता ।

**अठसिल्या***—संज्ञा पुं० [सं० अष्टशल्य] सिंहासन ।

**अठहत्तर**—वि० [ सं० अष्टसप्तति, प्रा० अट्ठहत्तरि ] सत्तर और आठ । ७८ ।

**अठाई***†—वि० [ सं० अस्थायी ] उत्पाती । नटखट । शरारती । उपद्रवी ।

**अठान***-संज्ञा पुं० [ सं० अ=नहीं + हिं० ठानना ] १ न ठानने योग्य कार्य्य । न करने योग्य काम । २ दुष्कर कर्म । ३ वैर । शत्रुता । ४ झगड़ा ।

**अठाना***†-क्रि० स० [अठ=वध करना] सताना । पीड़ित करना ।

क्रि० स० [ हिं० ठानना ] मचाना । ठानना ।

**अठारह**—वि० [ सं० अष्टादश ] दस और आठ । १८ ।

संज्ञा पुं० १ काव्य में पुराणसूचक संकेत या शब्द । २ चौसर का एक दाँव ।

**अठासी**-वि० [ सं० अष्टाशीति ] सी और आठ । ८८ ।

**अठिलाना***-क्रि० अ० दे० 'अठलाना' ।

**अठेल***-वि०[सं० अ=नहीं+हिं० ठेलना] बलवान् । मजबूत । जबरदस्त ।

**अठोठ***-संज्ञा पुं० [ हिं० ठाट ] ठाट । आडंबर । पाखंड ।

**अठोतरसौ** — वि० [सं० अष्टोत्तरशत] एक सौ आठ । सौ और आठ । १०८ ।

**अठोतरी**-संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्टोत्तरी ] एक सौ आठ दानों की जपमाला ।

**अड़ंगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अड़ाना + टाँग ] १ टाँग अड़ाना । रुकावट । २ बाधा । विघ्न ।

**अडंड***—वि० दे० "अदंड्य" ।

**अडंबर**—संज्ञा पुं० दे० "आडंबर" ।

**अड़**—संज्ञा पुं० [ सं० हठ ] १ रुकने की क्रिया या भाव । २ रोक । ३ हठ । जिद

**अड़कना**†-क्रि० स० दे० "अड़ाना" ।

**अडग**-वि० [ सं० अ + डगना ] न डिगनेवाला । अटल । अचल ।

**अड़गड़ा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १ बैल-गाड़ियों के ठहरने का स्थान । २ बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान ।

**अड़गोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अड़ + गोड़ा ] लकड़ी का वह टुकड़ा जो नट-खट चौपायों के गले में बाँधते हैं ।

**अड़चन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अड़ना + चलना ] झंझट । आपत्ति । कठिनाई ।

**अड़चल**-संज्ञा स्त्री० दे० "अड़चन" ।

**अड़तल**—संज्ञा पुं० [ हिं० आड़ + सं० तल ] १. आड़ । २ शरण । ३ बहाना । हीला ।

**अड़तालीस**-वि० [ सं० अष्टचत्वारिं-शत ] चालीस और आठ । ४८ ।

**अड़तीस**-वि० [ सं० अष्टत्रिंशत ] तीस और आठ । ३८ ।

**अड़दार**-वि० [ हिं० अड़ना + फ़ा० दार ( प्रत्य० ) ] १ अड़ियल । रुकने-वाला । २ ऐंड़दार । ३. मस्त । मत-वाला ।

**अड़ना**-क्रि० अ० [ सं० अल=वारण करना ] १ रुकना । ठहरना । २. हठ करना ।

**अड़बंग***†-वि० पुं० [ हिं० अड़ + सं० वक्र ] १ टेढ़ा मेढ़ा । अड़बड़ । अटपट । २. विकट । कठिन । दुर्गम । ३ विलक्षण ।

**अडर***—वि० [ सं० अ + हिं० डर ] निडर । निर्भय । बेडर ।

**अड़सठ**—वि० [ सं० अष्टषष्ठि ] साठ और आठ की संख्या । ६८ ।

**अड़हुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ओड्र + फुल्ल ] देवीफूल जपा या जवापुष्प ।

**अड़ाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० आड़ ] १. चौपायों के रहने का हाता । खरिक । २ दे० "अड़ार" ।

**अड़ान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अड़ना ] १. अड़ने या रुकने की जगह । २ अड़ने या रुकने की क्रिया भाव । ३ पड़ाव ।

**अड़ाना**-क्रि० स० [ हिं० अड़ना ] १ टिकाना । रोकना । ठहराना । अट-

काना। २. टेकना। डाट लगाना। ३ कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना। ४. ठूँसना। भरना। ५ गिराना। ढरकाना।

संज्ञा पु० १. एक राग। २. वह लकड़ी जो गिरती हुई छत या दीवार आदि को गिरने बचाने के लिये लगाई जाती है। डाट। चाँड़। थूनी।

**अड़ाती**—संज्ञा पु० [देश०] १ एक प्रकार का बड़ा पत्ता। २. अड़ंगा।

**अड़ायता** वि० [हिं० आड़] [स्त्री० अड़ायती] जो आड़ करे। ओट करनेवाला।

**अड़ार**-संज्ञा पुं०[सं०अट्टाल=बुर्ज]-१ समूह। राशि। ढेर। २ ईंधन का ढेर जो बेचने के लिए रक्खा हो। ३ लकड़ी या ईंधन की दुकान।

*वि० [सं० अराल] टेढ़ा। तिरछा। आड़ा।

**अड़ारना**†-क्रि० स० [हिं० टालना] डालना। देना।

**अडिग**—वि० [हिं० अ + डिगना] न डिगनेवाला। दृढ़। स्थिर।

**अड़ियल**—वि० [हिं० अड़ना] १ अड़कर चलनेवाला। चलते चलते रुक जानेवाला। २ सुस्त। मट्ठर। ३ हठी। ज़िद्दी।

**अड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० अड़ना] १ ज़िद। हठ। आग्रह। २. रोक। ३ ज़रूरत का वक्त या मौका।

**अडीठ**—वि० [हिं० अ + डीठ] १ जो दिखाई न दे। २ छिपा हुआ। गुप्त।

**अडुलना***—क्रि० स० [सं० उत्=ऊँचा + इल्=फेंकना] जल आदि ढालना। उँडेलना।

**अडूसा**—संज्ञा पु० [सं० अटरूष] एक पौधा जिसके फूल और पत्ते कास, श्वास आदि की औषध हैं।

**अड़ैता***—वि० दे० "अड़ायता"।

**अडोर**—वि० १ दे० "अडोल"। २ दे० "अँदोर"।

**अडोल**—वि० [सं० अ=नहीं हिं० डोलना] १. जो हिले नहीं। अटल। स्थिर। २ स्तब्ध। टकमारा।

**अड़ोस, पड़ोस**—संज्ञा पु० [हिं० पड़ोस] आसपास करीब।

**अड़ोसी पड़ोसी**—संज्ञा पु० [हिं० पड़ोस] आसपास का रहनेवाला।

**अड्डा**—संज्ञा पु० [सं० अट्टा=ऊँची जगह] १ टिकने की जगह। ठहरने का स्थान। २ मिलने या इकट्ठा होने की जगह। ३. केन्द्र स्थान। प्रधान स्थान। ४ चिड़ियों के बैठने के लिये लकड़ी या लोहे की छड़। ५ कबूतरों की छतरी। ६ करघा।

**अढ़तिया**—संज्ञा पु० [हिं० आढ़त] १. वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनों का माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता है। आढ़त करनेवाला। २ दलाल।

**अढ़वना***-क्रि० स० [सं०आज्ञापन] आज्ञा देना। काम में लगाना।

**अढ़वायक***—संज्ञा पु० [सं० आज्ञापक] दूसरों से काम लेनेवाला।

**अढ़िया**—संज्ञा स्त्री० [सं० आढक] काठ, पत्थर या लोहे का छोटा बर्तन।

**अढ़ुक**—संज्ञा पुं० [हिं० अढ़ुकना] ठोकर।

**अढ़ुकना**—क्रि० अ० [सं० अढौक्=चलना] १ ठोकर खाना। २ सहारा लेना।

**अढ़ैया** संज्ञा पु० [हिं० अढ़ाई] १ २½ सेर की तौल या बाट। २ ढाई गुने का पहाड़ा।

**अणि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नोक। २ धार। ३ सीमा। हद। ४ किनारा।

वि० बहुत छोटा।

**अणिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अष्ट सिद्धियों में पहिली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते।

**अणी***—सर्वो० [सं० अयि] अरी। एरी।

**अणु**-संज्ञा पुं० [सं०] १ द्व्यणुक से सूक्ष्म और परमाणु से बड़ा कण (६० परमाणुओं का)। २ छोटा टुकड़ा या कण। ३ रजकण। ४ अत्यंत सूक्ष्म मात्रा।

वि० १ अति सूक्ष्म। अत्यंत छोटा। २ जो दिखाई न दे।

**अणुबम**—संज्ञा पु० [सं० अणु+ अँ० बाम्ब] एक प्रकार का भीषण और नाशक बम जो अपना कार्य अणु के विस्फोट के द्वारा करता है।

**अणुवाद**—संज्ञा पु० [सं०] १ वह दर्शन या सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया हो (रामानुज का)। २ वैशेषिक दर्शन।

**अणुवादी**—संज्ञा पु० [सं०] १ नैयायिक। वैशेषिक शास्त्र का माननेवाला। २ रामानुज का अनुयायी।

**अणुवीक्षण**—संज्ञा पु० [सं०] १ सूक्ष्मदर्शक यंत्र। खुर्दबीन। २ बाल की खाल निकालना। छिद्रान्वेषण।

**अतंक***—संज्ञा पु० दे० "आतंक"।

**अतंद्रिक**—वि० [सं०] १ आलस्य-रहित। चुस्त। चंचल। २ व्याकुल। बेचैन।

**अतः**—क्रि० वि० [सं०] इस वजह से। इसलिये। इस वास्ते।

**अतएव**—क्रि० वि० [सं०] इसलिये। इस वजह से।

**अतथ्य**—वि० [सं०] १ अयथार्थ। झूठ। २ असमान।

**अतद्गुण**—संज्ञा पु० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक वस्तु का किसी ऐसी

दूसरी वस्तु के गुणों को न ग्रहण करना दिखलाया जाय जिसके कि वह अत्यंत निकट हो।

**अतन*** - क्रि० दे० 'अतनु"।

**अतनु**—वि० [ सं० ] १ शरीर-रहित। बिना देह का। २ मोटा। स्थूल। संज्ञा पु० अनंग। कामदेव।

**अतर**—संज्ञा पु० [ अ० इत्र ] फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार।

**अतरक***—वि० दे० 'अतर्क्य'।

**अतरदान**—संज्ञा पु० [ फ़ा० इत्रदान ] इत्र रखने का चाँदी सोने या धातु का बर्तन।

**अतरसों**—क्रि० वि० [ सं० इतर+श्वः ] १ परसों के आगे का दिन। आगामी तीसरा दिन। २ परसों से पहले का दिन। तीसरा व्यतीत दिन।

**अतरिख***- संज्ञा पु० दे० "अंतरिक्ष"।

**अतर्कित**—वि० [ सं० ] १. जिसका पहले से अनुमान न हो। २ आकस्मिक। बेसोचा समझा। जो विचार में न आया हो।

**अतर्क्य**—वि० [ सं० ] जिस पर तर्क वितर्क न हो सके। अनिर्वचनीय। अचिंत्य।

**अतल**—संज्ञा पु० [ ० ] सात पातालों में दूसरा पाताल।

**अतलस**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**अतलस्पर्शी**—वि० [ सं० ] अतल का छूनेवाला। अत्यंत गहरा। अथाह।

**अतलांतक**—संज्ञा पु० [ अ० एटलांटिक से सं० ] यूरोप और आफ्रिका के पश्चिमी तटों से अमेरिका के पूर्वी तटों तक फैला हुआ महासागर। एटलांटिक।

**अतवान**—वि० [ सं० अति ] बहुत। ज्यादा।

**अतवार**—संज्ञा० पु० दे० 'रविवार"।

**अतसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अलसी (पौधा)।

**अताई**—वि० [ अ० ] १ दक्ष। कुशल। प्रवीण। २. धूर्त। चालाक। ३. जो किसी काम को बिना सीखे हुए करे।

**अति**—वि० [ सं० ] बहुत। अधिक। संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती।

**अतिकाय**—वि० [ सं० ] स्थूल। मोटा।

**अतिकाल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. विलंब। देर। २ कुसमय।

**अतिकृच्छ्र**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ बहुत कष्ट। २ छः दिनों का एक व्रत।

**अतिकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पचीस वर्णों के वृत्तों की संज्ञा।

**अतिक्रम**—संज्ञा पु० [ सं० ] नियम या मर्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।

**अतिक्रमण**—संज्ञा पु० [ सं० ] हद के बाहर जाना। बढ़ जाना। उल्लंघन।

**अतिक्रांत**—वि० [ सं० ] १ हद के बाहर गया हुआ। २ बीता हुआ। व्यतीत।

**अतिगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मोक्ष। मुक्ति।

**अतिचार**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ ग्रहों की शीघ्र चाल। एक राशि का भोगकाल समाप्त किए बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना। २ विघात। व्यतिक्रम।

**अतिजगती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तेरह वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

**अतिथि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घर में आया हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति। अभ्यागत। मेहमान। पाहुन। २ वह संन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे। व्रात्य। ३ अग्नि। ४. यज्ञ में सोमलता लानेवाला।

**अतिथिपूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अतिथि का आदर सत्कार। मेहमानदारी। पंचमहायज्ञों में से एक।

**अतिथियज्ञ**—संज्ञा पु० [ सं० ] अतिथि का आदर सत्कार। अतिथिपूजा।

**अतिदेश**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ एक स्थान के धर्म का दूसरे स्थान पर आरोप। २ वह नियम जो और विषयों में भी काम आवे।

**अतिधृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उन्नीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

**अतिपतन**—संज्ञा पु० दे० "अतिपात"।

**अतिपात**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ अतिक्रम। अव्यवस्था। गड़बड़ी। २. बाधा। विघ्न।

**अतिपातक**—संज्ञा पु० [ सं० ] पुरुष के लिये माता, बेटी और पतोहू के साथ और स्त्री के लिये पुत्र, पिता और दामाद के साथ गमन।

**अतिबरवै**—संज्ञा पु० [ सं० अति+ हिं० बरवै ] एक छंद।

**अतिबल**—वि० [ सं० ] प्रबल। प्रचंड।

**अतिबला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन युद्ध विद्या जिसके सीखने से श्रम और ज्वर आदि की बाधा का भय नहीं रहता था। २ कँगही नाम का पौधा।

**अतिमुक्त**—वि० [ सं० ] १ जिसकी मुक्ति हो गई हो। २. विषयवासनारहित।

**अतिरंजन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अतिरंजित] बढ़ा चढ़ा कर कहने की रीति। अत्युक्ति।

**अतिरंजना**—संज्ञा स्त्री० दे० "अतिरंजन"।

**अतिरथी**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अकेले बहुतों के साथ लड़ सके।

**अतिरिक्त**—क्रि० वि० [सं०] सिवाय। अलावा। छोड़कर।
वि० १. शेष। बचा हुआ। २ अलग। जुदा। भिन्न।

**अतिरिक्त-पत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] अखबार के साथ बटनेवाली सूचना या विज्ञापन। क्रोड़पत्र।

**अतिरेक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अधिकता। ज्यादती। २ व्यर्थ की वृद्धि। बाहुल्य।

**अतिरोग**—संज्ञा पुं० [सं०] यक्ष्मा। क्षय।

**अतिवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सच्ची बात। २ कड़ुई बात। ३ डींग। शेखी।

**अतिवादी**—वि० [सं०] १ सत्यवक्ता। २ कटुवादी। ३ जो डींग मारे।

**अतिविषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।

**अतिवृष्टि**—संज्ञा [सं०] ६ ईतियों मे से एक। अत्यंत वर्षा।

**अतिवेल**—वि० [सं०] बहुत अधिक।

**अतिव्याप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] न्याय में किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।

**अतिशय**—वि० [सं०] [भाव० अतिशयता] बहुत। ज्यादा।

**अतिशयता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधिकता। ज्यादती।

**अतिशयोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमे भेद मे अभेद असंबंध मे संबंध आदि दिखाकर किसी वस्तु को बढ़ाकर वर्णन करते हैं।

**अतिशयोपमा**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनन्वय"।

**अतिसंध**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना।

**अतिसंधान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अतिक्रमण। २ विश्वासघात। धोखा।

**अतिसामान्य**—संज्ञा पुं० [सं] वह बात जो इतने सामान्य रूप मे कही जाय कि सब पर पूरी न घटे। (न्याय)

**अतिसार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमे खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों मे से पतले दस्तों के रूप मे निकल जाता है।

**अतिहसित**—संज्ञा पुं० [सं०] हास के छः भेदों मे से एक जिसमे हँसनेवाला ताली पीटे और उसकी आँखों मे आँसू निकलें।

**अतींद्रिय**—वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर अव्यक्त।

**अतीत**—वि० [सं०] [क्रि० अतीतना] १ गत। व्यतीत। बीता हुआ २ पृथक्। जुदा। अलग। ३ मृत। मरा हुआ।
क्रि० वि० परे। बाहर।
संज्ञा पुं० संन्यासी। यति। साधु।

**अतीतना***—क्रि० अ० [सं० अतीत] बीतना। गुजरना।
क्रि० स० [सं०] १ बिताना। व्यतीत करना। २ छोड़ना। त्यागना।

**अतीथ***—संज्ञा पुं० दे० "अतिथि"।

**अतीव**—वि० [सं०] बहुत। अत्यंत।

**अतीस**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विषा। अतिविषा।

**अतीसार**—संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"।

**अतुराई***—संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर] १ आतुरता। २. चंचलता। चपलता।

**अतुराना***—क्रि० अ० [सं० आतुर] १ आतुर होना। घबराना। २ जल्दी मचाना।

**अतुल**—वि० [सं०] [भाव० अतुलता] १ जिसकी तौल या अंदाज न हो सके। २. अमित। असीम। बहुत अधिक। ३ अनुपम। बेजोड़।
संज्ञा पुं० १ केशव के अनुसार अनुकूल नायक। २ तिल का पेड़।

**अतुलनीय**—वि० [सं०] १ अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। २. अनुपम। अद्वितीय।

**अतुलित**—वि० [सं०] १ बिना तौला हुआ। २ अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३ असंख्य। ४ अनुपम।

**अतुल्य**—वि० [सं०] १ असमान। असदृश। २ अनुपम। बेजोड़।

**अतूथ***—वि० [सं० अति+उत्थ] अपूर्व।

**अतूल***—वि० दे० 'अतुल'।

**अतृप्त**—वि० [सं०] [संज्ञा अतृप्ति] १ जो तृप्त या संतुष्ट न हो। २ भूखा।

**अतृप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मन न भरने की दशा। तृप्ति का न होना।

**अतोड़***—वि० [सं० अ+हिं० तोड़] जो न टूटे। अभंग। दृढ़।

**अतोल**—वि० [सं० अ+हिं० तोल] १ बिना अंदाज किया हुआ। २ बहुत अधिक। ३ अनुपम। बेजोड़।

**अतौल**—वि० दे० "अतोल"।

**अत्त***†—संज्ञा स्त्री० [सं० अति] अति। अधिकता। ज्यादती।

**अत्तार**—संज्ञा पुं० [अ०] १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २ यूनानी

दवा बनाने और बेचनेवाला।

**अचारी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अचार का काम या पेशा।

**अत्ति***†—संज्ञा पुं० दे० "अच"।

**अत्यंत**—वि० [ सं० ] बहुत अधिक। हद से ज्यादा। अतिशय।

**अत्यंताभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु का बिलकुल न होना। सत्ता की नितांत शून्यता। २ पाँच प्रकार के अभावो में से एक। तीनो कालो में संभव न होना,—जैसे, आकाशकुसुम, वंध्यापुत्र। (वैशेषिक) ३. बिलकुल कमी।

**अत्यंतिक**—वि० [ सं० ] १ समीपी। नजदीकी। २ बहुत घूमनेवाला।

**अत्यम्ल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इमली। वि० बहुत खट्टा।

**अत्यय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मृत्यु। नाश। २ हद से बाहर जाना। ३ दंड। सजा। ४ कष्ट। ५ दोष।

**अत्यष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १७ वर्णों के वृत्तों की संज्ञा।

**अत्याचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ आचार का अतिक्रमण। अन्याय। जुल्म। २ दुराचार। पाप। ३ पाखंड ढोंग।

**अत्याचारी**—वि० [ सं० ] १. अन्यायी। निठुर। जालिम। २ पाखंडी। ढोंगी।

**अत्याज्य**—वि० [ सं० ] १ न छोड़ने योग्य। २. जो छोड़ा न जा सके।

**अत्युक्त**—वि० [ सं० ] जो बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहा गया हो।

**अत्युक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करने की शैली। मुबालिगा। बढ़ावा। २. एक अलंकार जिसमें शूरता, उदारता आदि गुणों का अद्भुत और अतथ्य वर्णन होता है।

**अत्र**—क्रि० वि० [ सं० ] यहाँ। इस जगह।

*संज्ञा पुं० "अस्त्र" का अपभ्रंश।

**अत्रक**—वि० [ सं० ] १ यहाँ का। २ इस लोक का। ऐहिक।

**अत्रभवान्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अत्रभवती ] माननीय। पूज्य। श्रेष्ठ।

**अत्रि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सप्तर्षियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। २ एक तारा जो सप्तर्षिमंडल में है।

**अत्रैगुण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत, रज, तम, इन तीनों गुणों का अभाव।

**अथ**—अव्य० [ सं० ] १ एक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रन्थ या लेख का आरंभ करते थे। २. अब। ३ अनंतर।

**अथऊ**†—संज्ञा पुं० [ हिं० अथवना ] वह भोजन जो जैन लोग सूर्यास्त के पहले करते हैं।

**अथक**—वि० [ सं० अ = नहीं + हिं० थकना ] जो न थके। अश्रांत। क्रि० वि० बिना थके।

**अथच**—अव्य० [ सं० ] और। और भी।

**अथना*** —क्रि० अ० [ सं० अस्त ] अस्त होना डूबना।

**अथमना**†—संज्ञा पुं० [ सं० अस्तमन ] पश्चिम दिशा। 'उगमना' का उलटा।

**अथयना***—क्रि० अ० [ सं० अस्तमन ] अस्त होना।

**अथरा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थाल ] [ स्त्री० अथरी ] मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बर्तन। नाँद।

**अथर्व**—संज्ञा पुं० [ सं० अथर्वन् ] चौथा वेद जिसके मंत्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु और अंगिरा गोत्रवाले थे।

**अथर्वन्**—संज्ञा पुं० दे० "अथर्व'।

**अथर्वनी**—संज्ञा पुं० [ सं० अथर्वणि ] कर्मकांडी। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।

**अथवना***—क्रि० अ० [ सं० अस्तमन ] १ ( सूर्य, चंद्र आदि का ) अस्त होना। डूबना। २. लुप्त होना। गायब होना।

**अथवा**—अव्य० [ सं० ] एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा किंवा।

**अथाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आस्थानी ] १ बैठने की जगह। बैठक। चौपारा। २ वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर पंचायत करते हैं। ३. घर के सामने का चबूतरा। ४ मंडली। सभा। जमावड़ा।

**अथाग***—वि० दे० "अथाह"।

**अथान, अथाना**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थास्नु ] अचार।

**अथाना***—क्रि० अ० दे० "अथवना"। क्रि० स० [ सं० स्थान ] १ थाह लेना। गहराई नापना। २ ढूँढ़ना।

**अथावत***—वि० [ सं० अस्तिमत ] डूबा हुआ। अस्त।

**अथाह**—वि० [ सं० अस्ताघ ] १ जिसकी थाह न हो। बहुत गहरा। २ जिसका अंदाज न हो सके। अपरिमित। बहुत अधिक। ३. गंभीर। गूढ़।

संज्ञा पुं० १. गहराई। २ जलाशय। ३ समुद्र।

**अथिर***—वि० दे० "अस्थिर"।

**अथोर***—वि० [ सं० अ = नहीं + हिं० थोर ] अधिक। ज्यादा। बहुत।

**अदंक***—संज्ञा पुं० [ सं० आतंक ] डर। भय।

**अदंड**—वि० [ सं० ] १ जो दंड के योग्य न हो। सजा से बरी। २ जिस

पर कर या महसूल न लगे। ३ निर्भय। स्वच्छाचारी। ४ उद्दंड। बली।
संज्ञा पु० वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे। माफ़ी।

**अदंडनीय**—वि० [सं०] जो दंड पाने के योग्य न हो। अदंड्य।

**अदंडमान**—वि० [सं० अदंड्यमान] दंड के अयोग्य। दंड से मुक्त।

**अदंड्य**—वि० [सं०] जिसे दंड न दिया जा सके। सज़ा से बरी।

**अदंत**—वि० [सं०] १. जिसे दाँत न हो। २. बहुत थोड़ी अवस्था का। दुधमुहाँ।

**अदंभ**—वि० [सं०] १ दंभरहित। पाखंडविहीन। २ सच्चा। निश्छल। निष्कपट। ३ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ४. स्वच्छ। शुद्ध।
संज्ञा पु० शिव।

**अदग, अदग्ग**—वि० [सं० अदग्ध] १ बेदाग। शुद्ध। २ निरपराध। निर्दोष। ३ अछूता। अस्पृष्ट। साफ़।

**अदत**—देखो "अदद"।

**अदत्त**—वि० [सं०] न दिया हुआ।
संज्ञा पु० वह वस्तु जिसके दिए जाने पर भी लेनेवाले का उस रखने का अधिकार न हो। (स्मृति)

**अदत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या।

**अदद**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संख्या। गिनती। २ संख्या का चिह्न या संकेत।

**अदन**—संज्ञा पु० [अ०] १ पैगंबरी मतों के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रखा था। २. अरब के दक्षिण का एक बंदरगाह।

**अदना**—वि० [अ०] १ तुच्छ। क्षुद्र। २. सामान्य। मामूली।

**अदब**—संज्ञा पुं० [अ०] शिष्टाचार। कायदा। बड़ों का आदर सम्मान।

**अदबदाकर**—क्रि० वि० [सं० अधि+ वद] टेक बाँधकर। अवश्य। जरूर।

**अदभ्र**—वि० [सं०] १. बहुत। अधिक। ज्यादा। २ अपार। अनंत।

**अदम**—संज्ञा पु० [अ०] १ अभाव। न होना। २ परलोक।

**अदमपैरवी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी मुकदमे में जरूरी कार्रवाई न करना।

**अदम्य**—वि० [सं०] जिसका दमन न हो सके। प्रचंड। प्रबल।

**अदय**—वि० [सं०] १ दयारहित। (व्यापार) २ निर्दय। निष्ठुर। (व्यक्ति)

**अदरक**—संज्ञा पु० [सं० आर्द्रक, फ़ा० अदरक] एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।

**अदरकी**—संज्ञा [हिं० अदरक] सोंठ और गुड़ मिलाकर बनाई हुई टिकिया।

**अदरा**—संज्ञा पु० दे० "आर्द्रा"।

**अदराना**—क्रि० अ० [सं० आदर] बहुत आदर पाने से शेख़ी पर चढ़ना। इतराना।
क्रि० स० आदर देकर शेख़ी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

**अदर्शन**—संज्ञा पु० [सं०] १ अविद्यमानता। असाक्षात्। २ लोप। विनाश।

**अदर्शनीय**—वि० [सं०] १ जो देखने लायक न हो। २ बुरा। कुरूप। भद्दा।

**अदल**—संज्ञा पु० [अ०] न्याय। इंसाफ़।

**अदल बदल**—संज्ञा पु० [अ०] उलट पुलट। हेर फेर। परिवर्तन।

**अदली***—संज्ञा पु० [अ० अदल] न्यायी।

**अदवान**—संज्ञा स्त्री० [सं० अधः= नीचे + हिं० बान=रस्सी] चारपाई के पैताने बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिए उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। ओनचन।

**अदहन**—संज्ञा पु० [सं० आदहन] आग पर चढ़ा हुआ गरम पानी जिसमें दाल, चावल आदि पकाते हैं।

**अदाँत**—वि० [सं० अदंत] जिसे दाँत न आए हों। (पशुओं के संबंध में)

**अदांत**—वि० [सं०] १ जो इंद्रियों का दमन न कर सके। विषयासक्त। २ उद्दंड। अक्खड़।

**अदा**—वि० [अ०] चुकता। बेबाक।
**मुहा०**—अदा करना=पालन या पूरा करना। जैसे—क़र्ज़ अदा करना।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १ हाव भाव। नखरा। २ ढंग। तर्ज़।

**अदाई***—वि० [अ० अदा] १ ठगा। २ चालबाज।

**अदाग***—वि० [सं० अ + अ० दाग] १ बेदाग। साफ़। २ निर्दोष। पवित्र।

**अदागी***—वि० दे० "अदाग"।

**अदाता**—संज्ञा पु० [सं०] कृपण। कंजूस।

**अदान***—वि० [सं० अ + फ़ा० दाना] अनजान। नादान। नासमझ।

**अदानी**—वि० [सं०] कंजूस। कृपण। (साहित्य)

**अदायगी**—संज्ञा स्त्री० [अ० अदा] ऋण आदि का चुकाया जाना।

**अदायाँ**—वि० [हिं० अ + दायाँ] जो दायाँ या अनुकूल न हो। प्रतिकूल। विरुद्ध। वाम।

**अदालत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० अदालती] १. न्यायालय। कचहरी। २. न्यायाधीश।
**यौ०**—अदालत खफ़ीफ़ा=वह दीवानी

अदालत जिसमें छोटे मुकदमे लिए जाते हैं। अदालत दीवानी = वह अदालत जिसमें संपत्ति या स्वत्व-संबंधी बातों का निर्णय होता है। अदालत माल= वह अदालत जिसमें लगान और माल-संबंधी मुकदमे दायर किए जाते हैं।

**अदालती**—वि० [ अ० अदालत ] १ अदालत का। २ जो अदालत करे। मुकदमा लड़नेवाला। ३ अदालत संबंधी।

**अदाँव**- संज्ञा पु० [ सं० अ + हिं० दाँव ] बुरा दाँव पेंच। असमंजस। कठिनाई।

**अदावत** - संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शत्रुता। दुश्मनी। वैर। विरोध।

**अदावती**—वि० [ अ० अदावत ] १ जो अदावत रक्खे। २ विरोधजन्य। द्वेषमूलक।

**अदाह***—संज्ञा स्त्री० [ अ० अदा ] हाव भाव। नखरा।

**अदित***—संज्ञा पु० दे० "आदित्य"।

**अदिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ प्रकृति। २ पृथ्वी। ३ दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जो देवताओं की माता है। ४ पुनर्वसु। ५ अंतरिक्ष। ६ माता। ७ पिता।

**अदितिसुत**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ देवता। २ सूर्य्य।

**अदिन**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ बुरा दिन। संकट या दुःख का समय। २ अभाग्य।

**अदिव्य**—वि० [ सं० ] १ लौकिक। साधारण। २ बुरा।

**अदिव्य नायक**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० अदिव्या ] नायक जो देवता न हो, मनुष्य हो। ( साहित्य )

**अदिष्ट***-वि० सं० पुं० दे० "अदृष्ट"।

**अदिष्टी***—वि० [ सं० अ + दृष्टि ] १. अदूरदर्शी। मूर्ख। २ अभागा। बदकिस्मत।

**अदीठ***—वि० [ सं० अदृष्ट ] बिना देखा हुआ। गुप्त। छिपा हुआ।

**अदीन** —वि० [ सं० ] १ दीनतारहित। २ नम्र। प्रचंड। निडर। ३ ऊँची तबीअत का। उदार।

**अदीयमान** —वि० [सं०] जो न दिया जाय या न दिया जा सके।

**अदीह*** —वि० [ हिं० अ+दीर्घ ] छोटा। सूक्ष्म।

**अदुंद*** —वि० [ सं० अद्वंद्व ] प्रा० अदुंद ] १ द्वंद्वरहित। निर्द्वंद्व। बिना झगड़े का। बाधारहित। २ शांत। निश्चिंत। ३ बेजोड़। अद्वितीय।

**अदुतिय** —वि० दे० "अद्वितीय"।

**अदूजा** —वि० दे० "अद्वितीय"।

**अदूरदर्शी**—वि० [ सं० ] जो दूर तक न सोचे। स्थूलबुद्धि।

**अदूषण** -वि० [ सं० ] निर्दोष। शुद्ध।

**अदूषित** -वि० [सं०] निर्दोष। शुद्ध।

**अदृश्य**—वि० [ सं० ] १ जो दिखाई न दे। अलक्ष्य। २ जिसका ज्ञान इंद्रियों को न हो। अगोचर। ३ लुप्त। गायब।

**अदृष्ट**—वि० [ सं० ] १ न देखा हुआ। २ लुप्त। अंतर्द्धान। गायब। संज्ञा पु० १ भाग्य। किस्मत। २. अग्नि और जल आदि से उत्पन्न आपत्ति। जैसे, आग लगाना, बाढ़ आना।

**अदृष्टपूर्व**-वि० [सं०] १ जो पहले न देखा गया हो। २ अद्भुत। विलक्षण।

**अदृष्टवाद**—संज्ञा पु० [ सं० ] परलोक आदि परोक्ष बातों का सिद्धांत।

**अदृष्टार्थ**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह शब्द-प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का साक्षात् इस संसार में न हो, जैसे, स्वर्ग या परमात्मा।

**अदेख***—वि० [ सं० अ=नहीं + हिं० देखना ] १ छिपा हुआ। अदृश्य। गुप्त। २ न देखा हुआ। अदृष्ट। ३ जिसने न देखा हो।

**अदेखी** —वि० [ सं० अ=नहीं + हिं० देखना ] जो न देख सके। डाही। द्वेषी। ईर्षालु।

**अदेय** —वि० [ सं० ] न देने योग्य। जिसे दे न सकें।

**अदेस*** —संज्ञा पु० [ सं० आदेश ] १ आज्ञा। आदेश। २ प्रणाम। दंडवत। ( साधु )

**अदेह** —वि० [ सं० ] बिना शरीर का। संज्ञा पु० कामदेव।

**अदोख***—वि० दे० "अदोष"।

**अदोखिल***—वि० [ सं० अदोष ] निर्दोष।

**अदोष*** —वि० [ सं० ] १ निर्दोष। निष्कलंक। बेऐब। २. निरपराध।

**अदौरी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उड़द+ बरी ] उर्द की सुखाई हुई बरी।

**अद्द***—वि० दे० 'अर्द्ध'।

**अद्धरज***—संज्ञा पु० दे० "अध्वर्यु"।

**अद्धा** —संज्ञा पु० [ सं० अर्द्ध ] १. किसी वस्तु का आधा भाग। २. वह बोतल जो पूरी बोतल की आधी हो।

**अद्धी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अर्द्ध ] १ दमड़ी का आधा। एक पैसे का सोलहवाँ भाग। २. एक बारीक और चिकना कपड़ा।

**अद्भुत** —वि० [ सं० ] आश्चर्य-जनक। विलक्षण। विचित्र। अनोखा। संज्ञा पु० काव्य के नौ रसों में एक जिसमें विस्मय की परिपुष्टता दिखलाई जाती है।

**अद्भुतालय**—संज्ञा पु० दे० "अजायबघर"

**अद्भुतोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय के ऐसे गुणों का उल्लेख किया जाय जिनका होना उपमान में कभी संभव न हो।

**अद्य**—क्रि० वि० [सं०] अब। अभी।

**अद्यतन**—वि० [सं०] १ आजकल का। वर्त्तमान समय का। २. इस समय तक का।

**अद्यापि**—क्रि० वि० [सं०] आज भी। अभी तक। आज तक।

**अद्यावधि**—क्रि० वि० [सं०] अब तक।

**अद्रव्य**—सं० पु० [सं०] सत्ताहीन पदार्थ। अवस्तु। असत्। शून्य। अभाव।
वि० द्रव्य या धन रहित। दरिद्र।

**अद्रा***—संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।

**अद्रि**—संज्ञा पु० [सं०] पर्वत। पहाड़।

**अद्रितनया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २ गंगा। ३ २३ वर्णों का एक वृत्त।

**अद्वितीय**—वि० [सं०] १ अकेला। एकाकी। २ जिसके ऐसा दूसरा न हो। बेजोड़। अनुपम। ३ प्रधान। मुख्य। ४ विलक्षण।

**अद्वैत**—वि० [सं०] १ एकाकी। अकेला। २ अनुपम। बेजोड़।
संज्ञा पु० ब्रह्म। ईश्वर।

**अद्वैतवाद**—संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें चैतन्य या ब्रह्म के अतिरिक्त और किसी वस्तु या तत्त्व की वास्तव सत्ता नहीं मानी जाती और आत्मा और परमात्मा में भी कोई भेद नहीं माना जाता। (वेदान्त)

**अद्वैतवादी**—संज्ञा पु० [सं०] अद्वैत मत को माननेवाला। वेदाती।

**अधः**—अव्य० [सं०] नीचे तले।
संज्ञा स्त्री० पैर के नीचे की दिशा।

**अधःपतन**—संज्ञा पु० [सं०] १ नीचे गिरना। २. अवनति। अधःपात। ३ दुर्दशा। दुर्गति। ४. विनाश।

**अधःपात**—संज्ञा पु० [सं०] १ नीचे गिरना। पतन। २ अवनति। दुर्दशा।

**अधः स्वस्तिक**—संज्ञा पु० [सं०] शीर्ष-विन्दु के ठीक विपरीत दिशा का या नीचे का विंदु जो क्षितिज का दक्षिणी ध्रुव है।

**अध***—अव्य० दे० 'अधः"।
वि० [सं०अर्द्ध,प्रा० अद्ध] "आधा" शब्द का संकुचित रूप। आधा। (यौगिक में) जैसे, *अधकचरा, अधखुला।

**अधकचरा**—वि० [सं० अर्द्ध + हिं० कच्चा] १ अपरिपक्व। २ अधूरा। अपूर्ण। ३ अकुशल। अदक्ष।
वि० [सं० अर्द्ध+हिं० कचरना] आधा कुटा या पीसा हुआ। दरदरा।

**अधकपारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध=आधा + कपाल = सिर] आधे सिर का दर्द। आधा सीसी। सूर्यावर्त्त।

**अधकरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+ कर] मालगुजारी महसूल या किराए की आधी रकम जो किसी नियत समय पर दी जाय। अठनिया किस्त।

**अधकहा**—वि० [हिं० आधा + कहना] अस्पष्ट रूप से आधा कहा हुआ।

**अधखिला**—वि० [हिं० आधा + खिलना] आधा खिला हुआ। अर्द्ध-विकसित।

**अधखुला**—वि० [हिं० आधा + खुला] आधा खुला हुआ।

**अधगति** संज्ञा स्त्री० दे० "अधोगति"।

**अधघट***—वि० [हिं० आधा+घटना] जिससे ठीक अर्थ न निकले। अटपट।

**अधचरा**—वि०[हिं०आधा+ चरना] आधा चरा या खाया हुआ।

**अध-जला**—वि० [हिं० आधा + जलना] जो पूरा नहीं, बल्कि आधा ही जला हो।

**अधड़ा***—वि० [सं० अधर] [स्त्री० अधड़ी] १ न ऊपर न नीचे का। निराधार। २ ऊटपटाँग। बे सिर पैर का। असबद्ध।

**अधड़ी**—वि० स्त्री० [सं० अधर] १. अधर में पड़ा हुआ। २ ऊटपटाँग। असम्बद्ध।

**अधन*** वि० पु० [सं० अ+धन] निर्धन। कंगाल। गरीब।

**अधनिया**—वि० [हिं० आध + आना] आध आने या पैसे दो का।

**अधन्नी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा + आना] आध आने का सिक्का।

**अधपई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधा+ पाव] एक सेर के आठवें हिस्से की तौल या बाट।

**अधफर**—संज्ञा पु० [सं० अर्द्ध+ फलक] १ बीच का भाग। अधर। २ अंतरिक्ष।

**अधबना**—वि० [हिं० आधा+बनना] आधा बना हुआ।

**अधबर**—संज्ञा पु०[हिं० आधा+बाट] १. आधा मार्ग। आधा रास्ता। २ बीच।

**अधबुध**—वि०[सं० अर्द्ध+बुध जिसका ज्ञान अधूरा हो।

**अधबैसू***—वि० पु० [सं० अर्द्ध + वयस्] [स्त्री० अधबैसी] अधेड़। मध्यम अवस्था की (स्त्री)।

**अधम** वि० [सं०] १ नीच। निकृष्ट। बुरा। २ पापी दुष्ट।

**अधमाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० अधम

+हिं० ई (प्रत्यय)] नीचता। अध०, मेला।

**अधमता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधम का भाव। नीचता। खोटाई।

**अधमरा**—वि० [हिं० आधा + मरा] आधा मरा हुआ। मृतप्राय। अधमुआ।

**अधमर्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] ऋण लेनेवाला आदमी कर्जदार या ऋणी।

**अधमाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० अधम] दे० "अधमई"।

**अधमा दूती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दूती जो कटु बातें कहकर नायक या नायिका का संदेशा एक दूसरे को पहुँचावे।

**अधमा नायिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो प्रिय या नायक के हितकारी होने पर भी उसके प्रति कुव्यवहार करे।

**अधमुआ**—वि० दे० "अधमरा"।

**अधमुख**—संज्ञा पुं० दे० "अधमुख"।

**अधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे का ओठ। २ ओंठ।

संज्ञा पुं० [सं० अ = नहीं + हिं० धरना] १ बिना आधार का स्थान। अंतरिक्ष।

**मुहा०**—अधर में झूलना, पड़ना या लटकना=१. अधूरा रहना। पूरा न होना। २ पसोपेश में पड़ना। दुविधा मे पड़ना। २ पाताल।

वि० १. जो पकड़ में न आवे। चंचल। २. नीच। बुरा।

**अधरज**—संज्ञा पुं० [सं० अधर + रज] १. ओठों की ललाई। ओठों की सुर्खी। २. ओठ पर की पान या मिस्सी की धड़ी।

**अधरपान**—संज्ञा पुं० [सं०] ओठों का चुम्बन।

**अधरम**—संज्ञा पुं० दे० 'अधर्म'।

**अधरात**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आधी +रात] आधी रात।

**अधराधर**—संज्ञा पुं० [सं० अध+अधर] नीचे होंठ।

**अधरोत्तर**—वि० [सं०] १. ऊँचा-नीचा। २. बीहड़। ३. कमोबेश।

**अधर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य्य। कुकर्म दुराचार। बुरा-काम।

**अधर्मात्मा**—वि० पुं० [सं०] अधर्मी।

**अधर्मी**—संज्ञा पुं० सं० अधर्मिन्] [स्त्री० अधर्मिणी] पापी। दुराचारी।

**अधवा**—संज्ञा स्त्री० [सं० अ + धव =पति] बिना पति की स्त्री। विधवा। राँड़।

**अधसेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० आध+सेर] दो पाव का मान।

**अधस्तल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीचे का कोठरी। २. नीचे की तह। ३ तहखाना।

**अधाधुन्ध**—क्रि० वि० दे० "अंधाधुंध"।

**अधावट**—वि० पुं० [हिं० आध+औट] आधा औटा हुआ। (दूध)

**अधार**—संज्ञा पुं० दे० "आधार"।

**अधारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आधार] १. आश्रय। सहारा। आधार। २. काठ के डंडे में लगा हुआ पीढ़ा जिसे साधु लोग सहारे के लिए रखते हैं। ३. यात्रा का सामान रखने का झोला या थैला।

वि० स्त्री० जी को सहारा देनेवाली। प्रिय।

**अधार्मिक**—वि० [सं०] १ जो धार्मिक न हो। २ अधर्मी। दुराचारी।

**अधि**—एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं—१. ऊपर। ऊँचा। जैसे—अधिराज। अधिकरण। २ प्रधान। मुख्य। जैसे—अधिपति। ३. अधिक। ज्यादा। जैसे अधिमास। ४. संबंध में। जैसे—आध्यात्मिक।

**अधिक**—वि० [सं०] १. बहुत। ज्यादा। विशेष। २ बचा हुआ। फाल्तू।

संज्ञा पुं० १ वह अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक वर्णन करते हैं। २ न्याय में एक निग्रहस्थान।

**अधिकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुतायत। ज्यादती। विशेषता। बढ़ती। वृद्धि।

**अधिकमास**—संज्ञा पुं० [सं०] मलमास। लौंद का महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्य्यंत ऐसा काल जिसमें संक्रांति न पड़े। (प्रति तीसरे वर्ष)।

**अधिकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आधार। आसरा। सहारा। २. व्याकरण में कर्त्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार। सातवाँ कारक। ३. प्रकरण। शीर्षक। ४. दर्शन में आधार विषय। अधिष्ठान। ५. अधिकार में करना।

**अधिकांग**—वि० [सं०] जिसे कोई अवयव अधिक हो। जैसे—छँगुर।

**अधिकांश**—संज्ञा पुं० [सं०] अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा।

वि० बहुत।

क्रि० वि० १ ज्यादातर। विशेषकर। २. अक्सर। प्रायः।

**अधिकाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० अधिक + हिं० आई (प्रत्य०)] १. ज्यादती। अधिकता। बहुतायत। २. बड़ाई। महिमा।

**अधिकाना***—क्रि० अ० [सं० अधिक] अधिक होना। ज्यादा होना। बढ़ना।

**अधिकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १

कार्यभार । प्रभुत्व । आधिपत्य । प्रधानता । २. प्रकरण । ३. स्वत्व । हक । अख्तियार । ४ कब्जा । प्राप्ति । ५. सामर्थ्य । शक्ति । ६ योग्यता । जानकारी । लियाकत । ७ प्रकरण । शीर्षक । ८. रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता । (नाट्यशास्त्र)

*वि० पुं० [ स० अधिक ] अधिक ।

**अधिकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० अधिकारिन् ] [ स्त्री० अधिकारिणी ] १. प्रभु । स्वामी । मालिक । २. स्वत्वधारी । हकदार । ३. योग्यता या क्षमता रखनेवाला । उपयुक्त पात्र । ४. किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता । पंडित । ५. नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त होता है ।

**अधिकृत**—वि० [ स० ] अधिकार में आया हुआ । उपलब्ध ।

संज्ञा पुं० अधिकारी । अध्यक्ष ।

**अधिकौहाँ***—वि० [ हिं० अधिक + औहाँ (प्रत्य०) ] बराबर बढ़ता रहनेवाला ।

**अधिक्रम**—सज्ञा पु० [सं०] आरोहण । चढ़ाव ।

**अधिगत**—वि० [ स० ] १ प्राप्त । पाया हुआ । २. जाना हुआ । ज्ञात ।

**अधिगम**—संज्ञा पु० [ स० ] १. पहुँच । ज्ञान । गति । २ परोपदेश द्वारा प्राप्त ज्ञान । ३ ऐश्वर्य । बड़प्पन ।

**अधित्यका**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि । ऊँचा पहाड़ी मैदान ।

**अधिदेव**—सज्ञा पुं० [ स० ] [ स्त्री० अधिदेवी ] इष्टदेव । कुलदेव ।

**अधिदैव**—वि० [ स० ] दैविक । अधिदैविक ।

**अधिदैवत**—संज्ञा पु० [ स० ] वह प्रकरण या मन्त्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्य इत्यादि देवताओं के नाम-कीर्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले ।

वि० दैवत संबंधी ।

**अधिनायक**—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० अधिनायिका ] [ भाव० अधिनायकता, अधिनायकत्व ] १. सरदार । मुखिया । २ किसी आधुनिक राज्य का वह सर्वप्रधान अधिकारी जो राज्य के सब कार्यों का संचालन अपनी ही इच्छा से करता हो । डिक्टेटर ।

**अधिनायकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अधिनायक ] अधिनायक का कार्य पद या भाव ।

**अधिनायकतंत्र**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह राज्यप्रणाली जिसमें राज्य के सब कार्य उसके अधिनायक की ही इच्छा और आज्ञा से होते हो ।

**अधिप**—सज्ञा पुं० [स०] १. स्वामी । मालिक । २ सरदार । मुखिया । ३. राजा ।

**अधिपति**—सज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० अधिपत्नी ] १ मालिक । स्वामी । २. नायक । अग्रसर । मुखिया ।

**अधिभौतिक**—वि० दे० "आधिभौतिक" ।

**अधिमास**—सज्ञा पु० दे० 'अधिमास" ।

**अधिया**—सज्ञा स्त्री० [ हिं० आधा ] १. आधा हिस्सा । २. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी । ३. एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है ।

संज्ञा पु० गाँव में आधी पट्टी का मालिक ।

**अधियान**—सज्ञा पु० [ हिं० आधा ] जप करने की गोमुखी । जपनी ।

**अधियाना**—क्रि० स० [हिं० आधा] आधा करना । बराबर हिस्सों में बाँटना ।

**अधियार**—संज्ञा पु० [ हिं० आधा ] [ स्त्री० अधियारिन ] १. किसी जायदाद में आधा हिस्सा । २. आधे का मालिक । ३. वह जमींदार या असामी जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो ।

**अधियारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अधियार ] किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी ।

**अधिरथ**—सज्ञा पु० [ स० ] १ रथ हाँकने वाला । गाड़ीवान । २ बड़ा रथ ।

**अधिराज**—संज्ञा पु० [ सं० ] राजा । बादशाह । महराज ।

**अधिराज्य**—संज्ञा पु० [ स० ] साम्राज्य ।

**अधिरात***—सज्ञा स्त्री० [ हिं० आधी रात ] आधी रात । मध्य रात्रि ।

**अधिरोहण**—सज्ञा पु० [सं०] चढ़ना सवार होना । ऊपर उठना ।

**अधिवर्ष**—सज्ञा पुं० [ स० ] लौंद का वर्ष ।

**अधिवास**—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० अधिवासित ] १. रहने का जगह । २. खुशबू । ३ विवाह से पहले तेल हल्दी चढ़ाने की रीति । ४. उबटन । ५. धोती की तरह पहनने का वस्त्र ।

**अधिवासी**—सज्ञा पु० [ स० अधिवासिन् ] निवासी । रहनेवाला ।

**अधिवेशन**—सज्ञा पु० [ स० ] सभा आदि की बैठक । सभा । जलसा ।

**अधिष्ठाता**—सज्ञा पु० [ स० अधिष्ठातृ ] [ स्त्री० अधिष्ठात्री ] १. अध्यक्ष । मुखिया । प्रधान । २. वह । जिसके हाथ मे किसी कार्य्य का भार हो । ३ ईश्वर ।

**अधिष्ठान**—संज्ञा पु० [ स० ] [ वि० अधिष्ठित ] १ वासस्थान । रहने की स्थान । २ नगर । शहर । ३. स्थिति ।

रहाइस । पड़ाव । ४. आधार । सहारा । ५. वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो । जैसे रज्जु में सर्प और शुक्ति में रजत का । ६ सांख्य में भोक्ता और भोग का संयोग । ७ अधिकार । शासन । राजसत्ता ।

**अधिष्ठान शरीर**—संज्ञा पुं० [सं०] वह सूक्ष्म शरीर जिसमें मरण के उपरांत पितृलोक में आत्मा का निवास रहता है ।

**अधिष्ठित**—वि० [ सं० ] १ ठहरा हुआ । स्थापित । २ निर्वाचित । नियुक्त ।

**अधीत**—वि० [ सं० ] जो पढ़ा जा चुका हो ।

**अधीन**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अधीनता ] [ स्त्री० अधीना ] १ आश्रित । मातहत । २ वशीभूत । आज्ञाकारी । ३ विवश । लाचार । ४ अवलंबित । संज्ञा पुं० दास । सेवक ।

**अधीनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. परवशता । परतंत्रता । मातहती । २ लाचारी । बेबसी । ३ दीनता । गरीबी ।

**अधीनता**—क्रि० अ० [ हिं० अधीन+ ता ( प्रत्य० ) ] अधीन होना । वश में होना ।

**अधीनना***—क्रि० अ० [हिं० अधीन] अधीन होना ।

क्रि० स० किसी को अपने अधीन करना ।

**अधीर**—वि० पुं० [सं०] [ संज्ञा अधीरता ] १. धैर्यरहित । घबराया हुआ । उद्विग्न । २. बेचैन । व्याकुल । विह्वल । ३. चंचल । उतावला । आतुर । ४. असंतोषी ।

**अधीरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जो नायक में नारी-विलास-सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर प्रत्यक्ष कोप करे ।

**अधीश, अधीश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] [ स्त्री० अधीश्वरी ] १ मालिक । स्वामी । अध्यक्ष । २ भूपति । राजा ।

**अधुना**—क्रि०वि० [सं०] [ वि० आधुनिक] संप्रति । आजकल । इन दिनों ।

**अधुनातन**—वि० [ सं० ] वर्तमान समय का । हाल का । 'सनातन' का उलटा ।

**अधूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अकंपित । २ निर्भय । निडर । ३ ढीठ । ४. उचक्का ।

**अधूरा**—वि० [ हिं० अध + पूरा ] [ स्त्री० अधूरी ] अपूर्ण । जो पूरा न हो । असमाप्त ।

**अधेड़**—वि० [ हिं० आधा + एड़ (प्रत्य०) ] ढलती जवानी का । बुढ़ापे और जवानी के बीच का ।

**अधेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० आधा + एला (प्रत्य०) ] आधा पैसा ।

**अधेली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आधा + एली (प्रत्य०)] रुपये का आधा सिक्का । अठन्नी ।

**अधैर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धैर्य का न होना । अधीरता ।

**अधो**—अव्य० दे० "अधः" ।

**अधोगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ पतन । गिराव । २ अवनति । दुर्दशा ।

**अधोगमन**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० अधोगामी ] १. नीचे जाना । २ अवनति । पतन ।

**अधोगामी**—वि० [ सं० अधोगामिन् ] [ स्त्री० अधोगामिनी ] १ नीचे जानेवाला । २. अवनति की ओर जानेवाला ।

**अधोतर**†—संज्ञा पुं० [ सं० अधः + उत्तर ] दोहरी बुनावट का एक देशी कपड़ा ।

**अधोमार्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नीचे का रास्ता । २. सुरंग का रास्ता । ३ गुदा ।

**अधोमुख**—वि० [ सं० ] १. नीचे मुँह किए हुए । २ औंधा । उलटा ।

क्रि० वि० औंधा । मुँह के बल ।

**अधोर्ध्व**—क्रि० वि० [ सं०] ऊपर-नीचे ।

**अधोलंब**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह खड़ी रेखा जो किसी दूसरी सीधी आड़ी रेखा पर आकर इस प्रकार गिरे कि पार्श्व के दोनों कोण समकोण हों । लंब ।

**अधोवस्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीचे के अंगों में पहनने का कपड़ा । धोती ।

**अधोवायु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपानवायु । गुदा की वायु । पाद ।

**अध्मान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पेट अफरने का रोग । अफरा ।

**अध्यक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० अध्यक्षता ] १. स्वामी । मालिक । २ नायक । सरदार । मुखिया । ३ अधिकारी । अधिष्ठाता ।

**अध्यच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "अध्यक्ष" ।

**अध्ययन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पठन-पाठन । पढ़ाई ।

**अध्यवसाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ लगातार उद्योग । दृढ़तापूर्वक किसी काम में लगा रहना । २ उत्साह । ३ निश्चय ।

**अध्यवसायी**—वि० [ सं० अध्यवसायिन् ] [स्त्री० अध्यवसायिनी ] १ लगातार उद्योग करनेवाला । उद्यमी । २. उत्साही ।

**अध्यस्त**—वि० [ सं० ] वह जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो; जैसे रज्जु में सर्प का । ( वेदांत )

**अध्यात्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म-विचार । ज्ञानतत्त्व । आत्मज्ञान ।

**अध्यात्मवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अध्यात्मवादी ] वह सिद्धान्त

जिसमें ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान ही मुख्य माना जाता है।

**अध्यापक**—संज्ञा पुं० [सं०] [ स्त्री० अध्यापिका ] शिक्षक। गुरु। पढ़ानेवाला। उस्ताद।

**अध्यापकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं०अध्यापक + ई] पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।

**अध्यापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिक्षण। पढ़ाने का कार्य।

**अध्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ ग्रंथ-विभाग। २ पाठ। सर्ग। परिच्छेद।

**अध्यारोप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक व्यापार को दूसरे में लगाना। दोष। अध्यास। २. झूठी कल्पना। अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम।

**अध्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अध्यारोप। मिथ्याज्ञान।

**अध्यासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ उपवेशन। बैठना। २. आरोपण।

**अध्याहार**—संज्ञा पुं० [सं० ] १ तर्क-वितर्क। विचार। बहस। २. वाक्य को पूरा करने के लिए उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना। ३ अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया।

**अध्यूढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले। ज्येष्ठा पत्नी।

**अध्येय**—वि० [ सं० ] पढ़ने योग्य।

**अध्रुव**—वि० [ सं० ] १. डाँवाडोल। अस्थिर। २. अनिश्चित। बेठौर ठिकाने का।

**अध्वंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यात्री। मुसाफिर।

**अध्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ।

**अध्वर्यु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।

**अन्**—अव्य० [सं०] अभाव या निषेध-सूचक अव्यय। जैसे अनंत, अनधिकार।

**अनंग**—वि० [ सं० अनंग ] [ स्त्री० अनंगना] बिना शरीर का। देहरहित। • संज्ञा पुं० कामदेव।

**अनंगक्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रति। संभोग। २. छंद-शास्त्र में मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद।

**अनंगना***—क्रि० अ० [ सं० ] शरीर की सुध छोड़ना। सुधबुध भूलना।

**अनंगशेखर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दंडक नामक वर्ण वृत्त का एक भेद।

**अनंगारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**अनंगी**—वि० [ सं० अनंगिन् ] [ स्त्री० अनंगिनी ] कामी। कामुक। वि० सं० [अनंग + ई (प्रत्य०)] अंगरहित। बिना देह का। संज्ञा पुं० १ ईश्वर। २ कामदेव।

**अनंत**—वि० [ सं० ] १ जिसका अंत या पार न हो। असीम। बेहद। बहुत बड़ा। २ बहुत अधिक। ३. अविनाशी। संज्ञा पुं० १ विष्णु। २. शेषनाग। ३. लक्ष्मण। ४ बलराम। ५ आकाश। ६.बाहु का एक गहना। ७ सूत का गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी या अनंत के व्रत के दिन बाहु में पहनते हैं।

**अनंतचतुर्दशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भाद्र-शुक्ल चतुर्दशी।

**अनंतमूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पौधा या बेल जो रक्त शुद्ध करने की औषध है।

**अनंतर**—क्रि० वि० [ सं० ] १ पीछे। उपरांत। बाद। २. निरंतर। लगातार।

**अनंतवीर्य**—वि० [ सं० ] अपार पौरुष वाला।

**अनंता**—वि० स्त्री० [ सं० ] जिसका अंत या पारावार न हो। संज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ पार्वती। ३. कलियारी। ४ अनंतमूल। ५. दूब। ६ पीपर। ७ अनंतसूत्र।

**अनंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौदह वर्णों का एक वृत्त। * २ दे० "आनंद"।

**अनंदना***—क्रि० अ० [ सं० आनंद ] आनंदित होना। खुश होना। प्रसन्न होना।

**अनंदी**—संज्ञा पुं० [ सं० आनंद ] १ एक प्रकार का धान। २ दे० "आनंदी"।

**अनंभ**—वि० [ सं० ] बिना पानी का। * वि० [सं० अन् = नहीं + अंह = विघ्न ] निर्विघ्न। बाधारहित।

**अन***—क्रि० वि० [ सं० अन् ] बिना। बगैर। वि० [ सं० अन्य ] अन्य। दूसरा।

**अनअहिवात**—संज्ञा पुं० [ सं० अन् = नहीं + हिं० अहिवात = सौभाग्य ] वैधव्य। विधवापन। रँडापा।

**अनइस**—संज्ञा पुं० दे० "अनैस"।

**अनऋतु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अन् + ऋतु] १ विरुद्ध ऋतु। बेमौसिम। अकाल। २. ऋतुविपर्य्यय। ऋतु के विरुद्ध कार्य।

**अनक***—संज्ञा पुं० दे० "आनक"।

**अनकना***—क्रि० स० [ सं० आकर्णन ] १ सुनना। २ चुपचाप या छिपकर सुनना।

**अनकहा**—वि० [ सं० अन् = नहीं + हिं० कहना ] [ स्त्री० अनकही ] १ बिना कहा हुआ। अकथित। अनुक्त।

**मुहा०**—अनकही देना=चुपचाप होना। २ जो किसी का कहना न माने।

**अनख**—संज्ञा पुं० [ सं० अन् = बुरा + अक्ष=आँख ] १. क्रोध। कोप। नाराजी। २ दुःख। ग्लानि। खिन्नता। ३. ईर्ष्या। द्वेष। डाह। ४ झंझट। अनरीति। ५ डिठौना। काजल की बिंदी जिसे डीठ (नजर) से बचाने के लिये माथे में लगाते हैं।

वि० [ सं० अ + नख ] बिना नख का।

**अनखना***—क्रि० अ० [ हिं० अनख ] क्रोध करना। रुष्ट होना। रिसाना।

**अनखा†**—संज्ञा पुं० [ हिं० अनख ] काजल की वह बिंदी जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाई जाती है।

**अनखाना***—क्रि० अ० [ हिं० अनख ] क्रोध करना। रिसाना। रुष्ट होना। क्रि० स० अप्रसन्न करना। नाराज करना।

**अनखाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अनखाना + आहट ( प्रत्य० ) ] अनख दिखाने की क्रिया या भाव। नाराजगी। क्रोध।

**अनखी*†**—वि० [ हिं० अनख ] क्रोधी। गुस्सावर। जो जल्दी नाराज हो।

**अनखुला**—वि० [ हिं० अन + खुलना ] जो खुला न हो। बंद।

**अनखौंहा*†**—वि० [ हिं० अनख ] [ स्त्री० अनखौंहीं ] १ क्रोध से भरा। कुपित। रुष्ट। २. चिड़चिड़ा। जल्दी क्रोध करनेवाला। ३ क्रोध दिलानेवाला। ४ अनुचित। बुरा।

**अनगढ़**—वि० [ सं० अन्=नहीं + हिं० गढ़ना ] १ बिना गढ़ा हुआ। २ जिसे किसी ने बनाया न हो। स्वयंभू। ३. बेडौल। भद्दा। बेढंगा। ४. उजड्ड। अक्खड़। ५. बेतुका। अंडबंड।

**अनगढ़ा**—वि० दे० "अनगढ़"।

**अनगन*** -वि० [ सं० अन् + गणन ] [ स्त्री० अनगनी ] अगणित। बहुत।

**अनगना, अनगनियाँ**—वि० [ सं० अन्=नहीं + हिं० गिनना ] न गिना हुआ। अगणित। बहुत। संज्ञा पुं० गर्भ का आठवाँ महीना।

**अनगवना**—क्रि० अ० [ हिं० अन ( प्रत्य० ) = नहीं + गवन = जाना ] रुककर देर करना। जान बूझकर विलंब करना।

**अनगाना**—क्रि० अ० दे० "अनगवना"।

**अनगिन**—वि० दे० "अनगिनत"।

**अनगिनत**—वि० [ सं० अन् = नहीं + गिनना ] जिसकी गिनती न हो। असंख्य। बेशुमार। बहुत।

**अनगिना**—वि० पुं० [ सं० अन् + हिं० गिनना ] १. जो गिना न गया हो। २. असंख्य।

**अनगैर, अनगैरी***—वि० [अ० ग़ैर ] गैर। पराया।

**अनघ** वि० [ सं० ] १. पाप रहित। निर्दोष। २ शुद्ध। पवित्र। संज्ञा पुं० वह जो पाप न हो। पुण्य।

**अनघेरी***—वि० [ सं० अन् + हिं० घेरना ] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।

**अनघोर***—संज्ञा पुं० [ सं० घोर ] अंधेर। अत्याचार। ज्यादती।

**अनघोरी**—क्रि० वि० [ ? ] १. चुपचाप। २ अचानक। एकदम से।

**अनचाहत***—वि० [ सं० अन् = नहीं + हिं० चाहना ] न चाहनेवाला। जो प्रेम न करे।

**अनचाहा**—वि० [हिं० अन + चाहना] जिसकी इच्छा न की जाय।

**अनचीन्हा*†**—वि० [सं० अन् + हिं० चीन्हना ] अपरिचित। अज्ञात।

**अन चैन**—संज्ञा पुं० [हिं० + अनचैन] बेचैनी।

**अनजनमा**—वि० [ हिं० अन + जनमना ] १ जिसका जन्म न हुआ हो। २. ईश्वर का एक विशेषण।

**अनजान**—वि [ सं० अन् + हिं० जानना ] १. अज्ञानी। नादान। नासमझ। २ अपरिचित। अज्ञात।

**अनट***—सं० पुं० [ सं० अनृत ] उपद्रव। अनीति। अन्याय। अत्याचार।

**अनडीठ***—वि० [ सं० अन् + दृष्ट ] बिना देखा।

**अनत**—वि० [सं०] बिना झुका। सीधा। *क्रि० वि० [ सं० अन्यत्र] और कहीं। दूसरी जगह में।

**अनति**—वि० [ सं० ] कम। थोड़ा। संज्ञा स्त्री० नम्रता का अभाव। अहंकार।

**अनदेखा**-वि० पुं० [ सं० अन् + हिं० देखना] [स्त्री० अनदेखी ] बिना देखा हुआ।

**अनद्यतन भविष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में भविष्यकाल का एक भेद।

**अनद्यतन भूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में भूतकाल का एक भेद।

**अनधिकार**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अधिकार का अभाव। अधिकारी न होना। २. बेबसी। लाचारी। ३. अयोग्यता। वि० १ अधिकाररहित। २. अयोग्य। यौ०—अनधिकारचर्चा = वह बात कहना जिसे कहने का किसी को अधिकार न हो।

**अनधिकार चेष्टा**—ऐसा प्रयत्न जिसे करने का अधिकार न हो।

**अनधिकारी**—वि० [ सं० अनधिकारिन् ] [ स्त्री० अनधिकारिणी ] १. जिसे अधिकार न हो। २ अयोग्य। अपात्र।

**अनधिकृत**—वि० [ सं० ] जिस पर अधिकार न किया गया हो।

**अनधिगत**—वि० [ सं० ] बिना जाना या समझा हुआ। अज्ञात।

**अनध्यवसाय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अध्यवसाय का अभाव। अतत्परता। ढिलाई। २ किसी एक वस्तु के संबंध में साधारण अनिश्चय का वर्णन किया जाना।

**अनध्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह

दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने का निषेध हो। ( अमावास्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा। ) २. छुट्टी का दिन।

**अनन्नास**—संज्ञा पुं० [ पुर्त० अनानास ] घीकुआँर के समान छोटा पौधा जिसका फल बैगन के बराबर होता है और जिसका स्वाद खटमीठा होता है। फल के छिलके का रंग केसरिया और गूदे का उजला होता है। छिलका कड़ा होता है।

**अनन्य**—वि० [सं०] [ स्त्री० अनन्या] अन्य से संबंध न रखनेवाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन। जैसे—अनन्य भक्त।

संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

**अनन्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अन्य के संबंध का अभाव। २. एकनिष्ठा।

**अनन्वय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काव्य में वह अलंकार जिसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय रूप से कही जाय।

**अनन्वित**—वि० [ सं० ] १. असंबद्ध। पृथक्। २. अंडबंड। अयुक्त।

**अनपच**—संज्ञा पुं० [ सं० अन् = नहीं + पचना ] अजीर्ण। बदहज्मी।

**अनपढ़**—वि० [ सं० अन = नहीं + हिं० पढ़ना ] बेपढ़ा। अपठित। मूर्ख। निरक्षर।

**अनपत्य**—वि०[सं०][स्त्री०अनपत्या] निःसंतान।

**अनपराध**—वि० [ हिं० अन + अपराध ] जिसका कोई अपराध न हो। निर्दोष।

**अनपराधी**—वि० दे० "अनपराध।"

**अनपेक्ष**—वि० [ सं० ] बेपरवा।

**अनपेक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अपेक्षा का न होना। २. लापरवाही।

**अनपेक्षित**—वि० [ सं० ] जिसकी परवा न हो। जिसकी चाह न हो।

**अनपेक्ष्य**—वि० [ सं० ] जो अन्य की अपेक्षा न रखे। जिसे किसी की परवा न हो।

**अनफाँस***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अन + फाँस ] मोक्ष। मुक्ति।

**अनबन**—सं० पुं० [ अन् = नहीं + हिं० बनना ] बिगाड़। विरोध। खटपट।

*वि० १ भिन्न भिन्न। नाना विविध। २ बेठिकाने का। बेढंगा।

**अनबिधा**—वि० [सं० अन् + विद्ध] बिना बेधा या छेद किया हुआ। जैसे, अनबिधा मोती।

**अनबूझ**—वि० [ हिं० अन + बूझना ] १. नासमझ। अज्ञान। २. जो बूझा वा समझा न जा सके।

**अनबेधा**—वि० दे० "अनबिधा"।

**अनबोल**—वि० [ सं० अन् = नहीं + हिं० बोलना ] १. न बोलनेवाला। २. चुप। मौन। ३ गूँगा। ४ जो अपने सुख दुःख को न कह सके। ( पशुओं के लिये )

**अनबोलता**—वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० बोलना ] न बोलनेवाला। गूँगा। बेजबान। ( पशु )

**अन-बोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० अन + बोलना ] बोलचाल या बातचीत न होना।

वि० दे० "अनबोलता"।

**अनब्याहा**—वि० [ सं० अन् = नहीं + ब्याहा ]

[ स्त्री० अनब्याही ] अविवाहित। क्वाँरा।

**अनभल***—संज्ञा पुं० [ सं० अन् = नहीं + हिं० भला ] बुराई। हानि। अहित।

**अनभला**—वि० [ हिं० अन + भला ] बुरा। खराब।

संज्ञा पुं० दे० "अनभल"।

**अनभाय**—वि० दे० "अन भावता"।

**अन-भावता**—वि० [ हिं० अन + भाना ] जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

**अनभिज्ञ**—वि० [ सं० ][स्त्री० अनभिज्ञा संज्ञा अनभिज्ञता] १ अज्ञ। अनजान। मूर्ख। २ अपरिचित। नावाकिफ़।

**अनभिज्ञता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अज्ञता। अनजानपन। अनाड़ीपन। मूर्खता।

**अनभिमत**—संज्ञा पुं० [ सं० अन + अभिमत ] अभिमत का न होना। असम्मति।

**अनभीष्ट**—वि० [ सं० अन् + अभीष्ट ] जो अभीष्ट न हो।

**अनभेदी**—वि० [ हिं० अन + भेदी ] भेद या रहस्य न जाननेवाला।

**अनभो***—संज्ञा पुं० [ सं० अन् = नहीं + भव = होना ] अनहोनी बात। अचंभा। अचरज।

वि० अपूर्व। अलौकिक। अद्भुत।

**अनभोरी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भोर = भुलावा ] भुलावा। बहाली। चकमा।

**अनभ्यस्त**—वि० [ सं० ] १ जिसका अभ्यास न किया गया हो। २ जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।

**अनभ्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अभ्यास का अभाव। मश्क न होना।

**अनमद**—संज्ञा पुं० [ हिं० अन + मद ] मद या अभिमान का अभाव।

वि० जिसे मद या गर्व न हो।

**अनमन, अनमना**—वि० [ सं० अन्य-मनस्क ] १ जिसका जी न लगता हो। उदास। खिन्न। सुस्त। २ बीमार। अस्वस्थ।

**अनमापा***—वि० [ सं० अन् + मापना ] १ जो मापा न गया हो। २. न मापा जाने योग्य।

**अनमाप्या***—वि० दे० "अनमापा"।

**अनमारग***—संज्ञा पु० [ सं० अन् = बुरा + मार्ग ] कुमार्ग।

**अनमिख***—वि० संज्ञा पुं० दे० "अनिमिष"।

**अनमिल***—वि० [ सं० अ न् = नहीं + हिं० मिलना ] बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध।

**अनमिलता**—वि० [ सं० अन् = नहीं + हिं० मिलना ] अप्राप्य। अलभ्य। अदृश्य।

**अनमीलना***—क्रि० स० [ सं० उन्मीलन ] आँख खोलना।

**अनमेल**—वि० [ सं० अन् + हिं० मेल ] १ बेजोड़। असंबद्ध। २ बिना मिलावट का। विशुद्ध।

**अनमोल, अनमोला**—वि० [ सं० अन् + हिं० मोल ] १ अमूल्य। २ मूल्यवान्। बहुमूल्य। कीमती। ३ सुंदर। उत्तम।

**अनय**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ अमंगल। विपद्। २ अनीति। अन्याय।

**अनयन**—वि० [ सं० ] नेत्रहीन। अंधा।

**अनयस**—संज्ञा पु० दे० "अनैस"।

**अनयास***—क्रि० वि० दे० "अनायास"।

**अनरंग***—वि० [ हिं० अन + रंग ] दूसरे रंग का।

**अनरथ***—संज्ञा पु० दे० "अनर्थ"।

**अनरना***—क्रि० स० [ सं० अनादर ] अनादर करना। अपमान करना।

**अनरस***—संज्ञा पु० [ हिं० अन = नहीं + सं० रस ] १. रसहीनता। शुष्कता। २. रुखाई। कोप। मान। ३. मनोमालिन्य। मनमोटाव। अनबन। ४. दुःख। खेद। रंज। ५. रसविहीन काव्य।

**अनरसना***—क्रि० अ० [ हिं० अनरस ] १. उदास होना। २. नाराज होना। ३ दुःखी होना।

**अनरसा***—वि० [ सं० अन् + रस ] अनमना। माँदा। बीमार।
संज्ञा पु० दे० 'अँदरसा"।

**अनराता***—वि० [ सं० अन् = नहीं + हिं० राता ] १ बिना रँगा हुआ। सादा। २. प्रेम में न पड़ा हुआ।

**अनरीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अन् + रीति ] १. कुरीति। कुचाल। बुरी रस्म। २. अनुचित व्यवहार।

**अनरुचि***—संज्ञा स्त्री० दे० "अरुचि"।

**अनरूप***—वि० [ सं० अन् = बुरा + रूप ] १. कुरूप। बदसूरत। २. असमान। असदृश।

**अनर्गल**—वि० [ सं० ] १ बेरोक। बेधड़क। २ व्यर्थ। अंडबंड। ३. लगातार।

**अनर्घ**—वि० [ सं० ] १ बहुमूल्य। कीमती। २ सस्ता।

**अनर्घ्य**—वि० [ सं० ] १. अपूज्य। २ बहुमूल्य। अमूल्य।

**अनर्जित**—वि० [ सं० ] जो अर्जन न किया गया हो। जो अर्जित न हो। जैसे—अनर्जित आय।

**अनर्थ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ विरुद्ध अर्थ। उलटा मतलब। २ कार्य की हानि। नुकसान। ३ विपद। अनिष्ट ४ वह धन जो अधर्म से प्राप्त किया जाय।

**अनर्थक**—वि० [ सं० ] १. निरर्थक। अर्थरहित। २ व्यर्थ। बेमतलब। बेफायदा।

**अनर्थकारी**—वि० [ सं० अनर्थकारिन् ] [ स्त्री० अनर्थकारिणी ] १ उलटा मतलब निकालनेवाला। २. अनिष्टकारी। हानिकारी। ३. उपद्रवी। उत्पाती।

**अनर्ह**—वि० [ सं० ] अयोग्य। अपात्र।

**अनल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ अग्नि। आग। २. तीन की संख्या।

**अनलपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक चिड़िया। कहते हैं कि यह सदा आकाश में उड़ा करती है और वहीं अंडा देती है।

**अनल्प**—वि० [ सं० ] जो अल्प या थोड़ा न हो। बहुत। अधिक।

**अनलमुख**—वि० [ सं० ] जो अग्नि द्वारा पदार्थों को ग्रहण करे।
संज्ञा पु० १ देवता। २. ब्राह्मण।

**अनलस**—वि० [ सं० ] आलस्यरहित। फुर्तीला। चैतन्य।

**अनलायक***—वि० [ सं० अन् = नहीं + अ० लायक ]। नालायक। अयोग्य।

**अनलेख**—वि० [ हिं० अन + लेखना ] जो दिखाई न दे। अगोचर। अलख।

**अनल्प**—वि० [ सं० ] जो अल्प या थोड़ा न हो। बहुत।

**अनवकाश**—संज्ञा पु० [ सं० ] अवकाश या फुरसत न होना।

**अनवच्छिन्न**—वि० [ सं० ] १ अखंडित। अटूट। २. जुड़ा हुआ। संयुक्त।

**अनवट**—संज्ञा पु० [ सं० अंगुष्ठ ] पैर के अंगूठे में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।
संज्ञा पु० [ हिं० अन्धपट ] कोल्हू के बैल की आँखों के ढक्कन। ढोका।

**अनवद्य**—वि० [ सं० ] निर्दोष। बेऐब।

**अनवधान**—संज्ञा पु० [ सं० ] असावधानी। गफलत। बेपरवाही।

**अनवधि**—वि० [ सं० ] असीम। बेहद।
क्रि० वि० सदैव। हमेशा।

**अनवय**—संज्ञा पुं० [सं० अन्वय] १. वंश। कुल। २. दे० "अन्वय"।

**अनवरत**—क्रि० वि० [सं०] निरंतर। सतत। लगातार। हमेशा।

**अनवसर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ फुरसत का न होना। २. कुसमय। बेमौका।

**अनवस्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थितिहीनता। अव्यवस्था। २. आतुरता। अधीरता। ३ न्याय में एक प्रकार का दोष।

**अनवस्थित**—वि० [सं०] १ अधीर। चंचल। अशांत। २ निराधार। निरवलंब।

**अनवस्थिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चंचलता। अधीरता। २ आधारहीनता। ३ समाधि प्राप्त हो जाने पर भी चित्त का स्थिर न होना। (योग)

**अनवाँसना**—क्रि० वि० [सं० अनुवासन] नए बर्तन का पहले पहल काम में लाना।

**अनवाँस**—संज्ञा पुं० [सं० अण्वश] कटी हुई फसल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला। औंमा।

**अनवाँसी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अण्वश] एक बिस्वे का १/२० भाग। बिस्वांसी का बीसवाँ हिस्सा।

**अनवाद***—संज्ञा पुं० [सं० अनु=बुरा+वाद=वचन] १ बुरा वचन। कटु भाषण। २. व्यर्थ की या फालतू बात।

**अनशन**—संज्ञा पुं० [सं०] उपवास। अन्नत्याग। निराहार व्रत।

**अनश्वर**—वि० [सं०] नष्ट न होनेवाला। अटल स्थिर।

**अन-सखरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अन् नहीं+हिं० सखरी] पक्की रसोई। घी में पका हुआ भोजन। निखरी।

**अनसत**—वि० दे० "असत्य"।

**अनसमझा***—वि० [सं० अन्+हिं० समझना] १. जिसने न समझा हो। नासमझ। २ अज्ञात। बिना समझा हुआ।

**अनसहत***—वि० [सं० अन्+हिं० सहना] जो सहा न जाय। असह्य।

**अनसहन**—वि० [हिं० अन+सहना] जो सह न सके।

**अनसाना**—क्रि० अ० दे० "अनखाना"।

**अनसुन**—वि० [सं० अन्+हिं० सुनना] अश्रुत। न सुना हुआ।

**मुहा०**—अनसुनी करना = आनाकानी करना। सुनकर भी न सुनना।

**अनसूया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पराये गुण में दोष न देखना। नुक्ताचीनी न करना। २ ईर्ष्या का अभाव। ३. अत्रि मुनि की स्त्री।

**अनस्तित्व**—संज्ञा पुं० [सं० अन्+अस्तित्व] अस्तित्व का न होना। अभाव।

**अनहद-नाद**—संज्ञा पुं० दे० "अनाहत"।

**अनहित***—संज्ञा पुं० [सं० अन्=नहीं+हित] १ अहित। अपकार। बुराई। २ अहित-चिंतक। शत्रु।

**अनहितू**—वि० [हिं० अनहित] अनहित चाहनेवाला। अशुभचिंतक।

**अनहोता**—वि० [सं० अन्=नहीं+हिं० होना] १ दरिद्र। निर्धन। गरीब। २ अलौकिक। अचंभे का।

**अनहोनी**—वि० स्त्री० [सं० अन्=नहीं+हिं० होना] न होनेवाली। अलौकिक।

संज्ञा स्त्री० १. अलौकिक बात। २. न होने का भाव। अनस्तित्व।

**अनाकानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अनाकर्णन] सुनी अनसुनी करना। जान बूझकर बहलाना। टाल-मटोल।

**अनाकार**—वि० [सं०] निराकार।

**अनाक्रमण**—संज्ञा पुं० [सं०] आपस में एक दूसरे पर आक्रमण न करना। जैसे—अनाक्रमण संधि।

**अनाखर**†—वि० [सं० अनक्षर] बेडौल बेढंगा।

**अनागत**—वि० [सं०] १. न आया हुआ। अनुपस्थित। २ भावी। होनहार। ३ अपरिचित। अज्ञात। ४ अनादि। अजन्मा। ५ अपूर्व। अद्भुत। विलक्षण।

क्रि० वि० अचानक। सहसा।

**अनागम**—संज्ञा पुं० [सं०] आगमन का अभाव। न आना।

**अनाघात**—संज्ञा पुं० [सं०] १ संगीत में एक ताल। २ संगीत में वह स्थान जहाँ हिसाब ठीक रखने के लिये ताल छोड़ दिया जाता है।

**अनाचार**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अनाचारी] १ कदाचार। दुराचार। निंदित आचरण। २ कुरीति। कुप्रथा।

**अनाचारिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुराचारिता। निंदित आचरण। २ कुरीति।

**अनाज**—संज्ञा पुं० [सं० अन्नाद्य] अन्न। धान्य। दाना। गल्ला।

**अनाड़ी**—वि० [सं० अज्ञानी] १ नासमझ। नादान। अनजान। २ जो निपुण न हो। अकुशल। अदक्ष।

**अनातप**—संज्ञा पुं० [सं०] छाया। छाँह।

वि० ठंढा। शीतल।

**अनात्म**—वि० [सं० अनात्मन्] आत्मरहित। जड़।

संज्ञा पुं० आत्मा का विरोधी पदार्थ। अचित् जड़।

**अनाथ**—वि० [सं०] १. नाथहीन। बिना मालिक का। २. जिसका कोई

पालन पोषण करनेवाला न हो। ३. असहाय। अशरण। ४. दीन। दुखी।

**अनाथालय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ दीन दुखियों और असहायों का पालन हो। लगरखाना। २. लावारिस बच्चों की रक्षा का स्थान। यतीमखाना। अनाथाश्रम।

**अनाथाश्रम**—संज्ञा पु० दे० "अनाथालय"।

**अनादर**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० अनादरणीय, अनादरित, अनादृत] १. आदर का अभाव। निरादर। अवज्ञा। २. अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। ३ एक काव्यालकार जिसमे प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा प्राप्त वस्तु का अनादर सूचित किया जाता है।

**अनादि**—वि० [सं०] जिसका आदि न हो। जो सब दिन से हो।

**अनादृत**—वि० [सं०] जिसका अनादर हुआ हो। अपमानित।

**अनाधार**—वि० दे० "निराधार"।

**अनाना***—क्रि० स० [सं० आनयन] मँगाना।

**अनाप-शनाप**—संज्ञा पु० [सं० अनाप्त] १ ऊटपटाँग। आयँ बायँ। अडबड। २. असबद्ध प्रलाप। निरर्थक बकवाद।

**अनापा**—वि० [हिं० अ+नापना] १ जो नापा न गया हो। २ बहुत अधिक।

**अनाप्त**—वि० [सं०] १ अप्राप्त। अलब्ध। २. अविश्वस्त। ३ असत्य। ४. अकुशल। अनाड़ी। ५. अनात्मीय। अबंधु।

**अनाम**—वि० [सं० अनामन्] [स्त्री० अनामा] १ बिना नाम का। २. अप्रसिद्ध।

**अनामय**—वि० [सं०] १. रोग-रहित। नीरोग। तंदुरुस्त। २. निर्दोष। बेऐब।

संज्ञा पुं० १. नीरोगता। तदुरुस्ती। २. कुशल क्षेम।

**अनामा**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनामिका"।

**अनामिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली। अनामा।

**अनायत**—संज्ञा स्त्री० दे० "इनायत"।

**अनायत्त**—वि० [सं०] १. जो वश मे न आया हो। २. स्वतंत्र। स्वाधीन।

**अनायास**—क्रि० वि० [सं०] १ बिना प्रयास। बिना परिश्रम। २ अकस्मात्। अचानक।

**अनार**—संज्ञा पु० [फा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।

संज्ञा पु० [सं० अन्याय] अन्याय। अनीति।

**अनारदाना**—संज्ञा पु० [फ़ा०] १ खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। २ रामदाना।

**अनारी***—वि० [हिं० अनार] अनार के रंग का। लाल।

वि० दे० "अनाड़ी"।

**अनार्त्तव**—संज्ञा पु० [सं०] स्त्री का मासिक धर्म रुक जाना।

**अनार्य**—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० अनार्या] १ वह जो आर्य न हो। अश्रेष्ठ। २. म्लेच्छ।

**अनार्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनार्य होने का भाव या धर्म। २ नीचता। क्षुद्रता।

**अनावश्यक**—वि० [सं०] [संज्ञा अनावश्यकता] जिसकी आवश्यकता न हो। अप्रयोजनीय। गैरजरूरी।

**अनावर्षण**—संज्ञा पु० दे० "अनावृष्टि"।

**अनावृत**—वि० [सं०] १ जो ढका न हो। खुला। २ जो घिरा न हो।

**अनावृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्षा का अभाव। अवर्षा। सूखा।

**अनाश्रमी**—वि० [सं० अनाश्रमिन्] १ गार्हस्थ्य आदि चारो आश्रमो से रहित। आश्रमभ्रष्ट। २. पतित। भ्रष्ट

**अनाश्रय**—वि० [सं०] निराश्रय। निरवलम्ब। अनाथ। दीन।

**अनाश्रित**—वि० [सं०] आश्रय-रहित। निरवलब। बेसहारा।

**अनासक्त**—वि० [सं०] [संज्ञा अनासक्ति] १ जो किसी विषय में आसक्त न हो। २ निर्लेप।

**अनासी***—वि० दे० "अविनाशी"।

**अनास्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आस्था का अभाव। अश्रद्धा। २ अनादर। अप्रतिष्ठा।

**अनाह**—संज्ञा पुं० [सं०] अफरा। पेट फूलना।

**अनाहक**—नाहक के स्थान पर अशुद्ध प्रयोग। दे० "नाहक"।

**अनाहत**—वि० [सं०] जिस पर आघात न हुआ हो।

संज्ञा पुं० १ शब्द योग में वह शब्द जो अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है। २ हठ-योग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक।

**अनाहार**—संज्ञा पु० [सं०] भोजन का अभाव या त्याग।

वि० १ निराहार। जिसने कुछ खाया न हो। २. जिसमें कुछ खाया न जाय।

**अनाहूत**—वि० [सं०] बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।

**अनिंद***—वि० दे० "अनिंद्य"।

**अनिंद्य**—वि० पु० [ सं० ] १. जो निन्दा के योग्य न हो। निर्दोष। २ उत्तम। अच्छा।

**अनिकेत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जिसका घर-बार न हो। २ संन्यासी। ३ खानाबदोश।

**अनिच्छा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [वि० अनिच्छित, अनिच्छुक ] इच्छा का अभाव। इच्छा न होना।

**अनिच्छित**—वि० [ सं० ] १ जिसकी इच्छा न हो। अनचाहा। २. अरुचिकर।

**अनिच्छुक**—वि० [ सं० ] इच्छा न रखनेवाला। अनभिलाषी। निराकांक्षी।

**अनित्य**—वि० [सं०] [स्त्री० अनित्या। संज्ञा अनित्यत्व, अनित्यता ] १ जो सब दिन न रहे। अस्थायी। क्षणभंगुर। २. नश्वर। ३ जो स्वयं कार्यरूप हो और जिसका कोई कारण हो। ४ असत्य। झूठा।

**अनित्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ अनित्य अवस्था। अस्थिरता। २ नश्वरता।

**अनिद्र**—वि० [ सं० ] निद्रारहित। जिसे नींद न आवे।
संज्ञा पुं० नींद न आने का रोग।

**अनिप***—संज्ञा पु० [ हिं० अनी= सेना + प = स्वामी ] सेनापति। सेनाध्यक्ष।

**अनिमा***—संज्ञा स्त्री० दे० "अणिमा"।

**अनिमिष, अनिमेष**—वि० [ सं० ] स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ।
क्रि० वि० १. बिना पलक गिराए। एक-टक। २. निरंतर।

**अनिर्बंधित**—वि० [ सं० ] १ प्रतिबंध-रहित। बिना रोक-टोक का। २ मनमाना।

**अनियत**—वि० [ सं० ] १. जो नियत न हो। अनिश्चित। २. अस्थिर। अदृढ। ३. अपरिमित। असीम।

**अनियम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नियम का अभाव। व्यतिक्रम। अव्यवस्था।

**अनियमित**—वि० [ सं० ] १. नियम-रहित। बेकायदा। २. अनिश्चित।

**अनियाउ***—संज्ञा पु० दे० "अन्याय"।

**अनियारा***—वि० [ सं० अणि = नोक + हिं० आर ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० अनियारी ] नुकीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण।

**अनिरुद्ध**—वि० [ सं० ] जो रोका हुआ न हो। अबाध। बेरोक।
संज्ञा पु० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनको ऊषा व्याही थी।

**अनिर्दिष्ट**—वि० [ सं० ] १. जो बताया न गया हो। अनिर्धारित। २ अनिश्चित। ३ असीम।

**अनिर्देश्य**—वि० [ सं० ] जिसके विषय में ठीक बतलाया न जा सके। अनिर्वचनीय।

**अनिर्बंध**—वि० [ सं० ] १. जिसके लिए कोई बंधन न हो। २. स्वतंत्र।

**अनिर्वच**—वि० दे० "अनिर्वचनीय"।

**अनिर्वचनीय**—वि० [ सं० ] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय।

**अनिर्वाच्य**—वि० [ सं० ] १ जो बतलाया न जा सके। २ जो चुनाव के अयोग्य हो।

**अनिर्वाप्य**—वि० [ सं० ] १. जिसका निर्वापन न हो सके। जो बुझाई न जा सके। ( आग )

**अनिल**—संज्ञा पु० [ सं० ] वायु। हवा।

**अनिलकुमार**— संज्ञा पु० [ सं० ] हनुमान।

**अनिवार**—वि० दे० "अनिवार्य"।

**अनिवार्य**—वि० [ सं० ] [ भाव० अनिवार्यता ] १. जिसका निवारण न हो। जो हटे नहीं। २ जो अवश्य हो। ३ जिसके बिना काम न चल सके।

**अनिश्चित**—वि० [ सं० ] जिसका निश्चय न हुआ हो। अनियत। अनिर्दिष्ट।

**अनिष्ट**—वि० [ सं० ] जो इष्ट न हो। अनभिलषित। अवांछित।
संज्ञा पु० अमंगल। अहित। बुराई। खराबी।

**अनिष्टकर**—वि० [ सं० ] अनिष्ट या खराबी करनेवाला।

**अनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अणि = अग्र-भाग, नोक ] १ नोक। सिरा। कोर। २ किसी चीज का अगला सिरा। नोक।
संज्ञा स्त्री० [ सं० अनीक=समूह ] १ समूह। झुंड। दल। २ सेना।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० आन=मर्यादा ] ग्लानि।

**अनीक**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ सेना। २ समूह। झुंड। ३ युद्ध। लड़ाई।
*वि० [ सं० अ+हिं० नीक= अच्छा ] जो अच्छा न हो। बुरा। खराब।

**अनीठ***—वि० [ सं० अनिष्ट ] १ जो इष्ट न हो। अप्रिय। २ बुरा। खराब।

**अनीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अन्याय। बेइनसाफी। २ शरारत। ३ अंधेर।

**अनीप्सित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अनीप्सिता ] जिसकी चाह न हो। अनचाहा।

**अनीश**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अनीशा ] १ बिना मालिक का। २ अनाथ। असमर्थ। ३. सबसे श्रेष्ठ।
संज्ञा पु० १. विष्णु। २. जीव। माया।

**अनीश्वरवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास।

नास्तिकता । २. मीमांसा ।

**अनीश्वरवादी**—वि० [ सं० ] १. ईश्वर को न माननेवाला । नास्तिक । २. मीमांसक ।

**अनीस***—संज्ञा पुं० [सं० अनीश] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ ।

**अनीह**—वि० [सं०] [संज्ञा अनीहा] १. इच्छा-रहित । निस्पृह । २ निश्चेष्ट । ३. बेपरवाह ।

**अनु**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का संयोग करता है—१. पीछे । जैसे-अनुगामी । २ सदृश । जैसे--अनुकूल । अनुरूप । ३ साथ । जैसे-अनुपान । ४ प्रत्येक । जैसे—अनुक्षण । ५ बारंबार । जैसे—अनुशीलन ।

*अव्य० हाँ । ठीक है ।

**अनुकंपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुकंपित] १ कृपा । अनुग्रह । दया । २ सहानुभूति । हमदर्दी ।

**अनुकंपा**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुकंपन" ।

**अनुकंपित**—वि० [ सं० ] जिसपर कृपा की गई हो । अनुगृहीत ।

**अनुकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुकरणीय, अनुकृत ] १ देखादेखी कार्य । नकल । २ वह जो पीछे उत्पन्न हो या आवे ।

**अनुकर्त्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० अनुकर्त्री ] १ अनुकरण या नकल करनेवाला । २ आज्ञाकारी ।

**अनुकार**—संज्ञा पुं० दे० "अनुकरण"।

**अनुकारी**—वि० [ सं० अनुकारिन् ] [ स्त्री० अनुकारिणी ] १. अनुकरणकारी । २ नकल करनेवाला । ३. आज्ञाकारी ।

**अनुकूल**—वि० [ सं० ] १ मुआफ़िक । २. पक्ष में रहनेवाला । सहायक । ३. प्रसन्न ।

संज्ञा पुं० १. वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो । २ एक काव्यालंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है ।

**अनुकूलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ अप्रतिकूलता । अविरुद्धता । २ पक्षपात । सहायता । ३. प्रसन्नता ।

**अनुकूलना***—क्रि० स० [ सं० अनुकूलन ] १ मुआफ़िक होना । २ हितकर होना । ३ प्रसन्न होना ।

**अनुकृत**—वि० [ सं० ] अनुकरण या नकल किया हुआ ।

**अनुकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ देखादेखी कार्य । नकल । २ वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु का कारणांतर से दूसरी वस्तु के अनुसार हो जाना वर्णन किया जाय । पैरोडी ।

**अनुक्त**—वि० [ सं० ] [स्त्री० अनुक्ता] अकथित । बिना कहा हुआ ।

**अनुक्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्रम । सिलसिला ।

**अनुक्रमणिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ क्रम । सिलसिला । २ नामों आदि की क्रम से दी हुई सूची ।

**अनुक्रिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुक्रम" ।

**अनुक्रोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दया । अनुकंपा ।

**अनुक्षण**—क्रि० वि० [ सं० ] १ प्रतिक्षण । २ लगातार । निरंतर ।

**अनुग, अनुगत**—वि० [ सं० ] [संज्ञा अनुगति ] [ स्त्री० अनुगता ] १ अनुगामी । अनुयायी । २ अनुकूल । मुआफ़िक ।

संज्ञा पुं० सेवक । नौकर ।

**अनुगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनुसरण । २ अनुकरण । नकल । ३. मरण ।

**अनुगमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पीछे चलना । अनुसरण । २. समान आचरण । विधवा का मृत पति के साथ जल मरना ।

**अनुगामिता**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुगमन" ।

**अनुगामी**—वि० [ सं० अनुगामिन् ] स्त्री० [ अनुगामिनी ] १ पीछे चलनेवाले । २ समान आचरण करनेवाले । ३ आज्ञाकारी ।

**अनुगुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना दिखाया जाय ।

**अनुगृहीत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अनुगृहीता] १ जिस पर अनुग्रह किया गया हो । उपकृत । २. कृतज्ञ ।

**अनुग्रह**—संज्ञा पुं० [सं० ] [ वि० अनुगृहीत, अनुग्राही, अनुग्राहक ] १. कृपा । दया । २. अनिष्ट-निवारक । ३ सरकारी रियाअत ।

**अनुग्राहक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अनुग्राहिका ] अनुग्रह करनेवाला । कृपालु । उपकारी ।

**अनुग्राही**—वि० दे० "अनुग्राहक"।

**अनुच***—वि० [ सं० अनुच्च ] १. जो ऊँचा न हो । नीचा । २. जो श्रेष्ठ न हो । नीच ।

**अनुचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अनुचरी] १ दास। नौकर। २ सहचारी । साथी ।

**अनुचित**—वि० [ सं० ] अयुक्त । नामुनासिब । बुरा । खराब ।

**अनुज**—वि० [ सं० ] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० अनुजा ] छोटा भाई ।

**अनुजीवी**—संज्ञा पुं० [ सं० अनुजीविन् ] [ स्त्री० अनुजीविनी ] १.

आश्रित। २ सेवक। नौकर।

**अनुज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ आज्ञा। हुक्म। इजाज़त। २. एक काव्यालंकार जिसमें दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसके पाने की इच्छा का वर्णन किया जाता है।

**अनुताप**-संज्ञा पुं०[सं०][वि० अनुतप्त] १ तपन। दाह। जलन। २ दुःख। रंज। ३ पछतावा। अफसोस।

**अनुत्तर**—वि० [ सं० ] १ निरुत्तर। कायल। २ चुप्पाप। मौन।

**अनुत्तरित**—वि० [ सं० ] जिसका उत्तर न दिया गया हो।

**अनुत्तीर्ण**—वि० [ सं० ] १ जो उत्तीर्ण न हुआ हो। जो पार न उतरा हो। २ जो परीक्षा में पूरा न उतरा हो।

**अनुदात्त**—वि० [ सं० ] १ छोटा। तुच्छ। २ नीचा (स्वर)। लघु (उच्चारण)। ३ स्वर के तीन भेदों में से एक।

**अनुदार**—वि० [ सं० ][ भाव० अनुदारता] १. जो उदार न हो। संकीर्ण। नीच। तुच्छ। ३. कृपण। कंजूस।

**अनुदिन**—क्रि० वि० [ सं० ] नित्य प्रति। प्रति दिन। रोज़ मर्रा।

**अनुद्यत**—वि० [ सं० ] जो उद्यत या तैयार न हो।

**अनुद्योग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अकर्मण्यता। आलस्य। सुस्ती।

**अनुद्वेग**-संज्ञा पुं० [ सं० ] उद्वेग का अभाव। भय से मुक्त होने का भाव।

**अनुद्विग्न**—वि० [ सं० ] शान्त चित्त का। निर्भय। निश्शंक।

**अनुधावन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुधावक, अनुधावित] १ पीछे चलना अनुसरण। २ अनुकरण। नकल। ३ अनुसंधान।

**अनुनय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २ मनाना।

**अनुनाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वि० अनुनादित ] १. प्रतिध्वनि। २. जोर का शब्द।

**अनुनासिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जो (अक्षर) मुह और नाक से बोला जाय। जैसे ङ, ञ, ण।

**अनुपकारी**—वि० [ सं० अनुपकारिन् ] १ उपकार न करनेवाला। २. फजूल। निकम्मा।

**अनुपद**—वि० [ सं० ] पीछे पीछे चलने वाला। अनुगामी।

क्रि० वि० १ पीछे पीछे। २ कदम कदम पर। ३ जल्दी। शीघ्र। ४ पीछे। बाद।

**अनुपनीत**—वि० [ सं० ] जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो।

**अनुपम**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अनुपमता ] उपमा-रहित। बेजोड़।

**अनुपमेय**—वि० दे० "अनुपम"।

**अनुपयुक्त**—वि० [ सं० ] [ भाव० अनुपयुक्तता ] जो ठीक, उपयुक्त या योग्य न हो।

**अनुपयोगिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उपयोगिता का अभाव। निरर्थकता।

**अनुपयोगी**—वि० [ सं० ] बेकाम। व्यर्थ का।

**अनुपस्थित**—वि० [ सं० ] जो सामने मौजूद न हो। अविद्यमान। गैरहाज़िर।

**अनुपस्थिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अविद्यमानता। गैरमौजूदगी।

**अनुपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणित की त्रैराशिक क्रिया।

**अनुपातक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्महत्या के समान पाप। जैसे—चोरी, झूठ बोलना।

**अनुपादेय**—वि० [ सं० ] जो उपादेय या ठीक न हो।

**अनुपान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाय।

**अनुप्राणित**—वि० [ सं० ] जिसमें प्राण या जीवनी-शक्ति भरी गई हो।

**अनुप्राशन**—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन। खाना।

**अनुप्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार-बार आता है। वर्णवृत्ति। वर्णमैत्री।

**अनुबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बंधन। लगाव। २ आगा-पीछा। ३ कोई विषय या प्रसंग छिड़ने पर उससे संबंध रखनेवाली सब बातों का विवेचन। आरम्भ। ४ अनुसरण।

**अनुभव**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० अनुभवी ] १ वह ज्ञान जो साक्षात् करने से प्राप्त हो। २ परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान। तजरबा।

**अनुभवना***—क्रि० स० [ सं० अनुभवन] अनुभव करना। तजरबा करना।

**अनुभवी**—वि० [ सं० अनुभविन् ] अनुभव रखनेवाला। तजरबेकार। जानकार।

**अनुभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ महिमा। बड़ाई। २ काव्य में रस के चार योजकों में से एक। चित्त के भाव को प्रकाश करनेवाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ।

**अनुभावी**—वि० [ सं० अनुभाविन् ] [ स्त्री० अनुभाविनी ] १ जिसे अनुभव या संवेदना हो। २ वह साक्षी जिसने सब बातें खुद देखी-सुनी हों। चश्मदीद गवाह।

**अनुभूत**—वि० [सं०] १ जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २ परीक्षित। तजरबा किया हुआ।

**अनुभूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ अनुभव। २ परिज्ञान। बोध।

**अनुमति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १.

आज्ञा। हुक्म। २. सम्मति। इजाजत।

**अनुमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुमित ] १. अटकल। अंदाज़ा। २ न्याय में प्रमाण के चार भेदों में से एक जिससे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना हो।

**अनुमानना***—क्रि० स० [ सं० अनुमान ] अनुमान करना। अंदाज़ा करना।

**अनुमित**—वि० [ सं० ] अनुमान किया हुआ।

**अनुमिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अनुमान।

**अनुमेय**—वि० [ सं० ] अनुमान के योग्य।

**अनुमोदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुमोदनीय, अनुमोदित ] १ प्रसन्नता का प्रकाशन। खुश होना। २ समर्थन।

**अनुयायी**—वि० [ सं० अनुयायिन् ] स्त्री० अनुयायिनी ] १ अनुगामी। पीछे चलने वाला। २ अनुकरण करनेवाला।

संज्ञा पुं० अनुचर। सेवक। दास।

**अनुरंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुरंजित ] [ भाव० अनुरंजकता ] १. अनुराग। प्रीति। २ दिलबहलाव।

**अनुरक्त**—वि० [ सं० ] १ अनुरागयुक्त। आसक्त। २ लीन।

**अनुरक्ति**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनुराग"।

**अनुरत**—वि० दे० "अनुरक्त"।

**अनुरणन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अनुरणित] १. प्रतिध्वनि। २ बजना। ३ बोलना। शब्द करना।

**अनुराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रीति। प्रेम।

**अनुरागना***—क्रि० स० [ सं० अनुराग ] प्रीति करना। प्रेम करना।

**अनुरागी**—वि० [ सं० अनुरागिन् ] स्त्री० अनुरागिनी ] अनुराग रखनेवाला। प्रेमी।

**अनुराध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विनती विनय।

**अनुराधना***—क्रि० स० [ सं० अनुराध ] विनय करना। मनाना।

**अनुराधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में १७ वाँ नक्षत्र।

**अनुरूप**—वि० [ सं० ] १ तुल्य रूप का। सदृश। समान। २ योग्य। उपयुक्त।

**अनुरूपक**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिमा। प्रतिमूर्त्ति।

**अनुरूपता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ समानता। सादृश्य। २ अनुकूलता। उपयुक्तता।

**अनुरूपना***—क्रि० अ० [ सं० अनुरूप + ना ( प्रत्य० ) ] किसी के अनुरूप होना।

क्रि० स० किसी के अनुरूप बनाना।

**अनुरोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रुकावट। बाधा। २ प्रेरणा। उत्तेजना। ३ विनयपूर्वक किसी बात के लिये हठ। आग्रह। दबाव।

**अनुलेखन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ कर्त्ता —अनुलेखक ] १. लेख की ज्यों का त्यों प्रतिलिपि करना।

**अनुलेपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किसी तरल वस्तु की तह चढ़ाना। लेपन। २ उबटन करना। बटना लगाना। ३ लीपना।

**अनुलोम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार। २. संगीत में सुरों का उतार। अवरोही।

**अनुलोम विवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से किसी नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।

**अनुवक्ता**—वि० [ सं० ] किसी की कही हुई बात ज्यों की त्यों दोहराने वाला।

**अनुवर्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अनुकरण। अनुगमन। २. अनुकरण। समान आचरण। ३. किसी नियम का कई स्थानों पर बार बार लगाना।

**अनुवर्त्ती**—वि० [ सं० अनुवर्त्तिन् ] [ स्त्री० अनुवर्त्तिनी ] अनुसरण करनेवाला। अनुयायी।

**अनुवाक्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ग्रन्थ-विभाग। अध्याय या प्रकरण का एक भाग। २ वेद के अध्याय का एक अंश।

**अनुवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुनरुक्ति। फिर कहना। दोहराना। २. भाषांतर। उल्था। तर्जुमा। ३. वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन हो। ( न्याय )

**अनुवादक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। उल्था करनेवाला।

**अनुवादित**—वि० [ सं० अनुवाद ] अनुवाद किया हुआ।

**अनुवाद्य**—वि० [ सं० ] १ अनुवाद करने के योग्य। २. जिसका अनुवाद हो।

**अनुवृत्ति**—संज्ञा स्त्री [ सं० ] किसी पद के पहले अंश से कुछ वाक्य उसके पिछले अंश में अर्थ को स्पष्ट करने के लिए लाना।

**अनुशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घनिष्ठ संबंध। २ परिणाम। ३ पश्चात्ताप। पछताना। ४. घृणा। ५. पुराना वैर। ६. वाद विवाद। झगड़ा।

**अनुशयना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह परकीया नायिका जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से

दुखी हो।

**अनुशासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आज्ञा या आदेश देनेवाला। हुक्म देनेवाला। २ उपदेष्टा। शिक्षक। ३ देश या राज्य का प्रबन्ध करनेवाला।

**अनुशासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० अनुशासित ] १. आदेश। आज्ञा। हुक्म। २. उपदेश। शिक्षा। ३ व्याख्यान। विवरण। ४ 'महाभारत' का एक पर्व। ५. किसी संस्था के नियम या विधान का यथ विधि पालन। (आधु०)

**यौ०**—अनुशासन की कार्रवाई= नियम या विधान का ठीक-ठीक पालन न करने पर दंडित करने की क्रिया।

**अनुशीलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० अनुशीलित ] १ चिंतन। मनन। २ पुनः पुनः अभ्यास।

**अनुशोचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अनुताप। पछतावा। अफसोस।

**अनुश्रुत**—वि० [ सं० ] वैदिक परंपरा से चला आया हुआ।

**अनुश्रुति**—संज्ञा स्त्री [ सं० ] वह जो लोग परंपरा से सुनते चले आए हों। परंपरागत कथा या उक्ति।

**अनुषंग**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० आनुषंगिक ] १. करुणा। दया। २ संबंध। लगाव। ३ प्रसंग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना।

**अनुष्टुप्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार चरणों का वर्ण छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।

**अनुष्ठान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ कार्य का आरंभ। २ नियमपूर्वक कोई काम करना। ३ शास्त्रविहित कर्म करना। ४. फल के निमित्त किसी देवता का आराधन। प्रयोग। पुरश्चरण।

**अनुष्ठित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अनुष्ठिता ] जिसका अनुष्ठान, प्रयोग या कार्य किया गया हो।

**अनुसंधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पीछे लगना। २. खोज। ढूँढ। जाँच-पड़ताल। तहकीकात। ३ चेष्टा। कोशिश।

**अनुसंधानना***—क्रि० स० [ सं० अनुसंधान ] १ खोजना। ढूँढना। २. सोचना।

**अनुसर**—वि० दे० "अनुसार"।

**अनुसंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ गुप्त परामर्श या संधि। २ षड्यंत्र। कुचक्र।

**अनुसरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पीछे या साथ चलना। २ अनुकरण। नकल। ३ अनुकूल आचरण।

**अनुसरना***—क्रि० स० [सं० अनुसरण] १. पीछे या साथ साथ चलना। २ अनुकरण करना। नकल करना।

**अनुसार**—वि० [ सं० ] अनुकूल। सदृश। समान मुआफिक।

**अनुसारना***—क्रि० स० [सं० अनुसरण ] १ अनुसरण करना। २ आचरण करना। ३ कोई कार्य करना।

**अनुसारी***—वि० [ सं० अनुसारिन् ] अनुसरण या अनुकरण करनेवाला।

**अनुसाल***—संज्ञा पुं० [ सं० अनु + हिं० सालना ] वेदना। पीड़ा।

**अनुस्वार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ स्वर के पीछे उच्चारण होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, जिसका चिह्न ( ) है। निगृहीत। २ स्वर के ऊपर की बिंदी।

**अनुहरत***—वि० [ हिं० अनुहरना का कृदंत रूप ] १ अनुसार। अनुरूप। समान। २ उपयुक्त। योग्य। अनुकूल।

**अनुहरना***—क्रि० स० [ सं० अनुहरण ] १ अनुकरण या नकल करना। २ समान होना।

**अनुहरिया***—दे० "अनुहार"।

संज्ञा स्त्री० आकृति। मुखानी।

**अनुहार**—वि० [ सं० ] १. सदृश। तुल्य। समान। २ अनुसार। अनुकूल।

संज्ञा स्त्री० १ भेद। प्रकार। २ मुखानी। आकृति। ३. सादृश्य। ४. किसी चीज की हूबहू नकल। प्रतिकृति।

**अनुहारना***—क्रि० स० [ सं० अनुहरण ] तुल्य करना। सदृश करना। समान करना।

**अनुहारी**—वि० [ सं० अनुहारिन् ] [ स्त्री० अनुहारिणी ] १ अनुकरण या नकल करनेवाला। २ अनुरूप बना हुआ।

**अनूअर***—क्रि० वि० [ सं० अनवरत ? ] निरंतर। लगातार।

वि० दे० अनुत्तर।

**अनूजरा***—वि० [हिं० अन + ऊजरा] १. जो उज्ज्वल न हो। २ मैला।

**अनूठा**—वि० [ सं० अनुच्छिष्ट ] [स्त्री० अनूठी] १ अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। २ अच्छा। बढ़िया।

**अनूठापन**—संज्ञा पुं० [हिं० अनूठा + पन ( प्रत्य० )] १ विचित्रता। विलक्षणता। २ सुंदरता। अच्छापन।

**अनूढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

**अनूतर***—वि० दे० "अनुत्तर"।

**अनूदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किसी की कही हुई बात ज्यों की त्यों कहना। २ अनुवाद या उल्था करना।

**अनूदित**—वि० [ सं० ] १ कहा हुआ किया हुआ। २ तर्जुमा किया हुआ। भाषान्तरित। उल्था किया हुआ।

**अनूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जलप्राय देश। वह स्थान जहाँ जल अधिक हो।

वि० [ सं० अनुपम ] १. जिसकी उपमा न हो। बेजोड़। २. सुंदर। अच्छा।

**अनृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिथ्या। असत्य। झूठ। २. अन्यथा। विपरीत।

**अनेक**—वि० [सं०] [संज्ञा अनेकता ] एक से अधिक। बहुत।

**अनेकशः**—क्रि० वि० [ सं० ] १ बहुत बार। बहुधा। २. भिन्न भिन्न प्रकार से। ३. अधिक संख्या या परिमाण में।

**अनेकार्थ**—वि० [ सं० ] जिसके बहुत-से अर्थ हों।

**अनेग***—वि० दे० "अनेक"।

**अनेड़***—वि० [ सं० अनृत ] १ बुरा। खराब २. टेढ़ा-मेढ़ा। कुटिल।

**अनेरा**—वि० [ सं० अनृत ] [ स्त्री० अनेरी ] १ झूठ। व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २. झूठा। ३ अन्यायी। दुष्ट। ४. निकम्मा। ५. विलक्षण। बेढब। ६. बहका हुआ। आवारा।

क्रि० वि० व्यर्थ। फ़जूल।

**अनै***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अनीति ] १ नीति-विरुद्ध या बुरा आचरण। २. उपद्रव। उत्पात।

**अनैक्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एका न होना। मतभेद। फूट।

**अनैठ**†—संज्ञा पुं० [ सं० अन् + पण्यस्थ ] वह दिन जिसमें बाज़ार बंद रहे। 'पैंठ' का उलटा।

**अनैतिक**—वि० [ सं० ] जो नैतिक न हो। नीति-विरुद्ध।

**अनैतिहासिक**—वि० [ सं० ] जो ऐतिहासिक न हो।

**अनैस***†—संज्ञा पुं० [ सं० अनिष्ट ] बुराई।

वि० बुरा। खराब।

**अनैसना*** - क्रि० अ० [हिं० अनैस] बुरा मानना। रूठना।

**अनैसर्गिक**—वि० [ सं० ] जो नैसर्गिक न हो। अस्वाभाविक। अप्राकृतिक।

**अनैसा***—वि० [ हिं० अनैस ] [स्त्री० अनैसी ] अप्रिय। बुरा। खराब।

**अनैसे***—क्रि० वि० [ हिं० अनैस ] बुरे भाव से।

**अनैहा***—संज्ञा पुं० [ सं० अनीहित ] उत्पात।

**अनोखा**—वि० [ सं० अन् + ईक्ष ] [ स्त्री० अनोखी ] १ अनूठा। निराला। विलक्षण। विचित्र। २. नया। ३ सुंदर।

**अनोखापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० अनोखा + पन ( प्रत्य० ) ]१. अनूठापन। निरालापन। विलक्षणता। विचित्रता। २. नयापन। ३. सुंदरता।

**अनौचित्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उचित बात का अभाव। अनुपयुक्तता।

**अनौट***—संज्ञा पुं० दे० "अनवट"।

**अन्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ खाद्य पदार्थ। २ अनाज। धान्य। दाना। गल्ला। ३ पकाया हुआ अन्न। भात। ४. सूर्य। ५. पृथ्वी। ६ प्राण। जल। *वि० [ सं० अन्य ] दूसरा। विरुद्ध।

**अन्नकूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्य्यन्त किसी दिन होता है। इसमें अनेक प्रकार के भोजनों का भोग भगवान् को लगाते हैं।

**अन्न-चोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० अन्न + चोर ] वह जो चोर बाजार में बेचने के लिए छिपा कर अन्न रखता हो।

**अन्नक्षेत्र**—संज्ञा पुं० दे० "अन्नसत्र"।

**अन्नजल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दाना-पानी। खाना-पानी। खान-पान। २. आबदाना जीविका।

**मुहा०**—अन्न-जल त्यागना या छोड़ना = उपवास करना।

**अन्नद**—वि० [ स्त्री० अन्नदा ] दे० "अन्नदाता"।

**अन्नदाता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अन्नदात्री ] १. अन्नदान करनेवाला। २. पोषक। प्रतिपालक। ३ मालिक। स्वामी।

**अन्नपूर्णा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अन्न की अधिष्ठात्री देवी। दुर्गा का एक रूप।

**अन्नप्राशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बच्चों को पहले पहल अन्न चटाने का संस्कार।

**अन्नमयकोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पंच कोशों में से प्रथम। अन्न से बना हुआ त्वचा से लेकर वीर्य्य तक का समुदाय। स्थूल शरीर। ( वेदांत )

**अन्नसत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ भूखों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।

**अन्ना**—संज्ञा स्त्री० [तु०] दाई। धाय।

**अन्य**—वि० [ सं० ] दूसरा। और कोई। भिन्न। ग़ैर।

**अन्यतम**—वि० [ सं० ] १. बहुतों में से एक। २ सबसे बढ़कर। प्रधान। मुख्य।

**अन्यतः**—क्रि० वि० [ सं० ] १. किसी और से। २. किसी और स्थान से।

**अन्यत्र**—वि० [ सं० ] और जगह। दूसरी जगह।

**अन्यथा**—वि० [ सं० ] १. विपरीत। उलटा। विरुद्ध। २. असत्य। झूठ।

अव्य० नहीं तो। दूसरी अवस्था में।

**अन्यथासिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] न्याय में एक दोष जिसमें यथार्थ कारण दिखाकर किसी बात की सिद्धि की जाय।

**अन्यपुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दूसरा आदमी। ग़ैर। २. व्याकरण में वह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा

जाय। जैसे, 'यह', वह'।

**अन्यमनस्क**—वि० [सं०] जिसका जी न लगता हो। उदास। चिंतित। अनमना।

**अन्यसंभोगदुःखिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अन्य स्त्री में अपने प्रिय के संभोग-चिह्न देखकर दुःखित हो।

**अन्यसुरतिदुःखिता**—संज्ञा स्त्री० दे० "अन्यसंभोगदुःखिता"।

**अन्यापदेश**—संज्ञा पुं० दे० "अन्योक्ति"।

**अन्याई***—संज्ञा पुं० दे० "अन्याय"।

**अन्याय**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्यायी] १ न्याय-विरुद्ध आचरण। अनीति। बेइंसाफी। २. अंधेर। ३. जुल्म।

**अन्यायी**—वि० [सं० अन्यायिन्] अन्याय करनेवाला। जालिम।

**अन्यारा***—वि० [सं० अ + हिं० न्यारा] १. जो पृथक् न हो। जो जुदा न हो। २. अनोखा। निराला। ३ खूब। बहुत।

**अन्यास***—क्रि० वि० [सं० अनायास] १ अचानक। २ अनायास। बिना परिश्रम के। ३ बलपूर्वक। जबरदस्ती।

**अन्यून**—वि० [सं०] [संज्ञा अन्यूनता] १ जो न्यून या कम न हो। २. बहुत। अधिक।

**अन्योक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय। अन्यापदेश।

**अन्योदर्य**—वि० [सं०] दूसरे के पेट से पैदा। 'सहोदर' का उलटा।

**अन्योन्य**—सर्व० [सं०] परस्पर। आपस में।

संज्ञा पुं० वह काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जाय।

**अन्योन्याभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु न होना।

**अन्योन्याश्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्योन्याश्रित] १ परस्पर का सहारा। एक दूसरे की अपेक्षा। २. न्याय में एक वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा। सापेक्ष ज्ञान।

**अन्वय**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अन्वयी] १ परस्पर संबंध। तारतम्य। २ संयोग। मेल। ३ पद्यों के शब्दों को वाक्यरचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य। ४ अवकाश। खाली स्थान। ५ कार्य कारण का संबंध। ६. वंश। खानदान। ७. एक बात की सिद्धि से दूसरी बात की सिद्धि का संबंध।

**अन्वित**—वि० [सं०] युक्त। शामिल।

**अन्वितार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अन्वय के द्वारा निकलनेवाला अर्थ। २ अंदर छिपा या मिला हुआ अर्थ।

**अन्वीक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौर। विचार। २ खोज। तलाश।

**अन्वीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं० १ ध्यानपूर्वक देखना। २ खोज। तलाश।

**अन्वेषक**—वि० [सं०] [स्त्री० अन्वेषिका] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।

**अन्वेषण**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अन्वेषणा] अनुसंधान। खोज। ढूँढ़। तलाश।

**अन्वेषी**—वि० [सं० अन्वेषिन्] [स्त्री० अन्वेषिणी] खोजनेवाला। तलाश करनेवाला।

**अन्हवाना***—क्रि० स० [हिं० नहाना] स्नान करना। नहलाना।

**अन्हाना***†—क्रि० अ० दे० "नहाना"।

**अप्**—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

**अपंग**—वि० [सं० अपांग] १. अंगहीन। २ लँगड़ा। लूला। ३. अशक्त। बेबस।

**अप**-उप० [सं०] उलटा। विरुद्ध। बुरा। अधिक। यह उपसर्ग जिस शब्द के पहले आता है उसके अर्थ में निम्नलिखित विशेषता उत्पन्न करता है। १. निषेध। जैसे, अपमान। २. अपकृष्ट (दूषण)। जैसे, अपकर्म। ३ विकृति। जैसे, अपांग। ४ विशेषता। जैसे, अपहरण।

सर्व० आप का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) जैसे—अपस्वार्थी। अपकाजी।

**अपकर्त्ता**—संज्ञा पुं० [सं० अपकर्तृ] [स्त्री० अपकर्त्री] १ हानि पहुँचानेवाला। २ पापी।

**अपकर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

**अपकर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीचे को खींचना। गिरना। २ घटाव। उतार। ३ बेकदरी। निरादर। अपमान।

**अपकाजी**—वि० [हिं० आप + काज] स्वार्थी। मतलबी।

**अपकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपकार का उलटा। बुराई। अनुपकार। हानि। नुकसान। अहित। २. अनादर। अपमान।

**अपकारक**—वि० [सं०] १ अपकार करनेवाला। हानिकारी। २. विरोधी। द्वेषी।

**अपकारिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपकार करने की क्रिया या भाव।

**अपकारी**—वि० [सं० अपकारिन्] [स्त्री० अपकारिणी] १. हानिकारक।

बुराई करने वाला। २ विरोधी। द्वेषी।

**अपकारीचार***—वि० [ सं० अपकार + आचार ] हानि पहुँचानेवाला। विघ्नकारी।।

**अपकीरति***—संज्ञा स्त्री० दे० "अपकीर्त्ति"।

**अपकीर्त्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अपयश। अयश। बदनामी। निंदा।

**अपकृत**—वि० [ सं० ] १. जिसका अपकार किया गया हो। २. अपमानित। ३. जिसका विरोध किया गया हो। 'उपकृत' का उलटा।

**अपकृति**—संज्ञा स्त्री० दे० "अपकार"।

**अपकृष्ट**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अपकृष्टता ] १. गिरा हुआ। पतित। भ्रष्ट। २. अधम। नीच। ३ बुरा। [illegible]।

**अपक्रम**—संज्ञा पु० [ सं० ] व्यतिक्रम। क्रमभंग। गड़बड़। उलट पलट।

**अपक्व**—वि० [ सं० ] [ सं० अपक्वता ] १. बिना पका हुआ। कच्चा। २ अनभ्यस्त। असिद्ध। जैसे, अपक्व बुद्धि।

**अपगत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अपगति ] १. भागा हुआ। २ हटा हुआ। ३ मरा हुआ। ४. नष्ट।

**अपगा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी। दरिया।

**अपघन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शरीर। वि० बिना बादल का। मेघ-रहित।

**अपघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० अपघातक, अपघाती ] १. हत्या। हिंसा। २. विश्वासघात। धोखा।
संज्ञा पुं० [ हिं० अप = अपना + घात = मार ] आत्महत्या। आत्मघात।

**अपच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अजीर्ण।

**अपचय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाश। बरबादी। २. गँवाना। खोना।

**अपचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अपचारी ] १ अनुचित बर्त्ताव। बुरा आचरण। २ अनिष्ट। बुराई। ३. निंदा, अपयश। ४. कुपथ्य। स्वास्थ्य-नाशक व्यवहार।

**अपचाल***—संज्ञा पु० [ हिं० अप + चाल ] कुचाल। खोटाई। नटखटी।

**अपचित**—वि० [ सं० ] १ पूज्य। २. नष्ट।

**अपचिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पूजा। २. नाश।

**अपची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंडमाला रोग का एक भेद।

**अपछरा***—संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा"।

**अपजय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पराजय। हार।

**अपजस†***—संज्ञा पुं० दे० "अपयश"।

**अपटन†**—संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

**अपटु**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अपटुता ] १ जो पटु न हो। २ सुस्त। आलसी।

**अपठ**—वि० [ सं० ] १. अपढ़। जो पढ़ा न हो। २ मूर्ख।

**अपठ्यमान***—वि० [ सं० अपठ्यमान ] १. जो न पढ़ा जाय। २. न पढ़ने योग्य।

**अपडर***—संज्ञा पु० [ सं० अप+डर ] भय। शंका।

**अपडरना***—क्रि० अ० [ हिं० अपडर ] भयभीत होना। डरना।

**अपड़ाना***—क्रि० अ० [ सं० अपर ] [ संज्ञा अपड़ाव ] १. खींचा-तानी करना। २ रार या झगड़ा करना।

**अपड़ाव***—संज्ञा पुं० [ सं० अपर ] [ क्रि० अपड़ाना ] झगड़ा। रार। तकरार।

**अपढ़**—वि० [ सं० अपठ ] बिना पढ़ा। अनपढ़।

**अपढार†**—वि० [ हिं० अप + ढार = ढलना ] बेढंगे तौर से ढलने या अनुरक्त होनेवाला।

**अपत***—वि० [सं० अ=नहीं+पत्र] १ पत्र-हीन। बिना पत्तों का। २ आच्छादन-रहित। नग्न।
वि० [ सं० अपात्र ] अधम। नीच।
वि० [ अ+ पत= लज्जा, प्रतिष्ठा ] निर्लज्ज।
संज्ञा स्त्री० [ सं० अ+ पत= प्रतिष्ठा ] अपमान। बेइज्जती।

**अपतई***—संज्ञा पुं० [ हिं० अपत ] १. निर्लज्जता। बेहयाई। २. ढिठाई। धृष्टता। ३ चंचलता। ४ उत्पात।

**अपताना***—संज्ञा पुं० [ हिं० अप= अपना+ तानना ] जंजाल। प्रपंच।

**अपति***—वि० स्त्री० [सं० अ+पति] बिना पति की। विधवा।
वि० [ सं अ + पति=गति ] पापी। दुष्ट।
संज्ञा स्त्री० १. दुर्गति। दुर्दशा। २. अनादर। अपमान।

**अपतोस***—संज्ञा पुं० [ सं० अप+ तोष ] दुःख। रंज।

**अपत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संतान। औलाद।

**अपथ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ बीहड़ राह। विकट मार्ग। २. कुपथ। कुमार्ग।

**अपथ्य**—वि० [ सं० ] १. जो पथ्य न हो। स्वास्थ्य-नाशक। २ अहितकर।
संज्ञा पु० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।

**अपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बिना पैर के रेंगनेवाले, जंतु जैसे, साँप, केंचुआ आदि।

**अपदेखा**—वि० [हिं० आप+ देखना] १. अपने को बड़ा माननेवाला। आत्मश्लाघी। घमंडी। २ स्वार्थी।

**अपद्रव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निकृष्ट वस्तु। बुरी चीज़। २. बुरा धन।

**अपध्वंस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अपध्वंसी, अपध्वस्त ] १. विनाश। क्षय। २. अधःपतन। ३. अपमान। ४. पराजय। हार।

**अपन***—सर्व० दे० "अपना"। "हम"।

**अपनपौ***—संज्ञा पुं० [ हिं० अपना+पौ (प्रत्य०) ] १. अपनायत। आत्मीयता। संबंध। २ आत्मभाव। आत्मस्वरूप। ३ संज्ञा। सुध। होश। ज्ञान। ४ अहंकार। गर्व। ५ मर्यादा।

**अपनयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अपनीत ] १ दूर करना। हटाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३. गणित के समीकरण में किसी परिमाण को एक पक्ष से दूसरे पक्ष में ले जाना। ४ खंडन।

**अपना**—सर्व० [ सं० आत्मनः ] क्रि० अपनाना] १. निज का। (तीनों पुरुषों में)

**मुहा०**—अपना-सा करना=अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना। भर सक करना। अपना-सा मुँह लेकर रह जाना=किसी बात में अकृतकार्य्य होने पर लज्जित होना। अपनी अपनी पड़ना=अपनी अपनी चिंता में व्यग्र होना। अपने तक रखना=किसी से न कहना।

**यौ०**—अपने आप=स्वयं। स्वतः। खुद।

२. आप। निज। जैसे- अपने को।

संज्ञा पुं० आत्मीय। स्वजन।

**अपनाना**—क्रि० स० [ हिं० अपना ] १. अपने अनुकूल करना। अपनी ओर करना। २. अपना बनाना। अपनी शरण में लेना। ३ अपने अधिकार में करना।

**अपनापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० अपना ] १. अपनायत। आत्मीयता। २. आत्माभिमान।

**अपनापा**—संज्ञा पु० दे० "अपनापन"।

**अपनाम**—संज्ञा पु० [ सं० ] बदनामी। निंदा।

**अपनायत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अपना ] १ अपनापन। आत्मीयता। २. आपसदारी का संबंध।

**अपनोपन**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ हटाना। २. खंडन। प्रतिवाद।

**अपबस***—वि० [ हिं० अपना + वश ] अपने वश या काबू का।

**अपभय**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. निर्भयता। २ व्यर्थ भय। ३ डर। भय।

वि० [ सं० ] निर्भय। जो न डरे।

**अपभ्रंश**—संज्ञा पु० [ सं० ] [वि० अपभ्रष्ट। अपभ्रंशित ] १ पतन। गिराव। २ बिगाड़। विकृति। ३ बिगड़ा हुआ शब्द। ४. आधुनिक देशभाषाओं का वह स्वरूप जो प्राकृतों के बाद और वर्तमान रूप से पहले का जिससे वर्तमान हिंदी का विकास हुआ है।

वि० विकृत। बिगड़ा हुआ।

**अपभ्रष्ट**—वि० [ सं० ] १ गिरा हुआ। पतित। २ बिगड़ा हुआ। विकृत।

**अपमान**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. अनादर। अवज्ञा। २ तिरस्कार। बेइज़्ज़ती।

**अपमानना***—क्रि० स० [ सं० अपमान ] अपमान करना। तिरस्कार करना।

**अपमानित**—वि० [सं०] १. निंदित। २. बेइज़्ज़त।

**अपमानी**—वि० [ सं० अपमानिन् ] [ स्त्री० अपमानिनी ] निरादर करनेवाला। तिरस्कार करनेवाला।

**अपमार्ग**—संज्ञा पु० [ सं० ] बुरा रास्ता। कुपंथ।

**अपमृत्यु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुमृत्यु। कुसमय मृत्यु। जैसे—साँप आदि के काटने से मरना।

**अपयश**—संज्ञा पु०[सं०] १. अपकीर्त्ति। बदनामी। बुराई। २ कलंक। लांछन।

**अपयोग**—संज्ञा पु० [ सं० ] बुरा योग। २ कुसमय। ३ असगुन।

**अपरंच**—अव्य० [सं०] १ और भी। २. फिर भी। पुनः।

**अपरंपार***—वि० [ सं० अपरंपर] जिसका पारावार न हो। असीम। बेहद।

**अपर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अपरा ] १ पहला। पूर्व का। २. पिछला। ३ अन्य। दूसरा।

**अपरछन***—वि० [ सं० अप्रच्छन्न या अपरिच्छन्न ] १ आवरण-रहित। जो ढका न हो। २ [ सं० प्रच्छन्न ] आवृत। छिपा। गुप्त।

**अपरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] परायापन।

संज्ञा स्त्री० [ सं० अ = नहीं + परता=परायापन ] भेद-भाव-शून्यता। अपनापन।

*†वि० [ हिं० अप + रत ] स्वार्थी।

**अपरती***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अप+ सं० रति] १ स्वार्थ। बेइमानी।

**अपरत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पिछलापन। अर्वाचीनता। २ परायापन। बेगानगी।

**अपर दिशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पश्चिम।

**अपरना***—संज्ञा स्त्री० दे० "अपर्णा"।

**अपरबल***—वि॰ [सं॰ प्रबल] बलवान्।

**अपरलोक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] परलोक। स्वर्ग।

**अपरस**—वि॰ [सं॰ अ + स्पर्श] १ जिसे किसी ने छूआ न हो। २. न छूने योग्य।
संज्ञा पुं॰ एक चर्मरोग जो हथेली और तलवे में होता है।

**अपरांत**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पश्चिम का देश।

**अपरा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ अध्यात्म या ब्रह्मविद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या। लौकिक विद्या। पदार्थविद्या। २ पश्चिम दिशा।

**अपराग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ द्वेष। वैर। २ अरुचि।

**अपराजिता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ विष्णुक्रांता लता। कौआठोंठी। कोयल। २ दुर्गा। ३ अयोध्या का एक नाम। ४ चौदह अक्षरों के एक वृत्त का नाम।

**अपराध**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ अपराधी] १. दोष। पाप। २ कसूर। जुर्म। ३. भूल। चूक।

**अपराधी**—वि॰ पुं॰ [सं॰ अपराधिन्] [स्त्री॰ अपराधिन, अपराधिनी] दोषी। पापी। मुजरिम।

**अपराह्ण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] दोपहर के पीछे का काल। तीसरा पहर।

**अपरिग्रह**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ दान का न लेना। दान-त्याग। २ आवश्यक धन से अधिक का त्याग। विराग। ३. योगशास्त्र में पाँचवाँ यम। सगत्याग।

**अपरिचय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] परिचय का अभाव।

**अपरिचित**—वि॰ [सं॰] १. जिसे परिचय न हो। जो जानता न हो। अनजान। २. जो जाना-बूझा न हो। अज्ञात।

**अपरिच्छिन्न**—वि॰ [सं॰] [भाव॰ अपरिच्छिन्नता] १. जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। २ मिला हुआ। ३ असीम। सीमारहित।

**अपरिणामी**—वि॰ [सं॰ अपरिणामिन्] [स्त्री॰ अपरिणामिनी] १ परिणाम-रहित। विकारशून्य। जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो। २ निष्फल। व्यर्थ।

**अपरिपक्व**—वि॰ [सं॰] [भाव॰ अपरिपक्वता। अपरिपाक] १ जो पका न हो। कच्चा। २ अधकच्चा, अधकचरा।

**अपरिमित**—वि॰ [सं॰] १ असीम। बेहद। २ असंख्य। अगणित।

**अपरिमेय**—वि॰ [सं॰] १ बेअंदाज़। अकूत। २ असंख्य। अनगिनत।

**अपरिवर्त्तनीय**—वि॰ [सं॰] जिसमें कोई परिवर्तन या फेर बदल न हो सके।

**अपरिहार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ अपरिहारित, अपरिहार्य्य।] १ अवर्जन। अनिवारण। २ दूर करने के उपाय का अभाव।

**अपरिहार्य्य**—वि॰ [सं॰] १ जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके। अनिवार्य्य। २. अत्याज्य। न छोड़ने योग्य। ३ आदरणीय। ४. न छीनने योग्य। ५ जिसके बिना काम न चले।

**अपरूप**—वि॰ [सं॰] [भाव॰ अपरूपता] १ बदशकल। भद्दा। बेडौल। २ अद्भुत। अपूर्व।

**अपर्णा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ पार्वती। २. दुर्गा।

**अपलक**—वि॰ [सं॰ अ + हिं॰ पलक] जिसकी पलकें न गिरें।
क्रि॰ वि॰ बिना पलक भांजाए। टक लगाए।

**अपलक्षण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कुलक्षण। बुरा चिह्न।

**अपलाप**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] व्यर्थ की बकवाद।

**अपलोक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. बदनामी। २ मिथ्या दोषारोपण। अपवाद।

**अपवर्ग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. मोक्ष। निर्वाण। मुक्ति। २ त्याग। ३. दान।

**अपवर्जन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ अपवर्जित] १. त्यागना। २. मुक्त करना। छोड़ना।

**अपवश***—वि॰ [हिं॰ अप + सं॰ वश] अपने अधीन। अपने वश का। 'परवश' का उलटा।

**अपवाद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ अपवादित] १ विरोध। प्रतिवाद। खंडन। २ निंदा। अपकीर्ति। ३. दोष। पाप। ४ वह नियम जो व्यापक नियम से विरुद्ध हो। उत्सर्ग का विरोधी। ५. सम्मति। राय। ६ आदेश। आज्ञा।

**अपवादक, अपवादी**—वि॰ [सं॰] १ निंदक। २ विरोधी। बाधक।

**अपवारण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ अपवारित] १ व्यवधान। रोक। आड़। २ हटाने या दूर करने का कार्य्य। ३ अंतर्द्धान।

**अपवित्र**—वि॰ [सं॰] जो पवित्र न हो। अशुद्ध। मलिन।

**अपवित्रता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] अशुद्ध। अशौच। मैलापन।

**अपविद्ध**—वि॰ [सं॰] १ त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। २ बेधा हुआ। विद्ध।
संज्ञा पुं॰ वह पुत्र जिसको उसके माता-पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्रवत् पाला हो। (स्मृति)

**अपव्यय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निरर्थक व्यय । फ़जूलखर्ची । २. बुरे कामों में खर्च ।

**अपव्ययी**—वि० [ सं० अपव्ययिन् ] अधिक खर्च करनेवाला । फ़जूलखर्च ।

**अपशकुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुसगुन । असगुन । बुरा शकुन ।

**अपशब्द**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. अशुद्ध शब्द । २. बिना अर्थ का शब्द । ३. गाली । कुवाच्य । ४. पाद ।

**अपसगुन***—संज्ञा पुं० दे० "अपशकुन" ।

**अपसना***—क्रि० अ० दे० "अपसवना" ।

**अपसर**—वि० [ हिं० अप=अपना + सर ( प्रत्य० ) ] आपही आप । मनमाना । अपने मन का ।

**अपसर्जन**—संज्ञा पु० [ सं० ] विसर्जन । त्याग ।

**अपसवना***—क्रि० अ० [सं० अपसरण ] खिसकना । भागना । चल देना ।

**अपसव्य**—वि० [सं०] १. 'सव्य' का उलटा दहिना । दक्षिण । २. उलटा । विरुद्ध । ३. जनेऊ दहिने कंधे पर रक्खे हुए ।

**अपसोस***—संज्ञा पुं० दे० 'अफ़सोस" ।

**अपसोसना***—क्रि० अ० [हिं० अपसोस ] सोच करना । अफ़सोस करना ।

**अपसौन***—संज्ञा पुं० [ सं० अपशकुन ] असगुन । बुरा सगुन ।

**अपसौना**†—क्रि० अ० [ ? ] आना । पहुँचना ।

**अपस्नान**—संज्ञा पु० [सं०] [ वि० अपस्नात ] वह स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं । मृतकस्नान ।

**अपस्मार**—संज्ञा पु० [ सं० ] एक रोग, जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्छित हो गिर पड़ता है । मिरगी ।

**अपस्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा, बेसुरा या कर्कश स्वर ।

**अपस्वार्थी**—वि० [ हिं० अप + सं० स्वार्थी ] स्वार्थ साधनेवाला । मतलबी ।

**अपह**—वि० [ सं० ] नाश करनेवाला । विनाशक । जैसे क्लेशापह ।

**अपहत**—वि० [ सं० ] १ नष्ट किया हुआ । मारा हुआ । २ दूर किया हुआ ।

**अपहरण**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० अपहरणीय, अपहरित, अपहृत ] १ छीनना । ले लेना । हर लेना । लूट । २. चोरी । ३ छिपाव । संगोपन ।

**अपहरना***—क्रि० स० [ सं० अपहरण ] १ छीनना । ले लेना । लूटना । २ चुराना । ३. कम करना । घटाना । क्षय करना ।

**अपहर्ता**—संज्ञा पु० [ सं० अपहर्तृ ] १. छीननेवाला । हर लेनेवाला । ले लेनेवाला । २ चोर । लूटनेवाला । ३ छिपानेवाला ।

**अपहार**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ अपहरण करने की क्रिया या भाव । २ छीनना । ३ भगा ले जाना ।

**अपहारी**—संज्ञा पु० [ स्त्री० अपहारिणी ] दे० 'अपहर्त्ता" ।

**अपहास**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. उपहास । २ अकारण हँसी ।

**अपहृत**—वि० [ सं० ] छीना हुआ । चुराया हुआ । लूटा हुआ ।

**अपह्नव**—संज्ञा पुं० [सं०] १ छिपाव । दुराव । २. मिस । बहाना । टालमटूल ।

**अपह्नुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ दुराव । छिपाव । २. बहाना । टालमटूल । ३. वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय ।

**अपांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आँख का कोना । आँख की कोर । २. कटाक्ष । तिरछी नजर ।

वि० अंगहीन । अंगभंग ।

**अपा***—संज्ञा पु० [ हिं० आपा ] घमंड । गर्व ।

**अपात्र**—वि० [ सं० ] १. अयोग्य । कुपात्र । २. मूर्ख । ३ श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य ( ब्राह्मण ) ।

**अपादान**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. हटाना । अलगाव । विभाग । २. व्याकरण मे पाँचवाँ कारक जिससे एक एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारंभ सूचित होता है । इसका चिह्न 'से' है । जैसे "घर से" ।

**अपान**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. दस या पाँच प्राणों में से एक । २ गुदास्थ वायु जो मल-मूत्र को बाहर निकालती है । ३. वह वायु जो तालु से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त है । ४ वह वायु जो गुदा से निकले । ५ गुदा ।

*संज्ञा पु० [ हिं० अपना ] १ आत्मभाव । आत्मतत्त्व । आत्मज्ञान । २. आपा । आत्मगौरव । भरम । ३ सुध । होशहवास । ४ अहम् । अभिमान । घमंड ।

*सर्व० दे० "अपना" ।

**अपान वायु**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ पाँच प्रकार की वायु में से एक । २ गुदास्थ वायु । पाद ।

**अपाना**†—सर्व० दे० "अपना" ।

**अपाप**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह जो पाप न हो । पुण्य ।

वि० पापरहित ।

**अपामार्ग**—संज्ञा पु० [सं०] चिचड़ा ।

**अपाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ विश्लेष । अलगाव । २ अपगमन । पीछे हटना । ३ नाश । *४ अन्यथाचार । अनरीति ।

वि० [ सं० अ = नहीं + हिं० पाय = पैर ] १. बिना पैर का । लँगड़ा । अपाहिज । २. निरुपाय । असमर्थ ।

**अपार**—वि० [ सं० ] १. सीमारहित । अनंत । असीम । जिसकी सीमा न हो । २. असंख्य । अतिशय ।

**अपारग**—वि० [ सं० ] १. जो पार-गामी न हो । २ अयोग्य । ३ असमर्थ ।

**अपार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कविता में वाक्यार्थ स्पष्ट न होने का दोष ।

**अपार्थिव**—वि० [ सं० ] १. जो पार्थिव या लौकिक न हो । २ अलौकिक । लोकोत्तर ।

**अपाव***—संज्ञा पुं० [ सं० अपाय = नाश ] अन्यथाचार । अन्याय । उपद्रव ।

**अपावन**—वि० पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अपावनी ] अपवित्र । अशुद्ध । मलिन ।

**अपाहिज**—वि० [ सं० अपाहिक ] १. अगभंग । खंज । लूला-लँगड़ा । २ काम करने के अयोग्य । ३. आलसी ।

**अपिंडी**—वि० [ सं० अपिंडिन् ] पिंड या शरीर रहित । अशरीरी ।

**अपि**—अव्य० [ सं० ] १. भी । ही । २ निश्चय । ठीक ।

**अपितु**—अव्य० [ सं० ] १. किन्तु । २ बल्कि ।

**अपिधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आच्छादन । आवरण । ढकन ।

**अपीच***—वि० [ सं० अपीच्य ] सुंदर ।

**अपील**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. निवेदन । विचारार्थ प्रार्थना । २. मातहत अदालत के फ़ैसले के विरुद्ध ऊँची अदालत में फिर से विचार के लिये अभियोग उपस्थित करना ।

**अपुत्र**—वि० [ सं० ] निःसंतान । पुत्रहीन ।

**अपुत्रक**—वि० दे० "अपुत्र" ।

**अपुनपो***—संज्ञा पुं० दे० "अपनपौ" ।

**अपुनीत**—वि० [सं०] १ अपवित्र । अशुद्ध । २ दूषित । दोषयुक्त ।

**अपूठना***—क्रि० स० [सं० आपोथन] १. विध्वंस या नाश करना । २. उलटना ।

**अपूठा***—वि० [ सं० अपुष्ट ] १ अपरिपक्व । अजानकार । अनभिज्ञ । २. निस्सार ।

वि० [अस्फुट] अविकसित । बेखिला ।

**अपूत**—वि० [ सं० ] अपवित्र । अशुद्ध ।

*वि० [ हिं० अ + पूत ] पुत्रहीन । निपूता ।

*संज्ञा पुं० कुपूत । बुरा लड़का ।

**अपूर***—वि० [ सं० आपूर्ण ] पूरा । भरपूर ।

**अपूरना***—क्रि० स० [ सं० आपूरण ] १. भरना । २ फूँकना । बजाना । (शंख)

**अपूरब**—वि० दे० "अपूर्व" ।

**अपूरा***—संज्ञा पुं० [ सं० आ + पूर्ण ] [स्त्री० अपूरी] भरा हुआ । फैला हुआ । व्याप्त ।

**अपूर्ण**—वि० [ सं० ] [ भाव० अपूर्णता, अपूर्णत्व ] १. जो पूर्ण या भरा न हो । २ अधूरा । असमाप्त । ३. कम ।

**अपूर्णता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ अधूरापन । २ न्यूनता । कमी ।

**अपूर्णत्व**—संज्ञा पुं० दे० "अपूर्णता" ।

**अपूर्णभूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय । जैसे-वह खाता था ।

**अपूर्व**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अपूर्वता ] १ जो पहले न रहा हो । २. अद्भुत । अनोखा । विचित्र । ३. उत्तम । श्रेष्ठ ।

**अपूर्वता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विलक्षणता । अनोखापन ।

**अपूर्वरूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह काव्यालंकार जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का निषेध हो ।

**अपेक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अपेक्षित] १. आकांक्षा । इच्छा । अभिलाषा । चाह । २. आवश्यकता । ज़रूरत । ३. आश्रय । भरोसा । आशा । ४ कार्य्य-कारण का अन्योन्य संबंध । ५. तुलना । मुकाबिला ।

**अपेक्षाकृत**—अव्य० [ सं० ] मुकाबिले में । तुलना में ।

**अपेक्षित**—वि० [ सं० ] १. जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो । आवश्यक । ज़रूरी । २ इच्छित । वांछित । चाहा हुआ ।

**अपेक्ष्य**—वि० [ सं० ] १. अपेक्षा करने के योग्य । २ दे० "अपेक्षित" ।

**अपेय**—वि० [ सं० ] न पीने योग्य ।

**अपेल***—वि० [ सं० अ = नहीं + प्रेर = दबाना ] जो हटे या टले नहीं । अटल ।

**अपैठ***—वि० [ हिं० अ + पैठना ] जहाँ पैठ न हो सके । दुर्गम । अगम ।

**अपोगंड**—वि० [ सं० ] १. सोलह वर्ष के ऊपर की अवस्थावाला । २ बालिग़ ।

**अप्रकट**—वि० [ सं० ] जो प्रकट न हो । छिपा हुआ । लुप्त ।

**अप्रकाशित**—वि० [ सं० ] १. जिसमें उजाला न हो । अँधेरा । २ जो प्रकट न हुआ हो । गुप्त । छिपा हुआ । ३. जो सर्वसाधारण के सामने न रक्खा गया हो । ४. जो छापकर प्रचलित न किया गया हो ।

**अप्रकृत**—वि० [ सं० ] १. अस्वाभा-

[illegible] । २. बनावटी । कृत्रिम । ३. [illegible] ।

**अप्रचलित**—वि० [ सं० ] जो प्रच-लित न हो । अव्यवहृत । अप्रयुक्त ।

**अप्रतिभ**—वि० [ सं० ] १. प्रतिभा-शून्य । चेष्टाहीन । उदास । २ स्फूर्ति-शून्य । सुस्त । मंद । ३ मतिहीन । निर्बुद्धि । ४. लजीला ।

**अप्रतिभा**—सज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ प्रतिभा का अभाव । २ न्याय में एक निग्रह-स्थान ।

**अप्रतिम**—वि० [ स० ] अद्वितीय । अनुपम ।

**अप्रतिष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० अप्रतिष्ठित ] १ अनादर । अपमान । २. अयश । अपकीर्ति ।

**अप्रतिहत**—वि० [ सं० ] जो किसी प्रकार रोका न जा सके । अबाध ।

**अप्रत्यक्ष**—वि० [ स० ] १ जो प्रत्यक्ष न हो । परोक्ष । २ छिपा । गुप्त ।

**अप्रत्याशित**—वि० [ सं० ] जिसकी आशा न की गई हो । अचानक होने-वाला ।

**अप्रमाद**—सज्ञा पुं० [ सं० ] प्रमाद का अभाव । बुद्धि का ठीक ठिकाने होना ।

वि० प्रमाद-रहित ।

**अप्रमेय**—वि० [ स० ] १ जो नापा न जा सके । अपरिमित । अपार । अनंत । २. जो तर्क या प्रमाण से न सिद्ध हो सके ।

**अप्रयुक्त**—वि० [ स० ] जो काम में न लाया गया हो । अव्यवहृत ।

**अप्रसक्त**—वि० [ स० ] प्रसग-विरुद्ध । अप्रासंगिक ।

**अप्रसन्न**—वि० [ स० ] १ जो प्रसन्न न हो । नाराज । २. खिन्न । दुखी । उदास ।

**अप्रसन्नता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रसन्नता का अभाव । २. नाराजगी । खिन्नता ।

**अप्रसिद्ध**—वि० [ सं० ] १ जो प्रसिद्ध न हो । अविख्यात । २. गुप्त । छिपा हुआ ।

**अप्रस्तुत**—वि० [ स० ] १ जो प्रस्तुत या मौजूद न हो । अनुपस्थित । २ जिसकी चर्चा न आई हो ।

सज्ञा पु० उपमान ।

**अप्रस्तुतप्रशंसा**—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह अलकार जिसमे अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय ।

**अप्राकृत**—वि० [ स० ] जो प्राकृत न हो । अस्वाभाविक । असाधारण ।

**अप्राप्त**—वि० [ स० ] १ जो प्राप्त न हो । दुर्लभ । अलभ्य । २ जिसे प्राप्त न हुआ हो । ३ अप्रत्यक्ष । परोक्ष । अप्रस्तुत ।

**अप्राप्तव्यवहार**—वि० [ स० ] सोलह वर्ष से कम का (बालक) । नाबालिग ।

**अप्राप्य**—वि० [ स० ] जो प्राप्त न हो सके । अलभ्य ।

**अप्रामाणिक**—वि० [ स० ] [ स्त्री० अप्रामाणिकी ] १ जो प्रमाण से सिद्ध न हो । ऊटपटाँग । २ जो मानने योग्य न हो ।

**अप्रासंगिक**—वि० [ सं० ] प्रसग-विरुद्ध । जिसकी कोई चर्चा न हो ।

**अप्रिय**—वि० पुं० [ स० ] १ अरुचि-कर । जो न रुचे । २ जिसकी चाह न हो ।

**अप्सरा**—सज्ञा स्त्री० [ स० ] १. अंबुकण । वाष्पकण । २ वेश्याओं की एक जाति । ३ स्वर्ग की वेश्याओं की एक जाति । ४ स्वर्ग की वेश्या । इन्द्र की सभा मे नाचनेवाली देवागना । परी ।

**अप्सरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा" ।

**अफ़ग़ान**—संज्ञा पुं० [अ०] अफ़ग़ा-निस्तान का रहनेवाला । काबुली ।

**अफ़यून**—संज्ञा स्त्री० दे० "अफ़ीम ।"

**अफरना**—क्रि० अ० [ सं० स्फार ] १ पेट भर खाना । भोजन से तृप्त होना । २ पेट का फूलना । ३ ऊबना और अधिक की इच्छा न रखना ।

**अफरा**—सज्ञा पुं० [ स० स्फार ] अजीर्ण या वायु से पेट फूलना ।

**अफराना***—क्रि० अ० [ हिं० अफ-रना ] भोजन से तृप्त करना ।

**अफराव**—संज्ञा पु० दे० "अफरा" ।

**अफल**—वि० [ स० ] १ फलहीन । निष्फल । २ व्यर्थ । निष्प्रयोजन । ३ बाँझ ।

**अफलातून**—सज्ञा पु० [ अ० ] १ यूनानी दार्शनिक प्लेटो का अरबी नाम । २ बहुत बड़ा अभिमानी या धूर्त ।

**अफ़वाह**—सज्ञा स्त्री० [अ०] उड़ती खबर । बाज़ारू खबर । किंवदंती । गप्प ।

**अफ़सर**—सज्ञा पु० [अ० आफ़िसर] १. प्रधान मुखिया । २ अधिकारी । हाकिम ।

**अफ़सरी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० अफ़सर] १ अधिकार । प्रधानता । २ हुकूमत । शासन ।

**अफ़साना**—सज्ञा पु० [फा०] किस्सा । कहानी । कथा ।

**अफ़सोस**—सज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ शोक । रंज । २ पश्चात्ताप । खेद । पछतावा । दुःख ।

**अफ़ीम**—सज्ञा स्त्री० [ यू० ओपियन, अ० अफ़यून ] पोस्त के ढोंढ का गोंद जो कड़ुआ, मादक और विष होता है ।

**अफ़ीमची**—सज्ञा पुं० [ हिं० अफ़ीम+ ची (प्रत्य०) ] वह पुरुष जिसे अफ़ीम खाने की लत हो ।

**अफीमी**—वि० [ हिं० अफीम ] अफीमची।

**अब**—क्रि० वि० [ सं० इदानीं, अप० एव्वहि ] इस समय। इस क्षण। इस घड़ी।

**मुहा०** †—अब की = इस बार। अब जाकर = इतनी देर पीछे। अब तब लगना या होना = मरने का समय निकट पहुँचना।

**अबटन**†—संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

**अबखरा** संज्ञा पुं०[अ०] भाप। वाष्प।

**अबतर**—वि० [ फा० ] [ संज्ञा अबतरी ] १ बुरा। खराब। २ बिगड़ा हुआ।

**अबद्ध**—वि० [सं०] १ जो बँधा न हो। मुक्त। २. स्वच्छंद। निरंकुश।

**अबध**—वि० [ सं० अबाध ] १ अचूक। जो खाली न जाय। २. जो रोका न जा सके।

**अबधू***—वि० [ सं० अबोध ] अज्ञानी। अबोध।

संज्ञा पुं० [सं०अवधूत]त्यागी। विरागी।

**अबध्य**—वि० [सं० स्त्री० अबध्या ] [ संज्ञा अबध्यता ] १ जिसे मारना उचित न हो। २ जिसे शास्त्रानुसार प्राणदंड न दिया जा सके। जैसे, स्त्री, ब्राह्मण। ३. जिसे कोई मार न सके।

**अबर***—वि० [ सं० अबल ] निर्बल। कमजोर।

संज्ञा पुं० [ फा० अब्र] बादल। मेघ।

**अबरक**—संज्ञा पुं० [ सं० अभ्रक ] १. एक धातु जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती हैं। भोडल। भोड़र २. एक प्रकार का पत्थर।

**अबरन***—वि० [ सं० अवर्ण्य ] जिसका वर्णन न हो सके। अकथनीय।

वि० [ सं० अवर्ण ] १. बिना रूप-रंग का। वर्णशून्य। २. एक रंग का नहीं। भिन्न।

*संज्ञा पुं० दे० "आवरण"।

**अबरस**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. घोड़े का एक रंग जो सब्जे से कुछ खुलता हुआ सफ़ेद होता है। २ इस रंग का घोड़ा।

**अबरा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. 'अस्तर' का उलटा। दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। उपल्ला। २. न खुलनेवाली गाँठ। उलझन। निर्बल।

**अबरी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज। २. एक पीला पत्थर जो पच्चीकारी के काम आता है। एक प्रकार की लाह की रंगाई।

**अबरू**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] भौंह। भ्रू।

**अबल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अबला ] निर्बल। कमज़ोर।

**अबलख**—वि० [ सं० अवलक्ष ] सफ़ेद और काले अथवा सफ़ेद और लाल रंग का। कबरा। दोरंगा।

संज्ञा पुं० वह घोड़ा या बैल जिसका रंग सफ़ेद और काला हो।

**अबलखा**—संज्ञा पुं० [ सं० अवलक्ष ] एक प्रकार का काला पक्षी।

**अबला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्त्री। औरत।

**अबवाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह अधिक कर जो सरकार मालगुज़ारी पर लगाती है।

**अबस**—क्रि० वि० [ अ० ] व्यर्थ।

वि० [ सं० अवश ] जो अपने वश में न हो।

**अबाँह***—वि० [ हिं० अ+बाँह ] १. जिसकी बाँह न हो। निहत्था। २. जिसकी बाँह पकड़नेवाला कोई न हो। अनाथ।

**अबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अंगे से नीचा एक ढीला-ढाला पहनावा।

**अबात***—वि० [ सं० अ+वात ] १. बिना वायु का। २. जिसे वायु न हिलाती हो। ३. भीतर-भीतर सुलगनेवाला।

**अबादान**—वि० [ अ० आबाद ] बसा हुआ। पूर्ण। भरा पूरा।

**अबादानी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० आबादानी ] १. पूर्णता। बस्ती। २. शुभचिंतकता। ३. चहल-पहल। रौनक।

**अबाध**—वि० [सं०] १. बाधारहित। बेरोक। २. निर्विघ्न। ३. अपार। अपरिमित। बेहद। ४. जो असंगत न होता हो।

**अबाधित**—वि० [ सं० ] १. बाधारहित। बेरोक। २. स्वच्छंद। स्वतंत्र।

**अबाध्य**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा अबाध्यता ] १. बेरोक। जो रोका न जा सके। २. अनिवार्य्य।

**अबान***—वि० [ सं० अबाण ] शस्त्ररहित। हथियार छोड़े हुए। निहत्था।

**अबाबील**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] काले रंग की एक चिड़िया। कृष्णा। कन्हैया।

**अबार***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अ = बुरा + वेला = समय ] देर। बेर। विलंब।

**अबास***—संज्ञा पुं० [ सं० आवास ] रहने का स्थान। घर। मकान।

**अबिगत***—वि० [ सं० अ + विज्ञात ] जो जाना न जा सके। अज्ञेय।

**अबीर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० अबीरी ] रंगीन बुकनी जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं।

**अबीरी**—वि० [ अ० ] अबीर के रंग का। कुछ कुछ स्याही लिए लाल रंग का।

संज्ञा पुं० अबीरी रंग।

**अबुहाना**—क्रि० अ० दे० "अभुआना"।

**अबूझ**—वि० [ सं० अबुद्ध ] अबोध।

[illegible] । अदान ।

**अपूत***—वि० [ हिं० अ + पूत ] १. निकम्मा । व्यर्थ का । २. निःसंतान ।

**अबे**—अव्य [ सं० अयि ] अरे । हे । अपमान जनक संबोधन ।

**मुहा०**—अबे तबे करना = निरादर-सूचक वाक्य बोलना ।

**अबेध**—वि० [ हिं० ‾ + बेधना ] जो बेधा या छेदा न गया हो ।

**अबेर***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अवेला ] विलंब ।

**अबेश***—वि० [ फ़ा० बेश ] अधिक । बहुल ।

**अबैन*** —वि० [ हिं० अ + बैन ] चुप । मौन ।

**अबोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अज्ञान । मूर्खता ।

वि० [ सं० ] अनजान । नादान । मूर्ख ।

**अबोल***—वि० [ सं० अ = नहीं + हिं० बोल ] १. मौन । अवाक् । २. जिसके विषय में बोल या कह न सकें । अनिर्वचनीय ।

संज्ञा पुं० कुबोल । बुरा बोल ।

**अबोला**—संज्ञा पुं० [ सं० अ + हिं० बोलना ] रंज से न बोलना । रूठने के कारण मौन ।

**अब्ज**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ जल से उत्पन्न वस्तु । २ कमल । ३. शंख । ४. हिज्जल । ईजड़ । ५. चंद्रमा । ६ धन्वन्तरि । ७. कपूर । ८. सौ करोड़ । अरब ।

**अब्जद**—संज्ञा पु० [ अ० ] १. वर्णमाला विशेषतः रोमन या उसके क्रम से बनी हुई वर्णमालाओं ए, बी, सी, डी, या अलिफ, बे, जीम, दाल आदि से आरम्भ होती है । २. अरबी में अक्षरों द्वारा अंक सूचित करने की प्रणाली ।

**अब्जा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लक्ष्मी ।

**अब्द**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वर्ष । साल । २ मेघ । बादल । ३. आकाश ।

**अब्धि**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ समुद्र । सागर । २. सरोवर । ताल । ३ सात की सख्या ।

**अब्धिज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अब्धिजा ] १. समुद्र से पैदा हुई वस्तु । २ शख । ३. चंद्रमा । ४. अश्विनी-कुमार ।

**अब्बा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बाबा ] पिता ।

**अब्बास**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० अब्बासी ] एक पौधा जो फूल के लिये लगाया जाता है । गुले अब्बास । गुलाबाँस ।

**अब्बासी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मिस्र देश की एक प्रकार की कपास । २. एक प्रकार का लाल रंग ।

**अभ्र**—संज्ञा पुं० [ फ़ा०, [सं० अभ्र ] बादल । मेघ ।

**अब्रह्मण्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ वह कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो । २. हिंसादि कर्म । ३. जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो ।

**अब्रू**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा०, सं० भ्रू ] भौंह ।

**अभंग**—वि० [ सं० ] १ अखंड । अटूट । पूर्ण । २. अनाशवान् । न मिटनेवाला । ३ लगातार ।

संज्ञा पु० मराठी भाषा का एक प्रसिद्ध पद या छन्द ।

**अभंगपद**—संज्ञा पु० [ सं० ] श्लेष अलकार का एक भेद । वह श्लेष जिसमें अक्षरों को इधर उधर न करना पड़े ।

**अभंगी***—वि० [ सं० अभंगिन् ] १. अभंग । पूर्ण । २. जिसका कोई कुछ ले न सके ।

**अभंजन**—वि० [ सं० ] अटूट । अखंड ।

**अभक्त**—वि० [ सं० ] १. भक्तिशून्य । श्रद्धाहीन । २. भगवद्विमुख । ३. जो बाँटा या अलग न किया गया हो । समूचा ।

**अभक्ष**—वि० दे० "अभक्ष्य" ।

**अभक्ष्य**—वि० [ सं० ] १. अखाद्य । अभोज्य । जो खाने के योग्य न हो । २. जिसके खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो ।

**अभगत***—वि० दे० "अभक्त" ।

**अभग्न**—वि० [ सं० ] अखंड । समूचा ।

**अभद्र**—वि० [सं०] [ संज्ञा अभद्रता ] १. अमांगलिक । अशुभ । २. अशिष्ट । बेहूदा ।

**अभद्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अमांगलिकता । अशुभ । २. अशिष्टता । बेहूदगी ।

**अभयंकर**—वि० [ सं० ] जो भयंकर न हो ।

वि० दे० "अभयकर" ।

**अभय**—वि० [ सं० ] [स्त्री० अभया] निर्भय । बेडर ।

**मुहा०**—अभय देना या अभय बाँह देना = भय से बचाने का वचन देना । शरण देना ।

**अभयकर**—वि० [ सं० अभय + कर (प्रत्य०) ] अभयदान देनेवाला ।

**अभयदान**—संज्ञा पु० [ सं० ] भय से बचाने का वचन देना । शरण देना । रक्षा करना ।

**अभयपद**—संज्ञा पु० [ सं० ] मुक्ति ।

**अभयवचन**—संज्ञा पु० [ सं० ] भय से बचाने की प्रतिज्ञा । रक्षा का वचन ।

**अभर***—वि० [ सं० अ + भार ] दुर्वह । न ढोने योग्य ।

**अभरन***—संज्ञा पु० दे० "आभरण" ।

वि० [ सं० अवर्ण ] अपमानित । दुर्दशाग्रस्त । ज़लील ।

**अभरम***—वि० [ सं० अ + भ्रम ] १.

श्रम न करनेवाला। अश्रांत। २. निःशंक। निडर।

क्रि० वि० निःसंदेह। निश्चय।

**अभल***—वि० [सं० अ = नहीं + हिं० भला] अश्रेष्ठ। बुरा। खराब।

**अभव्य**—वि० [सं०] १.न होने योग्य। २. विलक्षण। अद्भुत। ३. अशुभ। बुरा।

**अभाऊ***—वि० [सं० अ = नहीं + भाव] १. जो न भावे। जो अच्छा न लगे। २. जो न सोहे। अशोभित।

**अभाग***—संज्ञा पुं० दे० "अभाग्य"।

**अभागा**—वि० [सं० अभाग्य] [स्त्री० अभागिनी] भाग्यहीन। प्रारब्धहीन। बदकिस्मत।

**अभागी**—वि० [सं० अभागिन्] [स्त्री० अभागिनी] १ भाग्यहीन। बदकिस्मत। २. जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।

**अभाग्य**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रारब्धहीनता। दुर्दैव। बुरा दिन। बदकिस्मती।

**अभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अविद्यमानता। न होना। २ त्रुटि। टोटा। कमी। घाटा। *३ कुभाव। दुर्भाव। विरोध।

**अभावना**—वि० [हिं० अ + भाना] जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

**अभावनीय**—वि० [सं०] जिसका पहले से अनुमान या विचार न किया गया हो। अकल्पित।

**अभाषण**—संज्ञा पुं० [सं०] भाषण या बातचीत न करना।

**अभास***—संज्ञा पुं० दे० "आभास"।

**अभि**—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगाकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—१. सामने। २. बुरा। ३ इच्छा। ४. समीप। ५. बार-बार। अच्छी तरह। ६. दूर। ७. ऊपर।

**अभिक्रमण**—संज्ञा पुं० [सं०] चढ़ाई धावा।

**अभिगमन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पास जाना। २. सहवास। संभोग।

**अभिगामी**—वि० [सं०] [स्त्री० अभिगामिनी] १. पास जानेवाला। २. सहवास या संभोग करनेवाला।

**अभिघात**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिघातक अभिघाती] १. चोट पहुँचाना। २ प्रहार। मार।

**अभिचार**—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्र-यंत्र द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसा-कर्म। पुरश्चरण।

**अभिचारी**—वि० [सं० अभिचारिन्] [स्त्री० अभिचारिणी] यंत्र मंत्र आदि का प्रयोग करनेवाला।

**अभिजन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुल। वंश। २ परिवार। ३ जन्मभूमि। ४. वह जो घर में सबसे बड़ा हो। ५. ख्याति।

**अभिजात**—वि० [सं०] १. अच्छे कुल में उत्पन्न। कुलीन। २ बुद्धिमान्। पंडित। ३ योग्य। उपयुक्त। ४ मान्य। पूज्य। ५. सुंदर। मनोहर।

**अभिजित**—वि० [सं०] विजयी।

संज्ञा पुं० [सं०] सिंघाड़े के आकार का एक नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं।

**अभिज्ञ**—वि० [सं०] १. जानकार। विज्ञ। २ निपुण। कुशल।

**अभिज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्मृति। याद। २ बुद्ध का अलौकिक ज्ञान-बल जो ध्यान की चारों अवस्थाओं के बाद होता है।

**अभिज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिज्ञात] १ स्मृति। खयाल। २. लक्षण। पहचान। ३. निशानी। सहिदानी। परिचायक चिह्न।

**अभिधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्दों के उस अर्थ को प्रकट करने की शक्ति जो उनके नियत अर्थों ही से निकलता हो।

**अभिधान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक नाम। २. कथन। ३. शब्दकोश।

**अभिधायक**—वि० [सं०] १. नाम रखनेवाला। २. कहनेवाला। ३ सूचक।

**अभिधेय**—वि० [सं०] १. प्रतिपाद्य। वाच्य। २. जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाय।

संज्ञा पुं० नाम।

**अभिनंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आनन्द। २ संतोष। ३. प्रशंसा। ४. उत्तेजना। प्रोत्साहन। ५ विनीत प्रार्थना।

**यौ०**—अभिनंदनपत्र = वह आदर या प्रतिष्ठासूचक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रकट करने के लिये उसे सुनाया और अर्पण किया जाता है।

**अभिनंदनीय**—वि० [सं०] वंदनीय। प्रशंसा के योग्य।

**अभिनंदित**—वि० [सं०] [स्त्री० अभिनंदिता] वंदित। प्रशंसित।

**अभिनय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल के लिये धारण करना। स्वाँग। नकल। २. नाटक का खेल।

**अभिनव**—वि० [सं०] १ नया। २ ताज़ा।

**अभिनिविष्ट**—वि० [सं०] १. धँसा हुआ। गड़ा हुआ। २ बैठा हुआ। ३ अनन्य मन से अनुरक्त। लिप्त। मग्न।

**अभिनिवेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रवेश। पैठ। गति। २. मनोयोग। लीनता। एकाग्रचिंतन। ३. दृढ़ संकल्प। तत्परता। ४. योगशास्त्र में मरण के

भय से उत्पन्न क्लेश। मृत्युशंका।

**अभिनीत**—वि० [ सं० ] १. निकट लाया हुआ। २. सुसज्जित। अलंकृत। ३. उचित। न्याय्य। ४. अभिनय किया हुआ। खेला हुआ ( नाटक )।

**अभिनेता**—संज्ञा पुं० [ सं० अभिनेतृ] [स्त्री० अभिनेत्री ] अभिनय करनेवाला व्यक्ति। स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। नट। ऐक्टर।

**अभिनेय**—वि० [ सं० ] अभिनय करने योग्य। खेलने योग्य ( नाटक )।

**अभिनै***—वि० दे० "अभिनव"। संज्ञा पुं० दे० 'अभिनय'।

**अभिन्न**—वि० [ सं० ] [संज्ञा अभिन्नता ] १. जो भिन्न न हो। अपृथक्। एकमय। २. सटा हुआ। संबद्ध। ३. मिला हुआ।

**अभिन्नता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भिन्नता का अभाव। २. लगाव। संबंध। ३. मेल।

**अभिन्नपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्लेष अलंकार का एक भेद।

**अभिप्राय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० अभिप्रेत ]१. आशय। मतलब। अर्थ। तात्पर्य। २. वह प्राकृतिक या काल्पनिक वस्तु जिसकी आकृति किसी चित्र में सजावट के लिए बनाई जाय।

**अभिप्रेत**—वि० [ सं० ] इष्ट। अभिलषित।

**अभिभावक**—वि० [ सं० ] १. अभिभूत या पराजित करनेवाला। २. स्तंभित कर देनेवाला। ३. वशीभूत करनेवाला। ४. देखरेख रखनेवाला। रक्षक। सरपरस्त।

**अभिभाषक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाषण करनेवाला। २. वकील।

**अभिभाषण**—संज्ञा पुं० [सं०] भाषण। व्याख्यान। वक्तृता। २. वकील की बहस।

**अभिभूत**—वि० [सं०] १. पराजित। हराया हुआ। २. पीड़ित। ३. जो वश में किया गया हो। वशीभूत। ४. विचलित। चकित या स्तब्ध।

**अभिमंत्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० अभिमंत्रित ] १. मंत्र द्वारा संस्कार। २. आवाहन।

**अभिमत**—वि० [सं०] १. मनोनीत। वांछित। २. सम्मत। राय के मुताबिक। संज्ञा पुं० १. मत। सम्मति। राय। २. विचार। ३. मनचाही बात।

**अभिमति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अभिमान। गर्व। अहंकार। २ वेदांत के अनुसार यह भावना कि 'अमुक वस्तु मेरी है'। ३ अभिलाषा। इच्छा। ४. राय। विचार।

**अभिमन्यु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अर्जुन का पुत्र।

**अभिमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अभिमानी ] अहंकार। गर्व। घमंड।

**अभिमानी**—वि० [सं० अभिमानिन् ] [स्त्री० अभिमानिनी ] अहंकारी। घमंडी।

**अभिमुख**—क्रि० वि० [सं०] सामने। सम्मुख।

**अभियान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चढ़कर या चलकर जाना। २ चढ़ाई। धावा।

**अभियुक्त**—वि० [सं०] [स्त्री० अभियुक्ता ] जिसपर अभियोग चलाया गया हो। मुलज़िम।

**अभियोक्ता**—वि० [सं०] [स्त्री० अभियोक्त्री ] अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। मुद्दई। फरियादी।

**अभियोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी के किए हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन। नालिश। मुकदमा। २. चढ़ाई। आक्रमण। ३. उद्योग।

**अभियोगी**—वि० [ सं० ] अभियोग चलानेवाला। नालिश करनेवाला। फ़रियादी।

**अभिरत**—वि० [ सं० ] १. लीन। अनुरक्त। २. युक्त। सहित।

**अभिरना***—क्रि० अ० [ सं० अभि+रण= युद्ध ] १. भिड़ना। लड़ना। २. टेकना।
क्रि० स० मिलाना।

**अभिराम**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अभिरामा ] [ भाव० अभिरामता ] मनोहर। सुंदर। रम्य। प्रिय।

**अभिरुचि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अत्यंत रुचि। चाह। पसंद। प्रवृत्ति।

**अभिलषित**—वि० [ सं० ] वांछित। इष्ट। चाहा हुआ।

**अभिलाख***—संज्ञा पुं० दे० "अभिलाष"।

**अभिलाखना***—क्रि० स० [ सं० अभिलषण ] इच्छा करना। चाहना।

**अभिलाखा***—संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाषा"।

**अभिलाष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इच्छा। शृंगार के अंतर्गत दस दशाओं में से एक। प्रिय से मिलने की इच्छा।

**अभिलाषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अभिलाष ] इच्छा। कामना। आकांक्षा। चाह।

**अभिलाषी**—वि० [ सं० अभिलाषिन्] [ स्त्री० अभिलाषिणी ] इच्छा करनेवाला। आकांक्षी।

**अभिवंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रणाम। नमस्कार। २. स्तुति।

**अभिवंदना**—संज्ञा स्त्री० दे० "अभिवंदन"।

**अभिवादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रणाम। नमस्कार। वंदना। २. स्तुति।

**अभिव्यंजक**—वि० [ सं० ] प्रकट

करनेवाला। प्रकाशक। सूचक। बोधक।

**अभिव्यंजन**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अभिव्यंजना] प्रकट करना। सूचित करना। स्पष्ट करना। व्यक्त करना।

**अभिव्यक्त**—वि० [सं०] प्रकट या ज़ाहिर किया हुआ। स्पष्ट किया हुआ।

**अभिव्यक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाशन। स्पष्टीकरण। साक्षात्कार। २. सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य में आविर्भाव। जैसे बीज से अंकुर निकलना।

**अभिशप्त**—वि० [सं०] १ शापित। जिसे शाप दिया गया हो। २. जिस-पर मिथ्या दोष लगा हो।

**अभिशाप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शाप। बददुआ। २. मिथ्या दोषारोपण।

**अभिशापित**—वि० दे० "अभिशप्त"।

**अभिषंग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पराजय। २. निंदा। आक्रोश। कोसना। ३ मिथ्या अपवाद। झूठा दोषारोपण। ४. दृढ़ मिलाप। आलिंगन। ५. शपथ। कसम। ६. भूत प्रेत का आवेश ७. शोक।

**अभिषिक्त**—वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] १. जिसका अभिषेक हुआ हो। २ बाधा-शांति के लिये जिसपर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो। ३. राजपद पर निर्वाचित।

**अभिषेक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल से सींचना। छिड़काव। २ ऊपर से जल डालकर स्नान। ३ बाधाशांति या मंगल के लिये मंत्र पढ़कर कुश और दूब से जल छिड़कना। मार्जन। ४ विधिपूर्वक मंत्र से जल छिड़ककर राजपद पर निर्वाचन। ५. यज्ञादि के पीछे शान्ति के लिये स्नान। शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा रखकर धीरे-धीरे पानी टपकाना।

**अभिष्यंद**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहाव। स्राव। २. आँख आना।

**अभिसंधि**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वंचना। धोखा। २. चुपचाप कोई काम करने की कई आदमियों की सलाह। कुचक्र। षड्यन्त्र।

**अभिसंधिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कलहांतरिता नायिका।

**अभिसरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आगे या पास जाना। २. प्रिय से मिलने जाना।

**अभिसरना***—क्रि० अ० [सं० अभिसरण] १ संचरण करना। जाना। २ किसी वांछित स्थान को जाना। ३. प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल को जाना।

**अभिसार**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभिसारिका, अभिसारी] १. सहाय। सहारा। २ युद्ध। ३ प्रिय से मिलने के लिये नायिका या नायक का संकेत-स्थल में जाना।

**अभिसारना***-क्रि० अ० दे० "अभिसरना"।

**अभिसारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो संकेत-स्थान में प्रिय से मिलने के लिये स्वयं जाय या प्रिय को बुलावे।

**अभिसारिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिसारिका।

**अभिसारी**—वि० [सं० अभिसारिन्] [स्त्री० अभिसारिका] १. साधक। सहायक। २. प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थल पर जानेवाला।

**अभिहित**—वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।

**अभी**—क्रि० वि० [हिं० अब+ही] इसी क्षण। इसी समय। इसी वक्त।

**अभीक**—वि० [सं०] १. निर्भय। निडर। २. निष्ठुर। कठोरहृदय। ३. उत्सुक।

**अभीप्सा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभीप्सित, अभीप्सु] किसी वस्तु के पाने की नितांत इच्छा। उत्कट अभिलाषा।

**अभीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गोप। अहीर। २. एक छंद।

**अभीष्ट**—वि० [सं०] १. वांछित। चाहा हुआ। २. मनोनीत। पसंद का। ३. अभिप्रेत। आशय के अनुकूल। संज्ञा पुं० मनोरथ। मनचाही बात।

**अभुआना**—क्रि० अ० [सं० आह्वान] हाथ पैर पटकना और सिर हिलाना जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।

**अभुक्त**—वि० [सं०] १. न खाया हुआ। २ बिना बर्ता हुआ। अव्यवहृत।

**अभुक्तमूल**—संज्ञा पुं० [सं०] ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ी। गडांत।

**अभू***—क्रि० वि० दे० "अभी"।

**अभूखन***†-संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।

**अभूत**—वि० [सं०] १. जो हुआ न हो। २. वर्तमान। ३. अपूर्व। विलक्षण।

**अभूतपूर्व**—वि० [सं०] १. जो पहले न हुआ हो। २. अपूर्व। अनोखा।

**अभेद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १. भेद का अभाव। अभिन्नता। एकत्व। २. एकरूपता। समानता। ३. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक।

वि० भेदशून्य। एकरूप। समान।

*वि० दे० "अभेद्य"।

**अभेदनीय**—वि० [सं०] जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

**अभेद्य**—वि० [सं०] १. जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके। २. जो टूट न सके।

**अभेव***—संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

**अभेरना**—क्रि० स० [सं० अभि+रण] १. भिड़ाना। मिलाकर रखना। सटाना। २. मिलाना। मिश्रित करना।

**अभेरा**—संज्ञा पुं० [सं० अभि+रण= लड़ाई] १ रगड़ा। मुठ-भेड़। २. रगड़। टक्कर।

**अभेव***—संज्ञा पुं० दे० "अभेद"।

**अभोग**—वि० [सं०] १. जिसका भोग न किया गया हो। अछूता। २. दे० "अभोग्य"।

**अभोगी**—वि० [सं०] जो भोग न करे। विरक्त।

**अभोग्य**—वि० [सं०] [स्त्री० अभोग्या] जो भोग करने के योग्य न हो।

**अभौतिक**—वि० [सं०] १. जो पंच-भूत का न बना हो। २. अगोचर।

**अभ्यंग**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] १. लेपन। चारों ओर पोतना। २. शरीर में तेल लगाना।

**अभ्यंतर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मध्य। बीच। २. हृदय।

क्रि० वि० भीतर। अंदर।

**अभ्यर्थना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित।] १. सम्मुख प्रार्थना। विनय। दरख्वास्त। २. सम्मान के लिये आगे बढ़कर लेना। अगवानी।

**अभ्यसित**—वि० दे० "अभ्यस्त"।

**अभ्यस्त**—वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास किया गया हो। बार बार किया हुआ। २. जिसने अभ्यास किया हो। दक्ष। निपुण।

**अभ्यागत**—वि० [सं०] १. सामने आया हुआ। २. अतिथि। पाहुन। मेहमान।

**अभ्यास**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्यासी, अभ्यस्त] १ पूर्णता प्राप्त करने के लिये फिर फिर एक ही क्रिया का अवलंबन। साधन। आवृत्ति। मश्क। २ आदत। बान।

**अभ्यासी**—वि० [सं० अभ्यासिन्] [स्त्री० अभ्यासिनी] अभ्यास करनेवाला। साधक।

**अभ्युत्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उठना। २ किसी बड़े के आने पर उसके आदर के लिये उठकर खड़े हो जाना। प्रत्युद्गम। ३ बढ़ती। समृद्धि। उन्नति। ४. उठान। आरंभ। उदय। उत्पत्ति।

**अभ्युदय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य्य आदि ग्रहों का उदय। २ प्रादुर्भाव। उत्पत्ति। ३. मनोरथ की सिद्धि। ४ विवाह आदि शुभ अवसर। ५ वृद्धि। बढ़ती। उन्नति।

**अभ्युपगम**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अभ्युपगत] १ सामने आना या जाना। प्राप्ति। २ स्वीकार। अंगीकार। मंजूरी। ३ बिना परीक्षा किए किसी ऐसी बात को मानकर, जिसका खंडन करना है, फिर उसकी विशेष परीक्षा करना। (न्याय)

**अभ्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मेघ। बादल। २ आकाश। ३. अभ्रक धातु। ४. स्वर्ण। सोना। ५ नागरमोथा।

**अभ्रक**—संज्ञा पुं० [सं०] अबरक। भोडर।

**अभ्रांत**—वि० [सं०] १ भ्रांति-शून्य। भ्रमरहित। २ स्थिर।

**अमंगल**—वि० [सं०] मंगलशून्य। अशुभ।

संज्ञा पुं० अकल्याण। दुःख। अशुभ।

**अमंद**—वि० [सं०] १. जो धीमा न हो। तेज। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ उद्योगी। ४ बहुत। अधिक प्रचुर।

**अमका**—संज्ञा पुं० [सं० अमुक] ऐसा ऐसा। अमुक। फलाना।

**अमचूर**—संज्ञा पुं० [हिं० आम+चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण। आम की पिसी हुई फाँकें।

**अमड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० आम्रात] एक पेड़ जिसमें आम की तरह के छोटे छोटे खट्टे फल लगते हैं। अमारी।

**अमत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मत का अभाव। असम्मति। २ रोग। ३ मृत्यु।

**अमत्त**—वि० [सं०] १ मदरहित। २ बिना घमंड का। ३ शांत।

**अमन**—संज्ञा पुं० [अ०] १. शांति। चैन। आराम। २ रक्षा। बचाव।

**अमनिया***—वि० [देश०] शुद्ध। पवित्र।

संज्ञा स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया। (साधु)

**अमनैक**—संज्ञा पुं० [सं० अम्नायिक] १ सरदार। २ हकदार। ३ ढीठ।

**अमर**—वि० [सं०] जो मरे नहीं। चिरंजीवी।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरा, अमरी] १ देवता। २. पारा। ३. हड़जोड़ का पेड़। ४. अमरकोश। ५ लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्त्ता अमरसिंह। ६. उनचास पवनों में से एक।

संज्ञा पुं० [अ० अम्र] १ काम। २ घटना। ३. विषय। ४ समस्या।

**अमरख***—संज्ञा पुं० [सं० अमर्ष= क्रोध] [स्त्री० अमरखी] १ क्रोध। कोप। गुस्सा। रिस। †२ क्षोभ। दुःख। रंज।

**अमरखी***—वि० [हिं० अमरख] क्रोधी। बुरा माननेवाला। दुखी होनेवाला।

**अमरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु का अभाव। चिरजीवन। २ देवत्व।

**अमरत्व**—संज्ञा पुं० दे० "अमरता"।

**अमरपख***—संज्ञा पुं० [सं० अमर-पक्ष] पितृपक्ष।

**अमरपति**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**अमरपद**—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ति।

**अमरपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अमरपुरी] अमरावती। देवताओं का नगर।

**अमरबेल**—संज्ञा स्त्री० [सं० अमरवल्ली] एक पीली लता या बौर जिसमें जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं। आकाश बौर।

**अमरलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

**अमरवल्ली**—संज्ञा स्त्री० [सं० अमर-वल्ली] अमरबेल। आकाश-बँवर। अमर-बोरिया।

**अमरस**—संज्ञा पुं० दे० "अमावट"।

**अमरसी**—वि० [हिं० अमरस] आम के रस की तरह पीला। सुनहला।

**अमराई**†—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रराजि] आम का बाग। आम की बारी।

**अमरालय**—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

**अमराव***†—संज्ञा पुं० दे० "अम-राई"।

**अमरावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देव-ताओं की पुरी। इन्द्रपुरी।

**अमरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ देवता की स्त्री। देवकन्या। देवपत्नी। २. एक पेड़। सग। आमन। पिया-साल।

**अमरीका**—संज्ञा पुं० दे० "अमेरिका"।

**अमरीकी**—वि० [हिं० अमेरिका] अमेरिका महादेश का। अमेरिका संबंधी।

संज्ञा पुं० अमेरिका का निवासी।

**अमरू**—संज्ञा पुं० [अ० अहमर = लाल ?] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**अमरूत, अमरूद**—संज्ञा पुं० [सं० अमृत (फल)] १ एक गोल मीठा फल जिसके अंदर सरसों के बराबर बहुत से बीज होते हैं। २. उक्त फल का पेड़।

**अमरेश**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**अमर्याद**—वि० [सं०] १ मर्यादा-विरुद्ध। बेकायदा। २ अप्रतिष्ठित।

**अमर्यादा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्र-तिष्ठा। बेइज्जती।

**अमर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अमर्षित, अमर्षी] १. क्रोध। रिस। वह द्वेष या दुःख जो ऐसे मनुष्य का कोई अपकार न कर सकने के कारण उत्पन्न होता है जिसने अपना तिरस्कार किया हो। ३ असहिष्णुता। अक्षमा।

**अमर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध। रिस।

**अमर्षी**—वि० [सं० अमर्षिन्] [स्त्री० अमर्षिणी] असहनशील। जल्दी बुरा माननेवाला।

**अमल**—वि० [सं०] [स्त्री० अमला] १ निर्मल। स्वच्छ। २ निर्दोष। पापशून्य।

संज्ञा पुं० [अ०] १ व्यवहार। कार्य। आचरण। साधन। २ अधिकार। शासन। हुकूमत। ३ नशा। ४ आदत। बान। टेव। लत। ५ प्रभाव। असर। ६ भोगकाल। समय।

**अमलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निर्मलता। स्वच्छता। २ निर्दोषता।

**अमलतास**—संज्ञा पुं० [सं० अम्ल] एक पेड़ जिसमें लंबी गोल फलियाँ लगती हैं जिसका फूल पीला होता है।

**अमलदारी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अधिकार। दखल। २. एक प्रकार की काश्तकारी जिसमें असामी को पैदावार के अनुसार लगान देनी पड़ती है। कनकूत।

**अमलपट्टा**—संज्ञा पुं० [अ० अमल + हिं० पट्ट] वह दस्तावेज़ या अधि-कार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिंदे को किसी कार्य्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाय।

**अमलबेत**—संज्ञा पुं० [सं० अम्ल-वेतस्] १. एक प्रकार की लता जिसकी सूखी हुई टहनियाँ खट्टी होती हैं और चूरण में पड़ती हैं। २ एक पेड़ जिसके फल की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है।

**अमला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २. सातला वृक्ष।

संज्ञा पुं० [अ०] कार्य्याधिकारी। कर्मचारी। कचहरी में काम करने-वाला।

**अमलौरा**—संज्ञा पुं० [अ० अमल = नशा + औरा (प्रत्य०)] नशे में चूर। मदमस्त।

**अमलिन**—वि० [सं०] जो मलिन न हो। स्वच्छ। साफ़।

**अमली**—वि० [अ०] १. अमल में आनेवाला। व्यावहारिक। २. अमल करनेवाला। कर्मण्य। ३ नशेबाज़।

**अमलोनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अम्ल-लोणी] नोनियाँ घास। नोनी।

**अमहर**—संज्ञा पुं० [हिं० आम] छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।

**अमाँ**—अव्य० [हिं० ए + फ़ा० मियाँ] मुसलमानों का एक संबोधन। ऐ मियाँ।

**अमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमा-वास्या की कला। २. घर। ३. मर्त्य-लोक।

**अमातना***—क्रि० स० [सं० आम-त्रण] आमंत्रित करना। निमंत्रण या न्योता देना।

**अमात्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मंत्री।

वज़ीर।

**अमाप**—वि० [ सं० ] १. जिसका माप या अंदाज़ न हो। अपरिमित। बेहद। २. गर्वरहित। निरभिमान। सीधा-सादा। ३. अप्रतिष्ठित। अनादृत। तुच्छ।
संज्ञा पुं० [ अ० ] १. रक्षा। बचाव। २. शरण। पनाह।

**अमानत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिए रखना। २. वह वस्तु जो इस प्रकार रखी जाय। थाती। धरोहर।

**अमानतदार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जिसके पास अमानत रखी जाय।

**अमानतनामा**—संज्ञा पुं० [ अ० + फ़ा० ] वह पत्र जिस पर अमानत में रखी हुई चीज़ों का विवरण हो।

**अमाना**—क्रि० अ० [ सं० आ = पूरा + मान ] १. पूरा पूरा भरना। समाना। अँटना। २. फूलना। इतराना। गर्व करना।

**अमानी**—वि० [ सं० अमानिन् ] निरभिमान। घमंडरहित। अहंकार-शून्य।
संज्ञा स्त्री० [सं० आत्मन् ] १. वह भूमि जिसकी ज़मींदार सरकार हो। खास। २. वह ज़मीन या कोई कार्य जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो। ३ लगान की वह वसूली जिसमें फ़सल के विचार से रिआयत हो।
†संज्ञा स्त्री० [सं० अ० + हिं० मानना] अपने मन की कारवाई। अंधेर। मनमानी।

**अमानुष**—वि० [ सं० ] १. मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर का। २. मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक।
संज्ञा पुं० १. मनुष्य से भिन्न प्राणी। २. देवता। ३. राक्षस।

**अमानुषिक**—वि० दे० "अमानुषी"।

**अमानुषी**—वि० [ सं० अमानुषीय ] १. मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध। पाशव। पैशाचिक। २. मानवी शक्ति के बाहर का।

**अमाय***—वि० दे० "अमाया"।

**अमाया**—वि० [ सं० ] १. माया-रहित। निर्लिप्त। २. निष्कपट। निश्छल।

**अमारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी"।

**अमार्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुमार्ग। कुराह। २. बुरी चाल। दुराचरण।

**अमाल**—संज्ञा पुं० [ अ० अमल ] अमल रखनेवाला। शासक।

**अमावट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आम्रावत, प्रा० अम्मावट्ट ] १.*आम के सुखाये हुए रस की पर्त या तह। २. पहिना जाति की एक मछली।

**अमावना***—क्रि० अ० दे० "अमाना"।

**अमावस**—संज्ञा स्त्री० दे० "अमावास्या।"

**अमावास्या**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि।

**अमाह**—संज्ञा पुं० [ सं० अमास ] आँख के डेले से निकला हुआ लाल मांस। नाख़ूना।

**अमिख**—संज्ञा पुं० [ सं० आमिष ] मांस। गोश्त।

**अमिट**—वि० [सं० अ + हिं० मिटना] १ जो न मिटे। जो नष्ट न हो। स्थायी। २. जिसका होना निश्चित हो। अटल। अवश्यभावी।

**अमित**—वि० [ सं० ] १. अपरिमित। बेहद। असीम। २ बहुत अधिक।

**अमिताभ**—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव।

**अमित्र**—वि० [ सं० ] १ शत्रु। बैरी। २. जिसका कोई दोस्त न हो। अमित्रक।

**अमिय***—संज्ञा पुं० [ सं० अमृत ] अमृत।

**अमिय मूरि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अमृत+मूल, वैदिक मूर ] अमृतबूटी। संजीवनी जड़ी।

**अमिरती**†—संज्ञा स्त्री० दे० "इमरती"।

**अमिल***—वि० [ सं० अ = नहीं + हिं० मिलना ] १ न मिलने योग्य। अप्राप्य। २. बेमेल। बेजोड़। ३. जिससे मेल-जोल न हो। ४ ऊभड़-खाभड़। ऊँचा-नीचा।

**अमिली**—संज्ञा स्त्री० दे० "इमली"।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० अ + मिलना ] मेल या अनुकूलता न होना। विरोध। मनमुटाव।

**अमिश्रित**—वि० [ सं० ] १. जो मिलाया न गया हो। २. बेमिलावट। खालिस।

**अमिष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छल का अभाव। बहाने का न होना।
*वि० निश्छल। जो हीलेबाज़ न हो। दे० "आमिष"।

**अमी***—संज्ञा पुं० दे० "अमिय"।

**अमीकर***—संज्ञा पुं० [सं० अमृतकर] चंद्रमा।

**अमीकला**—संज्ञा पुं० [ हिं० अमी ( अमृत ) + कला ] चंद्रमा।

**अमीत***—संज्ञा पुं० [ सं० अमित्र ] शत्रु।

**अमीन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ भाव० अमीनी ] वह अदालती कर्मचारी जिसके सपुर्द बाहर का काम हो।

**अमीर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ कार्याधिकार रखनेवाला। सरदार। २. धनाढ्य। दौलतमंद। ३ उदार।

**अमीराना**—वि० [ अ० ] अमीरों का-सा। जिससे अमीरी प्रगट हो।

**अमीरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. धनाढ्यता। दौलतमंदी। २. उदारता।

वि० अमीर का-सा । जैसे अमीरी ठाट ।

**अमुक**—वि० [ सं० ] फ़लाँ । ऐसा ऐसा । कोई व्यक्ति । ( इस शब्द का प्रयोग किसी नाम के स्थान पर करते हैं । )

**अमूर्त**—वि० [ सं० ] । निराकार । संज्ञा पुं० १ परमेश्वर । २ आत्मा । ३. जीव । ४. काल । ५. दिशा । ६. आकाश । ७. वायु ।

**अमूर्ति**—वि० [ सं० ] मूर्त्तिरहित । निराकार ।

**अमूर्तिमान्**—वि० [ सं० अमूर्त्तिमत् ] [ स्त्री० अमूर्त्तिमती ] १ निराकार । २. अप्रत्यक्ष । अगोचर ।

**अमूल**—वि० [सं०] बिना जड़ का । संज्ञा पुं० प्रकृति । ( सांख्य )

**अमूलक**—वि० [ सं० ] १. जिसकी कोई जड़ न हो । निर्मूल । २ असत्य । मिथ्या ।

**अमूल्य**—वि० [ सं० ] १ जिसका मूल्य निर्धारित न हो सके । अनमोल । २ बहुमूल्य । बेशक़ीमत । ३ जिसका कुछ भी मूल्य न हो । तुच्छ ।

**अमृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह वस्तु जिसके पीने से जीव अमर हो जाता है । सुधा । पीयूष । २. जल । ३ घी । ४. यज्ञ के पीछे की बची हुई सामग्री । ५. अन्न । ६. मुक्ति । ७ दूध । ८. औषध । ९. विष । १० बछनाग । ११. पारा । १२. धन । १३. सोना । १४. मीठी वस्तु ।

**अमृतकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा ।

**अमृतकुंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक छंद । २. एक बाजा ।

**अमृतगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक छंद ।

**अमृतत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मरण का अभाव । न मरना । २. मोक्ष । मुक्ति ।

**अमृतदान**—संज्ञा पुं० [ सं० अमृत + आदान ] भोजन की चीज़ें रखने का एक प्रकार का ढकनेदार बर्तन ।

**अमृतधारा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त ।

**अमृतध्वनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २४ मात्राओं का एक यौगिक छंद ।

**अमृतबान**—संज्ञा पुं० [सं० मृद्भांड] लाह का रोग़न किया हुआ मिट्टी का बरतन ।

**अमृतमूरि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अमृत + मूल, वैदिक मूर ] संजीवनी जड़ी । अमरमूर ।

**अमृतयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फलित ज्योतिष में एक शुभ फल-दायक योग ।

**अमृतसंजीवनी**—वि० स्त्री० दे० "मृतसंजीवनी" ।

**अमृतांशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा ।

**अमेंड**—वि० दे० 'अमेंड' ।

**अमेजना***—क्रि० स० [ फ़ा० आमेज़न ] मिलावट करना । मिलाना ।

**अमेट**—वि० दे० "अमिट" ।

**अमेध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपवित्र वस्तु । विष्ठा, मल-मूत्र आदि ।
वि० १. जो वस्तु यज्ञ में काम न आ सके । जैसे, पशुओं में कुत्ता और अन्नों में मसूर, उर्द आदि । २. जो यज्ञ कराने योग्य न हो । ३. अपवित्र ।

**अमेय**—वि० [ सं० ] १. अपरिमाण । असीम । बेहद । २ जो जाना न जा सके । अज्ञेय ।

**अमेरिका**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पश्चिमी गोलार्द्ध का महादेश जो उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में है ।

**अमेल, अमेली**—वि० [ हिं० अ + मेल ] १. असंबद्ध । २ जिसमें मेल-मिलाप न हो ।

**अमेव**—वि० दे० "अमेय" ।

**अमैंड***—वि० [ हिं० अ + मैंड = मर्यादा ] मर्यादा न मानने वाला ।

**अमोघ**—वि० [सं०] निष्फल न होनेवाला । अव्यर्थ । अचूक ।

**अमोद**—वि० [सं०] मोद रहित । संज्ञा पुं० दे० "आमोद" ।

**अमोल, अमोलक***—वि० [सं० अ + हिं० मोल ] अमूल्य । कीमती ।

**अमोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० आम + ओला ( प्रत्य० ) ] आम का नया निकलता हुआ पौधा ।

**अमोही**—वि० [ सं० अमोह ] १. विरक्त । २. निर्मोही । निष्ठुर ।

**अमौआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० आम + औआ (प्रत्य०) ] १. आम के सूखे रस का-सा रंग जो कई प्रकार का होता है, जैसे पीला, सुनहरा मूँगिया, इत्यादि २. इस रंग का कपड़ा ।

**अम्माँ**—संज्ञा स्त्री० [सं० अम्बा] माता । माँ ।

**अम्मामा**—संज्ञा पुं० [ अ० अम्मामः ] एक प्रकार का बड़ा साफ़ा ।

**अम्मारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अंबारी" ।

**अम्ल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खटाई । २. तेज़ाब ।
वि० खट्टा ।

**अम्लजन**—संज्ञा पुं० दे० "आक्सिजन" ।

**अम्लपित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है ।

**अम्लसार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काँजी । २ चूक । ३. अमलबेत । ४. हिंताल । ५. आमलासार गंधक ।

**अम्लान**—वि० [ सं० ] १. जो उदास न हो । २. निर्मल । स्वच्छ । साफ़ ।

**अम्हौरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घर्मचर्चिका, हिं० घमौरी ] छोटी-छोटी फुंसियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के

जाती शरीर में निकलती है। अँखौरी। कचौरी।

**अयं**—सर्व० [ सं० ] यह।

**अय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लोहा। २ अस्त्र-शस्त्र। हथियार। ३. अग्नि।

**अयथा**-वि० [सं०] १ मिथ्या। झूठ। असत्य। २. अयोग्य।

**अयन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गति। चाल। २. सूर्य या चंद्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। बारह राशियों के चक्र का आधा। ३. राशिचक्र की गति। ४. ज्योतिषशास्त्र। ५. एक प्रकार का सेननिवेश (कवायद)। ६ आश्रम। ७ स्थान। ८. घर। ९. काल। समय। १०. अंश। ११. एक यज्ञ जो अयन के प्रारम्भ में होता था। १२. गाय भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।

**अयनकाल**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह काल जो एक अयन में लगे। २ छः महीने का काल।

**अयनसंक्रम**-संज्ञा पुं० [ सं० ] मकर और कर्क की संक्रांति। अयन-संक्रांति।

**अयनसंक्रांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अयन-संक्रम।

**अयनसंपात**-संज्ञा पुं० [सं०] अयनांशों का योग।

**अयश**—संज्ञा पुं० [ सं० अयशस् ] १. अपयश। अपकीर्ति। २ निंदा।

**अयशस्कर**-वि० [सं०] १ जिससे यश न प्राप्त हो। २. जिससे बदनामी हो। जिसके कारण लोग बुरा कहें।

**अयस्कांत**-संज्ञा पुं० [ सं० ] चुंबक।

**अयाँ**—वि० [ अ० ] १ स्पष्ट। साफ़। २. प्रगट।

**अया**-अव्य० दे० "आया"।

**अयाचक**-वि० [ सं० ] १. न माँगनेवाला। २. संतुष्ट। पूर्णकाम।

**अयाचित**-वि० [ सं० ] बिना माँगा हुआ।

**अयाची**—वि० [ सं० अयाचिन् ] १. अयाचक। न माँगनेवाला। २ सम्पन्न। धनी।

**अयाच्य**-वि० [ सं० ] १ न माँगे जाने योग्य। जो माँगा न जा सके। २ दे० "अयाची"।

**अयान**—वि० [ सं० ] १. बिना यान या सवारी का। २ पैदल।

**अयान**—वि० दे० "अजान"।

**अयानता**—संज्ञा स्त्री० दे० "अयानप"।

**अयानप, अयानपन***—संज्ञा पु० [ हिं० अजान + पन ] १. अज्ञान। अनजानपन। २. भोलापन। सीधापन।

**अयानी***—वि० स्त्री० [ हिं० अजान ] [ पु० अयाना ] अजान। बुद्धिहीन। अज्ञानी।

**अयाल**—संज्ञा पु० [ तु० याल ] घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल। केसर

संज्ञा पु० [ अ० ] परिवार के लोग। बाल-बच्चे आदि।

यौ०—अयालदार = बाल-बच्चों वाला।

**अयास**—क्रि० वि० [ सं० अ + आयास ] बिना परिश्रम के। अनायास।

**अयि**—अव्य० [ सं० ] संबोधन का शब्द। हे। अय। अरे। अरी।

**अयुक्त**—वि० [ सं० ] १ अयोग्य। अनुचित। बेठीक। २. असंयुक्त। अलग। ३ आपद्ग्रस्त। ४ अनमना। ५ असंबद्ध। युक्तिशून्य। ६ जो जुता या नथा न हो ( पशु )। ७. काम में न लाया हुआ।

**अयुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ युक्ति का अभाव। असंबद्धता। गड़बड़ी। २. योग न देना। अप्रवृत्ति।

**अयुग, अयुग्म**—वि० [ सं० ] १. विषम। ताक़। २. अकेला। एकाकी।

**अयुत**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. दस हज़ार की संख्या का स्थान। २. उस स्थान की संख्या।

**अयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. योग का अभाव। २. बुरा योग। फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह नक्षत्रादि का पड़ना। ३ कुसमय। कुकाल। ४ कठिनाई। संकट। ५. वह वाक्य जिसका अर्थ सुगमता से न लगे। कूट। ६ अप्राप्ति। ७ गहरा उद्योग।

वि० [ सं० ] १ अप्रशस्त। बुरा। २ बेमेल। बेजोड़। ३. असंभव

वि० [ सं० अयोग्य ] अयोज्य। अनुचित।

**अयोग्य**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अयोग्या ] १ जो योग्य न हो। अनुपयुक्त। २ नालायक। निकम्मा। अपात्र। ३. अनुचित। नामुनासिब।

**अयोनि**-वि० [ सं० ] १ जो उत्पन्न न हुआ हो। अजन्मा। २ नित्य।

**अरग**—संज्ञा पु० [ देश० ] सुगंध का झोंका।

**अरंड**—संज्ञा पु० दे० "रेंड", "रेंड़"।

**अरंभ***—संज्ञा पु० दे० "आरंभ"।

सं० पु० [सं० आ+रम्भ=शब्द करना] १ नाद। शब्द। २. भीषण शब्द। गर्जन।

**अरंभना** क्रि० अ० [सं०+आरंभ=शब्द करना ] १ बोलना। नाद करना। २. शोर करना।

क्रि० स० [ सं० आरंभ ] आरंभ करना

क्रि० अ० आरंभ होना। शुरू होना।

**अर***—संज्ञा पु० [ हिं० अड़ ] ज़िद। अड़।

**अरइल***—वि० दे० "अड़ियल"।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

**अरई**—संज्ञा स्त्री० [?] बैल हाँकने की छड़ी।

**अरक***—संज्ञा पुं० [सं० अर्क] सूर्य।

**अरक़**—संज्ञा पुं० [अ० अर्क़] १. किसी पदार्थ का रस जो भभके से खींचने से निकले। आसव। २. रस।
संज्ञा पुं० [अ०] पसीना। स्वेद।

**अरकना***—क्रि० अ० [अनु०] १. अरराकर गिरना। २. टकराना। ३. फटना। दरकना।

**अरक़ नाना**—संज्ञा पुं० [अ०] एक अरक़ जो पुदीना और सिरका मिलाकर भभके से निकाला जाता है।

**अरकनी-बरकना***—क्रि० अ० [अनु०] इधर-उधर करना। खींचा-तानी करना।

**अरकला**—संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] १. रोकथाम। रुकावट। २. मर्यादा। सीमा।

**अरकाटी**—संज्ञा पुं० [अरकाट प्रदेश] वह जो कुली भरती कराकर बाहर टापुओं में भेजता है।

**अरकान**—संज्ञा० पुं० [अ० रुक्न का बहु०] राज्य के प्रमुख कर्म्मचारी या स्तंभ।

**अरगजा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० अर्गजः] एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाने से बनता है।

**अरगजी**—संज्ञा पुं० [हिं० अरगजा] एक रंग जो अरगजे का-सा होता है।

**अरगट***—वि० [हिं० अलग] पृथक्। अलग। निराला। भिन्न।

**अरगनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अलगनी"।

**अरगवानी**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] लाल रंग।
वि० १. लाल। २. बैंगनी।

**अरगल**—संज्ञा पुं० दे० "अर्गल"।

**अरगला**—संज्ञा पुं० [सं० अर्गल] १. अर्गल। २. रोक। संयम।

**अरगाना***—क्रि० अ० [हिं० अलगाना] १. अलग होना। पृथक् होना। २. सन्नाटा खींचना। चुप्पी साधना। मौन होना।
क्रि० स० अलग करना। छाँटना।

**अरघ**—संज्ञा पुं० दे० "अर्घ"।

**अरघा**—संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] १. एक गावदुम पात्र जिसमें अरघ का जल रखकर दिया जाता है। २. वह आधार जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। जलधरी। जलहरी।
संज्ञा पुं० [सं० अरघट्ट] कुएँ की जगत पर पानी निकलने के लिये बना हुआ रास्ता। चँवना।

**अरघान, अरघानि***—संज्ञा पुं० [सं० आघ्राण] गंध। महक। आघ्राण।

**अरचन***—संज्ञा पुं० दे० "अर्चन"।

**अरचना***—क्रि० स० [सं० अर्चन] पूजना।

**अरचल**—संज्ञा स्त्री० दे० "अड़चन"

**अरचा**—संज्ञा स्त्री० दे० "अर्चा"।

**अरचि***—संज्ञा स्त्री० दे० "अर्चि"।

**अरज**—संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज़] १. विनय। निवेदन। विनती। २. चौड़ाई।

**अरजना***—क्रि० अ० [अ० अर्ज़] निवेदन करना।

**अरजल**—संज्ञा पुं० [अ० अर्ज़ल] १. वह घोड़ा जिसके दोनों पिछले पैर और अगला दाहिना पैर सफ़ेद या एक रंग के हों। (ऐबी) २. नीच जाति का पुरुष। ३. वर्णसंकर।

**अरज़ी**—संज्ञा स्त्री० [अ० अर्ज़ी] आवेदनपत्र। निवेदन पत्र। प्रार्थनापत्र।
*[अ० अर्ज़] प्रार्थी। अर्ज़ करनेवाला।

**अरणि, अरणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृक्ष। गनियार। अँगेथू। २. सूर्य। ३. काठ का बना हुआ यंत्र जिससे यज्ञों में आग निकालते हैं। अग्निमंथ।

**अरण्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. कायफल। ३ संन्यासियों के दस भेदों में से एक।

**अरण्यरोदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निष्फल रोना। ऐसी पुकार जिसका सुननेवाला न हो। २. ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।

**अरति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] विराग। चित्त का न लगना।

**अरथ***—संज्ञा पुं० दे० "अर्थ"।

**अरथाना***—क्रि० स० [सं० अर्थ] समझाना। विवरण करना। व्याख्या करना।

**अरथी**—संज्ञा स्त्री० [सं० रथ] सीढ़ी के आकार का ढाँचा जिसपर मुर्दे को रखकर श्मशान ले जाते हैं। टिखटी।
संज्ञा पुं० [सं० अ+रथी] जो रथी न हो। पैदल।
वि० दे० "अर्थी"।

**अ-रदन**—वि० [सं० अ+रदन] बिना दाँत का।

**अरदन***—वि० दे० "अर्दन"।

**अरदना**—क्रि० स० [सं० अर्दन] १. रौंदना। कुचलना। २. वध या नाश करना।

**अरदली**—संज्ञा पुं० [अं० आर्डरली] वह चपरासी जो साथ में या दरवाज़े पर रहता है।

**अरदावा**—संज्ञा पुं० [सं० अर्द] १. दला या कुचला हुआ अन्न। २. भरता। चोखा।

**अरदास**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० अर्ज़दाश्त] निवेदन के साथ भेंट। नज़र। २. देवता के निमित्त भेंट निकालना।

**अरधंग**—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"।

**अरधंगी***—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।

**अरध***—वि० दे० "अर्ध"।

क्रि० वि० [सं० अधः] अंदर। भीतर।

**अरन***—संज्ञा पुं० दे० "अरण्य"।

**अरना**—संज्ञा पुं० [सं० अरण्य] जंगली भैंसा।

*क्रि० अ० दे० "अड़ना"।

**अरनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "अड़नि"।

**अरनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अरणी] १ एक छोटा वृक्ष जो हिमालय पर होता है। २. यज्ञ का अग्निमंथन काष्ठ।

वि० दे० "अरणि"।

**अरपन***—संज्ञा पुं० दे० "अर्पण"।

**अरपना***—क्रि० स० [सं० अर्पण] अर्पण करना।

**अरब**—संज्ञा पुं० [सं० अर्बुद] १. सौ करोड़। २. इसकी संख्या।

*संज्ञा पुं० [सं० अर्वन्] १. घोड़ा। २. इंद्र।

संज्ञा पुं० [अ०] १ पश्चिमी एशिया खंड का एक मरुदेश। २ इस देश का उत्तम घोड़ा। ३ अरब का निवासी।

**अरबर***—वि० दे० "अड़बड़"।

**अरबराना**—क्रि० अ० [हिं० अरबर] १. घबराना। व्याकुल होना। उतावला होना। विचलित होना। २. चलने में लड़खड़ाना।

**अरबरी***—संज्ञा स्त्री० [हिं० अरबर] घबराहट। हड़बड़ी। आकुलता।

**अरबिस्तान**—संज्ञा पुं० [अ०] अरब देश।

**अरबी**—वि० [फ़ा०] अरब देश का। संज्ञा पुं० १. अरबी घोड़ा। ताज़ी। २ अरबी ऊँट। ३. अरबी बाजा। ताशा। संज्ञा स्त्री० अरब देश की भाषा।

**अरबीला***—वि० [अनु०] अभिमानपूर्वक हठ करनेवाला। हठीला।

**अरभक***—वि० दे० "अर्भक"।

**अरमान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] इच्छा। लालसा। चाह। हौसला।

**अरर**—अव्य० [अनु०] अत्यंत व्यग्रता तथा अचंभे का सूचक शब्द।

**अरराना**—क्रि० अ० [अनु०] १ अरर शब्द करना। टूटने या गिरने का शब्द करना। २ भहरा पड़ना। सहसा गिरना।

**अरवा**—संज्ञा पुं० [सं० आलोक (तंडुल), बँग० आलो (चाल) हिं० आरो] वह चावल जो कच्चे अर्थात् बिना उबाले धान से निकाला जाय।

संज्ञा पुं० [सं० आलय] आला। ताखा।

**अरवाती**—संज्ञा स्त्री० दे० "ओलती"।

**अरविंद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ सारस।

**अरवी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आलुक] एक प्रकार का कंद जो तरकारी के रूप में खाया जाता है।

**अरस**—वि० [सं० अ+रस] १ नीरस फीका। २ गँवार। अनाड़ी।

*संज्ञा पुं० [सं० अलस] आलस्य।

*संज्ञा पुं० [अ० अर्श] १ छत। पाटन। २ धरहरा। ३ महल।

**अरसना***—क्रि० अ० [सं० अलसन ना० धा०] शिथिल पड़ना। मंद होना।

**अरसना-परसना**—क्रि० स० [सं० स्पर्शन प्र० द्वि०] आलिंगन करना। मिलना। भेंटना।

**अरस परस**—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श प्र० द्वि०] १ लड़कों का खेल। छुआ-छुई। आँखमिचौली। २. स्पर्श करना और देखना।

**अरसा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. समय। काल। २ देर। अतिकाल। विलंब।

**अरसात**—संज्ञा पुं० [सं० अलस] २४ अक्षरों का एक वृत्त।

**अरसाना***—क्रि० अ० [सं० अलस] १. अलसाना। २. निद्राग्रस्त होना।

**अरसी***—संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।

**अरसीला***—वि० [सं० अलस] आलस्यपूर्ण। आलस्य से भरा।

**अरसौंहाँ***—वि० दे० "अलसौंहाँ"।

**अरहट**—संज्ञा पुं० [सं० अरघट्ट] रहट नामक यंत्र जिससे कुएँ से पानी निकालते हैं।

**अरहन**-संज्ञा पुं० [सं० रंधन] वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है। रेहन।

**अरहना***-संज्ञा स्त्री० [सं० अर्हणा] पूजा।

**अरहर**—संज्ञा स्त्री० [सं० आढकी, प्रा० अड्ढकी] दो दल के दानों का एक अनाज जिसकी दाल खाई जाती है। तुवरी। तुअर।

**अरा**-संज्ञा पुं० दे० "आरा"।

**अराक**-संज्ञा पुं० [अ० इराक] १. अरब का एक देश; मेसोपोटामिया। २. वहाँ का घोड़ा।

**अराज**-वि० [सं० अ + राजन्] १. बिना राजा का। २ बिना क्षत्रिय का। संज्ञा पुं० [सं० अ + राजन्] अराजकता। शासन-विप्लव। हलचल।

**अराजक**—वि० [सं०] [संज्ञा अराजकता] जहाँ राजा न हो। राजाहीन। बिना राजा का।

**अराजकता**-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा का न होना। २. शासन का अभाव। ३ अशांति। हलचल।

**अराजी**-संज्ञा स्त्री० दे० "आराजी"।

**अरात**-संज्ञा पुं० दे० "अराति"।

**अराति**-सं० पुं० [सं०] १. शत्रु। २. काम, क्रोध आदि विकार। ३. छः की संख्या।

**अराधन**—संज्ञा पुं० दे० "आराधन"।

**अराधना**—क्रि० स० [सं० आराधन]

१. आराधना करना। पूजा करना। २. जपना। ध्यान करना।
संज्ञा स्त्री० दे० "आराधना"।
**अराधी**—वि० [ सं० आराधन ] आराधना या पूजा करनेवाला। पूजक।
**अराना**—क्रि० स० दे० "अड़ाना"।
**अराबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ गाड़ी। रथ। २. वह गाड़ा जिस पर तोप लादी जाय।
**अरामा**†—संज्ञा पुं० दे० "आराम"।
**अरारूट**—संज्ञा पुं० [ अँ० एरारूट ] एक पौधा जिसके कंद का आटा तीखुर की तरह काम में आता है।
**अरारोट**—संज्ञा पुं० दे० "अरारूट"।
**अराल**—वि० [ सं० ] कुटिल। टेढ़ा।
संज्ञा पुं० १. राल। २. मस्त हाथी।
**अरावली**—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
**अरिंद**—संज्ञा पुं० [ सं० अरि ] शत्रु।
**अरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शत्रु। वैरी। २. चक्र। ३. काम, क्रोध आदि। ४. छः की संख्या। ५. लग्न से छठा स्थान। (ज्यो०) ६ विट् खदिर। दुर्गंध खैर।
**अरियाना***—क्रि० स० [ सं० अरे ] अरे कहकर बोलना। तिरस्कार करना।
**अरिल्ल**—संज्ञा पुं० [ सं० अरिल्ल ] सोलह मात्राओं का एक छंद।
**अरिष्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दुःख। पीड़ा। २. आपत्ति। विपत्ति। ३. दुर्भाग्य। अमंगल। ४. अशकुन। ५ दुष्ट ग्रहों का योग। मरणकारक योग। ६. एक प्रकार का मद्य जो धूप में ओषधियों का खमीर उठाकर बनता है। ७ कौआ। ८ वृषभासुर। ९. अनिष्टसूचक उत्पात, जैसे भूकंप। १० सोरी। सूतिकागृह।
वि० [ सं० ] १. दृढ़। अविनाशी। २. शुभ। ३. बुरा। अशुभ।
**अरिष्टनेमि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कश्यप प्रजापति का एक नाम। २. कश्यप जी का एक पुत्र जो विनता से उत्पन्न हुआ था।
**अरिहन**—संज्ञा पुं० [ सं० अरिघ्न ] शत्रुघ्न।
संज्ञा पुं० दे० "अरहर"।
**अरिहा**—वि० [ सं० ] शत्रु का नाश करनेवाला।
संज्ञा पुं० [ सं० ] लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न।
**अरी**—अव्य० [ सं० अयि ] स्त्रियों के लिये संबोधन।
**अरुंतुद**—वि० [ सं० ] १. मर्म तक को कष्ट पहुँचानेवाला। मर्मभेदी। २. कठोर। कर्कश।
**अरुंधती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वशिष्ठ मुनि की स्त्री। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म से ब्याही गई थी। ३ एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षिमंडल में वशिष्ठ के पास है।
**अरु**—संयो० दे० "और"।
**अरुई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "अरवी"।
**अरुचि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ रुचि का अभाव। अनिच्छा। २. अग्निमांद्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती। ३ घृणा। नफरत।
**अरुचिकर**—वि० [ सं० ] जो रुचिकर न हो। जो भला न लगे।
**अरुज**—वि० [ सं० ] नीरोग। रोगरहित।
**अरुझना**—क्रि० अ० दे० "उलझना"।
**अरुझाना**—क्रि० स० दे० "उलझाना"।
**अरुण**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अरुणा ] [ भाव० अरुणता ] लाल। रक्त।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. सूर्य का सारथी। ३. गुड़। ४. ललाई जो संध्या सबेरे पश्चिम में दिखलाई पड़ती है। ५. एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ६. गहरा लाल रंग। ७ कुमकुम। ८ सिंदूर। ९. एक देश। १०. माघ के महीने का सूर्य।
**अरुणचूड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुक्कुट। मुर्गा।
**अरुणता**—संज्ञा स्त्री० दे० "अरुणिमा"।
**अरुणप्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अप्सरा। २. छाया और संज्ञा, सूर्य की स्त्रियाँ।
**अरुणशिखा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मुर्गा।
**अरुणाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अरुण ] ललाई। रक्तता। लाली।
**अरुणाभ**—वि० [ सं० ] लाल आभा से युक्त। लाली लिए हुए।
**अरुणिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ललाई। लालिमा। सुर्खी।
**अरुणोदय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उषाकाल। ब्राह्म मुहूर्त। तड़का। भोर।
**अरुणोपल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पद्मराग मणि। लाल।
**अरुन***—वि० दे० "अरुण"। ["अरुन" के यौगिक शब्दों के लिए दे० "अरुण" के यौगिक।]
**अरुनाना***—क्रि० अ० [ सं० अरुण ना० धा० ] लाल होना।
क्रि० स० [ सं० अरुण ] लाल करना।
**अरुनारा**—वि० [ सं० अरुण+आर (प्रत्य०) ] लाल। लाल रंग का।
**अरूरना***†—क्रि० अ० [ देश० ] लचकना। बल खाना। मुड़ना।
**अरुवा**—संज्ञा पुं० [ सं० अरु ] एक लता जिसका कंद खाया जाता है।
संज्ञा पुं० [ हिं० रुरुआ ] उल्लू पक्षी।
**अरूझना***—क्रि० अ० दे० "उलझना"।
**अरूढ़***—वि० दे० "आरूढ़"।
**अरूप**—वि० [ सं० ] रूपरहित। निराकार।
**अरूरना***—क्रि० अ० [ सं० आरोदन,

प्रा० आरोडन ] दुःखी या पीड़ित होना।

**अकसना**—क्रि० अ० [ सं० अक्स् = घाव ] १. छिदना। घाव होना। २. पीड़ित होना।

**अरे**—अव्य० [ सं० ] १. संबोधन का शब्द। ए। ओ। २. एक आश्चर्य-सूचक अव्यय।

**अरेरना***-क्रि० अ० [अनु०] रगड़ना।

**अरोगना***—क्रि० अ० दे० "आ-रोगना।"

**अरोच***-संज्ञा पुं० दे० "अरुचि"।

**अरोचक**-संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता।

वि० [सं०] जो रुचे नहीं। अरुचिकर।

**अरोहन***-संज्ञा पुं० दे० "आरोहण"।

**अरोहना**-क्रि० अ० [ सं० आरोहण ] चढ़ना।

**अरोही**-वि० दे० "आरोही"।

**अर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य्य। २. इंद्र। ३. ताँबा। ४. स्फटिक। ५. विष्णु। ६. पंडित। ७. आक। मदार। ८. बारह की संख्या।

संज्ञा पुं० [अ०] उतारा या निचोड़ा रस। दे० "अरक"।

**अर्कज**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सूर्य्य के पुत्र। यम। २. शनि। ३. अश्विनी-कुमार। ४. सुग्रीव। ५. कर्ण।

**अर्कजा**-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य्य की कन्या, यमुना। २ तापती।

**अर्कनाना**-संज्ञा पुं० दे० "अरकनाना"।

**अर्कव्रत**-संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा का प्रजा की वृद्धि के लिये उनसे कर लेना।

**अर्कोपल**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य्य-कांत मणि। २. लाल। पद्मराग।

**अर्गजा**—संज्ञा पुं० दे० "अरगजा"।

**अर्गल**-संज्ञा पुं० [सं०] १. वह लकड़ी जिसे किवाड़ बंद करके पीछे से आड़ी लगा देते हैं। अरगल। अगरी। ब्योड़ा। २. किवाड़। ३ अवरोध। ४. कल्लोल। ५. वे रंग-बिरंग के बादल जो सूर्योदय या सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में दिखाई पड़ते हैं। ६. मास।

**अर्गला**-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अरगल। अगरी। २ ब्योड़ा। ३ बिल्ली। किल्ली। सिटकिनी। ४. जंजीर जिसमें हाथी बाँधा जाता है। ५ एक स्तोत्र जिसका दुर्गासप्तशती के आदि में पाठ करते हैं। मत्स्यसूक्त। ६. अवरोध। ७. बाधक। रोक।

**अर्घ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ षोडशोप-चार में से एक। जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंडुल और जौ को मिलाकर देवता को अर्पण करना। २. अर्घ देने का पदार्थ। ३ जल दान। आदर के लिये सामने जल गिराना। ४. हाथ धोने के लिये जल देना। ५. मूल्य। भाव। ६. भेंट। ७ जल से सम्मानार्थ सींचना। ८. घोड़ा। ९. मधु। शहद।

**अर्घपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शंख के आकार का तांबे का बरतन जिससे सूर्य्य आदि देवताओं को अर्घ दिया जाता है। अर्घा।

**अर्घा**—संज्ञा पुं० [ सं० अर्घ ] १. अर्घपात्र। २. जलहरी।

**अर्घ्य**—वि० [ सं० ] १. पूजनीय। २. बहुमूल्य। ३ पूजा में देने योग्य। ( जल, फूल, मूल आदि ) ४ भेंट देने योग्य।

**अर्चक**—वि० [ सं० ] पूजा करने-वाला। पूजक।

[ वि० अर्चनीय, अर्च्य, अर्चित ]

**अर्चन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पूजा। पूजन। २. आदर। सत्कार।

**अर्चनीय**—वि० [ सं० ] १. पूजनीय। पूजा करने योग्य। २. आदरणीय।

**अर्चमान**—वि० दे० "अर्चनीय"।

**अर्चा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पूजा। २. प्रतिमा।

**अर्चि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अर्चिस् ] १ सूर्य की किरण। २ धूप। ३. आग की लपट।

**अर्चित**-वि० [ सं० ] [ स्त्री० अर्चिता ] १ पूजित। २. आदृत।

**अर्ज़**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] विनती। विनय।

संज्ञा पुं० चौड़ाई। आयत।

**अर्ज़दाश्त**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] निवेदन-पत्र।

**अर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अर्जनीय, अर्जित ] १. उपार्जन। पैदा करना। कमाना। २. संग्रह करना। संग्रह।

**अर्जमा***-संज्ञा पुं० दे० "अर्यमा"।

**अर्जित**-वि० [ सं० ] १ संग्रह किया हुआ। संगृहीत। २. कमाया हुआ। प्राप्त।

**अर्ज़ी**—संज्ञा स्त्री० [अ० ] प्रार्थना-पत्र। निवेदन-पत्र।

**अर्ज़ीदावा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह निवेदन-पत्र जो अदालत में किसी दादरसी के लिये दिया जाय।

**अर्ज़ीनवीस**-संज्ञा पुं० [ अ०+फ़ा० ] [ भाव० अर्ज़ीनवीसी ] वह जो दूसरों का अर्ज़ियाँ लिखने का काम करता हो।

**अर्जुन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक बड़ा वृक्ष। काहू। २ पाँच पांडवों में से मँझले का नाम। ३. हैहय-वंशी एक राजा। सहस्रार्जुन। ४. सफ़ेद कनेर। ५. मोर। ६. आँख की फूली। ७ एकलौता बेटा।

**अर्जुनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. सफ़ेद रंग की गाय। २. कुटनी। ३. उषा।

**अर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वर्ण।

अक्षर। जैसे, पचार्ण=पंचाक्षर। २. जल। पानी। ३. एक दंडक वृत्त। ४. शाल वृक्ष।

**अर्णव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. सूर्य। ३. इंद्र। ४. अंतरिक्ष। ५. दंडक वृत्त का एक भेद। ६. चार की संख्या।

**अर्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अर्थी] १. शब्द का अभिप्राय। शब्द की शक्ति। मानी। २. अभिप्राय। प्रयोजन। मतलब। ३ काम। इष्ट। ४ हेतु। निमित्त। ५ इंद्रियों के विषय। ६. धन। संपत्ति।

**अर्थकर**—वि० पुं० [सं०] [स्त्री० अर्थकरी] जिससे धन उपार्जन किया जाय। लाभकारी। जैसे, अर्थकरी विद्या।

**अर्थदंड**—संज्ञा पुं० [सं०] वह धन जो किसी अपराध के दंड में अपराधी से लिया जाय। जुर्माना।

**अर्थना**—क्रि० स० [सं०] माँगना।

**अर्थपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुबेर। २ राजा।

**अर्थपिशाच**—वि० [सं०] बहुत बड़ा कंजूस। धनलोलुप।

**अर्थमंत्री**—संज्ञा पुं० दे० "अर्थ-सचिव"।

**अर्थवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वाक्य जिससे किसी विधि के करने की उत्तेजना पाई जाय। २. वह वाक्य जो सिद्धांत के रूप में न कहा जाय, केवल किसी ओर चित्त प्रवृत्त करने के लिये कहा जाय।

**अर्थवेद**—संज्ञा पुं० [सं०] शिल्प-शास्त्र।

**अर्थशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, व्यय और वितरण तथा विनिमय की चर्चा हो। २. राज्य के प्रबंध, वृद्धि, रक्षा आदि की विद्या।

**अर्थसचिव**—संज्ञा पुं० [सं०] वह मंत्री जो राज्य के आर्थिक विषयों की देख-रेख करे।

**अर्थांतरन्यास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य-द्वारा समर्थन किया जाय।

**अर्थात्**—अव्य० [सं०] यानी। मतलब यह कि। विवरण-सूचक शब्द।

**अर्थाना***—क्रि० स० [सं० अर्थ ना० धा०] अर्थ लगाना।

**अर्थापत्ति**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मीमांसा के अनुसार वह प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आपसे आप हो जाय। २. एक अर्थालंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाय।

**अर्थालंकार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय।

**अर्थी**—वि० [सं० अर्थिन्] [स्त्री० अर्थिनी] १. इच्छा रखनेवाला। चाह रखनेवाला। २. कार्यार्थी। प्रयोजन-वाला। गर्ज़ी।

संज्ञा पुं० १. मुद्दई। २. सेवक। ३. धनी।

संज्ञा स्त्री० दे० "अरथी"।

**अर्दन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़न। हिंसा। २ जाना। ३. माँगना।

**अर्दना***—क्रि० स० [सं० अर्दन] पीड़ित करना।

**अर्दली**—संज्ञा पुं० दे० "अरदली"।

**अर्द्ध**—वि० [सं०] आधा।

**अर्द्धचंद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आधा चाँद। अष्टमी का चंद्रमा। २. चंद्रिका। मोर-पंख पर की आँख। ३. नखक्षत। ४. एक प्रकार का बाण। ५. सानुनासिक का एक चिह्न। चंद्रबिंदु। ६. एक प्रकार का त्रिपुंड। ७ गरदनिया। निकाल बाहर करने के लिये गले में हाथ लगाने की मुद्रा।

**अर्द्धजल**—संज्ञा पुं० [सं०] श्मशान में शव को स्नान कराके आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया।

**अर्द्धनयन**—संज्ञा पुं० [सं०] देव-ताओं की तीसरी आँख जो ललाट में होती है।

**अर्द्धनारीश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र में शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप।

**अर्द्धमागधी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राकृत का एक भेद। काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।

**अर्द्धवृत्त**—संज्ञा पुं० [सं०] मध्य-बिंदु से समान अंतर पर खींची हुई गोल रेखा का आधा अंश। आधा गोला या वृत्त।

**अर्द्धसम वृत्त**—संज्ञा पुं० [सं०] वह छंद जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो। जैसे दोहा और सोरठा।

**अर्द्धांग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आधा अंग। २. लकवा रोग जिसमें आधा अंग बेकाम हो जाता है। फ़ालिज। पक्षाघात।

**अर्द्धांगिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी।

**अर्द्धांगी**—संज्ञा पुं० [सं० अर्द्धांगिन्] शिव।

वि० [सं०] अर्द्धांग-रोगग्रस्त।

**अर्द्धाली**—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्धालि] आधी चौपाई। चौपाई की दो पंक्तियाँ।

**अर्द्धोदय**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्व जो उस दिन होता है जिस दिन माघ की अमावास्या रविवार को होती है और श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग

: कहता है।

**अर्धंग***—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांग"।

**अर्धंगी**—संज्ञा पुं० दे० "अर्द्धांगी"।

**अर्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अर्पित ] १. देना। दान। २. नजर। भेंट। ३ स्थापन।

**अर्पना***—क्रि० स० दे० "अरपना"।

**अर्व-दर्व***—संज्ञा पुं० [ सं० द्रव्य ] धन-दौलत।

**अर्बुद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ गणित में नवें स्थान की संख्या। दश कोटि। दस करोड़। २. अरावली पहाड़। ३. एक असुर। ४. कद्रू का पुत्र। एक सर्प। ५. मेघ। बादल। ६. दो मास का गर्भ। ७ एक रोग जिसमें एक प्रकार की गाँठ शरीर में पड़ जाती है। बतौरी।

**अर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बालक। २. शिशिर ऋतु। ३. शिष्य। ४ साग-पात।

**अर्भक**—वि० [ सं० ] १. छोटा। अल्प। २. मूर्ख। ३. दुबला। पतला। संज्ञा पुं० [ सं० ] बालक। लड़का।

**अर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अर्या। अर्याणी। अर्यी ] १. स्वामी। ईश्वर। २. वैश्य।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

**अर्यमा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ अर्यमन् ] १. सूर्य। २. बारह आदित्यों में से एक। ३. पितर के गणों में से एक। ४. उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। ५. मदार

**अर्वाक्**—अव्य० [सं०] १. पहले। इधर। २. सामने। नीचे। ३ निकट। समीप।

**अर्वाचीन**—वि० [ सं० ] १. पीछे का। आधुनिक। २. नवीन। नया।

**अर्श**—संज्ञा पुं० [सं० अर्शस् ] बवासीर।
संज्ञा पुं० [ अ० ] १. आकाश। २. स्वर्ग।

**अर्हंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जैनियों के पूज्य देव। जिन। २. बुद्ध।

**अर्ह**—वि० [ सं० ] १. पूज्य। २. योग्य। उपयुक्त। जैसे पूजार्ह, समार्ह, दंडार्ह।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २ इंद्र।

**अर्हणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० अर्हणीय ] पूजा।

**अर्हत, अर्हत्**—वि० [ सं० ] पूज्य।
संज्ञा पुं० जिनदेव।

**अर्ह्य**—वि० [ सं० ] पूज्य। मान्य।

**अलं**—अव्य० दे० "अलम्"।

**अलंकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किसी चीज को अलंकारों या बेलबूटों से अलंकृत करना। सजाना। २. सजावट।

**अलंकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अलंकृत] १ आभूषण। गहना। जेवर। २. वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आ जाय। ३ नायिका का सौंदर्य बढ़ाने वाले हाव भाव या चेष्टाएँ।

**अलंकित**—वि० दे० "अलंकृत"।

**अलंकृत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अलंकृता ] १ विभूषित। सँवारा हुआ। २ काव्यालंकार-युक्त।

**अलंग**—संज्ञा पुं० [ सं० अल=पूर्ण+अंग ] ओर। तरफ। दिशा।

**मुहा०**—अलंग पर आना या होना=घोड़ी का मस्ताना।

**अलंघनीय**—वि० [ सं० ] जो लाँघने योग्य न हो। अलंघ्य।

**अलंघ्य**—वि० [ सं० ] १ जो लाँघने योग्य न हो। जिसे फाँद न सकें। २. जिसे टाल न सकें।

**अलंब***—संज्ञा पुं० दे० "आलंब"।

**अलंबुषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अलंबुषा ] १ एक अप्सरा का नाम। २. लज्जावती या छुई-मुई का पौधा।

**अलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मस्तक के इधर-उधर लटकते हुए बाल। केश। लट। २. छल्लेदार बाल। ३. हरताल। ४. मदार।

**अलकतरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा काला पदार्थ।

**अलक-लड़ैता***—वि० [हिं० अलक=बाल+लाड़=दुलार ] [ स्त्री० अलक-लड़ैती ] दुलारा। लाड़ला।

**अलकसलोरा***—वि० [ सं० अलक्ष्य +हिं० सलोना ] [स्त्री० अलकसलोरी] लाड़ला। दुलारा।

**अलका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]१ कुबेर की पुरी। २ आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।

**अलकापति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुबेर।

**अलकावलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ केशों का समूह। बालों की लटें। २. घूँघरवाले बाल। छल्लेदार बाल।

**अलक्त, अलक्तक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाख। चपड़ा। २ लाह का बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।

**अलक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अलक्षणा ] १. लक्षण का न होना। २ बुरा या अशुभ लक्षण। ३. वह जिसमें बुरे लक्षण हों।

**अलक्षित**—वि० [ सं० ] १. अप्रकट। अज्ञात। २. अदृश्य। गायब।

**अलक्ष्य**—वि० [ सं ] १. अदृश्य। जो न देख पड़े। गायब। २. जिसका लक्षण न कहा जा सके।

**अलख**—वि० [ सं० अलक्ष्य ] १ जो दिखाई न पड़े। अदृश्य। अप्रत्यक्ष। २ अगोचर। इंद्रियातीत। ईश्वर का एक विशेषण।

**मुहा०**—अलख जगाना=१. पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना। २. परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना।

**अलखधारी** - संज्ञा पुं० दे० "अलखनामी"।

**अलखनामी**—संज्ञा पुं० [ सं० अलक्ष्य+नाम ] एक प्रकार के साधु जो भिक्षा के लिये ज़ोर ज़ोर से "अलख अलख" पुकारते हैं।

**अलखित***—वि० दे० "अलक्षित"।

**अलग**- वि० [ सं० अलग्न ] जुदा। पृथक्। भिन्न। अलहदा।

मुहा०—अलग करना=१. दूर करना। हटाना। २ छुड़ाना। बरखास्त करना। ३. बेलाग। बचा हुआ। रक्षित।

**अलगनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आलग्न] आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े लटकाने या फैलाने के लिये घर में बाँधा जाता है। डारा।

**अलगरज़***—वि० दे० "अलगरज़ी"।

**अलगरज़ी**†—वि० [ अ० ] बेग़रज़। बेपरवाह।

संज्ञा स्त्री० बेपरवाही।

**अलगाना**—क्रि० स० [ हिं० अलग ] १. अलग करना। छाँटना। जुदा करना। २ दूर करना। हटाना।

**अलगोज़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार की बाँसुरी।

**अलच्छ***—वि० दे० "अलक्ष्य"।

**अलजबरा**—संज्ञा पुं० बीजगणित।

**अलज्ज**—वि० [ सं० ] निर्लज्ज। बेहया।

**अलता**—संज्ञा पुं० [ सं० अलक्तक, प्रा० अलत्तअ ] १. लाल रंग जो स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। जावक। महावर। २. खसी की मूत्रेंद्रिय।

**अलप***—वि० दे० "अल्प"।

**अलपाका**—संज्ञा पुं० [स्पे० एलपाका] १. बकरे की तरह का एक जानवर जो स्पेन, दक्षिण अमेरिका तथा योरोप के अन्य देशों में होता है। २. इस जानवर का ऊन। ३. एक प्रकार का पतला कपड़ा।

**अलफ़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० अलफ़ी ] एक प्रकार का बिना बाँह का लंबा कुरता।

**अलबत्ता**—अव्य० [ अ० अल्बत्तः ] १. निस्संदेह। निःसंशय। बेशक। २. हाँ। बहुत ठीक। दुरुस्त। ३. लेकिन। परंतु।

**अलबम**—संज्ञा पुं० दे० "चित्राधार"।

**अलबेला**—वि० [ सं० अलभ्य+हिं० ला (प्रत्य०)] [ स्त्री० अलबेली ] १. बाँका। बना-ठना। छैला। २. अनोखा। अनूठा। सुन्दर। ३ अल्हड़। बेपरवाह। मनमौजी।

संज्ञा पुं० नारियल का बना हुक्का।

**अलबेलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० अलबेला + पन ( प्रत्य० ) ] १. बाँकापन। सज-धज। छैला-पन। २. अनोखापन। अनूठापन। सुंदरता। ३ अल्हड़पन। बेपरवाही।

**अलबी तलबी**—संज्ञा स्त्री० [ अरबी+अनु० ] अरबी फ़ारसी या कठिन उर्दू। ( उपेक्षा )

**अलभ्य**—वि० [ सं० ] [ भाव० अलभ्यता ] १ न मिलने योग्य। अप्राप्य। २ जो कठिनता से मिल सके। दुर्लभ। ३ अमूल्य। अनमोल।

**अलम्**—अव्य० [ सं० ] यथेष्ट। पर्याप्त। पूर्ण।

**अलम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ रंज। दुःख। २ सेना के आगे रहने वाला सबसे बड़ा झंडा।

**अलमस्त**—वि० [ अ० अल् + फ़ा०-मस्त ] १ मतवाला। बदहोश। बेहोश। २. बे-ग़म। बेफ़िक्र। ३ लापरवाह।

**अलमस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मस्तता। मस्ती। २. बेफ़िक्री। ३ लापरवाही।

वि० दे० "अलमस्त"।

**अलमारी**—संज्ञा स्त्री० [ पुर्त० अलमारियो ] वह खड़ा सन्दूक जिसमें चीजें रखने के लिए खाने या दर बने रहते हैं। बड़ी भंडरिया।

**अलर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पागल कुत्ता। २. सफेद आक या मदार। ३. एक प्राचीन राजा जिसने एक अंधे ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निकालकर दे दी थीं।

**अलल-टप्पू**—वि० [ देश० ] अटकलपच्चू। बे ठिकाने का। अंड बंड।

**अलल-बछेड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अल्हड़+बछेड़ा ] १ घोड़े का जवान बच्चा। २ अल्हड़ आदमी।

**अलल-हिसाब**—क्रि० वि० [ अ० ] बिना हिसाब किए।

**अललाना**†—क्रि० अ० [ सं० अर=बोलना ] चिल्लाना। गला फाड़कर बोलना।

**अलवाँती**—वि० स्त्री० [सं० बालवती] ( स्त्री० ) जिसे बच्चा हुआ हो। प्रसूता। जच्चा।

**अलबाई**—वि० स्त्री० [सं० बालवती] ( गाय या भैंस ) जिसको बच्चा जने एक या दो महीने हुए हों। "बाखरी" का उल्टा।

**अलवान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ऊनी चादर।

**अलस**—वि० [सं०] [भाव० अलसता] आलसी। सुस्त।

**अलसान, अलसानि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आलस ] १ आलस्य। सुस्ती। २. शैथिल्य।

**अलसाना**—क्रि० अ० [ सं० अलस ना० धा० ] आलस्य, शिथिलता अनुभव करना। २ विरक्त या उदासीन होना।

**अलसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अतसी ] १. एक पौधा जिसके बीजों से तेल

निकलता है। २. उस पौधे के बीज। तीसी।

**अलसेट**—संज्ञा स्त्री॰ सं॰ अल-सेद, प्रा॰ अलसेड़] [वि॰ अलसेटिया] १. ढिलाई। व्यर्थ की देर। २. टाल-मटूल। भुलावा। चकमा। ३. बाधा। अड़चन। ४. झगड़ा। तकरार।

**अलसेटिया***—वि॰ [हिं॰ अलसेट+इया (प्रत्य॰)] १. व्यर्थ देर करने वाला। २. अड़चन डालनेवाला। बाधा उपस्थित करने वाला। ३. टालमटूल करनेवाला। ४. झगड़ा करनेवाला।

**अलसौहाँ**—वि॰ [सं॰ अलस] [स्त्री॰ अलसौंही] १. आलस्ययुक्त। क्लांत। शिथिल। २. नींद से भरा। उनींदा।

**अलहदगी**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।

**अलहदा**—वि॰ [अ॰] अलग। पृथक्।

**अलहदी**—वि॰ दे॰ "अहदी"।

**अलहन**—संज्ञा पुं॰, स्त्री॰[?] १. विपत्ति या अभाग्य का आगम। कंबख्ती।

**अलाई**—वि॰ [सं॰ अलस] [स्त्री॰ अलाइन] आलसी। काहिल।

संज्ञा पुं॰ घोड़े की एक जाति।

**अलात**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. जलती हुई लकड़ी। २. अंगारा।

**अलात-चक्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ जलती हुई लकड़ी को ज़ोर से घुमाने से बना हुआ मंडल। २. बनेठी।

**अलान**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ आलान] १. हाथी बाँधने का खूटा या सिक्कड़। २. बंधन। बेड़ी। ३. बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी हुई लकड़ी।

**अलानिया**—क्रि॰ वि॰ [अ॰] खुले आम। सबके सामने।

**अलाप**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "आलाप"।

**अलापना**—क्रि॰ अ॰ [सं॰ आला-पन] १ बोलना। बातचीत करना। २. गाने में तान लगाना। ३. गाना।

**अलापी***—वि॰ [सं॰ आलापी] बोलने वाला। शब्द निकालनेवाला।

**अलाबू**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] लौवा। कद्दू।

**अलाम***—वि॰ [अ॰ अल्लामः] बातें बनानेवाला। मिथ्यावादी।

**अलामत**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. निशान। चिह्न। २. पहचान।

**अलायक़***—संज्ञा पु॰ दे॰ "अयोग्य"।

**अलार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कपाट। किवाड़।

*[सं॰ अलात] अलाव। आँवाँ। भट्ठी।

**अलाल**—वि॰ [सं॰ अलस] १. आलसी। सुस्त। २. अकर्मण्य। निकम्मा।

**अलाव***—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अलात] तापने के लिये जलाई हुई आग। कौड़ा।

**अलावा**—क्रि॰ वि॰ [अ॰] सिवाय। अतिरिक्त।

**अलिंग**—वि॰ [सं॰] १. लिंगरहित। बिना चिह्न का। २. जिसकी कोई पहचान बतलाई न जा सके।

संज्ञा पु॰ १ व्याकरण में वह शब्द जो दोनो लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मित्र। २. ब्रह्म।

**अलिंजर**—संज्ञा पु॰ [सं॰] पानी रखने का मिट्टी का बरतन। झझर। घड़ा।

**अलिंद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या सहन।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ अलींद्र] भौंरा।

**अलि**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ अलिनी] १ भौंरा। २. कोयल। ३. कौवा। ४. बिच्छू। ५. वृश्चिक राशि। ६. कुत्ता। ७. मदिरा।

संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "अली"।

**अलिक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ललाट। माथा।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "अलि"।

**अलिप्त**—वि॰ [सं॰] जो लिप्त न हो। अलीन। विरत।

**अली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ आली] १. सखी। सहेली। २ पंक्ति। क़तार।

*संज्ञा पुं॰ [सं॰ अलि] भौंरा।

**अलीक**—वि॰ [सं॰] १. मिथ्या। झूठा। २ मर्यादारहित। अप्रतिष्ठित। ३. असार।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ अ+हिं॰ लीक] अप्रतिष्ठा। मर्यादा।

**अलीजा***—वि॰ [अ॰ आलीजाह] बहुत। अधिक।

**अलीन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अलीन] १. द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी। साह। बाजू। २. दालान या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवार से सटा होता है।

वि॰ [सं॰ अ=नहीं+लीन=रत] १. अग्राह्य। अनुपयुक्त। अनुचित। बेजा। २. जो लीन न हो। विरत।

**अलीपित**—वि॰ दे॰ "अलिप्त"।

**अलील**—वि॰ [अ॰] बीमार। रुग्ण।

**अलीह***—वि॰ [सं॰ अलीक] १. मिथ्या। असत्य। झूठा। २. अनुचित।

**अलुक्**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे—सर-सिज।

**अलुझना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "उलझना"।

**अलुटना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ लुट्=लोटना] लड़खड़ाना। गिरना-पड़ना।

**अलमुनियम**—संज्ञा पु॰ [अ॰ एलुमिनम] एक हलकी धातु जो कुछ कुछ

नीलापन लिए सफेद होती है।
**अलुप**-वि० दे० "लुप्त"।
संज्ञा पुं० दे० "लोप"।
**अलूला***—संज्ञा पुं० [ हिं० बुलबुल ] १ भभूका। बबूला। लपट। २.बुलबुला।
**अलेख**—वि० [ सं० अ + लेख्य ] १. जिसके विषय में कोई भावना न हो सके। अनगिनत।
**अलेखा***—वि० [ हिं० अलेख ] १. बेहिसाब। २. व्यर्थ। निष्फल।
**अलेखी***—वि० [ हिं० अलेख ] १. बेहिसाब या अंडबंड काम करनेवाला। २. गड़बड़ मचानेवाला। अंधेर करनेवाला। अन्यायी।
**अलेल**—संज्ञा पुं० क्रीड़ा। किलोल।
**अलोक**—वि० [ सं० ] १ जो देखने में न आवे। अदृश्य। २ निर्जन। एकांत। ३ पुण्यहीन।
संज्ञा पुं० १ पातालादि लोक। परलोक। २ मिथ्या दोष। कलंक। निंदा।
**अलोकना***—क्रि० स० [ सं० आलोकन ] देखना। ताकना।
**अलोना**—वि० [ सं० अलवण ] [ स्त्री० अलोनी ] १ जिसमें नमक न पड़ा हो। २ जिसमें नमक न खाया जाय। जैसे, अलोना व्रत। ३ फीका। स्वादरहित।
**अलोप***—वि० दे० "लोप"।
**अलोलिक***—संज्ञा पुं० [सं०अलोल] अचंचलता। धीरता। स्थिरता।
**अलौकिक**—वि० [ सं० ] [ भाव० अलौकिकता ] १. जो इस लोक में न दिखाई दे। लोकोत्तर। २. अद्भुत। अपूर्व। ३. अमानुषी।
**अल्कत**—वि० [ अ० ] काटा या रद्द किया हुआ।
**अल्प**—वि० [ सं० ] [भाव० अल्पता, अल्पत्व ] १. थोड़ा। कम। २. छोटा।
संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई वर्णन की जाती है।
**अल्पका**—संज्ञा पुं० दे० "अलपाका"।
**अल्पजीवी**—वि० [सं०] जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।
**अल्पज्ञ**—वि० [ सं० ] [ भाव० अल्पज्ञता ] १. थोड़ा ज्ञान रखनेवाला। छोटी बुद्धि का। २. नासमझ।
**अल्पता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमी। न्यूनता। २. छोटाई।
**अल्पत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] "अल्पता"।
**अल्पप्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर, तथा य, र, ल, और व।
**अल्पमत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. थोड़े से लोगों का मत। बहुमत का उलटा। २ वे लोग जिनकी संख्या या मत औरों के मुकाबिले में कम हो। अल्पसंख्यक।
**अल्पवयस्क**—वि० [ सं० ] छोटी अवस्था का।
**अल्पशः**—क्रि० वि० [ सं० ] थोड़ा थोड़ा करके। धीरे धीरे। क्रमशः।
**अल्प-संख्यक**—वि० [ सं० ] गिनती के थोड़े या कम।
संज्ञा पुं० वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरों की अपेक्षा कम हो।
**अल्पायु**—वि० [ सं० अल्पायुस् ] थोड़ी आयुवाला। जो छोटी अवस्था में मरे।
**अल्ल**—संज्ञा पुं० [अ० आल] वंश का नाम। उपगोत्रज नाम। जैसे—पाँडे, त्रिपाठी, मिश्र।
**अल्लम गल्लम**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] अनाप शनाप। व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप।
**अल्ला**—संज्ञा पुं० दे० "अल्लाह"।
**अल्लाना***†—क्रि० अ० दे० "अललाना"।
**अल्लामा**†—वि० स्त्री० [अ० अल्लामः] कर्कशा। लड़ाकी।
संज्ञा पुं० [ अ० अल्लामः ] बहुत बड़ा विद्वान्।
**अल्लाह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ईश्वर।
यो० अल्लाहो-अकबर=ईश्वर महान् है।
**अल्हजा***—संज्ञा पुं० [ अ० अल्हज़ल ] इधर उधर की बात। गप्प।
**अल्हड़**-वि० [प्रा० ओल्हड़=प्रमत्त] १. मनमौजी। बेपरवाह। २. बिना अनुभव का। जिसे व्यवहार-ज्ञान न हो। ३. उद्धत। उजड्ड। ४. अनारी। गँवार।
संज्ञा पुं० नया बैल या बछड़ा जो निकाला न गया हो।
**अल्हड़पन**—संज्ञा पुं० [ हिं० अल्हड़ + पन] १. मनमौजीपन। बेपरवाही। २. व्यवहार-ज्ञान का अभाव। भोलापन। ३. उजड्डपन। अक्खड़पन। ४. अनाड़ीपन।
**अवंती**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] उज्जैन। उज्जयिनी ( यह सप्तपुरियों में से एक है )।
**अव**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग। यह जिस शब्द में लगता है, उसमें निम्नलिखित अर्थों की योजना करता है—१. निश्चय, जैसे—अवधारण। २. अनादर, जैसे—अवज्ञा। ३. न्यूनता या कमी, जैसे—अवघात। ४. निचाई या गहराई, जैसे—अवतार। अवक्षेप। ५. व्याप्ति, जैसे—अवकाश। अवगाहन।
*अव्य० दे० "और"।
**अवकलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० अवकलित] १. इकट्ठा करके मिला

देना। २. देखना। ३. जानना। ज्ञान। ४. ग्रहण।

**अवकलना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ अव-कलन ] ज्ञात होना। विचार में आना।

**अवकाश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रिक्त स्थान। खाली जगह। २. आकाश। अंतरिक्ष। शून्य स्थान। ३. दूरी। अंतर। फ़ासला। ४. अवसर। समय। मौका। ५. खाली वक्त। फ़ुर्सत। छुट्टी।

**अवकिरण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [वि॰ अवकीर्ण, अवकृष्ट ] बिखेरना। फैलाना। छितराना।

**अवकीर्ण**—वि॰ [ सं॰ ] १ फैलाया, छितराया या बिखेरा हुआ। २. नाश किया हुआ। नष्ट। ३. चूर चूर किया हुआ।

**अवकृपा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] कृपा का न होना। नाराज़गी।

**अवखन***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अवेक्षण ] देखना।

**अवगत**—वि॰ [ सं॰ ] १. विदित। ज्ञात। जाना हुआ। मालूम। २. नीचे गया हुआ। गिरा हुआ।

**अवगतना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवगत + हिं॰ ना ( प्रत्य॰ ) ] समझना। विचारना।

**अवगति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. बुद्धि। धारणा। समझ। २. बुरी गति।

**अवगाधना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "अवगाहना"।

**अवगारना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवग = जानकार + करण ] समझाना बुझाना। जताना।

क्रि॰ स॰ [ सं॰ अपकार ? ] बुरा-भला कहना। निंदा करना।

**अवगाह***—वि॰ [ सं॰ अवगाध ] १. अथाह। बहुत गहरा। * २. अनहोना। कठिन।

*संज्ञा पुं॰ १ गहरा स्थान। २. संकट का स्थान। ३. कठिनाई।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. भीतर प्रवेश करना। हलना। २. जल में हलकर स्नान करना।

**अवगाहन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवगाहित ] १. पानी में हलकर स्नान। निमज्जन। २. प्रवेश। पैठ। ३. मथन। विलोड़न। ४. खोज। छान-बीन। ५ चित्त लगाना। लीन होकर विचार करना।

**अवगाहना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ अवगाहन ] १ हलकर नहाना। निमज्जन करना। २. पैठना। धँसना। ३. मग्न होना।

क्रि॰ स॰ १ छान-बीन करना। २ विचलित करना। हलचल डालना। ३ चलाना। हिलाना। ४. सोचना। विचारना। ५ धारण करना। ग्रहण करना।

**अवगुंठन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवगुंठित ] १. ढँकना। छिपाना। २ रेखा से घेरना। ३. घूँघट। पर्दा। बुर्का।

**अवगुंफन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवगुंफित ] गूँथना। गुहना।

**अवगुण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. दोष। ऐब। २ बुराई। खोटाई।

**अवग्रह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रुकावट। अड़चन। बाधा। २ वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। ३ बाँध। बंद। ४. संधिविच्छेद। ( व्या॰ ) ५. 'अनुग्रह' का उलटा। ६ स्वभाव। प्रकृति। ७. शाप। कोसना।

**अवघट**—वि॰ [ सं॰ अव + घट या घट्ट ] विकट। दुर्गम। कठिन।

**अवचट**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अव + चित्त या अविचिन्ता ] कठिनाई। अंडस।

क्रि॰ वि॰ अकस्मात्। अनजान में।

**अवचय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] फूल फल आदि तोड़ या चुनकर इकट्ठा करना।

**अवचेतन**—वि॰ [ सं॰ ] जिसे केवल आंशिक चेतना हो पूरी पूरी न हो।

**अवचेतना**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] चेतना की वह प्रायः सुषुप्त सी अवस्था जिसमें किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता।

**अवच्छिन्न**—वि॰ [ सं॰ ] १. अलग किया हुआ। पृथक्। २. विशेषण-युक्त।

**अवच्छेद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] १. अलगाव। भेद। २ हद। सीमा। ३. अवधारण। छानबीन। ४. परिच्छेद। विभाग।

**अवच्छेदक**—वि॰ [ सं॰ ] १. भेदकारी। अलग करनेवाला। २ हद बाँधनेवाला। ३ अवधारक। निश्चय करानेवाला।

संज्ञा पुं॰ विशेषण।

**अवछंग***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उछंग"।

**अवज्ञा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवज्ञात, अवज्ञेय ] १. अपमान। अनादर। २ आज्ञा न मानना। अवहेला। ३ पराजय। हार। ४. वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न प्राप्त करना दिखलाया जाय।

**अवज्ञात**—वि॰ [ सं॰ ] अपमानित।

**अवज्ञेय**—वि॰ [ सं॰ ] अवज्ञा के योग्य।

**अवट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अमार्ग। गड्ढा।

**अवटना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ आवर्त्तन ] १. मथना। आलोड़न करना। २. किसी द्रव पदार्थ को आँच पर गाढ़ा करना।

क्रि॰ अ॰ घूमना। फिरना।

**अवडेर**—संज्ञा पु॰ [ हिं॰ अवडेरना ] १. फेर। चक्कर। २ झंझट। बखेड़ा। ३. रग में भग।

**अवडेरना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवधीरण ] १. फेर या झंझट में फँसाना। २. तंग करना।

**अवडेरा**—वि॰ [ हिं॰ अवडेर ] १. चक्करदार। फेर का। २ झंझटवाला। ३. बेढब। कुढगा।

**अवतंस**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवतंसित ] १. भूषण। अलंकार। २. शिरोभूषण। टीका। ३ मुकुट। ४. श्रेष्ठ व्यक्ति। सबसे उत्तम पुरुष। ५. माला। हार। ६. बाली। मुरकी। ७. कर्णफूल। ८ दूल्हा।

**अवतरण**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवतीर्ण ] १. उतरना। पार होना। २. घटना। कम होना। ३. जन्म ग्रहण करना। ४. नकल। प्रतिकृति। ५. प्रादुर्भाव। ६. सोढ़ी। ७. घाट। ८. किसी के कथन अथवा लेख को ज्यों का त्यों उद्धृत करना। उद्धरण।

**अवतरण-चिह्न**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] उलटे हुए विराम-चिह्न जिनके बीच किसी का कथन उद्धृत रहता है। जैसे—" "।

**अवतरणिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. प्रस्तावना। भूमिका। उपोद्घात। २. परिपाटी।

**अवतरना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ अवतरण ] प्रकट होना। उपजना। जन्मना।

**अवतरित**—वि॰ [ सं॰ ] १. ऊपर से नीचे उतारा हुआ। २. किसी दूसरे स्थल से लिया हुआ। उद्धृत। ३. जिसने अवतार धारण किया हो।

**अवतार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. उतरना। नीचे आना। २. जन्म। शरीरग्रहण। ३. देवता का मनुष्य आदि संसारी प्राणियों के शरीर को धारण करना। ४. विष्णु या ईश्वर का संसार में शरीर धारण करना। *५. सृष्टि।

**अवतारण**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ अवतारणा ] १. उतारना। नीचे लाना। २. नकल करना। ३. उदाहृत करना।

**अवतारना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवतारण ] १. उत्पन्न करना। रचना। २. जन्म देना।

**अवतारी**—वि॰ [ सं॰ अवतार ] १. उतरनेवाला। २. अवतार लेनेवाला। ३. देवांशधारी। ४. अलौकिक शक्तिवाला।

**अवतीर्ण**—वि॰ [ सं॰ ] १. ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। २. जिसने अवतार धारण किया हो। उत्तीर्ण।

**अवदशा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] दुर्दशा।

**अवदात**—वि॰ [ सं॰ ] १. उज्ज्वल। श्वेत। २. शुद्ध। स्वच्छ। निर्मल। ३. गौर। शुक्ल वर्ण का। ४. पीला।

**अवदान**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] १. शुद्ध आचरण। अच्छा काम। २. खंडन। ताड़ना। ३. शक्ति। बल। ४ अतिक्रम। उल्लंघन। ५. पवित्र करना। साफ़ करना।

**अवदान्य**—वि॰ [ सं॰ ] १. पराक्रमी। बली। २ अतिक्रमणकारी। हद से बाहर जानेवाला। ३. कंजूस।

**अवदारण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवदारित ] १. विदारण करना। तोड़ना। फाड़ना। २. मिट्टी खोदने का रंभा। खंता।

**अवद्य**—वि॰ [ सं॰ ] १. अधम। पापी। २. त्याज्य। कुत्सित। निकृष्ट। ३. दोषयुक्त।

**अवध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अयोध्या ] १. कोशल देश। २ अयोध्या नगरी।

*संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "अवधि"।

**अवधान**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] १. मनोयोग। चित्त का लगाव। २. चित्त की वृत्ति का निरोध कर उसे एक ओर लगाना। समाधि। ३. सावधानी। चौकसी।

*संज्ञा पु॰ [ सं॰ आधान ] गर्भ। पेट।

**अवधारण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवधारित, अवधारणीय, अवधार्य्य ] निश्चय। विचारपूर्वक निर्धारण करना।

**अवधारना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवधारण ] धारण करना। ग्रहण करना।

**अवधि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सीमा। हद। २. निर्धारित समय। मियाद। ३. अंत। ४. अंत समय। अंतिम काल।

अव्य॰ [ सं॰ ] तक। पर्यंत।

**अवधिमान***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] समुद्र।

**अवधी**—वि॰ [ सं॰ अयोध्या ] अवध-संबंधी। अवध का।

संज्ञा स्त्री॰ अवध की बोली।

**अवधू**—संज्ञा पु॰ दे॰ "अवधूत"।

**अवधूत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ अवधूतिन ] संन्यासी। साधु। योगी।

**अवन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रसन्न करना। २. रक्षा। बचाव।

*संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "अवनि"।

**अवनत**—वि॰ [ सं॰ ] १. नीचा। झुका हुआ। २. गिरा हुआ। पतित।

३. कम।

**अवगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घटती। कमी। न्यूनता। २. अधोगति। हीन दशा। ३. झुकाव। झुकाना। ४. नम्रता।

**अवना***—क्रि० अ० दे० "आवना"।

**अवनि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी। ज़मीन।

**अवपात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गिराव। पतन। २. गड्ढा। कुंड। हाथियों के फँसाने का गड्ढा। खोंड़ा। माल। ४. नाटक में भयादि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखाकर अंक की समाप्ति।

**अवबोध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जागना। २. ज्ञान। बोध।

**अवभृथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह शेष कर्म जिसके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर है। २. यज्ञांत स्नान।

**अवम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ पितरों का एक गण। २. मलमास। अधिमास।

**अवमतिथि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो।

**अवमर्दन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवमर्दित] १ कष्ट पहुँचाना। २. कुचलना। रौंदना या मलना।

**अवमर्श संधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पाँच प्रकार की संधियों में से एक (नाट्यशास्त्र)।

**अवमान**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवमानित] तिरस्कार। अपमान।

**अवमानना**—संज्ञा स्त्री० दे० "अवमान"।

क्रि० स० किसी का अपमान करना।

**अवयव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंश। भाग। हिस्सा। २. शरीर का अंग। ३. तर्क-पूर्ण। वाक्य का एक अंश या भेद। (न्याय)

**अवयवी**—वि० [सं० अवयविन्] १ जिसके बहुत से अवयव हों। अंगी। २. कुल। संपूर्ण।

संज्ञा पुं० १ वह वस्तु जिसके बहुत से अवयव हों। २ देह। शरीर।

**अवर***—वि० [सं० अपर] १ अन्य। दूसरा। और। २ अधम। नीच।

**अवरत**—वि० [सं०] १ जो रत न हो। विरत। निवृत। २ ठहरा हुआ। स्थिर। ३ अलग। पृथक्।

*संज्ञा पुं० दे० "आवर्त"।

**अवराधक**—वि० [सं० आराधक] आराधना करनेवाला। पूजनेवाला।

**अवराधन**—संज्ञा पुं० [सं० आराधन] आराधन। उपासना। पूजा। सेवा।

**अवराधना***—क्रि० स० [सं० आराधन] उपासना करना। पूजना। सेवा करना।

**अवराधी***—वि० [सं० आराधन] आराधना करनेवाला। उपासक। पूजक।

**अवरुद्ध**—वि० [सं०] १. रुँधा या रुका हुआ। २ गुप्त। छिपा हुआ।

**अवरूढ़**—वि० [सं०] ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ। 'आरूढ़' का उलटा।

**अवरेखना***—क्रि० स० [सं० अवलेखन] १. उरेहना। लिखना। चित्रित करना। २. देखना। ३. अनुमान करना। कल्पना करना। सोचना। ४. मानना। जानना।

**अवरेब**—संज्ञा पुं० [सं० अव = विरुद्ध + रेव = गति] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट।

यौ०—अवरेबदार = तिरछी काट का।

३. पेच। उलझन। ४. खराबी। कठिनाई। ५. झगड़ा। विवाद। खींचातानी।

**अवरोध**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधक] १ रुकावट। अड़चन। रोक। २ घेर लेना। मुहासिरा। ३. निरोध। बंद करना। ४ अनुरोध। दबाव। ५ अंतःपुर।

**अवरोधक**—वि० [सं०] [स्त्री० अवरोधिका] रोकनेवाला।

**अवरोधन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोधित, अवरोधी, अवरुद्ध] १ रोकना। छेंकना। २. अंतःपुर। जनाना।

**अवरोधना***—क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना। निषेध करना।

**अवरोधित**—वि० [सं०] रोका हुआ।

**अवरोधी**—वि० [सं० अवरोध] [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करनेवाला।

**अवरोह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ उतार। गिराव। अधःपतन। २. अवनति।

**अवरोहण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना। उतार। गिराव। पतन।

**अवरोहना***—क्रि० अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना।

क्रि० अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।

* क्रि० स० [हिं० उरेहना] खींचना। अंकित करना। चित्रित करना।

* क्रि० स० [सं० अवरोधन] रोकना।

**अवरोही (स्वर)**—संज्ञा पुं० [सं० अवरोहिन्] वह स्वर-साधन जिसमें पहले षड्ज का उच्चारण हो, फिर

निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतरते हुए स्वर निकलें। विलोम। आरोही का उलटा।

**अवर्ण**—वि॰ [ सं॰ ] १. वर्णरहित। बिना रंग का। २. बदरंग। बुरे रंग का। ३ वर्ण-धर्म-रहित।

**अवर्ण्य**—वि॰ [ सं॰ ] जो वर्णन के योग्य न हो।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अ+ वर्ण्य ] जो वर्ण्य या उपमेय न हो। उपमान।

**अवर्त***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ आवर्त ] १. पानी का भँवर या चक्कर। नाँच। २. घुमाव। चक्कर।

**अवर्षण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वर्षा का न होना।

**अवलंघना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अव + लंघन ] लाँघना।

**अवलंब**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] आश्रय। सहारा।

**अवलंबन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवलंबनीय, अवलंबित, अवलंबी ] १ आश्रय। आधार। सहारा। २. धारण। ग्रहण।

**अवलंबना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवलंबन ] १ अवलंबन करना। आश्रय लेना। टिकना। २ धारण करना।

**अवलंबित**—वि॰ [ सं॰ ] १. आश्रित। सहारे पर स्थिर। टिका हुआ। २. निर्भर। किसी बात के होने पर स्थिर किया हुआ।

**अवलंबी**—वि॰ पुं॰ [ सं॰ अवलंबिन् ] [ स्त्री॰ अवलंबिनी ] १. अवलंबन करनेवाला। सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।

**अवलिप्त**—वि॰ [ सं॰ ] १ लगा या पोता हुआ। २. आसक्त। ३. घमंडी।

**अवली***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ आवलि ] १. पंक्ति। पाँती। २. समूह। झुंड।

३. वह अन्न की डाँठ जो नवान्न करने के लिये खेत से पहले पहल काटी जाती है।

**अवलीक**—वि॰ [ सं॰ अव्यलीक ] पापशून्य। निष्कलंक। शुद्ध।

**अवलेखना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवलेखन ] १ खोदना। खुरचना। २ चिह्न डालना।

**अवलेप**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अवलेपन ] १ उबटन। लेप। २ घमंड। गर्व।

**अवलेपन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १ लगाना। पोतना। २. वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. घमंड। अभिमान। ४ ऐब।

**अवलेह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवलेह्य ] १ लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २ चटनी। माजून। ३ वह औषध जो चाटी जाय।

**अवलेहन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चाटना। २. चटनी।

**अवलोकन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवलोकित, अवलोकनीय ] १. देखना। २. देख-भाल। जाँच पड़ताल।

**अवलोकना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अवलोकन ] १. देखना। २. जाँचना। अनुसंधान करना।

**अवलोकनि***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ अवलोकन ] १. आँख। दृष्टि। २ चितवन।

**अवलोकनीय**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ अवलोकनीया ] देखने योग्य।

**अवलोचना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ आलोचन ] दूर करना।

**अवश**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ अवशता ] विवश। लाचार।

**अवशिष्ट**—वि॰ [ सं॰ ] शेष। बाकी।

**अवशेष**—वि॰ [ सं॰ ] १. बचा हुआ। शेष। बाकी। २. समाप्त।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवशिष्ट ] १ बची हुई वस्तु। २ अंत। समाप्ति।

**अवश्यंभावी**—वि॰ [ सं॰ अवश्यंभाविन् ] जो अवश्य हो। टले नहीं। अटल। ध्रुव।

**अवश्य**—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] निश्चय करके। निःसंदेह। ज़रूर।

वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ अवश्या ] १. जो वश में न आ सके। २. जो वश में न हो।

**अवश्यमेव**—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] अवश्य ही। निःसंदेह। ज़रूर।

**अवसन्न**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ अवसन्नता ] १ विषाद-प्राप्त। दुःखी। २ नष्ट होनेवाला। ३. सुस्त। आलसी। निकम्मा।

**अवसर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. समय। काल। २. अवकाश। फ़ुरसत। ३ इत्तफ़ाक।

**मुहा॰**—अवसर चूकना = मौका हाथ से जाने देना।

४. एक काव्यालंकार जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाय।

**अवसर्पण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अधोगमन। अधःपतन। अवरोहण।

**अवसर्पिणी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] जैन शास्त्रानुसार पतन का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।

**अवसाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ अवसादन, अवसन्न ] १. नाश। क्षय। २ विषाद। खेद। रंज। ३. दीनता। ४. आशा या उत्साह का अभाव। ५. थकावट। ६. कमजोरी।

**अवसान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १.

विराम। ठहराव। २. समाप्ति। अंत। ३. सीमा। ४. सायंकाल। ५. मरण।

**अवसि**—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

**अवसित**—वि० [ सं० ] १. जिसका अवसान या अंत हुआ हो। समाप्त। २. गत। बीता हुआ। ३. बदला हुआ। परिणत।

**अवसेख***—वि० दे० 'अवशेष"।

**अवसेचन**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ सींचना। पानी देना। २ पसीजना। पसीना निकलना। ३ वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना निकाला जाय। ४ शरीर का रक्त निकालना।

**अवसेर***—संज्ञा स्त्री० [सं० अवसर ?] १. अटकाव। उलझन। २. देर। विलंब। ३ चिंता। व्यग्रता। उचाट। ४. हैरानी।

**अवसेरना**—क्रि० स० [ हिं० अवसेर ] तंग करना। दुःख देना।

**अवसेषित***—वि० दे० "अवशिष्ट"।

**अवस्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दशा। हालत। २. समय। काल। ३ आयु। उम्र। ४. स्थिति। ५. मनुष्य की चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। ६. मनुष्य-जीवन का आठ अवस्थाएँ—कौमार, पोगंड, कैशोर, यौवन, बाल, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्।

**अवस्थान**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. स्थान। जगह। २ ठहराव। टिकना। स्थिति।

**अवस्थित**—वि० [ सं० ] १. उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। २. ठहरा हुआ।

**अवस्थिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वर्तमानता। मौजूद होना। स्थिति। २. सत्ता।

**अवहित्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छिपाव। मन का भाव छिपाना। ( साहित्य )

**अवहेलना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ अवज्ञा। तिरस्कार। २ ध्यान न देना। बेपरवाही।

*क्रि० स० [ सं० अवहेलन ] तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

**अवहेला**—संज्ञा स्त्री० दे० "अवहेलना"।

**अवहेलित**—वि० [ सं० ] जिसकी अवहेलना हुई हो। तिरस्कृत।

**अवाँ**—संज्ञा पु० दे० "आँवाँ"।

**अवांछनीय**—वि० [सं० अवाञ्छनीय] जिसका होना अच्छा न समझा जाय। जिसके न होने की इच्छा की जाय।

**अवांछित**—वि० दे० "अवाञ्छनीय"।

**अवांतर**—वि० [ सं० ] अंतर्गत। मध्यवर्ती।

संज्ञा पु० [सं०] मध्य। बीच।

**यौ०**—अवांतर दिशा = बीच की दिशा। विदिशा। अवांतर भेद = अंतर्गत भेद। भाग का भाग।

**अवांसना**—क्रि० काम में लाना।

**अवांसा**—काम मे लाया हुआ। पुराना।

**अवाँसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अवासित] १. वह बोझ जो नवान्न के लिये फ़सल में से पहले पहल काटा जाय। कवल। अवली। २. काम में लायी गयी।

**अवाई**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० आवना=आना ] १. आगमन। आना २ गहिरी जोताई। 'सेव' का उलटा।

**अवाक्**—वि० [ सं० अवाच् ] १. चुप। मौन। २. स्तंभित। चकित। विस्मित।

**अवाङ्मुख**—वि० [ सं० ] १ अधोमुख। उलटा। नीचे मुँह का। २. लज्जित।

**अवाची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्षिण दिशा।

**अवाच्य**—वि० [ सं० ] १. जो कुछ कहने योग्य न हो। अनिंदित। विशुद्ध। २. जिससे बात करना उचित न हो। नीच।

संज्ञा पु० [ सं० ] कुवाच्य। गाली।

**अवाज***—संज्ञा स्त्री० दे० "आवाज़"।

**अवार**—संज्ञा पु० [ सं० ] नदी के इस पार का किनारा। 'पार' का उलटा।

**अवारजा**—संज्ञा पु० [फ़ा० अवारिजः] १ वह वही जिसमें प्रत्येक असामी का जोत आदि लिखी जाती है। २. जमा-खर्च की वही।

**अवारना***—क्रि० स० [ सं० अवारण ] १ रोकना। मना करना। २. दे० "वारना"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० अवार ] १ किनारा। माड़। २. मुख। विवर। मुँह का छेद।

**अवास***—संज्ञा पु० दे० "आवास"।

**अवि**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ सूर्य। २ मदार। आक। ३ भेंड़ा। ४. बकरा। ५. पर्वत।

**अविकच**—वि० [ सं० अ+विकच ] १ जो विकसित न हुआ हो। बिना खिला हुआ। २ जो सफल या पूर्णकाम न हुआ हो।

**अविकल**—वि० [ सं० ] १ ज्यों का त्यों। बिना उलट-फेर का। २. पूर्ण। पूरा। ३ निश्चल। शांत।

**अविकल्प**—वि० [ सं० ] १. निश्चित। २. निःसंदेह। असंदिग्ध।

**अविकार**—वि० [ सं० ] १ विकाररहित। निर्दोष। २. जिसका रूप-रंग न बदले।

संज्ञा पु० [ सं० ] विकार का अभाव।

**अविकारी**—वि० [ सं० अविकारिन् ] [ स्त्री० अविकारिणी ] १.

जिसमें विकार न हो। जो एक सा रहे। निर्विकार। २. जो किसी का विकार न हो।

**अविकृत**—वि० पुं० [ सं० ] जो विकृत न हो। जो बिगड़ा या बदला न हो।

**अविगत**—वि० [ सं ] १. जो जाना न जाय। २. अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३. जिसका नाश न हो। नित्य।

**अविचल**—वि० [ सं० ] जो विचलित न हो। अचल। स्थिर। अटल।

**अविचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विचार का अभाव। २. अज्ञान। अविवेक। ३. अन्याय। अत्याचार।

**अविचारी**—वि० [ सं० अविचारिन् ] [ स्त्री० अविचारिणी ] १ विचारहीन। बेसमझ। २. अत्याचारी। अन्यायी।

**अविच्छिन्न**—वि० [ सं० ] अटूट। लगातार।

**अविच्छेद**—वि० [ सं० ] जिसका विच्छेद न हो। अटूट। लगातार।

**अविजित**—वि० [ सं० ] जो जीता न गया हो।

**अविज्ञ**—वि० [ सं० ] [ भाव० अविज्ञता ] अनजान। अज्ञानी।

**अविज्ञात**—वि० [ सं० ] १. अनजाना। अज्ञात। २. बेसमझा। अर्थ-निश्चय-शून्य।

**अविज्ञेय**—वि० पुं० [ सं० ] जो जाना न जा सके। न जानने योग्य।

**अवितथ**—वि० [ सं० ] विरुद्ध। उलटा।

**अविदित**—वि० [ सं० ] जो विदित न हो। अज्ञात। बिना जाना हुआ।

**अविद्यमान**—वि० [ सं० ] १. जो विद्यमान या उपस्थित न हो। अनुपस्थित। २. असत्। ३. मिथ्या। असत्य।

**अविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। मोह। २. माया का एक भेद। ३. कर्मकांड। ४. सांख्य-शास्त्रानुसार प्रकृति। जड़।

**अविधि**—वि० [ सं० ] विधि-विरुद्ध। नियम के विपरीत।

**अविनय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विनय का अभाव। ढिठाई। उद्दंडता।

**अविनश्वर**—वि० [ सं० ] जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। चिर-स्थायी।

**अविनाभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संबंध। २. व्याप्य-व्यापक संबंध। जैसे, अग्नि और धूम का।

**अविनाश**— संज्ञा पुं० [ सं० ] विनाश का अभाव। अक्षय।

**अविनाशी**—वि० पुं० [ सं० अविनाशिन् ] [ स्त्री० अविनाशिनी ] १. जिसका विनाश न हो। अक्षय। २. नित्य। शाश्वत।

**अविनीत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अविनीता ] १. जो विनीत न हो। उद्धत। २ अदांत। दुर्दांत। सरकश। ३ दुष्ट। ४. ढीठ।

**अविभक्त**—वि० [ सं० ] १ मिला हुआ। २ जो बाँटा न गया हो। शामिलाती। ३. अभिन्न। एक।

**अविभिन्न**—वि० [ सं० ] जो विभिन्न या अलग न हो। एक में मिला हुआ। अभिन्न।

**अविमुक्त**—वि० पुं० [ सं० ] जो विमुक्त न हो। बद्ध।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कनपटी। २. काशी।

**अविरत**—वि० [ सं० ] १. विराम-शून्य। निरंतर। २. लगा हुआ।
क्रि० वि० [ सं० ] १ निरंतर। लगातार। २ नित्य। हमेशा।

**अविरति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. निवृत्ति का अभाव। लीनता। २. विषयासक्ति। ३. अशांति।

**अविरथा***—क्रि० वि० दे० "वृथा"।

**अविरल**—वि० [ सं० ] १. मिला हुआ। २. घना। सघन।

**अविराम**—वि० [ सं० ] १. बिना विश्राम लिए हुए। २. लगातार। निरंतर।

**अविरुद्ध**—वि० [ सं० ] जो विरुद्ध न हो। अनुकूल।

**अविरोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समानता। २. विरोध का अभाव। अनुकूलता। ३. मेल। संगति।

**अविरोधी**—वि० [ सं० अविरोधिन् ] १. जो विरोधी न हो। अनुकूल। २. मित्र।

**अविलंब**—क्रि० वि० [ सं० ] बिना विलंब किए। तुरन्त। फ़ौरन।

**अविवाद**—वि० [ सं० अ + विवाद ] जिसके संबंध में किसी प्रकार का विवाद न हो। निर्विवाद।

**अविवाहित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० अविवाहिता ] जिसका ब्याह न हुआ हो। कुँआरा।

**अविवेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विवेक का अभाव। अविचार। २. अज्ञान। नादानी। ३ अन्याय।

**अविवेकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अज्ञान।

**अविवेकी**—वि० [ सं० अविवेकिन् ] १. अज्ञानी। विवेक-रहित। २. अविचारी। ३. मूढ़। मूर्ख। ४. अन्यायी।

**अविशेष**—वि० [ सं० ] भेदक धर्म-रहित। तुल्य। समान।
संज्ञा पुं० १ भेदक धर्म का अभाव। २. सांख्य में सातत्व, घोरत्व और मूढ़त्व आदि विशेषताओं से रहित सूक्ष्म भूत।

**अविश्रांत**—वि० [ सं० ] १. जो थके नहीं। २. जो थके नहीं।

**अविश्वसनीय**—वि० [ सं० ] जिसपर विश्वास न किया जा सके।

**अविश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विश्वास का अभाव। बेएतबारी। २. अनिश्चय।

**अविश्वासी**—वि० [ सं० अविश्वासिन् ] १. जो किसी पर विश्वास न करे। २. जिसपर विश्वास न किया जाय।

**अविषय**—वि० [ सं० ] १ जो मन या इंद्रिय का विषय न हो। अगोचर। २. अनिर्वचनीय।

**अविहड़***—वि० [सं० अ + विघट] जो खंडित न हो। अखंड। अनश्वर।

**अविहित**—वि० [ सं० ] जो विहित या ठीक न हो। अनुचित।

**अवीरा**—वि० [ सं० ] १. पुत्र और पतिरहित ( स्त्री )। २ स्वतंत्र (स्त्री)।

**अवेक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय ] १ अवलोकन। देखना। २ जाँच-पड़ताल। देख-भाल।

**अवेज***—संज्ञा पुं० [ अ० एवज़ ] बदला। प्रतीकार।

**अवेस***—संज्ञा पुं० दे० "आवेश"।

**अवैतनिक**—वि० [ सं० ] बिना वेतन या तनख्वाह के काम करनेवाला।

**अवैदिक**—वि० [ सं० ] वेदविरुद्ध।

**अवैध**—वि० [ सं० ] विधि या क़ानून आदि के विरुद्ध। ग़ैर-क़ानूनी।

**अव्यक्त**—वि० [सं० ] १. अप्रत्यक्ष। अगोचर। जो ज़ाहिर न हो। २. अज्ञात। अनिर्वचनीय। ३. जिसमे रूप-गुण न हो।
संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कामदेव। ३. शिव। ४. प्रधान। प्रकृति (सांख्य)। ५ सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। ६ ब्रह्म। ७ बीजगणित में वह राशि जिसका मान अनिश्चित हो। अनवगत राशि। ८. जीव।

**अव्यक्त गणित**—संज्ञा पुं० [सं०] बीजगणित।

**अव्यक्तलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सांख्य के अनुसार महत्तत्वादि। २ संन्यासी। ३ वह रोग जो पहचाना न जाय।

**अव्यय**—वि० [ सं० ] १. जो विकार को प्राप्त न हो। सदा एकरस रहनेवाला। अक्षय। २ नित्य। आदि-अन्त-रहित।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्याकरण में वह शब्द जिसमें लिंग, वचन और कारक आदि का भेद न हो। २ परब्रह्म। ३. शिव। ४ विष्णु।

**अव्ययीभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समास का एक भेद ( व्याकरण )।

**अव्यर्थ** वि० [ सं० ] १ जो व्यर्थ न हो। सफल। २ सार्थक। ३ अमोघ। न चूकनेवाला। ४. अवश्य असर करनेवाला।

**अव्यवस्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० अव्यवस्थित ] १ नियम का न होना। बेकायदगी। २. स्थिति या मर्यादा का न होना। ३ शास्त्रादि-विरुद्ध व्यवस्था। अविधि। ४ बेइंतज़ामी। गड़बड़।

**अव्यवस्थित**—वि० [ सं० ] १ शास्त्रादि-मर्यादा रहित। २ बेठिकाने का। ३ चंचल। अस्थिर।

**अव्यवहार्य**-वि० [ सं० ] १. जो व्यवहार में न लाया जा सके। २ पतित।

**अव्याकृत**-वि० [ सं० ] १. जिसमें विकार न हो। २. अप्रकट। गुप्त। ३. कारणरूप। ४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति।

**अव्याप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [वि० अव्याप्त ] १. व्याप्ति का अभाव। २ न्याय में संपूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटना।

**अव्यावृत**-वि० [ सं० ] १. निरंतर। लगातार। अटूट। २. ज्यों का त्यों।

**अव्याहत**—वि० [सं०] १. बेरोक। २. सत्य। ठीक। युक्तियुक्त।

**अव्युत्पन्न**—वि० [ सं० ] १. अनभिज्ञ। अनाड़ी। २ व्याकरण शास्त्रानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके।

**अव्वल**—वि० [ अ० ] १. पहला। आदि का। प्रथम। २ उत्तम। श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० आदि। प्रारंभ।

**अशंक**—वि० [ सं० ] बेडर। निर्भय।

**अशंभु**—संज्ञा पुं० [सं० अ + शंभु ] अमंगल। अहित। खराबी।

**अशकुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा शकुन।

**अशक्त**—वि० [ सं० ] [संज्ञा अशक्ति] १ निर्बल। कमज़ोर। २. असमर्थ।

**अशक्ति** —संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० अशक्त ] १. निर्बलता। कमज़ोरी। २ इंद्रियों और बुद्धि का बेकाम होना। ( सांख्य )

**अशक्य**—वि० [ सं० ] असाध्य। न होने योग्य।

**अशन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजन। आहार। २ खाने की क्रिया। खाना
वि० [ स्त्री० अशना ] खानेवाला। ( यौ० के अंत में )

**अशनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वज्र। बिजली।

**अशरण**—वि० [ सं० ] जिसे कहीं शरण न हो। अनाथ। निराश्रय।

**अशरफ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. सोने का एक सिक्का। मोहर। २. पीले रंग का एक फूल।

**अशराफ़**—वि० [ अ० ] शरीफ़। भद्र।

**अशरीरी**—वि० [सं० अ+ शरीरिन्] जिसका शरीर न हो। बिना शरीर का।

**अशांत**—वि० [सं०] [संज्ञा अशांति ] जो शांत न हो। अस्थिर। चंचल।

**अशांति**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० अशांत ] १ अस्थिरता। चंचलता। २ क्षोभ। असंतोष।

**अशिक्षित**—वि० [ सं० ] जिसने शिक्षा न पाई हो। बेपढ़ा-लिखा। अनपढ़।

**अशिव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अमंगल। अहित।

वि० अमंगल या अहित करनेवाला।

**अशिष्ट**—वि० [सं०] उजड्ड। बेहूदा।

**अशिष्टता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. असाधुता। बेहूदगी। उजड्डपन। २. ढिठाई।

**अशुचि**—वि० [सं०] [संज्ञा अशौच] १. अपवित्र। २. गंदा। मैला।

**अशुद्ध**—वि० [सं० ] १. अपवित्र। नापाक। २. बिना शोधा हुआ। असंस्कृत। ३. गलत।

**अशुद्धता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अपवित्रता। गंदगी। २. गलती।

**अशुद्धि**—संज्ञा स्त्री० दे० "अशुद्धता"।

**अशुन***—संज्ञा पुं० [ सं० अश्विनी ] अश्विनी नक्षत्र।

**अशुभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अमगल। अहित। २ पाप। अपराध।

वि० [ सं० ] जो शुभ न हो। बुरा।

**अशेष**—वि० [ सं० ] १. पूरा। समूचा। २. समाप्त। खतम। ३. अनंत। बहुत।

**अशोक**—वि० [ सं० ] शोकरहित। दुःखशून्य।

संज्ञा पुं० १ एक प्रकार का पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लंबी लंबी और किनारों पर लहरदार होती हैं। २. पारा।

**अशोकपुष्प-मंजरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दंडक वृत्त का एक भेद।

**अशोक-वाटिका**—संज्ञा स्त्री [ सं० ] १. शोक को दूर करनेवाला रम्य उद्यान। २. रावण का वह प्रसिद्ध बगीचा जिसमें उसने सीता जी को ले जाकर रक्खा था।

**अशोच्य**—वि० [सं०] जिसके संबंध में किसी प्रकार का शोच या चिंता करने की आवश्यकता न हो।

**अशौच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अशुचि ] १ अपवित्रता। अशुद्धता। २. हिंदू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या संतान होने पर कुछ दिन मानी जाती है।

**अश्मंतक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मूँज की तरह की एक घास जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे। २ आच्छादन। ढकना।

**अश्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पहाड़। पर्वत। २. पत्थर। ३. बादल। मेघ।

**अश्मक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। त्रावंकोर।

**अश्मकुट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार के वानप्रस्थ जो केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे।

**अश्मरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पथरी रोग।

**अश्रद्धा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [वि० अश्रद्धेय ] श्रद्धा का अभाव।

**अश्रांत**—वि० [ सं० ] जो थका माँदा न हो।

क्रि० वि० लगातार। निरंतर।

**अश्रु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँसू।

**अश्रु-गैस**—संज्ञा स्त्री० दे० "आँसू-गैस।"

**अश्रुत**—वि० [ सं० ] १. जो सुना न गया हो। २. जिसने कुछ देखा सुना न हो।

**अश्रुतपूर्व**—वि० [ सं० ] १. जो पहले न सुना गया हो। २. अद्भुत। विलक्षण।

**अश्रुपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँसू गिराना। रोना।

**अश्लिष्ट**—वि० [ सं० ] श्लेषशून्य। जो जुड़ा या मिला न हो। असंबद्ध।

**अश्लील**—वि० [सं०] फूहड़। भद्दा। लज्जाजनक।

**अश्लीलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूहड़पन। भद्दापन। लज्जा का उल्लंघन। ( काव्य में एक दोष )

**अश्लेषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में से नवाँ।

**अश्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घोड़ा। तुरग।

**अश्वकर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का शाल वृक्ष। २. लता-शाल।

**अश्वगंधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] असगंध।

**अश्वगति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक छंद। २. एक चित्रकाव्य।

**अश्वतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अश्वतरी] १. नाग-राज। २. खच्चर।

**अश्वत्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीपल।

**अश्वत्थामा**—संज्ञा पुं० [ सं० अश्वत्थामन् ] द्रोणाचार्य के पुत्र।

**अश्वपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घुड़सवार। २ रिसालदार। ३. घोड़ों का मालिक। ४. भरतजी के मामा।

५. केकय देश के राजकुमारों की उपाधि।

**अश्वपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] साईस।

**अश्वमेध**—संज्ञा पुं० [सं०] एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिये छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था।

**अश्वशाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ घोड़े रहें। अस्तबल। तबेला।

**अश्वारोहण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अश्वारोही] घोड़े की सवारी।

**अश्वारोही**—वि० [सं० अश्वारोहिन्] [स्त्री० अश्वारोहिणी] घोड़े का सवार।

**अश्विनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।

**अश्विनीकुमार**—संज्ञा पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

**अषाढ़**—संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।

**अष्ट**—वि० [सं०] आठ।

**अष्टक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ आठ वस्तुओं का संग्रह। २ वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक हों।

**अष्टकमल**—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग में मूलधार से ललाट तक के आठ कमल।

**अष्टका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अष्टमी। २ अष्टमी के दिन का कृत्य। अष्टकायोग।

**अष्टकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार सर्पों के आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक।

**अष्टकृष्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ कुल के मतानुसार आठ कृष्ण-मूर्त्तियाँ—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।

**अष्टद्रव्य**—संज्ञा पुं० [सं०] आठ द्रव्य जो हवन में काम आते हैं—अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी।

**अष्टधात**—संज्ञा स्त्री० दे० "अष्टधातु"।

**अष्टधाती**—वि० [हिं० अष्टधात + ई (प्रत्य०)] १. अष्टधातुओं से बना हुआ। २ दृढ़। मज़बूत। ३ उत्पाती। उपद्रवी। ४ वर्णसंकर।

**अष्टधातु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।

**अष्टपदी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का गीत जिसमें आठ पद होते हैं। २. बेले का फूल या पौधा।

**अष्टपाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ शरभ। शार्दूल। २. लूता। मकड़ी। ३ एक प्रकार की भीषण समुद्री मछली जिसे आठ पैर या बाँहें होती हैं।

**अष्टप्रकृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी। यथा—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य प्राड्विवाक और प्रतिनिधि।

**अष्टभुजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**अष्टभुजी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अष्टभुजा"।

**अष्टम**—वि० पुं० [सं०] आठवाँ।

**अष्टमंगल**—संज्ञा पुं० [सं०] आठ मंगलद्रव्य—सिंह, वृष, नाग, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक।

**अष्टमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि।

**अष्टमूर्ति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. शिव की आठ मूर्तियाँ—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव।

**अष्टवर्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आठ ओषधियों का समाहार—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि। २. ज्योतिष का एक गोचर। ३ राज्य के कृषि, वणिक, दुर्ग, सेतु, हस्तिबंधन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य संस्थापन का समूह।

**अष्टांग**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अष्टांगी] १. योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। २ आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण। ३ आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है।

वि० [सं०] १. आठ अवयवोंवाला। २ अठपहल।

**अष्टांगी**—वि० [सं० अष्टांगिन्] आठ अंगोंवाला।

**अष्टाक्षर**—संज्ञा पुं० [सं०] आठ अक्षरों का मंत्र।

वि० [सं०] आठ अक्षरों का।

**अष्टाध्यायी**—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।

**अष्टापद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २ मकड़ी। ३ कैलाश। ४ सिंह। शेर।

**अष्टावक्र**-संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि। २ टेढ़े मेढ़े अंगों का मनुष्य।

**अष्टीला**-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें पेशाब नहीं होता और गाँठ पड़ जाती है।

**असंक***-वि० दे० "अशंक"।

**असंक्रांति मास**-संज्ञा पुं० [सं०] अधिकमास। मलमास।

**असंख्य**-वि० [सं०] अनगिनत।

**असंग***-वि० [सं०] १. अकेला। एकाकी। २ किसी से वास्ता न रखने-वाला। निर्लिप्त। ३. अलग। ४. विरक्त।

**असंगत**-वि० [सं०] १ अयुक्त। बेठीक। २. अनुचित।

**असंगति**-संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बेसिलसिलापन। बेमेल होने का भाव। २. अनुपयुक्तता। ३ एक काव्यालंकार जिसमें कारण कहीं बताया जाय और कार्य्य कहीं।

**असंत**—वि० [सं०] खल। दुष्ट।

**असंतुष्ट**—वि० [सं०] [संज्ञा असंतुष्टि] १ जो संतुष्ट न हो। २ अतृप्त। जिसका मन न भरा हो। ३ अप्रसन्न।

**असंतुष्टि**-संज्ञा स्त्री० दे० "असंतोष"।

**असंतोष**-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० असंतोषी] १ संतोष का अभाव। अधैर्य। २ अतृप्ति। ३ अप्रसन्नता।

**असंबद्ध**-वि० [सं०] १ जो मेल में न हो। २. पृथक्। अलग। ३ अन-मिल। बे-मेल। अंड-बंड। जैसे, असंबद्ध प्रलाप।

**असंबाधा**-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

**असंभव**-वि० [सं०] जो संभव न हो। जो हो न सके। ना-मुमकिन। संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असंभव था।

**असंभवता**-संज्ञा स्त्री० [सं०] असंभव होने का भाव। न होने वाला गुण।

**असंभार***-वि० [हिं० अ+संभार] १. जो सँभालने योग्य न हो। २. अपार। बहुत बड़ा।

**असंभावना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] संभावना का अभाव। अनहोनापन।

**असंभावित**-वि० [सं०] जिसके होने का अनुमान न किया गया हो। अनुमानविरुद्ध।

**असंभाव्य**-वि० [सं०] जिसकी संभावना न हो। अनहोना।

**असंभाष्य**—वि० [सं०] १. न कहे जाने योग्य। २. जिससे बात-चीत करना उचित न हो। बुरा।

**असंयत**—वि० [सं०] संयमरहित। जो संयत या नियमबद्ध न हो।

**असंस्कृत**—वि० [सं०] १ बिना सुधारा हुआ। अपरिमार्जित। २ जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

**अस***—वि० [सं० ईदृश] १ इस प्रकार का। ऐसा। २ समान।

**असकताना**—क्रि० अ० [हिं० आसकत] आलस्य में पड़ना। आलसी होना।

**असक्त***—वि० दे० "आसक्त"।

**असकना**—संज्ञा पुं० [सं० असि+करण] लोहे का एक औज़ार जिससे म्यान के भीतर की लकड़ी साफ़ की जाती है।

**असगंध**—संज्ञा पुं० [सं० अश्वगंधा] एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम में आती है। अश्वगंधा।

**असगुन**—संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"।

**असज्जन**—वि० [सं०] खल। दुष्ट।

**असत**—वि० दे० "असत्"।

**असती**—वि० [सं०] जो सती न हो। कुलटा। पुंश्चली।

**असत्**—वि० [सं०] १. अस्तित्व-विहीन। सत्तारहित। २. बुरा। खराब। ३. असाधु।

**असत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ता का अभाव। अनस्तित्व। २. असज्जनता।

**असत्य**—वि० [सं०] मिथ्या। झूठ।

**असत्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिथ्यात्व। झुठाई।

**असत्यवादी**—वि० [सं०] झूठा। मिथ्यावादी।

**असन**—संज्ञा पुं० [सं० अशन] भोजन।

**असफल**—वि० दे० "विफल"।

**असफलता**—संज्ञा स्त्री० दे० "विफलता"।

**असबर्ग**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] खुरासान की एक लंबी घास जिसके फूल रेशम रँगने के काम में आते हैं।

**असबाब**—संज्ञा पुं० [अ०] चीज़। वस्तु। सामान।

**असभई**—संज्ञा स्त्री० [सं० असभ्यता] अशिष्टता। असभ्यता।

**असभ्य**—वि० [सं०] अशिष्ट। गँवार।

**असभ्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अशिष्टता। गँवारपन।

**असमंजस**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुविधा। आगा-पीछा। २. अड़चन। कठिनाई।

**असमंत***—संज्ञा पुं० [सं० अश्मंत] चूल्हा।

**असम**—वि० [सं०] १ जो सम या तुल्य न हो। जो बराबर न हो। अ-सदृश। २ विषम। ताक। ३ ऊँचा-नीचा। ४. एक काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलना असंभव बत-लाया जाय। ५ आसाम प्रदेश।

**असमबाण**—संज्ञा पुं० दे० "असम-शर"।

**असमय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विपत्ति का समय । बुरा समय ।
क्रि० वि० १. कुअवसर । बे-मौका । २. उचित समय से पहले ।

**असमर्थ**—वि० [ सं० ] १. सामर्थ्य-हीन । दुर्बल । अशक्त । २ अयोग्य ।

**असमवायि कारण**—संज्ञा पुं० [सं०] न्यायदर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो ।

**असमशर**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव ।

**असमान**—वि० [ सं० ] जो समान या बराबर न हो । असम ।
संज्ञा पुं० दे० "आसमान" ।

**असमाप्त**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा असमाप्ति ] अपूर्ण । अधूरा ।

**असमेध***-संज्ञा पुं० दे० "अश्वमेध" ।

**असम्मत**—वि० [ सं० ] १. जो राज़ी न हो । विरुद्ध । २. जिसपर किसी की राय न हो ।

**असम्मति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० असम्मत ] सम्मति का अभाव । विरुद्ध मत या राय ।

**असयाना***—वि० [हिं० अ + सयाना] १. सीधा-सादा । २. अनाड़ी । मूर्ख ।

**असर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] प्रभाव ।

**असरार***—क्रि० वि० [हिं० सरसर] निरंतर । लगातार । बराबर ।

**असराल**—वि० कठिन । भयंकर ।

**असल**—वि० [ अ० ] १. सच्चा । खरा । २. उच्च । श्रेष्ठ । ३. बिना मिलावट का । शुद्ध । ४. जो झूठा या बनावटी न हो ।
संज्ञा पुं० १. जड़ । बुनियाद । २ मूल धन ।

**असलियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. तत्त्व । वास्तविकता । २. मूल । ३. मूल तत्त्व । सार ।

**असली**—वि० [ अ० असल ] १. सच्चा । खरा । २. मूल । प्रधान । ३. बिना मिलावट का । शुद्ध ।

**असवार†**—संज्ञा पुं० दे० "सवार" ।

**असह***—वि० दे० "असह्य" ।

**असहन**—वि० १. दे० "असह्य" । २. दे० "असहिष्णु" ।

**असहनशील**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा असहनशीलता ] १ जिसमें सहन करने की शक्ति न हो । असहिष्णु । २. चिड़चिड़ा ।

**असहनीय**—वि० [ सं० ] न सहने योग्य । जो बर्दाश्त न हो सके । असह्य ।

**असहयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलकर काम न करना । २. आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रकट करने के लिये उसके कामों से बिलकुल अलग रहना ।

**असहाय**—वि० [ सं० ] जिसे कोई सहारा न हो । निःसहाय । निराश्रय । २ अनाथ ।

**असहिष्णु**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा असहिष्णुता ] १ असहनशील । २. चिड़चिड़ा ।

**असही**—वि० [ सं० असह ] दूसरे को देखकर जलने वाला । ईर्ष्यालु ।

**असह्य**—वि० [ सं० ] जो बर्दाश्त न हो सके । असहनीय ।

**असाँच***—वि० [ सं० असत्य ] असत्य । झूठ । मृषा ।

**असा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सोंटा । डंडा । २. चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा ।

**असाई***—वि० [ सं० अशालीन ] अशिष्ट । बेहूदा । बदतमीज़ ।

**असाढ़**—संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़" ।

**असाढ़ी**—वि० [सं० आषाढ़] आषाढ़ का ।
संज्ञा स्त्री० १. वह फ़सल जो आषाढ़ में बोई जाय । खरीफ़ । २. आषाढ़ी पूर्णिमा ।

**असाध***—वि० १ दे० "असाध्य" । २. दे० "असाधु"

**असाधारण**—वि० [ सं० ] जो साधारण न हो । असामान्य ।

**असाधु**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० असाध्वी ] १. दुष्ट । दुर्जन । २. अविनीत । अशिष्ट ।

**असाध्य**—वि० [ सं० ] १. न होने योग्य । दुष्कर । कठिन । २ न आरोग्य होने के योग्य । जैसे असाध्य रोग ।

**असामयिक**—वि० [ सं० ] जो नियत समय से पहले या पीछे हो । बिना समय का ।

**असामर्थ्य**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शक्ति का अभाव । अक्षमता । २. कमज़ोरी । सामर्थ्यहीनता ।

**असामान्य**—वि० [ सं० ] असाधारण । जो बराबर न हो ।

**असामी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] व्यक्ति । प्राणी । २ जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो । ३. वह जिसने लगान पर जोतने के लिए ज़मींदार से खेत लिया हो । रैयत । काश्तकार । जोता । ४. मुद्दालेह । देनदार । ५ अपराधी । मुलज़िम । ६ वह जिससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो ।
संज्ञा स्त्री० नौकरी । जगह ।

**असार**—वि० [सं०] [संज्ञा असारता] १. सार रहित । निःसार । २. शून्य । खाली । ३. तुच्छ ।

**असालत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कुलीनता । २ सचाई । तत्त्व ।

**असालतन**—क्रि० वि० [ अ० ] स्वयं । खुद ।

**असावधान**—वि [ सं० ] जो सावधान या सतर्क न हो । जो सचेत न हो ।

**असावधानता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

बेखबरी । बे-परवाही ।

**असावधानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "असावधानता" ।

**असावरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आसावरी ] छत्तीस रागिनियों में से एक ।

**असासा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] माल । असबाब । सपत्ति ।

**असि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तलवार । खड्ग ।

**असित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० असिता ] १. काला । २ दुष्ट । बुरा । ३ टेढ़ा । कुटिल ।

**असिद्ध**—वि० [ सं० ] १ जो सिद्ध न हो । २ बे-पका । कच्चा । ३. अपूर्ण । अधूरा । ४ निष्फल । व्यर्थ । ५. अप्रमाणित ।

**असिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अप्राप्ति । २ कच्चापन । कचाई । ३. अपूर्णता ।

**असिपत्र वन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक नरक ।

**असिस्टेंट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] सहायक । मददगार ( कर्मचारी ) ।

**असी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० असि ] एक नदी जो काशी के दक्षिण गंगा से मिली है ।

**असीम**—वि० [ सं० ] १. सीमारहित । बेहद । २. अपरिमित । अनंत । ३. अपार ।

**असीमित**—वि० दे० "असीम" ।

**असील***—वि० दे० "असल" ।

**असीस***—संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष" ।

**असीसना**—क्रि० स० [ सं० आशिष ] आशीर्वाद देना । दुआ देना ।

**असुंदर**—वि० [ सं० अ + सुंदर ] जो सुंदर न हो । कुरूप । भद्दा ।

**असु***—संज्ञा पुं० देखो "अश्व" ।

**असुग***—वि० [ सं० आशुग ] जल्दी चलनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. वायु । २. तीर । बाण ।

**असुभ***—वि० दे० "अशुभ" ।

**असुविधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अ = नहीं + सुविधि = अच्छी तरह ] १. कठिनाई । अड़चन । २. तकलीफ़ । दिक्कत ।

**असुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दैत्य । राक्षस । २ रात्रि । ३. नीच वृत्ति का पुरुष । ४. पृथ्वी । ५. सूर्य्य । ६. बादल । ७ राहु । ८ एक प्रकार का उन्माद ।

**असुरसेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राक्षस । ( कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा है । )

**असुराई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० असुर ] १. असुरों का सा काम या व्यवहार । राक्षसता । २. नीचता । खोटाई ।

**असुरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवता । २ विष्णु ।

**असुहाता**—वि० [ हिं० अ + सुहाता ] [ स्त्री० असुहाती ] १ जो अच्छा न लगे । २. बुरा । खराब ।

**असूझ**—वि० [ सं० अ + हिं० सूझना ] १ अँधेरा । अंधकारमय । २ जिसका वारपार न दिखाई पड़े । अपार । बहुत विस्तृत । ३ जिसके करने का उपाय न सूझे । विकट । कठिन ।

**असूत***—वि० [ सं० असूत्र ] विरुद्ध । असंबद्ध ।

**असूया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० असूयक ] पराये गुण में दोष लगाना । ईर्ष्या । डाह । ( रस के अंतर्गत एक संचारी भाव । )

**असूर्यपश्या**—वि० [ सं० ] जिसको सूर्य्य भी न देखे । परदे में रहनेवाली ।

**असूल**—संज्ञा पुं० दे० १. "उसूल" और २ "वसूल" ।

**असेग***—वि० [ सं० असह्य ] न सहने योग्य । असह्य । कठिन ।

**असेसर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] वह व्यक्ति जो जज को फ़ौजदारी के दौरे के मुकद्दमे में राय देने के लिए चुना जाता है ।

**असैला***—वि० [ सं० अ = नहीं + शैली = रीति ] [ स्त्री० असैली ] १. रीति-नीति के विरुद्ध काम करनेवाला । कुमार्गी । २ शैली के विरुद्ध । अनुचित ।

**असोच**—संज्ञा पुं० [ हिं० अ + सोच ] चिंतारहित । निश्चिंत ।

वि० [ सं० अशुचि ] अपवित्र । अशुद्ध ।

**असोज***†—संज्ञा पुं० [ सं० अश्वयुज् ] आश्विन । क्वार मास ।

**असोख***—वि० [ सं० अ + शोष ] जो सूखे नहीं । न सूखनेवाला ।

**असौंध***—संज्ञा पुं० [ अ + हिं० सौंध = सुगंध ] दुर्गंधि । बदबू ।

**अस्तंगत**—वि० [ सं० ] १. जो अस्त हो चुका हो । २. नष्ट । ३ अवनत । हीन ।

**अस्त**—वि० [ सं० ] १ छिपा हुआ । तिरोहित । २ जो न दिखाई पड़े । अदृश्य । ३ डूबा हुआ ( सूर्य, चंद्र आदि ) । ४ नष्ट । ध्वस्त ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] लोप । अदर्शन ।

यौ०—सूर्यास्त । शुक्रास्त । चंद्रास्त ।

**अस्तन**—संज्ञा पुं० दे० "स्तन" ।

**अस्तबल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] घुड़साल । तबेला ।

**अस्तमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अस्तमित ] १. अस्त होना । २. ग्रहों का अस्त होना ।

**अस्तमित**—वि० [ सं० ] १. तिरोहित । छिपा हुआ । २. डूबा हुआ । ३. नष्ट । ४. मृत ।

**अस्तर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. नीचे की तह या पल्ला । भितल्ला । २.

**अहिनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शेषनाग।

**अहिपुत्रक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र का शत्रु, वृत्र जो दैत्यों का सरदार था।

**अहिफेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सर्प के मुँह की लार या फेन। २. अफ़ीम।

**अहिबेल***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अहिवल्ली ] नाग बेल। पान।

**अहिवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दोहे का एक भेद।

**अहिवल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नागवल्ली। पान।

**अहिवात**—संज्ञा पु० [ सं० अविधवात्व] [वि० अहिवातिन, अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य। सोहाग।

**अहिवाती**—वि० स्त्री० [ हिं० अहिवात ] सौभाग्यवती। सोहागिन। सधवा।

**अहिसाव***—संज्ञा पुं० [ सं० अहि+शावक ] साँप का बच्चा। सँपोला।

**अहीर**—संज्ञा पुं० [ सं० आभीर ] [ स्त्री० अहीरिन ] एक जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है। ग्वाला।

**अहीश**—संज्ञा पुं० [ स० ] १ शेषनाग। २ शेष के अवतार लक्ष्मण और बलराम आदि।

**अहुटना***—क्रि० अ० [हिं० हटना] हटना। दूर होना। अलग होना।

**अहुटाना*** —क्रि० स० [हिं० हटाना] हटाना। दूर करना। भगाना।

**अहुठ***—वि० [ स० अध्युष्ठ ] साढ़े तीन।

**अहेतु** —वि० [ सं० ] १. बिना कारण का। निमित्त-रहित। २ व्यर्थ। फ़जूल।

संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार।

**अहेतुक**—वि० दे० "अहेतु"।

**अहेर**—संज्ञा पुं० [ सं० आखेट ] १. शिकार। मृगया। २ वह जंतु जिसका शिकार किया जाय।

**अहेरी**—संज्ञा पुं० [ हिं० अहेर ] १. शिकारी आदमी। आखेटक। २. व्याध।

**अहो**—अव्य० [ सं० ] एक अव्यय जिसका प्रयोग कभी संबोधन की तरह और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष या विस्मय सूचित करने के लिये होता है।

**अहोर-बहोर**—क्रि० वि० [ हिं० बहुरना ] फिर फिर। बार बार।

**अहोरात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिन-रात।

**अहोरा-बहोरा**—संज्ञा पु० [ सं० अहः = दिन + हिं० बहुरना ] विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने घर लौट जाती है। हेरा-फेरी।

## आ

**आ**—हिंदी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

**आँक**—संज्ञा पुं० [ सं० अंक ] १. अंक। चिह्न। निशान। २. संख्या का चिह्न। ३. अक्षर। ४. गढ़ी हुई बात। ५ अंश। हिस्सा। ६ लकीर। ७. किसी चीज पर संकेत रूप में आँका हुआ उसका दाम।

मुहा०—एक ही आँक=दृढ़ बात। पक्की बात। निश्चय।

**आँकड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० आँक ] १ अंक। अंकों की सूची, तालिका। संख्या का चिह्न। २. पेंच।

**आँकना**—क्रि० स० [ स० अंकन] १. चिह्नित करना। निशान लगाना। दागना। २ कूतना। अंदाज़ करना। मूल्य लगाना। ३. अनुमान करना। ठहराना। ४. चित्र बनाना।

**आँकर** —वि० [ स० आकर ] १. गहरा। २. बहुत अधिक।

वि० [ सं० अक्रय्य ] महँगा।

**आँकुस***†—संज्ञा पुं० दे० "अंकुश"।

**आँकू**—संज्ञा पुं० [ हिं० आँक + ऊ ( प्रत्य० ) ] आँकने या कूतनेवाला।

**आँख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अक्षि ] १. वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। लोचन। २. दृष्टि। नज़र। ध्यान।

मुहा०—आँख आना या उठना = आँख में लाली, पीड़ा और सूजन

होना। आँख उठाना = १. ताकना। देखना। २. हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आँख उलट जाना=पुतली का ऊपर चढ़ जाना (मरने के समय)। आँख का तारा= १ आँख का तिल। २ बहुत प्यारा व्यक्ति। आँख की पुतली=१ आँख के भीतर रंगीन भूरी झिल्ली का वह भाग जो सफ़ेदी पर की गोल काट से होकर दिखाई पड़ता है। २ प्रिय व्यक्ति। प्यारा मनुष्य। आँखों के डोरे=आँखों के सफ़ेद डेलों पर लाल रंग की बहुत बारीक नसें। आँख खुलना = १ पलक खुलना। २ नींद टूटना। ३ ज्ञान होना। भ्रम का दूर होना। ४ चित्त स्वस्थ होना। तबीअत ठिकाने आना। आँख खोलना= १ पलक उठाना। ताकना। २ चेताना। सावधान करना। ३ सुध में होना। स्वस्थ होना। आँख गड़ना=१ आँख किरकिराना। आँख दुखना। २ दृष्टि जमना। टकटकी बँधना। ३ प्राप्ति की उत्कट इच्छा होना। आँख चढ़ना=नशे या नींद से पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना। आँखें चार करना, चार आँखें करना=देखा-देखी करना। सामने आना। आँख चुराना या छिपाना= १ कतराना। सामने न होना। २ लज्जा से बराबर न ताकना। आँख झपकना=१ आँख बंद होना। २. नींद आना। आँखें डबडबाना= १.क्रि० अ० आँखों मेंआँसू भर आना। २ क्रि० स० आँखों में आँसू लाना। आँखें तरेरना=क्रोध की दृष्टि से देखना। आँख दिखाना=क्रोध की दृष्टि से देखना। कोप जताना। आँख न ठहरना=चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि न जमना। आँख निकालना=१ क्रोध की दृष्टि से देखना। २. आँख के डेले को काटकर अलग कर देना। आँख नीची होना= सिर का नीचा होना। लज्जा उत्पन्न होना। आँख पथराना=पलक का नियमित रूप से न गिरना और पुतली की गति मारा जाना (मरने का पूर्व लक्षण)। आँखों पर परदा पड़ना= अज्ञान का अंधकार छाना। भ्रम होना। आँख फड़कना=आँख की पलक का बार-बार हिलना (शुभ-अशुभ-सूचक)। आँख फाड़कर देखना=खूब आँखें खोलकर देखना। आँखें फिर जाना=१ पहले की सी कृपा न रहना। बेमुरौवती आ जाना। २ मन में बुराई आना। आँख फूटना=१ आँख की ज्योति का नष्ट होना। २ बुरा लगना। कुढ़न होना। आँख फेरना=१ पहिले की सी कृपा या स्नेहदृष्टि न रखना। २ मित्रता तोड़ना। ३ विरुद्ध होना। प्रतिकूल होना। आँख फोड़ना=१ आँखों की ज्योति का नाश करना। २ कोई ऐसा काम करना जिसमें आँख पर ज़ोर पड़े। आँख बंद होना = १ आँख झपकना। पलक गिरना। २ मृत्यु होना। मरण होना। आँख बंद करके या मूँदकर= बिना कुछ आगे देखे, सुने या विचार किए। आँख बचाना=सामना न करना। कतराना। आँखें बिछाना = १ प्रेम से स्वागत करना। २ प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना। बाट जोहना। आँख भर आना=आँख में आँसू आना। आँख भर देखना= खूब अच्छी तरह देखना। तृप्त होकर देखना। इच्छा भर देखना। आँख मारना= १ इशारा करना। सनकारना। २ आँख के इशारे से मना करना। आँख मिलाना=१ आँख सामने करना। बराबर ताकना २ सामने आना। मुँह दिखाना। आँखों में खून उतरना =क्रोध से आँखें लाल होना। आँख में गड़ना या चुभना=१. बुरा लगना। २ जँचना। पसंद आना। आँखों में चरबी छाना=मदांध होना। गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना। आँखों में धूल डालना=सरासर धोखा देना। भ्रम में डालना। आँखों में फिरना= ध्यान पर चढ़ना। स्मृति में बना रहना। आँखों में रात काटना=किसी कष्ट, चिंता या व्यग्रता से सारी रात जागते बीतना। आँखों में समाना= हृदय में बसना। चित्त में स्मरण बना रहना। किसी पर आँख रखना=१. नज़र रखना। चौकसी करना। २. चाह रखना। इच्छा रखना। आँख लगना=१.नींद लगना। झपकी आना। सोना। २ टकटकी लगना। दृष्टि जमना। (किसी से) आँख लगना = प्रीति होना। प्रेम होना। आँख लड़ना= १. देखा-देखी होना। आँख मिलना। २ प्रेम होना। प्रीति होना। आँख लाल करना = क्रोध दृष्टि से देखना। आँख सेंकना=दर्शन का सुख उठाना। नेत्र नंद लेना। आँखों से लगाकर रखना=बहुत प्रिय करके रखना। बहुत आदर-सत्कार से रखना। आँख होना =१. परख होना। पहचान होना। २ ज्ञान होना। विवेक होना। ३ विचार। विवेक। परख। शिनाख्त। पहचान। ४ कृपादृष्टि। दया-भाव। ५ संतति। संतान। लड़का-बाला। ६ आँख के आकार का छेद या चिह्न जैसे सूई छेद।

**आँखड़ी**—स्त्री० दे० 'आँख'।

**आँखफोड़ टिड्डा**—संज्ञा पु० १. हरे रंग का एक कीड़ा या फतिंगा। २ कृतघ्न। बेमुरौवत।

**आँखमिचौली, आँखमीचली**—संज्ञा

स्त्री० [ हिं० आँख + मींचना ] लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँख मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं जिन्हें उस आँख मूँदनेवाले लड़के को ढूँढ़कर छूना पड़ता है।

**आँखमुँदाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौली"।

**आँखा**—संज्ञा पुं० दे० "आखा"।

**आँग***†—संज्ञा पुं० [ सं० अंग ] अंग।

**आँगन**—संज्ञा पुं० [ सं० अंगण ] घर के भीतर का सहन। चौक। अजिर।

**आँगिक**—वि० [ सं० ] अंग संबंधी। अंग का।

संज्ञा पुं० १ चित्त के भाव को प्रकट करनेवाली चेष्टा। जैसे भ्रू-विक्षेप, हाव आदि। २. रस में कायिक अनुभाव। ३. नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

**आंगिरस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अंगिरा के पुत्र बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त्त। २. अंगिरा के गोत्र का पुरुष।

वि० अंगिरा-संबंधी। अंगिरा का।

**आँगी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "अँगिया"

**आँगुर, आँगुरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

**आँघी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घृ=क्षरण ] महीन कपड़े या जाली से मढ़ी हुई चलनी।

**आँच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अर्चि ] १. गरमी। ताप। २. आग की लपट। लौ। ३. आग।

**मुहा०**—आँच खाना=गरमी पाना। आग पर चढ़ना। तपना। आँच दिखाना=आग के सामने रखकर गरम करना।

४. एक एक बार पहुँचा हुआ ताप। ५. तेज। प्रताप। ६. आघात। चोट। ७. हानि। अहित। अनिष्ट। ८. विपत्ति। संकट। आफ़त। ९ प्रेम। मुहब्बत। १०. काम-ताप।

**आँचना***—क्रि० स० [ हिं० आँच ] १. जलाना। २ तपाना।

**आँचर***—संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।

**आँचल**—संज्ञा पुं० [ सं० अंचल ] १. धोती, दुपट्टे आदि के दोनो छोरों पर का भाग। पल्ला। छोर। २. साधुओं का अँचला। ३. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है।

**मुहा०**—आँचल देना=बच्चे को दूध पिलाना। २ विवाह की एक रीति। आँचल फाड़ना=बच्चे के जीने के लिये टोटका करना। आँचल में बाँधना=१. हर समय साथ रखना। प्रतिक्षण पास रखना। २ किसी कही हुई बात को अच्छी तरह स्मरण रखना। कभी न भूलना। आँचल लेना=आँचल छूकर सत्कार या अभिवादन करना। (क्रि०)

**आँजन**†—संज्ञा पुं० दे० "अंजन"।

**आँजना**—क्रि० स० [ सं० अंजन ] अंजन लगाना।

**आंजनेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हनुमान।

**आँजू**—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार की घास।

**आँट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अंटी ] १ हथेली में तर्जनी और अँगूठे के नीचे का स्थान। २ दाँव। वश। ३ बैर। लाग-डाँट। ४ गिरह। गाँठ। ऐंठन। ५ पूला। गट्ठा।

**आँटना***—क्रि० अ० दे० "अँटना"।

**आँटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आँटना ] १ लंबे तृणों का छोटा गट्ठा। पूला। २. लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३. सूत का लच्छा। ४. धोती की गिरह। टेंट-मुर्री। ऐंठन।

**आँट-साँट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आँट+सटना ] १. गुप्त अभिसंधि। साज़िश। २. मेल-जोल।

**आँठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अष्ठि, प्रा० अट्ठि ] १ दही, मलाई आदि वस्तुओं का लच्छा। २. गिरह। गाँठ। ३ गुठली। बीज।

**आँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० अण्ड ] अंडकोश।

**आँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अण्ड ] गाँठ। कंद।

**आँड़ू**—वि० [ सं० अण्ड ] अंडकोश-युक्त। जो बधिया न हो। (बैल)

**आँत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अन्त्र ] प्राणियों के पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदामार्ग तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। अंत्र। अँतड़ी। लाद।

**मुहा०**—आँत उतरना=एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे अंडकोश में उतर आती है और पीड़ा उत्पन्न होती है। आँतों का बल खुलना=पेट भरना। भोजन से तृप्ति होना। आँतें कुलकुलाना या सूखना=भूख के मारे बुरी दशा होना।

**आँतर, आँतरु***—संज्ञा पुं० दे० "अंतर"।

**आँदू**—संज्ञा पुं० [सं० अंदू=बेड़ी] १. लोहे का कड़ा। बेड़ी। २. बाँधने का सीकड़।

**आंदोलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बार बार हिलना। डोलना। २ उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। हलचल। धूम।

**आँध***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अन्ध ] १ अँधेरा। धुंध। २. आँधी। ३. आफ़त। कष्ट।

* वि० [सं० अन्ध] अंधा। जिसे सूझता न हो।

**आँधना***—क्रि० अ० [हिं० आँधी] वेग से धावा करना। टूटना।

**आँधरा***—वि० दे० "अंधा"।

**आँधारंभ*** —संज्ञा पु० [सं० अंध+आरंभ] अंधेरखाता। बिना समझा-बूझा आचरण।

**आँधी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंध=अँधेरा] बड़े वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठती है कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अंधड़।

वि० आँधी की तरह तेज। चुस्त। चालाक।

**आंध्र**—संज्ञा पुं० [सं०] तापी नदी के किनारे का देश।

**आँब**—संज्ञा पुं० दे० "आम"।

**आँबा हलदी**—संज्ञा स्त्री० दे० "आमा हलदी"।

**आँय बाँय**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] अनाप-शनाप। अंडबंड। व्यर्थ की बात।

**आँव**—संज्ञा पुं० [सं० आम=कच्चा] एक प्रकार का चिकना सफेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

**आँवठ**—संज्ञा पु० [सं० ओष्ठ] किनारा।

**आँवड़ना***—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

**आँवड़ा***—वि० [सं० आकुंड] गहरा।

**आँवडे़***—संज्ञा पु० चैन। स्थिरता।

**आँवल**—संज्ञा पु० [सं० उल्वम्] झिल्ली जिसमें गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं। खेड़ी। जेरी। साम।

**आँवला**—संज्ञा पु० [सं० आमलक] एक पेड़ जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं। फल।

**आँवलासार गंधक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँवला + सं० सार गंधक] खूब साफ की हुई गंधक जो पारदर्शक होती है।

**आँवाँ**—संज्ञा पुं० [सं० आपाक] वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

**मुहा०**—आँवा का आँवा बिगड़ना=किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।

**आंशिक**—वि० [सं०] अंश-संबंधी। अंश विषयक। थोड़ा। एक भाग।

**आंशुकजल**—संज्ञा पु० [सं०] वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय। (वैद्यक)

**आँस***—संज्ञा स्त्री० [सं० काश] संवेदना। दर्द।

संज्ञा स्त्री० [सं० पाश] १. डोरी। २. रेशा।

संज्ञा पु० दे० "आँसू"।

**आँसी***—संज्ञा स्त्री० [सं० अंश] भाजी। बैना। मिठाई जो इष्ट मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है।

**आँसू**—संज्ञा पु० [सं० अश्रु] वह जल जो आँखों से शोक, पीड़ा या हर्षातिरेक के समय निकलता है।

**मुहा०**-आँसू गिराना या ढालना=रोना। आँसू पीकर रह जाना=भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। आँसू पुँछना=आश्वासन मिलना। ढारस बँधना। आँसू पोंछना= ढारस बँधाना। दिलासा देना।

**आँसू-गैस**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आँसू + अँ० गैस] एक प्रकार की गैस जिसके स्पर्श से मुँह सूज जाता है और आँखों से आँसू बहने लगते हैं।

**आँहड़**—संज्ञा पु० [सं० भांड] बरतन।

**आँहाँ**—अव्य० [हिं० ना + हाँ] अस्वीकार या निषेध सूचक एक शब्द। नहीं।

**आ** —अव्य [सं०] एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, अभिव्याप्ति, ईषत् और अतिक्रमण के अर्थों में होता है। जैसे—(क) सीमा—आसमुद्र=समुद्र तक। आजन्म=जन्म भर। (ख) अभिव्याप्ति— आपाताल=पाताल के अंतर्भाग तक। (ग) ईषत् (थोड़ा, कुछ)—आपिंगल=कुछ कुछ पीला। (घ) अतिक्रमण—आकालिक = बेमौसिम का।

**उप०** [सं०] एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में थोड़ी-सी विशेषता कर देता है; जैसे, आरोहण, आकंपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या' (जाना) 'दा' (देना) तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है, तब उनके अर्थों को उलट देता है; जैसे 'गमन' से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'।

**आइ***—संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] जीवन।

**आइना**—संज्ञा पु० दे० "आईना"।

**आई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आना] मृत्यु। मौत।

*संज्ञा स्त्री० दे० "आइ"।

**आईन**—संज्ञा पु० [फा०] १. नियम। कायदा। जाबता। २. कानून। राजनियम।

**आईना**—संज्ञा पु० [फा०] १ आरसी। दर्पण। शीशा। २. किवाड़ का दिलहा।

**मुहा०**—आईना होना=स्पष्ट होना। आइने में मुँह देखना=अपनी योग्यता को जाँचना।

**आईनाबंदी**—संज्ञा स्त्री० [फा०]

१. झाड़-फानूस आदि की सजावट। २. फ़र्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।

**आईनासाज़**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] आईना बनानेवाला।

**आईनासाज़ी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] काँच की चद्दर के टुकड़े पर कलई करने का काम।

**आईनी**—वि० [फ़ा० आईन] क़ानूनी। राजनियम के अनुकूल।

**आउ***—संज्ञा स्त्री [सं० आयु] १. जीवन। २ उम्र।

**आउज, आउझ***—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

**आउबाउ***†—संज्ञा पुं० [सं० वायु] अंडबंड बात। असबद्ध प्रलाप।

**आउस**—संज्ञा पुं० [सं० आशु, बंग० आउश] धान का एक भेद। भदई। ओसहन।

**आकंपन**—संज्ञा पुं० [सं०] काँपना।

**आक**—संज्ञा पुं० [सं० अर्क] मदार। अकौआ। अकवन।

**आकड़ा**†—संज्ञा पुं० दे० "आक"।

**आकबाक***—संज्ञा स्त्री० [अ०] मरने के पीछे की अवस्था। परलोक।

**आकबाक***—संज्ञा पुं० [सं० वाक्य] अकबक। अंडबंड बात। ऊटपटाँग बात।

**आकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खान। उत्पत्तिस्थान। २ खज़ाना। भंडार। ३. भेद। किस्म। जाति। ४ तलवार चलाने का एक भेद।

**आकरकरहा**—संज्ञा पुं० [अ०] दे० "अकरकरा"।

**आकरखना***—क्रि० स० दे० "आकषना"।

**आकर ग्रंथ**—संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जिससे खोज के लिये, प्रमाण के लिये काम लिया जाय। एक प्रकार का कोश।

**आकरिक**—संज्ञा पुं० [सं०] खान खोदनेवाला।

**आकर भाषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मूल प्राचीन भाषा जिससे कोई नई भाषा आवश्यकतानुसार नये नये शब्द ले।

**आकरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आकर] खान खोदने का काम।

**आकर्ण**—वि० [सं०] कान तक फैला हुआ।

**आकर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक जगह के पदार्थ का बल से दूसरी जगह जाना। खिंचाव। २ पासे का खेल। ३ बिसात। चौसर। ४ इंद्रिय। ५ धनुष चलाने का अभ्यास। ६. कसौटी। ७ चुंबक।

**आकर्षक**—वि० [सं०] आकर्षण करनेवाला। खींचनेवाला।

**आकर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकृष्ट] १ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना। २. खिंचाव। ३ एक प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास में आ जाता है। (तंत्र)

**आकर्षण शक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

**आकर्षना***—क्रि० स० [सं० आकर्षण] खींचना।

**आकलन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। लेना। २ संग्रह। संचय। इकट्ठा करना। ३. गिनती करना। ४. अनुष्ठान। सम्पादन। ५. अनुसंधान।

**आकली**†—संज्ञा स्त्री० [सं० आकुल] आकुलता। बेचैनी।

**आकस्मिक**—वि० [सं०] १. जो बिना किसी कारण के हो। २. जो अचानक हो। सहसा होनेवाला।

**आकांक्षक**—वि० दे० "आकांक्षी"।

**आकांक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इच्छा। अभिलाषा। वांछा। चाह। २ अपेक्षा। ३ अनुसंधान। ४. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिए एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना। (न्याय)

**आकांक्षित**—वि० [सं०] १ इष्ट। अभिलषित। वांछित। २ अपेक्षित।

**आकांक्षी**—वि० [सं० आकांक्षिन्] [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

**आकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ स्वरूप। आकृति। सूरत। २ डील डौल। कद। ३ बनावट। संघटन। ४. निशान। चिह्न। ५ चेष्टा। ६. 'आ' वर्ण। ७ बुलावा।

**आकारी***—वि० [सं०] [स्त्री० आकारिणी] आह्वान करनेवाला। बुलानेवाला।

**आकाश**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंतरिक्ष। आसमान। २ वह स्थान जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो। (पंचभूतों में से एक।) ३ अभ्रक। अबरक।

**मुहा०**—आकाश छूना या चूमना = बहुत ऊँचा होना। आकाश पाताल एक करना = १ भारी उद्योग करना। २. आंदोलन करना। हलचल करना। आकाश पाताल का अन्तर = बड़ा अन्तर। बहुत फर्क। आकाश से बातें करना = बहुत ऊँचा होना।

**आकाशकुसुम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश का फूल। खपुष्प। २. अनहोनी बात। असम्भव बात।

**आकाशगंगा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बहुत से छोटेछोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में फैला है।

आकाशजनेऊ। इहर। पुराणानुसार आकाश में की गंगा। मंदाकिनी।

**आकाशचारी**—वि० [सं० आकाश-चारिन्] [स्त्री० आकाशचारिणी] आकाश में फिरनेवाला। आकाशगामी। संज्ञा पुं० १ सूर्यादिग्रह-नक्षत्र। २ वायु। ३ पक्षी। ४ देवता।

**आकाश-जल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्षा का जल। २ ओस।

**आकाश-दीप**—संज्ञा पुं० दे० "आकाश दीया"।

**आकाशदीया**—संज्ञा पुं० [सं० आकाश+हिं० दीया] वह दीपक जो कार्तिक में हिन्दू लोग कंडील में रखकर एक ऊँचे बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाते हैं।

**आकाशधुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश+धुरी] खगोल का ध्रुव। आकाश ध्रुव।

**आकाशनीम** संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश+हिं० नीम] नीम का बाँदा।

**आकाशपुष्प**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश का फूल। आकाशकुसुम। खपुष्प। २. असंभव वस्तु। अनहोनी बात।

**आकाशबेल**—संज्ञा स्त्री० दे० "अमर बेल"।

**आकाशभाषित**—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के अभिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना मानो वह मुझसे किया जा रहा है और फिर उसका उत्तर देना।

**आकाशमंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] खगोल।

**आकाशमुखी**—संज्ञा पुं० [सं० आकाश+हिं० मुखी] एक प्रकार के साधु जो आकाश की ओर मुँह करके तप करते हैं।

**आकाशलोचन**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है। वेधशाला। अबज़रवेटरी।

**आकाशवाणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें। देववाणी। २ दे० "रेडियो"।

**आकाशवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनिश्चित जीविका। ऐसी आमदनी जो बँधी न हो।

**आकाशी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आकाश+ई (प्रत्य०)] वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिए तानी जाती है।

**आकाशीय**—वि० [सं०] १. आकाश संबंधी। आकाश का। २ आकाश में रहने या होने वाला। ३ दैवागत। आकस्मिक।

**आकिल**—वि० [अ०] बुद्धिमान्।

**आकिलखानी**—संज्ञा पुं० [अ०+फ़ा०] एक रंग जो कालापन लिए लाल होता है।

**आकीर्ण**—वि० [सं०] व्याप्त। पूर्ण।

**आकुंचन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकुंचित, आकुंचनीय] सिकुड़ना। सिमटना। संकोचन।

**आकुंचित**—वि० [सं०] १ सिकुड़ा हुआ। सिमटा हुआ। २ टेढ़ा। कुटिल।

**आकुंठन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आकुंठित] १ गुठला या कुंद होना। २. लज्जा। शर्म।

**आकुल**—वि०[सं०] [संज्ञा आकुलता] १ व्यग्र। घबराया हुआ। उद्विग्न। २ विह्वल। कातर। ३. व्याप्त। संकुल।

**आकुलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्याकुलता। घबराहट। २ व्याप्ति।

**आकुलि**—संज्ञा पुं० [सं०] असुरों के एक पुरोहित का नाम।

**आकुलित**—वि० दे० "आकुल"।

**आकूति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्साह। २. आशय। ३ सदाचार।

**आकृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बनावट। गढ़न। ढाँचा। २. मूर्ति। रूप। ३ मुख। चेहरा। ४. मुख का भाव। चेष्टा। ५ २२ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**आकृष्ट**—वि० [सं०] खींचा हुआ।

**आक्रंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ रोना। २. चिल्लाना।

**आक्रम***—संज्ञा पुं० दे० "पराक्रम"।

**आक्रमण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करना। चढ़ाई। २ आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना। हमला। ३. घेरना। छेंकना। ४ आक्षेप। निंदा।

**आक्रमित**—वि० [सं०] [स्त्री० आक्रमिता] जिसपर आक्रमण किया गया हो।

**आक्रमिता (नायिका)**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो मनसा, वाचा, कर्मणा अपने मित्र को वश करे।

**आक्रांत**—वि० [सं०] १. जिसपर आक्रमण हो। जिसपर हमला हो। २. घिरा हुआ। आवृत्त। ३ वशीभूत। पराजित। विवश। ४. व्याप्त। आकीर्ण।

**आक्रीड़**—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रीड़ा करने का स्थान। २. केलि-कानन। ३ उपवन। बाग। ४ विहार। ५ दे० "क्रीड़ा"।

**आक्रोश**—संज्ञा पुं० [सं०] कोसना। शाप देना। गाली देना।

**आक्षिप्त**—वि० [सं०] १. फेंका हुआ। गिराया हुआ। २ दूषित। ३. निंदित।

**आक्षेप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। गिराना। २. दोष लगाना। अपवाद। इलज़ाम लगाना। ३. कटूक्ति। ताना।

४. एक वातरोग जिसमें अंग में कँप-कँपी होती है। ५. ध्वनि। व्यंग्य।

**आक्षेपक**—वि० [सं०] [स्त्री० आक्षेपिका] १. फेंकनेवाला। २ खींचनेवाला। ३ आक्षेप करनेवाला। निंदक।

**आखंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**आखत***—संज्ञा पुं० [सं० अक्षत] १. अक्षत। बिना टूटा चावल। २. चंदन या केसर में रंगा चावल जो मूर्ति या दूल्हा दुलहिन के माथे में लगाया जाता है।

**आखता**—वि० [फा०] जिसके अंड-कोश चीरकर निकाल लिए गए हों। जैसे, घोड़ा का।

**आखन***—क्रि० वि० [सं० आ + क्षण] प्रतिक्षण। हर घड़ी।

**आखना***—क्रि० स० [सं० आख्यान] कहना।

क्रि० स० [सं० आकांक्षा] चाहना।

क्रि० स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।

**आखर***—संज्ञा पुं० [सं० अक्षर] अक्षर।

**आखा**—संज्ञा पुं० [सं० आवरण] झीने कपड़े से मढ़ा हुई मैदा चालने की चलनी।

वि० [सं० अक्षय] कुल। पूरा। समूचा।

**आखा तीज**—संज्ञा स्त्री० [सं० अक्षय-तृतीया] बैशाख सुदी तीज। (स्त्रियों द्वारा वट का पूजन और दान)

**आखिर**—वि० [फ़ा०] अंतिम। पीछे का।

संज्ञा पुं० १ अंत। २. परिणाम। फल।

क्रि० वि० [फ़ा०] अंत में। अंत को।

**आखिरकार**—क्रि० वि० [फ़ा०] अंत में।

**आखिरी**—वि० [फ़ा०] अंतिम। पिछला।

**आखु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मूसा। चूहा। २. देवताड़। देवताड़। ३. सूअर।

**आखुपाषाण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चुम्बक पत्थर। २ संखिया।

**आखेट**—संज्ञा पुं० [सं०] अहेर। शिकार।

**आखेटक**—संज्ञा पुं० [सं०] शिकार। अहेर।

वि० [सं०] शिकारी। अहेरी।

**आखेटी**—संज्ञा पुं० [सं० आखेटिन्] [स्त्री० आखेटिनी] शिकारी। अहेरी।

**आखोट**—संज्ञा पुं० दे० "अखरोट"।

**आखोर**—संज्ञा पुं० [फा०] १ जानवरों के खाने से बची हुई घास या चारा। २ कूड़ा-करकट। ३ निकम्मी वस्तु।

वि० [फा०] १ निकम्मा। बेकाम। २ सड़ा गला। रद्दी। ३ मैला-कुचैला।

**आख्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाम। २ कीर्ति। यश। ३ व्याख्या।

**आख्यात**—वि० [सं०] १ प्रसिद्ध। विख्यात। २. कहा हुआ। ३ राजवंश के लोगों का वृत्तांत।

**आख्याति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नामवरी। ख्याति। शुहरत। २ कथन।

**आख्यान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तांत। बयान। २ कथा। कहानी। किस्सा। ३ उपन्यास के नौ भेदों में से एक। वह कथा जिसे स्वयं कवि ही कहे।

**आख्यानक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तांत। बयान। २. कथा। किस्सा। कहानी। ३ पूर्व वृत्तांत। कथानक।

**आख्यानिकी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद।

**आख्यायिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कथा। कहानी। किस्सा। २ वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले। ३ एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र भी अपने अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ कुछ कहते हैं।

**आगंतुक**—वि० [सं०] १. जो आवे। आगमनशील। २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय।

**आग**—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्नि] १. तेज और प्रकाश का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा जाता है। अग्नि। बैसुंदर।

**मुहा०**—आग बबूला (बगूला) होना या बनना=क्रोध के आवेश में होना। अत्यंत कुपित होना। आग बरसना= बहुत गरमी पड़ना। आग बरसाना= शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना। आग लगना =१. आग से किसी वस्तु का जलना। २. क्रोध उत्पन्न होना। कुढ़न होना। ३. महँगी फैलना। गिरानी होना। आग लगे=बुरा हो। नाश हो। (स्त्री०) आग लगाना= १ आग में किसी वस्तु को जलाना। २. गरमी करना। जलन पैदा करना। ३ उद्वेग बढ़ाना। जोश बढ़ाना। भड़-काना। ४ क्रोध उत्पन्न करना। ५ चुगली खाना। बिगाड़ना। नष्ट करना। आग होना =१. बहुत गर्म होना। २ क्रुद्ध होना। पाप में भरना। पानी में आग लगाना=१. अनहोनी बातें करना। २ असंभव कार्य करना। ३ जहाँ लड़ाई की कोई बात न हो वहाँ भी लड़ाई लगा देना। पेट की आग=भूख। २. जलन। ताप। गरमी। ३ कामाग्नि। काम का वेग। ४ वात्सल्य। प्रेम। ५ डाह। ईर्ष्या।

वि० १ जलता हुआ। बहुत गरम। २. जो गुण में उष्ण हो।

**आगत**—वि० [सं०] [स्त्री० आगता] आया हुआ। प्राप्त। उपस्थित।

**आगतपतिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति परदेश से लौटा हो।

**आगत स्वागत**—संज्ञा पुं० [ सं० आगत+स्वागत ] आए हुए व्यक्ति का आदर। आव-भगत। आदर-सत्कार।

**आगम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवाई। आगमन। आमद। २. भविष्य काल। आनेवाला समय। ३. होनहार।

**मुहा०**—आगम करना = ठिकाना करना। उपक्रम बाँधना। लाभ का डौल करना। उपाय रचना। आगम जनाना=होनहार की सूचना देना। आगम बाँधना = आनेवाली बात का निश्चय करना।

४.समागम। सगम। ५. आमदनी। आय। ६. व्याकरण में किसी शब्द-साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय। ७. उत्पत्ति। ८ शब्द-प्रमाण। ९ वेद। १० शास्त्र। ११. तंत्र शास्त्र। १२. नीतिशास्त्र। नीति।

वि० [ सं० ] आनेवाला। आगामी।

**आगमजानी**—वि० [ सं० आगम-ज्ञानी ] आगमज्ञानी। होनहार का जाननेवाला।

**आगमज्ञानी**—वि० [ सं० ] भविष्य का जाननेवाला। आगमज्ञानी।

**आगमन**—संज्ञा पुं० [सं०]१ अवाई। आना। २ प्राप्ति। आय। लाभ।

**आगमवाणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भविष्यवाणी।

**आगमविद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेद-विद्या।

**आगमसोची**—वि० [ सं० आगम+हिं० सोचना ] दूरदर्शी। अग्रसोची।

**आगमी**—संज्ञा पुं० [ सं० आगम = भविष्य ] आगम विचारनेवाला। ज्योतिषी।

**आगर**—संज्ञा पुं० [ सं० आकर ] [ स्त्री० आगरी ] १. खान। आकर। २. समूह। ढेर। ३ कोष। निधि। खज़ाना। ४. वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है।

संज्ञा पुं० [ सं० आगार] १ घर। गृह। २ छाजन। छप्पर।

वि० [ सं० अग्र ] १ श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़कर। २ चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।

**आगरी**—संज्ञा पुं०[हिं० आगर] नमक बनानेवाला पुरुष। लोनिया।

**आगल**—संज्ञा पुं० [ सं० अर्गल ] अगरी। ब्योंडा। बेंवड़ा।

क्रि०वि० [हिं० अगला]सामने। आगे।

वि० अगला।

**आगला***—क्रि०वि०दे० "अगला"।

**आगवन***—संज्ञा पुं०दे०"आगमन"।

**आगा**—संज्ञा पुं० [ सं० अग्र ] १ किसी चीज़ के आगे का भाग। अगाड़ी। २ शरीर का अगला भाग। ३ छाती। वक्षस्थल। ४ मुख। ५ ललाट। माथा। ६ लिंगेंद्रिय। ७ अँगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। ८ सेना या फौज का अगला भाग। हरावल। ९ घर के सामने का मैदान। १० पेशखीमा। आगडा। ११. आगे आनेवाला समय। भविष्य।

संज्ञा पुं० [ तु० आग़ा ] १ मालिक। सरदार। २ काबुली। अफगान।

**आगान***—संज्ञा पुं० [सं० आ+गान] बात। प्रसंग। आख्यान। वृत्तान्त।

**आगा-पीछा**—संज्ञा पुं० [हिं० आगा+पीछा] १. हिचक। सोच-विचार। दुविधा। २ परिणाम। नतीजा। ३ शरीर का अगला और पिछला भाग।

**आगामि,आगामी**-वि० [सं० आगा-मिन् ] [ स्त्री० आगामिनी ] भावी। होनहार। आनेवाला।

**आगार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घर। मकान। २. स्थान। जगह। ३. खज़ाना।

**आगाह**—वि० [ फ़ा० ] जानकार। वाकिफ़।

संज्ञा पुं० [हिं० आगा+आह (प्रत्य०)] आगम। होनहार।

**आगाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] जान-कारी।

**आगि*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।

**आगिल***—वि० दे० "अगला"।

**आगिवर्त्त***—संज्ञा पुं० दे० "अग्नि-वर्त्त"।

**आगी*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।

**आगू†**—क्रि० वि० दे० 'आगे"।

**आगे**—क्रि० वि० [सं० अग्र] १ और दूर पर। और बढ़कर। 'पीछे' का उलटा। २. समक्ष। सम्मुख सामने।

**मुहा०**—आगे आना=१ सामने आना। २ सामने पड़ना। मिलना। ३ सामना करना। भिड़ना। ४. घटित होना। घटना। आगे करना=१ उपस्थित करना। प्रस्तुत करना। २ अगुआ बनाना। मुखिया बनाना। आगे को=आगे। भविष्य में। आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य में। इसके बाद। आगे निकलना=बढ़ जाना। आगे पीछे=१ एक के पीछे एक। एक के बाद दूसरा। क्रम से। २ आस-पास। किसी के आगे पीछे होना=किसी के वंश में किसी प्राणी का होना। आगे से = १ सामने से। २. आइंदा से। भविष्य में। ३ पहले से। पूर्व में। बहुत दिनों में। आगे से लेना=अभ्यर्थना करना। आगे होना=१ आगे बढ़ना। अग्रसर होना। २. बढ़ जाना। ३ सामने आना। ४. मुकाबिला करना। भिड़ना। ५. मुखिया बनना।

३. जीवनकाल में। जीते-जी। ४ इसके पीछे। इसके बाद। ५. भविष्य में।

आगे को। ६ अनंतर। बाद। ७. पूर्व। पहले। ८ अतिरिक्त। अधिक। ९. गोद में लालन पालन में। जैसे, उसके आगे एक लड़का है।

**आगौन***—संज्ञा पुं० दे० "आगमन"।

**आग्नीध्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २. वह यजमान जो साग्निक हो या अग्निहोत्र करता हो। ३ यज्ञमंडप।

**आग्नेय**—वि० [सं०][स्त्री० आग्नेयी] १. अग्नि-संबंधी। अग्नि का। २ जिसका देवता अग्नि हो। ३. अग्नि से उत्पन्न। ४. जिससे आग निकले। जलानेवाला।

संज्ञा पुं० १. सुवर्ण। सोना। २. रक्त। रुधिर। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय। ५. दीपन औषध। ६ ज्वालामुखी पर्वत। ७ प्रतिपदा। ८. दक्षिण का एक देश जिसकी प्रधान नगरी माहिष्मती थी। ९ वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे। जैसे बारूद। १० ब्राह्मण। ११. अग्निकोण।

यौ०—आग्नेयस्नान = भस्म पोतना।

**आग्यौ***—क्रि० वि० [सं० अग्र] दे० "आगे"।

**आग्नेयास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती या बरसती थी।

**आग्नेयी**—वि० स्त्री० [सं०] १ अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २. पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।

**आग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अनुरोध। हठ। ज़िद। २ तत्परता। परायणता। ३. बल। जोर। आवेश।

**आग्रहायण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अगहन। मार्गशीर्ष मास। २ मृगशिरा नक्षत्र।

**आग्रही**—वि० [सं० आग्रहिन्] १. आग्रह करनेवाला। २ हठी। ज़िद्दी।

**आघ***—संज्ञा पुं० [सं० अर्घ] मूल्य। कीमत।

**आघात**—संज्ञा पुं० [सं०] १ धक्का। ठोकर। २ मार। प्रहार। चोट। ३ वध-स्थान। बूचड़खाना।

**आघूर्ण**—वि० [सं०] १. घूमता हुआ। फिरता हुआ। २ हिलता हुआ।

**आघूर्णित**—वि० [सं०] इधर उधर फिरता हुआ। चक्कर खाता हुआ।

**आघ्राण**—संज्ञा पुं० [सं०][वि० आघ्रात, आघ्रेय]। सूँघना। बास लेना। २ अघाना। तृप्ति।

**आचमन**—संज्ञा पुं० [सं०][वि० आचमनीय, आचमित] १ जल पीना। २ पूजा या धर्म्म संबंधी कर्म्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।

**आचमनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आचमनीय] एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं।

**आचरज***—संज्ञा पुं० दे० 'अचरज'।

**आचरण**—संज्ञा पुं० [सं०][वि० आचरणीय आचरित] १ अनुष्ठान। २ व्यवहार। बर्ताव। चाल-चलन। ३ आचार शुद्धि। सफ़ाई। ४ रथ। ५ चिह्न। लक्षण।

**आचरणीय** वि० [सं०] व्यवहार करने योग्य। करने योग्य।

**आचरन***—संज्ञा पुं० दे० "आचरण"।

**आचरना***—क्रि० अ० [सं० आचरण] आचरण करना। व्यवहार करना।

**आचरित** वि० [सं०] किया हुआ।

**आचान***—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

**आचार**—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यवहार। चलन। रहन-सहन। २ चरित्र। चालढाल। ३ शील। ४ शुद्धि। सफ़ाई।

**आचारज***—संज्ञा पुं० दे० "आचार्य्य"।

**आचारजी***—संज्ञा स्त्री० [सं० आचार्य्य] पुरोहिताई। आचार्य्य होने का भाव।

**आचारवान्**—वि० [सं०] [स्त्री० आचारवती] पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध आचार का।

**आचार-विचार**—संज्ञा पुं० [सं०] आचार और विचार। रहने की सफ़ाई। शौच।

**आचारी**—वि० [सं० आचारिन्] [स्त्री० आचारिणी] आचारवान्। चरित्रवान्।

संज्ञा पुं० रामानुज-संप्रदाय का वैष्णव।

**आचार्य्य**—संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० आचार्य्याणी] १ उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला। गुरु। २. वेद पढ़ानेवाला। ३ यज्ञ के समय कर्मोपदेशक। ४. पुरोहित। ५. अध्यापक। ६ ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर-रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य्य। ७. वेद का भाष्यकार।

**विशेष**—स्वयं आचार्य्य का काम करनेवाली स्त्री आचार्य्या कहलाती है। आचार्य की पत्नी को आचार्य्याणी कहते हैं।

**आचिंत्य** वि० [सं०] सब प्रकार से चिंतन करने के योग्य।

संज्ञा पुं० [सं० अचिंत्य] ईश्वर जो चिंतन में नहीं आ सकता।

**आच्छन्न** वि० [सं०] ढका हुआ। आवृत। २ छिपा हुआ।

**आच्छादक**—संज्ञा पुं० [सं०] ढाँकनेवाला।

**आच्छादन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आच्छादित, आच्छन्न] १ ढकना। २ वस्त्र। कपड़ा। ३ छाजन। छवाई।

**आच्छादित**—वि० [सं०] १. ढका हुआ। आवृत। २. छिपा हुआ।

तिरोहित।

**आछत***—क्रि॰ वि॰ [क्रि॰ अ॰ आछना का कृदंत रूप] १. होते हुए। रहते हुए। विद्यमानता में। मौजूदगी में। सामने। २. अतिरिक्त। सिवाय। छोड़कर।

**आछना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ अस्=होना] १. होना। २ रहना। विद्यमान होना।

**आछा***—वि॰ दे॰ "अच्छा"।

**आछे***—क्रि॰ वि॰ [हिं॰ अच्छा] अच्छी तरह।

**आछेप***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "आक्षेप"।

**आज**—क्रि॰ वि॰ [सं॰ अद्य] १. वर्त्तमान दिन में। जो दिन बीत रहा है, उसमें। २. इन दिनों। वर्त्तमान समय में। ३ इस वक्त। अब।

**आज-कल**—क्रि॰ वि॰ [हिं॰ आज+कल] इन दिनों। इस समय। वर्त्तमान दिनों में।

**मुहा॰**—आज-कल करना=टाल मटोल करना। हीला हवाला करना। आज-कल लगना=अब तक लगना। मरण-काल निकट आना।

**आजगव**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिव का धनुष। पिनाक।

**आजन्म**—क्रि॰ वि॰ [सं॰] जीवन भर। जन्म भर। जिंदगी भर।

**आज़माइश**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] परीक्षा।

**आज़माना**—क्रि॰ स॰ [फ़ा॰ आज़माइश] परीक्षा करना। परखना।

**आजमूदा**—वि॰ [फ़ा॰ आजमूदः] आजमाया हुआ। परीक्षित।

**आजा**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ आर्य] [स्त्री॰ आजी] पितामह। दादा। बाप का बाप।

**आजागुरु**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ आजा+गुरु] गुरु का गुरु।

**आज़ाद**—वि॰ [फ़ा॰] [संज्ञा आजादी, आजादगी] १ जो बद्ध न हो। छूटा हुआ। मुक्त। बरी। २ बेफिक्र। बेपरवाह। ३ स्वतंत्र। स्वाधीन। ४. निडर। निर्भय। ५. स्पष्ट-वक्ता। हाज़िर-जवाब। ६. उद्धत। ७ सूफ़ीसंप्रदाय के फ़कीर जो स्वतंत्र विचार के होते हैं।

**आज़ादी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. स्वतंत्रता। स्वाधीनता। २ रिहाई। छुटकारा।

**आजानु**—वि॰ [सं॰] जाँघ या घुटने तक लंबा।

**आजानुबाहु**—वि॰ [सं॰] जिसके बाहु जानु तक लंबे हों। जिसके हाथ घुटने तक पहुँचे। (वीरों का लक्षण)

**आजार**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १ रोग। बीमारी। २ दुःख। तकलीफ़।

**आजिज़**—वि॰ [अ॰] १ दीन। विनीत। २ हैरान। तंग।

**आजिज़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] दीनता।

**आजीवन**—क्रि॰ वि॰ [सं॰] जीवन-पर्य्यंत। जिंदगी भर।

**आजीविका**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वृत्ति। रोजी।

**आज्ञा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. बड़ों का छोटों को किसी काम के लिये कहना। आदेश। हुक्म। २. अनुमति।

**आज्ञाकारी**—वि॰ [सं॰ आज्ञाकारिन्] [स्त्री॰ आज्ञाकारिणी] १. आज्ञा माननेवाला। हुक्म माननेवाला। २ सेवक। दास।

**आज्ञापक**—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ आज्ञापिका] १. आज्ञा देनेवाला। २ प्रभु। स्वामी।

**आज्ञापत्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह लेख जिसके अनुसार किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय। हुक्मनामा।

**आज्ञापन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ आज्ञापित] सूचित करना। जताना।

**आज्ञापालक**—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ आज्ञापालिका] १. आज्ञा का पालन करनेवाला। आज्ञाकारी। २. दास टहलुआ।

**आज्ञापित**—वि॰ [सं॰] सूचित किया हुआ। जताया हुआ।

**आज्ञापालन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] आज्ञा के अनुसार काम करना। फ़रमाँबरदारी।

**आज्ञाभंग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] आज्ञा न मानना।

**आज्य**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. घी। २. वे वस्तुएँ जिनकी आहुति दी जाय। हवि।

**आटना**—क्रि॰ स॰ [सं॰ अट्ट] तोपना। ढाँकना। दबाना।

**आटा**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अटन=घूमना] १. किसी अन्न का चूर्ण। पिसान। चून।

**मुहा॰**—आटे दाल का भाव मालूम होना=संसार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे दाल की फ़िक्र=जीविका की चिंता।

२. किसी वस्तु का चूर्ण। बुकनी।

**आटोप**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ आच्छादन। फैलाव। २. आडंबर। विभव।

**आठ**—वि॰ [सं॰ अष्ट] चार का दूना।

**मुहा॰**—आठ आठ आँसू रोना=बहुत अधिक विलाप करना। आठों गाँठ कुम्मैत=१. सर्वगुण-संपन्न। २. चतुर। छँटा हुआ। धूर्त्त। आठों पहर=दिन-रात।

**आठैं**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आठ ] अष्टमी ।

**आडंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आडंबरी ] १. गंभीर शब्द । २ तुरही का शब्द । ३. हाथी की चिग्घाड़ । ४. ऊपरी बनावट । तड़क-भड़क । टीम-टाम । ढोंग । ५. आच्छादन । ६. तंबू । ७ बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है । पटह ।

**आडंबरी**—वि० [ सं० ] आडंबर करनेवाला । ऊपरी बनावट रखनेवाला । ढोंगी ।

**आड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अल=रोक ] १. ओट । परदा । २. शरण । पनाह । सहारा । आश्रय । ३. रोक । अड़ान । ४. थूनी । टेक ।
संज्ञा पुं० [ सं० अल=डंक ] बिच्छू या भिड़ आदि का डंक ।
संज्ञा स्त्री० [ सं० आलि = रेखा ] १. लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं । २. स्त्रियों के मस्तक पर का आड़ा तिलक । माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना । टीका ।

**आड़न**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आड़ना ] ढाल ।

**आड़ना**—क्रि० स० [ सं० अल्=वारण करना ] १. रोकना । छेंकना २. बाँधना । ३ मना करना । न करने देना । ४. गिरवी या रेहन रखना । गहने रखना ।

**आड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० अलि ] १ एक धारीदार कपड़ा । २. लट्ठा । शहतीर ।
वि० १. आँखों के समानांतर दाहिनी से बाईं ओर को या बाईं से दाहिनी ओर को गया हुआ । २. वार से पार तक रखा हुआ ।
मुहा०—आड़े आना = १. रुकावट डालना । बाधक होना । २. कठिन समय में सहायक होना । आड़े हाथों लेना = किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना । आड़े समय = कठिनाई के समय ।

**आड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आड़ा ] १. तबला, मृदंग आदि बजाने का एक ढंग । २ चमार की छुरी । ३ ओर । तरफ़ । दे० "आरी ।" ४ सहायक । अपने पक्ष का ।

**आड़ू**—संज्ञा पुं० [ सं० आलु ] एक प्रकार का फल जिसका स्वाद खटमीठा होता है ।

**आढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० आढक ] चार प्रस्थ अर्थात् चार सेर की एक तौल ।
*संज्ञा स्त्री० [ हिं० आड़ ] १ ओट । पनाह । *†२. अंतर । बीच । ३. नाशा ।
वि० [ सं० आढ्य = संपन्न ] कुशल । दक्ष ।

**आढ़क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चार सेर की एक तौल । २. इतना अन्न नापने का काठ का एक बरतन । ३ अरहर ।

**आढ़त**—संज्ञा स्त्री [ हिं० आड़ना = ज़मानत देना ] १ किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय । २. वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो । ३ वह धन जो इस प्रकार बिक्री करने के बदले में मिलता है । ४. वेश्यालय ।

**आढ़तिया**—संज्ञा पुं० दे० "अढ़तिया" ।

**आढ्य**—वि० [ सं० ] १ संपन्न । पूर्ण । २ युक्त । विशिष्ट । ३. उत्तम । बढ़िया । अच्छा । * ४. धनवान् । रुपए-पैसेवाला ।

**आणक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रुपए का सोलहवाँ भाग । आना ।

**आणविक**—वि० [ सं० ] अणु-संबंधी ।

**आतंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रोब । दबदबा । प्रताप । २. भय । आशंका । ३. रोग ।

**आततायी**—संज्ञा पुं० [ सं० आततायिन् ] [ स्त्री० आततायिनी ] १ आग लगानेवाला । २. विष देनेवाला । ३ वधोद्यत शस्त्रधारी । ४ जमीन, धन या स्त्री हरनेवाला ।

**आतप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० आतपता ] १ धूप । घाम । २. गर्मी । उष्णता । ३. सूर्य का प्रकाश ।

**आतपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छाता ।

**आतपपति**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

**आतपी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य ।
वि० धूप का । धूप संबंधी ।

**आतम**—वि० दे० "आत्म" ।

**आतमा**—संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा" ।

**आतश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आग । अग्नि ।

**आतशक**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० आतशकी ] फिरंग रोग । उपदंश । गर्मी ।

**आतशख़ाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा० ] १. वह स्थान जहाँ कमरा गर्म करने के लिये आग रखते हैं । २ वह स्थान जहाँ पारसियों की अग्नि स्थापित हो ।

**आतशदान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] अँगीठी ।

**आतशपरस्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] अग्नि की पूजा करनेवाला । अग्निपूजक । पारसी ।

**आतशबाज़**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो आतशबाज़ी के खिलौने और सामान बनाता है ।

**आतशबाज़ी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बारूद के बने हुए खिलौनों के जलने का दृश्य । २. बारूद के बने हुए खिलौने जो जलाने से कई आकार और रंग-

-स्फुलिंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं।

**आतशी**—वि० [फ़ा०] १. अग्नि-संबंधी। २. अग्नि-उत्पादक। ३ जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के।

**आतशी शीशा**—वह शीशा जिस पर सूर्य की किरणें केंद्रित करने से आग निकलती है।

**आतापी**—संज्ञा पु० [सं०] १. एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था। २. चील पक्षी।

**आतिथेय**—संज्ञा पु० [सं०] [भाव० आतिथेयत्व] १ अतिथि की सेवा करनेवाला। २. अतिथि-सेवा की सामग्री।

**आतिथ्य**—संज्ञा पु० [सं०] अतिथि का सत्कार। पहुनाई। मेहमानदारी।

**आतिश**—संज्ञा स्त्री० दे० "आतश"।

**आतिशय्य**—संज्ञा पु० [सं०] अतिशय होने का भाव। आधिक्य। बहुतायत। ज्यादती।

**आती-पाती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाती] लड़कों का एक प्रकार का खेल। पहाड़वा।

**आतुर**—वि० [सं०] [संज्ञा आतुरता] १ व्याकुल। व्यग्र। घबराया हुआ। उतावला। २ अधीर। उद्विग्न। बेचैन। ३. उत्सुक। ४. दुःखी। ५ रोगी। क्रि० वि० शीघ्र जल्दी।

**आतुरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २. जल्दी। शीघ्रता।

**आतुरताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "आतुरता"।

**आतुरसंन्यास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह सन्यास जो मरने के कुछ पहले लिया जाता है।

**आतुराना***—क्रि० अ० दे० "अतुराना"।

**आतुरी***—संज्ञा स्त्री० [सं० आतुर+ई (प्रत्यय)] १. घबराहट। व्याकुलता। २ शीघ्रता।

**आत्म**—वि० [सं० आत्मन्] अपना।

**आत्मक**—वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] मय। युक्त। (यौगिक शब्दों के अंत में)

**आत्मगत**—वि० [सं०] १ अपने में आया या लगा हुआ २. स्वगत।

**आत्मगौरव**—संज्ञा पु० [सं०] अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान। आत्म-सम्मान।

**आत्मघात**—संज्ञा पु० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालने का काम। आत्महत्या।

**आत्मघातक, आत्मघाती**-वि० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालनेवाला।

**आत्मज**—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० आत्मजा] १ पुत्र। लड़का। २. कामदेव।

**आत्मज्ञ**—संज्ञा पु० [सं०] जो अपने को जान गया हो। जिसे निज स्वरूप का ज्ञान हो।

**आत्मज्ञान**—संज्ञा पु० [सं०] १. जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी। २ ब्रह्म का साक्षात्कार।

**आत्मज्ञानी**—संज्ञा पु० [सं०] आत्मा और परमात्मा के संबंध में जानकारी रखनेवाला।

**आत्मतुष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आत्मज्ञान से उत्पन्न संतोष या आनंद।

**आत्मत्याग**—संज्ञा पु० [सं०] दूसरों के हित के लिए अपना स्वार्थ छोड़ना।

**आत्मनिवेदन**—संज्ञा पु० [सं०] अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना। आत्मसमर्पण। (नवधा भक्ति में)

**आत्मनीय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र। २ साला। ३. विदूषक।

**आत्मप्रशंसा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने मुँह से अपनी बड़ाई।

**आत्मबल**—संज्ञा पुं० [सं०] अपना अथवा अपनी आत्मा का बल।

**आत्मबोध**—संज्ञा पुं० दे० "आत्मज्ञान"।

**आत्मभू**—वि० [सं०] १. अपने शरीर से उत्पन्न। २ आप ही आप उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १ पुत्र। २ कामदेव। ३. ब्रह्मा। ४ विष्णु। ५. शिव।

**आत्मरक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपनी रक्षा या बचाव।

**आत्मरत**—वि० [सं०] [संज्ञा आत्मरति] जिसे आत्मज्ञान हुआ हो। ब्रह्मज्ञानप्राप्त।

**आत्मरति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मज्ञान।

**आत्मवाद**—संज्ञा पु० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही सबसे बढ़कर माना जाता हो। अध्यात्मवाद।

**आत्मवादी**—संज्ञा पु० [सं० आत्मवादिन्] वह जो आत्मवाद को मुख्य मानता हो।

**आत्मविक्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आत्मविक्रयी] अपने को आप बेच डालना।

**आत्मविक्रेता**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो अपने आप को बेचकर दास बना हो।

**आत्मविद्**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो आत्मा और परमात्मा का स्वरूप पहचानता हो। ब्रह्मविद्।

**आत्मविद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। ब्रह्मविद्या। अध्यात्म विद्या २ मिस्मरिज्म।

**आत्मविस्मृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने को भूल जाना। अपना ध्यान

न रखना।

**आत्मश्लाघा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० आत्मश्लाघी ] अपनी तारीफ़ करना।

**आत्मश्लाघी**—वि० [ सं० ] अपनी प्रशंसा आप करने वाला।

**आत्मसंयम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपने मन को रोकना। इच्छाओं को वश में रखना।

**आत्म-सम्मान**—संज्ञा पुं० दे० "आत्मगौरव"।

**आत्मसिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मोक्ष।

**आत्महंता**—वि० [ सं० आत्महन् ] आत्मघाती।

**आत्महत्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अपने आप को मार डालना। खुदकुशी।

**आत्महन्**—वि० दे० "आत्महंता"।

**आत्मा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० आत्मिक आत्मीय ] १. मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करनेवाली सत्ता। द्रष्टा। रूह। जीव। जीवात्मा। चैतन्य। २. मन। चित्त। ३. हृदय। दिल।

मुहा०—आत्मा ठंडी होना = १. तुष्टि होना। तृप्ति होना। संतोष होना। प्रसन्नता होना। २. पेट भरना। ३. भूख मिटना।

४. देह। शरीर। ५. सूर्य्य। ६. अग्नि ७. वायु। ८. स्वभाव। धर्म्म।

**आत्मानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आत्मा का ज्ञान। २. आत्मा में लीन होने का सुख।

**आत्माभिमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आत्माभिमानी ] अपनी इज्ज़त या प्रतिष्ठा का ख़याल। मान अपमान का ध्यान।

**आत्माराम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आत्मज्ञान से तृप्त योगी। २. जीव। ३. ब्रह्म। ४. तोता। सुग्गा। ( प्यार का शब्द )

**आत्मावलंबी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जो सब काम अपने बल पर करे।

**आत्मिक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० आत्मिका ] १. आत्मा-संबंधी। २. अपना। ३ मानसिक।

**आत्मीय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० आत्मीया ] निज का। अपना। [ संज्ञा पुं० ] १ अपना संबंधी। रिश्तेदार।

**आत्मीयता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अपनापन। स्नेह-संबंध। मैत्री।

**आत्मोत्सर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूसरे की भलाई के लिए अपने हित-अहित का ध्यान छोड़ना।

**आत्मोद्धार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना या ब्रह्म में मिलाना। मोक्ष। २. अपना उद्धार या छुटकारा।

**आत्मोन्नति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ आत्मा की उन्नति। २ अपनी उन्नति।

**आत्यंतिक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० आत्यंतिकी ] जो बहुतायत से हो।

**आत्रेय**—वि० [ सं० अत्रि ] १ अत्रिसंबंधी। २ अत्रि गोत्रवाला। संज्ञा पुं० १ अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा, चन्द्रमा। २ आत्रेयी नदी के तट का देश जो दीनाजपुर जिले के अंतर्गत है।

**आत्रेयी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक तपस्विनी जो वेदान्त में बड़ी निष्णात थी।

**आथ***—संज्ञा पुं० दे० "अर्थ"।

**आथन***—क्रि० अ० [ सं० अस्त ] अस्त होना। छिपना।

**आथना***—क्रि० अ० [ सं० अस्ति ] होना।

**आथर्वण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अथर्व वेद का जाननेवाला ब्राह्मण। २. अथर्व वेद-विहित कर्म।

**आथि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अस्ति ] १. स्थिरता। २ पूँजी। जमा।

**आदत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. स्वभाव। प्रकृति। २ अभ्यास। टेव। बान।

**आदम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।

**आदमक़द**—वि० [ अ० आदम+फ़ा० क़द ] आदमी के ऊँचाई के बराबर ( चित्र, मूर्ति या और कोई चीज़ )।

**आदमज़ाद**—संज्ञा पुं० [ अ० आदम +फ़ा० जाद ] १ आदम की संतान। २ मनुष्य।

**आदमी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. आदम की संतान। मनुष्य। मानव जाति।

मुहा०आदमी बनना=सभ्यता सीखना। अच्छा व्यवहार सीखना।

२ नौकर। सेवक।

**आदमीयत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मनुष्यत्व। इन्सानियत। २ सभ्यता।

**आदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सम्मान। सत्कार। प्रतिष्ठा। इज्ज़त।

**आदरणीय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० आदरणीया ] आदर के योग्य।

**आदरना***—क्रि० स० [ सं० आदर ] आदर करना। सम्मान करना। मानना।

**आदर भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० आदर + भाव ] सत्कार। सम्मान। क़दर। प्रतिष्ठा।

**आदर्श**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दर्पण। शीशा। आईना। २ टीका। व्याख्या। ३ वह जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय। नमूना।

**आदान प्रदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लेना-देना।

**आदाब**—संज्ञा पु० [अ०] १. नियम क़ायदे। २. लिहाज़। मान। ३ नमस्कार। सलाम।
**आदि**-वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। शुरू का। आरम्भ का। २ बिलकुल। नितांत।
संज्ञा पु० [सं०] १ आरंभ। बुनियाद। मूल कारण। २ परमेश्वर।
अव्य० वग़ैरह। आदिक। (इस शब्द से यह सूचित होता है कि इसी प्रकार और भी समझो।)
**आदिक**—अव्य० [सं०] आदि। वग़ैरह।
**आदिकवि**—संज्ञा पु० [सं०] १. वाल्मीकि ऋषि। २ शुक्राचार्य्य।
**आदि कारण**—संज्ञा पु० [सं०] पहला कारण जिससे सृष्टि के सब व्यापार उत्पन्न हुए। मूल कारण। जैसे, ईश्वर या प्रकृति।
**आदित***—संज्ञा पु० दे० "आदित्य"।
**आदित्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ अदिति के पुत्र। २. देवता। ३ सूर्य। ४. इंद्र। ५ वामन। ६. वसु। ७. विश्वेदेवा। ८ बारह मात्राओं के छंदों की संज्ञा। ९ मदार का पौधा।
**आदित्यवार**—संज्ञा पु० [सं०] एतवार।
**आदिनाथ**—संज्ञा पु० [सं०] शिव। महादेव।
**आदिपुरुष**—संज्ञा पु० [सं०] परमेश्वर।
**आदिम**—वि० [सं०] पहले का। पहला।
**आदिल**—वि० [फ़ा०] न्यायी। न्यायवान्।
**आदिविपुला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।
**आदिष्ट**—वि० [सं०] जिसे आदेश मिला हो।
**आदी**—वि० [अ०] अभ्यस्त।
संज्ञा स्त्री० [सं० आर्द्रक] अदरक।
**आदृत**—वि० [सं०] जिसका आदर किया गया हो। सम्मानित।
**आदेय**—वि० [सं०] लेने के योग्य।
**आदेश**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आदेशक, आदिष्ट] १. आज्ञा। २ उपदेश। ३ प्रणाम। नमस्कार। (साधु) ४ ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ५ व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। अक्षर परिवर्त्तन।
**आदेस***—संज्ञा पु० दे० "आदेश"।
**आद्यंत**—क्रि० वि० [सं०] आदि से अंत तक। शुरू से आख़ीर तक।
**आद्य**—वि० [सं०] आदि का। पहला।
**आद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ दस महाविद्याओं में से एक।
**आद्योपांत**—क्रि० वि० [सं०] आरंभ से अंत तक।
**आद्रा**—संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।
**आद्रत**—वि० दे० "आदृत"।
**आध**—वि० [हिं० आधा] दो बराबर भागों में से एक। आधा।
**यौ०**—एक आध=थोड़े से।
**आधा**—वि० [सं० अर्द्ध] [स्त्री० आधी] दो बराबर हिस्सों में से एक।
**मुहा०**—आधा आध=दो बराबर भागों में। आधा तीतर आधा बटेर=कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का। बेजोड़। बेमेल। अडबंड। आधा होना =दुबला होना। आधे आध=दो बराबर हिस्सों में बँटा हुआ। आधी बात =ज़रा सी भी अपमानसूचक बात।
**आधान**—संज्ञा पु० [सं०] १ स्थापन। रखना। २ गिरवी या बंधक रखना।
**आधार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रय। सहारा। अवलंब। २ व्याकरण में अधिकरण कारक। ३. थाला। आलवाल। ४ पात्र। ५ नींव। बुनियाद। मूल। ६ योगशास्त्र में एक चक्र। मूलाधार। ७. आश्रय देनेवाला। पालन करनेवाला।
यौ० प्राणाधार=जिसके आधार पर प्राण हो। परम प्रिय।
**आधारित**—वि० [सं० आधार] किसी के आधार पर ठहरा हुआ। अवलंबित।
**आधारी**—वि० [सं० आधारिन्] [स्त्री० आधारिणी] १ सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला। २ साधुओं की टेक की या अड्डे के आकार की एक लकड़ी।
**आधासीसी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अर्द्ध+शीर्ष] अधकपाली। आधे सिर की पीड़ा।
**आधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मानसिक व्यथा। चिंता। २. रहनबन्धक।
**आधिक***—वि० [हिं० आधा+एक] आधा।
क्रि० वि० आधे के लगभग। थोड़ा।
**आधिकारिक**—संज्ञा पु० [सं०] दृश्य काव्य में मूल कथावस्तु।
**आधिक्य**—संज्ञा पु० [सं०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।
**आधिदैविक**—वि० [सं०] देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवताकृत। (दुःख)
**आधिपत्य**—संज्ञा पु० [सं०] प्रभुत्व। स्वामित्व।
**आधिभौतिक**—वि० [सं०] व्याघ्र, सर्पादि जीवों कृत। जीवों या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त। (दुःख)
**आधीन***—वि० अशुद्ध प्रयोग दे० "अधीन"।
**आधुनिक**—वि० [सं०] वर्त्तमान समय का। हाल का। आज-कल का।
**आधेय**—संज्ञा पु० [सं०] १ किसी

सहारे पर टिकी हुई चीज़। २. ठहराने योग्य। रखने योग्य। ३. गिरौं रखने योग्य।

**आध्यात्मिक**-वि० [सं०] १. आत्मा-संबंधी। २. ब्रह्म और जीव-संबंधी।

**आनंद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनंदित, आनंदी] हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। सुख।

**यौ०**—आनंदमंगल।

**आनंदना***—क्रि० अ० [सं० आनंद+ना (प्रत्य०)] आनंदित या प्रसन्न होना।

**आनंद-बधाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० आनंद+हिं० बधाई] १ मंगल उत्सव। २. मंगल-अवसर।

**आनंदघन**—संज्ञा पुं० [सं०] काशी।

**आनंदमत्ता**—संज्ञा स्त्री० दे० "आनंद-सम्मोहिता"।

**आनंदसम्मोहिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यंत निमग्न होने के कारण मुग्ध हो रही हो।

**आनंदित**—वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

**आनंदी**—वि० [सं०] १ हर्षित। प्रसन्न। २. खुशमिज़ाज। प्रसन्न रहने-वाला।

**आन**-संज्ञा स्त्री० [सं० आणि=मर्य्यादा, सीमा] १ मर्य्यादा। २ शपथ। सौगंद। कसम। ३ विजय-घोषणा। दुहाई। ४ ढंग। तर्ज़। ५ क्षण। लहमा।

**मुहा०**—आन की आन में=शीघ्र ही। चटपट। तुरत।

६. अकड़। ऐंठ। ठसक। ७ अदब। लिहाज। ८. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक।

*वि० [सं० अन्य] दूसरा। और।

**आनक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. डंका। भेरी। दुंदुभी। २. गरजता हुआ बादल।

**आनकदुंदुभी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा नगाड़ा। २. कृष्ण के पिता वसुदेव।

**आनत**—वि० [सं०] १. कुछ झुका हुआ। २. नम्र।

**आन तान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आन] १. ठसक। शेखी। २. ज़िद। अड़। ३ बे सिर पैर की बात।

**आनद्ध**—वि० [सं०] १. कसा हुआ। २ मढ़ा हुआ।

संज्ञा पुं० वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो। जैसे—ढोल, मृदंग आदि।

**आनन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मुख। मुँह। २ चेहरा। मुखड़ा।

**आनन फ़ानन**—क्रि० वि० [अ०] अति शीघ्र। फ़ौरन। झटपट।

**आनना**†*—क्रि० स० [सं० आनयन] लाना।

**आन बान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आन+बान] १ सज-धज। ठाट-बाट। तड़क-भड़क। २ ठसक। अदा।

**आनयन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाना। २ उपनयन संस्कार।

**आनरेबुल**—वि० [अं०] प्रतिष्ठित। मान्य। (हाईकोर्ट के जजों आदि की उपाधि)

**आनरेरी**—वि० [अं०] अवैतनिक। कुछ वेतन न लेकर केवल प्रतिष्ठा के हेतु काम करनेवाला। जैसे,—आनरेरी मजिस्ट्रेट। आनरेरी सेक्रेटरी।

**आनर्त्त**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आनर्त्तक] १ द्वारका। २ आनर्त्त देश का निवासी। ३. नृत्यशाला। नाच-घर। ४. युद्ध।

**आना**—संज्ञा पुं० [सं० आणक] १ एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा। २. किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।

क्रि० अ० [सं० आगमन] १. आगमन करना। वक्ता के स्थान की ओर चलना या उसके प्राप्त होना। २. जाकर लौटना। ३. काल प्रारंभ होना। ४. फलना। फूलना। फल फूल लगना। ५. किसी भाव का उत्पन्न होना। जैसे—आनंद आना।

**मुहा०**—आए दिन = प्रतिदिन। रोज़-रोज़। आता जाता = आने जाने-वाला। पथिक। बटोही। आ धमकना = एकबारगी आ पहुँचना। आ पड़ना = १. सहसा गिरना। एकबारगी गिरना। २. आक्रमण करना। (अनिष्ट घटना का) घटित होना। आया गया = अतिथि। अभ्यागत। आ रहना=गिर पड़ना। आ लेना=१ पास पहुँच जाना। पकड़ लेना। २. आक्रमण करना। टूट पड़ना। (किसी का) आ बनना=लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। किसी को कुछ आना=किसी का कुछ ज्ञान होना। (किसी वस्तु) में आना=१. ऊपर से ठीक या जमकर बैठना। २. भीतर अटना। समाना।

**आनाकानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अना-कर्णन] १. सुनी अनसुनी करने का कार्य्य। न ध्यान देने का कार्य्य। २. टाल मटूल। हीला-हवाला। ३ काना-फूसी।

**आनाह**—संज्ञा पुं० [सं०] मलमूत्र रुकने से पेट फूलना।

**आनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "आन"।

**आनुगत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनुगत होने की क्रिया या भाव। २ अनुकरण।

**आनुपूर्वी**—वि० [सं० आनुपूर्वीय] क्रमानुसार। एक के बाद दूसरा।

**आनुमनिक**—वि० [सं०] अनुमान-संबंधी। खयाली।

**आनुवंशिक**—वि० [सं०] जो किसी वंश में बराबर होता आया हो। वंशा-

नुश्रविक ।

**आनुश्राविक**—वि० [ सं० ] जिसको परंपरा से सुनते चले आए हों ।

**आनुषंगिक**—वि० [ सं० ] जिसका साधन किसी दूसरे प्रधान कार्य्य को करते समय बहुत थोड़े प्रयास में हो जाय । गौण । अप्रधान । प्रासंगिक ।

**आन्वीक्षिकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. आत्मविद्या । २ तर्कविद्या । न्याय ।

**आप**—सर्व० [सं० आत्मन्] १ स्वयं । खुद । ( तीनों पुरुषों में )

**आपः**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जल ।

**यौ०**—आपकाज=अपना काम । जैसे—आपकाज महाकाज । आपकाजी=स्वार्थी । मतलबी । आपबीती = घटना जो अपने ऊपर बीत चुकी हो । आपरूप = स्वयं । आप ।

**मुहा०**—आप आपकी पड़ना = अपने अपने काम में फँसना । अपनी अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना । आप आपको = अलग अलग । न्यारे न्यारे । आपको भूलना= १. किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना । २. मदांध होना । घमंड में चूर होना । आप से=स्वयं । खुद । आप से आप= स्वयं । खुद-ब-खुद । आप ही=स्वयं । आप से आप । आप ही आप=१ बिना किसी और की प्रेरणा के । आपसे आप । २ मन ही मन में । किसी को संबोधन करके नहीं । स्वगत । २. "तुम" और "वे" के स्थान में आदरार्थक प्रयोग । ३. ईश्वर । भगवान् ।

संज्ञा पुं० [ सं० आपः=जल ] जल । पानी ।

**आपगा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी ।

**आपत्काल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ विपत्ति । दुर्दिन । २. दुष्काल । कुसमय ।

**आपत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुःख । क्लेश । विघ्न । २. विपत्ति । संकट । आफत । ३. कष्ट का समय । ४ जीविका-कष्ट । ५. दोषारोपण । ६ उज्र । एतराज़ ।

**आपत्य**—वि० [ सं० ] अपत्य या संतान संबंधी । औलाद का ।

**आपताब*** —दे० "आफताब" ।

**आपद्**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विपत्ति । आपत्ति २. दुःख । कष्ट । विघ्न ।

**आपदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ दुःख क्लेश । २. विपत्ति । आफत । ३ कष्ट का समय ।

**आपद्धर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिए हो । २ किसी वर्ण के लिए वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनोपाय न होने की अवस्था में ही हो । जैसे, ब्राह्मण के लिए वाणिज्य । ( स्मृति )

**आपन***†—सर्व० दे० "अपना" ।

**आपनपौ***—संज्ञा पुं० दे० "अपनपौ"

**आपना***—सर्व० दे० "अपना" ।

**आपन्न**—वि० [ सं० ] १ आपद्ग्रस्त दुःखी । २ प्राप्त ।

**यौ०**—शरणापन्न ।

**आपया**—संज्ञा स्त्री [ सं० आपगा ] नदी ।

**आपरूप**—वि० [हिं० आप+सं० रूप] अपने रूप से युक्त । मूर्तिमान् । साक्षात् । ( महापुरुषों के लिए )

सर्व० साक्षात् आप । आप महापुरुष । हजरत । ( व्यंग्य )

**आपरेशन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] फोड़ों आदि की चीरफाड़ । अस्त्र चिकित्सा ।

**आपस**—अव्य० [ हिं० आप + से ] १.संबंध । नाता । भाई-चारा । जैसे —आपसवाले में, आपस के लोग । २ एक दूसरे का साथ । एक दूसरे का संबंध । ( केवल संबंध और अधिकरण कारक में )

**मुहा०**—आपस का=१. इष्ट मित्र या भाई बंधु के बीच का । २ पारस्परिक । एक दूसरे का । परस्पर का । आपस में= परस्पर । एक दूसरे से ।

**यौ०**—आपसदारी=परस्पर का व्यवहार । भाईचारा ।

**आपसी**—वि० [ हिं० आपस ] आपस का । पारस्परिक ।

**आपस्तंब**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आपस्तंबीय ] १ एक ऋषि जो कृष्ण-यजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्त्तक थे । २ आपस्तंब शाखा के कल्प सूत्रकार जिनके बनाए तीन सूत्रग्रंथ हैं । ३ एक स्मृतिकार ।

**आपा**—संज्ञा पुं० [ हिं० आप ] १ अपनी सत्ता । अपना अस्तित्व । २ अपनी असलियत । ३ अहंकार । घमंड । गर्व । ४ होश-हवास । सुध बुध ।

**मुहा०**—आपा खोना=१. अहंकार त्यागना । नम्र होना । २ मर्य्यादा नष्ट करना । अपना गौरव छोड़ना । आपा तजना=१ अपनी सत्ता को भूलना । आत्मभाव का त्याग । २ अहंकार छोड़ना । निरभिमान होना । ३ प्राण छोड़ना । मरना । आपे में आना=होश हवास में होना । चेत में होना । आपे में न रहना = १ आपे से बाहर होना । बेकाबू होना । अपने ऊपर वश न रखना । २ घबराना । बदहवास होना । ३ अत्यंत क्रोध में होना । आपे से बाहर होना= १ क्रोध या हर्ष के आवेश में सुध-बुध खोना । क्षुब्ध होना । २ घबराना । उद्विग्न होना ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० आप ] बड़ी बहिन । ( मुसल० )

**आपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ गिराव । पतन । २ किसी घटना का अचानक हो जाना । ३ आरंभ । ४ अंत ।

**आपाततः**—क्रि० वि० [ सं० ] १.

अकस्मात् । अचानक । २. अंत को । आखिरकार । ३. आरंभ में । पहले ।

**आपातलिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छंद ।

**आपाधापी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० आप+धाप ] १. अपनी अपनी चिंता । अपनी अपनी धुन । २ खींच-तान । लाग-डाँट ।

**आपान**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. मद्यपान का स्थान । २. शराबियों की मंडली ।

**आपापंथी**—वि० [ हिं० आप+सं० पंथिन् ]मनमाने मार्ग पर चलनेवाला । कुमार्गी । कुपथी ।

**आपी***—संज्ञा पुं० [ सं० आप्य ] पूर्वाषाढ नक्षत्र ।

क्रि० वि० [ हिं० ] आपही । स्वयं ।

**आपीड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सिर पर पहनने की चीज़, जैसे—पगड़ी, सिरपेच, इत्यादि । २. पिंगल में एक विषम वृत्त ।

**आपु***†—सर्व० दे० "आप" ।

**आपुन***†- सर्व० दे० "अपना", "आप" ।

**आपुस***†—अव्य० दे० "आपस" ।

**आपूरना***—क्रि० अ० [ सं० आपूरण ] भरना ।

**आपेक्षिक**—वि० [सं०] १ सापेक्ष । अपेक्षा रखनेवाला । २. दूसरी वस्तु के अवलंबन पर रहनेवाला । निर्भर रहनेवाला ।

**आप्त**—वि० [सं०] १ आप्त । लब्ध । ( यौगिक में ) २. कुशल । दक्ष । ३ विषय को ठीक तौर से जाननेवाला । साक्षात्कृतधर्मा । ४ प्रामाणिक । पूर्ण तत्त्वज्ञ का कहा हुआ ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऋषि । २ शब्द प्रमाण । ३. भाग का लब्ध ।

**आप्तकाम**—वि० [ सं० ] जिसकी सब कामना एँ पूरी हो गई हों । पूर्णकाम ।

**आप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राप्ति । लाभ

**आप्यायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आप्यायित ] १. वृद्धि । वर्धन । २. तृप्ति । तर्पण । ३ एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना । ४. मृत धातु को जगाना या जीवित करना ।

**आप्लावन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आप्लावित ] डुबाना । बोरना ।

**आफ़त**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आपत्ति । विपत्ति । २ कष्ट । दुःख । ३. मुसीबत के दिन ।

**मुहा०**—आफ़त उठाना=१ दुःख सहना । विपत्ति भोगना । २ ऊधम मचाना । हलचल मचाना । आफ़त का परकाला=१ किसी काम को बड़ी तेजी से करनेवाला । पटु । कुशल । २. घोर उद्योगी । आकाश-पाताल एक करनेवाला । ३ हलचल मचानेवाला । उपद्रवी । आफ़त खड़ी करना = विपद् उपस्थित करना । आफ़त ढाना= १ ऊधम,उपद्रव या हलचल मचाना । २ तकलीफ़ देना । दुःख पहुँचाना । ३ अनहोनी बात कहना । आफ़त मचाना = १ हलचल करना । ऊधम मचाना । दगा करना । २ गुल गपाड़ा करना । ३ जल्दी मचाना । उतावली करना । आफ़त लाना = १ विपद् उपस्थित करना । २. बखेड़ा खड़ा करना । झगड़ा पैदा करना ।

**आफ़ताब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० आफ़ताबी ] सूर्य ।

**आफ़ताबा** संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हाथ मुँह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ ।

**आफ़ताबी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ] १ पान के आकार का पंखा जिसपर सूर्य्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि में झंडे के साथ चलता है । २. एक प्रकार की आतशबाज़ी । ३ दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान या ओसारी ।

वि० [ फ़ा० ] १. गोल । २. सूर्य्य-संबंधी ।

**यौ०**—आफ़ताबी गुलकंद = वह गुलकंद जो धूप में तैयार किया जाय ।

**आफ़ू**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अफ़ीम, मि० मरा० आफू ] अफ़ीम ।

**आब**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सं० आपः ] १ चमक । तड़क भड़क । आभा । कांति । पानी । २. शोभा । रौनक । छवि ।

संज्ञा पुं० पानी । जल ।

**आबकार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] शराब बनानेवाला, कलवार ।

**आबकारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो । हौली । शराबखाना । कलवरिया । भट्ठी । २ मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला । सरकारी मुहकमा ।

**आबखोरा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पानी पीने का बरतन । गिलास । २ कटोरा ।

**आबजोश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गरम पानी के साथ उबाला हुआ मुनक्का ।

**आबताब**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] तड़क-भड़क । चमक-दमक । द्युति ।

**आबदस्त**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मल त्याग के पीछे गुदेंद्रिय धोना । सींचना । पानी छूना ।

**आबदाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा० ] १. अन्न-पानी । दाना-पानी । अन्न-जल । २ जीविका । ३ रहने का संयोग ।

**मुहा०**—आब दाना उठना=जीविका न रहना । संयोग टलना ।

**आबदार**—वि० [ फ़ा ] चमकीला । कांतिमान् । द्युतिमान् ।

संज्ञा पुं० वह आदमी जो पुरानी तोपों में सुंबा और पानी का पुचारा देता है।

**आबदारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चमक। कांति।

**आब-दोज़**—वि० [फ़ा०] १. पानी में डूबा हुआ। २. पानी के अंदर डूब कर चलनेवाला। (जहाज़ या नाव) संज्ञा पुं० दे० "पनडुब्बी"।

**आबद्ध**—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. कैद।

**आबनूस**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० आबनूसी] एक जंगली पेड़ जिसके हीर की लकड़ी काली होती है।

**मुहा०**—आबनूस का कुंदा = अत्यंत काले रंग का मनुष्य।

**आबनूसी**—वि० [फ़ा०] १. आबनूस का सा काला। गहरा काला। २. आबनूस का बना हुआ।

**आबपाशी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिंचाई।

**आबरवाँ**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।

**आबरू**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] इज़्ज़त। प्रतिष्ठा। बड़प्पन। मान।

**आबला**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] छाला। फफोला।

**आब-हवा**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सरदी-गरमी, स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति। जल-वायु।

**आबाद**—वि० [फ़ा०] १ बसा हुआ। २ प्रसन्न। कुशलपूर्वक। ३. उपजाऊ। जोतने बोने योग्य (ज़मीन)।

**आबादकार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वे काश्तकार जो जंगल काटकर आबाद हुए हों।

**आबादानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अबादानी"।

**आबादी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बस्ती। २. जनसंख्या। मर्दुमशुमारी। ३. वह भूमि जिस पर खेती हो।

**आबी**—वि० [फ़ा०] १. पानी-संबंधी। पानी का। २. पानी में रहनेवाला। ३. रंग में हलका। फीका। ४. पानी के रंग का। हलका नीला या आस्मानी। ५. जलतटनिवासी।

संज्ञा पुं० समुद्र-लवण। साँभर नमक। संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें किसी प्रकार की आबपाशी होती हो। (खाकी का उलटा।)

**आब्दिक**—वि० [सं०] वार्षिक। सालाना।

**आभ**—संज्ञा स्त्री० दे० "आभा"। संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "आब"।

**आभरण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आभरित] १. गहना। आभूषण। जेवर। अलंकार। इनकी गणना १२ हैं—(१) नूपुर। (२) किंकिणी। (३) चूड़ी। (४) अंगूठी। (५) कंकण। (६) विजायठ। (७) हार। (८) कंठश्री। (९) बेसर। (१०) बिरिया। (११) टीका। (१२) सीसफूल। २. पोषण। परवरिश। पालन।

**आभरन***—संज्ञा पुं० दे० "आभरण"।

**आभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चमक। दमक। कांति। दीप्ति। २. झलक। प्रतिबिंब। छाया।

**आभार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बोझ। २ गृहस्थी का बोझ। गृह-प्रबंध की देख-भाल की जिम्मेदारी। ३. एक वर्णवृत्त। ४ एहसान। उपकार।

**आभारी**—वि० [सं० आभारिन्] जिसके साथ कोई उपकार किया गया हो। उपकृत।

**आभास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रतिबिंब। छाया। झलक। २. पता। संकेत। ३ मिथ्या ज्ञान। जैसे—रस्सी में सर्प का। ४ वह जो ठीक या असल न हो। वह जिसमें असल की कुछ झलक भर हो। जैसे, रसाभास, हेत्वाभास।

**आभासीन**—वि० [सं० आभास] आभास रूप में दिखाई देनेवाला।

**आभिजात्य**—संज्ञा पुं० [सं०] कुलीनों के लक्षण और गुण। कुल-संस्कार।

**आभीर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आभीरी] १. अहीर। ग्वाल। गोप। २. एक देश। ३. ११ मात्राओं का एक छंद। ४ एक रोग।

**आभीरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक संकर रागिनी। अबीरी। २. प्राकृत का एक भेद।

**आभूषण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आभूषित] गहना। ज़ेवर। आभरण। अलंकार।

**आभूषन***—संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।

**आभोग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रूप में कोई कसर न रहना। २. किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। पूर्ण लक्षण। ३ किसी पद्य के बीच कवि के नाम का उल्लेख।

**आभ्यतर**—वि० [सं०] भीतरी।

**आभ्यंतरिक**—वि० [सं०] भीतरी।

**आभ्युदयिक**—वि० [सं०] अभ्युदय, मंगल या कल्याण-संबंधी। संज्ञा पुं० [सं०] नांदीमुख श्राद्ध।

**आमंत्रण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमंत्रित] बुलाना। आह्वान। निमंत्रण। न्योता।

**आमंत्रित**—वि० [सं०] १. बुलाया हुआ। २. निमंत्रित। न्योता।

**आम**—संज्ञा पुं० [सं० आम्र] १.

एक बड़ा पेड़ जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान फल है। रसाल। २. इस पेड़ का फल।
यौ०—अमचूर। अमहर।
वि० [सं०] कच्चा। अपक्व। असिद्ध।
संज्ञा पुं० १. खाए हुए अन्न का कच्चा न पचा हुआ मल जो सफेद और लसीला होता है। आँव। २. वह रोग जिसमें आँव गिरती है।
वि० [अ०] १. साधारण। मामूली। २. जन-साधारण। जनता।
यौ०—आम खास=महलों के भीतर का वह भाग जहाँ राजा या बादशाह बैठते हैं। दरबार आम=वह राजसभा जिसमें सब लोग जा सकें।
३. प्रसिद्ध। विख्यात। (वस्तु या बात)
**आमड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० आम्रात] एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़े बेर के बराबर होते हैं।
**आमद**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. अवाई। आगमन। आना।
यौ०—आमद-रफ्त = आना-जाना। आवागमन।
२. आय। आमदनी।
**आमदनी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आय। प्राप्ति। आनेवाला धन। २. व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। रफ्तनी का उलटा। आयात।
**आमन**—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह भूमि जिसमें साल में एक ही फसल हो। २. जाड़े में होनेवाला धान।
**आमनाय**—संज्ञा पुं० दे० "आम्नाय"।
**आमना सामना**—संज्ञा पुं० [हिं० सामना] मुकाबिला। भेंट।
**आमने सामने**—क्रि० वि० [हिं० सामने] एक दूसरे के समक्ष या मुकाबिले में।
**आमय**—संज्ञा पुं० [सं०] रोग। बीमारी।
**आमरक्तातिसार**—संज्ञा पुं० [सं०] आँव और लहू के साथ दस्त होने का रोग।
**आमरख***—संज्ञा पुं० दे० "आमर्ष"।
**आमरखना***—क्रि० अ० [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।
**आमरण**—क्रि० वि० [सं०] मरण-काल तक। जिंदगी भर।
**आमरस**—संज्ञा पुं० दे० "अमरस"।
**आमर्दन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमर्दित] जोर से मलना, पीसना या रगड़ना।
**आमर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्रोध। गुस्सा। २. असहनशीलता। (रस में एक संचारी भाव)
**आमलक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्प० आमलकी] आँवला। धात्री-फल।
**आमलकी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी जाति का आँवला। आँवली।
**आमला**†—संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।
**आमवात**—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें आँव गिरती है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।
**आमशूल**—संज्ञा पुं० [सं०] आँव के कारण पेट में मरोड़ होने का रोग।
**आमातिसार**—संज्ञा पुं० [सं०] आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।
**आमात्य**—संज्ञा पुं० दे० "अमात्य"।
**आमादगी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] तैयारी। मुस्तैदी। तत्परता।
**आमादा**—वि० [फा०] उद्यत। तत्पर। उतारू। तैयार। सन्नद्ध।
**आमान्न**—संज्ञा पुं० [सं०] कच्चा और बिना पकाया हुआ अन्न। सीधा। रसद।
**आमाल**—संज्ञा पुं० [अ०] कर्म। करनी।
**आमालनामा**—संज्ञा पुं० [अ०] वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चाल-चलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।
**आमाशय**—संज्ञा पुं० [सं०] पेट के भीतर की वह थैली जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।
**आमाहल्दी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आम्रहरिद्रा] एक पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह और गंध में कचूर की तरह होती है।
**आमिख**—संज्ञा पुं० दे० "आमिष"।
**आमिर***—संज्ञा पुं० दे० "आमिल"
**आमिल**—संज्ञा पुं० [अ०] १. काम करनेवाला। २ कर्त्तव्य-परायण। ३. अमला। कर्मचारी। ४. हाकिम। अधिकारी। ५. ओझा। सयाना। ६. पहुँचा हुआ फ़कीर। सिद्ध।
वि० [संज्ञा अम्ल] खट्टा। अम्ल।
**आमिष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मांस। गोश्त। २. भोग्य वस्तु। ३ लोभ। लालच।
**आमिषप्रिय**—वि० [सं०] जिसे मांस प्यारा हो।
**आमिषाशी**—वि० [सं० आमिषाशिन्] [स्त्री० आमिषाशिनी] मांस-भक्षक। मांस खानेवाला।
**आमी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आम] १. छोटा कच्चा आम। अँबिया। २. एक पहाड़ी पेड़।
संज्ञा स्त्री० [सं० आम=कच्चा] जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी बाल।
**आमुख**—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक की प्रस्तावना।
**आमेजना***—क्रि० सं० [फा० आमेज़] मिलाना। सानना।
**आमोख्ता**—संज्ञा पुं० [फा० आमोख्तः] पढ़े हुए पाठ की आवृत्ति।

उदरणी।

**आमोद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आमोदित, आमोदी] १ आनंद। हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २. दिलबहलाव। तफ़रीह।

**आमोद प्रमोद**—संज्ञा पुं० [सं०] भोगविलास। हँसी-खुशी।

**आमोदित**—वि० [सं०] १ प्रसन्न। खुश। २. दिल लगा हुआ। जी बहला हुआ।

**आमोदी**—वि० [सं०] [स्त्री० आमोदिनी] प्रसन्न रहनेवाला। खुश रहनेवाला।

**आम्नाय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभ्यास। २ परंपरा।

**यौ०**—अक्षराम्नाय=वर्णमाला। कुलाम्नाय=कुलपरंपरा। कुल की रीति। ३ वेद आदि का पाठ और अभ्यास। ४. वेद।

**आम्र**—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ या फल।

**आम्रकूट**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत जिसे अमरकंटक कहते हैं।

**आयँती पायँती**†—संज्ञा स्त्री० [सं० अग्र+फ़ा० पायताना] सिरहाना। पायताना।

**आय**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आमदनी। आमद। लाभ। प्राप्ति। धनागम।

**यौ०**—आयव्यय=आमदनी और खर्च।

**आयत**—वि० [सं०] विस्तृत। लंबा-चौड़ा। दीर्घ। विशाल।

संज्ञा स्त्री० [अ०] इंजील या कुरान का वाक्य।

**आयतन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ मकान। घर। मंदिर। २ ठहरने की जगह। ३. देवताओं की वंदना की जगह। किसी पदार्थ का वह आकार या विस्तार जिसके कारण वह कुछ स्थान घेरता है।

**आयत्त**—वि० [सं०] अधीन।

**आयत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अधीनता।

**आयद**—वि० [अ०] १. आरोपित। लगाया हुआ। २. घटित। घटता हुआ।

**आयस**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयसी] १. लोहा। २. लोहे का कवच।

**आयसी**—वि० [सं० आयसीय] लोहे का।

संज्ञा पुं० [सं०] कवच। ज़िरहबक्तर।

**आयसु***—संज्ञा स्त्री० [सं० आदेश] आज्ञा। हुक्म।

*संज्ञा स्त्री० दे० "आयुष्य"।

**आया**—क्रि० अ० [हिं० आना] आना का भूतकालिक रूप।

संज्ञा स्त्री० [पुर्त०] अँगरेज़ों के बच्चों को दूध पिलाने और उनकी रक्षा करनेवाली स्त्री। धाय। धात्री।

अव्य० [फ़ा०] क्या। कि। (व्रज० 'कैधों' के समान) जैसे, आया तुम जाओगे या नहीं।

**आयात**—संज्ञा पुं० [सं०] देश में बाहर से आया हुआ माल।

**आयाम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंबाई। विस्तार। २. नियमित करने की क्रिया। नियमन। जैसे, प्राणायाम।

**आयास**—संज्ञा पुं० [सं०] परिश्रम। मेहनत।

**आयु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वय। उम्र। जिंदगी। जीवन-काल।

**मुहा०**—आयु खुटाना = आयु कम होना।

**आयुध**—संज्ञा पुं० [सं०] हथियार। शस्त्र।

**आयुर्बल**—संज्ञा पुं० [सं०] आयुष्य। उम्र।

**आयुर्वेद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आयुर्वेदीय] आयु संबंधी शास्त्र। चिकित्सा-शास्त्र। वैद्य-विद्या।

**आयुष्मान्**—वि० [सं०] [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरंजीवी।

**आयुष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] आयु। उम्र।

**आयोगव**—संज्ञा पुं० [सं०] वैश्य वर्ण की स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति। बढ़ई। (स्मृति)

**आयोजन**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आयोजना। वि० आयोजित] १. किसी कार्य में लगाना। नियुक्ति। २ प्रबंध। इंतज़ाम। तैयारी। ३. उद्योग। ४. सामग्री। सामान।

**आयोजना**—संज्ञा स्त्री० दे० "आयोजन"।

**आरंभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी कार्य्य की प्रथमावस्था का संपादन। अनुष्ठान। उत्थान। शुरू। २. किसी वस्तु का आदि। ३. उत्पत्ति। आदि। शुरू का हिस्सा।

**आरंभना**†—क्रि० अ० [सं० आरंभण] शुरू होना।

क्रि० स० आरंभ करना।

**आर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बिना साफ़ किया निकृष्ट लोहा। २. पीतल। ३ किनारा। ४. कोना। ५. पहिए का आरा। ६. हरताल।

संज्ञा स्त्री० [सं० अल = डंक] १. लोहे की पतली कील जो सौंटे या पैने में लगी रहती है। अनी। पैनी। २. नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३. बिच्छू, भिड़ या मधुमक्खी आदि का डंक।

संज्ञा स्त्री० [सं० आरा] चमड़ा छेदने का सूआ या टेकुआ। सुतारी।

†संज्ञा पुं० [हिं० अड़] ज़िद। हठ।

†संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तिरस्कार। घृणा। २ अदावत। वैर। ३. शर्म। लज्जा।

**आरक्त**—वि० [सं०] १. ललाई लिए हुए। कुछ लाल। २. लाल।

**आरण्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अभिलताष।

**आरज***—वि० दे० "आर्य"।

**आरजा**—संज्ञा पुं० [ अ० आरिज़ः] रोग। बीमारी।

**आरजू**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. इच्छा। वांछा। २. अनुनय। विनय। विनती।

**आरण्य**—वि० [ सं० ] जंगली। वन का।

**आरण्यक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० आरण्यकी ] वन का। जंगली।

संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिये उपयोगी उपदेश हैं।

**आरत***—वि० दे० "आर्त"।

**आरति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विरक्ति। २. दे० "आर्ति"।

**आरती**—संज्ञा स्त्री० [सं० आरात्रिक] १. किसी मूर्त्ति के ऊपर दीपक को घुमाना। नीराजन। (षोडशोपचार पूजन में) २. वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३. वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।

**आरन***—संज्ञा पुं० [ सं० अरण्य ] जंगल। वन।

**आर-पार**—संज्ञा पुं० [सं० आर=किनारा + पार = दूसरा किनारा ] यह किनारा और वह किनारा। यह छोर और वह छोर।

क्रि० वि० [सं०] एक किनारे से दूसरे किनारे तक। एक तल से दूसरे तल तक जैसे, आर-पार जाना या छेद होना।

**आरबल***, **आरबला**—संज्ञा पु० दे० "आयुर्बल"।

**आरब्ध**—वि० [ सं० ] आरंभ किया हुआ।

**आरभटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. क्रोधादिक उग्र भावों की चेष्टा। २. नाटक में एक वृत्ति जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है और जिसका व्यवहार इंद्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रौद्र, भयानक और बीभत्स रस आदि में होता है।

**आरव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ शब्द। आवाज़। २. आहट।

**आरषी***—वि० स्त्री० [ सं० आर्ष ] आर्ष। ऋषियों की।

**आरस***—संज्ञा पु० दे० "आलस्य"।

संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।

**आरसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आदर्श ] १. शीशा। आईना। दर्पण। २ शीशा जड़ा कटोरीदार छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।

**आरा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० अल्पा आरी ] १. लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है। २. चमड़ा सीने का टेकुआ या सूजा। सुतारी।

संज्ञा पु० [ सं० आर ] लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है।

**आराइश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सजावट।

**यौ०**—आराइशी सामान = कमरे की सजावट का सामान जैसे मेज, कुरसी आदि।

**आराकश**—संज्ञा पु० [ हि० आरा+ फ़ा० कश ] वह जो आरे से लकड़ी चीरता हो।

**आराज़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. भूमि। ज़मीन। २ खेत।

**आराति**—संज्ञा पु० [ सं० ] शत्रु। वैरी।

**आराधक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० आराधिका ] उपासक। पूजा करने वाला।

**आराधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य ] १. सेवा। पूजा। उपासना। २ तोषण। प्रसन्न करना।

**आराधना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूजा। उपासना।

*क्रि० स० [ सं० आराधन ] १ उपासना करना। पूजना। २ संतुष्ट करना प्रसन्न करना।

**आराधनीय**—वि० [ सं० ] आराधना करने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

**आराधित**—वि० [ सं० ] जिसकी आराधना की गई हो।

**आराध्य**—वि० [ सं० ] १ जिसकी आराधना की जाय। २ आराधना करने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

**आराम**—संज्ञा पु० [ सं० ] बाग। उपवन।

संज्ञा पु० [फ़ा०] १ चैन। सुख। २ चंगापन। मेहत। स्वास्थ्य। ३ विश्राम थकावट मिटाना। दम लेना।

**मुहा०**—आराम करना=सोना। आराम में होना =सोना। आराम लेना=विश्राम करना। आराम से = फुरसत में। धीरे धीरे।

वि० [फ़ा०] चंगा। तंदुरुस्त। स्वस्थ।

**आराम-कुरसी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा०+ अ० ] एक प्रकार की लंबी कुरसी।

**आरामगाह**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. विश्राम करने का स्थान। २ सोने की जगह।

**आराम-तलब**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा आराम-तलबी ] १ सुख चाहनेवाला। सुकुमार। २ सुस्त। आलसी।

**आरास्ता**—वि० [ फ़ा० ] सजा हुआ।

**आरि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अड़ ] ज़िद। हठ।

**आरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आरा का अल्पा०] १. लकड़ी चीरने का बढ़ई का एक औज़ार। छोटा आरा। २. लोहे की एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक में लगी रहती है। ३. जूता सीने का सूआ। सुतारी।

*संज्ञा स्त्री० [सं० आर=किनारा] १. ओर। तरफ। २. कोर। अवैंठ।

**आरुण्य**—संज्ञा पु० [सं०] 'अरुण' का भाव। अरुणता। लाली।

**आरूढ़**—वि० [सं०] [भाव० आरूढ़ता] १. चढ़ा हुआ। सवार। २. दृढ़। स्थिर। किसी बात पर जमा हुआ। ३. सन्नद्ध। तत्पर। उतारू।

**आरूढ़यौवना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मध्या नायिका के चार भेदों में से एक।

**आरो***—संज्ञा पुं० दे० "आरव"।

**आरोगना***—क्रि० स० [सं० आ + रोगना (रुज्=हिंसा)] भोजन करना। खाना।

**आरोग्य**—संज्ञा पु० नीरोग रहने का का भाव। स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती।

**आरोधना***—क्रि० स० [सं० आ+रुधन] रोकना। छेंकना। आड़ना।

**आरोप**—संज्ञा पु० [सं०] १. स्थापित करना। लगाना। मढ़ना। जैसे दोषारोप। २ एक पेड़ को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ झूठी कल्पना। ४ एक पदार्थ मे दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना। (साहित्य)

**आरोपण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोपित, आरोप्य] १. लगाना। स्थापित करना। मढ़ना। २. पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३ किसी वस्तु में स्थित गुण को दूसरी वस्तु में मानना। ४. मिथ्या-ज्ञान।

**आरोपना***—क्रि० स० [सं० आरोपण] १. लगाना। २. स्थापित करना।

**आरोपित**—वि० [सं०] १. लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। २. रोपा हुआ।

**आरोह**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोही] १ ऊपर की ओर गमन। चढ़ाव। २. आक्रमण। चढ़ाई। ३. घोड़े हाथी आदि पर चढ़ना। सवारी। ४. वेदांत में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५. कारण से कार्य्य का प्रादुर्भाव या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति। जैसे—बीज से अंकुर। ६ क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। आविर्भाव। विकास। (आधुनिक) ७ नितंब। ८. संगीत में स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचा स्वर निकालना।

**आरोहण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आरोहित] चढ़ना। सवार होना।

**आरोही**—वि० [सं० आरोहिन्] [स्त्री० आरोहिणी] चढ़नेवाला। ऊपर जानेवाला।

संज्ञा पु० १. संगीत में वह स्वर-साधन जो षड्ज से लेकर निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाय। २. सवार।

**आर्जव**—संज्ञा पु० [सं०] १ सीधापन। ऋजुता। २ सरलता। सुगमता। ३. व्यवहार की सरलता।

**आर्त्त**—वि० [सं०] १ पीड़ित। चोट खाया हुआ। २. दुखी। कातर। ३ अस्वस्थ।

**आर्त्तता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पीड़ा। दर्द। २ दुःख। क्लेश।

**आर्त्तनाद**—संज्ञा पु० [सं०] दुःखसूचक शब्द। पीड़ा में निकली हुई ध्वनि।

**आर्त्तव**—वि० [सं०] [स्त्री० आर्त्तवी] ऋतु में उत्पन्न। मौसिमी। सामयिक।

**आर्त्तस्वर**—संज्ञा पु० [सं०] दुःखसूचक शब्द।

**आर्थिक**—वि० [सं०] धन-संबंधी। द्रव्य-संबंधी। रुपए पैसे का। माली।

**आर्थी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कैतवापह्नुति"।

**आर्द्र**—वि० [सं०] [संज्ञा आर्द्रता] १. गीला। ओदा। तर। २. सना। लथपथ।

**आर्द्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताइस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र। २. वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है। आषाढ़ के आरंभ का काल। ३. ग्यारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति। ४. अदरक।

**आर्य्य**—वि० [सं०] [स्त्री० आर्य्या] १. श्रेष्ठ। उत्तम। २. बड़ा। पूज्य। ३. श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। मान्य।

संज्ञा पु० [सं०] १. श्रेष्ठ पुरुष। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। २ मनुष्यों की एक जाति जिसने संसार में बहुत पहले सभ्यता प्राप्त की थी।

**आर्य्यपुत्र**—संज्ञा पु० [सं०] पति का संबोधन करने का शब्द। (प्राचीन)

**आर्य्यत्व**—संज्ञा पु० [सं०] आर्य्य या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने का भाव। आर्यपन।

**आर्य्यसमाज**—संज्ञा पु० [सं०] एक धार्मिक तथा सामाजिक सुधार की संस्था जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे।

**आर्य्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २ सास। ३. दादी। पितामही। ४. एक अर्द्ध-मात्रिक छंद।

**आर्य्या गीत**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।

**आर्य्यावर्त्त**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० आर्य्यावर्तीय] उत्तरी भारत।

**आर्ष**—वि० [सं०] १. ऋषि-संबंधी।

२. ऋषि-प्रणीत । ऋषि-कृत । ३. वैदिक ।

**आर्ष प्रयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] शब्दों का वह व्यवहार जो व्याकरण के नियम के विरुद्ध हो, पर प्राचीन ग्रंथों में मिले ।

**आर्ष विवाह**—संज्ञा पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में तीसरा, जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेता था । कन्या ।

**आलंकारिक**—वि० [सं०] १. अलंकारसंबंधी । २. अलंकारयुक्त । ३. अलंकार जाननेवाला ।

**आलंग**—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ियों की मस्ती ।

**आलंब**—संज्ञा पुं० [सं०] १ अवलंब । आश्रय । सहारा । २. गति । शरण ।

**आलंबन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलंबित] १ सहारा । आश्रय । अवलंब । २. रस में वह वस्तु जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है । वह जिसके प्रति किसी भाव का होना कहा जाय । जैसे,—शृंगार रस में नायक और नायिका, रौद्र रस में शत्रु । ३. बौद्ध मत में किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान । ४ साधन । कारण ।

**आलंभ, आलंभन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. छूना । २. पकड़ना । ३. मारण । वध ।

**आल**—संज्ञा पुं० [सं०] हरताल ।
संज्ञा स्त्री० [सं० अल् = भूषित करना] १. एक पौधा जिसकी छाल और जड़ से लाल रंग निकलता है । २ इस पौधे से बना हुआ रंग ।
संज्ञा पुं० [अनु०] झंझट । बखेड़ा ।
संज्ञा पुं० [सं० आर्द्र] १. गीलापन । तरी । २. आँसू ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बेटी की संतति ।
यौ०—आल-औलाद = बाल-बच्चे । २. संतान । ३. वंश । कुल । खानदान ।

**आलकस**—संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

**आल-जाल**—वि० [हिं० आल = झंझट] व्यर्थ का । ऊटपटाँग ।

**आलथी पालथी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पालथी] बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एँड़ी दाएँ जंघे पर और बाईं एँड़ी दाहिने जंघे पर रखते हैं ।

**आलन**—संज्ञा पुं० [?] १. दीवार की मिट्टी में मिलाया जानेवाला घास-भूसा । साग में मिलाया जानेवाला आटा या बेसन ।

**आलपीन**—संज्ञा स्त्री० [पुर्त० आलफिनेट] एक घुंडीदार सुई जिससे कागज़ आदि के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं ।

**आलबाल**—संज्ञा पुं० दे० "आलवाल"।

**आलम**—संज्ञा पुं० [अ०] १ दुनिया । संसार । २ अवस्था । दशा । ३ जन-समूह ।

**आलमारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अलमारी"।

**आलय**—संज्ञा पुं० [सं०] १ घर । मकान । २ स्थान ।

**आलवाल**—संज्ञा पुं० [सं०] थाला । अथाल ।

**आलस**—वि० [सं०] आलसी । सुस्त ।
*संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

**आलसी**—वि० [हिं० आलस] सुस्त । काहिल ।

**आलस्य**—संज्ञा पुं० [सं०] कार्य्य करने में अनुत्साह । सुस्ती । काहिली ।

**आला**—संज्ञा पुं० [सं० आलय] ताक । ताखा । अरवा ।
वि० [अ०] सबसे बढ़िया । श्रेष्ठ ।
संज्ञा पुं० [अ० आलः] औज़ार । हथियार ।
*वि० [सं० आर्द्र] गीला । ओदा ।

**आलाइश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गंदी वस्तु । मल । गलीज ।

**आलान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या जंजीर । २. बंधन ।

**आलाप**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलापक, आलापित] १. कथोपकथन । संभाषण । बात-चीत । २. संगीत के सात स्वरों का साधन । तान ।

**आलापक**—वि० [सं०] १ बात-चीत करनेवाला । २. गानेवाला ।

**आलापचारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० आलाप+चारी] स्वरों को साधना या तान लड़ाना ।

**आलापना**—क्रि० स० [सं०] गाना । सुर खींचना । तान लड़ाना ।

**आलापिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँसुरी ।

**आलापी**—वि० [सं० आलापिन्] [स्त्री० आलापिनी] १. बोलनेवाला । २. अलाप लेनेवाला । तान लगानेवाला । गानेवाला ।

**आलारासी**—वि० [?] १ लापरवाह । २ जिसमें या जहाँ ला-परवाही हो ।

**आलिंगन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलिंगित] गले से लगाना । परिरंभण ।

**आलिंगना***—क्रि० स० [सं० आलिंगन] भेंटना । लपटना । गले लगाना ।

**आलि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सखी । सहेली । २ बिच्छू । ३. भ्रमरी । ४. पंक्ति । अवली ।

**आलिम**—वि० [अ०] विद्वान् । पंडित ।

**आली**—संज्ञा स्त्री० [सं० आलि] सखी ।
*वि० स्त्री० [सं० आर्द्र] भीगी हुई ।
वि० [अ०] बड़ा । उच्च । श्रेष्ठ ।

**आलीजाह**—वि० [अ०] बहुत ऊँचे पद या मर्यादावाला ।

**आलीशान**—वि० [अ०] भव्य । भड़कीला । शानदार । विशाल ।

**आलू**—संज्ञा पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद जो बहुत खाया जाता है ।

**आलूचा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० आलूचः] १ एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादि में बहुत खाया जाता है । २. पेड़ का

फल। मोटिया बदाम। गर्दालू।

**आलूबुखारा**-संज्ञा पुं०[फ़ा०] आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल।

**आलेख**-संज्ञा पुं० [सं०][वि० अ.लेख्य] लिखावट। लिपि।

**आलेखन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ लिखना। लिखाई। २ चित्र अंकित करना।

**आलेख्य**—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र। तसवीर।

**यौ०**—आलेख्य विद्या = चित्रकारी। वि० लिखने योग्य।

**आलेप**—संज्ञा पुं० [सं०] लेप। पलस्तर।

**आलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोक्य, आलोकित] १. प्रकाश। चाँदनी। उजाला। रोशनी। २ चमक ज्योति।

**आलोकन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश डालना। २. चमकाना। ३. दिखलाना।

**आलोकित**—वि० [सं०] १ जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो। २. चमकता हुआ।

**आलोचक**—वि० [सं०] [स्त्री० आलोचिका] १ देखनेवाला। २ जो आलोचना करे।

**आलोचन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दर्शन। २. गुण दोष का विचार। विवेचन।

**आलोचना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० आलोचित] किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार।

**आलोड़न**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आलोड़ित] १. मथना। हिलोरना। २. विचार।

**आलोड़ना***—क्रि० स० [सं० आलोड़न] १. मथना। २. हिलोरना। ३. खूब सोचना-विचारना। ऊहापोह करना।

**आल्हा**—संज्ञा पुं० [देश०] १. ३१ मात्राओं का एक छंद। वीर छंद। २. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३ बहुत लंबा-चौड़ा वर्णन।

**आव***—संज्ञा स्त्री० [सं० आयु] आयु।

**आवज, आवझ**—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

**आवटना***—संज्ञा पुं० [सं० आवर्त्त] १ हलचल। उथल-पुथल। अस्थिरता संकल्प-विकल्प। ऊहापोह।

**आवन***—संज्ञा पुं० [सं० आगमन] आगमन। आना।

**आवभगत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आवना + भक्ति] आदर-सत्कार।

**आवरण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवरित, आवृत] १. आच्छादन। ढकना। २ वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो। बेठन। ३ परदा। ४ ढाल। ५. दीवार इत्यादि का घेरा। ६. चलाए हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र।

**आवरण-पत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कागज जो किसी पुस्तक के ऊपर लगा रहता है और जिस पर पुस्तक का नाम रहता है।

**आवरण-पृष्ठ**—संज्ञा पुं० दे० "आवरण-पत्र"।

**आवर्जन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवर्जित] छोड़ देना। परित्याग।

**आवर्जना**—संज्ञा स्त्री० दे० "आवर्जन"।

**आवर्त्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पानी का भँवर। २. वह बादल जिससे पानी न बरसे। ३. एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त। लाजवर्द। ४. सोच-विचार। चिंता।

वि० घूमा हुआ। मुड़ा हुआ।

**आवर्त्तन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आवर्त्तनीय, आवर्तित] १. चक्कर देना। फिराव। घुमाव। मथना। हिलाना।

**आवर्दा**—वि० [फ़ा०] १ लाया हुआ। २ कृपापात्र।

**आवलि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।

**आवली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। श्रेणी। २ वह युक्ति या विधि जिसके द्वारा खेत की उपज का अंदाज होता है।

**आवश्यक**—वि० [सं०] १. जिसे अवश्य होना चाहिए। जरूरी। २. प्रयोजनीय। जिसके बिना काम न चले।

**आवश्यकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ज़रूरत। अपेक्षा। २. प्रयोजन। मतलब।

**आवश्यकीय**—वि० [सं०] जरूरी।

**आवस***—संज्ञा स्त्री० [हिं० अवस = आम] तरेल।

**आवाँ**—संज्ञा पुं० [सं० आपाक] गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

**आवागमन**—संज्ञा पुं० [हिं० आवा = आना + सं० गमन] १. आना-जाना। २. बार बार मरना और जन्म लेना।

**यौ०**—आवागमन से रहित = मुक्त।

**आवागवन***—संज्ञा पुं० दे० 'आवागमन"।

**आवाज़**-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०, मिलाओ सं० आवाद्य] १. शब्द। ध्वनि। नाद। २ बोली। वाणी। स्वर।

**मुहा०**—आवाज़ उठाना = विरुद्ध कहना। आवाज़ देना = ज़ोर से पुकारना। आवाज़ बैठना = कफ के कारण स्वर साफ़ न निकलना। गला बैठना। आवाज़ भारी होना = कफ के कारण

कंठ का स्वर विकृत होना।

**आवाज़ा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बोली ठोली। ताना। व्यंग्य।

**आवाजाही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० आना + जाना।] आना-जाना।

**आवारगी**—संज्ञा स्त्री० दे० "आवारापन"।

**आवारजा**—संज्ञा पुं० दे० "अवारजा"।

**आवारा**—वि० [ फ़ा० ] १. व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा। २. बेठौर ठिकाने का। उठल्लू। ३. बदमाश। लुच्चा।

**आवारागर्द**—वि० [ फ़ा० ] व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला। उठल्लू। निकम्मा।

**आवारापन**—संज्ञा पुं० [फ़ा० आवारा + हिं० पन ] आवारा होने का भाव। शुहदापन।

**आवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ रहने की जगह। निवास-स्थान। २. मकान। घर।

**आवाहन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मंत्र-द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य्य २. निमंत्रित करना। बुलाना।

**आविद्ध**—वि० [ सं० ] १ छिदा हुआ। भेदा हुआ। २. फेंका हुआ। संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

**आविर्भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० आविर्भूत ] १. प्रकाश। प्राकट्य। २ उत्पत्ति। ३. आवेश। संचार।

**आविर्भूत**—वि० [ सं० ] १ प्रकाशित। प्रकटित। २. उत्पन्न।

**आविल**—वि० [ सं० ] १ मलिन। गदला। २. अशुद्ध। अपवित्र। ३ काले, या धूमिल रंग का।

**आविष्कर्त्ता**—वि० [सं० आविष्कर्त्ता] [ आविष्कर्त्री ] आविष्कार करनेवाला।

**आविष्कार**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० आविष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] १. प्राकट्य। प्रकाश। २. कोई वस्तु तैयार करना जिसके बनाने की युक्ति पहले किसी को न मालूम रही हो। ईजाद। ३. किसी बात का पहले-पहल पता लगाना।

**आविष्कारक**—वि० दे० "आविष्कर्त्ता"।

**आविष्कृत**—वि० [ सं० ] १. प्रकाशित। प्रकटित। २. पता लगाया हुआ। जाना हुआ। ३. ईजाद किया हुआ।

**आविष्क्रिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "आविष्कार"।

**आवृत**—वि० [ सं० ] [स्त्री० आवृता] १. छिपा हुआ। ढका हुआ। २. लपेटा या घिरा हुआ।

**आवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. बार बार किसी बात का अभ्यास। २ पढ़ना। ३ किसी पुस्तक का पहली बार या फिर से ज्यों का त्यों छपना। संस्करण।

**आवेग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चित्त की प्रबल वृत्ति। मन का झोंक। जोर। जोश। २ रस के संचारी भावों में से एक। अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता। घबराहट। ३ मनोविकार।

**आवेदक**—वि० [ सं० ] निवेदन करनेवाला।

**आवेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] अपनी दशा को सूचित करना। निवेदन। अर्जी।

**आवेदनपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र या कागज जिसपर कोई अपनी दशा लिखकर सूचित करे। अरजी।

**आवेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याप्ति। संचार। दौरा। २. प्रवेश। ३. चित्त। प्रेरणा। झोंक। वेग। जोश। ४. भूत-प्रेत की बाधा। ५. मृगी रोग।

**आवेष्टन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आवेष्टित ] १. छिपाने या ढँकने का कार्य्य। २. छिपाने, लपेटने या ढँकने की वस्तु।

**आशंका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० आशंकित ] १ डर। भय। २. शक। संदेह। ३. अनिष्ट की भावना।

**आशंसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [वि० आशंसित ] १ आशा। २. इच्छा। कामना। ३. संभावना। ४. संदेह। शक। ५. प्रशंसा। तारीफ। ६. अभ्यर्थना। आदर-सत्कार।

**आशना**—संज्ञा उभ० [फ़ा० आश्ना] १ जिससे जान-पहचान हो। २. चाहनेवाला। प्रेमी।

**आशनाई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० आश्नाई] १ जान-पहचान। २ प्रेम। प्रीति। दोस्ती। ३ अनुचित संबंध।

**आशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २ वासना। इच्छा। ३. उद्देश्य। नीयत।

**आशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अप्राप्त के पाने की इच्छा और थोड़ा बहुत निश्चय। उम्मीद। २. अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के कुछ निश्चय से उत्पन्न संतोष। ३ दिशा। ४. दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

**आशातीत**—वि० [ सं० आशा + अतीत ] आशा से बढ़कर। बहुत अधिक।

**आशिक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ भाव० आशिकी, आशिकाना ] प्रेम करनेवाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।

**आशिकाना**—वि० [अ० आशिक़ानः] १. आशिकों का सा। २. प्रेम-पूर्ण।

**आशिकी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. प्रेम का व्यवहार । २. आशिक या आसक्त होना । आसक्ति ।

**आशिष**—संज्ञा स्त्री [सं०] १. आशीर्वाद । आसीस । दुआ । २. एक अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिये प्रार्थना होती है ।

**आशिषाक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह काव्यालंकार जिसमें दूसरे का हित दिखलाते हुए ऐसी बातों के करने की शिक्षा दी जाती है जिनसे वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो । ( केशव ) ।

**आशी**—वि० [ सं० आशिन् ] [स्त्री० आशिनी ] खानेवाला । भक्षक ।

**आशीर्वाद**—संज्ञा पुं० [सं०] कल्याण या मंगलकामना-सूचक वाक्य । आशिष । दुआ ।

**आशीविष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साँप ।

**आशु**—क्रि० वि० [ सं० ] शीघ्र । जल्द ।

**आशु कवि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो तत्क्षण कविता कर सके ।

**आशुग**—वि० [ सं० ] जल्दी चलनेवाला ।

वि० १. वायु । हवा । २. बाण । तीर ।

**आशुतोष**—वि० [ सं० ] शीघ्र संतुष्ट होनेवाला । जल्दी प्रसन्न होनेवाला ।

संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

**आश्चर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आश्चर्यित ] १. वह मनोविकार जो किसी नई अभूतपूर्व या असाधारण बात को सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है । अचंभा । विस्मय । तअज्जुब । २. रस के नौ स्थायी भावों में से एक ।

**आश्चर्यित**—वि० [ सं० ] चकित ।

**आश्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आश्रमी ] १. ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान । तपोवन । २. साधु-संत के रहने की जगह । ३. विश्राम-स्थान । ठहरने की जगह । ४ स्मृति में कही हुई हिंदुओं के जीवन की चार अवस्थाएँ—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास ।

**आश्रमी**—वि० [ सं० ] १. आश्रम-संबंधी । २. आश्रम में रहनेवाला । ३. ब्रह्मचर्य्यादि चार आश्रमों में से किसी को धारण करनेवाला ।

**आश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आश्रयी, आश्रित ] १. आधार । सहारा । अवलंब । २. आधार वस्तु । वह वस्तु जिसके सहारे पर कोई वस्तु हो । ३. शरण । पनाह । ४. जीवन-निर्वाह का हेतु । भरोसा । सहारा । ५. घर ।

**आश्रयी**—वि० [ सं० आश्रयिन् ] आश्रय लेने या पानेवाला । सहारा लेने या पानेवाला ।

**आश्रित**—वि० [ सं० ] १. सहारे पर टिका हुआ । ठहरा हुआ । २. भरोसे पर रहनेवाला । अधीन । ३. सेवक ।

**आश्लेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मिलावट ।

**आश्लेषा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्लेषा नक्षत्र ।

**आश्वस्त**—वि० [सं०] जिसे आश्वासन मिला हो । जिसे तसल्ली दी गई हो ।

**आश्वास, आश्वासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आश्वासनीय, आश्वासित, आश्वास्य ] दिलासा । तसल्ली । सांत्वना ।

**आश्विन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह महीना जिसकी पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र में पड़े । कुआर का महीना ।

**आषाढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो । असाढ़ । २. ब्रह्मचारी का दंड ।

**आषाढ़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।

**आषाढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आषाढ़ मास की पूर्णिमा । गुरुपूजा ।

**आसंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. साथ । संग । २. लगाव । संबंध । ३. आसक्ति ।

**आसंदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काठ की छोटी चौकी ।

**आस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आशा ] १. आशा । उम्मेद । २. लालसा । कामना । ३. सहारा । आधार । भरोसा ।

**आसकत**—संज्ञा स्त्री० [सं० आसक्ति] [ वि० आसकती; क्रि० आसकताना] सुस्ती । आलस्य ।

**आसकती**—वि० दे० "आलसी" ।

**आसक्त**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा आसक्ति ] १. अनुरक्त । लीन । लिप्त । २ मोहित । लुब्ध । मुग्ध ।

**आसक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनुरक्ति । लिप्तता । २. लगन । चाह । प्रेम ।

**आसते***—क्रि० वि० दे० "आहिस्ता" ।

**आसत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सामीप्य । निकटता । २. अर्थ-बोध के लिये बिना व्यवधान के एक दूसरे से संबंध रखनेवाले दो पदों या शब्दों का पास पास रहना ।

**आसन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिति । बैठने की विधि । बैठने का ढब । बैठक । हठयोग की क्रिया ।

**मुहा०**—आसन उखड़ना = अपनी जगह से हिल जाना । घोड़े की पीठ पर रान न जमना । आसन कसना = अंगों को तोड़ मरोड़ कर बैठना । आसन छोड़ना = उठ जाना ( आदरार्थ ) । आसन जमना = जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे, उसी स्थान पर उसी रीति से स्थिर रहना । बैठने

में स्थिर भाव आना। आसन डिगना या डोलना=१. बैठने में स्थिर भाव न रहना। २. चित्त चलायमान होना। मन डोलना। आसन डिगाना=१ जगह से विचलित करना। २ चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। आसन देना=सत्कारार्थ बैठने के लिये कोई वस्तु रख देना या बतला देना।

२. वह वस्तु जिसपर बैठें। ३. ठिकाना। निवास। डेरा। ४ चूतड़। ५ हाथी का कंधा जिसपर महावत बैठता है। ६. सेना का शत्रु के सामने डटे रहना।

**आसना***—क्रि० अ० [ सं० अस्=होना ] होना।

**आसनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आसन ] छोटा आसन। छोटा बिछौना।

**आसन्न**—वि० [ सं० ] निकट आया हुआ। समीपस्थ। प्राप्त।

**आसन्नभूत**—संज्ञा पु० [ सं० ] भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्त्तमान से उसकी समीपता पाई जाय। जैसे—मैं रहा हूँ।

**आसपास**—क्रि० वि० [ अनु० आस+सं० पार्श्व ] चारों ओर। निकट। इधर-उधर।

**आसमान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० आसमानी ] १ आकाश। गगन। २. स्वर्ग। देवलोक।

**मुहा०**—आसमान के तारे तोड़ना=कोई कठिन या असंभव काम करना। आसमान टूट पड़ना=किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। वज्रपात होना। आसमान पर उड़ना=१. इतराना। गुरूर करना। २. बहुत ऊँचे ऊँचे संकल्प बाँधना। आसमान पर चढ़ना=गुरूर करना। घमंड दिखाना। आसमान पर चढ़ाना=१. अत्यंत प्रशंसा करना। २. अत्यंत प्रशंसा करके मिजाज़ बिगाड़ देना। आसमान में थिगली लगाना=विकट कार्य्य करना। आसमान सिर पर उठाना=१. ऊधम मचाना। उपद्रव मचाना। २. हलचल मचाना। खूब आंदोलन करना। दिमाग आसमान पर होना=बहुत अभिमान होना।

**आसमानी**—वि० [ फ़ा० ] १ आकाश संबधी। आकाशीय। आसमान का। २ आकाश के रंग का। हलका नीला। ३ दैवी। ईश्वरीय।

संज्ञा स्त्री० ताड़ के पेड़ से निकाला हुआ मद्य। ताड़ी।

**आसमुद्र**—क्रि० वि० [ सं० ] समुद्र-पर्यंत। समुद्र के तट तक।

**आसय***—संज्ञा पुं० दे० "आशय"।

**आसरना***—क्रि० स० [ हिं० आसरा ] आश्रय लेना। सहारा लेना।

**आसरा**—संज्ञा पु० [ सं० आश्रय ] १. सहारा। आधार। अवलंब। २ भरण-पोषण की आशा। भरोसा। आसरा। ३ किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४. जीवन या कार्य्य-निर्वाह का हेतु। आश्रयदाता। सहायक। ५ शरण। पनाह। ६ प्रतीक्षा। प्रत्याशा। इंतज़ार। ७ आशा।

**आसव**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ वह मद्य जो भभके से न चुआया जाय, केवल फलों के खमीर को निचोड़ कर बनाया जाय। २ द्रव्यों का खमीर छानकर बनी हुई औषध। ३. अर्क।

**आसवी**—संज्ञा पु० [ सं० आसविन् ] शराब पीनेवाला। मद्यप।

वि० आसव-संबंधी।

**आसा**—संज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।

संज्ञा पु० [ अ० असा ] सोने या चाँदी का डंडा जिसे केवल सजावट के लिए राजा महाराजाओं अथवा बरात और जुलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं।

**यौ०**—आसा-बल्लम। आसा-सोंटा।

**आसाइश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आराम। सुख। चैन।

**आसान**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा आसानी ] सहज। सरल।

**आसानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] [ वि० आसान ] सरलता। सुगमता। सुबीता।

**आसामी**—संज्ञा पु० दे० "असामी"। वि० [ हिं० आसाम ] आसाम देश का। आसाम देश-संबंधी।

संज्ञा पु० आसाम देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० आसाम देश की भाषा।

**आसार**—संज्ञा पु० [ अ० ] चिह्न। लक्षण।

**आसावरी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] श्री राग की एक रागिनी।

संज्ञा पु० एक प्रकार का कबूतर।

**आसिख***—संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

**आसिन**—संज्ञा पु० दे० "आश्विन"।

**आसिरवचन**—संज्ञा पु० दे० "आशीर्वाद"।

**आसी***—वि० दे० "आशी"।

**आसीन**—वि० [ सं० ] बैठा हुआ। विराजमान।

**आसीस**—संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।

**आसु***—क्रि० वि० दे० "आशु"।

**आसुग***—संज्ञा पुं० दे० "आशुग"।

**आसुर**—वि० [ सं० ] असुर-संबंधी।

**यौ०**—आसुर-विवाह=वह विवाह जो कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर हो।

*संज्ञा पु० दे० "असुर"।

**आसुरी**—वि० [ सं० ] असुर-संबंधी। असुरों का। राक्षसी।

**यौ०**—आसुरी-चिकित्सा=. शस्त्र-

चिकित्सा। चीर-फाड़। आसुरी माया = चक्कर में डालनेवाली राक्षसों की चाल।
संज्ञा स्त्री॰ राक्षस की स्त्री।
**आसेब**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] [वि॰ आसेबी] भूत-प्रेत की बाधा।
**आसोज**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अश्वयुज] आश्विन मास। क्वार का महीना।
**आसौं***—क्रि॰ वि॰ [सं॰ इह+सवत्] इस वर्ष। इस साल।
**आस्तरण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ शय्या। २. बिछौना। बिस्तर। ३. दुपट्टा।
**आस्तव**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] उबलते हुए चावल का फेन। २ पनाला। ३. कष्ट। पीड़ा। ४ इंद्रिय द्वार।
**आस्तिक**—वि॰ [सं॰] [संज्ञा आस्तिकता] १ वेद, ईश्वर और परलोक इत्यादि पर विश्वास करनेवाला। २ ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला।
**आस्तिकता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वेद, ईश्वर और परलोक में विश्वास।
**आस्तीक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक ऋषि जिन्होंने जनमेजय के सर्पसत्र में तक्षक का प्राण बचाया था।
**आस्तीन**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है। बाँह।
**मुहा॰**—आस्तीन का साँप = वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे।
**आस्था**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ पूज्य बुद्धि। श्रद्धा। २ सभा। बैठक। ३ आलंबन। अपेक्षा।
**आस्थान**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. बैठने की जगह। बैठक। २. सभा। दरबार।
**आस्पद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. स्थान। जगह। २. आधार। अधिष्ठान। ३. कार्य्य। कृत्य। ४ पद। प्रतिष्ठा। ५. अल्ल। वंश। ६. कुल। जाति।
**आस्फालन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ आस्फालित] १ आत्मश्लाघा। डींग। २. संघर्ष। ३. शब्द करना।
**आस्य**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] मुख। मुँह।
**आस्वाद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] रस-स्वाद। जायका। मज़ा।
**आस्वादन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ आस्वादनीय, आस्वादित] चखना। स्वाद लेना।
**आह**—अव्य॰ [सं॰ अहह] पीड़ा, शोक, दुःख, खेद और ग्लानि-सूचक अव्यय।
संज्ञा स्त्री॰ कराहना। दुःख या क्लेश-सूचक शब्द। ठंढी साँस। उसास।
**मुहा॰**-आह पड़ना = शाप पड़ना। किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। आह भरना = ठंढी साँस खींचना। आह लेना = किसी को इतना सताना कि उसके हृदय से आह निकले।
*संज्ञा पुं॰ [सं॰ साहस] १ साहस। हियाव। २. बल। ज़ोर।
**आहट**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ आ = आना + हट (प्रत्य॰)] १ वह शब्द जो चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है। आने का शब्द। पाँव की चाप। खड़का। २. वह आवाज़ जिससे किसी स्थान पर किसी के रहने का अनुमान हो। ३ पता। टोह।
**आहत**—वि॰ [सं॰] [संज्ञा आहति] १. चोट खाया हुआ। घायल। ज़ख्मी। २. जिस संख्या को गुणित करें। गुण्य। ३ व्याघात-दोष-युक्त (वाक्य)।
**यौ॰**—हताहत = मरे हुए और ज़ख्मी।
**आहर***—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अहः] समय।
संज्ञा पुं॰ [सं॰ आहव] युद्ध। लड़ाई।
**आहरण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ आहरणीय, आहृत] १. छीनना। हर लेना। २. किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३ ग्रहण। लेना।
**आहरन**—संज्ञा पुं॰ [आहनन] लोहारों और सुनारों की निहाई।
**आहवन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ आहवनीय] यज्ञ करना। होम करना।
**आहाँ**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ आह्वान] १. हाँक। दुहाई। घोषणा। २. पुकार। बुलावा।
**आहा**—अव्य॰ [सं॰ अहह] आश्चर्य्य और हर्ष-सूचक अव्यय।
**आहार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. भोजन। खाना। २ खाने की वस्तु।
**आहार-विहार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन।
**आहारी**—वि॰ [सं॰ आहारिन्] [स्त्री॰ आहारिणी] खानेवाला। भक्षक।
**आहार्य्य**—वि॰ [सं॰] १. ग्रहण किया हुआ। २. बनावटी। ३. खाने योग्य।
संज्ञा पुं॰ [सं॰] चार प्रकार के अनुभावों में चौथा। नायक और नायिका का एक दूसरे का वेष धारण करना।
**आहार्य्याभिनय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बिना कुछ बोले या चेष्टा किये केवल रूप और वेष द्वारा नाटक का अभिनय करना।
**आहि**—क्रि॰ अ॰ [सं॰ अस्]

'आसना' का वर्त्तमान-कालिक रूप। है।

**आहित**—वि० [ सं० ] १. रक्खा हुआ। स्थापित। २. धरोहर या गिरों रक्खा हुआ।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पंद्रह प्रकार के दासों में से एक, जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर उसकी सेवा में रहकर उसे पटाता हो। २. गिरवी रखा हुआ माल।

**आहिस्ता**—क्रि० वि० [फ़ा०] धीरे से। धीरे धीरे। शनैः शनैः।

**आहुत**—संज्ञा पुं०[सं०] १. आतिथ्य-सत्कार। २. भूतयज्ञ। बलिवैश्वदेव।

**आहुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मंत्र पढ़कर देवता के लिए द्रव्य को अग्नि में डालना। होम। हवन। २. हवन में डालने की सामग्री। ३. होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञ-कुंड में डाली जाय।

**आहूत**—वि० [ सं० ] बुलाया हुआ। आह्वान किया हुआ। निमंत्रित।

**आहे***—क्रि० अ० [सं० अस्] 'आसना' का वर्त्तमान-कालिक रूप। है।

**आह्निक**—वि० [ सं० ] रोज़ाना। दैनिक।

**आह्लाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० आह्लादक, आह्लादित] आनंद। हर्ष। प्रसन्नता।

**आह्वय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाम। संज्ञा। २. तीतर, बटेर, मेढ़े आदि जीवों की लड़ाई की बाज़ी। प्राणिद्यूत।

**आह्वान**—संज्ञा पुं०[सं०]१ बुलाना। बुलावा। पुकार। २. राजा की ओर से बुलावे का पत्र। समन। ३. यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना।

# इ

**इ**—वर्णमाला में स्वर के अंतर्गत तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालु और प्रयत्न विवृत है। ई इसका दीर्घ रूप है।

**इंग**—संज्ञा पुं० [ सं० इङ्ग=संकेत ] १. चलना। हिलना। २. संकेत। इशारा। ३. हाथी का दाँत।

**इंगनी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० मैंगनीज़ ] एक प्रकार का धातु का मोर्चा जो काँच या शीशे का हरापन दूर करने के काम में आता है।

**इंगला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० इडा ] इड़ा नाम की नाड़ी। ( हठयोग )

**इंगलिश**—वि० [ अं० ] १ इँगलैंड संबंधी। अँगरेज़ी।
संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ी भाषा।

**इंगलिस्तान**—संज्ञा पुं० [ अं० इँगलिश+फ़ा० स्तान] [वि० इँगलिस्तानी] अँगरेज़ों का देश। इँगलैंड।

**इंगित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अभिप्राय को किसी चेष्टा-द्वारा प्रकट करना। इशारा। चेष्टा।
वि० १. हिलता हुआ। चलित। २. इशारा किया हुआ।

**इंगुदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ हिंगोट का पेड़। २. ज्योतिष्मती वृक्ष। माल-कँगनी।

**इंगुर***†—संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।

**इंगुरौटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ईंगुर + औटी (प्रत्य०) ] वह डिबिया जिसमें सौभाग्यवती स्त्रियाँ ईंगुर या सिंदूर रखती हैं। सिंधोरा।

**इंच**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] एक फ़ुट का बारहवाँ हिस्सा। तस्सू।

**इँचना***†—क्रि० अ० दे० "खिंचना"।

**इंजन**—संज्ञा पुं० [ अं० एंजिन ]१. कल। पेंच। २. भाप या बिजली से चलनेवाला। यंत्र। ३. रेलवे ट्रेन में वह गाड़ी जो भाप के ज़ोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

**इंजीनियर**—संज्ञा पुं० [ अं० एंजीनियर] १. यंत्र की विद्या जाननेवाला। कलों का बनाने या चलानेवाला। २. शिल्पविद्या में निपुण। ३. वह अफ़सर जिसके निरीक्षण में सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।

**इंजील**—संज्ञा स्त्री० [ यू० ] ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।

**इँडुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंडल] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर के उपर रख लेते हैं। गेंडुरी।

**इँडुरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "इँडुआ"।

**इँडहर**—संज्ञा पुं० [ ? ] उर्द की दाल में बना हुआ एक प्रकार का सालन।

**इंतक़ाल**—संज्ञा पुं० [अ०] १. मृत्यु। मौत। २. किसी संपत्ति का एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में जाना।

**इंतख़ाब**—संज्ञा पुं० [अ०] १. चुनाव। निर्वाचन। २. पसंद। ३. पटवारी के खाते की नक़ल।

**इंतज़ाम**—संज्ञा पुं० [अ०] प्रबंध। बदोबस्त। व्यवस्था।

**इंतज़ार**—संज्ञा पुं० [अ०] प्रतीक्षा।

**इंतहा**—संज्ञा स्त्री० [अ० इन्तिहा] १. चरम सीमा। २. अंत। समाप्ति। ३. परिणाम। फल।

**इंदव**—संज्ञा पुं० [सं० ऐंदव] एक छंद। चंद्रमा।

**इंदिरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

**इंदीवर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नीलोत्पल। नील-कमल। २. कमल।

**इंदु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २ कपूर। ३ एक की संख्या।

**इंदुमणि**—संज्ञा पुं० दे० "चद्रकांतमणि"।

**इंदुर**—संज्ञा पुं० [सं० इंदूर] चूहा।

**इंदुवदना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

**इंद्र**—वि० [सं०] १. ऐश्वर्यवान्। विभूति-संपन्न। २. श्रेष्ठ। बड़ा। जैसे नरेंद्र।

संज्ञा पु० १. एक वैदिक देवता जिसका स्थान अंतरिक्ष है और जो पानी बरसाता है। २ देवताओं का राजा।

**यौ०**—इंद्र का अखाड़ा =१. इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। २. बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच-रंग होता हो। इंद्र की परी=१. अप्सरा। २. बहुत सुंदरी स्त्री। ३. बारह आदित्यों में से एक। सूर्य्य। ४. बिजली। ५. मालिक। स्वामी। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र। ७. चौदह की संख्या। ८. छप्पय छंद के भेदों में से एक। ९. जीव। प्राण।

**इंद्रकील**—संज्ञा पुं० [सं०] मंदराचल।

**इंद्रगोप**—संज्ञा पुं० [सं०] बीरबहूटी नाम का कीड़ा।

**इंद्रचाप**—संज्ञा पुं० दे० "इंद्रधनुष"।

**इंद्रजव**—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रयव] कुड़ा। कौरैया का बीज।

**इंद्रजाल**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० इंद्रजालिक] मायाकर्म। जादूगरी। तिलस्म।

**इंद्रजाली**—वि० [सं० इंद्रजालिन्] [स्त्री० इंद्रजालिनी] इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

**इंद्रजित्**—वि० [सं०] इंद्र को जीतनेवाला।

संज्ञा पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद।

**इंद्रजीत**—संज्ञा पुं० दे० "इंद्रजित्"।

**इंद्रदमन**—संज्ञा पु० [सं०] १ बाढ़ के समय नदी के जल का किसी निश्चित कुंड, ताल अथवा वट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है। २. मेघनाद का एक नाम।

**इंद्रधनुष**—संज्ञा पुं० [सं०] सात रंगों का बना हुआ एक अर्द्धवृत्त जो वर्षा-काल में सूर्य्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।

**इंद्रधनुषी** वि० [सं० इंद्रधनुष + ई (प्रत्य०)] इंद्रधनुष की तरह सात रंगोंवाला।

**इंद्रनील**—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम।

**इंद्रप्रस्थ**—संज्ञा पु० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।

**इंद्रलोक**—संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग।

**इंद्रवंशा**—संज्ञा पुं० [सं०] १२ वर्णों का एक वृत्त।

**इंद्रवज्रा**—संज्ञा पुं० [सं०] ११ वर्णों का एक वृत्त।

**इंद्रवधू**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीरबहूटी।

**इंद्रा, इंद्राणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. इंद्र की पत्नी, शची। २ बड़ी इलायची। ३. इंद्रायन। ४. दुर्गा देवी।

**इंद्रायन**—संज्ञा पु० [सं० इंद्राणी] एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़वा होता है। इनारू।

**इंद्रायुध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वज्र। २. इंद्रधनुष।

**इंद्रासन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र का सिंहासन। २. राजसिंहासन।

**इंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। २. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। पदार्थों के रूप, रस, गंध आदि के अनुभव में सहायक अंग, जो पाँच हैं—चक्षु, श्रोत्र, रसना, नासिका और त्वचा। ज्ञानेंद्रिय। ३. वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न भिन्न कर्म किए जाते हैं और जो पाँच हैं—वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ। कर्मेंद्रिय। ४. लिंगेंद्रिय। ५. पाँच की संख्या।

**इंद्रियजित्**—वि० [सं०] जो इंद्रियों को जीत ले। जो विषयासक्त न हो।

**इंद्रियनिग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रियों के वेग को रोकना।

**इंद्रियरामी**—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रिय + हिं० रामी] इंद्रियों के सुख में रमने वाला। विलासी। आरामतलब।

**इंद्री***—संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रिय"।

**इंधन**—संज्ञा पु० दे० "ईंधन"।

**इंद्रीजुलाब**—संज्ञा पुं० [सं० इंद्रिय + फ़ा० जुलाब] वे ओषधियाँ जिनसे पेशाब अधिक आता है।

**इंपीरियल**—वि० [अं०] साम्राज्य

संबंधी।

**इंसाफ़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० मुंसिफ़ ] १. न्याय। अदल। फैसला। निर्णय।

संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**इंस्पेक्टर**—संज्ञा पु० [ अं० ] निरीक्षक।

**इकंग***—वि० दे० "एकांग"।

**इकंत***—वि० दे० "एकांत"।

**इक***—वि० दे० "एक"।

**इकजोर***—क्रि० वि० [ सं० एक + हिं० जोर = जोड़ना ] इकट्ठा। एक साथ।

**इकट्ठा**—वि० [ सं० एकस्थ ] एकत्र जमा।

**इकतर***—वि० दे० "एकत्र"।

**इकतरा**—संज्ञा पु० दे० "अँतरिया"।

**इकता***—संज्ञा स्त्री० दे० "एकता"।

**इकताई***—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० यकता] १. एक होने का भाव। एकत्व। २ अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान। एकांत-सेविता। ३. अद्वितीयता।

**इकतान***—वि० [ हिं० एक + तान ] एक रस। एक सा। स्थिर। अनन्य।

**इकतार**—वि० [ हिं० एक + तार ] बराबर। एक रस। समान।

क्रि० वि० लगातार।

**इकतारा**—संज्ञा पु० [ हिं० एक + तार ] १ सितार के ढंग का एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार रहता है। २. एक प्रकार का हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा।

**इकतीस**—वि० [ सं० एकत्रिंशत्, प्रा० एकतीस ] तीस और एक।

संज्ञा पु० तीस और एक की संख्या। इकतीस का अंक। ३१।

**इकत्र***—क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

**इकदारगी**—क्रि० वि० दे० "एकबारगी"।

**इकबाल**—संज्ञा पुं० [अ० इक़बाल] १ प्रताप। २ भाग्य। सौभाग्य। ३. स्वीकार।

**इकराम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. पारितोषिक। इनाम। २ इज्जत। आदर।

**इकरार**—संज्ञा पु० [ अ० इक़रार ] १. प्रतिज्ञा। वादा। २. कोई काम करने की स्वीकृति।

**इकला***—वि० दे० "अकेला"।

**इकलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० एक + लाई या लाई = पर्त्त ] १ एक पाट का महीन दुपट्टा या चादर। २. एक साड़ी। ३ अकेलापन।

**इकलौता**—संज्ञा पुं० [ हिं० इकला + पु० हिं० ऊत ( सं० पुत्र ) ] वह लड़का जो अपने माँ बाप का अकेला हो।

**इकल्ला**—वि० [हिं० एक+ला (प्रत्य०)] १ एकहरा। एक पर्त्त का। *†२. अकेला।

**इकसठ**—वि० [ सं० एकषष्टि ] साठ और एक।

संज्ञा पु० वह अंक जिससे साठ और एक का बोध हो। ६१।

**इकसर***—वि० [ हिं० एक + सर (प्रत्य०) ] अकेला। एकाकी।

**इकसार***—वि० [ हिं० एक + सर (सदृश) ] सदा एक सा रहनेवाला।

**इकसूत***—वि० [ सं० एक + सूत्र ] एक साथ। इकट्ठा। एकत्र।

**इकहरा**—वि० दे० "एकहरा"।

**इकहाई***—क्रि० वि० [ हिं० एक + हाइ (प्रत्य०)] १ एक साथ। फ़ौरन। २ अचानक।

**इकांत***—वि० दे० "एकांत"।

**इकेला**—वि० दे० "अकेला"।

**इकैठ***—वि० [सं० एकस्थ] इकट्ठा।

**इकौंज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० एक (इक) + वंध्या अथवा काकवंध्या ] वह स्त्री जिसको एक ही संतान हुई हो। काकवंध्या।

**इकौना**—वि० [ हिं० एक ] [ स्त्री० इकौनी ] अनुपम। बेजोड़।

**इकौसी***†—वि० [सं० एक + आवास] एकांत।

**इक्का**—वि० [सं० एक] १. एकाकी। अकेला। २. अनुपम। बेजोड़।

संज्ञा पु० १ एक प्रकार की कान की बाली जिसमें एक मोती होता है। २. वह योद्धा जो लड़ाई में अकेला लड़े। ३. वह पशु जो अपना झुंड छोड़कर अलग हो जाय। ४. एक प्रकार की दो पहिए की घोड़ा गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। ५. ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो।

**इक्का-दुक्का**—वि० [ हिं० इक्का + दुक्का ] अकेला दुकेला।

**इक्कीस**—वि० [ सं० एकविंशति ] बीस और एक।

संज्ञा पु० बीस और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है, २१।

**इक्यावन**—वि० [ सं० एकपंचाशत्, प्रा० एक्कावन ] पचास और एक।

संज्ञा पु० पचास और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है - ५१।

**इक्यासी**—वि० [सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि ] अस्सी और एक।

संज्ञा पु० अस्सी और एक की संख्या या अंक जो इस तरह लिखा जाता है—८१।

**इक्षु**—संज्ञा पु० [ सं० ] ईख। गन्ना। इच्छा।

**इक्ष्वाकु**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ सूर्यवंश के एक प्रधान राजा। २. कड़ुवी लौकी।

**इखद***—वि० दे० "ईषत्"।

**इखराज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] निकास। खर्च।

**इखलास**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. मेल-मिलाप। मित्रता। २ प्रेम। भक्ति। प्रीति।

**इखु***—संज्ञा पुं० दे० "इक्षु"।

**इख्तलाफ़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ विरोध। २. बिगाड़। अनबन।

**इख्तियार**—संज्ञा पुं० [अ०] १ अधिकार। २. अधिकार-क्षेत्र। ३. सामर्थ्य। काबू। ४. प्रभुत्व। स्वत्व।

**इच्छना***—क्रि० स० [ सं० इच्छन ] इच्छा करना। चाहना।

**इच्छा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० इच्छित, इच्छुक ] एक मनोवृत्ति जो किसी सुखद वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह।

**इच्छाचारी**—वि० [सं० इच्छाचारिन्] [ स्त्री० इच्छाचारिणी ] अपनी इच्छा के अनुसार सब काम करनेवाला। स्वतंत्र-प्रकृति।

**इच्छाभोजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जिन जिन वस्तुओं की इच्छा हो, उनको खाना।

**इच्छित**—वि० [ सं० ] जिसकी इच्छा की जाय। चाहा हुआ। वांछित।

**इच्छु***—संज्ञा पुं० दे० "इक्षु"।
वि० [सं०] चाहनेवाला। (यौगिक में)

**इच्छुक**—वि० [ सं० ] चाहनेवाला।

**इजमाल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० इजमाली ] १. कुल। समष्टि। २. किसी वस्तु पर कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व। साझा।

**इजमाली**—वि० [अ०] शिरकत का। संयुक्त। साझे का।

**इजराय**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. जारी करना। प्रचार करना। २. व्यवहार। अमल।

**यौ०**—इजराय डिगरी = डिगरी का अमलदरामद होना।

**इजलास**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बैठक। २ वह जगह जहाँ हाकिम बैठकर मुकदमे का फ़ैसला करता है। कचहरी। न्यायालय।

**इज़हार**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ज़ाहिर करना। प्रकाशन। प्रकट करना। २. अदालत के सामने बयान। गवाही। साक्षी।

**इजाज़त**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. अनुमति। २. परवानगी। मंजूरी।

**इज़ाफ़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बढती। वृद्धि। २. व्यय से बचा हुआ धन। बचत।

**इज़ार**—संज्ञा स्त्री० [अ०] पायजामा। सूथन।

**इज़ारबंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सूत या रेशम का बना हुआ जालीदार बँधना जो पायजामे या लहँगे के नेफे में उस कमर से बाँधने के लिये पड़ा रहता है। नारा।

**इजारदार इजारेदार**—वि० [फ़ा०] किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर लेनेवाला। ठेकेदार। अधिकारी।

**इजारा**—संज्ञा पुं० [अ० इजारः] १. किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर देना। २ ठेका। ३ अधिकार। इख्तियार। स्वत्व।

**इज़्ज़त**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। आदर।

**मुहा०**—इज़्ज़त उतारना = मर्यादा नष्ट करना। इज़्ज़त रखना = प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

**इज़्ज़तदार**—वि० [ फ़ा० ] प्रतिष्ठित।

**इज्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यज्ञ।

**इठलाना**—क्रि० अ० [ हिं० ऐंठ + लाना ] १. इतराना। ठसक दिखाना। गर्व-सूचक चेष्टा करना। २. मटकना। ३ नखरा करना।

**इठलाहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० इठलाना] इठलाने का भाव। ठसक।

**इठाई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० इष्ट + आई (प्रत्य०) ] १ रुचि। चाह। प्रीति। २ मित्रता।

**इड़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। भूमि। २ गाय। ३ वाणी। ४ स्तुति। ५ अन्न हवि। ६. नभदेवता। ७. दुर्गा। अंबिका। ८. पार्वती। ९ कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष की एक पुत्री थी। १०. स्वर्ग। ११. हठयोग की साधना के लिये कल्पित बाईं ओर की नाड़ी। १२. वैवस्वत मनु की दूसरी पत्नी का नाम।

**इत***†—क्रि० वि० [सं० इतः] इधर। इस ओर। यहाँ।

**इतक़ाद**—संज्ञा पुं० दे० "एतकाद"।

**इतना**—वि० [ सं० एतावत् अथवा पु० हि० ई (यह) + तना (प्रत्य०) ] [ स्त्री० इतनी ] इस मात्रा का। इस कदर।

**मुहा०**—इतने में = इसी बीच।

**इतनो***†—वि० दे० "इतना"।

**इतमाम***†—संज्ञा पुं० [ अ० इहतिमाम ] इंतज़ाम। बंदोबस्त। प्रबंध।

**इतमीनान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० इतमीनानी ] विश्वास। दिलजमई। संतोष।

**इतर**—वि० [सं०] १. दूसरा। और। अन्य। २ नीच। पामर। ३. साधारण।
संज्ञा पुं० दे० "अतर"।

**इतराज़ी***—संज्ञा स्त्री० [अ० एतराज़] विरोध। बिगाड़। नाराज़ी।

**इतराना**—क्रि० अ० [ सं० उत्तरण ] १. घमंड करना। २ ठसक दिखाना। इठलाना।

**इतराहट***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० इ-

राना ] दर्प। घमंड। गर्व।

**इतरेतर**—क्रि० वि० [ सं० ] परस्पर।

**इतरेतराभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्यायशास्त्र में एक के गुणों का दूसरे में न होना। अन्योन्याभाव।

**इतरेतराश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तर्क में एक प्रकार का दोष जो वहाँ होता है जहाँ एक वस्तु की सिद्धि दूसरी वस्तु की सिद्धि पर निर्भर होती है, और उस दूसरी वस्तु की सिद्धि भी पहली वस्तु की सिद्धि पर निर्भर होती है।

**इतरौहाँ***—वि० [ हिं० इतराना + औहाँ (प्रत्य०) ] जिससे इतराने का भाव प्रकट हो। इतराना सूचित करनेवाला।

**इतवार**—संज्ञा पुं० [ सं० आदित्यवार ] शनि और सोमवार के बीच का दिन। रविवार।

**इतस्ततः**—क्रि० वि० [ सं० ] इधर उधर।

**इताति***—संज्ञा स्त्री० दे० "इताअत"।

**इति**—अव्य० [ सं० ] समाप्तिसूचक अव्यय।
संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समाप्ति। पूर्णता।
**यौ०**—इतिश्री = समाप्ति। अंत।

**इतिकर्त्तव्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी काम के करने की विधि। परिपाटी।

**इतिवृत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुरावृत्त। पुरानी कथा। कहानी। २. वर्णन। हाल।

**इतिहास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० ऐतिहासिक ] बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले पुरुषों का काल-क्रम से वर्णन।

**इतेक***—वि० [ हिं० इत + एक ] इतना।

**इतो***—वि० [ सं० इयत् = इतना ] [ स्त्री० इती ] इतना। इस मात्रा का।

**इत्तफ़ाक़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० इत्तफ़ाक़िया; क्रि० वि० इत्तफ़ाक़न् ] १. मेल। मिलाप। एका। सहमति। २. संयोग। मौका। अवसर।
**मुहा०**—इत्तफ़ाक़ पड़ना = संयोग उपस्थित होना। मौका पड़ना। इत्तफ़ाक़ से = संयोगवश।

**इत्तला**—संज्ञा स्त्री० [ अ० इत्तलाअ ] सूचना। खबर।
**यौ०**—इत्तलानामा = सूचनापत्र।

**इत्ता, इत्तो***—वि० दे० "इतो"।

**इत्थं**—क्रि० वि० [ सं० ] ऐसे। यों।

**इत्थंभूत**—वि० [ सं० ] ऐसा।

**इत्थमेव**—वि० [ सं० ] ऐसा ही।
क्रि० वि० इसी प्रकार से।

**इत्यादि**—अव्य० [ सं० ] इसी प्रकार अन्य। इसी तरह और दूसरे। वग़ैरह। आदि।

**इत्यादिक**—वि० [ सं० ] इसी प्रकार के अन्य और। ऐसे ही और दूसरे। वग़ैरह।

**इत्र**—संज्ञा पुं० दे० "अतर"।

**इत्रीफल**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिफला ] शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह।

**इदम**—सर्व० [ सं० ] यह।

**इदमित्थं**—पद [ सं० ] ऐसा ही है। ठीक है।

**इधर**—क्रि० वि० [ सं० इतर ] इस ओर। यहाँ। इस तरफ़।
**मुहा०**—इधर-उधर = १. यहाँ वहाँ। इतस्ततः। २. आस पास। इनारे-किनारे। ३ चारो ओर। सब ओर। इधर उधर करना = १. टालमटूल करना। हीला-हवाला करना। २. उलट पलट करना। क्रम भंग करना। ३. तितर बितर करना। ४. हटाना। भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना। इधर उधर की बात = १. अफ़वाह। सुनी सुनाई बात। २. बेठिकाने की बात। असंबद्ध बात। इधर की उधर करना या लगाना = चुग़लखोरी करना। झगड़ा लगाना। इधर की दुनिया उधर होना = अनहोनी बात का होना। इधर उधर में रहना = व्यर्थ समय खोना। इधर उधर होना = १. उलट पुलट होना। बिगड़ना। २. भाग जाना। तितर-बितर होना।

**इन**—सर्व० [ हिं० इस ] 'इस' का बहुवचन।

**इनकमटैक्स**—संज्ञा पुं० [ अ० ] आमदनी पर लगनेवाला टैक्स या कर।

**इनकार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अस्वीकार। नामंजूरी। 'इकरार' का उलटा।

**इनफ्लुएंज़ा**—संज्ञा पुं० [ अं० ] सर्दी के कारण होनेवाला एक प्रकार का ज्वर।

**इनसान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मनुष्य।

**इनसानियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मनुष्यत्व। आदमियत। २. बुद्धि। शऊर। ३ भलमनसी। सज्जनता।

**इनाम**—संज्ञा पुं० [ अ० इनआम ] पुरस्कार। उपहार।
**यौ०**—इनाम इकराम = इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।

**इनायत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कृपा। दया। अनुग्रह। २. एहसान।
**मुहा०**—इनायत करना = कृपा करके देना।

**इनारा**†—संज्ञा पुं० दे० "कूआँ"।

**इने-गिने**—वि० [ अनु० इन + हिं० गिनना ] कतिपय। कुछ। थोड़े से। चुने चुनाए।

**इन्ह***†—सर्व दे० "इन"।

**इफ़रात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अधिकता।

**इबरानी**—वि० [ अ० ] यहूदी।
संज्ञा स्त्री० फ़िलस्तीन देश की प्राचीन

भाषा।

**इबादत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पूजा। अर्चा।

**इबारत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० इबारती ] १. लेख। २. लेख-शैली।

**इमरती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अमृत ] एक प्रकार की मिठाई।

**इमली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अम्ल + हिं० ई ( प्रत्य० ) ] १. बड़ा पेड़ जिसकी गूदेदार लंबी फलियाँ खटाई की तरह खाई जाती हैं। २. इस पेड़ का फल।

**इमाम**—संज्ञा पुं० [अ०] १. अगुआ। २. मुसलमानों का धार्मिक कृत्य करानेवाला मनुष्य। ३. अली के बेटों की उपाधि।

**इमामदस्ता**—संज्ञा पुं० [फ़ा० हावन + दस्ता ] लोहे या पीतल का खल और बट्टा।

**इमामबाड़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० इमाम + हिं० बाड़ा] वह हाता जिसमें शीया मुसलमान ताज़िया रखते और उसे दफ़न करते हैं।

**इमारत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बड़ा और पक्का मकान। भवन।

**इमि***—क्रि० वि० [ सं० एवम् ] इस प्रकार।

**इम्तहान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] परीक्षा। जाँच।

**इयत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीमा। हद।

**इरशाद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] आज्ञा। हुक्म।

**इरषा*** —संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्ष्या"।

**इरषित***—वि० [ सं० ईर्ष्या ] जिससे ईर्ष्या की जाय।

**इरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कश्यप की पत्नी जिससे बृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। २. भूमि। पृथ्वी। ३. वाणी।

**इराक़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अरब का एक प्रदेश।

**इराक़ी**—वि० [अ०]इराक़ प्रदेश का। संज्ञा पुं० घोड़ों की एक जाति।

**इरादा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] विचार। संकल्प।

**इर्द गिर्द**—क्रि० वि० [ अनु० इर्द + फ़ा० गिर्द ] १. चारों ओर। २ आस-पास।

**इषणा***—संज्ञा स्त्री० [ सं० एषणा ] प्रबल-इच्छा।

**इलज़ाम**—संज्ञा पुं० [ अ० इल्ज़ाम ] १ दोष। अपराध। २. अभियोग। दोषारोपण।

**इलहाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ईश्वर का शब्द। देववाणी।

**इला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। २ पार्वती। ३. सरस्वती। वाणी। ४. गो।

**इलाक़ा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. संबंध। लगाव। २ कई मौज़ों की ज़मींदारी।

**इलाज***—संज्ञा पुं० [अ०] १ दवा। औषध। २ चिकित्सा। ३. उपाय। युक्ति।

**इलाम***—संज्ञा पुं० [ अ० ऐलान ] १. इत्तलानामा। २. हुक्म। आज्ञा।

**इलायची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० एला + ची ( फ़ा० प्रत्य० 'च' ) ] एक सदाबहार पेड़ जिसके फल के बीजों में बड़ी तीक्ष्ण सुगंध होती है। बीज मसाले में पड़ते हैं और मुख सुगंधित करने के लिये खाए भी जाते हैं।

**इलायचीदाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० इलायची + दाना] १. इलायची का बीज। २. चीनी में पगा हुआ इलायची का दाना।

**इलावर्त्त**—संज्ञा पुं० दे० "इलावृत्त"।

**इलावृत***—संज्ञा पुं० [ सं० ] जंबूद्वीप के नौ खंडों में से एक।

**इलाही**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ईश्वर। खुदा।

वि० दैवी। ईश्वरीय।

**इलाही गज़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज जो ४१ अँगुल ( ३३¾ इंच ) का होता है और इमारत आदि में नापने के काम में आता है।

**इलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथिवी। भूमि।

**इल्तिजा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] निवेदन।

**इल्म**—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या। ज्ञान।

**इल्लत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रोग। बीमारी। २. झंझट। बखेड़ा। ३. दोष। अपराध।

**इल्ला**—संज्ञा पुं० [ सं० कील ] छोटा उभरा कड़ा दाना जो चमड़े के ऊपर निकलता है।

**इल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] चींटी आदि के बच्चों का वह रूप जो अंडे से निकलते ही होता है।

**इव**—अव्य० [सं०] उपमावाचक शब्द। समान। तरह।

**इशारा**—संज्ञा पुं० [ अ० इशारः ] १. सैन। संकेत। २ संक्षिप्त कथन। ३. बारीक सहारा। सूक्ष्म आधार। ४. गुप्त प्रेरणा।

**इशिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "इषीका"।

**इश्क़**—संज्ञा पुं० [ अ० इश्क़ ] [वि० आशिक़, माशूक़ ] मुहब्बत। चाह। प्रेम।

**इश्तहार**—संज्ञा पुं० [अ०] विज्ञापन।

**इषणा***—संज्ञा स्त्री० दे० "एषणा"।

**इषीका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बाण।

तीर।

**इषु**—संज्ञा पुं० दे० "इषीका"।

**इष्ट**—वि० [ सं० ] १. अभिलषित। चाहा हुआ। वांछित। २ पूजित। संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्रादि शुभ कर्म्म। २. इष्टदेव। कुलदेव। ३. अधिकार। देवता की छाया या कृपा। ४. मित्र।

**इष्टका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ईंट।

**इष्टता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] इष्ट का भाव।

**इष्टदेव, इष्टदेवता**—संज्ञा पुं० [सं०] आराध्य देव। पूज्य देवता।

**इष्टापत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वादी के कथन में दिखाई हुई ऐसी आपत्ति जिसे वादी स्वीकृत कर ले।

**इष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. इच्छा। अभिलाषा। २. यज्ञ।

**इस**—सर्व० [ सं० एषः ] 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप। जैसे, इसको में 'इस'।

**इसपंज**—संज्ञा पुं० [ अं० स्पंज ] समुद्र में एक प्रकार के छोटे जीवों की मुलायम ठठरी जो पीले रंग की होती है और रूई की तरह पानी खूब सोखती है। मुर्दा बादल।

**इसपात**—संज्ञा पुं० [ सं० अयस्पत्र, अथवा पुर्त्त० स्पेडा ] एक प्रकार का कड़ा लोहा।

**इसबगोल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] फ़ारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा में काम आते हैं।

**इसराज**—संज्ञा पुं० [ ? ] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**इसरार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] हठ। ज़िद।

**इसलाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० इसलामिया ] मुसलमानी धर्म।

**इसलाह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] संशोधन।

**इसारत***—संज्ञा स्त्री० [ अ० इशारा ] संकेत। इशारा।

**इसे**—सर्व० [ सं० एषः ] 'यह' का कर्मकारक और सम्प्रदानकारक का रूप।

**इस्तमरारी**—वि० [ अ० ] सब दिन रहनेवाला। नित्य। अविच्छिन्न। **यौ०**—इस्तमरारी बंदोबस्त=ज़मीन का वह बंदोबस्त जिसमें मालगुज़ारी सदा के लिये मुकर्रर कर दी जाती है।

**इस्तिंजा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से मूत्रेंद्रिय की शुद्धि। ( मुसल० )

**इस्तिरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्तरी=तह करनेवाली ] कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरज़ियों का औज़ार। लोहा।

**इस्तीफ़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० इस्तैफ़ा ] नौकरी छोड़ने की दरख्वास्त। त्यागपत्र।

**इस्तेमाल**—संज्ञा पुं० [अ०] प्रयोग। उपयोग।

**इस्म**—संज्ञा पुं० [ अ० ] नाम। संज्ञा।

**इस्म-नवीसी**—संज्ञा स्त्री० [ अ०+फ़ा० ] १. लोगों के नाम लिखना या लिखाना। २ अदालत में अपने गवाहों की सूची पेश करना।

**इस्मशरीफ़**—नाम।

**इह**—क्रि० वि० [ सं० ] इस जगह। इस लोक में। इस काल में। यहाँ। संज्ञा पुं० यह संसार। यह लोक।

**इहलीला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] इस लोक की लीला या जीवन। ज़िंदगी।

**इहाँ**—क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

## ई

**ई**—हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

**ईंगुर**—संज्ञा पुं० [ सं० हिंगुल प्रा० इंगुल ] गंधक और आक्सिजन से घटित एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है। इसकी बुकनी स्त्रियाँ शृंगार के काम में लाती हैं। ओषधि बनाने के काम में भी आता है। सिंगरफ़।

**ईंचना**—क्रि० स० दे० "खींचना"।

**ईंट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० इष्टका ] १. साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार उठाई जाती है।

मुहा०—ईंट से ईंट बजना = किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वस होना। ईंट से ईंट बजाना = किसी नगर या घर को ढाना या ध्वस्त करना। ईंट चुनना = दीवार उठाने के लिये ईंट पर ईंट बैठाना। जोड़ाई करना। डेढ़ या ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना = जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना। ईंट पत्थर = कुछ नहीं।
२. धातु का चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा। ३. ताश का एक लाल रंग।
**ईंटा**—संज्ञा पुं० दे० "ईंट"।
**ईंडरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुडली] कपड़े की कुडलाकार गद्दी जिसे भरा घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुरी।
**ईंधन**—संज्ञा पुं० [सं० ईंधन] जलाने की लकड़ी या कंडा। जलावन। जरनी।
**ई**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।
*सर्व० [सं० ई=निकट का संकेत] यह।
अव्य० [सं० हिं०] ज़ोर देने का शब्द। ही।
**ईक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य] १ दर्शन। देखना। २ आँख। ३. विवेचन। विचार। जाँच।
**ईख**—संज्ञा स्त्री० [सं० इक्षु] शर जाति की एक घास जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है। इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है। गन्ना। ऊख।
**ईखना***—क्रि० स० [सं० ईक्षण] देखना।
**ईछन***—संज्ञा पुं० [सं० ईक्षण] आँख।
**ईछना***—क्रि० स० [सं० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।
**ईछा***—संज्ञा स्त्री० "इच्छा"।
**ईजाद**—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी नई चीज़ का बनाना। नया निर्माण। आविष्कार।
**ईठ***—संज्ञा पुं० [सं० इष्ट] मित्र। सखा।
**ईठना***—क्रि० स० [सं० इष्ट] इच्छा करना।
**ईठि**—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्टि, प्रा० इट्ठि] १. मित्रता। दोस्ती। प्रीति। २. चेष्टा। यत्न।
**ईड़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्तुति। प्रशंसा।
**ईड़***—संज्ञा स्त्री० [सं० इष्ट प्रा० इट्ठ] [वि० ईड़ी] ज़िद। हठ।
**ईतर***—वि० [हिं० इतराना] १ इतरानेवाला। ढीठ। शोख। गुस्ताख। वि० [सं० इतर] निम्न श्रेणी का।
**ईति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव जो छः प्रकार के हैं-(क) अतिवृष्टि। (ख) अनावृष्टि। (ग) टिड्डी पड़ना। (घ) चूहे लगना। (च) पक्षियों की अधिकता। (छ) दूसरे राजा की चढ़ाई। २. बाधा। ३. पीड़ा। दुःख।
**ईथर**—संज्ञा पुं० [अं०] १. एक प्रकार का हवा से भी पतला अति सूक्ष्म द्रव्य या पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है। आकाशद्रव्य। २ एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहल और गंधक के तेजाब से बनता है।
**ईद**—संज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का एक त्योहार जो रोज़ा खतम होने पर होता है।
**यौ०**—ईदगाह = वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद के दिन इकट्ठे होकर नमाज़ पढ़ते हैं।
**ईदृश**—क्रि० वि० [सं०] [स्त्री० ईदृशी] इस प्रकार। इस तरह। ऐसे।
वि० इस प्रकार का। ऐसा।
**ईप्सा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] इच्छा। वांछा। अभिलाषा।
**ईप्सित**—वि० [सं०] चाहा हुआ। अभिलषित।
**ईबी सीबी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] सिसकारी का शब्द 'सी सी' का शब्द जो आनंद या पीड़ा के समय मुँह से निकलता है।
**ईमान**—संज्ञा पुं० [अ०] १. धर्म-विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २. चित्त की सद्वृत्ति। अच्छी नीयत। ३. धर्म। ४. सत्य।
**ईमानदार**—वि० [फ़ा०] १. विश्वास रखनेवाला। २. विश्वासपात्र। ३. सच्चा। ४. दियानतदार। जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा हो। ५. सत्य का पक्षपाती।
**ईरखा***—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
**ईरण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ईरित] १. आगे बढ़ाना। चलाना। २. उच्च-स्वर से कहना। घोषणा करना।
**ईरान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० ईरानी] फ़ारस देश।
**ईरानी**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] ईरान देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० ईरान देश की भाषा।
वि० ईरान का। ईरान-संबंधी।
**ईर्षणा***—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्यण] ईर्षा। डाह।
**ईर्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] [वि० ईर्षालु, ईर्षिन, ईर्षु] दूसरे का उत्कर्ष न सहन होने की वृत्ति। डाह। हसद।
**ईर्षालु**—वि० [सं०] ईर्षा करनेवाला। दूसरे की बढ़ती देखकर जलनेवाला।
**ईर्ष्या**—संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।
**ईवनिंग पार्टी**—संज्ञा स्त्री [अं०] संध्या समय दी जानेवाली जल-पान की दावत। सांध्य भोज।
**ईश**—संज्ञा पुं [सं०] [स्त्री० ईशा, ईशी] १ स्वामी। मालिक। २. राजा। ३. ईश्वर। परमेश्वर। ४. महादेव। शिव। रुद्र। ५. ग्यारह की संख्या। ६. आर्द्रा नक्षत्र। ७. एक उपनिषद्। ८. पारा।

**ईशता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वामित्व। प्रभुत्व।

**ईशान**—संज्ञा पुं०[सं०] [स्त्री० ईशानी] १. स्वामी। अधिपति। २. शिव। महादेव। ३. ग्यारह की संख्या। ४. ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. पूरब और उत्तर के बीच का कोना।

**ईशिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।

**ईशित्व**—संज्ञा पुं० दे० "ईशिता"।

**ईश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ईश्वरी] १. मालिक। स्वामी। २ क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक् पुरुष-विशेष। परमेश्वर। भगवान्। ३. महादेव। शिव।

**ईश्वरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ईश्वर का गुण, धर्म या भाव। ईश्वरपन।

**ईश्वरप्रणिधान**—संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के पाँच नियमों में से अंतिम। ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति रखना।

**ईश्वरीय**—वि० [सं०] १. ईश्वर-संबंधी। २. ईश्वर का।

**ईषत्**—वि० [सं०] थोड़ा। कुछ। कम।

**ईषत्स्पृष्ट**—संज्ञा पुं० [सं०] वर्णों के उच्चारण में एक प्रकार का आभ्यंतर प्रयत्न जिसमें जिह्वा, तालु, मूर्द्धा और दंत को तथा दाँत ओष्ठ को कम स्पर्श करता है। ('य', 'र', 'ल', 'व' ईषत्स्पृष्ट वर्ण हैं।)

**ईषद्**—वि० दे० "ईषत्"।

**ईषना***—संज्ञा स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।

**ईस*** संज्ञा पुं० दे० "ईश"।

**ईसन***— संज्ञा पुं० [सं० ईशान] ईशान कोण।

**ईसर***—संज्ञा पुं० [सं० ऐश्वर्य] ऐश्वर्य।

**ईसरगोल**—संज्ञा पुं० दे० "इसबगोल"।

**ईसवी**—वि० [फ़ा०] ईसा से संबंध रखनेवाला। ईसा का।

यौ०—ईसवी सन्=ईसा मसीह के जन्म-काल से चला हुआ संवत्।

**ईसा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक। ईसा मसीह। २ (ईश) महादेव।

**ईसाई**—वि० [फ़ा०] ईसा को माननेवाला। ईसा के बताए धर्म पर चलनेवाला।

**ईहा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० ईहित] १ चेष्टा। उद्योग। २ इच्छा। ३. लोभ।

**ईहामृग**—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक का एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं।

## उ

**उ**—हिंदी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

**उँ**—अव्य० एक प्रायः अव्यक्त शब्द जो प्रश्न, अवज्ञा या क्रोध सूचित करने के लिये व्यवहृत होता है।

**उंगल**—संज्ञा स्त्री० दे० "अंगुल"।

**उँगली**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंगुलि] हथेली के छोरों से निकले हुए फलियों के आकार के पाँच अवयव जो मिलकर वस्तुओं को ग्रहण करते हैं और जिनके छोरों पर स्पर्श-ज्ञान की शक्ति अधिक होती है।

मुहा०—(किसी की ओर) उँगली उठना =(किसी का) लोगों की निंदा का लक्ष्य होना। निंदा होना। बदनामी होना। (किसी की ओर) उँगली उठाना = १. निंदा का लक्ष्य बनाना। लांछित करना। दोष बताना। २ तनिक भी हानि पहुँचाना। टेढ़ी नज़र से देखना। उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना = थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिये उत्साहित होना। उँगलियों पर नचाना = १. जैसे चाहे वैसा कराना। २. अपनी इच्छा के अनुसार ले चलना। कानी उँगली=कनिष्ठिका या सबसे छोटी उँगली। कानों में उँगली देना = किसी बात से विरक्त या उदासीन होकर उसकी चर्चा बचाना। पाँचों उँगलियाँ घी में होना = सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।

**उँघाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ", "औंघाई"।

**उंचन**—संज्ञा स्त्री० [सं० उदञ्चन= ऊपर खींचना या उठाना] अदवायन। अदवान।

**उंचना**—क्रि० स० [सं० उदञ्चन]

अदवान तानना। उँचन कसना अदवान खींचना।

**उँचाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँचाई"।

**उँचाना***—क्रि० स० [ हिं० ऊँची ] ऊँचा करना। उठाना।

**उँचाव***†—संज्ञा पु० [ सं० उच्च ] ऊँचाई।

**उँचास***†—संज्ञा पुं० दे० "ऊँचाई"।

**उंछ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मालिक के ले जाने के पीछे खेत में पड़े हुए अन्न के दाने जीविका के लिये चुनना। सीला बीनना।

**उंछवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] खेत में गिरे हुए दानों को चुनकर जीवन-निर्वाह करना।

**उंछशील**—वि० [ सं० ] उंछवृत्ति से जीवन-निर्वाह करनेवाला।

**उँजियार**—वि० दे० "उजाला"।

**उँजेला**—संज्ञा पु० दे० "उजाला"।

**उँडेरना**—क्रि० स० दे० "उँडेलना"।

**उँडेलना**—क्रि० स० [ सं० उद्धारण ] १. तरल पदार्थ को दूसरे बरतन में डालना। ढालना। २. तरल पदार्थ को गिराना या फेंकना।

**उंदुर**—संज्ञा पु० [सं०] चूहा। मूसा।

**उँह**—अव्य० [अनु०] १. अस्वीकार, घृणा या उपेक्षा सूचित करनेवाला शब्द। २. वेदना-सूचक शब्द। कराहने का शब्द।

**उ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ ब्रह्मा। २. नर।

*अव्य० भी।

**उअना***—क्रि० अ० दे० "उगना"।

**उआना***—क्रि० स० दे० "उगाना"। *†क्रि० स० [ सं० उद्गुरण ] किसी के मारने के लिये हाथ या हथियार तानना।

**उऋण**—वि० [ सं० उत् + ऋण ] ऋणमुक्त। जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।

**उकचन**—संज्ञा पुं० [ सं० मुचकुंद ] मुचकुंद का फूल।

**उकचना***—क्रि० अ० [ सं० उत्कर्ष ] १ उखड़ना। अलग होना २. पर्त्त से अलग होना। उचड़ना। ३. उठ भागना।

**उकटना**—क्रि० स० दे० "उघटना"।

**उकटा**—वि० [ हिं० उकटना ] [स्त्री० उकटी] उकटनेवाला। एहसान जतानेवाला।

संज्ञा पु० किसी के किए हुए अपराध या अपने उपकार को बार बार जताना।

यौ०—उकटा पुरान = गई बीती और दबी दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन।

**उकठना**—क्रि० अ० [सं० अव = बुरा + काष्ठ] सूखना। सूखकर कड़ा होना।

**उकठा**—वि० [ हिं० उठकना ] शुष्क। सूखा।

**उकड़ू**—संज्ञा पु० [ सं० उत्कुतोर ] घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे ज़मीन पर पूरे बैठते हैं और चूतड़ एड़ियों से लगे रहते हैं।

**उकत**—संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

**उकताना**—क्रि० अ० [ सं० आकुल ] १. ऊबना। २. जल्दी मचाना।

**उकति***—संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

**उकलना**—क्रि० अ० [ सं० उत्कलन= खुलना ] १. तह से अलग होना। उचड़ना। २ लिपटी हुई चीज़ का खुलना। उधड़ना।

**उकलाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० उगलना] कै। उलटी। वमन। म..ली।

**उकलाना**—क्रि० अ० [हिं० उकलाई] उलटी करना। वमन करना। कै करना।

**उकवथ**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्कोथ ] एक प्रकार का चर्म-रोग जिसमें दाने निकलते हैं, खाज होती है और चेप बहता है।

**उकसना**—क्रि० अ० [ सं० उत्कर्षण या उत्सुक ] १ उभरना। ऊपर उठना। २. निकलना। अंकुरित होना। ३. उधड़ना।

**उकसनि***—संज्ञा स्त्री० [हिं० उकसना] उठने की क्रिया या भाव। उभाड़।

**उकसाना**—क्रि० स० [हिं० 'उकसना' का प्रे० रूप] १ ऊपर उठाना। २. उभाड़ना। उत्तेजित करना। ३. उठा देना। हटा देना। ४. (दिए की बत्ती) बढ़ाना या खसकाना।

**उकसाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उकसाना + हट (प्रत्य०) ] उकसाने की क्रिया या भाव। उत्तेजना।

**उकसौहाँ**—वि० [ हिं० उकसना + औहाँ (प्रत्य०) ] [ स्त्री० उकसौंही ] उभड़ता हुआ।

**उकाब**—संज्ञा पु० [ अ० ] बड़ी जाति का एक गिद्ध। गरुड़।

**उकालना***—क्रि०स०दे०"उकेलना"।

**उकासना***—क्रि० स० [ हिं० उकसाना ] १. उभाड़ना। २. खोदकर ऊपर फेंकना। ३. उघारना। खोलना।

**उकासी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उकसना] परदा आदि हट जाने से सामने आना। संज्ञा स्त्री० [सं० अवकाश] अवकाश। छुट्टी।

**उकुति***—संज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति"।

**उकुसना***—क्रि० स० [हिं०उकसना] उजाड़ना। उधेड़ना।

**उकेलना**—क्रि० स० [ हिं० उकलना ] १. तह या पर्त्त से अलग करना। उजाड़ना। २ लिपटी हुई चीज़ को छुड़ाना या अलग करना। उधेड़ना।

**उकौना**—संज्ञा पु० [ हिं० आकांक्षा ] गर्भवती की भिन्न-भिन्न वस्तुओं की

इच्छा। दोहद।

**उक्त**—वि॰ [ सं॰ ] कथित। कहा हुआ।

**उक्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. कथन। वचन। २. अनोखा वाक्य। चमत्कार-पूर्ण कथन।

**उखड़ना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उत्खिदन या उत्कर्षण ] १. किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। जड़-सहित अलग होना। खुदना। "जमना" का उलटा। २. किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना। जमा या सटा न रहना। ३. जोड़ से हट जाना। ४. (घोड़े के वास्ते) चाल में भेद पड़ना। गति सम न रहना। ५. संगीत में बेताल और बेसुर होना। ६. एकत्र या जमा न रहना। तितर-बितर हो जाना। ७ छूटना। अलग होना। ८. टूट जाना।

**मुहा॰**—उखड़ी उखड़ी बातें करना = उदासीनता दिखाते हुए बात करना। विरक्ति-सूचक बात करना। पैर या पाँव उखड़ना = ठहर न सकना। एक स्थान पर जमा न रहना। लड़ने के लिये सामने न खड़ा रहना।

**उखड़वाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उखड़ना का प्रे॰ रूप ] किसी को उखाड़ने में प्रवृत्त करना।

**उखम***—संज्ञा पु॰ [सं॰ ऊष्म] गरमी।

**उखमज***†—संज्ञा पु॰ दे॰ "ऊष्मज"।

**उखरना**†*—क्रि॰ अ॰ दे॰ "उखड़ना"।

**उखली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ उत्खल ] पत्थर या लकड़ी का एक पात्र जिसमें डालकर भूसीवाले अनाजों की भूसी मूसलों से कूटकर अलग की जाती है। ओखली।

**उखा***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उषा"।

**उखाड़**—संज्ञा पु॰ [ हिं॰ उखाड़ना ] १. उखाड़ने की क्रिया। उत्पाटन। २ वह युक्ति जिससे कोई पेंच रद्द किया जाता है। तोड़।

**उखाड़ना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उखड़ना का स॰ रूप ] १ किसी जमी, गड़ी या बैठी हुई वस्तु को स्थान से पृथक् करना। जमा न रहने देना। २. अंग को जोड़ से अलग करना। ३ भड़काना। बिचकाना। ४ तितर बितर कर देना। ५. हटाना। टालना। ६ नष्ट करना। ध्वस्त करना।

**मुहा॰**—गड़े मुर्दे उखाड़ना = पुरानी बातों को फिर से छेड़ना। गई बीती बात उभाड़ना। पैर उखाड़ देना = स्थान से विचलित करना। हटाना। भगाना।

**उखाड़ू**—वि॰ [ हिं॰ उखाड़ना ] १ उखाड़नेवाला। २. चुगली खानेवाला।

**उखिलता**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ उखिल + ता ) अजनबीपन। उष्णता।

**उखिलताई**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उखिलता"।

**उखारना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "उखाड़ना"।

**उखारी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ऊख ] ईख का खेत।

**उखालिया**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ उषः + काल ] बहुत सबेरे का भोजन। सरगही।

**उखेलना***—क्रि॰ स॰ [सं॰ उल्लेखन] उरेहना। लिखना। खींचना। (तसवीर)

**उगटना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उद्घाटन या उत्कथन ] १ उघटना। बार बार कहना। २. ताना मारना। बोली बोलना।

**उगना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उद्गमन ] १. निकलना। उदय होना। प्रकट होना। (सूर्य-चंद्र आदि ग्रह ) २ जमना। अंकुरित होना। ३. उपजना। उत्पन्न होना।

**उगरना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ उद्गरण] १ भरा हुआ पानी आदि निकलना। २. भरा हुआ पानी आदि निकल जाने से खाली होना।

**उगलना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उद्गिलन, पा॰ उग्गिलन ] १ पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से बाहर निकालना। कै करना। २. मुँह में गई हुई वस्तु को बाहर थूक देना। ३ पचाया माल विवश होकर वापस करना। ४ जो बात छिपाने के लिये कही जाय, उसे प्रकट कर देना।

**मुहा॰**—उगल पड़ना = तलवार का म्यान से बाहर निकल पड़ना। बाहर निकलना। जहर उगलना = ऐसी बात मुँह से निकालना जो दूसरे को बहुत बुरी लगे या हानि पहुँचावे।

**उगलवाना**-क्रि॰स॰दे॰ "उगलाना"।

**उगलाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उगलना का प्रे॰ रूप] १ मुख से निकलवाना। २ इकबाल कराना। दोष को स्वीकार कराना। ३ पचे हुए माल को निकलवाना।

**उगवना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "उगाना"।

**उगसाना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "उकसाना"।

**उगसारना***—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उकसाना ] बयान करना। कहना। प्रकट करना।

**उगाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उगना का स॰ रूप] १. जमाना। अंकुरित करना। उत्पन्न करना। (पौधा या अन्न आदि) २ उदय करना। प्रकट करना।

**उगार, उगाल***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उद्गार, पा॰ उगाल ] पीक। थूक। खखार।

**उगालदान**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ उगाल + फ़ा॰ दान (प्रत्य॰) ] थूकने या खखार आदि गिराने का बरतन। पीकदान।

**उगाहना**—क्रि० स० [सं० उद्ग्रहण] १. नियमानुसार अलग अलग अन्न, धन आदि लेकर इकट्ठा करना। वसूल करना। २. कहीं से प्रयत्नपूर्वक कुछ प्राप्त करना।

**उगाही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० उगाहना] १. रुपया पैसा वसूल करने का काम। वसूली। २. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

**उगिलना***†—क्रि० स० दे० "उगलना"।

**उग्गाहा**—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्गाथा, प्रा० उग्गाहा] आर्य्या छंद के भेदों में से एक।

**उग्र**—वि० [सं०] प्रचंड। उत्कट। तेज़।

संज्ञा पुं० १ महादेव। २. बच्छनाग-विष। बच्छनाग ज़हर। ३. क्षत्रिय पिता शूद्रा माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ४. केरल देश। ५. सूर्य्य।

**उग्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेजी। प्रचंडता।

**उघटना**—क्रि० अ० [सं० उत्कथन] १. ताल देना। सम पर तान तोड़ना। २. दबी-दबाई बात को उभाड़ना। ३. कभी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार-बार कह-कर ताना देना। ४ किसी को भला बुरा कहते कहते उसके बाप-दादे को भी भला बुरा कहने लगना।

**उघटा**—वि० [हिं० उघटना] किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। एहसान। जतानेवाला। उघटनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] उघटने का कार्य्य।

**उघड़ना**—क्रि० अ० [सं० उद्घाटन] १. खुलना। आवरण का हटना। (आवरण के संबंध में) २. खुलना। आवरणरहित होना। (आवृत के संबंध में) ३. नंगा होना। ४. प्रकट होना। प्रकाशित होना। ५. भंडा फूटना।

**उघरना***†—क्रि० अ० दे० "उघड़ना"।

**उघरारा***†—वि० [हिं० उघरना] [स्त्री० उघरारी] खुला हुआ।

**उघाड़ना***—क्रि० स० [हिं० उघड़ना का स० रूप] १. खोलना। आवरण का हटाना। (आवरण के संबंध में) २. खोलना। आवरण-रहित करना। (आवृत के संबंध में)। ३. नंगा करना। ४ प्रकट करना। प्रकाशित करना। ५. गुप्त बात को खोलना। भंडा फोड़ना।

**उघाड़ा**—वि० [हिं० उघड़ना] जिसके ऊपर कोई आवरण न हो।

**उघारना***—क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।

**उघेलना***—क्रि० स० [हिं० उघारना] खोलना।

**उचंत**—वि० दे० "उचित"।

**उचंतखाता**—वह रकम जो किसी कार्य्य के लिये पेशगी रखी जाय।

**उचकन**—संज्ञा पुं० [सं० उच्च+करण] ईंट-पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज़ को एक ओर ऊँचा करते हैं।

**उचकना**—क्रि० अ० [सं० उच्च = ऊँचा + करण = करना] १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एँड़ी उठाकर खड़ा होना। २. उछलना। कूदना।

क्रि० स० उछलकर लेना। लपककर छीनना।

**उचका***—क्रि० वि० [हिं० अचाका] अचानक। सहसा।

**उचकाना**—क्रि० स० [हिं० उचकना का स० रूप] उठाना। ऊपर करना।

**उचक्का**—संज्ञा पुं० [हिं० उचकना] [स्त्री० उचक्की] १. उचककर चीज़ ले भागनेवाला। आदमी। चाई। ठग। २. बदमाश।

**उचटना**—क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १. जमी हुई वस्तु का उखड़ना। उच-ड़ना। चिपका या जमा न रहना। २. अलग होना। पृथक् होना। छूटना। ३ भड़कना। बिचकना। ४. विरक्त होना।

**उचटाना***—क्रि० स० [सं० उच्चाटन] १. उचाड़ना। नोचना। २. अलग करना। छुड़ाना। ३. उदासीन करना। विरक्त करना। ४. भड़काना। बिचकाना।

**उचड़ना**—क्रि० अ० [सं० उच्चाटन] १ सटी या लगी हुई चीज़ का अलग होना। पृथक् होना। २. किसी स्थान से हटना या अलग होना। जाना। भागना।

**उचना***—क्रि० अ० [सं० उच्च] १. ऊँचा होना। ऊपर उठना। उच-कना। २. उठना।

क्रि० स० ऊँचा करना। उठाना।

**उचनि***—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्च] उभाड़।

**उचरंग**†—संज्ञा पुं० [हिं० उछलना + अंग] उड़नेवाला। कीड़ा। पतंग। पतिंगा।

**उचरना***—क्रि० स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।

क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना।

†*क्रि० अ० दे० "उचड़ना"।

**उचाट**—संज्ञा पुं० [सं० उच्चाट] मन का लगना। विरक्ति। उदासीनता।

**उचाटन***—संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"।

**उचाटना**—क्रि० स० [सं० उच्चाटन] उच्चाटन करना। जी हटाना। विरक्त करना।

**उचाटी***—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्चाट] उदासीनता। अनमनापन। विरक्ति।

**उचाड़ना**—क्रि० स० [हिं० उचड़ना] १. लगा या सटी हुई चीज़ का अलग करना। नोचना। २. उखाड़ना।

**उचाना**†—क्रि० स० [ सं० उच्च + करण ] १. ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २ उठाना।

**उचार***—संज्ञा पु० दे० "उच्चार"।

**उचारना***—क्रि० स० [ स० उच्चारण ] उच्चारण करना। मुँह से शब्द निकालना।

क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।

**उचंत**—वि० [ ? ] ( वह दी हुई रक़म ) जिसका हिसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो।

**उचित**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा औचित्य ] योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

**उचेलना**†—क्रि० स० दे० "उकेलना"।

**उचौहाँ***—वि० [ हिं० ऊँचा+औहाँ (प्रत्य०) ] [ स्त्री० ऊँचौहीं ] ऊँचा उठा हुआ।

**उच्च**—वि० [ सं० ] १. ऊँचा। श्रेष्ठ। बड़ा।

**उच्चतम**- वि० [सं०] सबसे ऊँचा।

**उच्चता**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] १. ऊँचाई। २. श्रेष्ठता। बड़ाई। ३. उत्तमता।

**उच्चरण**—संज्ञा पुं० [ स० ] [ वि० उच्चरणीय, उच्चरित ] कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुँह से शब्द फूटना।

**उच्चरना***—क्रि० स० [ सं० उच्चारण ] उच्चारण करना। बोलना।

**उच्चरित**—वि० [ स० ] १. जिसका उच्चारण हुआ हो। २ जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो।

**उच्चाकांक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] [ वि० उच्चाकांक्षी ] बड़ी या महत्व की आकांक्षा।

**उच्चाट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २. अनमनापन।

**उच्चाटन**—संज्ञा पुं० [ स० ] [ वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित ] लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना। विश्लेषण। २. उचाड़ना। उखाड़ना। नोचना ३. किसी के चित्त को कहीं से हटाना। ( तंत्र के छः अभिचारों या प्रयोगों में से एक )। ४. अनमनापन। विरक्त। उदासीनता।

**उच्चार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मुँह से शब्द निकालना। बोलना। कथन।

**उच्चारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य, उच्चार्यमाण ] १ कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना। मुँह से स्वर और व्यंजनयुक्त शब्द निकालना। २. वर्णों या शब्दों को बोलने का ढंग। तलफ़्फ़ुज़।

**उच्चारना***—क्रि० स० [ सं० उच्चारण ] ( शब्द ) मुँह से निकालना। बोलना।

**उच्चारित**—वि० [ सं० ] जिसका उच्चारण किया गया हो। बोला या कहा हुआ।

**उच्चार्य**—वि० [ सं० ] उच्चारण के योग्य।

**उच्चाशा**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] बड़ी या ऊँची आशा।

**उच्चैःश्रवा**—संज्ञा पुं० [ सं० उच्चैः श्रवस् ] खड़े कान और सात मुँह का इंद्र या सूर्य का सफ़ेद घोड़ा जो समुद्र-मंथन के समय निकला था।

वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।

**उच्छन्न**—वि० [ सं० ] दबा हुआ। लुप्त।

**उच्छलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उच्छलित ] ऊपर उठने या उछलने की क्रिया। उछाल।

**उच्छलना***—क्रि० अ० दे० "उछलना"।

**उच्छव***—संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।

**उच्छाव***—संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।

**उच्छाह***—संज्ञा पुं० दे० "उछाह"।

**उच्छिन्न**—वि० [सं०] १ कटा हुआ। खंडित। २. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।

**उच्छिष्ट**—वि० [ सं० ] १. किसी के खाने से बचा हुआ। जूठा। २. दूसरे का बर्ता हुआ।

संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शहद।

**उच्छू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उत्थान, पं० उत्थू ] एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि रुकने से आने लगती है। सुनसुनी।

**उच्छृंखल**—वि० [ सं० ] १. जो शृंखलाबद्ध न हो। क्रमविहीन। अंड-बंड। २. निरंकुश। स्वेच्छाचारी। मनमाना काम करनेवाला। ३. उद्दंड। अक्खड़।

**उच्छेद, उच्छेदन**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० उच्छिन्न ] १ उखाड़-पखाड़। खंडन। २ नाश।

**उच्छ्वसित**—वि० [ स० ] १. उच्छ्वासयुक्त। २. जिस पर उच्छ्वास का प्रभाव पड़ा हो। ३. विकसित। प्रफुल्ल। ४. जीवित।

**उच्छ्वास**—संज्ञा पुं० [ स० ] [ वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासित, उच्छ्वासी ] १ ऊपर खींची हुई साँस। उसास। २ साँस। श्वास। ३. ग्रंथ का विभाग। प्रकरण।

**उछंग***—संज्ञा पुं० [ सं० उत्संग ] १. क्रोड़। गोद। २. हृदय। छाती।

**उछकना** - क्रि० अ० [ हिं० छकना ] नशा हटना। चेत में आना।

**उछरना***†—क्रि० अ० दे० "उछलना"।

**उछल-कूद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उछलना+कूदना ] १. खेल-कूद। २. अधीरता, असंतोष आदि व्यक्त करने के लिए उछलने-कूदने का प्रयत्न।

**उछलना**—क्रि० अ० [सं० उच्छलन] १. वेग से ऊपर उठना और गिरना। २. झटके के साथ एक बारगी शरीर को क्षण भर के लिये इस प्रकार ऊपर उठा लेना जिसमें पृथ्वी का लगाव छूट जाय। कूदना। ३. अत्यंत प्रसन्न होना। खुशी से फूलना। ४. रेखा या चिह्न का साफ़ दिखाई पड़ना। चिह्न पड़ना। उपटना। उमड़ना। ५. उतराना। तरना।

**उछलवाना**—क्रि० स० [हिं० उछलना का प्रे० रूप] उछलने में प्रवृत्त करना।

**उछलाना**—क्रि० स० [हिं० उछालना का प्रे० रूप] उछालने में प्रवृत्त करना।

**उछाँटना**—क्रि० स० [हिं० उचाटना] उचाटना। उदासीन करना। विरक्त करना।

*क्रि० स० [हिं० छाँटना] छाँटना। चुनना।

**उछारना***†—क्रि० स० दे० "उछालना"।

**उछाल**—संज्ञा स्त्री० [सं० उच्छालन] १. सहसा ऊपर उठने की क्रिया। २ फलाँग। चौकड़ी। कुदान। ३. ऊँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है। † ४. उलटी। कै। वमन। ५. पानी का छींटा।

**उछालना**—क्रि० स० [सं० उच्छालन] १. ऊपर की ओर फेंकना। उचकाना। २. प्रकट करना। प्रकाशित करना।

**उछाह***—संज्ञा पुं० [सं० उत्साह] [वि० उछाही] १. उत्साह। उमंग। हर्ष। २. उत्सव। आनंद की धूम। ३. जैन लोगों की रथ-यात्रा। ४. इच्छा।

**उछाला**—संज्ञा पुं० [हिं० उछाल] १. जोश। उबाल। २. वमन। कै। उलटी। ३. उछलने की क्रिया। ४. किसी चीज़ का भाव एक दम से बढ़ जाना।

**उछाही***†—वि० [हिं० उछाह + ई (प्रत्य०)] उत्साह करनेवाला। आनंद मनानेवाला।

**उछीनना***—क्रि० स० [सं० उच्छिन्न] उच्छिन्न करना। उखाड़ना। नष्ट करना।

**उछीर***—संज्ञा पुं० [हिं० छीर = किनारा] अवकाश। जगह।

**उजड़ना**—क्रि० अ० [सं० अव—उ= नहीं + जड़ना = जमाना] [वि० उजाड़] १. उखड़ना-पुखड़ना। उच्छिन्न होना। ध्वस्त होना। २ गिर-पड़ जाना। तितर-बितर होना। ३. बरबाद होना। नष्ट होना।

**उजड़वाना**—क्रि० स० [हिं० उजाड़ना का प्रे० रूप] किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

**उजड्ड**—वि० [सं० उद्दंड] १. वज्र मूर्ख। अशिष्ट। असभ्य। २. उद्दंड। निरंकुश।

**उजड्डपन**—संज्ञा पुं० [हिं० उजड्ड + पन (प्रत्य०)] उद्दंडता। अशिष्टता। असभ्यता।

**उजबक**—संज्ञा पुं० [तु०] १. तातारियों की एक जाति। २. उजड्ड। मूर्ख।

**उजरत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बदला। एवज। २. मजदूरी। पारिश्रमिक।

**उजरना***—क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

**उजरा***—वि० दे० "उजला"।

**उजराई**—संज्ञा स्त्री० दे० "उजलापन"।

**उजराना***—क्रि० स० [सं० उज्ज्वल] उज्ज्वल कराना। साफ़ कराना।

क्रि० अ० सफ़ेद या साफ़ होना।

**उजलत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] जल्दी।

**उजलवाना**—क्रि० स० [हिं० उजालना का प्रे० रूप] गहने या अस्त्र आदि का साफ़ करवाना।

**उजला**—वि० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजली] [भाव० उजलापन] १. श्वेत। धौला। सफ़ेद। २. स्वच्छ। साफ़। निर्मल।

**उजलापन**—संज्ञा पुं० [हिं० उजला + पन] सफ़ेद या स्वच्छ होने का भाव।

**उजागर**—वि० [सं० उद्=ऊपर, अच्छी तरह + जागर=जागना, प्रकाशित होना] स्त्री० उजागरी] १. प्रकाशित। जाज्वल्यमान। जगमगाता हुआ। २. प्रसिद्ध। विख्यात।

**उजाड़**—संज्ञा पुं० [सं० उजट] १. उजड़ा हुआ स्थान। गिरी-पड़ी जगह। २. निर्जन स्थान। वह स्थान जहाँ बस्ती न हो। ३. जंगल। बियाबान।

वि० १. ध्वस्त। उच्छिन्न। गिरा पड़ा। २. जो आबाद न हो। निर्जन।

**उजाड़ना**—क्रि० स० [हिं० उजड़ना] १ ध्वस्त करना। गिराना पड़ाना। उधेड़ना। २. उच्छिन्न या नष्ट करना।

**उजान**—क्रि० वि० दे० "उजला"।

**उजार***—संज्ञा पुं० दे० "उजाड़"।

**उजारना***—क्रि० स० १. दे० "उजाड़ना"। २. दे० "उजालना"।

**उजारा***—संज्ञा पुं० [हिं० उजाला] उजाला।

वि० प्रकाशवान्। कांतिमान्।

**उजारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली"।

**उजालना**—क्रि० स० [सं० उज्ज्वलन] १. गहने या हथियार आदि साफ़ करना। चमकाना। निखारना। २. प्रकाशित करना। ३. बालना।

चलाना।

**उजाला**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उज्ज्वल] [ स्त्री॰ उजाली ] १. प्रकाश। चाँदनी। रोशनी। २. अपने कुल और जाति में श्रेष्ठ व्यक्ति।
वि॰ [ स्त्री॰ उजली] प्रकाशवान्। 'अँधेरा' का उलटा।

**उजाली**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ उजाला ] चाँदनी। चंद्रिका।

**उजास**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰, उजाला+स ( प्रत्य॰ ) ] चमक। प्रकाश। उजाला।

**उजासना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ उजास+ना ( प्रत्य॰ )] प्रकाशित होना। चमकना।
क्रि॰ स॰ प्रकाशित करना। चमकाना।

**उजियर***—वि॰ दे॰ "उजला"।

**उजियरिया**‡—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उजाली"।

**उजियार***—संज्ञा पु॰ दे॰ "उजाला"।

**उजियारना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उजियारा+ना (प्रत्य॰ ) ] १. प्रकाशित करना। २. जलाना।

**उजियारा***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उजाला"।

**उजियाला**—संज्ञा पु॰ दे॰ "उजाला"।

**उजीर***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वजीर"।

**उजुर**—संज्ञा पु॰ दे॰ "उज्र"।

**उजेर***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उजाला"।

**उजेला**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ उज्ज्वल ] प्रकाश। चाँदनी। रोशनी।
वि॰ [ स्त्री॰ उजेली ] प्रकाशवान्।

**उज्जर***—वि॰ दे॰ "उज्ज्वल"।

**उज्जल**—क्रि॰ वि॰ [सं॰ उद्=ऊपर+जल=पानी ] बहाव से उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। उजान।
*वि॰ दे॰ "उज्ज्वल"।

**उज्जयिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] मालवा देश की प्राचीन राजधानी जो सिप्रा नदी के तट पर है। ( सप्तपुरियों में से एक )

**उज्जैन**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उज्जयिनी"।

**उज्यारा***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उजाला"।

**उज्र**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ उज्र ] १. बाधा। विरोध। आपत्ति। विरुद्ध वक्तव्य। २. किसी बात के विरुद्ध विनय-पूर्वक कुछ कथन।

**उज्रदारी**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰उज्र+फ़ा॰ दारी ( प्रत्य॰ )] किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चाहता हो।

**उज्वल**—वि॰ [सं॰ उज्ज्वल ] [ संज्ञा उज्ज्वलता ] १. दीप्तिमान्। प्रकाशमान्। २. शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३. बेदाग। ४. श्वेत। सफ़ेद।

**उज्वलता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ उज्ज्वलता ] १. कांति। दीप्ति। चमक। २. स्वच्छता। निर्मलता। ३ सफ़ेदी।

**उज्वलन**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ उज्ज्वलन ] [ वि॰ उज्वलित ] १. प्रकाश। दीप्ति। २ जलना। बलना। ३. स्वच्छ करने का कार्य्य।

**उज्वला**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ उज्ज्वला] बारह अक्षरों की एक वृत्ति।

**उझकना***—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ उचकना ] १. उचकना। कूदना। २. ऊपर उठना। उभड़ना। उमड़ना। ३. ताकने के लिये ऊँचा होना। देखने के लिये सिर उठाना। ४. चौंकना।

**उझरना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उत्सरण, प्रा॰ उच्छरण ] ऊपर की ओर उठना।

**उझलनि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ उत्+झरनि ] वर्षा।

**उझलना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उज्झरण ] किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से गिराना। ढालना। उँडेलना।
*क्रि॰ अ॰ उमड़ना। बढ़ना।

**उझाँकना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "झाँकना"।

**उझिला**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ उझिलना ] उबटन बनाने के लिये उबाली हुई सरसों।
वि॰ कम गहरा। छिछला।

**उटंग**—वि॰ [ सं॰ उत्तुंग ] पहनने में ऊँचा या छोटा ( कपड़ा )।

**उटंगन**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ उट = घास ] एक घास जिसका साग खाया जाता है। चौपतिया। गुठुवा। सुसना।

**उटकना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उत्कलन ] अनुमान करना। अटकल लगाना।

**उटज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] झोपड़ी।

**उट्ठी**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] खेल या लागडाट में बुरी तरह हार मानना।

**उठँगन**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ उत्थ + अंग ] १. आड़। टेक। २. बैठने में पीठ को सहारा देनेवाली वस्तु।

**उठँगना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उत्थ + अंग ] १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २ लेटना। पड़ रहना।

**उठँगाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उठंगना ] १ खड़ा करने में किसी वस्तु से लगाना। भिड़ाना। २. ( किवाड़ ) भिड़ाना या बंद करना।

**उठना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उत्थान ] १. किसी वस्तु का ऐसी स्थिति में होना जिसमें उसका विस्तार पहले की अपेक्षा अधिक ऊँचाई तक पहुँचे। ऊँचा होना। बैठी से खड़ी स्थिति में होना।
मुहा॰—उठ जाना = दुनिया से चला जाना। मर जाना। उठती जवानी = युवावस्था का आरंभ। उठते बैठते = प्रत्येक अवस्था में। हर घड़ी। प्रतिक्षण। उठना बैठना = आना-जाना। संग-साथ।
२. ऊँचा होना। और ऊँचाई तक

चढ़ आना। जैसे—लहर उठना। ३. ऊपर जाना। ऊपर चढ़ना। आकाश में जाना। ४. कूदना। उछलना। ५. बिस्तर छोड़ना। जागना। * ६. निकलना। उदय होना। ७. उत्पन्न होना। पैदा होना। जैसे—विचार उठना। ८. सहसा आरंभ होना। एक बारगी शुरू होना। जैसे—दर्द उठना। ९. तैयार होना। उद्यत होना। १०. किसी अंक या चिह्न का स्पष्ट होना। उभड़ना। ११. पाँस बनना। खमीर आना। सड़कर उफनाना। १२. किसी दूकान या कार्यालय के कार्य का समय पूरा होना। १३. किसी दूकान या कारखाने का काम बंद होना। १४. चल पड़ना। प्रस्थान करना। १५. किसी प्रथा का दूर होना। १६. खर्च होना। काम में लगना। जैसे, रुपया उठना। १७. बिकना या भाड़े पर जाना। १८. याद आना। ध्यान पर चढ़ना। १९. किसी वस्तु का क्रमशः जुड़-जुड़कर पूरी ऊँचाई पर पहुँचना। २० गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना। या अलंग पर आना।

**उठल्लू**—वि० [ हिं० उठना + ल्लू (प्रत्य०) ] १. एक स्थान पर न रहनेवाला। आसनछोपी। २. आवारा। बेठिकाने का।

**मुहा०**—उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा = बेकाम इधर उधर फिरनेवाला। निकम्मा।

**उठवाना**—क्रि० स० [ हिं० उठाना क्रिया का प्रे० रूप ] उठाने का काम दूसरे से कराना।

**उठाईगीर**—वि० [हिं० उठाना + फ़ा० गीर ] १. आँख बचाकर चीज़ों का चुरा लेनेवाला। उचक्का। चाई २. बदमाश। लुच्चा।

**उठान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उत्थान ] १. उठना। उठने की क्रिया। २. बाढ़। बढ़ने का ढंग। वृद्धि-क्रम। ३. गति को प्रारंभिक अवस्था। ४ कोई बात आरंभ करने का प्रसंग या ढंग। आरंभ। ५. खर्च। व्यय। खपत।

**उठाना**—क्रि० स० [ हिं० उठना का स० रूप ] १. बैठी स्थिति से खड़ी स्थिति में करना। जैसे, लेटे हुए प्राणी को बैठाना। २. नीचे से ऊपर ले जाना। ३. धारण करना। ४. कुछ काल तक ऊपर लिये रहना। ५. जगाना। ६. निकालना। उत्पन्न करना। ७. आरंभ करना। शुरू करना। छेड़ना। जैसे—बात उठाना। ८. तैयार करना। उद्यत करना। ९ मकान या दीवार आदि तैयार करना। १० नियमित समय पर किसी दूकान या कार्यालय को बंद करना। ११. किसी प्रथा का बंद करना। १२. खर्च करना। लगाना। १३ भाड़े या किराये पर देना। १४. भोग करना। अनुभव करना। १५. शिरोधार्य करना। मानना। १६. किसी वस्तु को हाथ में लेकर कसम खाना।

**मुहा०**—उठा रखना = बाकी रखना। कसर छोड़ना।

**उठाव**—संज्ञा पुं० दे० "उठान"।

**उठौआ**—वि० दे० "उठौवा"।

**उठौनी**—संज्ञा स्त्री [ हिं० उठाना ] १. उठाने की क्रिया। २. उठाने की मजदूरी या पुरस्कार। ३ वह रुपया जो किसी फ़सल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिये पेशगी दिया जाय। अगौढ़ा। दादनी। ४. बनियों या दूकानदारों के साथ उधार का लेन-देन। ५. वह धन जो छोटी जातियों में वर की ओर से कन्या के घर विवाह दृढ़ करने के लिये भेजा जाता है। लगन-धरौआ। ६. वह धन या अन्न जो संकट पड़ने पर किसी देवता की पूजा के उद्देश से अलग रखा जाय। ७. एक रीति जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर मृतक के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते हैं और पुरुषों को पगड़ी बाँधते हैं।

**उठौवा**—वि० [ हिं० उठाना ] १. जिसका कोई स्थान नियत न हो। जो नियत स्थान पर न रहता हो। २. जो उठाया जाता हो।

**उड़ंकू**—वि० [ हिं० उड़ना + अंकू (प्रत्य०) ] १. उड़नेवाला। जो उड़ सके। २. चलने फिरनेवाला। डोलनेवाला।

**उड़***—संज्ञा पुं० दे० "उडु"।

**उड़न**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उड़ना ] उड़ने की क्रिया। उड़ान।

वि० उड़नेवाला। (यौगिक शब्दों के आरंभ में)

**उड़नखटोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० उड़ना + खटोला ] उड़नेवाला खटोला। विमान।

**उड़नगोला**—संज्ञा पुं० दे० "उड़नबम"।

**उड़नछू**—वि० [ हिं० उड़ना ] चंपत। गायब।

**उड़नझाँई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उड़ना + झाँई ] चकमा। बुत्ता। बहाली।

**उड़नफल**—संज्ञा पुं० [ हिं० उड़ना + फल ] वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति उत्पन्न हो।

**उड़नबम**—संज्ञा पुं० [ हिं० उड़ना + अं० बाम ] एक प्रकार का बम जो बहुत दूर से चलाये जाने पर, बहुत ऊँचे आकाश पर से होता हुआ, शत्रु के देश या उसकी सेना पर अपना विध्वंस-कारी प्रभाव प्रकट करता है।

**उड़ना**—क्रि० अ० [ सं० उड्डयन ] १. चिड़ियों का आकाश में या हवा

में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. आकाशमार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३. हवा में ऊपर उठना। जैसे—गुड्डी उड़ रही है। ४. हवा में फैलना। जैसे—छींटा उड़ना। ५. इधर-उधर हो जाना। छितराना। फैलना। ६. फहराना। फरफराना। जैसे—पताका उड़ना। ७. तेज चलना। भागना। ८. झटके के साथ अलग होना। कटकर दूर जा पड़ना। ९. पृथक् होना। उधड़ना। छितराना। १०. जाता रहना। गायब होना। लापता होना। ११. खर्च होना। १२. किसी भोग्य वस्तु का भोगा जाना। १३. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार होना। १४. रंग आदि का फीका पड़ना। धीमा पड़ना। १५. किसी पर मार पड़ना। लगना। १६. बातों में बहलाना। भुलावा देना। चकमा देना। १७. घोड़े का चौफाल कूदना। १८. छलांग मारना। कूदना (कुश्ती)

क्रि० स० छलाँग मारकर किसी वस्तु को लाँघना। कूदकर पार करना।

मुहा०—उड़ चलना=१. तेज़ दौड़ना। सरपट भागना। २. शोभित होना। फबना। ३. मजेदार होना। स्वादिष्ठ बनना। ४. कुमार्ग स्वीकार करना। बदराह बनना। ५. इतराना। घमंड करना। उड़ती खबर= बाज़ारू खबर। किंवदंती। उड़कर खाना = १. उड़-उड़कर काटना। २. अप्रिय लगना। बुरा लगना।

वि० उड़नेवाला। उड़ाका।

**उड़ती मछली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उड़ना + मछली ] एक प्रकार की मछली जो पानी से निकलकर कुछ दूर तक उड़ती भी है।

**उड़प**—संज्ञा पुं० [ हिं० उड़ना ] नृत्य का एक भेद।

संज्ञा पुं० दे० "उडुप"।

**उड़व**—संज्ञा पुं० [ सं० ओड़व ] रागों की एक जाति। वह राग जिसमें केवल पाँच स्वर लगें और कोई दो स्वर न लगें।

**उड़वाना**—क्रि० स० [ हिं० 'उड़ाना' का प्रे० रूप। ] उड़ाने में प्रवृत्त करना।

**उड़सना**—क्रि० अ० [ उप० उ + डासन = बिछौना ] १ बिस्तर या चारपाई उठाना। २ भंग होना। नष्ट होना।

**उड़ाऊ**—वि० [ हिं० उड़ना ] १. उड़नेवाला। उड़ाकू। २ खर्च करनेवाला। खर्चीला।

**उड़ाका, उड़ाकू**—वि० [ हिं० उड़ना ] उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।

**उड़ान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उड्डयन ] १. उड़ने की क्रिया। २ छलाँग। कुदान। ३. उतनी दूरी जितनी एक दौड़ में तय कर सके। *४. कलाई। गट्टा। पहुँचा।

**उड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० उड़ना ] १. किसी उड़नेवाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना। १ हवा में फैलाना। जैसे—धूल उड़ाना। ३ उड़नेवाले जीवों को भगाना या हटाना। ४. झटके के साथ अलग करना। काटकर दूर फेंकना। ५. हटाना। दूर करना। ६. चुराना। हज़म करना। ७. मिटाना। नष्ट करना। ८. खर्च करना। बरबाद करना। ९. खाने-पीने की चीज़ को खूब खाना-पीना। चट करना। १० भोग्य वस्तु को भोगना। ११. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। १२ प्रहार करना। लगाना। मारना। १३. भुलावा देना। बात टालना। १४. झूठ-मूठ दोष लगाना। १५. किसी विद्या को इस प्रकार सीख लेना कि उसके आचार्य को खबर न हो।

**उड़ायक***—वि० [ हिं० उड़ान + क (प्रत्य०) ] उड़ानेवाला।

**उड़ास***—संज्ञा स्त्री० [ सं० उद्वास ] रहने का स्थान। वास-स्थान। महल।

**उड़ासना**—क्रि० स० [ सं० उद्वासन ] १. बिछौने को समेटना। बिस्तर उठाना। *२ किसी चीज़ को तहस-नहस करना। उजाड़ना। ३. बैठने या सोने में विघ्न डालना।

**उड़िया**—वि० [ हिं० उड़ीसा ] उड़ीसा का।

संज्ञा पुं० उड़ीसा देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० उड़ीसा देश की भाषा।

**उड़ियाना**—संज्ञा पुं० [ ? ] २२ मात्राओं का एक छंद।

**उड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उड़ना ] १. मालखंभ की एक कसरत। २. कलाबाज़ी।

**उड़ीसा**—संज्ञा पुं० [ सं० ओड्र ] उत्कल देश।

**उडुंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गूलर। ऊमर।

**उडु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नक्षत्र। तारा। २. पक्षी। चिड़िया। ३. केवट मल्लाह। ४. जल। पानी।

**उडुप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चंद्रमा। २. नाव। ३. घड़नई या घंडई। ४. भिलावाँ। ५. बड़ा गरुड़।

संज्ञा पुं० [ हिं० उड़ना ] एक प्रकार का नृत्य।

**उडुपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**उडुराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**उडुस**—संज्ञा पुं० [ सं० उद्दंश ] खटमल।

**उड़ेरना, उड़ेलना**—क्रि० स० दे० "उँडेलना"।

**उड़ौनी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उड़ना ] जुगनू।

**उड़ौहाँ**—वि० [ हिं० उड़ना + औहाँ (प्रत्य०) ] उड़नेवाला।

**उड्डयन**—संज्ञा पुं० [सं०] उड़ना।

**उड्डयन-विभाग**—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे सब तरह के हवाई जहाजों आदि की व्यवस्था हो।

**उड्डीयमान**—वि० [सं० उड्डीयमत्] [स्त्री० उड्डीयमती] उड़नेवाला। उड़ता हुआ।

**उढ़कना**—क्रि० अ० [ हिं० अड़ना ] १. अड़ना। ठोकर खाना। २. रुकना। ठहरना। ३. सहारा लेना। टेक लगाना।

**उढ़काना**—क्रि० स० हिं० [उढ़कना] किसी के सहारे खड़ा करना। भिड़ाना।

**उढ़रना**—क्रि० अ० [ सं० ऊढ़ा ] विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ निकल जाना।

**उढ़री**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उढ़रना ] रखेली स्त्री। सुरैतिन।

**उढ़ाना**—क्रि० स० दे० "ओढ़ाना"।

**उढ़ारना**—क्रि० स० [ हिं० उढ़रना ] दूसरे की स्त्री को ले भागना।

**उढ़ावनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ओढ़नी"।

**उतंक**—संज्ञा पु० [ सं० उत्तंक ] १. एक ऋषि जो वेद मुनि के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो गौतम के शिष्य थे।

वि०* [ सं० उत्तुंग ] ऊँचा।

**उतंग***—वि० [ सं० उत्तुङ्ग ] १. ऊँचा। बलद। २ श्रेष्ठ। उच्च।

**उतन***—वि० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न। पैदा

**उत्**—उप० दे० "उद्"।

**उत***—क्रि० वि० [ सं० उत्तर ] वहाँ। उधर। उस ओर।

**उतन***—क्रि० वि० [ हिं० उ + तनु ] उस तरफ़। उस ओर।

**उतना**—वि० [ हिं० उस + तन हिं० (प्रत्य० सं० 'तावान्' से) ] उस मात्रा का। उस कदर।

**उतपात**—संज्ञा पु० दे० "उत्पात"।

**उतपानना**—क्रि० स० [ सं० उत्पन्न ] उत्पन्न करना। उपजाना।

क्रि० अ० उत्पन्न होना।

**उतमंग***—संज्ञा पुं० [ सं० उत्तमांग ] सिर।

**उतर***—संज्ञा पु० दे० "उत्तर"।

**उतरन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उतरना ] पहने हुए पुराने कपड़े।

**उतरना**—क्रि० अ० [ सं० अवतरण ] १. ऊँचे स्थान से सँभलकर नीचे आना। **मुहा०**—चित्त से उतरना = १. विस्मृत होना। भूल जाना। २. नीचा जँचना। अप्रिय लगना।

२. ढलना। अवनति पर होना। **मुहा०**—उतरकर = निम्न श्रेणी का। नीचे दरजे का। घटकर।

३. शरीर में किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४. कांति या स्वर का फीका पड़ना। ५. उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना। **मुहा०**—चेहरा उतरना = मुख मलीन होना। मुख पर उदासी छाना।

६. वर्ष मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। ७. थोड़-थोड़े अंश को बैठाकर किया जानेवाला काम पूरा होना। जैसे—मोजा उतरना। ८. ऐसी वस्तु का तैयार होना जो खराद या साँचे पर चढ़ाकर बनाई जाय। ९. भाव का कम होना। १०. डेरा करना। ठहरना। टिकना। ११. नकल होना। खिंचना। अंकित होना। १२. बच्चों का मर जाना। १३. भर आना। सञ्चारित होना। जैसे—थन में दूध उतरना। १४. भभके में खिंचकर तैयार होना। १५. सफ़ाई के साथ कटना। १६. उखड़ना। उधड़ना। १७ धारण की हुई वस्तु का अलग होना। १८. तौल में ठहरना। १९. किसी बाजे की कसन का ढीला होना जिससे उसका स्वर विकृत हो जाता है। २०. जन्म लेना। अवतार लेना। २१ आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों ओर घुमाया जाना। वसूल होना।

क्रि० स० [ सं० उत्तरण ] नदी, नाले या पुल का पार करना।

**उतरवाना**—क्रि० स० [ हिं० उतरना का प्रे० रूप ] उतारने का काम कराना।

**उतराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उतरना ] १. ऊपर से नीचे आने की क्रिया। २. नदी के पार उतारने का महसूल। ३. नीचे की ओर ढलती हुई जमीन। ढाल जमीन।

संज्ञा स्त्री० [सं० उत्तर] उत्तर दिशा से आनेवाली हवा।

**उतराना**—क्रि० अ० [ सं० उत्तरण ] १ पानी के ऊपर आना। पानी की सतह पर तैरना। २ उबलना। उफान खाना। ३ प्रकट होना। हर जगह दिखाई देना। ४ उद्धार पाना।

क्रि० स० दे० "उतरवाना"।

**उतरायल**—वि० [हिं० उतरना] किसी के द्वारा पहनकर उतारा हुआ। (कपड़ा)।

**उतरारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उत्तर ] उत्तर दिशा से आनेवाली हवा।

**उतराव**—संज्ञा पुं० दे० "उतार"।

**उतराहाँ**—क्रि० वि० [ सं० उत्तर + हा (प्रत्य०) ] उत्तर की ओर।

**उतरिन**—वि० दे० "उऋण"।

**उतलाना***—क्रि० अ० [ हिं० आतुर ] जल्दी करना।

**उतलंग** —संज्ञा पुं० दे० "उत्तमंग"।

**उतसहकंठा***—संज्ञा स्त्री० दे० "उत्कंठा"।

**उतान**—वि० [ सं० उत्तान ] पीठ को जमीन पर लगाए हुए। चित।

**उतायल***—वि० [ सं० उत् + त्वरा ] १. जल्दी। २. उतावला जल्दबाज।

**उतायली**—संज्ञा स्त्री० दे० "उतावली"।

**उतार**—संज्ञा, पुं० [ हिं० उतरना ] १. उतरने की क्रिया। २. क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति। ३. उतरने योग्य स्थान। ४. किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना। ५. घटाव। कमी। ६. नदी में हलकर पार करने योग्य स्थान। हिलान। ७ समुद्र का भाटा। ८. उतारन। निकृष्ट। ९. उतारा। न्योछावर। १०. वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का दोष दूर हो। परिहार।

**उतारन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उतारना ] १. वह पहनावा जो पहनने से पुराना हो गया हो। २. निछावर। उतारा। ३. निकृष्ट वस्तु।

**उतारना**—क्रि० स० [ सं० अवतरण ] १. ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। २. प्रतिरूप बनाना। (चित्र) खींचना। ३. लिखावट की नकल करना। ४. लगी या लिपटी हुई वस्तु को अलग करना। उचाड़ना। उधेड़ना। ५. किसी धारण की हुई वस्तु को दूर करना। पहनी हुई चीज को अलग करना। ६. ठहराना। टिकाना। डेरा देना। ७. उतारा करना। किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमाकर भूत प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। ८. निछावर करना। वारना। ९. वसूल करना। १०. किसी उग्र प्रभाव को दूर करना। ११. पीना। घूँटना। १२. ऐसी वस्तु तैयार करना जो मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाय। १३. बाजे आदि की कसन को ढीला करना। १४. भभके से खींचकर तैयार करना या खौलते पानी में किसी वस्तु का सार निकालना।

क्रि० स० [ सं० उत्तारण ] पार ले जाना। नदी-नाले के पार पहुँचाना।

**उतारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० उतरना ] १. डेरा डालने या टिकाने का कार्य्य। २. उतरने का स्थान। पड़ाव। ३. नदी पार करना।

संज्ञा पु० [ हिं० उतारना ] १. प्रेत-बाधा या रोग की शांति के लिये किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना। २. उतारे की सामग्री या वस्तु।

**उतारू**—वि० [ हिं० उतरना ] उद्यत। तत्पर।

**उताल***—क्रि० वि० [ सं० उद्+त्वर ] जल्दी। शीघ्र।

संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।

**उताली***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उताल ] शीघ्रता। जल्दी। उतावली।

क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

**उतावल***—क्रि० वि० [ सं० उद्+त्वर ] जल्दी जल्दी। शीघ्रता से।

**उतावला**—वि० [ सं० उद्+त्वर ] [ स्त्री० उतावली ] १. जल्दी मचानेवाला। जल्दबाज़। २ व्यग्र। घबराया हुआ।

**उतावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उद्+त्वर ] १. जल्दी। शीघ्रता। जल्दबाज़ी। २. व्यग्रता। चंचलता।

**उताहल**—क्रि० वि० [सं० उद्+त्वर] जल्दी से।

**उताहिल**—क्रि वि० दे० "उताहल"।

**उतृण**—वि० [ सं० उत्+ऋण ] १. ऋण से मुक्त। उऋण। २. जिसने उपकार का बदला चुका दिया हो।

**उतै***†—क्रि० वि० [हिं० उत] वहाँ। उधर।

**उतैला***—वि० दे० "उतावला"।

संज्ञा पुं० [ देश० ] उर्द।

**उत्कंठ**—वि० [ सं० ] जिसे उत्कंठा हो। उत्कंठित।

**उत्कंठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० उत्कंठित ] १. प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा २. किसी कार्य्य के करने में विलंब न सहकर उसे चटपट करने की अभिलाषा। रस में एक संचारी।

**उत्कंठित**—वि० [सं०] उत्कंठायुक्त। चाव से भरा हुआ।

**उत्कंठिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका।

**उत्कट**—वि० [ सं० ] [संज्ञा उत्कटता] तीव्र। विकट। उग्र।

**उत्कर्ण**—वि० [ सं० ] [ भाव० उत्कर्णता ] सुनने के लिए कान खड़े किए हुए।

**उत्कर्ष**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० उत्कृष्ट ] १. बड़ाई। प्रशंसा। २. श्रेष्ठता। उत्तमता। ३ समृद्धि ४. अधिकता। प्रचुरता

**उत्कर्षता**—संज्ञा स्त्री० दे० "उत्कर्ष"।

**उत्कल**—संज्ञा पु० [सं०] उड़ीसा देश।

**उत्कलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तरंग। लहर। २. कली। ३. उत्कंठा। ४ मन का उद्वेग।

**उत्कलित**—वि० [ सं० ] १. तरंगों से युक्त। लहराता हुआ। २ खिला हुआ। ३. उत्कंठित। ४. उद्विग्न। अनमना।

**उत्कीर्ण**—वि० [ सं० ] १. लिखा हुआ। खुदा हुआ। २. छिदा हुआ।

**उत्कुण**—संज्ञा पु० [सं०] १ मत्कुण। खटमल। २. बालों का कीड़ा। जूँ।

**उत्कृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. २६ वर्णों के वृत्तों का नाम। २. छब्बीस की संख्या।

**उत्कृष्ट**—वि० [ सं० ] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।

**उत्कृष्टता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रेष्ठता। अच्छापन। बड़प्पन।

**उत्कोच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घूस। रिशवत।

**उत्क्रांत**—वि० [ सं० ] १. ऊपर की ओर चढ़नेवाला। २. उत्पन्न। ३. जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण किया गया हो।

**उत्क्रांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति।

**उत्खनन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्खात ] खोदने की क्रिया। खोदाई।

**उत्खाता**—वि० [ सं० उत्खातृ ] खोदनेवाला।

**उतंग**—वि० दे० "उत्तुंग"।

**उतंस**—संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।

**उत**—संज्ञा पुं० [ सं० उत् ] १. आश्चर्य। २. संदेह।

**उत्तप्त**—वि० [ सं० ] १. खूब तपा हुआ। बहुत गरम। २. दुःखी। पीड़ित। संतप्त।

**उत्तम**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उत्तमा ] [ संज्ञा उत्तमता ] श्रेष्ठ। अच्छा। सबसे भला।

**उत्तमतया**—क्रि० वि० [ सं० ] अच्छी तरह से। भली भाँति से।

**उत्तमता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। खूबी। भलाई।

**उत्तमत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अच्छापन।

**उत्तम पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है। जैसे "मैं", "हम"।

**उत्तमर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऋण देनेवाला व्यक्ति। महाजन।

**उत्तमश्लोक**—वि० [ सं० ] यशस्वी। कीर्तिशाली।

संज्ञा पुं० १. यश। कीर्ति। २. विष्णु।

**उत्तमांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिर।

**उत्तमा दूती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लावे।

**उत्तमा नायिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल होने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहे।

**उत्तमोत्तम**—वि० [ सं० ] अच्छे से अच्छा।

**उत्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। २. किसी प्रश्न या बात को सुनकर उसके समाधान के लिए कही हुई बात। जवाब। ३. बनाया हुआ जवाब। बहाना। मिस। हीला। ४. प्रतिकार। बदला। ५. एक काव्यालंकार जिसमें उत्तर के सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है, अथवा प्रश्नों का ऐसा उत्तर दिया जाता है जो अप्रसिद्ध हो। ६. एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न के वाक्यों ही में उत्तर भी होता है अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।

वि० १. पिछला। बाद का। २. ऊपर का। ३. बढ़कर। श्रेष्ठ। ४. गौण।

क्रि० वि० पीछे। बाद।

**उत्तर-कोशल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अयोध्या के आस-पास का देश। अवध।

**उत्तरक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अंत्येष्टि क्रिया।

**उत्तरदाता**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्तरदातृ ] [ स्त्री० उत्तरदात्री ] १. वह (व्यक्ति) जो उत्तर दे। २. दे० "उत्तरदायी"।

**उत्तरदायित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जवाबदेही। ज़िम्मेदारी।

**उत्तरदायी**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्तरदायिन् ] [ स्त्री० उत्तरदायिनी ] १. दे० "उत्तरदाता"। २. वह जिससे किसी कार्य के बनने बिगड़ने पर पूछताछ की जाय। जवाबदेह। ज़िम्मेदार।

**उत्तर पक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शास्त्रार्थ में वह सिद्धांत जिससे पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन या समाधान हो। जवाब की दलील।

**उत्तरपथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवयान।

**उत्तरपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द।

**उत्तरमीमांसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वेदांत।

**उत्तरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अभिमन्यु की स्त्री जिससे परीक्षित उत्पन्न हुए थे।

**उत्तराखंड**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्तरा + खंड ] भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरी भाग।

**उत्तराधिकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी के मरने पर उसके धनादि का स्वत्व। वरासत।

**उत्तराधिकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्तराधिकारिन् ] [ स्त्री० उत्तराधिकारिणी ] वह जो किसी के मरने पर उसकी संपत्ति का मालिक हो।

**उत्तराफाल्गुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बारहवाँ नक्षत्र।

**उत्तराभाद्रपद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छब्बीसवाँ नक्षत्र।

**उत्तराभास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] झूठा जवाब। अंडबंड जवाब। (स्मृति)

**उत्तरायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य्य की, मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर, गति। २. वह छः महीने का समय जिसके बीच सूर्य्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।

**उत्तरार्द्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिछला आधा। पीछे का अर्द्ध भाग।

**उत्तराषाढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] इक्कीसवाँ नक्षत्र।

**उत्तरीय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उपरना। दुपट्टा। चद्दर। ओढ़ना।
वि० १. ऊपर का। ऊपरवाला। २. उत्तर दिशा का। उत्तर दिशा-संबंधी।

**उत्तरोत्तर**—क्रि० वि० [ सं० ] १. एक के पीछे एक। एक के अनंतर दूसरा। २. क्रमशः। लगातार। बराबर।

**उत्तल**—वि० दे० "उतला"।
वि० दे० "ऊत"

**उत्तान**—वि० [सं०] पीठ को जमीन पर लगाए हुए। चित। सीधा।

**उत्तानपाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राजा जो स्वायंभुव मनु के पुत्र और प्रसिद्ध भक्त ध्रुव के पिता थे।

**उत्ताप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्तप्त, उत्तापित ] १. गर्मी। तपन। २. कष्ट। वेदना। ३ दुःख। शोक। ४. क्षोभ।

**उत्तीर्ण**—वि० [ सं० ] १. पार गया हुआ। पारंगत। २ मुक्त। ३. परीक्षा में कृत कार्य्य। पास-शुदः।

**उत्तुंग**—वि० [ सं० ] बहुत ऊँचा।

**उत्तू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १ वह औज़ार जिसको गरम करके कपड़े पर बेल-बूटों या चुनट के निशान डालते हैं। २. बेल-बूटे का काम जो इस औज़ार से बनता है।
**मुहा०**—उत्तू करना = बहुत मारना।
वि० बदहवास। नशे में चूर।

**उत्तेजक**—वि० [ सं० ] १. उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला। प्रेरक। २. वेगों को तीव्र करनेवाला।

**उत्तेजन**—संज्ञा पुं० दे० "उत्तेजना"।

**उत्तेजना**—संज्ञा स्त्री० [ सं ] [ वि० उत्तेजित, उत्तेजक ] १. प्रेरणा। बढ़ावा। प्रोत्साहन। २. वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

**उत्तोलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऊँचा करना। तानना। २. तौलना।

**उत्थपना***—क्रि० स० [ सं० उत्थापन ] अनुष्ठान करना। आरंभ करना।

**उत्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उठने का कार्य्य। २. उठान। आरंभ। ३. उन्नति। समृद्धि। बढ़ती।

**उत्थानि***—संज्ञा स्त्री० दे० "उत्थान"।

**उत्थापन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर उठाना। तानना। २. हिलाना। डुलाना। ३. जगाना।

**उत्पत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं ] [ वि० उत्पन्न ] १. उद्गम। पैदाइश। जन्म। उद्भव। २ सृष्टि। ३ आरंभ। शुरू।

**उत्पन्न**—वि० [सं०] [स्त्री० उत्पन्ना] जन्मा हुआ। पैदा।

**उत्पल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**उत्पाटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्पाटित ] उखाड़ना।

**उत्पात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कष्ट पहुँचानेवाली आकस्मिक घटना। उपद्रव। आफ़त। २ अशांति। हलचल। ३ ऊधम। दंगा। शरारत।

**उत्पाती**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्पातिन् ] [ स्त्री० हिं० उत्पातिन ] उत्पात मचानेवाला। उपद्रवी। नटखट। शरारती।

**उत्पादक**—वि० [सं०] [ स्त्री० उत्पादिका ] उत्पन्न करनेवाला।

**उत्पादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्पादित ] उत्पन्न करना। पैदा करना।

**उत्पीड़क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कष्ट पहुँचानेवाला।

**उत्पीड़न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्पीड़ित ] तकलीफ़ देना। सताना।

**उत्प्रेक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० उत्प्रेक्ष्य ] १. उद्भावना। आरोप। २. एक अर्थालंकार जिसमें भेदज्ञान-पूर्वक उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है। जैसे, "मुख मानो चंद्रमा है"।

**उत्प्रेक्षोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का बहुतों में पाया जाना वर्णन किया जाता है। (केशव)

**उत्फुल्ल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा उत्फुल्लता ] १. विकसित। खिला हुआ। २. उत्तान। चित।

**उत्संग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गोद। क्रोड़। अंक। २. मध्य भाग। बीच। ३. ऊपर का भाग।
वि० निर्लिप्त। विरक्त।

**उत्सर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्सर्गी, औत्सर्गीय, उत्सर्ग्य ] १. त्याग। छोड़ना। २. दान। न्योछावर। ३. समाप्ति।

**उत्सर्गीकृत**—वि० [ सं० ] जो या जिसका उत्सर्ग किया जा चुका हो। दिया या छोड़ा हुआ।

**उत्सर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट] १. त्याग। छोड़ना। २ दान।

**उत्सर्पण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर चढ़ना। चढ़ाव। २ उल्लंघन। लाँघना।

**उत्सर्पिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काल की वह गति या अवस्था, जिसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श की क्रम से वृद्धि होती है। (जैन)

**उत्सव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उछाह। मंगलकार्य्य। धूम-धाम। २. मंगल-समय। तेहवार। पर्व। ३. आनंद। विहार।

**उत्साह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उत्साहित, उत्साही ] १. उमंग। उछाह। जोश। हौसला। २. हिम्मत। साहस की उमंग। ( वीर रस का स्थायी भाव )

**उत्साही**—वि० [ सं० उत्साहिन् ] उत्साहयुक्त। हौसलेवाला।

**उत्साहित***—वि० दे० "उत्साही"।

**उत्सुक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उत्सुका ] १. उत्कंठित । अत्यंत इच्छुक । २. चाही हुई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में तत्पर ।

**उत्सुकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. आकुल । इच्छा । २ किसी कार्य में विलंब न सहकर उसमें तत्पर होना । ( एक संचारी भाव )

**उत्सूत्र**—वि० [सं० उत्+ सूत्र] सूत्र के विरुद्ध ।

**उत्सृष्ट**—वि० [ सं० ] छोड़ा हुआ । त्यक्त ।

**उत्सेध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उन्नति । वृद्धि । २ ऊँचाई ।

वि० १ ऊँचा । २ श्रेष्ठ । उत्तम ।

**उथपना***—क्रि० स० [सं० उत्थापन] १. उठाना । २. उखाड़ना । ३. उजाड़ना ।

**उथराई**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] कुछ उठान ।

**उथलना**—क्रि० अ० [ सं० उत्+ स्थल ] १. डगमगाना । डाँवाडोल होना । चलायमान होना । २. उलटना । उलट-पुलट होना । ३. पानी का उथला या कम होना ।

क्रि० स० नीचे-ऊपर करना । इधर-उधर करना ।

**उथल-पुथल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उथलना ] उलट-पुलट । विपर्यय क्रम-भंग ।

वि० उलट-पुलट । अंड का बंड ।

**उथला**—वि० [ सं० उत्+स्थल ] कम गहरा । छिछला ।

**उथापन***—संज्ञा [ सं० उत्थापन ] देखो "उथपना" ।

**उदंत**—वि० [ सं० अ + दंत ] जिसके दाँत न जमे हों । अदंत । ( चौपायों के लिये ) ।

**उद्**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है । ऊपर; जैसे—उद्गमन । अतिक्रमण; जैसे—उत्तीर्ण । उत्कर्ष; जैसे—उद्बोधन । प्राबल्य, जैसे—उद्वेग । प्राधान्य, जैसे—उद्देश । अभाव, जैसे—उत्पथ । प्रकाश; जैसे—उच्चारण । दोष, जैसे—उन्मार्ग ।

**उदक**—संज्ञा पुं० [सं०] जल । पानी ।

**उदकअद्रि**—संज्ञा पुं० दे० "उदगद्रि" ।

**उदकक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तिलांजलि ।

**उदकना***—क्रि० अ० [देश०] कूदना ।

**उदकपरीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राचीन काल की शपथ का एक भेद जिसमें शपथ करनेवाले को अपने वचन की सत्यता प्रमाणित करने के लिये जल में डूबना पड़ता था ।

**उदगद्रि**—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय ।

**उदगरना**†—क्रि० अ० [सं० उद्गरण] १ निकलना । बाहर होना । २. प्रकाशित होना । प्रकट होना । ३ उखड़ना ।

**उदगर्गल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह विद्या जिससे यह ज्ञान प्राप्त हो कि अमुक स्थान में इतने हाथ की दूरी पर जल है ।

**उदगार***—संज्ञा पुं० दे० "उद्गार" ।

**उदगारना***—क्रि० स० [ सं० उद्गार ] १ बाहर निकालना । बाहर फेंकना । २. उभाड़ना । भड़काना । उत्तेजित करना ।

**उदगारी***—वि० [ सं० उद्गार ] १. उगलनेवाला । २. बाहर निकलनेवाला ।

**उदग्ग***—वि० [ सं० उदग्र ] १. ऊँचा । उन्नत । २. प्रचंड । उग्र । उद्धत ।

**उदग्र**—वि० [सं०] १. उच्च । ऊँचा । २. विशाल । बड़ा । ३. उद्दंड । ४. विकट । ५. तीव्र । तेज ।

**उदघटना***—क्रि० स० [ सं० उद्घटन ] प्रकट होना । उदय होना ।

**उदघाटना***—क्रि० स० [ सं० उद्घाटन ] प्रकट करना । प्रकाशित करना । खोलना ।

**उदथ***—संज्ञा पुं० [ सं० उद्गीथ = सूर्य ] सूर्य ।

**उदधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समुद्र । २ घड़ा । ३. मेघ ।

**उदधिसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समुद्र से उत्पन्न पदार्थ । २ चंद्रमा । ३. अमृत । ४ शंख । ५. कमल ।

**उदधिसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

**उदपान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुएँ के पास का गड्ढा । खाता । २. कमंडल ।

**उदबस**—वि० [ हिं० उद्वासन ] १ उजाड़ । सूना । २. एक स्थान पर न रहनेवाला । खानाबदोश ।

**उदबासना**—क्रि० सं० [ सं० उद्वासन ] १. तंग करके स्थान से हटाना । रहने में विघ्न डालना । भगा देना । २. उजाड़ना ।

**उदमदना***—क्रि० अ० [ सं० उद् + मद ] पागल होना । उन्मत्त होना ।

**उदमाद***—संज्ञा पुं० दे० "उन्माद" ।

**उदमादी***—वि० दे० "उन्मादी" ।

**उदमानना***—क्रि० अ० [ सं० उन्मत्त ] उन्मत्त होना । पागल होना ।

**उदय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उदित ] १. ऊपर आना । निकलना । प्रकट होना । ( विशेषतः ग्रहों के लिए )

**मुहा०**—उदय से अस्त तक=पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक । सारी पृथ्वी में । २. वृद्धि । उन्नति । बढ़ती । ३. निकलने का स्थान । उद्गम । ४. उदयाचल ।

**उदयगिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उदया-

बल।

**उदयना***—क्रि० अ० [ सं० उदय ] उदय होना।

**उदयाचल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य निकलता है।

**उदयाद्रि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उदयाचल।

**उदरंभर**—वि० [ सं० उदरभीर ] केवल अपना पेट भरनेवाला। पेटू।

**उदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पेट। जठर। २. किसी वस्तु के बीच का भाग। मध्य। पेटा। ३. भीतर का भाग।

**उदरना***—क्रि० अ० दे० "ओदरना"।

**उदवना***—क्रि० अ० दे० "उगना"।

**उदसना***—क्रि० अ० [ सं० उदसन या उद्वासन ] १. उजड़ना। २. तितर-बितर होना।

**उदात्त**—वि० [ सं० ] १. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २ दयावान्। कृपालु। ३. दाता। उदार। ४. श्रेष्ठ। बड़ा। ५. स्पष्ट। विशद। ६. समर्थ। योग्य।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेद के स्वर के उच्चारण का एक भेद जिसमें तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है। २. उदात्त स्वर। ३ एक काव्यालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन खूब बढ़ा चढ़ा कर किया जाता है। ४. दान।

**उदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राण वायु का एक भेद जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छींक आती है।

**उदाम**—*वि० दे० "उद्दाम"।

**उदायन**—*संज्ञा पुं० [ सं० उद्यान ] बाग।

**उदार**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा उदारता, औदार्य ] १. दाता। दानशील। २. बड़ा। श्रेष्ठ। ३. ऊँचे दिल का। ४. सरल। सीधा।

**उदारचरित**—वि० [ सं० ] जिसका चरित्र उदार हो। ऊँचे दिल का। शीलवान्।

**उदारचेता**—वि० [ सं० उदारचेतस् ] जिसका चित्त उदार हो।

**उदारता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दानशीलता। फैयाजी। २. उच्चविचार।

**उदारना**—क्रि० स० [ सं० उदारण ] १. दे० "ओदारना"। २. गिराना। तोड़ना।

**उदाराशय**—वि० [सं०] जिसके विचार और उद्देश्य उच्च हों। महापुरुष।

**उदावर्त**—संज्ञा पु० [सं०] गुदा का एक रोग जिसमें काँच निकल आती है और मल-मूत्र रुक जाता है। गुदग्रह। कांच।

**उदास**—वि० [ सं० ] १. जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो। विरक्त। २ झगड़े से अलग। निरपेक्ष। तटस्थ। ३. दुःखी रंजीदा।

**उदासना***—क्रि० अ० [ हिं० उदास ] उदास होना।

क्रि० स० [ सं० उदसन ] १. उजाड़ना। २. तितर-बितर करना।

**उदासी**—संज्ञा पु० [ सं० उदास + हिं० ई ( प्रत्य० ) ] १. विरक्त पुरुष। त्यागी पुरुष। संन्यासी। २. नानकशाही साधुओं का एक भेद।

संज्ञा स्त्री० [ सं० उदास + हिं० ई ( प्रत्य० ) ] १ खिन्नता। २. दुःख।

**उदासीन**—वि० [ सं० ] ( स्त्री० उदासीना; संज्ञा उदासीनता ] १ विरक्त। जिसका चित्त हट गया हो। २. झगड़े-बखेड़े से अलग। ३. जो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो। निष्पक्ष। तटस्थ। ४. रूखा। उपेक्षायुक्त। प्रेमशून्य।

**उदासीनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विरक्ति। त्याग। २. निरपेक्षता। निर्द्वंद्वता। ३. उदासी। खिन्नता।

**उदाहरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दृष्टांत मिसाल। २. न्याय में तर्क के पांच अवयवों में से तीसरा जिसके साथ साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है।

**उदियाना***—क्रि० अ० [सं० उद्विग्न] उद्विग्न होना। घबराना। हैरान होना।

**उदित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उदिता ] १. जो उदय हुआ हो। निकला हुआ। २. प्रकट। जाहिर। ३. उज्ज्वल। स्वच्छ। ४. प्रसन्न। ५. कहा हुआ।

**उदितयौवना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मुग्धा नायिका के सात भेदों में से एक जिसमें तीन हिस्सा यौवन और एक हिस्सा लड़कपन हो।

**उदीची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उत्तर दिशा।

**उदीच्य**—वि० [ सं० ] १ उत्तर का रहनेवाला। २ उत्तर दिशा का

संज्ञा पुं० [ सं० ] वैताली छंद का एक भेद।

**उदीयमान**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उदीयमाना ] १. जिसका उदय हो रहा हो। २. उठता या उमड़ता हुआ।

**उदुंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० औदुंबर ] १ गूलर। २ देहली। ड्योढ़ी। ३ नपुंसक। ४ एक प्रकार का कोढ़।

**उदूलहुक्मी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आज्ञा न मानना। आज्ञा का उल्लंघन करना।

**उदेग***—संज्ञा पुं० [ सं० उद्वेग ] उद्वेग।

**उदो***—संज्ञा पु० दे० "उदय"।

**उदोत***—संज्ञा पु० [ सं० उद्योत ] प्रकाश।

वि० १. प्रकाशित। दीप्त। २. शुभ्र। ३. उत्तम।

**उद्योती**—वि० [ सं० उद्यात ] [ स्त्री० उद्योतिनी ] प्रकाश करनेवाला ।

**उद्दौ***—संज्ञा पुं० दे० "उदय" ।

**उद्गत**—वि० [ सं० ] १. निकला हुआ । उत्पन्न । २. प्रकट । जाहिर । ३. फैला हुआ । व्याप्त ।

**उद्गम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उदय । आविर्भाव । २. उत्पत्ति का स्थान । उद्भवस्थान । निकास । मखरज । ३. वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो ।

**उद्गाता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ में चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है ।

**उद्गाथा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्या छंद का एक भेद ।

**उद्गार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्गारी, उद्गारित ] १ उबाल । उफान । २. वमन । कै । ३. थूक । कफ । ४ डकार । ५ बाढ़ । आधिक्य । ६. घोर शब्द । ७. किसी के विरुद्ध बहुत दिनों से मन में रखी हुई बात एकबारगी कहना ।

**उद्गारी**—वि० [ सं० उद्गारिन् ] [ स्त्री० उद्गारिणी ] १. उगलनेवाला । बाहर निकालनेवाला । २. प्रकट करनेवाला ।

**उद्गीत**—वि० [ सं० ] जो ऊँचे स्वर से गाया गया हो ।

**उद्गीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्या छंद का एक भेद ।

**उद्गीथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सामगान । २. प्रणव ।

**उद्ग्रीव**—वि० [ सं० ] १. जो गरदन ऊपर उठाये हो । २. उत्सुक ।

**उद्घाटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्घाटक, उद्घाटनीय, उद्घाटित ] १. खोलना । उघाड़ना । २. प्रकट या प्रकाशित करना ।

**उद्घात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ठोकर । धक्का । आघात । २. आरंभ ।

**उद्घातक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उद्घातिका ] १. धक्का मारनेवाला । ठोकर लगानेवाला । २. आरंभ करनेवाला ।

संज्ञा पुं० नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र आता या नेपथ्य से बोलता है ।

**उद्दंड**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा उद्दंडता ] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भी भय न हो । अक्खड़ । प्रचंड । उद्धत ।

**उद्दाम**—वि० [ सं० ] १. बंधनरहित । २. निरंकुश । उग्र । उद्दंड । बे-कहा । ३. स्वतंत्र । ४. महान् । गभीर ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वरुण । २. दंडक वृत्त का एक भेद ।

**उद्दित***—वि० १. दे० "उदित" । २. दे० "उद्धत" । ३. दे० "उद्यत" ।

**उद्दिम***—संज्ञा पुं० दे० "उद्यम" ।

**उद्दिष्ट**—वि० [ सं० ] १. दिखाया हुआ । इंगित किया हुआ । २. लक्ष्य । अभिप्रेत ।

संज्ञा पुं० पिंगल में वह क्रिया जिससे यह बतलाया जाता है कि दिया हुआ छंद मात्राप्रस्तार का कौन-सा भेद है ।

**उद्दीपक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उद्दीपिका ] उत्तेजित करनेवाला । उभाड़नेवाला ।

**उद्दीपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्दीपनीय, उद्दीपित, उद्दीप्त, उद्दीप्य ] १. उत्तेजित करने की क्रिया । उभाड़ना । बढ़ाना । जगाना । २. उद्दीपन या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ । ३. काव्य में वे विभाव जो रस को उत्तेजित करते हैं । जैसे, ऋतु, पवन आदि ।

**उद्दीप्त**—वि० [ सं० ] जिसका उद्दीपन हुआ हो । उभड़ा, बढ़ा या जागा हुआ । उत्तेजित ।

**उद्देश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित ] १. अभिलाषा । चाह । मंशा । २. हेतु । कारण । ३. न्याय में प्रतिज्ञा ।

**उद्देश्य**—वि० [ सं० ] लक्ष्य । इष्ट ।

संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसपर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय । अभिप्रेत अर्थ । इष्ट । २. वह जिसके संबंध में कुछ कहा जाय । विशेष्य । विधेय का उलटा । ३. मतलब । मंशा ।

**उद्दोत***—संज्ञा पुं० [ सं० उद्योत ] प्रकाश ।

वि० १. चमकीला । २. उदित । उत्पन्न ।

**उद्दोतिताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "उद्दोत" ।

**उद्ध***—क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व" ।

**उद्धत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा औद्धत्य ] १. उग्र । प्रचंड । २. अक्खड़ । प्रगल्भ ।

संज्ञा पुं० चार मात्राओं का एक छंद ।

**उद्धना***—क्रि० अ० [ सं० उद्धरण ] १. ऊपर उठना । २. उड़ना या फैलना ।

**उद्धतपन**—संज्ञा पुं० [ सं० उद्धत + हिं० पन ( प्रत्य० ) ] उजड्डपन । उग्रता ।

**उद्धरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्धरणीय, उद्धृत ] १. ऊपर उठना । २. मुक्त होने की क्रिया । ३. बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना । ४. पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये फिर फिर पढ़ना । ५. किसी लेख के किसी अंश को दूसरे लेख में ज्यों का त्यों रखना । ६. उन्मूलन ।

**उद्धरण-चिह्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे०

"अवतरण-चिह्न"।

**उद्धरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उद्धरण + हिं० ई (प्रत्य०) ] १. पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिये बार बार पढ़ना। २. दे० "उद्धरण"।

**उद्धरना***—क्रि० स० [ सं० उद्धरण ] उद्धार करना। उबारना।
क्रि० अ० बचना। छूटना।

**उद्धव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ उत्सव। २. यज्ञ की अग्नि। ३. कृष्ण के एक सखा।

**उद्धार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २ सुधार। उन्नति। दुरुस्ती। ३. कर्ज से छुटकारा। ४. वह ऋण, जिसपर ब्याज न लगे।

**उद्धारना***—क्रि० स० [ सं० उद्धार ] उद्धार करना। छुटकारा देना।

**उद्ध्वस्त**—वि० [ सं० ] टूटा-फूटा। ध्वस्त।

**उद्धृत**—वि० [ सं० ] १. उगला हुआ। २. ऊपर उठाया हुआ। ३. अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया हुआ।

**उद्बुद्ध**—वि० [ सं० ] १. विकसित। फूला हुआ। २. प्रबुद्ध। चैतन्य। जिसे ज्ञान हो गया हो। ३ जागा हुआ।

**उद्बुद्धा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अपनी ही इच्छा से उपपति से प्रेम करनेवाली परकीया नायिका।

**उद्बोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] थोड़ा ज्ञान।

**उद्बोधक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उद्बोधिका ] १. बोध करनेवाला। चेतानेवाला। २ प्रकाशित, प्रकट या सूचित करनेवाला। ३ उत्तेजित करनेवाला। ४. जगानेवाला।

**उद्बोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वि० उद्बोधनीय, उद्बोधित ] १. बोध कराना। चेताना। २. उत्तेजित करना। ३ जगाना।

**उद्बोधिता**—संज्ञा० स्त्री० [ सं० ] वह परकीया नायिका जो उपपति के चतुराई-द्वारा प्रकट किए हुए प्रेम को समझकर प्रेम करे।

**उद्भट**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा उद्भटता ] १. प्रबल। प्रचंड। श्रेष्ठ। २. उच्चाशय।

**उद्भव**—वि० [ सं० ] [ वि० उद्भूत ] १ उत्पत्ति। जन्म। २. वृद्धि। बढ़ती।

**उद्भावना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ कल्पना। मन की उपज। २ उत्पत्ति।

**उद्भास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्भासनीय, उद्भासित, उद्भासुर ] १. प्रकाश। दीप्ति। आभा। २ हृदय में किसी बात का उदय। प्रतीति।

**उद्भासित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उद्भासिता ] १. उत्तेजित। उद्दीप्त। २ प्रकाशित। । ३ विदित।

**उद्भिज**—संज्ञा पुं० दे० "उद्भिज्ज"।

**उद्भिज्ज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। वनस्पति। पेड़-पौधे।

**उद्भिद**—संज्ञा पुं० दे० "उद्भिज्ज"।

**उद्भूत**—वि [ सं० ] उत्पन्न।

**उद्भूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उत्पत्ति। २. उन्नति। ३. विभूति।

**उद्भेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ फोड़कर निकलना। ( पौधों के समान )। २ प्रकाशन। उद्घाटन। ३. प्राचीनों के मत से एक काव्यालंकार जिसमें कौशल से छिपाई हुई किसी बात का किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित होना वर्णन किया जाय।

**उद्भेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० उद्भेदनीय, उद्भिन्न ] १. तोड़ना। फोड़ना। २. फोड़कर निकलना। छेदकर पार जाना।

**उद्भ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऊपर की ओर भ्रमण करना। २. बुद्धि का विनाश। विभ्रम। ३. उद्वेग। व्याकुलता।

**उद्भ्रांत**—वि० [ सं० ] १. घूमता हुआ। चक्कर मारता हुआ। भूला हुआ। भटका हुआ। ३. चकित। भौचक्का। ४. उन्मत्त। पागल। ५. विकल। विह्वल। संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

**उद्यत**—वि० [ सं० ] १. तैयार। तत्पर। प्रस्तुत। मुस्तैद। २ उठाया हुआ। ताना हुआ।

**उद्यम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्यमी, उद्यत ] १ प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। मेहनत २ काम-धंधा। रोजगार।

**उद्यमी**—वि० [ सं० उद्यमिन् ] उद्यम करने वाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।

**उद्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बगीचा। बाग़।

**उद्यापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। जैसे हवन, गोदान इत्यादि।

**उद्युक्त**—वि० [ सं० ] उद्योग में रत। तत्पर।

**उद्योग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वि० उद्योगी, उद्युक्त ] १ प्रयत्न। प्रयास। कोशिश। मेहनत। २ उद्यम। काम-धंधा।

**उद्योगी**—वि० [ सं० उद्योगिन् ] [ स्त्री० उद्योगिनी ] उद्योग करनेवाला। मेहनती।

**उद्योत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। झलक। आभा।

**उद्रेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उद्रिक्त ] १. वृद्धि। बढ़ती। अधि-

कता। ज्यादती। २. एक काव्यालंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ जाना वर्णन किया जाता है।

**उद्वर्तन**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. शरीर में तेल, चंदन या उबटन आदि मलना। २. उबटन। बटना।

**उद्वह**—संज्ञा पुं० [सं० ] [स्त्री० उद्वहा ]. १ पुत्र। बेटा। जैसे, रघूद्वह। २. सात वायुओं में से एक जो तृतीय स्कंध पर है।

**उद्वहन**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. ऊपर खिंचना। उठना। २ विवाह।

**उद्वासन**—संज्ञा पुं० [सं० ] [वि० उद्वासनीय, उद्वासक, उद्वासित, उद्वास्य ] १. स्थान छुड़ाना। भगाना। खदेड़ना। २. उजाड़ना। वासस्थान नष्ट करना। ३ मारना। वध।

**उद्वाह**—संज्ञा पुं० [सं० ] विवाह।

**उद्वाहन**—संज्ञा पुं० [सं० ] [वि० उद्वाहनीय, उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह्य ] १ ऊपर ले जाना। उठाना। २. ले जाना। हटाना। ३. विवाह।

**उद्विग्न**—वि० [सं० ] १. उद्वेगयुक्त। आकुल। घबराया हुआ। व्यग्र।

**उद्विग्नता**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. आकुलता। घबराहट। २. व्यग्रता।

**उद्वेग**—संज्ञा पुं० [सं० ] [वि० उद्विग्न ] १. चित्त की आकुलता। घबराहट। ( संचारी भावों में से एक ) २. मनोवेग। चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। जोश। ३. शोक।

**उद्वेजक**—संज्ञा पुं० [सं० ] उद्विग्न करनेवाला।

**उद्वेजन**—संज्ञा पुं० [सं० ] उद्विग्न करना।

**उद्वेल**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. किसी चीज में भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना। २ छलकना। छलछलाना। बिखराना।

**उद्वेलित**—वि० [सं० ] १ सीमा के बाहर फैलता हुआ। २. छलछलाता या छलकता हुआ।

**उधड़ना**—क्रि० अ० [सं० उद्धरण ] १. खुलना। उखड़ना। २ सिला, जमा या लगा न रहना। ३ उजड़ना।

**उधम**—संज्ञा पुं० दे० "ऊधम"।

**उधर**—क्रि० वि० [सं० उत्तर अथवा पु० हिं० ऊ ( वह )+धर ( प्रत्य० ) ] उस ओर। उस तरफ़। दूसरी तरफ़।

**उधरना***—क्रि० स० [सं० उद्धरण ] १ मुक्त होना। २ दे० "उधड़ना"। क्रि० स० उद्धार या मुक्त करना।

**उधराना**—क्रि० अ० [सं० उद्धरण] १ हवा के कारण छितराना। तितर-बितर होना। २ ऊधम मचाना।

**उधार**—संज्ञा पुं० [सं० उद्धार ] १ कर्ज। ऋण।

**मुहा०**—उधार खाए बैठना = १. किसी नारी आसरे पर दिन काटते रहना। २. हर समय तैयार रहना। २ किसी एक की वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के लिये जाना। मँगनी। *३. उद्धार। छुटकारा।

**उधारक*** -वि० दे० "उद्धारक"।

**उधारन*** —वि० दे० "उद्धारक"।

**उधारना** -क्रि० स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। मुक्त करना।

**उधारी***—वि० [ सं० उद्धारिन् ] [ स्त्री० उधारिणी ] उद्धार करनेवाला।

**उधेड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उधेड़ना ] उधेड़ने की क्रिया या भाव।

**यौ०**—उधेड़-बुन।

**उधेड़ना**—क्रि० स० [ सं० उद्धरण ] १. मिली हुई पर्त का अलग अलग करना। उचाड़ना। २. टाँका खोलना। सिलाई खोलना। ३. छितराना। बिखराना।

**उधेड़-बुन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उधेड़ना + बुनना ] १. सोच-विचार। ऊहा-पोह। २. युक्ति बाँधना।

**उनत***—वि० [ सं० अवनत ] झुका हुआ।

**उन**—सर्व० "उस" का बहुवचन।

**उनका**—संज्ञा पुं० [ अ० उन्का ] एक कल्पित पक्षी जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा है।

**उनचन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ऐंचना ] वह रस्सी जो चारपाई के पायताने की ओर बुनावट को खींचकर कड़ा रखने के लिये लगी रहती है।

**उनचना**—क्रि० स० [ हिं० ऐंचना ] चारपाई के पायताने की खाली जगह की रस्सी को बुनावट कड़ी रखने के लिए खींचना।

**उनचास**—वि० [सं० एकोनपंचाशत्] चालीस और नौ। संज्ञा पुं० चालीस और नौ की संख्या। ४९।

**उनतीस**—वि० [ सं० एकोनत्रिंशत् ] एक कम तीस। बीस और नौ। संज्ञा पुं० बीस और नौ की संख्या। २९।

**उनदा*** - वि० दे० "उनींदा"।

**उनदौहाँ** - वि० दे० "उनींदा"।

**उनमद***—वि० [ सं० उद् + मत ] उन्मत्त।

**उनमना***—वि० दे० "अनमना"।

**उनमाथना***—क्रि० स० [ सं० उन्मथन ] [ वि० उन्माथी ] मथना। विलोड़न करना।

**उनमाथी***—वि० [ हिं० उनमाथना ] मथनेवाला। विलोड़न करनेवाला।

**उनमाद**—संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।

**उनमान***—संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"। संज्ञा पुं० [सं० उद् + मान] १. परिमाण। नाप। तौल। थाह। २. शक्ति।

सामर्थ्य ।

, वि॰ तुल्य । समान ।

**उनमानना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उनमान ] अनुमान करना । खयाल करना ।

**उनमुना***—वि॰ [ हिं॰ अनमना ] [ स्त्री॰ उनमुनी ] मौन । चुपचाप ।

**उनमुनी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उन्मनी"।

**उनमूलना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उन्मूलना ] उखाड़ना ।

**उनमेख***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उन्मेष ] १. आँख का खुलना । २. फूल खिलना । ३. प्रकाश ।

**उनमेखना***—क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्मेष] १. आँख का खुलना । उन्मीलित होना । २. विकसित होना ( फूल आदि का ) ।

**उनमेद**—संज्ञा पुं॰ [ ? ] बरसात के आरंभ में होनेवाला जल का जहरीला फेन । माँजा ।

**उनयना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "उनवना" ।

**उनरना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उन्नरण= ऊपर जाना ] १. उठना । उमड़ना । २. कूदते हुए चलना ।

**उनवना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ उन्नमन] १. झुकना । लटकना । २. छाना । घिर आना । ३. टूटना । ऊपर पड़ना ।

**उनवर**—वि॰ [ सं॰ ऊन ] कम । न्यून ।

**उनवान***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "अनुमान"।

**उनसठ***—वि॰ [ सं॰ एकोनषष्ठि ] पचास और नौ ।

संज्ञा पुं॰ पचास और नौ की संख्या या अंक । ५९ ।

**उनहत्तर**—वि॰ [ सं॰ एकोनसप्तति ] साठ और नौ ।

संज्ञा पुं॰ साठ और नौ की संख्या या अंक । ६९ ।

**उनहानि***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ अनुहारि ] समता । बराबरी ।

**उनहार***—वि॰ [ सं॰ अनुहार ] सदृश । समान ।

**उनहारि***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ अनुसार ] समानता । सादृश्य । एकरूपता ।

**उनाना***†—क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्नमन] १. झुकाना । २. लगाना । प्रवृत्त करना ।

क्रि॰ अ॰ आज्ञा मानना ।

**उनारना**†—क्रि॰ स॰ [सं॰ उन्नयन] १. उठाना । २. बढ़ाना । दे॰ "उनाना" ।

**उनींदा**—वि॰ [ सं॰ उन्निद्र ] [ स्त्री॰ उनींदी ] बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ । नींद से भरा हुआ । ऊँघता हुआ ।

**उन्नइस***†—वि॰ दे॰ "उन्नीस" ।

**उन्नत**—वि॰ [ सं॰ ] १. ऊँचा । ऊपर उठा हुआ । २. बढ़ा हुआ । समृद्ध । ३. श्रेष्ठ ।

**उन्नति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १ ऊँचाई । चढ़ाव । २. वृद्धि । समृद्धि । तरक्की ।

**उन्नतोदर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चाप या वृत्तखंड के ऊपर का तल । २. वह वस्तु जिसका वृत्तखंड ऊपर को उठा हो ।

**उन्नाब**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] एक प्रकार का बेर जो हकीमी नुसखों में पड़ता है।

**उन्नाबी**—वि॰ [अ॰ उन्नाब] उन्नाब के रंग का कालापन लिए हुए लाल ।

**उन्नायक**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ उन्नायिका ] १. ऊँचा करनेवाला । उन्नत करनेवाला । २. बढ़ानेवाला ।

**उन्नासी**—वि॰ [ सं॰ ऊनाशिति ] सत्तर और नौ । एक कम अस्सी ।

संज्ञा पुं॰ सत्तर और नौ की संख्या या अंक । ७९ ।

**उन्निद्र**—वि॰ [सं॰] १. निद्रारहित । जैसे—उन्निद्र रोग । २ जिसे नींद न आई हो । ३. विकसित । खिला हुआ ।

**उन्नीस**—वि॰ [ सं॰ एकोनविंशति ] एक कम बीस । दस और नौ ।

संज्ञा पुं॰ दस और नौ की संख्या या अंक । १९ ।

**मुहा॰**—उन्नीस बिस्वे = १ अधिकतर । १. अधिकांश । प्रायः । उन्नीस होना = १ मात्रा में कुछ कम होना । थोड़ा घटना । २. गुण में घटकर होना। ( दो वस्तुओं का परस्पर ) उन्नीस-बीस होना = एक का दूसरी से कुछ अच्छा होना ।

**उन्मत्त**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा उन्मत्तता ] १. मतवाला । मदांध । २. जो आपे में न हो । बेसुध । ३. पागल । बावला ।

**उन्मत्तता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] मतवालापन । पागलपन ।

**उन्मद**—संज्ञा पुं [ सं॰ ] १ उन्मत्त । प्रमत्त । २. पागल । बावला । ३. उन्माद । पागलपन ।

**उन्मन**—वि॰ [सं॰] १. जिसमें उद्वेग या व्याकुलता हो । २. अन्य-मनस्क ।

**उन्मनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] हठयोग में नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना।

**उन्माद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ उन्मादक, उन्मादी ] १. वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्य्यक्रम बिगड़ जाता है । पागलपन । विक्षिप्तता । चित्त-विभ्रम । २. रस के ३३ संचारी भावों में से एक जिसमें वियोग के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता ।

**उन्मादक**—वि॰ [ सं॰ ] १. पागल करनेवाला । २ नशा करनेवाला ।

**उन्मादन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. उन्मत्त या मतवाला करने की क्रिया । २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

**उन्मादी**—वि० [ सं० उन्मादिन् ] [ स्त्री० उन्मादिनी ] उन्मत्त। पागल। बावला।

**उन्मार्ग**—संज्ञा० पुं [ सं० ] [ वि० उन्मार्गी ] १ कुमार्ग। बुरा रास्ता २. बुरा ढंग।

**उन्मीलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उन्मीलक, उन्मीलनीय, उन्मीलित ] १. खुलना ( नेत्र का )। २. विकसित होना। खिलना।

**उन्मीलना***—क्रि० स० [ सं० उन्मीलन ] खोलना।

**उन्मीलित**—वि० [सं०] खुला हुआ। संज्ञा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच इतना अधिक सादृश्य वर्णन किया जाय कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े।

**उन्मुक्त**—वि० [ सं० ] १ जिसके बंधन खुल गए हों। छूटा हुआ। २. खुला हुआ। ३ उदार।

**उन्मुख**—वि० [सं०] [स्त्री० उन्मुखा] [संज्ञा उन्मुखता] १. ऊपर मुँह किए। २. उत्कंठित। उत्सुक। ३. उद्यत। तैयार।

**उन्मूलक**—वि० [ सं० ] समूल नष्ट करनेवाला। बर्बाद करनेवाला।

**उन्मूलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित ] १. जड़ से उखाड़ना। २. समूल नष्ट करना।

**उन्मूलना***—क्रि० स० [ सं० उन्मूलन ] जड़ से उखाड़ फेंकना।

**उन्हानि**—संज्ञा० स्त्री० दे० "उनहानि"।

**उन्हारि**—संज्ञा स्त्री० दे० "उनहारि"।

**उन्मेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ][ वि० उन्मिषित ] १. खुलना (आँख का)। २. विकाश। खिलना। ३. थोड़ा प्रकाश।

**उपंग**—संज्ञा पुं० [ सं० उपाङ्ग ] १. नसतरंग नामक बाजा। जलतरंग। २. उद्धव के पिता का नाम।

**उप**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग। यह जिन शब्दों के पहले लगता है, उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है, समीपता। जैसे—उपकूल, उपनयन। सामर्थ्य ( वास्तव में आधिक्य ); जैसे—उपकार। गौणता या न्यूनता; जैसे—उपमंत्री, उपसभापति। व्याप्ति; जैसे—उपकीर्ण।

**उपकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सामग्री। २. राजाओं के छत्र, चँवर आदि राजचिह्न।

**उपकरना***—क्रि० स० [ सं० उपकार ] उपकार करना। भलाई करना।

**उपकर्त्ता**—संज्ञा पुं दे० "उपकारक"।

**उपकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ हित-साधन। भलाई। नेकी। २. लाभ। फायदा।

**उपकारक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उपकारिका ] उपकार करनेवाला। भलाई करनेवाला।

**उपकारिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भलाई।

**उपकारी**—वि० [ सं० उपकारिन् ] [ स्त्री० उपकारिणी ] १. उपकार करनेवाला। भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला।

**उपकृत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उपकृता ] १ जिसके साथ उपकार किया गया हो। २. कृतज्ञ।

**उपकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उपकार।

**उपक्रम**—संज्ञा पु० [सं०] १. कार्य्यारंभ की पहली अवस्था। अनुष्ठान। उठान। २. किसी कार्य्य को आरंभ करने के पहले का आयोजन। तैयारी। ३. भूमिका।

**उपक्रमणिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषय-सूची।

**उपक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १, अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तांत का संक्षेप में कथन। २ आक्षेप।

**उपखान***—संज्ञा पुं० दे० 'उपाख्यान'।

**उपगत**—वि० [ सं० ] १ प्राप्त। उपस्थित। २. ज्ञात। जाना हुआ। ३. स्वीकृत।

**उपगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राप्ति। स्वीकार। २. ज्ञान।

**उपगीत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्य्या छंद का एक भेद।

**उपग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गिरफ्तारी। कैद। ३. बँधुआ। कैदी। ४. अप्रधान ग्रह। छोटा ग्रह। ५ राहु और केतु। वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है। जैसे—पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा है। (आधुनिक)

**उपघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ कर्त्ता० उपघातक, उपघाती ] १. नाश करने की क्रिया। २ इंद्रियों का अपने अपने काम में असमर्थ होना। अशक्ति। ३. रोग। व्याधि। ४. इन पाँच पातकों का समूह-उपपातक, जातिभ्रंशीकरण, संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलिनीकरण। ( स्मृति )

**उपचय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। २. संचय। जमा करना।

**उपचर्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सेवा-शुश्रूषा। २. चिकित्सा। इलाज।

**उपचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यवहार। प्रयोग। विधान। २. चिकित्सा। दवा। इलाज। ३. सेवा। तीमारदारी। ४. धर्म्मानुष्ठान। ५ पूजन के अंग या विधान जो प्रधानतः सोलह माने गए हैं। जैसे, षोडशोपचार। ६. खुशामद। ७. घूस। रिशवत। ८. एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है। जैसे, निःछल से निश्छल।

**उपचारक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ] उप-चारिका ] १ उपचार या सेवा करने वाला। २ विधान करनेवाला। ३ चिकित्सा करनेवाला।

**उपचारछल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वादी के कहे वाक्य में जान-बूझ कर अभि-प्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।

**उपचारना***—क्रि० स० [ सं० उप-चार ] १. व्यवहार में लाना। २ विधान करना।

**उपचारात्**—क्रि० वि० [ सं० ] केवल व्यवहार, दिखावे या रसम अदा करने के रूप में।

**उपचारी**—वि० [ सं० उपचारिन् ] [ स्त्री० उपचारिणी ] उपचार करने-वाला।

**उपचित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णार्द्ध समवृत्त।

**उपचित्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १६ मात्राओं का एक छंद।

**उपज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उपजना ] १. उत्पत्ति। उद्भव। पैदावार। जैसे, खेत की उपज। २ नई उक्ति। उद्-भावना। सूझ। ३ मन गढ़ंत बात। गाने में राग की सुंदरता के लिये उसमें बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिला देना।

**उपजना**—क्रि० अ० [ सं० उत्पद्यते, प्रा० उप्पज्जइ ] उत्पन्न होना। पैदा होना। उगना।

**उपजाऊ**—वि० [ हिं० उपज + आऊ (प्रत्य०) ] जिसमें अच्छी उपज हो। उर्वर। ( भूमि )

**उपजाति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वे वृत्त जो इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्र-वंशा और वंशस्थ के मेल से बनते हैं।

**उपजाना**—क्रि० स० [ हिं० उपजना का स० रूप ] उत्पन्न करना। पैदा करना।

**उपजीवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपजीवी, उपजीवक ] १ जीविका। रोजी। २ निर्वाह के लिये दूसरे का अवलंबन।

**उपजीवी**—वि० [ सं० उपजीविन् ] [ स्त्री० उपजीविनी ] दूसरे के सहारे पर गुजर करनेवाला।

**उपटन**—संज्ञा पुं० दे० "उबटन"। संज्ञा पुं० [ सं० उत्पतन = ऊपर उठना ] अंक या चिह्न जो आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाय। निशान। साँट।

**उपटना**—क्रि० अ० [ सं० उत्पट = पट के ऊपर ] १ आघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना। निशान पड़ना। २ उख-ड़ना।

**उपटा**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्पतन ] १ पानी की बाढ़। २ ठोकर।

**उपटाना**—क्रि० स० [ हिं० उबटना का प्रे० रूप ] उबटन लगवाना। क्रि० स० [ सं० उत्पाटन ] १ उख-ड़वाना। २ उखाड़ना।

**उपटारना**—क्रि० स० [ सं० उत्पाटन ] उच्चाटन करना। उठाना। हटाना।

**उपड़ना**—क्रि० अ० [ सं० उत्पतन ] १ उखड़ना। २ उपटना। अंकित होना।

**उपत्यका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पर्वत के पास की भूमि। तराई।

**उपदंश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक रोग जिसमें दाँत या नाखून लगने के कारण लिंगेंद्रिय पर घाव हो जाता है। २ गरमी। आतशक। फिरंग रोग। ३ गजक। चाट।

**उपदिशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

**उपदिष्ट**—वि० [ सं० ] १. जिसे उप-देश दिया गया हो। ज्ञापित।

**उपदेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हित की बात का कथन। शिक्षा। सीख। नसीहत। २ दीक्षा। गुरुमंत्र।

**उपदेशक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० उपदेशिका ] उपदेश करनेवाला। शिक्षा देनेवाला।

**उपदेश्य**—वि० [ सं० ] १ उपदेश के योग्य २ सिखाने योग्य ( बात )।

**उपदेष्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० उपदेष्टृ ] [ स्त्री० उपदेष्ट्री ] उपदेश देनेवाला। शिक्षक।

**उपदेसना**—क्रि० स० [ सं० उपदेश + ना ( प्रत्य० ) ] उपदेश करना।

**उपद्रव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपद्रवी ] १ उत्पात। हलचल। विप्लव। २. ऊधम। दंगा-फसाद। ३. किसी प्रधान रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ।

**उपद्रवी**—वि० [ सं० उपद्रविन् ] १ उपद्रव या ऊधम मचानेवाला। २. नटखट।

**उपधरना***—क्रि० अ० [ सं० उपध-रण ] अंगीकार करना। अपनाना।

**उपधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छल। कपट। २ व्याकरण में किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले का अक्षर। ३ उपाधि।

**उपधातु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अप्र-धान धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती हैं अथवा खानों से निकलती हैं। जैसे, काँसा, सोनामुखी।

**उपधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपधृत ] १ ऊपर रखना या ठहराना। २ सहारे की चीज़। ३ तकिया। गेडुआ। ४. विशेषता।

**उपधाना***—क्रि० अ० [ सं० ] पैदा होना।

**उपनय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. समीप ले जाना। २. बालक को गुरु के पास ले जाना। ३. उपनयन-संस्कार। ४. तर्क में कोई उदाहरण देकर उस उदाहरण के धर्म को फिर उपसंहार रूप से साध्य में घटाना।

**उपनयन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ उपनीत, उपनेता, उपनेतव्य, ] यज्ञोपवीत संस्कार।

**उपनागरिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] अलंकार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद जिसमें कान को मधुर लगनेवाले वर्ण आते हैं।

**उपनाना***—क्रि॰स॰ [ सं॰ उत्पादन ] उत्पन्न या पैदा करना।

**उपनाम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. दूसरा नाम। प्रचलित नाम। २. पदवी। तखल्लुस।

**उपनायक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी।

**उपनिधि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] धरोहर। अमानत। थाती।

**उपनिविष्ट**—वि॰ [ सं॰ ] दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

**उपनिवेश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना। २. अन्य स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती।

**उपनिषद्**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. पास बैठना। २. ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति के लिये गुरु के पास बैठना। ३. वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है।

**उपनीत**—वि॰ [ सं॰ ] १. पास लाया हुआ। २. पास बैठा हुआ। ३. जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो।

**उपनेता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उपनेतृ ] [ स्त्री॰ उपनेत्री ] १. लानेवाला। पहुँचानेवाला। २. उपनयन करानेवाला। आचार्य्य। गुरु।

**उपन्यास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ उपन्यस्त ] १. वाक्य का उपक्रम। बंधान। २. कल्पित आख्यायिका। कथा। नावेल।

**उपपति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे। यार।

**उपपत्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। २ चरितार्थ होना। मेल मिलाना। संगति। ३. युक्ति। हेतु।

**उपपत्तिसम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बिना वादी के कारण और निगमन आदि का खंडन किए हुए प्रतिवादी का अन्य कारण उपस्थित करके विरुद्ध विषय का प्रतिपादन।

**उपपन्न**—वि॰ [ सं॰ ] १. पास या शरण में आया हुआ। २. प्राप्त। मिला हुआ। ३. युक्त। संपन्न। ४. उपयुक्त।

**उपपातक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] छोटा पाप। जैसे, परस्त्रीगमन।

**उपपादन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ उपपादित, उपपन्न, उपपादनीय, उपपाद्य ] १. सिद्ध करना। साबित करना। ठहराना। २. कार्य्य को पूरा करना। संपादन।

**उपपुराण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १८ मुख्य पुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण। ये भी संख्या में १८ हैं।

**उपबरहन***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उपबर्हण ] तकिया।

**उपभुक्त**—वि॰ [ सं॰ ] १. काम में लाया हुआ। २. जूठा। उच्छिष्ट।

**उपभोक्ता**—वि॰ [ सं॰ उपभोक्तृ ] [ स्त्री॰ उपभोक्त्री ] उपभोग करनेवाला।

**उपभोग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. किसी वस्तु के व्यवहार का सुख। मज़ा लेना। २. काम में लाना। बर्तना। ३. सुख की सामग्री।

**उपभोग्य**—वि॰ [ सं॰ ] उपभोग या व्यवहार करने के योग्य।

**उपमंत्री**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह मंत्री जो प्रधान मंत्री के नीचे हो।

**उपमर्द**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उपमर्दन"।

**उपमर्दन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ उपमर्दित, उपमर्द्य ] १. बुरी तरह से दबाना या रौंदना। २. उपेक्षा और तिरस्कार करना।

**उपमा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. किसी वस्तु, व्यापार या गुण को दूसरी वस्तु, व्यापार या गुण के समान प्रकट करने की क्रिया। तुलना। मिलान। जोड़। एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है।

**उपमाता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उपमातृ ] [ स्त्री॰ उपमात्री ] उपमा देनेवाला। संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ उप + मातृ ] दूध पिलाने वाली दाई।

**उपमान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बताई जाय। २. न्याय में चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। किसी प्रसिद्ध पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन। ३. २३ मात्राओं का एक छंद।

**उपमाना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उपमा ] उपमा देना।

**उपमित**—वि॰ [ सं॰ ] जिसकी उपमा दी गई हो।
संज्ञा पुं॰ कर्मधारय के अंतर्गत एक समास जो दो शब्दों के बीच उपमा

अर्थक शब्द का लोप करने से बनता है। जैसे—पुरुषसिंह।

**उपमिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान।

**उपमेय**—वि० [सं०] जिसकी उपमा दी जाय। वर्ण्य। वर्णनीय।

**उपमेयोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय।

**उपयना***—क्रि० अ० [सं० उत्थापण] चला जाना। न रह जाना। उड़ जाना।

**उपयुक्त**—वि० [सं०] योग्य। उचित। वाजिब। मुनासिब।

**उपयुक्तता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ठीक उतरने या होने का भाव। यथार्थता। औचित्य।

**उपयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १. काम। व्यवहार। इस्तेमाल। प्रयोग। २. योग्यता। ३. फायदा। लाभ। ४. प्रयोजन। आवश्यकता।

**उपयोगिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] काम में आने की योग्यता। लाभकारिता।

**उपयोगिता-वाद**—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है।

**उपयोगी**—वि० [सं० उपयोगिन्] [स्त्री० उपयोगिनी] १. काम में आनेवाला। प्रयोजनीय। मसरफ का। २. लाभकारी। फायदेमंद। ३. अनुकूल। मुवाफिक।

**उपरत**—वि० [सं०] १. विरक्त। उदासीन। २. मरा हुआ।

**उपरति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विषय से विराग। विरति। त्याग। २. उदासीनता। उदासी। ३. मृत्यु। मौत।

**उपरत्न**—संज्ञा पुं० [सं०] कम दाम के रत्न। घटिया रत्न। जैसे, सीप, मरकत मणि।

**उपरना**—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर + ना (प्रत्य०)] दुपट्टा। चद्दर। उत्तरीय।

†क्रि० अ० [सं० उत्पाटन] उखड़ना।

**उपरफट, उपरफट्टू**—वि० [सं० उपरि + स्फुट] १. ऊपरी। बालाई। नियमित के अतिरिक्त। २ बेठिकाने का। व्यर्थ का।

**उपरस**—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में पारे का सा गुण करनेवाले पदार्थ। जैसे, गंधक।

**उपरांत**—क्रि० वि० [सं०] अनंतर। बाद।

**उपराग**—संज्ञा पुं० [सं०] १ रंग। २. किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। ३ विषय में अनुरक्ति। वासना। ४. चंद्र या सूर्य-ग्रहण।

**उपराम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ त्याग। २ उदासीनता। ३ विराम। विश्राम।

**उपरा-चढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊपर+ चढना] चढ़ा-ऊपरी। प्रतिद्वंद्विता। स्पर्द्धा।

**उपराज**—संज्ञा पुं० [सं०] राजप्रतिनिधि। वाइसराय। गवर्नर-जनरल। *संज्ञा स्त्री० दे० "उपज"।

**उपराजना***—क्रि० स० [सं० उपार्जन] १. पैदा करना। उत्पन्न करना। २. रचना। बनाना। ३. उपार्जन करना। कमाना।

**उपराना**†—क्रि० अ० [सं० उपरि] १. ऊपर आना। २. प्रकट होना। ३. उतराना

*क्रि० स० ऊपर करना। उठाना।

**उपराला***—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर + ला (प्रत्य०)] पक्ष ग्रहण। सहायता। रक्षा।

**उपरावटा***—वि० [सं० उपरि+आवर्त] जो गर्व से सिर उँचा किए हो।

**उपराहना***—क्रि० अ० [?] प्रशंसा करना।

**उपराही***—क्रि० वि० दे० "ऊपर"। वि० बढ़कर। श्रेष्ठ।

**उपरि**—क्रि० वि० [सं०] ऊपर।

**उपरी-उपरा**—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर] प्रतिद्वंद्विता। चढ़ा-ऊपरी।

**उपरूपक**—संज्ञा पुं० [सं०] छोटा नाटक जिसके १८ भेद हैं।

**उपरैना***—संज्ञा पुं० दे० "उपरना"।

**उपरैनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० उपरना] ओढ़नी।

**उपरोक्त**—वि० [हिं० ऊपर + सं० उक्त] ऊपर कहा हुआ। पहले कहा हुआ। (शुद्ध रूप "उपर्युक्त")

**उपरोध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अटकाव। रुकावट। २. आच्छादन। ढकना।

**उपरोधक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोकने या बाधा डालनेवाला। २. भीतर की कोठरी।

**उपरौटा**—संज्ञा पुं० [हिं० ऊपर + पट] (किसी वस्तु के) ऊपर का पल्ला।

**उपर्युक्त**—वि० [सं०] ऊपर कहा हुआ।

**उपल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर। २ ओला। ३ रत्न। ४. मेघ। बादल।

**उपलक्षक**—वि० [सं०] अनुमान करनेवाला। ताड़नेवाला।

संज्ञा पुं० वह शब्द जो उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ-द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की और और वस्तुओं का भी बोध

करावे।

**उपलक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपलक्षक, उपलक्षित ] १. बोध करानेवाला चिह्न। संकेत। २. शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी की कोटि की और और वस्तुओं का भी बोध होता है।

**उपलक्ष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संकेत। चिह्न। २. दृष्टि। उद्देश्य।

**यौ०**—उपलक्ष्य में=दृष्टि से। विचार से।

**उपलब्ध**—वि० [ सं० ] १. पाया हुआ। प्राप्त। २ जाना हुआ।

**उपलब्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राप्ति। २ बुद्धि। ज्ञान।

**उपला**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्पल ] [ स्त्री०, अल्पा० उपली ] ईंधन के लिये गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा। कंडा। गोहरा।

**उपलेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ लेप लगाना। लीपना। २ वह वस्तु जिससे लेप करें।

**उपलेपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त ] लीपना या लेप लगाना।

**उपल्ला**—संज्ञा पुं० [ हिं० ऊपर + ला (प्रत्य०) ] [ स्त्री०, अल्पा० उपल्ली ] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त्त या तह।

**उपवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाग। बगीचा। फुलवारी। २. छोटा जंगल।

**उपवना*** —क्रि० अ० [सं० उत्प्रयाण] १. गायब होना। २. उदय होना।

**उपवसथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गाँव। बस्ती। २. यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का विधान है।

**उपवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भोजन का छूटना। फाका। २. वह व्रत जिसमें भोजन छोड़ दिया जाता है।

**उपवासी**—वि० [ सं० उपवासिन् ] [ स्त्री० उपवासिनी ] उपवास करनेवाला।

**उपविष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हलका विष। कम तेज जहर। जैसे, अफीम या धतूरा।

**उपविष्ट**—वि० [ सं० ] बैठा हुआ।

**उपवीत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपवीती ] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. उपनयन।

**उपवेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हुई कही जाती हैं। जैसे, धनुर्वेद, आयुर्वेद।

**उपवेशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट ] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।

**उपशम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वासनाओं को दबाना। इंद्रिय-निग्रह। २ निवृत्ति। शांति। ३. निवारण का उपाय। इलाज।

**उपशमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपशमनीय, उपशमित, उपशाम्य ] १. शांत रखना। दबाना। २. उपाय से दूर करना। निवारण।

**उपशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मकान के पास का उठने-बैठने के लिए दालान या छोटा कमरा। बैठक।

**उपशिष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिष्य का शिष्य।

**उपसंपादक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० उपसंपादिका ] किसी कार्य्य में मुख्य कर्त्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य्य करनेवाला व्यक्ति।

**उपसंहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हरण। परिहार। २ समाप्ति। खातमा। निराकरण। ३. किसी पुस्तक के अंत का अध्याय जिसमें उद्देश्य या परिणाम संक्षेप में बतलाया गया हो। ४. सारांश।

**उपस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उप + वास = महँक ] दुर्गंध। बदबू।

**उपसना**†—क्रि० अ० [ सं० उप + वास = महँक ] १. दुर्गंधित होना। सड़ना।

**उपसर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह शब्द या अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है जैसे, अनु, अव, उप, उद् इत्यादि। २. अशकुन। ३ दैवी उत्पात।

**उपसागर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छोटा समुद्र। समुद्र का एक भाग। खाड़ी।

**उपसाना**—क्रि० स० [ हिं० उपसना ] बासी करना। सड़ाना।

**उपसुंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुंद नाम के दैत्य का छोटा भाई।

**उपसेचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी से सींचना या भिगोना। पानी छिड़कना। २. गीली चीज। रसा। शोरबा।

**उपस्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीचे या मध्य का भाग। २. पेड़ू। ३. पुरुष-चिह्न। लिंग। ४. स्त्री-चिह्न। भग। ५. गोद।

वि० निकट बैठा हुआ।

**उपस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपस्थानीय, उपस्थित ] १. निकट आना। सामने आना। २. अभ्यर्थना या पूजा के लिये निकट आना। ३. खड़े होकर स्तुति करना। ४. पूजा का स्थान। ५. सभा। समाज।

**उपस्थित**—वि० [ सं० ] १. समीप बैठा हुआ। सामने या पास आया हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाजिर। २. ध्यान में आया हुआ। याद।

**उपस्थिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्ण-वृत्ति।

**उपस्थिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी।

**उपस्वत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जमीन या किसी जायदाद की आमदनी का हक।

**उपहत**—वि० [ सं० ] १ नष्ट या बरबाद किया हुआ। २. बिगाड़ा हुआ। दूषित। ३. संकट में पड़ा हुआ।

**उपहसित (हास)**— संज्ञा पुं० [सं०] हास के छः भेदों में से एक चौथा। नाक फुलाकर आँखें टेढ़ी करते और गर्दन हिलाते हुए हँसना।

**उपहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भेंट। नजर। नजराना। २ शैवों की उपासना के छः नियम—हसित, गीत, नृत्य, हुडुक्कार, नमस्कार और जप।

**उपहास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपहास्य ] १. हँसी। दिल्लगी। २ निंदा। बुराई।

**उपहासास्पद**—वि० [ सं० ] १ उपहास के योग्य। हँसी उड़ाने के लायक। २ निंदनीय। खराब। बुरा।

**उपहासो***—संज्ञा स्त्री० [ सं० उपहास ] हँसी। ठट्ठा। निंदा।

**उपहास्य**—वि० दे० "उपहासास्पद"।

**उपही***—संज्ञा पुं० [ हिं० ऊपर + हा (प्रत्य०) ] अपरिचित, बाहरी या विदेशी आदमी।

**उपांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंग का भाग। अवयव। २. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति हो। जैसे—वेद के उपांग। ३. तिलक। टीका।

**उपांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपांत्य ] १. अंत के समीप का भाग। २. आस-पास का हिस्सा। छोटा किनारा।

**उपांत्य**—वि० [ सं० ] अंतवाले के समीपवाला। अंतिम से पहले का।

**उपाउ***—संज्ञा पुं० दे० "उपाय"।

**उपाकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन करना। २. यज्ञोपवीत संस्कार।

**उपाख्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पुरानी कथा। पुराना वृत्तांत। २. किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा। ३ वृत्तांत।

**उपाटना***—क्रि०स०दे० "उखाड़ना"।

**उपाति***—संज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।

**उपादान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [भाव० उपादानता] १. प्राप्ति। ग्रहण। स्वीकार। २ ज्ञान। बोध। ३ विषयों से इंद्रियों की निवृत्ति। ४ वह कारण जो स्वयं कार्य्य रूप में परिणत हो जाय। सामग्री जिससे कोई वस्तु तैयार हो। ५ सांख्य की चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही बात से पूरे फल की आशा करके और प्रयत्न छोड़ देता है।

**उपाधि***—संज्ञा स्त्री० दे० "उपाधि"।

**उपादेय**—वि० [ सं० ] [भाव० उपादेयता] १. ग्रहण करने योग्य। लेने योग्य। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

**उपाधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. और वस्तु को और बतलाने का छल। कपट। २ वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे। ३. उपद्रव। उत्पात। ४ कर्त्तव्य का विचार। धर्मचिंता। ५ प्रतिष्ठासूचक पद। खिताब।

**उपाधिधारी**—संज्ञा पुं० [ सं० उपाधिधारिन् ] वह जिसे कोई उपाधि या खिताब मिला हो।

**उपाधी**—वि० [सं० उपाधिन्] [स्त्री० उपाधिनी] उपद्रवी। उत्पात करने वाला।

**उपाध्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १. वेद वेदांग का पढ़ानेवाला। २ अध्यापक। शिक्षक। गुरु। ३ ब्राह्मणों का एक भेद।

**उपाध्याया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अध्यापिका।

**उपाध्यायानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी।

**उपाध्यायी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उपाध्याय की स्त्री। गुरुपत्नी। २. अध्यापिका।

**उपानह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जूता। पनही।

**उपाना***—क्रि० स० [ सं० उत्पादन ] उत्पन्न करना। पैदा करना। २. सोचना।

**उपाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपायी, उपेय ] १ पास पहुँचना। निकट आना। २ वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचे। साधन। युक्ति। तदबीर। ३. राजनीति में शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—साम, भेद, दंड, और दान। ४ शृंगार के दो साधन, साम और दाम।

**उपायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भेंट। उपहार।

**उपारना***—क्रि० स० दे० "उखाड़ना"।

**उपार्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपार्जनीय, उपार्जित ] लाभ करना। कमाना।

**उपार्जित**—वि० [ सं० ] कमाया हुआ। प्राप्त किया हुआ। संग्रहीत।

**उपालंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपालब्ध ] उलाहना। शिकायत। निंदा।

**उपालंभन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उपालंभनीय, उपालंभित, उपालंभ्य,

उपालभ्य ] ओलाहना देना। निंदा करना।

**उपाव***†—संज्ञा पु० दे० "उपाय"।

**उपास***†—संज्ञा पु० दे० "उपवास"।

**उपासक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उपासिका ] पूजा या आराधना करनेवाला। भक्त।

**उपासना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उपासन ] १. पास बैठने की क्रिया। २. आराधना। पूजा। टहल। परिचर्या।

*क्रि० स० [ सं० उपवास ] उपासना, पूजा या सेवा करना। भजना।

क्रि० अ० [ सं० उपवास ] १. उपवास करना। भूखा रहना। २. निराहार व्रत रहना।

**उपासनीय**—वि० [ सं० ] सेवा करने योग्य। आराधनीय। पूजनीय।

**उपासी**—वि० [सं० उपासिन्] [स्त्री० उपासिनी ] उपासना करनेवाला। सेवक। भक्त।

**उपास्य**—वि० [ सं० ] पूजा के योग्य। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य।

**उपेंद्र**—संज्ञा पु० [ सं० ] इंद्र के छोटे भाई, वामन या विष्णु भगवान्।

**उपेंद्रवज्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ग्यारह वर्णों की एक वृत्ति।

**उपेक्षण**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य ] १. विरक्त होना। उदासीन होना। किनारा खींचना। २. घृणा करना। तिरस्कार करना।

**उपेक्षणीय**—वि० दे० "उपेक्ष्य"।

**उपेक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २. घृणा। तिरस्कार।

**उपेक्षित**—वि० [ सं० ] जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।

**उपेक्ष्य**—वि० [ सं० ] उपेक्षा के योग्य।

**उपेत**—वि० [ सं० ] १. बीता हुआ। गत। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३. संयुक्त।

**उपैन***—वि० [ सं० उ + पह्नव ] [ स्त्री० उपैनी ] खुला हुआ। नंगा।

क्रि० अ० [ ? ] लुप्त हो जाना। उड़ना।

**उपोद्घात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य। प्रस्तावना। भूमिका। २. सामान्य कथन से भिन्न विशेष वस्तु के विषय में कथन। ( न्याय )।

**उपोषण**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० उपोषणीय, उपोषित, उपोष्य ] उपवास। निराहार व्रत।

**उपोसथ**—संज्ञा पु० [ सं० उपवसथ, प्रा० उपोसथ ] निराहार व्रत। उपवास। ( जैन, बौद्ध )

**उफ**—अव्य० [ अ० उफ़ ] आह। आह। अफसोस।

**उफड़ना***—क्रि० अ० दे० "उफनना"।

**उफनना***—क्रि० अ० [ सं० उत् + फेन ] १. उबलकर उठना। जोश खाना। ( दूध आदि का ) २. उमड़ना।

**उफनाना**—क्रि० अ० [ सं० उत् + फेन ] १. उबलना। २. उमड़ना।

**उफान**—संज्ञा पुं० [ उत् + फेन ] गरमी पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उबाल।

**उफाल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फाल ] लंबा डग।

**उबकना**—क्रि० अ० [ हिं० उबाक ] कै करना।

**उबकाई***—[ संज्ञा स्त्री० ] [ हिं० ओकाई ] मतली। कै।

**उबट***—संज्ञा पुं० [ सं० उद्वाट ] अटपट या बुरा रास्ता। विकट मार्ग।

वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।

**उबटन**—संज्ञा पु० [ सं० उद्वर्तन ] शरीर पर मलने के लिये सरसों, तिल और चिरौंजी आदि का लेप। बटना। अभ्यंग।

**उबटना**—क्रि० अ० [ सं० उद्वर्तन ] लगाना। उबटन मलना।

**उबना***—क्रि० अ० १. दे० "उगना"। २. दे० "ऊबना"।

**उबरना**—क्रि० अ० [ सं० उद्धारण ] १. उद्धार पाना। निस्तार पाना। मुक्त होना। छूटना। २. शेष रहना। बाकी बचना।

**उबलना**—क्रि० अ० [ सं० उद्=ऊपर + वलन = जाना] १. आँच या गरमी पाकर तरल पदार्थों का फेन के साथ ऊपर उठना। उफनना। २. उमड़ना। वेग से निकलना।

**उबहना***—क्रि० स० [ सं० उद्वहन, पा० उब्बहन = ऊपर उठना ] १. हथियार खींचना। (हथियार) म्यान से निकालना। शस्त्र उठाना। २ पानी फेंकना। उलीचना। ३. ऊपर की ओर उठना। उभरना।

क्रि० स० [ सं० उद्वहन ] जोतना।

वि० [ सं० उपाहन ] बिना जूते का। नंगा।

**उबाँत***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० उद्वांत ] वमन। कै।

**उबार**—संज्ञा पुं० [ सं० उद्धारण ] १. निस्तार। छुटकारा। उद्धार। २. आधार।

**उबारना**—क्रि० स० [ सं० उद्धारण ] उद्धार करना। छुड़ाना। मुक्त करना। बचाना।

**उबाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० उबलना ] १. आँच पाकर फेन के सहित ऊपर उठना। उफान। २. जोश। उद्वेग।

क्षोभ।

**उबालना**—क्रि० स० [ सं० उद्बालन ] १. तरल पदार्थ को आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठ आवे। खौलाना। चुराना। जोश देना। २. पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। जोश देना। उसिनना।

**उबासी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उश्वास ] जँभाई।

**उबाहना***—क्रि० स० दे० "उब-हना"।

**उबीठना**—क्रि० स० [ सं० अव + इष्ट ] जी भर जाने पर अच्छा न लगना।

क्रि० अ० ऊबना। घबराना।

**उबीधना***—क्रि० अ० [ सं० उद्वि-द्ध ] १. फँसना। उलझना। २ धँसना। गड़ना।।

**उबीध**—वि० [ सं० उद्विद्ध ] [ स्त्री० उबीधी ] १. धँसा हुआ। गड़ा हुआ। २. काँटों से भरा हुआ। झाड़ झंखाड़वाला।

**उबेना***—वि० [ हिं० उ = नहीं + सं० उपाहन ] नंगे पैर। बिना जूते का।

**उबेरना***—क्रि० स० दे० "उबारना"।

**उबेहना**—क्रि० स० [ सं० उद्वेधन ] १. जड़ना। बैठाना। २. पिराना।

**उभटना**—क्रि० अ० [ हिं० उभरना ] १. अहंकार करना। शेखी करना। २. दे० "उभड़ना"।

**उभड़ना**—क्रि० अ० [ सं० उद्भरण ] १. किसी तल या सतह का आस-पास की सतह से कुछ ऊँचा होना। उक-सना। फूलना। २. ऊपर निकलना। उठना। जैसे, अंकुर उभड़ना। ३. उत्पन्न होना। पैदा होना। ४ खुलना। प्रकाशित होना। ५. बढ़ना। अधिक या प्रबल होना। ६. हट जाना। ७ जवानी पर आना। ८ गाय, भैंस आदि का मस्त होना।

**उभना***—क्रि० अ० [ सं० उद्भरण ] १. उठना। २ उमड़ना।

**उभय**—वि० [ सं० ] दोनों।

**उभयतः**—क्रि० वि० [ सं० ] दोनों ओर से।

**उभयतोमुख**—वि० [ सं० ] दोनों ओर मुँहवाला।

**यौ०**—उभयतोमुखी गौ = ब्याती हुई गाय जिसके गर्भ से बच्चे का मुँह बाहर निकल आया हो। ( इसके दान का बड़ा माहात्म्य है। )

**उभयनिष्ठ**—वि० [ सं० ] १. जो दोनों में निष्ठा रखता हो। २ जो दोनों में सम्मिलित हो।

**उभयविपुला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्या छंद का एक भेद।

**उभरना***—क्रि० अ० दे० "उभ-ड़ना"।

**उभरौंहाँ***—वि० [ हिं० उभरना + औहाँ ( प्रत्य० ) ] उभार पर आया हुआ। उभरा हुआ।

**उभाड़**—संज्ञा पु० [ सं० उद्भिदन ] १. उठान। ऊँचापन। ऊँचाई। २. ओज। वृद्धि।

**उभाड़ना**—क्रि० स० [ हिं० उभड़ना ] १. भारी वस्तु को धीरे धीरे उठाना। उकसाना। २ उत्तेजित करना। बहकाना।

**उभाड़दार**—वि० [ हिं० उभाड़ + फा० दार ] १ उठा या उभरा हुआ। २. भड़कीला।

**उभाना***—क्रि० अ० दे० "अभु-आना"।

**उभार**—संज्ञा पु० दे० "उभाड़"।

**उभिटना***—क्रि० अ० [ देश० ] ठिठकना। हिचकना। भिटकना।

**उभै***—वि० दे० "उभय"।

**उमंग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उद् = ऊपर + मग = चलना ] १ चित्त का उभाड़। सुखदायक मनोवेग। मौज। लहर। उल्लास। २ उभाड़। ३. अधिकता। पूर्णता।

**उमंगना***—क्रि० अ० दे० "उम-गना"।

**उमँड़ना**—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

**उमग***—संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।

**उमगन***—संज्ञा स्त्री० दे० 'उमग'।

**उमगना**—क्रि० अ० [ हिं० उमग + ना ] १. उमड़ना। उमड़ना। भरकर ऊपर उठना। २. उल्लास में होना। हुलसना।

**उमगाना**—क्रि० स० [ हिं० उमगना ] १. उमड़ना। २ उल्लसित करना।

**उमचना***—क्रि० अ० [ सं० उन्मच ] १ किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिये कूदना। हुम-चना। २ चौकन्ना होना। सजग होना।

**उमड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उन्मडन ] १. बाढ़। बढ़ाव। भराव। २ घिराव। ३ धावा।

**उमड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० उमंग ] १ द्रव वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना। उतराकर बह चलना। २. उठकर फैलना। छाना। घेरना। जैसे—बादल उमड़ना।

**यौ०**—उमड़ना घुमड़ना = घूम-घूमकर फैलना या छाना। ( बादल )

३ आवेश में भरना। जोश में आना।

**उमड़ाना**—क्रि० अ० दे० "उम-ड़ना"।

क्रि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक रूप।

**उमदना***—क्रि० अ० [ सं० उन्मद ] १. उमंग में भरना। मस्त होना। २.

उमगना। उमड़ना।

**उमदा**—वि० दे० "उम्दा"।

**उमदाना***—क्रि० अ० [सं० उन्मद] १. मतवाला होना। मद में भरना। मस्त होना। २. उमंग या आवेश में आना।

**उमर**—संज्ञा स्त्री० [अ० उम्र] १. अवस्था। वय। २. जीवनकाल। आयु। मुसलमानों के एक खलीफा। (राजा)

**उमरती**—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का बाजा।

**उमराव***—संज्ञा पु० [अ० उमरा (अमीर का बहु०)] प्रतिष्ठित लोग। सरदार।

**उमस**—संज्ञा स्त्री० [सं० ऊष्म] वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है।

**उमसना***—क्रि० अ० [हिं० उमस] उमस होना।

**उमहना***—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।

**उमहाना***—क्रि० स० दे० "उमाहना"।

**उमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शिव की स्त्री, पार्वती। २ दुर्गा। ३. हलदी। ४. अलसी। ५. कीर्ति। ६. कांति।

**उमाकना***—क्रि० अ० [स० उ = नहीं + मक] खोदकर फेंक देना। नष्ट करना।

**उमाकिनी***†—वि० स्त्री० [हिं० उमाकना] उखाड़नेवाली। खोदकर फेंक देनेवाली।

**उमचना***† क्रि० स० [सं० उन्मंचन] १ उभाड़ना। ऊपर उठाना। २. निकालना।

**उमाद***—संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।

**उमाधव**—संज्ञा पु [सं०] महादेव।

**उमापति**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**उमाह**—संज्ञा पुं० [हिं० उमहना] उत्साह। उमंग। जोश। चित्त का उद्गार।

**उमाहना**—क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। क्रि० स० उमड़ाना। उमगाना।

**उमाहल***—वि० [हिं० उमाह] उमंग से भरा हुआ। उत्साहित।

**उमेठन**—संज्ञा स्त्री० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठन। मरोड़। पेंच। बल।

**उमेठना**—क्रि० स० [सं० उद्वेष्टन] ऐंठना। मरोड़ना।

**उमेठवाँ**—वि० [हिं० उमेठना] ऐंठदार। ऐंठनदार। घुमावदार।

**उमेड़ना***—क्रि० स० दे० "उमेठना"।

**उमेलना***—क्रि स० [सं० उन्मीलन] खोलना। प्रकट करना। २ वर्णन करना।

**उमैना***—क्रि० अ० [हिं० उमंग] मनमाना आचरण करना।

**उम्दगी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] अच्छापन। भलापन। खूबी।

**उम्दा**—वि० [अ०] अच्छा। भला।

**उम्मत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी मत के अनुयायियों की मंडली। २ जमाअत। समिति। समाज। ३. औलाद। संतान। (परिहास) ४. पैरोकार। अनुयायी।

**उम्मीद, उम्मेद**—संज्ञा स्त्री० [फा०] आशा। भरोसा। आसरा।

**उम्मेदवार**—संज्ञा पुं० [फा०] १. आशा या आसरा रखनेवाला। २. काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ्तर में बिना तनखाह काम करनेवाला आदमी। ३ किसी पद पर चुने जानेके लिये खड़ा होनेवाला आदमी।

**उम्मेदवारी**—संज्ञा स्त्री० [फा] १. आशा। आसरा। २. काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना तनखाह काम करना।

**उम्र**—संज्ञा स्त्री [अ०] १. अवस्था। वयस। २. जीवनकाल। आयु।

**उरंग, उरंगा**—संज्ञा पुं० दे० "उरग"।

**उर**—संज्ञा पुं० [सं० उरस्] १. वक्षःस्थल। छाती। २ हृदय। मन। चित्त।

**उरई**—संज्ञा स्त्री० [सं० उशीर] उशीर। खश।

**उरकना***—क्रि० अ० दे० "रुकना"।

**उरग**—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

**उरगना***—क्रि० स० [सं० उररीकरण] १. स्वीकार करना। २. सहना।

**उरगारि**—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

**उरगिनी***—संज्ञा स्त्री० [सं० उरगी] सर्पिणी।

**उरज, उरजात***—संज्ञा पुं० दे० "उरोज"।

**उरझना***—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

**उरझेर***—संज्ञा पुं० [?] हवा का झकोरा।

**उरझेरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "उलझेड़ा"।

**उरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेड़ा। मेढा। २. युरेनस नामक ग्रह।

**उरद**—संज्ञा पुं० [सं० ऋद्ध, पा० उद्द] [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है। माष।

**उरध***—क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।

**उरधारना**—क्रि० स० दे० "उधेड़ना"।

**उरबसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वशी"।

**उरबी***—संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी"।

**उरमना***†—क्रि० अ० [सं० अवलंबन, प्रा० ओलंबन] लटकना।

**उरमंडन**—संज्ञा पुं० [सं० उर+मंडन] हृदय के भूषण। प्रिय।

**उरमाना***†—क्रि० स० [हिं० उरमना] लटकाना।

**उरमाल***—संज्ञा पुं० दे० "रूमाल"।

**उरमी***—संज्ञा स्त्री० [सं० ऊर्मि] १. लहर। २. दुःख। पीड़ा। कष्ट।

**उरवसा**—क्रि॰ अ॰ [?] बलपूर्वक अंदर घुसना।

**उरविज***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उर्वी + ज = उत्पन्न ] भौम। मंगल।

**उरला**—वि॰ [ सं॰ अपर, अवर + हिं॰ ला (प्रत्य॰) पिछला। पीछे का। उत्तर। इस तरफ का।

वि॰ [ हिं॰ विरल ] विरला। निराला।

**उरस**—वि॰ [ सं॰ कुरस ] फीका। नीरस।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उरस् ] १. छाती। वक्षस्थल। २. हृदय। चित्त।

**उरसना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ उड़सना] ऊपर नीचे करना। उथल-पुथल करना।

**उरसिज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्तन।

**उरहना***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उलाहना"।

**उरा***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ उर्वी ] पृथिवी।

**उराय**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उराव"।

**उरारा***—वि॰ [ सं॰ उरु ] विस्तृत। विशाल।

**उराव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उरस् + आव (प्रत्य॰) ] चाव। चाह। उमंग। उत्साह। हौसला।

**उराहना**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उलाहना"।

**उरिण, उरिन**—वि॰ दे॰ "उऋण"।

**उरु**—वि॰ [ सं॰ ] १ लंबा चौड़ा। २. बड़ा।

*संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ऊरु ] जंघा। जाँघ।

**उरुजना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "उलझना"।

**उरुवा***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उलूक, प्रा॰ उलूअ ] उल्लू जाति की एक चिड़िया। रुरुआ।

**उरूज***—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] बढ़ती। वृद्धि।

**उरे***†—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ अवर ] १. परे। आगे। २. दूर। ३. इधर। इस तरफ।

**उरेखना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ आलेखन ] १ चित्र अंकित करना। २. दे॰ "अवरेखना"।

**उरेहु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उल्लेख ] चित्रकारी।

**उरेहना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उल्लेखन ] खींचना। लिखना। रचना। (चित्र)

**उरोज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्तन। कुच।

**उर्द**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उरद"।

**उर्दपर्णी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ उर्द + सं॰ पर्णी ] माषा-पर्णी। बन उरदी।

**उर्दू**—संज्ञा स्त्री॰ [ तु॰ ] वह हिंदी जिसमें अरबी, फारसी के शब्द अधिक हों और जो फारसी लिपि में लिखी जाय।

**उर्दू बाजार**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ उर्दू + बाजार ] १. लश्कर या छावनी का बाजार। २. वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।

**उर्ध***—वि॰ [ सं॰ ] ऊर्ध्व।

**उर्फ**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] चलतू नाम। पुकारने का नाम। उपनाम।

**उर्मि***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ऊर्मि"।

**उर्मिला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ऊर्मिला ] सीता जी की छोटी बहिन जो लक्ष्मण जी से ब्याही गई थी।

**उर्वरा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. उपजाऊ भूमि। २. पृथ्वी। भूमि। ३. एक अप्सरा।

वि॰ स्त्री॰ उपजाऊ। जरखेज। (जमीन)

**उर्वशी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक अप्सरा।

**उर्विजा***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उर्वीजा"।

**उर्वी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पृथ्वी।

**उर्वीजा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पृथ्वी से उत्पन्न, सीता।

**उर्वीधर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शेष। २. पर्वत।

**उर्स**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। २. मुसलमान साधुओं की निर्वाण तिथि।

**उलंग***—वि॰ [ सं॰ उलग्न ] नंगा।

**उलंघन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उल्लंघन"।

**उलंघना, उलँघना*** क्रि॰ स॰ [ सं॰ उल्लंघन ] १ नाँघना। डाकना। उल्लंघन करना। २. न मानना। अवज्ञा करना।

**उलका***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उल्का"।

**उलचना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "उलीचना"।

**उलछना***†—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उलचना ] १. हाथ से छितराना। बिखराना। २ उलीचना।

**उलछारना*** क्रि॰ स॰ दे॰ "उछालना"।

**उलझन**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ अवरुंधन ] १ अटकाव। फँसाव। गिरह। गाँठ २. बाधा। ३ पेंच। चक्कर। समस्या। ४ व्यग्रता। चिंता। तरद्दुद।

**उलझना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ अवरुंधन ] १. फँसना। अटकना। जैसे काँटे में उलझना। ('उलझना' का उलटा 'सुलझना' है।) २ लपेट में पड़ना। बहुत-से घुमावों के कारण फँस जाना। ३. लिपटना। ४. काम में लिप्त या लीन होना। ५. तकरार करना। लड़ना-झगड़ना। ६ कठिनाई में पड़ना। अड़चन में पड़ना। ७. अटकना। रुकना। ८ बल खाना। टेढ़ा होना।

**उलझाव***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "उलझन"।

**उलझाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ उलझना ] १. फँसाना। अटकाना। २. लगाए रखना। लिप्त रखना। ३. टेढ़ा करना।

*क्रि० अ० उलझना । फँसना ।

**उलझाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० उलझना ] १. अटकाव । फँसाव । २. झगड़ा । बखेड़ा । ३. चक्कर । फेर ।

**उलझौहाँ**—वि० [ हिं० उलझना ] १. अटकाने या फँसानेवाला । २. लुभानेवाला ।

**उलटना**—क्रि० अ० [सं० उल्लोठन] १. ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना । औंधा होना । पलटना । २ पीछे मुड़ना । घूमना । पलटना । ३. उमड़ना । टूट पड़ना । ४. अंडबंड होना । अस्त-व्यस्त होना । ५ विपरीत होना । विरुद्ध होना । ६ क्रुद्ध होना । चिढ़ना । ७. बरबाद होना । नष्ट होना । ८. बेहोश होना । बेसुध होना । ९ गिरना । १०. घमंड करना । इतराना । ११ चौपायों का एक बार जोड़ा खाकर गर्भ धारण न करना और फिर जोड़ा खाना ।

क्रि० स० १. नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे करना । औंधा करना । पलटना । फेरना । २. औंधा गिराना । ३. पटकना । गिरा देना । ४ लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर चढ़ाना । ५. अंडबंड करना । अस्तव्यस्त करना । ६. विपरीत करना । और का और करना । ७ उत्तर-प्रत्युत्तर करना । बात दोहराना । ८. खोदकर फेंकना । उखाड़ डालना । ९. बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिये खेत जोतना । १०. बेसुध करना । बेहोश करना । ११ कै करना । वमन करना । १२. उँडेलना । अच्छी तरह ढालना । १३. बरबाद करना । नष्ट करना । १४. रटना । जपना । बार-बार कहना ।

**उलट पुलट ( पुलट )**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ] अदल-बदल । अव्यवस्था । गड़बड़ी ।

**उलटफेर**—संज्ञा पुं० [ हिं० उलटा + फेर ] १. परिवर्तन । अदल-बदल । हेर-फेर । २. जीवन की भली-बुरी दशा ।

**उलटा**—वि० [ हिं० उलटना ] [ स्त्री० उलटी ] १. जिसके ऊपर का भाग नीचे और नीचे का भाग ऊपर हो । औंधा ।

**मुहा०**—उलटी साँस चलना=साँस का जल्दी-जल्दी बाहर निकलना । दम उखड़ना ( मरने का लक्षण ) । उलटी साँस लेना = जल्दी-जल्दी साँस खींचना । मरने के निकट होना । उलटे मुँह गिरना = दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना ।

२. जिसका आगे का भाग पीछे अथवा दाहिनी ओर का भाग बाईं ओर हो । इधर का उधर । क्रम-विरुद्ध ।

**मुहा०**—उलटा फिरना या लौटना = तुरंत लौट पड़ना । बिना क्षण भर ठहरे पलटना । उलटा हाथ = बायाँ हाथ । उलटी गंगा बहना = अनहोनी बात होना । उलटी माला फेरना = बुरा मनाना । अहित चाहना । उलटे छुरे से मूड़ना = उल्लू बनाकर काम निकालना । ठगना । उलटे पाँव फिरना = तुरंत लौट पड़ना ।

३. कालक्रम में जो आगे का पीछे और पीछे का आगे हो । जो समय से आगे पीछे हो । ४. विरुद्ध । विपरीत । ५. उचित के विरुद्ध । अंडबंड । अयुक्त ।

**मुहा०**—उलटा जमाना=वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय । अंधेर का समय । उलटा सीधा = बिना क्रम का । अंडबंड । अव्यवस्थित । उलटी खोपड़ी का = जड़ । मूर्ख । उलटी सीधी सुनाना = खरी-खोटी सुनाना । भला-बुरा कहना । फटकारना ।

क्रि० वि० १. विरुद्ध क्रम से । उलटे तौर से । बेठिकाने । अंडबंड । २. जैसा होना चाहिए उससे और ही प्रकार से ।

संज्ञा पुं० बेसन से बननेवाला एक पकवान ।

**उलटाना***—क्रि० स० [ हिं० उलटना ] १. पलटाना । लौटाना । पीछे फेरना । २. और का और करना या कहना । अन्यथा करना या कहना । ३. फेरना । दूसरे पक्ष में करना । ४. उलटा करना ।

**उलटा पलटा ( पुलटा )**—वि० [हिं० उलटा+पलटना] इधर-का उधर । अंडबंड । बे सिर पैर का । बेतरतीब ।

**उलटा पलटा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उलटना ] फेरफार । अदल-बदल ।

**उलटाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० उलटना ] १. पलटाव । फेर । २ घुमाव । चक्कर ।

**उलटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उलटना ] १. वमन । कै । २. कलैया । कलाबाजी ।

**उलटी सरसों**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उलटी + सरसों ] वह सरसों जिसकी कलियों का मुँह नीचे होता है । यह जादू टोने के काम में आती है । टेरी ।

**उलटे**—क्रि० वि० [ हिं० उलटा ] १. विरुद्ध क्रम से । बेठिकाने । २. विपरीत व्यवस्थानुसार । विरुद्ध न्याय से ।

**उलथना***—क्रि० अ० [ सं० उद् = नहीं + स्थल = जमना ] ऊपर-नीचे होना । उथल-पुथल होना । उलटना । क्रि० स० ऊपर-नीचे करना । उलटना पुलटना ।

**उलथा**—संज्ञा पुं० [ हिं० उलथना ] १. नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना । २. कलाबाजी । कलैया । ३. कलाबाजी के साथ पानी में कूदना । उलटा । उड़ी । ४. करवट बदलना । ( चौपायों के लिये ) ।

**उलद***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उलदना ] वर्षा की झड़ी । वर्षण ।

**उलंदना***—क्रि० स० [ हिं० उलटना ] उँडेलना । उलटना । ढालना ।
क्रि० अ० खूब बरसना ।

**उलफत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० उल्फत ] प्रेम ।

**उलमना***—क्रि० अ० [ सं० अवलंबन ] लटकना । झुकना ।

**उलरना***—क्रि० अ० [ सं० उल्ललन ] १. उछलना । २. नीचे-ऊपर होना । ३. झपटना ।

**उललना***—क्रि० अ० [ हिं० उड़लना ] १. ढरकना । ढलना । इधर-उधर होना ।

**उलसना***—क्रि० अ० [ सं० उल्लसन ] शोभित होना । सोहना ।

**उलहना**—क्रि० अ० [ सं० उल्लंभन ] १. उमड़ना । निकलना । प्रस्फुटित होना । २. उमड़ना । हुलसना । फूलना ।
संज्ञा पुं० दे० "उलाहना" ।

**उलही***—क्रि० अ० दे० "उलहना" ।

**उलाँघना***—क्रि० अ० [ सं० उल्लंघन ] १. लाँघना । डाँकना । फाँदना । २. अवज्ञा करना । न मानना । ३. पहले पहल घोड़े पर चढ़ना । (चाबुक सवार)

**उलाटना**—क्रि० अ० दे० "उलटना" ।

**उलार**—वि० [ हिं० ओलरना=लेटना ] जो पीछे की ओर झुका हो । जिसके पीछे की ओर बोझ अधिक हो । (गाड़ी)

**उलारना**—क्रि० स० [ हिं० उलरना ] उछालना । नीचे ऊपर फेंकना ।
क्रि० स० दे० "ओलारना" ।

**उलाहना**—संज्ञा पुं० [ सं० उपालंभन ] १. किसी की भूल या अपराध को उसे दुःखपूर्वक जताना । शिकायत । २. किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना । शिकायत ।
†*क्रि० स० १. उलाहना देना । २. दोष देना । निंदा करना ।

**उलाहू**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्साह ] उत्साह । उमंग ।

**उलीचना**—क्रि० स० [ सं० उल्लुंचन ] हाथ या बरतन से पानी उछालकर फेंकना ।

**उलूक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उल्लू चिड़िया । २. इंद्र । ३. दुर्योधन का एक दूत । ४. कणादि मुनि का एक नाम ।
**यौ०**—उलूकदर्शन=वैशेषिक दर्शन ।
संज्ञा पुं० [ सं० उल्का ] लुक । लौ ।

**उलूखल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ओखली । २. खल । खरल । चट्टू । ३. गुग्गुल ।

**उलेड़ना***—क्रि० स० [ हिं० उड़ेलना ] ढरकाना । उड़ेलना । ढालना ।

**उलेल***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुलेल ] १. उमंग । जोश । २ उछल-कूद । ३. बाढ़ ।
वि० बेपरवाह । अल्हड़ ।

**उल्का**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ प्रकाश । तेज । २. लुक । लुआठा । ३ मशाल । दस्ती । ४. दीया । चिराग । ५ वह पिंड जो कभी कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर को वेग से जाते हुए अथवा पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ते हैं । इनके गिरने को "तारा टूटना" कहते हैं ।

**उल्कापात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तारा टूटना । लुक गिरना । २. उत्पात । विघ्न ।

**उल्कापाती**—वि० [ सं० उल्कापातिन् ] [ स्त्री० उल्कापातिनी ] दंगा मचानेवाला । उत्पाती ।

**उल्कामुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० उल्कामुखी ] १ गीदड़ । २. एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है । अगिया-बैताल । ३ महादेव का एक नाम ।

**उल्था**—संज्ञा पुं० [ हिं० उलथना ] भाषांतर । अनुवाद । तरजुमा ।

**उल्लंघन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लाँघना । डाँकना । २ अतिक्रमण । ३. न मानना । पालन न करना ।

**उल्लंघना***—क्रि० स० दे० "उलंघना" ।

**उल्लसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उल्लसित, उल्लासी ] १. हर्ष करना । खुशी मनाना । २. रोमांच ।

**उल्लसित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उल्लसिता ] प्रसन्न । खुश ।

**उल्लाप्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उपरूपक का एक भेद । २. सात प्रकार के गीतों में से एक ।

**उल्लाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मात्रिक अर्द्धसम छंद ।

**उल्लाला**—संज्ञा पुं० [ सं० उल्लाल ] एक मात्रिक छंद ।

**उल्लास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० उल्लासक, उल्लसित ] १. प्रकाश । चमक । झलक । २ हर्ष । आनंद । ३ ग्रंथ का एक भाग । पर्व । ४. एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना दिखलाया जाता है ।

**उल्लासक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० उल्लासिका ] आनंद करनेवाला । आनंदी ।

**उल्लासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रकट करना । प्रकाशित करना । २. हर्षित होना ।

**उल्लासना**—क्रि० स० [ सं० उल्लासन ] प्रकट करना । २. प्रसन्न करना ।

**उल्लासी**—वि० [ सं० उल्लासिन् ] [ स्त्री० उल्लासिनी ] आनंदी । सुखी ।

**उल्लिखित**—वि० [ सं० ] १. खोदा

हुआ। उत्कीर्ण। २. छीला हुआ। खरादा हुआ। ३. ऊपर लिखा हुआ। ४ खींचा हुआ। चित्रित। ५. लिखा हुआ। लिखित।

**उल्लू**—संज्ञा पुं० [सं० उलूक] १. दिन में न देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी। **मुहा०**—कहीं उल्लू बोलना = उजाड़ होना।
२. बेवकूफ। मूर्ख।

**उल्लेख**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लेख। २. वर्णन। चर्चा। जिक्र। ३. चित्र। ४. एक काव्यालंकार जिसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में दिखाई पड़ना वर्णन किया जाय।

**उल्लेखन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिखना। २. चित्र खींचना।

**उल्लेखनीय**—वि० [सं०] लिखने के योग्य। वर्णन के योग्य।

**उल्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १. झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है। आँवल। ऑवरी। २ गर्भाशय।

**उवना***—क्रि० अ० दे० "उगना"।

**उशबा**—संज्ञा पुं० [अ०] एक पेड़ जिसकी जड़ रक्तशोधक है।

**उशीर**—संज्ञा पुं० [सं०] गाँडर की जड़। खस।

**उषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रभात। तड़का। ब्राह्मवेला। २. अरुणोदय की लालिमा। ३. बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को ब्याही गई थी।

**उषाकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] भोर। प्रभात। तड़का।

**उषापति**—संज्ञा पुं० [सं०] अनिरुद्ध। सूर्य।

**उष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट।

**उष्ण**—वि० [सं०] १. तप्त। गरम। २. फुरतीला। तेज।
संज्ञा पुं० १. ग्रीष्म ऋतु। २. प्याज। ३. एक नरक का नाम।

**उष्णक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ग्रीष्म काल। २. ज्वर। बुखार। ३. सूर्य।
वि० १. गरम। तप्त। २. ज्वरयुक्त। ३. तेज। फुरतीला।

**उष्ण कटिबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच पड़ता है।

**उष्णता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गरमी। ताप।

**उष्णत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] गरमी।

**उष्णीष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पगड़ी। साफा। २. मुकुट। ताज।

**उष्म**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरमी। ताप। २. धूप। ३. गरमी की ऋतु।

**उष्मज**—संज्ञा पुं० [सं०] छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि से पैदा होते हैं। जैसे, खटमल, जूं, चीलर आदि।

**उष्मा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गरमी। २ धूप। ३ गुस्सा। क्रोध। रिस।

**उस**—सर्व० उभ० [हिं० वह] 'वह' शब्द का वह रूप है जो विभक्ति लगने पर होता है। जैसे—उसने, उसको।

**उसकन**—संज्ञा पुं० [सं० उत्कर्षण] घास-पात या पयाल का वह पोटा जिससे बरतन माँजते हैं। उबसन।

**उसकना**†—क्रि० अ० दे० "उकसना"।

**उसकाना**†—क्रि० स० दे० "उकसाना"।

**उसनना**—क्रि० स० [सं० उष्ण] १. उबालना। पानी के साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना। २. पकाना।

**उसनाना**—क्रि० स० [हिं० उसनना का प्रे० रूप] उबलवाना। पकवाना।

**उसनीस***—संज्ञा पुं० दे० "उष्णीष"।

**उसमा**†—संज्ञा पुं० [अ० वसमा] उबटन।

**उसरना**—क्रि० अ० [सं० उद्+सरण=जाना] १. हटना। टलना। दूर होना। स्थानांतरित होना। २. बीतना। गुजरना। छिन्न-भिन्न होना। ३. भूलना। विस्मृत होना। बिसरना। ४. बनकर खड़ा होना।

**उसलना***—क्रि० अ० दे० "उसरना"।

**उससना***—क्रि० स० [सं० उत्+सरण] खिसकना। टलना। स्थानांतरित होना।
क्रि० स० [हिं० उसास] साँस लेना।

**उसाँस***—संज्ञा पुं० दे० "उसास"।

**उसारना***—क्रि० स० [हिं० उसारना] १. उखाड़ना। उघाड़ना। २. हटाना। टालना। ३. बनाकर खड़ा करना।

**उसारा**†—संज्ञा पुं० दे० "ओसारा"।

**उसालना***—क्रि० स० [सं० उत्+सारण] १. उखाड़ना। २ टालना। ३. भगाना।

**उसास**—संज्ञा स्त्री० [सं० उत्+श्वास] १. लंबी साँस। ऊपर को खींची हुई साँस। २. साँस। श्वास। ३ दुख या शोकसूचक श्वास। ठंढी साँस।

**उसासी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० उसास] दम लेने की फुरसत। अवकाश। छुट्टी।

**उसिनना**†—क्रि० स० दे० "उसनना"।

**उसीर**—संज्ञा पुं० दे० "उशीर"।

**उसीसा**—संज्ञा पुं० [सं० उत्+शीर्ष] १. सिरहाना। २. तकिया।

**उसूल**—संज्ञा पुं० [अ०] सिद्धांत।

**उस्तरा**—संज्ञा पुं० दे० "उस्तुरा"।

**उस्ताद**—संज्ञा पुं० [फा०] गुरु। शिक्षक। अध्यापक।
वि० १. चालाक। छली। धूर्त। २. निपुण। प्रवीण। दक्ष।

उस्तादाना—वेश्याओं को संगीत की शिक्षा देनेवाला।

उस्तादी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शिक्षक की वृत्ति। गुरुआई। २ चतुराई। निपुणता। ३ विज्ञता। ४ चालाकी। धूर्तता।

उस्तानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ गुरुआनी। गुरुपत्नी। २. वह स्त्री जो शिक्षा दे। ३ चालाक स्त्री। ठगिन। उस्ताद का स्त्रीलिंग।

उस्तुरा—संज्ञा पुं० [फा०] बाल मूड़ने का औजार। छुरा। अस्तुरा।

उस्वास—संज्ञा पुं० दे० "उसाँस"।

उहटना*—क्रि० अ० दे० "हटना"।

उहदा†—संज्ञा पुं० दे० "ओहदा"।

उहवाँ†—क्रि० वि० दे० "वहाँ"।

उहाँ—क्रि० वि० दे० "वहाँ"।

उहार—संज्ञा पुं० दे० "ओहार"

उहि†—सर्व० दे० "वही"।

## ऊ

ऊ—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

ऊँख—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊख"।

ऊँगा—संज्ञा पुं० [सं० अपामार्ग] चिचड़ा।

ऊँघ—संज्ञा स्त्री० [सं० अवाङ् = नीचे मुँह] उँघाई। निद्रागम। झपकी। अर्द्ध-निद्रा।

ऊँघन—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँघ] ऊँघ। झपकी।

ऊँघना—क्रि० अ० [सं० अवाङ् = नीचे मुँह] झपकी लेना। नींद में झूमना।

ऊँच*†—वि० दे० "ऊँचा"।

यौ०—ऊँच नीच = १. छोटा-बड़ा। आलाअदना। २. छोटी जाति का और बड़ी जाति का। ३. हानि और लाभ, भला और बुरा।

ऊँचा—वि० [सं० उच्च] [स्त्री० ऊँची] १. जो दूर तक ऊपर की ओर गया हो। उठा हुआ। उन्नत। बुलंद।

मुहा०—ऊँचा नीचा = १. ऊबड़-खाबड़। जो समथल न हो। २. भला-बुरा। हानि-लाभ। ३. जिसका छोर बहुत नीचे तक न हो। जिसका लटकाव कम हो। जैसे, ऊँचा कुरता। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। महान्।

मुहा०—ऊँचा नीचा या ऊँची नीची सुनाना = खोटी-खरी सुनाना। भला बुरा कहना।

४. जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।

मुहा०—ऊँचा सुनना = केवल जोर की आवाज सुनना। कम सुनना।

ऊँचाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऊँचा + ई (प्रत्य०)] १ ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उच्चता। बुलंदी। २ गौरव। बड़ाई।

ऊँचे*—क्रि० वि० [हिं० ऊँचा] १. ऊँचे पर। ऊपर की ओर। २ जोर से (शब्द करना)।

मुहा०—ऊँचे नीचे पैर पड़ना = बुरे काम में फँसना।

ऊँछ—संज्ञा पुं० [देश०] एक राग।

ऊँछना—क्रि० अ० [सं० उञ्छन = बीनना] कंघी करना।

ऊँट—संज्ञा पुं० [सं० उष्ट्र पा० उट्ट] [स्त्री० ऊँटनी] एक ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ लादने के काम में आता है।

ऊँटकटारा—संज्ञा पुं० [सं० उष्ट्रकंट] एक कँटीली झाड़ी जो जमीन पर फैलती है।

ऊँटवान—संज्ञा पुं० [हिं० ऊँट + वान (प्रत्य०)] ऊँट चलानेवाला।

ऊँड़ा*†—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] १. वह बरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ दें। २ चहबच्चा। तहखाना। वि० गहरा। गंभीर।

ऊँदरा—संज्ञा पुं० [सं० इंदुर] चूहा।

ऊँहूँ—अव्य० [अनु०] नहीं। कभी नहीं। हर्गिज नहीं। (उत्तर में)

ऊ—संज्ञा पुं० [सं०] १. महादेव। २ चंद्रमा।

*†अव्य० भी।

*†सर्व० वह।

ऊअना*†—क्रि० अ० [सं० उदयन] उगना। उदय होना।

ऊआबाई—वि० [हिं० आव बाव] अंडबंड। निरर्थक। व्यर्थ।

**ऊक**—संज्ञा पुं० [ सं० उल्का ] १. उल्का। टूटता हुआ तारा। लुक। लुआठा। २. दाह। जलन। ताप। जलन।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० चूक का अनु० ] भूल। चूक। गलती।

**ऊकना***—क्रि० अ० [ हिं० चूकना का अनु० ] १. चूकना। खाली जाना। लक्ष्य पर न पहुँचना। २. भूल करना। गलती करना।

क्रि० स० १. भूल जाना। २. छोड़ देना। उपेक्षा करना।

क्रि० स० [ हिं० उक ] जलाना। दाहना। भस्म करना।

**ऊख**—संज्ञा पुं० [ सं० इक्षु ] ईख। गन्ना।

*संज्ञा पुं० [ सं० ऊष्म ] गरमी। ऊमस।

वि० तपा हुआ। गरमी से व्याकुल।

**ऊखम**—संज्ञा पुं० दे० "उष्म"

**ऊखल**—संज्ञा पुं० [ सं० उलूखल ] काठ या पत्थर का गहरा बरतन जिसमें धान आदि की भूसी अलग करने के लिये मूसल से कूटते हैं। ओखली। काँडी। हावन।

**ऊखिल** वि० [ ? ] पराया। अपरिचित।

**ऊगना**—क्रि० अ० दे० "उगना"।

**ऊज***—संज्ञा पुं० [ सं० उद्धन् ] उपद्रव। ऊधम। अँधेर।

**ऊजड़**—वि० दे० "उजाड़"।

**ऊजर***—वि० दे० "उजला"।

वि० [हिं० उजड़ना ] उजाड़।

**ऊजरा***—वि० दे० "उजला"।

**ऊटक नाटक**—संज्ञा पुं० [ सं० उत्कट + नाटक ] १. व्यर्थ का काम। फजूल इधर-उधर करना। २. इधर उधर का काम।

**ऊटना***—क्रि० अ० [ हिं० औटना ] १. उत्साहित होना। हौसला करना। उमंग में आना। २. तर्क-वितर्क करना। सोच-विचार करना।

**ऊटपटाँग**—वि० [ हिं० अटपट + अंग ] १. अटपट। टेढ़ामेढ़ा। बेढंगा। बेमेल। २. निरर्थक। व्यर्थ। वाहियात।

**ऊठ**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] उमंग। उत्साह। उठान।

**ऊड़ना***—क्रि० स० दे० "ऊढ़ना"।

**ऊड़ा**-संज्ञा पुं० [सं० ऊन] १. कमी। टोटा। घाटा। २. गिरानी। अकाल। ३. नाश। लोप।

**ऊड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बूड़ना ] डुब्बी। गोता।

**ऊढ़**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ऊढ़ा ] विवाहित।

**ऊढ़ना***—क्रि० अ० [ सं० ऊह ] तर्क करना। सोच-विचार करना।

क्रि० अ० [ सं० ऊढ़ ]विवाह करना।

**ऊढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विवाहिता स्त्री। २. वह ब्याही स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे।

**ऊत**—वि० [ सं० अपुत्र ] १. बिना पुत्र का। निःसंतान। निपूना। २. उजड्ड। बेवकूफ।

संज्ञा पुं० वह जो निःसंतान मरने के कारण पिंड आदि न पाकर भूत होता है।

**ऊतर***—संज्ञा पुं० दे० १ "उत्तर"। २. दे० "बहाना"।

**ऊतला***—वि० [ हिं० उतावला] १ चंचल। २. वेगवान्।

**ऊतिम***—वि० दे० "उत्तम"।

**ऊद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अगर का पेड़ या लकड़ी।

संज्ञा पुं० [ सं० उद ] ऊदबिलाव।

**ऊदबत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ऊद + हिं० बत्ती ] अगर की बत्ती जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।

**ऊदबिलाव**—संज्ञा पुं० [ सं० उदबिडाल ] नेवले के आकार का, पर उससे बड़ा, एक जंतु जो जल और स्थल दोनों में रहता है।

**ऊदल**—संज्ञा पुं० [ उदयसिंह का संक्षिप्त रूप ] महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामंतों में से एक वीर।

**ऊदा**—वि० [ अ० ऊद अथवा फा० कबूद ] ललाई लिए हुए काले रंग का बैंगनी।

संज्ञा पुं० ऊदे रंग का घोड़ा।

**ऊधम**—संज्ञा पुं० [ सं० उद्धम ]उपद्रव। उत्पात। धूम। हुल्लड़।

**ऊधमी**—वि० [ हिं० ऊधम ] [ स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला। उत्पाती। उपद्रवी।

**ऊधो**—संज्ञा पुं० दे० "उद्धव"।

**ऊन**—संज्ञा पुं० [ सं० ऊर्णा ] भेड़ बकरी आदि का रोयाँ जिससे कंबल और पहनने के गरम कपड़े बनते हैं।

वि० [ सं० ऊन ] [ स्त्री० ऊनी ] १. कम। थोड़ा। छोटा। २. तुच्छ।

संज्ञा पुं० स्त्रियों के व्यवहार के लिये एक प्रकार की छोटी तलवार।

**ऊनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ऊन ] कमी। न्यूनता।

**ऊना**—वि० [ सं० ] १. कम। न्यून। थोड़ा। २ तुच्छ। हीन।

संज्ञा पुं० खेद। दुःख। रंज।

**ऊनी**—वि० [ सं० ऊन ] कम। न्यून।

संज्ञा स्त्री० उदासी। रंज। खेद।

वि० [ हिं० ऊन + ई ( प्रत्य० ) ] ऊन का बना हुआ वस्त्र आदि।

संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।

**ऊपर**—क्रि० वि० [ सं० उपरि ][वि० ऊपरी] १. ऊँचे स्थान में। ऊँचाई पर। आकाश की ओर। २. आधार पर।

ऊँचे पद पर । ३. ऊँची श्रेणी में । उच्च कोटि में । ४. (लेख में) पहले । ५. अधिक । ज्यादा । ६. प्रकट में । देखने में । ७. तट पर । किनारे पर । ८. अतिरिक्त । परे । प्रतिकूल ।

मुहा०—ऊपर ऊपर=बिना और किसी के बताए । चुपके से । ऊपर की आमदनी=१. वह प्राप्ति जो वेतन के अतिरिक्त हो । २. इधर उधर से फटकारी हुई रकम । ऊपर तले=१. ऊपर नीचे । २. एक के पीछे एक । आगे पीछे । क्रमशः । ऊपर तले के=वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहन न हुई हो । ऊपर लेना=(किसी कार्य्य का) जिम्मे लेना । हाथ में लेना । ऊपर से=१. बलदी से । ऊँचे से । २ इसके अतिरिक्त । सिवा इसके । ३. वेतन से अधिक । घूस के रूप में । ४. प्रत्यक्ष में । दिखाने के लिये ।

**ऊपरी**—वि० [ हिं० ऊपर ] १. ऊपर का । २. बाहर का । बाहरी । ३. बँधे हुए के सिवा । ४. दिखौआ । नुमाइशी ।

**ऊब**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ऊबना ] कुछ काल तक एक ही अवस्था में रहने से चित्त की व्याकुलता । उद्वेग । घबराहट ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ऊभ ] उत्साह । उमंग ।

**ऊबड़**—संज्ञा पुं० [ सं० उद्=बुरा + वर्त्म, प्रा० वट्ट=मार्ग ] कठिन मार्ग । अटपट रास्ता ।

वि० ऊबड़-खाबड़ । ऊँचा-नीचा ।

**ऊबड़-खाबड़**—वि० [ अनु० ] ऊँचा-नीचा जो समथल न हो । अटपट ।

**ऊबना**—क्रि० अ० [ सं० उद्वेजन ] उकताना । घबराना । अकुलाना ।

**ऊबरना**—क्रि० अ० दे० "उबरना" ।

**ऊभ***—वि० [ हिं० ऊभना=खड़ा होना ] ऊँचा । उभरा हुआ । उठा हुआ ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ऊब ] १. व्याकुलता । २. उमस । गरमी । ३. हौसला । उमंग ।

**ऊभट**—क्रि० अ० दे० "ऊबट" ।

**ऊभना***—क्रि० अ० [ सं० उद्भवन ] उठना ।

**ऊमक***—संज्ञा स्त्री० [ सं० उमंग ] झोंक । उठान । वेग ।

**ऊमना***—क्रि० अ० दे० "उजड़ना" ।

**ऊरज**—वि० संज्ञा पुं० दे० "ऊर्ज" ।

**ऊरध***—वि० दे० "ऊर्ध्व" ।

**ऊरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जानु । जंघा ।

**ऊरुस्तंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं ।

**ऊर्ज**—वि० [ सं० ] बलवान् । शक्तिमान् ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी ] १. बल । शक्ति । २ कार्तिक मास । ३. एक काव्यालंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी अहंकार का न छोड़ना वर्णन किया जाता है ।

**ऊर्जस्वल**—वि० दे० "ऊर्जस्वी" ।

**ऊर्जस्वित**—वि० [ सं० ] १. ऊपर की ओर चढ़ा हुआ । २. बहुत बढ़ा हुआ ।

**ऊर्जस्वी**—वि० [ सं० ] १. बलवान् । शक्तिमान् । २. तेजवान् । ३ प्रतापी ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] एक काव्यालंकार जो वहाँ माना जाता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भाव का अथवा भाव का अंग हो ।

**ऊर्जित**—वि० [ स्त्री० ऊर्जिता ] दे० "ऊर्ज" ।

**ऊर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भेड़ या बकरी के बाल । ऊन ।

**ऊर्द्ध्व**—क्रि० वि० [ सं० ] ऊपर ।

वि० १. ऊँचा । २. खड़ा ।

**ऊर्द्ध्वगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मुक्ति ।

**ऊर्द्ध्वगामी**—वि० [ सं० ] १. ऊपर को जानेवाला । २. मुक्त । निर्वाण-प्राप्त ।

**ऊर्द्ध्वचरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार के तपस्वी जो सिर के बल खड़े होकर तप करते हैं ।

**ऊर्द्ध्वद्वार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मरंध्र ।

**ऊर्द्ध्वपुंड्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खड़ा तिलक । वैष्णवी तिलक ।

**ऊर्द्ध्वबाहु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार के तपस्वी जो अपनी एक बाहु ऊपर की ओर उठाए रहते हैं ।

**ऊर्द्ध्वरेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पुराणानुसार राम कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरणचिह्नों में से एक चिह्न ।

**ऊर्द्ध्वरेता**—वि० [ सं० ] जो अपने वीर्य्य को गिरने न दे । ब्रह्मचारी ।

संज्ञा पुं० १. महादेव । २. भीष्म-पितामह । ३ हनुमान् । ४ सनकादि । ५. संन्यासी ।

**ऊर्द्ध्वलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकाश । २ वैकुंठ । स्वर्ग ।

**ऊर्द्ध्वश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऊपर को बढ़ती हुई साँस । २. श्वास की कमी या तंगी ।

**ऊर्ध**—क्रि० वि०, वि० दे० "ऊर्द्ध्व" ।

**ऊर्ध्व**—क्रि० वि०, वि० दे० "ऊर्द्ध्व" ।

**ऊर्मि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लहर । तरंग । २ पीड़ा । दुःख । ३ छः की संख्या । ४. शिकन । कपड़े की सलवट ।

**ऊरस**—वि० [ सं० कुरस ] दे० "उरस" ।

**ऊलजलूल**—वि० [ देश० ] १. असंबद्ध । बे सिर पैर का । अडबंड । २. अनाड़ी । नासमझ । ३. बेअदब । अशिष्ट ।

**ऊर्मिमाली**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र ।

**ऊर्मिल**—वि० [ सं० ] जिसमें लहरें

उठती हों। तरंगित।

**ऊर्मी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।

**ऊलना***—क्रि० अ० दे० "उछलना"।

**ऊषट***—संज्ञा पुं० दे० "ऊबट"।

**ऊषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सवेरा। २. अरुणोदय। पौ फटने की लाली। ३. बाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध से ब्याही थी।

**ऊषाकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सवेरा।

**ऊष्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गरमी। २. भाप। ३. गरमी का मौसिम।
वि० गरम।

**ऊष्मवर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] "श, ष, स, ह" ये अक्षर।

**ऊष्मा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ग्रीष्म काल। २. तपन। गरमी। ३. भाप।

**ऊसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ऊषर ] वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और कुछ उत्पन्न न हो।

**ऊह**—अव्य० [ सं० ] १. क्लेश या दुःख-सूचक शब्द। ओह। २. विस्मय-सूचक शब्द।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अनुमान। विचार। २ तर्क। दलील। ३. किंव-दंती। अफवाह।

**ऊहा**—संज्ञा स्त्री० दे० "ऊह"।

**ऊहापोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ऊह+अपोह ] तर्क-वितर्क। सोच-विचार।

## ऋ

**ऋ**—वह स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवमाता। अदिति। २ निंदा। बुराई।

**ऋक्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ऋचा। वेदमंत्र।

संज्ञा पुं० दे० "ऋग्वेद"।

**ऋक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० ऋक्षी] १. भालू। २. तारा। नक्षत्र। ३. मेष, वृष आदि राशियाँ।

**ऋक्षपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा। २. जांबवान्।

**ऋक्षवान्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऋक्ष पर्वत जो नर्मदा के किनारे से गुजरात तक है।

**ऋग्वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चारों वेदों में सबसे पहला। इसके रचना काल में मतभेद हैं किंतु संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है।

**ऋग्वेदी**—वि० [ सं० ऋग्वेदिन् ] ऋग्वेद का जानने या पढनेवाला।

**ऋचा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ वेद-मंत्र जो पद्य में हो। २ वेदमंत्र। कांडिका। ३. स्तोत्र।

**ऋच्छ**—संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"।

**ऋजु**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ऋज्वी ] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। २. सरल। सुगम। सहज। ३ सरल चित्त का। साफ व्यवहार रखनेवाला। सज्जन। ४. अनुकूल। प्रसन्न।

**ऋजुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सीधापन। २. सरलता। सुगमता। ३. सज्जनता।

**ऋण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० ऋणी] कुछ समय के लिये द्रव्य लेना। कर्ज। उधार।

**मुहा०**—ऋण उतरना=कर्ज अदा होना। ऋण चढ़ाना=जिम्मे रुपया निकालना। ऋण-पटाना=उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना।

**ऋणी**—वि० [ सं० ऋणिन् ] १. जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार। देनदार। अधमर्ण। २. उपकार माननेवाला। अनुगृहीत।

**ऋतु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के विभाग जो ६ हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। २. रजोदर्शन के उपरांत वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य होती हैं।

**ऋतुकांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वसंत ऋतु।

**ऋतुचर्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।

**ऋतुमती**—वि० स्त्री० [ सं० ] १ रजस्वला। पुष्पवती। मासिक-धर्म-युक्ता। २. जिस (स्त्री) के रजोदर्शन

...के १६ दिन न बीते हों और जो गर्भाधान के योग्य हो।

**ऋतुराज**—संज्ञा पुं० [सं०] वसंत ऋतु।

**ऋतुवती***—वि० स्त्री० दे० "ऋतुमती"।

**ऋतुस्नान**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।

**ऋत्विज**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० आर्त्विजी] यज्ञ करनेवाला। वह जिसका यज्ञ में वरण किया जाय। इनकी संख्या १६ होती है जिनमें चार मुख्य हैं—(क) होता, (ख) अध्वर्यु, (ग) उद्गाता और (घ) ब्रह्मा।

**ऋद्ध**—वि० [सं०] संपन्न। समृद्ध।

**ऋद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक ओषधि या लता जिसका कंद दवा के काम में आता है। २. समृद्धि। बढ़ती। ३ आर्या छंद का एक भेद।

**ऋद्धि सिद्धि**—संज्ञा [सं०] गणेशजी की दासियाँ समृद्धि और सफलता।

**ऋणिया**—वि० [सं० ऋणी] ऋणी।

**ऋभु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक गण-देवता। २. देवता।

**ऋषभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बैल। श्रेष्ठतावाचक शब्द। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ बैल के आकार का दक्षिण का एक पर्वत। ५ संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ६. एक जड़ी जो हिमालय पर होती है।

**ऋषि**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० ऋषिता, ऋषित्व] १. वेद मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। मंत्र-द्रष्टा। २. आध्यात्मिक और भौतिक तत्वों का साक्षात्कार करनेवाला।

**यौ०**—ऋषिऋण = ऋषियों के प्रति कर्त्तव्य। वेद के पठन-पाठन से इससे उद्धार होता है।

**ऋषित्व**—संज्ञा पुं० [सं०] ऋषि होने की अवस्था या भाव। ऋषि-पन। ऋषिता।

**ऋष्यमूक**—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

**ऋष्यशृंग**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो विभांडक ऋषि के पुत्र थे।

## ए

**ए**—संस्कृत वर्णमाला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्णमाला का आठवाँ स्वर वर्ण। यह अ और इ के योग से बना है; इसी लिये यह कंठतालव्य है।

**एँच-पेंच**—संज्ञा पुं० [फा० पेच] १. उलझाव। उलझन। घुमाव। २. टेढ़ी चाल। घात।

**एंजिन**—संज्ञा पुं० दे० "इंजन"।

**एँड़ा-बेंड़ा**—वि० [हिं० बेंड़ा + अनु० एँड़] उलटा-सीधा। अडबंड।

**एँडी**—संज्ञा स्त्री० [सं० एरंड] १. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो अंडी के पत्ते खाता है। २. इस कीड़े का रेशम। अंडी। मूगा।
संज्ञा स्त्री० दे० "एड़ी"।

**एँड़ुआ**—संज्ञा पुं० [हिं० एँड़ना] [स्त्री० अल्पा० एँड़ई] गोल मेंडरा जिसे गद्दी की तरह सिर पर रखकर बोझ उठाते हैं। बिंड़ुआ। गेंड़ुरी।

**एंपरर**—संज्ञा पुं० [अं०] सम्राट्।

**एंपायर**—संज्ञा पुं० [अं०] साम्राज्य।

**एंप्रेस**—संज्ञा स्त्री० [अं०] सम्राज्ञी।

**ए**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।
अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग संबोधन या बुलाने के लिये करते हैं।
*सर्व० [सं० एष] यह।

**एकंग** वि० [सं० एक+अंग] अकेला।

**एकंगा**—वि० [सं० एक + अंग] [स्त्री० एकंगी] एक ओर का। एक-तरफा।

**एकंत***—वि० दे० "एकांत"।

**एक**—वि० [सं०] [भाव० एकता, एकत्व] १. इकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या। २ अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम। ३ कोई। ४ निश्चित। ५. एक ही प्रकार का। समान। तुल्य।

**मुहा०**—एक अंक या आँक = १ एक ही बात। ध्रुव बात। पक्की बात। निश्चय। २ एक बार। एक आध = थोड़ा। कम। इक्का दुक्का। **एक आँख से देखना** = सबके साथ समान भाव रखना। एक आँख न भाना = तनिक भी अच्छा न लगना। **एक एक** = १ हर एक। प्रत्येक। २.

अलग अलग। पृथक् पृथक्। एक एक करके = एक के पीछे दूसरा। धीरे धीरे। एक कलम = बिलकुल। सब। अपनी और किसी की जान एक करना = १. किसी की और अपनी दशा एक सी करना। २. मारना और मर जाना। एकटक = १. अनिमेष। स्थिर दृष्टि से। नजर गड़ाकर। २. लगातार देखते हुए। एकताक = समान। बराबर। तुल्य। एकतार = १. एक ही रूपरंग का। समान। बराबर। २. समभाव से। बराबर। लगातार। एक तो = पहले तो। पहली बात तो यह कि। एक-दम = १. बिना रुके। लगातार। २. फौरन। उसी समय। ३. एक बारगी। एक साथ। एक दिल = १. खूब मिला जुला। २. एक ही विचार का। अभिन्न हृदय। एक दूसरे का, को, पर, में से = परस्पर। एक न चलना = कोई युक्ति सफल न होना। एक पेट के = एक ही माँ से उत्पन्न। सहोदर (भाई) १. एक-ब-एक = अकस्मात्। अचानक। एक बारगी। एक बात = १. दृढ़ प्रतिज्ञा। २. ठीक बात। सच्ची बात। एक सा = समान। बराबर। एक से एक = एक से एक बढ़कर। एक स्वर से कहना या बोलना = एक मत होकर कहना। एक होना = १. मिलना-जुलना। मेल करना। २. तद्रूप होना।

**एक-चक्र**—संज्ञा पुं० [स] १ सूर्य का रथ। २. सूर्य।

वि० चक्रवर्ती।

**एकछत्र**—वि० [सं०] बिना और किसी के आधिपत्य का (राज्य)। जिसमें कहीं और किसी का राज्य या अधिकार न हो।

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।

संज्ञा पुं० [सं०] वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है।

**एकज**—संज्ञा पुं० [स०] १. जो द्विज न हो। शूद्र। २ राजा।

वि० [सं० एक+एन] एक ही।

**एकजद्दी**—वि० [फ़ा०] जो एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हों। सपिंड या सगोत्र।

**एकजन्मा**—संज्ञा पु० [सं०] १. शूद्र। २. राजा।

**एकड़**—संज्ञा पुं० [अं०] पृथ्वी की एक माप जो १⅓ बीघे के बराबर होती है।

**एकडाल**—संज्ञा पुं० [हिं० एक+डाल] वह कटार या छुरा जिसका फल और बेट एक ही लोहे का हो।

**एकतंत्र**—संज्ञा पु० दे० "एकच्छत्र"।

**एकतः**—क्रि० वि० [स०] एक ओर से।

**एकत**—क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

**एकतरफा**—वि० [फ़ा०] १. एक ओर का। एक पक्ष का। २. जिसमें तरफदारी की गई हो। पक्षपातग्रस्त। ३. एक-रुखा। एक पार्श्व का।

**मुहा०**—एक तरफा डिगरी = वह डिगरी जो मुद्दालैह के हाजिर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो। एक पक्ष में निर्णय।

**एकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ऐक्य। मेल। २. समानता। बराबरी।

वि० [फा०] अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम।

**एकतान**—वि० [सं०] १. तन्मय। लीन। एकाग्र-चित्त। २. मिलकर एक।

**एकतारा**—संज्ञा पुं० [हिं० एक+तारा] एक तार का सितार या बाजा।

**एकतारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+तारी] गले में पहनने की एक तार की जाली। आभूषण विशेष।

**एकतालीस**—वि० [सं० एक चत्वारिंशत्] गिनती में चालीस और एक।

संज्ञा पुं० ४१ की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ४१।

**एकतीस**—वि० [सं० एकत्रिंश] गिनती में तीस और एक।

संज्ञा पुं० ३१ की संख्या का बोधक अंक। ३१।

**एकत्र**—क्रि० वि० [सं०] इकट्ठा। एक जगह।

**एकत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक होने का भाव। एकता। २. एक ही तरह का या बिलकुल एक सा होना। पूरी समानता।

**एकदंत**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

**एकदा**—क्रि० वि० [सं०] एक बार।

**एक देशीय**—वि० [स०] जो एक ही अवसर या स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे।

**एकनयन**—वि० [सं०] काना। एकाक्ष।

संज्ञा पुं० १. कौआ। २. कुबेर।

**एकनिष्ठ**—वि० [स०] जिसकी निष्ठा एक में हो। एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला।

**एकन्नी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० एक+आना] कम मूल्य की धातु का एक आने मूल्य का सिक्का।

**एकपक्षीय**—वि० [सं०] एक ओर का। एक तरफा।

**एकपत्नी-व्रत**—वि० [सं०] एक को छोड़ दूसरी स्त्री से विवाह या प्रेम-संबंध न करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक ही पत्नी रखने का नियम।

**एकबारगी**—क्रि० वि० [फ़ा०] १.

एक ही दफे में। एक समय में। २. अचानक। अकस्मात्। ३. बिलकुल। सारा।

**एकबाल**—संज्ञा पुं० दे० "इकबाल"।

**एकभुक्त**—वि० [ सं० ] जो रात-दिन में केवल एक बार भोजन करे।

**एकमत**—वि० [सं०] एक या समान मत रखनेवाले। एक राय के।

**एकमात्रिक**—वि० [ सं० ] एक मात्रा का।

**एकमुखी**—वि० [ सं० ] एक मुँह-वाला।

**यौ०**- एक मुखी रुद्राक्ष = वह रुद्राक्ष जिसमें फाँकवाली लकीर एक ही हो।

**एकरंग**—वि० [ हिं० एक+रंग ] १. समान। तुल्य। २. कपट शून्य। साफ दिल का। ३ जो चारों ओर एक सा हो।

**एकरदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणेश।

**एकरस**—वि० [ सं० ] एक ढंग का। समान।

**एकरार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] दे० "इकरार"।

**यौ०**—एकरारनामा = वह पत्र जिसमें दो या अधिक पुरुष परस्पर की प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञा पत्र।

**एकरूप**—वि० [ सं० ] १. समान आकृति का। एक ही रंगढंग का। २. ज्यों का त्यों। वैसा ही। कोरा।

**एकरूपता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. समानता। एकता। २. सायुज्य मुक्ति।

**एकल***—वि० [ हिं० एक ] १. अकेला। २. अनुपम। बेजोड़।

**एकला***†—वि० दे० "अकेला"।

**एकलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव का एक नाम। २. एक शिवलिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के प्रधान कुलदेव हैं।

**एकलौता**—वि० [हिं० एकला+पुत्र] [ स्त्री० एकलौती ] अपने माँ-बाप का एक ही ( लड़का )। जिसके और भाई-बहन न हों।

**एकवचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो।

**एकवाँझ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० एक+बाँझ ] वह स्त्री जिसे एक बच्चे के पीछे और दूसरा बच्चा न हुआ हो। काकवंध्या।

**एकवाक्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ऐकमत्य। लोगों के मत का परस्पर मिल जाना।

**एकवेणी**—वि० [ सं० ] १ जो (स्त्री) एक ही चोटी बनाकर बालों को किसी प्रकार समेट ले। २ वियोगिनी। ३ विधवा।

**एकसठ**—वि० [ सं० एकषष्ठि ] साठ और एक।

संज्ञा पुं० वह अंक जिससे एकसठ की संख्या का बोध होता है। ६१।

**एकसर***†—वि० [ हिं० एक+सर ( प्रत्य० ) ] १. अकेला। २. एक पल्ले का।

वि० [ फा० ] बिलकुल। तमाम।

**एकसाँ**—वि० [ फा० ] बराबर। समान।

**एकहत्तर**—वि० [ सं० एकसप्तति ] सत्तर और एक।

संज्ञा पुं० सत्तर और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ७१।

**एकहत्था**—वि० [ हिं० एक+हाथ ] ( काम या व्यवसाय ) जो एक ही के हाथ में हो।

**एकहरा**—वि० [सं०एक+हरा(प्रत्य०)] [स्त्री०एकहरी] १.एक परत का। जैसे, एकहरा अंगा। २ एक लड़ी का।

**यौ०**—एकहरा बदन = दुबला-पतला शरीर।

**एकांकी नाटक**—दस प्रकार के रूपकों में से एक।

**एकांग**—वि० [ सं० ] जिसे एक ही अंग हो।

**एकांगी**—वि० [ सं० एकांगिन् ] एक पक्ष का। एकतरफा। २. हठी। जिद्दी।

**एकांत**—वि० [ सं० ] १ अत्यंत। बिलकुल। २ अलग। अकेला। ३. निर्जन। सूना

संज्ञा पुं० [ सं० ] निराला स्थान।

**एकांत कैवल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मुक्ति का एक भेद। जीवन-मुक्ति।

**एकांतता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अकेलापन।

**एकांतवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ एकांतवासी ] निर्जन स्थान या में रहना।

**एकांतिक**—वि० [ सं० ] जो स्थल के लिये हो। जो सर्वत्र न घटे। एकदेशीय।

**एकांती**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह भक्त जो भगवत् प्रेम को अपने अंतःकरण में रखता है, प्रकट नहीं करता फिरता।

**एका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा।

संज्ञा पुं० [ सं० एक ] ऐक्य। एकता। मेल। अभिसंधि।

**एकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० एक+आई (प्रत्य०) ] १. एक का भाव। एक का मान। २ वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से और दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। ३. अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान। ४. उस स्थान पर लिखा जानेवाला अंक।

**एकाएक**—क्रि० वि० [ हिं० एक ] अकस्मात्। अचानक। सहसा।

**एकाएकी***-क्रि०वि०दे०"एकाएक"।

वि० [ सं० एकाकी ] अकेला।

**एकाकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मिल-मिलाकर एक होने की दशा। एक-मय होना।
वि० एक आकार का। समान।

**एकाकी**—वि० [ सं० एकाकिन् ] [ स्त्री० एकाकिनी ] अकेला।

**एकाकीपन**—संज्ञा पुं० [ सं० एकाकी +हिं० पन (प्रत्य०) ] अकेलापन।

**एकाक्ष**—वि० [ सं० ] काना।
यौ०—एकाक्ष रुद्राक्ष=एकमुखी रुद्राक्ष।
संज्ञा पुं० १ कौआ। २ शुक्राचार्य।

**एकाक्षरी**—वि० [ सं० एकाक्षरिन् ] एक अक्षर का। जिसमें एक ही अक्षर हो।
यौ०—एकाक्षरी कोश = वह कोश जिसमें अक्षरों के अलग अलग अर्थ दिए हों। जैसे, "अ" से वासुदेव। "क" से कामदेव इत्यादि।

**एकाग्र**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा एकाग्रता ] १. एक ओर स्थिर। चंचलता-रहित। २. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

**एकाग्रचित्त**—वि० [ सं० ] जिसका ध्यान बँधा हो। स्थिरचित्त।

**एकाग्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चित्त का स्थिर होना। अचंचलता।

**एकात्मता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एकता। अभेद। २. मिल मिलाकर एक होना।

**एकात्मवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सिद्धांत कि सारे संसार के प्राणियों और वस्तुओं में एक ही आत्मा व्याप्त है।

**एकादश**—वि० [ सं० ] ग्यारह।

**एकादशाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य। (हिंदू)

**एकादशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि।

**एकाधिकार**—संज्ञा पुं० दे० "एका-धिपत्य"।

**एकाधिपत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी वस्तु, कार्य, व्यापार या देश आदि पर होनेवाला एकमात्र अधि-कार। पूर्ण प्रभुत्व।

**एकार्थक**—वि० [ सं० ] समानार्थक।

**एकावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक अलंकार जिसमें पूर्व का और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाय। २ एक छंद। पंकज-वाटिका। ३ एक लड़ी का हार।

**एकाह**—वि० [ सं० ] एक दिन में पूरा होनेवाला। जैसे—एकाह पाठ।

**एकीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० एकीकृत ] मिलाकर एक करना।

**एकीभूत**—वि० [ सं० ] मिला हुआ। मिश्रित। जो मिलकर एक हो गया हो।

**एकेंद्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सांख्य के अनुसार उचित और अनु-चित दोनों प्रकार के विषयों से इंद्रियों को हटाकर उन्हें अपने मन में लीन करनेवाला। २ वह जीव जिसके केवल एक ही इंद्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है। जैसे—जोंक, केंचुआ।

**एकोतरसो**—वि० [ सं० एकोत्तरशत ] एक सौ एक।

**एकोद्दिष्ट (श्राद्ध)**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह श्राद्ध जो एक के उद्देश्य से किया जाय।

**एकौभा**†—वि० [ सं० एक ] अकेला।

**एक्का**—वि० [ हिं० एक+का (प्रत्य०) ] १. एक से संबंध रखनेवाला। २. अकेला।
यौ०—एका दुका = अकेला दुकेला।
संज्ञा पुं० १. वह पशु या पक्षी जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो। २. एक प्रकार की दो पहिए की गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता जाता है। ३. वह सिपाही जो अकेले बड़े बड़े काम कर सकता हो। ४ ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्की।

**एक्कावान**—संज्ञा पुं० [ हिं० एक्का+वान (प्रत्य०) ] एक्का हाँकनेवाला।

**एक्की**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० एक ] १. वह बैलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय। २. ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्का।

**एक्यानवे**—वि० [ सं० एकनवति, प्रा० एक्काणउइ ] नब्बे और एक।
संज्ञा पुं० नब्बे और एक की संख्या का बोध करानेवाला अंक। ९१।

**एक्यावन**—वि० [ सं० एकपंचाशत्, प्रा० एक्कावन्न ] पचास और एक।
संज्ञा पुं० पचास और एक की संख्या का बोधक अंक। ५१।

**एक्यासी**—वि० [ सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि ] अस्सी और एक।
संज्ञा पुं० एक और अस्सी की संख्या का बोधक अंक। ८१।

**एड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० एड्डक ] एड़ी।
मुहा०—एड़ करना=१ एड़ लगाना। २. चल देना। रवाना होना। एड़ देना या लगाना=१. लात मारना। २. घोड़े को आगे बढ़ाने के लिये एक एड़ से मारना। ३. उसकाना। उत्तेजित करना। ४ बाधा डालना।

**एडिशन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] किसी पुस्तक का किसी बार छपना। आवृत्ति। संस्करण।

**एड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० एड्डक = हड्डी ] टखनी के पीछे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग। एड़।

एड़ी०—एड़ी घिसना या रगड़ना=१. एड़ी को मल-मलकर धोना। २. बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना। एड़ी से चोटी तक=सिर से पैर तक।

एड्रेस—संज्ञा पुं० [अं०] १ पता। २. अभिनंदन-पत्र।

एण—संज्ञा पुं० [सं०] कस्तूरी मृग।

एतकाद—संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास।

एतदर्थ—क्रि० वि० [सं०] इसलिए।

एतद्—सर्व० [सं०] यह।

एतद्देशीय—वि० [सं०] इस देश से संबंध रखनेवाला। इस देश का।

एतबार—संज्ञा पुं० [अ०] विश्वास। प्रतीति।

एतराज—संज्ञा पुं० [अ०] विरोध। आपत्ति।

एतवार—संज्ञा पुं० दे० "इतवार"।

एता*†—वि० [सं० इयत्] [स्त्री० एती] इस मात्रा का। इतना।

एतादृश—वि० [सं०] ऐसा।

एतिक*†—वि० स्त्री० [हिं० एती + इक] इतनी।

एतिहात—संज्ञा स्त्री० दे० "एहतियात"।

एमन—संज्ञा पुं० [सं० यवन, फ़ा० यमन] संपूर्ण जाति का एक राग।

एरंड—संज्ञा पुं० [सं०] रेंड़। रेंड़ी।

एराक—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० एराकी] अरब का एक प्रदेश जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।

एराकी—वि० [फ़ा०] एराक का। संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी नस्ल एराक देश की हो।

एलची—संज्ञा पुं० [तु०] वह जो एक राज्य का संदेशा लेकर दूसरे राज्य में जाता है। दूत। राजदूत।

एला—संज्ञा स्त्री० [सं०] इलायची।

एलुवा—संज्ञा पुं० [अं० एलो] मुसब्बर।

एवं—क्रि० वि० [सं०] ऐसा ही। इसी प्रकार।

यौ०—एवमस्तु=ऐसा ही हो। अव्य० ऐसे ही और। इसी प्रकार और।

एव—अव्य० [सं०] १ एक निश्चयार्थक शब्द। ही। भी।

एवज़—संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रतिफल। प्रतिकार। २. परिवर्त्तन। बदला। ३. दूसरे की जगह पर कुछ काल तक के लिये काम करनेवाला। स्थानापन्न पुरुष।

एवज़ी—संज्ञा स्त्री० [अ० एवज़] दूसरे की जगह पर कुछ काल के लिये काम करनेवाला। आदमी। स्थानापन्न पुरुष।

एवमस्तु—अव्य० [सं०] ऐसा ही हो। (शुभाशीर्वाद)

एषण—संज्ञा पुं० इच्छा। अभिलाषा।

एषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा, अभिलाषा।

एह*—सर्व० [सं० एषः] यह। वि० यह।

एहतियात—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सावधानी। होशियारी। २. परहेज़।

एहसान—संज्ञा पुं० [अ०] उपकार। कृतज्ञता। निहोरा।

एहसानमंद—वि० [अ०] निहोरा या उपकार माननेवाला। कृतज्ञ।

एहि—सर्व० [हिं० एह] "एह" का वह रूप जो उसे विभक्ति के पहले प्राप्त होता है। इसको।

एहो—अव्य० संबोधन शब्द। हे। ऐ

# ऐ

ऐ—संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ और हिंदी या देवनागरी वर्णमाला का नवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।

ऐं—अव्य० [अनु०] १. एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात को फिर से कहलाने के लिये होता है। २. एक आश्चर्य-सूचक अव्यय।

ऐँचना—क्रि० स० [हिं० खींचना] १. खींचना। तानना। २ दूसरे का कर्ज अपने जिम्मे लेना। ओढ़ना।

ऐँचा—संज्ञा पुं० १. दे० "ऐंचा ताना"। २ दे० "अँकुड़ा"।

ऐँचाताना—वि० [हिं० ऐंचना +

तानना ] जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिंचती हो। भेंगा।

**ऐँचातानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ऐंचना+तानना ] खींचा-खींची। अपने अपने पक्ष का आग्रह।

**ऐँछना***—क्रि० स० [ स० उछन् = चुनना ] १. झाड़ना। साफ करना। २ ( बालों में ) कंघी करना। ऊँछना।

**ऐँठ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ऐंठन ] १. अकड़। ठसक। २. गर्व। घमंड। ३. कुटिल भाव। द्वेष। विरोध। दुर्भाव।

**ऐँठन**—संज्ञा स्त्री० [ स० आवेष्टन ] १. घुमाव। लपेट। पेच। मरोड़। बल। २. खिंचाव। अकड़ाव। तनाव।

**ऐँठना**—क्रि० स० [ स० आवेष्टन ] १. घुमाव देना। बल देना। मरोड़ना। २. दबाव डालकर या धोखा देकर लेना। झँसना।

क्रि० अ० १. बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २ तनना। खिंचना। अकड़ना। ३. मरना। ४. अकड़ दिखाना। घमंड करना। ५. टेढ़ी बातें करना। टर्राना।

**ऐँठवाना**—क्रि० स० [ हिं० ऐंठना का प्रे० रूप ] ऐंठने का काम दूसरे से करवाना।

**ऐँड़**—संज्ञा पु० [ हिं० ऐंठ ] ठसक। गर्व। २ पानी का भँवर।

वि० निकम्मा। नष्ट।

**ऐँड़दार**—वि० [ हिं० ऐंड़ + फा० दार] १. ठसकवाला। गर्वीला। घमंडी। २. शानदार। बाँका। तिरछा।

**ऐँड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० ऐंठन ] १. ऐंठना। बल खाना। २. अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। ३. इतराना। घमंड करना।

क्रि० स० १. ऐंठना। बल देना। २. बदन तोड़ना। अँगड़ाना।

**ऐँडबैंड़***—वि० [ हिं०. बेंड़ी+ऐंड़ी (अनु०) ] टेढ़ा। तिरछा। दे० "ऐँड़ा-बेंड़ा"।

**ऐँड़ा**—वि० [ हिं० ऐंड़ना ] [ स्त्री० ऐँड़ी ] टेढ़ा। ऐंठा हुआ।

मुहा०—अंग ऐंड़ा करना = ऐंठ दिखाना।

**ऐँड़ाना**—क्रि० अ० [ हिं० ऐंड़ना ] १. अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। बदन तोड़ना। २ इठलाना। अकड़ दिखाना।

**ऐँद्रजालिक**—वि० [ स० ] इंद्रजाल करनेवाला। मायावी।

**ऐंद्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. इंद्राणी। शची। २ दुर्गा। ३. इंद्रवारुणी। ४. इलायची।

**ऐ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

अव्य० [ स० अयि या हे ] एक संबोधन।

**ऐकमत्य**—संज्ञा पुं० [ स० ] एकमत होने का भाव।

**ऐक्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. एक का भाव। एकत्व। २. एका। मेल।

**ऐगुन***†—संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।

**ऐच्छिक**—वि० [ स० ] जो अपनी इच्छा पर हो।

**ऐजन**—अव्य० [ अ० ऐज़न ] तथा। तथैव। वही।

**ऐत***—वि० दे० "इतना"।

**ऐतरेय**—संज्ञा पु० [ स० ] १ ऋग्वेद का एक ब्राह्मण। २ एक उपनिषद्।

**ऐतिहासिक**—वि० [ स० ] १. इतिहास संबंधी। जो इतिहास में हो। २. जो इतिहास जानता हो।

**ऐतिहासिकता**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] ऐतिहासिक होने का भाव।

**ऐतिह्य**—संज्ञा पुं०[स०] परंपरा-प्रसिद्ध प्रमाण। यह प्रमाण कि लोक में बराबर बहुत दिनों से ऐसा सुनते आए हैं।

**ऐन**—संज्ञा पु० दे० "अयन"।

वि० [ अ० ] १. ठीक। उपयुक्त। सटीक। २. बिलकुल। पूरा पूरा।

**ऐनक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० एन = आँख ] चश्मा।

**ऐपन**—संज्ञा पु० [ सं० लेपन ] हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।

**ऐब**—संज्ञा पु० [ अ० ] [ वि० ऐबी ] १. दोष। दूषण। नुक्स। २. अवगुण। कलंक।

**ऐबी**—वि० [ अ० ] १. खोटा। बुरा। २. नटखट। दुष्ट। ३. विकलांग, विशेषतः काना।

**ऐया**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० आर्य्या प्रा० अज्जा ] १. बड़ी बूढ़ी स्त्री। २. दादी।

**ऐयार**—संज्ञा पु० [ अ० ] [ स्त्री० ऐयारा ] चालाक। धूर्त। उस्ताद। धोखेबाज। छली।

**ऐयारी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] चालाकी। धूर्तता।

**ऐयाश**—वि० [अ०] [ संज्ञा ऐयाशी ] १. बहुत ऐश या आराम करनेवाला। २. विषयी। लंपट। इंद्रियलोलुप।

**ऐयाशी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] विषयासक्ति। भोग-विलास।

**ऐरा गैरा**—वि० [ अ० ग़ैर ] १. बेगाना। अजनबी। ( आदमी ) २. तुच्छ। हीन।

**ऐराक**—संज्ञा पु० दे० "एराक"।

**ऐरापति***—संज्ञा पुं० दे० "ऐरावत"।

**ऐरावत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० ऐरावती ] १. बिजली से चमकता हुआ बादल। २ इंद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।

**ऐरावती**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] १. ऐरावत हाथी की हथनी। २. बिजली। ३ रावी नदी।

**ऐल**—संज्ञा पु० [ स० ] इला का पुत्र पुरूरवा।

*संज्ञा पु० [ हिं० अहिला ] १. बाढ़।

गुहा। २. अधिकता। बहुतायत। ३ कोलाहल।

**ऐश**—संज्ञा पुं० [ अ० ] आराम। चैन। भोग-विलास।

**ऐश्वर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ विभूति। धन-संपत्ति। २. अणिमादिक सिद्धियाँ। ३. प्रभुत्व। आधिपत्य।

**ऐश्वर्यवान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ऐश्वर्यवती ] वैभवशाली। संपत्तिवान्। सबल।

**ऐसा**—वि० दे० "ऐस"।

**ऐसा**—वि० [ सं० ईदृश ] [ स्त्री० ऐसी ] इस प्रकार का। इस ढंग का। इसके समान।

**मुहा०**—ऐसा वैसा या ऐसा वैसा = साधारण। तुच्छ। अदना।

**ऐसे**—क्रि० वि० [ हिं० ऐसा ] इस ढब से। इस ढंग से। इस तरह से।

**ऐहिक**—वि० [ सं० ] इस लोक से संबंध रखनेवाला। सांसारिक। दुनियावी।

# ओ

**ओ**—संस्कृत वर्णमाला का तेरहवाँ और हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।

**ओं**—अव्य० [ अनु० ] १. अंगीकार या स्वीकृतिसूचक शब्द। हाँ। अच्छा। तथास्तु। २. परब्रह्म-वाचक शब्द जो प्रणव मंत्र कहलाता है।

**ओंछना**—क्रि० स० [ सं० अंचन ] वारना। निछावर करना।

**ओंकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] हट या फिर जाना। (मन का)। क्रि० अ० दे० "ओकना"।

**ओंकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ परमात्मा का सूचक "ओं" शब्द। २. सोहन चिड़िया।

**ओंगना**—क्रि० स० [ सं० अंजन ] गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना जिससे पहिया आसानी से फिरे।

**ओंठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ ] मुँह की बाहरी उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं। लब। होठ।

**मुहा०**—ओंठ चबाना = क्रोध और दुःख प्रकट करना। ओंठ चाटना = किसी वस्तु को खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओठों पर जीभ फेरना। ओंठ फड़कना = क्रोध के कारण ओंठ काँपना।

**ओंड़ा***—वि० [ सं० कुंड ] गहरा। संज्ञा पुं० १ गड्ढा। गढ़ा। २ चोरों की खोदी हुई सेंध।

**ओ**—संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

अव्य० १ एक संबोधन-सूचक शब्द। २ विस्मय या आश्चर्य-सूचक शब्द। ओह। ३ एक स्मरण सूचक शब्द।

**ओक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घर। निवासस्थान। आश्रय। ठिकाना। २. नक्षत्रों या ग्रहों का समूह।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] मतली। कै।

संज्ञा पुं० [ हिं० बूक ] अंजली।

**ओकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. कै करना। २ भैंस की तरह चिल्लाना।

**ओकपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. चंद्रमा।

**ओकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ओकना ] वमन। कै।

**ओकारांत**—वि० [ सं० ] जिसके अंत में "ओ" अक्षर हो। जैसे, फोटो।

**ओखद**—संज्ञा पुं० दे० "औषध"।

**ओखली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उलूखल ] ऊखल।

**मुहा०**—ओखली में सिर देना = कष्ट सहने पर उतारू होना।

**ओखा***—संज्ञा पुं० [ सं० ओख ] मिस। बहाना। हीला।

वि० [ सं० ओख = सूखना ] १. रूखा सूखा। २ कठिन। विकट। टेढ़ा। ३. खोटा। जो शुद्ध या खालिस न हो। 'चोखा' का उलटा। ४. झीना। विरल।

**ओखाणो**—संज्ञा पुं० [ सं० उपाख्यान ] कहानी। कथा। कहावत।

**ओग***—संज्ञा पुं० [ हिं० उगहना ] कर। चंदा।

**ओघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ समूह। ढेर। २ किसी वस्तु का घनत्व। ३. बहाव। धारा। ४ "काल पाके सब काम आप ही हो जायगा," इस प्रकार संतोष। कालतुष्टि। (सांख्य)

**ओछा**—वि० [ सं० तुच्छ ] १. जो गंभीर या उच्चाशय न हो। तुच्छ। क्षुद्र। छिछोरा। २ जो गहरा न हो। छिछला। ३. हलका। जोर का नहीं।

४. छोटा। कम।

**ओछाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "ओछापन"

**ओछापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० ओछा + पन ( प्रत्य० ) ] नीचता। क्षुद्रता। छिछोरापन।

**ओज**—संज्ञा पुं० [ सं० ओजस् ] १. बल। प्रताप। तेज। २. उजाला। प्रकाश। ३ कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो। ४. शरीर के भीतर के रसों का सार भाग। ५. साहित्य के तीन गुणों में से एक जिससे शक्ति प्रदर्शित हो।

**ओजना**†—क्रि० स० [ सं० अवरुंधन ] अपने ऊपर लेना। सहना।

**ओजस्विता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तेज। कांति। दीप्ति। प्रभाव।

**ओजस्वी**—वि० [ सं० ओजस्विन् ] स्त्री० ओजस्विनी ] शक्तिवान्। प्रभावशाली।

**ओझ**—संज्ञा पुं० [ सं० उदर, हिं० ओझल ] १. पेट की थैली। पेट। २ आँत।

**ओझर**—संज्ञा पुं० [ सं० उदर ] पेट।

**ओझल**—संज्ञा पुं० [ सं० अवरुंधन प्रा० ओरुज्झन ] ओट। आड़।

**ओझा**—संज्ञा पुं० [ सं० उपाध्याय ] १. सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २. भूत प्रेत झाड़नेवाला। सयाना।

**ओझाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ओझा ] ओझा की वृत्ति। भूत प्रेत झाड़ने का काम।

**ओट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उट + घास फूस ] १. रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े। व्यवधान। आड़।

**मुहा०**—ओट में=बहाने से। हीले से। २. आड़ करनेवाली वस्तु। ३. शरण। पनाह। रक्षा।

**ओटपाय***—संज्ञा पुं० [ सं० उत्पात ] उपद्रव। झगड़ा।

**ओटना**—क्रि० स० [ सं० आवर्तन ] १. कपास को चरखी में दबाकर रुई और बिनौलों को अलग करना। २ अपनी ही बात कहते जाना। क्रि० स० [ हिं० ओट ] अपने ऊपर सहना।

**ओटनी,ओटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ओटना ] ओटने की चरखी। बेलनी।

**ओठँगना**†—क्रि० अ० [ सं० अवस्थान + अंग ] १. किसी वस्तु से टिककर बैठना। सहारा लेना। टेक लगाना। २. थोड़ा आराम करना। कमर सीधी करना।

**ओठँगाना**†—क्रि० स० [ हिं० ओठँगना ] १. सहारे से टिकाना। भिड़ाना। २. किवाड़ बंद करना।

**ओड़**—संज्ञा पुं० [ ? ] हरियाने की एक मुसलमान जाति जो भेड़ बकरियों का व्यापार करती है।

**ओड़न**†—संज्ञा पुं० [ हिं० ओड़ना ] १ ओड़ने की वस्तु। वार रोकने की चीज। २ ढाल। फरी।

**ओड़ना**—क्रि० स० [ हिं० ओट ] १ रोकना। वारण करना। ऊपर लेना। २. ( कुछ लेने के लिये ) फैलाना। पसारना।

**ओड़व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रागों की एक जाति। वह जिसमें पाँच ही स्वर हों।

**ओड़ा**—संज्ञा पुं० १ दे० "ओड़ा"। २ बड़ा टोकरा। खाँचा। संज्ञा पुं० कमी। टोटा।

**ओड्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उड़ीसा देश। २. उस देश का निवासी।

**ओढ़**—संज्ञा पुं० दे० "ओड़"।

**ओढ़ना**—क्रि० स० [ सं० उपवेष्टन ] १. शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना। २ अपने सिर लेना। अपने ऊपर लेना। जिम्मे लेना। संज्ञा पुं० ओढ़ने का वस्त्र।

**ओढ़नी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ओढ़ना ] स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। उपरैनी। फरिया।

**ओढ़र***†—संज्ञा पुं० [ हिं० ओढ़ना ] बहाना।

**ओढ़ाना**—क्रि० स० [ हिं० ओढ़ना ] ढाँकना। कपड़े से आच्छादित करना।

**ओत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अवधि ] १. आराम। चैन। † २. आलस्य। ३. किफायत। संज्ञा [ स्त्री० हिं० आवत ] प्राप्ति। लाभ। वि० [ सं० ] बुना हुआ।

**ओत-प्रोत**—वि० [ सं० ] बहुत मिला-जुला। इतना मिला हुआ कि उसका अलग करना असंभव सा हो। संज्ञा पुं० ताना-बाना।

**ओता***†—वि० दे० "उत्ता"।

**ओद**—संज्ञा पुं० [ सं० आर्द्र ] नमी। तरी। वि० गीला। तर। नम

**ओदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पका हुआ चावल।

**ओदर***—संज्ञा पुं० दे० "उदर"।

**ओदरना**—क्रि० अ० [ हिं० ओदारना ] १. विदीर्ण होना। फटना। २. छिन्न-भिन्न होना। नष्ट होना।

**ओदा**—वि० [ सं० उद = जल ] गीला। नम।

**ओदारना**†—क्रि० स० [ सं० अवदारण ] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। २. छिन्न-भिन्न करना। नष्ट करना।

**ओनंत***—वि० [ सं० अनुनत ] झुका हुआ।

**ओनचन**—संज्ञा स्त्री० दे० "उनचन"।

**ओनचना**—क्रि० सं० दे० "उनचना"।

**ओनवना***†—क्रि० अ० दे० "उनवना"।

**ओना**†—संज्ञा पुं० [सं० उद्गमन] तालाबों में पानी के निकलने का मार्ग। निकास।

**ओनामासी**—संज्ञा स्त्री० [सं० ॐ नमः सिद्धम्] १. अक्षरारंभ। २. प्रारंभ। शुरू।

**ओप**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओपना] १. चमक। दीप्ति। आभा। कांति। शोभा। २. जिला। पालिश। माँजा।

**ओपची**—संज्ञा पुं० [सं० ओप] कवच-धारी योद्धा। रक्षक योद्धा।

**ओपना**—क्रि० स० [सं० आवपन] जिला देना। चमकाना। पालिश करना।

क्रि० अ० चमकना।

**ओपनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।

**ओपनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओपना] १ यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर सोना या चाँदी चमकाते हैं। मोहरा। २. रगड़कर चमक लाने की कोई चीज। बट्टी।

**ओफ**—अव्य० [अनु०] पीड़ा, खेद, शोक और आश्चर्यसूचक शब्द। ओह।

**ओबरी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० विवर] छोटा घर।

**ओम्**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रणव मंत्र। ओंकार।

**ओर**—संज्ञा स्त्री० [सं० अवार] १. किसी नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार जिसे दाहिना, बाँया, ऊपर, नीचे आदि शब्दों से निश्चित करते हैं। तरफ। दिशा। २. पक्ष।

संज्ञा पुं० सिरा। छोर। किनारा।

**मुहा०**—ओर निभाना या निबाहना = अंत तक किसी का साथ देना। बराबर किसी की सहायता करते रहना।

२. आदि। आरंभ।

**ओरती**—संज्ञा स्त्री० दे० "ओलती"।

**ओरना***†—क्रि० अ० [हिं० ओर (= अंत) + ना (प्रत्य०)] 'ओरना' का अकर्म० रूप। समाप्त होना।

**ओरमना**—क्रि० अ० [सं० अवलम्बन] लटकना।

**ओरहा**—संज्ञा पुं० दे० "होरहा"।

**ओराना**†—क्रि० अ० [हिं० ओर अंत + आना] समाप्त होना। खतम होना।

**ओराहना**†—संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।

**ओरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओरौता] ओलती।

**ओलंदेज, ओलंदेजी**—वि० [हालैंड देश] हालैंड देश संबंधी। हालैंड देश का।

**ओलंबा, ओलंभा**—संज्ञा पुं० [सं० उपालंभ] उलाहना। शिकायत। गिला।

**ओल**—संज्ञा पुं० [सं०] सूरन। जिमीकंद।

वि० गीला। ओदा।

संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] १ गोद। २ आड़। ओट। ३ शरण। पनाह। ४ किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास जमानत में उस समय तक के लिये रहना, जब तक उस व्यक्ति का कुछ रुपया न दिया जाय या उसकी कोई शर्त न पूरी की जाय। जमानत। ५ वह वस्तु या व्यक्ति जो दूसरे के पास इस प्रकार जमानत में रहे। ६ बहाना। मिस।

**ओलती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओलमना] ढालुआँ छप्पर का वह किनारा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है। ओरी।

**ओलना**—क्रि० स० [हिं० ओल] १. परदा करना। ओट में करना। २. आड़ना। रोकना। ३. ऊपर लेना। सहना।

क्रि० स० [सं० शूल हिं० हूल] घुसाना।

**ओला**—संज्ञा पुं० [सं० उपल] १. गिरते हुए मेंह के जमे हुए गोले। पत्थर। बिनौली। २. मिस्री का बना हुआ लड्डू।

वि० ओले के ऐसा ठंडा। बहुत सर्द।

संज्ञा पुं० [हिं० ओल] १. परदा। ओट। २. भेद। गुप्त बात।

**ओलियाना**—क्रि० स० [हिं० ओल = गोद] गोद में भरना।

क्रि० स० [हिं० हूलना] घुसाना। ठूँसना।

**ओली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ओल] १. गोद। २. अंचल। पल्ला।

**मुहा०**—ओली ओड़ना = आँचल फैलाकर कुछ माँगना।

३. झोली।

**ओलू**†—संज्ञा अ० [?] विरहजन्य-स्मृति। जुदाई की याद।

**ओवर-कोट**—संज्ञा पुं० [अं०] जाड़े में पहनने का एक प्रकार का बड़ा कोट।

**ओषधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वनस्पति। जड़ी बूटी जो दवा में काम आवे। २ पौधे जो एक बार फलकर सूख जाते हैं।

**ओषधिपति, ओषधीष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चंद्रमा। २. कपूर।

**ओष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] होंठ। ओठ।

**ओष्ठ्य**—वि० [सं०] १ ओंठ संबंधी। २ जिसका उच्चारण ओंठ से हो।

**यौ०**—ओष्ठ्यवर्ण उ, ऊ, प, फ, ब,

म, म।

**ओस**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ अवश्याय ] हवा में मिली हुई भाप जो रात की सरदी से जमकर जलबिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है। शीत। शबनम।

**मुहा॰**—ओस पड़ना या पड़ जाना=१. कुम्हलाना। बेरौनक हो जाना। २. उमंग बुझ जाना। ३. लज्जित होना। शरमाना।

**ओसर**†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ उपसर्या ] बिना ब्याई हुई जवान भैंस।

**ओसरी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ अवसर ] पारी।

**ओसाई**†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ ओसाना] १. ओसाने का काम। २. ओसाने के काम की मजदूरी।

**ओसाना**—क्रि॰ स॰ [सं॰ आवर्षण] दाँए हुए गल्ले को हवा में उड़ाना जिससे दाना और भूसा अलग हो जाय। बरसाना। डाली देना।

**ओसार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अवसार=फैलाव ] फैलाव। विस्तार। चौड़ाई।

**ओसारा**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उपशाला ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ ओसारी ] १. दालान। बरामदा। २. ओसारे की छाजन। सायबान।

**ओह**—अव्य॰ [सं॰ अहह] आश्चर्य्य, दुःख या बेपरवाही का सूचक शब्द।

**ओहट***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ओट"।

**ओहदा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] पद। स्थान।

**ओहदेदार**—संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] पदाधिकारी। हाकिम। अधिकारी।

**ओहार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अवधार ] रथ या पालकी के ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा। परदा।

**ओहो**—अव्य॰ [ सं॰ अहो ] आश्चर्य्य या आनंद-सूचक शब्द।

# औ

**औ**—संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर-वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ+ओ के संयोग से बना है।

**औंगा**—वि॰ [ सं॰ अवाक् ] गूँगा। मूक।

**औंगी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ अवाक् ] चुप्पी। गूँगापन।

**औंगना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अंजन ] गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।

**औंघना, औंघाना**†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ अवाक्] ऊँघना। झपकी लेना।

**औंघाई**†—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ अवाङ्=नीचे मुँह ] हलकी नींद। झपकी। ऊँघ।

**औंजन***†—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ आवेजन ] ऊबना। व्याकुल होना। अकुलाना।

क्रि॰ स॰ [ देश॰ ] ढालना। उँडेलना।

**औंठ**—संज्ञा स्त्री॰ [ स॰ ओष्ठ ] उठा या उभड़ा हुआ किनारा। बारी।

**औंड़***—संज्ञा पुं॰ [ स॰ कुंड ] मिट्टी खोदने या उठानेवाला। मजदूर। बेलदार।

**औंड़ा**—वि॰ [ स॰ कुंड ] [ स्त्री॰ औंड़ी ] गहरा। गभीर।

वि॰ [ हिं॰ उमड़ना ] उमड़ा हुआ।

**औंदना***†—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ उन्माद या उद्विग्न] १. उन्मत्त होना। बेसुध होना २. व्याकुल होना। घबराना। अकुलाना।

**औंदाना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ उद्विग्न] ऊबना। व्याकुल होना। दम घुटने के कारण घबराना।

**औंधना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ औंधा ] उलट जाना। उलटा होना।

क्रि॰ स॰ उलटा कर देना।

**औंधा**—वि॰ [ सं॰ अधोमुख ] [ स्त्री॰ औंधी ] १. जिसका मुँह नीचे की ओर हो। उलटा। २. पेट के बल लेटा हुआ। पट।

**मुहा॰**—औंधी खोपड़ी का = मूर्ख। जड़। औंधी समझ = उलटी समझ। जड़बुद्धि। औंधे मुँह गिरना = बेतरह धोखा खाना।

२ नीचा।

संज्ञा पुं उलटा या चिलड़ा नामक पकवान

**औंधाना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अधः ]

१. उलटना। उलट देना। मुँह नीचे की ओर करना (बरतन)। २. नीचा करना। लटकाना।

**औंधापन**—संज्ञा पुं० [हिं० औंधा + पन] औंधे होने का भाव।

**औंसना**†—क्रि० अ० [हिं० उमस] उमस होना।

**औ***—अव्य० दे० "और"।

**औकात**—संज्ञा पुं० बहु० [अ० वक्त का बहु०] समय। वक्त।
संज्ञा स्त्री० एक०। १. वक्त। समय। २. हैसियत। बिसात। बिसारत। वित्त।

**औगत***—संज्ञा स्त्री० [सं० अव + गति] दुर्दशा। दुर्गति।
वि० दे० "अवगत"।

**औगाहना***—क्रि० स० दे० "अवगाहना"।

**औगी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। २ बैल हाँकने की छड़ी। पैना।
संज्ञा स्त्री० [सं० अवगर्त्त] जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है।

**औगुन***†—संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।

**औघट***†—वि० दे० "अवघट"।

**औघड़**—संज्ञा पुं० [सं० अघोर] [स्त्री० औघड़िन] १. अघोर मत का पुरुष। अघोरी। २ काम में सोच-विचार न करनेवाला।
वि० अंड बंड। उलटा पलटा।

**औघर**—वि० [सं० अव + घट] १. अटपट। अनगढ़। अंड बंड। 'सुघर' का प्रतिकूल। २. अनोखा। विलक्षण।

**औचक**—क्रि० वि० [सं० अव + चक = भ्रांति] अचानक। एकाएक। सहसा।

**औचट**—संज्ञा स्त्री० [सं० अ = नहीं + हिं० उचटना] अड़स। संकट। कठिनता।
क्रि० वि० १. अचानक। अकस्मात्। २. अनचीते में। भूल से।

**औचित***—वि० [सं० अव + चिंता] १. निश्चिंत। २. बेखबर।

**औचित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] उचित का भाव। उपयुक्तता।

**औज**—संज्ञा पुं० दे० "ओज"।

**औजार**—संज्ञा पुं० [अ०] वे यंत्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं। हथियार। राछ।

**औझड़, औझर**—क्रि० वि० [सं० अव + हिं० झड़ी] लगातार। निरंतर।

**औटन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० औटना] औटने की क्रिया या भाव।

**औटना**—क्रि० स० [सं० आवर्त्तन] १. दूध या किसी पतली चीज को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना। खौलाना।* २ व्यर्थ घूमना।
क्रि० अ० किसी तरल वस्तु का आँच या गरमी खाकर गाढ़ा होना।

**औटाना**—क्रि० स० दे० "औटना"।

**औठपाव**—संज्ञा पुं० दे० "अठपाव"।

**औढर**—वि० [सं० अव + हिं० ढार या ढाल] जिस ओर मन में आवे, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मनमौजी।

**औतरना***—क्रि० अ० दे० "अवतरना"।

**औतार***—संज्ञा पुं० दे० "अवतार"।

**औतापिक**—वि० [सं०] उत्ताप-संबंधी।

**औत्पत्तिक**—वि० [सं०] उत्पत्ति-संबंधी।

**औत्सुक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्सुकता।

**औथरा***—वि० दे० "उथला"।

**औदरिक**—वि० [सं०] १. उदर-संबंधी। २ बहुत खानेवाला। पेटू।

**औदसा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "अवदशा"।

**औदार्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उदारता। २. सात्विक नायक का एक गुण।

**औदास्य**—संज्ञा पुं० [सं०] उदासीनता।

**औदुम्बर**—वि० [सं०] १ उदुंबर या गूलर का बना हुआ। २. ताँबे का बना हुआ।
संज्ञा पुं० १. गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। २ एक प्रकार के मुनि।

**औद्धत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अक्खड़पन। उजड्डपन। २ धृष्टता। ढिठाई।

**औद्योगिक**—वि० [सं०] उद्योग-संबंधी।

**औध***—संज्ञा पुं० दे० "अवध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

**औधारना**—क्रि० स० दे० "अवधारना"।

**औधि***—संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

**औनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।

**औनिप***—संज्ञा पुं० [सं० अवनिप] राजा।

**औने पौने**—क्रि० वि० [हिं० ऊन (कम) + पौना ($\frac{3}{4}$ भाग)] आधी-तीही पर। थोड़ी-बहुत पर। कमती-बढ़ती पर।
मुहा०—औने पौने करना = जितना दाम मिले उतने पर बेच डालना।

**औपचारिक**—वि० [सं०] १. उपचार-संबंधी। २ जो केवल कहने सुनने के लिये हो। जो वास्तविक न हो।

**औपनिवेशिक**—वि० [सं०] १. उपनिवेश-संबंधी। २ उपनिवेशों का सा।
यौ०—औपनिवेशिक स्वराज्य = कुछ विशिष्ट अधिकारों से युक्त एक प्रकार का स्वराज्य जो ब्रिटिश साम्राज्य में आस्ट्रेलिया और कनाडा आदि उपनिवेशों को प्राप्त है।

**औपनिषदिक**—वि० [सं०] उप-

निषद्-संबंधी। उपनिषद् के समान।
**औपन्यासिक**—वि० [ सं० ] १. उपन्यास-विषयक। उपन्यास-संबधी। २. उपन्यास में वर्णन करने योग्य। ३. अद्‌भुत।
संज्ञा पु० उपन्यास लेखक।
**औपपत्तिक**—वि० [ सं० ] तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।
**औपपत्तिक शरीर**—संज्ञा पु० [सं०] देवलोक और नरक के जीवों का नैसर्गिक या सहज शरीर। लिंग शरीर।
**औपसर्गिक**—वि० [ सं० ] उपसर्ग-संबंधी।
**औपश्लेषिक (आधार)**—संज्ञा पु० [ सं० ] व्याकरण में अधिकरण कारक के अंतर्गत वह आधार जिसके किसी अंश ही से दूसरी वस्तु का लगाव हो।
**औमक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अवम ] अवम तिथि।
**और**—अव्य० [सं० अपर] एक संयोजक शब्द। दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द।
वि० १ दूसरा। अन्य। २. भिन्न।
**मुहा०**—और का और = कुछ का कुछ। विपरीत। अंडबंड। और क्या = हाँ। ऐसा ही है। (उत्तर में) उत्साह-वर्द्धक वाक्य। और तो और = दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य की बात नहीं। और ही कुछ होना = सबसे निराला होना। विलक्षण होना। और तो क्या = और बातों का तो जिक्र ही क्या। २. अधिक। ज्यादा।
**औरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. स्त्री। २ जोरू।
**औरस**—संज्ञा पुं० [सं०] १२ प्रकार के पुत्रों में सबसे श्रेष्ठ। धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।
वि० जो अपनी विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो।
**औरसना***—क्रि० अ० [ सं० अव = बुरा + रस ] विरस होना। अनखाना। रुष्ट होना।
**औरेब**—संज्ञा पुं० [ सं० अव + रेव = गति ] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट। ३. पेंच। उलझन। ४. पेंच की बात। चाल की बात।
**औलना**—क्रि० अ० [ सं० उल + जलना ] १ जलना। गरम होना। २ गरमी पड़ना।
**औलाद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. संतान। संतति। २ वंश-परंपरा। नस्ल।
**औला मौला**—वि० [ देश० ] मन मौजी।
**औलिया**—संज्ञा पुं० [ अ० वली का बहु० ] मुसलमान सिद्ध। पहुँचे हुए फकीर।
**औवल**—वि० [ अ० ] १ पहला। २. प्रधान। मुख्य। ३ सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।
संज्ञा पु० आरंभ। शुरू।
**औशि***—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।
**औषध**—संज्ञा पुं० स्त्री० [ सं० ] रोग दूर करनेवाली वस्तु। दवा।
**औसत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बराबर का परता। समष्टि का सम विभाग। सामान्य।
वि० माध्यमिक। दरमियानी। साधारण।
**औसना**—क्रि० अ० [ हिं० ऊमस + ना ] १ गरमी पड़ना। ऊमस होना। २. खाने की चीजों का बासी होकर सड़ना। ३ गरमी से व्याकुल होना।
**औसर***—संज्ञा पु० दे० "अवसर"।
**औसान**—संज्ञा [ सं० अवसान ] १. अंत। २. परिणाम।
संज्ञा पुं० [ फा० ] सुध बुध। होश-हवास।
**औसि***—क्रि० वि० दे० "अवश्य"।
**औसेर**—संज्ञा स्त्री० दे० "अवसेर"।
**औहत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अपघात ] १. अपमृत्यु। २ दुर्गति। दुर्दशा।
**औहाती**—संज्ञा स्त्री० दे० "अहिवाती"।

# क

**क**—हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं।
**कं**—संज्ञा पु० [ सं० कम् ] १. जल। २ मस्तक। ३. सुख। ४. अग्नि। ५ काम।
**कंक**—संज्ञा पु० [ सं० ] [स्त्री० कंका, कंकी ( हिं० ) ] १ सफेद चील। कौंक। २. एक प्रकार का बड़ा आम। ३. यम। ४. क्षत्रिय। ५. युधिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट के यहाँ रहे थे।
**कंकड़**—संज्ञा पु० [ सं० कर्कर ] [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी ] [ वि० कँकड़ीला ] १. चिकनी मिट्टी और चूने के योग

वे छोटे रोड़े जो सड़क बनाने के काम में आते हैं। २. पत्थर का छोटा टुकड़ा। ३. किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो आसानी से न पिस सके। अँकड़ा। ४. सूखा या सेंका हुआ तमाकू।

**कँकड़ीला**—वि० [हिं० कंकड़ + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कंकड़ीली] कंकड़ मिला हुआ।

**कंकण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कलाई में पहनने का एक आभूषण। कंगन। कड़ा। २. वह धागा जो विवाह से पहले दुलहे या दुलहिन के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

**कंकरीट**—संज्ञा स्त्री० [अं० कांक्रीट] १. चूना, कंकड़, बालू इत्यादि से मिलकर बना हुआ गच बनाने का मसाला। छर्रा। बजरी। २. छोटी छोटी कंकड़ी जो सड़कों में बिछाई और कूटी जाती है।

**कँकरेत**—वि० दे० "कँकड़ीला"।

**कंकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] ठठरी। पंजर।

**कंकालिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. उग्र और दुष्ट स्वभाव की स्त्री। कर्कशा।

**कंकाली**—संज्ञा स्त्री० [सं० कंकाल] एक नीच जाति।
संज्ञा स्त्री० दे० "कंकालिनी"।

**कंकोल**—संज्ञा पुं० [सं०] शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद जिसके फल शीतलचीनी से बड़े और कड़े होते हैं।

**कँखवारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख + वारी] वह फोड़िया जो काँख में होती है।

**कँखौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख] १. काँख। २. दे० "कँखवारी"।

**कंगन**—संज्ञा पुं० [सं० कंकण] १. कंकण। २. हाथ में पहनने का गहना।

**कँगना**—संज्ञा पुं० [सं० कंकण] [स्त्री० कँगनी] १. दे० "कंकण"। २. वह गीत जो कंकण बाँधते समय गाया जाता है।

**कँगनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कँगना] १. छोटा कंगन। २ छत या छाजन के नीचे दीवार में उभड़ी हुई लकीर, जो खूबसूरती के लिये बनाई जाती है। कगर। कार्निस। ३. गोल चक्कर जिसके बाहरी किनारे पर दाँत या नुकीले कँगूरे हों।
संज्ञा स्त्री० [सं० कंगु] एक अन्न जिसके चावल खाए जाते हैं। काकुन। टाँगुन।

**कंगला**—वि० दे० "कंगाल"।

**कंगाल**—वि० [सं० कंकाल] १. भुक्खड़। अकाल का मारा। २. निर्धन। दरिद्र।

**कंगाली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंगाल] निर्धनता।

**कँगुरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कानी + उँगली] सबसे छोटी उँगली।

**कँगूरा**—संज्ञा पुं० [फा० कँगुरा] [वि० कँगूरेदार] १ शिखर। चोटी। २. किले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ खड़े हो कर सिपाही लड़ते हैं। बुर्ज। ३ कँगूरे के आकार का छोटा रवा। (गहनों में)

**कंघा**—संज्ञा पुं० [सं० कंक] [स्त्री० अल्पा० कंघी] १ लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई चीज जिसमें लंबे लंबे पतले दाँत होते हैं और जिससे सिर के बाल झाड़े या साफ किये जाते हैं। २ जुलाहों का एक औजार जिससे वे करघे में भरनी के तागों को कसते हैं। बय। बौला।

**कंघी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कंकती] १. छोटा कंघा।
**मुहा०**—कंघी चोटी = बनाव-सिंगार।
२. जुलाहों का कंघी नामक औजार। ३. एक पौधा जिसकी जड़, पत्ती आदि दवा के काम में आती है। अतिबला।

**कँघेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० कंघा + एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कँघेरिन] कंघा बनानेवाला।

**कंचन**—संज्ञा पुं० [सं० कांचन] १. सोना। सुवर्ण।
**मुहा०**—कंचन बरसना = (किसी स्थान का) समृद्धि और शोभा से युक्त होना।
२. धन। संपत्ति। ३. धतूरा। ४. एक प्रकार का कचनार। रक्त-कांचन। ५ [स्त्री० कंचनी] एक जाति का नाम जिसमें स्त्रियाँ प्रायः वेश्या का काम करती हैं।
वि० १. नीरोग। स्वस्थ। २. स्वच्छ।

**कंचनवान**—संज्ञा पुं० दे० "धनवान"।

**कंचनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंचन] वेश्या।

**कंचु, कँचुआ**—संज्ञा पुं० दे० "कंचुक"।

**कंचुक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कंचुकी] १. जामा। चपकन। अचकन। २ चोली। अँगिया। ३ वस्त्र। ४. बक्तर। कवच। ५ केंचुल।

**कंचुकी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली।
संज्ञा पुं० [सं० कंचुकिन्] १. रनिवास के दास-दासियों का अध्यक्ष। अंतःपुर-रक्षक। २. द्वारपाल। ३ साँप।

**कंचुरि***—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचुल", "केंचुली"।

**कँचेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० काँच] [स्त्री० कँचेरिन] काँच का काम करनेवाला।

**कंज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २ कमल। ३ चरण की एक रेखा। कमल। पद्म। ४. अमृत। ५. सिर के बाल। केश।

**कंजई**—वि॰ [ हिं॰ कंजा ] कंजे के रंग का। धूएँ के रंग का। खाकी
संज्ञा पुं॰ १. खाकी रंग। २. वह घोड़ा जिसकी आँख कंजई रंग की हो।

**कंजड़, कंजर**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ या कालंजर ][ स्त्री॰ कंजड़िन ] १. एक घूमनेवाली जाति। २. रस्सी बटने सिरकी बनाने का काम करनेवाली एक जाति।

**कंजा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ करंज ] एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली के दाने औषध के काम में आते हैं। करंजुवा।
वि॰ [ स्त्री॰ कंजी ] १. कंजे के रंग का। गहरा खाकी। २. जिसकी आँख कंजे के रंग की हो।

**कंजावलि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक वर्णवृत्त।

**कंजूस**—वि॰ [सं॰ कण + हिं॰ चूस] [ संज्ञा कंजूसी ] जो धन का भोग न करे। कृपण। सूम।

**कँजियाना**—क्रि॰ अ॰ [ ? ] १. अंगारा का ठंढा पड़ना। २. काला पड़ना। ३. आँखों का कंजा होना।

**कंटक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ कंटकित ] १. काँटा। २. सूई की नोक। ३. क्षुद्र शत्रु। ४. विघ्न। बाधा। बखेड़ा। ५. रोमांच। ६. बाधक। विघ्नकर्त्ता। ७. कवच।

**कंटकारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. भटकटैया। कटेरी। छोटी कटाई। २. सेमल।

**कंटकित**—वि॰ [ सं॰ ][ स्त्री॰ कंटकिता ] १. रोमाञ्चित। पुलकित। २. काँटेदार।

**कंटकी**—वि॰ [ सं॰ कंटकिन् ] काँटेदार।
संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] भटकटैया।

**कंटर**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ डिकैंटर ] शीशे की बनी हुई सुंदर सुराही जिसमें शराब और सुगंध आदि रखे जाते हैं।

**कंटाइन**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ कात्यायनी] १. चुड़ैल। डाइन। २. लड़ाकी स्त्री।

**कंटाय**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ काँटा ] एक कँटीला पेड़ जिसकी लकड़ी के यज्ञ-पात्र बनते हैं।

**कँटिया**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ काँटी ] १. काँटी। छोटी कील। २. मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी। ३. अँकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ४. सिर पर का एक गहना।

**कँटीला**—वि॰ [ हिं॰ काँटा + ईला (प्रत्य॰) ] [ स्त्री॰ कँटीली ] काँटेदार। जिसमें काँटे हों।

**कंटोप**—संज्ञा पुं॰[हिं॰ कान + तोपना ] टोपी जिससे सिर और कान ढके रहते हैं।

**कंठ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ कंठ्य, भाव॰ कंठता] १. गला। टेटुआ। २. गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और आवाज निकलती है। घाँटी।

**मुहा॰** -कंठ फूटना=१. वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना। २. मुँह से शब्द निकलना। ३. घाँटी फूटना। युवावस्था आरंभ होने पर आवाज का बदलना। कंठ करना या रखना= जबानी याद करना या रखना।
३ स्वर। आवाज। शब्द। ४. तोते, पंडुक आदि के गले की रेखा। हँसली। ५. किनारा। तट। तीर। काँठा।

**कंठगत**—वि॰ [ सं॰ ] गले में आया हुआ। गले में अटका हुआ।

**मुहा॰**—प्राण कंठगत होना=प्राण निकलने पर होना। मृत्यु का निकट आना।

**कंठतालव्य**—वि॰ [ सं॰ ] ( वर्ण ) जिनका उच्चारण कंठ और तालु-स्थानों से मिलकर हो। 'ए' और 'ऐ' वर्ण।

**कंठमाला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] गले का एक रोग जिसमें रोगी के गले में लगातार छोटी छोटी फुड़िया निकलती हैं।

**कंठस्थ** —वि॰ [सं॰] १. गले में अटका हुआ। कंठगत। २. जुबानी। कंठाग्र।

**कंठा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कंठ ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ कंठी] १. वह भिन्न-भिन्न रंगों की रेखा जो तोते आदि पक्षियों के चारों ओर निकल आती है। हँसली। २. गले का एक गहना जिसमें बड़े-बड़े मनके होते हैं। ३ कुरते या अँगरखे का वह अर्धचंद्राकार भाग जो गले पर रहता है।

**कंठाग्र**—वि॰ [ सं॰ ] कंठस्थ। जबानी।

**कंठी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कंठा का अल्पा॰ रूप ] १. छोटी गुरियों का कंठा। २. तुलसी आदि की मनियों की माला। (वैष्णव)

**मुहा॰**—कंठी देना या बाँधना=चेला करना या चेला बनाना। कंठी लेना=१. वैष्णव होना। भक्त होना। २. मद्य-मांस छोड़ना।
३ तोते आदि पक्षियों के गले की रेखा। हँसली। कंठी।

**कंठौष्ठ्य** —वि॰ [ सं॰ ] जो एक साथ कंठ और ओंठ के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ' वर्ण।

**कंठ्य**—वि॰ [ सं॰ ] १. गले से उत्पन्न। २. जिसका उच्चारण कंठ से हो। ३. गले या स्वर के लिये हितकारी
संज्ञा पुं॰ १ वह वर्ण जिनका उच्चारण कंठ से होता है। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग। २. गले के लिये उपकारी औषध।

**कंडरा** —संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] रक्त की मोटी नाड़ी।

**कंडा**—संज्ञा पुं० [सं० स्कंदन] [स्त्री० अल्पा० कंडी] १. जलाने का सूखा गोबर।

**मुहा०**—कंडा होना= १. सूखना। दुर्बल हो जाना। २. मर जाना।

२. लंबे आकार में पाथा हुआ सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है। उपला। ३. सूखा मल। गोटा। सुद्दा।

**कंडाल**—संज्ञा पुं० [सं० करनाल] नरसिंहा। तुरही। तूरी।

संज्ञा पुं० [सं० कंडोल] पानी रखने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन।

**कंडी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंडा] १. छोटा कंडा। गोहरी। उपली। २ सूखा मल। गोटा।

**कंडील**—संज्ञा स्त्री० [अ० कंदील] मिट्टी, अबरक या कागज की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।

**कंडु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] खुजली। खाज।

**कंडौरा**—संज्ञा पुं० [हिं० कंडा + औरा (प्रत्य०)] वह स्थान जहाँ कंडा पाथा या रखा जाय।

**कंत,कंथ***—संज्ञा पुं० दे० "कांत"।

**कंथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुदड़ी। कथड़ा।

**कंथी**—संज्ञा पुं० [हिं० कंथा] गुदड़ी-वाला। जोगी। साधु।

**कंद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जड़ जो गूदेदार और बिना रेशे का हो; जैसे सूरन, शकरकंद इत्यादि। २. सूरन। ओल। ३. बादल। ४. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। ५. छप्पय के ७१ भेदों में से एक।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] जमाई हुई चीनी। मिश्री।

**कंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। ध्वंस।

**कंदरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुफा। गुहा।

**कंदर्प**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

**कंदला**—संज्ञा पुं० [सं० कंदल = सोना] १. चाँदी की वह गुल्ली या लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं। पासा। रैनी। गुल्ली। २. सोने या चाँदी का पतला तार।

**कंदा**—संज्ञा पुं० [सं० कंद] १. दे० "कंद"। २. शकरकंद। गंजी। †३. घुइयाँ। अरुई।

**कंदील**—संज्ञा स्त्री० दे० "कंडील"।

**कंदुक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गेंद। २. गाल तकिया। गल-तकिया। गेडुआ। ३. सुपारी। पुंगीफल। ४. एक वर्णवृत्त।

**कंदैला**—वि० [हिं० काँदा, पू० हिं० कँदई + ला (प्रत्य०)] मलिन। गदला। मलयुक्त।

**कँदोरा**—संज्ञा पुं० [हिं० कटि + डोरा] कमर में पहनने का एक तागा। करधनी।

**कंध***—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] १ डाली। २. दे० "कंधा"।

**कंधनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "करधनी"।

**कंधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गरदन। ग्रीवा। २ बादल। ३. मुस्ता। मोथा।

**कंधरा**—संज्ञा स्त्री० दे० "कंधर"।

**कंधा**—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] १. मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है। २. बाहुमूल। मोढ़ा।

**कंधार**—संज्ञा पुं० [सं० कर्णधार] १. केवट। २. पार लगानेवाला।

संज्ञा पुं० [सं० गान्धार] अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश।

**कंधारी**—वि० [हिं० कंधार] जो कंधार देश में उत्पन्न हुआ हो। कंधार का।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

**कँधावर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कंधा + आवर (प्रत्य०)] १. जूए का वह भाग जो बैल के कंधे के ऊपर रहता है। २. वह चद्दर या दुपट्टा जो कंधे पर डाला जाता है।

**कँधेला**—संज्ञा पुं० [हिं० कंधा + एला (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।

**कंप**—संज्ञा पुं० [सं०] कँपकँपी। काँपना। (सात्त्विक अनुभावों में से एक)

संज्ञा पुं० [अं० कैंप] पड़ाव। लश्कर।

**कँपकँपी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँपना] थर-थराहट। काँपना। संचलन।

**कंपन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कंपित] काँपना। थरथराहट। कँपकँपी।

**कँपना**—क्रि० अ० [सं० कंपन] १. हिलना। डोलना। काँपना। २. भय-भीत होना।

**कंपमान**—वि० दे० "कंपायमान"।

**कंपा**—संज्ञा पुं० [हिं० काँपना] बाँस की पतली तीलियाँ जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियों को फँसाते हैं।

**कँपाना**—क्रि० स० [हिं० काँपना का प्रे० रूप] १ हिलाना-डुलाना। २ भय दिखाना।

**कंपायमान**—वि० [सं०] हिलता हुआ।

**कंपास**—संज्ञा पुं० [अं०] १ एक यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। २ परकार।

**कंपित**—वि० [सं०] १ काँपता हुआ। चंचल। २. भयभीत। डरा हुआ।

**कंपू**—संज्ञा पुं० [अं० कैंप] १. वह स्थान जहाँ फौज रहती या ठह-रती हो। छावनी। पड़ाव। जनस्थान। २. डेरा। खेमा।

**कंबल**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कमली] ऊन का बना हुआ मोटा कपड़ा जिसे गरीब लोग ओढ़ते हैं। एक बरसाती कीड़ा। कमला।

**कंबु, कंबुक**—संज्ञा पुं० [सं०] १.

शंख। ३. शंख की चूड़ी। घोंघा। ४. हाथी।

**कंबोज**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कांबोज] अफगानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम जो गांधार के पास पड़ता था।

**कँवल**—संज्ञा पुं० दे० "कमल"।

**कँवलगट्टा**—संज्ञा पुं० [सं० कमल + हिं० गट्टा] कमल का बीज।

**कंस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काँसा। २. प्याला। कटोरा। ३. सुराही। ४. मँजीरा। झाँझ। ५. काँसे का बना हुआ बर्तन या चीज़। ६. मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का जो श्रीकृष्ण का मामा था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

**कँसताल**—संज्ञा पुं० [सं० कांस्यताल] झाँझ।

**क**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कामदेव। ४. सूर्य। ५. प्रकाश। ६. प्रजापति। ७. दक्ष। ८. अग्नि। ९. वायु। १०. राजा। ११. यम। १२. आत्मा। १३. मन। १४. शरीर। १५. काल। १६. धन। १७. शब्द।

**कई**—वि० [सं० कति प्रा० कई] एक से अधिक। अनेक।

**ककड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्कटी] एक बेल जिसमें लंबे-लंबे फल लगते हैं। इसी का फल जो पतला लंबा होता है। गर्मी के दिनों में उपजता है।

**ककनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कंगन"।

**ककनू**—संज्ञा पुं० दे० "कुकनू"।

**ककहरा**—संज्ञा पुं० [क + क + ह + रा (प्रत्य०)] 'क' से 'ह' तक वर्ण माला।

**ककही**—संज्ञा स्त्री० दे० "कंघी"।

**ककुद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बैल के कंधे का कूबड़। डिल्ला। २. राज-चिह्न।

**ककुभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्जुन का पेड़। २. एक राग। ३. एक छंद। ४. दिशा।

**ककुभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दिशा।

**ककोड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "खेखसा"।

**ककोरना**—क्रि० स० [?] १. खरोचना। २. माड़ना। ३. सिकोड़ना।

**कक्कड़**—संज्ञा पुं० [सं० कर्कर] सूखी या सेंकी हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम पर रखकर पीते हैं। खत्रियों की एक उपजाति।

**कक्का**—संज्ञा पुं० [सं० केकय] केकय देश।

संज्ञा पुं० [सं०] नगाड़ा। दुंदुभी।

संज्ञा पुं० दे० "काका"।

**कक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काँख। बगल। २. काछ। कछौटा। लाँग। ३. कछार। कच्छ। ४. कास। ५. जंगल। ६. सूखी घास। ७. सूखा वन। ८. भूमि। ९. घर। कमरा। कोठरी। १०. पाप। दोष। ११. काँख का फोड़ा। कखरवार। १२. दर्जा। श्रेणी। १३. सेना के अगल बगल का भाग। १४. कमरबंद। पटुका।

**कक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिधि। २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३. तुलना। समता। बराबरी। ४. श्रेणी। दर्जा। ५. ड्योढ़ी। देहली। ६. काँख। ७. कखवार। फोड़ा। ८. किसी घर की दीवार या पाख। ९. काँछ। कछौटा।

**कखौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काँख] १. दे० "काँख"। २. काँख का फोड़ा।

**कगर**—संज्ञा पुं० [सं० क = जल + अग्र] १. कुछ ऊँचा किनारा। २. बाढ़। औंठ। बारी। ३. मेंड़। डाँड़। ४. छत या छाजन के नीचे दीवार में रीढ़-सी उभड़ी हुई लकीर। कार्निस। कँगनी।

क्रि० वि० १. किनारे पर। २. समीप।

**कगरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कगार"।

**कगार**—संज्ञा पुं० [हिं० कगर] १. ऊँचा किनारा। २. नदी का करारा। ३. टीला।

**कच**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाल। २. सूखा। फोड़ा या जख्म। पपड़ी। ३. झुंड। ४. बादल। ५. बृहस्पति का पुत्र।

संज्ञा पुं० [अनु०] १. धँसने या चुभने का शब्द। २. कुचले जाने का शब्द।

वि० 'कच्चा' का अल्पा० रूप जिसका व्यवहार समास में होता है, जैसे, कचलहू।

**कचका**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कच] वह चोट जो दबने से लगे। कुचल जाने की चोट।

**कचकच**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद। झकझक। किचकिच।

**कचकचाना**—क्रि० अ० [अनु० कचकच] १. कचकच शब्द करना। २. दाँत पीसना।

**कचकड़ा**—संज्ञा पुं० रासायनिक विधि से कई वस्तुओं से मिलाकर बनायी एक हल्की वस्तु जिससे खिलौना, गिलास, तश्तरी आदि बनाते हैं।

**कचकोल**—संज्ञा पुं० [फा० कशकोल] दरियाई नारियल का भिक्षापात्र। कपाल।

**कचदिला**—वि० [हिं० कच्चा + फा० दिल] कच्चे दिल का। जिसे किसी प्रकार के कष्ट, पीड़ा आदि सहने का साहस न हो।

**कचनार**—संज्ञा पुं० [सं० कांचनार] एक छोटा पेड़ जिसमें सुंदर फूल लगते हैं।

**कचपच**—संज्ञा पुं० [अनु०] १.

थोड़े से स्थान में बहुत सी चीजों या लोगों का भर जाना। गिचपिच। २. दे॰ "कचकच"।

**कचपचिया, कचपची**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कचरच ] १. कृत्तिका नक्षत्र। २. चमकीले बुंदे जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती है।

**कचपेंदिया**—वि॰ [ हिं॰ कच्चा + पेंदी ] १. पेंदी का कमजोर। २. अस्थिर विचार का। बात का कच्चा। ओछा।

**कचर-कचर**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] १. कच्चे फल के खाने का शब्द। २. बकवाद।

**कचरकूट**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कचरना + कूटना ] १ खूब पीटना और लतियाना। मारकूट।

†२. खूब पेट भर भोजन। इच्छा भोजन।

**कचरना***†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ कच्चरण ] १. पैर से कुचलना। रौंदना। २. खूब खाना।

**कचरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कच्चा ] १. कच्चा खरबूजा। २. फूट का कच्चा फल। ककड़ी। ३. कूड़ा-करकट। रद्दी चीज। ४. उरद या चने की पीठी। ५. समुद्र का सेवार। ६. कतवार।

**कचरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कच्चा ] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल खाये जाते हैं। पेहँटा। २. कचरी या कच्चे पेहँटे के सुखाए हुए टुकड़े। ३ कचरी के फल के तले हुए टुकड़े। ४ काटकर सुखाए हुए फल मूल आदि जो तरकारी के लिये रखे जाते हैं। ५. छिलकेदार दाल।

**कचलोंदा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कच्चा + लोंदा ] कच्चे आटे का पेड़ा। लोई।

**कचलोन**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ काँच + लोन ] एक प्रकार का लवण जो काँच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बनता है।

**कचलोहू**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कच्चा + लोहू ] वह पनछा या पानी जो खुले जख्म से थोड़ा थोड़ा निकलता है। रस धातु।

**कचहरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कचकच = वाद-विवाद + हरी (प्रत्य॰) ] १ गोष्ठी। जमावड़ा। २ दरबार। राजसभा। ३ न्यायालय। अदालत। ४. दफ्तर।

**कचाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कच्चा + ई (प्रत्य॰) ] १. कच्चापन। २. नातजुर्बेकारी।

**कचाना**†—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ कच्चा ] १. पीछे हटना। हिम्मत हारना। २ डरना।

**कचायँध**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कच्चा + गंध ] कच्चेपन की महक।

**कचारना**†—क्रि॰ स॰ [हिं॰ पछारना] कपड़ा धोना।

**कचालू**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कच्चा + आलू ] १ एक प्रकार की अरुई। बंडा। २. उबाले आलू तथा खटाई की बनी चाट।

**कचिया**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "काचलवण"।

**कचियाना**†—क्रि॰ अ॰ दे॰ "कचाना"। क्रि॰ स॰ 'कचना' का स॰ रूप।

**कचोची***—संज्ञा स्त्री॰ [अनु॰ कच = कूचने का शब्द ] जबड़ा। दाढ़।

**मुहा॰**—कचोची बँधना=दाँत बैठना। (मरने का समय)

**कचुल्ला**†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कटोरा"।

**कचूमर**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ कुचलना ] १. कुचलकर बनाया हुआ अचार। कुचला। २. कुचली हुई वस्तु।

**मुहा॰**—कचूमर करना या निकालना= १. खूब कूटना। चूर चूर करना। कुचलना। २. नष्ट करना। खूब पीटना।

**कचूर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ कर्चूर] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर की सी कड़ी महँक होती है। नर-कचूर।

**कचोटना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ कोंचना ] मन में पीड़ा अनुभव करना।

**कचोना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ कच= धँसाने का शब्द ] चुभाना। धँसाना।

**कचोरा***†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ काँधा+ ओरा ( प्रत्य॰ ) ] [ स्त्री॰ कचोरी ] कटोरा। प्याला।

**कचौड़ी, कचौरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कचरी ] एक प्रकार की पूरी जिसके भीतर उरद आदि की पीठी भरी जाती है।

**कच्चा**—वि॰ [ सं॰ कषण ] १. जो पका न हो। हरा और बिना रस का। अपक्व। २. जो आँच पर पका न हो। जैसे कच्चा घड़ा। ३. जो पुष्ट न हो। अपरिपुष्ट। ४. जिसके तैयार होने में कसर हो। ५. अदृढ़। कमजोर।

**मुहा॰**—कच्चा जी या दिल= विचलित होनेवाला चित्त। धैर्यच्युत होनेवाला चित्त। कच्चा करना=डराना। भयभीत करना।

६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। बे-ठीक।

**मुहा॰**—कच्चा करना =१ अप्रामाणिक ठहराना। झूठा साबित करना। २. लज्जित करना। शरमाना। ३. पक्की सिलाई करने के पहले कपड़े पर टाका लगाना। कच्चा पड़ना = १. अप्रामाणिक या झूठा ठहरना। २. सिटपिटाना। संकुचित होना। कच्ची पक्की=भली बुरी। उलटी-सीधी। दुर्वचन। गाली। कच्ची बात=अश्लील बात। लज्जाजनक बात।

७. जो प्रमाणिक तौल या माप से

कम हो। जैसे, कच्चा सेर। ८.कच्ची या गीली मिट्टी का बना हुआ। ६. अप रिपक्व। अपटु। अनाड़ी।

संज्ञा पुं० १. वह दूर दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिस पर दरजी बखिया करते हैं।२. ढाँचा।खाका।ढड्ढा।३ मसविदा। ४. जबड़ा। दाढ़।५ बहुत छोटा ताँबे का सिक्का जिसका चलन सब जगह न हो। कच्चा पैसा।

**कच्चा चिट्ठा** सज्ञा पु०[हिं० कच्चा+ चिट्ठा।१ वह वृत्तांत जो ज्यों क त्यों कहा जाय। २ गुप्त भेद। रहस्य।

**कच्चा माल**—संज्ञा पु० [ हिं० कच्चा+माल ] वह द्रव्य जिसमें व्यवहार की चीजें बनती हों। सामग्री। जैसे, रूई, तिल।

**कच्चा हाथ**—संज्ञा पुं० वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। अनभ्यस्त हाथ।

**कच्ची**—वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग।

**कच्ची चीनी**—सज्ञा स्त्री० [ हिं० कच्ची+चीनी ] वह चीनी जो खूब साफ न की गई हो।

**कच्ची बही**—सज्ञा स्त्री० [ हिं० कच्ची + बही ] वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।

**कच्ची रसोई**—सज्ञा स्त्री० [हिं० कच्ची + रसोई] केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। अन्न जो दूध या घी में न पकाया गया हो। जैसे, रोटी, दाल, भात।

**कच्चीसड़क**—सज्ञा स्त्री० [ हिं० कच्ची + सड़क ] वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो।

**कच्ची सिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कच्ची + सिलाई ] दूर दूर पर पड़ा हुआ डोभ या टाका और लंगर। कोका।

**कच्चू**—संज्ञा पुं० [ सं० कचु ] १. अरुई। घुइयां। २ बंडा।

**कच्चे पक्के दिन**—सज्ञा पुं० १. चार या पांच महीने का गर्भ-काल। २ दो ऋतुओं की संधि के दिन।

**कच्चे बच्चे**—सज्ञा पु० [ हिं० कच्चा+ बच्चा ] बहुत छोटे छोटे बच्चे। बहुत से लड़के-बाले।

**कच्छ**—सज्ञा पुं० [ स० ] १ जलप्राय देश। अनूप देश। २ नदी आदि के किनारे की भूमि। कछार। ३ छप्पय का एक भेद।

[ वि० कच्छी ] ४ गुजरात के समीप एक प्रदेश। ५ इस देश का घोड़ा।

सज्ञा पु० [सं० कक्ष] धोती की लाँग।

*सज्ञा पुं० [ स० कच्छप ] कछुआ।

**कच्छप**-संज्ञा पु० [ स० ] [ स्त्री० कच्छपी ] १ कछुआ। २. विष्णु के २४ अवतारों में से एक। ३. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ४ दोहे का एक भेद।

**कच्छपी**-सज्ञा स्त्री० [स०] १.कच्छप की स्त्री। कछुई। २ सरस्वती की वीणा।

**कच्छा**—सज्ञा पुं० [ सं० कच्छ ] १. दो पतवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं। २ कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा बेड़ा।

**कच्छी**—वि० [ हिं० कच्छ ] १ कच्छ देश क । २.कच्छ देश में उत्पन्न। सज्ञा पु० [ हिं० कच्छ ] घोड़े की एक जाति।

**कच्छू**†—सज्ञा पु० [कच्छप ] कछुआ।

**कछनी**—सज्ञा स्त्री० [ हिं० काछना ]१. घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती। २ छोटी धोती। ३ वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

**कछवाहा**—संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] राजपूतों की एक जाति।

**कछान, कछाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० काछना ] धोती पहनने का वह प्रकार जिसमें वह घुटनों के ऊपर चढ़ाकर कसी जाती है।

**कछार**—संज्ञा पुं० [ सं० कच्छ ] समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि।

**कछु***†—वि० दे० "कुछ"।

**कछुआ**—सज्ञा पुं० [ सं० कच्छप ] [ स्त्री० कछुई ] एक जल जंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

**कछुक*** —वि० [हिं० कछु+एक] कुछ।

**कछोटा, कछौटा**—सज्ञा पुं० [ हिं० काछ ] [स्त्री० अल्पा० कछोटी ] १. स्त्रियों के धोती पहनने का वह ढग जिसमें पीछे लाँग खोंसी जाती है। २. कछनी।

**कज**—सज्ञा पु० [फा० ] १. टेढ़ापन। २ ऐब।

**कजरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० काजल ] १. दे० "काजल"। २ काली आँखोंवाला बैल।

**कजराई*** सज्ञा स्त्री० [ हिं० काजल ] कालापन।

**कजरारा**—वि० [ हिं० काजर + आरा (प्रत्य० ) ] [स्त्री० कजरारी] १ काजल वाला। जिसमें काजल लगा हो। अंजन युक्त। २ काजल के समान काला।

**कजरी**—सज्ञा स्त्री० दे० "कजली"।

**कजरौटा**—सज्ञा पु० दे० "कजलौटा"।

**कजलाना**—क्रि० अ० [ हिं० काजल ] १ काला पड़ना। २ आग का बुझना। क्रि० स० काजल लगाना। आँजना।

**कजली**—सज्ञा स्त्री० [ हिं० काजल] १. कालिख। २. एक साथ पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी। ३. रस फूँकने

में धातु का वह अंश जो आँच से ऊपर चढ़कर पात्र में लग जाता है। ४. धान की एक जाति। ५.वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो। ६. एक बरसाती त्योहार। ७ एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

**कजलौटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काजल+ औटा (प्रत्य०) ] [स्त्री० अल्पा० कजलौटी ] काजल रखने की लोहे की डंडीदार डिबिया।

**कजा**—संज्ञा स्त्री० [अ०] मौत। मृत्यु।

**कजाक***—संज्ञा पुं० [ तु० ] लुटेरा। डाकू।

**कजाकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. लुटेरापन। लूटमार। २ छल-कपट। धोखेबाजी।

**कजावा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] ऊँट की काठी।

**कजिया**—संज्ञा पुं० [ अ० ] झगड़ा। लड़ाई।

**कजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. टेढ़ापन। टेढ़ाई। २. दोष। ऐब। कसर।

**कज्जल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कज्जलित, भाव० कज्जलता] १. अंजन। काजल। २. सुरमा। ३. कालिख। ४ बादल। ५. एक छंद।

**कज्जाक**—संज्ञा पुं० दे० "कजाक"।

**कट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हाथी का गंडस्थल। २. गंडस्थल। ३ नरसल। नरकट। ४. नरकट की चटाई। दरमा। ५. टट्टी। ६ खस, सरकंडा आदि घास। ७. शव। लाश। ८. अरथी। ९. श्मशान।

संज्ञा पुं० [ हिं० कटना ] १. एक प्रकार का काला रंग। २. 'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे, कटखना कुत्ता।

**कटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेना। फौज। २. राज-शिविर। ३. कंकण। कड़ा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. नितंब। चूतड़। ६. घास-फूस की चटाई। गोंदरी। सथरी। ७. हाथी के दाँतों पर जड़े हुए पीतल के बंद या सामी। ८. समूह।

**कटकई***—संज्ञा स्त्री० [सं० कटक + ई (प्रत्य०) ] कटक। फौज। लश्कर।

**कटकट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १ दाँतों के बजने का शब्द। २ लड़ाई-झगड़ा।

**कटकटाना**—क्रि० अ० [ हिं० कट-कट ] दाँत पीसना।

**कटकाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कटक + आई (प्रत्य०) ] सेना। फौज।

**कटखना**—वि० [ हिं० काटना + खाना] काट खानेवाला। दाँत से काटनेवाला। संज्ञा पुं० युक्ति। चाल। हथकंडा।

**कटघरा**—संज्ञा पुं० [हिं० काठ + घर] १ काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो। २ बड़ा भारी पिंजड़ा। ३ जेल।

**कटजीरा**†—संज्ञा पुं० दे० "काला जीरा"।

**कटड़ा** संज्ञा पुं० [ सं० कटार ] भैंस का पँड़वा।

**कटती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कटना ] बिक्री।

**कटना**—क्रि० अ० [ सं० कर्तन ] १. किसी धारदार चीज की दाब से दो टुकड़े होना।

**मुहा०**—कटती कहना = मर्मभेदी बात कहना। कट गये = लज्जित हो गये।

२ पिसना। महीन चूर होना। ३ किसी धारदार चीज़ से घाव होना। ४. किसी भाग का अलग हो जाना। ५. लड़ाई में मरना। ६ कतरा जाना। ब्योंता जाना। ७. छीजना। नष्ट होना। ८. समय का बीतना। ९. रास्ता खतम होना। १०. धोखा देकर साथ छोड़ देना। खिसक जाना। ११. लज्जित होना। झेंपना। १२. जलना। डाह करना। १३. मोहित होना। आसक्त होना। १४ बिकना। खपना। १५. प्राप्ति होना। आय होना। जैसे—माल कटना। १६ कलम की लकीर से किसी लिखावट का रद होना। मिटना। खारिज होना। १७. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगना कि शेष कुछ न बचे।

**कटनांस**†—संज्ञा पुं० [ देश०, या सं० कीट + नाश ] नीलकंठ। चाष पक्षी।

**कटनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कटना ] १ काट। २ प्रीति। आसक्ति। रीझ।

**कटनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कटना ] १. काटने का औज़ार। २. काटने का काम।

**कटर**†—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. एक प्रकार की बड़ी नाव जो चरखियों के सहारे चलती है। २ पनसुइया। छोटी नाव।

**कटरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कटहरा ] छोटा चौकोर बाजार।

संज्ञा पुं० [ सं० कटाह ] भैंस का नर बच्चा।

**कटवाँ**—वि० [ हिं० कटना + वाँ (प्रत्य०) ] जो काट कर बना हो। कटा हुआ।

**कटसरैया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कटसारिका ] अड़ूसे की तरह का एक कँटीदार पौधा।

**कटहर***—संज्ञा पुं० दे० "कटहल"।

**कटहरा**—संज्ञा पुं० दे० "कटघरा"।

**कटहल**—संज्ञा पुं० [ सं० कंटकिफल ] १. एक सदाबहार घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं। फल का छिलका मोटा और खुरखुरा होता है। २. इस पेड़ का

फल जिसकी तरकारी बनती है, पकने पर लोग खाते भी हैं।

**कटहा***—वि० [ हिं० काटना + हा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० कटही ] काट खानेवाला।

**कटा***—संज्ञा पुं० [ हिं० काटना ] मार-काट। वध। हत्या। कत्लआम।

**कटाइक***—वि० दे० "कटायक"।

**कटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काटना ] १. काटने का काम। २. फसल काटने का काम। ३ फसल काटने की मजदूरी।

**कटाकट**—संज्ञा पुं० [ हिं० कट ] १. कटकट शब्द। २ लड़ाई।
क्रि० वि० कटकट शब्द के साथ।

**कटाकटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काटना ] १. मार-काट। २. घोर वैमनस्य।

**कटाक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तिरछी चितवन। तिरछी नजर। २. व्यंग्य। आक्षेप।

**कटाग्नि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] घास-फूस की आग जिसमें लोग जल मरते थे।

**कटाछनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कटाकटी"।

**कटान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काटना ] काटने की क्रिया, भाव या ढंग। कटाव।

**कटाना**—क्रि० स० [ हिं० काटना का प्रे० रूप ] काटने का काम दूसरे से कराना।

**कटायक***—वि० [हिं० काटना] काटनेवाला कटार।

**कटार, कटारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कट्टार] [ स्त्री० अल्पा० कटारी ] एक बालिश्त का छोटा तिकोना और दुधारा हथियार।

**कटाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० काटना ] १. काट। काट-छाँट। कतर ब्योंत। २. काटकर बनाए हुए बेल-बूटे।

**कटावदार**—वि० [ हिं० कटाव + दार (प्रत्य०) ] जिसपर खोद या काटकर चित्र और बेल बूटे बनाए गए हों।

**कटावन**†—संज्ञा पुं० [ हिं० कटना ] १. कटाई करने का काम। २. किसी वस्तु का कटा हुआ टुकड़ा। कतरन।

**कटास**—संज्ञा पुं० [ हिं० काटना ] एक प्रकार का बनबिलाव। कटार। खीखर।

**कटाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कड़ाह। बड़ी कड़ाही। २. कछुए की खोपड़ी। ३. कुआँ। ४. नरक। ५ झोंपड़ी। ६. भैंस का बच्चा। ७ ढूह। ऊँचा टीला।

**कटि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे पड़ता है। कमर। २ हाथी का गंडस्थल।

**कटिजेब**—संज्ञा स्त्री० [ कटि + हिं० जेब = रस्सी ] किंकिणी। करधनी।

**कटिबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमरबंद। २ गरमी-सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक।

**कटिबद्ध**—वि० [ सं० ] १. कमर बाँधे हुए। २. तैयार। तत्पर। उद्यत।

**कटियाना***—क्रि० अ० [ हिं० काँटा ] रोओं का खड़ा हो जाना। कंटकित होना।

**कटिसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमर में पहनने का डोरा। मेखला। सूत की करधनी।

**कटीला**—वि० [ हिं० काटना ] [ स्त्री० कटीली ] १ काट करनेवाला। तीक्ष्ण। चोखा। २. बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ३. मोहित करनेवाला। ४. नोक-झोंक का।
वि० [ हिं० काँटा ] १. काँटेदार। काँटों से भरा हुआ। २. नुकीला। तेज।

**कटु, कटुक**—वि० [ सं० ] १. छः रसों में से एक। चरपरा। कड़ुआ। २. बुरा लगनेवाला। अनिष्ट। ३ काव्य में रस के विरुद्ध वर्णों की योजना।

**कटुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कड़ुवापन।

**कटुत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कड़ुवापन।

**कटूक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अप्रिय बातें।

**कटेरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काँटा ] भटकटैया।

**कटैया**†—संज्ञा पुं० [ हिं० काटना ] काटनेवाला। जो काट डाले।

**कटोरदान**—संज्ञा पुं० [ हिं० कटोरा + दान (प्रत्य०) ] पीतल का एक ढक्कनदार बरतन जिसमें तैयार भोजन आदि रखते हैं।

**कटोरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काँसा + ओरा (प्रत्य०) = कँसोरा ] खुलेमुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेंदी का एक छोटा बरतन।

**कटोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कटोरा का अल्पा० ] १. छोटा कटोरा। बेलिया। प्याली। २ अँगिया का वह जुड़ा हुआ भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं। ३. तलवार की मूठ के ऊपर का गोल भाग। ४ फूल के सींके का चौड़ा सिरा जिसपर दल रहते हैं।

**कटौती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कटना ] किसी रकम को देते हुए उसमें से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

**कट्टर**—वि० [ हिं० काटना ] १. काट खानेवाला। कटहा। २. अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहनेवाला। अंध-विश्वासी। ३. हठी। दुराग्रही। दृढ़।

**कट्टहा**—संज्ञा पुं० [ सं० कट = शव + हा (प्रत्य०) ] महाब्राह्मण। कट्टिया। महापात्र।

**कट्टा**—वि० [ हिं० काठ ] १. मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २. बलवान्। बली।
संज्ञा पुं० जबड़ा। कल्ला।
**मुहा०**—कट्टे लगाना = किसी दूसरे के कारण अपनी वस्तु का नष्ट होना या उस दूसरे के हाथ लगना।

**कट्ठा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काठ ] १ जमीन की एक नाप जो पाँच हाथ चार अंगुल की होती है। २ मोटा या खराब गेहूँ।

**कठ**—संज्ञा पु० [ स० ] १ एक ऋषि। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्। ३ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।
संज्ञा पु० [ स० काष्ठ ] १. ( केवल समस्त पदों मे ) काठ। लकड़ी। जैसे, कठपुतली, कठकीली। २ ( समस्त पदों में फल आदि के लिये ) जंगली। निकृष्ट जाति का जैसे, कठकेला। कठ-जामुन।

**कठकेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० काठ + केला ] एक प्रकार का केला जिसका फल रूखा और फीका होता है।

**कठताल**—संज्ञा पु० दे० "करताल"।

**कठघरा**—संज्ञा पु० दे० "कटघरा"।

**कठपुतली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काठ + पुतली ] १ काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार द्वारा नचाते हैं। २ वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे।

**कठड़ा**—संज्ञा पु० [ हिं० कठघरा ] १ कठघरा। कठहरा। २. काठ का बड़ा संदूक। ३ काठ का बड़ा बरतन। कठौता।

**कठप्रेम**—संज्ञा पु० [ हिं० कठ + प्रेम ] वह प्रेम जो प्रिय के अप्रसन्न होने पर भी किया जाता है।

**कठफोड़वा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काठ + फोड़ना ] खाकी रंग की एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है।

**कठबंधन**—संज्ञा पु० [ हिं० काठ + बंधन ] काठ की वह बेड़ी जो हाथी के पैर में डाली जाती है। अँदुआ।

**कठबाप**—संज्ञा पु० [ हिं० काठ + बाप ] सौतेला बाप।

**कठमलिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० काठ + माला ] १ काठ की माला या कंठी पहननेवाला वैष्णव। २ झूठ-मूठ कंठी पहननेवाला। बनावटी साधु। झूठा संत।

**कठमस्त**—वि० [ हिं० कठ + फ़ा० मस्त ] १ सड मुसंड। २ व्यभिचारी।

**कठमस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कठ-मस्त ] मुसंडापन। बदमस्ती। शरारत।

**कठरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काठ + करा ] १ दे० "कठहरा" या "कठघरा"। २ काठ का संदूक। ३ काठ का बरतन। कठौता।

**कठला**—संज्ञा पु० [ स० कंठ + ला ( प्रत्य० ) ] बच्चों के पहनने का एक प्रकार की माला।

**कठवत**—संज्ञा स्त्री० दे० "कठौता"।

**कठवल्ली**—संज्ञा पु० [ स० ] कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा का एक उपनिषद्।

**कठिन**—वि० [ स० ] १ कड़ा। सख्त। कठोर। २ मुश्किल। दुष्कर। दुःसाध्य।

**कठिनता**—संज्ञा स्त्री० [ स० कठिन ] १. कठोरता। कड़ाई। कड़ापन। सख्ती। २. मुश्किल। असाध्यता। ३ निर्दयता। बेरहमी। ४ मजबूती। दृढ़ता।

**कठिनाई**—संज्ञा स्त्री० [ स० कठिन + आई (प्रत्य०) ] १ कठोरता। सख्ती। २ मुश्किल। क्लिष्टता। ३ असाध्यता।

**कठिया**—वि० [ हिं० काठ ] जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो। जैसे, कठिया बादाम।

**कठियाना**—क्रि० अ० [ हिं० काठ + आना ( प्रत्य० ) ] सूखकर कड़ा हो जाना।

**कठिहार**—वि० [ हिं० काढना ] १. काढने या निकालनेवाला। २ उद्धार करनेवाला।

**कठुवाना**—क्रि० अ० [ हिं० काठ + आना ( प्रत्य० ) ] १ सूखकर काठ की तरह कड़ा होना। २. ठंढक से हाथ पैर ठिठुरना।

**कठूमर**—संज्ञा पु० [ हिं० काठ + ऊमर ] जंगली गूलर।

**कठेठ, कठेठा**—वि० [ स० काठ + एठ ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० कठेठी ] १ कड़ा। कठोर। कठिन। दृढ। सख्त। २ कटु। अप्रिय। अधिक बलवाला। तगड़ा।

**कठोर**—वि० [ स० ] [ स्त्री० कठोरा ] १ कठिन। सख्त। कड़ा। २ निर्दय। निष्ठुर। निठुर। बेरहम।

**कठोरता**—संज्ञा स्त्री० [ स० ] १. कड़ाई। सख्ती। २ निर्दयता। बेरहमी।

**कठोरपन**—संज्ञा पु० [ हिं० कठोर + पन ( प्रत्य० ) ] १. कठोरता। कड़ापन। सख्ती। २ निर्दयता। निष्ठुरता।

**कठौता**—संज्ञा पु० [ हिं० कठौत ] काठ का बड़ा और चौड़ा बरतन।

**कड़क**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कड़कड़ ] १ कड़कड़ाहट का शब्द। २ तड़प। डपट। ३ गाज। वज्र। ४ घोड़े की सरपट चाल। ५ कसक। दर्द जो रुक रुककर हो। ६ रुक रुककर और जलन के साथ पेशाब उतरने का रोग।

**कड़कड़**—संज्ञा पु० [ अनु० ] १ दो वस्तुओं के आघात का कठोर शब्द। घोर शब्द। २ कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।

**कड़कड़ाता**—वि० [ हिं० कड़कड़ ] [ स्त्री० कड़कड़ाती ] १ कड़कड़ शब्द करता हुआ। २ कड़ाके का। बहुत तेज। घोर। प्रचंड।

**कड़कड़ाना**—क्रि० अ० [सं० कड़] १. कड़कड़ शब्द होना। २. 'कड़कड़' शब्द के साथ टूटना। ३ घी, तेल आदि का आँच पर बहुत तपकर कड़-कड़ बोलना।

क्रि० स० १. कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना। २. घी, तेल आदि को खूब तपाना।

**कड़कड़ाहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़कड़] कड़कड़ शब्द। गरज। घोर नाद।

**कड़कना**—क्रि० अ० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ शब्द होना। २. चिटकने का शब्द होना। ३ दपेटना। डाँटना। ४. चिटकना। फटना। दरकना।

**यौ०**—बिजली की कड़क।

**कड़कनाल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क + नाल] चौड़े मुँह की तोप।

**कड़क बिजली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क + बिजली] १ कान का एक गहना। चोंदवाला। २ तोड़ेदार बंदूक।

**कड़खा**—संज्ञा पु० [हिं० कड़क] लड़ाई के समय गाया जानेवाला गीत।

**कड़खैत**—संज्ञा पु० [हिं० कड़खा + ऐत (प्रत्य०)] १ कड़खा गानेवाला। २ भाट। चारण।

**कड़बड़ा**—वि० [सं० कर्बर = कबरा] जिसके कुछ बाल सफेद और कुछ बाल काले हों।

**कड़बी**—संज्ञा स्त्री० [सं० काड,हिं० कॉड़ा] ज्वार का पेड़ जिसके भुट्टे काट लिये गए हों और जो चारे के लिये छोड़े हों।

**कड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० कटक] [स्त्री० कड़ी] १. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा। २ लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा। ३. एक प्रकार का कबूतर।

वि० [सं० कड्ड] [स्त्री० कड़ी] १ जो दबाने से जल्दी न दबे। कठोर। कठिन। सख्त। ठोस। २. जिसकी प्रकृति कोमल न हो। रूखा। ३ उग्र। दृढ़। ४. कसा हुआ। चुस्त। ५. जो गीला न हो। कम गीला। ६ हृष्ट पुष्ट। तगड़ा। दृढ़। ७ जोर का। प्रचंड। तेज। जैसे—कड़ी चोट। ८. सहनेवाला। झेलनेवाला। धीर। ९. दुष्कर। दुःसाध्य। मुश्किल। १० तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ११. असह्य। बुरा लगनेवाला। १२ कर्कश।

**कड़ाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा का भाव०] कठोरता। कड़ापन। सख्ती।

**कड़ाका**—संज्ञा पु० [हिं० कड़कड़] १ किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।

**मुहा०**—कड़ाके का = जोर का। तेज। २ उपवास। लंघन। फाका।

**कड़ाबीन**—संज्ञा स्त्री० [तु० कराबीन] १ चौड़े मुँह की बंदूक। २. छोटी बंदूक।

**कड़ाहा**—संज्ञा पुं० [सं० कटाह, प्रा० कड़ाह] [स्त्री० अल्पा० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।

**कड़ाही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ाह] छोटा कड़ाहा।

**कड़ियल**†—वि० [हिं० कड़ा] कड़ा।

**कड़िहार**—वि० दे० "कढ़िहार"।

**कड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा] १. जंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। २ छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने या लटकाने के लिये लगाया जाय। ३ लगाम। ४, गीत का एक पद। धरन।

संज्ञा स्त्री० [सं० काड] छोटी धरन।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ा = कठिन] अड़स। संकट। दुःख। मुसीबत।

**कड़ीदार**—वि० [हिं० कड़ी + दार (प्रत्य०)] जिसमें कड़ी हो। छल्लेदार।

**कड़ुआ**—वि० [सं० कटुक] [स्त्री० कड़ुई] १. स्वाद में उग्र और अप्रिय। कटु। जैसे—नीम, चिरायता आदि का। २ तीखी प्रकृति का। गुस्सैल। अक्खड़। ३. अप्रिय। जो भला न मालूम हो।

**मुहा०**—कड़ुआ करना = १ धन बिगाड़ना। रुपये लगाना। २ कुछ दाम खड़ा करना। कड़ुवा मुँह = वह मुँह जिससे कटु शब्द निकलें। कड़ुआ होना = बुरा बनना।

४ विकट। टेढ़ा। कठिन।

**मुहा०**—कड़ुए कसैले दिन = १. बुरे दिन। कष्ट के दिन। २ दो-रसे दिन जिनमें रोग फैलता है। कड़ुआ घूँट = कठिन काम।

**कड़ुआ तेल**—संज्ञा पु० [हिं० कड़ुआ + तेल] सरसों का तेल जिसमें बहुत झाल होती है।

**कड़ुआना**—क्रि० अ० [हिं० कड़ुआ] १ कड़ुआ लगना। २ बिगड़ना। खीझना। ३ आँख में किरकिरी पड़ने का-सा दर्द होना।

**कड़ुआहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़ुआ + हट (प्रत्य०)] कड़ुआ-पन।

**कढ़ना**—क्रि० अ० [सं० कर्षण] १. निकलना। बाहर आना। खिंचना। २ उदय होना। ३ बढ़ जाना। ४. (प्रतिद्वंद्विता में) आगे निकल जाना। ५ स्त्री का उपपति के साथ घर छोड़कर चला जाना।

क्रि० अ० [हिं० गाढ़ा] दूध का औटाया जाकर गाढ़ा होना।

**कढ़राना, कढ़लाना**‡—क्रि० स० [सं० काढ़ना + लाना] घसीटना। घसीटकर बाहर करना।

**कढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "कढ़ाही"।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० काढ़ना ] कढ़ने की क्रिया ।

**कढ़ाना,कढ़वाना**—क्रि० स० [ हिं० काढ़ना का प्रे० रूप ] निकलवाना । बाहर कराना ।

**कढ़ाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० काढ़ना ] १. बूटे कसीदे का काम । २. बेल-बूटों का उभार ।

**कढ़िराना***†—क्रि०स०दे०"कढ़राना" ।

**कढ़िहार**—वि० [ हिं० काढ़ना ] १. काढ़ने या निकालनेवाला । २. उद्धार करनेवाला ।

**कढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कढ़ना = गाढ़ा होना ] एक प्रकार का सालन जो पानी में घोले हुए बेसन को आँच पर गाढ़ा करने से बनता है ।

**मुहा०**—कढ़ी का सा उबाल = शीघ्र ही घट जानेवाला जोश ।

**कढ़ैया†**—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही" ।

†संज्ञा पुं० [ हिं० काढ़ना ] १. निकालनेवाला । २. उद्धार करनेवाला । बचानेवाला ।

**कढ़ोरना***—क्रि० स० [ सं० कर्षण ] खींचना । घसीटना ।

**कण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किनका । रवा । अत्यंत छोटा टुकड़ा । २ चावल का बारीक टुकड़ा । कना । ३. अन्न के कुछ दाने । ४. भिक्षा ।

**कणाद**—संज्ञा पुं०[सं०] वैशेषिकशास्त्र के रचयिता एक मुनि । उलूक मुनि ।

**कणिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किनका । टुकड़ा ।

**कण्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक मंत्रकार ऋषि । २. कश्यप गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने शकुंतला को पाला था ।

**कत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] देशी कलम की नोक की आड़ी काट ।

†*अव्य० [ सं० कुतः पा० कुतो ] क्यों । किस लिये । काहे को ।

**कतई**—अव्य० [ अ० ] बिलकुल । एकदम ।

**कतक***—अव्य० [ सं० कुतः ] किसलिये । क्यों ।

अव्य० [ हिं० कितना + एक ] कितना ।

**कतना**—क्रि० अ० [ हिं० कातना ] काता जाना ।

**कतरन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कतरना ] कपड़े, कागज आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो काँट-छाँट के पीछे बच रहते हैं ।

**कतरना**—क्रि० स० [ सं० कर्त्तन ] कैंची या किसी औजार से काटना ।

**कतरनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कतरना ] १. बाल, कपड़े आदि काटने का एक औजार । कैंची । २. धातुओं की चद्दर आदि काटने का, सड़सी के आकार का, एक औजार । काती ।

**कतर-ब्योंत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कतरना + ब्योंत ] १. काट-छाँट । २. उलट फेर । इधर का उधर करना । ३. उधेड़बुन । सोचविचार । ४ दूसरे के सौदे-सुलुफ में से कुछ रकम अपने लिये निकाल लेना । ५. युक्ति । जोड़ तोड़ । ढंग । ढर्रा ।

**कतरवाना**—क्रि०स०दे०"कतराना" ।

**कतरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कतरना ] कटा हुआ टुकड़ा । खंड ।

संज्ञा पुं० [ अ० ] बूँद । बिंदु ।

**कतराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कतराना ] १. कतरने का काम । २ कतरने की मजदूरी ।

**कतराना**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कतरना ] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना ।

क्रि० स० [ हिं० कतरना का प्रे० रूप ] कटाना । कटवाना । छँटवाना ।

**कतरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्त्तरी = चक्र ] १. कोल्हू का पाट जिसपर आदमी बैठकर बैलों को हाँकता है । कातर । २. हाथ में पहनने का पीतल का एक जेवर ।

**कतल**—संज्ञा पु० [ अ० कत्ल ] वध । हत्या ।

**कतलबाज**—संज्ञा पु० [ अ० कत्ल + फ़ा० बाज ] वधिक । जल्लाद ।

**कतलाम**—संज्ञा पुं० [ अ० कत्ले-आम ] सर्व-साधारण का वध । सर्व-संहार ।

**कतली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० कतरा ] मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा ।

**कतवाना**—क्रि० स० [ हिं० कातना का प्रे० रूप ] दूसरे से कताने का काम लेना ।

**कतवार**—संज्ञा पु० [ हिं० पतवार = पताई ] कूड़ा-करकट । बेकाम घास-फूस ।

**यौ०**—कतवारखाना = कूड़ा फेंकने की जगह ।

*†संज्ञा पु० [ हिं० कातना ] कातनेवाला ।

**कतहुँ,कतहूँ***†—अव्य० [ हिं० कत + हूँ ] कहीं । किसी स्थान पर । किसी जगह ।

**कता**—संज्ञा स्त्री० [ अ० कतअ ] १. बनावट । आकार । २. ढंग । वजा । ३ कपड़े की काट-छाँट ।

**कताई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कातना ] १. कातने की क्रिया । २ कातने की मजदूरी ।

**कतान**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. अलसी की छाल का बना एक बढ़िया कपड़ा जो पहले बनता था । २ बढ़िया बुनावट का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

**कताना**—क्रि० स० [ हिं० कातना का प्रे० रूप ] किसी अन्य से कताने का

काम कराना।

**कतार**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ पंक्ति। पाँति। श्रेणी। २ समूह। झुंड।

**कतारा**—संज्ञा पुं० [सं० कांतार] [स्त्री० अल्पा० कतारी] लाल रंग का मोटा गन्ना।

**कतारी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कतार"। संज्ञा स्त्री० [हिं० कतारा] कतारे की जाति की छोटी और पतली ईख।

**कति***—वि० [सं०] १ (गिनती में) कितने। २. कितना (तौल या माप में)। ३. कौन। ४. बहुत से। अगणित।

**कतिक***†—वि० [सं० कति + एक] १. कितना। २. बहुत। अनेक।

**कतिपय**—वि० [सं०] १. कितने ही। कई एक। २. कुछ थोड़े से।

**कतीरा**—संज्ञा पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम में आता है।

**कतेक***†—वि० दे० "कितने"।

**कतेब***—संज्ञा पुं० [?] कुरान।

**कतौना**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कातना] १. कातने का काम या मजदूरी। २ कोई काम करने के लिये देर तक बैठे रहना।

**कत्ता**—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तरी] १ बाँस चीरने का एक औजार। बाँका। बाँसा। २. छोटी टेढ़ी तलवार।

**कत्ती**—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्तरी] १. चाकू। छुरी। २ छोटी तलवार। ३. कटारी। पेशकब्ज। ४ सोनारों की कतरनी। ५ वह पगड़ी जो बत्ती के समान बटकर बाँधी जाती है।

**कत्थई**—वि० [हिं० कत्था] खैर के रंग का।

**कत्थक**—संज्ञा पुं० [सं० कथक] एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है।

**कत्था**—संज्ञा पुं० [सं० क्वाथ] १. खैर की लकड़ियों को जलाकर सुखाया काढ़ा जो पान में खाया जाता है। २. खैर का पेड़।

**कत्ल**—संज्ञा पुं० दे० "कतल"।

**कथंचित्**—क्रि० वि० [सं०] शायद।

**कथक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कथा या किस्सा कहनेवाला। २. पुराण बाँचनेवाला। पौराणिक। ३. कत्थक।

**कथकीकर**—संज्ञा पुं० [हिं० कत्था + कीकर] खैर का पेड़।

**कथक्कड़**—संज्ञा पुं० [सं० कथा + कड़ (प्रत्य०)] बहुत कथा कहनेवाला।

**कथन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथना। बखान। २. बात। उक्ति।

**कथना***—क्रि० स० [सं० कथन] १. कहना। बोलना। २ निंदा करना। बुराई करना।

**कथनी***—संज्ञा स्त्री० [सं० कथन + ई (प्रत्य०)] १. बात। कथन। २. हुज्जत। बकवाद।

**कथनीय**—वि० [सं०] [स्त्री० कथनीया] १ कहने योग्य। वर्णनीय। २ निंदनीय। बुरा।

**कथरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कथा + री (प्रत्य०)] पुराने चिथड़ों को जोड़-जाड़कर बनाया हुआ बिछावन। गुदड़ी।

**कथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह जो कहा जाय। बात। २. धर्म-विषयक व्याख्यान। ३ चर्चा। जिक्र। ४. समाचार। हाल। ५. वाद-विवाद। कहा सुनी।

**कथानक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथा। २ छोटी कथा। कहानी।

**कथामुख**—संज्ञा पुं० [सं०] आख्यान या कथा-ग्रंथ की प्रस्तावना।

**कथावस्तु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपन्यास या कहानी का ढाँचा। प्लाट।

**कथा वार्त्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अनेक प्रकार की बात-चीत। २. पौराणिक आख्यान।

**कथित**—वि० [सं०] कहा हुआ।

**कथीर**—संज्ञा पुं० [सं० कस्तीर] राँगा।

**कथील, कथीला**—संज्ञा पुं० दे० "कथीर"।

**कथोद्घात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रस्तावना। कथा-प्रारंभ। २. (नाटक में) सूत्रधार की बात, अथवा उसके मर्म को लेकर पहले पहल पात्र का रंग-भूमि में प्रवेश और अभिनय का आरंभ।

**कथोपकथन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बातचीत। २. वाद-विवाद।

**कथ्य**—वि० [सं०] १. कहने के योग्य। कथनीय। २. साधारण बोल-चाल की भाषा में प्रचलित। ३. जो कहा जाता हो। कहलानेवाला।

**कदंब**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रसिद्ध वृक्ष। कदम। समूह। ढेर। झुंड।

**कद**—संज्ञा स्त्री० [अ० कद] [वि० कदी] १ द्वेष। शत्रुता। २. हठ। जिद।
†अव्य० [सं० कदा] कब। किस समय।

**कद**—संज्ञा पुं० [अ० कद] ऊँचाई (प्राणियों के लिये)

**यौ०**—कद्दे आदम = मानव शरीर के बराबर ऊँचा।

**कदध्व***—संज्ञा पुं० [सं० कदध्वा] खोटा मार्ग। कुपथ। बुरा रास्ता।

**कदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मरण। विनाश। २. मारना। वध। हिंसा। ३ युद्ध। संग्राम। ४. पाप। ५ दुःख।

**कदन्न**—संज्ञा पुं० [सं०] कुत्सित अन्न। बुरा अन्न। मोटा अन्न। जैसे, कोदों।

**कदम**—संज्ञा पुं० [सं० कदंब] १

एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं। २ एक घास।

**कदम**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १ पैर। पाँव।

**मुहा॰**—कदम उठाना = १. तेज चलना। २. उन्नति करना। कदम चूमना = अत्यंत आदर करना। कदम छूना = १. प्रणाम करना। २ शपथ खाना। कदम बढ़ाना या कदम आगे बढ़ाना = १. तेज चलना। २ उन्नति करना। कदम रखना = प्रवेश करना। दाखिल होना। आना।

२ धूल या कीचड़ में बना पैर का चिह्न।

**मुहा॰**—कदम पर कदम रखना = १ ठीक पीछे पीछे चलना। २. अनुकरण करना। ३ चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अंतर। पैंड। पग। फाल। ४ घोड़े की एक चाल जिसमें केवल पैरों में गति होती है और बदन नहीं हिलता।

**कदमबाज**—वि॰ [ अ॰ ] कदम की चाल चलनेवाला। (घोड़ा)।

**कदर**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १ मान। मात्रा। २ मान। प्रतिष्ठा। बड़ाई।

**कदरई***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कादर ] कायरता।

**कदरज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कदर्य ] एक प्रसिद्ध पापी।

वि॰ दे॰ "कदर्य"।

**कदरदान**—वि॰ [ फ़ा॰ ] कदर करनेवाला। गुणग्राही। गुणग्राहक।

**कदरदानी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] गुणग्राहकता।

**कदरमस***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ कदन + हिं॰ मस ( प्रत्य॰ ) ] मार-पीट। लड़ाई।

**कदराई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कादर + ई ( प्रत्य॰ ) ] कायरपन। भीरुता। कायरता।

**कदराना***—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ कादर ] कायर होना। डरना। भयभीत होना।

**कदरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ कद = बुरा + रव = शब्द ] एक पक्षी जो डील-डौल में मैना के बराबर होता है।

**कदर्थ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] निकम्मी वस्तु। कूड़ा करकट।

वि॰ कुत्सित। बुरा।

**कदर्थना**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ कदर्थन ] [ वि॰ कदर्थित ] दुर्गति। दुर्दशा। बुरी दशा।

**कदर्थित**—वि॰ [ सं॰ ] जिसकी दुर्दशा की गई हो। दुर्गति-प्राप्त।

**कदर्य**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा कदर्यता ] कंजूस।

**कदली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १ केला। २ एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज बनाने में काम आती है। ३ एक तरह का हिरन।

**कदा**—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] कब। किस समय।

**मुहा॰**—यदा कदा=कभी कभी। जबतब।

**कदाकार**—वि॰ [ सं॰ ] बुरे आकार का। बदसूरत। बदशक्ल। भद्दा।

**कदाच***—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ कदाचन ] शायद। कदाचित्।

**कदाचार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ कदाचारी ] बुरी चाल। बुरा आचरण। बदचलनी।

**कदाचित्**—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] १. कभी। २ शायद।

**कदापि**—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] कभी। किसी समय भी।

**कदी**—वि॰ [ अ॰ कद ] हठी। जिद्दी।

**कदी**-क्रि॰ वि॰ दे॰ "कधी", "कभी"।

**कदीम**—वि॰ [ अ॰ ] पुराना। प्राचीन।

**कदीमी**—वि॰ [ अ॰ कदीम ] पुराना। बहुत दिनों से चला आता हुआ।

**कदुष्ण**—वि॰ [ सं॰ ] थोड़ा गर्म।

**कदूरत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] रंजिश। मन-मोटाव। कीना।

**कद्दावर**—वि॰ [ फ़ा॰ ] बड़े डील-डौल का।

**कद्दी**—वि॰ दे॰ "कदी"।

**कद्रुज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सर्प। साँप।

**कद्दू**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ कदू ] लौकी। घिया।

**कद्दूकश**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] लोहे, पीतल आदि की छेददार चौकी जिस-पर कद्दू को रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं।

**कद्दूदाना**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] पेट के भीतर के छोटे छोटे सफेद कीड़े जो मल के साथ गिरते हैं।

**कधी**—क्रि॰ वि॰ दे॰ "कभी"।

**कन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कण ] १ बहुत छोटा टुकड़ा। २ अन्न का एक दाना। ३. अनाज के दाने का टुकड़ा। ४ प्रसाद। जूठन। ५ भीख। भिक्षान्न। ६ चावलों की धूल। कना। ७ बालू या रेत के कण। ८ शारीरिक शक्ति।

संज्ञा पुं॰ 'कान' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों में आता है। जैसे-कनपटी।

**कनई**†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ कांड या कंदल ] कनखा। नई शाखा। कल्ला। कोंपल।

†संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कौंदव ] गीली मिट्टी।

**कनउड़***—वि॰ दे॰ "कनौड़ा"।

**कनक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सोना। सुवर्ण। २ धतूरा। ३ पलाश। टेसू। ढाक। ४. नागकेसर। ५ खजूर। ६. छप्पय छंद का एक भेद।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कणिक ] गेहूँ।

**कनककली**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कनक + हिं॰ कली ] कान में पहनने का फूल।

**कनककशिपु**—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

**कनकचंपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कनक + हिं० चंपा ] मध्यम आकार का एक पेड़। कर्णिकार। कनियारी।

**कनकटा**—वि० [ हिं० कान + कटना ] १. जिसका कान कटा हो। बूचा। २. कान काट लेनेवाला।

**कनकना**—वि० [ अनु० ] जरा से आघात से टूटनेवाला। 'चीमड़' का उलटा।

**कनकना**—वि० [ हिं० कनकनाना ] [ स्त्री० कनकनी ] १ जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो। २ चुनचुनानेवाला। ३. अरुचिकर। नागवार। चिड़चिड़ा।

**कनकनाना**—क्रि० अ० [ हिं० काँद, पु० हिं० कान ] [ संज्ञा कनकनाहट ] १. सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के स्पर्श से अंगों में चुनचुनाहट होना। चुनचुनाना। २ चुनचुनाहट या कनकनाहट उत्पन्न करना। गला काटना। ३ अरुचिकर लगना। नागवार मालूम होना।

क्रि० अ० [ हिं० कना ] १. चौकन्ना होना। २. रोमांचित होना।

**कनकनाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कनकनाना ] कनकनाने का भाव। कनकनी।

**कनकफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धतूरे का फल। २ जमालगोटा।

**कनका**—संज्ञा पुं० [ सं० कणिक ] १ अन्न के टूटे फूटे दाने। २ छोटा कण।

**कनकाचल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सोने का पर्वत। २. सुमेरु पर्वत।

**कनकानी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़े की एक जाति।

**कनकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कणिक ] १ चावल के टूटे हुए छोटे टुकड़े। २. छोटा कण।

**कनकूत**—संज्ञा पुं० [ सं० कण + हिं० कूत ] खेत में खड़ी फसल की उपज का अनुमान।

**कनकौवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कना + कौवा ] कागज की बड़ी पतंग। गुड्डी।

**कनखजूरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + खजु = एक कीड़ा ] एक जहरीला छोटा कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं। गोजर।

**कनखा**†—संज्ञा पुं० [ सं० कांडक ] कोपल।

**कनखियाना**—क्रि० स० [ हिं० कनखी ] १ कनखी या तिरछी नजर से देखना। २. आँख से इशारा करना।

**कनखी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोन + आँख ] पुतली को आँख के कोने पर ले जा कर ताकने की मुद्रा। दूसरों की दृष्टि बचाकर देखना। २ आँख का इशारा।

**मुहा०**—कनखी मारना = आँख से इशारा या मना करना।

**कनखैया***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"।

**कनखोदनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कान + खोदनी ] कान की मैल निकालने का सलाई।

**कनगुरिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कानी + अँगुरी ] सबसे छोटी उँगली।

**कनछेदन**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + छेदना ] हिंदुओं का एक संस्कार जिसमे बच्चों का कान छेदा जाता है। कर्णवेध।

**कनटोप**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + टोप या तोपना ] कानों को ढँकनेवाली टोपी।

**कनतूतुर**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान तूतू शब्द ] छोटी जाति का एक जहरीला मेढक।

**कनधार***—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

**कनपटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कान + सं० पट ] कान और आँख के बीच का स्थान।

**कनपेड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + पेड़ा ] एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिल्टी निकल आती है।

**कनफटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + फटना ] गोरखपंथी योगी जो कानों को फड़वाकर उनमें बिल्लौर के छल्ले पहनते हैं।

**कनफुँका**—वि० [ हिं० कान + फूँकना ] [ स्त्री० कनफुँकी ] १. कान फूँकनेवाला। दीक्षा देनेवाला। २ जिसने दीक्षा ली हो।

**कनफुसकी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

**कनफूल**—संज्ञा पुं० दे० "करनफूल"।

**कनमनाना**—क्रि० अ० [ हिं० कान + मानना ] १ सोए हुए प्राणी का कुछ आहट पाकर हिलना डोलना या सचेष्ट होना। २. किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना।

**कनमैलिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + मैल ] कान की मैल निकालनेवाला।

**कनय***—संज्ञा पुं० दे० "कनक"।

**कनरस**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + रस ] १. गाना-बजाना सुनने का आनंद। २ गाना-बजाना या बात सुनने का व्यसन।

**कनरसिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० कान + रसिया ] गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

**कनसलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कान + हिं० सलाई ] कनखजूरे की तरह का एक कीड़ा।

**कनसाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० कोन + सालना ] चारपाई के पायों के तिरछे पड़े छेद जिनके कारण चारपाई में कनेव आ जाय।

**कनसार**—संज्ञा पुं० [ सं० कांस्यकार ] ताम्रपत्र पर लेख खोदनेवाला।

**कनसुई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कान + सुनना ] आहट। टोह।

**मुहा०**—कनसुई या कनसुइयाँ लेना = १. छिपकर किसी की बात सुनना। २. भेद लेना।

**कनस्तर**—संज्ञा पुं० [ अं० *कनिस्टर* ] टीन का चौखूँटा पीपा, जिसमें घी-तेल आदि रखा जाता है।

**कनहार***—संज्ञा पुं० [ सं० कर्णधार ] मल्लाह।

**कना**—संज्ञा पुं० दे० "कन"।

**कनाउड़ा***—वि० दे० "कनौड़ा"।

**कनागत**—संज्ञा पुं० [ सं० कन्यागत ] १. पितृपक्ष। २ श्राद्ध।

**कनात**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] मोटे कपड़े की वह दीवार जिसमें किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं।

**कनारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कनारा + ई ( प्रत्य० ) ] १ मदरास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश की भाषा। २. कनारा का निवासी।

**कनावड़ा***—संज्ञा पुं० दे० "कनौड़ा"।

**कनिआरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्णिकार ] कनक-चंपा का पेड़।

**कनिका***—संज्ञा स्त्री० दे० "कणिका"।

**कनिगर***—संज्ञा पुं० [ हिं० कानि + फा० गर ] अपनी मर्य्यादा का ध्यान रखनेवाला। नाम की लाज रखनेवाला।

**कनियाँ*** —संज्ञा स्त्री० [ हिं० कौंध ] गोद। कोरा। उत्संग।

**कनियाना**—क्रि० अ० [ हिं० कोना ] आँख बचाकर निकल जाना। कतराना। क्रि० अ० [ हिं० कन्नी, कन्ना ] पतंग का किसी ओर झुक जाना। कन्नी खाना।

†क्रि० अ० [ हिं० कनिया ] गोद लेना। गोद में उठाना।

**कनियार**—संज्ञा पुं० [ सं० कर्णिकार ] कनकचंपा।

**कनिष्ठ**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कनिष्ठा ] १ बहुत छोटा। अत्यंत लघु। सबसे छोटा। २. जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। ३. उमर में छोटा। ४. हीन। निकृष्ट।

**कनिष्ठा**—वि० स्त्री० [ सं० ] १. बहुत छोटी। सबसे छोटी। २. हीन। निकृष्ट। नीच।

संज्ञा स्त्री० १ दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री। २. नायिका-भेद के अनुसार दो या अधिक स्त्रियों में वह स्त्री जिसपर पति का प्रेम कम हो। ३ छोटी उँगली। छिगुनी।

**कनिष्ठिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सबसे छोटी उँगली। कानी उँगली। छिगुनी।

**कनिहार***—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

**कनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कण ] १ छोटा टुकड़ा। २ हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।

**मुहा०**—कनी खाना या चाटना = हीरे की कनी निगलकर प्राण देना। ३ चावल के छोटे-छोटे टुकड़े। किनकी। ४. चावल का मध्य भाग जो कभी कभी नहीं गलता। ५. बूँद।

**कनीनिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. आँख की पुतली। तारा। २. कन्या।

**कनीर**—संज्ञा पुं० दे० "कनेर"।

**कनूका**—संज्ञा पुं० [ सं० कण ] अनाज का दाना। कनका।

**कने**†—क्रि० वि० [ सं० करणे = स्थान में ] १ पास। निकट। समीप। २. ओर। तरफ। ३. अधिकार में। कब्जे में।

**कनेक्शन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] लगाव। संबंध।

**कनेठा**†—वि० [ हिं० काना + एठा ( प्रत्य० ) ] १. काना। २. भेंगा। ऐंचा-ताना।

**कनेठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कान + ऐंठना ] कान मरोड़ने की सजा।

**कनेर**—संज्ञा पुं० [ सं० कणेर ] एक पेड़ जिसमें लाल या पीले सुंदर फूल लगते हैं।

**कनेरिया**—वि० [ हिं० कनेर ] कनेर के फूल के रंग का। कुछ श्यामता लिये लाल।

**कनेव***—संज्ञा पुं० [हिं० कोन + एव] चारपाई का टेढ़ापन।

**कनोखी**—वि० [ हिं० कनखी ] तिरछी ( आँख या दृष्टि )।

**कनौजिया**--वि० [ हिं० कनौज + इया ( प्रत्य० ) ] १ कनौज-निवासी। २ जिसके पूर्वज कनौज के रहनेवाले रहे हों।

संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज।

**कनौड़ा**—वि० [ हिं० कान + औड़ा ( प्रत्य० ) ] १. काना। २. जिसका कोई अंग खंडित हो। अपंग। खोंडा। ३ कलंकित। निंदित। ४. लज्जित। संकुचित।

संज्ञा पुं० [ हिं० कीनना = मोल लेना + औड़ा ( प्रत्य० ) ] १ मोल लिया हुआ गुलाम। क्रीत दास। २. कृतज्ञ मनुष्य। एहसानमंद आदमी। ३. तुच्छ मनुष्य।

**कनौती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कान + औती ( प्रत्य० ) ] १. पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। २ कानों के उठाए रखने का ढंग। ३. कान में पहनने की बाली।

**कन्ना**—संज्ञा पुं० [ सं० कर्ण, प्रा० कण्ण ] [ स्त्री० कन्नी ] १. पतंग का वह डोरा जिसका एक छोर काँप और

लड़के के मेरु पर और दूसरा पुछल्ले के कुछ ऊपर बँधा जाता है। २. किनारा। कोर। औंठ।
संज्ञा पुं० [ सं० कण ] चावल का कन।
संज्ञा पुं० [ सं० कर्णक ] वनस्पति का एक रोग जिससे उसकी लकड़ी तथा फल आदि में कीड़े पड़ जाते हैं।
मुहा० कन्ने से काटना। किसी कार्य का मूल से नष्ट कर देना।

**कन्नी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कना ] १. पतंग या कनकौवे के दोनों ओर के किनारे। २. वह धज्जी जो पतंग की कन्नी में इसलिये बाँधी जाती है कि वह सीधी उड़े। ३. किनारा। हाशिया।
संज्ञा पुं० [ सं० करण ] राजगीरों का करनी नामक औजार।

**कन्यका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ क्वारी लड़की। २ पुत्री। बेटी।

**कन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अविवाहिता लड़की। क्वारी लड़की।
यौ०—पंचकन्या = पुराणों के अनुसार ये पाँच स्त्रियाँ जो बहुत पवित्र मानी गई हैं—अहल्या, द्रौपदी कुन्ती, तारा और मंदोदरी।
२ पुत्री। बेटी। ३ बारह राशियों में से छठी राशि। ४. घीक्वार। ५ बड़ी इलायची। ६. एक वर्ण-वृत्त।

**कन्याकुमारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कन्या + कुमारी ] भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप। रासकुमारी।

**कन्यादान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

**कन्याधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्त्री-धन जो स्त्री को अविवाहिता या कन्या-अवस्था में मिला हो।

**कन्याराशी**—वि० [ सं० कन्याराशि ] १. जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्याराशि में हो। २. चौपट। सत्यानाशी।

**कन्यापानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कन्या + हिं० पानी ] कन्या के सूर्य्य के समय की वर्षा।

**कन्हाई, कन्हैया**—संज्ञा पुं० [ सं० कृष्ण ] १. श्रीकृष्ण। २. अत्यंत प्यारा आदमी। प्रिय व्यक्ति। ३. बहुत सुंदर लड़का।

**कपट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कपटी ] १. अभिप्राय साधन के लिये हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। छल। दंभ। धोखा। २. दुराव। छिपाव।

**कपटना**—क्रि० स० [ सं० कल्पन् ] १ काट कर अलग करना। छाँटना। खोंटना। २. काटकर अलग निकालना।

**कपटी**—वि० [सं०] कपट करनेवाला। छली। धोखेबाज। धूर्त्त।

**कपड़छन, कपड़छान**—संज्ञा पुं० [ हिं० कपड़ा + छानना ] किसी पिसी हुई बुकनी को कपड़े में छानने का कार्य्य।

**कपड़द्वार**—संज्ञा पुं० [ हिं० कपड़ा द्वार ] कपड़ों का भंडार। वस्त्रागार।

**कपड़धूलि**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कपड़ा धूलि ] एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा। करेब।

**कपड़मिट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कपड़ा + मिट्टी ] धातु या ओषधि फूँकने के संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया। कपड़ौटी। गिल-हिकमत।

**कपड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कर्पट ] १. रुई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बना हुआ शरीर का आच्छादन। वस्त्र। पट।
मुहा०—कपड़ों से होना = मासिक धर्म से होना। रजस्वला होना। (स्त्रोका)
२. पहनावा। पोशाक।
यौ०—कपड़ा लत्ता=पहननेका सामान।

**कपड़ौटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कपड़मिट्टी"।

**कपर्द, कपर्दक**—संज्ञा पुं० [सं०][स्त्री० कपर्दिका ] १. ( शिव का ) जटाजूट। २ कौड़ी।

**कपर्दिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कौड़ी।

**कपर्दिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा।

**कपर्दी**—संज्ञा पुं० [ सं० कपर्दिन् ] [ स्त्री० कपर्दिनी ] १ शिव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक।

**कपाट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किवाड़। पट।

**कपाटबद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसके अक्षरों को विशेष रूप से लिखने से किवाड़ों का चित्र बन जाता है।

**कपार***†—संज्ञा पुं० दे० "कपाल"।

**कपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कपाली,कपालिका ] १. खोपड़ा। खोपड़ी। २. ललाट। मस्तक। ३ अदृष्ट। भाग्य। ४. घड़े आदि के नीचे या ऊपर का भाग। खपड़ा। खर्पर। ५ मिट्टी का भिक्षा-पात्र। खप्पर। ६. वह बर्तन जिसमें यज्ञों मे देवताओं के लिये पुरोडाश पकाया जाता था।

**कपालक***—वि० दे० "कापालिक"।

**कपालक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृतक संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं।
मुहा०—कपाल क्रिया करना = नष्ट करना।

**कपालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] खोपड़ी।
संज्ञा स्त्री० [ सं० कापालिका ] काली। रणचंडी।

**कपालिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा।

**कपाली**—संज्ञा पुं० [ सं० कपालिन् ]

[ स्त्री० कपालिनी ] १. शिव। महादेव। २. भैरव। ३. ठीकरा लेकर भीख माँगनेवाला। ४. एक वर्णसंकर जाति। कपरिया। हठयोग का वह आसन जिसमें सिर नीचे तथा पाँव ऊपर किया जाता है। शीर्षासन।

**कपास**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्पास ] [ वि० कपासी ] एक पौधा जिससे रूई निकलती है।

**कपासी**—वि० [ हिं० कपास ] कपास के फूल के रंग का। बहुत हलके पीले रंग का।
संज्ञा पुं० बहुत हलका। पीला रंग।

**कपिंजल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चातक। पपीहा। २ गौरा पक्षी। ३ भरदूल। भरही। ४ तीतर। ५. एक मुनि।
वि० [ सं० ] पीले रंग का।

**कपि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बंदर। २. हाथी। ३ करंज। कंज। ४. सूर्य्य।

**कपिकच्छु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] केवाँच।

**कपिकेतु**—संज्ञा पु० [ सं० ] अर्जुन

**कपिकोल**—संज्ञा पुं० दे० "कपिकच्छु"।

**कपित्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कैथ का पेड़ या फल।

**कपिध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अर्जुन।

**कपिल**—वि० [ सं० ] १ भूरा। मटमैला। तामड़े रंग का। २ सफेद।
संज्ञा पु० १ अग्नि। २. कुत्ता। ३ चूहा। ४ शिलाजीत। ५ महादेव। ६. सूर्य्य। ७ विष्णु। ८ एक मुनि जो सांख्य-शास्त्र के आदि-प्रवर्तक माने जाते हैं।

**कपि-लता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] केवाँच।

**कपिलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भूरापन। २. ललाई। ३ पीलापन। ४ सफेदी।

**कपिलवस्तु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गौतम-बुद्ध का जन्म स्थान।

**कपिला**—वि० स्त्री० [ सं० ] १ भूरे रंग की। मटमैले रंग की। २ सफेद। ३. जिसके शरीर में सफेद दाग हों। ४. सीधी सादी। भोली भाली।
संज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। २. सीधी गाय। ३ पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी। ४. दक्ष की एक कन्या।

**कपिश**—वि० [ सं० ] १. काला और पीला रंग लिये भूरे रंग का। मटमैला। २ पीला-भूरा। लाल-भूरा।

**कपिशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ एक प्रकार का मद्य। २. एक नदी। कसाई। ३ कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे।

**कपीश**—संज्ञा पु० [ सं० ] बानरों का राजा। जैसे हनुमान, सुग्रीव इत्यादि।

**कपूत**—संज्ञा पु० [ सं० कुपुत्र ] बुरी चाल-चलन का पुत्र। बुरा लड़का।

**कपूती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कपूत ] पुत्र के अयोग्य आचरण। नालायकी।

**कपूर**—संज्ञा पु० [ सं० कर्पूर ] एक सफेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है।

**कपूरकचरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कपूर + कचरी ] एक बेल जिसकी जड़ सुगंधित होती है, और दवा के काम में आती है। सितरुना।

**कपूरी**—वि० [ हिं० कपूर ] १ कपूर का बना हुआ। २ हलके पीले रंग का।
संज्ञा पु० १ कुछ हलका पीला रंग। २ एक प्रकार का कड़ुआ पान।

**कपोत**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० कपोतिका, कपोती ] १ कबूतर। २ परेवा। ३ पक्षी। चिड़िया। ४ भूरे रंग का कच्चा सुरमा।

**कपोतव्रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चुपचाप दूसरे के अत्याचारों को सहना।

**कपोती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कबूतरी। २. पेंडुकी। ३. कुमरी।
वि० [ सं० ] कपोत के रंग का। धूमले रंग का।

**कपोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गाल।

**कपोलकल्पना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मनगढ़त या बनावटी बात। गप्प।

**कपोलकल्पित**—वि० [ सं० ] बनावटी। मनगढ़ंत। झूठ।

**कपोल गेंडुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० कपोल + हिं० गेंद ] गाल के नीचे रखने का तकिया। गल-तकिया।

**कफ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. वह गाढ़ी लसीली और अठेदार वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह से बाहर आती है तथा नाक से भी निकलती है। श्लेष्मा। बलगम। २ शरीर के भीतर की एक धातु। (वैद्यक)

**कफ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] कमीज या कुर्त्ते की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं।
संज्ञा पु० [ फा० ] झाग। फेन।

**कफन**—संज्ञा पु० [ अ० ] वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है।

**मुहा०**—कफन की कौड़ी न होना या रहना = अत्यंत दरिद्र होना। कफन को कौड़ी न रखना = जो कमाना, वह सब खा लेना।

**कफनखसोट**—वि० [ अ० कफन + हिं० खसोट ] कंजूस। मक्खीचूस। अत्यंत लोभी।

**कफनखसोटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कफन खसोटना ] १ डोमों का कर जो वे श्मशान पर मुर्दों का कफन फाड़कर लेते हैं। २ इधर उधर से भले या बुरे ढंग से धन एकत्र करने की रुचि या वृत्ति। कंजूसी।

**कफनाना**—क्रि० स० [ अ० कफन +

हिं० आना (प्रत्य०)] गाड़ने या जलाने के लिये मुर्दे को कफन में लपेटना।

**कफनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कफन] १. वह कपड़ा जो मुर्दे के गले में डालते हैं। २. साधुओं के पहनने का घुटने तक का लंबा कुर्ता।

**कफस**—संज्ञा पुं० [अ०] १. पिंजरा। २. काबुक। दरबा। ३. बंदीगृह। कैदखाना। ४. बहुत तंग जगह।

**कबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीपा। कंडाल। २. मेघ। ३. पेट। उदर। ४. जल। ५. बिना सिर का धड़। रुंड। ६. एक राक्षस जिसे राम ने जीता ही भूमि में गाड़ दिया था। ७. राहु।

**कब**—क्रि० वि० [सं० कदा] १. किस समय? किस वक्त? (प्रश्नसूचक)।

**मुहा०**—कब का, कब के, कब से = देर से। विलंब से। कब नहीं = बराबर। सदा।

२. कभी नहीं। नहीं।

**कबड्डी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक खेल जिसे दो दल बनाकर खेलते हैं। २. कौंगा। कपा।

**कबर**—संज्ञा स्त्री० दे० "कब्र"।

**कबरा**—वि० [सं० कर्वर, पा० कब्बर] [स्त्री० कबरी] सफेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दागवाला। चितला। अबलक।

**कबरिस्तान**—संज्ञा पुं० दे० "कब्रिस्तान"।

**कबरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कबरी] स्त्रियों के सिर की चोटी।

**कबल**—अव्य० [अ०] पहले।

**कबा**—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा।

**कबाड़**—संज्ञा पुं० [सं० कर्पट] [संज्ञा कबाड़ी] १. काम में न आनेवाली वस्तु। अगड़-खंगड़। २. अंड बंड काम। व्यर्थ का व्यापार। ३. तुच्छ व्यवसाय।

**कबाड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] व्यर्थ की बात। झंझट। बखेड़ा।

**कबाड़िया**—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] १. टूटी-फूटी, सड़ी गली चीजें बेचनेवाला आदमी। २. तुच्छ व्यवसाय करनेवाला पुरुष। ३. झगड़ालू आदमी।

**कबाड़ी**—संज्ञा पुं० वि० दे० "कबाड़िया"।

**कबाब**—संज्ञा पुं० [अ०] सीखों पर भूना हुआ मांस।

**कबाबचीनी**—संज्ञा स्त्री० [अ० कबाब + हिं० चीनी] १. मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी जिसके गोल फल खाने में कड़ुए और ठंढे मालूम होते हैं। २. कबाबचीनी का गोल फल या दाना।

**कबाबी**—वि० [अ० कबाब] १. कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।

**कबार**—संज्ञा पुं० [हिं० कबाड़] १. व्यापार। रोजगार। व्यवसाय। २. दे० "कबाड़"।

**कबारना**†—क्रि० स० [देश०] उखाड़ना।

**कबाला**—संज्ञा पुं० [अ०] वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय। जैसे—बयनामा।

**कबाहत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुराई। खराबी। २. दिक्कत। तरद्दुद। अड़चन।

**कबीर**—संज्ञा पुं० [अ० कबीर बड़ा, श्रेष्ठ] १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. एक प्रकार का अश्लील गीत या पद जो होली में गाया जाता है।

वि० श्रेष्ठ। बड़ा।

**कबीरपंथी**—वि० [हिं० कबीर + पंथ] कबीर के संप्रदाय का।

**कबीला**—संज्ञा पुं० [अ० कबीलः] १. समूह। झुंड। २. एक वंश के सब लोगों का वर्ग। पश्चिमोत्तर प्रदेश वाले।

संज्ञा स्त्री० जोरू। पत्नी।

संज्ञा पुं० दे० "कमीला"।

**कबुलवाना, कबुलाना**—क्रि० स० [हिं० कबूलना का प्रे० रूप] कबूल कराना।

**कबूतर**—संज्ञा पुं० [फा०, मिलाओ सं० कपोत] [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी।

**कबूतरखाना**—संज्ञा पुं० [फा०] पालतू कबूतरों के रहने का दरबा।

**कबूतरबाज**—वि० [फा०] जिसे कबूतर पालने और उड़ाने की लत हो।

**कबूल**—संज्ञा पुं० [अ०] स्वीकार। मंजूर।

**कबूलना**—क्रि० स० [अ० कबूल + ना (प्रत्य०)] स्वीकार करना। सकारना। मंजूर करना।

**कबूलियत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे।

**कबूली**—संज्ञा स्त्री० [फा०] चने की दाल की खिचड़ी।

**कब्ज**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ग्रहण। पकड़। २. दस्त का साफ न होना। मलावरोध।

**कब्जा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. मूँठ। दस्ता।

**मुहा०**—कब्जे पर हाथ डालना = तलवार खींचने के लिए मूँठ पर हाथ ले जाना। २. किवाड़ या संदूक

में बड़े जाने वाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े। क्ब्र मादगी। पकड़। ३. दखल। अधिकार। वश। इख्तियार।

**कब्ज़ादार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ भाव० संज्ञा कब्ज़ादारी ] १. वह अधिकारी जिसका कब्ज़ा हो। २. दखीलकार असामी।

वि० जिसमें कब्ज़ा लगा हो।

**कब्ज़ियत** संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पाखाने का साफ़ न आना। मलाव-रोध।

**कब्र**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. वह गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई आदि अपने मुर्दे गाड़ते हैं। २. वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।

**मुहा०**—कब्र में पैर या पाँव लटकाना = मरने को होना। मरने के करीब होना।

**कब्रिस्तान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

**कभी**—क्रि० वि० [ हिं० कब + ही ] किसी समय। किसी अवसर पर।

**मुहा०**—कभी का = बहुत देर से। कभी न कभी = आगे चलकर अवश्य किसी अवसर पर।

**कभू***—क्रि० वि० दे० "कभी"।

**कमंगर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० कमानगर ] १. कमान बनानेवाला। २ जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी को असली जगह पर बैठानेवाला। २. चितेरा। मुसौवर। †वि० दक्ष। कुशल। निपुण।

**कमंगरी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० कमानगर] १. कमान बनाने का पेशा या हुनर। २. हड्डी बैठाने का काम। ३. मुसौवरी।

**कमंडल**—संज्ञा पुं० दे० "कमंडलु"।

**कमंडली**—वि० [ सं० कमंडलु + ई (प्रत्य० )] १ साधु। बैरागी। २. पाखंडी।

**कमंडलु**—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासियों का जलपात्र, जो धातु, मिट्टी, तुमड़ी, दरियाई नारियल आदि का होता है।

**कमंद***—संज्ञा पुं० दे० "कबंध"।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर जंगली पशु आदि फँसाए जाते हैं। फंदा। पाश। २. फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

**कम**—वि० [ फ़ा० ] १. थोड़ा। न्यून। अल्प।

**मुहा०**—कम से कम = अधिक नहीं तो इतना अवश्य। और नहीं तो इतना जरूर। २. बुरा, जैसे कमबख्त।

क्रि० वि० प्रायः नहीं। बहुधा नहीं।

**कमअसल**—वि० [ फ़ा० कम + अ० असल ] वर्ण संकर। दोगला।

**कमख़ाब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर कलाबत्तू के बेलबूटे बने होते हैं।

**कमची**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] [सं० कंचिका ] १ पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी बनाते हैं। तीली। २. पतली लचकदार छड़ी। ३ लकड़ी आदि की पतली पट्टी।

**कमच्छा**—संज्ञा स्त्री० दे० "कामाख्या"।

**कमज़ोर**—वि० [ फ़ा० ] दुर्बल। अशक्त।

**कमज़ोरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] निर्बलता। दुर्बलता। अशक्तता।

**कमठ** संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कमठी ] १ कछुआ। २ साधुओं का तुंबा। ३ बाँस।

**कमठा**—संज्ञा पुं० [ कमठ ] धनुष।

**कमठी**-संज्ञा पुं० [ सं० ] कछुई।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कमठ ] बाँस की पतली लचीली धज्जी। पट्टी।

**कमती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० कम+ती ] कमी। घटती।

वि० कम। थोड़ा।

**कमना***†—क्रि० अ० [ फ़ा० कम ] कम होना। न्यून होना। घटना।

**कमनी**—वि० दे० "कमनीय"।

**कमनीय**—वि० [ सं० ] [ भाव० कमनीयता ] [ स्त्री० कमनीया ] १. कामना करने योग्य। २. मनोहर। सुंदर।

**कमनैत**—संज्ञा पुं० [फ़ा० कमान+हिं० ऐत ( प्रत्य० ) ] कमान चलानेवाला। तीरदाज।

**कमनैती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० कमान+ हिं० ऐती ( प्रत्य० ) ] तीर चलाने की विद्या।

**कमबख्त**—वि० [ फ़ा० ] भाग्यहीन। अभागा।

**कमबख्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] बदनसीबी। दुर्भाग्य। अभाग्य।

**कमर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर होता है।

**मुहा०**—कमर कसना या बाँधना = १. तैयार होना। उद्यत होना। २. चलने की तैयारी करना। कमर टूटना = निराश होना। उत्साह का न रहना। २. किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग। जैसे-कोल्हू की कमर। ३. अँगरखे या सलूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है। लपेट।

**कमरकोट, कमरकोटा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० कमर + हिं० कोट ] १ वह छोटी दीवार जो किलों और चारदीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और छेद होते हैं। २. रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार।

**कमरख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्मरंग, पा० कम्मरग ] १. एक पेड़ जिसके

फाँकवाले लंबे लंबे फल खट्टे होते हैं और खाए जाते हैं। कर्मरंग। कमरंग। २ इस पेड़ का फल।

**कमरखी**—वि० [ हिं० कमरख ] जिसमें कमरख के ऐसी उभड़ी हुई फाँकें हों।

**कमरबन्द**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं। पटका। २. पेटी। ३ इजारबंद। नाड़ा।

वि० कमर कसे तैयार। मुस्तैद।

**कमरबल्ला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० कमर + हिं० बल्ला ] १. खपड़े की छाजन में वह लकड़ी जो तड़क के ऊपर और कोरों के नीचे लगाई जाती है। कमरबस्ता। २. कमरकोटा।

**कमरा**—संज्ञा पुं० [ लै० कैमेरा ] १ कोठरी। २. फोटोग्राफी का वह औजार जिसके मुँह पर लेंस या प्रतिबिंब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है।

*संज्ञा पुं० दे० "कंवल"।

**कमरिया**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० कमर ] एक प्रकार का हाथी जो डील-डौल में छोटा पर बहुत जबर्दस्त होता है। बौना हाथी।

‡संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

**कमरी**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।

**कमल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुदर फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २ इस पौधे का फूल। ३. कमल के आकार का एक मांस पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। क्लोमा। ४. जल। पानी। ५. ताँबा। ६ [ स्त्री० कमली ] एक प्रकार का मृग। ७. सारस। ८. आँख का कोया। डेला। ९. योनि के भीतर कमलाकार एक गाँठ। फूल। धरन। १०. छः मात्राओं का एक छंद। ११. छप्पय के ७१ भेदों में से एक। १२. काँच का एक प्रकार का गिलास जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है। १३. एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं। पीलू। कमला। काँवर। १४. मूत्राशय। मसाना।

**कमलगट्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० कमल + हिं० गट्टा ] कमल का बीज। पद्मबीज।

**कमलज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।

**कमलनयन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कमलनयनी ] जिसकी आँखें कमल की पंखड़ी की तरह बड़ी और सुंदर हों।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २ राम। ३. कृष्ण।

**कमलनाभ**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**कमलनाल**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमल की डंडी जिस पर फूल रहता है।

**कमलबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का चित्रकाव्य।

**कमलबाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कमल + बाई ] एक रोग जिसमें शरीर, विशेषकर आँख पीली पड़ जाती है।

**कमलयोनि**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

**कमला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. धन। ऐश्वर्य। ३. एक प्रकार की बड़ी नारंगी। संतरा। ४. एक वर्णवृत्त। रतिपद।

संज्ञा पुं० [ सं० कवल ] १. रोएँदार कीड़ा जिसके शरीर में छू जाने से खुजलाहट होती है। झाँझाँ। सूँड़ी। २ अनाज या सड़े फल आदि में पड़नेवाला लंबा सफेद रंग का कीड़ा। ढोला।

**कमलाकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छप्पय का एक भेद।

**कमलाक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कमलाक्षी ] १. कमल का बीज। २. दे० "कमलनयन"।

**कमलापति**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**कमलालया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

**कमलावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पद्मावती छंद।

**कमलासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्मा। २. योग का एक आसन। पद्मासन।

**कमलिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा कमल। २. वह तालाब जिसमें कमल हों।

**कमली**—संज्ञा पुं० [ सं० कमलिन् ] ब्रह्मा।

संज्ञा स्त्री० छोटा कमल।

**कमवाना**—क्रि० स० [ हिं० कमाना का प्रे० रूप ] कमाने का काम दूसरे से कराना।

**कमसिन**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा कमसिनी ] कम उम्र का। छोटी अवस्था का।

**कमसिनी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लड़कपन।

**कमाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कमाना ] १ कमाया हुआ धन। अर्जित द्रव्य। २. कमाने का काम। ३. व्यवसाय। उद्यम। धंधा।

**कमाऊ**—वि० [हिं० कमाना] कमानेवाला।

**कमाख**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**कमाची**—संज्ञा स्त्री० दे० "कमची"।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० कमानचा ] कमान की तरह झुकाई हुई तीली।

**कमान**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. धनुष।

**मुहा०**—कमान चढ़ना = १. दौरदौरा होना। २. त्योरी चढ़ना। क्रोध में होना।

२. इंद्रधनुष। ३. मेहराब। ४ तोप। ५. बंदूक।

संज्ञा स्त्री० [ अ० कमांड ] १ आज्ञा। हुक्म। २. फौजी आज्ञा। ३ फौजी नौकरी।

मुहा०—कमान पर जाना = लड़ाई पर जाना। कमान बोलना = सिपाही को नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

**कमानगर**—संज्ञा पुं० दे० "कमगर"।

**कमानचा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. छोटी कमान। २. सारंगी बजाने की कमानी। ३. मिहराब। डाट।

**कमाना**—क्रि० स० [ हिं० काम ] १. कामकाज करके रुपया पैदा करना। २. सुधारना या काम के योग्य बनाना।

यौ०—कमाई हुई हड्डा या देह = कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर। कमाया साँप = वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिए गए हों।

३ सेवा संबंधी छोटे छोटे काम करना। जैसे—पाखाना कमाना (उठाना)। ४. कर्म संचय करना। जैसे—पाप कमाना।

क्रि० अ० १. मेहनत मजदूरी करना। २. कसब करना। खर्ची कमाना।

†क्रि० स० [ हिं० कम ] कम करना। घटाना।

**कमानिया**—संज्ञा पुं० [फ़ा० कमान] धनुष चलानेवाला। तीरंदाज।

वि० धन्वाकार। मेहराबदार।

**कमानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० कमान ] [ वि० कमानीदार ] १. लोहे की तीली, तार अथवा और कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बैठाई हो कि दाब पड़ने से दब जाय और हटने पर फिर अपनी जगह पर आ जाय।

यौ०—बाल-कमानी = घड़ी की एक बहुत पतली कमानी जिसके सहारे चक्कर घूमता है। २. झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली। ३. एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आँत उतरनेवाले रोगी कमर में लगाते हैं। ४. कमान के आकार की कोई झुकी हुई लकड़ी जिसके दोनों सिरों के बीच में रस्सी, तार या बाल बँधा हो।

**कमाल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. परिपूर्णता। पूरापन। २ निपुणता। कुशलता। ३. अद्भुत कर्म। अनोखा कार्य। ४ कारीगरी। ५ कबीरदास के बेटे का नाम।

वि० १ पूरा। संपूर्ण। सब। २. सर्वोत्तम। ३ अत्यंत। बहुत ज्यादा।

**कमालियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ परिपूर्णता। पूरापन। २. निपुणता। कुशलता।

**कमासुत**—वि० [ हिं० कमाना+सुत ] १ कमाई करनेवाला। २ उद्यमी।

**कमी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० कम ] १. न्यूनता। कोताही। अल्पता। २ हानि। नुकसान।

**कमीज**—संज्ञा स्त्री० [ अ० कमीस ] वह कुर्त्ता जिसमें कली और चौबगले नहीं होते।

**कमीना**—वि० [फ़ा०] [स्त्री० कमीनी] ओछा। नीच। क्षुद्र।

**कमीनापन**—संज्ञा पुं० [फा० कमीना + पन (प्रत्य०)] नीचता। ओछापन। क्षुद्रता।

**कमीला**—संज्ञा पुं० [ सं० कंपिल्ल ] एक छोटा पेड़ जिसके फलों पर की लाल धूल रेशम रँगने के काम में आती है।

**कमुकंदर***†—संज्ञा पुं० [ सं० कार्मुक + दर ] धनुष तोड़नेवाले रामचंद्र।

**कमेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काम + एरा (प्रत्य०) ] काम करनेवाला। मजदूर। नौकर।

**कमेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० काम + एला (प्रत्य०)] वह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं। वध स्थान। कसाईखाना।

**कमोदिक**—संज्ञा पुं० [ सं० कामोद ] (राग) गवैया।

**कमोदिन***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

**कमोरा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंभ + ओरा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० कमोरी, कमोरिया ] चौड़े मुँह का मिट्टी का एक बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है। घड़ा। कछरा।

**कम्यूनिज्म**—संज्ञा पुं० दे० "साम्यवाद"।

**कम्यूनिस्ट**—वि० दे० "साम्यवादी"।

**कम्यूनीके**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सरकारी सूचना या विवरण का पत्र।

**कयपूती**—संज्ञा स्त्री० [ मला० कयु = पेड़ + पूती = सफेद ] एक सदाबहार पेड़ जिसकी पत्तियों से कपूर की तरह उड़नेवाला सुगंधित तेल निकाला जाता है।

**कया***—संज्ञा स्त्री० दे० "काया"।

**कयाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ ठहराव। टिकान। २ ठहरने की जगह। विश्राम-स्थान। ३ ठौर-ठिकाना। निश्चय। स्थिरता।

**कयामत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। लेखे का दिन। अंतिम दिन। २. प्रलय। ३ हलचल। खलबली।

**कयास**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० कयासी ] अनुमान। अटकल। सोच-विचार। ध्यान।

**करक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मस्तक। २. कमंडलु। ३. नारियल की खोपड़ी।

४. पंजर। ठठरी।

**करंज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कंजा। २. एक छोटा जंगली पेड़। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी।

संज्ञा पुं० [फ़ा० कुलंग सं० कलिंग] मुर्गा।

**करंजा**—संज्ञा पुं० दे० "कंजा"।

**करंजुवा**—संज्ञा पुं० दे० "करंज"।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार के अंकुर जो बाँस या ऊख में होते और उनको हानि पहुँचाते हैं। घमोई।

वि० [सं० करंज] करंज के रंग का। खाकी।

संज्ञा पुं० खाकी रंग। करंज का सा रंग।

**करंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शहद का छत्ता। २. तलवार। ३ कारंडव नाम का हंस। ४. बाँस की टोकरी या पिटारी। डला।

संज्ञा पुं० [सं० कुरविंद] कुरुल पत्थर जिसपर रखकर हथियार तेज किये जाते हैं।

**करंतीना**—संज्ञा पुं० [अं० क्वारंटाइन] वह स्थान जहाँ ऐसे लोग कुछ दिन रखे जाते हैं जो किसी फैलनेवाली बीमारी के स्थान से आते हैं।

**कर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. सूर्य्य या चंद्रमा की किरण। ४. ओला। पत्थर। ५. मालगुजारी। महसूल। ६. छल। युक्ति। पाखंड।

वि० [सं०] [स्त्री० करी] करनेवाला। (यौ० के अंत में)

*प्रत्य० [सं० कृत] संबंध कारक का चिह्न। का।

**करक**—संज्ञा पुं० [अ०] १. कमंडलु। करवा। २. दाड़िम। अनार। ३. कचनार। ४. पलास। ५ वकुल। मौलसिरी। ६. करील का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कड़क] १. रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा। कसक। चिनक। २. रुक-रुककर और जलन के साथ पेशाब होने का रोग। ३. वह चिह्न जो शरीर पर किसी वस्तु की दाब, रगड़ या आघात से पड़ जाता है। साँट।

**करकच**—संज्ञा पुं० [दे०] समुद्री नमक।

**करकट**—संज्ञा पुं० [हिं० खर + सं० कट] कूड़ा। झाड़न। बहारन। कतवार।

यौ० कूड़ा करकट।

**करकना**—क्रि० अ० दे० "कड़कना"।

*वि० [सं० कर्कर] [स्त्री० करकरी] जिसके कण उँगलियों में गड़ें। खुरखुरा।

**करकरा**—संज्ञा पुं० [सं० कर्करेटु] एक प्रकार का सारस।

वि० [सं० कर्कर] खरखरा।

**करकराहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० करकरा + आहट (प्रत्य०)] १ कड़ापन। खरखराहट। २ आँख में किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा।

**करकस***—वि० दे० "कर्कश"।

**करका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश से गिरनेवाला पत्थर। ओला।

**करखना***—क्रि० अ० [सं० कर्षण] जोश में आना। उत्तेजित होना।

**करखा**—संज्ञा पुं० १ दे० "कड़खा"। २. एक प्रकार का छंद।

संज्ञा पुं० [सं० कष] उत्तेजना। बढ़ावा। ताव।

संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।

**कर-गत**—वि० [सं०] हाथ में आया हुआ। हस्तगत।

**करगता**—संज्ञा पुं० [सं० कटि + गता] सोने, चाँदी या सूत की करधन।

**करगस**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गिद्ध। २. तीर।

**करगह**—संज्ञा पुं० [फ़ा० कारगाह] १. जुलाहों के कारखाने की वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं और कपड़ा बुनते हैं। २. कपड़ा बुनने का यंत्र।

**करगहना**—संज्ञा पुं० [सं० कर + हिं० गहना] पत्थर या लकड़ी जिसे खिड़की या दरवाजा बनाने में चौखटे के ऊपर रखकर आगे जोड़ाई करते हैं। भरेठा।

**करग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्याह।

**करघा**—संज्ञा पुं० दे० "करगह"।

**करचंग**—संज्ञा पुं० [हिं० कर + चंग] १ ताल देने का एक बाजा। २. डफ।

**करछा**—संज्ञा पुं० [सं० कर + रक्षा] [स्त्री० करछी] बड़ी करछी।

**करछाल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कर + उछाल] उछाल। छलाँग। कुदान।

**करछी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कलछी"।

**करज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नख। नाखून। २. उँगली। ३. नख नामक सुगंधित द्रव्य।

**करजोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कर + हिं० जोड़ना] हत्थाजोड़ी नाम की ओषधि।

**करट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कौआ। २. हाथी की कनपटी। ३. कुसुम का पौधा।

**करटी**—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

**करण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसका चिह्न 'से' है। २ हथियार। औजार। ३. इंद्रिय। ४ देह। ५. क्रिया। कार्य्य। ६. स्थान। ७. हेतु। ८. ज्योतिष

में तिथियों का एक विभाग। ६ वह संख्या जिसका पूरा पूरा वर्गमूल न निकल सके। करणीगत संख्या।
*संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"।

**करणीय**—वि० [सं०] [स्त्री०] करने योग्य।

**करतब**—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तव्य] [वि० करतबी] १. कार्य। काम। २. कला। हुनर। ३ करामात। जादू।

**करतबी**—वि० [हिं० करतब] १. करनेवाला। पुरुषार्थी। २ निपुण। गुणी। ३ करामात दिखानेवाला। बाजीगर।

**करतरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्त्तरी"।

**करतल**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० करतली] १. हाथ की गदोरी। हथेली। २. चार मात्राओं के गण (डगण) का एक रूप।

**करतली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हथेली। २ हथेली का शब्द। ताली।

**करता**—संज्ञा पुं० दे० "कर्त्ता"।
†संज्ञा पुं० १. वृत्त का नाम। २. उतनी दूरी जहाँ तक बंदूक की गोली जाय।

**करतार**—संज्ञा पुं० [सं० कर्त्तार] ईश्वर।
†संज्ञा पुं० दे० "करताल"।

**करतारी***—संज्ञा स्त्री० दे० "करताली"।
वि० [संज्ञा कर्त्तार] ईश्वरीय।

**करताल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। ताली बजना। २ लकड़ी, काँसे आदि का एक बाजा जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाते हैं। ३ झाँझ। मँजीरा।

**करतूत**—संज्ञा पुं० [सं० कर्तृत्व] १. कर्म। करनी। काम। २. कला। गुण। हुनर।

**करतूति**—संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत"।

**करद**—वि० [सं०] १. कर देनेवाला। अधीन। २ सहारा देनेवाला।

**करदम**—संज्ञा पुं० दे० "कर्दम"।

**करदा**—संज्ञा पुं० [हिं० गर्द] १ बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा-करकट या खूद-खाद। २. दाम में वह कमी जो किसी वस्तु में कूड़े-करकट आदि का वजन निकाल देने के कारण की जाय। धड़ा। कटौती।

**करधनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० किंकिणी] १. सोने या चाँदी का कमर में पहनने का एक गहना। २. कई लड़ों का सूत जो कमर में पहना जाता है।

**करधर**—संज्ञा पुं० [सं० कर = वर्षा जल + धर] बादल। मेघ।

**करन***—संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"।

**करनधार***—संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।

**करनफूल**—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण + हिं० फूल] कान का एक गहना। तरौना। कौंप।

**करनबेध**—संज्ञा पुं० [सं० कर्णवेध] बच्चों के कान छेदने का संस्कार या रीति।

**करना**—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं। सुदर्शन।
संज्ञा पुं० [सं० करुण] बिजौरे की तरह का एक बड़ा नीबू।
*संज्ञा पुं० [सं० करण] किया हुआ काम। करनी। करतूत।
क्रि० स० [सं० करण] १ किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना। निबटाना। भुगताना। अंजाम देना। संपादित करना। २. पकाकर तैयार करना। राँधना। ३ ले जाना। पहुँचाना। ४ पति या पत्नी रूप से ग्रहण करना। ५ रोजगार खोलना। व्यवसाय खोलना। ६. सवारी ठहराना। भाड़े पर सवारी लेना। ७ रोशनी बुझाना। ८. एक रूप से दूसरे रूप में लाना। बनाना। ९. कोई पद देना। १० किसी वस्तु को पोतना। जैसे रंग करना।

**करनाई**—संज्ञा स्त्री० [अ० करनाय] तुरही।

**करनाटक**—संज्ञा पुं० [सं० कर्णाटक] मद्रास प्रांत का एक भाग।

**करनाटकी**—संज्ञा पुं० [सं० कर्णाटकी] १. करनाटक प्रदेश का निवासी। २ कलाबाज। कसरत दिखानेवाला मनुष्य। ३ जादूगर। इंद्रजाली।

**करनाल**—संज्ञा पुं० [अ० करनाय] १. सिंघा। नरसिंहा। भोंपा। धूतू। २. एक प्रकार का बड़ा ढोल। ३ एक प्रकार की तोप।

**करनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] १. कार्य। कर्म। करतूत। अंत्येष्टि कर्म। मृतकसंस्कार। ३ दीवार पर पला या गारा लगाने का औजार। कन्नी।

**करपर***—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्पर] खोपड़ी।
वि० [सं० कृपण] कंजूस।

**करपरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] पीठी की बरी।

**करपलई**—संज्ञा स्त्री० दे० "करपल्लवी"।

**करपल्लवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करना।

**करपिचकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कर + हिं० पिचकी] जलक्रीड़ा में पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने के लिये दोनों हथेलियों से बनाया हुआ संपुट।

**करपीड़न**—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह।

**करपृष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] हथेली के पीछे का भाग।

**करबरना**—क्रि० अ० [अनु०] १. कुल-बुलाना। २. कलरव करना। चहकना।

**करबला**—संज्ञा पुं० [अ०] १. अरब का वह स्थान जहाँ हुसैन मारे गए थे। २. वह स्थान, जहाँ ताजिए दफन हों। ३. वह स्थान जहाँ पानी न मिले।

**करबी** संज्ञा स्त्री० दे० "कड़बी"।

**करबूस**—संज्ञा पुं० [?] हथियार लट-काने के लिये घोड़े का जीन या चार-जामे में टँकी हुई रस्सी या तसमा।

**करबोटी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक तरह का पक्षी।

**करभ**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० करभी] १. हथेली के पीछे का भाग। करपृष्ठ। २. ऊँट का बच्चा। ३. हाथी का बच्चा। ४. नख नाम को सुगंधित वस्तु। ५. कटि। कमर। ६ दोहे के सातवें भेद का नाम।

**करभोरु**—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी के सूँड़ के ऐसा जघा।

वि० सुंदर जाँघवाली।

**करम**—संज्ञा पुं० [सं० कर्म] १ कर्म। काम।

**यौ०**—करम-भोग=वह दुःख जो अपने किए हुए कर्मों के कारण हो।

२ कर्म का फल। भाग्य। किस्मत।

**मुहा०**—करम का मारा=अभागा। भाग्यहीन। करम फूटना=भाग्य मंद होना।

**यौ०**—करमरेख=किस्मत में लिखी बात।

संज्ञा पुं० [अ०] मिहरबानी। कृपा।

**करमकल्ला**—संज्ञा पुं० [अ० करम + हिं० कल्ला] एक प्रकार का गोभी जिस में केवल कोमल कोमल पत्तो का बँधा हुआ संपुट होता है। बंद गोभी। पात-गोभी।

**करमचंद***†—संज्ञा पुं० [सं० कर्म] कर्म।

**करमठ***†—वि० [सं० कर्मठ] १. कर्मनिष्ठ। २. कर्मकांडी।

**करमात***—संज्ञा पुं० [सं० कर्म] भाग्य।

**करमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उँग-लियों के पोर जिनपर उँगली रखकर माला के क्रम से जप की गिनती करते हैं।

**करमाली**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

**करमी**—वि० [सं० कर्मी] १. कर्म करनेवाला। २. कर्मठ। ३. कर्मकांडी।

**करमुखा*** -वि० [हिं० काला + मुख] [स्त्री० करमुखी] काले मुँह-वाला। कलंकी।

**करमुँहा**—वि० [हिं० काला + मुँह] १. काले मुँहवाला। २ कलंकी।

**करर**—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक जहरीला कीड़ा जिसके शरीर में बहुत गाँठें होती हैं। २. रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद। ३. एक प्रकार का जंगली कुसुम।

**कररना, कररानाः*** क्रि० अ० [अनु०] १ चरमराकर टूटना। २. कर्कश शब्द करना।

**कररुह**—संज्ञा पुं० [सं०] नाखून।

**करल**—संज्ञा पुं० [सं० कटाह] कड़ाही।

**करला**—संज्ञा पुं० दे० "कल्ला"।

**करवट**—संज्ञा स्त्री० [सं० करवर्त] हाथ के बल लेटने की मुद्रा। वह स्थिति जो पार्श्व के बल लेटने से हो।

**मुहा०**—करवट बदलना या लेना=१ दूसरी ओर घूमकर लेटना। २. पलटा खाना। और का और हो जाना। करवट खाना या होना=उलट जाना। फिर जाना। करवट न लेना=किसी कर्तव्य का ध्यान न रखना। सन्नाटा खींचना। करवटें बदलना=बिस्तर पर बेचैन रहना। तड़पना।

संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] १. करवत। आरा। २. वे प्राचीन आरे या चक्र जिनके नीचे लोग शुभ फल की आशा से प्राण देते थे।

**करवत**—संज्ञा पुं० [सं० करपत्र] आरा।

**करवर***†—संज्ञा स्त्री० [देश०] विपत्ति। आफत। संकट। मुसीबत।

**करवरना***—क्रि० अ० [सं० कल-रव] कलरव करना। चहकना।

**करवा**—संज्ञा पुं० [सं० करक] धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा। बधना।

**करवाचौथ**—संज्ञा स्त्री० [सं० करक चतुर्थी] कार्तिक कृष्ण चतुर्थी। इस दिन स्त्रियाँ गौरी का व्रत करती हैं।

**करवानक**—संज्ञा पुं० [?] गौरैया। चिड़ा।

**करवाना**—क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] दूसरे को करने में प्रवृत्त करना।

**करवार*** - संज्ञा स्त्री० [सं० करवाल] तलवार।

**करवाल**—संज्ञा पुं० [सं० करवाल] १. नख। नाखून। २. तलवार।

**करवाली** —संज्ञा स्त्री० [सं० कराल] छोटी तलवार। करौली।

**करवीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कनेर का पेड़। २. तलवार। खड्ग। ३ श्मशान।

**करवील**—संज्ञा पुं० दे० "करील"।

**करवैया***†—वि० [हिं० करना + वैया (प्रत्य०)] करनेवाला।

**करष**—संज्ञा पुं० [सं० कर्ष] १. खिंचाव। मनमोटाव। अकस। तनाव। द्रोह। २. ताव। लड़ाई का जोश।

**करषना*** —क्रि० स० [सं० कर्षण] १ खींचना। तानना। घसीटना। २. सोख लेना। सुखाना। ३ बुलाना।

निमंत्रित करना। ४. आकर्षण करना। समेटना।

**करसना***—क्रि० स० दे० "करषना"।

**करसान***—संज्ञा पु० दे० "कृषाण"।

**करसायर, करसायल**—संज्ञा पुं० [सं० कृष्णसार] काला मृग। काला हिरन।

**करसी**—संज्ञा स्त्री० [सं० करीष] १. उपले या कंडे का टुकड़ा। २. कंडा। उपला।

**करहंस**—संज्ञा पुं० दे० "करहंस"।

**करहंस**—संज्ञा पु० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।

**करह***—संज्ञा पु० [सं० करभ] ऊँट। संज्ञा पुं० [सं० कलिः] फूल की कली।

**करहाट, करहाटक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल की जड़। भैंसीड़। २. कमल का छत्ता।

**करांकुल**—संज्ञा पु० [सं० कलांकुर] पानी के किनारे की एक बड़ी चिड़िया। कूँज।

**करा***—संज्ञा स्त्री० दे० "कला"।

**कराइत**—संज्ञा पुं० [हिं० काला] एक प्रकार का काला साँप जो बहुत विषैला होता है।

**कराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० केराना] उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।
*संज्ञा स्त्री० [हिं० काला] कालापन। श्यामता।
संज्ञा स्त्री० [हिं० करना] करने या कराने का भाव।

**करात**—संज्ञा पुं० [अ० कीरात] चार जौ की एक तौल जो सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम में आती है।

**कराना**—क्रि० स० [हिं० करना का प्रे० रूप] करने में लगाना।

**कराबा**—संज्ञा पुं० [अ०] शीशे का बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।

**करामात**—संज्ञा स्त्री० [अ० 'करामत' का बहु०] चमत्कार। अद्भुत व्यापार। करिश्मा।

**करामाती**—वि० [हिं० करामात + ई (प्रत्य०)] निश्चय। करामात या करिश्मा दिखानेवाला। सिद्ध।

**करार**—संज्ञा पु० [अ० करार] १. ठहरा हुआ होने का भाव। स्थिरता। २ ठहराने या निश्चित करने का भाव। ठहराव। ३ धैर्य। धीरज। तसल्ली। संतोष। ४. आराम। चैन। ५. वादा। प्रतिज्ञा।

**करारना***—क्रि० अ० [अनु०] काँ काँ शब्द करना। कर्कश स्वर निकालना।

**करारा**—संज्ञा पु० [सं० कराल] १ नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने। २ टीला। दूह।
वि० [हिं० कड़ा, कर्रा] १. छूने में कठोर। कड़ा। २ दृढ़चित्त। ३. आँच पर इतना तला या सेंका हुआ कि तोड़ने से कुर कुर शब्द करे। ४ उग्र। तेज। तीक्ष्ण। ५. चोखा। खरा। ६. अधिक। गहरा। घोर। ७ हट्टा-कट्टा। बलवान्।

**करारापन**—संज्ञा पु० [हिं० करारा + पन(प्रत्यय)] करारा होने का भाव। कड़ापन।

**कराल**—वि० [सं०] १ जिसके बड़े बड़े दाँत हों। २. डरावना। भयानक।

**कराली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
वि० डरावनी। भयावनी।

**कराव, करावा**—संज्ञा पुं० [हिं० करना] एक प्रकार का विवाह या सगाई।

**कराह**—संज्ञा पुं० [हिं० करना + आह] कराहने का शब्द। पीड़ा का शब्द।
*संज्ञा पुं० दे० "कड़ाह"।

**कराहना**—क्रि० अ० [हिं० करना + आह] व्यथा सूचक शब्द मुँह से निकालना। आह आह करना।

**करिंद**—संज्ञा पुं० [सं० करींद्र] १. उत्तम या बड़ा हाथी। २. ऐरावत हाथी।

**करि**—संज्ञा पुं० [सं० करिन्] हाथी।
*अव्य० [सं० करण] से। द्वारा।

**करिखा***†—संज्ञा पु० दे० "कालिख"।

**करिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] हथिनी।

**करिया***—संज्ञा पु० [सं० कर्ण] १ पतवार। कलवारी। २. माँझी। केवट। मल्लाह।
*† वि० [हिं० काला] काला। श्याम।

**करियाई**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० काला] कालापन।

**करियारी**—संज्ञा स्त्री० [?] लगाम। बाग।

**करिल**—संज्ञा पु० [सं० करीर] कोंपल।
वि० [हिं० कारा, काला] काला।

**करिवदन**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

**करिहाँव**†—संज्ञा स्त्री० [सं० कटि-भाग] कमर।

**करी**—संज्ञा पुं० [सं० करिन्] [स्त्री० करिणी] हाथी।
संज्ञा स्त्री० [सं० काड] १. छत पाटने का शहतीर। कड़ी। *२. कली। ३. पंद्रह मात्राओं का एक छंद।
प्रत्य० [सं०] करनेवाला। (यौगिक शब्दों के अंत में)

**करीना***—संज्ञा पु० दे० "[illegible]ना"।

**करीना**—संज्ञा पु० [अ०] १. ढंग। तर्ज। तरीका। चाल। २. क्रम। तरतीब। ३. शऊर। सलीका।

**करीब**—क्रि० वि० [अ०] १. समीप। पास। निकट। २. लगभग।

क्रि०—करीब-करीब—प्रायः। लगभग।

**करीम**—वि० [ अ० ] कृपालु। दयालु।
संज्ञा पुं० ईश्वर।

**करीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाँस का नया कल्ला। २. करील का पेड़। ३. घड़ा।

**करील**—संज्ञा पुं० [ सं० करीर ] एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।

**करीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गजराज।

**करीष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूखा गोबर जो जंगलों में मिलता है। अरना कंडा।

**करुआ***।—वि० दे० "कड़ुआ"।

**करुआई***—संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ुआपन"।

**करुआना**।—क्रि० अ० दे० "कड़ुआना"।

**करुखी***—संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी"।

**करुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "करुणा"। ( यह काव्य के नौ रसों में से है। ) २. एक बुद्ध का नाम। ३. परमेश्वर।
वि० करुणायुक्त। दयार्द्र।

**करुणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह मनोविकार या दुःख जो दूसरे के दुःख के ज्ञान से उत्पन्न होता है और दूसरों के दुःख को दूर करने की प्रेरणा करता है। दया। रहम। तरस। २. वह दुःख जो अपने प्रिय मित्रादि के वियोग से होता है। शोक।

**करुणादृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दयादृष्टि।

**करुणानिधान, करुणानिधि**—वि० [ सं० ] जिसका हृदय करुणा से भरा हो। बहुत बड़ा दयालु।

**करुणामय**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा करुणामयता ] बहुत दयावान्।

**करुणार्द्र**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा करुणार्द्रता ] जिसका मन करुणा से पसीज गया हो।

**करुना***—संज्ञा स्त्री० दे० "करुणा"।

**करुर***—वि० [ सं० कटु ] कड़ुआ।

**करुवा***—संज्ञा पुं० दे० "करवा"।
संज्ञा पुं० दे० "कड़ुआ"।

**करुवार**—संज्ञा पुं० [ सं० कर + वार ( प्रत्य० ) ] नाव चलाने का डाँड़ा।

**करू***—वि० दे० "कड़ुआ"।

**करूष**—संज्ञा पुं० [सं० ] एक देश का नाम जो रामायण के अनुसार गंगा के किनारे था।

**करूला**।—संज्ञा पुं० [ हिं० कड़ा + ऊला ( प्रत्य० ) ] हाथ में पहनने का कड़ा।

**करेजा***।—संज्ञा पुं० दे० "कलेजा"।

**करेणु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथी।

**करेणुका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हथिनी।

**करेब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० क्रेप ] एक करारा झीना रेशमी कपड़ा।

**करेमू**—संज्ञा पुं० [ सं० कलबु ] पानी में का एक घास जिसका साग खाया जाता है।

**करेर***।—वि० [ सं० कठोर ] कठोर।

**करेला**—संज्ञा पुं० [ सं० कारवेल्ल ] १. एक छोटी बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते हैं। २. माला या हुमेल की लंबी गुरिया जो बड़े दानों के बीच में लगाई जाती है। हमेल।

**करेली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० करेला ] जंगली करेला जिसके फल छोटे होते हैं।

**करैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० कारा, काला] काला फनदार साँप जो बहुत विषैला होता है।

**करैल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कारा, काला] एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे मिलती है।
संज्ञा पुं० [ सं० करीर ] १. बाँस का नरम कल्ला। २ डोम-कौआ।

**करैला**—संज्ञा पुं० दे० "करेला"।

**करैली मिट्टी**—संज्ञा स्त्री० दे० "करैल"।

**करोटन**—संज्ञा पुं० [ अ० क्रोटन ] १. वनस्पति की एक जाति। २. एक प्रकार के पौधे जो अपने रंग-बिरंग और विलक्षण आकार के पत्तों के लिये लगाए जाते हैं।

**करोटी***—संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।

**करोड़**—वि० [ सं० कोटि ] सौ लाख की संख्या, १००००००० ।

**करोड़पति**—वि० [ हिं० करोड़ + सं० पति ] वह जिसके पास करोड़ों रुपए हों। बहुत बड़ा धनी।

**करोड़ी**—संज्ञा पुं० [ हिं० करोड़ ] १ रोकड़िया। तहसीलदार। २. मुसलमानी राज्य का एक अफसर जिसके जिम्मे कुछ तहसील रहती थी।

**करोना**—क्रि० स० [ सं० क्षुरण ] खुरचना।

**करोना**।—क्रि० स० [ सं० क्षुरण ] खुरचना।

**करोला***।—संज्ञा पुं० [ हिं० करवा ] करवा। गड़ुवा।

**करौंहा***।—वि० [ हिं० काला + औंहा ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० करौंही ] कुछ काला। श्याम।

**करौंजी***—संज्ञा स्त्री० दे० "कलौंजी"।

**करौट***—संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।

**करौंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० करमर्द ] १ एक कँटीला झाड़ जिसके बेर के से सुंदर छोटे फल खटाई के रूप में खाए जाते हैं। २. एक छोटी कँटीली जंगली झाड़ी जिसमें मटर के बराबर फल लगते हैं।

**करौंदिया**—वि० [ हिं० करौंदा ] करौंदे के समान हलकी स्याही लिए हुए खुलता लाल।

**करौत**—संज्ञा पुं० [ सं० करपत्र ] [ स्त्री० करौती ] लकड़ी चीरने का आरा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० करना ] रखेली स्त्री।

**करौता**—संज्ञा पु० दे० "करौत"।

संज्ञा पु० [ हिं० करवा ] काँच का बड़ा बरतन या शीशी। करावा।

**करौती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० करौता ] लकड़ी चीरने का औजार। आरी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० करवा ] १. शीशे का छोटा बरतन। करावा। २. काँच की भट्टी।

**करौला***—संज्ञा पुं० [ हिं० रौला + शोर ] हँकवा करनेवाला। शिकारी।

**करौली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० करवाली ] एक प्रकार की सीधी छुरी।

**कर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ केकड़ा। २ बारह राशियों में से चौथी राशि। ३. काकड़ासिंगी। ४ अग्नि। ५. दर्पण।

**कर्कट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कर्कटी, कर्कटा ] १. केकड़ा। २ कर्क राशि। ३ एक प्रकार का सारस। करकरा। करकटिया। ४ लौकी। घीआ। ५. कमल की मोटी जड़। भसींड़। ६. सँड़सा।

**कर्कटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ कछुई। २. ककड़ी। ३. सेमर का फल। ४ सौंप।

**कर्कर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कंकड़। २. कुरंज पत्थर जिसके चूर्ण की सान बनती है।

वि० १. कड़ा। करारा। २ खुरखुरा।

**कर्कश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमाले का पेड़। २. ऊख। ईख। ३. खग। तलवार।

वि० १ कठोर। कड़ा। जैसे, कर्कश स्वर। २ खुरखुरा। काँटेदार। ३. तेज। तीव्र। प्रचंड। ४. अधिक। क्रूर।

**कर्कशता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कठोरता। कड़ापन। २ खुरखुरापन।

**कर्कशा**—वि० स्त्री० [ सं० ] झगड़ालू। झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी।

**कर्कोट**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. बेल का पेड़। २ खेखसा। ककोड़ा।

**कर्चूर**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ सोना। सुवर्ण। २ कचूर। नरकचूर।

**कर्ज, कर्जा**—संज्ञा पु० [ अ० ] ऋण। उधार।

**मुहा०**—कर्ज उतारना = कर्ज चुकाना। उधार बेबाक करना। कर्ज खाना = १ कर्ज लेना। २ उपकृत होना। वश में होना।

**कर्जदार**—वि० [ फ़ा० ] उधार लेनेवाला।

**कर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कान। श्रवणेंद्रिय। २ कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत दानी प्रसिद्ध है।

**मुहा०**—कर्ण का पहरा = प्रभातकाल। दान-पुण्य का समय।

३. नाव की पतवार। ४. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा। ५ पिंगल में डगण अर्थात् चार मात्रावाले गणों की संज्ञा।

**कर्णकटु**—वि० [ सं० ] कान को अप्रिय। जो सुनने में कर्कश लगे।

**कर्ण-कुसुम**—संज्ञा पु० [ सं० ] कान में पहनने का करनफूल।

**कर्णकुहर**—संज्ञा पु० [ सं० ] कान का छेद।

**कर्णधार**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. माझी। मल्लाह। २. पतवार। किलवारी।

**कर्णनाद**—संज्ञा पु० [ सं० ] कान में सुनाई पड़ती हुई गूँज।

**कर्णपाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कान की लौ। २. कान की बाली। मुरकी।

**कर्णपिशाची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक देवी जिसके सिद्ध होने पर, कहा जाता है कि मनुष्य जो चाहे सो जान सकता है।

**कर्णभूषण**—संज्ञा पु० [ सं० ] कान में पहनने का एक गहना।

**कर्णमूल**—संज्ञा पु० [ सं० ] कनपेड़ा रोग।

**कर्णवेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बालकों के कान छेदने का संस्कार। कनछेदन।

**कर्णाट**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. दक्षिण का एक देश। २. संपूर्ण जाति का एक राग।

**कर्णाटक**—संज्ञा पु० दे० "कर्णाट"।

**कर्णाटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी। २. कर्णाट देश की स्त्री। ३. कर्णाट देश की भाषा। ४ शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग के ही अक्षर आते हैं।

**कर्णिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कान का करनफूल। २. हाथ की उँगली। ३. हाथी की सूँड़ की नोक। ४. कमल का छत्ता। ५. सेवती। सफेद गुलाब। ६ कलम। लेखनी। ७. डंठल।

**कर्णिकार**—संज्ञा पु० [ सं० ] कनियारी या कनकचंपा का पेड़।

**कर्णी**—संज्ञा पु० [ सं० कर्णिन् ] बाण।

**कर्त्तन**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ काटना। कतरना। २. (सूत इत्यादि) कातना।

**कर्त्तनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कैंची।

**कर्त्तरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ कैंची। कतरनी। २. (सुनारों की) काती। ३.

कटारी। ४. ताल देने का एक बाजा।

**कर्त्तव्य**—वि० [सं०] करने के योग्य। संज्ञा पुं० करने योग्य कार्य्य। धर्म। फर्ज।

**यौ०**—कर्त्तव्याकर्त्तव्य=करने और न करने योग्य कर्म। उचित और अनुचित कर्म।

**कर्त्तव्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कर्त्तव्य का भाव।

**यौ०**—इतिकर्त्तव्यता=उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा। दौड़ की हद। २. कर्त्तव्य या कर्मकांड कराने की दक्षिणा।

**कर्त्तव्यमूढ़**—वि० [सं०] १. जिसे यह न सुझाई दे कि क्या करना है। २. भौचक्का।

**कर्त्ता**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कर्त्री] १. करनेवाला। काम करनेवाला। २. रचनेवाला। बनानेवाला। ३ ईश्वर। ४. व्याकरण के छः कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है।

**कर्त्तार**—संज्ञा पुं० [सं० 'कर्तृ' की प्रथमा का बहु०] १. करनेवाला। २. ईश्वर।

**कर्त्तृक**—वि० [सं०] किया हुआ। संपादित।

**कर्त्तृत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] कर्त्ता का भाव। कर्त्ता का धर्म।

**कर्त्तृवाचक**—वि० [सं०] कर्त्ता का बोध करानेवाला (व्या०)

**कर्त्तृवाच्य क्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिससे कर्त्ता का बोध प्रधान रूप से हो; जैसे—खाना, पीना, मारना।

**कर्दम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कीचड़। कीच। चहला। २. मांस। ३. पाप। ४. स्वायंभुव मन्वंतर के एक प्रजापति।

**कर्नैला**—संज्ञा पुं० [देश०] रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद।

**कर्पट**—संज्ञा पुं० [सं०] गूदड़। लत्ता।

**कर्पटी**—संज्ञा पुं० [सं० कर्पटिन्] [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला भिखारी।

**कर्पर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपाल। खोपड़ी। २. खप्पर। ३ कछुए की खोपड़ी। ४ एक शस्त्र। ५. कड़ाह। ६ गूलर।

**कर्परी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] खपरिया।

**कर्पास**—संज्ञा पुं० [सं०] कपास।

**कर्पूर**—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

**कर्बुर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। स्वर्ण। २. धतूरा। ३. जल। ४ पाप। ५ राक्षस। ६ जड़हन धान। ७ कचूर

वि० रंग बिरंगा। चितकबरा।

**कर्म**—संज्ञा पुं० [सं० कर्मन् का प्रथमा रूप] १ वह जो किया जाय। क्रिया। कार्य्य। काम। करनी। (वैशेषिक के छः पदार्थों में से एक) २ यज्ञ-याग आदि कर्म। (मीमांसा) ३ व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४. वह कार्य्य या क्रिया जिसका करना कर्त्तव्य हो। जैसे—ब्राह्मणों के षट्-कर्म। ५. भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। ६. मृतक-संस्कार। क्रिया-कर्म्म।

**कर्मकर**—संज्ञा पुं० दे० "कर्मकार"।

**कर्मकांड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म-संबंधी कृत्य। यज्ञादि कर्म। २. वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।

**कर्मकांडी**—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञादि कर्म या धर्म-संबंधी कृत्य करनेवाला।

**कर्मकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक वर्णसंकर जाति। कमकर। २. लोहे या सोने का काम बनानेवाला। ३. बैल। ४. नौकर। सेवक। ५. बेगार।

**कर्मक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्य्य करने का स्थान। २ भारतवर्ष।

**कर्मचारी** संज्ञा पुं० [सं० कर्मचारिन्] १ काम करनेवाला। कार्य्य-कर्त्ता। २. वह जिसके अधीन राज्य-प्रबंध या और कोई कार्य्य हो। अमला।

**कर्मठ**—वि० [सं०] १. काम में चतुर। २ धर्म संबंधी कृत्य करनेवाला। कर्मनिष्ठ।

संज्ञा पुं० अग्निहोत्र, संध्या आदि नित्यकर्मों को विधिपूर्वक करनेवाला। व्यक्ति।

**कर्मणा**—क्रि० वि० [सं० कर्मन् का तृतीया] कर्म्म से। कर्म द्वारा। जैसे—मनसा, वाचा, कर्मणा।

**कर्मण्य**—वि० [सं०] खूब काम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।

**कर्मण्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्य-कुशलता।

**कर्मधारय समास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण हो; जैसे—कचलहू।

**कर्मना***—क्रि० वि० दे० "कर्मणा"।

**कर्मनाशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो चौसा के पास गंगा में मिलती है।

**कर्मनिष्ठ**—वि० [सं०] संध्या अग्निहोत्र आदि कर्त्तव्य करनेवाला। क्रियावान्।

**कर्मभू**—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मक्षेत्र"।

**कर्मभोग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्मफल। करनी का फल। २. पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम।

**कर्ममास**—संज्ञा पुं० [सं०] ३० सावन दिनों का महीना। सावन मास।

**कर्मयुग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कलयुग।

**कर्मयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र विहित कर्म। २. कर्त्तव्य कर्म का साधन जो सिद्धि और असिद्धि में समान भाव रखकर किया जाय।

**कर्मरेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्म + रेखा ] कर्म की रेखा। भाग्य की लिखन। तकदीर।

**कर्मवाच्य क्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह क्रिया जिसमें कर्म मुख्य होकर कर्त्ता के रूप से आया हो।

**कर्मवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान है। २. कर्मयोग।

**कर्मवादी**—संज्ञा पुं० [ सं० कर्मवादिन् ] १. कर्मकांड को प्रधान माननेवाला। मीमांसक। २ काम को प्रधान माननेवाला। ३. भाग्य को प्रधान माननेवाला।

**कर्मवान्**—वि० दे० "कर्मनिष्ठ।"

**कर्मविपाक**—संज्ञा पु० [ सं० ] पूर्व जन्म के किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल।

**कर्मशील**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर स्वभावतः काम करे। कर्मवान्। २ यत्नवान्। उद्योगी।

**कर्मशूर**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह जो साहस और दृढ़ता के साथ कर्म करे। उद्योगी।

**कर्मसंन्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कर्म का त्याग। २ कर्म के फल का त्याग।

**कर्मसाक्षी**—वि० [ सं० कर्मसाक्षिन् ] जिसके सामने कोई काम हुआ हो।

संज्ञा पुं० वे देवता जो प्राणियों के कर्मों को देखते रहते हैं और उनके साक्षी रहते हैं; जैसे—सूर्य, चंद्र, अग्नि।

**कर्महीन**—वि० [ सं० ] १. जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। २. अभागा। *भाग्यहीन।*

**कर्मिष्ठ**—वि० [ सं० ] १. कर्म करनेवाला। काम में चतुर। २ दे० "कर्मनिष्ठ"।

**कर्मी**—वि० [ सं० कर्मिन् ] [ स्त्री० कर्मिणी ] १. कर्म करनेवाला। २. फल की आकांक्षा से यज्ञादि कर्म करनेवाला। ३ बहुत काम करनेवाला। कर्मठ। ४. मजदूर।

**कर्मेंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह अंग जिससे कोई क्रिया की जाती है। ये पाँच हैं—हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ।

वि० [ हिं० कड़ा ] १ कड़ी। सख्त। २ कठिन। मुश्किल।

**कर्रा**—वि० दे० "कड़ा"।

**कर्राना***†—क्रि० अ० [ हिं० कर्रा ] कड़ा होना। कठोर होना।

**कर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सोलह माशे का एक मान। २. पुराना सिक्का। ३. खिंचाव। घसीटना। ४. जोताई। ५. ( लकीर आदि ) खींचना। ६. जोश।

**कर्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खींचनेवाला। २. हल जोतनेवाला। किसान।

**कर्षण** संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कर्षित, कर्षक, कर्षणीय, कर्ष्य ] १. खींचना। २ खरोंचकर लकीर डालना। ३. जोतना। ४ कृषिकर्म।

**कर्षना***—क्रि० स० [ सं० कर्षण ] खींचना।

**कलंक**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. दाग। धब्बा। २ चंद्रमा पर का काला दाग। ३ कालिख। कजली। ४. लांछन। बदनामी। ५. ऐब। दोष।

**कलंकित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कलंकिता ] जिसे कलंक लगा हो। लांछित। दोषयुक्त।

**कलंकी**—वि० [ सं० कलंकिन् ] [ स्त्री० कलंकिनी ] जिसे कलंक लगा हो। दोषी। अपराधी।

†संज्ञा पु० [ सं० कल्कि ] कल्कि अवतार।

**कलँगा**—संज्ञा पु० दे० "कलमा"।

**कलंदर**—संज्ञा पु० [ अ० कलंदर ] १ एक प्रकार के मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त होते हैं। २. रीछ और बंदर नचानेवाला। ३. दे० "कलंदरा"।

**कलंदरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। गुदड़।

**कलंब** संज्ञा पुं० [ सं० ] १ शर। २. शाक का डंठल। ३ कदंब।

**कलंबिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गले के पीछे की नाड़ी। मन्या।

**कल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. अव्यक्त मधुर ध्वनि। जैसे—कोयल की कूक। २ वीर्य्य।

वि० १. सुंदर। २ मधुर।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कल्य ] १. आरोग्य। तंदुरुस्ती। २. आराम। सुख।

**मुहा०**—कल से = १ चैन से। †२. धीरे धीरे। आहिस्ता आहिस्ता। ३. संतोष। तुष्ट।

क्रि० वि० [ सं० कल्य ] १. आगामी दूसरा दिन। आनेवाला दिन। २. भविष्य में। ३ गया दिन। बीता हुआ दिन।

**मुहा०**—कल का = थोड़े दिनों का।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कला ] १. ओर। बल। पहलू। २. अंग। अवयव। पुरजा। ३. युक्ति। ढंग। ४. पेंचों और पुरजों से बनी हुई वस्तु जिससे काम लिया जाय। यंत्र।

**यौ०**—कलदार = (यंत्र से बना हुआ)

ठगया । ५. पेंच । पुर्जा ।

**मुहा०**—कल ऐंठना = किसी के चित्त का किसी ओर फेरना ।

६. बंदूक का घोड़ा या चाप ।

वि० [ हिं० ] "काला" शब्द का संक्षिप्त रूप । ( यौगिक में । ) जैसे—कलमुहाँ ।

**कलई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ राँगा । २ राँगे का पतला लेप जो बरतन इत्यादि पर लगाते हैं । मुलम्मा । ३. वह लेप जो रंग चढ़ाने या चमकाने के लिए किसी वस्तु पर लगाया जाता है । ४. बाहरी चमक दमक । तड़क-भड़क । भीत पर पोता चूना ।

**मुहा०**—कलई खुलना=असली भेद खुलना । वास्तविक रूप का प्रकट होना । कलई न लगना = युक्ति न चलना ।

५ चूने का लेप । सफेदी ।

**कलईगर**—संज्ञा पुं० [ अ० + फा० ] वह जो बरतनों पर कलई करता हो ।

**कलईदार**—वि० [ फा० ] जिसपर कलई या राँगे का लेप चढा हो ।

**कलकंठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कलकंठी ] १ कोकिल । कोयल । २. पारावत । परेवा । ३ हंस ।

वि० मीठी ध्वनि करनेवाला ।

**कलक**—संज्ञा पुं० [ अ० कलक ] १. बेचैनी । घबराहट । २. रंज । दुःख । खेद ।

संज्ञा पुं० दे० "कल्क" ।

**कलकना***—क्रि० अ० [ हिं० कलकल ] चिल्लाना । शोर करना । चीत्कार करना ।

**कलकल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. झरने आदि के जल के गिरने का शब्द । २. कोलाहल ।

संज्ञा स्त्री० झगड़ा । वाद-विवाद ।

**कलकानि**—संज्ञा स्त्री० [ अ० कलक ] दिक्कत । हैरानी । दुःख ।

**कलकूजक**—वि० पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कलकूजिका ] मधुर ध्वनि करनेवाला ।

**कलगा**—संज्ञा पुं० [ तु० कलगी ] मरसे की जाति का एक पौधा । जटाधारी । मुर्गकेश ।

**कलगी**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] १. शुतुर्मुर्ग आदि चिड़ियों के सुंदर पंख जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं । २ मोती या सोने का बना सिर का एक गहना । ३ चिड़ियों के सिर की चोटी । ४ इमारत का शिखर । ५ लावनी का एक ढंग ।

**कलचुरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश ।

**कलछा**—संज्ञा पुं० [ सं० कर + रक्षा ] बड़ी डाँड़ी का चम्मच या बड़ी कलछी ।

**कलछी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर + रक्षा ] बड़ी डाँड़ी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं ।

**कलजिब्भा**—वि० [ हिं० काला + जीभ ] [ स्त्री० कलजिब्भी ] १ जिसकी जीभ काली हो । २. जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः ठीक घटें ।

**कलजीहा**—वि० दे० "कलजिब्भा" ।

**कलझँवाँ**—वि० [ हिं० काला + झाँई ] काले रंग का । साँवला ।

**कलत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्री । पत्नी ।

**कलदार**—वि० [ हिं० कल + दार ] जिसमें कल लगी हो । पेंचदार ।

संज्ञा पुं० सरकारी रुपया ।

**कलधूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चाँदी ।

**कलधौत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सोना । २ चाँदी । ३. सुंदर ध्वनि ।

**कलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कलित ] १. उत्पन्न करना । बनाना । २ धारण करना । ३. आचरण । ४ लगाव । संबंध । ५ गणित की क्रिया । जैसे—संकलन, व्यवकलन । ६. ग्रास । कौर । ७ ग्रहण । ८ शुक्र और शोणित के संयोग का वह विकार जो गर्भ की प्रथम रात्रि में होता है और जिससे कलल बनता है ।

**कलना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. धारण या ग्रहण करना । २. विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना । ३ गणना । विचार । ४ लेन-देन । व्यवहार ।

**कलप**—संज्ञा पुं० [ सं० कल्प ] १. कलफ । २. खिजाब । ३ दे० "कल्प" ।

**कलपना**—क्रि० अ० [ सं० कल्पन ] १ विलाप करना । बिलखना । *२. कल्पना करना ।

क्रि० स० [ सं० कल्पन् ] काटना । कतरना ।

*संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पना" ।

**कलपाना**—क्रि० स० [ हिं० कलपना ] दुःखी करना । जी दुखाना ।

**कलफ**—संज्ञा पुं० [ सं० कल्प ] १. पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं । माड़ी । २. चेहरे पर का काला धब्बा । झाँई ।

**कलबल**—संज्ञा पुं० [ सं० कला + बल ] उपाय । दाँव-पेंच । जुगुत ।

सं० पुं० [ अनु० ] शोर-गुल ।

वि० अस्पष्ट (स्वर) ।

**कलबूत**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० कालबुद ] १ ढाँचा । साँचा । २ लकड़ी का वह ढाँचा जिसपर चढ़ाकर जूता सिया जाता है । फरमा । ३. गुंबदनुमा ढाँचा जिसपर रखकर टोपी या पगड़ी आदि बनाई जाती है । गोलंबर । कालिब ।

**कलभ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. हाथी का उसका बच्चा। २. ऊँट का बच्चा। ३. धतूरा।

**कलम**—संज्ञा पुं॰ स्त्री॰ [ अ॰, सं॰ ] १. जीभ लगी हुई या कटी हुई लकड़ी का टुकड़ा जिसे स्याही में डुबाकर कागज पर लिखते हैं। लेखनी।

**मुहा॰**—कलम चलना=लिखाई होना। कलम चलाना=लिखना। कलम तोड़ना=लिखने का हद कर देना। अनूठी उक्ति करना।

२. किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिये काटी जाय।

**मुहा॰**—कलम करना=काटना-छाँटना।

३. जड़हन धान। ४. वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड़ दिये जाते हैं। ५. बालों या गिलहरी की पूँछ के बालोंकी बनी कूची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं। ६. चित्र अंकित करने की शैली। आलेखन-शैली। ७. शीशे का कटा हुआ लंबा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है। ८ शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा लंबा टुकड़ा। रवा। ९. वह औजार जिससे महीन चीज काटी, खोदी या नकाशी जाय।

**कलम कसाई**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] वह जो कुछ लिख-पढ़कर लोगों की हानि करे।

**कलमकारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फा॰ ] कलम से किया हुआ काम। जैसे—नक्काशी।

**कलमख***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कल्मष"।

**कलमतराश**—संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] कलम बनाने की छुरी। चाकू।

**कलमदान**—संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] कलम, दवात आदि रखने का डिब्बा या छोटा संदूक।

**कलमना***—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ कलम ] काटना। दो टुकड़े करना।

**कलमलना,कलमलाना***—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] दाब में पड़ने के कारण अंगो का हिलना-डोलना। कुलबुलाना।

**कलमा**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १ वाक्य। बात। २. वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है।

**मुहा॰**—कलमा पढ़ना=मुसलमान होना।

**कलमी**—वि॰ [ फा॰ ] १. लिखा हुआ। लिखित। २ जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो। जैसे, कलमी आम। ३. जिसमें कलम या रवा हो। जैसे, कलमी शोरा।

**कलमुहाँ**—वि॰ [ हिं॰ काला + मुँह ] १. जिसका मुँह काला हो। २ कलंकित। लांछित। ३. अभागा। (गाली)

**कलरव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ कलरवित ] १. मधुर शब्द। २. कोकिल। ३ कबूतर।

**कलल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] गर्भाशय में रज और वीर्य्य के संयोग की वह अवस्था जिसमें एक बुलबुला सा बन जाता है।

**कलवरिया**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ कलवार + इया (प्रत्य॰) ] शराब की दूकान।

**कलवार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कल्यपाल ] एक जाति। वह जाति जो शराब बनाती और बेचती है।

**कलविंग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चटक। गौरैया। २ तरबूज। ३. सफेद चँवर।

**कलश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ कलशी ] १. घड़ा। गगरा। २. मंदिर, चैत्य आदि का शिखर। ३ मंदिरों या मकानों के शिखर पर का कँगूरा। ४. एक मान जो द्रोण या ८ सेर के बराबर होता था। ५. चोटी। सिरा।

**कलशी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ गगरी। छोटा कलशा। २ मंदिर का छोटा कँगूरा।

**कलस**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कलश"।

**कलसा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कलश ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ कलसी ] १. पानी रखने का बरतन। गगरा। घड़ा। २. मंदिर का शिखर।

**कलसी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ कलश ] १. छोटा गगरा। २. छोटा शिखर या कँगूरा।

**कलहंतरिता**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कलहांतरिता"।

**कलहंस**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. हंस। २ राजहंस। ३ श्रेष्ठ राजा। ४. परमात्मा। ब्रह्म। ५ एक वर्णवृत्त। ६. क्षत्रियों की एक शाखा।

**कलह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [वि॰ कलहकारी, कलही ] १ विवाद। झगड़ा। २ लड़ाई।

**कलहकारी**—वि॰ [ सं॰ कलहकारिन् ] [ स्त्री॰ कलहकारिणी ] झगड़ा करनेवाला।

**कलहप्रिय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] नारद। वि॰ [ स्त्री॰ कलहप्रिया ] जिसे लड़ाई भली लगे। लड़ाका। झगड़ालू।

**कलहांतरिता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह नायिका जो नायक या पति का अपमान करके पीछे पछताती है।

**कलहा***—वि॰ दे॰ "कलही"।

**कलहारी***—वि॰ स्त्री॰ [ सं॰ कलहकार ] कलह करनेवाली। लड़ाकी। झगड़ालू। कर्कशा।

**कलही**—वि॰ [ सं॰ कलहिन् ] [स्त्री॰ कलहिनी ] झगड़ालू। लड़ाका।

**कलाँ**—वि॰ [फा॰] बड़ा। दीर्घाकार।

**कलांकुर**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कराकुल"।

**कला**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. अंश।

भाग। २. चंद्रमा का सोलहवाँ भाग। ३ सूर्य का बारहवाँ भाग। ४ अग्नि-मंडल के दस भागों में से एक। ५. समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। ६ राशि के तीसवें अंश का ६० वाँ भाग। ७. वृत्त का १८०० वाँ भाग। राशि-चक्र के एक अंश का ६० वाँ भाग। ८. छंदःशास्त्र या पिंगल में 'मात्रा'। ९ चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार शरीर की सात विशेष झिल्लियाँ। १०. किसी कार्य्य को भली भाँति करने का कौशल। फन। हुनर। (काम-शास्त्र के अनुसार ६४ कलाएँ हैं।) ११. मनुष्य के शरीर के आध्यात्मिक विभाग जो १६ हैं। पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ, पाँच प्राण और मन। १२ वृद्धि। सूद। १३ जिह्वा। १४ मात्रा (छंद)। १५. स्त्री का रज। १६. विभूति। तेज। १७ शोभा। छटा। प्रभा। १८ तेज। १९ कौतुक। खेल। लीला। †२० छल। कपट। धोखा। २१. ढंग। युक्ति। करतब। २२ नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है। ढेकली। कलैया। २३ यंत्र। पेंच। २४ एक वर्णवृत्त।

**कलाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कलाची ] हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है। मणिबंध। गट्टा। प्रकोष्ठ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कलाप ] १. सूत का लच्छा। करछा। कुकरी। २ हाथी के गले में बाँधने का कलावा।

**कलाकंद**—संज्ञा पुं० [ फा० ] खोए और मिश्री की बनी बरफी।

**कलाकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो कोई कलापूर्ण कार्य करता हो।

**कलाकारिता**—संज्ञा स्त्री० कलाकार का काम या भाव।

**कलाकौशल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी कला की निपुणता। हुनर। दस्तकारी। कारीगरी। २. शिल्प।

**कलाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सोनार।

**कलादा***—संज्ञा पुं० [ सं० कलाप ] हाथी की गर्दन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है। कलावा। किलावा।

**कलाधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा। २ दंडक छंद का एक भेद। ३. शिव। ४ वह जो कलाओं का ज्ञाता हो।

**कलानाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**कलानिधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**कलाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ समूह। झुंड। जैसे—क्रिया-कलाप। २. मोर की पूँछ। ३ पूला। मुट्ठा। ४. तूण। तरकश। ५. कमरबंद। पेटी। ६ करधनी। ७ चंद्रमा। ८. कलावा। ९ कातंत्र व्याकरण। १०. व्यापार। ११ आभरण। जेवर। भूषण।

**कलापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। २ पूला। मुट्ठा। ३ हाथी के गले का रस्सा। ४ चार श्लोकों का समूह।

**कलापिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रात्रि। २ मयूरी। मोरनी।

**कलापी**—संज्ञा पुं० [ सं० कलापिन् ] [ स्त्री० कलापिनी ] १ मोर। २. कोकिल।

वि० १. तूणीर बाँधे हुए। तरकशबंद। २ झुंड में रहनेवाला।

**कलाबत्तू**—संज्ञा पुं० [ तु० कलाबतून ] [ वि० कलाबतूनी ] १. सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय। २ सोने-चाँदी के कलाबत्तू का बना हुआ पतला फीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है।

**कलाबाज**—वि० [ हिं० कला + फा० बाज ] कलाबाजी या नट-क्रिया करनेवाला।

**कलाबाजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कला + फा० बाजी ] सिर नीचे करके उलट जाना। ढेकली। कलैया।

**कलाभृत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**कलाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वाक्य। वचन। २. बातचीत। कथन। ३ वादा। प्रतिज्ञा। ४ उज्र। एतराज।

**कलामुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**कलार**—संज्ञा पुं० दे० "कलवार"।

**कलाल**—संज्ञा पुं० [ सं० कल्यपाल ] [ स्त्री० कलाली ] कलवार। मद्य बेचनेवाला।

**कलावंत**—संज्ञा पुं० [ सं० कलावान् ] १. संगीत कला में निपुण व्यक्ति। गवैया। २ कलाबाजी करनेवाला। नट।

वि० कलाओं का जाननेवाला।

**कलावत**—संज्ञा पुं० दे० "कलावंत"।

**कलावती**—वि० स्त्री० [ सं० ] १. जिसमें कला हो। २ शोभावाली। छविशाली।

**कलावा**—संज्ञा पुं० [ सं० कलापक ] [ स्त्री० अल्पा० कलाई ] १. सूत का लच्छा जो तकले पर लिपटा रहता है। २ लाल पीले सूत के तागों का लच्छा जिसे विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ या घड़ों पर बाँधते हैं। ३. हाथी की गरदन।

**कलावान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कलावती ] कला-कुशल। गुणी।

**कलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मटमैले रंग की एक चिड़िया। कुलंग। २. कुटज। कुरैया। ३. इंद्रजौ। ४. सिरिस का पेड़। ५ पाकर का पेड़। ६ तरबूज। ७ कलिंगड़ा राग। ८. एक समुद्रतटस्थ देश जिसका विस्तार गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच

में था।
वि० कलिंग देश का।
**कलिंगड़ा**—संज्ञा पु० [ सं० कलिंग ] एक राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है।
**कलिंद**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. बहेड़ा। २. सूर्य्य। ३. एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकलती है।
**कलिंदजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।
**कलिंदी***—संज्ञा स्त्री० दे० "कलिंदी"।
**कलि**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. बहेड़े का फल या बीज। २ कलह। विवाद। झगड़ा। ३. पाप। ४. चार युगों में से चौथा युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता रहती है। ५. छंद में टगण का एक भेद। ६ सूरमा। वीर। जवाँमर्द। ७ क्लेश। दुःख। ८ संग्राम। युद्ध।
वि० [ सं० ] श्याम। काला।
**कलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बिना खिला फूल। कली। २. वीणा का मूल। ३ प्राचीन काल का एक बाजा। ४ एक छंद।
**कलिकाल**—संज्ञा पु० [ सं० ] कलियुग।
**कलित**—वि० [सं०] [ स्त्री० कलिता ] १ विदित। ख्यात। २ प्राप्त। गृहीत। ३. सजाया हुआ। सुसज्जित। ४. सुन्दर। मधुर।
**कलिमल**—संज्ञा पु० [ सं० ] पाप। कलुष।
**कलिया**—संज्ञा पु० [ अ० ] भूनकर रसेदार पकाया हुआ मांस।
**कलियाना**—क्रि० अ० [ हिं० कलि ] १. कली लेना। कलियों से युक्त होना। २. चिड़ियों का नया पंख निकलना।
**कलियारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कलिहारी ] एक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।
**कलियुग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चार युगों में से चौथा युग। वर्त्तमान युग।
**कलियुगाद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] माघ की पूर्णिमा जब कलियुग का आरंभ हुआ था।
**कलियुगी**—वि० [ सं० ] १. कलियुग का। २. कुप्रवृत्तिवाला।
**कलिल**—वि० [ सं० ] १ मिला हुआ। मिश्रित। २. घना। ३ दुर्गम।
**कलिवर्ज्य**—वि० [ सं० ] जिसका करना कलियुग में निषिद्ध हो। जैसे, अश्वमेध।
**कलिहारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी"।
**कलींदा**—संज्ञा पु० [ सं० कालिंद ] तरबूज।
**कली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कलिका ] १ बिना खिला फूल। मुँह-बँधा फूल। बोंड़ी। कलिका।
**मुहा०**—दिल की कली खिलना = आनंदित होना। चित्त प्रसन्न होना। २ चिड़ियों का नया निकला हुआ पर। ३. वह तिकोना कटा हुआ कपड़ा जो कुर्ते, अँगरखे आदि में लगाया जाता है। ४ हुक्के का नीचेवाला भाग।
संज्ञा स्त्री० [ अ० कलई ] पत्थर या सीप आदि का फूका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है। जैसे—कली का चूना।
**कलीट***—वि० [ हिं० काली ] काला कलूटा।
**कलीरा**—संज्ञा पु० [ देश० ] कौड़ियों और छुहारों की माला जो विवाह में दी जाती है।
**कलील**—संज्ञा पु० [ अ० ] थोड़ा। कम।
**कलीसिया**—संज्ञा पु० [ यू० इक्लिसिया ] ईसाइयों या यहूदियों की धर्ममंडली।
**कलुख**—संज्ञा पु० दे० "कलुष"।
**कलुवाबीर**—संज्ञा पु० [ हिं० काला+बीर ] टोना टामर का एक देवता जिसकी दुहाई मंत्रों में दी जाती है।
**कलुष**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० कलुषित, कलुषी ] १ मलिनता। २. पाप। ३ क्रोध।
वि० [ स्त्री० कलुषा, कलुषी ] १. मलिन। मैला। २ निंदित। ३. दोषी। पापी।
**कलुषाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कलुष+आई (प्रत्य०) ] बुद्धि की मलिनता। चित्त का विकार।
**कलुषित**—वि० [सं०] [स्त्री० कलुषिता] १ दूषित। २. मैला। ३. पापी। ४. दुःखित। ५ क्षुब्ध। ६. असमर्थ। ७. काला।
**कलुषी**—वि० स्त्री० [ सं० ] १ पापिनी। दोषी। २ मलिन। गंदी।
वि० पु० [ सं० कलुषिन् ] १ मलिन। मैला। गंदा। २ पापी। दोषी।
**कलूटा**—वि० [ हिं० काला+टा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० कलूटी ] काले रंग का। काला।
**कलेऊ**—संज्ञा पु० दे० "कलेवा"।
**कलेजा**—संज्ञा पु० [ सं० यकृत् ] १. प्राणियों का एक अवयव जो छाती के दाँई ओर होता है और भोजन के पाचन में सहायक होता है। हृदय। दिल।
**मुहा०**—कलेजा उलटना = १ वमन करते करते जी घबराना। २. होश का जाता रहना। कलेजा काँपना = जी दहलना। डर लगना। कलेजा जलाना = दुःख देना। कलेजा टूक टूक होना = शोक से हृदय विदीर्ण होना। कलेजा ठंढा करना = संतोष देना। तुष्ट करना। कलेजा थामकर बैठ या रह जाना = शोक के वेग को दबाकर रह जाना।

मन मसोस कर रह जाना। कलेजा धक धक करना = भय से व्याकुलता होना। कलेजा धड़कना = १. डर से जी काँपना। भय से व्याकुलता होना। २. चित्त में चिंता होना। जी में खटका होना। कलेजा निकालकर रखना=अत्यंत प्रिय वस्तु समर्पण करना। सर्वस्व दे देना। कलेजा पक जाना = दुःख सहते सहते तंग आ जाना। पत्थर का कलेजा = १ कड़ा जी। दुःख सहने में समर्थ हृदय। २ कठोर चित्त। कलेजा पत्थर का करना = भारी दुःख झेलने के लिये चित्त को दबाना। कलेजा फटना = किसी के दुःख को देखकर मन में अत्यंत कष्ट होना। कलेजा बाँसों, बल्लियों या हाथों उछलना = १. आनंद से चित्त प्रफुल्ल होना। २. भय या आशंका से जी धक धक करना। कलेजा बैठ जाना = क्षीणता के कारण शरीर और मन की शक्ति का मंद पड़ना। कलेजा मुँह को या मुँह तक आना = १. जी घबराना। जी उकताना। व्याकुलता होना। २ संताप होना। दुःख से व्याकुलता होना। कलेजा हिलना = कलेजा काँपना। अत्यंत भय होना। कलेजे पर साँप लोटना = चित्त में किसी बात के स्मरण आ जाने से एकबारगी शोक छा जाना।

२ छाती। वक्षःस्थल।

मुहा०—कलेजे से लगाना = छाती या गले से लगाना। आलिंगन करना।

३. जीवट। साहस। हिम्मत।

**कलेजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कलेजा ] बकरे आदि के कलेजे का मांस।

**कलेवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीर। देह। चोला।

मुहा०—कलेवर बदलना = १. एक शरीर त्यागकर दूसरा शरीर धारण करना। २. एक रूप से दूसरे रूप में जाना। ३. जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति का स्थापित होना।

२. ढाँचा।

**कलेवा**—संज्ञा पुं० [ सं० कल्यवर्त ] १. वह हलका भोजन जो सबेरे बासी मुँह किया जाता है। नहारी। जलपान।

मुहा०—कलेवा करना = १. निगल जाना। खा जाना। २. मार डालना।

२. वह भोजन जो यात्री घर से चलते समय बाँध लेते हैं। पाथेय। संबल। ३. विवाह के अंतर्गत एक रीति जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है। खिचड़ी। बासी।

**कलेस***—संज्ञा पुं० दे० "क्लेश"।

**कलैया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कला ] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया। कलाबाजी।

**कलोर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कल्या ] वह जवान गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।

**कलोल**—संज्ञा पुं० [ सं० कल्लोल ] आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा। केलि।

**कलोलना***—क्रि० अ० [ हिं० कलोल ] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

**कलौंजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कालाजाजी ] १ एक पौधा। २. इसकी फलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम में आते हैं। मँगरैला। ३. एक प्रकार की तरकारी। भरगल।

**कलौंस**—वि० [ हिं० काला + औंस (प्रत्य०) ] कालापन लिए। सियाही-मायल।

संज्ञा पुं० १. कालापन। २. कलंक।

**कल्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चूर्ण। बुकनी। २. पीठी। ३. गूदा। ४. दंभ। पाखंड। ५ शठता। ६. मैल। कीट। ७. विष्ठा। ८. पाप। ९. गीली या भिगोई हुई ओषधियों को बारीक पीसकर बनाई हुई चटनी। अवलेह। १० बहेड़ा।

**कल्कि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु के दसवें अवतार का नाम जो संभल (मुरादाबाद) में एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।

**कल्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विधान। विधि। कृत्य। जैसे, प्रथम कल्प। २. वेद के प्रधान छः अंगों में एक जिसमें यज्ञादि के करने का विधान है। ३. प्रातःकाल। ४. वैद्यक के अनुसार रोग-निवृत्ति का एक उपाय या युक्ति। जैसे, केश-कल्प, काया-कल्प। ५. प्रकरण। विभाग। ६. काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२००००००० वर्ष होते हैं।

वि० तुल्य। समान। जैसे, देवकल्प।

**कल्पक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० कल्पकता ] १ नाई। २. कचूर।

वि० १ रचनेवाला। २. काटनेवाला। ३ कल्पना करनेवाला।

**कल्पकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्पशास्त्र का रचनेवाला व्यक्ति।

**कल्पतरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्पवृक्ष।

**कल्पद्रुम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्पवृक्ष।

**कल्पना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रचना। बनावट। सजावट। २ वह शक्ति जो अंतःकरण में ऐसी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है जो उस समय इंद्रियों के सम्मुख उपस्थित नहीं होतीं। उद्भावना। अनुमान। ३ किसी एक वस्तु में अन्य वस्तु का आरोप। अध्यारोप। ४. मान लेना। फर्ज करना। ५. मन-गढ़ंत बात।

**कल्पलता**—संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पवृक्ष"।

**कल्पवल्ली**—संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पवृक्ष"।

**कल्पवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] माघ में

महीने भर गंगा तट पर संयम के साथ रहना।

**कल्पवृक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार देवलोक का एक अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है। २. एक वृक्ष जो सब पेड़ों से बड़ा और दीर्घजीवी होता है। गोरख इमली।

**कल्पसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सूत्र-ग्रंथ जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।

**कल्पांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रलय।

**कल्पित**—वि० [ सं० ] १ जिसकी कल्पना की गई हो। २. मनमाना। मनगढ़ंत। फर्जी। ३ बनावटी। नकली।

**कल्मष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाप। २. मैल। मल। † ३. पीब। मवाद।

**कल्माष**—वि० [ सं० ] १ चितकबरा। चित्रवर्ण। २ काला।

**कल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सबेरा। भोर। प्रातःकाल। मधु। शराब।

**कल्यपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कलवार।

**कल्या**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दरदाने के योग्य बछिया। कलोर।

**कल्याण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मंगल। शुभ। भलाई। २ सोना। ३ एक राग।

वि० [ स्त्री० कल्याणी ] अच्छा। भला।

**कल्याणी**—वि० [ सं० ] १. कल्याण करनेवाली। २ सुंदरी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. माषपर्णी। २. गाय।

**कल्यान**†—संज्ञा पुं० दे० "कल्याण"।

**कल्लर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १ नोनी मिट्टी। २. रेह। ३. ऊसर। बंजर।

**कल्लाँच**—वि० [ तु० कल्लाच ] १. लुच्चा। शोहदा। गुंडा। २. दरिद्र। कंगाल।

**कल्ला**—संज्ञा पुं० [ सं० करीर ] १. अंकुर। कल्फा। किल्ला। गोंफा। २. हरी निकली हुई टहनी। ३. लंप या सिरा जिसमें बत्ती जलती है। बर्नर।

संज्ञा पुं० [ फा० ] १. गाल के भीतर का अंश। जबड़ा। २ जबड़े के नीचे गले तक का स्थान।

**कल्लातोड़**—वि० [ हिं० कल्ला + तोड़ ] १. मुँहतोड़। प्रबल। २. जोड़-तोड़ का।

**कल्लादराज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा कल्लादराज़ी ] बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला। मुँहजोर।

**कल्लाना**—क्रि० अ० [ सं० कड् या कल् ] चमड़े के ऊपर ही ऊपर कुछ जलन लिए हुए एक प्रकार की पीड़ा होना।

**कल्लोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी की लहर। तरंग। २ आमोद प्रमोद। क्रीड़ा।

**कल्लोलिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी।

**कल्ह**†—क्रि० वि० दे० "कल"।

**कल्हर**—संज्ञा पुं० दे० "कल्लर"।

**कल्हरना***—क्रि० अ० [ हिं० कड़ाह + ना ( प्रत्य० ) ] कड़ाही में तला जाना। भुनना।

**कल्हारना**†—क्रि० स० [ हिं० कड़ाह + ना ( प्रत्य० ) ] कड़ाही में भूनना या तलना।

क्रि० अ० [ सं० कल्ल शोर करना ] दुःख से कराहना। चिल्लाना।

**कवच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कवची ] १. आवरण। छाल। छिलका। २ लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसे योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे। जिरह। बकतर। सँजोया। सन्नाह। ३ तंत्रशास्त्र का एक अंग जिसमें मंत्रों द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा के लिये प्रार्थना की जाती है। ४. इस प्रकार रक्षा मंत्र लिखा हुआ तावीज। ५ बड़ा नगाड़ा जो युद्ध में बजता है। पटह। डंका।

**कवन**†—सर्व० दे० "कौन"।

**कवर**—संज्ञा पुं० [ सं० कवल ] ग्रास। कौर।

संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कवरी ] १. केशपाश। २. गुच्छा।

संज्ञा पुं० [ अं० ] १ ढकना। २. पुस्तक का आवरणपृष्ठ।

**कवरना**—क्रि० स० दे० "कौरना"।

**कवरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चोटी। जूड़ा।

**कवर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कवर्गीय ] क से ङ तक के अक्षरों का समूह।

**कवल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में खाने के लिये मुँह में रखी जाय। कौर। ग्रास। गस्सा। २ उतना पानी जितना मुँह साफ करने के लिये एक बार मुँह में लिया जाय। कुल्ली।

संज्ञा पुं० [ देश० ] [ स्त्री० कवली ] १ एक पक्षी। २ घोड़े की एक जाति।

**कवलित**—वि० [ सं० ] कौर किया हुआ। खाया हुआ। भक्षित।

**कवाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ पकाकर शहद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस। किवाम। २ चाशनी। शीरा।

**कवायद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. नियम। व्यवस्था। २ व्याकरण। ३. सेना के युद्ध करने के नियम। ४. लड़नेवाले सिपाहियों के युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।

**कवि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काव्य करनेवाला। कविता रचनेवाला। २. ऋषि। ३. ब्रह्मा। ४. शुक्राचार्य। ५. सूर्य।

**कविका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लगाम। २ केवड़ा।

**कविता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मनोविकारों पर प्रभाव डालनेवाला रमणीय

पद्यमय वर्णन। काव्य।

**कविताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "कविता"।

**कवित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० कवित्व ] १. कविता। काव्य। २ दण्डक के अंतर्गत ३१ अक्षरों का एक वृत्त।

**कवित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काव्य-रचना शक्ति। २ काव्य का गुण।

**कविनासा***—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।

**कविराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ श्रेष्ठ कवि। २. भाट। ३. बंगाली वैद्यों की उपाधि।

**कविराय**—संज्ञा पुं० दे० "कविराज"।

**कविलास***—संज्ञा पुं० [सं० कैलाश] १. कैलास २. स्वर्ग।

**कवेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० कौआ + एला ( प्रत्य० ) ] कौए का बच्चा।

**कव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंड, पितृ-यज्ञादि किए जायँ।

**कश**—संज्ञा पुं० [ सं० ][ स्त्री० कशा ] चाबुक।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. खिंचाव।

**यौ०**—कश-मकश।

२. हुक्के या चीलम का दम। फूँक।

**कशकोल**—संज्ञा पुं० दे० "कजकोल"।

**कश-मकश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. खींचातानी। २. भीड़। धक्कम-धक्का। ३. आगा-पीछा। सोच-विचार।

**कशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रस्सी। २. कोड़ा।

**कशिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आकर्षण।

**कशीदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कपड़े पर सूई और तागे से निकाले हुए बेल-बूटे।

**कश्चित्**—वि० [ सं० ] कोई। कोई-एक।

सर्व० [ सं० ] कोई (व्यक्ति)।

**कश्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. नौका। नाव। २. पान, मिठाई या बायना बाँटने के लिए धातु या काठ का बना हुआ एक छिछला बर्तन। ३ शतरंज का एक मोहरा।

**कश्मल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाप। २. मोह। ३. मूर्च्छा।

वि० [ स्त्री० कश्मला ] १. पापी। २. मलिन।

**कश्मीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पंजाब के उत्तर हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य और उर्वरता के लिए संसार में प्रसिद्ध है।

**कश्मीरी**—वि० [ हिं० कश्मीर + ई ( प्रत्य० ) ] कश्मीर का। कश्मीर देश में उत्पन्न।

संज्ञा स्त्री० कश्मीर देश की भाषा।

संज्ञा पुं० [ हिं० कश्मीर ] [ स्त्री० कश्मीरिन ] १. कश्मीर देश का निवासी। २. कश्मीर देश का घोड़ा।

**कश्यप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक वैदिक ऋषि। २. एक प्रजापति। ३. कछुआ। ४. सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

**कष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सान। २. कसौटी। (पत्थर) ३. परीक्षा। जाँच।

**कषा**—संज्ञा पुं० दे० "कशा"।

**कषाय**—वि० [ सं० ] १. कसैला। बाकठ। ( छः रसों में से एक )। २. सुगंधित। खुशबूदार। ३. रँगा हुआ। ४ गेरु के रंग का। गैरिक।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कसैली वस्तु। २. गोंद। ३. गाढ़ा रस। ४. क्रोध। लोभ आदि विकार ( जैन )। ५. कलियुग।

**कष्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. क्लेश। पीड़ा। तकलीफ। २. संकट। आपत्ति। मुसीबत।

**कष्टकल्पना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बहुत खींच खाँच की और कठिनता से घटनेवाली युक्ति।

**कष्टसाध्य**—वि० [ सं० ] जिसका करना कठिन हो। मुश्किल से होनेवाला।

**कष्टी**—वि० [ सं० कष्ट ] पीड़ित। दुःखी।

**कस**—संज्ञा पुं० [सं० कष] १ परीक्षा। कसौटी। जाँच। २. तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है। ३. आसव। शराब।

संज्ञा पुं० १ जोर। बल। २. वश। काबू।

**मुहा०**—कस का = जिसपर अपना इख्तियार हो। कस में करना या रखना = वश में रखना। अधीन में रखना।

३ रोक। अवरोध।

संज्ञा पुं० [ सं० कषाय ] १. 'कसाव' का संक्षिप्त रूप। २. निकाला हुआ अर्क। ३. सार। तत्व।

*†— क्रि० वि० १ कैसे। २. क्यों।

**कसक**—संज्ञा पुं० [ सं० कष् ] १. हलका या मीठा दर्द। साल। टीस। २. बहुत दिन का मन में रखा हुआ द्वेष। पुराना बैर।

**मुहा०**—कसक निकालना = पुराने बैर का बदला लेना।

३ हौसला। अरमान। अभिलाषा। ४. हमदर्दी। सहानुभूति।

**कसकना**—क्रि० अ० [ हिं० कसक ] दर्द करना। सालना। टीसना।

**कसकुट**—संज्ञा पुं० [ हिं० काँसा + कुट = टुकड़ा ] एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग मिलाकर बनाई जाती है। भरत। काँसा।

**कसन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कसना ] १. कसने की क्रिया या ढंग। २. कसने

की रस्सी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कष ] दुःख। क्लेश।

**कसना**—क्रि० स० [ सं० कर्षण ] १. बंधन को दृढ़ करने के लिये उसकी डोरी आदि को खींचना। २ बंधन को खींचकर बँधी हुई वस्तु को अधिक दबाना।

**मुहा०**—कस कर=१. जोर से। बलपूर्वक। २. पूरा पूरा। बहुत अधिक। कसा = पूरा पूरा। बहुत अधिक। जैसे—कसा दाम।

३. जकड़कर बाँधना। जकड़ना। ४. पुर्जों को दृढ़ करके बैठाना। ५. साज रखकर सवारी के लिये तैयार करना।

**मुहा०**—कसा कसाया = चलने के लिये बिलकुल तैयार।

६. ठूस ठूसकर भरना।

क्रि० अ० १. बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय। जकड़ जाना। २. लपेटने या पहनने की वस्तु का तंग होना। ३. बँधना। ४. साज रखकर सवारी का तैयार होना। ५ खूब भर जाना।

क्रि० स० [ सं० कषण ] १. परखने के लिये सोने आदि धातुओं को कसौटी पर घिसना। कसौटी पर चढ़ाना। २. परखना। जाँचना। आजमाना। ३ तलवार को लचाकर, उसके लोहे की परीक्षा करना। ४. दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना।

क्रि० स० [ सं० कषण = कष्ट देना ] क्लेश देना। कष्ट पहुँचाना।

**कसनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "कसन"।

**कसनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कसना ] १. रस्सी जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. बेठन। गिलाफ। ३ कंचुकी। अँगिया। ४. कसौटी। ५. परीक्षा। परख। जाँच।

**कसब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. परिश्रम। मेहनत। २. पेशा। रोजगार। व्यवसाय।

**कसबल**—संज्ञा पुं० [हिं० कस + बल] १ शक्ति। बल। २ साहस। हिम्मत।

**कसबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० कसबाती ] साधारण गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। बड़ा गाँव।

**कसबिन, कसबी**—संज्ञा स्त्री० [अ० कसब ] १ वेश्या। रंडी। व्यभिचारिणी स्त्री।

**कसम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शपथ। सौगंध।

**मुहा०**—कसम उतारना =१ शपथ का प्रभाव दूर करना। २ किसी काम को नाममात्र के लिये करना। कसम देना, दिलाना या खाना = किसी को किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। कसम लेना= कसम खिलाना। प्रतिज्ञा कराना। कसम खाने को = नाम मात्र का।

**कसमस**—संज्ञा स्त्री० दे० "कसमसाहट"।

**कसमसाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १ बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का एक दूसरे से रगड़ खाते हुए हिलना डोलना। खलबलाना। कुलबुलाना। २. ऊबकर हिलना डोलना। ३ घबराना। बेचैन होना। ४ आगा-पीछा करना। हिचकना।

**कसमसाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कसमसाना ] १ कुलबुलाहट। २ बेचैनी। घबराहट।

**कसर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कमी। न्यूनता। २. द्वेष। वैर। मनमोटाव।

**मुहा०**—कसर निकालना = बदला लेना।

३ टोटा। घाटा। हानि। ४. नुक्स। दोष। विकार। ५. किसी वस्तु के सूखने या उसमें से कूड़ा-करकट निकलने से हो जानेवाली कमी।

**कसरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० कसरती ] शरीर को पुष्ट और बलवान् बनाने के लिये दंड, बैठक आदि परिश्रम का काम। व्यायाम। मेहनत।

संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अधिकता। ज्यादती।

**कसरती**—वि० [ अ० कसरत ] १. कसरत करनेवाला। २. कसरत से पुष्ट और बलवान् बनाया हुआ।

**कसवाना**—क्रि० स० [हिं० कसना का प्रे० रूप] कसने का काम दूसरे से कराना।

**कसहँड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काँसा ] [ स्त्री० कसहँड़ी ] काँसे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

**कसाई**—संज्ञा पुं० [ अ० कस्साब ] [ स्त्री० कसाइन ] १ वधिक। घातक। २ बूचड़।

वि० निर्दय। बेरहम। निठुर।

**कसाना**—क्रि० अ० [ हिं० कसाव ] स्वाद में कसैला हो जाना। काँसे के योग से खट्टी चीज का बिगड़ जाना।

क्रि० स० दे० "कसवाना"।

**कसार**—संज्ञा पुं० [ सं० कृसर ] चीनी मिला हुआ भुना आटा या सूजी। पँजीरी।

**कसाला**—संज्ञा पुं० [ सं० कष्ट ] १. कष्ट। तकलीफ। २. कठिन परिश्रम। मेहनत।

**कसाव**—संज्ञा पुं० [ सं० कषाय ] कसैलापन।

**कसावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कसना ] कसने का भाव। तनाव। खिंचावट।

**कसीटना***—क्रि० स० दे० "कसना"।

**कसीदा**—संज्ञा पुं० दे० "कशीदा"।

**कसीदा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] उर्दू या फारसी भाषा की एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति या निंदा की जाती है।

**कसी**—संज्ञा पुं० [ सं० कासीस ]

लोहे का एक विकार जो खानों में मिलता है।

**कसीलना***—क्रि० अ० [सं० कर्षण] आकर्षित करना। खींचना।

**कसु***—क्रि० वि० [?] खींचतान।

**कसूँभा**—संज्ञा पु० दे० "कुसुमा"।

**कसूँभी**—वि० [सं० कुसुम] कुसुम के रंग का लाल।

**कसूर**—संज्ञा पु० [अ०] अपराध। दोष।

**कसूरमंद, कसूरवार**—वि० [फा०] दोषी। अपराधी।

**कसेरा**—संज्ञा पु० [हिं० काँसा + एरा। (प्रत्य०)] [स्त्री० कसेरिन] काँसे, फूल आदि के बरतन ढालने और बेचनेवाला।

**कसेरू**—संज्ञा पु० [सं० कशेरु] एक प्रकार के मोथे की गँठीली जड़ जो मीठी होती है।

**कसैया***†—संज्ञा पु० [हिं० कसना] १ कसनेवाला। २ जकड़कर बाँधनेवाला। परखनेवाला। जाँचनेवाला।

**कसैला**—वि० [हिं० कसाव + ऐला (प्रत्य०)] [स्त्री० कसैली] कषाय स्वादवाला। जिसमें कसाव हो। जैसे, आँवला, हड़ आदि।

**कसैली**†—संज्ञा पु० [हिं० कसैला] सुपारी।

**कसोरा**—संज्ञा पु० [हिं० काँसा + ओरा (प्रत्य०)] १. कटोरा। २. मिट्टी का प्याला।

**कसौटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कषपट्टी, प्रा० कसवट्टी] १. एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। २ परीक्षा। जाँच। परख।

**कस्टम**—संज्ञा पु० [अं०] १. प्रथा। रवाज। २ आयात और निर्यात पर लगनेवाला कर।

**कस्तूर**—संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] कस्तूरी-मृग।

**कस्तूरा**—संज्ञा पुं० [सं० कस्तूरी] १ कस्तूरीमृग। २. लोमड़ी की तरह का एक पशु।

संज्ञा पु० [देश०] १. वह सीप जिससे मोती निकलता है। २ एक ओषधि जो पोर्टब्लेयर की चट्टानों से खुरचकर निकाली जाती और बहुत बलकारक होती है।

**कस्तूरिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कस्तूरी।

**कस्तूरिया**—संज्ञा पु० दे० "कस्तूरी-मृग"।

वि० १ कस्तूरीवाला। कस्तूरी-मिश्रित। २ कस्तूरी के रंग का। मुश्की।

**कस्तूरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।

**कस्तूरी-मृग**—संज्ञा पु० [सं०] बहुत ठंढे पहाड़ी स्थानों में होनेवाला एक प्रकार का हिरन, जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

**कहँ***—प्रत्य० [सं० कक्ष] कर्म और सम्प्रदान का चिह्न 'को'। के लिये। (अवधी)

*क्रि० वि० दे० "कहाँ"।

**कहँरना**—क्रि० अ० दे० "कहरना"।

**कहकहा**†—संज्ञा पु० [अ० अनु०] ठठाकर हँसना। अट्टहास।

**कहगिल**—संज्ञा स्त्री० [फा० काह= घास + गिल = मिट्टी] दीवार में लगाने का गारा।

**कहत**—संज्ञा पु० [अ०] दुर्भिक्ष। अकाल।

यौ०—कहतसाली=दुर्भिक्ष का समय।

**कहता**—वि० [हिं० कहना] कहनेवाला।

**कहन**—संज्ञा स्त्री० [सं० कथन] १. कथन। उक्ति। २. वचन। बात। ३ कहावत। ४. कविता।

**कहना**—क्रि० स० [सं० कथन] १. बोलना। उच्चारण करना। वर्णन करना।

मुहा०—कह बदकर=१. प्रतिज्ञा करके। दृढ़ संकल्प करके। २ ललकारकर। दावे के साथ। कहना सुनना = बातचीत करना। कहने को = १. नाममात्र को। २. भविष्य में स्मरण के लिये। कहने की बात= वह बात जो वास्तव में न हो।

२. प्रकट करना। खोलना। जाहिर करना। ३. सूचना देना। खबर देना। ४. नाम रखना। पुकारना। ५. समझाना-बुझाना।

कहना-सुनना = समझाना। मनाना।

६ कविता करना।

संज्ञा पु० कथन। आज्ञा। अनुरोध।

**कहनाउत***—संज्ञा स्त्री० दे० "कहनावत"।

**कहनावत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना + आवत (प्रत्य०)] १ बात। कथन। २. कहावत।

**कहनि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कहन"।

**कहनूत**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना + ऊत (प्रत्य०)] कहावत। मसल।

**कहर**—संज्ञा पु० [अ०] विपत्ति। आफत।

वि० [अ० कह्हार] अपार। घोर। भयंकर।

**कहरना**†—क्रि० अ० दे० "कराहना"।

**कहरवा**—संज्ञा पु० [हिं० कहार] १. पाँच मात्राओं का एक ताल। २. दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है। ३.

वह नाच जो कहरवा ताल पर होता है।

**कहरी**—वि० [ अ० क़ह्र ] आफत ढालेवाला।

**कहरुवा**—संज्ञा पुं० [ फा० कहरुबा ] एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़ कर यदि घास या तिनके के पास रखें तो उसे चुंबक की तरह पकड़ लेता है।

**कहल***†—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. ऊमस। औंस। २. ताप। ३. कष्ट।

**कहलना***—क्रि० अ० [ हिं० कहल ] १. ऊमस खाना। अकुलाना। २ गरमी या ऊमस से व्याकुल होना। ३. दहलना।

**कहलवाना**—क्रि०स०दे०"कहलाना"।

**कहलाना**—क्रि० स० [ कहना का प्रे० रूप ] १ दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २ संदेशा भेजना। ३. पुकारा जाना।

क्रि० अ० [ हिं० कहल ] ऊमस से या गरम से व्याकुल या शिथिल होना।

**कहवाँ***†—क्रि० अ० दे० "कहाँ"।

**कहवा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक पेड़ का बीज जिसके चूर को चाय की तरह पीते हैं।

**कहवाना***—क्रि०स०दे०"कहलाना"।

**कहवैया***—वि० [ हिं० कहना+वैया (प्रत्य०) ] कहनेवाला।

**कहाँ**—क्रि० वि० [ वैदिक सं० कुहः ] किस जगह ? किस स्थान पर ?

**मुहा०**—कहाँ का=१. न जाने कहाँ का। असाधारण। बड़ा भारी। २. कहीं का नहीं। नहीं है। कहाँ का कहाँ=बहुत दूर। कहाँ की बात=यह बात ठीक नहीं है। कहाँ यह कहाँ वह=इनमें बड़ा अंतर है। कहाँ से=क्यों। व्यर्थ। नाहक।

**कहा***†—संज्ञा पुं० [ सं० कथन ] कथन। बात। आज्ञा। उपदेश।

क्रि० वि० [ सं० कथम् ] कैसे। किस तरह।

*†सर्व० [ सं० कः ] क्या। (ब्रज)

**कहाकही**—संज्ञा स्त्री० दे० "कहा-सुनी"।

**कहाना**—क्रि० स० दे० "कहलाना"।

**कहानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कथानिका] १ कथा। किस्सा। आख्यायिका। २ झूठी बात। गढ़ी बात।

**यौ०** रामकहानी=लंबा चौड़ा वृत्तांत।

**कहार**—संज्ञा पुं० [ सं० क=जल+हार ] एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।

**कहारा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्कंधभार ] टोकरा।

**कहाल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बाजा।

**कहावत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कहना ] १. ऐसा बँधा वाक्य जिसमें कोई अनुभव की बात संक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही गई हो। कहनूत। लोकोक्ति। मसल। २ कही हुई बात। उक्ति।

**कहा-सुना**—संज्ञा पुं० [ हिं० कहना+सुनना ] अनुचित कथन और व्यवहार। भूल-चूक।

**कहा-सुनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कहना+सुनना ] वाद-विवाद। झगड़ा-तकरार।

**कहिया***†—क्रि० वि० [ सं० कुहः ] कब।

**कहीं**—क्रि० वि० [हिं० कहाँ] १ किसी अनिश्चित स्थान में। ऐसे स्थान में जिसका ठीक-ठिकाना न हो।

**मुहा०**—कहीं और=दूसरी जगह। अन्यत्र। कहीं का=१ न जाने कहाँ का। २ बड़ा भारी। कहीं का न रहना या होना=दो पक्षों में से किसी पक्ष के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना। कहीं न कहीं=किसी स्थान पर अवश्य।

२ ( प्रश्न रूप में और निषेधार्थक ) नहीं। कभी नहीं। ३ कदाचित्। यदि। अगर। ( आशंका और इच्छा सूचक)। ४ बहुत अधिक। बहुत बढ़कर।

**कहुँ***—क्रि० वि० दे० "कहीं"।

**कहुला**†—वि० दे० "काल"।

**कहूँ*** क्रि० वि० दे० "कहीं"।

**काइयाँ** वि० [ अनु० काँव काँव ] चालाक। धूर्त।

**काँ***—अव्य० [ सं० किम् ] क्यों। सर्व० [ सं० कानि ] क्या।

**काँकर***† —संज्ञा पुं० दे० "कंकड़"।

**काँकरी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काँकर ] छोटा कंकड़।

**मुहा०**—काँकरी चुनना=चिंता या वियोग के दुःख से किसी काम में मन न लगना।

**काँक्षनीय**—वि० [ सं० ] इच्छा करने योग्य। चाहने लायक।

**कांक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० कांक्षित ] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

**कांक्षी**—वि० [ सं० कांक्षिन् ] [ स्त्री० कांक्षिणी ] चाहनेवाला। इच्छा रखने-वाला।

**काँख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कक्ष ] बाहु-मूल के नीचे की ओर का गड्ढा। बगल।

**काँखना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. श्रम या पीड़ा से उँह-आँह आदि शब्द मुँह से निकालना। मल या मूत्र को निकालने के लिये पेट की वायु को दबाना।

**काँखासोती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काँख+सं० श्रोत्र ] दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालने का ढंग।

**काँगड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] पंजाब प्रांत का एक पहाड़ी प्रदेश जिसमें एक

छोटा ज्वालामुखी पर्वत है जो ज्वालामुखी देवी के नाम से प्रसिद्ध है।

**काँगड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की छोटी अंगीठी जिसे जाड़े में कश्मीरी लोग गले में लटकाए रहते हैं।

**काँगनी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "कँगनी"।

**काँगुरा**—संज्ञा पुं० दे० "कँगूरा"।

**काँच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कक्ष ] १. धोती का वह छोर जिसे दोनो जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसते हैं। लाँग। २ गुदेंद्रिय के भीतर का भाग। गुदाचक्र।

**मुहा०**—काँच निकलना=किसी आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना।

संज्ञा पुं० [ सं० काँच ] एक मिश्र धातु जो बालू और रेह या खारी मिट्टी को गलाने से बनती और पारदर्शक होती है। शीशा।

**कांचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कांचनीय ] १ सोना। २ कचनार। ३ चंपा। ४ नागकेसर। ५ धतूरा।

**कांचनचंगा**—संज्ञा पुं० [सं० कांचनशृंग ] हिमालय की एक चोटी।

**काँचरी, काँचली***—संज्ञा स्त्री० [सं० कंचुलिका ] साँप की केंचुली।

**काँचा***—वि० दे० "कच्चा"।

**कांची**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मेखला। क्षुद्रघंटिका। करधनी। २. गोटा। पट्ठा। ३ गुंजा। घुँघुची। ४. हिंदुओं की सात पुरियों में से एक पुरी। कांजीवरम्।

**कांचीपुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कांची ] कांजीवरम्।

**काँचुरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "काँचली"।

**काँछना***—क्रि० स० दे० "काछना"।

**काँछा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कांक्षा"।

**काँजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं०कांजिक ] १. एक प्रकार का खट्टा रस जो पिसी हुई राई आदि को घोलकर रखने से बनता है। २ मट्ठे या दही का पानी। छाछ।

**काँजी हाउस**—संज्ञा पुं० [अं० काइन हाउस ] वह सरकारी मवेशीखाना जिसमें लोगों के छूटे हुए पशु बंद किए जाते हैं।

**काँट***—संज्ञा पुं० दे० "काँटा"।

**काँटा**—संज्ञा पुं० [ सं० कंटक ] [वि० कँटीला ] १. किसी किसी पेड़ की डालियों में निकले हुए सुई की तरह के नुकीले अंकुर जो बहुत कड़े हो जाते हैं। कंटक।

**मुहा०**—काँटा निकलना =१ बाधा या कष्ट दूर होना। २. खटका मिटना। रास्ते में काँटा बिछाना = विघ्न करना। बाधा डालना। काँटा बोना =१. बुराई करना। अनिष्ट करना। २. अड़चन डालना। उपद्रव मचाना। काँटा सा खटकना = अच्छा न लगना। दुःखदायी होना। काँटा होना = बहुत दुबला होना। काँटों में घसीटते हो = इतनी अधिक प्रशंसा या आदर करते हो जिसके मैं योग्य नहीं। काँटों पर लोटना = दुःख से तड़पना। बेचैन होना।

२ वह काँटा जो मोर, मुर्ग, तीतर आदि पक्षियों की नर जातियों के पैरों में पंजे के ऊपर निकलता है। खाँग। ३. वह काँटा जो मैना आदि पक्षियों के गले में रोग के रूप में निकलता है। ४ छोटी छोटी नुकीली और खुरखुरी फुंसियाँ जो जीभ में निकलती है। ५ [ स्त्री० अल्पा० काँटी ] लोहे की बड़ी कील। ६ मछली पकड़ने की झुकी हुई नोकदार अँकुड़ी या कँटिया। ७ लोहे की झुकी हुई अँकुड़ियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरे बरतन निकालते हैं। ८. सूई या कील की तरह की कोई नुकीली वस्तु। जैसे, साही का काँटा। ९. तराजू की डाँड़ी पर वह सूई जिससे दोनों पलड़ों के बराबर होने की सूचना मिलती है। १०. वह लोहे की तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा होता है।

**मुहा०**—काँटे की तौल = न कम न बेश। ठीक ठीक। काँटे में तुलना = महँगा होना।

११. नाक में पहनने की कील। लौंग। १२. पंजे के आकार का धातु का बना हुआ एक औजार जिससे अँगरेज लोग खाना खाते हैं। १३. घड़ी की सूई। १४ गणित में गुणनफल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया।

**काँटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काँटा ] १. छोटा काँटा। कील। २. वह छोटी तराजू जिसकी डाँड़ी पर काँटा लगा हो। ३. झुकी हुई छोटी कील। अँकुड़ी। ४ बेड़ी।

**काँठा***—संज्ञा पुं० [ सं० कंठ ] १. गला। २.तोते आदि चिड़ियों के गले की रेखा। ३. किनारा। तट। ४. पार्श्व। बगल।

**कांड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाँस या ईख आदि का वह अंश जो दो गाठों के बीच में हो। पोर। गाँडा। गँडा। २ शर। सरकंडा। ३ वृक्षों की पेड़ी। तना। ४. शाखा। डाली। डंठल। ५. गुच्छा। ६. किसी कार्य्य या विषय का विभाग। जैसे—कर्मकांड। ७. किसी ग्रंथ का वह विभाग जिसमें एक पूरा प्रसंग हो। ८ समूह। वृंद।

**काँड़ना***†—क्रि० स० [ सं० कंडन ] १ रौंदना। कुचलना। २ चावल से भूसी अलग करना। कूटना। ३ खूब मारना।

**कांडर्षि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ऋषि जिसने वेद के किसी कांड ( कर्म, ज्ञान, उपासना ) पर विचार किया हो, जैसे—जैमिनि।

**काँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कांड ] १. लकड़ी का बड़ा डंडा । २. बाँस या लकड़ी का कुछ पतला सीधा लट्ठा ।
**मुहा०**—काँड़ी कफन = मुरदे की रथी का सामान ।

**कांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पति । शौहर । २. श्रीकृष्णचंद्र । ३. चंद्रमा । ४. विष्णु । ५. शिव । ६. कार्त्तिकेय । ७ बसंत ऋतु । ८. कुंकुम । ९. एक प्रकार का बढ़िया लोहा । कांतसार ।
वि० १ सुंदर । मनोहर । २. प्रिय ।

**कांतसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कांत लोहा ।

**कांता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रिया । सुंदरी । स्त्री । २. भार्य्या । पत्नी ।

**कांतार** संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भयानक स्थान । २. दुर्भेद्य और गहन वन । ३ एक प्रकार की ईख । ४. बाँस । ५. छेद ।

**कांताशक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भक्ति का एक भेद जिसमें भक्त ईश्वर को अपना पति मानकर पत्नी भाव से भक्ति करता है । माधुर्य्य भाव ।

**कांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दीप्ति । प्रकाश । तेज । आभा । २. सौंदर्य्य । शोभा । छवि । ३. चंद्रमा की सोलह कलाओं में से एक । ४ चंद्रमा की एक स्त्री का नाम । ५ आर्य्या छंद का एक भेद ।

**कांतिमान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कांतिमती ] कांतिवाला । दीप्तियुक्त । संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. कामदेव ।

**कांतिसार**—संज्ञा पुं० दे० "कांत ९" ।

**काँथरि***—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी" ।

**काँदना***—क्रि० अ० [ सं० क्रंदन ] रोना ।

**काँदा**—संज्ञा पुं० [ सं० कंद ] १. एक गुल्म जिसमें प्याज की तरह गाँठ पड़ती है । २. प्याज । ३ दे० "काँदो" ।

**काँदो***†—संज्ञा पुं० [कर्दम] कीचड़ ।

**काँधा***†—संज्ञा पुं० दे० "कंधा" ।

**काँधना***—क्रि० वि० [ हिं० काँध ] १. उठाना । सिर पर लेना । सँभालना । २ ठनना । मचाना । स्वीकार करना । अंगीकार करना । ४. भार लेना ।

**काँधर, काँधा***†—संज्ञा पुं० दे० "कान्ह" ।

**काँप**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कंपा ] १. बाँस आदि की पतली लचीली तीली । २. पतंग या कनकौवे की धनुष की तरह झुकी हुई तीली । ३ सूअर का खाँग । ४. हाथी का दाँत । ५ कान में पहनने का एक गहना । ६ एक प्रकार की मिट्टी ।

**काँपना**—क्रि० अ० [ सं० कंपन ] १. हिलना । थरथराना । २ डर से काँपना । थर्राना ।

**कांबोज**—वि० [ सं० ] कंबोज देश का ।

**काँय काँय, काँव काँव**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १ कौवे का शब्द । २. व्यर्थ का शोर ।

**काँवर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काँव = आ र ( प्रत्य० ) ] बँहगी ।

**काँवरा**† —वि० [ पं० कमला ] घबराया हुआ ।

**काँवरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० काँवरि ] काँवर लेकर चलनेवाला तीर्थयात्री । कामारथी ।

**काँवरू**—संज्ञा पुं० दे० "कामरूप" ।

**काँवाँरथी**—संज्ञा पुं० [ सं० कामार्थी ] वह जो किसी तीर्थ में किसी कामना से काँवर लेकर जाय ।

**काँस**—संज्ञा पुं० [ सं० कास ] एक प्रकार की लंबी घास ।

**काँसा**—संज्ञा पुं० [ सं० कांस्य ] [ वि० काँसी ] एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है । कसकुट । भरत ।
संज्ञा पुं० [ फा० काँसा ] भीख माँगने का ठीकरा या खप्पर ।

**काँसागर**—संज्ञा पुं० [ हिं० काँसा + फा० गर ( प्रत्य० ) ] काँसे का काम करनेवाला ।

**कांस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काँसा । कसकुट ।

**का**—प्रत्य० [ सं० प्रत्य० क ] संबंध या षष्ठी का चिह्न, जैसे—राम का घोड़ा ।

**काई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कावार ] १. जल या सीड़ में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास या सूक्ष्म वनस्पति-जाल ।
**मुहा०**—काई छुड़ाना = १ मैल दूर करना । २ दुःख दारिद्र्य दूर करना । काई सा फट जाना = तितर बितर हो जाना । छँट जाना ।
२ एक प्रकार का मुर्चा जो ताँबे इत्यादि पर जम जाता है । ३ मल । मैल ।

**काउन्सिल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] कुछ विशिष्ट विषयों पर विचार करने वाली सभा या समिति ।

**काऊ***†—क्रि० वि० [ सं० कदा ] कभी ।
सर्व० [ सं० कः ] १ कोई । २ कुछ ।

**काक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कौआ ।
संज्ञा पुं० [ अं० कार्क ] एक प्रकार की नर्म लकड़ी जिसकी डाट बोतलों में लगाई जाती है । काग ।

**काकगोलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कौवे की आँख की पुतली, जो एक ही दोनों आँखों में घूमती हुई कही जाती है ।

**काकजंघा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चकसेनी । मसी का पौधा । २. गुंजा । घुँघची । ३. मुगौन या मुगवन नाम की लता ।

**काककर्कासींगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं०

कर्कटशृंगी ] काकड़ा नामक पेड़ में लगी हुई एक प्रकार की लाही जो दवा के काम में आती है।

**काकतालीय**—वि० [ सं० ] संयोग-वश होनेवाला। इत्तफाकिया।

**यौ०**—काकतालीय न्याय।

**काकदंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कोई असंभव बात।

**काकपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों के ऊपर रहते हैं। कुल्ला। जुल्फ।

**काकपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिये पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।

**काकपच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "काकपक्ष"।

**काकवंध्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसे एक संतति के उपरांत दूसरी न हुई हो।

**काकबलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओं को दिया जाता है। कागौर।

**काकभुशुंडि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ब्राह्मण जो लोमश के शाप से कौआ हो गए थे और राम के बड़े भक्त थे।

**काकरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "ककड़ी"।

**काकरेजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० काक + रेजा ] काकरेजी रंग का कपड़ा।

**काकरेजी**—संज्ञा पुं० [ फा० ] कोकची रंग जो लाल और काले के मेल से बनता है।

वि० काकरेजी रंग का।

**काकली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ मधुर ध्वनि। कलनाद। २. सेंध लगाने की सबरी।

**काका**—संज्ञा पुं० [ फा० काका = बड़ा भाई ] [ स्त्री० काकी ] बाप का भाई। चाचा।

**काका कौआ**—संज्ञा पुं० दे० "काकातूआ"।

**काकाक्षिगोलक न्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक शब्द या वाक्य को उलट-फेरकर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना।

**काकातूआ**—संज्ञा पुं० [ मला० ] वह बड़ा तोता जिसके सिर पर टेढ़ी चोटी होता है।

**काकिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. घुँघची। गुंजा। २ पण का चतुर्थ भाग जो पाँच गंडे कौड़ियों का होता है। ३ माशे का चौथाई भाग। ४. कौड़ी।

**काकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कौए की मादा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० काका ] चाची। चची।

**काकु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छिपी हुई चुटीली बात। व्यंग्य। तनज। ताना। २ अलंकार में वक्रोक्ति का एक भेद जिसमें शब्दों के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नहीं बल्कि ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय ग्रहण हो।

**काकुल**—संज्ञा पुं० [ फा० ] कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल। कुल्ले। जुल्फें।

**काकोली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सतावर की तरह की एक ओषधि जो अब नहीं मिलती।

**काग**—संज्ञा पुं० [ सं० काक ] कौआ।

संज्ञा पुं० [ अं० कार्क ] १ बलूत की जाति का एक बड़ा पेड़ जो स्पेन, पुर्त-गाल, फ्रांस तथा अफ्रीका के उत्तरीय भागों में होता है। २ बोतल या शीशी की डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती है।

**कागज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० कागजी ] १ सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस-पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं।

**यौ०**—कागज पत्र = १. लिखे हुए कागज। २ प्रामाणिक लेख। दस्तावेज।

**मुहा०**—कागज काला करना या रँगना = व्यर्थ कुछ लिखना। कागज की नाव = क्षणभंगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज़। कागजी घोड़े दौड़ाना = लिखा-पढ़ी करना।

२ लिखा हुआ प्रामाणिक लेख। प्रमाण-पत्र। दस्तावेज। ३. समाचार-पत्र। अखबार। ४. प्रामिसरी नोट।

**कागजात**—संज्ञा पुं० [ अ० कागज़ का बहु० ] कागज पत्र।

**कागजी**—वि० [ अ० कागज़ ] १. कागज का बना हुआ। २. जिसका छिलका कागज की तरह पतला हो। जैसे—कागजी बादाम। ३. लिखा हुआ। लिखित।

**कागद**[†]—संज्ञा पुं० दे० "कागज"।

**कागभुसुंड**—संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडि"।

**कागर***—संज्ञा पुं० दे० "कागज"।

संज्ञा पुं० [ हिं० काग ? ] चिड़ियों के वे रूई के से मुलायम पर जो झड़ जाते हैं।

**कागरी***—वि० [ हिं० कागज़ ] तुच्छ।

**कागावासी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काग + बासी ] १. वह भाँग जो सबेरे कौआ बोलते समय छानी जाय। २. एक प्रकार का मोती जो कुछ काला होता है।

**कागारोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० काग = कौआ + रोर = शोर ] हल्ला। हुल्लड़। शोर गुल।

**कागौर**—संज्ञा पुं० दे० "काकबलि"।

**काचलवण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कचिया नोन। काला नोन।

**काची***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कच्चा ] १ दूध रखने की हाँडी। २. तीखुर,

सिंघाड़े आदि का हलुआ।

**काँछ**—संज्ञा पु० [ सं० कक्ष ] १ पेड़ू और जाँघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान। २ धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है। लाँग। ३. अभिनय के लिये नटों का वेष या बनाव।

**मुहा०**—काछ काछना = वेष बनाना।

**काछना**—क्रि० स० [ सं० कक्षा ] १. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जाँघों पर से ले जाकर पीछे कसकर बाँधना। २ बनाना। सँवारना। क्रि० स० [ सं० कर्षण ] हथेली या चम्मच आदि से तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना।

**काछनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काछना ] १ कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी। २ घाघरे की तरह का एक चुननदार आधे जाँघे तक का पहनावा।

**काछा**—संज्ञा पु० दे० "काछनी"।

**काछी**—संज्ञा पु० [ कच्छ = जलप्राय देश ] तरकारी बोने और बेचनेवाला आदमी।

**काछू***—संज्ञा पु० दे० "कछुआ"।

**काछे**—क्रि० वि० [ सं० कक्ष ] निकट। पास।

**काज**—संज्ञा पुं० [ सं० कार्य्य ] १. कार्य्य।

**मुहा०**—के काज = के हेतु। निमित्त। २. व्यवसाय। पेशा। रोजगार। ३ प्रयोजन। मतलब। उद्देश्य। अर्थ। ४ विवाह।

संज्ञा पु० [ अ० काजा ] वह छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है। बटन का घर।

**काजर**—संज्ञा पु० दे० "काजल"।

**काजरी***—संज्ञा स्त्री० [सं० कज्जली] वह गाय जिसकी आँखों पर काला घेरा हो।

**काजल**—संज्ञा पु० [ सं० कज्जल ] वह कालिख जो दीपक के धुएँ के जमने से लग जाती है और आँखों में लगाई जाती है।

**मुहा०**—काजल घुलाना, डालना, देना या सारना = ( आँखों में ) काजल लगाना। काजल पारना = दीपक के धुएँ की कालिख को किसी बरतन में जमाना। काजल की कोठरी = ऐसा स्थान जहाँ जाने से मनुष्य का कलंक लगे।

**काजी**—संज्ञा पु० [ अ० ] मुसलमानों के धर्म और रीति-नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

**काजू**—संज्ञा पु० [कोंक० काजु] १. एक पेड़ जिसके फलों की गिरी को भूनकर लोग खाते हैं। २ इस वृक्ष के फल की गुठली के भीतर की मींगी या गिरी।

**काजू भोजू**—वि० [ हिं० काज + भोग ] ऐसी दिखाऊ वस्तु जो अधिक दिनों तक काम न आ सके।

**काट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काटना ] १ काटने की क्रिया या भाव।

**यौ०**—काट-छाँट = १ मार-काट। लड़ाई। २ काटने से बचा खुचा टुकड़ा। कतरन। ३ किसी वस्तु में कमी बेशी। घटाव बढ़ाव। मार काट = तलवार आदि की लड़ाई।

२ काटने का ढंग। कटाव। तराश। ३ कटा हुआ स्थान। घाव। जख्म। ४ कपट। चालबाजी। विश्वासघात। ५. कुश्ती में पेंच का तोड़। ६ किसी बुरी वस्तु के नाश करने का उपाय। ७ विरोध।

**काटना**—क्रि० स० [ सं० कर्त्तन ] १. शस्त्र आदि की धार धँसाकर किसी वस्तु के दो खंड करना।

**मुहा०**—काटो तो खून नहीं = एक बारगी सन्न हो जाना। बिलकुल स्तब्ध हो जाना।

२ पीसना। महीन चूर करना। ३. घाव करना। जख्म करना। ४ किसी वस्तु का कोई अंश निकालना। किसी भाग को कम करना। ५ युद्ध में मारना। वध करना। ६. कतरना। ब्योंतना। ७ नष्ट करना। ८ समय बिताना। ९ रास्ता खतम करना। दूरी तै करना। १०. अनुचित प्राप्ति करना। बुरे ढंग से आय करना। ११ कलम की लकीर से किसी लिखावट को रद्द करना। छेंकना। मिटाना। १२ ऐसे कामों को तैयार करना जो लकीर के रूप में कुछ दूर तक चले गये हों। जैसे, सड़क काटना, नहर काटना। १३ ऐसे कामों को तैयार करना जिनमें लकीरों द्वारा कई विभाग किये गए हों, जैसे—क्यारी काटना। १४. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का ऐसा भाग लगाना कि शेष न बचे। १५ जेलखाने में दिन बिताना। १६ विषैले जंतु का डंक मारना। डसना।

**मुहा०**—काटने दौड़ना = चिड़चिड़ाना। खीजना।

१७ किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लग कर जलन और छरछराहट पैदा करना। १८ एक रेखा का दूसरी रेखा के ऊपर से चार कोण बनाते हुए निकल जाना। १९. ( किसी मत का ) खंडन करना। अप्रमाणित करना। २०. दुःखदायी लगना।

**मुहा०**—काटे खाना या काटने दौड़ना

=१. बुरा मालूम होना। चित्त को व्यथित करना। २ सूना और उजाड़ लगना।

**काठर***—वि० [सं० कठोर] १ कड़ा। कठिन। २ कट्टर। ३ काटनेवाला।

**काढ़ू**—संज्ञा पुं० [हिं० काटना] १ काटनेवाला। २ कराऊ। डरावना। भयानक।

**काठ**—संज्ञा पुं० [सं० कष्ठ] १ पेड़ का कोई स्थूल अंग जो आधार से अलग हो गया हो। लकड़ी।

**यौ०**—काठ कबाड़=टूटा फूटा सामान।

**मुहा०**—काठ का उल्लू=जड़। वज्र मूर्ख। काठ होना=१ संज्ञा हीन होना। चेतनारहित होना। स्तब्ध होना। २ सूखकर कड़ा हो जाना। काठ की हाँड़ी=ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।

२. ईंधन। जलाने की लकड़ी। ३ शहतीर। लक्कड़। ४ लकड़ी की बनी हुई बेड़ी। कलंदरा।

**मुहा०**—काठ मारना या काठ में पाँव देना=अपराधी को काठ की बेड़ी पहनाना।

**काठड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "कठौता"।

**काठिन्य**—संज्ञा पुं० दे० "कठिनता"।

**काठी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काठ] १. घोड़े या ऊँट की पीठ पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। अँगरेजी जीन। २ शरीर की गठन। अँगलेट। ३ तलवार या कटार की म्यान।

वि० [काठियावाड़ देश] काठियावाड़ का।

**काढ़ना**—क्रि० स० [सं० कर्षण] १. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना। निकालना। २. किसी आवरण को हटाकर कोई वस्तु प्रत्यक्ष करना। खोलकर दिखाना। ३ किसी वस्तु को किसी वस्तु से अलग करना। ४. लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर बेल बूटे बनाना। उरेहना। चित्रित करना। ५ उधार लेना। ऋण लेना। ६ कड़ाहे में से पकाकर निकालना।

**काढ़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० काढ़ना] ओषधियों को पानी में उबाल या औटाकर बनाया हुआ शरबत। क्वाथ।

**कातंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] कलाप व्याकरण।

**कातना**—क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १. रूई बटकर तागा बनाना। २. चरखा चलाना।

**कातर**—वि० [सं०] १ अधीर। व्याकुल। चंचल। २ डरा हुआ। भयभीत। ३ डरपोक। बुजदिल। ४. आर्त। दुःखित।

संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्त] कोल्हू में लकड़ी का वह तख्ता जिस पर हाँकने वाला बैठता है।

**कातरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कातर] १ अधीरता। चंचलता। २. दुःख की व्याकुलता। ३ डरपोकपन।

**काता**—संज्ञा पुं० [हिं० कातना] काता हुआ सूत। तागा। डोरा।

**यौ०**—बुढ़िया का काता=एक प्रकार की मिठाई जो बहुत महीन सूत की तरह होती है।

**कातिक**—संज्ञा पुं० [सं० कार्त्तिक] वह महीना जो क्वार के बाद पड़ता है। कार्तिक।

**कातिब**—संज्ञा पुं० [अ०] लिखनेवाला। लेखक।

**कातिल**—वि० [अ०] घातक। हत्यारा।

**काती**—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्त्री] १. कैंची। २. सुनारों की कतरनी। ३. चाकू। छुरी। ४ छोटी तलवार। कत्ती।

**कात्यायन**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कात्यायनी] १ कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न ऋषि जिसमें तीन प्रसिद्ध हैं—एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वररुचि कात्यायन। २ पाली व्याकरण के कर्त्ता एक बौद्ध आचार्य।

**कात्यायनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कत गोत्र में उत्पन्न स्त्री। २. कात्यायन ऋषि की पत्नी। ३ कषाय वस्त्र धारण करनेवाली अधेड़ विधवा स्त्री। ४ दुर्गा।

**काथ***—संज्ञा पुं० दे० "कत्था"।

**काथरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

**कादंब**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक तरह का हंस। २ ऊख। ३. बाण।

वि० कदंब संबंधी।

**कादंबरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोकिल। कोयल। २. सरस्वती। वाणी। ३ मदिरा। शराब। ४. मैना ५ बाणभट्ट की लिखी प्रसिद्ध आख्यायिका।

**कादंबिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेघमाला।

**कादर**—वि० [सं० कातर] १. डरपोक। भीरु। २ अधीर। व्याकुल।

**कादिरी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की चोली। सीनाबंद।

**कान**—संज्ञा पुं० [सं० कर्ण] १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। सुनने की इंद्रिय। श्रवण। श्रुति। श्रोत्र।

**मुहा०**—कान उठाना=१. सुनने के लिये तैयार होना। आहट लेना। २. चौकन्ना होना। सचेत या सजग होना। कान उमेठना=१ दंड देने के हेतु

किसी का कान मरोड़ देना। २. किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना। कान करना = सुनना। ध्यान देना। कान काटना = मात करना। बढ़कर होना। कान का कच्चा = जो किसी के कहने पर बिना सोचे समझे विश्वास कर ले। कान खड़े करना = सचेत करना। होशियार करना। कान खाना या खा जाना = बहुत शोर गुल करना। बहुत बातें करना। कान गरम करना या कर देना = कान उमेठना। कान पूँछ दबा कर चला जाना = चुपचाप चला जाना। बिना विरोध किए टल जाना। (किसी बात पर) कान देना या धरना = ध्यान देना। ध्यान से सुनना। कान पकड़ना = १ कान उमेठना। २. अपनी भूल या छोटाई स्वीकार करना। (किसी बात से) कान पकड़ना = पछतावे के साथ किसी बात के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना। कान पर जूँ न रेंगना = कुछ भी परवा न होना। कुछ भी ध्यान न होना। कान फुँकवाना = गुरुमंत्र लेना। दीक्षा लेना। कान फूँकना = १ दीक्षा देना। चेला बनाना। २. दे० "कान भरना"। कान भरना = किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना। खयाल खराब करना। कान मलना = दे० "कान उमेठना"। कान में तेल डाले बैठना = बात सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना। कान में डाल देना = सुना देना। कानों कान खबर न होना = जरा भी खबर न होना। किसी के सुनने में न आना। कानों पर हाथ धरना या रखना = किसी बात के करने से एकबारगी इनकार करना।

२. सुनने की शक्ति। श्रवण शक्ति। ३. लकड़ी का एक टुकड़ा जो कूँड़ अधिक चौड़ी करने के लिये हल के अगले भाग में बाँध दिया जाता है। कन्ना। ४. सोने का एक गहना जो कान में पहना जाता है। ५. चारपाई का टेढ़ापन। कनेव। ६ किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े। ७ तराजू का पसंगा। ८. तोप या बंदूक में वह स्थान जहाँ रंजक रखी और बत्ती दी जाती है। पियाली। रंजकदानी। ९ नाव की पतवार।

संज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।

**काननन**—संज्ञा पु० [सं०] १. जंगल। २ घर। कान का बहुवचन। (व्रजभाषा)

**काना**—वि० [सं० काण] [स्त्री० कानी] जिसकी आँख फूट गई हो। एकाक्ष।

वि० [सं० कर्णक] वे फल आदि जिनका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो। कन्ना।

संज्ञा पु० [सं० कर्ण] १ 'आ' की मात्रा जो किसी अक्षर के आगे लगाई जाती है और जिसका रूप ( ा ) है। २ पाँसे पर की बिंदी या चिह्न। जैसे, तीन काने।

वि० [सं० कर्ण] जिसका कोई कोना या भाग निकला हो। तिरछा। टेढ़ा।

**कानाकानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कर्णाकर्ण] कानाफूसी। चर्चा।

**कानाफुसकी, कानाफूसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कान + अनु० 'फुस'] वह बात जो कान के पास धीरे से कही जाय।

**कानाबाती**—संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।

**कानि**—संज्ञा स्त्री० [?] १ लोक लज्जा। मर्यादा का ध्यान। २ लिहाज। संकोच।

**कानी**—वि० स्त्री० [हिं० काना] एक आँखवाली। जिसकी एक आँख फूटी हो।

**मुहा०**—कानी कौड़ी = फूटी या झंझी कौड़ी।

वि० स्त्री० [सं० कनीनी] सबसे छोटी (उँगली)। जैसे—कानी उँगली।

**कानीन**—संज्ञा पु० [सं०] वह जो किसी कुमारी कन्या से पैदा हुआ हो।

**कानी हाउस**—संज्ञा पु० [अं० काइन हाउस] वह घर जिसमें किसी की हानि करनेवाले पशु पकड़कर बंद किए जाते हैं।

**कानून**—संज्ञा पु० [अ०, यू० केनान] [वि० कानूनी] राज्य में शांति रखने का नियम। राजनियम। आईन। विधि।

**मुहा०**—कानून छाँटना = कानूनी बहस करना। कुतर्क या हुज्जत करना।

**कानूनगो**—संज्ञा पु० [फा०] माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागजों की जाँच करता है।

**कानूनदाँ**—संज्ञा पु० [फा०] कानून जाननेवाला। विधिज्ञ।

**कानूनिया**—वि० [अ० कानून] १. कानून जाननेवाला। २ हुज्जती।

**कानूनी**—वि० [अ० कानून] १ जो कानून जाने। २ कानून-संबंधी। अदालती। ३ जो कानून के मुताबिक हो। नियमानुकूल। ४ तकरार करनेवाला। हुज्जती।

**कान्यकुब्ज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन समय का एक प्रांत जो वर्त्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था। २ इस देश का निवासी। ३. इस देश का ब्राह्मण।

**कान्ह***—संज्ञा पु० [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण।

**कान्हड़ा**—संज्ञा पु० [सं० कर्णाट] एक राग।

**कान्हर***—संज्ञा पुं० [हिं० कान्ह]

श्रीकृष्णजी।

**कापर***—संज्ञा पुं० दे० "कपड़ा"।

**कापाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र। २. एक प्रकार की संधि।

**कापालिक**—संज्ञा पुं० [सं०] शैव मत के तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते और मद्य मांसादि खाते हैं।

**कापाली**—संज्ञा पुं० [सं० कापालिन्] [स्त्री० कापालिनी] १ शिव। २ एक प्रकार का वर्णसंकर।

**कापिल**—वि० [सं०] १. कपिल-संबंधी। कपिल का। २. भूरा।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सांख्य दर्शन। २ कपिल के दर्शन का अनुयायी। ३ भूरा रंग।

**कापी**—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ नकल। प्रतिलिपि। २. लिखने की कोरे कागजों की पुस्तक। ३. प्रति। जिल्द।

**कापी राइट**—संज्ञा पुं० [अं०] कानून के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन या अनुवाद आदि का वह स्वत्व जो उसके ग्रंथकार या प्रकाशक को प्राप्त होता है।

**कापुरुष**—संज्ञा पु० [सं०] कायर। डरपोक।

**काफिया**—संज्ञा पुं० [अ०] अंत्यानुप्रास। तुक। सज।

**यौ०**—काफियाबंदी = तुकबंदी। तुक जोड़ना।

**मुहा०**—काफिया तंग करना = बहुत हैरान करना। नाकों दम करना।

**काफिर**—वि० [अ०] १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २. ईश्वर को न माननेवाला। ३. निर्दय। निष्ठुर। बेदर्द। ४. दुष्ट। बुरा। ५. काफिर देश का रहनेवाला।

संज्ञा पु० [अ०] वि० [काफिरी] एक देश का नाम जो अफ्रिका में है।

**काफिला**—संज्ञा पुं० [अ०] यात्रियों का दल।

**काफी**—वि० [अ०] १ जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। पूरा। २. एक प्रकार का पेय, कहवा। ३. एक राग।

**काफूर**—संज्ञा पुं० [फा०] कपूर।

**मुहा०**—काफूर होना = चंपत होना।

**काफूरी**—वि० [हिं० काफूर] १. काफूर का। २ कपूर के रंग का।

संज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत हलका हरा रंग।

**काब**—संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकाबी।

**काबर**—वि० [सं० कर्बुर प्रा० कब्बुर] कई रंगों का। चितकबरा।

**काबा**—संज्ञा पु० [अ०] अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।

**काबिज**—वि० [अ०] १. अधिकार रखनेवाला। अधिकारी। २ मल का अवरोध करनेवाला। दस्त रोकनेवाला।

**काबिल**—वि० [अ०] [संज्ञा काबिलीयत] १ योग्य। लायक। २. विद्वान्। पंडित।

**काबिलीयत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। लियाकत। २. पांडित्य। विद्वत्ता।

**काबिस**—संज्ञा पु० [सं० कपिश] एक रंग जिससे मिट्टी के कच्चे बर्तन रँगते हैं।

**काबुक**—संज्ञा पु० [फ़ा०] कबूतरों का दरबा।

**काबुल**—संज्ञा पु० [सं० कुभा] [वि० काबुली] १. एक नदी जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंध नदी में गिरती है। २. अफगानिस्तान की राजधानी।

**काबुली**—वि० [हिं० काबुल] काबुल का।

संज्ञा पु० काबुल का निवासी।

**काबू**—संज्ञा पु० [तु०] वश। इख्तियार।

**काम**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कामुक, कामी] १ इच्छा। मनोरथ। २. महादेव। ३. कामदेव। ४. इंद्रियों की अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति (कामशास्त्र)। ५. सहवास। मैथुन की इच्छा। ६. चातुर्वर्ग या चार पदार्थों में से एक।

संज्ञा पु० [सं० कर्म्म, प्रा० कम्म] १. वह जो किया जाय। व्यापार। कार्य्य।

**मुहा०**—काम आना = लड़ाई में मारा जाना। काम करना = १. प्रभाव डालना। असर डालना। २. फल उत्पन्न करना। काम चलना = १ काम जारी रहना। क्रिया का संपादन होना। काम तमाम करना = १ काम पूरा करना। २. मार डालना। जान लेना। काम होना = १. प्राण जाना। २. अत्यंत कष्ट पहुँचना।

२. कठिन शक्ति या कौशल का कार्य्य।

**मुहा०**—काम रखता है = बड़ा कठिन कार्य्य है। मुश्किल बात है।

३ प्रयोजन। अर्थ। मतलब।

**मुहा०**—काम निकलना = १ प्रयोजन सिद्ध होना। उद्देश्य पूरा होना। मतलब गँठना। २ कार्य्य निर्वाह होना। आवश्यकता पूरी होना। काम पड़ना = आवश्यकता होना।

४. गरज। वास्ता। सरोकार।

**मुहा०**—किसी के काम पड़ना = किसी

से पाला पड़ना। किसी प्रकार का व्यवहार या संबंध होना। काम से काम रखना = अपने प्रयोजन पर ध्यान रखना। व्यर्थ बातों में न पड़ना।
५. उपयोग। व्यवहार। इस्तेमाल।
मुहा०—काम आना = १ व्यवहार में आना। उपयोगी होना। २ सहारा देना। सहायक होना। काम का = व्यवहार योग्य। उपयोगी (वस्तु)। काम देना = व्यवहार में आना। उपयोगी होना। काम में लाना = बर्तना। व्यवहार करना।
६. कारबार। व्यवसाय। रोजगार। ७ कारीगरी। बनावट। रचना। ८. बेलबूटा या नक्काशी।

**कामकला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मैथुन। रति। २. कामदेव की स्त्री। रति।

**कामकाज**—संज्ञा पुं० [हिं० काम + काज] १ काम धन्धा। कार्य। २. व्यापार।

**कामकाजी**—वि० [हिं० काम + काज] काम करनेवाला। उद्योग धंधे में रहनेवाला।

**कामग**—संज्ञा पु० [सं०] १ अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। २. दुराचारी। लंपट।

**कामगार**—संज्ञा पु० १ दे० "कामदार"। २ दे० "मजदूर"।

**काम-चलाऊ**—वि० [हिं० काम + चलाना] जिससे किसी प्रकार का काम निकल सके। जो बहुत से अंशों में काम दे जाय।

**कामचारी**—वि० [सं०] १ जहाँ चाहे वहाँ विचरनेवाला। २ मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। ३. कामुक।

**कामचोर**—वि० [हिं० काम + चोर] काम से जी चुरानेवाला। अकर्मण्य। आलसी।

**कामज**—वि० [सं०] वासना से उत्पन्न।

**कामजित्**—वि० [सं०] काम को जीतनेवाला।
संज्ञा पु० [सं०] १. महादेव। शिव। २. कार्तिकेय। ३. जिन देव।

**कामज्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर जो स्त्रियों और पुरुषों को अखंड ब्रह्मचर्य्य पालन करने से हो जाता है।

**कामड़िया**—संज्ञा पु० [हिं० कामरी] रामदेव के मत के अनुयायी चमार साधु।

**कामतरु**—संज्ञा पु० दे० "कल्पवृक्ष"।

**कामता***—संज्ञा पु० [सं० कामद] चित्रकूट।

**कामद**—वि० [सं०] [स्त्री० कामदा] मनोरथ पूरा करनेवाला। इच्छानुसार फल देनेवाला।

**कामद मणि**—संज्ञा पु० [सं०] चिंतामणि।

**कामदहन**—संज्ञा पु० [सं० काम + दहन] कामदेव को जलानेवाले, शिव।

**कामदा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामधेनु। २ दस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**कामदानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काम + दानी (प्रत्य०)] बेल-बूटा जो बादले के तार या सलमे-सितारे से बनाया जाय।

**कामदार**—संज्ञा पु० [हिं० काम + दार (प्रत्य०)] कारिंदा। अमला। प्रबंधकर्त्ता।
वि० जिसपर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों। जैसे, कामदार टोपी।

**कामदुहा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

**कामदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। २. वीर्य्य। ३. संभोग की इच्छा।

**काम-धाम**—संज्ञा पुं० [हिं० काम + धाम (अनु०)] काम-काज। धंधा।

**कामधुक***—संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।

**कामधेनु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय वही मिलता है। सुरभी। २ वशिष्ठ की शवला या नंदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनसे विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

**कामना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा। मनोरथ। ख्वाहिश।

**काम पंचमी**—संज्ञा स्त्री० [यौ० (सं० काम + पंचमी)] वसंत पंचमी।

**कामबाण**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव के बाण, जो पाँच हैं—मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टकरण। बाणों को फूलों का मानने पर पाँच बाण ये हैं—लाल कमल, अशोक, आम की मंजरी, चमेली और नील कमल।

**कामभूरुह**—संज्ञा पु० [सं०] कल्पवृक्ष।

**कामयाब**—वि० [फा०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो गया हो। सफल। कृतकार्य।

**कामयाबी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सफलता।

**कामरिपु**—संज्ञा पु० [सं०] शिव।

**कामरी***—संज्ञा स्त्री० [सं० कंबल] कमली।

**कामरुचि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अस्त्र जिससे और अस्त्रों का व्यर्थ करते थे।

**कामरू**—संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।

**कामरूप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आसाम का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। २. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे। ३. १६ मात्राओं का एक छंद। ४. देवता।
वि० मनमाना रूप बनानेवाला।

**कामल**—संज्ञा पुं० [सं०] कमल रोग।

**कामला**—संज्ञा पुं० दे० "कामल"।

**कामली***—संज्ञा स्त्री० [सं० कंबल] कमली।

**कामवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] काम या संभोग की वासना रखनेवाली स्त्री।

**कामवान्**—वि० [सं०] [स्त्री० कामवती] काम या संभोग की इच्छा करनेवाला।

**कामशर**—संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"।

**कामशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।

**कामसखा**—संज्ञा पुं० [सं० कामसख] वसंत।

**कामांध**—वि० [सं०] जिसे कामवासना की प्रबलता में भले बुरे का ज्ञान न हो।

**कामा**—संज्ञा स्त्री० [सं० काम] एक वृत्ति जिसमें दो गुरु होते हैं।

**कामाक्षी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार देवी की एक मूर्ति।

**कामाख्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी का एक अभिग्रह। २ कामरूप।

**कामातुर**—वि० [सं०] काम के वेग से व्याकुल। समागम की इच्छा से उद्विग्न।

**कामायनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैवस्वत मनु की पत्नी श्रद्धा का एक नाम।

**कामारथी**†-संज्ञा पुं० दे० "काँवारथी"।

**कामारि**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**कामावशायिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यसंकल्पता जो योगियों की आठ सिद्धियों या ऐश्वर्यों में से एक है।

**कामित***—संज्ञा स्त्री० [सं० काम] कामना। इच्छा।

**कामिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामवती स्त्री। २. स्त्री। सुंदरी। ३. मदिरा।

**कामिनीमोहन**—संज्ञा पुं० [सं०] स्रग्विणी छंद का एक नाम।

**कामिल**—वि० [अ०] १. पूरा। पूर्ण। कुल। समूचा। २ योग्य। व्युत्पन्न।

**कामी**—वि० [सं० कामिन्] [स्त्री० कामिनी] १. कामना रखनेवाला। २. विषयी। कामुक।
संज्ञा पुं० [सं०] १ चकवा। २ कबूतर। ३. चिड़ा। ४. सारस। ५. चंद्रमा।

**कामुक**—वि० [सं०] [स्त्री० कामुका] १ इच्छा करनेवाला। चाहनेवाला। २. [स्त्री० कामुकी] कामी। विषयी।

**कामेश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंत्र के अनुसार एक भैरवी। २. कामाख्या की पाँच मूर्त्तियों में से एक।

**कामोद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक राग।

**कामोद्दीपक**—वि० [सं०] जिससे मनुष्य को सहवास की इच्छा अधिक हो।

**कामोद्दीपन**—संज्ञा पुं० [सं०] सहवास की इच्छा का उत्तेजन।

**काम्य**—वि० [सं०] १. जिसकी इच्छा हो। २. जिससे कामना की सिद्धि हो।
संज्ञा पुं० [सं०] वह यज्ञ या कर्म्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय। जैसे—पुत्रेष्टि।

**काम्येष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यज्ञ जो कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।

**काय**—वि० [सं०] प्रजापति संबंधी।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। जिस्म। २. प्रजापति तीर्थ। कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग (स्मृति)। ३. प्रजापति का हवि। ४. प्राजापत्य विवाह। ५ मूल धन। पूँजी। ६. समुदाय। संघ।

**काय-कल्प**-संज्ञा पुं० दे० "कायाकल्प"।

**कायचिकित्सा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चिकित्सा का वह अंग जिसमें ज्वर आदि सर्वांगव्यापी रोगों के उपशमन का विधान है।

**कायजा**—संज्ञा पुं० [अ० कायजः] घोड़े की लगाम की डोरी, जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं।

**कायथ**—संज्ञा पुं० दे० "कायस्थ"।

**कायदा**—संज्ञा पुं० [अ० कायदः] १. नियम। २. चाल। दस्तूर। रीति। ढंग। ३. विधि। विधान। ४. क्रम। व्यवस्था।

**कायफल**—संज्ञा पुं० [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

**कायम**—वि० [अ०] १. ठहरा हुआ। स्थिर। २. स्थापित। ३. निर्धारित। निश्चित। मुकर्रर।

**कायम-मुकाम**—वि० [अ०] स्थानापन्न। एवजी।

**कायर**—वि० [सं० कातर] डरपोक। भीरु।

**कायरता**—संज्ञा स्त्री० [सं० कातरता] डरपोकपन। भीरुता।

**कायल**—वि० [अ०] जो तर्क-वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। कबूल करनेवाला।

**कायली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ दवेलिका] मथानी।

संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ कायर] ग्लानि। लज्जा।

*संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ कायल]* कायल या तर्क में परास्त होने की क्रिया का भाव।

**यौ॰**—*कायली-माकूली* = तर्क करना और तर्क सिद्ध बात मानना।

**कायव्यूह**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शरीर में वात, पित्त, कफ तथा त्वक्, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम। २ योगियों की अपने कर्मों के भोग के लिये चित्त में एक एक इंद्रिय और अंग की कल्पना करना। ३' सैनिक घेरा।

**कायस्थ**—वि॰ [सं॰] काय में स्थित। शरीर में रहनेवाला।

संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ जीवात्मा। २. परमात्मा। ३ एक जाति का नाम।

**काया**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ काय] शरीर। तन।

**मुहा॰**—काया पलट जाना = रूपांतर हो जाना। और से और हो जाना।

**कायाकल्प**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया।

**काया-पलट**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ काया + पलटना] १. भारी हेर-फेर। बहुत बड़ा परिवर्तन। २. एक शरीर या रूप का दूसरे शरीर या रूप में बदलना। और ही रंग-रूप होना।

**कायिक**—वि॰ [सं॰] शरीर-संबंधी। २ शरीर से किया हुआ या उत्पन्न। जैसे, कायिक पाप। ३. संघ-संबंधी। (बौद्ध)

**कारंड, कारंडव**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।

**कारंधमी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] रसायनी। कीमियागर।

**कार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ क्रिया। कार्य्य। जैसे—उपकार, स्वीकार। २. बनानेवाला। रचनेवाला। जैसे, कुंभकार, ग्रंथकार। ३. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के आगे लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे—चकार, लकार। ४. एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका सशावत् बोध कराता है। जैसे—चीत्कार।

संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] कार्य्य। काम।

संज्ञा स्त्री॰ [अं॰] मोटर (गाड़ी)।

*वि॰ दे॰ "काला"।

**कारक**—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ कारिका] करनेवाला। जैसे, हानिकारक, सुखकारक।

संज्ञा पुं॰ [सं॰] व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।

**कारकदीपक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] काव्य में वह अर्थालंकार जिसमें कई एक क्रियाओं का एक ही कर्त्ता वर्णन किया जाय।

**कारकुन**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. इंतजाम करनेवाला। प्रबंधकर्त्ता। २ कारिंदा।

**कारखाना**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १ वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु बनाई जाती है। २ कार-बार। व्यवसाय। ३. घटना। दृश्य। मामला। ४ क्रिया।

**कारगर**—वि॰ [फ़ा॰] १ प्रभावजनक। असर करनेवाला। २ उपयोगी।

**कारगुजार**—वि॰ [फ़ा॰] [संज्ञा कारगुजारी] अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह पूरा करनेवाला।

**कारगुजारी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. पूरी तरह और आज्ञा पर ध्यान देकर काम करना। कर्त्तव्यपालन। २. कार्य्य-पटुता। होशियारी। ३. कर्मण्यता।

**कारचोब**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] [वि॰ संज्ञा कारचोबी] १. लकड़ी का एक चौकठा जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है। अड्डा। २. जरदोजी या कसीदे का काम करनेवाला। जरदोज।

**कारचोबी**—वि॰ [फ़ा॰] जरदोजी का।

संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] जरदोजी। गुलकारी।

**कारज***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कार्य्य"।

**कारटा***—संज्ञा पुं॰ [सं॰ करट] कौआ।

**कारण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. हेतु। वजह। सबब। वह जिसके प्रभाव से कोई बात हो [illegible] जिसके विचार से कुछ किया जाय [illegible] संज्ञा [illegible] उसे दूसरे पदार्थ की सम्प्राप्ति [illegible] पाँच हैं—मो [illegible] । निमित्त। प्रत्यय। [illegible]ोपण और नि[illegible] साधन। ५ कर्म। ६ प्रमाणों का मानने पर [illegible]

**कारणमाला**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ हेतुओं की श्रेणी। २. काव्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न कार्य्य पुनः किसी अन्य कार्य्य का कारण होता हुआ वर्णन किया जाय।

**कारणशरीर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमें इंद्रियों का विषय-व्यापार तो नहीं रहता है, पर अहंकार आदि का संस्कार रहता है। (वेदांत)

**कारतूस**—संज्ञा पुं॰ [पुर्त्त॰ कार्टूश] गोली-बारूद भरी एक नली जिसे टोंटेदार और रिवाल्वर बंदूकों में भरकर चलाते हैं।

**कारन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कारण"।

*संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ कारुण्य] रोने का आर्त्तस्वर। कूक। करुण स्वर।

**कारनिस**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] दीवार की कँगनी । कगर ।

**कारनी**—संज्ञा पुं० [ सं० कारण ] प्रेरक ।

संज्ञा पुं० [ सं० कारीनि ] भेद करनेवाला । भेदक । बुद्धि पलटनेवाला ।

**कारपरदाज**—वि० [ फा० ] १. काम करनेवाला । कारकुन । २. प्रबंधकर्त्ता । कारिंदा ।

**कारपरदाजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ दूसरे की ओर से किसी कार्य्य के प्रबंध करने का काम । २. कार्य्य करने की तत्परता ।

**कारबार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० कारबारी ] काम-काज । व्यापार । पेशा । व्यवसाय ।

**कारबारी**—वि० [ फ़ा० ] कामकाजी । संज्ञा पुं० कारकुन । कारिंदा ।

**काररवाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ काम । कृत्य । करतूत । २ कार्य्य-तत्परता । कर्मण्यता । ३ गुप्त प्रयत्न । चाल ।

**कारवाँ**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] यात्रियों का दल ।

**कारसाज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा कारसाजी ] बिगड़े काम को सँभालनेवाला । काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला ।

**कारसाजी** —संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ काम पूरा उतारने की युक्ति । २. गुप्त कार्रवाई । चालबाजी । कपट-प्रयत्न ।

**कारस्तानी** —संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. कारसाजी । काररवाई । २ चालबाजी ।

**कारा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बंधन । कैद । २. पीड़ा । क्लेश ।

वि० * दे० "काला" ।

**कारागार, कारागृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कैदखाना । बंदीगृह ।

**कारावास** —संज्ञा पुं० [ सं० ] कैद ।

**कारिंदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दूसरे की ओर से काम करनेवाला । कर्मचारी । गुमाश्ता ।

**कारिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या । २. नट की स्त्री ।

**कारिख**—संज्ञा स्त्री० दे० "कालिख" ।

**कारित**—वि० [ सं० ] कराया हुआ ।

**कारी**—संज्ञा पुं० [ सं० कारिन् ] [ स्त्री० कारिणी ] करनेवाला । बनानेवाला ।

वि० [ फ़ा० ] घातक । मर्मभेदी ।

**कारीगर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ संज्ञा कारीगरी ] लकड़ी, पत्थर आदि से सुंदर वस्तुओं की रचना करनेवाला । शिल्पकार ।

वि० हाथ से काम बनाने में कुशल । निपुण । हुनरमंद ।

**कारीगरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. अच्छे अच्छे काम बनाने की कला । निर्माणकला । २ सुंदर बना हुआ काम । मनोहर रचना ।

**कारु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भा० कारुता ] शिल्पी । कारीगर । दस्तकार ।

**कारुणिक**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा कारुणिकता ] कृपालु । दयालु ।

**कारुण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] करुणा का भाव । दया । मेहरबानी ।

**कारूँ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था, पर खैरात नहीं करता था ।

यौ०—कारूँ का खजाना = अनंत संपत्ति ।

**कारूनी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] घोड़ों की एक जाति ।

**कारूरा** —संज्ञा पुं० [ अ० ] १ फुँकनी शीशी जिसमें रोगी का मूत्र वैद्य को दिखलाने के लिये रखा जाता है । २. मूत्र । पेशाब ।

**कारौंछ**—संज्ञा स्त्री० दे० "कालौंछ" ।

**कारोबार**—संज्ञा पुं० दे० "कारबार" ।

**कार्ड**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १ मोटे कागज का वह टुकड़ा जिस पर समाचार या पता आदि लिखा जाता है ।

**कार्तवीर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृतवीर्य का पुत्र सहस्रार्जुन ।

**कार्तिक**— संज्ञा पुं० [ सं० ] एक चांद्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है ।

**कार्त्तिकेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होनेवाले स्कंदजी । षडानन ।

**कार्पण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृपणता । कंजूसी ।

**कार्पास** —संज्ञा पुं० [ सं० ] कपास ।

**कार्मण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग ।

**कार्मना***—संज्ञा पुं० [ सं० कार्मण ] १. मंत्र-तंत्र का प्रयोग । कृत्या । २. मंत्र । तंत्र ।

**कार्मुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धनुष । २ परिधि का एक भाग । चाप । ३. इंद्रधनुष । ४. बाँस । ५. सफेद खैर । ६. बकायन । ७. धनु राशि । नवीं राशि ।

**कार्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काम । कृत्य । व्यापार । धंधा । २. वह जो कारण का विकार हो अथवा जिसे लक्ष्य करके कर्त्ता क्रिया करे । ३ फल । परिणाम ।

**कार्यकर्त्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काम करनेवाला । कर्मचारी ।

**कार्य कारण भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कार्य और कारण का संबंध ।

**कार्यसम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय में चौबीस जातियों में से एक । इसमें प्रतिवादी, किसी कारण से उत्पन्न कार्य्य के संबंध में वादी द्वारा कही हुई बात के खंडन का प्रयत्न वैसे ही और कार्य्य

करकर करता है जिनमें वह बात नहीं पाई जाती।

**कार्याधिकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसके सुपुर्द किसी कार्य्य का प्रबंध आदि हो।

**कार्याध्यक्ष**—संज्ञा पु० [सं०] अफसर। मुख्य कार्यकर्त्ता।

**कार्यान्वित**—वि० [सं० ] १ कार्य में लगा हुआ।

**कार्यार्थी**—वि० [ सं० ] १ कार्य की सिद्धि चाहनेवाला। २. कोई इच्छा रखनेवाला।

**कार्यालय**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह स्थान जहाँ कोई काम होता हो। दफ्तर। कारखाना।

**कार्रवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई"।

**कार्षापण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का प्राचीन सिक्का।

**काल**—संज्ञा पु० [सं०] १ वहसबंध-सत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है। समय। वक्त। मुहा०—काल पाकर=कुछ दिनो पीछे। २. अंतिम काल। नाश का समय। मृत्यु। ३. यमराज। यमदूत। ४ उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ५ अकाल। महँगी। दुर्भिक्ष। ६ [ स्त्री० काली ] शिव का एक नाम। महाकाल।

वि० काला। काले रंग का।

*क्रि० वि० दे० "कल"।

**कालकंठ**—संज्ञा पु० [सं०] १ शिव। महादेव। २. मोर। मयूर। ३ नीलकंठ पक्षी। ४. खंजन। खिड़रिच।

**कालका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।

**कालकूट**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ एक प्रकार का अत्यंत भयंकर विष। काला बच्छनाग। २. घुँगिया की जाति के एक पौधे की जड़ जिसपर चित्तियाँ होती हैं।

**कालकेतु**—संज्ञा पु० [ सं० ] एक राक्षस।

**कालकोठरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काल + कोठरी ] १ जेलखाने की बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें कैद-तनहाईवाले कैदी रखे जाते हैं। २. कलकत्ते के फोर्ट विलियम नामक किले की एक तंग कोठरी जिसमें कलाइव के कथनानुसार सिराजुद्दौला ने बहुत से अँगरेजों को कैद किया था।

**कालक्षेप**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. दिन काटना। वक्त बिताना। २. निर्वाह। गुजर-बसर।

**कालखंड**—संज्ञा पु० [ सं० ] परमेश्वर।

**कालगंडैत**—संज्ञा पु० [ हिं० काला + गंडा ] वह विषधर साँप जिसके ऊपर काले गंडे या चित्तियाँ होती हैं।

**कालचक्र**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. समय का हेर फेर। जमाने की गर्दिश। २ एक अस्त्र।

**कालज्ञ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ समय के हेर फेर का जाननेवाला। २. ज्योतिषी।

**कालज्ञान**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. स्थिति और अवस्था की जानकारी। २ मृत्यु का समय जान लेना।

**कालतुष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सांख्य में एक तुष्टि। यह विचार कर संतुष्ट रहना कि जब समय आ जायगा, तब यह बात स्वयं हो जायगी।

**कालदंड**—संज्ञा पु० [ सं० ] यमराज का दंड।

**कालधर्म**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. मृत्यु। विनाश। अवसान। २ वह व्यापार जिसका होना किसी विशेष समय पर स्वाभाविक हो। समयानुसार धर्म।

**कालनिशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दिवाली की रात। २ अँधेरी भयावनी रात।

**कालनेमि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रावण का मामा एक राक्षस। २. एक दानव जिसने देवताओं को पराजित करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था।

**कालपाश**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. वह नियम जिसके कारण भूत-प्रेत कुछ समय तक के लिए कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते। २. यमराज का बंधन। यमपाश।

**कालपुरुष**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल।

**कालबंजर**—संज्ञा पु० [ सं० काल + हिं० बंजर ] वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न हो।

**कालबूत**—संज्ञा पु० [ फ़ा० कलबुद ] १ वह कच्चा भराव जिसपर महराब बनाई जाती है। छैना। १. चमारों का वह काठ का साँचा जिसपर चढ़ाकर वे जूता सीते हैं।

**कालभैरव**—संज्ञा पु० [ सं० ] शिव के मुख्य गणों में से एक।

**काल-यवन**—संज्ञा पु० [ सं० ] हरिवंश के अनुसार यवनों का एक राजा जिसने जरासंध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी।

**कालयापन**—संज्ञा पु० [ सं० ] कालक्षेप। दिन काटना। गुजारा करना।

**कालर**—संज्ञा पु० दे० "कल्लर"।

संज्ञा पु० [ अं० ] १ कुत्तों आदि के गले में बाँधनेवाला पट्टा। २ कोट या कमीज में की वह पट्टी जो गले के चारों ओर रहती है।

**कालराति***—संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि"।

**कालरात्रि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अँधेरी और भयावनी रात। २ ब्रह्मा

की रात्रि जिसमें सारी सृष्टि लय को प्राप्त रहती है, केवल नारायण ही रहते हैं। प्रलय की रात। ३ मृत्यु की रात्रि। ४. दिवाली की अमावस्या। ५ दुर्गा की एक मूर्ति। ६. यमराज की बहिन जो सब प्राणियों का नाश करती है। ७. मनुष्य की आयु में सतहत्तरवें वर्ष के सातवें महीने की सातवीं रात जिसके बाद वह नित्यकर्म आदि से मुक्त समझा जाता है।

**कालवाचक, कालवाची**—वि० [सं०] समय का ज्ञान करानेवाला। जिसके द्वारा समय का ज्ञान हो।

**काल-विपाक**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम के होने का समय पूरा होना।

**काल-सर्प**—संज्ञा पुं० [सं०] वह साँप जिसके काटने से आदमी मर जाय।

**काला**—वि० [सं० काल] [स्त्री० काली] १. काजल या कोयले के रंग का। स्याह।

**मुहा०**—(अपना) मुँह काला करना = १ कुकर्म करना। पाप करना। २ व्यभिचार करना। अनुचित सह-गमन करना। ३. किसी बुरे आदमी का दूर होना। (दूसरे का) मुँह काला करना = १. किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति का दूर करना। व्यर्थ की झंझट दूर हटाना। २ कलंक का कारण होना। बदनामी का सबब होना। काला मुँह होना या मुँह काला होना = कलंकित होना। बदनाम होना। २. कलुषित। बुरा। ३ भारी। प्रचंड।

**मुहा०**—काले कोसों = बहुत दूर।

संज्ञा पुं [सं० काल] काला साँप।

**काला कलूटा**—वि० [हिं० काला + कलूटा] बहुत काला। अत्यंत श्याम। (मनुष्य)

**कालाक्षरी**—वि० [सं०] काले अक्षर मात्र का अर्थ बता देनेवाला। अत्यंत विद्वान्।

**कालाग्नि**—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रलय काल की अग्नि। २. प्रलयाग्नि के अधिष्ठाता रुद्र।

**काला चोर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत भारी चोर। २. बुरे से बुरा आदमी।

**कालाजीरा**—संज्ञा पुं० [हिं० काला + जीरा] स्याह जीरा। मीठा जीरा। पर्वत जीरा।

**कालातीत**—वि० [सं०] जिसका समय बीत गया हो।

संज्ञा पुं० १. न्याय के पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से वह जिसमें अर्थ एक देशकाल के ध्वंस से युक्त हो और इस कारण असत् ठहरता हो। २. आधुनिक न्याय में एक प्रकार का बाध जिसमें साध्य के आधार में साध्य का अभाव निश्चित रहता है।

**काला दाना**—संज्ञा पुं० [हिं० काला + दाना] १ एक प्रकार की लता जिससे काले दाने निकलते हैं। २ इस लता का दाना या बीज जो अत्यंत रेचक होता है।

**काला नमक**—संज्ञा पुं० [हिं० काला + फा० नमक] सज्जी के योग से बना हुआ एक प्रकार का पाचक लवण। सोचर।

**काला नाग**—संज्ञा पुं० [हिं० काला + नाग] १ काला साँप। विषधर सर्प। २ अत्यंत कुटिल या खोटा आदमी।

**काला पहाड़**—संज्ञा पुं० [हिं० काला+ पहाड़] १. बहुत भारी या भयानक। दुस्तर (वस्तु)। २ बहलोल लोदी का एक भाँजा जो सिकंदर लोदी से लड़ा था। ३. मुरशिदाबाद के नवाब दाऊद का एक सेनापति जो बड़ा क्रूर और कट्टर मुसलमान था।

**काला पान**—संज्ञा पुं० [हिं० काला + पान] ताश की बूटियों का वह रंग जो "हुकुम" कहलाता है।

**काला पानी**—संज्ञा पुं० [हिं० काला + पानी] १. बंगाल की खाड़ी के समुद्र में वह स्थान जहाँ का पानी अत्यंत काला दिखाई पड़ता है। २. देश-निकाले का दंड। ३. एंडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-निकाले के कैदी भेजे जाते हैं। ४ शराब। मदिरा।

**काला भुजंग**—वि० [हिं० काला + भुजंग] बहुत काला। घोर कृष्ण वर्ण का।

**कालास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार से शत्रु का निधन निश्चय समझा जाता था।

**कालिंग**—वि० [सं० कलिंग] कलिंग देश का।

संज्ञा पुं० [सं०] १ कलिंग देश का निवासी। २ कलिंग देश का राजा। ३. हाथी। ४ साँप। ५ तरबूज।

**कालिंजर**—संज्ञा पुं० [सं० कालंजर] एक पर्वत जो बाँदे से ३० मील पूर्व की ओर है और जिसका माहात्म्य पुराणों में है।

**कालिंदी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी। २ कृष्ण की एक स्त्री। ३ एक वैष्णवसंप्रदाय।

**कालि***—क्रि० वि० दे० "कल"।

**कालिक**-वि० [सं०] १ समय संबंधी। समय का। २ जिसका समय नियत हो। संज्ञा पुं० [अं० कॉलिक] एक प्रकार की पेट या गुर्दों की पीड़ा।

**कालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवी की एक मूर्ति। चंडिका। काली। २. कालापन। कालिख। ३. बिछुआ नामक

पौधा। ४. मेघ। घटा। ५. स्याही। मसि। ६. मदिरा। शराब। ७. आँख की काली पुतली। ८ रणचंडी।

**कालिकापुराण**—संज्ञा पु। [ सं० ] एक उपपुराण जिसमें कालिका देवी का माहात्म्य है।

**कालिकाला***—क्रि० वि० [ हिं० कालि + काला ] कदाचित्। कभी। किसी समय।

**कालिख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कालिका ] वह काली बुकनी जो धुएँ के जमने से लग जाती है। कलौंछ। स्याही।
**मुहा०**—मुँह में कालिख लगना = बदनामी के कारण मुँह दिखलाने लायक न रहना।

**कालिब**†—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ टीम या लकड़ी का गोल ढाँचा जिसपर चढ़ाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं। २. शरीर। देह।

**कालिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कालापन। २. कलौंछ। कालिख। ३ अँधेरा। ४. कलंक। दोष। लांछन।

**कालिय**—संज्ञा पु० [ सं० ] एक सर्प जिसे कृष्ण ने वश में किया था।

**काली**—संज्ञा स्त्री० [ सं ] १ चंडी। कालिका। दुर्गा। २. पार्वती। गिरिजा। ३. दस महाविद्याओं में पहली महाविद्या।

**कालीघटा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली + घटा ] घने काले बादलों का समूह। कादंबिनी।

**कालीजबान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० काली + फा० जबान ] वह जिससे निकली हुई अशुभ बातें सत्य घटा करें।

**कालीजीरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कर्णजीर, हिं० काला + जीरा ] एक ओषधि जो एक पेड़ की बोंड़ी के झालदार बीज हैं।

**कालीदह**—संज्ञा पुं० [ सं० कालिय + हिं० दह ] वृंदावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।

**कालीन***—वि० किसी एक काल या समय से संबंध रखनेवाला। काल या समय का। [कालिक का हिंदी प्रयोग] जैसे—प्राक्कालीन। बहुकालीन।

**कालीन**—संज्ञा पु० [ अ० ] मोटे तागों का बुना बहुत मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेल बूटे बने रहते हैं। गलीचा।

**कालीमिर्च**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काली + मिर्च ] गोल मिर्च।

**कालीशीतला**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काली + सं० शीतला ] एक प्रकार की शीतला या चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं।

**कालौंछ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काला + औंछ (प्रत्य०) ] १ कालापन। स्याही। कालिख। २. धुएँ की कालिख। रहूँ।

**काल्पनिक**—संज्ञा पु० [ सं० ] कल्पना करनेवाला।
वि० [ सं० ] कल्पित। मनगढ़ंत।

**काल्ह**—क्रि० वि० दे० "कल"।

**कावा**—संज्ञा पु० [ फा० ] घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।
**मुहा०**—कावा काटना = १ वृत्त में दौड़ना। चक्कर खाना। २ आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना = चक्कर देना।

**काव्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. वह वाक्य या वाक्यरचना जिसमें चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। २ वह पुस्तक जिसमें कविता हो। काव्य का ग्रंथ। ३ रोला छंद का एक भेद।

**काव्यलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय।

**काव्यार्थापत्ति**—संज्ञा पुं० दे० "अर्थापत्ति"।

**काश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक प्रकार की घास। काँस। २. खाँसी। [ फा० ] यदि यह संभव हो।

**काशिका**—वि० स्त्री० [ सं० ] १ प्रकाश करनेवाली। २ प्रकाशित। प्रदीप्त।
संज्ञा स्त्री० १ काशी पुरी। २. पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति।

**काशीकरवट**—संज्ञा पु० [ सं० काशी + सं० करपत्र ] काशीस्थ एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे के नीचे कटकर अपने प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे।

**काशीफल**—संज्ञा० पु० [ सं० कोशफल ] कुम्हड़ा।

**काश्त**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. खेती। कृषि। २ जमींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व।

**काश्तकार**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ किसान कृषक खेतिहर। २. वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो।

**काश्तकारी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ खेतीबारी। किसानी। २ काश्तकार का हक।

**काश्मरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंभारी का पेड़।

**काश्मीर**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. एक देश का नाम। दे० "कश्मीर"। २. कश्मीर का निवासी। ३. केसर।

**काश्मीरा**—संज्ञा पुं० [ सं० काश्मीर ] एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

**काश्मीरी**—वि० [ सं० काश्मीर + ई

(प्रत्य०) १ कश्मीर देश-संबंधी। २. कश्मीर देश का निवासी।

**काश्यप**—वि० [सं०] कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का। कश्यप-संबंधी।

**काषाय**—वि० [सं०] १. हर, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। २. गेरुआ।

**काष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काठ। २. ईंधन।

**काष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हद। अवधि। २. उच्चतम चोटी या ऊँचाई। उत्कर्ष। ३. अठारह पल का समय या एक कला का ३० वाँ भाग। ४. चंद्रमा की एक कला। ५ दिशा। ओर।

**कास**—संज्ञा पुं० [सं०] खाँसी। संज्ञा पुं० [सं० काश] काँस।

**कासनी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २ कासनी का बीज। ३ एक प्रकार का नीला रंग जो कासनी के फूल के रंग के समान होता है।

**कासा**—संज्ञा पुं० [फा०] १. प्याला। कटोरा। २ आहार। भोजन। ३. दरियाई नारियल का बरतन जो फकीर रखते हैं।

**कासार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा ताल। तालाब। २ २० रगण का एक दंडक वृत्त। ३. दे० "कसार"।

**कासिद**—संज्ञा पुं० [अ०] सँदेशा ले जानेवाला। हरकारा। पत्रवाहक।

**काहँ***—प्रत्य० दे० "कहँ"।

**काह***—क्रि० वि० [सं० कः, को] क्या? कौन वस्तु?

**काहि*** —सर्व० [हिं० (प्रत्य०)] १. किसका? किसे? २. किससे?

**काहिल**—वि० [अ०] आलसी। सुस्त।

**काहिली**—संज्ञा स्त्री० [अ०] सुस्ती। आलस।

**काही**—वि० [फा० काह या हिं० काई] घास के रंग का। कालापन लिए हुए हरा।

**काहु***—सर्व० दे० "काहू"।

**काहू**—सर्व० [हिं० का+हू (प्रत्य०)] किसी।

संज्ञा पुं० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

**काहे*** —क्रि० वि० [सं० कथं, प्रा० कहं] क्यों? किस लिये?

यौ०—काहे को = किस लिये? क्यों?

**किं**—अव्य० दे० "किम्"।

**किंकर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० किंकरी] १. दास। २. राक्षसों की एक जाति।

**किं-कर्त्तव्य-विमूढ़** —वि० [सं०] जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए। हक्का-बक्का। भौचक्का। घबराया हुआ।

**किंकिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्षुद्रघंटिका। २. करधनी। जेहर। कमरकस।

**किंगरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी] छोटा चिकारा। छोटी सारंगी जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं।

**किंचन**—संज्ञा पुं० [सं०] थोड़ी वस्तु।

**किंचित्**—वि० [सं०] कुछ। थोड़ा।

यौ० —किंचिन्मात्र = थोड़ा भी। थोड़ा ही।

क्रि० वि० कुछ। थोड़ा।

**किंजल्क**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पद्म-केशर। कमल का केशर। २. कमल। ३. कमल के फूल का पराग। ४. नाग-केशर।

वि० [सं०] कमल के केशर के रंग का।

**किंतु**—अव्य० [सं०] १. पर। लेकिन। परंतु। २. वरन्। बल्कि।

**किंपुरुष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किन्नर। २. दोगला। वर्णसंकर। ३. प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति।

**किंभूत**—वि० [सं०] १ किस प्रकार का। कैसा। २. विलक्षण। अद्भुत। ३. भोंडा। भद्दा।

यौ० —किंभूत-किमाकार = विलक्षण और भद्दा या भोंडा।

**किंवदंती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अफवाह। उड़ती खबर। जनरव।

**किंवा**—अव्य० [सं०] या। या तो। अथवा।

**किंशुक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पलाश। ढाक। टेसू। २. तुन का पेड़।

**कि**—सर्व० [सं० किम्] क्या? किस प्रकार?

अव्य० [सं० किम्। फा० कि] १. एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है। २. इतने में। ३. या। अथवा।

**किकियाना**—क्रि० अ० [अनु०] १. कीं कीं या कें कें का शब्द करना। २. रोना।

**किचकिच**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ का वाद-विवाद। बकवाद। २. झगड़ा।

**किचकिचाना**—क्रि० अ० [अनु०] १ (क्रोध से) दाँत पीसना। २. भरपूर बल लगाने के लिये दाँत पर दाँत रखकर दबाना। ३. दाँत पर दाँत दबाना।

**किचकिचाहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० किचकिचाना] किचकिचाने का भाव।

**किचकिची**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० किच-किचाना ] किचकिचाहट। दाँत पीसने की अवस्था।

**किचड़ाना**—क्रि० अ० [ हिं० कीचड़ + आना ( प्रत्य० ) ] ( आँख का ) कीचड़ से भरना।

**किचर-पिचर**—वि० दे० "गिच-पिच"।

**किछु***†—वि० दे० "कुछ"।

**किटकिट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किच-किच।

**किटकिटाना**—क्रि० स० [सं० किट-किटाय अनु० ] १. क्रोध से दाँत पीसना। २. दाँत के नीचे ककड़ की तरह कड़ा लगना।

**किटकिना**—संज्ञा पुं० [ सं० कृतक ] १. वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठीके की चीज का ठेका दूसरे असामियों को देता है। २. चाल। चालाकी।

**किटकिनादार**—संज्ञा पुं० [ हिं० किटकिना + फ़ा० दार ( प्रत्य० ) ] वह पुरुष जो किसी वस्तु को ठेकेदार से ठेके पर ले।

**किट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धातु की मैल। २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल।

**कित***†—क्रि० वि० [ सं० कुत्र ] १ कहाँ। २. किस ओर। किधर। ३. ओर। तरफ।

**कितक***†—वि०, क्रि० वि० [ सं० कियत् ] कितना। किस कदर।

**कितना**—वि० [सं० कियत् ] [ स्त्री० कितनी ] १. किस परिमाण, मात्रा या संख्या का ? (प्रश्नवाचक) २. अधिक। बहुत।

क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में। कहाँ तक। २. अधिक।

**कितव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जुआरी। २. धूर्त। छली। ३. पागल। ४. दुष्ट।

**किता**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सिलाई के लिए कपड़े की काट-छाँट। ब्योंत। २. ढग। चाल। ३ संख्या। अदद। ४. विस्तार का एक भाग। सतह का हिस्सा। ५ प्रदेश। प्रांगण। भूभाग।

**किताब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० किताबी ] १ पुस्तक। ग्रंथ। २ रजिस्टर। बही।

**मुहा०**—किताबी कीड़ा = वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो। किताबी चेहरा = वह चेहरा जिसकी आकृति लबाई लिये हो।

**किताबी**—वि० [अ० किताब] किताब के आकार का।

**कितिक***†—वि० दे० "कितक", "कितना"।

**कितेक***†—वि० [ सं० कियदेक ] १. कितना। २. असंख्य। बहुत।

**कितै***†—अव्य दे० "कित"।

**कितो***†—वि० [ स्त्री० किती ] दे० "कितना"।

क्रि० वि० कितना।

**कित्ति***—संज्ञा स्त्री० [ सं० कीर्ति ] यश।

**किधर**—क्रि० वि० [ सं० कुत्र ] किस ओर। किस तरफ।

**किधौं***—अव्य० [ सं० किम् ] १. अथवा। या। २ या तो। न जाने।

**किन**—सर्व० 'किस' का बहुवचन।

क्रि० वि० [ सं० किम् + न ] १ क्यों न। चाहे। २ क्यों नहीं।

संज्ञा पुं० [ सं० किण ] चिह्न। दाग।

**किनका**—संज्ञा पुं० [ सं० कणिक ] [ स्त्री० अल्पा० किनकी ] १ अन्न का टूटा हुआ दाना। २. चावल आदि की खुद्दी।

**किनवानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कण + हिं० पानी ] छोटी छोटी बूँदों की झड़ी। फुही।

**किनहा**†—वि० [ सं० कर्णक ] (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों। कच्चा।

**किनार***†—संज्ञा पुं० दे० "किनारा"।

**किनारदार**—वि० [ फ़ा० किनारा + दार ] ( कपड़ा ) जिसमें किनारा बना हो।

**किनारा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती हो। लबाई के बल की कोर। २. नदी या जलाशय का तट। तीर।

**मुहा०**—किनारे लगना = (किसी कार्य का) समाप्ति पर पहुँचना। समाप्त होना।

३. लंबाई चौड़ाईवाली वस्तु के चारों ओर का वह भाग जहाँ से उसके विस्तार का अंत होता हो। प्रांत। भाग। ४ [ स्त्री० किनारी ] कपड़े आदि में किनारे पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है। हाशिया। गोट। ५ किसी ऐसी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें चौड़ाई न हो। ६ पार्श्व। बगल।

**मुहा०**—किनारा खींचना = दूर होना। हटना। किनारे न जाना = अलग रहना। बचना। किनारे बैठना, रहना या होना = अलग होना। छोड़कर दूर हटना।

**किनारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० किनारा] सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो कपड़ा के किनारे पर लगाया जाता है।

**किनारे**—क्रि० वि० [हिं० किनारा] १. कोर या बाढ़ पर। २. तट पर। ३. अलग।

**किन्नर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० किन्नरी ] १. एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान होता है।

२. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।

**किन्नरी**—संज्ञा स्त्री० [स०] १. किन्नर की एक स्त्री। २. किन्नर जाति की स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [सं० किन्नरी वीणा] १. एक प्रकार का तंबूरा। २. किंगरी। सारंगी।

**किफ़ायत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. काफी या अलम् होने का भाव। २. कमखर्ची। थोड़े में काम चलाना। ३. बचत।

**किफ़ायती**—वि०* [अ० किफायत] कमखर्च करनेवाला। सँभालकर खर्च करनेवाला।

**किबला**—संज्ञा पु० [अ०] १ पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं। २. मक्का। ३ पूज्य व्यक्ति। ४ पिता। बाप।

**किबलानुमा**—संज्ञा पु० [फा०] पश्चिम दिशा का बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाजों पर अरब के मल्लाह करते थे।

**किम्**—वि०,सर्व० [स०] १. क्या ? २. कौन सा ?

यौ०—किमपि = कोई भी। कुछ भी।

**किमरिक**—संज्ञा पु० [अ० कैंब्रिक] एक प्रकार का चिकना सफेद कपड़ा।

**किमाकार**—वि० दे० "किंभूत"।

**किमाछ**—संज्ञा पु० दे० "केवाँच"।

**किमाम**—संज्ञा पु० [अ० किवाम] शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत। खमीर।

**किमाश**—संज्ञा पु० [अ०] तर्ज। ढंग। वजा। २. गंजीफे का एक रंग। ताज।

**किमि***—क्रि० वि० [सं० किम्] कैसे ? किस प्रकार ? किस तरह ?

**किम्मत**†—संज्ञा स्त्री० [अ० हिकमत] १ युक्ति। होशियारी। २. बहादुरी।

**कियत्**—वि० [सं०] कितना।

**कियारी**—संज्ञा स्त्री० [स० केदार] १. खेतो या बगीचों में थोड़े-थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें पौधे लगाए जाते हैं। क्यारी। २. खेतों के वे विभाग जो सिंचाई के लिये नालियों के द्वारा बनाये जाते हैं। ३. वह बड़ा कड़ाह जिसमें समुद्र का खारा पानी नमक नीचे बैठने के लिये भरते हैं।

**कियाह**—संज्ञा पुं० [सं०] लाल घोड़ा।

**किरंटा**—संज्ञा पु० [अं० क्रिश्चियन] छोटे दरजे का क्रिस्तान। केरानी। (तुच्छ)।

**किरका**—संज्ञा पुं० [सं० कर्कट = कंकड़ी] छोटा टुकड़ा। कंकड़। किरकिरी।

**किरकिटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "किरकिरी"।

**किरकिरा**—वि० [सं० कर्कट] कँकरीला। कंकड़दार। जिसमें महीन और कड़े रवे हों।

मुहा०—किरकिरा हो जाना = रंग में भंग हो जाना। आनंद में विघ्न पड़ना।

**किरकिराना**—क्रि० अ० [हिं० किरकिरा] १ किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना। २ दे० "किटकिटाना"।

**किरकिराहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० किरकिरा + हट (प्रत्य०)] १ आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा। २. दाँत के नीचे कँकरीली वस्तु के पड़ने का शब्द। ३ किटकिटापन। कँकरीलापन।

**किरकिरी**—संज्ञा स्त्री० [स० कर्कर] १. धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा देता है। २. अपमान। हेठी।

**किरकिल**—संज्ञा पुं० [सं० कृकलास] गिरगिट।

*संज्ञा स्त्री० दे० "कृकल"।

**किरच**—संज्ञा स्त्री० [स० कृति = कैंची (अस्त्र)] १. एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। २ छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे काँच आदि का)।

**किरण**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किरन।

**किरणमाली**—संज्ञा पु० [स०] सूर्य।

**किरन**—संज्ञा स्त्री० [सं० किरण] १. ज्योति की अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य्य, चंद्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई पड़ती हैं। रोशनी की लकीर।

मुहा०—किरन फूटना = सूर्योदय होना। २ कलाबत्तू या बादले की बनी झालर।

**किरपा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा"।

**किरपान***—संज्ञा पु० दे० "कृपाण"।

**किरम**—संज्ञा पु० [सं० कृमि] १. दे० "किरिमदाना"। २. कीट। कीड़ा।

**किरमाल***†—संज्ञा पु० [स० करवाल] तलवार। खड्ग।

**किरमिच**—संज्ञा पु० [अं० कैनवस] एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, बैग आदि बनते हैं।

**किरमिज**—संज्ञा पु० [स० कृमि+ज] [वि० किरमिजी] १. एक प्रकार का रंग। हिरमजी। दे० "किरिमदाना"। २. मटमैलापन लिए करौंदिया रंग का घोड़ा।

**किरमिजी**—वि० [स० कृमिज] किरमिज के रंग का। मटमैलापन लिए हुए करौंदिया।

**किरराना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] १. क्रोध से दाँत-पीसना। २. किर्रकिर्र शब्द करना।

**किरवान***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कृपाण"।

**किरवार***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "करवाल"।

**किरवारा***†—संज्ञा पुं [सं॰ कृतमाल] अमलतास।

**किराँची**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ कैरेज ] १ वह बैलगाड़ी जिसपर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है। २. माल-गाड़ी का डब्बा।

**किरात**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ किरातिनी, किरातिन, किराती ] १ एक प्राचीन जंगली जाति। २. हिमालय के पूर्वीय भाग तथा उसके आस-पास के देश का प्राचीन नाम।

**किरात**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ कैरात ] जवाहरात की एक तौल जो लगभग ४. जौ के बराबर होती है।

**किराना**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "केराना"।
क्रि॰ स॰ दे॰ "केराना"।

**किरानी**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "केरानी"।

**किराया**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] वह दाम जो दूसरे की कोई वस्तु काम में लाने के बदले में उसके मालिक को दिया जाय। भाड़ा।

**किरायेदार**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ किरायादार ] कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला।

**किरावल**—संज्ञा पुं॰ [ तु॰ करावल ] १. वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिये आगे जाय। २. बंदूक से शिकार करनेवाला आदमी।

**किरासन**—संज्ञा पुं॰ [अं॰ केरोसिन] केरोसिन तेल। मिट्टी का तेल।

**किरिच**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "किरच"।

**किरिन**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "किरण"।

**किरिम**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "कृमि"।

**किरिमदाना**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कृमि + हिं॰ दाना ] किरमिज नामक कीड़ा जो लाख की तरह थूहर के पेड़में लगता है और सुखाकर रँगने के काम में आता है।

**किरिया***†—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ क्रिया] १ शपथ। सौगंध। कसम। २. कर्त्तव्य। काम। ३. मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्धादि कर्म। मृतकर्म।
**यौ॰**—किरिया करम=क्रियाकर्म। मृतकर्म्म।

**किरीट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे में बाँधा जाता था। २. आठ भगण का एक वर्ण-वृत्त या सवैया।

**किरीटी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ किरीटिन् ] १ वह जो किरीट पहने। २. इंद्र। ३. अर्जुन। ४ राजा।

**किरोलना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ कर्त्तन ] करोदना।

**किर्च***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "किरच"।

**किर्मिज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कृमिज ] १. एक प्रकार का रंग। किरमिजी। दे॰ "किरिमदाना"। २. किरमिजी रंग का घोड़ा।

**किल**—अव्य॰ [ सं॰ ] निश्चय। सचमुच।

**किलक**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ किलकना] १. किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया। २ हर्षध्वनि। किलकार।
संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ किलक] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

**किलकना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ किलकिला ] किलकार मारना। हर्षध्वनि करना।

**किलकार**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ किलक] हर्षध्वनि।

**किलकारना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ किलक] १. हर्षध्वनि करना। २. चिल्लाना।

**किलकारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ किलक] हर्षध्वनि।

**किलकिंचित**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] संयोग शृंगार के ११ हावों में से एक जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है।

**किलकिल**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "किच-किच"।

**किलकिला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] हर्ष-ध्वनि। आनंद सूचक शब्द। किलकारी।
संज्ञा पुं॰ [ सं॰ कृकल ] मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया।
संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] समुद्र का वह भाग जहाँ की लहरें भयंकर शब्द करती हों।

**किलकिलाना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ किलकिला ] १. आनंद-सूचक शब्द करना। हर्षध्वनि करना। २. चिल्लाना। हल्लागुल्ला करना। ३. वाद विवाद करना। झगड़ा करना।

**किलकिलाहट**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ किलकिलाना ] किलकिलाने का शब्द या भाव।

**किलना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ कील ] १. कीलन होना। कीला जाना। २. वश में किया जाना। ३ गति का अवरोध होना।

**किलनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ कीट, हिं॰ कीड़ा ] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक कीड़ा। किल्ली।

**किलबिलाना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "कुल-बुलाना"।

**किललाना***—यौ॰ [ किल + लाना ] चिल्लाना।

**किलवाँक**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] काबुल देश का एक प्रकार का घोड़ा।

**किलवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ किलना का प्रे॰ रूप ] १. कील लगवाना या जड़वाना। २. तंत्र या मंत्र द्वारा किसी

भूत-प्रेत के विघ्नकारी कृत्य को रोकवा देना।

**किलवारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ कर्ण ] १ पतवार। कन्ना। २ छोटा डाँड़ा।

**किलविष**—संज्ञा पु॰ दे॰ "किल्विष"।

**किलहँटा**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] सिरोही पक्षी।

**किला**—संज्ञा पु॰ [ अ॰ ] लड़ाई के समय बचाव का एक सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़।

**यौ॰**—किलेदार=दुर्गपति। गढ़पति।

**किलात**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] असुरों के एक पुरोहित का नाम।

**किलाना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "किलवाना"।

**किलाबंदी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. दुर्गनिर्माण। २. व्यूह-रचना।

**किलावा**—संज्ञा पु॰ [ फा॰ कलावा ] हाथी के गले में पड़ा रस्सा जिसमें पैर फँसाकर महावत उसे चलाता है।

**किलिक**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

**किलेदार**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ किलः + फ़ा॰ दार ] [ भा॰ किलेदारी ] किले का प्रधान अधिकारी। दुर्गपति। गढ़पति।

**किलेबंदी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "किला-बंदी"।

**किलोल**—संज्ञा पु॰ दे॰ "कलोल"।

**किल्लत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. कमी। न्यूनता। २ संकोच। तंगी।

**किल्ला**—संज्ञा पु॰ [हिं॰ कील] बहुत बड़ा कील या मेख। खूँटा।

**किल्ली**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ कील ] १. कील। खूँटी। मेख। २ सिटकिनी। बिल्ली। ३ किसी कल या पेंच की मुठिया जिसे घुमाने से वह चले।

**मुहा॰**—किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना = किसी की चाल किसी के हाथ में होना। किल्ली घुमाना या ऐंठना = दाँव चलाना। युक्ति लगाना।

**किल्विष**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] १. पाप। अपराध। दोष। २ रोग।

**किवाँच**—संज्ञा पु॰ दे॰ "केवाँच"।

**किवाड़**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ कपाट ] [स्त्री॰ किवाड़ी] लकड़ी का पल्ला जो द्वार बंद करने के लिये चौखट में जड़ा रहता है। पट। कपाट।

**किशमिश**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ][वि॰ किशमिशी ] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर।

**किशमिशी**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १ जिसमें किशमिश हो। २. किशमिश के रंग का।

संज्ञा पु॰ एक प्रकार का अमौआ रंग।

**किशलय**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] नया निकला हुआ पत्ता। कोमल पत्ता। कल्ला।

**किशोर**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ किशोरी ] १ ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा।

**किश्त**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना। शह।

**किश्ती**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ कश्ती ] १. नाव। २. एक प्रकार की छिछली थाली या तश्तरी। ३. शतरंज का एक मोहरा। हाथी।

**किश्तीनुमा**—वि॰ [ फ़ा॰ ] नाव के आकार का। जिसके दोनों किनारे धन्वाकार होकर दोनों छोरों पर कोना डालते हुए मिलें।

**किष्किंध**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] मैसूर के आस पास के देश का प्राचीन नाम।

**किष्किंधा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] किष्किंध देश की एक पर्वतश्रेणी।

**किस**—सर्व॰ [ सं॰ कस्य ] "कौन" और "क्या" का वह रूप जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

**किसनई***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "किसानी"।

**किसब***—संज्ञा पु॰ दे॰ "कसब"।

**किसबत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] वह थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।

**किसमत**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "किस्मत"।

**किसमी***—संज्ञा पु॰ [ अ॰ कसबी ] श्रमजीवी। कुली। मजदूर।

**किसलय**—संज्ञा पु॰ दे॰ "किशलय"।

**किसान**—संज्ञा पु॰ [सं॰ कृषाण, प्रा॰ किसान ] कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।

**किसानी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ किसान] खेती। कृषिकर्म। किसान का काम।

**किसी**—सर्व॰ [ हिं॰ किस + ही ] "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—किसी ने।

**किसू***—सर्व॰ दे॰ "किसी"।

**किस्त**—संज्ञा स्त्री॰[अ॰] १ कई बार करके ऋण या देना चुकाने का ढंग। २ किसी ऋण या देने का वह भाग जो किसी निश्चित समय पर दिया जाय।

**किस्तबंदी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग।

**किस्तवार**—क्रि॰ वि॰ [ फ़ा॰ ] १. किस्त के ढंग से। किस्त करके। २. हर किस्त पर।

**किस्म**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. प्रकार। भेद। भाँति। तरह। २ ढंग। तर्ज। चाल।

**किस्मत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. प्रारब्ध। भाग्य। नसीब। करम। तकदीर।

**मुहा॰**—किस्मत आजमाना = किसी

कार्य को हाथ में लेकर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। किस्मत चमकना या जागना = भाग्य प्रबल होना। बहुत भाग्यवान् होना। किस्मत फूटना = भाग्य बहुत मंद हो जाना।

२ किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई जिले हों। कमिश्नरी।

**किस्मतवर**—वि० [ फा० ] भाग्यवान्।

**किस्सा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कहानी। कथा। आख्यान। २ वृत्तांत। समाचार। हाल। ३ कांड। झगड़ा। तकरार।

**किस्साख्वाँ**—संज्ञा पुं० [ अ० + फा० ] [ भा० किस्साख्वानी ] वह जो किस्से-कहानियाँ सुनाने का काम करता हो।

**किस्सागो**—संज्ञा पुं० [ भा० किस्सागोई ] दे० "किस्साख्वाँ"।

**किहिं***—सर्व० [हिं० कौन] किसका।

**की**—प्रत्य० [ हिं० की ] हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप।

क्रि० स० [ सं० कृत, प्रा० कि ] हिं० "करना" के भूत कालिक रूप "किया" का स्त्री०।

**कीक**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] चीत्कार। चीख।

**कीकट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। २. घोड़ा। ३. [ स्त्री० कीकटी ] प्राचीन काल की एक अनार्य्य जाति जो कीकट देश में बसती थी।

**कीकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] की की करके चिल्लाना। चीत्कार करना।

**कीकर**—संज्ञा पुं० [ सं० किंकराल ] बबूल।

**कीका**—संज्ञा पुं० [ सं० केकाण ] १. घोड़ा।

**कीकान**—संज्ञा पुं० [ सं० केकाण ] १. पश्चिमोत्तर का एक देश जो घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। २. इस देश का घोड़ा। ३. घोड़ा।

**कीच**—संज्ञा पुं० [सं० कच्छ] कीचड़। कर्दम।

**कीचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाँस जिसके छेद में घुसकर वायु हू हू शब्द करती है। २. राजा विराट का साला।

**कीचड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० कीच + ड़ (प्रत्य०) ] १. पानी मिली हुई धूल या मिट्टी। कर्दम। पंक। २. आँख का सफेद मल।

**कीट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु। कीड़ा। मकोड़ा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० किट्ट ] जमी हुई मैल। मल।

**कीटभृंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक न्याय जिसका प्रयोग उस समय होता है जब कई वस्तुएँ बिलकुल एकरूप हो जाती हैं।

**कीड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कीट, प्रा० कीड ] १. छोटा उड़ने या रेंगनेवाला जंतु। मकोड़ा। २. कृमि। सूक्ष्म कीट।

**मुहा०**—कीड़े काटना=चंचलता होना। जी उकताना। कीड़े पड़ना = १. (वस्तु में) कीड़े उत्पन्न होना। २. दोष होना। ऐब होना।

३ साँप। ४ जूँ, खटमल आदि।

**कीड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कीड़ा ] १. छोटा कीड़ा। २. चींटी। पिपीलिका।

**कीदहुँ***—अव्य दे० "किधौं"।

**कीनखाब**—संज्ञा पुं० दे० "कमखाब"।

**कीनना**‡-क्रि० स० [ सं० क्रीणन ] खरीदना। मोल लेना। क्रय करना।

**कीना**—संज्ञा पुं० [ फा० ] द्वेष। वैर।

**कीप**—संज्ञा स्त्री० [ अं० कीप ] वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में इसलिये लगाते हैं जिसमें द्रव पदार्थ उसमें ढालते समय बाहर न गिरे। कुप्पी।

**कीमत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] दाम। मूल्य।

**कीमती**—वि० [ अ० ] अधिक दामों का। बहुमूल्य।

**कीमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।

**कीमिया**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] रासायनिक क्रिया। रसायन।

**कीमियागर**—संज्ञा पुं० [ फा० ] रसायन बनानेवाला। रासायनिक परिवर्त्तन में प्रवीण।

**कीमुख्त**—संज्ञा पुं० [ अ० ] गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

**कीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शुक। सुग्गा। तोता। २ व्याध। बहेलिया। ३ कश्मीर देश। ४. कश्मीर देशवासी।

**कीरति***—संज्ञा स्त्री० दे० "कीर्ति"।

**कीर्ण**—वि० [ सं० ] १ बिखरा हुआ। २ फैला हुआ। व्याप्त। ३. छिपा हुआ। आच्छन्न।

**कीर्त्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ कथन। यशवर्णन। गुणकथन। २. कृष्णलीलासंबंधी भजन और कथा आदि।

**कीर्त्तनिया**—संज्ञा पुं० [ सं० कीर्त्तन + इया (प्रत्य०) ] कृष्णलीला-संबंधी भजन और कथा सुननेवाला। कीर्त्तन करनेवाला।

**कीर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पुण्य। २ ख्याति। बड़ाई। नामवरी। नेकनामी। यश। ३. राधा की माता का नाम। ४ आर्या छंद के भेदों में से एक। ५ दशाक्षरी वृत्तों में से एक। ६ एकादशाक्षरी वृत्तों में से एक वृत्त। ७. प्रसाद।

**कीर्त्तिमान्**-वि० [सं०] यशस्वी। नेकनाम। मशहूर। विख्यात।

**कीर्त्तिस्तंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह स्तंभ जो किसी कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय । २. वह कार्य्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्त्ति स्थायी हो ।

**कील**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लोहे या काठ की मेख । काँटा । परेग । खूँटी । २. वह मूढ़ गर्भ जो योनि में अटक जाता है । ३ नाक में पहनने का छोटा आभूषण । लौंग । ४. मुहाँसे की मांस-कील । ५. जाँते के बीचोबीच का खूँटा । ६ वह खूँटी जिसपर कुम्हार का चाक घूमता है ।

**कीलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खूँटी । कील । २. तंत्र के अनुसार एक देवता । ३. वह मंत्र जिससे किसी अन्य मंत्र की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया जाय ।

**कीलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंधन । रोक । रुकावट । २. मंत्र को कीलने का काम ।

**कीलना**—क्रि० स० [ सं० कीलन ] १. मेख जड़ना । कील लगाना । २. कील ठोककर मुँह बंद करना ( तोप आदि का ) । ३. किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना । ४ साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके । ५. अधीन करना । वश में करना ।

**कीला**—संज्ञा पुं० [ सं० कील ] बड़ी कील ।

**कीलाक्षर**—संज्ञा पुं० [ सं० कील + अक्षर ] बाबुल की एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कीलसे लिखे जाते थे ।

**कीलाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अमृत । २. जल । ३. रक्त । ४. मधु । ५. पशु ।

**कीलित**—वि० [ सं० ] १. जिसमें कील जड़ी हो । २. मंत्र से स्तंभित । कीला हुआ ।

**कीली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कील ] १. किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील जिसपर वह चक्र घूमता है । †२. दे० "कील" और "किल्ली" ।

**कीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बंदर । वानर ।

यौ०—कीशध्वज = अर्जुन ।

२. चिड़िया । ३ सूर्य्य ।

**कीसा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] थैली । खीसा ।

**कुँअर**—संज्ञा पुं० [ सं० कुमार ] [ स्त्री० कुँअरि ] १ लड़का । पुत्र । बालक । २. राजपुत्र । राजकुमार ।

**कुँअर-विलास**—संज्ञा पुं० [ हिं० कुँअर + विलास ] एक प्रकार का धान या चावल ।

**कुँअरेटा***‡—संज्ञा पुं० [ हिं० कुँअर + एटा ] [ स्त्री० कुँअरेटी ] लड़का । बालक ।

**कुँआँ**—संज्ञा पुं० दे० "कूआँ" ।

**कुँआरा**—वि० [ सं० कुमार ] [ स्त्री० कुँआरी ] जिसका ब्याह न हुआ हो । बिन ब्याहा ।

**कुँई**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी" ।

**कुंकुम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. केसर । जाफरान । २ रोली जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं । ३ कुंकुमा ।

**कुंकुमा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंकुम ] झिल्ली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में दूसरों पर मारते हैं ।

**कुंचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिकुड़ने या बटुरने की क्रिया । सिमटना ।

**कुंचित**—वि० [ सं० ] १. घूमा हुआ । टेढ़ा । २. घूँघरवाले । छल्लेदार ( बाल ) ।

**कुंची**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंजी" ।

**कुंज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जो वृक्ष, लता आदि से मंडप की तरह ढका हो ।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० कुंज = कोना ] वे बूटे जो दुशाले के कोनों पर बनाए जाते हैं ।

**कुंजक***—संज्ञा पुं० [ सं० ] ड्योढ़ी पर का वह चोबदार जो अंतःपुर में आता जाता हो । कंचुकी ।

**कुंजकुटीर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुंज-गृह । लताओं से घिरा हुआ घर ।

**कुंजगली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुंज + गली ] १ बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ । २ पतली तंग गली ।

**कुँजड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंज + ड़ा ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन ] एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती है ।

**कुंजर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुंजरा, कुंजरी ] १ हाथी ।

**मुहा०**—कुंजरो वा नरो वा, कुंजरो नरो = हाथी या मनुष्य । श्वेत या कृष्ण । अनिश्चित या दुविधा की बात ।

२ बाल । केश । ३. अंजना के पिता और हनुमान् के नाना का नाम । ४. छप्पय के इक्कीसवें भेद का नाम । ५. पाँच मात्राओं के छंदों के प्रस्तार में पहला प्रस्तार । ६ आठ की संख्या । वि० श्रेष्ठ । उत्तम । जैसे—पुरुष-कुंजर ।

**कुंजरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह ।

**कुंजल**—संज्ञा पुं० दे० "कुंजर" ।

**कुंजविहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण ।

**कुंजित**—वि० [ सं० ] कुंजों से युक्त । लता-मंडपोंवाला ।

**कुंजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंचिका ] १. चाभी । ताली ।

**मुहा०**—( किसी की ) कुंजी हाथ में होना = किसी का वश में होना ।

२. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी

पुस्तक का अर्थ खुले । टीका ।

**कुंठ**—वि० [ सं० ] १. जो चोखा या तीक्ष्ण न हो । गुठला । कुंद । २. मूर्ख ।

**कुंठित**—वि० [ सं० ] १ जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो । कुंद । गुठला । २. मंद । बेकाम । निकम्मा ।

**कुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चौड़े मुँह का एक गहरा बर्तन । कुंडा । २ प्राचीन काल का एक मान जिससे अनाज नापा जाता था । ३ बहुत छोटा तालाब । ४ पृथिवी में खोदा हुआ गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ पात्र, जिसमें आग जलाकर अग्निहोत्रादि करते हैं । ५ बटलोई । स्थाली । ६ ऐसी स्त्री का जारज लड़का जिसका पति जीता हो । ७ पूला । गठ्ठा । ८ लोहे का टोप । कूँड़ । खोद । ९ हौदा ।

**कुंडरा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंड ] मटका ।

**कुंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सोने चाँदी आदि का बना हुआ कान का एक मंडलाकार आभूषण । बाली । मुरकी । २. एक गोल आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी कनफटे कानों में पहनते हैं । ३ कोई मंडलाकार आभूषण । जैसे—कड़ा, चूड़ा आदि । ४ रस्सी आदि का गोल फंदा । ५ लोहे का वह गोल मँडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है । मेखला । मेंड़री । ६. किसी लंबी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति । फेंटी । मंडल । ७. वह मंडल जो कुहरे या बदली में चंद्रमा या सूर्य्य के किनारे दिखाई पड़ता है । ८ छंद में वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हों, पर एक ही अक्षर हो । ९. बाईस मात्राओं का एक छंद ।

**कुंडलाकार**—वि० [ सं० ] वर्तुलाकार । गोल । मंडलाकार ।

**कुंडलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मंडलाकार रेखा । २ कुंडलिया छंद ।

**कुंडलिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तंत्र और उसके अनुयायी हठयोग के अनुसार एक कल्पित वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गई है । २ जलेबी या इमरती नाम की मिठाई ।

**कुंडलिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंडलिका ] एक मात्रिक छंद जो दोहे और एक रोला के योग से बनता है ।

**कुंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जलेबी । २ कुंडलिनी । ३ गुडुचि । गिलोय । ४ जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला एक चक्र जिसमें बारह घर होते हैं । ५. गेंडुरी । इंडुआ । ६ साँप के बैठने की मुद्रा ।

संज्ञा पुं० [ सं० कुंडलिन् ] १. साँप । २. वरुण । ३. मोर । ४ विष्णु ।

**कुंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंड ] मिट्टी का चौड़े मुँह का एक बहुत बड़ा गहरा बरतन । बड़ा मटका । कछरा ।

संज्ञा पुं० [ सं० कुंडल ] दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोंढा जिसमें साँकल फँसाई जाती है और ताला लगाया जाता है ।

**कुंडिनपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन नगर जो विदर्भ देश में था ।

**कुंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंड ] पत्थर या मिट्टी का कटोरे के आकार का बरतन जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुंडा ] १. जंजीर की कड़ी । २. किवाड़ में लगी हुई साँकल ।

**कुंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गवेधुक । कौड़िल्ला । २ भाला । बरछी । ३ जूँ । ४ क्रूर भाव । अनख ।

**कुंतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिर के बाल । केश । २ प्याला । चुक्कड़ । ३. जौ । ४. हल । ५. एक देश का नाम जो कोंकण और बरार के बीच में था । ६ वेश बदलनेवाला पुरुष । बहुरूपिया ।

**कुंता**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती" ।

**कुंतिभोज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राजा जिसने कुंती या पृथा को गोद लिया था ।

**कुंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता । पृथा ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंत ] बरछी । भाला ।

**कुँथना**—क्रि० अ० [ हिं० कूथना ] पीटा जाना ।

**कुंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जूही की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं । २. कनेर का पेड़ । ३ कमल । ४ कुंदुर नाम का गोंद । ५. एक पर्वत का नाम । ६ कुबेर की नौ निधियों में से एक । ७. नौ की संख्या । ८ विष्णु ।

वि० [ फ़ा० ] १. कुंठित । गुठला । २ स्तब्ध । मंद ।

यौ०—कुंदजेहन = मंदबुद्धि ।

**कुंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंद ] १. बहुत अच्छे और साफ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िये नगीने जड़ते हैं । २. बढ़िया या खालिस सोना ।

वि० १. कुंदन के समान चोखा । खालिस । स्वच्छ बढ़िया । २ नीरोग ।

**कुँदरू**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंदुर = करेला ] एक बेल जिसमें चार पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं जिनकी तरकारी होती है । बिंबा ।

**कुंदलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छब्बीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति ।

**कुंदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मिलाओ सं० स्कंध ] १. लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा जो प्रायः जलाने के काम में आता है । लक्कड़ । २. लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रख-

कर बढ़ई लकड़ी गढ़ते, कुंदीगर कपड़े पर कुंदी करते और किसान घास काटते हैं। निहठा। निष्ठा। ३ बंदूक का चौड़ा पिछला भाग। ४. वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। काठ। ५. दस्ता। मूठ। बेंट। ६. लकड़ी की बड़ी मुँगरी जिससे कपड़ों की कुंदी की जाती है।

संज्ञा पुं० [ सं० स्कंद, हिं० कंधा ] १. चिड़िया का पर। डैना। २. कुश्ती का एक पेंच।

संज्ञा पुं० [ सं० कुंदन ] भुना हुआ दूध। खोवा, मावा।

**कुंदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुंदा ] १. कपड़ों की सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिए उसे मोंगरी से कूटने की क्रिया। २ खूब मारना। ठोंकपीट।

**कुंदीगर** —संज्ञा पुं० [ हिं० कुंदी + गर ( प्रत्य० ) ] कुंदी करनेवाला।

**कुंदुर**—संज्ञा पुं० [ सं० अ० ] एक प्रकार का पीला गोंद जो दवा के काम में आता है।

**कुँदेरना**—क्रि० स० [ सं० कुंतन ] १. खुरचना। २. खरादना।

**कुँदेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कुँदेरना + एरा ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० कुँदेरी ] खरादनेवाला। कुनेरा।

**कुंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मिट्टी का घड़ा। घट। कलश। २. हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग। ३. ज्योतिष में दसवीं राशि। ४. दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान या तौल। ५. प्राणायाम के तीन भागों में से एक। कुंभक। ६ एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है। ७. प्रह्लाद का पुत्र एक दैत्य।

**कुंभक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राणायाम का एक अंग जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोक रखते हैं।

**कुंभकर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राक्षस जो रावण का भाई था।

**कुंभकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २. मुर्गा।

**कुंभज, कुंभजात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घड़े से उत्पन्न पुरुष। २. अगस्त्य मुनि। ३. वशिष्ठ। ४. द्रोणाचार्य।

**कुंभसंभव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अगस्त्य मुनि।

**कुंभिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कुंभी। जलकुंभी। २ वेश्या। ३. कायफल। ४. आँख की एक फुंसी। गुहांजनी। बिलनी। ५. परवल का पेड़। ६. शूक रोग।

**कुँभिलाना***—क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"।

**कुंभी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ हाथी। २ मगर। ३ गुग्गुल। ४. एक जहरीला कीड़ा। ५ एक राक्षस जो बच्चों को क्लेश देता है।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ छोटा घड़ा। २. कायफल का पेड़। ३. दंती का पेड़। दाँती। ४. एक वनस्पति जो जलाशयों में होती है। जलकुंभी। ५. एक नरक का नाम। कुंभीपाक नरक। ६ खंभे के नीचे का चौकोर पत्थर। चौकी।

**कुंभीधान्य**—संज्ञा पुं [ सं० ] घड़ा या मटका भर अन्न जिसे कोई गृहस्थ या परिवार छः दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके। ( स्मृति )

**कुंभीधान्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उतना अन्न रखनेवाला जितना कोई गृहस्थ छः दिन या किसी किसी के मत से साल भर खा सके।

**कुंभीनस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुंभीनसी ] १. क्रूर साँप। २. एक प्रकार का जहरीला कीड़ा। ३. रावण।

**कुंभीपाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार एक नरक। २. एक प्रकार का सन्निपात जिसमें नाक से काला खून जाता है।

**कुंभीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नक्र या नाक नामक जल-जन्तु। २. एक प्रकार का कीड़ा।

**कुँवर**—संज्ञा पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवरि ] १ लड़का। पुत्र। बेटा। २. राजपुत्र। राजा का लड़का।

**कुँवरेटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कुँवर + एटा ( प्रत्य० ) ] बालक। छोटा लड़का। बच्चा।

**कुँवारा**—वि० [ सं० कुमार ] [ स्त्री० कुँवारी ] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन ब्याहा।

**कुँहकुँह***—संज्ञा पुं० [ सं० कुंकुम ] केसर।

**कु**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग जो संज्ञा से पहले लगकर उसके अर्थ में "नीच", "कुत्सित" आदि का भाव बढ़ाता है।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथिवी।

**कुआँ**—संज्ञा पुं० दे० "कूआँ"।

**कुआर**—संज्ञा पुं० [ सं० कुमार, प्रा० कुँवार ] [ वि० कुआरी ] हिंदुस्तानी सातवाँ महीना। शरद् ऋतु का पहला महीना। आश्विन। अविवाहित ( कुमार )।

**कुइयाँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुआँ ] छोटा कुआँ।

**यौ०**—कठकुइयाँ = वह छोटा छोटा कुआँ जो काठ से बँधा हो।

**कुई**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुइयाँ"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कुव ] कुमुदिनी।

**कुकटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुक्कुटी =

सेवक ] कपास की एक जाति जिसकी रुई ललाई लिए होती है।

**कुकड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० सिकुड़ना ] सिकुड़कर रह जाना। संकुचित हो जाना।

**कुकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुक्कुटी ] १. कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा जो कातकर तकले पर से उतारा जाता है। अट्ठा। अंटी। २ दे० "खुखड़ी"।

**कुकनू**—संज्ञा पुं० [ यू० ] एक कल्पित पक्षी जो गाने में विलक्षण माना जाता है। कहा जाता है कि जब यह गाने लगता है, तब आग निकल पड़ती है जिसमें वह भस्म हो जाता है।

**कुकर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का कटोरदान जिसमें दाल, चावल, तरकारी आदि एक साथ पकाई जा सकती है।

**कुकरी***†—[सं० कुक्कुट] वन-मुर्गी।

**कुकरौंधा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुक्कुरद्रु ] पालक से मिलता जुलता एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से कड़ी गंध निकलती है।

**कुकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा या खोटा काम।

**कुकर्मी**—वि० [ हिं० कुकर्म ] बुरा काम करनेवाला। पापी।

**कुकुभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मात्रिक छंद।

**कुकुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यदुवंशी क्षत्रियों की एक शाखा। २ एक प्राचीन प्रदेश। ३. एक साँप का नाम। ४. कुत्ता।

**कुकुरखाँसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुक्कुर + खाँसी ] वह सूखी खाँसी जिसमें कफ न गिरे। ढाँसी।

**कुकुरदंत**—संज्ञा पुं० [ हिं० कुक्कुर+दंत ] [वि०कुकुरदंता] वह दाँत जो किसी किसी को साधारण दाँतों के अतिरिक्त और उनसे कुछ नीचे आड़ा निकलता है तथा जिसके कारण होंठ कुछ उठ जाता है।

**कुकुरमाछी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुक्कुर + मक्खी ] एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं को काटती है।

**कुकुरमुत्ता**—संज्ञा पुं० [ हिं० कुक्कुर +मूत ] एक प्रकार की खुमी जिसमें से बुरी गंध निकलती है। छत्राक।

**कुकुही***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुक्कुभ ] वनमुर्गी।

**कुक्कुट**—संज्ञा पुं०[सं०]१ मुर्गा। २ चिनगारी। ३ लुक। ४ जटाधारी पौधा।

**कुक्कुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुक्कुरी] १ कुत्ता। श्वान। २ यदुवंशियों की एक शाखा। कुकुर। ३ एक मुनि।

**कुक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पेट। उदर।

**कुक्षि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ पेट। २ कोख। ३ किसी चीज के बीच का भाग।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक दानव। २ राजा बलि। ३ एक प्राचीन देश।

**कुखेत**—संज्ञा पुं० [ सं० कुक्षेत्र ] बुरा स्थान। खराब जगह। कुठाँव।

**कुख्यात**—वि० [सं०] निंदित। बदनाम।

**कुख्याति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निंदा।

**कुगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गति। दुर्दशा।

**कुगहनि***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु+ग्रहण ] अनुचित आग्रह। हठ। जिद।

**कुग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरे ग्रह।

**कुघा***—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] दिशा। ओर। तरफ।

**कुघात**—संज्ञा पुं० [ हिं० कु + घात] १. कुअवसर। बेमौका। २ बुरा दाँव। छल कपट।

**कुच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्तन। छाती।

**कुचकुचाना**—क्रि० स० [अनु० कुचकुच] १ लगातार कोंचना। बार बार नुकीली चीज धसाना या गोदना। २. थोड़ा कुचलना।

**कुचना***—क्रि० अ० [ सं० कुचन ] सिकुड़ना। सिमटना। ( क्व० )

**कुचक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूसरों को हानि पहुँचाने वाला गुप्त प्रयत्न। षड्यंत्र।

**कुचक्री**—संज्ञा पुं० [ सं० कुचक्रिन् ] षड्यंत्र रचनेवाला। गुप्त प्रयत्न करके दूसरों को हानि पहुँचानेवाला।

**कुचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बुरे स्थानों में घूमनेवाला। आवारा। २. नीच कर्म करनेवाला। ३. वह जो पराई निंदा करता फिरे।

**कुचलना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. किसी चीज पर सहसा ऐसी दाब पहुँचाना जिससे वह बहुत दब और विकृत हो जाय। मसलना। २. पैरों से रौंदना।

**मुहा०**—सिर कुचलना = पराजित करना।

**कुचला**—संज्ञा पुं० [ सं० कचीर ] एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषध के काम में आते हैं।

**कुचली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुचलना] वे दाँत जो डाढ़ों और राजदंत के बीच में होते हैं। कीला। सीला दाँत।

**कुचाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + हिं० चाल ] १. बुरा आचरण। खराब आचरण। खराब चाल-चलन। २. दुष्टता। पाजीपन। बदमाशी।

**कुचाली**—संज्ञा पुं [ हिं० कुचाल ] १ कुमार्गी। बुरे आचरणवाला। २. दुष्ट।

**कुचाह***—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० चाह ] बुरी खबर। अशुभ बात।

**कुचिया**†—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंचिका] छोटी टिकिया।

**कुचील***†—वि० [सं० कुचैल] मैले कपड़ेवाला। मैला कुचैला। मलिन।

**कुचीला***†-वि० दे० "कुचैला"।

**कुचेष्ट**-वि० [सं०] बुरी चेष्टावाला।

**कुचेष्टा**-संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कुचेष्ट] १. बुरी चेष्टा। हानि पहुँचाने का यत्न। बुरी चाल। २ चेहरे का बुरा भाव।

**कुचैन***—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० चैन] कष्ट। दुःख। व्याकुलता। वि० बेचैन। व्याकुल।

**कुचैला**—वि० [सं० कुचैल] [स्त्री० कुचैली] १. जिसका कपड़ा मैला हो। मैले कपड़ेवाला। २. मैला। गंदा।

**कुच्छित***—वि० दे० "कुत्सित"।

**कुछ**—वि० [सं० किंचित्] थोड़ी संख्या या मात्रा का। जरा। थोड़ा सा।

**मुहा०**-कुछ एक = थोड़ा सा। कुछ कुछ = थोड़ा। कुछ ऐसा = विलक्षण। असाधारण। कुछ न कुछ = थोड़ा बहुत। कम या ज्यादा।

सर्व० [सं० कश्चित्] १. कोई (वस्तु)। कुछ का कुछ = और का और। उलटा। कुछ कहना = कड़ी बात कहना। बिगड़ना। कुछ कर देना = जादू टोना कर देना। मंत्र-प्रयोग कर देना। (किसी को) कुछ हो जाना = कोई रोग या भूत प्रेत की बाधा हो जाना। कुछ हो = चाहे जो हो।

२ बड़ी या अच्छी बात। ३ सार वस्तु। काम की वस्तु। ४ गणमान्य मनुष्य।

**मुहा०**—कुछ लगाना = (अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना। कुछ हो जाना = किसी योग्य हो जाना। गणमान्य हो जाना।

**कुजंत्र***—संज्ञा पुं० [सं० कुयंत्र] बुरा यंत्र। अभिचार। टोटका। टोना।

**कुज** संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल ग्रह। २ वृक्ष। पेड़। ३. नरकासुर जो पृथ्वी का पुत्र माना जाता था।

**कुजन**—संज्ञा पुं० [सं०] दुष्ट। बुरा आदमी।

**कुजा**-संज्ञा स्त्री० [सं० कु = पृथ्वी + जा = जायमान] १. जानकी। २. कात्यायिनी।

**कुजात**—संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "कुजाति"।

**कुजाति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी जाति। नीच जाति।

संज्ञा पुं० १. बुरी जाति का आदमी। नीच पुरुष। २ पतित या अधम पुरुष।

**कुजोग***†—संज्ञा पुं० [सं० कुयोग] १ कुसंग। कुमेल। बुरा मेल। २. बुरा अवसर।

**कुजोगी***-वि० [सं० कुयोगी] असंयमी।

**कुटंत**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना + त (प्रत्य०)] १ कूटने का भाव। कुटाई। मार।

**कुट**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुटी] १ घर। गृह। २ कोट। गढ़। ३ कलश।

संज्ञा स्त्री० [सं० कुष्ठ] एक बड़ी मोटी झाड़ी जिसकी जड़ सुगंधित होती है।

संज्ञा पुं० [सं० कुट = कूटना] कूटा हुआ टुकड़ा। छोटा टुकड़ा। जैसे, तिलकुट। एक प्रकार का चावल।

**कुटका**-संज्ञा पुं० [हिं० काटना] [स्त्री० अल्पा० कुटकी] छोटा टुकड़ा।

**कुटकी**-संज्ञा स्त्री० [सं० कटुका] १. एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ की गोल गाँठ दवा के काम में आती है। २ एक जड़ी।

†संज्ञा स्त्री० [सं० कुटका] कँगनी। चेना।

संज्ञा स्त्री० [सं० कटु + काट] एक उड़नेवाला छोटा कीड़ा जो कुत्ते, बिल्ली आदि के रोयों में घुसा रहता है।

**कुटज**-संज्ञा पुं० [सं०] १. कुरैया। कर्ची। कुड़ा। २ अगस्त्य मुनि।

**कुटनपन**-संज्ञा पुं० [सं० कुट्टनी] १. कुटनी का काम। दूती-कर्म्म। २. झगड़ा लगाने का काम।

**कुटनपेशा**-संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन"।

**कुटनहारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूटना + हारी (प्रत्य०)] धान कूटनेवाली स्त्री।

**कुटना**-संज्ञा पुं० [हिं० कुटनी] १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला। दूत। दलाल। २. दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला। चुगलखोर।

संज्ञा पुं० [हिं० कूटना] वह हथियार जिससे कुटाई की जाय।

क्रि० अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना।

**कुटनाना**-क्रि० स० [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहका कर कुमार्ग पर ले जाना।

**कुटनापा**-संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन"।

**कुटनी**-संज्ञा स्त्री० [सं० कुट्टनी] १. स्त्रियों को बहका कर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाली स्त्री। दूती। २. दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली।

**कुटवाना**—क्रि० स० [हिं० कूटना का प्रे० रूप] कूटने की क्रिया दूसरे से कराना।

**कुटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूटना ] १. कूटने का काम। २. कूटने की मजदूरी।

**कुटास**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूटना ] मार-पीट।

**कुटिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुटी] झोपड़ी।

**कुटिल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कुटिला ] १. वक्र। टेढ़ा। २. कुंचित। घूमा या बल खाया हुआ। ३. छल्लेदार। घुँघराला। ४. दगाबाज। कपटी। छली। संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शठ। खल। २. वह जिसका रंग पीलापन लिए सफेद और आँखें लाल हों। ३. चौदह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त।

**कुटिलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टेढ़ापन। २. खोटाई। छल। कपट।

**कुटिलपन**—संज्ञा पुं० दे० "कुटिलता"।

**कुटिला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सरस्वती नदी। २ एक प्राचीन लिपि।

**कुटिलाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता"।

**कुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ घास फूस से बनाया हुआ छोटा घर। पर्णशाला। कुटिया। झोपड़ी। २ मुरा नामक गंधद्रव्य। ३. श्वेत कुटज।

**कुटीचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार प्रकार के संन्यासियों में से पहला जो शिखा-सूत्र त्याग नहीं करता।

**कुटीचर**—संज्ञा पुं० दे० "कुटीचक"। संज्ञा पुं० [ सं० कुचर ] कपटी। छली।

**कुटीर**—संज्ञा पुं० दे० "कुटी"।

**कुटुंब**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परिवार। कुनबा। खानदान।

**कुटुंबी**—संज्ञा पुं० [ सं० कुटुंबिन् ] [ स्त्री० कुटुंबिनी ] १. परिवारवाला। कुनबेवाला। २ कुटुंब के लोग। संबंधी। नातेदार।

**कुटुम*†**—संज्ञा पुं० दे० "कुटुंब"।

**कुटेक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + हिं० टेक ] अनुचित हठ। बुरी जिद।

**कुटेव**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु+हिं० टेव ] खराब आदत। बुरी बान।

**कुट्टनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुटनी"।

**कुट्टमित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संयोग के समय स्त्रियों की मिथ्या दुःख-चेष्टा जो हावों में है।

**कुट्टा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कटना ] १. पर-कटा कबूतर। २ पैर बाँधकर जाल में छोड़ा हुआ पक्षी जिसे देखकर और पक्षी फँसते हैं।

**कुट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काटना ] १. चारे को छोटे छोटे टुकड़ों में काटने की क्रिया। २. गँड़ासे से बारीक काटा हुआ चारा। ३ कूटा और सड़ाया हुआ कागज जिससे कलमदान इत्यादि बनते हैं। ४ लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे मित्रता तोड़ने के समय दाँतों पर नाखून बुलाकर करते हैं। मैत्री-भंग। ५ परकटा कबूतर।

**कुठला**—संज्ञा पुं० [ सं० कोष्ठ, प्रा० कोट्ठ + ला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० अल्पा० कुठली ] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

**कुठाँउ**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव"।

**कुठाँव*†**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + हिं० ठाँव ] बुरी ठौर। बुरी जगह।

**मुहा०**—कुठाँव मारना = ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट या दुर्गति हो।

**कुठाट**—संज्ञा पुं० [ सं० कु + हिं० ठाट ] १ बुरा साज। बुरा सामान। २ बुरा प्रबंध। बुरा आयोजन। खराब काम करने की तैयारी।

**कुठार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुठारी ] १ कुल्हाड़ी। २ परशु। फरसा। ३. नाशक।

**कुठाराघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुल्हाड़ी का आघात। २. गहरी चोट।

**कुठारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कुल्हाड़ी। टाँगी। २ नाश करनेवाली।

**कुठाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + स्थाली ] मिट्टी की घरिया जिसमें सोना, चाँदी गलाते हैं।

**कुठाहर***—संज्ञा पुं० [ सं० कु + हिं० ठाहर ] १ कुठौर। कुठाँव। बुरा स्थान। २. बे-मौका। बुरा अवसर।

**कुठिया†**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुठला"।

**कुठौर**—संज्ञा पुं० [ सं० कु + हिं० ठौर ] १. कुठाँव। बुरी जगह। २. बे मौका।

**कुड़**—संज्ञा पुं० [ सं० कुष्ठ, प्रा० कुट्ठ ] कुट नाम की ओषधि।

**कुड़कुड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] मन ही मन कुढ़ना। कुड़बुड़ाना।

**कुड़कुड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] भूख या अजीर्ण से होनेवाली पेट की गुड़गुड़ाहट।

**मुहा०**—कुड़कुड़ी होना = किसी बात को जानने के लिये आकुलता होना।

**कुड़बुड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] मन ही मन कुढ़ना। कुड़कुड़ाना।

**कुडमल**—संज्ञा पुं० [ सं० कुड्मल ] कली।

**कुड़ल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंचन ] शरीर में ऐंठन की पीड़ा जो रक्त की कमी या उसके ठंढे पड़ने से होती है। तशन्नुज।

**कुड़व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अन्न नापने का एक पुराना मान जो चार अंगुल चौड़ा और उतना ही गहरा होता था।

**कुड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुटज ] इंद्र जौ का वृक्ष।

**कुड़क**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० कुरक ] १. अंडा न देनेवाली मुर्गी। २. व्यर्थ। खाली।

**कुडौल**—वि० [सं० कु + हिं० डौल] बेडौल। भद्दा। भौंडा।

**कुढंग**—संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं० ढंग] बुरा ढंग। कुचाल। बुरी रीति।

वि० १ बुरे ढंग का। बेढंगा। भद्दा। बुरा। २. बुरी तरह का। बद-वजा। कुढंगा।

**कुढंगा**—वि० [हिं० कुढंग] [स्त्री० कुढंगी] १. बेशऊर। उजड्ड। २. बेढंगा। भद्दा।

**कुढंगी**—वि० [हिं० कुढंग] कुमार्गी। बुरे चाल-चलन का।

**कुढ़न**—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रुद्ध] वह क्रोध या दुःख जो मन ही मन रहे। चिढ़।

**कुढ़ना**—क्रि० अ० [सं० क्रुद्ध] १. भीतर ही भीतर क्रोध करना। मन ही मन खीझना या चिढ़ना। बुरा मानना। २ डाह करना। जलना। ३. भीतर ही भीतर दुःखी होना। मसोसना।

**कुढब**—वि० [सं० कु + हिं० ढब] १ बुरे ढग का। बेढब। २. कठिन। दुस्तर।

**कुढ़ाना**—क्रि० स० [हिं० कुढ़ना] १ क्रोध दिलाना। चिढ़ाना। खिझाना। २. दुःखी करना। कलपाना।

**कुणप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शव। लाश। २. इगुदी। गोंदी। ३. राँगा। ४. बरछा।

**कुणपाशी**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का प्रेत जो मुर्दा खाता है। २ मुर्दा खानेवाला जतु।

**कुतका**—संज्ञा पुं० [हिं० गतका] १. गतका। २. मोटा डंडा। सोंटा। ३. भाँग घोटने का डंडा। भंग-घोटना।

**कुतना**—क्रि० अ० [हिं० कूतना] कूतने का कार्य्य होना। कूता जाना।

**कुतप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिन का आठवाँ मुहूर्त्त जो मध्याह्न समय में होता है। २. श्राद्ध में आवश्यक वस्तुएँ, जैसे—मध्याह्न, गैंडे के चमड़े का पात्र, कुश, तिल आदि। ३. सूर्य्य। ४. अग्नि। ५. द्विज।

**कुतरना**—क्रि० [सं० कर्तन] १. दाँत से छोटा सा टुकड़ा काट लेना। २. बीच ही से कुछ अश उड़ा लेना।

**कुतर्क**—संज्ञा पु० [सं०] बुरा तर्क। बेढंगी दलील। वितडा।

**कुतर्की**—संज्ञा पुं० [सं० कुतर्किन्] व्यर्थ तर्क करनेवाला। बकवादी। वितंडावादी।

**कुतवार***—संज्ञा पु० दे० "कोतवाल"।

**कुतवाल**†—संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

**कुताही**—संज्ञा स्त्री० दे० "कोताही"।

**कुतिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुत्ती] कुत्ते की मादा। कूकरी। कुत्ती।

**कुतुक**—संज्ञा पु० [सं०] १ उत्सुकता। कुतूहल। २. आनंद।

**कुतुब**—संज्ञा पुं० [अ०] ध्रुव तारा।

**कुतुबनुमा**—संज्ञा पुं० [अ०] वह यत्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है। दिग्दर्शक यत्र।

**कुतूहल**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कुतूहली] १ किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कंठा। २. वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो। कौतुक। ३ क्रीड़ा। खिलवाड़। ४. आश्चर्य्य। अचंभा।

**कुतूहली**—वि० [सं० कुतूहलिन्] १ जिसे वस्तुओं का देखने या जानने की अधिक उत्कंठा हो। २. कौतुकी। खिलवाड़ी।

**कुत्ता**—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० कुत्ती] १. भेड़िए, गीदड़, लोमड़ी आदि की जाति का पशु जो घर की रक्षा के लिए पाला जाता है। श्वान। कूकुर।

यौ०—कुत्ते-खसी = व्यर्थ और तुच्छ कार्य।

मुहा०—क्या कुत्ते ने काटा है ?=क्या पागल हुए हैं ? कुत्ते की मौत मरना= बहुत बुरी तरह से मरना। कुत्ते का दिमाग होना या कुत्ते का भेजा खाना = बहुत अधिक बकवाद करने की शक्ति होना।

२. एक प्रकार की घास जिसकी बालें कपड़ों में लिपट जाती हैं। लपटौवाँ। ३. कल का वह पुरजा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है। ४. लकड़ी का एक छोटा चौकोर टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाजा नहीं खुल सकता। बिल्ली। ५ बंदूक का घोड़ा। ६. नीच या तुच्छ मनुष्य। क्षुद्र।

**कुत्सा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा।

**कुत्सित**—वि० [सं०] १. नीच। अधम। २. निंदित। गर्हित। खराब।

**कुदकना**—क्रि० अ० दे० "कूदना"।

**कुदक्का**†—संज्ञा पु० [हिं० कूदना] उछल कूद।

**कुदरत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. शक्ति। प्रभुत्व। इख्तियार। २. प्रकृति। माया। ईश्वरी शक्ति। ३. कारीगरी। रचना।

**कुदरती**—वि० [अ०] १ प्राकृतिक। स्वाभाविक। २ दैवी। ईश्वरीय।

**कुदरा**†—संज्ञा पुं० दे० "कुदाल"।

**कुदर्शन**—वि० [सं०] कुरूप। बदसूरत।

**कुदलाना***—क्रि० अ० [हिं० कूदना] कूदते हुए चलना। उछलना। कूदना।

**कुदाँव**—संज्ञा पुं० [सं० कु + हिं०

दाँव ] १. बुरा दाँव। कुघात। २. विश्वासघात। दगा। धोखा। ३. औघट। बुरी स्थिति। संकट की स्थिति। ४. बुरा स्थान। विकट स्थान। ५. मर्मस्थान।

**कुदाई***—वि० [हिं० कुदाँव] बुरे ढंग से दाँव घात करनेवाला। छली। विश्वासघाती।

**कुदान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ बुरा दान (लेनेवाले के लिये) जैसे—शय्यादान, गजदान आदि। २ कुपात्र या अयोग्य आदि को दिया जानेवाला दान।

संज्ञा स्त्री० [हिं० कूदना] १. कूदने की क्रिया या भाव। २. बहुत पहुँचकर कहना। ३. उतनी दूरी जितनी एक बार कूदने में पार की जाय।

**कुदाना**—क्रि० स० [हिं० कूदना] कूदने का प्रेरणार्थक रूप। कूदने में प्रवृत्त करना।

**कुदाम***—संज्ञा पुं० [सं० कु+हिं० दाम] खोटा सिक्का। खोटा रुपया।

**कुदाय***—संज्ञा पुं० दे० "कुदाँव"।

**कुदाल**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुद्दाल] [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार।

**कुदास**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुदासी] दुष्ट या बुरा सेवक।

**कुदिन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ आपत्ति का समय। खराब दिन। २ एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का समय। सावन दिन। ३ वह दिन जिसमें ऋतु-विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।

**कुदिष्टि**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुदृष्टि"।

**कुदृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी नजर। पापदृष्टि।

**कुदेव**—संज्ञा पुं० [सं० कु=भूमि+देव] भूदेव। भूसुर। ब्राह्मण।

संज्ञा पुं० [सं० कु=बुरा+देव] राक्षस।

**कुद्रव**—संज्ञा पुं० [सं०] कोदो। (अन्न)।

संज्ञा पुं० [देश०] तलवार चलाने के ३२ हाथों या प्रकारों में से एक।

**कुधर**—संज्ञा पुं० [सं० कुध्र] १. पहाड़। पर्वत। २. शेषनाग।

**कुधातु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बुरी धातु। २ लोहा।

**कुनकुना**—वि० [सं० कदुष्ण] आधा गरम। कुछ गरम। गुनगुना।

**कुनना**—क्रि० स० [सं० क्षुणन] १. बरतन आदि खरादना। २ खरोंचना।

**कुनप**—संज्ञा पुं० दे० "कुणप"।

**कुनबा**—संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] कुटुंब।

**कुनबी**—संज्ञा पुं० [सं० कुटुंब] हिंदुओं की एक जाति जो प्रायः खेती करती है। कुरमी। गृहस्थ।

**कुनवा**—संज्ञा पुं० [हिं० कुनना] बरतन आदि खरादनेवाला। मनुष्य। खरादी।

**कुनह**—संज्ञा स्त्री० [फा० कीनः] [वि० कुनही] १. द्वेष। मनोमालिन्य। २ पुराना वैर।

**कुनही**—वि० [हिं० कुनह] द्वेष रखनेवाला।

**कुनाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुनना] १ वह चूर या बुकनी जो किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलती है। बुरादा। २. खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**कुनाम**—संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी।

**कुनित***—वि० दे० "क्वणित"।

**कुनियाँ**—संज्ञा स्त्री० दे० "कानियाँ"।

**कुनैन**—संज्ञा स्त्री० [अं० क्विनिन] सिंकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो अँगरेजी चिकित्सा में ज्वर के लिये अत्यंत उपकारी माना जाता है।

**कुपंथ**—संज्ञा पुं० [सं० कुपथ] १. बुरा मार्ग। २. निषिद्ध आचरण। कुचाल। ३. बुरा मत। कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय।

**कुपंथी**—वि० दे० "कुमार्गी"।

**कुपढ़**—वि० [सं० कु+हिं० पढ़ना] अनपढ़।

**कुपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा रास्ता। २. निषिद्ध आचरण। बुरी चाल।

यौ०—कुपथगामी = निषिद्ध आचरणवाला।

*संज्ञा पुं० [सं० कुपथ्य] वह भोजन जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो।

**कुपथ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को खराब करे। बदपरहेजी।

**कुपना***—क्रि० अ० दे० "कोपना"।

**कुपाठ**—संज्ञा पुं० [सं०] बुरी सलाह।

**कुपात्र**—वि० [सं०] १ अनधिकारी। अयोग्य। नालायक। २. वह जिसे दान देना शास्त्रों से निषिद्ध हो।

**कुपार***—संज्ञा पुं० [सं० अकूपार] समुद्र।

**कुपित**—वि० [सं०] १ क्रुद्ध। क्रोधित। २ अप्रसन्न। नाराज।

**कुपुटना**—क्रि० स० [?] चुटकी में फूल या साग आदि तोड़ना।

**कुपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह पुत्र जो कुपथगामी हो। कपूत। दुष्ट पुत्र।

**कुप्पा**—संज्ञा पुं० [सं० कूपक या कुतुप] [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं।

**मुहा०**—कुप्पा होना या हो जाना = १ फूल जाना। सूजना। २. मोटा होना। हृष्ट-पुष्ट होना। ३ रूठना। मुँह फुलाना।

**कुंई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुआं ] छोटा कुआँ।

**कुअवसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा प्रबंध। खराब इंतजाम।

**कुकुरमा**—संज्ञा पुं० दे० "कुफ्र"।

**कुभेलक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काबुल नदी का पुराना नाम।

**कुफ्र**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात।

**कुबंड**—संज्ञा पुं० [ सं० कोदंड ] धनुष।

*वि० [ कु + बंड = खंड ] खोंडा। विकृतांग।

**कुबजा**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या "कुबरी"।

**कुबड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुब्ज ] [ स्त्री० कुबड़ी ] वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई या झुक गई हो।

वि० १. झुका हुआ। टेढ़ा। २. जिसकी पीठ झुकी हो।

**कुबड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुबड़ा ] १ दे० "कुबरी"। २. वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो। टेढ़िया।

**कुबत***†—संज्ञा स्त्री० [सं० कु + हिं० बात ] १ बुरी बात। २ निंदा। ३. बुरी चाल।

**कुबरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुबड़ा ] १. कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र पर अधिक प्रेम रखती थी। कुब्जा। २ वह छड़ी जिसका सिरा झुका हो। टेढ़िया।

**कुबाक***—संज्ञा पुं० दे० 'कुवाक्य"।

**कुबानि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + हिं० बानि ] बुरी आदत। बुरी लत। कुटेव।

**कुबानी***—संज्ञा पुं० [सं० कुवाणिज्य] बुरा व्यापार।

**कुबुद्धि**—वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ मूर्खता। बेवकूफी। २. बुरी सलाह। कुमंत्रणा।

**कुबेर**—संज्ञा पुं० दे० "कुवेर"।

**कुबेला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुवेला ] १. बुरा समय। २. अनुपयुक्त काल।

**कुबोलना**—वि० [हिं० कु + बोलना] [ स्त्री० कुबोलनी ] बुरी या अशुभ बातें कहनेवाला।

**कुब्ज**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कुब्जा ] जिसकी पीठ टेढ़ी हो। कुबड़ा।

संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वायु रोग जिसमें छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है।

**कुब्जा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचंद्र से प्रेम रखती थी। कुबरी। २ कैकेयी की मंथरा नाम की एक दासी।

**कुब्बा**—संज्ञा पुं० दे० "कूबड़"।

**कुभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ पृथ्वी की छाया। २. बुरी दीप्ति। ३ काबुल नदी।

**कुमंठी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० कमठ = बाँस ] पतली लचीली टहनी।

**कुमक**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] १. सहायता। मदद। २ पक्षपात। हिमायत। तरफदारी।

**कुमकी**—वि० [ तु० कुमक ] कुमक का। कुमक से संबंध रखनेवाला।

संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में सहायता करने के लिए सिखाई हुई हथिनी।

**कुमकुम**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंकुमः ] १ केसर। २. कुमकुमा।

**कुमकुमा**—संज्ञा पुं० [ तु० कुमकुमः ] १. लाख का बना हुआ एक प्रकार का पोला गोला जिसमें अबीर और गुलाल भरकर होली में लोग एक दूसरे पर मारते हैं। २ एक प्रकार का तंग मुँह का छोटा लोटा। ३. काँच के बने हुए पोले छोटे गोले।

**कुमरिया**—संज्ञा पुं० [?] हाथियों की एक जाति।

**कुमरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पडुक की जाति की एक चिड़िया।

**कुमाच**—संज्ञा पुं० [ अ० कुमाश ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

**कुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुमारी ] १. पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा। ३ युवराज। ४ कार्तिकेय। ५. सिंधु नद। ६. तोता। सुग्गा। ७. खरा सोना। ८. सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं। ९ युवावस्था या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष। १० एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है।

वि० [ सं० ] बिना ब्याहा। कुँवारा।

**कुमारगा**—संज्ञा पुं० दे० 'कुमार्ग"।

**कुमारतंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोगों का निदान और चिकित्सा हो। बालतंत्र।

**कुमारबाज**—संज्ञा पुं० [ अ० किमार + फा० बाज ] जुआरी। जुआ खेलनेवाला।

**कुमारभृत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या। २ गर्भिणी या नवप्रसूता। बालकों के रोगों की चिकित्सा।

**कुमारललिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सात अक्षरों का एक वृत्त।

**कुमारललिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आठ अक्षरों का एक वृत्त।

**कुमारिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुमारी।

**कुमारिल भट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध मीमांसक जिन्होंने जैनों और बौद्धों को परास्त करने में योग

दिया था।

**कुमारी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या। २. घीकुवार। ३ नवमल्लिका। ४. बड़ी इलायची। ५ सीता जी का एक नाम। ६. पार्वती। ७ दुर्गा। ८ एक अंतरीप, जो भारतवर्ष के दक्खिन में है। ९. पृथ्वी का मध्य।

वि० स्त्री० बिना ब्याही।

**कुमारीपूजन**—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की देवी-पूजा जिसमें कुमारी बालिकाओं का पूजन किया जाता है।

**कुमार्ग**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० कुमार्गी] १ बुरा मार्ग। बुरी राह। २ अधर्म।

**कुमार्गी**—वि० [सं० कुमार्गिन्] [स्त्री० कुमार्गिनी] १. बदचलन। कुचाली। २ अधर्मी; धर्महीन।

**कुमुख**—वि० पु० [सं०] [स्त्री० कुमुखी] जिसका चेहरा देखने में अच्छा न हो।

**कुमुद**—संज्ञा पु० [सं०] १. कुई। कोका। २. लाल कमल। ३. चाँदी। ४ विष्णु। ५ एक बंदर जो राम रावण के युद्ध में लड़ा था। ६ कपूर। ७. दक्षिण-पश्चिम कोण का दिग्गज।

**कुमुदबंधु**—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

**कुमुदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुई। कोई।

**कुमुदिनीपति**—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

**कुमुद्वती**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

**कुमेरु**—संज्ञा पु० [सं०] दक्षिणी ध्रुव।

**कुमोद***—संज्ञा पु० दे० 'कुमुद'।

**कुमोदिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।

**कुम्मैत**—संज्ञा पुं० [तु० कुमैत] १. घोड़े का एक रंग जो स्याही लिए लाल होता है। लाखी। २. इस रंग का घोड़ा।

**यौ०**—आठो गाँठ कुम्मैत = अत्यंत चतुर। छँटा हुआ। चालाक। धूर्त्त।

**कुम्मैद***—संज्ञा पुं० दे० "कुम्मैत"।

**कुम्हड़ा**—संज्ञा पु० [सं० कूष्मांड] एक बेल जिसकी तरकारी बनती है। उसका फल।

**मुहा०**—कुम्हड़े की बतिया = १ कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल। २. अशक्त और निर्बल मनुष्य।

**कुम्हड़ौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा + बरी] एक प्रकार की बरी जो पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाती है। बरी।

**कुम्हलाना**—क्रि० अ० [सं० कु + म्लान] १. पौधे की ताजगी का जाता रहना। मुरझाना। २ सूखने पर होना। ३ कांति का मलिन पड़ना। प्रभाहीन होना।

**कुम्हार**—संज्ञा पु० [सं० कुंभकार] [स्त्री० कुम्हारिन] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

**कुम्हारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हार] १ 'कुम्हार' का स्त्रीलिंग रूप। २. दे० "अंजनहारी" २।

**कुम्ही**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुंभी] जलकुंभी।

**कुयश**—संज्ञा पुं० [सं०] बदनामी। अपयश।

**कुरंग**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कुरंगी, कुरंगिन] १. बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २. मृग। हिरन। ३ बरवै छंद।

संज्ञा पु० [सं० कु + हिं० रंग] १. बुरा रंग-ढंग। बुरा लक्षण। २ घोड़े का एक रंग जो लोहे के समान होता है। नीला। कुम्मैत। लखौरी। ३. इस रंग का घोड़ा।

वि० बुरे रंग का।

**कुरंगसार**—संज्ञा पु० [सं०] कस्तूरी।

**कुरंटक**—संज्ञा पुं० [सं०] पीली कटसरैया।

**कुरंड**—संज्ञा पुं० [सं० कुरुविंद] एक खनिज पदार्थ जिसके चूर्ण को लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज करने की सान बनाते हैं।

**कुरकी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुर्की"।

**कुरकुटा**†—संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा टुकड़ा। २. रोटी का टुकड़ा।

**कुरकुर**—संज्ञा पु० [अनु०] सूखी वस्तु के दबकर टूटने का शब्द।

**कुरकुरा**—वि० [हिं० कुरकुर] [स्त्री० कुरकुरी] खरा और करारा जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो।

**कुरकुरी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पतली मुलायम हड्डी। जैसे, कान की।

**कुरता**—संज्ञा पु० [तु०] [स्त्री० कुरती] एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।

**कुरना***†—क्रि० अ० दे० "कुरलना"।

**कुरबान**—वि० [अ०] जो निछावर या बलिदान किया गया हो।

**मुहा०**—कुरबान जाना = निछावर होना।

**कुरबानी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] बलिदान।

**कुरर**—संज्ञा पु० [सं०] १ गिद्ध की जाति का एक पक्षी। २. कराँकुल। क्रौंच।

**कुररा**—संज्ञा पु० [सं० कुरर] [स्त्री० कुररी] १. कराँकुल। क्रौंच। २. टिटिहरी।

**कुररी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आर्य्या छंद का एक भेद। २. 'कुररा' का स्त्रीलिंग।

**कुरलना***—क्रि० अ० [सं० कलरव] मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना।

**कुरता**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] क्रीड़ा । संज्ञा पुं० दे० "कुल्ला" ।

**कुरव**—वि० [ सं० ] बुरी बोली बोलनेवाला ।

**कुरवना**—क्रि० स० [ हिं० कूरा ] ढेर या राशि लगाना । एक बारगी बहुत सा रखना ।

**कुरवारना***—क्रि० स० [सं० कर्त्तन] १. खोदना । २. खरोचना । करोदना ।

**कुरविद**—संज्ञा पुं० दे० "कुरुविंद" ।

**कुरसी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है ।

यौ०—आराम कुरसी=एक प्रकार की बड़ी कुरसी जिसपर आदमी लेट सकता है ।

२. वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनाई जाती है । ३ पीढ़ी । पुश्त ।

**कुरसीनामा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] लिखी हुई वंश परंपरा । वंशवृक्ष ।

**कुरा**—संज्ञा पुं० [ अ० कुरह ] वह गाँठ जो पुराने जख्म में पड़ जाती है । संज्ञा पुं० [ सं० कुरव ] कटसरैया ।

**कुराइ**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुराय" ।

**कुरान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्म-ग्रंथ है ।

**कुराय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + फा० राह ] पानी से पोली जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा ।

**कुराह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कु + फा० राह ] [ वि० कुराही ] १. कुमार्ग । बुरी राह । २ बुरी चाल । खोटा आचरण ।

**कुराहर***†—संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल" ।

**कुराही**—वि० [ हिं० कुराह + ई (प्रत्य०) ] कुमार्गी । बद चलन । संज्ञा स्त्री० बद-चलनी । दुराचार ।

**कुरिया**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुटी ] १. फूस की झोंपड़ी । कुटी । २. बहुत छोटा गाँव ।

**कुरियाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कल्लोल ] चिड़ियों का मौज में बैठकर पर खुजलाना ।

मुहा०—कुरियाल में आना = १ चिड़ियों का आनंद में होना । २. मौज में आना ।

**कुरिहार***—संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल" ।

**कुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूरा ] मिट्टी का छोटा धुस या टीला ।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० कुल ] वंश । घराना ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूरा ] खंड । टुकड़ा ।

**कुरीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुरी रीति । कुप्रथा । २. कुचाल ।

**कुरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वैदिक आर्यों का एक कुल । २ हिमालय के उत्तर और दक्षिण का एक प्रदेश । ३. एक सोमवंशी राजा जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे । ४. कुरु के वंश में उत्पन्न पुरुष ।

**कुरुई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुडव ] बाँस या मूँज की बनी हुई छोटी डलिया । मौनी ।

**कुरुक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अंबाले और दिल्ली के बीच में है । महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था ।

**कुरुखेत**†—संज्ञा पुं० "कुरुक्षेत्र" ।

**कुरुख**—वि० [ सं० कु + फा० रुख ] जिसके चेहरे से अप्रसन्नता झलकती हो । नाराज ।

**कुरुजांगल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पांचाल देश के पश्चिम का एक देश ।

**कुरुम***—संज्ञा पुं० दे० "कूर्म्म" ।

**कुरुविंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मोथा । २ काच लवण । ३. उरद । ४ दर्पण ।

**कुरूप**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कुरूपा ] बुरी शकल का । बदसूरत । बेडौल । बेढंगा ।

**कुरूपता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बद-सूरती ।

**कुरेदना**—क्रि० स० [ सं० कर्त्तन ] १ खुरचना । खरोचना । करोदना । खोदना । २ राशि या ढेर को इधर-उधर चलाना ।

**कुरेर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कुलेल" ।

**कुरेलना**—क्रि० स० दे० "कुरेदना" ।

**कुरैना**†—क्रि० स० दे० "कुरवना" ।

**कुरैया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुटज ] सुंदर फूलोंवाला जंगली पेड़ जिसके बीज "इंद्रजौ" कहलाते हैं ।

**कुरौना***‡—क्रि० स० [ हिं० कूरा = ढेर ] ढेर लगाना । कूरा लगाना ।

**कुर्क**—वि० [ तु० कुर्क ] [ संज्ञा कुर्की ] जब्त ।

**कुर्क अमीन**—संज्ञा पुं० [ तु० कुर्क + फा० अमीन ] वह सरकारी कर्म्मचारी जो अदालत की आज्ञा से जायदाद कुर्क करता है ।

**कुर्की**—संज्ञा स्त्री० [ तु० कुर्क + ई (प्रत्य०) ] कर्जदार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिए सरकार द्वारा जब्त किया जाना ।

**कुर्मी**—संज्ञा पुं० दे० "कुनबी" ।

**कुर्री**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १ इँगा । पटरा । २. कुरकुरी हड्डी । ३. गोल टिकिया ।

**कुलंग**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. एक पक्षी जिसका सिर लाल और बाकी शरीर मटमैले रंग का होता है । २. मुर्गा ।

**कुलंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अदरक की तरह का पौधा जिसकी जड़

गरम और दीपन होती है। २. पान की जड़।

**कुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वंश। घराना। खानदान। २ जाति। ३. समूह। समुदाय। झुंड। ४ घर। मकान। ५. *वाम मार्ग*। कौल धर्म। ६. व्यापारियों का संघ।

वि० [ अ० ] समस्त। सब। सारा।

**यौ०**—कुल जमा = १. सब मिलाकर। २. केवल। मात्र।

**कुलकना**—क्रि० अ० [ हिं० किलकना ] आनंदित होना। खुशी से उछलना।

**कुलकलंक**—संज्ञा पु० [ सं० ] अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।

**कुलकानि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुल + हिं० कान = मर्य्यादा ] कुलकी मर्य्यादा। कुल की लज्जा।

**कुलकुलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] कुल कुल शब्द करना।

**मुहा०**—आँतें कुलकुलाना = भूख लगना।

**कुलकेतु**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह जो अपने वंश में ध्वजा के समान हो। कुल की शोभा बढ़ानेवाला।

**कुलक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० स्त्री० कुलक्षणी] १. बुरा लक्षण। २. कुचाल। बदचलनी।

वि० [ सं० ] [ स्त्री० कुलक्षणा ] १. बुरे लक्षणवाला। २ दुराचारी।

**कुलच्छन**—संज्ञा पु० दे० "कुलक्षण"।

**कुलच्छनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुलक्षणी"।

**कुलज**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० कुलजा ] उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष।

**कुलट**—वि० पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुलटा ] १. बहुत स्त्रियों से प्रेम रखनेवाला। व्यभिचारी। बदचलन। २. औरस के अतिरिक्त। और प्रकार का पुत्र। जैसे, क्षेत्रज, दत्तक।

**कुलटा**—वि० स्त्री० [ सं० ] बहुत पुरुषों से प्रेम रखनेवाली। छिनाल (स्त्री)।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह परकीया नायिका जो बहुत पुरुषों से प्रेम रखती हो।

**कुलतारन**—वि० [ सं० कुल + हिं० तारना ] [ स्त्री० कुलतारनी ] कुल को तारनेवाला।

**कुलथी**—संज्ञा स्त्री० [ कुलत्थ या कुलत्थिका ] एक प्रकार का मोटा अन्न।

**कुलदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुलदेवी ] वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परंपरा से होती आई हो। कुलदेवता।

**कुलदेवता**—संज्ञा पुं० दे० "कुलदेव"।

**कुलधन्य**—वि० [ सं० ] अपने कुल को धन्य करनेवाला। कुल का नाम उज्ज्वल करनेवाला।

**कुलधर्म**—संज्ञा पु० [ सं० ] कुल-परंपरा से चला आता हुआ कर्त्तव्य।

**कुलना**—क्रि० स० [ हिं० कल्लाना ] टीस मारना। दर्द करना।

**कुलपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ घर का मालिक। २. वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३ वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे।

**कुलपूज्य**—वि० [ सं० ] जिसका मान कुलपरंपरा से होता आया हो। कुल का पूज्य।

**कुलफ***†—संज्ञा पुं० [ अ० कुफ़ुल ] ताला।

**कुलफत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मानसिक दुःख। चिंता।

**कुलफा**—संज्ञा पु० [ फ़ा० खुर्फा ] एक साग। बड़ी जाति की अमलोनी।

**कुलफी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुलफ ] १. पेंच। २. टीन आदि का चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ जमाते हैं। ३ उपयुक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शर्बत।

**कुलबुल**—संज्ञा पु० [ अनु० ] [ संज्ञा कुल-बुलाहट ] छोटे छोटे जीवों के हिलने-डोलने की आहट।

**कुलबुलाना**—क्रि० अ० [ अनु० कुल-बुल ] १ बहुत छोटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना डोलना। इधर-उधर रेंगना। २. चंचल होना। आकुल होना।

**कुलबोरन**†—वि० [ हिं० कुल + बोरना] वंश की मर्य्यादा भ्रष्ट करनेवाला। कुल में दाग लगानेवाला।

**कुलवधू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुलवती स्त्री। मर्य्यादा से रहनेवाली स्त्री।

**कुलवंत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कुलवती ] कुलीन।

**कुलवट**—संज्ञा पु० [ सं० कुल वर्त्म ] कुल की राह। वंश की परंपरा।

**कुलवान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० कुलवती ] कुलीन। अच्छे वंश का।

**कुल-संस्कार**—संज्ञा पु० [ सं० ] कुलीनों के लक्षण और गुण। आभिजात्य।

**कुलह**—संज्ञा स्त्री० [ फा० कुलाह ] १ टोपी। २ शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का ढकन। अँधियारी।

**कुलहा***†—संज्ञा पु० दे० "कुलह"।

**कुलही**—संज्ञा स्त्री० [ फा० कुलाह ] बच्चों के सिर पर देने की टोपी। कनटोप।

**कुलांगार**—संज्ञा पु० [ सं० ] कुल का नाश करनेवाला। सत्य नाशी।

**कुलाँच, कुलाँट***—संज्ञा स्त्री० [ तु० कुलाच ] चौकड़ी। छलाँग। उछाल।

**कुलाचल**—संज्ञा पु० दे० 'कुलपर्वत"।

**कुलाचार्य्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] कुल-गुरु।

**कुलाधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुल+आधि ] पाप।

**कुलाबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है। पायजा। २ मोरी।

**कुलाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ स्त्री० कुलाली ] १. मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कुम्हार। २ जंगली मुर्गा। ३ उल्लू।

**कुलाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर गाँठ से सुमों तक काले हों।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] एक प्रकार की टोपी जो अफगानिस्तान में पहनी जाती है।

**कुलाहल***—संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल"।

**कुलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक प्रकार का पक्षी। २ चिड़ा। गौरा। ३ पक्षी।

**कुलिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २ उत्तम वंश में उत्पन्न पुरुष। ३. कुल का प्रधान पुरुष।

**कुलिश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हीरा। २. वज्र। बिजली। गाज। ३. राम, कृष्णादि के चरणों का एक चिह्न। ४. कुठार।

**कुली**—संज्ञा पुं० [ तु० ] बोझ ढोनेवाला। मजदूर।

**यौ०**—कुली कबारी=छोटी जाति के लोग।

**कुलीन** वि० [ सं० ] [संज्ञा कुलीनता] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे घराने का। खानदानी। २ पवित्र। शुद्ध। साफ।

**कुलुफ**‡—संज्ञा पुं० [ अ० कुफ्ल ] ताला।

**कुलू**—संज्ञा पुं० [ सं० कुलूत ] काँगड़े के पास का देश।

**कुलूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुलू देश।

**कुलेल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कल्लोल ] क्रीड़ा। कलोल।

**कुलेलना***—क्रि० अ० [हिं० कुलेल] क्रीड़ा करना। आमोद-प्रमोद करना।

**कुल्माष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुलथी। २ उर्द। माष। ३. बोरो धान। ४. वह अन्न जिसमें दो भाग हों। द्विदल अन्न।

**कुल्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कृत्रिम नदी। नहर। २ छोटी नदी। ३. नाली।

**कुल्ला**—संज्ञा पुं० [सं० कवल] [स्त्री० कुल्ली ] मुँह को साफ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा।

संज्ञा पुं० [ ? ] १. घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है। २ इस रंग का घोड़ा।

संज्ञा [ फा० काकुल ] जुल्फ। काकुल।

**कुल्ली**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।

**कुल्हड़**—संज्ञा पुं० [ सं० कुल्हर ] [ स्त्री० कुल्हिया ] पुरवा। चुकड़।

**कुल्हाड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुठार [ स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी ] एक औजार जिससे पेड़ काटते और लकड़ी चीरते हैं। कुठार।

**कुल्हाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुल्हाड़ा का स्त्री० अल्पा० ] छोटा कुल्हाड़ा। कुठारी। टाँगी।

**कुल्हिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुल्हड़ ] छोटा पुरवा या कुल्हड़। चुकड़।

**मुहा०**—कुल्हिया में गुड़ फोड़ना=इस प्रकार कोई कार्य्य करना जिसमें किसी को खबर न हो।

**कुवलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कुवलयिनी ] १. नीली कोईं। कोका। २. नील कमल। ३. भूमंडल। ४. एक प्रकार के असुर।

**कुवलयापीड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कंस का एक हाथी जिसे कृष्णचन्द्र ने मारा था।

**कुवलयाश्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धुंधुमार राजा। २. ऋतुध्वज राजा। ३ एक घोड़ा जिसे, ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु को मारने के लिए, सूर्य्य ने पृथ्वी पर भेजा था।

**कुवाँ**—संज्ञा पुं० दे० "कुआँ"।

**कुवाच्य**—वि० [ सं० ] जो कहने योग्य न हो। गंदा। बुरा।

संज्ञा पुं० दुर्वचन। गाली।

**कुवार**—संज्ञा पुं० [ सं० ( अश्विनी ) कुमार ] [ वि० कुवारी ] आश्विन का महीना। असोज।

**कुविचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा विचार।

**कुविचारी**—वि० [सं० कुविचारिन्] [ स्त्री० कुविचारिणी ] बुरे विचारवाला।

**कुवेर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक देवता जो यक्षों के राजा तथा इंद्र की नौ निधियों के भंडारी समझे जाते हैं। रावण का भाई।

**कुश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० कुशा, कुशी ] १ कास की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था। २. जल। पानी। ३. रामचंद्र के एक पुत्र। ४. दे० "कुशद्वीप"। ५. हल की फाल। कुसी।

**कुशद्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात द्वीपों में से एक जो चारों ओर घृतसमुद्र से घिरा है।

**कुशध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सीरध्वज। जनक के छोटे भाई जिनकी कन्याएँ भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थीं।

**कुशल**—वि० [ सं० ] [स्त्री० कुशला]

१. चतुर। दक्ष। प्रवीण। २. श्रेष्ठ। अच्छा। भला। ३. पुण्यशील। ४. क्षेम। मंगल। खैरियत। राजी। खुशी।

**कुशल-क्षेम**—संज्ञा पु० [सं०] राजी-खुशी। खैर-आफियत।

**कुशलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चतुराई। चालाकी। २. योग्यता। प्रवीणता।

**कुशलाई, कुशलात***—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुशल] कल्याण। क्षेम। खैरियत।

**कुशा**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुश"। (१)।

**कुशाग्र**—वि० [सं०] कुश की नोक की तरह तीखा। तीव्र। तेज। जैसे—कुशाग्र-बुद्धि।

**कुशादा**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा कुशादगी] १. खुला हुआ। २. विस्तृत। लंबा चौड़ा।

**कुशासन**—संज्ञा पुं० [सं० कुश+आसन] कुश का बना हुआ आसन।

**कुशिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन आर्य वंश। विश्वामित्र जो इसी वंश के थे। २. एक राजा जो विश्वामित्र के पितामह और गाधि के पिता थे। ३ फाल।

**कुशीद**—संज्ञा पुं० दे० "कुसीद"।

**कुशीनगर**—संज्ञा पुं० [सं० कुशनगर] वह स्थान जहाँ साल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था।

**कुशीलव**—संज्ञा पु० [सं०] १ कवि। चारण। २. नाटक खेलनेवाला। नट। ३. गवैया। ४ वाल्मीकि ऋषि।

**कुशूलधान्यक**—संज्ञा पु० [सं०] वह गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक के लिये खाने भर को अन्न संचित हो।

**कुशेशय**—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

**कुश्ता**—संज्ञा पु० [फ़ा०] वह भस्म जो धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया जाय। भस्म।

**कुश्ती**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] दो आदमियों का परस्पर एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिये लड़ना। मल्ल-युद्ध। पकड़।

**मुहा०**—कुश्ती मारना = कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना। कुश्ती खाना = कुश्ती में हार जाना।

**कुश्तीबाज**—वि० [फ़ा०] कुश्ती लड़नेवाला। लड़ता। पहलवान।

**कुष्ठ**—संज्ञा पु० [सं०] १ कोढ़। २ कुट नामक ओषधि। ३ कुड़ा नामक वृक्ष।

**कुष्ठी**—संज्ञा पु० [सं० कुष्ठिन्] [स्त्री० कुष्ठिनी] वह जिसे कोढ़ हुआ हो। कोढ़ी।

**कुष्मांड**—संज्ञा पु० [सं०] १. कुम्हड़ा। २ एक प्रकार के देवता जो शिव के अनुचर हैं।

**कुसंग**—संज्ञा पु० दे० "कुसंगति"।

**कुसंगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरों का संग। बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना।

**कुसंस्कार**—संज्ञा पु० [सं०] चित्त में बुरी बातों का जमना। बुरी वासना।

**कुसगुन**—संज्ञा पु० [सं० कु+हिं० सगुन] बुरा सगुन। असगुन। कुलक्षण।

**कुसमय**—संज्ञा पु० [सं०] १ बुरा समय। २ वह समय जो किसी कार्य के लिये ठीक न हो। अनुपयुक्त अवसर। ३ नियत से आगे या पीछे का समय। ४ संकट का समय। दुःख के दिन।

**कुसल***†—वि० दे० "कुशल"।

**कुसलाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+ई (प्रत्य०)] निपुणता। चतुराई।

**कुसलाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशल+आई (प्रत्य०)] १. कुशलता। निपुणता। २. कुशल-क्षेम। खैरियत।

**कुसलात***—संज्ञा स्त्री० दे० "कुशलात"।

**कुसली***—वि० दे० "कुशली"। †संज्ञा पुं० [हिं० कसैली] १. आम की गुठली। २ गोझा। पिराक।

**कुसवारी**—संज्ञा पु० [सं० कोशकार] १ रेशम का जंगली कीड़ा। २ रेशम का कोया।

**कुसाइत**—संज्ञा स्त्री० [सं० कु+अ० सअत] १. बुरी साइत। बुरा मुहूर्त। कुसमय। २ अनुपयुक्त समय। बेमौका।

**कुसाखी***—संज्ञा पुं० [सं० कु+शाखा] खराब पेड़।

**कुसियार**—संज्ञा पु० [सं० कोशकार] एक प्रकार की मोटी ईख जिसमें बहुत रस होता है।

**कुसी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुशी] हल का फाल।

**कुसीद**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० कुसीदिक] १ सूद। ब्याज। वृद्धि। २ ब्याज पर दिया हुआ धन।

**कुसुंब**—संज्ञा पु० [सं०] एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी जाठ और गाड़ियाँ बनाने के काम में आती हैं।

**कुसुंभ**—संज्ञा पु० [सं०] १ कुसुम। बर्रे। २ केसर। कुमकुम।

**कुसुंभा**—संज्ञा पु० [सं० कुसुंभ] १ कुसुम का रंग। २ अफीम और भाँग के योग से बना हुआ एक मादक द्रव्य।

**कुसुंभी**—वि० [सं० कुसुंभ] कुसुम के रंग का। लाल।

**कुसुम**—संज्ञा पु० [सं०] [वि० कुसुमित] १ फूल। पुष्प। २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों। ३. आँख का एक रोग। ४. मासिक धर्म। रजोदर्शन। रज। ५. छंद में ठगण का छठा भेद।

संज्ञा पुं० दे० "कुसुंब"।
संज्ञा पुं० [सं० कुसुंभ] एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं। बर्रे।

**कुसुमपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] पटना नगर का एक प्राचीन नाम।

**कुसुमबाण**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

**कुसुमविचित्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

**कुसुमस्तवक**—संज्ञा पुं० [सं०] दंडक छंद का एक भेद।

**कुसुमशर**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

**कुसुमांजलि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता पर हाथ की अँजुली में फूल भरकर चढ़ाना। पुष्पांजलि।

**कुसुमाकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बसंत। २ छप्पय का एक भेद।

**कुसुमायुध**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

**कुसुमावलि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूलों का गुच्छा। फूलों का समूह।

**कुसुमासव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फूलों का रस। मकरंद। शहद। मधु।

**कुसुमित**—वि० [सं०] फूला हुआ। पुष्पित।

**कुसूत**—संज्ञा पुं० [सं० कु+सूत्र, प्रा० सुत्त] १ बुरा सूत। २. कुप्रबंध। कुयोग।

**कुसेसय***—संज्ञा पुं० दे० "कुशेशय"।

**कुहक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ माया। धोखा। जाल। फरेब। २ धूर्त। मक्कार। ३ मुर्गे की कूक। ४ इंद्रजाल जाननेवाला।

**कुहकना**—क्रि० अ० [सं० कुहुक या कुहू] पक्षी का मधुर स्वर मे बोलना। पीकना।

**कुहकिनी**—वि० [हिं० कुहकना] कुहकनेवाली।
संज्ञा स्त्री० कोयल।

**कुहकुहाना**—क्रि० अ० दे० "कुहकना"।

**कुहना***—क्रि० स० [सं० कु+हनन] बुरी तरह से मारना। खूब पीटना।
क्रि० अ० [अनु०] गाना। अलापना।

**कुहनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० कफोणि] हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी।

**कुहप**—संज्ञा पुं० [सं० कुहू = अमावस्या + प] रजनीचर। राक्षस।

**कुहर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गड्ढा। बिल। छेद। सूराख। २ गले का छेद।

**कुहरा**—संज्ञा पुं० [सं० कुहेड़ी] जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंढक पाकर वायु की भाप में जमने से उत्पन्न होता है।

**कुहराम**—संज्ञा पुं० [अ० कहर + आम] १. विलाप। रोना पीटना। हलचल।

**कुहाना***†—क्रि० अ० [हिं० कोह + ना (प्रत्य०)] रिसाना। नाराज होना। रूठना।

**कुहारा***—संज्ञा पुं० दे० "कुल्हाड़ा"।

**कुहासा**†—संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।

**कुही**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुधि = एक पक्षी] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया। कुहर।
संज्ञा पुं० [फा० कोही = पहाड़ी] घोड़े की एक जाति। टाँगन।
*वि० [हिं० कोह = क्रोध + ई (प्रत्य०)] क्रोधी।

**कुहुक**—संज्ञा पुं० [अनु०] पक्षियों का मधुर स्वर। पीक।

**कुहुकना**—क्रि० अ० [हिं० कुहक + ना (प्रत्य०)] पक्षियों का मधुर स्वर मे बोलना।

**कुहुकबान**—संज्ञा पुं० [हिं० कुहुकना + बाण] एक प्रकार का बाण जिसे चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।

**कुहुकिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुहकनी"।

**कुहू**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अमावस्या, जिसमें चंद्रमा बिलकुल दिखलाई न दे। २ मोर या कोयल की बोली। (इस अर्थ में "कुहू" के साथ कंठ, मुख आदि शब्द लगाने से कोकिलवाची शब्द बनते हैं।)

**कूँख**—संज्ञा स्त्री० दे० "कोख"।

**कूँखना**—क्रि० अ० दे० "काँखना"।

**कूँच**—संज्ञा स्त्री० जो एँड़ी के ऊपर या टखने के नीचे होती है। पै। दे० "बाइनस"।

**कूँचना**†—क्रि० स० दे० "कुचलना"।

**कूँचा**—संज्ञा पुं० [सं० कूर्च] [स्त्री० कूँची] झाड़ू। बोहारी।

**कूँची**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कूँचा] १ छोटा कूँचा। छोटा झाड़ू। २. कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या उन पर रंग फेरते हैं। ३. चित्रकार की रंग भरने की कलम।

**कूँज**—संज्ञा पुं० [सं० क्रौंच] क्रौंच पक्षी।

**कूँड़**—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] १. लोहे की ऊँची टोपी जिसे लड़ाई के समय पहनते थे। खोद। २. मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं। ३. वह नाली जो खेत में हल जोतने से बन जाती है। कुंड।

**कूँड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० कूँड़ी] १ पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन। २ छोटे पौधे लगाने का बरतन। गमला। ३ रोशनी करने की बड़ी हाँड़ी। डोल। ४. मिट्टी या काठ का बड़ा बरतन। कठौता। मठौता।

**कूँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूँड़ा ] १ पत्थर की प्याली। पथरी। २. छोटी नाँद।

**कूँथना***†—क्रि० अ० [ सं० कुथन ] १. दुःख या श्रम से स्पष्ट शब्द मुँह से निकालना। काँखना। २. कबूतरों का गुटरगूँ करना।

क्रि० स० मारना। पीटना।

**कूआँ**—संज्ञा पुं० [ सं० कूप ] १. पानी निकालने के लिये पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप। इँदारा।

**मुहा०**—(किसी के लिए) कूआँ खोदना = हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कूआँ खोदना = जीविका के लिये प्रयत्न करना। कूएँ में गिरना= विपत्ति में पड़ना। कूएँ में बाँस डालना =बहुत ढूँढ़ना। कूएँ में भाँग पड़ना= सबकी बुद्धि खराब होना। नित्य कूआँ खोदना—प्रति दिन कार्य करके कमाना।

**कूई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुव + ई (प्रत्य०) ] जल में होनेवाला एक पौधा, जिसके फूलों का चाँदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है। कुमुदिनी। कोकावेली।

**कूक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कूजन ] १. लंबी सुरीली ध्वनि। २ मोर या कोयल की बोली।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० कुंजी ] घड़ी या बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया।

**कूकना**—क्रि० अ० [ सं० कूजन ] कोयल या मोर का बोलना।

क्रि० स० [ हिं० कुंजी ] कमानी कसने के लिये घड़ी या बाजे में कुंजी भरना।

**कूकर**—संज्ञा पुं० [ सं० कुक्कुर ] [ स्त्री० कूकरी ] कुत्ता। श्वान।

**कूकर कौर**—संज्ञा पुं० [ हिं० कूकर+कौर ] १. वह जूठा भोजन जो कुत्ते के आगे डाला जाता है। टुकड़ा। २ तुच्छ वस्तु।

**कूकस**—संज्ञा पुं० [ ? ] अनाज की भूसी।

**कूका**—संज्ञा पुं० [ हिं० कूकना= चिल्लाना ] सिक्खों का एक पंथ।

**कूच**—संज्ञा पुं० [ तु० ] प्रस्थान। रवानगी।

**मुहा०**—कूच कर जाना = मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना= होश हवास जाता रहना। भय या किसी और कारण से ठक हो जाना। कूच बोलना = प्रस्थान करना।

**कूचा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १ छोटा रास्ता। गली। २. दे० "कूँचा"।

**कूज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूजना ] ध्वनि।

**कूजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० कूजित ] मधुर शब्द बोलना। (पक्षियों का)

**कूजना**—क्रि० अ० [ सं० कूजन ] कोमल और मधुर शब्द करना।

**कूजा**—संज्ञा पुं० [ फा० कूजा ] १ मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़। २ मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिश्री। मिश्री की डली।

**कूजित**—वि० [सं०] १. जो गाया या कहा गया हो। ध्वनित। २. गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण (स्थान आदि)। ३ पक्षियों के मधुर शब्दों से युक्त।

**कूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पहाड़ की ऊँची चोटी। जैसे—हेमकूट। २ सींग। ३ (अनाज आदि की) ऊँची और बड़ी राशि। ढेर। ४ छल। धोखा। फरेब। ५. मिथ्या। असत्य। झूठ। ६ गूढ़ भेद। गुप्त रहस्य। ७ वह जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो। जैसे, सूर का कूट। ८. वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो।

वि० [ सं० ] १. झूठा। मिथ्यावादी। २ धोखा देनेवाला। छलिया। ३. कृत्रिम। बनावटी। नकली। ४. प्रधान। श्रेष्ठ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कुष्ठ ] कुट नाम की ओषधि।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० काटना या कूटना ] काटने, कूटने या पीटने आदि की क्रिया।

**कूटता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कठिनाई। २ झुठाई। ३ छल। कपट।

**कूटत्व**—संज्ञा पुं० दे० "कूटता"।

**कूटना**—क्रि० स० [ सं० कुट्टन ] १. किसी चीज को तोड़ने आदि के लिये उस पर बार बार कोई चीज पटकना। जैसे, धान कूटना।

**मुहा०**—कूट कूटकर भरना = खूब कस कस कर भरना। ठसाठस भरना।

२ मारना। पीटना। ठोंकना। ३. सिल, चक्की आदि में टाँकी से छोटे छोटे गड्ढे करना। दाँत निकालना।

**कूटनीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दाँव-पेच की नीति या चाल। छिपी हुई चाल। घात।

**कूटयुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय।

**कूट-योजना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] षड्यंत्र। भीतरी चालबाजी।

**कूटसाक्षी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] झूठा गवाह।

**कूटस्थ**—वि० [ सं० ] १ सर्वोपरि स्थित। आला दर्जे का। २. अचल। अटल। ३ अविनाशी। विनाश-रहित। ४ गुप्त। छिपा हुआ।

**कूट्टू**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलहार के रूप में खाया जाता है। काफर। कुल्टू। काटू। कोटू।

**कूड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कूट, प्रा० कूड

=ढेर ] १. जमीन पर पड़ी हुई गर्द, खर पत्ते आदि जिन्हें साफ करने के लिये झाड़ू दिया जाता है। कतवार। २. निकम्मी चीज।

**कूड़ाखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० कूड़ा+ फ़ा० खाना ] वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता हो। कतवारखाना।

**कूढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० कुष्टि ] बोने की वह रीति जिसमें हल की गड़ारी में बीज डाला जाता है। छींटा का उलटा।
वि० [ सं० कु+ऊह=कूह, प्रा० कूध ] नासमझ। अज्ञानी। बेवकूफ।

**कूढ़मग्ज**—वि० [ हिं० कूढ़ + फा० मग्ज ] मंदबुद्धि। कुदजेहन।

**कूत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० आकूत=आशय] १ वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान। २ दे० "कनकूत"।

**कूतना**—क्रि० स० [ हिं० कूत ] १. अनुमान करना। अंदाज लगाना। २ बिना गिने, नापे या तौले संख्या, मूल्य या परिमाण आदि का अनुमान करना। ३. दे० "कनकूत"।

**कूद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कूदने की क्रिया या भाव।
यौ०—कूद-फाँद=कूदने या उछलने की क्रिया।

**कूदना**—क्रि० अ० [ सं० स्कुदन ] १. दोनों पैरों को पृथिवी पर से बलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना। उछलना। फाँदना। २. जान-बूझकर ऊपर से नीचे की ओर गिरना। ३. बीच में सहसा आ मिलना या दखल देना। ४ क्रम-भंग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। ५. अत्यंत प्रसन्न होना। दे० "उछलना"। ६ बढ़बढ़कर बातें करना।
मुहा०—किसी के बल पर कूदना= किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़बढ़कर बोलना।

क्रि० स० उल्लंघन कर जाना। लाँघ जाना।

**कूनना**—क्रि० स० दे० "कुनना"।

**कूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ कुआँ। इनारा। २ कुप्पी। ३. छेद। सुराख। ४. गहरा गड्ढा।

**कूपन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] चिह्न-स्वरूप कागज का वह छोटा टुकड़ा जिसे दिखाने या देने पर कोई चीज मिले या कोई अधिकार प्राप्त हो।

**कूपमंडूक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुएँ में रहनेवाला मेंढक। २. वह मनुष्य जो अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो। बहुत थोड़ी जानकारी का मनुष्य।

**कूबड़**—संज्ञा पुं० [ सं० कूबर ] १ पीठ का टेढ़ापन। २ किसी चीज का टेढ़ापन।

**कूबरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुबरी"।

**कूर**—वि० [सं० क्रूर] १ दया रहित। निर्दय। २. भयंकर। डरावना। ३. मनहूस। असगुनियाँ। ४ दुष्ट। बुरा। ५ अकर्मण्य। निकम्मा। ६ मूर्ख।

**कूरता**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूर ] १. निर्दयता। कठोरता। बेरहमी। २. जड़ता। मूर्खता। ३ अरसिकता। ४. कायरता। डरपोकपन। ५ खोटापन। बुराई।

**कूरपन**—संज्ञा पुं० दे० "कूरता"।

**कूरम***—संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।

**कूरा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० कूरी] १ ढेर। राशि। २ भाग। अंश। हिस्सा।

**कूर्चिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कूँची। २ कली। ३ कुंजी। ४. सूई।

**कूर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कच्छप। कछुआ। २. पृथिवी। ३. प्रजापति का एक अवतार। ४. एक ऋषि। ५. वह वायु जिसके प्रभाव से पलकें खुलती और बंद होती हैं। ६ विष्णु का दूसरा अवतार।

**कूर्मपुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह मुख्य पुराणों में से एक।

**कूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किनारा। तट। तीर। २ सेना के पीछे का भाग। ३. समीप। पास। ४ नहर। ५. तालाब।

**कूलिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी।

**कूल्हा**—संज्ञा पुं० [ सं० क्रोड ] कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

**कूवत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शक्ति। बल।

**कूबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ रथ का वह भाग जिसपर जूआ बाँधा जाता है। युगंधर। हरसा। २ रथ में रथी के बैठने का स्थान। ३. कुबड़ा।

**कूष्मांड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुम्हड़ा। २. पेठा। ३. वैदिक काल के एक ऋषि।

**कूह***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कूक ] १. चिग्घाड़। हाथी की चिक्कार। २. चीख। चिल्लाहट।

**कृकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मस्तक की वायु जिसके वेग से छींक आती है।

**कृकलास**—संज्ञा पुं० [सं०] गिरगिट।

**कृकाट, कृकाटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रीढ़ का वह भाग जो गले को जोड़ता है।

**कृच्छ्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कष्ट। दुःख। २ पाप। ३. मूत्र-कृच्छ्र रोग। ४ कोई व्रत जिसमें पंचगव्य प्राशन कर दूसरे दिन उपवास किया जाय।
वि० कष्टसाध्य। मुश्किल।

**कृत**—वि० [ सं० ] १ किया हुआ। संपादित। २ बनाया हुआ। रचित।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार युगों में से

"महला युग। सतयुग। २. वह दास जिसने कुछ नियत काल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा की हो। ३. चार की संख्या।

**कृतकार्य**—वि० [सं०] जिसका प्रयोजन सिद्ध हो चुका हो। सफल मनोरथ।

**कृतकृत्य**—वि० [सं०] जिसका काम पूरा हो चुका हो। कृतार्थ। सफलमनोरथ।

**कृतघ्न**—वि० [सं०] [संज्ञा कृतघ्नता] किए हुए उपकार को न माननेवाला। अकृतज्ञ।

**कृतघ्नता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को न मानने का भाव। अकृतज्ञता।

**कृतघ्नी***†—वि० दे० "कृतघ्न"।

**कृतज्ञ**—वि० [सं०] [संज्ञा कृतज्ञता] उपकार को माननेवाला। एहसान माननेवाला।

**कृतज्ञता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किए हुए उपकार को मानना। एहसानमंदी।

**कृतयुग**—संज्ञा पुं० [सं०] सतयुग।

**कृतविद्य**—वि० [सं०] जिसे किसी विद्या का अभ्यास हो। जानकार। पंडित।

**कृतहीन**—वि० दे० "कृतघ्न"।

**कृतांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समाप्त करनेवाला। अंत करनेवाला। २ यम। धर्मराज। ३ पूर्व जन्म में किए हुए शुभ और अशुभ कर्म्मों का फल। ४ मृत्यु। ५. पाप। ६ देवता। ७. दो की संख्या।

**कृतात्मा**—संज्ञा पुं० [सं०] महात्मा।

**कृतात्यय**—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य के अनुसार भोग द्वारा कर्मों का नाश।

**कृतार्थ**—वि० [सं०] १ जिसका काम सिद्ध हो चुका हो। कृतकृत्य। सफलमनोरथ। २. संतुष्ट। ३. कुशल। निपुण। होशियार।

**कृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ करतूत। करनी। २. कार्य। काम। ३. आघात। क्षति। ४ इंद्रजाल। जादू। ५. दो समान अंकों का घात। वर्ग-संख्या (गणित)। ६ बीस की संख्या।

**कृती**—वि० [सं०] १. कुशल। निपुण। दक्ष। २. साधु। ३. पुण्यात्मा।

**कृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृगचर्म। २. चमड़ा। खाल। ३ भोजपत्र।

**कृत्तिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र। २ छकड़ा।

**कृत्तिवास**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**कृत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कर्त्तव्य-कर्म। वेद विहित आवश्यक कार्य। जैसे—यज्ञ, संस्कार। २. करनी। करतूत। कर्म। ३ भूत, प्रेत, यक्षादि जिनका पूजन अभिचार के लिये होता है।

**कृत्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक भयकर राक्षसी जिसे तांत्रिक अपने अनुष्ठान से शत्रु को नष्ट करने के लिए भेजते हैं। २ अभिचार। ३. दुष्टा या कर्कशा स्त्री।

**कृत्रिम**—वि० [सं०] १ जो असली न हो। नकली। २. वह अनाथ बालक जिसे पालकर किसी ने अपना पुत्र बनाया हो।

**कृदंत**—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने। जैसे—पाचक, नदन।

**कृपण**—वि० [सं०] [संज्ञा स्त्री० कृपणता] १ कंजूस। सूम। २ क्षुद्र। नीच।

**कृपणता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कंजूसी।

**कृपनाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "कृपणता"।

**कृपया**—क्रि० वि० [सं०] कृपापूर्वक। अनुग्रहपूर्वक। मिहरबानी करके।

**कृपा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० कृपालु] १ बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे की भलाई करने की इच्छा या वृत्ति। अनुग्रह। दया। २. क्षमा। माफी।

**कृपाण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तलवार। २ कटार। ३. दंडक वृत्त का एक भेद।

**कृपापात्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिसपर कृपा हो। कृपा का अधिकारी।

**कृपायतन**—संज्ञा पुं० [सं०] अत्यंत कृपालु।

**कृपाल***†—वि० दे० "कृपालु"।

**कृपालु**—वि० [सं०] कृपा करनेवाला।

**कृपालुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दया का भाव। मेहरबानी।

**कृपिण***†—वि० दे० "कृपण"।

**कृमि**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० कृमिल] १ क्षुद्र कीट। छोटा कीड़ा। २ हिरमजी कीड़ा या मिट्टी। किरमिज। ३. लाह।

**कृमिज**—वि० [सं०] कीड़ों से उत्पन्न। संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० कृमिजा] १ रेशम। २ अगर। ३ किरमिजी। हिरमिजी।

**कृमिरोग**—संज्ञा पुं० [सं०] आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

**कृश**—वि० [सं०] १ दुबला पतला। क्षीण। २. अल्प। छोटा। सूक्ष्म।

**कृशता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ दुबलापन । दुर्बलता । २ अल्पता । कमी।
**कृशताई**—संज्ञा स्त्री० दे० "कृशता"।
**कृशर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कृशरा ] १. तिल और चावल की खिचड़ी । २. खिचड़ी । ३. लोबिया मटर । केशारी । दुबिया ।
**कृशानु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अग्नि ।
**कृशित**—वि० [ सं० ] दुबला-पतला ।
**कृशोदरी**—वि० स्त्री० [ सं० ] पतली कमरवाली ( स्त्री ) ।
**कृषक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसान। खेतिहर । काश्तकार। २. हल का फाल।
**कृषि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [वि० कृष्य] खेती । काश्त । किसानी ।
**कृषीवल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसान ।
**कृष्ण**—वि० [ सं० ] १. श्याम । काला। स्याह । २ नीला या आसमानी ।
संज्ञा पुं० [ स्त्री० कृष्णा ] १ यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के प्रधान अवतारों में हैं। २.एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था । ३ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि । ४. अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद् । ५. छप्पय छंद का एक भेद । ६ चार अक्षरों का एक वृत्त । ७ वेदव्यास । ८. अर्जुन । ९ कोयल । १० कौआ । ११. कदम का पेड़ । १२. अँधेरा पक्ष । १३ कलियुग । १४ चंद्रमा का धब्बा।
**कृष्णचंद्र**—संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण"(१)।
**कृष्णद्वैपायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पराशर के पुत्र वेदव्यास । पाराशर्य ।
**कृष्णपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मास का वह पक्ष जिसमें चंद्रमा का ह्रास हो । अँधेरा पाख ।
**कृष्णलोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० "चुंबक" ।
**कृष्णसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ काला हिरन । करसायल । २. सेंहुड़ । थूहर।

**कृष्णा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ द्रौपदी। २. पीपल । पिप्पली । ३ दक्षिण देश की एक नदी । ४ काली दाख । ५. काला जीरा । ६. काली ( देवी ) । ७. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । ८ काले पत्ते की तुलसी ।
**कृष्णाभिसारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत स्थान में जाय ।
**कृष्णाष्टमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भादों के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्री कृष्ण का जन्म हुआ था ।
**कृष्य**—वि० [ सं० ] खेती करने योग्य ( भूमि ) ।
**कें कें**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. चिड़ियों का कष्टसूचक शब्द । २. झगड़ा या असंतोष-सूचक शब्द ।
**केंचली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कंचुक ] साँप आदि के शरीर पर झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है ।
**केंचुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० किंचिलिक ] १ सूत के आकार का एक बरसाती कीड़ा जो एक बालिश्त लंबा होता है । २ केंचुए के आकार का सफेद कीड़ा जो मल के साथ बाहर निकलता है।
**केंचुली**—संज्ञा स्त्री० दे० "केंचली"।
**केंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० यू० केंट्रन ] १ किसी वृत्त के अंदर का वह बिंदु जिससे परिधि तक खींची हुई सब रेखाएँ परस्पर बराबर हों । नाभि । ठीक मध्य का बिंदु । २. किसी निश्चित अंश से ९०, १८०, २७० और ३६० अंश के अंतर का स्थान । ३. मुख्य या प्रधान स्थान । ४. रहने का स्थान । ५. बीच का स्थान ।
**केंद्रित**—वि० [ सं० ] एक ही केंद्र में इकट्ठा किया हुआ । एक जगह लाया हुआ ।
**केंद्री**—वि० [ सं० केंद्रिन् ] केंद्र में स्थित ।
**केंद्रीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुछ चीजों, शक्तियों या अधिकारों को एक केंद्र में लाने का काम ।
**केंद्रीय**—वि० [ सं० ] केंद्र से संबंध रखनेवाला । मध्य-स्थानीय ।
**के**—प्रत्य० [ हिं० का ] १. संबंधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप । जैसे—राम के घोड़े । २. "का" विभक्ति का वह रूप जो उसे संबंधवान् के विभक्तियुक्त होने से प्राप्त होता है । जैसे—राम के घोड़े पर ।
†सर्व० [ सं० "कः" ] कौन? (अवधी)
**केउ**†—सर्व० [ हिं० के + उ ] कोई ।
**केउर***—संज्ञा पुं० दे० "केयूर" ।
**केकड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कर्कट ] पानी का एक कीड़ा जिसे आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं ।
**केकय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यास और शाल्मली नदी की दूसरी ओर के देश का प्राचीन नाम (वह अब कश्मीर के अंतर्गत है और कक्का कहलाता है ) । २ [ स्त्री० केकयी ] केकय देश का राजा या निवासी । ३. दशरथ के श्वसुर और कैकेयी के पिता ।
**केकयी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कैकेयी"।
**केका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मोर की बोली ।
**केकी**—संज्ञा पुं० [ सं० केकिन् ] मोर। मयूर ।
**केचित्**—सर्व० [ सं० ] कोई कोई ।
**केड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कांड ] १. नया पौधा या अंकुर । कोंपल । २. नव युवक ।
**केत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर । भवन। २. स्थान । जगह । बस्ती । ३. केतु ।

समझा।

**केतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केवड़ा ।
वि० [ सं० कति + एक ] १. कितने। किस कदर। २. बहुत। बहुत कुछ।

**केतकर***—संज्ञा स्त्री० दे० "केतकी"।

**केतकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] एक छोटा पौधा जिसमें कांड के चारों ओर तलवार के से लंबे कँटेदार पत्ते निकले होते हैं और कोश में बंद मंजरी के रूप में बहुत सुगंधित फूल लगते हैं।

**केतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ निमंत्रण। २. ध्वजा। ३. चिह्न। ४. घर। ५. स्थान। जगह।

**केता***।—वि० [ सं० कियत् ] [ स्त्री० केति ] कितना।

**केतिक***।—वि० [ सं० कति + एक ] १. कितना। किस कदर। २ कितना। किस संख्या में।

**केतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्ञान। २. दीप्ति। प्रकाश। ३ ध्वजा। पताका। ४. निशान। चिह्न। ५ पुराणानुसार एक राक्षस का कबंध। ६ एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ सी दिखाई देती है। पुच्छल तारा। ७. नवग्रहों में से एक ग्रह। ( फलित )। ८. चंद्रकक्ष और क्रांति-रेखा के अधःपात का बिंदु। ( गणित-ज्योतिष )

**केतुमती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ एक वर्णार्द्ध समवृत्त। २. रावण की नानी अर्थात् सुमाली राक्षस की पत्नी।

**केतुमान्**—वि० [ सं० ] १. तेजवान्। तेजस्वी। २. ध्वजावाला। ३. बुद्धिमान्।

**केतुवृक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार मेरु के चारों ओर के पर्वतों पर के वृक्षों का नाम। ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और बरगद।

**केतो***—वि० [ सं० कति ] [ स्त्री० केति ] कितना।

**केदली**।—संज्ञा पुं० दे० "कदली"।

**केदार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह खेत जिसमें धान बोया या रोपा जाता हो। २ सिंचाई के लिए खेत में किया हुआ विभाग। कियारी। ३. वृक्ष के नीचे का थाला। थाँवला। ४. दे० "केदारनाथ"।

**केदारनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।

**केन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध उपनिषद्। तलवार का उपनिषद्।

**केबिन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. छोटा कमरा या घर। २ जहाज में अफसरों या यात्रियों के रहने की कोठरी।

**केम***—संज्ञा पुं० दे० "कदंब"।

**केयूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाँह में पहनने का बिजायठ। बजुल्ला। अंगद। बहूँटा। भुजबंद।

**केयूरी**—वि० [ सं० ] जो केयूर पहने हो। केयूरधारी।

**केरा**।—प्रत्य० [सं० कृत] [स्त्री० केरी] संबंध सूचक विभक्ति। का (अवधी)।

**केरल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ दक्षिण भारत का एक देश। कनारा। २ [स्त्री० केरली] केरल देश वासी पुरुष। ३ एक प्रकार का फलित ज्योतिष।

**केराना**।—संज्ञा पुं० [ सं० क्रयण ] नमक, मसाला, हलदी आदि चीजें जो पसारियों के यहाँ मिलती हैं।

**केरानी**—संज्ञा पुं० [अं० क्रिश्चियन ] १. वह जिसके माता-पिता में से कोई एक यूरोपियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो। किरंटा। युरेशियन। २ अंगरेजी दफ्तर में लिखने पढ़ने का काम करनेवाला। मुंशी। क्लर्क।

**केराव**।—संज्ञा पुं० [ सं० कलाय ] मटर।

**केरि***—प्रत्य० [ सं० कृत ] दे० "केरी"।
संज्ञा स्त्री० दे० "केलि"।

**केरी***—प्रत्य० [ सं० कृत ] की। "के" विभक्ति का स्त्रीलिंग रूप।
संज्ञा स्त्री० [ देश० ] आम का कच्चा और छोटा नया फल। अँबिया।

**केरोसिन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] मिट्टी का तेल।

**केला**—संज्ञा पुं० [ सं० कदल, प्रा० कयल ] गरम जगहों में होनेवाला एक पेड़ जिसके पत्ते गज सवा गज लंबे और फल लंबे, गूदेदार और मीठे होते हैं। उसका फल।

**केलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. खेल। क्रीड़ा। २. रति। मैथुन। स्त्रीप्रसंग। ३ हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। ४. पृथ्वी।

**केलिकला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सरस्वती की वीणा। २. रति। समागम।

**केवका**—संज्ञा पुं० [सं० कवक = ग्रास] वह मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।

**केवट**—संज्ञा पुं० [ सं० कैवर्त्त ] एक जाति जो आजकल नाव चलाने तथा मिट्टी खोदने का काम करती है।

**केवटी दाल**—संज्ञा पुं० [ सं० केवट = एक संकर जाति + दाल ] दो या अधिक प्रकार की, एक में मिली हुई, दाल।

**केवटी मोथा**—संज्ञा पुं० [ सं० कैवर्त्तमुस्तक ] एक प्रकार का सुगंधित मोथा।

**केवड़ई**—वि० [ हिं० केवड़ा + ई ( प्रत्य० ) ] हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद। जैसे—केवड़ई रंग।

**केवड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० केविका ] १

सफेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। २. इस पौधे का फूल। ३. इसके फूल से उतरा हुआ सुगंधित जल।

**केवल**—वि० [ सं० ] १. एकमात्र। अकेला। २. शुद्ध। पवित्र। ३. उत्कृष्ट। उत्तम। श्रेष्ठ।

क्रि० वि० मात्र। सिर्फ।

संज्ञा पु० [ वि० केवली ] वह ज्ञान जो भ्रांतिशून्य और विशुद्ध हो।

**केवलात्मा**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २ शुद्ध स्वभाववाला मनुष्य।

**केवली**—संज्ञा पु० [ सं० केवल + ई (प्रत्य०) ] मुक्ति का अधिकारी साधु। केवल-ज्ञानी।

**केवलव्यतरेकी**—संज्ञा पु० [ सं० केवलव्यतिरेकिन् ] कार्य्य को प्रत्यक्ष देखकर कारण का अनुमान। जैसे—नदी का चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनुमान। शेषवत्।

**केवलान्वयी**—संज्ञा पुं० [ सं० केवलान्वयिन् ] कारण द्वारा कार्य्य का अनुमान। जैसे—बादल देखकर पानी बरसने का अनुमान। पूर्ववत्।

**केवाँच**—संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

**केवा**—संज्ञा पु० [ सं० कुव = कमल ] १ कमल। २ केतकी। केवड़ा।

संज्ञा पु० [ सं० किवा ] बहाना। मिस। टालमटूल।

**केवाड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "किवाड़"।

**केश**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ रश्मि। किरण। २ वरुण। ३ विश्व। ४. विष्णु। ५. सूर्य्य। ६. सिर का बाल।

**मुहा०**—केश न टाल सकना = (किसी का) तनिक भी क्षति न पहुचा सकना।

**केशकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाल झाड़ने और गूँथने की कला। केशविन्यास। केशांत नामक संस्कार।

**केशपाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बालों की लट। काकुल।

**केशरंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भँगरैया।

**केशर**—संज्ञा पु० दे० "केसर"।

**केशराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का भुजंगा पक्षी। २. भँगरैया। भृंगराज।

**केशरी**—संज्ञा पु० दे० "केसरी"।

**केशव**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. विष्णु। २. कृष्णचन्द्र। ३. ब्रह्म। परमेश्वर। ४ विष्णु के २४ मूर्तिभेदों में से एक।

**केशविन्यास**—संज्ञा पु० [ सं० ] बालों की सजावट। बालों का सँवारना।

**केशांत**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. सोलह संस्कारों में से एक जिसमें यज्ञोपवीत के पीछे सिर के बाल मूँड़े जाते थे। गोदान कर्म। २. मुंडन।

**केशि**—संज्ञा पु० [ सं० ] एक राक्षस जिसे कृष्ण ने मारा था।

**केशिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ वह स्त्री जिसके सिर के बाल सुंदर और बड़े हों। २. एक अप्सरा। ३. पार्वती की एक सहचरी। ४ रावण की माता कैकसी का एक नाम।

**केशी**—संज्ञा पु० [ सं० केशिन् ] [ स्त्री० केशिनी ] १ प्राचीन काल के एक गृहपति का नाम। २ एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था। ३ घोड़ा। ४. सिंह।

वि० १ किरण या प्रकाशवाला। २. अच्छे बालोंवाला।

**केस**—संज्ञा पुं० दे० "केश"।

संज्ञा पु० [ अं० ] किसी चीज के रखने का खाना या घर। २. मुकदमा। ३. दुर्घटना।

**केसर**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. बाल की तरह पतले पतले सींके या तार जो फूलों के बीच में रहते हैं। २. ठंढे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसका केसर स्थायी सुगंध के लिये प्रसिद्ध है। कुंकुम। जाफरान। ३ घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल। अयाल। ४. नागकेसर। ५. बकुल। मौलसिरी। ६. स्वर्ण।

**केसरिया**—वि० [ सं० केसर + इया (प्रत्य०) ] १. केसर के रंग का। पीला। जर्द। २. केसर मिश्रित।

**केसरी**—संज्ञा पुं० [ सं० केसरिन् ] १. सिंह। २ घोड़ा। ३. नागकेसर। ४. हनुमान्‌जी के पिता का नाम।

**केसारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खेसारी"।

**केसू**—संज्ञा पु० दे० "टेसू"।

**केहरी***—संज्ञा पु० [ सं० केसरी ] १. सिंह। शेर। २. घोड़ा।

**केहा**—संज्ञा पु० [ सं० केका ] मोर। मयूर।

**केहि***†—वि० [ हिं० के + हि (विभक्ति) ] किसको। (अवधी)।

**केहूँ***—क्रि० वि० [ सं० कथम् ] किसी प्रकार। किसी भाँति। किसी तरह।

**केहू**†—सर्व० [ हिं० के ] कोई।

**कैंकर्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. "किंकर" का भाव। किंकरता। २. सेवा।

**कैं***—प्रत्य० [ हिं० के ] के।

**कैंचा**—वि० [ हिं० काना + ऐंचा ... कनैचा ] ऐंचाताना। भैंगा।

संज्ञा पु० [ तु० कैंची ... ] कैंची।

**कैंची**—संज्ञा स्त्री० ... बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का यंत्र। कतरनी। २. दो ... तीलियाँ या लकड़ियाँ ... की तरह एक दूसरी के ऊपर ... रखी या जड़ी हों।

**कैंड़ा**—संज्ञा ... सं० कांड ] १.

यह यंत्र जिससे किसी चीज का नक्शा ठीक किया जाता है। २. पैमाना। मान। नपना। ३. चाल। ढग। काट-छाँट। ४. चालबाजी। चतुराई।

**कै**—वि० [ सं० कति, प्रा० कई ] कितना।

*अव्य० [ सं० किम् ] या। वा। अथवा।

संज्ञा स्त्री० [अ० कै] वमन। उलटी।

**कैकस**—संज्ञा पु० [ सं० ] राक्षस।

**कैकसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुमाली राक्षस की कन्या और रावण की माता।

**कैकेयी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कैकय गोत्र मे उत्पन्न स्त्री। २. राजा दशरथ की वह रानी जिसने रामचंद्र को वन-वास दिलवाया था।

**कैटभ**—संज्ञा पु० [ सं० ] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।

**कैटभारि**—संज्ञा पु० [ सं० ] विष्णु।

**कैतव**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ धोखा। छल। कपट। २. जुआ। द्यूतक्रीड़ा। ३. वैदूर्य मणि। लहसुनियाँ।

वि० १. धोखेबाज। छली। २ धूर्त। शठ। ३. जुआरी।

**कैतवापह्नुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अपह्नुति अलंकार का एक भेद, जिसमें वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट शब्दों में न करके व्याज से किया जाता है।

**कैतून**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] एक प्रकार की बारीक लैस जो कपड़ों में लगाई जाती है।

**कैथ, कैथा**—संज्ञा पु० [ सं० कपित्थ ] एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के कसैले और खट्टे फल लगते हैं।

**कैथिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कायथ ] कायस्थ जाति की स्त्री।

**कैथी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कायथ ] एक पुरानी लिपि या लिखावट जो शीघ्र लिखी जाती है और जिसमें शीर्ष रेखा नहीं होती।

**कैद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [वि० कैदी] १. बंधन। अवरोध। २. पहरे में बंद स्थान में रखना। कारावास।

**मुहा०**—कैद काटना = कैद में दिन बिताना।

३. किसी प्रकार की शर्त, अटक या प्रतिबंध जिसके पूरे होने पर ही कोई बात हो।

**कैदक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] कागज का बंद या पट्टी जिसमें कागज आदि रखे जाते हैं।

**कैदखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ कैदी रखे जाते हों। कारागार। बंदीगृह। जेलखाना।

**कैद तनहाई**—संज्ञा स्त्री० [ अ० + फ़ा० ] वह कैद जिसमें कैदी को तंग कोठरी में अकेले रखा जाय। काल-कोठरी।

**कैदमहज**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वह कैद जिसमें कैदी को किसी प्रकार का काम न करना पड़े। सादी कैद।

**कैदसख्त**—संज्ञा स्त्री० [ अ० कैद + फ़ा० सख्त ] वह कैद जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े। कड़ी कैद।

**कैदी**—संज्ञा पु० [ अ० ] वह जिसे कैद की सजा दी गई हो। बंदी। बँधुवा।

**कैधौं***†—अव्य० [ हिं० कै + धौं ] या। वा। अथवा।

**कैफियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. समाचार। हाल। वर्णन। २ विवरण। ब्योरा।

**मुहा०**—कैफियत तलब करना=नियमानुसार विवरण माँगना। कारण पूछना।

३. आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।

**कैबर**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] तीर का फल।

**कैबा**†—संज्ञा स्त्री० अव्ययवत् [ हिं० कै=कितना + बार ] १. कितनी बार। २ बहुत बार।

**कैवार***—संज्ञा पुं० दे० "किवाड़"।

**कैम, कैमा***—संज्ञा पुं० दे० "कदब"।

**कैमुतिक न्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक न्याय या उक्ति जिसका प्रयोग यह दिखलाने के लिये होता है कि जब उतना बड़ा काम हो गया, तब यह क्या है।

**कैरव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कैरवी ] १ कुमुद। २ सफेद कमल। ३ शत्रु।

**कैरवाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कैरवों का समूह।

**कैरा**—संज्ञा पु० [ सं० कैरव ] [ स्त्री० कैरी ] १ भूरा (रंग)। २. वह सफेदी जिसमें ललाई की झलक या आभा हो। ३ वह बैल जिसके सफेद रोओं के अंदर से चमड़े की ललाई झलकती हो। सोकना। सोकन।

वि० १ कैरे रंग का। २ जिसकी आँखें भूरी हों। कंजा।

**कैलास**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में रावण-हद से उत्तर ओर है। (यहाँ शिव जी का निवास माना जाता है।) २. शिव-लोक।

**यौ०**—कैलासनाथ, कैलासपति=शिव।

**कैलासवास**—मरण। मृत्यु।

**कैलेंडर**—संज्ञा पु० दे० "दिनपत्र"।

**कैवर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केवट।

**कैवर्त्तमुस्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केवटी मोथा।

**कैवल्य**—संज्ञा पु० [सं०] १ शुद्धता। बेमेलपन। निर्लिप्तता। एकता। २. मुक्ति। मोक्ष। निर्वाण। ३. एक उपनिषद्।

**कैशिकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाटक की मुख्य चार वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य-गीत तथा भोग-विलास आदि होते हैं।

**कैसर**—संज्ञा पुं० [ लै० सीज़र ] सम्राट्। बादशाह।

**कैसा**—वि० [ सं० कीदृश ] [ स्त्री० कैसी ] १. किस प्रकार का? किस ढंग का? किस रूप या गुण का? २ (निषेधार्थक प्रश्न के रूप में) किसी प्रकार का नहीं। जैसे—जब हम उस मकान में रहते नहीं, तब किराया कैसा? ३. सदृश। समान। ऐसा।

**कैसे**—क्रि० वि० [ हिं० कैसा ] १. किस प्रकार? किस ढंग से? २. किस हेतु? क्यों?

**कैसो***†—वि० दे० "कैसा"।

**कोंई**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुँई"।

**कोंकण** संज्ञा पुं० [ सं० ] १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २. उक्त देश का निवासी।

**कोंचना**—क्रि० स० [ सं० कुच ] चुभाना। गोदना। गड़ाना। धँसाना।

**कोंचा**—संज्ञा पुं० दे० "क्रौंच"।

संज्ञा पुं० [ हिं० कोंचना ] बहेलियों की वह लंबी छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने का लासा लगाए रहते हैं।

**कोंछना**—क्रि० स० दे० "कोंछियाना"।

**कोंछियाना**—क्रि० स० [ हिं० कोंछी ] (स्त्रियों की) साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है।

क्रि० स० [ हिं० कोंछ ] ( स्त्रियों के ) अंचल के कोने में कोई चीज भरकर कमर में खोंस लेना।

**कोंढ़ा**—संज्ञा पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी ] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाती है।

वि० [ हिं० कोंढ़ा + हा (प्रत्य० ) ] जिसमें कोंढ़ा लगा हो। जैसे, कोंढ़ा बकरा।

**कोंथना**—क्रि० अ० दे० "कूँथना"।

**कोंपन***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोंपल ] डाली के नवजात पत्ते। कोमल पत्ते।

**कोंपर**—संज्ञा पुं० [ हिं० कोंपल ] छोटा अधपका या डाल का पका आम।

**कोंपल**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० कोमल या कुपल्लव ] नई और मुलायम पत्ती। अंकुर। कल्ला।

**कोंवर***†—वि० [ सं० कोमल ] नरम। मुलायम। नाजुक।

**कोंहड़ा**†—संज्ञा पुं० दे० "कुम्हड़ा"।

**कोंहड़ौरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोंहड़ा + बरी] कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बरी।

**को***-सर्व० [ सं० कः ] कौन?

प्रत्य० कर्म और संप्रदान की विभक्ति। जैसे—साँप को मारो।

**कोआ**—संज्ञा पुं० [ सं० कोश या हिं० कोसा ] १ रेशम के कीड़े का घर। कुसियारी। २. टसर नामक रेशम का कीड़ा। ३ महुए का पका फल। कोलैंदा। गोलैंदा। ४ कटहल के गूदेदार पके हुए बीजकोष।

५. दे० "कोया"।

**कोइरी**—संज्ञा पुं० [ हिं० कोयर ] साग, तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति। काछी।

संज्ञा स्त्री० दे० "कोइलारी"।

**कोइला**—संज्ञा पुं० दे० "कोयला"।

**कोइली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोयल ] १. वह कच्चा आम जिसमें काला दाग पड़ जाता है और एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है। २ आम की गुठली।

**कोई**—सर्व०, वि० [ सं० कोऽपि ] १ ऐसा एक ( मनुष्य या पदार्थ ) जो अज्ञात हो। न जाने कौन एक।

**मुहा०**—कोई न कोई = एक नहीं तो दूसरा। यह न वह।

२. बहुतों में से चाहे जो एक। अविशेष वस्तु या व्यक्ति। ३ एक भी ( मनुष्य )।

क्रि० वि० लगभग। करीब करीब।

**कोउ***†—सर्व० दे० "कोई"।

**कोउ***†—सर्व० [ हिं० कोउ = एक ] कोई एक। कतिपय। कुछ लोग।

**कोऊ**†*—सर्व० दे० "कोई"।

**कोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० कोकी ] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। सुरखाब। २ विष्णु। ३ मेढक।

**कोकई**—वि० [ तु० कोक ] ऐसा नीला जिसमें गुलाबी की झलक हो। कौड़ियाला।

**कोककला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रतिविद्या। संभोग-संबंधी विद्या।

**कोकदेव**—संज्ञा पुं० कोकशास्त्र या रतिशास्त्र का रचयिता एक पंडित।

**कोकनद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लाल कमल। २. लाल कुमुद।

**कोकनी**—संज्ञा पुं० [ तु० कोक = आसमानी ] एक प्रकार का रंग।

वि० [ देश० ] १. छोटा। नन्हा। २ घटिया।

**कोकशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कोककृत रतिशास्त्र। कामशास्त्र।

**कोका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिसकी सुखाई हुई पत्तियाँ चाय या कहवे की भाँति शक्ति-वर्द्धक समझी जाती हैं।

संज्ञा पुं० स्त्री० [ तु० ] धाय की संतान। दूध-भाई या दूध बहिन।

**कोकाबेरी**—दे० "कोकाबेली"।

**कोकाबेरी, कोकाबेली**—संज्ञा स्त्री०

[सं० कोकनद + हिं० बेल] नीली कुमुदिनी।

**कोकाह**—संज्ञा पुं० [सं०] सफेद घोड़ा।

**कोकिल**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोयल चिड़िया। २ नीलम की एक छाया। ३ छप्पय का १९ वाँ भेद। ४. कोयला।

**कोकिला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोयल।

**कोकी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मादा चकवा।

**कोकीन,कोकेन**—संज्ञा स्त्री० [अं०] कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की मादक ओषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

**कोको**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कौआ। लड़कों को बहकाने का शब्द।

**कोख**—संज्ञा स्त्री० [सं० कुक्षि] १. उदर। जठर। पेट। २. पेट के दोनों बगल का स्थान। ३. गर्भाशय।

**यौ०**—कोख-जली=जिसकी संतान मर गई हो या मर जाती हो।

**मुहा०**—कोख उजड़ जाना = १. संतान मर जाना। २. गर्भ गिर जाना। कोख बंद होना = बंध्या होना। कोख, या कोख माँग से, ठंढी या भरी पूरी रहना = बालक, या, बालक और पति का सुख देखते रहना। (आसीस)

**कोख-बंद**—वि० स्त्री० दे० "बाँझ"

**कोगी**—संज्ञा पुं० [देश०] कुत्ते से मिलता जुलता एक शिकारी जानवर जो झुंड में रहता है। सोनहा।

**कोच**—संज्ञा पुं० [अं०] १. एक प्रकार की चौपहिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी। २. गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।

**कोचना**—क्रि० स० दे० "कोंचना"।

**कोचकी**—संज्ञा पुं० [?] एक रंग जो ललाई लिए भूरा होता है।

**कोचबकस**—संज्ञा पुं० [अं० कोच+बक्स] घोड़ागाड़ी आदि में वह ऊँचा स्थान जिसपर हाँकनेवाला बैठता है।

**कोचवान**—संज्ञा पुं० [अं० कोचमैन] घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

**कोचा**—संज्ञा पुं० [हिं० कोंचना] १ तलवार, कटार आदि का हलका घाव जो पार न हुआ हो। २ लगती हुई बात। ताना।

**कोजागर**—संज्ञा पुं० [सं०] आश्विन मास की पूर्णिमा। शरद पूनो। (जागरण का उत्सव)

**कोट**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दुर्ग। गढ़। किला। २ शहरपनाह। ३ महल। राजप्रासाद। ४ विस्तार। लंबाई।
संज्ञा पुं० [सं० कोटि] समूह। यूथ।
संज्ञा पुं० [अं०] अँगरेजी ढंग का एक पहनावा।

**कोटपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्ग की रक्षा करनेवाला। किलेदार।

**कोटर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पेड़ का खोखला भाग। २. दुर्ग के आस-पास का वह कृत्रिम वन जो रक्षा के लिये लगाया जाता है।

**कोटि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धनुष का सिरा। २ अस्त्र की नोक या धार। ३ वर्ग। श्रेणी। दरजा। ४ किसी वादविवाद का पूर्व पक्ष। ५. उत्कृष्टता। उत्तमता। ६ समूह। जत्था। ७ किसी ९० अंश के चाप के दो भागों में से एक। ८ किसी त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा।
वि० [सं०] सौ लाख। करोड़।

**कोटिक**—वि० [सं० कोटि + क] १. करोड़। २. अनगिनत। बहुत अधिक।

**कोटिशः**—क्रि० वि० [सं०] अनेक प्रकार से। बहुत तरह से।
वि० बहुत अधिक। अनेकानेक।

**कोटू**—संज्ञा पुं० दे० "कूटू"।

**कोठा**—वि० [सं० कुंठ] खटाई के के असर से जिससे कोई वस्तु कूँची या चबाई न जा सके। कुंठित। (दाँत)

**कोठरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठ + ड़ी (री) (अल्पा० प्रत्य०)] (मकान आदि में) वह छोटा स्थान जो चारों ओर दीवारों से घिरा और छाया हुआ हो। छोटा कमरा।

**कोठा**—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठक] १. बड़ा कोठरी। चौड़ा कमरा। २. भंडार। ३. मकान में छत या पाटन के ऊपर का कमरा। अटारी।

**यौ०**—कोठेवाली = वेश्या।
४ उदर। पेट। पक्वाशय।

**मुहा०**—कोठा बिगड़ना = अपच आदि रोग होना। कोठा साफ होना = साफ दस्त होना।
५. गर्भाशय। धरन। ६. खाना। घर। ७ किसी एक अंक का पहाड़ा जो एक खाने में लिखा जाता है। ८ शरीर या मस्तिष्क का कोई भीतरी भाग जिसमें कोई विशेष शक्ति या वृत्ति रहती हो।

**कोठार**—संज्ञा पुं० [हिं० कोठा] अन्न, धन आदि रखने का स्थान। भंडार।

**कोठारी**—संज्ञा पुं० [हिं० कोठार + ई (प्रत्य०)] वह अधिकारी जो भंडार का प्रबंध करता हो। भंडारी।

**कोठिला**—संज्ञा पुं० दे० 'कुठला''।

**कोठी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोठा] १. बड़ा पक्का मकान। हवेली। बँगला। २. वह मकान जिसमें रुपए का लेन-देन या कोई बड़ा कारबार हो। बड़ी दूकान। ४. अनाज रखने का कुठला। बखार। गंज।

५. ईंट या पत्थर की वह जोड़ाई जो कुएँ की दीवार या पुल के खंभे में पानी के भीतर जमीन तक होती है। ६. गर्भाशय।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कोटि = समूह ] उन बाँसों का समूह जो एक साथ मंडलाकार उगते हैं।

**कोठीवाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० कोठी + वाला ] १. महाजन। साहूकार। २ बड़ा व्यापारी। ३ महाजनी अक्षर जो कई प्रकार के होते हैं। कोठीवाली। मुड़िया।

**कोठीवाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोठी ] १. कोठी चलाने का काम। २. कोठीवाल अक्षर।

**कोड़ना**—क्रि० स० [ सं० कुंड ] १. खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलट देना। गोड़ना। २. खोदना।

**कोड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कवर ] १. डंडे में बँधा हुआ बटा सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के लिये मारते हैं। चाबुक। सोंटा। दुर्रा। २. उत्तेजक बात। मर्म्मस्पर्शी बात। ३ चेतावनी।

**कोड़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोड़ना ] कोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**कोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० स्कोर ] बीस का समूह। बीसी।

**कोढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० कुष्ठ ] [ वि० कोढ़ी ] एक प्रकार का रक्त और त्वचा संबंधी रोग जो संक्रामक और घिनौना होता है।

**मुहा०**—कोढ़ चूना या टपकना = कोढ़ के कारण अंगों का गल गलकर गिरना। कोढ़ की खाज या कोढ़ में खाज = दुःख पर दुःख।

**कोढ़ी**—संज्ञा पुं० [हिं० कोढ़][ स्त्री० कोढ़िन ] कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

**कोण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक न हो जाती हों। कोना। २ कोठरी या घर में वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिली हों। कोना। ३ दो दिशाओं के बीच की दिशा। विदिशा। कोण चार हैं—अग्नि, नैर्ऋति, ईशान और वायव्य।

**कोत** - संज्ञा स्त्री० दे० "कुव्वत"।

**कोतल**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १ सजा-सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो। जलूसी घोड़ा। २ स्वयं राजा की सवारी का घोड़ा। ३ वह घोड़ा जो जरूरत के वक्त के लिये साथ रखा जाता है।

**कोतवाल** - संज्ञा पुं० [ सं० कोटपाल ] १ पुलिस का एक प्रधान कर्म्मचारी। २. पंडितों की सभा, बिरादरी की पंचायत अथवा साधुओं के अखाड़े की बैठक, भोज आदि का निमंत्रण देने और उनका ऊपरी प्रबंध करनेवाला।

**कोतवाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोतवाल + ई ( प्रत्य० ) ] १ वह मकान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्य्यालय हो। २ कोतवाल का पद या काम।

**कोता***†—वि० [ फा० कोतह ] [स्त्री० कोती ] छोटा। कम। अल्प।

**कोताह**—वि० [ फा० ] छोटा। कम।

**कोताही**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] त्रुटि। कमी।

**कोति***—संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

**कोथला**—संज्ञा पुं० [ हिं० गूथल अथवा कोठला ] १ बड़ा थैला। २ पेट।

**कोथली** -संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोथली ] रुपए पैसे रखने की एक प्रकार की लंबी थैली जिसे कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

**कोदंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धनुष। कमान। २. धनु-राशि। ३. भौंह।

**कोद***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० कोण अथवा कुत्र ] १. दिशा। ओर। तरफ। २. कोना।

**कोदों, कोदो**—संज्ञा पुं० [सं० कोद्रव] एक कदन्न जो प्रायः सारे भारतवर्ष में होता है।

**मुहा०**-कोदो देकर पढ़ना या सीखना = अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना। छाती पर कोदो दलना = किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे बहुत बुरा लगे।

**कोध***--संज्ञा स्त्री० दे० "कोद"।

**कोन**†—संज्ञा पुं० दे० "कोना"।

**कोना**—संज्ञा पुं० [ सं० कोण ] १. बिंदु पर मिलती हुई ऐसी दो रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक रेखा नहीं हो जातीं। अंतराल। २. नुकीला किनारा या छोर। नुकीला सिरा। ३ छोर का वह स्थान जहाँ लंबाई चौड़ाई मिलती हो। खूँट। ४. कोठरी या घर के अंदर की वह सँकरी जगह जहाँ लंबाई-चौड़ाई की दीवारें मिलती हैं। ५ एकांत और छिपा हुआ स्थान।

**मुहा०**—कोना झाँकना = भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना।

**कोनियाँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कोना ] १ दीवार के कोने पर चीजें रखने के लिये बैठाई हुई पटरी या पटिया। पटनी। २ किसी चित्र या मूर्ति आदि के चारों कोनों का अलंकरण।

**कोप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० कुपित] क्रोध। रिस। गुस्सा।

**कोपन**—वि० [ सं० ][ स्त्री० कोपना ] कोप करनेवाला। क्रोधी। गुस्सेवर।

**कोपना***—क्रि० अ० [ सं० कोप ] क्रोध करना। क्रुद्ध होना। नाराज

होना।

**कोपभवन**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठ कर जा रहे।

**कोपर**—संज्ञा पुं० [हिं० कोपल] डाल का पका हुआ आम। टपका। सीकर।

संज्ञा पुं० [सं० कपाल] बड़ा थाल।

**कोपल**—संज्ञा पुं० [सं० कोमल या कुपल्लव] वृक्ष आदि की नई मुलायम पत्ती। कल्ला।

**कोपि**—सर्व० [सं०] कोई।

**कोपी**—वि० [सं० कोपिन्] कोप करनेवाला। क्रोधी।

**कोपीन**—संज्ञा पुं० दे० "कौपीन"।

**कोफता**—संज्ञा पुं० [फा०] कूटे हुए मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

**कोबी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोभी"।

**कोमल**—वि० [सं०] [स्त्री० कोमला] १. मृदु। मुलायम। नरम। २ सुकुमार। नाजुक। ३ अपरिपक्व। कच्चा। ४. सुदर। मनोहर। ५. स्वर का एक भेद। (संगीत)

**कोमलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मृदुलता। मुलायमत। नरमी। २. मधुरता।

**कोमला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह वृत्ति या अक्षर-योजना जिसमें कोमल पद हो और प्रसाद गुण हो।

**कोमलाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "कोमलता"।

**कोय***†—सर्व० दे० "कोई"।

**कोयर**—संज्ञा पुं० [सं० कोपल] १. सागपात। सब्जी तरकारी। २. हरा चारा।

**कोयल**—संज्ञा स्त्री० [सं० कोकिल] बहुत सुदर बोलनेवाली काले रंग की एक छोटी चिड़िया।

संज्ञा स्त्री० एक लता जिसकी पत्तियाँ गुलाब की पत्तियों से मिलती-जुलती होती हैं। अपराजिता।

**कोयला**—संज्ञा पुं० [सं० कोकिल = अंगारा] १. जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है। २ एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो कोयले के रूप का होता है और जलाने के काम में आता है।

**कोया**—संज्ञा पुं० [सं० कोण] १. आँख का ढेला। २. आँख का कोना।

संज्ञा पुं० [सं० कोश] कटहल का गूदेदार बीजकोश जो खाया जाता है।

**कोर**—संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] १. किनारा। सिरा। हाशिया। २. कोना। गोशा। ३. कपड़े आदि के छोर का कोना।

**मुहा०**—कोर दबना = किसी प्रकार के दबाव या वश में होना।

४ द्वेष। वैर। वैमनस्य। ५. दोष। ऐब। बुराई। ६ हथियार की धार। बाढ़। ७ पंक्ति। श्रेणी। कतार।

**कोरक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कली। मुकुल। २ फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। फूल की कटोरी। ३. कमल की नाल या डंडी। मृणाल।

**कोर-कसर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोर + फ़ा० कसर] १ दोष और त्रुटि। ऐब और कमी। २. अधिकता और न्यूनता। कमी-बेशी।

**कोरना**†—क्रि० स० [हिं० कोर] १ कोड़ना। २ खरोचना। ३ कुतरना।

**कोरमा**—संज्ञा पुं० [तु०] भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा बिलकुल नहीं होता।

**कोरवा**†—संज्ञा पुं० दे० "पुरवा"।

**कोरहन**—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का धान।

**कोरा**—वि० [सं० केवल] [स्त्री० कोरी] १. जो बर्ता न गया हो। नया। अछूता।

**मुहा०**—कोरी धार या बाढ़ = हथियार की धार जिस पर अभी सान रखी गई हो।

२ (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो। ३. जिसपर कुछ लिखा या चित्रित न किया हो। सादा।

**मुहा०**—कोरा जवाब = साफ इनकार। स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार।

४. खाली। रहित। वंचित। विहीन। ५. आपत्ति या दोष से रक्षित। बेदाग। ६. मूर्ख। अपढ़। जड़। ७. धनहीन। अकिंचन। ८. केवल। सिर्फ।

संज्ञा पुं० बिना किनारे की रेशमी धोती।

†संज्ञा पुं० [सं० क्रोड़] गोद। उछंग।

**कोरापन**—संज्ञा पुं० [हिं० कोरा + पन (प्रत्य०)] नवीनता। अछूतापन।

**कोरि**—वि० दे० "कोटि"।

**कोरिया**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुटिया] झोपड़ी।

**कोरी**—संज्ञा पुं० [सं० कोल + सुअर] [स्त्री० कोरिन] हिंदू जुलाहा।

**कोल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूअर। शूकर। २ गोद। उत्संग। ३. बेर। बदरीफल। ४ तोले भर की एक तौल। ५. काली मिर्च। ६ दक्षिण के एक प्रदेश या राज्य का प्राचीन नाम। ७. एक जंगली जाति।

**कोलना**—क्रि० स० [सं० क्रोडन] खोदकर बीच में पोला करना।

**कोलाहल**—संज्ञा पुं० [सं०] शोर। हौरा।

**कोली**—संज्ञा स्त्री० [सं० क्रोड़] गोद।

संज्ञा पुं० हिंदू जुलाहा। कोरी।

**कोल्हू**—संज्ञा पुं० [हिं० कूल्हा ?] दानों से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र।

मुहा०—कोल्हू का बैल = बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना = बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

**कोविद**—वि० [सं०] [स्त्री० कोविदा] पंडित। विद्वान्। कृतविद्य।

**कोविदार**—संज्ञा पुं० [सं०] कचनार।

**कोश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंड। अंडा। २. संपुट। डिब्बा। गोलक। ३. फूलों की बँधी कली। ४. पत्रपात्र नामक पूजा का बरतन। ५. तलवार, कटार आदि का म्यान। ६ आवरण। खोल। ७. वेदांत में निरूपित अन्नमय आदि पाँच आवरण जो प्राणियों में होते हैं। ८ थैली। ९. संचित धन। १० वह ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्य्याय के सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों। अभिधान। ११ समूह। १२. अंडकोश। १३. रेशम का कोया। कुसियारी। १४ कटहल आदि फलों का कोया।

**कोशकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. म्यान बनानेवाला। २. शब्द-कोश बनानेवाला। अर्थ सहित शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करनेवाला। ३. रेशम का कीड़ा।

**कोशकीट**—संज्ञा पुं० [सं०] रेशम का कीड़ा।

**कोशपान**—संज्ञा पुं० [सं०] अपराध की एक प्राचीन परीक्षा-विधि जिसमें अभियुक्त को एक दिन उपवास करने के बाद कुछ प्रतिष्ठित लोगों के सामने तीन चुल्लू जल पीना पड़ता था।

**कोशपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] खजाने की रक्षा करनेवाला।

**कोशल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। २. उपर्युक्त देश में बसनेवाली क्षत्रिय जाति। ३ अयोध्या नगर।

**कोशवृद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंड-वृद्धि रोग।

**कोशांबी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशांबी"।

**कोशागार**—संज्ञा पुं० [सं०] खजाना।

**कोशिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] प्रयत्न। चेष्टा।

**कोष**—संज्ञा पुं० दे० "कोश"।

**कोषाध्यक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] खजानची।

**कोष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उदर का मध्य भाग। पेट का भीतरी हिस्सा। १. शरीर के भीतर का कोई भाग जिसके अंदर कोई विशेष शक्ति रहती हो। जैसे—पक्वाशय। गर्भाशय आदि। ३ कोठा। घर का भीतरी भाग। ४. वह स्थान जहाँ अन्न संग्रह किया जाय। गोला। ५. कोश। भंडार। खजाना। ६. प्राकार। शहरपनाह। चहारदीवारी। ७ वह स्थान जो लकीर, दीवार, बाढ़ आदि से चारों ओर से घिरा हो।

**कोष्ठक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी प्रकार की दीवार, लकीर या और किसी वस्तु से घिरा स्थान। खाना। कोठा। २. किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से खाने या घर हों। सारिणी। ३. लिखने में एक प्रकार के चिह्नों का जोड़ा जिसके अंदर कुछ वाक्य या अंक आदि लिखे जाते हैं। जैसे—[ ] { } , ( )।

**कोष्ठबद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] पेट में मल का रुकना। कब्जियत।

**कोष्ठी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जन्मपत्री।

**कोस**—संज्ञा पुं० [सं० क्रोश] दूरी की एक नाप जो प्राचीन काल से ४००० या ८००० हाथ की मानी जाती थी। आजकल दो मील की दूरी।

मुहा०—कोसों या काले कोसों = बहुत दूर। कोसों दूर रहना = अलग रहना।

**कोसना**—क्रि० स० [सं० क्रोशन] शाप के रूप में गालियाँ देना।

मुहा०—पानी पी-पीकर कोसना = बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना = शाप और गाली देना।

**कोसा**—संज्ञा पुं० [सं० कोश] एक प्रकार का रेशम।

संज्ञा पुं० [सं० कोश = प्याला] [स्त्री० कोसिया] मिट्टी का बड़ा दीया। कसोरा।

**कोसा-काटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कोसना + काटना] शाप के रूप में गाली। बद-दुआ।

**कोसिला**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"

**कोहँड़ौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा + बरी] उर्द की पीठी और कुम्हड़े के गूदे से बनाई हुई बरी।

**कोह**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पर्वत। पहाड़।

†*संज्ञा पुं० [सं० क्रोध] क्रोध। गुस्सा।

संज्ञा पुं० [सं० ककुभ] अर्जुन-वृक्ष।

**कोहनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुहनी"।

**कोहनूर**—संज्ञा पुं० [फ़ा० कोह + अ० नूर] भारत की किसी खान से निकला हुआ बहुत बड़ा, प्राचीन और प्रसिद्ध हीरा।

**कोहबर**—संज्ञा पुं० [सं० कोष्ठवर] वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किये जाते हैं।

**कोहरा**—संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।

**कोहल**—संज्ञा पुं० [सं०] एक मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रणेता कहे जाते हैं।

**कोहान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] ऊँट की पीठ पर का डिल्ला या कूबड़।

**कोहाना***†—क्रि० अ० [हिं० कोह] १. रूठना। नाराज होना। मान करना। २. गुस्सा होना। क्रोध होना।

**कोहिस्तान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०]

पहाड़ी देश।

**कोही**—वि० [ हिं० कोह ] क्रोध करने वाला।

वि० [ फ़ा० कोह ] पहाड़ी।

**कौं***—प्रत्य० [हिं० को] को। के लिए।

**कौंच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कच्छु ] सेम की तरह की एक बेल जिसमें तरकारी के रूप में खाई जानेवाली फलियाँ लगती हैं। कपि-कच्छु। केवाँच।

**कौंछु**—संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।

**कौंतय**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. कुंती के युधिष्ठिर आदि पुत्र। २ अर्जुन-वृक्ष।

**कौंध**—संज्ञा स्त्री० [हिं० कौंधना] बिजली की चमक।

**कौंधना**—क्रि० अ० [ सं० कनन = चमकना + अध ] बिजली का चमकना।

**कौंला**—संज्ञा पुं० [ सं० कमला ] एक प्रकार का मीठा नीबू या संगतरा।

**कौ०**—क्रि० वि० दे० "कब"।

**कौआ**—संज्ञा पु० [सं० काक] [ स्त्री० कौवी ] १. एक बड़ा काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिए प्रसिद्ध है। काक।

**यौ०**—कौआ गुहार या कौआ रोर= १. बहुत अधिक बकबक। २. गहरा शोर गुल।

२. बहुत धूर्त मनुष्य। काइयाँ। ३. वह लकड़ी जो बँड़ेरी के सहारे के लिए लगाई जाती है। कौहा। बहुत्ताँ। ४. गले के अंदर तालू की झालर के बीच का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा। घाँटी। लगर। ललरी। ५. एक प्रकार की मछली जिसका मुँह बगले की चोंच की तरह होता है।

**कौआठोंठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० काक-तुंडी ] एक लता जिसके फूल सफेद और नीले रंग के तथा आकार में कौवे की चोंच के समान होते हैं। काकतुंडी। काकनासा।

**कौआना**—क्रि० अ० [ कौआ ] १. भौचक्का होना। चकपकाना। २. अचानक कुछ बड़बड़ा उठना।

**कौटिल्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. टेढ़ापन। २. कपट। ३. चाणक्य का एक नाम।

**कौटुंबिक**—वि० [ सं० ] १ कुटुंब का। कुटुम्ब-सबंधी। २ परिवारवाला।

**कौड़ा**—संज्ञा पु० [ सं० कपर्दक ] बड़ी कौड़ी।

संज्ञा पु० [ सं० कुंड ] जाड़े के दिनों में तापने के लिए जलाई हुई आग। अलाव।

**कौड़िया**—वि० [ हिं० कौड़ी ] कौड़ी के रंग का। कुछ स्याही लिए हुए सफेद।

संज्ञा पुं० कोड़िला पक्षी। किलकिला।

**कौड़ियाला**—वि० [ हिं० कौड़ी ] कौड़ी के रंग का। ऐसा हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ झलक हो। कोकई।

संज्ञा पुं० १. कोई रंग। २ एक प्रकार का विषैला साँप। ३ कृपण धनाढ्य। कजूस अमीर। एक पौधा जिसमें गुच्छी के आकार के छोटे छोटे फूल लगते हैं। ५. कौड़िला पक्षी। किलकिला।

**कौड़ियाही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कौड़ी ] मजदूरी की एक रीति जिसमें प्रतिखेप कुछ कौड़ियाँ दी जाती हैं।

**कौड़िल्ला**—संज्ञा पुं० [ हिं० कौड़ी ] मछली खानेवाली एक चिड़िया। किलकिला।

**कौड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कपर्दिका ] १. समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह अस्थिकोश के अंदर रहता है और जिसका अस्थि-कोश सबसे कम मूल्य के सिक्के की तरह काम आता है। कपर्दिका। वराटिका।

**मुहा०**—कौड़ी काम का नहीं=निकम्मा। निकृष्ट। कौड़ी का, या, दो कौड़ी का =जिसका कुछ मूल्य न हो। तुच्छ। निकम्मा। २ निकृष्ट। खराब। कौड़ी के तीन तीन होना = १ बहुत सस्ता होना। २. तुच्छ होना। बेकदर होना। ना-चीज होना। कौड़ी कौड़ी अदा करना, चुकाना या भरना = सब ऋण चुका देना। कुल बेबाक कर देना। कौड़ी कौड़ी जोड़ना=बहुत थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना। बड़े कष्ट से रुपया बटोरना। कौड़ी भर = बहुत थोड़ा सा। ज़रा सा। कानी या झंझी कौड़ी = १ वह कौड़ी जो टूटी हो। २ अत्यंत अल्प द्रव्य। चित्ती कौड़ी = वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें हों (इसका व्यवहार जुए में होता है।)

२ धन। द्रव्य। रुपया-पैसा। ३. वह कर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओं से लेता है। ४ आँख का डेला। ५ छाती के नीचे बीचोबीच की वह छोटी हड्डी जिसपर सबसे नीचे की दोनों पसलियाँ मिलती हैं। ६. जघे, काँख, या गले की गिल्टी। ७ कटार की नोक।

**कौणप**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ एक राक्षस। २ पापी। अधर्मी।

**कौतिग***‡—संज्ञा पु० दे० "कौतुक"।

**कौतुक**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० कौतुकी ] १ कुतूहल। २. आश्चर्य। अचभा। ३ विनोद। दिल्लगी। ४. आनंद। प्रसन्नता। ५. खेल-तमाशा।

**कौतुकिया**—संज्ञा पु० दे० "कौतुकी"।

**कौतुकी**—वि० [ सं० ] १. कौतुक करनेवाला। विनोदशील। २ विवाह-संबंध करनेवाला। ३ खेल तमाशा करनेवाला।

**कौतूह, कौतूहल**—संज्ञा पु० दे० "कुतूहल"।

**कौथा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० कौन + तिथि ] १. कौन सी तिथि ? कौन तारीख ? २ कौन सा संबंध ? कौन सा वास्ता ?

**कौथा†**—वि० [ हिं० कौन + सं० स्था (स्थान) ] किस संख्या का ? गणना में किस स्थान का।

**कौन**—सर्व० [ सं० कः, किम् ] एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है। **मुहा०**—कौन सा = कौन ? कौन होना = १. क्या अधिकार रखना ? क्या मतलब रखना ? २ कौन संबंधी होना ? रिश्ते में क्या होना ?

**कौनप**—संज्ञा पु० दे० "कौणप"।

**कोपीन**—संज्ञा पु० [ सं० ] ब्रह्मचारियों और संन्यासियों आदि के पहनने की लँगोटी। चीर। कफनी। कछा।

**कौम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वर्ण। जाति।

**कौमार**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० कौमारी ] १ कुमार अवस्था। जन्म से पाँच वर्ष तक की या ( तंत्र के मत से ) १६ वर्ष तक की अवस्था। २. कुमार।

**कौमारभृत्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] बालकों के लालन-पालन और चिकित्सा आदि की विद्या। धातृविद्या। दाया गेरी।

**कौमारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी पुरुष की पहली स्त्री। २. सात मातृकाओं में से एक। ३ पार्वती।

**कौमी**—वि० [ अ० कौम ] कौम का। जाति-संबंधी। जातीय।

**कौमुदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ ज्योत्स्ना। चाँदनी। जुन्हैया। २. कार्तिकी पूर्णिमा। ३ आश्विनी पूर्णिमा। ४. दीपोत्सव की तिथि। ५. कुमुदिनी। कोई।

**कौमोदी, कौमोदकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विष्णु की गदा।

**कौर**—संज्ञा पु० [ सं० कवल ] १. उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। गस्सा। निवाला। **मुहा०**—मुँह का कौर छीनना = देखते देखते किसी का अंश दबा बैठना। २. उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए डाला जाय।

**कौरना†**—क्रि० स० [ हिं० कौड़ा ] थोड़ा भूनना। सेंकना।

**कौरव**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० कौरवी ] कुरु राजा की संतान। कुरु-वंशज।

वि० [ सं० ] [ स्त्री० कौरवी ] कुरु-संबंधी।

**कौरवपति**—संज्ञा पु० [ सं० ] दुर्योधन।

**कौरा**—संज्ञा पु० [ सं० कौल ] द्वार के दोनों ओर के वे भाग जिनसे खुलने पर किवाड़े सटे रहते हैं। कौर। वह अन्न जो कुत्ते या गाय के सामने डाल दिया जाता है।

**कौरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्रोड ] अँकवार। गोद।

**कौलंज**—संज्ञा पु० [ यू० कूलंज ] पसलियों के नीचे का दर्द। बायसूल।

**कौल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे खानदान का। २ वाम मार्गी।

संज्ञा पु० [ सं० कवल ] कौर। ग्रास।

**कौल**—संज्ञा पु० [ अ० ] १. कथन। उक्ति। वाक्य। २. प्रतिज्ञा। प्रण। वादा।

**यौ०**—कौल करार = परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा।

**कौलटेय**—संज्ञा पु० [ सं० ] कुलटा का पुत्र।

**कौला**—संज्ञा पु० दे० "कौरा"।

**कौवाल**—संज्ञा पु० [ अ० ] कौवाली गानेवाला।

**कौवाली**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. एक प्रकार का भगवत्प्रेम-संबंधी गीत जो सूफियों की मजलिसों में होता है। २. इस धुन में गाई जानेवाली कोई गजल। ३ कौवालों का पेशा।

**कौशल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. कुशलता। चतुराई। निपुणता। २. मंगल। ३ कोशल देश का निवासी।

**कौशलेय**—संज्ञा पु० [ सं० ] रामचंद्र।

**कौशल्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कोशल के राजा दशरथ की प्रधान स्त्री और रामचंद्र की माता।

**कौशांबी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक बहुत प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। वत्सपट्टन।

**कौशिक**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. इंद्र। २. कुशिक राजा के पुत्र गाधि। ३. विश्वामित्र। ४ कोशाध्यक्ष। ५. कोशकार। ६ रेशमी कपड़ा। ७ शृंगार रस। ८. एक उपपुराण। ९. हनुमत् के मत से छः रागों में से एक। १०. उल्लू।

**कौशिकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंडिका। २. राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की स्त्री। ३. काव्य या नाटक में वह वृत्ति जिसमें करुण, हास्य और शृंगार रस का वर्णन हो और सरल वर्ण आवें।

**कौशिल्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

**कौशेय**—वि० [ सं० ] रेशम का। रेशमी।

**कौषिकी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशिकी"।

**कौषीतकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ऋग्वेद की एक शाखा। २ ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण और उपनिषद्।

**कौसल्य***—संज्ञा पु० दे० "कौशल"।

**कौसिक**—संज्ञा पुं० दे० "कौशिक"।

**कौसिला***†—संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।

**कौस्तुभ**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षःस्थल पर पहने रहते हैं।

**क्या**—सर्व० [सं० किम्] एक प्रश्नवाचक शब्द जो प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है। कौन वस्तु या बात?

**मुहा०**—क्या कहना है या क्या खूब!—प्रशंसासूचक वाक्य। धन्य! वाह वा! बहुत अच्छा है! क्या कुछ, क्या क्या कुछ=सब कुछ। बहुत कुछ। क्या चीज है!=ना चीज है। तुच्छ है। क्या जाता है! = क्या नुकसान होता है? कुछ हानि नहीं। क्या जानें! = कुछ नहीं जानते। ज्ञात नहीं। मालूम नहीं। क्या पड़ी है! = क्या आवश्यकता है? कुछ जरूरत नहीं। कुछ गरज नहीं। और क्या = हाँ ऐसा ही है।

वि० १. कितना? किस कदर? २. बहुत अधिक। बहुतायत से। ३. अपूर्व। विचित्र। ४ बहुत अच्छा। कैसा उत्तम!

क्रि० वि० क्यों? किस लिये?

अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द।

**क्यारा**-संज्ञा स्त्री० दे० "क्यारी"।

**क्यों**-क्रि० वि० [सं० किम्] १. किसी व्यापार या घटना के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस कारण? किस लिए? किस वास्ते?

**यौ०**—क्योंकि=इसलिये कि। इस कारण कि।

**मुहा०**—क्योंकर= किस प्रकार? कैसे? क्यों नहीं! = १. ऐसा ही है। ठीक कहते हो। निःसंदेह। बेशक। २. हाँ। जरूर। ३. कभी नहीं। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।

*२ किस भाँति? किस प्रकार?

**क्रंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोना। विलाप। २. युद्ध के समय वीरों का आह्वान।

**क्रकच**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्योतिष में एक अशुभ योग। २. करील का पेड़। ३. आरा। करवत। एक नरक।

**क्रतु**—संज्ञा पुं० [सं०] १ निश्चय। संकल्प। २. इच्छा। अभिलाषा। ३. विवेक। प्रज्ञा। ४. इंद्रिय। ५ जीव। ६ विष्णु। ७ यज्ञ, विशेषतः अश्वमेध।

**यौ०**—क्रतुपति = विष्णु। क्रतुफल = यज्ञ का फल, स्वर्ग आदि।

८. आषाढ़ मास। ९ ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से हैं।

**क्रतुध्वंसी**—संज्ञा पुं० [सं०] (दक्ष प्रजापति का यज्ञ नष्ट करनेवाले) शिव।

**क्रतुपशु**—संज्ञा पुं० [सं०] घोड़ा।

**क्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पैर रखने या डग भरने की क्रिया। २. वस्तुओं या कार्यों के परस्पर आगे-पीछे आदि होने का नियम। पूर्वापर संबंधी व्यवस्था। शैली। तरतीब। सिलसिला। ३ कार्य को उचित रूप से धीरे धीरे करने की प्रणाली।

**मुहा०** क्रम क्रम करके = धीरे धीरे। शनैः शनैः। क्रम से, क्रम क्रम से = धीरे-धीरे।

४ वेद-पाठ की एक प्रणाली। ५ किसी कृत्य के पीछे कौन सा कृत्य करना चाहिए, इसकी व्यवस्था। वैदिक विधान। कल्प। ६ वह काव्यालंकार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय।

*संज्ञा पुं० दे० "कर्म"।

**क्रमनासा***—संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनासा"।

**क्रमशः**—क्रि० वि० [सं०] १. क्रम से। सिलसिलेवार। २. धीरे-धीरे। थोड़ा थोड़ा करके।

**क्रमसंन्यास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह संन्यास जो क्रम से ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जाय।

**क्रमागत**—वि० [सं०] १. क्रमशः किसी रूप को प्राप्त। २. जो सदा से होता आया हो। परंपरागत।

**क्रमात्**—क्रि० वि० [सं०] १. क्रम या सिलसिले से। यथानुक्रम। २. क्रम-क्रम से। धीरे धीरे।

**क्रमानुकूल, क्रमानुसार**—वि०,क्रि० वि० [सं०] श्रेणी के अनुसार। क्रम से। सिलसिलेवार। तरतीब से।

**क्रमिक**—वि० [सं०] १. क्रमयुक्त। क्रमागत। २ परंपरागत। ३ क्रम क्रम से होनेवाला।

**क्रमुक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ सुपारी। नागरमोथा। ३ एक प्राचीन देश।

**क्रमेल, क्रमेलक**—संज्ञा पुं० [सं०, यूना० क्रमेलस] ऊँट।

**क्रय**—संज्ञा पुं० [सं०] मोल लेने की क्रिया। खरीदने का काम।

**यौ०**— क्रय-विक्रय=खरीदने और बेचने की क्रिया। व्यापार।

**क्रयी**—संज्ञा पुं० [सं० क्रयिन्] मोल लेनेवाला। खरीदनेवाला।

**क्रय्य** – वि० [सं०] जो बिक्री के लिए रखा जाय। जो चीज बेचने के लिए हो।

**क्रव्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मांस।

**क्रव्याद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मांस खानेवाला जीव। २ चिता की आग।

**क्रांत**—वि० [सं०] १. दबा या ढका हुआ। २ जिस पर आक्रमण हुआ हो। ग्रस्त। ३. आगे बढ़ा हुआ। जैसे—सीमाक्रांत।

**क्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कदम

रखना। गति। २. खगोल में वह कल्पित वृत्त, जिसपर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पड़ता है। अपक्रम। ३. एक दशा से दूसरी दशा में भारी परिवर्त्तन। फेरफार। उलटफेर। जैसे—राज्यक्रांति।

**क्रांतिमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह वृत्त जिसपर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।

**क्रांतिवृत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य का मार्ग।

**क्रिचयना***—संज्ञा पुं० [ सं० कृच्छ्र-चान्द्रायण ] चांद्रायण व्रत।

**क्रिमि**—संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।

**क्रिमिजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लाह। लाख।

**क्रियमाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जो किया जा रहा हो। २. वर्त्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा।

**क्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ किसी काम का होना या किया जाना। कर्म। २ प्रयत्न। चेष्टा। ३ गति। हरकत। हिलना डोलना। ४. अनुष्ठान। आरंभ। ५. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय। जैसे—आना, मारना। ६ शौच आदि कर्म। नित्य-कर्म। ७. श्राद्ध आदि प्रेत कर्म।

**यौ०**—क्रिया कर्म = अन्त्येष्टि क्रिया। ८ उपचार। चिकित्सा।

**क्रियाचतुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्रिया या घात में चतुर नायक।

**क्रियातिपत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह काव्यालंकार जिसमें प्रकृत से भिन्न, कल्पना करके, किसी विषय का वर्णन किया जाय। यह अतिशयोक्ति का एक भेद है।

**क्रियात्मक**—वि० [ सं० ] क्रिया के रूप में किया हुआ जो वस्तुतः कर दिख-लाया गया हो।

**क्रियानिष्ठ**—वि० [ सं० ] संध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला।

**क्रियायोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं की पूजा करना और मंदिर आदि बन-वाना।

**क्रियार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि-वाक्य।

**क्रियावान्**—वि० [ सं० ] कर्मनिष्ठ। कर्मठ।

**क्रियाविदग्धा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करे।

**क्रिया-विशेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो। जैसे—कैसे, धीरे, क्रमशः, अचानक इत्यादि।

**क्रिस्तान**—संज्ञा पुं० [ अं० क्रिश्चियन् ] ईसा के मत पर चलनेवाला। ईसाई।

**क्रिस्तानी**—वि० [ हिं० क्रिस्तान + ई (प्रत्य०) ] १ ईसाइयों का। २. ईसाई-मत के अनुसार।

**क्रीट***—संज्ञा पुं० दे० "किरीट"।

**क्रीड़न**—संज्ञा पुं० दे० "क्रीड़ा"।

**क्रीड़ना**—क्रि० अ० [ सं० ] क्रीड़ा करना। खेलना।

**क्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. केलि। आमोद-प्रमोद। खेल-कूद। २. एक छंद या वृत्त।

**क्रीड़ाचक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छः यगणों का एक वृत्त या छंद। महामा-दकरी।

**क्रीड़ित**—वि० [ सं० ] जिससे क्रीड़ा की जाय। क्रीड़ा के काम में आया हुआ।

**क्रीत**—वि० [ सं० ] खरीदा हुआ। संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "क्रीतक"। २. पंद्रह प्रकार के दासों में से वह जो मोल लिया गया हो।

**क्रीतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बारह प्रकार के पुत्रों में से एक, जो माता पिता को धन देकर उनसे खरीदा गया हो।

**क्रुद्ध**—वि० [ सं० ] कोपयुक्त। क्रोध मे भरा हुआ।

**क्रूर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० क्रूरा ] १. पर-पीड़क। दूसरों को कष्ट पहुंचा-नेवाला। २ निर्दय। जालिम। ३. कठिन। ४. तीक्ष्ण।

**क्रूरकर्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्रूर काम करनेवाला।

**क्रूरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. निष्ठुरता। निर्दयता। कठोरता। २. दुष्टता।

**क्रूरात्मा**—वि० [ सं० ] दुष्ट प्रकृति-वाला।

**क्रूस**—संज्ञा पुं० [ अं० क्रास ] ईसा-इयों का एक धर्म-चिह्न जो उस सूली का सूचक है जिस पर ईसामसीह चढ़ाये गये थे।

**क्रेता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खरीदने-वाला। मोल लेनेवाला। खरीददार।

**क्रोड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आलिं-गन में दोनों बाँहों के बीच का भाग। भुजांतर। वक्षःस्थल। २. गोद। अँक-वार। कोल।

**क्रोड़पत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र में उसकी पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय। परिशिष्ट। पूरक।

**क्रोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चित्त का उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।

**क्रोधवंत***—वि० दे० "क्रुद्ध"।

**क्रोधित***—वि० [ हिं० क्रोध ] कुपित। क्रुद्ध।

**क्रोधी**—वि० [ सं० क्रोधिन् ] [ स्त्री० क्रोधिनी] क्रोध करनेवाला। गुस्सावर।
**क्रोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कोस।
**क्रौंच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. करौंकुल नामक पक्षी। २. हिमालय का एक पर्वत। ३. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। ४. एक प्रकार का अस्त्र। ५. एक वर्णवृत्त।
**क्लब**—संज्ञा पुं० [ अं० ] सार्वजनिक विषयों के विचार या आमोद-प्रमोद के लिए बनी संस्था या समिति।
**क्लर्क**—संज्ञा पुं० [ अं० ] कार्यालय का मुंशी। मुहर्रिर।
**क्लांत**—वि० [ सं० ] थका हुआ। श्रांत।
**क्लांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. परिश्रम। २. थकावट।
**क्लिप**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] कागज या बालों आदि को दबाने की कमानी।
**क्लिशित**—वि० [ सं० ] दे० "क्लेशित"।
**क्लिष्ट**—वि० [ सं० ] १. क्लेशयुक्त। दुखी। दुःख से पीड़ित। बेमेल (बात)। पूर्वापर विरुद्ध (वाक्य)। ३. कठिन। मुश्किल। ४. जो कठिनता से सिद्ध हो।
**क्लिष्टता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्लिष्ट का भाव।
**क्लिष्टत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ क्लिष्ट का भाव। कठिनता। क्लिष्टता। २ काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने में कठिनता होती है।
**क्लीव**—वि० पुं० [ सं० ] १ षंढ। नपुंसक। नामर्द। २. डरपोक। कायर।
**क्लीवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] क्लीव का भाव।
**क्लीवत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नपुंसकता।
**क्लेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गीलापन। आर्द्रता। २. पसीना।
**क्लेदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पसीना लानेवाला। २. शरीर में एक प्रकार का कफ जिससे पसीना उत्पन्न होता है। ३. शरीर में की दस प्रकार की अग्नियों में से एक।
**क्लेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दुःख। कष्ट। व्यथा। वेदना। † २ झगड़ा। लड़ाई।
**क्लेशित**—वि० [ सं० ] जिसे क्लेश हो। दुःखित। पीड़ित।
**क्लैब्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्लीवता।
**क्लोम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दाहिनी ओर का फेफड़ा। फुप्फुस।
**क्वचित्**—क्रि० वि० [ सं० ] कोई हो। शायद ही कोई। बहुत कम।
**क्वण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ घुँघरू का शब्द। २ वीणा की झंकार।
**क्वणित**—वि० [ सं० ] १ शब्द करता हुआ। गुंजार करता हुआ। २. बजता हुआ।
**क्वाँरा**—संज्ञा पुं० दे० "क्वारा"।
**क्वाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पानी में उबालकर ओषधियों का निकाला हुआ गाढ़ा रस। काढ़ा।
**क्वान*** संज्ञा पुं० दे० "क्वण"।
**क्वारपन**—संज्ञा पुं० [ हिं० क्वारा + पन ( प्रत्य० )] क्वारापन। कुमारपन। क्वारा का भाव।
**क्वारा**—संज्ञा पुं०, वि० [सं० कुमार] [ स्त्री० क्वारी ] जिसका विवाह न हुआ हो। कुँआरा। बिन ब्याहा।
**क्वारापन**—संज्ञा पुं० दे० "क्वारपन"।
**क्वारेंटाइन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] वह स्थान जहाँ बाहर से आये हुए लोग इसलिए कुछ समय तक रोक रखे जाते हैं कि उनके द्वारा कोई संक्रामक रोग देश में न फैले।
**क्वासि**—वाक्य [ सं० ] तू कहाँ है? तू किस स्थान पर है?
**क्वैला**—संज्ञा पुं० दे० "कोयला"।
**क्षंतव्य**—वि० दे० "क्षम्य"।
**क्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० क्षणिक] १. काल या समय का सबसे छोटा भाग। पल का चतुर्थांश।
**मुहा०**—क्षण मात्र = थोड़ी देर। २. काल। ३. अवसर। मौका। ४. समय। ५. उत्सव। पर्व का दिन।
**क्षणदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रात।
**क्षणप्रभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बिजली।
**क्षणभंगुर**—वि० [ सं० ] शीघ्र या क्षण भर में नष्ट होनेवाला। अनित्य।
**क्षणिक**—वि० [ सं० ] एक क्षण रहनेवाला। क्षणभंगुर। अनित्य।
**क्षणिकवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु का उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नाश हो जाना माना जाता है।
**क्षणिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बिजली।
**क्षणेक**—क्रि० [ वि० [सं० क्षण+एक ] क्षण भर। बहुत थोड़ी देर तक।
**क्षत**—वि० [ सं० ] जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो। घाव लगा हुआ। संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घाव। जख्म। २. व्रण। फोड़ा। ३. मारना। काटना। ४ क्षति या आघात पहुँचाना।
**क्षतज**—वि० [ सं० ] १. क्षत से उत्पन्न। जैसे-क्षतज शोथ। २. लाल। सुर्ख। संज्ञा पुं० [ सं० ] रक्त। रुधिर। खून।
**क्षतयोनि**—वि० [ सं० ] ( स्त्री० ) जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो।

**क्षत-विक्षत**—वि० [ सं० ] जिसे बहुत चोटें लगी हों। घायल। लहू-लुहान।

**क्षतव्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान।

**क्षता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह कन्या जिसका विवाह से पहले ही किसी पुरुष से दूषित संबंध हो चुका हो।

**क्षताशौच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अशौच जो किसी मनुष्य को घायल या जख्मी होने के कारण लगता है।

**क्षति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हानि। नुकसान। २. क्षय। नाश।

**क्षत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बल। २. राष्ट्र। ३. धन। ४. शरीर। ५ जल। [ स्त्री० क्षत्राणी ] क्षत्रिय।

**क्षत्रकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षत्रियोचित कर्म।

**क्षत्रधर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षत्रियों का धर्म। यथा:—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजापालन करना आदि।

**क्षत्रप**—संज्ञा पुं० [सं० या पुं० फा०] ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि जो भारत के शक राजाओं ने ग्रहण की थी।

**क्षत्रपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा।

**क्षत्रयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिष में राजयोग।

**क्षत्रवेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धनुर्वेद।

**क्षत्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी ] १. हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना है। २. राजा।

**क्षत्री**—संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय"।

**क्षपणक**—वि० [ सं० ] निर्लज्ज। संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नंगा रहनेवाला जैन यती। दिगंबर यती। २. बौद्ध सन्यासी।

**क्षपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रात। रात्रि।

**क्षपाकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा। २. कपूर।

**क्षपाचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० क्षपाचरी ] निशाचर। राक्षस।

**क्षपानाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**क्षम**—वि० [ सं० ] सशक्त। योग्य। समर्थ। उपयुक्त। (यौगिक में) जैसे—कार्यक्षम।

संज्ञा पुं० [ सं० ] शक्ति। बल।

**क्षमणीय**—वि० [ सं० ] क्षमा करने योग्य।

**क्षमता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] योग्यता। सामर्थ्य।

**छमना***—क्रि० स० दे० "छमना"।

**क्षमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चित्त की एक वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाए हुए कष्ट को चुपचाप सह लेता है और उसके प्रतिकार या दंड की इच्छा नहीं करता। क्षांति। माफी। २. सहिष्णुता। सहनशीलता। ३ पृथ्वी। ४. एक की संख्या। ५ दक्ष की एक कन्या। ६. दुर्गा। ७ तेरह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**छमाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० क्षमा ] क्षमा करने की क्रिया।

**छमाना***—क्रि० स० दे० "छमाना"

**क्षमालु**—वि० [ सं० ] क्षमाशील। क्षमावान्।

**क्षमावान्**—वि० पुं० [ सं० क्षमावत् ] [ स्त्री० क्षमावती ] १. क्षमा करनेवाला। माफ करनेवाला। २. सहनशील। गमखोर।

**क्षमाशील**—वि० [ सं० ] १. माफ करनेवाला। क्षमावान्। २. शांत प्रकृति

**क्षमितव्य**—वि० [ सं० ] क्षमा करने योग्य।

**क्षमी**—वि० [ सं० क्षमा + ई (प्रत्य०) १. क्षमाशील। माफ करनेवाला। २. शांत प्रकृति।

वि० [ सं० क्षम ] समर्थ। सशक्त।

**क्षम्य**—वि० [सं०] माफ करने योग्य। जो क्षमा किया जाय। क्षंतव्य

**क्षय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० क्षयित्व ] १ धीरे धीरे घटना। ह्रास। अपचय। २ प्रलय। कल्पांत। ३. नाश। ४. घर। मकान। ५. यक्ष्मा नामक रोग। क्षयी। ६. अंत। समाप्ति। ७ ज्योतिष में बहुत दिनों पर पड़नेवाला एक मास या महीना जिसमें दो संक्रांतियाँ होती हैं और जिसके तीन मास पहले और तीन मास के पीछे एक एक अधिमास पड़ता है।

**क्षय पक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्ण पक्ष।

**क्षयिष्णु**—वि० [ सं० ] क्षय या नष्ट होनेवाला।

**क्षयी**—वि० [ सं० ] १. क्षय होनेवाला। नष्ट होनेवाला। २ जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो।

संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षय ] एक प्रसिद्ध असाध्य रोग जिसमें रोगी का फेफड़ा सड़ जाता और सारा शरीर धीरे धीरे गल जाता है। तपेदिक। यक्ष्मा।

**क्षय्य**—वि० [सं०] क्षय होने के योग्य।

**क्षर**—वि० [ सं० ] नाशवान्। नष्ट होनेवाला।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जल। २ मेघ। ३ जीवात्मा। ४. शरीर। ५ अज्ञान।

**क्षरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रस रसकर चूना। स्राव होना। रसना। २. झगड़ा। ३ नाश या क्षय होना। ४ छूटना।

**क्षांत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० क्षांता ] १. क्षमाशील। क्षमा करनेवाला। २. सहनशील।

**क्षांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सहिष्णुता। सहनशीलता। २. क्षमा।

**क्षात्र**—वि० [ सं० ] क्षत्रिय-संबंधी। क्षत्रियों का।

संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षत्रियत्व। क्षत्रियपन

**क्षाम**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० क्षामा ] १. क्षीण। कृश। दुबला पतला।

**यौ०**—क्षामोदरी—पतली कमरवाली। ( स्त्री )।

२. दुर्बल। कमजोर। ३ अल्प। थोड़ा।

**क्षार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दाहक, जारक या विस्फोटक ओषधियों को जलाकर या खनिज पदार्थों को पानी में घोलकर रासायनिक क्रिया द्वारा साफ करके तैयार की हुई राख का नमक। खार। खारी। २ नमक। ३ सज्जी। खार। ४ शोरा। ५. सुहागा। ६ भस्म। राख।

वि० [सं०] १. क्षरणशील। २. खारा।

**क्षारलवण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खारी नमक।

**क्षालन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धोना।

**क्षालित**—वि० [ सं० ] धुला हुआ।

**क्षिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथिवी। २. वासस्थान। जगह। ३. गोरोचन। ४ क्षय। ५. प्रलय-काल।

**क्षितिज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मंगल ग्रह। २. नरकासुर। ३. केंचुआ। ४. वृक्ष। पेड़। ५ खगोल में वह तिर्य्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अंश हो। ६ दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं।

**क्षिप्त**—वि० [ सं० ] १. फेंका हुआ। त्यागा हुआ। २. विकीर्ण। ३. अवज्ञात। अपमानित। ४ पतित। ५. वात रोग से ग्रस्त। ६. उचटा हुआ। चंचल।

संज्ञा पुं० चित्त की पाँच अवस्थाओं में से एक। ( योग )

**क्षिप्र**—क्रि० वि० [ सं० ] १. शीघ्र। जल्दी। २ तत्क्षण। तुरंत।

वि० [ सं० ] १. तेज। जल्द। २. चंचल।

**क्षिप्रहस्त**—वि० [ सं० ] शीघ्र या तेज काम करनेवाला।

**क्षीण**—वि० [ सं० ] १ दुबला-पतला। २. सूक्ष्म। ३ क्षयशील। ४. घटा हुआ। जो कम हो गया हो।

**क्षीणचंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चंद्रमा।

**क्षीणता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्बलता। कमजोरी। २ दुबलापन। ३. सूक्ष्मता।

**क्षीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूध। पय।

**यौ०**—क्षीरसार = मक्खन।

२ द्रव या तरल पदार्थ। ३. जल। पानी। ४ पेड़ों का रस या दूध। ५ खीर।

**क्षीरकाकोली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की काकोली जड़ी जो अष्ट वर्ग के अंतर्गत है।

**क्षीरज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २ शंख। ३. कमल। ४ दही।

**क्षीरजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लक्ष्मी।

**क्षीरधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**क्षीरनिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**क्षीरव्रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केवल दूध पीकर रहने का व्रत। पयाहार।

**क्षीरसागर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है।

**क्षीरिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. क्षीर-काकोली। २. खिरनी।

**क्षीरोद**—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर-समुद्र।

**यौ०**—क्षीरोद तनया = लक्ष्मी।

**क्षुण्ण**—वि० [सं०] १ अभ्यस्त। २ दलित। ३ टुकड़े टुकड़े किया हुआ। ४ खंडित।

**क्षुत**—संज्ञा [ सं० ] भूख। क्षुधा।

**क्षुद्र** वि० [ सं० ] १. कृपण। कंजूस। २. अधम। नीच। ३. अल्प। छोटा या थोड़ा। ४. क्रूर। खोटा। ५ दरिद्र।

**क्षुद्रघंटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. घुंघरूदार करधनी। २ घुँघरू।

**क्षुद्रता**—संज्ञा स्त्री०[सं०] १. नीचता। कमीनापन। २. ओछापन।

**क्षुद्रप्रकृति**—वि० [ सं० ] ओछे या या खोटे स्वभाववाला। नीच प्रकृति का।

**क्षुद्रबुद्धि**—वि० [ सं० ] १ दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। २ नासमझ। मूर्ख।

**क्षुद्रा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वेश्या। २ अमलोनी। लोनी। ३ मधुमक्खी।

**क्षुद्रावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] क्षुद्रघंटिका।

**क्षुद्राशय**—वि० [सं०] नीच-प्रकृति। कमीना। "महाशय" का उलटा।

**क्षुधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० क्षुधित, क्षुधालु ] भोजन करने की इच्छा। भूख।

**क्षुधातुर**—वि० [ सं० ] भूखा।

**क्षुधावंत**—वि० दे० "क्षुधावान्"।

**क्षुधावान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० क्षुधावती] जिसे भूख लगी हो। भूखा।

**क्षुधित** वि० [ सं० ] भूखा।

**क्षुप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छोटी डालियोंवाला वृक्ष। पौधा। झाड़ी।

**क्षुब्ध**—वि० [ सं० ] १ चंचल। अधीर। २. व्याकुल। विह्वल। ३.

भयभीत। डरा हुआ। ४. कुपित। क्रुद्ध।

**क्षुभित**—वि० [ सं० ] क्षुब्ध।

**क्षुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ छुरा। उस्तरा। २ पशुओं के पाँव का खुर।

**क्षुरधार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक नरक। २. एक प्रकार का बाण।

**क्षुरप्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक प्रकार का बाण। २ खुरपा।

**क्षुरिका**—संज्ञा पुं० [सं०] १ छुरी। चाकू। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्।

**क्षुरी**—संज्ञा पुं० [सं० क्षुरिन्] [ स्त्री० क्षुरिनी ] १. नाई। हज्जाम। २. वह पशु जिसके पाँव में खुर हो।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छुरी। चाकू।

**क्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह स्थान जहाँ अन्न बोया जाता है। खेत। २. समतल भूमि। ३ उत्पत्ति स्थान। ४. स्थान। प्रदेश। ५ तीर्थ स्थान। ६ स्त्री। जोरू। ७ शरीर। बदन। ८ अंतःकरण। ९. वह स्थान जो रेखाओं से घिरा हुआ हो।

**क्षेत्रगणित**—संज्ञा पु० [ सं० ] क्षेत्रों के नापने और उनका क्षेत्रफल निकालने की विधि बतानेवाला गणित।

**क्षेत्रज**—वि० [ सं० ] जो क्षेत्र से उत्पन्न हो।

संज्ञा पु० [सं०] वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की बिना संतानवाली स्त्री के गर्भ से दूसरे पुरुष द्वारा उत्पन्न हो।

**क्षेत्रज्ञ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २ परमात्मा। ३ किसान। खेतिहर।

वि० [ सं० ] जानकार। ज्ञाता।

**क्षेत्रपति**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. खेतिहर। २. जीवात्मा। ३. परमात्मा।

**क्षेत्रपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ खेत का रखवाला। क्षेत्ररक्षक। २. एक प्रकार के भैरव। ३. द्वारपाल। ४. किसी स्थान का प्रधान प्रबंधकर्त्ता। भूमिया।

**क्षेत्रफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी क्षेत्र का वर्गात्मक परिमाण। रकबा।

**क्षेत्रविद्**—संज्ञा पुं० [सं०] जीवात्मा।

**क्षेत्री**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षेत्रिन् ] १. खेत का मालिक। २ नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति। ३ स्वामी।

**क्षेप**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ फेंकना। २. ठोकर। घात। ३. अक्षांश। शर। ४. निंदा। बदनामी। ५ दूरी। ६. बिताना। गुजारना। जैसे—कालक्षेप।

**क्षेपक**—वि० [ सं० ] १. फेंकनेवाला। २ मिलाया हुआ। मिश्रित। ३. निंदनीय।

संज्ञा पु० [ सं० ] ऊपर से या पीछे से मिलाया हुआ अंश।

**क्षेपण**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ फेंकना। २ गिराना। ३ बिताना। गुजारना।

**क्षेमंकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार की चील जिसका गला सफेद होता है। २. एक देवी।

**क्षेम**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. प्राप्त वस्तु की रक्षा। सुरक्षा। हिफाजत।

**यौ०**- योग-क्षेम।

२ कुशल। मंगल। ३. अभ्युदय। ४. सुख। आनंद। ५. मुक्ति।

**क्षैण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षीण का भाव।

**क्षोणि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। २. एक की संख्या।

**क्षोणिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा।

**क्षोणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणि"।

**क्षोभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० क्षुब्ध, क्षुभित ] १. विचलता। खलबली। २. व्याकुलता। घबराहट। ३. भय। डर। ४ रंज। शोक। ५. क्रोध।

**क्षोभण**—वि० [ सं० ] क्षोभित करनेवाला। क्षोभक।

संज्ञा पु० [ सं० ] काम के पाँच बाणों में से एक।

**क्षोभित*** - वि० [ सं० क्षोभ ] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. विचलित। चलायमान। ३. डरा हुआ। भयभीत। ४. क्रुद्ध।

**क्षोभी**—वि० [ सं० क्षोभिन् ] उद्वेगशील। व्याकुल। चचल।

**क्षोम**—संज्ञा पु० दे० "क्षौम"।

**क्षौणि, क्षौणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। २. एक को संख्या।

**क्षौद्र**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ क्षुद्र का भाव। क्षुद्रता। २ छोटी मक्खी का मधु। ३. जल।

**क्षौम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। २ वस्त्र। कपड़ा।

**क्षौर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हजामत।

**क्षौरिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाई। हज्जाम।

**क्ष्मा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। धरती। २. एक की संख्या।

**क्ष्वेड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अव्यक्त शब्द या ध्वनि। २ विष। जहर। ३. शब्द। ध्वनि।

वि० [ सं० ] १. छिछोरा। २ कपटी।

# ख

**ख**—हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर ।

**खं**—संज्ञा पुं० [ सं० खम् ] १. शून्य स्थान । खाली जगह । २ बिल । छिद्र । ३. आकाश । ४ निकलने का मार्ग । ५. इंद्रिय । ६ बिंदु । शून्य । ७. स्वर्ग । ८. सुख. । ६ ब्रह्म । १० मोक्ष । निर्वाण ।

**खंख**—वि० [ सं० कंक ] १. छूछा । खाली । २. उजाड़ । वीरान ।

**खखरा**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] ताँबे का बड़ा देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है ।

वि० [ देश० ] १. जिसमें बहुत से छेद हों । २. जिसकी बुनावट घनी या ठस न हो । झीना ।

**खँखार**—संज्ञा पुं० दे० "खखार" ।

**खंग**—संज्ञा पुं० [ सं० खड्ग ] १ तलवार । २. गैंडा ।

**खँगना**†—क्रि० अ० [ सं० क्षय ] कम होना । घट जाना ।

**खँगड़ा**—वि० दे० "खँगैल" ।

**खँगालना**—क्रि० स० [ सं० क्षालन ] १. हलका धोना । थोड़ा धोना । २. सब कुछ उड़ा ले जाना । खाली कर देना ।

**खँगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खँगना ] कमी । घटी ।

**खँगैल**—वि० [ हिं० खांग ] जिसे खाँग या दाँत निकले हों ।

**खँघारना**—क्रि० स० दे० "खँगालना" ।

**खँचना**†—क्रि० अ० [ हिं० खाँचना ] चिह्नित होना । निशान पड़ना ।

**खँचाना**†—क्रि० स० [ हिं० खाँचना ] १. अंकित करना । चिह्न बनाना । २ जल्दी जल्दी लिखना । ३. दे० "खींचना" ।

**खँचिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "खाँची" ।

**खंज**†—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक रोग जिसमें मनुष्य का पैर जकड़ जाता है । २ लँगड़ा ।

**खंजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लँगड़ा ।

*संज्ञा पुं० [ सं० खजन ] खंजन पक्षी ।

**खँजड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खँजरी" ।

**खंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् से लेकर शीतकाल तक दिखाई देता है । खँड़रिच । ममोला । २ खँड़रिच के रंग का घोड़ा ।

**खंजर**—संज्ञा पुं० [ फा० ] कटार ।

**खँजरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खजरीट = एक ताल ] डफली की तरह का एक छोटा बाजा ।

संज्ञा स्त्री० [ फा० खंजर ] १ रंगीन कपड़ों की लहरिएदार धारी । २. धारीदार कपड़ा ।

**खंजरीट**—संज्ञा पुं० [सं०] ममोला । खंजन ।

**खंजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णार्द्ध समवृत्त ।

**खंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाग । टुकड़ा । हिस्सा । २. देश । वर्ष । ३. नौ की संख्या । ४. समीकरण की एक क्रिया । (गणित) । ५ खाँड़ । चीनी । ६. दिशा । दिक् ।

वि० १. खंडित । अपूर्ण । २. छोटा । लघु ।

संज्ञा पुं० [ सं० खड्ग ] खाँड़ा ।

**खंडकथा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कथा का एक भेद जिसमें मंत्री अथवा ब्राह्मण नायक होता है और चार प्रकार का विरह रहता है ।

**खंडकाव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छोटा कथात्मक प्रबंधकाव्य । जैसे—मेघदूत ।

**खंडन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० खंडनीय, खंडित ] १. तोड़ने-फोड़ने की क्रिया । भंजन । छेदन । २. किसी बात को अयथार्थ ठहराना । बात काटना । मंडन का उलटा ।

**खँडना**†—संज्ञा पुं० [ सं० खंड ] एक प्रकार का नमकीन पकवान ।

**खंडना***—क्रि० स० [ सं० खंडन ] १ टुकड़े टुकड़े करना । तोड़ना । २ बात काटना ।

**खंडनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खंडन ] मालगुजारी की किश्त । कर ।

**खंडनीय**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तोड़ने फोड़ने लायक । २. खंडन करने योग्य । ३. जो अयुक्त ठहराया जा सके ।

**खंडपरशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ महादेव । शिव । २ विष्णु । ३. परशुराम ।

**खंडपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] हलवाई ।

**खंडपूरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाँड़ + पूरी ] एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी ।

**खंडप्रलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है ।

**खंडबरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खाँड़ + बरा ] मीठा बड़ा । ( पकवान )

**खंडमेरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिंगल में एक क्रिया ।

**खंडर**—संज्ञा पुं० दे० "खँडहर" ।

**खंडरना**—क्रि० स० दे० "खंडना" ।

**खँडरा**—संज्ञा पुं० [ सं० खंड + हिं० बरा] बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा ।

**खँडरिच**—संज्ञा पुं० [ सं० खंजरीट ] खंजन पक्षी ।

**खँडवानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाँड़ +

पानी ] १. खाँड़ का रस। शरबत। २ कन्या पक्षवालों की ओर से बरातियों को जलपान या शरबत में मेजने की क्रिया।

**खँड़साल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खंड + शाला ) ] खाँड़ या शक्कर बनाने का कारखाना।

**खँड़हर**—संज्ञा पुं० [ सं० खंड + हिं० घर ] किसी टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।

**खंडित**—वि० [ सं० ] १. टूटा हुआ। भग्न। २ जो पूरा न हो। अपूर्ण।

**खंडिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सबेरे उसके पास आवे।

**खँड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खंड ] छोटा टुकड़ा।

**खँडौरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० खाँड़ + औरा (प्रत्य०) ] मिसरी का लड्डू। ओला।

**खंतरा**—संज्ञा पुं० [ सं० कांतर या हिं० अँतरा ] १ दरार। खोंडरा। २ कोना। अँतरा।

**खंता**†—संज्ञा पुं० [ सं० खनित्र ] [ स्त्री० अल्पा० खनी ] १ कुदाल। २. फावड़ा। ३ गैनी।

**खंदक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ शहर या किले के चारों ओर की खाई। २ बड़ा गड्ढा।

**खंदा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० खनना ] खोदनेवाला।

**खँधवाना**—क्रि० स० [ हिं० खाली ] खाली कराना।

**खँधार***†—संज्ञा पुं० [ सं० स्कंधावार] १ स्कंधावार। छावनी। २ डेरा। खेमा।

संज्ञा पुं० [ सं० खड्गाल ] सामंत राजा। सरदार।

**खँधियाना**†—क्रि० स० [ हिं० खाली ] बाहर निकालना। खाली करना।

**खंभ**—संज्ञा पुं० दे० "खंभा"।

**खंभा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्कंभ या स्तंभ] [ स्त्री० खँभिया ] १. पत्थर या काठ का लंबा खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है। स्तंभ। २ बड़ी लाट। पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा।

**खंभार***†—संज्ञा पुं० [ सं० क्षोभ, प्रा० खोभ ] १. अंदेशा। चिंता। २. घबराहट। व्याकुलता। ३. डर। भय। ४ शोक।

**खँभिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खंभा ] छोटा पतला खंभा।

**खँसना***—क्रि० अ० दे० "खसना"।

**ख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गड्ढा। गर्त। २ खाली स्थान। ३. निर्गम। निकास। ४. छेद। बिल। ५ इंद्रिय। ६. गले की वह नाली जिससे प्राणवायु आती जाती है। ७ कुआँ। ८. तीर का घाव। ९ आकाश। १० स्वर्ग। ११ सुख। १२. कर्म। १३ बिंदु। सिफर। १४. ब्रह्म। १५ शब्द।

**खई***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षयी ] १ क्षय। २ लड़ाई। युद्ध। ३. तकरार। झगड़ा।

**खक्खा**—संज्ञा पुं० [ अ० कहकहा ] जोर की हँसी। अट्टहास। कहकहा। २. अनुभवी पुरुष। ३. बड़ा और ऊँचा हाथी।

**खखार**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] गाढ़ा थूक या कफ जो खखारने से निकले। कफ।

**खखारना**—क्रि० अ० [ अनु० ] थूक या कफ बाहर करने के लिये गले से शब्द सहित वायु निकालना।

**खखेटना***—क्रि० स० [सं० आखेट] १. दबाना। २. भगाना। ३. घायल करना।

**खखेटा**—संज्ञा पुं० [ ? ] १. छिद्र। छेद। २. शंका। खटका।

**खग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकाश में चलनेवाली वस्तु या व्यक्ति। २. पक्षी। चिड़िया। ३. गंधर्व। ४ बाण। तीर। ५. ग्रह। तारा। ६. बादल। ७. देवता। ८. सूर्य्य। ९ चंद्रमा। १०. वायु।

**खगकेतु**—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

**खगना***†—क्रि० अ० [ हिं० खाँग= काँटा ] १. चुभना। धँसना। २ चित्त में बैठना। मन में धँसना। ३. लग जाना। लिप्त होना। ४. चिह्नित हो जाना। उपट आना ५. अटक रहना। अड़ जाना।

**खगनाथ, खगनायक, खगपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. गरुड़।

**खगेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गरुड़।

**खगोल**—संज्ञा पुं० [ सं०] १. आकाशमंडल। २. खगोलविद्या।

**खगोलविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह विद्या जिससे आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान प्राप्त हो। ज्योतिष।

**खग्ग***—संज्ञा पुं० [ सं० खड्ग ] तलवार।

**खग्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य्य या चंद्र का सारा मंडल ढँक जाय।

**खचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० खचित ] १ बाँधने या जड़ने की क्रिया। २ अंकित करने या होने की क्रिया।

**खचना***—क्रि० अ० [ सं० खचन ] १. जड़ा जाना। २ अंकित होना। चित्रित होना। ३. रम जाना। अड़

-आना। ४. अटक जाना। फँसना।
क्रि० स० १. जड़ना। २. अंकित करना।

**खचर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. मेघ। ३. ग्रह। ४. नक्षत्र। ५ वायु। ६. पक्षी। ७. बाण। तीर।
वि० आकाश में चलनेवाला।

**खचरा**—वि० [हिं० खच्चर] १. वर्णसंकर। दोगला। २. दुष्ट। पाजी।

**खचाखच**—क्रि० वि० [अनु०] बहुत भरा हुआ। ठसाठस।

**खचित**—वि० [सं०] खींचा हुआ। चित्रित या लिखित।

**खचेरना***—क्रि० स० [हिं० खदेड़ना] दगाना। अभिभूत करना।

**खच्चर**—संज्ञा पुं० [देश०] गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।

**खज***—वि० [सं० खाद्य, प्रा० खज्ज] खाने योग्य। जो खाया जा सके। भक्ष्य।

**खजला**—संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।

**खजहजा***—संज्ञा पुं० [सं० खाद्याद्य] खाने योग्य उत्तम फल या मेवा।

**खजानची**—संज्ञा पुं० [फा०] खजाने का अफसर। कोषाध्यक्ष।

**खजाना**—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज संग्रह करके रखी जाय। धनागार। २. राजस्व। कर।

**खजीना**—संज्ञा पुं० दे० "खजाना"।

**खजुआ**†—संज्ञा पुं० दे० "खाजा"।

**खजुरा**†—संज्ञा पुं० [हिं० खजूर] स्त्रियों के सिर की चोटी गूँथने की डोरी।

**खजुली**†—संज्ञा स्त्री० दे० "खुजली"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० खाजा] खाजे की तरह की एक मिठाई।

**खजूर**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० खजूर] १. ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। २. एक प्रकार की मिठाई।

**खजूरी**—वि० [हिं० खजूर] १ खजूर-संबंधी। खजूर का। २. खजूर के आकार का। ३ तीन लर का गूँथा हुआ।

**खट**—संज्ञा पुं० [अनु०] दो चीजों के टकराने या किसी कड़ी चीज के टूटने से उत्पन्न शब्द। ठोकने पीटने की आवाज।
मुहा०—खट से = तुरन्त। तत्काल।

**खटक**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] खटका। चिंता। वेदना।

**खटकना**—क्रि० अ० [अनु०] १. 'खटखट' शब्द होना। टकराने या टूटने का सा शब्द होना। २ रह रहकर पीड़ा होना। ३ बुरा मालूम होना। खलना। ४ विरक्त होना। उचटना। ५ डरना। भय करना। ६. परस्पर झगड़ा होना। ७. अनिष्ट की भावना या आशंका होना। ८ ठीक न जान पड़ना। ९. मन में चिंता उत्पन्न करना।

**खटका**—संज्ञा पुं० [हिं० खटकना] १ 'खट-खट' शब्द। टकराने या पीटने का सा शब्द। २ डर। भय। आशंका। ३ चिंता। फिक्र। ४. किसी प्रकार का पेंच या कमानी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई वस्तु खुलती या बंद होती हो। ५. किवाड़ की सिटकिनी। बिल्ली। ६ पेड़ में बँधा बाँस का वह टुकड़ा जिसे हिलाकर चिड़िया उड़ाते हैं।

**खटकाना**—क्रि० स० [हिं० खटकना] १. 'खटखट' शब्द करना। ठोकना। हिलाना या बजाना। २ शंका उत्पन्न करना।

**खटकीड़ा**—संज्ञा पुं० दे० 'खटमल'।

**खटखट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. ठोकने पीटने का शब्द। २. झंझट। झमेला। ३. लड़ाई। झगड़ा। रार।

**खटखटाना**—क्रि० स० [अनु०] 'खट खट' शब्द करना। खड़खड़ाना।

**खटना**—क्रि० स० [?] धन कमाना।
क्रि० अ० काम-धंधे में लगना।

**खटपट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. अनबन। लड़ाई। झगड़ा। २ ठोंकने-पीटने या टकराने का शब्द।

**खटपटिया**—वि० [अनु०] झगड़ालू।
संज्ञा स्त्री० [अ०] खड़ाऊँ।

**खटपद**—संज्ञा पुं० दे० "षट्पद"।

**खटपाटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाट + पाटी] खाट की पाटी।

**खटबुना**—संज्ञा पुं० [हिं० खाट + बुनना] चारपाई आदि बुननेवाला।

**खटमल**—संज्ञा पुं० [हिं० खाट + मल = मैल] लाल रंग का एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में उत्पन्न होता है। खटकीड़ा।

**खटमिट्ठा**—वि० [हिं० खट्टा + मीठा] कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

**खटमुख**—संज्ञा पुं० दे० "षट्मुख"।

**खटरस**—संज्ञा पुं० दे० "षट्रस"।

**खटराग**—संज्ञा पुं० दे० "षड्राग"।
संज्ञा पुं० [सं० षड्राग] १ झंझट। बखेड़ा। २. व्यर्थ और अनावश्यक चीजें।

**खटवाट**—संज्ञा स्त्री० दे० "खटपाटी"।

**खटाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खट्टा] १. खट्टापन। तुर्शी। २ खट्टी चीज।
मुहा०—खटाई में डालना = दुविधा में डालना। कुछ निर्णय न करना।

**खटाका**—संज्ञा पुं० [अ०] 'खट' शब्द।
क्रि० वि० जल्दी। तुरत।

**खटाखट**—संज्ञा पुं० [अनु०] ठोकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द।
क्रि० वि० १ खटखट शब्द के साथ। २ जल्दी जल्दी। बिना रुकावट के।

**खटाना**—क्रि० अ० [ हिं० खट्टा ] किसी वस्तु में खट्टापन आ जाना। खट्टा होना।

क्रि० अ० [ सं० स्कन्ध ] १. निर्वाह होना। गुजारा होना। निभना। २ ठहरना। ३. जाँच में पूरा उतरना।

**खटापटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट"।

**खटाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० खटाना ] निर्वाह। गुजर।

**खटास**—संज्ञा पुं० [ सं० खट्वास ] गंध-बिलाव।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० खट्टा ] खट्टापन। तुर्शी।

**खटिक**—संज्ञा पुं० [ सं० खट्टिक ] [ स्त्री० खटकिन ] एक छोटी जाति जिसका काम फल, तरकारी आदि बेचना है।

**खटिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाट ] छोटी चारपाई या खाट। खटोला।

**खटेटी**—वि० [ हिं० खाट + एटी (प्रत्य०) ] जिसपर बिछौना न हो।

**खटोलना**—संज्ञा पुं० दे० "खटोला"।

**खटोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० खाट + ओला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० अल्पा० खटोली ] छोटी खाट।

**खट्टा**—वि० [ सं० कटु ] कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का। तुर्श। अम्ल।

**मुहा०**—जी खट्टा होना = चित्त अप्रसन्न होना। दिल फिर जाना।

संज्ञा पुं० [ हिं० खट्टा ] नीबू की जाति का एक बहुत खट्टा फल। गलगल।

**खट्टा मीठा**—वि० दे० "खटमिट्ठा"।

**खट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खट्टा ] खट्टा नीबू।

**खट्टू**—संज्ञा पुं० [ हिं० खटना ] कमानेवाला।

**खट्वांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चारपाई का पावा या पाटी। २. शिव का एक अस्त्र। ३. वह पात्र जिसमें प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगी जाती है।

**खट्वा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] खटिया। खाट।

**खड़ंजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खड़ा + अंग ] फर्श पर ईंटों की खड़ी चुनाई।

**खड़क**—संज्ञा स्त्री० दे० "खटक"।

**खड़कना**—क्रि० अ० दे० "खटकना"।

**खड़खड़ा**—संज्ञा पुं० [अनु०] १. दे० "खटखटा"। २. काठ का एक ढाँचा जिसमें जोतकर गाड़ी के लिए घोड़े सधाए जाते हैं।

**खड़खड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] कड़ी वस्तुओं का परस्पर शब्द के साथ टकराना।

क्रि० स० कई वस्तुओं को परस्पर टकराना।

**खड़खड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खड़खड़ाना ] पालकी। पीनस।

**खड़ग***—संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।

**खड़गी***—वि० [ सं० खड्गिन् ] तलवार लिए हुए। तलवारवाला।

संज्ञा पुं० [ सं० खड्ग ] गैंडा।

**खड़जी**—संज्ञा पुं० दे० "खड्गी"।

**खड़बड़**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १ खटखट शब्द। २. उलट-फेर। ३. हलचल।

**खड़बड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १ विचलित होना। घबराना। २. बे-तरतीब होना।

क्रि० स० १. किसी वस्तु का उलट-पुलट कर 'खड़बड़' शब्द उत्पन्न करना। २ उलट फेर करना। ३. घबरा देना।

**खड़बड़ाहट**—संज्ञा पुं० [ हिं० खड़बड़ाना ] "खड़बड़ाना" का भाव।

**खड़बड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खड़बड़ाना ] १. व्यतिक्रम। उलट फेर। २ हलचल।

**खड़बीहड़†**—वि० दे० "खड़बिड़ा"।

**खड़मंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० खड + मंडल ] गड़बड़। घपला।

वि० उलट-पुलट। नष्ट भ्रष्ट।

**खड़ा**—वि० [ सं० खड्क = खंभा, थूना ] [ स्त्री० खड़ी ] १ सीधा ऊपर को गया हुआ। ऊपर को उठा हुआ। जैसे—झंडा खड़ा करना। २. पृथ्वी पर पैर रखकर टाँगों को सीधा करके अपने शरीर को ऊँचा किए। दंडायमान।

**मुहा०**—खड़े खड़े = तुरत। झटपट। खड़ा जवाब = वह इनकार जो चटपट किया जाय। खड़ा होना = सहायता देना। मदद करना।

३ ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ४ प्रस्तुत। उपस्थित। तैयार। ५. सन्नद्ध। उद्यत। ६ आरंभ। जारी। ७ (घर, दीवार आदि) स्थापित। निर्मित। उठा हुआ। ८ जो उखाड़ा या काटा न गया हो। जैसे—खड़ी फसल। ९. बिना पका। असिद्ध। कच्चा। १०. समूचा। पूरा। ११. ठहरा हुआ। स्थिर।

**खड़ाऊँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० काठ + पाँव या 'खटखट' अनु० ] काठ के तले का खुला जूता। पादुका।

**खड़ाका**—संज्ञा पुं०, क्रि० वि० दे० "खटाका"।

**खड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खटिका ] एक प्रकार की सफेद मिट्टी। खरिया। खड़ी।

**खड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

**खड़ीबोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खड़ी + बोली ] पश्चिमी हिन्दी का वह भेद जो दिल्ली के आस-पास बोला जाता है और जिसमें उर्दू और हिंदी गद्य लिखा जाता है।

**खड्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक

प्रकार की तलवार। खाँड़ा। २. गैंडा।
**खड्गकोश**—संज्ञा पुं० [सं०] म्यान।
**खड्गपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] यमपुरी का वह पेड़ जिसमें तलवार के से पत्ते होते हैं।
**खड्गी**—संज्ञा पुं० [सं० खड्गिन्] १ वह जिसके पास खड्ग हो। खड्गधारी। २ गैंडा।
**खड्ड, खड्डा**—संज्ञा पुं० [सं० खात] गड्ढा।
**खत**—संज्ञा पुं० [सं० क्षत] घाव। जख्म।
**खत**—संज्ञा पुं० [अ०] १ पत्र। चिट्ठी। २. लिखावट। ३. रेखा। लकीर। ४ दाढ़ी के बाल। हजामत।
**खतकशी**—संज्ञा स्त्री० [अ० खत + फ़ा० कशी] चित्र बनाने के पहले आवश्यक रेखाएँ अंकित करना। रेखाकर्म। टीपना।
**खतखोट**†—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षत + हिं० खुट्ट] घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड।
**खतना**—क्रि० अ० [हिं० खाता] खाते पर चढ़ना। खतियाया जाना।
**खतना**—संज्ञा पुं० [अ०] लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म। सुन्नत। मुसलमानी।
**खतम**—वि० [अ० खत्म] पूर्ण। समाप्त।
**मुहा०**—खतम करना=मार डालना।
**खतमी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] गुलखैरू की जाति का एक पौधा।
**खतर, खतरा**—संज्ञा पुं० [अ०] १ डर। भय। खौफ। २ आशंका।
**खतरेटा**—संज्ञा पुं० दे० "खत्री"।
**खता**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कसूर। अपराध। २. धोखा। ३. भूल। गलती।
**खता***†—संज्ञा पुं० दे० "खत"।
**खतावार**—वि० [अ० खता + फ़ा० वार] दोषी। अपराधी।
**खति***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षति"।
**खतियाना**—क्रि० स० [हिं० खाता] आय व्यय और क्रय-विक्रय आदि को खाते में अलग अलग मद में लिखना।
**खतियौनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खतियाना] १ वह बही जिसमें अलग अलग हिसाब हो। खाता। खतियाने का काम।
**खत्ता**—संज्ञा पुं० [सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १ गड्ढा। २ अन्न रखने का स्थान।
**खत्म**—वि० दे० "खतम"।
**खत्री**—संज्ञा पुं० [सं० क्षत्रिय] [स्त्री० खतरानी] हिंदुओं में एक जाति।
**खदबदाना**—क्रि० अ० [अनु०] उबलने का शब्द होना।
**खदरा**†—संज्ञा पुं० [सं० खनन] गड्ढा।
वि० रद्दी। निकम्मा।
**खदान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना या खान] वह गड्ढा जो कोई वस्तु निकालने के लिये खोदा जाय। खान।
**खदिर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ खैर का पेड़। २ कत्था। ३ चंद्रमा। ४ इंद्र।
**खदेरना**—क्रि० स० [हिं० खेदना] दूर करना।
**खद्दड़, खद्दर**—संज्ञा पुं० [?] हाथ के काते हुए सूत का बुना कपड़ा। खादी। गाढ़ा।
**खद्योत**—संज्ञा पुं० [सं०] १ जुगनू। २ सूर्य।
**खन***†—संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।
संज्ञा पुं० [सं० खण्ड] (मकान का) खंड।
**खनक**—संज्ञा पुं० [सं०] जमीन खोदनेवाला। २. वह स्थान जहाँ कोई खनिज पदार्थ निकलता हो। खान। ३ भूतत्त्व-शास्त्र जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० [अनु०] धातुखंडों के टकराने या बजने का शब्द।
**खनकना**—क्रि० अ० [अनु०] खनखनाना। धातुखंडों के टकराने का शब्द होना।
**खनकाना**—क्रि० स० [अनु०] धातुखंड आदि से शब्द उत्पन्न करना।
**खनखनाना**—क्रि० अ० [अनु०] खनकना।
क्रि० स० [अनु०] खनकाना।
**खनना***†—क्रि० स० [सं० खनन] १ खोदना। २ कोड़ना।
**खनवाना, खनाना**—क्रि० स० [हिं० खनना] खनने का काम दूसरों से कराना।
**खनिज**—वि० [सं०] खान से खोदकर निकाला हुआ।
**खनित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] गैंती। खंता।
**खनोना***†—क्रि० स० दे० "खनना"।
**खपची**—संज्ञा स्त्री० [तु० कमची] १ बाँस की पतली तीली। २ कमठी। बाँस की पतली पट्टी।
**खपड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १ पटरी के आकार का मिट्टी का पका टुकड़ा जो मकान छाने के काम आता है। २ भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। खप्पर। ३ मिट्टी के टूटे बरतन का टुकड़ा। ठीकरा। ४ कछुए की पीठ पर का कड़ा ढक्कन।
**खपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० खर्पर] १ नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा बरतन। २ दे० "खोपड़ी"।
**खपड़ैल**—संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल"।
**खपत, खपती**—संज्ञा स्त्री० [हिं०

खपना ] १. समाई। गुंजाइश। २ माल की कटती या बिक्री।

**खपना**—क्रि० अ० [सं० क्षेपण] [संज्ञा खपत] १ किसी प्रकार व्यय होना। काम में आना। लगना। कटना। २. चल जाना। गुजारा होना। निभना। ३. नष्ट होना। ४. तंग होना। दिक होना।

**खपरिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० खर्परी] भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ। दर्विका। रसक।

**खपरैल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खपड़ा] खपड़े से छाई हुई छत।

**खपाना**—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. किसी प्रकार व्यय करना। काम में लाना।

**मुहा०**—माथा या सिर खपाना=सिर पच्ची करना। सोचते सोचते हैरान होना।

२ निर्वाह करना। निभना। ३. नष्ट करना। समाप्त करना। ४. तंग करना।

**खपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंधर्व-नगर। २. पुराणानुसार एक नगर जो आकाश में है। ३ राजा हरिश्चंद्र की पुरी जो आकाश में स्थित मानी जाती है।

**खपुष्प**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश-कुसुम। २ असंभव बात। अनहोनी घटना।

**खप्पर**—संज्ञा पुं० [सं० खर्पर] १. तसले के आकार का कोई पात्र।

**मुहा०**—खप्पर भरना=खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी पर चढ़ाना।

२. भिक्षापात्र। ३. खोपड़ी।

**खफगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. क्रोध। कोप।

**खफा**—वि० [अ०] १. अप्रसन्न। नाराज। २. क्रुद्ध। रुष्ट।

**खफीफ**—वि० [अ०] १. थोड़ा। कम। २ हलका। ३ तुच्छ। क्षुद्र। ४. लज्जित।

**खबर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ समाचार। वृत्तांत। हाल।

**मुहा०**—खबर उड़ना=चर्चा फैलना। अफवाह होना। खबर लेना=१ सहायता करना। सहानुभूति दिखलाना। २ सजा देना।

२ सूचना। ज्ञान। जानकारी। ३ भेजा हुआ समाचार। सँदेसा। ४. चेत। सुधि। संज्ञा। ५. पता। खोज।

**खबरगीर**—वि० [अ०+फ़ा०] [संज्ञा खबरगीरी] देख भाल करनेवाला।

**खबरदार**—वि० [फ़ा०] होशियार। सजग।

**खबरदारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सावधानी। होशियारी।

**खबरनवीस**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० खबरनवीसी] वह जो राजाओं आदि के पास नित्य के समाचार लिखकर भेजता हो। समाचार लेखक।

**खबरि, खबरिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "खबर"।

**खबीस**—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो दुष्ट और भयंकर हो।

**खब्त**—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० खब्ती] पागलपन। सनक। झक्क।

**खब्ती**—वि० [अ०] सनकी। पागल।

**खंभरना***†—क्रि० स० [हिं० भरना] १. मिश्रित करना। २. उथल-पुथल मचाना।

**खभार**—संज्ञा पुं० दे० "खँभार"।

**खम**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] टेढ़ापन। झुकाव।

**मुहा०**—खम खाना=१. मुड़ना। झुकना। दबना। २. हारना। पराजित होना। खम ठोकना=१. लड़ने के लिये ताल ठोकना। २. दृढ़ता दिखलाना। खम ठोककर=दृढ़ता या निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

**खमकना**—क्रि० अ० [अनु०] खम खम शब्द करना।

**खम दम**—संज्ञा पुं० [फ़ा० खम + दम] पुरुषार्थ। साहस।

**खमसा**—संज्ञा पुं० [अ० खमसः=पाँच संबंधी] एक प्रकार की गजल।

**खमा***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

**खमीर**—संज्ञा पुं० [अ०] १. गूँधे हुए आटे का सड़ाव। २. गूँधकर उठाया हुआ आटा। माया। ३. कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो तंबाकू में डाला जाता है। ४ स्वभाव। प्रकृति।

**खमीरा**—वि० पुं० [अ०] [स्त्री० खमीरी] १ खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाया हुआ। २. शीरे में पकाकर बनाई हुई ओषधि। जैसे—खमीरा बनफशा।

**खमोश**—वि० दे० "खामोश"।

**खम्माच**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खंभावती] मालकोस राग की दूसरी रागिनी।

**खय***†—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

**खया**—संज्ञा पुं० दे० "खवा"।

**खयानत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना। गबन। २. चोरी या बेईमानी।

**खयाल**—संज्ञा पुं० "ख्याल"।

**खर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गधा। २. खच्चर। ३ बगला। ४. कौवा। ५. एक राक्षस जो रावण का भाई था। ६. तृण। तिनका। घास। ७ साठ संवत्सरों में से एक। ८. छप्पय छंद का एक भेद।

वि० [सं०] १. कड़ा। सख्त। २. तेज। तीक्ष्ण। हानिकारक। अमांग-

खिक। जैसे—खर मास। ४. तेज धार का।

**खरक**—संज्ञा पुं० [ सं० खड़क ] १. चौपायों को रखने के लिये लकड़ियाँ गाड़कर बनाया हुआ घेरा। डाँढा। बाड़ा। २ पशुओं के चरने का स्थान। ३. बाँसों की फट्टियों का केवाड़। टट्टर।

संज्ञा स्त्री० दे० "खड़क"।

**खरकना**-क्रि०अ०[अनु०]१.दे०"खड़कना"। २. फाँस चुभने का सा दर्द होना। सरकना। चल देना।

**खरका**—संज्ञा पु०[हिं० खर] तिनका।

**मुहा०**—खरका करना = भोजन के उपरांत तिनके से खोदकर दाँत साफ करना।

संज्ञा पुं० दे० "खरक"।

**खरखरा**—वि० दे० "खुरखुरा"।

**खरखशा**—संज्ञा पु० [फ़ा०] १ झगड़ा। लड़ाई। २ भय। आशंका। ३ झंझट। बखेड़ा।

**खरखाकी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खर+ खाना ] खर, तृण आदि खानेवाली, अग्नि।

**खरग**—संज्ञा पुं० दे०"खड्ग"।

**खरगोश**—संज्ञा पु० [ फा० ] खरहा।

**खरच**—संज्ञा पु० दे० "खर्च"।

**खरचना**—क्रि० स० [ फा० खर्च ] १. व्यय करना। खर्च करना। २. व्यवहार में लाना।

**खरचा**—संज्ञा पु० दे० १. "खरका"। २. दे० "खर्चा"।

**खरतल**†—वि० [ हिं० खरा ] १. खरा। स्पष्टवादी। २. शुद्ध हृदयवाला। ३. मुरौवत न करनेवाला। ४ साफ। स्पष्ट। ५. प्रचंड। उग्र।

**खरतर**—वि० [ सं० ] अधिक तीक्ष्ण। बहुत तेज।

**खरतुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० खर ] बथुए की तरह की एक घास। ममर। बथुआ।

**खरदुक**—संज्ञा पुं० [ फा० खुर्द ? ] एक पुराना पहनावा।

**खरदूषण**—संज्ञा पु० [सं०] खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे।

**खरधार**—वि [ सं० ] तेज धारवाला (अस्त्र)।

**खरब**—संज्ञा पुं० [ सं० खर्व ] सौ अरब की संख्या।

**खरबूजा**—संज्ञा पु० [ फा० खर्बुज़ा ] ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोल फल।

**खरभर**—संज्ञा पु० [ अनु० ] १. शोर। गुल। २ हलचल। गड़बड़।

**खरभरना**—क्रि० अ० [ हिं० खरभर ] १. क्षुब्ध होना २ घबराना।

**खरभराना**—क्रि० अ० [हिं० खरभर] १ खरभर शब्द करना। २ शोर करना। ३ गड़बड़ या हलचल मचाना। ४ व्याकुल होना।

**खरमंडल**—वि० दे० "खड़मंडल"।

**खरमस्ती**—संज्ञा स्त्री० [फा०] दुष्टता। पाजीपन। शरारत।

**खरमास**—संज्ञा पु० दे० "खरवाँस"।

**खरमिटाव**†—संज्ञा पु० [ हिं० खर + मिटाना ] जलपान। कलेवा।

**खरल**—संज्ञा पु० [ सं० खल ] पत्थर की कूँड़ी जिसमें औषधियाँ कूटी जाती हैं। खल।

**खरवाँस**—संज्ञा पु० [ हिं० खर + मास ] पूस और चैत का महीना जब कि सूर्य धन और मीन का होता है। ( इनमें मांगलिक कार्य्य करना वर्जित है। )

**खरसा**—संज्ञा पु० [ सं० षड्रस ] एक प्रकार का पकवान।

**खरसान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खर + सान ] हथियार तेज करने की एक प्रकार की सान।

**खरहरा**—संज्ञा पु० [ हिं० खरहरना ] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर के डंठलों से बना हुआ झाड़ू। झँखरा। २. घोड़े के रोएँ साफ करने के लिये दाँतीदार कंघी।

**खरहरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का मेवा। ( कदाचित् खजूर )।

**खरहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खर = घास + हा ( प्रत्य० ) ] खरगोश जंतु।

**खरांशु**—संज्ञा पु [ सं० ] सूर्य्य।

**खरा**—वि० [ सं० खर = तीक्ष्ण ] १. तेज। तीखा। २ अच्छा। बढ़िया। विशुद्ध। बिना मिलावट का। ३. सेंककर कड़ा किया हुआ। करारा। ४ चीमड़। कड़ा। ५. जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो। साफ। छल-छिद्र शून्य। ६ नगद ( दाम )।

**मुहा०**—रुपये खरे होना = रुपये मिलना या मिलने का निश्चय होना।

७ लगी लिपटी न कहनेवाला। स्पष्ट-वक्ता। ८ ( बात के लिये ) यथातथ्य। सच्चा। †* ९. बहुत अधिक। ज्यादा।

**खराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खरा + ई ( प्रत्य० ) ] "खरा" का भाव। खरापन।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] सबेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन आदि न मिलने के कारण तबीअत खराब होना।

**खराद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० खर्राद ] एक औजार जिसपर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है।

संज्ञा स्त्री० १. खरादने का भाव या क्रिया। २ बनावट। गढ़न।

**खरादना**—क्रि० स० [ हिं० खराद ] खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ और सुडौल करना। २. काट-छाँटकर

सुडौल बनाना ।

**खरादी**—संज्ञा पुं० [ हिं० खराद ] खरादनेवाला ।

**खरापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० खरा + पन ] १. खरा का भाव । २ सत्यता । सचाई ।

**खराब**—वि० [ अ० ] १. बुरा । निकृष्ट । २ दुर्दशाग्रस्त । ३. पतित । मर्यादा भ्रष्ट ।

**खराबी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. बुराई । दोष । अवगुण । २ दुर्दशा । दुरवस्था ।

**खरायँध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षार + गंध ] १ खार की सी गंध । मूत्र की दुर्गंध ।

**खरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रामचंद्र । २. विष्णु भगवान् । ३. कृष्णचंद्र ।

**खराश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] खरोंच । छिलन ।

**खरिक**—संज्ञा पुं० दे० "खरक" ।

**खरिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खर + इया ( प्रत्य० ) ] १ घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी से बनी हुई जाली । पाँसी । २ झोली ।
संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया" ।

**खरियाना**—क्रि० स० [ हिं० खरिया= झोली ] १. झोली में डालना । थैले में भरना । २. हस्तगत करना । ले लेना । ३. झोली में से गिराना ।

**खरिहान**—संज्ञा पुं० दे० "खलियान" ।

**खरी**—संज्ञा स्त्री० १. दे० 'खड़िया' । २. "खली" ।

**खरीता**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० अल्पा० खरीती ] १. थैली । खीसा । २. जेब । ३. वह बड़ा लिफाफा जिसमें आज्ञापत्र आदि भेजे जायँ ।

**खरीद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मोल लेने की क्रिया । क्रय । २. खरीदी हुई चीज ।

**खरीदना**—क्रि० स० [ फ़ा० खरीदन ] मोल लेना । क्रय करना ।

**खरीदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. मोल लेनेवाला । ग्राहक । २. चाहनेवाला ।

**खरीफ**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वह फसल जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय ।

**खरेई**—क्रि० वि० [ हिं० खरा + ही ] सचमुच ।

**खरोंच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षुरण ] १. छिलने का चिह्न । खराश । २. एक पकवान ।

**खरोंचना**—क्रि० स० [ सं० क्षुरण ] खुरचना । करोना । छीलना ।

**खरोई**—संज्ञा स्त्री० दे० "खरेई" ।

**खरोट**—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच" ।

**खरोटना**—क्रि० स० [ सं० क्षुरण ] १ नाखून गड़ाकर शरीर में घाव करना । २ दे० "खरोंचना" ।

**खरोष्ट्री, खरोष्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्राचीन लिपि जो फारसी की तरह दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी । गांधार लिपि ।

**खरौंट**—संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच" ।

**खरौंहा**—वि० [ हिं० खारा + औंहा ] कुछ कुछ खारा । नमकीन ।

**खर्ग**—संज्ञा पुं० दे० "खड्ग" ।

**खर्च**—संज्ञा पुं० [ अ० खर्ज ] १ किसी काम में किसी वस्तु का लगाना । व्यय । सरफा । खपत । २. वह धन जो किसी काम में लगाया जाय ।

**खर्चा**—संज्ञा पुं० दे० "खर्च" ।

**खर्चीला**—वि० [ हिं० खर्च + ईला ( प्रत्य० ) ] बहुत खर्च करनेवाला ।

**खर्जूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खजूर । २. चाँदी । ३. हरताल । ४. बिच्छू ।

**खर्पर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तसले के आकार का मिट्टी का बरतन । २. काली देवी का वह पात्र जिसमें वे रुधिर पान करती हैं । ३. भिक्षापात्र । ४. खोपड़ा । ५ खपरिया नामक उपधातु ।

**खर्व**—वि० [ सं० ] १. जिसका अंग भग्न या अपूर्ण हो । न्यूनांग । २. छोटा । लघु । ३. वामन । बौना ।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सौ अरब की संख्या । खरब । २. कुबेर की नौ निधियों में से एक ।

**खर्रा**—संज्ञा पुं० [ खर खर से अनु० ] १. वह लंबा कागज जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो । २. पीठ पर छोटी छोटी फुंसियाँ निकलने का रोग ।

**खर्राचा**†—वि० दे० "खर्चीला" ।

**खर्राटा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] वह शब्द जो सोते समय नाक से निकलता है ।

**मुहा०**—खर्राटा भरना, मारना या लेना = बेखबर सोना ।

**खल**—वि० [ सं० ] १. क्रूर । २. नीच । अधम । ३. दुर्जन । दुष्ट ।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य । २. तमाल का पेड़ । ३. धतूरा । ४. खलियान । ५. पृथ्वी । ६ स्थान । ७. खरल ।

**खलई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "खलाई" ।

**खलक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सृष्टि के प्राणी या जीवधारी । २. दुनिया । संसार ।

**खलड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खाल" ।

**खलता**—सं० स्त्री० [ सं० ] दुष्टता । नीचता ।

**खलना**—क्रि० अ० [ सं० खर=तीक्ष्ण ] बुरा लगना । अप्रिय होना ।

**खलबल**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हलचल। २. शोर। हल्ला। ३. कुलबुलाहट।

**खलबलाना**—क्रि० अ० [हिं० खलबल] १. खलबल शब्द करना। २. खौलना। ३. हिलना डोलना। ४. विचलित होना।

**खलबली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खलबल] १. हलचल। २. घबराहट। व्याकुलता।

**खलल**—संज्ञा पु० [अ०] रोक। बाधा।

**खलाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खल + आई (प्रत्य०)] खलता। दुष्टता।

**खलाना***—क्रि० स० [हिं० खाली] १. खाली करना। २. गड्ढा करना। ३. फूली हुई सतह को नीचे धँसाना। पिचकाना।

**खलास**—वि० [अ०] १. छूटा हुआ। मुक्त। २. समाप्त। ३. च्युत। गिरा हुआ।

**खलासी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खलास] मुक्ति। छुटकारा। छुट्टी।
संज्ञा पु० [देश०] जहाज पर का नौकर।

**खलाल**—संज्ञा पु० [अ०] दाँत खोदने का खरका।

**खलित***—वि० [सं० स्खलित] १. चलायमान। चंचल। २ गिरा हुआ।

**खलियान**—संज्ञा पु० [सं० खल + स्थान] १ वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी और बरसाई जाती है। २. राशि। ढेर।

**खलियाना**—क्रि० स० [हिं० खाल] खाल उतारना। चमड़ा अलग करना।
क्रि० स० [हिं० खाली] खाली करना।

**खलिश**—संज्ञा स्त्री० [फा०] कसक। पीड़ा।

**खली**—संज्ञा स्त्री० [सं० खल] तेल निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

**खलीता**—संज्ञा पुं० दे० "खरीता"।

**खलीफा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. अध्यक्ष। अधिकारी। २ कोई बूढ़ा व्यक्ति। ३. खुर्राट। ४. खानसामाँ। बावर्ची। ५. हज्जाम। नाई।

**खलु**—अव्य०, क्रि० वि० [सं०] १ शब्दालंकार। २. प्रश्न। ३. प्रार्थना। ४ नियम। ५. निषेध। ६. निश्चय।

**खलेल**—संज्ञा पु० [हिं० खली तेल] खली आदि का वह अंश जो फुलेल में रह जाता है।

**खल्लड़**—संज्ञा पुं० [सं० खल्ल] १ चमड़े की मशक या थैला। २. औषधि कूटने का खल। ३. चमड़ा।

**खल्व**—संज्ञा पु० [सं०] वह रोग जिसके कारण सिर के बाल झड़ जाते हैं। गंज।

**खल्वाट**—संज्ञा पुं० [सं०] गंज रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं।
वि० [सं०] जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। गंजा।

**खवा**—संज्ञा पुं० [सं० स्कंध] कंधा। भुजमूल।

**खवाना***—क्रि० स० दे० "खिलाना"।

**खवारा***—वि० [फा० ख्वार] बुरा। खोटा।

**खवास**—संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० खवासिन] राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. रानियों की खास खिदमत करनेवाली दासी। २ राजाओं की रखेली।

**खवासी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खवास + ई (प्रत्य०)] १. खवास का काम। खिदमतगारी। २. चाकरी। नौकरी। ३ हाथी के हौदे या गाड़ी आदि में पीछे की ओर वह स्थान जहाँ खवास बैठता है।

**खवैया**—संज्ञा पु० [हिं० खाना + वैया (प्रत्य०)] खानेवाला।

**खस**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वर्त्तमान गढ़वाल और उसके उत्तरवर्ती प्रांत का एक प्राचीन नाम। २ इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति।
संज्ञा स्त्री० [फा० खस] गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।

**खसकंत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खसकना + अंत (प्रत्य०)] खसकने का काम।

**खसकना**—क्रि० अ० [अनु०] धीरे धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। सरकना।

**खसकाना**—क्रि० स० [हिं० खसकना] १ स्थानांतरित करना। हटाना। २ गुप्त रूप से कोई चीज हटाना।

**खसखस**—संज्ञा स्त्री० [सं० खसखस] पोस्ते का दाना।

**खसखसा**—वि० [अनु०] जिसके कण दबाने से अलग अलग हो जायँ। भुरभुरा।
वि० [हिं० खसखस] बहुत छोटे (बाल)।

**खसखाना**—संज्ञा पु० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

**खसखास**—संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस"।

**खसखासी**—वि० [हिं० खसखास] पोस्ते के फूल के रंग का। नीलापन लिए सफेद।

**खसना***—क्रि० अ० [हिं० खसकना] अपने स्थान से हटना। खसकना। गिरना।

**खसबो**—संज्ञा स्त्री० दे० "खुशबू"।

**खसम**—संज्ञा पु० [अ०] १. पति। खाविंद। २ स्वामी। मालिक।

**खसरा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. पटवारी का एक कागज जिसमें प्रत्येक खेत का

नेवर, रकबा आदि लिखा रहता है। २ हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा। संज्ञा पुं० [फा० खारिश] एक प्रकार की खुजली।

**खसलत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्वभाव। आदत।

**खसाना**—क्रि० स० [हिं० खसना] नीचे की ओर ढकेलना या फेंकना। गिराना।

**खसिया**—वि० [अ० खस्सी] १. जिसके अंडकोष निकाल लिए गए हों। बधिया। २ नपुंसक। हिजड़ा। ३. बकरा।

**खसी**—संज्ञा पुं० [अ० खस्सी] बकरा।

**खसीस**—वि० [अ०] कंजूस। सूम।

**खसोट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खसोटना] १. बुरी तरह उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २ उचकने या छीनने की क्रिया।

**खसोटना**—क्रि० स० [सं० कृष्ट] १. बुरी तरह उखाड़ना या उचाड़ना। नोचना। २ बलपूर्वक लेना। छीनना।

**खसोटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट"।

**खस्ता**—वि० [फा० खस्तः] बहुत थोड़े दाब से टूट जानेवाला। भुरभुरा।

**खस्वस्तिक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कल्पित बिंदु जो सिर के ऊपर आकाश में माना गया है। शीर्षबिंदु। पाद-बिंदु का उलटा।

**खस्सी**—संज्ञा पुं० [अ०] बकरा। वि० [अ०] १ बधिया। २ हिजड़ा। नपुंसक।

**खहर**—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में वह राशि जिसका हर शून्य हो।

**खाँ**—संज्ञा पुं० दे० "खान"।

**खाँखर**†—वि० [हिं० खाँख] १ जिसमें बहुत छेद हों। सूराखदार। २. जिसकी बनावट दूर दूर पर हो। ३. खोखला।

**खाँग**†—संज्ञा पुं० [सं० खड्ग, प्रा० खग्ग] १. काँटा। कंटक। २ वह काँटा जो तीतर, मुर्गे आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है। ३. गैंडे के मुँह पर का सींग। ४. जंगली सूअर का मुँह के बाहर निकला हुआ दाँत।

†संज्ञा स्त्री० [हिं० खँगना] त्रुटि। कमी।

**खाँगना**†—क्रि० अ० [सं० खंज= खाँड़ा] कम होना। घटना।

**खाँगड़, खाँगड़ा**—वि० [हिं० खाँग + ड़ (प्रत्य०)] १. जिसके खाँग हो। खाँगवाला। २. हथियारबंद। शस्त्रधारी। ३ बलवान्। ४. अक्खड़। उद्दंड।

**खाँगी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खँगना] कमी। घाटा। त्रुटि।

**खाँच**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खाँचना] १ संधि। जोड़। २. खींचकर बनाया हुआ निशान। ३. गठन। खचन।

**खाँचना***†—क्रि० स० [सं० कर्षण] [वि० खँचैया] १. अंकित करना। चिह्न बनाना। २. खींचना। जल्दी जल्दी लिखना।

क्रि० अ० खींचा जाना या खिंचना। अंकित होना।

**खाँचा**—संज्ञा पुं० [हिं० खाँचना] [स्त्री० खाँची] पतली टहनियों आदि का बना हुआ बड़े बड़े छेदों का टोकरा। झाबा।

**खाँड़**—संज्ञा स्त्री [सं० खंड] बिना साफ की हुई चीनी। कच्ची शक्कर।

**खाँड़ना**—क्रि० स० [सं० खंडन] १ तोड़ना। २ चबाना। कुचलना।

**खाँड़र**—संज्ञा पुं० [सं० खंड] टुकड़ा।

**खाँड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० खड्ग] खड्ग (अस्त्र)।

संज्ञा पुं० [सं० खंड] भाग। टुकड़ा।

**खाँधना***—क्रि० स० [सं० खादन] खाना।

**खाँभ***†—संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] खंभा।

**खाँवाँ**—संज्ञा पुं० [सं० ख] चौड़ी खाई।

**खाँसना**—क्रि० स० [सं० कासन] कफ या और कोई अटकी हुई चीज निकालने के लिए वायु को शब्द के साथ कंठ के बाहर निकालना।

**खाँसी**—संज्ञा स्त्री [सं० कास, कास] १ गले और श्वास की नलियों में फँसे या जमे हुए कफ अथवा अन्य पदार्थ को बाहर फेंकने के लिए शब्द के साथ हवा निकालने की क्रिया। २ अधिक खाँसने का रोग। कास रोग। ३. खाँसने का शब्द।

**खाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० खानि] वह नहर जो किसी गढ़ या महल आदि के चारों ओर रक्षा के लिए खोदी गई हो। खंदक।

**खाऊ**—वि० [हिं० खाना (खा) + ऊ (प्रत्य०)] बहुत खानेवाला। पेटू।

**खाक**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. धूल। मिट्टी।

**मुहा०**—(कहीं पर) खाक उड़ना = बरबाद होना। उजाड़ होना। खाक उड़ाना या छानना = मारा मारा फिरना। खाक में मिलना = बिगड़ना। बरबाद होना।

२. तुच्छ। अकिंचन। ३ कुछ नहीं। जैसे—वे खाक पढ़ते लिखते हैं।

**खाकसार**—वि० [फा०] [संज्ञा खाकसारी] १. धूल में मिला हुआ। २. तुच्छ। अकिंचन।

संज्ञा पुं० मुसलमानों का एक राजनीतिक दल। (आधुनिक)।

**खाकशीर**—संज्ञा स्त्री० [ फा० खाक-शीर ] एक औषध जिसे खूबकलाँ भी कहते हैं।

**खाका**—संज्ञा पु० [ फा० खाकः ] १. चित्र आदि का डौल ढाँचा। नकशा। **मुहा०**—खाका उड़ाना=उपहास करना। २. वह कागज जिसमें किसी काम के खर्च का अनुमान लिखा जाय। चिट्ठा। तखमीना। तक़दमा। ३. मसौदा।

**खाकी**—वि० [ फा० ] १ मिट्टी के रंग का। भूरा। २. बिना सींची हुई भूमि।

**खाख**—संज्ञा स्त्री० दे० "खाक"।

**खागना**—क्रि० अ० [ हिं० खाँग=काँटा ] चुभना। गड़ना।

**खाज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खर्जु ] एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है। खुजली।

**मुहा०**—कोढ़ की खाज=दुःख में दुःख बढ़ानेवाली वस्तु।

**खाजा**—संज्ञा पु० [ सं० खाद्य ] १. भक्ष्य वस्तु। खाना। २ एक प्रकार की मिठाई।

**खाजी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाजा ] खाद्य पदार्थ। भोजन की वस्तु।

**मुहा०**—खाजी खाना=मुँह की खाना। बुरी तरह पराजित या अकृतकार्य्य होना।

**खाट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खट्वा ] चारपाई। पलँगड़ी। खटिया। माचा।

**खाटा***—वि० दे० "खट्टा"।

**खाड़***—संज्ञा पु० [सं० खात] गड्ढा। गर्त्त।

**खाड़व**—संज्ञा पुं० दे० "षाड़व"।

**खाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाड़ ] समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो। आखात। खलीज।

**खात**—संज्ञा पु० [सं०] १. खोदना। खोदाई। २ तालाब। पुष्करिणी। ३. कुआँ। ४ गड्ढा। ५. खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा।

**खातमा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. अंत। समाप्ति। २ मृत्यु।

**खाता**—संज्ञा पु० [सं० खात] १. अन्न रखने का गड्ढा। बखार। २. कूएँ के पास का गड्ढा।

संज्ञा पुं० [ हिं० खत ] १. वह बही जिसमें मितिवार और ब्योरेवार हिसाब लिखा हो।

**मुहा०**—खाता खोलना = नया व्यवहार करना।

२ मद्द। विभाग।

**खातिर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] आदर। सम्मान।

†अव्य० [ अ० ] वास्ते। लिए।

**खातिरख्वाह**—अव्य०, क्रि०, वि० [ फा० ] जैसा चाहिए, वैसा। इच्छानुसार। यथेच्छ।

**खातिरजमा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] संतोष। इतमीनान। तसल्ली।

**खातिरदारी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] सम्मान। आदर। आवभगत।

**खातिरी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० खातिर ] १ सम्मान। आदर। आवभगत। २ तसल्ली। इतमीनान। संतोष।

**खाती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खात ] १ खोदी हुई भूमि। २ खानि। जमीन खोदनेवाली एक जाति। खतिया। ३. बढ़ई।

**खाद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खाद्य ] वे सड़े गले पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिए डाले जाते हैं। पाँस।

*संज्ञा पु० खाने योग्य पदार्थ।

**खादक**—वि० [ सं० ] खानेवाला। भक्षक।

**खादन**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० खादित, खाद्य, खादनीय ] भक्षण। भोजन। खाना।

**खादर**—संज्ञा पु० [ हिं० खाड़ ] नीची जमीन। बाँगर का उलटा। कछार।

**खादित**—वि० [ सं० ] खाया हुआ। भक्षित।

**खादिम**—संज्ञा पु० [ फा० ] सेवक। नौकर।

**खादी**—वि० [ सं० खादिन् ] १. खानेवाला। भक्षक। २. शत्रु का नाश करनेवाला। रक्षक। ३ कँटीला।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १ गजी या और कोई मोटा कपड़ा। २. हाथ से काते हुए सूत से हाथ के करघे पर भारत का बना कपड़ा। खद्दर।

†वि० [ हिं० खादि = दोष] १. दोष निकालनेवाला। छिद्रान्वेषी। २. दूषित।

**खादुक**—वि० [ सं० ] जिसकी प्रवृत्ति सदा हिंसा की ओर रहे। हिंसालु।

**खाद्य**—वि० [ सं० ] खाने योग्य।

संज्ञा पु० [ सं० ] भोजन। खाने की वस्तु।

**खाधु***†—संज्ञा पु० [ सं० खाद्य ] भोज्य पदार्थ।

**खाधुक***—वि० [ सं० खादक ] खानेवाला।

**खान**—संज्ञा पुं० [ हिं० खाना ] १. खाने की क्रिया। भोजन। २. भोजन की सामग्री। ३ भोजन करने का ढंग या आचार।

संज्ञा स्त्री० [ सं० खानि ] १. वह स्थान जहाँ से धातु पत्थर आदि खोदकर निकाले जायँ। खानि। आकर। खदान। २ जहाँ कोई वस्तु बहुत सी हो। खजाना।

संज्ञा पु० [ तातार या मंगोल काङ = सरदार ] १ सरदार। २. पठानो की उपाधि।

**खानक**—संज्ञा पुं० [ सं० खन ] १. खान खोदनेवाला। २. बेलदार। ३. मेमार। राज।

**खानकाह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मुसलमान साधुओं के रहने का स्थान या मठ।

**खानगी**—वि० [ फा० ] निज का। आपस का। घरेलू। घरू।
संज्ञा स्त्री० [ फा० ] केवल कसब करानेवाली तुच्छ वेश्या। कस्बी।

**खानदान**—संज्ञा पु० [ फा० ] वंश। कुल।

**खानदानी**—वि० [ फा० ] १. ऊँचे वंश का। अच्छे कुल का। २. वंश-परंपरागत। पैतृक। पुश्तैनी।

**खान-पान**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. अन्न-पानी। अन्न दाना। २. खाना-पीना। ३ खाने-पीने का आचार। ४. खाने-पीने का संबंध।

**खानसामा**—संज्ञा पु० [ फा० ] अंगरेजों, मुसलमानों आदि का भंडारी या रसोइया।

**खाना**—क्रि० स० [ सं० खादन ] १. भोजन करना। भक्षण करना। पेट में डालना।

**मुहा०**—खाता कमाता = खाने पीने भर को कमानेवाला। खाना कमाना = काम धंधा करके जीविका निर्वाह करना। खा-पका जाना या डालना = खर्च कर डालना। उड़ा डालना। खाना न पचना=चैन न पड़ना। जी न मानना। २ हिंसक जन्तुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना।

**मुहा०**—खा जाना या कच्चा खा जाना = मार डालना। प्राण ले लेना। खाने दौड़ना = चिड़चिड़ाना। क्रुद्ध होना। ३. विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४. तंग करना। दिक करना। कष्ट देना। ५. नष्ट करना बरबाद करना। ६. उड़ा देना दूर कर देना। न रहने देना। ७. हजम करना। मार लेना। हड़प जाना। ८ बेईमानी से रुपया पैदा करना। रिश्वत आदि लेना। ९ (आघात, प्रभाव आदि) सहना। बर्दाश्त करना।

**मुहा०**—मुँह की खाना = नीचा देखना। २. पराजित होना। हार जाना।

**खाना**—संज्ञा पु० [ फा० ] १ घर। मकान। जैसे—डाकखाना, दवाखाना। २. किसी चीज के रखने का घर। केस। ३. विभाग। कोठा। घर। ४. सारिणी या चक्र का विभाग। कोष्ठक।

**खाना-खराब**—वि० [ फा० ] जिसका घर-बार तक न रह गया हो। दुर्दशा-ग्रस्त।

**खानाजाद**—वि० [ फा० ] १. घर में पला हुआ। २. सेवक। दास।

**खानातलाशी**—संज्ञा स्त्री० [फा० ] किसी खोई या चुराई हुई चीज के लिये मकान के अंदर छानबीन करना।

**खानापूरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाना + पूरना ] किसी चक्र या सारिणी के कोठों में यथास्थान संख्या या शब्द आदि लिखना। नकशा भरना।

**खानाबदोश**—वि० [ फा० ] जिसका घरबार न हो।

**खानि**—संज्ञा स्त्री० [सं० खनि] १ दे० "खान"। २. ओर। तरफ। ३ प्रकार। तरह। ढंग।

**खानिक***†—संज्ञा स्त्री० दे० "खानि"।

**खाब***†—संज्ञा पु० दे० "ख्वाब"।

**खाम**—संज्ञा पु० [ हिं० खामना ] १. चिट्ठी का लिफाफा। २ संधि। जोड़। टाँका।
*†वि० [ सं० क्षाम ] घटा हुआ। क्षीण।

**खाम**—वि० [ फा० ] १. जो पका न हो। कच्चा। २. जिसे अनुभव न हो।

**खाम-खयाली**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] व्यर्थ का या बिना आधार का विचार।

**खामखाह**, **खामखाही**—क्रि० वि० दे० "ख्वाहमख्वाह"।

**खामना**—क्रि० स० [ सं० स्कंभन ] १. गीली मिट्टी या आटे से किसी पात्र का मुँह बंद करना। २. चिट्ठी को लिफाफे में बंद करना।

**खामी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ १ कच्चापन। कचाई। २. त्रुटि। दोष।

**खामोश**—वि० [फा०] चुप। मौन।

**खामोशी**—संज्ञा स्त्री० [फा० ] मौन। चुप्पी।

**खार**—संज्ञा पु० [ सं० क्षार ] १. दे० "क्षार"। २ सज्जी। ३. लोना। लोनी। कल्लर। रेह। ४. धूल। राख। ५. एक पौधा जिससे खार निकलता है।

**खार**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. काँटा। कंटक। फाँस। २. खाँग। ३. डाह। जलन।

**मुहा०**—खार खाना = डाह करना। जलना।

**खारक**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षारक ] छुहारा।

**खारा**—वि० पुं० [ सं० क्षार ] [स्त्री० खारी ] १ क्षार या नमक के स्वाद का। २. कड़ुआ। अरुचिकर।
संज्ञा पु० [ सं० क्षारक ] १. एक धारीदार कपड़ा। २. घास या सूखे पत्ते बाँधने के लिये जालदार बँधना। ३ जालीदार थैला। ४ झाबा। खाँचा।

**खारिक***†—संज्ञा पु० [ सं० क्षारक ] छोहारा।

**खारिज**—वि० [ अ० ] १. बाहर किया हुआ। निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. भिन्न। अलग। ३ जिस ( अभियोग ) की सुनाई करने से इन्कार

किया गया हो।

**खारिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] खुजली।

**खारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खारा ] एक प्रकार का क्षार लवण।

वि० क्षार-युक्त। जिसमें खार हो।

**खारुआँ-खारुवा**—संज्ञा पुं० [सं० क्षारक ] १ आल से बना हुआ एक प्रकार का रंग। २ इस रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा।

**खाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षाल ] १ मनुष्य, पशु आदि के शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ा। त्वचा।

**मुहा०**—खाल उधेड़ना या खींचना= बहुत मारना या पीटना या कड़ा दंड देना।

२. आधा चरसा। अधौड़ी। ३ धौंकनी। भाथी। ४. मृत शरीर।

संज्ञा स्त्री० [ सं० खात ] १. नीची भूमि जिसमें प्रायः बरसात का पानी जमा हो जाता हो। २. खाड़ी। खलीज। ३. खाली जगह।

**खालसा**—वि० [ अ० खालिस=शुद्ध] १. जिसपर केवल एक का अधिकार हो। २ राज्य का। सरकारी।

**मुहा०**—खालसा करना=१ स्वायत्त करना। जब्त करना। २. नष्ट करना।

संज्ञा पुं० सिक्खों की एक विशेष मंडली।

**खाला**—वि० [ हिं० खाल ] [ स्त्री० खाली ] नीचा। निम्न।

**खाला**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] माता की बहिन। मौसी।

**मुहा०**—खाला जी का घर=सहज काम।

**खालिस**—वि० [ अ० ] जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। शुद्ध।

**खाली**—वि० [ अ० ] जिसके भीतर का स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २. जिसपर कुछ न हो। ३. जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो।

**मुहा०**—हाथ खाली होना=हाथ में रुपया पैसा न होना। निर्धन होना। खाली पेट=बिना कुछ अन्न खाये हुए।

३. रहित। विहीन। ४ जिसे कुछ काम न हो। ५ जो व्यवहार में न हो। जिसका काम न हो ( वस्तु )। ६ व्यर्थ। निष्फल।

**मुहा०**—निशाना या वार खाली जाना =ठीक न बैठना। लक्ष्य पर न पहुँचना। बात खाली जाना या पड़ना=वचन निष्फल होना। कहने के अनुसार कोई बात न होना।

क्रि० वि० केवल। सिर्फ़।

**खाविंद**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ पति। खसम। २ मालिक। स्वामी।

**खास**—वि० [ अ० ] १. विशेष। मुख्य। प्रधान। 'आम' का उलटा।

**मुहा०**—खासकर=विशेषतः। प्रधानतः।

२. निज का। आत्मीय। ३ स्वयं। खुद। ४ ठीक। ठेठ। विशुद्ध।

संज्ञा स्त्री० [ अ० कीसा ] गाढ़े कपड़े की थैली।

**खासकलम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] निज का मुंशी। प्राइवेट सेक्रेटरी।

**खासगी**—वि० [ अ० खास + गी (प्रत्य०) ] राजा या मालिक आदि का। २. व्यक्तिगत। नीजी। निज का।

**खासबरदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह सिपाही जो राजा की सवारी के आगे चलता है।

**खासा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ राजा का भोजन। राज-भोग। २ राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। ३. एक प्रकार का पतला सफेद सूती कपड़ा।

वि० पुं० [ देश० ] [ स्त्री० खासी ] १. अच्छा। भला। उत्तम। २ स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग। ३. मध्यम श्रेणी का। ४ सुडौल। सुंदर। ५. भरपूर। पूरा पूरा। सर्वांगपूर्ण।

**खासियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ स्वभाव। प्रकृति। आदत। २. गुण। सिफ़त।

**खाहिश**—संज्ञा स्त्री० दे० 'ख्वाहिश'।

**खिंचना**—क्रि० अ० [ सं० कर्षण ] १ घसीटा जाना। २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकल जाना। ३ एक या दोनों छोरों का एक या दोनों ओर बढ़ना। तनना। ४ किसी ओर बढ़ना या जाना। आकर्षित होना। प्रवृत्त होना। ५ सोखा जाना। खपना। चूसना। ६ भभके से अर्क या शराब आदि तैयार होना। ७ गुण या तत्त्व का निकल जाना।

**मुहा०**—पीड़ा या दर्द खिंचना= ( औषध आदि से ) दर्द दूर होना।

८. कलम आदि से बनकर तैयार होना। चित्रित होना। ९ रुक रहना। रुकना।

**मुहा०**—हाथ खिंचना=देना बंद होना।

१० माल की चलान होना। माल खपना। ११ अनुराग कम होना।

**खिंचवाना**—क्रि० स० [ हिं० खींचना का प्रे० ] खींचने का काम दूसरे से कराना।

**खिंचाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खिंचना ] १ खींचने की क्रिया। २ खींचने की मजदूरी।

**खिंचाना**—क्रि० स० दे० 'खिंचवाना'।

**खिंचाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० खिंचना ] "खिंचना" का भाव।

**खिंडाना**—क्रि० स० [ सं० क्षिप्त ] बिखराना। छितराना।

**खिंखिर***—संज्ञा पुं० दे० "किंकिणा"।

**खिचड़वार**—संज्ञा पुं० हिं० खिचड़ी+वार ] मकर संक्राति।

**खिचड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कृसर ] १ एक में मिलाया या पकाया हुआ दाल और चावल।

मुहा०—खिचड़ी पकाना=गुप्त भाव से कोई सलाह करना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना=सबकी सम्मति के विरुद्ध या सबसे अलग होकर कोई कार्य्य करना।

२. विवाह की एक रसम जिसमें वर तथा उसके संबंधियों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। ३ एक ही में मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदार्थ। ४. मकर संक्राति।

वि० १ मिला जुला। २. गड़बड़।

**खिजमत***—संज्ञा स्त्री० दे० "खिदमत"।

**खिजलाना**—क्रि० अ० [हिं० खीजना] झुंझलाना। चिढ़ना।

क्रि० स० [ हिं० खीजना का प्रे० ] दुखी करना। चिढ़ाना।

**खिज़ाँ**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वृक्षों के पत्ते झड़ने के दिन। हेमंत ऋतु। २ पतझड़। ३. ह्रास या पतन के दिन।

**खिज़ाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सफेद बालों को काला करने की ओषधि। केश-कल्प।

**खिझ***—संज्ञा स्त्री० दे० "खीझ", "खीज"।

**खिझना**—क्रि० अ० दे० "खीजना"।

**खिझाना**—क्रि० स० [ हिं० खीझना] चिढ़ाना।

**खिड़कना**—क्रि० अ० [ हिं० खिसकना ] चुपचाप बिना कहे सुने चल देना।

**खिड़की**—संज्ञा स्त्री० [सं० खटिक्का] छोटा दरवाजा। दरीचा। झरोखा।

**खिताब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पदवी। उपाधि।

**खित्ता**—संज्ञा पुं० [ अ० ] प्रांत। देश।

**खिदमत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सेवा। टहल।

**खिदमतगार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] खिदमत करनेवाला। सेवक। टहलुआ।

**खिदमती**—वि० [ फ़ा० खिदमत ] १ जो खूब सेवा करे। २ सेवा-संबंधी अथवा जो सेवा के बदले में प्राप्त हुआ हो।

**खिन***†—संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

**खिन्न**—वि० [ सं० ] १. उदासीन। चिंतित। २. अप्रसन्न। नाराज। ३. दीन-हीन। असहाय।

**खिपना***—क्रि० अ० [ सं० क्षिप् ] १. खपना। २. तल्लीन होना। निमग्न होना।

**खियाना**†—क्रि० अ० [ सं० क्षय या हिं० खाना ] रगड़ से घिस जाना।

†क्रि० वि० दे० "खिलाना"।

**खियाल**—संज्ञा पुं० दे० "ख्याल"।

**खिरनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षीरिणी ] एक ऊँचा पेड़ और उसके फल जो खाये जाते हैं।

**खिराज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] राजस्व। कर।

**खिरिरना***—क्रि० स० [ अनु० ] १ अनाज छानना। २. खुरचना।

**खिरैंटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० खरयष्टिका] बला। बरियारा। बीजबंद।

**खिरौरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खीर + औरा ] एक प्रकार का लड्डू।

**खिलअत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वह वस्त्र आदि जो किसी राजा की ओर से सम्मान-सूचनार्थ किसी को दिया जाता है।

**खिलकत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सृष्टि। संसार। २. बहुत से लोगों का समूह। भीड़।

**खिलकौरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेल+कौरी ( प्रत्य० ) ] खेल। खिलवाड़।

**खिलखिलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] खिल खिल शब्द करके हँसना। जोर से हँसना।

**खिलत, खिलति***†—संज्ञा स्त्री० दे० "खिलअत"।

**खिलना**—क्रि० अ० [ सं० स्खल ] १. कली से फूल होना। विकसित होना। २ प्रसन्न होना। ३ शोभित होना। ठीक या उचित जँचना। ४. बीच से फट जाना। ५. अलग अलग हो जाना।

**खिलवत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] एकांत। शून्य या निर्जन स्थान।

**खिलवतखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ कोई गुप्त सलाह हो। एकांत मंत्रणा-स्थान।

**खिलवाड़**—संज्ञा पुं० दे० "खेलवाड़"।

**खिलवाना**—क्रि० स० [हिं० खाना] दूसरे से भोजन कराना।

क्रि० स० [ हिं० खिलाना का प्रे० ] प्रफुल्लित कराना।

क्रि० स० दे० "खेलवाना"।

**खिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खाना ] खाने या खिलाने का काम।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० खेलाना ( खेल ) ] वह दाई या मजदूरनी जो बच्चों को खेलाती हो।

**खिलाड़, खिलाड़ी**—संज्ञा पुं० [हिं० खेल + आड़ी (प्रत्य०)] [ स्त्री० खिलाड़िन ] १. खेल करनेवाला। खेलनेवाला। २. कुश्ती लड़ने, पटा बनेठी खेलने या ऐसे ही और काम करनेवाला। ३ जादूगर।

**खिलाना**—क्रि० स० [ हिं० खेलना ] किसी को खेल में नियोजित करना। खेल करना।

क्रि० स० [ हिं० खिलना ] 'खाना' का प्रेरणार्थक रूप । भोजन कराना ।
क्रि० स० [ हिं० खिलना ] खिलने में प्रवृत्त करना । विकसित करना । फुलाना ।

**खिलाफ**—वि० [ अ० ] विरुद्ध । उलटा । विपरीत ।

**खिलौना**—संज्ञा पुं० [ हिं० खेल + औना ( प्रत्य० ) ] कोई मूर्ति जिससे बालक खेलते हैं ।

**खिल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खिलना ] हँसी । हास्य । दिल्लगी । मजाक ।
**यौ०**—खिल्लीबाज =दिल्लगीबाज ।
†संज्ञा स्त्री० [ हिं० खील ] १ पान का बीड़ा । गिलौरी । २. कील । काँटा ।

**खिवना**—क्रि० अ० [ ? ] चमकना । प्रकाशित होना ।

**खिसकना**—क्रि० अ० दे० खस-कना ।

**खिसना***—क्रि० अ० दे० "खिस-कना" ।

**खिसाना***†—क्रि० अ० दे० "खिसियाना" ।

**खिसारा**—संज्ञा पुं० [फा०] घाटा । नुकसान । हानि ।

**खिसियाना**—क्रि० अ० [हिं० खीस+ दाँत ] १. लजाना । लज्जित होना । शरमाना । २. खफा होना । क्रुद्ध होना । रिसाना ।

**खिसी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खिसि-याना ] १. लज्जा । शरम । २ ढिठाई । धृष्टता ।

**खिसौहाँ***—वि० [ हिं० खिसाना ] १. लज्जित-सा । २ कुढ़ा या रिसाया सा ।

**खींच**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खींचना ] खींचना का भाव ।

**खींच-तान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खींच+ तान ] १. दो व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग । खींचाखींची । २. क्लिष्ट कल्पना द्वारा किसी शब्द या वाक्य आदि का अन्यथा अर्थ करना ।

**खींचना**—क्रि० स० [स० कर्षण] [प्रे० खिंचवाना ] १. घसीटना । २ किसी कोश, थैले आदि में से बाहर निकालना । ३ किसी वस्तु को छोर या बीच से पकड़कर अपनी ओर लाना । ४ बल-पूर्वक अपनी ओर बढ़ाना । तानना । ऐंचना । ५ आकर्षित करना । किसी ओर ले जाना ।
**मुहा०**—चित्त खींचना = मन को मोहित करना ।
६ सोखना । चूसना । ७. भभके से अर्क,शराब आदि टपकाना । ८ किसी वस्तु के गुण या तत्त्व को निकाल लेना ।
**मुहा०**—पीड़ा या दर्द खींचना = ( औषध आदि से ) दर्द दूर करना ।
९ कलम फेरकर लकीर आदि डालना । लिखना । चित्रित करना । १० रोक रखना ।
**मुहा०**—हाथ खींचना = देना या और कोई काम बंद करना ।

**खींचाखींची, खींचातानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खींचतान" ।

**खीज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खीजना ] १ खीजना का भाव । झुँझलाहट । २ वह बात जिससे कोई चिढ़े ।

**खीजना**—क्रि० अ० [ स० खिद्यते ] दुखी और क्रुद्ध होना । झुँझलाना । चिढ़ना ।

**खीझ***†—संज्ञा स्त्री० दे० "खीज" ।

**खीझना***†—क्रि० अ० दे० "खीजना" ।

**खीन***†—वि० [ स० क्षीण ] क्षीण ।

**खीनताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षीणता" ।

**खीर**—संज्ञा स्त्री० [ स० क्षीर ] १. दूध । २. दूध में पकाया हुआ चावल ।
**मुहा०**—खीर चटाना = बच्चे को पहले पहल अन्न खिलाना ।

**खीरा**—संज्ञा पुं० [ स० क्षीरक ] ककड़ी की जाति का एक लंबा फल ।

**खीरी**—संज्ञा स्त्री० [स० क्षीर] चौपायों के थन के ऊपर का वह मांस जिसमें दूध रहता है । बाख ।
संज्ञा स्त्री० [ स० क्षीरी ] खीरनी ।

**खील**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खिलना ] भूना हुआ धान । लावा ।
†संज्ञा स्त्री० दे० "कील" ।

**खीला**‡—संज्ञा पुं० [ हिं० कील ] काँटा । मेख । कील ।

**खीली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खील ] पान का बीड़ा । खिल्ली ।

**खीवन, खीवनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षीवन ] मतवालापन । मस्ती ।

**खीस***†—वि० [ सं० क्लिष्ट ] नष्ट । बरबाद ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० खीज ] १. अप्रसन्नता । नाराजगी । २ क्रोध । रोष । गुस्सा ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० खिसिआना ] लज्जा । शरम ।
संज्ञा स्त्री० [ स० कीश = बंदर ] ओंठ से बाहर निकले हुए दाँत ।

**खीसा**—संज्ञा पुं० [ फा० कीसा ] [ स्त्री० अल्पा० खीसी ] १. थैला । २ जेब । खलीता ।

**खुँदाना**—क्रि० स० [ स० क्षुण्ण = रौंदा हुआ ] ( घोड़ा ) कुदाना । [illegible]

**खुंभी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खुभी" [illegible]

**खुआर***†—वि० दे० "ख्वार" ।

**खुखड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खुँ[illegible]चना" ।

**खुक्ख**—वि० [ स० शुष्क ] [illegible] जिसके पास कुछ न हो । खाली ।
[illegible] "खिंचवाना" ।

**खुखड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खिंचना ] तकुए पर चढ़ाकर लपेटा [illegible] या ऊन । कुकड़ी । २. [illegible] स० क्षिप्त [illegible]

**खुगीर**—संज्ञा पुं० [ फा० [illegible]

ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के चारजामे के नीचे रखते हैं। नमदा। २. चारजामा। जीन।

मुहा०—खुगीर की भरती = अनावश्यक और व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का समूह।

खुचर, खुचुर—संज्ञा स्त्री० [सं० कुचर] झूठमूठ अवगुण दिखलाने का कार्य्य। ऐबजोई।

खुजलाना—क्रि० स० [सं० खर्जु] खुजली मिटाने के लिये नख आदि को अंग पर फेरना। सहलाना।

क्रि० अ० किसी अंग में सुरसुरी या खुजली मालूम होना।

खुजलाहट—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजलाना] सुरसुरी। खुजली।

खुजली—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुजलाना] १ खुजलाहट। सुरसुरी। २. एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है।

खुजाना—क्रि० स०, क्रि० अ० दे० "खुजलाना"।

खुट—संज्ञा स्त्री० दे० "कुट्टी" (४)।

खुटक*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खटकना] खटका। आशंका। चिंता।

खुटकना—क्रि० स० [सं० खुड् या खुंड] किसी वस्तु को ऊपर ऊपर से तोड़ या नोच लेना।

खुटका—संज्ञा पु० दे० "खटका"।

खुटचाल*—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटी + चाल] १ दुष्टता। पाजीपन। २ खराब चालचलन। ३. उपद्रव।

खुटचाली*—वि० [हिं० खुटचाल + ई (प्रत्य०)] १ दुष्ट। पाजी। २. दुराचारी। बदचलन।

खुटना*†—क्रि० अ० [सं० खुड] खुलना।

क्रि० अ० समाप्त होना।

खुटपन, खुटपना—संज्ञा पुं० [हिं० खोटा + पन, पना (प्रत्य०)] खोटापन। दोष। ऐब।

खुटाना†—क्रि० अ० [सं० खुड् = खोड़ा होना, या खोट] समाप्त होना। खतम होना।

खुटाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोटाई] खोटापन। दोष।

खुटिला—संज्ञा पुं० [देश०] करनफूल नामक कान का गहना।

खुट्टी†—संज्ञा स्त्री० [खुट से अनु०] १. रेवड़ी नाम की मिठाई। २. दे० "कुट्टी" (४)।

खुड्डी†—संज्ञा स्त्री० [?] दे० "खुरड"।

खुडुआ†—संज्ञा पुं० दे० "खोघी"।

खुड्डी, खुड्ढी—संज्ञा स्त्री० [हिं० गड्ढा] १. पाखाने में पैर रखने के पायदान। २. पखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा—संज्ञा पु० [अ०] १. तारीफ। प्रशंसा। २ सामयिक राजा की प्रशंसा या घोषणा।

मुहा०—किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना = सर्वसाधारण को सूचना देने के लिये किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना। (मुसल०)

खुत्था, खुथी*†—संज्ञा स्त्री० [हिं० खूँटी] १ पौधों का वह भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी पर गड़ा रह जाता है। खूँथी। खूँटी। २. थाती। धरोहर। अमानत। ३. वह पतली लंबी थैली जिसमें रुपया भरकर कमर में बाँधते हैं। वसनी। हिमयानी। ४. धन। दौलत।

खुद—अव्य० [फ़ा०] स्वयं। आप।

मुहा०—खुद ब खुद = आपसे आप। बिना किसी दूसरे के प्रयास, यत्न या सहायता के।

खुदकाश्त—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वह जमीन जिसे उसका मालिक स्वयं जोते बोए, पर वह सीर न हो।

खुदकुशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] आत्महत्या।

खुदगरज—वि० [फ़ा०] अपना मतलब साधनेवाला। स्वार्थी।

खुदगरजी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्वार्थपरता।

खुदना—क्रि० अ० [हिं० खोदना] खोदा जाना।

खुदमुख्तार—वि० [फ़ा०] जिसपर किसी का दबाव न हो। स्वतंत्र। स्वच्छंद।

खुदरा—संज्ञा पुं० [सं० क्षुद्र] छोटी और साधारण वस्तु। फुटकर चीज।

खुदवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुदवाना] खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुदवाना—क्रि० स० [हिं० खोदना का प्रे०] खोदने का काम कराना।

खुदा—संज्ञा पु० [फ़ा०] स्वयंभू। ईश्वर।

खुदाई—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ईश्वरता। २. सृष्टि।

खुदाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० खोदना] खोदने का भाव, काम या मजदूरी।

खुदाई खिदमतगार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पश्चिमी भारत के एक प्रकार के स्वयंसेवक जो राष्ट्रिय विचारों के हैं और समाज सेवा करते हैं।

खुदावंद—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. ईश्वर। २. मालिक। अन्नदाता। ३. हुजूर। श्रीमान्।

खुदाव—संज्ञा पुं० [हिं० खोदाव] १. खुदाई। २. खोदकर बनाये हुए बेल-बूटे। नक्काशी।

खुदी—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. अहंकार।

२. अभिमान। घमंड। शेखी।

**खुद्दी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षुद्र ] चावल, दाल आदि के बहुत छोटे छोटे टुकड़े।

**खुनखुना**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] घुन-घुना। झुनझुना।

**खुनस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खिन्नमनस् ] [ वि० खुनसी ] क्रोध। गुस्सा। रिस।

**खुनसाना**†—क्रि० अ० [ सं० खिन्न-मनस् ] क्रोध करना। गुस्सा होना।

**खुनसी**—वि० [ हिं० खुनसाना ] क्रोधी।

**खुफ़िया**—वि० [ फ़ा० ] गुप्त। पोशीदा। छिपा हुआ।

**खुफिया पुलिस**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० खुफिया + अं० पुलीस] गुप्त पुलिस। भेदिया। जासूस।

**खुभना**—क्रि० स० [ अनु० ] चुभना। घुसना। धँसना।

**खुभराना***†—क्रि० अ० [सं० क्षुब्ध] उपद्रव के लिये घूमना। इतराए फिरना।

**खुभाना**—क्रि० स० [ अनु० ] दे० "चुभाना"।

**खुभी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुभना ] कान में पहनने का लौंग।

**खुमान**—वि० [ सं० आयुष्मान् ] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी। (आ-शीर्वाद)

**खुमार**—संज्ञा पुं० दे० "खुमारी"।

**खुमारी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० खुमार ] १. मद। नशा। २. नशा उतरने के समय की हलकी थकावट। ३. वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है।

**खुमी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० कुमा ] पत्र-पुष्प-रहित क्षुद्र उद्भिद की एक जाति जिसके अंतर्गत भूफोड़, ढिंगरी और कुकुरमुत्ता आदि हैं।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुभना ] १. सोने की कील जिसे लोग दाँतों में जड़वाते हैं। २. धातु का पोला छल्ला जो हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाता है।

**खुरंड**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षुर=खरो-चना + अंड ] सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी।

**खुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सींगवाले चौपायों के पैर की टाप जो बीच से फटी होती है।

**खुरक**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुटक ] सोच। खटका। अंदेशा।

**खुरखुर**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] वह शब्द जो गले में कफ आदि रहने के कारण साँस लेते समय होता है। घर-घर शब्द।

**खुरखुरा**—वि० [ सं० क्षुर=खरोच-ना ] जिसको छूने से हाथ में कण या रवे गड़ें। नाहमवार। खुरदरा।

**खुरखुराना**—क्रि० अ० [ खुरखुर से अनु० ] गले में कफ के कारण घर-घराहट होना।

क्रि० अ० [ हिं० खुरखुरा ] खुरखुरा मालूम होना। कण या रवे आदि गड़ना।

**खुरखुराहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुर-खुर ] साँस लेते समय गले का शब्द।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुरखुरा ] खुरदरा-पन।

**खुरचन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरचना] वह वस्तु जो खुरचकर निकाली जाय।

**खुरचना**—क्रि० अ० [ सं० क्षुरण ] किसी जमी हुई वस्तु को कुरेदकर अलग कर लेना। करोचना। करोना।

**खुरचनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खुरचना] खुरचने का औजार।

**खुरचाल**—संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल"।

**खुरजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का झोला। बड़ा थैला।

**खुरताल**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुर + ताड़ना ] टाप या खुर की चोट। सुम का आघात।

**खुरपका**—संज्ञा पुं० [हिं० खुर+पकना] चौपायों का एक रोग जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाने निकल आते हैं।

**खुरपा**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षुरप ][स्त्री० अल्पा० खुरपी ] घास छीलने का औज़ार।

**खुरमा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. छोहारा। २. एक प्रकार का पकवान या मिठाई।

**खुराक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] भोजन। खाना।

**खुराकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह धन जो खुराक के लिये दिया जाय।

**खुराफात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. बेहूदा, और रद्दी बात। २. गाली-गलौज। ३ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।

**खुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुर ] टाप का चिह्न।

**खुरुक***—संज्ञा पुं० दे० "खुरक"।

**खुर्द**—वि० [ फ़ा० ] छोटा। लघु।

**खुर्दबीन**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह यंत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी देख पड़ती है। सूक्ष्मदर्शक यंत्र।

**खुर्द बुर्द**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] नष्ट-भ्रष्ट।

**खुर्दा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] छोटी मोटी चीज।

**खुर्राट**—वि० [ देश० ] १ बूढ़ा। वृद्ध। २. अनुभवी। तजरबेकार। ३. चालाक। धूर्त।

**खुलना** क्रि० अ० [ सं० खुड, खुल =भेदन ] १. अवरोध या आवरण का दूर होना। बंद न रहना। जैसे—किवाड़ खुलना।

**मुहा०**—खुलकर = बिना रुकावट के।

२. ऐसी वस्तु का हट जाना जो छाए या घेरे हो। ३ दरार होना। छेद होना। फटना। ४. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु का हटना। ५ जारी होना। ६. सड़क, नहर आदि तैयार होना। ७ किसी कारखाने, दूकान या दफ्तर का नित्य का कार्य्य आरंभ होना। ८. किसी सवारी का रवाना हो जाना। ९. गुप्त या गूढ़ बात का प्रकट हो जाना।

**मुहा०**—खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान = सबके सामने। छिपाकर नहीं। १०. मन की बात कहना। भेद बताना। ११. देखने में अच्छा लगना। सजना।

**मुहा०**—खुलता रंग = हलका सोहावना रंग।

**खुलवाना**—क्रि० स० [ हिं० खोलना का प्रे० ] खोलने का काम दूसरे से कराना।

**खुला**—वि० पुं० [ हिं० खुलना ] १ बंधन-रहित। जो बँधा न हो। २. जिसे कोई रुकावट न हो। अवरोधहीन। ३ जो छिपा न हो। स्पष्ट। प्रकट। जाहिर।

**खुलासा**—संज्ञा पुं० [अ०] सारांश। वि० [ हिं० खुलना ] १ खुला हुआ। २. अवरोधरहित। ३. साफ साफ। स्पष्ट।

**खुल्लमखुल्ला**—क्रि० वि० [ हिं० खुलना ] प्रकाश्य रूप से। खुले आम।

**खुवार***—वि० दे० "ख्वार"।

**खुश**—वि० [फ़ा०] १. प्रसन्न। मगन। आनंदित। २ अच्छा। (यौगिक में)।

**खुशकिस्मत**—वि० [फ़ा०] भाग्यवान्।

**खुशकिस्मती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सौभाग्य।

**खुशखबरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] प्रसन्न करनेवाला समाचार। अच्छी खबर।

**खुशदिल**—वि० [ फ़ा० ] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २. हँसोड़। मसखरा।

**खुशनसीब**—वि० [फ़ा०] भाग्यवान्।

**खुशबू**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सुगंधि। सौरभ।

**खुशबूदार**—वि० [ फ़ा० ] उत्तम गंधवाला।

**खुशमिजाज**—वि० [ फ़ा० ] सदा प्रसन्न रहनेवाला। हँसमुख।

**खुशमिजाजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मन का सदा प्रसन्न रहना। २. कुशल समाचार। खैरियत।

**खुशहाल**—वि० [फ़ा०] सुखी। संपन्न।

**खुशामद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशंसा। चापलूसी।

**खुशामदी**—वि० [ फ़ा० खुशामद+ई (प्रत्य०) ] खुशामद करनेवाला। चापलूस

**खुशामदी टट्टू**—संज्ञा पुं० [ हिं० खुशामदी+टट्टू ] वह जिसका काम खुशामद करना हो।

**खुशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आनंद। प्रसन्नता।

**खुश्क**—वि० [ फ़ा० मि० सं० शुष्क ] १. जो तर न हो। सूखा। २. जिसमें रसिकता न हो। रूखे स्वभाव का। ३ बिना और आमदनी के। केवल। मात्र।

**खुश्की**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. रूखापन। शुष्कता। नीरसता। २. स्थल या भूमि।

**खुशाल, खुस्याल***—वि० [फ़ा० खुशहाल] आनंदित। मुदित। खुश।

**खुसिया**—संज्ञा पुं० [अ०] अंडकोश।

**खुही**—संज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी"।

**खूँखार**—वि० [ फ़ा० ] १. खून पीनेवाला। २ भयंकर। डरावना। ३. क्रूर। निर्दय।

**खूँट**—संज्ञा पुं० [सं० खंड] १. छोर। कोना। २ ओर। तरफ। ३ भाग। हिस्सा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोंट ] कान की मैल।

**खूँटना**—क्रि० स० [ सं० खडन ] १. पूछताछ करना। टोकना। २. छेड़छाड़ करना। ३. कम होना। ४. दे० "खोटना"।

**खूँटा**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षोड ] पशु बाँधने के लिये जमीन में गड़ी लकड़ी या मेख।

**खूँटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खूँटा ] १. छोटी मेख। छोटी गड़ी लकड़ी। २. अरहर, ज्वार आदि के पौधे की सूखी पेड़ी का अंश जो फसल काट लेने पर खेत में खड़ा रह जाता है। ३. गुल्ली। अँटी। ४. बालों के नए निकले हुए कड़े अंकुर। ५. सीमा। हद। ६. मेख के आकार की लकड़ी।

**खूँद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खूँदना ] थोड़ी जगह में घोड़े का इधर-उधर चलते या पैर पटकते रहना।

**खूँदना**—क्रि० अ० [ सं० खुंडन = ताड़ना ] १. पैर उठा उठाकर जल्दी जल्दी भूमि पर पटकना। उछलकूद करना। २. पैरों से रौंदकर खराब करना। †३. कुचलना।

**खूक, खूखू***—संज्ञा पुं० [फ़ा० खूक] सूअर।

**खूझा**—संज्ञा पुं० [ सं० गुह्य, प्रा० गुज्झ ] १. फल के अंदर का निकम्मा रेशेदार भाग। २. उलझा हुआ रेशेदार लच्छा।

**खूटना***†—क्रि० अ० [ सं० खुंडन ] १. रुक जाना। बंद हो जाना। २. खतम होना।

क्रि० स० छेकना। रोक टोक करना।

**खूटा***—वि० दे० "खोटा"।

**खूद, खूदड़, खूदर**†—संज्ञा पुं० [सं० क्षुद्र] किसी वस्तु को छान लेने या साफ कर लेने पर बचा हुआ निकम्मा भाग।

**खून**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. रक्त। रुधिर।

**मुहा०**—खून उबलना या खौलना=क्रोध से शरीर लाल होना। गुस्सा चढ़ना। खून का प्यासा=वध का इच्छुक। खून सिर पर चढ़ना या सवार होना=किसी को मार डालने या किसी प्रकार का और कोई अनिष्ट करने पर उद्यत होना। खून पीना=१. मार डालना। २. बहुत तंग करना। सताना।

२. वध। हत्या। कतल।

**खून-खराबा**—संज्ञा पुं० [हिं० खून+खराबी] मार काट।

**खून खराबी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खून-खराब."।

**खूनी**—वि० [फ़ा०] १ मार डालने-वाला। हत्यारा। घातक। २. अत्याचारी।

**खूब**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा खूबी] अच्छा। भला। उमदा। उत्तम।

क्रि० वि० [फ़ा०] अच्छी तरह से।

**खूबकलाँ**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] फारस का एक घास के बीज। खाकसीर।

**खूबसूरत**—वि० [फ़ा०] सुंदर। रूपवान्।

**खूबसूरती**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सुंदरता।

**खूबानी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] जरदालू।

**खूबी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २. गुण। विशेषता।

**खूसट**—संज्ञा पुं० [सं० कौशिक] उल्लू।

वि० शुष्कहृदय। अरसिक। मनहूस।

**खूसर**†—संज्ञा पुं०वि० दे० "खूसट"।

**ख्रीष्टीय**—वि० [हिं० ख्रीष्ट+सं० ईय (प्रत्य)] ईसासंबंधी। ईसा का। ईसाई।

**खेकसा, खेखसा**—संज्ञा पुं० [देश०] परवल के आकार का एक रोएँदार फल या तरकारी। ककोड़ा।

**खेचर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो आसमान में चले। आकाशचारी। २. सूर्य-चंद्र आदि ग्रह। ३ तारागण। ४. वायु। ५. देवता। ६. विमान। ७. पक्षी। ८. बादल। ९ भूत-प्रेत। १०. राक्षस।

**खेचरी गुटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] योगसिद्ध गोली जिसको मुह में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती है। (तंत्र)

**खेचरी मुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] योगसाधन की एक मुद्रा जिसमें जीभ को उलटकर तालू से लगाते हैं और दृष्टि मस्तक पर।

**खेटक**—संज्ञा पुं० [सं०] १ खेड़ा। गाँव।

२. सितारा। ३. बलदेवजी की गदा।

संज्ञा पुं० [सं० आखेट] शिकार।

**खेटकी**—संज्ञा पुं० [सं०] भड्डरी। भड़रिया।

संज्ञा पुं० [सं० आखेट] १. शिकारी। अहेरी। २. वधिक।

**खेड़ा**†—संज्ञा पुं० [सं० खेट] छोटा गाँव।

**खेड़ी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का देशी लोहा। खुरकुटिया लोहा। २. वह मांसखंड जो जरायुज जीवों के बच्चों की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।

**खेत**—संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्र] १. अनाज आदि की फसल उत्पन्न करने के योग्य जोतनेबोने की जमीन।

**मुहा०**—खेत करना=१. समथल करना। २. उदय के समय चंद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना।

२. खेत में खड़ी हुई फसल। ३. किसी चीज के विशेषतः पशुओं आदि के उत्पन्न होने का स्थान या देश। ४. समर भूमि।

**मुहा०**—खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना। खेत रखना=समर में विजय प्राप्त करना।

५. तलवार का फल।

**खेतिहर**—संज्ञा पुं० [सं० क्षेत्रधर] खेती करनेवाला। कृषक। किसान।

**खेती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेत+ई (प्रत्य०)] १. खेत में अनाज बोने का कार्य्य। कृषि। किसानी। २. खेत में बोई हुई फसल।

**खेतीबारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खेती+बारी] किसानी। कृषि-कर्म।

**खेद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० खेदित, खिन्न] १. अप्रसन्नता। दुःख। रंज। २ शिथिलता। थकावट।

**खेदना**†—क्रि० स० [सं० खेट] १. मारकर हटाना। भगाना। खदेरना। २ शिकार के पीछे दौड़ना।

**खेदा**—संज्ञा पुं० [हिं० खेदना] १. किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। २, शिकार। अहेर। आखेट।

**खेदित**—वि० [सं०] १. दुःखित। रंजीदा। २. थका हुआ। शिथिल।

**खेना**—क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. नाव के डाँड़ों को चलाना जिसमें नाव चले। २ कालक्षेप करना। बिताना। काटना।

**खेप**—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षेप] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार में ले जाई जाय। लदान। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

**खेपना**—क्रि० स० [ सं० क्षेपण ] बिताना। काटना। गुजारना।

**खेम***—संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।

**खेमटा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. बारह मात्राओं का एक ताल। २. इस ताल पर होनेवाला गाना या नाच।

**खेमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] तंबू। डेरा।

**खेरौरा**†—संज्ञा पुं० [ ? ] मिसरी का लड्डू। ओला।

**खेल**—संज्ञा पुं० [ सं० केलि ] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछल कूद, दौड़ धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, जिसमें कभी-कभी हार जीत भी होती है। क्रीड़ा।

**मुहा०**—खेल खेलाना = बहुत तंग करना।

२. मामला। बात। ३. बहुत हलका या तुच्छ काम। ४ अभिनय, तमाशा, स्वाँग या करतब आदि। ५. कोई अद्भुत बात। विचित्र लीला।

**खेलक***—संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।

**खेलना**—क्रि० अ० [ सं० केलि, केलन ] [ प्रे० खेलाना ] १ मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर-उधर उछलना, कूदना, दौड़ना आदि। क्रीड़ करना। २. काम-क्रीड़ा करना। विहार करना। ३ भूत-प्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ पैर आदि हिलाना। अभुआना। ४. विचरना। चलना। बढ़ना।

क्रि० स० १ मन बहलाव का काम करना। जैसे—गेंद खेलना, ताश खेलना।

**मुहा०**—जान या जी पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो। २. नाटक या अभिनय करना।

**खेल-मिचौली**—संज्ञा स्त्री० दे० "आँख मिचौली"।

**खेलवाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० खेल+वाड़ ] खेल। क्रीड़ा। तमाशा। मन-बहलाव। दिल्लगी।

**खेलवाड़ी**—वि० [ हिं० खेल+वार (प्रत्य०) ] १. बहुत खेलनेवाला। २ विनोदशील।

**खेला**—संज्ञा पुं० दे० "खेल"।

**खेलाड़ी**—वि० [ हिं० खेल+आड़ी (प्रत्य०) ] १. खेलनेवाला। क्रीड़ाशील। २. विनोदी।

संज्ञा पुं० १. खेल में सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। वह जो खेले। २. तमाशा करनेवाला। ३. ईश्वर।

**खेलाना**—क्रि० स० [ हिं० 'खेलना' का प्रे० ] १. किसी दूसरे को खेल में लगाना २ खेल में शामिल करना। ३ उलझाए रखना। बहलाना।

**खेलार***†—संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।

**खेलौना**—संज्ञा पुं० दे० "खिलौना"।

**खेवक***—संज्ञा पुं० [ सं० क्षेपक ] नाव खेनेवाला। मल्लाह। केवट।

**खेवट**—संज्ञा पुं० [ हिं० खेत+बाँट ] पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक पट्टीदार का हिस्सा लिखा रहता है। संज्ञा पुं० [ हिं० खेना ] मल्लाह। माँझी।

**खेवना***—क्रि० स० दे० "खेना"।

**खेवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खेना ] १. नाव का किराया। २. नाव-द्वारा नदी पार करने का काम। ३. बार। दफा। काल। समय। ४. बोझ से भरी नाव।

**खेवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खेना ] १. नाव खेने का काम। २. नाव खेने की मजदूरी।

**खेस**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बहुत मोटे सूत की लंबी चादर।

**खेसारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कृसर ] एक प्रकार का मटर। दुबिया मटर। लतरी।

**खेह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षार ] धूल। राख।

**मुहा०**—खेह खाना=१ धूल फाँकना। व्यर्थ समय खोना। २. दुर्दशा-ग्रस्त होना।

**खेहर**†—संज्ञा स्त्री० दे० "खेह"।

**खैंचना**—क्रि० स० दे "खींचना"।

**खैर**—संज्ञा पुं० [ सं० खदिर ]। १. एक प्रकार का बबूल। कथ-कीकर। सोन कीकर। २. इस वृक्ष की लकड़ी को उबालकर निकाला और जमाया हुआ रस जो पान में खाया जाता है। कत्था। ३ एक पक्षी।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० खैर ] कुशल। क्षेम। अव्य० १. कुछ चिंता नहीं। कुछ परवा नहीं। २. अस्तु। अच्छा।

**खैरआफियत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० खैर ] कुशलमंगल। क्षेम कुशल।

**खैरखाह**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा खैरखाही ] भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

**खैर-भैर**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. हो-हल्ला। २ हलचल।

**खैरा**—वि० [ हिं० खैर ] खैर के रंग का। कत्थई।

**खैरात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० खैराती ] दान। पुण्य।

**खैरियत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. कुशल क्षेम। राजी-खुशी। २. भलाई। कल्याण।

**खैल भैल**—संज्ञा पुं० दे० "खैर-भैर"।

**खैलर**—संज्ञा स्त्री० [ सं क्ष्वेड ] मथानी।

**खैला**—संज्ञा पुं० दे० "खैलर"।

**खोंइचा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खूँट ] स्त्रियों की धोती का आँचल। पल्ला। खूँट।

**खोंगाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीलापन लिए सफेद रंग का घोड़ा।

**खोंच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुच ] १.

किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात। खरोंट। २ काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।

**खोंचा**—संज्ञा पुं० [ सं० कुच ] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस।

**खोंचया**—संज्ञा पुं० [ हिं० खोंची ] भिखारी।

**खोंची**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खूँट ] भिक्षा। भीख।

**खोंट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोंटना] १. खोंटने या नोचने की क्रिया। २. नोचने से पड़ा हुआ दाग। खरोंट।

**खोंटना**—क्रि० स० [ सं० खुड ] १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना। कतरना।

**खोंड़र**—संज्ञा पुं० [ सं० कोटर ] पेड़ का भीतरी पोला भाग।

**खोंड़ा**—वि० [ सं० खुड ] १ जिसका कोई अंग भंग हो। २. जिसके आगे के दो तीन दाँत टूटे हों।

**खोंता**—संज्ञा पुं० [ देश० ] चिड़ियों का घोंसला। नीड़।

**खोंसना**—क्रि० स० [ सं० कोश + ना ( प्रत्य० ) ] किसी वस्तु को कहीं स्थिर रखने के लिये उसका कुछ भाग दूसरी वस्तु में घुसेड़ देना। अटकाना।

**खोआ**—संज्ञा पुं० दे० "खोया"।

**खोई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षुद्र ] १. रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े। छोई। २. धान की खील। लाई। ३ कंबल की घोघी।

**खोखला**—वि० [ हिं० खुक्ख + ला ( प्रत्य० ) ] जिसके भीतर कुछ न हो। पोला।

**खोखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० खुक्ख ] १. वह कागज जिसपर हुंडी लिखी जाती है। २. वह हुंडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।

**खोगीर**—संज्ञा पुं० दे० "खुगीर"।

**खोज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोजना ] १. अनुसंधान। तलाश। शोध। २. चिह्न। निशान। पता। ३. गाड़ी के पहिए की लीक अथवा पैर आदि का चिह्न।

**खोजना**—क्रि० स० [ सं० खुज = चुराना] तलाश करना। पता लगाना। ढूँढ़ना।

**खोजवाना**—क्रि० स० [ हिं० खोजना का प्रे०] पता लगवाना। ढुँढ़वाना।

**खोजा**—संज्ञा पुं० [ फा० ख्वाजा ] १ वह नपुंसक जो मुसलमानी हरमों में सेवक की भाँति रहता है। २ सेवक। नौकर। ३. माननीय व्यक्ति। सरदार।

**खोजी**—वि० [ हिं० ] खोजने या ढूँढ़नेवाला।

**खोट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खोट ] १. दोष। ऐब। बुराई। २. किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।

**खोटता**—संज्ञा स्त्री० दे० "खोटाई"।

**खोटा**—वि० [ सं० क्षुद्र ] [ स्त्री० खोटी ] जिसमें ऐब हो। बुरा। "खरा" का उलटा।

**मुहा०**—खोटी खरी सुनाना = डाँटना। फटकारना।

**खोटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोटा + ई ( प्रत्य० ) ] १. बुराई। दुष्टता। क्षुद्रता। २ छल। कपट। ३. दोष। ऐब। नुक्स।

**खोटापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० खोटा + पन ( प्रत्य० ) ] खोटा होने का भाव। क्षुद्रता।

**खोड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोट ] भूत-प्रेत आदि की बाधा।

**खोड़रा**—संज्ञा पुं० [ सं० कोटर ] पुराने पेड़ में खोखला भाग या गड्ढा।

**खोद**—संज्ञा पुं० [ फा० खोद ] युद्ध में पहनने का लोहे का टोप। कूँड़। शिरस्त्राण।

**खोदना**—क्रि० स० [ सं० खुद=भेदन करना ] १. सतह की मिट्टी आदि हटाकर गहरा करना। गड्ढा करना। खनना। २ मिट्टी आदि उखाड़ना। ३. खोदकर उखाड़ना या गिराना। ४. नक्काशी करना। ५. उँगली, छड़ी आदि से छूना या दबाना। गड़ाना। ६. छेड़छाड़ करना। छेड़ना। ७ उत्तेजित करना। उसकाना। उभाड़ना।

**खोदबिनोद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोद + बिनोद ( अनु० ) ] छानबीन। जाँच-पड़ताल।

**खोदवाना**—क्रि० स० [ हिं० खोदना का प्रे० ] खोदने का काम दूसरे से करवाना।

**खोदाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोदना ] १. खोदने का काम। २ खोदने की मजदूरी।

**खोना**—क्रि० स० [ सं० क्षेपण ] १. अपने पास की वस्तु को निकल जाने देना। गँवाना। २. भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ देना। ३ खराब करना। बिगाड़ना।

क्रि० अ० पास की वस्तु का निकल जाना। किसी वस्तु का कहीं भूल से छूट जाना।

**खोनचा**—संज्ञा पुं० [फा० ख्वानचा] बड़ी परात या थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।

**खोपड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० खर्पर ] १ सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर। ३. गरी का गोला। गरी। ४ नारियल।

**खोपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोपड़ा ] १. सिर की हड्डी। कपाल। २ सिर।

**मुहा०**—अंधी या औंधी खोपड़ी का = नासमझ। मूर्ख। खोपड़ी खा या चाट जाना = बहुत बातें करके तंग करना।

खोपड़ी गंजी होना = मार से सिर के बाल झड़ जाना।

**खोपा**—संज्ञा पुं० [ सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा ] १ ऊपर का कोना। २. मकान का कोना जो किसी रास्ते की ओर पड़े। ३. स्त्रियों की गुथी चोटी की तिकोनी बनावट। ४ जूड़ा। वेणी। ५ गरी का गोला।

**खोभरा***—संज्ञा पुं० [ हिं० खुभना ] खूँटी आदि चुभनेवाली चीज।

**खोभार**†—संज्ञा पुं० [ ? ] कूड़ा करकट फेंकने का गड्ढा।

**खोम***—संज्ञा पुं० [ अ० कौम ] समूह।

**खोय**†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ख़ू] आदत।

**खोया**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षुद्र ] आँच पर चढ़ाकर इतना गाढ़ा किया हुआ दूध कि उसकी पिंडी बाँध सकें। मावा। खोवा।

**खोर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुर ] १. सँकरी गली। कूचा। २ चौपायों को चारा देने की नाँद।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोरना ] स्नान। नहान।

**खोरना**†—क्रि० अ० [ सं० क्षालन ] नहाना।

**खोरा**—संज्ञा पु० [ सं० खोलक, फ़ा० आबखोरा ] [ स्त्री० खोरिया ] १. कटोरा। बेला। २. पानी पीने का बरतन। आबखोरा।

†*वि० [सं० खोर या खोट] लँगड़ा।

**खोराक**—संज्ञा पु० दे० "खुराक"।

**खोरि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खुर ] तंग गली।

संज्ञा स्त्री० [ सं० खोट या खोर ] १. ऐब। दोष। २. बुराई।

**खोरिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोरा ] १. छोटी कटोरी। २. सिरपर लगाने के चमकीले बूँदे ( स्त्री० )।

**खोल**—संज्ञा पुं० [सं० खोल=कोश या आवरण] १. ऊपर से चढ़ा हुआ ढकना। गिलाफ। २. कीड़ों का ऊपरी चमड़ा जिसे समय समय पर वे बदला करते हैं। ३ मोटा चादर।

**खोलना**—क्रि० स० [ सं० खुड, खुल = भेदन ] १ छिपाने या रोकनेवाली वस्तु को हटाना। जैसे—किवाड़ खोलना। २. दरार करना। छेद करना। शिगाफ करना। ३ बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु को अलग करना। बंधन तोड़ना। ४. किसी बँधी हुई वस्तु को मुक्त करना। ५. किसी क्रम को चलाना या जारी करना। ६. सड़क, नहर आदि तैयार करना। ७ दूकान, दफ्तर आदि का दैनिक कार्य आरंभ करना। ८. गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट या स्पष्ट कर देना।

**खोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खोल ] आवरण। गिलाफ़। जैसे—तकिए की खोली।

**खोह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोह ] गुहा। गुफा। कंदरा।

**खोही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खोतक ] १. पत्तों की छतरी। २. घुग्घी।

**खौं**—संज्ञा स्त्री० [ सं० खन् ] १ खात। गड्ढा। २. अन्न रखने का गहरा गड्ढा।

**खौचा**—संज्ञा पुं० [ सं० षट् + च ] साढ़े छः का पहाड़ा।

**खौफ**—संज्ञा पु० [ अ० ] [ वि० खौफनाक ] डर। भय। भीति। दहशत।

**खौर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षौर या क्षुर ] १. चंदन का तिलक। टीका। २ स्त्रियों का सिर का एक गहना।

**खौरना**—क्रि० स० [ हिं० खौर ] खौर लगाना। चंदन का टीका लगाना।

**खौरहा**†—वि० [हिं० खौरा + हा(प्रत्य०)] [ स्त्री० खौरही ] १ जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। २ जिसके शरीर में खौरा या खुजली का रोग हो। ( पशु )

**खौरा**—संज्ञा पु० [ सं० क्षौर। फा० बालखोरा ] एक प्रकार की बड़ी खुजली।

वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।

**खौलना**—क्रि० अ० [ सं० क्ष्वेल ] ( तरल पदार्थ का ) उबलना। जोश खाना।

**खौलाना**—क्रि० स० [ हिं० खौलना ] जल, दूध आदि गरम करना।

**ख्यात**—वि० [ सं० ] प्रसिद्ध। विदित।

**ख्याति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रसिद्धि। शोहरत।

**ख्याल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० ख्याली ] १ ध्यान। मनोवृत्ति।

**मुहा०**—ख्याल रखना=ध्यान रखना। देखते भालते रहना। किसी के ख्याल पड़ना=किसी को दिक करने पर उतारू होना।

२. स्मरण। स्मृति। याद।

**मुहा०** ख्याल से उतारना = भूल जाना। याद न रहना।

३ विचार। भाव। सम्मति। ४. आदर। ५ एक प्रकार का गाना।

*†संज्ञा पु० [ हिं० खेल ] खेल। क्रीडा।

**ख्याली**—वि० [ हिं० ख्याल ] कल्पित। फर्जी।

**मुहा०**—ख्याली पुलाव पकाना = असंभव बातें सोचना। मनोराज्य करना।

वि० [ हिं० खेल ] खेल या कौतुक करनेवाला।

**खिष्टान**—संज्ञा पुं० [ हिं० खिष्ट ] ईसाई।

**खिष्टीय**—वि० [ अं० क्राइस्ट ]

१. ईसाई । २. ईसाई धर्म संबंधी ।

**ख्रीष्ट**—संज्ञा [अं० क्राइस्ट] [वि० ख्रिष्टीय] हजरत ईसा मसीह ।

**ख्वाजा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मालिक । २. सरदार । ३. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फकीर । ४. रनिवास का नपुंसक भृत्य । ख्वाजासरा ।

**ख्वाब**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. सोने की अवस्था । नींद । स्वप्न ।

**ख्वार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा ख्वारी] १. खराब । सत्यानाश । २. अनादृत । तिरस्कृत ।

**ख्वारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. खराबी । दुर्दशा । २. सर्वनाश ।

**ख्वाह**—अव्य० [फ़ा०] या । अथवा । या तो ।

**यौ०**—ख्वाह-म-ख्वाह = १. चाहे कोई चाहे या न चाहे । जबरदस्ती । २. जरूर । अवश्य ।

**ख्वाहिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [वि०, ख्वाहिशमंद] इच्छा । अभिलाषा । आकांक्षा ।

## ग

**ग**—व्यंजन में क वर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है ।

**गंग**—संज्ञा पुं० [सं० गंगा] एक मात्रिक छंद ।

संज्ञा स्त्री० [सं० गंगा] गंगा नदी ।

**गंग बरार**—संज्ञा पुं० [हिं० गंगा + फ़ा० बरार] वह जमीन जो किसी नदी की धारा के हटने से निकल आती है ।

**गंग शिकस्त**—संज्ञा पुं० [हिं० गंगा + फ़ा० शिकस्त] वह जमीन जिसे कोई नदी काट ले गई हो ।

**गंगा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी ।

**गंगागति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु ।

**गंगा जमनी**—वि० [हिं० गंगा + यमुना] १. मिला जुला । संकर । दो-रंगा । २. सोने, चाँदी, पीतल ताँबे आदि दो धातुओं का बना हुआ । ३. काला-उजला । स्याह-सफेद । अबलक ।

**गंगाजल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंगा का पानी । २. एक बारीक सफेद कपड़ा ।

**गंगाजली**—संज्ञा स्त्री० [सं० गंगाजल] १. वह सुराही या शीशी जिसमें यात्री गंगाजल भर कर ले जाते हैं । २. धातु की सुराही ।

**गंगाधर**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव ।

**गंगापुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भीष्म । २. एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं । ३ एक वर्णसंकर जाति ।

**गंगा यात्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मरणासन्न मनुष्य का गंगा के तट पर मरने के लिए गमन । २ मृत्यु ।

**गंगाल**—संज्ञा पुं० [सं० गंगा + आलय] पानी रखने का बड़ा बरतन । कंडाल ।

**गंगालाभ**—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु ।

**गंगासागर**—संज्ञा पुं० [हिं० गंगा + सागर] १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है जहाँ गंगा समुद्र में गिरती हैं । २ एक प्रकार की बड़ी टोंटीदार झारी ।

**गँगेरन**—संज्ञा स्त्री० [सं० गांगेरुकी] एक पौधा जो चतुर्विध बला के अंतर्गत माना जाता है । नागबला ।

**गंगोक***—संज्ञा पुं० दे० "गंगोदक" ।

**गंगोदक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गंगाजल । २. चौबीस अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त ।

**गँगौटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गंगा + मिट्टी] गंगा के किनारे की मिट्टी ।

**गंज**—संज्ञा पुं० [सं० कंज या खंज] १. सिर के बाल उड़ने का रोग । चाई । चँदलाई । खल्वाट । २. सिर में छोटी छोटी फुनसियों का रोग । बालखोरा । संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] [सं०] १. खजाना । कोष । २. ढेर । अंबार । राशि । अटाला । ३. समूह । झुंड । ४. गल्ले की मंडी । गोला । हाट । बाजार । ५. वह चीज जिसके भीतर बहुत सी काम की चीजें हों ।

**गंजन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अवज्ञा । तिरस्कार । २. पीड़ा । कष्ट । ३. नाश ।

**गंजना**—क्रि० स० [सं० गंजन] १. अवज्ञा करना । नाश करना ।

**गँजाना**—क्रि० स० [सं०] १. देखिये "गंजना" । २. गंजने का काम दूसरे से कराना ।

३. गाँजने का काम दूसरे से कराना।

**गंजा**—संज्ञा पुं० [ सं० खज या कंज] गज रोग।
वि० जिसको गंज रोग हो। खल्वाट।

**गंजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गंज ] १. ढेर। समूह। गाँज। †२. शकरकंद। कंदा।
संज्ञा स्त्री० [ अं० गुएरनेसी = एक टापू ] बुनी हुई एक छोटी कुरती या बंडी जो बदन में चिपकी रहती है। बनियाइन।
संज्ञा पुं० दे० "गँजेड़ी"।

**गंजीफा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] एक खेल जो अठरग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

**गँजेड़ी**—वि० [ हिं० गाँजा + एड़ी (प्रत्य०) ] गाँजा पीनेवाला।

**गँठजोड़ा, गँठबंधन**—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ + बंधन ] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।

**गंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ कपोल। गाल। २ कनपटी। ३. गंडा जो गले में पहना जाता है। ४. फोड़ा। ५. चिह्न। लकीर। दाग। ६. गोल मंडलाकार चिह्न या लकीर। गराड़ी। गंडा। ७. गाँठ। ८ वीथी नामक नाटक का एक अंग।

**गंडक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ गले में पहनने का जंतर या गंडा। २ गंडकी नदी का तटस्थ देश तथा वहाँ के निवासी।
संज्ञा स्त्री० दे० "गंडकी"।

**गंडकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंगा में गिरनेवाली उत्तर-भारत की एक नदी।

**गंडमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक रोग जिसमें गले में छोटी छोटी बहुत सी फुड़ियाँ निकलती हैं। गलगंड। कंठमाला।

**गंडस्थल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कनपटी।

**गंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० गंडक ] गाँठ।
संज्ञा पुं० [ सं० गंडक ] मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया धागा जिसे लोग रोग और भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिए गले में बाँधते हैं।
मुहा०—गंडा तावीज=मंत्र-यंत्र टोटका।
संज्ञा पुं० [ सं० गंडक ] पैसे, कौड़ी के गिनने में चार चार की संख्या का समूह।
संज्ञा पुं० [ सं० गंड = चिह्न ] १. आड़ी लकीरों की पंक्ति। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रंगीन धार कंठा। हँसली।

**गँड़ासा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गँडी + सं० असि ] [ स्त्री० अल्पा० गँड़ासी ] चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार।

**गंडूष**—संज्ञा पुं० [ सं० गंडूषा ] १. चुल्ला। २ कुल्ला।

**गँडेरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कांड या गंड ] ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।

**गंता**—वि० [ सं० गंत ] जानेवाला।

**गंदगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ मैलापन। मलिनता। २ अपवित्रता। अशुद्धता। नापाकी। ३ मैला। गलीज। मल।

**गंदना**—संज्ञा पुं० [ सं० गंधन, या फा० ] लहसुन या प्याज की तरह का एक मसाला।

**गँदला**—वि० [हिं० गंदा + ला (प्रत्य०) ] मैला-कुचैला। गंदा। मलिन।

**गंदा**—वि० [ फ़ा० ] [स्त्री० गंदी] १. मैला। मलिन। २. नापाक। अशुद्ध। ३ घिनौना। घृणित।

**गंदुम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गेहूँ।

**गंदुमी**—वि० [ फा० गंदुम ] गेहूँ के रंग का।

**गंध**—संज्ञा स्त्री० [सं० गंध] १. बास। महक। २ सुगंध। अच्छी महक। ३. सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाय। ४. लेश। अणुमात्र। संस्कार। संबंध।

**गंधक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० गंधकी ] एक पीला जलनेवाला खनिज पदार्थ।

**गंधकी**—वि० [ हिं० गंधक ] गंधक के रंग का हलका पीला।

**गंधपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सफेद तुलसी। २. मरुवा। ३ नारंगी। ४. बेल

**गंधबिलाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० गंध + बिलाव ] नेवले की तरह का एक जंतु जिसकी गिलटी से सुगंधित चेप निकलता है।

**गंधमार्जार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गंधबिलाव।

**गंधमादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक पुराण प्रसिद्ध पर्वत। २ भौंरा।

**गंधर्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ सं० स्त्री० गंधर्वी, हिं० स्त्री० गंधर्विन ] १. देवताओं का एक भेद। ये गाने में निपुण कहे गए हैं। विद्याधर। २. मृग। ३. घोड़ा। ४. वह आत्मा जिसने एक शरीर छोड़कर दूसरा ग्रहण किया हो। ५. एक जाति जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं। ६. विधवा स्त्री का दूसरा पति।

**गंधर्वनगर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखाई पड़ता है। २. मिथ्या ज्ञान। भ्रम। ३. चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में

दिखाई पड़ता है। ४. संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों के बीच फैली हुई लाली।

**गंधर्वविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संगीत।

**गंधर्वविवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आठ प्रकार के विवाहों में से एक। वह संबंध जो वर और वधू अपने मन से कर लेते हैं।

**गंधर्ववेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संगीत शास्त्र जो चार उपवेदों में से एक है।

**गंधवह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। हवा। २. चंदन।
वि० १. गंध ले जाने या पहुँचानेवाला। २. सुगंधित। खुशबूदार।

**गंधा**—वि० स्त्री० [ सं० ] गंधवाली (यौगिक शब्दों के अंत में)।

**गंधाना**—क्रि० स० [ हिं० गंध ] गंध देना। बसाना। दुर्गंध करना।

**गंधाबिरोजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गंध + बिरोजा] चीर नामक वृक्ष का गोंद। चढ़स।

**गंधार**—संज्ञा पुं० दे० "गांधार"।

**गँधिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० गंध ] १. एक प्रकार का बदबूदार कीड़ा। २. एक तरह की घास।

**गंधी**—संज्ञा पुं० [ सं० गंधिन् ] [स्त्री० गंधिनी, गंधिन ] १. सुगंधित तेल और इत्र आदि बेचनेवाला। अत्तार। २. गँधिया घास। गाँधी। ३. गँधिया कीड़ा।

**गँधीला**—वि० [ हिं० गंध ] बुरी गंधवाला। बदबूदार।

**गंभारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक बड़ा पेड़। काश्मरी।

**गंभीर**—वि० [सं०] १ जिसकी थाह जल्दी न मिले। नीचा। गहरा। २. घना। गहन। ३. जिसके अर्थ तक पहुँचना कठिन हो। गूढ़। जटिल। ४. घोर। भारी। ५. शांत। सौम्य।

**गँवँ**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० गम्य ] १. घात। दाँव। २. मतलब। प्रयोजन। ३. अवसर। मौका। ४. ढग। उपाय। युक्ति।

**मुहा०**—गँवँ से = ढग से। युक्ति से। †धीरे से। चुपके से।

**गँवई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँव ] [वि० गँवइयाँ ] गाँव की बस्ती।

**गँवर मसला**—संज्ञा पुं० [हिं० गँवार + अ० मसल ] गँवारों की कहावत या उक्ति।

**गँवाना**—क्रि० स० [ सं० गमन ] १. (समय) बिताना। काटना। २. पास की वस्तु को निकल जाने देना। खोना।

**गँवार**—वि० [ हिं० गाँव + आर (प्रत्य०) ] [ स्त्री० गँवारिन। वि० गँवारू, गँवारी ] १. गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती। असभ्य। २ बेवकूफ। मूर्ख। ३ अनाड़ी।

**गँवारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गँवार ] १. गँवारपन। देहातीपन। २. मूर्खता। बेवकूफी। ३. गँवार स्त्री।
वि० [ हिं० गँवार + ई (प्रत्य०) ] १. गँवार का सा। २. भद्दा। बदसूरत।

**गँवारू**—वि० दे० "गँवारी"।

**गँवेला**†—वि० दे० "गँवार"।

**गँस***—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रंथि ] १ गाँठ। द्वेष। वैर। २. मन में चुभनेवाली बात। ताना। चुटकी।
संज्ञा स्त्री० [ सं० कषा ] तीर की नोक।

**गँसना***†—क्रि० स० [ सं० ग्रंथन ] १. अच्छी तरह कसना। जकड़ना। गाँठना। २ बुनावट में सूतों को परस्पर खूब मिलाना।
क्रि० अ० १. बुनावट में सूतों का खूब पास पास होना। २. ठसाठस भरना।

**गँसीला**—वि० [ हिं० गाँसी ][ स्त्री० गँसीली ] तीर के समान नोकदार। चुभनेवाला।

**गँह**—क्रि० स० [ सं० ग्रहण ] ग्रहण करना। पकड़ना। ठहरना। रुकना।

**ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गीत। २. गधर्व। ३ गुरु मात्रा। ४. गणेश। ५. गानेवाला। ६ जानेवाला।

**गइंद***—संज्ञा पुं० दे० "गयंद"।

**गई करना***—क्रि० अ० [ हिं० गई + करना ] तरह देना। जाने देना। छोड़ देना।

**गई बहोर**—वि० [ हिं० गया + बहुरि ] खोई हुई वस्तु को पुनः देने अथवा बिगड़े हुए काम को बनानेवाला।

**गऊ**—संज्ञा स्त्री० [सं० गो ] गाय। गौ।

**गकरिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गाकरी"।

**गगन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकाश। २. शून्य स्थान। ३. छप्पय छंद का एक भेद।

**गगनचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पक्षी।

**गगनचुंबी**—वि० दे० "गगनभेदी"।

**गगनधूल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गगन + हिं० धूल ] १. खुमी का एक भेद। एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। २. केतकी के फूल की धूल।

**गगनवाटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आकाश की वाटिका। (असभव बात)

**गगनभेड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गगन + भेड़ ] करॉकुल या कूँज नाम की चिड़िया।

**गगनभेदी, गगनस्पर्शी**—वि० [सं०] आकाश तक पहुँचनेवाला। बहुत ऊँचा।

**गगनानग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पचीस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

**गगरा**—संज्ञा पुं० [ सं० गर्गर ][स्त्री० अल्पा० गगरी ] धातु का बड़ा घड़ा। कलसा।

**गच**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] १. किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २ चूने सुरखी का मसाला, जिससे जमीन पक्की की जाती है। ३. चूने सुरखी से पिटी हुई जमीन। पक्का फर्श। लेट।

**गचकारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ गच + फ़ा॰ कारी ] गच का काम। चूने, सुरखी का काम।

**गचगीर**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ गच × फा॰ गीर ] [ भाव॰ गचगीरी ] गच बनानेवाला।

**गचना*** –क्रि॰ स॰ [ अनु॰ गच ] १ बहुत अधिक या कसकर भरना। २ दे॰ "गाँसना"

**गच्छना***‡—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ गच्छ = जाना ]

क्रि॰ स॰ १. चलाना। निबाहना। २. अपने जिम्मे लेना। अपने ऊपर लेना।

**गजंद***—संज्ञा पु॰ दे॰ "गयंद"।

**गज**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] [स्त्री॰ गजी] १. हाथी। २ एक राक्षस। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४. आठ की संख्या।

**गज**—संज्ञा पु॰ [ फ़ा॰ ] १. लंबाई नापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है। २. लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बंदूक भरी जाती है। ३ एक प्रकार का तीर।

**गजइलाही**—संज्ञा पु॰ [ फ़ा॰ गज + इलाही ] अकबरी गज जो ४१ अंगुल का होता है।

**गजक**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ कजक ] १. वह चीज जो शराब पीने के बाद मुँह का स्वाद बदलने के लिये खाई जाती है। चाट। जैसे—कबाब, पापड़। २. तिलपपड़ी। तिल शकरी। ३. नाश्ता। जलपान।

**गजगति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. हाथी की सी मंद चाल। २. एक वर्ण-वृत्त।

**गजगमन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] हाथी की सी मंद चाल।

**गजगामिनी**—वि॰ स्त्री॰ [ सं॰ ] हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली।

**गजग्राह**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ गज + ग्राह] हाथी की झूल।

**गजगौन*** –संज्ञा पु॰ दे॰ "गजगमन"।

**गजगौहर**—संज्ञा पु॰ दे॰ "गजमुक्ता"।

**गजदंत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १ हाथी का दाँत। २ दीवार में गड़ी खूँटी। ३ वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों। ४ दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत।

**गजदंती** –वि॰ [ हिं॰ गज + दंत ] हाथी दाँत का बना हुआ।

**गजदान**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] हाथी का मद।

**गजनवी**—वि॰ [ फ़ा॰ ] गजनवी नगर का रहनेवाला।

**गजना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "गाजना"।

**गजनाल**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।

**गजपति**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] १. बहुत बड़ा हाथी। २. वह राजा जिसके पास बहुत से हाथी हों।

**गजपिप्पली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक पौधा जिसकी मंजरी औषध के काम आती है।

**गजपीपल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "गजपिप्पल"।

**गजपुट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] गड्ढे में धातु फूँकने की एक रीति। (वैद्यक)

**गजब**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. कोप। रोष। गुस्सा। २. आपत्ति। आफत। विपत्ति। ३. अंधेर। अन्याय। जुल्म। ४ विलक्षण बात।

**मुहा॰**—गजब का=विलक्षण। अपूर्व।

**गजबाँक, गजबाग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ गज + बाँक या बाग ] हाथी का अंकुश।

**गजमणि, गजमुक्ता**–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] प्राचीनों के अनुसार एक मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है।

**गजमोती**—संज्ञा पु॰ दे॰ "गजमुक्ता"।

**गजर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ गर्ज, हिं॰ गरज] १ पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द। पगरा। २. सबेरे के समय का घंटा।

**मुहा॰** – गजरदम = तड़के। सबेरे।

३ चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही बार जल्दी जल्दी फिर घंटा बजना।

**गजरा**—संज्ञा पु॰ [ हिं॰ गज ] १. फूलों की घनी गुथी हुई माला। २. एक गहना जो कलाई में पहना जाता है। ३. एक रेशमी कपड़ा।

**गजराज**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] बड़ा हाथी।

**गजल**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] फारसी और उर्दू में एक प्रकार की कविता।

**गजवदन**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] गणेश।

**गजवान**—संज्ञा पु॰ [ हिं॰ गज + वान (प्रत्य॰) ] महावत। हाथीवान।

**गजशाला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह घर जिसमें हाथी बाँधे जाते हैं। फील-खाना। हथिसाल।

**गजा**—संज्ञा पु॰ [ फा॰ गज ] नगाड़ा बजानेवाला डंडा।

**गजाधर**—संज्ञा पु॰ दे॰ "गदाधर"।

**गजानन**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ ] गणेश।

**गजी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फा॰ गज ] एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा। सल्लम।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हथिनी ।

**गजेन्द्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऐरावत । २. बड़ा हाथी । गजराज ।

**गजव्यूह***—संज्ञा पुं० [ सं० गज + व्यूह ] हाथियों का झुंड ।

**गजका**—संज्ञा पुं० [ सं० गर्ज्ज = शब्द ] दूध, पानी आदि के छोटे छोटे बुलबुलों का समूह । गाज ।

†संज्ञा पुं० [ सं० गज ] १. ढेर । गाँज । अंबार । २. खजाना । कोश । ३. धन ।

**गझिन**†—वि० [ हिं० गछना ] १. सघन । घना । २. गाढ़ा । मोटा । ठस बुनावट का ।

**गटई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कंठ ] गला ।

**गटकना**—क्रि० स० [ गट से अनु० ] १. खाना । निगलना । २. हड़पना । दबा लेना ।

**गटकीला**—वि० [ हिं० गटकना ] गटकने या निगलनेवाला ।

**गटगट**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] निगलने या घूँट घूँट पीने में गले से उत्पन्न शब्द ।

**गटपट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बहुत अधिक मेल । घनिष्ठता । सहवास । प्रसंग ।

**गटरमाला**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० गट + माला ] बड़े दानों की माला ।

**गटा***—संज्ञा पुं० दे० "गट्टा" ।

**गटी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्रंथि ] १ गाँठ । २. पकड़ । लपेट ।

**गट्ट**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] किसी वस्तु के निगलने में गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

**गट्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रंथ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ ] १. हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़ । कलाई । २. पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ । ३. गाँठ । ४. बीज । ५. एक प्रकार की मिठाई ।

**गट्ठर**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाँठ ] बड़ी गठरी ।

**गट्ठा**—संज्ञा पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया ] १. घास, लकड़ी आदि का बोझ । भार । गट्ठर । २. बड़ी गठरी । बुकचा । ३. प्याज या लहसुन की गाँठ ।

**गठन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्रथन ] बनावट ।

**गठना**—क्रि० अ० [ सं० ग्रथन ] १. दो वस्तुओं का मिलकर एक होना । जुड़ना । सटना । २. मोटी सिलाई होना । ३ बुनावट का दृढ़ होना ।

**यौ०**—गठाबदन = हृष्टपुष्ट और कड़ा शरीर ।

४. किसी षट्चक्र या गुप्त विचार में सहमत या सम्मिलित होना । ५. दाँव पर चढ़ना । अनुकूल होना । सधना । ६. अच्छी तरह निर्मित होना । भली भाँति रचा जाना । ७. संभोग होना । विषय होना । ८. अधिक मेल-मिलाप होना ।

**गठरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गट्ठर ] १. कपड़े में गाँठ देकर बाँधा हुआ सामान । बड़ी पोटली । बुकचा । २ जमा की हुई दौलत ।

**मुहा०**—गठरी मारना = अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना । ठगना ।

**गठबाँसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गट्ठा + अंश] गट्ठे या बिस्वे का बीसवाँ अंश । बिस्वांसी ।

**गठवाना**—क्रि० स० [ हिं० गाठना ] १ गठाना । सिलवाना । २. जुड़वाना । जोड़ मिलवाना ।

**गठा***—संज्ञा पुं० दे० "गट्ठा" ।

**गठाव**—संज्ञा पुं० दे० "गठन" ।

**गठित**—वि० [ सं० ग्रथित ] गठा हुआ ।

**गठिबंध***—संज्ञा पुं० दे० "गठबंधन" ।

**गठिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाँठ ] १. बोझ लादने का बोरा या दोहरा थैला । खुरजी । २. बड़ी गठरी । ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है ।

**गठियाना**†—क्रि० स० [ हिं० गाँठ ] १. गाँठ देना । गाँठ लगाना । २. गाँठ में बाँधना ।

**गठिवन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्रंथिपर्ण] मध्यम आकार का एक पेड़ ।

**गठीला**—वि० [ हिं० गाँठ + ईला (प्रत्य० ) ] [ स्त्री० गठीली ] जिसमें बहुत-सी गाँठें हों ।

वि० [ हिं० गठना ] १ गठा हुआ । चुस्त । सुडौल । २ मजबूत । दृढ़ ।

**गठौत, गठौती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गठना ] १ मेल मिलाप । मित्रता । २ मिलकर पक्की की हुई बात । अभिसंधि ।

**गड़ंग**†—संज्ञा पुं० [ सं० गर्व ] [वि० गड़ंगिया ] १ घमंड । शेखी । डींग २ आत्मश्लाघा । बड़ाई ।

**गड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ओट । आड़ । २ घेरा । चहारदीवारी । ३. गड्ढा ।

**गड़कना**—क्रि० अ० [ अ० ग़र्क़ ] डूबना ।

क्रि० अ० दे० "गरजना" ।

**गड़गड़**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द । २ पेट में भरी वायु के हिलने का शब्द ।

**गड़गड़ा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] एक प्रकार का हुक्का ।

**गड़गड़ाना**— क्रि० अ० [ हिं० गड़गड़ ] गरजना । कड़कना ।

क्रि० स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना ।

**गड़गड़ाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गड़-गड़ाना ] गड़गड़ाने का शब्द। गड़-गड़।

**गड़गड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] एक तरह की डुग्गी।

**गड़दार**—संज्ञा पुं० [सं० गंड = गैंड़ा-सा + दार ] वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ साथ भाला लिए हुए चलता है।

**गड़ना**—क्रि० अ० [ सं० गर्त ] १. धँसना। घुसना। चुभना। २. शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचना। खुरखुरा लगना। ३. दर्द करना। दुखना। पीड़ित होना (आँख और पेट के लिये)। ४. मिट्टी आदि के नीचे दबना। दफन होना।

**मुहा०**—गड़े मुर्दे उखाड़ना = दबी दबाई या पुरानी बात उठाना।

५. समाना। पैठना।

**मुहा०**—गड़ जाना = झेंपना। लज्जित होना। ६. खड़ा होना। भूमि पर ठहरना। ७. जमना। स्थिर होना। डटना।

**गड़प**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द।

**गड़पना**—क्रि० स० [ अ० गड़प ] १. निगलना। खा लेना। २ हजम करना। अनुचित अधिकार करना।

**गड़प्पा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाड़ ] १ गड्ढा। २ धोखा खाने का स्थान।

**गड़बड़**—वि० [ हिं० गड़ = गड्ढा + बड़ = बड़ा ऊँचा ] [वि० गड़बड़िया] ऊँचा नीचा। असमतल। २. अस्त-व्यस्त। अडबड।

संज्ञा पु० १ क्रमभंग। अव्यवस्था। कुप्रबंध।

**यौ०**—गड़बड़झाला = गोलमाल। अव्यवस्था। गड़बड़ाध्याय = दे० "गड़बड़झाला"।

२. उपद्रव। दंगा। ३ (रोग आदि का) उपद्रव। आपत्ति।

**गड़बड़ाना**—क्रि० अ० [ हिं० गड़-बड़ ] १ गड़बड़ी में पड़ना। चक्कर या भूल में पड़ना। २. क्रमभ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना। ३. अस्त-व्यस्त होना। बिगड़ना।

क्रि० स० १. गड़बड़ी में डालना। चक्कर में डालना। २ भ्रम में डालना। भुलवाना। ३ बिगाड़ना। खराब करना।

**गड़बड़िया**—वि० [ हिं० गड़बड़ ] गड़बड़ करनेवाला। उपद्रव करने-वाला।

**गड़बड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गड़बड़"।

**गड़रिया**—संज्ञा पु० [ सं० गड्डरिक] [ स्त्री० गड़रिन ] एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है।

**गड़हा**—संज्ञा पुं० [स्त्री० गड़ही] दे० "गड्ढा"

**गड़ा**—संज्ञा पु० [ सं० गण ] ढेर। राशि।

**गड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० गड़ना ] चुभाना। धँसाना। भोंकना।

क्रि० स० [हिं० 'गाड़ना' का प्रे० रूप] गाड़ने का काम कराना।

**गड़ायत***—वि० [ हिं० गड़ना ] गड़नेवाला। चुभनेवाला।

**गड़ारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंडल ] १. मंडलाकार रेखा। गोल लकीर। वृत्त। २ घेरा।

संज्ञा स्त्री० [सं० गड = चिह्न ] लम्बा-तर पास पास आड़ी धारियाँ। गंडा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंडली ] गोल चरखी जिस पर रस्सी चढाकर कुएँ से पानी खींचते हैं। घिरनी।

**गड़ारीदार**—वि० [ हिं० गड़ारी + फ़ा० दार ] १. जिसपर गंडे या धारियाँ पड़ी हों। २ घेरदार। जैसे—गड़ारीदार पायजामा।

**गड़ुई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गड़वा ] पानी पीने का टोंटीदार छोटा बरतन। झारी।

**गड़ुवा**—संज्ञा पु० [हिं० गेरना=गिराना+उवा (प्रत्य०)—गेरुवा ] टोंटीदार लोटा।

**गड़ेरिया**—संज्ञा पु० दे० "गड़रिया"।

**गड़ोना**—क्रि० स० दे० "गड़ाना"।

**गड़ौना**—संज्ञा पु० [ हिं० गाड़ना ] एक प्रकार का पान।

**गड्ड**—संज्ञा पु० [ सं० गण ] [स्त्री० गड्डी ] एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हों। गंज।

*संज्ञा पु० [ सं० गर्त ] गड्ढा।

**गड्डवड्ड, गड्डमड्ड**—संज्ञा पु० [ हिं० गड्ड ] [ भाव० गड्डमड्डपन ] बेमेल की मिलावट। घालमेल। घपला।

वि० बे सिलसिले। मिला-जुला। अड-बड।

**गड्डरिक**—संज्ञा पु० [ सं० ] गड़े-रिया।

वि० १. भेड़ का। २. भेड़ संबंधी।

**गड्डाम**—वि० [ अं० गॉड+डैम ] नीच। लुच्चा। बदमाश। पाजी।

**गड्डी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गड्ड"।

**गड्ढा**—संज्ञा पु० [ सं० गर्त प्रा० गड्ड ] १. जमीन में गहरा स्थान। खत्ता। गड़हा। २ थोड़े घेरे की गहराई।

**मुहा०**—किसी के लिये गड्ढा खोदना= किसी के अनिष्ट का प्रयत्न करना। बुराई करना।

**गढ़ंत**—वि० [ हिं० गढ़ना ] कल्पित। बनावटी। (बात)

**गढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० गड़=खाँई

[ स्त्री० अनु० गढ़ी ] १. खाँई। २. किला। कोट।

**मुहा०**—गढ़ जीतना या तोड़ना=१. किला जीतना। २. बहुत कठिन काम करना।

**गढ़त, गढ़न**—संज्ञा स्त्री०[हिं० गढ़ना] गढ़ने की क्रिया या भाव। बनावट। गठन।

**गढ़ना**—क्रि० स० [ सं० घटन ] १. काट छाँटकर काम की वस्तु बनाना। सुघटित करना। रचना। २. सुडौल करना। दुरुस्त करना। ३. बात बनाना। कपोल-कल्पना करना। ४. मारना। पीटना। ठोंकना।

**गढ़पति**—संज्ञा पुं० [ हिं० गढ़+पति ] १. किलेदार। २. राजा। सरदार।

**गढ़वई, गढ़वै**—संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।

**गढ़वाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० गढ़+वाला ] वह जिसके अधिकार में गढ़ हो। गढ़वाला।

संज्ञा पुं० उत्तराखंड का एक प्रदेश।

**गढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गढ़ना ] १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २. गढ़ने की मजदूरी।

**गढ़ाना**—क्रि० स० [ हिं० गढ़ना का प्रे० रूप ] गढ़ने का काम कराना। गढ़वाना।

क्रि० अ० [ हिं० गाढ़=कठिन ] कष्टकर प्रतीत होना। मुश्किल गुजरना। खलना।

**गढ़िया**—संज्ञा पुं० [ हिं० गढ़ना ] गढ़नेवाला।

**गढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गढ़ ] छोटा किला।

**गढ़ीश**—संज्ञा पुं० [ हिं० गढ़ + सं० ईश ] गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी।

**गढ़ैया**—वि० [ हिं० गढ़ना ] गढ़नेवाला।

**गढ़ोई***†—संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।

**गण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। झुंड। जत्था। २. श्रेणी। जाति। कोटि। ३. ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। ४. सेना का वह भाग जिसमें तीन गुल्म हों। ५. छंदःशास्त्र में तीन वर्णों का समूह। लघु, गुरु के क्रम के अनुसार गण आठ माने गए हैं—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण। ६ व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान लोप, आगम और वर्ण-विकारादि हों। ७. शिव के पारिषद्। प्रमथ। ८. दूत। सेवक। पारिषद। ९ परिचारक-वर्ग। अनुचरों का दल।

**गणक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिषी। गणना करनेवाला।

**गणतंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र (राज्य)।

**गणदेवता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समूह-चारी देवता। जैसे—विश्वेदेवा, रुद्र।

**गणन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० गणनीय, गणित, गण्य ] १ गिनना। २. गिनती।

**गणना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ गिनती। शुमार। २. हिसाब। ३. संख्या।

**गणनायक**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

**गणपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गणेश। २ शिव।

**गण राज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह राज्य जो चुने हुए मुखियों या सरदारों के द्वारा चलाया जाता हो।

**गणाधिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गणेश। २ साधुओं का अधिपति या महंत।

**गणिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वेश्या।

**गणित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह शास्त्र जिसमें मात्रा, संख्या और परिमाण का विचार हो। २. हिसाब।

**गणितज्ञ**—वि० [ सं० ] १ गणित शास्त्र जाननेवाला। हिसाबी। २. ज्योतिषी।

**गणेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिंदुओं के एक प्रधान देवता जिनका सारा शरीर मनुष्य का-सा है पर सिर हाथी का सा है।

**गण्य**—वि० [ सं० ] १. गिनने के योग्य। २ जिसे लोग कुछ समझें। प्रतिष्ठित।

**यौ०**—गण्यमान्य=प्रतिष्ठित।

**गत**—वि० [सं०] [स्त्री० गता] १. गया हुआ। बीता हुआ। २ मरा हुआ। ३ रहित। हीन।

संज्ञा स्त्री० [ सं० गति ] १ अवस्था। दशा।

**मुहा०**—गत बनाना=दुर्दशा करना। २ रूप। रंग। वेष। ३ काम में लाना। सुगति। उपयोग। ४. दुर्गति। दुर्दशा। नाश। ५ बाजों के कुछ बोलों का क्रमबद्ध मिलान। ६. नृत्य में शरीर का विशेष संचालन और मुद्रा। नाचने का ठाठ।

**गतका**—संज्ञा पुं० [ सं० गदा ] १. लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खाल चढ़ी रहती है। २. वह खेल जो फरी और गतके से खेला जाता है।

**गतांक**—वि० [ सं० ] गया बीता। निकम्मा।

संज्ञा पुं० समाचार-पत्र का पिछला अंक।

**गतानुगतिक**—वि० [सं०] १. पुराने उदाहरण को देखकर उसके अनुसार चलनेवाला। २. अनुकरण करनेवाला।

**गति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [भाव० गतिता] १. एक स्थान से दूसरे स्थानपर क्रमशः जाने की क्रिया। चाल। गमन। २ हिलने-डोलने की क्रिया। हरकत। स्पंदन। ३. अवस्था। दशा। हालत। ४. रूप-रंग। वेष। ५. पहुँच। प्रवेश। पैठ। ६. प्रयत्न की सीमा। अंतिम उपाय। दौड़। तदबीर। ७ सहारा। अवलंब। शरण। ८. चेष्टा। प्रयत्न। ९ लीला। माया। १०. ढंग। रीति। ११. मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की दशा। १२. मोक्ष। मुक्ति। १३. लड़नेवालों के पैर की चाल। पैतरा।

**गत्ता**—संज्ञा पुं० [देश०] कागज के कई परतों को साटकर बनाई हुई दफ्ती। कुट।

**गत्तालखाता**—संज्ञा पुं० [सं० गर्त+हिं० खाता] बट्टाखाता। गई-बीती रकम का लेखा।

**गथ**०†—संज्ञा पुं० [सं० ग्रंथ] १. पूँजी। जमा। २. माल। ३ झुंड।

**गथना**०—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १. एक में एक जोड़ना। आपस में गूँथना। २ बात गढ़ना। बात बनाना।

**गद**—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष। २. रोग। ३. श्रीकृष्णचंद्र का छोटा भाई।

संज्ञा पुं० [अनु०] गुलगुली वस्तु पर आघात लगने का शब्द।

**गदका**†—संज्ञा पुं० दे० "गतका"।

**गदकारा**—वि० पुं० [अनु० गद+कारा (प्रत्य०)] [स्त्री० गदकारी] मुलायम और दब जानेवाला। गुलगुला। गुदगुदा।

**गदगद***—वि० दे० "गद्‌गद"।

**गदना***—क्रि० स० [सं० गदन] कहना।

**गदर**—संज्ञा पुं० [अ०] १. हलचल। खलबली। उपद्रव। २. बलवा। बगावत।

**गदराना**—क्रि० अ० [अनु० गद] १. (फल आदि का) पकने पर होना। २. जवानी में अंगों का भरना ३. आँख में कीचड़ आदि का आना।

क्रि० अ० [हिं० गंदा] गँदला होना।

वि० गदराया हुआ।

**गदहपचीसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गदहा+पचीसी] १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है।

**गदहपन**—संज्ञा पुं० [हिं० गदह+पन (प्रत्य०)] मूर्खता। बेवकूफी।

**गदहपूरना**—संज्ञा स्त्री० [सं० गदह=रोग+पुनर्नवा] पुनर्नवा नाम का पौधा।

**गदहा**—संज्ञा पुं० [सं०] रोग हरनेवाला। वैद्य। चिकित्सक।

संज्ञा पुं० [सं० गर्दभ] [स्त्री० गदही] १. घोड़े के आकार का, पर उससे कुछ छोटा, एक प्रसिद्ध चौपाया। गधा। गर्दभ।

**मुहा०**—गदहे पर चढ़ाना=बहुत बेइज्जत या बदनाम करना। गदहे का हल चलना = बिलकुल उजड़ जाना। बरबाद हो जाना।

२. मूर्ख। बेवकूफ। नासमझ।

**गदहिला**†—संज्ञा पुं० [हिं० गदहा] वह गदहा जिस पर ईंटें या मिट्टी लादते हैं।

**गदा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक डंडे में लट्टू रहता था।

संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. फ़कीर। २. दरिद्र।

**गदाई**—वि० [फ़ा० गदा = फकीर + ई (प्र०)] १. तुच्छ। नीच। क्षुद्र। वाहियात। रद्दी।

**गदाधर**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु। नारायण।

**गदेला**—संज्ञा पुं० [हिं० गद्दा] मोटा ओढ़ना या बिछौना। गद्दा। छोटा लड़का।

**गदोरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] हथेली।

**गद्‌गद**—वि० [सं०] १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण। २. अधिक हर्ष प्रेम आदि के कारण रुका हुआ, अस्पष्ट या असंबद्ध ३. प्रसन्न।

**गद्द**—संज्ञा पुं० [अनु०] १. मुलायम जगह पर किसी चीज के गिरने का शब्द। २. किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचनेवाली चीज के कारण पेट का भारीपन।

**गद्दर**—वि० [देश०] १. जो अच्छी तरह पका न हो। अधपका। २. मोटा गद्दा।

**गद्दा**—संज्ञा पुं० [हिं० गद से अनु०] १. रूई, पयाल आदि भरा हुआ बहुत मोटा और गुदगुदा बिछौना। भारी तोशक। गदेला। २. घास, पयाल, रूई आदि मुलायम चीजों का बोझ। ३. किसी मुलायम चीज की मार।

**गद्दी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दा का स्त्री० और अल्पा०] १ छोटा गद्दा। २. वह कपड़ा जो घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने के लिए डाला जाता है। ३. व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। ४. किसी बड़े अधिकारी का पद।

**मुहा०**—गद्दी पर बैठना = १. सिंहासनारूढ़ होना। २. उत्तराधिकारी होना।

५ किसी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य्य की शिष्य-परंपरा। ६. हथेली।

**गद्दीनशीन**—वि० [हिं० गद्दी + फ़ा०

नशीन ] १. सिंहासनारूढ़। जिसे राज्याधिकार मिला हो। २ उत्तराधिकारी।

**गद्दी-नशीनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गद्दी + फ़ा० नशीनी ] गद्दी पर बैठने का समारोह। राज्यारोहण।

**गद्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो। वार्तिक। वचनिका। पद्य का उलटा।

**गधा**—संज्ञा पुं० दे० "गदहा"।

**गन***—संज्ञा पुं० दे० "गण"।

**गनक***—संज्ञा पुं० [ सं० गणक ] ज्योतिषी।

**गनगन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] काँपने या रोमांच होने की मुद्रा।

**गनगनाना**—क्रि० अ० [ अनु० गनगन ] शीत आदि से रोमांच या कंप होना।

**गनगौर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गण + गौरी ] चैत्र शुक्ल तृतीया। इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

**गनना**†—क्रि० स० दे० "गिनना"।

**गनाना***—क्रि० स० दे० "गिनाना"। क्रि० अ० गिना जाना।

**गनियारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गणिकारी ] शमी की तरह का एक पौधा। छोटी अरनी।

**गनी**—वि० [ अ० ग़नी ] धनी। धनवान्।

**गनीम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ लुटेरा। डाकू। २. बैरी। शत्रु।

**गनीमत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. लूट का माल। २ वह माल जो बिना परिश्रम मिले। मुफ्त का माल। ३. संतोष की बात।

**गन्ना**—संज्ञा पुं० [ सं० कांड ] ईख। ऊख।

**गप**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कल्प० ] [वि० गप्पी ] १. इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो। २. वह बात जो केवल जी बहलाने के लिए की जाय। बकवाद।

**यौ०**—गपशप=इधर उधर की बातें। ३ झूठी खबर। मिथ्या संवाद। अफवाह। ४. वह झूठी बात जो बड़ाई प्रकट करने के लिए की जाय। डींग।

संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम अथवा गीली वस्तु में घुसने आदि से होता है।

**यौ०**—गपागप=जल्दी जल्दी। झटपट। २. निगलने या खाने की क्रिया। भक्षण।

**गपकना**—क्रि० अ० [ अनु० गप + हिं० करना ] चटपट निगलना। झट से खा लेना।

**गपड़चौथ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गपोड़ = बात + चौथ ] व्यर्थ की गोष्ठी। व्यर्थ की बात।

वि० लीपा-पोत। अंड-बंड।

**गपना***—क्रि० स० [ हिं० गप ] गप मारना। बकवाद करना। बकना।

**गपाड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गप ] मिथ्या बात। कपोल-कल्पना। गप।

**गपोड़ी**—वि० दे० "गप्पी"।

**गप्प**—संज्ञा स्त्री० दे० "गप"।

**गप्पा**—संज्ञा पुं० [अनु० गप] धोखा। छल।

**गप्पी**—वि० [ हिं० गप ] गप मारनेवाला। छोटी बात को बढ़ाकर कहनेवाला।

**गप्फा**—संज्ञा पुं० [ अनु० गप ] १. बहुत बड़ा ग्रास। बड़ा कौर। २. लाभ। फायदा।

**गफ**—वि० [ सं० ग्रप्स = गुच्छ ] घना। ठस। गाढ़ा। घनी बुनावट का।

**गफलत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. असावधानी। बेपरवाई। २ बेखबरी। चेत या सुध का अभाव। ३. भूल। चूक।

**गफिलाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "गफलत"।

**गबन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] किसी दूसरे के सौंपे हुए माल का खा लेना। खयानत।

**गबरा**†—वि० दे० "गब्बर"।

**गबरू**—वि० [ फ़ा० ख़ूबरू ] १. उभड़ती जवानी का। पट्ठा। २. भोला-भाला। सीधा।

†संज्ञा पुं० दूल्हा। पति।

**गबरून**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० गबरून ] चारखाने की तरह का एक मोटा कपड़ा।

**गब्बर**—वि० [ सं० गर्व, प्रा० गब्ब ] १ घमंडी। गर्वीला। अहंकारी। २. जल्दी काम न करने या बात का जल्दी उत्तर न देने वाला। मट्ठर। मंद। ३ बहुमूल्य। कीमती। ४ मालदार। धनी।

**गभस्ति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किरण २ सूर्य। ३ बाँह। हाथ।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा।

**गभस्तिमान्**—संज्ञा पुं० [ सं० गभस्तिमत् ] १ सूर्य। २ एक द्वीप। ३. एक पाताल।

**गभीर***—वि० [ स्त्री० गभीरा ] दे० "गंभीर"।

**गभुआर**—वि० [ सं० गर्भ + आर (प्रत्य०) ] १. गर्भ का (बाल)। जन्म के समय का रखा हुआ (बाल)। २ जिसके सिर के जन्म के बाल न कटे हों। जिसका मुंडन न हुआ हो। ३. नादान। अनजान।

**गम**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गम्य ] (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश। पहुँच। गुज़र।

**गम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. दुःख। शोक।

**मुहा०**—गम खाना = क्षमा करना। जाने देना।

**गमक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जाने-वाला। २. बोधक। सूचक। बतला-नेवाला।

संज्ञा स्त्री० १. संगीत में एक श्रुति या स्वर से दूसरी श्रुति या स्वर पर जाने का ढंग। २. तबले की गंभीर आवाज। ३. सुगंध।

**गमकना**—क्रि० अ० [ हिं० गमक ] महकना।

**गमखोर**—वि० [ फ़ा० गमख्वार ] [संज्ञा गमखोरी] सहिष्णु। सहनशील।

**गमगीन**—वि० [ अ० + फ़ा० ] दुःखी। उदास।

**गमन**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० गम्य ] १. जाना। चलना। यात्रा करना। २. संभोग। जैसे—वेश्यागमन। ३ राह। रास्ता।

**गमना***—क्रि० अ० [ सं० गमन ] जाना। चलना।

*क्रि० अ० [ अ० गम ] १. सोच करना। रंज करना। २. ध्यान देना।

**गमला**—संज्ञा पुं० [ ? ] १. फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बरतन। २ कमोड। पाखाना फिरने का बरतन।

**गमाना***—क्रि० स० दे० "गँवाना"।

**गमार**†—वि० दे० "गँवार"।

**गमी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० गम ] १. शोक की अवस्था या काल। २ वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं। सोग। ३ मृत्यु। मरनी।

**गम्य**—वि० [ सं० ] १ जाने योग्य। गमन योग्य। २. प्राप्य। लभ्य। ३. संभोग करने योग्य। भोग्य। ४. साध्य।

**गयंद***—संज्ञा पुं० [ सं० गजेन्द्र ] बड़ा हाथी।

**गय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. अंतरिक्ष। आकाश। ३. धन। ४. प्राण। ५. पुत्र। अपत्य। ६. एक असुर। ७ गया नामक तीर्थ।

*संज्ञा पुं० [ सं० गज ] हाथी।

**गयनाल**—संज्ञा स्त्री० दे० "गजनाल"।

**गयल***—संज्ञा स्त्री० दे० "गैल"।

**गयशिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंतरिक्ष। आकाश। २. गया के पास का एक पर्वत।

**गया**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बिहार या मगध का एक तीर्थ जहाँ हिंदू पिंड दान करते हैं। २. गया में होनेवाला पिंडदान।

क्रि० अ० [ सं० गम ] 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। प्रस्थानित हुआ।

**मुहा०**—गया गुजरा या गया बीता = बुरी दशा को पहुँचा हुआ। नष्ट। निकृष्ट।

**गयावाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० गया + वाल ] गया तीर्थ का पंडा।

**गर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ रोग। बीमारी। २. विष। जहर। ३. वत्स-नाभ। बछनाग।

*संज्ञा पुं० [ हिं० गल ] गला। गरदन।

प्रत्य० [ फ़ा० ] ( किसी काम को ) बनाने या करनेवाला। जैसे—बाजीगर, कलईगर।

**गरक**—वि० [ अ० गर्क ] १. डूबा हुआ। निमग्न। २ विलुप्त। नष्ट। बरबाद।

**गरगज**—संज्ञा पुं० [हिं० गढ़ + गज] १. किले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज जिस पर तोपें रहती हैं। २. वह ढूह या टीला जहाँ से शत्रु की सेना का पता चलाया जाता है। ३. तख्तों से बनी हुई नाव की छत। ४. फाँसी की टिकठी।

वि० बहुत बड़ा। विशाल।

**गरगरा**—संज्ञा पुं० [अनु०] गराड़ी। घिरनी।

**गरगाव**—[ फ़ा० गरकाब ] डूबा हुआ। नीची भूमि। खलार।

**गरज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गर्जन ] १. बहुत गंभीर शब्द। २. बादल या सिंह का शब्द।

**गरज**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. आशय। प्रयोजन। मतलब। २. आवश्यकता। जरूरत। ३ चाह। इच्छा।

अव्य० १. निदान। आखिरकार। अंततोगत्वा। २. मतलब यह कि। सारांश यह कि।

**गरजना**—क्रि० अ० [ सं० गर्जन ] १ बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना। २. मोती का चटकना। तड़पना। फूटना।

वि० गरजनेवाला।

**गरजमंद**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा गरजमंदी] १. जिसे आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २. इच्छुक। चाहने-वाला।

**गरजी**—वि० दे० "गरजमंद"।

**गरजू**†—वि० दे० "गरजमंद"।

**गरट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रथ ] समूह। झुंड।

**गरद**—संज्ञा स्त्री० दे० "गर्द"।

**गरदन**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। ग्रीवा।

**मुहा०**—गरदन उठाना=विरोध करना।

विद्रोह करना। गरदन काटना = १. धड़ से सिर अलग करना। मार डालना। २. बुराई करना। हानि पहुँचाना। गरदन पर = ऊपर। जिम्मे। (पाप के लिये) गरदन मारना =सिर काटना। मार डालना। गरदन में हाथ देना या डालना = गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना। गरदनियाँ देना।

२. बरतन आदि का ऊपरी भाग।

**गरदना**†—संज्ञा पुं० [ हिं० गरदन ] १. मोटी गरदन। २. वह धौल जो गरदन पर लगे।

**गरदनियाँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गरदन + इयाँ ( प्रत्य० ) ] ( किसी को किसी स्थान से ) गरदन पकड़कर निकालने की क्रिया।

**गरदनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरदन] १. कुरते का गला। २. गले में पहनने की हँसली। ३ घोड़े की गरदन और पीठ पर रखने का कपड़ा। ४. कारनिस। कँगनी।

**गरदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० गर्द ] धूल। गुबार। मिट्टी। खाक। गर्द।

**गरदान**—वि० [ फ़ा० ] घूम फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला।

संज्ञा पुं० १. शब्दों का रूप-साधन। २. वह कबूतर जो घूम फिरकर सदा अपने स्थान पर आता हो।

**गरना***†—क्रि० अ० १. दे० "गलना"। २. दे० "गड़ना"।

क्रि० अ० [ सं० गरण ] निचुड़ना।

**गरनाल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गर+नली] बहुत चौड़े मुँह की तोप। घननाल। घंननाद।

**गरब***†—संज्ञा पुं० [ सं० गर्व ] १. दे० "गर्व"। २. हाथी का मद।

**गरबई**—संज्ञा स्त्री० दे० "गर्व"।

**गरब-गहेला**—वि० [ हिं० गर्व + गहना ] जिसने गर्व धारण किया हो। गर्वीला।

**गरबना, गरबाना***†—क्रि० अ० [ सं० गर्व ] घमंड में आना। अभिमान करना।

**गरबीला**—वि० [ सं० गर्व ] जिसे गर्व हो। घमंडी। अभिमानी।

**गरभ**—संज्ञा पुं० दे० "गर्भ"।

**गरभाना**—क्रि० अ० [ हिं० गर्भ ] १. गर्भिणी होना। गर्भ से होना। २. धान, गेहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।

**गरम**—वि० [ फ़ा० गर्म ] १. जलता हुआ। तप्त। तत्ता। उष्ण।

**यौ०**—गरमागरम = तत्ता। उष्ण।

२. तीक्ष्ण। उग्र। खरा।

**मुहा०**—मिजाज गरम होना=१ क्रोध आना। २. पागल होना। गरम होना = आवेश में आना। क्रुद्ध होना।

३. तेज। प्रबल। प्रचंड। जोर शोर का। ४. जिसके व्यवहार या सेवन से गरमी बढ़े।

**यौ०**—गरम कपड़ा = शरीर गरम रखनेवाला कपड़ा। ऊनी कपड़ा। गरम मसाला=धनियाँ, लौंग, बड़ी इलायची, जीरा, मिर्च इत्यादि मसाले। ५. उत्साहपूर्ण। जोश से भरा हुआ।

**गरमाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "गरमी"।

**गरमागरम**—वि०[ फा० गरम ] १. बिलकुल गरम। २ ताजा।

**गरमागरमी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गरमा + गरम ] १. मुस्तैदी। जोश। २. कहा-सुनी।

**गरमाना**—क्रि० अ० [ हिं० गरम ] १. गरम पड़ना। उष्ण होना। २. उमंग पर आना। मस्ताना। ३. आवेश में आना। क्रोध करना। झल्लाना। ४. कुछ देर लगातार दौड़ने या परिश्रम करने पर घोड़े आदि पशुओं का तेजी पर आना।

† क्रि० स० गरम करना। तपाना। औटाना।

**गरमाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गरम ] गरमी।

**गरमी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. उष्णता। ताप। जलन। २ तेजी। उग्रता। प्रचंडता।

**मुहा०**—गरमी निकालना = गर्व दूर करना।

३. आवेश। क्रोध। गुस्सा। ४ उमंग। जोश। ५ ग्रीष्म ऋतु। कड़ी धूप के दिन। ६. एक रोग जो प्रायः दुष्ट मैथुन से उत्पन्न होता है। आतशक। फिरंग रोग।

**गरमीदाना**—संज्ञा पुं [ हिं० गरमी + दाना ] अम्हौरी। पित्ति।

**गर्‍याना**—क्रि० अ० [ देश० ] मस्ती में झूमना। मस्त होना।

**गरयारा**—संज्ञा पुं० दे० "गलियारा"।

**गररा***—संज्ञा पुं० दे० "गर्रा"।

**गरराना**—क्रि० अ० [अनु०] भीषण ध्वनि करना। गभीर गरजना।

**गरल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [भाव०-गरलता ] १ विष। जहर। २ साँप का जहर।

**गरवा***—वि० [ सं० गुरु ] भारी।

संज्ञा पुं० दे० "गला"।

**गरसना**—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

**गरह**—संज्ञा पुं० दे० "ग्रह"।

**गरहन***†—संज्ञा पुं० दे० "ग्रहण"।

**गराँव**—संज्ञा पुं० [ हिं० गर = गला ] दोहरी रस्सी जो चौपायों के गले में बाँधी जाती है।

**गरा**†—संज्ञा पुं० दे० "गला"।

**गराज***—संज्ञा स्त्री० [ सं० गर्जन ] गरज।

**गड़ारी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० गड़गड़

या सं० कुंडली ] काठ या लोहे का गोल चक्कर जिसके गड्ढे में रस्सी डालकर कुएँ से घड़ा या पखा आदि खींचते हैं। चरखी।
संज्ञा स्त्री० [ सं० गड = चिह्न ] रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी लकीर। सौंट।

**गराना***—क्रि० स० दे० "गलाना"।
क्रि० स० [ हिं० गारना ] १. गारने का काम दूसरे से कराना। २ गारना।

**गरारा**—वि० [ सं० गर्व + आर (प्रत्य०) ] १. गर्वयुक्त। २. प्रबल। प्रचंड। बलवान्।
संज्ञा पुं० [ अ० गरगरा ] १. कुल्ली। २. कुल्ली करने की दवा।
संज्ञा पुं० [ हिं० घेरा ] १. पायजामे की ढीली मोहरी। २ बहुत बड़ा थैला।

**गरास***—संज्ञा पुं० दे० "ग्रास"।

**गरासना***—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

**गरिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं० गरिमन्] १. गुरुत्व। भारीपन। बोझ। २. महिमा। महत्त्व। गौरव। ३. गर्व। अहंकार। घमंड। ४ आत्मश्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिससे साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

**गरियाना**†—क्रि० अ० [हिं० गारी + आना ( प्रत्य० ) ] गाली देना।

**गरियार**—वि० [ हिं० गड़ना = एक जगह रुक जाना ] सुस्त। बोदा। मट्ठर ( चौपाया )।

**गरिष्ठ**—वि० [ सं० ] १. अति गुरु। अत्यंत भारी। २ जो जल्दी न पचे।

**गरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुलिका ] १. नारियल के फल के भीतर का मुलायम गोला। २. बीज के अंदर की गूदी। गिरी। मींगी।

**गरीब**—वि० [ अ० ग़रीब ] १ नम्र। दीन। हीन। २. दरिद्र। निर्धन। कंगाल।

**गरीबनिवाज**—वि० [ फ़ा० ग़रीब + निवाज़ ] दीनों पर दया करनेवाला। दयालु।

**गरीबपरवर**—वि० [ फ़ा० ] गरीबों को पालनेवाला। दीन-प्रतिपालक।

**गरीबाना**—क्रि० वि० [फ़ा० गरीबानः] गरीबों का सा।

**गरीबामऊ**—वि० दे० "गरीबाना"।

**गरीबी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ग़रीब ] १. दीनता। अधीनता। नम्रता। २. दरिद्रता। निर्धनता। कंगाली। मुहताजी।

**गरीयस**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० गरीयसी ] १ बड़ा भारी। गुरु। २. महान्। प्रबल।

**गरु, गरुआ***†—वि० [ सं० गुरु ] [ स्त्री० गरुई ] १. भारी। वजनी। २. गौरवशाली।

**गरुआई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गरुआ ] गुरुता।

**गरुआना**†—क्रि० अ० [ सं० गुरु ] भारी होना।

**गरुड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु के वाहन जो पक्षियों के राजा माने जाते हैं। २. बहुतों के मत से उकाब पक्षी। †३. एक सफेद रंग का बड़ा जल-पक्षी। पँड़वा ढेक। ४. सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना। ५. छप्पय छंद का एक भेद।

**गरुड़गामी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

**गरुड़ध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**गरुड़पुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह पुराणों में से एक।

**गरुड़रुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सोलह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**गरुड़व्यूह**—संज्ञा पुं० [सं०] रणस्थल में सेना के जमाव या स्थापन का एक प्रकार।

**गरुता***—संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता"।

**गरुवाई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई"।

**गरू**—वि० [ सं० गुरु ] भारी। वजनी।

**गरूर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] घमंड। अभिमान।

**गरूरत, गरूरता**—संज्ञा स्त्री० दे० "गरूर"।

**गरूरी**†—वि० [अ० गुरूरी] घमंडी।
संज्ञा स्त्री० अभिमान। घमंड।

**गरेबान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।

**गरेरना**—क्रि० स० [ हिं० घेरना ] घेरना।

**गरेरा**—संज्ञा पुं० दे० "घेरा"।

**गरेरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गराड़ी"।

**गरैयाँ**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गला ] गराँव।

**गरोह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] झुंड। जत्था।

**गर्ग**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. एक वैदिक ऋषि। २. बैल। साँड़। ३. एक पर्वत का नाम।

**गर्ज**—संज्ञा स्त्री० दे० "गरज"।

**गर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भीषण ध्वनि। गरजना। गरज। गंभीर नाद।
यौ०—गर्जन-तर्जन=१. तड़प। २. डाँट-डपट।

**गर्जना**—क्रि० अ० दे० "गरजना"।

**गर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गड्ढा। गड़हा। २. दरार। ३. घर। ४ रथ।

**गर्द**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] धूल। राख।
यौ०—गर्द गुबार = धूल मिट्टी।

**गर्दखोर, गर्दखोरा**—वि० [ फ़ा० गर्दखोर ] जो गर्द या मिट्टी आदि

पहले से जल्दी मैला या खराब न हो। संज्ञा पुं० पाँव पोंछने का टाट या कपड़ा।

**गर्दन**—संज्ञा स्त्री० दे० "गरदन"।

**गर्दभ**—संज्ञा पुं० [सं०] गधा। गदहा।

**गर्दिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. घुमाव। चक्कर। २. विपत्ति। आपत्ति।

**गर्बीला**—वि० दे० "गरबीला"।

**गर्भ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पेट के अंदर का बच्चा। हमल।

मुहा०—गर्भ गिरना = पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले ही निकल जाना। गर्भपात।

२. स्त्री के पेट के अंदर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है। गर्भाशय।

**गर्भकेसर**—संज्ञा पुं० [सं०] फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं।

**गर्भगृह**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान के बीच की कोठरी। मध्य का घर। २. घर का मध्य भाग। आँगन। ३. मंदिर में वह कोठरी जिसमें प्रतिमा रखी जाती है।

**गर्भनाल**—संज्ञा स्त्री० [सं०] फूल के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ-केसर होता है।

**गर्भपात**—संज्ञा पुं० [सं०] पेट में से बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले निकल जाना।

**गर्भवती**—वि० स्त्री० [सं०] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी। गुर्विणी।

**गर्भसंधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में पाँच प्रकार की संधियों में से एक।

**गर्भस्थ**—वि० [सं०] जो गर्भ में हो।

**गर्भस्राव**—संज्ञा पुं० [सं०] चार महीने के अंदर का गर्भपात।

**गर्भांक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाटक के भीतर किसी नाटक का दृश्य। २. नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य।

**गर्भाधान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य के सोलह संस्कारों में से पहला जो गर्भ में आने के समय ही होता है। २. गर्भ की स्थिति। गर्भ-धारण।

**गर्भाशय**—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

**गर्भिणी**—वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।

**गर्भित**—वि० [सं०] १. गर्भयुक्त। २. भरा हुआ। पूर्ण।

**गर्रा**—वि० [सं० गरहाधिक] लाख के रंग का।

संज्ञा पुं० १. लाही रंग। २. घोड़े का एक रंग जिसमें लाही बालों के साथ कुछ सफेद बाल मिले होते हैं। ३. इस रंग का घोड़ा। ४. लाही रंग का कबूतर।

**गर्व**—संज्ञा पुं० [सं०] अहंकार। घमंड।

**गर्वाना***—क्रि० अ० [सं० गर्व] गर्व करना।

**गर्विता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।

**गर्विष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] घमंडी।

**गर्वी**—वि० [सं० गर्विन्] [स्त्री० गर्विणी] घमंडी। अहंकारी।

**गर्वीला**—वि० [सं० गर्व + ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] घमंडी। अभिमानी।

**गर्हण**—संज्ञा पुं० [सं०] निंदा। शिकायत।

**गर्हित**—वि० [सं०] दूषित। बुरा।

**गर्ह्य**—वि० [सं०] गर्हणीय।

**गल**—संज्ञा पुं० [सं०] गला। कंठ।

**गलकंबल**—संज्ञा पुं० [सं०] गाय के गले के नीचे की झालर। लहर।

**गलका**—संज्ञा पुं० [हिं० गलना] १. एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों में होता है। २. एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक।

**गलगंज**—संज्ञा पुं० [हिं० गाल + गाजना] शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल।

**गलगजना**—क्रि० अ० [हिं० गलगंज] शोर करना। हल्ला करना।

**गलगंड**—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें गला सूजकर लटक आता है। घेघा।

**गलगल**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. मैना की जाति की एक चिड़िया। सिरगोटी। गलगलिया। २. एक प्रकार का बड़ा नीबू।

**गलगला**—वि० [हिं० गीला] आर्द्र। तर।

**गलगाजना**—क्रि० अ० [हिं० गाल + गाजना] गाल बजाना। बढ़बढ़कर बातें करना।

**गलगुथना**—वि० [हिं० गाल] जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हों। मोटा।

**गलग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मछली का काँटा। २. वह आपत्ति जो कठिनता से टले।

**गलछट**—संज्ञा स्त्री० दे० "गलफड़ा"।

**गलजंदड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० गल + यन्त्र, पं० जंदरा] १. वह जो कभी पिंड न छोड़े। गले का हार। २. कपड़े की पट्टी जो गले में चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए बाँधी जाती है।

**गलझंप**—संज्ञा पुं० [हिं० गला + झाँपना] हाथी के गले में पहनाने की लोहे की झूल या जंजीर।

**गलतंस**—संज्ञा पुं० [सं० गलित + वंश] निस्संतान व्यक्ति की संपत्ति। लावारिस जायदाद।

**गलत**—वि० [ अ० ] [ संज्ञा स्त्री० गलती ] १. अशुद्ध । भ्रममूलक । २. असत्य । मिथ्या । झूठ ।

**गलतकिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाल + तकिया ] छोटा, गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है ।

**गलत-फहमी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] किसी बात को और का और समझना । भ्रम ।

**गलतान**—वि० [ फा० गल्ताँ ] लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपड़ा ।

**गलती** - संज्ञा स्त्री० [ अ० ग़लत+ई ] १. भूल । चूक । धोखा । २. अशुद्धि । भूल ।

**गलथना**—संज्ञा पुं० [ सं० गलस्तन ] वे थैलियाँ जो कुछ बकरियों की गरदन में दोनों ओर लटकती रहती हैं ।

**गलथैली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाल + थैली ] बंदरों के गाल के नीचे की थैली, जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं ।

**गलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गिरना । पतन । २. गलना ।

**गलना**— क्रि० अ० [ सं० गरण ] १. किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना । विकृत होकर द्रव या कोमल होना । २. बहुत जीर्ण होना । ३. शरीर का दुर्बल होना । बदन सूखना । ४ बहुत अधिक सरदी के कारण हाथ पैर का ठिठुरना । ५. वृथा या निष्फल होना । बेकाम होना ।

**गलफड़ा** -संज्ञा पुं० [ हिं० गाल + फटना ] १. जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं । २. गाल का चमड़ा ।

**गलफाँसी** —संज्ञा स्त्री० [ हिं० गला + फाँसी ] १. गले की फाँसी । २. कष्टदायक वस्तु या कार्य्य । जंजाल ।

**गलबहियाँ, गलबाँही** -संज्ञा स्त्री० [हिं० गला + बाँह ] गले में बाँह डालना । आलिंगन ।

**गलमुँदरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाल + सं० मुद्रा ] १. शिवजी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा । गलमुद्रा । २ गाल बजाना ।

**गलमुच्छा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाल + हिं० मूछ ] गालों पर के बढ़ाए हुए बाल । गलगुच्छा ।

**गलमुद्रा**—संज्ञा स्त्री० दे० "गलमुँदरी"।

**गलवाना** —क्रि० स० [ हिं० 'गलना' का प्रे० रूप ] गलाने का काम दूसरे से कराना ।

**गलशुंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जीभ के आकार का मांस का छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास होता है । छोटी जबान या जीभ । जीभी । कौआ । २. एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है ।

**गलसुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाल + सूजना ] एक रोग जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज आता है ।

**गलसुई**—संज्ञा स्त्री० दे० "गलतकिया" ।

**गलस्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गलथना ।

**गलही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गला] नाव का अगला उठा हुआ भाग ।

**गला**—संज्ञा पुं० [ सं० गल ] १. शरीर का वह अवयव जो सिर को धड़ से जोड़ता है । गरदन । कंठ । १. गले की नाली जिससे शब्द निकलता और आहार अंदर जाता है । पका । मुलायम ।

**मुहा०**—गला काटना= १ धड़ से सिर जुदा करना । २. बहुत हानि पहुँचाना । ३. सूरन, बंडे आदि का गले के अंदर एक प्रकार की जलन और चुनचुनाहट उत्पन्न करना । कनकनाना । गला घुटना = दम रुकना । अच्छी तरह साँस न लिया जाना । गला घोटना = १ गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय । टेंटुआ दबाना । २ जबरदस्ती करना । जब्र करना । ३ मार डालना । गला दबाकर मार डालना । गला छूटना = पीछा छूटना । छुटकारा मिलना । गला दबाना = अनुचित दबाव डालना । गला फाड़ना = इतना चिल्लाना कि गला दुखने लगे । गला रेतना= दे० "गला काटना" । गले का हार = १. इतना प्यारा ( व्यक्ति या वस्तु ) कि पास से कभी जुदा न किया जाय । अत्यंत प्रिय । चिर सहचर । २ पीछा न छोड़नेवाला । ( बात ) गले के नीचे उतरना या गले उतरना =( बात ) मन में बैठना । जी में जँचना । ध्यान में आना । गले पड़ना = इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना । न चाहने पर भी मिलना । ( दूसरे के ) गले बाँधना या मढ़ना = दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना । जबरदस्ती देना । गले लगाना = १. भेंटना । मिलना । आलिंगन करना । २. दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना ।

३. गले का स्वर । कंठस्वर । ४. अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग । गरेबान । ५ बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग । ६. चिमनी का कल्ला ।

**गलाना**—क्रि० स० [ हिं० गलना का सकर्मक रूप ] १ किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को पृथक् पृथक् करके उसे नरम, गीला या द्रव करना । नरम या मुलायम करना । पुलपुला करना । २. धीरे धीरे क्षीण करना । ३. ( रुपया ) खर्च कराना ।

**गलानि†***—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

**गलित**—वि०[सं०] १ गिरा हुआ। २ अधिक दिन का होने के कारण नरम पड़ा हुआ। ३ गला हुआ। ४. पुराना पड़ा हुआ। जीर्ण-शीर्ण। खंडित। ५. चुआ हुआ। च्युत। ६. नष्ट-भ्रष्ट। ७ परिपक्व।

**गलित कुष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं० ] वह कोढ़ जिसमें अंग गल गलकर गिरने लगते हैं।

**गलितयौवना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

**गलियारा**—संज्ञा पुं० [ हिं गली ] १.गली की तरह का छोटा तंग रास्ता। २. दो कमरों, स्थानों या प्रदेशों आदि के बीच का अलग, सीधा और सुरक्षित मार्ग।

**गली**—संज्ञा स्त्री० [सं० गल ] १. घरों की पंक्तियों के बीच से होकर गया हुआ तंग रास्ता। खोरी। कूचा। पक्की वस्तु। मुलायम।

**मुहा०**—गली गली मारे मारे फिरना=१. इधर उधर व्यर्थ घूमना। २ जीविका के लिये इधर से उधर भटकना। ३. चारों ओर अधिकता से मिलना। सब जगह दिखाई पड़ना। २. महल्ला। महाल।

**गलीचा**—संज्ञा पुं० [ फा० ग़ालीचः ] एक प्रकार का खूब मोटा ऊन का (सूती भी) बुना हुआ बिछौना जिस पर रंग-बिरंगके बेलबूटे बने रहते हैं। कालीन।

**गलीज**—वि० [ अ० ] १ गँदला। मैला। २ नापाक। अशुद्ध। अपवित्र। संज्ञा पुं० १ कूड़ा-करकट। गंदी वस्तु। मैला। गदगी। २. पाखाना। मल।

**गलीत***—[ अ० गलीज ] मैला कुचैला। गलत।

**गलेबाज**—वि० [ हिं० गला + बाज ] जिसका गला अच्छा हो। अच्छा गानेवाला।

**गलेबाजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गला + बाजी ] १. अच्छा गाना। २. बहुत बढ़बढ़कर बातें बनाना। डींग।

**गल्प**—संज्ञा स्त्री० [सं० जल्प या कल्प ] १. मिथ्या प्रलाप। गप्प। २. छोटी कहानी।

**गल्ला**—संज्ञा पुं० [ अ० गुल ] शोर। हौरा।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० गल्ला ] झुंड। दल। ( चौपायों के लिये )

**गल्ला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [वि० गल्लई] १. फल, फूल आदि की उपज। पैदावार। २. अन्न। अनाज। ३ वह धन जो दूकान पर नित्य की बिक्री से मिलता है। गोलक।

**गवँ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गम ] १. प्रयोजन सिद्ध होने का अवसर। घात। २ मतलब।

**मुहा०**—गवँ से=१. घात देखकर। मौका तजवीज कर। २. धीरे से। चुपचाप।

**गवन*†**—संज्ञा पुं० [ सं० गमन ] १. प्रस्थान। प्रयाण। चलना। जाना। २ गति। वधू का पहले पहल पति के घर जाना। गौना।

**गवनचार**—संज्ञा पुं० [ हिं० गवन + चार ] वर के घर वधू के जाने की रस्म।

**गवनना***—क्रि० अ० [ सं० गमन ] जाना।

**गवना**—संज्ञा पुं० दे० "गौना"।

**गवय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० गवयी ] १ नीलगाय। २ एक छंद।

**गवाक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छोटी खिड़की। मोखा। झरोखा।

**गवाख***—संज्ञा दे० "गवाक्ष"।

**गवाना**—क्रि० स० [ हिं० गाना ] गाने का काम दूसरे से कराना।

**गवामयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक यज्ञ।

**गवारा**—वि० [ फा० ] १. मनभाता। अनुकूल। पसंद। २. सह्य। अंगीकार करने के योग्य।

**गवास***—संज्ञा पुं० [ सं० गवाशन ] कसाई।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाना ] गाने की इच्छा।
क्रि० अ० लगना।

**गवाह**—संज्ञा पुं० [ फा० ] [ संज्ञा गवाही ] १ वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। २. वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो। साक्षी।

**गवाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] किसी घटना के विषय में ऐसे मनुष्य का कथन जिसने वह घटना देखी हो या जो उसके विषय में जानता हो। साक्षी का प्रमाण। साक्ष्य।

**गवीश**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. गोस्वामी। २ विष्णु। ३. साँड़।

**गवेजा**—संज्ञा पुं० [हिं० गप, गब ] गप। बातचीत।

**गवेधु, गवेधुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कसेई। कौड़िल्ला।

**गवेला†**—वि० [ हिं० गाँव ] देहाती।

**गवेषणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] खोज। अन्वेषण।

**गवेषी**—वि० [ सं० गवेषिन् ] [ स्त्री० गवेषिणी ] खोजनेवाला। ढूँढ़नेवाला।

**गवेसना***—क्रि० स० [सं० गवेषणा] ढूँढ़ना।

**गवैया**—वि० [पू० हिं० गायब=गाना] गानेवाला। गायक।

**गवँहा**—वि० [हिं० गाँव+ऐंहा (प्रत्य०)] गाँव का रहनेवाला। ग्रामीण। देहाती।

**गव्य**—वि० [ सं० ] गौ से उत्पन्न। जो गाय से प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी।
संज्ञा पुं० १. गायों का झुंड। २. पंचगव्य।

**गश**—संज्ञा पुं० [ अ० गशी से फ़ा० ] मूर्च्छा। बेहोशी। असंज्ञा। तौंवर।

**मुहा०**—गश खाना=बेहोश होना।

**गश्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० गश्ती ] १. टहलना। घूमना। फिरना। भ्रमण। दौरा। चक्कर। २. पहरे के लिये किसी स्थान के चारों ओर या गली कूचों आदि में घूमना। रौंद। गिरदावरी। दौरा।

**गश्ती**—वि० [ फ़ा० ] घूमनेवाला। फिरनेवाला। चलता।

संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।

**गसीला**—वि० [ हिं० गसना ] [स्त्री० गसीली ] १. जकड़ा या गठा हुआ। एक दूसरे से खूब मिला हुआ। गुथा हुआ। २. ( कपड़ा ) जिसके सूत खूब मिले हों। गफ।

**गस्सा**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रास ] ग्रास। कौर।

**गह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्रह ] १. पकड़। पकड़ने की क्रिया या भाव। २ हथियार आदि थामने की जगह। मूठ। दस्ता।

**मुहा०**—गह बैठना=मूठ पर हाथ भरपूर जमना।

**गहकना**—क्रि० अ० [ सं० गद्गद ] १. चाह से भरना। लालसा से पूर्ण होना। ललकना। लहकना। २ उमंग से भरना।

**गहगड्ड**—वि० [ सं० गह=गहरा+गड्ड=गड्ढा ] गहरा। भारी। घोर। ( नशे के लिये )

**गहगह***—वि० [सं० गद्गद] प्रफुल्ल। प्रसन्नतापूर्ण। उमग से भरा हुआ।

क्रि० वि० धमाधम। धूम के साथ। ( बाजे के लिये )।

**गहगहा**—वि० [ सं० गद्गद ] १. उमंग और आनंद से भरा हुआ। प्रफुल्ल। २. धमाधम। धूमधामवाला।

**गहगहाना**—क्रि० अ० [ हिं० गहगहा ] १. आनंद से फूलना। बहुत प्रसन्न होना। २. पौधों का लहलहाना।

**गहगहे**—क्रि० वि० [ हिं० गहगहा ] १ बड़ी प्रफुल्लता के साथ। २. धूम के साथ।

**गहडोरना**—क्रि० स० [ देश० ] पानी को मथकर या हिला-डुलाकर गँदला करना।

**गहन**—वि० [ सं० ] १. गंभीर। गहरा। अथाह। २. दुर्गम। घना। दुर्भेद्य। ३. कठिन। दुरूह। ४. निविड़। घना।

संज्ञा पुं० १ गहराई। थाह। २ दुर्गम स्थान। ३. वन या कानन में गुप्त स्थान।

संज्ञा पुं० [ सं० ग्रहण ] १ ग्रहण। २. कलंक। दोष। ३. दुःख। कष्ट। विपत्ति। ४. बंधक। रेहन।

संज्ञा स्त्री० [हिं० गहना=पकड़ना ] १. पकड़ने का भाव। पकड़। २. हठ। जिद।

**गहनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गहन। दुर्गम या गंभीर होने का भाव।

**गहना**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रहण=धारण करना ] १. आभूषण। जेवर। २ रेहन। बंधक।

क्रि० स० [ सं० ग्रहण ] पकड़ना। धरना।

**गहनि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्रहण ] १. टेक। अड़। जिद। हठ। २. पकड़।

**गहबर***†—वि० [सं० गह्वर] १. दुर्गम। विषम। २. व्याकुल। उद्विग्न। ३. आवेग से भरा हुआ। मनोवेग से आकुल।

**गहबरना**—क्रि० अ० [ हिं० गहबर ] १. आवेग से भरना। मनोवेग से आकुल होना। २. घबराना। उद्विग्न होना।

**गहर**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] देर। विलंब।

संज्ञा पुं० [ सं० गह्वर ] गहरा। दुर्गम। गूढ़।

**गहरना**—क्रि० अ० [हिं० गहर=देर] देर लगाना। विलंब करना।

क्रि० अ० [ सं० गह्वर ] १. झगड़ना। उलझना। २. कुढ़ना। नाराज होना।

**गहरवार**—संज्ञा पुं० [ गहिरदेव=एक राजा ] एक क्षत्रिय-वंश।

**गहरा**—वि० [ सं० गंभीर ] [ स्त्री० गहरी ] १. ( पानी ) जिसकी थाह बहुत नीचे हो। गंभीर। निम्न। अतलस्पर्श।

**मुहा०**—गहरा पेट=ऐसा पेट जिसमें सब बातें पच जायँ। ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले।

२. जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ३. बहुत अधिक। ज्यादा। घोर।

**मुहा०**—गहरा असामी=१ भारी आदमी। २. बड़ा आदमी। गहरे लोग=चतुर लोग। भारी उस्ताद। घोर धूर्त्त। गहरा हाथ=हथियार का भरपूर वार जिससे खूब चोट लगे।

४. दृढ़। मजबूत। भारी। कठिन। ५. जो हलका या पतला न हो। गाढ़ा।

**मुहा०**—गहरी घुटना या छनना=१. खूब गाढ़ी भंग घुटना या पीसना। २. गाढ़ी मित्रता होना। बहुत अधिक हेल-मेल होना।

**गहराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गहरा+ई ( प्रत्य० ) गहरा का भाव। गहरापन।

**गहराना**†—क्रि० अ० [ हिं० गहरा ] गहरा होना।

क्रि० स० [ हिं० गहरा ] गहरा करना।

क्रि० अ० दे० "गहरना"।

**गहराव**—संज्ञा पुं० [ हिं० गहरा ] गहराई।

**गहरू**—संज्ञा स्त्री० दे० "गहर"।

**गहलौत**—संज्ञा पुं० [ ? ] राजपूताने के क्षत्रियों का एक वंश।

**गहवाना**—क्रि० स० [ हिं० गहना का प्रे० ] पकड़ने का काम कराना। पकड़ाना।

**गहवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गहना ] पालना। झूला। हिंडोला।

**गहाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गहना ] गहने का भाव। पकड़।

**गहागडु**—वि० दे० "गहगडु"।

**गहाना**—क्रि० स० [ हिं० गहना का प्रे० ] धराना। पकड़ाना।

**गहासना**—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

**गहीला**—वि० [ हिं० गहेला ] [ स्त्री० गहीली ] १. गर्वयुक्त। घमंडी। २. पागल।

**गहुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० गहना ] एक तरह की सड़सी।

**गहेजुआ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] छछूँदर।

**गहेलरा**—वि० दे० "गहेला"।

**गहेला**—वि० [ हिं० गहना=पकड़ना+एला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० गहेली ] १. हठी। जिद्दी। २. अहंकारी। मानी। घमंडी। ३ पागल। ४. गँवार। अनजान। मूर्ख।

**गहैया**—वि० [ हिं० गहना+ऐया ( प्रत्य० ) ] १. पकड़नेवाला। ग्रहण करनेवाला। २. अंगीकार करनेवाला। स्वीकार करनेवाला।

**गह्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंधकारमय और गूढ़ स्थान। २. जमीन में छोटा सूराख। बिल। ३. विषम स्थान। दुर्भेद्य स्थान। ४. गुफा। कंदरा। गुहा। ५. निकुंज। लतागृह। ६. झाड़ी। ७. जंगल। वन।
वि० १. दुर्गम। विषम। २. गुप्त।

**गांग**—वि० [ सं० ] गंगा-संबंधी। गंगा का।

**गांगेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भीष्म। २. कार्तिकेय। ३ हेलसा मछली। ४. कसेरू।

**गाँज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० गंज ] राशि। ढेर।

**गाँजना**—क्रि० स० [ हिं० गाँज, फ़ा० गंज ] राशि लगाना। ढेर करना।

**गाँजा**—संज्ञा पुं० [ सं० गंजा ] भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कलियों का धूआँ पीते हैं।

**गाँठ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्रंथ, पा० गंठि ] [ वि० गँठीली ] १. रस्सी, डोरी, तागे आदि में पड़ी उभरी हुई उलझन जो खिंचकर कड़ी और दृढ़ हो जाती है। गिरह। ग्रंथि।

मुहा०—मन या हृदय की गाँठ खोलना=१ जी खोलकर कोई बात कहना। मन में रखी हुई बात कहना। २. अपनी भीतरी इच्छा प्रगट करना। ३ हौसला निकालना। लालसा पूरी करना। मन में गाँठ पड़ना=आपस के संबंध में भेद पड़ना। मनमोटाव होना।

२ अंचल, चद्दर या किसी कपड़े की खूँट में कोई वस्तु ( जैसे, रुपया ) लपेटकर लगाई हुई गाँठ।

मुहा०—गाँठ कतरना या काटना=गाँठ काटकर रुपया निकाल लेना। जेब कतरना। गाँठ का=पास का। पल्ले का। गाँठ का पूरा=धनी। मालदार। गाँठ जोड़ना=विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के पल्ले को एक में बाँधना। गँठजोड़ा करना। ( कोई बात ) गाँठ में बाँधना=अच्छी तरह याद रखना। स्मरण रखना। सदा ध्यान में रखना। गाँठ से = पास से। पल्ले से।

३. गठरी। बोरा। गट्ठा। ४. अंग का जोड़। बंद। जैसे—पैर की गाँठ। ५. ईख, बाँस आदि में थोड़े थोड़े अंतर पर कुछ उभरा हुआ मंडल। पोर। पर्व। जोड़। ६. गाँठ के आकार की जड़। अंटी। गुत्थी। ७. घास का बँधा हुआ बोझ। गट्ठा।

**गाँठगोभी**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाँठ + गोभी ] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूजे की सी गोल गाँठें होती हैं।

**गाँठदार**—वि० [ हिं० गाँठ + दार ( प्रत्य० ) ] जिसमें बहुत सी गाँठें हों। गठीला।

**गाँठना**—क्रि० स० [ सं० ग्रंथन पा० गंठन ] १ गाँठ लगाना। सीकर, मुर्री लगाकर या बाँधकर मिलाना। सटना। २ फटी हुई चीजों को टाँकना या उनमें चकती लगाना। मरम्मत करना। गूथना। ३ मिलाना। जोड़ना। ४ तरतीब देना।

मुहा०—मतलब गाँठना = काम निकालना।

५. अपनी ओर मिलाना। अनुकूल करना। पक्ष में करना। ६. गहरी पकड़ पकड़ना। ७ वश में करना। वशीभूत करना। ८. वार को रोकना।

**गाँठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गाँठ"।

**गाँडर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गंडाली ] मूँज की तरह की एक घास। गंडदूर्वा।

**गाँडा**—संज्ञा पुं० [ सं० कांड या खंड ] [ स्त्री० गँडी ] १ किसी पेड़, पौधे या डंठल का छोटा कटा खंड। जैसे—ईख का गाँडा। २. ईख का छोटा कटा टुकड़ा। गँडेरी।

**गांडीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अर्जुन का धनुष।

**गाँती**—संज्ञा स्त्री० दे० "गाती"।

**गाँथना**—क्रि० स० [ सं० ग्रंथन ]-

१. गूँथना। गूँधना। २. मोटी सिलाई करना।

**गांधर्व**—वि० [सं०] १. गंधर्वसंबंधी। २. गंधर्वदेशोत्पन्न। ३ गंधर्व जाति का।

संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर, तालादि का वर्णन है। गंधर्वविद्या। गंधर्ववेद। २ गान-विद्या। संगीत-शास्त्र। ३ आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से प्रेमपूर्वक मिलकर पति-पत्नीवत् रहते हैं।

**गांधर्ववेद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद। २. संगीत-शास्त्र।

**गांधार**—संज्ञा पुं० [सं०, फा० कंदहर] १ सिंधु नद के पश्चिम का देश। २ [स्त्री० गांधारी] गांधार देश का रहनेवाला। ३ संगीत में सात स्वरों में तीसरा स्वर।

**गांधारी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गांधार देश की स्त्री या राजकन्या। २ धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता का नाम।

**गांधी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरे रंग का एक छोटा कीड़ा। २. एक घास। †३. हींग। ४ गंधी। ५. गुजराती वैश्यों की एक जाति। भारत के इस युग के सबसे बड़े नेता।

**गांभीर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गहराई। गंभीरता। २. स्थिरता। अचंचलता। ३. हर्ष, क्रोध, भय आदि मनोवेगों से चंचल न होने का गुण। शांति का भाव। धीरता। ४. गूढ़ता। गहनता।

**गाँव गाँव**—संज्ञा पुं० [सं० ग्राम] वह स्थान जहाँ पर बहुत से किसानों के घर हों। छोटी बस्ती। खेड़ा।

**गाँस**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँसना] १. रोक टोक। बंधन। २ बैर। द्वेष। ईर्ष्या। ३. हृदय की गुप्त बात। भेद की बात। रहस्य। ४. गाँठ। फंदा। गठन। ५ तीर या बर्छी का फल। †६. वश। अधिकार। शासन। ७ देख-रेख। निगरानी। ८. अड़चन। कठिनता। संकट।

**गाँसना**—क्रि० स० [हिं० ग्रंथन] १. एक दूसरे से लगाकर कसना। गूथना। २. सालना। छेदना। चुभोना। ३. ताने में कसना, जिससे बुनावट ठस हो।

मुहा०—बात को गाँसकर रखना=मन में बैठाकर रखना। हृदय में जमाना। †४. वश में रखना। शासन में रखना। ५ पकड़ में करना। दबोचना। ६. ठूसना। भरना।

**गाँसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गाँस] १. तीर या बरछी आदि का फल। हथियार की नोक। २ गाँठ। गिरह। ३. कपट। छलछंद। ४. मनोमालिन्य।

**गाइ, गाई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गाय"।

**गाकरी**†—संज्ञा स्त्री० [?] १. लिट्टी। बाटी। २ रोटी।

**गागर, गागरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी"।

**गाच**—संज्ञा स्त्री० [अ० गाज] बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिसपर रेशमी बेल बूटे बने रहते हैं। फुलवर।

**गाछ**—संज्ञा पुं० [सं० गच्छ] १ छोटा पेड़। पौधा। २. पेड़। वृक्ष।

**गाज**—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्ज] १. गर्जन। गरज। शोर। २. बिजली गिरने का शब्द। वज्रपातध्वनि। ३ बिजली। वज्र।

मुहा०—किसी पर गाज पड़ना=आफत आना। ध्वंस होना। नाश होना।

संज्ञा पुं० [अनु० गजगज] फेन। झाग।

**गाजना**—क्रि० अ० [सं० गर्जन पा० गज्जन] १ शब्द करना। हुंकार करना। गरजना। चिल्लाना। २ हर्षित होना। प्रसन्न होना।

मुहा०—गाल गाजना = हर्षित होना।

**गाजर**—संज्ञा स्त्री० [सं० गृंजन] एक पौधा जिसका कंद मोटा होता है। फल।

मुहा०—गाजर मूली समझना = तुच्छ समझना।

**गाजा**—संज्ञा पुं० [फा०] मुँह पर मलने का एक प्रकार का रोगन।

**गाजी**—संज्ञा पुं० [अ०] १. मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिए विधर्मियों से युद्ध करे। २. बहादुर। वीर।

**गाड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० गर्त] १. गड़हा। गड्ढा। २. वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है। ३. कुएँ की दाल। भगाड़।

**गाड़ना**—क्रि० स० [हिं० गाड़-गड्ढा] १ गड्ढा खोदकर किसी चीज को उसमें डालकर ऊपर से मिट्टी डाल देना। जमीन के अंदर दफनाना। तोपना। २ गड्ढा खोदकर उसमें किसी लंबी चीज का एक सिरा जमाकर खड़ा करना। जमाना। ३ किसी नुकीली चीज को नोक के बल किसी चीज पर ठोककर जमाना। धँसाना। ४ गुप्त रखना। छिपाना।

**गाडर**†—संज्ञा स्त्री० [सं० गड्डरी] भेड़।

**गाड़ा***†—संज्ञा पुं० [सं० शकट] गाड़ी। छकड़ा। बैलगाड़ी।

संज्ञा पुं० [सं० गर्त प्रा० गड्ड] वह गड्ढा जिसमें आगे लोग छिपकर बैठ रहते थे और शत्रु, डाकू आदि का पता लेते थे।

**गाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शकट] एक

स्थान से दूसरे स्थान पर माल असबाब या आदमियों को पहुँचाने के लिये एक यत्र। यान। शकट।

**गाड़ीखाना**—सज्ञा पुं० [हिं० गाड़ी+खाना] वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रहती हों।

**गाड़ीवान**—सज्ञा पुं० [हिं० गाड़ी+वान (प्रत्य०)] १ गाड़ी हाँकनेवाला। २. कोचवान।

**गाढ़**—वि० [सं०] १. अधिक। बहुत। अतिशय। २. दृढ़। मजबूत। ३. घना। गाढ़ा। जो पानी की तरह पतला न हो। ४. गहरा। अथाह। ५. विकट। कठिन। दुरूह। दुर्गम। संज्ञा पुं० कठिनाई। आपत्ति। संकट।

**गाढ़ा**—वि० [स० गाढ] [स्त्री० गाढ़ी] १ जिसमें जल के अतिरिक्त ठोस अंश भी मिला हो। २ जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों। ठस। मोटा। (कपड़े आदि के लिये) ३. घनिष्ठ। गहरा। गूढ़। ४. बढ़ा चढ़ा। घोर। कठिन। विकट।

**मुहा०**—गाढ़े की कमाई = बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। गाढ़े का साथी या संगी = सकट के समय का मित्र। विपत्ति के समय सहारा देनेवाला। गाढ़े दिन = संकट के दिन। सज्ञा पु० [सं० गाढ़] १. एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी। २. मस्त हाथी।

**गाढ़े†**—क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १. दृढ़ता से। जोर से। २. अच्छी तरह।

**गाणपत**—वि० [सं०] गणपति-सबधी।

सज्ञा पु० एक संप्रदाय जो गणेश की उपासना करता है।

**गाणपत्य**—संज्ञा पुं० [स०] गणेश का उपासक।

**गात**—संज्ञा पुं० [सं० गात्र] शरीर। अंग।

**गाता**—वि० [सं० गातृ] गानेवाला।

**गाती**—संज्ञा स्त्री०[सं०गात्री]१ वह चद्दर जिसे गले में बाँधते हैं। २. चद्दर या अँगोछा लपेटने का एक ढग।

**गात्र**—संज्ञा पुं० [स०] अग। देह। शरीर।

**गाथ**—संज्ञा पु० [स० गाथा] यश। प्रशसा।

**गाथना**—क्रि० स० दे० "गाँथना"।

**गाथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तुति। २ वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। ३ प्राचीन काल की ऐतिहासिक रचना जिसमें लोगों के दान, यज्ञादि का वर्णन होता था। ४. आर्या नाम की वृत्ति। ५. एक प्रकार की प्राचीन भाषा। ६ श्लोक। ७ गीत। ८. कथा। वृत्तांत। ९ पारसियों के धर्म-ग्रंथ का एक भेद।

**गाद†**—सज्ञा स्त्री० [सं० गाध] १. तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज। तलछट। २ तेल की कीट। ३. गाढ़ी चीज।

**गादड़, गादर†**—वि० [सं० कातर या कदर्य, प्रा० कादर] कायर। डरपोक। भीरु।

सज्ञा पु० [स्त्री० गादड़ी] गीदड़। सियार।

**गादा**—संज्ञा पु० [स० गाधा=दल-दल] १. खेत का वह अन्न जो अच्छी तरह न पका हो। अधपका अन्न। गदर। २. ने पकी फसल। कच्ची फसल। बरगद का फल।

**गादी**—सज्ञा स्त्री० [हिं० गद्दी] १. एक पकवान। †२ दे० "गद्दी"।

**गादुर†**—सज्ञा पु० दे० "चमगादड़"।

**गाध**—सज्ञा पु० [स०] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। थाह। ३. नदी का बहाव। कूल। ४. लोभ।

वि० [स्त्री० गाधा] १. जिसे हलकर पार कर सकें। जो बहुत गहरा न हो। छिछला। पायाब। २. थोड़ा। स्वल्प।

**गाधि**—सज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के पिता।

**गान**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गेय, गेतव्य] १. गाने की क्रिया। संगीत। गाना। २. गाने की चीज। गीत।

**गाना**—क्रि० स० [स० गान] १. ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चारण करना। आलाप के साथ ध्वनि निकालना। २. मधुर ध्वनि करना। ३ वर्णन करना। विस्तार के साथ कहना।

**मुहा०**—अपनी ही गाना = अपनी ही बात कहते जाना। अपना ही हाल कहना।

४ स्तुति करना। प्रशसा करना। सज्ञा पु० १ गाने की क्रिया। गान। २ गाने की चीज। गीत।

**गाफिल**—वि० [अ०] [सज्ञा गफलत] १ बेसुध। बेखबर। २. असावधान।

**गाभ**—सज्ञा पुं० [स० गर्भ पा० गब्भ] १. पशुओं का गर्भ। २ दे० "गाभा"। ३. मध्य।

**गाभा**—सज्ञा पु० [सं० गर्भ] [वि० गाभिन] १ नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता। नया कल्ला। कोंपल। २. केले आदि के डंठल के अदर का भाग। ३. लिहाफ, रजाई आदि के अदर की निकाली हुई पुरानी रूई। गुदड़। ४ कच्चा अनाज। खड़ी खेती।

**गाभिन, गाभिनी**—वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी। (चौपायों के लिये)

**गाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्राम ] गाँव।
**गामी**—वि० [ सं० गामिन् ] [ स्त्री० गामिनी ] १. चलनेवाला। चालवाला। २ गमन करनेवाला। संभोग करनेवाला।
**गाय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गो ] १. सींगवाला एक मादा चौपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है। २. बहुत सीधा मनुष्य। दीन मनुष्य।
**गायक**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० गायिका, गायकी ] गानेवाला। गवैया।
**गायकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गानेवाली स्त्री।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाना या सं० गायक ] १. गानविद्या का पूरा ज्ञान। २. गान विद्या के नियमों के अनुसार ठीक तरह से गाना। ३. गानविद्या।
**गाय-गोठ**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोशाला"।
**गायताल**—संज्ञा पु० दे० "गत्तालखाता"।
**गायत्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ एक वैदिक छंद। २. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्त्व का माना जाता है। ३ खैर। ४ दुर्गा। ५ गंगा। ६. छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
**गायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० गायिनी ] १. गानेवाला। गवैया। गायक। २ गान। गाना। ३ कार्तिकेय।
**गायब**—वि० [अ०] लुप्त। अंतर्धान।
**गायबाना**—क्रि० वि० [ अ० ] पीठ पीछे। अनुपस्थिति में।
**गायिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ गानेवाली स्त्री। २ एक मात्रिक छंद।
**गार**—संज्ञा पु० [ अ० ] १. गहरा गड्ढा। २. गुफा। कंदरा।
संज्ञा स्त्री० दे० "गाली"।
**गारत**—वि० [ अ० ] नष्ट। बरबाद।
**गारद**—संज्ञा स्त्री० [ अं० गार्ड ] सिपाहियों का झुंड जो रक्षा के लिये नियत हो। पहरा। चौकी।
**गारना**—क्रि० स० [ सं० गालन ] १. दबाकर पानी या रस निकालना। निचोड़ना। २. पानी के साथ घिसना। जैसे—चंदन गारना। *३. निकालना। त्यागना।
*†क्रि० स० [ सं० गल ] १. गलाना।
**मुहा०**—तन या शरीर गारना = शरीर गलाना। शरीर को कष्ट देना। तप करना।
२. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. किसी का अभिमान चूर्ण करना।
**गारा**—संज्ञा पु० [ हिं० गारना ] मिट्टी अथवा चूने, सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है।
**गारी***†—संज्ञा पु० स्त्री० दे० "गाली"।
**गारुड़**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. साँप का विष उतारने का मंत्र। २. सेना की एक व्यूह रचना। ३ सुवर्ण। सोना। वि० गरुड़संबंधी।
**गारुड़ी**—संज्ञा पु० [ सं० गारुडिन् ] मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला।
**गारो***—संज्ञा पु० [ सं० गौरव, प्रा० गारव ] १. गर्व। घमंड। अहंकार। २. महत्त्व का भाव। बड़प्पन। मान। आसाम प्रांत की एक जाति।
**गारौ***—संज्ञा पु० [सं० गर्व] घमंड। गर्व। अहंकार।
**गार्गी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री। २ दुर्गा। ३ याज्ञवल्क्य ऋषि की एक स्त्री।
**गार्जियन**—संज्ञा पु० [ अं० ] नाबालिगों आदि का अभिभावक।
**गार्ड**—संज्ञा पु० [ अं० ] १. वह जो रक्षा आदि के लिए नियुक्त हो। रक्षक। २ रेलगाड़ी के साथ रहनेवाला उसका जिम्मेदार कर्मचारी।
**गार्हपत्याग्नि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छः प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।
**गार्हस्थ्य**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ गृहस्थाश्रम। २. गृहस्थ के मुख्य कृत्य। पंचमहायज्ञ।
**गाल**—संज्ञा पुं० [ सं० गड, गल्ल ] १. मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग। गंड। कपोल।
**मुहा०**—गाल फुलाना = रूठकर न बोलना। रूठना। रिसाना। गाल बजाना या मारना = डींग मारना। बढ़ बढ़कर बातें करना। काल के गाल में जाना = मृत्यु के मुख में पड़ना।
२ बकवाद करने की लत। मुँहजोरी।
**मुहा०**—गाल करना = १ मुँह जोरी करना। मुँह से अंडबंड निकालना। २ बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।
३ मध्य। बीच। ४ उतना अन्न जितना एक बार मुँह में डाला जाय। फंका। ग्रास।
**गालगूल***†—संज्ञा पु० [ हिं० गाल + अनु० ] व्यर्थ बात। गपशप। अनापशनाप।
**गालमसूरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक पकवान या मिठाई।
**गालव**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ एक ऋषि का नाम। २ एक प्राचीन वैयाकरण। ३. लोध का पेड़। ४. स्मृतिकार।
**गाला**—संज्ञा पु० [ हिं० गाल = ग्रास ] धुनी हुई रूई का गाला जो चरखे में कातने के लिये बनाया जाता है। पूनी।

**मुहा०**—रूई का गाला=बहुत उज्ज्वल।
†संज्ञा पुं० [ हिं० गाल ] १. बढ़-बढ़ाने की लत। अडबंड बकने का स्वभाव। मुँहजोरी। कल्ले-दराजी। २. ग्रास।

**गालिब**—वि० [अ०] जीतनेवाला। बढ़ जानेवाला। विजयी। श्रेष्ठ। उर्दू के एक विख्यात कवि।

**गालिम***—वि० दे० "गालिब"।

**गाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गालि ] १. निंदा या कलंक सूचक वाक्य। दुर्वचन।
**मुहा०**—गाली खाना=दुर्वचन सुनना। गाली सहना। गाली देना = दुर्वचन कहना।
२ कलंक-सूचक आरोप।

**गाली गलौज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाली + अनु० गलौज ] परस्पर गालि-प्रदान। तू तू मैं मैं। दुर्वचन।

**गाली गुफ्ता**—संज्ञा पुं० दे० "गाली-गलौज"।

**गालना, गाल्हना***†—क्रि० अ० [सं० गल्ह=बात ] बात करना। बोलना।

**गालू**—वि० [ हिं० गाल ] १ गाल बजानेवाला। व्यर्थ डींग मारनेवाला। २ बकवादी। गप्पी।

**गाव**—संज्ञा पुं० [ सं० गो । फ़ा० गाव ] गाय।

**गावकुशी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गोवध।

**गावजबान**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] एक बूटी जो फारस देश में होती है।

**गावतकिया**—संज्ञा पुं० [ फा० ] बड़ा तकिया जिससे कमर लगाकर लोग फर्श पर बैठते हैं। मसनद।

**गावदी**—वि० [ हिं० गाय +सं० धी ] कुंठित बुद्धि का। अबोध। नासमझ। बेवकूफ।।

**गावदुम**—वि० [ फ़ा० ] १. जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। २. चढ़ाव-उतारवाला। ढालुवाँ।

**गाशिया**—संज्ञा पुं० [ अ० गाशिया ] जीनपोश।

**गाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्राह ] १. ग्राहक। गाहक। २. पकड़। घात। ३. ग्राह।

**गाहक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अवगाहन करनेवाला।
*संज्ञा पुं० [ सं० ग्राहक ] १ खरीद-दार। मोल लेनेवाला।
**मुहा०**—जी या प्राण का गाहक = १ प्राण लेनेवाला। मार डालने की ताक में रहनेवाला। २. दिक करनेवाला। २. कदर करनेवाला। चाहनेवाला।

**गाहकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाहक ] १. बिक्री। २ गाहक।

**गाहकताई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० ग्राह-कता ] कदरदानी। चाह।

**गाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० गाहित ] गोता लगाना। विलोड़न। स्नान।

**गाहना**—क्रि० स० [ सं० अवगाहन ] १ डूबकर थाह लेना। अवगाहन करना। २ मथना। विलोड़ना। हल-चल मचाना। ३ धान आदि के डंठल को झाड़ना जिसमें दाना नीचे झड़ जाय। ओहना।

**गाहा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गाथा ] १ कथा। वर्णन। चरित्र। वृत्तांत। २ आर्य्या छंद।

**गाही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गहना ] फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान।

**गाहू**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गना ] उप-गीति छंद।

**गिंजना**—क्रि० अ० [ हिं० गींजना ] किसी चीज (विशेषतः कपड़े) का उलटे पुलटे जाने के कारण खराब हो जाना। गींजा जाना।

**गिंजाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुंजन ] एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।
संज्ञा स्त्री० [ गींजना ] गींजने का भाव।

**गिंडुरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "इंडुआ"।

**गिंदौड़ा, गिंदोरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गेंद ] मोटी रोटी के आकार में ढाली हुई चीनी।

**गिआन***—संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान"।

**गिउ***—संज्ञा पुं० [सं० ग्रीवा] गला। गरदन।

**गिचपिच**—वि० [ अनु० ] जो साफ या क्रम से न हो। अस्पष्ट।

**गिचिर पिचिर**—वि० दे० "गिच-पिच"।

**गिजगिजा**—वि० [ अनु० ] १ ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न लगे। २ जो छूने में मांसल मालूम हो।

**गिजा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] भोजन। खुराक।

**गिटकिरी** संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।

**गिटपिट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] निरर्थक शब्द।
**मुहा०**—गिटपिट करना = टूटी फूटी या साधारण अँगरेजी भाषा बोलना।

**गिट्टक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गिट्टा ] चिलम के नीचे रखने का कंकर। चुगल।

**गिट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गिट्टा ] १. पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। २ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा। ठीकरा। ३ चिलम की गिट्टक।

**गिड़गिड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] अत्यंत नम्र होकर कोई बात या प्रार्थना करना।

**गिड़गिड़ाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं०

गिड़गिड़ाना ] १. विनती । २. गिड़गिड़ाने का भाव ।

**गिद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० गृध्र ] १. एक प्रकार का बड़ा मांसाहारी पक्षी । २. छप्पय छंद का ५२ वाँ भेद ।

**गिद्धराज**—संज्ञा पुं० [ हिं० गिद्ध + राज ] जटायु ।

**गिधयाना**—क्रि० सं० [ देश० ] परचाना । परिचित करना ।

**गिनती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गिनना + ती ( प्रत्य० ) ] १ संख्या निश्चित करने की क्रिया । गणना । शुमार ।

**मुहा०**—गिनती में आना या होना = कुछ महत्त्व का समझा जाना । गिनती गिनने के लिये = नाम मात्र के लिए । कहने सुनने भर को ।

२. संख्या । तादाद ।

**मुहा०**—गिनती के = बहुत थोड़े ।

३ उपस्थिति की जाँच । हाजिरी । ( सिपाही ) । ४. एक से सौ तक की अंकमाला ।

**गिनना**—क्रि० स० [ स० गणन ] १. गणना करना या संख्या निश्चित करना ।

**मुहा०**—दिन गिनना = १ आशा में समय बिताना । २ किसी प्रकार कालक्षेप करना ।

२. गणित करना । हिसाब लगाना । ३ कुछ महत्त्व का समझना । खातिर में लाना ।

**गिनवाना**—क्रि० स० दे० "गिनाना" ।

**गिनाना**—क्रि० स० [ हिं० गिनना का प्रे० ] गिनने का काम दूसरे से कराना ।

**गिनी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. सोने का एक सिक्का । २. एक विलायती घास ।

**गिन्नी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गिनी" ।

**गिब्बन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का बंदर ।

**गिमटी**—संज्ञा स्त्री [ अं० डिमिटी ] एक प्रकार का बूटीदार मज़बूत कपड़ा ।

**गिय***—संज्ञा पुं० दे० "गिउ" ।

**गियाह**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक तरह का घोड़ा ।

**गिर**—संज्ञा पुं० [ सं० गिरि ] १. पहाड़ । पर्वत । २. सन्यासियों के दस भेदों में से एक ।

**गिरंदा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] फंदा लगाने वाला । फाँसने वाला ।

**गिरई**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की मछली ।

**गिरगिट**—संज्ञा पुं० [ सं० कृकलास या गलगति ] छिपकली की जाति का एक जंतु जो दिन में दो बार रंग बदलता है । गिरगिटान ।

**मुहा०**-गिरगिट की तरह रंग बदलना= बहुत जल्दी सम्मति या सिद्धांत बदल देना ।

**गिरगिरी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] लड़कों का एक खिलौना ।

**गिरजा**—संज्ञा पुं० [ पुर्त० इग्रिजिया ] ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर ।

**गिरदा**†—संज्ञा पुं० [ फा० गिर्द ] १. घेरा । चक्कर । २. तकिया । गेंडुआ । बालिश । ३ काठ की थाली जिसमें हलवाई मिठाई रखते हैं । ४ ढाल । फरी ।

**गिरदान**†—संज्ञा पुं० [ हिं० गिरगिट ] गिरगिट ।

**गिरदावर**—संज्ञा पुं० दे० "गिर्दावर" ।

**गिरधर**—संज्ञा पुं० दे० "गिरिधर" ।

**गिरना**—क्रि० अ० [ सं० गलन ] १. एकदम ऊपर से नीचे आ जाना । अपने स्थान से नीचे आ रहना । पतित होना । २. खड़ा न रह सकना । जमीन पर पड़ जाना । ३. अवनति या घटाव पर होना । बुरी दशा में होना । ४. किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में आ मिलना । ५ शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना । ६. बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना । टूटना । ७. अपने स्थान से हट, निकल या झड़ जाना । ८. किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर की ओर से नीचे को आता माना जाता है । जैसे—फालिज गिरना । ९ सहसा उपस्थित होना । प्राप्त होना । १० लड़ाई में मारा जाना ।

**गिरनार**—संज्ञा पुं० [ सं० गिरि + नार = नगर ] [ वि० गिरनारी ] जैनियों का एक तीर्थ जो गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत पर है । रैवतक पर्वत ।

**गिरफ्त**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ पकड़ने का भाव । पकड़ । २ दोष का पता लगाने का ढब ।

**गिरफ्तार**—वि० [ फा० ] १. जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो । २. ग्रसा हुआ । ग्रस्त ।

**गिरफ्तारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. गिरफ्तार होने का भाव या क्रिया ।

**गिरमिट**—संज्ञा पुं० [ अं० गिमलेट ] ( लकड़ी में छेद करने का ) बड़ा बरमा ।

†संज्ञा पुं० [ अं० एग्रीमेंट=इकरारनामा ] १. इकरारनामा । शर्तनामा । २ स्वीकृति या प्रतिज्ञा । इकरार ।

**गिरवान***†—संज्ञा पुं० दे० "गीर्वाण" ।

संज्ञा पुं० [ फा० गरेबान ] १. अंगे या कुरते का वह गोल भाग जो गर्दन के चारों ओर रहता है । २. गर्दन । गला ।

**गिरवाना**—क्रि० स० [ हिं० गिराना का प्रे० ] गिराने का काम दूसरे से कराना ।

**गिरवी**—वि० [ फ़ा० ] गिरों रखा हुआ । बंधक । रेहन ।

**गिरवीदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह

तरह बोलना।

**गुंचा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कली। कोरक। २ नाच-रंग। विहार। जश्न।

**गुंची***—संज्ञा स्त्री० दे० "घुँघची"।

**गुंज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुंज ] १. भौंरों के भनभनाने का शब्द। गुंजार। २. आनद ध्वनि। कलरव। ३. दे० "गुंजा"।

**गुंजन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भौंरों के गूँजने की क्रिया। भनभनाहट। कोमल मधुर ध्वनि। [ हिं० ] गाँठ। रहस्य। छिपा भेद।

**गुंजना**—क्रि० अ० [ सं० गुंज ] भौंरों का भनभनाना। मधुर ध्वनि निकालना। गुनगुनाना।

**गुंजनिकेतन**—संज्ञा पुं० [ सं० गुंज + निकेतन ] भौंरा। मधुकर।

**गुंजरना**—क्रि० अ० [ हिं० गुंजार ] १. गुंजार करना। भौंरों का गूँजना। भनभनाना। २. शब्द करना। गरजना।

**गुंजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] घुँघची नाम की लता।

**गुंजाइश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. अँटने की जगह। समाने भर को स्थान। अवकाश। २ समाई। सुबीता।

**गुंजान**—वि० [ फ़ा० ] घना। अविरल। सघन।

**गुंजायमान**—वि० [ सं० ] गुंजारता हुआ। गूँजता हुआ।

**गुंजार**—संज्ञा पुं० [ सं० गुंज + आर ] भौंरों की गूँज। भनभनाहट।

**गुंजारित**—वि० दे० "गुंजित"।

**गुंजित**—वि० [ सं० ] भौंरों आदि के गुंजन से युक्त। जिसमें गुंजार हो।

**गुंठा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गठना ] एक प्रकार का नाटे कद का घोड़ा। टाँगन। † वि० [ देश० ] नाटा। बौना।

**गुंडई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुंडा ] गुंडापन। बदमाशी।

**गुंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंडली ] १. फेटा। कुंडली। २. गेंडुरी। इँडुरी।

**गुंडा**—वि० [सं० गुंडक] [स्त्री० गुंडी] १. बदचलन। कुमार्गी। बदमाश। २. छैला। चिकनिया।

**गुंडापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० गुंडा + पन ( प्रत्य० ) ] बदमाशी।

**गुंथना**—क्रि० अ० [ सं० गुत्स, गुत्थ = गुच्छा ] १ तागों, बाल की लटों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में बँधना। २ एक में उलझकर मिलना। उलझकर बँधना। ३ मोटे तौर पर सिलना। नत्थी होना।

**गुंदला**—संज्ञा पुं० [ सं० गुंडाला ] नागरमोथा।

**गुंधना**—क्रि० अ० [ सं० गुध=क्रीड़ा] पानी में सानकर मसला जाना। माड़ा जाना।

†क्रि० अ० दे० "गुँथना"।

**गुंधवाना**—क्रि० स० [ हिं० गूँधना का प्रे० ] गूँधने का काम दूसरे से कराना।

**गुंधाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गूँधना ] १. गूँधने या माड़ने की क्रिया या भाव। २. गूँधने या माड़ने की मजदूरी।

**गुंधावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गूँधना ] गूँधने या गूँथने की क्रिया या ढंग।

**गुंफ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० गुंफित ] १ उलझन। फँसाव। गुत्थमगुत्था। २ गुच्छा। ३. दाढ़ी। गलमुच्छा। ४. कारणमाला अलंकार।

**गुंफन**—संज्ञा पुं० [ सं० ]· [ वि० गुंफित ] उलझाव। फँसाव। गुत्थगुत्था। गूँथना। गौंछना।

**गुंबज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० गुंबद ] गोल और ऊँची छत।

**गुंबजदार**—वि० [ फ़ा० गुंबद + दार ] जिस पर गुंबज हो।

**गुंबद**—संज्ञा पुं० दे० "गुंबज"।

**गुंबा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोल + अंब = आम ] वह कड़ी गोल सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमा।

**गुंभी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुंफ ] अंकुर। गाभ।

**गुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० गुवाक ] १. चिकनी सुपारी। २ सुपारी।

**गुइयाँ**—संज्ञा स्त्री०,पुं० [ हिं० गोहन] १. साथी। सखा। ( स्त्री० ) २ सखी। सहचरी।

**गुग्गुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक काँटेदार पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिये जलाते और दवा के काम में लाते हैं। गूगल। २ सलई का पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है।

**गुच्ची**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] वह छोटा गड्ढा जो लड़के गोली या गुल्ली-डंडा खेलते समय बनाते हैं। वि० स्त्री० बहुत छोटी। नन्हीं।

**गुच्चीपारा, गुच्चीपाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० गुच्ची = गड्ढा + पारना = डालना ] एक खेल जिसमें लड़के एक छोटा सा गड्ढा बनाकर उसमें कौड़ियाँ फेंकते हैं।

**गुच्छ, गुच्छक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक में बँधे हुए फूलों या पत्तियों का समूह। गुच्छा। २. घास की जूरी। ३. वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या पतली टहनियाँ फैलें। झाड़। ४ मोर की पूँछ।

**गुच्छा**—संज्ञा पुं० [ सं० गुच्छ ] १. एक में लगे या बँधे कई पत्तों या फलों

का समूह । गुच्छा । २. एक में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह । जैसे, कुंजियों का गुच्छा । ३. फुँदना । झब्बा ।

**गुच्छी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुच्छ ] १. करंज । कंजा । २. रीठा । ३ एक तरकारी ।

**गुच्छेदार**—वि० [ हिं० गुच्छा + फा० दार ( प्रत्य० ) ] जिसमें गुच्छा हो ।

**गुजर**—संज्ञा पुं० [फा०] १. निकास । गति । २. पैठ । पहुँच । प्रवेश । ३. निर्वाह । कालक्षेप ।

**गुजरना**—क्रि० अ० [ फ़ा० गुजर + ना ( प्रत्य० ) ] १. समय व्यतीत होना । कटना । बीतना ।

**मुहा०**—किसी पर गुजरना = किसी पर ( संकट या विपत्ति ) पड़ना ।

२. किसी स्थान से होकर आना या जाना ।

**मुहा०**—गुजर जाना = मर जाना ।

३. निर्वाह होना । निपटना । निभना ।

**गुजर-बसर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] निर्वाह । गुजारा । कालक्षेप ।

**गुजरात**—संज्ञा पुं० [ सं० गुर्जर + राष्ट्र ] [ वि० गुजराती ] भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम का एक प्रांत ।

**गुजराती**—वि० [ हिं० गुजरात ] १. गुजरात का निवासी । गुजरात देश में उत्पन्न । २ गुजरात का बना हुआ ।

संज्ञा स्त्री० १ गुजरात देश की भाषा । २. छोटी इलायची ।

**गुजरान**—संज्ञा पुं० दे० "गुजर (३)" ।

**गुजराना***—क्रि० स० दे० "गुजारना" ।

**गुजरिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गूजर ] १. गूजर जाति की स्त्री । ग्वालिन । गोपी ।

**गुजरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गूजर ] १. कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची । २. कान-कटा भेड़ । ३. दे० "गूजरी" ।

**गुजरेटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गूजर ] १. गूजर जाति की कन्या । २. गूजरी । ग्वालिन ।

**गुजश्ता**—वि० [ फा० ] बीता हुआ । गत । व्यतीत । भूत ( काल ) ।

**गुजारना**—क्रि० स० [ फा० ] १. बिताना । काटना । २. पहुँचाना । पेश करना ।

**गुजारा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. गुजर । गुजरान । निर्वाह । २. वह वृत्ति जो जीवन निर्वाह के लिए दी जाय । ३. महसूल लेने का स्थान ।

**गुजारिश**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] निवेदन ।

**गुज्जरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गूजरी । २. एक रागिनी ।

**गुझरौट***—संज्ञा पुं० [ सं० गुह्य + सं० आवर्त्त ] १. कपड़े की सिकुड़न । शिकन । सिलवट । २. स्त्रियों की नाभि के आसपास का भाग ।

**गुझिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुह्यक ] १. एक प्रकार का पकवान । कुसली । पिराक । २. खोए की एक मिठाई ।

**गुझौट***—संज्ञा पुं० दे० "गुझरौट" ।

**गुटकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] कबूतर की तरह गुटरगूँ करना ।

क्रि० स० १. निगलना । २. खा जाना ।

**गुटका**—संज्ञा पुं० [ सं० गुटिका ] १. दे० "गुटिका" । २. छोटे आकार की पुस्तक । ३. लट्टू । ४. गुपचुप मिठाई ।

**गुटरगूँ**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] कबूतरों की बोली ।

**गुटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वटिका । वटी । गोली । २. एक सिद्धि जिसके अनुसार एक गोली मुँह में रख लेने से जहाँ चाहे, वहाँ चले जायँ ; कोई नहीं देख सकता ।

**गुट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० गोष्ठ ] १. समूह । झुंड । २. दल । यूथ ।

**गुट्ठल**—वि० [हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो । २. जड़ । मूर्ख । कूढ़मगज । ३. गुठली के आकार का ।

संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ । गुलथी २ गिलटी ।

**गुट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोष्ठ ] मांटी गाँठ ।

**गुठली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुटिका ] ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो । जैसे—आम की गुठली ।

**गुड़ंबा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गुड़ + आँब, आम ] उबालकर शीरे में डाला हुआ कच्चा आम ।

**गुड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पकाकर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस जो बट्टी या भेली के रूप में होता है ।

**मुहा०**—कुल्हिया में गुड़ फूटना = गुप्त रीति से कोई कार्य्य होना । छिपे छिपे सलाह होना ।

**गुड़गुड़**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] वह शब्द जो जल में नली आदि के द्वारा हवा फूँकने से होता है; जैसे हुक्के में ।

**गुड़गुड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] गुड़गुड़ शब्द होना ।

क्रि० स० [ अनु० ] हुक्का पीना ।

**गुड़गुड़ाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुड़गुड़ाना + हट ( प्रत्य० ) ] गुड़गुड़ शब्द होने का भाव ।

**गुड़गुड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुड़-

गुड़ाना ] एक प्रकार का हुक्का। पेच वान। फरशी।

गुड़ुच—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलोय"।

गुड़धानी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुड़+ धान ] वह लड्डू जो भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधे जाते हैं।

गुड़रू—संज्ञा पुं० [ देश० ] गडुरी चिड़िया।

गुड़हर—संज्ञा पुं० [ हिं० गुड़ + हर ] १. अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

गुड़हल—संज्ञा पुं० दे० "गुड़हर"।

गुड़ाकू—संज्ञा पुं० [ हिं० गुड़ ] गुड़ मिला हुआ पीने का तमाकू।

गुड़ाकेश—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। महादेव। २. अर्जुन।

गुड़िया—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुड़ या गुड्डा ] कपड़ों की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।

मुहा०—गुड़ियों का खेल=सहज काम।

गुड़ी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुड्डी ] पतंग। चग। कनकौवा। गुड्डी।

गुडूची—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा—संज्ञा पुं० [सं० गुड़ = खेलने की गोली ] गुड्डा। कपड़े का बना हुआ पुतला।

मुहा०—गुड्डा बाँधना = अपकीर्ति करते फिरना। निंदा करना।

संज्ञा पुं०† [ हिं० गुड्डी ] बड़ी पतंग।

गुड्डी—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुरु + उड्डीन ] पतग। कनकौवा। चग।

संज्ञा स्त्री० [ स० गुटिका ] १ घुटने की हड्डी। २ एक. प्रकार का छोटा हुक्का।

गुढ़ना—क्रि० अ० [ स० गूढ ] १. छिपना। २. गूढ़ अर्थ समझना। जैसे—पढ़ना-गुढ़ना।

गुढ़ा—संज्ञा पुं० [ सं० गूढ़ ] १. छिपने की जगह। गुप्त स्थान। २. मवास।

गुढ़ासी—संज्ञा पुं० [ सं गूढाशयी ] १. अपने मन में कोई गूढ आशय रखनेवाला। २ विप्लव करने वाला।

गुण—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० गुणी] १. किसी वस्तु में पाई जानेवाली वह बात जिसके द्वारा वह वस्तु दूसरी वस्तु से पहचानी जाय। धर्म। सिफत। २. प्रकृति के तीन भाव—सत्व, रज और तम। ३. निपुणता। प्रवीणता। ४. कोई कला या विद्या। हुनर। ५ असर। तासीर। प्रभाव। ६. अच्छा स्वभाव। शील।

मुहा०—गुण गाना = प्रशंसा करना। तारीफ करना। गुण मानना = एहसान मानना। कृतज्ञ होना।

७. विशेषता। खासियत। ८. तीन की संख्या। ९. प्रकृति। १० व्याकरण में 'अ' 'ए' और 'ओ'। ११ रस्सी या तागा। डोरा। सूत। १२. धनुष की डोरी।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—द्विगुण।

गुणक—संज्ञा पुं० [ स० ] वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करें।

गुणकारक ( कारी )—वि० [ स० ] फायदा करनेवाला। लाभदायक।

गुणगौरि—संज्ञा स्त्री० [ स० ] १. पतिव्रता स्त्री। २. सोहागिन। ३. स्त्रियों का एक व्रत।

गुणग्राहक—संज्ञा पुं० [ स० ] गुणियों का आदर करनेवाला मनुष्य। कदरदान।

गुणग्राही—वि० दे० "गुणग्राहक"।

गुणज्ञ—वि० [ स० ] १- गुण को पहचाननेवाला। गुण का पारखी। २. गुणी।

गुणन—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित ] १. गुणा करना। जरब देना। २ गिनना। तखमीना करना। ३. उद्धरणी करना। रटना। ४ मनन करना।

गुणनफल—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अंक या संख्या जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे।

गुणना—क्रि० स० [ सं० गुणन ] जरब देना। गुणन करना।

गुणवंत—वि० दे० "गुणवान्"।

गुणवाचक—वि० [ सं० ] जो गुण को प्रकट करे।

यौ०—गुणवाचक संज्ञा = व्याकरण में वह संज्ञा जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।

गुणवान्—वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती ] गुणवाला। गुणी।

गुणांक—संज्ञा पुं० [ स० ] वह अंक जिसको गुणा करना हो।

गुणा—संज्ञा पुं० [ स० गुणन ] [वि० गुण्य, गुणित ] गणित की एक क्रिया। जरब।

गुणाकर—वि० [ स० ] जिसमें बहुत से गुण हों। गुणनिधान।

गुणाढ्य—वि० [ स० ] गुणपूर्ण। गुणी।

गुणानुवाद—संज्ञा पुं० [ स० ] गुण-कथन। प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई।

गुणित—वि० [ स० ] गुणा किया हुआ।

गुणी—वि० [ स० गुणिन् ] गुणवाला। जिसमें कोई गुण हो।

संज्ञा पुं० १ कला-कुशल पुरुष। २. झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा। ३ रस्सी युक्त। डोरी वाला।

गुणीभूत व्यंग्य—संज्ञा पुं० [ सं० ] काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो।

गुण्य—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अंक जिसको गुणा करना हो। २. वह जिसमें

विशिष्ट गुण हों।

**गुत्थमगुत्था**—संज्ञा पुं० [हिं० गुथना] १. उलझाव। फँसाव। २. हाथापाई। भिड़त।

**गुत्थी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुथना] वह गाँठ जो कई वस्तुओं के एक में गुथने से बने। गिरह। उलझन।

**गुथना**—क्रि० अ० [सं० गुत्सन] १. एक लड़ी या गुच्छे में नाथा जाना। २ टँकना। गाँथा जाना। ३. भद्दी सिलाई होना। टाँका लगना। ४. एक का दूसरे के साथ लड़ने के लिये खूब लिपट जाना।

**गुथवाना**—क्रि० स० [हिं० गूथना का प्रे०] गूथने का काम दूसरे से कराना।

**गुथुवाँ**—वि० [हिं० गुथना] जो गूँथकर बनाया गया हो।

**गुदकार, गुदकारा**—वि० [हिं० गूदा या गुदार] १. गूदेदार। जिसमें गूदा हो। २. गुदगुदा। मोटा। मांसल।

**गुदगुदा**—वि० [हिं० गूदा] १. गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २. मुलायम।

**गुदगुदाना**—क्रि० अ० [हिं० गुदगुदा] १ हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना। २. मन बहलाव या विनोद के लिये छेड़ना। ३. किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना।

**गुदगुदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदगुदाना] १. वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। २ उत्कंठा। शौक। ३. आह्लाद। उल्लास। उमंग।

**गुदड़ा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गूथना] फटे पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ कपड़ा। कंथा।

**गुदड़ी में लाल**—गुदड़ी में लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु।

**गुदड़ी बाजार**—संज्ञा पुं० [हिं० गुदड़ी+फ़ा० बाजार] वह बाजार जहाँ फटे पुराने कपड़े या टूटी-फूटी चीजें बिकती हों।

**गुदना**—संज्ञा पु० दे० "गोदना"। क्रि० अ० [हिं० गोदना] चुभना। धसना।

**गुदभ्रंश**—संज्ञा पु० [सं०] काँच निकलने का रोग।

**गुदर***—संज्ञा पु० दे० "गुजर"।

**गुदरना***‡—क्रि० अ० [फ़ा० गुजर +हिं० ना (प्रत्य०)] गुजरना। बीतना।

क्रि० स० निवेदन करना। पेश करना।

**गुदरानना***‡—क्रि० स० [फ़ा० गुजरान+हिं० ना (प्रत्य०)] १ पेश करना। सामने रखना। २. निवेदन करना।

**गुदरैन***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुदरना] १. पढ़ा हुआ पाठ शुद्धतापूर्वक सुनाना। २. परीक्षा। इम्तहान।

**गुदा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मलद्वार। गाँड़।

**गुदाना**—क्रि० स० [हिं० गोदना का प्रे०] गोदने की क्रिया कराना।

**गुदार**†—वि० [हिं० गूदा] गूदेदार।

**गुदारना***—क्रि०स०दे०"गुजारना"।

**गुदारा***†—संज्ञा पु० [फ़ा० गुजारा] १ नाव पर नदी पार करने की क्रिया। उतारा। २. दे० "गुजारा"।

**गुदी**†—संज्ञा पु० [हिं० गूदा] १. फल के बीज के भीतर का गूदा। मग्ज। मींगो। गिरी। २. सिर का पिछला भाग। ३. हथेली का मांस।

**गुन***†—संज्ञा पु० दे० "गुण"।

**गुनगुना**—वि० दे० "कुनकुना"।

**गुनगुनाना**—क्रि० अ० [अनु०] १ गुनगुन शब्द करना। २ नाक में बोलना। अस्पष्ट स्वर में गाना।

**गुनना**—क्रि० स० [सं० गुणन] १. गुणा करना। जरब देना। २ गिनना। तखमीना करना। ३. उद्धरणी करना। रटना। ४. सोचना। चिंतन करना। ५. समझना। मानना।

**गुनहगार**—वि० [फ़ा०] १. पापी। २. दोषी। अपराधी।

**गुनही**†—संज्ञा पु० [फ़ा० गुनाह] गुनहगार।

**गुना**—संज्ञा पुं० [सं० गुणन] १ एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे—पाँचगुना। २. गुणा। (गणित)

**गुनाह**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पाप। २. दोष। कसूर। अपराध।

**गुनाही**—संज्ञा पु० दे० 'गुनहगार"।

**गुनिया**†—संज्ञा पु० [हिं० गुणी] गुणवान्।

**गुनियाला***—वि० दे० "गुनिया"।

**गुनी**—वि० संज्ञा पु० दे० "गुणी"।

**गुनीला***—वि० दे० गुनिया।

**गुप**—वि० दे० "घुप"।

**गुपचुप**—क्रि० वि० [हिं० गुप्त+चुप] बहुत गुप्त रीति से। छिपाकर। चुपचाप।

संज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई।

**गुपाल**—संज्ञा पु० दे० "गोपाल"।

**गुपुत***—वि० दे० "गुप्त"।

**गुप्त**—वि० [सं०] [भाव गुप्तता] १. छिपा हुआ। २. गूढ़। जिसके जानने में कठिनता हो।

संज्ञा पु० [सं०] वैश्यों का अल्ल।

**गुप्तचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह दूत जो किसी बात का भेद लेता हो। भेदिया। जासूस।

**गुप्तदान**—संज्ञा पुं० [सं०] वह दान जिसे देते समय केवल दाता जाने।

**गुप्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह नायिका जो प्रेम छिपाने का उद्योग करती है। २. रखी हुई स्त्री। सुरेतिन। रखेली।

**गुप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छिपाने की क्रिया। २. रक्षा करने की क्रिया। ३. कारागार। कैदखाना। ४. गुफा। ५. अहिंसा आदि के योग के अंग। यम।

**गुप्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुप्त ] वह छड़ी जिसके अंदर किरच या पतली तलवार हो।

**गुफा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुहा ] वह गहरा अँधेरा गड्ढा जो जमीन या पहाड़ के नीचे दूर तक हो।

**गुफ्तगू**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] बातचीत।

**गुबरैला**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोबर + ऐला (प्रत्य०) ] एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

**गुबार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. गर्द। धूल। २. मन में दबाया हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष आदि।

**गुबिंद***—संज्ञा पुं० दे० "गोविंद"।

**गुब्बारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कुप्पा ] वह थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाते हैं।

**गुम**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १ गुप्त। छिपा हुआ। २. अप्रसिद्ध। ३. खोया हुआ।

**गुमटा**—संज्ञा पुं० [ सं० गुंबा + टा (प्रत्य०) ] वह गोल सूजन जो मत्थे या सिर पर चोट लगने से होती है। गलमी।

**गुमटी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० गुंबद ] मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की छत जो सबसे ऊपर उठी हुई होती है। रेल की लाइन के किनारे बनी कोठरी।

**गुमना**†—क्रि० अ० [ फा० गुम ] गुम होना। खो जाना।

**गुमनाम**—वि० [ फा० ] १ अप्रसिद्ध। अज्ञात। २ जिसमें नाम न दिया हो।

**गुमर**—संज्ञा पुं० [ फा० गुमान ] १. अभिमान। घमंड। शेखी। २. मन में छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि। गुबार। ३. धीरे धीरे की बात चीत। कानाफूसी।

**गुमराह**—वि० [ फा० ] १. बुरे मार्ग में चलनेवाला। २. भूला भटका हुआ।

**गुमान**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. अनुमान। कयास। २. घमंड। अहंकार। गर्व। ३. लोगों की बुरी धारणा। बदगुमानी।

**गुमाना**†—क्रि० स० दे० "गँवाना"।

**गुमानी**—वि० [ हिं० गुमान ] घमंडी। अहंकारी। गरूर करनेवाला।

**गुमाश्ता**—संज्ञा पुं० [ फा० ] बड़े व्यापारी की ओर से खरीदने और बेचने के लिए नियुक्त मनुष्य। एजेंट।

**गुम्मट**—संज्ञा पुं० [ फा० गुंबद ] गुंबद। संज्ञा पुं० [सं० गुल्म] दे० "गुमटा"।

**गुम्मा**—वि० [ फा० गुम ] चुप्पा। न बोलनेवाला।

**गुरंब, गुरंबा**—संज्ञा पुं० दे० "गुड़ंबा"।

**गुर**—संज्ञा पुं० [ सं० गुरुमंत्र ] वह साधन या क्रिया जिसके करते ही कोई काम तुरत हो जाय। मूलमंत्र। भेद युक्ति।

†संज्ञा पुं० दे० "गुरु"।

**गुरगा**—संज्ञा पुं० [ सं० गुरुग ] [ स्त्री० गुरगी ] १. चेला। शिष्य। २. टहलुआ। नौकर। ३. गुप्तचर। जासूस।

**गुरगाबी**—संज्ञा पुं० [ फा० ] मुंडा जूता।

**गुरचा**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुरुच ] सिकुड़न। बट। बल।

**गुरचों**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] परस्पर धीरे धीरे बातें करना। कानाफूसी।

**गुरझन**—संज्ञा स्त्री० उलझन। गाँठ।

**गुरदा**—संज्ञा पुं० [फा० सं० गोर्द ] १. रीढ़दार जीवों के अंदर का एक अंग जो कलेजे के निकट होता है। २. साहस। हिम्मत। ३. एक प्रकार की छोटी तोप।

**गुरमुख**—वि० [ हिं० गुरु + मुख ] जिसने गुरु से मंत्र लिया हो। दीक्षित।

**गुरम्मर**†—संज्ञा पुं० [ हिं० गुड़ + आम ] माठे आमों का वृक्ष।

**गुरवी**—वि० [ सं० गर्व ] घमंडी।

**गुरसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोरसी"।

**गुराई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गोराई"।

**गुराब**—संज्ञा पुं० [ देश० ] तोप लादने की गाड़ी।

**गुरिद**†*—संज्ञा पुं० [फा० गुर्ज] गदा।

**गुरिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुटिका ] १. वह दाना या मनका जो माला का एक अंश हो। २. चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३. मछली के मांस की बोटी।

**गुरु**—वि० [ सं० ] १. लंबे-चौड़े आकारवाला। बड़ा। २. भारी। वजनी। ३. कठिनता से पकने या पचनेवाला। (खाद्य)

संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० गुरुआनी ] १. देवताओं के आचार्य, बृहस्पति। २. बृहस्पति नामक ग्रह। ३. पुष्य नक्षत्र। ४. यज्ञोपवीत संस्कार में गायत्री मंत्र का उपदेष्टा। आचार्य। ५. किसी मंत्र का उपदेष्टा। ६. किसी विद्या या कला का शिक्षक। उस्ताद। दो मात्राओं वाला

अक्षर। (पिंगल) ८. ब्रह्म। ९. विष्णु। १०. शिव।

**गुरुआनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+आनी (प्रत्य०)] १. गुरु की स्त्री। २. वह स्त्री जो शिक्षा देती हो।

**गुरुआई**—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+आई (प्रत्य०)] १. गुरु का धर्म। २ गुरु का काम। ३. चालाकी। धूर्तता।

**गुरुकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का स्थान जहां वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो।

**गुरुच**—संज्ञा स्त्री० [सं० गुडूची] एक प्रकार की मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ती है और दवा के काम में आती है। गिलोय।

**गुरुज***—संज्ञा पुं० दे० "गुर्ज"।

**गुरुजन**—संज्ञा पुं० [सं०] बड़े लोग। माता-पिता, आचार्य आदि।

**गुरुता**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुरुत्व। भारीपन। २. महत्त्व बड़प्पन। ३. गुरुपन, गुरुताई।

**गुरुताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "गुरुता"।

**गुरुतोमर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद।

**गुरुत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १ भारीपन। वजन। बोझ। २. महत्त्व। बड़प्पन।

**गुरुत्वकेंद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ में वह बिंदु जिसपर समस्त वस्तु का भार एकत्र और कार्य्य करता हुआ मानते हैं।

**गुरुत्वाकर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।

**गुरुदक्षिणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ने पर गुरु को दी जाय।

**गुरुद्वारा** - संज्ञा पुं० [सं० गुरु+द्वार] १. आचार्य्य या गुरु के रहने की जगह। २. सिक्खों का मन्दिर।

**गुरुविनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "गुर्विणी"।

**गुरुभाई**—संज्ञा पुं० [सं० गुरु+हिं० भाई] एक ही गुरु के शिष्य।

**गुरुमुख**—वि० [सं० गुरु+मुख] दीक्षित जिसने गुरु से मंत्र लिया हो।

**गुरुमुखी**—संज्ञा स्त्री० [सं० गुरु+मुखी] गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि।

**गुरुवार**—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति का दिन। बृहस्पति। बीफे।

**गुरू**—संज्ञा पुं० [सं० गुरु] गुरु अध्यापक।

**यौ०**—गुरू घंटाल=बड़ा भारी चालाक।

**गुरेरना**—क्रि० स० [सं० गुरु=बड़ा+हेरना] आँखें फाड़कर देखना। घूरना।

**गुरेरा***—संज्ञा पुं० दे० "गुलेला"।

**गुर्ज**—संज्ञा पुं० [फा०] गदा। सोटा।

**यौ०**—गुर्जबर्दार= गदाधारी सैनिक। संज्ञा पुं० दे० "बुर्ज"।

**गुर्जर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुजरात देश। २. गुजरात देश का निवासी। ३. गूजर।

**गुर्जरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गुजरात देश की स्त्री। २. भैरव राग का स्त्री। (रागिनी)

**गुर्राना**—क्रि० अ० [अनु०] १. डराने के लिये घुर घुर की तरह गंभीर शब्द करना (जैसे कुत्ते, बिल्ली करते हैं)। २ क्रोध या अभिमान में कर्कश स्वर से बोलना।

**गुर्विणी**—वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।

**गुर्वी**—वि० स्त्री० [सं०] १. बड़ा। भारी। २. प्रधान। मुख्य। ३. गौरव शाली। ४. गर्भवती। संज्ञा स्त्री० गुरु की पत्नी।

**गुल**—संज्ञा पुं० [फा०] १. गुलाब का फूल। २. फूल। पुष्प।

**मुहा०**—गुल खिलना = १ विचित्र घटना होना। २. बखेड़ा खड़ा होना। ३. पशुओं के शरीर में फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। ४ वह गड्ढा जो गालों में हँसने आदि के समय पड़ता है। शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिह्न। दाग। छाप। ६. दीपक में बत्ती का वह अंश जो जलकर उभर आता है।

**मुहा०**—(चिराग) गुल करना = (चिराग) बुझाना या ठंडा करना। ७ तमाकू का जला हुआ अंश। जट्ठा। ८. किसी चीज पर बना हुआ भिन्न रंग का कोई निशान। ९ जलता हुआ कोयला।

संज्ञा पुं० कनपटी।

**गुल**—संज्ञा पुं० [फा०] शोर। हल्ला।

**गुलअब्बास**—संज्ञा पुं० [फा० गुल+अ० अब्बास] एक पौधा जिसमें बरसात के दिनों में लाल या पीले रंग के फूल लगते हैं। गुलाबाँस।

**गुलकंद**—संज्ञा पुं० [फा०] मिश्री या चीनी में मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पँखरियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लाने के लिये होता है।

**गुलकारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेल-बूटे का काम।

**गुलकेश**—संज्ञा पुं० [फा० गुल+केश] मुर्गकेश का पौधा या फूल। जटाधारी।

**गुलखैरू**—संज्ञा पुं० [फ़ा० गुल+खैरू] एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं।

**गुलगपाड़ा**—संज्ञा पुं० [अ० गुल+गप्प] बहुत अधिक चिल्लाहट। शोर। गुल।

**गुलगुल**—वि० [हिं० गुलगुला] नरम। मुलायम। कोमल।

**गुलगुला**—संज्ञा पुं० दे० "गुलगुल"।

संज्ञा पुं० [हिं० गोल + गोला] १. एक मीठा पकवान। २. कनपटी। गंडस्थल।

**गुलगुलाना**†—क्रि० स० [हिं० गुलगुल] गूदेदार चीज को दबा या मलकर मुलायम करना।

**गुलगोथना**—संज्ञा पुं० [हिं० गुलगुल + तन] ऐसा नाटा मोटा आदमी जिसके गाल आदि अंग खूब फूले हुए हों।

**गुलचना***—क्रि० स० दे० "गुलचाना"।

**गुलचा**—संज्ञा पुं० [हिं० गाल] प्यार से प्रेमपूर्वक गालों पर किया हुआ हाथ का आघात।

**गुलचाना, गुलचियाना**†*—क्रि० स० [हिं० गुलचा + ना] गुलचा मारना।

**गुलछर्रा**—संज्ञा पुं० [हिं० गोली + छर्रा] वह भोग विलास या चैन जो बहुत स्वच्छंदतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जाय।

**गुलजार**—संज्ञा पुं० [फा०] बाग। वाटिका।

वि० हरा-भरा। आनंद और शोभायुक्त।

**गुलझटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल + सं० झट = जमाव] १. उलझन की गाँठ। २. सिकुड़न। शिकन।

**गुलथी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोल+प्र० अस्थ] १ पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोली। २ मांस की गाँठ।

**गुलदस्ता**—संज्ञा पुं० [फा०] सुंदर फूलों और पत्तियों का एक में बँधा समूह। गुच्छा।

**गुलदाउदी**—संज्ञा स्त्री० [फा० गुल + दाऊदी] एक छोटा पौधा जो सुंदर गुच्छेदार फूलों के लिए लगाया जाता है।

**गुलदान**—संज्ञा पुं० [फा०] गुलदस्ता रखने का पात्र।

**गुलदार**—संज्ञा पुं० [फा०] १ एक प्रकार का कबूतर। २. एक प्रकार का कशीदा।

वि० दे० "फूलदार"।

**गुलदुपहरिया**—संज्ञा पुं० [फा० गुल + हिं० दुपहरिया] एक छोटा साधा पौधा जिसमें कटोरे के आकार के गहरे लाल रंग के सुंदर फूल लगते हैं।

**गुलनार**—संज्ञा पुं० [फा०] १ अनार का फूल। २ अनार के फूल का सा गहरा लाल रंग।

**गुलबकावली**—संज्ञा स्त्री० [फा० गुल + सं० बकावली] हल्दी की जाति का एक पौधा जिसमें सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।

**गुलबदन**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

**गुलमेंहदी**—संज्ञा पुं० [फा० गुल + हिं० मेंहदी] एक प्रकार के फूल का पौधा।

**गुलमेख**—संज्ञा पुं० [फा०] वह कील जिसका सिरा गोल होता है। फुलिया।

**गुललाला**—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक प्रकार का पौधा। २ इस पौधे का फूल।

**गुलशन**—संज्ञा पुं० [फा०] वाटिका। बाग।

**गुलशब्बो**—संज्ञा स्त्री० [फा०] लहसुन से मिलता-जुलता एक छोटा पौधा। रजनीगंधा। सुगवरा। सुगंधिराज।

**गुलहजारा**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का गुललाला।

**गुलाब**—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक झाड़ या कँटीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं। २. गुलाबजल।

**गुलाबजामुन**—संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब+ हिं० जामुन] १. एक मिठाई। २ एक पेड़ जिसका स्वादिष्ठ फल नीबू के बराबर पर कुछ चपटा होता है।

**गुलाबपाश**—संज्ञा पुं० [हिं० गुलाब + फा० पाश] झारी के आकार का एक लंबा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।

**गुलाबबाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गुलाब + हिं० बाड़ी] वह आमोद या उत्सव जिसमें कोई स्थान गुलाब के फूलों से सजाया जाता है।

**गुलाबा**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का बरतन।

**गुलाबी**—वि० [फा०] १ गुलाब के रंग का। २ गुलाब संबंधी। ३ गुलाबजल से बनाया हुआ। ४. थोड़ा या कम। हलका।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका लाल रंग।

**गुलाम**—संज्ञा पुं० [अ०] १ मोल लिया हुआ दास। खरीदा हुआ नौकर। २ साधारण सेवक। नौकर।

**गुलामी**—संज्ञा स्त्री० [अ० गुलाम + ई० (प्रत्य०)] १ गुलाम का भाव। दासत्व। २ सेवा। नौकरी। ३ पराधीनता। परतंत्रता।

**गुलाल**—संज्ञा पुं० [फा० गुल्लाला] एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिंदू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।

**गुलाला**—संज्ञा पुं० दे० "गुललाला"।

**गुलिस्ताँ**—संज्ञा पुं० [फा०] बाग।

वाटिका।

**गुलूबंद**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. लंबी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिए सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २. गले का एक गहना।

**गुलेनार**—संज्ञा पुं० दे० "गुलनार"।

**गुलेल**—संज्ञा स्त्री० [ फा० गिलूल ] वह कमान जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

**गुलेला**—संज्ञा पुं० [ फा० गुलूला ] १. मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २. गुलेल।

**गुल्फ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एँड़ी पर की गाँठ।

**गुल्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो। जैसे, ईख, शर आदि। २. सेना का एक समुदाय जिसमें ९. हाथी, ९. रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल होते हैं। ३ पेट का एक रोग।

**गुल्लक**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोलक"।

**गुल्ला**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोला ] मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं।

संज्ञा पुं० [ अ० गुल ] शोर। हल्ला।

संज्ञा पुं० दे० "गुलेल"।

**गुल्लाला**—संज्ञा पुं० [ फा० गुले लालः ] एक प्रकार का लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है।

**गुल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुलिका = गुठली ] १. फल की गुठली। २. महुए की गुठली। ३. किसी वस्तु का कोई लंबोतरा छोटा टुकड़ा जिसका पेटा गोल हो। ४. छत्ते में वह जगह जहाँ मधु होता है।

**गुल्ली-डंडा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गुल्ली + डंडा ] लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो एक गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है।

**गुवाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुपारी।

**गुवाल**—संज्ञा पुं दे० "ग्वाल"।

**गुविंद***†—संज्ञा पुं० दे० "गोविंद"।

**गुसाँई**—संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।

**गुसा***†—संज्ञा पुं० दे० "गुस्सा"।

**गुस्ताख**—वि० [ फा० ] बड़ों का संकोच न रखनेवाला। धृष्ट। अशालीन। अशिष्ट।

**गुस्ताखी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] धृष्टता। ढिठाई। अशिष्टता। बेअदबी।

**गुस्ल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] स्नान। नहाना।

**गुस्लखाना**—संज्ञा पुं० [ अ० गुस्ल + फा० खाना ] स्नानागार। नहाने का घर।

**गुस्सा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० गुस्सावर, गुस्सैल ] क्रोध। कोप। रिस।

**मुहा०**—गुस्सा उतरना या निकलना = क्रोध शांत होना। (किसी पर) गुस्सा उतारना = क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना। अपने कोप का फल चखाना। गुस्सा चढ़ना = क्रोध का आवेश होना।

**गुस्सैल**—वि० [ अ० गुस्सा + हिं० ऐल (प्रत्य०) ] जिसे जल्दी क्रोध आवे। गुस्सावर।

**गुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ कार्तिकेय। २. अश्व। घोड़ा। ३ विष्णु का एक नाम। ४ निषाद जाति का एक नायक जो राम का मित्र था। ५ गुफा। ६ हृदय।

†संज्ञा पुं० [ सं० गुह्य ] गूह। मैला।

**गुहना**†—क्रि० स० दे० "गूँथना"।

**गुहराना**†—क्रि० स० [ हिं० गुहार ] पुकारना। चिल्लाकर बुलाना।

**गुहवाना**—क्रि० स० [ हिं० गुहना का प्रे० ] गुहने का काम करवाना। गुथवाना।

**गुहांजनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुह्य + अंजन ] आँख की पलक पर होनेवाली फुड़िया। बिलनी।

**गुहा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गुफा। कंदरा।

**गुहाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गुहाना ] १ गुहने की क्रिया, ढंग या भाव। २ गुहने की मजदूरी।

**गुहार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गो + हार ] रक्षा के लिए पुकार। दोहाई।

**गुहेरा**—संज्ञा पुं० [सं० गोधा] गोह। संज्ञा पुं० [हिं० गुहना+एरा (प्रत्य०)] चाँदी-सोने की मालाएँ आदि गुहनेवाला। पटेहरा।

**गुहेरी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] आँख की पलक की फुंसी। बिलनी।

**गुह्य**—वि० [ सं० ] १. गुप्त। छिपा हुआ। पोशीदा। २ गोपनीय। छिपाने योग्य। ३ गूढ़। जिसका तात्पर्य सहज में न खुले।

**गुह्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वे यक्ष जो कुबेर के खजानों की रक्षा करते हैं।

**गुह्यपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुबेर।

**गूँगा**—वि० [ फा० गूँग = जो बोल न सके ] [ स्त्री० गूँगी ] जो बोल न सके। जिसे वाणी न हो। मूक।

**मुहा०**—गूँगे का गुड़ = ऐसी बात जिसका अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके।

**गूँज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुंज ] १. भौंरों के गूँजने का शब्द। कलध्वनि। २. प्रतिध्वनि। व्याप्तध्वनि। ३ लट्टू की कील। ४ कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार।

**गूँजना**—क्रि० अ० [ सं० गुंजन ] १. भौंरों या मक्खियों का मधुर ध्वनि

गूँजना । गुंजारना । २. प्रतिध्वनित होना । शब्द से व्याप्त होना ।

**गूँथना**—क्रि० स० दे० "गूँधना" ।

**गूँधना**—क्रि० स० [सं० गुध=क्रीडा] पानी में सानकर हाथों से दबाना या मलना । माड़ना । मसलना ।

क्रि० स० [सं० गुंफन] गूँथना । पिरोना ।

**गूजर**—संज्ञा पुं० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] अहीरों की एक जाति । ग्वाला ।

**गूजरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० गुर्जरी] १. गूजर जाति की स्त्री । ग्वालिन । २ पैर में पहनने का एक जेवर । ३ एक रागिनी ।

**गूझा**—संज्ञा पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० गुझिया] १ गोझा । बड़ी पिराक । †२. फलों के भीतर का रेशा ।

**गूढ़**—वि० [सं०] १ गुप्त । छिपा हुआ । २. जिसमें बहुत सा अभिप्राय छिपा हो । अभिप्राय-गर्भित । गंभीर । ३. जिसका आशय जल्दी समझ में न आवे । कठिन ।

**गूढ़गेह***—संज्ञा पुं० दे० "यज्ञशाला" ।

**गूढ़ता**—संज्ञा स्त्री० [सं] १. गुप्तता । छिपाव । २. कठिनता ।

**गूढ़ पुरुष**—संज्ञा पुं० [सं०] जासूस ।

**गूढ़ोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त बात किसी दूसरे के ऊपर छोड़ किसी तीसरे के प्रति कही जाती है ।

**गूढ़ोत्तर**—संज्ञा पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न का उत्तर कोई गूढ़ अभिप्राय या मतलब लिए हुए दिया जाता है ।

**गूथना**—क्रि० स० [सं० ग्रथन] १. कई चीजों को एक गुच्छे या लड़ी में गूथना । पिरोना । २. सुई तागे से टाँकना ।

**गूदड़**—संज्ञा पुं० [हिं० गूथना] [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा । फटा पुराना कपड़ा ।

**गूदा**—संज्ञा पुं० [सं० गुप्त] [स्त्री० गूदी] १. फल के भीतर का वह अंश जिसमें रस आदि रहता है । २. भेजा । मग्ज । खोपड़ी का सार भाग । ३. मींगी । गिरी ।

**गून**—संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] वह रस्सी जिससे नाव खींचते हैं ।

**गूनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोनी" ।

**गूमा**—संज्ञा पुं० [सं० कुंभा] एक छोटा पौधा । द्रोणपुष्पी ।

**गूलर**—संज्ञा पुं० [सं० उदुंबर?] बटवर्ग का एक बड़ा पेड़ जिसमें लड्डू के से गोल फल लगते हैं । उदंबर । ऊमर ।

**मुहा०**—गूलर का फूल=वह जो कभी देखने में न आवे । दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु ।

**गूह**—संज्ञा पुं० [सं० गुह्य] गलीज । मल । मैला । विष्ठा ।

**गृध्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गिद्ध । २ जटायु, सपाति आदि पौराणिक पक्षी ।

**गृह**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० गृही] १. घर । मकान । निवास-स्थान । २. कुटुंब । वंश ।

**गृहजात**—संज्ञा पुं० [सं०] वह दास जो घर की दासी से पैदा हो । घर-जाया ।

**गृहप, गृहपति**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० गृहपत्नी] १ घर का मालिक । २. अग्नि ।

**गृह-मंत्री**—संज्ञा पुं० दे० "गृह सचिव" ।

**गृहयुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर के भीतर का झगड़ा । २. किसी देश के भीतर ही आपस में होनेवाली लड़ाई ।

**गृह-सचिव**—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का वह मंत्री जो देश की भीतरी बातों की व्यवस्था करता हो ।

**गृहस्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मचर्य के उपरांत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहनेवाला व्यक्ति । ज्येष्ठाश्रमी । २. घरबारवाला । बालबच्चोंवाला आदमी । †३ वह जिसके यहाँ खेती होती हो ।

**गृहस्थाश्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते और घर का काम-काज देखते हैं ।

**गृहस्थी**—संज्ञा स्त्री० [सं० गृहस्थ+ई (प्रत्य०)] १.गृहस्थाश्रम । गृहस्थ का कर्त्तव्य । २ घरबार । गृह-व्यवस्था । ३ कुटुंब । लड़के वाले । ४ घर का सामान । माल असबाब । †५. खेती बारी ।

**गृहिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घर की मालिकिन । २. भार्या । स्त्री ।

**गृही**—संज्ञा पुं० [सं० गृहिन्] [स्त्री० गृहिणी] १ गृहस्थ । गृहस्थाश्रमी । २ यात्री । (भड्डरों की बोली)

**गृहीत**—वि० [सं०] [स्त्री० गृहीता] १ जो ग्रहण किया गया हो । स्वीकृत । २ लिया, पकड़ा या रखा हुआ । ३. आश्रित ।

**गृह्य**—वि० [सं०] गृह संबधी ।

**गृह्यसूत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं ।

**गेंठी**—संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] वाराही कंद ।

**गेंड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० कांड] ऊख के ऊपर का पत्ता । अगौरा ।

संज्ञा पुं० [सं० गोष्ठ] घेरा । अहाता ।

**गेंड़ना**—क्रि० स० [हिं० गेंड] १. खेतों को मेंड़ से घेरकर हद बाँधना । २. अन्न रखने के लिये गेंड़ बनाना । ३. घेरना । गोंठना ।

**गेंडुली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंडली ] कुंडल। फेंटा। जैसे—साँप की गेंडली।

**गेंड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० कांड ] १. ईख के ऊपर के पत्ते। अगोरी। २ ईख। गन्ना।

**गेंडुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० गडुक=तकिया ] १ तकिया। सिरहाना। २. बड़ा गेंद।

**गेंडुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० कुंडली ] १. रस्सी का बना हुआ मेंडरा जिसपर घड़ा रखते हैं। इँडुरी। बिड़वा। २. फेंटा। कुंडली। ३. साँप का कुंडलाकार बैठना।

**गेंद**—संज्ञा पुं० [ सं० गेंडुक, कंदुक ] १. कपड़े, रबर या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक। २. कालिब। कलबूत।

**गेंद-तड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गेंद+तड़ (अनु०) ] वह खेल जिसमें लड़के एक दूसरे को गेंद से मारते हैं।

**गेंदवा**—संज्ञा पुं० [ सं० गेंडुक ] तकिया।

**गेंदा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गेंदा ] एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।

**गेंदुक***—संज्ञा पुं० [ सं० गेंडुक ] गेंद।

**गेंदुवा**—संज्ञा पुं० [ सं० गेंडुक ] गेंडुआ। उसीसा। तकिया। गोल तकिया।

**गेड़ना**—क्रि० स० [ सं० गड=चिह्न। हिं० गंडा ] १ लकीर से घेरना। २. परिक्रमा करना। चारों ओर घूमना।

**गेय**—वि० [ सं० ] गाने के लायक।

**गेरना**—क्रि० स० [ सं० गलन या गिरण] १. गिराना। नीचे डालना। २. ढालना। उँडेलना। ३. डालना।

**गेरुआ**—वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०) ] १. गेरू के रंग का। मटमैलापन लिये लाल रंग का। २. गेरू में रँगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

**गेरुई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गेरू ] चैत की फसल का एक रोग।

**गेरू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गवेदुक ] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है। गिरमाटी। गैरिक।

**गेह**—संज्ञा पुं० [ सं० गृह ] घर। मकान।

**गेहनी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गेह ] गृहिणी।

**गेही***—संज्ञा पुं० [ हिं० गेह ] [ स्त्री गेहिनी ] गृहस्थ।

**गेहुँअन**—संज्ञा पुं० [ हिं० गेहूँ ] मटमैले रंग का एक अत्यंत विषधर फनदार साँप।

**गेहुँआ**—वि० [ हिं० गेहूँ ] गेहूँ के रंग का। बादामी।

**गेहूँ**—संज्ञा पुं० [ सं० गोधूम ] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।

**गैंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० गंडक ] भैंसे के आकार का एक पशु जो ऐसे दलदलों और कछारों में रहता है जहाँ जंगल होता है।

**गैन***—संज्ञा पुं० [ सं० गमन ] गैल। मार्ग।

*संज्ञा पुं० दे० "गगन"।

**गैनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खता। वि०[ सं० गमन ] चलनेवाली।

**गैब**—संज्ञा पुं० [ अ ] परोक्ष। वह जो सामने न हो। परोक्ष।

**गैबर***—संज्ञा पुं० [ सं० गजवर ] १. बड़ा हाथी। २ एक प्रकार की चिड़िया।

**गैबी**—वि० [ अ० गैब ] १. गुम। छिपा हुआ। २. अजनबी। अज्ञात।

**गैयर***—संज्ञा पुं० [ सं० गजवर ] हाथी।

**गैया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गो ] गाय।

**गैर**—वि० [ अ० ] १. अन्य। दूसरा। २. अजनबी। अपने कुटुंब या समाज से बाहर का (व्यक्ति)। पराया। ३. विरुद्ध अर्थवाची या निषेध वाचक शब्द। जैसे—गैर मुमकिन, गैरहाजिर।

**गैर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अत्याचार। अंधेर।

**गैरजिम्मेदार**—वि० [ अ०+फ़ा० ] [ संज्ञा गैरजिम्मेदारी ] अपनी जिम्मेदारी न समझनेवाला।

**गैरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] लज्जा। हया।

**गैरमनकूला**—वि० [ अ० ] जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले न जा सकें। स्थिर। अचल।

**गैरमामूली**—वि० [ अ० ] असाधारण।

**गैर-मिसिल**—वि० [ अ० ] १. अनुचित। २. बेसिलसिले।

**गैरमुनासिब**—वि० [ अ० ] अनुचित।

**गैरमुमकिन**—वि० [ अ० ] असंभव।

**गैरवाजिब**—वि० [ अ० ] अयोग्य। अनुचित।

**गैर-सरकारी**—वि० [ अ० + फ़ा ] जो सरकारी न हो।

**गैरहाजिर**—वि० [ अ० ] अनुपस्थित।

**गैरहाजिरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अनुपस्थिति।

**गैरिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गेरू। २. सोना।

**गैल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गली ] मार्ग। रास्ता।

**गोंइँड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० गाँव+मेड़ ] गाँव के आसपास की जमीन।

**गोंठ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोष्ठ ] धोती की लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।

**गोंठना**—क्रि० स० [ सं० कुंठन ] १. किसी वस्तु की नोक या कोर गुठली

कर देना। २. गोशे या पुवे की कोर को मोड़ मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना।
क्रि० स० [ सं० गोष्ठ ] चारों ओर से घेरना।

**गोंड़**—संज्ञा पुं० [ सं० गोड ] १. एक जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है। २ बंग और भुवनेश्वर के बीच का देश।

**गोंडरा**†—संज्ञा पुं० [ सं० कुंडल ] [ स्त्री० गोंडरी ] १ लोहे का मँडरा जिसपर मोट का चरसा लटकता है। २. कुंडल के आकार की वस्तु। मँडरा। ३. गोल घेरा।

**गोंड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० गोष्ठ ] १. बाड़ा। घेरा हुआ स्थान। ( विशेषकर चौपायों के लिये।) २. पुरा। गाँव। खेड़ा।

**गोंद**—संज्ञा पुं० [ सं० कुंदुरु या हिं० गूदा ] पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव। लासा। निर्यास।
यौ०—गोंददानी = वह बरतन जिसमें गोंद भिगोकर रखा रहे।

**गोंदपँजीरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोंद + पँजीरी ] गोंद मिली हुई पँजीरी जिसे प्रसूता स्त्रियों को खिलाते हैं।

**गोंदरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुद्रा ] १. पानी में होनेवाली एक घास। २. इस घास की बनी हुई चटाई।

**गोंदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोवदिनी = प्रियगु ] १. मौलसिरी की तरह का एक पेड़। २. इगुदी। हिंगोट।

**गो**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गाय। गऊ। २. किरण। ३ वृष राशि। ४. इंद्रिय। ५. बोलने की शक्ति। वाणी। ६. सरस्वती। ७. आँख। दृष्टि। ८ बिजली। ९ पृथ्वी। जमीन। १०. दिशा। ११. माता। जननी। १२. बकरी, भैंस, भेड़ी इत्यादि दूध देनेवाले पशु। १३ जीभ। जबान।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बैल। २. नंदी नामक शिवगण। ३. घोड़ा। ४. सूर्य। ५ चंद्रमा। ६. बाण। तीर। ७. आकाश। ८ स्वर्ग। ९. जल। १०. वज्र। ११. शब्द। १२. नौ का अंक।
अव्य० [ फा० ] यद्यपि।
यौ०—गोकि = यद्यपि। गो।
प्रत्य० [फ़ा०] कहनेवाला। (यौ० में)

**गोइंठा**†—संज्ञा पु० [सं० गो+विष्ठा ] इंधन के लिये सुखाया हुआ गोबर। उपला। कंडा। गोहरा।

**गोइंदा**—संज्ञा पु० [ फ़ा० ] गुप्त भेदिया। गुप्तचर। जासूस।

**गोइ**—संज्ञा पु० दे० "गोय"।

**गोइयाँ**—संज्ञा पुं० स्त्री० [ हिं० गोहनिया ] साथ में रहनेवाला। साथी। सहचर।

**गोई**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोइयाँ।"

**गो-कन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कामधेनु।

**गोऊ***†—वि० [ हिं० गोना + ऊ (प्रत्य०) ] चुरानेवाला। छिपानेवाला।

**गोकर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ हिंदुओं का एक शैव क्षेत्र जो मलाबार में है। २ इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति।
वि० [ सं० ]गऊ के से लंबे कानवाला।

**गोकर्णी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक लता। मुरहरी। चुरनहार।

**गोकुल**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ गौओं का झुंड। गो-समूह। २. गोशाला। ३. एक प्राचीन गाँव जो वर्तमान मथुरा से पूर्व-दक्षिण की ओर है।

**गोकोस**—संज्ञा पु० [ सं० गो+क्रोश ] १. उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े। २. छोटा कोस।

**गोक्षुर**—संज्ञा पु० दे० "गोखरू"।

**गोखग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्थल में रहनेवाले पशु। जानवर।

**गोखरू**—संज्ञा पु० [ सं० गोक्षुर ] १. एक प्रकार का क्षुप जिसमें चने के आकार के कड़े और कँटीले फल लगते हैं। २ धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिये उनके रास्ते में फैला दिए जाते हैं। ३. गोटे और बादले के तारों से गूँथकर बनाया हुआ एक साज। ४. कड़े के आकार का एक आभूषण।

**गोखा**—संज्ञा पु० दे० "झरोखा"।

**गोग्रास**—संज्ञा पु० [ सं० ] पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या श्राद्धादिक के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है।

**गोचर**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हो सके। २ गौओं के चरने का स्थान। चरागाह। चरी।

**गोज़**—संज्ञा पुं० [ फा० ] अपान वायु। पाद।

**गोजर**—संज्ञा पु० [ सं० खर्जू ] कनखजूरा।

**गोजई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गेहूँ + जौ ] एक में मिला हुआ गेहूँ और जौ।

**गोजी**—संज्ञा स्त्री० [सं० गवाजन ] १ गौ हाँकने की लकड़ी। २. बड़ी लाठी। लट्ठ।

**गोझनवट**†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] स्त्रियों की साड़ी का अंचल। पल्ला।

**गोझा**—संज्ञा पु० [ सं० गुह्यक] [ स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया ] १. गुझिया नामक पकवान। पिराक। २. एक प्रकार की कँटीली घास। गुज्झा। ३. जेब। खलीता।

**गोट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोष्ठ ] १ वह पट्टी या फीता जिसे किसी कपड़े के किनारे लगाते हैं। मगजी। २.

किसी प्रकार का किनारा।
संज्ञा स्त्री० [ सं० गोष्ठी ] मंडली। गोष्ठी।
संज्ञा स्त्री० [ सं० गुटक ] चौपड़ का मोहरा। नरद। गोटी।

**गोटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोट ] १. बादले का बुना हुआ पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है। २ धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी। ३ छोटे टुकड़ों में कतरी और एक में मिली इलायची, सुपारी और खरबूजे बादाम की गिरी। ४ सूखा हुआ मल। कंडी। सुद्दा।

**गोटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गुटिका ] १ कंकड़, गेरू, पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं। २ चौपड़ खेलने का मोहरा। नरद। ३ एक खेल जो गोटियों से खेला जाता है। ४. लाभ का आयोजन।

**मुहा०**—गोटी जमना या बैठना = १. युक्ति सफल होना। २. आमदनी की सूरत होना।

**गोठ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोष्ठ ] १. गोशाला। गोस्थान। २. गोष्ठी। श्राद्ध। ३. सैर।

**गोड़**†—संज्ञा पुं० [ सं० गम, गो ] पैर।

**गोड़इत**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोइँड़+ऐत (प्रत्य०) ] गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार।

**गोड़ना**—क्रि० स० [ हिं० कोड़ना ] मिट्टी खोदना और उलट पुलट देना जिसमें वह पोली और भुरभुरी हो जाय। कोड़ना।

**गोड़ा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० गोड़ ] १. पलँग आदि का पाया। २. घोड़िया।

**गोड़ाई**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोड़ना ] गोड़ने की क्रिया या मजदूरी।

**गोड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० गोड़ना का प्रे० ] गोड़ने का काम दूसरे से कराना।

**गोड़ापाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोड़+पाई=जुलाहों का ढाँचा] बार बार आना-जाना।

**गोड़ारी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोड़=पैर +आरी (प्रत्य०) ] १. पलँग आदि का वह भाग जिधर पैर रहता है। पैताना। २ जूता

**गोड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोड़ ] छोटा पैर।

**गोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोटी ] लाभ का आयोजन। गोटी।
क्रि० अ० जमना। बैठना। बैठाना।

**गोणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टाट का दोहरा बोरा। गोन। २. एक पुरानी माप

**गोत**—संज्ञा पुं० [सं० गोत्र] १ कुल। वंश। खानदान। २. समूह। जत्था। गरोह।

**गोतम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ऋषि।

**गोतमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गौतम ऋषि की स्त्री। अहल्या।

**गोता**—संज्ञा पुं० [ अ० ] डूबने की क्रिया। डुब्बी।

**मुहा०**—गोता खाना=धोखे में आना। फरेब में आना। गोता मारना=१. डुबकी लगाना। डूबना। २. बीच में अनुपस्थित रहना।

**गोताखोर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. डुबकी लगानेवाला। डुबकी मारनेवाला। २. डुबकनी नाम।

**गोतिया**—वि० दे० "गोती"।

**गोती**—वि० [ सं० गोत्रीय ] अपने गोत्र का। जिसके साथ शौचाशौच का संबंध हो। गोत्रीय। भाई-बंधु।

**गोत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संतति। संतान। २. नाम। ३. क्षेत्र। वर्त्म। ४. राजा का छत्र। ५. समूह। जत्था। गरोह। ६. बंधु। भाई। ७ एक प्रकार का जाति-विभाग। ८ वंश। कुल। खानदान। ९ कुल या वंश की संज्ञा जो उसके किसी मूल पुरुष के अनुसार होती है।

**गोत्रसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

**गोदंती**—संज्ञा स्त्री० [सं० गोदंत] १. कच्ची या सफेद हरताल। २ एक रत्न।

**गोद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्रोड ] १. वह स्थान जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है और जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं। उत्संग। कोरा।

**मुहा०**—गोद का = छोटा बालक। बच्चा। गोद बैठना = दत्तक बनना। २. अंचल।

**मुहा०**—गोद पसारकर = अत्यंत अधीनता से। गोद भरना = १ सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में नारियल आदि पदार्थ देना। २. संतान होना। औलाद होना। गोद भरी रहे = पुत्रवती बनी रहे।

**गोदनशीन**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोद + फा० नशीन ] वह जिसे किसी ने गोद लिया हो। दत्तक।

**गोद-नशीनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोद + फा० नशीनी ] गोद बैठने का समारोह। दत्तक होना।

**गोदनहारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोदना + हारी (प्रत्य० ] ] कंजड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है।

**गोदना**—क्रि० स० [ हिं० खोदना ] १ चुभाना। गड़ाना। २. किसी कार्य के लिए बार बार जोर देना। ३. चुभती या लगती हुई बात कहना। ताना देना।
संज्ञा पुं० तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर में नील या कोयले के

पानी में डूबी हुई सूइयों से पाछकर बनता है।

**गोंदा**—संज्ञा पुं० [हिं० गौंद] बड़, पीपल या पाकर के पक्के फल।

**गोदान**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ को विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया। २. केशांत संस्कार।

**गोदाम**—संज्ञा पुं० [अं० गोडाउन] वह स्थान जहाँ बिक्री का बहुत सा माल रखा जाता हो।

**गोदावरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी।

**गोदी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोद"।

**गोधन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौओं का समूह। गौओं का झुंड। २. गौ रूपी संपत्ति। ३. एक प्रकार का तीर। †*संज्ञा पुं० [सं० गोवर्द्धन] गोवर्द्धन पर्वत।

**गोधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोह नामक जंतु।

**गोधूम**—संज्ञा पुं० [सं०] गेहूँ।

**गोधूलि, गोधूली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह समय जब जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ने के कारण धुँधली छा जाय। संध्या का समय।

**गोन**—संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १. टाट, कंबल, चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है। २. साधारण बोरा। खास।

संज्ञा स्त्री० [सं० गुण] रस्सी जिसे नाव खींचने के लिये मस्तूल में बाँधते हैं।

**गोनर्द**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नागरमोथा। २. सारस पक्षी। ३ एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था।

**गोनस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का साँप। २ वैक्रांत मणि।

**गोना***—क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

**गोनिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० कोण] दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औजार।

संज्ञा पुं० [हिं० गोन=बोरा + इया (प्रत्य०)] स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला।

**गोनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० गोणी] १. टाट का थैला। बोरा। २. पटुआ। सन। पाट।

**गोप**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ की रक्षा करनेवाला। २ ग्वाला। अहीर। ३. गोशाला का अध्यक्ष या प्रबंध करनेवाला। ४. भूपति। राजा। ५ गाँव का मुखिया।

संज्ञा पुं० [सं० गुंफ] गले में पहनने का एक आभूषण।

**गोपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. विष्णु। ३. श्रीकृष्ण। ४. ग्वाल। गोप। ५. राजा। ६. सूर्य।

**गोपद**—संज्ञा पुं० [सं० गोष्पद] १. गौशाला। २. गौ के खुर का निशान।

**गोपदी**—वि० [हिं० गोपद] गौ के खुर के समान। बहुत छोटा।

**गोपन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ छिपाव। दुराव। २ छिपाना। लुकाना। ३ रक्षा।

**गोपना***†—क्रि० स० [सं० गोपन] छिपाना।

**गोपनीय**—वि० [सं०] छिपाने के लायक।

**गोपांगना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोप जाति की स्त्री।

**गोपा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय पालनेवाली, अहीरिन। ग्वालिन। २. श्यामा लता। ३. महात्मा बुद्ध की स्त्री का नाम।

**गोपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ का पालन-पोषण करनेवाला। २. अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण। ४. एक छंद।

**गोपालतापन, गोपालतापनीय**—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

**गोपाष्टमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला अष्टमी।

**गोपिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोप की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन। ग्वालिन।

**गोपी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ग्वालिनी। गोपपत्नी। २. श्रीकृष्ण की प्रेमिका व्रज की गोप जातीय स्त्रियाँ।

**गोपीचंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी।

**गोपीत**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का खंजन पक्षी।

**गोपीनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**गोपुच्छ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गौ की पूँछ। २ एक प्रकार का गावदुमा हार।

**गोपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नगर का द्वार। शहर का फाटक। २. किले का फाटक। ३ फाटक। दरवाजा। ४ स्वर्ग।

**गोपेंद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २ गोपों में श्रेष्ठ, नंद।

**गोप्ता**—वि० [सं० गोप्तृ] रक्षा करनेवाला। रक्षक।

**गोप्य**—वि० [सं०] गुप्त रखने योग्य।

**गोफन, गोफना**—संज्ञा पुं० [सं० गोफण] छींके के आकार का जाल जिससे ढेले आदि भरकर चलाते हैं। ढेलवाँस। फन्नी।

**गोफा**—संज्ञा पुं० [सं० गुंफ] नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता।

**गोबर**—संज्ञा पुं० [सं० गोमय] गाय

की विष्ठा। गौ का मल।

**गोबरगणेश**—वि० [ हिं० गोबर+गणेश] १. भद्दा। बदसूरत। २ मूर्ख। बेवकूफ।

**गोबरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोबर+ई (प्रत्य०) ] १. कंडा। उपला। २. गोबर की लिपाई।

**गोबरैला** संज्ञा पुं० दे० "गुबरैला"।

**गोभ**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोफा ] पौधों का एक रोग।

**गोभा**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] लहर।

**गोभा**—संज्ञा पुं० [?] अकुर। आंख।

**गोभिल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

**गोभी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोजिह्वा या गुफ=गुच्छा ] १ प्रकार की घास। गाजिया। बनगोभी। २. एक प्रकार का शाक।

**गोम**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] घोड़ो की एक भौंरी।

**गोमती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक नदी। वाशिष्ठी। २ एक देवी। ३. ग्यारह मात्राओं का एक छद।

**गोमय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गौ का गू। गाबर।

**गोमर**—संज्ञा पुं० [ हिं० गौ+मारना] कसाई।

**गोमायु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गीदड़।

**गोमुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गौ का मुँह।

**मुहा०**—गोमुख नाहर या व्याघ्र=वह मनुष्य जो देखने में बहुत ही सीधा, पर वास्तव में बड़ा क्रूर और अत्याचारी हो। २. वह शख जिसका आकार गौ के मुँह के समान होता है। ३. नरसिंहा नाम का बाजा। ४. दे० "गोमुखी"।

**गोमुखी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जप-माली। जप-गुथली। २ गौ के मुँह के आकार का गंगोत्तरी का वह स्थान जहाँ से गंगा निकलती है।

**गोमूत्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार का चित्रकाव्य। २. चित्रण आदि में लहरियेदार बेल। बरद-मुतान। बैल-मुतनी।

**गोमेद, गोमेदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध मणि या रत्न जो कुछ ललाई लिए पीला होता है। राहुरत्न।

**गोमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक यज्ञ जिसमें गौ से हवन किया जाता था।

**गोयँड़**—संज्ञा पुं० दे० "गोंइँड़"।

**गोय**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गेंद।

**गोया**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] मानो।

**गोर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह गड्ढा जिसमें मृत शरीर गाड़ा जाय। कब्र। †वि० [ सं० गौर ] गोरा।

**गोरखइमली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० गोरख+इमली ] एक बहुत बड़ा पेड़। कल्प-वृक्ष।

**गोरखधंधा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोरख+धंधा ] १. कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह जिनको विशेष युक्ति से परस्पर जोड़ या अलग कर लेते हैं। २. कोई ऐसी चीज या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो।

**गोरखनाथ**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोरक्ष-नाथ ] एक प्रसिद्ध अवधूत या हठ-योगी।

**गोरखपंथी**—वि० [ हिं० गोरखनाथ+पंथ ] गोरखनाथ के चलाये हुए सप्रदायवाला।

**गोरखमुंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुण्डी ] एक प्रकार की घास जिसमें घुंडी के समान गोल गुलाबी रंग के फूल लगते हैं।

**गोरखर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गधे की जाति का एक जंगली पशु।

**गोरखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोरख ] १ नैपाल के अंतर्गत एक प्रदेश। २. इस देश का निवासी।

**गोरज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गौ के खुरों से उठी हुई धूल।

**गोरटा***—वि० पुं० [ हिं० गोरा ] [ स्त्री० गोरटी ] गोरे रंगवाला। गोरा।

**गोरस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ दूध। दुग्ध। २ दधि। दही। ३. तक्र। मठा। छाछ। ४. इंद्रियों का सुख।

**गोरसा**—संज्ञा पुं० [ सं० गोरस ] गौ के दूध से पला हुआ बच्चा।

**गोरसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोरस+ई (प्रत्य०) ] दूध गरम करने की अंगीठी।

**गोरा**—वि० [ सं० गौर ] सफेद और स्वच्छ वर्णवाला। जिसके शरीर का चमड़ा सफेद और साफ हो। (मनुष्य) संज्ञा पुं० युरोप, अमेरिका आदि देशों का निवासी। फिरंगी।

**गोराई***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोरा+ई या आई ] १. गोरापन। २.सुदरता। सौंदर्य।

**गोरिल्ला**—संज्ञा पुं० [ अफ्रि० ] बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बनमानुस।

**गोरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गौरी ] सुदर और गौर वर्ण की स्त्री। रूपवती स्त्री।

**गोरू**—संज्ञा पुं० [ सं० गो ] सींगवाला पशु। चौपाया। मवेशी।

**गोरोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीले रंग का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।

**गोलंदाज**—संज्ञा पुं० [फ़ा] तोप में गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।

**गोलंबर**—संज्ञा पुं० [हिं० गोल+अंबर ] १. गुबद। २. गुबद के आकार का कोई गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ। ३.

गोलाई। ४. कलबूत। कालिब।

**गोल**—वि० [ सं० ] १ जिसका घेरा या परिधि वृत्ताकार हो। चक्र के आकार का। वृत्ताकार। २. ऐसे घनात्मक आकार का जिसके पृष्ठ का प्रत्येक बिंदु उसके भीतर के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो। सर्ववर्त्तुल। गेंद आदि के आकार का।

**मुहा०**—गोल गोल=१. स्थूल रूप से। मोटे हिसाब से। २. अस्पष्ट रूप से। गोल बात=ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो। गोल हो जाना = गायब हो जाना।

संज्ञा पु० [ सं० ] १ मंडलाकार क्षेत्र। वृत्त। २. गोलाकार पिंड। गोला। वटक। संज्ञा पु० [ फा० गोल ] मंडली। झुंड।

**गोलक**—संज्ञा पु० [ सं० ] १ गोलोक। २. गोल पिंड। ३. विधवा का जारज पुत्र। ४ मिट्टी का बड़ा कुंडा। ५. आँख का डेला। ६ आँख की पुतली। ७. गुंबद। ८. वह संदूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाय। ९. गल्ला। गुल्लक। १० वह धन जो किसी विशेष कार्य्य के लिये संग्रह करके रखा जाय। फंड। ११. हाकी या फुटबाल के खेल में वह घेरा जिसमें गेंद मारने से विजय प्राप्त होती है। १२. ऐसी विजय।

**गोलगप्पा**—संज्ञा पु० [ हिं० गोल+अनु० गप ] एक प्रकार की महीन और करारी घी में तली फुलकी।

**गोलमाल**—संज्ञा पुं० [ सं० गोल (राग) ] गड़बड़। अव्यवस्था।

**गोलमिर्च**—संज्ञा स्त्री दे० "काली मिर्च"।

**गोलयंत्र**—संज्ञा पु० [ सं० ] वह यंत्र जिससे ग्रहों, नक्षत्रों की गति और अयन-परिवर्त्तन आदि जाने जाते हों।

**गोलयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्योतिष में एक बुरा योग। २. गड़बड़। गोलमाल।

**गोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० गोल ] १. किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। जैसे–लोहे का गोला। २. लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। ३ वायु गोला। ४ जंगली कबूतर। ५ नारियल की गिरी का गोल पिंड। गरी का गोला। ६. वह बाजार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों। ७ लकड़ी का लम्बा लट्ठा जो छाजन में लगाने तथा दूसरे कामों में आता है। कोंड़ी। बल्ला। ८. रस्सी सूत आदि की गोल लपेटी हुई पिंडी।

**गोलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोल+आई (प्रत्य०) ] गोल का भाव। गोलापन।

**गोलाकार, गोलाकृति**—वि० [ सं० ] जिसका आकार गोल हो। गोल शकल-वाला।

**गोलार्द्ध**—संज्ञा पु० [ सं० ] पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है।

**गोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोला का अल्पा० ] १ छोटा गोलाकार पिंड। वटिका। बटिया। २ औषध की वटिका। बटी। ३. मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे बालक खेलते हैं। ४. गोली का खेल। ५ सीसे आदि का ढला हुआ छोटा गोल पिंड जो बंदूक में भरकर चलाया जाता है।

**गोलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्ण का निवासस्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है।

**गोवना***—क्रि० स० दे० "गोना"।

**गोवर्द्धन**—संज्ञा पु० [ सं० ] वृंदावन का एक पवित्र पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया था।

**गोविंद**—संज्ञा पुं० [ सं० गोपेंद्र, प्रा० गोविंद ] १ श्रीकृष्ण। २ वेदांतवेत्ता। तत्त्वज्ञ।

**गोश**—संज्ञा पु० [ फ़ा० ] सुनने की इंद्रिय। कान।

**गोशमाली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. कान उमेठना। २. ताड़ना। कड़ी चेतावनी।

**गोशवारा**—संज्ञा पु० [ फा० ] १ खजन नामक पेड़ का गोंद। २. कान का बाला। कुंडल। ३ बड़ा मोती जो सार में अकेला हो। ४ कलाबत्तू से बुना हुआ पगड़ी का आँचल। ५ तुर्रा। कलँगी। सिर-पेच। ६ जोड़। मीजान। ७ वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर एक मद का आयव्यय अलग अलग दिखलाया गया हो।

**गोशा**—संज्ञा पु० [ फ़ा० ] १ कोना। अंतराल। २ एकांत स्थान। ३. तरफ। दिशा। ओर। ४ कमान की दोनों नोकें। धनुष्कोटि।

**गोशानशीन**—एकांतवास करने वाला।

**गोशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गौओं के रहने का स्थान। गोठ।

**गोश्त**—संज्ञा पु० [ फा० ] मांस।

**गोष्ठ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. गोशाला। २ परामर्श। सलाह। ३. दल। मंडली।

**गोष्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बहुत से लोगों का समूह। सभा। मंडली। २. वार्त्तालाप। बातचीत। ३ परामर्श। सलाह। ४ एक ही अंक का एक रूपक।

**गोसमावल**—संज्ञा पु० दे० "गोशवारा"।

**गोसाईं**—संज्ञा पुं० [ सं० गोस्वामी ] १. गौओं का स्वामी या अधिकारी। २. ईश्वर। ३. संन्यासियों का एक संप्रदाय। ४ विरक्त साधु। अतीत। ५. मालिक। प्रभु।

**गोसैयाँ**†—संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।

**गोस्वामी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। जितेंद्रिय। २ वैष्णव-संप्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी।

**गोह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोधा ] छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु।

**गोहन***—संज्ञा पुं० [ सं० गोधन ] १. संग रहनेवाला। साथी। २. संग। साथ।

**गोहरा**—संज्ञा पुं० [ सं० गो + इल्ल या गोहल्ल ] [ स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर। कंडा। उपला।

**गोहराना**†—क्रि० अ० [हिं० गोहार] पुकारना। बुलाना। आवाज देना।

**गोहार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गो + हार ( हरण ) ] १ पुकार। दुहाई। रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाना। २. हल्ला-गुल्ला। शोर।

**गोहारी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गोहार"

**गोही***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोपन ] १ दुराव। छिपाव। २. छिपी हुई बात। गुप्त वार्ता।

**गोहुअन**—संज्ञा पुं० दे० "गेहुँअन"।

**गौं**—संज्ञा स्त्री० [सं० गम, प्रा० गवँ] १. प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर। सुयोग। मौका। घात।

**यौ०**—गौं घात=उपयुक्त अवसर या स्थिति।

२. प्रयोजन। मतलब। गरज। अर्थ।

**मुहा०**—गौं का यार=मतलबी। स्वार्थी। गौं निकलना=काम निकलना। स्वार्थ साधन होना। गौं पड़ना=गरज होना। ३. ढग। ढब। तर्ज। ४. पार्श्व। पक्ष।

**गौ**—संज्ञा स्त्री [ सं० ] गाय। गैया।

**गौ**—क्रि० स० [हिं० गया] चला गया। बीत गया।

**गौखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गवाक्ष ] १. छोटी खिड़की। झरोखा। २ दालान या बरामदा।

**गौखा**†—संज्ञा पुं० दे० "गौख"।

संज्ञा पुं० [ हिं० गौ + खाल ] गाय का चमड़ा।

**गौगा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ शोर। गुल गपाड़ा। हल्ला। २. अफवाह। जनश्रुति।

**गौचरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गौ + चरना ] गाय चराने का कर।

**गौड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंग देश का एक प्राचीन विभाग। २ ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित हैं। ३ ब्राह्मणों की एक जाति। ४. गौड़ देश का निवासी। ५. कायस्थों का एक भेद। ६ संपूर्ण जाति का एक राग।

**गौड़िया**†—वि० [ सं० गौड़ + इया ( प्रत्य० )] गौड़ देश का। गौड़ देश-संबंधी।

**गौड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गुड़ से बनी मदिरा। २ काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें टवर्ग, संयुक्त अक्षर अथवा समास अधिक आते हैं। ३ एक रागिनी।

**गौण**—वि० [ सं० ] १ जो प्रधान या मुख्य न हो। २ सहायक। संचारी।

**गौणी**—वि० स्त्री० [सं०] १. अप्रधान। साधारण। जो मुख्य न मानी जाय। संज्ञा स्त्री० एक लक्षण जिसमें किसी एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे में आरोपित किया जाता है।

**गौतम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गोतम ऋषि के वंशज ऋषि। न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य ऋषि। ३ बुद्धदेव। ४ सप्तर्षिमंडल के तारों में से एक।

**गौतमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गौतम ऋषि की स्त्री, अहल्या। २. कृपाचार्य्य की स्त्री। ३. गोदावरी नदी। ४. दुर्गा।

**गौदुमा**—वि० दे० "गावदुम"।

**गौन**†—संज्ञा पुं० दे० "गमन"।

**गौनहाई**†—वि० स्त्री० [ हिं० गौना + हाई ( प्रत्य० ) ] जिसका गौना हाल में हुआ हो।

**गौनहार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गौना + हार ( प्रत्य० ) ] १. वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय। २. दे० "गौनहारी"।

**गौनहारिन, गौनहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गावना + हार ( प्रत्य० ) ] गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।

**गौना**—संज्ञा पुं० [ सं० गमन ] विवाह के बाद की एक रसम जिसमें वर वधू को अपने साथ घर लाता है। द्विरागमन। मुकलावा।

**गौमुखी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोमुखी"।

**गौर**—वि० [ सं० ] १ गोरे चमड़ेवाला। गोरा। २ श्वेत। उज्ज्वल। सफेद।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १ लाल रंग। २. पीला रंग। ३. चंद्रमा। ४. सोना। ५. केसर।

संज्ञा पुं० दे० "गौड़"।

**गौर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ सोच-विचार। चिंतन। २ खयाल। ध्यान।

**गौरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गोराई। गोरापन। २. सफेदी।

**गौरव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़प्पन। महत्त्व। २. भारीपन। ३. सम्मान। इज्जत। ४ उत्कर्ष। ५ अभ्युत्थान।

**गौरवान्वित**—वि० [ सं० ] गौरव या महिमा से युक्त। मान्य। सम्मानित।

**गौरविज**—वि० दे० "गौरवान्वित"।

**गौरवी**—वि० [सं० गौरविन्] [स्त्री० गौरविनी] १. गौरवान्वित। २ अभिमानी।

**गौरांग**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. विष्णु।

२. श्रीकृष्ण । ३. चैतन्य महाप्रभु ।

**गौरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गौर ] गोरे रंग की स्त्री । २. पार्वती । गिरिजा । ३. हल्दी ।

**गौरासार**—संज्ञा पुं० दे० "अबादि" ।

**गौरिया**—संज्ञा स्त्री० [ ! ] १. काले रंग का एक जलपक्षी । २. मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का ।

**गौरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गोरे रंग की स्त्री । २. पार्वती । गिरिजा । ३. आठ वर्ष की कन्या । ४. हल्दी । ५. तुलसी । ६. गोरोचन । ७. सफेद रंग की गाय । ८. सफेद दूब । ९ गंगा नदी । १०. पृथिवी ।

**गौरीशंकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महादेव । शिव । २. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम ।

**गौरीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव ।

**गौरैया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया" ।

**गौल्मिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक गुल्म या ३० सैनिकों का नायक ।

**गौहर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मोती ।

**ग्याति**—संज्ञा स्त्री० दे० "ज्ञाति" ।

**ग्यान**†—संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान" ।

**ग्यारस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ग्यारह ] एकादशी ।

**ग्यारह**—वि० [ सं० एकादश, प्रा० एगारस ] दस और एक ।

संज्ञा पुं० दस और एक की सूचक संख्या ११ ।

**ग्रंथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुस्तक । किताब । २. गाँठ लगाना । ग्रंथन । ३. धन ।

**ग्रंथकर्त्ता, ग्रंथकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ग्रंथ की रचना करनेवाला ।

**ग्रंथचुंबक**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रंथ + चुंबक = चूमनेवाला ] जो ग्रंथों का केवल पाठ मात्र कर गया हो । अल्पज्ञ ।

**ग्रंथचुंबन**—संज्ञा पुं० [ सं० ग्रंथ + चुंबन ] किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना ।

**ग्रंथन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ गोंद लगाकर जोड़ना । २. जोड़ना । ३. गूँथना ।

**ग्रंथना***—क्रि० स० दे० "ग्रंथन" ।

**ग्रंथसंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ग्रंथ का विभाग । जैसे—सर्ग, अध्याय आदि ।

**ग्रंथ साहब**—संज्ञा पुं० [ हिं० ग्रंथ + साहब ] सिक्खों की धर्म-पुस्तक ।

**ग्रंथि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गाँठ । २ बंधन । ३ मायाजाल । ४ एक रोग जिसमें गाँठों की तरह सूजन होती है ।

**ग्रंथित**—वि० [ सं० ग्रंथन ] १ गूँथा हुआ । २. गाँठ दिया हुआ । जिसमें गाँठ लगी हो ।

**ग्रंथिपर्णी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गाँडर दूब ।

**ग्रंथिबंधन**—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के कोनों को गाँठ देकर बाँधना । गँठबंधन ।

**ग्रंथिल**—वि० [ सं० ] गाँठदार । गँठीला ।

**ग्रथित**—वि० [ सं० ] १. गाँठ देकर बाँधा हुआ । २ एक में गूँथा या पिराया हुआ ।

**ग्रसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भक्षण । निगलना । २. पकड़ । ग्रहण । ३. बुरी तरह पकड़ना । ४. ग्रास । ५. ग्रहण ।

**ग्रसना**—क्रि० स० [ सं० ग्रसन ] १. बुरी तरह पकड़ना । २ सताना ।

**ग्रसित**—वि० दे० "ग्रस्त" ।

**ग्रस्त**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ग्रस्ता ] १. पकड़ा हुआ । २ पीड़ित । ३. खाया हुआ ।

**ग्रस्तास्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना ।

**ग्रस्तोदय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जब कि उनपर ग्रहण लगा हो ।

**ग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्तकाल आदि का पता प्राचीन ज्योतिषियों ने लगा लिया था । २. वह तारा जो अपने सौर जगत् में सूर्य की परिक्रमा करे । जैसे—पृथ्वी, मंगल, शुक्र । ३. नौ की संख्या । ४ ग्रहण करना । लेना । ५. अनुग्रह । कृपा । ६. चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण । ७ राहु । ८. स्कंद, शकुनी आदि छोटे बच्चों के रोग ।

मुहा०—अच्छे ग्रह होना = अच्छा समय होना । फलित के अनुसार शुभ या अनुकूल ग्रह होना । बुरे ग्रह होना = ग्रहों का प्रतिकूल होना ।

† वि० बुरी तरह से पकड़ने या तंग करनेवाला । दिक करनेवाला ।

**ग्रहण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है । उपराग । २ पकड़ने या लेने की क्रिया । ३. स्वीकार । मंजूरी ।

**ग्रहणीय**—वि० [ सं० ] ग्रहण करने के योग्य ।

**ग्रहदशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोचर ग्रहों की स्थिति । २ ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था । ३. अभाग्य । कमबख्ती ।

**ग्रहपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ सूर्य । २ शनि । ३. आक का पेड़ ।

**ग्रहवेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ग्रह की स्थिति आदि का जानना ।

**ग्रांडील**—वि० [ अं० ग्रैंडियर ] ऊँचे कद का । बहुत बड़ा या ऊँचा ।

**ग्राउंड**—संज्ञा पुं० [अं०] १. जमीन ।

भूमि। २. खुला मैदान। ३. आधार।

**ग्राम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छोटी बस्ती। गाँव। २. मनुष्यों के रहने का स्थान। बस्ती। आबादी। जनपद। ३. समूह। ढेर। ४. शिव। ५. क्रम से सात स्वरों का समूह। सप्तक। ( संगीत )

**ग्रामणी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ गाँव का मालिक। २ प्रधान। अगुआ।

**ग्रामदेवता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किसी एक गाँव में पूजा जानेवाला देवता। २ गाँव का रक्षक देवता। डीहवार।

**ग्रामसिंह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुत्ता।

**ग्रामी**—वि० [ सं० ग्राम+ई (प्रत्य०)] गाँव का। गाँव में रहनेवाला।

**ग्रामीण**—वि० [ सं० ] देहाती। गँवार।

**ग्राम्य**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ग्राम्या ] १ गाँव से संबंध रखनेवाला। ग्रामीण। २. बेवकूफ। मूढ़। ३. प्राकृत। असली।

संज्ञा पुं० १. काव्य में भद्दे या गँवारू शब्द आने का दोष। २ अश्लील शब्द या वाक्य। ३. मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

**ग्राम्यधर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] मैथुन। स्त्री-प्रसंग।

**ग्राव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्वत। २. पत्थर। ३. ओला।

**ग्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ उतना भोजन जितना एक बार मुँह में डाला जाय। गस्सा। कौर। निवाला। २. पकड़ने की क्रिया। पकड़। ३. ग्रहण लगना।

**ग्रासक**—वि० [ सं० ] १ पकड़नेवाला। २. निगलनेवाला। ३ छिपाने या दबानेवाला।

**ग्रासना**—क्रि० स० दे० "ग्रसना"।

**ग्रासित**—वि० दे० "ग्रस्त"।

**ग्राह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मगर। घड़ियाल। २. ग्रहण। उपराग। ३ पकड़ना। लेना।

**ग्राहक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ग्रहण करनेवाला। २ माल लेनेवाला। खरीदनेवाला। खरीदार। ३. लेने या पाने की इच्छा रखनेवाला। चाहनेवाला। ४. वह ओषधि जिससे दस्त बँधा होने लगे।

**ग्राही**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० ग्राहिणी ] १ वह जो ग्रहण करे। स्वीकार करनेवाला। २ मल रोकनेवाला पदार्थ।

**ग्राह्य**—वि० [ सं० ] १ लेने योग्य। २ स्वीकार करने योग्य। ३ जानने योग्य।

**ग्रीखम***—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

**ग्रीवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गर्दन। गला।

**ग्रीषम***—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।

**ग्रीष्म**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गरमी की ऋतु। जेठ असाढ़ का समय। २ उष्ण। गरम।

**ग्रेह***—संज्ञा पुं० दे० "गेह"।

**ग्रेही***—संज्ञा पुं० दे० "गृहस्थ"।

**ग्लानि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ शारीरिक या मानसिक शिथिलता। अनुत्साह। खेद। २. अपनी दशा, बुराई या दोष आदि को देखकर अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता।

**ग्वार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० गोराणी ] एक वार्षिक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है। कौरी। खुरथी।

संज्ञा पुं० [ हिं० ग्वाल ] अहीर।

**ग्वारनट, ग्वारनेट**—संज्ञा स्त्री० [ अं० गारनेट ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**ग्वारपाठा**—संज्ञा पुं० दे० "घीकुआँर"।

**ग्वारफली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ग्वार+फली ] ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

**ग्वारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ग्वार"।

**ग्वाल**—संज्ञा पुं० [ सं० गो+पाल, प्रा० गोवाल ] १ अहीर। २. एक छंद का नाम।

**ग्वाला**—संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"।

**ग्वालिन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ग्वाल] १ ग्वाल की स्त्री। ग्वाल जाति की स्त्री। २ ग्वार।

संज्ञा स्त्री० [ सं० गोपालिका ] एक बरसाती कीड़ा। गिजाई। घिनौरी।

**ग्वैंठना***—क्रि० स० [ सं० गुंठन, हिं० गुमेठना ] मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना।

**ग्वैंडा***—संज्ञा पुं० दे० "गोइँड़"।

# घ

**घ**—हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है।

**घँघरा**—संज्ञा पुं० दे० "घाँघरा"।

**घँघोलना**—क्रि० स० [ हिं० घन+घोलना ] १. हिलाकर घोलना। पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना। २. पानी को हिलाकर मैला करना।

**घंट**—संज्ञा पुं० [ सं० घट ] १. घड़ा। २. मृतक की क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।
संज्ञा पुं० दे० "घंटा"।

**घंटा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अल्पा० घंटी ] १. धातु का एक बाजा। घड़ियाल। २. वह घड़ियाल जो समय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है। ३. दिन रात का चौबीसवाँ भाग। साठ मिनट का समय।

**घंटाघर**—संज्ञा पुं० [ हिं० घंटा+घर ] वह ऊँचा धौरहर जिसपर ऐसी बड़ी धर्मघड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

**घंटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बहुत छोटा घंटा। २. घुँघुरू।

**घंटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घंटिका ] पीतल या फूल की छोटी लोटिया।
संज्ञा स्त्री० [ सं० घंटा ] १. बहुत छोटा घंटा। २. घंटी बजने का शब्द। ३. घुँघुरू। चौरासी। ४. गले की हड्डी की वह गुरिया जो अधिक निकली रहती है। ५. गले के अंदर मांस की वह छोटी पिंडी जो जीभ की जड़ के पास लटकती रहती है। कौआ।

**घई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० गभीर ] १. गभीर भँवर। पानी का चक्कर। २. थूनी। टेक
वि० [ सं० गंभीर ] जिसकी थाह न लग सके। बहुत गहरा। अथाह।

**घघरबेल**—संज्ञा स्त्री० दे० "बंदाल"।

**घघरा**—संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

**घट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ घड़ा। जलपात्र। कलसा। २ पिंड। शरीर।
मुहा०—घट में बसना या बैठना=मन में बसना। ध्यान पर चढ़ा रहना।
वि० [ हिं० घटना ] घटा हुआ। कम।

**घटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बीच में पड़नेवाला। मध्यस्थ। २ विवाह संबंध तय करानेवाला। बरेखिया। ३. दलाल। ४ काम पूरा करनेवाला। चतुर व्यक्ति। ५ वंश परंपरा बतलानेवाला। चारण।

**घटकर्ण***—संज्ञा पुं० दे० "कुंभकर्ण"।

**घटका**—संज्ञा पुं० [ सं० घटक=शरीर ] मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक-रुककर घरघराहट के साथ निकलती है। कफ छेंकने की अवस्था। घर्रा।

**घटती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घटना ] १. कमी। कसर। न्यूनता। २. हीनता। अप्रतिष्ठा।

**घटदासी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुटनी।

**घटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० घटनीय, घटित ] १. गढ़ा जाना। २ उपस्थित होना।

**घटना**—क्रि० अ० [ सं० घटन ] १ उपस्थित होना। होना। २ लगना। सटीक बैठना। ३ ठीक उतरना।
क्रि० अ० [ हिं० कटना ] १. कम होना। क्षीण होना।
संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कोई बात जो हो जाय। वाकया। वारदात।

**घट-बढ़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घटना+बढ़ना ] कमी-बेशी। न्यूनाधिकता।

**घटयोनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अगस्त्य मुनि।

**घटवाना**—क्रि० स० [ हिं० घटाना का प्रे० ] घटाने का काम कराना कम कराना।

**घटवाई**—संज्ञा पुं० [ हिं० घाट+वाई ] घाट का कर लेनेवाला।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० घटना ] कम करवाई।

**घटवार**—संज्ञा पुं० [ हिं० घाट+पाल या वाला ] १. घाट का महसूल लेनेवाला। २ मल्लाह। केवट। ३ घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण। घाटिया।

**घटसंभव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अगस्त्य मुनि।

**घट-स्थापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी मंगल कार्य्य या पूजन आदि के पूर्व जल भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन। ( इस दिन से देवी की पूजा आरंभ होती है। )

**घटा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मेघों का घना समूह। उमड़े हुए बादल।

**घटाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घटना + ई ( प्रत्य० ) ] हीनता। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

**घटाकाश**—संज्ञा पुं० [सं०] घड़े के अंदर की खाली जगह।

**घटाटोप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बादलों की घटा जो चारों ओर से घेरे हो। २. गाड़ी या बहली को ढक लेनेवाला ओहार।

**घटाना**—क्रि० स० [ हिं० घटना ] १. कम करना। क्षीण करना। २ बाकी निकालना। काटना। ३. अप्रतिष्ठा करना।

**घटाव**—संज्ञा पुं० [हिं० घटना] १. कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। २. अवनति। ३ नदी के बाढ़ की कमी।

**घटावना***—क्रि० स० दे० "घटाना"।

**घटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा घड़ा या नाँद। २ घटी यंत्र। घड़ी। ३ एक घड़ी या २४ मिनट का समय।

**घटित**—वि० [ सं० ] बना हुआ। रचा हुआ। रचित। निर्मित।

**घटिताई***—संज्ञा स्त्री० [हिं० घटी] घाटा। कमी।

**घटिया**—वि० [ हिं० घट + इया (प्रत्य०)] १. जो अच्छे मेल का न हो। खराब। सस्ता। 'बढ़िया' का उलटा। २ अधम। तुच्छ।

**घटिहा**—वि० [ हिं० घात + हा ( प्रत्य० ) ] १ घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २ चालाक। मक्कार। ३. धोखेबाज। ४ व्यभिचारी। लंपट। ५ दुष्ट।

**घटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चौबीस मिनट का समय। घड़ी। मुहूर्त। २. समयसूचक यंत्र। घड़ी। संज्ञा स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। न्यूनता। २. हानि। क्षति। नुकसान। घाटा।

**घटूका***—संज्ञा पुं० दे० "घटोत्कच"।

**घटोत्कच**—संज्ञा पुं० [सं०] हिडिंबा से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

**घट्ठा**—संज्ञा पुं० [सं० घट्ट] शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।

**घड़घड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] गड़गड़ या घड़घड़ शब्द करना। गड़गड़ाना।

**घड़घड़ाहट**—संज्ञा स्त्री० [अनु० घड़घड़] घड़घड़ शब्द होने का भाव।

**घड़ना**—क्रि० स० दे० "गढ़ना"।

**घड़नई, घड़नैल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घड़ा + नैया (नाव)] बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिससे छोटी छोटी नदियाँ पार करते हैं।

**घड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० घट] मिट्टी का पानी भरने का बरतन। जलपात्र। बड़ा गगरा।

**मुहा०**—घड़ों पानी पड़ जाना=अत्यन्त लज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।

**घड़ाना**—क्रि० स० दे० "गढ़ाना"।

**घड़िया**—संज्ञा स्त्री० [सं० घटिका] १ मिट्टी का बरतन जिसमें सोनार सोना, चाँदी गलाते हैं। २. मिट्टी का छोटा प्याला।

**घड़ियाल**—संज्ञा पुं० [ सं० घटिकालि=घंटों का समूह ] वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिए बजाया जाता है। संज्ञा पुं० [ हिं० घड़ा+आल=वाला] एक बड़ा और हिंसक जल-जंतु। ग्राह।

**घड़ियाली**—संज्ञा पुं० [ हिं० घड़ियाल ] घंटा बजानेवाला।

**घड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घटी ] १. दिन-रात का ३२वाँ भाग। २४ मिनट का समय।

**मुहा०**—घड़ी घड़ी=बार बार। थोड़ी थोड़ी देर पर। घड़ी गिनना=१. किसी बात का बड़ी उत्सुकता के साथ आसरा देखना। २. मरने के निकट होना।

२. समय। काल। ३. अवसर। उपयुक्त समय। ४. समय-सूचक यंत्र।

**घड़ीदिआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० घड़ी + दीआ=दीपक ] वह घड़ा और दीया जो घर के किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

**घड़ीसाज**—संज्ञा पुं० [हिं० घड़ी + फा० साज़ ] घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

**घड़ोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० घड़ा ] छोटा घड़ा।

**घड़ौंची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घटमंच, प्रा० घड़वंच ] पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई।

**घतिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० घात + इया ( प्रत्य० ) ] घात करनेवाला। धोखा देनेवाला।

**घतियाना**—क्रि० स० [ हिं० घात ] १. अपनी घात या दाँव में लाना। मतलब पर चढ़ाना। २ चुराना। छिपाना।

**घन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मेघ। बादल। २. लोहारों का बड़ा हथौड़ा जिससे वे गरम लोहा पीटते हैं। ३ समूह। झुंड। ४. कपूर। ५. घंटा। घड़ियाल। ६. वह गुणनफल जो

किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणन करने से लब्ध हो। ७. लंबाई चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार। ८ ताल देने का बाजा। ९. पिंड। शरीर।
वि० १. घना। गझिन। २. गठा हुआ। ठोस। ३. दृढ़। मजबूत। ४. बहुत अधिक। ज्यादा।

**घनक**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] गड़गड़ाहट। गरज।

**घनकना**—क्रि० अ० [अनु०] गरजना।

**घनकारा**—वि० [हि० घनक] गरजनेवाला।

**घनकोदंड**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र-धनुष।

**घनगरज**—संज्ञा स्त्री० [हि० घन+गर्जन] १. बादल के गरजने की ध्वनि। २. एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है। ढिंगरी। ३ एक प्रकार की तोप।

**घनघनाना**—क्रि० अ० [अनु०] घंटे की सी ध्वनि निकलना।
क्रि० स० [अनु०] घन घन शब्द करना।

**घनघनाहट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] घन घन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि।

**घनघोर**—संज्ञा पुं० [सं० घन+घोर] १. भीषण ध्वनि। २ बादल की गरज।
वि० १ बहुत घना। गहरा। २ भीषण।
यौ०—घनघोर घटा=बड़ी गहरी काली घटा।

**घनचक्कर**—संज्ञा पुं० [सं० घन+चक्र] १ वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि सदैव चंचल रहे। २ मूर्ख। बेवकूफ मूढ़। ३ वह जो व्यर्थ इधर उधर फिरा करे। आवारागर्द।

**घनता**—संज्ञा स्त्री० दे० "घनत्व"।

**घनत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १ घना होने का भाव। घनापन। सघनता। २ लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव। ३ गठाव। ठोसपन।

**घननाद**—संज्ञा पुं० [सं०] मेघनाथ।

**घनफल**—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंबाई चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल। २. वह गुणनफल जो किसी संख्या को उस संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।

**घनबान**—संज्ञा पुं० [हि० घन+बाण] एक प्रकार का बाण जिससे बादल हो जाते थे।

**घनबेल**—वि० [हि० घन+बेल] जिसमें बेल-बूटे हों। बेलदार।

**घनमूल**—संज्ञा पुं० [सं०] गणि० में किसी घन (राशि) का मूल अंक। जैसे २७ का घनमूल ३ होगा।

**घन वर्धन**—संज्ञा पुं० [सं०] धातु आदि को पीटकर बढ़ाना।

**घन-वर्धनीयता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे वे पीटने पर बढ़ें।

**घन-श्याम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ काला बादल। २ श्रीकृष्ण। ३ रामचंद्र।

**घनसार**—संज्ञा पुं० [सं०] कपूर।

**घना**—वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी] १ जिसके अवयव या अंश पास पास सटे हों। सघन। गझिन। गुंजान। २ घनिष्ठ। नजदीकी। निकट का। ३ बहुत।

**घनाक्षरी**—संज्ञा पुं० [सं०] दंडक या मनहर छंद जिसे लोग कवित्त कहते हैं।

**घनात्मक**—वि० [सं०] १. जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) बराबर हो। २. जो लंबाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो।

**घनानंद**—संज्ञा पुं० [सं०] गद्य-काव्य का एक भेद।

**घनाली**—संज्ञा स्त्री० [सं० घन+अवली] मेघों की पंक्ति या समूह।

**घनिष्ठ**—वि० [सं०] १. गाढ़ा। घना। २ पास का। निकटस्थ। (संबंध)

**घने**—वि० [सं० घन] बहुत से। अनेक।

**घनेरा**—वि० [हि० घना+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक। अतिशय।

**घपचिआना**—क्रि० अ० दे० "घबराना"।

**घपची**—संज्ञा स्त्री० [हि० घन+पंच] दोनों हाथों की मजबूत पकड़।

**घपला**—संज्ञा पुं० [अनु०] एकमेक। १. किसी एक में दूसरे को अलग करना कठिन हो। गड़बड़। गोलमाल।

**घबराना**—क्रि० अ० [सं० गह्वर या हि० गड़बड़ाना] १ व्याकुल होना। चंचल होना। उद्विग्न होना। २ भौचक्का होना। किंकर्तव्य-विमूढ़ होना। ३. उतावली में होना। जल्दी मचाना। ४. जी न लगना।
क्रि० स० १. व्याकुल करना। अधीर करना। २. भौचक्का करना। ३. जल्दी में डालना। गड़बड़ी डालना। ४ हैरान करना। ५ उचाट करना।

**घबराहट**—संज्ञा स्त्री० [हि० घबराना] १ व्याकुलता। अधीरता। उद्विग्नता।

२. किंकर्तव्य-विमूढ़ता। ३. उतावली।

**घमंका**-संज्ञा पु० दे० "घमका"।

**घमंड**-संज्ञा पु० [सं० गर्व] १. अभिमान। शेखी। अहंकार। २. जोर। भरोसा।

**घमंडी**-वि० [हि० घमंड] [स्त्री० घमंडिन] अहंकारी। अभिमानी। मगरूर।

**घमकना**-क्रि० अ० [अनु० घम] १ 'घमघम' या और किसी प्रकार का गंभीर शब्द होना। घहराना। गरजना। †क्रि० स० घूँसा मारना।

**घमका** संज्ञा पु० [अनु०] १. गदा या घूँसा पड़ने का शब्द। २. आघात की ध्वनि।

**घमघमाना** क्रि० अ० [अनु०] घम घम शब्द होना।

क्रि० स० प्रहार करना। मारना।

**घमड़ना**-क्रि० अ० दे० "घुमड़ना"।

**घमर**-संज्ञा पु० [अनु०] नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द। गंभीर ध्वनि।

**घमसान**-संज्ञा पु० [अनु० घम+सान (प्रत्य०)] भयंकर युद्ध। घोर रण। गहरी लड़ाई।

**घमाका**-संज्ञा पु० [अनु० घम] भारी आघात का शब्द।

**घमाघम**-संज्ञा स्त्री० [अनु० घम] १. घम घम की ध्वनि। २. धूम-धाम। चहल पहल।

क्रि० वि० घम घम शब्द के साथ।

**घमाना**†-क्रि० अ० [हि० घाम] घाम लेना। गरम होने के लिए धूप में बैठना।

**घमस**-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊमस"।

**घमासान**-संज्ञा पु० दे० "घमसान"।

**घमोय**-संज्ञा स्त्री० [देश०] कँटीले पत्तों का एक पौधा। सत्यानाशी। भँड़भाँड़।

**घमौरी**-संज्ञा स्त्री० दे० "अम्हौरी"।

**घर**-संज्ञा पुं० [सं० गृह] [वि० घराऊ, घरू, घरेलू] १. मनुष्यों के रहने का स्थान जो दीवार आदि से घेरकर बनाया जाता है। निवासस्थान। आवास। मकान।

**मुहा०**-घर करना १. बसना। रहना। निवास करना। २ समाने या अँटने के लिए स्थान निकालना। ३. घुसना। धँसना। चित्त, मन या आँख में घर करना=इतना पसंद आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे। जँचना। अत्यंत प्रिय होना। घर का= १ निज का। अपना। २. आपस का। संबंधियों या आत्मीय जनों के बीच का। घर का न घाट का= १. जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो। २. निकम्मा। बेकाम। घर के बाढ़े=घर ही में बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। घर के घर रहना= न हानि उठाना न लाभ। बराबर रहना। घर घाट=१. रंग-ढंग। चाल-ढाल। गति और अवस्था। २. ढंग। ढब। प्रकृति। ३. ठौर-ठिकाना। घर द्वार। स्थिति। घर घालना=१. घर बिगाड़ना। परिवार में अशांति या दुःख फैलाना। २ कुल में कलंक लगाना। ३. मोहित करके वश में करना। घर फोड़ना = परिवार में झगड़ा लगाना। घर बसना=१ घर आबाद होना। २. घर में धन-धान्य होना। ३ घर में स्त्री या बहू आना। ब्याह होना। घर बैठे=बिना कुछ काम किए। बिना हाथ पैर डुलाये। बिना परिश्रम (किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना= किसी के घर पत्नी भाव से जाना। घर से = १. पास से। पल्ले से। २. पति। स्वामी। ३. स्त्री। पत्नी।

२. जन्मस्थान। जन्मभूमि। स्वदेश। ३ घराना। कुल। वंश। खानदान। ४. कार्यालय। कारखाना। ५. कोठरी कमरा। ६. आड़ी खड़ी खींची हुई रेखाओं से घिरा स्थान। कोठा। खाना। ७. कोई वस्तु रखने का डिब्बा। कोश। खाना। ८. पटरी आदि से घिरा हुआ स्थान। खाना। कोठा। ९ किसी वस्तु के अँटने या समाने का स्थान। छोटा गड्ढा। १०. छेद। बिल। ११. मूल कारण। १२. गृहस्थी।

**घरघराना**-क्रि० अ० [अनु०] कफ के कारण गले से साँस लेते समय घर्र घर्र शब्द निकलना।

**घरघाल**-वि० दे० "घरघालन"।

**घरघालन**-वि० [हि० घर+घालन] [स्त्री० घरघालिनी] १. घर बिगाड़नेवाला। २ कुल में कलंक लगानेवाला।

**घरजाया** संज्ञा पु० [हि० घर+जाया =पैदा] गृहजात दास। घर का गुलाम।

**घरदासी**-संज्ञा स्त्री० [हि० घर+स० दासी] गृहिणी। भार्या। पत्नी।

**घरद्वार**-संज्ञा पु० दे० "घरबार"।

**घरनाल**-संज्ञा स्त्री० [हि० घड़ा+नाल] एक प्रकार की पुरानी तोप। रहकला।

**घरनी**-संज्ञा स्त्री० [सं० गृहिणी, प्रा० घरणी] घरवाली। भार्या। गृहिणी।

**घरफोरी**-संज्ञा स्त्री० [हि घर+फोड़ना] परिवार में कलह फैलानेवाली।

**घरबसा**-संज्ञा पुं० [हि० घर+बसना] [स्त्री० घरबसी] १ उपपति। यार। २. पति।

**घरबार**-संज्ञा पुं० [हि० घर+बार= द्वार] [वि० घरबारी] १. रहने का स्थान। ठौर-ठिकाना। २. घर का जंजाल। गृहस्थी। ३. निज की सारी संपत्ति।

**घरबारी**-संज्ञा पुं० [ हिं० घर + बार ] बालबच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुंबी।

**घरमना**-क्रि० अ० [?] प्रवाह के रूप में गिरना।

**घरवात***†-संज्ञा स्त्री० [ हिं० घर + वात (प्रत्य०) ] घर का सामान। गृहस्थी।

**घरवाला**-संज्ञा पुं [ हिं०घर+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री०घरवाली] १. घर का मालिक। २. पति। स्वामी।

**घरसा***-संज्ञा पुं० [सं० घर्ष] रगड़ा।

**घरहाई***†-संज्ञा स्त्री० [ हिं० घर + सं० घातीं, हिं० घाई ] १. घर में विरोध करानेवाली स्त्री। २. अपकीर्ति फैलानेवाली।

**घराऊ**-वि० [ हिं० घर + आऊ ( प्रत्य० ) ] १ घर से संबंध रखनेवाला। गृहस्थी-संबंधी। २. आपस का। निज का।

**घराती**-संज्ञा पुं० [ हिं० घर + आती (प्रत्य०)] विवाह में कन्या-पक्ष के लोग।

**घराना**-संज्ञा पुं० [ हिं० घर + आना (प्रत्य०)] खानदान। वंश। कुल।

**घरिया**-संज्ञा स्त्री० दे० "घड़िया"।

**घरियाना**†-क्रि० स० [ हिं० घरी] घरी या तह लगाना।

**घरी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० घर=कोठा, खाना ] तह। परत। लपेट।

**घरीक***†-क्रि० वि०[हिं०घड़ी + एक] एक घड़ी भर। थोड़ी देर।

**घरू**-वि० [ हिं० घर + ऊ (प्रत्य०) ] जिसका संबंध घर-गृहस्थी से हो। घर का।

**घरेलू**-वि० [ हिं० घर + एलू (प्रत्य०)] १. जो घर में आदमियों के पास रहे। पालतू। पालू। २. घर का। निज का। घरू। ३. घर का बना हुआ।

**घरैया**†-वि० [ हिं० घर + ऐया (प्रत्य०) ] घर या कुटुंब का। अत्यंत घनिष्ठ-संबंधी।

**घरो***-संज्ञा पुं० दे० "घड़ा"।

**घरौंदा, घरौंधा**-संज्ञा पुं० [ हिं० घर + औंदा (प्रत्य०) ] १. कागज, मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर जिससे छोटे बच्चे खेलते हैं। २. छोटा-मोटा घर।

**घरौना**-संज्ञा पुं० दे० "घरौंदा"।

**घर्म**-संज्ञा पुं० [ सं० ] घाम। धूप।

**घर्रा**-संज्ञा पुं० (अनु०) १. एक प्रकार का अंजन। २ गले की घरघराहट जो कफ के कारण होती है।

**घर्राटा**-संज्ञा पुं० दे० "खर्राटा"। संज्ञा पुं० [ अनु० ] बड़ा घोर शब्द।

**घर्षण**-संज्ञा पुं० [ सं० ] रगड़। घिस्सा।

**घर्षित**-वि० [ सं० ] [ स्त्री० घर्षिता ] रगड़ा हुआ। रगड़ खाया हुआ।

**घलना**†-क्रि० अ० [ हिं० घालना ] १ छूटकर गिर पड़ना। फेंका जाना। २. चले हुए तीर या भरी हुई गोली का छूट पड़ना। ३ मारपीट हो जाना।

**घलाघल, घलाघली** संज्ञा स्त्री० [हिं० घलना] मार-पीट आघात-प्रतिघात।

**घलुआ**†-संज्ञा पुं० [ हिं० घाल] वह अधिक वस्तु जो खरीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी जाय। घेलौना। घाल।

**घवरि***†-संज्ञा स्त्री० दे० "घौंद"।

**घसखुदा**-संज्ञा पुं० [ हिं० घास+ खोदना ] १. घास खोदनेवाला। २. अनाड़ी। मूर्ख।

**घसना***†-क्रि० अ० दे० "घिसना"।

**घसिटना**-क्रि० अ० [ सं० घर्षित+ ना ( प्रत्य० ) ] घसीटा जाना।

**घसियारा**-संज्ञा पुं० [ हिं० घास+ आरा ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० घसियारी या घसियारिन ] घास बेचनेवाला। घास छीलकर लानेवाला।

**घसीट**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० घसीटना ] १. जल्दी जल्दी लिखने का भाव। २. जल्दी का लिखा हुआ लेख। ३. घसीटने का भाव।

**घसीटना**-क्रि०स०[ सं० घृष्ट, प्रा० घिष्ट+ना ( प्रत्य० ) ] १. किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई जाय। कढ़ारना। २. जल्दी जल्दी लिखकर चलता करना। ३ किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।

**घहनाना***†-क्रि० अ० [ अनु० ] घंटे आदि की ध्वनि निकालना। घहराना।

**घहरना**-क्रि० अ० [ अनु० ] गरजने का सा शब्द करना। गंभीर ध्वनि निकालना।

**घहराना**-क्रि० अ० [ अनु० ] गरजने का सा शब्द करना। गंभीर शब्द करना।

**घहरानि**†-संज्ञा स्त्री० [ हिं० घहराना ] गंभीर ध्वनि। तुमुल शब्द। गरज।

**घहरारा***†-संज्ञा पुं० [हिं० घहराना] घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज। वि० घोर शब्द करनेवाला।

**घहरारी**-संज्ञा स्त्री० दे० "घहरारा"।

**घाँ***†-संज्ञा स्त्री० [ सं० ख या घाट=ओर ] १ दिशा। दिक्। २ ओर। तरफ।

**घाँघरा**-संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।

**घाँटी**†-संज्ञा स्त्री० [ सं० घंटिका ] १. गले के अंदर की घंटी। कौआ। २. गला।

**घाँटो**-संज्ञा पुं० [ हिं० घट ] एक

प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

**घाँह**†*-संज्ञा पुं० [ हिं० घाँ ] तरफ। ओर।

**घा***-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ओर। तरफ।

**घाइ***-संज्ञा पुं० दे० "घाव"।

**घाइल**†*-वि० दे० "घायल"।

**घाई**†*-संज्ञा स्त्री० [ हिं० घाँ या घा ] १. ओर। तरफ। २. दो वस्तुओं के बीच का स्थान। संधि। ३. बार। दफा। ४. पानी में पड़नेवाला भँवर।

**घाई**-संज्ञा स्त्री० [ सं० गभस्ति=उँगली ] दो उँगलियों के बीच की संधि। अंटी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० घाव ] १ चोट। आघात। प्रहार। वार। २ धोखा। चालबाजी।

**घाऊघप** वि० [ हिं० खाऊ+गप या घप ] चुपचाप माल हजम करनेवाला।

**घाएँ**-अव्य० [ हिं० घाँ ] ओर। तरफ।

**घाघ**-संज्ञा पुं० १ गोंडे के रहनेवाले एक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति जिनकी बहुत सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं। २ गहरा चालाक। खुर्राट।

**घाघरा**-संज्ञा पुं० [ सं० घर्घर=क्षुद्रघंटिका ] [ स्त्री० अल्पा० घाघरी ] वह चुननदार और घेरदार पहनावा जिससे स्त्रियों का कमर से नीचे का अंग ढका रहता है। लहँगा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० घर्घर ] सरजू नदी।

**घाघस**-संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार की मुरगी।

**घाट**-संज्ञा पुं० [ सं० घट्ट ] १. किसी जलाशय का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते-धोते या नाव पर चढ़ते हैं।

**मुहा०**—घाट घाट का पानी पीना=१. चारों ओर देश-देशांतर में घूमकर अनुभव प्राप्त करना। २. इधर-उधर मारे मारे फिरना।

२. चढ़ाव उतारका पहाड़ी मार्ग। ३. पहाड़। ४. ओर। तरफ। दिशा। ५. रंग-ढंग। चाल-ढाल। डौल। ढब। तौरतरीका। ६. तलवार की धार।

†संज्ञा स्त्री० [ सं० घात या हिं० घट=कम ] १. धोखा। छल। २. बुराई।

†वि० [ हिं० घट ] कम। थोड़ा।

**घाटवाल**-संज्ञा पुं० [ हिं० घाट+वाला (प्रत्य०) ] घाटिया। गंगापुत्र।

**घाटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० घटना ] हानि। कमी।

**घाटारोह**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० घाट+सं० रोध ] घाट रोकना। घाट से जाने न देना।

**घाटि***†—वि० [ हिं० घटना ] कम। न्यून। घटकर।

संज्ञा स्त्री० [ सं० घात ] नीच कर्म। पाप।

**घाटिया**—संज्ञा पुं० [ सं० घाट+इया (प्रत्य०) ] घाटवाल। गंगापुत्र।

**घाटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घाट ] पर्वतों के बीच का सकरा मार्ग। दर्रा।

**घात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० घाती ] १. प्रहार। चोट। मार। धक्का। जरब। २. वध। हत्या। ३. अहित। बुराई। ४. (गणित में) गुणनफल।

संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य्य करने के लिये अनुकूल स्थिति। दाँव। संयोग।

**मुहा०**—घात पर चढ़ाना या घात में आना=अभिप्राय-साधन के अनुकूल होना। दाँव पर चढ़ना। हत्थे चढ़ना। घात लगना=मौका मिलना। घात लगाना=युक्ति भिड़ाना। घाते में=मुफ्त में। नफे में। प्राप्य के अतिरिक्त।

२. किसी पर आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध और कोई कार्य्य करने के लिये अनुकूल अवसर की खोज। ताक।

**मुहा०**—घात में=ताक में।

३. दाँव-पेच। चाल। छल। चालबाजी। ४ रंग-ढंग। तौर-तरीका।

**घातक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० घातिका ] १ मार डालनेवाला। हत्यारा। २ हिंसक। वधिक।

**घातकी**—संज्ञा पुं० दे० "घातक"।

**घातिनी**—वि० स्त्री० [ सं० ] मारनेवाली। वध करनेवाली।

**घातिया**—वि० दे० "घाती"।

**घाती**—वि० [ सं० घातिन् ] [ स्त्री० घातिनी ] १. घातक। संहारक। २ नाश करनेवाला। ३. धोखेबाज।

**घान**—संज्ञा पुं० [ सं० घन=समूह ] १. उतनी वस्तु जितनी एक बार डालकर कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाय। २. उतनी वस्तु जितनी एक बार में पकाई जाय।

संज्ञा पुं० [ हिं० घन ] प्रहार। चोट।

**घाना**†*—क्रि० स० [ सं० घात ] मारना।

**घानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "घान"।

**घाम**†—संज्ञा पुं० [ सं० घर्म ] धूप। सूर्य्यातप।

**घामड़**—वि० [ हिं० घाम ] १. घाम या धूप में व्याकुल (चौपाया)।

२. मूर्ख

**घामर***—वि० [ हिं० घाम ] दे० "घामड़"।

**घाय***—संज्ञा पुं० दे० "घाव"।

**घायक**—वि० [ हिं० घातक ] विनाशक।

**घायल**—वि० [ हिं० घाव ] जिसको घाव लगा हो। चुटैल। जख्मी। आहत।

**घाल**†—सं० पुं० [ हिं० घलना ] दे० "घलुआ"।

**मुहा०** घाल न गिनना=तुच्छ समझना।

**घालक**—सं० पुं० [ हिं० घालना ] [ स्त्री० घालिका, घालिनी ] [ भाव० घालकता ] मारने या नाश करनेवाला।

**घालना**†—क्रि० स० [ सं० घटन ] १ भीतर या ऊपर रखना। डालना। रखना। २ फेंकना। चलाना। छोड़ना। ३ बिगाड़ना। नाश करना। ४ मार डालना।

**घालमेल**—सं० पुं० [ हिं० घालना+मेल ] १. कई भिन्न प्रकार की वस्तुओं का एक साथ मिलावट। गड्डबड्ड। २ मेल-जोल।

**घाव**—संज्ञा पुं० [ सं० घात, प्रा० घाअ ] शरीर पर का वह स्थान जो कट या चिर गया हो। क्षत। जख्म।

**मुहा०**—घाव पर नमक या नोन छिड़कना=दुःख के समय और दुःख देना। शोक पर और शोक उत्पन्न करना। घाव पूजना या भरना=घाव का अच्छा होना।

**घाव-पत्ता**—संज्ञा पुं० [ हिं० घाव+पत्ता ] एक लता जिसके पान के से पत्ते घाव, फोड़े आदि पर लगाए जाते हैं।

**घावरिया**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० घाव+वाला ] घावों की चिकित्सा करनेवाला।

**घास**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी पर उगनेवाले छोटे छोटे उद्भिद् जिन्हें चौपाए चरते हैं। तृण। चारा।

**यौ०**—घास-पात या घास-फूस=१ तृण और वनस्पति। २ खर-पतवार। कूड़ा-कर्कट।

**मुहा०**—घास काटना, खोदना या छीलना=१ तुच्छ काम करना। २ व्यर्थ काम करना।

**घाह***—संज्ञा स्त्री० दे० "घाई"।

**घिग्घी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १ साँस लेने में वह रुकावट जो रोते रोते पड़ने लगती है। हिचकी। सुबकी। २ गले में वह रुकावट जो भय के मारे पड़ती है।

**घिघियाना**—क्रि० अ० [ हिं० घिग्घी ] १ करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना। २ चिल्लाना।

**घिचपिच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घृष्ट+पिष्ट ] १ जगह की तंगी। सकरापन। २ थोड़े स्थान में बहुत-सी वस्तुओं का समूह।

वि० अस्पष्ट। गिचपिच।

**घिन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घृणा ] १ अरुचि। नफरत। घृणा। २ गंदी चीज देखकर जी मचलाने की सी अवस्था। जी बिगड़ना।

**घिनाना**—क्रि० अ० [ हिं० घिन ] घृणा करना। नफरत करना।

**घिनावना**—वि० दे० "घिनौना"।

**घिनौना**†—वि० [ हिं० घिन ] [ स्त्री० घिनौनी ] जिसे देखने से घिन लगे। घृणित। बुरा।

**घिन्नी**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "घिरनी" २ दे० "गिन्नी"।

**घिय**—संज्ञा पुं० दे० "घी"।

**घिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घी ] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। कद्दू।

**घियाकश**—संज्ञा पुं० दे० "कद्दूकश"।

**घियातोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घिया + तोरी ] एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है। नेनुआ।

**घिरना**—क्रि० अ० [ सं० ग्रहण ] १ सब ओर से छेका जाना। आवृत्त होना। घेरे में आना। २ चारों ओर से इकट्ठा आना।

**घिरनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घूर्णन ] १. गराड़ी। चरखी। २ चक्कर। फेरा। ३ रस्सी बटने की चरखी। ४. दे० "घिन्नी"।

**घिराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घेरना ] १ घेरने की क्रिया या भाव। २ पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।

**घिरावँध**—संज्ञा स्त्री० दे० "घेराबंदी"।

**घिराव**—सं० पुं० [ हिं० घेरना ] १. घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २. घेरा।

**घिरौरा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] चूहे का बिल।

**घिर्राना**—क्रि० स० [ अनु० घिर घिर ] १ घसीटना। २ गिड़गिड़ाना।

**घिसघिस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घिसना ] १ कार्य में शिथिलता। अनुचित विलंब। अतत्परता। २ व्यर्थ का विलंब। अनिश्चय।

**घिसटना**—क्रि० अ० [ हिं० घसीटना ] घसीटा जाना।

**घिसना**—क्रि० स० [ सं० घर्षण ] एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर रख कर खूब दबाते हुये इधर-उधर फिराना। रगड़ना।

क्रि० अ० रगड़ खाकर कम होना।

**घिसपिस**–संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घिसपिस। २. सट्टा-बट्टा। मेल-जोल।

**घिसवाना**–क्रि० स० [हिं घिसना का प्रे०] घिसने का काम करवाना। रगड़वाना।

**घिसाई**–संज्ञा स्त्री० [हिं० घिसना] घिसने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**घिस्सा**-संज्ञा पुं० [हिं० घिसना] १. रगड़ा। २. धक्का। ठोकर। ३. वह आघात जो पहलवान अपनी कुहनी और कलाई की हड्डी से देते हैं। कुंदा। रद्दा।

**घींच**–संज्ञा स्त्री० दे "गरदन"।

**घी**–संज्ञा पु० [सं० घृत प्रा० घीअ] दूध का निकला सार जिसमें से जलका अंश तपाकर निकाल दिया गया हो। तपाया हुआ मक्खन। घृत।

**मुहा०**–घीके दिये जलना=कामना पूरी होना। मनोरथ सफल होना। २. आनद-मंगल होना। उत्सव होना। (किसी की) पाचों उँगलियाँ घी में होना=खूब आराम-चैन का मौका मिलना। खूब लाभ होना।

**घीकुँवार**–संज्ञा पुं० [सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा। गोंडपट्ठा।

**घुँइयाँ**–संज्ञा स्त्री० [देश०] अरवी कंद।

**घुँगची, घुँघची**–संज्ञा स्त्री० [गुंजा] एक प्रकार की बेल जिसके लाल बीज प्रसिद्ध हैं। गुंजा।

**घुँघनी**–संज्ञा स्त्री० [अनु०] भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।

**घुँघरारे***–वि० दे० "घुँघराले"।

**घुँघराले**–वि० [हिं०घुमरना+वाले] [स्त्री० घुँघराली] घूमे हुए और बल खाये हुए (बाल)। छल्लेदार।

**घुँघरू**–संज्ञा पुं० [अनु०घुन घुन+सं० रव या रू] १. किसी धातु की बनी हुई गोल पाली गुरिया जिसके भीतर 'घन-घन' बजने के लिए कंकड़ भर देते हैं। २. ऐसी गुरियों की लड़ी। चौरासी। मंजीर। ३. ऐसी गुरियों का बना हुआ पैर का गहना। ४. गले का वह घुर घुर शब्द जो मरते समय कफ छेंकने के कारण निकलता है। घटका। घट्टका।

**घुँघुवारे**–वि० दे० "घुँघराले"।

**घुंडी**–संज्ञा स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. कपड़े का गोल बटन। गोपक। २. हाथ पैर में पहनने के कड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ। ३. कोई गोल गाँठ।

**घुग्घी**–संज्ञा स्त्री० [देश०] तिकोना लपेटा हुआ कंबल आदि जिसे किसान या गड़रिये धूप, पानी और शीत से बचने के लिए सिर पर डालते हैं। घोघी। खुखुआ।

**घुग्घू**–संज्ञा पु० [सं० घूक] उल्लू पक्षी।

**घुघुआ**–संज्ञा पुं० दे० "घुग्घू"।

**घुघुआना**–क्रि० अ० [हिं० घुग्घू] १. उल्लू पक्षी का बोलना। २. बिल्ली का गुर्राना।

**घुटकना**–क्रि० स० [हिं०घूँट+करना] १. घूँट घूँट कर, पीना। २. निगल जाना।

**घुटना**–संज्ञा पुं० [सं० घुंटक] पाँव के मध्य का भाग। टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ।

क्रि० अ० [हिं०घूँटना या घोटना] १.साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकलना। रुकना। फँसना।

**मुहा०**–घुट घुटकर मरना=दम तोड़ते हुए साँसत से मरना।

२. उलझकर कड़ा पड़ जाना। फँसना। ३. गाँठ या बंधन का दृढ़ होना।

क्रि० अ० [हिं० घोटना] १. घोटा जाना।

**मुहा०**–घुटा हुआ=पक्का चालाक। २. रगड़ खाकर चिकना होना। ३. घनिष्ठता होना। मेल-जोल होना।

**घुटन्ना**–संज्ञा पुं० [हिं० घुटना] पायजामा।

**घुटरूँ**–संज्ञा पु० [सं० घुट] घुटना।

**घुटवाना**–क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] १. घोटने का काम कराना। २. बाल मुँड़ाना।

**घुटाई**–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुटना] घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया।

**घुटाना**–क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] घोटने का काम दूसरे से कराना।

**घुटुरूँ**–संज्ञा पुं० [हिं० घुटना] घुटना।

**घुटुरुअन**–क्रि० वि० [हिं० घुटना] घुटनों के बल।

**घुट्टी**–संज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिए पिलाई जाती है।

**मुहा०**–घुट्टी में पड़ना=स्वभाव में होना

**घुड़कना**–क्रि० स० [सं० घुर] क्रुद्ध होकर डराने के लिए जोर से कोई बात कहना। कड़ककर बोलना। डाँटना।

**घुड़की**–संज्ञा स्त्री० [हिं० घुड़कना] १. वह बात जो क्रोध में आकर डराने के लिए जोर से कही जाय। डाँट-डपट। फटकार। २. घुड़कने की क्रिया।

**यौ०**–बंदरघुड़की=झूठमूठ डर दिखाना।

**घुड़चढ़ा**–संज्ञा पुं० [हिं० घोड़ा+चढ़ना] सवार। अश्वारोही।

**घुड़चढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा + चढ़ना ] १. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। २. एक प्रकार की तोप। घुड़नाल।

**घुड़दौड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा + दौड़ ] १. घोड़ों की दौड़। २. एक प्रकार का जुए का खेल। ३. घोड़े दौड़ाने का स्थान या सड़क। ४. एक प्रकार की बड़ी नाव।

**घुड़नाल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा + नाल ] एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चलती है।

**घुड़बहल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा + बहल ] वह रथ जिसमें घोड़े जुतते हों।

**घुड़सवार**—संज्ञा पुं० [ हिं० घोड़ा + फा० सवार ] [भाव० घुड़सवारी] वह जो घोड़े पर सवार हो। अश्वारोही।

**घुड़साल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा + शाला ] घोड़ों के बाँधने का स्थान अस्तबल।

**घुँड़िया**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोड़िया"।

**घुणाक्षरन्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय, जिस प्रकार घुनों के खाते खाते लकड़ी में अक्षर-से बन जाते हैं।

**घुन**—संज्ञा पुं० [ सं० घुण ] एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है।

**मुहा०**—घुन लगना=१. घुन का अनाज या लकड़ी को खाना। २. अंदर ही अंदर किसी वस्तु का क्षीण होना।

**घुनघुना**—संज्ञा पुं० दे० "झुनझुना"।

**घुनना**—क्रि० अ० [ हिं० घुन ] १. घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना। २. क्रोध के कारण अंदर ही से छीजना।

**घुन्ना**—वि० [ अनु० घुनघुनाना ] [ स्त्री० घुन्नी ] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही में रक्खे। घुग्घा।

**घुप**—वि० [ सं० कूप या अनु० ] गहरा (अँधेरा)। निविड़ (अंधकार)।

**घुमँड़ना**—क्रि० अ० दे० "घुमड़ना"।

**घुमक्कड़**—वि० [ हिं० घूमना + अक्कड़ (प्रत्य०)] बहुत घूमनेवाला।

**घुमटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० घूमना + टा ( प्रत्य० )] सिर का चक्कर। जी घूमना।

**घुमड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घुमड़ना] बरसनेवाले बादलों की घेरघार।

**घुमड़ना**—क्रि० अ० [ घूम + अड़ना ] १. बादलों का घूम घूमकर इकट्ठा होना। मेघों का छाना। २. इकट्ठा होना। छा जाना।

**घुमड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घूमना ] सिर में चक्कर आना।

**घुमना**—वि० [ हिं० घूमना] [ स्त्री० घुमनी ] घूमनेवाला।

**घुमरना**—क्रि० अ० [ अनु० घम घम ] १. घोर शब्द करना। ऊँचे शब्द से बजना। २. दे० "घुमड़ना"। †३ घूमना।

**घुमराना**—क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

**घुमाना**—क्रि० स० [ हिं० घूमना ] १. चक्कर देना। चारों ओर फिराना। २ इधर-उधर टहलाना। सैर कराना। ३. किसी विषय की ओर लगाना। प्रवृत्त करना।

**घुमाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० घुमाना ] १. घूमने या घुमाने का भाव। २. फेर। चक्कर।

**मुहा०**—घुमाव-फिराव की बात= पेचीली बात। हेर फेर की बात। ३. रास्ते का मोड़।

**घुमावदार**—वि० [ हिं० घुमाव + दार ] जिसमें कुछ घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।

**घुम्मरना***—क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

**घुरकना**—क्रि० स० दे० "घुड़कना"।

**घुरघुरा**—संज्ञा पुं० [देश०] झींगुर।

**घुरघुराना**—क्रि० अ० [ अनु० घुर घुर ] गले से घुर घुर शब्द निकलना।

**घुरना***—क्रि० अ० दे० "घुलना"। क्रि० अ० [ स० घुर ] शब्द करना। बजना।

**घुरबिनिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घूरा + बीनना ] घूर पर से दाना इत्यादि बीन बीनकर एकत्र करने या गली-कूचों में से टूटी-फूटी चीज चुन कर एकत्र करने का काम।

**घुरमना***—क्रि० अ० दे० "घूमना"।

**घुराना**†—क्रि० अ० १. दे० "घुमाना"। २. दे० "घुलाना"।

**घुर्मित**—क्रि० वि० [ सं० घूर्णित ] घूमता हुआ।

**घुलना**—क्रि० अ० [ स० घूर्णन प्रा० घुलन ] १. पानी, दूध आदि पतली चीजों में खूब हिल-मिल जाना। हल होना।

**मुहा०**—घुल घुलकर बातें करना= खूब मिल जुलकर बातें करना।

२. द्रवित होना। गलना। ३. पककर पिलपिला होना। ४. रोग आदि से शरीर का क्षीण होना। दुर्बल होना।

**मुहा०**—घुला हुआ=बुड्ढा। वृद्ध। घुल घुलकर काँटा होना=बहुत दुबला हो जाना। घुल घुलकर मरना=बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना।

५. (समय) बीतना। व्यतीत होना।

**घुलवाना**—क्रि० स० [हिं० घुलना का प्रे०] १. गलवाना। द्रवित कराना। २. आँख में सुरमा लगवाना।

क्रि० स० [हिं० घोलना का प्रे०] किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित कराना। हल कराना।

**घुलाना**—क्रि० स० [हिं० घुलना] १. गलाना। द्रवित करना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. मुँह में रखकर धीरे धीरे रस चूसना। गलाना। चुभलाना। ४. गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना। ५. (सुरमा या काजल) लगाना। सारना। ६. (समय) बिताना। व्यतीत करना।

**घुलावट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घुलना] घुलने का भाव या क्रिया।

**घुसड़ना**—क्रि० अ० दे० "घुसना"।

**घुसना**—क्रि० अ० [सं० कुश=आलिंगन करना अथवा घर्षण] १. अंदर पैठना। प्रवेश करना। भीतर जाना। २. धँसना। चुभना। गड़ना। ३. अनधिकार चर्चा या कार्य्य करना। ४. मनोनिवेश करना।

**घुसपैठ**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घुसना+पैठना] पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।

**घुसाना**—क्रि० स० [हिं० घुसना] १. भीतर घुसेड़ना। पैठाना। २. चुभाना। धँसाना।

**घुसेड़ना**—क्रि० स० दे० "घुसाना"।

**घूँघट**—संज्ञा पुं० [सं० गुंठ] १. वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है। २. परदे की वह दीवार जो बाहरी दरवाजे के सामने भीतर की ओर रहती है। गुलामगर्दिश। ओट।

**घूँघर**-संज्ञा पुं० [हिं० घुमरना] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।

**घूँघरवाले**-वि० [हिं० घूँघर] टेढ़े छल्लेदार। कुंचित। भँवरीले। (बाल)

**घूँघरी**-संज्ञा स्त्री० दे० "घुँघरू"।

**घूँट**-संज्ञा पुं० [अनु० घुट घुट] द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले के नीचे उतारा जाय। चुसकी।

**घूँटना**-क्रि० स० [हिं० घूँट] द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना। पीना।

**घूँटी**-संज्ञा स्त्री० [हिं० घूँट] एक औषध जो छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है।

मुहा०—जनम घूँटी=वह घूँटी जो बच्चे को उसका पेट साफ करने के लिए जन्म के दूसरे दिन दी जाती है।

**घूँस**-संज्ञा स्त्री० दे० "घूस"।

**घूँसा**-संज्ञा पुं० [हिं० घिस्सा] १. बँधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिए उठाई जाय। मुक्का। ढुक। धमाका। २. बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार।

**घूआ**-संज्ञा पुं० [देश०] १. काँस, मूँज या सरकंडे आदि का रुई की तरह का फूल जो लंबे सीकों में लगता है। २. एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।

**घूगस**-संज्ञा पुं० [देश०] ऊँचा बुर्ज।

**घूघ**-संज्ञा स्त्री० [हिं० घोघी या फा० खोद] लोहे या पीतल की बनी टोपी।

**घूटना**-क्रि० स० दे० "घूँटना"।

**घूम**-संज्ञा स्त्री० [हिं० घूमना] घूमने का भाव।

**घूमना**-क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १. चारों ओर फिरना। चक्कर खाना। २. सैर करना। टहलना। ३. देशांतर में भ्रमण करना। सफर करना। ४. वृत्त की परिधि में गमन करना। कावा काटना। मँडराना। ५. किसी ओर को मुड़ना। ६. वापस आना या जाना। लौटना।

मुहा०-घूम पड़ना=सहसा क्रुद्ध हो जाना। *७. उन्मत्त होना। मतवाला होना।

**घूरना**-क्रि० अ० [सं० घूर्णन] १. बार बार आँख गड़ाकर बुरे भाव से देखना। २. क्रोधपूर्वक एकटक देखना। †३ घूमना।

**घूरा**—संज्ञा पुं० [सं० कूट, हिं० कूरा] १. कूड़े-करकट का ढेर। २. कतवारखाना।

**घूस**—संज्ञा स्त्री० [गुहाशय] चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु।

संज्ञा स्त्री० [सं० गुह्याशय] वह द्रव्य जो किसी को अपने अनुकूल कोई कार्य्य कराने के लिए अनुचित रूप से दिया जाय। रिश्वत। उत्कोच। लाँच।

यौ०—घूसखोर=घूस खानेवाला। घूसखोरी=घूस लेने की क्रिया। घूस, रिश्वत।

**घृणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] घिन। नफरत।

**घृणित**—वि० [सं०] १. घृणा करने योग्य। २. जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो।

**घृत**—संज्ञा पुं० [सं०] घी।

**घृतकुमारी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] घीकुवार।

**घृताची**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा।

**घृनी**—वि० [?] दयालु।

**घेघा**—संज्ञा पुं० [देश०] १. गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है। २. गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन होकर बतौड़ा

जा निकल आता है।

**घेर**—संज्ञा पुं० [हिं० घेरना] १. चारों ओर का फैलाव। घेरा। परिधि।

**घेरघार**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घेरना] १. चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया। २. चारो ओर का फैलाव। विस्तार। ३. खुशामद। विनती।

**घेरना**—क्रि० स० [सं० ग्रहण] १. चारों ओर हो जाना। चारों ओर से छेंकना। बाँधना। २. चारों ओर से रोकना। आक्रांत करना। छेंकना। ग्रसना। ३. गाय आदि चौपायों को चराना। ४. किसी स्थान को अपने अधिकार में रखना। ५. खुशामद करना।

**घेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० घेरना] १. चारो ओर की सीमा। लंबाई चौड़ाई आदि का सारा विस्तार या फैलाव। परिधि। २. चारो ओर की सीमा की माप का जोड़। परिधि का मान। ३. वह वस्तु जो किसी स्थान के चारों ओर हो (जैसे दीवार आदि)। ४. घिरा हुआ स्थान। हाता। मंडल। ५. सेना का किसी दुर्ग या गढ़ को चारों ओर से छेंकने का काम। मुहासरा।

**घेवर**—संज्ञा पुं० [हिं० घी+पूर] एक प्रकार की मिठाई।

**घैया**—संज्ञा पुं० [हिं० घी या सं० घात] १. ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। २. थन से छूटती हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पी जाय।

संज्ञा स्त्री० [हिं० घाई या घी] ओर। तरफ।

**घैर, घैरु, घैरो***-संज्ञा पुं० [देश०] १. निंदामय चर्चा। बदनामी। अपयश। २. चुगली। गुतशिकायत।

**घैला**—संज्ञा पुं० [सं० घट] घड़ा।

**घोंघा**—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा। शंबुक।

वि० १. जिसमें कुछ सार न हो। २. मूर्ख।

**घोंघुआ**—संज्ञा पुं० दे० "घोंसला"।

**घोंटना**—क्रि० स० [हिं० घूँट, पू० हिं० घोंट] १. घूँट घूँट करके पीना। हजम करना।

क्रि० स० दे० "घोटना"।

**घोंपना**—क्रि० स० [अनु० घप] १. धँसाना। चुभाना। गड़ाना। २. बुरी तरह सीना।

**घोंसला**—संज्ञा पुं० [सं० कुशालय] घास, फूस आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पक्षी रहते हैं। नीड़। खोता।

**घोंसुआ***-संज्ञा पुं० दे० "घोंसला"।

**घोखना**—क्रि० स० [सं० घुष] पाठ को बार बार आवृत्ति करना। रटना। घोटना।

**घोघी**†-संज्ञा स्त्री० दे० "घुग्घी"।

**घोट, घोटक**—संज्ञा पुं० [सं० घोटक] घोड़ा।

**घोटना**—क्रि० स० [सं० घुट आवर्त्तन] १. चिकना या चमकीला करने के लिए बार बार रगड़ना। २. बारीक पीसने के लिए बार बार रगड़ना। ३. बट्टे आदि से रगड़कर परस्पर मिलाना। हल करना। ४. अभ्यास करना। मश्क करना। ५. डाँटना। फटकारना ६. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय।

संज्ञा पुं० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औजार।

**घोटवाना**—क्रि० स० [हिं० घोटना का प्रे०] घोटने का काम दूसरे से कराना।

**घोटा**—संज्ञा पुं० [हिं० घोटना] १. वह वस्तु जिससे घोटा जाय। २. घुटा हुआ चमकीला कपड़ा। ३. रगड़ा। घुटाई।

**घोटाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोटना+आई (प्रत्य०)] घोटने का काम या मजदूरी।

**घोटाला**—संज्ञा पुं० [देश०] घपला। गड़बड़।

**घोड़साल**—सं० स्त्री० दे० "घुड़साल"।

**घोड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० घोटक, प्रा० घोड़ा] [स्त्री० घोड़ी] १. चार पैरों का प्रसिद्ध पशु जो सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम में आता है। अश्व।

**मुहा०**—घोड़ा उठाना=घोड़े को तेज दौड़ाना। घोड़ा कसना=घोड़े पर सवारी के लिए जीन या चारजामा कसना। घोड़ा डालना=किसी ओर वेग से घोड़ा बढ़ाना। घोड़ा निकालना=घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। घोड़ा फेंकना=वेग से घोड़ा दौड़ाना। घोड़ा बेचकर सोना=खूब निश्चिंत होकर सोना।

२. वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बंदूक में गोली चलती है। ३. टोटा जो भार सँभालने के लिए दीवार में लगाया जाता है। ४. शतरंज का मोहरा।

**घोड़ागाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+गाड़ी] वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है।

**घोड़ानस**—संज्ञा स्त्री० [हिं० घोड़ा+नस] वह बड़ी मोटी नस जो एँड़ी के पीछे ऊपर को जाती है। कूँच। पै।

**घोड़ावच**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा + वच ] खुरासानी वच ।

**घोड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ी + इया ( प्रत्य० ) ] १. छोटी घोड़ी । २. दीवार में गड़ी हुई खूँटी । ३. छज्जे का भार सँभालनेवाली टोड़ी ।

**घोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घोड़ा ] १. घोड़े की मादा । २. पायों पर खड़ी काठ की लंबी पटरी । पाटा । ३. विवाह की वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़ी पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है । ४. विवाह के गीत ।

**घोर**—वि० [ सं० ] १. भयंकर । भयानक । डरावना । विकराल । २. सघन । घना । दुर्गम । ३. कठिन । कड़ा । ४. गहरा । गाढ़ा । ५. बुरा । ६. बहुत ज्यादा । संज्ञा स्त्री० [ सं० घुर ] शब्द । गर्जन । ध्वनि ।

**घोरना***—क्रि० अ० [सं० घोर] भारी शब्द करना । गरजना ।

**घोरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० घोड़ा ] १. घोड़ा । २. खूँटा ।

**घोरिला***†—संज्ञा पुं० [ हिं० घोड़ी ] लड़कों के खेलने का घोड़ा ।

**घोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० घोलना ] वह जो घोलकर बनाया गया हो ।

**घोलना**—क्रि० स० [ हिं० घुलना ] पानी या और किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना । हल करना ।

**घोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अहीरों की बस्ती । २. अहीर । ३. गोशाला । ४. तट । किनारा । ५. शब्द । आवाज़ । नाद । ६. गरजने का शब्द । ७. शब्दों के उच्चारण में एक प्रयत्न ।

**घोषणा**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना । २. राजाज्ञा आदि का प्रचार । मुनादी । डुग्गी ।

**यौ०**—घोषणापत्र=वह पत्र जिसमें सर्व-साधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो । ३. गर्जन । ध्वनि । शब्द । आवाज़ ।

**घोसी**—संज्ञा पुं० [ सं० घोष ] अहीर । ग्वाल ।

**घौद, घौर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] फलों का गुच्छा । गौद ।

**घ्राण**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० घ्रेय ] १. नाक । २. सूँघने की शक्ति । ३. सुगंध ।

—:*:—

## ङ

**ङ**—व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम अक्षर । यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है ।

**ङ**—संज्ञा पुं० [ सं ] १. सूँघने की शक्ति । २. गंध । सुगंध । ३. भैरव ।

—:*:—

## च

**च**—संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठा व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान तालु है ।

**चंक**—वि० [ सं० चक्र ] पूरा पूरा । समूचा । सारा । समस्त ।

**चंक्रमण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इधर-उधर घूमना । टहलना ।

**चंग**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] डफ के आकार का एक छोटा बाजा । संज्ञा पुं० [ ? ] गंजीफे का एक रंग । संज्ञा स्त्री० [ सं० चं=चंद्रमा ] पतंग । गुड्डी ।

**मुहा०**—चंग चढ़ना या उमड़ना=बढ़ी-चढ़ी बात होना । खूब जोर होना । चंग पर चढ़ाना=१. इधर-उधर की

बात कहकर अपने अनुकूल करना । २. मिजाज बढ़ा देना ।

**चँगना***—क्रि० स० [हिं० चंगा या फ़ा० तंग] तंग करना । कसना । खींचना ।

**चंगा**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अंगुल] १. चंगुल । पंजा । २. पकड़ । वश ।

**चंगा**—वि० [सं० चंग] [स्त्री० चंगी] १. स्वस्थ । तंदुरुस्त । नीरोग । २. अच्छा । भला । सुन्दर । ३. निर्मल । शुद्ध ।

**चंगुर***—संज्ञा पुं० दे० "चंगुल" ।

**चंगुल**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+अंगुल] १. चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा । २. हाथ के पंजों की वह स्थिति जो उँगलियों से किसी वस्तु को उठाने या लेने के समय होती है । बकोटा ।

मुहा०—चंगुल में फँसना=वश या पकड़ में आना । काबू में होना ।

**चँगेर, चँगेरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० चंगेरिक] १. बाँस की छिछली डलिया । बाँस की चौड़ी टोकरी । २. फूल रखने की डलिया । डगरी । ३. चमड़े का जलपात्र । मशक । पखाल । ४. रस्सी में बाँधकर लटकाई हुई टोकरी जिसमें बच्चों को सुलाकर पालना झुलाते हैं ।

**चँगेली**—संज्ञा स्त्री० दे० "चंगेर" ।

**चंच***—संज्ञा पुं० दे० "चञ्चु" ।

**चंचरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भ्रमरी । भँवरी । २. चाँचरि । होली में गाने का एक गीत । ३. हरिप्रिया छंद । ४. एक वर्णवृत्त । चचरा । चंचली । विबुधप्रिया । ५. छब्बीस मात्राओं का एक छंद ।

**चंचरीक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चंचरीकी] भ्रमर । भौंरा ।

**चंचरीकावली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।

**चंचल**—वि० [सं०] [स्त्री० चंचला] १. चलायमान । अस्थिर । हिलता-डोलता । २. अधीर । अव्यवस्थित । एकाग्र न रहनेवाला । ३. उद्विग्न । घबराया हुआ । ४. नटखट । चुलबुला ।

**चंचलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता । चपलता । २. नटखटी । शरारत ।

**चंचलताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता" ।

**चंचला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी । २. बिजली । ३. पिप्पली । ४. एक वर्णवृत्त ।

**चंचलाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता" ।

**चंचु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शाक । चेंच । २. रेंड़ का पेड़ । ३. मृग । हिरन ।

संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच ।

**चंचोरना**—क्रि० स० दे० "चचोड़ना" ।

**चंट**—वि० [सं० चंड] १. चालाक । होशियार । सयाना । २. धूर्त । छँटा हुआ ।

**चंड**—वि० [सं०] [स्त्री० चंडा] १. तेज । तीक्ष्ण । उग्र । प्रखर । २. बलवान् । दुर्दमनीय । ३. कठोर । कठिन । विकट । ४. उद्धत । क्रोधी । गुस्सावर ।

संज्ञा पुं० [सं० चंड] १. ताप । गरमी । २. एक यमदूत । ३. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था ४. कार्तिकेय ।

**चंडकर**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

**चंडता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उग्रता । प्रबलता । वीरता । २. बल । प्रताप ।

**चंड-मुण्ड**—संज्ञा पुं० [सं०] दो राक्षसों के नाम जो देवी के हाथों से मारे गए थे ।

**चंडरसा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त ।

**चंडवृष्टिप्रपात**—संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक-वृत्त ।

**चंडांशु**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

**चँडाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० चंड=तेज] १. शीघ्रता । जल्दी । फुरती । उतावली । २. प्रबलता । जबरदस्ती । ऊधम । अत्याचार ।

**चंडाल**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० चंडालिन, चंडालिनी] चांडाल । श्वपच ।

**चंडालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा । २. एक प्रकार की वीणा ।

**चंडालिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंडाल वर्ण की स्त्री । २. दुष्टा स्त्री । पापिनी स्त्री । ३. एक प्रकार का दोहा छंद । (दूषित) ।

**चंडावल**—संज्ञा पुं० [सं० चंड+आवलि] १. सेना के पीछे का भाग । 'हरावल' का उलटा । २. बहादुर सिपाही । ३. संतरी ।

**चंडिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा । २. लड़ाकी स्त्री । ३. गायत्री देवी ।

**चंडी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिए धारण किया था । २. कर्कशा और उग्र स्त्री । ३. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।

**चंडू**—संज्ञा पुं० [सं० चंड=तीक्ष्ण ?] अफीम का किवाम जिसका धुआँ नशे के लिए नली के द्वारा पीते हैं ।

**चंडूखाना**—संज्ञा पुं० [हिं० चंडू+

फा० खाना] वह स्थान जहाँ लोग चंडू पीते हैं।
मुहा०—चंडूखाने की गप=मतवालों की झूठी बकवाद। बिलकुल झूठी बात।

**चंडूबाज**—संज्ञा पुं० [हिं० चंडू+फ़ा० बाज़ (प्रत्य०)] चंडू पीनेवाला।

**चंडूल**—संज्ञा पुं० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया।
यौ०—पुरानाचंडूल=मूर्ख।

**चंडोल**—संज्ञा पुं० [सं० चंद्र+दोल] एक प्रकार की पालकी।

**चंद**—संज्ञा पुं० [सं० चंद्र] १. दे० "चंद्र"। २. हिंदी के एक अत्यंत प्राचीन कवि जो दिल्ली के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान की सभा में थे।
वि० [फा०] थोड़े से। कुछ।

**चंदक**—संज्ञा पुं० [सं० चंद्र] १. चंद्रमा। २. चाँदनी। ३. चांद नाम की मछली। ४. माथे पर पहनने का अर्द्धचंद्राकार गहना। ५. नथ में पान के आकार की बनावट।

**चंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पेड़ जिसके हीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देवपूजन आदि में होता है। श्रीखंड। संदल। २. चंदन की लकड़ी या टुकड़ा। ३. घिसे हुए चंदन का लेप। ४. छप्पय छंद का तेरहवाँ भेद।

**चंदनगिरि**—संज्ञा पुं० [सं०] मलयाचल।

**चंदनहार**—संज्ञा पुं० दे० "चंद्रहार"।

**चंदमा**—संज्ञा पुं० दे० "चंद्रमा"।

**चंदनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चाँदनी"।

**चँदनौता**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का लहँगा।

**चंदबान**—संज्ञा पुं० दे० "चंद्र-बाण"।

**चँदराना**—क्रि० स० [सं० चंद्र (दिखलाना)] १. फुसलाना। बहकाना। बहलाना। २. जान-बूझकर अनजान बनना।

**चँदला**—वि० [हिं० चाँद=खोपड़ी] गंजा।

**चँदवा**—संज्ञा पुं० [सं० चंद्र या चंद्रोदय] एक प्रकार का छोटा मंडप। चँदोवा।
संज्ञा पुं० [सं० चंद्रक] १. गोल आकार की चकती। मोर की पूँछ पर का अर्द्धचंद्राकार चिह्न।

**चंदा**—संज्ञा पुं० [सं० चंद या चंद्र] १. चंद्रमा। २. पीतल आदि की गोल चद्दर।
संज्ञा पुं० [फ़ा० चंद=कई एक] १. वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य्य के लिए, लिया जाय। बेहरी। उगाही। २ किसी सामयिक पत्र या पुस्तक आदि का वार्षिक मूल्य।

**चंदावल**—संज्ञा पुं० दे० "चंडावल"।

**चँदोआ**—संज्ञा पुं० दे० "चँदवा"।

**चंदिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "चंद्रिका"।

**चंदिनि, चंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० चंद्र] चाँदनी। [illegible]

**चंदिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाँद] खोपड़ी। सिर का मध्य भाग।

**चंदिर**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**चँदेरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० चेदि या हिं० चंदेल] एक प्राचीन नगर जो ग्वालियर राज्य में है। चेदि देश की राजधानी।

**चँदेरीपति**—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपाल।

**चंदेल**—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों की एक शाखा जो किसी समय कालिंजर और महोबे में राज्य करती थी।

**चंद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. एक की संख्या। ३. मोर की पूँछ की चंद्रिका। ४. कपूर। ५. जल। ६. सोना। सुवर्ण। ७. पौराणिक भूगोल के १८ उपद्वीपों में से एक। ८. वह बिंदी जो सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जाती है। ९. पिंगल में रगण का दसवाँ भेद (।।S।।)। १०. हीरा। ११. कोई आनंददायक वस्तु।
वि० १. आनंददायक। २. सुंदर।

**चंद्रक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. चंद्रमा के ऐसा मंडल या घेरा। ३. चंद्रिका। चाँदनी। ४. मोर की पूँछ की चंद्रिका। ५. नहँ। नाखून। ६. कपूर।

**चंद्रकला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश। २. चंद्रमा की किरण या ज्योति। ३. एक वर्णवृत्त। ४. माथे पर पहनने का एक गहना।

**चंद्रकान्त**—संज्ञा पुं० [सं०] एक मणि या रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह चंद्रमा के सामने करने से पसीजता है।

**चंद्रकांता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा की स्त्री। २. रात्रि। रात। ३. पद्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**चंद्रगुप्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्रगुप्त। २. मगध देश का प्रथम मौर्य्यवंशी राजा। ३. गुप्तवंश का एक प्रसिद्ध राजा।

**चंद्रग्रहण**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का ग्रहण।

**चंद्रचूड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**चंद्रज्योति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चंद्र + ज्योति ] चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी।

**चंद्रधनु**—संज्ञा पुं० [ स्त्री० ] वह इंद्रधनुष जो रात को चंद्रमा का प्रकाश पड़ने के कारण दिखाई पड़ता है।

**चंद्रधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**चंद्रवधूटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बीरबहूटी"।

**चंद्रप्रभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चंद्रमा की ज्योति। चाँदनी। चंद्रिका।

**चंद्रबाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का बाण जिसका फल अर्द्ध चंद्राकार होता था।

**चंद्रबिंदु**—संज्ञा पुं० [सं०] अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी। जिसका रूप यह ँ है।

**चंद्रबिंब**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा का मंडल।

**चंद्रभाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**चंद्रभूषण**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**चंद्रमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रकांत मणि। २. उल्लाला छंद।

**चंद्रमा**—संज्ञा पुं० [ सं० चंद्रमस् ] रात का प्रकाश देनेवाला एक उपग्रह जो महीने में एक बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करता है और सूर्य से प्रकाश पाकर चमकता है तथा घटता बढ़ता है। चाँद। शशि। विधु।

**चंद्रमाललाम**—संज्ञा पुं० [ सं० चंद्रमा + ललाम=भूषण ] महादेव। शंकर। शिव।

**चंद्रमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २८ मात्राओं का एक छंद।

**चंद्रमौलि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**चंद्ररेखा, चंद्रलेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंद्रमा की कला। २. चंद्रमा की किरण। ३. द्वितीया का चंद्रमा। ४. एक वृत्त का नाम।

**चंद्रलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा का लोक।

**चंद्रवंश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षत्रियों के दो आदिकुलों में से एक जो पुरुरवा से आरंभ हुआ था।

**चंद्रवर्त्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**चंद्रवार**—संज्ञा पुं० [सं०] सोमवार।

**चंद्रशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चाँदनी। चंद्रमा का प्रकाश। २. घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।

**चंद्रशेखर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**चंद्रहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गले में पहनने की एक प्रकार की माला। नौलखा हार।

**चंद्रहास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खड्ग। तलवार। २. रावण की तलवार।

**चंद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चंद्र ] मरने के समय की वह अवस्था जब टकटकी बँध जाती है।

**चंद्रातप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. चंदवा। वितान।

**चंद्रार्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बननेवाली एक मिश्रित धातु।

**चंद्रावर्त्ता**—संज्ञा–पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**चंद्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंद्रमा का प्रकाश। चाँदनी। कौमुदी। २. मोर की पूँछ के पर का गोल चिह्न। ३. इलायची। ४. जूही या चमेली। ५. एक देवी। ६. एक वर्णवृत्त। ७. माथे पर का एक भूषण। बेंदी। बेंदा।

**चंद्रोदय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा का उदय। २. वैद्यक में एक रस। ३. चँदवा। चँदोवा। वितान।

**चंपई**—वि० [ हिं० चंपा ] चंपा के फूल के रंग का। पीले रंग का।

**चंपक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंपा। २. चंपा केला। ३. सांख्य में एक सिद्धि।

**चंपकमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**चंपत**—वि० [ देश० ] चलता। गायब। अंतर्धान।

**चँपना**—क्रि० अ० [ सं० चप् ] १. बोझ से दबना। २. उपकार आदि से दबना।

**चंपा**—संज्ञा पुं० [ सं० चंपक ] १. मझोले कद का एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के कड़ी महक के फूल लगते हैं। २. एक पुरी जो प्राचीन काल में अंग देश की राजधानी थी। ३. एक प्रकार का मीठा केला। ४. घोड़े की एक जाति। ५. रेशम का कीड़ा।

**चंपाकली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चंपा + कली ] गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

**चंपारण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक स्थान जिसे आजकल चंपारन कहते हैं।

**चंपू**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह काव्यग्रंथ जिसमें गद्य के बीच बीच में पद्य भी हो।

**चंबल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चर्मण्वती ] १. एक नदी। २. नालों के किनारे की वह लकड़ी जिससे सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाते हैं।
संज्ञा पुं० पानी की बाढ़।

**चँवर**—संज्ञा पुं० [ सं० चामर ] [ स्त्री० अल्पा० चँवरी ] १. डाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्तियों के सिरपर डुलाया जाता है।
मुहा०—चँवर ढलना=ऊपर चँवर

हिलाया जाना।
२. घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कलँगी। ३. झालर। फुँदना।

**चँवरढार**—संज्ञा पुं० [हिं० चँवर+ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

**चँसुर**—संज्ञा पुं० [सं० चंद्रशूर] हालों या हालिम नाम का पौधा।

**च**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कच्छप। कछुआ। २. चंद्रमा। ३. चोर। ४. दुर्जन। और।

**चउर***—संज्ञा पुं० दे० "चँवर"।

**चउहट्ट***—संज्ञा पुं० दे० "चौहट्ट"।

**चउहा**—संज्ञा पुं० [चतुर्विध] चार प्रकार का।

**चक**—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] १. चकई नाम का खिलौना। २. चक्रवाक पक्षी। चकवा। ३. चक्र नामक अस्त्र। ४ चक्का। पहिया। ५. जमीन का बड़ा टुकड़ा। पट्टी। ६. छोटा गाँव। खेड़ा। पट्टी। पुरवा। ७. किसी बात की निरंतर अधिकता। ८. अधिकार। दखल।
वि० भरपूर। अधिक। ज्यादा।
वि० [सं०] चकपकाया हुआ। भ्रांत।

**चकई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।
संज्ञा स्त्री० [ ० चक्र] घिरनी या गड़ारी के आकार का एक खिलौना।

**चकचकाना**—क्रि० अ० [अनु०] १. किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना। रस रसकर ऊपर आना। २. भींग जाना।

**चकचाना***—क्रि० अ० [अनु०] चौंधियाना। चकाचौंध लगना।

**चकचाल***—संज्ञा पुं० [सं० चक्र+हिं० चाल] चक्कर। भ्रमण। फेरा।

**चकचाव***—संज्ञा पुं० [अनु०] चकाचौंध।

**चकचून, चकचूर**—वि० [सं० चक्र+चूर्ण] चूर किया हुआ। चकनाचूर।

**चकचौंध**—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

**चकचौंधना**—क्रि० अ० [सं० चक्षु+अंध] आँख का अत्यन्त अधिक प्रकाश के सामने ठहर न सकना। चकाचौंध होना।
क्रि० स० चकाचौंधी उत्पन्न करना।

**चकचौंह***—संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

**चकचौंहना**—क्रि० स० [देश०] चाह भरी दृष्टि से देखना।

**चकचौंहाँ**—वि० [देश०] देखने योग्य। सुंदर।

**चकडोर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चकई+डोर] चकई नामक खिलौने में लगा हुआ त।

**चकता**—संज्ञा० पुं० दे० "चकत्ता"।

**चकती**—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्रवत्] १. चमड़े, कपड़े आदि में से काटा हुआ, गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। पट्टी। २. फटे टूटे स्थान को बन्द करने के लिए लगी हुई पट्टी या धज्जी। थिगली।
मुहा०—बादल में चकती लगाना=अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।

**चकत्ता**—संज्ञा पुं० [सं० चक्र+वर्त्त] १. रक्तविकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग। २. खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन। ददोरा। ३. दाँतों से काटने का चिह्न।
संज्ञा पुं० [तु० चग़ताई] १. मोगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह थे। २. चगताई वंश का पुरुष।

**चकना***—क्रि० अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १. चकित होना। भौचक्का होना। चकपकाना। २. चौंकना। आशंकायुक्त होना।

**चकनाचूर**—वि० [हिं० चक=भरपूर+चूर] १. जिसके टूट-फूटकर बहुत से छोटे छोटे टुकड़े हो गये हों। चूर चूर। खंड खंड। चूर्णित। २. बहुत थका हुआ।

**चकपक, चकबक**—वि० [सं० चक्र] चकित। स्तंभित।

**चकपकाना**—क्रि० अ० [सं० चक्र=भ्रांत] १. आश्चर्य से इधर-उधर ताकना। भौचक्का होना। चौंकना।

**चकफेरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० चक्र, हिं० चक+हिं० फेरी] परिक्रमा। भँवरी।

**चकबंदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चक+फ़ा० बंदी] भूमि को कई भागों में विभक्त करना।

**चकमक**—संज्ञा पुं० [तु०] एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिसपर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।

**चकमा**—संज्ञा पुं० [सं० चक्र=भ्रांत] १. भुलावा। धोखा। २. हानि। नुकसान।

**चकरा***—संज्ञा पुं० [सं० चक्र] चक्रवाक पक्षी। चकवा।

**चकरबा**—संज्ञा पुं० [सं० चक्रव्यूह] १. कठिन स्थिति। असमंजस। २. बखेड़ा।

**चकरा***—वि० [सं० चक्र] [स्त्री० चकरी] चौड़ा। विस्तृत।
यौ०—चौड़ा चकरा।

**चकराना**—क्रि० अ० [सं० चक्र] १. (सिर का) चक्कर खाना। (सिर)

घूमना। २. भ्रांत होना। चकित होना। ३. चकपकाना। चकित होना। घबराना।

क्रि० स० आश्चर्य में डालना।

**चकरी**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चक्री ] १. चक्की। २. चकई नाम का खिलौना।

वि० चक्की के समान इधर-उधर घूमनेवाला। भ्रमित। अस्थिर। चंचल।

**चकलाई**–संज्ञा स्त्री० दे० "चौड़ाई"।

**चकला**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र, हिं० चक+ला (प्रत्य०) ] १. पत्थर या काठ का गोल पाटा जिसपर रोटी बेली जाती है। चौका। २. चक्की। ३. इलाका। जिला। ४. व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा।

वि० [ स्त्री० चकली ] चौड़ा।

**चकली**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चक्र, हिं० चक ] १. घिरनी। गड़ारी। २. छोटा चकला जिसपर चंदन घिसते हैं। होरसा।

**चकलेदार**–संज्ञा पुं० [ देश० ] किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला।

**चकवँड़**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्रमर्द ] एक बरसाती पौधा। पमार। पवाड़।

**चकवा**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्रवाक ] [ स्त्री० चकवी, चकई ] एक जल-पक्षी जिसके संबंध में प्रवाद है कि रात को जोड़े से अलग पड़ जाता है। सुरखाब।

**चकवाना***–क्रि० अ० [ देश० ] चकपकाना।

**चकवार***–संज्ञा पुं० दे० "कछुआ"।

**चकवाह***–संज्ञा पुं० दे० "चकवा"।

**चकहा***–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र ] पहिया।

**चका***–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र ] १. पहिया। चक्का। चाक। २. चकवा पक्षी।

**चकाचक**–वि० [ अनु० ] तराबोर। लथ-पथ।

क्रि० वि० खूब। भरपूर।

**चकाचौंध**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चक= चमकना+चौं=चारों ओर + अंध ] अत्यन्त अधिक चमक के सामने आँखों की झपक। तिलमिलाहट। तिलमिली।

**चकाना***–क्रि० अ० दे० "चकपकाना"।

**चकाबू**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्रव्यूह ] १. एक के पीछे एक कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की स्थिति। २. भूलभुलैयाँ।

**चकासना***–क्रि० अ० दे० "चमकना"।

**चकित**–वि० [ सं० ] [ स्त्री० चकिता ] १. चकपकाया हुआ। विस्मित। दंग। हक्काबक्का। २. हैरान। घबराया हुआ। ३. चौकन्ना। शंकित। डरा हुआ। ४. डरपोक। कायर।

**चकिताई***–संज्ञा स्त्री० [ सं० चकित ] चकित होने की क्रिया या भाव। आश्चर्य।

**चकुला***–संज्ञा पुं० [ देश० ] चिड़िया का बच्चा। चेंटुवा।

**चकृत***–वि० दे० "चकित"।

**चकैया***–संज्ञा स्त्री० दे० "चकई"।

**चकोटना**–क्रि० स० [ हिं० चिकोटी ] चुटकी से मांस नोचना। चुटकी काटना।

**चकोतरा**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र= गोला ] एक प्रकार का बड़ा जँबीरी नीबू।

**चकोर**–संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० चकोरी, चकोरिका ] १. एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला प्रसिद्ध है। २. एक वर्णवृत्त का नाम।

**चकौंध***–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

**चक्क**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र ] १. चकवाक। चकवा। २. कुम्हार का चाक।

**चक्कर**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र ] १. पहिए के आकार की कोई (विशेषतः घूमनेवाली) बड़ी गोल वस्तु। मंडलाकार पटल। चाक। २. गोल या मंडलाकार घेरा। मंडल। ३. मंडलाकार गति। परिक्रमण। फेरा। ४. पहिए के ऐसा भ्रमण। अक्ष पर घूमना।

**मुहा०**—चक्कर काटना=परिक्रमा करना। मँड़राना। चक्कर खाना= १. पहिए की तरह घूमना। २. घुमाव-फिराव के साथ जाना। ३. भटकना। भ्रांत होना। हैरान होना। ४. चलने में अधिक घुमाव या दूरी। फेर। ५. हैरानी। असमंजस। ६. पेंच। जटिलता। दुरूहता।

**मुहा०**—किसी के चक्कर में आना या पड़ना=किसी के धोखे में आना या पड़ना।

७. सिर घूमना। घूमरी। घुमटा। ८. पानी का भँवर। जंजाल।

**चक्कवइ***–वि० दे० "चक्रवर्ती"।

**चक्का**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्र, प्रा० चक्क ] १. पहिया। चाक। २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ३. बड़ा चिपटा टुकड़ा। बड़ा कतरा। ढेला।

**चक्की**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चक्री ] आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र। जाँता।

**मुहा०**–चक्की पीसना=कड़ा परिश्रम करना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० चक्रिका ] १. पैर के घुटने की गोल हड्डी। २. बिजली। वज्र।

**चखनी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चखना ] खाने की स्वादिष्ट और चटपटी चीज। चाट।

**चक्र**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पहिया। चाका। २. कुम्हार का चाक। ३. चक्की। जाँता। ४. तेल पेरने का कोल्हू। ५. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ६. लोहे के एक अस्त्र का नाम जो पहिए के आकार का होता है। ७. पानी का भँवर। ८. वातचक्र। बवंडर। ९. समूह। समुदाय। मंडली। १०. एक प्रकार का व्यूह या सेना की स्थिति। ११. मंडल। प्रदेश। राज्य। १२. एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आसमुद्रांत भूमि। १३. चकवाक पक्षी। चकवा। १४. योग के अनुसार शरीरस्थ ६ पद्म। १५. फेरा। घुमाव। भ्रमण। चक्कर। १६. दिशा। प्रान्त। १७. एक वर्णवृत्त।

**चक्रतीर्थ**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दक्षिण में वह तीर्थस्थान जहाँ ऋष्यमूक पर्वतों के बीच तुंगभद्रा नदी घूमकर बहती है। २ नैमिषारण्य का एक कुंड।

**चक्रधर**–वि० [ सं० ] जो चक्र धारण करे।

संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान्। २. श्रीकृष्ण। ३ बाजीगर। इंद्रजाल करनेवाला। ४. कई ग्रामों या नगरों का अधिपति।

**चक्रधारी**–संज्ञा पुं० दे० "चक्रधर"।

**चक्रपाणि**–संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**चक्रपूजा**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तान्त्रिकों की एक पूजा-विधि।

**चक्रबंध**–संज्ञा पुं० [ सं० ] चक्र के आकार का एक चित्र-काव्य।

**चक्रमर्द**–संज्ञा पुं० [ सं० ] चकवँड़।

**चक्रमुद्रा**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जो वैष्णव अपने बाहु तथा और अंगों पर छपाते हैं।

**चक्रवर्ती**–वि० [ सं० चक्रवर्त्तिन् ] [स्त्री० चक्रवर्त्तिनी ] आसमुद्रांत भूमि पर राज्य करनेवाला। सार्वभौम।

**चक्रवाक**–संज्ञा पुं० [ सं० ] चकवा पक्षी।

**यौ०**—चकवाकबंधु=सूर्य्य।

**चक्रवात**–संज्ञा पुं० [ सं० ] वेग से चक्कर खाती हुई वायु। वातचक्र। बवंडर।

**चक्रवाल**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परिधि। घेरा। २. समूह। जनसमाज। ३. एक पौराणिक पर्वतमाला जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई मानी जाती है।

**चक्रवृद्धि**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह सूद या ब्याज जिसमें ब्याज पर भी ब्याज लगता जाता है। सूद दर सूद।

**चक्रव्यूह**–संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिए उसके चारों ओर कई घेरों में सेना को चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।

**चक्रांक**–संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० चक्रांकित ] चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर पर दगवाते हैं।

**चक्रायुध**–संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**चक्रित***–वि० दे० "चकित"।

**चक्री**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्रिन् ] १. वह जो चक्र धारण करे, जैसे विष्णु। २. वह जो चक्र चलावे। जैसे कुम्हार। ३. गाँव का पंडित या पुरोहित। ४. चक्रवाक। चकवा। ५ सर्प। ६. जासूस। मुखबिर। चर। ७ चक्रवर्ती। ८. चक्रमर्द। चकवँड़।

**चक्षु**–संज्ञा पुं० [ सं० चक्षुष् ] १. दर्शनेंद्रिय। आँख। २. एक नदी जिसे आजकल आक्सस या जेहूँ कहते हैं। वंक्षु नद।

**चक्षुरिंद्रिय**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आँख।

**चक्षुष्य**–वि० [ सं० ] १. जो नेत्रों को हितकारी हो ( औषधि आदि )। २. सुंदर। प्रियदर्शन। ३. नेत्र-संबंधी।

**चख***–संज्ञा पुं० [ सं० चक्षुष् ] आँख।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] झगड़ा। तकरार। कलह।

**यौ०**—चख-चख=तकरार। कहा सुनी।

**चखचौंध***–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"

**चखना**–क्रि० स० [ सं० चष ] स्वाद लेना। स्वाद लेने के लिए मुँह में रखना।

**चखाचखी**–संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० चख= झगड़ा ] लाग-डाँट। विरोध। बैर।

**चखाना**–क्रि० स० [ हिं० चखना का प्रे० ] खिलाना। स्वाद दिलाना।

**चखु***–संज्ञा पुं० दे० "चक्षु"।

**चखौड़ा***†–संज्ञा पुं० [ हिं० चख+ औड़ ] डिठौना। डिठौना।

**चगड़**–वि० [देश०] चतुर। चालाक।

**चगताई***–संज्ञा पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताईखाँ से चला था।

**चचा**–संज्ञा पुं० [सं० तात] [ स्त्री० चची ] बाप का भाई। पितृव्य।

**चचिया**–वि० [ हिं० चचा ] चाचा के बराबर का संबंध रखनेवाला।

**यौ०**—चचिया ससुर=पति या पत्नी का चाचा।

**चचींडा**†–संज्ञा पुं० [ सं० चिचिंड ]

१. तोरई की तरह की एक तरकारी। २. चिचड़ा।

**चचेरा**-वि० [ हिं० चचा ] चाचा से उत्पन्न। चाचाजाद। जैसे—चचेरा भाई।

**चचोड़ना**-क्रि० स० [ अनु० या देश० ] दाँत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना।

**चट**-क्रि० वि० [ सं० चटुल—चंचल ] जल्दी से। झट। तुरंत। फौरन्। शीघ्र।

* संज्ञा पुं० [सं० चित्र] १. दाग। धब्बा। २. घाव या चकत्ता।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है। २. वह शब्द जो उँगलियों को मोड़कर दबाने से होता है।

वि० [ हिं० चाटना ] चाट पोंछकर खाया हुआ।

**मुहा०**—चट कर जाना=१. सब खा जाना। २. दूसरे की वस्तु लेकर न देना।

**चटक**-संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० चटका ] गौरा पक्षी। गाैरवा। गौरैया। चिड़ा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० चटुल=सुंदर ] चटकीलापन। चमक-दमक। कांति। शोभा।

† वि० चटकीला। चमकीला।

संज्ञा स्त्री० [ सं० चटुल ] तेजी। फुरती। क्रि० वि० चटपट। तेजी से।

वि० चटपटा। चटकारा। चरपरा।

**चटकदार**-वि० दे० "चटकीला"।

**चटकना**-क्रि० अ० [ अनु० चट ] 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना। तड़कना। कड़कना। २. कोयले, गँठीली लकड़ी आदि का जलते समय चटचट करना। ३. चिड़चिड़ाना। झुँझलाना। ४. गरज पड़ना। स्थान स्थान पर फटना। ५. कलियों का फूटना या खिलना। प्रस्फुटित होना। ६. अनबन होना। खटकना।

संज्ञा पुं० [ अनु० चट ] तमाचा। थप्पड़।

**चटकनी**-संज्ञा स्त्री० [ अनु० चट ] सिटकिनी।

**चटक मटक**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चटक+मटक ] बनाव-सिंगार। वेश-विन्यास और हाव-भाव। नाज-नखरा।

**चटका**†-संज्ञा पुं० [ हिं० चट ] फुरती।

**चटकाना** क्रि० स० [ अनु० चट ] १ ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय। तोड़ना। २ उँगलियों को खींचकर या मोड़ते हुए दबाकर चट चट शब्द निकालना। ३ बार बार टकराना जिसमें चट चट शब्द निकले। ४ ठंक मारना।

**मुहा०**-जूतियाँ चटकाना=जूता घसीटते हुए फिरना। मारा मारा फिरना। ५. अलग करना। दूर करना। ६. चिढ़ाना। कुपित करना।

**चटकारा**-वि० [ सं० चटुल ] १ चटकीला। चमकीला। २. चंचल चपल। तेज।

वि० [ अनु० चट ] स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

**चटकाली**-संज्ञा स्त्री० [ सं० चटक+आलि ] १ गौरों की पंक्ति। २. चिड़ियों की पंक्ति।

**चटकीला**-वि० [ हिं० चटक+ईला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० चटकीली ] १. जिसका रंग फीका न हो। खुलता। शोख। भड़कीला। २. चमकीला। चमकदार। आभायुक्त। ३ चरपरा। चटपटा। मजेदार।

**चटकोरा**†-संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का खिलौना।

**चटखना**-क्रि० स०, संज्ञा पुं० दे० "चटकना"।

**चट चट**-संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] चटकने का शब्द। चट चट शब्द।

**चटचटाना**-क्रि० अ० [ सं० चट=भेदन ] १. चट चट करते हुए टूटना या फूटना। २. लकड़ी कोयले आदि का चट चट शब्द करते हुए जलना।

**चट-चेटक**-संज्ञा पुं० [ सं० चेटक ] इंद्रजाल। जादू।

**चटनी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाटना ] १. चाटने की चीज। अवलेह। २. वह गीली चरपरी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय।

**चटपट**-क्रि० वि० [ अनु० ] शीघ्र। जल्दी।

**चटपटा**-वि० [ हिं० चाट ] [ स्त्री० चटपटी ] चरपरा। तीक्ष्ण स्वाद का। मजेदार।

**चटपटाना**-क्रि० अ० दे० "छटपटाना"।

**चटपटी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चटपट ] [ वि० चटपटिया ] १. आतुरता। उतावली। शीघ्रता। २. घबराहट। व्यग्रता।

**चटवाना**-क्रि० स० दे० "चटाना"।

**चटशाला**-संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"।

**चटसार***†-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चट्टा=चेला+सार=शाला ] बच्चों के पढ़ने का स्थान। पाठशाला। मकतब।

**चटाई**-संज्ञा स्त्री० [ सं० कट=चटाई ] फूस, सींक, पतली फट्टियों आदि का बिछावन। तृण का आसन। साथरी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाटना ] चाटने की क्रिया।

**चटाका**-संज्ञा पुं० [ अनु० ] लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के जोर से

टूटने का शब्द।

**चटाना**-क्रि० स० [ हिं० चाटना का प्रे० ] १. चाटने का काम कराना। २. थोड़ा थोड़ा किसी दूसरे के मुँह में डालना। खिलाना। ३. घूस देना। रिश्वत देना। ४. छुरी, तलवार आदि पर सान रखना।

**चटापटी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चटपट ] १. शीघ्रता। २. महामारी आदि जिसमें लोग चटपट मर जाते हैं।

**चटावन**-संज्ञा पुं० [ हिं० चटाना ] बच्चे को पहले पहल अन्न चटाना। अन्नप्राशन।

**चटिक***-क्रि० वि० [ हिं० चट ] चटपट।

**चटियल**-वि० [ देश० ] जिसमें पेड़-पौधे न हों। निचाट। (मैदान)।

**चटी**-संज्ञा स्त्री० दे० "चटसार"। संज्ञा स्त्री० दे० "चट्टी"।

**चटुल**-वि० [ सं० ] [ स्त्री० चटुला] १. चंचल। चपल। चालाक। २. सुंदर। प्रियदर्शन। ३. मधुर-भाषी।

**चटुला**-संज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली। संज्ञा पुं० एक प्रकार का केशविन्यास।

**चटोरा**-वि० [ हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०) ] १. जिसे अच्छी अच्छी चीजें खाने की लत हो। स्वाद-लोलुप। २. लोलुप। लोभी।

**चटोरपन**-संज्ञा पुं० दे० "चटोरापन"

**चटोरापन**-संज्ञा पुं० [ हिं० चटोरा +पन (प्रत्य०) ] अच्छी अच्छी चीजें खाने का व्यसन।

**चट्ट**-वि० [ हिं० चाटना ] १. चाट-पोंछकर खाया हुआ। २.समाप्त। नष्ट। गायब।

**चट्टा**-संज्ञा पुं० [ देश० ] चटियल मैदान। संज्ञा पुं० [ हिं० चकत्ता ] शरीर पर कुष्ट आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता। दाग।

**चट्टान**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चट्टा ] पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा। विस्तृत शिलापटल। शिलाखंड।

**चट्टा-बट्टा**-संज्ञा पुं० [ हिं० चट्टू+ बट्टा=गोला ] छोटे बच्चों के खेलने के लिए काठ के खिलौने का एक समूह। २. गोल और गोलियाँ जिन्हें बाजीगर एक थैली में से निकाल कर लोगों को तमाशा दिखाते हैं।

**मुहा०**-एक ही थैली के चट्टे बट्टे=एक ही मेल के मनुष्य। चट्टे बट्टे लड़ाना = इधर का उधर लगाकर लड़ाई कराना।

**चट्टी**-संज्ञा स्त्री० [देश०] ठिकान। पड़ाव।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपटा या अनु० चट चट ] एड़ी की ओर खुला हुआ जूता। स्लीपर।

**चट्टू**-वि० [ हिं० चाट ] स्वाद-लोलुप। चटोरा।
संज्ञा पुं० [अनु०] पत्थर का बड़ा खरल।

**चडूढी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चढ़ना ] एक खेल जिसमें लड़के एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर चलते हैं।

**चढ़त,चढ़न**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना] देवता को चढ़ाई हुई वस्तु। देवता की भेंट।

**चढ़ना**-क्रि० अ० [ सं० उच्चलन ] १. नीचे से ऊपर को जाना। ऊँचाई पर जाना। २. ऊपर उठना। उड़ना। ३. ऊपर की ओर सिमटना। ४. ऊपर से ढँकना। मढ़ा जाना। ५. उन्नति करना।

**मुहा०**—चढ़ बनना=सुयोग मिलना

६. (नदी या पानी का) बाढ़ पर आना। ७. धावा करना। चढ़ाई करना। ८. बहुत से लोगों का दल बाँधकर किसी काम के लिए जाना। ९. मँहगा होना। भाव का बढ़ना। १०. सुर ऊँचा होना। ११. धारा या बहाव के विरुद्ध चलना। १२. ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का कस जाना। तनना।

**मुहा०**—नस चढ़ना=नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना।

१३. किसी देवता, महात्मा आदि को भेंट दिया जाना। देवार्पित होना। १४. सवारी पर बैठना। सवार होना। १५. वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरम्भ होना। १६ ऋण होना। कर्ज होना। १७. बही या कागज आदि पर लिखा जाना। टकना। दर्ज होना। १८. किसी वस्तु का बुरा और उद्वेगजनक प्रभाव होना। १९. पकने या आँच खाने के लिए चूल्हे पर रखा जाना। २०. लेप होना। पोता जाना।

**चढ़वाना**—क्रि० स० [ हिं० चढ़ाना का प्रे० ] चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

**चढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २ ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३ शत्रु से लड़ने के लिए प्रस्थान। धावा। आक्रमण।

**चढ़ा-उतरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चढ़ना उतरना ] बार बार चढ़ने-उतरने की क्रिया।

**चढ़ा-ऊपरी**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चढ़ना+ ऊपर ] एक दूसरे के आगे होने या बढ़ने का प्रयत्न। लाग-डाँट। होड़।

**चढ़ाचढ़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"।

**चढ़ाना**—क्रि० स० [ हिं० चढ़ना का प्रे० ] १. चढ़ना का सकर्मक रूप। चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. चढ़ने में सहायता देना। ऐसा काम करना जिससे चढ़े। ३. पी जाना।

**चढ़ाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० चढ़ना ] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। उन्नति।
**यौ०**—चढ़ाव-उतार = ऊँचा-नीचा स्थान।
२. बढ़ने का भाव। वृद्धि। बाढ़।
**यौ०**—चढ़ाव-उतार=एक सिरेपर मोटा और दूसरे सिरे की ओर क्रमशः पतला होते जाने का भाव। गावदुम आकृति।
३. दे० "चढ़ावा"। ४ वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो। 'बहाव' का उलटा।

**चढ़ावा**—संज्ञा पु० [ हिं० चढ़ना ] १. वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। पुजापा। ३. बढ़ावा। दम।
**मुहा०**—चढ़ावा बढ़ावा देना=उत्साह बढ़ाना। उसकाना। उत्तेजित करना।

**चणक**—संज्ञा पु० [ सं० ] चना।

**चतुरंग**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. वह गाना जिसमें चार प्रकार के बोल गठे हों। २. सेना के चार अंग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल। ३ चतुरंगिणी सेना। ४ शतरंज।

**चतुरंगिणी**—वि० स्त्री० [सं०] चार अंगोंवाली ( विशेषतः सेना )।

**चतुर**—वि० पु० [ सं० ] [ स्त्री० चतुरा ] १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। वक्रगामी। २. फुरतीला। तेज़। ३. प्रवीण। होशियार। निपुण। ४. धूर्त। चालाक।
संज्ञा पुं० शृंगार रस में नायक का एक भेद।

**चतुरई**—संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"।

**चतुरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चतुर+ता ( प्रत्य० )] चतुराई। प्रवीणता। होशियारी।

**चतुरपन**†—संज्ञा पुं०दे० "चतुराई"।

**चतुरस्र**—वि० [ सं० ] चौकोर।

**चतुरसम**†—संज्ञा पुं० दे० "चतुःसम"।

**चतुराई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चतुर+आई ( प्रत्य० )] १. होशियारी। निपुणता। दक्षता। २. धूर्तता। चालाकी।

**चतुरानन**—संज्ञा पु० [ सं० ] ब्रह्मा।

**चतुरिंद्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार इंद्रियोंवाले जीव। जैसे—मक्खी, भौंरे, साँप आदि।

**चतुर्गुण**—वि० [ सं० ] १. चौगुना। २. चार गुणोंवाला।

**चतुर्थ**—वि० [ सं० ] चौथा।

**चतुर्थांश**—संज्ञा पुं० [सं०] चौथाई।

**चतुर्थाश्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास।

**चतुर्थी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ। २. वह गंगापूजन आदि कर्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।

**चतुर्दशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि। चौदस।

**चतुर्दिक्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चारों दिशाएँ।
क्रि० वि० चारों ओर।

**चतुर्भुज**—वि० [सं०] [ स्त्री० चतुर्भुजा ] चार भुजाओंवाला। जिसकी चार भुजाएँ हों।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों।

**चतुर्भुजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक देवी। २. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।

**चतुर्भुजी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चतुर्भुज+ई ( प्रत्य० )] एक वैष्णव संप्रदाय।
वि० चार भुजाओंवाला।

**चतुर्मास**—संज्ञा पुं० दे० "चातुर्मास"।

**चतुर्मुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।
वि० [ स्त्री० चतुर्मुखी ] चार मुखवाला।
क्रि० वि० चारों ओर।

**चतुर्युगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चारों युगों का समय। ४३,२०,००० वर्ष का समय। चौजुगी। चौकड़ी।

**चतुर्वर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

**चतुर्वर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

**चतुर्वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ परमेश्वर। ईश्वर। २. चारों वेद।

**चतुर्वेदी**—संज्ञा पु० [ सं० चतुर्वेदिन् ] १. चारों वेदों का जाननेवाला पुरुष। २. ब्राह्मणों की एक जाति।

**चतुर्व्यूह**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २. विष्णु।

**चतुष्कल**—वि० [ सं० ] चार कलाओंवाला। जिसमें चार मात्राएँ हों।

**चतुष्कोण**—वि० [ सं० ] चार कोनोंवाला। चौकोर। चौकोना।

**चतुष्टय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार की संख्या। २. चार चीजों का समूह।

**चतुष्पथ**—संज्ञा पुं० [सं०] चौराहा।

**चतुष्पद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौपाया। २. चौपदा नामक छंद।

वि० चार पदोंवाला।

**चतुष्पदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चौपैया छंद।

**चतुष्पदी**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. १५ मात्राओं का चौपाई छंद। २.चार पद का गीत।

**चत्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौमुहानी। चौरास्ता। २. चबूतरा। वेदी।

**चद्दर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० चादर ] १. चादर। २. किसी धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर। ३. नदी आदि के तेज बहाव में वह अंश जिसकी सतह कभी कभी बिल्कुल समतल हो जाती है।

**चनक***-संज्ञा पुं० दे० "चना"।

**चनकना**-क्रि० अ० दे "चटकना"।

**चनखना**-क्रि० अ० [हिं० अनखना] खफा होना। चिढ़ना। चिटकना।

**चनन***—संज्ञा पुं० दे० "चंदन"।

**चना**-संज्ञा पुं० [ सं० चणक ] चैती फसल का एक प्रधान अन्न। बूट। छोला।

**मुहा०**—नाकों चने चबवाना=बहुत तंग करना। बहुत दिक या हैरान करना। लोहे का चना=अत्यन्त कठिन काम। विकट कार्य।

**चपकन**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपकना ] १. एक प्रकार का अंगा। अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि के लोहे या पीतल का वह साज जिसमें ताला लगाया जाता है।

**चपकना**-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

**चपकुलिश**-संज्ञा स्त्री० [ तु० ] १. कठिन स्थिति। अड़चल। फेर। कठिनाई। झंझट। अंडस। २. बहुत भीड़ भाड़।

**चपटना**-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

**चपटा**-वि० दे० "चिपटा"।

क्रि० स० [ हिं० चिपटा ] ठोककर चिपटा करना।

**चपड़ा**-संज्ञा पुं० [ हिं० चपटा ] १. साफ की हुई लाख का पत्तर। २. लाल रंग का एक कीड़ा।

**चपत**—संज्ञा पुं० [ सं० चर्पट ] १. तमाचा। थप्पड़। २. धक्का। हानि।

**चपना**—क्रि० अ० [ सं० चपन=कूटना, कुचलना ] १. दबना। कुचल जाना। २. लज्जा से गड़ जाना। लज्जित होना।

**चपनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपना ] १. छिछला कटोरा। कटोरी। २. दरियाई नारियल का कमंडल। ३. हाँड़ी का ढक्कन।

**चपरगट्टू**—वि० [ हिं० चौपट+गट्टा ] १.सत्यानाशी। चौपट। २. आफत का मारा। अभागा। ३. गुत्थमगुत्थ। एक में उलझा हुआ। ४. पकड़कर दबाया हुआ। मूर्ख।

**चपरना***—क्रि० स० [ अनु० चर-चर ] १. दे० "चुपड़ना"। २. परस्पर मिलाना। ३. धोखा देना। क्रि० अ० [ सं० चपल ] जल्दी करना।

**चपरा**—अव्य० [ हिं० चपरना ] झटपट। दे० "चपड़ा"।

**चपरास**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपरासी ] दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगाकर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं। बल्ला। बैज।

**चपरासी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० चप=बायाँ+रास्ता=दाहिना ] वह नौकर जो चपरास पहने हो। प्यादा। अरदली।

**चपल***—क्रि० वि० [ सं० चपल ] फुरती से।

**चपल**—वि० [ सं० ] १. स्थिर न रहनेवाला। चंचल। चुलबुला। २. बहुत काल तक न रहनेवाला। क्षणिक। ३. उतावला। जल्दबाज। ४. चालाक। धृष्ट।

**चपलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चञ्चलता। तेजी। जल्दी। २. धृष्टता। ढिठाई।

**चपला**—वि० स्त्री० [ सं० ] चञ्चला। फुरतीली। तेज।
संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लक्ष्मी। २ बिजली। चञ्चला। ३. आर्य्या छंद का एक भेद। ४ पुंश्चली स्त्री। ५. जीभ। जिह्वा।

**चपलाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

**चपलाना***—क्रि० अ० [सं० चपल] चलना। हिलना। डोलना।
क्रि० स० चलाना। हिलाना।

**चपली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपटा ] जूती।

**चपाक***—क्रि० वि० दे० "चटपट"।

**चपाती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चर्पटी ] वह पतली रोटी जो हाथ से बेलकर बढ़ाई जाती है।

**चपाना**—क्रि० स० [ हिं० चपना ] १. दबाने का काम कराना। दबवाना। २. लज्जित करना। झिपाना। शरमिंदा करना।

**चपेट**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपाना ] १. झोंका। रगड़ा। धक्का। आघात। २. थप्पड़। झापड़। तमाचा। ३. दबाव। संकट।

**चपेटना**—क्रि० स० [ हिं० चपेट ] १. दबाना। दबोचना। २. बलपूर्वक भगाना। ३. फटकार बताना।

डाँटना।

**चपेड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "चपेट"।

**चपेरना***—संज्ञा पुं० [हिं० चापना] दबाना।

**चप्पड़**—संज्ञा पुं० दे० "चिप्पड़"।

**चप्पन**—संज्ञा पुं० [हिं० चपना=दबाना] छिछला कटोरा।

**चप्पल**—संज्ञा पुं० [हिं० चपटा] वह जूता जिसकी एड़ी पर दीवार न हो।

**चप्पा**—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्पाद] १. चतुर्थांश। चौथा भाग। २. थोड़ा भाग। ३. चार अंगुल जगह। ४ थोड़ी जगह।

**चप्पी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चपना-दबना] धीरे धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया। चरण-सेवा।

**चप्पू**—संज्ञा पुं० [हिं० चाँपना] एक प्रकार का डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है। किलवारी।

**चबवाना**—क्रि० स० [हिं० चबाना का प्रे०] चबाने का काम कराना।

**चबाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चबाना] चबाने की क्रिया या भाव।
संज्ञा पुं० दे० "चबाई"।

**चबाना**—क्रि० स० [सं० चर्वण] १. दाँतों से कुचलना। कुचलना।

**मुहा०**—चबा चबाकर बातें करना=एक एक शब्द धीरे धीरे बोलना। मठार मठारकर बातें करना। चबे का चबाना=किये हुए काम को फिर फिर करना। पिष्टपेषण करना।
†२. दाँत से काटना। दरदराना।

**चबाव, चबावन***—संज्ञा पुं० दे० "चवाव"

**चबूतरा**—संज्ञा पुं० [सं० चत्वाल] १. बैठने के लिए चौरस बनाई हुई ऊँची जगह। चौतरा। †२. कोतवाली। बड़ा थाना।

**चबेना**—संज्ञा पुं० [हिं० चबाना] चबाकर खाने के लिए सूखा भुना हुआ अनाज। चर्वण। भूँजा।

**चबेनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चबाना] जलपान का सामान।

**चभाना**—क्रि० स० [हिं० चाभना का प्रे०] खिलाना। भोजन कराना।

**चभोरना**—क्रि० स० [हिं० चुभकी] १ डुबाना। गोता देना। २ तर करना।

**चमक**—संज्ञा स्त्री० [सं० चमत्कृत] १ प्रकाश। ज्योति। रोशनी। २. कांति। दीप्ति। आभा। ३. कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है। लचक। चिक।

**चमकनाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "चमक"।

**चमक-दमक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक+दमक अनु०] १. दीप्ति। आभा। २. तड़क-भड़क।

**चमकदार**—वि० [हिं० चमक+फ़ा० दार] जिसमें चमक हो। चमकीला।

**चमकना**—क्रि० अ० [हिं० चमक] १ प्रकाश या ज्योति से युक्त दिखाई देना। प्रकाशित होना। जगमगाना। २ कांति या आभा से युक्त होना। दमकना। ३ श्री-संपन्न होना। उन्नति करना। ४. जोर पर होना। बढ़ना। ५. चौंकना। भड़कना। ६. फुरती से खसक जाना। ७. एकबारगी दर्द हो उठना। ८ मटकना। उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव बताना। ९. कमर में चिक आना। लचक आना।

**चमकाना**—क्रि० स० [हिं० चमकना] १. चमकीला करना। चमक लाना। झलकाना। २. उज्ज्वल करना। साफ करना। ३ भड़काना। चौंकाना। ४. चिढ़ाना। खिझाना। ५. घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना। ६. भाव बताने के लिए उँगली आदि हिलाना। मटकाना।

**चमकारी***—संज्ञा स्त्री० दे० 'चमक'।
वि० चमकीली।

**चमकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक] कारचोबी में रुपहले या सुनहले तार के छोटे छोटे गोल चिपटे टुकड़े। सितारे। तारे।

**चमकीला**—वि० [हिं० चमक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चमकीली] १ जिसमें चमक हो। चमकनेवाला। २ भड़कीला। शानदार।

**चमकौवल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमक+औवल (प्रत्य०)] १ चमकाने की क्रिया। २ मटकाने की क्रिया।

**चमक्को**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमकना] १ चमकने मटकनेवाली स्त्री। चंचल और निर्लज्ज स्त्री। २ कुलटा स्त्री। ३. झगड़ालू स्त्री।

**चमगादड़**—संज्ञा पुं० [सं० चर्मचटक] एक उड़नेवाला बड़ा जंतु जिसके चारों पैर परदार होते हैं।

**चमचम**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बँगला मिठाई।
क्रि० वि० दे० "चमाचम"।

**चमचमाना**—क्रि० अ० [हिं० चमक] चमकना। प्रकाशमान होना। दमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमक लाना।

**चमचा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० चमस] [स्त्री० अल्पा० चमची] १. एक प्रकार की छोटी कलछी।

चम्मच । डोई । २. चिमटा ।

**चमजूई, चमजोई**—संज्ञा स्त्री० [सं० चर्मयूका] १. एक प्रकार की किल्ली । २ पीछा न छोड़नेवाली वस्तु ।

**चमड़ा**—संज्ञा पु [सं० चर्म] १ प्राणियों के सारे शरीर का ऊपरी आवरण । चर्म । त्वचा । जिल्द । खाल ।

**मुहा०**—चमड़ा उधेड़ना या खींचना =१. चमड़े को शरीर से अलग करना । २. बहुत मार मारना ।

२. प्राणियों के मृत शरीर पर से उतारा हुआ चर्म जिससे जूते, बैग आदि चीजें बनती हैं । खाल । चरसा ।

**मुहा०**—चमड़ा सिझाना=चमड़े को बबूल की छाल, सज्जी, नमक आदि के पानी में डालकर मुलायम करना ।

३. छाल, छिलका ।

**चमड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० 'चमड़ा' ।

**चमत्कार**—संज्ञा पुं० [सं० ] [ वि० चमत्कारी, चमत्कृत ] १. आश्चर्य । विस्मय । २. आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना । करामात । ३. अनूठापन । विचित्रता ।

**चमत्कारी**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० चमत्कारिणी ] १. जिसमें विलक्षणता हो । अद्भुत । २. चमत्कार या करामात दिखानेवाला ।

**चमत्कृत**—वि० [ सं० ] आश्चर्यित । विस्मित ।

**चमत्कृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आश्चर्य ।

**चमन**—संज्ञा पु० [ फा० ] १. हरी क्यारी । २. फुलवारी । छोटा बगीचा ।

**चमर**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० चमरी ] १. सुरागाय । २. सुरागाय की पूँछ का बना चँवर । चामर ।

**चमरख**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाम+रखा ] मूँज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है ।

**चमरबधुआ** संज्ञा पुं० दे० "खरतुआ" ।

**चमरशिखा**-संज्ञा स्त्री० [ सं० चाम+शिखा ] घोड़ों की कलगी ।

**चमरस**—संज्ञा पु० [हिं० चाम] जूते या चमड़े की रगड़से होने वाला घाव ।

**चमरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चमर" ।

**चमरौधा**—संज्ञा पु० दे० "चमौवा" ।

**चमला**—संज्ञा पुं० [देश०] [ स्त्री० अल्पा० चमली ] भीख माँगने का ठीकरा या पात्र ।

**चमस**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० अल्पा० चमसा ] १. सोमपान करने का चम्मच के आकार का यज्ञपात्र । २. कलछा । चम्मच ।

**चमाऊ***—संज्ञा पु० [ सं० चामर ] चँवर ।

**चमाचम**—वि० [ हिं० चमकना का अनु० ] उज्ज्वल कांति के साथ । झलक के साथ ।

**चमार**-संज्ञा पु० [ सं० चर्मकार ] [ स्त्री० चमारिन,चमारी ] एक जाति जो चमड़े का काम बनाती और झाड़ू देती है ।

**चमारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चमार] १ चमार की स्त्री । २. चमार का काम ।

**चमू**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सेना । फौज । २. नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे ।

**चमेली**-संज्ञा स्त्री० [ सं० चंपक बेलि ] १. एक झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिए प्रसिद्ध है । २. इस झाड़ी का फूल जो सफेद, छोटा और सुगंधित होता है ।

**चमोटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चाम+औटा ( प्रत्य० ) ] मोटे चमड़े का टुकड़ा जिसपर रगड़कर नाई छुरे की धार तेज करते हैं ।

**चमोटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाम+औटी ( प्रत्य० ) ] १. चाबुक । कोड़ा । २. पतली छड़ी । कमची । बेंत । ३. चमड़े का वह टुकड़ा जिसपर नाई छुरे की धार घिसते हैं ।

**चमौवा**-संज्ञा पुं० [हिं० चाम] एक तरह का भद्दा देशी जूता । चमरौधा ।

**चम्मच**-संज्ञा पुं० [ फा० । मि० । सं० चमस् ] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी ।

**चय**-संज्ञा पुं० [सं०] १ समूह । ढेर । राशि । २. धुस्स । टीला । ढूह । ३. गढ़ । किला । ४. धुस । कोट । चहारदीवारी । प्राकार । ५. बुनियाद । नींव । ६. चबूतरा । ७. चौकी । ऊँचा आसन ।

**चयन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इकट्ठा करने का कार्य्य । संग्रह । संचय । २. चुनने का कार्य्य । चुनाई । ३. यज्ञ के लिए अग्नि का संस्कार । ४. क्रम से लगाना या चुनना ।

*। संज्ञा पुं० दे० "चैन" ।

**चयना** *-क्रि० स० [ सं० चयन ] संचय करना । इकट्ठा करना ।

**चर**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा की ओर से नियुक्त किया हुआ वह मनुष्य जिसका काम प्रकाश्य या गुप्त रूप से अपने अथवा पराये राज्यों की भीतरी दशा का पता लगाना हो । गूढ़ पुरुष । भेदिया । जासूस । २. किसी विशेष कार्य्य के लिए भेजा हुआ आदमी । दूत । ३. वह जो चले । जैसे—अनु-

चर, बेचर । ४. खंजन पक्षी । ५. कौड़ी । कपर्दिका । ६ मंगल । भौम । ७. नदियों के किनारे या संगम-स्थान पर की वह गीली भूमि जो नदी के साथ बहकर आई हुई मिट्टी के जमने से बनती है । ८. दलदल । कीचड़ । ९. नदियों के बीच में बालू का बना हुआ टापू । रेता ।
वि० [ सं० ] १ आप से आप चलनेवाला । जंगम । २. एक स्थान पर न ठहरनेवाला । अस्थिर । ३. खानेवाला ।

**चरई**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चारा ] पशुओं के चारा खाने का गड्ढा ।
संज्ञा स्त्री० [ ? ] सितार आदि की खूँटी ।

**चरक**-संज्ञा पुं० [सं० ] १. दूत । चर । २. गुप्तचर । भेदिया । जासूस । ३. वैद्यक के एक प्रधान आचार्य । ४. मुसाफिर । बटोही । पथिक । ५. दे० "चटक" ।

**चरकटा**-संज्ञा पु० [ हिं० चारा + काटना ] चारा काटकर लानेवाला आदमी ।

**चरकना** *-क्रि० अ० दे० "चर-कना" ।

**चरका**-संज्ञा पु० [ फा० चरकः ] १. हलका घाव । जख्म । २. गरम धातु से दागने का चिह्न । ३. हानि । ४. धोखा । छल ।

**चरख**-संज्ञा पु० [ फा० चर्ख ] १. घूमनेवाला गोल चक्कर । चाक । २. खराद । ३. सूत कातने का चरखा । ४. कुम्हार का चाक । ५. गोफन । ढेलवाँस । ६. वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है । ७. लकड़बग्घा । ८. एक शिकारी चिड़िया ।

**चरखपूजा**-संज्ञा स्त्री० [ सं० चरक= एक बौद्ध तांत्रिक संप्रदाय + पूजा ] एक प्रकार की उग्र देवी पूजा जो चैत की संक्रांति को होती है ।

**चरखा**-संज्ञा पुं० [ फा० चर्ख ] १. घूमनेवाला गोल चक्कर । चरख । २. लकड़ी का यंत्र जिसकी सहायता से ऊन, कपास या रेशम आदि को कात-कर सूत बनाते हैं । रहट । ३ कुएँ से पानी निकालने का रहट । ४. सूत लपेटने की गराड़ी । चरखी । रील । ५ गराड़ी । घिरनी । ६ बड़ा या बेडौल पहिया । ७ गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकालते हैं । खड़खड़िया । ८ झंझट का काम ।

**चरखी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा० ] १. पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु । २. छोटा चरखा । ३ कपास ओटने की चरखी । बेलनी । ओटनी । ४ सूत लपेटने की फिरकी । ५ कुएँ से पानी खींचने आदि की गराड़ी । घिरनी ।

**चरग**-संज्ञा पुं० [ फा० चरग ] १. बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया । चरख । २ लकड़बग्घा नामक जंतु ।

**चरचना**-क्रि० स० [ सं० चर्चन ] १. देह में चंदन आदि का लगाना । २. लेपना । पोतना । ३ भाँपना । अनु-मान करना ।

**चरचराना**-क्रि० अ० [ अनु० चर-चर ] १. चर चर शब्द के साथ टूटना या जलना । २. घाव आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना । चर्राना ।
क्रि० स० चर चर शब्द के साथ ( लकड़ी आदि ) तोड़ना ।

**चरचा**-संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा" ।

**चरचारी***-संज्ञा पु० [ हिं० चरचा ] १. चर्चा चलानेवाला । २. निंदक ।

**चरजना***-क्रि० अ० [ सं० चर्चन ] १. बहकाना । भुलावा देना । बहाला देना । २ अनुमान करना । अंदाज लगाना ।

**चरण**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पग । पैर । पाँव । २ बड़ों का सान्निध्य । बड़ों का संग । ३ किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद । ४. किसी चीज का चौथाई भाग । ५ मूल । जड़ । ६ गोत्र । ७. क्रम । ८. आचार । ९ घूमने की जगह । १०. सूर्य आदि की किरण । ११ अनुष्ठान । १२ गमन । जाना । १३. भक्षण । चरने का काम ।

**चरणगुप्त**-संज्ञा पु० [ सं० ] एक प्रकार का चित्रकाव्य ।

**चरणचिह्न**-संज्ञा पु० [ सं० ] १ पैरों के तलए की रेखा । २ पैर का निशान ।

**चरणदासी**-संज्ञा स्त्री० [ सं० चरण+ दासी ] १ स्त्री । पत्नी । २ जूता । पनही ।

**चरणपादुका**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ खड़ाऊँ । पाँवड़ी । २ पत्थर आदि का बना हुआ चरण के आकार का पूजनीय चिह्न ।

**चरणपीठ**-संज्ञा पु० [ सं० ] चरण-पादुका ।

**चरणसेवा**-संज्ञा स्त्री० [ सं० चरण+ सेवा ] १ पैर दबाना । २. बड़ों की सेवा ।

**चरणसहस्र**-संज्ञा पु० [ सं० ] सूर्य ।

**चरणामृत**-संज्ञा पु० [ सं० ] १ वह पानी जिसमें किसी महात्मा या बड़े के चरण धोए गये हों । पादो-दक । २. एक में मिला हुआ दूध,

दही, घी, शक्कर और शहद जिसमें किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो।

**चरणायुध**-संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।

**चरणोदक**-संज्ञा पुं० [सं०] चरणामृत।

**चरता**-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चर होने या चलने का भाव। २. पृथ्वी।

**चरती**-संज्ञा पुं० [हिं० चरना=खाना] व्रत के दिन उपवास न करनेवाला।

**चरन**-संज्ञा पुं० दे० "चरण"।

**चरना**-क्रि० स० [सं० चर=चलना] पशुओं का घूम-घूमकर घास चारा आदि खाना।
क्रि० अ० [सं० चर] घूमना फिरना।
संज्ञा पुं० [सं० चरण=पैर] काछा।

**चरनि**-संज्ञा स्त्री० [सं० चर+गमन] चाल।

**चरनी**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १. पशुओं के चरने का स्थान। चरी। चरागाह। २. वह नाद जिसमें पशुओं के खाने के लिए चारा दिया जाता है। ३. पशुओं का आहार, घास, चारा आदि।

**चरपट**-संज्ञा पुं० [सं० चर्पट] १. चपत। तमाचा। थप्पड़। २. चाई। उचक्का। ३. एक छंद। चर्पट।

**चरपरा**-वि० [अनु०] [स्त्री० चरपरी] स्वाद में तीक्ष्ण। झालदार। तीता।

**चरपराहट**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चरपरा] १. स्वाद की तीक्ष्णता। झाल। २. घाव आदि की जलन। ३. द्वेष। डाह। ईर्ष्या।

**चरफराना***-क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

**चरब**-वि० [फ़ा० चर्ब] तेज। तीखा।

**चरबन**-संज्ञा पुं० दे० "चबेना"।

**चरबाँक, चरबाक**-वि० [सं० चार्वाक] १. चतुर। चालाक। २. शोख। निडर।

**चरबा**-संज्ञा पुं० [फ़ा० चरबः] प्रतिमूर्ति। नकल। खाका।

**चरबी**-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सफेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और बहुत से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है। मेद। वसा। पीव।

**मुहा०**—चरबी चढ़ना=मोटा होना। चरबी छाना=१. बहुत मोटा हो जाना। शरीर में मेद बढ़ जाना। २. मदांध होना।

**चरम**-वि० [सं०] अंतिम। सबसे बढ़ा हुआ। चोटी का।

**चरमकरण**-[संज्ञा पुं० [सं० चरम+करण] उत्तम कृत्य। पुण्य कार्य।

**चरमर**-संज्ञा पुं० [अनु०] तनी या चीमड़ वस्तु (जैसे—जूता, चारपाई) के दबने या मुड़ने का शब्द।

**चरमराना**-क्रि० अ० [अनु०] चरमर शब्द होना।
क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना।

**चरमवती***-संज्ञा स्त्री० दे० "चर्मण्वती"।

**चरमावर्तन**-संज्ञा पुं० [सं० चरम+आवर्त] अंतिम फेरा।

**चरवाई**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चराना] १. चराने का काम। २. चराने की मजदूरी।

**चरवाना**-क्रि० स० [हिं० चराना का प्रे०] चराने का काम दूसरे से कराना।

**चरवारा***-वि० दे० "चरवाहा"।

**चरवाहा**-संज्ञा पुं० [हिं० चरना+वाहा=वाहक] गाय, भैंस आदि चरानेवाला।

**चरवाही**-संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई"।

**चरवैया**†-संज्ञा पुं० [हिं० चरना] १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।

**चरस**-संज्ञा पुं० [सं० चर्म] १. भैंस या बैल आदि के चमड़े का वह बहुत बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिए पानी निकाला जाता है। चरसा। तरसा। पुर। मोट। २. भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म। ३. गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चेप, जिसका धुआँ नशे के लिए चिलम पर पीते हैं।
संज्ञा पुं० [फ़ा० चर्ज] आसाम प्रांत में होनेवाला एक पक्षी। बन-मोर। चीनी मोर।

**चरसा**-संज्ञा पुं० [हिं० चरस] १. भैंस, बैल आदि का चमड़ा। २. चमड़े का बना हुआ बड़ा थैला। ३. चरस। मोट।

**चरसी**-संज्ञा पुं० [हिं० चरस+ई (प्रत्य०)] १. चरस द्वारा खेत सींचनेवाला। २. वह जो चरस पीता हो।

**चराई**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चरना] १. चरने का काम। २. चराने का काम या मजदूरी।

**चरागाह**-संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों। चरनी। चरी।

**चराचर**-वि० [सं०] १. चर और अचर। जड़ और चेतन। २. जगत्। संसार।

**चराना**—क्रि० स० [हिं० चरना] १. पशुओं को चारा खिलाने के लिए खेतों या मैदानों में ले जाना। २. बातों में बहलाना।

**चराचर**†*—संज्ञा स्त्री० [देश०]

अर्थ की बात। बकवाद।

**चरिंदा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० ] चलनेवाला जीव। पशु। हैवान।

**चरित**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. रहन-सहन। आचरण। २. काम। करनी। करतूत। कृत्य। ३. किसी के जीवन की विशेष घटनाओं या कार्यों आदि का वर्णन। जीवन चरित। जीवनी।

**चरितनायक**—संज्ञा पुं० [सं० ] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।

**चरितार्थ**—वि० [सं० ] [ संज्ञा चरितार्थता ] १. जिसके उद्‌देश्य या अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो। कृतकृत्य। कृतार्थ। २. जो ठीक ठीक घटे।

**चरित्तर**-संज्ञा पुं० [सं० चरित्र ] १. धूर्तता की चाल। नखरेबाजी। नकल।

**चरित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वभाव। २. वह जो किया जाय। कार्य्य। ३. करनी। करतूत। ४. चरित।

**चरित्रनायक**—संज्ञा पुं० दे० "चरितनायक"।

**चरित्रवान्**—वि० [सं० ] [स्त्री० चरित्रवती ] अच्छे चरित्रवाला। उत्तम आचरणवाला।

**चरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चर या हिं० चरा] १. पशुओं के चरने की जमीन। २. छोटी ज्वार के हरे पेड़ जो चारे के काम में आते हैं। कड़वी।

**चरु**—संज्ञा पुं० [सं० ] [वि० चरव्य] १ हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न। हव्यान्न। हविष्यान्न। २. वह पात्र जिसमें उक्त अन्न पकाया जाय। ३ पशुओं के चरने की जमीन। ४. यज्ञ।

**चरखला**|—संज्ञा पुं० [ हिं० चरखा] सूत कातने का चरखा।

**चरुपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पात्र जिसमें हविष्यान्न रखा या पकाया जाय।

**चरेरा**—वि० [ चरचर से अनु० ] [ स्त्री० चरेरी ] १. कड़ा और खुरदुरा। २. कर्कश।

**चरेरू**—संज्ञा पुं० [ हिं० चरना ] चिड़िया।

**चरैया**—संज्ञा पुं० [हिं० चरना] १. चरानेवाला। २. चरनेवाला।

**चर्चक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चर्चा करनेवाला।

**चर्चन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चर्चा। २. लेपन।

**चर्चरिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाटक में वह गान जो किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिकापात होने पर होता है।

**चर्चरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार का गाना जो वसंत में गाया जाता है। फाग। चाँचर। २. होली की धूम-धाम या हुल्लड़। ३. एक वर्णवृत्त। ४. करतलध्वनि। ताली बजाने का शब्द। ५. चर्चरिका। ६ आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

**चर्चा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ जिक्र। वर्णन। बयान। २. वार्त्तालाप। बातचीत। ३ किंवदंती। अफवाह। ४. लेपन। पोतना। ५. गायत्रीरूपा महादेवी। दुर्गा।

**चर्चिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चर्चा। जिक्र। २. दुर्गा।

**चर्चित**—वि० [ सं० ] १. लगा या लगाया हुआ। पोता हुआ। लेपित। २. जिसकी चर्चा हो।

**चर्पट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चपत। थप्पड़। २ हाथ की खुली हुई हथेली।

**चर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चमड़ा। २. ढाल। सिपर।

**चर्मकशा, चर्मकषा**-संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य। चमरखा।

**चर्मकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० चर्मकारी ] चमड़े का काम करनेवाली जाति। चमार।

**चर्मकील**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बवासीर। २. एक रोग जिसमें शरीर में एक नुकीला मसा निकल आता है न्यच्छ।

**चर्मचक्षु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साधारण चक्षु। ज्ञान-चक्षु का उलटा।

**चर्मण्वती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंबल नदी। २. केले का पेड़।

**चर्मदंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक।

**चर्मदृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साधारण दृष्टि। आँख। ज्ञानदृष्टि का उलटा।

**चर्म-पादुका**—संज्ञा स्त्री० [ सं०] जूता।

**चर्मवसन**- संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**चर्य्य**—वि० [ सं० ] जो करने योग्य हो।

**चर्य्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह जो किया जाय। आचरण। २. आचार। चाल-चलन। ३. काम-काज। ४. वृत्ति। जीविका। ५. सेवा। ६. चलना। गमन।

**चर्राना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. लकड़ी आदि का टूटने या तड़कने के समय चर चर शब्द करना। २. घाव पर खुजली या सुरसुरी मिली हुई हलकी पीड़ा होना। ३. खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव होना। ४. किसी बात की वेगपूर्ण इच्छा होना।

**चर्री**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चर्राना ] लगती हुई व्यंगपूर्ण बात। चुटीली बात।

**चर्वण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० चर्व्य ] १. चबाना। २. वह वस्तु जो चबाई जाय। ३. भूना हुआ दाना जो चबाकर खाया जाता है। चबैना। बहुरी। दाना।

**चर्वित**—वि० [ सं० ] चबाया हुआ।

**चर्वितचर्वण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी किए हुए काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना। पिष्टपेषण।

**चल**—वि० [ सं० ] १. चंचल। अस्थिर। २. चलता हुआ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पारा। २. दोहा छंद का एक भेद। ३ शिव। ४. विष्णु।

**चलकना**—क्रि० अ० दे० "चमकना"।

**चलचलाव**—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. प्रस्थान। यात्रा। चलाचली। २. मृत्यु।

**चल-चित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वे चित्र जो परदे पर सजीव प्राणियों की तरह चलते-फिरते और बोलते दिखाई देते हैं। सिनेमा।

**चलचूक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चल=चंचल+चूक=भूल ] धोखा। छल। कपट।

**चलता**—वि० [ हिं० चलना ] [स्त्री० चलती ] १ चलता हुआ। गमन करता हुआ।

**मुहा०**—चलता करना=१. हटाना। भगाना। भेजना। २. किसी प्रकार निपटाना। चलता बनना=चल देना।

२. जिसका क्रमभंग न हुआ हो। जो बराबर जारी हो। ३. जिसका रिवाज बहुत हो। प्रचलित। ४. काम करने योग्य। जो अशक्त न हुआ हो। ५. चालाक।

संज्ञा पुं० [ देश० ] १. एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें बेल के से फल लगते हैं। २. कवच। झिलम।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चल होने का भाव। चंचलता। अस्थिरता।

**चलता खाता**—संज्ञा पुं० [ हिं० चलना+खाता ] बैंक आदि का वह खाता जिसमें हर समय लेन-देन हो सकता हो।

**चलती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चलना ] मान-मर्यादा। प्रभाव। अधिकार।

**चलतू**—वि० दे० "चलता"।

**चलदल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीपल का वृक्ष।

**चलन**—संज्ञा पुं० [ हिं० चलना ] १. चलने का भाव। गति। चाल। २. रिवाज। रस्म। रीति। ३ किसी चीज का व्यवहार, उपयोग या प्रचार।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ज्योतिष में विषुवत् की उस समय की गति, जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

संज्ञा पुं० [ सं० ] गति। भ्रमण।

**चलन कलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिन-रात के घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है। एक प्रकार का गणित।

**चलनसार**—वि० [ हिं० चलन+सार (प्रत्य०) ] १. जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २. जो अधिक दिनों तक काम में लाया जा सके। टिकाऊ।

**चलना**—क्रि० अ० [सं० चलन] १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। गमन करना। प्रस्थान करना।

**मुहा०**—चलते बैल को अरई (या आर) लगाना=किसी के काम करते रहने पर भी ताकीद करके उसे तंग करना।

२. हिलना-डोलना।

**मुहा०**—पेट चलना=१. दस्त आना। २. निर्वाह होना। गुजर होना। मन चलना=इच्छा होना। लालसा होना। चल बसना=मर जाना। अपने चलते=भरसक। यथाशक्ति।

३. कार्य-निर्वाह में समर्थ होना। निभना। ४. प्रवाहित होना। बहना। ५. वृद्धि पर होना। बढ़ना। ६. किसी कार्य में अग्रसर होना। किसी युक्ति का काम में आना। ७. आरंभ होना। छिड़ना। ८. जारी रहना। क्रम या परंपरा का निर्वाह होना। ९. बराबर काम देना। टिकना। ठहरना। १०. लेन देन के काम में आना। ११. प्रचलित होना। जारी होना। १२. प्रयुक्त होना। व्यवहृत होना। काम में लाया जाना। १३. तीर, गोली आदि का छूटना। १४. लड़ाई-झगड़ा होना। विरोध होना। १५. पढ़ा जाना। बाँचा जाना। १६. कारगर होना। उपाय लगना। वश चलना। १७. आचरण करना। व्यवहार करना। १८. निगला जाना। खाया जाना।

क्रि० स० शतरंज या चौसर आदि खेलों में किसी मोहरे या गोटी आदि को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना; अथवा ताश या गंजीफे आदि खेलों में किसी पत्ते को सब खेलनेवालों के सामने रखना।

**चलना**—संज्ञा पुं० [हिं० चलनी] बड़ी चलनी।
**चलनिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "चलन"।
**चलनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "छलनी"।
**चलपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] पीपल का वृक्ष।
**चलवाँत**—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] पैदल। सिपाही।
**चलवाना**—क्रि० स० [हिं० चलना का प्रे०] १. चलाने का कार्य्य दूसरे से कराना। २. चलाने का काम कराना।
**चलविचल**—वि० [सं० चल+विचल] १. जो ठीक जगह से इधर-उधर हो गया हो। उखड़ा-पुखड़ा। बेठिकाने। २ जिसके क्रम या नियम का उल्लंघन हुआ हो।
संज्ञा स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन।
**चलवैया**†—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] चलनेवाला।
**चला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली। २. पृथ्वी। भूमि। ३. लक्ष्मी।
**चलाऊ**—वि० [हिं० चलना] जो बहुत दिनों तक चले। मजबूत। टिकाऊ।
**चलाक**—वि० दे० "चालाक"।
**चलाका**†*—संज्ञा स्त्री० [सं० चला] बिजली।
**चलाचल***—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलन] १. चलाचली। २. गति। चाल।
वि० [सं०] १. चंचल। चपल। २ चल विचल।
**चलाचली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १. चलने के समय की घबराहट, धूम या तैयारी। रवारवी। २. बहुत से लोगों का प्रस्थान। ३. चलने की तैयारी या समय।
वि० जो चलने के लिए तैयार हो।

**चलान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चलना] १ भेजे जाने या चलने की क्रिया। २. भेजने या चलाने की क्रिया। ३. किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए न्यायालय में भेजा जाना। ४. माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। ५. भेजा या आया हुआ माल। ६. वह कागज जिसमें किसी की सूचना के लिए भेजी हुई चीजों की सूची आदि हो। रवन्ना।
**चलाना**—क्रि० स० [हिं० चलना] १. किसी को चलने में लगाना। चलने के लिए प्रेरित करना। २. गति देना। हिलाना-डुलाना। हरकत देना।
**मुहा०**—किसी की चलाना=किसी के बारे में कुछ कहना। मुँह चलाना=खाना। भक्षण करना। हाथ चलाना=मारने के लिए हाथ उठाना। मारना पीटना।
३. कार्य्य-निर्वाह में समर्थ करना। निभाना। ४.प्रवाहित करना। बहाना। ५. वृद्धि करना। उन्नति करना। ६. किसी कार्य्य को अग्रसर करना। ७. आरंभ करना। छेड़ना। ८. जारी रखना। ९. बराबर काम में लाना। टिकाना। १०. व्यवहार में लाना। लेन-देन के काम में लाना। ११. प्रचलित करना। प्रचार करना। १२. व्यवहृत करना। प्रयुक्त करना। १३. तीर, गोली आदि छोड़ना। १४. किसी चीज से मारना। १५. किसी व्यवसाय की वृद्धि करना।
**चलापन**—संज्ञा पुं० [हिं० चला+पन] चंचलता।
**चलायमान**—वि० [सं०] १. चलनेवाला। जो चलता हो। २. चंचल। ३. विचलित।

**चलाव**†—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. चलने का भाव। २. यात्रा।
**चलावना**—क्रि० स० दे० "चलाना"
**चलावा**—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] १. रीति। रस्म। रवाज। २. आचरण। चाल-चलन। ३. द्विरागमन। गौना। मुकलावा। ४. एक प्रकार का उतारा जो प्रायः गाँवों में भयंकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है।
**चलित**—वि० [सं०] १. अस्थिर। चलायमान। २. चलता हुआ।
**चलैया**†—संज्ञा पुं० [हिं० चलना] चलनेवाला
**चवन्नी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ (चार का अल्पा०+आना+ई (प्रत्य०)] चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का।
**चवर्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चवर्गीय] च से ञ तक के अक्षरों का समूह।
**चवा***—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौबाई] एक साथ सब दिशाओं से बहनेवाली वायु।
**चवाई**—संज्ञा पुं० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] १. बदनामी की चर्चा फैलानेवाला। निंदक। चुगलखोर।
**चवाव**—संज्ञा पुं० [हिं० चौवाई] १ चारों ओर फैलनेवाली चर्चा। प्रवाद। अफवाह। २ बदनामी। निन्दा की चर्चा।
**चव्य**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ओषधि।
**चश्मदीद**—वि० [फ़ा०] जो आँखों से देखा हुआ हो।
**यौ०**—चश्मदीद गवाह=वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे।

**चश्म-नुमाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आँखें दिखाना । घुड़कना ।

**चश्मा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा ] १. कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर के तालों का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने या ठंढक रखने के लिए पहना जाता है । ऐनक । २. पानी का सोता । सोत ।

**चष***—संज्ञा पुं० [ सं० चक्षु ] आँख ।

**चषक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मद्य पीने का पात्र । २. मधु । शहद ।

**चषचोल***—संज्ञा पुं० [ हिं चष + चोल = वस्त्र ] आँख की पलक ।

**चसक**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] हलका दर्द ।

*संज्ञा पुं० दे० "चषक" ।

**चसकना**—क्रि० अ० [ हिं० चसक ] हलकी पीड़ा होना । टीसना ।

**चसका**—संज्ञा पुं० [ सं० चषण ] १ किसी वस्तु या कार्य से मिला हुआ आनद, जो उस चीज के पुनः पाने या उस काम के पुनः करने की इच्छा उत्पन्न करता है । शौक । चाट । २. आदत । लत ।

**चसना**—क्रि० अ० [ हिं० चाशनी ] दो चीजों का एक में सटना । लगना । चिपकना ।

यौ०—चसजाना=मरजाना ।

**चसम***—संज्ञा स्त्री० दे० "चश्म" ।

**चसमा ***—दे० चश्मा ।

**चस्पाँ**—वि० [ फ़ा० ] चिपकाया हुआ ।

**चह**—संज्ञा पुं० [ सं० चय ] नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिए चबूतरा । घाट ।

*।—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० चाह ] गड्ढा ।

**चहक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चहकना ] पक्षियों का मधुर शब्द । चिड़ियों का चह चह ।

**चहकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. पक्षियों का आनंदित होकर मधुर शब्द करना । चहचहाना । २. उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना ।

**चहकार**—संज्ञा स्त्री० दे० "चहक" ।

**चहकारना**।—क्रि० अ० दे० "चहकना" ।

**चहचहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चहचहाना ] १. 'चहचहाना' का भाव । चहक । २. हँसी-दिल्लगी । ठट्ठा ।

वि० १. जिसमें चहचह शब्द हो । उल्लास । शब्द-युक्त । २. आनद और उमंग उत्पन्न करनेवाला । बहुत मनोहर । ३. ताजा ।

**चहचहाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] पक्षियों का चहचह शब्द करना । चहकना ।

**चहनना**।—क्रि० स० [ अनु० ] अच्छी तरह खाना ।

**चहना***।—क्रि० स० दे० "चाहना" ।

**चहनि**।*—संज्ञा स्त्री० दे० "चाह" ।

**चहबच्चा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० चाह = कुआँ + बच्चा ] १ पानी भर रखने का छोटा गड्ढा या हौज । २. धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना ।

**चहर**।*—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चहल ] १. आनंद की धूम । रौनक । २. शोर-गुल । हल्ला ।

वि० १. बढ़िया । उत्तम । २. चुलबुला ।

**चहरना**।*—क्रि० अ० [ हिं० चहल ] आनंदित होना । प्रसन्न होना ।

**चहल**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] कीचड़ । कीच ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० चहचहाना ] आनंद की धूम । आनंदोत्सव । रौनक ।

**चहलकदमी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चहल + फ़ा० कदम ] धीरे धीरे टहलना या घूमना ।

**चहल-पहल**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने-जाने की धूम । अबादानी । २. रौनक ।

**चहला**।—संज्ञा पुं० [ सं० चिक्खिल ] कीचड़ ।

**चहारदीवारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] किसी स्थान के चारों ओर की दीवार । प्राचीर ।

**चहारुम**—वि० [ फ़ा० ] किसी वस्तु के चार भागों में से एक भाग । चतुर्थांश ।

**चही, चहा**—क्रि० अ० [ ? ] छुक-छिपकर देखना ।

**चहुँ***—वि० [ हिं० चार ] चार । चारों ।

**चहुँवान**—संज्ञा पुं० दे० "चौहान" ।

**चहूँ**—वि० दे० "चहुँ"

**चहूँटना**।—क्रि० अ० [हिं० चिमटना] सटना । लगना । मिलना ।

**चहेटना**—क्रि० स० [ ? ] १. गारना । निचोड़ना । २ दे० "चपेटना" ।

**चहेता**—वि० [ हिं० चाहना + एता (प्रत्य० ) ] [ स्त्री० चहेती ] जिसे चाहा जाय । प्यार ।

**चहोरना**।—क्रि० अ० [ देश० ] १ पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना । रोपना । बैठाना । २. सहेजना । सँभालना ।

**चाँई**—वि० [ देश० ] १. ठग। उचक्का। २. होशियार। छली। चालाक।

**चाँक**—संज्ञा पु० [ हिं० चौ०=चार+अंक=चिह्न ] काठ की वह थापी जिससे खलिहान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाते हैं।

**चाँकना**—क्रि० स० [ हिं० चाँक ] १. खलिहान में अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। २. सीमा घेरना। हद खींचना। हद बाँधना। ३. पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

**चाँगला**†—वि० [ सं० चंग, हिं० चंगा ] १. स्वस्थ। तंदुरुस्त। हृष्ट-पुष्ट। २. चतुर।
संज्ञा पुं० घोड़ों का एक रंग।

**चाँचर, चाँचरि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चर्चरी ] वसंत ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। चर्चरी राग।

**चाँचु***—संज्ञा पुं० दे० "चोंच"।

**चाँटा**†—संज्ञा पु० [ हिं० चिमटना ] [ स्त्री० चाँटी ] बड़ी च्यूँटी। चिउँटा।
संज्ञा पुं० [ अनु० चट ] थप्पड़। तमाचा।

**चाँटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "च्यूँटी"।

**चाँड़**—वि० [ सं० चंड ] १ प्रबल। बलवान्। २. उग्र। उद्धत। शोख। ३. बढ़ाचढ़ा। श्रेष्ठ। ४. तृप्त। संतुष्ट।
संज्ञा स्त्री० [ सं० चंड=प्रबल ] १. भार सँभालने का खंभा। टेक। थूनी। २. किसी अभावपूर्ति के निमित्त आकुलता। भारी जरूरत। गहरी चाह।

**मुहा०—चाँड़** सरना=इच्छा पूरी होना।
३. दबाव। संकट। ४. प्रबलता। अधिकता। बढ़ती।

**चाँड़ना**—क्रि० स० [ ? ] १. खोदना। खोदकर गिराना। २. उखाड़ना। उजाड़ना। ३. जोर से दबाना।

**चांडाल**—संज्ञा पु० [ सं० ] [ स्त्री० चांडाली, चांडालिन ] १. एक अत्यंत नीच जाति। डोम। श्वपच। २ पतित मनुष्य। ( गाली )

**चांडिला***†—वि० [ सं० चंड ] [ स्त्री० चांडिली ] १. प्रचंड। प्रबल। उग्र। २. उद्धत। नटखट। शोख। ३. बहुत अधिक।

**चाँद**—संज्ञा पु० [ सं० चंद्र ] १ चन्द्रमा।

**मुहा०—**चाँद का टुकड़ा=अत्यंत सुन्दर मनुष्य। चाँद पर थूकना=किसी महात्मा पर कलंक लगाना, जिसके कारण स्वयं अपमानित होना पड़े। किधर चाँद निकला है?=आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े?
२. चान्द्र मास। महीना। ३ द्वितीया के चन्द्रमा के आकार का एक आभूषण। ४ चाँदमारी का काला दाग जिसपर निशाना लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।

**चाँदतारा**—संज्ञा पु०[हिं० चाँद+तारा] १. एक प्रकार की बारीक मलमल जिसपर चमकीली बूटियाँ होती हैं। २. एक प्रकार की पतंग या कनकौआ।

**चाँदना**—संज्ञा पु० [ हिं० चाँद ] १. प्रकाश। उजाला। २. चाँदना।

**चाँदनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाँद ] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चंद्रमा का उजाला। चन्द्रिका।

**मुहा०—**चाँदनी का खेत=चंद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। चार दिन की चाँदनी=थोड़े दिन रहनेवाला सुख या आनंद।
२. बिछाने की बड़ी सफेद चद्दर। सफेद फर्श। ३. ऊपर तानने का सफेद कपड़ा।

**चाँदबाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० चाँद+बाला ] कान में पहनने का एक गहना।

**चाँदमारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाँद+मारना ] दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।

**चाँदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाँद ] एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन इत्यादि बनते हैं। रजत।

**मुहा०**—चाँदी का जूता=घूस। रिश्वत। चाँदी काटना=खूब रुपया पैदा करना।

**चांद्र**—वि० [ सं० ] चंद्रमा-संबंधी।
संज्ञा पु० [ सं० ] १. चान्द्रायण व्रत। २. चन्द्रकांत मणि। ३. अदरख।

**चांद्र मास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक का समय।

**चांद्रायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार आहार घटाना-बढ़ाना पड़ता है। २. एक मात्रिक छंद।

**चाँप**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चपना

१. चँप या दब जाने का भाव। दबाव। २. रेल-पेल। धक्का। ३. किसी बलवान् की प्रेरणा। ४. बंदूक का वह पुरजा जिसके द्वारा कुंदे से नली जुड़ी रहती है।

†*संज्ञा पुं० [ हिं० चंपा ] चंपा का फूल।

**चाँपना**—क्रि० स० [ सं० चपन ] दबाना।

**चाँयँ चाँयँ**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] व्यर्थ की बकवाद। बकबक।

**चाइ,चाउ***—संज्ञा पुं० दे० "चाव"।

**चाक**—संज्ञा पुं० [ सं० चक्र ] १. कील पर घूमता हुआ वह मंडलाकार पत्थर जिसपर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलाल-चक्र। २. पहिया। ३. कुएँ से पानी खींचने की चरखी। गराड़ी। घिरनी। ४ थापा जिससे खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं। ५. मंडलाकार चिह्न की रेखा।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दरार। चीर।

वि० [ तु० चाक ] दृढ़। मजबूत। पुष्ट। २. हृष्ट पुष्ट। तंदुरुस्त।

यौ०—चाक चौबंद=१. हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। २. चुस्त। चालाक। फुरतीला। तत्पर।

**चाकचक**—वि० [ तु० चाक + अनु० चक ] चारों ओर से सुरक्षित। दृढ़। मजबूत।

**चाकचक्य**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चमक-दमक। चमचमाहट। उज्ज्वलता। २. शोभा। सुन्दरता।

**चाकना**—क्रि० स० [ हिं० चाँक ] १. सीमा बाँधने के लिए किसी वस्तु की रेखा या चिह्न खींचकर चारों ओर से घेरना। हद खींचना। २. खलियान में अनाज के राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। ३. पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

**चाकर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ स्त्री० चाकरानी ] दास। भृत्य। सेवक। नौकर।

**चाकरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सेवा। नौकरी।

**चाकसू**—संज्ञा पुं० [ सं० चक्षुष्या ] १ बनकुलथी। २. निर्मली।

**चाकी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की"। संज्ञा स्त्री० [ सं० चक्र ] बिजली। वज्र।

**चाकू**—संज्ञा पुं० [ तु० ] छुरी।

**चाक्षुष**—वि० [ सं० ] १. चक्षु-संबंधी। २. जिसका बोध नेत्रों से हो। चक्षुर्ग्राह्य।

संज्ञा पुं० १. न्याय में ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध नेत्रों द्वारा हो। २ छठे मनु का नाम।

**चाखना**†—क्रि० स० दे० "चखना"।

**चाचर, चाचरि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चर्चरी ] १ होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। चर्चरी राग। २. होली में होनेवाले खेल-तमाशे। होली की धमार। ३. उपद्रव। दंगा। हलचल। हल्ला-गुल्ला।

**चाचरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चर्चरी ] योग की एक मुद्रा।

**चाचा**—संज्ञा पुं० [ सं० तात ] [ स्त्री० चाची ] काका। पितृव्य। बाप का भाई।

**चाट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाटना ] १. चटपटी चीजों के खाने या चाटने की प्रबल इच्छा। २. एक बार किसी वस्तु का आनन्द लेकर फिर उसी का आनन्द लेने की चाह। चसका। शौक। लालसा। ३. प्रबल इच्छा। कड़ी चाह। लोलुपता। ४. लत। आदत। बान। टेव। ५. चरपरी और नमकीन खाने की चीजें। गजक।

**चाटना**—क्रि० स० [ अनु० चट चट ] १. खाने या स्वाद लेने के लिए किसी वस्तु को जीभ से उठाना। जीभ लगाकर खाना। २. पोंछकर खा लेना। चट कर जाना। ३ (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना।

यौ०—चूमना चाटना=प्यार करना।

४. कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना।

**चाटु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मीठी बात। प्रिय बात। २. खुशामद। चापलूसी।

**चाटुकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खुशामद करनेवाला। चापलूस। खुशामदी।

**चाटुकारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चाटुकार + ई (प्रत्य०) ] झूठी प्रशंसा या खुशामद।

**चाड़***—संज्ञा स्त्री० दे० "चाँड़"।

**चाड़ा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० चाड़ ] [ स्त्री० चाड़ी ] प्रेमपात्र। प्यारा। प्रिय।

**चाणक्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजनीति के आचार्य्य एक मुनि जो पाटलिपुत्र के सम्राट् चंद्रगुप्त के मंत्री थे और कौटिल्य नाम से भी प्रसिद्ध हैं।

**चातक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० चातकी ] पपीहा नामक पक्षी।

**चातर**†—वि० दे० "चातुर"।

**चातुर**—वि० [सं०] १. नेत्रगोचर। २. चतुर। ३. खुशामदी। चापलूस।

**चातुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चतुरता। चतुराई। व्यवहार-दक्षता। २. चालाकी।

**चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक**—संज्ञा पुं० [सं०] चार पदार्थ—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

**चातुर्मासिक**—वि० [सं०] चार महीने में होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि)।

**चातुर्मास्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चार महीने में होनेवाला एक वैदिक यज्ञ। २. चार महीने का एक पौराणिक व्रत जो वर्षाकाल में होता है।

**चातुर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] चतुराई।

**चातुर्वर्ण्य**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के चारों वर्ण।

**चात्रिक***†—संज्ञा पुं० दे० "चातक"।

**चादर**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. कपड़े का लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढने के काम में आता हे। २. हलका ओढना। चौड़ा दुपट्टा। पिछौरी। ३. किसी धातु का बड़ा चौखूँटा पत्तर। चद्दर। ४. पानी की चौड़ी धार जो कुछ ऊपर से गिरती हो। ५ फूलों की राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढ़ाई जाती है। (मुसल०)

**चान***—संज्ञा पुं० दे० "चंद्रमा"

**चानक***—क्रि० वि० दे० "अचानक"।

**चानन***—संज्ञा पुं० दे० "चंदन"।

**चानना***—क्रि० अ० [हिं० चाव+ना (प्रत्य०)] चाव में आना। उमग में आना।

**चाप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २ गणित में आधा वृत्त-क्षेत्र। ३. वृत्त की परिधि का कोई भाग। ४. धनु राशि।

संज्ञा स्त्री० [सं० चाप=धनुष] १. दबाव। २. पैर की आहट।

**चापट, चापड़**—वि० [हिं० चिपटा] १. दबाया या कुचला हुआ। २ बराबर। समतल। ३. बरबाद। चौपट।

**चापना**†—क्रि० स० [सं० चाप=धनुष] दबाना।

**चापल***—वि० दे० "चपल"।

**चापलता***—संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

**चापलूस**—वि० [फ़ा०] खुशामदी। लल्लो-चप्पो करनेवाला। चाटुकार।

**चापलूसी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] खुशामद।

**चापल्य**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चपलता।

**चाब**—संज्ञा स्त्री० [सं० चव्य] १. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषध के काम में आती है। चाव्य। २. इस पौधे का फल।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चाबना] १. चौखूँटे दाँत जिनसे भोजन कुचल कर खाया जाता है। डाढ। चौभड़। २. बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

**चाबना**—क्रि० स० [सं० चर्वण] १. चबाना। २. खूब भोजन करना। खाना।

**चाबी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चाप] कुंजी। ताली।

**चाबुक**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कोड़ा। हंटर। सोटा। २. जोश दिलानेवाली बात।

**चाबुकसवार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [संज्ञा चाबुकसवारी] घोड़े को चलना सिखाने वाला।

**चाभना**—क्रि० स० [हिं० चाबना] खाना।

**चाभी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चाबी"।

**चाम**—संज्ञा पुं० [सं० चर्म] चमड़ा खाल।

**मुहा०**—चाम के दाम चलाना=अपनी चलती में अन्याय करना। अंधेर करना।

**चामर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चँवर। चवर। चौंरी। २. मोरछल। ३. एक वर्णवृत्त।

**चामिल***—संज्ञा स्त्री० दे० "चंबल"।

**चामीकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २ धतूरा।

वि० स्वर्णमय। सुनहरा।

**चामुंडा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिन्होंने चंड मुंड नामक दैत्यों का वध किया था।

**चाय**—संज्ञा स्त्री० [चीनी चा] १ एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढा चीनी के साथ पीने की चाल अब प्रायः सर्वत्र है। २. चाय उबाला हुआ पानी।

**यौ०**-चाय पानी=जलपान।

* संज्ञा पुं० दे० "चाव"।

**चायक***—संज्ञा पुं० [हिं० चाय] चाहनेवाला।

**चार**—वि० [सं० चतुर] १. जो गिनती में दो और दो हो। तीन से एक अधिक।

**मुहा०**—चार आँखें होना=नजर से नजर मिलना। देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। **चार चाँद लगना**= १. चौगुनी प्रतिष्ठा होना। २. चौगुनी

शोभा होना । सौंदर्य्य बढ़ना (स्त्री०) । चारों फूटना=चारों आँखें (दो हिए की, दो ऊपर की) फूटना । २. कई एक । बहुत से । ३. थोड़ा बहुत । कुछ ।

संज्ञा पुं० चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४ ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० चरित, चारी ] १. गति । चाल । गमन । २. बंधन । कारागार । ३. गुप्तदूत । चर । जासूस । ४. दास । सेवक । ५. चिरौंजी का पेड़ । पियार । अचार । ६. आचार । रीति । रस्म ।

**चार-आइना**-संज्ञा पुं० [ फ़ा० ]एक प्रकार का कवच या बकतर ।

**चार काने** संज्ञा पुं० [ हिं० चार+ कानी=मात्रा ] चौसर या पासे का एक दाँव ।

**चारखाना**-संज्ञा पुं० [फ़ा० ] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंगीन धारियों के द्वारा चौखूँटे घर बने रहते हैं ।

**चारजामा**-संज्ञा पुं० [फ़ा० ] जीन । पलान ।

**चारण**-संज्ञा पुं० [ सं०] १. वंश की कीर्ति गानेवाला । भाट । बंदीजन । २. राजपूताने की एक जाति । ३. भ्रमणकारी ।

**चारदीवारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. घेरा । हाता । २ शहर-पनाह । प्राचीर ।

**चारना***†-क्रि० स० [ सं० चारण ] चराना ।

**चारपाई**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चार+ पाया ] छोटा पलंग । खाट । खटिया मजी ।

**मुहा०**-चारपाई धरना, पकड़ना या लेना=इतना बीमार होना कि चारपाई से न उठ सके । अत्यंत रुग्ण होना । चारपाई से लगना=बीमारी के कारण उठ न सकना ।

**चारपाया**-संज्ञा पुं० दे० "चौपाया"

**चारबाग**-संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १ चौखूँटा बगीचा । २. चार बराबर खानों में से बँटा हुआ रूमाल ।

**चारयारी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चार फ़ा० यार ] १. चार मित्रों की मंडली । २ मुसलमानों में सुन्नी संप्रदाय की एक मंडली । । ३. चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है ।

**चारा**-संज्ञा पुं० [हिं० चरना] पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंठल आदि । संज्ञा पुं० [फ़ा०] उपाय । तदबीर ।

**चारिणी**—वि० स्त्री० [ सं० ] आचरण करनेवाली । चलनेवाली ।

**चारित**—वि० [सं०] चलाया हुआ ।

**चारित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ कुल-क्रमागत आचार । २ चाल-चलन । व्यवहार । स्वभाव । ३. संन्यास । (जैन)

**चारित्र्य**—संज्ञा पुं० [सं०] चरित्र ।

**चारी**—वि० [ सं० चारिन् [ स्त्री० चारिणी] १ चलनेवाला । २. आचरण करनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. पदाति सैन्य । पैदल सिपाही । २. संचारी भाव ।

**चारु**—वि० [ सं० ] सुंदर । मनोहर ।

**चारुता**-संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता ।

**चारुहासिनी**—वि० स्त्री० [ सं० ] सुंदर हँसनेवाली । मनोहर मुसकानवाली ।

संज्ञा स्त्री० वैताली छंद का एक भेद ।

**चार्वाक**-संज्ञा पुं० [सं० ] एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक ।

**चाल**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० चलना ] १ गति । गमन । चलने की क्रिया । २. चलने का ढंग । गमन-प्रकार । ३. आचरण । बर्त्ताव । व्यवहार । ४. आकार-प्रकार । बनावट । गढ़न । ५. रीति । रवाज । रस्म । प्रथा। परिपाटी । ६. गमनमुहूर्त्त । चलने की सायत । चाला । ७. कार्य्य करने की युक्ति । ढंग । तदबीर । ढब । ८ कपट । छल । धूर्त्तता । ९. ढंग । प्रकार । तरह । १०. शतरंज, ताश आदि के खेल में गोटी को एक घर से दूसरे घर में ले जाने अथवा पत्ते या पासे को दाँव पर डालने की क्रिया । ११. हलचल । धूम । आंदोलन । १२. हिलने डोलने का शब्द । आहट । खटका ।

**चालक**-वि० [ सं० ] चलानेवाला । संचालक ।

संज्ञा पुं० [हिं० चाल]धूर्त्त । छली ।

**चालचलन**-संज्ञा पुं० [ हिं० चाल+ चलन] आचरण । व्यवहार । चरित्र । शील ।

**चालढाल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाल +ढाल ] १. आचरण । व्यवहार । २. तौर-तरीका ।

**चालन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चलाने की क्रिया । २. चलने की क्रिया । गति ।

संज्ञा पुं० [ हिं० चालना ] भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है ।

**चालना***†-क्रि० स० [ सं० चालन ] १. चलाना । परिचालित करना । २. एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना । ३. (बहू ) बिदा कराके ले आना । ४. हिलना । डोलना । ५. कार्य्य निर्वाह करना । भुगताना । ६. बात उठाना । प्रसंग छेड़ना । ७. आटे को छलनी में रखकर छानना ।

क्रि० अ० [ सं० चालन ] चलना ।

**चालनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चलनी"

**चालबाज**—वि० [ हिं० चाल + फ़ा० बाज़ ] [ संज्ञा चालबाजी ] धूर्त । छली ।

**चाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० चाल ] १. प्रस्थान । कूच । रवानगी । २. नई बहू का पहले-पहल मायके से ससुराल या ससुराल से मायके जाना । ३. यात्रा का मुहूर्त्त ।

**चालाक**—वि० [ फ़ा० ] १. व्यवहार-कुशल । चतुर । दक्ष । २. धूर्त । चालबाज़ ।

**चालाकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. चतुराई । व्यवहार-कुशलता । दक्षता । पटुता । २. धूर्त्तता । चालबाजी । ३. युक्ति ।

**चालान**—संज्ञा पुं० दे० "चलान" ।

**चालिया**—वि० दे० "चालबाज" ।

**चाली**—वि० [हिं० चाल] १. चालिया । धूर्त्त । चालबाज । २. चंचल । नटखट ।

**चालीस**—वि० [ सं० चत्वारिंशत् ] जो गिनती में बीस और बीस हो ।

संज्ञा पुं० बीस और बीस की संख्या या अंक ।

**चालीसा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चालीस ] [स्त्री० चालीसी] १. चालीस वस्तुओं का समूह । २. चालीस दिन का समय । चिल्ला ।

**चाल्ह**—संज्ञा स्त्री० [देश० ] चेल्हवा मछली ।

**चावँ चावँ**—संज्ञा स्त्री० दे० "चाँयँ चाँयँ" ।

**चाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० चाह ] १. प्रबल इच्छा । अभिलाषा । लालसा । अरमान । २. प्रेम । अनुराग । चाह । ३. शौक । उत्कंठा । ४. लाड़ प्यार । दुलार । नखरा । ५. उमंग । उत्साह । आनंद ।

**चावना**—क्रि० स० दे० "चाहना" ।

**चावल**—संज्ञा पुं० [ सं० तंडुल ] १. एक प्रसिद्ध अन्न । धान के दाने की गुठली । तंडुल । २. पकाया चावल । भात । ३. चावल के आकार के दाने । ४ एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल ।

**चाशनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. चीनी, मिश्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस । २. चसका । मजा । ३. नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिए सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है ।

**चाष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नीलकंठ पक्षी । २. चाहा पक्षी ।

संज्ञा पुं० [सं० चक्षु] आँख । नेत्र ।

**चासा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १ हलवाहा । हल जोतनेवाला । २. किसान । खेतिहर ।

**चाह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० इच्छा । अथवा सं० उत्साह ] १ इच्छा । अभिलाषा । २ प्रेम । अनुराग । प्रीति । ३. आदर । कदर । ४ माँग । जरूरत । ५. चाय ।

*संज्ञा स्त्री० [हिं० चाल=आहट ] १. खबर । समाचार । २. गुप्तभेद । मर्म ।

क्रि० अ० देखना ।

**चाहक***—संज्ञा पुं० [ हिं० चाहना ] चाहनेवाला । प्रेम करनेवाला ।

**चाहत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाह ] चाह । प्रेम ।

**चाहना**—क्रि० स० [ हिं० चाह ] १. इच्छा करना । अभिलाषा करना । २. प्रेम करना । प्यार करना । ३. माँगना । ४. प्रयत्न करना । कोशिश करना । *५. देखना । ताकना । ६. ढूँढ़ना ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० चाहना ] चाह । जरूरत ।

**चाहा**—संज्ञा पुं० [ सं० चाष ] बगले की तरह का एक जल-पक्षी ।

**चाहि***—अव्य [सं० चैव=और भी ?] अपेक्षाकृत ( अधिक ) । बनिस्बत ।

**चाहिए***—अव्य० [ हिं० चाहना ] उचित है । उपयुक्त है । मुनासिब है ।

**चाही**—वि० स्त्री० [ हिं० चाह ] चहेती । प्यारी ।

वि० [ फ़ा० चाह = कूआँ ] कूएँ से सींची जानेवाली ( जमीन ) ।

**चाहे**—अव्य० [ हिं० चाहना ] १ जो चाहे । इच्छा हो । मन में आवे । २. यदि जी चाहे तो । जैसा जो चाहे । ३. होना चाहता हो । होनेवाला हो ।

**चिआँ**—संज्ञा पुं० [ सं० चिंचा ] इमली का बीज ।

**चिउँटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिमटना ] एक कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है ।

**चिउँटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिमटना ] एक बहुत छोटा कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है । चींटी । पिपीलिका ।

**मुहा०**—चिउँटी की चाल = बहुत सुस्त चाल । मंद गति । चिउँटी के पर निकलना = ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो । मरने पर होना ।

**चिगना†**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १ किसी पक्षी का, विशेषतः मुरगी

का, छोटा बच्चा । २. छोटा बालक । बच्चा ।

**चिंघाड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चीत्कार ] १. चीख मारने का शब्द । २. किसी जंतु का घोर शब्द । चिल्लाहट । ३. हाथी की बोली ।

**चिंघाड़ना**—क्रि० अ० [ सं० चीत्कार ] १. चीखना । चिल्लाना । २. हाथी का बोलना या चिल्लाना ।

**चिंचिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तिंतिड़ी ] १. इमली का पेड़ । २. इमली का फल ।

**चिंज, चिंजा***[—संज्ञा पुं० [ सं० चिरंजीव ] [स्त्री० चिंजी] लड़का । पुत्र । बेटा ।

**चिंड**—संज्ञा पुं० [ ? ] नाच का एक प्रकार ।

**चिंत**—संज्ञा स्त्री० दे० "चिंता" ।

**चिंतक**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा चिंतकता ] १. चिंतन करनेवाला । ध्यान करनेवाला, २. सोचने वाला ।

**चिंतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बार बार स्मरण । ध्यान । २ विचार । विवेचना । गौर ।

**चिंतना***—क्रि० स० [ सं० चिंतन ] १ ध्यान करना । स्मरण करना । २. सोचना ।

संज्ञा स्त्री० [सं० चिंतन] १. ध्यान । स्मरण । भावना । २ चिंता । सोच ।

**चिंतनीय**—वि० [ सं० ] १. चिंतन या ध्यान करने योग्य । भावनीय । २. जिसकी फिक्र करना उचित हो । ३. विचार करने योग्य । ४. संदिग्ध ।

**चिंतवन***—संज्ञा पुं० दे० "चिंतन" ।

**चिंता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ध्यान । भावना । २ सोच । फिक्र । खुटका ।

**चिंतामणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक कल्पित रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है । २. ब्रह्मा । ३. परमेश्वर । ४. सरस्वती का मंत्र जिसे विद्या आने के लिए लड़के की जीभ पर लिखते हैं ।

**चिंतित**—वि० [सं०] [स्त्री० चिंतिता] जिसे चिंता हो । चिंतायुक्त । फिक्रमंद ।

**चिंत्य**—वि० [ सं० ] १. भावनीय । विचारणीय । विचार करने योग्य । २. संदिग्ध ।

**चिंदी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] टुकड़ा ।

**मुहा०**-हिंदी की चिंदी निकालना=अत्यंत तुच्छ भूल निकालना । कुतर्क करना ।

**चिंपांजी**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का वन-मानुष ।

**चिउड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "चिड़वा" ।

**चिक**—संज्ञा स्त्री० [ तु० चिक ] बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झंझरीदार परदा । चिलमन ।

संज्ञा पुं० पशुओं को मारकर उनका मांस बेचनेवाला । बूचर । बकर-कसाई ।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कमर का वह दर्द जो एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण होता है । चमक । चिलक । झटका ।

**चिकट**—वि० [ सं० चिक्किट ] १. चिकना और मैल से गंदा । मैला-कुचैला । २. लसीला ।

**चिकटना**—क्रि० अ० [ हिं० चिकट या चिक्कट ] जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना ।

**चिकन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] महीन सूती कपड़ा जिसपर उभरे हुए बूटे बने रहते हैं ।

**चिकना**—वि० [ सं० चिक्कण ] [स्त्री० चिकनी ] १. जो छूने में खुरखुरा न हो । जो साफ और बराबर हो । २. जिसपर पैर आदि फिसले । ३ जिसमें तेल लगा हो ।

**मुहा०**—चिकना घड़ा=निर्लज्ज । बेहया ।

४. साफ-सुथरा । सँवारा हुआ । सुंदर ।

**मुहा०**—चिकनी-चुपड़ी बातें=बना-वटी स्नेह से भरी बातें । कृत्रिम मधुर भाषण ।

५. लल्लो-चप्पो करनेवाला । चाटुकार । खुशामदी । ६. स्नेही । अनुरागी । प्रेमी ।

संज्ञा पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ ।

**चिकनाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिकना+ई ( प्रत्य० ) ] १. चिकना होने का भाव । चिकनापन । चिकनाहट । २. स्निग्धता । सरसता ।

**चिकनाना**—क्रि० स० [हिं० चिकना+ना (प्रत्य०) ] १. चिकना करना । स्निग्ध करना । २. साफ करना । सँवारना ।

क्रि० अ० १. चिकना होना । २. स्निग्ध होना । ३. चरबी से युक्त होना । हृष्ट-पुष्ट होना । मोटाना । ४. स्नेह-युक्त होना ।

**चिकनापन**—संज्ञा पुं० [हिं० चिकना+पन ( प्रत्य० ) ] चिकना होने का भाव । चिकनाई । चिकनाहट ।

**चिकनाहट**—संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन" ।

**चिकनिया**—वि० [ हिं० चिकना ] छैला । शौकीन बाँका । बना-ठना ।

**चिकनी सुपारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चिक्कणी ] एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी ।

**चिकरना**—क्रि० अ० [ सं० चीत्कार ] चीत्कार करना । चिंघाड़ना । चीखना ।

**चिकवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिक ] मांस बेचनेवाला । बूचड़ ।

संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

**चिकार**—संज्ञा पुं० दे० "चिंघाड़" ।

**चिकारना**—क्रि० अ० दे० "चिंघाड़ना" ।

**चिकारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिकार ] [ स्त्री० अल्पा० चिकारी ] १. सारंगी की तरह का एक बाजा । २. हिरन की जाति का एक जानवर ।

**चिकित्सक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रोग दूर करने का उपाय करनेवाला । वैद्य ।

**चिकित्सा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० चिकित्सक, चिकित्स्य ] १. रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया । इलाज । २. वैद्य का व्यवसाय या काम ।

**चिकित्सालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ रोगियों की दवा हो । अस्पताल ।

**चिकियाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिक=बूचड़+इयाना (स्थानवाचक प्रत्य०) ] चिकों या बूचड़ों का महल्ला ।

**चिकुटी***—संज्ञा स्त्री० दे० "चिकोटी" ।

**चिकुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिर के बाल । केश । २. पर्वत । ३. साँप आदि रेंगनेवाले जंतु । ४. छछूँदर । ५. गिलहरी ।

**चिकोटी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "चुटकी" ।

**चिक्कट**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिकना+कीट या काट ] गर्द, तेल आदि की मैल जो कहीं जम गई हो । कीट ।

वि० मैला-कुचैला । गंदा ।

**चिक्कण**—वि० [ सं० ] चिकना ।

**चिक्करना**—क्रि० अ० दे० "चिंघाड़ना" ।

**चिक्कार**—संज्ञा पुं० दे० "चिंघाड़" ।

**चिखुरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गिलहरी" ।

**चिचड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. डेढ़, दो हाथ ऊँचा एक पौधा जो दवा के काम में आता है । अपामार्ग । ओगा । अझाझार । लटजीरा । २. दे० "चिचड़ी" ।

**चिचड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक कीड़ा जो चौपायों के शरीर में चिमटा रहता है और उनका खून पीता है । किलनी । किल्ली ।

**चिचान***—संज्ञा पुं० [ सं० सचान ] बाज पक्षी ।

**चिचिंडा**—संज्ञा पुं० दे० "चचींड़ा" ।

**चिचियाना**†—क्रि० अ० दे० "चिल्लाना" ।

**चिचुकना**—क्रि० अ० दे० "चुचुकना" ।

**चिचोड़ना**†—क्रि० स० दे० "चचोड़ना" ।

**चिजारा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० चीदन=चुनना ] कारीगर । मेमार । राज ।

**चिट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चीड़ना ] १. कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा । २ पुरजा । छोटा पत्र ।

**चिटकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. सूखकर जगह जगह पर फटना । २ लकड़ी का जलते समय 'चिट चिट' शब्द करना । ३. चिढ़ना ।

**चिटकाना**—क्रि० स० [ अनु० ] १ किसी सूखी हुई चीज का तोड़ना या तड़काना । २. खिझाना । चिढ़ाना ।

**चिटनवीस**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिट+फ़ा० नवीस ] लेखक । मुहर्रिर । कारिंदा ।

**चिट्टा**—वि० [ सं० सित ] सफेद । श्वेत ।

संज्ञा पुं० [ ? ] झूठा बढ़ावा ।

**चिट्ठा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिट ] १. हिसाब की बही । खाता । लेखा । २. वह कागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब जाँचकर नफा-नुकसान दिखाया जाता है । ३ किसी रकम की सिलसिलेवार फिहरिस्त । सूची । ४ वह रुपया जो प्रतिदिन, प्रति सप्ताह या प्रतिमास मजदूरी या तनख्वाह के रूप में बाँटा जाय । ५ खर्च की फिहरिस्त ।

मुहा०—कच्चा चिट्ठा=ऐसा सविस्तर वृत्तांत जिसमें कोई बात छिपाई न गई हो ।

**चिट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिट ] १. वह कागज जिसपर कहीं भेजने के लिए समाचार आदि लिखा हो । पत्र । खत । २. कोई छोटा पुरजा या कागज जिसपर कुछ लिखा हो । ३ एक क्रिया जिसके द्वारा यह निश्चय किया जाता है कि कोई माल पाने या कोई काम करने का अधिकारी कौन हो । ४. किसी बात का आज्ञापत्र ।

**चिट्ठीपत्री**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिट्ठी + पत्री ] १. पत्र । खत । २. पत्र-व्यवहार ।

**चिट्ठीरसाँ**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिट्ठी + फ़ा० रसाँ ] चिट्ठी बाँटनेवाला । डाकिया ।

**चिड़चिड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "चिचड़ा" ।

वि० [ हिं० चिड़चिड़ाना ] शीघ्र चिढ़नेवाला । जल्दी अप्रसन्न हो जानेवाला ।

**चिड़चिड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १ जलने में चिड़चिड़ शब्द होना । २. सूखकर जगह जगह से फटना । खरा होकर दरकना । ३ चिढ़ना । बिगड़ना । झुँझलाना ।

**चिड़वा**—संज्ञा पुं० [ सं० चिपिट ]

हरे, भिगोए या कुछ उबाले हुए धान को भाड़ में भूनकर और फिर कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना। चिउड़ा।

**चिउड़ा**-संज्ञा पुं० [सं० चटक] गौरा पक्षी।

**चिड़िया**—संज्ञा स्त्री० [सं० चटक] १. पक्षी। पखेरू। पंछी।

**मुहा०**—चिड़िया का दूध = अप्राप्य वस्तु। सोने की चिड़िया=धन देनेवाला असामी।

२ चिड़िया के आकार का गढ़ा या काटा हुआ टुकड़ा। ३ ताश का एक रंग।

**चिड़ियाखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिड़िया + फ़ा० खाना ] वह स्थान या घर जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिए रखे जाते हैं।

**चिड़िहार***-संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

**चिड़ी**-संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

**चिड़ीमार**-संज्ञा पुं० [ हिं० चिड़ी+ मारना ] चिड़िया पकड़नेवाला। बहेलिया।

**चिढ़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिढ़-चिढ़ाना ] १. चिढ़ने का भाव। अप्रसन्नता। कुढ़न। खिजलाहट। २ नफरत। घृणा।

**चिढ़ना**—क्रि० अ० [ हिं० चिढ़-चिढ़ाना ] १. अप्रसन्न होना। नाराज होना। बिगड़ना। कुढ़ना। २ द्वेष रखना। बुरा मानना।

**चिढ़ाना**—क्रि० स० [ हिं० चिढ़ना ] १ अप्रसन्न करना। नाराज करना। खिझाना। कुढ़ाना। २. किसी को कुढ़ाने के लिए मुँह बनाना, या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना। ३. उपहास करना।

**चित्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चेतना। ज्ञान।

**चित**—संज्ञा पुं० [ सं० चित्त ] चित्त। मन।

*संज्ञा पुं० [ हिं० चितवन ] चितवन। दृष्टि।

वि० [ सं० चित=ढेर किया हुआ ] पीठ के बल पड़ा हुआ। 'पट' का उलटा।

**चितउन***—संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

**चितकबरा**—वि० [ सं० चित्र+ कर्बुर ] [ स्त्री० चितकबरी ] किसी एक रंग पर दूसरे रंग के दागवाला। रंग-बिरंगा। कबरा। चितला।

**चितचोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० चित+ चोर ] चित्त को चुरानेवाला। प्यारा। प्रिय।

**चितभंग**—संज्ञा पुं० [ सं० चित्त+ भंग ] १ ध्यान न लगना। उचाट। उदासी। २ होश का ठिकाने न रहना। मति-भ्रम।

**चितरना***—क्रि० स० [ सं० चित्र ] चित्रित करना। चित्र बनाना।

**चितरोख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चित्र+ फ़ा० रुख ] एक प्रकार की चिड़िया। चितरखा।

**चितला**-वि० [ सं० चित्रल ] कबरा। चितकबरा। रंग-बिरंगा।

संज्ञा पुं० १ लखनऊ का एक प्रकार का खरबूजा। २. एक प्रकार की बड़ी मछली।

**चितवन**—सं० स्त्री० [ हिं० चेतना ] ताकने का भाव या ढंग। अवलोकन। दृष्टि।

**चितवना***—क्रि० स० [ हिं० चेतना ] देखना।

**चितवाना***—क्रि० स० [हिं० चितवना का प्रे० ] तकाना। दिखाना।

**चिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चित्या ] १. चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिसपर मुरदा जलाया जाता है। २. श्मशान। मरघट।

**चिताना**—क्रि० स० [ हिं० चेतना ] १. सावधान करना। होशियार करना। २. स्मरण कराना। याद दिलाना। ३. आत्मबोध कराना। ज्ञानोपदेश कराना। ४ (आग) जलाना। सुलगाना।

**चितावनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिताना ] १. चिताने की क्रिया। सतर्क या सावधान करने की क्रिया। २. वह बात जो सावधान करने के लिए कही जाय।

**चितारना**—क्रि० अ० [ सं० चित्रण ] चित्रित करना। अंकित करना।

**चिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चिता। २. समूह। ढेर। ३ चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया। चुनाई। ४. चैतन्य। ५. दुर्गा।

**चितेरा**—संज्ञा पुं० [ सं० चित्रकार ] [ स्त्री० चितेरिन ] चित्रकार। चित्र बनानेवाला।

**चितै**—देखकर।

**चितौन**—संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

**चितौनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चेतावनी"।

**चित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंतःकरण की अनुसंधानात्मक वृत्ति। २ अंतःकरण। जी। मन। दिल।

**मुहा०**—चित्त चढ़ना=दे० "चित्त पर चढ़ना"। चित्त चुराना=मन मोहना। मोहित करना। चित्त देना=ध्यान देना। मन लगाना। चित्त पर चढ़ना=१. मन में बसना।

बार बार ध्यान में आना । २ स्मरण होना । याद पड़ना । चित्त बैठना=चित्त एकाग्र न रहना । चित्त में धँसना, जमना या बैठना=१. हृदय में दृढ़ होना । मन में धँसना । २. समझ में आना । असर करना । चित्त से उतरना=१. ध्यान में न रहना । भूल जाना । २. दृष्टि से गिरना ।

**चित्तता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चित्त का भाव । चित्तपन । चित्तत्व ।

**चित्तभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] योग में चित्त की अवस्थाएँ जो पाँच हैं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध ।

**चित्तर**—संज्ञा पुं० दे० "चित्र" ।

**चित्तरसारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चित्रशाला" ।

**चित्तविक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चित्त की चंचलता या अस्थिरता ।

**चित्तविभ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भ्रांति । भ्रम । भौचक्कापन ] २. उन्माद ।

**चित्तवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चित्त की गति । चित्त की अवस्था ।

**चित्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चित्र ] छोटा दाग या चिह्न । छोटा धब्बा । बुँदकी ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० चित ] वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी और खुरदरी होती है और जिससे जुए के दाँव फेंकते हैं । टैयाँ ।

**चित्तौर**—संज्ञा पुं० [ सं० चित्रकूट ] एक इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर जो उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी था ।

**चित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० चित्रित] १. चंदन आदि से माथे पर बनाया हुआ चिह्न । तिलक । २. किसी वस्तु का स्वरूप या आकार जो कलम और रंग आदि के द्वारा बना हो । तसवीर ।

मुहा०—चित्र उतारना = १. चित्र बनाना । तसवीर खींचना । २. वर्णन आदि के द्वारा ठीक ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना । ३. काव्य के तीन भेदों में से एक जिसमें व्यंग्य की प्रधानता नहीं रहती । अलंकार । ४ काव्य में एक प्रकार की रचना जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, खड्ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं । ५. एक वर्णवृत्त । ६. आकाश । ७. एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर में सफेद चित्तियाँ या दाग पड़ जाते हैं । ८ चित्रगुप्त । ९. चीते का पेड़ । चित्रक ।

वि० १. अद्भुत । विचित्र । २ चितकबरा । कबरा । ३. रंग बिरंगा ।

**चित्रक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तिलक । २. चीते का पेड़ । ३. चीता । बाघ । ४. चिरायता । ५. चित्रकार ।

**चित्रकला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चित्र बनाने की विद्या । तसवीर बनाने का हुनर ।

**चित्रकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चित्र बनानेवाला । चितेरा ।

**चित्रकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चित्र-कार+ई ] चित्रविद्या । चित्र बनाने की कला ।

**चित्रकाव्य**—संज्ञा पुं० दे० "चित्र" ।

**चित्रकूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवास के समय राम और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था । २. चित्तौर ।

**चित्रगुप्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौदह यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं ।

**चित्रजल्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह भावगर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर एक दूसरे से कहते हैं । ( साहित्य )

**चित्रना***—क्रि० स० [ सं० चित्रण ] चित्रित करना । तसवीर बनाना ।

**चित्रपट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० चित्रपटी ] १. वह कपड़ा, कागज या पटरी जिसपर चित्र बनाया जाय । चित्राधार । २. छींट । सिनेमा ।

**चित्रपदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक छंद ।

**चित्रमद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरह-सूचक भाव दिखलाना ।

**चित्रमृग**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्तीदार हिरन । चीतल ।

**चित्रयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुड्ढे का जवान और जवान का बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला ।

**चित्ररथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य ।

**चित्रलेखा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त । २. चित्र बनाने की कलम या कूँची ।

**चित्रविचित्र**—वि० [ सं० ] १ रंग-बिरंगा । कई रंगों का । २. बेल-बूटेदार

**चित्रविद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] चित्र बनाने की विद्या ।

**चित्रशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ वह घर जहाँ चित्र बनते हों । २ वह घर जहाँ चित्र रखे हों या रंग-बिरंग की सजावट हो ।

**चित्रसारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चित्र+

शाला ] १. वह घर जहाँ चित्र टँगे हों या दीवार पर बने हों। २. सजा हुआ सोने का कमरा। विलास-भवन। रंगमहल। ३. चित्रकारी।

**चित्रस्थ**–वि० [ सं० ] १. चित्र में अंकित किया हुआ। २. चित्र में अंकित व्यक्ति के समान निस्तब्ध।

**चित्रहस्त**–संज्ञा पुं० [ सं० ] वार का एक हाथ। हथियार चलाने का एक हाथ।

वि० जिसने वार करने के लिए हाथ उठाया हो।

**चित्रांग**–वि० [ सं० ] [ स्त्री० चित्रांगी ] जिसके अंग पर चित्तियाँ धारियाँ आदि हों।

संज्ञा पुं० १. चित्रक। चीता। २. एक प्रकार का सर्प। चीतल। ३. ईंगुर।

**चित्रांगद**–सं० पुं० [सं०] १. राजा शान्तनु के पुत्र का नाम। २ गंधर्व। ३ विद्याधर।

**चित्रांगदा**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अर्जुन की पत्नी का नाम। २. रावण की पत्नी का नाम।

**चित्रा**–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से चौदहवाँ नक्षत्र। २ मूषिकपर्णी। ३. ककड़ी या खीरा। ४. दंती वृक्ष। ५. गंडदूर्वा। ६. मजीठ। ७. बायबिडंग। ८. मूसाकानी। आखुकर्णी। ९. अजवाइन। १०. एक रागिनी। ११. पंद्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**चित्राधार**–संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्र एकत्र करके रखे जाते हैं। चित्र संग्रह।

**चित्रिणी**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

**चित्रित**–वि० [ सं० ] १. चित्र में खींचा हुआ। चित्र द्वारा दिखाया हुआ। २. जिसपर बेल-बूटे आदि बने हों। ३. जिसपर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों।

**चित्रोत्तर**–संज्ञा पुं० [ सं० ] एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।

**चिथड़ा**–संज्ञा पुं० [ सं० चीर्ण या चीर ] फटा-पुराना कपड़ा। लत्ता। लुगरा।

**चिथाड़ना**–क्रि० स० [ सं० चीर्ण ] १. चीरना। फाड़ना। २. अपमानित करना।

**चिदात्मा**–संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म।

**चिदानंद**–संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म।

**चिदाभास**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १ चैतन्यस्वरूप परब्रह्म का आभास या प्रतिबिंब जो अंतःकरण पर पड़ता है। २. जीवात्मा।

**चिद्रूप**–संज्ञा पुं० [ सं० ] परमात्मा।

**चिद्विलास**–संज्ञा पुं० [ सं० ] चैतन्य-स्वरूप ईश्वर की माया।

**चिनक**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिनगी ] जलन लिए हुए पीड़ा। चुनचुनाहट।

**चिनगटा**–संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।

**चिनगारी**–संज्ञा स्त्री० [सं० चूर्ण, हिं० चून + अंगार ] १. जलती हुई आग का छोटा कण या टुकड़ा। २. दह-कती हुई आग में से फूट-फूटकर उड़-ने वाला कण। अग्निकण।

**मुहा०**–आँखों से चिनगारी छूटना= क्रोध से आँखें लाल लाल होना।

**चिनगी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुन + अग्नि ] १. अग्निकण। चिनगारी। २. चुस्त और चालाक लड़का। ३. वह लड़का जो नटों के साथ रहता है।

**चिनाना**[*]–क्रि० स० दे० 'चुनवाना'।

**चिनिया**–वि० [हिं० चीनी] १. चीनी के रंग का। सफेद। २. चीन देश का।

**चिनिया केला**–संज्ञा पुं० [ हिं० चिनिया + केला ] छोटी जाति का एक केला।

**चिनिया बदाम**–संज्ञा पुं० दे० "मूँग-फली"।

**चिन्मय**–वि० [ सं० ] [ स्त्री० चिन्मयी ] ज्ञानमय।

संज्ञा पुं० परमेश्वर।

**चिन्ह**[*†]–संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

**चिन्हवाना**[†]–क्रि० स० दे० 'चिन्हाना'।

**चिन्हाना**–क्रि० स० [ हिं० चीन्हना का प्रे० ] पहचनवाना। परिचित कराना।

**चिन्हानी**–संज्ञा स्त्री० [हिं० चिह्न] १. चिन्हने की वस्तु। पहचान। लक्षण। २. स्मारक। यादगार। ३. रेखा। धारी। लकीर।

**चिन्हार**–वि० [हिं० चीन्हना ] अपने पहचान का। परिचित।

**चिन्हारी**[†]–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिह्न ] जान पहचान। परिचय।

**चिपकना**–क्रि० अ० [ अनु० चिप-चिप ] किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओं का परस्पर जुड़ना। सटना। चिमटना।

**चिपकाना** क्रि० स० [ हिं० चिपकना ] १. लसीली वस्तु का बीच में देकर दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना। चिमटाना। श्लिष्ट करना। चस्पाँ करना। २. लिपटाना।

**चिपचिपा**–वि० [ अनु० चिपचिप ] जिसे छूने से हाथ चिपकता हुआ जान पड़े। लसदार। लसीला।

**चिपचिपाना**–क्रि० अ० [हिं० चिप-चिप] छूने में चिपचिपा जान पड़ना।

अख़्त्यार मालूम होना।

**चिपटना**–क्रि॰ अ॰ दे॰ "चिपकना"।

**चिपटा**–वि॰ [ सं॰ चिपिट ] जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो। बैठा या धँसा हुआ।

**चिपड़ी, चिपरी**–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चिप्पड़ ] गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े। उपली।

**चिप्पड़**–संज्ञा॰ पुं॰ [ सं॰ चिपिट ] १. छोटा चिपटा टुकड़ा। २. सूखे लकड़ी आदि के ऊपर की छूटी हुई छाल का टुकड़ा।पपड़ी। ३. किसी वस्तु के ऊपरसे छीलकर निकाला हुआ टुकड़ा।

**चिप्पिका**–संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक प्रकार की चिड़िया।

**चिप्पी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चिप्पड़ ] १. छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा। २. उपली। गोहँठी।

**चिबुक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] ठोड़ी।

**चिमटना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ चिपटना ] १. चिपकना। सटना। २. आलिंगन करना। लिपटना। ३. हाथ-पैर आदि सब अंगों को लगाकर दृढ़ता से पकड़ना। गुथना। ४. पीछा न छोड़ना। पिंड न छोड़ना।

**चिमटा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चिमटना] [स्त्री॰ अल्पा॰ चिमटी] एक औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते हैं, जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते। दस्तपनाह।

**चिमटाना**–क्रि॰ स॰ [ हिं॰ चिमटना] १. चिपकाना। सटाना। २.लिपटाना।

**चिमटी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चिमटा] बहुत छोटा चिमटा।

**चिमड़ा**—वि॰ दे॰ "चीमड़"।

**चिमनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ] १. मकान का धूआँ बाहर निकालनेवाला छिद्र या नल। २. लंप या लालटेन पर को शीशे की नली।

**चिरंजीव**—वि॰ [ सं॰ ] १. चिरजीवी। २. आशीर्वाद का शब्द।

**चिरंतन**– वि॰ [ सं॰ ] पुराना। प्राचीन।

**चिर**—वि॰ [ सं॰ ] बहुत दिनों तक रहनेवाला।

क्रि॰ वि॰ बहुत दिनों तक।

संज्ञा पुं॰ तीन मात्राओं का ऐसा गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो।

**चिरई**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चिड़िया"।

**चिरकना** क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] थोड़ा थोड़ा मल निकलना या हगना।

**चिरकाल**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] दीर्घ काल। बहुत समय।

**चिर-कालिक**– वि॰ [ सं॰ ] बहुत दिनों का। पुराना।

**चिरकीन**–वि॰ [ फ़ा॰ ] गंदा।

**चिरकुट**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चिर+कुट्ट =काटना ] फटा पुराना कपड़ा। चिथड़ा। गूदड़।

**चिरचिटा**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] चिचड़ा। अपामार्ग।

**चिर-जीवन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सदा बना रहनेवाला जीवन। अमर-जीवन।

**चिरजीवी**—वि॰ [ सं॰ ] १ बहुत दिनों तक जीनेवाला। २ अमर।

संज्ञा पुं॰ १. विष्णु। २. कौवा। ३. मार्कंडेय ऋषि। ४. अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गये हैं।

**चिरना**—क्रि॰ अ॰ ( सं॰ चीर्ण ) १. फटना। सीध में कटना। २. लकीर के रूप में घाव होना।

**चिरनिद्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ वि॰ चिरनिद्रित ] मृत्यु। मौत।

**चिरमि, चिरमिटी**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] गुंजा। घुँघची।

**चिरवाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चिरवाना ] चिरवाने का भाव, कार्य या मजदूरी।

**चिरवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ चीरना का प्रे॰ ] चीरने का काम कराना। फड़वाना।

**चिरस्थायी**—वि॰ [ सं॰ चिरस्थायिन् ] बहुत दिनों तक रहनेवाला।

**चिरस्मरणीय**—वि॰ [ सं॰ ] १ बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य। २. पूजनीय।

**चिरहटा**–संज्ञा पुं॰ दे॰ "चिड़ीमार"।

**चिराई**—संज्ञा स्त्री [ हिं॰ चीरना ] चीरने का भाव, क्रिया या मज़दूरी।

**चिराक***–संज्ञा पुं॰ दे॰ "चिराग"।

**चिराग**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ चिराग़] दीपक। दीआ।

**चिरागदान**–संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] दीयट। शमादान।

**चिरागी**–संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १ किसी पवित्र स्थान पर चिराग आदि जलाने का खर्च। २. मजारपर चढ़ाई जानेवाली भेंट।

**चिरातन**—वि॰ दे॰ "चिरंतन"।

**चिराना**–क्रि॰ स॰ [ हिं॰ चीरना ] चीरने का काम दूसरे से कराना। फड़वाना।

वि॰ [ सं॰ चिरंतन ] १. पुराना। २. जीर्ण।

**चिरायँध**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ चर्म+गंध ] वह दुर्गंध जो चमड़े, बाल, मांस आदि जलने से फैलती है।

**चिरायता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चिरतिक्त या चिरात् ] एक पौधा जो बहुत कड़वा होता है और दवा के

काम में आता है।

**चिरायु**—वि० [ सं० चिरायुस् ] बड़ी उम्रवाला। बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घायु।

**चिरारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चिरौंजी"।

**चिरिया***—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

**चिरिहार**—संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

**चिरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"

**चिरौंजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चार+बीज ] पियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी।

**चिरौरी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] दीनतापूर्ण प्रार्थना।

**चिलक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिलकना ] १. आभा। कांति। द्युति। २. रह-रहकर उठनेवाला दर्द। टीस। चमक।

**चिलकना**—क्रि० अ० [ हिं० चिल्ल =बिजली, या अनु० ] १. रह रहकर चमकना। चमचमाना। २. रह रहकर दर्द उठना।

**चिलकाना**†-क्रि० स० [हिं० चिलक ] चमकाना। झलकाना।

**चिलकी**—संज्ञा पुं०] हिं० चिलकना] चमकता हुआ नया रुपया।

**चिलगोजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार का मेवा। चीड़ या सनोबर के फल।

**चिलचिलाना**-क्रि० अ० दे० "चिलकना"।

**चिलड़ा**-संज्ञा पुं० [ देश० ] उलटा नाम का एक पकवान।

**चिलता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० चिलतः] एक प्रकार का कवच।

**चिलबिल**-संज्ञा पुं० [सं० चिलबिल्व] १ एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष। २. एक प्रकार का बरसाती पौधा जो प्रायः नालों में होता है।

**चिलबिला, चिलबिल्ला**-वि० [सं० चल+बल ] [ स्त्री० चिलबिल्ली ] चंचल। चपल।

**चिलम**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] कटोरी के आकार का नलीदार मिट्टी का एक बरतन जिसपर तंबाकू जलाकर धुआँ पीते हैं।

**चिलमची**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।

**चिलमन**-संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] बाँस की फट्टियों का परदा। चिक।

**चिलवाँस**-संज्ञा पुं० [ ? ] चिड़िया फँसाने का फंदा।

**चिल्लड़**—संज्ञा पुं० [ सं० चिल=वस्त्र] जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफेद कीड़ा।

**चिल्लर**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] दुअन्नी, चवन्नी आदि छोटे सिक्के। रेजगी।

**चिल्लपों**-संज्ञा स्त्री० [हिं० चिल्लाना +अनु० पों ] चिल्लाना। शोर-गुल। पुकार।

**चिल्लवाना**—क्रि० स० [ हिं० चिल्लाना का प्रे० ] चिल्लाने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

**चिल्ला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. चालीस दिन का समय।

**मुहा०**—चिल्ले का जाड़ा=बहुत कड़ी सरदी।

२. चालीस दिन का बंधेज या किसी पुण्यकार्य्य का नियम। ( मुसल० )

संज्ञा पुं० [ देश० ] १. एक जंगली पेड़। २. उड़द या मूँग आदि की पीठी चुपड़ कर सेकी हुई रोटी चीला। उलटा। ३. धनुष की डोरी। पतंचिका।

**चिल्लाना**-क्रि० अ० [ हिं० चीत्कार] जोर से बोलना। शोर करना। हल्ला करना।

**चिल्लाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिल्लाना ] १. चिल्लाने का भाव। २. हल्ला। शोर।

**चिल्लिका**-संज्ञा स्त्री० दे० "चिलक"।

**चिल्ली** संज्ञा स्त्री० [ सं० ] झिल्ली ( कीड़ा )

संज्ञा स्त्री०[सं०चिरिका]बिजली। वज्र।

**चिल्हीं**†—संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

**चिहुँकना***†-क्रि०अ०दे०"चौंकना"।

**चिहुँटना***-क्रि० स० [ सं० चिपिट, हिं० चिमटना ] १. चुटकी काटना।

**मुहा०**—चित्त चिहुँटना=मर्म स्पर्श करना। चित्त में चुभना।

२. चिपटना। लिपटना।

**चिहुँटी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] चुटकी। चिकोटी।

**चिहुर***-संज्ञा पुं० [ सं चिकुर ] सिर के बाल। केश।

**चिह्न**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह लक्षण जिससे किसी चीज की पहचान हो। निशान। २. पताका। झंडी। ३. दाग। धब्बा।

**चिह्नित**—वि० [ सं० ] चिह्न किया हुआ। जिसपर चिह्न हो।

**चीं, चींचीं**— संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द।

**चीं चपड़**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] विरोध में कुछ बोलना।

**चींटा, चींटा**—संज्ञा पुं० दे० "चिउँटा"।

**चींतना***-क्रि० स० दे० "चितना"।

**चींथना**-क्रि० स० ( ? ) नोचकर

फाड़ना। (कपड़ा)

**चीख़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चीत्कार ] बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द। चिल्लाहट।

**चीकट**—संज्ञा पुं० [ हिं० कीचड़ ] १. तेल की मैल। तलछट। २. लसार मिट्टी।

संज्ञा पुं० [ देश० ] चिकट नाम का कपड़ा।

वि० बहुत मैला या गंदा।

**चीखना**—क्रि० अ० [ सं० चीत्कार ] १. जोर से चिल्लाना। २. बहुत जोर से बोलना।

वि० दे० "चिकना"।

**चीख**—संज्ञा स्त्री० दे० "चीक"।

**चीखना**—क्रि० स० [ प० चखण ] स्वाद जानने के लिए, थोड़ी मात्रा में खाना।

**चीखर, चीखल**—संज्ञा पुं० दे० "कीचड़"।

**चीखुर**—संज्ञा पुं० [ हिं० चिखुर ] गिलहरी।

**चीज़**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. सत्तात्मक वस्तु। पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २. आभूषण। गहना। ३. गाने की चीज। गीत। ४. विलक्षण वस्तु। ५. महत्त्व की वस्तु।

**चीड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चीकड़ ) मैला।

**चीठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी"।

**चीड़**—संज्ञा पुं० [ सं० चीड़ा ] एक बहुत ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधाबिरोजा और ताड़पीन तेल निकलता है।

**चीतक**—संज्ञा पुं० [ सं० चित्रा ] चित्रा नक्षत्र।

**चीतना**—क्रि० स० [ सं० चेत ] [ वि० चीता ] १. सोचना। विचारना। २. चैतन्य होना। ३. स्मरण करना।

क्रि० स० [ सं० चित्र ] चित्रित करना। तसवीर या बेल-बूटे बनाना।

**चीतल**—संज्ञा पुं० [ हिं० चित्ती ] १. एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं। २. अजगर की जाति का एक प्रकार का चित्तीदार साँप।

**चीता**—संज्ञा पुं० [ सं० चित्रक ] १. बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु। २. एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ ओषध के काम में आता है।

संज्ञा पुं० [ सं० चित्त ] १. चित्त। हृदय। दिल। २. होश। संज्ञा।

वि० [ हिं० चेतना ] सोचा या विचारा हुआ।

**चीत्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिल्लाहट। हल्ला। शोर। गुल।

**चीथड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।

**चीथना**—क्रि० स० [ सं० चीर्ण ] टुकड़े टुकड़े करना। चोंथना। फाड़ना।

**चीन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] झंडा। पताका। २. सीसा नामक धातु। ३. तागा। सूत। ४. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ५. एक प्रकार का हिरन। ६. एक प्रकार का साँवाँ। चेना। ७. एक प्रसिद्ध देश।

**चीनना**—क्रि० स० दे० "चीन्हना"

**चीनांशुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार की लाल बनात जो पहले चीन से आता था। २. चीन से आनेवाला रेशमी कपड़ा।

**चीना**—संज्ञा पुं० [ हिं० चीन ] १. चीन देशवासी। २. एक तरह का साँवाँ। चेना। ३. चीनी कपूर।

वि० चीन देश का।

**चीना बदाम**—संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

**चीनिया**—वि० [ देश० ] चीन देश का।

**चीनी**—संज्ञा स्त्री० [चीन (देश०) + ई (प्रत्य०)] मिठाई का सार जो सफेद चूर्ण के रूप में होता है और ईख के रस, चुकंदर, खजूर आदि से निकाला जाता है। शक्कर।

वि० चीन देश का।

**चीनी मिट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चीनी (वि०) + मिट्टी ] एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसपर पालिश बहुत अच्छी होती है और जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

**चीन्हा**—संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

**चीन्हना**—क्रि० स० [ सं० चिह्न ] पहचानना।

**चीप**—संज्ञा पुं० १. दे० "चिप्पड़"। २. दे० "चेप"।

**चीफ़**—संज्ञा पुं० [अं०] बड़ा सरदार या राजा।

**यौ०**—रूलिंग चीफ = वह राजा जिसे अपने राज्य में पूरा अधिकार हो।

वि० प्रधान। मुख्य।

**चीमड़**—वि० [ हिं० चमड़ा ] जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।

**चीयाँ**—संज्ञा पुं० दे० "चियाँ"।

**चीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वस्त्र। कपड़ा। २. वृक्ष की छाल। ३. चिथड़ा। लत्ता। ४. गौ का थन।

५. मुनियों, विशेषतः बौद्ध भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा। ६. धूप का पेड़।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० चीरना ] १. चीरने का भाव या क्रिया। २. चीरकर बनाया हुआ शिगाफ या दरार।

**चीर-चरम***—संज्ञा पुं० [ सं० चीरचर्म ] बाघंबर। मृगचर्म। मृगछाला।

**चीरना**—क्रि० स० [सं० चीर्ण] विदीर्ण करना। फाड़ना।

**मुहा०**—माल ( या रुपया आदि ) चीरना = अनुचित रूप से बहुत धन कमाना।

**चीरफाड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चीर +फाड़ ] १. चीरने-फाड़ने का काम या भाव। २. शस्त्र-चिकित्सा। जर्राही।

**चीरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चीरना ] १. एक प्रकार का लहरिएदार रंगीन कपड़ा जो पगड़ी बनाने के काम में आता है। २. गाँव की सीमा पर गाड़ा हुआ पत्थर या खंभा। ३. चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।

**चीरी***—संज्ञा पुं० दे० "चिड़िया"

**चीर्ण**—वि० [ सं० ] फाड़ा या चीरा हुआ।

**चील**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चिल्ल ] गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया।

**चीलर**—संज्ञा पुं० दे० "चिल्लड़"।

**चीला**—संज्ञा पुं० दे० "चिलड़ा"।

**चील्ह**—संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

**चील्ही**—संज्ञा स्त्री० [देश०] बालकों के कल्याणार्थ एक प्रकार का तंत्रोपचार।

**चीवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संन्यासियों या भिक्षुओं का फटा-पुराना कपड़ा। २.बौद्ध संन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।

**चीवरी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बौद्ध भिक्षुक। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

**चीस**—संज्ञा स्त्री० दे० "टीस"।

**चुंगल**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+अंगुल] १. चिड़ियों या जानवरों का पंजा। चंगुल। २. मनुष्य के पंजे की वह स्थिति जो किसी वस्तु को पकड़ने में होती है। पंजा।

**मुहा०**—चंगुल में फँसना=वश में आना।

**चुंगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुंगल ] १. चुंगल भर वस्तु। चुटकी भर चीज। २. वह महसूल जो शहर के भीतर आनेवाले बाहरी माल पर लगता हो।

**चुँघाना**—क्रि० स० [ हिं० चुसाना ] चुसाना।

**चुंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० अल्पा० चुंडी ] कुआँ। कूप।

**चुंडित***—वि० [ हिं० चुंडी ] चुटियावाला। चुंडावाला।

**चुंदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चूड़ा ] बालों की शिखा जिसे हिन्दू सिर पर रखते हैं। चुटैया।

**चुँधलाना**—क्रि० अ० [ हिं० चौं= चार+अंध ] चौंधना। चकाचौंध होना।

**चुंधा**—वि० [हिं० चौ=चार+अंध] [स्त्री० चुंधी ] १. जिसे सुझाई न पड़े। २. छोटी आँखोंवाला।

**चुँधियाना**—क्रि० अ० दे० "चुंधलाना"।

**चुंबक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो चुंबन करे। २. कामुक। कामी। ३. धूर्त मनुष्य। ४. ग्रन्थों को केवल इधर-उधर उलटनेवाला। ५. एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।

**चुंबकत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चुंबक पत्थर का वह गुण जिससे वह लोहे को अपनी तरफ खींचता है।

**चुंबन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० चुंबनीय, चुंबित ] प्रेम से होठों से ( किसी के ) गाल आदि अंगों का स्पर्श। चुम्मा।

**चुंबना**—क्रि० स० दे० "चूमना"।

**चुंबित**—वि० [ सं० ] १ चूमा हुआ। २. प्यार किया हुआ। ३. स्पर्श किया हुआ।

**चुंबी**—वि० [ सं० चुम्बिन् ] १. चूमनेवाला। २. छूने या स्पर्श करनेवाला।

**चुअना***—क्रि० अ० दे० "चूना"।

**चुआई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुआना ] चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।

**चुआन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चूना ] १. खाई। नहर। २. गड्ढा।

**चुआना**—क्रि० स० [ हिं० चूना= टपकना ] १. टपकाना। बूँद बूँद गिराना। * २. चुपड़ना। चिकनाना। रसमय करना। भभके से अर्क उतारना।

**चुकंदर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गाजर की तरह की एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।

**चुक**—संज्ञा पुं० दे० "चूक"।

**चुकचुकाना**—क्रि० अ०[हिं० चूना+ टपकना ] १. किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छेदों से होकर बाहर आना। २. पसीजना।

**चुकता**—वि० [हिं० चुकना] बेबाक।

विशेष। अदा। (ऋण)

**चुकती**—वि० दे० "चुकता"।

**चुकना**—क्रि० अ० [ सं० च्युत्कृत ] १. समाप्त होना। खतम होना। बाकी न रहना। २. बेबाक होना। अदा होना। चुकता होना। ३. तै होना। निबटना। * ४. चूकना। भूल करना। त्रुटि करना। ५. *खाली जाना। व्यर्थ होना। ६. एक समाप्ति-सूचक संयोजक क्रिया।

**चुकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुकता ] चुकने या चुकता होने का भाव।

**चुकाना**—क्रि० स० [ हिं० चुकना ] १. किसी प्रकार का देना साफ करना। अदा करना। बेबाक करना। २. तै करना। ठहराना।

**चुक्कड़**—संज्ञा पुं० [ सं० चषक ] मिट्टी का गोल छोटा बरतन जिसमें पानी या शराब आदि पीते हैं। पुरवा।

**चुक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चूक नाम की खटाई। चुक। महाम्ल। २. एक प्रकार का खट्टा साग। चूका। ३. काँजी।

**चुगद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. उल्लू पक्षी। २ मूर्ख। बेवकूफ।

**चुगना**-क्रि० स० [सं० चयन] चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना।

**चुगलखोर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला। लुतरा।

**चुगलखोरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] चुगली खाने का काम।

**चुगली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] दूसरे की निंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।

**चुगाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुगाना + ई ( प्रत्य० ) ] चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।

**चुगाना**—क्रि० स० [ हिं० चुगना ] चिड़ियों को दाना या चारा डालना।

**चुगुल***†—संज्ञा पुं० दे० "चुगल"

**चुचकारना**—क्रि० स० [ अनु० ] चुमकारना।

**चुचकारी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव।

**चुचाना**—क्रि० अ० [ सं० च्यवन ] चूना। टपकना। रसना। निचुड़ना।

**चुचकना**†—क्रि० अ० [ सं० शुष्क + ना (प्रत्य०) ] ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ।

**चुटक**†—संज्ञा पुं० [ हिं० चोट ] कोड़ा। चाबुक।

संज्ञा स्त्री० [अनु० चुट चुट] चुटकी।

**चुटकना**—क्रि० स० [हिं० चोट] कोड़ा या चाबुक मारना।

क्रि० स० [ हिं० चुटकी ] १. चुटकी से तोड़ना। २. साँप काटना।

**चुटका**—संज्ञा पुं० [ हिं० चुटकी ] १ बड़ा चुटकी। २. चुटकी भर अन्न।

**चुटकी**—संज्ञा स्त्री० [अनु० चुटचुट] १ किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिए अँगूठे और पास की उँगली का मेल।

**मुहा०**—चुटकी बजाना=अँगूठे को बीच की उँगली पर रखकर जोर से छटकाकर शब्द निकालना। चुटकी बजाते=चटपट। देखते देखते। बात की बात में। चुटकी भर=बहुत थोड़ा। जरा सा। चुटकियों में= बहुत शीघ्र। चटपट। चुटकियों में या पर उड़ाना=अत्यन्त तुच्छ या सहज समझना। कुछ न समझना।

२. चुटकी भर आटा। थोड़ा आटा।

**मुहा०**—चुटकी माँगना = भिक्षा माँगना।

३. चुटकी बजने का शब्द। ४. अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दबाने या पीड़ित करने की क्रिया।

**मुहा०**—चुटकी भरना = १. चुटकी काटना। २. चुभती या लगती हुई बात कहना। चुटकी लेना = १. हँसी उड़ाना। दिल्लगी उड़ाना। २. चुभती या लगती हुई बात कहना।

५. अँगूठे और उँगली से मोड़कर बनाया हुआ गोखरू, गोटा या लचका। ६. बंदूक के प्याले का ढकना या घोड़ा।

**चुटकुला**—संज्ञा पुं० [ हिं० चोट + कला ] १. चमत्कारपूर्ण उक्ति। मजेदार बात।

**मुहा०**—चुटकुला छोड़ना = १ दिल्लगी की बात कहना। २. कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय।

२. दवा का कोई छोटा नुसखा जो बहुत गुणकारक हो। लटका।

**चुटफुट**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ] फुटकर वस्तु। फुटकर चीज।

**चुटिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चोटी ] बालों की वह लट जो सिर के बीचाबीच रखी जाती है। शिखा। चुंदी।

**चुटीला**—वि० [ हिं० चोट ] जिसे चोट या घाव लगा हो।

संज्ञा पुं० [ हिं० चोटी ] अगल बगल की पतली चोटी। मेंढ़ी।

वि० सिरे का। सबसे बढ़िया।

**चुटैल**—वि० [ हिं० चोट ] १. जिसे चोट लगी हो। घायल। †२. चोट या आक्रमण करनेवाला।

**चुड़िहारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चूड़ी + हारा (प्रत्य०) ] [स्त्री० चुड़िहारिन]

चूड़ी बेचनेवाला।

**चुड़ैल**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चूड़ा + ऐल (प्रत्य०)] १ भूतनी। डायन। प्रेतनी। पिशाचिनी। २. कुरूपा स्त्री। ३. क्रूर स्वभाव की स्त्री। दुष्टा।

**चुनचुना**–वि० [ हिं० चुनचुनाना ] जिसके छूने या खाने से जलन लिए हुए पीड़ा हो।

संज्ञा पुं० सूत की तरह के महीन सफेद कीड़े जो पेट के मल के साथ निकलते हैं।

**चुनचुनाना**–क्रि० अ० [ अनु० ] कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी पीड़ा होना।

**चुनट**–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनन"।

**चुनन**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुनना] वह सिकुड़न जो दाब पाकर कपड़े, कागज आदि पर पड़ती है। सिलवट। शिकन। चुनट।

**चुनना**–क्रि० स० [ सं० चयन ] १. छोटी वस्तुओं को हाथ, चोंच आदि से एक एक करके उठाना। २. छाँट छाँटकर अलग करना। ३ बहुतों में से कुछ को पसंद करके लेना। ४. तरतीब से लगाना। सजाना। ५. जोड़ाई करना। दीवार उठाना।

**मुहा०**–दीवार में चुनना=किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईंटों की जोड़ाई करना।

६. कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना।

**चुनरी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुनना ] १ वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच बुँदकियाँ होती हैं। २. याकूत। चुन्नी।

**चुनवाना**–क्रि० स० दे० "चुनाना"।

**चुनाई**–संज्ञा स्त्री०[ हिं० चुनना ] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग। ३. चुनने की मजदूरी।

**चुनाना**–क्रि० स० [ हिं० चुनना का प्रे० ] चुनने का काम दूसरे से कराना।

**चुनाव**–संज्ञा पु० [हिं० चुनना ] १. चुनने का काम। २. बहुतों में से कुछ को किसी कार्य्य के लिए पसंद या नियुक्त करना।

**चुनिंदा**–वि० [ हिं० चुनना + इंदा (प्रत्य०) ] १. चुना हुआ। छँटा हुआ। २. बढ़िया।

**चुनी**–संज्ञा स्त्री० दे० "चुन्नी"।

**चुनौटी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चूना + औटी (प्रत्य०) ] चूना रखने की डिबिया।

**चुनौती**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुनचुनाना या चूना ] १. उत्तेजना। बढ़ावा। चिट्ठा। २. युद्ध के लिए आह्वान। ललकार। प्रचार।

**चुन्नी**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चूर्ण ] १. मानिक, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा नग। २ अनाज का चूर। ३. लकड़ी का बारीक चूर। कुनाई। ४. चमकी। सितारा।

**चुप**–वि० [ सं० चुप (चोपन)=मौन ] जिसके मुँह से शब्द न निकले। अवाक्। मौन।

**यौ०**–चुपचाप=१. मौन। खामोश। २ शांत भाव से। बिना चंचलता के। ३. धीरे से। छिपे छिपे। ४. निरुद्योग। प्रयत्नहीन। ५. बिना विरोध में कुछ कहे। बिना चीं-चपड़ के।

संज्ञा स्त्री०मौनावलंबन। न बोलना।

**चुप्का**–वि० [ हिं० चुप ] [ स्त्री० चुपकी ] मौन। खामोश।

**मुहा०**–चुपके से=१. बिना कुछ कहे-सुने। २. गुप्त रूप से। धीरे से।

**चुपचाप**–वि०, क्रि०वि० दे० "चुप"।

**चुपड़ना**–क्रि० स० [ हिं० चिपचिपा ] १. किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना। पोतना। जैसे—रोटी में घी चुपड़ना। २. किसी दोष का आरोप दूर करने के लिए इधर-उधर की बातें करना। ३. चिकनी चुपड़ी कहना। चापलूसी करना।

**चुपाना**†*–क्रि० अ० [ हिं० चुप ] चुप हो रहना। मौन रहना।

**चुप्पा**–वि०[हिं० चुप ] [स्त्री० चुप्पी] जो बहुत कम बोले। घुन्ना।

**चुप्पी**–संज्ञा स्त्री० [हिं० चुप] मौन।

**चुबलाना**–क्रि० स० [ अनु० ] स्वाद लेने के लिए मुँह में रखकर इधर-उधर डुलाना।

**चुभकना**–क्रि० अ० [ अनु० ] गोता खाना।

**चुभकी**–संज्ञा स्त्री० [अनु०] डुब्बी। गोता।

**चुभना**–क्रि० अ० [ अनु० ] १. किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना। गड़ना। धँसना। २. हृदय में खटकना। मन में व्यथा उत्पन्न करना। ३. मन में बैठना।

**चुभलाना**–क्रि० स० दे० 'चुबलाना'

**चुभाना, चुभोना**–क्रि० स० [ हिं० चुभना का प्रे० ] धँसाना। गड़ाना।

**चुमकार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चूमना + कार ] चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिए निकालते हैं। पुचकार।

**चुमकारना**—क्रि० स० [ हिं० चुमकार ] प्यार दिखाने के लिए चूमने का सा शब्द निकालना। पुचकारना। दुलारना।

**चुम्मा**†—संज्ञा पुं० दे० "चूमा"।

**चुर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बाघ आदि के रहने का स्थान। माँद। बैठक।

* वि० [सं० प्रचुर] बहुत। अधिक।

**चुरकना, चुरगना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. चहकना। चीं चीं करना ( व्यंग्य या तिरस्कार )। † २. चटकना। टूटना।

**चुरकी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चोटी ] चुटिया।

**चुरकुट, चुरकुस**—वि० [ हिं० चूर+कूटना ] चकनाचूर। चूर चूर। चूर्णित।

**चुरना**†—क्रि० अ० [ सं० चूर= जलना, पकना ] १. आँच पर खौलते हुए पानी के साथ किसी वस्तु का पकना। सीझना। २. आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।

**चुरमुर**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।

**चुरमुरा**—वि० [ अनु० ] जो दबाने पर चुर चुर शब्द करके टूट जाय। करारा।

**चुरमुराना**—क्रि० अ० [ अनु० ] चुरमुर शब्द करके टूटना।

क्रि० स० [ अनु० ] १. चुरमुर शब्द करके तोड़ना। २. करारी या खरी चीज चबाना।

**चुरवाना**—क्रि० स० [ हिं० चुराना= पकाना ] पकाने का काम कराना।

क्रि० स० दे० "चोरवाना"।

**चुरा***†—संज्ञा पु० दे० "चूरा"।

**चुराना**—क्रि० स० [ सं० चुर=चोरी करना ] १. गुप्त रूप से पराई वस्तु हरण करना। चोरी करना।

**मुहा०**—चित्त चुराना=मन मोहित करना।

२. लोगों की दृष्टि से बचाना। छिपाना।

**मुहा०**—आँख चुराना=नजर बचाना। सामने मुँह न करना।

३. काम के करने में कसर करना।

क्रि० स० [ हिं० चुरना ] खौलते पानी में पकाना। सिझाना।

**चुरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "चूड़ी"।

**चुरुट**—संज्ञा पुं० [ अं० शेरूट ] तंबाकू के पत्ते या चूर की बत्ती जिसका धुँआ लोग पीते हैं। सिगार।

**चुरू***—संज्ञा पुं० दे० "चुल्लू"।

**चुल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चल=चंचल ] किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा। खुजलाहट।

**चुलचुलाना**—क्रि० अ० [ हिं० चुल ] १. खुजलाहट होना। २. दे० "चुलबुलाना"।

**चुलचुली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चुलचुलाना ] चुल। खुजलाहट।

**चुलबुला**—वि० [ सं० चल+बल ] [ स्त्री० चुलबुली ] १. चंचल। चपल। २ नटखट।

**चुलबुलाना**—क्रि० अ० [ हिं० चुलबुल ] १. चुलबुल करना। रह रहकर हिलना। २. चंचल होना। चपलता करना।

**चुलबुलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० चुलबुला+पन ( प्रत्य० ) ] चंचलता। चपलता। शोखी।

**चुलबुलाहट**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] चंचलता।

**चुलाना**-क्रि० स० दे० "चुवाना"।

**चुलियाला**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक मात्रिक छंद।

**चुलुक**—संज्ञा पु०[ सं० ] १. भारी दलदल या कीचड़। २. चुल्लू।

**चुल्ला, चुल्ली**—वि० [ अनु० ] चुलबुला। पाजी। शरारती।

**चुल्लू**—संज्ञा पुं० [ सं० चुलुक ] गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सके।

**मुहा०**—चुल्लू भर पानी में डूब मरो=मुँह न दिखाओ। लज्जा के मारे मर जाओ।

**चुवना***—क्रि० अ० दे० "चूना"।

**चुवाना***—क्रि० स० [ हिं० चूना का प्रे० ] बूँद बूँद करके गिराना। टपकाना।

**चुसकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चूसना ] ओंठ से लगाकर थोड़ा-थोड़ा करके पीने की क्रिया। सुड़क। घूँट। दम।

**चुसना**—क्रि० अ० [ हिं० चूसना ] १. चूसा जाना। २. निचुड़ जाना। निकल जाना। ३. सारहीन होना। ४ देते देते पास में कुछ न रह जाना।

**चुसनी**-संज्ञा स्त्री०[ हिं० चूसना ] १ बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में डालकर चूसते हैं। २ दूध पिलाने की शीशी।

**चुसाना**-क्रि० स० [ हिं० चूसना का प्रे० ] चूसने का काम दूसरे से कराना।

**चुस्त**-वि० [ फ़ा० ] १. कसा हुआ। जो ढीला न हो। संकुचित। तंग। २ जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चलता। ३. दृढ़। मजबूत।

**चुस्ती**-संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. फुरती। तेजी। २. कसावट। तंगी। ३. दृढ़ता। मजबूती।

**चुहँटी**-संज्ञा स्त्री० [ देश० ] चुटकी।

**चुहचुहा**-वि० [ अनु० ] [ स्त्री० चुहचुही ] १. चुहचुहाता हुआ। २. रसीला। शोख।

**चुहचुहाता**–वि॰ [ हिं॰ चुहचुहाना ] रसीला। सरस। रँगीला। मजेदार।

**चुहचुहाना**–क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] १. रस टपकना। चटकीला लगना। २. चिड़ियों का बोलना। चहचहाना।

**चुहचुही**–संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] चमकीले काले रंग की एक बहुत छोटी चिड़िया। फुलचुही।

**चुहटना**–क्रि॰ स॰ [ देश॰ ] रौंदना। कुचलना। परेशान करना। चिमटना। लिपटना। कसकना।

**चुहड़ा**–संज्ञा पुं॰ दे॰ "चूहड़ा"।

**चुहल**–संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ चुहचुह= चिड़ियों की बोली ] हँसी। ठठोली। मनोरंजन।

**चुहलबाज**–वि॰ [ हिं॰ चुहल+फा॰ बाज (प्रत्य॰) ] ठठोल। मसखरा। दिल्लगीबाज।

**चुहाड़ा**–वि॰ [ हिं॰ चुहल ] दुष्ट। पाजी।

**चुहिया**–संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चूहा ] चूहा का स्त्री॰ और अल्पा॰ रूप।

**चुहुँटना***–क्रि॰ स॰ दे॰ "चिमटना"।

**चुहुँटनी**–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चिरमिटी"।

**चूँ**–संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] १. छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २. चूँ शब्द।

**मुहा॰**—चूँ करना=१. कुछ कहना। २. प्रतिवाद करना। विरोध में कुछ कहना।

**चूँकि**–क्रि॰ वि॰ [ फा॰ ] इस कारण से कि। क्योंकि। इसलिए कि।

**चूँदरी**–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चुनरी"।

**चूक**–संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चूकना ] १. भूल। गलती। २. कपट। धोखा। छल।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चूक ] १. नींबू, इमली, अनार आदि खट्टे फलों के रस को गाढ़ा करके बनाया हुआ एक अत्यंत खट्टा पदार्थ। २. एक प्रकार का खट्टा साग।

वि॰ बहुत अधिक खट्टा।

**चूकना**–क्रि॰ अ॰ [ सं॰ च्युक्कत, प्रा॰ चुक्कि ] १. भूल करना। गलती करना। २. लक्ष्य-भ्रष्ट होना। ३. सुअवसर खो देना।

**चूका**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चूक ] एक खट्टा साग।

**चूची**–संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ चूचुक ] स्तन। कुच।

**चूचुक**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्तन का अगला भाग।

**चूजा**–संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] मुरगी का बच्चा।

**चूड़ांत**–वि॰ [ सं॰ ] चरम सीमा। क्रि॰ वि॰ अत्यन्त। बहुत अधिक।

**चूड़ा**–संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. चोटी। शिखा। चुरकी। २. मोर के सिर पर की चोटी। ३. कुआँ। ४. गुंजा। घुँघची। ५. बाँह में पहनने का एक अलंकार। ६. चूड़ाकरण नाम का संस्कार।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चूड़ा ] १. कंकण। कड़ा। वलय। २. हाथीदाँत की चूड़ियाँ।

**चूड़ाकरण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बच्चे का पहले पहल सिर मुड़वाकर चोटी रखवाने का संस्कार। मुंडन।

**चूड़ाकर्म**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] चूड़ाकरण।

**चूड़ापाश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. स्त्रियों के सिर का जूड़ा। २. एक प्रकार का जनाना केश-विन्यास।

**चूड़ाभरण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] प्राचीन काल का एक प्रकार का केश-विन्यास।

**चूड़ामणि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सिर में पहनने का शीशफूल नाम का गहना। बीज। २. सर्वोत्कृष्ट। सबमें श्रेष्ठ।

**चूड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चूड़ा ] १. कोई मंडलाकार पदार्थ। वृत्ताकार पदार्थ। २. हाथ में पहनने का एक वृत्ताकार गहना।

**मुहा॰**—चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना=पति के मरने के समय स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना=स्त्रियों का वेष धारण करना ( व्यंग्य और हास्य )।

३. फोनाग्राफ या ग्रामोफोन बाजे का रेकार्ड जिसमें गाना भरा रहता है।

**चूड़ीदार**—वि॰ [ हिं॰ चूड़ी+फा॰ दार ] जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों।

**यौ॰**—चूड़ीदार पायजामा= एक प्रकार का चुस्त पायजामा।

**चूत**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] आम का पेड़। संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ च्युति ] योनि। भग।

**चूतड़**–संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चूत + तल ] पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग। नितंब।

**चून**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चूर्ण ] आटा। पिसान।

**चूनर, चूनरी**–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चूनरी"।

**चूना**–संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चूर्ण ] एक प्रकार का तीक्ष्ण और सफेद क्षारभस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि

पदार्थों को भट्ठियों में फूँककर बनाया जाता है।

†क्रि० अ० [ सं० च्यवन ] १. किसी द्रव पदार्थ का बूँद बूँद होकर नीचे गिरना। टपकना। २. किसी चीज का, विशेषतः फल आदि का, अचानक ऊपर से नीचे गिरना। ३. गर्भपात होना। ४. किसी चीज में ऐसा छेद या दरज हो जाना जिसमें से होकर कोई द्रव पदार्थ बूँद बूँद गिरे।

†वि० [ हिं० चूना ( क्रि० अ० ) ] जिसमें किसी चीज के चूने योग्य छेद या दरज हो।

**चूनादानी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चूना+ फ़ा० दान ] चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।

**चूनी†**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चूर्णिका ] १. अन्न का छोटा टुकड़ा। अन्नकण। २. चुन्नी।

**चूमना**–क्रि० स० [ सं० चुंबन ] होंठों से ( किसी दूसरे के ) गाल आदि अंगों को अथवा किसी और पदार्थ को स्पर्श करना या दबाना। चुम्मा लेना।

**चूमा**–संज्ञा पुं० [ सं० चुंबन, हिं० चूसना ] चूमने की क्रिया या भाव। चुंबन। चुम्मा।

**चूर**–संज्ञा पुं० [ सं० चूर्ण ] किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे या महीन टुकड़े जो उसे तोड़ने, काटने आदि से बनते हैं। बुकनी।

वि० १. तन्मय। निमग्न तल्लीन। २. मद-विह्वल। नशे में मस्त।

**चूरन**–संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण"।

**चूरना†***–क्रि० स० [सं० चूर्णन] १. चूर करना। टुकड़े टुकड़े करना। २. तोड़ना।

**चूरमा**–संज्ञा पुं० [ सं० चूर्ण ] रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ खाद्य पदार्थ।

**चूरा**–संज्ञा पुं० [ सं० चूर्ण ] चूर्ण। बुरादा।

**चूर्ण**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूखा पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे छोटे टुकड़ों में किया हुआ पदार्थ। बुकनी। २ पाचक औषधों की बारीक बुकनी। चूरन।

**यौ०**–चूर्णभाष्य=पद्य से गद्य में व्याख्या करना।

वि० तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

**चूर्णक**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सत्तू। सतुआ। २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे शब्द हों, लंबे समासवाले शब्द न हों। ३. धान।

**चूर्णा**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्या छंद का दसवाँ भेद।

**चूर्णित**–वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ।

**चूल**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिखा। २. बाल।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसे जोड़ने के लिए ठोंका जाय।

**चूलिका**–संज्ञा स्त्री० [सं०] नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना।

**चूल्हा**–संज्ञा पुं० [सं० चुल्लि] मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिस पर, नीचे आग जलाकर, भोजन पकाया जाता है।

**मुहा०**–चूल्हा जलना = भोजन बनना। चूल्हा फूँकना = भोजन पकना। चूल्हे में जाय या पड़े = नष्ट-भ्रष्ट हो।

**चूषण**–संज्ञा पुं० [ सं० ] चूसने की क्रिया।

**चूष्य**–वि० [ सं० ] चूसने के योग्य।

**चूसना**–क्रि० स० [ सं० चूषण ] १. जीभ और होंठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना। २. किसी चीज का सार भाग ले लेना। ३. धीरे धीरे धन आदि लेना।

**चूहड़**–वि० दे० "चुहाड़ा"।

**चूहड़ा**–संज्ञा पुं० [ ? ] [ स्त्री० चूहड़ी ] भंगी या मेहतर। चांडाल। श्वपच।

**चूहर**–संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा"।

**चूहा**–संज्ञा पुं० [ अनु० चूँ+हा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० अल्पा० चुहिया, चूहा आदि ] एक प्रसिद्ध छोटा जंतु जो प्रायः घरों या खेतों में बिल बनाकर रहता और अन्न आदि खाता है। मूसा।

**चूहादंती**–संज्ञा स्त्री० [हिं० चूहा + दाँत ] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।

**चूहादान**–संज्ञा पुं० [ हिं० चूहा+ फ़ा० दान ] चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।

**चूहेदानी**–संज्ञा स्त्री० दे० "चूहादान"।

**चें**–संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] चिड़ियों के बोलने का शब्द। चें चें।

**चेंच**–संज्ञा पुं० [ सं० चंचु ] एक प्रकार का साग।

**चें चें**–संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. चिड़ियों या बच्चों के बोलने का शब्द। चीं चीं। २. व्यर्थ की बकवाद। बकबक।

**चेंटुआ**–संज्ञा पुं० [हिं० चिड़िया] चिड़िया का बच्चा।

**चें पें**–संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. चिल्लाहट। २. असंतोष की पुकार।

३. चकमक।

**चेकितान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

**चेचक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] शीतला रोग।

**चेचकरू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हो।

**चेट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० चेटी या चेटिका ] १. दास। सेवक। नौकर। २. पति। ३. नायक और नायिका को मिलानेवाला। भँडुवा। ४. भाँड़।

**चेटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० चेटकी ] १. सेवक। दास। नौकर। २. चटक-मटक। ३. दूत। ४. जादू या इन्द्रजाल की विद्या। ५. कनौड़ा।

**चेटकनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चेटक"।

**चेटका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चिता ] १. चिता। २ श्मशान। मरघट।

**चेटकी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र-जाली। जादूगर। २. कौतुक करने-वाला। कौतुकी।

संज्ञा स्त्री० "चेटक" का स्त्री०।

**चेटिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "चेटी"।

**चेटुया**—संज्ञा पुं० [ सं० चेटक ] चेला। शिष्य।

**चेटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दासी।

**चेत्**—अव्य० [ सं० ] १. यदि। अगर। २. शायद। कदाचित्।

**चेत**—संज्ञा पुं० [ सं० चेतस् ] १. चित्त की वृत्ति। चेतना। संज्ञा। होश। २. ज्ञान। बोध। ३. साव-धानी। चौकसी। ४. खयाल। स्म-रण। सुध।

**चेतक**—संज्ञा पुं० [हिं०] जादूभरी।

**चेतन**—वि० [सं०] जिसमें चेतना हो। संज्ञा पुं० १. आत्मा। जीव। २. मनुष्य। ३. प्राणी। जीवधारी। ४. परमेश्वर।

**चेतनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चेतन का धर्म। चैतन्य। सज्ञानता।

**चेतना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. मनोवृत्ति। ३. ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। ४. स्मृति। सुधि। याद। ५. चेतनता। चैतन्य। संज्ञा। होश।

क्रि० अ० [ हिं० चेत+ना (प्रत्य०)] १. संज्ञा में होना। होश में आना। २. सावधान होना। चौकस होना।

क्रि० स० विचारना। समझना।

**चेता**—वि० [ सं० ] चित्तवाला। (यौ० के अंत में। जैसे—दृढ़चेता।)

**चेतावनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चेतना] वह बात जो किसी को होशियार करने के लिए कही जाय। सतर्क होने की सूचना।

**चेतिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० चिति] मुरदा जलाने की चिता। सरा।

**चेदि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक देश। २. इस देश का राजा। ३. इस देश का निवासी।

**चेदिराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिशु-पाल।

**चेना**—संज्ञा पुं० [ सं० चणक ] १. कँगनी या साँवाँ की जाति का एक मोटा अन्न। २. एक प्रकार का साग।

**चेप**—संज्ञा पुं० [ चिपचिप से अनु० ] १ कोई गाढ़ा चिपचिपा या लसदार रस। २ चिड़ियों को फँसाने का लासा।

**चेपदार**—वि० [ हिं० चेप+फ़ा० दार ] जिसमें चेप या लस हो। चिपचिपा।

**चेर, चेरा**—संज्ञा पुं० [ सं० चेटक ] [ स्त्री० चेरी ] १. नौकर। सेवक। २. चेला। शिष्य।

**चेराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चेरा+ई ] दासत्व। सेवा। नौकरी।

**चेरी**—संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री०।

**चेल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कपड़ा।

**चेलकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चेला ] चेलहाई।

**चेलहाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चेला+हाई ( प्रत्य० ) ] चेलों का समूह। शिष्यवर्ग।

**चेला**—संज्ञा पुं० [सं० चेटक] [ स्त्री० चेलिन, चेली ] १. वह जिसने कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो। शिष्य। २. वह जिसने शिक्षा ली हो। शागिर्द। विद्यार्थी।

**चेलिन, चेली**—संज्ञा स्त्री० "चेला" का स्त्री० रूप।

**चेल्हवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चिल (मछली) ] एक तरह की छोटी मछली।

**चेष्टा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शरीर के अंगों की गति। २. अंगों की गति या अवस्था जिससे मन का भाव प्रकट हो। ३. उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य्य। काम। ५. श्रम। परिश्रम। ६. इच्छा। कामना।

**चेस्टर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] ओवर कोट की तरह का एक प्रकार का बड़ा कोट।

**चेहरा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. शरीर के ऊपरी अंग का अगला भाग जिसमें मुँह, आँख, आदि रहते हैं। मुखड़ा। वदन।

यौ०—चेहरा शाही=वह रुपया जिस पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो। प्रचलित रुपया

मुहा०—चेहरा उतरना = लज्जा,

शोक, चिंता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना। चेहरा होना = फौज में नाम लिखा जाना।

२. किसी चीज का अगला भाग। आगा। ३. देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।

**चेहलुम**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह रसम जो मुहर्रम के चालीसवें दिन होती है (मुसल०)

**चै***—संज्ञा पुं० दे० "चय"।

**चैत**—संज्ञा पुं० [सं० चैत्र] फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना। चैत्र।

**चैतन्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चित्स्वरूप आत्मा। चेतन आत्मा। २. ज्ञान। बोध। चेतना। ३. ब्रह्म। ४. परमेश्वर। ५. प्रकृति। ६. एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा।

**चैती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चैत+ई (प्रत्य०)] १. वह फसल जो चैत में काटी जाय। रब्बी। २. एक चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

वि० चैत-संबंधी। चैत का।

**चैत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. मंदिर। देवालय। ३. वह स्थान जहाँ यज्ञ हो। यज्ञशाला। ४. गाँव में वह पेड़ जिसके नीचे ग्राम देवता की वेदी या चबूतरा हो। ५. किसी देवी देवता का चबूतरा। ६. बुद्ध की मूर्ति। ७. अश्वत्थ का पेड़। ८. बौद्ध संन्यासी या भिक्षुक। ९. बौद्ध संन्यासियों के रहने का मठ। विहार। १०. चिता।

**चैत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संवत् का प्रथम मास। चैत। २. बौद्ध भिक्षु। ३. यज्ञभूमि। ४. देवालय। मंदिर।

**चैत्ररथ**—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के बाग का नाम।

**चैन**—संज्ञा पुं० [सं० शयन] आराम। सुख।

**मुहा०**—चैन उड़ाना=आनंद करना। चैन पड़ना=शांति मिलना। सुख मिलना।

**चैपला**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

**चैयाँ**†—संज्ञा स्त्री० [?] बाँह।

**चैल**—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।

**चैला**—संज्ञा पुं० [हिं० छीलना] [स्त्री० अल्पा० चैली] कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है।

**चोंक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोख] वह चिह्न जो चुंबन में दाँत लगने से पड़ता है।

**चोंगा**—संज्ञा पुं० [?] कोई वस्तु रखने के लिए खोखली नली। कागज, टीन आदि की बनी हुई नली।

**चोंघना***†—क्रि० स० दे० "चुगना"।

**चोंच**—संज्ञा स्त्री० [सं० चञ्चु] १. पक्षियों के मुँह का निकला हुआ अगला भाग। टोंट। तुंड। २. मुँह। (व्यंग्य)।

**मुहा०**—दो दो चोंचें होना = कहा-सुनी होना। कुछ लड़ाई-झगड़ा होना।

**चोंटना**—क्रि० स० दे० "खोंटना"।

**चोंड़ा**†—संज्ञा पुं० [सं० चूड़ा] स्त्रियों के सिर के बाल। झोंटा।

**चोंड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० चुंडा = छोटा कुआँ] सिंचाई के लिए खोदा हुआ छोटा कुआँ।

**चोंथ**—संज्ञा पुं० [अनु०] उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।

**चोंथना**†—क्रि० स० [अनु०] किसी चीज में से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना।

**चोंधर**—वि० [हिं० चौंधियाना] १. जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। २. मूर्ख।

**चोआ**—संज्ञा पुं० [हिं० चुआना] एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो कई गंध-द्रव्यों के एक साथ मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है।

**चोई**—संज्ञा स्त्री० [?] धोई हुई दाल का छिलका।

**चोकर**—संज्ञा पुं० [हिं० चून = आटा + कराई = छिलका] गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बच जाता है।

**चोका**—संज्ञा पुं० [हिं० चुसकना] १. चूसने की क्रिया या भाव। २ चूसने की वस्तु।

**चोख***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० चोखा] तेजी।

**चोखना***—क्रि० स० [सं० चूषण] चूसना।

**चोखनी***—संज्ञा स्त्री० [सं० चूषण] चूसकर पीने की क्रिया।

**चोखा**—वि० [सं० चोक्ष] जिसमें किसी प्रकार की मैल, खोट या मिलावट आदि न हो। जो शुद्ध और उत्तम हो। २. जो सच्चा और ईमानदार हो। खरा। ३. जिसकी धार

तेज हो। पैना। धारदार।
संज्ञा पुं० उबाले या भूने हुए बैंगन, आलू आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मलकर तैयार किया हुआ सालन। भरता।

**चोगा**–संज्ञा पुं०[तु०] पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा। लबादा।

**चोगान**–संज्ञा पुं० दे० "चौगान"।

**चोचला**–संज्ञा पुं० [ अनु० ]१. अंगों की वह गति या चेष्टा जो हृदय की किसी प्रकार की, विशेषतः जवानी की उमंग में की जाती है। हाव-भाव। २. नखरा। नाज।

**चोज**–संज्ञा पुं० [ ? ] १. वह चमत्कार-पूर्ण उक्ति जिससे लोगों का मनोविनोद हो। सुभाषित। २. हँसी-ठट्ठा, विशेषतः व्यंग्यपूर्ण उपहास।

**चोट**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चुट=काटना] १.एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का वेग के साथ पतन या टक्कर। आघात। प्रहार।

**मुहा०**-चोट खाना=आघात ऊपर लेना।

२ शरीर पर आघात या प्रहार का प्रभाव। घाव। जख्म।

**यौ०**-चोट चपेट=घाव। जख्म।

३. किसी को मारने के लिए हथियार आदि चलाने की क्रिया। वार। आक्रमण। ४ किसी हिंसक पशु का आक्रमण। हमला। ५. हृदय पर का आघात। मानसिक व्यथा। ६. किसी के अनिष्ट के लिए चली हुई चाल। ७.आवाजा। बौछार। ताना। ८. विश्वासघात। धोखा। दगा। ९.बार। दफा। मरतबा।

**चोटहा**†–वि० [ हिं० चोट ] चोट खाया हुआ। चुटैल।

**चोटैल**–दे० चुटैल।

**चोटा**–संज्ञा पुं०[हिं०चोआ] राब का पसेव जो छानने से निकलता है। चोआ।

**चोटार**†–वि० [ हिं० चोट+आर (प्रत्य०)] चोट खाया हुआ। चुटैल।

**चोटारना**†–क्रि० अ० [ हिं चोट] चोट करना।

**चोटियाना**–क्रि० स० [ हिं० चोट] चोट लगाना।
क्रि० स० [ हिं० चोटी ] १. चोटी पकड़ना। २. वश में करना।

**चोटी**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चूड़ा ] १. सिर के मध्य के थोड़े से कुछ बड़े बाल जिन्हें प्रायः हिंदू नहीं कटाते। शिखा। चुंदी।

**मुहा०**–चोटी दबना=बेबस होना। लाचार होना। ( किसी की )चोटी ( किसी के ) हाथ में होना=किसी प्रकार के दबाव में होना।

२. एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल। ३.सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं। ४. जूड़े में पहनने का एक आभूषण। ५. कुछ पक्षियों के सिर के वे पर जो ऊपर उठे रहते हैं। कलगी। शिखर।

**मुहा०**–चोटी का =सर्वोत्तम।

**चोटी-पोटी**†–वि० स्त्री० [ देश० ] १. खुशामद से भरी हुई (बात)। २. झूठी या बनावटी ( बात )।

**चोट्टा**–संज्ञा पुं० [ हिं० चोर ] [ स्त्री० चोट्टी ] वह जो चोरी करता हो। चोर।

**चोड़**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १.उत्तरीय वस्त्र। २. चोल नामक प्राचीन देश।

**चोदक**–वि०[सं०] प्रेरणा करनेवाला।

**चोदना**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २.प्रेरणा। ३. योग आदि के संबंध का प्रयत्न।

**चोप***–संज्ञा पुं० [ हिं० चाव ] १. गहरी चाह। इच्छा। ख्वाहिश। २. चाव। शौक। रुचि। ३. उत्साह। उमंग। ४. बढ़ावा।

**चोपना***†–क्रि० अ० [ हिं० चोप ] किसी वस्तु पर मोहित हो जाना। मुग्ध होना।

**चोपी***–वि० [ हिं० चोप ] १. इच्छा रखनेवाला। २. उत्साही।

**चोब**–संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २.नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३. सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। ४. छड़ी। सोटा।

**चोबचीनी**–संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] एक काष्ठौषधि जो एक लता की जड़ है।

**चोबदार**–संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है। आसा-बरदार। २. प्रतीहार। द्वारपाल।

**चोर**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चुराने या चोरी करनेवाला। तस्कर।

**मुहा०**–मन में चोर पैठना=मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना।

२. ऊपर से अच्छे हुए घाव में वह दूषित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है। ३. वह छोटी संधि या छेद, जिसमें से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय। ४. खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं। ५. चोरक ( गंधद्रव्य )।
वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले।

**चोरकट**–संज्ञा पुं० [ हिं० चोर+कट=काटनेवाला ] चोर। उचक्का।

**चोरटा**—संज्ञा पुं० दे० "चोट्टा"।

**चोर-दंत**—संज्ञा पुं० [ हिं० चोर + दंत ] वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त बहुत कष्ट के साथ निकलता है।

**चोरदरवाजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० चोर + दरवाजा ] मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार।

**चोरपुष्पी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अंधाहुली।

**चोरमहल**—संज्ञा पुं० [ हिं० चोर + महल ] वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं।

**चोरमिहीचनी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चोर + मीचना=बंद करना ] आँख-मिचौली का खेल।

**चोराचोरी***†—क्रि० वि० [ हिं० चोर + चोरी ] छिपे छिपे, चुपके चुपके।

**चोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चोर ] १ छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम। चुराने की क्रिया। २. चुराने का भाव। ३. चोली।

**चोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। २. उक्त देश का निवासी। ३. स्त्रियों के पहनने की चोली। ४. कुरते के ढंग का एक पहनावा। चोला। ५. कवच। जिरहबक्तर।

**चोलना**†—संज्ञा पुं० दे० "चोला"।

**चोला**—संज्ञा पुं० [ सं० चोल ] १. एक प्रकार का बहुत लंबा और ढीला-ढाला कुरता जो प्रायः साधु, फकीर पहनते हैं। २. एक रसम जिसमें नए जनमे हुए बालक को पहले पहल कपड़े पहनाए जाते हैं। ३. शरीर। बदन। तन।

**मुहा०**— चोला छोड़ना = मरना। प्राण त्यागना। चोला बदलना= एक शरीर परित्याग करके दूसरा शरीर धारण करना। ( साधु )

**चोली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चोल ] अँगिया की तरह का स्त्रियों का पहनावा।

**मुहा०**—चोली दामन का साथ=बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता।

**चोषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चूसना।

**चोष्य**—वि० [ सं० ] जो चूसने के योग्य हो।

**चौंक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौंकना ] चौंकने की क्रिया का भाव।

**चौंकना**—क्रि० अ० [ हिं० चौंक + ना ( प्रत्य० ) ] १. एकाएक डर जाने या पीड़ा आदि अनुभव करने पर झट से काँप या हिल उठना। झिझकना। २. चौकन्ना होना। खबरदार होना। ३. चकित होना। भौंचक्का होना। ४. भय या आशंका से हिचकना। भड़कना।

**चौंकाना**—क्रि० स० [ हिं० चौंकना का प्रे० ] किसी को चौंकने में प्रवृत्त करना। भड़काना।

**चौंध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० चक्=चमकना ] चकचौंध। तिलमिलाहट।

**चौंधना***—क्रि० अ० [ हिं० चौंध ] इस प्रकार चमकना कि चकाचौंध उत्पन्न हो।

**चौंधियाना**—क्रि० अ० [ हिं० चौंध ] १. अत्यंत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना। चकाचौंध होना। २. आँखों से सुझाई न पड़ना।

**चौंधी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चकचौंध"।

**चौंर**—संज्ञा पुं० दे० "चँवर"।

**चौंराना***—क्रि० स० [ सं० चामर ] १. चँवर डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ू देना।

**चौंरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौंर ] १. काठ की डाँड़ी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आता है। २. चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। ३. सफेद पूँछवाली गाय।

**चौ**—वि० [सं० चतुः] चार (संख्या)। ( केवल यौगिक में ) जैसे, चौपहल। संज्ञा पुं० मोती तौलने का एक मान।

**चौआ**—संज्ञा पुं० दे० "चौवा"।

**चौआना***—क्रि० अ० [ हिं० चौंकना ] १. चकपकाना। चकित होना। २. चौकन्ना होना।

**चौक**—संज्ञा पुं० [ सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क ] १. चौकोर भूमि। चौखूँटी खुली जमीन। २. घरके बीच की कोठरियों और बरामदों से घिरा हुआ चौखूँटा खुला स्थान। आँगन। सहन। ३. चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४. मंगल अवसरों पर पूजन के लिए आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। ५. शहर के बीच का बड़ा बाजार। ६. चौराहा। चौमुहानी। ७. चौसर खेलने का कपड़ा। बिसात। ८. सामने के चार दाँतों की पंक्ति।

**चौकड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ + कड़ा] कान में पहनने की वह बालियाँ जिनमें दो दो मोती हों।

**चौकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौ=चार + सं० कला=अंग ] १. हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता हुआ जाता है। चौफाल। कुदान। फलाँग। कुलाँच।

**मुहा०**—चौकड़ी भूल जाना=बुद्धि का काम न करना। सिटपिटा जाना।

चक्कर आना।

२. चार आदमियों का गुट्ट। मंडली।

चौ०-चंडाल चौकड़ी=उपद्रवियों की मंडली।

३. एक प्रकार का गहना। ४. चार युगों का समूह। चतुर्युगी। ५. पलथी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ+घोड़ी] चार घोड़ों की गाड़ी।

**चौकन्ना**—वि० [हिं० चौ=चारों ओर+कान] १. सावधान। होशियार। चौकस। सजग। २. चौंका हुआ। आशंकित।

**चौकल**—संज्ञा पुं० [सं०] चार मात्राओं का समूह।

**चौकस**—वि० [हिं० चौ=चार+कस=कसा हुआ] १. सावधान। सचेत। होशियार। २. ठीक। दुरुस्त। पूरा।

**चौकसाई***†—संज्ञा स्त्री० दे० 'चौकसी'।

**चौकसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौकस] सावधानी। होशियारी। खबरदारी।

**चौका**—संज्ञा पुं० [सं० चतुष्क] १. पत्थर का चौकोर टुकड़ा। चौखूँटी सिल। २. काठ या पत्थर का पाटा जिसपर रोटी बेलते हैं। चकला। ३. सामने के चार दाँतों की पंक्ति। ४. सिर का एक गहना। सीसफूल। ५. लिपा पुता स्थान जहाँ हिंदू रसोई बनाते या खाते हैं। ६. मिट्टी या गोबर का लेप जो सफाई के लिए किसी स्थान पर किया जाय।

मुहा०—चौका लगाना=१. लीप-पोतकर बराबर करना। २. सत्यानाश करना।

७. एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह। जैसे—मोतियों का चौका। ८. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।

**चौकिया सोहागा**—संज्ञा पुं० [हिं० चौकी+सोहागा] छोटे छोटे चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा।

**चौकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० चतुष्की] चौकोर आसन जिसमें चार पाए लगे हों। छोटा तख्त। २. कुरसी। ३. मंदिर में मंडप के खंभों के बीच का स्थान जिसमें से होकर मंडप में प्रवेश करते हैं। ४. पड़ाव। ठहरने की जगह। टिकान। अड्डा। ५. वह स्थान जहाँ आस-पास की रक्षा के लिए थोड़े से सिपाही आदि रहते हों। ६. पहरा। खबरदारी। रखवाली। ७. वह भेंट या पूजा जो किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई जाती है। ८. गले में पहनने का एक गहना। पटरी। ९. रोटी बेलने का छोटा चकला।

**चौकीदार**—संज्ञा पुं० [हिं० चौकी+फ़ा०+दार] १. पहरा देनेवाला। २. गोंड़ैत।

**चौकीदारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. पहरा देने का काम। रखवाली। खबरदारी। २. चौकीदार का पद। ३. वह चंदा या कर जो चौकीदार रखने के लिए लिया जाय।

**चौकोना**—वि० दे० "चौकोर।

**चौकोर**—वि० [सं० चतुष्कोण] जिसके चार कोने हों। चौखूँटा। चतुष्कोण।

**चौखट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+काठ] १. लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं। २. देहली। डेहरी।

**चौखटा**—संज्ञा पुं० [हिं० चौखट] चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुँह देखने का या तसवीर का शीशा जड़ा जाता है। फ्रेम।

**चौखानि**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+खानि=जाति] अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव।

**चौखूँट**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ+खूँट] १. चारों दिशाएँ। २. भूमंडल।

क्रि० वि० चारों ओर।

**चौखूँटा**—वि० दे० "चौकोर"।

**चौगड्डा**—संज्ञा पुं० दे० "चौराहा"।

**चौगान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं। २. चौगान खेलने का मैदान। ३. नगाड़ा बजाने की लकड़ी। युद्धभूमि।

**चौगिर्द**—क्रि० वि० [हिं० चौ+फ़ा० गिर्द=तरफ] चारों ओर। चारो तरफ।

**चौगुना**—वि० [सं० चतुर्गुण] [स्त्री० चौगुनी] चार बार और उतना ही; चतुर्गुण।

**चौगोड़िया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० चौ=चार+ गोड़ = पैर] एक प्रकार की ऊँची चौकी।

**चौगोशिया**—वि० [फ़ा०] चार कोनवाला।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी।

संज्ञा पुं० तुरकी घोड़ा।

**चौघड़**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+दाढ़] किनारे का वह चौड़ा चिपटा दाँत जो आहार कूचने या चबाने के काम में आता है। चौभर।

**चौघड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० चौ=चार+घर=खाना] १. पान, इलायची रखने का डिब्बा जिसमें चार खाने बने होते हैं। २. चार खानों का बरतन जिसमें मसाला आदि रखते हैं। ३. पत्ते की वह खोंगी जिसमें

चार खीझे पान हों।

**चौघर**†—वि॰ [ देश॰ ] घोड़ों की एक चाल। चौफाल। पोइया। सरपट।

**चौघोड़ी***†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौ + घोड़ा ] चार घोड़ों की गाड़ी। चौकड़ी।

**चौचंद***†—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ चौथ + चंद या चवाव+चंड ] कलंक-सूचक अपवाद। बदनामी की चर्चा। निंदा। शोर करना।

**चौचंदहाई***—वि॰ स्त्री॰ [ हिं॰ चौचंद + हाई ( प्रत्य॰ ) ] बदनामी करनेवाली।

**चौड़ा**—वि॰ [ सं॰ चिपिट=चिपटा] [ स्त्री॰ चौड़ी ] लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच विस्तृत। चकला। लंबा का उलटा।

**चौड़ाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौड़ा+ ई ( प्रत्य॰ )] चौड़ापन। फैलाव। अर्ज।

**चौड़ान**-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चौड़ाई"।

**चौडोल**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चंडोल ] १. एक प्रकार का बाजा। २. दे॰ "चंडोल"।

**चौतनियाँ**— संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चौतनी"।

**चौतनी**-संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौ=चार + तनी = बंद ] बच्चों की वह टोपी जिसमें चार बंद लगे रहते हैं।

**चौतरा**†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "चबूतरा"।

**चौतही**-संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौ + तह ] खेस की बुनावट का एक मोटा कपड़ा।

**चौताल**-संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चौ+ताल ] १. मृदंग का एक ताल। २. एक प्रकार का गीत जो होली में गाया जाता है।

**चौतुका**-वि॰ [ हिं॰ चौ + तुक ] जिसमें चार तुक हों।

संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों की तुक मिली होती है।

**चौथ**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ चतुर्थी ] १. पक्ष की चौथी तिथि। चतुर्थी।

**मुहा॰**—चौथ का चाँद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चंद्रमा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले तो उसे झूठा कलंक लगता है। २. चतुर्थांश। चौथाई भाग। ३. मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था।

*। वि॰ चौथा।

**चौथपन***-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ चौथा+पन] जीवन की चौथी अवस्था। बुढ़ापा।

**चौथा**—वि॰ [ सं॰ चतुर्थ ] [स्त्री॰ चौथी ] क्रम में चार के स्थान पर पड़नेवाला।

**चौथाई**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चौथा + ई ( प्रत्य॰ ) ] चौथा भाग। चतुर्थांश। चहारुम।

**चौथिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चौथा ] १. वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे। २. चौथाई का हकदार।

**चौथी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौथा ] १ विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के कंगन खोले जाते हैं। २. फसल की वह बाँट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है।

**चौदंता**—वि॰ [हिं॰ चौ + दाँत ] १. चार दाँतोंवाला।२.उद्दंड।बदमाश।

**चौदस**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ चतुर्दशी ] पक्ष का चौदहवाँ दिन। चतुर्दशी।

**चौदह**—वि॰ [ सं॰ चतुर्दश ] जो गिनती में दस और चार हो।

संज्ञा पुं॰ दस और चार के जोड़ की संख्या। १४।

**चौदाँत**†*—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ चौ= चार + दाँत ]

दो हाथियों की लड़ाई। हाथियों का मुठभेड़।

**चौधराई**-संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ चौधरी ] १. चौधरी का काम। २. चौधरी का पद।

**चौधरी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चतुर + धर ] किसी समाज या मंडली का मुखिया जिसका निर्णय उस समाजवाले मानते हैं। प्रधान।

**चौप***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "चोप"।

**चौपई**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ चतुष्पदी ] १५ मात्राओं का एक छंद।

**चौपट**—वि॰ [ हिं॰चौ=चार + पट= किवाड़ा ] चारों ओर से खुला हुआ। अरक्षित।

वि॰ नाश-भ्रष्ट। तबाह। बरबाद।

**चौपटा**--वि॰ [ हिं॰ चौपट + आ ( प्रत्य॰ ) ] चौपट करनेवाला।

**चौपड़**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चौसर"।

**चौपत**†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौ= चार + परत ] कपड़े की तह या घड़ी।

**चौपतरना, चौपताना**-क्रि॰ स॰ [हिं॰ चौपत] कपड़े की तह लगाना।

**चौपनिया**-संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ चौ + पची ] १. एक प्रकार की घास। २. एक साग।

**चौपथ**-संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चतुष्पथ ] चौराहा।

**चौपद***†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "चौपाया"।

**चौपदा**-संज्ञा पुं॰ [ सं॰ चतुष्पद] एक प्रकार का छंद जिसमें चार पद या चरण होते हैं।

**चौपहल**–वि० [ हिं० चौ + फ़ा० पहलू ] जिसके चार पहल या पार्श्व हों। वर्गात्मक।

**चौपाई**–संज्ञा स्त्री० [ सं० चतुष्पदी ] १. १६ मात्राओं का एक छंद। † २. चारपाई।

**चौपाया**–संज्ञा पुं० [ सं० चतुष्पद ] चार पैरोंवाला पशु। गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

**चौपाल**–संज्ञा पुं० [हिं० चौबार ] १. बैठने उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो, पर चारों ओर खुला हो। २. बैठक। ३. दालान। ४. एक प्रकार की पालकी।

**चौपुरा**–संज्ञा पुं० [हिं० चौ + पुरवट] वह कूआँ जिस पर चारों ओर चार पुरवट या मोट एक साथ चल सकें।

**चौपैया**–संज्ञा पुं० [ सं० चतुष्पदी ] १. एक प्रकार का छंद। † २. चारपाई। खाट।

**चौफला**–वि० [हिं० चौ + फल] चार फलोंवाला। ( चाकू आदि )

**चौफेर**–क्रि० वि० [हिं० चौ + फेरा] चारों तरफ।

**चौबंदी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौ + बंद ] एक प्रकार का छोटा चुस्त अंगा। बगलबंदी।

**चौबंसा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक वर्णवृत्त।

**चौबगला**—संज्ञा पुं० [ हिं० चौ + बगल ] कुरते, अंगे इत्यादि में बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग। वि० चारों ओर का।

**चौबाई**†–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौ + बाई =हवा ] १. चारों ओर से बहनेवाली हवा। २. अफवाह। किंवदंती। उड़ती खबर।

**चौबारा**– संज्ञा पुं० [हिं० चौ + बार] १. कोठे के ऊपर की खुली कोठरी। बँगला। बालाखाना। २. खुली हुई बैठक।
क्रि० वि० [ हिं० चौ=चार + बार= दफा ] चौथी दफा। चौथी बार।

**चौबे**–संज्ञा पुं० [ सं० चतुर्वेदी ] [स्त्री० चौबाइन ] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा।

**चौबोला**–संज्ञा पुं० [ हिं० चौबोल ] एक प्रकार का मात्रिक छंद।

**चौभड़**–संज्ञा स्त्री० दे० "चौभड़"।

**चौमंजिला**–वि० [ हिं० चौ=चार + फ़ा० मंजिल ] चार मरातिब या खंडोंवाला ( मकान आदि )।

**चौमसिया**–वि० [ हिं० चौ + मास ] वर्षा के चार महीनों में होनेवाला।
संज्ञा पुं० [ हिं० चार + माशा ] चार माशे का बाट।

**चौमार्ग**–संज्ञा पुं० दे० "चौराहा"।

**चौमासा**–संज्ञा पुं० [ सं० चातुर्मास ] १ वर्षा काल के चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन। चातुर्मास। २. वर्षा ऋतु के संबंध की कविता।

**चौमुख**–क्रि० वि० [ हिं० चौ=चार + मुख=ओर ] चारों ओर। चारों तरफ।

**चौमुखा**–वि० [ हिं० चौ=चार + मुख] [ स्त्री० चौमुखी ] चारों ओर चार मुँहवाला।

**चौमुहानी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौ= चार फ़ा० मुहाना ] चौराहा। चौरास्ता। चतुष्पथ।

**चौमेखा**–वि० [ हिं० चौ + मेख ] चार मेखोंवाला।
संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का दण्ड या सजा।

**चौरंग**–संज्ञा पुं० [ हिं० चौ=चार + रंग=प्रकार ] तलवार का एक हाथ।
वि० तलवार के वार से कटा हुआ।

**चौरंगा**–वि० [ हिं० चौ + रंग ] [ स्त्री० चौरंगी ] चार रंगों का। जिसमें चार रंग हों।

**चौर**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दूसरों की वस्तु चुरानेवाला। चोर। २. एक गंध द्रव्य।

**चौरस**–वि० [ हिं० चौ=चार + (एक) रस=समान ] १. जो ऊँचा नीचा न हो। समतल। बराबर। २. चौपहल। वर्गात्मक।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का वर्णवृत्त।

**चौरसाना**–क्रि० स० [ हिं० चौरस] चौरस करना।

**चौरस्ता, चौरहर**–संज्ञा पुं० दे० "चौराहा"।

**चौरा**–संज्ञा पुं० [ सं० चतुर ] [स्त्री० अल्पा० चौरी ] १. चबूतरा। वेदी। २. किसी देवता, सती, मृत महात्मा, भूत, प्रेत आदि का स्थान जहाँ वेदी या चबूतरा बना रहता है। † ३. चौपाल। चौबारा। ४. लोबिया। बोड़ा। अरवा। रवाँस।

**चौराई**–संज्ञा स्त्री० दे० "चौलाई"।

**चौरासी**–वि० [ सं० चतुरशीति ] अस्सी से चार अधिक।
संज्ञा पुं० १. अस्सी से चार अधिक की संख्या। ८४। २ चौरासी लक्ष योनि।
**मुहा०**–चौरासी में पड़ना या भरमना= निरंतर बार बार कई प्रकार के शरीर धारण करना।
३. नाचते समय पैर में बाँधने का घुँघरू।

**चौराहा**–संज्ञा पुं० [ हिं० चौ=चार + राह=रास्ता] चौरस्ता। चौमुहानी।

**चौरी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौरा ] छोटा चबूतरा।

**चौरेठा**–संज्ञा पुं० [ हिं० चाउर + पीठा ] पानी के साथ पीसा हुआ चावल।
**चौर्य**–संज्ञा पुं० [ सं० ] चोरी।
**चौलसंस्कार**–संज्ञा पुं० [सं०] मुंडन
**चौलाई**–सं० स्त्री० [ हिं० चौ + राई =दाने ] एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।
**चौलुक्य**†–संज्ञा पुं० दे० "चालुक्य"।
**चौवर, चौवा**–संज्ञा पु०[हिं०चौ=चार] १.हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. अँगूठे को छोड़ हाथ की बाकी उँगलियों की पंक्ति में लपेटा हुआ तागा। ३. चार अंगुल की माप। ४. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
†संज्ञा पुं० दे० "चौपाया"।
**चौसर**–संज्ञा पुं० [ सं० चतुस्सारि ] १ एक खेल जो बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जाता है। चौपड़। नर्दबाजी। २. इस खेल की बिसात।
संज्ञा पुं० [ चतुरंसक ] चार लड़ी का हार।
**चौहट्ट**†*–संज्ञा पु० दे० "चौहट्टा"।
**चौहट्टा**–संज्ञा पुं० [ हिं० चौ=चार + हाट ] १. वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौक। २ चौमुहानी। चौरस्ता।
**चौहद्दी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० चौ + फ़ा० हद ] चारों ओर की सीमा।
**चौहरा**–वि० [ हिं० चौ=चार + हरा] १. जिसमें चार फेरे या तहें हों। चार परतवाला। †२. चौगुना। जो चार बार हो।
**चौहान**–संज्ञा पुं० [ ?] क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।
**चौहैं**–क्रि० वि० [ हिं० चौ ] चारों ओर।
**च्यवन**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चूना। झरना। टपकना। २. एक ऋषि का नाम।
**च्यवनप्राश**–संज्ञा पुं० [ सं० ] आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह।
**च्युत**–वि० [ सं० ] १. गिरा हुआ। झड़ा हुआ। २. भ्रष्ट। ३ अपने स्थान से हटा हुआ। ४. विमुख। पराङ्मुख।
**च्युति**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. झड़ना। गिरना। २. गति। उपयुक्त स्थान से हटना। ३ चूक। कर्तव्य-विमुखता।

—:*:—

## छ

**छ**–हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।
**छंग***–संज्ञा पुं० दे० "उछंग"।
**छँगुनियाँ, छँगुली***–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छँगुली ] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।
**छँछोरी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाछ + बरी ] एक पकवान जो छाछ में बनाया जाता है।
**छँटना**–क्रि० अ० [ सं० चटन ] १. कटकर अलग होना। छिन्न होना। २. अलग होना। दूर होना। ३. समूह से अलग होना। ४ चुनकर अलग कर लिया जाना।
**मुहा०**–छँटा हुआ = १ चुना हुआ। २ चालाक। चतुर। धूर्त।
५ साफ होना। मैल निकलना। ६ क्षीण होना। दुबला होना।
**छँटवाना**–क्रि० स० [ हिं० छाँटना ] १. कटवाना। २. चुनवाना। ३ छिलवाना।
**छँटाई**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाँटना ] छाँटने का काम, भाव या मजदूरी।
**छँटैल**–वि० [ हिं० छँटना ] १. छँटा हुआ। २. धूर्त या चालाक।
**छँड़ना***–क्रि० स० [ हिं० छोड़ना ] १. छोड़ना। त्यागना। २. अन्न को ओखली में डालकर कूटना। छाँटना।
**छँड़ाना***†–क्रि० स० [ हिं० छुड़ाना ] छीनना। छुड़ाकर ले लेना।
**छंद**–संज्ञा पुं० [ सं० छंदस् ] १. वेदों के वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है। २. वेद। ३. वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो। पद्य। ४ वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रखने की व्य-

वस्था। पद्यबंध। वृत्त। ५. वह विद्या जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो। ६. अभिलाषा। इच्छा। ७. स्वेच्छाचार। ८. बंधन। गाँठ। ९. जाल। संघात। समूह। १०. कपट। छल।

यौ०—छल-छंद=कपट। धोखेबाजी। ११. चाल। युक्ति। १२. रंग ढंग। आकार। चेष्टा। १३. अभिप्राय। मतलब।

संज्ञा पुं० [सं० छदक] एक आभूषण जो हाथ में पहना जाता है।

**छंदोबद्ध**-वि० [सं०] श्लोकबद्ध। जो पद्य के रूप में हो।

**छंदोभंग**-संज्ञा पुं० [सं०] छंद-रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।

**छः**-वि० [सं० षट्, प्रा० छ] गिनती में पाँच से एक अधिक।

संज्ञा पुं० १ वह संख्या जो पाँच से एक अधिक हो। २. इस संख्या का सूचक अंक।

**छ**-संज्ञा पुं० [सं०] १. काटना। २. ढाँकना। आच्छादन। ३. घर। ४. खंड। टुकड़ा।

**छकड़ा**-संज्ञा पुं० [सं० शकट] बोझ लादने की बैलगाड़ी। सग्गड़। लढ़ा।

**छकड़ी**-संज्ञा स्त्री० [हिं० छः+कड़ी] १.छः का समूह। २.वह पालकी जिसे छः कहार उठाते हों। ३. छः घोड़ों की गाड़ी।

**छकना**-क्रि० अ० [सं० चकन] [संज्ञा छाक] १. खा-पीकर अघाना। तृप्त होना। २. मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना।

क्रि० अ० [सं० चक = भ्रांत] १. चकराना। अचंभे में आना। २. दिक होना।

**छकाना**-क्रि० स० [हिं० छकना] १. खिला पिलाकर तृप्त करना। २. मद्य आदि से उन्मत्त करना।

क्रि० स० [सं० चक = भ्रांत] १. अचंभे में डालना। २.दिक करना।

**छकीला**-वि० [हिं० छकना] १. छका हुआ। तृप्त। २. मस्त। मत्त।

**छक्का**-संज्ञा पुं० [सं० षट्क] १. छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवयवों से बनी हो। २. षड्दर्शन। छः शास्त्र। ३. जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी फेंकने से छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें।

मुहा०+छक्का पंजा = चालबाजी। ४. जुआ। ५. वह ताश जिसमें छः बूटियाँ हों। ६. होश हवास। सुध। संज्ञा।

मुहा०— छक्के छूटना=१. होश-हवास जाता रहना। बुद्धि का काम न करना। २. हिम्मत हारना। साहस छूटना।

**छगड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० छागल] बकरा।

**छगन**—संज्ञा पुं० [सं० छगण=एक छोटी मछली] छोटा बच्चा। प्रिय बालक।

वि० बच्चों के लिए एक प्यार का शब्द।

**छगुनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० छोटी+उँगली] कनिष्ठिका। कानी उँगली।

**छछिआ,छछिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० छाछ] छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र।

**छछूँदर**—संज्ञा पुं० [सं० छछुंदरी] १. चूहे की जाति का एक जंतु। २. एक प्रकार का यंत्र या तावीज। ३. एक आतिशबाजी।

**छजना**—क्रि० अ० [सं० सज्जन] १. शोभा देना। सजना। अच्छा लगना। २. उपयुक्त। जान पड़ना। ठीक जँचना।

**छज्जा**—संज्ञा पुं० [हिं० छाजना या छाना] १. छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है। ओलती। २.कोठे या पाटन का वह भाग जो कुछ दूर तक दीवार के बाहर निकला रहता है।

**छटकना**—क्रि० अ० [अनु० या हिं० छूटना] १. किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना। सटकना। २. दूर रहना। अलग अलग फिरना। ३. वश में से निकल जाना। ४. कूदना।

**छटकाना**—क्रि० अ०[हिं० छटकना] १. दाब या पकड़से बलपूर्वक निकल जाने देना। २.झटका देकर पकड़ या बंधन से छुड़ाना। ३. पकड़ या दबाव में रखनेवाली वस्तु को बल पूर्वक अलग करना।

**छटपटाना**—क्रि० अ० [अनु०] बंधन या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटकारना। तड़फड़ाना। २. बेचैन होना। व्याकुल होना। ३. किसी वस्तु के लिए व्याकुल होना।

**छटपटी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. घबराहट। बेचैनी। २. आकुलता। गहरी-उत्कंठा।

**छटाँक**—संज्ञा स्त्री० [हिं०छ+टाँक] एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है।

**छटा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति प्रकाश। २. शोभा। सौंदर्य। ३. बिजली।

मुहा०—छटा हुआ=चतुर। बदमाश

**छठ**—संज्ञा स्त्री० [सं० षष्ठी] पक्ष

की छठी तिथि।

**छठा**—वि० [ सं० षष्ठ ] [ स्त्री०छठी] जो क्रम में पाँच और वस्तुओं के उपरांत हो।

**छठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं०षष्ठी ] जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार।

**मुहा०**—छठी का दूध याद आना= सब सुख भूल जाना। बहुत हैरानी होना।

**छड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शर ] धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

**छड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० छड़ ] पैर में पहनने का गहना।

वि० [ हिं० छाँड़ना] अकेला। एका-एकी।

**छड़िया**—संज्ञा पुं० [ हिं० छड़ी ] दरबान।

**छड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छड़ ] १. सीधी पतली लकड़ी। पतली लाठी। २. झंडी जिसे मुसलमान पीरों की मजार पर चढ़ते हैं।

**छत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छत्र ] १. घर की दीवारों के ऊपर चूने, कंकड़ से बनाया हुआ फर्श। पाटन। २. ऊपर का खुला हुआ कोठा। ३. छत के ऊपर तानने की चादर। चाँदनी।

*संज्ञा पुं०[सं०क्षत] घाव।। जख्म।

*क्रि० वि०[सं० सत्] होते हुए। रहते हुए। आछत।

**छतगीर,छतगीरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छत+फ़ा० गीर ] ऊपर तानी हुई चाँदनी।

**छतना***—संज्ञा पुं० [ हिं० छाता ] पत्तों का बना हुआ छाता।

**छतनार**|—वि० [ हिं० छाता या छतना ] [ स्त्री० छतनारी ] छाते की तरह फैला हुआ। दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। (पेड़)

**छतरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छत्र ] १. छाता। २. एक प्रकार का बहुत बड़ा छाता जिसके सहारे आजकल सैनिक लोग हवाई जहाजों से जमीन पर उतरते हैं।

**यौ०**—छतरी फौज=छतरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरने वाली सेना।

३.मंडप। ४.समाधि के स्थान पर बना हुआ। छज्जेदार मंडप। ५.कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की फट्टियों का टट्टर। ६. खुमी।

**छतिया***|—संज्ञा स्त्री०दे० "छाती"।

**छतियाना**—क्रि० स० [ हिं० छाती ] १. छाती के पास ले जाना। २. बन्दूक छोड़ने के समय कुंदे को छाती के पास लगाना।

**छतिवन**-संज्ञा पु० [ सं० सप्तपर्णी ] एक पेड़। सप्तपर्णी।

**छतीसा**-वि० [ हिं० छत्तीस ] [ स्त्री० छतीसी ] १. चतुर। सयाना। २. धूर्त।

**छत्तर**|-संज्ञा पु० १ दे० "छत्र"। २. दे० "सत्र"।

**छत्ता**—संज्ञा पु० [ सं० छत्र ] १ छाता। छतरी। २. पटाव या छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो। ३. मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर। ४. छाते की तरह दूर तक फैली हुई वस्तु। छतनारी चीज। चकत्ता। ५. कमल का बीजकोश।

**छत्तेदार**—वि० [ हिं० छत्ता + फ़ा० दार (प्रत्य०) ] १. जिस पर पटाव या छत हो। २. मधुमक्खी के छत्ते के आकार का।

**छत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छाता। छतरी। २ राजाओं का रुपहला या सुनहरा छाता जो राजचिह्नों में से एक है।

**यौ०**—छत्रछाँह, छत्रछाया=रक्षा। शरण।

३ खुमी। भूफोड़। कुकुरमुत्ता।

**छत्रक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खुमी। कुकुरमुत्ता। छाता। २. तालमखाने की जाति का एक पौधा। ३. मंदिर। मंडप। देवमंदिर। ४.शहद का छत्ता।

**छत्रधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो राजाओं पर छत्र लगाता हो।

**छत्रधारी**-वि० [ सं० छत्रधारिन् ] जो छत्र धारण करे। जैसे, छत्रधारी राजा।

**छत्रपति**-संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा।

**छत्रपन***—वि० [ सं० क्षत्रिय + पन ] क्षत्रियत्व।

**छत्रबंधु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीच कुल का क्षत्रिय।

**छत्रभंग**-संज्ञा पु० [ सं० ] १ राजा का नाश। २ ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना गया है। ३. अराजकता।

**छत्री**-वि० [ सं० क्षत्रिन् ] छत्रयुक्त। संज्ञा पु० | दे० "क्षत्रिय"।

**छद**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ढक लेने-वाली वस्तु। आवरण। जैसे—रद-च्छद। २. पक्ष। चिड़ियों का पंख। ३. पत्ता।

**छदन**-संज्ञा पु० दे० "छद"।

**छदाम**-संज्ञा पु० [ हिं० छः + दाम ] पैसे का चौथाई भाग।

**छद्म**-संज्ञा पु० [ सं० छद्मन् ] १. छिपाव। गोपन। २. व्याज। बहाना। हीला। ३. छल। कपट। जैसे—छद्मवेश।

**छद्मवेश**-संज्ञा पु० [ सं० ] [ वि० छद्मवेशी ] बदला हुआ वेश। कृत्रिम वेश।

**छमी**—वि० [ सं० छद्मिन् ] [ स्त्री० छद्मिनी ] १. बनावटी वेश धारण करनेवाला । २. छली । कपटी ।

**छन**—संज्ञा पुं० दे० "क्षण" ।

**छनक**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] छन छन करने का शब्द । झनझनाहट । झनकार ।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. छनकने की क्रिया या भाव । २. किसी आशंका से चौंककर भागने की क्रिया । भड़क ।

*संज्ञा पुं० [ हिं० छन + एक ] एक क्षण ।

**छनक-मनक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. गहनों की झंकार । २. सजधज । ३. ठसक । ४. दे० "छमक-मनक" ।

**छनकना**—क्रि० अ० [ अनु० छन + छन ] १. किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूँद का छन छन शब्द करके उड़ जाना । २. *झनकार करना । बजना ।

क्रि० अ० [ अनु० ] चौंकना होकर भागना ।

**छनकाना**—क्रि० स० [ हिं० छनकना ] छन छन शब्द करना ।

क्रि० स० [ हिं० छनकना ] चौंकाना । चौकन्ना करना । भड़काना ।

**छनछनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के कारण छन छन शब्द होना । २. खौलते हुए घी, तेल आदि में किसी गीली वस्तु के पड़ने के कारण छन छन शब्द होना । ३. झनझनाना । झनकार होना ।

क्रि० स० १ छन छन का शब्द उत्पन्न करना । २. झनकार करना ।

**छनछवि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षण-छवि ] बिजली ।

**छनदा***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षणदा" ।

**छनना**—क्रि० अ० [ सं० क्षरण ] १. किसी पदार्थ का महीन छेदों में से इस प्रकार नीचे गिरना कि मैल सीठी आदि ऊपर रह जाय । छलनी से साफ होना । २. किसी नशे का पिया जाना ।

**मुहा०**—गहरी छनना = १. खूब मेल-जोल होना । गाढ़ी मैत्री होना । २. लड़ाई होना । ३. बहुत से छेदों से युक्त होना । छलनी हो जाना । ४. बिंध जाना । अनेक स्थानों पर चोट खाना । ५. छान-बीन होना । निर्णय होना । ६. कड़ाह में से पूरी, पकवान आदि निकलना ।

**छनाना**—क्रि० स० [ हिं० छानना ] किसी दूसरे से छानने का काम कराना । भाग पिलाना ।

**छनिक***—वि० दे० "क्षणिक" ।

*संज्ञा पुं० [ हिं० छन+एक ] क्षण भर ।

**छन्न**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. किसी तपी हुई चीज पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द । २. झनकार । ठनकार ।

**छन्ना**—संज्ञा पुं० [ हिं० छानना ] वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय । साफी ।

**छप**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. पानी में किसी वस्तु के एकबारगी जोर से गिरने का शब्द । २. पानी के छींटों के जोर से पड़ने का शब्द ।

**छपका**—संज्ञा पुं० [ हिं० चपकना ] सिर में पहनने का एक गहना ।

संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. पानी का भरपूर छींटा । २. पानी में हाथ पैर मारने की क्रिया ।

**छपछपाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] पानी पर कोई वस्तु पटककर छपछप शब्द करना ।

क्रि० स० [ अनु० ] पानी में छपछप शब्द उत्पन्न करना ।

**छपद**—संज्ञा पुं० [ सं० षट्पद ] भौंरा ।

**छपन**†—वि० [ हिं० छिपना ] गुप्त । गायब ।

संज्ञा पुं० [ सं० क्षपण ] नाश । संहार ।

**छपना**—क्रि० अ० [ हिं० चपना= दबना ] १. छापा जाना । चिह्न या दाग पड़ना । २. चिह्नित होना । अंकित होना । ३. यंत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना । ४. शीतला का टीका लगना ।

†क्रि० अ० दे० "छिपना" ।

**छपरखट, छपरखाट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छप्पर+खाट ] मसहरीदार पलंग ।

**छपरबंद**—वि० दे० "छप्परबंद" ।

**छपरी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० छप्पर] झोंपड़ी ।

**छपवाना**—क्रि० स० दे० "छपाना" ।

**छपा***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षपा" ।

**छपाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छापना ] १. छापने का काम । मुद्रण । अंकन । २. छापने का ढंग । ३. छापने की मजदूरी ।

**छपाकर**—संज्ञा पुं० दे० "क्षपाकर" ।

**छपाका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. पानी पर किसी वस्तु के जोर से पड़ने का शब्द । २. जोर से उछाला हुआ पानी का छींटा ।

**छपाना**—क्रि० स० [हिं० छापना का प्रे०] छापने का काम दूसरे से कराना ।

*क्रि० स० दे० "छिपाना" ।

**छपानाथ**—संज्ञा पुं० दे० "क्षपानाथ" ।

**छप्पय**—संज्ञा पुं० [ सं० षट्पद ]

एक मात्रिक छंद जिसमें छः चरण होते हैं।

**छप्पर**—संज्ञा पुं० [ हिं० छोपना ] १. फूस आदि की छाजन जो मकान के ऊपर छाई जाती है। छाजन। छान।

**मुहा०**—छप्पर पर रखना=छोड़ देना। चर्चा न करना। जिक्र न करना। छप्पर फाड़कर देना=अनायास देना। अकस्मात् देना।

२. छोटा ताल या गड्ढा। पोखर।

**छप्परबंद**—वि० [ हिं० छप्पर+फ़ा० बंद ] १. जो छप्पर या झोपड़ा बनाकर रहता हो। २. छप्पर छाने या बनानेवाला।

**छबतख्ती***—संज्ञा स्त्री० [हिं० छवि + अ० तकतीअ ] शरीर की सुन्दर बनावट।

**छबि**—संज्ञा स्त्री० दे० "छवि"।

**छबिमान**—वि० दे० "छबीला"।

**छबीला**—वि० [ हिं० छवि+ईला (प्रत्य० ) ] [ स्त्री० छबीली ] शोभायुक्त। सुन्दर।

**छबुंदा**—संज्ञा पुं० [हिं० छः+बूँद] एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।

**छम**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. घुँघरू बजने का शब्द। २. पानी बरसने का शब्द।

*संज्ञा पुं० दे० "क्षम"।

**छमकना**—क्रि० अ० [ हिं० छम+क ] १. घुँघरू आदि बजाते हुए हिलना डोलना। २. गहनों की झनकार करना।

**छमछम**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. नूपुर, पायल, घुँघरू आदि बजने का शब्द। २. पानी बरसने का शब्द। क्रि० वि० छमछम शब्द के साथ।

**छमछमाना**—क्रि० अ० [अनु०] १. छमछम शब्द करना। २. छमछम शब्द करके चलना।

**छमना**†—क्रि० [ सं० क्षमन ] क्षमा करना।

**छमसी**—दे० "छमासी"।

**छमा, छमाई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

**छमासी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० छ+मास] मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला श्राद्ध।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० छ+माशा ] १. छः माशे की तौल। २. छः माशे का बटखरा।

**छमाछम**—क्रि० वि० [ अनु० ] लगातार छमछम शब्द के साथ।

**छमुख**—संज्ञा पुं० [ हिं० छः+मुख ] षडानन।

**छय***†—संज्ञा पुं० दे० "क्षय"।

**छयना***—क्रि० अ० [ हिं० छय+ना ] क्षय को प्राप्त होना। छीजना। नष्ट होना।

**छर**—संज्ञा पुं० दे० "छल"।

संज्ञा पुं० दे० "क्षर"।

छरजाना=भूत इत्यादि से डर जाना।

**छरकना***—क्रि० अ० दे० "छलकना"।

**छरछंद***—संज्ञा पुं० दे० "छलछंद"।

**छरछर**—संज्ञा पुं० [ हिं० छर ] कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। २. पतली लचीली छड़ी के लगाने का शब्द। सटसट।

**छरछराना**—क्रि० अ० [ सं० क्षार ] [ संज्ञा छरछराहट ] नमक आदि लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना।

**छरना**—क्रि० अ० [ सं० क्षरण ] १. चूना। टपकना। २. चकचकाना। चुचुवाना।

†*क्रि० स० [ हिं० छलना ] १. छलना। धोखा देना। ठगना। २. मोहित करना।

**छरभार***†—संज्ञा पुं० [ सं० सार+भार ] १. प्रबंध या कार्य्य का बोझ। कार्य्य-भार। २. झंझट। बखेड़ा।

**छरहरा**—वि० [ हिं० छड़+हरा (प्रत्य० ) ] [ स्त्री० छरहरी ] १. क्षीणांग। सुबुक। हलका। २. तेज। फुरतीला।

**छरा**—संज्ञा पुं० [सं० शर ] १. छड़ा। २. लर। लड़ी। ३. रस्सी। ४. नारा। इजारबंद। नीवी।

**छरिदा**†—वि० दे० "छरीदा"।

**छरी**†*—संज्ञा स्त्री०, वि० १. दे० "छड़ी"। २. दे० "छली"।

**छरीदा**—वि० [ अ० जरीदः ] १. अकेला। २. जिसके पास बोझ या असबाब न हो। ( यात्री )

**छरीला**—संज्ञा पुं० [सं० शैलेय] काई की तरह का एक पौधा। पथरफूल। बुढ़ना।

**छर्दन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वमन। कै करना।

**छर्दि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वमन। कै। उलटी।

**छर्रा**—संज्ञा पुं० [ अनु० छरछर ] १. छोटी कंकड़ी का कण। २. लोहे या सीसे के छोटे छोटे टुकड़े जो बन्दूक में चलाये जाते हैं।

**छल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह व्यवहार जो दूसरे को धोखा देने के लिए किया जाता है। २. व्याज। मिस। बहाना। ३. धूर्तता। वंचना। ठगपन। ४. कपट।

**छलक, छलकन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छलकना ] छलकने की क्रिया या भाव।

**छलकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १.

किसी तरल चीज का बरतन से उछल कर बाहर गिरना। २. उमड़ना। बाहर होना।

**छलकाना**—क्रि० स० [ हिं० छलकना ] किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिला-डुलाकर बाहर उछालना।

**छलछंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० छल + छंद ] [ वि० छलछंदी ] कपट का जाल। चालबाजी।

**छलछलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. छल छल शब्द होना। २. पानी आदि थोड़ा थोड़ा करके गिरना। ३. जल से पूर्ण होना।

**छलछिद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कपट-व्यवहार। धूर्तता। धोखेबाजी।

**छलना**—क्रि० स० [ सं० छलन ] धोखा देना। भुलावे में डालना। प्रतारित करना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धोखा। छल।

**छलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चालना या सं० चरण ] आटा चालने का बरतन। चलनी।

**मुहा०**—छलनी हो जाना=किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना। कलेजा छलनी होना=दुःख सहते सहते हृदय जर्जर हो जाना।

**छलहाई***†—वि० स्त्री० [ सं० छल + हा ( प्रत्य० ) ] छली। कपटी। चालबाज।

**छलाँग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० उछल + अंग ] कुदान। फलाँग। चौकड़ी।

**छला***†—संज्ञा पुं० दे० "छल्ला"।

**छलाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छल + आई ( प्रत्य० ) ] छल का भाव। कपट।

**छलाना**—क्रि० स० [ हिं० छलना का प्रे० ] धोखा दिलाना। प्रतारित कराना।

**छलावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० छल ] १. भूत प्रेत आदि की छाया जो एक बार दिखाई पड़कर फिर झट से अदृश्य हो जाती है। २. वह प्रकाश या लुक जो दलदलों के किनारे या जंगलों में रह रहकर दिखाई पड़ता और गायब हो जाता है। अगिया-बैताल। उल्कामुख प्रेत। ३. चपल। चंचल। शोख। ४. इन्द्रजाल। जादू।

**छलिया, छली**—वि० [ सं० छलिन् ] छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।

**छल्ला**—संज्ञा पुं० [ सं० छल्ली=लता ] १. मुँदरी। २. कोई मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।

**छल्लेदार**—वि० [ हिं० छल्ला + फ़ा० दार ] जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों।

**छवना**†—संज्ञा पुं० [ सं० शावक ] [ स्त्री० छवनी ] १. बच्चा। २ सूअर का बच्चा।

**छवा***†—संज्ञा पुं० [ सं० शावक ] किसी पशु का बच्चा। बछड़ा।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एँड़ी।

**छवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाना ] १. छाने का काम या भाव। २. छाने की जदूरी।

**छवाना**—क्रि० स० [ हिं० छाना का प्रे० ] छाने का काम दूसरे से कराना।

**छवि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० छबीला ] १. शोभा। सौंदर्य। २. कांति। प्रभा।

**छहरना***—क्रि० अ० [ सं० क्षरण ] छितराना।

**छहराना***—क्रि० अ० [ सं० क्षरण ] छितराना। बिखरना। चारों ओर फैलना।

क्रि० स० बिखराना। छितराना।

**छहरीला**†—वि० [ हिं० छरहरा ] [ स्त्री० छहरीली ]। छितरानेवाला। बिखरनेवाला।

**छहियाँ**†—संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।

**छाँगना**—क्रि० स० [ सं० छिन्न + करण ] डाल टहनी आदि काट कर अलग करना।

**छाँगुर**—संज्ञा पुं० [ हिं० छः + अंगुल ] वह मनुष्य जिसके पंजे में छः उँगलियाँ हों।

**छाँट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाँटना ] १. छाँटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढंग। २. कतरन। ३. अलग की हुई निकम्मी वस्तु।

†संज्ञा स्त्री० [ सं० छर्दि ] वमन। कै।

**छाँट-छिड़का**—संज्ञा पुं० [ हिं० छींटा + छिड़काव ] बहुत हलकी और थोड़ी वर्षा।

**छाँटना**—क्रि० स० [ सं० खंडन ] १. छिन्न करना। काटकर अलग करना। २. किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३. अनाज में से कन या भूसी कूट फटकारकर अलग करना। ४. लेने के लिए चुनना या निकालने के लिए पृथक् करना। ५. दूर करना। हटाना। ६. साफ करना। ७. किसी वस्तु का कुछ अंश निकालकर उसे छोटा या संक्षिप्त करना। ८ हिंदी की चिंदी निकालना। ९. अलग या दूर रखना।

**छाँटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० छाँटना ] १ छाँटने की क्रिया या भाव। २. किसी को छल से अलग करना।

**मुहा०**—छाँटा देना = किसी छल से साथ या मंडली से अलग करना।

**छाँड़ना***†—क्रि० स० दे० "छोड़ना"।

**छाँद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छंद=बंधन ] चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी। नोई।

**छाँदना**—क्रि० स० [ सं० छंदन ] १. रस्सी आदि से बाँधना। जकड़ना। कसना। २. घोड़े या गधे के पिछले पैरों का एक दूसरे से सटाकर बाँध देना।

**छाँदा**—संज्ञा पुं० [ हिं० छाँदना ] १. वह भोजन जो ज्यौनार आदि से अपने घर लाया जाय। परोसा। २. हिस्सा। भाग। कड़ाह प्रसाद।

**छांदोग्य**—संज्ञा पु० [सं० ] १. सामवेद का एक ब्राह्मण। २. छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।

**छाँव**—संज्ञा स्त्री० देखो "छाँह"।

**छाँवड़ा**—*संज्ञा पुं० [सं० शावक] [ स्त्री० छाँवड़ी, छौड़ी ] १. जानवर का बच्चा। छौना। २. छोटा बच्चा। बालक।

**छाँह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छाया ] १. वह स्थान जहाँ आड़ या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पड़ती हो। छाया। २ ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३.बचाव या निर्वाह का स्थान। शरण। रक्षा। ४. छाया। परछाईं।

**मुहा०**—छाँह न छूने देना=पास न फटकने देना। निकट तक न आने देना। छाँह बचाना=दूर दूर रहना। पास न जाना।

५. प्रतिबिंब। ६. भूत-प्रेत आदि का प्रभाव। आसेब। बाधा।

**छाँहगीर**—संज्ञा पुं० [ हिं० छाँह + फ़ा० गीर ] १. राजछत्र। २.दर्पण। आईना।

**छाउँ***—संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।

**छाक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं०छकना ] १ तृप्ति। इच्छापूर्ति। २. वह भोजन जो काम करनेवाले दोपहर को करते हैं। दुपहरिया। कलेवा। ३. नशा। मस्ती।

**छाकना**†*—क्रि० अ० [हिं०छकना] १. खा-पीकर तृप्त होना। अघाना। अफरना। २. नशा पीकर मस्त होना। क्रि० अ० [ हिं० छकना ] हैरान होना।

**छाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बकरा।

**छागल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बकरा। २ बकरे की खाल की बनी हुई चीज। संज्ञा स्त्री० [ हिं० साँकल ] पैर का एक गहना। झाँझन।

**छाछ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छच्छिका ] वह पनीला दही या दूध जिसका घी या मक्खन निकाल लिया गया हो। मट्ठा। मही।

**छाज**—संज्ञा पुं० [ सं० छाद ] १ अनाज फटकने का सींक का बरतन। सूप। २ छाजन। छप्पर। ३.छज्जा। संज्ञा पु० [ हिं० छजना ] १ छजने की क्रिया या भाव। २ सजावट। सज्जा। साज।

**छाजन**—संज्ञा पुं० [ सं० छादन ] आच्छादन। वस्त्र। कपड़ा।

**यौ०**—भोजन-छाजन=खाना-कपड़ा। संज्ञा स्त्री० १ छप्पर। छान। खपरैल। २. छाने का काम या ढंग। छवाई।

**छाजना**—क्रि० अ० [ सं० छादन ] [ वि० छाजित ] १. शोभा देना। अच्छा लगना। भला लगना। फबना। २ सुशोभित होना।

**छाजा***†—संज्ञा पु० दे० "छज्जा"।

**छात***—संज्ञा पुं० दे० "छाता"।

**छाता**—संज्ञा पुं० [ सं० छत्र ] १. बड़ी छतरी। मेह, धूप आदि से बचने के लिए आच्छादन जिसे लेकर लोग चलते हैं। २. दे० "छत्ता"। ३. खुमी।

**छाती**—संज्ञा स्त्री० [सं० छादिन्] १ हड्डी की ठठरियों का फलक जो पेट के ऊपर गर्दन तक होता है सीना। वक्षःस्थल।

**मुहा०**—छाती पत्थर को करना=भारी दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना। छाती पर मूँग या कोदो दलना=किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे। छाती पर पत्थर रखना=दुःख सहने के लिए हृदय कठोर करना। छाती पर साँप लोटना या फिरना= १. दुःख से कलेजा दहल जाना। मानसिक व्यथा होना। २ ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना। जलन होना। छाती पीटना=दुःख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। छाती फटना=दुःख से हृदय व्यथित होना। अत्यंत संताप होना। छाती से लगाना = आलिंगन करना। गले लगाना। वज्र की छाती = ऐसा कठोर हृदय जो दुःख सह सके। सहिष्णु हृदय।

२ कलेजा। हृदय। मन। जी।

**मुहा०**—छाती जलना = १. अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन मालूम होना। २. शोक से हृदय व्यथित होना। संताप होना। ३ डाह होना। जलन होना। छाती जुड़ाना = दे० "छाती ठंडी करना"। छाती ठंडी करना=चित्त शांत और प्रफुल्ल करना। मन की अभिलाषा पूर्ण करना। छाती धड़कना=खटके या डर से कलेजा जल्दी जल्दी उछलना। जी दहलना।

३. स्तन। कुच। ४.हिम्मत। साहस

**छात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिष्य। चेला।

**छात्रवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास की दशा में सहायतार्थ मिला करे।

**छात्रालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंग हाउस।

**छाद्मिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो भेष बदले हो। २. मक्कार। ढोंगी। ३. बहुरुपिया।

**छादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० छादित] १. छाने या ढकने का काम। २. वह जिससे छाया या ढका जाय। आवरण। आच्छादन। ३. छिपाव। ४. वस्त्र।

**छान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छादन ] छप्पर।

**छानना**—क्रि० स० [ सं० चालन या क्षरण ] १. चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिसमें उसका कूड़ा-करकट निकल जाय। २. छाँटना। बिलगाना। ३. जाँचना। पड़तालना। ४. ढूँढ़ना। अनुसंधान करना। तलाश करना। ५. भेदकर पार करना। ६ नशा पीना। ७. बनाना।

क्रि० स० दे० "छादना"।

**छानबीन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छानना + बीनना ] १. पूर्ण अनुसंधान या अन्वेषण। जाँच-पड़ताल। गहरी खोज। २. पूर्ण विवेचना। विस्तृत विचार।

**छाना**—क्रि० स० [ सं० छादन ] १. किसी वस्तु पर कोई दूसरी वस्तु इस प्रकार फैलाना जिसमें वह पूरी ढक जाय। आच्छादित करना। २. पानी, धूप आदि से बचाव के लिए किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना। ३. बिछाना। फैलाना। ४. शरण में लेना।

क्रि० अ० १. फैलना। पसरना। बिछ जाना। २. डेरा डालना। रहना।

**छानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाना ] घास-फूस का छाजन।

**छाप**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छापना ] १. वह चिह्न जो छापने में पड़ता है। २. मुहर का चिह्न। मुद्रा। ३. शंख, चक्र आदि के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अंगों पर गरम धातु से अंकित कराते हैं। मुद्रा। ४. वह अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदा हुआ ठप्पा रहता है; ५ कवियों का उपनाम।

**छापना**—क्रि० स० [ सं० चपन ] १. स्याही आदि पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर उसकी आकृति चिह्नित करना। २. किसी साँचे को दबाकर, उस पर के खुदे या उभरे हुए चिह्नों की आकृति चिह्नित करना। ठप्पे से निशान डालना। मुद्रित करना। अंकित करना। ३. कागज आदि को छापे की कल में दबाकर उस पर अक्षर या चित्र अंकित करना। मुद्रित करना।

**छापा**—संज्ञा पुं० [ हिं० छापना ] १. साँचा जिस पर गीली स्याही आदि पोतकर उस पर खुदे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु पर उतारते हैं। ठप्पा। २. मुहर। मुद्रा। ३. ठप्पे या मुहर से दबाकर डाला हुआ चिह्न या अक्षर। ४. पंजे का वह चिह्न जो शुभ अवसरों पर हलदी आदि से छापकर ( दीवार, कपड़े आदि पर ) डाला जाता है। ५. रात में बेखबर लोगों पर आक्रमण।

**छापाखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० छापा + फ़ा० खाना ] वह स्थान जहाँ पुस्तक आदि छापी जाती हैं। मुद्रणालय। प्रेस।

**छाबड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] वह दौरी आदि जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं। खोनचा।

**छाबड़ीवाला**—संज्ञा पुं० [हिं० छाबड़ी + वाला ] वह जो छाबड़ी या खोमचे में रखकर खाने-पीने की चीजें बेचता हो।

**छाम**—वि० दे० "क्षाम"।

**छामोदरी***—वि० स्त्री० दे० "क्षामोदरी"।

**छायल**—संज्ञा पुं० [ हिं० छाना ] स्त्रियों का एक पहनावा।

**छाया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उजाला छेकनेवाली वस्तु पड़ जाने के कारण उत्पन्न अंधकार या कालिमा। साया। २. आड़ या आच्छादन के कारण धूप, मेंह आदि का अभाव। साया। ३. वह स्थान जहाँ आड़ के कारण किसी आलोकप्रद वस्तु का उजाला न पड़ता हो। ४. परछाईं। ५. प्रतिबिंब। ६. तद्रूप वस्तु। प्रतिकृति। अनुहार। पटतर। ७. अनुकरण। नकल। ८. सूर्य की एक पत्नी। ९. कांति। दीप्ति। १० शरण। रक्षा। ११. अंधकार। १२. आर्या छंद का एक भेद। १३. भूत का प्रभाव।

**छायाग्राहिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक राक्षसी जिसने समुद्र फाँदते हुए हनुमान जी की छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था।

**छायादान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घी या तेल से भरे काँसे के कटोरे में

अपनी परछाईं देखकर दिया जाने-वाला दान।

**छायापथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकाशगंगा। २. देवपथ।

**छायापुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हठ-योग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि से बहुत देर तक देखते रहने से दिखाई पड़ती है।

**छायामय**—वि० [ सं० छाया +मय (प्रत्य०) ] १. छाया से युक्त। २. जिस पर छाया पड़ी हो।

**छायावाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शैली या उक्ति आदि जिसमें अज्ञात या अज्ञेय के प्रति कोई जिज्ञासा या कथन हो।

**छायावादी**—वि० [सं०] १. छाया-वाद के सिद्धांत पर कविता करनेवाला कवि। २. छायावाद का पक्षपाती।

**छार**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षार ] १. जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से घुली हुई धातुओं की राख का नमक। क्षार। २. खारी नमक। ३. खारी पदार्थ। ४. भस्म। राख। खाक।

यौ०—छार खार करना=नष्ट भ्रष्ट करना।

५. धूल। गर्द। रेणु।

**छाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छल्ल ] पेड़ों के धड़ आदि के ऊपर का आवरण। वल्कल।

**छालटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाल+टी ] छाल या सन का बना हुआ वस्त्र।

**छालना**—क्रि० अ० [ सं० चालन ] १. छानना। २. छलनी की तरह छिद्रमय करना।

**छाला**—संज्ञा पुं० [ सं० छाल ] १. छाल या चमड़ा। जिल्द। जैसे—मृगछाला। २. किसी अंग पर जलने, रगड़ खाने आदि से चमड़े की ऊपरी झिल्ली का उभार जिसके भीतर एक प्रकार का चेप रहता है। फफोला।

**छालित***—वि० [ सं० प्रक्षालित ] धोया हुआ।

**छालिया, छाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाला ] सुपारी।

**छावनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाना ] १. छप्पर। छान। २. डेरा। पड़ाव। ३. सेना के ठहरने का स्थान।

**छावरा***†—संज्ञा पुं० दे० "छौना"।

**छावा**—संज्ञा पुं० [ सं० शावक ] १. बच्चा। २. पुत्र। बेटा। ३. जवान हाथी।

**छिउँकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिउटी ] १. एक प्रकार की छोटी चींटी। २. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। ३. चिकोटी।

**छिंकना**—क्रि० अ० [ हिं० छेंकना ] छेंका या घेरा जाना।

**छिछ***संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] छींटा। धार।

**छिड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० छोलना ] जबरदस्ती ले लेना। छीनना।

**छि**—अव्य० [अनु०] घृणा, तिरस्कार या अरुचिसूचक शब्द।

**छिकनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० छिक्कनी] नकछिकनी घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती है।

**छिगुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षुद्र+अँगुली ] सबसे छोटी उँगली। कनि-ष्ठिका।

**छिच्छ***—संज्ञा स्त्री० दे० "छिछ"।

**छिछकारना**†—क्रि० स० दे०"छिड़-कना"।

**छिछड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "छीछड़ा"।

**छिछला**—वि० [ हिं० छूछा+ला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० छिछली ] (पानी की सतह ) जो गहरी न हो। उथला। जो गभीर न हो।

**छिछोरपन, छिछोरापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० छिछोरा ] छिछोरा होने का भाव। क्षुद्रता। ओछापन। नीचता।

**छिछोरा**—वि० [ हिं० छिछला ] [ स्त्री० छिछोरी ] क्षुद्र। ओछा।

**छिजाना**—क्रि० स० [ हिं० छीजना ] छीजने का काम कराना।

† क्रि० अ० दे० "छीजना"।

**छिटकना**—क्रि० अ० [ सं० क्षिप्त ] १. इधर उधर पड़कर फैलना। चारों ओर बिखरना। २. प्रकाश की किरणों का चारों ओर फैलना।

**छिटकाना**—क्रि० स० [ हिं० छिट-कना ] चारों ओर फैलाना। बिखराना।

**छिड़कना**—क्रि० स० [ हिं० छींटा+करना ] द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे फैलकर इधर उधर पड़ें।

**छिड़कवाना**—क्रि० स० [ हिं० छिड़कना का प्रे० ] छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

**छिड़का**—संज्ञा पुं० दे० "छिड़काव"।

**छिड़काई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छिड़-कना ] १. छिड़कने की क्रिया या भाव। छिड़काव। २. छिड़कने की मजदूरी।

**छिड़काव**—संज्ञा पुं० [ हिं० छिड़-कना ] पानी आदि छिड़कने की क्रिया।

**छिड़ना**—क्रि० अ० [हिं० छेड़ना] आरंभ होना। शुरू होना। चल पड़ना।

**छितनी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] छोटी

टोकरी।

**छितराना**—क्रि० अ० [ सं० क्षिप्त+करण ] खंडों या कणों का गिरकर इधर-उधर फैलना। तितर-बितर होना। बिखरना।

क्रि० स० १. खंडों या कणों को गिराकर इधर उधर फैलाना। बिखराना। छींटना। २. दूर दूर करना। विरल करना।

**छिति***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षिति"।

**छितिज**—संज्ञा पुं० दे० "क्षितिज"

**छितिपाल***-संज्ञा पुं० [ सं० क्षिति+पाल ] राजा।

**छितीस***—संज्ञा पुं० [ क्षितीश ] राजा।

**छिदना**—क्रि० अ० [ हिं० छेदनी ] १. छेद से युक्त होना। सूराखदार होना। २. घायल होना। जख्मी होना। ३ चुभना।

**छिदाना**—क्रि० स० [ हिं० छेदना ] १. छेद कराना। २. चुभवाना। धसवाना।

**छिद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० छिद्रित ] १. छेद। सूराख। २. गड्ढा। विवर। बिल। ३. अवकाश। जगह। ४. दोष। त्रुटि। ५. नौ की संख्या।

**छिद्रान्वेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० छिद्रान्वेषी ] दोष ढूँढ़ना। खुचुर निकालना।

**छिद्रान्वेषी**—वि० [ सं० छिद्रान्वेषिन् ] [ स्त्री० छिद्रान्वेषिणी ] पराये दोष ढूँढ़नेवाला।

**छिन***—संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।

**छिनक***—क्रि० वि० [ हिं० छिन+एक ] एक क्षण। दम भर। थोड़ी देर।

**छिनकना**—क्रि० स० [ हिं० छिड़कना ] नाक का मल जोर से साँस बाहर करके निकालना।

**छिनछवि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षण+छवि ] बिजली।

**छिनना**—क्रि० अ० [ हिं० छिनना ] छीन लिया जाना। हरण होना।

**छिनभंग*** - वि० दे० "क्षण-भंगुर"।

**छिनरा**—वि० दे० "छिनाल" २।

**छिनवाना**—क्रि० स० [ हिं० छीनना का प्रे० ] छीनने का काम दूसरे से कराना।

**छिनाना**—क्रि० स० दे० "छिनवाना"।

† क्रि० स० छीनना। हरण करना।

**छिनाल**—वि० [ सं० छिन्ना+नारी ] १ व्यभिचारिणी। कुलटा। परपुरुषगामिनी। २. व्यभिचारी। परस्त्री गामी।

**छिनाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० छिनाल ] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास। व्यभिचार।

**छिन्न**—वि० [ सं० ] जो कटकर अलग हो गया हो। खंडित।

**छिन्न भिन्न**—वि० [ सं० ] १. कटा-कुटा। खंडित। टूटा फूटा। २. नष्ट-भ्रष्ट। ३. अस्त-व्यस्त। तितर-बितर।

**छिन्नमस्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक देवी जो महाविद्याओं में छठी हैं।

**छिपकली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चिपकना ] एक सरीसृप या जंतु जो दीवारों आदि पर प्रायः दिखाई पड़ता है। पल्ली। गृहगोधिका। बिस्तुइया।

**छिपना**—क्रि० अ० [ सं० क्षिप = डालना ] ओट में होना। ऐसी स्थिति में होना जहाँ से दिखाई न पड़े।

**छिपाना**—क्रि० स० [ सं० क्षिप = डालना ] [ संज्ञा छिपाव ] १. आवरण या ओट में करना। दृष्टि से ओझल करना। २. प्रकट न करना। गुप्त रखना।

**छिपाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० छिपना ] छिपाने का भाव। गोपन। दुराव।

**छिप्र***—क्रि० वि० दे० "क्षिप्र"।

**छिमा***‡—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।

**छिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षिप्त ] १. घृणित वस्तु। घिनौनी चीज। २. मल। गलीज।

**मुहा०**—छिया छरद करना= छी छी करना। घृणित समझना।

वि० मैला। मलिन। घृणित।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बच्चिया ] छोकरी। लड़की।

**छिरकना***—क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

**छिरेटा**—संज्ञा पुं० [ सं० छिलहिंड ] एक प्रकार की छोटी बेल। पातालगारुड़ी।

**छिलका**—संज्ञा पुं० [ हिं० छाल ] एक परत की खोल जो फलों आदि पर होती है।

**छिलना**—क्रि० अ० [ हिं० छीलना ] १. छिलके का अलग होना। २. ऊपरी चमड़े का कुछ भाग कटकर अलग हो जाना।

**छिवना***—क्रि० अ० [ हिं० छूना ] स्पर्श करना।

**छिहानी**†—संज्ञा स्त्री० [ ? ] मरघट। श्मशान।

**छींक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छिक्का ] नाक से शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का झोंका या स्फोट।

**छींकना**—क्रि० अ० [ हिं० छींक ] नाक से वेग के साथ वायु निकालना।

**छींट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षिप्त ] १

महीन बूँद। जलकण। सीकर। २. वह कपड़ा जिसपर रंग-बिरंग के बेल-बूटे छपे हों।

**छींटना**–क्रि० स० दे० "छितराना"।

**छींटा**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षिप्त, प्रा० छिप्त ] १. द्रव पदार्थ की महीन बूँद जो जोर से पड़ने से इधर-उधर गिरे। जलकण। सीकर। २. हलकी वृष्टि। ३. पड़ी हुई बूँद का चिह्न। ४. छोटा दाग। ५. मदक या चंडू की एक मात्रा। ६. व्यंग्य-पूर्ण उक्ति।

**छी**—अव्य० [ अनु० ] घृणा-सूचक शब्द।

**मुहा०**— छी छी करना = घिनाना। अरुचि या घृणा प्रकट करना।

**छींका**—संज्ञा पुं० [ सं० शिक्य ] १. रस्सियों का जाल जो छत मे खाने-पीने की चीजें रखने के लिए लटकाया जाता है। सिकहर। २. जालीदार खिड़की या झरोखा। ३. बैलों के मुँह पर चढ़ाया जानेवाला रस्सियों का जाल। ४. रस्सियों का बना हुआ झूलनेवाला पुल। झूला।

**छीछड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ ] मांस का तुच्छ और निकम्मा टुकड़ा।

**छीछालेदर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छी छी ] दुर्दशा। दुर्गति। खराबी।

**छीज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छीजना ] घाटा। कमी।

**छीजना**—क्रि० अ० [ सं० क्षयण ] क्षीण होना। घटना। कम होना।

**छीति***—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षति ] १. हानि। घाटा। २. बुराई।

**छीछी छाल**—वि० [ सं० क्षति+छिन्न ] छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

**छीन**—वि० दे० "क्षीण"।

**छीनना**—क्रि० स० [ सं० छिन्न+ना (प्रत्य०)] १. काटकर अलग करना। २. दूसरे की वस्तु जबरदस्ती ले लेना। हरण करना। ३. चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना। कूटना। रेहना।

**छीना झपटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छीनना + झपटना ] छीनकर किसी वस्तु को ले लेना।

**छीना**†—क्रि० स० दे० "छूना"।

**छीप**—वि० [ सं० क्षिप्र ] तेज। वेग-वान्।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० छाप ] १ छाप। चिह्न। दाग। २. सेहुआँ नामक रोग।

**छीपी**—संज्ञा पुं० [ हिं० छाप ] [ स्त्री० छीपिन ] कपड़े पर बेल-बूटे या छींट छापनेवाला।

**छीबर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छापना ] मोटी छींट।

**छीमी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० शिंबी ] फली। गाय का स्तन।

**छीर**—संज्ञा पुं० दे० "क्षीर"।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० छोर ] कपड़े का वह किनारा जहाँ लंबाई समाप्त हो। छोर।

**छीरप***—संज्ञा पुं० [ सं० क्षीरप ] दूध पीता बच्चा।

**छीलना**–क्रि० अ० [ हिं० छाल ] १. छिलका या छाल उतारना। २. जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना।

**छीलर**–संज्ञा पुं० [ हिं० छिछला ] छिछला गड्ढा। तलैया।

**छुँगना***–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छँगुली ] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।

**छुँगली***–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छँगुली ] एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।

**छुआना**†–क्रि० स० दे० "छुलाना"।

**छुआछूत**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छूना ] १. अछूत को छूने की क्रिया। अस्पृश्य स्पर्श। २. स्पृश्य-अस्पृश्य का विचार। छूत-छात का विचार।

**छुईमुई**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छूना + मुवना ] लज्जालु। लज्जावती। लजा-धुर।

**छुगुन**†–संज्ञा पुं० दे० "घुँघरू"

**छुच्छा**–वि० दे० "छूछा"।

**छुच्छी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छूछा ] १. पतली पोली नली। २. नाक की कील। लौंग।

**छुच्छू**–वि० [ अनु० ] तुच्छ। तिर-स्कार-योग्य।

क्रि० प्र०—बनाना।

**छुछमछली**–संज्ञा स्त्री० [ सं० सूक्ष्म, हिं० छूछम + मछली ] अंडे से फूटा हुआ मेढक का बच्चा जिसका रूप मछली का सा होता है।

**छुट***–अव्य० [ हिं० छूटना ] छोड़-कर। सिवाय। अतिरिक्त।

**छुटकाना***–क्रि० स० [ हिं० छूटना] १. छोड़ना। अलग करना। २. साथ न लेना। ३ मुक्त करना। छुट-कारा देना।

**छुटकारा**–संज्ञा पुं० [ हिं० छुटकारा ] १. बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया। मुक्ति। रिहाई। २ आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा। निस्तार।

**छुटना***–क्रि० अ० दे० "छूटना"।

**छुटपन**†–संज्ञा पुं० [ हिं० छोटा + पन (प्रत्य०) ] १. छोटाई। लघुता। २. बचपन।

**छुटाना**†–क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

**छुट्टा**—वि० [ हिं० छूटना ] [ स्त्री० छुट्टी ] १ जो बँधा न हो। २. एका-एकी। अकेला।

**छुट्टी**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० छूट ] १.छुट-

कारा। मुक्ति। रिहाई। २. काम से खाली वक्त। अवकाश। फुरसत। ३. काम बंद रहने का दिन। तातील। ४. चलने की अनुमति। जाने की आज्ञा।

**छुड़वाना** - क्रि० स० [ हिं० छोड़ना का प्रे० ] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

**छुड़ाना**-क्रि०स० [ हिं० छोड़ना ] १. बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक करना। २. दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३. पुती हुई वस्तु को दूर करना। ४. कार्य्य या नौकरी से हटाना। बरखास्त करना। ५. किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना।

[ 'छोड़ना' का प्रे० ] छोड़ने का काम कराना।

**छुत्***-संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षुत् ] भूख।

**छुतिहा**-वि० [हिं०छूत+हा (प्रत्य०)] १.छूतवाला। जो छूने योग्य न हो। अस्पृश्य। २. कलंकित। दूषित।

**छुद्र**-संज्ञा पुं० दे० "क्षुद्र"।

**छुद्रावलि***-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुद्र-घंटिका"।

**छुधा**-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।

**छुप***-संज्ञा पुं० दे० "क्षुप"।

**छुपना**-क्रि० अ० दे० "छिपना"।

**छुभित***-वि० [ सं० क्षुभित ] १. विचलित। चंचलचित्त। २. घबराया हुआ।

**छुभिराना***-क्रि० अ० [ हिं० क्षोभ] क्षुब्ध होना। चंचल होना।

**छुरधार***-संज्ञा स्त्री० [सं० क्षुरधार] छुरे की धार। पतली पैनी धार।

**छुरा**-संज्ञा पुं० [ सं० क्षुर ] [ स्त्री० अल्पा०छुरी ] १. बेंट में लगे हुए लंबे धारदार टुकड़े का एक हथियार। २. वह हथियार जिससे नाई बाल मूँड़ते हैं। उस्तरा।

**छुरित**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लास्य नृत्य का एक भेद। २. बिजली की चमक।

**छुरी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० छुरा ] १. चीजें काटने या चीरने फाड़ने का एक बेंटदार छोटा हथियार। चाकू। २. आक्रमण करने का एक धारदार हथियार।

**छुलछुलाना**-क्रि० अ० [ अनु० ] थोड़ा-थोड़ा।

**छुलाना**-क्रि० स० [ हिं० छूना ]छूना का प्रेरणार्थक रूप। स्पर्श कराना।

**छुवाना**-क्रि० स० दे० "छुलाना"।

**छुहना***-क्रि० अ० [ हिं० छुवना ] १. छू जाना। २. रँगाजाना। लिपना।

क्रि० स० दे० "छूना"।

**छुहारा**-संज्ञा पुं० [ सं० क्षुत+हार ] १. एक प्रकार का खजूर। खुरमा। २. पिंडखजूर।

**छूँछा**-वि० [ सं० तुच्छ ] [ स्त्री० छूँछी ] १. खाली। रीता। रिक्त। जैसे—छूँछा घड़ा। २. जिसमें कुछ तत्त्व न हो। निःसार। ३. निर्धन। गरीब।

**छू**-संज्ञा पुं० [ अनु० ] मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।

**मुहा०**-छू मंतर होना=चटपट दूर होना। गायब होना। जाता रहना।

**छूछा**-वि० दे० "छूँछा"।

**छूट**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० छूटना ] १. छूटने का भाव। छुटकारा। मुक्ति। २. अवकाश। फुरसत। ३. बाकी रुपया छोड़ देना। छुड़ौती। ४. किसी कार्य्य से संबंध रखनेवाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। ५. वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय। ६. स्वतंत्रता। आजादी। ७. गाली-गलौज।

**छूटना**-क्रि० अ० [ सं० छुट ] १. बँधी, फँसी या पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना। दूर होना।

**मुहा०**-शरीर छूटना=मृत्यु होना।

२. किसी बाँधने या पकड़नेवाली वस्तु का ढीला पड़ना या अलग होना। जैसे-बंधन छूटना। ३. किसी पुती या लगी हुई वस्तु का अलग या दूर होना। ४. बंधन से मुक्त होना। छुटकारा होना। ५. प्रस्थान करना। रवाना होना। ६. दूर पड़ जाना। वियुक्त होना। बिछुड़ना। ७ पीछे रह जाना। ८. दूर तक जानेवाले अस्त्र का चल पड़ना। ९. बराबर होती रहनेवाली बात का बंद होना। न रह जाना।

**मुहा०**-नाड़ी छूटना=नाड़ी का चलना बंद हो जाना।

१०. किसी नियम या परंपरा का भंग होना। जैसे-व्रत छूटना। ११. किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना। १२. रस रसकर ( पानी ) निकलना। १३ ऐसी वस्तु का अपनी क्रिया में तत्पर होना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १४. शेष रहना। बाकी रहना। १५. किसी काम का या उसके किसी अंग का भूल से न किया जाना। १६. किसी कार्य्य से हटाया जाना। बरखास्त होना। १७. रोजी या जीविका का न रह जाना।

**छूत**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० छूना ] १. छूने का भाव। संसर्ग। छुवाव। २. गंदी, अशुचि या रोग-संचारक वस्तु का स्पर्श। अस्पृश्य का संसर्ग।

**यौ०**-छूत का रोग=वह रोग जो किसी

रोगी से छू जाने से हो।
३. अशुचि वस्तु के छूने का दोष या दूषण। ४. अशुद्धि के कारण अस्पृश्यता। ऐसी अशुद्धि कि छूने से दोष लगे। ५. भूत आदि लगने का बुरा प्रभाव।

**छूना**—क्रि० अ० [सं० छुप] एक वस्तु का दूसरी के इतने पास पहुँचना कि दोनों एक दूसरी से सट जायँ। स्पर्श होना।
क्रि० स० १. किसी वस्तु तक पहुँच-कर उसके किसी अंग को अपने किसी अंग से सटाना या लगाना। स्पर्श करना।
**मुहा०**—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।
२. हाथ बढ़ाकर उँगलियों के संसर्ग में लाना। हाथ लगाना। †३. दान के लिए किसी वस्तु का स्पर्श करना। ४. दौड़ की बाजी में किसी का पकड़ना। उन्नति की समान श्रेणी में पहुँचना। ६. बहुत कम काम में लाना। ७. पोतना।

**छूँकना**—क्रि० स० [सं० छुंद] १. आच्छादित करना। स्थान घेरना। जगह लेना। २. रोकना। जाने न देना। ३. लकीरों से घेरना। ४. काटना। मिटाना।

**छेक**—संज्ञा पुं० [हिं० छेद] १. छेद। सूराख। २. कटाव। विभाग।

**छेकानुप्रास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें वर्णों का सादृश्य एक ही बार हो।

**छेकापह्नुति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खंडन किया जाता है।

**छेकोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अर्थांतर-गर्भित उक्ति।

**छेटा**—संज्ञा स्त्री० [सं० क्षिप्त] बाधा।

**छेड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० छेद] १. छू या खोद-खोदकर तंग करने की क्रिया। २. हँसी-ठठोली करके कुढ़ाने का काम। चुटकी। ३. चिढ़ानेवाली बात। ४. रगड़ा। झगड़ा। ५. कोई काम आरंभ करना। पहल।

**छेड़ना**—क्रि० स० [हिं० छेदना] १. खोदना-खोदना। दबाना। कोंचना। २ छू या खोद-खोदकर भड़काना या तंग करना। ३. किसी के विरुद्ध ऐसा कार्य्य करना जिससे वह बदला लेने के लिए तैयार हो। ४. हँसी-ठठोली करके कुढ़ाना। चुटकी लेना। ५. कोई बात या कार्य्य आरंभ करना। उठाना। ६. बजाने के लिए बाजे में हाथ लगाना। ७. नश्तर से फोड़ा चीरना।

**छेड़वाना**—क्रि० स० [हिं० 'छेड़ना' का प्र०] छेड़ने का काम दूसरे से कराना।

**छेता**—संज्ञा पुं० [सं० छेदन] दे० "छेदन"।

**छेत्र**‡—संज्ञा पुं० दे० "क्षेत्र"।

**छेद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. छेदन। फाड़ने का काम। २. नाश। ध्वंस। ३. छेदन करनेवाला। ४. गणित में भाजक।
संज्ञा पुं० [सं० छिद्र] १. सूराख। छिद्र। रंध्र। २. बिल। दरज। खोखला विवर। ३. दोष। दूषण। ऐब।

**छेदक**—वि० [सं०] १. छेदने या काटनेवाला। २. नाश करनेवाला। ३. विभाजक।

**छेदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काटकर अलग करने का काम। चीर-फाड़। २. नाश। ध्वंस। ३. काटने या छेदने का अस्त्र। ४. रुकावट। ५. छिद्र।

**छेदना**—क्रि० स० [सं० छेदन] १. कुछ चुभा कर किसी वस्तु को छिद्रयुक्त करना। बेधना। भेदना। २. क्षत करना। घाव करना। †३. काटना। छिन्न करना।

**छेना**—संज्ञा पुं० [सं० छेदन] खटाई से फाड़ा हुआ दूध जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो। फटे दूध का खोया। पनीर।

**छेनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] लोहे का वह औजार जिससे पत्थर आदि काटे या नकाशे जाते हैं। टाँकी।

**छेम***‡—संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।

**छेमकरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षेमकरी"।

**छेरवा***—संज्ञा पुं० दे० "छोहरा"।

**छेरा***—संज्ञा पुं० दे० "छोहरा"।

**छेरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

**छेव**—संज्ञा पुं० [सं० छेद] १. जख्म। घाव।
**मुहा०**—छल छत्र=कपट व्यवहार।
†२. आनेवाली आपत्ति। होनहार दुःख।
संज्ञा स्त्री० दे० "टेव"।

**छेवना***—संज्ञा स्त्री० [हिं० छेना] ताड़ी।
क्रि० स० [सं० छेदन] १. काटना। छिन्न करना। २. चिह्न लगाना।
*क्रि० स० [सं० क्षेपण] १. फेंकना। २. डालना। ऊपर डालना।
**मुहा०**—जी पर छेवना=जी पर खेलना। जान संकट में डालना।

**छेह***—संज्ञा० पुं० [हिं० छेव] १. दे० "छेव"। २. खंडन। नाश। ३. परंपरा भंग। ४. वियोग।
वि० १. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। २. न्यून। कम।

*संज्ञा स्त्री० दे० "छेह"।

**छेहरा***—संज्ञा पुं० दे० "छेह"

संज्ञा पुं० संख्या ४.।

**छै†**—वि० दे० "छः"।

*संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

**छैना***—संज्ञा पुं० [ ? ] १. करताल या जोड़ी की तरह का एक बाजा। २. लोहा काटने का एक औजार।

*क्रि० अ० [सं० क्षय] क्षीण होना।

**छैया†***—संज्ञा पुं० [ हिं० छवना ] बच्चा।

**छैल***—संज्ञा पुं० दे० "छैला"।

**छैल चिकनियाँ**—संज्ञा पुं० [देश०] शौकीन। बना-ठना आदमी।

**छैल छबीला**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १ सजाधजा और युवा पुरुष। बाँका। २ छबीला नाम का पौधा।

**छैला**—संज्ञा पुं० [ सं० छवि + इल्ल ( प्रत्य० ) ] सुन्दर और बना-ठना आदमी। मजीला। बाँका। शौकीन।

**छोंड़ा***—संज्ञा पुं० [ सं० क्ष्वे ] दही मथने की मथानी।

**छोई**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. दे० "खोई"। २. निस्सार वस्तु।

**छोकड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० शावक ] [ स्त्री० छोकड़ी ] लड़का। बालक। लौंडा। ( बुरे भाव से )

**छोकड़ापन**—संज्ञा पुं [ हिं० छोकड़ा + पन ( प्रत्य० ) ] १. लड़कपन। २ छिछोरापन।

**छोकरा †**—संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा"।

**छोटा**—वि० [ सं० क्षुद्र ] [ स्त्री० छोटी ] १. जो बड़ाई या विस्तार में कम हो। डील डौल में कम।

**यौ०**—छोटा-मोटा=साधारण।

२. जो अवस्था में कम हो। थोड़ी उम्र का। ३. जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो। ४. तुच्छ। सामान्य। ५. ओछा। क्षुद्र।

**छोटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छोटा + ई ( प्रत्य० ) ] १. छोटापन। लघुता। २. नीचता।

**छोटापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० छोटा + पन ( प्रत्य० ) ] १. छोटा होने का भाव। छोटाई। लघुता। २. बचपन। लड़कपन।

**छोटी इलायची**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छोटी + इलायची ] सफेद या गुजराती इलायची।

**छोटी हाजिरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं छोटी + हाजिरी ] यूरोपियनों का प्रातःकाल का कलेवा।

**छोड़ना**—क्रि० स० [ सं० छोरण ] १. पकड़ी हुई वस्तु का पकड़ से अलग करना। २. किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना। ३. बंधन आदि से मुक्त करना। छुटकारा देना। ४. अपराध क्षमा करना। मुआफ करना। ५. न ग्रहण करना। न लेना। ६. प्राप्य धन न लेना। देना। मुआफ करना। ७. परित्याग करना। पास न रखना। ८ पड़ा रहने देना। न उठाना या लेना। ९. प्रस्थान कराना। चलाना।

**मुहा०**—किसी पर किसी को छोड़ना= किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिए उसके पीछे किसी को लगा देना।

१० चलाना या फेंकना। क्षेपण करना। ११ किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना। १२. हाथ में लिए हुए कार्य्य का त्याग देना। १३. किसी रोग या व्याधि का दूर होना। १४. वेग के साथ बाहर निकालना। १५. ऐसी वस्तु को चलाना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले। १६. बचाना। शेष रखना।

**मुहा०**—छोड़कर = अतिरिक्त। सिवाय।

१७. किसी कार्य को या उसके किसी अंग को भूल से न करना। १८. ऊपर से गिराना।

**छोड़वाना**—क्रि० स० [ हिं छोड़ना का प्रे० ] छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

**छोड़ाना**—क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

**छोनिप***—संज्ञा पुं० दे० "क्षोणिप"।

**छोनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी"।

**छोप**—संज्ञा पुं० [ सं० क्षेप ] १. गाढ़ी या गीली वस्तु की मोटी तह। मोटा लेप। २. लेप चढ़ाने का कार्य। ३. आघात। वार। प्रहार। ४. छिपाव। बचाव।

**छोपना**—क्रि० स० [ हिं० छुपाना ] १. गीली वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर फैलाना। गाढ़ा लेप करना। २. गीली मिट्टी आदि का लोंदा ऊपर रखना या फैलाना। गिलावा लगाना। थापना। ३ दबाकर चट घेंटना। धर दबाना। ग्रसना। ‡४. आच्छादित करना। ढकना। छेकना। †५. किसी बुरी बात को छिपाना। परदा डालना। †६. वार या आघात से बचाना।

**छोभ**—संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ"।

**छोभना***—क्रि० अ० [ हिं० छोभ + ना ( प्रत्य० ) ] करुणा, शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना। क्षुब्ध होना।

**छोभित***—वि० दे० "क्षोभित"।

**छोम***—वि० [ सं० क्षोम ] १ चिकना। २. कोमल।

**छोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० छोड़ना ] १.

आयत विस्तार की सीमा । चौड़ाई का हाशिया ।

**छोर**—ओर छोर=आदि अंत । २. विस्तार की सीमा । हद । ३. नोक ।

**छोरना**†—क्रि० स० [ सं० छोरण ] १. बंधन आदि अलग करना । खोलना । २. बंधन से मुक्त करना । ३. हरण करना । छीनना ।

**छोरा**†–संज्ञा पुं० [ सं०शावक ] [स्त्री० छोरी ] छोकड़ा । लड़का ।

**छोरा-छोरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० छोरना ] छीन खसाट । छीना छीनी ।

**छोलना**†—क्रि० स० [ हिं० छाल ] छीलना ।

**छोह**—संज्ञा पुं० [ हिं० क्षोभ ] १. ममता । प्रेम । स्नेह । २. दया । अनुग्रह । कृपा ।

**छोहना***—क्रि० अ० [ हिं० छोह + ना (प्रत्य०) ] १. विचलित, चंचल या क्षुब्ध होना । २. प्रेम या दया करना ।

**छोहरा**†*–संज्ञा पुं० दे० "छोरा" ।

**छोहाना***—क्रि० अ० [ हिं० छोह ] १. मुहब्बत करना । प्रेम दिखाना । २. अनुग्रह करना । दया करना ।

**छोहिनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी' ।

**छोही***†—वि० [ हिं० छोह ] ममता रखनेवाला । प्रेमी । स्नेही । अनुरागी ।

**छौंक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बघार । तड़का ।

**छौंकना**—क्रि० स० [ अनु० छायँ-छायँ ] १. वासने के लिए हींग, मिरचा आदि मे मिले हुए कड़कड़ाते घी को दाल आदि में डालना । बघारना । २. मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी में कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिए डालना । तड़का देना ।

**छौकना**†—क्रि० अ० [ सं० चतुष्क ] जानवर का कूदना या झपटना ।

**छौंड़ा**†—संज्ञा पुं० [ सं० क्षुंडा ] अनाज रखने का गड्ढा । खत्ता । संज्ञा पु० [ सं० शावक ] [ स्त्री० छौंड़ी ] लड़का । बच्चा ।

**छौना**—संज्ञा पुं० [ सं० शावक ] [ स्त्री० छौनी ] पशु का बच्चा । जैसे—मृग-छौना ।

**छौर***—संज्ञा पुं० दे० "क्षौर" ।

**छौलदारी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का छोटा खेमा । छोटा तंबू ।

**छौवाना***–क्रि०स० दे० "छुआना" ।

—:*:—

# ज

**ज**—हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है ।

**जंग**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] [ वि० जंगी ] लड़ाई । युद्ध । समर ।

**जंग**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] लोहे का मुरचा ।

**जंगम**—वि० [ सं० ] १. चलने-फिरनेवाला । चर । २. जो एक स्थल से दूसरे स्थल पर लाया जा सके । जैसे—जंगम संपत्ति ।

**जंगल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० जंगली ] १ जल-शून्य भूमि । रेगिस्तान । २. वन ।

**जँगला**—संज्ञा पु० [ पुर्त्त० जेगिला ] १. खिड़की, दरवाजे, बरामदे आदि में लगी हुई लोहे के छड़ों की पंक्ति । कटहरा । बाड़ । २.चौखट या खिड़की जिसमें छड़ लगी हों ।

**जंगली**—वि० [ हिं० जगल ] १. जंगल में मिलने या होनेवाला । जंगल-संबंधी । २. बिना बोए या लगाए उगनेवाला पौधा । ३ जंगल में रहनेवाला । बनैला ।

**जंगार**—संज्ञा पु० [ फ़ा० ] [ वि० जंगारी ] १. ताँबे का कसाव । तूतिया । २ एक रंग जो ताँबे का कसाव है ।

**जंगारी**—वि० [ फ़ा० जंगार ] नीले रंग का ।

**जंगाल**—संज्ञा पुं० दे० "जगार" ।

**जंगी**—वि० [ फ़ा० ] १. लड़ाई से संबंध रखनेवाला । जैसे—जंगी जहाज । २. फौजी । सैनिक । सेना-संबंधी । ३. बड़ा । बहुत बड़ा । दीर्घकाय । ४.

वीर । लड़का ।

**जंघा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जंघ ] १. पिंडली । २. जाँघ । रान । ऊरु ।

**जँचना**—क्रि० अ० [हिं० जाँचना] १. जाँचा जाना । देखा-भाला जाना । २. पूरा जाँच में उतरना । उचित या अच्छा ठहरना । ३.जान पड़ना प्रतीत होना ।

**जँचा**—वि०[हिं०जँचना] १.जाँचा हुआ । सुपरीक्षित । २ अव्यर्थ । अचूक ।

**जंजर***†—वि० [ सं० जर्जर ] पुराना और कमजोर । बेकाम ।

**जंजाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० जग+जाल ] १. प्रपंच । झंझट । बखेड़ा । २. बंधन । फँसाव । उलझन । ३. पानी का भँवर । ४. एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक । ५. बड़े मुँह की तोप । ६. बड़ा जाल ।

**जंजाली**—वि० [ हिं० जंजाल ]झगड़ालू । बखेड़िया । फसादी ।

**जंजीर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] [ वि० जंजीरी ] १. साँकल । सिकड़ी । कड़ियों की लड़ी । २. बेड़ी । ३. किवाड़ की कुंडी । सिकड़ी ।

**जंतर**—संज्ञा पुं० [ सं० यंत्र ] १. कल । औजार । यंत्र । २. तांत्रिक यंत्र । ३. चौकोर या लंबी ताबीज जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है । ४. गले में पहनने का एक गहना । कठुला ।

**जंतर-मंतर**—संज्ञा पुं० [हिं० यंत्र+मंत्र ] १. यंत्र-मंत्र । टोना-टोटका । जादू-टोना । २. मानमंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते हैं । आकाश-लोचन । वेधशाला ।

**जंतरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यंत्र ]१. छोटा जंता जिसमें सोनार तार बढ़ाते हैं । २. पत्रा । तिथि-पत्र । ३. जादूगर । भानमती । ४. बाजा बजानेवाला ।

**जँतसर**—संज्ञा पुं० [ हिं० जाँता ] वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं ।

**जँतसार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यंत्र-शाला ] जाँता गाड़ने का स्थान ।

**जंता**—संज्ञा पुं० [ सं० यंत्र ] [स्त्री० जंती, जंतरी ] १. यंत्र । कल । जैसे—जंताघर । २. तार खींचने का औजार ।

वि० [सं० यंतृ=यंता] दंड देनेवाला । शासन करने वाला ।

**जंती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जंता ] छोटा जंता । जंतरी ।

†संज्ञा स्त्री० [ हिं० जनना ] माता । मा ।

**जंतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जन्म लेनेवाला जीव । प्राणी । जानवर ।

**यौ०**—जीवजंतु=प्राणी । जानवर ।

**जंतुघ्न**—वि० [ सं० ] जंतुनाशक । कृमिघ्न ।

**जंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० यंत्र ] १ कल । औजार । २. तांत्रिक यंत्र । ३. ताला ।

**जंत्रना***—क्रि० स० [ हिं० जंत्र ] ताले के भीतर बंद करना । जकड़बंद करना ।

संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा" ।

**जंत्रना***—संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।

**जंत्र-मंत्र**—संज्ञा पुं० दे० "जंतर-मंतर" ।

**जंत्रित**—वि० [ सं० यंत्रित ] १. दे० "यंत्रित"। २. बंद । बँधा हुआ ।

**जंत्री**—संज्ञा पुं० [सं० यंत्र] बाजा ।

**जंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जंद ] १. पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ । २. वह भाषा जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है ।

**जंदरा**—संज्ञा पुं० [ सं० यंत्र ] यंत्र । कल । २. जाँता । † ३. ताला ।

**जंपना***—क्रि० स० [ सं० जल्पन ] बोलना । कहना ।

**जंबीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.जँबीरी नीबू । २. मरुवा । बन-तुलसी ।

**जंबीरीनीबू**—संज्ञा पुं० [ सं० जंबीर ] एक प्रकार का खट्टा नीबू ।

**जंबु**—संज्ञा पुं० [सं०]जामुन । (फल)

**जंबुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ा जामुन । फरेंदा । २. केवड़ा । ३. शृगाल । गीदड़

**जंबुद्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक जिसमें हिंदुस्तान है ।

**जंबुमत्**—संज्ञा पुं० दे० 'जांबवान्'।

**जंबू**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.जामुन । २. काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर ।

**जंबूर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. जंबूरा । जमुरका । २. तोप की चर्ख । ३. पुरानी छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी । जंबूरक ।

**जंबूरक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. छोटी तोप । २. तोप की चर्ख । ३. भँवरकली ।

**जंबूरची**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. तोपची । तुपकची । २. सिपाही ।

**जंबूरा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जंबूर+भौंरा ] १. चर्ख जिस पर तोप चढ़ाई जाती है । २. भँवरकड़ी । भँवरकली । ३. सुनारों का बारीक काम करने का एक औजार ।

**जंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दाढ़ । चौभड़ । २. जबड़ा । ३. एक दैत्य । ४. जँबीरी नीबू । ५. जँभाई ।

**जँभाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जृंभा ] मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया जो निद्रा या आलस्य मालूम पड़ने आदि के कारण होती है। उबासी।

**जँभाना**—क्रि० अ० [ सं० जृंभण ] जँभाई लेना।

**जंभारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. अग्नि। ३. वज्र। ४ विष्णु।

**ज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मृत्यु जय। २. जन्म। ३. पिता। ४. विष्णु। ५. छंदःशास्त्रानुसार एक गण जिसके आदि और अंत के वर्ण लघु और मध्य का गुरु होता है। ( । ऽ । )। वि० १. वेगवान्। तेज। २. जीतनेवाला।

प्रत्य० उत्पन्न। जात। जैसे—देशज।

**जई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जौ ] १. जौ की जाति का एक अन्न। २. जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य के रूप में ब्राह्मण, पुरोहित भेंट करते हैं। ३. अंकुर। ४. उन फलों की बतिया जिनमें बतिया के साथ फूल भी रहता है। जैसे—कुम्हड़े की जई।

* वि० दे० "जयी"।

**जईफ**—वि० [ अ० ] बुड्ढा। वृद्ध।

**जईफी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बुढ़ापा।

**जकंद***—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जगंद ] छलाँग। चौकड़ी। उछाल।

**जकंदना**—क्रि० अ० [ हिं० जकंद ] १. कूदना। उछलना। २. टूट पड़ना।

**जक**—संज्ञा पुं० [ सं० यक्ष ] १. धन-रक्षक भूत-प्रेत। यक्ष। २. कंजूस आदमी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० झक ] [ वि० झक्की ] १. जिद। हठ। अड़। २. धुन। रट।

**जक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. हार। पराजय। २ हानि। घाटा। ३. पराभव। लज्जा।

**जकड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जकड़ना ] जकड़ने का भाव। कसकर बाँधना।

**मुहा०**—जकड़बंद करना=१. खूब कस कर बाँधना। २. पूरी तरह अपने अधिकार में करना।

**जकड़ना**—क्रि० स० [ सं० युक्त + करण ] कसकर बाँधना। कड़ा बाँधना।

*क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगों का हिलने-डुलने के योग्य न रह जाना।

**जकना***—क्रि० अ० [ हिं० जक या चक ] १. भौचक्का होना। चकपकाना। २. झक में बोलना।

**जकात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दान। खैरात। २ कर। महसूल।

**जकित***—वि० [ हिं० चकित ] चकित। विस्मित। स्तंभित।

**जखम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जख्म ] १. क्षत। घाव। २ मानसिक दुःख का आघात।

**मुहा०**—जखम ताजा या हरा हो आना=बीते हुए कष्ट का फिर लौट या याद आना।

**जखमी**—वि० [ फ़ा० जख्मी ] जिसे जखम लगा हो। घायल।

**जखीरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजों का संग्रह हो। कोष। खजाना। २. संग्रह। ढेर। समूह। ३. वह स्थान जहाँ तरह तरह के पौधे और बीज बिकते हों।

**जग**—संज्ञा पुं० [ सं० जगत् ] १. संसार। विश्व। दुनिया। २. संसार के लोग। जन-समुदाय। लोक।

†*संज्ञा पुं० दे० "यज्ञ"।

**जगजगा**—वि० [ हिं० जगजगाना ] चमकीला। प्रकाशित। जो जगमगाता हो।

**जगजगाना**†—क्रि० अ० [ अनु० ] चमकना। जगमगाना।

**जगजोनि**—संज्ञा पुं० दे० "जगद्योनि"।

**जगड्वाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आडम्बर। व्यर्थ का आयोजन।

**जगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि और अंत के लघु होते हैं। जैसे—महेश।

**जगत्**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। २. महादेव। ३. जंगम। ४. विश्व। संसार।

**जगत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जगति=घर की कुर्सी ] कुएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा।

संज्ञा पुं० दे० "जगत्"।

**जगतसेठ**—संज्ञा पुं० [ सं० जगत् + श्रेष्ठ ] बहुत बड़ा धनी या महाजन।

**जगती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संसार। भुवन। २ पृथ्वी। ३. एक वैदिक छंद।

**जगदंब, जगदंबा**—संज्ञा स्त्री० दे० "जगदंबिका"।

**जगदम्बा, जगदम्बिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जगत् की माता। २. दुर्गा।

**जगदाधार**—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

**जगदीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परमेश्वर। २ विष्णु। जगन्नाथ।

**जगदीश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परमेश्वर।

**जगदीश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भगवती।

**जगद्गुरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परमेश्वर। २. शिव। ३. नारद। ४ अत्यंत पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष।

**जगद्धाता**—संज्ञा पुं० [सं० जगद्धातृ]

[स्त्री० जगद्धात्री] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महादेव।

**जगद्धात्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा की एक मूर्ति। २. सरस्वती।

**जगद्योनि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. विष्णु। ३. ब्रह्मा। ४. परमेश्वर। ५. पृथ्वी।

**जगद्वंद्य**—वि० [सं०] जिसकी वंदना सारा संसार करे। संसार में पूज्य या श्रेष्ठ।

**जगना**—क्रि० अ० [सं० जागरण] १. नींद से उठना। जागना। २. सचेत या सावधान होना। ३. देवी देवता या भूत-प्रेत आदि का अधिक प्रभाव दिखाना। ४. उत्तेजित होना। ५. (आग का) जलना। ६. जगमगाना। चमकना।

**जगन्नाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. विष्णु। ३. विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है।

**जगन्नियंता**—संज्ञा पुं० [सं० जगन्नियतृ] परमात्मा। ईश्वर।

**जगन्माता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**जगन्मोहिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. महामाया।

**जगबंद***—वि० दे० "जगद्वंद्य"।

**जगमग,जगमगा**—वि० [अनु०] १ प्रकाशित। जिसपर प्रकाश पड़ता हो। २ चमकीला। चमकदार।

**जगमगाना**—क्रि० अ० [अनु०] खूब चमकना। झलकना। दमकना।

**जगमगाहट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जगमग] जगमगाने का भाव। चमक।

**जगर मगर**—वि० दे० "जगमग"।

**जगवाना**—क्रि० स० [हिं० जगना] जगाने का काम दूसरे से कराना।

**जगह**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जायगाह] १. वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके। स्थान। स्थल। २. मौका। स्थल। अवसर। ३. पद। ओहदा। नौकरी।

**जगात**†—संज्ञा पुं० [अ० ज़कात] १. दान। खैरात। २. महसूल। कर।

**जगाती**†—संज्ञा पुं० [हिं० जगात] १. वह जो कर वसूल करे। २. कर उगाहने का काम।

**जगाना**—क्रि० स० [हिं० जागना] १. 'जागने' या 'जगने' का प्रेरणार्थक रूप। नींद त्यागने के लिए प्रेरणा करना। २. चेत में लाना। होश दिलाना। बोध कराना। †३. फिर से ठीक स्थिति में लाना। †४. आग को तेज करना। सुलगाना। †५. यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना। जैसे—मंत्र जगाना।

**जगार**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जागना] जागरण। जाग उठना।

**जगीला**†—वि० [हिं० जागना] जागने के कारण अलसाया हुआ। उनींदा।

**जघन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कटि के नीचे आगे का भाग। पेड़ू। २. नितंब। चूतड़।

**जघनचपला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद।

**जघन्य**—वि० [सं०] १. अंतिम। चरम। २. गर्हित। त्याज्य। अत्यंत बुरा। ३. नीच। निकृष्ट।

संज्ञा पुं० १. शूद्र। २. नीच जाति।

**जचना**—क्रि० अ० दे० "जँचना"।

**जच्चा**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जच्चः] प्रसूता स्त्री। वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा हुआ हो।

यौ०-जच्चाखाना=सूतिकागृह। सौरी।

**जच्छ***†—संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।

**जज**—संज्ञा पुं० [अं०] न्यायाधीश।

**जजमान**—संज्ञा पुं० दे० "यजमान"।

**जजिया**—संज्ञा पुं० [अ०] १. दंड। २. एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्यकाल में अन्य धर्मवालों पर लगता था।

**जजी**—संज्ञा स्त्री० [अं० जज] १. जज का पद या काम। २. जज की कचहरी।

**जजीरा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] टापू। द्वीप।

**जटना**—क्रि० स० [हिं० जाट] धोखा देकर कुछ लेना। ठगना।

*क्रि० स० [सं० जटन] जड़ना।

**जटल**—संज्ञा स्त्री० [सं० जटिल] व्यर्थ और झूठ बात। गप्प। बकवास।

**जटा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते हैं। २. जड़ के पतले पतले सूत। झकरा। ३. एक साथ बहुत से रेशे आदि। ४. शाखा। ५. जटामासी। ६. जूट। पाट। ७. कौंछ। केवाँच। ८. वेद-पाठ का एक भेद।

**जटाजूट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत से लंबे बालों का समूह। २. शिव की जटा।

**जटाधर**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

**जटाधारी**—वि० [सं०] जो जटा रखे हो।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. मरसे की जाति का एक पौधा। मुर्गकेश।

**जटाना**—क्रि० स० [हिं० जटना]

जड़ने का काम दूसरे से कराना ।

क्रि० अ० ठगा जाना ।

**जटामासी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जटा-मांसी ] एक सुगंधित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है । बालछड़ । बालूचर ।

**जटायु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रामायण का एक प्रसिद्ध गिद्ध । २. गुग्गुल ।

**जटित**—वि० [ सं० ] जड़ा हुआ ।

**जटिल**—वि० [ सं० ] १. जटावाला । जटाधारी । २. अत्यंत कठिन । दुरूह । दुर्बोध । ३. क्रूर । दुष्ट ।

**जटिलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जटिल होने का भाव । २. दुरूहता । पेचीलापन ।

**जठर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पेट । कुक्षि । २. एक उदर रोग । ३. शरीर ।

वि० १. वृद्ध । बूढ़ा । २ कठिन ।

**जठराग्नि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है ।

**जड़**—वि० [ सं० ] १. जिसमें चेतनता न हो । अचेतन । २ चेष्टाहीन । स्तब्ध । ३. नासमझ । मूर्ख । ४. ठिठुरा हुआ । ५. शीतल । ठंढा । ६. गूँगा । मूक । ७. बहरा । ८. जिसके मन में मोह हो ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० जटा ] पेड़ों और पौधों का वह भाग जो जमीन के अंदर दबा रहता है और जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार पहुँचता है । मूल । सोर । २ नींव । बुनियाद ।

**मुहा०**—जड़ उखाड़ना या खोदना= १. ऐसा नष्ट करना जिसमें फिर अपनी पूर्व स्थिति तक न पहुँच सके । २. बुराई करना । अहित करना । जड़ जमना =दृढ़ या स्थायी होना । जड़ पकड़ना =जमना । दृढ़ होना । ३. हेतु । कारण । सबब । ४. आधार ।

**जड़ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जड़ का भाव ] १. अचेतना । २. मूर्खता । बेवकूफी । ३. स्तब्धता । चेष्टा न करने का भाव । साहित्य में एक संचारी भाव ।

**जड़त्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चेतनता का विपरीत भाव । अचेतन । स्वयं हिल डोल या किसी प्रकार की चेष्टा न कर सकने का भाव । २. अज्ञता । मूर्खता ।

**जड़ना**—क्रि० स० [ सं० जटन ] १. एक चीज को दूसरी चीज में बैठाना । पच्ची करना । २. एक चीज को दूसरी चीज में ठोंककर बैठाना । जैसे—नाल जड़ना । ३. प्रहार करना । ४. चुगली खाना ।

**जड़भरत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंगिरस-गोत्री एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे ।

**जड़वाना**—क्रि० स० [ हिं० जड़ना ] जड़ने का काम दूसरे से कराना ।

**जड़हन**—संज्ञा पुं० [ हिं० जड़+हनन=गाड़ना ] वह धान जिसके पौधे एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह बैठाए जाते हैं । शालि ।

**जड़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जड़ना ] १. जड़ने का काम या भाव । २. जड़ने की मजदूरी ।

**जड़ाऊ**—वि० [ हिं० जड़ना ] जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों ।

**जड़ाना**—क्रि० स० दे० "जड़वाना" । †क्रि० अ० [ हिं० जाड़ा ] शीत लगना ।

**जड़ाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० जड़ना ] १. जड़ने का काम या भाव । २. जड़ाऊ काम ।

**जड़ावर**—संज्ञा पुं० [ हिं० जाड़ा ] जाड़े में पहनने के कपड़े । गरम कपड़े ।

**जड़ित***—वि० [ सं० जटित ] १. जड़ा हुआ । २. जिसमें नग आदि जड़े हों । ३. अच्छी तरह बँधा या जकड़ा हुआ ।

**जड़िमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जड़ता ।

**जड़िया**—संज्ञा पुं० [ हिं० जड़ना ] नगों के जड़ने का काम करनेवाला ।

**जड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जड़ ] वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय । बिरई ।

**यौ०**—जड़ी-बूटी=जंगली ओषधि ।

**जड़ीभूत**—वि० [ सं० ] जो बिलकुल जड़ के समान हो गया हो । मूढ़ ।

**जड़ुआ**—वि० दे० "जड़ाऊ" ।

**जड़ैया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जाड़ा+ ऐया ( प्रत्य० ) ] जूड़ी का बुखार ।

**जत***—वि० [ सं० यत् ] जितना । जिस मात्रा का ।

**जतन***—संज्ञा पुं० दे० "यत्न" ।

**जतनी**—संज्ञा पुं० [ सं० यत्न ] १. यत्न करनेवाला । २ चतुर । चालाक ।

**जतलाना**—क्रि० स० दे० "जताना" ।

**जताना**—क्रि० स० [ हिं० जानना ] १. ज्ञात कराना । बतलाना । २. पहले से सूचना देना ।

**जती**—संज्ञा पुं० दे० "यती" ।

**जतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वृक्ष का निर्यास । गोंद । २. लाख । लाह । ३. शिलाजीत ।

**जतुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हींग । २ लाख । लाह । ३. शरीर के चमड़े पर का दाग जो जन्म से ही होता है । लच्छन ।

**जतुका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पहाड़ी

नामक लता। २. चमगादड़।

**जतुगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घास फूस आदि का बना हुआ घर। कुटी।

**जतेक**†*—क्रि० वि० [ हिं० जितना+एक ] जितना। जिस मात्रा का।

**जत्था**—संज्ञा पुं० [ सं० यूथ ] १. बहुत से जीवों का समूह। झुंड। गरोह। २. वर्ग। फिरका।

**जथा***—क्रि० वि० दे० "यथा"।
संज्ञा पुं० दे० "जत्था"।
संज्ञा स्त्री० [ सं० गथ ] पूँजी। धन।

**जद**†—क्रि० वि० [ सं० यदा ] जब। जब कभी।
अव्य० [ सं० यदि ] यदि। अगर।

**जदपि**—क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।

**जदवार**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] निर्विषी।

**जदु***—संज्ञा पुं० दे० "यदु"।

**जदुपति***—संज्ञा पुं० दे० "यदुपति"।

**जदुपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० यदुपुर ] मथुरानगरी।

**जदुराई, जदुराज**—संज्ञा पुं० [ सं० यदुराज ] श्रीकृष्ण।

**जद्द**†*—वि० [ अ० ज्यादः ] ज्यादा। [ ]० प्रचंड। प्रबल।

**जद्दपि**†*—क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।

**जद्द-बद्द**—बुरा-भला कहना।

**जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लोक। लोग। २. प्रजा। ३. गँवार। देहाती। ४. अनुयायी। अनुचर। दास। ५. समूह। समुदाय। ६. भवन। ७. मजदूरी। ८. सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।

**जनक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जन्मदाता। उत्पादक। २. पिता। बाप। ३. मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि। ४. सीता के पिता।

**जनकजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता।

**जनकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] 'जनक' होने का भाव।

**जनकनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता।

**जनकपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मिथिला की प्राचीन राजधानी।

**जनकांगजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता।

**जनकौर**—संज्ञा पुं० [ सं० जनक+पुर ] १. जनकपुर। २. जनक राजा के भाई-बंधु।

**जनखा**—वि० [ फ़ा० ज़नकः ] १. जिसके हाव-भाव आदि औरतों के से हों। २. हीजड़ा। नपुंसक।

**जनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जनन का भाव। २. जन-समूह। सर्वसाधारण।

**जनन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उत्पत्ति। उद्भव। २. जन्म। ३. आविर्भाव। ४. तंत्र के अनुसार मंत्रों के दस संस्कारों में से पहला। ५. यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार। ६. वंश। कुल। ७. पिता। ८. परमेश्वर।

**जनना**—क्रि० स० [ सं० जनन ] १. जन्म देना। पैदा करना। २. ब्याना।

**जननि***—संज्ञा स्त्री० दे० "जननी"।

**जननी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उत्पन्न करने वाली। २. माता। माँ। ३ कुटकी। ४. अलता। ५. दया। कृपा। ६. जनी नाम का गंध-द्रव्य।

**जननेंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भग। योनि।

**जनपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आबाद देश। २. बस्ती। गाँव। जिला।

**जनप्रिय**—वि० [ सं० ] सबसे प्रेम रखने वाला। सर्व-प्रिय।

**जनम**—संज्ञा पुं० दे० "जन्म"।

**जनमघूँटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जनम+घूँटी ] वह घूँटी जो बच्चों को जन्मते समय से दो-तीन वर्षतक दी जाती है।

**मुहा०**—( किसी बात का ) जनमघूँटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात की) आदत पड़ना।

**जनमना**—क्रि० अ० [ सं० जन्म ] पैदा होना। जन्म लेना।

**जनमसँघाती**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० जन्म+सँघाती ] १. वह जिसका साथ जन्म से ही हो। २. वह जिसका साथ जन्म भर रहे।

**जनमाना**—क्रि० स० [ हिं० जनम ] जनमने का काम कराना। प्रसव कराना।

**जनमेजय**—संज्ञा पुं० दे० "जन्मेजय"।

**जनयिता**—संज्ञा पुं० [ सं० जनयितृ ] पिता।

**जनयित्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] माता।

**जनरल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] फौज का सेनापति।
वि० साधारण। आम।

**जनरव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ किंवदंती। अफवाह। २ लोकनिंदा। बदनामी। ३. कोलाहल। शोर।

**जनलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात लोकों में से एक।

**जनवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "जनाई"।

**जनवाना**—क्रि० स० [ हिं० जनना ] प्रसव कराना। लड़का पैदा कराना।
क्रि० स० [ हिं० जानना ] समाचार दिलवाना। सूचित कराना।

**जनवास**—संज्ञा पुं० [ सं० जन+

वास] १. सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान। २. बरातियों के ठहरने का स्थान। ३. सभा। समाज।

**जनवासा**—संज्ञा पुं० दे० "जनवास"।

**जनश्रुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अफवाह। किंवदंती।

**जनसंख्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तादाद। आबादी।

**जनस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मनुष्यों का निवास स्थान। २. दंडकारण्य का एक प्रदेश।

**जनहरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक दंडक वृत्त।

**जनाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जनना] १. जनानेवाली। दाई। २. जनाने की मजदूरी।

**जनाउ***†—संज्ञा पुं० दे० "जनाव"।

**जनाजा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. शव। लाश। २. अरथी या वह संदूक जिसमें लाश को रखकर गाड़ने, जलाने आदि ले जाते हैं।

**जनानखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] स्त्रियों के रहने का स्थान। अंतःपुर।

**जनाना**—क्रि० स० दे० "जताना"। क्रि० स० [ हिं० जनना ] उत्पन्न कराना। जनन का काम कराना।

**जनाना**—वि० [ फ़ा० ] [ स्त्री० जनानी ] १. स्त्रियों का। स्त्री-संबंधी। २. हीजड़ा। ३. निर्बल। डरपोक।

संज्ञा पुं० १. जनखा। मेहरा। २. अंतःपुर। जनानखाना। ३. पत्नी। जोरू।

**जनानापन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जनाना + पन (प्रत्य०) ] मेहरापन। क्लीत्व।

**जनाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द। महाशय।

**जनार्दन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**जनाव**†—संज्ञा पुं० [ हिं० जनाना ] जनाने की क्रिया या भाव। सूचना। इत्तला।

**जनावर**†—संज्ञा पुं० दे० "जानवर"।

**जनाश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धर्मशाला। सराय। २. घर। मकान।

**जनि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। २. नारी। स्त्री। ३. माता। ४. जनी नामक गंध-द्रव्य। ५. भार्या। पत्नी। ६. जन्मभूमि। *†अव्य० मत। नहीं। न।

**जनित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० जनिता ] उत्पन्न। जन्मा हुआ।

**जनिता**—संज्ञा पुं० [ सं० जनितृ ] [ स्त्री० जनित्री ] १. उत्पन्न करनेवाला। २. पिता।

**जनित्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] माता। माँ।

**जनियाँ***—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० जान ] प्रियतमा। प्रिया। प्रेयसी।

**जनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जन ] १ दासी। अनुचरी। २. स्त्री। ३. माता। ४. कन्या। पुत्री। ५. एक गंध-द्रव्य।

वि० स्त्री० उत्पन्न या पैदा की हुई।

**जनु**—क्रि० वि० [ हिं० जानना ] मानो। ( उत्प्रेक्षावाचक )

**जनून**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पागलपन। उन्माद।

**जनूनी**—संज्ञा पुं० [ अ० जनून ] पागल।

**जनेऊ**—संज्ञा पुं० [ सं० यज्ञ ] १. यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र। २. यज्ञोपवीत संस्कार।

**जनेत**—संज्ञा स्त्री० [ सं०जन + एत (प्रत्य०) ] बरयात्रा। बरात।

**जनेव**—संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ"।

**जनैया**—वि० [ हिं० जनना + ऐया (प्रत्य०) ] जाननेवाला। जानकार।

**जनौ**—क्रि० वि० [ हिं० जानना ] मानो। गोया।

**जन्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जीवन धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश।

**मुहा०**—जन्म लेना=पैदा होना।

२ अस्तित्व में आना। आविर्भाव। ३. जीवन। जिंदगी।

**मुहा०**—जन्म हारना = १. व्यर्थ जन्म खोना। २ दूसरे का दास होकर रहना।

४. आयु। जीवनकाल। जैसे-जन्म भर।

**जन्मकुंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले। ( फलित ज्योतिष )

**जन्मतिथि**—संज्ञा स्त्री० दे० "जन्मदिन"।

**जन्मदिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जन्म का दिन। वर्षगाँठ।

**जन्मना**—क्रि० अ० [ सं० जन्म + ना (प्रत्य०) ] १. जन्म लेना। पैदा होना। २. अस्तित्व में आना।

**जन्मपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जन्मपत्री।

**जन्मपत्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह पत्र या खरा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति आदि का ब्योरा रहता है।

**जन्मभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।

**जन्म-सिद्ध**—[ सं० ] जिसकी सिद्धि जन्म से ही हो। जन्म मात्र से प्राप्त।

**जन्मस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जन्मभूमि।

**जन्मांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूसरा जन्म।

**जन्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० जन्मन् ] वह जिसका जन्म हो। ( समास के अन्त में )।

वि० जो पैदा हुआ हो। उत्पन्न।

**जन्माना**—क्रि० स० [ हिं० जन्मना ] उत्पन्न करना। जन्म देना।

**जन्माष्टमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था।

**जन्मेजय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. राजा परीक्षित के पुत्र का नाम जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था।

**जन्मोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव तथा पूजन।

**जन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ], [ स्त्री० जन्या ] १. साधारण मनुष्य। जनसाधारण। २. किंवदंती। अफवाह। ३. राष्ट्र। किसी एक देश के वासी। ४. लड़ाई। युद्ध। ५. पुत्र। बेटा। ६. पिता। ७. जन्म।

वि० १. जनसंबंधी। २. किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला। ३. राष्ट्रीय। जातीय। ४. जो उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत।

**जन्हु**—संज्ञा पुं० दे० "जह्नु"।

**जप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी मंत्र या वाक्य का बार-बार धीरे-धीरे पाठ करना। २. पूजा आदि में मंत्र का संख्यापूर्वक पाठ।

**जप-तप**—संज्ञा पुं० [ हिं० जप+तप ] संध्या, पूजा, जप और पाठ आदि। पूजा-पाठ।

**जपना**—क्रि० स० [ सं० जपन ] १. किसी वाक्य या शब्द को धीरे-धीरे देर तक कहना या दोहराना। २. संध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय संख्यानुसार बार बार उच्चारण करना। ३. खा जाना। ले लेना।

**जपनी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० जपना ] १. माला। २. गोमुखी। गुप्ती।

**जपनीय**—वि० [ सं० ] जप करने योग्य।

**जपमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह माला जिसे लेकर लोग जप करते हैं।

**जपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जवा। अड़हुल।

संज्ञा पुं० [ सं० जापक ] जपनेवाला।

**जपिया, जपी**—वि० [ हिं० जप ] जप करनेवाला।

**जप्त**—वि० दे० "जब्त"।

**जफा**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सख्ती। जुल्म।

**जफील**—संज्ञा स्त्री० [ अ० जफ़ीर ] [ क्रि० जफीलना ] १. सीटी का शब्द। २. वह जिससे सीटी बजाई जाय। सीटी।

**जब**—क्रि० वि० [ सं० यावत् ] जिस समय। जिस वक्त।

**मुहा०**—जब जब=कभी। जिस जिस समय। जब तब=कभी-कभी। जब देखो तब=सदा। सर्वदा। हमेशा।

**जबड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० जंभ ] मुँह में दोनों ओर ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें जड़ी रहती हैं। कल्ला।

**जबर**—वि० [ फ़ा० ज़बर ] १. बलवान्। बली। ताकतवर। २. दृढ़। मजबूत।

**जबरई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जबर ] अन्याययुक्त अत्याचार। सख्ती। ज्यादती।

**जबरदस्त**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा जबरदस्ती ] १. बलवान्। बली। शक्तिवाला। २. दृढ़। मजबूत।

**जबरदस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] अत्याचार। सीनाजोरी। जियादती। अन्याय।

क्रि० वि० बलपूर्वक। दबाव डालकर।

**जबरन्**—क्रि० वि० [ अ० जब्रन् ] बलात्। जबरदस्ती। बलपूर्वक।

**जबरा**—वि० [ हिं० जबर ] बलवान्। बली।

संज्ञा पुं० [ अं० जेबरा ] घोड़े और गदहे के मध्य का एक बहुत सुंदर जंगली जानवर।

**जबह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया। हिंसा।

**जबहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जीव ] जीवट। साहस।

**जबान**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. जीभ। जिह्वा।

**मुहा०**—जबान खींचना=धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिए कठोर दंड देना। जबान पकड़ना=बोलने न देना। कहने से रोकना। जबान पर आना=मुँह से निकलना। जबान में लगाम न होना=सोच-समझ कर बोलने के अयोग्य होना। जबान हिलाना=मुँह से शब्द निकालना। दबी जबान से बोलना या कहना=अस्पष्ट रूप से बोलना। साफ-साफ न कहना।

**यौ०**-बर-जबान=कंठस्थ। उपस्थित। बजबान=बहुत सीधा।

२. बात। बोल। ३. प्रतिज्ञा। वादा। कौल। ४. भाषा। बोल-चाल।

**जबानदराज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा जबानदराजी ] धृष्टता-पूर्वक अनुचित बातें करनेवाला।

**जबानबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १.

किसी घटना के संबंध में लिखा जाने-वाला इजहार या गवाही। २.मौन। चुप्पी।

**जबानी**—वि० [ हिं० जबान ] १. जो केवल जबान से कहा जाय, किया न जाय। मौखिक। २. जो लिखित न हो। मौखिक। मुँह से कहा हुआ।

**जबाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जाबाल ऋषि की माता जो एक दासी थी।

**जबून**—वि० [ तु० ] बुरा। खराब।

**जब्त**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ। सरकार से छीना हुआ। जैसे—रियासत जब्त होना। २. अपनाया हुआ।

**जब्ती**—संज्ञा स्त्री० [ अ० जब्त ] जब्त होने की क्रिया।

**जब्र**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ज्यादती। सख्ती।

**जब्रन,जब्रिया**—क्रि० वि० दे० "जबरन"।

**जभी**—क्रि० वि० [ हिं०जब+ही (प्रत्य०) ] १. जिस समय ही। २. ज्योंही।

**जम**—संज्ञा पुं० दे० "यम"।

**जमकात,जमकातर***—संज्ञा पुं० [ सं० यम+हिं० कातर ] पानी का भँवर।

संज्ञा स्त्री० [ सं० यम+कर्त्तरी ] १. यम का छुरा या खाँड़ा। २. खाँड़ा।

**जमघट**—संज्ञा पुं० दे० "यमघंट"।

**जमघट**—संज्ञा पुं० [ हिं०जमना+घट्ट ] मनुष्यों की भीड़। ठट्ट। जमावड़ा।

**जमज**—वि० दे० "यमज"।

**जमडाढ़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यम+डाढ़ ] कटारी की तरह का एक हथियार।

**जमदग्नि**—संज्ञा पुं० [ सं ] एक प्राचीन ऋषि।

**जमधर**—संज्ञा पुं० दे०"जमडाढ"।

**जमन***—संज्ञा पुं० दे० "यवन"।

**जमना**—क्रि० अ० [ सं० यमन ] १ तरल पदार्थ का थाम या गाढ़ा हो जाना। जैसे—बरफ जमाना। २. दृढ़तापूर्वक बैठना। अच्छी तरह स्थित होना। ३. स्थिर होना। निश्चल होना। ४ एकत्र होना। इकट्ठा होना। ५ हाथ से होने वाले काम का पूरा पूरा अभ्यास होना। ६ बहुत से आदमियों के सामने होनेवाले किसी काम का उत्तमता से होना। जैसे—गाना जमना। खेल जमना। ७ किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना। ८ उगना, जैसे—पेड़-पौधों का जमना।

क्रि० अ० [ सं० जन्म+ना (प्रत्य०) ] उगना। उपजना। उत्पन्न होना।

संज्ञा स्त्री० दे० "यमुना"

**जमनिका***—संज्ञा स्त्री० [ सं० यवनिका ] १ यवनिका। परदा। २. काई। ३ मैल।

**जमराज**—संज्ञा पुं० दे० "यम-राज"।

**जमवट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जमना ] लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कुआँ बनाने में भगाड़ में रखा जाता है।

**जमवार***—संज्ञा पुं० [ सं० यमद्वार ] यम का द्वार।

**जमा**—वि० [ अ० ] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २. सब मिलाकर। ३. जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो।

संज्ञा स्त्री [ अ० ] १. मूलधन। पूँजी। २. धन। रुपया-पैसा। ३. भूमि-कर। मालगुजारी। लगान। ४. जोड़। ( गणित )।

**जमाई**—संज्ञा पुं० [ सं० जामातृ ] दामाद। जँवाई। जामाता।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० जमना ] जमने या जमाने की क्रिया या भाव।

**जमाखर्च**—संज्ञा पुं० [ फा० जमा+खर्च ] आय और व्यय।

**जमात**—संज्ञा स्त्री० [अ० जमाअत] १. मनुष्यों का समूह। गरोह या जत्था। २. कक्षा। श्रेणी। दर्जा।

**जमादार**—संज्ञा पुं० [ फा० ] [संज्ञा जमादारी ] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।

**जमानत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वह जिम्मेदारी जो जबानी, कोई कागज लिखकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। जामिनी।

**जमानतनामा**—संज्ञा पुं० [ फा०+अ० ] वह कागज जो जमानत करते समय लिखा जाता है।

**जमाना**—क्रि० स० [ हिं० जमना ] "जमना" का सकर्मक। जमने में सहायक होना।

**जमाना**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. समय। काल। वक्त। २. बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३. प्रताप या सौभाग्य का समय। ४ दुनिया। संसार। जगत्।

**जमानासाज**—वि० [ फा० ] [संज्ञा जमानासाजी ] जो लोगों का रंग-ढंग देखकर व्यवहार करता हो।

**जमाबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] पट-वारी का एक कागज जिसमें असा-मियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं।

**जमामार**—वि० [ हिं० जमा+

मारना ] दूसरा का धन दबा रखने या ले लेनेवाला ।

**जमालगोटा**—संज्ञा पुं० [ सं० जयपाल ] एक पौधे का बीज जो अत्यंत रेचक होता है । जयपाल । दंतीफल ।

**जमाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० जमाना ] १. जमने का भाव । २. जमाने का भाव ।

**जमावट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जमाना] जमने का भाव ।

**जमावड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जमना=एकत्र होना ] बहुत से लोगों का समूह । भीड़ ।

**जमींकंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जमीन+कंद ] सूरन । ओल ।

**जमींदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] जमीन का मालिक । भूमि का स्वामी ।

**जमींदारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. जमींदार की वह जमीन जिसका वह मालिक हो । २. जमींदार का पद ।

**जमींदोज**—वि० [ फ़ा० ] जो तोड़-फोड़कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो । विनष्ट ।

**जमीन**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. पृथ्वी (ग्रह)। २ पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जिसपर लोग रहते हैं । भूमि । धरती ।

**मुहा०**—जमीन आसमान एक करना=बहुत बड़े बड़े उपाय करना । जमीन आसमान का फरक=बहुत अधिक अंतर । बहुत बड़ा फरक । जमीन देखना=१. गिर पड़ना । पटका जाना । २. नीचा देखना ।

३. कपड़े आदि की वह सतह जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों । ४. वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से किया जाय । ५. चित्र लिखने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह । ६. डौल । भूमिका । आयोजन ।

**मुहा०**—जमीन बाँधना=अस्तर या मसाला लगाकर चित्र के लिए सतह तैयार करना ।

**जमुकना**†—क्रि० अ० [ ? ] पास पास होना । सटना ।

**जमुर्रद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पन्ना (रत्न) ।

**जमुहाना**†—क्रि० अ० दे० "जँभाना" ।

**जमूरक, जमूरा**†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जंबूरक ] एक प्रकार की छोटी तोप ।

**जमूड़ा**—एक प्रकार की सड़सी ।

**जमोग**†—संज्ञा पुं० [ हिं० जमोगना] जमोगने अर्थात् स्वीकार कराने की क्रिया ।

**जमोगना**†—क्रि० स० [ अ० जमा+योग ] १. हिसाब-किताब की जाँच करना । २. स्वयं उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिए दूसरे को भार सौंपना । परेखना । ३. तसदीक कराना । ४ बात की जाँच कराना ।

**जमौआ**—वि० [हिं० जमाना] जमाकर बनाया हुआ । जैसे—जमौआ कंबल ।

**जम्हाना**—क्रि० अ० दे० "जँभाना"।

**जम्हाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "जँभाई"।

**जयंत**—वि० [ सं० ] [स्त्री० जयंता] १ विजयी । २. बहुरूपिया ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रुद्र । २. इन्द्र के पुत्र उपेंद्र का नाम । ३ स्कंद । कार्त्तिकेय ।

**जयंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विजय करनेवाली । विजयिनी । २. ध्वजा । पताका । ३. हलदी । ४. दुर्गा । ५. पार्वती । ६. किसी की जन्मतिथि पर होनेवाला उत्सव । वर्षगाँठ का उत्सव । ७. एक बड़ा पेड़ । जैंत या जैता । ८. बैजंती का पौधा । ९. जौ के छोटे पौधे जिन्हें विजयादशमी के दिन ब्राह्मण यजमानों को भेंट करते हैं । जई ।

**जय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों का पराभव । जीत ।

**मुहा०**—जय मनाना=विजय की कामना करना । समृद्धि चाहना ।

२. विष्णु के एक पार्षद का नाम । ३. महाभारत का पूर्व नाम । ४. जयंती । जैंत का पेड़ । ५. लाभ । ६. अयन ।

**जयकरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौपाई छंद ।

**जयजयकार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी की जय मनाने का घोष ।

**जयजीव***—संज्ञा पुं० [ हिं० जय+जी ] एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है—जय हो और जिओ ।

**जयति**—अव्य० [ सं० ] जय हो ।

**जयद्रथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंधु-सौवीर का राजा जो दुर्योधन का बहनोई था ।

**जयना***†—क्रि० अ० [ सं० जयन ] जीतना ।

**जयपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जो पराजित पुरुष अपने पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है । विजय-पत्र ।

**जयपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जमालगोटा । २. विष्णु । ३. राजा ।

**जयमंगल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा की सवारी का हाथी ।

**जयमाल**—संज्ञा स्त्री० [सं०जयमाला] १. वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय । २. वह माला

जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती थी ।
**जयस्तंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विजय का स्मारक स्तंभ या धरहरा ।
**जया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. हरी दूब। ४. अरणी वृक्ष। ५. जैंत का पेड़। ६. हरीतकी। हड़। ७. पताका। ध्वजा। ८ गुड़हल का फूल।
वि० जय दिलानेवाली। जयकारिणी।
**जयी**—वि० [ सं० जयिन् ] विजयी। जयशील।
**जर***—संज्ञा पुं० [ सं० जरा ] वृद्धावस्था।
**जर**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। दौलत। रुपया।
**जरकटी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।
**जरकश, जरकसी***—वि० [ फ़ा० जरकश ] जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।
**जरखेज**—वि०[फ़ा०][संज्ञा जरखेजी] उपजाऊ। उर्वरा। ( जमीन )
**जरठ**—वि० [ सं० ] १. कर्कश। कठिन। २.वृद्ध। बुड्ढा। ३. जीर्ण। पुराना।
**जरतार***—संज्ञा पुं० [ फ़ा०जर + हिं० तार ] सोने या चाँदी आदि का तार। जरी।
**जरतुश्त**—संज्ञा पुं० दे० "जरदुश्त"।
**जरत्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० जरती ] १. बुड्ढा। वृद्ध। २. पुराना। बहुत दिनों का।
**जरत्कारु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ऋषि।
**जरद**—वि० [ फ़ा० ज़र्द ] पीला। पीत।
**जरदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. चावलों का एक व्यंजन। २. पान में खाने की सुगंधित सुरती। ३. पीले रंग का घोड़ा।
**जरदालू**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] खूबानी।
**जरदी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. पिलाई। पीलापन। २. अंडे के भीतर का पीला चेप।
**जरदुश्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] फ़ारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य।
**जरदोज**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जरदाजी का काम करनेवाला।
**जरदोजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमे-सितारे आदि से की जाती है।
**जरन***—संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।
**जरनल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] सामयिक पत्र।
**जरना***—क्रि० अ० दे० "जलना"।
क्रि० स० दे० "जड़ना"।
**जरनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।
**जरनैल**—संज्ञा पुं० दे० "जनरल"।
**जरब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आघात। चोट।
**मुहा०**—जरब देना = चोट लगाना। पीटना। २. गुणा। ( गणित )
**जरबफ्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।
**जरबाफी**—वि० [फ़ा०] [ कचा ज़रबाफ ] जिस पर जरबाफ का काम बना हो।
संज्ञा स्त्री० जरदोजी।
**जरबीला***—वि० [ फ़ा० जरब + ईला (प्रत्य०) ] भड़कीला और सुंदर।
**जरमन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] जरमनी का निवासी।
संज्ञा स्त्री० जरमनी की भाषा।
वि० जरमनी देश का।
**जरमन सिलवर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रसिद्ध सफेद और चमकीली धातु।
**जरर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. हानि। नुकसान। क्षति। २.आघात। चोट।
**जरांकुश**—संज्ञा पुं० [ सं० यज्ञकुश ] मूँज के प्रकार की एक सुगंधित घास।
**जरवारा***—वि० [ फ़ा० जर + हिं० वाला ] धनी। संपन्न।
**जरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुढ़ापा।
**जरा**—वि० [ अ० ज़र्रा ] थोड़ा। कम।
क्रि० वि० थोड़ा। कम।
**जराअत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [वि० जराअती ] जराअत-पेशा। खेती-बारी।
**जराग्रस्त**—वि० [ सं० ] बुड्ढा। वृद्ध।
**जराना***—क्रि० स० दे० "जलाना"।
**जरायु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह झिल्ली, जिसमें बच्चा बँधा हुआ उत्पन्न होता है। आँवल। खेड़ी। उल्व। २ गर्भाशय।
**जरायुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह प्राणी जो आँवल या खेड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो। पिंडज का एक भेद।
**जराव***—वि० दे० "जड़ाऊ"।
**जरासंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मगध देश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा।
**जरिया***—संज्ञा पुं० दे० "जड़िया"।
वि० [ हिं० जलना ] जो जलाकर बनाया गया हो। जैसे—जरिया नमक।
**जरिया**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १.

संबंध। लगाव। द्वार। २. हेतु। कारण। सबब।

**जरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है। २. सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।

**जरीब**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है।

**जरीवाना**†—संज्ञा पुं० दे० "जुरमाना"।

**जरूर**—क्रि० वि० [ अ० ] अवश्य। निःसंदेह।

**जरूरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] आवश्यकता। प्रयोजन।

**जरूरी**—वि० [ फ़ा० ] १. जिसके बिना काम न चले। प्रयोजनीय। २. जो अवश्य होना चाहिए। आवश्यक।

**जरौट**†*—वि० [ हिं० जड़ना ] जड़ाऊ।

**जर्क बर्क**—वि० [ फ़ा० ] तड़क-भड़कवाला। भड़कीला। चमकीला। भड़कदार।

**जर्जर**—वि० [ सं० ] १. जीर्ण। जो पुराना होने के कारण बेकाम हो गया हो। २. टूटा-फूटा। खंडित। ३. वृद्ध। बुड्ढा।

**जर्जरित**—वि० दे० "जर्जर"।

**जर्द**—वि० [ फ़ा० ] पीला। पीत।

**जर्दा**—संज्ञा पुं० दे० "जरदा"।

**जर्दी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पीलापन।

**जर्नेल**—संज्ञा पुं० दे० "जरनल"।

**जर्रा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. अणु। २. बहुत छोटा टुकड़ा या खंड।

**जर्राह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ संज्ञा जर्राही ] फोड़ों आदि को चीरकर चिकित्सा करनेवाला। शस्त्र-चिकित्सक।

**जलंधर**—संज्ञा पुं० [ सं ] एक राक्षस जिसका वध विष्णु के उसकी स्त्री को धोखा देने पर हुआ था।

संज्ञा पुं० दे० "जलोदर"।

**जल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी। २. उशीर। खस। ३. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र।

**जल-अलि**—संज्ञा पुं० [ सं० जल+अलि ] एक काला कीड़ा जो पानी पर तैरा करता है। पैरौवा। भौंतुवा।

**जलकर**—संज्ञा पुं० [ हिं० जल+कर ] १. जलाशयों की उपज। ताल में होनेवाला पदार्थ। जैसे—मछली, सिंघाड़ा आदि। २. इस प्रकार के पदार्थों पर का कर।

**जल-कल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जल+हिं० कल ] १. नगर के सब घरों में नल या कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग। २. पानी देनेवाला कल। ३. आग बुझानेवाला दमकल।

**जलक्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह क्रीड़ा जो जलाशय में की जाय। जल-विहार।

**जलखावा**†—संज्ञा पुं० दे० "जलपान"।

**जलघड़ी**—संज्ञा स्त्री०[हिं०जल+घड़ी] समय जानने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी।

**जलचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० जलचरी ] पानी में रहनेवाले जंतु।

**जलचरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मछली।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० जलचर+ई (प्रत्य०) ] जलचर होने की क्रिया या भाव।

**जल-चादर**—संज्ञा स्त्री० [हिं०जल+चादर ] जल का फैला हुआ पतला प्रवाह।

**जलचारी**—संज्ञा पुं० दे० "जलचर"

**जलज**—वि० [ सं० ] जो जल में उत्पन्न हो।

संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. शंख। ३ मछली। ४. जल-जंतु। ५. मोती।

**जलजला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] भूकंप।

**जलजात**—वि० दे० "जलज"।

संज्ञा पुं० [ सं० ] पद्म। कमल।

**जल-डमरूमध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दो बड़े समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला समुद्र। (भूगोल)।

**जलतरंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर बजाया जाता है।

**जलत्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के काटने पर जल देखने से उत्पन्न होता है। जलातंक।

**जलथंभ**—संज्ञा पुं० दे० "जलस्तंभ"।

**जलद**—वि० [ सं० ] जल देनेवाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. मोथा। ३. कपूर।

**जलदागम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वर्षा ऋतु का आगमन या आरंभ। २. आकाश में बादलों का घिरना।

**जलधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बादल। २. मुस्ता। ३. समुद्र।

**जलधरमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बारह अक्षरों की एक वृत्ति।

**जलधरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है। जलहरी।

**जलधारा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पानी का प्रवाह। पानी की धार। २. जलधारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या।

संज्ञा पुं० बादल। मेघ।

**जलधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समुद्र। २. दस शंख की संख्या।

**जलन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जलना ] १. जलने की पीड़ा या दुःख। दाह। २. बहुत अधिक ईर्ष्या। डाह।

**जलना**—क्रि० अ० [ सं० ज्वलन] १. अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूपमें हो जाना। दग्ध होना। बलना। २. आँच के कारण भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना। ३. आँच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित होना। झुलसना।

मुहा०—जले पर नमक छिड़कना=किसी दुःखी या व्यथित मनुष्य को और दुःख देना।

४. ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना।

मुहा०—जली-कटी या जली-भुनी बात=लगती हुई बात। कटु बात जो द्वेष, डाह या क्रोध आदि के कारण कही जाय।

**जलनिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**जलपक्षी**—संज्ञा पुं० [ सं० जल-पक्षिन् ] वह पक्षी जो जल के आस-पास रहता हो।

**जलपना**—क्रि० अ० [ सं० जल्पन ] लंबी चौड़ी बातें करना। बकवाद करना।

**जलपाटल**—संज्ञा पुं० [ हिं० जल + पटल ] काजल।

**जलपान**—संज्ञा पुं०[सं०] थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाश्ता।

**जलपीपल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जल-पिप्पली ] पीपल के आकार की एक प्रकार की ओषधि।

**जलप्रपात**—संज्ञा पु० [ सं० ] किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना।

**जलप्रवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी का बहाव। २. नदी में बहा देने की क्रिया।

**जलप्लावन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी की बाढ़ जिससे आस-पास की भूमि जल में डूब जाय। २ एक प्रकार का प्रलय।

**जलबेंत**—संज्ञा पुं० [ सं० जलवेत्र ] जलाशयों के पास होनेवाला बेत।

**जलभँवरा**—संज्ञा पु० [ हिं० जल + भँवरा ] एक काला कीड़ा जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है। भौंतुवा।

**जलमानुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० जलमानुषी ] परीरू नामक कल्पित जलजंतु जिसकी नाभि से ऊपरका भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के ऐसा होता है।

**जलयान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सवारी जो जल में काम आता हो। जैसे—नाव।

**जलराशि**—संज्ञा पु० [ सं० ] समुद्र।

**जलरुह**—संज्ञा पु० [ सं० ] कमल।

**जलवर्त**—संज्ञा पु० दे० "जलावर्त"

**जलवाना**—क्रि० स० [हिं० जलाना] जलाने का काम दूसरे से कराना।

**जलशायी**—संज्ञा पु० [ सं० जल-शायिन् ] विष्णु।

**जलसा**—संज्ञा पु० [ अ० ] १ उत्सव या समारोह जिसमें खाना, पीना, गाना, बजाना आदि हो। २ सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन।

**जलसिंह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सील की तरह का एक समुद्री जंतु।

**जलसेना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समुद्र में जहाजों पर लड़नेवाली फौज।

**जलस्तम्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक भौतिक घटना जिसमें जलाशयों या समुद्र के ऊपर एक मोटा स्तम्भ-सा बन जाता है। सूँड़ी।

**जलस्तम्भन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंत्रादि से जल की गति रोकना। पानी बाँधना।

**जलहर**—वि० [ हिं० जल ] जल से भरा हुआ। जलमय।

**जलहरण**—संज्ञा पु० [ सं० ] बत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति या दंडक।

**जलहरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० जलधरी ] १ अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। २. मिट्टी का जल भरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है।

**जलांजलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृतक को दी जानेवाली जल की अंजलि।

**जलाक**—संज्ञा पु० [ हिं० जलना ] १ धूप की ज्वाला। २. लू।

**जलाजल**—संज्ञा पुं०[हिं० झलाझल ] गोटे आदि की झालर। झलाझल। * -वि० दे० "झलाझल"।

**जलाटीन**—संज्ञा पु० दे० "जिलाटिन"।

**जलातंक**—संज्ञा पु० दे० "जल-त्रास"।

**जलातन**—वि० [हिं० जलना + तन] १. क्रोधी। बिगड़ैल। २. ईर्ष्यालु। डाही।

**जलाद***—संज्ञा पुं० दे० "जल्लाद"।

**जलाधिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वरुण।

**जलाना**—क्रि० स० [ हिं० जलना ] १. अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में कर देना। प्रज्वलित करना। भस्म करना। २ किसी पदार्थ को आँच से भाप या कोयले आदि के रूप में करना। ३. आँच के द्वारा विकृत या पीड़ित करना। मुसलमान।

४. किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

**जलापा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जलना + आपा (प्रत्य०) ] डाह या ईर्ष्या की जलन।

**जलावन**—संज्ञा पुं० [हिं० जलाना] १. ईंधन। २. किसी वस्तु का वह अंश जो तपाए या जलाए जाने पर जल जाता है। जलता।

**जलावर्त्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी का भँवर। नाल। २. एक प्रकार का मेघ।

**जलाशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ पानी एकत्र हो। जैसे—तालाब, नदी।

**जलाहल**—वि० [ हिं० जल+जल ] जलमय।

**जलील**—वि० [ अ० ] १ तुच्छ। २ जिसने नीचा देखा हो। अपमानित।

**जलूस**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बहुत से लोगों का सज-धजकर किसी सवारी के साथ प्रस्थान। उत्सव-यात्रा।

**जलेचर**—वि० दे० "जलचर"।

**जलेबी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जलाव ] १ एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकार होती है। २. गोल घेरा। कुंडली। लपट। ३. एक प्रकार की आतशबाजी।

**जलेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वरुण। २. समुद्र। ३. जलाधिप।

**जलोदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होने से पेट फूल जाता है।

**जलौका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जोंक।

**जल्द**—क्रि० वि० [ अ० ] [ संज्ञा जल्दी ] १. शीघ्र। चटपट। २. तेजी से।

**जल्दी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शीघ्रता। फुरती।

क्रि० वि० दे० "जल्द"।

**जल्प**—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन। कहना। २ बकवाद। व्यर्थ की बात। प्रलाप।

**जल्पक**—वि० [ सं० ] बकवादी। वाचाल।

**जल्पन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बकवाद। प्रलाप। व्यर्थ की बात। २. डींग।

**जल्पना**—क्रि० अ० [सं० जल्पन] व्यर्थ बकवाद करना। डींग मारना। सटना।

**जल्लाद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. प्राणदंड पाए हुए अपराधियों का वध करने पर नियुक्त पुरुष। घातक। बधिक। २ क्रूर व्यक्ति।

**जवनिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।

**जवाँमर्द**—वि० [ फा० ] [ संज्ञा जवाँमर्दी ] शूरवीर। बहादुर।

**जव**—संज्ञा पुं० दे० "जौ"।

**जवा**—संज्ञा स्त्री० दे० "जपा"।

संज्ञा पुं० [ सं० यव ] लहसुन का दाना।

**जवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जाना ] जाने की क्रिया या भाव। गमन।

**जवाखार**—संज्ञा पुं० [सं० यवक्षार] एक नमक जो जौ के क्षार से बनता है।

**जवादि**—संज्ञा पुं० [ अ० जब्बाद ] एक सुगंधित द्रव्य जो गंधबिलाव के शरीर से निकलता है। गौरासार।

**जवान**—वि० [ फा० ] १. युवा। तरुण। २. वीर। बहादुर।

संज्ञा पुं० १. मनुष्य। पुरुष। २. सिपाही।

**जवानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अजवायन।

संज्ञा स्त्री० [फा०] यौवन। तरुणाई।

**मुहा०**—जवानी उतरना या ढलना=उमर ढलना। बुढ़ापा आना। जवानी चढ़ना=यौवन का आगमन होना।

**जवाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी प्रश्न या बात के समाधान के लिए कही हुई बात। उत्तर। २. बदला। ३. मुकाबले की चीज। जोड़। ४. नौकरी छूटने की आज्ञा।

**जवाबदार**—वि० दे० "जवाबदेह"।

**जवाबदेह**—वि० [ फा० ] [ संज्ञा जवाबदेही ] उत्तरदाता। जिम्मेदार।

**जवाबी**—वि० [ फा० ] जवाब का। जिसका जवाब देना हो।

**जवाबी पोस्टकार्ड**—एक साथ लगे दो पोस्टकार्ड।

**जवार***—संज्ञा पुं० दे० "जवाल"।

**जवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जौ ] जौ के हरे अंकुर। जई।

**जवारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जौ ] जौ छुहारे और मोतियों आदि से गुँथा हुआ हार।

**जवाल**—संज्ञा पुं० [ अ० ज़वाल ] १. अवनति। उतार। घटाव। २. जंजाल। आफत।

**जवास, जवासा**—संज्ञा पुं० [ सं० यवासक ] एक प्रकार का कँटीला पौधा जिसके पत्ते सूख जाते हैं।

**जवाहरी**—संज्ञा पुं० दे० "जौहरी"।

**जवाहर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] रत्न। मणि।

जवाहर-जैकट=सदरी।

**जवाहिर**—संज्ञा पुं० दे० "जवाहर"।

**जवैया**—वि० [ हिं० जाना + ऐया

( प्रत्य० )] जानेवाला। गमनशील।

**जशन**—संज्ञा पुं० [फा०] १. उत्सव। जलसा। २. आनंद। हर्ष।

**जस*‡**—क्रि० वि० [सं० यथा] जैसा। † संज्ञा पुं० दे० "यश"।

**जसोदा**—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

**जसोवै***—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

**जस्ता**—संज्ञा पुं० [सं० जसद] खाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु।

**जहँ**—क्रि० वि० दे० "जहाँ"।

**जहँड़ना, जहँड़ाना†**—क्रि० अ० १. घाटा उठाना। २. धोखे में आना।

**जहतिया†**—संज्ञा पुं० [हिं० जगात] जगात या लगान वसूल करनेवाला।

**जहत्स्वार्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोड़े हुए हों। लक्षण-लक्षणा।

**जहदजहल्लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्षणा का वह प्रकार जिसमें वक्ता के शब्दों के कई भावों में से केवल एक भाव ग्रहण किया जाता है।

**जहदना**—क्रि० अ० [हिं० जहदा] १. कीचड़ होना। २ थक जाना।

**जहदा**—संज्ञा पुं० [?] दलदल।

**जहन्नम***—संज्ञा पुं० दे० "जहन्नुम"।

**जहना*†**—क्रि० अ० १. त्यागना। छोड़ना। २ नाश करना।

**जहन्नुम**—संज्ञा पुं० [अ०] नरक।

**मुहा०**—जहन्नुम में जाय=चूल्हे में जाय। हमसे कोई संबंध नहीं।

**जहमत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति। मुसीबत। आफत। २. झंझट। बखेड़ा।

**जहर**—संज्ञा स्त्री० [अ० ज़ह्र] १. विष। गरल।

**मुहा०**—जहर उगलना=मर्मभेदी या कटु बात कहना। जहर का घूँट पीना=किसी अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। जहर का बुझाया हुआ=बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट।

२. अप्रिय बात या काम।

**मुहा०**—जहर करना या कर देना=बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। जहर लगना=बहुत अप्रिय जान पड़ना।

वि० १. घातक। मार डालनेवाला। २. बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला। संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।

**जहरबाद**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का बहुत भयंकर और विषैला फोड़ा।

**जहरमोहरा**—संज्ञा पुं० [फा० जह्रमुहरा] १. एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। २. हरे रंग का एक विषघ्न पत्थर।

**जहरी, जहरीला**—वि० [अ० जह्र + ईला (प्रत्य०)] जिसमें जहर हो। विषैला।

**जहल्लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० दे० "जहत्स्वार्था"।

**जहाँ**—क्रि० वि० [सं० यत्र] जिस स्थान पर। जिस जगह।

**मुहा०**—जहाँ का तहाँ=जिस जगह पर हो, उसी जगह पर। जहाँ तहाँ=१. इतस्ततः। इधर-उधर। २. सब जगह। सब स्थानों पर।

**जहाँगीरी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार की चूड़ी।

**जहाँपनाह**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] संसार का रक्षक। (बादशाहों का संबोधन)

**जहाज**—संज्ञा पुं० [अ०] समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।

**मुहा०**—जहाज का कौवा या काग = दे० "जहाजी कौवा"।

**जहाजी**—वि० [अ०] जहाज से संबंध रखनेवाला।

**यौ०**—जहाजी कौआ=१. वह कौआ जो किसी जहाज के छूटने के समय उसपर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़-उड़कर फिर उसी जहाज पर आता है। २. ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो।

**जहान**—संज्ञा पुं० [फा०] संसार। लोक। जगत्।

**जहालत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] अज्ञान।

**जहिया*†**—क्रि० वि० [सं० यद्] जिस समय। जब।

**जहीं*‡**—अव्य० [सं० यत्र] जहाँ ही। जिस स्थान पर। अव्य० दे० "ज्यों ही"।

**जहीन**—वि० [अ०] १ बुद्धिमान्। समझदार। २. धारणा शक्तिवाला।

**जहूर**—संज्ञा पुं० [अ०] प्रकाश।

**जह्नु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २ एक राजर्षि। जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तब इन्होंने गंगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। तभी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।

**जह्नुतनया, जह्नुनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा। भागीरथी।

**जाँग**—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

**जाँगड़ा**—संज्ञा पुं० [देश०] भाट। बंदी।

**जाँगर**—संज्ञा पुं० [ हिं० जान या जाँघ ] शरीर का बल। बूता।

**जाँगल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीतर। २. मांस। ३. ऊसर देश। वि० जंगल-संबंधी। जंगली।

**जांगलू**—वि० [फ़ा० जंगल] गँवार। जंगली।

**जाँघ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जंघा = पिंडली ] घुटने और कमर के बीच का अंग। ऊरु।

**जाँघिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० जाँघ + इया (प्रत्य०) ] पायजामे की तरह का घुटने तक का एक पहनावा। काछा।

**जाँघिल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार की चिड़िया।

वि० [ हिं० जाँघ ] जिसका पैर चलने में लच खाता हो।

**जाँच**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जाँचना ] १ जाँचने की क्रिया या भाव। परीक्षा। परख। २ गवेषणा।

**जाँचक***†—संज्ञा पुं० दे० "याचक"।

**जाँचना**—क्रि० स० [ सं० याचन ] १. सत्यासत्य आदि का अनुसंधान करना। परीक्षा करना। †२ प्रार्थना करना। माँगना।

**जाँजरा***†—वि० दे० "जाजरा"।

**जाँझ***—संज्ञा स्त्री० [ सं० झंझा ] वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

**जाँत, जाँता**—संज्ञा पुं० [ सं० यंत्र] १. आटा पीसने की बड़ी चक्की। २. दे० "जँता"।

**जांतव**—वि० [ सं० जातव ] १ जंतु-संबंधी। जीव-जन्तुओं का। २. जीव-जंतुओं से उत्पन्न या मिलनेवाला।

**जाँब***†—संज्ञा पुं० दे० "जामुन"।

**जाँबवंत**—संज्ञा पुं० दे० "जांबवान्"।

**जाँबवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाम्बवती ] जाम्बवान् की कन्या जिसके साथ श्रीकृष्ण ने विवाह किया था।

**जांबवान्**—संज्ञा पुं० [सं०] सुग्रीव का मंत्री एक भालू जो राम की सेना में लड़ा था।

**जांबुवान**—संज्ञा पुं० दे० "जाम्बवान्"।

**जाँवत***—अव्य० दे० "यावत्"।

**जाँवर***†—संज्ञा पुं० [ हिं० जाना ] गमन। जाना।

**जा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. माता। मा। २. देवरानी। देवर की स्त्री।

वि० स्त्री० उत्पन्न। संभूत।

*†सर्व० [ हिं० जो ] जिस।

वि० [ फा० ] मुनासिब। उचित।

**जाइ***—वि० [ हिं० जाना ] व्यर्थ। वृथा।

वि० [ फा० जा ] उचित। वाजिब।

**जाई**—संज्ञा [ सं० जा ] बेटी। पुत्री।

**जाउनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "जामुन"।

**जाक***—संज्ञा पुं० [ सं० यक्ष ] यक्ष।

**जाकड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० जाकर ] माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा। पक्का का उलटा।

**जाकेट**—संज्ञा स्त्री० [ अं० जैकेट ] १. एक प्रकार की कुरती या सदरी। २ कोट।

**जाखिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

**जाग**—संज्ञा पुं० [ सं० यज्ञ ] यज्ञ। मख।

†संज्ञा स्त्री० [ हिं० जगह ] जगह। स्थान।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० जगह ] जागने की क्रिया या भाव। जागरण।

**जागती जोत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जागना + ज्योति ] किसी देवता विशेषतः देवी की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार।

**जागना**—क्रि० अ० [ सं० जागरण ] १. सोकर उठना। नींद त्यागना। २ निद्रा-रहित रहना। जाग्रत अवस्था में होना। ३. सजग होना। सावधान होना। ४. उदित होना। चमक उठना।

**मुहा०**—जागता=१. प्रत्यक्ष। साक्षात्। २. प्रकाशित। भासमान।

५. समृद्ध होना। बढ़-चढ़कर होना। ६ प्रसिद्ध होना। विख्यात होना। जोर-शोर से उठना। ७ प्रज्वलित होना। जलना।

**जागबलिक**†*—संज्ञा पुं० दे० "याज्ञवल्क्य"।

**जागर, जागरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ निद्रा का अभाव। जागना। २. किसी पर्व के उपलक्ष में सारी रात जागना।

**जागरित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नींद का न होना। जागरण। २. वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहे।

**जागरूक**—संज्ञा पुं० [सं०]१. वह जो जाग्रत अवस्था में हो। २. रखवाला। पहरेदार।

**जागरूप**—वि० [हिं० जागना + रूप] जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

**जागर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जागरण। जाग्रति। २.चेतनता।

**जागी**†*—संज्ञा पुं० [ सं० यज्ञ ] भाट।

**जागीर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] [ वि० जागीरी ] राज्य की ओर से मिली

भूमि या प्रदेश।

**जागीरदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह जिसे जागीर मिली हो। जागीर का मालिक। २. अमीरी। रईसी।

**जाग्रत**—वि० [ सं० ] १. जो जागता हो। २. वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान हो।

**जाग्रति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाग्रत ] जागरण। जागने की क्रिया।

**जाचक**‡*—संज्ञा पुं० [ सं० याचक] १. माँगनेवाला। २. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा।

**जाचकता**‡*—संज्ञा स्त्री० [ सं० याचकत्व ] १. माँगने का भाव। २. भीख माँगने की क्रिया। भिखमंगी।

**जाचना**‡*—क्रि० स० [सं० याचन] माँगना।

**जाजरा**‡*—वि० [ सं० जर्जर ] जर्जर। जीर्ण।

**जाजिम**—संज्ञा स्त्री० [ तु० जाजम ] १. बिछाने की छपी हुई चादर या फर्श। २ गलीचा। कालीन।

**जाज्वल्य**—वि० [ सं० ] प्रज्वलित। प्रकाशयुक्त।

**जाज्वल्यमान**—वि० [ सं० ] १. प्रज्वलित। दीप्तिमान्। २. तेजस्वी। तेजवान्।

**जाट**—संज्ञा पुं० [ ? ] भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति जो पूर्वी पंजाब, सिंध और राजपूताने में फैली हुई है।

* वि० गँवार। उजड्ड।

**जाठ**—संज्ञा पुं० [ सं० यष्टि ] १. वह बड़ा लट्ठा जो पत्थर के कोल्हू की कूँडी के बीच पड़ा रहता है।

**जाठर**—वि० [ सं० ] १. जठर संबंधी। २. जठर से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. जठर। पेट। २. भूख।

**जाड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० जड़ ] १. वह ऋतु जिसमें बहुत ठंढक पड़ती है। शीतकाल। २. सरदी। शीत। पाला। ठंढ।

**जाड्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जड़ता।

**जात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जन्म। २. पुत्र। बेटा। ३ जीव। प्राणी।

वि० १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। २. व्यक्त। प्रकट। ३ प्रशस्त। अच्छा। ४ जिसने जन्म लिया हो। पैदा। जैसे—नवजात।

संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

**जात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शरीर। देह।

संज्ञा स्त्री० दे० "जाति"।

**जातक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बच्चा। २ बच्चा। ३. भिक्षु। ४ फलित ज्योतिष का एक भेद। ५. वे बौद्ध कथाएँ जिनमें महात्मा बुद्धदेव के पूर्व जन्मों की बातें हैं।

**जातकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिन्दुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

**जातना, जातनाई**‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "यातना"।

**जात पाँत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाति + पंक्ति ] जाति। बिरादरी।

**जाता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कन्या। पुत्री।

वि० स्त्री० उत्पन्न।

**जाति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जन्म। पैदाइश। २ हिन्दुओं में समाज का वह विभाग जो पहले पहल कर्मानुसार किया गया था, पर पीछे से जन्मानुसार हो गया। ३. निवासस्थान या वंश परंपरा के विचार से मनुष्य-समाज का विभाग। ४. वह विभाग जो धर्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया जाय। कोटि। वर्ग। ५. सामान्य सत्ता। ६. वर्ण। ७. कुल। वंश। ८. गोत्र। ९. मात्रिक छंद।

**जातिच्युत**—वि० [ सं० ] जाति से गिरा या निकाला हुआ। जाति बहिष्कृत।

**जाति पाँति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाति + हिं० पाँति ( पंक्ति ) ] जाति या पंक्ति। वर्ण और उसके उपविभाग।

**जाती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चमेली की जाति का एक फूल। जाही। जाई। २ छोटा आँवला। ३ मालती।

**जाती**—वि० [ अ० जात ] १ व्यक्तिगत। २ अपना। निज का।

**जातीय**—वि० [ सं० ] जाति-संबंधी।

**जातीयता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जाति का भाव। जाति की ममता। जातित्व।

**जातुधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राक्षस।

**जात्रा***—संज्ञा स्त्री० दे० "यात्रा"।

**जादव***‡—संज्ञा पुं० दे० "यादव"।

**जादवपति***‡—संज्ञा पुं० [ सं० यादवपति ] श्रीकृष्णचन्द्र।

**जादसपति***‡ संज्ञा पुं० [ सं० यादसांपति ] जल-जंतुओं का स्वामी, वरुण।

**जादा***—वि० दे० "ज्यादा"।

**जादा**—वि० [ फ़ा० जादः ] [ स्त्री० जादी ] उत्पन्न। जन्मा हुआ। ( यौ० के अन्त में जैसे शाहजादा )

**जादू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानवी समझते हों। इन्द्रजाल। २. वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। ३. टोना। टोटका। ४. दूसरे को मोहित करने की शक्ति। मोहिनी।

**जादूगर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ स्त्री०

जादूगरनी ] वह जो जादू करता हो।

**जादूगरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] जादू करने की क्रिया। जादूगर का काम।

**जादौ***†—संज्ञा पुं० दे० "यादव"।

**जादौराय***†—संज्ञा पुं० [ सं० यादव ] श्रीकृष्णचंद्र।

**जान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्ञान ] १. ज्ञान। जानकारी। २. खयाल। अनुमान।

यौ०—जान पहचान=परिचय।

वि० सुजान। जानकार। चतुर।

संज्ञा पुं० दे० "यान"।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. प्राण। जीव। प्राणवायु। दम।

मुहा०—जान के लाले पड़ना=प्राण-बचना कठिन दिखाई देना। जान पर आ बनना। जान को जान न समझना=अत्यंत अधिक कष्ट या परिश्रम सहना। जान खाना=तंग करना। बार बार घेरकर दिक करना। जान छुड़ाना या बचाना=१.प्राण बचाना। २. किसी झंझट से छुटकारा करना। संकट टालना। (किसी पर) जान जाना=किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना। जान जोखो=प्राणहानि की आशंका। प्राण जाने का डर। जान निकलना=१.प्राण निकलना। मरना। २. भय के मारे प्राण सूखना। जान पर खेलना=प्राणों को भय में डालना। जान को जोखों में डालना। जान से जाना=प्राण खोना। मरना।

२. बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य। दम। ३.सार। तत्त्व। ४. अच्छा या सुंदर करनेवाली वस्तु। शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। जान आना=शोभा बढ़ना।

**जानकार**—वि० [ हिं० जानना+कार ( प्रत्य० ) ] [ संज्ञा जानकारी ] १. जानने वाला। अभिज्ञ। २. विज्ञ। चतुर।

**जानकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जनक की पुत्री, सीता।

**जानकी-जानि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रामचंद्र।

**जानकी-जीवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रामचंद्र।

**जानकीनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीराम।

**जानदार**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें जान हो। सजीव। जीवधारी।

**जाननहार***—वि० [ हिं० जानना ] जाननेवाला।

**जानना**—क्रि० स० [ सं० ज्ञान ] १ ज्ञान प्राप्त करना। अभिज्ञ होना। परिचित होना। मालूम करना। २. सूचना पाना। खबर रखना। ३ अनुमान करना। सोचना।

**जानपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जनपद-संबंधी वस्तु। २. जनपद का निवासी। लोक। मनुष्य। ३ देश। ४ मालगुजारी।

**जानपना***†—संज्ञा पुं० [ हिं० जान+पन ( प्रत्य० ) ] बुद्धिमत्ता। चतुराई।

**जानपनी***—संज्ञा पुं० [हिं० जान+पन (प्रत्य०) ]बुद्धिमानी। चतुराई।

**जानमनि***—संज्ञा पुं० [हिं० जान+मणि ] ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बड़ा ज्ञानी पुरुष।

**जानराय**—संज्ञा पुं० [ हिं० जान+राय] जानकारों में श्रेष्ठ। बड़ा बुद्धिमान्।

**जानवर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. प्राणी। जीव। २. पशु। जंतु।

**जानशीन**—वि० [फ़ा०] [सं० जानशीनी] १. दूसरे के स्थान या पद पर बैठने-वाला। २. उत्तराधिकारी।

**जानहार***—वि० दे० "जाननहार"।

**जानहु***†—अव्य० [ हिं० जानना ] मानो।

**जाना**—क्रि० अ० [सं० यान=जाना] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने के लिए गति में होना। गमन करना। बढ़ना। २. हटना। प्रस्थान करना।

मुहा०—जाने दो=१. क्षमा करो। माफ करो। २. चर्चा छोड़ो। प्रसंग छोड़ो। किसी बात पर जाना=किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना।

३. अलग होना। दूर होना ४. हाथ या अधिकार से निकलना। हानि होना। ५. खो जाना। गायब होना। गुम होना। ६. बीतना। गुजरना। ७. नष्ट होना।

मुहा०—गया घर=दुर्दशा प्राप्त घराना। गया-बीता=१. दुर्दशाप्राप्त। २. निकृष्ट।

८. बहना। जारी होना।

*क्रि० स० [ सं० जनन ] उत्पन्न करना। जन्म देना। पैदा करना।

**जानि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्त्री। भार्या।

* वि० [ सं० ज्ञानी ] जानकार।

**जानिब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] तरफ। ओर।

यौ०—जानिबदार=पक्षपाती।

**जानी**—वि० [फ़ा०] जान से संबंध रखनेवाला।

यौ०—जानी दुश्मन=जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त=दिली दोस्त।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जान] प्राणप्यारी।

**जाहिरी**—वि० [अ० ] जो जाहिर हो। प्रकट।

**जाहिल**—वि० [ अ० ] १. मूर्ख। अज्ञान। नासमझ। २. अनपढ़। विद्याहीन।

**जाही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाति ] चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल।

**जाह्नवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जह्नु ऋषि से उत्पन्न गंगा।

**जिंक**—संज्ञा पुं० [ अं० ] जस्ते का क्षार।

**जिंगनी, जिंगिनी**—संज्ञा स्त्री०[सं०] जिंगिन का पेड़।

**जिंद**—संज्ञा पुं० [अ० ] भूत। प्रेत। जिन।

संज्ञा पुं० दे० "जंद"।

**जिंदगानी**—संज्ञास्त्री०दे०"जिंदगी"।

**जिंदगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. जीवन। २. जीवन-काल। आयु।

**मुहा०**—जिंदगी के दिन पूरे करना या भरना=१. दिन काटना। जीवन बिताना। २.मरने को होना। आसन्न मृत्यु होना।

**जिंदा**—वि० [ फ़ा० ] जीवित। जीता हुआ।

**जिंदादिल**—वि० [ फ़ा० ] [संज्ञा जिंदादिली ] खुश-मिजाज। हँसोड़। दिल्लगीबाज।

**जिंवाना**†—क्रि०स० दे० "जिमाना"।

**जिंस**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. प्रकार। किस्म। भाँति। २. चीज। वस्तु। द्रव्य। ३. सामग्री। सामान। ४. अनाज। गल्ला। रसद।

**जिंसवार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पटवारियों का वह कागज जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।

**जिआना**†*-क्रि०स०दे०"जिलाना"।

**जिउ**—संज्ञा पुं० दे० "जीव"।

**जिउका**—संज्ञा स्त्री० दे०"जीविका"

**जिउकिया**-संज्ञा पुं० [ हिं०जीविका] १. जीविका करनेवाला। रोजगारी। २. पहाड़ी लोग जो जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।

**जिउतिया**—संज्ञा स्त्री० दे०"जिताष्टमी"।

**जिक्र**—संज्ञा पुं० [ अ० ] चर्चा। प्रसंग।

**जिगर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मि० सं० यकृत् ] [ वि० जिगरी ] १. कलेजा। २. चित्त। मन। जीव। ३ साहस। हिम्मत। ४. गूदा। सत्त। सार।

**जिगरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जिगर ] साहस। हिम्मत। जीवट।

**जिगरी**—वि० [ फ़ा० ] १. दिली। भीतरी। २ अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्न-हृदय।

**जिगीषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जीतने की इच्छा। २. उद्योग। प्रयत्न।

**जिच,जिच्च**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. विवशता। तंगी। मजबूरी। २.शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो।

वि० विवश। मजबूर। तंग।

**जिजिया**—संज्ञा पुं० दे०"जजिया"।

**जिज्ञासा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जानने की इच्छा। ज्ञान प्राप्त करने की कामना। २ पूछ-ताछ। प्रश्न। तहकीकात।

**जिज्ञासु**—वि० [ सं० ] जानने की इच्छा रखनेवाला। जो जिज्ञासा करे। खोजी।

**जित्**—वि० [ सं० ] जीतनेवाला। जेता।

**जित**—वि० [ सं० ] जीता हुआ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] जीत। विजय।

वि० दे० "जित्"।

*†क्रि० वि० [ सं० यत्र ] जिधर। जिस ओर।

**जितक***—वि०, क्रि० वि० दे० "जितना"।

**जितना**—वि० [ हिं० जिस+तना (प्रत्य०) ] [ स्त्री० जितनी ] जिस मात्रा का। जिस परिमाण का।

क्रि० वि० जिस मात्रा में। जिस परिमाण में।

**जितवना***†-क्रि०स० दे०"जताना"।

**जितवाना**-क्रि० स० दे०"जिताना"।

**जितवार**†—वि० [ हिं० जीतना ] जीतनेवाला।

**जितवैया**†—वि० [ हिं० जीतना+वैया (प्र० प्रत्य०) ] जीतनेवाला।

**जितात्मा**—वि० दे० "जितेंद्रिय"।

**जिताना**—क्रि० स० [ हिं० जीतना का प्रे० ] जीतने में सहायता करना।

**जिताष्टमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हिंदुओं का एक व्रत जिसे पुत्रवती स्त्रियाँ आश्विन कृष्णाष्टमी के दिन करती हैं। जिउतिया।

**जितेंद्रिय**—वि० [ सं० ] १ जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो। २. सम वृत्तिवाला। शांत।

**जिते***—वि० बहु० [ हिं० जिस+ते ] जितने। (संख्या-सूचक)।

**जितै***—क्रि० वि [ सं० यत्र, प्रा० यत्त ] जिधर। जिस ओर।

**जितैया**—वि० [ हिं० जीतना ] जीतनेवाला।

**जितो***†—वि० [ हिं० जिस] जितना

( परिमाण-सूचक )।

क्रि० वि० जिस मात्रा में। जितना।

**जित्वर**—वि० [ सं० ] जेता। विजयी।

**जित्वरी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काशी का एक प्राचीन नाम।

**जिद्**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० जिद्दी ] १. वैर। शत्रुता। २. हठ। अड़। दुराग्रह।

**जिद्दी**—वि० [ फ़ा० ] १. जिद करनेवाला। हठी। २ दूसरे की बात न माननेवाला। दुराग्रह।

**जिधर**—क्रि० वि० [ हिं० जिस+धर (प्रत्य०) ] जिस ओर। जहाँ।

**जिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. सूर्य। ३. बुद्ध। ४. जैनों के तीर्थंकर।

वि० सर्व० [ सं० यानि ] "जिस" का बहु०।

संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमान भूत।

**जिना**—संज्ञा पुं० [अ०] व्यभिचार।

**जिनाकार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा जिनकारी ] व्यभिचारी।

**जिनि**†—अव्य० [ हिं० जनि ] मत। नहीं।

**जिनिस**—संज्ञा स्त्री० दे० "जिंस"।

**जिन्ह**†*—सर्व० दे० "जिन"।

**जिबह**—संज्ञा पु० दे० "जबह"।

**जिभ्भा, जिभ्या***—संज्ञा स्त्री० दे० "जिह्वा"।

**जिमनास्टिक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार की अँगरेजी कसरत।

**जिमाना**—क्रि० स० [ हिं० जीमना ] खाना खिलाना। भोजन कराना।

**जिमि***—क्रि० वि० [ हिं० जिस+इमि ] जिस प्रकार से। जैसे। यथा। ज्यों।

**जिम्मा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. इस बात का भार-ग्रहण कि कोई बात या कोई काम अवश्य होगा; और यदि न होगा तो उसका दोष भार ग्रहण करनेवाले पर होगा। दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा। जवाबदिही।

**मुहा०**—किसी के जिम्मे रुपया आना, निकलना या होना=किसी के ऊपर रुपया ऋण स्वरूप होना। देना ठहरना।

२. सपुर्दगी। देख-रेख। संरक्षा।

**जिम्मादार**—संज्ञा पुं० दे० "जिम्मावार"।

**जिम्मावार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो किसी बात के लिए जिम्मा ले। जवाबदेह। उत्तरदाता।

**जिम्मावारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जिम्मावार ] १. किसी बात के करने या किए जाने का भार। उत्तरदायित्व। जवाबदिही। २. सपुर्दगी। रक्षा।

**जिम्मेवार**—संज्ञा पुं० दे० "जिम्मावार"।

**जिय**†—संज्ञा पुं० [ सं० जीव ] मन। चित्त।

**जियन**—संज्ञा पुं० [ हिं० जीवन ] जीवन।

**जियबधा**—संज्ञा पुं० दे० "जल्लाद"।

**जियरा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० जीव ] जीव।

**जियान**—संज्ञा पुं० [अ० ] घाटा। टोटा।

**जियाना**†*—क्रि० स० [हिं० जीना] १. जिलाना। जीवित रखना। २. पालना।

**जियाफत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आतिथ्य। मेहमानदारी २ भोज। दावत।

**जियारत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दर्शन। २. तीर्थ दर्शन।

**मुहा०**—जियारत लगना=भीड़ लगना।

**जियारी**†*—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जीना ] १. जीवन। जिंदगी। २. जीविका। ३. हृदय की दृढ़ता। जीवट। जिगरा।

**जिरगा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. झुंड। गरोह। २. मंडली। दल।

**जिरह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० जुरह ] १. ऐसी पूछ-ताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिए की जाय।

**जिरह**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। वर्म। बकतर।

**यौ०**—जिरह-पोश=जो बकतर पहने हो।

**जिरही**—वि० [ हिं० जिरह ] जो जिरह पहने हो। कवचधारी।

**जिराफा**—संज्ञा पुं० दे० "जुराफा"।

**जिला**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. चमक दमक।

**मुहा०**—जिला देना=माँजकर तथा रोगन आदि चढ़ाकर चमकाना। सिकला करना।

**यौ०**—जिलाकार=सिकलीगर।

२. माँजकर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का कार्य।

**जिला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. प्रांत। प्रदेश। २. भारतवर्ष में किसी प्रांत का वह भाग जो एक कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के प्रबंध में हो। ३. किसी इलाके का छोटा विभाग या अंश।

**जिलाटीन**—दे०—जेलाटिन।

**जिलादार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह अफसर जिसे जमींदार अपने इलाके के किसी भाग में लगान वसूल

करने के लिए नियत करता है। २. वह अफसर जो नहर, अफीम आदि संबंधी किसी हलके में काम करने के लिए नियत हो।

**जिलाना**—क्रि० स० [ हिं० 'जीना का स० ] १. जीवन देना। जिंदा करना। जीवित करना। †२.पालना। पोसना। ३. मरने से बचाना। प्राण-रक्षा करना।

**जिलासाज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हथियारों आदि पर ओप चढ़ानेवाला। सिकलीगर।

**जिलाह***—संज्ञा पुं० [ अ० जल्लाद] अत्याचारी।

**जिलेदार**—संज्ञा पुं० दे० "जिलादार"।

**जिल्द**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० जिल्दी ] १. खाल। चमड़ा। खलड़ी। २. ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३. वह पट्ठा या दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिए लगाई जाती है। ४. पुस्तक की एक प्रति। ५. पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला हो। भाग। खंड।

**जिल्दबंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो। जिल्द बाँधनेवाला।

**जिल्दसाज**—संज्ञा पुं० दे० "जिल्दबंद"।

**जिल्लत**—संज्ञा स्त्री० [ अ०,] १. अनादर। अपमान। तिरस्कार। बेइज्जती।

**मुहा०**—जिल्लत उठाना या पाना= १. अपमानित होना। २. तुच्छ ठहरना।

२. दुर्गति। दुर्दशा। हीन दशा।

**जिवा**—संज्ञा पुं० दे० "जीव"।

**जिवाना**—क्रि० स० दे० "जिलाना"।

**जिवारी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जिलाने+हारी ] जिलानेवाली।

**जिष्णु**—वि० [ सं० ] सदा जीतनेवाला। विजयी।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. इंद्र। ४. सूर्य। ५. अर्जुन।

**जिस**—वि० [ सं० यः, यस् ] 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है। जैसे—जिस पुरुष ने।

सर्व० 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

**जिस्ता**—संज्ञा पुं० १ दे० "जस्ता"। ‡२. दे० "दस्ता"।

**जिस्म**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] शरीर। देह।

**जिह***†—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० जह, स० ज्या ] धनुष का चिल्ला। रोदा। ज्या।

**जिहन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] समझ। बुद्धि।

**मुहा०**—जिहन खुलना = बुद्धि का विकास होना। जिहन लड़ाना=खूब सोचना।

**जिहाद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मज़हबी लड़ाई। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियों से अपने धर्म के प्रचार आदि के लिए करते थे।

**जिह्म**—वि० [ सं० ] वक्र। टेढ़ा।

**जिह्मग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो टेढ़ा या तिरछा चलता हो। २. सर्प। साँप।

**जिह्वा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जीभ। जबान।

**जिह्वाग्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जीभ की नोक।

**मुहा०**—जिह्वाग्र करना=कंठस्थ करना। जबानी याद करना।

**जिह्वामूल**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० जिह्वामूलीय ] जीभ की जड़ या पिछला स्थान।

**जिह्वामूलीय**—संज्ञा पुं० [सं० ] वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो। क और ख के पहले विसर्ग आने से वे जिह्वामूलीय हो जाते हैं। कोई कोई कवर्ग मात्र को जिह्वामूलीय मानते हैं।

**जींगन**†—संज्ञा पुं० [ सं० जृंगण ] जुगनू।

**जी**—संज्ञा पुं० [ सं० जीव ] १. मन। दिल। तबीयत। चित्त। २. हिम्मत। दम। जीवट। ३. संकल्प। विचार।

**मुहा०**=जी अच्छा होना = चित्त स्वस्थ होना, नीरोग होना। किसी पर जी आना=किसी से प्रेम होना। जी उचटना=चित्त न लगना। मन हटना। जी उड़ जाना = भय, आशंका आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। जी करना= १. हिम्मत करना। साहस करना। २ इच्छा होना। जी का बुखार निकलना= क्रोध, शोक, दुःख आदि के वेग को रो-कलपकर या बक-झककर शांत करना। (किसी के) जी को जी समझना=किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना= मन फिर जाना या विरक्त होना। घृणा होना। जी खोलकर = १. बिना किसी संकोच के। बेधड़क। २. जितना जी चाहे। यथेष्ट। जी चलना=जी चाहना। इच्छा होना। जी चुराना=हीला हवाली करना। किसी काम से भागना। जी छोटा

करना=१. मन उदास करना। २. उदारता छोड़ना। कंजूसी करना। जी टँगा रहना या होना=चित्त में ध्यान या चिंता रहना। चित्त चिंतित रहना। जी डूबना=चित्त स्थिर न रहना। चित्त व्याकुल होना। जी दुखना=चित्त को कष्ट पहुँचना। जी देना=१. मरना। २. अत्यंत प्रेम करना। जी धँसा जाना=दे० "जी बैठा जाना"। जी धड़कना=भय या आशंका से चित्त स्थिर न रहना। कलेजा धक-धक करना। जी निढाल होना=चित्त का स्थिर न रहना। चित्त ठिकाने न रहना। जी पर आ बनना =प्राण बचाना कठिन हो जाना। जी पर खेलना=जान को आफत में डालना। जान पर जोखों उठाना। जी बहलना=चित्त का आनन्दपूर्वक लीन होना। मनोरंजन होना। जी बिगड़ना=जी मचलाना। कै करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना=किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना। किसी के प्रति घृणा या क्रोध करना। जी भरना (क्रि० अ०)=चित्त संतुष्ट होना। तृप्ति होना। जी भरना (क्रि० स०)=दूसरे का संदेह दूर करना। खटका मिटाना। जी भरकर =मनमाना। यथेष्ट। जी भर आना=चित्त में दुख या करुणा का उद्रेक होना। दुःख या दया उमड़ना। जी मचलाना या मतलाना=उलटी या कै करने की इच्छा होना। वमन करने को जी चाहना। जी में आना=चित्त में विचार उत्पन्न होना। जी चाहना। (किसी का) जी रखना = मन रखना। इच्छा पूरी करना। प्रसन्न करना। संतुष्ट करना। जी लगाना = मन का किसी विषय में योग देना। चित्त प्रवृत्त होना। (किसी से) जी लगना= किसी से प्रेम होना। जी से=जी लगाकर। ध्यान देकर। जी से उतर जाना=दृष्टि से गिर जाना। भला न जँचना। जी से जाना=मर जाना।

अव्य० [सं० जित्, या (श्री) युत] एक सम्मानसूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है अथवा किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रति-संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है।

**जीअ, जीउ***—संज्ञा पुं० दे० "जी", "जीव"।

**जीअन***—संज्ञा पुं० दे० "जीवन"।

**जीगन***—संज्ञा पुं० दे० "जुगनू"।

**जीजा**—संज्ञा पुं० [हिं० जीजी] बड़ी बहिन का पति। बड़ा बहनोई।

**जीजी**—संज्ञा स्त्री० [सं० देवी] बड़ी बहिन।

**जीत**—संज्ञा स्त्री० [सं० जिति] १. युद्ध या लड़ाई में विपक्षी के विरुद्ध सफलता। जय। विजय। फतह। २. किसी ऐसे कार्य्य में सफलता जिसमें दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हों। ३. लाभ। फायदा।

**जीतना**—क्रि० स० [हिं० जीत+ना (प्रत्य०)] १. युद्ध या लड़ाई में विपक्षी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। विजय प्राप्त करना। २. किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त करना जिसमें दो या अधिक परस्पर विरुद्ध पक्ष हों।

**जीता**—वि० [हिं० जीना] १. जीवित। जो मरा न हो। २. तौल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।

**जीन***—वि० [सं० जीर्ण] १. जर्जर। कटा फटा। २. वृद्ध। बुड्ढा।

**जीन**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। चार-जामा। काठी। २. पलान। कजावा। ३. एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा।

**जीनपोश**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।

**जीनसवारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] घोड़े पर जीन रख कर चढ़ने का कार्य्य।

**जीना**—क्रि० अ० [सं० जीवन] १. जीवित रहना। जिंदा रहना।

**मुहा०**—जीता-जागता=जीवित और सचेत। भला चंगा। जीती मक्खी निगलना=जान बूझकर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना। जीते जी मर जाना=जीवन में ही मृत्यु से बढ़कर कष्ट भोगना। जीना भारी हो जाना=जीवन का आनंद जाता रहना।

२. प्रसन्न होना। प्रफुल्ल होना।

संज्ञा पुं० [फ़ा० जीन] सीढ़ी।

**जीनी***—वि० दे० "झीनी"।

**जीभ**—संज्ञा स्त्री० [सं० जिह्वा] १. मुँह के भीतर रहनेवाली लंबे चिपटे मांस-पिंड की वह इंद्रिय जिससे रसों का अनुभव और शब्दों का उच्चारण होता है। जबान। जिह्वा। रसना।

**मुहा०**—जीभ चलना=भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने के लिए जीभ का हिलना डोलना। चटोरेपन की इच्छा होना। जीभ निकालना=जीभ खींचना। जीभ उखाड़ लेना। जीभ पकड़ना=बोलने न देना। बोलने से रोकना। जीभ बंद करना=बोलना

बंद करना । चुप रहना । जीभ चलाना=बकबक करना । बहुत बोलना । जीभ हिलाना=मुँह से कुछ बोलना । छोटी जीभ=गलशुंडी । किसी की जीभ के नीचे जीभ होना=किसी का अपनी कही हुई बात को बदल जाना ।

२ जीभ के आकार की कोई वस्तु; जैसे—निब ।

**जीभी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जीभ ] १. धातु की बनी एक पतली धनुषाकार वस्तु जिससे जीभ छीलकर साफ करते हैं । २. निब । ३. छोटी जीभ । गलशुंडी ।

**जीमना**—क्रि० स० [ स० मन ] भोजन करना ।

**जीमूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पर्वत । २. बादल । ३. इंद्र । ४. सूर्य्य । ५. शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम । ६. एक प्रकार का दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं । यह प्रचित के अंतर्गत है ।

**जीमूतवाहन**—संज्ञा पु० [सं०] इंद्र ।

**जीया***—संज्ञा पुं० दे० "जी" ।

**जीयट**—संज्ञा पु० दे० "जीवट" ।

**जीयति**†*—संज्ञा स्त्री० [हिं० जीना] जीवन ।

**जीयदान**—संज्ञा पुं० [सं० जीवदान] प्राणदान । जीवनदान । प्राणरक्षा ।

**जीर**—संज्ञा पुं० [ स० ] १. जीरा । २. फूल का जीरा । केसर । ३. खड्ग । तलवार ।

*संज्ञा पुं० [ फ़ा० जिरह ] जिरह । कवच ।

*वि० [ सं० जीर्ण ] जीर्ण । पुराना ।

**जीरण***—वि० दे० "जीर्ण" ।

**जीरन**—वि० दे० "जीर्ण" ।

**जीरना***—क्रि० अ० [ सं० जीर्ण ] १. जीर्ण होना । २ कुम्हलाना । ३. फटना ।

**जीरा**—संज्ञा पुं० [ स० जीरक ] १. दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं । इसके दो मुख्य भेद हैं—सफेद और काला । २. जीरे के आकार के छोटे, महीन, लंबे बीज । ३. फूलों का केसर ।

**जीरी**—संज्ञा पुं० [ हि० जीरा ] एक प्रकार का अगहनी धान जो कई वर्षों तक रह सकता है ।

**जीर्ण**—वि० [ सं० ] १ बुढ़ापे से जर्जर । २. टूटा फूटा और पुराना । बहुत दिनों का ।

यौ०—जीर्ण-शीर्ण=फटा पुराना ।

३ पेट में अच्छी तरह पचा हुआ ।

**जीर्ण-ज्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ज्वर जिसे रहते बारह दिन से अधिक हो गये हो । पुराना बुखार ।

**जीर्णता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुढ़ापा । बुढ़ाई । २. पुरानापन ।

**जीर्णोद्धार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फटी पुरानी या टूटी फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार । पुनः संस्कार । मरम्मत ।

**जीला**†*—वि० [सं० झिल्ली] [स्त्री० जीली] १.झीना । पतला । २. महीन ।

**जीवंत**—वि० [सं०] जीता-जागता ।

**जीवंती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक लता जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं । २. एक लता जिसके फूलों में मीठा मधु या मकरंद होता है । ३. एक प्रकार की बढ़िया पीली हड़ । ४. बाँदा । ५. गुडूची ।

**जीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राणियों का चेतन तत्त्व । जीवात्मा । आत्मा । २ प्राण । जीवनतत्त्व । जान । ३. प्राणी । जीवधारी ।

यौ०—जीवजंतु=१. जानवर । प्राणी । २. कीड़ा-मकोड़ा ।

**जीवक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राण धारण करनेवाला । २. क्षपणक । ३ सँपेरा । ४. सेवक । ५. ब्याज लेकर जीविका करनेवाला । सूदखोर । ६. पीतसाल वृक्ष । ७. अष्टवर्ग के अंतर्गत एक जड़ी या पौधा ।

**जीवट**—संज्ञा पुं० [ सं० जीवथ ] हृदय की दृढ़ता । जिगरा । साहस । हिम्मत ।

**जीवदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपने वश में आए हुए शत्रु या अपराधी को न मारने या, छोड़ देने का कार्य । प्राणदान । प्राणरक्षा ।

**जीव-धन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जीवों और पशुओं के रूप में सम्पत्ति । २ जीवन-धन ।

**जीवधारी**—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणी । जानवर ।

**जीवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० जीवित ] १ जन्म और मृत्यु के बीच का काल । जिंदगी । २.जीवित रहने का भाव । प्राण-धारण । ३. जीवित रखनेवाली वस्तु । ४. परमप्रिय । प्यारा । ५. जीविका । ६ पानी । ७ वायु ।

**जीवन चरित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जीवन में किये हुए कार्यों आदि का वर्णन । जिंदगी का हाल ।

**जीवनधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति । २. प्राणाधार । प्राणप्रिय ।

**जीवनबूटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जीवन+हिं० बूटी ] एक पौधा या बूटी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिला

सकती है। संजीवनी।

**जीवनमूरि**—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवन+मूल] १. जीवन बूटी। २. अत्यंत प्रिय वस्तु।

**जीवनवृत्त**—संज्ञा पुं० दे० "जीवनचरित"।

**जीवना***—क्रि०अ०दे० "जीना"।

**जीवनी**—संज्ञा स्त्री० [जीवन+ई० (प्रत्य०)] जीवन भर का वृत्तांत। जीवनचरित।

*संज्ञा स्त्री० जीवन। जिंदगी।*

वि० जीवन देनेवाली।

**जीवनोपाय**—संज्ञा पुं० [सं०] जीविका।

**जीवन्मुक्त**—वि० [सं०] जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सांसारिक मायाबंधन से छूट गया हो।

**जीवन्मृत**—वि० [सं०] जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।

**जीव-प्रभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] *आत्मा।*

**जीवबंद***—वि० दे० "जीवबंधु"।

**जीवबंधु**—संज्ञा पुं० [सं०] गुल दुपहरिया। बंधूक।

**जीवयोनि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] *जीव-जंतु।*

**जीवरा***†—संज्ञा पुं० [हिं०जीव] जीव। प्राण।

**जीवरि**†—संज्ञा पुं० [सं० जीव या जीवन] जीवन। प्राण-धारण की शक्ति।

**जीवलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] भूलोक। पृथ्वी।

**जीवहत्या,जीवहिंसा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्राणियों का वध। २. प्राणियों के वध का दोष।

**जीवांतक**—वि० [सं०] जीवों की हत्या करनेवाला।

**जीवाजून**—संज्ञा पुं० [सं० जीव-योनि] पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जीव।

**जीवाणु**—संज्ञा पुं० [सं०] जीव-युक्त अणु जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

**जीवात्मा**—संज्ञा पुं० [सं०] प्राणियों की चेतन वृत्ति का कारण-स्वरूप पदार्थ। जीव। आत्मा। प्रत्य-गात्मा।

**जीवानुज**—संज्ञा पुं० [सं०] गर्गा-चार्य मुनि जो बृहस्पति के वंश में हुए हैं।

**जीविका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यापार जिससे जीवन का निर्वाह हो। जीवनोपाय। रोजी। वृत्ति।

**जीवित**—वि० [सं०] जीता हुआ। जिंदा।

**जीवितेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जीता जागता और प्रत्यक्ष ईश्वर। २. स्वामी। पति।

**जीवी**—वि० [सं० जीविन्] १. जीनेवाला। प्राणधारी। २. जीविका करने वाला। जैसे—श्रमजीवी।

**जीवेश**—संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा।

**जीह,जीहि***—*संज्ञा स्त्री०दे०"जीभ"।*

**जुंबिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चाल। गति। हरकत। हिलना-डोलना।

**मुहा०**—जुंबिश खाना = हिलना-डोलना।

**जु***—वि०, क्रि० वि० दे० "जो"।

**जुआँ**—संज्ञा स्त्री० दे० "जूँ"।

**जुआ**—संज्ञा पुं० [सं० द्यूत] रुपये-पैसे की बाजी लगाकर खेला जाने-वाला खेल।

**जुआचोर**—संज्ञा पुं० [हिं० जुआ+चोर] धोखेबाज। ठग। वंचक।

**जुआठा**—संज्ञा पुं० दे० "जूआ"।

**जुआरी**—संज्ञा पुं० [हिं० जुआ] जुआ खेलनेवाला।

**जुईं**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूँ] छोटी जुआँ।

**जुकाम**—संज्ञा पुं० सरदी से होने-वाली एक बीमारी, जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है। सरदी।

**मुहा०**—मेंढकी को जुकाम होना= किसी छोटे मनुष्य का कोई बड़ा काम करना।

**जुग**—संज्ञा पुं० [सं० युग] १. युग। २. जोड़ा। युग्म। ३. चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही कोठे में इकट्ठा होना। ४. पुश्त। पीढ़ी।

**जुगजुगाना**—क्रि० अ० [हिं० जगना] १. मंद ज्योति से चमकना। टिमटिमाना। २. अवनत दशा से कुछ उन्नत दशा को प्राप्त होना। उभरना।

**जुगत**—संज्ञा स्त्री० [सं० युक्ति] १. युक्ति। उपाय। तदबीर। ढंग। २. व्यवहार-कुशलता। चतुराई। हथ-कंडा।

**जुगती**—संज्ञा पुं० [हिं० जुगत] *अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने* या लगानेवाला। चतुर। चालाक।

संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।

**जुगनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।

**जुगनू**—संज्ञा पुं० [हिं० जुगजुगाना] १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। पटबीजना। २. पान के आकार का गले का एक गहना। रामनामी।

**जुगम***—वि० दे० "युग्म"।

**जुगल**—वि० दे० "युगल"।

**जुगवना**—क्रि० स० [ सं० योग+अवना (प्रत्य०) ] १. संचित रखना। एकत्र करना।

**जुगाना**†—क्रि० स० दे० "जुगवना"।

**जुगार**†—संज्ञा स्त्री० दे० "जुगाली"।

**जुगालना**—क्रि० अ० [ सं० उद्गिलन ] चौपायों का पागुर करना।

**जुगाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जुगालना ] सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा थोड़ा निकालकर फिर से चबाने की क्रिया। पागुर। रोमंथ।

**जुगुत**—संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।

**जुगुप्सा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० जुगुप्सित ] १. निंदा। बुराई। २. अश्रद्धा। घृणा।

**जुज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मि० सं० युज् ] कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह। फारम।

**जुज्झ***†—संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।

**जुझवाना***†—क्रि० स० [ हिं० जूझना ] लड़ा देना।

**जुझाऊ**—वि० [ हिं० जूझ+आऊ (प्रत्य०) ] लड़ाई में काम आनेवाला। युद्ध-संबंधी।

**जुझार**†*—वि० [ हिं० जुज्झ+आर (प्रत्य०)] १.लड़ाका। वीर। २.युद्ध। लड़ाई।

**जुट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० युक्त ] १. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। जोड़ी। जुग। २. जत्था। दल।

**जुटना**—क्रि० अ० [ सं० युक्त+ना (प्रत्य०) ] १. दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे। सबद्ध होना। संश्लिष्ट होना। जुड़ना। २. लिपटना। गुथना। ३.संभोग करना। ४. एकत्र होना। ५. कार्य्य में सम्मिलित होना। ६. मिलना।

**जुटली**—वि० [ सं० जूट ] जूड़ेवाला। लंबे बालों की लटवाला।

**जुटाना**—क्रि० स० [ हिं० जुटना ] जुटना का सकर्मक रूप। जुटने में प्रवृत्त करना।

**जुटाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० जुटना ] १. जुटने की क्रिया या भाव। २. जमावड़ा।

**जुट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जुटना ] १. घास या टहनियों का छोटा पूला। अँटिया। जूरी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. तले-ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह। गड्डी।

वि० जुटी या मिली हुई।

**जुठारना**—क्रि० स० [ हिं० जूठा ] खाने-पीने की वस्तु का कुछ खाकर छोड़ देना। जूठा करना। उच्छिष्ट करना।

**जुठिहारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जूठा+हारा ] [ स्त्री० जुठिहारी ] जूठा खानेवाला।

**जुड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० जुटना ] १. कई वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे। संबद्ध होना। संयुक्त होना। २.संभोग करना। प्रसंग करना। †३. इकट्ठा होना। ४.एकत्र होना। किसी कार्य में योग देने के लिए उपस्थित होना। ५. प्राप्त होना। मिलना। ६. ठंढा होना। ७. दे० "जुतना"।

**जुड़पित्ती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जूड़+पित्त ] एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।

**जुड़वाँ**—वि० [ हिं० जुड़ना ] गर्भ-काल से ही एक में सटे हुए। जुड़े हुए। यमल। जैसे—जुड़वाँ बच्चे। संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।

**जुड़वाना**†—क्रि० स० [ हिं० जुड़ ] १. ठंढा करना। २. शांत करना। सुखी करना।

क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।

**जुड़ाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई"।

**जुड़ाना**†—क्रि० अ० [ हिं० जूड़ ] १. ठंढा होना। २. शांत होना। तृप्त होना।

क्रि० स० १. ठंढा करना। २. शांत और संतुष्ट करना। तृप्त करना।

**जुड़ावना**†—क्रि० स० दे० "जुड़ाना"।

**जुडीशल**—वि० [ अं० ] दीवानी या फौजदारी संबंधी। न्याय संबंधी।

**जुत***—वि० दे० "युक्त"।

**जुतना**—क्रि० अ० [ हिं० युक्त ] १ बैल, घोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगना। नधना। २. किसी काम में परिश्रम पूर्वक लगना। ३. हल से जोता जाना।

**जुतवाना**—क्रि० स० [ हिं० जोतना] दूसरे से जोतने का काम कराना।

**जुताई**—संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।

**जुतियाना**—क्रि० स० [ हिं० जूता+इयाना (प्रत्य०) ] १. जूता मारना। जूते लगाना। २. अत्यंत निरादर करना।

**जुत्थ***—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

**जुदा**—वि० [ फ़ा० ] १. पृथक्। अलग। २. भिन्न। निराला।

**जुदाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] जुदा होने का भाव। बिछोह। वियोग।

**जुद्ध***—संज्ञा पुं० दे० "युद्ध"।

**जुन्हरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यवनाल ] ज्वार ( अन्न )।

**जुन्हाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्योत्स्ना, प्रा० जोन्हा ] १. चाँदनी । चंद्रिका । २. चंद्रमा ।

**जुन्हैया**†—संज्ञा स्त्री० दे० 'जुन्हाई' ।

**जुपना**†—क्रि० अ० [ हिं० जुड़ना ?] ( चिराग का ) बुझना ।

**जुबली**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] किसी बड़ी घटना का स्मारक महोत्सव । जयंती ।

**जुबान**—संज्ञा स्त्री० दे० "जबान" ।

**जुमला**—वि० [ फ़ा० ] सब । कुल । संज्ञा पुं० पूरा वाक्य ।

**जुमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] शुक्रवार ।

**जुमिल**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का घोड़ा ।

**जुमेरात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बृहस्पतिवार ।

**जुरअत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] साहस । हिम्मत ।

**जुरझना***—क्रि० स० [ हिं० जलना ] जलना । फुँकना ।

**जुरझुरी**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्वर या जूर्त्ति + हिं० झरझराना ] १. ज्वरांश । हरारत । २. ज्वर के आदि की कँपकँपी ।

**जुरना***† क्रि० स० दे० "जुड़ना"

**जुरमाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े । अर्थ-दंड ।

**जुरा***—संज्ञा स्त्री० दे० "जरा" ।

**जुराना***—क्रि० अ० दे० "जुड़ाना" क्रि० स० दे० "जोड़ना" ।

**जुराफा**—संज्ञा पुं० [ अ० ज़ुर्राफ़ा ] अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी होती हैं । कुछ हिंदी कवियों ने इसे भूलकर पक्षी समझ लिया है ।

**जुर्म**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह कार्य्य जिसके दंड का विधान राजनियम में हो । अपराध ।

**जुर्रा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] नर बाज ।

**जुर्राब**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] मोजा । पायताबा ।

**जुल**—संज्ञा पुं० [सं० छल ?] धोखा । दम ।

**जुलाई***—वि० [ हिं० जुल + आई (प्रत्य०) ] धोखा देने वाला । धूर्त । संज्ञा स्त्री० दे० "जूलाई" ।

**जुलाब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. रेचन । दस्त । २. रेचक औषध । दस्त लानेवाली दवा ।

**जुलाहा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जौलाह ] १. कपड़ा बुननेवाला । तंतुवाय । तंतुकार । २. पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा ।

**जुल्फ**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं । पट्टा । कुल्ला ।

**जुल्फी**—संज्ञा स्त्री० दे० "जुल्फ" ।

**जुल्म**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अत्याचार अन्याय ।

**मुहा०**—जुल्म टूटना=आफत आ पड़ना । जुल्म ढाना=१. अत्याचार करना । २.कोई अद्भुत काम करना ।

**जुलूस**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सिंहासनारोहण । २. किसी उत्सव का समारोह । ३. उत्सव और समारोह की यात्रा । धूमधाम की सवारी ।

**जुल्लाब**—संज्ञा पुं० दे० "जुलाब" ।

**जुस्तजू**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तलाश । खोज ।

**जुहाना**†—क्रि० स० [ सं० यूय= आना ( प्रत्य० ) ] १. एकत्र करना । संचित करना । २. इमारत के काम में पत्थर आदि यथास्थान बैठाना । ३.चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को यथास्थान बैठाना । संयोजन ।

**जुहार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अवहार ?] क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम । सलाम ।

**जुहारना**—क्रि०स० [सं०अवहार] १. सहायता माँगना । २. एहसान लेना ।

**जुही**—संज्ञा स्त्री० दे० "जूही" ।

**जूँ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यूका ] एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है ।

**मुहा०**—कानों पर जूँ रेंगना=स्थिति का ज्ञान होना । होश होना ।

**जू**—अव्य० [ सं० (श्री) युक्त ] एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है । जी ।

**जूआ**—संज्ञा पुं० [ सं० युग ] १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है । †२. जुआठा । ३. चक्की में लगी हुई वह लकड़ी जिसे पकड़ कर वह फिराई जाती है ।

संज्ञा पुं० [ सं० द्यूत, प्रा० जूआ ] वह खेल जिससे जीतनेवाले को हारनेवाले से कुछ धन मिलता है । हार-जीत का खेल । द्यूत ।

**जूजू**—संज्ञा पुं० [अनु०] एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं । हाऊ ।

**जूझ***—संज्ञा स्त्री० [सं०युद्ध] लड़ाई ।

**जूझना**†*—क्रि० अ० [ सं० युद्ध ] १. लड़ना । २. लड़कर मर जाना ।

**जूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जटा की गाँठ । जूड़ा । २. लट । जटा । ३. एक प्रकार का रेशेवाला पौधा जिसके रेशे से बोरे बनते हैं ।

**जूठन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जूठा ] ए-

वह खानेपीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दी हो। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक-दो बार कर लिया हो। भुक्त पदार्थ।

**जूठा**—वि० [ सं० जुष्ठ ] [ स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना ] १. किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। २. जिसे किसी ने भोग करके अपवित्र कर दिया हो। भुक्त।
संज्ञा पुं० दे० "जूठन"।

**जूड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० जूट ] १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं। २. चोटी। कलगी। ३. मूँज आदि का पूला। ४. घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी।

**जूड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जूड़ ] वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है।

**जूता**—संज्ञा पुं० [ सं० युक्त ] चमड़े आदि का बना हुआ वह ढाँचा जिसे लोग काँटे आदि से बचने के लिए पैरों में पहनते हैं। जोड़ा। पादत्राण। उपानह।

**मुहा०**—( किसी का ) जूता उठाना= १. किसी का दासत्व करना। २. खुशामद करना। चापलूसी करना। जूता उछलना या चलना=मारपीट होना। झगड़ा होना। जूता खाना= १. जूतों की मार खाना। २. बुरा-भला सुनना। तिरस्कृत होना। जूते से खबर लेना या बात करना=जूते से मारना। जूतों दाल बँटना=आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।

**जूताखोर**—वि० [ हिं० जूता+फ़ा० खोर ] जो मार या गाली की कुछ पर्वा न करे। निर्लज्ज। बेहया।

**जूती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जूता ] स्त्रियों का जूता।

**जूती पैजार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जूती+फ़ा० पैज़ार ] १. जूतों की मार-पीट। २. लड़ाई। दंगा।

**जूथ***—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

**जून**—संज्ञा पुं० [सं० द्युवन्] समय। काल।
संज्ञा पुं० [ सं० जूर्ण ] तृण। घास।
संज्ञा पुं० [ अं० ] मई के बाद का अँगरेजी छठा महीना।

**जूनियर**—वि० [ अं० ] काल-क्रम से बाद का। छोटा।

**जूप**—संज्ञा पुं० [ सं० द्यूत ] १. जूआ। द्यूत। २. विवाह में एक रीति जिसमें वर और वधू परस्पर जूआ खेलते हैं। पासा।
संज्ञा पुं० दे० "यूप"।

**जूमना***†—क्रि० अ० [ अ० जमा ] इकट्ठा होना। जुटना। एकत्र होना।

**जूर***—संज्ञा पुं० [ हिं० जुरना ] जोड़। संचय।

**जूरना***—क्रि० स० दे० "जोड़ना"।

**जूरा**—संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा"।

**जूरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जुरना ] १. घास या पत्तों का छोटा पूला। जुट्टी। २. सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। ३. एक प्रकार का पकवान।
संज्ञा पुं० [ अं० जूरी ] एक प्रकार के पंच जो जज के साथ बैठकर मुकदमा सुनते और राय देते हैं।

**जूलाई**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] जून के बाद का अँगरेजी सातवाँ महीना।

**जूस**—संज्ञा पुं० [ सं० जूष ] १. पकी हुई दाल का पानी जो रोगियों को पथ्य रूप में दिया जाता है। २. उबाली हुई चीज का रस। रसा।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० जुफ्त, सं० युक्त ] युग्म संख्या। सम संख्या।

**जूस ताक**—संज्ञा पुं० [ हिं० जूस+फ़ा० ताक ] एक प्रकार का जूआ जिसमें कौड़ियाँ हाथ में लेकर पूछा जाता है कि ये जूस हैं या ताक।

**जूसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जूस ] वह गाढ़ा लसीला रस जो ईख के पकते हुए रस में से छूटता है। खाँड़ का पसेव। चोटा।

**जूह***—संज्ञा पुं० दे० "यूथ"।

**जूहर***—संज्ञा पुं० दे० "जौहर"।

**जूही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यूथी ] १. एक प्रसिद्ध झाड़ या पौधा। इसके फूल चमेली से मिलते-जुलते, पर छोटे होते हैं। २. एक प्रकार की आतशबाजी।

**जृंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० जृंभा। वि० जृंभक ] १. जँभाई। २. आलस्य।

**जृंभक**—वि० [ सं० ] जँभाई लेनेवाला।
संज्ञा पुं० १. रुद्रगणों में से एक। २. एक अस्त्र जिसके चलाने से शत्रु जँभाई लेने लगते थे, या सो जाते थे।

**जृंभण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जँभाई लेना।

**जृंभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जँभाई। २. आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता।

**जेंगना**†—संज्ञा पुं० दे० "जुगनूँ"।

**जेंना**—क्रि० स० दे० "जेंवना"।

**जेंवन**—संज्ञा पुं० [ हिं० जेंवना ] भोजन।

**जेंवना**—क्रि० स० [ सं० जेमन ] खाना।

**जेंवाना**†—क्रि० स० [ हिं० जेंवना ]

खिलाना।

**जे***†—सर्व० [सं० ये] 'जो' का बहु-वचन।

**जेइ, जेउ, जेऊ***†—सर्व० दे० 'जो'।

**जेटी**—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल चढ़ता या उतरता है।

**जेठ**—संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ] १. ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है। ज्येष्ठ। २. [स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई। भसुर।

वि० अग्रज। बड़ा।

**जेठरा**†—वि० दे० "जेठ"।

**जेठा**—वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] १. अग्रज। बड़ा। २. सबसे अच्छा।

**जेठाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ] बड़ाई। जेठापन।

**जेठानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेठ] जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री।

**जेठी**—वि० [हिं० जेठ+ई (प्रत्य०)] जेठ संबंधी। जेठ का।

**जेठीमधु**—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी।

**जेठौत, जेठौता**†—संज्ञा पुं० [सं० ज्येष्ठ+पुत्र] [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र।

**जेता**—संज्ञा पुं०[सं० जेतृ] १.जीतनेवाला। विजयी। २. विष्णु।

वि० दे० "जितना"

**जेतिक***†—क्रि० वि० [सं० यः] जितना।

**जेते***†—वि० [सं० यः, यत्] जितने।

**जेतो***†—क्रि० वि० [सं० यः, यत] जितना।

**जेब**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पहनने के कपड़ों के बगल में या सामने की ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं। खीसा। खरीता। पाकेट।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ज़ेब] शोभा सौंदर्य्य।

**जेबकट**—संज्ञा पुं० [फ़ा० जेब+हिं० काटना] वह जो दूसरों के जेब से रुपया पैसा लेने के लिए जेब काटता हो। जेबकतरा। गिरहकट।

**जेबखर्च**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह धन जो किसी को निज के खर्च के लिए मिले।

**जेबघड़ी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० जेब+घड़ी] छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है। जेबी घड़ी। वाच।

**जेबी**—वि० [फ़ा०] १. जो जेब में रखा जा सके। २.जिसका आकार प्रकार नियमित या साधारण से बहुत छोटा हो। बहुत छोटा।

**जेय**—वि० [सं०] जीतने योग्य।

**जेर**—संज्ञा स्त्री० [देश०] वह झिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है। आँवल।

वि० [फ़ा० ज़ेर] [संज्ञा ज़ेरबारी] १. परास्त। पराजित। २. जो बहुत तंग किया जाय।

**जेरपाई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्त्रियों को जूता।

**जेरबार**—वि० [फ़ा०] १. जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो। २. जिसकी बहुत हानि हुई हो।

**जेरबारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना। तंगी। २. हैरानी। परेशानी।

**जेरी**—संज्ञा स्त्री० [?] १. दे० "जेर"। २ वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाड़ियाँ इत्यादि हटाने के लिए रखते हैं।

**जेल**—संज्ञा पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी आदि निश्चित समय के लिए रखे जाते हैं। कारागार। बंदीगृह।

संज्ञा पुं० [फ़ा० ज़ेर] जंजाल। हैरानी या परेशानी का काम।

**जेलखाना**—संज्ञा पुं० [अं०+फ़ा०] कारागार।

**जेलाटिन जेलाटीन**—संज्ञा पुं० [अं०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस, हड्डी और खाल से निकलता है।

**जेवना**—क्रि० स० दे० "जीमना"।

**जेवनार**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जेवना] १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज। २. रसोई। भोजन।

**जेवर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गहना। आभूषण।

**जेवरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

**जेह**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ज़िह=चिल्ला] १ कमान की डोरी में वह स्थान जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध में निशाना रहता है। चिल्ला। २. दीवार में नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभड़ा हुआ लेप।

**जेहन**—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० ज़हीन] बुद्धि। धारणाशक्ति।

**जेहर**†—संज्ञा स्त्री० [?] पाजेब (जेवर)।

**जेहल**—संज्ञा पुं० दे० "जेल"।

**जेहलखाना**†—संज्ञा पुं० दे० "जेल"।

**जेहि***—सर्व० [सं० यस्] १. जिसका। २. जिससे।

**जै**—संज्ञा स्त्री० दे० "जय"।
†वि० [ सं० यावत् ] जितने। जिस कदर।
**जैजैकार**—संज्ञा स्त्री० दे० "जय-जयकार"।
**जैत**†*—संज्ञा स्त्री० [ सं० जयति ] विजय।
संज्ञा पुं० [ सं० जयंती ] अगस्त की तरह का एक पेड़।
**जैतपत्र***—संज्ञा पुं० [सं० जयति+पत्र ] जयपत्र।
**जैतवार***†—संज्ञा पुं० [ हिं० जैत+वार ] जीतने वाला। विजयी। विजेता।
**जैतून**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक ऊँचा सदाबहार पेड़ जिसे पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थीं। इसके फल और बीज दवा के काम में आते हैं। इसका तेल भी होता है जो खाने के काम आता है।
**जैन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भारत का एक धर्म संप्रदाय जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है और कोई ईश्वर या सृष्टिकर्त्ता नहीं माना जाता। २. जैनी।
**जैनी**—संज्ञा पुं० [ हिं० जैन ] जैन-मतावलंबी।
**जैबु**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० जेंवना ] भोजन।
**जैबो**†—क्रि० अ० दे० "जाना"।
**जैमाल**—संज्ञा स्त्री० दे० "जयमाल"।
**जैमिनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूर्व मीमांसा के प्रवर्त्तक एक ऋषि जो व्यास जी के ४ मुख्य शिष्यों में से एक थे।
**जैयद**—वि० [ अ० जद्द= दादा ] १. बड़ा भारी। बहुत बड़ा। २. बहुत धनी।
**जैल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. नीचे का भाग। २. पंक्ति। सफ। ३. इलाका।
**जैलदार**—संज्ञा पुं० [ अ० जैल+फ़ा० दार ] वह सरकारी ओहदेदार जिसके अधिकार में कई गाँवों का प्रबंध हो।
**जैसा**—वि० [ सं० यादृश ] [ स्त्री० जैसी ] १. जिस प्रकार का। जिस रूप-रंग या गुण का।
**मुहा०**—जैसे का तैसा=ज्यों का त्यों। जैसा पहले था, वैसा ही। जैसा चाहिए=उपयुक्त।
२. जितना। जिस परिमाण या मात्रा का। ( केवल विशेषण के साथ ) †३. समान। सदृश। तुल्य। *क्रि० वि० जितना। जिस परिमाण में।
**जैसे**—क्रि० वि० [ हिं० जैसा ] जिस प्रकार से। जिस ढंग से।
**मुहा०**—जैसेतैसे=किसी प्रकार। बड़ी कठिनता से।
**जैसो**†—वि०, क्रि० वि० दे० "जैसा"।
**जों***—क्रि० वि० दे० "ज्यों"।
**जोंक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जलौका ] १. पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है। २ वह मनुष्य जो अपना काम निकालने के लिए बेतरह पीछे पड़ जाय।
**जोंकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोंक ] १. लोहे का वह काँटा जो दो तख्तों को जोड़ता है। २. दे० "जोंक"।
**जोंधरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जूर्ण ] १. छोटी ज्वार। २. बाजरा। ( क्वचित् )
**जोंधैया**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्योत्स्ना] चाँदनी। चंद्रिका।
**जो**—सर्व० [ सं० यः ] एक संबंध-वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ और वर्णन की योजना की जाती है। जैसे—जो घोड़ा आपने भेजा था, वह मर गया।
*अव्य० [ सं० यद् ] यदि। अगर।
**जोअना***†-क्रि० स० दे० "जोवना"।
**जोइ***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाया ] जोरू। पत्नी। स्त्री।
†सर्व० दे० "जो"।
**जोइसी***-संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।
**जोउ**—सर्व० दे० "जो"।
**जोखना**—क्रि० स० [ सं० जुष=जाँचना ] १. तौलना। वजन करना। २. जाँचना।
**जोखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जोखना ] लेखा। हिसाब।
**जोखिता***—संज्ञा स्त्री० दे० "योषिता"।
**जोखिम**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झोका ] १. भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशंका अथवा संभावना। झोंकी।
**मुहा०**—जोखिम उठाना या सहना=ऐसा काम करना जिसमें भारी अनिष्ट की आशंका हो। जान जोखिम होना=मरने का भय होना।
२. वह पदार्थ जिसके कारण भारी विपत्ति आने की संभावना हो।
**जोखों**—संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम"।
**जोगंधर**—संज्ञा पुं० [ सं० योगधर ] एक युक्ति जिसके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।
**जोग**—संज्ञा पुं० दे० "योग"।
अव्य० [ सं० योग्य ] को। के निकट। के वास्ते। ( पुरा० हिं० )
**जोगड़ा**—संज्ञा [ हिं० जोग+ड़ा (प्रत्य०)] बना हुआ योगी। पाखंडी।

**जोखना**—क्रि० स० [ सं० योग + अवना ( प्रत्य० ) ] १. यत्न से रखना। रक्षित रखना। २. संचित करना। एकत्र करना। ३. लिहाज रखना। आदर करना। ४. जाने देना। ख्याल न करना। ५. पूरा करना।

**जोगानल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० योगानल ] योग से उत्पन्न आग।

**जोगिंद***†—संज्ञा पुं० दे० "जोगींद्र"।

**जोगिन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० योगिनी ] १. जोगी की स्त्री। २. साधुनी। ३. पिशाचिनी।

**जोगिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "योगिनी"।

**जोगिया**—वि० [ हिं० जोगी + इया ( प्रत्य० ) ] १. जोगी-संबंधी। जोगी का। २. गेरू के रंग में रँगा हुआ। गैरिक।

**जोगींद्र***†—संज्ञा पुं० [ सं० योगींद्र ] १. बड़ा योगी। २. शिव।

**जोगी**—संज्ञा पुं० [ सं० योगी ] १. वह जो योग करता हो। योगी। २. एक प्रकार के भिक्षुक जो सारंगी पर गाते फिरते हैं।

**जोगीड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० योगी + ड़ा ( प्रत्य० ) ] १. एक प्रकार का रंगीन या चलता गाना। २. गाने बजानेवालों का एक छोटा समाज।

**जोगेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० योगेश्वर ] १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. सिद्ध योगी।

**जोजन***†—संज्ञा पुं० दे० "योजन"।

**जोट***—संज्ञा पुं० [ सं० योटक ] १. जोड़ी। २. साथी। ३. प्रतिपक्षी।

**जोटा***†—संज्ञा पुं० [ सं० योटक ] जोड़ा। युग।

**जोटिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**जोटी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोट ] १. जोड़ी। युग्मक। २. बराबरी का। समान। ३ प्रतिपक्षी।

**जोड़**—संज्ञा पुं० [ सं० योग ] १. कई संख्याओंका योग। जोड़ने की क्रिया। २. वह संख्या जो कई संख्याओं को जोड़ने से निकले। ठीक। टोटल। ३. वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिले हो। ४. वह टुकड़ा जो किसी चीज में जोड़ा जाय। ५. वह चिह्न जो दो चीजों के एक में मिलने के कारण संधि-स्थान पर पड़ता है। ६. शरीर के दो अवयवों का संधि-स्थान। गाँठ। ७. मेल-मिलाप। ८. एक ही तरह की अथवा साथ साथ काम में आनेवाली दो चीजें। जोड़ा। ९. बराबरी। समानता। १०. वह जो बराबरी का हो। जोड़ा। ११. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। १२. छल। दाँव।

**यौ०**—जोड़-तोड़ = १. दाँव-पेच। छल-कपट। २ विशेष युक्ति। ढंग।

**जोड़ती**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोड़ + ती ( प्रत्य० ) ] गणित में कई संख्याओं का योग। जोड़।

**जोड़न**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोड़ ] वह पदार्थ जो दही जमाने के लिए दूध में डाला जाता है। जावन। जामन।

**जोड़ना**—क्रि० स० [ हिं० जुड़ = बाँधना या सं० युक्त ] १. दो वस्तुओं को किसी उपाय से एक करना। दो चीजों को मजबूती से एक करना। २. किसी टूटी हुई चीज के टुकड़ों को मिलाकर एक करना। ३. द्रव्य या सामग्री को क्रम से रखना या लगाना। ४. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ५. कई संख्याओं का योगफल निकालना। ६. वाक्यों या पदों आदि की योजना करना। ७. प्रज्वलित करना। जलाना। ८. संबंध स्थापित करना।

**जोड़वाँ**—वि० [ हिं० जोड़ा + वाँ ( प्रत्य० ) ] वे दो बच्चे जो एक ही गर्भ से साथ उत्पन्न हुए हों। यमज।

**जोड़वाना**—क्रि० स० [ हिं० जोड़ना का प्रे० ] जोड़ने का काम दूसरे से कराना।

**जोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० जोड़ना ] [ स्त्री० जोड़ी ] १. दो समान पदार्थ। एक ही सी दो चीजें। २. जूते। उपानह। ३. पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। ४. स्त्री और पुरुष या नर और मादा। ५. वह जो बराबरी का हो। जोड़।

**जोड़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोड़ना + आई ( प्रत्य० ) ] १. वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया या भाव। २. जोड़ने की मजदूरी।

**जोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोड़ा ] १. एक ही सी दो चीजें। जोड़ा। २. दो घोड़ों या दो बैलों की गाड़ी। ३. दोनों मुगदर जिससे कसरत करते हैं। ४. मँजीरा।

**जोत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोतना ] १. चमड़े का तस्मा या रस्सी जिसका एक सिरा जोते जानेवाले जानवरों के गले में और दूसरा उस चीज में बँधा रहता है जिसमें वे जोते जाते हैं। २. वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले लटकते रहते हैं।

†संज्ञा स्त्री० दे० "ज्योति"।

**जोतना**—क्रि० स० [ सं० योजना या युक्त ] १. गाड़ी कोल्हू आदि को चलाने के लिए उसके आगे बैल, घोड़े आदि पशु बाँधना। २. किसी को जबरदस्ती किसी काम में लगाना। ३. खेती के लिए हल चलाना।

**जोता**—संज्ञा पुं० [ हिं० जोतना ] १. जुआठे में बँधी हुई वह पतली रस्सी जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है। २. बहुत बड़ी शहतीर। ३. वह जो हल जोतता हो।
**जोताई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोतना+आई (प्रत्य०)] १. जोतने का काम या भाव। २. जोतने की मजदूरी।
**जोति, जोती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्योति ] १. घी का दीआ जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है। २. दे० "ज्योति"।
*†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोतना ] जोतने-बोने योग्य भूमि।
**जोतिक***†—क्रि० वि० [?] जैसा।
**जोधा***†—संज्ञा पुं० दे० "योद्धा"।
**जोनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "योनि"।
**जोन्ह, जोन्हाई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "जुन्हाई"।
**जोपै***—प्रत्य० [ हिं० जो+पर ] १. यदि। अगर। २. यद्यपि। अगरचे।
**जोफ़**—संज्ञा पुं० [अ०] १. बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. निर्बलता। कमजोरी।
**जोबन**—संज्ञा पुं० [ सं० यौवन ] १. युवा होने का भाव। यौवन। २. सुंदरता। खूबसूरती। ३. रौनक। बहार।
**जोम**—संज्ञा पुं० [अ०] १. उमंग। उत्साह। २. जोश। आवेश। ३. अभिमान।
**जोय***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० जाया ] जोरू। स्त्री०। सर्व० पुं० जो। जिस।
**जोयना***†—क्रि० स० [हिं० जोड़ना] बालना। जलाना।
क्रि० स० दे० "जोवना"।
**जोयसी***†—संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।
**जोर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १ बल। शक्ति।
**मुहा०**—(किसी बात पर) जोर देना=किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्त्वपूर्ण बतलाना। (किसी बात के लिए) जोर देना=किसी बात के लिए आग्रह करना। जोर मारना या लगाना=१. बल का प्रयोग करना। २. बहुत प्रयत्न करना।
**यौ०**—जोर-जुल्म=अत्याचार।
२. प्रबलता। तेजी। बढ़ती।
**मुहा०**—जोरों पर होना=१. पूरे बल पर होना। बहुत तेज होना। २. खूब उन्नत होना। ३. वश। अधिकार। काबू। ४. वेग। आवेश। झोंक।
**मुहा०**—जोरों पर=बड़े वेग से। तेजी से।
५. भरोसा। आसरा। सहारा।
**मुहा०**—किसी के जोर पर कूदना=किसी की अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना।
६. परिश्रम। मेहनत। ७. व्यायाम।
**जोरदार**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें बहुत जोर हो। जोरवाला।
**जोरना**†—क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
**जोरशोर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बहुत अधिक जोर।
**जोराजोरी**†*—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० जोर ] जबरदस्ती।
क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।
**जोरावर**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा जोरावरी ] बलवान्। ताकतवर।
**जोरी**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी"।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ज़ोर] जबरदस्ती।
**जोरू**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोड़ा ] स्त्री। पत्नी।
**जोलाहल***—संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्वाला ] ज्वाला। अग्नि। आग।
**जोली**†*—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोड़ी] बराबरी।
**जोवना***—क्रि० स० [ सं० जुषण=सेवन] १. जोहना। देखना। २. ढूँढ़ना तलाश करना। ३. आसरा देखना।
**जोश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. आँच या गरमी के कारण उबलना। उफान। उबाल।
**मुहा०**—जोश खाना=उबलना। उफनना। जोश देना=पानी के साथ उबालना।
२. चित्त की तीव्र वृत्ति। मनोवेग।
**मुहा०**—खून का जोश=प्रेम का वह वेग जो अपने वंश के किसी मनुष्य के लिए हो।
**जोशन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] भुजाओं पर पहनने का गहना। २. जिरह-बकतर। कवच।
**जोशाँदा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि। क्वाथ। काढ़ा।
**जोशी**—संज्ञा पुं० दे० "जोषी"।
**जोशीला**—वि० [ फ़ा० जोश+ईला (प्रत्य०) ] [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो। आवेगपूर्ण।
**जोष**—संज्ञा स्त्री० [ सं० योषा ] स्त्री। नारी।
संज्ञा स्त्री० दे० "जोख"।
**जोषिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्त्री। नारी।
**जोषी**—संज्ञा पुं० [ सं०ज्योतिषी ] १. गुजराती। महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति। २. ज्योतिषी। गणक। (क्व०)
**जोह**†*—संज्ञा स्त्री० [ हिं० जोहना ] १. खोज। तलाश। २. इंतजार। प्रतीक्षा। खोज। ३. कृपा-दृष्टि।
**जोहना***—संज्ञा स्त्री० [हिं० जोहना] १. देखने या जोहने की क्रिया। २. तलाश। ३. प्रतीक्षा इंतजार।
**जोहना**—क्रि० स० [ सं० जुषण=

सेवन ] १. देखना । ताकना । २.ढूँढ़ना । पता लगाना । ३. प्रतीक्षा करना ।

**जोहार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जुषण=सेवन ] अभिवादन । वंदन । प्रणाम ।
संज्ञा पुं० दे० "जौहर" ।

**जोहारना**†—क्रि० अ० [ हिं० जोहार ] जोहार या अभिवादन करना ।

**जौं**†—अव्य० [ सं० यदि ] यदि । जो ।
क्रि० वि० दे० "ज्यों" ।

**जौंरा-भौंरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भुइँ-घर, भुइँहरा ] किले या महलों का वह तहखाना जिसमें गुप्त खजाना आदि रहता है ।
संज्ञा पुं० [ हिं० जोड़ा + भौंरा ] दो बालकों का जोड़ा ।

**जौंरे**†—क्रि० वि० [ फ़ा० जवार ] पास । निकट ।

**जौ**—संज्ञा पुं० [ सं० यव ] १. गेहूँ की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की गिनती अनाजो में हैं । २. एक पौधा जिसकी लचीली टहनियो से टोकरे, झाड़ आदि बनते हैं । ३. छः राई (खरदल) के बराबर एक तौल ।
†अव्य० [ सं० यद् ] यदि । अगर ।
*† क्रि० वि० जब ।

**जौक**—संज्ञा पुं० [ तु० जूक़ ] १. झुंड । जत्था । २. फौज । सेना । ३. पक्षियों की श्रेणी ।

**जौजा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० जौजः ] जोरू ।

**जौधिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तलवार या खड्‌ग के ३२ हाथों में से एक ।

**जौन***—सर्व० [ सं० यः ] जो ।
वि० जो ।
संज्ञा पुं० दे० "यवन" ।

**जौपै***†—अव्य० [ हिं० जौ + पै ] अगर । यदि ।

**जौबति***—संज्ञा स्त्री० दे० "युवती" ।

**जौहर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० गौहर का अरबी रूप ] १. रत्न । बहुमूल्य पत्थर । २. सार वस्तु । सारांश । तत्त्व । ३. हथियार की ओप । ४. विशेषता । उत्तमता । खूबी ।
संज्ञा पुं० [ हिं० जीव + हर ] १. राजपूतों में युद्ध-समय की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या गढ़ में शत्रु-प्रवेश का निश्चय होने पर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल जाते थे । २. वह चिता जो दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिए बनाई जाती है । ३. आत्महत्या ।

**जौहरी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. रत्न परखने या बेचनेवाला । रत्न-विक्रेता । २. किसी वस्तु के गुण-दोष की पहचान रखनेवाला । पारखी । जँचवैया ।

**ज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज और ञ के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर । २. ज्ञान । बोध । ३. ज्ञानी । जाननेवाला । जैसे, शास्त्रज्ञ । ४. ब्रह्मा । ५. बुध ग्रह ।

**ज्ञप्त**—वि० [ सं० ] जाना हुआ ।

**ज्ञप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जानकारी । २. बुद्धि ।

**ज्ञात**—वि० [ सं० ] जाना हुआ । विदित ।

**ज्ञात-यौवना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो ।

**ज्ञातव्य**—वि० [ सं० ] जो जाना जा सके । ज्ञेय । बोधगम्य ।

**ज्ञाता**—वि० [ सं० ज्ञातृ, ज्ञाता ] [ स्त्री० ज्ञात्री ] जानने या ज्ञान रखनेवाला । जानकार ।

**ज्ञाति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य । गोती । २. भाई-बंधु ।
संज्ञा स्त्री० दे० "जाति" ।

**ज्ञातृत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] जानकारी ।

**ज्ञान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वस्तुओं और विषयों की वह भावना जो मन या आत्मा को हो । बोध । जानकारी । प्रतीति ।
**मुहा०**—ज्ञान छाँटना=अपनी विद्या या जानकारी जताने के लिए लंबी-चौड़ी बातें करना । २. यथार्थ या सम्यक् ज्ञान । तत्त्वज्ञान ।

**ज्ञानकांड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेद का वह कांड या विभाग जिसमें ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषयों का विचार है । जैसे—उपनिषद् ।

**ज्ञानगम्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जो जाना जा सके । ज्ञेय ।

**ज्ञानगोचर**—वि० दे० "ज्ञानगम्य" ।

**ज्ञानयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन ।

**ज्ञानवान्**—वि० [ सं० ] ज्ञानी ।

**ज्ञानवृद्ध**—वि० [ सं० ] जिसकी जानकारी अधिक हो ।

**ज्ञानी**—वि० [ सं० ज्ञानिन् ] १. जिसे ज्ञान हो । ज्ञानवान् । जानकार । २. आत्मज्ञानी । ब्रह्मज्ञानी ।

**ज्ञानेंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है । यथा—दर्शनेंद्रिय, श्रवणेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, रसना और स्पर्शेंद्रिय ।

**ज्ञापक**—वि० [ सं० ] जतानेवाला । सूचक ।

**ज्ञापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य ] जताने या बताने का

कार्थ्य।

ज्ञापित—वि० [ सं० ] बताया हुआ। सूचित।

ज्ञेय—वि० [ सं० ] १. जिसका जानना योग्य या कर्त्तव्य हो। जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।

ज्या—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. धनुष की डोरी। २. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो। ३. वह रेखा जो किसी चाप के एक सिरे से उस व्यास पर लंब-रूप से गिरी हो जो चाप के दूसरे सिरे से होकर गया हो। ४. पृथ्वी।

ज्यादती—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. अधिकता। बहुतायत। २. अत्याचार।

ज्यादा—वि० [ फ़ा० ] अधिक। बहुत।

ज्यान*—संज्ञा पुं० [ फ़ा० जियान ] हानि।

ज्याना*—क्रि० स० दे० "जिलाना"।

ज्याफत—संज्ञा स्त्री० [ अ० ज़ियाफ़त ] १. दावत। भोज। २. मेहमानी। आतिथ्य।

ज्यामिति—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह गणित विद्या जिससे भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, तल आदि का विचार किया जाता है। क्षेत्रगणित। रेखागणित।

ज्यारना*—क्रि० अ० दे० "जिलाना"।

ज्यावना*—क्रि० स० दे० "जिलाना"।

ज्यूँ†—अव्य० दे० "ज्यों"।

ज्येष्ठ—वि० [ सं० ] १. बड़ा। जेठा। २. वृद्ध। बड़ा-बूढ़ा।

संज्ञा पुं० १. जेठ का महीना। २. परमेश्वर।

ज्येष्ठता—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ज्येष्ठ होने का भाव। बड़ाई। २. श्रेष्ठता।

ज्येष्ठा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से बना और कुंडल के आकार का है। २. वह स्त्री जो औरों की अपेक्षा अपने पति को अधिक प्यारी हो। ३. छिपकली। ४. मध्यमा उँगली।

वि० स्त्री० बड़ी।

ज्यों*—क्रि० वि० [ सं० यः+इव ] १ जिस प्रकार। जैसे। जिस ढंग से।

मुहा०—ज्यों त्यों=किसी न किसी प्रकार।

२. जिस क्षण। जैसे ही।

मुहा०—ज्यों ज्यों=१. जिस क्रम से। २. जिस मात्रा से। जितना।

अव्य० मानों। जैसे।

ज्योतिःशिखा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विषम वर्णवृत्तों का एक भेद जिसके पहले दल में ३२ लघु और दूसरे दल में १६ गुरु होते हैं।

ज्योति—संज्ञा स्त्री० [ स० ज्योतिस् ] १. प्रकाश। उजाला। द्युति। २ लपट। लौ। ३. अग्नि। ४. सूर्य्य। ५. नक्षत्र। ६. आँख की पुतली के मध्य का विंदु। ७. दृष्टि। ८. विष्णु। ९. परमात्मा।

ज्योतिक-संज्ञा पुं० दे० "ज्योतिषी"।

ज्योतित—वि० [ सं० ज्योति ] ज्योति से भरा हुआ। प्रकाशमान। उजला।

ज्योतिमय—वि० [ स्त्री० ज्योतिमयी ] दे० "ज्योतिर्मय"।

ज्योतिमान—वि० दे० "ज्योतिर्मय"।

ज्योतिरिंगण—संज्ञा पुं० [ सं० ] जुगनू।

ज्योतिर्मय—वि० [ सं० ] प्रकाशमय। जगमगाता हुआ।

ज्योतिर्मान—वि० दे० "ज्योतिर्मय"।

ज्योतिर्लिंग—संज्ञा [ सं० ] १. महादेव। शिव। २. भारतवर्ष में प्रतिष्ठित शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।

ज्योतिर्लोक—संज्ञा पुं० [ सं० ] ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद्—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ज्योतिष।

ज्योतिश्चक्र—संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों और राशियों का मंडल।

ज्योतिष—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। २. अस्त्रों का एक संहार या रोक।

ज्योतिषी-संज्ञा पुं० [ सं० ज्योतिषिन् ] ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य। ज्योतिर्विद्। दैवज्ञ। गणक।

ज्योतिष्क—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। २. मेथी। ३. चित्रक वृक्ष। चीता। ४. गनियारी।

ज्योतिष्टोम—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का यज्ञ।

ज्योतिष्पथ—संज्ञा पुं० [ सं० ] आकाश।

ज्योतिष्पुंज—संज्ञा पुं० [ सं० ] नक्षत्रसमूह।

ज्योतिष्मती—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मालकँगनी। २. रात्रि।

ज्योतिष्मान्—वि० [ सं० ] प्रकाशयुक्त।

संज्ञा पुं० सूर्य्य ।
**ज्योत्स्ना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंद्रमा का प्रकाश । चाँदनी । २. चाँदनी रात ।
**ज्योनार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० जेमन = खाना] १. पका हुआ भोजन । रसोई । २. भोज । दावत । ज्याफत ।
**ज्योरी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० जीवा ] रस्सी ।
**ज्योहत, ज्योहर***†—संज्ञा पुं० [ सं० जीव + हत ] आत्महत्या । जौहर ।
**ज्यौं**—अव्य० [सं० यदि] जो । यदि ।
संज्ञा पुं० दे० "जौ" ।
*संज्ञा पुं० [ सं० जीव ] आत्मा ।
**ज्यौतिष**—वि० [ सं० ] ज्योतिष-संबंधी ।
**ज्वर**—संज्ञा पु० [ सं० ] शरीर की वह गरमी जो अस्वस्थता प्रकट करे । ताप । बुखार ।
**ज्वरांकुश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्वर की एक औषध । २. एक सुगंधित घास ।
**ज्वरा**—संज्ञा पुं० [ सं० जरा ] मृत्यु ।
**ज्वरी***—संज्ञा पुं० दे० "जरी" ।
**ज्वलंत**—वि० [सं०] १. प्रकाशमान् । दीप्त । २. अत्यंत स्पष्ट ।
**ज्वलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जलने का कार्य्य या भाव । जलन । दाह । २. अग्नि । आग । ३. लपट । ज्वाला ।
**ज्वलित**—वि० [ सं० ] १. जला हुआ । २. चमकता या झलकता हुआ । उज्ज्वल ।
**ज्वान**†—वि० दे० "जवान" ।
**ज्वार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यवनाल ] १. एक प्रकार की घास जिसकी बाल के दाने मोटे अनाजों में गिने जाते हैं । जोन्हरी । जुंडी । २. समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव । लहर की उठान । भाटा का उलटा ।
संज्ञा पुं० दे० "ज्वाल" ।
**ज्वार-भाटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० ज्वार + भाटा ] समुद्र के जल का चढ़ाव उतार या लहर का बढ़ना और घटना जो चंद्रमा और सूर्य्य के आकर्षण से होता है । इसके चढ़ने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं ।
**ज्वाल**—संज्ञा पुं०[सं०] लौ । लपट ।
*संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वाला" ।
**ज्वाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अग्निशिखा । लपट । २. विष आदि की गरमी । ३. गरमी । ताप । जलन ।
**ज्वालादेवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शारदा पीठ में स्थित एक देवी । इनका स्थान काँगड़ा जिले में है ।
**ज्वालामुखी पर्वत**—संज्ञा पुं० [सं०] वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय-समय पर निकला करते हैं ।

—:*:—

# झ

**झ**—हिंदी व्यंजन वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है ।
**झंकना**—क्रि० अ० दे० "झींखना" ।
**झंकार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. झंझनाहट का शब्द । झनकार । २. झींगुर आदि छोटे जानवरों के बोलने का शब्द ।
**झंकारना**—क्रि० स० [ सं० झंकार ] "झनझन" शब्द उत्पन्न करना ।
क्रि० अ० झनझन शब्द होना ।
**झंकृत**—वि० [ सं० ] जिसमें झनकार हुई हो ।
**झंकृति**—संज्ञा स्त्री० दे० "झंकार" ।
**झंखना**—क्रि० अ० दे० "झींखना" ।
**झंखाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़ का अनु० ] १. घनी और कँटीली झाड़ी या पौधा । २. वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गए हों । ३. व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह ।
**झँगा**—संज्ञा पुं० दे० "झगा" ।
**झँगुली***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा" ।
**झंझट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] व्यर्थ का झगड़ा । टंटा । बखेड़ा । प्रपंच ।
**झंझनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] झनझन शब्द होना । झंकारना ।
क्रि० स० झनझन शब्द करना ।

**झंझर**—संज्ञा स्त्री० दे० "झज्झर"।

**झँझरा**—वि० [अनु०] [स्त्री० झंझरी] जिसमें बहुत से छोटे छोटे छेद हों।

**झँझरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झर झर से अनु० ] १. किसी चीज में बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। जाली। २. दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जालीदार खिड़की।

**झंझा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। २. तेज आँधी।

**झंझानिल, झंझावात**—संज्ञा पुं० दे० "झंझा"।

**झंझी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] फूटी कौड़ी।

**झँझोड़ना**—क्रि० स० [सं० झर्झन] १. किसी चीज को बहुत वेग और झटके के साथ हिलाना जिसमें वह टूट-फूट जाय या नष्ट हो जाय। झकझोरना। २. किसी जानवर का अपने से छोटे जानवर को मार डालने के लिए दाँतों से पकड़कर खूब झटका देना।

**झंडा**—संज्ञा पुं० [सं० जयंत] [स्त्री० अल्पा० झंडी ] तिकोने या चौकोर कपड़े का टुकड़ा जिसका एक सिरा लकड़ी आदि के डंडों में लगा रहता है और जिसका व्यवहार चिह्न प्रकट करने, संकेत करने और उत्सव आदि सूचित करने के लिए होता है। पताका। निशान। फरहरा। ध्वजा।

**मुहा०**—झंडा खड़ा करना = १. सैनिक आदि एकत्र करने के लिए झंडा स्थापित करके संकेत करना। २. आडंबर करना। झंडा गाड़ना या फहराना=१. किसी स्थान विशेषतः नगर या किले आदि पर अपना अधिकार करके उसके चिह्न-स्वरूप झंडा स्थापित करना। २ पूर्णरूप से अपना अधिकार जमाना।

२. ज्वार, बाजरे आदि पौधों के ऊपर का नर-फूल। जीरा।

**झंडी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झंडा] छोटा झंडा।

**झँडूला**—वि० [ हिं० झंड + ऊला (प्रत्य० ) ] १. जिसके सिर पर गर्भ के बाल हों। जिसका मुंडन संस्कार न हुआ हो (बालक)। २. मुंडन संस्कार से पहले का। गर्भ का (बाल)। ३. घनी पत्तियोंवाला। सघन। (वृक्ष)।

**झंप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उछाल। फलाँग।

**मुहा०**—झंप देना=कूदना।

संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़ों के गले का एक आभूषण।

**झँपकना, झँपना**—क्रि० अ० [ सं० झंप ] १. ढँकना। छिपना। आड़ में होना। २ उछलना। कूदना। लपकना। ३. टूट पड़ना। एकदम से आ पड़ना। ४. झेंपना। लज्जित होना।

**झँपरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाँपना= ढकना ] पालकी का ढाँकने की खोली। आहार।

**झंपान**—संज्ञा पुं० [सं० झप] पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली। झप्पान।

**झंपित***—वि० [ सं० झंप ] ढका या छिपाया हुआ।

**झँपोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाँपा + ओला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया ] छोटा झाँपा या झाबा, छाबड़ा।

**झंब**—संज्ञा पुं० [ देश० ] गुच्छा।

**झँबकार***†—वि० [ हिं० झाँवला + काला ] झाँवले रंग का। काला।

**झँवराना**—क्रि० अ० [ हिं० झाँवर ] १. कुछ काला पड़ना। २. कुम्हलाना। फीका पड़ना।

**झँवा**—संज्ञा पुं० दे० "झाँवा"।

**झँवाना**—क्रि० अ० [ हिं० झाँवा ] १ झाँवे के रंग का हो जाना। कुछ काला पड़ जाना। २. अग्नि का मंद हो जाना। ३. घट जाना। ४. कुम्हलाना। मुरझाना। ५. झाँवे से रगड़ा जाना।

क्रि० स० १. झाँवे के रंग का कर देना। कुछ काला कर देना। २. आग ठंढी करना। ३. घटाना। ४. कुम्हला देना। मुरझा देना। ५. झाँवे से रगड़ना या रगड़वाना।

**झँसना**—क्रि० स० [अनु०] १ सिर या तलुए आदि में कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से उसे बार बार रगड़ना। २. किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।

**झ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. झंझावात। वर्षा मिली हुई तेज आँधी। २. बृहस्पति। ३. दैत्यराज। ४. ध्वनि।

**झई**—संज्ञा स्त्री० दे० "झाई"।

**झउआ**†—संज्ञा पुं० दे० "झाबा"।

**झक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] सनक। धुन।

संज्ञा स्त्री० दे० "झख"।

वि० चमकीला। साफ।

**झकझक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. व्यर्थ की हुज्जत। फजूल तकरार। २. बकबक।

**झकझका**-वि० [अनु०] चमकीला।

**झकझकाहट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] चमक।

**झकझेलना**—क्रि० स० दे० "झकझोरना"।

**झकझोर**—संज्ञा पुं० [अनु०] झटका। वि० झोंकेदार। तेज।

**झकझोरना**—क्रि० स० [अनु०] किसी चीज को पकड़कर खूब हिलाना। झटका देना।

**झकझोरा**—संज्ञा पुं० [अनु०] झटका।

**झकझोलना**—क्रि० स० दे० "झकझोरना"।

*क्रि० अ० [हिं० झकझोरना] झकझोरा जाना। जोर से हिलना-डुलना।

**झकना**†—क्रि० अ० [अनु०] १. बकवाद करना। व्यर्थ की बातें करना। २. क्रोध में आकर अनुचित वचन कहना।

**झका***—वि० [हिं० झक] चमकीला। साफ।

**झकाझक**—वि० [अनु०] खूब साफ और चमकता हुआ। झलाझल। उज्ज्वल।

**झकुराना**†—क्रि० अ० [हिं० झकोरा] झूमना।

क्रि० स० झूमने में प्रवृत्त करना।

**झकोर***†—संज्ञा पुं० [अनु०] १. हवा का झोंका। २. झटका। झोंका।

**झकोरना**—क्रि० अ० [अनु०] हवा का झोंका मारना।

**झकोरा**—संज्ञा पुं० [अनु०] हवा का झोंका।

**झकोल***†—संज्ञा पुं० दे० "झकोर"।

**झक्क**—वि० [अ०] साफ और चमकता हुआ।

संज्ञा स्त्री० दे० "झक"।

**झक्कड़**—संज्ञा पुं० [अनु०] तेज आँधी।

वि० दे० "झक्की"।

**झक्की**—वि० [अनु०] १. बहुत बकबक करनेवाला। २. जो अपनी धुन के सामने किसी की न सुने। सनकी।

**झखना***†—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

**झख**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झींखना] झींखने का भाव या क्रिया। मछली।

**मुहा०**—झख मारना=१. व्यर्थ समय नष्ट करना। २. अपनी मिट्टी खराब करना।

**झखना***—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

**झखा***—संज्ञा स्त्री० [सं० झष] मछली।

**झगड़ना**—क्रि० अ० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर विवाद करना। झगड़ा करना।

**झगड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० झकझक से अनु०] परस्पर आवेशपूर्ण विवाद। लड़ाई। हुज्जत। तकरार।

**झगड़ालू**—वि० [हिं० झगड़ा + आलू (प्रत्य०)] जो बात बात में झगड़ा करता हो। कलहप्रिय।

**झगड़ी***-संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।

**झगर**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

**झगरा***†-संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।

**झगराऊ***†-वि० दे० "झगड़ालू"।

**झगरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।

**झगला***†—संज्ञा पुं० दे० "झगा"।

**झगा**—संज्ञा पुं० [?] छोटे बच्चों के पहनने का कुछ ढीला कुरता।

**झगुली***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

**झज्झर**—संज्ञा स्त्री० [सं० अलिंजर] कुछ चौड़े मुँह का पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन।

**झझरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] फूटी कौड़ी।

**झझक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झझकना] १. झझकने की क्रिया या भाव। भड़क। २. कुछ क्रोध से बोलने की क्रिया या भाव। झुँझलाहट। ३. रह रहकर निकलनेवाली अप्रिय गंध। ४. रह रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा।

**झझकन***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झझक"।

**झझकना**—क्रि० अ० [अनु०] १. भय की आशंका से अकस्मात् रुक जाना। अचानक डरकर ठिठकना। चिढ़कना। चमकना। भड़कना। २. झुँझलाना। खिजलाना। ३. चौंक पड़ना।

**झझकाना**—क्रि० स० [हिं० झझकना का प्रे०] १. भय की आशंका कराके किसी काम से रोक देना। भड़काना। २. चौंका देना।

**झझकारना**—क्रि० स० [अनु०] [सं० झझकार] १. डपटना। डाँटना। २. दुरदुराना। ३. तुच्छ समझना।

**झट**—क्रि० वि० [सं० झटिति] तुरंत। उसी समय।

**झटकना**—क्रि० स० [हिं० झट] १. किसी चीज को झोंके से हिलाना जिसमें उसपर पड़ी हुई दूसरी चीज गिर पड़े। झटका देना। २. जोर से हिलाना। झोंका देना।

**मुहा०**—झटककर=झोंके से। तेजी से। २. चालाकी से या जबरदस्ती किसी की चीज लेना। ऐंठना।

क्रि० अ० रोग या दुःख से क्षीण होना।

**झटका**—संज्ञा पुं० [अनु०] १. झटकने की क्रिया। हलका धक्का। झोंका। २. झटके का भाव। ३. पशु-वध का वह प्रकार जिसमें पशु हथियार के एक ही आघात से काट डाला

जाता है। ४. आपत्ति, रोग या शोक आदि का आघात।

**झटकारना**—क्रि० स० दे० "झटकना"।

**झटपट**—अव्य० [ हिं० झट+अनु० पट ] अति शीघ्र। तुरंत। फौरन।

**झटिति***—क्रि० वि० [ सं० ] १. झट। चटपट। २. बिना समझे बूझे।

**झड़**—संज्ञा स्त्री० दे० "झड़ी"।

**झड़कना***—क्रि० स० दे० "झिड़कना"।

**झड़झड़ाना**—क्रि० स० १. दे० "झिड़कना"। २. दे० "झझोड़ना"।

**झड़न**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झड़ना ] १. झड़ी हुई चीज। २. झड़ने की क्रिया या भाव।

**झड़ना**—क्रि० अ० [ सं० क्षरण ] १. किसी चीज से उसके छोटे-छोटे अंगों का टूटकर गिरना। २. अधिक मान या संख्या में गिरना। ३. झाड़ा या साफ किया जाना।

**झड़प**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १ मुठभेड़। लड़ाई। २. क्रोध। गुस्सा। ३. आवेश।

**झड़पना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. आक्रमण करना। वेग से किसी पर गिरना। २. लड़ना। झगड़ना। ३ जबरदस्ती किसी से कुछ छीन लेना। झटकना।

**झड़बेरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाड़+बेर ] जंगली बेर।

**झड़वाना**—क्रि० स० [ हिं० झाड़ना का प्रे० ] झाड़ने का काम दूसरे से कराना।

**झड़ाका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] मुठ-भेड़। झड़प।

क्रि० वि० झट से। चटपट।

**झड़ाझड़**—क्रि० वि० [अनु०] लगातार।

**झड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झड़ना ] १. लगातार झड़ने की क्रिया। २. छोटी बूँदों की लगातार वर्षा। ३. लगातार बहुत सी बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना। ४. ताले के भीतर का खटका।

**झन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] धातु के टुकड़े के बजने की ध्वनि।

**झनक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] झनझन शब्द।

**झनकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १ झनकार का शब्द करना। २. क्रोध आदि में हाथ पैर पटकना। ३. दे० "झींखना"।

**झनकबात**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झनक+वात ] एक प्रकार का वायु रोग।

**झनकार**—संज्ञा स्त्री० दे० "झंकार"।

**झनझनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] झनझन शब्द होना।

क्रि० स० झनझन शब्द उत्पन्न करना।

**झनम**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का पुराना बाजा।

**झनाझन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] झंकार। झनझन शब्द।

क्रि० वि० झनझन शब्द सहित।

**झनिया**—वि० दे० "झीना"।

**झनाहट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] झन-कार। झनझनाहट।

**झप**—क्रि० वि० [ सं० झप ] जल्दी से। तुरंत।

**झपक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झपकना ] १. पलक गिरने भर का समय। बहुत थोड़ा समय। २. पलक का गिरना। ३. हलकी नींद। झपकी।

**झपकना**—क्रि० अ० [ सं० झंप ] १. पलक का गिरना। २. झपकी लेना। ऊँघना। ( क्व० ) ३. झपटना। ४. झेंपना।

**झपकाना**—क्रि० स० [ अनु० ] पलकों को बार बार बंद करना।

**झपकी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. हलकी नींद। २. आँख झपकने की क्रिया। ३. धोखा। चकमा। बह-काना।

**झपकौंहा***†—वि० [ हिं० झपना ] [ स्त्री० झपकौंही ] १. नींद से भरा हुआ (नेत्र)। झपकता हुआ। २. मस्त। नशे में चूर।

**झपट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० झंप ] झप-टने की क्रिया या भाव।

**झपटना**—क्रि० अ० [ सं० झंप ] आक्रमण करने के लिए वेग से बढ़ना। टूटना।

**झपटान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झपटना ] झपटने की क्रिया या भाव। झपट।

**झपटाना**—क्रि० स० [ हिं० झपटना का प्रे० ] किसी को झपटने में प्रवृत्त करना।

**झपटानी**—संज्ञा पु० [ हिं० झपटना ] एक प्रकार का लड़ाई का हवाई जहाज।

**झपट्टा**†—संज्ञा पुं० दे० "झपट"।

**झपताल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] संगीत में एक ताल।

**झपना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. ( पलकों का ) गिरना। २. आँखें झपकना। ३. झुकना। ४. झेंपना।

**झपलैया***—संज्ञा स्त्री० दे० "झपोला"।

**झपवाना**—क्रि० स० झपना का प्रेर० रूप।

**झपस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झपसना ] गुंजान होने का भाव।

**झपसना**—क्रि० अ० [ हिं० झँपना=ढँकना ] लता या पेड़ की डालियों का खूब घना होकर फैलना।

**झपाका**—संज्ञा पुं० [ हिं० झप ] शीघ्रता।

क्रि० वि० झप से। जल्दी।

**झपाटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० झपट ] चपेट। आक्रमण।

**झपाना**—क्रि० स० [ हिं० झपना ] १. मूँदना। बंद करना ( आँखों या पलकों का )। २. झुकाना।

**झपित**—वि० [ हिं० झपना ] १. झपा हुआ। मुँदा हुआ। २. जिसमें नींद भरी हो। उनींदा* (नेत्र)। ३. लज्जित। लज्जायुक्त।

**झपेट**—संज्ञा स्त्री० दे० "झपट"।

**झपेटना**—क्रि० स० [अनु०] आक्रमण करके दबा लेना। दबोचना। छोप लेना।

**झपेटा**†—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. चपेट। झपट। २. भूत-प्रेतादिकृत बाधा या आक्रमण।

**झप्पान**—संज्ञा पुं० दे० "झंपान"।

**झबरा**—वि० [ अनु० ] [ स्त्री० झबरी ] जिसके बहुत लंबे लंबे बिखरे हुए बाल हों।

**झबरीला**—वि० [ हिं० झबरा + ईला ] कुछ बड़ा, चारों तरफ बिखरा और घूमा हुआ (बाल)।

**झबैरा**†*—वि० दे० "झबरीला"।

**झबा**—संज्ञा पुं० दे० "झब्बा"।

**झबार, झबारि**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] टंटा। बखेड़ा। झगड़ा।

**झबिया**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झब्बा ] छोटा झब्बा। छोटा फुँदना।

**झबूकना**†—क्रि० अ० [ अनु० ] चमकना। झझकना। चौंकना।

**झब्बा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. तारों का गुच्छा जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिए लटकाया जाता है। २. एक में लगी हुई छोटी चीजों का समूह। गुच्छा।

**झमक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. चमक का अनुकरण। २. प्रकाश। उजेला। ३. झमझम शब्द। ४. नखरे की चाल।

**झमकना**—क्रि० अ० [ हिं० झमक ] १. रह रहकर चमकना। दमकना। २. झपकना। छाना। ३. झमझम शब्द होना। झनकार होना। ४. लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना। ५. अकड़ दिखलाना। ६. झमझम शब्द करना।

**झमकाना**—क्रि० स० [ हिं० झमकना का स० रूप ] १. चमकाना। चमक पैदा करना। २. आभूषण या हथियार आदि बजाना और चमकाना।

**झमकारा**—वि० [ हिं० झमझम ] बरसनेवाला ( बादल )।

**झमकीला**—वि० [ हिं० झमकना ] १. चमकीला। २. चंचल।

**झमझम**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. घुँघरुओं आदि के बजने का झमझम शब्द। छमछम। २. पानी बरसने का शब्द।

वि० जो खूब चमके। चमकता हुआ।

क्रि० वि० १. झमझम शब्द के साथ। २. चमक-दमक के साथ। झमाझम।

**झमना**—क्रि० अ० [अनु०] झुकना। दबना।

**झमा***—संज्ञा पुं० दे० "झाँवाँ"।

**झमाका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २. ठसक। नखरा।

**झमाझम**—क्रि० वि० [ अनु० ] १. उज्ज्वल कांति के सहित। दमक के साथ। २. झमझम शब्द सहित।

**झमाड़**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] झुरमुट।

**झमाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] छाना। घेरना।

क्रि० अ० दे० "झँवाना"।

**झमार**—संज्ञा पुं० [ ? ] वर्षा का झोंका।

**झमेला**—संज्ञा पुं० [ अनु० झाँव झाँव ] १. बखेड़ा। झंझट। २. भीड़-भाड़।

**झमेलिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० झमेला + इया ( प्रत्य० ) ] झमेला करनेवाला। झगड़ालू।

**झर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पानी गिरने का स्थान। निर्झर। २. झरना। सोता। चश्मा। ३. समूह। ४. तेजी। वेग। ५. झड़ी। लगातार वृष्टि। ६.* ताप।

**झरक***—संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

**झरकना***—क्रि० अ० १. दे० "झलकना"। २. दे० "झिड़कना"।

**झरझर**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] जल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।

**झरझराना**—क्रि० स० [ हिं० झरझर ] १. झरझर शब्द के साथ गिराना। २. दे० "झड़झड़ाना"।

क्रि० अ० झरझर शब्द के साथ जलना।

**झरन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झरना ] १. झरने की क्रिया। २. वह जो कुछ झरकर निकला हो। ३. दे० "झड़न"।

**झरना**†*—क्रि० अ० [ सं० क्षरण ] १. दे० "झड़ना"। २. ऊँची जगह से सोते का गिरना।

संज्ञा पुं० [ सं० झर ] ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जल-प्रवाह। सोता। चश्मा।

संज्ञा पुं० [सं० क्षरण] १. एक प्रकार की छलनी जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है। २. लंबी डाँड़ी की छेददार चिपटी करछी। पौना।
वि० [स्त्री० झरनी] झरनेवाला। जो झरता हो।

**झरनि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झरन"।

**झरवा***—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. झोंका। झकोर। २. वेग। तेज़ी। ३ चोंड़। टेक। ४. चिक। चिलमन। परदा। ५. दे० "झड़प"।

**झरपना***†—क्रि० अ० [अनु०] १. झोंका देना। बौछार मारना। २. दे० "झड़पना।"

**झरसना***—क्रि० अ० दे० "झुल-सना"।

**झरहरना**—क्रि० अ० [अनु०] झरझर शब्द करना।

**झरहरा**†—वि० दे०"झँझरा"।

**झरहराना**—क्रि० अ० [अनु०] हवा के झोंके से पत्तों का शब्द करना।
क्रि० स० झटकना। झाड़ना।

**झराझर**—क्रि० वि० [अनु०]१. झरझर शब्द सहित। २. लगातार। बराबर। ३. वेग सहित।

**झरिफ***—संज्ञा पुं० [हिं० झरप] चिलमन। चिक।

**झरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १. पानी का झरना। स्रोत। चश्मा। २. वह किराया या कर जो किसी बाजार या सट्टी में जाकर सौदा बेचनेवालों से प्रतिदिन लिया जाता है। ३. दे० "झड़ी"।

**झरोखा**—संज्ञा पुं० [अनु० झरझर+गोखा] हवा या रोशनी के लिए, दीवारों में बनी हुई झँझरीदार छोटी खिड़की। गवाक्ष।

**झल**—संज्ञा पुं० [सं० ज्वल=ताप] १. दाह। जलन। आँच। २. किसी विषय की उत्कट इच्छा। उग्र कामना। ३. क्रोध। गुस्सा। ४. समूह।

**झलक**—संज्ञा स्त्री० [सं० झल्लिका] १. चमक। दमक। आभा। २. आकृति का आभास। प्रतिबिंब। ३. वह प्रधान रंगत या आभा जो किसी समूचे चित्र में व्याप्त हो।

**झलकदार**—वि० [हिं० झलक+फ़ा० दार] चमकीला।

**झलकना**—क्रि० अ० [सं० झल्लिका] १ चमकना। दमकना। २. कुछ कुछ प्रकट होना। आभास होना।

**झलकनि***-संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।

**झलका**—संज्ञा पुं० [सं० ज्वल=जलना] शरीर में पड़ा हुआ छाला। फफोला।

**झलकाना**—क्रि० स० [हिं० झलकना का स०] १. चमकाना। दमकाना। २. दरसाना। कुछ आभास देना।

**झलझल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झलकना] चमक। दमक।
क्रि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ।

**झलझलाना**—क्रि० अ० [अनु०] चमकना।
क्रि० स० चमकाना। चमचमाना।

**झलझलाहट**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमक। दमक।

**झलना**—क्रि० स० [हिं० झलझल (हिलना)] हवा करने के लिए कोई चीज हिलाना।
क्रि० अ० १. इधर-उधर हिलना। † २. शेखी बघारना। डींग हाँकना। ३ "झालना" का अ० रूप। ४. दे० "झेलना"।

**झलमल**—संज्ञा पुं० [ज्वल=दीप्ति] १. अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला। २. चमक-दमक।
क्रि० वि० दे० "झलझल"।

**झलमला**—वि० [हिं० झलमलाना] चमकीला।

**झलमलाना**—क्रि० अ० [हिं० झल-मल] १. रह रह कर चमकना। चमचमाना। २. निकलते हुए प्रकाश का हिलना डोलना।
क्रि० स० किसी स्थिर ज्योति या लौ को हिलाना-डुलाना।

**झलरा**†—संज्ञा पुं० [हिं० झालर] एक प्रकार का पकवान जिसे झालर भी कहते हैं।

**झलराना***†—क्रि० अ० [हिं० झालर] फैलकर छाना।

**झलवाना**—क्रि० स० [हिं० झलना] झलने या झालने का काम दूसरे से कराना।

**झला***†—संज्ञा पुं० [हिं० झड़] १. हलकी वर्षा। २. झालर, तोरण या बंदनवार आदि। ३. पंखा। बेना। ४. समूह।

**झलाझल**—वि० [अनु०] खूब चम-चमाता हुआ। चमाचम।

**झलाझली**—वि० [अनु०] चमक-दार।
संज्ञा स्त्री० झलाझल का भाव।

**झलाबोर**—संज्ञा पुं० [हिं० झल-मल] १. कलाबत्तू का बुना हुआ साड़ी आदि का चौड़ा अंचल। २. कारचोबी।
वि० चमकीला। चमकदार।

**झलामला**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झल-झल=चमक] चमक। दमक।
वि० चमकीला।

**झल्ल**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पागल-पन।

**झलरा**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] १. बड़ा टोकरा। २ वर्षा। वृष्टि। ३. बौछार।
†[ हिं॰ झल्लाना ] १. पागल। २. बेवकूफ।

**झलाना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ झल ] चिढ़ना। खिजलाना।
क्रि॰ स॰ चिढ़ाना। खिझाना।

**झवा***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "झाँवा"।

**झष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. मत्स्य। मछली। २.मकर। मगर। ३. ताप। गरमी। ४. वन। ५. मीन राशि। ६. दे॰ "झख"।

**झषकेतु**—संज्ञा पुं॰ [ स॰ झषकेतन] कामदेव।

**झसना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "झँसना"।

**झहनना***—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] १. झन्नाटे या सन्नाटे में आना। २. (रोएँ का) खड़ा होना। ३. झन-झन शब्द होना।

**झहनाना**—क्रि॰ स॰ [ अनु॰ ] १. झहनना का सकर्मक रूप। २.झनकार करना।

**झहरना***—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] १. झड़ने का सा या झरझर शब्द करना। २. शिथिल पड़ना। ढीला होना।
क्रि॰ स॰ झिड़कना। झल्लाना।

**झहराना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] १. शिथिल होकर या झरझर शब्द के साथ गिरना। २. झल्लाना। खिजलाना। ३. हिलाना।

**झाँई**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ छाया ] १. परछाईं। छाया। झलक। २. अंधकार। अँधेरा। ३. धोखा। छल।
**मुहा॰**—झाँई बताना=धोखा देना।
४. प्रतिघात। प्रतिध्वनि। ५. एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्त-विकार से मनुष्यों के शरीर पर पड़ जाते हैं।

**झाँक**—संज्ञा स्त्री॰ [ स॰ झाँकना ] झाँकने की क्रिया या भाव।

**झाँकना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ अध्यक्ष ] १. ओट की बगल में से देखना। २. इधर-उधर झुककर देखना।

**झाँकनी**†*—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "झाँकी"।

**झाँका**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "झरोखा"।

**झाँकी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ झाँकना ] १.झाँकने की क्रिया या भाव। दर्शन। अवलोकन। २. दृश्य। ३. झरोखा।

**झाँख**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] एक प्रकार का हिरन।

**झाँखना**†*—क्रि॰अ॰दे॰ "झींखना"।

**झाँखर**—संज्ञा पु॰ दे॰ "झलाड़"।

**झाँगला**—वि॰ [ देश॰ ] ढीला ढाला (कपड़ा)।

**झाँगा**†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "झगा"।

**झाँझ**—संज्ञा स्त्री॰ [ झनझन से अनु॰] १.मजीरे की तरह के काँसे से ढले हुए दो बड़े गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जिन्हें पूजन आदि के समय बजाते हैं। झाल। २. क्रोध। गुस्सा। ३. पाजीपन। शरारत। ४. झार। ५. दे॰ "झाँझन"।

**झाँझड़ी***†—संज्ञा स्त्री॰दे॰"झाँझन"।

**झाँझन**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैंजनी। पायल।

**झाँझर**†*—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] १. झाँझन। पैंजनी। २. छलनी।
वि॰ १. पुराना। जर्जर। २. छेद-वाला।

**झाँझरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] १. झाँझ बाजा। झाल। २. झाँझन नामक गहना।

**झाँझिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ झाँझ ] वह जो झाँझ बजाता हो।

**झाँप**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰झाँपना ] १. वह जिससे कोई चीज ढाँकी जाय। २. नींद। झपकी। ३. पर्दा। चिक।
संज्ञा पुं॰ [ सं॰ झंप ] उछल-कूद।

**झाँपना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ उत्थापन ] पकड़कर दबा लेना। छाप लेना।

**झाँपना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰उत्थापन ] १. ढाँकना। आड़ में करना। २. झेंपना। लजाना। शरमाना।

**झाँपी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ झाँपना ] १. ढाँकने की टोकरी। २. मूँज की पिटारी।

**झाँवना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ झाँवाँ ] झाँवें से रगड़कर (हाथ पैर आदि) धोना।

**झाँवर**†—वि॰ [ सं॰ श्यामल ] १. झाँवे के रंग का। कुछ काला। २. मलिन। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. शिथिल। मंद। सुस्त।

**झाँवली**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ झाँई=छाया ] १. झलक। २. आँख की कनखी।

**झाँवाँ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ झामक ] जली हुई ईंट जिससे रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।

**झाँसना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ झाँसा ] धोखा देना। ठगना।

**झाँसा**—संज्ञा पुं॰[सं॰अध्यास] बहकाने की क्रिया। धोखा-धड़ी। दम-बुत्ता।
**यौ॰**—झाँसा-पट्टी=धोखा-धड़ी।

**झा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ उपाध्याय ] मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

**झाऊ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ झाबुक ] एक प्रकार का छोटा झाड़।

**झाग**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ गाज ] पानी आदि का फेन। गाज।

**झगड़ुआ†**—संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।

**झाड़**—संज्ञा पुं० [ सं० झाट ] १. वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियाँ जड़ या जमीन के बहुत पास से निकल कर चारों ओर खूब छितराई हुई हों। २. झाड़ के आकार का वह रोशनी करने का सामान जो छत में लटकाया या जमीन पर बैठकी की तरह रखा जाता है।

यौ०—झाड़-फ़ानूस=शीशे के झाड़, हँडिया और गिलास आदि।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाड़ना ] १. झाड़ने की क्रिया। २. फटकार। डाँट-डपट। ३. मंत्र से झाड़ने की क्रिया।

यौ०—झाड़ फूँक=मंत्रोपचार।

**झाड़खंड**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़+खंड ] जंगल। वन।

**झाड़ झंखाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़+झंखाड़ ] १. काँटेदार झाड़ियों का समूह। २. निकम्मी चीजें।

**झाड़दार**—वि० [ हिं० झाड़+फ़ा० दार ] १. सघन। घना। २. कँटीला। काँटेदार।

**झाड़न**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाड़ना ] १. वह जो झाड़ने पर निकले। २. वह कपड़ा जिससे कोई चीज झाड़ी जाय।

**झाड़ना**—क्रि० सं० [ सं० क्षरण या चालन ] १. निकालना। दूर करना। हटाना। छुड़ाना। २. अपनी योग्यता दिखलाने के लिए गढ़-गढ़कर बातें करना।

क्रि० स० [ सं० क्षरण ] १. किसी चीज पर पड़ी हुई गर्द आदि साफ करने के लिए उसको उठाकर झटका देना। झटकारना। फटकारना। २. झटके से किसी चीज पर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीज गिराना या हटाना। ३. बल या युक्ति-पूर्वक किसी से धन ऐंठना। झटकना। (क्व०) ४. रोग या प्रेत बाधा आदि दूर करने के लिए किसी को मंत्र आदि से फूँकना। ५. फटकारना। डाँटना।

**झाड़ फूँक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाड़ना+फूँकना ] भूत-प्रेत आदि की बाधाओं अथवा रोगों को दूर करने के लिए मंत्र आदि पढ़कर झाड़ना फूँकना।

**झाड़बुहार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाड़ना+बुहारना ] झाड़ना और बुहारना। सफाई।

**झाड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़ना ] १. झाड़ फूँक। २. तलाशी। ३. मल। गुह। मैला। ४. पाखाना। टट्टी *

**झाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झाड़ ] १. छोटा झाड़। पौधा। २. छोटे पेड़ों का समूह।

**झाड़ू**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़ना ] १. लंबी सींकों आदि का समूह जिससे जमीन या फर्श झाड़ते हैं। कूँचा। बोहारी। सोहनी।

मुहा०—झाड़ू फिरना=कुछ न रहना। झाड़ू मारना=घृणा या निरादर करना। २. पुच्छलतारा। केतु।

**झाड़ूबरदार**—वि० [ हिं० झाड़+फ़ा० बरदार ] झाड़ू देनेवाला। चमार।

**झापड़**—संज्ञा पुं० [ सं० चपट ] थप्पड़। तमाचा।

**झाबदार†**—वि० [ ? ] परिपूर्ण। भरा पूरा।

**झाबर**—संज्ञा पुं० दे० "झाबा"।

**झाबा**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाँपना ] १. टोकरा। खाँचा। २. दे० "झब्बा"।

**झामा***—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. झब्बा। गुच्छा। २. घुड़की। डाँट। डपट। ३. धोखा। छल।

**झामर**—संज्ञा पुं० दे० "झूमर"।

**झामरा***—वि० [ हिं० झाँवला ] मैला। मलिन।

**झामी†**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाम ] धोखेबाज।

**झायँ झायँ**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. झनकार। झन् झन् शब्द। २. वह शब्द जो किसी सुनसान स्थान में हो। हवा का शब्द।

**झावँ झावँ**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बकवाद। बकबक। २. हुज्जत। तकरार।

**झार†**—वि० [ सं० सर्व ] १. एक मात्र। निपट। केवल। २. कुल। सब। समस्त।

संज्ञा पुं० समूह। झुंड।

संज्ञा स्त्री० [ सं० झाला+ताप ] १. दाह। जलन। २. ईर्ष्या। डाह। ३. ज्वाला। लपट। आँच। ४. झाल। चरपरापन।

**झारखंड**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़+खंड ] १. एक पहाड़ जो वैद्यनाथ से होता हुआ जगन्नाथपुरी तक चला गया है। २. दे० "झाड़खंड"।

**झारना**—क्रि० स० [ सं० झर ] १. बाल साफ करने के लिए कंघी करना। २. छाँटना। अलग करना। ३. दे० "झाड़ना"।

**झारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० झाड़ना ] १. सूप। २. झरना। ३. दे० "झाड़ा"।

**झारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झरना ] एक प्रकार का लंबोतरा टोंटीदार पात्र।

**झाल**—संज्ञा पुं० [ सं० झल्लक ] झाँझ नामक बाजा।

संज्ञा पुं० [ देश० ] झालने की क्रिया या भाव।

संज्ञा स्त्री० [ सं० झाला ] १.

राहट। तीतापन। तीक्ष्णता। २. तरंग। लहर।
संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।
वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "झार"।

**झालना**—क्रि० स० [?] १. धातु की बनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना। २. पीने की चीजों को ठंढा करने के लिए बरफ या शोरे में रखना।

**झालर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झल्लरी] १. किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिए बनाया या लगाया हुआ वह हाशिया जो लटकता रहता है। २. झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज। ३. झाँझ।
संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का पकवान जिसे झलरा भी कहते हैं।

**झालरना**-क्रि० अ० दे० 'झलराना'।

**झाला**—संज्ञा पुं० [अनु०] १. सितार या बीन बजाते समय बीच में पैदा की जानेवाली एक प्रकार की सुंदर झंकार। २. इस प्रकार की झंकार के साथ बजाया जानेवाला टुकड़ा।

**झाली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झड़] पानी की झड़ी।

**झिंगवा**—संज्ञा स्त्री० [सं० चिंगट] एक प्रकार की छोटी मछली।

**झिंगुली***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झगा"।

**झिंझिया**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] छेदोंवाला वह घड़ा जिसमें दीआ बालकर कुआर के महीने में लड़कियाँ घुमाती हैं।

**झिंझोटी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक रागिनी।

**झिझकना**-क्रि० अ० दे० "झझकना"।

**झिझकारना**—क्रि० स० १. दे० "झझकारना"। २. दे० "झटकना"।

**झिटका**†—संज्ञा पुं० दे० "झटका"।

**झिड़कना**—क्रि० स० (अनु०) १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना। २. अलग फेंक देना। झटकना।

**झिड़की**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झिड़कना] वह बात जो झिड़ककर कही जाय। डाँट। फटकार।

**झिनवा**—संज्ञा पुं० [देश०] महीन चावल का धान।

**झिपना**—क्रि० अ० दे० "झेंपना"।

**झिपाना**†—क्रि० स० [हिं झेंपना का स० रूप] लज्जित करना। शरमिंदा करना।

**झिरझिरा**—वि० [हिं० झरना] झँझरा। झीना। पतला। बारीक (कपड़ा)।

**झिरना***—क्रि० अ० दे० "झरना"।

**झिरहर**†—वि० दे० "झँझरा"।

**झिराना**—क्रि० अ० दे० "झुराना"।

**झिरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झरना] १. छोटा छेद जिसमें से कोई चीज निकल जाय। २. पानी का छोटा सोता। ३. पाला। तुषार।

**झिलँगा**—संज्ञा पुं० [हिं० ढीला + अंग] ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
संज्ञा पुं० दे० "झींगा"।

**झिलना**—क्रि० अ० [?] १. बलपूर्वक प्रवेश करना। धँसना। घुसना। २. तृप्त होना। अघा जाना। ३. मग्न होना। तल्लीन होना। ४. झेला जाना। सहा जाना।

**झिलम**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिली] लोहे का बना एक झँझरीदार पहनावा जो लड़ाई में सिर और मुँह पर पहना जाता था। टोप। खोद।

**झिलमिल**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. हिलता हुआ प्रकाश। २. रह रहकर प्रकाश के घटने बढ़ने की क्रिया। ३. एक प्रकार का बढ़िया बारीक और मुलायम कपड़ा। ४. युद्ध में पहनने का लोहे का कवच। झिलम।
वि० रह रहकर चमकता हुआ।

**झिलमिला**—वि० [अनु०] १. जो गफ या गाढ़ा न हो। झँझरा। झीना। २. चमकता हुआ। ३. जो बहुत स्पष्ट न हो।

**झिलमिलाना**-क्रि० अ० [अनु०] [भाव० झिलमिलाहट] १. रह रहकर चमकना। २. प्रकाश का हिलना।
क्रि० स० १. कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि वह रह रहकर चमके। २. हिलाना।

**झिलमिली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झिलमिल] १. बहुत सी आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों आदि में प्रकाश या वायु आने के लिए जड़ा रहता है। खड़खड़िया। २. चिक। चिलमन।

**झिलाना**—क्रि० स० [हिं० झेलना का प्रे०] दूसरे को झेलने के लिए बाध्य करना।

**झिल्लड़**—वि० [हिं० झिल्ली] पतला और झँझरा। गफ का उलटा। (कपड़ा)

**झिल्ली**—संज्ञा पुं० [सं०] झींगुर।
संज्ञा स्त्री० [सं० चैल] ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े।

**झींकना**—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

**झींका**—संज्ञा पुं० [देश०] उतना अन्न जितना एक बार चक्की में डाला जाता है।

**झींख**—संज्ञा स्त्री० [हिं० खीज]

झींखने का भाव। कुढ़न।

**झींखना**—क्रि० अ० [ हिं० खीजना ] १. बहुत पछताना और कुढ़ना। खीजना। २. दुखड़ा रोना। विपत्ति का हाल सुनाना।

संज्ञा पुं० १. झींखने की क्रिया या भाव। २. दुःख का वर्णन। दुखड़ा।

**झींगा**—संज्ञा पुं० [ सं० चिंगट ] १. एक प्रकार की मछली। २. एक प्रकार का धान।

**झींगुर**—संज्ञा पुं० [ अनु० झीं + कर ] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज झीं झीं होती है। झुरझुरा। झंझीरा। झिल्ली।

**झींसी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० या हिं० झीना ] छोटी छोटी बूँदों की वर्षा। फुहार।

**झीखना**—क्रि० अ० दे० "झींखना"।

**झीना**—वि० [ सं० क्षीण ] १. बहुत महीन। बारीक। पतला। २. जिसमें बहुत से छेद हों। झँझरा। ३. दुबला। दुर्बल। [ स्त्री० झीनी ]

**झील**—संज्ञा स्त्री० [ सं० क्षीर ] १. किसी बड़े मैदान में बड़ा प्राकृतिक जलाशय। २. बहुत बड़ा तालाब। ताल। सर।

**झीलर**—संज्ञा पुं० [ हिं० झील ] छोटी झील।

**झीवर**—संज्ञा पुं० [ सं० धीवर ] मल्लाह।

**झुँझलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] [ भाव० झुँझलाहट ] खिजलाना। किटकिटाना। चिड़चिड़ाना।

**झुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० यूथ ] बहुत से मनुष्यों या पशुओं आदि का समूह। वृंद। गरोह।

**झुकना**—क्रि० अ० [ सं० युज् ] १. ऊपरी भाग का नीचे की ओर लटकना। निहुरना। नवना।

**मुहा०**—झुक झुक पड़ना=नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खड़ा न रह सकना। २. किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर प्रवृत्त होना। ३. किसी खड़े या सीधे पदार्थ का किसी ओर प्रवृत्त होना। ४. प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होना। ५. नम्र होना। विनीत होना। ६. क्रुद्ध होना। रिसाना।

**झुकमुख**†—संज्ञा पुं० दे० "झुटपुटा"।

**झुकराना**—क्रि० अ० [ हिं० झोंका ] झोंका खाना।

**झुकवाना**—क्रि० स० [ हिं० झुकना ] झुकाने का काम दूसरे से कराना।

**झुकाना**—क्रि० स० [ हिं० झुकना ] १. किसी खड़ी चीज के ऊपरी भाग को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुराना। नवाना। ५. किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों को किसी ओर प्रवृत्त करना। ३. प्रवृत्त करना। रुजू करना। ४. नम्र करना। विनीत बनाना।

**झुकामुखी**—संज्ञा स्त्री० दे० "झुटपुटा"।

**झुकाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० झुकना ] १. किसी ओर लटकने, प्रवृत्त होने या झुकने की क्रिया या भाव। २. ढाल। उतार। ३. मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति।

**झुग्गी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] झोपड़ी। कुटिया।

**झुगिया***—संज्ञा स्त्री० दे० "झुग्गी"।

**झुटपुटा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] ऐसा समय जब कि कुछ अंधकार और कुछ प्रकाश हो। झुकमुख।

**झुटुँग**—वि० [ हिं० झोंटा ] जिसके खड़े खड़े और बिखरे हुए बाल हों। झोंटेवाला।

**झुठकाना**—क्रि० स० [ हिं० झूठ ] झूठी बात कहकर विश्वास दिलाना।

**झुठलाना**—क्रि० स० [ हिं० झूठ+लाना (प्रत्य०) ] १. झूठा ठहराना। झूठा बनाना। २. झूठ कहकर धोखा देना।

**झुठाई***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूठ+आई ] झूठ का भाव। झूठापन। असत्यता।

**झुठाना**—क्रि० स० [ हिं० झूठ+आना ( प्रत्य० ) ] झूठा ठहराना।

**झुनक**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] नुपुर का शब्द।

**झुनकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] झुन-झुन शब्द करना।

**झुनकार**†—वि० [ हिं० झीना ] [ स्त्री० झुनकारी ] पतला। महीन। बारीक।

**झुनझुन**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] नूपुर आदि के बजने का शब्द।

**झुनझुना**—संज्ञा पुं० [ हिं० झुनझुन से अनु० ] एक प्रकार का खिलौना जिसे हिलाने से झुन झुन शब्द होता है। घुनघुना।

**झुनझुनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] झुन झुन शब्द होना।

क्रि० स० झुन झुन शब्द उत्पन्न करना।

**झुनझुनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झुनझुनाना ] १. हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट। २. एक प्रकार का रोग जिसमें ऐसी सनसनाहट होती है।

**झुपरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "झोपड़ी"।

**झुबझुबी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कान में पहनने का एक गहना।

**झुमका**—संज्ञा पुं० [ हिं० झूमना ] छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना।

**झुमाना**— क्रि० स० [ हिं० झूमना का स० रूप ] किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।

**झुरझुरी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] कँप-कँपी।

**झुरना**—क्रि० अ० [ हिं० धूल या चूर ] १. सूखना। दे० "झुराना"। २. बहुत अधिक दुःखी होना या शोक करना। ३. अधिक चिंता, रोग या परिश्रम आदि के कारण दुर्बल होना। घुलना।

**झुरमुट**—संज्ञा पुं० [ सं० झुंट= झाड़ी ] १ एक ही में मिले हुए या पास पास कई झाड़ या क्षुप। २. बहुत से लोगों का समूह। गरोह। ३. चादर आदि से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।

**झुरवाना**—क्रि० स० [ हिं० झुरना ] सुखाने का काम दूसरे से कराना।

**झुरसना***†—क्रि० अ० दे० "झुल-सना"।

**झुराना**†—क्रि० स० [ हिं० झुरना ] सुखाना।

क्रि० अ० १. सूखना। २. दुःख या भय से घबरा जाना। ३. दुबला होना।

**झुरावन**†—संज्ञा पुं० [ हिं० झुराना] सूखने के कारण कम होनेवाला अंश।

**झुर्री**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झुरना] सिकु-ड़न। सिलवट। शिकन।

**झुलना**†—संज्ञा पुं० दे० "झूला"। वि० [ हिं० झूलना ] झूलनेवाला।

**झुलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूलना ] १. तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ में लटकाती हैं। २. दे० "झूमर"।

**झुलमुला**†—वि० दे० "झिलमिल"।

**झुलस**—संज्ञा स्त्री० दे० "झुलसन"।

**झुलसन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झुलसना] १. झुलसने की क्रिया या भाव। २. शरीर झुलसनेवाली गरमी।

**झुलसना**—क्रि० अ० [ सं० ज्वल+ अंश ] १. ऊपरी भाग का इस प्रकार अंशतः जल जाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. अधिक गरमी के कारण किसी चीज के ऊपरी भाग का सूखकर काला पड़ जाना।

क्रि० स० १. ऊपरी भाग या तल को इस प्रकार अंशतः जलाना कि उसका रंग काला पड़ जाय। झौंसना। २. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को सुखा-कर अधजला कर देना।

**झुलसवाना**—क्रि०स० [हिं० झुलसना का प्रे० ] झुलसने का काम दूसरे से कराना।

**झुलसाना**—क्रि० स० १. दे० "झुल-सना"। २. दे० "झुलसवाना"।

**झुलाना**—क्रि० स० [ हिं० झूलना ] १. किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। २. कोई चीज देने या कोई काम करने के लिए बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना।

**झुल्ला**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का कुरता।

**झुलावना***†— क्रि० स० दे० "झुलाना"।

**झुहिरना**†—क्रि० स० [ ? ] लदना। लादा जाना।

**झूँक***†— संज्ञा पुं० दे० "झोंका"। संज्ञा स्त्री० दे० "झोंक"।

**झूँकना**†—क्रि० स० १. दे० "झोंकना"। २. दे० "झखना"। ३. दे० "झुकना"।

**झूँखना***†—क्रि० अ० दे०"झींखना"।

**झूँझल**—संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझला-हट"।

**झूँसना**†—क्रि० अ० और स० दे० "झुलसना"।

**झूँकटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूट+ काठ ] छोटी झाड़ी।

**झूकना***—क्रि० अ० [हिं० झोंकना] गिरना। झोंका जाना।

**झूँका***†—संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।

**झूझना**—क्रि० अ० दे० "जूझना"।

**झूठ**—संज्ञा पुं० [ सं० अयुक्त, प्रा० अजुत्त ] वह बात जो यथार्थ न हो। असत्य। सच का उलटा।

**मुहा०**—झूठ सच कहना या लगाना= झूठी निंदा करना। शिकायत करना।

**झूठमूठ**—क्रि० वि० [ हिं० झूठ+ मूठ (अनु०)] बिना किसी वास्तविक आधार के। यों ही। व्यर्थ।

**झूठा**—वि० [ हिं० झूठ ] १. जो सत्य न हो। मिथ्या। असत्य। २. झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी। ३. जो केवल रूप-रंग आदि में असल चीज के समान हो, पर गुण आदि में नहीं। नकली। ४. जो (पुरजा या अंग आदि) बिगड़ जाने के कारण ठीक ठीक काम न दे सके।

वि० दे० "जूठा"।

**झूठों**—क्रि० वि० [ हिं० झूठा ] १. झूठ-मूठ। यों ही। २. नाममात्र के लिए।

**झूना**†— वि० दे० "झीना"।

**झूम**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूमना ] १. झूमने की क्रिया या भाव । २. ऊँघ । झपकी । ( क्व० )

**झूमक**—संज्ञा पुं० [ हिं० झूमना ] १. एक प्रकार का गीत जो होली के दिनों में स्त्रियाँ झूम झूमकर एक घेरे में नाचती हुई गाती हैं । झूमर । झूमकरा । २. इस गीत के साथ होने वाला नृत्य । ३. झूमर नामक पूरबी गीत । ४. गुच्छा । ५. चाँदी, सोने आदि के छोटे झुमकों या मोतियों आदि के गुच्छों की वह कतार जो साड़ी आदि में सिर पर पड़नेवाले भाग में लगी रहती है । ६. दे० "झुमका" ।

**झूमकसाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूमक+साड़ी ] वह साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हों ।

**झूमका**—संज्ञा पुं० १. दे० "झुमका" । २. दे० "झूमक" ।

**झूमड़**—संज्ञा पुं० दे० "झूमर" ।

**झूमड़ झामड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० झूमड़ ] ढकोसला । झूठा प्रपंच ।

**झूमना**—क्रि० अ० [ सं० झंप ] १. बार बार आगे-पीछे, नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना । झोंके खाना ।

मुहा०—बादल झूमना=बादलों का एकत्र होकर झुकना ।

२. सिर और धड़ को बार बार आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना । ( मस्ती, प्रसन्नता, नींद या नशे में । )

**झूमर**—संज्ञा पुं० [हिं० झूमना] १. सिर में पहनने का एक प्रकार का गहना । २. कान में पहनने का झुमका । ३. झूमक नाम का गीत । ४. इस गीत के साथ होनेवाला नाच । ५. बहुत से लोगों का साथ मिलकर गोल घेरे में घूम-घूमकर नाचना । ६. झूमरा नामक ताल । ७. एक प्रकार का काठ का खिलौना ।

**झूर**†—वि० [ हिं० चूर ] सूखा । खुश्क ।

वि० [ हिं० झूठ ] १. खाली । २. व्यर्थ ।

संज्ञा स्त्री० १. जलन । दाह । २. दुःख ।

**झूरा**†—वि० [ हिं० झूर ] १. सूखा । खुश्क । २. खाली ।

संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव । अवर्षण । २. न्यूनता । कमी ।

**झूरे**†—क्रि० वि० [ हिं० झूर ] व्यर्थ । निष्प्रयोजन । झूठमूठ ।

वि० दे० "झूर" ।

**झूल**—संज्ञा पुं० [ हिं० झूलना ] १. वह कपड़ा जो शोभा के लिए चौपायों पर डाला जाता है । २. वह कपड़ा जो पहनने पर भद्दा जान पड़े । (व्यंग्य) * ३. दे० "झूला" ।

**झूलन**—संज्ञा पुं० [ हिं० झूलना ] वर्षा ऋतु का एक उत्सव जिसमें मूर्तियों को झूले पर बैठाकर झुलाते हैं । हिंडोला ।

**झूलना**—क्रि० अ० [ सं० दोलन ] १. किसी लटकी हुई वस्तु के सहारे नीचे की ओर लटककर बार बार आगे पीछे या इधर-उधर होना । लटककर बार बार इधर-उधर हिलना । २. झूले पर बैठकर पेंग लेना । ३. किसी कार्य्य के होने की आशा में अधिक समय तक पड़े रहना ।

वि० झूलनेवाला । जो झूलता हो ।

संज्ञा पुं० १. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ और अंत में गुरु लघु होते हैं । २. इसी छंद का दूसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में ३७ मात्राएँ और अंत में यगण होता है । ३. हिंडोला । झूला ।

**झूलरि**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूलना ] झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका ।

**झूला**—संज्ञा पुं० [ सं० दोला ] १. पेड़ की डाल या छत आदि में लटकाई हुई दोहरी या चौहरी रस्सी आदि से बँधी पटरी जिस पर बैठकर झूलते हैं । हिंडोला । २. बड़े रस्सों जंजीरों या तारों आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल । ३. वह बिस्तर जिसके दोनों सिरे रस्सियों में बाँधकर दोनों ओर दो ऊँची खूँटियों आदि में बाँध दिए गए हों । ४. देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता । ५. झोंका । झटका ।

**झेंपना, झेपना**—क्रि० अ० [ हिं० झिपना ] शरमाना । लजाना । लज्जित होना ।

**झेर***†—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० देर ] १. विलंब । देर । २. बखेड़ा । झगड़ा ।

**झेरना***†—क्रि० स० [ हिं० झेलना] झेलना ।

क्रि० स० [हिं० छेड़ना] शुरू करना ।

**झेरा**—संज्ञा पुं० [ ? ] झंझट । बखेड़ा ।

**झेल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झेलना ] १. तैरने आदि में हाथ पैर से पानी हटाने की क्रिया । २. हलका धक्का या हिलोरा । ३. झेलने की क्रिया या भाव ।

संज्ञा स्त्री० विलंब । देर ।

**झेलना**—क्रि० स० १. ऊपर लेना । सहना । बरदाश्त करना । २. तैरने में हाथ-पैर से पानी हटाना । ३. पानी में पैठना । हेलना । ४. ठेलना । ढकेलना । ५. पचाना । हजम करना ।

६. ग्रहण करना । मानना । ७. क्रीड़ा करना ।

**झोंक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झुकना ] १. झुकाव । प्रवृत्ति । २. बोझ । भार । ३. प्रबल गति । वेग । तेजी । रव । ४. किसी काम का धूमधाम से उठान ५. ठाट । सजावट ।

**यौ०**—झोंक झोंक=१. ठाट-बाट । धूम-धाम । २. प्रतिद्वंद्विता । विरोध । ६. पानी का हिलोरा । ७. दे० "झोंका" ।

**झोंकना**—क्रि० स० [ हिं० झोंक ] १. किसी वस्तु को आग में फेंकना ।

**मुहा०**—भाड़ झोंकना=तुच्छ काम करना । २. जबरदस्ती आगे की ओर बढ़ाना । ढकेलना । ठेलना । ३. अंधाधुंध खर्च करना । ४. आपत्ति, दुःख या भय के स्थान में कर देना । बुरी जगह ठेलना । ५. बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना । ६. बिना विचारे दोष आदि मढ़ना ।

**झोंकवाना**—क्रि० स० [ हिं० झोंकना का प्रे० ] झोंकने का काम दूसरे से कराना ।

**झोंका**—संज्ञा पुं० [ हिं० झोंक ] १. झटका । धक्का । रेला । झपट्टा । २. हवा का झटका या धक्का । ३. हवा का बहाव । झकोरा । ४. पानी का हिलोरा । ५. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया । ६. ठाठ। सजावट ।

**झोंकाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंकना] झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

**झोंकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झोंक ] १. उत्तरदायित्व । जवाबदेही । २. अनिष्ट या हानि की आशंका । जोखों । जोखिम ।

**झोंझ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. खोता । घोंसला । २. कुछ पक्षियों ( जैसे ढेक, गीध ) के गले की थैली या लटकता हुआ मांस । ३. खुजली । सुरसुराहट

**झोंझल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झुँझलाना ] झुँझलाहट । क्रोध । कुढ़न ।

**झोंटा**—संज्ञा पुं० [ सं० जूट ] बड़े-बड़े बालों का समूह । २. पतली लंबी वस्तुओं का वह समूह जो एक बार हाथ में आ सके । जुट्टा ।

संज्ञा पुं० [ हिं० झोंका ] वह धक्का जो झूले को इधर-उधर हिलाने के लिए दिया जाता है । झोंका । पेंग ।

**झोंटी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झोंटा" ।

**झोंपड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० छोपना ] स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी ] वह बहुत छोटा सा घर जो गाँवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर और घास-फूस से छाकर बना लेते हैं । कुटी । पर्णशाला ।

**मुहा०**—अंधा झोंपड़ा=पेट । उदर ।

**झोंपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० झोंपड़ा] छोटा झोंपड़ा । कुटिया ।

**झोंपा**—संज्ञा पुं० [ हिं० झब्बा ] झब्बा । गुच्छा ।

**झोंटिंग**—वि० [ हिं० झोंटा ] जिसके सिर पर बड़े बड़े और खड़े बाल हों । झोंटेवाला ।

संज्ञा पुं० भूत-प्रेत या पिशाच आदि ।

**झोरई**†—वि० [ हिं० झोल ] रसेदार । ( तरकारी )

**झोरना**—क्रि० स० [ सं० दोलन ] १. झटका देकर हिलाना या कँपाना । २. किसी चीज को इस प्रकार झटका देकर हिलाना जिसमें उसके साथ लगी हुई दूसरी चीजें गिर पड़ें । ३. इकट्ठा करना । एकत्र करना ।

**झोरा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "झोली" ।

**झोरी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झोली ] १. झोली । २. पेट । झोझर । ओझर । ३. एक प्रकार की रोटी ।

**झोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० झालि ] १. तरकारी आदि का गाढ़ा रसा । शोरबा । कढ़ी आदि की तरह पकाई हुई पतली लेई । ३. माँड़ । पीच । ४. धातु पर का मुलम्मा ।

संज्ञा पुं० [ हिं० झूलना ] १. पहने या ताने हुए कपड़ों आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाता है । २. इस प्रकार झूलने या लटकने का भाव या क्रिया । तनाव या कसाव का उलटा । ३. पल्ला । आँचल । ४.परदा । ओट । आड़ ।

वि० १. जो कसा या तना न हो । ढीला । २.निकम्मा । खराब । बुरा ।

संज्ञा पुं० १.गलती । भूल । २. त्रुटि । कमी ।

संज्ञा पुं० [ हिं० झिल्ली ] १. वह झिल्ली या थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे या अंडे रहते हैं । २. गर्भ ।

संज्ञा पुं० [ सं० ज्वाल ] १. राख । भस्म । खाक । २. दाह । जलन ।

**झोलदार**—वि० [ हिं० झोल + फ़ा० दार ] १. जिसमें रसा हो । २. जिस पर गिलट या मुलम्मा किया हो । ३. झोल-संबंधी । ४. ढीला-ढाला ।

**झोला**†—संज्ञा पुं० [ हिं० झूलना ] झोंका । झकोरा । हिलोर ।

संज्ञा पुं० [ हिं० झूलना ] [ स्त्री० अल्पा० झोली ] १. कपड़े की बड़ी झोली या थैली । २. ढीला-ढाला गिलाफ । खोली । ३. साधुओं का ढीला कुरता । चोला । ४. वात का एक रोग जिसमें कोई अंग ढीला पड़कर बेकाम हो जाता है । लकवा । ५. पेड़ों का पाला, लू आदि के कारण

एकबारगी कुम्हला जाने या सूख जाने का रोग। ६. झटका। आघात। धक्का। ७. बाधा। आपत्ति। ८. संकेत। इशारा।

**झोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० झूलना ] १. कपड़े को मोड़कर बनाई हुई थैली। झोकरी। २. घास बाँधने का जाल। ३. मोट। चरसा। पुर। ४. वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज ओसाया जाता है। ५. कुश्ती का एक पेच। बँवरा। ६. सफरी बिस्तर जो चारों कोनों पर लगी हुई रस्सियों द्वारा खंभों में बाँधकर फैलाया जाता है।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्वाल ] राख। भस्म।

**मुहा०**—झोली-बुझाना = सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना।

**झोलना***—क्रि० स० [ सं० ज्वालन ] जलाना।

**झोंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० झोंझ ] पेट। उदर।

**झौंर***—संज्ञा पुं० [ सं० युग्म, प्रा० जुम्म, [ हिं० झूमर ] १. झुंड। समूह। २. फूलों पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा। ३. एक प्रकार का गहना। झब्बा। ४. पेड़ों या झाड़ियों का घना समूह। झापस। कुंज।

**झौंरना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. गूँजना। गुंजारना। २. दे० "झौंरना"।

**झौंरा**†—संज्ञा पुं० [ ? ] झुंड।

**झौंराना***—क्रि० अ० [हिं० झूमना] इधर-उधर हिलना। झूमना।

क्रि० अ० [ हिं० झाँवरा ] १ झाँवले रंग का हो जाना। काला पड़ जाना। २. मुरझाना। कुम्हलाना।

**झौंसना**—क्रि० स० दे० "झुलसना"।

**झौर**—संज्ञा पुं० [ अनु० झाँव झाँव ] १. हुज्जत। तकरार। झौरा। विवाद। २. डाँट-फटकार। कहा-सुनी।

**झौरना**—क्रि० स० [ हिं० झपटना ] छाप लेना। दबा लेना। झपटकर पकड़ना।

**झौरे**—क्रि० वि० [ हिं० धौरे ] १. समीप। पास। निकट। २. साथ। संग।

**झौवा**‡—संज्ञा पुं० [हिं० झाबा] रहठे की बनी हुई छोटी दौरी। खँचिया।

**झौहाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १ गुर्राना। २. जोरसे चिड़चिड़ाना।

—:*:—

## ञ

**ञ**—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है।

—:*:—

## ट

**ट**—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहिला वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

**टंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार माशे की एक तौल। २. सिक्का। ३. २१$\frac{1}{4}$ रत्ती की मोती की तौल। ४. पत्थर गढ़ने का औजार। टाँकी। छेनी। ५. कुल्हाड़ी। फरसा। ६. कुदाल। ७. तलवार। ८. टाँग। ९. क्रोध। १०. अभिमान। ११. सुहागा। १२. कोष।

संज्ञा पुं० [ अं० टैंक ] एक प्रकार की बख्तरदार गाड़ी जिसपर तोपें चढ़ी रहती हैं।

**टंकण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुहागा। २. धातु की चीज में टाँके से जोड़ लगाने का कार्य्य। ३. घोड़े की एक जाति। ४. एक प्राचीन देश जो कदाचित् दक्षिण में था। ५. हाथ से दबाकर अक्षरों का छापना। टाइप करना।

**टँकना**—क्रि० अ० [ सं० टंकण ] १. टाँका जाना। २. सीकर अटकाया जाना। सिलना। ३. रेती के दाँतों का नुकीला होना। ४. लिखा जाना। दर्ज किया जाना। ५. सिल, चक्की आदि को खुरदुरा किया जाना। रेता जाना। कुटना।

**टँकवाना**—क्रि० स० दे० "टँकाना"।

**टंकशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] टकसाल।

**टंका**—संज्ञा पुं० [ सं० टंक ] १. एक तोले की तौल। २. ताँबे का एक पुराना सिक्का।

**टँकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टाँकना ] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**टँकाना**—क्रि० स० [ हिं० टाँकना ] १. टाँकों से जोड़वाना या सिलवाना। २. सिलाकर लगवाना। ३. ( सिल, जाँता, चक्की आदि को ) खुरदुरा कराना। कुटाना।

**टंकार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टन टन शब्द जो किसी कसे हुए तार आदि पर उँगली मारने से होता है। २. वह शब्द जो धनुष की कसी हुई डोरी पर बाण रखकर खींचने से होता है। ३. धातु-खंड पर आघात लगने का शब्द। ठनाका। झनकार।

**टंकारना**—क्रि० स० [ सं० टंकार ] धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना। चिल्ला खींच कर बजाना।

**टंकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टंक=खड्ड या गड्ढा ] पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुंड या बड़ा बरतन। टाँका।

**टंकोर**—संज्ञा पुं० दे० "टंकार"।

**टंकोरना**—क्रि० स० दे० "टंकारना"।

**टँगड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टाँग"।

**टँगना**—क्रि० अ० [ सं० टंगण ] १. किसी वस्तु का किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार अटकना कि उसका प्रायः सब भाग नीचे की ओर गया हो। लटकना। २. फाँसी पर चढ़ना या लटकना।

संज्ञा पुं० वह रस्सी जिसपर कपड़े आदि टाँगे या रखे जाते हैं। अलगनी।

**टँगारी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० टंग ] कुल्हाड़ी।

**टंच**†—वि० [ सं० चंड ] १. सूम। कंजूस। कृपण। २. कठोर-हृदय। निष्ठुर।

वि० [ हिं० टिचन ] तैयार। मुस्तैद।

**टंट घंट**—संज्ञा पुं० [ अनु० टन टन +घंट ] १. घड़ी-घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच। २. काठ-कबाड़।

**टंटा**—संज्ञा पुं० [ अनु० टन टन ] १. लंबी चौड़ी प्रक्रिया। आडंबर। खटराग। २. उपद्रव। दंगा। फसाद। ३. झगड़ा।

**टंडल, टंडैल**—संज्ञा पुं० [ अं० जनरल ] मजदूरों का सरदार।

**ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नारियल का खोपड़ा। २. वामन। ३. चौथाई भाग। ४. शब्द।

**टई**—संज्ञा स्त्री० दे० "टही"।

**टक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टक या त्राटक ] १. ऐसा ताकना जिसमें बड़ी देर तक पलक न गिरे। २. स्थिर दृष्टि।

**मुहा०**—टक बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना। टक टक देखना=बिना पलक गिराये लगातार कुछ काल तक देखते रहना। टक लगाना=आसरा देखते रहना।

**टकटका***†—संज्ञा पुं० [ हिं० टक ] [ स्त्री० टकटकी ] स्थिर दृष्टि। टकटकी।

वि० स्थिर या बँधी हुई ( दृष्टि )।

**टकटकाना**†—क्रि० स० [ हिं० टक ] १. एकटक ताकना। स्थिर दृष्टि से देखना। २. टकटक शब्द उत्पन्न करना।

**टकटकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टक ] ऐसी तकाई जिसमें देर तक पलक न गिरे। अनिमेष या स्थिर दृष्टि। गड़ी हुई नजर।

**मुहा०**—टकटकी बाँधना= स्थिर दृष्टि से देखना।

**टकटोना, टकटोरना**—क्रि० स० [ सं० त्वक्+तोलन ] १. टटोलना। २. ढूँढ़ना।

**टकटोलना**—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

**टकटोहन**—संज्ञा पुं० [ हिं० टकटोना ] टटोलकर देखने की क्रिया।

**टकटोहना***—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

**टकराना**—क्रि० अ० [ हिं० टक्कर ] १. जोर से भिड़ना। धक्का या ठोकर लेना। २. मारा-मारा फिरना। डाँवाडोल घूमना।

क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी पर जोर

से मारना। जोर से भिड़ाना। पटकना।

**टकसाल**—संज्ञा स्त्री० [सं० टंकशाला] १. वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं।

**मुहा०**—टकसाल बाहर=१. (सिक्का) जिसका चलन न हो। २. (वाक्य या शब्द) जिसका प्रयोग शिष्ट न माना जाय।

२. जँची या प्रामाणिक वस्तु।

**टकसाली**—वि० [हिं० टकसाल] १. टकसाल का। टकसाल संबंधी। २. खरा। चोखा। ३. अधिकारियों या विज्ञों द्वारा माना हुआ। सर्वसम्मत। ४. जँचा हुआ।

संज्ञा पुं० टकसाल का अधिकारी।

**टका**—संज्ञा पुं० [सं० टंक] १. चाँदी का एक पुराना सिक्का। रुपया। २. ताँबे का एक सिक्का जो दो पैसे के बराबर होता है। अधन्ना। दो पैसे।

**मुहा०**—टका सा जवाब देना=साफ इनकार करना। कोरा जवाब देना। टका सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित हो जाना। खिसिया जाना। टके गज की चाल=मोटी चाल। थोड़े खर्च में निर्वाह।

३. धन। द्रव्य। रुपया-पैसा। ४. तीन तोले की तौल। (वैद्यक)

**टकाही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टका] टके या दो पैसे फी रुपए का सूद।

**टकाही**—वि० स्त्री० [हिं० टका] नीच और दुश्चरित्रा (स्त्री)।

**टकुआ**—संज्ञा पुं० [सं० तर्कुक] चरखे में का तकला जिस पर सूत काता जाता है।

**टकैत**—वि० [हिं० टका] धनी। संपन्न।

**टकोर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टंकार] १. हलकी चोट। प्रहार। आघात। ठेस। थपेड़। २. नगाड़े पर का आघात। ३. डंके या नगाड़े की आवाज। ४. धनुष की डोरी खींचने का शब्द। टंकार। ५. दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाने की क्रिया। सेंक। ६. झाल। चरपराहट।

**टकोरना**—क्रि० स० [हिं० टकोर] १ हलका आघात पहुँचाना। २. डंके आदि पर चोट लगाना। दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाना। सेंकना।

**टकोरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० टंकार] आघात। चोट।

**टक्कर**—संज्ञा स्त्री० [अनु० ठक] १. वह आघात जो दो वस्तुओं के वेग के साथ एक दूसरी से भिड़ने से लगता है। ठोकर।

**मुहा०**—टक्कर खाना=१ किसी कड़ी वस्तु के साथ इतने वेग से भिड़ना या छू जाना कि गहरा आघात पहुँचे। २. मारा मारा फिरना।

२. मुकाबिला। मुठभेड़। लड़ाई।

**मुहा०**—टक्कर का=बराबरी का। समान। तुल्य। टक्कर खाना=१ मुकाबिला करना। भिड़ना। २. समान होना। तुल्य होना। टक्कर लेना=वार सहना। चोट सहना।

३ जोर से सिर मारने का धक्का।

**मुहा०**—टक्कर मारना=ऐसा प्रयत्न करना जिसका फल शीघ्र दिखाई न दे। माथा मारना। टक्कर लड़ाना=दूसरे के सिर पर सिर मारकर लड़ना।

४ घाटा। हानि। नुकसान।

**टखना**—संज्ञा पुं० [सं० टंक] एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ। गुल्फ।

**टग*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।

**टगण**—संज्ञा पुं० [सं०] छः मात्राओं का एक गण।

**टघरना†**—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

**टचटच**—क्रि० वि० [हिं० टचना] धाँय धाँय। धक धक। (आग की लपट का शब्द)

**टटका**—वि० [सं० तत्काल] १. तुरत का प्रस्तुत। हाल का। ताजा। २. नया। कोरा।

**टटल बटल†**—वि० [अनु०] अंड-बंड। ऊटपटाँग।

**टटीबा**—संज्ञा पुं० [अनु०] घिरनी। चक्कर।

**टटोना, टटोरना†**—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

**टटोल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टटोलना] टटोलने का भाव या क्रिया। गूढ़ स्पर्श।

**टटोलना**—क्रि० स० [सं० त्वक्+तोलन] १. मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। गूढ़ स्पर्श करना। २. ढूँढ़ने या पता लगाने के लिए इधर-उधर हाथ रखना। ३. बातों ही बातों में किसी के हृदय का भाव जानना। थाह लेना। थहाना। ४. जाँच करना। परखना।

**टटोहना***—क्रि० स० दे० "टटोलना"।

**टट्टर**—संज्ञा पुं० [सं० तट या स्थाता] बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिए दरवाजे आदि में लगाया जाता है।

**टट्टी**—संज्ञा स्त्री० [सं० तटी या

स्थात्री ] १. बाँस की फट्टियों आदि को जोड़कर आड़ या रक्षा के लिए बनाया हुआ ढाँचा ।

**मुहा०**—टट्टी की आड़ ( या ओट ) से शिकार खेलना=१. किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना । २. छिपाकर बुरा काम करना । धोखे की टट्टी=ऐसी वस्तु या बात जिसके कारण लोग धोखा खाकर हानि उठावें ।

२. चिक । चिलमन । ३. पतली दीवार । ४ पाखाना । ५. बाँस की फट्टियों आदि की दीवार और छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती हैं । ६. खस की सींकों की बनी पतली दीवार या परदा जिसे गरमियों में दरवाजे पर लगाते हैं और ठंडा रखने के लिए पानी से भिगाते हैं ।

**टट्टू**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] छोटे कद का घोड़ा । टाँगन ।

**मुहा०**—भाड़े का टट्टू=रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी ।

**टन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] किसी धातुखंड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द । टनकार ।

**टनकना**—क्रि० अ० [ अनु० टन ] १. टन टन बजना । २. धूप या गरमी लगने के कारण सिर में दर्द होना ।

**टनटन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] घंटे का शब्द ।

**टनटनाना**—क्रि० स० [ हिं० टनाटन ] धातुखंड पर आघात करके 'टनटन' शब्द निकालना ।

क्रि० अ० टनटन बजना ।

**टनमन**—संज्ञा पुं० दे० "टोना" ।

वि० दे० "टनमना" ।

**टनमना**—वि० [ सं० तन्मनस् ] जिसकी तबीअत हरी हो । स्वस्थ । चंगा । 'अनमना' का उलटा ।

**टनाका**†—संज्ञा पुं० [ अनु० टन ] घंटा बजने का शब्द ।

वि० बहुत कड़ी ( धूप ) ।

**टनाटन**—संज्ञा स्त्री [ अनु० ] लगातार होनेवाला टनटन शब्द ।

**टप**—संज्ञा पुं० [ हिं० टोप ] १. खुली गाड़ियों में लगा हुआ ओहार या सायबान । कलंदरा । २. लटकानेवाले लंप के ऊपर की छतरी ।

संज्ञा पुं० [ अं० टब ] १. नाँद के आकार का पानी रखने का खुला बरतन । टाँका । २. कान में पहनने का अँगरेजी ढंग का फूल ।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बूँद बूँद टपकने का शब्द । २. किसी वस्तु के एकबारगी ऊपर से गिर पड़ने का शब्द ।

**टपक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टपकना ] १. टपकने का भाव । २. बूँद बूँद गिरने का शब्द । ३. रुक रुककर होनेवाला दर्द ।

**टपकना**—क्रि० अ० [ अनु० टप टप ] १. बूँद बूँद गिरना । चूना । रसना । २. फल का पेड़ से गिरना । ३. ऊपर से सहसा आना । ४ अधिकता से कोई भाव प्रकट होना । जाहिर होना । झलकना । ५. घाव आदि के कारण रह रहकर दर्द करना । चिलकना । टीस मारना ।

**टपका**—संज्ञा पुं० [ हिं० टपकना ] १. बूँद बूँद गिरने का भाव । २. टपकी हुई वस्तु । रसाव । ३. पककर आपसे आप गिरा हुआ फल । ४.रह रहकर उठनेवाला दर्द । टीस ।

**टपका टपकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टपकना ] १. बूँदा बूँदी । (मेंह की) हलकी झड़ी । फुहार । २. फलों का लगातार गिरना ।

**टपकाना**—क्रि० स० [ हिं० टपकना] १. बूँद बूँद करके गिराना चुआना । २. भबके से अर्क खींचना । चुआना ।

**टपना**—क्रि० अ० [ हिं० तपना ] १. बिना कुछ खाए पीए पड़ा रहना । २. व्यर्थ आसरे में बैठा रहना ।

**टपरना**—क्रि० स० [ अनु० टप ] १. टाँकी की चोट से पत्थर की सतह खुदुरी करना । २. जमीन या दीवार पर नया मसाला लगाने से पहले उसे थोड़ा थोड़ा खोदना या तोड़ना ।

**टपाटप**—क्रि० वि०[ अनु० ] १. लगातार टप टप शब्द के साथ या बूँद बूँद करके ( गिरना ) । २. एक एक करके शीघ्रता से ।

**टपाना**—क्रि० स० [ हिं० तपाना ] १. बिना खिलाए पिलाए पड़ा रहने देना । २. व्यर्थ आसरे में रखना ।

क्रि० स० [ हिं० टपना ] फँदाना ।

**टप्पर**†—संज्ञा पुं० दे० "छप्पर" ।

**टप्पा**—संज्ञा पुं० [ हिं० टाप ] १. उछल उछलकर जाती हुई वस्तु की बीच बीच में टिकान । २. उतनी दूरी जितनी दूरी पर कोई फेंकी हुई वस्तु जाकर पड़े । ३. उछाल । कूद । फलाँग । ४. नियत दूरी । मुकर्रर फासला । ५. दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला मैदान । ६. जमीन का छोटा हिस्सा । ७. अंतर । बीच । फर्क । ८. एक प्रकार का चलता गाना ।

**टब**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पानी रखने के लिए नाँद के आकार का एक खुला बड़ा बरतन ।

संज्ञा पुं० [ हिं० टप ] एक प्रकार का [illegible] ।

**टमटम**—संज्ञा स्त्री० [ अं० टैंडम ] दो ऊँचे ऊँचे पहियों की एक खुली हलकी गाड़ी ।

**टमकी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का बरतन ।

**टमाटर**—संज्ञा पुं० [ अं० टोमैटो ] एक प्रकार का खट्टा विलायती बैंगन ।

**टर**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. कर्कश या कर्णकटु शब्द । कड़ुई बोली ।

**मुहा०**—टर टर करना या लगाना=ढिठाई से बोलते जाना । जबानदराजी करना ।

२. मेंढक की बोली । ३. अविनीत वचन और चेष्टा । ऐंठ । अकड़ । ४. हठ । जिद ।

**टरकना**—क्रि० अ० [ हिं० टरना ] १. खिसकना । २. टल जाना । हट जाना ।

**टरकाना**—क्रि० स० [ हिं० टरकना ] १. हटाना । खिसकाना । २. टाल देना । चलता करना । धता बताना ।

**टरकुल**—वि० [ हिं० टरकाना ] बहुत ही मामूली और निकम्मा ।

**टरटराना**—क्रि० अ० [ हिं० टर ] १. बक बक करना । २. ढिठाई से बोलना ।

**टरना**†—क्रि० अ० दे० "टलना" । *क्रि० स० टालना । हटाना ।

**टरनि**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टरना ] टरने का भाव या ढंग ।

**टर्रा**—वि० [ अनु० टर टर ] १. अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देनेवाला । टर्रानेवाला । २. धृष्ट । कटुवादी ।

**टर्राना**—क्रि० अ० [ अनु० टर ] अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देना ।

**टर्रापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० टर्रा ] बात-चीत में अविनीत भाव । कटुवादिता ।

**टलना**—क्रि० अ० [ सं० टलन ] १. हटना । खिसकना । सरकना ।

**मुहा०**—अपनी बात से टलना=प्रतिज्ञा न पूरी करना । मुकरना ।

२. मिटना । न रह जाना । ३. ( किसी कार्य्य के लिए ) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना । ४. ( किसी बात का ) अन्यथा होना । ठीक न ठहरना । ५. ( किसी आदेश या अनुरोध का ) न माना जाना । उल्लंघित होना । ६. समय व्यतीत होना । बीतना ।

**टलहा**†—वि० [ देश० ] खोटा । खराब ।

**टला-टली**—संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटोल" ।

**टल्लेनवीसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिल्लेनवीसी" ।

**टवाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अटन=घूमना ] व्यर्थ घूमना । आवारगी ।

**टस**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] किसी भारी चीज के खिसकने या टसकने का शब्द ।

**मुहा०**—टस से मस न होना=१. किसी भारी चीज का कुछ भी न खिसकना । २. कहने सुनने का कुछ भी प्रभाव अनुभव न करना ।

**टसक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० टसकना ] रह रहकर उठनेवाली पीड़ा । कसक । टीस । चसक ।

**टसकना**—क्रि० अ० १. जगह से हटना । खिसकना । २. रह रहकर दर्द करना । टीस मारना । ३. हृदय में कहने सुनने का प्रभाव अनुभव करना । बात मानने को तैयार होना ।

**टसकाना**—क्रि० स० [ हिं० टसकना ] हटाना । खिसकाना । सरकाना ।

**टसर**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रसर ] एक प्रकार का घटिया, कड़ा और मोटा रेशम ।

**टसुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० अँसुआ ] आँसू ।

**टहकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. रह रहकर दर्द करना । २. पिघलना ।

**टहना**—संज्ञा पुं० [ सं० तनुः ] वृक्ष की डाल ।

**टहनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टहना ] वृक्ष की पतली शाखा । डाली ।

**टहल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टहलना ] १. सेवा । शुश्रूषा । खिदमत ।

**यौ०**—टहल टई या टहल टकोर=सेवा ।

२. नौकरी-चाकरी । काम धंधा ।

**टहलना**—क्रि० अ० [ सं० तत्+चलन ] १. धीरे धीरे चलना । मंद गति से चलना ।

**मुहा०**—टहल जाना=खिसक जाना ।

२. जी बहलाने के लिए धीरे धीरे चलना या घूमना । सैर करना । हवा खाना ।

**टहलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टहल ] १. दासी । मजदूरनी । २. चिराग की बत्ती उकसानेवाली लकड़ी ।

**टहलाना**—क्रि० स० [ हिं० टहलना ] १. धीरे धीरे चलाना । २. सैर कराना । घुमाना । फिराना । दूर करना ।

**टहलुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० टहल ] [ स्त्री० टहलुई, टहलनी ] सेवक । खिदमतगार ।

**टहलू**—संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ" ।

**टही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घाट, घात ] मतलब निकालने की घात । प्रयोजन-सिद्धि का ढंग । जोड़ तोड़ ।

**टहोका**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठोकर ]

हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। झटका।

मुहा०—टहोका देना=झटकना। ढकेलना। टहोका खाना=धक्का खाना। ठोकर सहना।

**टाँक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टंक ] १. तीन या चार माशे की एक तौल। (जौहरी) २. कूत। अंदाज। आँक। संज्ञा स्त्री० [ हिं० टाँकना ] १. लिखावट। लिखन। २. कलम की नोक।

**टाँकना**—क्रि० स० [ सं० टंकन ] १. एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि जड़कर जोड़ना। २. सिलाई के द्वारा जोड़ना। सीना। ३. सीकर अटकाना। ४. सिल, चक्की आदि को टाँकी से गड्ढे करके खुरदुरा करना। कूटना। रेहना। ५. रेती तेज करना। ६. स्मरण रखने के लिए लिखना। दर्ज करना। चढ़ाना। † ७ लिखकर पेश करना। दाखिल करना। ८. चट कर जाना। उड़ा जाना। खाना। ९. अनुचित रूप से ले लेना। मार लेना।

**टाँका**—संज्ञा पुं० [ हिं० टाँकना ] १. जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा। २. सिलाई का पृथक् अंश। डोभ। ३. सिलाई। सीवन। ४. टँकी हुई चकती। थिगली। चिप्पी। ५. शरीर पर के घाव की सिलाई। ६. धातुओं को जोड़ने का मसाला। संज्ञा पुं० [ सं० टंक ] [ स्त्री० अल्पा० टाँकी] पत्थर काटने की चौड़ी छेनी। संज्ञा पुं० [ सं० टंक ] १. पानी इकट्ठा रखने का छोटा सा कुंड। हौज। चहबच्चा। २. पानी रखने का बड़ा बरतन। कंडाल।

**टाँकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टंक ] १. पत्थर गढ़ने का औजार। छेनी। २. काट कर बनाया हुआ छेद। पानी रखने का छोटा हौज। संज्ञा स्त्री० [ सं० टंक ] छोटा टाँका।

**टाँग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टंग ] शरीर का वह निचला भाग जिससे प्राणी चलते या दौड़ते हैं। जीवों के चलने का अवयव।

मुहा०—टाँग अड़ाना=१.बिना अधिकार के किसी काम में योग देना। फजूल दखल देना। २. विघ्न डालना। टाँग तले से ( या नीचे से ) निकलना=हार मानना। परास्त होना। टाँग पसार कर सोना = निश्चिंत सोना।

**टाँगन**—संज्ञा पुं० [ सं० तुरंगम ] छोटा घोड़ा। टट्टू।

**टाँगना**—क्रि० स० [ हिं० टँगना ] १. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु से इस प्रकार बाँधना या उस पर ठहराना कि उसका सब या बहुत सा भाग नीचे लटकता रहे। लटकाना। २. फाँसी पर चढ़ाना।

**टाँगा**—संज्ञा पुं० [ सं० टंग ] बड़ी कुल्हाड़ी। संज्ञा पुं० [ हिं० टँगना ] एक प्रकार की गाड़ी जिसका ढाँचा इतना ढीला होता है कि वह पीछे की ओर कुछ झुका रहता है।

**टाँगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टाँगा ] कुल्हाड़ी।

**टाँच**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टाँकी ] दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात या वचन। भाँजी। संज्ञा स्त्री० [ हिं० टाँका ] १. टाँका। सिलाई। डोभ। २. टँकी हुई चकती। थिगली।

**टाँचना**—क्रि० स० [ हिं० टाँच ] १. टाँकना। डोभ लगाना। २. काटना। तराशना।

**टाँट**—संज्ञा पुं० [ हिं० टट्टो ] खपड़ी। कपाल।

**टाँठ, टाँठा**—वि० [ अनु० ठनठन ] १. करारा। कड़ा। कठोर। २. दृढ़। बली।

**टाँड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थाणु ] १. लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिस पर चीज असबाब रखते हैं। परछत्ती। २. मचान जिस पर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं। संज्ञा [ सं० ताड़ ] बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टँड़िया।

**टाँड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० टाँड़=समूह ] १. अन्न आदि व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड जिसे व्यापारी लेकर चलते हैं। बरदी। २. बिक्री के माल का खेप। ३. बनजारों का झुंड। ४. कुटुंब। परिवार।

**टाँड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

**टाँय टाँय**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. कर्कश शब्द। टें टें। २. बकवाद।

मुहा०—टाँय टाँय फिस = बकवाद बहुत, पर फल कुछ भी नहीं।

**टाइटिल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पुस्तक का आवरणपृष्ठ। मुख-पृष्ठ। पदवी।

**टाइप**—संज्ञा पुं० [ अं० ] छापने के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर।

**टाइप-राइटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक कल जिससे टाइप के से अक्षर छापे जाते हैं।

**टाइम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] समय। वक्त।

यौ०—टाइम-पीस=एक प्रकार की

छोटी घड़ी ।

**टाइमटेबुल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. वह सारिणी जिसमें भिन्न कार्यों का समय लिखा रहता है । २. वह पुस्तक जिसमें रेल-गाड़ियों के पहुँचने और छूटने का समय रहता है ।

**टाट**—संज्ञा पुं० [ सं० तंतु ] १. सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा ।

**मुहा०**—टाट में पाट की बखिया=चीज तो भद्दी और सस्ती, पर उसमें लगी हुई सामग्री बढ़िया और बहुमूल्य । बेमेल का साज । २. बिरादरी या उसका अंग । ३. महाजनी गद्दी ।

**मुहा०**—टाट उलटना=दिवाला निकलना ।

**टाटर**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थातृ=जो खड़ा हो । ] १. टट्टर । टट्टी । २. सिर की हड्डी । खोपड़ी । कपाल ।

**टाटिक, टाटी***—संज्ञा स्त्री० दे० "टट्टी" ।

**टाड़**—संज्ञा स्त्री० दे० "टाँड़" ।

**टान**—संज्ञा स्त्री० [सं० तान] तनाव ।

**टानना**—क्रि० स० दे० "तानना" । जितना एक बार में छापा जाय ।

**टाप**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थापन ] १ घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग जो जमीन पर पड़ता है । सुम । २. घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द । ३. मछली पकड़ने का झाबा । ४. मुरगियों के बंद करने का झाबा । ५.काम में पहनने का एक अलंकार ।

**टापना**—क्रि० अ० [ हिं० टाप+ना (प्रत्य०) ] १. घोड़ों का पैर पटकना । २. किसी वस्तु के लिए इधर-उधर हैरान फिरना । ३.उछलना । कूदना । क्रि० स० कूदना । फाँदना । क्रि० अ० दे० "टपना" ।

**टापा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थापन ] १. उजाड़ मैदान । २. उछाल । ३. किसी वस्तु को ढकने या बंद करने का टोकरा । झाबा ।

**टापू**—संज्ञा पुं०[हिं० टापा या टप्पा ] १. स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो । द्वीप । † २. टप्पा । टापा ।

**टाबर**†—संज्ञा पुं० [ पंजाबी टब्बर] १. बालक । लड़का । २. परिवार ।

**टामक**†—संज्ञा पुं० [ अनु० ] डिमडिमा ।

**टामन**—संज्ञा पुं० दे० "टोटका" ।

**टारना**†—क्रि० स० दे० "टालना" ।

**टाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अट्टाल ] १. ऊँचा ढेर । भारी राशि । अटाला । गंज । २. लकड़ी, भुस आदि की दूकान ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० टालना ] टालने का भाव ।

संज्ञा पुं० [ सं० टार ] स्त्री और पुरुष का समागम कराने वाला । कुटना । भड़ुआ ।

**टालटूल**—संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल" ।

**टालना**—क्रि० स० [ हिं० टलना ] १. हटाना । खिसकाना । सरकाना । २.दूर करना । भगा देना । ३.मिटाना । न रहने देना । ४. किसी कार्य्य के लिए दूसरा समय स्थिर करना । ५. समय बिताना । ६. ( आदेश या अनुरोध ) न मानना । ७. बहाना करके पीछा छुड़ाना । हीला-हवाली करना । ८. झूठा वादा करना । ९. धता बताना । टरकाना । १०. पलटना । फेरना । ११. इधर-उधर हिलाना । गति देना ।

**टालमटूल**—संज्ञा स्त्री० [हिं०टालना] बहाना ।

**टाली**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी । २. चंचल जवान गाय या बछिया ।

**टावर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] मीनार ।

**टाहली**†—संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ" ।

**टिंड**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टिंडिश ] एक बेल जिसके गोल फलों की तरकारी होती है ।

**टिकट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. वह कागज का टुकड़ा जो किसी प्रकार का महसूल या फीस चुकाने वालों को प्रमाण-पत्र के रूप में दिया जाय । २ वह कर या महसूल जो किसी काम के करनेवालों पर लगाया जाय ।

**टिकटिकी**—संज्ञा स्त्री०दे० "टिकठी" ।

**टिकठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्रिकाष्ठ] १. तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेंत या कोड़े लगाये जाते हैं या उनके गले में फाँसी का फंदा लगाया जाता है । २. तिपाई । ३. वह रथी जिस पर शव ले जाते हैं ।

**टिकड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० टिकिया ] [ स्त्री० अल्पा० टिकड़ी ] १. कोई चिपटा गोल टुकड़ा । २. आँच पर सेंकी हुई रोटी । बाटी । अंगाकड़ी ।

**टिकना**—क्रि० अ० [ सं० स्थित ] १. कुछ काल तक के लिए रहना । ठहरना । २. घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना । तल में जमना । ३. कुछ दिनों तक काम देना । ४. स्थित रहना । अड़ा रहना ।

**टिकरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया] १. एक प्रकार का नमकीन पकवान ।

२. टिकिया ।

**टिकली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकिया ] १. छोटी टिकिया । २. पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिंदी । सितारा । चमकी ।

**टिकस**—संज्ञा पुं० [ अं० टैक्स ] महसूल ।

**टिकाई**—संज्ञा पुं० [ हिं० टीका ] युवराज ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिकना ] टिकने का भाव ।

**टिकाऊ**—वि० [ हिं० टिकना ] टिकने या कुछ दिनों तक काम देनेवाला । मजबूत ।

**टिकान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिकना ] १. टिकने या ठहरने का भाव । २. पड़ाव । चट्टी ।

**टिकाना**—क्रि० स० [ हिं० टिकना ] १. रहने के लिए जगह देना । २. ठहराना । †३. बोझ उठाने में सहायता देना ।

**टिकाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० टिकना ] १. स्थिति । ठहराव । २. स्थिरता । स्थायित्व । ३. ठहरने की जगह । पड़ाव ।

**टिकिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० वटिका ] १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा । जैसे दवा की टिकिया । २. कोयले की बुकनी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिससे चिलम पर आग सुलगाते हैं । ३. उक्त आकार की एक गोल मिठाई ।

**टिकुली**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।

**टिकैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० टीका + ऐत (प्रत्य० ) ] १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार । युवराज । २. अधिष्ठाता । ३. सरदार ।

**टिकोरा**—संज्ञा पुं० [ सं० वटिका, हिं० टिकिया ] आम का छोटा और कच्चा फल ।

**टिक्कड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० टिकिया ] १. बड़ी टिकिया । २. सेंकी हुई छोटी मोटी रोटी । बाटी । लिट्टी । अँगाकड़ी ।

**टिक्का**—संज्ञा पुं० दे० "टीका" ।

**टिक्की**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिकिया ] १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा । टिकिया । २. अंगाकड़ी । बाटी ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० टीका ] १. माथे पर की बिंदी । २. ताश की बूटी ।

**टिघलना**—क्रि० अ० दे० "पिघलना" ।

**टिच**—वि० [ अं० अटेंशन ] १. तैयार । प्रस्तुत । दुरुस्त । २. उद्यत । मुस्तैद ।

**टिटकारना**—क्रि० स० [ अनु० ] [ संज्ञा टिटकारी ] 'टिक टिक' कहकर हाँकना ।

**टिटिह, टिटिहा**—संज्ञा पुं० [ सं० टिट्टिभ ] टिटिहरी चिड़िया का नर ।

**टिटिहरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टिट्टिभ, हिं० टिटिह ] पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया । कुररी ।

**टिट्टिभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० टिट्टिभी ] १. टिटिहरी । कुररी । २. टिड्डी ।

**टिड्डा**—संज्ञा पुं० [ सं० टिट्टिभ ] एक प्रकार का छोटा परदार कीड़ा ।

**टिड्डी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टिट्टिभ ] एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो बड़ा दल बाँध कर चलता और पेड़ पौधों को बड़ी हानि पहुँचाता है ।

**टिढ़बिंगा**—वि० [ हिं० टेढ़ा + सं० वंक ] टेढ़ा मेढ़ा ।

**टिपका***†—संज्ञा पुं० [ हिं० टिपकना ] बूँद ।

**टिपकारी**—ईंटों की जोड़ पर सिमेंट या सुरखी से गहरी रेखा बनाना ।

**टिप टिप**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द ।

**टिपवाना**—क्रि० स० [ हिं० टीपना ] टीपने का काम दूसरे से कराना ।

**टिपारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तीन + फ़ा० पारः=टुकड़ा ] मुकुट के आकार की एक टोपी ।

**टिप्पणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी" ।

**टिप्पन**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. टीका । व्याख्या । २. जन्मकुंडली । जन्मपत्री ।

**टिप्पनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी वाक्य या प्रसंग का अर्थ सूचित करनेवाला विवरण । २. टीका । व्याख्या ।

**टिफिन**—संज्ञा पुं० [अं०] दोपहर का भोजन या जलपान ।
**यौ०**—टिफिन-कैरियर=कटोरदान ।

**टिमटिमाना**—क्रि० अ० [सं० तिम=ठंढा होना ] १. ( दीपक का ) मंद मंद जलना । क्षीण प्रकाश देना । २. बुझने पर हो होकर जलना । झिलमिलाना । ३. मरने के निकट होना ।

**टिमाक**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बनाव-सिंगार ।

**टिर**—संज्ञा स्त्री० दे० "टर" ।

**टिरफिस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिर + फिस ] बात न मानने की ढिठाई । चीं-चपड़ । विरोध ।

**टिर्राना**—क्रि० अ० दे० "टर्राना" ।

**टिल्ला**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठेलना ] धक्का ।

**टिल्लेनवीसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिल्ला + फ़ा० नवीसी ] १. निठल्लापन । २. हीलाहवाली । बहाना । ३. कुटनापन ।

**टिसुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० अश्रु ] आँसू।

**टिहुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० घुंठ, हिं० घुटना] १. घुटना। २. कोहनी।

**टिहूका**-संज्ञा स्त्री० [ देश० ] चौंकने की क्रिया या भाव। चौंक। झझक।

**टींड़सी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

**टींडी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिड्डी"।

**टीक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तिलक ] १. गले में पहनने का गहना। २. माथे में पहनने का गहना।

**टीकना**—क्रि० स० [ हिं० टीका ] १. टीका या तिलक लगाना। २ चिह्न या रेखा बनाना।

**टीका**—संज्ञा पुं० [सं० तिलक] १. वह चिह्न जो चंदन, रोली, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर सांप्रदायिक संकेत के लिए लगाया जाता है। तिलक। २. विवाह स्थिर होने की एक रीति जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर के माथे में तिलक लगाते और वर-पक्ष के लोगों को द्रव्य देते हैं। तिलक। ३. दोनो भौंहों के बीच माथे का मध्य भाग। ४. (किसी समुदाय का) शिरोमणि। श्रेष्ठ पुरुष। ५. राजसिंहासन या गद्दी पर बैठने का कृत्य। राज्यतिलक। ६. राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज। ७. आधिपत्य का चिह्न। ८. एक गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं। ९. धब्बा। दाग। चिह्न। १०. किसी रोग से बचाने के लिए उस रोग के चेप या रस को लेकर किसी के शरीर में सूइयों से चुभाकर प्रविष्ट करने की क्रिया।

संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पद या ग्रंथ का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ। व्याख्या।

**टीकाकार**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।

**टीन**—संज्ञा पुं० [ अं० टिन ] १. राँगा। २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर। ३. इस चद्दर का बना डिब्बा।

**टीप**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीपना] १. दबाने या ठोकने की क्रिया या भाव। दबाव। दाब। २. गच कूटने का काम। ३. टंकार। घोर शब्द। ४. गाने में जोर की तान। ५. स्मरण के लिए किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया। टाँक लेने का काम। ६. दस्तावेज। ७. जन्मपत्री। कुंडली।

**टीप टाप**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टीप] १. बनाव-सिंगार। २. आडंबर।

**टीपन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टीपना ] जन्मपत्री।

**टीपना**—क्रि० स० [ सं० टेपन ] १. दबाना। चाँपना। मसकना। २. धीरे धीरे ठोकना। ३. चित्र बनाने में पहले उसकी रेखाएँ खींचना। रेखा-कर्म। खतकशी।

क्रि० स० [ सं० टिप्पनी ] लिखना। टाँकना।

**टीबा**—संज्ञा पुं० दे० "टीला"।

**टीमटाम**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बनाव-सिंगार।

**टीला**—संज्ञा पुं० [ सं० अष्ठीला ] १ पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग। दूह। भीटा। २. मिट्टी का ऊँचा ढेर। धुस। ३. पहाड़ी।

**टीस**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] रह रहकर उठनेवाला दर्द। कसक। चसक।

**टीसना**—क्रि० अ० [ हिं० टीस ] रह रहकर दर्द उठना। कसक होना।

**टुंडा, टुंडा**—वि० [सं० तुंड] [ स्त्री० टुंडी ] १. जिसकी डाल या टहनी आदि कट गई हो। ठूँठा। २. जिसका हाथ कट गया हो। लूला। लुंजा।

**टुइयाँ**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] छोटी जाति का तोता।

वि० ठेंगना। नाटा। बौना।

**टुक**—वि० [ सं० स्तोक ] थोड़ा। जरा।

**टुकड़गदा**—संज्ञा पुं० [हिं० टुकड़ा+ फ़ा० गदा ] भिखारी। मँगता।

वि० १. तुच्छ। २. दरिद्र। कंगाल।

**टुकड़गदाई**—संज्ञा पुं० दे० "टुकड़-गदा"।

संज्ञा स्त्री० टुकड़ा माँगने का काम।

**टुकड़तोड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० टुकड़ा तोड़ना ] दूसरे का दिया हुआ टुकड़ा खाकर रहनेवाला आदमी।

**टुकड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तोक ] [ स्त्री० अल्पा० टुकड़ी ] १. किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो। खंड। २. चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३. रोटी का तोड़ा हुआ अंश।

**मुहा०**—(दूसरे का) टुकड़ा तोड़ना= दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। टुकड़ा माँगना=भीख माँगना। टुकड़ा-सा जवाब देना=झट और स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। कोरा जवाब देना।

**टुकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टुकड़ा ] १. छोटा टुकड़ा। खंड। २. समुदाय। मंडली। दल। जत्था। ३. सेना का एक अंश।

**टुच्चा**—वि० [ सं० तुच्छ ] तुच्छ। ओछा।

**टुटपुँजिया**—वि० [ हिं० टूटी+

पूँजी] जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।

**टुटरूँ**—संज्ञा पुं० [अनु०] छोटी पंडुकी।

**टुटरूँ टूँ**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] पंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द। वि० १. अकेला। २. दुबला-पतला।

**टुनगा**†—संज्ञा पुं० [सं० तनु+अग्र] [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।

**टुपकना,टुमकना**†—क्रि० अ० [अनु०] १. धीरे से काटना या डंक मारना। २. कटु या व्यंग्यपूर्ण बात कहना। ३. चुगली खाना।

**टुर्री**—संज्ञा पुं० [?] डली। रवा। कण।

**टूँगना**—क्रि० स० [हिं० टुनगा] थोड़ा-सा काटकर खाना।

**टूँड़**—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टूँडी] १. कीड़ों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। २. जौ, गेहूँ आदि की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव। सींग।

**टूँडी**—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. छोटा टूँड़। २. ढोंढ़ी। नाभि। ३. किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

**टूक**†—संज्ञा पुं० [सं० स्तोक] टुकड़ा।

**टूकर**†—संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा"।

**टूका**†—संज्ञा पुं० [हिं० टूक] १. टुकड़ा। खंड। २. रोटी का चौथाई भाग। ३. भिक्षा। भीख।

**टूट**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० टूटना, सं० त्रुटि] १. खंड। टूटन। टुकड़ा। २. टूटने का भाव। ३. लिखावट में वह भूल से छूटा हुआ शब्द या वाक्य जो पीछे से किनारे पर लिखते हैं। ४. भूल। त्रुटि। †संज्ञा पुं० टोटा। घाटा।

**टूटना**—क्रि० अ० [सं० त्रुट] १. टुकड़े टुकड़े होना। खंडित होना। भग्न होना। २. किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३. लगातार चलनेवाली वस्तु का रुक जाना। सिलसिला बंद होना। ४. किसी ओर एकबारगी वेग से जाना। ५. एकबारगी बहुत-सा आ पड़ना। पिल पड़ना।

**मुहा०**—टूट टूटकर बरसना=मूसलधार बरसना।

६. एकबारगी धावा करना। ७. अनायास कहीं से आ जाना। ८. पृथक् होना। अलग होना। ९. संबंध छूटना। लगाव न रह जाना। १०. दुर्बल होना। क्षीण होना। ११. धनहीन होना। १२. चलता न रहना। बंद हो जाना। १३. युद्ध में किले का ले लिया जाना। १४. घाटा होना। १५. शरीर में ऐंठन या तनाव लिए हुए पीड़ा होना।

**टूटा**—वि० [हिं० टूटना] १. खंडित। भग्न।

**मुहा०**—टूटी फूटी बात या बोली= १. असंबद्ध वाक्य। २. अस्पष्ट वाक्य।

२. दुबला या कमजोर। ३. निर्धन। संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

**टूठना***—क्रि० अ० [सं० तुष्ट, प्रा० तुट्ठ] संतुष्ट होना।

**टूठनि***—संज्ञा स्त्री० [हिं० टूठना] संतोष। तुष्टि।

**टूम**—संज्ञा स्त्री० [अनु० टुनटुन] १. गहना। आभूषण।

**मुहा०**—टूमटाम=१. गहना पाता। वस्त्राभूषण। २. बनाव-सिंगार। ३. ताना। व्यंग्य।

**टूमना**†—क्रि० स० [अनु०] १. धक्का देना। झटका देना। २. ताना मारना।

**टूरनामेंट**—संज्ञा पुं० [अं०] खेलों की प्रतियोगिता।

**टें**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] तोते की बोली।

**मुहा०**—टें टें = व्यर्थ की बकवाद। हुज्जत। टें होना या बोलना=चटपट मर जाना।

**टेंगना,टेंगरा**—संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] एक प्रकार की मछली।

**टेंट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तट+ऐंठ] धोती की वह मंडलाकार ऐंठन जो कमर पर पड़ती है। मुर्री। संज्ञा स्त्री० [सं० तुंड] १. कपास का डोडा। २. दे० "टेंटर"।

**टेंटर**—संज्ञा पुं० [सं० तुंड] रोग या चोट के कारण आँख के डेले पर का उभरा हुआ मांस। ढेंढर।

**टेंटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेंट] करील। संज्ञा पुं० [अनु० टेंटें] व्यर्थ झगड़ा करनेवाला। हुज्जती। चंचल।

**टेंटुआ**—संज्ञा पुं० [देश०] १. गला। २. अँगूठा।

**टेंटें**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. तोते की बोली। २. व्यर्थ की बकवाद।

**टेंटा**†—वि० [?] चंचल। शरारती।

**टेंडसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंड"।

**टेउकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टेक] किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिए उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।

**टेक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिकना] १. वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को

टिकाए रखने के लिए नीचे से लगाई जाती है। चाँड़। थूनी। थम। २. डासना। सहारा। ३. आश्रय। अवलंब। ४. बैठने का स्थान। ५. ऊँचा टीला। ६. मन में ठानी हुई बात। हठ। जिद।

मुहा०—टेक निभना या रहना=प्रतिज्ञा पूरी होना। टेक पकड़ना या गहना=हठ करना।

७. बान। आदत। ८. गीत का पहला पद। स्थायी।

**टेकना**—क्रि० स० [ हिं० टेक ] १. सहारे के लिए किसी वस्तु को शरीर के साथ भिड़ाना। सहारा लेना। डासना लेना। २. ठहराना या रखना।

मुहा०—माथा टेकना=प्रणाम करना।

३. सहारे के लिए पकड़ना। हाथ का सहारा लेना। ४. हठ करना। ५. बीच में रोकना या पकड़ना।

**टेकनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेकना ] वह चीज जो किसी चीज को गिरने से रोकने के लिए लगाई जाय।

**टेकरा**—संज्ञा पुं० [हिं० टेक] [ स्त्री० अल्पा० टेकरी ] टीला। छोटी पहाड़ी।

**टेकला**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेक ] धुन। रट।

**टेकान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेकाना ] १. गिरने वाली छत आदि को सँभालने के लिए उसके नीचे खड़ी की हुई लकड़ी। टेक। चाँड़। २. वह चबूतरा जिस पर बोझ ढोने वाले बोझ उतारकर सुस्ताते हैं।

**टेकाना**—क्रि० स० [ हिं० टेकना ] १. उठा कर ले जाने में सहारा देने के लिए थामना। २. उठने बैठने में सहायता के लिए पकड़ना।

**टेकी**—संज्ञा पुं० [ हिं० टेक ] १. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २. हठी। जिद्दी।

**टेकुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० तर्कुक ] चरखे का तकला।

**टेकुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेकुआ ] १. सूत कातने या रस्सी बटने का तकला। २. चमारों का सूआ जिससे वे तागा खींचते हैं।

**टेघरना**—क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

**टेटका**—संज्ञा पुं० [ सं० तारंक ] कान का एक गहना।

वि० दे० "टेढ़ा"।

**टेढ़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेढ़ा ] टेढ़ापन। वक्रता।

वि० दे० "टेढ़ा"।

**टेढ़बिड़ंगा**—वि० [ हिं० टेढ़ा+बेढंगा ] टेढ़ा-मेढ़ा।

**टेढ़ा**—वि० [ सं० तिरस्=टेढ़ा ] [ स्त्री० टेढ़ी ] १. जो बीच में इधर-उधर झुका या घूमा हो। जो सीधा न हो। वक्र। कुटिल। २. जो समानांतर न गया हो। तिरछा। ३. कठिन। मुश्किल। पेचीला।

मुहा०—टेढ़ी खीर=मुश्किल काम।

४. उद्धत। उजड्ड। दुःशील।

मुहा०—टेढ़ा पड़ना या होना=१. उग्र रूप धारण करना। बिगड़ना। २. अकड़ना। ऐंठना। टेढ़ी सीधी सुनाना=भला बुरा कहना।

**टेढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन"।

**टेढ़ापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० टेढ़ा+पन ] टेढ़ा होने का भाव।

**टेढ़े**—क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] घुमाव-फिराव के साथ।

मुहा०—टेढ़े टेढ़े जाना=इतराना।

**टेना**—क्रि० स० [ हिं० टेव+ना (प्रत्य०) ] १. हथियार को तेज करने के लिए पत्थर आदि पर रगड़ना। २. मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिए ऐंठना।

**टेनिस**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का अँग्रेजी खेल जो बीच में जाल टाँगकर रबर के पोले गेंद और जालदार बल्ले से खेला जाता है।

**टेबुल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. एक प्रकार की बड़ी ऊँची चौकी। मेज। २. सारिणी जैसे, टाइमटेबुल।

**टेम**—संज्ञा स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीपशिखा। दिए की लौ। लाट।

**टेर**—संज्ञा स्त्री० [सं० तार] १. गाने में ऊँचा स्वर। तान। टीप। २. बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार। हाँक।

**टेरना**—क्रि० स० [ हिं० टेर+ना (प्रत्य०) ] १. ऊँचे स्वर से गाना। २. पुकारना।

क्रि० स० [ सं० तीरण=तै करना ] तै करना। बिताना। पूरा करना।

**टेलिग्राफ**—संज्ञा पुं० [ अं० ] तार जिसके द्वारा खबरें भेजी जाती हैं।

**टेलिग्राम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] तार से भेजी हुई खबर।

**टेलिप्रिंटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का यंत्र जिससे तार द्वारा आये हुए समाचार टाइप-राइटर पर छपते हैं।

**टेलिफोन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] वह तार जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है।

**टेलिविजन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से रेडियो के साथ दृश्य भी सिनेमा की भाँति दिखाई देते हैं।

**टेव**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेक ]

आदत । बान ।

**टेवना**†—क्रि० स० दे० "टेना" ।

**टेवा**—संज्ञा पुं० [ सं० टिप्पन ] १. जन्मपत्री । जन्मकुंडली । २. लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, घड़ी आदि लिखी रहती है ।

**टेवैया**†—संज्ञा पुं० [ हिं० टेवना ] टेनेवाला । चोखा करनेवाला ।

**टेसू**—संज्ञा पुं० [ सं० किंशुक ] १. पलाश । ढाक । २. एक उत्सव जिसमें विजयादशमी के दिन बहुत से लड़के गाते हुए घूमते हैं ।

**टैंक**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. तालाब । २. पानी रखने का हौज या खजाना । ३. लोहे की एक प्रकार की बहुत बड़ी गाड़ी जिस पर तोपें लगी रहती हैं ।

**टैक्स**—संज्ञा पुं० [ अं० ] कर । महसूल ।

यौ०—इन्कम टैक्स=आमदनी पर लगनेवाला कर ।

**टैयाँ**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की चिपटी छोटी कौड़ी । चित्ती ।

**टोंका**‡—संज्ञा पुं० [ सं० स्तोक= थोड़ा ] १. सिरा । किनारा । २. नोक । कोना ।

**टोंचना**—क्रि० स० [ सं० टंकन ] चुभाना ।

**टोंटा**—संज्ञा पुं० [ सं० तुंड ] [ स्त्री० टोंटी ] पानी आदि ढालने के लिए बरतन में लगी हुई नली । तुलतुली ।

**टोक**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्तोक ] १. टोकने की क्रिया या भाव ।

यौ०—रोक-टोक=प्रश्न आदि द्वारा बाधा । रोक-टोक=मनाही । निषेध । २. बुरी दृष्टि का प्रभाव । नजर । (स्त्री०)

**टोकना**—क्रि० स० [ हिं० टोक ] १. किसी को कोई काम करते हुए देख-कर उसे कुछ कहकर टोकना या पूछ-ताछ करना । २. नजर लगाना ।

संज्ञा पुं० [ ? ] [ स्त्री० टोकनी ] १. टोकरा । डला । २. एक प्रकार का हंडा ।

**टोकरा**—संज्ञा पुं० [ ? ] [ स्त्री० टोकरी ] बाँस की फट्टियों या पतली टहनियों का बनाया हुआ गोल और गहरा बरतन । छाबड़ा । डला । झाबा । खाँचा ।

**टोकरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टोकरा ] १. छोटा टोकरा । २. देगचो । बटलोई ।

**टोकारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० टोक ] वह बात जो किसी को कुछ चिताने या स्मरण दिलाने के लिए कही जाय ।

**टोटका**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रोटक ] कोई बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिए ऐसा प्रयोग जो किसी अलौकिक या दैवी शक्ति पर विश्वास करके किया जाय । टोना । यंत्र-मंत्र । लटका ।

मुहा०—टोटका करने आना=आकर तुरंत चला जाना ।

**टोटकेहाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टोटका ] टोटका, टोना या जादू करनेवाली ।

**टोटा**—संज्ञा पुं० [ सं० तुंड ] १. बचा या कटा हुआ टुकड़ा । २. कारतूस ।

संज्ञा पुं० [ हिं० टूटना ] १. घाटा । हानि । २. कमी । अभाव ।

**टोड़***†—संज्ञा पुं० [ हिं० तोंद ] बड़ा पेट । मोटा उदर ।

**टोड़िक***†—संज्ञा पुं० [ हिं० टोड़+ इक ] तोंद वाला । पेटू ।

**टोडिल***—संज्ञा पुं० [ ? ] शरारती ।

**टोडी**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. नीच और तुच्छ विचार का मनुष्य । कमीना और खुशामदी ।

यौ०—टोडी बच्चा=सरकारी अफसरों का खुशामदी ।

**टोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्रोटकी ] संपूर्ण जाति की एक रागिनी ।

**टोनहा**—वि० [ हिं० टोना ] [ स्त्री० टोनही ] टोना या जादू करनेवाला ।

**टोनहाया**—संज्ञा पुं० [ हिं० टोना ] [ स्त्री० टोनहाई ] टोना या जादू करनेवाला मनुष्य ।

**टोना**—संज्ञा पुं० [ सं० तंत्र ] १. मंत्र-तंत्र का प्रयोग । जादू । २. विवाह का एक प्रकार का गीत ।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक शिकारी चिड़िया ।

†क्रि० स० [ सं० त्वक्+ना ] हाथ से टटोलना । छूना ।

**टोप**—संज्ञा पुं० [ हिं० तोपना=ढाकना ] १. बड़ी टोपी । २. लड़ाई में पहनने की लोहे की टोपी । शिरस्त्राण । खोद । कूँड़ । ३. खोल । गिलाफ ।

†संज्ञा पुं० [ अनु० टप ] बूँद । कतरा ।

**टोपा**—संज्ञा पुं० [ हिं० टोप ] बड़ी टोपी ।

†संज्ञा पुं० [ हिं० तोपना ] टोकरा ।

†संज्ञा पुं० [ हिं० तोपना ] टाँका । डोभ ।

**टोपी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तोपना ] १. सिर पर का पहनावा । २. राजमुकुट । ताज । ३. इस आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु । ४. इस आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे बंदूक पर चढ़ाकर घोड़ा गिराने से आग लगती है । बंदूक का पड़ाका । ५. वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है ।

**डोम**—संज्ञा पुं० [ हिं० डोम ]

टोंका। तोपा।

**टोंगी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कटारी। कटार।

**टोरना**—क्रि० स० [ सं० त्रुट ] तोड़ना।

**मुहा०**—आँख टोरना=लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना।

**टोर्रा**—संज्ञा पुं० [ सं० तुवर ] १. अरहर का छिलके सहित खड़ा दाना। २. रवा।

**टोल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तोलिका ] १. मंडली। जत्था। झुंड। २. चटसार। पाठशाला।

**टोल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] वह कर जो किसी विशेष सुभीते के लिए या यात्रियों आदि पर लगता है।

**टोला**—संज्ञा पुं० [ सं० तोलिका=घेरा, बाड़ा ] [ स्त्री० टोलिका ] १. आदमियों की बड़ी बस्ती का एक भाग। मुहल्ला। २. पत्थर या ईंट का टुकड़ा। रोड़ा।

**टोली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तोलिका ] १. छोटा मुहल्ला। बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। झुंड। जत्था। मंडली। ३. पत्थर की चौकोर पटिया। सिल। ४. एक प्रकार का बाँस। नाल।

**टोवना†**—क्रि० स० दे० "टोना"।

**टोह**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टोली ] १. टटोल। खोज। ढूँढ़। २. खबर। देख-भाल।

**टोही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टोह ] पता लगानेवाला।

**टौरना**—क्रि० स० [ हिं० टेरना ? ] जाँच करना। परखना। थाह लेना। पता लगाना।

**ट्रंक**—संज्ञा पुं० [ अं० ] कपड़े आदि रखने का लोहे का संदूक। पेटी।

**ट्राम**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] बड़े नगरों में सड़क पर चलनेवाली एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिसका मार्ग रेल की लाइनों की तरह दो पटरियों का होता है।

—:*:—

# ठ

**ठ**—व्यंजनों में बारहवाँ व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

**ठंठ**—वि० [ सं० स्थाणु ] ठूँठा। ( पेड़ )।

**ठंठार**—वि० [ हिं० ठंठ ] खाली। रीता।

**ठंड**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठंडा ] शीत। सरदी।

**ठंडाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठंढाई"।

**ठंडक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठंडा ] १. शीत। सरदी। जाड़ा। २. ताप या जलन की कमी। तरी। ३. संतोष। तृप्ति। प्रसन्नता। तसल्ली। ४. किसी उपद्रव या फैले हुए रोग आदि की शांति।

**ठंडा**—वि० [ सं० स्तब्ध ] [ स्त्री० ठंडी ] १. सर्द। शीतल।

**मुहा०**—ठंडी साँस = दुःख से भरी साँस। शोकोच्छ्वास। आह।

२. जो जलता या दहकता न हो। बुझा हुआ। ३. जिसमें आवेश न हो। शांत।

**मुहा०**—ठंडा करना= १. क्रोध शांत करना। २. ढारस देकर शोक कम करना। तसल्ली देना।

४धीर। शांत। गंभीर। ५.जिसमें उत्साह या उमंग न हो। सुस्त। उदासीन। ६. जो कोई अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। विरोध न करनेवाला।

**मुहा०**—ठंडे ठंडे=बिना विरोध या प्रतिवाद किए। चुपचाप।

७. तृप्त। प्रसन्न। खुश।

**मुहा०**—ठंडे ठंडे = हँसी खुशी से। ठंडा रखना=आराम-चैन से रखना।

८. निश्चेष्ट। जड़। ९. मृत। मरा हुआ।

**मुहा०**—ठंडा होना = मर जाना। ताजिया ठंढा करना=ताजिया दफन करना। ( किसी पवित्र या प्रिय वस्तु को ) ठंढा करना=फेंकना या तोड़ना फोड़ना।

**ठंढाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठंढा ] १. वह दवा या मसाला जिससे शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है। २. पिसी हुई भाँग।

**ठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। २. महाध्वनि। ३. चंद्रमंडल। ४. शून्य।

**ठई**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] स्थिति।

**ठक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] ठोंकने का शब्द।

वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौचक्का।

**ठक ठक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बखेड़ा। टंटा। झंझट।

**ठकठकाना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. खटखटाना। २. ठोंकना-पीटना।

**ठकठकिया**—वि० [ अनु० ठक ठक] तकरार करने वाला। हुज्जती। बखेड़िया।

**ठकुरसुहाती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर + सुहाना ] लल्लोचप्पो। खुशामद।

**ठकुराइन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर] १. ठाकुर की स्त्री। स्वामिनी। मालिकिन। २. क्षत्री की स्त्री। क्षत्राणी। ३. नाई की स्त्री।

**ठकुराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर ] १.सरदारी। प्रधानता। २. ठाकुर का अधिकार। ३. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो। रियासत। ४. बड़प्पन। महत्त्व। बड़ाई।

**ठकुरानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर ] १. ठाकुर या सरदार की स्त्री। २. रानी। ३. मालिकिन। स्वामिनी।

**ठकुराय**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाकुर ] क्षत्रियों का एक भेद।

**ठकुरायत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर ] १. आधिपत्य। प्रभुत्व। २. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधीन हो। रियासत।

**ठकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेकना + औरी ] अड्डे के आकार की सहारा देने की वह लकड़ी जो साधु या पहाड़ी मजदूर अपने साथ रखते हैं। बैरागिन। जोगिन।

**ठक्कर**—संज्ञा स्त्री० दे० "टक्कर"।

**ठग**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थग ] [ स्त्री० ठगनी, ठगिन ] १. वह लुटेरा जो छल और धूर्तता से माल लूटता हो। २. छली। धूर्त। धोखेबाज।

**ठगई**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।

**ठगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ५ मात्राओं का एक गण।

**ठगना**—क्रि० स० [ हिं० ठग ] १. धोखा देकर माल लूटना २. धोखा देना। छल करना।

**मुहा०**—ठगा सा=आश्चर्य से स्तब्ध। चकित। भौचक्का।

३. सौदा बेचने में बेईमानी करना।

†क्रि अ० १. धोखा खाना। प्रतारित होना। २. चक्कर में आना। चकित होना। दंग रहना।

**ठगनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठग ] १. ठग की स्त्री या ठगनेवाली स्त्री। २. कुटनी।

**ठगपना**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठग + पन ] १. ठगने का भाव या काम। २. धूर्तता। छल। चालाकी।

**ठगमूरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठग + मूरि ] वह नशीली जड़ी बूटी जिसे ठग पथिकों को बेहोश करके उनका धन लूटने के लिए खिलाते थे।

**मुहा०**—ठगमूरी खाना = मतवाला होना।

**ठगमोदक**—संज्ञा पुं० दे० "ठगलाड़ू"।

**ठगलाड़ू**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठग + लड्डू ] ठगों का लड्डू जिसमें नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी।

**मुहा०**—ठगलाड़ू खाना = मतवाला होना। बेसुध होना।

**ठगवाही**†—संज्ञा पुं० दे० "ठग"।

**ठगवाना**—क्रि० स० [ हिं० ठगना का प्रे० ] दूसरे से धोखा दिलवाना।

**ठगविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठग+ सं० विद्या ] धूर्तता। धोखेबाजी।

**ठगाना**†—क्रि० अ० [ हिं० ठगना ] धोखे में आकर हानि सहना। ठगा जाना।

**ठगाही**†—संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।

**ठगिन, ठगिनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठग ] १. धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री। लुटेरिन। २. ठग की स्त्री।

**ठगिया**—संज्ञा पुं० दे० "ठग"।

**ठगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठक ] १. धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव। २. धूर्तता। धोखेबाजी।

**ठगोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठग+ औरी ] १ सुध-बुध भुलानेवाली शक्ति। २. टोना। जादू।

**ठट**—संज्ञा पुं० [सं० स्थाता] १. एक स्थान पर स्थित बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह। २. बनाव। रचना। सजावट।

**ठटकीला**—वि० [ हिं० ठाट ] सजा हुआ। ठाटदार।

**ठटना**—क्रि० स० [ हिं० ठाढ़ ] १. ठहराना। निश्चित करना। २. सजाना। सज्जित करना।

क्रि० अ० १. खड़ा रहना। अड़ना। डटना। २. सजना। सुसज्जित होना।

क्रि० स० [ हिं० ठाट ] आरंभ करना। ( राग )

**ठटनि**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठटना ] बनाव। रचना।

**ठटरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाट ] १. हड्डियों का ढाँचा। अस्थिपंजर। २. घास-भूसा आदि बाँधने का जाल। खरिया। ३. किसी वस्तु का ढाँचा। ४. मुरदा उठाने की रथी। अरथी।

**ठट्ठा**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाट ] बनाव। रचना।

**ठट्ट**—संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

**ठट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाट ] ठटरी। पंजर।

**ठट्ठा**—संज्ञा पुं० [ सं० अट्टहास ] हँसी। दिल्लगी।

यौ०—ठट्ठेबाज=दिल्लगीबाज।

मुहा०—ठट्ठा उड़ाना = उपहास करना।

**ठठ**—संज्ञा पुं० दे० "ठट"।

**ठठई**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठट्ठा"।

**ठठकना**—क्रि० अ० [ सं० स्थेष्ठ+करण ] १. एक-बारगी रुक या ठहर जाना। ठिठकना। २. स्तंभित हो जाना। ठक रह जाना।

**ठठना**—क्रि० अ० दे० "ठटना"।

**ठठरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।

**ठठाना**—क्रि० स० [अनु० ठक ठक] मारना। पीटना।

क्रि० अ० [ सं० अट्टहास ] जोर से हँसना।

**ठठेरिन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] ठठेरे का स्त्री।

**ठठेर-मंजारिका**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठठेरा+मार्जारिका ] ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे।

**ठठेरा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ठन ठन ] [ स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी ] बर्तन बनानेवाला। कसेरा।

मुहा०—ठठेरे ठठेरे बदलाई=जैसे के साथ तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली=ठठेरे की बिल्ली ऐसा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न चौंके या घबराय।

**ठठेरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठठेरा] १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम।

यौ०—ठठेरी बाजार=कसेरो का बाजार।

**ठठोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठट्ठा ] १. दिल्लगीबाज। मसखरा। २. दे० "ठठोली"।

**ठठोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठट्ठा ] हँसी। दिल्लगी।

**ठड़ा**—वि० [ सं० स्थातृ ] खड़ा। दंडायमान।

**ठढ़ा**—वि० [ सं० स्थातृ ] खड़ा। दंडायमान।

**ठन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

**ठनक**—संज्ञा स्त्री० [अनु० ठन ठन] १. चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द। २ टीस। चसक।

**ठनकना**—क्रि० अ० [ अनु० ठन ठन ] १. ठन ठन शब्द करना। २. टीस मारना। चसकना।

मुहा०—माथा ठनकना=गहरा खटका पैदा होना।

**ठनकाना**—क्रि० स० [ हिं०ठनकना ] किसी धातुखंड या चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात करके शब्द निकालना। बजाना।

**ठनकार**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] ठन-ठन शब्द।

**ठनगन**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठनना ] मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिए हठ।

**ठनठन गोपाल**—संज्ञा पुं० [ अनु० ठनठन+गोपाल ] १. छूँछी और निःसार वस्तु। २. निर्धन मनुष्य।

**ठनठनाना**—क्रि० स० [ अनु० ] ठनठन शब्द निकालना। बजाना।

क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना।

**ठनना**—क्रि० अ० [ हिं० ठानना ] १. (किसी कार्य्य का) तत्परता के साथ आरंभ होना। अनुष्ठित होना। छिड़ना। २. (मन में) ठहरना। पक्का होना। ३. ठहरना। लगना। जमना। ४. उद्यत होना। मुस्तैद होना।

**ठनाका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] ठन ठन शब्द। ठनकार।

**ठनाठन**—क्रि० वि० [ अनु० ठन ठन ] ठन ठन शब्द के साथ।

**ठपका**—संज्ञा पुं० [ देश० ] धक्का। ठेस।

**ठप्पा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थापन ] १. लकड़ी, धातु आदि का खंड जिस पर कोई आकृति या बेल-बूटे आदि इस प्रकार खुदे हों कि उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से वे आकृतियाँ उभर आवें या बन जायँ। साँचा। २. साँचे के द्वारा बनाया हुआ बेल-बूटा आदि। छाप। नकश। ३. एक प्रकार का गोटा।

**ठमक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठमकना ] १. चलते चलते ठहर जाने का भाव। रुकावट। २. चलने की ठसक। लचक।

**ठमकना**—क्रि० अ० [ सं० स्तंभ ] १. चलते चलते ठहर जाना। ठिठकना। रुकना। २. ठसक के साथ रुक रुककर या हावभाव दिखाते हुए चलना।

**ठमकाना, ठमकारना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ ठमकना ] चलते चलते रोकना। ठहराना।

**ठयना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ अनुष्ठान ] १. दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करना। ठानना। २. कर चुकना। पूरी तरह से करना। ३. मन में ठहराना। निश्चित करना।

क्रि॰ अ॰ दे॰ "ठनना"।

क्रि॰ स॰ [ सं॰ स्थापन ] १. स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २. लगाना। प्रयुक्त करना।

क्रि॰ अ॰ १. स्थित होना। बैठना। जमना। २. प्रयुक्त होना। लगना।

**ठरना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ स्तब्ध ] १. सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। २. बहुत अधिक ठंड पड़ना।

**ठर्रा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ ठड्ढा ] १. बहुत मोटा सूत। २. बड़ी अधपकी ईंट। ३. महुए की निकृष्ट शराब।

**ठलुवा**—संज्ञा पुं॰ बेकार।

**ठवना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "ठयना"।

**ठवनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ स्थापन ] १. बैठक। स्थिति। २. बैठने या खड़े होने का ढंग। आसन। मुद्रा।

**ठस**—वि॰ [ सं॰ स्थास्नु ] १. ठोस। कड़ा। २. जिसकी बुनावट घनी हो। गफ। ३. दृढ़। मजबूत। ४. भारी। वजनी। ५. सुस्त। आलसी। ६. (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७. कृपण। कंजूस।

**ठसक**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ठस ] १. गर्वीली चेष्टा। नखरा। २. दर्प। शान।

**ठसकदार**—वि॰ [ हिं॰ ठसक+फ़ा॰ दार ] १. घमंडी। अभिमानी। २. शानदार। तड़क-भड़कवाला।

**ठसका**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] १. सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले। २. ठोकर। धक्का।

**ठसाठस**—क्रि॰ वि॰ [ हिं॰ ठस ] ठूँसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

**ठस्सा**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] १. अभिमानपूर्ण हाव-भाव। ठसक। २. घमंड। अहंकार। ३. ठाट-बाट। शान।

**ठहना**—क्रि॰ अ॰ [अनु॰] १. घोड़ों का हिनहिनाना। २. घनघनाना। घंटे का बजना।

†क्रि॰ अ॰ [ सं॰ संस्था ] बनाना। सँवारना।

क्रि॰ स॰ बचाना। रक्षा करना।

**ठहर**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्थल ] १. स्थान। जगह। २. रसोई का स्थान। चौका। लिपाई-पोताई।

**ठहरना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ स्थैर्य ] १. चलना बंद करना। रुकना। थमना। २. डेरा डालना। टिकना। ३. एक स्थान पर बना रहना। स्थित रहना।

**मुहा॰**—मन ठहरना = चित्त की आकुलता दूर होना।

४. नीचे न फिसलना या गिरना। अड़ा रहना, स्थित रहना। ५. नष्ट न होना। बना रहना। ६. कुछ दिन काम देने लायक रहना। चलना। ७. घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना। थिराना। ८. धीरज रखना। ९. प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। १०. निश्चित होना। पक्का होना।

**मुहा॰**—किसी बात का ठहरना=किसी बात का संकल्प होना। ठहरा=है। जैसे, वह अपने संबंधी ठहरे।

**ठहराई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ठहरना ] १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. कब्जा। अधिकार।

**ठहराना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ ठहरना ] १. चलने से रोकना। गति बंद करना। २. डेरा देना। टिकाना। ३. अड़ाना। टिकाना। ४. इधर-उधर न जाने देना। ५. किसी होते हुए काम को रोकना। ६. पक्का करना। तै करना।

**ठहराव**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ ठहरना ] १. ठहरने का भाव। स्थिरता। २. निश्चय। निर्धारण।

**ठहरौनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ठहराना ] विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन-देन का करार।

**ठहाका**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] जोर की हँसी। अट्टहास।

**ठहियाँ**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ठाँव"।

**ठाँ**—संज्ञा स्त्री॰, पुं॰ दे॰ "ठाँव"।

**ठाँई**†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ ठाँव ] १. स्थान। जगह। २. तईं। प्रति। ३. समीप। पास। निकट।

**ठाउँ**—संज्ञा पुं॰, स्त्री॰ दे॰ "ठाँयँ"।

**ठाँठ**—वि॰ [ अनु॰ ठन ठन ] १. जो सूखकर बिना रस का हो गया हो। नीरस। २. ( गाय या भैंस ) जो दूध न देती हो।

**ठायँ**—संज्ञा पुं॰, स्त्री॰ [ सं॰ स्थान] १. स्थान। जगह। २. समीप। निकट। पास।

संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] बंदूक छूटने का शब्द।

**ठायँ ठायँ**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] १. बंदूक छूटने का शब्द। †२. झगड़ा।

**ठाँव**—संज्ञा पुं॰, स्त्री॰ [ सं॰ स्थान ] स्थान। जगह। ठिकाना।

**ठाँसना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ स्थास्नु ] १. जोर से घुसाना या भरना।

३. रोकना । मना करना ।

क्रि० अ० ठन ठन शब्द के साथ खौलना ।

**ठाकुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ठक्कुर ] [ स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी ] १. देवता । देव-मूर्ति । २. ईश्वर । भगवान् । ३. पूज्य व्यक्ति । ४. किसी प्रदेश का अधिपति । नायक । सरदार । ५. जमींदार । ६. क्षत्रियों की उपाधि । ७. मालिक । स्वामी । ८. नाइयों की उपाधि ।

**ठाकुरद्वारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाकुर+द्वार ] मंदिर । देवालय । देवस्थान ।

**ठाकुरबाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर+बाड़ी ] देवालय । मंदिर ।

**ठाकुरसेवा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाकुर + सेवा ] १. देवता का पूजन । २. मंदिर के नाम उत्सर्ग की हुई संपत्ति ।

**ठाकुरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. स्वामित्व । आधिपत्य । शासन । २. दे० "ठकुराई" ।

**ठाट**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थातृ ] १. लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा । २. मूल अंगों की योजना जिनके आधार पर शेष रचना होती है । ढाँचा । ढड्ढा । पंजर । ३. वेश-विन्यास । श्रृंगार । सजावट ।

**क्रि० प्र०**—ठटना ।—बनाना ।

**मुहा०**—ठाट बदलना = १. वेश बदलना । २. झूठमूठ अधिकार या बड़प्पन जताना । रंग बाँधना ।

४. आडंबर । ऊपरी तड़क-भड़क । दिखावट । ५. ढंग । शैली । प्रकार । तर्ज । ६. आयोजन । तैयारी । ७. सामान । सामग्री । ८. युक्ति । ढंग । उपाय ।

संज्ञा पुं० [ हिं० ठाट ] [ स्त्री० ठाटी ] १. समूह । झुंड । †२. बहुतायत । अधिकता ।

**ठाटना***†—क्रि० स० [ हिं० ठाट ] १. निर्मित करना । रचना । बनाना । २. अनुष्ठान या आयोजन करना । ठानना । ३. सजाना । सँवारना ।

**ठाट बाट**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाट ] १. सजावट । सजधज । २. तड़क भड़क । आडंबर ।

**ठाटर**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाट ] १. ठाट । टट्टर । टट्टी । २. ठठरी । पंजर । ३. ढाँचा । ४. कबूतर आदि के बैठने की छतरी । ५. ठाटबाट । बनाव । सिंगार । सजावट ।

**ठाटी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठाट ] ठट । समूह ।

**ठाठ**—संज्ञा पुं० दे० "ठाट" ।

**ठाढ़ा**†*—वि० [ सं० स्थातृ ] १. खड़ा । दंडायमान । २. समूचा । साबित । ३. उत्पन्न । पैदा ।

**मुहा०**—ठाढ़ा देना=ठहराना । टिकाना ।

वि० हट्टा कट्टा । हृष्ट पुष्ट ।

**ठाढ़ेश्वरी**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाढ़ा ] एक प्रकार के साधु जो दिन-रात खड़े ही रहते हैं ।

**ठादर**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] झगड़ा । मुठभेड़ ।

**ठान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अनुष्ठान ] १. कार्य्य का आयोजन । काम का छिड़ना । अनुष्ठान । २. छेड़ा हुआ काम । ३. दृढ़ निश्चय । पक्का इरादा । ४. अदाज । चेष्टा । मुद्रा ।

**ठानना**†—क्रि० स० [ सं० अनुष्ठान ] १. ( कार्य्य ) तत्परता के साथ आरंभ करना । अनुष्ठित करना । छेड़ना । २. पक्का करना । ठहराना ।

**ठाना***†—क्रि० स० [ सं० अनुष्ठान ] १. ठानना । २. निश्चित करना । पक्का करना । ३. स्थापित करना । रखना ।

**ठाम**†*—संज्ञा पुं०, स्त्री० [ सं० स्थान ] १. स्थान । जगह । २. संचालन का ढंग । ठवनि । मुद्रा ।

**ठार**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तब्ध ] १. गहरा जाड़ा । गहरी सरदी । २. पाला । हिम ।

**ठाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० निठल्ला ] १. रोजगार का न रहना । बेकारी । २. आमदनी का न होना ।

वि० जिसे कुछ काम-धंधा न हो । निठल्ला ।

**ठाली**—वि० [ हिं० निठल्ला ] जिसे कुछ कामधंधा न हो । निठल्ला । बेकाम । खाली ।

**ठावना***—क्रि० स० दे० "ठाना" ।

**ठाहर**†—संज्ञा पुं० [ सं० स्थान ] १ स्थान । जगह । २. रहने या टिकने का स्थान । डेरा ।

**ठिंगना**—वि० [ हिं० हेठ+अंग ] [ स्त्री० ठिंगनी ] छोटे डील का । नाटा ।

**ठिगठैना**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० ठीक+ठयना ] ठीक-ठाक । प्रबंध । आयोजन ।

**ठिकना**†—क्रि० अ० दे० "ठहरना" ।

**ठिकरा**†—संज्ञा पुं० दे० "ठीकरा" ।

**ठिकाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० टिकान ] १. स्थान । जगह । ठौर । २. रहने या ठहरने की जगह । निवास-स्थान । ३. निर्वाह या आश्रय का स्थान ।

**मुहा०**—ठिकाने आना=१. अपने स्थान पर पहुँचना । २. [illegible]-

विचार के उपरांत यथार्थ बात करना या समझना। ठिकाने की बात=१. ठीक या प्रामाणिक बात। २. समझदारी की बात। ठिकाने पहुँचाना या लगाना=१.ठीक जगह पर पहुँचाना। २. नष्ट कर देना। न रहने देना। ३. मार डालना।

४. निश्चित अस्तित्व। दृढ़ स्थिति। स्थिरता। ठहराव। ५.प्रबंध। आयोजन। बंदोबस्त। ६.पारावार। अंत। हद। ७.(कुछ रियासतों में) जागीर। †क्रि० स० [ हिं० ठिकना ] १. ठहराना। २. अपने पास रखना। ( बाजारू )

**ठिकानेदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठिकाना + फ़ा० दार ] वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना ( जागीर ) मिला हो।

**ठिठकना**—क्रि० अ० [ सं० स्थित + करण ] १. चलते चलते एकबारगी रुक जाना। २. स्तंभित होना। ठक रह जाना।

**ठिठरना**—क्रि० अ० [ सं० स्थित ] सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।

**ठिठुरना**†-क्रि० अ०दे० "ठिठरना"।

**ठिनकना**-क्रि० अ० [ अनु० ] बच्चों का बीच में रुक रुककर रोना।

**ठिर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थिर ] गहरी सरदी।

**ठिरना**—क्रि० म० [ हिं० ठिर ] सरदी से ठिठुरना।

क्रि० अ० बहुत जाड़ा पड़ना।

**ठिलना**—क्रि० अ० [ हिं० ठेलना ] १. ठेला जाना। ढकेला जाना। २. बलपूर्वक बढ़ना। घुसना। धँसना।

**ठिलाठिल**†-क्रि० वि० [हिं०ठिलना] एक पर एक गिरते हुए। धक्कमधक्का करते हुए।

**ठिलिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थाली ] छोटा घड़ा। गगरी।

**ठिलुआ**—वि० [ हिं० निठल्ला ] निठल्ला। निकम्मा।

**ठिल्ला**†—संज्ञा पुं० [ हिं० ठिलिया ] [ स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली ] गगरी। घड़ा।

**ठिहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठहरना ] ठहराव। निश्चय। इकरार।

**ठीक**—वि० [ हिं० ठिकाना ] १. जैसा हो, वैसा। यथार्थ। सच। प्रामाणिक। २. उपयुक्त। उचित। मुनासिब। योग्य। ३. शुद्ध। सही। ४. दुरुस्त। अच्छा। ५. जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६. सीधा। सुष्ठु। ७. जिसमें कुछ फर्क न पड़े। निर्दिष्ट। ८ ठहराया हुआ। निश्चित। स्थिर। पक्का।

क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे। उचित रीति से।

संज्ञा पुं० १ पक्की बात। निश्चय। ठिकाना।

**मुहा०**—ठीक देना=मन में पक्का करना।

२. स्थिर प्रबंध। पक्का आयोजन। ठहराव। ३. जोड़। योग।

**ठीक ठाक**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठीक ] १ निश्चित प्रबंध। बंदोबस्त। आयोजन। २ निश्चय। ठहराव। पक्की बात।

वि० अच्छी तरह दुरुस्त। प्रस्तुत।

**ठीकरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० टुकड़ा ] [ स्त्री० अल्पा० ठीकरी ]; १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा। सिटकी। २. पुराना या टूटा फूटा बरतन। ३. भीख माँगने का बरतन। भिक्षापात्र।

**ठीकरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठीकरा ] १. मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा।

२. तुच्छ वस्तु।

**ठीका**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठीक ] १. कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। २. आमदनी की वस्तु का कुछ काल तक के लिए इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता जाय। इजारा। पट्टा।

**ठीकेदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठीका + फ़ा० दार ] ठीका लेनेवाला।

**ठीलना**†—क्रि० स० दे० "ठेलना"।

**ठीवन***—संज्ञा पुं० [ सं० ष्ठीवन ] थूक। खखार।

**ठीहँ**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] घोड़ों की हिनहिनाहट।

**ठीहा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्था ] १. जमीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं; २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा। ३. बैठने के लिए कुछ ऊँचा किया हुआ स्थान। गद्दी। ४ हद। सीमा।

**ठुँठ**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थाणु ] १. सूखा हुआ पेड़। २. कटे हुए हाथ वाला जीव। टूला।

**ठुकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. ताड़ित होना। ठोंका जाना। पिटना। २ धँसना। गड़ना। ३. मार खाना। मारा जाना। ४. हानि होना। नुकसान होना। ५. पैर में बेड़ी पहनना। कैद होना।

**ठुकराना**—क्रि० स० [ हिं० ठोकर ] १. ठोकर लगाना। लात मारना। २. तुच्छ समझ कर दूर हटाना।

**ठुकवाना**—क्रि० स० [ हिं० ठोकना का प्रे० ] ठोकने का काम कराना।

पिटवाना।

**ठुड्डी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंड ] चेहरे में होंठ के नीचे का भाग। चिबुक। ठोड़ी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठड्डी ] वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो। ठोर्रीं।

**ठुमक**—वि० [ अनु० ] जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं। ठसक भरी (चाल)।

**ठुमकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाचने में पर पटककर चलना जिसमें घुँघरू बजें।

**ठुमका**—वि० [ अनु० ] नाटा। ठेंगना।

**ठुमकी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. ठिठक। रुकावट। २. छोटी खरी पूरी। वि० स्त्री० नाटी। छोटे डील की।

**ठुमरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।

**ठुर्री**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठड्डा=खड़ा] वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।

**ठुसना**—क्रि० अ० [ हिं० ठूँसना ] कसकर भरा जाना।

**ठुसाना**—क्रि० स० [ हिं० ठूसना ] १. कसकर भरवाना। २. खूब पेट भर खिलाना। (अशिष्ट)।

**ठूँग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंड ] १. चोंच। ठोर। २. चोंच से मारने की क्रिया।

**ठूँठ**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थाणु ] १. वह पेड़ जिसकी डाल, पत्तियाँ आदि कट गई हों। सूखा पेड़। २. कटा हुआ हाथ। टुंड।

**ठूँठा**—वि० [ सं० स्थाणु ] १. बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़)। सूखा (पेड़)। २. बिना हाथ का। लूला।

**ठूँसना**—क्रि० स० दे० "ठूसना"।

**ठूसना**—क्रि० स० [ हिं० ठस ] १. खूब कसकर भरना। २. घुसेड़ना। घुसाना। ३. खूब पेट भरकर खाना।

**ठेंगना**—वि० [ हिं० हेठ+अंग ] [ स्त्री० ठेंगनी ] छोटे डील का।

**ठेंगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अँगूठा ] १. अँगूठा। ठोसा। २. सोंटा। डंडा। **मुहा०**—ठेंगा दिखाना = मूर्ख बनाना। धोखा देना। हराना।

**ठेंठी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. कान की मैल। २. कान के छेद में उसे मूँदने के लिए लगाई हुई रुई आदि की डाट। ३. डाट। काग।

**ठेंपी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"।

**ठेक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिकना ] १. टेक। चाँड़। २. पच्चड़। ३. पेंदा। तल। ४. घोड़ों की एक चाल। ५. छड़ी या लाठी की सामी।

**ठेकना**—क्रि० स० [ हिं० टिकना, टेक ] १. सहारा लेना। आश्रय लेना। टेकना। २. टिकना। ठहरना। रहना।

**ठेका**—संज्ञा पुं० [ हिं० टिकना ] १. सहारे की वस्तु। ठेक। २. ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३ तबला या ढोल बजाने का वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय। ४. तबले में बाँया। ५. ठोकर। धक्का।

संज्ञा पुं० दे० "ठीका"।

**ठेकाई**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कपड़ों की छपाई में काले हाशिए की छपाई।

**ठेकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टेक ] टेक। सहारा।

**ठेगना***—क्रि० स० [ हिं० टेकना ] १. टेकना। सहारा लेना। २. रोकना। मना करना।

**ठेघा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० टेक ] टेक। चाँड़।

**ठेठ**—वि० [देश०] १. निपट। निरा। बिलकुल। २. जिसमें कुछ मेल जोल न हो। खालिस। ३. शुद्ध। निर्मल। निर्लिप्त। ४. आरंभ। शुरू।

संज्ञा स्त्री० वह बोली जिसमें लिखने पढ़ने की भाषा के शब्दों का मेल न हो। सीधीसादी बोली।

**ठेलना**—क्रि० स० [ हिं० टलना ] धक्का देकर आगे बढ़ाना। रेलना। ढकेलना।

**ठेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठेलना ] १. धक्का। आघात। टक्कर। २. एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं। ३. भीड़-भाड़। धक्कम-धक्का।

**ठेलाठेल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठेलना ] धक्कम-धक्का।

**ठेलुवा**—संज्ञा पुं० दे० "ठलुवा"।

**ठेस**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ठस] आघात। चोट।

**ठैन**†*—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थान ] जगह। स्थान।

**ठोंक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठोंकना ] ठोंकने की क्रिया या भाव। प्रहार। आघात।

**ठोंकना**—क्रि० स० [ अनु० ठक ठक ] १. जोर से चोट मारना। प्रहार करना। पीटना। २. मारना-पीटना। ३. चोट लगाकर धँसाना। गाड़ना। ४. (नालिश, अरजी आदि) दाखिल करना। दायर करना। ५. काठ में डालना। बेड़ियाँ

से जकड़ना। ६. हथेली से आघात पहुँचाना। थपथपाना।

**मुहा०**—ठोंकना बजाना=जाँचना। परखना।

७. हाथ से मारकर बजाना।

**ठोंग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंड ] १. चोंच या उसकी मार। २. उँगली की ठोकर।

**ठोंगा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] कागज का बना हुआ एक खास तरह का दोना या पात्र।

**ठो**†—अव्य० [ हिं० ठौर ] एक शब्द जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगाया जाता है। संख्या। अदद। ( पूरबी )

**ठोकर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठोकना ] १. आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगे। ठेस।

**मुहा०**—ठोकर या ठोकरें खाना=१. किसी भूल के कारण दुःख सहना। २. धोखे में आना। चूक जाना। ३. दुर्गति सहना। कष्ट सहना। ठोकर लेना=ठोकर खाना।

२. वह पत्थर या कंकड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता हो। ३. वह कड़ा आघात जो पैर या जूते के पंजे से किया जाय। ४ कड़ा आघात। धक्का। ५. जूते का अगला भाग।

**ठोठरा**†—वि० [ हिं० ठूँठ ] खाली। पोपला।

**ठोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंड ] होंठ के नीचे का गोलाई लिए उभरा भाग। ठुड्डी। चिबुक। दाढ़ी।

**ठोढ़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठोड़ी"।

**ठोर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का पकवान।

†संज्ञा पुं० [ सं० तुंड ] चोंच। चंचु।

**ठोली**—संज्ञा स्त्री० दे० "ठठोली"।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] दुश्चरित्र या रखेली स्त्री।

**ठोस**—वि० [ हिं० ठस ] १. जो पोला या खोखला न हो। २. दृढ़। मजबूत।

संज्ञा पुं० [ देश० ] कुढ़न। डाह।

**ठोसा**—संज्ञा पुं० दे० "ठेंगा"।

**ठोहना***†—क्रि० स० [ हिं० ढूँढ़ना ] पता लगाना। खोजना।

**ठौनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "ठवनि"।

**ठौर**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठाँव ] १. जगह। स्थान।

**मुहा०**—ठौर कुठौर=१. बुरे ठिकाने। अनुपयुक्त स्थान पर। २. बेमौका। बिना अवसर। ठौर न आना=समीप न आना। ठौर रखना=मार डालना। ठौर रहना=१. जहाँ का तहाँ पड़ रहना। २. मर जाना।

३. मौका। अवसर।

—:*:—

# ड

**ड**—व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण।

**डंक**—संज्ञा पुं० [सं० दंश] १.बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाते हैं। २. डंक मारा हुआ स्थान। ३. कलम की जीभ। निब।

**डंकना**—क्रि० अ० [अनु०] भयानक शब्द करना। गरजना।

**डंका**—संज्ञा पुं० [सं० ढक्का] एक प्रकार का नगाड़ा।

**मुहा०**—डंके की चोट कहना=खुल्लमखुल्ला कहना। सबको सुनाकर कहना।

**डंकिनी**—संज्ञा स्त्री०दे० "डाकिनी"।

**डंकिनी बंदोबस्त**—वह बंदोबस्त जिसमें खेत की लगान सदा के लिए निश्चित हो जाय। स्थायी बंदोबस्त।

**डंगर**—संज्ञा पुं० [देश० ] चौपाया।

**डँगरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डँगरा ] लंबी ककड़ी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाँगर ] चुड़ैल। डाइन।

**डँगवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० डंगर ] किसानों की पारस्परिक हल-बैल आदि की सहायता। जिता।

**डंगू ज्वर**—संज्ञा पुं० [ अं० डेंगू ] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

**डँटैया**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाँटना ] डाँटनेवाला। घुड़कनेवाला। धमकानेवाला।

**डंठा**=संज्ञा पुं० दे० "डंडा"।

**डंठल**—संज्ञा पुं० [सं० दंड] छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

**डंठी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० दंड] डंठल।

**डंड**—संज्ञा पुं० [ सं० दंड ] १. डंडा। सोंटा। २. बाहुदंड। बाँह। ३. हाथ पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की कसरत।

**मुहा०**—डंड पेलना=खूब डंड करना। ४. दंड। सजा। ५. अर्थदंड। जुरमाना। ६. घाटा। हानि। नुकसान। ७. घड़ी। दंड।

**डंडपेल**—संज्ञा पुं० [ हिं० डंड+पेलना ] १. कसरती। पहलवान। २. बलवान् आदमी।

**डंडवत**—संज्ञा स्त्री० दे० "दंडवत्"।

**डँड़वारा**—संज्ञा पुं० [हिं० डाँड़+वार ] [स्त्री० अल्पा० डँड़वारी ] वह कम ऊँची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिए उठायी जाय।

**डँड़वी***—संज्ञा पुं० [ हिं० दंड ]दंड या राजकर देनेवाला। करद।

**डंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० दंड ] १. लकड़ी या बाँस का सीधा लंबा टुकड़ा। २. मोटी छड़ी। सोंटा। लाठी। ३. चहारदीवारी। डाँड़। डँड़वारा।

**डंडाकरन***—संज्ञा पुं० दे० "दंडकवन"।

**डंडा-डोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डंडा +डोली ] लड़कों का एक खेल।

**डँड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाँड़ी=रेखा ] १. वह साड़ी जिसके बीच में गोटे टाँककर लकीरें बनी हों। छड़ीदार साड़ी। २. गेहूँ के पौधे की सींक जिसमें बाल रहती है।

संज्ञा पुं० [ हिं० डाँड़ ] कर उगाहनेवाला।

**डंडी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डंडा ] १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २. हाथ में रहनेवाली वस्तु का वह लंबा पतला भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३. तराजू की लकड़ी जिसमें पलड़े बाँधे जाते हैं। डाँड़ी। ४. लंबा डंठल जिसमें फूल या फल लगा होता है। नाल। ५. आरसी नाम के गहने का वह छल्ला जो उँगली में पड़ा रहता है। ६. झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी। ७. दंड धारण करनेवाला संन्यासी। दंडी।

*वि० [ सं० द्वंद्व ] चुगलखोर।

**डँडोरना**—क्रि० स० [अनु०] ढूँढ़ना। खोजना।

**डंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ आडंबर। ढकोसला। २. विस्तार। ३. एक प्रकार का चँदवा। चदरछत।

**यौ०**—मेघडंबर=बड़ा शामियाना। दलबादल। अंबर डंबर=वह लाली जो संध्या के समय आकाश में दिखाई पड़ती है।

**डँवरुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० डमरु ] वात का एक रोग। गठिया।

**डवाँडोल**—वि० दे० "डाँवाँडोल"।

**डंस**—संज्ञा पुं० [ सं० दंश ] एक प्रकार का बड़ा जंगली मच्छर। डाँस। २ वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो।

**डक**—संज्ञा पुं० [ अं० डाक ] १. एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा। ३. बन्दरगाह का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरती है।

**डकरना, डकराना**—क्रि० अ० [ अनु० ] बैल या भैंसे का बोलना।

**डकार**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. पेट की वायु का कंठ से शब्द के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरा होना सूचित होता है।

**मुहा०**—डकार न लेना = किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना।

२. बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।

**डकारना**—क्रि० अ० [हिं० डकार+ना ] १. पेट की वायु को मुँह से निकालना। डकार लेना। २. किसी का माल ले लेना। हजम करना। पचा जाना। ३. बाघ, सिंह आदि का गरजना, दहाड़ना।

**डकैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाका+एत ] डाका मारने वाला। डाकू। लुटेरा।

**डकैती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डकैत ] डाका मारने का काम। छापा।

**डग**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाँकना ] १. एक स्थान से पैर उठा कर दूसरे स्थान पर रखना। फाल। कदम।

**मुहा०**—डग देना=चलने में आगे को ओर पैर रखना। डग भरना या मारना = कदम बढ़ाना। लंबे पैर बढ़ाना।

२. उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े। पैंड़।

**डगडगाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] इधर उधर हिलना। डगमगाना।

**डगडोलना**—क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।
**डगडोर**—वि० दे० "डाँवाँडोल"।
**डगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।
**डगना**†*—क्रि० अ० [ हिं० डग ] १. हिलना। टसकना। खसकना। जगह छोड़ना। २. चूकना। भूल करना। डिगना। ३. डगमगाना। लड़खड़ाना।
**डगमग**—वि० [ अनु० ] १. लड़खड़ाता हुआ। २. विचलित।
**डगमगाना**—क्रि० अ० [ हिं० डग + मग ] १. कभी इस बल, कभी उस बल झुकना। थरथराना। लड़खड़ाना। २. विचलित होना। दृढ़ न रहना। क्रि० स० किसी को डगमग होने में प्रवृत्त करना।
**डगर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० डग ] मार्ग। रास्ता।
**डगरना***†—क्रि० अ० [ हिं० डगर ] चलना। रास्ता लेना।
**डगरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० डगर ] रास्ता। मार्ग।
संज्ञा पुं० [ देश० ] बाँस की पतली फट्टियों का बना छिछला बर्तन। डलरा। छाबड़ा।
**डगा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० डागा ] नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब। डागा।
**डगाना**—क्रि० स० दे० "डिगाना"।
**डटना**—क्रि० अ० [ हिं० ठ.ढ़ ] १. जमकर खड़ा होना। अड़ना। ठहरा रहना। २. लग जाना। छू जाना।
*†क्रि० स० [ सं० दृष्टि ] देखना।
**डटाना**—क्रि० स० [ हिं० डटना ] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना। सटाना। भिड़ाना। २. जोर से भिड़ाना। ३. जमाना। खड़ा करना।
**डट्टा**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाटना ] १. हुक्के का नैचा। २. डाट। काग। ३. बड़ी मेख।
**डड़ढार***†—वि० [ हिं० डाढ़ी ] १. बड़ी दाढ़ीवाला। २. वीर। बहादुर। ३. साहसी।
**डढ़न***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दग्ध ] जलन।
**डढ़ना***—क्रि० अ० [ सं० दग्ध ] जलना।
**डढ़ार, डढ़ारा**—वि० [हिं० डाढ़ ] १. वह जिसके डाढ़ें हों। २. वह जिसे दाढ़ी हो।
**डढ़ियल**—वि० [ हिं० डाढ़ी ] डाढ़ीवाला। जिसे बड़ी डाढी हो।
**डढ़ना***—क्रि० स० [ सं० दग्ध ] जलाना।
**डढ़ीरा***—वि० [ हिं० डाढ़ी ] डाढीवाला।
**डपट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दर्प ] डाँट। झिड़की। घुड़की।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० रपट ] घोड़े की तेज चाल।
**डपटना**—क्रि० स० [ हिं० डपट ] क्रोध में जोर से बोलना। डाँटना। क्रि० स० [ हिं० रपटना ] तेजी से जाना।
**डपोरसंख**—संज्ञा पुं० [ अनु० डपोर = बड़ा + शंख ] १. जो कहे बहुत, पर कर कुछ न सके। डींग मारनेवाला। २. बड़े डीलडौल का, पर मूर्ख।
**डफ**—संज्ञा पुं० [ अ० दफ ] १. चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा जो प्रायः होली में बजाया जाता है। डफला। २. लावनीवालों का बाजा। चंग।
**डफला**—संज्ञा पुं० दे० "डफ"।
**डफली**—संज्ञा स्त्री० [ अ० दफ ] छोटा डफ। खँजरी।
मुहा०—अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग = जितने लोग, उतनी राय।
**डफार**†—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द। चिग्घाड़।
**डफारना**†—क्रि० अ० [ अनु० ] जोर से रोना या चिल्लाना। दहाड़ मारना।
**डफालची, डफाली**—संज्ञा पुं० [ हिं० डफला ] डफला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।
**डफोरना**†—क्रि० अ० [ अनु० ] हाँक देना। ललकारना।
**डब**—संज्ञा पुं० [ हिं० डब्बा ] जेब। थैला।
**डबकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] पीड़ा करना। टपकना। टीस मारना।
**डबकौंहाँ**—वि० [ अनु० ] [ स्त्री० डबकौंहीं ] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ।
**डबडबाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] आँसू से ( आँखें ) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।
**डबरा**—संज्ञा पुं० [ सं० दभ्र ] [ स्त्री० डबरी ] छिछला गड्ढा जिसमें पानी जमा रहे। कुंड। हौज।
**डबल**—वि० [ अं० ] दोहरा।
संज्ञा पुं० अँगरेजी राज्य का पैसा।
**डबलरोटी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० डबल + हिं० रोटी ] पावरोटी।
**डबी**†*—संज्ञा स्त्री दे० "डब्बी"।
**डबोना**—क्रि० स० दे० "डुबाना"।
**डब्बा**—संज्ञा पुं० [ सं० डिंब ] १.

ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २. रेलगाड़ी में की एक गाड़ी।

**डब्बू**—संज्ञा पुं० [ हिं० डब्बा ] व्यंजन परोसने का एक प्रकार का कटोरा।

**डभकना**†—क्रि० अ० [ अनु० डभ-डभ ] १. पानी में डूबना उतराना। चुभकी लेना। २. आँखों में जल भर आना। आँख डबडबाना।

**डभकौहाँ**—वि० [ हिं० डभकना ] अश्रुपूर्ण ( नेत्र )

**डभकौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० डभकना] उरद की पीठी की बरी। डुभकी।

**डमरू**—संज्ञा पुं० [ सं० डमरु ] १. चमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच मे पतला रहता और दोनों सिरों की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है। २. इस आकार की कोई वस्तु। ३ ३२ लघु वर्णों का एक दंडक वृत्त।

**डमरूमध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० डमरु+मध्य ] धरती का वह तंग या पतला भाग जो जल के दो बड़े भूमि खंडों को मिलता हो।

**यौ०**—जल-डमरूमध्य=जल का वह तंग या पतला भाग जो जल के दो बड़े-बड़े भागों को मिलाता हो।

**डमरूयंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० डमरु+यंत्र ] एक प्रकार का यंत्र या पात्र जिसमें अर्क खींचे जाते तथा सिंगरफ का पारा, कपूर आदि उड़ाए जाते हैं।

**डयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उड़ान। २. पक्ष।

**डयना**—संज्ञा पुं० पंख। डैना।

**डर**—संज्ञा पुं० [ सं० दर ] १. वह मनोवेग जो किसी अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होता है। भय। भीति। त्रास। २. अनिष्ट की संभावना का अनुमान। आशंका।

**डरना**—क्रि० अ० [ हिं० डर+ना ] १. अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। २. आशंका करना। ३. पड़े रहना।

**डरपना**†—क्रि० अ० दे० "डरना"।

**डरपाना**†—क्रि० स० दे० "डराना"।

**डरपोक**—वि० [ हिं० डरना+पोकना ] बहुत डरने वाला। भीरु। कायर।

**डरवाना**—क्रि० स० दे० "डराना"।

**डरा***—संज्ञा पुं० दे० "डला"।

**डराडरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "डर"।

**डराना**—क्रि० स० [ हिं० डरना ] डर दिखाना। भयभीत करना।

**डरारी***—वि० [ हिं० डर ] डरावनी।

**डरावना**—वि० [ हिं० डर ] जिससे डर लगे। भयानक। भयंकर।

**डरावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० डराना ] १. डराने के लिए कही हुई बात। २. वह लकड़ी जो पेड़ों में चिड़िया उड़ाने के लिए बँधा रहती और खटखट शब्द करती है। खटखटा। धड़का।

**डरिया**†—संज्ञा स्त्री दे० "डाल"।

**डरीला**†—वि० [ हिं० डार ] डारवाला। शाखायुक्त। टहनीदार।

**डरैला**†—वि० [ हिं० डर] डरावना।

**डल**—संज्ञा पुं० [हिं० डला] टुकड़ा। खंड।

संज्ञा स्त्री० [ सं० तल्ल ] झील।

**डलना**—क्रि० अ० [ हिं० डालना ] डाला जाना। पड़ना।

**डलवाना**—क्रि० स० [ हिं०'डालना' का प्रे० ] डालने का काम दूसरे से कराना।

**डला**—संज्ञा पुं० [ सं० दल ] [स्त्री० डली ] टुकड़ा। खंड।

संज्ञा पुं० [ सं० डलक ] [ स्त्री० डलिया ] बाँस, बेंत आदि की पतली फट्टियों से बना हुआ बरतन। टोकरा। दौरा।

**डलिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डला ] छोटा डला या टोकरा। दौरी।

**डली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डला ] १. छोटा टुकड़ा। छोटा ढेला। खंड। २. सुपारी।

संज्ञा स्त्री० दे० "डलिया"।

**डसन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दंशन ] डसने की क्रिया, भाव या ढंग।

**डसना**—क्रि० स० [ सं० दंशन ] १. विषवाले कीड़े का दाँत से काटना। २. डंक मारना।

**डसाना**†—क्रि० स० [ हिं० डसना का प्रे० ] दाँत से कटवाना। डसवाना।

**डहकना**—क्रि० स० [ हिं० डाका ] १. छल करना। धोखा देना। ठगना। जटना। २. ललचाकर न देना।

क्रि० अ० [हिं० दहाड़, धाड़ ] १. बिलखना। विलाप करना। २.दहाड़ मारना।

*क्रि० अ० [ देश० ] छितराना। फैलना।

**डहकाना**—क्रि० स० [ हिं० डाका ] खाना। गँवाना। नष्ट करना।

क्रि० अ० धोखे में आकर पास का कुछ खोना। ठगा जाना।

क्रि० स० १.धोखे से किसी की चीज ले लेना। ठगना। जटना। २. कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर न देना।

**डहडहा**—वि० [ अनु० ] [ स्त्री० डहडही ] १. जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा-भरा। ताजा। २.

प्रसन्न। आनंदित। ३. तुरंत का। ताज़ा।

**डहडहाट**†*—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डहडहा ] १. हरापन। ताजगी। २. प्रफुल्लता। आनन्द।

**डहडहाना**—क्रि० अ० [ हिं० डहडहा ] १. पेड़, पौधे का हरा-भरा या ताजा होना। २. प्रसन्न होना। आनंदित होना।

**डहन**—संज्ञा पुं० [ सं० डयन ] पर। पंख।

**डहना**—क्रि० अ० [ सं० दहन ] १. जलना। भस्म होना। २. द्वेष करना। बुरा मानना।

क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःख पहुँचाना।

**डहर**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डगर ] १. रास्ता। मार्ग। पथ। २. आकाश-गंगा।

**डहरना**—क्रि० अ० [ हिं० डहर ] चलना।

**डहराना**†—क्रि० स० [हिं० डहरना] चलाना।

**डहार**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाहना ] डाहने या तंग करनेवाला।

**डाँक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दमक ] ताँबे या चाँदी का बहुत पतला पत्तर जो नगीनों के नीचे बैठाते हैं।

दे०—"डाक"।

†संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाँकना ] कै। वमन।

संज्ञा पुं० १. दे० "डंका"। २. दे० "डंक"।

**डाँकना**†—क्रि० स० [ सं० तक=चलना ] १. कूदकर पार करना। फाँदना। २. वमन करना। कै करना।

**डाँग**—संज्ञा पुं० [देश०] १. जंगल। २. डंका।

संज्ञा स्त्री० बड़ा डंडा। लट्ठ।

**डाँगर**—वि० [ देश० ] १. गाय, भैंस आदि पशु। चौपाया। २. एक नीच जाति।

वि० १.बहुत दुबला-पतला। २.मूर्ख।

**डाँट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दांति ] १. शासन। २. वश। दबाव। ३. घुड़की। डपट।

**डाँटना**—क्रि० स० [ हिं० डाँट ] डराने के लिए क्रोध-पूर्वक जोर से बोलना। घुड़कना।

**डाँठ**†—संज्ञा पुं० [सं० दंड] डंठल।

**डाँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० दंड ] १. सीधी लकड़ी। डंडा। २ गदका। ३. नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. सीधी लकीर। ५. दूर तक गई हुई ऊँची तंग जमीन। ऊँची मेंड़। ६. छोटा भीटा या टीला। ७. सीमा। हद। ८. अर्थदंड। जुरमाना। ९. नुकसान का बदला। हरजाना।

**डाँड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० डाँड़ ] अर्थ-दंड देना। जुरमाना करना।

**डाँड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाँड़ ] १. छड़। डंडा। २. गतका। ३. नाव खेने का डाँड़। ४. हद। सीमा। मेंड़।

**डाँड़ा मेंड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाँड़+मेंड़ ] १. परस्पर अत्यन्त सामीप्य। लगाव। २. अनबन। झगड़ा।

**डाँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाँड़ ] १. लम्बी पतली लकड़ी। २. लंबा हत्था या दस्ता। ३. तराजू की डंडी। ४. पतली शाखा। टहनी। ५. हिंडोले में वे चार सीधी लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती है। ६. डाँड़ खेनेवाला आदमी। ७. सीधी लकीर। रेखा। ८. लीक। मर्यादा। ९. चिड़ियों के बैठने का अड्डा। १०. डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की सवारी। झप्पान।

**डाँवरा**—संज्ञा पुं० [ सं० डिंब ? ] [ स्त्री० डाँवरी] लड़का। बेटा। पुत्र।

**डाँवाँडोल**—वि० [ हिं० डोलना ] एक स्थिति में न रहनेवाला। चंचल। अस्थिर।

**डाँस**—संज्ञा पुं० [ सं० दंश ] १. बड़ा मच्छड़। दंश। २. एक प्रकार की मक्खी।

**डाइन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० डाकिनी ] १. भूतनी। चुड़ैल। २. वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हों। टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री।

**डाक**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाँकना ] १. सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमें एक एक ठिकाने पर बराबर जानवर आदि बदले जाते हों।

**मुहा०**—डाक बैठाना या लगाना = शीघ्र यात्रा के लिए स्थान स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना।

**यौ०**—डाक चौकी=मार्ग में वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े या हरकारे बदले जायँ। २. राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था। ३. कागज पत्र आदि जो डाक से आवे।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] वमन। कै।

संज्ञा पुं० [बंग०] नीलाम की बोली।

**डाकखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाक+फ़ा० खाना ] वह सरकारी दफ्तर जहाँ लोग चिट्ठी पत्री आदि छोड़ते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं।

**डाकगाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाक+गाड़ी ] डाक ले जानेवाली

रेलगाड़ी जो और गाड़ियों से तेज चलती है।

**डाकघर**—संज्ञा पुं० दे० "डाकखाना"।

**डाकना**—क्रि० अ० [ हिं० डाक ] कै करना।

क्रि० स० [ हिं० डाँक+ना ] फाँदना। लाँघना।

**डाक बँगला**—[ हिं० डाक+बँगला ] वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों के ठहरने के लिए बना हो।

**डाक्टर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान् या पंडित। २. वह जिसे अँगरेजी ढंग से चिकित्सा करने का अधिकार प्राप्त हो।

**डाक्टरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० डाक्टर ] डाक्टर का काम, पद या पदवी आदि।

वि० डाक्टर संबंधी। डाक्टर का।

**डाका**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाकना या सं० दस्यु ] माल-असबाब जबरदस्ती छीनने के लिए दल बाँधकर धावा। बटमारी।

**डाकाजनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाक+फ़ा० ज़नी ] डाका मारने का काम। बटमारी।

**डाकिन**—संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।

**डाकिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पिशाची जो काली के गणों में है। २. डाइन। चुड़ैल।

**डाकू**—संज्ञा पुं० [ हिं० डाकना, सं० दस्यु ] डाका डालने वाला। लुटेरा।

**डाकोर**—संज्ञा पुं० [ सं० ठाक्कुर ] ठाकुर। विष्णु भगवान्। (गुजरात)।

**डाख**—संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

**डागा**—संज्ञा पुं० [ सं० दंडक ] नगाड़ा बजाने का डंडा। चोब।

**डांगुर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] जाटों की एक जाति।

**डाट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दाति ] १. वह वस्तु जो बोझ को ठहराने या वस्तु को खड़ी रखने के लिए लगाई जाय। टेक। चाँड़। २. छेद बंद करने की वस्तु। ३. बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। ठेंठी। काग। गट्टा। ४. मेहराब को रोक रखने के लिए ईंटों आदि की भराई।

संज्ञा पुं० दे० "डाँट"।

**डाटना**—क्रि० स० [ हिं० डाट ] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर दबाना। भिड़ाकर ठेलना। २. ठेकना। चाँड़ लगाना। ३. छेद या मुँह बंद करना। ठेंठा लगाना। ४. कसकर या ठूसकर भरना। ५. खूब पेट भर खाना। ६. ठाट से कपड़ा-गहना आदि पहनना। ७. मिलाना। भिड़ाना।

**डाढ़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दंष्ट्रा ] चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़।

**डाढ़ना***—क्रि० स० [ सं० दग्ध ] जलाना।

**डाढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दग्ध ] १. दावानल। वन की आग। २. आग। ३. ताप। दाह। जलन।

**डाढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डाढ़ ] १. ओंठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भाग ठोढ़ी। ठुड्डी। चिबुक। २. ठुड्डी और कनपटी पर के बाल। दाढ़ी।

**डाबर**—संज्ञा पुं० [ सं० दभ्र ] १. नीची जमीन जहाँ पानी ठहरा रहे। २. गड़ही। पोखरी। तलैया। ३. हाथ धोने का पात्र। चिलमची। ४. मैला पानी।

**डाबा**—संज्ञा पुं० दे० "डब्बा"।

**डाभ**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्भ ] १. एक प्रकार का कुश। २. कुश। ३. आम की मंजरी या मौर। ४. कच्चा नारियल।

**डामर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव-कथित माना जानेवाला एक तंत्र। २. हलचल। धूम। ३. आडंबर। ठाटबाट। ४. चमत्कार।

संज्ञा पुं० [ देश० ] १. साल वृक्ष का गोंद। राल। २. कहरुबा नामक गोंद। ३. एक प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है।

**डामल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० दायमुल हब्स ] १. उम्र भर के लिए कैद। २. 'देशनिकाला' का दंड।

**डायँ डायँ**—क्रि० वि० [ अनु० ] व्यर्थ इधर से उधर (घूमना)।

**डायन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० डाकिनी ] १. डाकिनी। पिशाचिनी। चुड़ैल। २. कुरूपा स्त्री।

**डायरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] रोजनामचा। दैनिकी।

**डार***†—संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० डलक ] डलिया। चँगेर।

**डारना**†*—क्रि० स० दे० "डालना"।

**डाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दारु ] १. पेड़ के धड़ से निकली हुई वह लंबी लकड़ी जिसमें पत्तियाँ और कल्ले होते हैं। शाखा। शाख। २. फानूस जलाने के लिए दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी। ३. तलवार का फल।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० डला ] १. डलिया। चँगेरी। २. कपड़ा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है।

**डालना**—क्रि० स० [ सं० तलन ] १. नीचे गिराना। छोड़ना। फेंकना। **मुहा०**-डाल रखना=१.रख छोड़ना। २. रोक रखना। देर लगाना। भुलाना।
२. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना। छोड़ना। ३. रखना या मिलाना। ४.प्रविष्ट करना। घुसाना। ५. खोज खबर न लेना। भुला देना। ६. अंकित करना। चिह्नित करना। ७. फैलाकर रखना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनना। ९. जिम्मे करना। भार देना। १०. गर्भगत करना। ( चौपायों के लिए ) ११. कै करना। उलटी करना। १२. ( स्त्री को ) पत्नी की तरह रखना। १३. लगाना। उपयोग करना। १४. घटित करना। मचाना। १५. बिछाना।

**डाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डला ] १. डलिया। चँगेरी। २. फल, फूल मेवे जो डलिया में सजा कर किसी के पास सम्मानार्थ भेजे जाते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

**डावरा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] डिंब या मार० टाबर ? ] [ स्त्री० डावरी ] लड़का। बेटा।

**डासन**†—संज्ञा पुं० [ हिं० डाभ+ आसन ] बिछावन। बिछौना। बिस्तर।

**डासना**†—क्रि० स० [हिं० डासन] बिछाना। डालना। फैलाना।
†—क्रि० स० [हिं० डसना] डसना।

**डासनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डासन ] चारपाई।

**डाह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दाह ] जलन। ईर्ष्या।

**डाहना**—क्रि०.स० [ सं० दाहन ] जलाना। सताना। तंग करना।

**डाही**—वि० [ हिं० डाह ] डाह या ईर्ष्या करनेवाला।

**डाहुक**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का पक्षी।

**डिंगर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मोटा आदमी २. दुष्ट। बदमाश। ३. दास। गुलाम।
संज्ञा पुं० [ देश० ] वह काठ जो नटखट चौपायों के गले में बाँध दिया जाता है।

**डिंगल**—वि० [ सं० डिंगर ] नीच। दूषित।
संज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं।

**डिंड्सी**—संज्ञा स्त्री० दे० "टिंडसी"।

**डिंडिम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] डुगडुगी। डुग्गी।

**डिंब**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बावैला। भयध्वनि। २. दंगा। लड़ाई। ३. अंडा। ४. फेफड़ा। ५. प्लीहा। पिलही। ६. कीड़े का छोटा बच्चा।

**डिंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छोटा बच्चा। मूर्ख।
†संज्ञा पुं० [ स० दंभ ] १. आडंबर। पाखंड। २. अभिमान। घमंड।

**डिक्टेटर**—संज्ञा पुं० [अं०] विशेष अवसरों के लिए चुना हुआ प्रधान और पूर्ण अधिकार-प्राप्त अधिकारी। अधिनायक।

**डिगना**—क्रि० अ० [ सं० टिक ] १. जगह छोड़ना। टलना। खसकना। २. किसी बात पर स्थिर न रहना। विचलित होना।

**डिगरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. विश्वविद्यालय की परीक्षा की पदवी। २. अंश। कला।
संज्ञा स्त्री० [ अं० डिक्री ] दीवानी। अदालत का वह फैसला जिसमें किसी फरीक को कोई हक मिलता है।

**डिगरीदार**—वि० [ हिं० डिगरी + फ़ा० दार] वह जिसके पक्ष में डिगरी या हक का फैसला हो।

**डिगलाना**—क्रि० अ० दे० "डगमगाना"।

**डिगाना**—क्रि० स० [ हिं० डिगना ] १. जगह से टालना। सरकाना। खसकाना। २. बात पर स्थिर न रखना। विचलित करना।

**डिग्गी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दीर्घिका ] तालाब।
†संज्ञा स्त्री० [ देश० ] हिम्मत। साहस।

**डिजाइन**—संज्ञा .पुं० [ अं० ] १. कल्पित चित्र। २. तर्ज। ढंग। तरह।

**डिटेक्टिव**-संज्ञा पुं० [अं०] जासूस।

**डिठार, डिठियार**†—वि० [ हिं० डीठ=नजर ] जिसे सुझाई दे।

**डिठौना**—संज्ञा पुं० [ हिं० डीठ ] काजल का टीका जो लड़कों को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं।

**डिढ़**—वि० दे० "दृढ़"।

**डिढ़या**†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] अत्यंत लालच। लालसा। कामना। तृष्णा।

**डिनर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] रात का भोजन।

**डिप्लोमा**—संज्ञा पुं० [ अं० ] वह लिखित प्रमाणपत्र जो किसी को विशेष योग्यता आदि प्राप्त करने पर मिलता है।

**डिबिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डिब्बा ] छोटा ढक्कनदार बरतन। छोटा डिब्बा या संपुट।

**डिब्बा**—संज्ञा पुं० [ सं० डिंब ]

एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन। संपुट। २. रेलगाड़ी की एक गाड़ी। ३. बच्चों की पसली के दर्द की बीमारी। पसली।

**डिभगना**—क्रि० स० [देश०] मोहित करना। छलना। बहकना।

**डिम**—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें माया, इंद्रजाल, लड़ाई और क्रोध आदि का समावेश होता है।

**डिमडिमी**—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंडिम] डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा।

**डिल्ला**—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है। २. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। तिलका। तिल्ला। तिल्लाना।

संज्ञा पुं० [हिं० टीला] बैलों के कंधे पर उठा हुआ कूबड़ा। कुब्बा। ककुद्।

**डिसमिस**—वि० [अं०] १. नामंजूर। खारिज। २. नौकरी से हटाया हुआ। बरखास्त।

**डींग**—संज्ञा स्त्री० [सं० डीन] शेखी। सिट्ट।

**डीठ**—संज्ञा स्त्री० [सं० दृष्टि] १. दृष्टि। नजर। निगाह। २. देखने की शक्ति। ३. ज्ञान। समझ।

**डीठना***—क्रि० अ० [हिं० डीठ] दिखाई देना। दृष्टि में आना।

क्रि० स० १. दिखाना। २. नजर लगाना।

**डीठबंध**—संज्ञा पुं० [सं० दृष्टिबंध] १. नजरबंदी। इंद्रजाल। २. इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

**डीठिमूठि***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० डीठि + मूठ] नजर। टोना। जादू।

**डिठौना**—काला बिंदी जो बालकों के माथे पर लगायी जाती है जिससे नजर न लगे।

**डीन**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पक्षियों की उड़ान।

संज्ञा पुं० [अं०] विश्वविद्यालय में किसी विभाग का अध्यक्ष।

**डीबुआ**†—संज्ञा पुं० [देश०] पैसा।

**डीमडाम**—संज्ञा स्त्री० [सं० डिंब] १. ठाट। ऐंठ। तपाक। ठसक। २. ठाट-बाट।

**डील**—संज्ञा पुं० [हिं० टीला] १. प्राणियों के शरीर की ऊँचाई। कद। उठान।

**यौ०**—डील डौल=१. देह की लंबाई-चौड़ाई। २. शरीर का ढाँचा। आकार। काठी। २. शरीर। जिस्म। देह। ३. व्यक्ति। प्राणी। मनुष्य।

**डीह**—संज्ञा पुं० [फ़ा० देह] १. आबादी। बस्ती। २. उजड़े हुए गाँव का टीला। ३. ग्राम-देवता।

**डुंगा**†—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा। पहाड़ी।

**डुंगर**†—संज्ञा पुं० दे० "डुंग"।

**डुंड**†—संज्ञा पुं० [सं० दंड] १ पेड़ की सूखी डाल। ठूँठ। २. डंका।

**डुक**—संज्ञा पुं० [देश०] घूँसा। मुक्का।

**डुगडुगी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा। डौंगी। डुग्गी।

**डुग्गी**—संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।

**डुपटना**—क्रि० स० [हिं० दो + पट] (कपड़ा) चुनना। चुनियाना।

**डुबकनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी] अंदर डूबकर चलने वाली नाव। पन-डुब्बी। सबमेरीन।

**डुबकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० डूबना] १. पानी में डूबना। डुब्बी। गोता। बुड़की। २. पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

**डुबाना**—क्रि० स० [हिं० डूबना] १. पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना। गोता देना। २. चौपट या नष्ट करना।

**मुहा०**—नाम डुबाना=नाम को कलंकित करना। मर्यादा खोना। लुटिया डुबाना=महत्त्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना।

**डुबाव**—संज्ञा पुं० [हिं० डूबना] पानी की डूबने भर की गहराई।

**डुबोना**†—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

**डुब्बा**—संज्ञा पुं० दे० "पन-डुब्बा"।

**डुब्बी**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "डुबकी"। २. दे० "पन-डुब्बी"।

**डुभकौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० डुबकी + बरी] पीठी की बिना तली बरी।

**डुलना***†—क्रि० अ० दे० "डोलना"।

**डुलाना**—क्रि० स० [हिं० डोलना] १. गति में लाना। हिलाना। चलाना। २. हटाना। भगाना। ३. फिराना। घुमाना। टहलाना।

**डूँगर**—संज्ञा पुं० [सं० तुंग] १. टीला। भीटा। ढूह। २. छोटी पहाड़ी।

**डूबना**—क्रि० अ० [अनु० डुबडुब] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ के भीतर समाना। गोता खाना।

**मुहा०**—डूब मरना=शरम के मारे मुँह न दिखाना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना=दे० "डूब मरना"। डूबना उतराना=चिंता में पड़ जाना। जी डूबना=१. चित्त व्याकुल होना। २. बेहोशी होना।

२. सूर्य्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना। ३. चौपट होना। बरबाद होना।

**मुहा०**—नाम डूबना=प्रतिष्ठा नष्ट

होना।

४. किसी व्यवसाय में लगाया हुआ या किसी को दिया हुआ धन नष्ट होना। ५. चिंतन में मग्न होना। ६. लीन होना। तन्मय होना। लिप्त होना।

**डेंड़सी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० टिंडिश ] ककड़ी की तरह की एक तरकारी। टिंड। टिंडसी।

**डेक**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. जहाज की छत। २ बकरम नैनू का कपड़ा।

**डेड़हा**†—संज्ञा पुं० [ सं० डुडुभ ] पानी का साँप।

**डेढ़**—वि० [ सं० अध्यर्द्ध ] एक पूरा और उसका आधा। जो गिनती में १½ हो।

**मुहा०**—डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना=खरेपन या अक्खड़पन के कारण सबसे अलग काम करना। डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना=अपनी राय सबसे अलग रखना।

**डेढ़ा**—वि० दे० "डेवढ़ा"।

संज्ञा पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।

**डेबरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ढिबरी"।

**डेमरेज**—संज्ञा पुं० [ अं० ] बंदरगाह या रेल के स्टेशन पर उचित समय से अधिक तक पड़े रह जानेवाले माल का किराया जो माल छुड़ानेवाले को देना पड़ता है।

**डेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० ठहरना ] १ थोड़े दिनों के लिए रहना। टिकान। पड़ाव। २. ठहरने या रहने के लिए फैलाया हुआ सामान।

**मुहा०**—डेरा डालना=सामान फैलाकर टिकना। ठहरना। डेरा पड़ना=टिकान होना।

३. ठहरने का स्थान। ४. छावनी। खेमा। तंबू। शामियाना। ५. नाचने गानेवालों का दल। मंडली। गोल। ६. मकान। घर।

*†वि० [सं० डहर ?] बायाँ। सव्य।

**डेराना**†—क्रि० अ० दे० "डरना"।

**डेरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० डेयरी ] वह स्थान जहाँ दूध और मक्खन आदि के लिए गौएँ और भैंसें रखी जाती हों।

**डेल**—संज्ञा पुं० [ सं० डुंडुल ] उल्लू पक्षी।

संज्ञा पुं० [सं० दल] रोड़ा। ढेला। संज्ञा पुं० पक्षियों को बंद करने का डला।

**डेला**—संज्ञा पुं० [ सं० दल ] आँख का सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली होती है। कोया। रोड़ा।

**डेली**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डला ] डलिया। बाँस की झाँपी। [ अं० ] दैनिक।

**डेवढ़**† —वि० [ हिं० डेवढ़ा ] डेढ़-गुना। डेवढ़ा।

संज्ञा स्त्री० सिलसिला। क्रम। तार।

**डेवढ़ा**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ा"।

**डेवढ़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योढ़ी"।

**डेहरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "देहलीज"।

**डैन***—संज्ञा पुं० दे० "डैना"।

**डैना***—संज्ञा पुं० [ सं० डयन ] चिड़ियों का पंख। पक्ष। पर। बाजू।

**डोंगर**—संज्ञा पुं० [ सं० तुंग ] [स्त्री० अल्प० डोंगरी ] पहाड़ी। टीला।

**डोंगा**—संज्ञा पुं० [ सं० द्रोण ] १. बिना पाल की नाव। २. बड़ी नाव।

**मुहा०**—डोंगा डूबना=नाश होना; बरबाद होना। डोंगा बोर देना=खराब कर देना; नष्ट कर देना।

**डोंगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोंगा ] छोटी नाव।

**डोंड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० तुंड ] १. बड़ी इलायची। २. टोंटा। कारतूस।

**डोंड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंड ] १. पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है। २. उभरा हुआ मुँह। टोंटी।

**डोई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोकी ] काठ की डाँड़ी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते हैं।

**डोकरा**—संज्ञा पुं० [ सं० दुष्कर ] [ स्त्री० डोकरी ] १. अशक्त और वृद्ध मनुष्य। †२. पिता।

**डोकिया, डोकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोका ] काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल, बटना आदि रखते हैं।

**डोडो**—संज्ञा पुं० [ अं० ] बत्तख के बराबर एक चिड़िया जो अब नहीं मिलती।

**डोब,डोबा**—संज्ञा पुं० [हिं० डूबना] डुबाने का भाव। गोता। डुबकी।

**डोम**—संज्ञा पुं० [ सं० डम ] [ स्त्री० डोमिनी, डोमनी ] १. एक जाति जो बाँस की दौरी, सूप आदि बनाती है। वाल्मीक। हरिजनों का एक वर्ग। श्मशान पर शव को आग देना, सूप-डले आदि बेचना इनका काम है। २. ढाढ़ी। मीरासी।

**डोमकौआ**—संज्ञा पुं० [हिं० डोम + कौआ ] बड़ा और बहुत काला कौआ।

**डोमड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "डोम"।

**डोमनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोम ] १. डोम जाति की स्त्री। २. ढाढ़ी या मीरासी की स्त्री।

**डोमिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोम ] १. डोम जाति की स्त्री। २. ढाढ़ी,

मीरासियों की स्त्री ।

**डोरई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] डोरा । मोटा तागा ।

**मुहा०**—डोर पर लगाना = प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना । ढब पर लाना ।

**डोरा**—संज्ञा पुं० [ सं० डोरक ] १. रुई, रेशम आदि को बटकर बनाया हुआ बहुत लंबा और पतला खंड । मोटा सूत या तागा । धागा । २. धारी । लकीर । ३. आँखों की महीन लाल नसें जो नशे या उमंग की दशा में दिखाई पड़ती हैं । ४. तलवार की धार । ५. तपे घी की धार । ६. एक प्रकार की करछी । पली । ७. स्नेह-सूत्र । प्रेम का बंधन ।

**मुहा०**—डोरा डालना = प्रेमसूत्र में बद्ध करना । परचाना ।

८. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे । ९. काजल या सुरमे की रेखा ।

**डोरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० डोरा ] १. वह कपड़ा जिसमें कुछ सूत की लंबी धारियाँ बनी हों । एक प्रकार का बगला ।

**डोरियाना**†—क्रि० स० [ हिं० डोरी + आना ( प्रत्य० ) ] पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना ।

**डोरिहार***—संज्ञा पुं० [ हिं० डोरी + हारा ] [ स्त्री० डोरिहारिन ] पटवा ।

**डोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोरा ] १. रस्सी । रज्जु । २. पाश । बंधन ।

**मुहा०**—डोरी ढीली छोड़ना=देख-रेख कम करना । चौकसी कम करना ।

३. डाँड़ीदार कटोरा या कलछा । डोरा ।

**डोरे***—क्रि० वि० [ हिं० डोर ] साथ लिए हुए । साथ साथ । संग संग ।

**डोल**—संज्ञा पुं० [ सं० दोल ] १. लोहे का गोल बरतन । २. हिंडोला । झूला । ३. डोली । पालकी । ४. हल-चल ।

वि० [ हिं० डोलना ] चंचल ।

**डोलची**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोल ] छोटा डोल ।

**डोलडाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० डोलना ] १. चलना फिरना । २. पाखाने जाना ।

**डोलना**—क्रि० स० [ सं० दोलन ] १. चलायमान होना । गति में होना । २. चलना । फिरना । ३. हटना । दूर होना । ४. ( चित्त ) विचलित होना । डिगना ।

**डोला**—संज्ञा पुं० [ सं० दोल ] [ स्त्री० डोली ] १. स्त्रियों के बैठने की बंद सवारी जिसे कहार ढोते हैं । मियाना ।

**मुहा०**—डोला देना=१. किसी राजा या सरदार को भेंट की तरह पर अपनी बेटी देना । २. अपनी बेटी को वर के घर पर ले जाकर ब्याहना ।

२. झूले का झोंका । पेंग ।

**डोलाना**—क्रि० स० [ हिं० डोलना ] १. हिलाना । चलाना । २. दूर करना । भगाना । हटाना ।

**डोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डोला ] एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं ।

**डोही**—संज्ञा स्त्री० दे० "डोई" ।

**डौंड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० डिंडिम ] १. डिंढोरा । डुगडुगिया ।

**मुहा०**—डौंड़ी देना = १. मुनादी करना । २. सबसे कहते फिरना । डौंड़ी बजना =१. घोषणा होना । २. जयजयकार होना ।

२. घोषणा । मुनादी ।

**डौंरू**—संज्ञा पुं० दे० "डमरू" ।

**डौआ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] काठ का चमचा ।

**डौल**—संज्ञा पुं० [ हिं० डोल ? ] १. ढाँचा । ढड्ढा ।

**मुहा०**—डौल पर लाना=काट-छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना ।

२. बनावट का ढंग । रचना-प्रकार । ढब । ३. तरह । प्रकार । ४. युक्ति । उपाय ।

**मुहा०**—डौल पर लाना=अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना । डौल बाँधना या लगाना=उपाय करना । युक्ति बैठाना । ५. रंग-ढंग । लक्षण । सामान ।

**डौलियाना**†—क्रि० स० [ हिं० डौल ] १. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना । ढंग पर लाना । २. गढ़कर दुरुस्त करना ।

**ड्योढ़ा**—वि० [ हिं० डेढ़ ] किसी पदार्थ से उसका आधा और ज्यादा । डेढ़गुना ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है ।

**ड्योढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० देहली ] १. फाटक । चौखट । दरवाजा । वह बाहरी कोठरी जो मकान में घुसने के पहले पड़ती है । पौरी ।

**ड्योढ़ीदार**—संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ीवान" ।

**ड्योढ़ीवान**—संज्ञा पुं० [ हिं० ड्योढ़ी + वान ( प्रत्य० ) ] ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार । द्वारपाल । दरबान ।

**ड्रम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] लोहे का ढोल के आकार का पीपा जिसमें कोई पदार्थ भर कर कहीं भेजा जाता

है या रखा जाता है।

**ड्राइवर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] गाड़ी हाँकने या चलानेवाला।

**ड्राम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक अँगरेजी तौल जो तीन माशे के लगभग होती है।

**ड्रामा**—संज्ञा पुं० [ अं० ] नाटक।

**ड्रेस**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पहनने के कपड़े। पोशाक। लिबास।

—:*:—

# ढ

**ढ**—हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

**ढँकना**—क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

**ढंख***†—संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

**ढंग**—संज्ञा पुं० [ सं० तंग (तंगन) ] १. प्रणाली। शैली। ढब। रीति। २. प्रकार। तरह। किस्म। ३. रचना। बनावट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय।

**मुहा०**—ढंग पर चढ़ना=अभिप्राय साधन के अनुकूल होना। ढंग पर लाना=अभिप्राय साधन के अनुकूल करना।

५. चाल-ढाल। आचरण। व्यवहार। ६. बहाना। हीला। पाखंड। ७. लक्षण। आभास।

**यौ०**—रंग-ढंग=लक्षण।

८. दशा। अवस्था। स्थिति।

**ढँगलाना**†—क्रि० स० [ हिं० ढाल ] लुढ़काना।

**ढंगी**—वि० [ हिं० ढंग ] चालबाज। चतुर। चालाक।

**ढँढोर**—संज्ञा पुं० [अनु० धायँ धायँ] आग की लपट। ज्वाला। लौ।

**ढँढोरची**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढँढोरा ] ढँढोरा या मुनादी फेरनेवाला।

**ढँढोरना**†—क्रि० स० दे० "ढूँढ़ना"।

**ढँढोरा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ढम + ढोल ] १. घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डौंड़ी। २. वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय। मुनादी।

**ढँढोरिया**—संज्ञा पुं० [हिं० ढँढोरा] ढँढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला।

**ढँपना**—क्रि० अ० दे० "ढकना"।

**ढ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ा ढोल। २ कुत्ता। ३. ध्वनि। नाद।

**ढई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढहना=गिरना] किसी के यहाँ किसी काम से पहुँचना और जब तक काम न हो जाय, तब तक वहाँ से न हटना। धरना देना।

**ढकना**—संज्ञा पुं० [सं० ढक=छिपना] [ स्त्री० अल्पा० ढकनी ] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

क्रि० अ० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना। छिपना।

क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

**ढकनिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "ढकनी"।

**ढकनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढकना ] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

**ढका***†—संज्ञा पुं० [ सं० ढक्का ] बड़ा ढोल।

*संज्ञा पुं० [ अनु० ] धक्का। टक्कर।

**ढकिलना***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढकेलना ] वेग के साथ धावा। चढ़ाई। आक्रमण।

**ढकेलना**—क्रि० स० [ हिं० धक्का ] १. धक्के से गिराना। ठेलकर आगे की ओर गिराना। २. धक्के से हटाना। ठेलकर सरकाना।

**ढकोसना**—क्रि० स० [ अनु० ढक-ढक ] एकबारगी बहुत सा पीना।

**ढकोसला**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढंग + स० कौशल ] मतलब साधने का ढंग। आडंबर। पाखंड।

**ढक्कन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ढाँकने की वस्तु। ढकना।

**ढक्का**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल।

**ढगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओं का होता है।

**ढचर**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढाँचा ] १. ढाँचा। बखेड़ा। २. आडंबर। ढकोसला।

**ढड्ढा**—वि० [ देश० ] बहुत बड़ा और बेढंगा।
संज्ञा पुं० [ हिं० ठाट ] १. ढाँचा। २. झूठा ठाट-बाट। आडंबर।

**ढनमनाना**†—क्रि० अ० [ अनु० ] लुढ़कना।

**ढपना**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढाँपना ] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।
क्रि० अ० [हिं० ढकना] ढका होना।

**ढप्पू**—वि० [ देश० ] बहुत बड़ा। ढड्ढा।

**ढफ**†—संज्ञा पु० दे० "ढफ"।

**ढब**—संज्ञा पु० [ सं० धव=गति ] १. ढंग। रीति। तरीका। २.प्रकार। तरह। किस्म। ३. बनावट। गढ़न। ४. अभियुक्ति। उपाय। तदबीर। ५. प्रकृति। आदत। बान।
मुहा०—ढब पर चढ़ना=किसी का ऐसी अवस्था में होना जिससे कुछ मतलब निकले। ढब पर लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उससे कुछ अर्थ सिद्ध हो।

**ढयना**—क्रि० अ० [ सं० ध्वंसन ] दीवार, मकान आदि का गिरना। ध्वस्त होना।

**ढरक**—संज्ञा स्त्री० दे० "ढलक"।

**ढरकना**†—क्रि० अ० [ हिं० ढार या ढाल ] १. पानी आदि द्रव पदार्थ का नीचे गिर पड़ना। ढलना। २. लेटना। ३. नीचे की ओर जाना।

**ढरका**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढरकना ] बाँस की नली जिससे चौपायों के गले में दवा उतारते हैं।

**ढरकाना**†—क्रि० स० [ हिं० ढरकना ] पानी आदि को आधार से नीचे गिराना। गिराकर बहाना।

**ढरकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढरकना ] जुलाहों का एक औजार जिससे वे लोग बाने का सूत फेंकते हैं।

**ढरकौंहा**†—संज्ञा पुं० [ ढलना ] ढलनेवाला।

**ढरना**†*—क्रि० अ० दे० "ढलना"।

**ढरनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढरना ] १. गिरने या पड़ने की क्रिया। पतन। २. हिलने डोलने की क्रिया। गति। ३. चित्त की प्रवृत्ति। झुकाव। ४. करुणा। दयाशीलता। कृपालुता।

**ढरहरना***†—क्रि० अ० [हिं० ढरना] खसकाना। सरकना। ढलना। झुकना।

**ढरहरी**†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] पकौड़ी।

**ढराना**—क्रि० स० १. दे० "ढलाना"। २. दे० "ढरकाना"।

**ढरारा**—वि० [ हिं० ढार ] [ स्त्री० ढरारी ] १. गिरकर बह जानेवाला। २. लुढ़कनेवाला। ३. शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला।

**ढर्रा**—संज्ञा पुं० [ हिं० धरना ] १. मार्ग। रास्ता। पथ। २. शैली। ढंग। तरीका। ३. युक्ति। उपाय। तदबीर। ४. आचरण पद्धति। चाल-चलन।

**ढलक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढलना ] ढलकाव। उतराई।

**ढलकना**—क्रि० अ० [ हिं० ढाल ] १ द्रव पदार्थ का आधार से नीचे गिर पड़ना। ढलना। २. लुढ़कना।

**ढलका**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढलकना ] वह रोग जिसमें आँख से पानी बहा करता है।

**ढलकाना**—क्रि० स० [ हिं० ढलकना ] १. द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना। २. लुढ़काना।

**ढलना**—क्रि० अ० [ हिं० ढाल ] १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर सरक जाना। ढरकना। बहना। २. बीतना। गुजरना। ३. उँडेला जाना। ४. लुढ़कना। ५. लहर खाकर इधर-उधर डोलना। लहराना। ६ किसी ओर आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। ७. प्रसन्न होना। रीझना। ८. साँचे में ढाल कर बनाया जाना। ढाला जाना।
मुहा०—दिन ढलना=संध्या होना। सूरज या चाँद ढलना=सूर्य या चंद्रमा का अस्त होना।
मुहा०—साँचे में ढला=बहुत सुंदर।

**ढलवाँ**—वि० [ हिं० ढालना ] जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो।

**ढलवाना**—क्रि० स० [ हिं० ढालना का प्रे० ] ढालने का काम दूसरे से कराना।

**ढलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढालना ] १. ढालने का भाव या काम। २. ढालने की मजदूरी।

**ढलाना**—क्रि० स० दे० "ढलवाना"।

**ढलैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढाल ] ढाल रखनेवाला सिपाही।

**ढवरी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढलना] धुन। ढोरी। लौ। लगन। रट।

**ढहना**—क्रि० अ० [ सं० ध्वंसन ] १. मकान आदि का गिर पड़ना। ध्वस्त होना। २. नष्ट होना। मिट जाना।

**ढहरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "डेहरी"।
संज्ञा स्त्री० [ देश० ] मिट्टी का मटका।

**ढहवाना**—क्रि० स० [ हिं० ढहाना का प्रे० ] ढहाने का काम कराना। गिरवाना।

**ढहाना**—क्रि० स० [ सं० ध्वंसन ] दीवार, मकान आदि गिरवाना।

ध्वस्त करना।

**ढँकना**—क्रि० स० [ सं० ढक=छपाना ] १. ऊपर से कोई वस्तु फैला या डालकर ( किसी वस्तु को ) ओट में करना। २. इस प्रकार ऊपर फैलाना कि नीचे की वस्तु छिप जाय।

**ढँाक**—संज्ञा पुं० दे० "ढाक"।

**ढाँचा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थाता ] १. किसी चीज को बनाने के पहले जोड़ जाड़कर बैठाए हुए उसके भिन्न भिन्न भाग। ठाट। ठट्टर। डौल। २. इस प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदि के बल्ले कि उनके बीच कोई वस्तु जमाई या जड़ी जा सके। ३. पंजर। ठठरी। ४. गढ़न। बनावट। ५. प्रकार। भाँति। तरह।

**ढाँपना**—क्रि० स० दे० "ढाँकना"।

**ढाँसना**—क्रि० अ० [ अनु० ] सूखी खाँसी खाँसना।

**ढाँसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढाँसना ] सूखी खाँसी।

**ढाई**—वि० [ सं० अर्द्धद्वितीय, हिं० अढाई ] दो और आधा।

**ढाक**—संज्ञा पुं० [ सं० आषाढक ] पलाश का पेड़। छिउला। छीउल।

**मुहा०**—ढाक के तीन पात=सदा एक सा।

संज्ञा पुं० [ सं० ढक्का ] लड़ाई का ढोल।

**ढाका पाटन**—संज्ञा पुं० [ ढाका नगर ] एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

**ढाटा, ढाठा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] डाढ़ी पर बाँधने की पट्टी।

**ढाड़**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. चिग्घाड़। गरज। दहाड़ (बाघ, सिंह आदि की)। २. चिल्लाहट।

**मुहा०**—ढाड़ मारना=चिल्लाकर रोना।

**ढाढ़ना**—क्रि० स० दे० "दाढ़ना"।

**ढाढ़स**—संज्ञा पुं० [ सं० दृढ़ ] १. धैर्य। आश्वासन। तसल्ली। २. दृढ़ता। साहस। हिम्मत।

**ढाढ़ी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] [ स्त्री० ढाढ़िन ] एक प्रकार के मुसलमान गवैए।

**ढाबा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. छोटी अटारी। २. ओलती। ३. रोटी दाल आदि बिकने का स्थान।

**ढाना**—क्रि० स० [ हिं० ढाहना ] १. दीवार, मकान आदि को गिराना। ध्वस्त करना। २. गिराना।

**ढाबर**—वि० [ हिं० ढाबर ] मिट्टी मिला हुआ। मटमैला। गँदला। (पानी)।

**ढामक**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] ढोल आदि का शब्द।

**ढार***—संज्ञा स्त्री० [ सं० धार ] १. ढाल। उतार। २. पथ। मार्ग। प्रणाली। २ ढाँचा। रचना। बनावट।

**ढारना**—क्रि० स० दे० "ढालना"।

**ढारस**—संज्ञा पुं० दे० "ढाढ़स"।

**ढाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र या धातु की फरी। चर्म। आड़। फलक।

संज्ञा स्त्री० [ सं० धार ] १ वह स्थान जो क्रमशः बराबर नीचा होता गया हो। उतार। २. ढंग। प्रकार। तरीका।

**ढालना**—क्रि० स० [ सं० धार ] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ को गिराना। उँडेलना। २. शराब पीना। ३. बेचना। ४. ताना छोड़ना। व्यंग्य बोलना। ५. साँचे में ढालकर कोई चीज बनाना।

**ढालवाँ**—वि० [ हिं० ढाल ] [ स्त्री० ढालवीं ] जो बराबर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल हो। ढालू।

**ढालुवा**—वि० ढला हुआ।

**ढालू**—वि० दे० "ढालवाँ"।

**ढासा**—संज्ञा पुं० [ सं० दस्यु ] लुटेरा। डाकू।

**ढासना**—संज्ञा पुं० [ सं० धारण+आसन ] १. वह ऊँची वस्तु जिस पर बैठने में पीठ टिक सके। सहारा। टेक। २. तकिया।

**ढाहना**—क्रि० स० दे० "ढाना"।

**ढिंढोरना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. मथना। बिलोड़ना। २. हाथ डालकर ढूँढ़ना।

**ढिंढोरा**—संज्ञा पुं० [अनु० ढम+ढोल ] १. वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है। डुगडुगिया। २. वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय। घोषणा।

**ढिग**—क्रि० वि० [सं० दिक् ] पास। निकट।

संज्ञा स्त्री० १. पास। सामीप्य। २. तट। किनारा। छोर। ३. कपड़े का किनारा। कोर।

**ढिठाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढीठ] १. गुरुजनों के समक्ष व्यवहार की अनुचित स्वच्छंदता। धृष्टता। गुस्ताखी। २. निर्लज्जता। ३. अनुचित साहस।

**ढिबरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० डिब्बी ] वह डिबिया जिसके मुँह पर बत्ती लगाकर मिट्टी का तेल जलाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढपना ] कसे जानेवाले पेंच के सिरे पर का लोहे का छल्ला।

**ढिमका**—सर्व० [ हिं० अमका का अनु० ] [ स्त्री० ढिमकी ] अमुक। फलाँ। फलाना।

**ढिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढीला ] १. ढीला होने का भाव। २. शिथिलता। सुस्ती।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढीलना ] ढीलने की क्रिया या भाव।

**ढिलाना**—क्रि० स० [ हिं० ढीलना का प्रे० ] १. ढीलने का काम कराना। २. ढीला कराना।

*†क्रि० स० ढीला करना।

**ढिल्लड़**—वि० [ हिं० ढीला ] सुस्त। आलसी।

**ढिसरना***†—क्रि० अ० [ सं० ध्वंसन ] १. फिसल पड़ना। सरक पड़ना। २. प्रवृत्त होना। झुकना।

**ढींगर**†—संज्ञा पुं० [ सं० डिंगर ] १. हट्टा-कट्टा आदमी। २. पति या उपपति।

**ढींच**†—संज्ञा पुं० [देश०] कूबड़।

**ढींढ़, ढींढा**†—संज्ञा पुं० [सं० ढुंढि= लंबोदर, गणेश] १. निकला हुआ पेट। २. गर्भ। हमल।

**ढीट**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] रेखा। लकीर।

**ढीठ**—वि० [सं० धृष्ट] १. बड़ों का संकोच या डर न रखनेवाला। धृष्ट। शोख। २. अनुचित साहस करनेवाला। निडर। ३. साहसी। हिम्मतवर।

**ढीठक**—वि० दे० "ढीठ"।

**ढीठता***†—संज्ञा स्त्री० दे० "ढिठाई"।

**ढीठ्यो**—संज्ञा पुं० दे० "ढीठ"।

**ढीमा**†—संज्ञा पुं० [देश०] १. पत्थर का बड़ा टुकड़ा या ढोंका। २. मिट्टी की पिंडी।

**ढील**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढीला ] १. शिथिलता। अतत्परता। सुस्ती। २. बंधन को ढीला करने का भाव।

†संज्ञा पुं० बालों का कीड़ा। जूँ।

**ढीलना**—क्रि० स० [ हिं० ढीला ] १. कसा या तना हुआ न रखना। ढीला करना। २ बंधन-मुक्त करना। छोड़ देना। ३ ( रस्सी आदि ) इस प्रकार छोड़ना जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय।

**ढीला**—वि० [सं० शिथिल] १. जो कसा या तना हुआ न हो। २. जो दृढ़ता से बँधा या लगा हुआ न हो। ३. जो खूब कसकर पकड़े हुए न हो। ४. खुला हुआ। ५. जो गाढ़ा न हो। बहुत गीला। ६. जो अपने संकल्प पर अड़ा न रहे। ७. धीमा। शांत। नरम। ८. मंद। सुस्त। शिथिल।

**मुहा०**—ढीली आँख=मद भरी चितवन।

९ सुस्त। आलसी।

**ढीलापन**—संज्ञा पुं० [हिं० ढीला + पन ( प्रत्य० ) ] ढीला होने का भाव। शिथिलता।

**ढुंढ**†—संज्ञा पुं० [ हिं० ढूँढ़ना ] उचक्का। ठग।

**ढुंढपाणि***—संज्ञा पुं० [ सं० दंडपाणि ] १. शिव के एक गण। २. दंडपाणि भैरव।

**ढुंढवाना**—क्रि० स० [ हिं० ढूँढ़ना का प्रे० ] ढूँढने का काम कराना। तलाश करना।

**ढुंढा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की बहिन थी।

**ढुंढिराज**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

**ढुंढी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] बाँह। मुश्क।

**मुहा०**—ढुँढियाँ चढ़ाना = मुश्कें बाँधना।

**ढुकना**—क्रि० अ० [ देश० ] १. घुसना। प्रवेश करना। २. एकबारगी धावा करना। टूट पड़ना। ३. कोई बात सुनने या देखने के लिए आड़ में छिपना।

**ढुटौना**—संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

**ढुनमुनिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढनमनाना ] लुढ़कने की क्रिया या भाव।

**ढुरकना**†—क्रि० अ० [ हिं० ढर ] १. फिसलकर गिरना। लुढ़कना। २. झुकना।

**ढुरना**—क्रि० अ० [ हिं० ढार ] १. गिरकर बहना। ढुरकना। लुढ़कना। २. कभी इधर कभी उधर होना। डगमगाना। ३ सूत या रस्सी के रूप की वस्तु का इधर-उधर हिलना। लहराना। ४. लुढ़कना। फिसल पड़ना। ५. प्रवृत्त होना। झुकना। ६. अनुकूल होना। प्रसन्न होना।

**ढुरहुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढुरना ] १. लुढ़कने की क्रिया या भाव। २. पगडंडी।

**ढुराना**—क्रि० स० [ हिं० ढुरना ] १. गिराकर बहाना। ढुरकाना। ढुलकाना। २. इधर-उधर हिलाना। लहराना। ३. लुढ़काना।

**ढुर्री**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढुरना ] पगडंडी।

**ढुलकना**—क्रि० स० [ हिं० ढाल + कना ( प्रत्य० ) ] ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए गिरना। लुढ़कना।

**ढुलकाना**—क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

**ढुलना**—क्रि० अ० [ हिं० ढाल ] १. गिरकर बहना। लुढ़कना। २. प्रवृत्त होना। झुकना। ३. प्रसन्न होना। कृपालु होना। ४. इधर से उधर हिलना। लहराना।

**ढुलवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढोना ] ढोने का काम, भाव या मजदूरी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढुलना ] ढुलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**ढुलवाना**--क्रि० स० [ हिं० ढोना का प्रे० ] ढोने का काम दूसरे से कराना।

**ढुलाना**--क्रि० स० [ हिं० ढाल ] १. गिराकर बहाना। ढरकाना। ढालना। २. नीचे ढालना। गिराना। ३. लुढ़काना। ढँगलाना। ४. प्रवृत्त करना। झुकाना। ५. अनुकूल करना। प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६. इधर-उधर डुलाना। ७. चलाना। फिराना। ८. फेरना। पोतना।

क्रि० स० [ हिं० ढोना ] ढोने का काम कराना।

**ढूँढ़**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढूँढ़ना ] खोज। तलाश।

**ढूँढ़ना**--क्रि० स० [ सं० ढुंढन ] खोजना। तलाश करना।

**ढूसर**--संज्ञा पुं० दे० "भार्गव"।

**ढूह, ढूहा**†--संज्ञा पुं० [ सं० स्तूप ] १. ढेर। अटाला। २. टीला। भीटा।

**ढेंक**--संज्ञा स्त्री० [ सं० ढेंक ] पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।

**ढेंकली**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढेंक (चिड़िया) ] १. सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। २. धान कूटने की लकड़ी का एक यंत्र। धन-कुट्टी। ढेंकी। ३. कलाबाजी। कलैया।

**ढेंकी**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढेंक+एक पक्षी ] अनाज कूटने की ढेंकली।

**ढेंढ**†--संज्ञा पुं० [ देश० ] १. कौवा। २. एक जाति। ३. मूर्ख। मूढ़।

संज्ञा पुं० [ सं० तुंड ] कपास आदि का ढोंढा। ढोंढ।

**ढेंढर**--संज्ञा पुं० [ हिं० ढेढ ] आँख के डेले का निकला हुआ विकृत मांस। टेंटर।

**ढेपुनी**†--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढेंप ] १. पत्ते या फल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है। ढेप। २. दाने की तरह उभरी हुई नोक। ठोंठ। ३. कुचाग्र।

**ढेबुआ**†--संज्ञा पुं० [ देश० ] पैसा।

**ढेमनी**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० धावरी (धीवर जाति की स्त्री) ] रखी हुई स्त्री। रखेली। उपपत्नी।

**ढेर**--संज्ञा पुं० [ हिं० धरना ? ] नीचे ऊपर रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का ऊपर उठा हुआ समूह। राशि। अटाला। अंबार।

**मुहा०**--ढेर करना=मार डालना। ढेर हो रहना या जाना = १. गिरकर मर जाना। २. थककर चूर हो जाना।

†वि० बहुत अधिक। ज्यादा।

**ढेरी**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढेर ] ढेर। राशि।

**ढेल***--संज्ञा पुं० दे० "ढेला"।

**ढेलवाँस**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढेल + सं० पाश ] रस्सी का वह फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं। गोफना।

**ढेला**--संज्ञा पुं० [सं० दल] १. ईंट, कंकड़, पत्थर आदि का टुकड़ा। चक्का। २. टुकड़ा। खंड। ३. एक प्रकार का धान।

**ढेला चौथ**--संज्ञा स्त्री० [हिं० ढेला+ चौथ ] भादों सुदी चौथ। (लोग इस दिन दूसरों पर ढेले फेंकते हैं।

**ढैया**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढाई ] १. ढाई सेर तौलने का बटखरा। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

**ढोंग**--संज्ञा पुं० [ हिं० ढंग ] ढकोसला। पाखंड।

**ढोंगबाजी**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढोंग + फा० बाजी ] पाखंड। आडंबर।

**ढोंगी**--वि० [ हिं० ढोंग ] पाखंडी। ढकोसलेबाज।

**ढोंढ़**--संज्ञा पुं० [ सं० तुंड ] १. कपास, पोस्ते आदि का डोंडा। २. कली।

**ढोंढ़ी**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढोंढ़ ] नाभि।

**ढोटा**--संज्ञा पुं० [ सं० दुहितृ=लड़की ] [ स्त्री० ढोटी ] १. पुत्र। बेटा। २. लड़का।

**ढोटौना**‡--संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

**ढोना**--क्रि० स० [ सं० वोढ ] १. बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २. उठा ले जाना। ३. निर्वाह करना।

**ढोर**--संज्ञा पुं० [हिं० ढुरना] गाय, बैल, भैंस आदि पशु। चौपाया। मवेशी।

**ढोरना***†--क्रि० स० [हिं० ढारना] १. ढरकाना। ढालना। २. लुढ़काना। ३ साथ लगना। ४. इधर-उधर डुलाना।

**ढोरी**--संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढोरना ] १. ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। २. रट। धुन। लौ। लगन।

**ढोल**--संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है।

**मुहा०**--ढोल पीटना या बजाना= चारों ओर कहते या जताते फिरना। २. कान का परदा।

**ढोलक**--संज्ञा स्त्री० [ सं० ढोल ] छोटा ढोल।

**ढोलकिया**--वि० [ हिं० ढोलक ] ढोलक बजानेवाला।

**ढोलना**--संज्ञा पुं० [हिं० ढोल] १.

ढोलक के आकार का छोटा जंतर। २. ढोलक के आकार का बड़ा बेलन जिससे सड़क पीटते हैं।

क्रि० स० [ सं० दोलन ] १. ढरकाना। ढालना। २. डुलाना।

**ढोलनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दोलन ] बच्चों का झूला। पालना।

**ढोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढोल ] १. एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है। २. हद का निशान। ३. पिंड। शरीर। देह। ४. प्यारा। दूल्हा। प्रियतम। ५. एक प्रकार का गीत।

**ढोलिनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ढोलिया] ढोल बजानेवाली स्त्री। डफालिन।

**ढोलिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढोल ] [ स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।

**ढोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ढोल] २०० पानों की गड्डी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० ठठोली ] हँसी। ठठोली।

**ढोव**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढोवना ] वह पदार्थ जो मंगल के अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं। डाली। नजर।

**ढोवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० ढोना ] १. ढोने की क्रिया या भाव। २. लूट। ३. दे० "ढोव"।

**ढोहना***—क्रि० स० १. दे० "ढोना" २. दे० "ढूँढ़ना"।

**ढौंचा**—संज्ञा पुं० [ सं० अर्द्ध+हिं० चार ] साढ़े चार का पहाड़ा।

**ढौंसना**—क्रि० अ० [ हिं० धौंस ] आनदध्वनि करना।

**ढौरना***—क्रि० अ० [ हिं० ढुलना ] डोलना। झूमना।

**ढौरी***†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] रट। धुन।

संज्ञा पुं० ढंग। विधि।

—:*:—

# ण

**ण**—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

**ण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्ध। २. आभूषण। ३. निर्णय। ४. ज्ञान। ५. शिव। ६. दान। ७. दे० "नगण"।

**णगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दो मात्राओं का एक गण।

—:*:—

# त

**त**—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ, व्यंजन वर्ण का १६वाँ और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।

**तं**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नाव। २. पुण्य।

**तंग**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] घोड़ों की जीन कसने का तस्मा। कसन।

वि० १. कसा। दृढ़। २. दिक। विकल। हैरान। ३. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ४. चुस्त। छोटा।

मुहा०—तंग आना या होना=घबरा

जाना। दुःखी होना। तंग करना=सताना। दुःख देना। हाथ तंग होना=धनहीन होना।

**तंगदस्त**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा तंगदस्ती] १. कंजूस। २. गरीब।

**तंगहाल**—वि० [फ़ा०] १. निर्धन। गरीब। २. विपद्ग्रस्त।

**तंगा**—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का पेड़। २. अधन्ना। डबल पैसा।

**तंगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तंग या सँकरे होने का भाव। संकीर्णता। संकोच। २. दुःख। तकलीफ। ३. निर्धनता। गरीबी। ४. कमी।

**तंजेब**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।

**तंड**—संज्ञा पुं० [सं० ताडव] नृत्य। नाच।

**तंडव**—संज्ञा पुं० दे० "ताडव"।

**तंडुल**—संज्ञा पुं० [सं०] चावल।

**तंत***†—संज्ञा पुं० दे० "तंतु"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तुरंत] आतुरता।
संज्ञा पुं० दे० "तत्व"।

संज्ञा पुं० [सं० तंत्र] १. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। जैसे, सितार या सारंगी। २. क्रिया। ३. तर्क। शास्त्र। ४. इच्छा। कामना। ५. दे० "तंत्र"।

वि० जो तौल में ठीक हो।

**तंतमंत**—संज्ञा पु० दे० "तंत्रमंत्र"।

**तंतरी***†—संज्ञा पुं० [सं० तंत्री] वह जो तारवाले बाजे बजाता हो।

**तंतु**—संज्ञा पुं० [सं० तंतु] १. सूत। डोरा। तागा। २. ग्राह। ३. संतान। बाल-बच्चे। ४. विस्तार। फैलाव। ५. यज्ञ की परंपरा। ६. वंश-परंपरा। ७. ताँत। ८. मकड़ी का जाला।

**तंतुवादक**—संज्ञा पुं० [सं०] बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला। तंत्री।

**तंतुवाय**—संज्ञा पुं० [सं०] कपड़े बुननेवाला। ताँती।

**तंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तंतु। ताँत। २. सूत। ३. जुलाहा। ४. कपड़ा। वस्त्र। ५. कुटुम्ब का भरण-पोषण। ६. निश्चित सिद्धांत। ७. प्रमाण। ८. औषध। दवा। ९. झाड़ने फूँकने का मंत्र। १०. कार्य्य। ११. कारण। १२. राजकर्मचारी। १३. राज्य का प्रबंध। १४. सेना। फौज। १५. धन। संपत्ति। १६. अधीनता। परवश्यता। १७. कुल। खानदान। १८. हिंदुओं का उपासना संबंधी एक शास्त्र जो शिव-प्रणीत माना और गुप्त रखा जाता है।

**तंत्रण**—संज्ञा पुं० [सं०] शासन या प्रबंध आदि करने का काम।

**तंत्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. गुरुच। ३. शरीर की नस। ४. रस्सी। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। तंत्र। ६. वीणा।
संज्ञा पु० [सं०] वह जो बाजा बजाता हो।

**तंदरा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "तंद्रा"।

**तंदुरुस्त**—वि० [फ़ा०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। नीरोग। स्वस्थ।

**तंदुरुस्ती**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. नीरोग होने की अवस्था या भाव। २. स्वास्थ्य।

**तंदुल***†—संज्ञा पुं० दे० "तंडुल"।

**तंदूर**—संज्ञा पुं० [फ़ा० तनूर] भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का मिट्टी का बहुत बड़ा गोल पात्र।

**तँदूरी**—वि० [हिं० तंदूर] तंदूर में बना हुआ।

**तंदेही**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तनदिही] १. परिश्रम। मेहनत। २. प्रयत्न। कोशिश। ३. चेतावनी। ताकीद।

**तंद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह अवस्था जिसमें नींद मालूम पड़ने के कारण मनुष्य कुछ कुछ सो जाय। उँघाई। ऊँघ। २. हलकी बेहोशी।

**तंद्रालस**—संज्ञा पुं० [सं० तंद्रा+आलस्य] तंद्रा या ऊँघने के कारण होनेवाला आलस्य।

**तंद्रालु**—वि० [सं०] जिसे तंद्रा आती हो।

**तंबा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० तबान] चौड़ी मोहरी का एक प्रकार का पायजामा।

**तंबाकू**—संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।

**तँबिया**—संज्ञा पुं० [हिं० ताँबा+इया (प्रत्य०)] ताँबे या और किसी चीज का बना हुआ छोटा तसला।

**तँबियाना**—क्रि० अ० [हिं० ताँबा] १. ताँबे के रंग का होना। २. ताँबे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गंध आ जाना।

**तंबीह**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. नसीहत। शिक्षा। २. ताकीद।

**तंबू**—संज्ञा पुं० [हिं० तनना] कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा घर। खेमा। डेरा। शिविर। शामियाना।

**तंबूर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का छोटा ढोल।

**तंबूरची**—संज्ञा पुं० [फ़ा० तंबूर+ची (प्रत्य०)] तंबूर बजानेवाला।

**तंबूरा**—संज्ञा पुं० [हिं० तानपूरा] बीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।

**तंबूल***†—संज्ञा पुं० दे० "तांबूल"।

**तंबोल**—संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] १. दे० "तांबूल"। २. दे० "तमोल"।

**तँबोली**—संज्ञा पुं० [हिं० तंबोल] वह जो पान बेचता हो। बरई।

**तंभ, तंभन***—संज्ञा पुं० [सं० स्तंभ] शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव।

**त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाव। २. पुण्य। ३. चोर। ४. झूठ। ५. दुम। ६. गोद। ७. म्लेच्छ। ८. गर्भ। ९. रत्न। १०. बुद्ध।

*†—क्रि० वि० [सं० तद्] तो।

**तअज्जुब**—संज्ञा पुं० [अ०] आश्चर्य। विस्मय। अचंभा।

**तअल्लुक़ा**—संज्ञा पुं० [अ०] बहुत से मौजों की जमींदारी। बड़ा इलाका।

**तअल्लुक़ेदार**—संज्ञा पुं [अ०] इलाकेदार। तअल्लुके का मालिक।

**तअल्लुक़ेदारी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] तअल्लुक़ेदार का पद या भाव।

**तअल्लुक़**—संज्ञा पुं० [अ०] संबंध।

**तअल्लुक़ा**—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक़ः"।

**तअस्सुब**—संज्ञा पुं० [अ०] धर्म या जाति-संबंधी पक्षपात।

**तइसा**†—वि० दे० "वैसा"।

**तईं***—प्रत्य० [हिं० तें*] से। प्रत्य० [प्रा० हुंतो] प्रति। को। से। अव्य० [सं० तावत्] लिए। वास्ते।

**तई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री०] थाली के आकार की छिछली कड़ाही।

**तऊ***†—अव्य० १. दे० "तब"। २. दे० "त्यों"।

**तऊ***†—अव्य० [हिं० तब+ऊ (प्रत्य०)] तो भी। तथापि। तिस पर भी।

**तक**—अव्य० [सं० अंत+क] एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है। पर्य्यंत।

संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।

**तकदमा**—संज्ञा पुं० [अ० तख़मीना] किसी चीज की तैयारी का वह हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय। तख़मीना। अंदाज।

**तकदीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

**तकदीरवर**—वि० [अ० तकदीर+फ़ा० वर] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।

**तकन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना] ताकने की क्रिया या भाव। देखना। दृष्टि।

**तकना***†—क्रि० अ० [हिं० ताकना] १. देखना। निहारना। अवलोकन करना। २. शरण लेना। पनाह लेना।

संज्ञा पुं० [हिं० ताकना] बहुत ताकनेवाला।

**तकमा**†—संज्ञा पु० १. दे० "तमगा"। २. दे० "तुकमा"।

**तकमील**—संज्ञा स्त्री० [अ०] पूरा होने की क्रिया या भाव। पूर्णता।

**तकरार**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी बात को बार बार कहना। २ हुज्जत। विवाद। झगड़ा। टंटा।

**तकरीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बातचीत। २. वक्तृता। भाषण।

**तकला**—संज्ञा पुं० [सं० तर्कु] [स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता जाता है। टेकुआ। २. रस्सी बनाने की टिकुरी।

**तकली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक छोटा यंत्र जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा सा तकला लगा रहता है।

**तकलीफ़**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कष्ट। क्लेश। दुःख। २. विपत्ति। मुसीबत।

**तकल्लुफ़**—संज्ञा [अ०] केवल दिखाने के लिए कष्ट उठाकर कोई काम करना। शिष्टाचार।

**तकसीम**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटाई। २. गणित में वह क्रिया जिससे कोई संख्या कई भागों में बाँटी जाय। भाग।

**तकसीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] अपराध। कसूर।

**तकाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताकना+ई (प्रत्य०)] ताकने की क्रिया या भाव।

**तकाजा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ऐसी चीज माँगना जिसके पाने का अधिकार हो। तगादा। २. ऐसा काम करने के लिए कहना जिसके लिए वचन मिल चुका हो। ३. उत्तेजना। प्रेरणा।

**तकाना**—क्रि० स० [हिं० ताकना का प्रे०] दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

**तकावी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो गरीब खेतिहरों को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिये कर्ज दिया जाय।

**तकिया**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कपड़े का वह थैला जिसमें रुई, पर आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। बालिश। २. पत्थर की वह पटिया आदि जो रोक या सहारे के लिए

लगाई जाती है। मुतक्का। ३. विश्राम करने का स्थान। ४. आश्रय। सहारा। आसरा। ५. वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फकीर रहता हो।

**तकिया-कलाम**—संज्ञा पुं० दे० "सखुनतकिया"।

**तकुआ**—संज्ञा पुं० दे० "तकला"।

**तक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मट्ठा। छाछ।

**तक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रामचन्द्र के भाई भरत का बड़ा पुत्र।

**तक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाताल के आठ नागों में से एक जिसने परीक्षित को काटा था। २. आजकल के विद्वानों के अनुसार भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति। इनका जातीय चिह्न सर्प था। ३. साँप। सर्प। ४. विश्वकर्मा। ५. सूत्रधार। ६. एक संकर जाति। ७. बढ़ई।

**तक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ बनाना।

**तक्षशिला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक बहुत प्राचीन नगरी जो भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी। हाल में यह नगर रावलपिंडी के पास जमीन खोदकर निकाला गया है। जनमेजय ने यहीं सर्प-यज्ञ किया था।

**तखफीफ**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] कमी।

**तखमीनन्**—क्रि० वि० [ अ० ] अंदाज से।

**तखमीना**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अंदाज। अनुमान। अटकल।

**तख्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २. तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।

**तख्त-ताऊस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० + अ० ] मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

**तख्तनशीन**—वि० [ फ़ा० ] जो राज-सिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनारूढ़।

**तख्तपोश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ चौकी।

**तख्तबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] तख्तों की बनी हुई दीवार।

**तख्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तख्तः ] १. लकड़ी का लंबा चौड़ा और चौकोर टुकड़ा। बड़ा पटरा। पल्ला।

**मुहा०**—तख्ता उलटना=बना-बनाया काम बिगाड़ना। तख्ता हो जाना= अकड़ जाना।

२. लकड़ी की बड़ी चौकी। तख्त। ३. अरथी। टिखटी। ४. कागज का ताव। ५. बाग की कियारी।

**तख्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तख्तः ] १. छोटा तख्ता। २. काठ की पटरी जिस पर लड़के लिखने का अभ्यास करते हैं। पटिया।

**तगड़ा**—वि० [ हिं० तन+कड़ा ] [ स्त्री० तगड़ी ] १ सबल। बलवान्। मजबूत। २. अच्छा और बड़ा।

**तगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीन वर्णों का वह समूह जिसमें पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण होता है। ( पिंगल )

**तगदमा**—दे० "तकदमा"।

**तगना**—क्रि० अ० [ हिं० तागना ] तागा जाना।

**तगमा**—संज्ञा पुं० दे० "तमगा"।

**तगर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती और औषध के काम में आती है।

**तगला**—संज्ञा पुं० दे० "तकला"।

**तगा***†—संज्ञा पुं० दे० "तागा"।

**तगाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तागना ] तागने का काम, भाव या मजदूरी।

**तगादा**—संज्ञा पुं० दे० "तकाजा"।

**तगार, तगारी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. उखली गाड़ने का गड्ढा। २. चूना, गारा इत्यादि ढोने का तसला। ३. वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय। ४. वह पक्का गड्ढा जिसमें जूठी आदि रखी जाय।

**तगीर***—संज्ञा पुं० [ अ० तग़य्युर ] बदलने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन।

**तगीरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तगीर ] परिवर्त्तन।

**तचना**†—क्रि० अ० दे० "तपना"।

**तचा**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्वचा ] चमड़ा। खाल।

**तचाना**—क्रि० स० [ हिं० तपाना ] १ तपाना। तप्त करना। २. संतप्त या दुःखी करना।

**तचित**—वि० [ हिं० तचना ] संतप्त। दुःखी।

**तच्छक***—संज्ञा पुं० दे० "तक्षक"।

**तच्छिन***—क्रि० वि० [ सं० तत्क्षण ] उसी समय। तत्काल।

**तज**—संज्ञा पुं० [ सं० त्वच ] १. दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड़। बाजारों में मिलनेवाला तेजपत्ता इसका पत्ता और तज (लकड़ी) इसकी छाल है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम में आती है।

**तजकिरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] चर्चा। जिक्र।

**तजन***†—संज्ञा पुं० [ [illegible] ]

तजने की क्रिया या भाव। त्याग। परित्याग।
संज्ञा पुं० [ सं० तजीन ] कोड़ा। चाबुक।
**तजना**—क्रि० स० [ सं० त्यजन ] त्यागना।
**तजरबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वह ज्ञान जो परीक्षा द्वारा प्राप्त किया जाय। अनुभव। २. वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए की जाय।
**तजरबाकार**—संज्ञा पुं० [ अ० तजरबा+फ़ा० कार ] जिसने तजरबा किया हो।
**तजवीज**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सम्मति। राय। २. फैसला। निर्णय। **यौ०**-तजवीजसानी=अभियोग की फिर से होने वाली सुनवाई।
३. बंदोबस्त।
**तज्जन्य**—वि० [सं०] उससे उत्पन्न।
**तज्जनित**--[?] उससे उत्पन्न।
**तज्ञ**—वि० [सं०] १. तत्त्व का जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २. ज्ञानी।
**तटंक**-संज्ञा पुं० दे० "ताटंक"।
**तट**--संज्ञा पुं० [सं० ] १. क्षेत्र। खेत। २. प्रदेश। ३. तीर। किनारा। कूल।
क्रि० वि० समीप। पास। निकट।
**तटका**—वि० दे० "टटका"।
**तटनी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० तटिनी ] ( तटवाली) नदी। सरिता। दरिया।
**तटस्थ**—वि० [ सं० ] १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. निकट रहनेवाला। ३. अलग रहनेवाला। जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे। उदासीन। निरपेक्ष।
**तटिनी,तटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी।
**तड़**—संज्ञा पुं० [ सं० तट ] एक ही जाति या समाज में होनेवाला विभाग। पक्ष।
संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. कोई चीज पटकने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। २. आमदनी की सूरत। ( दलाल )
**तड़क**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तड़कना ] १. तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण किसी चीज पर पड़ा हुआ चिह्न।
**तड़कना**—क्रि० अ० [ अनु० तड़ ] १. 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना। चटकना। कड़कना। २. किसी चीज का सूखने आदि के कारण फट जाना। ३. जोर का शब्द करना। ४. बिगड़ना। झुँझलाना। ५. उछलना। कूदना।
**तड़क-भड़क**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] ठाट-बाट।
**तड़का**—संज्ञा पुं० [ हिं० तड़कना ] १. सबेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।
**तड़काना**—क्रि० स० [ हिं० तड़कना का स० रूप ] १. इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड़' शब्द हो। २. जोर का शब्द उत्पन्न करना।
**तड़क्का**—क्रि वि० दे० "तड़ाका"।
**तड़तड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] तड़ तड़ शब्द होना।
क्रि० स० तड़ तड़ शब्द उत्पन्न करना।
**तड़प**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तड़पना ] १. तड़पने की क्रिया या भाव। २. चमक। भड़क।
**तड़पना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. अधिक वेदना के कारण व्याकुल होना। छटपटाना। तलमलाना। २. घोर शब्द करना। गरजना।
**तड़पाना**—क्रि० स० [ हिं० तड़पना का स० रूप ] दूसरे को तड़पने में प्रवृत्त करना।
**तड़फना**-क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
**तड़बंदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तड़+फ़ा० बंदी ] समाज या बिरादरी में अलग-अलग तड़ या विभाग बनना।
**तड़ाक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] तड़ाके का शब्द।
क्रि० वि० 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के सहित। २. जल्दी से। चटपट। तुरंत।
**यौ०**—तड़ाक पड़ाक=चटपट। तुरंत।
**तड़ाका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] "तड़" शब्द।
क्रि० वि० चटपट।
**तड़ाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पद्मादि-युक्त सर। तालाब। सरोवर। ताल। पुष्कर।
**तड़ागना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. डींग हाँकना। २. हाथ पैर हिलाना। प्रयत्न करना।
**तड़ातड़**—क्रि० वि० [ अनु० ] इस प्रकार जिसमें तड़ तड़ शब्द हो।
**तड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० ताड़ना का प्रे० ] किसी दूसरे को ताड़ने में प्रवृत्त करना। भँपाना।
**तड़ावा**--संज्ञा पुं० [ हिं० तड़ाना ] १. ऊपरी तड़क भड़क। २. धोखा। छल। ( क्व० )
**तड़ित**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तड़ित् ] बिजली।
**तड़िता**--संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।
**तड़ी**--संज्ञा स्त्री० [ तड़ से अनु० ] १. चपत। धौल। २. धोखा। छल। ( दलाल ) ३. बहाना। हीला।
**तड़ीत***—संज्ञा स्त्री० दे० "तड़ित"।
**तत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्म। परमात्मा। २. वायु। हवा।
सर्व० उस। जैसे—तत्काल। तत्क्षण।

**तत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। २. विस्तार। ३. पिता। ४. पुत्र। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों। जैसे—सारंगी, सितार आदि।

*†—वि० [ सं० तप्त ] तपा हुआ। गरम।

*†—संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।

**ततकार**—संज्ञा पुं० दे० "तततायेई"।

**ततखन***—क्रि० वि० दे० "तत्क्षण"।

**तततायेई**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] नृत्य का शब्द। नाच के बोल।

**ततबाउ***†—संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।

**ततबीर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "तदबीर"।

**ततसार***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० तप्तशाला ] आँच देने या तपाने की जगह।

**तताई***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तत्ता ] गरमी।

**ततारना**—क्रि० स० [ हिं० तत्ता ] १. गरम जल से धोना। २. ततेरा देकर धोना।

**तति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. श्रेणी। पंक्ति। ताँता। २. समूह। ३. विस्तार।

**ततुबाऊ***†—संज्ञा पुं० दे० "तंतुवाय"।

**ततोधिक**—वि० [ सं० ] उससे बढ़कर।

**ततैया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तिक्त ] बरें। भिड़।

**तत्काल**—क्रि० वि० [ सं० ] तुरंत। फौरन।

**तत्कालिक**—वि० दे० "तात्कालिक"।

**तत्कालीन**—वि० [ सं० ] उस समय का।

**तत्क्षण**—क्रि० वि० [ सं० ] उसी समय। तुरंत। फौरन।

**तत्त***†—संज्ञा पुं० दे० "तत्त्व"।

**तत्ता***—वि० [सं० तप्त] गरम। उष्ण।

**तत्ताथेई**—संज्ञा स्त्री० दे० "तत्ता-थेई"।

**तत्तो थंबो**—संज्ञा पुं० [ हिं० तत्ता=गरम+थामना ] १. दम-दिलासा। बहलावा। २. लड़ते हुए आदमियों को समझाकर शांत करना। बीच-बचाव।

**तत्त्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वास्तविक स्थिति। यथार्थता। असलियत। २. जगत् का मूल कारण। सांख्य में २५ तत्त्व माने गये हैं। ३. पंचभूत। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। ४. परमात्मा। ब्रह्म। ५. सार वस्तु। साराश।

**तत्त्वज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तत्त्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २. दार्शनिक।

**तत्त्वज्ञान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के संबंध का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्म-ज्ञान।

**तत्त्वज्ञानी**—संज्ञा पुं० दे० "तत्त्वज्ञ"।

**तत्त्वता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तत्त्व होने का भाव या गुण। २. यथार्थता।

**तत्त्वदर्शी**—संज्ञा पुं० दे० "तत्त्वज्ञ"।

**तत्त्वदृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] ज्ञान-चक्षु। दिव्य-दृष्टि।

**तत्त्ववाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दर्शन-शास्त्रसंबंधी विचार।

**तत्त्ववादी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तत्त्ववाद का ज्ञाता और समर्थक। २. यथार्थ और स्पष्ट बात करनेवाला।

**तत्त्वविद्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तत्त्ववेत्ता।

**तत्त्वविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दर्शनशास्त्र।

**तत्त्ववेत्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तत्त्वज्ञ। २. दार्शनिक।

**तत्त्वशास्त्र**—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन-शास्त्र"।

**तत्त्वावधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जाँच-पड़ताल। देख-रेख।

**तत्थ**†—वि० [ सं० तत्त्व ] मुख्य। प्रधान।

संज्ञा पुं० १. शक्ति। बल। २. तत्त्व।

**तत्पर**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा तत्परता ] १. उद्यत। मुस्तैद। सन्नद्ध। २. निपुण। ३. चतुर। होशियार।

**तत्परता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सन्नद्धता। मुस्तैदी। २. दक्षता। निपुणता। ३. होशियारी।

**तत्पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर। परमेश्वर। २. एक रुद्र का नाम। ३. एक प्रकार का समास जिसमें पहले पद में कर्त्ता कारक की विभक्ति को छोड़कर दूसरे कारकों की विभक्ति लुप्त हो और पिछले पद का अर्थ प्रधान हो। जैसे—जलचर।

**तत्र**—क्रि० वि० [ सं० ] उस जगह। वहाँ।

**तत्रभवान्**—संज्ञा पुं० [सं० ] माननीय। पूज्य।

**तत्रापि**—अव्य० [ सं० ] तथापि।

**तत्सम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संस्कृत का वह शब्द जिसका व्यवहार भाषा में उसके शुद्ध रूप में या ज्यों का त्यों हो। किसी भाषा का शुद्ध शब्द।

**तत्सामयिक**—वि० [ सं० ] उस समय का।

**तथा**—अव्य० [ सं० ] १. और। वा। २. इसी तरह। ऐसे ही।

**यौ०**—तथास्तु=ऐसा ही हो। एवमस्तु।

**तथा-कथित**—वि० [ सं० ] जो कोई काम करनेवाला कहा जाय, पर जिसके संबंध में कोई प्रमाण न हो। कहा जानेवाला।

**तथा-कथ्य**— वि० दे० "तथा-कथित"।

**तथागत**—संज्ञा पुं०[सं०] गौतम बुद्ध।

**तथापि**—अव्य० [ सं० ] तो भी। तब भी।

**तथैव**—अव्य० [ सं० ] वैसा ही। उसी प्रकार।

**तथोक्त**—वि० दे० "तथा-कथित"।

**तथ्य**— वि० [ सं० ] सचाई। यथार्थता।

**तद्**—वि० [ सं० ] वह। (यौगिक में) †क्रि० वि० [ सं० तदा ] उस समय। तब।

**तदंतर, तदनंतर**—क्रि० वि० [सं०] उसके पीछे। उसके बाद। उसके उपरांत।

**तदनुरूप**—वि० [ सं० ] उसी के रूप का। उसी के समान।

**तदनुसार**— वि० [ सं० ] उसके मुताबिक। उसके अनुकूल।

**तदपि**—अव्य० [ सं० ] तो भी। तथापि।

**तदबीर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अभीष्ट सिद्ध करने का साधन। उपाय। युक्ति। तरकीब।

**तदा**—क्रि० वि० [ सं० ] उस समय। तब।

**तदाकार**—वि० [ सं० ] १. वैसा ही। उसी आकार का। तद्रूप। २. तन्मय।

**तदारुक**—संज्ञा पुं० [अ० ] १. भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध में जाँच। २. दुर्घटना को रोकने के लिए पहले से किया हुआ प्रबंध। पेशबंदी। ३. सजा। दंड।

**तदीय**—सर्व० [सं०] [संज्ञा तदीयता] उससे संबंध रखनेवाला। उसका।

**तदुपरांत**—क्रि० वि० [ सं० ] उसके पीछे। उसके बाद।

**तद्गत**—वि० [ सं० ] १. उससे संबंध रखनेवाला। २. उसके अंतर्गत। उसमें व्याप्त।

**तद्गुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग करके समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है।

**तद्धित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं। जैसे—'मित्र' से 'मित्रता'।

**तद्भव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्तित हो गया हो। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप। जैसे—'अश्रु' का 'आँसू'। किसी भाषा के शुद्ध रूप से बिगड़कर बना हुआ शब्द। जैसे—लैंटर्न से लालटेन।

**तद्यपि**—अव्य० [ सं० ] तथापि। तो भी।

**तद्रूप**—वि० [ सं० ] समान। सदृश।

**तद्रूपता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सादृश्य। समानता।

**तद्वत्**—वि० [ सं० ] उसी के जैसा। उसके समान। ज्यों का त्यों।

**तन**—संज्ञा पुं० [ सं० तनु ] शरीर। देह। गात।

**मुहा०**—तन को लगना=१. हृदय पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। २. (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। तन देना=ध्यान देना। मन लगाना। तन मन मारना=इंद्रियों को वश में रखना।

क्रि० वि० तरफ। ओर।

*वि० दे० "तनिक"।

**तनकीह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ जाँच। तहकीकात। २. अदालत का किसी मुकदमे की उन बातों का पता लगाना जिनका फैसला होना जरूरी हो।

**तनखाह**-संज्ञा स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन। तलब।

**तनगना***†—क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

**तनजेब**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।

**तनज्जुल**—वि० [ अ० ] उन्नत का उलटा। अवनत। उतारा या घटाया हुआ।

**तनज्जुली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] अवनति।

**तन-तनहा**—वि० [ हिं० तन+फ़ा० तनहा ] अकेला।

**तनाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तानना ] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**तनाउ**—वि० दे० "तनाव"।

**तनतनाना**—क्रि० अ० [ अ० तनूतनः ] १. शान दिखाना। २. क्रोध करना।

**तनत्राण**—संज्ञा पुं० दे० "तनुत्राण"।

**तनधर**—संज्ञा पुं० दे० "तनुधारी"।

**तनना**—क्रि० अ० [सं० तन या तनु] १. खिंचाव या खुश्की आदि के कारण किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ना। २. आकर्षित या प्रवृत्त होना। ३. अकड़कर सीधा खड़ा होना। ४. कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदासीन होना। ऐंठना।

**तनपात**—संज्ञा पुं० दे० "तनुपात"।
**तनमय**—वि० दे० "तन्मय"।
**तनय**—संज्ञा पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।
**तनया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बेटी। पुत्री।
**तनराग**—संज्ञा पुं० दे० "तनुराग"।
**तनरुह***।—संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।
**तनवाना**—क्रि० स० [हिं० तानना का प्रे०] तानने का काम दूसरे से कराना। तनाना।
**तनसुख**—संज्ञा पुं०*[हिं० तन+सुख] एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।
**तनहा**—वि० [फ़ा०] जिसके संग कोई न हो। अकेला। एकाकी।
क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले।
**तनहाई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. तनहा होने की दशा या भाव। अकेलापन। २. एकांत।
**तना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वृक्ष का जमीन से ऊपर निकला हुआ वह भाग जिसमें डालियाँ न निकली हो। पेड़ का धड़। मंदल।
क्रि० वि० [हिं० तन] ओर। तरफ।
**तनाकु***।—क्रि० वि० दे० "तनिक"।
**तनाजा**—संज्ञा पुं० [अ०] १ बखेड़ा। झगड़ा। २ शत्रुता। वैर।
**तनाना**—क्रि० स० दे० "तनवाना"।
**तनाव**।—संज्ञा स्त्री० [अ० तिनाव] खेमे की रस्सी।
**तनाव**—संज्ञा पुं० [हिं० तनना] १. तनने का भाव या क्रिया। २. रस्सी। डोरी।
**तनि, तनिक**—वि० [सं० तनु=अल्प] १. थोड़ा। कम। २. छोटा।
क्रि० वि० जरा। टुक।
**तनिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर का दुबलापन। कृशता।
**तनिया**।—संज्ञा स्त्री० [हिं० तनी] १. लँगोटी। कौपीन। २. कछनी। जाँघिया। ३. चोली।
**तनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तानना] १. डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे आदि में उनका पल्ला बाँधने के लिए लगाया जाता है। बंद। बंधन। २. दे० "तनिया"।
।क्रि० वि० दे० "तनिक"।
**तनु**—वि० [सं०] १. दुबला-पतला। २ थोड़ा। कम। ३. कोमल। नाजुक। ४. सुंदर। बढ़िया।
संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। बदन। २. चमड़ा। खाल। ३. स्त्री। औरत।
**तनुक***।—क्रि० वि० दे० "तनिक"।
संज्ञा पुं० दे० "तनु"।
**तनुज**—संज्ञा पुं० [सं०] बेटा। पुत्र।
**तनुजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़की। बेटी।
**तनुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लघुता। छोटाई। २. दुर्बलता। दुबलापन।
**तनुत्राण**—संज्ञा पुं० [सं०] कवच। बखतर।
**तनुधारी**—वि० [सं०] शरीर धारण करनेवाला। देहधारी।
**तनुमध्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौरस नाम का वर्णवृत्त।
**तनुराग**—संज्ञा पुं० [सं०] केसर, चंदन आदि मिला सुगंधित उबटन। बटना।
**तनूज***—संज्ञा पुं० दे० "तनुज"।
**तनूजा**—संज्ञा स्त्री० [सं० तनुजा] लड़की। बेटी।
**तनेना**—वि० [हिं० तनना+एना (प्रत्य०)] [स्त्री० तनेनी] १. खिंचा हुआ। टेढ़ा। तिरछा। २. क्रुद्ध। नाराज।
**तनै***—संज्ञा पुं० दे० "तनय"।
**तनैया***।—संज्ञा स्त्री० [सं० तनया] बेटी।
**तनोज***—संज्ञा पुं० [सं० तनूज] १. रोम। लोम। रोआँ। २. लड़का। बेटा।
**तनोरुह***—संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।
**तन्नाना**—क्रि० अ० [हिं० तनना] अकड़ना। ऐंठना। अकड़ दिखाना।
**तन्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं० तनिका] वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले लटकते हैं। जोती।
संज्ञा स्त्री० दे० "तरनी"।
**तन्मय**—वि० [सं०] [स्त्री० तन्मयी] जो किसी काम में बहुत मग्न हो। लवलीन। लगा हुआ। दत्तचित्त।
**तन्मयता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिप्तता। एकाग्रता। लीनता। लगन।
**तन्मात्र**—संज्ञा पुं० [सं०] सांख्य के अनुसार पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप। ये संख्या में पाँच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।
**तन्मात्रा**—संज्ञा स्त्री० दे० "तन्मात्र"।
**तन्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।
**तन्वंग**—वि० [सं० तनु+अंग] [स्त्री० तन्वंगी] दुबले पतले अंगोंवाला।
**तन्वी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।
वि० दुबली या कोमल अंगोंवाली।
**तप**—संज्ञा पुं० [सं० तपस्] १. शरीर को कष्ट देनेवाले वे कार्य्य जो

चित्त को विषयों से निवृत्त करने के लिए किये जायँ। तपस्या। २. शरीर या इंद्रिय को वश में रखने का धर्म। ३. नियम। ४. अग्नि।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ताप। गरमी। २. ग्रीष्म ऋतु। ३. बुखार। ज्वर।

**तपकना***—क्रि० अ० [ हिं० टपकना ] १. धड़कना। उछलना। २. चमकना। ३. दे० "टपकना"।

**तपती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सूर्य की कन्या।

**तपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तपने की क्रिया या भाव। ताप। जलन। आँच। दाह। २. सूर्य। रवि। ३. सूर्यकांत मणि। ४. ग्रीष्म। गरमी। ५. एक प्रकार की अग्नि। ६. धूप। ७. वह क्रिया या हाव-भाव आदि जो नायक के वियोग में नायिका करे या दिखलावे।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० तपना ] ताप। गरमी।

**तपना**—क्रि० अ० [ सं० तपन ] १. अधिक गर्मी आदि के कारण खूब गरम होना। तप्त होना। २. संतप्त होना। कष्ट सहना। ३. गरमी या ताप फैलाना। ४. प्रभुत्व या प्रताप दिखलाना। आतंक फैलाना। ५. तपस्या करना। तप करना। ६. बुरे कामों में अंधाधुंध खर्च करना।

**तपनि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "तपन"।

**तपनी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तपना ] १. वह स्थान जहाँ बैठकर आग तापते हों। कौड़ा। अलाव। २. तपस्या। तप।

**तप-रितु**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तपना + ऋतु ] गरमी का मौसिम।

**तपश्चरण**—संज्ञा पुं० दे० "तपश्चर्या"।

**तपश्चर्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तपस्या।

**तपस**—संज्ञा पुं० दे० "तपस्या"।

**तपसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तपस्या ] १. तपस्या। तप। २. तापती नदी।

**तपसाली**—संज्ञा पुं० [ सं० तपःशालिन् ] तपस्वी।

**तपसी**—संज्ञा पुं० [ सं० तपस्वी ] तपस्वी।

**तपस्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तप। व्रतचर्या।

**तपस्विता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तपस्वी होने की अवस्था या भाव।

**तपस्विनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री। ३. पतिव्रता या सती स्त्री।

**तपस्वी**—संज्ञा पुं० [ सं० तपस्विन् ] [ स्त्री० तपस्विनी ] १. वह जो तप करता हो। तपस्या करनेवाला। २. दीन। ३. दया करने योग्य।

**तपा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तप ] तपस्वी।

**तपाक**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १ आवेश। जोश। २. वेग। तेजी।

**तपाना**—क्रि० स० [ हिं० तपना ] १.गरम करना। तप्त करना। २.दुःख देना।

**तपावंत**—संज्ञा पुं० [ हिं० तप + वंत ( प्रत्य० )] वह जो तपस्या करता हो। तपस्वी।

**तपित***†—वि० [ सं० ] तपा हुआ। गरम।

**तपिया**—संज्ञा पुं० दे० "तपस्वी"।

**तपिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गरमी। तपन.

**तपी**—संज्ञा पुं० [ हिं० तप ] तपस्वी।

**तपेदिक**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तप + अ० दिक़ ] राजयक्ष्मा। क्षय रोग।

**तपोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ा तपस्वी।

**तपोबल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तप का प्रभाव या शक्ति।

**तपोभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तप करने का स्थान। तपोवन।

**तपोलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से छठा लोक।

**तपोवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य वन।

**तपोवृद्ध**—वि० [ सं० ] जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।

**तप्त**—वि० [ सं० ] १. तपाया या तपा हुआ। गरम। उष्ण। २. दुःखित। पीड़ित।

**तप्तकुंड**—संज्ञा पुं०[सं०] वह प्राकृतिक जल-धारा जिसका पानी गरम हो।

**तप्तकृच्छ्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित्त-स्वरूप किया जाता है।

**तप्तमाष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार की परीक्षा जिससे अपराध आदि के संबंध में किसी के कथन की सत्यता जानी जाती थी।

**तप्तमुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शंख, चक्रादि के छापे जो तपाकर वैष्णव लोग अपने अंगों पर दाग लेते हैं।

**तप्प***†—संज्ञा पुं० दे० "तप"।

**तफरीक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. विभाग। बँटवारा। २. अंतर। फरक। ३. गणित में घटाने की क्रिया। बाकी।

**तफरीह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. खुशी। प्रसन्नता। २. दिल्लगी। हँसी। ठट्ठा। ३. हवाखोरी। सैर।

**तफ़सील**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. विस्तृत वर्णन। २. टीका। तशरीह। ३. कैफियत। ब्योरा।

**तब**—अव्य [ सं० तदा ] १. उस समय। उस वक्त। २. इस कारण। इस वजह से।

**तबक़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. आकाश के वे खंड जो पृथ्वी के ऊपर और नीचे माने जाते हैं। लोक। तल। २. परत। तह। ३. चाँदी, सोने के पत्तरों को पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक। ४. चौड़ी और छिछली थाली।

**तबकगर**—संज्ञा पुं० [ अ० तबक + फ़ा० गर ] सोने, चाँदी के तबक बनानेवाला। तबकिया।

**तबका**—संज्ञा पुं० [ अ० तबकः ] १ खंड। विभाग। २. तह। परत। ३. लोक। तल। ४. आदमियों का गरोह।

**तबकिया**—संज्ञा पुं० दे० 'तबकगर'।

**तबदील**—वि० [ अ० ] [संज्ञा तबदीली ] जो बदला गया हो। परिवर्तित।

**तबर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कुल्हाड़ा। २. कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।

**तबल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. बड़ा ढोल। २. नगाड़ा। डंका।

**तबलची**—संज्ञा पुं० [ अ० तबलः ] वह जो तबला बजाता हो। तबलिया।

**तबला**—संज्ञा पुं० [ अ० तबलः ] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा। यह बाजा इसी तरह के और दूसरे बाजों के साथ बजाया जाता है जिसे "बायाँ", "ठेका" या "डुग्गी" कहते हैं।

**तबलिया**—संज्ञा पुं० दे० "तबलची"।

**तबलीग**—संज्ञा पुं० [ अ० ] दूसरों को अपने धर्म में मिलाना।

**तबादला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ बदला जाना। परिवर्त्तन। २. किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना।

**तबाशीर**—संज्ञा पुं० [ सं० तवक्षीर ] बंसलोचन।

**तबाह**—वि० [ फ़ा० ] [संज्ञा तबाही] जो बिलकुल खराब हो गया हो। नष्ट। बरबाद।

**तबाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] नाश। बरबादी।

**तबीअत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. चित्त। मन। जी।

**मुहा०**—( किसी पर) तबीअत आना= ( किसी पर प्रेम ) होना। आशिक होना। तबीअत फड़क उठना=चित्त का उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो जाना। तबीअत लगना=१. मन में अनुराग उत्पन्न होना। २. ध्यान लगा रहना। २. बुद्धि। समझ। ज्ञान।

**तबीअतदार**—वि० [अ० तबीअत + फ़ा० दार] १. समझदार। २. भावुक। रसिक।

**तबीब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वैद्य। हकीम।

**तबेला**—संज्ञा पुं० दे० "तवेला"।

**तब्बर***—संज्ञा पुं० दे० "टाबर"।

**तभी**—अव्य० [ हिं० तब+ही ] १. उसी समय। उसी वक्त। उसी घड़ी। २. इसी कारण। इसी वजह से।

**तमंचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. छोटी बंदूक। पिस्तौल। २. वह लंबा पत्थर जो दरवाजों की बगल में लगाया जाता है।

**तम**—संज्ञा पुं० [ सं० तमस् ] १. अंधकार। अँधेरा। २. राहु। ३. वराह। सूअर। ४. पाप। ५. क्रोध। ६. अज्ञान। ७. कालिख। कालिमा। ८. नरक। ९. मोह। १०. सांख्य में प्रकृति का तीसरा गुण जिससे काम, क्रोध और हिंसा आदि होती है। प्रत्य० एक प्रत्यय जो विशेषण के अंत में लगाकर "सबसे बढ़कर" का अर्थ देता है। जैसे-श्रेष्ठतम।

**तमक**—संज्ञा पुं० [ हिं० तमकना ] १. जोश। उद्वेग। २. तेजी। तीव्रता। ३. क्रोध।

**तमकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. क्रोध का आवेश दिखलाना। २. दे० "तमतमाना"।

**तमगा**—संज्ञा पुं० [ तु० ] पदक।

**तमचर**—संज्ञा पुं० [ सं० तमीचर ] १ राक्षस। निशाचर। २. उल्लू।

**तमचुर***†—संज्ञा पुं० [ सं० ताम्रचूड़ ] मुरगा। कुक्कुट।

**तमचोर***†—संज्ञा पुं० दे० "तमचुर"

**तमच्छन्न**—वि० दे० "तमाच्छन्न"।

**तमतमाना**—क्रि० अ० [ सं० ताम्र ] धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।

**तमता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तम का भाव। २. अँधेरा। अंधकार।

**तमन्ना**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] ख्वाहिश। इच्छा।

**तमयी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० तम+मयी ] रात।

**तमस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंधकार। २. अज्ञान का अंधकार। ३. पाप। ४. तमसा नदी। टौंस।

**तमसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] टौंस नदी।

**तमस्विनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अँधेरी रात।

**तमस्वी**—वि० [ सं० तमस्विन् ] अंध-

-कारपूर्ण।

**तमस्सुक**—संज्ञा पुं० [अ०] वह कागज जो ऋण लेनेवाला ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर महाजन को देता है। दस्तावेज।

**तमहीद**—संज्ञा स्त्री० [अ०] भूमिका।

**तमा**—संज्ञा पुं० [सं० तमस्] राहु।
संज्ञा स्त्री० रात। रात्रि। रजनी।
संज्ञा स्त्री० [अ० तमअ] लोभ।

**तमाकू**—संज्ञा पुं० [पुर्त० टुबैको] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में काम में लाए जाते हैं। २. इस पौधे का पत्ता जिसका व्यवहार लोग अनेक प्रकार से नशे के लिए करते हैं। सुरती। ३. इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर जलाकर मुँह से धुँआ खींचते हैं।

**तमाखू**†—संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।

**तमाचा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० तपान्चः] हथेली और उँगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार। थप्पड़। झापड़।

**तमाच्छन्न**—वि० [सं०] तम या अंधकार से घिरा हुआ।

**तमाच्छादित**—वि० दे० "तमाच्छन्न"।

**तमादी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] किसी बात की मुद्दत या मियाद गुजर जाना।

**तमाम**—वि० [अ०] १. पूरा। संपूर्ण। कुल। २. समाप्त। खतम।

**तमामी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा।

**तमारि**—संज्ञा पुं० [हिं० तम+अरि] सूर्य।
संज्ञा स्त्री० दे० "तँवार"।

**तमाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बहुत ऊँचा सुंदर सदाबहार वृक्ष। २. तेजपत्ता। ३. काले खैर का वृक्ष। ४. वरुण वृक्ष। ५. एक प्रकार की तलवार।

**तमाशबीन**—संज्ञा पुं० [अ० तमाशः+फ़ा० बीन] १. तमाशा देखनेवाला। २. वेश्यागामी। ऐयाश।

**तमाशा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो। चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २. अद्भुत व्यापार। अनोखी बात।

**तमाशाई**—संज्ञा पुं० [अ०] तमाशा देखनेवाला।

**तमिस्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधकार। अँधेरा। २. क्रोध। गुस्सा।
वि० [स्त्री० तमिस्रा] अंधकारपूर्ण।

**तमिस्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] काली या अँधेरी रात।

**तमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।

**तमीचर**—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

**तमीज**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भले और बुरे को पहचानने की शक्ति। विवेक। २. पहचान। ३. ज्ञान। बुद्धि। ४. अदब। कायदा।

**तमीपति, तमीश**—संज्ञा पुं० [सं० तमी+ईश] चंद्रमा।

**तमोगुण**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकृति के तीन भावों में से एक जो भारी और रोकनेवाला तथा निकृष्ट माना गया है। निकृष्ट कर्म इसी के कारण होते हैं।

**तमोगुणी**—वि० [सं०] जिसकी वृत्ति में तमोगुण हो। अधम वृत्ति-वाला।

**तमोघ्न**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. चंद्रमा। ३. सूर्य। ४. बुद्ध। ५. विष्णु। ६. शिव। ७. ज्ञान। ८. दीपक। दीआ।
वि० जिससे अँधेरा दूर हो।

**तमोमय**—वि० [सं०] १. तमोगुण-युक्त। २. अज्ञानी। ३. क्रोधी।

**तमोर***†—संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] पान।

**तमोरी***†—संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।

**तमोल***†—संज्ञा पुं० [सं० तांबूल] १. पान का बीड़ा। २. दे० "तबोल"।

**तमोली**—संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।

**तमोहर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. सूर्य। ३. अग्नि। आग। ४. ज्ञान।
वि० [सं०] १. अंधकार दूर करनेवाला। २. अज्ञान दूर करनेवाला।

**तय**—वि० [अ०] १. पूरा किया हुआ। निबटाया हुआ। समाप्त। २. निश्चित। ठहराया हुआ। मुकर्रर। ३. निबटाया हुआ। निर्णीत। फैसल।

**तयना***†—क्रि० अ० दे० "तपना"।

**तयार**†*—वि० दे० "तैयार"।

**तरंग**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी की लहर। हिलोर। मौज। २. संगीत में स्वरों का चढ़ाव-उतार। स्वरलहरी। ३. चित्त की उमंग। मन की मौज।

**तरंगवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**तरंगायित**—वि० [सं०] १. जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। २. तरंगों की तरह का। लहरियादार। लहर-दार।

**तरंगिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।
वि० स्त्री० तरंगवाली।

**तरंगित**—वि० [सं०] जिसमें तरंगें उठ रही हों। हिलोर मारता या लहराता हुआ। नीचे ऊपर उठता हुआ।

**तरंगी**—वि० [सं० तरंगिन्] [स्त्री०

तरंगिणी ] १. तरंग-युक्त। जिसमें लहर हो। २. मनमौजी।

**तर**—वि० [ फ़ा० ] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। २. शीतल। ठंढा। ३. जो सूखा न हो। हरा। ४. मालदार।

†क्रि० वि० [ सं० तल ] तले। नीचे।

प्रत्य० [ सं० ] एक प्रत्यय जो गुण-वाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य ( गुण में ) सूचित करता है। जैसे—अधिकतर, श्रेष्ठतर।

**तरई**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० तारा ] नक्षत्र।

**तरक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तड़कना ] दे० "तड़क"।

संज्ञा पुं० [ सं० तर्क ] १. सोच-विचार। उधेड़-बुन। ऊहापोह। २. सुंदर उक्ति। चतुराई का वचन। चोज की बात।

संज्ञा स्त्री० [ सं० तर=पथ ? ] वह शब्द जो पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरंभ का शब्द सूचित करने के लिए लिखा जाता है।

**तरकना**†*—क्रि० अ० दे० "तड़कना"।

क्रि० अ० [ सं० तर्क ] तर्क करना। सोच-विचार करना।

क्रि० अ० [ अनु० ] उछलना। कूदना।

**तरकश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।

**तरकशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तर्कश ] छोटा तरकस। तूणीर।

**तरका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले।

**तरकारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तरः=सब्जी+कारी ] १. वह पौधा जिसकी पत्ती, डंठल, फल आदि पकाकर खाने के काम आते हैं। भाजी। सब्जी। २. खाने के लिए पकाया हुआ फल-फूल, पत्ता आदि। शाक। भाजी। ३. खाने योग्य मांस। (पं०)

**तरकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ताडंकी ] कान में पहनने का फूल के आकार का एक गहना।

**तरकीब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मिलान। २. बनावट। रचना। ३. युक्ति। उपाय। ढंग। ढब। ४. रचना-प्रणाली।

**तरकुली**—संज्ञा स्त्री० दे० "तरकी"।

**तरक्की**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वृद्धि। उन्नति।

**तरखा**†—संज्ञा पुं० [ सं० तरंग ] जल का तेज बहाव। तीव्र प्रवाह।

**तरखान**—संज्ञा पुं० [ सं० तक्षण ] बढ़ई।

**तरछाना***†—क्रि० अ० [ हिं० तिरछा ] तिरछी आँख से इशारा करना। इंगित करना।

**तरजना**—क्रि० अ० [ सं० तर्जन ] १. ताड़न करना। डाँटना। डपटना। २. भला-बुरा कहना। बिगड़ना।

**तरजनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तर्जनी"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० तर्जन ] भय। डर।

**तरजीला**—वि० [ सं० तर्जन ] १. क्रोधपूर्ण। २. उग्र। प्रचंड।

**तरजीह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] किसी को औरों से अच्छा समझना या प्रधानता देना।

**तरजुमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अनुवाद। भाषांतर। उल्था।

**तरजौहाँ**—वि० दे० "तरजीला"।

**तरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तरना। तैरना। २. पार जाना।

**तरणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नदी आदि पार करना। २. निस्तार। उद्धार।

संज्ञा स्त्री० दे० "तरणी"।

**तरणिजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सूर्य की कन्या, यमुना। २. एक वर्ण-वृत्त।

**तरणितनूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सूर्य की पुत्री, यमुना।

**तरणिसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य का पुत्र। २. यम। ३. शनि। ४. कर्ण।

**तरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नौका। नाव।

**तरतराना***—क्रि० अ० [ अनु० ] १. तड़ तड़ शब्द करना। तड़तड़ाना। २. घी आदि से बिलकुल तर करना।

**तरतीब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वस्तुओं का अपने ठीक स्थानों पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।

**तरद्दुद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सोच। फिक्र। अंदेशा। चिंता। खटका।

**तरन***—संज्ञा पुं० दे० "तरण"।

संज्ञा पुं० दे० "तरौना"।

**तरनतार**—संज्ञा पुं० [ सं० तरण ] निस्तार। मोक्ष। मुक्ति।

**तरनतारन**—संज्ञा पुं० [ सं० तरण+हिं० तरना ] १. उद्धार। निस्तार। मोक्ष। २. भवसागर से पार करनेवाला।

**तरना**—क्रि० स० [ सं० तरण ] पार करना।

क्रि० अ० मुक्त होना। सद्‌गति प्राप्त करना।

*क्रि० अ० दे० "तलना"।

**तरनि**—संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।

**तरनिजा***—संज्ञा स्त्री० दे० "तरणिजा"।

**तरनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तरणि ] १. नाव। नौका। २. मिठाई का थाल या खोंचा रखने का छोटा मोढ़ा। तबी।

**तरपत**—संज्ञा पुं० [ सं० तृप्ति ] १. सुभीता। २. आराम।

**तरपना**—क्रि० अ० दे० "तड़पना"।

**तरपर**—क्रि० वि० [ हिं० तर-पर ] १. नीचे ऊपर। २. एक के पीछे दूसरा।

**तरपीला***—वि० [ हिं० तड़प ] चमकदार।

**तरफ़**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. ओर। दिशा। अलंग। २. किनारा। पार्श्व। बगल। ३. पक्ष। पासदारी।

**तरफ़दार**—वि० [ अ० तरफ़+फ़ा० दार ] [ संज्ञा तरफ़दारी ] पक्ष में रहनेवाला। पक्षपाती। हिमायती।

**तरफराना**—क्रि० अ० दे० "तड़फड़ाना"।

**तर-बतर**—वि० [ फ़ा० ] भीगा हुआ। आर्द्र।

**तरबूज़**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तर्बुज ] १ एक प्रकार की बेल। २. इस बेल के बड़े गोल फल जो खाने के काम में आते हैं।

**तरबोना***—क्रि० अ० [ हिं० तर ] तर करना। भिगाना।

**तरमीम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] संशोधन।

**तरराना***—क्रि० अ० [अनु०] मरोड़ना। ऐंठना।

**तरल**—वि० [ सं० ] १. हिलता-डोलता। चलायमान। चंचल। २. क्षणभंगुर। ३. बहनेवाला। द्रव। ४. चमकीला। ५. कोमल। मद।

**तरलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंचलता। २. द्रवत्व।

**तरलनयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**तरलाई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० तरल+आई ( प्रत्य० ) ] १. चंचलता। चपलता। २. द्रवत्व।

**तरवर**—संज्ञा पुं० [ हिं० ताड़+बनना ] १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।

संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

**तरवरिया***—वि० [ हिं० तलवार ] तलवार चलानेवाला।

**तरवा**—संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।

**तरवार**—संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"।

संज्ञा पुं० दे० "तरवर"।

**तरस**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रस ] दया। रहम।

**मुहा०**—( किसी पर ) तरस खाना=दयार्द्र होना। दया करना। रहम करना।

**तरसना**—क्रि० अ० [ सं० तर्षण ] ( किसी वस्तु को ) न पाकर बेचैन रहना।

क्रि० स० [ सं० त्रासन ] १. त्रस्त करना। कष्ट या पीड़ा पहुँचाना। २. भयभीत करना। डराना।

**तरसाना**—क्रि० स० [हिं० तरसना] १. कोई वस्तु न देकर उसके लिए बेचैन करना। २. व्यर्थ ललचाना।

**तरसौहाँ***—वि० [ हिं० तरसना ] तरसनेवाला।

**तरह**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भाँति। किस्म। २. आलंकारिक रचना-प्रकार। ढाँचा। डौल। बनावट। रूप-रंग। ३. ढब। तर्ज। प्रणाली। रीति। ढंग। ४. युक्ति। उपाय।

**मुहा०**—तरह देना=खयाल न करना। बचा जाना। जाने देना।

५. हाल। दशा। अवस्था।

**तरहटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तर ] १. नीची भूमि। २. पहाड़ की तराई।

**तरहदार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा तरहदारी ] १. सुंदर बनावट का। २. शौकीन।

**तरहर, तरहारि**†—क्रि० वि० [ हिं० तर+हर ( प्रत्य० ) ] तले। नीचे। वि० १. नीचे का। २. निकृष्ट। बुरा।

**तरहुँड***—क्रि० वि० दे० "तरहर"।

**तरहेल**†—वि० [ हिं० तर+हेल ( प्रत्य० ) ] १. अधीन। निम्नस्थ। २. वश में आया हुआ। पराजित।

**तराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तर=नीचे ] १. पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान। २. पहाड़ की घाटी।

**तराज़ू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सीधी डाँड़ी के छोरों से बँधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं। तुला। तकड़ी। किसी वस्तु को तौलने का यंत्र।

**तराटक***-संज्ञा पुं० दे०"त्राटिका"।

**तराना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार का चलता गाना।

**तराप***†—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बंदूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द।

**तरापा**†—संज्ञा पुं० [ अनु० ] हाहाकार। कुहराम। त्राहि त्राहि।

**तराबोर**—वि० [ फ़ा० तर+हिं० बोरना ] खूब भीगा हुआ। शराबोर।

**तरामर***—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. जल्दी जल्दी होनेवाली कार्रवाई। २. घूस।

**तरामीरा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

**तरायला**—वि० [ हिं० तर ? ] १. तरल। २. चपल। चंचल।

**तरारा**—संज्ञा पुं० [ ? ] १. उछाल।

छलाँग। कुलाँच। २. पानी की धार जो बराबर किसी वस्तु पर गिरे।

**तरावट**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तर+ आवट (प्रत्य०) ] १. गीलापन। नमी। २. ठंढक। शीतलता। ३. शरीर की गरमी शांत करनेवाला आहार आदि। ४. स्निग्ध भोजन।

**तराश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. काटने का ढंग या भाव। काट। २. काट-छाँट। बनावट। रचना-प्रकार। ३. ढंग। तर्ज़।

**तराशना**—क्रि० स० [ फ़ा० ] काटना। कतरना।

**तरासना***—क्रि० स० [ सं० त्रसन ] त्रास या कष्ट देना।

**तराहीं***—क्रि० वि० [हिं० तले]नीचे।

**तरिका**†—संज्ञा पुं० [ सं० ताडंक ] कान का एक गहना। तरकी। तरौना।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० तड़ित् ] बिजली।

**तरिता***—संज्ञा स्त्री० दे० "तड़िता"।

**तरियाना**†—क्रि० स० [ हिं० तरे= नीचे ] १. नीचे कर देना। तह में बैठा देना। २. ढाँकना। छिपाना। क्रि० अ० तले बैठ जाना। तह में जमना।

**तरिवन**—संज्ञा पुं० [ हिं० ताड़ ] १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।

**तरिवर***—संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

**तरिहँत**†—क्रि० वि० [ हिं० तर+ हँत (प्रत्य०) ] नीचे। तले।

**तरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाव। नौका।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तर ] १. गीला-पन। आर्द्रता। २. ठंढक। शीत-लता। ३. वह नीची भूमि जहाँ बर-सात का पानी इकट्ठा रहता हो। कछार। ४. तराई। तरहटी।

*संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताड़ ] कान का एक गहना। तरिवन। कर्णफूल।

**तरीका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. ढंग। विधि। रीति। २. चाल। व्यवहार। ३. उपाय। तदबीर।

**तरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वृक्ष। पेड़। २. एक प्रकार का चीड़।

**तरुण**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० तरुणी] १. युवा। जवान। २. नया। नूतन।

**तरुणाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण+ आई (प्रत्य०) ] युवावस्था। जवानी।

**तरुणाना***—क्रि० अ० [ सं० तरुण+ आना (प्रत्य०) ] जवानी पर आना।

**तरुणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] युवती। जवान स्त्री।

**तरुन***†—संज्ञा पुं० दे० "तरुण"।

**तरुनई, तरुनाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० तरुण + आई (प्रत्य०) ] तरुणावस्था। जवानी।

**तरुनापा***—संज्ञा पुं० दे० "तरु-नाई"।

**तरुबाँही***—संज्ञा स्त्री० [ सं० तरु+ हिं० बाँह ] पेड़ की भुजा। शाखा। डाल।

**तरेंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० तरंड ] पानी में तैरता हुआ काठ। बेड़ा।

**तरे**†—क्रि० वि० [ सं० तल ] नीचे। तले।

**तरेटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तराई"।

**तरेरना**—क्रि० स० [ सं० तर्ज+हिं० हेरना ] दृष्टि से असम्मति या असं-तोष प्रकट करना। क्रोधपूर्वक देखना।

**तरैया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तारा ] तारा। नक्षत्र।

वि० [ हिं० तरना ] १. तरनेवाला। २. तारनेवाला।

**तरोई**—संज्ञा ० ०"तुरई"

**तरोवर***—संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

**तरौंछ**—संज्ञा स्त्री० दे० "तलछट"।

**तरौंस***—संज्ञा पुं० [ हिं० तर + औंस (प्रत्य०) ] तट। तीर। किनारा।

**तरौना**—संज्ञा पुं० [ हिं० ताड़+ बनना ) १. कान में पहनने का एक गहना। तरकी। ताडंक। २. कर्ण-फूल।

**तर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु के विषय में अज्ञात तत्त्व को कारणोपपत्ति द्वारा निश्चित करने-वाली उक्ति या विचार। हेतुपूर्ण युक्ति। विवेचना। दलील। २. चम-त्कार-पूर्ण उक्ति। चुहल या चोज की बात। ३. व्यंग्य। ताना।

संज्ञा पुं० [ अ० ] त्याग। छोड़ना।

**तर्कना***†—क्रि० अ० [ सं० तर्क ] तर्क करना।

**तर्क वितर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऊहापोह। सोच-विचार। २. वाद-विवाद। बहस।

**तर्कश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] तीर रखने का चोगा। भाथा। तूणीर।

**तर्कशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विवेचना करने के नियम और सिद्धांतों के खंडन-मंडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २. न्यायशास्त्र।

**तर्काभास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐसा तर्क जो ठीक न हो। कुतर्क।

**तर्की**—संज्ञा पुं० [ सं० तर्किन् ] [ स्त्री० तर्किनी ] तर्क करनेवाला।

**तर्कु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तकला। टेकुआ।

**तर्क्य**—वि० [ सं० ] जिस पर कुछ सोच-विचार करना आवश्यक हो। विचार्य। चिंत्य।

**तर्ज़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. प्रकार। किस्म। तरह। २. रीति। शैली।

ढग । ढब । ३. रचना-प्रकार । बनावट ।

**तर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० तर्ज्जन ] [ वि० तर्जित ] १. धमकाने का कार्य्य । भय-प्रदर्शन । २. क्रोध । ३. फटकार । डाँट-डपट ।

**यौ०**—तर्जन-गर्जन=क्रोध-प्रदर्शन ।

**तर्जना**—क्रि० अ० [ सं० तर्ज्जन ] डाँटना । धमकाना । डपटना ।

**तर्जनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तर्ज्जनी ] अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली ।

**तर्जुमा**—संज्ञा पुं० [अ०] भाषांतर । उल्था । अनुवाद ।

**तर्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी ] १. तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया । २. कर्मकांड की एक क्रिया जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिए हाथ या अरघे से पानी देते हैं ।

**तर्यौना***-संज्ञा पुं० दे० "तरौना" ।

**तल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नीचे का भाग । २. पेंदा । तला । ३. जल के नीचे की भूमि । ४. वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो । ५. पैर का तलवा । ६. हथेली । ७. किसी वस्तु का बाहरी फैलाव । पृष्ठ देश । सतह । ८. घर की छत । पाटन । ९. सप्त पातालों में से पहला ।

**तलक†**—अव्य० [ हिं० तक ] तक । पर्यंत ।

**तलकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह कर या लगान जो जमींदार ताल की वस्तुओं पर लगाता है ।

**तलगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तह-खाना ।

**तलघर**—संज्ञा पुं० [ सं० तलगृह ] जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी । भुइँधरा । तहखाना ।

**तलछट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तल+छँटना ] द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल । तलौंछ ।

**तलना**—क्रि० स० [ सं० तरण+तिराना ] कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना ।

**तलप***—संज्ञा पुं० दे० "तल्प" ।

**तलपट**—वि० [ देश० ] बरबाद । चौपट ।

**तलफ**—वि० [ अ० ] [संज्ञा तलफी] नष्ट । बरबाद ।

**तलफना**-क्रि० अ० दे० "तड़पना" ।

**तलब**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. खोज । तलाश । २. चाह । पाने की इच्छा । ३ आवश्यकता । माँग । ४. बुलावा । बुलाहट । ५. तनखाह । वेतन ।

**तलबगार**—वि० [ फ़ा० ] चाहने-वाला ।

**तलबाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में दाखिल किया जाता है ।

**तलबी**-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बुलाहट । २. माँग ।

**तलबेली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तल-फना ] घोर उत्कंठा । आतुरता । बेचैनी । छटपटी ।

**तलमलाना†**—क्रि० अ० दे० "तिल-मलाना" ।

**तलवकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सामवेद की एक शाखा । २. उप-निषद् ।

**तलवा**—संज्ञा पुं० [ सं० तल ] एँड़ी और पंजों के बीच में पैर के नीचे की ओर का भाग । पादतल ।

**मुहा०**—तलवा खुजलाना = तलवे में खुजली होना जिससे यात्रा का शकुन समझा जाता है । तलवे चाटना=बहुत खुशामद करना । तलवे छलनी होना = चलते चलते शिथिल हो जाना । तलवे धो धोकर पीना = अत्यंत सेवा-शुश्रूषा करना । तलवों में आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना ।

**तलवार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तर-वारि ] लोहे का एक लंबा धारदार हथियार । खड्ग । असि । कृपाण ।

**मुहा०**—तलवार का खेत=लड़ाई का मैदान । युद्धक्षेत्र । तलवार का घाट=तलवार में वह स्थान जहाँ से उसका टेढ़ापन आरंभ होता है । तलवार का पानी=तलवार की आभा या दमक । तलवारों की छाँह में=ऐसे स्थान में जहाँ अपने ऊपर चारों ओर तलवार ही तलवार दिखाई देती हो । रण-क्षेत्र में । तलवार खींचना=आघात करने के लिए म्यान से तलवार बाहर करना । तलवार सौंतना = वार करने के लिए तलवार खींचना ।

**तलहटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तल घट्ट ] पहाड़ के नीचे की भूमि । तराई ।

**तला**—संज्ञा पुं० [ सं० तल ] १. किसी वस्तु के नीचे की सतह । पेंदा । २. जूते के नीचे का चमड़ा ।

**तलाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "तलैया" ।

**तलाक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पति-पत्नी का विधानपूर्वक संबंध-त्याग ।

**तलातल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात पातालों में से एक ।

**तलामली***—संज्ञा स्त्री० दे० "तल-बेली" ।

**तलाव†**—संज्ञा पुं० [ सं० तल्ल ] ताल । तालाब ।

**तलाश**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] १. खोज । ढूँढ़-ढाँढ़ । अन्वेषण । अनु-

संधान। २. आवश्यकता। चाह।

**तलाशना**‡—क्रि० स० [ फ़ा० तलाश ] ढूँढ़ना। खोजना।

**तलाशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु को पाने के लिए देख-भाल।

**मुहा०**—तलाशी लेना=गुम या छिपाई हुई वस्तु को निकालने के लिए संदिग्ध मनुष्य के घरबार आदि की देखभाल करना।

**तली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तल ] १. नीचे की सतह। पेंदी। २. तलछट। तलौंछ। † ३. हाथ या पैर की हथेली या तलवा।

**तले**—क्रि० वि० [ सं० तल ] नीचे। ऊपर का उलटा।

**मुहा०**—तले ऊपर=१. एक के ऊपर दूसरा। २. उलट-पुलट किया हुआ। गड्ड-मड्ड। तले ऊपर के=ऐसे दो जिनमें से एक दूसरे के उपरान्त हुआ हो।

**तलेटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तल ] १. पेंदी। २. पहाड़ के नीचे की भूमि। तलहटी।

**तलैया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताल ] छोटा ताल।

**तलौंछ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तल=नीचे ] नीचे जमी हुई मैल आदि। तलछट।

**तल्ख**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा तल्खी ] १. कड़ुआ। कटु। २. बुरे स्वाद का।

**तल्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शय्या। पलँग। सेज। २. अट्टालिका। अटारी।

**तल्ला**—संज्ञा पुं० [ सं० तल ] १. तले की परत। अस्तर। भितल्ला। २.ढिग। पास। सामीप्य। ३.मरातिब; मकानों की ऊँचाई के हिसाब से खंड।

**तल्लीन**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा तल्लीनता ] किसी विषय में लीन। निमग्न।

**तव**—सर्व० [ सं० ] तुम्हारा।

**तवक्षीर**—संज्ञा पुं० [ सं० मि० फ़ा० तबाशीर ] तीखुर।

**तवज्जह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. ध्यान। रुख। २. कृपादृष्टि।

**तवना**—क्रि० अ० [ सं० तपन ] १. तपना। गरम होना। २. ताप या दुःख से पीड़ित होना। ३. प्रताप फैलाना। तेज पसारना। ४. गुस्से से लाल होना। क्रुद्ध जाना।

**तवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तवन=जलना ] [स्त्री० अल्पा० तवी, तौनी] १. लोहे का वह छिछला, गोल बरतन जिस पर रोटी सेंकते हैं।

**मुहा०**—तवे की बूँद=१ क्षणस्थायी। देर तक न टिकनेवाला। २. जिससे कुछ भी तृप्ति न हो। २. मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं।

**तवाजा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आदर। मान। आवभगत। २. मेहमानदारी। दावत।

**तवायफ**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वेश्या। रंडी।

**तवारा**—संज्ञा पुं० [ सं० ताप, हिं० ताव ] जलन। दाह। ताप।

**तवारीख**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] इतिहास।

**तवालत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. लंबाई। दीर्घत्व। २. अधिकता। अधिकाई। ३. बखेड़ा। झंझट।

**तवेला**—संज्ञा पुं० [ अ० तवेल: ] अश्वशाला। घुड़साल। अस्तबल।

**तशखीश**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. ठहराव। निश्चय। २. मर्ज की पहचान। रोग का निदान।

**तशरीफ**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बुजुर्गी। इज्जत। महत्त्व। बड़प्पन।

**मुहा०**—तशरीफ रखना=विराजना। बैठना ( आदर )। तशरीफ लाना=पदार्पण करना। आना। ( आदर)।

**तश्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बड़ा थाल।

**तश्तरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] थाली के आकार का छिछला हलका बरतन। रिकाबी।

**तष्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अल्पा० तष्टी ] १. छील-छालकर गढ़नेवाला। २. विश्वकर्मा।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० तश्त ] ताँबे की छोटी तश्तरी।

**तस**—वि० [ सं० तादृश ] तैसा। वैसा।
क्रि० वि० तैसा। वैसा।

**तसकीन**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] तसल्ली। ढारस।

**तसदीक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सच्चाई। २. सच्चाई की परीक्षा या निश्चय। प्रमाणों के द्वारा पुष्टि। समर्थन। ३. साक्ष्य। गवाही।

**तसदीह***†—संज्ञा स्त्री० [ अ० तसदीअ ] १. सिर का दर्द। २. तकलीफ। दुःख।

**तसबीह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] सुमिरनी। जपमाला। (मुसल०)

**तसमा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] चमड़े का चौड़ा फीता।

**तसला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तश्त ] [ स्त्री० तसली ] कटोरे के आकार का पर उससे बड़ा और गहरा बरतन।

**तसलीम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सलाम। प्रणाम। २. किसी बात की स्वीकृति। हामी।

**तसल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. ढारस। सांत्वना। आश्वासन। २. शांति। धैर्य। धीरज।

**तसवीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं की आकृति जो रंग आदि के द्वारा कागज, पटरी आदि पर बनी हो। चित्र।

वि० चित्र सा सुंदर। मनोहर।

**तसू**—संज्ञा पुं० [सं० त्रि+शूक] इमारती गज का २४ वाँ अंश जो १$\frac{1}{2}$ इंच के लगभग होता है।

**तस्कर**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोर। २. श्रवण। कान। ३ चोर नामक गंधद्रव्य।

**तस्करता**-संज्ञा स्त्री० [सं०] चोरी।

**तस्करी**—संज्ञा स्त्री० [सं० तस्कर] १. चोरी। २. चोर की स्त्री। ३. चोर स्त्री।

**तस्फिया**-संज्ञा पुं० [अ०] फैसला। निर्णय।

**तस्मात्**—अव्य० [सं०] इसलिए।

**तस्य**—सर्व० [सं०] उसका।

**तस्सू**-संज्ञा पुं० दे० "तसू"।

**तहँ, तहँवा**—क्रि० वि० दे० "तहाँ"।

**तह**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो। परत।

मुहा०—तह करना या लगाना=किसी फैली हुई वस्तु के भागों को कई ओर से मोड़कर समेटना। तह कर रखो=रहने दो। नहीं चाहिए। तह तोड़ना=१. झगड़ा निपटाना। २. कुएँ का सब पानी निकाल देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे। (किसी चीज की) तह देना=१. हलकी परत चढ़ाना। २. हलका रंग चढ़ाना।

२. किसी वस्तु के नीचे का विस्तार। तल। पेंदा।

मुहा०—तह की बात=छिपी हुई बात। गुप्त रहस्य। (किसी बात की) तह तक पहुँचना=यथार्थ रहस्य जान लेना। असली बात समझ जाना।

३. पानी के नीचे की जमीन। तल। थाह। ४. महीन पटल। वरक। झिल्ली।

**तहकीक**-संज्ञा स्त्री० दे० 'तहकीकात'।

**तहकीकात**—संज्ञा स्त्री० [अ० तहकीक का बहु०] किसी विषय या घटना की ठीक ठीक बातों की खोज। अनुसंधान। जाँच।

**तहखाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह कोठरी या घर जो जमीन के नीचे बना हो। भुइँधरा। तलगृह।

**तहजीब**-संज्ञा स्त्री० [अ०] सभ्यता।

**तह-दरज**—वि० [फ़ा०] (कपड़ा) जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।

**तहना***—क्रि० अ० दे० "तपना"।

**तहपेंच**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] पगड़ी के नीचे का कपड़ा।

**तह-बाजारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बाजार या हट्टी में सौदा बेचनेवालों से लिया जानेवाला कर।

**तहमत**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तहमद] कमर में लपेटा हुआ कपड़ा या अँगोछा। लुंगी। अँचला।

**तहरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी। २ मटर की खिचड़ी।

**तहरीक**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गति देना। २. उसकाना। ३. आंदोलन। ४. प्रस्ताव।

**तहरीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखावट। लेख। २. लेख शैली। ३. लिखी हुई बात। ४. लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५. लिखने की उजरत। लिखाई।

**तहरीरी**—वि० [फ़ा०] लिखा हुआ। लिखित।

**तहलका**—संज्ञा पुं० [अ०] १. मौत। मृत्यु। २. बरबादी। नाश। ३. खलबली। धूम। हलचल।

**तहवील**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सुपुर्दगी। २. अमानत। धरोहर। ३. खजाना। जमा।

**तहवीलदार**—संज्ञा पुं० [अ० तहवील+फ़ा० दार] कोषाध्यक्ष। खजानची।

**तहस-नहस**—वि० [देश०] बरबाद। नष्ट-भ्रष्ट।

**तहसील**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लोगों से रुपया वसूल करने की क्रिया। वसूली। उगाही। २. वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो। ३ तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी

**तहसीलदार**—संज्ञा पुं० [अ० तहसील+फ़ा० दार] १. कर वसूल करनेवाला। २. वह अफसर जो जमींदारों से सरकारी मालगुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमों का फैसला करता है।

**तहसीलदारी**—संज्ञा स्त्री० [अ० तहसील+फ़ा० दार+ई] १. तहसीलदार का पद। २. तहसीलदार की कचहरी।

**तहसीलना**—क्रि० स० [अ० तहसील] उगाहना। वसूल करना। (कर, लगान, चंदा आदि)।

**तहाँ**—क्रि० वि० [सं० तत्+सं० स्थान] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ।

**तहाना**—क्रि० स० [हिं० तह] तह करना। लपेटना।

**तहियाँ**†—क्रि० वि० [सं० तदाहि] तब। उस समय।

**तहियाना**†—क्रि॰ स॰ दे॰ "तहाना"।

**तहाँ**†—क्रि॰ वि॰ [ हिं॰ तहाँ ] उसी जगह। उसी स्थान पर। वहीं।

**ता**—प्रत्य॰ [ सं॰ ] एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा शब्दों के आगे लगता है।
अव्य॰ [ फ़ा॰ ] तक। पर्य्यंत।
*†—सर्व॰ [ सं॰ तद् ] उस।
*†—वि॰ उस।

**ताँई**—क्रि॰ वि॰ दे॰ "ताईं"।

**ताँगा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "टाँगा"।

**तांडव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शिव का नृत्य। २. पुरुष का नृत्य। (पुरुषों के नृत्य को तांडव और स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं।) ३. वह नाच जिसमें बहुत उछल-कूद हो। उद्धत नृत्य।

**ताँत**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ तंतु ] १. भेड़, बकरी की अँतड़ी, या चौपायों के पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ सूत। २. धनुष की डोरी। ३. डोरी। सूत। ४. सारंगी आदि का तार। ५. जुलाहों की राछ।

**ताँता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ तति=श्रेणी ] श्रेणी। पंक्ति। कतार।

**मुहा॰**—ताँता लगना=एक पर एक बराबर चला चलना।

**ताँति**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ताँत"।

**ताँती**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ताँता ] १. पंक्ति। कतार। २. बाल-बच्चे। औलाद।
संज्ञा पुं॰ जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

**तांत्रिक**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ तांत्रिका ] तंत्र संबंधी।
संज्ञा पुं॰ तंत्रशास्त्र का जाननेवाला। यंत्र मंत्र आदि करनेवाला।

**ताँबा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ताम्र ] लाल रंग की प्रसिद्ध धातु। यह पीटने से बढ़ सकती है और इसका तार भी खींचा जा सकता है।

**ताँबिया**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ताँबी"।

**ताँबी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ताँबा ] १. चौड़े मुँह का ताँबे का एक छोटा बरतन। २. ताँबे की करछी।

**तांबूल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पान या उसका बीड़ा। २. सुपारी।

**ताँसना**†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ त्रास ] १. डाँटना। धमकाना। आँख दिखाना। २. दुःखी करना। सताना।

**ताईं**—अव्य॰ [ सं॰ तावत् या फ़ा॰ ता ] तक। पर्य्यंत। २. पास तक। समीप। निकट। ३. ( किसी के ) प्रति। समक्ष। लक्ष्य करके। ४. लिये। वास्ते। निमित्त।
वि॰ दे॰ "तई"।

**ताई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ताऊ ] बाप के बड़े भाई की स्त्री। जेठी चाची।
संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की छिछली कड़ाही।

**ताईद**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. पक्षपात। तरफदारी। २. अनुमोदन। समर्थन।

**ताऊ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ तात ] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा। ताया।

**मुहा॰**—बछिया के ताऊ=मूर्ख।

**ताऊन**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] प्लेग का रोग।

**ताऊस**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. मोर। मयूर।
**यौ॰**—तख्त ताऊस=शाहजहाँ का बहुमूल्य रत्नजटित राजसिंहासन जो मोर के आकार का था। २. सारंगी से मिलता-जुलता एक बाजा।

**ताक**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ताकना ] १. ताकने की क्रिया या भाव। अवलोकन। २. स्थिर दृष्टि। टकटकी। ३. किसी अवसर की प्रतीक्षा। मौका देखते रहना। घात।

**मुहा॰**—ताक में रहना=मौका देखते रहना। ताक रखना या लगाना=घात में रहना। मौका देखते रहना। ४. खोज। तलाश।

**ताक**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. चीज, वस्तु रखने के लिए दीवार में बना हुआ गड्ढा या खाली स्थान। आला। ताखा।

**मुहा॰**—ताक पर धरना या रखना=पड़ा रहने देना। काम में न लाना।
वि॰ १. जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागों में न बँट सके। विषम। जैसे—तीन, पाँच।
२. जिसके जोड़ का दूसरा न हो। अद्वितीय। अनुपम।

**ताक-झाँक**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ताकना+झाँकना ] १. रह रहकर बार बार देखने की क्रिया। २. छिपकर देखने की क्रिया।

**ताकत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. जोर। बल। शक्ति। २. सामर्थ्य।

**ताकतवर**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १. बलवान्। बलिष्ठ। २. शक्तिमान्। सामर्थ्यवान्।

**ताकना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ तर्कण ] १. सोचना। विचारना। २. अवलोकन करना। देखना। ३. ताड़ना। समझ जाना। ४. पहले से देखकर स्थिर करना। तजवीज करना। ५. दृष्टि रखना। रखवाली करना।

**ताका**—वि॰ [ हिं॰ ताकना ] तिरछा। ताकने वाला। भेंगा।

**ताकि**†—अव्य॰ [ फ़ा॰ ] जिसमें। इसलिए कि। जिससे।

**ताकीद**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] जोर के

साथ किसी बात की आज्ञा या अनुरोध। खूब चेताकर कही हुई बात।

**ताखा**—संज्ञा पुं० [ अ० ताक़ः ] कपड़े का लपेटा हुआ थान। किसी वस्तु के रखने का दीवार में स्थान।

**ताग**—संज्ञा पुं० [ हिं० तागना ] तागने की क्रिया या भाव।
संज्ञा पुं० दे० "तागा"।

**तागड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताग + कड़ी ] १. कमर में पहनने का एक गहना। करधनी। किंकिणी। २. कमर में पहनने का रंगीन डोरा। कटिसूत्र। करगता।

**तागना**—क्रि० स० [ हिं० तागा ] दूर दूर पर मोटी सिलाई करना। डोभ या लंगर डालना।

**ताग-पाट**—संज्ञा पुं० [ हिं० तागा + पाट=रेशम ] एक प्रकार का गहना जो विवाह में काम आता है।

**तागा**—संज्ञा पुं० [ सं० तार्कव ] १. रुई, रेशम आदि का वह अंश जो बटने से लंबी रेखा के रूप में निकलता है। डोरा। धागा। २. वह कर या महसूल जो प्रति मनुष्य के हिसाब से लगे।

**ताज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बादशाह की टोपी। राजमुकुट। २. कलगी। तुर्रा। ३. मोर, मुर्गे आदि के सिर की चोटी। शिखा। ४. दीवार की कँगनी या छज्जा। ५. मकान के सिरे पर शोभा के लिए बनाई हुई बुर्जी। ६. गंजीफे के एक रंग का नाम। ७. आगरे का ताजमहल।

**ताजक**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक ईरानी जाति जो बलोचिस्तान में "देहवार" कहलाती है।

**ताजगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. ताजापन। हरापन। २. प्रफुल्लता। स्वस्थता। ३. नयापन।

**ताजदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बादशाह।

**ताजन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ताजियाना ] कोड़ा। चाबुक।

**ताजपोशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

**ताजमहल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] आगरे का प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल के लिए बनवाया था।

**ताजा**—वि० [ फ़ा० ] [ स्त्री० ताजी ] १. जो सूखा या कुम्हलाया न हो। हरा भरा। २. (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३. जो थका-माँदा न हो। स्वस्थ। प्रफुल्ल।
यौ०—मोटा-ताजा=हृष्ट-पुष्ट।
४ तुरंत का बना। सद्यः प्रस्तुत। ५ जो व्यवहार के लिए अभी निकाला गया हो। ६ जो बहुत दिनों का न हो। नया।

**ताजिया**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बाँस की कमचियों आदि का मकबरे के आकार का मंडप जिसमें इमाम हुसैन की कब्र होती है। मुहर्रम में शीया मुसलमान इसकी आराधना करते और तब इसे दफन करते हैं।

**ताजियाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कोड़ा।

**ताजी**—वि० [ फ़ा० ] अरब का।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. अरब का घोड़ा। २. शिकारी कुत्ता।

**ताजीम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बड़े के सामने उसके आदर के लिए उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। सम्मान प्रदर्शन।

**ताजीमी सरदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ताज़ीम + अ० सरदार ] वह सरदार जिसके आने पर राजा या बादशाह उठकर खड़े हो जायँ।

**ताजीर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० ताजीरी ] दंड।

**ताजीरात**—संज्ञा पुं० [ अ० ] दंड संबंधी कानूनों का संग्रह।

**ताजीरी**—वि० [ अ० ] दंड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ। जैसे ताजीरी पुलिस। ताजीरी कर।

**ताटंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कान में पहनने का करनफूल। तरकी। २. छप्पय के २४ वें भेद का नाम। ३. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अंत में मगण होता है।

**ताडंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कान की तरकी। करनफूल।

**ताड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शाखा-रहित एक बड़ा और प्रसिद्ध पेड़ जो खंभे के रूप में ऊपर की ओर बढ़ता चला जाता है और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। २. ताड़न। प्रहार। ३. शब्द। ध्वनि। ४. अनाज के डंठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी में आ जाय। जुट्टी। ५. हाथ का एक गहना।

**ताड़का**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक राक्षसी जिसे श्रीरामचन्द्र ने मारा था।

**ताड़न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मार। प्रहार। आघात। २. डाँट-डपट। घुड़की। ३. शासन। दंड।

**ताड़ना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रहार। मार। २. डाँट-डपट। शासन। दंड। धमकी। ३. उत्पीड़न। कष्ट।
क्रि० स० १. मारना। पीटना। २. डाँटना-डपटना।

क्रि० स० [ सं० तर्कण ] १. किसी ऐसी बात को जान लेना जो छिपाई गई हो। लक्षण से समझ लेना। भाँपना। लख लेना। २. मार-पीटकर भगाना। हटा देना।

**ताड़ित**—वि० [ सं० ] १. जिस पर प्रहार पड़ा हो। २. जो डाँटा गया हो। ३. दंडित। ४. मारकर भगाया हुआ।

**ताड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताड़ ] ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मद्य के रूप में होता है।

**तात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पिता। बाप। २. पूज्य व्यक्ति। गुरु। ३. प्यार का एक शब्द या संबोधन जो भाई या मित्र और विशेषतः छोटे के लिए व्यवहृत होता है।

†वि० [ सं० तप्त ] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

**ताता**†—वि० [ सं० तप्त ] [ स्त्री० ताती ] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

**तताथेई**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] नाचने में पैर के गिरने आदि का अनुकरण शब्द।

**तातर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मध्य एशिया का एक देश जो हिंदुस्तान और फारस के उत्तर में कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर प्रांत तक है।

**तातारी**—वि० [ फ़ा० ] तातार देश-संबंधी। तातार देश का।

संज्ञा पुं० तातार देश का निवासी।

**तातील**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] छुट्टी का दिन।

**तात्कालिक**—वि० [ सं० ] तत्काल या तुरत का। तत्काल-संबंधी।

**तात्पर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अर्थ। आशय। मतलब। अभिप्राय। २. तत्परता।

**तात्त्विक**—वि० [ सं० ] १. तत्त्व-संबंधी। २. तत्त्व-ज्ञान-युक्त। ३. यथार्थ।

**ताथेई**—संज्ञा स्त्री० दे० "तताथेई"।

**तादात्म्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वस्तु का मिलकर दूसरी वस्तु के रूप में हो जाना।

**तादाद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] संख्या। गिनती।

**तादृश**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० तादृशा ] उसके समान। वैसा।

**ताधा**—संज्ञा स्त्री० दे० "तताथेई"।

**तान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तानने का भाव या क्रिया। खींच। फैलाव। विस्तार। २. अनेक विभाग करके सुर का खींचना। लय का विस्तार। आलाप।

**मुहा०**—तान उड़ाना=गीत गाना। किसी पर तान तोड़ना = किसी पर आक्षेप करना।

३. ऐसा पदार्थ जिसका बोध इंद्रियों आदि को हो। ज्ञान का विषय।

**तानना**—क्रि० स० [ सं० तान ] १. फैलाने के लिए जोर से खींचना।

**मुहा०**—तानकर=बलपूर्वक। जोर से।

२. किसी सिमटी या लिपटी हुई वस्तु को खींच कर फैलाना।

**मुहा०**—तानकर सोना = १. आराम से सोना। २. निश्चिंत रहना।

३. परदे की सी वस्तु को ऊपर फैलाकर बाँधना। ४. एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक ले जाकर बाँधना। ५. मारने के लिए हाथ या कोई हथियार उठाना। ६. किसी को हानि पहुँचाने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित कर देना। ७. कैदखाने भेजना।

**तानपूरा**—संज्ञा पुं० [सं० तान + हिं० पूरा ] सितार के आकार का एक बाजा। तंबूरा।

**तानबाना***—संज्ञा पुं० दे० "ताना-बाना"।

**तानसेन**—संज्ञा पुं० अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा गवैया। यह पहले ब्राह्मण था, पर पीछे मुसलमान हो गया था।

**ताना**—संज्ञा पुं० [ हिं० तानना ] १. कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत। २. दरी या कालीन बुनने का करघा।

क्रि० स० [ हिं० ताव + ना (प्रत्य०) ] १. ताव देना। तपाना। गरम करना। २. पिघलाना। ३. तपाकर परीक्षा करना। ( सोना आदि धातु। ) ४. जाँचना। आजमाना।

† क्रि० स० [ हिं० तवा ] गीली मिट्टी आदि से बरतन का मुँह बंद करना। मूँदना।

संज्ञा पुं० [ अ० ] आक्षेप-वाक्य। बोली-ठाली। व्यंग्य।

**ताना-पाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताना + पाई ] बार बार आना जाना।

**ताना-बाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० ताना + बाना ] कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई के बल फैलाए हुए सूत।

**ताना रीरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तान + अनु० री री ] साधारण गाना। राग। अलाप।

**ताना-शाह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो अपने अधिकारों का बहुत मनमाना उपयोग करे।

**ताना-शाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. अधिकारों का मनमाना उपयोग।

२. वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।

**तानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताना ] कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत।

**ताप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने, भाप बनने आदि में देखा जाता है और जिसका अनुभव अग्नि, सूर्य्य की किरण आदि के रूप में होता है। उष्णता। गरमी। २. आँच। लपट। ३. ज्वर। बुखार। ४. कष्ट। दुःख। पीड़ा। ताप तीन प्रकार का माना गया है-आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ५. मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख।

**तापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ताप उत्पन्न करनेवाला। २. रजोगुण। ३. ज्वर।

**ताप-चालक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच सकता हो। जैसे धातु।

**ताप-चालकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पदार्थों का वह गुण जिससे गरमी या ताप उनके एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचता हो।

**तापतिल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताप+तिल्ली ] पिलही बढ़ने का रोग। प्लीहा रोग।

**तापती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सूर्य्य की कन्या तापी। २. एक पवित्र नदी जो सतपुड़ा पहाड़ से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है।

**तापत्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीन प्रकार के ताप। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।

**तापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ताप देनेवाला। २. सूर्य्य। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. सूर्य्यकांत मणि। ५. मदार। ६. एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को पीड़ा होती है। ( तंत्र )

**तापना**—क्रि० अ० [ सं० तापन ] आग की आँच से अपने को गरम करना।

क्रि० स० १. गरम करने के लिए जलाना। फूँकना। २. नष्ट करना।

*क्रि० स० तपाना। गरम करना।

**तापमान यंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उष्णता की मात्रा मापने का यंत्र। थरमामीटर।

**तापस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० तापसी ] १ तप करनेवाला। तपस्वी। २. तेजपत्ता।

**तापसतरु,तापसद्रुम**-संज्ञा पुं०[सं०] इंगुदी वृक्ष। हिंगोट।

**तापसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तपस्या करनेवाली स्त्री। तपस्वी की स्त्री।

**तापस्वेद**—संज्ञा पुं० ( सं० ) उष्णता पहुँचा कर उत्पन्न किया हुआ पसीना।

**तापा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तोपना ? ] मुर्गी का दरबा।

**तापिच्छ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तमाल वृक्ष।

**तापित**—वि० [सं० ] १. जो तपाया गया हो। २. तप्त। गरम। ३. दुःखित। पीड़ित।

**तापी**—वि० [ सं० तापिन् ] १. ताप देनेवाला। २. जिसमें ताप हो।

संज्ञा पुं० बुद्धदेव।

संज्ञा स्त्री० १. सूर्य की एक कन्या। २. तापती नदी। ३. यमुना नदी।

**तापेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य।

**ताफ्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

**ताब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. ताप। गरमी। २. चमक। आभा। दीप्ति। ३. शक्ति। सामर्थ्य। ४. मन को वश में रखने की शक्ति। धैर्य।

**ताबड़तोड़**—क्रि० वि० [ अनु० ] अखंडित क्रम से। लगातार। बराबर।

**ताबा**—वि० दे० "ताबे"।

**ताबूत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह संदूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने को ले जाते हैं।

**ताबे**—वि० [ अ० ताबअ ] १. वशीभूत। अधीन। मातहत। २. आज्ञानुवर्ती। हुक्म का पाबंद।

**ताबेदार**—वि० [ अ० ताबअ+फ़ा० दार ] [ संज्ञा ताबेदारी ] आज्ञाकारी। हुक्म का पाबंद।

**ताम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दोष। विकार। २. व्याकुलता। बेचैनी। ३. दुःख। क्लेश।

वि० १. भीषण। डरावना। भयंकर। २. व्याकुल। हैरान।

संज्ञा पुं० [ सं० तामस ] १. क्रोध। रोष। गुस्सा। २. अंधकार। अँधेरा।

**तामचीनी**—संज्ञा [अं० टाम चाइना मेक ] लोहे का बरतन जिसपर पक्की रंगीन कलई रहती है।

**तामजान**—संज्ञा पुं० [हिं० थामना+सं० यान ] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।

**तामड़ा**—वि० [ हिं० ताँबा+ड़ा (प्रत्य०)] ताँबे के रंग का। ललाई लिए हुए भूरा। एक प्रकार की ईंट जो बहुत पकी होती है।

**तामरस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.

कमल। २. सोना। ३. ताँबा। ४. धतूरा। ५. एक नगण, दो जगण और एक यगण का एक वर्णवृत्त।

**तामलूक**—संज्ञा पुं० [सं० ताम्रलिप्त] वंग देश का एक भूभाग जो मेदिनीपुर जिले में है। ताम्रलिप्त।

**तामलेट**—संज्ञा पुं० [अं० टंबलर] लोहे का गिलास या बरतन जिसपर रोगन या लुक फेरा रहता है।

**तामस**—वि० [सं०] [स्त्री० तामसी] तमोगुण से युक्त।

संज्ञा पुं० १. सर्प। साँप। २ खल। ३. उल्लू। ४. क्रोध। गुस्सा। ५. अंधकार। अँधेरा। ६.अज्ञान। मोह।

**तामसी**—वि० स्त्री० [सं०] तमोगुणवाली।

संज्ञा स्त्री० [सं०] अँधेरी रात। २. महाकाली। ३. एक प्रकार की माया विद्या।

**तामिल**—संज्ञा पुं० (?) [देश०] १. दक्षिण भारत की एक जाति। २. इस जाति की भाषा।

**तामिस्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक अंधेरा नरक। २. क्रोध। ३. द्वेष। ४. एक अविद्या का नाम।

**तामीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] [बहु० तामीरात] इमारत बनाने का काम।

**तामील, तामीली**—संज्ञा स्त्री० [अ०] (आज्ञा का) पालन।

**तामोर***—संज्ञा पुं० दे० "तांबूल"।

**ताम्र**—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबा।

**ताम्रचूड़**—संज्ञा पुं० [सं०] मुर्गा।

**ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिस पर प्राचीन काल में अक्षर खुदवाकर दानपत्र आदि लिखते थे।

**ताम्रपर्णी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बावली। तालाब। २. मदरास की एक छोटी नदी।

**ताम्र युग**—संज्ञा पुं० [सं०] पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय जब वह पहले-पहले ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। यह युग प्रस्तर-युग के बाद और लौह-युग के पहले पड़ता है।

**ताम्रलिप्त**—संज्ञा पुं० [सं०] मेदिनीपुर (बंगाल) जिले के तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।

**ताय***†—संज्ञा पुं० [सं० ताप] १. ताप। गर्मी। २. जलन। ३. धूप।

सर्व० दे० "ताहि"।

**तायदाद**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद"।

**तायफा**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [फा०] १. वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २. वेश्या।

**तायना***†—क्रि० स० [हि० ताव] तपाना।

**ताया**—संज्ञा पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] बाप का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।

**तार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रूपा। चाँदी। २. तपी हुई धातु का पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। धातु-तंतु। ३. धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है। टेलिग्राफ। ४. तार से आई हुई खबर। ५. सूत। तागा।

**मुहा०**—तार तार करना=नोचकर सूत सूत अलग करना।

६. बराबर चलता हुआ क्रम। अखंड परंपरा। सिलसिला।

**मुहा०**—तार बँधना = किसी काम का बराबर चला चलना। सिलसिला जारी होना। ७. ब्योंत। सुबीता। व्यवस्था।

**मुहा०**—तार जमना, बैठना या बँधना =ब्योंत होना। कार्यसिद्धि का सुबीता होना।

†८. ठीक माप। ९. कार्य्यसिद्धि का योग। युक्ति। ढब। १०. प्रणव। ओंकार। ११. संगीत में एक सप्तक। १२. अठारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

*संज्ञा पुं० [सं० ताल] १. ताल। मजीरा। २. करताल नामक बाजा।

संज्ञा पुं० [सं० तल] तल। सतह।

*संज्ञा पुं० [हिं० ताड़] कान का एक गहना। ताटंक। तरौना।

वि० [सं०] निर्मल। स्वच्छ।

**तारक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. एक असुर जिसे कार्त्तिकेय ने मारा था। दे० "तारकासुर"। ५. राम का षडक्षर मंत्र। 'ओं रामाय नमः' का मंत्र। ६. वह जो पार उतारे। ७. भवसागर से पार करनेवाला। ८. एक प्रकार का वर्णवृत्त।

**तारकश**—संज्ञा पुं० [हिं० तार+फा० कश] [कार्य्य—तारकशी] धातु का तार खींचनेवाला।

**तारका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. आँख की पुतली। ३. नाराच नामक छंद। ४. बालि की स्त्री तारा।

संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़का"।

**तारकाक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] तारकासुर का बड़ा लड़का। यह उन तीन भाइयों में से एक था जो तीन पुर (त्रिपुर) बसाकर रहते थे।

**तारकासुर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर जिसको मारने के लिए शिव

को पार्वती से विवाह करके कार्तिकेय को उत्पन्न करना पड़ा था ।

**तारकूट**—संज्ञा पुं० [ सं० तार ] चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु ।

**तारकेश**—संज्ञा पुं० [ सं० तारका+ईश ] चंद्रमा ।

**तारकेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव ।

**तारकोल**—संज्ञा पुं० दे० "अलकतरा" ।

**तारघर**—संज्ञा पुं० [ हिं० तार+घर ] वह स्थान जहाँ से तार की खबर भेजी जाय ।

**तार-घाट**—संज्ञा पुं० [ हिं० तार+घात ] मतलब निकलने का सुबीता । व्यवस्था । आयोजन ।

**तारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पार उतारने का काम । २. उद्धार । निस्तार । ३. उद्धार करनेवाला । तारनेवाला । ४. विष्णु ।

**तारतम्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० तारतम्यिक ] १. एक दूसरे से कमी-बेशी का हिसाब । न्यूनाधिक्य । २. कमी-बेशी के हिसाब से तरतीब । ३. गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान ।

**तार-तोड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० तार ] कारचोबी का काम ।

**तारन**—संज्ञा पुं० दे० "तारण" ।

**तारना**—क्रि० स० [ सं० तारण ] १. पार लगाना । पार करना । २. संसार के क्लेश आदि से छुड़ाना । सद्गति देना ।

**तारपीन**—संज्ञा पुं० [ अं० टरपेंटाइन ] चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्रायः औषध के काम में आता है ।

**तारबर्की**—संज्ञा पुं० [ हिं० तार+फ़ा० बर्क ] बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचानेवाला तार ।

**तारल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तरल या प्रवाहशील होने का धर्म । द्रवत्व । २. चंचलता ।

**तारा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नक्षत्र । सितारा ।

**मुहा०**-तारे गिनना=चिंता या आसरे में बेचैनी से रात काटना । तारा टूटना=चमकते हुए पिंड का आकाश से पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई पड़ना । उल्कापात होना । तारा डूबना=शुक्र का अस्त होना । तारे तोड़ लाना=कोई बहुत ही कठिन या चालाकी का काम करना । तारों की छाँह=बड़े सबेरे । तड़के ।

२. आँख की पुतली । ३. सितारा । भाग्य । किस्मत ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दस महाविद्याओं में से एक । २. बृहस्पति की स्त्री जिसे चंद्रमा ने उसकी इच्छानुसार रख लिया था और जिससे बुध उत्पन्न हुआ था । ३. बालि नामक बंदर की स्त्री और सुषेण की कन्या । यह पंचकन्याओं में मानी जाती है । *संज्ञा पुं० दे० "ताला" ।

**ताराग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये पाँच ग्रह ।

**ताराज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. लूट-पाट । २. नाश । ध्वंस । बरबादी ।

**ताराधिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा । २. शिव । ३. बृहस्पति । ४. बालि । ५. सुग्रीव ।

**ताराधीश**—संज्ञा पुं० दे० "ताराधिप" ।

**तारापथ**-संज्ञा पुं० [सं०] आकाश ।

**तारामंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नक्षत्रों का समूह या घेरा ।

**तारिका***-संज्ञा स्त्री० दे० "तारका" ।

**तारिणी**—वि० स्त्री० [ सं० ] तारनेवाली । उद्धार करनेवाली ।

संज्ञा स्त्री० तारा देवी ।

**तारी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "ताली" ।

*†—संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़ी" ।

**तारीक**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा तारीकी ] १. स्याह । काला । २. धुँधला । अँधेरा ।

**तारीख**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. महीने का हर एक दिन ( २४ घंटों का ) । तिथि । २. वह तिथि जिसमें पूर्व काल के किसी वर्ष में कोई विशेष घटना हुई हो । ३. नियत तिथि । किसी काम के लिए ठहराया हुआ दिन ।

**मुहा०**—तारीख डालना=तारीख मुकर्रर करना । दिन नियत करना ।

**तारीफ़**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. लक्षण । परिभाषा । २. वर्णन । विवरण । ३. बखान । प्रशंसा । श्लाघा । ४. विशेषता । गुण । सिफ़त ।

**तारुण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जवानी ।

**तारेश**—संज्ञा पुं० [ हिं० तारा+ईश ] चंद्रमा ।

**तार्किक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तर्क-शास्त्र का जाननेवाला । २ तत्त्ववेत्ता । दार्शनिक ।

**ताल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. करतल । हथेली । २. वह शब्द जो दोनों हथेलियों को एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न होता है । करतलध्वनि । ताली । ३. नाचने गाने में उसके मध्यवर्ती काल और क्रिया का परिमाण ।

**मुहा०**—ताल बेताल=१. जिसका ताल ठिकाने से न हो । २. अवसर या बिना अवसर ।

४. जंघे या बाहु पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया हुआ शब्द। (कुश्ती)

**मुहा०**—ताल ठोंकना=लड़ने के लिए ललकारना।

५. मँजीरा। झाँझ। ६. चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला। ७. हरताल। ८. ताड़ का पेड़ या फल। ९. ताला। १०. तलवार की मूठ। ११. पिंगल में ढगण का दूसरा भेद।

संज्ञा पुं० [सं० तल्ल] तालाब।

**तालक***†—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।

**तालकेतु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भीष्म। २. बलराम।

**तालजंघ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश। २. इस देश का निवासी।

**तालध्वज**—संज्ञा पुं० दे० "तालकेतु"।

**तालपर्णी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौंफ। २. कपूर कचरी। ३. तालमूली। मुसली।

**ताल-बैताल**—संज्ञा पुं० [सं० ताल + वेताल] दो देवता या यक्ष। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध किया था।

**तालमखाना**—संज्ञा पुं० [हिं० ताल + मखाना] १. एक पौधा जिसके बीज दमे के काम आते हैं। २. दे० "मखाना"।

**तालमूली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुसली।

**तालमेल**—संज्ञा पुं० [हिं० ताल + मेल] १. ताल-सुर का मिलान। २. उपयुक्त योजना। ठीक ठीक संयोग। ३. उपयुक्त अवसर।

**तालरस**—संज्ञा पुं० [सं०] ताड़ के पेड़ का मद्य। ताड़ी।

**तालवन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ताड़ के पेड़ों का जंगल। २. व्रज का एक वन।

**तालव्य**—वि० [सं०] १. तालु संबंधी। २. तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण। जैसे इ, ई, च, छ, य, श, आदि।

**ताला**—संज्ञा पुं० [सं० तलक] १. लोहे, पीतल आदि की वह कल जिसे बंद किवाड़, संदूक आदि की कुंडी में फँसा देने से वह बिना कुंजी के नहीं खुल सकता।

**मुहा०**—ताला तोड़ना=किसी दूसरे की वस्तु को चुराने के लिए उसके ताले को तोड़ना।

२. वह लोहे का तवा जो योद्धा लोग छाती पर पहनते थे।

**तालाकुंजी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ताला + कुंजी] १. किवाड़, संदूक आदि बंद करने का यंत्र। २. लड़कों का एक खेल।

**तालाब**—संज्ञा पुं० [हिं० ताल + फ़ा० आब] जलाशय। सरोवर। पोखरा।

**तालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ताली। कुंजी। २. नत्थी या तागा जिससे तालपत्र या कागज बँधे हों। ३. सूची। फेहरिस्त।

**तालिब**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ढूँढ़नेवाला। तलाश करनेवाला। २. चाहनेवाला।

**तालिबइल्म**—संज्ञा पुं० [अ०] विद्यार्थी।

**तालिम***†—संज्ञा स्त्री० [सं० तल्प] बिस्तर।

**ताली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लोहे की वह कील जिससे ताला खोला और बंद किया जाता है। कुंजी। चाबी। २. ताड़ी। ताड़ का मद्य। ३. तालमूली। मुसली। ४. एक वर्ण-वृत्त। ५. मेहराब के बीचो-बीच का पत्थर या ईंट।

संज्ञा स्त्री० [सं० ताल] १. दोनों फैली हुई हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। थपोड़ी।

**मुहा०**—ताली पीटना या बजाना=हँसी उड़ाना। उपहास करना।

२. दोनों हथेलियों को फैलाकर एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न शब्द। करतल-ध्वनि।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया। गड्ढी।

**तालीम**—संज्ञा स्त्री० [अ०] अभ्यासार्थ उपदेश। शिक्षा।

**तालीशपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तमाल या तेजपत्ते की जाति का एक पेड़। २. भूआँवला की जाति का एक पौधा। इसकी सूखी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। पनियाँ आँवला।

**तालु**—संज्ञा पुं० [सं०] तालू।

**तालुका**—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुका"।

**तालू**—संज्ञा पुं० [सं० तालु] १. मुँह के भीतर की ऊपरी छत।

**मुहा०**—तालू में दाँत जमना=अदृष्ट आना। बुरे दिन आना। तालू से जीभ न लगना=चुपचाप न रहा जाना। बके जाना।

२. खोपड़ी के नीचे का भाग। दिमाग।

**तालेवर**—वि० [अ० तालः + वर] धनी।

**ताल्लुक**—संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक"।

**ताव**—संज्ञा पुं० [सं० ताप] १. वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिए पहुँचाई जाय।

**मुहा०**—(किसी वस्तु में) ताव आना=जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना। ताव खाना=आँच पर गरम

होना। ताव देना=आँच पर रखना। गरम करना। मूँछों पर ताव देना=पराक्रम, बल आदि के घमंड में मूँछों पर हाथ फेरना।

२. अधिकार मिले हुए क्रोध का आवेश।

मुहा०—ताव दिखाना=अभिमान मिला हुआ क्रोध प्रकट करना। ताव में आना=अभिमान मिले हुए क्रोध के आवेग में होना। ३. शेखी की झोंक। ४. ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन हो।

मुहा०—ताव चढ़ना=प्रबल इच्छा होना।

संज्ञा पुं० [फ़ा० ता] कागज का तख्ता।

**तावत्**—क्रि० वि० [सं०] १. उतनी देर तक। तब तक। २. उतनी दूर तक। वहाँ तक। "यावत्" का संबंधपूरक।

**तावना***†—क्रि० स० [सं० तापन] १. तपाना। गरम करना। २. जलाना। ३. दुःख पहुँचाना।

**ताव भाव**—संज्ञा पुं० [हिं० ताव भाव] उपयुक्त अवसर। मौका। परिस्थिति।

**तावरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० ताप] १. ताप। दाह। जलन। २. धूप। घाम। ३. बुखार। ज्वर। हरारत। ४. गरमी से आया हुआ चक्कर। मूर्च्छा।

**तावरो***†—संज्ञा पुं० दे० "तावरी"।

**तावा**†—संज्ञा पुं० दे० "तवा"।

**तावान**—संज्ञा पुं० [फ़ा] वह चीज जो नुकसान भरने के लिए दी या ली जाय। दंड। डाँड़।

**तावीज**—संज्ञा पुं० [तअवीज़] १. मंत्र, यंत्र या कवच जो किसी संपुट के भीतर रखकर पहना जाय। २. धातु का चौकोर या अठपहला संपुट जिसे तागे में लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं। जंतर।

**ताश**—संज्ञा पुं० [अ० तास] १. एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा। जरबफ्त। २. खेलने के लिए मोटे कागज के चौखूँटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं। ३. छोटी दफ्ती जिस पर सीने का तागा लपेटा रहता है।

**तासा**—संज्ञा पुं० [अ० तास] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।

**तासीर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] असर। प्रभाव।

**तासु**†*—सर्व० [हिं० ता] उसका।

**तासूँ**†—सर्व० दे० "तासो"।

**तासों**†*—सर्व० [हिं० ता] उससे।

**तास्सुब**—संज्ञा पुं० [अ०] १. पक्षपात। २. धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन।

**ताहम**—अव्य० [फ़ा०] तो भी।

**ताहि***†—सर्व० [हिं० ता] उसको। उसे।

**ताहीं**†—अव्य० दे० "ताईं"। "तईं"।

**तिंतिड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] इमली।

**तिआ**—संज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।

**तिआह**†—संज्ञा पुं० [सं० त्रिविवाह] १. तीसरा विवाह। २. वह पुरुष जिसका तीसरा ब्याह हो रहा हो।

**तिकड़म**—संज्ञा पुं० [सं० त्रिक्रम?] [कर्त्ता तिकड़मी] युक्ति। तरकीब। चाल।

**तिकड़मी**—संज्ञा पुं० [हिं० तिकड़म] वह जो तिकड़म लड़ाना जानता हो। चालबाज।

**तिकड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० तीन] एक साथ बुनी हुई तीन धोतियाँ।

**तिकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+कड़ी] १. तीन कड़ियोंवाला। २. चारपाई की वह बुनावट जिसमें तीन रस्सियाँ एक साथ हों।

**तिकोन***—वि० दे० "तिकोना"।

**तिकोना**—वि० [सं० त्रिकोण] जिसमें तीन कोने हों। तीन कोनों का।

संज्ञा पुं० समोसा नाम का पकवान।

**तिकोनिया**—वि० दे० "तिकोना"।

**तिक्का**†—संज्ञा पुं० [फ़ा० तिक:] मास की बोटी। लोथ।

**तिक्की**—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रि] गंजीफे या ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हों।

**तिक्ख***—वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तीखा। चोखा। तेज। २. तीव्रबुद्धि। चालाक।

**तिक्त**—वि० [सं०] जिसका स्वाद नीम या चिरायते आदि का सा हो। तीता। कड़ुआ।

**तिक्तता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तिताई। कड़ुआपन।

**तिच्छ***†—वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तीक्ष्ण। तेज। २. चोखा। पैना।

**तिच्छता***—संज्ञा स्त्री० [सं० तीक्ष्णता] तेजी।

**तिखटी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "टिकठी"।

**तिखाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीखा] तीखापन।

**तिखारना**†—क्रि० अ० [सं० त्रि+हिं० आखर] कोई बात पक्की करने के लिए कई बार कहना या कहलाना।

**तिखूँटा**—वि० [हिं० तीन+खूँट] जिसमें तीन कोने हों। तिकोना।

**तिगा*†**—संज्ञा पुं० दे० "त्रिक"।

**तिगुना**—वि० [ सं० त्रिगुण ] तीन बार अधिक। तीन गुना।

**तिग्म**—वि० [ सं० ] तीक्ष्ण। तेज। संज्ञा पुं० १. वज्र। २. पिप्पली।

**तिग्मता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीक्ष्णता।

**तिच्छ***—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

**तिच्छन***—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

**तिजरा**—संज्ञा पुं० दे० "तिजारी"।

**तिजहरी***—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन+पहर ] तीसरा पहर।

**तिजारत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] वाणिज्य। व्यापार। रोजगार। सौदागरी।

**तिजारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिजार] हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।

**तिजोरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] वह लोहे का संदूक या छोटी आलमारी जिसमें रुपए आदि रखे जाते हैं।

**तिड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तिड्डी"।

**तिड़ी बिड़ी**—वि० [ देश० ] तितर-बितर। छितराया हुआ।

**तित***—क्रि० वि० [ सं० तत्र ] १. तहाँ वहाँ। २. उधर। उस ओर।

**तितना†**—क्रि० वि० दे० "उतना"।

**तितर बितर**—वि० [ हिं० तिधर+अनु० ] १. जो एकत्र न हो। छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २. अव्यवस्थित। अस्त-व्यस्त।

**तितली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीतर ] १ एक उड़नेवाला सुंदर कीड़ा या फतिंगा जो प्रायः फूलों पर बैठा हुआ दिखाई पड़ता है। २. एक प्रकार की घास।

**तितलौकी†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीता+लौआ ] कडुतुंबी। कडुआ कद्दू।

**तितारा**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रि+हिं० तार ] सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं। वि० जिसमें तीन तार हों।

**तितिंबा**—संज्ञा पुं० [अ० तितिम्मः] १. ढकोसला। २. शेष। ३. पुस्तक का परिशिष्ट। उपसंहार।

**तितिक्ष**—वि० [ सं० ] सहनशील।

**तितिक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सरदी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २. क्षमा। क्षांति।

**तितिक्षु**—वि० [ सं० ] क्षमाशील।

**तितिम्मा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बचा हुआ भाग। २. परिशिष्ट। उपसंहार।

**तिते*†**—वि० [ सं० तति ] उतने।

**तितेक*†**—वि० [ हिं० तितो+एक ] उतना।

**तितै†***—क्रि० वि० [ हिं० तितो+ऐ ( प्रत्य० ) ] १. वहाँ या वहीं। २. उधर।

**तितो*†**—वि०, क्रि० वि० [ सं० तति ] उतना।

**तित्तिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीतर पक्षी। २. यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३. यास्क मुनि के शिष्य जिन्होंने तैत्तिरीय शाखा चलाई थी।

**तिथि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चांद्र मास के अलग अलग दिन जिनके नाम संख्या के अनुसार होते हैं। मिति। तारीख। ( प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं। ) २. पंद्रह की संख्या।

**तिथिक्षय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी तिथि का गिनती में न आना। ( ज्यो० )

**तिथिपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] पंचांग। जंत्री।

**तिदरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीन+फा० दर ] वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।

**तिधर†**—क्रि० वि० दे० "उधर"।

**तिधारा**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिधार ] बिना पत्रों का एक प्रकार का थूहर ( सेंहुड़ )।

**तिन†**—सर्व० [ सं० तेन ] 'तिस' का बहु०। संज्ञा पुं० [सं० तृण] तिनका। तृण।

**तिनकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] चिड़चिड़ाना। चिढ़ना। झल्लाना।

**तिनका**—संज्ञा पुं० [ सं० तृण ] सूखी घास या डाँठी का टुकड़ा। तृण।

**मुहा०**—तिनका दाँतों में पकड़ना या लेना=क्षमा या कृपा के लिए दीनतापूर्वक विनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना=१. संबंध तोड़ना। २. बलैया लेना। तिनके का सहारा=थोड़ा सा सहारा। तिनके को पहाड़ करना=छोटी बात को बड़ी कर डालना।

**तिनगना**—क्रि० अ० दे० "तिनकना"।

**तिनगरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का पकवान।

**तिनपहला**—वि० [ हिं० तीन+पहल ] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

**तिनिश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सीसम की जाति का एक पेड़। तिनास। तिनसुना।

**तिनुका*†**—संज्ञा पुं० दे० "तिनका"।

**तिन्ना**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सती नामक वर्णवृत्त। २. रोटी के साथ खाने की रसेदार वस्तु। ३. तिन्नी धान।

**तिन्नी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तृण ] एक प्रकार का जंगली धान जो तालों में होता है।

संज्ञा स्त्री० [देश०] नीवी। फुफुँदी।

**तिन्ह†**—सर्व देे० "तिन"।

**तिपति*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।

**तिपल्ला**—वि० [ हिं० तीन + पल्ला ] १. जिसमें तीन पल्ले हों। २. जिसमें तीन तागे हों।

**तिपाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीन + पाया] तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी। टिकठी। तिगोड़िया।

**तिपाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० तीन + पाट ] १. जो तीन पाट जोड़कर बना हो। २. जिसमें तीन पल्ले हों।

**तिबारा**—वि० [ हिं० तीन + बार ] तीसरी बार।

संज्ञा पुं० तीन बार खींचा हुआ मद्य।

संज्ञा पुं० [ हिं० तीन + बार=दरवाजा ] वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।

**तिबासी**—वि० [हिं० तीन + बासी] तीन दिन का बासी (खाद्य पदार्थ)।

**तिब्ब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] यूनानी चिकित्सा-शास्त्र।

**तिब्बत**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रि + भोट] एक देश जो हिमालय के उत्तर है। भोट देश।

**तिब्बती**—वि० [ हिं० तिब्बत ] भोट देशी। तिब्बत का। तिब्बत में उत्पन्न।

संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा।

संज्ञा पुं० तिब्बत का रहनेवाला।

**तिमंजिला**—वि० [ हिं० तीन + अ० मंजिल ] [ स्त्री० तिमंजिली ] तीन खंडों का। तीन मरातिब का।

**तिमिंगिल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समुद्र में रहनेवाला मत्स्य के आकार का एक बड़ा भारी जंतु। २. एक द्वीप का नाम।

**तिमि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समुद्र में रहनेवाला मछली के आकार का एक बड़ा भारी जंतु। २. समुद्र। ३. रतौंधी का रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता।

*अव्य० [ सं० तद् + इमि ] उस प्रकार। वैसे।

**तिमिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंधकार। अँधेरा। २. आँखों से धुँधला दिखाई पड़ना, रात को न दिखाई पड़ना आदि आँखों के दोष।

**तिमिरहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य।

**तमिरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य।

**तिमिरारी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० तिमिराली] अंधकार का समूह। अँधेरा।

**तिमिरावलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अंधकार का समूह।

**तिमुहानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तीन + फा० मुहाना ] वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने को तीन मार्ग हों। तिरमुहानी।

**तिय***—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्त्री ] १. स्त्री। औरत। २. पत्नी। जोरू।

**तियला**—संज्ञा पुं० [ हिं० तिय + ला ] स्त्रियों का एक पहनावा।

**तिया**—संज्ञा पुं० [ सं० तृ ] तिक्की। तिड्डी।

*संज्ञा स्त्री० दे० "तिय"।

**तिरकना**—क्रि० अ० [ ? ] १. बाल सफेद होना। २. दे० "तड़कना"।

**तिरकुटा**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिकटु ] सोंठ, मिर्च, पीपल इन तीन कड़ुई ओषधियों का समूह।

**तिरखा*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

**तिरखित***—वि० दे० "तृषित"।

**तिरखूँटा**—वि० [ सं० त्रि + हिं० खूँट ] जिसमें तीन खूँट या कोने हों। तिरकोना।

**तिरछई†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तिरछा] तिरछापन।

**तिरछा**—वि० [ सं० तिरश्चीन ] १. जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर-उधर हटकर गया हो।

**यौ०**—बाँका तिरछा=छबीला।

**मुहा०**—तिरछी चितवन या नजर=बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर दृष्टि। तिरछी बात या वचन=कटु वाक्य। अप्रिय शब्द।

२. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**तिरछाई†**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तिरछा] तिरछापन।

**तिरछाना**—क्रि० अ० [हिं० तिरछा] तिरछा होना।

**तिरछापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० तिरछा + पन ] तिरछा होने का भाव।

**तिरछौहाँ**—वि० [ हिं० तिरछा + औहाँ ] जो कुछ तिरछापन लिए हो।

**तिरछौहें**—क्रि० वि० [ हिं० तिरछौहाँ ] तिरछेपन के साथ। वक्रता से।

**तिरना**—क्रि० अ० [ सं० तरण ] १. पानी में न डूबकर सतह के ऊपर रहना। उतराना। २. तैरना। पैरना। ३. पार होना। ४. तरना। मुक्त होना।

**तिरनी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. घाघरी बाँधने की डोरी। नीवी। तिन्नी। फुफती। २. स्त्रियों के घाघरे या धोती का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है।

**तिरप**—संज्ञा [ सं० त्रि ] नृत्य में एक प्रकार की गति। त्रिसा। तिहाई।

**तिरपट**—वि० [देश०] १. तिरछा। टेढ़ा। २. मुश्किल। कठिन।

**तिरपाई**—संज्ञा स्त्री० [ अं० टीपाय ] तीन पायों की ऊँची चौकी। स्टूल

**तिरपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० तृण हिं० पातना=बिछाना ] फूस या सरकंडों के लंबे पूले जो छाजन में खपड़ों के नीचे दिए जाते हैं। मुट्ठा।
संज्ञा पुं० [ अं० टारपालिन ] रोगन चढ़ा हुआ कनवास या टाट।

**तिरपित***‡—वि० दे० "तृप्त"।

**तिरपौलिया**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रि+ हिं० पोल ] वह स्थान जहाँ बराबर से ऐसे तीन बड़े फाटक हों जिनसे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें।

**तिरबेनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।

**तिरमिरा**—संज्ञा पुं० [ सं० तिमिर] १. दुर्बलता के कारण होनेवाला दृष्टि का एक दोष जिसमें कभी अँधेरा और कभी अनेक प्रकार के रंग या तारे दिखाई पड़ते हैं। २. तेज रोशनी या चमक में नजर का न ठहरना। चकाचौंध।

**तिरमिराना**—क्रि० अ० [ हिं० तिरमिरा ] तेज रोशनी या चमक के सामने ( आँखों का ) झपना। चौंधना। चौंधियाना।

**तिरलोक**‡—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।

**तिरशूल**‡—संज्ञा पुं० दे० "त्रिशूल"।

**तिरस्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० तिरस्कृत ] १. अनादर। अपमान। २. भर्त्सना। फटकार। ३. अनादर-पूर्वक त्याग।

**तिरस्कृत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० तिरस्कृता ] १. जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत। २. अना-दरपूर्वक त्याग किया हुआ। ३. परदे में छिपा हुआ।

**तिरहुत**—संज्ञा पुं [ सं० तीरभुक्ति ] मिथिला प्रदेश जिसके अंतर्गत आज कल मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिला है।

**तिरहुतिया**—वि० [ हिं० तिरहुत ] तिरहुत का।
संज्ञा पुं० तिरहुत का रहनेवाला।
संज्ञा स्त्री० तिरहुत की बोली।

**तिराना**—क्रि० स० [ हिं० तिरना ] १. पानी के ऊपर ठहराना या चलाना। तैराना। २. पार करना। ३. उबारना। निस्तार करना। भव-भीत करना।

**तिराहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तीन+ फ़ा० राह ] वह स्थान जहाँ से तीन रास्ते तीन ओर गए हों। तिरमु-हानी।

**तिरि**‡—वि० दे० "तिर्यक"।

**तिरिन**‡*—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

**तिरिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्त्री ] स्त्री। औरत।
**यौ०**—तिरिया चरित्तर=स्त्रियों की चालाकी या कौशल।

**तिरीछा***†—वि० दे० "तिरछा"।

**तिरेंदा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तरंड ] १. समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिए किसी ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ पानी छिछला होता है या चट्टानें होती हैं। २. मछली मारने की बंसी में की लकड़ी जिसके डूबने से मछली के फँसने का पता लगता है। तरेंदा।

**तिरोधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंत-र्द्धान।

**तिरोभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंतर्द्धान। अदर्शन। २. गोपन। छिपाव।

**तिरोभूत, तिरोहित**—वि० [ सं० ] छिपा हुआ। अंतर्हित। गायब।

**तिरौंछा**†—वि० दे० "तिरछा"।

**तिर्यक**—वि० [ सं० ] तिरछा। टेढ़ा।
संज्ञा पुं० पशु, पक्षी आदि जीव।

**तिर्यक्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तिरछापन।

**तिर्यग्गति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तिरछी या टेढ़ी चाल। २. पशु-योनि की प्राप्ति।

**तिर्यग्योनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पशु, पक्षी आदि जीव।

**तिलंगा**—संज्ञा पुं० [ सं० तैलंग ] अँगरेजी फौज का देशी सिपाही।
संज्ञा पुं० [ हिं० तीन+लंग ] एक प्रकार का कनकौवा।

**तिलंगाना**—संज्ञा पुं० [ सं० तैलंग ] तैलंग देश।

**तिलंगी**—वि० [ सं० तैलंग ] तिलंगाने का निवासी।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीन+लंग ] एक प्रकार की पतंग।

**तिल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक पौधा जिसकी खेती तेलवाले बीजों के लिए होती है। तिल दो प्रकार का होता है—सफेद और काला।
**मुहा०**-तिल की ओट पहाड़=किसी छोटी बात के भीतर बड़ी भारी बात। तिल का ताड़ करना = किसी छोटी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल तिल= थोड़ा थोड़ा। तिल धरने की जगह न होना = जरा सी भी जगह खाली न रहना। तिल भर = जरा सा। थोड़ा सा।
२. काले रंग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। ३. काली बिंदी के आकार का गोदना। ४. आँख की पुतली के बीचोबीच की गोल बिंदी।

**तिलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह चिह्न जो चंदन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर साम्प्रदायिक संकेत या शोभा के लिए लगाते हैं। टीका। २.

राज्याभिषेक। राजगद्दी। राजतिलक। ३. विवाहसंबंध स्थिर करने की एक रीति। टीका। ४. माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। टीका। ५. शिरोमणि। श्रेष्ठ व्यक्ति। ६. पुन्नाग की जाति का एक सुंदर पेड़। ७. घोड़े का एक भेद। ८. तिल्ली जो पेट के भीतर होती है। क्लोम। ९. किसी ग्रंथ की अर्थसूचक व्याख्या। टीका।

संज्ञा पुं० [ तु० तिरलीक ] १. एक प्रकार का जनाना कुरता। २. खिलअत।

**तिलकना**—क्रि० अ० [ हिं० तड़कना ] १. गीली मिट्टी का सूखकर स्थान स्थान पर दरकना या फटना। २. फिसलना।

**तिलक मुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चंदन आदि का टीका और शंख,चक्र आदि का छापा जो भक्त लोग लगाते हैं।

**तिलकहरू**—दे० "तिलकहार"।

**तिलकहार**-संज्ञा पुं० [ हिं० तिलक+हार ] वह लोग जो कन्या पक्ष से वर को तिलक चढ़ाने के लिए भेजे जाते हैं।

**तिलका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त। तिल्ला। तिल्लाना। डिल्ला।

**तिलकुट**—संज्ञा पुं० [ सं० तिलक ] कूटे हुए तिल जो खाँड़ की चाशनी में पगे हों।

**तिलचटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तिल+चाटना ] एक प्रकार का झींगुर। चपड़ा।

**तिल-चावला**—वि० [ हिं० तिल+चावल ] काला और सफेद मिला हुआ।

**तिल-चावली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तिल+चावल] तिल और चावल की खिचड़ी।

**तिलछना***—क्रि० अ० [ अनु० ] विकल रहना। छटपटाना। बेचैन रहना।

**तिलड़ा**—वि० [ हिं० तीन+लड़ ] जिसमें तीन लड़ हों।

**तिलड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीन+लड़ ] तीन लड़ों की माला जिसके बीच में जुगनी होती है।

**तिलदानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तिल्ला+सं० आधान ] वह थैली जिसमें दरजी सूई, तागा आदि रखते हैं।

**तिलपटटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तिल+पट्टी ] खाँड़ में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ कतरा।

**तिलपपड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तिलपट्टी"।

**तिलपुष्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तिल का फूल। २. व्याघ्रनख। बघनखी।

**तिलभुग्गा**—संज्ञा पुं० दे० "तिलकुट"।

**तिलमिल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तिरमिर ] चकाचौंध। तिरमिराहट।

**तिलमिलाना**—क्रि० अ० दे० "तिरमिराना"।

**तिलवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तिल ] तिलों का लड्डू।

**तिलस्म**—संज्ञा पुं० [ यू० टेलिस्मा ] १. जादू। इंद्रजाल। २. अद्भुत या अलौकिक व्यापार। करामात। चमत्कार।

**तिलस्मी**—वि० [ हिं० तिलस्म ] तिलस्मसंबंधी।

**तिलहन**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेल+धान्य ] वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।

**तिलांजली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृतक-संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते हैं।

**मुहा०**—तिलांजली देना=बिलकुल त्याग देना। जरा भी संबंध न रखना।

**तिलाक**—संज्ञा पुं० [ अ० तलाक ] पति-पत्नी के नाते का टूटना।

**तिली**†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "तिल"। २. दे० "तिल्ली"।

**तिलेदानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तिलदानी"।

**तिलेगू**—संज्ञा स्त्री० दे० "तेलगू"।

**तिलोक**—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।

**तिलोकपति**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिलोकपति ] विष्णु।

**तिलोकी**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिलोकी] इक्कीस मात्राओं का एक उपजाति छंद।

**तिलोचन**—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोचन"।

**तिलोत्तमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा जिसे ब्रह्मा ने संसार भर के सब उत्तम पदार्थों में से एक एक तिल अंश लेकर बनाया था।

**तिलोदक**—संज्ञा पुं० दे० "तिलांजली"।

**तिलोरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. तेलिया मैना। २. दे० "तिलौरी"।

**तिलौंछना**—क्रि० स० [ हिं० तेल+औंछना ] थोड़ा तेल लगाकर चिकना करना।

**तिलौंछा**—वि० [ हिं० तिल+औंछा ] जिसमें तेल का सा स्वाद या रंग हो।

**तिलौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तिल+बरी ] वह बरी जिसमें तिल भी

मिला हो।

**तिल्ला**—संज्ञा पुं० [ अ० तिला ] १. कलाबत्तू या बादले आदि का काम। २. दुपट्टे या साड़ी आदि का वह अंचल जिसमें कलाबत्तू आदि का काम किया हो।

संज्ञा पुं० दे० "तिलका" (वर्णवृत्त)।

**तिल्लाना**—संज्ञा पुं० दे० "तराना" (१)।

**तिल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तिलक ] पेट के भीतर का पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव जो पसलियों के नीचे बाँईं ओर होता है। इसका संबंध पाकाशय से होता है। प्लीहा। पिलही।

संज्ञा स्त्री० [ सं० तिल ] तिल नाम का अन्न।

**तिवाड़ी, तिवारी**—संज्ञा पुं० दे० "त्रिपाठी"।

**तिवासा**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिवासर ] तीन दिन।

**तिशना**—संज्ञा पुं० [फ़ा० तशनीय] ताना। मेहना। व्यंग्य वचन।

*संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

**तिष्टना***—क्रि० स० [ सं० सृष्टि ] बनाना। रचना।

**तिष्ठना***—क्रि० अ० [ सं० तिष्ठ ] ठहरना।

**तिष्षन***—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

**तिसा**—सर्व० [ सं० तस्मिन् ] 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।

**तिसपर**—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था में।

**तिसना***-संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

**तिसरायत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तीसरा ] तीसरा या गैर होने का भाव।

**तिसरैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० तीसरा ] १. झगड़ा करनेवालों से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।

**तिसाना***—क्रि० अ० [ सं० तृषा ] प्यासा होना।

**तिहरा**—वि० दे० "तेहरा"।

**तिहराना**—क्रि० स० [ हिं० तेहरा ] दो बार करके एक बार फिर और करना।

**तिहवार**—संज्ञा पु० दे० "त्योहार"।

**तिहाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्रि+भाग ] तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयांश।

संज्ञा स्त्री० खेत की उपज। फसिल।

**तिहायत**—संज्ञा पुं० दे० "तिसरैत"।

**तिहारा, तिहारो***†—सर्व० दे० "तुम्हारा"।

**तिहाव**†—संज्ञा पुं० [ हिं० तेह ] १. क्रोध। कोप। २ बिगाड़। झगड़ा।

**तिहि**—सर्व० दे० "तेहि"।

**तिहूँ**†—वि० [ हिं० तीन ] तीनों।

**तिहैया**—संज्ञा पुं० [ हिं० तिहाई ] १. तीसरा भाग। तृतीयांश। २. तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें जिनमें से अंतिम थाप ठीक सम पर है।

**ती***—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्त्री ] १. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी। ३. मनोहरण छंद। भ्रमरावली। नलिनी।

**तीक्षण, तीक्षन***—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

**तीक्ष्ण**—वि० [ सं० ] १. तेज नोक या धारवाला। २. तेज। प्रखर। तीव्र। ३. उग्र। प्रचंड। तीखा। ४. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ५. जो सुनने में अप्रिय हो। कर्ण-कटु। ६. जो सहन न हो। असह्य।

**तीक्ष्णता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तीक्ष्ण होने का भाव। तीव्रता। तेजी।

**तीक्ष्णदृष्टि**—वि० [ सं० ] जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्म-दृष्टि।

**तीक्ष्णधार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खड्ग।

वि० जिसकी धार बहुत तेज हो।

**तीक्ष्णबुद्धि**—वि० [ सं० ] जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो। बुद्धिमान्।

**तीख***†—वि० दे० "तीखा"।

**तीखन***†—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

**तीखा**—वि० [सं० तीक्ष्ण] १. जिसकी धार या नोक बहुत तेज हो। तीक्ष्ण। २. तेज। तीव्र। प्रखर। ३. उग्र। प्रचंड। ४. जिसका स्वभाव बहुत उग्र हो। ५. जिसका स्वाद बहुत तेज या चरपरा हो। ६. जो सुनने में अप्रिय हो। ७. चोखा। बढ़िया।

**तीखुर**—संज्ञा पुं० [ सं० तवक्षीर ] हलदी की जाति का एक प्रकार का पौधा। इसकी जड़ के सत का व्यवहार कई तरह की मिठाइयाँ आदि बनाने में होता है।

**तीछन, तीछा***†—वि० दे० "तीक्ष्ण"।

**तीज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तृतीया ] १. पक्ष की तीसरी तिथि। २. भादों सुदी तीज।

वि० दे० "हरतालिका"।

**तीजा**—वि० [ हिं० तीन ] [ स्त्री० तीजी ] तीसरा। तृतीय।

**तीत***†—वि० दे० "तीता"।

**तीतर**—संज्ञा पुं० [ सं० तित्तिर ] एक प्रसिद्ध चंचल और तेज दौड़नेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिए पाला जाता है।

**तीता**—वि० [सं० तिक्त] १. जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। तिक्त।

जैसे—मिर्च। २. कड़ुआ। कटु।
**तीतुरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।
**तीतुल***—संज्ञा पुं० दे० "तीतर"।
**तीन**—वि० [सं० त्रीणि] जो दो और एक हो।
संज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।
**मुहा०**—तीन पाँच करना=घुमाव-फिराव या हुज्जत की बात करना।
संज्ञा पुं० सरयूपारी ब्राह्मणों में तीन उत्तम गोत्रों का एक वर्ग।
**मुहा०**—तीन तेरह करना=तितर-बितर करना। अलग अलग करना। न तीन में, न तेरह में=जो किसी गिनती में न हो।
**तीनि***†—संज्ञा पुं० और वि० दे० "तीन"।
**तीमारदारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम।
**तीय**—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।
**तीया***—संज्ञा स्त्री० दे० "तीय"
संज्ञा पुं० दे० "तिक्को" या "तिड़ी"।
**तीरंदाज**—संज्ञा पुं० [फा०] तीर चलानेवाला।
**तीरंदाजी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तीर चलाने की विद्या या क्रिया।
**तीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नदी का किनारा। कूल। तट। २. पास। निकट। समीप।
संज्ञा पुं० [फ़ा] बाण। शर।
**मुहा०**—तीर चलाना या फेंकना=युक्ति भिड़ाना। रंग-ढंग लगाना।
**तीरथ**—संज्ञा पुं० दे० "तीर्थ"।
**तीरभुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तिरहुत देश।
**तीरवर्ती**—वि० [सं०] १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. पास रहनेवाला। पड़ोसी।
**तीरस्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] नदी के तीर पर पहुँचाया हुआ मरणासन्न व्यक्ति।
**तीरा***†—संज्ञा पुं० दे० "तीर"।
**तीर्णा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्ण-वृत्त। सती। तिन्न। तरणिजा।
**तीर्थंकर**—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के उपास्य देव जो सब देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से रहित और मुक्तिदाता माने जाते हैं। इनकी संख्या २४ है।
**तीर्थ**—संज्ञा पुं० [ ] १. वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्म-भाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिए जाते हो। २. कोई पवित्र स्थान। ३. हाथ में के कुछ विशिष्ट स्थान। ४. शास्त्र। ५ यज्ञ। ६. स्थान। स्थल। ७ उपाय। ८. अवसर। ९. अवतार। १०. उपाध्याय। गुरु। ११. दर्शन। १२. ब्राह्मण। १३. अग्नि। १४. सन्यासियों की एक उपाधि। १५. तारनेवाला। १६. ईश्वर। १७. माता-पिता।
**तीर्थपति**—संज्ञा पुं० दे० "तीर्थराज"।
**तीर्थयात्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्र स्थानों में दर्शन, स्नानादि के लिए जाना। तीर्थाटन।
**तीर्थराज**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रयाग।
**तीर्थराजी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी।
**तीर्थाटन**—संज्ञा पुं० [सं०] तीर्थयात्रा।
**तीर्थिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तीर्थ का ब्राह्मण, पंडा। २ बौद्ध धर्म का विद्वेषी ब्राह्मण। (बौद्ध) ३. तीर्थंकर।
**तीली**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० तीर] १. बड़ा तिनका। सींक। २. धातु आदि का पतला, पर कड़ा तार।
**तीवर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। २. व्याधा। शिकारी। ३. मछुआ। ४. एक वर्ण-संकर अंत्यज जाति।
**तीव्र**—वि० [सं०] १. अतिशय। अत्यंत। २. तीक्ष्ण। तेज। ३. बहुत गरम। ४. नितांत। बेहद। ५. कटु। कड़ुवा। ६. न सहने योग्य। असह्य। ७. प्रचंड। ८. तीखा। ९. वेग-युक्त। तेज। १०. कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा हुआ (स्वर)। (संगीत)।
**तीव्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीव्र होने का भाव। तीक्ष्णता। तेजी। तीखापन।
**तीस**—वि० [सं० त्रिंशति] दस का तिगुना। बीस और दस।
**यौ०**—तीसों दिन या तीस दिन=सदा। हमेशः। तीसमारखाँ=बड़ा बहादुर (व्यंग्य)।
संज्ञा पुं० दस की तिगुनी संख्या।
**तीसरा**—वि० [हिं० तीन] १. क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई संबंध न हो। गैर।
**तीसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० तीस] फल आदि गिनने का तीस गाहियों अर्थात् एक सौ पचास का एक मान।
संज्ञा पुं० दे० "तिहाई"।
**तुंग**—वि० [सं०] १. उन्नत। ऊँचा। २. उग्र। प्रचंड। ३. प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० १. पुन्नाग वृक्ष। २. पर्वत। पहाड़। ३. नारियल। ४. कमल का केसर। ५. शिव। ६. दो नगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।
**तुंगता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऊँचाई।
**तुंगनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।
**तुंगबाहु**—संज्ञा पुं० [सं०] तल-

वार के १२ हाथों में से एक।

**तुंगभद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मतवाला हाथी।

**तुंगभद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्षिण भारत की एक नदी।

**तुंगारण्य**—संज्ञा पुं० [सं०] झाँसी के पास बेतवा के किनारे का एक जंगल।

**तुंगारन***†—संज्ञा पुं० दे० "तुंगारण्य"।

**तुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुख। मुँह। २. चंचु। चोंच। ३. निकला हुआ मुँह। थूथन। ४. तलवार का अगला हिस्सा। ५. शिव। महादेव।

**तुंडि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मुँह। २. चोंच। ३. नाभि।

**तुंडी**—वि० [ सं० तुंडिन् ] मुँह, चोंच, थूथन या सूँड़वाला।
संज्ञा पुं० गणेश।
संज्ञा स्त्री० नाभि। ढोढ़ी।

**तुंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पेट। उदर।
वि० [ फा० ] तेज। प्रचंड। घोर।

**तुंदिल**—वि० [ सं० ] तोंदवाला। बड़े पेटवाला।

**तुँदैला**—वि० [ सं० तुंदिल ] तोंद या बड़े पेटवाला।

**तुँबड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तूँबड़ी"।

**तुंबर***—संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

**तुंबा**—संज्ञा पुं० दे० "तूँबा"।

**तुंबुरु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धनिया। २. एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है। ३. एक गंधर्व जो चैत के महीने में सूर्य के रथ पर रहते हैं।

**तुअ***‡—सर्व० दे० "तुव" "तव"।

**तुअना***†—क्रि० अ० [ हिं० चूना ] १. चूना। टपकना। २. खड़ा न रह सकना। गिर पड़ना। ३. गर्भपात होना।

**तुक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टूक ] १. किसी पद्य या गीत का कोई खंड। कड़ी। २. पद्य के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अक्षर-मैत्री। अंत्यानुप्रास। काफिया।
मुहा०—तुक जोड़ना=भद्दी कविता करना।

**तुकबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तुक+फ़ा० बंदी ] १. केवल तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया। २. भद्दी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।

**तुकमा**—संज्ञा पुं० [ फा० ] घुंडी फँसाने का फंदा। मुद्धी।

**तुकांत**—संज्ञा पुं० [ हिं० तुक+सं० अंत ] पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अंत्यानुप्रास। काफिया।

**तुका**—संज्ञा पुं० दे० "तुक्का"।

**तुकार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तू+सं० कार ] 'तू' का प्रयोग जो अपमान-जनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन।

**तुकारना**—क्रि० स० [ हिं० तुकार ] तू तू करके या अशिष्ट संबोधन करना।

**तुक्कल**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तुका ] बड़ी पतंग।

**तुक्का**—संज्ञा पुं० [ फा० तुका ] वह तीर जिसमें गाँसी की जगह घुंडी सी बनी होती है।

**तुख**—संज्ञा पुं० [ सं० तुष ] १. भूसी। छिलका। २. अंडे के ऊपर का छिलका।

**तुखार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक देश का प्राचीन नाम जिसकी स्थिति हिमालय के उत्तर-पश्चिम होनी चाहिए। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। २. इस देश का निवासी। ३. इस देश का घोड़ा।
संज्ञा पुं० दे० "तुषार"।

**तुख्म**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बीज।

**तुच्छ**—वि० [ सं० ] १. हीन। क्षुद्र। नाचीज। २. ओछा। नीच। ३. अल्प। थोड़ा।

**तुच्छता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हीनता। नीचता। २. ओछापन। क्षुद्रता। ३. अल्पता।

**तुच्छत्व**—संज्ञा पुं० दे० "तुच्छता"।

**तुच्छातितुच्छ**—वि० [ सं० ] छोटे से छोटा। अत्यंत हीन। अत्यंत क्षुद्र।

**तुजुक**—संज्ञा पुं० [तु०] १. शोभा। शान २ कानून। नियम। ३. आत्म-चरित्र।

**तुझ**—सर्व० [ सं० तुभ्यम् ] 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है।

**तुझे**—सर्व० [हिं० तुझ] 'तू' का कर्म और संप्रदान रूप। तुझको।

**तुट***—वि० [ सं० त्रुट ] लेश मात्र। जरा सा।

**तुट्ठना***—क्रि० स० [ सं० तुष्ट ] तुष्ट करना। प्रसन्न करना। राजी करना।
क्रि० अ० तुष्ट होना। प्रसन्न होना।

**तुड़वाना**—क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

**तुड़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तुड़ाना ] १. तुड़ाने की क्रिया या भाव। २. तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**तुड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० तोड़ने का प्रे० ] १. तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. अलग करना। संबंध न रखना। ३. बड़े सिक्के को बराबर मूल्य के कई छोटे छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना।

**तुतरा***†—वि० दे० "तोतला"।

**तुतराना**—क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

**तुतरौहाँ**—वि० दे० "तोतला"।

**तुतलाना**—क्रि० अ० [अनु०] शब्दों और वर्णों का अस्पष्ट उच्चारण करना। रुक रुककर टूटे-फूटे शब्द बोलना।

**तुत्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तूतिया।

**तुदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यथा देने की क्रिया। पीड़न। २. व्यथा। पीड़ा।

**तुन**—संज्ञा पुं० [ सं० तुन्न ] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।

**तुनक**—वि० [ फ़ा० ] १. दुर्बल। २ नाजुक। कोमल।

**यौ०**—तुनक-मिजाज=बात बात पर बिगड़ने या रूठनेवाला।

**तुनीर**—संज्ञा पुं० दे० "तूणीर"।

**तुपक**—संज्ञा स्त्री० [ तु० तोप ] १. छोटी तोप। २. बंदूक। कड़ाबीन।

**तुफंग**—संज्ञा स्त्री० [ तु० तोप ] १. हवाई बंदूक। २. वह लंबी नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

**तुफैल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. साधन। द्वार। २. कृपा। अनुग्रह।

**तुभना**—क्रि० अ० [ सं० स्तोभन ] स्तब्ध रहना। ठक रह जाना। चकित रह जाना।

**तुम**—सर्व० [ सं० त्वम् ] 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। वह सर्वनाम जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिए होता है, जिससे कुछ कहा जाता है।

**तुमड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंबिनी ] १. छोटा तूँबा। तुंबी। २. सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा। महुवर।

**तुमरा**—सर्व० दे० "तुम्हारा"।

**तुमरू**—संज्ञा पुं० दे० "तुंबुरु"।

**तुमल***—संज्ञा पुं०, वि० दे० "तुमुल"।

**तुमुर***—संज्ञा पुं० दे० "तुमुल"।

**तुमुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेना का कोलाहल या धूम। लड़ाई की हलचल। २. सेना की गहरी मुठभेड़।

**तुम्ह**‡—सर्व० दे० "तुम"।

**तुम्हारा**—सर्व० [ हिं० तुम ] 'तुम' का संबंधकारक का रूप।

**तुम्हें**—सर्व० [ हिं० तुम ] 'तुम' का वह विभक्ति-युक्त रूप जो उसे कर्म और संप्रदान में प्राप्त होता है। तुमको।

**तुरंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घोड़ा। २. चित्त। ३. सात की संख्या।

**तुरंगक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ी तोरई।

**तुरंगम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घोड़ा। २ चित्त। ३. दो नगण और दो गुरु का एक वृत्त। तुग। तुंगा।

**तुरंज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. चकोतरा नीबू। २. बिजौरा नीबू। खट्टी।

**तुरंजबीन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रकार की चीनी जो ऊँटकटारे के पौधों पर जमती है। २. नीबू के रस का शरबत।

**तुरंत**—क्रि० वि० [ सं० तुर ] जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फौरन।

**तुरई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तूर ] एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है।

**तुरक**—संज्ञा पुं० दे० "तुर्क"।

**तुरकटा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तुर्क + हिं० टा ( प्रत्य० ) ] मुसलमान।

**तुरकाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तुर्क ] [ स्त्री० तुरकानी ] १. तुरकों का सा। २. तुर्कों का देश या बस्ती।

**तुरकिन**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० तुर्क ] १. तुर्क जाति की स्त्री। †२. मुसलमान की स्त्री।

**तुरकी**—वि० [ फ़ा० ] तुर्क देश का। संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] तुर्किस्तान की भाषा।

**तुरग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० तुरगी ] १. घोड़ा। २. चित्त।

**तुरत**—अव्य० [ सं० तुर ] शीघ्र। चटपट।

**तुरपन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तुरपना ] एक प्रकार की सिलाई। बखिया का उलटा।

**तुरपना**—क्रि० स० [ हिं० तुरप + ना ] तुरपन की सिलाई करना। लुढ़ियाना।

**तुरय***—संज्ञा पुं० [ सं० तुरग ] घोड़ा।

**तुरही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तूर ] फूँक कर बजाने का एक बाजा जो मुँह की ओर पतला और पीछे की ओर चौड़ा होता है।

**तुरा***—संज्ञा स्त्री० दे० "त्वरा"। संज्ञा पुं० [ सं० तुरग ] घोड़ा।

**तुराई**‡*—संज्ञा स्त्री० [ सं० तूलिका ] गद्दा।

**तुराना***—क्रि० अ० [ सं० तुर ] घबराना। आतुर होना।
क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

**तुरावती**—वि० स्त्री० [ सं० त्वरावती ] वेगवाली। झोंक के साथ बहनेवाली।

**तुरिया***—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरीय"।

**तुरीय**—वि० [ सं० ] चतुर्थ। चौथा। संज्ञा स्त्री० १. वेद में वाणी या वाक् के चार भेदों में द्वितीय। वैखरी। वह अवस्था जब वाणी मुँह में आकर उच्चरित होती है। २. प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अंतिम।

**तुरुष्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तुर्क जाति । तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य । २. इस जाति का देश । तुर्किस्तान । ३. तुर्किस्तान का घोड़ा ।

**तुरही**—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरही" ।

**तुर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० तुरुष्क ] १. तुर्किस्तान का निवासी । २. रूम या टर्की का रहनेवाला ।

**तुर्कमान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तुर्क ] १. तुर्क जाति का मनुष्य । २. तुर्की घोड़ा ।

**तुर्की**—वि० [ फ़ा० तुर्क ] तुर्किस्तान का ।

संज्ञा स्त्री० १. तुर्किस्तान की भाषा । २. तुर्किस्तान का घोड़ा । ३. तुर्कों की सी ऐंठ । अकड़ । गर्व ।

**तुर्रा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो । काकुल । २. पर या फुँदना जो पगड़ी में लगाया या खोसा जाता है । कलगी । गोशवारा ।

**मुहा०**—तुर्रा यह कि=उस पर भी इतना और । सबके उपरांत इतना यह भी । ३. फूलों की लड़ियों का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है । ४. टोपी आदि में लगा हुआ फुँदना । ५. पक्षियों के सिर पर निकले हुए परों का गुच्छा । चोटी । शिखा । ६. कोड़ा । चाबुक ।

वि० [ फ़ा० ] अनोखा । अद्भुत ।

**तुर्वसु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न राजा ययाति का एक पुत्र ।

**तुर्श**—वि० [ फ़ा० ] खट्टा । अम्ल ।

**तुर्शी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] खटाई । अम्लता ।

**तुल***—वि० दे० "तुल्य" ।

**तुलना**—क्रि० अ० [ सं० तुल ] १. तौला जाना । तराजू पर अंदाजा जाना । २. तौल या मान में बराबर उतरना । तुल्य होना । ३. आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार के बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर को झुका न हो । ४. किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे । सधना । ५. नियमित होना । बँधना । ६. गाड़ी के पहिए का औंगा जाना । ७. उद्यत होना ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दो या अधिक वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरी से घट बढ़ होने का विचार । मिलान । तारतम्य । २. सादृश्य । समता । ३. उपमा ।

**तुलनात्मक**—वि० [ सं० ] जिसमें और काम के साथ साथ तुलना भी हो ।

**तुलवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तौलना ] १. तौलने की मजदूरी । २. पहिए को औंगने की मजदूरी ।

**तुलवाना**—क्रि० स० [ हिं० तौलना ] [ संज्ञा तुलवाई ] १. तौल कराना । वजन कराना । २. गाड़ी के पहिए की धुरी में घी, तेल आदि दिलाना । औंगवाना ।

**तुलसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक छोटा झाड़ या पौधा जिसकी पत्तियों से एक प्रकार की तीक्ष्ण गंध निकलती है । इसको हिंदू अत्यन्त पवित्र मानते हैं ।

**तुलसीदल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तुलसी के पौधे का पत्ता जिसे अत्यंत पवित्र मानते हैं ।

**तुलसीदास**—संज्ञा पुं० उत्तरीय भारत के सर्वप्रधान भक्त कवि जिनके 'रामचरितमानस' का प्रचार भारत में घर घर है ।

**तुलसीपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तुलसी की पत्ती ।

**तुला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सादृश्य । तुलना । मिलान । २. गुरुत्व नापने का यंत्र । तराजू । काँटा । ३. मान । तौल । ४. ज्योतिष की बारह राशियों में से सातवीं राशि जिसका आकार तराजू लिए हुए मनुष्य का सा माना जाता है ।

**तुलाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तूल ] रूई से भरा दोहरा कपड़ा जो ओढ़ने के काम में आता है । दुलाई ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० तुलना ] १. तौलने का काम या भाव । २. तौलने की मजदूरी ।

**तुलादान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सोलह महादानों में से एक प्रकार का दान जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य या पदार्थ का दान होता है ।

**तुलाधार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तुला राशि । २. बनियाँ । वणिक् । ३. काशी का रहनेवाला एक वणिक् जिसने महर्षि जाजलि को उपदेश दिया था । ४. काशी-निवासी एक व्याध जो सदा माता-पिता की सेवा में तत्पर रहता था ।

**तुलाना***—क्रि० अ० [ हिं० तुलना ] १. आ पहुँचना । समीप आना । निकट आना । २. बराबर होना । पूरा उतरना ।

क्रि० स० [ हिं० तुलना ] गाड़ी के पहियों की धुरी में चिकना दिलाना ।

**तुला-परीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अभियुक्तों की एक दिव्य परीक्षा । इसमें अभियुक्त को दो बार तौलते थे और दोनों बार तौल बराबर होने पर निर्दोष मानते थे ।

**तुलायंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तराजू ।

**तुल्य**—वि॰ [सं॰] १. समान। बराबर। २. सदृश।

**तुल्यता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. बराबरी। समता। २. सादृश्य।

**तुल्ययोगिता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक अलंकार जिसमें कई प्रस्तुतों या अप्रस्तुतों का अर्थात् बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म बतलाया जाता है।

**तुव**—सर्व॰ दे॰ "तव"।

**तुवर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. कसैला रस। २. अरहर।

**तुष**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. अन्न का छिलका। भूसी। २. अंडे का छिलका।

**तुषानल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. भूसी या घास-फूस की आग। २. ऐसी आग में भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिए की जाती है।

**तुषार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. हवा में मिली भाप जो सरदी से जमकर गिरती है। पाला। २. हिम। बरफ। ३. हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोड़े प्रसिद्ध थे। ४. तुषार देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा थी।

वि॰ छूने में बरफ की तरह ठंढा।

**तुष्ट**—वि॰ [सं॰] १. तोषप्राप्त। तृप्त। २. राजी। प्रसन्न। खुश।

**तुष्टता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] संतोष।

**तुष्टना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ तुष्ट] प्रसन्न होना।

**तुष्टि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। (सांख्य में नौ प्रकार की तुष्टियाँ मानी गई हैं, चार आध्यात्मिक और पाँच बाह्य।) ३. कंस के आठ भाइयों में से एक।

**तुसी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ तुष] अन्न के ऊपर का छिलका। भूसी।

**तुहारा**—सर्व॰ दे॰ "तुम्हारा"।

**तुहिं**—सर्व॰ [हिं॰ तू] तुझको।

**तुहिन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ पाला। कुहरा। तुषार। २. हिम। बरफ। ३. चाँदनी। ४. शीतलता। ठंढक।

**तुहिनांशु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] चंद्रमा।

**तुहिनाचल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] हिमालय।

**तूँ**—सर्व॰ दे॰ "तू"।

**तूँबा**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ तुंबक] १. कड़ुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु अपने साथ रखते हैं। कमंडल। तुंबा।

**यौ॰**—तूँबा फेरी=इधर की चीज उधर करना। एक की चीज दूसरे को देना।

**तूँबी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ तूँबा] १. कड़ुआ गोल कद्दू। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन।

**तू**—सर्व॰ [सं॰ त्वम्] मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम। जैसे, तू यहाँ से चला जा। यह शब्द ईश्वर के लिए प्रयुक्त होता है। मनुष्य के लिए अशिष्ट समझा जाता है।

**मुहा॰**—तू-तड़ाक, तू पुकार, या तू तू मैं मैं करना=अशिष्ट शब्दों में विवाद करना।

**तूख**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ तुष] तिनके का टुकड़ा। सींक। खरका।

**तूटना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "टूटना"।

**तूठना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ तुष्ट] १. संतुष्ट होना। तृप्त होना। २. प्रसन्न होना।

**तूण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. तीर रखने का चोंगा। तरकश। २ चामर नामक वृत्त।

**तूणीर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] तूण। तरकश।

**तूत**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] मझोले आकार का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। शहतूत।

**तूतिया**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नीला थोथा"।

**तूती**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. छोटी जाति का तोता। २. कनेरी नाम की छोटी सुंदर चिड़िया। ३. मटमैले रंग की एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुंदर बोलती है।

**मुहा॰**—किसी की तूती बोलना=किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना। नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है=१. भीड़-भाड़ या शोर-गुल में कही हुई बात नहीं सुनाई पड़ती। २ बड़े लोगों के सामने छोटों की बात कोई नहीं सुनता।

४. मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।

**तूदा**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १ राशि। ढेर। २. सीमा का चिह्न। हदबंदी। ३. मिट्टी का वह टीला जिस पर निशाना लगाना सीखा जाता है।

**तून**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ तुन्नक] १. तुन का पेड़। २. तूल नाम का लाल कपड़ा।

*संज्ञा पुं॰ दे॰ "तूण"।

**तूना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "तुअना"।

**तूनीर**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "तूणीर"।

**तूफान**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. डुबानेवाली बाढ़। २. ऐसा अंधड़ जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे, तथा इसी प्रकार के और उत्पात हों। आँधी। ३. आपत्ति। आफत। ४. हल्ला गुल्ला। ५. झगड़ा बखेड़ा। दंगा। ६. झूठा दोषारोपण। तोहमत।

**तूफानी**—वि० [ फ़ा० ] १. बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। फसादी। २. झूठा कलंक लगानेवाला। ३. उग्र। प्रचंड।

**तूमड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ दे० तूँबा ] १. तूँबी। २. तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।

**तूम-तड़ाक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. तड़क-भड़क। शान-शौकत। २. ठसक। बनावट।

**तूमना**—क्रि० स० [ सं० स्तंभ ] १. रूई के गाले के सटे हुए रेशों को कुछ अलग अलग करना। उधेड़ना। २. धज्जी धज्जी करना। ३. हाथ से मसलना।

**तूमार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।

**तूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नगाड़ा। २. तुरही।

**तूरज***—संज्ञा पुं० दे० "तूर्य"।

**तूरण,तूरन**—क्रि० वि० दे० "तूर्ण"।

**तूरना**—क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
*संज्ञा पुं० [ सं० तूर ] तुरही।

**तूरा**—संज्ञा पुं० दे० "तुरही"।

**तूरान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] फारस के उत्तर-पूर्व पड़नेवाला मध्य एशिया का सारा भू-भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियों का निवास-स्थान है।

**तूरानी**—वि० [फ़ा०] तूरान देश का।
संज्ञा पुं० तूरान देश का निवासी।

**तूर्ण**—क्रि० वि० [ सं० ] शीघ्र। जल्दी।

**तूल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश। २. शहतूत। ३. कपास, मदार, सेमर आदि के डोंड़े के भीतर का घूआ। रुई।
संज्ञा पुं० [ हिं० तून ] १. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २. गहरा लाल रंग।
*वि० [ सं० तुल्य ] तुल्य। समान।
संज्ञा पुं० [ अ० ] लंबाई। विस्तार।
**मुहा०**—तूल खींचना या पकड़ना= किसी बात का बहुत बढ़ जाना।
**यौ०**—तूलकलाम=१. लंबी चौड़ी बातें। २. कहा-सुनी। तूल तवील= लंबा चौड़ा।

**तूलना**—क्रि० स० [ हिं० तुलना ] पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।

**तूलम-तूल**—क्रि० वि० [अनु० तूल] आमने-सामने।

**तूला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कपास।

**तूलिका, तूली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तसवीर बनानेवालों की कलम या कूँची।

**तूष्णी**—वि० [ सं० तूष्णीम् ] मौन। चुप।
संज्ञा स्त्री० मौन। खामोशी। चुप्पी।

**तूस**—संज्ञा पुं० [ सं० तुष ] भूसी। भूसा।
संज्ञा पुं० [ तिब्बती थोश ] १. एक प्रकार का बहुत उत्तम ऊन जिससे दुशाले बनते हैं। पशम। पशमीना। २. तूस के ऊन का जमाया हुआ कंबल या नमदा।

**तूसदान**—संज्ञा पुं० [पुर्त० कारटूश+दान ] कारतूस।

**तूसना***—क्रि० स० [ सं० तुष्ट ] १. संतुष्ट करना। तृप्त करना। २. प्रसन्न करना।
क्रि० अ० संतुष्ट या तृप्त होना।

**तृखा**—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

**तृजग***—वि० दे० "तिर्य्यक्"।

**तृण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह उद्भिद् जिसकी पेड़ी में छिलके और हीर का भेद नहीं होता और जिसकी पत्तियों के भीतर केवल लंबाई के बल नसें होती हैं। जैसे—कुश, दूब, सरपत, बाँस, घास।
**मुहा०**—तृण गहना या पकड़ना= हीनता प्रकट करना। गिड़गिड़ाना। ( किसी वस्तु पर ) तृण टूटना=किसी वस्तु का इतना सुन्दर होना कि उसे नजर से बचाने के लिए उपाय करना पड़े। तृणवत्=अत्यंत तुच्छ। कुछ भी नहीं। तृण तोड़ना=किसी सुन्दर वस्तु को देखकर उसे नजर से बचाने के लिए उपाय करना। तृण तोड़ना= संबंध तोड़ना।

**तृणधान्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तिन्नी का चावल। मुन्यन्न। २. सावाँ।

**तृणमय**—वि० [ सं० ] घास का बना हुआ।

**तृणशय्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चटाई।

**तृणारणि न्याय**—संज्ञा पुं० [सं०] तृण और अरणी से अग्नि उत्पन्न होने की भाँति स्वतंत्र या अलग अलग कारणों की व्यवस्था।

**तृणावर्त्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चक्रवात। बवंडर। २. एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मार डाला था।

**तृतीय**—वि० [ सं० ] तीसरा।

**तृतीयांश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीसरा भाग।

**तृतीया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। तीज। २. व्याकरण में करण कारक।

**तृन***—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

**तृपति***—संज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति"।

**तृपित***—वि० दे० "तृप्त"।

**तृप्त**—वि० [ सं० ] १. जिसकी इच्छा

पूरी हो गई हो। तुष्ट। अघाया हुआ। २. प्रसन्न। खुश।

**तृप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. इच्छा पूरी होने से प्राप्त शांति और आनंद। संतोष। २. प्रसन्नता। खुशी।

**तृषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्यास। २. इच्छा। अभिलाषा। ३. लोभ। लालच।

**तृषावंत**—वि० [ सं० तृषावान् ] प्यासा।

**तृषित**—वि० [ सं० ] १. प्यासा। २. अभिलाषी। इच्छुक।

**तृष्णा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राप्ति के लिए आकुल करने वाली इच्छा। लोभ। लालच। २. प्यास।

**तैं***†—प्रत्य० [ सं० तस् (प्रत्य०) ] १. से। द्वारा। २. से (अधिक)। ३. (किसी काल या स्थान) से।

**तेंदुआ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु।

**तेंदू**—संज्ञा पुं० [ सं० तिंदुक ] १. मझोले आकार का एक वृक्ष। इसकी लकड़ी आबनूस के नाम से बिकती है। २. इस पेड़ का फल जो खाया जाता है।

**ते**—अव्य० दे० "तें"।

†सर्व० [ सं० ते ] वे। वे लोग।

**तेउ**—संज्ञा पुं० दे० "तेज"।

**तेखना***†—क्रि० अ० [ हिं० तेहा ] बिगड़ना। क्रुद्ध होना। नाराज होना।

**तेग**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] तलवार। खड्ग।

**तेगा**—संज्ञा पुं० [ अ० तेग़ ] १. खाँड़ा। खड्ग। (अस्त्र) २. दरवाजे को पत्थर, मिट्टी इत्यादि से बंद करने की क्रिया।

**तेज**—संज्ञा पुं० [ सं० तेजस् ] १. दीप्ति। कांति। चमक। आभा। २. पराक्रम। जोर। बल। ३. वीर्य। ४. सार भाग। तत्व। ५. ताप। गर्मी। ६ पित्त। ७ सोना। ८. तेजी। प्रचंडता। ९. प्रताप। रोब-दाब। १०. सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग-शरीर। ११. पाँच महाभूतों में से तीसरा भूत जिसमें ताप और प्रकाश होता है। अग्नि।

**तेज**—वि० [ फ़ा० ] १. तीक्ष्ण धार का। जिसकी धार पैनी हो। २. चलने में शीघ्रगामी। ३. चटपट काम करनेवाला। फुरतीला। ४ तीक्ष्ण। तीखा। झालदार। ५. महँगा। गराँ। ६. उग्र। प्रचंड। ७. चटपट अधिक प्रभाव डालनेवाला। ८. जिसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण हो।

**तेजना***—क्रि० स० दे० "तजना"।

**तेजपत्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० तेजपत्र ] दारचीनी की जाति का एक पेड़। इसकी पत्तियाँ सुगंधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।

**तेजपत्र**—संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।

**तेजपात**—संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।

**तेजमान, तेजवंत**—वि० दे० "तेजवान्"।

**तेजवान्**—वि० [ सं० तेजोवान् ] १. जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २. वीर्यवान्। ३. बली। ताकतवाला। ४. चमकीला।

**तेजस**—संज्ञा पुं० दे० "तेज"।

**तेजसी***—वि० [ हिं० तेजस्वी ] तेज-युक्त।

**तेजस्विता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तेजस्वी होने का भाव।

**तेजस्वी**—वि० [ सं० तेजस्विन् ] १. कांतिमान्। तेजयुक्त। जिसमें तेज हो। २. प्रतापी। प्रभावशाली।

**तेजाब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० तेजाबी ] औषध के काम के लिए किसी क्षार पदार्थ का तरल या रवे के रूप में तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है।

**तेजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] तेज होने का भाव। २. तीव्रता। प्रबलता। ३. उग्रता। प्रचंडता। ४. शीघ्रता। जल्दी। ५. महँगी। मंदी का उलटा।

**तेजोमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य, चंद्रमा आदि आकाशीय पिंडों के चारों ओर का मंडल। छटा-मंडल।

**तेजोमय**—वि० [ सं० ] बहुत आभा, कांति या ज्योतिवाला।

**तेजोहत**—वि० [ सं० ] जिसका तेज नष्ट हो गया हो।

**तेतना**†—वि० दे० "तितना"।

**तेता**†—वि० पुं० [ सं० तावत् ] [ स्त्री० तेती ] उतना। उसी कदर। उसी प्रमाण का।

**तेतिक***†—वि० [ हिं० तेता ] उतना।

**तेतो***†—वि० दे० "तेता"।

**तेरस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्रयोदशी ] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

**तेरह**—वि० [ सं० त्रयोदश ] दस और तीन।

संज्ञा पुं० दस और तीन का जोड़।

**मुहा०**—तेरह बाइस करना = इधर-उधर की बातें करना। बहाना करना।

**तेरहीं**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तेरह] किसी के मरने के दिन से तेरहवीं तिथि, जिसमें पिंडदान और ब्राह्मण-भोजन करके दाह करनेवाला और मृतक के घर के लोग शुद्ध होते हैं।

**तेरा**—सर्व० [ सं० तव ] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एकवचन संबंधकारक सर्वनाम। तू का संबंधकारक रूप।
**मुहा०**—तेरी सी=तेरे लाभ या मतलब की बात। तेरे अनुकूल बात।
**तेरुस**—संज्ञा पुं० दे० "त्यौरुस"। संज्ञा स्त्री० दे० "तेरस"।
**तेरे**†—अव्य [ हिं० ते ] से।
**तेरो***—सर्व० दे० "तेरा"।
**तेल**—संज्ञा पु० [ सं० तैल ] १. वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से निकाला जाता है अथवा आप से आप निकलता है। चिकना। रोगन। २. विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमें वर और वधू को हल्दी मिला हुआ तेल लगाया जाता है।
**मुहा०**—तेल उठना या चढ़ना=विवाह से पहले तेल की रस्म पूरी होना।
**तेलगू**—संज्ञा पुं० [ सं० तैलंग ] तैलंग देश की भाषा।
**तेलहन**—संज्ञा पु० [ हिं० तेल ] वे बीज जिनसे तेल निकलता है। जैसे सरसों।
**तेलहा**†—वि० पुं० [ हिं० तेल ] १. तेल-युक्त। जिसमें तेल हो। २. तेल संबंधी।
**तेला**—संज्ञा पुं० [ ? ] तीन दिन-रात का उपवास।
**तेलिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तेली का स्त्री० ] १. तेली जाति की स्त्री। २. एक बरसाती कीड़ा जिसके छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं।
**तेलिया**—वि० [ हिं० तेल ] १. तेल की तरह चिकना और चमकीला। २. तेल के से रंगवाला।
संज्ञा पुं० १. काला, चिकना और चमकीला रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३. एक प्रकार का बबूल। ४. सींगिया नामक विष।
**तेलियाकंद**—संज्ञा पुं० [ सं० तैलकंद ] एक प्रकार का कंद। यह जहाँ होता है, वहाँ भूमि तेल से सींची हुई जान पड़ती है।
**तेलियाकुमैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेलिया+कुमैत ] घोड़े का एक रंग जो अधिक काला या कुमैत होता है।
**तेलिया पखान**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेलिया+सं० पाषाण ] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर।
**तेलिया सुरंग**-संज्ञा पुं० दे० "तेलिया कुमैत"।
**तेली**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेल ] [ स्त्री० तेलिन ] हिंदुओं की एक जाति जो सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करती है।
**मुहा०**—तेली का बैल=हर समय काम में लगा रहनेवाला व्यक्ति।
**तेवन**†—संज्ञा पुं० [ सं० अंतेवन ] १. नजरबाग। पाईं बाग। २. आमोद-प्रमोद और क्रीड़ा का स्थान या वन। ३. क्रीड़ा।
**तेवर**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेह=क्रोध ] १ कुपित दृष्टि। क्रोध भरी चितवन।
**मुहा०**—तेवर चढ़ना=दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध प्रकट हो। तेवर बदलना या बिगड़ना=१. बेमुरौवत हो जाना। २ खफा हो जाना।
२. भौंह। भृकुटी।
**तेवाना***†—क्रि० अ० [ देश० ] सोचना। चिन्ता करना।
**तेह***†—संज्ञा पुं० [ हिं० तेखना ] १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। घमंड। ताव। ३. तेजी। प्रचंडता।
**तेहरा**—वि० पुं० [ हिं० तीन+हरा ] १. तीन परत किया हुआ। तीन लपेट का। २. जो एक साथ तीन तीन हों। ३. जो दो बार होकर फिर तीसरी बार किया गया हो। ४. तिगुना। ( क्व० )।
**तेहराना**—क्रि० स० [ हिं० तेहरा ] किसी काम को बिलकुल ठीक करने के लिए तीसरी बार करना।
**तेहवार**—संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।
**तेहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेह ] १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। शेखी। घमंड।
**तेहि***†—सर्व० [ सं० ते ] उसको। उसे।
**तेही**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेह+ई (प्रत्य०)] १. गुस्सा करनेवाला। क्रोधी। २ अभिमानी। घमंडी।
**तैं***—क्रि० वि० [ हिं० ते ] से। वि० दे० "ते"।
सर्व० [ सं० त्वम् ] १. तू। *२. तूने।
**तै**†—क्रि० वि० [ सं० तत् ] उतना। उस कदर। उस मात्रा का।
संज्ञा पुं० [ अ० ] १. निबटेरा। फैसला।
**यौ०**—तै तमाम=अंत। समाप्ति। २ पूर्ति। पूरा करना।
वि० १. जिसका निबटेरा या फैसला हो चुका हो। २. जो पूरा हो चुका हो।
**तैजस**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. कोई चमकीला पदार्थ। २. घी। ३. पराक्रमी। ४. भगवान्। ५. वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस तथा रस को धातु में परिणत करती है। ६. राजस अवस्था में प्राप्त अहंकार।
वि० [ सं० ] तेज से उत्पन्न। तेज संबंधी।
**तैत्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीतर। गैंडा।

**तैत्तिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्ण-यजुर्वेद के प्रवर्त्तक एक ऋषि का नाम।

**तैत्तिरीय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कृष्ण यजुर्वेद की छियासी शाखाओं में से एक, जो तित्तिरि नामक ऋषि प्रोक्त है। २. इस शाखा का उप-निषद्।

**तैत्तिरीयारण्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमें वानप्रस्थों के लिए उपदेश हैं।

**तैनात**—वि० [ अ० तअय्युन ] [ संज्ञा तैनाती ] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ। मुकर्रर। नियत। नियुक्त।

**तैयार**—वि० [ अ० ] १. जो काम में आने के लिए बिलकुल उपयुक्त हो गया हो। दुरुस्त। ठीक। लैस।

**मुहा०**—हाथ तैयार होना = कला आदि में हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना।

२. उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३. प्रस्तुत। उपस्थित। मौजूद। ४. हृष्ट-पुष्ट। मोटाताजा।

**तैयारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तैयार+ई (प्रत्य०) ] १. तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २. तत्प-रता। मुस्तैदी। ३. शरीर की पुष्टता। मोटाई। ४. प्रबंध आदि के संबंध की धूम-धाम। ५. सजावट।

**तैयों**†—क्रि० वि० दे० "तक"।

**तैरना**—क्रि० अ० [ सं० तरण ] १. पानी के ऊपर ठहरना। उतराना। २. हाथ पैर या और कोई अंग हिलाकर पानी पर चलना। पैरना। तरना।

**तैराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० तैरना+आई (प्रत्य०) ] तैरने की क्रिया या भाव।

**तैराक**—वि० [ हिं० तैरना+आक (प्रत्य०) ] जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।

**तैराना**—क्रि० स० [ हिं० तैरना का प्रे० ] १ दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना। २. धुसाना।

**तैलंग**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिकलिंग ] दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। इस देश की भाषा तेलगू कहलाता है।

**तैलंगी**—संज्ञा पुं० [ हिं० तैलंग+ई (प्रत्य०) ] तैलंग देशवासी।

संज्ञा स्त्री० तैलंग देश की भाषा।

**तैल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिकना। तेल।

**तैलकार**—संज्ञा पुं० दे० "तेली"।

**तैलचित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का चित्र जो प्रायः मोटे कपड़े या कागज पर तेल मिले हुए रंगों से बनाया जाता है।

**तैलत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तेल का भाव या गुण।

**तैलाक्त**—वि० [ सं० ] जिसमें तेल लगा हो।

**तैलाभ्यंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शरीर में तेल मलने की क्रिया। तेल की मालिश।

**तैश**—संज्ञा पुं० [ अ० ] आवेश। क्रोध।

**तैसा**—वि० [ सं० तादृश ] उस प्रकार का। "वैसा" का पुराना रूप।

**तैसे**—क्रि० वि० दे० "वैसे"।

**तों***†—क्रि० वि० दे० "त्यों"।

**तोंअर***†—संज्ञा पुं० दे० "तोमर"।

**तोंद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तुंद ] पेट के आगे का बढ़ा हुआ भाग। पेट का फुलाव।

**तोंदल**—वि० [ हिं० तोंद + ल (प्रत्य०) ] जिसका पेट आगे को बढ़ा हो। तोंदवाला।

**तो***—सर्व० [ सं० तव ] तेरा।

अव्य० [ सं० तद् ] उस दशा में। तब।

अव्य० [ सं० तु० ] एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर जोर देने के लिए अथवा कभी कभी यों ही किया जाता है।

*सर्व० [ सं० तव ] तू का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है। तुझ। (ब्रज०)।

क्रि० अ० [ हिं० हतो=था ] था। (क्व०)

**तोइ***†—संज्ञा पुं० [ सं० तोय ] पानी। जल।

**तोई**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] मगजी। गोट।

**तोख***†—संज्ञा पुं० दे० "तोष"।

**तोटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**तोटका**—संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।

**तोड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० तोड़ना ] १. तोड़ने की क्रिया या भाव। (क्व०) २ नदी आदि के जल का तेज बहाव। ३. कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिए किया हुआ दाँव या पेंच। ४. किसी प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। मारक। ५ बार। दफा। झोंक।

**तोड़क**—वि० [ हिं० तोड़ना ] तोड़-नेवाला।

**तोड़ना**—क्रि० स० [हिं० टूटना] १ आघात या झटके से किसी पदार्थ के खंड करना। टुकड़े करना। २. किसी वस्तु के अंग का अथवा उसमें लगी हुई किसी दूसरी वस्तु को किसी प्रकार अलग करना। ३. किसी वस्तु का कोई अंग किसी प्रकार खंडित, भग्न

या बेकाम करना। ४. खेत में हल जोतना। ५. सेंध लगाना। ६. क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना। ७. किसी संघटन, व्यवस्था या कार्य्य-क्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा नष्ट कर देना। ८. निश्चय के विरुद्ध आचरण करना अथवा नियम का उल्लंघन करना। ९. मिटा देना। बना न रहने देना।

**तोड़र**—संज्ञा पुं० दे० "तोड़ा"।

**तोड़वाना**—क्रि० स० दे० "तुड़वाना"।

**तोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तोड़ना ] १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर या सिकड़ी जो हाथों या गले में पहनी जाती है। २. रुपये रखने की टाट आदि की थैली जिसमें १००० ) आते हैं।

**मुहा०**—तोड़े उलटना या गिनना= बहुत सा द्रव्य होना।

३. नदी का किनारा। तट। ४. नदी के संगम पर बालू, मिट्टी आदि का मैदान। ५. घाटा। कमी। टोटा। ६. नाच का एक टुकड़ा।

संज्ञा पुं० [ सं० तुंड या हिं० टोंटा ] नारियल की जटा की वह रस्सी जिससे पुरानी चाल की तोड़ेदार बंदूक छोड़ी जाती थी। पलीता।

**यौ०**—तोड़ेदार बंदूक=वह बंदूक जो तोड़ा या पलीता दाग कर छोड़ी जाय।

संज्ञा पुं० [ देश० ] वह लोहा जिसे चकमक पर मारने से आग निकलती है।

**तोण***†—संज्ञा पुं० [ सं० तूण ] तरकश।

**तोदा**†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तोदः ] ढेर। समूह।

**तोतई**—वि० [ हिं० तोता+ई(प्रत्य०)] तोते के रंग का सा। धानी।

**तोतक**—संज्ञा पुं० [ हिं० तोता ? ] पपीहा।

**तोतराना***—क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।

**तोतला**—वि० [ हिं० तुतलाना ] १. वह जो तुतलाकर बोलता हो। अस्पष्ट बोलनेवाला। २. जिसमें उच्चारण स्पष्ट न हो।

**तोता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके शरीर का रंग हरा और चोंच लाल होती है। ये आदमियों की बोली की बहुत अच्छी तरह नकल करते हैं। इसलिए लोग इन्हें पालते हैं। कीर। सुआ।

**मुहा०**—हाथों के तोते उड़ जाना= बहुत घबरा जाना। सिटपिटा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना =बहुत बेमुरौवत होना। तोता पालना=किसी दोष, दुर्व्यसन या रोग को जान-बूझ कर बढ़ाना। २. बंदूक का घोड़ा।

**तोताचश्म**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला। बेमुरौवत।

**तोदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चाबुक, कोड़ा, चमोटी आदि। तोत्र। २. व्यथा। पीड़ा।

**तोदरी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] फारस में होने वाला एक प्रकार का बड़ा कँटीला पेड़ जिसके बीज औषध के काम में आते हैं।

**तोप**—संज्ञा स्त्री० [तु०] एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो और चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाये जाते हैं।

**मुहा०**—तोप कीलना=तोप की नाली में लकड़ी का कुंदा खूब कसकर ठोंक देना जिसमें उसमें से गोला न चलाया जा सके। तोप की सलामी उतारना=किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्त्वपूर्ण घटना के समय बिना गोले के बारूद भर कर शब्द करना।

**तोपखाना**—संज्ञा पुं० [अ० तोप+फ़ा० खाना ] १. वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो। २. युद्ध के लिए सुसज्जित चार से आठ तोपों तक का समूह।

**तोपची**—संज्ञा पुं० [अ० तोप+ची (प्रत्य०)]तोप चलानेवाला। गोलंदाज।

**तोपना**†—क्रि० स० [ सं० छोपन ] ढाँकना।

**तोपा**—संज्ञा पुं० [ हिं० तुरपना] एक टाँके में की हुई सिलाई।

**तोफा**†—वि०, संज्ञा पुं० दे० "तोहफा"।

**तोबड़ा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तोबरा ] चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाते हैं।

**मुहा०**—तोबड़ा चढ़ाना= बोलने से रोकना।

**तोबा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० तौबः ] किसी अनुचित कार्य्य का भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा।

**मुहा०**—तोबा-तिल्ला करना या मचाना= रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना। तोबा बुलवाना= पूर्ण रूप से परास्त करना।

**तोम**—संज्ञा पुं० [सं० स्तोम] समूह। ढेर।

**तोमर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी

के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। शर्पला। शापला। २. एक प्रकार का छंद। ३. एक प्राचीन देश का नाम। ४. इस देश का निवासी। ५. राजपूत क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।

**तोय**—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

**तोयचर, तोयधार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। २. मोथा।

**तोयधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**तोयनिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**तोर***†—संज्ञा पुं० दे० "तोड़"।
*†—वि० दे० "तेरा"।

**तोरई**—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

**तोरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घर या नगर का बाहरी फाटक। २. वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिए खंभों और दीवारों में लटकाई जाती हैं। बंदनवार।

**तोरन***†—संज्ञा पुं० दे० "तोरण"।

**तोरना**—क्रि० स० दे० "तोड़ना"।

**तोरा***†—सर्व० दे० "तेरा"।

**तोराना***†—क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

**तोरावान्***†—वि० [ सं० त्वरावत् ] [ स्त्री० तोरावती ] वेगवान्। तेज।

**तोरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

**तोल**†—संज्ञा स्त्री० दे० "तौल"।
अ० दे० "तुल"।

**तोलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तौलने की क्रिया। २. उठाने की क्रिया।

**तोलना**—क्रि० स० दे० "तौलना"।

**तोला**—संज्ञा पुं० [ सं० तोलक ] १. बारह माशे की तौल। २. इस तौल का बाट।

**तोशक**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] खोल में रूई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

**तोशदान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० तोशः-दान ] १. वह थैली आदि जिसमें मार्ग के लिए जलपान आदि या दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। २ चमड़े की वह थैली जिसमें सिपाहियों का कारतूस रहता है।

**तोशा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह खाद्य पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रख लेता है। पाथेय। २. साधारण खाने-पीने की चीज।

**तोशाखाना**—संज्ञा पुं० [तु० तोशक + फ़ा० खाना ] वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हैं।

**तोष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अघाने या मन भरने का भाव। तुष्टि। संतोष। तृप्ति। २ प्रसन्नता। आनंद।
वि० अल्प। थोड़ा। ( अनेकार्थ )

**तोषक**—वि० [ सं० ] संतुष्ट करने-वाला।

**तोषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तृप्ति। संतोष। २. संतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

**तोषना***—क्रि० स० [ सं० तोष ] संतुष्ट करना। तृप्त करना।
क्रि० अ० संतुष्ट होना। तृप्त होना।

**तोषल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कंस के एक असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २. मूसल।

**तोषित**—वि० [ सं० ] जिसका तोष हो गया हो। तुष्ट। तृप्त।

**तोस***—संज्ञा पुं० दे० "तोष"।

**तोसल***†—संज्ञा पुं० दे० "तोषल"।

**तोसा***†—संज्ञा पुं० दे० "तोशा"।

**तोसागार***†—संज्ञा पुं० दे० "तोशा-खाना"।

**तोहफगी**—संज्ञा स्त्री० [अ० तोहफ़ा] उत्तमता। अच्छापन। उम्दगी।

**तोहफा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सौगात। उपहार।

**तोहमत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वृथा लगाया हुआ दोष। झूठा कलंक।

**तोहरा**—सर्व० दे० "तुम्हारा"।

**तोहि**—सर्व० [हिं० तू या तैं ] तुझको तुझे।

**तौंकना**—क्रि० अ० दे० "तौंसना"।

**तौंस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ताव + ऊमस ] वह प्यास जो धूप खा जाने के कारण लगे और किसी भाँति न बुझे।

**तौंसना**—क्रि० अ० [ हिं० तौंस ] गरमी से झुलस जाना। गरमी से संतप्त होना।

**तौंसा**—संज्ञा पुं० [ हिं० ताव + ऊमस ] अधिक ताप। कड़ी गरमी।

**तौं**†*—क्रि० वि० दे० "तो"।
क्रि० अ० [ हि० हतो ] था।

**तौक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना। २. इसी आकार की बहुत भारी वृत्ताकार पटरी या मँडरा जिसे अपराधी या पागल के गले में पहना देते हैं। ३. इसी आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो पक्षियों आदि के गले में होता है। हँसुली। ४. पट्टा। चपरास। ५. कोई गोल घेरा या पदार्थ।

**तौन**‡—सर्व० [सं० त ] वह। जो।

**तौनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तवा का स्त्री० अल्पा० ] रोटी सेंकने का छोटा तवा। तई। तवी।

**तौफीक**—संज्ञा स्त्री० [ अ०] श्रद्धा। २. सामर्थ्य। शक्ति।

**तौबा**—संज्ञा स्त्री० दे० "तोबा"।

**तौर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. चाल-ढाल। चाल-चलन।
**यौ०**—तौर-तरीका=चाल-चलन।

२. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीका। ढंग। प्रकार। भाँति। तरह।

**तौरात**—संज्ञा पुं० दे० "तौरेत"।

**तौरि***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तौंवरि ] घुमेर। घुमरी। चक्कर।

**तौरेत**—संज्ञा पुं० [ इब्रा० ] यहूदियों का प्रधान धर्म-ग्रंथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था।

**तौल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तराजू। २. तुलाराशि।

संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण। भार का मान। वजन। २. तौलने की क्रिया या भाव।

**तौलना**—क्रि० स० [ सं० तोलन ] १. किसी पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण जानने के लिए उसे तराजू या काँटे आदि पर रखना। वजन करना। जोखना। २. किसी अस्त्र आदि को चलाने के लिए हाथ का इस प्रकार ठीक करना कि वह अस्त्र अपने लक्ष्य पर पहुँच जाय। साधना। ३. तारतम्य जानना। मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। ओंगना।

**तौलवाना**†—क्रि० स० [ हिं० तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।

**तौला**—संज्ञा पुं० [ हिं० तौलना ] १. अनाज तौलनेवाला मनुष्य। बया। २. तंबिया।

**तौलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तौल + आई (प्रत्य०) ] तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**तौलाना**—क्रि० स० [ हिं० तौलना का प्रे० ] तौलने का काम दूसरे से कराना।

**तौलिया**—संज्ञा स्त्री०, पुं० [ अं० टावेल ] एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।

**तौसना**†—क्रि० अ० [ हिं० तौंस ] गरमी से बहुत व्याकुल होना।

क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।

**तौहीन**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

**तौहीनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।

**त्यक्त**—वि० [ सं० ] [ वि० त्यक्तव्य ] छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।

**त्यजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० त्यजनीय ] छोड़ने का काम। त्याग।

**त्याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। उत्सर्ग। २. किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३. संबंध या लगाव न रखने की क्रिया। ४. विरक्ति आदि के कारण सांसारिक विषयों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया। ५. ब्याह के समय दिया जानेवाला दान।

**त्यागना**—क्रि० स० [ सं० त्याग ] छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना।

**त्यागपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो। २. इस्तीफा।

**त्यागी**—वि० [ सं० त्यागिन् ] स्वार्थ या सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।

**त्याजना***†—क्रि० स० दे० "त्यागना"।

**त्याज्य**—वि० [ सं० ] त्यागने योग्य।

**त्यार**†—वि० दे० "तैयार"।

**त्यूँ**†—क्रि० वि० दे० "त्यों"।

**त्यों**—क्रि० वि० [ सं० तत + एवम् ] १. उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २. उसी समय। तत्काल। अ० तरफ। ओर।

**त्योरस**†—संज्ञा पुं० [ हिं० ति० (तीन) + बरस ] १. पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २. आगामी तीसरा वर्ष।

**त्योराना***—क्रि० अ० [ ? ] सिर घूमना।

**त्योरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० त्रिकुटी ] अवलोकन। चितवन। दृष्टि। निगाह।

मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना=दृष्टि का ऐसी अवस्था में हो जाना जिससे कुछ क्रोध झलके। आँखें चढ़ना। त्योरी में बल पड़ना=त्योरी चढ़ना।

**त्योरुस**†—संज्ञा पुं० दे० "त्योरस"।

**त्योहार**—संज्ञा पुं० [ सं० तिथि + वार ] वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। पर्व-दिन।

**त्योहारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० त्योहार] वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष में छोटों, लड़कों, आश्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है।

**त्यौं**—क्रि० वि० दे० "त्यों"।

**त्यौनार**—संज्ञा पुं० [ हिं० तेवर ] ढंग। तर्ज।

**त्यौर**—संज्ञा पुं० दे० "त्यौरी"।

**त्रपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० त्रपमान् ] १. लज्जा। लाज। शर्म। हया। २. छिनाल स्त्री। पुंश्चली। ३. कीर्त्ति। यश।

वि० [ सं० ] लज्जित। शरमिंदा।

**त्रय**—वि० [ सं० ] १. तीन। २.

तीसरा।

**त्रयी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तीन वस्तुओं का समूह। तिगुड्ड।

**त्रयोदशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

**त्रष्टा**—संज्ञा पुं० दे० "तष्टा"। ( तश्तरी )

**त्रसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भय। डर। २. उद्वेग।

**त्रसना***।—क्रि० अ० [ सं० त्रसन ] भय से काँप उठना। डरना। खौफ खाना।

**त्रसरेणु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह चमकता हुआ कण जो छेद में से आती हुई धूप में नाचता या घूमता दिखाई देता है। सूक्ष्म कण।

**त्रसाना***।—क्रि० स० [हिं० त्रसना] डराना। धमकाना। भय दिखाना।

**त्रसित***—वि० [ सं० त्रस्त ] १. भयभीत। डरा हुआ। २. पीड़ित। सताया हुआ।

**त्रस्त**—वि० [ सं० ] १. भयभीत। डरा हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित। ३. घबराया हुआ। व्याकुल।

**त्राटक**—संज्ञा पुं० दे० "त्राटिका"।

**त्राटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] योग की मुद्रा।

**त्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० त्रातक ] १. रक्षा। बचाव। हिफाजत। २. रक्षा का साधन। ३. कवच।

**त्राता, त्रातार**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रातृ ] रक्षक। बचानेवाला।

**त्रायमाणा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बनफशे की तरह की एक लता।

वि० रक्षक। रक्षा करनेवाला।

**त्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. डर। भय। २. कष्ट। तकलीफ।

**त्रासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० त्रासिका ] १. डरानेवाला। भयभीत करनेवाला। २. निवारक। दूर करनेवाला।

**त्रासना***।—क्रि० स० [ सं० त्रासन] डराना। भय दिखाना। त्रास देना।

**त्रासित**—वि० दे० "त्रस्त"।

**त्राहि**—अव्य० [ सं० ] बचाओ। रक्षा करो।

**त्रि**—वि० [ सं० ] तीन। जैसे, त्रिकाल।

**त्रिकंटक**—वि० [ सं० ] जिसमें तीन काँटे हों।

**त्रिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीन का समूह। २. रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३. कमर। ४. त्रिफला।

**त्रिककुद्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. त्रिकूट पर्वत। २. विष्णु।

वि० जिसके तीन शृंग हों।

**त्रिकटु, त्रिकटुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सोंठ, मिर्च और पीपल ये तीन कटु वस्तुएँ।

**त्रिकल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीन मात्राओं का शब्द। प्लुत। २. दोहे का एक भेद।

वि० जिसमें तीन कलाएँ हों।

**त्रिकांड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अमरकोष का दूसरा नाम। २. निरुक्त का दूसरा नाम।

वि० जिसमें तीन कांड हों।

**त्रिकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीनों समय—भूत, वर्त्तमान और भविष्य। २. तीनों समय—प्रातः, मध्याह्न और सायं।

**त्रिकालज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सर्वज्ञ।

**त्रिकालदर्शक**—वि० दे० "त्रिकालज्ञ"।

**त्रिकालदर्शी**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिकालदर्शिन् ] तीनों कालों की बातों को जाननेवाला व्यक्ति। त्रिकालज्ञ।

**त्रिकुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्रिकूट ] दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर का स्थान।

**त्रिकूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २. वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है। ३. एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है। ४. योग में मस्तक के छः चक्रों में से पहला चक्र।

**त्रिकोण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीन कोने का क्षेत्र। त्रिभुज क्षेत्र। २ तीन कोनेवाली कोई वस्तु।

**त्रिकोणमिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गणितशास्त्र का वह विभाग जिसमें त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग-विस्तार आदि का मान निकालने की रीति बतलाई जाती है।

**त्रिखा***—संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।

**त्रिगर्त्त**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर भारत के उस प्रांत का प्राचीन नाम जिसमें आज-कल जालंधर और काँगड़ा आदि नगर हैं।

**त्रिगुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का समूह।

वि० [ सं० ] तीन गुना। तिगुना।

**त्रिगुणात्मक**—वि० पुं० [ सं० ] [स्त्री० त्रिगुणात्मिका] सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त।

**त्रिजग***।—संज्ञा पुं० [ सं० तिर्यक् ] पशु तथा कीड़े-मकोड़े। तिर्य्यक्।

संज्ञा पुं० [सं० त्रिजगत्] तीनों लोक—

स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

**त्रिजट**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**त्रिजटा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] विभीषण की बहिन जो अशोक वाटिका में जानकी जी के पास रहा करती थी।

**त्रिजामा***†—संज्ञा स्त्री० [सं० त्रियामा] रात्रि।

**त्रिज्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा। व्यास की आधी रेखा।

**त्रिण***—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

**त्रिदंड**—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास आश्रम का चिह्न, बाँस का एक डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बाँधी होती हैं।

**त्रिदंडी**—संज्ञा पुं० [सं] संन्यासी।

**त्रिदल**—संज्ञा पुं० [सं०] बिल्वपत्र।

**त्रिदश**—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

**त्रिदशालय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।

**त्रिदिनस्पृश**—संज्ञा पुं० [सं] वह तिथि जिसका थोड़ा बहुत अंश तीन दिनों में पड़ता हो।

**त्रिदिव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. आकाश।

**त्रिदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता।

**त्रिदोष**—संज्ञा पुं० [सं०] १ वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष। २. सन्निपात रोग।

**त्रिदोषना***—क्रि० अ० [सं० त्रिदोष] १. तीनों दोषों के कोप में पड़ना। २. काम, क्रोध और लोभ के फंदों में पड़ना।

**त्रिधा**—क्रि० वि० [सं०] तीन तरह से।

वि० [सं०] तीन तरह का।

**त्रिधारा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तीन धारावाला सेंहुड़। तिधारा। २. गंगा।

**त्रिन***†—संज्ञा पुं० दे० "तृण"।

**त्रिनयन**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**त्रिनेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**त्रिपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] कर्म, ज्ञान और उपासना इन तीनों मार्गों का समूह।

**त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

**त्रिपद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तिपाई। २. त्रिभुज। ३. वह जिसके तीन पद हों।

**त्रिपदी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंसपदी। २. तिपाई। ३. गायत्री।

**त्रिपाठी**—संज्ञा पुं० [सं० त्रिपाठिन्] १. तीन वेदों का जाननेवाला पुरुष। त्रिवेदी। २ ब्राह्मणों की एक जाति। तिवारी।

**त्रिपिटक**—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जिसे बौद्ध लोग अपना प्रधान धर्मग्रंथ मानते हैं। इसके तीन भाग हैं—सूत्रपिटक, विनयपिटक और अभिधर्म्मपिटक।

**त्रिपिताना**†—क्रि० अ० [सं० तृप्ति + आना (प्रत्य०)] तृप्त होना। अघा जाना।

क्रि० स० तृप्त या संतुष्ट करना।

**त्रिपुंड**—संज्ञा पुं० [सं० त्रिपुंड्र] भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग लगाते हैं।

**त्रिपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाणासुर का एक नाम। २. तीनों लोक। ३ चँदेरी नगर। ४. वे तीनों नगर जो तारकासुर के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के तीनों पुत्रों ने मय दानव से अपने लिए बनवाए थे।

**त्रिपुरदहन**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**त्रिपुरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामाख्या देवी की एक मूर्ति।

**त्रिपुरारि**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**त्रिपुरासुर**—संज्ञा पुं० दे० 'त्रिपुर' (१)।

**त्रिफला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।

**त्रिबली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं। इनकी गणना स्त्री के सौंदर्य्य में होती है।

**त्रिबेनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।

**त्रिभंग**—वि० [सं०] जिसमें तीन जगह बल पड़ते हो।

संज्ञा पुं० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें पेट, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता है।

**त्रिभंगी**—वि० [सं०] त्रिभंग।

संज्ञा पुं० [सं०] १. एक मात्रिक छंद। २. गणनात्मक दंडक का एक भेद।

**त्रिभुज**—संज्ञा पुं० [सं०] वह धरातल जो तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हो।

**त्रिभुवन**—संज्ञा पुं० [सं०] तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।

**त्रिमात्रिक**—वि० [सं०] जिसमें तीन मात्राएँ हों। प्लुत।

**त्रिमूर्ति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता। २. सूर्य्य।

**त्रिय, त्रिया***†—संज्ञा स्त्री० [सं० स्त्री] औरत।

**यौ०**—त्रियाचरित्र=स्त्रियों का छल-कपट जिसे पुरुष सहज में नहीं समझ सकते।

**त्रियामा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात्रि।

**त्रियुग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु।

२. सत्ययुग, द्वापर और त्रेता ये तीनों युग।

**त्रिलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

**त्रिलोकनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर। २. राम। ३. कृष्ण।

**त्रिलोकपति**—संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोकनाथ"।

**त्रिलोकी**-संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिलोक"

**त्रिलोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**त्रिवर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अर्थ, धर्म और काम। २. त्रिफला। ३. त्रिकुटा। ४. वृद्धि, स्थिति और क्षय। ५. सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण। ६. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों प्रधान जातियाँ।

**त्रिविध**-वि० [ सं० ] तीन प्रकार का। क्रि० वि० [ सं० ] तीन प्रकार से।

**त्रिवृत्करण**-संज्ञा पुं० [ सं० ] अग्नि, जल और पृथ्वी इन तीनों तत्त्वों में से प्रत्येक में शेष दोनों तत्त्वों का समावेश कर के प्रत्येक को अलग अलग तीन भागों में विभक्त करने की क्रिया।

**त्रिवेणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तीन नदियों का संगम। २. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम-स्थान जो प्रयाग में है। ३. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियों का संगम-स्थान। (हठ योग)

**त्रिवेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऋक्, यजुः और साम ये तीनों वेद। त्रिवेदी।

**त्रिवेदी**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिवेदिन् ] १. ऋक्, यजुः और साम इन तीनों वेदों का जाननेवाला। २. ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी।

**त्रिशंकु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बिल्ली। २. जुगनूँ। ३. एक पहाड़ का नाम। ४. पपीहा। ५. एक प्रसिद्ध सूर्य्यवंशी राजा जिन्होंने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध करने के कारण स्वर्ग न पहुँच सके थे और बीच आकाश में रुक गए थे। ६. एक तारा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशंकु हैं जो इंद्र के ढकेलने पर आकाश से गिर रहे थे और जिन्हें मार्ग में ही विश्वामित्र ने रोक दिया था।

**त्रिशक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीनों ईश्वरीय शक्तियाँ। २. महत्तत्त्व जो त्रिगुणात्मक है। बुद्धितत्त्व। ३. गायत्री।

**त्रिशिर**—संज्ञा पुं० [ सं० त्रिशिरस् ] १ रावण का एक भाई। २. कुबेर। वि० जिसके तीन सिर हों।

**त्रिशूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (महादेव जी का अस्त्र)। २. दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख।

**त्रिषित***—वि० दे० "तृषित"।

**त्रिष्टुभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वैदिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।

**त्रिसंगम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीन नदियों का संगम। त्रिवेणी। फगुनियाँ।

**त्रिसंध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

**त्रिसंध्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रातः मध्याह्न और साय ये तीनों संध्याएँ।

**त्रिस्थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काशी, गया और प्रयाग ये तीन पुण्य-स्थान।

**त्रिस्रोता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० त्रिस्रोतस् ] गंगा।

**त्रुटि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमी। कसर। न्यूनता। २. अभाव। ३. भूल। चूक। ४. वचन-भंग।

**त्रुटित**—वि० [ सं० ] १. कटा या टूटा हुआ। २. आहत। घायल।

**त्रुटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "त्रुटि"।

**त्रेतायुग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार युगों में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का होता है। इसका आरंभ कार्तिक शुक्ल नवमी को हुआ था।

**त्रै**—वि० [ सं० त्रय ] तीन।

**त्रैकालिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीनों कालों में या सदा होनेवाला।

**त्रैगुण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का धर्म्म या भाव।

**त्रैमातुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लक्ष्मण।

**त्रैमासिक**—वि० [ सं० ] हर तीसरे महीने होनेवाला। जो हर तीसरे महीने हो।

**त्रैराशिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणित की एक क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

**त्रैलोक्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक। २. २१ मात्राओं का कोई छंद।

**त्रैवर्णिक**—संज्ञा पुं० [सं० ] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णों के लोग।

**त्रैवार्षिक**—वि० [ सं० ] जो हर तीसरे वर्ष हो। तीन वर्ष संबंधी।

**त्रोटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाटक का एक भेद जिसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं।

**त्रोण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तूणीर। तरकश।

**त्र्यंबक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**त्र्यंबका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा।

**त्वक्**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. छिलका। छाल। २. त्वचा। चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञानेंद्रियों में से एक जो सारे शरीर के ऊपर है।

**त्वचकना***—क्रि० अ० [ सं० त्वचा] वृद्धावस्था में शरीर का चमड़ा झूलना।

**त्वचा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ शरीर पर का चमड़ा। २. छाल। वल्कल। ३. साँप की केंचुली।

**त्वदीय**—सर्व० [ सं० ] तुम्हारा।

**त्वरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शीघ्रता। जल्दी।

**त्वरालेखन**—एक प्रकार के लेखन की क्रिया जिसमें अक्षरों के स्थान पर चिह्नों द्वारा शीघ्रता से लिखा जाता है।

**त्वरावान्**—वि० [ सं० त्वरावत् ] शीघ्रता करनेवाला। जल्दबाज।

**त्वरित**—वि० [ सं० ] तेज। क्रि० वि० शीघ्रता से।

**त्वरितगति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त। अमृतगति।

**त्वष्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० त्वष्टृ ] १. विष्णु का एक नाम। विश्वकर्मा। २. महादेव। शिव। ३. एक प्रजापति का नाम। ४. बढ़ई। ५. बारह आदित्यों में से ग्यारहवें आदित्य। ६. एक वैदिक देवता।

**त्वेष**—संज्ञा पुं० [ सं० त्वेषस् ] १. उत्साह। उमंग। २. मन का आवेग। आवेश।

६२

—:*:—

# थ

**थ**—हिंदी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और त-वर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।

**थंडिल***—संज्ञा पुं० [ सं० स्थंडिल ] यज्ञ की वेदी।

**थंब, थंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तंभ ] [ स्त्री० थंबी ] १. खभा। स्तंभ। २. सहारा। टेक।

**थंभन**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तंभन ] १. रुकावट। ठहराव। २. दे० "स्तंभन"।

**थँभना**‡—क्रि० अ० दे० "थमना"।

**थंभित***—वि० [ सं० स्तंभित ] १. रुका या ठहरा हुआ। २. अचल। स्थिर। ३. भय या आश्चर्य से निश्चल। ठक।

**थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.रक्षण। २. मंगल। ३. भय। ४. पर्वत। ५. भक्षण। आहार।

**थक**—संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "थाक"।

**थकन**—संज्ञा स्त्री० दे० "थकान"।

**थकना**—क्रि० अ० [ सं० स्था+कृ ] १. परिश्रम करते करते हार जाना। शिथिल होना। क्लांत होना। २.ऊब जाना। हैरान हो जाना। ३. बुढ़ापे से अशक्त होना। ४. ढीला होना या रुक जाना। चलता न रहना। ५. मोहित होना। मुग्ध होना।

**थकान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थकना ] थकने का भाव। थकावट। शिथिलता।

**थकाना**—क्रि० स० [ हिं० थकना ] श्रांत या शिथिल करना। परिश्रम से अशक्त कराना।

**थका-माँदा**—वि० [ हिं० थकना+माँदा ] परिश्रम करते करते अशक्त। श्रांत। श्रमित।

**थकावट, थकाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थकना ] थकने का भाव। शिथिलता।

**थकित**—वि० [ हिं० थकना ] १. थका हुआ। श्रांत। शिथिल। २. मोहित। मुग्ध।

**थकौहाँ**—वि० [ हिं० थकना ] [ स्त्री० थकौहीं ] कुछ थका हुआ। थका-माँदा। शिथिल।

**थक्का**—संज्ञा पुं [ सं० स्था+क ] [ स्त्री० थक्की, थकिया ] गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। जमा हुआ कतरा।

**थगित**—वि० [ हिं० थकित ] १. ठहरा हुआ। रुका हुआ। शिथिल। ढीला। २. मंद।

**थति**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "थाती"।

**थन**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तन ] गाय, भैंस, बकरी इत्यादि चौपायों का स्तन। चौपायों की चूची।

**थनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्तन ] स्तन के आकार की दो थैलियाँ जो बकरियों के गले के नीचे लटकती हैं। गल-थना।

**थनेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० थन+एला (प्रत्य०) ] एक प्रकार का फोड़ा जो स्त्रियों के स्तन पर होता है।

**थनैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० थान ] १ गाँव का मुखिया। २. वह आदमी जो जमीदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करे।

**थपक**—संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।

**थपकना**—क्रि० स० [ अनु० थप थप ] १. प्यार से या आराम पहुँचाने के लिए किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना। २. धीरे धीरे ठोंकना। ३. पुचकारना या दमदिलासा देना।

**थपका***—संज्ञा पुं० दे० "थक्का"।

**थपकाना**—क्रि० स० [हिं० थपकना] १. थपकने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "थपकना"।

**थपकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थपकना ] १. किसी के शरीर पर (प्यार से आराम पहुँचाने के लिए) हथेली से धीरे धीरे पहुँचाया हुआ आघात। २. हाथ से धीरे धीरे ठोंकने की क्रिया।

**थपथपी**—संज्ञा स्त्री० दे० "थपकी"।

**थपन***—संज्ञा पुं० [ सं० स्थापन ] ठहराने या जमाने का काम। स्थापन।

**थपना***—क्रि० स० [ सं० स्थापन ] स्थापित करना। बैठाना। जमाना। क्रि० अ० स्थापित होना। जमना।

**थपेड़ना**—क्रि० स० [ हिं० थपेड़ा ] थपेड़ा लगाना।

**थपेड़ा**—संज्ञा पुं० [ अनु० थप थप ] १ थप्पड़। २. आघात। धक्का। टक्कर।

**थपोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० थप ] दोनों हथेलियों को टकराकर शब्द उत्पन्न करना। कर-तल-ध्वनि। ताली।

**थप्पड़**—संज्ञा पुं० [अनु० थप थप ] १. हथेली से किया हुआ आघात। तमाचा। झापड़। २ आघात। धक्का।

**थम***—संज्ञा पुं० दे० "स्तंभ"।

**थमकारी***—वि० [ सं० स्तंभन ] स्तंभन करनेवाला। रोकनेवाला।

**थमना**—क्रि० अ० [ सं० स्तंभन ] १. चलता न रहना। रुकना। ठहरना। २. जारी न रहना। बंद हो जाना। ३ धीरज धरना। सब्र करना। ठहरा रहना।

**थर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्तर ] तह। परत। संज्ञा पुं० [ सं० स्थल ] १. दे० "थल"। २. बाघ की माँद।

**थरकना**†*—क्रि० अ० [ अनु० थर थर ] डर से काँपना। थर्राना।

**थरकौहाँ**—वि० [ हिं० थरकना ] काँपता या हिलता हुआ।

**थरथर**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] डर से काँपने की मुद्रा। क्रि० वि० काँपने की पूरी मुद्रा से।

**थरथराना**—क्रि० अ० [ अनु० थर-थर ] १. डर के मारे काँपना। २. काँपना।

**थरथराहट, थरथरी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० थर थर ] कँपकपी।

**थरसना**†*—संज्ञा पुं० [हिं० त्रसना] त्रस्त होना। भयभीत होना।

**थरमामीटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] शरीर का ताप नापने का यंत्र। तापमापक यंत्र।

**थरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थली ] १ शेरों आदि की माँद। २. गुफा।

**थरु***—संज्ञा पुं० [ सं० स्थल ] जगह।

**थर्राना**—क्रि० अ० [ अनु० थर थर] डर के मारे काँपना। दहलना।

**थल**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थल ] १ स्थान। जगह। ठिकाना। २. वह जमीन जिस पर पानी न हो। सूखी धरती। जल का उलटा। ३ थल का मार्ग। ४ वह स्थान जहाँ बहुत-सी रेत पड़ गई हो। भूड़। थली। रेगिस्तान। ५ बाघ की माँद। चुर।

**थलकना**—क्रि० अ० [ सं० स्थूल ] १. झोल पड़ने के कारण ऊपर-नीचे हिलना। २ मोटाई के कारण शरीर के मांस का हिलना-डोलने में हिलना।

**थलचर**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थलचर] पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।

**थलज**—संज्ञा पुं० [ हिं० थल ] गुलाब।

**थलथल**—वि० [ सं० स्थूल ] मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।

**थलथलाना**—क्रि० अ० [हिं० थूला] मोटाई के कारण शरीर के मांस का झूलकर हिलना।

**थलपति**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थल+

पति ] राजा।

**थलरुह***— वि० [ सं० स्थलरुह ] धरती पर उत्पन्न होनेवाले जंतु, वृक्ष आदि।

**थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थली ] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का थल। ३. ठहरने या बैठने की जगह। बैठक। ४. बालू का मैदान।

**थवई**—संज्ञा पुं० [सं० स्थपति] मकान बनानेवाला कारीगर। राज।

**थसरना***—क्रि० अ० [ ? ] शिथिल होना।

**थहना***—क्रि० स० [ हिं० थाह ] थाह लेना।

**थहराना***—क्रि० अ० [ अनु० थर थर ] काँपना।

**थहाना**—क्रि० स० [ हिं० थाह ] १. गहराई का पता लगाना। थाह लेना। २. किसी की विद्या, बुद्धि या भीतरी अभिप्राय आदि का पता लगाना।

**थांग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थान ] १. चोरों या डाकुओं का गुप्त स्थान। २. खोज। पता। सुराग।

**थाँगी**—संज्ञा पुं० [ हिं० थाँग ] १. चोरी का माल माल लेने या अपने पास रखनेवाला आदमी। २. चोरों को चोरी के लिए ठिकाने आदि का पता देनेवाला मनुष्य। ३. जासूस। ४. चोरों के गोल का सरदार।

**थाँवला**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थल ] वह घेरा या गड्ढा जिसमें कोई पौधा लगा हो। थाला। आल-बाल।

**था**—क्रि० अ० [ सं० स्था ] 'है' शब्द का भूतकालिक रूप। रहा।

**थाक**—संज्ञा पुं० [ सं० स्था ] १. गाँव की सीमा। २. ढेर। समूह। राशि।

**थाकना***—क्रि० अ० दे० "थकना"।

**थात***—वि० [ सं० स्थाता ] जो बैठा या ठहरा हो। स्थित।

**थाति**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थात ] १. स्थिरता। ठहराव। टिकान। रहन। २. दे० "थाती"।

**थाती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थात ] १. समय पर काम आने के लिए रखी हुई वस्तु। २. जमा। पूँजी। गथ। ३. धरोहर। अमानत।

**थान**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थान ] १. जगह। ठौर। ठिकाना। २. डेरा। निवासस्थान। ३. किसी देवी या देवता का स्थान। ४. वह स्थान जहाँ घोड़े या चौपाये बाँधे जायँ। ५. कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लंबाई बँधी हुई होती है। ६. संख्या। अदद।

**थाना**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थान ] १. टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. वह स्थान जहाँ अपराधों की सूचना दी जाती है और कुछ सरकारी सिपाही रहते हैं। पुलिस की बड़ी चौकी।

**थानुसुत***—संज्ञा पुं० [ सं० स्थाणु+सुत ] गणेशजी।

**थानेदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० थाना + फ़ा० दार] थाने का प्रधान अफ़सर।

**थानैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० थान+ऐत (प्रत्य०) ] १. किसी चौकी या अड्डे का मालिक। २. किसी स्थान का देवता। ग्राम-देवता।

**थाप**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थापन ] १. तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात। थपकी। ठोंक। २. थप्पड़। तमाचा। ३. निशान। छाप। ४. स्थिति। जमाव। ५. प्रतिष्ठा। मर्य्यादा। धाक। ६. मान। कदर। प्रमाण। ७. पंचायत। ८. शपथ। सौगंध। कसम।

**थापन**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थापन ] १. स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया। २. किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना। रखना।

**थापना**—क्रि० स० [ सं० स्थापन ] १. स्थापित करना। जमाना। बैठाना। २. किसी गीली सामग्री को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थापना ] १. स्थापन। प्रतिष्ठा। २. नवरात्र में दुर्गा-पूजा के लिए घट-स्थापना।

**थापर***—संज्ञा पुं० दे० "थप्पड़"।

**थापा**—संज्ञा पुं० [ हिं० थाप ] १. पंजे का छाप। २. खलियान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी या गोबर से डाला हुआ चिह्न। चौकी। ३. वह साँचा जिसमें रंग आदि पोतकर कोई चिह्न अंकित किया जाय। छापा। ४. ढेर। राशि।

**थापी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थापना ] वह चिपटी मुंगरी जिससे राज या कारीगर गच पीटते हैं।

**थाम**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तंभ ] १. खंभा। स्तंभ। २. मस्तूल।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० थामना ] थामने की क्रिया या ढंग। पकड़। रोक।

**थामना**—क्रि० स० [ सं० स्तंभन ] १. किसी चलती हुई वस्तु को रोकना। गति या वेग अवरुद्ध करना। २. गिरने, पड़ने या लुढ़कने आदि न देना। ३. ग्रहण करना। हाथ में लेना। पकड़ना। ४. सहारा देना। मदद देना। सँभालना। ५. अपने ऊपर कार्य्य का भार लेना।

**थायी***—वि० दे० "स्थायी"।

**थारो***—वि० तुम्हारा ।

**थाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० थाली ] बड़ी थाली ।

**थाला**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थल, हिं० थल ] वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है । थाँवला । आलबाल ।

**थाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थाली ] वह बड़ा छिछला बरतन जिसमें खाने के लिए भोजन रखा जाता है । बड़ी तश्तरी ।

**मुहा०**—थाली का बैंगन=लाभ और हानि देख कभी इस पक्ष में कभी उस पक्ष में होनेवाला ।

**थावर***—वि० दे० "स्थावर" ।

**थावस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थेयस ] स्थिरता । धीरज ।

**थाह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थान ] १. धरती का वह तल जिस पर पानी हो । गहराई का अन्त या हद । २. कम गहरा पानी जिसकी थाह मिल सके । ३. गहराई का पता । गहराई का अंदाज । ४. अंत । पार । सीमा । हद । ५. कोई वस्तु कितनी या कहाँ तक है, इसका पता लेना ।

**थाहना**—क्रि० स० [ हिं० थाह ] थाह लेना । अंदाज लेना । पता लगाना ।

**थाहरा***—वि० [ हिं० थाह ] जिसमें जल गहरा न हो । छिछला ।

**थिएटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. रंगभूमि । २. नाटक । अभिनय ।

**थिगली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० टिकली] वह टुकड़ा जो किसी फटे हुए कपड़े आदि का छेद बंद करने के लिए लगाया जाय । चकती । पैबंद ।

**मुहा०**—बादल में थिगली लगाना= अत्यंत कठिन काम करना ।

**थित***—वि० [ सं० स्थित ] १. ठहरा हुआ । २ स्थापित । रखा हुआ

**थिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थिति ] १. ठहराव । स्थायित्व । २. ठहरने का स्थान । ३. रहाइश । रहन । ४ बने रहने का भाव । रक्षा । ५. अवस्था । दशा ।

**थियासोफी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. ब्रह्मविद्या । २. सब धर्मों का समन्वय करनेवाला एक संप्रदाय ।

**थिर**—वि० [ सं० स्थिर ] १. स्थिर । ठहरा हुआ । अचल । २. शांत । धीर । ३. स्थायी । दृढ़ । टिकाऊ ।

**थिरक**—संज्ञा पुं० [ हिं० थिरकना ] नृत्य में चरणों की चंचल गति ।

**थिरकना**—क्रि० अ० [ सं० अस्थिर + करण ] १ नाचने में पैरों का क्षण क्षण पर उठाना और रखना । २. अंग मटकाकर नाचना ।

**थिरकौहाँ**—वि० [ हिं० थिरकना ] थिरकनेवाला ।

**थिरजीह***—संज्ञा पुं० [ सं० स्थिर-जिह्व ] मछली ।

**थिरता,थिरताई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थिरता ] १. ठहराव । अचलत्व । २. स्थायित्व । ३. शांति । धीरता ।

**थिर-थानी**—वि० [ सं० स्थिर+स्थान] एक जगह जमकर रहनेवाला ।

**थिरना**—क्रि० अ० [ सं० स्थिर ] १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना बंद होना । २.जल के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना । ३. मैल आदि के नीचे बैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना । नियरना ।

**थिरा***—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थिरा ] पृथ्वी ।

**थिराना**—क्रि० स० [ हिं० थिरना ] १. क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना । २. जल को स्थिर करके उसमें घुली हुई वस्तु को नीचे बैठने देना । ३. किसी वस्तु को जल में घोलकर और उसकी मैल आदि को नीचे बैठाकर साफ करना । निथारना ।

†क्रि० अ० दे० "थिरना" ।

**थीता***—संज्ञा पुं० [ सं० स्थित ] १. स्थिरता । शांति । २. कल । चैन ।

**थीर***—वि० दे० "थिर" ।

**थुकाना**—क्रि० स० [ हिं० थूकना का (प्रे०) ] १. थूकने की क्रिया दूसरे से कराना । २. मुँह में ली हुई वस्तु को गिरवाना । उगलवाना । ३. थुड़ी थुड़ी कराना । निंदा कराना ।

**थुक्का फजीहत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थूक+अ० फजीहत ] १. निंदा और तिरस्कार । थुड़ी थुड़ी । २ लड़ाई-झगड़ा ।

**थुड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० थू थू ] घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द । धिक्कार । लानत ।

**मुहा०**—थुड़ी थुड़ी करना=धिक्कारना ।

**थुथकार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थूक ] थूकने की क्रिया, भाव या शब्द ।

**थुथकारना**—क्रि० स० [ हिं० थुथकार ] थुड़ी थुड़ी करना । परम घृणा प्रकट करना ।

**थुनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "थूनी" ।

**थुरहथा**—वि० [हिं० थोड़ा + हाथ ] [ स्त्री० थुरहथी ] १. जिसके हाथ छोटे हों । जिसकी हथेली में कम चीज आवे । २. किफायत करनेवाला ।

**थुलमा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बढ़िया पहाड़ी कम्बल ।

**थू**—अव्य० [ अनु० ] १. थूकने का शब्द । २. घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द । धिक् । छिः ।

**मुहा०**—थू थू करना=धिक्कारना ।

**थूक**—संज्ञा पुं० [ अनु० थू थू ] वह गाढ़ा और कुछ कुछ लसीला रस जो मुँह के भीतर जीभ तथा मांस की झिल्लियों से छूटता है । ष्ठीवन । खखार । लार ।

**मुहा०**—थूकों सत्तू सानना=बहुत थोड़ी सामग्री लगाकर बड़ा कार्य्य पूरा करने चलना ।

**थूकना**—क्रि० अ० [ हिं० थूक ] मुँह से थूक निकालना या फेंकना ।

**मुहा०**—किसी ( व्यक्ति या वस्तु ) पर न थूकना=अत्यंत तुच्छ समझ कर ध्यान तक न देना । थूककर चाटना=१. कहकर मुकर जाना । २. किसी दी हुई वस्तु को लौटा लेना ।

क्रि० स० १. मुँह में ली हुई वस्तु को गिराना । उगलना ।

**मुहा०**—थूक देना=तिरस्कार कर देना ।

२. बुरा कहना । धिक्कारना । निंदा करना ।

**थूथन**—संज्ञा पुं० [ देश० ] लंबा निकला हुआ मुँह । जैसे, सूअर या ऊँट का ।

**थून**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थूणा ] थूनी । चाँड़ ।

**थूनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्थूणा ] १. खंभा । स्तंभ । थम । २. वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिए नीचे से लगाया जाय । चाँड़ ।

**थूरना**†—क्रि० स० [ सं० थूर्वण ] १. कूटना । दलित करना । २. मारना । पीटना । ३. ठूँसना । कसकर भरना ।

**थूल***—वि० [ सं० स्थूल ] १. मोटा । भारी । २. भद्दा ।

**थूला**—वि० [ सं० स्थूल ] [ स्त्री० थूली ] मोटा । मोटा-ताजा ।

**थूवा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तूप ] १. ढूह । २. पिंडा । लौंदा । ३. सीमा-सूचक स्तूप ।

**थूहर**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थूण ] एक छोटा पेड़ जिसमें गाँठों पर से डंडे के आकार के डंठल निकलते हैं । इसका दूध विषैला होता है और औषध के काम में आता है । सेंहुड़ ।

**थेई थेई**—वि० [ अनु० ] थिरक थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल ।

**थेगली**—संज्ञा स्त्री० दे० "थिगली" ।

**थेथर**—वि० [देश०] १. लस्त-पस्त । थका हुआ । २. परेशान ।

**थेथरई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थेथर ] निर्लज्जता और उद्दंडता से भरी बात ।

**थैला**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थल ] [ स्त्री० अल्पा० थैली ] १. कपड़े आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर बंद कर सकें । बड़ा बटुआ । बड़ा कीसा । २. रुपयों से भरा हुआ थैला । तोड़ा ।

**थैली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थैला ] १. छोटा थैला । कोश । कीसा । बटुआ । २. रुपयों से भरी हुई थैली । तोड़ा ।

**मुहा०**—थैली खोलना=थैली में से निकालकर रुपया देना ।

**थोक**—संज्ञा पुं० [ सं० स्तोमक ] १. ढेर । राशि । २. समूह । झुंड ।

**मुहा०**—थोक करना=इकट्ठा करना । जमा करना ।

३ इकट्ठा बेचने की चीज । खुदरा का उलटा । ४. इकट्ठी वस्तु । कुल ।

**थोड़ा**—वि० [ सं० स्तोक ] [ स्त्री० थोड़ी ] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो । न्यून । अल्प । कम । जरा सा ।

**यौ०**—थोड़ा-बहुत=कुछ कुछ । किसी कदर ।

क्रि० वि० अल्प परिमाण या मात्रा में । जरा । तनिक ।

**मुहा०**—थोड़ा ही=नहीं । बिलकुल नहीं ।

**थोथरा**—वि० दे० "थोथा" ।

**थोथा**—वि० [ देश० ] [ स्त्री० थोथी ] १. जिसके भीतर कुछ सार न हो । खोखला । खाली । पोला । २ जिसकी धार तेज न हो । कुंठित । गुठला । ३. व्यर्थ का । निकम्मा ।

**थोपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० थोपना ] चपत । धौल ।

**थोपना**—क्रि० स० [ सं० स्थापन ] १. किसी गीली वस्तु का लौंदा यों ही ऊपर डाल देना या जमा देना । छोपना । २. मोटा लेप चढ़ाना । ३. मत्थे मढ़ना । लगाना । ४. आक्रमण आदि से रक्षा करना । बचाना । ५. दे० "छोपना" ।

**थोबड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] जानवरों का थूथन ।

**थोर, थोरा***†—वि० दे० "थोड़ा" ।

**थोरिक***†—वि० [ हिं० थोड़ा ] थोड़ा सा । तनिक सा ।

**थौंसना, थौंसजाना**—अधिक थक जाना ।

**थौंद***—संज्ञा स्त्री० दे० "तोंद" ।

**थ्यावस**†—संज्ञा पुं० [ सं० स्थैर्य ] १. स्थिरता । ठहराव । २. धीरता । धैर्य्य ।

**थ्यावस**—संज्ञा पुं० शिथिलता; थकान ।

# द

**द**—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन जो त-वर्ग का तीसरा वर्ण है। दंतमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है।

**दंग**—वि० [फ़ा०] विस्मित। चकित। आश्चर्यान्वित। स्तब्ध।
संज्ञा पु० १. घबराहट। भय। डर। २. दे० "दंगा"।

**दंगई**—वि० [हिं० दंगा] १. दंगा करनेवाला। उपद्रवी। झगड़ालू। २. प्रचंड। उग्र।

**दंगल**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पहलवानों की वह कुश्ती जो जोड़ बद कर हो और जिसमें जीतनेवाले को इनाम आदि मिले। २. अखाड़ा। मल्लयुद्ध का स्थान। ३. जमावड़ा। समूह। जमात। दल। ४. बहुत मोटा गद्दा या तोशक।
वि० बहुत बड़ा; भारी।

**दंगली**—वि० [फ़ा० दंगल] १. दंगल-संबंधी। २. बहुत बड़ा।

**दंगा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० दंगल] १. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। २. गुलगपाड़ा। हुल्लड़। शोर-गुल।

**दंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. डंडा। सोंटा। लाठी। स्मृतियों में आश्रम और वर्ण के अनुसार दंड धारण करने की व्यवस्था है। २. डंडे के आकार की कोई वस्तु। जैसे, भुजदंड, मेरुदंड। ३. एक प्रकार की कसरत जो हाथ-पैर के पंजों के बल औंधे होकर की जाती है। ४. भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ प्रणाम। दंडवत्। ५. किसी अपराध के प्रतिकार में अपराधी को पहुँचाई हुई पीड़ा या हानि। सजा। तदारुक। ६. अर्थदंड। जुरमाना। डाँड़।
मुहा०—दंड भरना=१. जुरमाना देना। २. दूसरे के नुकसान को पूरा करना। दंड भोगना या भुगतना=सजा अपने ऊपर लेना। दंड सहना=नुकसान उठाना। घाटा सहना।
७. दमन। शासन। वश। शमन। ८. ध्वजा या पताका का बाँस। ९. तराजू की डंडी। डाँड़ी। १०. किसी वस्तु (जैसे—करछी, चम्मच आदि) की डंडी। ११. लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। १२ (दंड देनेवाले) यम। १३. साठ पल का काल। २४ मिनट का समय। घड़ी।

**दंडक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. डंडा। २. दंड देनेवाला पुरुष। शासक। ३. वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक जिसमें गणों का बंधन या नियम होता है, और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है। ४. दंडकारण्य।

**दंडकला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मात्रिक छंद।

**दंडकारण्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था।

**दंडदास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दंड का रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो।

**दंडधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. शासनकर्त्ता। ३. सन्यासी।

**दंडधार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. राजा।

**दंडन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंडनीय, दंडित, दंड्य] दंड देने की क्रिया। शासन।

**दंडना**—क्रि० स० [सं० दंडन] दंड देना। शासित करना। सजा देना।

**दंडनायक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेनापति। २. दंड-विधान करनेवाला राजा या हाकिम।

**दंडनीति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की राजाओं की नीति।

**दंडनीय**—वि० [सं०] [स्त्री० दंडनीया] दंड पाने योग्य।

**दंडपाणि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २ भैरव की एक मूर्ति।

**दंडप्रणाम**—संज्ञा पु० [सं०] दंडवत्। सादर अभिवादन।

**दंडवत्**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।

**दंडविधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपराधों के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था।

**दंडायमान**—वि० [सं०] डंडे की तरह सीधा खड़ा। खड़ा।

**दंडालय**—संज्ञा पु० [सं०] १. न्यायालय। २. वह स्थान जहाँ दंड दिया जाय। ३. एक छंद। दंडकला।

**दंडिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीस अक्षरों की वर्णवृत्ति।

**दंडित**—वि० पुं० [सं०] जिसे दंड मिला हो। सजायाफ्ता।

**दंडी**—संज्ञा पुं० [सं० दंडिन्] १. दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २.

यमराज। ३. राजा। ४. द्वारपाल। ५. वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे। ६. जिनदेव। ७. शिव। महादेव। ८. संस्कृत के प्रसिद्ध कवि जिनके बनाये हुए दो ग्रंथ मिलते हैं—'दशकुमारचरित' और 'काव्यादर्श'।

**दंड्य**—वि० [सं०] दंड पाने योग्य।

**दंत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाँत। २. ३२ की संख्या।

**दंतकथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों, और जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो। सुनी-सुनाई परंपरागत बात।

**दंतच्छद**—संज्ञा पुं० [सं०] ओष्ठ। ओंठ।

**दंतधावन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दाँत धोने या साफ करने का काम। दातुन करने की क्रिया। २ दतौन। दातुन।

**दंतबीज**—संज्ञा पुं० [सं०] अनार।

**दंतमूलीय**—वि० [सं०] दंतमूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)। जैसे तवर्ग।

**दँतार**†—वि० [हिं० दाँत] बड़े दाँतोंवाला।

**दँतिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत+इया (प्रत्य०)] छोटे छोटे दाँत।

**दंती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडी की जाति का एक पेड़। यह दो प्रकार की होती है—लघुदंती और बृहद्दंती।

**दँतुरिया**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "दँतिया"।

**दँतुला**—वि० [सं० दंतुल] [स्त्री० दँतुली] बड़े बड़े दाँतोंवाला।

**दंतोष्ठ्य**—वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत और ओंठ से हो। ऐसा वर्ण "व" है।

**दंत्य**—वि० [सं०] १. दंत-संबंधी। २. (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे तवर्ग।

**दंद**—संज्ञा स्त्री० [सं० दहन] किसी स्थान से निकलती हुई गरमी।

संज्ञा पुं० [सं० द्वंद्व] १. लड़ाई-झगड़ा। उपद्रव। २. शोर-गुल।

**दंदन**—वि० [सं० द्वंद्व] [स्त्री० दंदनी] दमन करनेवाला।

**दंदाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [वि० दंदानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे आदि की। गर्म होना।

**दंदानेदार**—वि० [फ़ा०] जिसमें दाँत की तरह निकले हुए कँगूरों की पंक्ति हो।

**दंदी**—वि० [हिं० दंद] झगड़ालू। उपद्रवी।

**दंपति, दंपती**—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री-पुरुष का जोड़ा। पति-पत्नी का जोड़ा।

**दंपा***—संज्ञा स्त्री० [हिं० दमकना] बिजली।

**दंभ**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंभी] १. महत्त्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिए झूठा आडंबर। २. झूठी ठसक। अभिमान। घमंड।

**दंभान***—संज्ञा पुं० दे० "दंभ"।

**दंभी**—वि० [सं० दम्भिन्] [स्त्री० दंभिनी] १. पाखंडी। ढकोसलेबाज। २. अभिमानी। घमंडी।

**दंभोलि**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रास्त्र। वज्र।

**दँवरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दमन, हिं० दाँवना] अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिए उसे बैलों से रौंदवाने का काम।

**दँवारि***—संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।

**दंश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दंत-क्षत। २. दाँत काटने की क्रिया। दंशन। ३. दाँत। ४. विषैले जंतुओं का डंक। ५. डाँस नामक विषैली मक्खी।

**दंशक**—संज्ञा पुं० [सं०] दाँत से काटनेवाला।

**दंशन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दंशित, दंशी] १. दाँत से काटना। २. डसना। ३. वर्म। बकतर।

**दंशना***—क्रि० स० [सं० दंशन] १. दाँत से काटना। २. डसना।

**दंष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] दाँत।

**दंस***—संज्ञा पुं० दे० "दंश"।

**द**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पर्वत। पहाड़। २. दाँत। ३. दाता। (यौगिक में) जैसे, करद।

संज्ञा स्त्री० १. भार्य्या। स्त्री। २. रक्षा। ३. खंडन।

**दइत**—संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।

**दई**—संज्ञा पुं० [सं० दैव] १ ईश्वर। विधाता।

**मुहा०**—दई का घाला=ईश्वर का मारा हुआ। अभागा। कमबख्त। दई दई=हे दैव, हे दैव! (रक्षा के लिए ईश्वर की पुकार।)

२. दैव-संयोग। अदृष्ट। प्रारब्ध।

**दईमारा**—वि० [हिं० दई+मारना] [स्त्री० दईमारी] जिसपर ईश्वर का कोप हो। अभागा। कमबख्त।

**दकन**—संज्ञा पुं० [सं० दक्षिण] दक्षिणी भारत।

**दकनी**—संज्ञा पुं० [हिं० दकन] दक्षिणी भारत का निवासी।

वि० दक्षिण भारत का।

संज्ञा स्त्री० १. दक्षिण भारत की भाषा। २. उर्दू भाषा का पुराना नाम।

**दकियानूसी**—वि० [ अ० ] बहुत पुराना।

**दकीका**—संज्ञा पुं० [अ०] १. कोई बारीक बात। २. युक्ति। उपाय।

**मुहा०**—कोई दकीका बाकी न रखना =कोई उपाय बाकी न रखना। सब उपाय कर चुकना।

**दक्खिन**—संज्ञा पुं० [ सं० दक्षिण ] [ वि० दक्खिनी ] १. वह दिशा जो सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दहिने हाथ की ओर पड़ती है। उत्तर के सामने की दिशा। २. भारत का वह भाग जो दक्षिण में है।

**दक्खिनी**—वि० [ हिं० दक्खिन ] १. दक्खिन का। २. जो दक्षिण के देश का हो।

संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी।

**दक्ष**—वि० [ सं० ] १. निपुण। कुशल। चतुर। होशियार। २. दाक्षण। दाहिना।

संज्ञा पुं० १. एक प्रजापति का नाम जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं। पुराणानुसार शिव की पत्नी सती इन्हीं की कन्या थीं। २. अत्रि ऋषि। ३. महेश्वर।

**दक्षकन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सती, जो शिव की पत्नी थीं।

**दक्षता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निपुणता। योग्यता। कमाल।

**दक्षिण**—वि० [ सं० ] १. बायाँ का उलटा। दाहिना। अपसव्य। २. इस प्रकार प्रवृत्त जिससे किसी का कार्य सिद्ध हो। अनुकूल। ३. उस ओर का जिधर सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिना हाथ पड़े। ४. निपुण। दक्ष। चतुर।

संज्ञा पुं० १. उत्तर के सामने की दिशा। २. वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो। ३. प्रदक्षिणा। ४. तंत्रोक्त एक आचार या मार्ग।

**दक्षिणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दक्षिण दिशा। २. वह दान जो किसी शुभ कार्य्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय। ३. पुरस्कार। भेंट। ४ वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से संबंध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो।

**दक्षिणापथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिए रास्ते जाते हैं।

**दक्षिणायन**—वि० [ सं० ] भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर। जैसे, दक्षिणायन सूर्य।

संज्ञा पुं० १. सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। २. २१ जून से २२ दिसंबर तक वह छः महीने का समय जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है।

**दक्षिणावर्त्त**—वि० [ सं० ] जो दाहिना ओर को घूमा हुआ हो।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का शंख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है।

वि० दक्षिण देश का।

**दक्षिणीय**—वि० [ सं० ] १. दक्षिण का। २. जो दक्षिणा का पात्र हो।

**दखमा**—संज्ञा पुं० [ ? ] वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

**दखल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. अधिकार। कब्जा। २. हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३. पहुँच। प्रवेश।

**दखल दिहानी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० + फ़ा० ] अदालत से दखल दिलाने की क्रिया।

**दखिन**—संज्ञा पुं० दे० "दक्षिण"।

**दखिनहा**†—वि० [ हिं० दक्खिन + हा (प्रत्य०) ] दक्षिण का। दक्षिणी।

**दखील**—वि० [ अ० ] जिसका दखल या कब्जा हो। अधिकार रखनेवाला।

**दखीलकार**—संज्ञा पुं० [अ० दखील + फ़ा० कार ] [भाव० दखीलकारी] वह असामी जिसने किसी जमींदार के खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रखा हो।

**दगड़**—संज्ञा पुं० [ ? ] लड़ाई में बजाया जानेवाला बड़ा ढोल।

**दगदगा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. डर। भय। २. संदेह। ३. एक प्रकार की कंडील।

**दगदगाना**—क्रि० अ० [ हिं० दगना ] दमदमाना। चमकना।

क्रि० स० चमकाना। चमक उत्पन्न करना।

**दगदगी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।

**दगध**†—संज्ञा पुं० दे० "दाह"।

वि० दे० "दग्ध"।

**दगधना***—क्रि० अ० [ सं० दग्ध ] जलना।

क्रि० स० १. जलाना। २. दुःख देना।

**दगना**—क्रि० अ० [ सं० दग्ध + ना (प्रत्य०) ] १. (बंदूक या तोप आदि का) छूटना। चलना। २. जलना। झुलस जाना। ३. दागा जाना। दागना का अकर्मक। ४. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना।

क्रि० स० दे० "दागना"।

**दगर, दगरा**†—संज्ञा पुं० [ ? ] १. देर। विलंब। २. डगर। रास्ता।

**दगल**—संज्ञा पुं० दे० "दगला"।

**दगला**—संज्ञा पुं० [?] मोटे वस्त्र का बना हुआ या रूईदार अँगरखा। भारी लबादा।

**दगवाना**—क्रि० स० [हिं० दागना का प्रे०] दागने का काम दूसरे से कराना।

**दगहा**—वि० [हिं० दाग] जिसमें दाग हो।
वि० [हिं० दाह = प्रेतकर्म + हा (प्रत्य०)] जिसने प्रेत-क्रिया की हो। दाह-कर्म करनेवाला।
वि० [हिं० दगना + हा (प्रत्य०)] जो दागा हुआ हो। दग्ध किया हुआ।

**दगा**—संज्ञा स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा।

**दगादार**—वि० दे० "दगाबाज"।

**दगाबाज**—वि० [फ़ा०] धोखा देने वाला। छली। कपटी।

**दगाबाजी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] छल। कपट।

**दगैल**—वि० [अ० दाग़ + ऐल (प्रत्य०)] १. दागदार। जिसमें दाग हो। २. जिसमें कुछ खोट या दोष हो।
संज्ञा पुं० [अ० दगा] दगाबाज। छली।

**दग्ध**—वि० [सं०] १. जला या जलाया हुआ। २. दुःखित। जिसे कष्ट पहुँचा हो।

**दग्धा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पश्चिम दिशा। २. कुछ विशिष्ट राशियों से युक्त कुछ विशिष्ट तिथियाँ (अशुभ)।

**दग्धाक्षर**—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर जिनका छंद के आरंभ में रखना वर्जित है।

**दग्धित***—वि० दे० "दग्ध"।

**दचक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दचकना] दचकने की क्रिया या भाव।

**दचकना**—क्रि० अ० [अनु०] [संज्ञा दचका] १. ठोकर या धक्का खाना। २. दब जाना। ३. झटका खाना।
क्रि० स० १. ठोकर या धक्का लगाना। २. दबाना। ३. झटका देना।

**दचका**—संज्ञा पुं० दे० "दचक"।

**दचना**—क्रि० अ० [अनु०] गिरना।

**दच्छ**—संज्ञा पुं० दे० "दक्ष"।

**दच्छकुमारी***—संज्ञा स्त्री० [सं० दक्ष + कुमारी] दक्ष प्रजापति की कन्या, सती।

**दच्छना**—संज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।

**दच्छसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं० दक्ष + सुता] दक्ष की कन्या, सती।

**दच्छिन**—वि० दे० "दक्षिण"।

**दड़ना***—क्रि० अ० [सं० दहन] जलना।

**दढ़ियल**—वि० [हिं० दाढ़ी + इयल (प्रत्य०)] दाढ़ीवाला। जो दाढ़ी रखे हो।

**दतवन**—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुअन"।

**दतिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत का अल्पा० स्त्री०] दाँत का स्त्रीलिंग और अल्पार्थक रूप। छोटा दाँत।

**दतुअन, दतुवन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाँत + अवन (प्रत्य०)] १. नीम या बबूल आदि की छोटी टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं। दातुन। २. दाँत साफ करने और मुँह धोने की क्रिया।

**दतौन**—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

**दत्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दत्तात्रेय। २. जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। ३. दान। ४. दत्तक।
**यौ०**—दत्तविधान=दत्तक पुत्र लेना।
वि० दिया हुआ।

**दत्तक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो वास्तव में पुत्र न हो, पर शास्त्र-विधि से बनकर पुत्र मान लिया गया हो। गोद लिया हुआ लड़का। मुतबन्ना।

**दत्तचित्त**—वि० [सं०] जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो।

**दत्तात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० दत्तात्मन्] वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।

**दत्तात्रेय**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि जो पुराणानुसार विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने जाते हैं।

**दत्तोपनिषद्**—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

**ददा**—संज्ञा पुं० दे० "दादा"।

**ददिऔरा**†—संज्ञा पुं० दे० "ददिहाल"।

**ददिया ससुर**—संज्ञा पुं० [हिं० दादा + ससुर] [स्त्री० ददिया सास] पत्नी या पति का दादा। श्वशुर का पिता।

**ददिहाल**—संज्ञा पुं० [हिं० दादा + आलय] १. दादा का कुल। २. दादा का घर।

**ददोरा**—संज्ञा पुं० [हिं० दाद] मच्छड़, बर्रे आदि के काटने या खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर होनेवाली चकत्ती की तरह थोड़ी सी सूजन। चकत्ता।

**दद्रु**—संज्ञा पुं० [सं०] दाद रोग।

**दध**†*—संज्ञा पुं० दे० "दधि"।

**दधसार***—संज्ञा पुं० दे० "दधिसार"।

**दधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जमाया हुआ दूध। दही। २. वस्त्र। कपड़ा।

संज्ञा पुं० [ सं० उदधि ] समुद्र। सागर।

**दधिकाँदो**—संज्ञा पुं० [ सं० दधि + हिं० काँदो=कीचड़ ] जन्माष्टमी के समय होनेवाला एक प्रकार का उत्सव जिसमें लोग हलदी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेंकते हैं।

**दधिजात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मक्खन।

संज्ञा पुं० [ सं० उदधि + जात ] चंद्रमा।

**दधिसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० उदधि-सुत ] १. कमल। २. मुक्ता। मोती। ३. चंद्रमा। ४. जालंधर दैत्य। ५. विष। जहर।

संज्ञा पुं० [ सं० ] मक्खन। नवनीत।

**दधिसुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० उदधि-सुता ] सीप।

**दधीचि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वैदिक ऋषि जो यास्क के मत से अथर्व के पुत्र थे और इसी लिए दधीचि कहलाते थे। एक बार वृत्रासुर के उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिए दधीचि से उनकी हड्डियाँ माँगी। दधीचि ने इसके लिए अपने प्राण त्याग दिए। तभी से ये बड़े भारी दानी प्रसिद्ध हैं।

**दनदनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. दनदन शब्द करना। २. आनंद करना।

**दनादन**—क्रि० वि० [ अनु० ] दनदन शब्द के साथ।

**दनु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी। इसके चालीस पुत्र हुए थे जो सब दानव कहलाते हैं।

**दनुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० दनुजता, दनुजत्व ] असुर। राक्षस।

**दनुजदलनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा।

**दनुजराय**—संज्ञा पुं० [ सं० दनुज + हिं० राय ] दानवों का राजा हिरण्यकशिपु।

**दनुजेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण।

**दन्न**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] "दन्न" शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।

**दपटना**—क्रि० अ० [ हिं० डाँटना के साथ अनु० ] [ संज्ञा दपट ] डाँटना। घुड़कना।

**दपु**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्प ] दर्प। शेखी।

**दपेट**—संज्ञा स्त्री० दे० "दपट"।

**दफतर**—संज्ञा पुं० दे० "दफ्तर"।

**दफती**—संज्ञा स्त्री० [ अ० दफ्तीन ] कागज के कई तख्तों को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता। कुट। नसली।

**दफन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] किसी चीज को विशेषतः मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया।

**दफनाना**—क्रि० स० [ अ० दफ़न + आना ] जमीन में दबाना। गाड़ना।

**दफा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० दफ़अः ] १ बार। बेर। २. किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो। धारा।

**मुहा०**—दफा लगाना=अभियुक्त पर किसी दफा के नियम को घटाना।

वि० [ अ० दफ़अ ] दूर किया हुआ। हटाया हुआ। तिरस्कृत।

**दफादार**—संज्ञा पुं० [ अ० दफ़अः= समूह + फ़ा० दार ] फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

**दफीना**—संज्ञा पुं० [ अ० ] गड़ा हुआ धन या खजाना।

**दफ्तर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह स्थान जहाँ किसी कारखाने आदि के संबंध की कुल लिखा-पढ़ी और लेन-देन आदि हो। आफिस। कार्यालय। २. लंबी चौड़ी चिट्ठी। ३. सविस्तर वृत्तांत। चिट्ठा।

**दफ्तरी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह कर्मचारी जो दफ्तर के कागज आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खींचता हो। २. किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज। जिल्दबंद।

**दबंग**—वि० [ हिं० दबाव या दबाना ] प्रभावशाली। दबाववाला।

**दबक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दबकना ] १. दबने या छिपने की क्रिया या भाव। २. सिकुड़न।

**दबकगर**—संज्ञा पुं० [ हिं० दबक + गर ( प्रत्य० ) ] दबका ( तार ) बनानेवाला। दबकैया।

**दबकना**—क्रि० अ० [ हिं० दबाना ] १. भय के कारण छिपना। २. लुकना छिपना।

क्रि० स० धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना।

**दबका**—संज्ञा पुं० [ हिं० दबकना= तार आदि पीटना ] कामदानी का सुनहला तार।

**दबकाना**—क्रि० स० [ हिं० दबकना का स० रूप ] छिपाना। आड़ में करना।

**दबकैया**—संज्ञा पुं० दे० "दबकगर"।

**दबगर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. ढाल बनानेवाला। २. चमड़े के कुप्पे बनानेवाला।

**दबदबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] रोब-दाब।

**दबना**—क्रि० अ० [ सं० दमन ] १. भार के नीचे आना। बोझ के नीचे पड़ना। २. ऐसी अवस्था में होना जिसमें किसी ओर से बहुत जोर पड़े। ३. किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना। पीछे हटना। ४. दबाव में पड़कर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना। ५. किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जँचना। ६. किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना। ७. उभड़ न सकना। शांत रहना। ८. अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना। ९. ऐसे अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके। १०. धीमा पड़ना। मंद पड़ना।

**मुहा०**—दबी जबान से कहना=साफ साफ न कहना, बल्कि इस प्रकार कहना जिससे केवल कुछ ध्वनि व्यक्त हो। ११. संकोच करना। झेंपना।

**दबवाना**—क्रि० स० [ हिं० दबना का प्रे० ] दबाने का काम दूसरे से कराना।

**दबाना**—क्रि० स० [ सं० दमन ] [संज्ञा दाब, दबाव] १. ऊपर से भार रखना (जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँस जाय अथवा इधर-उधर हट न सके)। २. किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना। ३. पीछे हटाना। ४. जमीन के नीचे गाड़ना। दफन करना। ५. किसी पर इतना आतंक जमाना कि वह कुछ कह न सके। जोर डालकर विवश करना। ६. दूसरे को मंद या मात कर देना। ७. किसी बात को उठने या फैलने न देना। ८. दमन करना। शांत करना। ९ किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना। १०. झोंक के साथ बढ़कर किसी चीज को पकड़ लेना। ११. ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मनुष्य असहाय, दीन या विवश हो जाय।

**दबाव**—संज्ञा पुं० [हिं० दबाना ] १. दबाने की क्रिया। चाँप। २. दबाने का भाव। चाँप। ३. रोब।

**दबीज**—वि० [ फा० ] जिसका दल मोटा हो। गाढ़ा। संगीन।

**दबैल**—वि० [ हिं० दबाना+ऐल (प्रत्य०) ] १. जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २. जो बहुत दबता या डरता हो।

**दबोचना**—क्रि० स० [ हिं० दबाना ] १ किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना। धर दबाना। २. छिपाना।

**दबोरना***—क्रि० स० [ हिं० दबाना ] अपने सामने ठहरने न देना। दबाना।

**दमंकना***—क्रि० अ० दे० "दमकना"।

**दम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह दंड जो दमन करने के लिए दिया जाता है। सजा। २. इंद्रियों को वश में रखना और चित्त को बुरे कामों में प्रवृत्त न होने देना। ३. कीचड़। ४. घर। ५. पुराणानुसार मरुत राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इंद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ६. बुद्ध का एक नाम। ७. विष्णु। ८. दबाव। संज्ञा पुं० [ फा० ] १. साँस। श्वास।

**मुहा०**—दम अटकना या उखड़ना=साँस रुकना, विशेषतः मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना=१. चुप रह जाना। २. साँस ऊपर चढ़ाना। दम घुटना=हवा की कमी के कारण साँस रुकना। दम घोटकर मारना=१. गला दबाकर मारना। २. बहुत कष्ट देना। दम तोड़ना=अंतिम साँस लेना। दम फूलना= १. अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। २. दमे के रोग का दौरा होना। दम भरना= १. किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना। २. परिश्रम के कारण थक जाना। दम मारना=१. विश्राम करना। सुस्ताना। २. बोलना। कुछ कहना। चूँ करना। दम लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना= १. श्वास की गति को रोकना। २. चुप होना। मौन रहना।

२. नशे आदि के लिए साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया।

**मुहा०**—दम मारना या लगाना= गाँजे आदि को चिलम पर रखकर उसका धूआँ खींचना। ३. साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया। ४. उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल।

**मुहा०**—दम के दम=क्षण भर। थोड़ी देर। दम पर दम=बहुत थोड़ी थोड़ी देर पर।

५. प्राण। जान। जी।

**मुहा०**—दम खुश्क होना=दे० "दम सूखना"। दम नाक में या नाक में दम आना=बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना=मृत्यु होना। मरना। दम सूखना=बहुत डर के कारण साँस तक न लेना। प्राण सूखना।

६. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम देता है। जीवनी-शक्ति। ७. व्यक्तित्व।

मुहा०—(किसी का) दम गनीमत होना=(किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ अच्छी बातों का होता रहना।

८. खाद्य पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका मुँह बंद करके आग पर पकाने की क्रिया। ९. धोखा। छल। फरेब।

यौ०—दम-झाँसा=छल-कपट। दमदिलासा, दम-पट्टी या दमबुत्ता=वह बात जो केवल फुसलाने के लिए कही जाय। झूठी आशा।

मुहा०—दम देना=बहकाना। धोखा देना।

१०. तलवार या छुरी आदि की धार।

**दमक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० चमक का अनु० ] चमक। चमचमाहट। द्युति। आभा।

**दमकना**—क्रि० अ० [ हिं० चमकना का अनु० ] चमकना। चमचमाना।

**दमकल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दम+कल ] १. वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों, जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंके से फेंका जा सके। पंप। २. वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगी हुई आग बुझाई जाती है। पंप। ३. वह यंत्र जिसकी सहायता से कुएँ से पानी निकालते हैं। पंप। ४. दे० "दमकला"।

**दमकला**—संज्ञा पुं० [ हिं० दम+कल ] १. वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के द्वारा महफिलों में गुलाब-जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है। २. दे० "दमकल"।

**दमखम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. दृढ़ता। मजबूती। २. जीवनी-शक्ति। प्राण। ३. तलवार की धार और उसका झुकाव। ४. मूर्ति की सुन्दर और सुडौल गढ़न। ५. चित्र की वह गोलाई लिए लगातार चलनेवाली रेखाएँ जिनसे वह चित्र जानदार मालूम होता है।

**दम-चूल्हा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दम+चूल्हा ] एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

**दमड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्रविण=धन ] पैसे का आठवाँ भाग।

मुहा०—दमड़ी का पूत=बहुत ही तुच्छ। नगण्य। दमड़ी के तीन होना=बहुत सस्ता होना। कौड़ियों के मोल होना।

**दमदमा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह किलेबंदी जो लड़ाई के समय थैलों में बालू भरकर की जाती है। मोरचा। धुस।

**दमदार**—वि० [ फ़ा० ] १. जिसमें जीवनी-शक्ति यथेष्ट हो। २. दृढ़। मजबूत। ३ जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह सके। ४. जिसकी धार तेज हो। चोखा।

**दमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दबाने या रोकने की क्रिया। २. दंड। सजा। ३. इंद्रियों की चंचलता रोकना। निग्रह। दम। ४. विष्णु। ५. महादेव। शिव। ६. एक ऋषि का नाम। दमयंती इन्हीं के यहाँ उत्पन्न हुई थी। ७. एक राक्षस।

संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।

**दमनक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का छंद। २. दौना नामक पौधा।

**दमनशील**—वि० [ सं० ] जिसकी प्रकृति दमन करने की हो। दमन करनेवाला।

**दमनीय**—वि० [ सं० ] १. जो दमन किया जा सके। २. जो दबाया जा सके।

**दमबाज़**—वि० [ फ़ा० दम+बाज़ ] दम देनेवाला। फुसलानेवाला।

**दमयंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] राजा नल की स्त्री जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।

**दमा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती है और कफ बड़ी कठिनता से निकलता है। साँस।

**दमाद**—संज्ञा पुं० [ सं० जामातृ ] कन्या का पति। जवाई। जामाता।

**दमानक**—संज्ञा स्त्री० [देश०] तोपों की बाढ़।

**दमामा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नगाड़ा। डंका।

**दमारि***†—संज्ञा पुं० [सं० दावानल] जंगल की आग। वन की आग।

**दमावति**—संज्ञा स्त्री० दे० 'दमयंती'।

**दमैया***†—वि० [ हिं० दमन+ऐया (प्रत्य०) ] दमन करनेवाला।

**दयंत**‡—संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।

**दया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मन का दुःखपूर्ण वेग जो दूसरे के कष्ट को देखकर उत्पन्न होता और उस कष्ट को दूर करने की प्रेरणा करता है। करुणा। रहम। २. दक्ष-प्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी।

**दयादृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] करुणा या अनुग्रह का भाव। मेहरबानी की नजर।

**दयानत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] सत्य-निष्ठा। ईमान।

**दयानतदार**—वि० [ अ० दयानत+ फा० दार ] ईमानदार। सच्चा।

**दयाना***—क्रि० अ० [ हिं० दया+ना ( प्रत्य० )] दयालु होना। कृपालु होना।

**दयानिधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसमें बहुत अधिक दया हो। बहुत दयालु।

**दयानिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० दयानिधिता ] १. बहुत दयालु पुरुष। २ ईश्वर।

**दयापात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो दया के योग्य हो।

**दयापर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दयापरायण। दयालु।

**दयामय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दया से पूर्ण। दयालु। २. ईश्वर।

**दयार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] प्रांत। प्रदेश।

**दयार्द्र**—वि० [ सं० ] [ भाव० दयार्द्रता ] दया-पूर्ण। दयालु।

**दयाल**—वि० दे० "दयालु"।

**दयालु**—वि० [ सं० ] बहुत दया करनेवाला।

**दयालुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दयालु होने का भाव।

**दयावंत**—वि० दे० "दयालु"।

**दयावना***—वि० पुं० [ हिं० दया+ आवना ] [ स्त्री० दयावनी ] दया के योग्य। दीन।

**दयावान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दयावती ] जिसके चित्त में दया हो। दयालु।

**दयाशील**—वि० [ सं० ] दयालु।

**दयासागर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जिसके चित्त में बहुत दया हो।

**दयित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दयिता ] प्रिय। प्यारा।

**दर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शंख। २. गड्ढा। दरार। ३. गुफा। कंदरा। ४. फाड़ने की क्रिया। विदारण। ५. डर। भय।

संज्ञा पुं० [ सं० दल ] समूह। दल।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. द्वार। दरवाजा। २. मकान के अंदर का विभाग। ३. मकान की मंजिल। खंड।

**मुहा०**—दर दर मारा मारा फिरना= दुर्दशाग्रस्त होकर घूमना।

संज्ञा स्त्री० १. भाव। निर्ख। २. प्रमाण। ठाक-ठिकाना। ३. कदर। प्रतिष्ठा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० दारु ] ईख। ऊख।

**दरक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दरकना ] १. दरकने की क्रिया या भाव। २. दराज। दरज।

वि० [ सं० ] डरपोक। कायर।

**दरकना**—क्रि० अ० [ सं० दर= फाड़ना ] दाब पड़ने से फटना। चिरना।

**दरका**—संज्ञा पुं० [ हिं० दरकना ] १. शिगाफ। दरार। २. वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।

**दरकाना**—क्रि० स० [ हिं० दरकना ] फाड़ना।

क्रि० अ० फटना।

**दरकार**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आवश्यकता। जरूरत।

**दरकारी**—वि० [ फ़ा० ] आवश्यक। अपेक्षित। जरूरी।

**दर-किनार**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] अलग। अलहदा। एक ओर। दूर।

**दरकूच**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] बराबर यात्रा करता हुआ। मंजिल दर मंजिल।

**दरखत***†—संज्ञा पुं० दे० "दरख्त"।

**दरखास्त**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० दरख्वास्त ] १. किसी बात के लिए प्रार्थना। २. निवेदन। प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र।

**दरख्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पेड़। वृक्ष।

**दरगह**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] दरगाह।

**मुहा०**—किसी के दरगह पड़ना= किसी के पीछे पड़ना। किसी को लगातार बहुत तंग करना।

**दरगाह**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. चौखट। देहरी। २. दरबार। कचहरी। ३ किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान। मकबरा।

**दर-गुजर**—वि० [ फ़ा० ] १. अलग। वंचित। २. मुआफ। क्षमा-प्राप्त।

**दरज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दर= दरार ] शिगाफ। दराज। दरारा।

**दरजन**—संज्ञा पुं० दे० "दर्जन"।

**दरजा**—संज्ञा पुं० दे० "दर्जा"।

**दरजी**—संज्ञा पुं० दे० "दर्जी"।

**दरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दलने या पीसने की क्रिया। २. ध्वंस। विनाश।

**दरद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दर्द ] १. पीड़ा। व्यथा। २. दया। करुणा।

संज्ञा पुं० १. काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। २. एक म्लेच्छ जाति जिसका उल्लेख मनुस्मृति, हरिवंश आदि में है। ३. ईंगुर। शिंगरफ।

**दर दर**—क्रि० वि० [ फ़ा० दर ] द्वार द्वार। स्थान स्थान पर।

**दरदरा**—वि० [ सं० दरण=दलना ] [ स्त्री० दरदरी ] जिसके कण स्थूल हों। जिसके रवे महीन न हों, मोटे हों।

**दरदराना**—क्रि० स० [ सं० दरण ] इस प्रकार पीसना या रगड़ना कि मोटे मोटे रवे या टुकड़े हो जायँ। थोड़ा पीसना।

**दरदवंत, दरदवंद**—वि० [ फ़ा० दर्द+वंत (प्रत्य०) ] १. सहानुभूति रखनेवाला। कृपालु। दयालु। २. जिसको पीड़ा हो। पीड़ित। दुखी।

**दरद**—संज्ञा पुं० दे० "दरद" या "दर्द"।

**दरन***—वि०, संज्ञा पुं० दे० "दलन"।

**दरना**—क्रि स० [ सं० दरण ] १. दरदरा दलना। मोटा चूर्ण करना। २. नष्ट करना।

**दरप***†—संज्ञा पुं० दे० "दर्प"।

**दरपन***—संज्ञा पुं० दे० "दर्पण"।

**दरपना***—क्रि० अ० [ सं० दर्पण ] १. ताव में आना। क्रोध करना। २. घमंड करना।

**दरपनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दरपन ] मुँह देखने का छोटा शीशा।

**दरपेश**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] आगे। सामने।

**दरबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. अलग-अलग दर या विभाग बनाना। २. चीजों की दर या भाव निश्चित करना।

**दरब**—संज्ञा पुं० [ सं० द्रव्य ] धन। दौलत।

**दरबा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दर ] कबूतरों, मुरगियों आदि के रहने के लिए काठ का खानेदार संदूक।

**दरबान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा०, मि० सं० द्वारवान् ] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

**दरबार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० दरबारी ] १. वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबों के साथ बैठते हैं। २ राजसभा।

**मुहा०**—दरबार खुलना=दरबार में जाने की आज्ञा मिलना। दरबार बंद होना=दरबार में जाने की रोक होना।

३ महाराज। राजा। (रजवाड़ों में) ४. दरवाजा। द्वार।

**दरबारदारी***—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] किसी के यहाँ बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना।

**दरबार-विलासी***—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दरबार+ सं० विलासी ] द्वारपाल। दरबान।

**दरबारी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दरबार में बैठनेवाला आदमी।

वि० दरबार का। दरबार के योग्य।

**दरबी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दर्वी ] कलछी।

**दरभ**—संज्ञा पुं० दे० "दर्भ"।

संज्ञा पुं० [ ? ] बंदर।

**दरमा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बाँस की चटाई।

**दरमान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] औषध। दवा।

**दरमाहा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मासिक वेतन।

**दरमियान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मध्य। बीच।

क्रि० वि० बीच में। मध्य में।

**दरमियानी**—वि० [ फ़ा० ] बीच का।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।

**दररना***—क्रि० स० दे० "दरेरना"।

**दरवाजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. द्वार। मुहाना। २. किवाड़। कपाट।

**दरवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दर्वी ] १. कलछी। पौनी। २. साँप का फन।

**यौ०**—दरवीकर=साँप।

**दरवेश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] फकीर। साधु।

**दरशन**—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।

**दरशनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दर्शन ] दर्पण। शीशा।

**दरशनी हुंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दर्शन ] वह हुंडी जिसके भुगतान की मिति को दस दिन या उससे कम बाकी हो।

**दरशाना**—क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।

**दरस**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्श ] १. देखा-देखी। दर्शन। दीदार। २. भेंट। मुलाकात। ३. रूप। छवि। सुंदरता।

**दरसन**—संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।

**दरसना***—क्रि० अ० [ सं० दर्शन ] दिखाई पड़ना। देखने में आना।

क्रि० स० [ सं० दर्शन ] देखना। लखना।

**दरसनिया**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्शन ] वह जो शीतला आदि की शांति की पूजा कराता हो।

**दरसाना**—क्रि० स० [ सं० दर्शन ] १. दिखलाना। दृष्टिगोचर कराना। २. प्रकट करना। स्पष्ट करना। समझाना।

*†—क्रि० अ० दिखाई पड़ना।

**दरसावना**—क्रि० स० दे० "दरसाना"।

**दराज**—वि॰ [ फ़ा॰ ] बड़ा भारी। दीर्घ।
क्रि॰ वि॰ [ फ़ा॰ ] बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ दरार ] दरज। दरार।
संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ड्राअर ] मेज में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।

**दरार**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ दर ] वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने पर पड़ जाती है। शिगाफ। दरज।

**दरारना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ दरार + ना (प्रत्य॰) ] फटना। विदीर्ण होना।

**दरारा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ दरना ] दरेरा। धक्का।

**दरिंदा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] फाड़ खानेवाला जंतु। मांस-भक्षक वन-जंतु।

**दरिद्र**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ दरिद्रा ] जिसके पास धन न हो। निर्धन। कंगाल।

**दरिद्रता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] कंगाली। निर्धनता। गरीबी।

**दरिद्र नारायण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] दरिद्रों और दीन-दुःखियों के रूप में रहनेवाले नारायण।

**दरिद्री**—वि॰ दे॰ "दरिद्र"।

**दरिया**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. नदी। २. समुद्र। सिंधु।

**दरियाई**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १. नदी संबंधी। २. नदी के निकट का। ३. समुद्र संबंधी।
संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ दाराई ] एक प्रकार की रेशमी पतली साटन।

**दरियाई घोड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ दरियाई + हिं॰ घोड़ा ] गैंडे की तरह का एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है। हिपोपोटैमस।

**दरियाई नारियल**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ दरियाई + हिं॰ नारियल ] एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र बनता है जिसे सन्यासी या फकीर अपने पास रखते हैं।

**दरियादासी**—संज्ञा पुं॰ निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।

**दरिया-दिल**—वि॰ [ फ़ा॰ ] [ स्त्री॰ दरिया-दिली ] उदार। दानी।

**दरियाफ्त**—वि॰ [ फ़ा॰ ] जिसका पता लगा हो। ज्ञात। मालूम।

**दरिया-बरार**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले।

**दरियाबुर्द**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।

**दरियाव**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "दरिया"।

**दरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. गुफा। खोह। २. पहाड़ के बीच का वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरती हो।
संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ स्तर ] मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना। शतरंजी।

**दरीखाना**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ दर + खाना ] वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।

**दरीचा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] [ स्त्री॰ दरीची ] १. खिड़की। झरोखा। २. खिड़की के पास बैठने की जगह।

**दरीबा**—संज्ञा पुं॰ [ ? ] पान का बाजार।

**दरेग**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ दरेग़ ] कमी। कसर।

**दरेरना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ दरण ] १. रगड़ना। पीसना। २. रगड़ते हुए धक्का देना।

**दरेरा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ दरण ] १. रगड़ा। धक्का। २. बहाव का जोर। तोड़।

**दरेस**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ड्रेस ] १. एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा। २ पोशाक।
वि॰ तैयार। बना बनाया।

**दरेसी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ दरेस ] समतल या दुरुस्त करना।

**दरैया**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ दरण ] १. दलनेवाला। जो दले। २. घातक। विनाशक।

**दरोग**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] झूठ। असत्य।

**दरोगहलफी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना।

**दर्ज**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "दरज"।
वि॰ [ फ़ा॰ ] कागज पर लिखा हुआ।

**दर्जन**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ डज़न ] बारह का समूह। इकट्ठी बारह वस्तुएँ।

**दर्जा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] ऊँचाई-निचाई के क्रम के विचार से निश्चित स्थान। श्रेणी। कोटि। वर्ग। २. पढ़ाई के क्रम में ऊँचा नीचा स्थान। ३. पद। ओहदा। ४. किसी वस्तु का वह विभाग जो ऊपर नीचे के क्रम से हो। खंड।
क्रि॰ वि॰ गुणित। गुना।

**दर्जी**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] [ स्त्री॰ दर्जिन ] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २. कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष।

**दर्द**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. पीड़ा।

व्यथा । २. दुःख । तकलीफ । ३. करुणा । दया ।

मुहा०—दर्द खाना=दया करना ।

४. हाथ से निकल जाने का कष्ट ।

**दर्दमंद**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा दर्दमंदी ] १. पीड़ित । दुःखी । २. दयावान् ।

**दर्दी**—वि० दे० "दर्दमंद" ।

**दर्दुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेढक । २. बादल । ३. अभ्रक । अबरक ।

**दद्रु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दाद नामक रोग ।

**दर्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घमंड । अहंकार । अभिमान । गर्व । २. अहंकार के कारण किसी के प्रति कोप । मान । ३. उद्दंडता । अक्खड़पन । ४. आतंक । रोब ।

**दर्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुँह देखने का शीशा । आइना । आरसी २. आँख ।

**दर्पित**—वि० [ सं० ] १. दर्प या अभिमान से भरा हुआ । अभिमानी । २. उद्दंड । अक्खड़ । ३. जिस पर आतंक छाया हो ।

**दर्पी**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्पिन् ] दर्प से भरा हुआ । अभिमानी । घमंडी ।

**दर्ब**—संज्ञा पुं० [सं० द्रव्य] १ द्रव्य । धन । २. धातु । ( सोना, चाँदी इत्यादि )

**दर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का कुश । डाभ । २. कुश । ३. कुशासन ।

**दर्भासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुश का बना हुआ बिछावन । कुशासन ।

**दर्रा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग । घाटी ।

**दर्राना**—क्रि० अ० [ अनु० दड़ दड़ ] धड़धड़ाना । बेधड़क चला आना ।

**दर्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हिंसा करनेवाला मनुष्य । २. राक्षस । ३. पंजाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति । ४.इस जाति का उक्त देश ।

**दर्वी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. करछी । चमचा । २. साँप का फन ।

**दर्वीकर**-संज्ञा पुं० [ सं० ] फनवाला साँप ।

**दर्श**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दर्शन । २ अमावास्या तिथि । ३. द्वितीया तिथि । ४. वह यज्ञ या कृत्य जो अमावास्या के दिन हो ।

**दर्शक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दर्शन करनेवाला । देखनेवाला । २. दिखानेवाला ।

**दर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह बोध जो दृष्टि के द्वारा हो । साक्षात्कार । अवलोकन । २. भेंट । मुलाकात । ३. तत्त्वज्ञान संबंधी विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत् के नियामक धर्म और जीवन के अंतिम लक्ष्य आदि का निरूपण होता है । ४. नेत्र । आँख । ५. स्वप्न । ६ बुद्धि । ७. धर्म्म । ८. दर्पण ।

**दर्शनी हुंडी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दरशनी हुंडी" ।

**दर्शनीय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दर्शनीया ] १. देखने योग्य । देखने लायक । २. सुंदर । मनोहर ।

**दर्शाना**—क्रि० स० दे० "दरसाना" ।

**दर्शी**—वि० [ सं० दर्शिन् ] देखनेवाला ।

**दल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु के उन दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों, पर जरा सा दबाव पड़ने से अलग हो जायँ । जैसे, दाल के दो दल । २. पौधों का पत्ता । पत्र । ३. तमालपत्र । ४. फूल की पंखड़ी । ५. समूह । झुंड । गरोह । ६. मंडली । गुट्ट । ७. सेना । फौज । ८. परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई ।

**दलक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० दलक ] गुदड़ी ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० दलकना ] १. आघात से उत्पन्न कंप । घबराहट । धमक । २. रह रहकर उठनेवाला दर्द । टीस । चमक ।

**दलकन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दलक ] १. दलकने की क्रिया या भाव । २. आघात ।

**दलकना**—क्रि० अ० [ सं० दलन ] १. फट जाना । दरार खाना । चिर जाना । २. थर्राना । काँपना । ३. चौंकना । ४. उद्विग्न हो उठना ।

क्रि० स० [ सं० दलन ] डराना । भयभीत कर देना ।

**दलगंजन**—वि० [ सं० ] भारी वीर ।

**दलदल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दलाढ्य ] १. कीचड़ । पाँक । चहला । २. वह गीली जमीन जिसमें पैर नीचे को धँसता हो ।

मुहा०—दलदल में फँसना=१. मुश्किल या दिक्कत में पड़ना । २. जल्दी खतम या तै न होना । खटाई में पड़ना ।

**दलदला**—वि० [ हिं० दलदल ] [ स्त्री० दलदली ] जिसमें दलदल हो । दलदलवाला ।

**दलदार**—वि० [ हिं० दल + फ़ा० दार ] जिसका दल, तह या परत मोटी हो ।

**दलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० दलित ] १. पीसकर टुकड़े टुकड़े करना । २. संहार ।

वि० संहार या नाश करनेवाला ।

(यौ० के अंत में)

**दलना**—क्रि० स० [सं० दलन] १. रगड़ या पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। चूर्ण करना। २. रौंदना। कुचलना। ३. दबाना। मसलना। मींड़ना। ४. चक्की में डालकर अनाज आदि के दानों को दो दलों या कई टुकड़ों में करना। ५. नष्ट करना। ध्वस्त करना। ६. झटके से खंडित करना। तोड़ना।

**दलनि**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दलना] दलने की क्रिया या ढंग।

**दलनीय**—वि० [सं०] [स्त्री० दलनीया] दलन करने योग्य।

**दलपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मुखिया। अगुआ। सरदार। २. सेनापति।

**दल बल**—संज्ञा पुं० [सं०] लाव-लश्कर। फौज।

**दल-बादल**—संज्ञा पुं० [हिं० दल+बादल] १. बादलों का समूह। २. भारी सेना। ३. बहुत बड़ा शामियाना।

**दलमलना**—क्रि० स० [हिं० दलना+मलना] १. मसल डालना। मीड़ डालना। २. रौंदना। कुचलना। ३. नष्ट करना।

**दलवाना**—क्रि० स० [हिं० दलना का प्रे०] दलने का काम दूसरे से करवाना।

**दलवाल***†—संज्ञा पुं० [सं० दलपाल] सेनापति।

**दलवैया**—वि० [हिं० दलना] १. दलन या नाश करनेवाला। २. दलने या चूर्ण करनेवाला।

**दलहन**—संज्ञा पुं० [हिं० दाल+अन्न] वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।

**दलान**†—संज्ञा पुं० दे० "दालान"।

**दलाल**—संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा दलाली] १. वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे। मध्यस्थ। २. कुटना।

**दलाली**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दलाल का काम। २. वह द्रव्य जो दलाल को मिलता है।

**दलित**—वि० [सं०] [स्त्री० दलिता] १. मसला हुआ। मर्दित। २. दबाया, रौंदा या कुचला हुआ। ३. खंडित। ४. विनष्ट किया हुआ।

**दलिया**—संज्ञा पुं० [हिं० दलना] दल कर कई टुकड़े किया हुआ अनाज।

**दली**—वि० [सं० दल] १. दलवाला। २. पत्तोंवाला।

**दलील**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तर्क। युक्ति। २. बहस। वाद-विवाद।

**दलेल**—संज्ञा स्त्री० [अं० ड्रिल] सिपाहियों की वह कवायद जो सजा की तरह पर हो।

**दवँगरा**—संज्ञा पुं० [सं० दव+अंगार ?] वर्षा के आरंभ में होनेवाली झड़ी।

**दव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वह आग जो वन में आप से आप लग जाती है। दवाग्नि। दवारि। दावा। ३. अग्नि। आग।

**दवन***—संज्ञा पुं० [सं० दमन] नाश।

संज्ञा पुं० [सं० दमनक] दौना पौधा।

**दवना***—संज्ञा पुं० दे० "दौना"।

क्रि० स० [सं० दव] जलना।

**दवनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दमन] फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम। दँवरी। मिसाई।

**दवरिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि"।

**दवा**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २. रोग दूर करने का उपाय। उपचार। चिकित्सा। ३. दूर करने की युक्ति। मिटाने का उपाय। ४. दुरुस्त करने की तदबीर।

*संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १. वन में लगनेवाली आग। वनाग्नि। २. अग्नि। आग।

**दवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "दवा"।

**दवाखाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह जगह जहाँ दवा मिलती हो। २. औषधालय।

**दवागिन***—संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।

**दवाग्नि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन में लगनेवाली आग। दावानल।

**दवात**—संज्ञा स्त्री० [अ० दावात] लिखने की स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

**दवानल**—संज्ञा पुं० [सं०] दवाग्नि।

**दवामी**—वि० [अ०] जो चिरकाल तक के लिए हो। स्थायी।

**दवामी बंदोबस्त**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें सरकारी मालगुजारी एक ही बार सदा के लिए मुकर्रर हो।

**दवारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दवाग्नि] दवाग्नि।

**दशकंठ**—संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

**दशकंठजहा**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

**दशकंधर**—संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

**दशक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दस

वस्तुओं का समूह। २. सन-संवत् आदि में इकाई से दहाई तक के दस वर्ष।

**दशगात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृतक-संबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है।

**दशग्रीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण।

**दशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दाँत। २. कवच।

**दशना**—वि० स्त्री० [सं० ] दशन या दाँतोंवाली।

**दशनाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संन्यासियों के दस भेद जो ये हैं—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।

**दशनामी**—संज्ञा पुं० [ हिं० दश+नाम ] संन्यासियों का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शंकराचार्य के शिष्यों से चला है।

**दशनावली**— संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दाँतों की पंक्ति।

**दशमलव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो। ( गणित )

**दशमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चांद्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि।

**दशमुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण।

**दशमूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विशिष्ट दस पेड़ों की छाल या जड़। ( वैद्यक )

**दशरथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशीय एक प्राचीन राजा जिनके पुत्र श्रीरामचंद्र थे।

**दशशीश***—संज्ञा पुं० [ सं० दश-शीर्ष ] रावण।

**दशहरा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। २. विजया दशमी।

**दशांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस सुगंधद्रव्यों के मेल से बनता है।

**दशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवस्था। स्थिति। प्रकार। हालत। २ मनुष्य के जीवन की अवस्था। ३. साहित्य में रस के अंतर्गत विरही की अवस्था। ४. फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में प्रत्येक ग्रह का नियत भोग-काल।

**दशानन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण।

**दशार्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विंध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण की ओर स्थित उस प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती है। २. उक्त देश का निवासी या राजा। ३. तंत्र का एक दशाक्षर मंत्र।

**दशार्णा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धसान नदी जो विंध्याचल से निकलकर यमुना में मिलती है।

**दशाश्वमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ काशी के अंतर्गत एक तीर्थ। २. प्रयाग के अंतर्गत त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट, जहाँ से यात्री जल भरते हैं।

**दशाह**—संज्ञा पुं०[सं०] १.दस दिन। २. मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन।

**दस**—वि० [सं० दश] १. जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। २ कई। बहुत से।

संज्ञा पुं० पाँच की दूनी संख्या।

**दसखत**†—संज्ञा पुं० दे० "दस्तखत"।

**दसन***—संज्ञा पुं० दे० "दशन"।

**दसना**—क्रि० अ० [ हिं० डासना ] बिछाया जाना। बिछना। फैलना। क्रि० स० बिछाना। बिस्तर फैलाना। संज्ञा पुं० बिछौना। बिस्तर।

**दसमाथ***—संज्ञा पुं० [ हिं० दस+माथ ] रावण।

**दसमी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दशमी"।

**दसवाँ**—वि० [ हिं० दस ] गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला।

संज्ञा पुं० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।

**दसा**—संज्ञा स्त्री० दे० "दशा"।

**दसाना**†—क्रि० स० [ ? ] बिछाना।

**दसारन**—संज्ञा पुं० दे० "दशार्ण"।

**दसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दशा ] १. कपड़े के छोर पर का सूत। छीर। २. थान का आँचल।

**दसौंधी**-संज्ञा पुं० [ सं०दास+वंदी=भाट ] बंदियों या चारणों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।

**दस्तंदाजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] हस्तक्षेप।

**दस्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पतला पायखाना। विरेचन। २ हाथ।

**दस्तक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. हाथ से खट खट शब्द उत्पन्न करने या खटखटाने की क्रिया। २. बुलाने के लिए दरवाजे की कुंडी खटखटाने की क्रिया। ३. मालगुजारी वसूल करने के लिए गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। ४. माल आदि ले जाने का परवाना। ५. कर। महसूल।

**दस्तकार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी।

**दस्तकारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ] हाथ की कारीगरी। शिल्प।

**दस्तखत**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] अपने हाथ का लिखा हुआ अपना नाम। हस्ताक्षर।

**दस्तगीर**—वि० [ फ़ा०] [संज्ञा दस्त-

गीरी ] सहायक । मददगार ।

**दस्त-दराज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा दस्तदराजी ] १. जल्दी मार बैठनेवाला । २. उचक्का । हाथ-लपक ।

**दस्त-बरदार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा दस्तबरदारी ] जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले ।

**दस्तयाब**—वि० [ फ़ा० ] हस्तगत । प्राप्त ।

**दस्तरख़ान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह चादर, जिस पर खाना रखा जाता है । ( मुसल० ) ।

**दस्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दस्त ] १. वह जो हाथ में आवे या रहे । २. किसी औज़ार आदि का वह हिस्सा जो हाथ से पकड़ा जाता है । मूठ । बेंट । ३. फूलों का गुच्छा । गुलदस्ता । ४. सिपाहियों का छोटा दल । गारद । ५. किसी वस्तु का उतना गड्डा या पूला जितना हाथ में आ सके । ६. कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी ।

**दस्ताना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दस्तानः ] पंजे और हथेली में पहनने का बुना हुआ कपड़ा । हाथ का मोजा ।

**दस्तावर**—वि० [ फ़ा० ] जिससे दस्त आवें । विरेचक ।

**दस्तावेज़**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह कागज जिसमें कुछ आदमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करनेवालों के दस्तखत हों । व्यवहार-संबंधी लेख ।

**दस्ती**—वि० [ फ़ा० दस्त=हाथ ] हाथ का ।

संज्ञा स्त्री० १. हाथ में लेकर चलने की बत्ती । मशाल । २. छोटी मूठ । छोटा बेंट । ३. छोटा कलमदान ।

**दस्तूर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. रीत । रस्म । रवाज । चाल । प्रथा । २. नियम । कायदा । विधि । ३. पारसियों का पुरोहित जो कर्म-कांड कराता है ।

**दस्तूरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० दस्तूर ] वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक के तौर पर पाते हैं ।

**दस्यु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. डाकू । चोर । २. असुर । ३. अनार्य्य । म्लेच्छ । ४. दास ।

**दस्युज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दस्युजा ] दस्यु की संतान । नीच ।

**दस्युता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लुटेरापन । डकैती । २. दुष्टता । क्रूर स्वभाव ।

**दस्युवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. डकैती । लुटेरापन । २. चोरी ।

**दह**—संज्ञा पुं० [ सं० ह्रद ] १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो । पाल । २. कुंड । हौज ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० दहन ] ज्वाला । लपट ।

**दहक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दहन ] १. आग दहकने की क्रिया । धधक । दाह । २. ज्वाला । लपट ।

**दहकना**—क्रि० अ० [ सं० दहन ] १. लौ के साथ जलना । धधकना । भड़कना । २. शरीर का गरम होना । तपना ।

**दहकान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० दहकानी, भाव० दहकानियत ] गँवार । देहाती ।

**दहकाना**—क्रि० स० [ हिं० दहकना ] १ ऐसा जलाना कि लौ ऊपर उठे । २. धधकाना । ३. भड़काना । क्रोध दिलाना ।

**दहकानी**—वि० [ फ़ा० ] देहाती । गँवार ।

**दहड़ दहड़**—क्रि० वि० [ सं० दहन या अनु० ] लपट फेंकते हुए । धायँ धायँ ।

**दहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० दहनीय, दह्यमान ] १. जलने की क्रिया या भाव । दाह । २. अग्नि । आग । ३. कृत्तिका नक्षत्र । ४. तीन की संख्या । ५. एक रुद्र ।

**दहना**—क्रि० अ० [ सं० दहन ] १. जलना । बलना । भस्म होना । २. क्रोध से संतप्त होना । कुढ़ना ।

क्रि० स० १. जलाना । भस्म करना । २. संतप्त करना । दुःखी करना । कष्ट पहुँचाना । ३. क्रोध दिलाना । कुढ़ाना ।

क्रि० अ० [ हिं० दह ] धँसना । नीचे बैठना ।

वि० दे० "दहिना" ।

**दहनि**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दहना ] जलने की क्रिया । जलन ।

**दहपट**—वि [ फ़ा० दह=दस+पट=समतल ] १. ढाया हुआ । ध्वस्त । चौपट । नष्ट । २. रौंदा हुआ । कुचला हुआ । दलित ।

**दहपटना**—क्रि० स० [ हिं० दहपट ] १. ध्वस्त करना । चौपट करना । नष्ट करना । २. रौंदना । कुचलना ।

**दहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ह्रद ] १. नदी में गहरा स्थान । दह । २. कुंड । हौज ।

**दहरना***—क्रि० अ० दे० "दहलना" ।

क्रि० स० दे० "दहलाना" ।

**दहरौरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दही+बड़ा ] १. दही में पड़ा हुआ बड़ा । २. एक प्रकार का गुलगुला ।

**दहल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दहलना ]

डर से एकबारगी काँप उठने की क्रिया।

**दहलना**—क्रि० अ० [ सं० दर=डर + हिं० हिलना ] डर से एकबारगी काँप उठना। भय से स्तंभित होना।

**दहला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दह=दस ] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों।
†संज्ञा पुं० [ सं० थल ] थाला। थाँवला।

**दहलाना**—क्रि० स० [ हिं० दहलना ] डर से कँपाना। भयभीत करना।

**दहलीज**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] द्वार के चौखट की नीचेवाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है। देहली। डेहरी।

**दहशत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] डर। भय।

**दहा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दह ] १. मुहर्रम का महीना। २. मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३ ताजिया।

**दहाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० दह=दस] १. दस का मान या भाव। २. अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान जिस पर जो अंक लिखा होता है, उससे उतने ही गुने दस का बोध होता है।

**दहाड़**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. किसी भयंकर जंतु का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की ध्वनि। आर्तनाद।

**मुहा०**—**दहाड़** मारना, या दहाड़ मारकर रोना=चिल्ला चिल्लाकर रोना।

**दहाड़ना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

**दहाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. चौड़ा मुँह। द्वार। २. वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३. मोरी।

**दहिना**—वि० [ सं० दक्षिण ] [ स्त्री० दहिनी ] शरीर के दो पार्श्वों में से उस पार्श्व का नाम जिधर के अंगों या पेशियों में अधिक बल होता है। बायाँ का उलटा। अपसव्य।

**दहिनावर्त्त**†—वि० दे० "दक्षिणावर्त्त"।

**दहिने**—क्रि० वि० [ हिं० दहिना ] दहिनी ओर का।
**यौ०**—दहिने होना=अनुकूल होना। प्रसन्न होना। दहिने बाएँ=इधर-उधर। दोनों ओर।

**दही**—संज्ञा पुं० [ सं० दधि ] खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

**मुहा०**—दही दही करना=किसी चीज को मोल लेने के लिए लोगों से कहते फिरना।

**दहुँ***—अव्य० [ सं० अथवा ] १. अथवा। या। किंवा। २. स्यात्। कदाचित्।

**दहेंड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दही + हंडी ] दही रखने का मिट्टी का बरतन।

**दहेज**—संज्ञा पुं० [ अ० जहेज ] वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाता है। दायजा। यौतुक।

**दहेला**—वि० [ हिं० दहला+एला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० दहेली ] १. जला हुआ। दग्ध। २ संतप्त। दुःखी।
वि० [ हिं० दलहना ] [ स्त्री० दहेली] भीगा हुआ। ठिठुरा हुआ।

**दह्यौ***—संज्ञा पुं० दे० "दही"।

**दाँ**—संज्ञा पुं० [ सं० दाच् ( प्रत्य० ) जैसे, एकदा ] दफा। बार। बारी।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] ज्ञाता। जाननेवाला।

**दाँक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्रांक्ष ] दहाड़। गरज।

**दाँकना**—क्रि० अ० [ हिं० दाँक + ना (प्रत्य०) ] गरजना। दहाड़ना।

**दाँग**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. छः रत्ती की तौल। २. दिशा। तरफ। ओर।
संज्ञा पुं० [ हिं० डंका ] नगाड़ा। डंका।
संज्ञा पुं० [ हिं० डूँगर ] टीला। छोटी पहाड़ी।

**दाँज**†—संज्ञा स्त्री० [सं० उदाहार्य्य] बराबरी। समता। जोड़। तुलना।

**दाँड़ना**—क्रि० स० [ सं० दंड ] १. दंड या सजा देना। २. जुरमाना करना।

**दाँत**—संज्ञा पुं० [ सं० दंत ] १. अंकुर के रूप में निकली हुई हड्डी जो जीवों के मुँह, तालू, गले या पेट में होती है और आहार चबाने, तोड़ने तथा आक्रमण करने, जमीन खोदने इत्यादि के काम में आती है। दंत। रद। दशन।

**मुहा०**—दाँतों उँगली काटना=दे० "दाँत तले उँगली दबाना"। दाँत काटी रोटी=अत्यंत घनिष्ठ मित्रता। गहरी दोस्ती। दाँत खट्टे करना=१. खूब हैरान करना। २ प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में परास्त करना। पस्त करना। दाँत चबाना=क्रोध से दाँत पीसना। कोप प्रकट करना। दाँत तले उँगली दबाना=१. अचरज में आना। चकित होना। दंग रहना। २. खेद प्रकट करना। अफसोस करना। दाँत तोड़ना=परास्त करना। हैरान करना। दाँत पीसना=( क्रोध में ) दाँत पर दाँत रखकर हिलाना। दाँत किटकिटाना। दाँत बजना=

सरदी से दाँत के हिलने या काँपने के कारण दाँत पर दाँत पड़ना। दाँत बैठ जाना=दाँत की ऊपर नीचे वाली पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। दाँतों में तिनका लेना=दया के लिए बहुत विनती करना। हा हा खाना। (किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना=१. लेने की गहरी चाह रखना। २. बैर लेने का विचार रखना। (किसी के) तालू में दाँत जमना=बुरे दिन आना। शामत आना।

२. दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु। दंदाना। दाँता।

**दांत**—वि० [ सं० ] १. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। २. जिसने इंद्रियों को वश में कर लिया हो। संयमी। ३. दाँत का। दाँत-संबंधी।

**दाँता**—संज्ञा पुं० [ हिं० दाँत ] दाँत के आकार का कँगूरा। रवा। दंदाना।

**दाँताकिटकिट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दाँत + किटकिट (अनु०) ] १. कहा-सुनी। झगड़ा। २. गाली-गलौज।

**दांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. इंद्रिय-निग्रह। इंद्रियों का दमन। २. अधीनता। ३. विनय। नम्रता।

**दाँती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दात्री ] १. हँसिया जिससे घास या फसल काटते हैं। २. काली भिड़।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० दाँत ] १. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। बत्तीसी। २. दो पहाड़ों के बीच की सँकरी जगह। दर्रा।

**दाँना**—क्रि० स० [ सं० दमन ] पकी फसल के डंठलों को बैलों से इसलिए रौंदवाना जिसमें डंठल से दाना अलग हो जाय।

**दांपत्य**—वि० [ सं० ] पति-पत्नी संबंधी। स्त्री-पुरुष का सा।

संज्ञा पुं० स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार।

**दांभिक**—वि० [ सं० ] १. पाखंडी। आडंबर रचनेवाला। धोखेबाज। २. अहंकारी। घमंडी।

**दाँय**—संज्ञा स्त्री० दे० "दँवरी"।

**दाँवँ**—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

**दाँवनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दामिनी ] दामिनी नाम का सिर का गहना।

**दाँवरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दाम ] रस्सी। डोरी।

**दाइ***—संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव"।

**दाइज, दाइजा**—संज्ञा पुं० दे० "दायजा"।

**दाईं**—वि० स्त्री० [ हिं० दायाँ ] दाहिनी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० दाच् (प्रत्य०), हिं० दाँ (प्रत्य०) ] बारी। दफा। बार।

**दाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० धात्री, मि० फ़ा० दायः ] दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री। धाय। २. बच्चे की देख-रेख रखनेवाली दासी। ३. प्रसूता के उपचार के लिए नियुक्त स्त्री।

**मुहा०**—दाई से पेट छिपाना=जाननेवाले से कोई बात छिपाना।

*वि० दे० "दायी"।

**दाउँ***†—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

**दाउ**†—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"।

**दाऊ**—संज्ञा पुं० [ सं० देव ] १ बड़ा भाई। २. कृष्ण के बड़े भाई बलदेव।

**दाऊदखानी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रकार का चावल। २. उत्तम प्रकार का सफेद गेहूँ। दाऊदी गेहूँ।

**दाऊदी**—संज्ञा पुं० [ अ० दाऊद ] एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ।

**दाक्षायण**—वि० [ सं० ] १. दक्ष से उत्पन्न। २. दक्ष का। दक्ष-संबंधी।

**दाक्षायणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दक्ष की कन्या। २. अश्विनी आदि नक्षत्र। ३. दुर्गा। ४. कश्यप की स्त्री, अदिति।

**दाक्षिणात्य**—वि० [ सं० ] दक्खिनी। दक्षिण का।

संज्ञा पुं० भारतवर्ष का वह भाग जो विंध्याचल के दक्षिण पड़ता है। २. दक्षिण देश का निवासी।

**दाक्षिण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अनुकूलता। प्रसन्नता। २. उदारता। सुशीलता। ३. दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। ४. नाटक में वाक्य या चेष्टा द्वारा दूसरे के उदासीन या अप्रसन्न चित्त को फेरकर प्रसन्न करना।

वि० १. दक्षिण का। दक्षिण संबंधी। २. दक्षिणा संबंधी।

**दाख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्राक्षा ] १. अंगूर। २. मुनक्का। ३. किशमिश।

**दाखिल**—वि० [ फ़ा० ] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। पैठा हुआ।

**मुहा०**-दाखिल करना=भर देना। जमा करना।

२. शरीक। मिला हुआ। ३. पहुँचा हुआ।

**दाखिल खारिज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उसपर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।

**दाखिल दफ्तर**—वि० [ फ़ा० ] दफ्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ (कागज) जिसपर कुछ विचार न किया जाय।

**दाखिला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १.

प्रवेश। पैठ। २. संस्था आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य्य।

**दाग**—संज्ञा पुं० [ सं० दग्ध ] १. जलाने का काम। दाह। २. मुर्दा जलाने की क्रिया।

**मुहा०**—दाग देना=मुरदे का क्रिया-कर्म करना।

३. जलन। दाह। ४. जलन का चिह्न।

**दाग़**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० दाग़ी ] १. धब्बा। चित्ती।

**मुहा०**—सफेद दाग=एक प्रकार का कोढ़ जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं। फूल। २. निशान। चिह्न। अंक। ३. फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। ४. कलंक। ऐब। दोष। लांछन। ५. जलने का चिह्न।

**दागदार**—वि० [ फ़ा० ] जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।

**दागना**—क्रि० स० [ हिं० दाग ] १. जलाना। दग्ध करना। २. तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय। ३. धातु के तपे हुए साँचे को छुलाकर अंग पर उसका चिह्न डालना। तप्त मुद्रा से अंकित करना। ४. फोड़े आदि पर ऐसी तेज दवा लगाना जिससे वह जल या सूख जाय। ५. भरी हुई बंदूक में बत्ती देना। तोप, बंदूक आदि छोड़ना।

क्रि० स० [ फ़ा० दाग़ ] रंग आदि से चिह्न या दाग लगाना। अंकित करना।

**दागबेल**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० दाग़+हिं० बेलि ] भूमि पर फावड़े या कुदाल से बनाए हुए चिह्न जो सड़क बनाने, नीव खोदने आदि के लिए डाले जाते हैं।

**दागी**—वि० [ फ़ा० दाग़ ] १. जिस पर दाग या धब्बा हो। २. जिस पर सड़ने का चिह्न हो। ३. कलंकित। दोषयुक्त। लांछित। ४. जिसको सजा मिल चुकी हो।

**दाघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गरमी। ताप। २. दाह। जलन।

**दाजन**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "दाझन"।

**दाजना***—क्रि० अ० [ सं० दग्ध या दाहन ] १ जलना। २. ईर्ष्या करना। डाह करना।

क्रि० स० जलाना।

**दाझन***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दहन ] जलन।

**दाझना***—क्रि० अ० [ सं० दाहन ] जलना। संतप्त होना।

क्रि० स० जलाना।

**दाटना**†*—क्रि० अ० [ ? ] प्रतीत होना। जान पड़ना।

**दाड़िम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अनार।

**दाढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० दंष्ट्रा या दाढ़क ] जबड़े के भीतर के मोटे चौड़े दाँत। चौभर।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] १.भीषण शब्द। गरज। दहाड़। २. चिल्लाहट।

**मुहा०**—दाढ़ मारकर रोना=खूब चिल्ला चिल्लाकर रोना।

**दाढ़ना***—क्रि० स० [ सं० दाहन ] १. जलाना। आग में भस्म करना। २. संतप्त करना। दुःखी करना।

**दाढ़ा**†—संज्ञा पुं० दे० "दाढ़"।

संज्ञा पुं० [ हिं० दाढ़ ] १. वन की आग। दावानल। २. आग। अग्नि। ३. दाह। जलन।

**दाढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दाढ़ ] १. चिबुक। २. ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल। श्मश्रु। दे० "दाढ़ी"।

**दाढ़ीजार**—संज्ञा पुं० [ हिं० दाढ़ी+जलना ] एक गाली, जिसे स्त्रियाँ कुपित होने पर पुरुषों को देती हैं।

**दात***—संज्ञा पुं० [ सं० दातव्य ] दान।

संज्ञा पुं० दे० "दाता"।

**दातव्य**—वि० [ सं० ] देने योग्य।

संज्ञा पुं० १. देने का काम। दान। २. दानशीलता। उदारता।

**दाता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो दान दे। दानशील। २. देनेवाला।

**दातार**—संज्ञा पुं० [ सं० दाता का बहु० ] दाता। देनेवाला।

**दाती***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दात्री ] देनेवाली।

**दातुन**—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

**दातुरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दातृत्व"।

**दातृत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दान-शीलता। देने की प्रवृत्ति।

**दातौन**—संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

**दात्यूह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पपीहा। चातक। २. मेघ। बादल।

**दात्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] देने-वाली।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हँसिया। दाँती।

**दाद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दद्रु ] एक चर्मरोग जिसमें शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड़ जाते हैं जिनमें बहुत खुजली होती है। दिनाई।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] इंसाफ। न्याय।

**मुहा०**—दाद चाहना=किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना=१. न्याय करना। २. प्रशंसा करना। सराहना।

**दादनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वह रकम जिसे चुकाना हो। २. वह रकम जो किसी काम के लिए पेशगी दी जाय। अगता।

**दादरा**—संज्ञा पुं० [ ? ] १. एक प्रकार का चलता गाना। २. दो अर्द्ध मात्राओं का एक ताल।

**दादा**—संज्ञा पुं० [ सं० तात ] [स्त्री० दादी ] १. पितामह। पिता का पिता। आजा। २. बड़ा भाई। ३. बड़े-बूढ़ों के लिए आदर-सूचक शब्द।

**दादि***†—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० दाद ] न्याय। इंसाफ।

**दादी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दादा ] पिता की माता। दादा की स्त्री।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० दाद ] दाद चाहनेवाला। न्याय का प्रार्थी। फरियादी।

**दादु***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० दद्रु ] दाद। दिनाई।

**दादुर***—संज्ञा पुं० [ सं० दर्दुर ] मेढक।

**दादू**†—संज्ञा पुं० [ अनु० दादा ] १. दादा के लिए संबोधन या प्यार का शब्द। २. 'भाई' आदि के समान एक साधारण संबोधन। ३. एक साधु जिनके नाम पर एक पंथ चला है। ये जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनका जन्म-स्थान अहमदाबाद था। ये अकबर के समय में हुए थे।

**दादूदयाल**—संज्ञा पुं० दे० "दादू" (३)।

**दादूपंथी**—संज्ञा पुं० [ हिं० दादू + पंथी ] दादू नामक साधु या उनके पंथ का अनुयायी।

**दाध***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दाद ] जलन। दाह।

**दाधना***—क्रि० स० [ सं० दग्ध ] जलाना। भस्म करना।

**दान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देने का कार्य। २. वह धर्मार्थ कर्म जिसमें श्रद्धा या दयापूर्वक दूसरे को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३. वह वस्तु जो दान में दी जाय। ४. कर। महसूल। चुंगी। ५. राजनीति में कुछ देकर शत्रु के विरुद्ध कार्य-साधन की नीति। ६. हाथी का मद। ७. छेदन। ८. शुद्धि।

**दानधर्म्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दान देने का धर्म्म। दान-पुण्य।

**दानपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई संपत्ति किसी को प्रदान की जाय।

**दानपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह व्यक्ति जो दान पाने के उपयुक्त हो।

**दानलीला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। २. वह ग्रंथ जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

**दानव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दानवी ] कश्यप के वे पुत्र जो 'दनु' नाम्नी पत्नी से उत्पन्न हुए थे। असुर। राक्षस।

**दान-वारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथी का मद।

**दानवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दानव की स्त्री। २. दानव जाति की स्त्री। राक्षसी।

वि० [ सं० दानवीय ] दानवों का। दानवसंबंधी।

**दानवीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो दान देने से न हटे। अत्यंत दानी।

**दानवेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा बलि।

**दानशील**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा दानशीलता ] दान करनेवाला। दानी।

**दाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दानः ] १. अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। कन।

मुहा०—दाने दाने को तरसना=अन्न का कष्ट सहना। भोजन न पाना। दाने दाने को मुहताज=अत्यंत दरिद्र।

२. अनाज। अन्न। ३. सूखा भुना हुआ अन्न। चबेना। चर्वण। ४. कोई छोटा बीज जो बाल, फली या गुच्छे में लगे। ५. फल या उसका बीज। ६. कोई छोटी गोल वस्तु। जैसे—मोती का दाना। घुघरू का दाना। ७. माला की गुरिया। मनका। ८. छोटी गोल वस्तुओं के लिए संख्या के स्थान पर आनेवाला शब्द। अदद। ९. रवा। कण। कणिका। १० किसी सतह पर के छोटे छोटे उभार जो टटोलने से अलग अलग मालूम हों।

वि० [ फ़ा० दाना ] बुद्धिमान्। अक्लमंद।

**दानाई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ] अक्ल-मंदी।

**दानाध्यक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

**दाना-पानी**—संज्ञा पुं० [फ़ा० दाना + हिं० पानी ] १. खान-पान। अन्न-जल।

मुहा०—दाना-पानी छोड़ना=अन्न-जल ग्रहण न करना। उपवास करना।

२. भरण-पोषण का आयोजन। जीविका। ३. रहने का संयोग।

**दानी**—वि० [ सं० दानिन् ] [ स्त्री० दानिनी ] जो दान करे। उदार।

संज्ञा पुं० दान करनेवाला व्यक्ति। दाता।

संज्ञा पुं० [ सं० दानीय ] १. कर

संग्रह करनेवाला। महसूल उगाहनेवाला। २. दान लेनेवाला।

**दानेदार**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें दाने या रवे हों। रवादार।

**दानौ**‡*—संज्ञा पुं० दे० "दानव"।

**दाप**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्प, प्रा० दप्प ] १ अहंकार। घमंड। अभिमान। २. शक्ति। बल। जोर। ३. उत्साह। उमंग। ४. रोब। दबदबा। आतंक। ५.क्रोध। ६. जलन। ताप।

**दापक**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्पक ] दबानेवाला।

**दापना***—क्रि० स० [हिं० दाप] १. दबाना। २. मना करना। रोकना।

**दाब**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दाप ] १. दबने या दबाने का भाव। २. किसी वस्तु का वह जोर जो नीचे की वस्तु पर पड़े। भार। बोझ। ३. आतंक। रोब। आधिपत्य। शासन।

**दाबदार**—वि० [ हिं० दाब + फ़ा० दार ] आतंक रखनेवाला। रोबदार।

**दाबना**—क्रि० स० दे० "दबाना"।

**दाबा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दाबना ] कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी मिट्टी में गाड़ना।

**दाभ**—संज्ञा पुं० [ सं० दर्भ ] कुश। डाभ।

**दाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रस्सी। रज्जु। २. माला। हार। लड़ी। ३. समूह। राशि। ४. लोक। विश्व। संज्ञा पुं० [ फ़ा० मिलाओ सं० ] जाल। फंदा। पाश।

संज्ञा पुं० [ हिं० दमड़ी ] १. पैसे का चौबीसवाँ या पचीसवाँ भाग।

**मुहा०**—दाम दाम भर देना=कौड़ी कौड़ी चुका देना। कुछ (ऋण) बाकी न रखना।

२. वह धन जो किसी वस्तु के बदले में बेचनेवाले को दिया जाय। मूल्य। कीमत।

**मुहा०**—दाम खड़ा करना=कीमत वसूल करना। दाम चुकाना=१. मूल्य दे देना। २. कीमत ठहराना। मोल भाव तै करना। दाम भरना=नुकसानी देना। डाँड़ देना।

३ धन। रुपया-पैसा। ४. सिक्का। रुपया।

**मुहा०**—चाम के दाम चलाना=अधिकार या अवसर पाकर मनमाना अंधेर करना।

५. राजनीति की एक चाल जिसमें शत्रु को धन द्वारा वश में करते हैं। दान-नीति।

**दामन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. अंगे, कोट, कुरते इत्यादि का निचला भाग। पल्ला। २ पहाड़ों के नीचे की भूमि।

**दामनगीर**—वि० [ फ़ा० ] १. दामन या पल्ला पकड़नेवाला। २. दावादार।

**दामरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दाम ] रस्सी। रज्जु।

**दामा***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दावा ] दावानल।

**दामाद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मिलाओ सं० जामातृ ] पुत्री का पति। जवाई। जामाता।

**दामिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बिजली। विद्युत्। २. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। बेंदी। बिंदिया। दाँवनी।

**दामी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाम] कर। मालगुजारी।

वि० मूल्यवान्। कीमती।

**दामोदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु। ३. एक जैन तीर्थंकर।

**दायँ***—संज्ञा पुं० दे० "दावँ"। संज्ञा स्त्री० [ ? ] बराबरी। दे० "दाँज"।

**दाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह धन जो किसी को देने को हो। २. दायजे, दान आदि में दिया जानेवाला धन। ३ वह पैतृक या संबंधी का धन जिसका उत्तराधिकारियों में विभाग हो सके। ४ दान।

*संज्ञा पुं० दे० "दाव"।

**दायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दायिका ] देनेवाला। दाता।

**दायज, दायजा**—संज्ञा पुं० [ सं० दाय ] वह धन जो विवाह में वर-पक्ष को दिया जाय। यौतुक। दहेज।

**दायभाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पैतृक धन का विभाग। २. बाप-दादे या संबंधी की संपत्ति के पुत्रों, पौत्रों या संबंधियों में बाँटे जाने की व्यवस्था। यह हिंदू धर्मशास्त्र का एक प्रधान विषय है। इसके दो प्रधान पक्ष हैं—मिताक्षरा और दायभाग।

**दायम**—क्रि० वि० [ अ० ] सदा। हमेशा।

**दायमी**—वि० [ अ० ] सदा बना रहनेवाला। स्थायी।

**दायमुलहब्स**—संज्ञा पुं० [ अ० ] जीवन भर के लिए कैद। काले पानी की सजा।

**दायर**—वि० [ फ़ा० ] १. फिरता या चलता हुआ। २. चलता। जारी।

**मुहा०**—दायर करना=मामले मुकदमे वगैरह को चलाने के लिए पेश करना।

**दायरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २. वृत्त। ३ कक्षा।

**दायाँ**—वि० [हिं०दाहिना] दाहिना।

**दाया***†—संज्ञा स्त्री० दे० "दया"।
संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] दाई।

**दायाद**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दायादा ] जो दाय का अधिकारी हो। जिसे किसी की जायदाद में हिस्सा मिले।
संज्ञा पुं० १. वह जिसका संबंध के कारण किसी की जायदाद में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २ पुत्र। बेटा। ३ सपिंड कुटुम्बी।

**दायित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देनदार होने का भाव। २. जिम्मेदारी। जवाबदेही।

**दायी**—वि० [ सं० दायिन् ] [ स्त्री० दायिनी ] देनेवाला। जैसे—सुखदायी, वरदायी।

**दायें**—क्रि० वि० [ हिं० दायाँ ] दाहिनी ओर को।

**मुहा०**—दायें होना=अनुकूल या प्रसन्न होना।

**दार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पत्नी। भार्य्या।
*संज्ञा पुं० दे० "दारु"।
प्रत्य० [ फ़ा० ] रखनेवाला।

**दारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दारिका ] १. बच्चा। लड़का। २. पुत्र। बेटा।

**दारकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विवाह।

**दारचीनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दारु + चीन (देश) ] १ एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत और सिंहल में होता है। २. इस पेड़ की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।

**दारण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दारित] १. चीरने-फाड़ने का काम। चीर-फाड़। २. चीरने-फाड़ने का औजार। ३. फोड़ा आदि चीरने का काम।

**दारना***—क्रि० स० [ सं० दारण ] १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. नष्ट करना।

**दारपरिग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विवाह।

**दार-मदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. आश्रय। ठहराव। २. किसी कार्य्य का किसी पर अवलंबित रहना।

**दारा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दार ] पत्नी। भार्य्या।

**दारि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "दाल"।

**दारिउँ***—संज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।

**दारिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ बालिका। कन्या। २. बेटी। पुत्री।

**दारिद***—संज्ञा पुं० [ सं० दारिद्रय ] दरिद्रता।

**दारिद्र***—संज्ञा पुं० दे० "दारिद्रय"।

**दारिद्र्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी।

**दारिम***—संज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।

**दारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बेवाई। खरुआ।
संज्ञा स्त्री० [ सं० दारिका ] वह लौंडी जिसे लड़ाई में जीतकर लाए हों।

**दारीजार**—संज्ञा पुं० [ हिं० दारी + सं० जार ] १. लौंडी का पति। (गाली) २. दासीपुत्र।

**दारु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काठ। लकड़ी। २. देवदार। ३. बढ़ई। ४. कारीगर।

**दारुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवदारु। २. श्रीकृष्ण के सारथी का नाम।

**दारुजोषित***—संज्ञा स्त्री० दे० "दारुयोषित"।

**दारुण**—वि० [ सं० ] १. भयंकर। भीषण। घोर। २. कठिन। प्रचंड। विकट।
संज्ञा पुं० १. चीते का पेड़। २. भयानक रस। ३. विष्णु। ४. शिव। ५. एक नरक का नाम। ६. राक्षस।

**दारुन***—वि० दे० "दारुण"।

**दारुपुत्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कठपुतली।

**दारुयोषित**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कठपुतली।

**दारुसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंदन।

**दारुहलदी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा ] झाल की जाति का एक सदाबहार झाड़। इसकी जड़ और डंठल दवा के काम में आते हैं।

**दारू**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. दवा। औषध। २. मद्य। शराब। ३. बारूद।

**दारों***—संज्ञा पुं० दे० "दारयो"।

**दारोगा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. देख-भाल रखनेवाला या प्रबंध करनेवाला व्यक्ति। २. पुलिस का वह अफसर जो किसी थाने पर अधिकारी हो। थानेदार।

**दार्यो***—संज्ञा पुं० [ सं० दाड़िम ] अनार।

**दार्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन प्रदेश जो आधुनिक काश्मीर के अंतर्गत पड़ता था।

**दार्शनिक**—वि० [ सं० ] १. दर्शन जाननेवाला। तत्त्वज्ञानी। २. दर्शनशास्त्र-संबंधी।

**दाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दालि ] १. दली हुई अरहर, मूँग आदि जिसे सालन की तरह खाते हैं। २. मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ दाल अन्न जो रोटी, भात आदि के साथ खाया जाता है।

**मुहा०**—(किसीकी) दाल गलना=

(किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल दलिया=सूखा-रूखा भोजन। गरीबों का सा खाना। दाल में कुछ काला होना=कुछ खटके या संदेह की बात होना। किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। दाल रोटी=सादा खाना। सामान्य भोजन। जूतियों दाल बँटना=आपस में खूब लड़ाई झगड़ा होना। ३. दाल के आकार की कोई वस्तु। ४. चेचक, फोड़े, फुंसी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है। खुरंड।

**दालचीनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दारचीनी"।

**दालमोठ**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दाल+मोठ=एक कदन्न] घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल।

**दालान**—संज्ञा पु० [फ़ा०] मकान में वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो। बरामदा। ओसारा।

**दालिम** संज्ञा पुं० दे० "दाड़िम"।

**दाव**—संज्ञा पुं० [सं० प्रत्य० दा (दाच) जैसे एकदा] १ बार। दफा। मरतबा। २. किसी बात का समय जो कई आदमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से आवे। बारी। पारी। ३. उपयुक्त समय। अनुकूल संयोग। अवसर। मौका।

मुहा०—दावँ करना=घात लगाना। घात में बैठना। दावँ लगाना=अनुकूल संयोग मिलना। मौका मिलना। दावँ लेना=बदला लेना।

४. कार्य-साधन की युक्ति। उपाय। चाल।

मुहा०—दावँ पर चढ़ना=इस प्रकार वश में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल ले। ५. कुश्ती या लड़ाई जीतने के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति। चाल। पेच। बंद। ६. कार्य-साधन की कुटिल युक्ति। छल। कपट। ७ खेल में प्रत्येक खेलाड़ी के खेलने का समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की बारी। चाल।

मुहा०—दावँ पर रखना या लगाना। रुपया-पैसा या कोई वस्तु बाजी पर लगाना।

८. पासे, जुए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो।

मुहा०—दावँ देना=खेल में हारने पर नियत दंड भोगना या परिश्रम करना। (लड़के)

†९. स्थान। ठौर। जगह।

**दावँना**—क्रि० स० [सं० दमन] दाना और भूसा अलग करने के लिए कटी हुई फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।

**दावँनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना। बंदी।

**दावँरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। रज्जु।

**दाव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वन की आग। ३. आग। अग्नि। ४. जलन। ताप।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हथियार।

**दावत**—संज्ञा स्त्री० [अ० दअवत] १. ज्योंनार। भोज। २. खाने का बुलावा। निमंत्रण।

**दावन**—संज्ञा पुं० [सं० दमन] १. दमन। नाश। २. हँसिया। ३. एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। खुखड़ी।

**दावना**—क्रि० स० दे० "दावँना"। क्रि० स० [हिं० दावन] दमन करना।

**दावनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दावँनी"।

**दावा**—संज्ञा स्त्री० [सं० दाव] बन में लगनेवाली आग जो पेड़ों की डालियों के एक दूसरीसे रगड़ खाने से उत्पन्न होती है।

संज्ञा पुं० [अ०] १. किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य्य। किसी चीज पर हक जाहिर करना। २. स्वत्व। हक। ३. किसी जायदाद या रुपये-पैसे के लिए चलाया हुआ मुकदमा। ४ नालिश। अभियोग। ५. अधिकार। जोर। ६. कोई बात कहने में वह साहस जो उसकी यथार्थता के निश्चय से उत्पन्न होता है। दृढ़ता। ७. दृढ़तापूर्वक कथन।

**दावागीर**—संज्ञा पुं० [अ० दावा+फ़ा० गीर] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

**दावाग्नि**—संज्ञा स्त्री० दे० "दावानल"।

**दावात**—संज्ञा स्त्री० [अ०] स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।

**दावादार**—संज्ञा पुं० [अ० दावा+फ़ा० दार] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

**दावानल**—संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि। दावा।

**दावनी***—संज्ञा स्त्री० [सं० दामिनी] १. बिजली। २. दावनी नाम का गहना।

**दाशरथि**—संज्ञा पुं० [सं०] दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि।

**दाशार्ह**—संज्ञा पुं० [सं०] दशरह से उत्पन्न यादव। कृष्ण।

**दास**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० दासी] १. वह जो अपने को दूसरे

की सेवा के लिए समर्पित कर दे। सेवक। चाकर। नौकर। मनुस्मृति में सात प्रकार के और याज्ञवल्क्य, नारद आदि में पंद्रह प्रकार के दास कहे गए हैं। २. शूद्र। ३. धीवर। ४. एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के आगे लगाई जाती है। ५. दस्यु। ६ वृत्रासुर।

†*संज्ञा पुं० दे० "डासन"।

**दासता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दास का कर्म। दासत्व। सेवावृत्ति।

**दासत्व**—संज्ञा पु० दे० "दासता"।

**दासन**—संज्ञा पु० दे० "डासन"।

**दासपन**—संज्ञा पुं० दे० "दासता"।

**दासा**—संज्ञा पु० [ सं० दासी=वेदी ] १ दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिस पर चीज-वस्तु भी रख सकें। २ आँगन के चारों ओर दीवार से सटा-कर उठाया हुआ चबूतरा। ३ वह लकड़ी या पत्थर जो दरवाजे पर दीवार के आर-पार रहता है।

**दासानुदास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेवक का सेवक। अत्यंत तुच्छ सेवक। (नम्रता)

**दासी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सेवा करनेवाली स्त्री। टहलनी। लौंडी।

**दासीपुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी का रखेला या दासी से उत्पन्न पुत्र।

**दासेय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दासेयी ] दास से उत्पन्न। गुलामजादा।

**दास्तान**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वृत्तांत। हाल। २. कथा। किस्सा। ३. वर्णन।

**दास्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दासत्व। दासपन। सेवा। २. भक्ति के नौ भेदों में से एक जिसमें उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उनका दास समझते हैं।

**दाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जलाने की क्रिया या भाव। भस्मीकरण। २. शव जलाने की क्रिया। मुर्दा फूँकने का कर्म। ३. जलन। ताप। ४. एक रोग जिसमें शरीर में जलन मालूम होती है, प्यास लगती है और कंठ सूखता है। ५. शोक। संताप। अत्यंत दुःख। ६. डाह। ईर्ष्या।

**दाहक**—वि० [ सं० ] जलानेवाला।

संज्ञा पुं० १. चित्रक वृक्ष। २. अग्नि।

**दाहकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जलने का भाव या गुण।

**दाहकर्म**†—संज्ञा पुं० [ सं० ] शवदाह-कर्म। मुर्दा फूँकने का काम।

**दाहक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृतक को जलाने का संस्कार। शव-दाह-कर्म।

**दाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ जलाने का काम। २ जलवाने या भस्म कराने की क्रिया।

**दाहना**—क्रि० स० [ सं० दाह ] १. भस्म करना। २ जलाना। दुःख पहुँचाना।

वि० दे० "दाहिना"।

**दाहिना**—वि० [ सं० दक्षिण ] [ स्त्री० दाहिनी ] १. उस पार्श्व का जिसके अंगों की पेशियों में अधिक बल होता है। 'बायाँ' का उलटा। दक्षिण। अपसव्य।

**मुहा०**- दाहिनी देना=दक्षिणावर्त्त परि-क्रमा करना। दाहिनी लाना=प्रद-क्षिणा करना। (किसी का) दाहिना हाथ होना=बड़ा भारी सहायक होना।

२ उधर पड़नेवाला जिधर दाहिना हाथ हो। ३. अनुकूल। प्रसन्न।

**दाहिनावर्त्त***—वि० दे० "दक्षि-णावर्त्त"।

**दाहिने**—क्रि० वि० [ हिं० दाहिना ] उस तरफ जिस तरफ दाहिना हाथ हो। दाहिने हाथ की दिशा में।

**दाही**—वि० [ सं० दाहिन् ] [ स्त्री० दाहिनी ] जलानेवाला। भस्म करने-वाला।

**दिंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का नाच।

**दिंडी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

**दिअना***—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

**दिअली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दीया का स्त्री० अल्पा० ] १. मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरा। २. दे० "दिउली"।

**दिआ**—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

**दिआना**—क्रि० स० दे० "दिलाना"।

**दिउली**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दिअली ] १. सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरंड। दाल। २. दे० "दिअली"। ३. मछली के ऊपर से छूटने वाला छिलका। सेहरा।

**दिक्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिशा। ओर।

**दिक**—वि० [ अ० ] १. जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तंग। २. अस्वस्थ। बीमार। ('तबीयत' शब्द के साथ)

संज्ञा पुं० क्षय रोग। तपेदिक।

**दिकदाह**—संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह"।

**दिक्क**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "दिक"।

**दिक्कत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दिक का भाव। परेशानी। तकलीफ। तंगी। कष्ट। २. कठिनता। मुश्किल।

**दिक्कन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिशा-रूपी कन्या। ( पुराणों में दसों

दिशाएँ ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं )।

**दिक्करी**—संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

**दिक्कांता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिक्कन्या।

**दिक्कुंजर**—संज्ञा पुं० वह काल्पनिक हाथी जिन पर दिशाएँ खड़ी हैं।

**दिक्पाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार दसों दिशाओं के पालन करनेवाले देवता। यथा—पूर्व के इंद्र। दक्षिण के यम आदि। २. चौबीस मात्राओं का एक छंद। उर्दू का रेख्ता यही है।

**दिक्शूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास। जिस दिन जिस दिशा में दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ माना जाता है।

**दिक्साधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह उपाय या विधि जिससे दिशाओं का ज्ञान हो।

**दिक्सुन्दरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्कन्या"।

**दिखना**†—क्रि० अ० [ हिं० देखना ] दिखाई देना। देखने में आना।

**दिखराना***—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

**दिखरावना***— क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

**दिखरावनी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दिखलाना ] दिखाने का भाव या क्रिया।

**दिखलवाई**— संज्ञा स्त्री० [ हिं० दिखलाना ] १. वह धन जो दिखलवाने के बदले में दिया जाय। २. दे० "दिखलाई"।

**दिखलवाना**— क्रि० स० [ हिं० दिखलाना का प्रे० ] दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

**दिखलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दिखलाना ] १. दिखलवाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो दिखलाने के बदले में दिया जाय।

**दिखलाना**—क्रि० स० [ हिं० देखना का प्रे० रूप ] १. दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। दृष्टिगोचर कराना। दिखाना। २. अनुभव कराना। मालूम कराना। जताना।

**दिखहार***†—संज्ञा पुं० [ हिं० देखना + हार ( प्रत्य० ) ] देखनेवाला।

**दिखाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दिखाना + आई ( प्रत्य० ) ] १. देखने या दिखाने का काम। २ वह धन जो देखने या दिखाने के बदले में दिया जाय।

**दिखाऊ**†—वि० [ हिं० देखना + आऊ ( प्रत्य० ) ] १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। ३. दिखौआ। बनावटी।

**दिखादिखी**—संज्ञा स्त्री० दे० "देखा देखी"।

**दिखाना**—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

**दिखाव**— संज्ञा पुं० [ हिं० देखना + आव ( प्रत्य० ) ] १. देखने का भाव या क्रिया। २. दृश्य। नजारा।

**दिखावटी**—वि० दे० "दिखौआ"।

**दिखावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० देखना + आवा ( प्रत्य० ) ] ऊपरी तड़क-भड़क। आडंबर।

**दिखैया***†—संज्ञा पुं० [ हिं० देखना + ऐया ( प्रत्य० ) ] दिखलाने या देखनेवाला।

**दिखौआ**— वि० [ हिं० देखना + औआ ( प्रत्य० ) ] वह जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। बनावटी।

**दिगंगना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिशारूपिणी स्त्री।

**दिगंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दिशा का छोर। दिशा का अंत। २. आकाश का छोर। क्षितिज। ३. सब दिशाएँ।

संज्ञा पुं० [ सं० दृग् + अंत ] आँख का कोना।

**दिगंतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दो दिशाओं के बीच का स्थान।

**दिगंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। महादेव। २. नंगा रहनेवाला जैन यति। दिगंबर यति। क्षपणक। ३. अंधकार। तम। ४. जैनियों की एक शाखा।

वि० नंगा। नग्न।

**दिगंबरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नंगापन।

**दिगंश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अंश।

**दिगंश यंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह यंत्र जिससे किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगंश जाना जाय।

**दिग्**—संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्"।

**दिग्दंति***†—संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

**दिग्पाल**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

**दिग्गज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए स्थापित हैं।

वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

**दिग्घ***†—वि० [ सं० दीर्घ ] १. लंबा । २. बड़ा ।

**दिग्दर्शक यंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] डिबिया के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है । कुतुबनुमा ।

**दिग्दर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो कुछ उदाहरण-स्वरूप दिखलाया जाय । नमूना । २. नमूना दिखाने का काम । ३. अभिज्ञता । जानकारी ।

**दिग्दाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक दैवी घटना जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशाएँ लाल और जलती हुई सी दिखलाई पड़ती हैं । ( अशुभ )

**दिग्देवता**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

**दिग्पट**—संज्ञा पुं० [ सं० दिक्पट ] १. दिशारूपी वस्त्र । २. नंगा । दिगंबर ।

**दिग्पति**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

**दिग्भ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिशाओं का भ्रम होना । दिशा भूल जाना ।

**दिग्मंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिशाओं का समूह । संपूर्ण दिशाएँ ।

**दिग्राज**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

**दिग्वस्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महादेव । शिव । २. नंगा रहनेवाला जैन यति ।

**दिग्वास**—संज्ञा पुं० दे० "दिग्वस्त्र" ।

**दिग्विजय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. राजाओं का अपनी वीरता दिखलाने और महत्त्व स्थापित करने के लिए देश-देशांतरों में अपनी सेना के साथ जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना । २. अपने गुण, विद्या या बुद्धि आदि के द्वारा देश-देशांतरों में अपना महत्त्व स्थापित करना ।

**दिग्विजयी, दिग्विजेता**—वि० पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दिग्विजयिनी ] जिसने दिग्विजय किया हो ।

**दिग्विभाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिशा । ओर ।

**दिग्व्यापी**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दिग्व्यापिनी ] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो ।

**दिग्शूल**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल" ।

**दिङ्नाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दिग्गज । २.एक बौद्ध नैयायिक और आचार्य, जो मल्लिनाथ के अनुसार कालिदास के समय में हुए थे और उनके बड़े भारी प्रतिद्वन्द्वी थे ।

**दिङ्मंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] दिशाओं का समूह ।

**दिच्छित***†—संज्ञा पुं०, वि दे० "दीक्षित" ।

**दिजराज***†—संज्ञा पुं० दे० "द्विजराज" ।

**दिठवन**—संज्ञा स्त्री० दे० "देवोत्थान" ।

**दिठादिठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "देखादेखी" ।

**दिठाना**—क्रि० अ० [ हिं० दीठ ] बुरी दृष्टि लगना ।

क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना ।

**दिठौना**†—संज्ञा पुं० [ हिं० दीठ=दृष्टि +औना (प्रत्य०) ] काजल की वह बिंदी जो बालकों को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं ।

**दिढ़***†—वि० दे० "दृढ़" ।

**दिढ़ाना***†—क्रि० स० [ सं० दृढ़+आना ( प्रत्य० ) ] १. पक्का करना । मजबूत करना । २. निश्चित करना ।

**दिढ़ाव***—संज्ञा पुं० दे० "दृढ़ता" ।

**दिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कश्यप ऋषि की एक स्त्री जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या और दैत्यों की माता थी ।

**दितिसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दैत्य । राक्षस ।

**दिदार**—संज्ञा पुं० दे० "दीदार" ।

**दिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय ।

**मुहा०**—दिन को तारे दिखाई देना=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे । दिन को दिन, रात को रात न जानना या समझना=अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना । दिन चढ़ना=सूर्योदय होना । दिन छिपना या डूबना=संध्या होना । दिन ढलना=संध्या का समय निकट आना । दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े =बिलकुल दिन के समय । दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी जल्दी और बहुत अधिक बढ़ना । खूब उन्नति पर होना । दिन निकलना=सूर्योदय होना ।

**यौ०**—दिन रात=सदा । हर वक्त । २. उतना समय जितने में पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूमती है । आठ पहर या चौबीस घंटे का समय ।

**मुहा०**—दिन दिन या दिन पर दिन=नित्य प्रति । सदा । हर रोज ।

३. समय । काल । वक्त ।

**मुहा०**—दिन काटना या पूरे करना=निर्वाह करना । समय बिताना । दिन बिगड़ना=बुरे दिन होना ।

४. नियत या उपयुक्त काल । निश्चित या उचित समय ।

**मुहा०**—दिन धरना=दिन निश्चित करना ।

५. वह समय जिसके बीच कोई विशेष बात हो। जैसे—गर्भ के दिन, बुरे दिन।

मुहा०—दिन चढ़ना=किसी स्त्री का गर्भवती होना। दिन फिरना=बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना। दिन भरना=बुरे दिन काटना।

क्रि० वि० सदा। हमेशा।

**दिनअर***—संज्ञा पुं० दे० "दिनकर"।

**दिनकंत***†—संज्ञा पुं० [ सं० दिन + हिं० कंत ( कांत ) ] सूर्य।

**दिनकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य।

**दिनचर्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिन भर का काम-धंधा। दिन भर का कर्तव्य कर्म्म।

**दिनदानी***†—संज्ञा पुं० [ सं० दिन + दानी ] प्रति दिन दान करनेवाला।

**दिननाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य।

**दिनपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य।

**दिनपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र या पत्र-समूह जिसमें वार, तिथियाँ और तारीखें आदि दी रहती हैं। कैलेंडर।

**दिनमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य। रवि।

**दिनमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान। दिन का प्रमाण।

**दिनराइ***—संज्ञा पुं० दे० "दिनराज"।

**दिनराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य।

**दिनांत**—संज्ञा पुं० [ सं० दिनान्त ] दिन का अंत। संध्या।

**दिनांध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसे दिन को न सूझे।

**दिनाइ**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] दाद नामक रोग।

**दिनाई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दिन, हिं० आना ] कोई ऐसी विषाक्त वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही समय में मृत्यु हो जाय।

**दिनार***—संज्ञा पुं० दे० "दीनार"।

**दिनियर***†—संज्ञा पुं० [ सं० दिनकर ] सूर्य।

**दिनी**—वि० [ हिं० दिन + ई (प्रत्य०) ] बहुत दिनों का। पुराना। प्राचीन।

**दिनेर**—संज्ञा पुं० [ सं० दिनकर ] सूर्य।

**दिनेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. दिन के अधिपति ग्रह।

**दिनौंधी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दिन + अंध + ई ( प्रत्य० )] एक रोग जिसमें दिन के समय सूर्य की तेज किरणों के कारण बहुत कम दिखाई देता है।

**दिपति***†—संज्ञा स्त्री० दे० "दीप्ति"।

**दिपना***—क्रि० अ० [ सं० दीप्ति ] प्रकाशमान होना। चमकना।

**दिपाना**—क्रि० अ० दे० "दिपना"।

**दिब***—संज्ञा पुं० दे० "दिव्य"।

**दिमाक**—संज्ञा पुं० दे० "दिमाग"।

**दिमाग**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सिर का गूदा। मस्तिष्क। भेजा।

मुहा०—दिमाग खाना या चाटना=व्यर्थ की बातें कहना। बहुत बकवाद करना। दिमाग खाली करना=ऐसा काम करना जिसमें मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो। मगजपच्ची करना। दिमाग चढ़ना या आसमान पर होना=बहुत अधिक घमंड होना।

२. मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ।

मुहा०—दिमाग लड़ाना=बहुत अच्छी तरह विचार करना। खूब सोचना।

३. अभिमान। घमंड। शेखी।

**दिमागचट**—वि० [ हिं० दिमाग + चाटना ] बक बक कर सिर खानेवाला। बकवादी।

**दिमागदार**—वि० [ अ० दिमाग + फ़ा० दार ( प्रत्य० ) ] १. जिसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो। बहुत बड़ा समझदार। २. अभिमानी। घमंडी।

**दिमागी**—वि० दे० "दिमागदार"।

वि० दिमाग-संबंधी।

**दिमात***†—संज्ञा पुं०, वि० [ सं० द्विमातृ ] दो माताओंवाला। वह जिसकी दो माताएँ हों।

वि०, संज्ञा पुं० [ सं० द्विमात्र ] वह जिसमें दो मात्राएँ हों। दो मात्राओं वाला।

**दिमाना***†—वि० दे० "दीवाना"।

**दियना**‡—संज्ञा पुं० दे० "दीआ"।

क्रि० अ० [ सं० दीप्त ] चमकना।

**दियरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दीआ + रा ( प्रत्य० ) ] १. एक प्रकार का पकवान। २ वह लुक जो शिकारी हिरनों को आकर्षित करने के लिए जलाते हैं। ३ दे० "दीपा"।

**दिया**—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

**दियारा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दयार=प्रदेश ] १. नदी के किनारे की वह जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है। कछार। खादर। दरिया-बरार। २ प्रदेश। प्रांत।

**दियासलाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "दीयासलाई"।

**दिरद***—संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

**दिरम**—संज्ञा पुं० [ अ० दरहम ] १ मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का। दिरहम। २. साढ़े तीन माशे की एक तौल।

**दिरमान**†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दरमान ] चिकित्सा। इलाज।

**दिरमानी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दरमान + ई ( प्रत्य० ) ] इलाज करनेवाला।

चिकित्सक।

**दिरानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "देवरानी"।

**दिरिस***†—संज्ञा पुं० दे० "दृश्य"।

**दिल**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कलेजा। हृदय। २. मन। चित्त। हृदय। जी। **मुहा०**—दिल कड़ा करना=हिम्मत बाँधना। साहस करना। दिल का कँवल खिलना=चित्त प्रसन्न होना। मन में आनंद होना। दिल का गवाही देना=मन में किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना। दिल का बादशाह=१. बहुत बड़ा उदार। २ मनमौजी। लहरी। दिल के फफोले फोड़ना=भली बुरी सुनाकर अपना जी ठंढा करना। दिल जमना=१ किसी काम में चित्त लगना। ध्यान या जी लगना। २. संतुष्ट होना। जी भरना। दिल ठिकाने होना=मन में शांति, संतोष या धैर्य होना। चित्त स्थिर होना। दिल देना=आशिक होना। प्रेम करना। दिल बुझना=चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल में फरक आना=सद्भाव में अंतर पड़ना। मन-मोटाव होना। दिल में=१. जी लगाकर। अच्छी तरह। ध्यान देकर। २. अपने मन से। अपनी इच्छा से। दिल से दूर करना=भुला देना विस्मरण करना। ध्यान छोड़ देना। दिल ही दिल में=चुपके चुपके। मन ही मन।

(शेष मुहावरों के लिए देखो "जी" और "कलेजा" के मुहावरे।)

३. साहस। दम। ४. प्रवृत्ति। इच्छा।

**दिलगीर**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दिलगीरी] १. उदास। २. दुःखी।

**दिलचला**—वि० [फ़ा० दिल+हिं० चलना] १. साहसी। हिम्मतवाला। दिलेर। २. वीर। बहादुर।

**दिलचस्प**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दिलचस्पी] जिसमें जी लगे। मनोहर। चित्ताकर्षक।

**दिलजमई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० दिल+अ० जमअ+ई (प्रत्य०)] इतमीनान। तसल्ली।

**दिलजला**—वि० [फ़ा० दिल+हिं० जलना] जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा हो।

**दिल-जोई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी का मन रखने के लिए उसे प्रसन्न करना।

**दिलदार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दिलदारी] १. उदार। दाता। २. रसिक। ३. प्रेमी। प्रिय।

**दिलफेंक**—संज्ञा पुं० [दिल+फेंक] जिसका हृदय वश में न हो। जो सरलता से प्रेम-पाश में फँस जाय।

**दिलबर**—वि० [फ़ा०] प्यारा। प्रिय।

**दिलबस्तगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] किसी बात में दिल लगाना। मनोरंजन।

**दिलरुबा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा।

**दिलवाना**-क्रि० स० दे० "दिलाना"।

**दिलशिकन**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दिलशिकनी] दुःखी या निराश करके दिल तोड़नेवाला।

**दिलहा**-संज्ञा पुं० दे० "दिल्ला"। जोड़दार किवाड़ों का वह भाग जो बीच में होता है।

**दिलाना**—क्रि० स० [हिं० देना का प्रे०] दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना।

**दिलावर**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दिलावरी] १. शूर। बहादुर। २. उत्साही। साहसी।

**दिलासा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० दिल+हिं० आसा] तसल्ली। ढारस। आश्वासन। धैर्य।

**यौ०**—दम-दिलासा=१.तसल्ली। धैर्य। २. दम-बुत्ता=धोखा। फरेब।

**दिली**—वि० [फ़ा० दिल+ई (प्रत्य०)] १.हृदय या दिल-संबंधी। हार्दिक। २. अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्नहृदय। जिगरी।

**दिलीप**—संज्ञा पुं० [सं०] इक्ष्वाकुवंशी एक राजा जो वाल्मीकि के अनुसार राजा सगर के परपोते, भगीरथ के पिता और रघु के परदादा थे, किंतु रघुवंश के अनुसार इन्हीं राजा दिलीप की स्त्री सुदक्षिणा के गर्भ से राजा रघु उत्पन्न हुए थे।

**दिलेर**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दिलेरी] १. बहादुर। शूर। वीर। २. साहसी।

**दिल्लगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० दिल+हिं० लगना] १. दिल लगाने की क्रिया या भाव। २. केवल चित्त-विनोद या हँसने हँसाने की बात। ठट्ठा। ठठोली। मजाक। मखौल। **मुहा०**—किसी बात की दिल्लगी उड़ाना=(किसी बात का) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिए (उसे) हँसी में उड़ा देना। उपहास करना।

**दिल्लगीबाज़**—संज्ञा पुं० [हिं० दिल्लगी+फ़ा० बाज़] हँसी-दिल्लगी करनेवाला। मसखरा।

**दिल्ला**—संज्ञा पुं० [देश०] किवाड़ के पल्ले में लकड़ी का वह चौखटा जो शोभा के लिए बना या जड़ दिया जाता है। आईना।

**दिल्लीवाल**—संज्ञा पुं० [ दिल्ली नगर] एक प्रकार का जूता। सलेमशाही।

**दिव**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० दिवता] १. स्वर्ग। २. आकाश। ३. वन। ४. दिन।

**दिवराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**दिवला***—संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

**दिवस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिन। रोज।

**दिवस-अंध***-संज्ञा पुं० दे० 'दिवांध'।

**दिवस-मुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रातःकाल। सबेरा।

**दिवस्पति**—संज्ञा पु० [ सं० ] सूर्य।

**दिवांध**—वि० [ सं० ] जिसे दिन मे न सूझे। जिसे दिनौंधी हो।
संज्ञा पुं० १. दिनौंधी का रोग। २. उल्लू।

**दिवा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दिन। दिवस। २. बाईस अक्षरो का एक वर्णवृत्त। मालिनी।

**दिवान**—संज्ञा पुं० दे० "दीवान"।

**दिवाकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य।

**दिवाना**†-संज्ञा पुं० दे० "दीवाना"।
*†क्रि० स० दे० "दिलाना"।

**दिवाभिसारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिए संकेत-स्थान में जाय।

**दिवार**—वि० [ हिं० देना+वार (प्रत्य०) ] जो देता हो। देनेवाला।
†संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

**दिवाला**—संज्ञा पु० [ हिं० दिया+बालना=जलाना ] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिए कुछ न रह जाय। टाट उलटना।

**मुहा०**—दिवाला निकलना=दिवाला होना। दिवाला मारना=दिवालिया बन जाना। ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना।
२. किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना।

**दिवालिया**—वि० [ हिं० दिवाला+इया (प्रत्य०) ] जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ न बच गया हो।

**दिवाली**—संज्ञा स्त्री० दे० 'दीवाली'।

**दिवैया**—वि० [ हिं० देना+वैया (प्रत्य०) ] देनेवाला। जो देता हो।

**दिवोदास**—संज्ञा पुं० चंद्रवंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र जो काशी के राजा थे और धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं।

**दिवोल्का**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिन के समय आकाश से गिरनेवाला पिंड या उल्का।

**दिवौका**—संज्ञा पुं० [ सं० दिवौकस् ] १. वह जो स्वर्ग में रहता हो। २. देवता।

**दिव्य**—वि० [ सं० ] [स्त्री० दिव्या ] १. स्वर्ग से संबंध रखनेवाला। स्वर्गीय। २. आकाश से संबंध रखनेवाला। अलौकिक। ३. प्रकाशमान। चमकीला। ४. खूब साफ या सुंदर।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यव। जौ। २. तत्ववेत्ता। ३. तीन प्रकार के केतुओं में से एक। ४. आकाश में होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। ५. तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो। जैसे—इंद्र, राम। ६. व्यवहार या न्यायालय में प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था। ये परीक्षाएँ नौ प्रकार की होती थीं—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंडुल, तप्तमाषक, फूल तथा धर्मज। ७. शपथ, विशेषतः देवताओं आदि की शपथ। सौगंध। कसम।

**दिव्यचक्षु**—संज्ञा पुं० [ सं० दिव्यचक्षुस् ] १. ज्ञानचक्षु। २. अंधा। ३. चश्मा। ऐनक।

**दिव्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दिव्य का भाव। २. देवभाव। ३. सुंदरता। उत्तमता।

**दिव्यदृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त, परोक्ष अथवा अंतरिक्ष पदार्थ दिखाई दें। २. ज्ञान-दृष्टि।

**दिव्यरथ**—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं का विमान।

**दिव्यसूरि**—संज्ञा पुं० [सं०] रामानुज संप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम ये हैं—कसार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्त, भक्ताङ्घ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविद्र, रामानुज और गोदा देवी या मधुकर कवि।

**दिव्यांगना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देववधू। २. अप्सरा।

**दिव्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायिका। जैसे—पार्वती, सीता आदि।

**दिव्यादिव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीन प्रकार के नायकों में से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिसमें देवताओं के भी गुण हों। जैसे—नल, अभिमन्यु।

**दिव्यादिव्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक। वह इहलौकिक नायिका जिसमें स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों। जैसे—दमयंती, उर्वशी आदि।

**दिव्यास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवताओं का दिया हुआ हथियार।

२ मत्रों द्वारा चलने वाला हथियार ।

**दिव्योदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वर्षा का जल। पानी ।

**दिश्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दिशा । दिक् ।

**दिशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार । ओर । तरफ । २. क्षितिज वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों में से किसी एक विभाग की ओर का विस्तार । ये चार विभाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं। प्रत्येक दो दिशाओं के बीच में एक कोण भी होता है। इनके सिवा एक ऊर्ध्व या सिर के ऊपर की ओर दूसरी अधः या पैर के नीचे की ओर भी माना जाता है। ३. दस की संख्या ।

**दिशाभ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिशाओं के संबंध में भ्रम होना । दिक्भ्रम ।

**दिशाशूल**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल" ।

**दिशि**—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

**दिश्य**—वि० [ सं० ] दिशा-संबंधी ।

**दिष्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाग्य । २. उपदेश । ३. दारुहलदी । ४. ...क ।

**दिष्टबंधक**—संज्ञा पुं० [ सं० दृष्टि+बंधक ] वह रेहन जिसमें चीज पर रुपये देने वाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे ।

**दिष्टि***—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि" ।

**दिसंतर*†**—संज्ञा पुं० [ सं० देशांतर ] देशांतर । विदेश । परदेश । क्रि० वि० बहुत दूर तक ।

**दिस*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

**दिसना*†**—क्रि० अ० दे० "दिखना" ।

**दिसा**—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" । †संज्ञा स्त्री० [ सं० दिशा=ओर ] मलत्याग । पैखाना । झाड़ा फिरना ।

**दिशादाह*†**—संज्ञा पुं० दे० "दिग्दाह" ।

**दिसावर**—संज्ञा पुं० [ सं० देशांतर ] दूसरा देश । परदेश । विदेश ।

**दिसावरी**—वि० [ हिं० दिसावर+ई ( प्रत्य० ) ] विदेश से आया हुआ । बाहरी। ( माल )

**दिसि*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

**दिसिटि*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि" ।

**दिसिदुरद*†**—संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज" ।

**दिसिनायक*†**—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

**दिसिप***—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

**दिसिराज***—संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

**दिसैया*†**—वि० [ हिं० दिसना+ऐया (प्रत्य०) ] १. देखनेवाला । २. दिखानेवाला ।

**दिस्टि***—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि" ।

**दिस्टीबंध**—संज्ञा पुं० [ दृष्टिबंधन ] नजरबंद । जादू । इंद्रजाल ।

**दिस्ता**—संज्ञा पुं० दे० "दस्ता" ।

**दिहंदा**—वि० [ फ़ा० ] दाता । देनेवाला ।

**दिहकान**-संज्ञा पुं० दे० "दहकान" ।

**दिहा**—संज्ञा पुं० दे० "दिहाड़ा" ।

**दिहाड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दि+हाड़ा ( प्रत्य० ) ] १. दुर्गत । बुरी हालत । २. दिन ।

**दिहात**—संज्ञा स्त्री० दे० "देहात" ।

**दीआ**—संज्ञा पुं० दे० "दीया" ।

**दीक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दीक्षा देनेवाला गुरु । २. शिक्षक ।

**दीक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० दीक्षित ] दीक्षा देने की क्रिया ।

**दीक्षांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अवभृथ यज्ञ जो किसी यज्ञ के समापनांत में उसकी त्रुटि आदि के दोष की शांति के लिए हो । परीक्षोपरांत प्रमाणपत्र देने का उत्सव ।

**दीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान । यजन । २ गुरु या आचार्य्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश । मंत्र की शिक्षा जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। ३. उपनयन-संस्कार जिसमें आचार्य्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है। ४ वह मंत्र जिसका उपदेश गुरु करे। गुरुमंत्र ।

**दीक्षागुरु**—संज्ञा पुं [ सं० ] मंत्रोपदेष्टा गुरु ।

**दीक्षित**—वि० [सं०] १.जिसने सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो । २. जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मंत्र लिया हो । संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद ।

**दीखना**—क्रि० अ० [ हिं० देखना ] दिखाई देना । देखने में आना । दृष्टिगोचर होना ।

**दीघी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दीर्घिका ] बावली । पोखरा । तालाब ।

**दीच्छा***—संज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा" ।

**दीठ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दृष्टि ] १. देखने की वृत्ति या शक्ति । दृष्टि । २. टक । दृक्पात । नजर । निगाह । ( मुहावरे के लिए दे० "दृष्टि" के मुहावरे । ) ३. आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है । दृक्पथ ।

४. अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव बुरा पड़े। नजर।

**मुहा०**—दीठ उतारना या झाड़ना=मंत्र के द्वारा बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। दीठ खा जाना=किसी की बुरी दृष्टि के सामने पड़ जाना। टोक में आना। दीठ जलाना=नजर उतारने के लिए राई नोन या कपड़ा जलाना। ५ देखने के लिए खुली हुई आँख। ६. देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ७. परख। पहचान। तमीज। ८. कृपा-दृष्टि। मिहरबानी की नजर। ९ आशा की दृष्टि। उम्मीद। १० विचार। संकल्प।

**दीठबंदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दीठ+बंध] इंद्रजाल की ऐसी माया जिससे लोगों को और का और दिखाई दे। नजरबंदी। जादू।

**दीठवंत**—वि० [सं० दृष्टि+वंत] जिसे दिखाई दे। सुझाखा।

**दीदा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० दीदः] १ दृष्टि। नजर। २. आँख। नेत्र।

**मुहा०**—दीदा लगना=जी लगना। ध्यान जमना। दीदे का पानी ढल जाना=निर्लज्ज हो जाना। दीदे निकालना=क्रोध की दृष्टि से देखना। दीदे फाड़कर देखना=अच्छी तरह आँख खोलकर देखना।

३. अनुचित साहस। ढिठाई।

**दीदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दर्शन। देखा-देखी।

**दीदी**—संज्ञा स्त्री० [पुं० हिं० दादा=बड़ा भाई] बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।

**दीधिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सूर्य, चंद्रमा आदि की किरण। २. प्रकाश। ३. उँगली।

**दीन**—वि० [सं०] [स्त्री० दीना] १. जिसकी दशा हीन हो। दरिद्र। गरीब। २. दुःखित। संतप्त। कातर। ३. जिसका मन मरा हुआ हो। उदास। खिन्न। ४ दुःख या भय से अधीनता प्रकट करनेवाला। नम्र। विनीत।

संज्ञा पुं० [अ०] मत। मजहब।

**दीनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दरिद्रता। गरीबी। २. नम्रता। विनीत भाव।

**दीनताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "दीनता"।

**दीनत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] दीनता।

**दीनदयालु**—वि० [सं०] दीनों पर दया करनेवाला।

संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम।

**दीनदार**—वि० [अ० दीन+फ़ा० दार] [संज्ञा दीनदारी] अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला। धार्मिक।

**दीन-दुनिया**—संज्ञा स्त्री० [अ० दीन+दुनिया] यह लोक और परलोक।

**दीनबंधु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुखियों का सहायक। २. ईश्वर का एक नाम।

**दीनानाथ**—संज्ञा पुं० [सं० दीन+नाथ] १. दीनों का स्वामी या रक्षक। २ ईश्वर।

**दीनार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ण-भूषण। सोने का गहना। २. निष्क का तौल। ३. स्वर्णमुद्रा। मोहर।

**दीप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीया। चिराग। २. दस मात्राओं का एक छंद। संज्ञा पुं० दे० "द्वीप"।

**दीपक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीया। चिराग।

**यौ०**—कुलदीपक=वंश को उजाला करनेवाला।

२. एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत (जो वर्णन का विषय हो) और अप्रस्तुत (जो वर्णन का उपस्थित विषय न हो और उपमान आदि हो) का एक ही धर्म्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक होता है। ३ संगीत में छः रागों में से दूसरा राग। ४. केसर। कुंकुम। वि० [सं०] [स्त्री० दीपिका] १. प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। २ पाचन की अग्नि को तेज करनेवाला। ३. शरीर में वेग या उमंग लानेवाला। उत्तेजक।

**दीपकमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वर्णवृत्त। २. दीपक अलंकार का एक भेद, जिसमें कई दीपक एक साथ आते हैं।

**दीपकवृक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह बड़ा दीवट जिसमें दीए रखने के लिए कई शाखाएँ हों। २. झाड़।

**दीपकावृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद।

**दीपत, दीपति***—संज्ञा स्त्री० [सं० दीप्ति] १. कांति। चमक। प्रभा। २. शोभा। ३. कीर्ति।

**दीपदान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देवता के सामने दीपक जलाने का काम, जो पूजन का एक अंग समझा जाता है। २. एक कृत्य जिसमें मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीए का संकल्प कराया जाता है।

**दीपध्वज**—संज्ञा पुं० [सं०] काजल।

**दीपन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्त, दीप्य] १. प्रकाश के लिए जलाने का काम।

प्रकाशन। २. भूख को उभारना। ३. आवेग उत्पन्न करना। उत्तेजन। वि० दीपन करनेवाला। जठराग्नि-वर्द्धक।
संज्ञा पुं० मंत्र के उन दस संस्कारों में से एक जिनके बिना मंत्र सिद्ध नहीं होता।

**दीपना***—क्रि० अ० [ सं० दीपन ] प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना।
क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।

**दीपमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जलते हुए दीपों की पंक्ति। २. दीपदान। आरती के लिए जलाई हुई बत्तियों का समूह।

**दीपमालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दीपदान, आरती या शोभा के लिए दीयों की पंक्ति। २. दीवाली।

**दीपमाली**—संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।

**दीपशिखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दीये की टेम। चिराग की लौ। प्रदीप-ज्वाला।

**दीपावलि**—संज्ञा स्त्री० दे० "दीपमालिका"।

**दीपिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छोटा दीया।
वि० स्त्री० उजाला फैलानेवाली।

**दीपित**—वि० [ सं० ] १. प्रकाशित। प्रज्वलित। २. चमकता या जगमगाता हुआ। ३. उत्तेजित।

**दीपोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दीवाली।

**दीप्त**—वि० [ सं० ] १. प्रज्वलित। जलता हुआ। २. जगमगाता हुआ। चमकीला।

**दीप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रकाश। उजाला। रोशनी। २. प्रभा। आभा। चमक। द्युति। ३. कांति। शोभा। छवि। ४. ज्ञान का प्रकाश।

**दीप्तिमान्**—वि० [ सं० दीप्तिमत् ] [ स्त्री० दीप्तिमती ] १. दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। २. कांतियुक्त। शोभायुक्त।

**दीप्य**—वि० [ सं० ] १. जो जलाया जाने को हो। २. जो जलाने योग्य हो।

**दीप्यमान**—वि० [ सं० ] चमकता हुआ।

**दीबो**—संज्ञा पुं० दे० "देना"।

**दीमक**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा। यह लकड़ी, कागज आदि में लगकर उसे खोखला और नष्ट कर देता है। वल्मीक।

**दीयट**—संज्ञा पुं० दे० "दीवट"।

**दीया**—संज्ञा पुं० [ सं० दीपक ] १. उजाले के लिए जलाई हुई बत्ती। चिराग। दीपक।
मुहा०—दीया ठंढा करना=दीया बुझाना। (किसी के घर का) दीया ठंढा होना=किसी के मरने से कुल में अंधकार छा जाना। दीया बढ़ाना=दीया बुझाना। दीया-बत्ती करना=रोशनी का सामान करना। चिराग जलाना। दीया लेकर ढूँढ़ना=चारों ओर हैरान होकर ढूँढ़ना। बड़ी छान-बीन से खोजना।
२. [ स्त्री० अल्पा० दिवली, दियली ] बत्ती जलाने का छोटा कसोरा।

**दीयासलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दीया+सलाई ] लकड़ी की छोटी सलाई या सींक जिसका एक सिरा गंधक आदि लगी रहने के कारण रगड़ने से जल उठता है।

**दीरघ***—वि० दे० "दीर्घ"।

**दीर्घ**—वि० [सं०] १. आयत। लंबा। २. बड़ा। (देश और काल दोनों के लिए)।
संज्ञा पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा। जैसे—आ, ई, ऊ।

**दीर्घकाय**—वि० [ सं० ] बड़े डील-डोल का।

**दीर्घजीवी**—वि० [ सं० दीर्घजीविन् ] जो बहुत दिनों तक जीए। बहुत काल तक जीनेवाला।

**दीर्घतमा**—संज्ञा पुं० [सं० दीर्घतमस्] एक जन्मांध ऋषि जो उतथ्य के पुत्र थे। इन्हीं ने अपनी स्त्री के अनुचित व्यवहार से अप्रसन्न होकर यह मर्यादा बाँधी थी कि कोई स्त्री एक के बाद दूसरा पति न कर सकेगी।

**दीर्घदर्शिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] परिणाम आदि का विचार करनेवाली बुद्धि। दूरदर्शिता।

**दीर्घदर्शी**—वि० [ सं० दीर्घदर्शिन् ] दूर तक की बात सोचनेवाला। दूरदर्शी।

**दीर्घदृष्टि**—वि० दे० "दीर्घदर्शी"।

**दीर्घनिद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मौत।

**दीर्घनिःश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लंबी साँस जो दुःख के आवेग के कारण ली जाती है।

**दीर्घबाहु**—वि० [ सं० ] जिसकी भुजाएँ लंबी हों।

**दीर्घलोचन**—वि० [सं०] बड़ी आँखों-वाला।

**दीर्घश्रुत**—वि० [ सं० ] १. जो दूर तक सुनाई पड़े। २. जिसका नाम दूर तक विख्यात हो।

**दीर्घसूत्र**—वि० दे० "दीर्घसूत्री"।

**दीर्घसूत्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव।

**दीर्घसूत्री**—वि० [ सं० दीर्घसूत्रिन् ] हर एक काम में जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला।

**दीर्घस्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] द्विमात्रिक स्वर।

**दीर्घायु**—वि० [ सं० ] बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। चिरंजीवी।

**दीर्घिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बावली। छोटा जलाशय। छोटा तालाब।

**दीर्ण**—वि० [ सं० ] १ फटा हुआ। विदीर्ण। २. टूटा हुआ। भग्न।

**दीवट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दीपस्थ ] पीतल, लकड़ी आदि का आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीपकाधार। चिरागदान।

**दीवा**—संज्ञा पुं० [सं० दीपक] दीया।

**दीवान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. राजा या बादशाह के बैठने की जगह। राजसभा। कचहरी। २. राज्य का प्रबंध करनेवाला। मंत्री। वजीर। प्रधान। ३. गजलों का संग्रह।

**दीवानआम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों। २. वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो।

**दीवानखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बड़े आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं। बैठक।

**दीवानखास**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० + अ० ] १. ऐसी सभा जिसमें राजा या बादशाह मंत्रियों तथा चुने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है। खास दरबार। २. वह जगह जहाँ खास दरबार होता है।

**दीवाना**—वि० [ फ़ा० ] [ स्त्री० दीवानी ] पागल।

**दीवानापन**—संज्ञा पुं० [फ़ा० दीवाना + पन ( प्रत्य० ) ] पागलपन। सिड़ीपन। विक्षिप्तता।

**दीवानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. दीवान का पद। २. वह न्यायालय जो संपत्ति आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे। ३ पगली।

**दीवार**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि को नीचे ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थान को घेरकर मकान आदि बनाते हैं। भीत। २. किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो।

**दीवारगीर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दीया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

**दीवाल**—संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

**दीवाली**—संज्ञा स्त्री० [सं० दीपावली] कार्त्तिक की अमावास्या को होनेवाला एक उत्सव जिसमें संध्या के समय घर में भीतर-बाहर बहुत से दीपक जलाकर पंक्तियों में रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लोग जूआ भी खेलते हैं।

**दीसना**—क्रि० अ० [ सं० दृश= देखना ] दिखाई पड़ना। दृष्टिगोचर होना।

**दीह***—वि० [ सं० दीर्घ ] लंबा। बड़ा।

**दुंद**—संज्ञा पुं० [ सं० द्वंद्व ] १. दो मनुष्यों के बीच होनेवाला युद्ध या झगड़ा। २. उत्पात। उपद्रव। ३. जोड़ा। युग्म।
संज्ञा पुं० [ सं० दुंदुभि ] नगाड़ा।

**दुंदुभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नगाड़ा।
*संज्ञा पुं० [सं० द्वंद्व] बार बार जन्म लेने और मरने का कष्ट।

**दुंदुभि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वरुण। २. विष। ३.एक राक्षस जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था।
संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नगाड़ा। धौंसा।

**दुंदुभी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुंदुभि"।

**दुंदुह***—संज्ञा पुं० [ सं० डुडुभ ] पानी का साँप। डेड़हा।

**दुंबा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दुंबालः ] एक प्रकार का मेढ़ा, जिसकी दुम चक्की के पाट की तरह गोल और भारी होती है।

**दुःकंत***—संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

**दुःख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऐसी अवस्था जिससे छुटकारा पाने की इच्छा प्राणियों में स्वाभाविक हो। सुख का विपरीत भाव। तकलीफ। कष्ट। क्लेश। ( सांख्य में दुःख तीन प्रकार के माने गए हैं—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। )
**मुहा०**—दुःख उठाना, पाना या भोगना=कष्ट सहना। तकलीफ सहना। दुःख देना या पहुँचाना= कष्ट पहुँचाना। दुःख बँटाना=सहानुभूति करना। कष्ट या संकट के समय साथ देना। दुःख भरना=कष्ट या संकट के दिन काटना।
२. संकट। आपत्ति। विपत्ति। ३. मानसिक कष्ट। खेद। रंज। ४. पीड़ा। व्यथा। दर्द। ५. व्याधि। रोग। बीमारी।

**दुःखकर**—संज्ञा पुं० दे० "दुःखद"।

**दुःखद, दुःखदाता**—वि० [ सं० दुःखदातृ ] दुःख पहुँचानेवाला।

**दुःखदायक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दुःखदायिका ] दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला।

**दुःखदायी**—वि० दे० "दुःखदायक"।

**दुःखप्रद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुःखद।

**दुःखमय**—वि० [सं०] क्लेश से भरा हुआ।

**दुःखवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें सदा संसार और उसकी सब बातें दुःखमय मानी जाती हैं।

**दुःखवादी**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो दुःखवाद पर विश्वास करता हो।

**दुःखांत**—वि० [सं०] १. जिसके अंत में दुःख हो। २. जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो। जैसे, दुःखांत नाटक।

संज्ञा पुं० १. दुःख का अन्त। क्लेश की समाप्ति। २. दुःख की पराकाष्ठा।

**दुःखित**—वि० [सं०] जिसे कष्ट या तकलीफ हो। पीड़ित। क्लेशित।

**दुःखिनी**—वि० स्त्री० [सं०] जिस पर दुःख पड़ा हो। दुखिया।

**दुःखी**—वि० [सं० दुःखिन्] [स्त्री० दुःखिनी] जिसे दुःख हो। जो कष्ट में हो।

**दुःशला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की कन्या, जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी।

**दुःशासन**—वि० [सं०] जिस पर शासन करना कठिन हो।

संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के सौ लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यंत प्रेमपात्र और मंत्री था। यह अत्यंत क्रूर स्वभाव का था। पांडव लोग जब जूए में हार गए थे, तब यही द्रौपदी को पकड़कर सभास्थल में लाया था।

**दुःशील**—वि० [सं०] बुरे स्वभाव का।

**दुःशीलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुष्टता।

**दुःसंधान**—संज्ञा पुं० [सं०] केशवदास के अनुसार काव्य में एक रस, जो उस स्थल पर होता है, जहाँ एक तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल; एक तो मेल की बात करता है, दूसरा बिगाड़ की।

**दुःसह**—वि० [सं०] जिसका सहन करना कठिन हो। जो कष्ट से सहा जाय।

**दुःसाध्य**—वि० [सं०] १. जिसका करना कठिन हो। २. जिसका उपाय कठिन हो।

**दुःसाहस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा साहस जिसका परिणाम कुछ न हो, या बुरा हो। व्यर्थ का साहस। २. ऐसी बात करने की हिम्मत जो अच्छी न समझी जाती हो या हो न सकती हो। अनुचित साहस। ढिठाई। धृष्टता।

**दुःसाहसी**—वि० [सं०] दुःसाहस करनेवाला।

**दुःस्वप्न**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो।

**दुःस्वभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] बुरा स्वभाव। दुःशीलता। बदमिजाजी।

वि० दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।

**दु**—वि० [हिं० दो] "दो" शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने के काम में आता है। जैसे-दुविधा, दुचित्ता।

**दुअन**—संज्ञा पुं० दे० "दुवन"।

**दुअन्नी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+आना] दो आने का सिक्का।

**दुआ**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रार्थना। दरखास्त। विनती। याचना।

**मुहा०**—दुआ माँगना=प्रार्थना करना।

२. आशीर्वाद। असीस।

**मुहा०**—दुआ लगना=आशीर्वाद का फलीभूत होना।

**दुआदस***—संज्ञा पुं० दे० "द्वादश"।

**दुआबा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] दो नदियों के बीच का प्रदेश।

**दुआर**†—संज्ञा पुं० [सं० द्वार] द्वार।

**दुआरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुआर] छोटा दरवाजा।

**दुआल**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. चमड़ा। २. चमड़े का तसमा। ३. रिकाब का तसमा।

**दुआली**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० द्वाल=तसमा] चमड़े का वह तसमा जिससे कसेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।

**दुइ**†—वि० दे० "दो"।

**दुइज**†*—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वितीय] पाख की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज।

संज्ञा पुं० [सं० द्विज] दूज का चाँद। द्वितीया का चंद्रमा। कम मिलनेवाला व्यक्ति।

**दुई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो] अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी।

**दुऊ***—वि० दे० "दोनों"।

**दुकड़हा**†—वि [हिं० दुकड़ा] तुच्छ। नीच।

**दुकड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० द्विक्+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ी] १. वह वस्तु जो एक साथ या एक में लगी हुई दो दो हो। जोड़ा। २. वह जिसमें कोई वस्तु दो दो हो या जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो। ३. एक पैसे का चौथाई भाग। दो दमड़ी। छदाम।

**दुकड़ी**—वि० स्त्री० [हिं० दुकड़ा] जिसमें कोई वस्तु दो दो हो।

संज्ञा स्त्री १. चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो दो बाध एक साथ बुने

जाते हैं। २. दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता। दुक्की। ३. दो घोड़ों की बग्घी।

**दुकना***—क्रि० अ० [ देश० ] छुकना। छिपना।

**दुकान**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ बेचने के लिए चीजें रखी हों और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हों। सौदा बिकने का स्थान। हट्ट। हट्टी।

**मुहा०**—दुकान बढ़ाना=दुकान बंद करना। दुकान लगाना=१. दुकान का असबाब फैला कर यथास्थान बिक्री के लिए रखना। २. बहुत-सी चीजों को इधर-उधर फैलाकर रख देना।

**दुकानदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला। दुकानवाला। २. वह जिसने अपनी आय के लिए कोई ढोंग रच रखा हो।

**दुकानदारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. दुकान या बिक्री-बट्टे का काम। दुकान पर माल बेचने का काम। २. ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम।

**दुकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० दुष्काल ] अन्न-कष्ट का समय। अकाल। दुर्भिक्ष।

**दुकूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा। क्षौम वस्त्र। २. महीन कपड़ा। बारीक कपड़ा। ३. वस्त्र। कपड़ा।

**दुकूलिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**दुकेला**—[ हिं० दुक्का+एला (प्रत्य०)] [ स्त्री० अकेली ] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो।

**यौ०**—अकेला दुकेला=जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो आदमी हों।

**दुकेले**—क्रि० वि० [ हिं० दुकेला ] किसी के साथ। दूसरे आदमी को साथ लिए हुए।

**दुक्कड़**—संज्ञा पुं० [हिं० दो+कूँड़] १. तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २. एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा।

**दुक्का**—वि० [ सं० द्विक ] [ स्त्री० दुक्की ] १. जो एक साथ दो हों। जिसके साथ कोई दूसरा भी हो।

**यौ०**—इक्का-दुक्का=अकेला-दुकेला। २. जो जोड़े में हो। जो एक साथ दो हों। ( वस्तु )

संज्ञा पुं० दे० "दुक्की"।

**दुक्की**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दुक्का ] ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ बनी हों।

**दुखंडा**—वि० [ हिं० दो+खंड ] जिसमें दो खंड हों। दो मरातिब का। दो-तल्ला।

**दुखंत***—संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

**दुख**—संज्ञा पुं० दे० "दुःख"।

**दुखड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुःख+ड़ा ( प्रत्य० ) ] १. वह कथा जिसमें किसी के कष्ट या शोक का वर्णन हो। तकलीफ का हाल।

**मुहा०**—दुखड़ा रोना=अपने दुःख का वृत्तांत कहना।

२. कष्ट। विपत्ति। मुसीबत।

**दुखद**—वि० दे० "दुःखद"।

**दुखदाई, दुखदानि***—वि० दे० "दुःखदायी"।

**दुखदुंद***—संज्ञा पुं० [ सं० दुःख-द्वंद्व ] दुःख का उपद्रव। दुःख और आपत्ति।

**दुखना**—क्रि० अ० [ सं० दुःख ] ( किसी अंग का ) पीड़ित होना। दर्द करना। पीड़ा युक्त होना।

**दुखरा***—संज्ञा पुं० दे० "दुखड़ा"।

**दुखवना**†—क्रि० स० दे० "दुखाना"।

**दुखहाया**—वि० दे० "दुःखित"।

**दुखाना**—क्रि० स० [ सं० दुःख ] १. पीड़ा देना। कष्ट पहुँचाना। व्यथित करना।

**मुहा०**—जी दुखाना=मानसिक कष्ट पहुँचाना। मन में दुःख उत्पन्न करना। २. किसी के मर्मस्थान या पके [illegible] इत्यादि का छू देना, जिससे [illegible] में पीड़ा हो।

**दुखारा, दुखारी**—वि० [ हिं० [illegible] + आर ( प्रत्य० ) ] दुखी। पीड़ित [illegible]

**दुखारी*** - वि० दे० "दुखारा"।

**दुखित***—वि० दे० "दुःखित"।

**दुखिया**—वि० [ हिं० दुख+इया (प्रत्य०)] जिसे किसी प्रकार का दुःख या कष्ट हो। दुखी।

**दुखियारा**—वि० [ हिं० दुखिया ] [स्त्री० दुखियारी ] १. जिसे किसी बात का दुःख हो। दुखिया। २. रोगी।

**दुखी**—वि० [ सं० दुःखित, दुःखी ] १. जिसे दुःख हो। जो कष्ट या दुःख में हो। २. जिसके चित्त में खेद उत्पन्न हुआ हो। जिसके दिल में रंज हो। ३. रोगी। बीमार।

**दुखीला**†—वि० [ हिं० दुख+ईला (प्रत्य०) ] दुःख अनुभव करनेवाला। दुःखपूर्ण।

**दुखौहाँ***—वि० [ हिं० दुख+औहाँ ] [ स्त्री० दुखौहीं ] दुःखदायी। दुःख देनेवाला।

**दुगंछा**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] ग्लानि। घृणा।

**दुगई**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] ओसारा

बरामदा ।

**दुगदुगी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० धुक-धुक ] १. वह गड्ढा जो छाती के ऊपर बीचोबीच होता है । धुकधुकी । २. गले में पहनने का एक गहना ।

**दुगना**—वि० [ सं० द्विगुण ] [ स्त्री० दुगनी ] किसी वस्तु से उतना और अधिक, जितनी कि वह हो । द्विगुण । दूना ।

**दुगड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+गाड़=गड्ढा ] १. दुनाली बंदूक । २. दोहरी गोली ।

**दुगासरा**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर्ग+आश्रय ] किसी दुर्ग के नीचे या चारो ओर बसा हुआ गाँव ।

**दुगुण***—वि० दे० "द्विगुण" ।

**दुगुन***†—वि० दे० "दुगना" ।

**दुग्ग***—संज्ञा पुं० दे० "दुर्ग" ।

**दुग्ध**—वि० [ सं० ] १. दुहा हुआ । २. भरा हुआ ।

संज्ञा पुं० दूध । पय ।

**दुग्धी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुधिया नाम की घास । दुद्धी ।

वि० [ दुग्धिन् ] दूधवाला । जिसमें दूध हो ।

**दुघड़िया**—वि० [ हिं० दो+घड़ी ] दो घड़ी का । जैसे—दुघड़िया मुहूर्त ।

**दुघड़िया मुहूर्त**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो घड़ी+सं० मुहूर्त ] दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त । द्विघटिका मुहूर्त । (ऐसा मुहूर्त बहुत जल्दी या आवश्यकता के समय निकाला जाता है और इसमें वार आदि का विचार नहीं होता । )

**दुघरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+घड़ी ] दुघड़िया मुहूर्त ।

**दुचंद**—वि० [ फ़ा० दोचंद ] दूना । दुगना ।

**दुचित***—वि० [ हिं० दो+चित्त ] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो । अस्थिर चित्त । २. चिंतित । फिक्रमंद ।

**दुचितई, दुचिताई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दुचित ] १. चित्त की अस्थिरता । दुबधा । संदेह । २. खटका । चिंता । आशंका ।

**दुचित्ता**—वि० [ हिं० दो+चित्त ] [ स्त्री० दुचित्ती ] [संज्ञा दुचित्तापन] १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो । जो दुबधे में हो । अस्थिर-चित्त । २. संदेह में पड़ा हुआ । ३. जिसके चित्त में खटका हो । चिंतित ।

**दुज***—संज्ञा पुं० दे० "द्विज" ।

**दुजन्मा***—संज्ञा पुं० दे० 'द्विजन्मा' ।

**दुजपति***—संज्ञा पुं० दे० 'द्विजपति' ।

**दुजानू**—क्रि० वि० [ हिं० दो+फ़ा० जानू ] दोनों घुटनों के बल । (बैठना) ।

**दुजायगी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुई" ।

**दुजीह***—संज्ञा पुं० दे० "द्विजिह्व" ।

**दुजेश**—संज्ञा पुं० दे० "द्विजेश" ।

**दुटूक**—वि० [ हिं० दो+टूक ] दो टुकड़ों में किया हुआ । खंडित ।

मुहा०—दुटूक बात=थोड़े में कही हुई साफ बात । बिना घुमाव-फिराव की स्पष्ट बात । खरी बात ।

**दुड़बड़ी**†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बाजा ।

**दुड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुक्की" ।

**दुत्**—अव्य० [ अनु० ] १. एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है । दूर हो । २. घृणा या तिरस्कार सूचक शब्द ।

**दुतकार**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० दुत्+कार ] वचन द्वारा किया हुआ अपमान । तिरस्कार । धिक्कार । फटकार ।

**दुतकारना**—क्रि० स० [ हिं० दुतकार ] १. दुत् दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना । २. तिरस्कृत करना । धिक्कारना ।

**दुतर्फा**—वि० [हिं० दो+अ० तरफ़ ] [ स्त्री० दुतर्फी ] दोनों ओर का । जो दोनों ओर हो ।

**दुतारा**—संज्ञा पुं० [हिं० दो+तार ] एक बाजा जिसमें दो तार होते हैं ।

**दुति**—संज्ञा स्त्री० दे० "द्युति" ।

**दुतिमान***—वि० दे० "द्युतिमान्" ।

**दुतिय***—वि० दे० "द्वितीय" ।

**दुतिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्वितीया ] पक्ष की दूसरी तिथि । दूज ।

**दुतिवंत***—वि० [ हिं० दुति+वंत (प्रत्य०) ] १. आभायुक्त । चमकीला । २. सुन्दर ।

**दुतीय***—वि० दे० "द्वितीय" ।

**दुतीया***†—संज्ञा स्त्री० दे० 'द्वितीया' ।

**दुदल**—संज्ञा पुं० [ सं० द्विदल ] १. दाल । २. एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है । कानफूल । बरन ।

**दुदलाना**†—क्रि० स० दे० 'दुतकारना' ।

**दुदामी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+दाम ] एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था ।

**दुदिला**—वि० [ हिं० दो+फ़ा० दिल ] १. दुबधे में पड़ा हुआ । दुचित्ता । २. खटके में पड़ा हुआ । चिंतित । व्यग्र । घबराया हुआ ।

**दुद्धी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दुग्धी ] १. जमीन पर फैलनेवाली एक घास जिसके डंठलों में थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं । इसका व्यवहार औषध में होता है । २. थूहर की जाति का एक छोटा पौधा ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० दूध ] १. खड़िया मिट्टी। २. सारिवा लता। ३. जंगली नील।

**दुधमुख***†—वि० [हिं० दूध+मुख] दूधपीता। दूधमुहाँ।

**दुधमुँहाँ**—वि० दे० "दूधमुहाँ"।

**दुधहाँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दूध+हाँड़ी ] मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।

**दुधाँड़ी**-संज्ञा स्त्री० दे० "दुधहाँड़ी"।

**दुधार**—वि० [ हिं० दूध+आर (प्रत्य०) ] १. दूध देनेवाला। जो दूध देती हो। २. जिसमें दूध हो।

वि०, संज्ञा पुं० दे० "दुधारा"।

**दुधारा**—वि० [ हिं० दो+धार ] (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का खाँड़ा।

**दुधारी**—वि० स्त्री० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] दूध देने वाली। जो दूध देती हो।

वि० स्त्री० [ हिं० दो+धार ] जिसमें दोनों ओर धार हो।

**दुधारू**—वि० दे० "दुधार"।

**दुधिया**-वि० [हिं०दूध+इया(प्रत्य०)] १. दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २. जिसमें दूध होता हो। ३. दूध की तरह सफेद। सफेद रंग का।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुग्धिका ] १. दुद्धी नाम की घास। २. एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३. खड़िया मिट्टी। ४.कलियारी की जाति का एक विष।

**दुधिया पत्थर**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुधिया+पत्थर ] १. एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २. एक प्रकार का नग या रत्न।

**दुधिया विष**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुधिया+विष ] कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुन्दर पौधे काश्मीर और हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विष होता है। तेलिया विष। मीठा जहर।

**दुधैल**—वि० [ हिं० दूध + ऐल (प्रत्य०) ] बहुत दूध देनेवाली। दुधार।

**दुनरना, दुनवना**†*—क्रि० अ० [ हिं० दो+नवना=झुकना] लचकर प्रायः दोहरा हो जाना।

क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।

**दुनाली**—वि० स्त्री० [ हिं० दो+नाल ] दो नलोंवाली। जैसे दुनाली बंदूक।

संज्ञा स्त्री० वह बंदूक जिसमें दो दो गोलियाँ एक साथ भरी जायँ। दुनाली बंदूक।

**दुनियाँ**—संज्ञा स्त्री० [ अ० दुनिया ] १. संसार। जगत्।

**यौ०**—दीन-दुनिया=लोक-परलोक।

**मुहा०**—दुनिया के परदे पर = सारे संसार में। दुनिया की हवा लगना= सांसारिक अनुभव होना। संसारी विषयों का अनुभव होना। दुनिया भर का=बहुत या बहुत अधिक।

२. संसार के लोग। लोक। जनता। ३. संसार का जंजाल। जगत् का प्रपंच।

**दुनियाई**—वि० [ अ० दुनिया+हिं० ई (प्रत्य०) ] सांसारिक।

संज्ञा स्त्री० संसार।

**दुनियादार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ।

वि० १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। २. व्यवहार-कुशल।

**दुनियादारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. दुनिया का कारबार। गृहस्थी का जंजाल। २. वह व्यवहार जिससे अपना प्रयोजन सिद्ध हो। स्वार्थ-साधन। ३. बनावटी व्यवहार।

**दुनियासाज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा दुनियासाजी ] १. ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थसाधक। २. चापलूस।

**दुनी***—संज्ञा स्त्री० [ अ० दुनिया ] संसार।

**दुपटा**†*—संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।

**दुपट्टा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+पाट ] [ स्त्री० अल्पा० दुपट्टी ] १. ओढ़ने का वह कपड़ा जो दो पाटों को जोड़कर बना हो। दो पाट की चद्दर। चादर।

**मुहा०**—दुपट्टा तानकर सोना=निश्चिंत होकर सोना। बेखटके सोना।

२. कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।

**दुपट्टी**†*-संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"।

**दुपद**—संज्ञा पुं० वि० दे० "द्विपद"।

**दुपहर**—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

**दुपहरिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+पहर ] १. मध्याह्न का समय। दोपहर। २. एक छोटा पौधा जो फूलों के लिए लगाया जाता है।

**दुपहरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।

**दुफसली**—वि० [ हिं० दो+अ० फस्ल ] वह चीज जो रबी और खरीफ दोनों में हो।

वि० स्त्री० दुबधा की। अनिश्चित (बात)।

**दुबधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्विविधा ]

१. दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने को क्रिया या भाव। अनिश्चय। चित्त की अस्थिरता। २. संशय। संदेह। ३. असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश। ४. खटका। चिंता।

**दुबरा**†—वि० दे० "दुबला"।

**दुबराना***†—क्रि० अ० [ हिं० दुबरा +ना ] दुबला होना। शरीर से क्षीण होना।

**दुबला**—वि० [ सं० दुर्बल ] [ स्त्री० दुबली ] १. जिसका बदन हलका और पतला हो। क्षीण शरीर का। कृश। २. अशक्त।

**दुबलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुबला +पन ] कृशता। क्षीणता।

**दुबारा**—क्रि० वि० दे० "दोबारा"।

**दुबाला**—वि० दे० "दोबाला"।

**दुबिध***—संज्ञा पु० दे० "द्विविद"।

**दुबिध, दुबिधा***—संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

**दुबे**—संज्ञा पुं० [सं० द्विवेदी] [ स्त्री० दुबाइन ] ब्राह्मणो का एक भेद। दूबे। द्विवेदी।

**दुभाखी**—संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।

**दुभाषिया**—संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषी] दो भाषाओं का जाननेवाला ऐसा मनुष्य जो उन भाषाओ के बोलनेवाले दो मनुष्यो को एक दूसरे का अभिप्राय समझावे।

**दुमंजला**—वि० [ फ़ा० ] [ स्त्री० दुमंजली ] दो मरातिब का। दोखंडा।

**दुम**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. पूँछ। पुच्छ।

**मुहा०**—दुम दबाकर भागना=डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना। दुम हिलाना=कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना। २. पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। ३. पीछे पीछे लगा रहनेवाला आदमी। पिछलग्गू। ४. किसी काम का सबसे अंतिम थोड़ा सा अंश।

**दुमची**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है।

**दुमदार**—वि० [ फ़ा० ] १. पूँछवाला। २. जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो।

**दुमन, दुमना**—वि० [ हिं० दो+मन ] दुःखी। चिंतित।

**दुमाता**—वि० [ सं० दुर्मातृ ] १. बुरी माता। २. सौतेली माँ।

**दुमाहा**—वि० [ हिं० दो + माह ] हर दो महीने पर पूरा होनेवाला। (वेतन आदि)

**दुमुहाँ**—वि० दे० "दोमुहाँ"।

**दुरंगा**—वि० [ हिं० दो+रंग ] [ स्त्री० दुरंगी ] १. दो रंगों का। जिसमें दो रंग हों। २. दो तरह का। ३. दोहरी चाल चलनेवाला।

**दुरंगी**—वि० स्त्री० दे० "दुरंगा"। संज्ञा स्त्री० कुछ इस पक्ष का, कुछ उस पक्ष का अवलंबन। द्विविधा।

**दुरंत**—वि० [ सं० ] १. अपार। बड़ा भारी। २. दुर्गम। दुस्तर। कठिन। ३. घोर। प्रचंड। भीषण। ४. जिसका परिणाम बुरा हो। अशुभ। ५. दुष्ट। खल।

**दुरंधा***—वि० [ सं० द्विरंध्र ] १. दो छिद्रोंवाला। २. आर-पार छेदा हुआ।

**दुर्**—अव्य० या उप० [ सं० ] एक अव्यय जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—१. दूषण। (बुरा अर्थ) जैसे—दुरात्मा। २. निषेध। जैसे—दुर्बल। ३. दुःख।

**दुर**—अव्य० [ हिं० दूर ] एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिए होता है और जिसका अर्थ है "दूर हो"।

**मुहा०**—दुर दुर करना=तिरस्कारपूर्वक हटाना। कुत्ते की तरह भगाना।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. मोती। मुक्ता। २. मोती का वह लटकन जो नाक में पहना जाता है। लोलक। ३. छोटी बाली।

**दुरजन***—संज्ञा पु० दे० "दुर्जन"।

**दुरजोधन***—संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

**दुरतिक्रम**—वि० [ सं० ] १. जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन न हो सके। २. प्रबल। ३. जिसका पार पाना कठिन हो। अपार।

**दुरत्यय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दुरत्यया ] १. जिसे पार करना बहुत कठिन हो। २. दुस्तर। कठिन। ३. दुर्दमनीय।

**दुरथल***—संज्ञा पुं० [ सं० दुः+स्थल ] बुरी जगह।

**दुरद***—संज्ञा पुं० दे० "द्विरद"।

**दुरदाम***—वि० [ सं० दुर्दम ] कष्टसाध्य।

**दुरदाल***—संज्ञा पुं० [ सं० द्विरद ] हाथी।

**दुरदुराना**—क्रि० स० [ हिं० दुर दुर] तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान के साथ भगाना।

**दुरदृष्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुर्भाग्य। बदकिस्मती।

**दुरना**†*—क्रि० अ० [ हिं० दूर ] १. आँखों के आगे से दूर होना। आड़

में जाना। २. न दिखलाई पड़ना। छिपना।

**दुरपदी**#—संज्ञा स्त्री० दे० "द्रौपदी"।

**दुरभिसंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।

**दुरभेवा**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर्भाव या दुर्भेद ] बुरा भाव। मनमोटाव। मनोमालिन्य।

**दुरमुस**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर (प्रत्य०) + मुस=कूटना ] गदा के आकार का डंडा, जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।

**दुरलभ**#—वि० दे० "दुर्लभ"।

**दुरवस्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुरी दशा। खराब हालत। २. दुःख, कष्ट या दरिद्रता की दशा। हीन दशा।

**दुराउ**#—संज्ञा पुं० दे० "दुराव"।

**दुरागमन**—संज्ञा पुं० दे० "द्विरागमन"।

**दुराग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० दुराग्रही ] १. किसी बात पर बुरे ढंग से अड़ना। हठ। जिद। २ अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उस पर स्थिर रहने का काम।

**दुराचरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा चाल-चलन। खोटा व्यवहार।

**दुराचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० दुराचारी ] दुष्ट आचरण। बुरा चाल-चलन।

**दुराज**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर्+राज्य ] बुरा राज्य। बुरा शासन।

संज्ञा पुं० [ हिं० दो + राज्य ] १. एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन। २. वह स्थान जहाँ दो राजाओं का राज्य हो।

**दुराजी**—वि० [ सं० दुराज्य ] दो राजाओं का।

**दुरात्मा**—वि० [ सं० दुरात्मन् ] दुष्टात्मा। नीचाशय। खोटा।

**दुरादुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दुरना= छिपना ] छिपाव। गोपन।

**मुहा०**—दुरादुरी करके=छिपे छिपे।

**दुराधर्ष**—वि० [ सं० ] जिसका दमन करना कठिन हो। प्रचंड। प्रबल।

**दुराना**—क्रि० अ० [ हिं० दूर ] १ दूर होना। हटना। टलना। भागना। २. छिपना।

क्रि० स० १. दूर करना। हटाना। २ छोड़ना। त्यागना। ३. छिपाना। गुप्त रखना।

**दुरालभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जवासा। धमासा। हिंगुवा। २ कपास।

**दुराव**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुराना ] १. अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव। छिपाव। भेदभाव। २. कपट। छल।

**दुराशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुष्ट आशय। बुरी नीयत।

वि० जिसका आशय बुरा हो। खोटा।

**दुराशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो। व्यर्थ की आशा।

**दुरासा**#-संज्ञा स्त्री० दे० "दुराशा"।

**दुरित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाप। पातक। २. उपपातक। छोटा पाप।

वि० [ स्त्री० दुरिता ] पापी। पातकी। अघी।

**दुरियाना**†—क्रि० स० [ हिं० दूर ] दूर करना। हटाना।

**दुरुखा**—वि० [ हिं० दो + फ़ा० रुख ] १. जिसके दोनों ओर मुँह हों। २. जिसके दोनों ओर कोई चिह्न या विशेष वस्तु हो। ३. जिसके दोनों ओर दो रंग हों।

**दुरुपयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना। बुरा उपयोग।

**दुरुस्त**—वि० [ फ़ा० ] १. जो अच्छी दशा में हो। जो टूटा-फूटा या बिगड़ा न हो। ठीक। २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३. उचित। मुनासिब। ४. यथार्थ।

**दुरुस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सुधार। संशोधन।

**दुरूह**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा दुरूहता ] जल्दी समझ में न आने योग्य। गूढ़। कठिन।

**दुरेफ**—संज्ञा पुं० दे० "द्विरेफ"।

**दुर्कुल**#—संज्ञा पुं० दे० "दुष्कुल"।

**दुर्गंध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुरी गंध या महक। बदबू। कुवास।

**दुर्ग**—वि० [ सं० ] जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुर्गम।

संज्ञा पुं० १. पत्थर आदि की चौड़ी और पुष्ट दीवारों से घिरा हुआ वह स्थान जिसके भीतर राजा, सरदार और सेना के सिपाही आदि रहते हैं। गढ़। कोट। किला। २. एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा।

**दुर्गत**—वि० [ सं० ] १. जिसकी बुरी गति हुई हो। दुर्दशा-ग्रस्त। २. दरिद्र।

संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति"।

**दुर्गति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुरी गति। दुर्दशा। बुरा हाल। जिल्लत। २. वह दुर्दशा जो परलोक में हो। नरक-भोग।

**दुर्गपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गढ़ का रक्षक। किलेदार।

**दुर्गम**—वि० [ सं० ] [संज्ञा दुर्गमता] १. जहाँ जाना कठिन हो। औघट। २. जिसे जानना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. दुस्तर। कठिन। विकट। संज्ञा पुं० १. गढ़। दुर्ग। किला। २. विष्णु। ३. वन। ४. संकट का स्थान।

**दुर्गरक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किलेदार।

**दुर्गा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ आदि शक्ति। देवी। वैदिक काल में यह अंबिका देवी के रूप में स्मरण की जाती थीं और रुद्र की बहन मानी जाती थी। देवी भागवत के अनुसार ये विष्णु की माया थी जो दक्ष प्रजापति की कन्या सती के रूप में प्रकट हुई था, जिन्होंने तप करके शिव को पति रूप में प्राप्त किया। इनका अनेक असुरों का मारना प्रसिद्ध है। गौरी, काली, रौद्री, भवानी, चंडी, अन्नपूर्णा आदि इन्हीं के नाम और रूप हैं। २. नील का पौधा। ३ अपराजिता। कौवा-ठोंठी। ४. श्यामा पक्षी। ५. नौ वर्ष की कन्या। ६. एक संकर रागिनी।

**दुर्गाध्यक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गढ़ का प्रधान। किलेदार।

**दुर्गुण**—संज्ञा पुं० [ सं०] बुरा गुण। दोष। ऐब। बुराई।

**दुर्गोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुर्गापूजा का उत्सव जो नवरात्र में होता है।

**दुर्घट**—वि० [ सं० ] जिसका होना कठिन हो। कष्टसाध्य।

**दुर्घटना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो। अशुभ घटना। बुरा संयोग। वारदात। २. विपद। आफत।

**दुर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुष्ट जन। खोटा आदमी। खल।

**दुर्जनता**—संज्ञा स्त्री०[ सं० ] दुष्टता।

**दुर्जय**—वि० [ सं० ] जिसे जितना बहुत कठिन हो। जो जल्दी जीता न जा सके।

**दुर्जेय**—वि० दे० "दुर्जय"।

**दुर्ज्ञेय**—वि० [ सं० ] जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।

**दुर्दम**—वि० दे० "दुर्दमनीय"।

**दुर्दमनीय**—वि० [ सं० ] १. जिस का दमन करना बहुत कठिन हो। २. प्रचंड। प्रबल।

**दुर्दम्य**—वि० दे० "दुर्दमनीय"।

**दुर्दर***—वि० दे० "दुर्द्धर"।

**दुर्दशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुरी दशा। मंद अवस्था। दुर्गति। खराब हालत।

**दुर्दांत**—वि० [ सं० ] जिसे दबाना बहुत कठिन हो। दुर्दमनीय।

**दुर्दिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बुरा दिन। २. ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन। ३. दुर्दशा, दुःख और कष्ट का समय।

**दुर्दैव**—संज्ञा पु० [सं० ] १. दुर्भाग्य। बुरी किस्मत। २. दिनों का बुरा फेर।

**दुर्द्धर**—वि० [ सं० ] १. जिसे कठिनता से पकड़ सके। २. प्रबल। प्रचंड। ३. जो कठिनता से समझ में आवे।

**दुर्द्धर्ष**—वि० [ सं० ] १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. प्रबल। प्रचंड। उग्र।

**दुर्नाम**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर्नामन् ] १. बुरा नाम। कुख्याति। बदनामी। २. गाली। बुरा वचन। ३. बवासीर। ४. सीप।

**दुर्निवार**—वि० दे० "दुर्निवार्य्य"।

**दुर्निवार्य्य**—वि० [ सं० ] १. जिसका निवारण करना कठिन हो। जो जल्दी रोका न जा सके। २.जो जल्दी हटाया न जा सके। ३. जिसका होना निश्चित हो।

**दुर्नीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुनीति। कुचाल। अन्याय। अयुक्त आचरण।

**दुर्बल**—वि० [ सं० ] १. जिसे बल न हो। कमजोर। अशक्त। २. दुबला-पतला।

**दुर्बलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बल की कमी। कमजोरी। २.कृशता। दुबलापन।

**दुर्बोध**—वि० [ सं० ] जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़। क्लिष्ट। कठिन।

**दुर्भाग्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंद भाग्य। बुरा अदृष्ट। खोटी किस्मत।

**दुर्भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बुरा भाव। २. द्वेष। मनमोटाव। मनोमालिन्य।

**दुर्भावना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुरी भावना। २. खटका। चिंता। अंदेशा।

**दुर्भिक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले। अकाल। कहत।

**दुर्भिच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिक्ष"।

**दुर्भेद**—वि० [ सं० ] १. जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २. जिसे जल्दी पार न कर सकें।

**दुर्भेद्य**—वि० दे० "दुर्भेद"।

**दुर्मति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि। वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो। दुर्बुद्धि। कमअक्ल। २. खल। दुष्ट।

**दुर्मद**—वि० [ सं० ] १. घमंडी । २. मदमत्त ।

**दुर्मल्लिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दृश्य काव्य के अंतर्गत चार अंकों का एक उपरूपक जिसमें हास्य रस प्रधान होता है ।

**दुर्मिल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं । अंत में एक सगण और दो गुरु होते हैं । २. एक प्रकार का सवैया जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं ।

**दुर्मुख**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घोड़ा । २. राम की सेना का एक बंदर । ३. रामचन्द्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था ।

वि० [ स्त्री० दुर्मुखी ] १. जिसका मुख बुरा हो । २. कटुभाषी । अप्रियवादी ।

**दुर्योधन**—संज्ञा पुं० [सं०] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत बुरा मानता था । इसी के साथ जूआ खेलकर युधिष्ठिर अपना सारा राज्य और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार गए और उन्हें सब भाइयों सहित १२ वर्ष तक वनवास और १ वर्ष तक अज्ञातवास करना पड़ा । जब वे अज्ञातवास से लौटे तब दुर्योधन ने उनका राज्य उन्हें नहीं लौटाया जिसके कारण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ ।

**दुर्रा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कोड़ा । चाबुक ।

**दुर्रानी**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अफगानों की एक जाति ।

**दुर्लंघ्य**—वि० [ सं० ] जिसे जल्दी लाँघ न सकें ।

**दुर्लक्ष्य**—वि० [ सं० ] जो कठिनता से दिखाई पड़े । जो प्रायः अदृश्य हो ।

**दुर्लक्ष्यी**—वि० दे० "दुर्लक्ष्य" ।

**दुर्लभ**—वि० [ सं० ] [संज्ञा दुर्लभता] १. जिसे पाना सहज न हो । दुष्प्राप्य । २. अनोखा । बहुत बढ़िया । ३ प्रिय ।

**दुर्वचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुर्वाक्य । गाली ।

**दुर्वह**—वि० [ सं० ] जिसका वहन करना कठिन हो ।

**दुर्वाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अपवाद । निंदा । २. स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य ।

**दुर्वासा**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर्वासस् ] एक मुनि जो अत्रि के पुत्र थे । ये अत्यंत क्रोधी थे ।

**दुर्विनीत**—वि० [ सं० ] अविनीत । अशिष्ट । उद्धत । अक्खड़ ।

**दुर्विपाक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा परिणाम । २ बुरा संयोग । दुर्घटना ।

**दुर्वृत्त**—वि० [सं०] [संज्ञा दुर्वृत्ति] दुश्चरित्र । दुराचारी ।

**दुर्व्यवस्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुप्रबंध ।

**दुर्व्यवहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बुरा व्यवहार । बुरा बर्त्ताव । २. दुष्ट आचरण ।

**दुर्व्यसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी ऐसी बात का अभ्यास जिससे कोई हानि हो । बुरी लत । खराब आदत ।

**दुर्व्यसनी**—वि० [ सं० ] बुरी लतवाला ।

**दुलकना**—क्रि० अ० स० दे० "दुलखना" ।

**दुलकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दलकना ] घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है ।

**दुलखना**—क्रि० स० [हिं० दो+लक्षण] बार बार कहना या बतलाना ।

क्रि० अ० कहकर मुकरना ।

**दुलड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+लड़ ] दो लड़ों की माला ।

**दुलत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+लात ] घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना ।

**दुलदुल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह खच्चरी जो इसकंदरिया ( मिस्र ) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नजर में दी थी । साधारण लोग इसे घोड़ा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों में इसकी नकल निकालते हैं ।

**दुलना**—क्रि० अ० दे० "डुलना" ।

**दुलभ***—वि० दे० "दुर्लभ" ।

**दुलरा***—वि० दे० "दुलारा" ।

**दुलराना***—क्रि० स० [हिं० दुलारना] बच्चों का बहलाकर प्यार करना । लाड़ करना ।

क्रि० अ० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना ।

**दुलरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुलड़ी" ।

**दुलहन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दुलहा ] नवविवाहिता वधू । नई ब्याही स्त्री ।

**दुलहा**—संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा" ।

**दुलहिया, दुलही**†—संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन" ।

**दुलहेटा**—संज्ञा पुं० [ प्रा० दुल्लह+हिं० बेटा ] १ लाड़ला बेटा । दुलारा लड़का । २. दुलहा ।

**दुलाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० तूल ] ओढ़ने का दोहरा हलका कपड़ा जिसके भीतर रूई भरी हो ।

**दुलाना***—क्रि० स० दे० "डुलाना" ।

**दुलार**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुलारना ] प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के

कारण लोग बच्चों या प्रेमपात्रों के साथ करते हैं। लाड़-प्यार।

**दुलारना**—क्रि० स० [सं० दुर्लालन] प्रेम के कारण बच्चों या प्रेमपात्रों को प्रसन्न करने के लिए उनके साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना। लाड़ करना।

**दुलारा**—वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो। लाड़ला।

**दुलीचा, दुलैचा**—संज्ञा पुं० दे० "गलीचा"।

**दुलोही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+लोहा] एक प्रकार की तलवार।

**दुल्लभ***—वि० दे० "दुर्लभ"।

**दुव**—वि० [सं० द्वि] दो।

**दुवन**—संज्ञा पुं० [सं० दुर्मनस्] १. खल। दुर्जन। बुरा आदमी। २. शत्रु। वैरी। दुश्मन। ३. राक्षस। दैत्य।

**दुवाज**—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

**दुवादस***†—वि० दे० "द्वादश"।

**दुवादस बानी***—वि० [सं० द्वादश=सूर्य+वर्ण] बारह बानी का। सूर्य के समान दमकता हुआ। आभा-युक्त। खरा। (विशेषतः सोने के लिए)

**दुवार**†—संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।

**दुवाल**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।

**दुवाली**—संज्ञा स्त्री० [देश०] रँगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिए घोंटने का औजार। घोंटा।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० दुवाल] चमड़े का परतला या पेटी जिसमें बंदूक, तलवार आदि लटकाते हैं।

**दुविधा**†—संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।

**दुवो***†—वि० [हिं० दुव=दो] दोनों।

**दुशवार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा दुशवारी] १. कठिन। दुरूह। मुश्किल। २ दुःसह।

**दुशाला**—संज्ञा पुं० [संज्ञा द्विशाट, फ़ा० दोशाला] पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।

**दुशासन***—संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।

**दुश्चरित**—वि० [सं०] १. बुरे आचरण का। बदचलन। २. कठिन।
संज्ञा पुं० बुरा आचरण। कुचाल।

**दुश्चरित्र**—वि० [सं०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।
संज्ञा पुं० बुरी चाल। दुराचार।

**दुश्चिंता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी या विकट चिंता।

**दुश्चेष्टा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।

**दुश्मन**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] शत्रु। वैरी।

**दुश्मनी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] वैर। शत्रुता।

**दुष्कर**—वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दुःसाध्य।

**दुष्कर्म**—संज्ञा पुं० [सं० दुष्कर्मन्] [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

**दुष्कर्मा**—वि० [सं० दुष्कर्मन्] पापी। कुकर्मी।

**दुष्कर्मी**—वि० [सं० दुष्कर्म+ई (प्रत्य०)] बुरा काम करनेवाला। पापी। दुराचारी।

**दुष्काल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुरा वक्त। कुसमय। २. दुर्भिक्ष। अकाल।

**दुष्कीर्त्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बदनामी।

**दुष्ट**—वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] १. जिसमें दोष या ऐब हो। दूषित। दोष-ग्रस्त। २. पित्त आदि दोष से युक्त। ३. दुर्जन। खल। दुराचारी। पाजी।

**दुष्टता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दोष ऐब। २. बुराई। खराबी। ३. बदमाशी।

**दुष्टपना**—संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।

**दुष्टाचार**—संज्ञा पुं० [सं०] कुचाल। कुकर्म।

**दुष्टात्मा**—वि० [सं०] जिसका अंतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। दुराशय।

**दुष्प्रवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुरी प्रवृत्ति।
वि० दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

**दुष्प्राप्य**—वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।

**दुष्मंत**—संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

**दुष्यंत**—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। इसी से शकुंतला के गर्भ से सर्वदमन या भरत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

**दुसराना***—क्रि० स० दे० "दोहराना"।

**दुसरिहा***†—वि० [हिं० दूसर+

हा ( प्रत्य० ) ] १. साथी । संगी। २. प्रतिद्वंद्वी ।

**दुसह***—वि० [ सं० दुःसह ] जो सहा न जाय । असह्य । कठिन ।

**दुसही†**—वि० [ हिं० दुःसह+ई ( प्रत्य० ) ] १. जो कठिनता से सह सके । २. ईर्ष्यालु ।

**दुसाखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+शाखा ] एक प्रकार का शमादान, जिसमें दो कनखे निकले होते हैं ।

**दुसाध**—संज्ञा पुं० [ सं० दोषाद ] हिंदुओं में एक जाति जो सूअर पालती है ।

**दुसार**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+साल-ना ] आर-पार किया हुआ छेद ।
क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक ।

**दुसाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+शल ] आर-पार छेद ।

**दुसासन***—संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन" ।

**दुसूती**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+सूत ] एक प्रकार की मोटी चादर ।

**दुसेजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+सेज ] बड़ी खाट । पलंग ।

**दुस्तर**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा दुस्तरता ] १. जिसे पार करना कठिन हो । २. विकट । कठिन ।

**दुस्सह**—वि० दे० "दुःसह" ।

**दुहता**—संज्ञा पुं० [ सं० दौहित्र ] [ स्त्री० दुहती ] बेटी का बेटा । नाती ।

**दुहत्था**—वि० [ हिं० दो+हाथ ] [ स्त्री० दुहत्थी ] दोनों हाथों से किया हुआ ।

**दुहना**—क्रि० स० [ सं० दोहन ] १. स्तन से दूध निचोड़कर निकालना । ( 'दूध' और 'दूधवाला पशु' दोनों इसके कर्म हो सकते हैं । ) २. निचोड़ना । तत्व या सार खींचना ।

**मुहा०**—दुह लेना=१. सार खींच लेना । २. धन हर लेना । लूटना ।

**दुहनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दोहनी ] वह बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है । दोहनी ।

**दुहरा**—वि० पुं० दे० "दोहरा" ।

**दुहाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्वि+आह्वाय ] १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, जो चारो ओर दी जाय । मुनादी । घोषणा ।

**मुहा०**—( किसी की ) दुहाई फिरना=१. राजा के सिंहासन पर बैठने पर उसके नाम की घोषणा होना । २. प्रताप का डंका पिटना ।
२. शपथ । कसम । सौगंध ।
३. बचाव या रक्षा के लिए किसी का नाम लेकर चिल्लाना ।

**मुहा०**—दुहाई देना=अपने बचाव के लिए किसी का नाम लेकर चिल्लाना ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० दुहना ] १. गाय, भैंस आदि का दुहने का काम । २. दुहने की मजदूरी ।

**दुहाग**—संज्ञा पुं० [ सं० दुर्भाग्य ] १. दुर्भाग्य । २ वैधव्य । रँड़ापा ।

**दुहागिन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दुहागी] सुहागिन का उलटा । विधवा ।

**दुहागिल**—वि० [ हिं० दुहाग ] १. अभागा । २. अनाथ । ३. सूना ।

**दुहागी†**—वि० [ सं० दुर्भागिन् ] [ स्त्री० दुहागिन ] दुर्भागी । अभागा । बदकिस्मत ।

**दुहाना**—क्रि० स० [ हिं० दुहना का प्रे० ] दुहने का काम दूसरे से कराना ।

**दुहावनी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० दुहाना ] दूध दुहने की मजदूरी । दुहाई ।

**दुहिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दुहितृ ] कन्या । लड़की ।

**दुहिन***—संज्ञा पुं० [ सं० द्रुहण ] ब्रह्मा ।

**दुहुँघाँ*†**-संज्ञा पुं० [ ? ] दोनों ओर ।

**दुहेला**--वि० [ सं० दुर्हेल ] [ स्त्री० दुहेली ] १. दुःखदायी । दुःसाध्य । कठिन । २ दुःखी ।
संज्ञा पुं० विकट या दुःखदायक कार्य ।

**दुहोतरा***—वि० [ सं० दु, द्वि+उत्तर ] दो अधिक । दो ऊपर ।

**दुह्य**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० दुह्या ] दुहने योग्य ।

**दूँद***—संज्ञा पुं० दे० "दुंद" ।

**दूँदना***—क्रि० अ० [ हिं० दुंद ] लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव करना ।

**दूँदि***—संज्ञा स्त्री० दे० "दुंद" ।

**दूइज†**—संज्ञा स्त्री० दे० "दूज" ।

**दूक***—वि० [ सं० द्व्येक ] दो एक । कुछ ।

**दूकान**—संज्ञा पुं० दे० "दुकान" ।

**दूखना***—क्रि० स० [ सं० दूषण+ना ( प्रत्य० ) ] दोष लगाना । ऐब लगाना ।
क्रि० अ० दे० "दुखना" ।

**दूज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्वितीया ] किसी पक्ष की दूसरी तिथि । दुइज । द्वितीया ।

**मुहा०**—दूज का चाँद होना=बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना । कम दर्शन देना ।

**दूजा*†**—वि० [ सं० द्वितीया ] दूसरा ।

**दूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दूती] १. वह जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजा जाय । चर । बसीठ । २. प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य ।

**दूतकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सँदेसा

या खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।

**दूतता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दूतत्व।

**दूतत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूत का काम। दूतता।

**दूतपन**—संज्ञा पुं० दे० "दूतत्व"।

**दूत-मंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल।

**दूतर***†—वि० दे० "दुस्तर"।

**दूतिका, दूती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक-दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी। संचारिका। सारिका।

**दूत्य**—संज्ञा पुं० दे० "दौत्य"।

**दूध**—संज्ञा पुं० [ सं० दुग्ध ] १. सफेद रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों में रहता है और जिससे उनके बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है। पय। दुग्ध।

**मुहा०**—दूध उतरना=छातियों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना=ऐसा न्याय करना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकालकर फेंक देना=किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना=अभीतक बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और संतान की वृद्धि हो ( आशीर्वाद )। दूध फटना=खटाई आदि पड़ने के कारण दूध का जल अलग और सार भाग या छेना अलग हो जाना। दूध बिगड़ना। ( स्तनों में ) दूध भर आना=बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उतर आना।

२ अनाज के हरे बीजों का रस। ३. वह सफेद तरल पदार्थ जो अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों और डंठलों को तोड़ने पर निकलता है।

**दूधपिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दूध+पिलाना ] १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रसम जिसमें बरात के समय माता, वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है।

**दूध-पूत**—संज्ञा पुं० [ हिं० दूध+पूत ] धन और संतति।

**दूध-फेनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "फेनी"।

**दूध भाई**—संज्ञा पुं० [ हिं० दूध+भाई ] [ स्त्री० दूध+बहन ] ऐसे बालकों में से एक जो एक ही स्त्री का स्तन पीकर पले हों, पर दूसरे माता-पिता से उत्पन्न हों।

**दूधमुँहा**—वि० [ हिं० दूध+मुँह ] जो अभी तक माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा।

**दूधमुख**—वि० [ हिं० दूध+सं० मुख ] छोटा बच्चा। बालक। दूध-मुँहा।

**दूधिया**—वि० [ हिं० दूध+इया ( प्रत्य० ) ] १. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २. दूध के रंग का। सफेद।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफेद बढ़िया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।

**दून**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दूना ] १. दूने का भाव।

**मुहा०**—दून की लेना या हाँकना=बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना। डींग मारना।

२. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरंभ किया जाय, उसके आधे समय में गाना या बजाना।

संज्ञा पुं० [ देश० ] तराई। घाटी।

**दूनर***—वि० [ सं० द्विनम्र ] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

**दूतावास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूसरे राज्य के दूत के रहने का स्थान।

**दूना**—वि० [ सं० द्विगुण ] दुगुना। दो बार उतना ही।

**दूनों***†—वि० दे० "दोनों"।

**दूब**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दूर्वा ] एक बहुत प्रसिद्ध घास। यह तीन प्रकार की होती है; हरी, सफेद और गाँडर। वि० दे० "गाँडर"।

**दू-बदू**—क्रि० वि० [ हिं० दो या फ़ा० रूबरू ] आमने-सामने। मुका-बले में।

**दूबरा***†—वि० दे० "दुबला"।

**दूबा**†—संज्ञा स्त्री० दे० "दूब"।

**दूबे**—संज्ञा पुं० [ सं० द्विवेदी ] द्विवेदी ब्राह्मण।

**दूभर**—वि० [ सं० दुर्भर ] कठिन। मुश्किल।

**दूमना**†*—क्रि० अ० [ सं० द्रुम ] हिलना।

**दूरंदेश**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा दूरं-देशी ] दूर तक की बात विचारने-वाला। दूरदर्शी।

**दूर**—क्रि० वि० [ सं० ] देश, काल या संबंध आदि के विचार से बहुत अंतर पर। बहुत फासले पर। पास या निकट का उलटा।

**मुहा०**—दूर करना=१. अलग करना। जुदा करना। २. न रहने देना। मिटाना। दूर भागना या रहना=बहुत बचना। पास न जाना। दूर होना=१. हट जाना। अलग हो

जाना। २. मिट जाना। नष्ट होना।
दूर की बात=१. बारीक बात। २. कठिन बात।
वि० जो दूर या फासले पर हो।
**दूरता**—संज्ञा स्त्री० दे० "दूरत्व"।
**दूरत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।
**दूरदर्शक**—वि० [सं०] दूर तक देखनेवाला।
**दूरदर्शक यंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] दूरबीन।
**दूरदर्शिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूर की बात सोचने का गुण। दूरंदेशी।
**दूरदर्शी**—वि० [सं०] बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला। अग्रसोची। दूरंदेश।
**दूरबीन**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गोल नल के आकार का एक यंत्र जिससे दूर की चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं।
**दूरवर्ती**—वि० [सं०] दूर का। जो दूर हो।
**दूरवीक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] दूरबीन।
**दूरस्थ**—वि० [सं०] दूर का।
**दूरागत**—वि० [सं०] दूर से आया हुआ।
**दूरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० दूर+ई (प्रत्य०)] दो वस्तुओं के मध्य का स्थान। दूरत्व। अंतर। फासला।
**दूरीकृत**—वि० [सं०] दूर किया हुआ।
**दूर्वा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूब नाम की घास।
**दूलन***—संज्ञा पुं० दे० "दोलन"।
**दूलह**—संज्ञा पुं० [सं० दुर्लभ] १. दुलहा। वर। नौशा। २. पति। स्वामी।
**दूलित***—वि० दे० "दोलित"।
**दूल्हा**—संज्ञा पुं० दे० "दूलह"।
**दूषक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी पर दोषारोपण करे। २. दोष उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।
**दूषण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दोष। ऐब। बुराई। अवगुण। २. दोष लगाने की क्रिया या भाव। ऐब लगाना। ३. रावण का भाई, एक राक्षस।
**दूषणीय**—वि० [सं०] दोष लगाने योग्य। जिसमें ऐब लगाया जा सके।
**दूषना***†—क्रि० स० [सं० दूषण] दोष लगाना। कलंकित करना।
**दूषित**—वि० [सं०] जिसमें दोष हो। खराब। बुरा। दोषयुक्त।
**दूष्य**—वि० [सं०] १. दोष लगाने योग्य। जिसमें दोष लगाया जा सके। २. निंदनीय। निंदा करने योग्य। ३. तुच्छ।
**दूसना**—क्रि० स० दे० "दूषना"।
**दूसर***†—वि० दे० "दूसरा"।
**दूसरा**—वि० [हिं० दो] १. जो क्रम में दो के स्थान पर हो। पहले के बाद का। द्वितीय। २. जिसका प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से संबंध न हो। अन्य। और।
**दूहना**—क्रि० स० दे० "दुहना"।
**दूहा***†—संज्ञा पुं० दे० "दोहा"।
**दृक्**—संज्ञा पुं० [सं०] छिद्र। छेद।
**दृक्क्षेप**—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टिपात।
**दृक्पथ**—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की पहुँच।
**दृक्पात**—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टिपात।
**दृक्शक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रकाशरूप। चैतन्य। २. आत्मा।
**दृगंचल**—संज्ञा पुं० [सं०] पलक।
**दृगंबु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आँखों से निकलनेवाला जल। २. आँसू।
**दृग***—संज्ञा पुं० [सं० दृश्] १. आँख।
मुहा०—दृग डालना या देना=देखना।
२. देखने की शक्ति। दृष्टि। ३. दो की संख्या।
**दृगमिचाव**—संज्ञा पुं० [हिं० दृग + मींचना] आँख-मिचौली का खेल।
**दृग्गोचर**—वि० [सं०] जो आँख से दिखाई दे।
**दृढ़**—वि० [सं०] १. जो खूब कसकर बँधा या मिला हो। प्रगाढ़। २. पुष्ट। मजबूत। कड़ा। ठोस। ३. बलवान्। बलिष्ठ। हृष्ट-पुष्ट। ४. जो जल्दी नष्ट या विचलित न हो। स्थायी। ५. निश्चित। ध्रुव। पक्का। ६. निडर। ढीठ। कड़े दिल का।
**दृढ़चेता**—वि० [सं० दृढ़-चेतस्] पक्के विचारोंवाला।
**दृढ़ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दृढ़ होने का भाव। दृढ़त्व। २. मजबूती। ३. स्थिरता।
**दृढ़त्व**—संज्ञा पुं० [सं०] दृढ़ता।
**दृढ़पद**—संज्ञा पुं० [सं०] तेईस मात्राओं का एक छंद। उपमान।
**दृढ़प्रतिज्ञ**—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।
**दृढ़ांग**—वि० [सं०] जिसके अंग दृढ़ हों। कड़े बदन का। हृष्ट-पुष्ट।
**दृढ़ाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "दृढ़ता"।
**दृढ़ाना**—क्रि० स० [सं० दृढ़ + आना (प्रत्य०)] दृढ़ करना। पक्का या मजबूत करना।
क्रि० अ० १. कड़ा, पुष्ट या मजबूत होना। २. स्थिर या पक्का होना।
**दृप्त**—वि० [सं०] १. उग्र। प्रचंड।

२. प्रज्वलित। ३. तेजयुक्त। ४. अभिमानी।

**दृश्**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० दृश्य] १. देखना। दर्शन। २. दिखानेवाला। प्रदर्शक। ३. देखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख। ३. दो की संख्या। ४. ज्ञान।

**दृशद्वती**—संज्ञा स्त्री० दे० "दृषद्वती"।

**दृश्य**—वि० [सं०] १. जो देखने में आ सके। जिसे देख सकें। दृग्गोचर। २. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। ३. मनोरम। सुंदर। ४. जानने योग्य। ज्ञेय।
संज्ञा पुं० १. वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो। देखने की वस्तु। २. तमाशा। ३. वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शकों को दिखाया जाय। नाटक। ४. गणित में ज्ञात या दी हुई संख्या।

**दृश्यमान**—वि० [सं०] १. जो दिखाई पड़ रहा हो। २. चमकीला। ३. सुन्दर।

**दृषद्वती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जिसका नाम ऋग्वेद में आया है। इसे आजकल घग्घर और राखी कहते हैं।

**दृष्ट**—वि० [सं०] १. देखा हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात। प्रकट। ३. लौकिक और गोचर। प्रत्यक्ष।
संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. साक्षात्कार। ३. प्रत्यक्ष प्रमाण। (सांख्य)

**दृष्टकूट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहेली। २ वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से न समझा जा सके, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से जाना जाय।

**दृष्टमान***—वि० [सं० दृश्यमान] प्रकट।

**दृष्टवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।

**दृष्टव्य**—वि० [सं०] देखने योग्य।

**दृष्टांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों का धर्म आदि समझाने के लिए समान धर्मवाली किसी प्रसिद्ध या ज्ञात वस्तु या व्यापार का कथन। उदाहरण। मिसाल। २ एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब-प्रतिबिंब-भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है। ३. शास्त्र।

**दृष्टार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो। २. वह शब्द जिसके श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो, जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता हो।

**दृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देखने की वृत्ति या शक्ति। आँख की ज्योति। २. आँख की पुतली के किसी वस्तु की सीध में होने की स्थिति। अवलोकन। नजर। निगाह। ३. आँख की ज्योति का प्रसार, जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का बोध होता है। दृक्पथ। ४. देखने के लिए खुली हुई आँख।

**मुहा०**—(किसी से) दृष्टि जुड़ना=देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से) दृष्टि जोड़ना=आँख मिलाना। साक्षात्कार करना। दृष्टि मिलाना=दे० "दृष्टि जोड़ना"। दृष्टि रखना=देख-रेख में रखना।

५. परख। पहचान। तमीज। ६. कृपा-दृष्टि। हित का ध्यान। मिहरबानी की नजर। ७. आशा की दृष्टि। आस। उम्मीद। ८. ध्यान। विचार। अनुमान। ९. उद्देश्य।

**दृष्टिकूट**—संज्ञा पुं० दे० "दृष्टकूट"।

**दृष्टिकोण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंग या कोण जिससे कोई चीज देखी या कोई बात सोची जाय।

**दृष्टिक्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र आदि में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथाक्रम एक एक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर दिखाई पड़े।

**दृष्टिगत**—वि० [सं०] जो दिखाई पड़ता हो।

**दृष्टिगोचर**—वि० [सं०] नेत्रेंद्रिय द्वारा जिसका बोध हो। जो देखने में आ सके।

**दृष्टिपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि का फैलाव। नजर की पहुँच।

**दृष्टि-परंपरा**—संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टिक्रम"।

**दृष्टिपात**—संज्ञा पुं० [सं०] दृष्टि डालने की क्रिया या भाव। ताकना। देखना।

**दृष्टिबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीठबंदी। इंद्रजाल। माया। जादू। २. हाथ की सफाई या चालाकी। हस्त-लाघव।

**दृष्टिवंत**—वि० [सं० दृष्टि+वंत (प्रत्य०)] १. दृष्टिवाला। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्।

**दृष्टिवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] वह सिद्धांत जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।

**दे**—संज्ञा स्त्री० [सं० देवी] स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। देवी।

**देई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० देवी ] १. देवी। २. स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। ३. लड़की।

**देख**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० देखना ] देखने की क्रिया या भाव। जैसे-देख-रेख, देख-भाल।

**देखन***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया, भाव या ढंग।

**देखनहारा***†-संज्ञा पुं० [हिं०देखना] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

**देखना**—क्रि० स० [ सं० दृश् ] १. किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप-रंग आदि का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना। अवलोकन करना।

**मुहा०**-देखना-सुनना=ज्ञान प्राप्त करना। पता लगाना। देखने में=१ बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। २ रूप-रंग में। देखते-देखते=१. आँखों के सामने। २. तुरंत। फौरन। चटपट। देखते रह जाना=हक्का-बक्का रह जाना। चकित हो जाना। देखा जायगा=१. फिर विचार किया जायगा। २. पीछे जो कुछ करना होगा, किया जायगा।

२. जाँच करना। मुआयना करना। ३. ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आजमाना। परखना। ५. निगरानी रखना। ताकते रहना। ६. समझना। सोचना। विचारना। ७. अनुभव करना। भोगना। ८ पढ़ना। बाँचना। ९. गुण, दोष का पता लगाना। परीक्षा करना। जाँच। १०. ठीक करना।

**देख भाल**-संज्ञा स्त्री० [ हिं०देखना + भालना ] १. जाँच-पड़ताल। निरीक्षण। निगरानी। २. देखा-देखी। साक्षात्कार।

**देखराना***†—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

**देखरावना***†—क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

**देख-रेख**-संज्ञा स्त्री० [हिं० देखना + सं० प्रेक्षण ] देख भाल। निरीक्षण। निगरानी।

**देखाऊ**—वि० [ हिं० देखना ] १. जो केवल देखने में सुंदर हो, काम का न हो। झूठा तड़क-भड़कवाला। २. जो ऊपर से दिखाने के लिए हो, वास्तविक न हो। बनावटी।

**देखा देखी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० देखना ] आँखों से देखने की दशा या भाव। दर्शन। साक्षात्कार।
क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर। दूसरों के अनुकरण पर।

**देखाना***†-क्रि० स० दे०"दिखाना"।

**देखा भाली**—संज्ञा स्त्री० दे० "देख भाल"।

**देखाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० देखना ] १. दृष्टि की सीमा। नजर की पहुँच। २ ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

**देखावट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दिखाना] १. रूप-रंग दिखाने की क्रिया या भाव। बनाव। २. ठाट-बाट। तड़क-भड़क।

**देखावटी**—वि० बनावटी। असत्य। जिसमें तथ्य न हो।

**देखावना**-क्रि० स० दे० "दिखाना"।

**देग**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।

**देगचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [स्त्री० अल्पा० देगची ] छोटा देग।

**देदीप्यमान**—वि० [ सं० ] अत्यंत प्रकाश-युक्त। चमकता हुआ। दमकता हुआ।

**देन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० देना ] १. देने की क्रिया या भाव। दान। २. दी हुई चीज। प्रदत्त वस्तु।

**देनदार**—संज्ञा पुं० [ हिं०देना + फ़ा० दार ] ऋणी। कर्जदार।

**देन-लेन**—संज्ञा पुं० [ हिं० देना + लेना ] देने और लेने का व्यवहार।

**देनहारा***†—वि० [ हिं० देना + हार (प्रत्य०) ] देनेवाला।

**देना**—क्रि० स० [ सं० दान ] १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना। प्रदान करना। २. सौंपना। हवाले करना। ३. हाथ पर या पास रखना। थमाना। ४ रखना, लगाना या डालना। ५. मारना। प्रहार करना। ६ अनुभव कराना। भोगाना। ७ उत्पन्न करना। निकालना। ८. बंद करना। ९. भिड़ाना। (इस क्रिया का प्रयोग बहुत सी सकर्मक क्रियाओं के साथ संयो० क्रि० के रूप में होता है। जैसे—कर देना, गिरा देना।)
संज्ञा पुं० उधार लिया हुआ रुपया। कर्ज।

**देमान**†*-संज्ञा पुं० दे० "दीवान"।

**देय**—वि० [सं०] देने योग्य। दातव्य।

**देयासी**†-वि० [ ? ] [स्त्री० देयासिन्] झाड़ फूँक करनेवाला। ओझा।

**देर**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय। अतिकाल। विलंब। २. समय। वक्त।

**देरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "देर"।

**देव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० देवी] १ देवता। सुर। २ पूज्य व्यक्ति। ३. ब्राह्मणों तथा बड़ों के लिए एक आदर-सूचक शब्द।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दैत्य। राक्षस।

**देवऋण**—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लिए कर्त्तव्य, यज्ञादि।

**देवऋषि**—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के लोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य आदि ऋषि।

**देवकन्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता की पुत्री। देवी।

**देवकार्य्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किया हुआ कर्म। होम, पूजा आदि।

**देवकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता का नाम।

**देवकीनंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**देवगज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐरावत।

**देवगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं के अलग अलग समूह। देवताओं का वर्ग।

**देवगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मरने के उपरात उत्तम गति। स्वर्गलाभ।

**देवगिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २. दक्षिण का एक प्राचीन नगर जो आजकल दौलताबाद कहलाता है।

**देवगुरु**—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

**देवठान**—संज्ञा पुं० [सं० देवोत्थान] कार्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं। दिठवन।

**देवतर्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले लेकर पानी देना।

**देवता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी। सुर।

**देवत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवता होने का भाव या धर्म।

**देवदत्त**—वि० [ सं० ] देवता का दिया हुआ। २. देवता के निमित्त किया हुआ।

संज्ञा पुं० १. देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। २. शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जिससे जँभाई आती है। ३. अर्जुन के शंख का नाम।

**देवदारु**—संज्ञा पुं० [ सं० देवदारु ] एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़। इसकी अनेक जातियाँ संसार के अनेक स्थानों में पाई जाती हैं। इससे एक प्रकार का अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल भी निकलता है।

**देवदाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक लता जो देखने में तुरई की बेल से मिलती-जुलती होती है। घघर बेल। बंदाल।

**देवदासी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वेश्या। २. मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्तकी।

**देवदूत**—संज्ञा पुं० [सं० ] जो परमात्मा या किसी देवता का संदेशवाहक हो। पैगंबर। वसीठ। फरिश्ता।

**देवदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**देवधुनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंगा नदी।

**देवनदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गंगा। २. सरस्वती और दृषद्वती नदियाँ।

**देवनागरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी, मराठी आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है।

**देवपथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आकाश।

**देवपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] इंद्र की नगरी। अमरावती।

**देवभाषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संस्कृत भाषा।

**देवभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्वर्ग।

**देवमंदिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्त्ति स्थापित हो। देवालय।

**देवमाया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में डालती है।

**देवमुनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नारद ऋषि।

**देवयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है।

**देवयान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उपनिषदों के अनुसार शरीर से अलग होने के उपरात जीवात्मा के जाने के लिए दो मार्गों में से वह मार्ग जिससे वह ब्रह्मलोक को जाता है।

**देवयानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शुक्राचार्य की कन्या, जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई थी। पीछे राजा ययाति के साथ इसका विवाह हुआ था।

**देवयुग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्ययुग।

**देवयोनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहनेवाले उन जीवों की सृष्टि, जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं। जैसे—अप्सरा, यक्ष, पिशाच आदि।

**देवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० देवरानी ] १. पति का छोटा भाई। २. पति का भाई।

**देवरा**—संज्ञा पुं० [ सं० देव ] [ स्त्री० देवरी ] छोटा-मोटा देवता।

**देवराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**देवराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग।

**देवरानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० देवर ] देवर की स्त्री। पति के छोटे भाई

की स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० देव+रानी ] देवराज इंद्र की पत्नी, शची। इंद्राणी।

**देवराय**—संज्ञा पुं० दे० "देवराज"।

**देवर्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, क्रतु इत्यादि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं।

**देवल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो देवताओं की पूजा करके जीविका निर्वाह करे। पुजारी। पंडा। २. धार्मिक पुरुष। ३. नारद मुनि। ४. एक प्रकार का धावक।

संज्ञा पुं० [ सं० देवालय ] देवालय। देवमंदिर।

**देवलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग।

**देववधू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवता की स्त्री। २. देवी। ३. अप्सरा।

**देववाणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संस्कृत भाषा। २. किसी अदृश्य देवता का वचन जो अंतरिक्ष में सुनाई पड़े। आकाशवाणी।

**देवव्रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भीष्म पितामह।

**देवशुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] देवलोक की कुतिया, सरमा। विशेष—दे० "सरमा"।

**देवसभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवताओं का समाज। २. राजसभा। ३. सुधर्मा नामक सभा, जिसे मय ने अर्जुन या युधिष्ठिर के लिए बनाया था।

**देवसेना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवताओं की सेना। २. प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। षष्ठी।

**देवस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवताओं के रहने की जगह। २. देवालय। मंदिर।

**देवहूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्वायंभुव मनु की तीन कन्याओं में से एक, जो कर्दम मुनि को ब्याही थी। सांख्य-शास्त्र के कर्त्ता कपिल इन्हीं के पुत्र थे।

**देवांगना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवताओं की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। २. अप्सरा।

**देवा**†—वि० [ हिं० देना ] १. देनेवाला। जैसे—पानी-देवा। †२. देनदार। ऋणी। परमात्मा।

**देवान**†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दीवान ] १. दरबार। कचहरी। राजसभा। २. अमात्य। मंत्री। वजीर। ३. प्रबंध-कर्त्ता।

**देवानां-प्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवताओं को प्रिय। २. बकरा। ३. मूर्ख।

**देवापि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राजा जो ऋष्टिषेण के पुत्र और शांतनु के बड़े भाई थे।

**देवायतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग।

**देवारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।

**देवार्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान।

**देवाला**†—वि० [ हिं० देना ] देनेवाला। दाता।

**देवालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वर्ग। २. वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति रखी जाय। मंदिर।

**देवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवता की स्त्री। देवपत्नी। २. दुर्गा। ३. वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो। पटरानी। ४. ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि। ५. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री।

**देवीपुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उपपुराण, जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है।

**देवीभागवत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पुराण, जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं। श्रीमद्भागवत के समान, इस पुराण में बारह स्कंध और १८००० श्लोक हैं। अतः इसका निर्णय कठिन है कि दोनों में कौन पुराण है और कौन उपपुराण।

**देवेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**देवेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**देवैया**†—वि० [ हिं० देना+ऐया (प्रत्य०) ] देनेवाला।

**देवोत्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति।

**देवोत्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु का शेष की शय्या पर से उठना, जो कार्तिक शुक्ला एकादशी को होता है।

**देवोद्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं के बगीचे, जो चार हैं—नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र।

**देवोन्माद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का उन्माद, जिसमें रोगी पवित्र रहता, सुगंधित फूलों की माला पहनता और संस्कृत बोलता है।

**देश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विस्तार, जिसके भीतर सब कुछ है। दिक्। स्थान। २. पृथ्वी का वह विभाग जिसका कोई अलग नाम हो, और जिसके अंतर्गत कई प्रांत, नगर आदि हों। ३. वह भूभाग जो एक ही राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अंतर्गत हो। राष्ट्र। ४. स्थान। जगह। ५. शरीर का कोई भाग। अंग।

**देशज**—वि० [ सं० ] देश में उत्पन्न। संज्ञा पुं० वह शब्द जो न संस्कृत हो।

न संस्कृत का अपभ्रंश हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से यों ही उत्पन्न हो गया हो।

**देशनिकाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० देश +निकाला ] देश से निकाल दिये जाने का दंड।

**देशभाषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी देशविशेष की भाषा। जैसे—बँगला, मराठी, गुजराती आदि।

**देशांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अन्य देश। विदेश। परदेश। २. भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर-दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। लंबांश।

**देशाटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा। देशभ्रमण।

**देशी**—वि० [ सं० देशीय ] १. देश का। देश संबंधी। २. स्वदेश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

**देशीय**—वि० दे० "देशी"।

**देश्य**—वि० [ सं० ] देश-संबंधी। देशी।

**देस**—संज्ञा पुं० दे० "देश"।

**देसवाल**—वि० [ हिं० देश + वाला] स्वदेश का। दूसरे देश का नहीं। ( मनुष्य )

**देसावर**—संज्ञा पुं० [ सं० देश+ अपर] अन्य देश। विदेश। परदेश। देशांतर।

**देसी**—वि० [ सं० देशीय ] स्वदेश का। दूसरे देश का नहीं।

**देह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० देही ] १. शरीर। तन। बदन। वि० दे० "शरीर"।

**मुहा०**—देह छूटना=जीवन समाप्त होना। मृत्यु होना। देह छोड़ना= मरना। देह धरना= शरीर धारण करना। जन्म लेना।

२. शरीर का कोई अंग। ३. जीवन। जिंदगी।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गाँव। खेड़ा। मौजा।

**देहकान**—संज्ञा पुं० दे० "दहकान"।

**देहत्याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु। मौत।

**देहधारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीररक्षा। जीवनरक्षा। २. जन्म।

**देहधारी**—संज्ञा पुं० [ सं० देह-धारिन् ] [ स्त्री० देहधारिणी ] शरीर धारण करनेवाला। शरीरी।

**देहपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु। मौत।

**देह-यात्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शरीर का खान-पान आदि व्यवहार। २. मृत्यु।

**देहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० देव+घर ] देवालय।

संज्ञा पुं० [ हिं० देह ] मनुष्य का शरीर।

**देहरी**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "देहली"।

**देहली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है। दहलीज।

**देहलीदीपक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देहली पर रखा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है।

**यौ०**—देहलीदीपक न्याय=देहली पर रखे हुए दोनों ओर प्रकाश फैलानेवाले दीपक के समान दोनों ओर लगने-वाली बात।

२. एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनों ओर लगाया जाता है।

**देहवंत**—वि० [ सं० देहवान् का बहु० ] जिसके देह हो। जो तनुधारी हो।

संज्ञा पुं० व्यक्ति। प्राणी। शरीरी।

**देहवान्**—वि० [ सं० ] शरीरधारी।

**देहांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु। मौत।

**देहात**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० देहाती ] गाँव। गँवई। ग्राम।

**देहाती**—वि० [ फ़ा० देहात ] १. गाँव का। २. गाँव में रहनेवाला। ग्रामीण। ३. गँवार।

**देहात्मवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देह या शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत।

**देही**—संज्ञा पुं० [ सं० देहिन् ] १. आत्मा। २. शरीरधारी। प्राणी। संज्ञा स्त्री० दे० "देह"।

**दैं***—अव्य० [ अनु० ] से। जैसे। चपाक दें।

**दैउ***†—संज्ञा पुं० दे० "दैव"।

**दैत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम्नी स्त्री से पैदा हुए थे। असुर। राक्षस। २. लंबे डील या असाधारण बल का मनुष्य। ३. अति-करनेवाला आदमी।

**दैत्यगुरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शुक्राचार्य।

**दैत्यारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. इंद्र।

**दैनंदिन**—वि० [ सं० ] नित्य का। क्रि० वि० १. प्रति दिन। रोज रोज। २. दिनों दिन।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रलय।

**दैनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० जो प्रति दिन लिखी जाय। जिसमें प्रति दिन का वर्णन हो। ऐसी पुस्तक। डायरी।

**दैन**—वि० [ हिं० देना ] देनेवाला। दायक। ( यौगिक में )

**दैनिक**—वि० [ सं० ] १. प्रति दिन का। रोज रोज का। २. जो रोज

दिन हो। नित्य होनेवाला। ३. जो एक दिन में हो। ४. दिन संबंधी।

**दैनिकी**—संज्ञा स्त्री० दैनंदिनी। डायरी। प्रति दिन लिखी जानेवाली। वह सादी पुस्तक जिसमें प्रति दिन लिखा जाय। डायरी।

**दैन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दीनता। विनीत भाव। २. काव्य के संचारी भावों में से एक जिसमें दुःख आदि से चित्त अति नम्र हो जाता है। कातरता।

**दैयत**†—संज्ञा पुं० [ सं० दैत्य ] दैत्य।

**दैया***†—संज्ञा पुं० [ हिं० दई ] दई। दैव।

**मुहा०**—दैयत कै=दई दई करके। किसी प्रकार। कठिनता से।

अव्य० आश्चर्य, भय या दुःखसूचक शब्द जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं। हे दई! हे परमेश्वर!

**दैर्घ्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दीर्घता। लंबाई।

**दैव**—वि० [ सं० ] [ वि० दैवी ] १. देवता-संबंधी। २. देवता के द्वारा होनेवाला।

संज्ञा पुं० १. प्रारब्ध। अदृष्ट। भाग्य। २. होनेवाली बात। होनी। ३. विधाता। ईश्वर। ४. आकाश। आसमान।

**मुहा०**—दैव बरसना=पानी बरसना।

**दैवगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ईश्वरीय बात। दैवी घटना। २. भाग्य। प्रारब्ध।

**दैवज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिषी। गणक।

**दैवत**—वि० [ सं० ] देवता संबंधी।

संज्ञा पुं० १. देवता की प्रतिमा आदि। २. देवता।

**दैवसंयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संयोग। इत्तिफाक।

**दैववश,दैववशात्**—क्रि० वि० [ सं० ] संयोग से। दैवयोग से। अकस्मात्।

**दैववाणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. आकाशवाणी। २. संस्कृत।

**दैववादी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाग्य के भरोसे रहनेवाला। २. आलसी। निरुद्योगी।

**दैवविवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें यज्ञ करनेवाला व्यक्ति ऋत्विज या पुरोहित को अपनी कन्या देता है।

**दैवागत**—वि० [ सं० ] दैवी। आकस्मिक।

**दैवात्**—क्रि० वि० [ सं० ] अकस्मात्। दैवयोग से। इत्तिफाक से।

**दैविक**—वि० [ सं० ] १ देवता-संबंधी। देवताओं का। २. देवताओं का किया हुआ।

**दैवी**—वि० [ सं० ] १. देवता-संबंधिनी। २. देवताओं की की हुई। देवकृत। प्रारब्ध या संयोग से होनेवाली। ३. आकस्मिक। ४. सात्विक।

**दैवीगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ईश्वर की की हुई बात। २. भावी। होनहार। अदृष्ट।

**दैहिक**—वि० [ सं० ] १. देह-संबंधी। शारीरिक। २. देह से उत्पन्न।

**दोंचना**†—क्रि० स० [ हिं० दोचन ] दबाव में डालना।

**दो**—वि० [ सं० द्वि ] एक और एक।

**मुहा०**—दो-एक या दो-चार=कुछ। थोड़े। दो-चार होना=भेंट होना। मुलाकात होना। आँखें दो चार होना=सामना होना। दो दिन का=बहुत ही थोड़े समय का।

**दो-आतशा**—वि० [ फ़ा० ] जो दो बार भभके में खींचा या चुआया गया हो।

**दोआब,दोआबा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में हो।

**दोउ**†—संज्ञा पुं०, वि० दे० "दो"।

**दोउ, दोऊ***†—वि० [ हिं० दो ] दोनों।

**दोख***†—संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

**दोखना***†—क्रि० स० [ हिं० दोष + ना ( प्रत्य० ) ] दोष लगाना। ऐब लगाना।

**दोखी***†—संज्ञा पुं० दे० "दोषी"।

**दोगला**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० दोगलः ] [ स्त्री० दोगली ] १. वह मनुष्य जो अपनी माता के यार से उत्पन्न हुआ हो। जारज। २. वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न भिन्न जातियों के हों।

**दोगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दुक्का ] १. एक प्रकार का लिहाफ का कपड़ा। २ पानी में घोला हुआ चूना जिससे सफेदी की जाती है।

**दोचंद**—वि० [ फ़ा० ] दुगना। दूना।

**दोच**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दबोच ] १. दुबधा। असमंजस। २ कष्ट। दुःख। ३. दबाव। दबाए जाने का भाव।

**दोचन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दबोचन ] १. दुबधा। असमंजस। २. दबाव। ३. कष्ट। दुःख।

**दोचना**—क्रि० स० [ हिं० दोच ] कोई काम करने के लिए बहुत ज़ोर देना। दबाव डालना।

**दोचित्ता**—वि० [ हिं० दो + चित्त ] [ स्त्री० दोचित्ती ] जिसका चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो। उद्विग्न-चित्त।

**दोचित्ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+

चित्त ] "दोचित्ता" होने का भाव। चित्त की उद्विग्नता।

**दोज**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो ] पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।

**दोजख**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मुसलमानों के अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं।

**दोजखी**—वि० [ फ़ा० ] १. दोजख-संबंधी। दोजख का। २. बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।

**दो-जानू**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] घुटनों के बल। घुटने टेककर। ( बैठना )

**दोतरफा**—वि० [ फ़ा० ] दोनों तरफ का। दोनों ओर संबंधी।

क्रि० वि० दोनों तरफ। दोनों ओर।

**दोतला, दोतल्ला**—वि० [हिं० दो + तल ] दो खंड का। दो-मंजिला। जैसे—दोतल्ला मकान।

**दोतही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो + तह] एक प्रकार की मोटी दोहरी चादर।

**दोतारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो + तार (धातु) ] एकतारे की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**दोदना**†—क्रि० स० [ हिं० दो (दोहराना) ] प्रत्यक्ष कही हुई बात से इनकार करना। प्रत्यक्ष बात से मुकरना।

**दोदिला**—वि० दे० "दो-चित्ता"।

**दोधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त। बंधु।

**दोधारा**—वि० [ हिं० दो + धार ] [ स्त्री० दोधारी ] जिसके दोनों ओर धार या बाढ़ हो।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का थूहर।

**दोन**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो ] दो पहाड़ों के बीच की नीची जमीन।

संज्ञा पुं० [ हिं० दो+नद ] १. दो नदियों के बीच की जमीन। दोआबा। २. दो नदियों का संगम-स्थान। ३. दो वस्तुओं की संधि या मेल।

**दोनला**—वि० [ हिं० दो + नल ] जिसमें दो नालें हों। जैसे—दोनली बंदूक।

**दोना**—संज्ञा पुं० [ सं० द्रोण ] [ स्त्री० दोनी ] पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का छोटा गहरा पात्र।

**दोनिया, दोनी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दोना का स्त्री० अल्पा० ] छोटा दोना।

**दोनों**—वि० [ हिं० दो + नो (प्रत्य०) ] ऐसे विशिष्ट दो ( मनुष्य या पदार्थ ) जिनका पहले वर्णन हो चुका हो और जिनमें से कोई छोड़ा न जा सकता हो। एक और दूसरा। उभय।

**दोपलिया**†—वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"।

**दोपल्ली**—वि० [ हिं० दो + पल्ला + ई (प्रत्य०) ] दो पल्लेवाला। जिसमें दो पल्ले हों।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ सिले होते हैं।

**दोपहर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो + पहर ] वह समय जब सूर्य मध्य आकाश में रहता है। मध्याह्न-काल।

**दोपहरिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

**दोपीठा**—वि० [ हिं० दो + पीठ ] दोनों ओर समान रंग-रूप का। दोरुखा।

**दोफसली**—वि० [ हिं० दो + अ० फसल ] १. दोनों फसलों के संबंध का। २. जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देने योग्य।

**दोबल**—संज्ञा पुं० [ ? ] दोष। अपराध।

**दोबा***—संज्ञा पुं० दे० "दुबधा"।

**दोबारा**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] एक बार हो चुकने के उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।

**दोबाला**—वि० [ फ़ा० ] दुगना। दूना।

**दोभाषिया**—संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।

**दोमंजिला**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें दो खंड या मंजिलें हों। ( मकान )

**दोमहला**—वि० दे० "दोमंजिला"।

**दोमुँहा**—वि० [ हिं० दो + मुँह ] १. जिसे दो मुँह हो। २. दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला। कपटी।

**दोमुँहा साँप**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो + मुँहा + साँप ] १. एक प्रकार का साँप जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। २. कुटिल। कपटी।

**दोय***†—वि०, संज्ञा पुं० १. दे० "दो"। २. दे० "दोनों"।

**दोयम**—वि० [ फ़ा० ] दूसरा। द्वितीय।

**दोरंगा**—वि० [ हिं० दो + रंग ] १. दो रंग का। जिसमें दो रंग हों। २. जो दोनों ओर लग या चल सके।

**दोरंगी**—संज्ञा स्त्री [ हिं० दो + रंग + ई (प्रत्य०) ] १. दोरंगे या दो-मुँहे होने का भाव। २. छल। कपट।

**दोरदंड***†—वि० दे० "दुर्दंड"।

**दोरसा**—वि० [ हिं० दो + रस ] दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। जिसमें दो तरह के रस या स्वाद हों।

यौ०—दोरसे दिन=गर्भावस्था के दिन।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीने का तमाकू।

**दोराहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+राह] वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।

**दोरुखा**—वि० [ फ़ा० ] १. जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २. जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।

**दोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. झूला। हिंडोला। २. डोली। चंडोल।

**दोला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हिंडोला। झूला। २.डोली या चंडोल।

**दोलायंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैद्यों का एक यंत्र जिसकी सहायता से वे ओषधियों के अर्क उतारते हैं।

**दोलायमान**—वि० [ सं० ] हिलता हुआ।

**दोलित**—वि० [सं०] [स्त्री० दोलिता] हिलता या झूलता हुआ।

**दोशाखा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] शमादान या दीवारगीर जिसम दो बत्तियाँ हों।

**दोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बुरापन। खराबी। अवगुण। एब। नुक्स।

**मुहा०**—दोष लगाना=किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है। २. लगाया हुआ अपराध। अभियोग। लांछन। कलंक।

**यौ०**—दोषारोपण=दोष देना या लगाना।

३. अपराध। कसूर। जुर्म। ४. पाप। पातक। ५. शरीर में के वात, पित्त और कफ जिनके कुपित होने से शरीर में व्याधि उत्पन्न होती है। ६.वह मानसिक भाव जो मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होता है और जिसकी प्रेरणा से मनुष्य भले या बुरे कामों में प्रवृत्त होता है। अतिव्याप्ति। (न्याय) ७. साहित्य में वे बातें जिनसे काव्य के गुण में कमी हो जाती है। यह पाँच प्रकार का होता है—पद-दोष, पदांश-दोष, वाक्य-दोष, अर्थ-दोष और रस-दोष। ८. प्रदोष।

संज्ञा पुं० [सं० द्वेष] द्वेष। शत्रुता।

**दोषता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दोष का भाव।

**दोषन***†—संज्ञा पुं० [ सं० दूषण ] दोष। दूषण। अपराध।

**दोषना***†—क्रि० स० [ सं० दूषण+ना (प्रत्य०) ] दोष लगाना। अपराध लगाना।

**दोषारोपण**—संज्ञा पुं० [सं० दोष+आरोपण ] किसी पर कोई दोष लगाना।

**दोषित***—वि० दे० "दूषित"।

**दोषिन**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दोषी ] १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री। ३ दुष्ट स्वभाववाली स्त्री।

**दोषी**—संज्ञा पुं० [ सं० दोषिन् ] १. अपराधी। कसूरवार। २. पापी। ३. मुजरिम। अभियुक्त। ४. जिसमें दोष हो। ५. दुष्ट स्वभाववाला।

**दोस***†—संज्ञा पुं० दे० "दोष"।

**दोसदारी***†—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० दोस्तदारी ] मित्रता। दोस्ती।

**दोसाला**†—वि० [ हिं० दो+साल=वर्ष ] दो वर्ष का। दो वर्ष का पुराना।

**दोसूती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० दो+सूती] दोतही या दुसूती नाम की बिछाने की मोटी चादर।

**दोस्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मित्र। स्नेही।

**दोस्ताना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. दोस्ती। मित्रता। २. मित्रता का व्यवहार।

वि० दोस्ती का। मित्रता का।

**दोस्ती**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मित्रता। स्नेह।

**दोह***†—संज्ञा पुं० दे० "द्रोह"।

**दोहग**—संज्ञा पुं० दे० "दोहाग"।

**दोहगा**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० दुर्भगा ] रखनी। सुरैतिन। उपपत्नी।

**दोहता**—संज्ञा पुं० [ सं० दौहित्र ] [ स्त्री० दोहती ] लड़की का लड़का। नाती। नवासा।

**दोहत्थड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० दो+हाथ ] दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़।

**दोहत्था**—क्रि० वि० [ हिं० दो+हाथ ] दोनो हाथों से। दोनों हाथो के द्वारा।

वि० जो दोनों हाथों से हो।

**दोहद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गर्भवाली स्त्री की इच्छा। उकौना। २. गर्भवती स्त्री की मतली इत्यादि। ३. गर्भावस्था। ४. गर्भ का चिह्न। ५. गर्भ। ६. एक प्राचीन विश्वास जिसके अनुसार सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, चरणाघात से अशोक, दृष्टिपात से तिलक, मधुर गान से आम और नाचने से कचनार इत्यादि वृक्ष फूलते हैं।

**दोहदवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गर्भवती स्त्री।

**दोहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गाय, भैंस इत्यादि के स्तनों से दूध निकालना। दुहना। २. दोहनी।

**दोहना***—क्रि० स० [ सं० दूषण ] १. दोष लगाना। २. तुच्छ ठहराना।

**दोहनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मिट्टी का वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं।

२. दूध दुहने का काम।

**दोहर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दो+पर्त=तह] एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।

**दोहरना**—क्रि० अ० [हिं० दोहरा] १. दो बार होना। दूसरी आवृत्ति होना। २. दोहरा होना।
क्रि० स० दोहरा करना।

**दोहरा**—वि० पुं० [हिं० दो+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १. दो परत या तह का। २. दुगना।
संज्ञा पुं० १. एक ही पत्ते में लपेटे हुए पान के दो बीड़े। (तंबोली) २. दोहा नाम का छंद।

**दोहराना**—क्रि० स० [हिं० दोहरा] १. किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। † २. किसी कपड़े या कागज आदि की दो तहें करना। दोहरा करना।

**दोहा**—संज्ञा पुं० [हिं० दो+हा (प्रत्य०)] एक प्रसिद्ध हिंदी छंद। इसी को उलट देने से सोरठा हो जाता है।

**दोहाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुहाई"।

**दोहाग, दोहागा***†—संज्ञा पुं० [सं० दौर्भाग्य] दुर्भाग्य। बदकिस्मती। अभाग्य।

**दोहागा**†—संज्ञा पुं० [हिं० दोहाग] [स्त्री० दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।

**दोहित्र**—संज्ञा पुं० [सं० दौहित्र] बेटी का बेटा। नाती।

**दोही**—संज्ञा पुं० [हिं० दो] दोहे की तरह का एक छंद।
संज्ञा पुं० [सं० दोहिन्] १. दूध दुहनेवाला। २. ग्वाला।
संज्ञा स्त्री० दुहाई। पुकार।

**दोह्य**—वि० [सं०] दुहने योग्य।

**दौं***—अव्य० १. दे० "धौं"। २. दे० "दूँ"।

**दौंकना***—क्रि० अ० दे० "दमकना"।

**दौंचना***†—क्रि० स० [हिं० दबोचना] १. दबाव डालकर लेना। २. लेने के लिए अड़ना।

**दौंरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौंना या दौंवना] १. बैलों का झुंड जो कटी हुई फसल के डंठलों पर दाना झाड़ने के लिए फिराया जाता है। २. वह रस्सी जिससे बैल बँधे होते हैं। ३. फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया। ४. झुंड।

**दौ***—संज्ञा स्त्री० [सं० दव] १. जंगल की आग। २. संताप। ताप। जलन।

**दौड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। धावा।
मुहा०—दौड़ मारना या लगाना=१. वेग के साथ जाना। २. दूर तक पहुँचना। लंबी यात्रा करना।
२. वेगपूर्वक आक्रमण। धावा। चढ़ाई। ३. उद्योग में इधर-उधर फिरने की क्रिया। प्रयत्न। ४. द्रुतगति। वेग।
मुहा०—मन की दौड़=चित्त की सूझ। कल्पना।
५. गति की सीमा। पहुँच। ६. उद्योग की सीमा। प्रयत्नों की पहुँच। ७. बुद्धि की गति। अक्ल की पहुँच। ८. विस्तार। लंबाई। आयतन। ९. सिपाहियों का दल जो अपराधियों को एक बारगी कहीं पकड़ने के लिए जाय।

**दौड़-धूप**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़+धूप] परिश्रम। प्रयत्न। उद्योग।

**दौड़ना**—क्रि० अ० [सं० धोरण] १. मामूली चलने से ज्यादा तेज चलना।
मुहा०—चढ़ दौड़ना=चढ़ाई करना। आक्रमण करना। दौड़ दौड़कर आना=जल्दी जल्दी या बार बार आना।
२. सहसा प्रवृत्त होना। झुक पड़ना। ३. किसी प्रयत्न में इधर-उधर फिरना। ४. फैलना। व्याप्त होना। छा जाना।

**दौड़ादौड़**—क्रि० वि० [हिं० दौड़+दौड़] [संज्ञा दौड़ादौड़ी] बिना कहीं रुके हुए। अविश्रांत। बेतहाशा।

**दौड़ादौड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़धूप। २. बहुत से लोगों के साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया। ३. आतुरता। हड़बड़ी।

**दौड़ान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव। द्रुतगमन। २. वेग। झोंक। ३. सिलसिला।

**दौड़ाना**—क्रि० स० [हिं० दौड़ना का सकर्मक रूप] १. दौड़ने की क्रिया कराना। जल्द जल्द चलाना। २. बार बार आने-जाने के लिए कहना या विवश करना। ३. किसी वस्तु को एक जगह से खींचकर दूसरी जगह ले जाना। ४. फैलाना। पोतना। ५. चलाना। जैसे—कलम दौड़ाना।

**दौत्य***—संज्ञा पुं० [सं०] दूत का काम।

**दौन***—संज्ञा पुं० दे० "दमन"।

**दौना**—संज्ञा पुं० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियों में तेज पर कुछ कड़ुई सुगंध आती है।
†संज्ञा पुं० दे० "दोना"।
*क्रि० स० [सं० दमन] दमन करना।

**दौनागिरि**—संज्ञा पुं० दे० "द्रोणगिरि"।

**दौर**—संज्ञा पुं० [अ०] १. चक्कर। भ्रमण। फेरा। २. दिनों का फेर।

कालचक्र । ३. अभ्युदय-काल । बढ़ती का समय ।

दौ०-दौरदौरा=प्रधानता । प्रबलता । ४. प्रताप । प्रभाव । हुकूमत । ५. बारी । पारी । ६. बार । दफा । ७. दे० "दौरा" ।

**दौरना***†-क्रि० अ० दे० "दौड़ना" ।

**दौरा**—संज्ञा पुं० [ अ० दौर ] १. चक्कर । भ्रमण । २. इधर-उधर जाने या घूमने की क्रिया । फेरा । गश्त । ३. अफसर का इलाके में जाँच-पड़ताल के लिए घूमना ।

**मुहा०**—( असामी या मुकदमा ) दौरा सुपुर्द करना=( असामी या मुकदमे का ) फैसले के लिए सेशन-जज के पास भेजना ।

४.सामयिक आगमन । फेरा । ५.किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय-समय पर होता हो । आवर्त्तन । †संज्ञा पुं० [ सं० द्रोण ] [ स्त्री० अल्पा० दौरी ] बाँस की फट्टियों या मूँज आदि का टोकरा ।

**दौरात्म्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दुरात्मा का भाव । दुर्जनता । २. दुष्टता ।

**दौरान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. दौरा । चक्र । २. दिनों का फेर । ३. फेरा । पारी ।

**दौराना**†*-क्रि०स० दे०"दौड़ाना" ।

**दौरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हि० दौरा ] बाँस या मूँज की छोटी टोकरी । चँगेरी । डलिया ।

**दौर्जन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुर्जनता ।

**दौर्बल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] दुर्बलता ।

**दौर्भाग्य**—संज्ञा पुं० दे० "दुर्भाग्य" ।

**दौर्मनस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] "दुर्मनस्" होने का भाव । दुर्जनता ।

**दौर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूरी ।

**दौलत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] धन । संपत्ति ।

**दौलतखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] निवासस्थान । घर । ( आदरार्थ ) ।

**दौलतमंद**—वि० [ फ़ा० ] धनी । संपन्न ।

**दौवारिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] द्वारपाल ।

**दौहित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० दौहित्री ] लड़की का लड़का । नाती ।

**द्याना,द्यावना***—क्रि० स० दे० "दिलाना" ।

**द्यु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दिन । २. आकाश । ३. स्वर्ग । ४ अग्नि । ५. सूर्य्यलोक ।

**द्युति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दीप्ति । कांति । चमक । २. शोभा । छवि । ३. लावण्य । ४. रश्मि । किरण ।

**द्युतिमंत**—वि० दे० "द्युतिमान्" ।

**द्युतिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्युति+मा ( प्रत्य० ) ] प्रकाश । तेज ।

**द्युतिमान्**—वि० [ सं० द्युतिमत् ] [ स्त्री० द्युतिमती ] जिसमें चमक या आभा हो ।

**द्युमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य ।

**द्युमत्सेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शाल्व देश के एक राजा जो सत्यवान् के पिता थे ।

**द्युलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्गलोक ।

**द्यूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह खेल जिसमें दाँव बदकर हार-जीत की जाय । जूआ ।

**द्योतक**—वि० [ सं० ] १. प्रकाश करनेवाला । प्रकाशक । २. बतलानेवाला ।

**द्योतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० द्योतित ] १. दर्शन । २. प्रकाशित करने या जलाने का काम । ३. दिखाने का काम ।

**द्योहरा***—संज्ञा पुं० दे० "देवधरा" ।

**द्यौस***—संज्ञा पुं० [सं० दिवस] दिन ।

**द्रम्म**—संज्ञा पुं० [ सं० मि० फ़ा० दिरम ] सोलह पण मूल्य की एक मुद्रा । ( लीलावती )

**द्रव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. द्रवण । २. बहाव । ३. पलायन । दौड़ । ४. वेग । ५. आस्रव । ६. रस । ७. द्रवत्व ।

वि० १. पानी की तरह पतला । तरल । २. गीला । ३ पिघला हुआ ।

**द्रवण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० द्रवित] १. गमन । गति । २. क्षरण । बहाव । ३. पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव । ४. चित्त के कोमल होने की वृत्ति ।

**द्रवणशील**—वि० [ सं० ] जो पिघलता या पसीजता हो ।

**द्रवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] द्रवत्व ।

**द्रवत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पानी की तरह पतला होने या बहने का भाव ।

**द्रवना***—क्रि० अ० [ सं० द्रवण ] १. प्रवाहित होना । बहना । २. पिघलना । ३. पसीजना । दयार्द्र होना ।

**द्रविड़**—संज्ञा पुं० [ सं० तिरमिक ] १. दक्षिण भारत का एक देश । २. इस देश का रहनेवाला । ३. ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत पाँच विभाग हैं—आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़ और महाराष्ट्र ।

**द्रवित**—वि० दे० "द्रवीभूत" ।

**द्रवीभूत**—वि० [सं० ] १. जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो । २. पिघला हुआ । ३. दयार्द्र । दयालु ।

**द्रव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वस्तु । पदार्थ । चीज । २. वह पदार्थ जिसमें

केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो और जो समवायि कारण हो। वैशेषिक में द्रव्य नौ कहे गये हैं — पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। वास्तव में द्रव्य उस मूल तत्त्व को कहते हैं जिसमें और कोई द्रव्य न मिला हो। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि जल और वायु आदि कई और मूल द्रव्यों के योग से बने हैं। उन्होंने लगभग ७५ ऐसे मूल द्रव्य या तत्त्व ढूँढ़ निकाले हैं जिनके योग से भिन्न भिन्न पदार्थ बने हैं। ३. सामग्री। सामान। उपादान। ४. धन। दौलत।

**द्रव्यत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] द्रव्य का भाव।

**द्रव्यवान्**—वि० [ सं० द्रव्यवत् ] [ स्त्री० द्रव्यवती ] धनवान्। धनी।

**द्रष्टव्य**—वि० [ सं० ] १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो दिखाया जानेवाला हो।

**द्रष्टा**—वि० [ सं० ] १. देखनेवाला। २. साक्षात् करनेवाला। ३. दर्शक। प्रकाशक।
संज्ञा पुं० सांख्य के अनुसार पुरुष, और योग के अनुसार आत्मा।

**द्राक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दाख। अंगूर।

**द्राघिमा**—संज्ञा पुं० [ सं० द्राघिमन् ] १. दीर्घता। लंबाई। २. अक्षांश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्य रेखा के समानांतर पूर्व-पश्चिम को मानी गई हैं।

**द्राव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गमन। २. क्षरण। ३. बहने या पसीजने की क्रिया।

**द्रावक**—वि० [सं०] [स्त्री० द्राविका] १. ठोस चीजको पानी की तरह पतला करनेवाला। २. बहानेवाला। ३. गलानेवाला। ४. पिघलानेवाला। ५. हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।

**द्रावण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।

**द्राविड़**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० द्राविड़ी ] द्रविड़ देशवासी।

**द्राविड़ी**—वि० [ सं० ] द्रविड़-संबंधी।

**मुहा०**—द्राविड़ी प्राणायाम=कोई सीधी तरह होनेवाली बात घुमाव-फिराव के साथ करना।

**द्रुत**—वि० [ सं० ] १. द्रवीभूत। गला हुआ। २. शीघ्रगामी। तेज। ३. भागा हुआ।
संज्ञा पुं० १. वृक्ष। २. ताल की एक मात्रा का आधा। बिंदु। व्यंजन। ३. वह लय जो मध्यम से कुछ तेज हो। दून।

**द्रुतगामी**—वि० [ सं० द्रुतगामिन् ] [ स्त्री० द्रुतगामिनी ] शीघ्रगामी। तेज चलनेवाला।

**द्रुतपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बारह अक्षरों का एक छंद।

**द्रुतमध्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्द्ध-समवृत्ति।

**द्रुतविलंबित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है। सुंदरी।

**द्रुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. द्रव। २ गति।

**द्रुपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उत्तर पाञ्चाल के एक राजा जो महाभारत के युद्ध में मारे गए थे। धृष्टद्युम्न और शिखंडी इनके पुत्र और कृष्णा इनकी कन्या थी।

**द्रुम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वृक्ष।

**द्रुमिला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

**द्रुह्यु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राचीन आर्य्यों का एक वंश या जनसमूह। २. शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ पुत्र जिसने ययाति का बुढ़ापा लेना अस्वीकृत किया था।

**द्रोण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लकड़ी का एक बरतन जिसमें वैदिक काल में सोम रखा जाता था। २. जल आदि रखने का लकड़ी का बरतन। कठवत। ३. चार आढक या १६ सेर की एक प्राचीन माप। ४. पत्तों का दोना। ५. नाव। डोंगा। ६. अरणी की लकड़ी। ७. लकड़ी का रथ। ८. डोम कौवा। काला कौवा। ९. द्रोण-गिरि नाम का पहाड़। १०. दे० "द्रोणाचार्य्य"।

**द्रोणकाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] डोम कौवा।

**द्रोणगिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पर्वत जिसे वाल्मीकीय रामायण में क्षीरोद समुद्र लिखा है।

**द्रोणाचार्य्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महाभारत में प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे। शरद्वान् की कन्या कृपी के साथ इनका विवाह हुआ था जिससे अश्वत्थामा नामक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ था।

**द्रोणी**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. डोंगी। २. छोटा दोना। ३. काठ का प्याला। कठवत। डोकिया। ४. दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ५. दर्रा। ६. द्रोण की स्त्री, कृपी। ७. एक परि-माण जो दो सूर्प या १२८ सेर का

होता था।

**द्रोना***—संज्ञा पुं० दे० "द्रोण"।

**द्रोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० द्रोही ] दूसरे का अहितचिंतन। बैर। द्वेष।

**द्रोही**—वि० [ सं० द्रोहिन् ] [ स्त्री० द्रोहिणी ] द्रोह करनेवाला। बुराई चाहनेवाला।

**द्रौपदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा जो पाँचों पांडवों को ब्याही गई थी। जूए में युधिष्ठिर का सर्वस्व जीत लेने पर दुर्योधन ने दुःशासन द्वारा इसे भरी सभा में बुलवाकर इसका वस्त्र खिंचवाना चाहा था, पर वह वस्त्र न खिंच सका। इसी पर भीम ने बदला चुकाने के लिए दुःशासन के कलेजे का रक्त-पान करने की प्रतिज्ञा की थी जो उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में पूरी की थी।

**द्वंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. युग्म। मिथुन। जोड़ा। २. जोड़। प्रतिद्वंद्वी। ३. दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। द्वंद्वयुद्ध। ४. झगड़ा। कलह। बखेड़ा। ५. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। जैसे—राग-द्वेष, दुःख-सुख इत्यादि। ६. उलझन। झंझट। जंजाल। ७. कष्ट। दुःख। ८. उपद्रव। झगड़ा। ऊधम। ९. दुबधा। संशय।

संज्ञा स्त्री० [ सं० दुंदुभि ] दुदुभी।

**द्वंदर***—वि० [ सं० द्वंद्वालु ] झगड़ालू।

**द्वंद्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दो वस्तुएँ जो एक साथ हों। युग्म। जोड़ा। २. स्त्री-पुरुष या नर-मादा का जोड़ा। ३. दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं का जोड़ा। ४. गुप्त बात। रहस्य। ५. दो आदमियों की लड़ाई। ६. झगड़ा। बखेड़ा। कलह। ७. एक प्रकार का समास जिसमें मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है। जैसे—रोटी-दाल पकाओ।

**द्वंद्वयुद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह लड़ाई जो दो पुरुषों के बीच हो। कुश्ती।

**द्वय**—वि० [ सं० ] दो।

**द्वयता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्वय + ता (प्रत्य०) ] १. दो का भाव। द्वैत। २. अपनेपन और परायेपन का भाव। भेद-भाव। दुजायगी।

**द्वादश**—वि० [ सं० ] १. जो संख्या में दस और दो हो। बारह। २ बारहवाँ।

संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।

**द्वादशबानी**—संज्ञा पुं० दे० "बारहबानी"।

**द्वादशाक्षर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु का एक मंत्र जिसमें बारह अक्षर हैं। वह मंत्र यह है—"ओं नमो भगवते वासुदेवाय"।

**द्वादशाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बारह दिनों का समुदाय। २. वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने से बारहवें दिन हो।

**द्वादशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी पक्ष की बारहवीं तिथि।

**द्वादसबानी***—वि० दे० "बारहबानी"।

**द्वापर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार युगों में से तीसरा युग। पुराणों में यह युग ८६४००० वर्ष का माना गया है।

**द्वार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दीवार, परदे आदि में वह खुला स्थान जिससे होकर कोई वस्तु भीतर-बाहर आ जा सके। मुख। मुहाना। मुहड़ा। २. घर में आने-जाने के लिए दीवार में खुला हुआ स्थान। दरवाजा। ३. इंद्रियों के मार्ग या छेद; जैसे—आँख, कान, नाक। ४. उपाय। साधन।

**द्वारका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काठियावाड़-गुजरात की एक प्राचीन नगरी। यह सात पुरियों में से एक है। कुशस्थली। द्वारावती।

**द्वारकाधीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रीकृष्ण। २. कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है।

**द्वारकानाथ**—संज्ञा पुं० दे० "द्वारकाधीश"।

**द्वारचार**—संज्ञा पुं० दे० "द्वार-पूजा"।

**द्वार-पटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दरवाजे पर टाँगने का परदा।

**द्वारपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो दरवाजे पर रक्षा के लिए नियुक्त हो। दरबान।

**द्वारपूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विवाह में एक कृत्य जो कन्यावाले के द्वार पर उस समय होता है जब बारात के साथ वर आता है।

**द्वारवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] द्वारका।

**द्वारसमुद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दक्षिण का एक पुराना नगर जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राजधानी थी।

**द्वारा**—संज्ञा पुं० [ सं० द्वार ] १. द्वार। दरवाजा। फाटक। २. मार्ग। राह।

अव्य० [ सं० द्वारात् ] जरिए से।

साधन से।

**द्वारावती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] द्वारका।

**द्वारिका**-संज्ञा स्त्री० दे० "द्वारका"।

**द्वारी***—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वार+ई (प्रत्य०) ] छोटा द्वार। दरवाजा।

संज्ञा पुं० दे० "द्वारपाल"।

**द्वि**—वि० [ सं० ] दो।

**द्विक**—वि० [ सं० ] १. जिसमें दो अवयव हों। २. दोहरा।

**द्विकर्मक**—वि० [ सं० ] ( क्रिया ) जिसके दो कर्म हों।

**द्विकल**—संज्ञा पुं० [ हिं० द्वि+कला] छंदःशास्त्र में दो मात्राओं का समूह।

**द्विगु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्यावाचक हो। पाणिनि ने इसे कर्मधारय के अंतर्गत रखा है; पर और लोग इसे स्वतंत्र समास मानते हैं।

**द्विगुण**—वि० [ सं० ] दुगना। दूना।

**द्विगुणित**—वि० [ सं० ] १. दो से गुणा किया हुआ। २ दूना। दुगना।

**द्विज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जिसका जन्म दो बार हुआ हो।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंडज प्राणी। २.पक्षी। ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। ४. ब्राह्मण। ५. चंद्रमा। ६. दाँत।

**द्विजन्मा**—वि० [ सं० द्विजन्मन् ] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।

संज्ञा पुं० द्विज।

**द्विजपति, द्विजराज**—संज्ञा पुं० [ सं ] १. ब्राह्मण। २. चंद्र। ३. कपूर। ४. गरुड़।

**द्विजाति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। द्विज। २. ब्राह्मण। ३. अंडज। ४. पक्षी। ५. दाँत।

**द्विजिह्व**—वि० [ सं० ] १. जिसे दो जीभ हों। २. चुगलखोर। ३. खल। दुष्ट।

संज्ञा पुं० साँप।

**द्विजेंद्र, द्विजेश**—संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति"।

**द्वितिया***—वि० [ सं० द्वितीय ] दूसरा।

**द्वितीय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० द्वितीया ] दूसरा।

**द्वितीया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

**द्वित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दो का भाव। २ दोहरे होने का भाव।

**द्विदल**—वि० [ सं० ] १. जिसमें दो दल या पिंड हों। २. जिसमें दो पटल हों।

संज्ञा पुं० वह अन्न जिसमें दो दल हों। दाल।

**द्विधा**—क्रि०-वि० [ सं० ] १. दो प्रकार से। दो तरह से। २. दो खंडों या टुकड़ों में।

**द्विपद**—वि० [ सं० ] दो पैरोंवाला।

संज्ञा पुं० मनुष्य।

**द्विपदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह छंद या वृत्ति जिसमें दो पद हों। २. दो पदों का गीत। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें किसी दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पंक्तियों में लिखते हैं।

**द्विपाद**—वि० [ सं० ] १. दो पैरोंवाला। (पशु) २. जिसमें दो पद या चरण हों।

**द्विबाहु**—वि० [ सं० ] दो बाँहों या हाथों वाला।

**द्विभाषी**—संज्ञा पुं० [सं० द्विभाषिन्] [ स्त्री० द्विभाषिणी ] वह पुरुष जो दो भाषाएँ जानता हो। दुभाषिया।

**द्विमुखी**—वि० स्त्री० [ सं० ] दो मुँहवाली।

संज्ञा स्त्री० वह गाय जो बच्चा दे रही हो। ( ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है।)

**द्विरद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथी।

वि० [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतोंवाला।

**द्विरसन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० द्विरसना ] १. दो जबानोंवाला। द्विजिह्व। २. कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० द्विरसना ] साँप।

**द्विरागमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना। दौंगा।

**द्विरुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दो बार कथन।

**द्विरेफ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भ्रमर। भौंरा।

**द्विविध**—वि० [ सं० ] दो प्रकार का।

क्रि० वि० दो प्रकार से।

**द्विविधा***—संज्ञा पुं० [ सं० द्विविध] दुबधा।

**द्विवेदी**—संज्ञा पुं० [ सं० द्विवेदिन् ] ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

**द्विशिर**—वि० [ सं० द्वि+शिर ] दो सिरोंवाला। जिसके दो सिर हों।

**मुहा०**—कौन द्विशिर है ? = किसे फालतू सिर है ? किसे अपने मरने का भय नहीं है ?

**द्विष, द्विषत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

शत्रु। वैरी।

**द्वींद्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जंतु जिसके दो ही इंद्रियाँ हों।

**द्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो। टापू। जजीरा। ( बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप और छोटे छोटे द्वीपों के समूह को द्वीपपुंज या द्वीपमाला कहते हैं।) २ पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग जिनके नाम ये हैं—जंबूद्वीप, लंकाद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

**द्वेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति। चिढ़। शत्रुता। वैर।

**द्वेषी**—वि० [ सं० द्वेषिन ] [ स्त्री० द्वेषिणी ] विरोधी। वैरी। चिढ़ रखनेवाला।

**द्वेष्टा**—वि० दे० "द्वेषी"।

**द्वै***†—वि० [ सं० द्वय ] दो। दोनों।

**द्वैज***—संज्ञा स्त्री० [ सं० द्वितीय ] द्वितीया। दूज।

**द्वैत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दो का भाव। युग्म। युगल। २. अपने और पराए का भाव। भेद। अंतर। भेद-भाव। ३. दुबधा। भ्रम। ४. अज्ञान।

**द्वैतवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह दार्शनिक सिद्धात जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है। वेदात को छोड़कर शेष पाँचों दर्शन द्वैतवादी माने जाते हैं। २. वह दार्शनिक सिद्धात जिसमें भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

**द्वैतवादी**—वि० [ सं० द्वैतवादिन् ] [ स्त्री० द्वैतवादिनी ] द्वैतवाद को माननेवाला।

**द्वैध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विरोध। २. राजनीति के षड्गुणों में से एक जिसमें मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। ३. आधुनिक राजनीति में वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हो।

**द्वैपायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यास जी का एक नाम। २. एक ह्रद या ताल जिसमें कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन भागकर छिपा था।

**द्वैमातुर**—वि० [ सं० ] जिसकी दो माँ हों।

संज्ञा पुं० १ गणेश। २. जरासंध।

**द्वौ***—वि० [ हिं० दो+ऊ, दोउ ] दोनों।

वि० दे० "दव"।

—:*:—

# ध

—:*:—

**ध**—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंत-मूल है।

**धंधक**—संज्ञा पुं० [हिं० धंधा] काम-धंधे का आडंबर। जंजाल। बखेड़ा।

**धंधकधोरी**—संज्ञा पुं० [हिं० धंधक+धोरी ] हर घड़ी काम में जुता रहनेवाला।

**धंधरक**—संज्ञा पुं० दे० "धंधक"।

**धँधला**—संज्ञा पुं० [ हिं० धंधा ] १. कपट का आडंबर। झूठा ढोंग। छल-छंद। २. हीला। बहाना।

**धँधलाना**—क्रि० अ० [हिं० धँधला] छल-छंद करना। ढग रचना।

**धंधा**—संज्ञा पुं० [ सं० धनधान्य ] १.धन या जीविका के लिए उद्योग। काम काज। २. उद्यम। व्यवसाय। कारबार।

**धँधार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धूआँ ] ज्वाला। लपट।

**धंधारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धंधा ] गोरखधंधा।

**धँधोर**—संज्ञा पुं० [अनु० धायँधायँ= आग दहकने की ध्वनि] १. होलिका। होली। २. आग की लपट। ज्वाला।

**धँवना***—क्रि० स० दे० "धौंकना"।

**धँसन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धँसना ] १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. घुसने या पैठने का ढंग। ३. गति। चाल।

**धँसना**—क्रि० अ० [ सं० दंशन ] १. किसी कड़ी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर दाब पाकर घुसना। गड़ना।

**मुहा०**—जी या मन में धँसना=चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। दिल में असर करना।

२. अपने लिए जगह करते हुए घुसना।

*†३. नीचे की ओर धीरे धीरे जाना। नीचे खसकना। उतरना। ४. तल के किसी अंश का दबाव आदि पाकर नीचे हो जाना जिससे गड्ढा सा पड़ जाय। ४. किसी खड़ी वस्तु का जमीन में और नीचे तक चला जाना। बैठ जाना।

*क्रि० अ० [सं० ध्वंसन] नष्ट होना।

**धसान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धँसना ] १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. दलदल।

**धँसाना**—क्रि० स० [ हिं० धँसना ] १. नरम चीज में घुसाना। गड़ाना। चुभाना। २. पैठाना। प्रवेश कराना। ३. तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना।

**धँसाव**—संज्ञा पुं० दे० "धँसान"।

**धक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. हृदय के जल्दी-जल्दी चलने का भाव या शब्द।

**मुहा०**—जी धकधक करना=भय या उद्वेग से जी धड़कना। जी धक हो जाना=१. डर से जी दहल जाना। २. चौंक उठना।

२. उमंग। उद्वेग। चोप।

क्रि० वि० अचानक। एकबारगी।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] छोटी जूँ।

**धकधकाना**—क्रि० अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर जोर से या जल्दी जल्दी चलना। †२. (आग का) दहकना। भभकना।

**धकधकी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० धक ] १. जी धक धक करने की क्रिया या भाव। जी की धड़कन। २. गले और छाती के बीच का गड्ढा जिसमें स्पंदन मालूम होता है। धुकधुकी दुगदुगी।

**मुहा०**—धुकधुकी धड़कना=अकस्मात् आशंका या खटका होना। छाती धड़कना।

**धकना**—क्रि० अ० [ हिं० दहकना ] १. सुलगना। जलना। २. तपना।

**धकपक**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] धकधकी। क्रि० वि० दहलते हुए। डरते हुए।

**धकपकाना**—क्रि० अ० [अनु० धक] जी में दहलना। दहशत खाना। डरना।

**धकपेल***—संज्ञा स्त्री० [अनु० धक+पेलना ] धक्कमधक्का। रेलापेल।

**धका**†*—संज्ञा पुं० दे० "धक्का"।

**धकाना**†—क्रि० स० [हिं० दहकाना] दहकाना। सुलगाना।

**धकारा**†—संज्ञा पुं० [ अनु० धक ] आशंका। खटका।

**धकियाना**†—क्रि० स० [ हिं० धक्का] धक्का देना। ढकेलना।

**धकेलना**—क्रि० स० दे० "ढकेलना"

**धकैत**—वि० [ हिं० धक्का+ऐत (प्रत्य०) ] धक्कम-धक्का करनेवाला।

**धक्कम-धक्का**—संज्ञा पुं० [ हिं० धक्का ] १. बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम। धकापेल। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।

**धक्का**—संज्ञा पुं० [ सं० धम, हिं० धमक ] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ ऐसा वेग-युक्त स्पर्श जिससे एक या दोनों पर एकबारगी भारी दबाव पड़ जाय। टक्कर। रेला। झोंका। २. ढकेलने की क्रिया। झोंका। चपेट। ३. ऐसी भारी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों। कसमकस। ४. शोक या दुःख का आघात। संताप। ५. विपत्ति। आफत। ६. हानि। टोटा। नुकसान।

**धक्कामुक्की**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धक्का+मुक्का ] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को ढकेले और घूसों से मारे। मुठभेड़। मारपीट।

**धगड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० धव=पति ] [ स्त्री० धगड़ी ] यार। उपपति।

**धगधगाना***†—क्रि० अ० [ अनु० ] धकधकाना। धड़कना (छाती या जी का)।

**धगवरी**—वि० [ हिं० धगड़ा=पति या यार ] १. पति की दुलारी। २. कुलटा।

**धगा***†—संज्ञा पुं० दे० "धागा"।

**धचका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] धक्का। झटका।

**धज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ध्वज ] १. सजावट। बनाव। सुंदर रचना।

**यौ०**—सजधज=तैयारी। साज-सामान। २. मोहित करनेवाली चाल। सुंदर ढंग। ३. बैठने-उठने का ढब। ठवन। ४. ठसक। नखरा। ५. रूप-

रंग। शोभा।

**धंजा**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ध्वजा"।

**धजीला**—वि॰ [ हिं॰ धज+ईला (प्रत्य॰) ] [ स्त्री॰ धजीली ] सजीला। तरहदार। सुंदर।

**धज्जी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ धटी ] १. कपड़े, कागज आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी। २. लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी।

**मुहा॰**—धज्जियाँ उड़ाना= १. टुकड़े-टुकड़े करना। विदीर्ण करना। २. (किसी की) खूब दुर्गति करना।

**धड़ंग**—वि॰ [ हिं॰ धड़+अंग ] नंगा।

**धड़**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ धर ] १. शरीर का स्थूल मध्यभाग जिसके अंतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं। २. पेड़ का वह सबसे मोटा कड़ा भाग जिससे निकलकर डालियाँ इधर-उधर फैली रहती हैं। पेड़ी। तना।

संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] वह शब्द जो किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होता है।

**धड़क**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ धड़ ] १. दिल के चलने या उछलने की क्रिया। हृदय का स्पंदन। २. हृदय के स्पंदन का शब्द। तड़प। तपाक। ३. भय, आशंका आदि के कारण हृदय का अधिक स्पंदन। जी धक धक करने की क्रिया। ४. आशंका। खटका। अंदेशा। भय।

**यौ॰**—बे-धड़क=बिना किसी संकोच के।

**धड़कन**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ धड़क ] हृदय का स्पंदन। दिल का धक धक करना।

**धड़कना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ धड़क ] १. हृदय का स्पंदन करना। दिल का उछलना या धक धक करना।

**मुहा॰**—छाती, जी या दिल धड़कना= भय या आशंका से हृदय का जोर जोर से और जल्दी जल्दी चलना।

२. किसी भारी वस्तु के गिरने का सा धड़धड़ शब्द होना।

**धड़का**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ धड़ ] १. दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने का शब्द। ३. खटका। अंदेशा। भय। ४. पयाल का पुतला या डंडे पर रखी हुई काली हाँडी आदि जिसे चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में रखते हैं। धोखा।

**धड़काना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ धड़क ] १. दिल में धड़क पैदा करना। जी धक धक कराना। २. जी दहलाना। डराना। ३. धड़धड़ शब्द उत्पन्न कराना।

**धड़धड़ाना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ धड़धड़ ] धड़ धड़ शब्द करना। भारी चीज के गिरने-पड़ने को सी आवाज करना।

**मुहा॰**—धड़धड़ाता हुआ=१. धड़ धड़ शब्द और वेग के साथ। २. बिना किसी प्रकार के खटके या संकोच के। बेधड़क।

**धड़ल्ला**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ धड़ ] धड़ाका।

**मुहा॰**—धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ=१. बिना किसी रुकावट के। झोंक से। २. बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के। बेधड़क।

**धड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ धट ] १. वह बोझ जो बँधी हुई तौल का होता है और जिसे तराजू के एक पलड़े पर रखकर दूसरे पलड़े पर उसी के बराबर चीज रखकर तौलते हैं। बाट। बटखरा।

**मुहा॰**—धड़ा करना=कोई वस्तु रखकर तौलने के पहले तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। धड़ा बाँधना=१. दे॰ "धड़ा करना"। २. दोषारोपण करना। कलंक लगाना। २. चार सेर की एक तौल। ३. तराजू।

**धड़ाका**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ धड़ ] 'धड़' 'धड़' शब्द। धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।

**मुहा॰**—धड़ाके से=जल्दी से। चटपट।

**धड़ाधड़**—क्रि॰ वि॰ [अनु॰ धड़] १. लगातार 'धड़' 'धड़' शब्द के साथ। २. लगातार। बराबर। जल्दी जल्दी।

**धड़ा-बंदी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "धड़े-बंदी"।

**धड़ाम**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ धड़ ] ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द।

**धड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ धटिका, धटी ] १. चार या पाँच सेर की एक तौल। २. वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है।

**धड़े-बंदी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ धड़ा+बंद ] १. तौल में धड़ा बाँधना। २. युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक बल बराबर करना।

**धत्**—अव्य॰ [ अनु॰ ] दुतकारने का शब्द। तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

**धत**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रत, हिं॰ लत ] खराब आदत। कुटेव। लत।

**धतकारना**—क्रि॰ स॰ [ अनु॰ धत् ] १. दुतकारना। दुरदुराना। २.

लानत-मलामत करना। धिक्कारना।

**धता**—वि० [अनु० धत्] जो दूर हो गया हो या किया गया हो। चलता। हटा हुआ।

**मुहा०**—धता करना या बताना=चलता करना। हटाना। भगाना। टालना।

**धतूर**—संज्ञा पुं० [अनु० धू+सं० तूर] नरसिंहा नाम का बाजा। तुरही। सिंहा।

**धतूरा**—संज्ञा पुं० [सं० धुस्तूर] दो-तीन हाथ ऊँचा एक पौधा। इसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।

**मुहा०**—धतूरा खाए फिरना=उन्मत्त के समान घूमना।

**धत्ता**—संज्ञा पुं० [देश०] एक मात्रिक छंद

**धत्तानंद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद जिसकी प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ और अंत में नगण होता है।

**धधक**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। आग की भभक। २. आँच। लपट। लौ।

**धधकना**—क्रि० अ० [हिं० धधक] आग का लपट के साथ जलना। दहकना। भड़कना।

**धधकाना**—क्रि० स० [हिं० धधकना] आग दहकाना। प्रज्वलित करना।

**धधाना**—क्रि० अ० दे० "धधकना"।

**धनंजय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. चित्रक वृक्ष। चीता। ३. अर्जुन का एक नाम। ४. अर्जुन वृक्ष। ५. विष्णु। ६. शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक।

**धन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुपया-पैसा, जमीन-जायदाद इत्यादि। संपत्ति। द्रव्य। दौलत। २. चौपायों का झुंड जो किसी के पास हो। गाय, भैंस आदि। गोधन। ३. स्नेहपात्र। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। जीवनसर्वस्व। ४. गणित में जोड़ी जानेवाली संख्या या जोड़ का चिह्न। ऋण या क्षय का उलटा। ५. मूल। पूँजी।

*संज्ञा स्त्री० [सं० धनी] युवती स्त्री। वधू।

‡ वि० दे० "धन्य"।

**धनक**—संज्ञा पुं० [सं० धनु] १. धनुष। कमान। २. एक प्रकार की ओढ़नी।

**धनकुबेर**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धन में कुबेर के समान हो। अत्यंत धनी।

**धनतेरस**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धन+तेरस] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है।

**धनद**—वि० [सं०] धन देनेवाला। दाता।

संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. धनपति वायु।

**धनधान्य**—संज्ञा पुं० [सं०] धन और अन्न आदि। सामग्री और संपत्ति।

**धनधाम**—संज्ञा पुं० [सं०] घर-बार और रुपया-पैसा।

**धनधारी**—संज्ञा पुं० [सं० धन+धारी] १. कुबेर। २. बहुत बड़ा अमीर।

**धनपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुबेर। २. धनवान्। सम्पन्न। अमीर।

**धनवंत**—वि० दे० "धनवान्"।

**धनवान्**—वि० [सं०] [स्त्री० धनवती] जिसके पास धन हो। धनी। दौलतमंद।

**धनहीन**—वि० [सं०] निर्धन। दरिद्र।

**धना***—संज्ञा स्त्री० [सं० धनिका, हिं० धनिया=युवती] युवती। वधू। (गीत या कविता)

**धनाढ्य**—वि० [सं०] धनवान्। अमीर।

**धनाश्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

**धनासी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धनाश्री"।

**धनि***—संज्ञा स्त्री० [सं० धनी] युवती। वधू।

वि० दे० "धन्य"।

**धनिक**—वि० [सं०] धनी।

संज्ञा पुं० १. धनी मनुष्य। २. पति।

**धनिया**—संज्ञा पुं० [सं० धन्याक, धनिका] एक छोटा पौधा जिसके सुगंधित फल मसाले के काम में आते हैं।

*संज्ञा स्त्री० [सं० धनिका] युवती स्त्री।

**धनिष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

**धनी**—वि० [सं० धनिन्] १. जिसके पास धन हो।

**यौ०**-धनी धोरी=१.धन और मर्यादा-वाला। २. मालिक या रक्षक।

**मुहा०**—बात का धनी=बात का सच्चा।

२. जिसके पास कोई गुण आदि हो।

संज्ञा पुं० १. धनवान् पुरुष। मालदार आदमी। २. वह जिसके अधिकार में कोई हो। अधिपति। मालिक। स्वामी। ३. पति। शौहर।

संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती स्त्री। वधू।

**धनु**—संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।

**धनुआ**—संज्ञा पुं० [सं० धन्वन्, धन्वा] १. धनुस्। कमान। २. रूई धुनने की धुनकी।

**धनुही**—संज्ञा स्त्री० [सं० धनु+ई (प्रत्य०)] छोटा धनुस्।

**धनुक**—संज्ञा पुं० १. दे० "धनुस"। २. दे० "इन्द्रधनुष"।

**धनुकबाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धनुक+बाई] लकवे की तरह का एक वायु-रोग।

**धनुर्धर**—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष धारण करनेवाला पुरुष। कमनैत। तीरंदाज।

**धनुर्धारी**—संज्ञा पुं० दे० "धनुर्धर"।

**धनुर्मख**—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें धनुस् का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा भी होती थी।

**धनुर्वात**—संज्ञा पुं० [सं०] धनुकबाई रोग।

**धनुर्विद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धनुस् चलाने की विद्या। तीरंदाजी का हुनर।

**धनुर्वेद**—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें धनुस् चलाने की विद्या का निरूपण है। यह यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है।

**धनुष**—संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।

**धनुस्**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फलदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर और उसके दोनों छोरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया जाता है। कमान। २. ज्योतिष में धनुराशि। ३. एक लग्न। ४. चार हाथ की एक माप।

**धनुहाई***—संज्ञा स्त्री० [हिं० धनु+हाई (प्रत्य०)] धनुस् की लड़ाई।

**धनुही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धनु+ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने की कमान।

**धनेस**—संज्ञा पुं० [सं० धनस् ?] बगले के आकार की एक चिड़िया।

**धन्न***—वि० दे० "धन्य"।

**धन्नासेठ**—संज्ञा पुं० [हिं० धन+सेठ] बहुत धनी आदमी। प्रसिद्ध धनाढ्य।

**धन्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं० (गो) धन] १. गायों और बैलों की एक जाति। २. घोड़े की एक जाति।

**धन्य**—वि० [सं०] [स्त्री० धन्या] प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। पुण्यवान्। सुकृती। श्लाघ्य।

**धन्यवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. साधुवाद। शाबाशी। प्रशंसा। २ किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा। कृतज्ञतासूचक शब्द। शुक्रिया।

**धन्वन्तरि**—संज्ञा पुं० [सं०] देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्र-मंथन के समय और सब वस्तुओं के साथ समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।

**धन्वा**—संज्ञा पुं० [सं० धन्वन्] १. धनुस्। कमान। २. जलहीन देश। मरुभूमि।

**धन्वाकार**—वि० [सं०] धनुस् या कमान के आकार का। गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।

**धन्वी**—वि० [सं० धन्विन्] १ धनुर्धर। कमनैत। २. निपुण। चतुर।

**धप**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।

संज्ञा पुं० धौल। थप्पड़। तमाचा।

**धपना**—क्रि० अ० [सं० धावन या हिं० धाप] १. जोर से चलना। दौड़ना। २. झपटना। लपकना। ३. मारना। पीटना।

**धप्पा**—संज्ञा पुं० [अनु० धप] १. थप्पड़। तमाचा। २. घाटा। नुकसान।

**धपि**—अ० [?] शीघ्रता से। जल्दी से।

**धब्बा**—संज्ञा पुं० [देश०] १. किसी सतह के ऊपर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने में बुरा लगे। दाग। निशान। २. कलंक।

**मुहा०**—नाम में धब्बा लगाना=कीर्ति को मिटानेवाला काम करना।

**धम**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।

**धमक**—संज्ञा स्त्री० [अनु० धम] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात का शब्द। २. पैर रखने की आवाज या आहट। ३. आघात आदि से उत्पन्न कंप या विचलता। ४. आघात। चोट।

**धमकना**—क्रि० अ० [हिं० धमक] १. 'धम' शब्द के साथ गिरना। धमाका करना।

**मुहा०**—आ धमकना=आ पहुँचना। २ दर्द करना। व्यथित होना। (सिर)

**धमकाना**—क्रि० स० [हिं० धमक] १ डराना। भय दिखाना। २. डाँटना। घुड़कना।

**धमकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं०] १. दंड देने या अनिष्ट करने का विचार जो भय दिखाने के लिए प्रकट किया जाय। त्रास दिखाने की क्रिया। २. घुड़की। डाँट-डपट।

**मुहा०**—धमकी में आना=डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

**धमगजर**—संज्ञा पुं० [देश०] उपद्रव। उत्पात।

**धमधमाना**—क्रि० अ० [अनु० धम] 'धम धम' शब्द करना।

**धमधूसर**—वि० [देश०] १. मोटा और भद्दा। २. मूर्ख।

**धमनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शरीर के भीतर की वह छोटी या बड़ी नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता

रहता है। इनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार २४ है। इनकी सहस्रों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं। २. वह नली जिसमें शुद्ध लाल रक्त हृदय के स्पंदन द्वारा क्षण-क्षण पर जाकर सारे शरीर में फैलता रहता है। नाड़ी। (आधुनिक)

**धमाकना***—क्रि० अ० दे० "धमकना"।

**धमाका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. बंदूक का शब्द। ३. आघात। धक्का। ४. पथरकला बंदूक। ५. हाथी पर लादने की तोप।

**धमाचौकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० धम+हिं० चौकड़ी ] १. उछल-कूद। उपद्रव। ऊधम। २. धींगाधींगी। मार-पीट।

**धमाधम**—क्रि० वि० [ अनु० धम ] १. लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ। २. लगातार कई प्रहारशब्दों के साथ।

संज्ञा स्त्री० १. कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धम धम शब्द। २. मारपीट।

**धमार**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. उछल कूद। उपद्रव। उत्पात। धमाचौकड़ी। २. नटों की उछल-कूद। कलाबाजी। ३. विशेष प्रकार के साधुओं की दहकती आग पर कूदने की क्रिया।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का गीत।

**धमारिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० धमार ] धमार गानेवाला।

**धमारी**—संज्ञा पुं० [ हिं० धमार ] १. उपद्रव। उत्पात। २. होली की क्रीड़ा।

वि० उपद्रवी।

**धरैया***—वि० [ हिं० धरना ] पकड़नेवाला।

**धर**—वि० [ सं० ] १. धारण करनेवाला। ऊपर लेनेवाला। २. ग्रहण करनेवाला।

संज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड़। २. कच्छप जो पृथ्वी को ऊपर लिए है। कूर्मराज। ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण। ५. पृथ्वी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना ] धरने या पकड़ने की क्रिया।

यौ०—धर-पकड़=भागते हुए आदमियों को पकड़ने का व्यापार। गिरफ्तारी।

**धरक***—संज्ञा स्त्री० दे० "धड़क"।

**धरकना**—क्रि० अ० दे० "धड़कना"।

**धरण**—संज्ञा पुं० दे० "धारणा"।

**धरणि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी।

**धरणिधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पृथ्वी का धारण करनेवाला। २. कच्छप। ३. पर्वत। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. शेषनाग।

**धरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी। आधार।

**धरणीसुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता।

**धरता**—संज्ञा पुं० [ हिं० धरना या वैदिक धर्तृ ] १. किसी का रुपया धरनेवाला। देनदार। ऋणी। कर्जदार। २. कोई कार्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला। धारण करनेवाला।

यौ०—कर्त्ता धरता=सब कुछ करनेवाला।

**धरती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० धरित्री ] पृथ्वी।

**धरधर***—संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

संज्ञा स्त्री० दे० "धड़ धड़"।

**धरधरा***—संज्ञा पुं० [ अनु० ] धड़कन।

**धरधराना***—क्रि० अ० दे० "धड़धड़ाना"।

**धरन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना ] १. धरने की क्रिया, भाव या ढंग। २. हठ। अड़। टेक। ३. वह लंबा लट्ठा जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिए आड़ा रखा जाता है जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके। कड़ी। धरनी। ४. वह नस जो गर्भाशय को दृढ़ता से जकड़े रहती है। गर्भाशय का आधार। ५. गर्भाशय। ६. टेक। हठ।

संज्ञा पुं० दे० "धरना"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० धरणि ] धरती। जमीन।

**धरनहार***—वि० [ हिं० धरना+हार (प्रत्य०) ] धारण करनेवाला।

**धरना**—क्रि० स० [ सं० धरण ] १. किसी वस्तु को दृढ़ता से हाथ में लेना। पकड़ना। थामना। ग्रहण करना।

मुहा०—धर-पकड़कर = जबरदस्ती। बलात्।

२. स्थापित करना। स्थित करना। रखना। ठहराना। ३. पास या रक्षा में रखना।

मुहा०—धरा रह जाना=काम न आना।

४. धारण करना। देह धर रखना। पहनना। ५. अवलंबन करना। अंगीकार करना। ६. व्यवहार के लिए हाथ में लेना। ग्रहण करना। ७. पल्ला पकड़ना। आश्रय ग्रहण करना। ८. किसी फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या छू जाना। ९. किसी को रखना। रखेली की तरह रखना। १०. गिरवी रखना। रेहन रखना। बंधक रखना।

संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिए किसी के पास अड़कर बैठना और जब तक काम न हो, तब तक अन्न न ग्रहण करना।

**धरनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धरणी"।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना ] हठ। टेक।

**धरम*†**—संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।

**धरवाना**—क्रि० स० [ हिं० धरना का प्रे० ] धरने का काम दूसरे से कराना।

**धरषना***—क्रि० स० [ सं० धर्षण ] दबाना। मर्दन करना।

**धरसना**—क्रि० अ० [ सं० धर्षण ] १. दब जाना। २. डर जाना। सहम जाना।

क्रि० स० १. दबाना। २. अपमानित करना।

**धरसनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "धर्षणी"।

**धरहर†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना +हर (प्रत्य०) ] १. गिरफ्तारी। धर-पकड़। २. लड़नेवालों को धर-पकड़कर लड़ाई बंद करने का कार्य्य। बीच-बिचाव। ३. बचाव। रक्षा। ४. धैर्य्य। धीरज।

**धरहरना***—क्रि० अ० [ अनु० ] धड़ धड़ शब्द करना। धड़धड़ाना।

**धरहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुर=ऊपर+घर ] खंभे की तरह बहुत ऊँचा मकान का भाग जिस पर चढ़ने के लिए भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों। धौरहर। मीनार।

**धरहरिया†**—संज्ञा पुं० [ हिं० धर-हरि ] बीचबिचाव करानेवाला। रक्षक।

**धरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। जमीन। २. संसार। दुनिया। ३. एक वर्णवृत्त।

**धराऊ**—वि० [ हिं० धरना+आऊ (प्रत्य०) ] १. जो साधारण से अधिक अच्छा होने के कारण कभी कभी केवल विशेष अवसरों पर निकाला जाय। बहुमूल्य। २. बहुत दिनों का रखा हुआ। पुराना।

**धराक*†**—संज्ञा पुं० दे० "धड़ाक"।

**धरातल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पृथ्वी। धरती। २. केवल लंबाई-चौड़ाई का गुणन-फल जिसमें मोटाई गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार न किया जाय। सतह। ३. लंबाई और चौड़ाई का गुणन-फल। रकबा।

**धराधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शेषनाग। २. पर्वत। ३. विष्णु।

**धराधरन***—संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

**धराधार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] "शेषनाग"।

**धराधीश**—संज्ञा पुं० [सं०] "राजा"।

**धराना**—क्रि० स० [ हिं० 'धरना' का प्रे० ] १. पकड़ाना। थमाना। २. स्थिर कराना। रखाना। ३. स्थिर करना। ठहराना। निश्चित कराना। मुकर्रर कराना।

**धरापुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंगल ग्रह।

**धराशायी**—वि० [ सं० धराशायिन् ] [ स्त्री० धराशायिनी ] जमीन पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ।

**धरासुर†**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मण।

**धराहर**—संज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।

**धरित्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धरती। पृथ्वी।

*संज्ञा स्त्री० [हिं० धरना+ई (प्रत्य०)] अवलंब। सहारा।

**धरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरा ] चार सेर की एक तौल।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना ] रखेली स्त्री।

संज्ञा स्त्री० [हिं० ढार ] कान में पहनने का एक गहना।

**धरेजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० धरना ] किसी स्त्री को पत्नी की तरह रखना। संज्ञा स्त्री० दे० "धरेल"।

**धरेल, धरेली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना ] उपपत्नी। रखेली।

**धरेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा।

**धरैया†**—संज्ञा पुं० [ हिं० धरना ] धरनेवाला।

**धरोहर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना ] वह वस्तु या द्रव्य जो किसी के पास इस विश्वास पर रखा हो कि उसका स्वामी जब माँगेगा, तब वह दे दिया जायगा। थाती। अमानत।

**धर्त्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० भर्तृ ] १. धारण करनेवाला। २. कोई काम ऊपर लेनेवाला।

यौ०—कर्त्ता-धर्त्ता=जिसे सब कुछ करने धरने का अधिकार हो।

**धर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे, उससे कभी अलग न हो। प्रकृति। स्वभाव। नित्य नियम। २. अलंकार शास्त्र में वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान में समान रूप से हो, जैसे—'कमल के ऐसे कोमल और लाल चरण'। इस उदाहरण में कोमलता और ललाई दोनों के साधारण धर्म हैं। ३. वह कृत्य या विधान जिसका फल शुभ ( स्वर्ग या उत्तम लोक की प्राप्ति आदि ) बताया गया हो। ४. किसी जाति, कुल, वर्ग, पद इत्यादि के लिए उचित ठहराया हुआ व्यव-

साथ या व्यवहार। कर्त्तव्य। फर्ज। जैसे—ब्राह्मण का धर्म, पुत्र का धर्म्म। ५. कल्याणकारी कर्म। सुकृत। सदाचार। श्रेय। पुण्य। सत्कर्म।

मुहा०—धर्म कमाना=धर्म करके उस का फल संचित करना। धर्म बिगाड़ना=१. धर्म के विरुद्ध आचरण करना। धर्म भ्रष्ट करना। २. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। धर्म-लगती कहना=ठीक ठीक कहना। सत्य या उचित बात कहना। धर्म से कहना= सत्य सत्य कहना।

६. किसी आचार्य्य या महात्मा द्वारा प्रवर्तित ईश्वर, परलोक आदि के संबंध में विशेष रूप का विश्वास और आराधना की विशेष प्रणाली। उपासना-भेद। मत। संप्रदाय। पंथ। मजहब। ७. नीति। न्याय-व्यवस्था। कायदा। कानून। जैसे—हिंदू-धर्मशास्त्र। ८. विवेक। ईमान।

**धर्म-कर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म या विधान जिसका करना किसी धर्म-ग्रंथ में आवश्यक ठहराया गया हो।

**धर्मक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुरुक्षेत्र। २. भारतवर्ष जो धर्म के संचय के लिए कर्मभूमि माना गया है।

**धर्मग्रंथ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ या पुस्तक जिसमें किसी जन-समाज के आचार-व्यवहार और उपासना आदि के संबंध में शिक्षा हो।

**धर्मघड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० धर्म+ हिं० घड़ी] बड़ी घड़ी जो ऐसे स्थान पर लगी हो जिसे सब लोग देख सकें।

**धर्मचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का समूह। २. बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था।

**धर्मचर्य्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म का आचरण।

**धर्मचारी**—वि० [सं० धर्मचारिन्] [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म का आचरण करनेवाला।

**धर्मच्युत**—वि० [सं०] [संज्ञा धर्मच्युति] अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ।

**धर्मज्ञ**—वि० [सं०] धर्म्म जाननेवाला। धर्मपुत्र युधिष्ठिर।

**धर्मणा**—क्रि० वि० [सं०] धर्म के विचार से।

**धर्मतः**—अव्य० [सं०] धर्म का ध्यान रखते हुए। सत्य सत्य।

**धर्मधक्का**—संज्ञा पुं० [सं० धर्म+ हिं० धक्का] १.वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिए सहनी पड़े। २. व्यर्थ का कष्ट।

**धर्मध्वज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का आडंबर खड़ा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य। पाखंडी। २. मिथिला के एक जनकवंशीय राजा जो संन्यास-धर्म और मोक्ष-धर्म के जाननेवाले परम ब्रह्मज्ञानी थे।

**धर्मध्वजी**—संज्ञा पुं० [सं० धर्मध्वजिन्] पाखंडी।

**धर्मनिष्ठ**—वि० [सं०] धर्म में जिसकी आस्था हो। धार्मिक। धर्मपरायण।

**धर्मनिष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म मे आस्था। धर्म में श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति।

**धर्मपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो। विवाहिता स्त्री।

**धर्म-पुस्तक**—संज्ञा स्त्री० [सं० धर्म+पुस्तक] वह पुस्तक जो किसी धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का मुख्य ग्रंथ।

**धर्मबुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्म-अधर्म का विवेक। भले-बुरे का विचार।

**धर्मभीरु**—वि० [सं०] जिसे धर्म का भय हो। जो अधर्म करते हुए बहुत डरता हो।

**धर्मयुग**—संज्ञा पुं० [सं०] सत्ययुग।

**धर्मयुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का नियम भंग न हो।

**धर्मरक्षित**—संज्ञा पुं० [सं०] योन (यवन) देशीय एक बौद्ध धर्मोपदेशक या स्थविर जिसे महाराज अशोक ने अपरांतक (बलोचिस्तान) देश में उपदेश देने भेजा था।

**धर्मराइ***—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।

**धर्मराज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धर्म का पालन करनेवाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४. न्यायाधीश। न्यायकर्त्ता।

**धर्मराय***—संज्ञा पुं० दे० "धर्मराज"।

**धर्मलुप्ता उपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उपमा जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय में समान रूप से पाई जानेवाली बात का कथन न हो।

**धर्मवीर**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो धर्म करने में साहसी हो।

**धर्मव्याध**—संज्ञा पुं० [सं०] मिथिलापुरनिवासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्व सम-

संबंध का।

**धर्मशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह मकान जो पथिकों या यात्रियों के टिकने के लिए धर्मार्थ बना हो। २. अन्नसत्र।

**धर्मशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार-संबंधी नियम हों।

**धर्मशास्त्री**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला पंडित।

**धर्मशील**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा धर्मशीलता ] धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला। धार्मिक।

**धर्मसभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] न्यायालय। कचहरी। अदालत।

**धर्मसारी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "धर्मशाला"।

**धर्मांध**—वि० [ सं० ] [ भा० धर्मांधता ] जो धर्म के नाम पर अंधा हो रहा हो। धर्म के नाम पर बुरे से बुरे काम करनेवाला।

**धर्मांशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य।

**धर्माचार्य**—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु।

**धर्मात्मा**—वि० [धर्मात्मन्] धर्मशील। धार्मिक।

**धर्माधिकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्यायालय।

**धर्माधिकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धर्म-अधर्म की व्यवस्था देनेवाला। विचारक। न्यायाधीश। २. वह जो किसी राजा की ओर से धर्मार्थ द्रव्य बाँटने आदि का प्रबंध करता है। दानाध्यक्ष।

**धर्माध्यक्ष**—संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी"।

**धर्मार्थ**—क्रि० वि० [सं०] केवल धर्म या पुण्य के उद्देश्य से। परोपकार के लिए।

**धर्मावतार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. साक्षात् धर्मस्वरूप। अत्यंत धर्मात्मा। २. न्यायाधीश। ३. युधिष्ठिर।

**धर्मासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह आसन या चौकी जिस पर न्यायाधीश बैठता है।

**धर्मिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्नी। वि० धर्म करनेवाली।

**धर्मिष्ठ**—वि० [ सं० ] धार्मिक। पुण्यात्मा।

**धर्मी**—वि० [ सं० धर्म्मिन् ] [ स्त्री० धर्म्मिणी ] १. जिसमें धर्म या गुण हो। २. धार्मिक। पुण्यात्मा। ३. मत या धर्म को माननेवाला।

संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार। गुण या धर्म का आश्रय। २. धर्मात्मा मनुष्य।

**धर्मोपदेशक**—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म का उपदेश देनेवाला।

**धर्ष**—संज्ञा पुं० दे० "धर्षण"।

**धर्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो धर्षण करे।

**धर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०][वि० धर्षणीय धर्षित ] १. अनादर। अपमान। २. दबोचना। आक्रमण ३. दबाने या दमन करने का कार्य्य। ४. असहनशीलता।

**धर्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अवज्ञा। अपमान। हतक। २. दबाने या हराने का कार्य्य। ३. सतीत्वहरण।

**धर्षी**—वि० [ सं० धर्षिन् ] [ स्त्री० धर्षिणी ] १. धर्षण करनेवाला। २. आक्रमण करनेवाला। दबोचनेवाला। ३. हरानेवाला। ४. नीचा दिखाने या अपमान करनेवाला।

**धव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक जंगली पेड़ जिसके कई अंगों का ओषधि के रूप में व्यवहार होता है। २. पति। स्वामी। जैसे—माधव। ३. पुरुष। मर्द।

**धवनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।

†* वि० [सं० धवल] सफेद। उजला।

**धवरा**†—वि० [ सं० धवल ][ स्त्री० धवरी ] उजला। सफेद।

**धवरी**—वि० स्त्री० [ हिं० धवरा ] सफेद।

संज्ञा स्त्री० सफेद रंग की गाय।

**धवल**—वि० [ सं० ] १. श्वेत। उजला। सफेद। २. निर्मल। झकाझक। ३. सुन्दर।

संज्ञा पुं० छप्पय छंद का ४५ वाँ भेद।

**धवलगिरि**—संज्ञा पुं० दे० 'धवलागिरि'।

**धवलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी।

**धवलना**—क्रि० स० [ सं० धवल ] उज्ज्वल करना। चमकाना। प्रकाशित करना।

**धवला**—वि० स्त्री० [ सं० ] सफेद। उजली।

संज्ञा स्त्री० सफेद गाय।

**धवलाई***†—संज्ञा स्त्री० [सं० धवल+आई (प्रत्य०) ] सफेदी। उजलापन।

**धवलागिरि**—संज्ञा पुं० [सं० धवल+गिरि] हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी।

**धवलित**—वि० [ सं० ] १. सफेद। २. उज्ज्वल।

**धवलिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सफेदी। २. उज्ज्वलता।

**धवली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद गाय।

**धवाना**—क्रि० स० [ हिं० धाना का प्रे० ] दौड़ाना।

**धस**—संज्ञा पुं० [हिं० धँसना=पैठना] जल आदि में प्रवेश। डुबकी। गोता।

**धसक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी में गले से निकलता है। २. सूखी खाँसी। ठसक।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धसकना ] १. डाह। ईर्ष्या। २. धसकने की क्रिया या भाव।

**धसकना**—क्रि० अ० [हिं० धँसना] १. नीचे को धँसना या दब जाना। बैठ जाना। २. डाह करना। ईर्ष्या करना। ३. डरना।*

**धसना***—क्रि० अ० [ सं० ध्वंसन ] ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना।

‡ क्रि० अ० दे० "धँसना"।

**धसनि**—संज्ञा स्त्री० दे० "धँसनि"।

**धसमसाना***‡—क्रि० अ० दे० "धँसना"।

**धसान**—संज्ञा स्त्री० दे० "धँसान"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० दशार्ण ] पूरबी मालवा और बुन्देलखण्ड की एक छोटी नदी।

**धाँगड़**—संज्ञा पुं० [देश०] १. अनार्य जंगली जाति। २ एक जाति जो कुएँ और तालाब खोदने का काम करती है।

**धाँधना**—क्रि० स० [ देश० ] १. बंद करना। मेंड़ना। २. बहुत अधिक खा लेना।

**धाँधल**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. ऊधम। उपद्रव। नटखटी। २. फरेब। धोखा। दगा। ३. बहुत अधिक जल्दी।

**धाँधलपन**—संज्ञा पुं० [ हिं० धाँधल + पन ( प्रत्य० ) ] १. पाजीपन। शरारत। २. धोखेबाजी दगाबाजी।

**धाँधली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धाँधल + ई ( प्रत्य० ) ] १. उपद्रवी। शरीर। पाजी। नटखट। २. धोखेबाज। दगाबाज। ३. बहुत अधिक जल्दी। धाँधल। ४. स्वेच्छाचारिता। मनमानी।

**धाँस**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] सूखे तम्बाकू या मिर्च आदि की तेज गंध।

**धाँसना**—क्रि० अ० [ अनु० ] पशुओं का खाँसना।

**धा**—वि० [ सं० ] धारण करनेवाला। धारक।

प्रत्य० तरह। भाँति। जैसे—नवधा भक्ति।

संज्ञा पुं० [ सं० धैवत ] संगीत में "धैवत" शब्द या स्वर का संकेत। ध।

**धाई***—संज्ञा स्त्री० १. दे० "दाई"। २. दे० "धव"।

**धाउ**—संज्ञा पुं० [ सं० धाव ] नाच का एक भेद।

**धाऊ**‡—संज्ञा पुं० [ सं० धावन ] वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिए दौड़ाया जाय। हरकारा।

**धाक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. रोब। आतंक।

**मुहा०**—धाक बँधना=रोब या दबदबा होना। आतंक छाना। धाक बाँधना= रोब जमाना।

२. प्रसिद्धि। शोहरत। शोर।

**धाकना**—क्रि० अ० [ हिं० धाक ] धाक जमाना। रोब जमाना।

**धागा**‡—संज्ञा पुं० [ हिं० तागा ] बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।

**धाड़**‡—संज्ञा स्त्री० १. दे० "डाढ़"। २. दे० "दहाड़"। ३. दे० "ढाड़"।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धार ] १. डाकुओं का आक्रमण। २. जत्था। झुंड। गरोह।

**धात**—संज्ञा स्त्री० दे० "धातु"।

**धातकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धव का फूल।

**धाता**—संज्ञा पुं० [ सं० धातृ ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। महादेव। ४. ४९ वायुओं में से एक। ५. शेषनाग। ६. १२ सूर्यों में से एक। ७. ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ८. विधाता। विधि। ९. टगण के आठवें भेद की संज्ञा।

वि० १. पालनेवाला। पालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला।

**धातु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमें एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमें से होकर ताप और विद्युत् का संचार हो सके तथा जो पीटने अथवा तार के रूप में खींचने से खंडित न हो। प्रसिद्ध धातुएँ ये हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा और राँगा। २. शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। वैद्यक में शरीरस्थ सात धातु मानी गई हैं।—रस, रक्त, मांस, मेद, धातुएँ, मज्जा और शुक्र। ३. बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि आदि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे में बंद करके स्थापित करते थे। ४. शुक्र। वीर्य।

संज्ञा पुं० १. भूत। तत्त्व। २. शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं। जैसे—संस्कृत में भू, कृ, धृ, इत्यादि।

**धातुपुष्ट**—वि० [ सं० ] ( औषधि ) जिससे वीर्य गाढ़ा होकर बढ़े।

**धातुमर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] कच्ची धातु को साफ करना, जो ६४ कलाओं में है।

**धातुराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गेरू।

**धातुवर्द्धक**—वि० [ सं० ] वीर्य्य को बढ़ानेवाला। जिससे वीर्य्य बढ़े।

**धातुवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौंसठ कलाओं में से एक, जिसमें कच्ची धातु को साफ करते तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलग अलग करते हैं। २. रसायन बनाने का काम। ३. ताँबे से सोना बनाना।

किमियागरी।

**धात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पात्र। बरतन।

*वि० [ सं० धातृ ] पालने या रक्षा करनेवाला।

**धात्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. माता। माँ। २. वह स्त्री जो किसी शिशु को दूध पिलावे और उसका लालन-पालन करे। धाय। दाई। ३. गायत्री-स्वरूपिणी भगवती। ४. गंगा। ५. आँवला। ६. भूमि। पृथ्वी। ७. गाय। ८. आर्य्या छंद का एक भेद।

**धात्रीविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लड़का जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।

**धात्वर्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धातु से निकलनेवाला ( किसी शब्द का ) अर्थ। मूल और पहला अर्थ।

**धाधि**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धधकना ] ज्वाला।

**धान**—संज्ञा पुं० [ सं० धान्य ] तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों की गिनती अच्छे अन्नों में है। इन्हीं बीजों को कूटकर उनका छिलका निकालने से चावल बनते हैं। शालि। व्रीहि।

*संज्ञा पुं० दे० "धान्य"।

**धानक**—संज्ञा पुं० [ सं० धानुष्क ] १. धनुष चलानेवाला। धनुर्द्धारी। तीरंदाज। कमनैत। २. रूई धुननेवाला। धुनिया। ३. पूरब की एक पहाड़ी जाति।

**धानकी**—संज्ञा पुं० [ हिं० धानुक ] धनुर्द्धर।

**धानपान**—वि० [ हिं० धान+पान ] दुबला-पतला। नाजुक।

**धानमाली**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

**धाना***†—क्रि० अ० [ सं० धावन ] १. तेजी से चलना। दौड़ना। भागना। २. कोशिश करना। प्रयत्न करना।

**धानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह जो धारण करे। वह जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २. स्थान। जगह। जैसे—राजधानी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धान+ई (प्रत्य०) ] धान की पत्ती के रंग का सा हलका हरा रंग।

वि० हलके हरे रंग का।

संज्ञा स्त्री० [ सं० धाना ] भूना हुआ जौ या गेहूँ।

संज्ञा स्त्री० *† दे० "धान्य"।

**धानुक**—संज्ञा पुं० दे० "धानक"।

**धान्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार तिल का एक परिमाण या तौल। २. धनिया। ३. छिलके समेत चावल। धान। ४. अन्न मात्र। ५. एक प्राचीन अस्त्र।

**धाप**—संज्ञा पुं० [ हिं० टप्पा ] १. दूरी की एक नाप जो प्रायः एक मील की और कहीं दो मील की मानी जाती है। २. लंबा-चौड़ा मैदान। ३. खेत की नाप।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० धापना ] तृप्ति। संतोष।

**धापना***—क्रि० अ० [ सं० तर्पण ] संतुष्ट होना। तृप्त होना। अघाना। जी भरना।

क्रि० स० संतुष्ट करना। तृप्त करना।

क्रि० अ० [ सं० धावन ] दौड़ना। भागना।

**धाबा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २. वह स्थान जहाँ पर कच्ची या पक्की रसोई (मोल) मिलती हो।

**धा-भाई**—संज्ञा पुं० [ हिं० धा=धाय +भाई ] ऐसे बालक जिनमें से एक तो धाय का पुत्र हो और दूसरे ने उस धाय का केवल दूध पीया हो। दूध-भाई।

**धाम**—संज्ञा पुं० [सं० धामन्] १. घर। मकान। २. देह। शरीर। ३. बाग-डोर। लगाम। ४. शोभा। ५. प्रभाव। ६. देवस्थान या पुण्यस्थान। जैसे—चारों धाम आदि। ७. जन्म। ८. विष्णु। ९. ज्योति। १०. ब्रह्म। ११. स्वर्ग।

**धामक-धूमक**—संज्ञा स्त्री० दे० "धूमधाम"।

**धामिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धाना=दौड़ना ] एक प्रकार का बहुत लंबा और तेज दौड़नेवाला साँप।

**धायँ**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] किसी पदार्थ के जोर से गिरने या तोप, बंदूक आदि छूटने का शब्द।

**धाय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० धात्री ] वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिए नियुक्त हो। धात्री। दाई।

संज्ञा पुं० [ सं० धातकी ] धव का पेड़।

**धायना***—क्रि० अ० [ हिं० धाना ] दौड़ना।

**धार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जोर से पानी बरसना। जोर की वर्षा। २. इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल जो वैद्यक और डाक्टरी में बहुत उपयोगी माना जाता है। ३. ऋण। उधार। कर्ज। ४. प्रांत। प्रदेश।

संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. द्रव पदार्थ की गति-परंपरा। पानी आदि

के गिरने या बहने का तार। अखंड प्रवाह।

मुहा०—धार चढ़ाना=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध जल आदि चढ़ाना। धार देना=दूध देना। धार निकालना=दूध दूहना। धार मारना=पेशाब करना।

२. पानी का सोता। चश्मा। ३. किसी काटनेवाले हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे कोई चीज काटते हैं। बाढ़।

मुहा०—धार बाँधना=यंत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना।

४. किनारा। सिरा। छोर। ५.सेना। फौज। ६. किसी प्रकार का डाका, आक्रमण या हल्ला। ७. ओर। तरफ। दिशा।

**धारक**—वि० [सं०] १. धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला। ३. ऋण लेनेवाला।

**धारण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. थामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना। २. पहनना। ३. सेवन करना। खाना या पीना। ४. अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५. ऋण लेना। उधार लेना।

**धारणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. वह शक्ति जिससे कोई बात मन में धारण की जाती है। बुद्धि। अक्ल। समझ। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार। ४. मर्य्यादा। ५. याद। स्मृति। ६. योग में मन की वह स्थिति जिसमें केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

**धारणीय**—वि० [सं०] [स्त्री० धारणीया] धारण करने योग्य।

**धारना***—क्रि० स० [सं० धारण] १. धारण करना। अपने ऊपर लेना। २. ऋण करना। उधार लेना।
क्रि० स० दे० "ढारना"।

**धारा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घोड़े की चाल। घोड़े का चलना। २. पानी आदि का बहाव या गिराव। अखंड प्रवाह। धार। ३. लगातार गिरता या बहता हुआ कोई पदार्थ। ४. पानी का झरना। सोता। चश्मा। ५.काटनेवाले हथियार का तेज सिरा तलवार। बाढ़। धार। ६.बहुत अधिक वर्षा। ७. समूह। झुंड। ८. प्राचीन काल की एक नगरी का नाम जो दक्षिण देश में थी। ९. लकीर। रेखा। १०. मालवा की प्राचीन राजधानी।

**धाराधर**—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

**धारा-यंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पिचकारी। २. फुहारा।

**धारावाहिक, धारावाही**—वि० [सं०] धारा के रूप में बिना रोक-टोक बढ़ने या चलनेवाला। बराबर कुछ समय तक क्रम से चलनेवाला।

**धारा-सभा**—संज्ञा स्त्री० दे० "व्यवस्थापिका-सभा"।

**धारि***—संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. दे० "धार"। २. समूह। झुंड। ३. एक वर्णवृत्त।

**धारिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरणी। पृथ्वी।
वि० स्त्री० धारण करनेवाली।

**धारी**—वि० [सं० धारिन्] [स्त्री० धारिणी] धारण करनेवाला। जो धारण करे।
संज्ञा पुं० धारि नामक वर्णवृत्त।
संज्ञा स्त्री० [सं० धारा] १. सेना। फौज। २. समूह। झुंड। ३. रेखा। लकीर।

**धारीदार**—वि० [हिं० धारी+फ़ा० दार] जिसमें लंबी लंबी धारियाँ या लकीरें हों।

**धारोष्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] थन से निकला हुआ ताजा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता है और बहुत गुणकारक माना जाता है।

**धार्तराष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के वंशज।

**धार्मिक**—वि० [सं०] १. धर्मशील। धर्मात्मा। पुण्यात्मा। २. धर्म-संबंधी।

**धार्मिकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धार्मिक होने का भाव। धर्मशीलता।

**धार्य**—वि० [सं०] धारण करने के योग्य।

**धावक**—संज्ञा पुं० [सं०] हरकारा।

**धावन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहुत जल्दी या दौड़कर जाना। २. चिट्ठी या सँदेशा पहुँचानेवाला। दूत। हरकारा। ३. धोने या साफ करने का काम। ४. वह चीज जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय।

**धावना***†—क्रि० अ० [सं० धावन] जल्दी जल्दी जाना। दौड़ना। भागना।

**धावनि***†—संज्ञा स्त्री० [सं० धावन=गमन] १. जल्दी जल्दी चलने की क्रिया या भाव। २.धावा। चढ़ाई।

**धावरी***—संज्ञा स्त्री० [सं० धवल] सफेद गाय। धौरी।
वि० सफेद। उज्ज्वल।

**धावा**—संज्ञा पुं० [सं० धावन] १. शत्रु से लड़ने के लिए दल बल सहित तैयार होकर जाना। आक्रमण। हमला। चढ़ाई। २. जल्दी जल्दी जाना। दौड़।

**मुहा०**—धावा मारना=जल्दी जल्दी चलना।

**धावित**—वि० [ सं० ] दौड़ता या भागता हुआ।

**धाह***—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़

**धाही***†—संज्ञा स्त्री० दे० "धाय"।

**धिंग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दृढ़ांग या धींगाधींगी अनु० ] धींगाधींगी। ऊधम। उपद्रव।

**धिंगा**†—संज्ञा पुं० [ सं० दृढ़ांग ] १. बदमाश। शरीर। २. बेशर्म। निर्लज्ज।

**धिंगाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं दृढ़ांगी ] १. शरारत। ऊधम। बदमाशी। २. बेशर्मी।

**धिंगाना**—क्रि० स० [ हिं० धिंग ] धींगाधींगी करना। उपद्रव या ऊधम मचाना।

**धिआ**—संज्ञा स्त्री० दे० "धिय"।

**धिआन***†—संज्ञा पुं० दे० "ध्यान"।

**धिआना†***—क्रि० स० दे० "ध्यावना"।

**धिक्**—अव्य० [ सं० ] १. तिरस्कार, अनादर या घृणासूचक एक शब्द। लानत। २. निंदा। शिकायत।

**धिक**—अव्य० [ सं० धिक् ] धिक्। लानत।

**धिकना**†—क्रि० अ० [ सं० दग्ध ] गरम होना। तप्त होना।

**धिकाना**†—क्रि० स० [ सं० दग्ध या हिं० दहकना ] खूब गरम करना। तपाना।

**धिक्कार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तिरस्कार, अनादर या घृणाव्यंजक शब्द। लानत।

**धिक्कारना**—क्रि० स० [ सं० धिक् ] "धिक्" कहकर बहुत तिरस्कार करना। लानत-मलामत करना। फट-कारना।

**धिग***—अव्य० दे० "धिक्"।

**धिय, धिया***—संज्ञा स्त्री० [ सं० दुहिता ] १. कन्या। बेटी। २. लड़की। बालिका।

**धिरकार**†—संज्ञा स्त्री० दे० "धिक्कार"।

**धिरवना***†—क्रि० स० [ सं० धर्षण ] धमकाना।

**धिराना***†—क्रि० स० [ हिं० धिरवना ] डराना। धमकाना। भय दिखाना।

क्रि० अ० [ सं० धीर ] १. धीमा होना। मंद पड़ना। २. धैर्य धारण करना।

**धींग, धींगड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० डिंगर ] हट्टा कट्टा। दृढ़ांग मनुष्य।

वि० १. मजबूत। जोरावर। २. शरीर। बदमाश। ३. कुमार्गी। पापी।

**धींगा**—संज्ञा पुं० [ सं० डिंगर=शठ ] शरीर। बदमाश। उपद्रवी। पाजी।

**धींगाधींगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धींग ] १. शरारत। बदमाशी। २. जबरदस्ती।

**धींगामुश्ती**—संज्ञा स्त्री० दे० "धींगाधींगी"।

**धींगड़, धींगड़ा**†—वि० [ सं० डिंगर ] [ स्त्री० धींगड़ी ] १. पाजी। बदमाश। दुष्ट। २. हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट। ३. वर्णसंकर। दोगला।

**धींद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह इंद्रिय जिससे किसी बात का ज्ञान हो। जैसे-मन, आँख, कान। ज्ञानेंद्रिय।

**धींगरा**—संज्ञा पुं० दे० "धींगड़ा"।

**धींवर**—संज्ञा पुं० दे० "धीमर"।

**धी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुद्धि। अक्ल। २. मन। ३. कर्म।

संज्ञा स्त्री० [सं० दुहिता] लड़की। बेटी।

**धीजना**—क्रि० स० [ सं० धृ, धार्य्य, धैर्य्य ] १. ग्रहण करना। स्वीकार करना। अंगीकार करना। २. धीरज धरना। धैर्य्ययुक्त होना। ३. प्रसन्न या संतुष्ट होना। ४. स्थिर होना।

**धीम***†—वि० दे० "धीमा"।

**धीमर**—संज्ञा पुं० दे० "धीवर"।

**धीमा**—वि० [ सं० मध्यम ] [ स्त्री० धीमी ] १. जिसकी चाल में बहुत तेजी न हो। जो आहिस्तः चले। २. जो अधिक प्रचंड, तीव्र या उग्र न हो। हलका। ३. कुछ नीचा और साधारण से कम ( स्वर )। ४. जिसकी तेजी कम हो गई हो।

**धीमान्**—संज्ञा पुं० [ सं० धीमत् ] [ स्त्री० धीमती ] १. बृहस्पति। २ बुद्धिमान्।

**धीय**†—संज्ञा स्त्री० दे० "धी"।

**धीया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दुहिता ] लड़की।

**धीर**—वि० [ सं० ] १. जिसमें धैर्य्य हो। दृढ़ और शांत चित्तवाला। २. बलवान्। ताकतवर। ३. विनीत। नम्र। ४. गंभीर। ५. मनोहर। सुंदर। ६. मंद। धीमा।

*†संज्ञा पुं० [ सं० धैर्य्य ] १. धैर्य्य। धीरज। ढारस। २. संतोष। सब्र।

**धीरक***—संज्ञा पुं० दे० "धैर्य्य"।

**धीरज***—संज्ञा पुं० दे० "धैर्य्य"।

**धीरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चित्त की स्थिरता। मन की दृढ़ता। धैर्य्य। २. स्थिरता। संतोष। सब्र।

**धीरना***—क्रि० अ० [ हिं० धीर ( धैर्य )+ना ( प्रत्य० ) ] धैर्य धारण करना। धीरज धरना।

क्रि० स० धैर्य धारण कराना। धीरज

धराना।

**धीर-ललित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह नायक जो सदा खूब बना-ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो।

**धीर-शांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह नायक जो सुशील, दयावान्, गुणवान् और पुण्यवान् हो।

**धीरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकाशित करे।

वि० [ सं० धीर ] मंद। धीमा।

संज्ञा पुं० [ सं० धैर्य्य ] धीरज। धैर्य्य।

**धीराधीरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध जतलावे।

**धीरे**—क्रि० वि० [ हिं० धीर ] १. आहिस्ते से। धीमी गति से। २. इस प्रकार जिसमें कोई सुन या देख न सके। चुपके से।

**धीरोदात्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह नायक जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो। २. वीर-रस-प्रधान नाटक का मुख्य नायक।

**धीरोद्धत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह नायक जो बहुत प्रचंड और चंचल हो और सदा अपने ही गुणों का बखान किया करे।

संज्ञा पुं० दे० "धैर्य्य"।

**धीवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० धीवरी ] एक जाति जो प्रायः मछली पकड़ने और बेचने का काम करती है। मछुवा। मल्लाह।

**धुँकार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ध्वनि + कार ] जोर का शब्द। गरज। गड़-गड़ाहट।

**धुँगार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० धूम्र + आधार ] बघार। तड़का। छौंक।

**धुँगारना**—क्रि० स० [ हिं० धुँगार ] बघारना। छौंकना। तड़का देना।

**धुँआ**†—वि० [ हिं० धुंध ] धुँधली। मंद दृष्टि।

**धुँद**—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंध"।

**धुंध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० धूम्र + अंध ] १. वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल या भाप के कारण हो। २. हवा में उड़ती हुई धूल। ३. आँख का एक रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती।

**धुंधकार**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुँकार ] १. धुंकार। गरज। गड़गड़ाहट। २. अंधकार।

**धुंधमार**—संज्ञा पुं० दे० "धुंधु-मार"।

**धुंधर**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धुंध ] १. हवा में उड़ती हुई धूल। २. अँधेरा। तारीकी।

**धुँधराना**—क्रि० अ० दे० "धुधलाना"।

**धुँधला**—वि० [ हिं० धुंध + ला ] १. कुछ कुछ काला। धूएँ के रंग का। २. जो साफ दिखाई न दे। अस्पष्ट। ३. कुछ कुछ अँधेरा।

**धुँधलाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "धुँधलापन"।

**धुँधलाना**—क्रि० अ० [ हिं० धुँधला ] धुँधला होना।

क्रि० स० धुँधला करना।

**धुँधलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुँधला + पन ] १. धुँधले या अस्पष्ट होने का भाव। २. कम दिखाई देने का भाव।

**धुँधाना**—क्रि० अ० [ हिं० धुंध ] १. धूआँ देना। २. दे० "धुँधलाना"।

**धुंधु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राक्षस जो मधु राक्षस का पुत्र था। वह जब साँस लेता था तब उसके साथ धूआँ और अंगारे निकलते थे और भूकंप होता था।

**धुंधुकार**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुंध + कार ] १. अंधकार। अँधेरा। २. धुँधलापन। ३. नगाड़े का शब्द। धुंकार।

**धुंधुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा त्रिशंकु का पुत्र। २. कुवलयाश्व, जिसने धुंधुमार को मारा था।

**धुंधुरि***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धुंध ] गर्दगुबार या धूएँ के कारण होनेवाला अँधेरा।

**धुंधरित**—वि० [ हिं० धुंधुर ] १. धुँधला किया हुआ। धूमिल। २. दृष्टिहीन। धुँधली दृष्टिवाला।

**धुँधवाना***†—क्रि० अ० [ सं० धूम, हिं० धूआँ ] धूआँ देना। धूआँ दे देकर जलना।

**धुँधेरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धुंधुरि"।

**धुअ***—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

**धुआँ**—संज्ञा पुं० [ सं० धूम्र ] १. जलती हुई चीजों से निकलनेवाली भाप जो कुछ कालापन लिए होती है। धूम।

**मुहा०**—धुएँ का धौरहर=थोड़े ही काल में नष्ट होनेवाली वस्तु आयोजन। धुएँ के बादल उड़ाना=भारी गप हाँकना। धुआँ निकालना या काढ़ना=बढ़ बढ़कर बातें कहना। २. घटाटोप उमड़ती हुई वस्तु। भारी समूह। ३. धुर्रा। धज्जी।

**धुआँकश**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुआँ + फ़ा० कश ] भाप के जोर से चलनेवाली नाव या जहाज। अगिनबोट। स्टीमर।

**धुआँधार**—वि० [हिं० धुआँ+धार] १. धुएँ से भरा। धूममय। २. गहरे रंग का। भड़कीला। भव्य। ३. काला। स्याह। ४. बड़े जोर का। प्रचंड। घोर।
क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत जोर से।

**धुआँना**—क्रि० अ० [हिं० धुआँ+ना (प्रत्य०)] अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध में बिगड़ जाना। (पकवान आदि)

**धुआँयध**—वि० [हिं० धुआँ+गंध] धुएँ की तरह महकनेवाला।
संज्ञा स्त्री० अन्न न पचने के कारण आनेवाली डकार। धूम।

**धुआँस**—संज्ञा स्त्री० दे० "धुवाँस"।

**धुकड़ पुकड़**—संज्ञा पुं० [अनु०] १. भय आदि से होनेवाली चित्त की अस्थिरता। घबराहट। २. आगा-पीछा। पसोपेश।

**धुकधुकी**—संज्ञा स्त्री० [धुकधुक से अनु०] १. पेट और छाती के बीच का वह भाग जो कुछ गहरा सा होता है। २. कलेजा। हृदय। ३. कलेजे की धड़कन। कंप। ४. डर। भय। खौफ। ५. पदिक या जुगनू नामक गहना।

**धुकना***†—क्रि० अ० [हिं० झुकना] १. नीचे की ओर ढलना। झुकना। नवना। २. गिर पड़ना। ३ झपटना। टूट पड़ना।

**धुकार**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० धमकाना] घोर शब्द। गड़गड़ाहट का शब्द।

**धुकाना**†*—क्रि० स० [हिं० धुकना] १. झुकाना। नवाना। २ गिराना। ढकेलना। ३. पछाड़ना। पटकना।
क्रि० स० [सं० धूम+करण] धूनी देना।

**धुकार, धुकारी**—संज्ञा स्त्री० [धु से अनु०] नगाड़े का शब्द।

**धुक्कना***†—क्रि० अ० दे० "धुकना"।

**धुज, धुजा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

**धुजिनी***†—संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वजा] सेना। फौज।

**धुड़ंगा***†—वि० [हिं० धूर+अंगी] [स्त्री० धुड़ंगी] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो। २. जिस पर धूल लगी हो।

**धुतकार**—संज्ञा स्त्री० दे० "दुतकार"।

**धुताई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता"।

**धुतारा***—वि० दे० "धूर्त"।

**धुधुकार**—संज्ञा स्त्री० [धुधु से अनु०] १. धू धू शब्द का शोर। २. घोर शब्द। गरज।

**धुधुकारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धुधुकार"।

**धुन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धुनना] १ बिना आगा-पीछा सोचे कोई काम करते रहने की प्रवृत्ति। लगन।
यौ०—धुन का पक्का=वह जो आरंभ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े। २. मन की तरंग। मौज। ३. सोच। विचार। चिंता। खयाल।
संज्ञा स्त्री० [सं० ध्वनि] १. गीत गाने का ढंग। गाने का तर्ज। २. दे० "ध्वनि"।

**धुनकना**—क्रि० स० दे० "धुनना"।

**धुनकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० धनुस्] १. धुनियों का वह धनुस् के आकार का औजार जिससे वे रूई धुनते हैं। पिंजा। फटका। २. लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

**धुनना**—क्रि० स० [हिं० धुनकी] १. धुनकी से रूई साफ करना जिसमें उसके बिनौले निकल जायँ। २. खूब मारना-पीटना। ३. बार-बार कहना। कहते ही जाना। ४. कोई काम बिना रुके बराबर करना।

**धुनवाना**—क्रि० स० [हिं० धुनना का (प्रे०)] धुनने का काम दूसरे से कराना।

**धुनि***—संज्ञा स्त्री० दे० १. "ध्वनि"। दे० २. "धूनी"।

**धुनियाँ**—संज्ञा पुं० [हिं० धुनना] वह जो रूई धुनने का काम करता हो। बेहना।

**धुनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी।

**धुपना**†—क्रि० अ० दे० "धुलना"।

**धुमिला**—वि० दे० "धूमिल"।

**धुमिलाना***—क्रि० अ० [हिं० धूमिल] धूमिल होना। काला पड़ना।

**धुरंधर**—वि० [सं०] [संज्ञा धुरंधरता] १. भार उठानेवाला। २. जो सब मे बहुत बड़ा, भारी या बली हो। ३. श्रेष्ठ। प्रधान।

**धुर**—संज्ञा पुं० [सं० धुर्] १. गाड़ी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। २. शीर्ष या प्रधान स्थान। ३. भार। बोझ। ४. आरंभ। शुरू। ५. जमीन की एक माप जो बिस्वे का बीसवाँ भाग होती है। बिस्वांसी।
अव्य० [सं० ध्रुव] १. बिलकुल ठीक। सटीक। सीधे। २. अत्यंत। एकदम दूर। बिलकुल दूर।
मुहा०—धुर सिर से=बिलकुल शुरू से।
वि० [सं० ध्रुव] पक्का। दृढ़।

**धुरजटी***—संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटी"।

**धुरना***†—क्रि० स० [सं० धूर्वण] १. पीटना। मारना। २. बजाना।

**धुरपद**—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुपद"।

**धुरवा***†—संज्ञा पुं० [ सं० धुर्+वाह ] बादल। मेघ।

**धुरा**—संज्ञा पुं० [ सं० धुर ] [ संज्ञा स्त्री० अल्पा० धुरी ] वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिस पर वह घूमता है। अक्ष।

**धुरियाना**†—क्रि० स० [ हिं० धूर ] १. किसी वस्तु पर धूल डालना। २. किसी ऐब को युक्ति से दबा देना। क्रि० अ० १. किसी चीज का धूल से ढँका जाना। २. ऐब का दबाया जाना।

**धुरिया मल्लार**—संज्ञा पुं० [ देश० धुरिया+मल्लार ] मल्लार।

**धुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धुरा ] गाड़ी का अक्ष।

**धुरीण**—वि० [ सं० ] १. बोझ सँभालनेवाला। २. मुख्य। प्रधान। ३. धुरधर।

**धुरी राष्ट्र**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुरी+सं० राष्ट्र ] आधुनिक सार्वराष्ट्रीय राजनीति में जर्मनी, इटली और जापान, जिनका गुट दूसरे महायुद्ध के बाद टूट गया।

**धुरेटना***†—क्रि० स० [ हिं० धुर+एटना (प्रत्य०) ] धूल से लपेटना। धूल लगाना।

**धुर्रा**—संज्ञा पुं० [ हिं० धूर ] किसी चीज का अत्यंत छोटा भाग। कण। जर्रा। भुआ।

**मुहा०**—धुर्रे उड़ाना=१. किसी वस्तु के अत्यंत छोटे छोटे टुकड़े कर डालना। २. छिन्न भिन्न कर डालना। ३. बहुत अधिक मारना।

**धुलना**—क्रि० अ० [ हिं० धोना का अ० रूप ] पानी की सहायता से साफ या स्वच्छ किया जाना। धोया जाना।

**धुलवाना**—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

**धुलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धोना ] १. धोने का काम या भाव। २. धोने की मजदूरी।

**धुलाना**—क्रि० स० [ सं० धवल ] धोने का काम दूसरे से कराना। धुलवाना।

**धुलेंडी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धूल+उड़ाना ] हिंदुओं का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन होता है। इस दिन लोग दूसरों पर अबीर-गुलाल डालते हैं।

**धुव***†—संज्ञा पुं० दे० "ध्रुव"।

**धुवाँ**—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

**धुवाँस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धूर+माष, वा धूमसी ] उरद का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है।

**धुवाना***—क्रि० स० दे० "धुलाना"।

**धुस्स**—संज्ञा पुं० [ सं० ध्वंस ] १. मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर। टीला। २. नदी का बाँध। बंद।

**धुस्सा**—संज्ञा पुं० [ सं० द्विशाट ] मोटे ऊन की लोई जो ओढ़ने के काम में आती है।

**धूँध**—संज्ञा स्त्री० दे० "धुँध"।

**धूँधर***—वि० दे० "धुँधला"।

**धू***—वि० [ सं० ध्रुव ] स्थिर। अचल।

संज्ञा पुं० १. ध्रुवतारा। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र जो भगवान् का भक्त था। ३. धुरी।

**धूआँ**—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

**धूई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धूआँ ] धूनी।

**धूकना***—क्रि० अ० दे० "ढुकना"।

**धूजट***—संज्ञा पुं० [ सं० धूर्जटि ] शिव।

**धूजना**—क्रि० अ० [ ? ] १. हिलना। २. काँपना।

**धूत**—वि० [ सं० ] १. हिलता या काँपता हुआ। थरथराता हुआ। २. जो धमकाया गया हो। ३. त्यक्त। छोड़ा हुआ। ४. सब तरफ से ढका या घिरा हुआ।

†*वि० [ सं० धूर्त ] धूर्त। दगाबाज।

**धूतना***—क्रि० स० [ हिं० धूर्त ] धूर्तता करना। धोखा देना। ठगना।

**धूतपापा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काशी की एक पुरानी छोटी नदी।

**धूताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता"।

**धूती**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक चिड़िया।

**धूतुक धूतू**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] तुरही।

**धूधू**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।

**धूनना***—क्रि० स० [ हिं० धूनी ] किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना। धूनी देना।

क्रि० स० दे० "धुनना"।

**धूना**—संज्ञा पुं० [ हिं० धूनी ] १. एक प्रकार का बड़ा पेड़। इसका गोंद भी धूप की तरह जलाया जाता है। २. वह सुगंधित वस्तु जो आग में जलाई जाय।

**धूनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धूई ] १. गुग्गुल, लोबान आदि गंध-द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। धूप।

**मुहा०**—धूनी देना=गंध-मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना।

२. साधुओं के तापने की आग।

**मुहा०**—धूनी जगाना या लगाना=१. साधुओं का अपने सामने आग

जलाना । २. शरीर तपाना । तप करना । ३. साधु होना । विरक्त होना । धूनी रमाना=१. सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना । २. तप करना । साधु या विरक्त हो जाना ।

**धूप**—संज्ञा पुं० [सं०] देवपूजन में या सुगंध के लिए गंध-द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ । सुगंधित धूम ।
संज्ञा स्त्री० १. गंध-द्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है । जैसे—कस्तूरी, अगर की लकड़ी । २. कृत्रिम अर्थात् कई द्रव्यों योग से बनाई हुई धूप । ३. सूर्य्य का प्रकाश और ताप । घाम ।
मुहा०—धूप खाना=ऐसी स्थिति में होना कि धूप ऊपर पड़े । धूप चढ़ना या निकलना=सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना । दिन चढ़ना । धूप दिखाना=धूप में रखना । धूप लगने देना । धूप में बाल या चूँड़ा सफेद करना=बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत सा भाग बिता देना ।

**धूपघड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप+घड़ी] एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है । इसमें एक गोल चक्कर के बीच एक कील होती है । धूप में उसी कील की परछाँही से समय जाना जाता है ।

**धूपछाँह**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप+छाँह] एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा ।

**धूपदान**—संज्ञा पुं० [सं० धूप+आधान] धूप या गंधद्रव्य जलाने का डिब्बा । अगियारी ।

**धूपदानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धूपदान" ।

**धूपना***†—क्रि० अ० [सं० धूपन] धूप देना । गंधद्रव्य जलाना ।
क्रि० स० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना । सुगंधित धुएँ से बासना ।
क्रि० स० [सं० धूपन=श्रांत होना] दौड़ना । हैरान होना । जैसे—दौड़ना-धूपना ।

**धूपबत्ती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूप+बत्ती] मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है ।

**धूपित**—वि० [सं०] १. धूप जलाकर सुगंधित किया हुआ । २ थका हुआ । शिथिल ।

**धूम**—संज्ञा पुं० [सं०] १ धुआँ । २. अजीर्ण या अपच में उठनेवाली डकार । ३. धूमकेतु । ४. उल्कापात ।
संज्ञा स्त्री० [सं० धूम=धुआँ] १. बहुत से लोगों के इकट्ठे होने और शोर-गुल करने आदि का व्यापार । रेलपेल । हलचल । आंदोलन । २. उपद्रव । उत्पात । ऊधम ।
मुहा०—धूम डालना=ऊधम करना ।
३. ठाट-बाट । समारोह । भारी आयोजन । ४. कोलाहल । हल्ला । शोर । ५. जनरव । शोहरत । प्रसिद्धि ।

**धूमक धैया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूम] उछलकूद और हल्ला-गुल्ला । उपद्रव । उत्पात ।

**धूमकेतु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि । २. केतुग्रह । पुच्छल तारा । ३. शिव ।

**धूम धड़क्का**—संज्ञा पुं० दे० "धूमधाम" ।

**धूमधाम**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूम+धाम (अनु०)] भारी तैयारी । ठाट-बाट । समारोह ।

**धूमपान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशेष प्रकार का धुआँ जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता है । २. तमाकू, चुरुट आदि पीने का कार्य्य ।

**धूमपोत**—संज्ञा पुं० [सं०] धुआँकश ।

**धूमर***†—वि० दे० "धूमल" ।

**धूमल, धूमला**—वि० [सं० धूमल] [स्त्री० धूमली] १. धुएँ के रंग का । ललाई लिए काला । २. जो चटकीला न हो । धुँधला । ३. जिसकी कांति मंद हो ।

**धूमावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओं में से एक देवी ।

**धूमिल***—वि० [सं० धूमल] १. धुएँ के रंग का । धुँधला ।

**धूम्र**—वि० [सं०] धुएँ के रंग का ।
संज्ञा पुं० १. ललाई लिए काला रंग । २. शिलारस नाम का गंधद्रव्य । ३. एक असुर । ४. शिव । महादेव । ५. मेढ़ा ।

**धूम्रवर्ण**—वि० [सं०] धुएँ के रंग का ।

**धूर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "धूल" ।

**धूरजटी***—संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटि" ।

**धूरत***†—वि० दे० "धूर्त्त" ।

**धूरधान**—संज्ञा पुं० [हिं० धूर+धान] धूल की राशि । गर्द का ढेर ।

**धूरधानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० धूरधान] १. गर्द की ढेरी । धूल की राशि । २. ध्वंस । विनाश । ३. पथरकला । बंदूक ।

**धूरा**—संज्ञा पुं० [हिं० धूर] १. धूल । गर्द । २. चूर्ण । बुकनी । चूरा ।
मुहा०—धूरा करना या देना=शीत से

अंग सुन होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना।

**धूरि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।

**धूर्जटि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**धूर्त**—वि० [ सं० ] १. मायावी। छली। चालबाज। २. धोखा देनेवाला। वंचक।

संज्ञा पुं० १. साहित्य में शठ नायक का एक भेद। २. विट् लवण। ३. लोहे की मैल। ४. धतूरा। ५ दाँव-पेंच करनेवाला।

**धूर्तता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चालबाजी। वंचकता। ठगपना। चालाकी।

**धूल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० धूलि ] १. मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर। रेणु। रज। गर्द।

**मुहा०**—(कहीं) धूल उड़ना=१. बरबादी होना। तबाही आना। २. सन्नाटा होना। रौनक न रहना। (किसी की) धूल उड़ना=१. दोषों और त्रुटियों का उधेड़ा जाना। बदनामी होना। २. उपहास होना। दिल्लगी उड़ना। किसी की धूल उड़ाना=१. बुराइयों को प्रकट करना। बदनामी करना। २. उपहास करना। हँसी करना। धूल की रस्सी बटना=१. अनहोनी बात के पीछे पड़ना। २. केवल धूर्तता से काम निकालना। धूल चाटना=१. बहुत विनती करना। २. अत्यंत नम्रता दिखाना। (किसी बात पर) धूल डालना=१. फैलने न देना। दबाना। २. ध्यान न देना। धूल फाँकना=मारा मारा फिरना। धूल में मिलना=नष्ट होना। चौपट होना। पैर की धूल=अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति। सिर पर धूल डालना=पछताना। सिर धुनना।

२. धूल के समान तुच्छ वस्तु।

**मुहा०**—धूल समझना=अत्यंत तुच्छ समझना। किसी गिनती में न लाना।

**धूला**—संज्ञा पुं० [ देश० ] टुकड़ा। खंड।

**धूलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धूल। गर्द।

**धूवाँ**—संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

**धूसर**—वि० [सं०] १.धूल के रंग का। खाकी। मटमैला। २. धूल लगा हुआ। जिसमें धूल लिपटी हो। धूल से भरा।

**यौ०**—धूल धूसर=धूल से भरा हुआ।

**धूसरा**—वि० दे० "धूसर"।

**धूसरित**—वि० [ सं० ] १. जो धूल से मटमैला हुआ हो। २. धूल से भरा हुआ।

**धूसला**—वि० दे० "धूसर"।

**धृक, धृग***—अव्य० दे० "धिक्"।

**धृत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० धृता ] १. धरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. धारण किया हुआ। ग्रहण किया हुआ। ३. स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४. पतित।

**धृतराष्ट्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो। २. वह जिसका राज्य दृढ़ हो। ३ एक कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य्य के पुत्र थे।

**धृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. धरने या पकड़ने की क्रिया। धारण। २. स्थिर रहने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३. मन की दृढ़ता। धैर्य्य। धीरता। ४. सोलह मातृकाओं में से एक। ५. अठारह अक्षरों के वृत्तों की संज्ञा। ६. दक्ष की एक कन्या और धर्म की पत्नी।

**धृती**—वि० [ सं० धृतिन् ] धीर। धैर्यवान्।

**धृष्ट**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० धृष्टा ] १. संकोच या लज्जा न करनेवाला। निर्लज्ज। बेहया। २. ढीठ। गुस्ताख। उद्धत।

**धृष्टता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनुचित साहस। ढिठाई। गुस्ताखी। २. निर्लज्जता। बेहयाई।

**धृष्टद्युम्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई। कुरुक्षेत्र के युद्ध में जब द्रोणाचार्य्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु की झूठी खबर सुनकर योग में मग्न हुए, तब इसी ने उनका सिर काटा था।

**धृष्णु**—वि० [ सं० ] १. धृष्ट। ढीठ। २. साहसी।

**धृष्य**—वि० [ सं० ] घर्षण योग्य। धर्षणीय।

**धेन**—संज्ञा स्त्री० दे० "धेनु"।

**धेनु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह गाय जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हो। सवत्सा गौ। २. गाय।

**धेनुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राक्षस जिसे बलदेव जी ने मारा था।

**धेनुमुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गोमुख नामक बाजा। नरसिंहा।

**धेय**—वि० [ सं० ] १. धारण करने योग्य। धार्य्य। २. पोषण करने योग्य। पोष्य।

**धेर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक अनार्य्य जाति। इस जाति के लोग गाँव के बाहर रहते और मरे हुए चौपायों का मांस खाते हैं।

**धेरिया, धेरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दुहिता ] लड़की। बेटी।

**धेलवा**†, **धेला**—संज्ञा पुं० दे०

"अधेला"।

**धेली**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० अधेला ] अठन्नी।

**धैंताल**†—वि० [ अनु० धै+हिं० ताल ] १. चपल। चंचल। २. उजड्ड। उद्धत।

**धैना**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धरना या धंधा ] १. टेव। आदत। स्वभाव। २. काम-धंधा।

**धैर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संकट, बाधा आदि उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता। धीरता। धीरज। २. उतावली या आतुर न होने का भाव। सब्र। ३. चित्त में उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

**धैवत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जो मध्यम के बाद का है।

**धोंधा**—संज्ञा पुं० [सं० ढुंढि+गणेश] १. लोंदा। बेडौल पिंड। २. भद्दा।

**मुहा०**—मिट्टी का धोंधा=१. मूर्ख। नासमझ। जड़। २. निकम्मा। आलसी।

**धोई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धोना ] छिलका निकाली हुई उरद या मूँग की दाल।

*संज्ञा पुं० [ हिं० धवई ] राजगीर। थवई।

**धोकड़**—वि० [ देश० ] हट्टा-कट्टा। मुसंडा।

**धोका**—संज्ञा पुं० दे० "धोखा"।

**धोखा**—संज्ञा पुं० [ सं० धूकता ] १. मिथ्या व्यवहार जिससे दूसरे के मन में मिथ्या प्रतीति उत्पन्न हो। भुलावा। छल। दगा। २. धूर्तता, चालाकी, झूठ बात आदि से उत्पन्न मिथ्या प्रतीति। डाला हुआ भ्रम। भुलावा।

**मुहा०**—धोखा खाना=ठगा जाना। प्रतारित होना। धोखा देना=१. भ्रम में डालना। छलना। २. अकस्मात् मरकर या नष्ट होकर दुःख पहुँचाना।

३. भ्रम। भ्रांति। भूल।

**मुहा०**—धोखा खाना=भ्रम में पड़ना।

४. भ्रम में डालनेवाली वस्तु। माया।

**मुहा०**—धोखे की टट्टी=१. वह पर्दा या टट्टी जिसकी ओट में छिपकर शिकारी शिकार खेलते हैं। २. भ्रम में डालनेवाली चीज। ३. दिखाऊ चीज। धोखा खड़ा करना या रचना=भ्रम में डालने के लिए आडंबर करना।

५ जानकारी का अभाव। अज्ञान।

**मुहा०**—धोखे में या धोखे से=जान-बूझकर नहीं। भूल से।

६. अनिष्ट की संभावना। जोखों।

**मुहा०**—धोखा उठाना=भ्रम में पड़कर हानि या कष्ट उठाना।

७. अन्यथा होने की संभावना। संशय।

**मुहा०**—धोखा पड़ना=जैसा समझा या कहा जाय, उसके विरुद्ध होना। अन्यथा होना। ८. भूल। चूक। प्रमाद। त्रुटि।

**मुहा०**—धोखा लगना=त्रुटि होना। कमी होना। धोखा लगाना=चूक या कसर करना।

९ वह पुतला जिसे किसान चिड़ियों को डराने के लिए खेत में खड़ा करते हैं। बिजूखा। धुचकाक। १० रस्सी लगी हुई लकड़ी जो फलदार पेड़ों पर इसलिए बाँधी जाती है कि रस्सी खींचने से खटखट शब्द हो और चिड़ियाँ दूर रहें। खटखटा। ११. बेसन का एक पकवान।

**धोखेबाज**—वि० [ हिं० धोखा+फा० बाज़ ] धोखा देनेवाला। छली। कपटी। धूर्त।

**धोखेबाजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धोखेबाज ] छल। कपट। धूर्तता।

**धोटा**—संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।

**धोती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अधोवस्त्र ] वह कपड़ा जो कटि से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर और स्त्रियों का प्रायः सर्वांग ढकने के लिए कमर में लपेटकर ओढ़ा जाता है।

**मुहा०**—धोती ढीली करना=डर जाना। भयभीत होना। डरकर भागना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० धौती ] १. योग की एक क्रिया। दे० "धौति"। २. कपड़े की वह धज्जी जिसे हठयोग की "धौति" क्रिया में मुँह से निगलते हैं।

**धोना**—क्रि० स० [ सं० धावन] १. पानी से साफ करना। प्रक्षालित करना। पखारना।

**मुहा०**—(किसी वस्तु से) हाथ धोना=खो देना। गँवा देना। वंचित रहना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=सब छोड़कर लग जाना।

२. दूर करना। हटाना। मिटाना।

**मुहा०**—धो बहाना=न रहने देना।

**धोप**†*—संज्ञा स्त्री० [ ? ] तलवार। खड्ग।

**धोब**—संज्ञा पुं० [ हिं० धोवना ] धोए जाने की क्रिया। धुलावट।

**धोबिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धोबी ] १. धोबी जाति की स्त्री। २. एक जल-पक्षी।

**धोबी**—संज्ञा पुं० [ हिं० धोवना ] [ स्त्री० धोबिन ] वह जो मैले कपड़े को धो और साफ करके अपनी जीविका चलाता हो। कपड़ा धोनेवाला। रजक।

**मुहा०**—धोबी का कुत्ता=व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा आदमी।

**धोम**—संज्ञा पुं० [ सं० धूम्र ] धूम्र।

धूआँ।

**धोर**—संज्ञा पुं० [ सं० धर=किनारा ] १. पास। निकटता। २. किनारा। बाढ़।

**धोरी**—संज्ञा पुं० [ सं० धौरेय ] १. धुरे को उठानेवाला। भार उठानेवाला। २. बल। वृषभ। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार। ४. श्रेष्ठ पुरुष। बड़ा आदमी।

**धोरे***—क्रि० वि० [ सं० धर ] पास। निकट।

**धोवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अधोवस्त्र ] धोती।

**धोवन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धोना ] १. धोने का भाव। पछारने की क्रिया। २. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।

**धोवना***—क्रि० स० दे० "धोना"।

**धोवा***—संज्ञा पुं० [ हिं० धोना ] १. धोवन। २. जल। अर्क।

**धोवाना***†—क्रि० स० [ हिं० धोना ] धुलाना।

क्रि० अ० धुलना। धोया जाना।

**धौं***†—अव्य० [ हिं० दैंव, दहुँ ] १. एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले लगाया जाता है जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और संशय का भाव अधिक होता है। न जाने। मालूम नहीं। २. प्रश्न के रूप में आनेवाले दो विकल्प या संदेहसूचक वाक्यों में से दूसरे या दोनों के पहले लगनेवाला शब्द। कि। या। अथवा। ३. एक शब्द जिसका प्रयोग जोर देने के लिए ऐसे प्रश्नों के पहले 'तो' या 'भला' के अर्थ में होता है जिनका उत्तर काकु से 'नहीं' होता है। ४. किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्न वाक्य का आरंभ-सूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। ५. विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के लिए आनेवाला एक शब्द।

**धौंक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौंकना ] १. आग दहकाने के लिए भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का झोंका। २. गरमी की लपट। ताप। लू।

**धौंकना**—क्रि० स० [ सं० धम् = धौंकना ] १. आग पर, उसे दहकाने के लिए, भाथी दबाकर हवा का झोंका पहुँचाना। २. ऊपर डालना। भार डालना या सहन कराना। ३. दंड आदि लगाना।

**धौंकनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौंकना ] १. बाँस या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूँकते हैं। २. भाथी।

**धौंका**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौंकना ] लू।

**धौंकिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० धौंकना ] १. भाथी चलानेवाला। आग फूँकनेवाला। २. एक प्रकार के व्यापारी जो भाथा आदि लिए घूमते और टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करते हैं।

**धौंकी**—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकना"।

**धौंज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौंजना ] १. दौड़-धूप। २. घबराहट। उद्विग्नता।

**धौंजन**—संज्ञा स्त्री० दे० "धौंज"।

**धौंजना**†—क्रि० स० [ सं० ध्वजन ] दौड़ना-धूपना। दौड़-धूप करना। क्रि० स० पैरों से रौंदना।

**धौंताल**—वि० [ हिं० धुन+ताल ] १. जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २. शरारती। ३. फुरतीला। चुस्त। चालाक। ४. साहसी। दृढ़। ५. हट्टा-कट्टा। मजबूत। हेकड़। ६. निपुण। पटु।

**धौंस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दंश ] १. धमकी। घुड़की। डाँट। डपट। २. धाक। अधिकार। रोब दाब। ३. झाँसा-पट्टी। भुलावा। धोखा। छल।

**धौंसना**—क्रि० स० [ सं० ध्वंसन ] १. दबाना। दमन करना। २. धमकी या घुड़की देना। डराना। ३. मारना-पीटना।

**धौंस-पट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौंस + पट्टी ] भुलावा। झाँसा-पट्टी। दम-दिलासा।

**धौंसर***—वि० दे० "धूसर"।

**धौंसा**—संज्ञा पुं० [ हिं० धौंसना ] १. बड़ा नगारा। डंका। २. सामर्थ्य। शक्ति।

**धौंसिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० धौंसना ] १. धौंस से काम चलानेवाला। २. झाँसा-पट्टी देनेवाला। ३. नगारा बजानेवाला।

**धौ**—संज्ञा पुं० दे० "धव"।

**धौत**—वि० [ सं० ] १. धोया हुआ। साफ। २. उजला। सफेद। ३. नहाया हुआ।

संज्ञा पुं० रूपा। चाँदी।

**धौति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शुद्ध। २. हठयोग की एक क्रिया जो शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिए की जाती है। ३. आँतें साफ करने की योग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की एक धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं, फिर पानी पीकर उसे धीरे धीरे बाहर निकालते हैं।

**धौम्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ऋषि जो देवल के भाई और पांडवों के पुरोहित थे। २. एक ऋषि जो महाभारत के अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषि के पुत्र और बड़े शिवभक्त थे। ३. एक ऋषि जो तारा रूप में

पश्चिम दिशा में स्थित है।

**धौरहर***—संज्ञा पुं० दे० "धौरा-हर"।

**धौरा**—वि० [ सं० धवल ] [ स्त्री० धौरी ] १. श्वेत। सफेद। उजला। २. सफेद रंग का बैल। ३. धौ का पेड़। ४. एक प्रकार का पंडुक।

**धौराहर**—संज्ञा पुं० [ हिं० धुर=ऊपर+घर] ऊँची अटारी। धरहरा। मीनार। बुर्ज।

**धौरिय***—संज्ञा पुं० [ सं० धौरेय ] बैल।

**धौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौरा ] १. सफेद रंग की गाय। कपिला। २. एक प्रकार की चिड़िया।

**धौरे**—क्रि० वि० दे० "धोरे"।

**धौल**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. धप्पा। चाँटा। थप्पड़। २. नुकसान। हानि। टोटा।

*वि० [ सं० धवल ] उजला। सफेद।

**मुहा०**—धौल धूर्त=गहरा धूर्त। संज्ञा पुं० [ हिं० धौराहर ] धरहरा। धौराहर।

**धौल-धक्का**—संज्ञा पुं० [ हिं० धौल+धक्का ] आघात। चपेट।

**धौल-धप्पड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० धौल+धप्पा ] १. मार-पीट। धक्का-मुक्का। २. उपद्रव।

**धौलहर***—संज्ञा पुं० दे० "धौरा-हर"।

**धौला**—वि० [ सं० धवल ] [ स्त्री० धौली ] सफेद। उजला। श्वेत।

**धौलाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० धौल+आई (प्रत्य०) ] सफेदी। उजलापन।

**धौलागिरि**—संज्ञा पुं० दे० "धवल-गिरि"।

**ध्यात**—वि० [ सं० ] विचारा हुआ। ध्यान किया हुआ। चिंतित।

**ध्याता**—वि० [ सं० ध्यातृ ] [ स्त्री० ध्यात्री ] १. ध्यान करनेवाला। २. विचार करनेवाला।

**ध्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अंतः-करण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव। मानसिक प्रत्यक्ष।

**मुहा०**—ध्यान में डूबना या मग्न होना=कोई बात इतना मन में लाना कि और सब बातें भूल जायँ। ध्यान धरना=मन में स्थापित करना। (किसी के) ध्यान में लगना=किसी का विचार मन में लाकर मग्न होना। २. सोच विचार। चिंतन। मनन। ३. भावना। प्रत्यय। विचार। ख्याल।

**मुहा०**—ध्यान आना=विचार उत्पन्न होना। ध्यान जमना=विचार स्थिर होना। ध्यान बँधना=लगातार खयाल बना रहना। ध्यान रखना=विचार बनाए रखना। न भूलना। ध्यान लगना=बराबर खयाल बना रहना। ४ चित्त की ग्रहण-वृत्ति। चित्त। मन।

**मुहा०**—ध्यान में न लाना= १. चिंता न करना। परवाह न करना। २ न विचारना। ५. चेतना की प्रवृत्ति। चेत। खयाल।

**मुहा०**—ध्यान जमना=चित्त एकाग्र होना। ध्यान जाना=चित्त का किसी ओर प्रवृत्त होना। ध्यान दिलाना=खयाल कराना, या जताना। चेताना। सुझाना। ध्यान देना=(अपना) चित्त प्रवृत्त करना। गौर करना। ध्यान पर चढ़ना=मन में स्थान कर लेना। चित्त से न हटना। ध्यान बँटना=चित्त एकाग्र न रहना। खयाल इधर-उधर होना। ध्यान बँधना=किसी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ध्यान लगना=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना। ६. बोध करनेवाली वृत्ति। समझ। बुद्धि। ७ धारणा। स्मृति। याद।

**मुहा०**—ध्यान आना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान दिलाना=स्मरण कराना। याद दिलाना। ध्यान पर चढ़ना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान रखना=याद रखना। ध्यान से उतरना=भूलना।

८. चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया। यह योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था है।

**मुहा०**—ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना। चित्त इधर-उधर हो जाना। ध्यान करना=परमचिंतन आदि के लिए चित्त को एकाग्र करके बैठना।

**ध्यानना***—क्रि० स० [सं० ध्यान ] ध्यान करना।

**ध्यानयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो।

**ध्याना***—क्रि० स० [ सं० ध्यान ] १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। सुमरना।

**ध्यानी**—वि० [ सं० ध्यानिन् ] १. ध्यानयुक्त। समाधिस्थ। २. ध्यान करनेवाला।

**ध्येय**—वि० [ सं० ] १. ध्यान करने करने योग्य। २. जिसका ध्यान किया जाय।

**ध्रुपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ध्रुवपद ] एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की लीला या राजाओं के यज्ञादि का वर्णन गाया जाता है। एक राग।

**ध्रुव**—वि० [ सं० ] १. सदा एक ही

स्थान पर रहनेवाला। स्थिर। अचल। २. सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। नित्य। ३. निश्चित। दृढ़। ठीक। पक्का।
संज्ञा पुं० १. आकाश। २. शंकु। कील। ३. पर्वत। ४. खंभा। थून। ५. वट। बरगद। ६. आठ वसुओं में से एक। ७. ध्रुपद। ८. विष्णु। ९. ध्रुव तारा। १०. पुराणों के अनुसार राजा उत्तानपाद के एक पुत्र जिनकी माता का नाम सुनीति था। विष्णु भगवान् ने इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर इन्हें वर दिया कि तुम सब लोकों, ग्रहों और नक्षत्रों के ऊपर उनके आधार-स्वरूप अचल भाव से स्थित रहोगे। तब से ये आकाश में तारे के रूप में प्रायः एक ही स्थान पर स्थित हैं। ११. भूगोल विद्या में पृथ्वी के वे दोनों सिरे जिनसे होकर अक्षरेखा गई हुई मानी जाती है। १२. रगण का अठारहवाँ भेद जिसमें क्रमशः एक लघु, एक गुरु और तीन लघु होते हैं।

**ध्रुवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्थिरता। अचलता। २. दृढ़ता। पक्कापन। ३. निश्चय।

**ध्रुवतारा**—संज्ञा पुं० [ सं० ध्रुव + तारक, हिं० तारा ] वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर-उधर नहीं होता। यह उत्तानपाद का पहला पुत्र ध्रुव माना जाता है।

**ध्रुवदर्शक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सप्तर्षि-मंडल। २. कुतुबनुमा।

**ध्रुवदर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विवाह के संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें वर-वधू को ध्रुव तारा दिखाया जाता है।

**ध्रुवलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं।

**ध्वंस**—संज्ञा पुं० [सं०] विनाश। नाश।

**ध्वंसक**—वि० [ सं० ] नाश करनेवाला।

**ध्वंसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त ] १. नाश करने की क्रिया। २. नाश होने का भाव। क्षय। विनाश।

**ध्वंसावशेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी चीज के टूट-फूट जाने पर बचा हुआ अंश।

**ध्वंसी**—वि० [ सं० ध्वंसिन् ] [ स्त्री० ध्वंसिनी ] नाश करनेवाला। विनाशक।

**ध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चिह्न। निशान। २ वह लंबा या ऊँचा डंडा जिसके सिरे पर कोई चिह्न बना रहता है, या पताका बँधी रहती है। निशान। झंडा।

**ध्वजभंग**—संज्ञा पुं० [सं०] नपुंसकता।

**ध्वजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ध्वज ] १. पताका। झंडा। निशान। २. छंदःशास्त्रानुसार ठगण का पहला भेद जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।

**ध्वजिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सेना का एक भेद जिसका परिमाण कुछ लोग वाहिनी का दूना मानते हैं।

**ध्वजी**—वि० [ सं० ध्वजिन् ] [ स्त्री० ध्वजिनी ] १. ध्वजवाला। जो ध्वजा पताका लिए हो। २. चिह्नवाला। चिह्नयुक्त।

**ध्वनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह विषय जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो। शब्द। नाद। आवाज। २. शब्द का स्फोट। आवाज की गूँज। लय। ३. वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक विशेषतावाला हो। ४. आशय। गूढ़ अर्थ। मतलब।

**ध्वनित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० ध्वनिता ] १. शब्दित। २. व्यंजित। प्रकट किया हुआ। ३. बजाया हुआ। वादित।

**ध्वन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्यंग्यार्थ।

**ध्वन्यात्मक**—वि० [ सं० ] १. ध्वनिस्वरूप या ध्वनिमय। २. ( काव्य ) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।

**ध्वन्यार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ध्वन्यर्थ ] वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।

**ध्वस्त**—वि० [ सं० ] १. च्युत। गिरापड़ा। २. खंडित। टूटा-फूटा। भग्न। ३. नष्ट। भ्रष्ट। ४. परास्त। पराजित।

**ध्वांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंधकार। अँधेरा।

**ध्वांतचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राक्षस।

—:*:—

# न

**न**—एक व्यंजन जो हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।

**नंग**—संज्ञा पुं० [ हिं० नंगा ] १. नग्नता। नंगापन। नंगे होने का भाव। २. गुप्त अंग।

**नंग-धड़ंग**—वि [ हिं० नंगा+धड़ंग (अनु०) ] बिलकुल नंगा। दिगंबर। विवस्त्र।

**नंग-मुनंगा**—वि० दे० "नंग-धड़ंग"।

**नंगा**—वि० [ सं० नग्न ] १. जो कोई कपड़ा न पहने हो। दिगंबर। विवस्त्र। वस्त्रहीन।

यौ०—नंगा मादरजाद=बिलकुल नंगा।

२. निर्लज्ज। बेहया। ३. लुच्चा। पाजी। ४. जो किसी तरह ढँका न हो। खुला हुआ।

**नंगा-झोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नंगा+झोरना ] किसी के पहने हुए कपड़ों आदि को उतरवाकर अथवा योंही अच्छी तरह देखना जिसमें उसकी छिपाई हुई चीज का पता लग जाय। कपड़ों की तलाशी।

**नंगाबुच्चा, नंगाबूचा**—वि० [ हिं० नंगा+बूचा=खाली ] जिसके पास कुछ भी न हो। बहुत दरिद्र।

**नंगा लुच्चा**—वि० [ हिं० नंगा+लुच्चा ] नीच और दुष्ट। बदमाश।

**नँगियाना**—क्रि० स० [ हिं० नंगा+इयाना (प्रत्य०) ] १. नंगा करना। शरीर पर वस्त्र न रहने देना। २. सब कुछ छीन लेना।

**नँग्याना***—क्रि० स० दे० "नँगियाना"।

**नंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आनंद। हर्ष। २. परमेश्वर। ३. पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ४. विष्णु। ५. चार प्रकार की बाँसुरियों में से एक। ६. पिंगल में ढगण के दूसरे भेद का नाम जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। ७. लड़का। बेटा। पुत्र। ८. गोकुल के गोपों के मुखिया जिनके यहाँ श्रीकृष्ण को, उनके जन्म के समय, वसुदेव जाकर रख आए थे। बाल्यावस्था में श्रीकृष्ण इन्हींके यहाँ रहे थे। इनकी स्त्री का नाम यशोदा था। ९. महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई।

**नंदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २. राजा नंद जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहते थे।

वि० १. आनंददायक। २. कुल-पालक। ३. संतोष देनेवाला।

**नंदकिशोर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**नंदकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विष्णु।

**नंदकुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**नंदगाँव**—संज्ञा पुं० [ सं० नंदग्राम ] वृंदावन का एक गाँव जहाँ नंद गोप रहते थे।

**नंदग्राम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नंदीग्राम। २. अयोध्या के समीप का एक गाँव जहाँ बैठकर राम के वनवास-काल में भरत ने तपस्या की थी। नंदिग्राम।

**नंदनंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**नंदनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] योग-माया।

**नंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र के उपवन का नाम जो स्वर्ग में माना जाता है। २. एक प्रकार का विष। ३. महादेव। शिव। ४. विष्णु। ५. लड़का। बेटा। जैसे-नंदनंदन। ६. एक प्रकार का अस्त्र। ७. मेघ। बादल। ८. एक वर्णवृत्त।

वि० आनंददायक। प्रसन्न करनेवाला।

**नंदनवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र की वाटिका।

**नंदना***—क्रि० अ० [ सं० नंद ] आनंदित होना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० नंद=बेटा ] लड़की। बेटी।

**नंदनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी"।

**नंदरानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नंद+हिं० रानी ] नंद की स्त्री, यशोदा।

**नंदलाल**—संज्ञा पुं० [ सं० नंद+हिं० लाल=बेटा ] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

**नंदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. गौरी। ३. एक प्रकार की कामधेनु। ४. एक मातृका या बाल ग्रह। ५ संपत्ति। संपदा। ६. पति की बहन। ननद। ७. बरवै छंद का एक नाम। ८. प्रसन्नता।

वि० १. आनंद देनेवाली। २. शुभ।

**नंदि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आनंद। २. वह जो आनंदमय हो। ३. परमेश्वर। ४. शिव का द्वारपाल बैल। नंदिकेश्वर।

**नंदिकेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव के द्वारपाल बैल का नाम। २. एक उपपुराण जिसे नंदिपुराण भी कहते हैं।

**नंदिघोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अर्जुन का रथ। २. बंदीजनों की

घोषणा ।

**नंदित**—वि० [ सं० ] आनंदित । सुखी ।

*वि० [हिं० नादना] बजता हुआ ।

**नंदिन***—संज्ञा स्त्री० [ सं० नंद= बेटा ] लड़की ।

**नंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पुत्री । बेटी । २. रेणुका नामक गंध-द्रव्य । ३ उमा । ४. गंगा । ५. पति की बहन । ननद । ६. दुर्गा । ७ तेरह अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त । कलहंस । सिंहनाद । ८. वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि की कन्या थी । राजा दिलीप ने इसी गौ की सिंह से रक्षा की थी और इसी की आराधना करके उन्होंने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था । ९. पत्नी । स्त्री । जोरू ।

**नंदिवर्द्धन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव । २. पुत्र । बेटा । ३. मित्र । दोस्त । ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का विमान ।

वि० आनंद बढ़ानेवाला ।

**नंदी**—संज्ञा पुं० [ सं० नंदिन् ] १. धव का पेड़ । २ बरगद का पेड़ । ३. शिव के एक प्रकार के गण । ४. शिव का द्वारपाल, बैल । ५. शिव के नाम पर दागकर उत्सर्ग किया हुआ कोई बैल । ६. वह बैल जिसके शरीर पर गाँठें हों । ऐसा बैल खेती के काम के लिए अच्छा नहीं होता । ७. विष्णु ।

वि० आनंदयुक्त । जो प्रसन्न हो ।

**नंदीगण**—संज्ञा पुं० [ हिं० नंदी + गण ] १. शिव के द्वारपाल, बैल । २. दागकर उत्सर्ग किया हुआ बैल । साँड़ ।

**नंदीमुख**—संज्ञा पुं० दे० "नांदी-मुख" ।

**नंदीश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव । २. शिव का एक गण ।

**नंदेऊ***†—संज्ञा पुं० दे० "नंदोई" ।

**नंदोई**—संज्ञा पुं० [ हिं० ननद + ओई ( प्रत्य० ) ] ननद का पति । पति का बहनोई ।

**नंबर**—वि० [ अं० ] संख्या । अदद । संज्ञा पुं० १. गिनती । गणना । २. सामयिक पत्र की कोई संख्या । अंक । ३ कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज ।

**नंबरदार**—संज्ञा पुं० [ अं० नंबर+ फ़ा० दार ] गाँव का वह जमींदार जो अपनी पट्टी के और हिस्सेदारों से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता दे ।

**नंबरवार**—क्रि० वि० [ अं० नंबर+ फ़ा० वार ] सिलसिलेवार । एक एक करके । क्रमशः ।

**नंबरी**—वि० [अं० नंबर+ई (प्रत्य०)] १. नंबरवाला । जिस पर नंबर लगा हो । २. प्रसिद्ध । मशहूर ।

**नंबरी गज**—संज्ञा पुं० दे० "नंबर ( ३ )" ।

**नंबरी सेर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नंबरी +सेर ] तौलने का सेर जो अँगरेजी रुपयों से ८० भर का होता है ।

**नंस***—वि० [ सं० नाश ] नष्ट । बरबाद ।

**न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उपमा । २. रत्न । ३. सोना । ४. बुद्ध । ५ बंध ।

अव्य० १. निषेधवाचक शब्द । नहीं । मत । २. या नहीं । जैसे— तुम वहाँ आओगे न ?

**नई***—वि० [ सं० नय ] नीतिज्ञ ।

वि० स्त्री० [ सं० नव ] 'नया' का स्त्री० रूप ।

*†संज्ञा स्त्री० दे० "नदी" ।

**नउँजी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लीची ] लीची नामक फल ।

**नउ***†—वि० १ दे० "नव" । २. दे० "नौ" ।

**नउआ**†—संज्ञा पुं० दे० "नाऊ" ।

**नउका***†—संज्ञा स्त्री० दे० "नौका" ।

**नउज***—अव्य० दे० "नौज" ।

**नउत***†—वि० [ हिं० नवना ] नीचे की ओर झुका हुआ ।

**नउलि***†—वि० [ सं० नवल ] नया ।

**नओढ़***†—संज्ञा स्त्री० दे० "नवोढ़ा" ।

**नककटा**—वि० [ हिं० नाक+कटना ] [ स्त्री० नककटी ] १. जिसकी नाक कटी हो । २. जिसकी बहुत दुर्दशा, अप्रतिष्ठा या बदनामी हुई हो । ३. निर्लज्ज । बेहया ।

**नकघिसनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाक+घिसना ] १. जमीन पर नाक रगड़ने की क्रिया । २. बहुत अधिक दीनता । आजिजी ।

**नकचढ़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाक+ चढ़ना ] [ स्त्री० नकचढ़ी ] चिड़-चिड़ा । बदमिजाज ।

**नकछिकनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० छिक्कनी ] एक प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं ।

**नकटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाक+ कटना ] [ स्त्री० नकटी ] १. वह जिसकी नाक कट गई हो । २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं ।

वि० १. जिसकी नाक कटी हो । २. निर्लज्ज ।

**नकतोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाक+ तोड़=गति ] अभिमान-पूर्वक नाक-

भौं चढ़ाकर नखरा करना अथवा कोई बात कहना।

**नकद**—संज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा।

वि० १. (रुपया) जो तैयार हो। (धन) जो तुरंत काम में लाया जा सके। २. खास। ३. दे० "नगद"।

क्रि० वि० तुरंत दिए हुए रुपये के बदले में। 'उधार' का उलटा।

**नकदी**—संज्ञा स्त्री० दे० "नकद"।

**नकना***†—क्रि० स० [हिं० नाकना] १. उल्लंघन करना। लाँघना। डाँकना। फाँदना। २. चकना। ३. त्यागना।

क्रि० अ० [हिं० नकियाना] नाक में दम होना। हैरान होना।

क्रि० स० नाक में दम करना।

**नकफूल**—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+फूल] नाक में पहनने का लौंग या कील।

**नकब**—संज्ञा स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध।

**नकबानी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+बानी] नाक में दम। हैरानी।

**नकबेसर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+बेसर] नाक में पहनने की छोटी नथ। बेसर।

**नकमोती**—संज्ञा पुं० [हिं० नाक+मोती] नाक में पहनने का मोती। लटकन।

**नकल**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह जो किसी दूसरे के ढंग पर या उसकी तरह तैयार किया गया हो। अनुकृति। कापी। २. एक के अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का कार्य्य। अनुकरण। ३. लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि। कापी। ४. किसी के वेष, हाव-भाव या बात-चीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण। स्वाँग। ५. अद्भुत और हास्यजनक आकृति। ६. हास्य-रस की कोई छोटी-मोटी कहानी। चुटकुला।

**नकलनवीस**—संज्ञा पुं० [अ० नक़ल+फ़ा० नवीस] वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नकल करना होता है।

**नकल-बही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नकल+बही] वह बही जिस पर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है।

**नकली**—वि० [अ०] १. जो नकल करके बनाया गया हो। कृत्रिम। बनावटी। २. खोटा। जाली। झूठा।

**नकवानी***—संज्ञा स्त्री० दे० "नकबानी"।

**नकश**—संज्ञा पुं० [अ० नक्श] १. दे० "नक्श"। २. ताश से खेला जानेवाला एक जूआ।

**नकशा**—संज्ञा पुं० दे० "नक्शा"।

**नकसीर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+सं० क्षीर=जल] आप से आप नाक से रक्त बहना।

**मुहा०**—नकसीर भी न फूटना=जरा भी तकलीफ या नुकसान न होना।

**नकाना***†—क्रि० अ० [हिं० नाकयाना] नाक में दम होना। बहुत परेशान होना।

क्रि० स० [हिं० नकियाना] नाक में दम करना। बहुत परेशान करना।

**नकाब**—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिए सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। (मुसल्मान)

**यौ०**—नकाबपोश=चेहरे पर नकाब डाले हुआ।

२. साड़ी या चादर का वह भाग जिससे स्त्रियों का मुँह ढँका रहता है। घूँघट।

**नकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. न या नहीं का बोधक शब्द या वाक्य। नहीं। २. इनकार। अस्वीकृति। ३. "न" अक्षर।

**नकारना**—क्रि० अ० [हिं० नकार+ना (प्रत्य०)] इनकार करना। अस्वीकृत करना।

**नकारा**†—वि० [फ़ा० नाकारः] जो किसी काम का न हो। खराब। निकम्मा।

**नकाशना**†—क्रि० स० [अ० नक्काशी] धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र, फूल, पत्ती आदि बनाना।

**नकाशी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "नक्काशी"।

**नकियाना**†—क्रि० अ० [हिं० नाक+आना (प्रत्य०)] १. शब्दों का अनुनासिक-वत् उच्चारण करना। २. बहुत दुःखी या हैरान होना।

क्रि० स० बहुत परेशान या तंग करना।

**नकीब**—संज्ञा पुं० [अ०] १. चारण। बंदीजन। भाट। २. कड़खा गानेवाला पुरुष। कड़खैत।

**नकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नेवला नामक जंतु। २. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो अश्विनीकुमार द्वारा माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३. बेटा। पुत्र।

**नकेल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाक+एल (प्रत्य०)] ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है। मुहरा।

**मुहा०**—किसी की नकेल हाथ में होना=किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना।

**नक्का**—संज्ञा पुं० [हिं० नाक] सुई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका।

**नक्कारखाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ पर नक्कारा बजता है। नौबतखाना।

**मुहा०**—नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है=बड़े बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।

**नक्कारची**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नगाड़ा बजानेवाला।

**नक्कारा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नगाड़ा। डंका। नौबत। दुंदुभी।

**नक्काल**—संज्ञा पुं० [अ०] १. अनुकरण करनेवाला। नकल करनेवाला। २. भाँड़।

**नक्काश**—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो नक्काशी करता हो।

**नक्काशी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० नक्काशीदार] १ धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २. वे बेल बूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।

**नक्की**—वि० [देश०] १. पक्का। दृढ़। २. ठीक।

**नक्की-मूठ**—संज्ञा पुं० [हिं० नक्की+मूठ] कौड़ियों से खेला जानेवाला एक खेल।

**नक्कू**—वि० [हिं० नाक] १. जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला। ३. सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला।

**नक्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बिलकुल संध्या का समय। २. रात। ३. एक प्रकार का व्रत। इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। ४. शिव।

**नक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाक नामक जल-जंतु। २. मगर। ३. घड़ियाल। कुंभीर। ४. नाक। नासिका।

**नक्ल**—संज्ञा स्त्री० दे० "नकल"।

**नक्श**—वि० [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ।

**मुहा०**—मन में नक्श करना या कराना=किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना।

संज्ञा पुं० [अ०] १. तसवीर। चित्र। २. खोदकर या क़लम से बनाया हुआ बेल बूटा। ३. मोहर। छाप।

**मुहा०** नक्श बैठना=अधिकार जमना।

४. वह यंत्र जो रोगों आदि को दूर करने के लिए कागज आदि पर लिखकर बाँह या गले में पहनाया जाता है। तावीज। ५. जादू। टोना। ६. दे० "नक्श (२)।"

**नक्शा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. रेखाओं द्वारा आकार आदि का निर्देश। चित्र। प्रतिमूर्ति। तसवीर। २. आकृति। शक्ल। ढाँचा। गढ़न। ३. किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४. चाल-ढाल। तर्ज। ढंग। ५. अवस्था। दशा। ६. ढाँचा। ठप्पा। ७. किसी धरातल पर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथ्वी या खगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो। ऐसे चित्रों में प्रायः देश, पर्वत, समुद्र, नदियाँ और नगर आदि दिखलाए जाते हैं।

**नक्शानवीस**—संज्ञा पुं० [अ० नक्शा+फ़ा० नवीस] नक्शा लिखने या बनानेवाला।

**नक्शाबंद**—संज्ञा पुं० [अ०+फ़ा०] वह जो साड़ियों आदि के बेल-बूटे के नक्शे या तर्ज तैयार करता है।

**नक्शी**—वि० [अ० नक्श+ई (प्रत्य०)] जिस पर बेल-बूटे बने हों। नक्काशीदार।

**नक्षत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का वह समूह या गुच्छ जिसकी पहचान के लिए आकार निर्दिष्ट करके नाम रखा गया हो। ये सब २७ नक्षत्रों में विभक्त हैं।

**नक्षत्रनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**नक्षत्रपथ**—संज्ञा पुं० [सं०] नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

**नक्षत्रराज**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**नक्षत्रलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।

**नक्षत्रवृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तारा टूटना। उल्कापात होना।

**नक्षत्री**—संज्ञा पुं० [सं० नक्षत्रिन्] चंद्रमा।

वि० [सं० नक्षत्र+ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्।

**नख**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथ या पैर का नाखून। २. नाखून के आकार का एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य जो घोंघे की जाति के एक जानवर के मुँह का ऊपरी आवरण होता है। ३. खंड। टुकड़ा।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नख] गुड्डी उड़ाने के लिए पतला रेशमी या सूती तागा। डोर।

**नखक्षत**—संज्ञा पुं० [सं०] वह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण बना हो।

**नखच्छत***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नखक्षत"।
**नखकोलिया***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नखक्षत"।
**नखजल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ नख+जल] नखों से निकला जल। गंगा।
**नखत, नखतर***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नक्षत्र"।
**नखतराज, नखतेस***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "चंद्रमा"।
**नखना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ नाखना] उल्लंघन होना। डाँका जाना।
क्रि॰ स॰ उल्लंघन करना। पार करना।
क्रि॰ स॰ [सं॰ नष्ट] नष्ट करना।
**नखबान***—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ नख] नाखून।
**नखरा**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमंग में अथवा प्रिय को रिझाने के लिए हो। चोंचला। नाज। २. चपलता। चुलबुलापन।
**नखरा-तिल्ला**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ नखरा+हिं॰ तिल्ला (अनु॰)] नखरा। चोंचला।
**नखरीला**†—वि॰ [फ़ा॰ नखरा] नखरा करनेवाला।
**नखरेखा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नखक्षत।
**नखरेबाज**—वि॰ [फ़ा॰] [संज्ञा नखरेबाजी] जो बहुत नखरा करे। नखरा करनेवाला।
**नखरौट**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ 'नखक्षत'।
**नखविंदु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह गोल या चंद्राकार चिह्न जो स्त्रियाँ नाखून के ऊपर मेंहदी या महावर से बनाती है।
**नखशिख**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. नख से लेकर शिख तक के सब अंग। मुहा॰—नखशिख से=सिर से पैर तक। २. शरीर के सब अंगों का वर्णन।
**नखांक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. नख नामक गंध-द्रव्य। २. नाखून गड़ने का चिह्न।
**नखायुध**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शेर, चीता आदि नखों से फाड़नेवाले जानवर। २ नृसिंह।
**नखास**—संज्ञा पुं॰ [अ॰ नख्खास] वह बाजार जिसमें पशु विशेषतः घोड़े बिकते हैं।
**नखियाना***†—क्रि॰ स॰ [सं॰ नख+इयाना (प्रत्य॰)] नाखून गड़ाना।
**नखी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ नखिन्] १. शेर। २. चीता। ३. वह जानवर जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता हो।
संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नख नामक गंधद्रव्य।
**नखेद***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "निषेध"।
**नखोटना***†—क्रि॰ स॰ [सं॰ नख+ओटना (प्रत्य॰)] नाखून से खरोंचना या नोचना।
**नग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. पर्वत। पहाड़। २. पेड़। वृक्ष। ३. सात की संख्या। ४. सर्प। साँप। ५. सूर्य।
संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ नगीना, सं॰ नग] १. दे॰ "नगीना"। २. अदद। संख्या।
**नगज**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] हाथी।
वि॰ जो पहाड़ से उत्पन्न हो।
**नगजा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पार्वती।
**नगण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पिंगल में तीन लघु अक्षरों का एक गण।
**नगण्य**—वि॰ [सं॰] [संज्ञा नगण्यता] बहुत ही साधारण या गया-बीता। तुच्छ।
**नगदंती**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] विभीषण की स्त्री।
**नगद**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नकद"।
**नगधर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] श्रीकृष्णचंद्र।
**नगधरन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नगधर"।
**नगनंदिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पार्वती।
**नगन***†—वि॰ [सं॰ नग्न] जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा।
**नगनिका**—संज्ञा स्त्री॰ [?] क्रीड़ावृत्त। जिसमें एक यगण और एक गुरु होता है।
**नगनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ नग्ना] १. कन्या, पुत्री। बेटी। २. नंगी स्त्री।
**नगपति**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. हिमालय पर्वत। २. चंद्रमा। ३. शिव। ४. सुमेरु।
**नगर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] गाँव या कस्बे आदि से बड़ी मनुष्यों की वह बस्ती जिसमें अनेक जातियों के लोग रहते हों। शहर।
**नगरकीर्तन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह गाना, बजाना या कीर्तन जो नगर की गलियों और सड़कों में घूम घूमकर हो।
**नगरनारि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वेश्या।
**नगरपाल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह जिसका काम नगर की रक्षा करना हो।
**नगरवासी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शहर में रहनेवाला। नागरिक। पुरवासी।
**नगरहार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] प्राचीन भारत का एक नगर जो वर्त्तमान जलालाबाद के निकट बसा था।
**नगराई***†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ नगर+आई॰ (प्रत्य॰)] १. नागरिकता। शहरातीपन। २. चतुराई। चालाकी।
**नगराध्यक्ष**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नगरपाल"।
**नगरी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नगर।

शहर।
संज्ञा पुं० [सं० नगरिन्] शहर में रहनेवाला।

**नगस्वरूपिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त। प्रमाणी। प्रमाणिका।

**नगाड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "नगारा"।

**नगाधिप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २. सुमेरु पर्वत।

**नगारा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगाड़ा। डंका। धौंसा।

**नगारि**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**नगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० नग=पर्वत+ई (प्रत्य०)] १. रत्न। मणि। नगीना। नग। २. पार्वती। ३. पहाड़ी स्त्री।

**नगीच**†—क्रि० वि० दे० "नजदीक"।

**नगीना**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] रत्न। मणि।

**नगीनासाज**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

**नगेंद्र, नगेश**—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय।

**नगेसरि***†—संज्ञा पुं० दे० "नागकेशर"।

**नग्न**—वि० [सं०] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। नंगा। २. जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।

**नग्नता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नंगे होने का भाव।

**नग्मा**—संज्ञा पुं० दे० "नगमा"।

**नग्र***†—संज्ञा पुं० दे० "नगर"।

**नघना**—क्रि० स० [सं० लंघन] लाँघना।

**नघाना**—क्रि० स० [सं० लंघन] लँघाना।

**नचना***†—क्रि० अ० [हिं० नाचना] नाचना।
वि० १. नाचनेवाला। २. बराबर इधर-उधर घूमनेवाला।

**नचनि***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाचना] नाच।

**नचनिया**†—संज्ञा पुं० [हिं० नाचना+इया (प्रत्य०)] नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला।

**नचनी**—वि० स्त्री० [हिं० नाचना] १. नाचनेवाली। २. इधर-उधर घूमती रहनेवाली।

**नचवैया**—संज्ञा पुं० [हिं० नाच] नाचने या नचानेवाली।

**नचाना**—क्रि० स० [हिं० नाचना का प्रे०] १. दूसरे को नाचने में प्रवृत्त करना। नृत्य कराना। २. किसी को बार बार उठने-बैठने या और कोई काम करने के लिए तंग करना। हैरान करना।
**मुहा०**—नाच नचाना=घूमने-फिरने या और कोई काम करने के लिए विवश करके तंग करना।
३. इधर-उधर घुमाना या हिलाना।
**मुहा०**—आँखें (या नैन) नचाना=चंचलतापूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर-उधर घुमाना।
४. व्यर्थ इधर-उधर दौड़ाना।

**नचिकेता**—संज्ञा पुं० [सं० नचिकेतस्] १. वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। २. अग्नि।

**नचीला**—वि० [हिं० नाच] १. जो नाचता या इधर-उधर घूमता रहे। २. चंचल।

**नचौहाँ***†—वि० [हिं० नाचना+औहाँ (प्रत्य०)] जो सदा नाचता या इधर-उधर घूमता रहे।

**नछत्र**—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

**नछत्री***†—वि० [सं० नक्षत्र+ई (प्रत्य०)] भाग्यवान्। भाग्यशाली।

**नजदीक**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा, वि० नजदीकी] निकट। पास। करीब। समीप।

**नजम**—संज्ञा स्त्री० [अ० नज़्म] कविता।

**नजर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दृष्टि। निगाह।
**मुहा०**—नजर आना=दिखाई देना। दिखाई पड़ना। नजर पर चढ़ना=पसंद आ जाना। भला मालूम होना। नजर पड़ना=दिखाई देना। नजर बाँधना=जादू या मंत्र आदि के जोर से किसी का कुछ का कुछ कर दिखाना।
२ कृपादृष्टि। मेहरबानी से देखना। ३. निगरानी। देख-रेख। ४. ध्यान। खयाल। ५. परख। पहचान। ६. दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुन्दर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़कर उसे खराब कर देनेवाला माना जाता है।
**मुहा०**—नजर उतारना=बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या युक्ति से हटा देना। नजर लगना=बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।
संज्ञा स्त्री० [अ०] १. भेंट। उपहार। २. अधीनता सूचित करने की एक रस्म जिसमें राजाओं आदि के सामने प्रजा-वर्ग के या अधीनस्थ लोग आदि नकद रुपया आदि हथेली में रखकर सामने लाते हैं।

**नजरना***—क्रि० अ० [अ० नज़र+ना (प्रत्य०)] १. देखना। २. नजर लगाना।

**नजरबंद**—वि० [अ० नज़र+फ़ा०

बंद ] जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से वह कहीं आ जा न सके।

संज्ञा पुं० जादू या इंद्रजाल आदि का वह खेल जिसके विषय में लोगों का यह विश्वास रहता है कि वह लोगों की नजर बाँधकर किया जाता है।

**नज़रबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० नज़र+ फ़ा० बंदी ] १. राज्य की ओर से वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित या नियत स्थान पर रखा जाता है। २. नजरबंद होने की दशा। ३. जादूगरी। बाजीगरी।

**नज़रबाग**—संज्ञा पुं० [ अ० ] महलों या बड़े बड़े मकानों आदि के सामने या चारों ओर का बाग।

**नज़रहाया**—वि० [ अ० नज़र + हाया (प्रत्य०) ] [ स्त्री० नजरहाई ] नजर लगानेवाला।

**नज़राना**!*—क्रि० स० [ हिं० नजर + आनना (प्रत्य०) ] १. उपहार-स्वरूप देना। २. नज़र लगाना।

**नज़राना**—क्रि० अ० [ हिं० नजर ] नजर लग जाना। बुरी दृष्टि के प्रभाव में आना।

क्रि० स० नजर लगाना। उपहार।

संज्ञा पुं० [ अ० ] भेंट। उपहार।

**नज़रि***—संज्ञा स्त्री० दे० "नजर"।

**नज़ला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. एक प्रकार का रोग जिसमें गरमी के कारण सिर का विकार-युक्त पानी ढलकर भिन्न भिन्न अंगों की ओर प्रवृत्त होकर उन्हें खराब कर देता है। २. जुकाम। सरदी।

**नज़ाकत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] नाजुक होने का भाव। सुकुमारता। कोमलता।

**नजात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मुक्ति। मोक्ष। २. छुटकारा। रिहाई।

**नज़ारा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. दृश्य। २. दृष्टि। नजर। ३. प्रिय को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

**नजिकाना***†—क्रि० स० [ हिं० नजीक (नजदीक) + आना (प्रत्य०)] निकट पहुँचना। नजदीक पहुँचना। पास पहुँचना।

**नजीक**†*—क्रि० वि० [ फ़ा० नजदीक ] निकट।

**नजीर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] उदाहरण। दृष्टांत।

**नजूम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ज्योतिष विद्या।

**नजूमी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ज्योतिषी।

**नजूल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] शहर की वह जमीन जो सरकार के अधिकार में हो।

**नट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दृश्य-काव्य का अभिनय करनेवाला मनुष्य। वह जो नाट्य करता हो। २. प्राचीनकाल की एक संकर जाति। ३. एक जाति जो प्रायः गा बजाकर और खेल-तमाशे करके निर्वाह करती है। ४. संपूर्ण जाति का एक राग।

**नटई**†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. गला। गरदन। २. गले की घंटी। घाँटी।

**नटखट**—वि० [ हिं० नट + अनु० खट ] १. ऊधमी। उपद्रवी। चंचल। शरीर। २. चालाक। धूर्त। मक्कार।

**नटखटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नटखट ] बदमाशी। शरारत। पाजीपन।

**नटता**—संज्ञा स्त्री० [ सं०] नट का भाव।

**नटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नृत्य। नाचना। २. नाट्य करना।

**नटना**—क्रि० अ० [ सं० नट ] १. नाट्य करना। २. नाचना। नृत्य करना। ३. कहकर बदल जाना। मुकरना।

क्रि० स० [ सं० नष्ट ] नष्ट करना।

क्रि० अ० नष्ट होना।

**नटनारायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संपूर्ण जाति का एक राग।

**नटनि***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० नर्त्तन ] नृत्य।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० नटना ] इनकार।

**नटनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नट+नी (प्रत्य०) ] १. नट की स्त्री। २. नट जाति की स्त्री।

**नटराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव। शिव।

**नटवना***—क्रि० स० [ सं० नट ] नाट्य करना। अभिनय करना।

**नटवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाट्य-कला में प्रवीण मनुष्य। २. श्रीकृष्ण। वि० बहुत चतुर। चालाक।

**नटसार***†—संज्ञा स्त्री० दे० "नाट्य-शाला"।

**नटसारी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नट ] नट का काम।

**नटसाल**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. काँटे का वह भाग जो निकाल लिए जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २. बाण की गाँसी जो शरीर के भीतर रह जाय। ३. कसक। पीड़ा।

**नटिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नट ] नट की स्त्री।

**नटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नट जाति की स्त्री। २. नाचनेवाली स्त्री। नर्त्तकी। ३ अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।

**नटुआ, नटुवा**†—संज्ञा पुं० १. दे० "नट"। २. दे० "नटई"।

**नटेश, नटेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं०

महादेव।

**नटैया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "नटई"।

**नठना***†—क्रि० अ० [ सं० नष्ट ] नष्ट होना।

क्रि० स० नष्ट करना।

**नढ़ना**†—क्रि० स० [ हिं० नाथना ] १. गूँथना। पिरोना। २. बाँधना। कसना।

**नत**—वि० [ सं० ] झुका हुआ।

**नतपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० नत+पालक ] शरणागत का पालन करनेवाला। प्रणतपाल।

**नतरु, नतरक***†—क्रि० वि० [ हिं० न+तो ] नहीं तो। अन्यथा।

**नतांश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ग्रहों की स्थिति निश्चित करनेवाला वह वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर होता है और जो विषुवत रेखा पर लंब होता है।

**नति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ झुकाव। उतार। २. नमस्कार। प्रणाम। ३. विनय। विनती। ४. नम्रता। खाकसारी।

**नतिनी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाती का स्त्री० रूप ] लड़की की लड़की। नातिन।

**नतीजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] परिणाम। फल।

**नतु**—क्रि० वि० [ हिं० न+तो ] नहीं तो।

**नतुवा**—अव्य० [ सं० ] नहीं तो क्या?

**नतैत**†—संज्ञा पुं० [ हिं० नाता+ऐत (प्रत्य०) ] संबंधी। रिश्तेदार। नातेदार।

**नतैती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नतैत ] रिश्तेदारी। संबंध।

**नत्था**†—संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

**नत्थी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नथ या नाथना ] १. कागज या कपड़े आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही में बाँधना या फँसाना। २. इस प्रकार नाथे हुए कई कागज आदि। मिसल।

**नथ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाथना ] बाली की तरह का नाक का एक गहना।

**नथना**—संज्ञा पुं० [ सं० नस्त ] १. नाक का अगला भाग।

**मुहा०**—नथना फुलाना=क्रोध करना।

२. नाक का छेद।

क्रि० अ० [ हिं० नाथना का अ० रूप ] १. किसी के साथ नत्थी होना। एक सूत्र में बँधना। २. छिदना। छेदा जाना।

**नथनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नथ ] १. नाक में पहनने की छोटी नथ। २. बुलाक।

**नथिया, नथुनी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।

**नद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुंलिंगवाची हो।

**नदना***†—क्रि० अ० [ सं० नदन=शब्द करना ] १. पशुओं का शब्द करना। रँभाना। बँबाना। २.बजना। शब्द करना।

**नदराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**नदान***†—वि० दे० "नादान"।

**नदारद**—वि० [ फ़ा० ] जो मौजूद न हो। गायब। अप्रस्तुत। लुप्त।

**नदिया***†—संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

**नदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जल का वह प्राकृतिक और भारी प्रवाह जो किसी बड़े पर्वत या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से होता हुआ प्रायः बारहों महीने बहता रहता हो। दरिया।

**मुहा०**—नदी नाव संयोग=ऐसा संयोग जो कभी इत्तिफ़ाक से हो जाय।

२. किसी तरल पदार्थ का बड़ा प्रवाह।

**नदीगर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह गड्ढा या तल जिसमें से होकर नदी का पानी बहता है।

**नदीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**नद्दना***†—क्रि० अ० दे० "नदना"।

**नद्दी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।

**नद्ध**—वि० [ सं० ] बँधा हुआ। बद्ध।

**नधना**—क्रि० अ० [ सं० नद्ध+ना (प्रत्य०) ] १.बैल,घोड़े आदि का उस वस्तु के साथ जुड़ना या बँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना हो। जुतना। २. जुड़ना। संबद्ध होना। ३. काम का ठनना।

**ननकारना***†—क्रि० अ० [ हिं० न+करना ] अस्वीकार करना। मंजूर न करना।

**ननँद, ननद**—संज्ञा स्त्री० [सं० ननांद] पति की बहिन।

**ननदोई**—संज्ञा पुं० [ हिं० ननद+आई (प्रत्य०) ] ननद का पति। पति का बहनोई।

**ननसार**—संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल"।

**ननिआउर**†—संज्ञा पुं० दे० "ननिहाल"।

**ननिया ससुर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नानी+इया ( प्रत्य० ) + हिं० ससुर ] [ स्त्री० ननिया सास ] स्त्री या पति का नाना।

**ननिहाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाना+आलय ] नाना का घर। ननसार।

**नन्हा**—वि० [ सं० न्यंच या न्यून ]

[ स्त्री० नन्ही ] छोटा ।

**नन्हाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नन्हा + ई ( प्रत्य० ) ] १. छोटापन । छोटाई । २. अप्रतिष्ठा । हेठी ।

**नन्हैया***†—वि० दे० "नन्हा" ।

**नपाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाप + आई ( प्रत्य० ) ] नापने का काम, भाव या मजदूरी ।

**नपाक***†—वि० [ फ़ा० नापाक ] अपवित्र ।

**नपुंसक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह पुरुष जिसमें कामेच्छा न हो और किसी विशेष उपाय से जाग्रत हो । २. क्लीव । ३. हिजड़ा ।

**नपुंसकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नपुंसक होने का भाव । २. नामर्दी । हिजड़ापन ।

**नपुंसकत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नामर्दी ।

**नपुआ**†—संज्ञा पुं० [ हिं० नाप ] वह बरतन जिससे कोई चीज नापी जाय ।

**नपुत्री***†—वि० दे० "निपुत्री" ।

**नप्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नप्तृ ] [ स्त्री० नप्ती ] नाती या पोता ।

**नफर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दास । सेवक । २. व्यक्ति ।

**नफरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] घिन । घृणा ।

**नफरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी या काम । २. मजदूरी का दिन ।

**नफा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] लाभ । फायदा ।

**नफासत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] नफीस होने का भाव । उम्दापन ।

**नफीरी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तुरही ।

**नफीस**—वि० [ अ० ] १. उम्दा । बढ़िया । २. साफ । स्वच्छ । ३. सुंदर ।

**नबी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ईश्वर का दूत । पैगंबर । रसूल ।

**नबेड़ना**—क्रि० स० [ सं० निवारण ] १. निपटाना । तै करना । ( झगड़ा आदि) समाप्त करना । २ चुनना । दे० "निबेरना" ।

**नबेड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नबेड़ना ] फैसला । न्याय । निपटारा ।

**नब्ज**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] हाथ की वह रक्तवहा नाली जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है । नाड़ी ।

**मुहा०**—नब्ज चलना=नाड़ी में गति होना । नब्ज छूटना=नाड़ी की गति या प्राण न रह जाना ।

**नब्बे**—वि० [ सं० नवति ] जो गिनती में ८० और १० हो ।

संज्ञा पुं० ८० और १० के जोड़ की संख्या ९० ।

**नभ**—संज्ञा पुं० [सं० नभस् ] १. पंच तत्त्व में से एक । आकाश । आसमान । गगन । व्योम । २. शून्य स्थान । ३. शून्य । सुन्ना । सिफर । ४. सावन या भादों का महीना । ५. आश्रय । आधार । ६.पास । निकट । नजदीक । ७. शिव । ८. जल । ९ मेघ । बादल । १०. वर्षा ।

**नभगामी**—संज्ञा पुं० [ सं० नभोगामिन् ] १. चंद्रमा । ( हिं० ) २. पक्षी । ३. देवता । ४. सूर्य्य । ५. तारा ।

**नभचर**—संज्ञा पुं० दे० "नभश्चर" ।

**नभधुज***—संज्ञा पुं० [ सं० नभध्वज ] मेघ ।

**नभश्चर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पक्षी । २. बादल । ३. हवा । ४. देवता, गंधर्व और ग्रह आदि ।

वि० आकाश में चलनेवाला ।

**नभस्थल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आकाश ।

**नभःस्थित**—वि० [ सं० ] आकाश में स्थित ।

**नभोमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य ।

**नभोवाणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "रेडियो" ।

**नम**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नमी ] भीगा हुआ । गीला । तर । आर्द्र ।

संज्ञा पुं० [ सं० नमस् ] १. नमस्कार । २. त्याग । ३. अन्न । ४. वज्र । ५. यज्ञ ।

**नमक**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिसका व्यवहार भोज्य पदार्थों में एक प्रकार का स्वाद उत्पन्न करने के लिए थोड़े मान में होता है । लवण । नोन ।

**मुहा०**—नमक अदा करना = अपने पालक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना । ( किसी का ) नमक खाना = ( किसी के द्वारा ) पालित होना । ( किसी का ) दिया खाना । नमक मिर्च मिलाना या लगाना = किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना । नमक फूटकर निकलना=नमकहरामी की सजा मिलना । कृतघ्नता का दंड मिलना । कटे पर नमक छिड़कना =किसी दुखी को और भी दुःख देना ।

२. कुछ विशेष प्रकार का सौंदर्य्य जो अधिक मनोहर या प्रिय हो । लावण्य ।

**नमकख्वार**—वि० [ फ़ा० ] नमक खानेवाला । पालित होनेवाला ।

**नमकसार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो ।

**नमकहराम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नमक + अ० हराम ] [ संज्ञा नमकहरामी ] वह जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे। कृतघ्न।

**नमकहलाल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नमक + अ० हलाल ] [ संज्ञा नमकहलाली ] वह जो अपने स्वामी या अन्नदाता का कार्य धर्मपूर्वक करे। स्वामिनिष्ठ। स्वामिभक्त।

**नमकीन**—वि० [ फ़ा० ] १. जिसमें नमक का सा स्वाद हो। २. जिसमें नमक पड़ा हो। ३. सुंदर। खूबसूरत।

संज्ञा पुं० वह पकवान आदि जिसमें नमक पड़ा हो।

**नमदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।

**नमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० नमनीय, नमित ] १. प्रणाम। नमस्कार। २. झुकाव।

**नमना***†—क्रि० अ० [ सं० नमन ] १. झुकना। २. प्रणाम करना। नमस्कार करना।

**नमनीय**—वि० [ सं० ] १. जिसे नमस्कार किया जाय। आदरणीय। पूजनीय। माननीय। २. जो झुक सके।

**नमस्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] झुककर अभिवादन करना। प्रणाम।

**नमस्कारना***—क्रि० स० [ सं० नमस्कार ] नमस्कार करना।

**नमस्ते**—[ सं० ] एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार है।

**नमाज़**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मि० सं० नमन ] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार होती है।

**नमाज़ी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. नमाज़ पढ़नेवाला। २. वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जाती है।

**नमाना***†—क्रि० स० [ सं० नमन ] १. झुकाना। २. दबाकर अपने अधीन करना।

**नमित**—वि० [ सं० ] झुका हुआ।

**नमिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० नमिश्क ] विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।

**नमी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] गीलापन। आर्द्रता।

**नमुचि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ऋषि का नाम। २. एक दानव जो पहले इंद्र का सखा था, पर पीछे इंद्र द्वारा मारा गया था। ३. एक दैत्य जो शुंभ और निशुंभ का छोटा भाई था।

**नमूना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. अधिक पदार्थ में से निकाला हुआ वह थोड़ा अंश जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ के गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान कराने के लिए होता है। बानगी। ढाँचा। ठाठ। खाका।

**नम्र**—वि० [ सं० ] १. विनीत। जिसमें नम्रता हो। २. झुका हुआ।

**नम्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नम्र होने का भाव। विनय।

**नय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नीति। २. नम्रता।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० नद ] नदी।

**नयकारी***—संज्ञा पुं० [ सं० नृत्यकारी ] १. नाचनेवालों का मुखिया। २. नाचनेवाला। नचनिया।

**नयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चक्षु। नेत्र। आँख। २. ले आना।

**नयनगोचर**—वि० [ सं० ] जो आँखों के सामने हो। समक्ष।

**नयनपट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँख की पलक।

**नयना***†—क्रि० अ० [ सं० नमन ] १. नम्र होना। २. झुकना। लटकना।

*क्रि० स० घटाना। नीचा करना।

†संज्ञा पुं० [ सं० नयन ] आँख। नेत्र।

**नयनागर**—वि० [ सं० ] नीतिज्ञ।

**नयनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आँख की पुतली।

वि० स्त्री० आँखवाली। जैसे—मृगनयनी।

**नयनू**—संज्ञा पुं० [ सं० नवनीत ] १. मक्खन। २. एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

**नयर***—संज्ञा पुं० [ सं० नगर ] नगर।

**नयशील**—वि० [ सं० ] १. नीतिज्ञ। २. विनीत।

**नया**—वि० [ सं० नव ] १. जो थोड़े समय से बना, चला या निकला हो। नवीन। हाल का।

**मुहा०**—नया करना=कोई नया फल या अनाज, मौसिम में पहले पहल खाना। नया पुराना करना=१. पुराना हिसाब साफ करके नया हिसाब चलाना। (महाजनी) २. पुराने को हटाकर उसके स्थान पर नया करना या रखना। २. जो थोड़े समय से मालूम हुआ हो या सामने आया हो। ३. जो पहले था, उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। ४. जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। ५. जिसका आरम्भ बहुत हाल में हुआ हो।

**नयापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० नया + पन (प्रत्य०) ] नया होने का भाव। नवीनता। नूतनत्व।

**नर**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० नरता, नरत्व] १. विष्णु। २. शिव। महादेव। ३. अर्जुन। ४. एक देव-योनि। ५. पुरुष। मर्द। आदमी। ६. वह खूँटी जो छाया आदि जानने के लिए खड़े बल गाड़ी जाती है। शंकु। शंव। ७. सेवक। ८. दोहे का एक भेद जिसमें १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। ९. छप्पय का एक भेद जिसमें १० गुरु और १३ लघु होते हैं। १०. दे० "नर नारायण"। वि० जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो। मादा का उलटा।

संज्ञा पुं० [हिं० नल] पानी का नल।

**नरई**†—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. गेहूँ की बाल का डंठल। २. एक तरह की घास।

**नरकंत***—संज्ञा पुं० [सं० नरकांत] राजा।

**नरक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणों और धर्मशास्त्रों आदि के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिए भेजी जाती है। जहन्नुम। २. बहुत ही गंदा स्थान। ३. वह स्थान जहाँ बहुत अधिक पीड़ा हो।

**नरकगामी**—वि० [सं०] नरक में जानेवाला।

**नरक चतुर्दशी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा-कतवार निकालकर फेंका जाता है।

**नरकचूर**—संज्ञा पुं० दे० "कचूर"।

**नरकट**—संज्ञा पुं० [सं० नल] बेंत की तरह का पोले डंठल का एक प्रसिद्ध पौधा। इसके डंठल कलमें, निगालियाँ, दौरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।

**नरकासुर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध और बहुत धनी असुर, जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से इसका सिर काटा था।

**नरकी**—वि० दे० "नारकी"।

**नरकेसरी**—संज्ञा पुं० [सं०] नृसिंह।

**नरकेहरी**—संज्ञा पुं० दे० "नर-केसरी"।

**नरगिस**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफेद रंग का फूल लगता है। फारसी के कवि इस फूल से आँख की उपमा देते हैं।*

**नरजा**†—संज्ञा पुं० [स्त्री० नरजी] छोटा तराजू।

**नरजी**†—संज्ञा पुं० [?] तौलने वाला।

स्त्री० छोटी तराजू।

**नरतक***—संज्ञा पुं० दे० "नर्त्तक"।

**नरतात**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**नरत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] नर होने का भाव।

**नरद**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नर्द] चौसर खेलने की गोटी।

संज्ञा स्त्री० [सं० नर्द] ध्वनि। नाद।

**नरदन**—संज्ञा स्त्री० [सं० नर्दन=नाद] नाद करना। गरजना।

**नरदमा, नरदा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० नाबदान] मैले पानी का नल।

**नरदारा**—संज्ञा पुं० [सं० नर+सं० दारा] १. हिजड़ा। नपुंसक। २. डरपोक। कायर।

**नरदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। नृपति। २. ब्राह्मण।

**नरनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**नर-नारायण**—संज्ञा पुं० [सं०] नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

**नरनारि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी। पांचाली।

**नरनाह***—संज्ञा पुं० [सं० नरनाथ] राजा।

**नरनाहर**—संज्ञा पुं० [सं० नर+हिं० नाहर] नृसिंह भगवान्।

**नरपति**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**नरपाल**—संज्ञा पुं० [सं० नृपाल] राजा।

**नरपिशाच**—संज्ञा पुं० [सं०] जो मनुष्य होकर भी पिशाचों का-सा काम करे।

**नरबदा**—संज्ञा स्त्री० दे० "नर्मदा"।

**नरभक्षी**—संज्ञा पुं० [सं० नरभक्षिन्] राक्षस।

**नरम**—वि० [फ़ा० नर्म] १. मुलायम। कोमल। मृदु। २. लचकदार। लचीला। ३. तेज का उलटा। मंदा। ४. धीमा। मद्धिम। ५. सुस्त। आलसी। ६. जल्दी पचनेवाला। लघु-पाक। ७. जिसमें पौरुष का अभाव या कमी हो।

**नरमा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नरम] १. एक प्रकार की कपास। मनवा। देव-कपास। राम-कपास। २. सेमर की रूई। ३. कान के नीचे का भाग। लौ। ४. एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

**नरमाई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी"।

**नरमाना**—क्रि० स० [हिं० नरम+आना (प्रत्य०)] १. नरम करना। मुलायम करना। २. शांत करना। धीमा करना।

क्रि० अ० १. नरम होना। मुलायम होना। २. शांत होना। ठंढा होना।

**नरमी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० नर्म ] नरम होने का भाव। मुलायमियत। कोमलता।

**नरमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी।

**नरलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार।

**नरवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "नरई"।

**नरवाह, नरवाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सवारी जिसे मनुष्य उठाकर ले चलते हों। जैसे पालकी आदि।

**नरसल**—संज्ञा पुं० दे० "नरकट"।

**नरसिंह**—संज्ञा पुं० दे० "नृसिंह"।

**नरसिंघा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नर=बड़ा + सिंघा =सींग का बना बाजा ] तुरही की तरह का एक प्रकार का नल के आकार का तांबे का बड़ा बाजा जो फूँककर बजाया जाता है।

**नरसिंह**—संज्ञा पुं० दे० "नृसिंह"।

**नरसों**—क्रि० वि० दे० "अतरसों"।

**नरहरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नृसिंह भगवान् जो दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं।

**नरहरी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है।

**नरांतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण का एक पुत्र जिसे अंगद ने मारा था।

**नराच**—संज्ञा पुं० [ सं० नाराच ] १. तीर। बाण। शर। २. पंच-चामर या नागराज नामक वृत्त।

**नराचिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वितान वृत्त का एक भेद।

**नराज**—वि० दे० "नाराज"।

**नराजना***—क्रि० स० [ फ़ा० नाराज ] अप्रसन्न करना। नाराज करना।

क्रि० अ० अप्रसन्न होना। नाराज होना।

**नराट***†—संज्ञा पुं० [ सं० नरराट् ] राजा।

**नराधिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा।

**नरिंद***†—संज्ञा पुं० [ सं० नरेंद्र ] राजा।

**नरियर**†—संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।

**नरिया**†—संज्ञा पुं० [ हिं० नाली ] एक प्रकार का अर्द्धवृत्ताकार और लंबा मिट्टी का खपड़ा।

**नरियाना**†—क्रि० अ० [ देश० ] जोर से चिल्लाना।

**नरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. सिझाया हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा। २. ढरकी के भीतर की नली जिस पर तार लपेटा रहता है। नार। (जुलाहा) ३. एक घास।

† संज्ञा स्त्री० [ सं० नलिका ] नली। नाली।

संज्ञा स्त्री० [ सं० नर ] स्त्री। नारी।

**नरेन्द्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा। नृप। नरेश। २. वह जो साँप-बिच्छू आदि के काटने का इलाज करे। विष-वैद्य। ३. २८ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

**नरेली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नारियल ] १. नारियल की खोपड़ी। २. नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

**नरेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा। नृप।

**नरोत्तम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ईश्वर।

**नर्क***—संज्ञा पुं० दे० "नरक"।

**नर्त्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० नर्त्तकी ] १. नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला। नट। २. नरकट। ३. चारण। बंदीजन। ४. महादेव। ५. एक प्रकार की जाति।

**नर्त्तकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाचनेवाली।

**नर्त्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नृत्य। नाच।

**नर्त्तना***—क्रि० अ० [ सं० नर्त्तन ] नाचना।

**नर्त्तित**—वि० [ सं० ] नृत्य करता हुआ। नाचता हुआ।

**नर्द**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] चौसर की गोटी।

**नर्दन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भीषण ध्वनि।

**नर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० नर्मन् ] १. परिहास। हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी। २. हँसी-ठट्ठा करनेवाला। सखा।

वि० दे० "नरम"।

**नर्मद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मसखरा। भाँड़।

**नर्मदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मध्य प्रदेश की एक नदी जो अमरकंटक से निकलकर भड़ौंच के पास खंभात की खाड़ी में गिरती है।

**नर्मदेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार के अंडाकार शिवलिंग जो नर्मदा नदी से निकलते हैं।

**नर्मद्युति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रतिमुख संधि के १३ अंगों में से एक। (नाट्य०)

**नर्मसचिव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विदूषक।

**नल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नरकट। २. पद्म। कमल। ३. निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीरसेन के पुत्र। विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयंती के साथ इनका विवाह हुआ था। नल और दमयंती घोर कष्ट भोगने के लिए प्रसिद्ध हैं। ४. राम की सेना का एक बंदर जो विश्वकर्मा का पुत्र माना जाता है। इसी ने पत्थरों को पानी

पर तैराकर लंका विजय के समय समुद्र पर पुल बाँधा था ।
संज्ञा पुं० [ सं० नाल ] १ पोली लंबी चीज । २ धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लंबा खंड । ३. वह मार्ग जिसमें से होकर गंदगी और मैला आदि बहता हो । पनाला । ४.पेड़ू के अन्दर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है । नला ।

**नलकूबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुबेर के एक पुत्र । कहते हैं कि ये और इनके भाई मणिग्रीव नारद के शाप से यमलार्जुन हुए थे । श्रीकृष्ण ने इन्हें स्पर्श करके शाप-मुक्त किया था ।

**नलसेतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रामेश्वर के निकट का समुद्र पर बँधा हुआ वह पुल जो रामचन्द्र ने नल-नील आदि से बनवाया था ।

**नला**—संज्ञा पुं० [ हिं० नल ] १ पेड़ू के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है । नल । २ हाथ या पैर की नली के आकार की लंबी हड्डी ।

**नलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नल के आकार की कोई वस्तु । चोंगा । नली । २. मूँगे के आकार का एक प्रकार का गंध-द्रव्य । ३. प्राचीन काल का एक अस्त्र । नाल । ४. तरकश जिसमें तीर रखते हैं ।

**नलिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमल । २. जल । ३. सारस । ४. नीली कुमुदिनी ।

**नलिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमलिनी । कमल । २.वह देश जहाँ कमल अधिकता से होते हों । ३. पुराणानुसार गंगा की एक धारा का नाम । ४. नलिका नामक गंध-द्रव्य । ५. नदी । ६. एक वर्णवृत्त । मनहरण । भ्रमरावली ।

**नलिनीरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मृणाल । कमल की नाल । २. ब्रह्मा ।

**नली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नल का स्त्री० अल्पा० ] १. छोटा या पतला नल । छोटा चोंगा । २. नल के आकार की भीतर से पोली हड्डी जिसमें मज्जा भी होती है । ३. घुटने से नीचे का भाग । पैर की पिंडली । ४. बंदूक की नली जिसमें होकर गोली गुजरती है ।

**नलुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० नल=नला ] छोटा नल या चोंगा ।

**नव**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा नवता ] नया । नवीन । नूतन ।
वि० [ सं० नवन् ] नौ । आठ और एक ।

**नवक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ही तरह की नौ का समूह ।

**नवका***—संज्ञा स्त्री० [ सं० नौका ] नाव ।

**नवकुमारी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नवरात्र में पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमें नौ देवियों की कल्पना की जाती है ।

**नवखंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी के नौ खंड—भारत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य ।

**नवग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फलित ज्योतिष में सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह ।

**नवछावरि***†-संज्ञा स्त्री० दे० "न्यौछावर" ।

**नव-जात**—वि० [सं०] जो अभी पैदा हुआ हो ।

**नवतन**†*—वि० [सं० नवीन] नया ।

**नवदुर्गा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र में नौ दिनों तक क्रमशः पूजा होती है । यथा—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा ।

**नवधा भक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नौ प्रकार की भक्ति । यथा—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन ।

**नवन***—संज्ञा पुं० "नमन" ।

**नवना***†—क्रि० अ० [ सं० नमन ] १. झुकना । २. नम्र होना ।

**नवनि**†*—संज्ञा स्त्री० [हिं० नवना] १. झुकने की क्रिया या भाव । २. नम्रता । दीनता ।

**नवनीत**—संज्ञा पुं० [सं०] मक्खन ।

**नवपदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चौपई या जनकरी छंद का एक नाम ।

**नवम**—वि० [ सं० ] जो गिनती में नौ के स्थान पर हो । नवाँ ।

**नवमल्लिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ चमेली । २. नेवारी ।

**नवमालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नगण, जगण, भगण और यगण का एक वर्णवृत्त । नवमालिनी । २. नेवारी का फूल ।

**नवमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि ।

**नवयुवक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० नवयुवती ] नौजवान । तरुण ।

**नवयुवा**-संज्ञा पुं० दे० "नवयुवक" ।

**नवयौवना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसके यौवन का आरंभ हो । नौजवान औरत ।

**नवरंग**—वि० [ सं० नव + हिं० रंग ] १. सुंदर । रूपवान् । २. नए ढंग का । नवेला ।

**नवरंगी**—वि० [ हिं० नवरंग+ई

(प्रत्य०)] १. नित्य नए आनंद करनेवाला। २ हँसमुख। खुशमिजाज।

**नवरत्न**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न या जवाहिर। २. राजा विक्रमादित्य की एक कल्पित सभा के नौ पंडित—धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि। ३. गले में पहनने का नौ रत्नों का हार।

**नवरस**—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य के ये नौ रस—शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत।

**नवरात्र**—संज्ञा पुं० [सं०] चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ नौ दिन जिनमें लोग नवदुर्गा का व्रत, घटस्थापन तथा पूजन आदि करते हैं।

**नवल**—वि० [सं०] [स्त्री० नवला] १. नवीन। नया। २. सुंदर। ३. जवान। युवा। ४. उज्ज्वल।

**नवल-अनंगा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

**नवलकिशोर**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

**नवल-बधू**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

**नवला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] युवती।

**नवशिक्षित**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौसिखुआ। २. वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

**नवसत***—संज्ञा पुं० [सं० नव+सत=सप्त] नव और सात, सोलह शृंगार।

वि० सोलह। षोडश।

**नवसप्त**—संज्ञा पुं० [सं०] नौ और सात, सोलह शृंगार।

**नवसर**—संज्ञा पुं० [हिं० नौ+सं० सृक] नौ लड़ का हार।

वि० [सं० नव+वत्सर] नवयुवक।

**नवससि***—संज्ञा पुं० [सं० नवशशि] द्वितीया या दूज का चाँद। नया चाँद।

**नवसात***—संज्ञा पुं० दे० "नवसत"।

**नवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नवना] विनीत होने का भाव।

†* वि० नया। नवीन।

**नवागत**—वि० [सं०] नया आया हुआ।

**नवाज**—वि० [फ़ा०] कृपा करनेवाला।

**नवाजना**†*—क्रि० स० [फ़ा० नवाज] कृपा करना। दया दिखलाना।

**नवाजिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] कृपा। दया।

**नवाड़ा**—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार की छोटी नाव। २. नाव को बीच धारा में ले जाकर चक्कर देने की क्रीड़ा। नावर।

**नवाना**—क्रि० स० [सं० नमन] १. झुकाना। २. विनीत करना।

**नवान्न**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फसल का नया अनाज। २. एक प्रकार का श्राद्ध।

**नवाब**—संज्ञा पुं० [अ० नव्वाब] १. मुगल सम्राटों के समय बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त होता था। २. एक उपाधि जो आजकल छोटे-मोटे मुसलमानी राज्यों के मालिक अपने नाम के साथ लगाते हैं। ३ राजा की उपाधि के समान एक उपाधि जो भारतीय मुसलमान अमीरों को अँगरेजी सरकार की ओर से मिलती थी।

वि० बहुत शान-शौकत और अमीरी ढंग से रहने तथा खूब खर्च करनेवाला।

**नवाबी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नवाब+ई (प्रत्य०)] १. नवाब का पद। २. नवाब का काम। ३. नवाब होने की दशा। ४. नवाबों का राजत्व काल। ५. नवाबों की सी हुकूमत। ६. बहुत अधिक अमीरी।

**नवासा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [स्त्री० नवासी] बेटी का बेटा। दौहित्र।

**नवाह**—संज्ञा पुं० [सं०] रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।

**नवीन**—वि० [सं०] १. हाल का। ताजा। नया। नूतन। २. विचित्र। अपूर्व। ३. [स्त्री० नवीना] नवयुवक। जवान।

**नवीनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नवीन या नया होने का भाव। नूतनता।

**नवीस**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] लिखनेवाला। लेखक। कातिब।

**नवीसी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

**नवेद**—संज्ञा पुं० [सं० निवेदन] १. निमंत्रण। न्योता। २. निमंत्रणपत्र।

**नवेला**—वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १. नवीन। नया। २. तरुण। जवान।

**नवोढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नवविवाहिता स्त्री। वधू। २. नवयौ-

वधू। युवती स्त्री। ३. साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।

**नव्य**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा नव्यता ] नया। नूतन। नवीन।

**नशना***—क्रि० अ० [ सं० नाश ] नष्ट होना।

**नशा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० या अ० ? ] वह अवस्था जो शराब, अफीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है।

**मुहा०**—नशा किरकिरा हो जाना=किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा छाना=नशा चढ़ना। मस्ती चढ़ना। नशा जमना=अच्छी तरह नशा होना। नशा हिरन होना=किसी असंभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।

२. वह चीज जिससे नशा हो। मादक द्रव्य।

**यौ०**—नशा-पानी=मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। नशे का सामान।

३. धन, विद्या, प्रभुत्व या रूप आदि का घमंड। अभिमान। मद। गर्व।

**मुहा०**—नशा उतारना=घमंड दूर करना।

**नशाखोर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो नशे का सेवन करता हो। नशे-बाज।

**नशाना***—क्रि० स० [ सं० नाश ] नष्ट करना।

**नशावन***†—वि० [ सं० नाश ] नाश करना।

**नशीन**—वि० [ फ़ा० ] बैठनेवाला।

**नशीनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] बैठने की क्रिया या भाव।

**नशीला**—वि० [ फ़ा० नशा + ईला (प्रत्य०) ] १. नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २. जिसपर नशे का प्रभाव हो।

**मुहा०**—नशीली आँखें = वे आँखें जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

**नशेबाज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो।

**नशोहर**†—वि० [ सं० नाश + ओहर ] नाशक।

**नश्तर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार का बहुत तेज छोटा चाकू। इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।

**नश्वर**—वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

**नश्वरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नश्वर का भाव।

**नष***—संज्ञा पुं० दे० "नख"।

**नषत***—संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

**नष्ट**—वि० [ सं० ] १. जो अदृश्य हो। जो दिखाई न दे। २. जिसका नाश हो गया हो। जो बरबाद हो गया हो। ३. अधम। नीच। ४. निष्फल। व्यर्थ।

**नष्टता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नष्ट होने का भाव। २. वाहियात-पन। दुराचारिता।

**नष्टबुद्धि**—वि० [ सं० ] मूर्ख। मूढ़।

**नष्ट-भ्रष्ट**—वि० [ सं० ] जो बिलकुल टूट-फूट या नष्ट हो गया हो।

**नष्टा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेश्या। रंडी। २. व्यभिचारिणी। कुलटा।

**नसंक***†—वि० [ सं० निःशंक ] निर्भय।

**नस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्नायु ] १. शरीर के भीतर तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने के लिए होता है (जैसे, घोड़ानस)। साधारण बोलचाल में कोई शरीर-तंतु या रक्तवाहिनी नली।

**मुहा०**—नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना=खिंचाव, दबाव या झटके आदि के कारण शरीर में किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर-उधर हो जाना या बल खा जाना। नस नस में=सारे शरीर में। सर्वांग में। नस नस फड़क उठना=बहुत अधिक प्रसन्नता होना।

२. वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच बीच में होते हैं।

**नस-तरंग**—संज्ञा पुं० [ हिं० नस+तरंग ] शहनाई के आकार का पीतल का एक बाजा जिसको गले की घंटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

**नसतालीक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. फारसी या अरबी लिपि लिखने का वह ढंग जिसमें अक्षर खूब साफ और सुंदर होते हैं। 'घसीट' या 'शिकस्त' का उलटा। २. वह जिसका रंग-ढंग बहुत अच्छा और सुंदर हो।

**नसना***†—क्रि० अ० [ सं० नशन ] १. नष्ट होना। बरबाद होना। २. बिगड़ जाना।

क्रि० अ० [ हिं० नटना ] भागना।

**नसल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वंश।

**नसवार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नास+

वार (प्रत्य०)] सूँघने के लिए तमाकू के पीसे हुए पत्ते। सुँघनी। नास।

**नसाना*†**—क्रि० अ० [ सं० नाश ] १. नष्ट हो जाना। २.बिगड़ जाना।

**नसावना‡**—क्रि० अ० दे० "नसाना"।

**नसीत***—संज्ञा स्त्री० दे० "नसीहत"।

**नसीनी†**—संज्ञा स्त्री० [ सं० निःश्रेणी ] सीढ़ी।

**नसीब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] भाग्य। प्रारब्ध।

**मुहा०**—नसीब होना=प्राप्त होना। मिलना।

**नसीबवर**—वि० [ अ० ] भाग्यवान्।

**नसीबा†**—संज्ञा पुं० दे० "नसीब"।

**नसीहत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. उपदेश। शिक्षा। सीख। २. अच्छी सम्मति।

**नसेनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्रेणी ] सीढ़ी।

**नस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नास। सुँघनी। २. वह दवा या चूर्ण आदि जिसे नाक के रास्ते दिमाग में चढ़ाते हैं।

**नस्वर*†**—वि० दे० "नश्वर"।

**नहँ‡**—संज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

**नहछू**—संज्ञा पुं० [ सं० नखक्षौर ] विवाह की एक रस्म जिसमें वर की हजामत बनती है,नाखून काटे जाते हैं और उसे मेहँदी आदि लगायी जाती है।

**नहन**—संज्ञा पुं० [ देश० ] पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

**नहना***—क्रि० स० [ हिं० नाधना ] नाधना। काम में लगाना। जोतना।

**नहर**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ] वह कृत्रिम जल-मार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा आदि के लिए तैयार किया जाता है।

**नहरनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० नखहरणी ] हज्जामों का एक औजार जिससे नाखून काटे जाते हैं।

**नहरुआ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का रोग जिसमें एक घाव में से डोरी की तरह का कीड़ा धीरे-धीरे निकलता है।

**नहला**—संज्ञा पुं० [ हिं० नौ ] ताश का वह पत्ता जिस पर नौ बूटियाँ होती हैं।

**नहलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नहलाना ] नहलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**नहलाना**—क्रि० स० [ हिं० नहाना का सं० ] दूसरे को स्नान कराना। नहवाना।

**नहवाना**—क्रि० स० दे० "नहलाना"।

**नहसुत**—क्रि० स० [ सं० नखसुत ] नख की रेखा। नाखून का निशान।

**नहान**—संज्ञा पुं० [ सं० स्नान ] १. नहाने की क्रिया। २. स्नान का पर्व।

**नहाना**—क्रि० अ० [ सं० स्नान ] १. शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिए उसे जल से धोना। स्नान करना।

**मुहा०**—दूधों नहाना पूतों फलना=धन और परिवार से पूर्ण होना। (आशीर्वाद)।

२. किसी तरल पदार्थ से सारे शरीर का आप्लुत हो जाना। बिलकुल तर हो जाना।

**नहार**—वि० [ फा०, मि० सं० निराहार ] जिसने सबेरे से कुछ खाया न हो। बासीमुँह।

**नहारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० नहार ] जलपान।

**नहिं***—अव्य० दे० "नहीं"।

**नहीं**—अव्य० [ सं० नहिं ] एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति प्रकट करने के लिए होता है।

**मुहा०**—नहीं तो=उस दशा में जब कि यह बात न हो। नहीं सही=यदि ऐसा न हो तो कोई परवा या हानि नहीं।

**नहुष**—संज्ञा पुं [सं०] १. अयोध्या का एक प्राचीन इक्ष्वाकुवंशी राजा जो अंबरीष का पुत्र और ययाति का पिता था। २. एक नाग का नाम। ३. विष्णु।

**नहूसत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मनहूस होने का भाव। उदासीनता। खिन्नता। मनहूसी। २. अशुभ लक्षण।

**नाँउँ**—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

**नाँगा**—वि० दे० "नंगा"।

संज्ञा पुं० [ हिं० नंगा ] एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते हैं। नागा।

**नाँघना*†**—क्रि० स० [ सं० लंघन ] लाँघना। इस पार से उस पार उछलकर जाना।

**नाँठना***—क्रि० अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना।

**नाँद**—संज्ञा स्त्री० [सं० नदक] मिट्टी का वह बड़ा और चौड़ा बरतन जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है। हौदी।

**नाँदना***—क्रि० अ० [ सं० नाद ] १. शब्द करना। शोर करना। २. छींकना।

क्रि० अ० [सं० नंदन] १. आनंदित होना। २. दीपक का बुझने के पहले भभकना।

**नांदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अभ्युदय। समृद्धि। २. वह आशीर्वादात्मक श्लोक या पद्य जिसका सूत्रधार नाटक आरंभ करने के पहले पाठ करता है। मंगलाचरण।

**नांदीमुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक आभ्युदयिक श्राद्ध जो विवाह आदि

मंगल अवसरों पर किया जाता है। वृद्धिश्राद्ध।

**नांदीमुखी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दो नगण, दो तगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।

**नायँ*†**—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।

**नाँवँ**—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

**नाँह***—संज्ञा पुं० [सं० नाथ] स्वामी।

**ना**—अव्य० [ सं० ] नहीं। न।

**नाइक***—संज्ञा पुं० दे० "नायक"।

**नाइत्तिफ़ाक़ी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] मेल का अभाव। फूट। मतभेद। विरोध।

**नाइन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाई ] १. नाई जाति की स्त्री। २. नाई की स्त्री।

**नाइब***—संज्ञा पुं० दे० "नायब"।

**नाईं**—संज्ञा स्त्री० [सं० न्याय] समान दशा।
वि० स्त्री० समान। तुल्य।

**नाई**—संज्ञा पुं० [सं० नापित] नाऊ। हज्जाम।

**नाउँ†***—संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

**नाउ*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "नाव"।

**नाउन†**—संज्ञा स्त्री० दे० "नाइन"।

**नाउम्मेद**—वि० [ फ़ा० ] निराश।

**नाउम्मेदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] निराशा।

**नाऊ†**—संज्ञा पुं० दे० "नाई"।

**नाकंद**—वि० [ फ़ा० ना+कंदः ] बिना निकाला हुआ (घोड़ा आदि)। अल्हड़। अशिक्षित। बिना सिखाया हुआ।

**नाक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नक्र ] १. ओठों और आँखों के बीच की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय। नासा। नासिका।

**यौ०**—नाक घिसनी=विनती और गिड़गिड़ाहट।

**मुहा०**—नाक कटना=प्रतिष्ठा नष्ट होना। इज्जत जाना। नाक-कान काटना=कड़ा दंड देना। (किसी की) नाक का बाल=सदा साथ रहनेवाला घनिष्ट मित्र या मंत्री। नाक चढ़ना=क्रोध आना। त्योरी चढ़ना। नाकों चने चबवाना=खूब तंग करना। हैरान करना। नाक-भौं चढ़ाना या नाक-भौं सिकोड़ना=१. अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना। २. घिनाना और चिढ़ना। नापसंद करना। नाक में दम करना या नाक में दम लाना=खूब तंग करना। बहुत हैरान करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना=बहुत गिड़गिड़ाना और विनती करना। मिन्नत करना। नाकों आना=हैरान हो जाना। बहुत तंग होना। नाक सिकोड़ना=अरुचि या घृणा प्रकट करना। घिनाना।

२. कपाल के केशों आदि का मल जो नाक से निकलता है। रेंट। नेटा।

**यौ०**—नाक सिनकना=जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

३. प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत। मान।

**मुहा०**—नाक रख लेना=प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।

संज्ञा पुं० [सं० नक्र] मगर की जाति का एक प्रसिद्ध जलजंतु।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वर्ग। २. अंतरिक्ष। आकाश। ३. अस्त्र का एक आघात।

**नाकड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाक+ड़ा (प्रत्य०) ] एक रोग जिसमें नाक पक जाती है।

**नाकदर**—वि० [फ़ा० ना+अ० क़द्र] [ संज्ञा नाकदरी ] जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो।

**नाकना***—क्रि० स० [ सं० लंघन ] १. लाँघना। उल्लंघन करना। २. बढ़ जाना। मात कर देना।

**नाकबुद्धि**—वि० [हिं० नाक+बुद्धि] क्षुद्र बुद्धिवाला। ओछी समझ का।

**नाका**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाकना ] १. रास्ते आदि का छोर। प्रवेश-द्वार। मुहाना। २. गली या रास्ते का आरंभ-स्थान। ३. नगर, दुर्ग आदि का प्रवेश-द्वार। फाटक।

**मुहा०**—नाका छेंकना या बाँधना=आने जाने का मार्ग रोकना।

४. वह प्रधान स्थान जहाँ निगरानी रखने, या महसूल आदि वसूल करने के लिए सिपाही तैनात हों। ५. सूई का छेद।

**नाकाबंदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० नाका+फ़ा० बंदी] किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट।

**नाकाबिल**—वि० [फ़ा०] अयोग्य। नालायक।

**नाकाम**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नाकामी] १. विफल-मनोरथ। २. निराश।

**नाकिस**—वि० [अ०] बुरा। खराब।

**नाकुली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नकुल ] एक प्रकार का कंद जो सर्प के विष को दूर करता है।

**नाकेदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाका+फ़ा० दार (प्रत्य०) ] १. नाके या फाटक पर रहनेवाले सिपाही। २. वह अफसर जो आने-जाने के प्रधान स्थानों पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिए तैनात हो।
वि० जिसमें नाका या छेद हो।

**नाकेबंदी**—संज्ञा स्त्री० दे० "नाकाबंदी"।

**नाक्षत्र**—वि० [ सं० ] नक्षत्र-संबंधी ।

**नाखना***†—क्रि० स० [ सं० नष्ट ] १. नाश करना । नष्ट कर देना । २. फेंकना । गिराना ।

क्रि० स० [ हिं० नाकना ] उल्लंघन करना ।

**नाखुना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] आँख का एक रोग जिसमें एक लाल झिल्ली सी आँख की सफेदी में पैदा होती है ।

**नाखुश**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नाखुशी ] अप्रसन्न । नाराज ।

**नाखून**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नाखुन ] १. उँगलियों के छोर पर चिपटे किनारे या नोक की तरह निकली हुई कड़ी वस्तु । नख । नहँ । २. चौपायों की टाप या खुर का बढ़ा हुआ किनारा ।

**नाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० नागिन ] १. सर्प । साँप ।

**मुहा०**—नाग खेलाना=ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो । २. कद्रू से उत्पन्न कश्यप की संतान जिनका स्थान पाताल लिखा गया है । ३. एक देश का नाम जो हिमालय के उस पार था । ४. इस देश में बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा मानी जाती है । ५. एक पर्वत । ( महाभारत ) ६. हाथी । हस्ति । ७. राँगा । ८. सीसा । (धातु) ९. नागकेसर । १०. पुन्नाग । ११. पान । तांबूल । १२. नागवायु । १३. बादल । १४. आठ की संख्या । १५. दुष्ट या क्रूर मनुष्य ।

**नागकन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाग जाति की कन्या जो बहुत सुंदर मानी गई है ।

**नागकेसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक सीधा सदाबहार पेड़ । इसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं । नागचंपा ।

**नागझाग***—संज्ञा पुं० [ हिं० नाग+झाग ] अफीम ।

**नागदमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नागदौन ।

**नागदौन**—संज्ञा पुं० [ सं० नागदमन ] १. छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़ । कहते हैं, इसकी लकड़ी के पास साँप नहीं आते । २. दे० "नागदौना" ।

**नागनग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गजमुक्ता ।

**नागना***—क्रि० अ० [ हिं० नागा ] नागा करना । अंतर डालना ।

**नागपंचमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सावन सुदी पंचमी ।

**नागपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सर्पों का राजा वासुकि । २. हाथियों का राजा ऐरावत ।

**नागपाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे ।

**नागफनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाग+फन ] १. थूहर की जाति का एक पौधा जिसके चौड़े मोटे पत्तों पर जहरीले काँटे होते हैं । २. कान में पहनने का एक गहना ।

**नागफाँस**—संज्ञा पुं० दे० "नागपाश" ।

**नागबला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गँगेरन ।

**नागबेल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नागवल्ली ] पान की बेल । बान ।

**नागर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० नागरी ] १. नगर-संबंधी । २. नगर में रहनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला मनुष्य । २. चतुर आदमी । सभ्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति । ३. देवर । ४. गुजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति ।

**नागरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नागरिकता । शहरातीपन । २. नगर का रीति-व्यवहार । सभ्यता । ३. चतुराई ।

**नागरबेल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नागवल्ली ] पान ।

**नागरमुस्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नागरमोथा ।

**नागरमोथा**—संज्ञा पुं० [ सं० नागरमुस्ता ] एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है ।

**नागराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शेषनाग । २. ऐरावत । ३. 'पंचामर' या 'नाराच' नामक छंद ।

**नागरिक**—वि० [ सं० ] १. नगर-संबंधी । नगर का । २. नगर में रहने वाला । शहराती । ३. चतुर । सभ्य ।

**नागरिकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नागरिक के अधिकारों से संपन्न होने की अवस्था ।

**नागरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नगर की रहनेवाली स्त्री । २. चतुर स्त्री । प्रवीण स्त्री । ३. भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत और हिंदी लिखी जाती है । देवनागरी । खड़ी बोली ।

**नागलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] पाताल ।

**नागवंश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शक जाति की एक शाखा, जिसका राज्य भारत के कई स्थानों और सिंहल में भी था ।

**नागवल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पान।

**नागवार**—वि० [ फ़ा० ] १. असह्य। २. जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

**नागा**—संज्ञा पुं० [ सं० नग्न ] उस संप्रदाय का शैव साधु जिसमें लोग नंगे रहते हैं।

संज्ञा पुं० [ सं० नाग ] १. आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जंगली जाति। २. आसाम में वह पहाड़ जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है।

संज्ञा पुं० [ अ० नाग़ा ] किसी निरंतर या नियत समय पर होनेवाली बात का किसी दिन या किसी नियत अवसर पर न होना। अंतर। बीच।

**नागार्जुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन बौद्ध महात्मा या बोधिसत्त्व जो माध्यमिक शाखा के प्रवर्त्तक थे।

**नागाशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गरुड़। २. मयूर। ३. सिंह।

**नागिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाग ] १. नाग की स्त्री। साँप की मादा। २. रोयों की लंबी भौंरी जो पीठ पर होती है। ( अशुभ )

**नागेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ा सर्प। २. शेष, वासुकि आदि नाग। ३. ऐरावत।

**नागेसर**—संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर"।

**नागौर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नव+नगर] मारवाड़ के अंतर्गत एक नगर।

**नागौरी**—वि० [ हिं० नागौर ] नागौर का अच्छी जाति का ( बैल, बछड़ा आदि )।

वि० स्त्री० नागौर की। अच्छी जाति की (गाय)।

**नाच**—संज्ञा पुं० [ सं० नाट्य ] १. अंगों की वह गति जो हृदयोल्लास के कारण मनमानी अथवा संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार और हाव-भाव-युक्त हो।

**मुहा०**—नाच काछना=नाचने के लिए तैयार होना। नाच दिखाना=१. उछलना, कूदना। हाथ-पैर हिलाना। =२. विलक्षण आचरण करना। नाच नचाना=१. जैसा चाहना, वैसा काम कराना। २. दिक करना।

२. नृत्य। नाट्य। खेल। ३. कृत्य। कर्म।

**नाच-कूद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाच+कूद ] १. नाच-तमाशा। २. आयोजन। प्रयत्न। ३. गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग। डींग। ४. क्रोध से उछलना।

**नाचघर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाच+घर ] वह स्थान जहाँ नाच हो। नृत्यशाला।

**नाचना**—क्रि० अ० [ हिं० नाच ] १. चित्त की उमंग से उछलना, कूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टा करना। २. संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार हाव-भावपूर्वक कूदना, फिरना तथा इसी प्रकार की और चेष्टाएँ करना। थिरकना। नृत्य करना। ३. भ्रमण करना। चक्कर मारना। घूमना।

**मुहा०**—सिर पर नाचना=१. घेरना। ग्रसना। २. पास आना। निकट आना। आँख के सामने नाचना=अंतःकरण में प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना।

४. उद्योग में इधर से उधर फिरना। दौड़ना-धूपना। ५. थर्राना। काँपना। ६. क्रोध में आकर उछलना-कूदना। बिगड़ना।

**नाच-महल**—संज्ञा पुं० दे० "नाचघर"।

**नाच-रंग**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाच+रंग ] आमोद-प्रमोद। जलसा।

**नाचार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नाचारी ] विवश। लाचार।

**नाचीज़**—वि० [ फ़ा० ] तुच्छ। पोच।

**नाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० अनाज ] १. अन्न। अनाज। २. खाद्य द्रव्य। भोज्य सामग्री।

**नाज़**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. नखरा। चोचला।

**मुहा०**—नाज उठाना=चोचला सहना।

२. घमंड। गर्व।

**नाज़नीं**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा०] सुंदरी स्त्री।

**नाज़बरदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] नाज या नखरे झेलनेवाला।

**नाज़-बरदारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] नाज उठाना। चोचले सहना।

**नाजायज़**—वि० [ अ० ] जो जायज न हो। जो नियमविरुद्ध हो। अनुचित।

**नाज़िम**—वि० [ अ० ] प्रबंधकर्त्ता।

संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमानी राज्य-काल में वह प्रधान कर्मचारी जिस पर किसी देश के प्रबंध का भार रहता था।

**नाज़िर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. निरीक्षक। देखभाल करनेवाला। २. लेखकों का अफसर। ३. ख्वाजा। महलसरा। ४. वेश्याओं का दलाल।

**नाज़िल**—वि० [ अ० ] ऊपर से उतरनेवाला।

**नाज़ी**—संज्ञा पुं० १. आधुनिक जर्मनी का वह बहुत बलवान् दल जो अपने आपको राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था और जो दूसरे महायुद्ध में नष्ट हो

गया। २. इस दल का सदस्य।

**नाजुक**—वि० [ फ़ा० ] १. कोमल। सुकुमार। २. पतला। महीन। बारीक। ३. सूक्ष्म। गूढ़। ४. जरा से झटके या धक्के से टूट-फूट जानेवाला।

**यौ०**—नाजुक मिजाज=जो थोड़ा सा कष्ट भी न सह सके।

५. जिसमें हानि या अनिष्ट की आशंका हो। जोखों का।

**नाजो**—वि० स्त्री० [ हिं० नाज ] १. दुलारी। २. प्रियतमा। ३. नाजनी।

**नाट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नृत्य। नाच। २. नकल। स्वाँग। ३. एक देश जो कर्नाटक के पास था। ४. यहाँ का निवासी।

**नाटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाट्य या अभिनय करनेवाला। नट। २. रंगशाला में नटों की आकृति, हाव-भाव, वेष और वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। ३. वह ग्रंथ या काव्य जिसमें स्वाँग के द्वारा दिखाया जानेवाला चरित्र हो। दृश्य-काव्य। अभिनय-ग्रंथ।

**नाटककार**—संज्ञा पुं० नाटक का रचयिता।

**नाटकशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता हो।

**नाटकावतार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय।

**नाटकिया, नाटकी**—वि० [ हिं० नाटक ] नाटक का अभिनय करनेवाला।

**नाटकीय**—वि० [ सं० ] नाटक-संबंधी।

**नाटना**—क्रि० अ० [ सं० नाट्य=बहाना ] प्रतिज्ञा आदि पर स्थिर न रहना। निकल जाना।

क्रि० स० अस्वीकार करना। इनकार करना।

**नाटा**—वि० [ सं० नत=नीचा ] [ स्त्री० नाटी ] जिसका डील ऊँचा न हो। छोटे कद का।

**नाटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का दृश्य-काव्य जिसमें चार अंक होते हैं।

**नाट्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नटों का काम। नृत्य, गीत और वाद्य। २. स्वाँग के द्वारा चरित्र-प्रदर्शन। अभिनय। ३. स्वाँग।

**नाट्यकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाटक करनेवाला। नट।

**नाट्यमंदिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाट्यशाला।

**नाट्यरासक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ही अंक का एक प्रकार का उपरूपक दृश्य-काव्य।

**नाट्यशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ पर अभिनय किया जाय।

**नाट्यशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। २. भरत मुनि कृत एक प्राचीन ग्रंथ।

**नाट्यालंकार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह विशेष अलंकार जिसके आने से नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है।

**नाट्योक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वे विशेष विशेष संबोधन शब्द जो विशेष विशेष व्यक्तियों के लिए नाटकों में आते हैं—जैसे, ब्राह्मण के लिए आर्य्य।

**नाठ***—संज्ञा पुं० [ सं० नष्ट ] १. नाश। ध्वंस। २. अभाव। अनस्तित्व।

**नाठना***—क्रि० स० [ सं० नष्ट ] नष्ट करना। ध्वस्त करना।

क्रि० अ० नष्ट होना। ध्वस्त होना।

क्रि० अ० [ हिं० नाटना ] भागना। हटना।

**नाठा**—संज्ञा पुं० [ सं० नष्ट ] वह जिसके आगे पीछे कोई वारिस न हो।

**नाड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नाल ] ग्रीवा। गर्दन।

**नाड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० नाड़ी ] १. सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा या धोती बाँधती हैं। इजारबंद। नीवी। २. लाल या पीला रँगा हुआ गंडेदार सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।

**नाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नली। २. साधारणतः शरीर के भीतर की वे नलियाँ जिनमें होकर रक्त बहता है। धमनी।

**मुहा०**—नाड़ी चलना=कलाई की नाड़ी में स्पंदन या गति होना। नाड़ी छूट जाना=१. नाड़ी का न चलना। २. प्राण न रह जाना। मृत्यु हो जाना। ३. मूर्च्छा आना। बेहोशी आना। नाड़ी देखना=कलाई की नाड़ी दबाकर रोगी की अवस्था का पता लगाना।

३. हठयोग के अनुसार ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वास-वाहिनी नालियाँ। ४. व्रणरंध्र। नासूर का छेद। ५. बंदूक की नली। ६. काल का एक मान जो छः क्षण का होता है।

**नाड़ीचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] हठयोग के अनुसार नाभिदेश में एक अंडाकार गाँठ जिससे निकलकर सब नाड़ियाँ फैली हैं।

**नाड़ीमंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] विषुव-द्रेखा।

**नाड़ीवलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काल या समय निश्चित करने का एक यंत्र।

**नात**†—संज्ञा पुं० [ सं० ज्ञाति ] १. नातेदार। संबंधी। २. नाता। संबंध।

**नातरफदार**—वि० [हिं० ना + फ़ा० तरफदार ] [ भाव० ना-तरफदारी ] जो किसी एक पक्ष की तरफ न हो।

तटस्थ।

**नातरु***—अव्य० [ हिं० न+तो+अरु ] और नहीं तो। अन्यथा।

**नातवाँ**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नातवानी ] कमजोर। दुर्बल।

**नाता**—संज्ञा पुं० [ सं० ज्ञाति ] १. दो या कई मनुष्यों के बीच वह लगाव जो एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह आदि के कारण होता है। ज्ञाति-संबंध। रिश्ता। २. संबंध। लगाव।

**नाताकत**—वि० [ फ़ा० ना+अ० ताक़त ] जिसे ताकत या बल न हो। निर्बल।

**नाती**—संज्ञा पुं० [सं० नप्तृ] [ स्त्री० नतिनी, नातिन ] लड़की या लड़के का लड़का। बेटी या बेटे का बेटा।

**नाते**—क्रि० वि० [ हिं० नाता ] १. संबंध से। २. हेतु। वास्ते। लिए।

**नातेदार**—वि० [ हिं० नाता+फ़ा० दार ] [ संज्ञा नातेदारी ] संबंधी। रिश्तेदार। सगा।

**नात्सी**—संज्ञा पुं० दे० "नाज़ी"।

**नाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रभु। स्वामी। अधिपति। मालिक। २. पति। ३. वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें वश में करने के लिए डाल देते हैं।

संज्ञा स्त्री० [हिं० नाथना] १. नाथने की क्रिया या भाव। २. जानवरों की नकेल।

**नाथना**—क्रि० स० [ हिं० नाथ ] १. बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उसमें इसलिए रस्सी डालना जिसमें वे वश में रहें। नकेल डालना। २. किसी वस्तु को छेदकर उसमें रस्सी या तागा डालना। ३. नत्थी करना। ४. लड़ी के रूप में जोड़ना।

**नाथद्वारा**—संज्ञा पुं० [सं० नाथद्वार] उदयपुर राज्य के अंतर्गत वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित है।

**नाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शब्द। आवाज। २. वर्णों का अव्यक्त रूप। ३. वर्णों के उच्चारण में एक प्रयत्न जिसमें कंठ को न तो बहुत अधिक फैलाकर और न संकुचित करके वायु निकालनी पड़ती है। ४. सानुनासिक स्वर। अर्द्धचंद्र। ५. संगीत।

**यौ०**—नादविद्या=संगीत-शास्त्र।

**नादना***—क्रि० स० [ सं० नदन ] बजाना।

क्रि० अ० १. बजना। शब्द करना। २. चिल्लाना। गरजना।

क्रि० अ० [ सं० नंदन ] लहकना। लहलहाना। प्रफुल्लित होना।

**नादली**—संज्ञा स्त्री० [ अ० नाद+अली ] संगयशब नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिसे हृदय की रोग-बाधा दूर करने के लिए यंत्र की तरह पहनते हैं। हौलदिली।

**नादान**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नादानी] नासमझ। अनजान। मूर्ख।

**नादार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नादारी] निधन।

**नादिम**—वि० [ अ० ] लज्जित।

**नादित**—वि० [सं०] जिसमें नाद या शब्द होता हो। शब्दित।

**नादिया**—संज्ञा पुं० [ सं० नंदी ] १. नंदी। २. वह बैल जिसे लेकर जोगी भीख माँगते हैं।

**नादिर**—वि० [ फ़ा० ] अद्भुत। अनोखा।

**नादिरशाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] भारी अंधेर या अत्याचार।

वि० बहुत कठोर और उग्र।

**नादिहंद**—वि० [फ़ा०] न देनेवाला। जिससे रकम वसूल न हो।

**नादी**—वि० [ सं० नादिन् ] [ स्त्री० नादिनी ] १. शब्द करनेवाला। २. बजनेवाला।

**नाधना**—क्रि० स० [ सं० नद्ध ] १. रस्सी या तस्मे के द्वारा बैल, घोड़े आदि को उस वस्तु के साथ बाँधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना होता है। जोतना। २. जोड़ना। संबद्ध करना। ३. गूँथना। गुहना। ४. आरंभ करना। ठानना।

**नानक**—संज्ञा पुं० पंजाब के एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख संप्रदाय के आदिगुरु थे।

**नानकपंथी**—संज्ञा पुं० [ हिं० नानक+पंथ ] गुरु नानक का अनुयायी। सिख।

**नानकशाही**—वि० [ हिं० नानकशाह ] १ गुरु नानक से संबंध रखनेवाला। २. नानकशाह का शिष्य या अनुयायी। सिख।

**नानकीन**—संज्ञा पुं० [ चीनी नानकिङ ] एक प्रकार का सूती कपड़ा।

**नानखताई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।

**नानबाई**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नानबा, नानबाफ़ ] रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला।

**नाना**—वि० [ सं० ] १. अनेक प्रकार के। बहुत तरह के। २. अनेक। बहुत।

संज्ञा पुं० [ देश० ] [ स्त्री० नानी ] माता का पिता। मातामह।

†क्रि० स० [ सं० नमन ] १. झुकाना। नम्र करना। २. नीचा करना। ३.

डालना। ४. घुसाना। प्रविष्ट करना।

संज्ञा पुं० [ अ० ] पुदीना।

यौ०—अर्क नाना=सिरके के साथ भबके में उतारा हुआ पुदीने का अर्क।

**नानिहाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० नानी+आल (आलय) ] नाना-नानी का स्थान या घर।

**नानी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] माँ की माँ। माता की माता। मातामही।

**मुहा०**—नानी याद आना या मर जाना=आपत्ति सी आ जाना। दुःख सा पड़ जाना।

**ना-नुकर**—संज्ञा पुं० [ हिं० न+करना ] नाहीं। इनकार।

**नान्हा**†—वि० [ सं० न्यून ] १. छोटा। लघु। २. नीच। क्षुद्र। ३. पतला। महीन।

**मुहा०**—नान्ह कातना=१. बहुत बारीक काम करना। २. कठिन या दुष्कर कार्य करना।

**नान्हक**—संज्ञा पुं० दे० "नानक"।

**नान्हरिया**†*—वि० [ हिं० नान्ह ] छोटा।

**नान्हा**†*—वि० दे० "नन्हा"।

**नाप**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मापन ] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई जिसकी छोटाई-बड़ाई निश्चय किसी निर्दिष्ट लंबाई के साथ मिलाने से किया जाय। परिमाण। माप। २. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि कितनी है, इसको ठीक ठीक स्थिर करने के लिए की जाने वाली क्रिया। नापने का काम। ३. वह निर्दिष्ट लंबाई जिसे एक मानकर किसी वस्तु का विस्तार कितना है, यह स्थिर किया जाता है। मान। ४. नापने की वस्तु।

**नाप-जोख, नाप तौल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाप+जोख या तौल ] १. नापने-जोखने या तौलने की क्रिया। २. परिमाण या मात्रा जो नाप या तौलकर स्थिर की जाय।

**नापना**—क्रि० स० [ सं० मापन ] १. किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई कितनी है, यह निश्चित करना। मापना।

**मुहा०**—सिर नापना=सिर काटना। २. कोई वस्तु कितनी है इसका पता लगाना।

**नापसंद**—वि० [ फ़ा० ] १. जो पसंद न हो। जो अच्छा न लगे। २. अप्रिय।

**नापाक**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नापाकी ] १. अशुद्ध। अपवित्र। २. मैला-कुचैला।

**ना-पायदार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नापायदारी ] जो मजबूत या टिकाऊ न हो। कमजोर।

**ना-पास**—वि० [ हिं० ना+अं० पास ] जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण।

**नापित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो सिरके बाल मूड़ने या काटने आदि का काम करता हो। नाई। नाऊ। हज्जाम।

**नापैद**—वि० [ फ़ा० ना+पैदा ] १. जो पैदा न हुआ हो। २. विनष्ट। ३. अप्राप्य।

**नाफा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।

**नाबदान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नाव=नाली ] वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है। पनाला। नरदा।

**नाबालिग**—वि० [ अ०+फ़ा० ] [ संज्ञा नाबालिगी ] जो पूरा जवान न हुआ हो। अप्राप्तवयस्क।

**नाबूद**—वि० [ फ़ा० ] नष्ट। ध्वस्त।

**नाभ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नाभि ] १. नाभि। ढोंढी। धुन्नी। २. शिव का एक नाम। ३. एक सूर्यवंशी राजा जो भगीरथ के पुत्र थे। (भागवत) ४. अस्त्रों का एक संहार।

**नाभा**—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध भक्त जिनका नाम नारायणदास था। कहते हैं कि ये जाति के डोम थे और दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। ये जन्मांध कहे जाते हैं। अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था।

**नाभाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे। इनके पुत्र अज और अज के दशरथ हुए। २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कारूष वंश के एक राजा।

**नाभि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चक्र-मध्य। पहिए का मध्य भाग। नाह। २. जरायुज जंतुओं के पेट के बीचो-बीच वह चिह्न या गड्ढा जहाँ गर्भावस्था में जरायुनाल जुड़ा रहता है। ढोंढी। धुन्नी। तुन्नी। ढुंढी। ३. कस्तूरी।

संज्ञा पुं० १. प्रधान राजा। २. प्रधान व्यक्ति या वस्तु। ३. गोत्र। ४. क्षत्रिय।

**नामंजूर**—वि० [ फ़ा०+अ० ] [ संज्ञा नामंजूरी ] जो मंजूर न हो। जो माना न गया हो।

**नाम**—संज्ञा पुं० [ सं० नामन् ] [ वि० नामी ] १. वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध

है। संज्ञा। आख्या।

मुहा०—नाम उछालना = बदनामी कराना। चारों ओर निंदा कराना। नाम उठ जाना=चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। (किसी बात का) नाम करना=कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिए थोड़ा-सा करना। नाम का=१. नामधारी। २. कहने-सुनने भर को, काम के लिए नहीं। नाम के लिए या नाम को=१. कहने सुनने भर के लिए। थोड़ा सा। २. काम के लिए नहीं। नाम चढ़ना=किसी नामावली में नाम लिखा जाना। नाम चलना=लोगों में नाम का स्मरण बना रहना। यादगार बनी रहना। नाम जपना=१.बार-बार नाम लेना। २. ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। (किसी का) नाम धरना= १. बदनाम करना। दोष लगाना। २. दोष निकालना। ऐब बताना। नाम धराना=१. नामकरण कराना। २. बदनामी कराना। निंदा कराना। नाम न लेना=दूर रहना। बचना। नाम निकल जाना=किसी बात के लिए मशहूर या बदनाम हो जाना। किसी के नाम पर=किसी को अर्पित करके। किसी के निमित्त। किसी के नाम पड़ना=किसी के नाम के आगे लिखा जाना। जिम्मेदार रखा जाना। (किसी के) नाम पर मरना या मिटना=किसी के प्रेम में लीन होना। किसी के प्रेम में खपना। (किसी के) नाम पर बैठना=किसी के भरोसे संतोष करके स्थिर रहना। (किसी का) नाम बद करना= बदनामी करना। कलंक लगाना। नाम बाकी रहना= १. मरने या कहीं चले जाने पर भी कीर्ति का बना रहना। २. केवल नाम ही नाम रह जाना, और कुछ न रहना। नाम बिकना=नाम मशहूर होने से कदर होना। नाम मिटना=१. नाम न रहना। स्मारक या कीर्ति का लोप होना। २. नाम तक शेष न रहना। एकदम अभाव हो जाना। नाम-मात्र =नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। अत्यंत अल्प। (कोई) नाम रखना= नाम निश्चित करना। नामकरण करना। नाम लगाना=किसी दोष या अपराध के संबंध में नाम लेना। दोष मढ़ना। अपराध लगाना। (किसी के) नाम लिखना=किसी के नाम के आगे लिखना। किसी के जिम्मे लिखना या टाँकना। (किसी का) नाम लेकर= १. किसी प्रसिद्ध या बड़े आदमी के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके। नाम के प्रभाव से। २. (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके। नाम लेना=१. नाम का उच्चारण करना। नाम कहना। २. नाम जपना। नाम स्मरण करना। ३. गुण गाना। प्रशंसा करना। ४. चर्चा करना। जिक्र करना। नाम व निशान=पता। खोज। (किसी) नाम से=शब्द द्वारा निर्दिष्ट होकर या करके। (किसी के) नाम से=१. चर्चा से। जिक्र से। २. (किसी का) संबंध बताकर। यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। ३. (किसी को) हकदार या मालिक बनाकर। (किसी के) उपयोग या उपभोग के लिए। नाम से काँपना=नाम सुनते ही डर जाना। बहुत भय मानना। नाम होना=१. दोष मढ़ा जाना। कलंक लगना। २. नाम प्रसिद्ध होना। ३. प्रसिद्धि। ख्याति। यश। कीर्ति।

मुहा०—नाम कमाना या करना= प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। नाम को मरना=सुयश के लिए प्रयत्न करना। नाम जगाना=उज्ज्वल कीर्ति फैलाना। नाम डुबाना=यश और कीर्ति का नाश करना। नाम डूबना= यश और कीर्ति का नाश होना। नाम पर धब्बा लगाना=यश पर लांछन लगाना। बदनामी करना। नाम पाना =प्रसिद्धि प्राप्त करना। मशहूर होना। नाम रह जाना=कीर्ति की चर्चा रहना। यश बना रहना।

**नामक**—वि० [ सं० ] नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करनेवाला।

**नामकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाम रखने का काम। २. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

**नामकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाम-करण।

**नामकीर्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

**नामजद**—वि० [ फ़ा० ] १. जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित कर लिया गया हो। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

**नामजदगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] किसी काम या चुनाव आदि में किसी का नाम निश्चित किया जाना।

**नामदार**—वि० दे० "नामवर"।

**नामदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जिनकी कथा भक्त-माल में है। ये वामदेवजी के नाती (दौहित्र) थे। २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।

**नामधराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाम+ धराना ] बदनामी। निंदा। अपकीर्ति।

**नाम-धाम**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाम+

धाम ] नाम और पता। पता ठिकाना।

**नामधारी**—वि० [ सं० ] नामक ।

**नामधेय**—संज्ञा पुं [सं०] १. नाम। निर्देशक शब्द। २. नामकरण। वि० नामवाला। नाम का।

**नामनिशान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] चिह्न। पता।

**नाम-पट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पट्ट जिस पर किसी व्यक्ति या संस्था आदि का नाम लिखा हो। साइनबोर्ड।

**नामबोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाम + बोलना ] भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।

**नामर्द**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा नामर्दी] १. नपुंसक। क्लीव। २. डरपोक। कायर।

**नामलेवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नाम + लेना ] १. नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २. उत्तराधिकारी। संतति। वारिस।

**नामवर**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नामवरी ] जिसका बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।

**नामशेष**—वि० [ सं० ] १. जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। गत। मरा हुआ।

**नामांकित**—वि० [ सं० ] जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।

**नामांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

**नामाकूल**—वि० [ फ़ा० ना + अ० माकूल ] १. अयोग्य। नालायक। २. अयुक्त। अनुचित।

**नामालूम**—वि० [ फ़ा० + अ० ] १. बिना जाना हुआ। अज्ञात। २. अपरिचित। ३. अप्रसिद्ध।

**नामावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नामों की पंक्ति। नामों की सूची। २. वह कपड़ा जिसपर चारों ओर भगवान् या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी।

**नामी**—वि० [ हिं० नाम + ई (प्रत्य०) अथवा सं० नामिन् ] १. नामधारी। नामवाला। २. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

**नामुनासिब**—वि० [ फ़ा० ] अनुचित।

**नामुमकिन**—वि० [ फ़ा० + अ० ] असंभव।

**नामूसी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० नामूस = इज्जत ] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। बदनामी।

**नाम्ना**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० नाम्नी ] नामवाला।

**नायँ**[†]*—संज्ञा पुं० दे० "नाम"। अव्य० दे० "नहीं"।

**नायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० नायिका ] १. लोगों को अपने कहे पर चलानेवाला आदमी। नेता। अगुआ। सरदार। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. श्रेष्ठ पुरुष। जन-नायक। ४. साहित्य में शृंगार का आलंबन या साधक रूप-यौवन-संपन्न पुरुष अथवा वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। ५ संगीत-कला में निपुण पुरुष। कलावंत। ६. एक वर्णवृत्त का नाम।

**नायका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नायिका ] * १. दे० "नायिका"। २. वेश्या की माँ। ३. कुटनी। दूती।

**नायन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाई ] नाई की स्त्री।

**नायब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुनीम। मुख्तार। २. सहायक। सहकारी।

**नायाब**—वि० [ फ़ा० ] १. जो जल्दी न मिले। अप्राप्य। २. बहुत बढ़िया।

**नायिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रूप-गुण-संपन्न स्त्री। २. वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो।

**नारंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नारंगी।

**नारंगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नागरंग, अ० नारंज ] १. नीबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. नारंगी के छिलके का सा रंग। पीलापन लिए हुए लाल रंग। वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का।

**नार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नाल ] १. गरदन। ग्रीवा।

**मुहा०**—नार नवाना या नीचा करना = १. गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। २. लज्जा, चिंता, संकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीची करना।

२. जुलाहों की ढरकी। नाल।

[†]संज्ञा पुं० १. आँवल नाल। दे० "नाल"। २. नाला। ३. बहुत मोटा रस्सा। ४. सूत की वह डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा कसती हैं। नारा। नाला। ५. जुआ जोड़ने की रस्सी या तस्मा।

[†]संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

**नारकी**—वि० [ सं० नारकिन् ] नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी।

**नारद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। ये बहुत बड़े हरिभक्त प्रसिद्ध हैं और

कहदू-मिथ भी कहे गये हैं। पर आजकल के विद्वानों का मत है कि नारद किसी एक आदमी का नाम नहीं था, बल्कि साधुओं का एक संप्रदाय था। २. विश्वामित्र के एक पुत्र। ३. एक प्रजापति। ४. झगड़ा करानेवाला आदमी।

**नारद पुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अठारह महापुराणों में से एक। इसमें तीर्थों और व्रतों का माहात्म्य है। २. बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण।

**नारदीय**—वि० [ सं० ] नारद संबंधी।

**नारना**—क्रि० स० [ सं० ज्ञान ] थाह लगाना।

**नार-बेवार**—संज्ञा पुं० [ हिं० नार + सं० विवार=फैलाव ] नाल और खेड़ी आदि। नारा-पोटी।

**नारसिंह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नरसिंह रूपधारी विष्णु। २. एक तंत्र का नाम। ३. एक उपपुराण। वि० नृसिंह-संबंधी।

**नारा**—संज्ञा पुं० [ सं० नाल ] १. इजारबंद। नीवी। दे० "नाड़ा"। २. लाल रँगा हुआ सूत जो पूजन में देवताओं को चढ़ाया जाता है। मौली। कुसुंभ-सूत्र। ३. हल के जुवे में बँधी हुई रस्सी। †४. दे० "नाला"। संज्ञा पुं० [ अ० नअरः ] कोई बँधा हुआ वाक्य जो बार बार जोर से कहा जाय। घोष।

**नाराच**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लोहे का बाण। २. दुर्दिन। ऐसा दिन जिसमें बादल घिरा हो, अंधड़ चले तथा इसी प्रकार के और उपद्रव हों। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त। महामालिनी। तारका। ४. २४ मात्राओं का एक छंद।

**नाराज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नाराजगी, नाराजी ] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

**नारायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। भगवान्। ईश्वर। २. पूस का महीना। ३. 'अ' अक्षर का नाम। ४. कृष्ण यजुर्वेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ५. एक अस्त्र।

**नारायणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. गंगा। ४. श्रीकृष्ण की सेना का नाम जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिए दिया था।

**नारायणीय**—वि० [ सं० ] नारायण संबंधी।

**नाराशंस**—वि० [ सं० ] जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो। स्तुति-संबंधी। संज्ञा पुं० १. वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं आदि की प्रशंसा होती है। प्रशस्ति। २. वह चमचा जिसमें पितरों को सोमपान दिया जाता है। ३. पितर।

**नाराशंसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "नाराशंस"।

**नारि**—संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

**नारिकेल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नारियल।

**नारिदान***—संज्ञा पुं० दे० "नाबदान"।

**नारियल**—संज्ञा पुं० [ सं० नारिकेल ] १. खजूर की जाति का एक पेड़। इसके बड़े गोल फलों के ऊपर एक बहुत कड़ा रेशेदार छिलका होता है जिसके नीचे कड़ी गुठली और सफेद गिरी होती है जो खाने में मीठी होती है। २. नारियल का हुक्का।

**नारियली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नारियल ] १. नारियल का खोपड़ा। २. नारियल का हुक्का।

**नारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्त्री। औरत। २. तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति।

*संज्ञा स्त्री० १. दे० "नाड़ी"। २. दे० "नाली"।

**नारीत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नारी या स्त्री होने का भाव। स्त्रीत्व। औरतपन।

**नारू**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. जूँ। ढील। २. नहरुआ नामक रोग।

**नालंद**—संज्ञा पुं० बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कोस दक्खिन था।

**नाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लंबी डंडी। डाँड़ी। २. पौधे का डंठल। कांड। ३. गेहूँ, जौ आदि की वह पतली लंबी डंडी जिसमें बाल लगती है। ४. नली। नल। ५. बंदूक की नली। ६. सुनारों की फुकनी। ७. जुलाहों की नली। छूँछा।

संज्ञा पुं० १. रक्त की नलियों तथा एक प्रकार के मज्जातंतु से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय की दीवार से मिली होती है। आँवलनाल। उल्व-नाल। नारा। २. लिंग। ३. हरताल। ४. जल बहने का स्थान।

संज्ञा पुं० [ अ० ] १. लोहे का वह अर्द्धचंद्राकार खंड जिसे घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की एँड़ी के नीचे उन्हें रगड़ से बचाने के लिए जड़ते हैं। २. तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढ़ी होती है। ३. कुंडलाकार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके बीचोबीच पकड़कर उठाने के लिए एक दस्ता रहता है। इसे अभ्यास के लिए कसरत करनेवाले

उठाते हैं। ४. लकड़ी का वह चक्कर जिसे नीचे डालकर कूएँ की खोदाई की जाती है। ५. वह रुपया जो जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है।

**नालकटाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ नाल + कटाई ] तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम।

**नालकी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ नाल = डंडा ] इधर उधर से खुली पालकी जिस पर एक मिहराबदार छाजन होती है।

**नालबंद**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ + फ़ा॰ ] जूते की एँड़ी या घोड़े की टाप में नाल जड़नेवाला।

**नाला**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ नाल ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ नाली ] १. लकीर के रूप में दूर तक गया हुआ वह गड्ढा जिससे होकर बरसाती पानी किसी नदी आदि में जाता है। जलप्रणाली। २. उक्त मार्ग से बहता हुआ जल। जल प्रवाह। ३. दे॰ "नाड़ी"।

**नालायक**—वि॰ [ फ़ा॰ + अ॰ ] [ संज्ञा नालायकी ] अयोग्य। निकम्मा। मूर्ख।

**नालिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. छोटी नाल या डंठल। २. नाली। ३. एक प्रकार का गंधद्रव्य।

**नालिश**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] किसी के द्वारा पहुँचे हुए दुःख या हानि का ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो। फरियाद।

**नाली**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ नाला ] १. जल बहने का पतला मार्ग। जल-प्रवाह-पथ। २. गलीज आदि बहने का मार्ग। मोरी। ३. कोई गहरी लकीर। ४. घोड़े की पीठ का गड्ढा। ५. बैल आदि चौपायों को दवा पिलाने का चोंगा। ढरका।
संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. नाड़ी। धमनी। रक्त आदि बहने की नली। २. करेमू का साग। ३. घड़ी। ४. कमल।

**नावँ***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नाम"।

**नाव**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ नौका ] लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर चलनेवाली सवारी। नौका। किश्ती।

**नावक**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. एक प्रकार का छोटा बाण। २. मधु-मक्खी का डंक।
संज्ञा पुं॰ [ सं॰ नाविक ] केवट। मल्लाह।

**नावना**†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ नामन ] १. झुकाना। नवाना। २. डालना। फेंकना। गिराना। ३. प्रविष्ट करना। घुसाना।

**नावर***†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ नाव] १. नाव। नौका। २. नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।

**नावाकिफ**—वि॰ [ फ़ा॰ + अ॰ ] अपरिचित। अनजान।

**नाविक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मल्लाह। केवट।

**नाश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. न रह जाना। लोप। ध्वंस। बरबादी। २. गायब होना।

**नाशक**—वि॰ [ सं॰ ] १. नाश करने-वाला। ध्वंस करनेवाला। २. मारने-वाला। वध करनेवाला। ३. दूर करनेवाला।

**नाशकारी**—वि॰ [ सं॰ नाशकारिन् ] नाशक।

**नाशन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] नाश करना।
वि॰ [ स्त्री॰ नाशिनी ] नाश करने-वाला।

**नाशना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "नासना"।

**नाशपाती**—संज्ञा स्त्री॰ [ तु॰ ] मझोले डीलडौल का एक पेड़ जिसके फल प्रसिद्ध मेवों में गिने जाते हैं।

**नाशमय**—वि॰ [ सं॰ नाश + मय ] [ स्त्री॰ नाशमयी ] नश्वर। नाश-वान्।

**नाशवान्**—वि॰ [ सं॰ ] नश्वर। अनित्य।

**नाशी**—वि॰ [ सं॰ नाशिन् ] [ स्त्री॰ नाशिनी ] १. नाश करनेवाला। नाशक। २. नश्वर।

**नाश्ता**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] जल-पान।

**नास**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ नासा ] १. वह औषध जो नाक से सूँघी जाय। २. सुँघनी।

**नासदान**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ नास + दान ( सं॰ आधान ) ] सुँघनी रखने की डिबिया।

**नासना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ नाशन ] १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. मार डालना।

**नासमझ**—वि॰ [ हिं॰ ना + समझ ] [ संज्ञा नासमझी ] जिसे समझ न हो। निर्बुद्धि। बेवकूफ।

**नासा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ वि॰ नास्य ] १. नासिका। नाक। २. नाक का छेद। नथना।

**नासापुट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] नथना।

**नासिक**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ नासिक्य ] महाराष्ट्र देश में एक तीर्थ जो उस

स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकलती है।

**नासिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाक। नासा।

**नासी***—वि० दे० "नाशी"।

**नासीर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सेना का अग्रभाग।

**नासूर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता। नाड़ीव्रण।

**नास्तिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो ईश्वर या परलोक आदि को न माने।

**नास्तिकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नास्तिक होने का भाव। ईश्वर, परलोक आदि को न मानने की बुद्धि।

**नास्तिवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नास्तिकों का तर्क या मत।

**नास्य**—वि० [ सं० ] नाक संबंधी। नासिका।

**नाह***—संज्ञा पुं० दे० "नाथ"।

**नाहक**—क्रि० वि० [ फ़ा० ना + अ० हक़ ] वृथा। व्यर्थ। बेफायदा। बे-मतलब।

**नाह-नूह***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाहीं ] नहीं नहीं शब्द। इनकार।

**नाहर**—संज्ञा पुं० [ सं० नरहरि ] १. सिंह। शेर। २. बाघ।
संज्ञा पुं० [ ? ] टेसू का फूल।

**नाहरू**—संज्ञा पुं० [ देश० ] नारू नाम का रोग। नहरुवा।
संज्ञा पुं० दे० "नाहर"।

**नाहिनै***—वाक्य [ हिं० नाहीं ] नहीं है।

**नाहीं**—अव्य० दे० "नहीं"।

**नित***—क्रि० वि० दे० "नित्य"।

**निंद***—वि० दे० "निंद्य"।

**निंदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निंदा करनेवाला।

**निंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निंदनीय, निंदित, निंद्य ] निंदा करने का काम।

**निंदना***—क्रि० स० [ सं० निंदन ] निंदा करना। बदनाम करना।

**निंदनीय**—वि० [ सं० ] १. निंदा करने योग्य। २. बुरा। गर्ह्य।

**निँदरना**—क्रि० स० दे० "निंदना"।

**निँदरिया**‡*—संज्ञा स्त्री० [ सं० निद्रा ] नींद।

**निंदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. (किसी व्यक्ति या वस्तु का) दोषकथन। बुराई का वर्णन। अपवाद। २. अपकीर्ति। बदनामी। कुख्याति।

**निंदाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निराना ] निराने की क्रिया या भाव या मजदूरी।

**निँदासा**—वि० [ हिं० नींद + आसा (प्रत्य०) ] जिसे नींद आ रही हो। उनींदा।

**निंदास्तुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निंदा के बहाने स्तुति। व्याजस्तुति।

**निंदित**—वि० [सं०] [स्त्री० निंदिता] जिसकी लोग निंदा करते हों। दूषित। बुरा।

**निँदिया**—‡संज्ञा स्त्री० [ हिं० नींद ] नींद।

**निंद्य**—वि० [ सं० ] १. निंदा करने योग्य। निंदनीय। २. दूषित। बुरा।

**निंब**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नीम का पेड़।

**निंबकौरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "निबौली"।

**निंबार्क**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अरुणि या निंबादित्य नामक आचार्य। २. इनका चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।

**निंबू**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीबू।

**निः**—अव्य० [ सं० निस् ] एक उपसर्ग। दे० "नि"।

**निःशंक**—वि० [ सं० ] १. जिसे डर न हो। निडर। निर्भय। २. जिसे किसी प्रकार का खटका या हिचक न हो।

**निःशब्द**—वि० [ सं० ] शब्दरहित। जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे।

**निःशेष**—वि० [ सं० ] १. जिसका कोई अंश न रह गया हो। समूचा। सब। २. समाप्त।

**निःश्रेणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीढ़ी।

**निःश्रेयस**—वि० [ सं० ] १. मोक्ष। मुक्ति। २. कल्याण। ३. भक्ति। ४. विज्ञान।

**निःश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राण-वायु का नाक से निकलना या नाक से निकली हुई वायु। साँस।

**निःसंकोच**—क्रि० वि० [ सं० ] बिना संकोच के। बेधड़क।

**निस्संग**—वि० [ सं० ] १. बिना मेल या लगाव का। २. निर्लिप्त। ३. जिसमें अपने मतलब का कुछ लगाव न हो। ४. जिसके साथ कोई न हो। अकेला।

**निःसंतान**—वि० [ सं० ] जिसके संतान न हो। निपूता या निपूती।

**निःसंदेह**—वि० [सं०] संदेह-रहित। जिसे या जिसमें कुछ संदेह न हो।
अव्य० १. बिना किसी संदेह के। २. इसमें कोई संदेह नहीं। ठीक है। बेशक।

**निःसंशय**—वि० [सं०] संदेह रहित।

**निःसत्त्व**—वि० [ सं० ] जिसमें कुछ असलियत, तत्त्व या सार न हो।

**निःशरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.

निकलना। २. निकलने का रास्ता। निकास। ३. निर्वाण। ४. मरण।

**निःसीम**—वि० [ सं० ] १. जिसकी सीमा न हो। बेहद। २. बहुत बड़ा या अधिक।

**निःसृत**—वि० [सं०] निकला हुआ।

**निःस्पंद**—वि० [ सं० ] जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन न हो। निश्चल।

**निःस्पृह**—वि० [ सं० ] १. इच्छा-रहित। जिसे किसी बात की आकांक्षा न हो। २. जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो। निर्लोभ।

**निःस्वन**—वि० [ सं० ] जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। निःशब्द।

संज्ञा पुं० [ सं० ] ध्वनि। शब्द।

**निःस्वार्थ**—वि० [ सं० ] १. जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो। २. ( कोई बात ) जो अपने अर्थसाधन के निमित्त न हो।

**नि**—अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह; जैसे, निकर। अधोभाव; जैसे, निपतित। अत्यंत; जैसे, निगृहीत। आदेश, जैसे, निदेश। नित्य, कौशल, बंधन, अंतर्भाव, समीप, दर्शन आदि।

संज्ञा पुं० निषाद स्वर का संकेत।

**निअर***—अव्य० [ सं० निकट ] निकट।

वि० समान। तुल्य।

**निअराना***—क्रि० स० [हिं० निअर] निकट जाना। समीप पहुँचना।

क्रि० अ० निकट आना। पास होना।

**निआउ***—संज्ञा पुं० दे० "न्याव"।

**निआन***—संज्ञा पुं० [ सं० निदान] अंत।

अव्य० अंत में। आखिर।

**निआमत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ। अलभ्य पदार्थ।

**निआर्थी***—वि० [ हिं० न + अर्थ ] निर्धन। गरीब।

**निकंटक***—वि० दे० "निष्कंटक"।

**निकंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० नि + कंदन=नाश, वध ] नाश। विनाश।

**निकंदना***—क्रि० स० [ सं० निकंदन ] नष्ट करना।

**निकट**—वि० [ सं० ] १. पास का। समीप का। २. संबंध जिससे विशेष अंतर न हो।

क्रि० वि० पास। समीप। नजदीक।

मुहा०—किसी के निकट=१. किसी से। २. किसी के लेखे में। किसी की समझ में।

**निकटता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समीपता।

**निकटवर्ती**—वि० [सं० निकटवर्त्तिन्] [ स्त्री० निकटवर्त्तिनी ] पासवाला। समीपस्थ।

**निकटस्थ**—वि० [ सं० ] १. पास का। २. संबंध में जिससे बहुत अंतर न हो।

**निकम्मा**—वि० [ सं० निष्कर्म्म ] [ स्त्री० निकम्मी ] १. जो कोई काम-धंधा न करे। २. जो किसी काम का न हो। बेमसरफ। बुरा।

**निकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। झुंड। २. राशि। ढेर। ३. निधि।

संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का अँगरेजी जाँघिया। आधा पायजामा।

**निकरना***—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

**निकर्मा**—वि० [ सं० निष्कर्म्मा ] आलसी।

**निकलंक**—वि० [ सं० निष्कलंक ] दोषरहित।

**निकलंकी**—संज्ञा पुं० [ सं० निष्कलंक ] विष्णु का दसवाँ अवतार। कल्कि अवतार।

**निकल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है।

**निकलना**—क्रि० अ० [ हिं० निकालना ] १. भीतर से बाहर आना। निर्गत होना।

मुहा०—निकल जाना=१. चला जाना। आगे बढ़ जाना। २. न रह जाना। नष्ट हो जाना। ३. घट जाना। कम हो जाना। ४. न पकड़ा जाना। भाग जाना। (स्त्री का) निकल जाना=किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़कर चली जाना।

२. मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज का अलग होना। ३. पार होना। एक ओर से दूसरी ओर चला जाना।

मुहा०—निकल चलना=विस से बाहर काम करना। इतराना। अति करना।

४. किसी श्रेणी आदि के पार होना। उत्तीर्ण होना। ५. गमन करना। जाना। गुजरना। ६. उदय होना। ७. प्रादुर्भूत होना। उत्पन्न होना। ८. उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ९. किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। १०. निश्चित होना। ठहराया जाना। ११. स्पष्ट होना। प्रकट होना। १२. छिड़ना। आरंभ होना। १३. सिद्ध होना। सरना। १४. हल

होना। किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। १५. फैलाव होना। १६. प्रचलित होना। १७. छूटना। मुक्त होना। १८. आविष्कृत होना। १९. शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। २०. अपने को बचा जाना। बच जाना। २१. कहकर नहीं करना। मुकरना। नटना। २२. खपना। बिकना। २३. प्रस्तुत होकर सर्वसाधारण के सामने आना। प्रकाशित होना। २४. हिसाब-किताब होने पर कोई रकम जिम्मे ठहरना। २५. फटकर अलग होना। उचड़ना। २६. जाता रहना। दूर होना। न रह जाना। २७. व्यतीत होना। बीतना। गुजरना। २८. घोड़े, बैल आदि का सवारी लेकर चलना आदि सीखना।

**निकलवाना**—क्रि० स० [ हिं० निकाल का प्रे० ] निकालने का काम दूसरे से कराना।

**निकष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कसौटी का पत्थर। २. तलवार की म्यान।

**निकसना**†—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

**निकाई***—संज्ञा पुं० दे० "निकाय"। संज्ञा स्त्री० [हिं० नीक ] १. भलाई। अच्छापन। उम्दगी। २. खूबसूरती। सुंदरता।

**निकाज**—वि० [ हिं० नि + काज ] बेकाम। निकम्मा।

**निकाना**—क्रि० स० दे० "निराना"।

**निकाम**—वि० [ हिं० नि + काम ] १. निकम्मा। २. बुरा। खराब। क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।
*वि० दे० "निष्काम"।
*वि० [ ? ] प्रचुर। बहुत अधिक।

**निकाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. घर। ४. परमात्मा।

**निकारना***†—क्रि० स० दे० "निकालना"।

**निकालना**—क्रि० स० [ सं० निष्कासन ] १. भीतर से बाहर लाना। निर्गत करना। २. मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज को अलग करना। ३. पार करना। अतिक्रमण कराना। ४ गमन कराना। ले जाना। ५. किसी ओर को बढ़ा हुआ करना। ६. निश्चित करना। ठहराना। ७. उपस्थित करना। मौजूद करना। ८. खोलना। स्पष्ट करना। ९. छेड़ना। आरंभ करना। चलाना। १०. सबके सामने लाना। देख में करना। ११. अलग करना। पृथक् करना। १२. घटाना। कम करना। १३. अलग करना। छुड़ाना। मुक्त करना। १४. नौकरी से छुड़ाना। बरखास्त करना। १५. दूर करना। हटाना। १६. बेचना। खपाना। १७. सिद्ध करना। प्राप्त करना। १८. निर्वाह करना। चलाना। १९. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। २०. जारी करना। फैलाना। २१. आविष्कृत करना। ईजाद करना। २२. बचाव करना। निस्तार करना। उद्धार करना। २३. प्रचारित करना। प्रकाशित करना। २४. रकम जिम्मे ठहराना। ऊपर ऋण या देना निश्चित करना। २५. ढूँढ़कर पाना। बरामद करना। २६. घोड़े, बैल आदि को सवारी लेकर चलना या गाड़ी आदि खींचना सिखाना। शिक्षा देना। २७. सुई से बेल-बूटे बनाना।

**निकाला**—संज्ञा पुं० [हिं० निकालना ] १. निकालने का काम। २. किसी स्थान से निकाले जाने का दंड। निष्कासन।

**निकास**—संज्ञा पुं० [ हिं० निकलना ] १. निकलने की क्रिया या भाव। २. निकालने की क्रिया या भाव। ३. निकलने के लिए खुला स्थान या छेद। ४. द्वार। दरवाजा। ५. बाहर का खुला स्थान। मैदान। ६. उद्गम। मूल-स्थान। ७. वंश का मूल। ८. रक्षा का उपाय। छुटकारे की तदबीर। ९. निर्वाह का ढंग। ढर्रा। वसीला। सिलसिला। १०. प्राप्ति का ढंग। आमदनी का रास्ता। ११. आय। आमदनी। निकासी।

**निकासना**†—क्रि० स० दे० "निकालना"।

**निकासी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निकास ] १. निकलने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। रवानगी। २. वह धन जो सरकारी मालगुजारी आदि देकर जमींदार को बचे। मुनाफा। ३. आय। आमदनी। लाभ। ४. बिक्री के लिए माल की रवानगी। लदाई। भरती। ५. बिक्री। खपत। ६ चुंगी। ७. रवन्ना।

**निकाह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।

**निकियाना**—क्रि० स० [ देश० ] नोचकर धज्जी धज्जी अलग करना।

**निकिष्ट***†—वि० दे० "निकृष्ट"।

**निकुंज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लता-गृह। ऐसा स्थान जो घनी लताओं से घिरा हो।

**निकुंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुंभकर्ण का एक पुत्र। यह रावण का

अंशी था । २. एक विश्वेदेव । ३. महादेव का एक गण ।

**निकृष्ट**—वि० [ सं० ] बुरा । अधम । नीच ।

**निकृष्टता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुराई । अधमता । नीचता । मंदता ।

**निकेत, निकेतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घर । मकान । २. स्थान । जगह ।

**निक्षिप्त**—वि० [ सं० ] १. फेंका हुआ । २. छोड़ा हुआ । त्यक्त ।

**निक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फेंकने या डालने की क्रिया या भाव । २. चलाने की क्रिया या भाव । ३. छोड़ने की क्रिया या भाव । त्याग । ४. पोंछने की क्रिया या भाव । ५. धरोहर । अमानत । थाती ।

**निक्षेपण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य ] १. फेंकना । डालना । २. छोड़ना । चलाना । ३. त्यागना ।

**निखंग***—संज्ञा पुं० दे० "निषंग" ।

**निखंड**—वि० [ सं० निस् + खंड ] ठीक मध्य में । न थोड़ा इधर न उधर । सटीक । ठीक ।

**निखट्टू**—वि० [ हिं० उप० नि=नहीं+ खटना=कमाना ] १. जो कुछ कमाई न करे । इधर-उधर मारा मारा फिर- नेवाला । २. निकम्मा । आलसी ।

**निखट्टू**—वि० बेकार । जो कुछ काम न करता हो ।

**निखरक***—अ० [ हिं० नि=नहीं + खरक=खटका ] बेखटका । निश्चिं- ततया ।

**निखरना**—क्रि० अ० [ सं० निक्ष- रण=छँटना ] १. मैल छँटकर साफ होना । निर्मल होना । २. रंगत का खुलना होना ।

**निखरवाना**—क्रि० स० [ हिं० निख- रना ] साफ कराना । धुलवाना ।

**निखरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निख- रना ] पक्की या घी की पकी हुई रसोई । घृतपक्व । सखरी का उलटा ।

**निखर्व**—वि० [ सं० ] दस हजार करोड़ ।

संज्ञा पुं० दस हजार करोड़ की संख्या या अंक ।

**निखालस***—वि० [ सं० न्यक्ष=सारा, सब ] बिलकुल । सब । और बाकी कुछ नहीं ।

**निखाद**—संज्ञा पुं० दे० "निषाद" ।

**निखार**—संज्ञा पुं० [ हिं० निखरना ] १. निर्मलता । स्वच्छता । सफाई । २. शृंगार ।

**निखारना**—क्रि० स० [ हिं० निख- रना ] १. साफ करना । २. पवित्र करना ।

**निखालिस**—वि० [ हिं० नि+अ० खालिस ] विशुद्ध । जिसमें और किसी चीज का मेल न हो ।

**निखिल**—वि० [ सं० ] संपूर्ण । सब ।

**निखुटना**—क्रि० अ० [ ? ] खतम होना ।

**निखेध***—संज्ञा पुं० दे० "निषेध" ।

**निखेधना***—क्रि० स० [ सं० निषेध ] मना करना ।

**निखोट**—वि० [ हिं० उप० नि+ खोट ] १. जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो । निर्दोष । २. साफ । स्पष्ट या खुला हुआ ।

क्रि० वि० बिना संकोच के । बेधड़क ।

**निखोटना**—क्रि० स० [ हिं० नख ] नाखून से तोड़ना या काटना ।

**निगंदना**—क्रि० स० [ फ़ा० निगंदः= बखिया ] रजाई, दुलाई आदि रूई भरे कपड़ों में तागा डालना ।

**निगंध***—वि० [ सं० निर्गंध ] गंध- हीन ।

**निगड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हाथी के पैर बाँधने की जंजीर । आँदू । २. बेड़ी ।

**निगद, निगदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निगदित ] भाषण । कथन ।

**निगम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मार्ग । पथ । २. वेद । ३. हाट । बाजार । ४. मेला । ५. रोजगार । व्यापार । ६. व्यापारियों का संघ । ७. निश्चय ।

**निगमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय में अनुमान के पाँच अवयवों में से एक । साबित की जानेवाली बात साबित हो गई, यह बताने के लिए दलील वगैरह के पीछे उस बात को फिर कहना । नतीजा ।

**निगमागम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेद- शास्त्र ।

**निगर**-वि०, संज्ञा पुं० दे० "निकर" ।

**निगरा**—संज्ञा पुं० वह ऊख का रस जिसमें पानी न मिला हो ।

**निगरानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] देख-रेख । निरीक्षण ।

**निगरु***—वि० [ सं० नि+गुरु ] हलका । जो भारी या वजनी न हो ।

**निगलना**—क्रि० स० [ सं० निगरण ] १. खा जाना । गले के नीचे उतार लेना । २. दूसरे का धन आदि मार बैठना ।

**निगहबान**-संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] रक्षक ।

**निगहबानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] रक्षा ।

**निगालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आठ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति । नग- स्वरूपिणी ।

**निगाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निगाल ] हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं ।

**निगाह**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. दृष्टि। नज़र। २. देखने की क्रिया या ढंग। चितवन। तकाई। ३. कृपा-दृष्टि। मेहरबानी। ४. ध्यान। विचार। ५. परख। पहचान।

**निगिच***—वि० [ सं० निगूढ़ ] जिसका बहुत क्षोभ हो। बहुत प्यारा।

**निगुन***—वि० दे० "निर्गुण"।

**निगुनी***—वि० [ हिं० उप० नि+ गुनी ] जो गुणी न हो। गुण-रहित।

**निगुरा**—वि० [हिं० उप० नि+गुरु] जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो। अदीक्षित।

**निगूढ़**—वि० [ सं० ] अत्यंत गुप्त।

**निगृहीत**—वि० [ सं० ] १. घिरा हुआ। पकड़ा हुआ। २. जिस पर आक्रमण किया गया हो। आक्रमित। आक्रांत। पीड़ित। ४. दंडित।

**निगोड़ा**—वि० [हिं० निगुरा] [स्त्री० निगोड़ी ] १. जिसके ऊपर कोई बड़ा न हो। २. जिसके आगे-पीछे कोई न हो। अभागा। ३. दुष्ट। बुरा। नीच। कमीना।

**निग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रोक। अवरोध। २. दमन। ३. चिकित्सा। रोकने का उपाय। ४. दंड। ५. पीड़न। सताना। ६. बंधन। ७. भर्त्सन। डाँट। फटकार। ८. सीमा। हद।

**निग्रहना***—क्रि० स० [सं० निग्रहण] १. पकड़ना। २. रोकना। ३. दंड देना।

**निग्रहस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] वाद-विवाद या शास्त्रार्थ में वह अवसर जहाँ दो शास्त्रार्थ करनेवालों में से कोई उलटी-पुलटी या नासमझी की बात कहने लगे और उसे चुप करके शास्त्रार्थ बंद कर देना पड़े। यह पराजय का स्थान है। न्याय में ऐसे निग्रह-स्थान २२ कहे गए हैं।

**निग्रही**—वि० [ सं० निग्रहिन् ] १. रोकनेवाला। दबानेवाला। २. दंड देनेवाला।

**निघंटु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वैदिक शब्दों का कोश। २. शब्द-संग्रह-मात्र।

**निघटना***—क्रि० अ० दे० "घटना"।

**निघर-घट**—वि० [ हिं० नि=नहीं+ घर=घाट ] १. जिसका कहीं घर-घाट न हो। जिसे कहीं ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया।

**मुहा०**—निघर-घट देना=बेहयाई से झूठी सफाई देना।

**निघरा**—वि० [ हिं० नि+घर ] जिसके घरबार न हो। निगोड़ा। (गाली)

**निचय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। २. निश्चय। ३. संचय।

**निचल***—वि० दे० "निश्चल"।

**निचला**—वि० [ हिं० नीचे+ला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० निचली ] नीचे का। नीचेवाला।

वि० [ सं० निश्चल ] स्थिर। शांत।

**निचाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नीच ] १. नीचा होने का भाव। नीचापन। २. नीचे की ओर दूरी या विस्तार। ३. कमीनापन।

**निचान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नीचा ] १. नीचापन। २. ढाल। ढालुआँपन। झुकाव।

**निचिंत**—वि० [सं० निश्चिंत] चिंता-रहित। बेफिक्र। सुचित।

**निचीता***—वि० दे० "निश्चिंत"।

**निचुड़ना**—क्रि० अ० [ सं० उप० नि+ च्यवन=चूना ] १. रस से भरी या गीली चीज का इस प्रकार दबना कि रस या पानी टपककर निकल जाय। गरना। २. छूटकर चूना। गरना। ३. रस या सारहीन होना। ४. शरीर का रस या सार निकल जाने से दुबला होना।

**निचै***—संज्ञा पुं० दे० "निचय"।

**निचोड़**—संज्ञा पुं० [हिं० निचोड़ना] १. निचोड़ने से निकला हुआ रस आदि। २. सार। सत। ३. सारांश। खुलासा।

**निचोड़ना**—क्रि० स० [हिं० निचुड़ना] १. गीली या रस भरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर उसका पानी या रस टपकाना। गारना। २. किसी वस्तु का सार-भाग निकाल लेना। ३. सर्वस्व हरण कर लेना।

**निचोना***†—क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

**निचोरना***†—क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

**निचोल**—संज्ञा पुं० [ ? ] स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।

**निचोवना***†—क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

**निचौहाँ**—वि० [ हिं० नीचा+औहाँ (प्रत्य०) ] [ स्त्री० निचौहीं ] नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ। नमित।

**निचौहैं**—क्रि० वि० [ हिं० निचौहाँ ] नीचे की ओर।

**निच्छक्का**—संज्ञा पुं० [ सं० निस्+ चक्र=मंडली ] निराला। एकांत। निर्जन स्थान।

**निछत्र**—वि० [ सं० निश्छत्र ] १. छत्रहीन। बिना छत्र का। २. बिना राजचिह्न का।

वि० [सं० निःक्षत्र] क्षत्रियों से हीन।

**निछनियाँ**—क्रि० वि० दे० "निछान"।

**निछल**—वि० [ सं० निश्छल ] छलहीन।

**निछान**—वि० [ हिं० उप० नि+छानना ] खालिस। विशुद्ध।

क्रि० वि० एकदम। बिलकुल।

**निछावर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० न्यासावर्त्त। मि० अ० निसार ] १. एक उपचार या टोटका जिसमें किसी की रक्षा के लिए कोई वस्तु उसके सिर या सारे अंगों के ऊपर से घुमाकर दान कर देते या डाल देते हैं। उत्सर्ग। वारा-फेरा। उतारा।

**मुहा०**—( किसी का ) किसी पर निछावर होना=किसी के लिए मर-जाना।

२. वह द्रव्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय। ३. इनाम। नेग।

**निछोह, निछोही**—वि० [ हिं० उप० नि+छोह ] १. जिसे छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय।

**निज**—वि० [ सं० ] १. अपना। स्वकीय।

**मुहा०**—निज का=खास अपना।

२. खास। मुख्य। प्रधान। ३. ठीक। सही। सच्चा। यथार्थ।

अव्य० १. निश्चय। ठीक ठीक।

**मुहा०**—निज करके=१. निश्चय। अवश्य। २. खासकर। विशेष करके। मुख्यतः।

**निजकाना**‡—क्रि० अ० [ फ़ा० नज़दीक ] निकट पहुँचना। समीप आना।

**निजत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपनापन। २. मौलिकता।

**निजाअ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. झगड़ा। तकरार। २. शत्रुता। बैर।

**निजाई**—वि० [ अ० ] जिसके संबंध में कोई झगड़ा हो।

**निजाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बंदोबस्त। इंतजाम। २. हैदराबाद के नव्वाबों का पदवीसूचक नाम।

**निजी**—वि० [ सं० निज ] निज का। अपना। व्यक्तिगत।

**निजु**‡—वि० दे० "निजी"।

**निजोर**‡*—वि० [ हिं० नि+फ़ा० जोर ] निबल।

**निझरना**—क्रि० अ० [ हिं० उप० नि+झरना ] १. अच्छी तरह झड़ जाना। २. लगी हुई वस्तु के झड़ जाने से खाली हो जाना। ३. सार वस्तु से रहित हो जाना। खुक्ख हो जाना। ४. अपने को निर्दोष प्रमाणित करना। सफाई देना।

**निटोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० उप० नि+टोला ] टोला। मुहल्ला। पुरा। बस्ती।

**निट्ठि***—क्रि० वि० दे० "नीठि"।

**निठल्ला**—वि० [ हिं० उप० नि=नहीं+टहल=काम ] १ जिसके पास कोई काम-धंधा न हो। खाली। २. बेरोजगार। बेकार।

**निठल्लू**—वि० दे० "निठल्ला"।

**निठाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० नि+टहल=काम ] १. ऐसा समय जब कोई काम-धंधा न हो। खाली वक्त। २. वह वक्त या हालत जिसमें कुछ आमदनी न हो।

**निठुर**—वि० [ सं० निष्ठुर ] जो पराया कष्ट न समझे। निर्दय। क्रूर।

**निठुरई***—संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

**निठुरता***—संज्ञा स्त्री० [ सं० निष्ठुरता ] निर्दयता। क्रूरता। हृदय की कठोरता।

**निठुराई***—संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

**निठौर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नि+ठौर ] १. बुरी जगह। कुठाँव। २. बुरा दाँव। बुरी दशा।

**निडर**—वि० [ हिं० उप० नि+डर ] १. जिसे डर न हो। निःशंक। निर्भय। २. साहसी। हिम्मतवाला। ३. ढीठ। धृष्ट।

**निडरपन, निडरपना**—संज्ञा पुं० [ हिं० निडर+पन ( प्रत्य० ) ] निर्भयता।

**निड़***—क्रि० वि० [ सं० निकट ] निकट। पास।

**निढाल**—वि० [ हिं० नि+ढाल=गिरा हुआ ] १. शिथिल। थका-माँदा। अशक्त। २. सुस्त। उत्साहहीन।

**निढिल***—वि० [ हिं० नि+ढीला ] १. कसा या तना हुआ। २. कड़ा।

**नितंत**—क्रि० वि० दे० "नितांत"।

**नितंब**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमर का पिछला उभरा हुआ भाग। चूतड़। ( विशेषतः स्त्रियों का ) २. स्कंध। कंधा।

**नितंबिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुन्दर नितंबोंवाली स्त्री। सुंदरी।

**नित**—अव्य० [ सं० ] १. प्रतिदिन। रोज।

**यौ०**—नित नित=प्रतिदिन। रोज रोज। नित नया=सब दिन नया रहनेवाला। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

**नितल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात पातालों में से एक।

**नितांत**—वि० [ सं० ] १. बहुत अधिक। २. बिल्कुल। सर्वथा। एकदम।

**निति**‡*—अव्य० दे० "नित"।

**नित्य**—वि० [ सं० ] १. जो सब दिन

रहे। शाश्वत। अविनाशी। त्रिकाल-व्यापी। २. प्रति दिन। रोज का।
अव्य० १. प्रति दिन। रोज-रोज। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

**नित्यकर्म**—संज्ञा पुं० [सं० ] १ प्रति दिन का काम। २.वह धर्म-संबंधी कर्म जिसका प्रतिदिन करना आवश्यक ठहराया गया हो। नित्य की क्रिया।

**नित्यक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] नित्यकर्म।

**नित्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] नित्य होने का भाव। अनश्वरता।

**नित्यत्व**—संज्ञा पुं० [सं० ] नित्यता।

**नित्यनियम**—संज्ञा पुं० [सं० ] प्रतिदिन का बँधा हुआ व्यापार। रोज का कायदा।

**नित्यनैमित्तिक कर्म**—संज्ञा पुं० [सं० ] पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।

**नित्यप्रति**—अव्य० [सं० ] हर रोज।

**नित्यशः**—अव्य० [सं० ] १. प्रति दिन। रोज। २. सदा। सर्वदा।

**नित्यसम**—संज्ञा पुं० [सं० ] न्याय में वह अयुक्त खंडन जो इस प्रकार किया जाय कि अनित्य वस्तुओं में भी अनित्यता नित्य है; अतः धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ।

**निथंभ***—संज्ञा पुं० [सं० नि+स्तंभ] खंभा।

**निथरना**—क्रि० अ० [हिं० नि+थिर+ना (प्रत्य०)] १. पानी या और किसी पतली चीज का स्थिर होना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना।

**निथार**—संज्ञा पुं० [हिं० निथारना] १ घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ पानी। २. पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई चीज।

**निथारना**—क्रि० स० [हिं० निथरना] १. पानी या और किसी पतली चीज को स्थिर करना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज को नीचे बैठाकर खाली पानी अलग करना।

**निदई***—वि० दे० "निर्दय"।

**निदरना***—क्रि० स० [सं० निरादर] १. निरादर करना। अपमान करना। बेइज्जती करना। २. तिरस्कार करना। त्याग करना। ३. मात करना। बढ़कर निकलना।

**निदर्शन**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य्य। २. उदाहरण।

**निदर्शना**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें एक बात किसी दूसरी बात को ठीक ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है।

**निदलन***—संज्ञा पुं० दे० "निर्दलन"।

**निदहना***—क्रि० स० [सं० निदहन] जलाना।

**निदाघ**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. गरमी। ताप। २. धूप। घाम। ३. ग्रीष्म काल। गरमी।

**निदान**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. आदि कारण। २. कारण। ३. रोग-निर्णय। रोग-लक्षण। रोग की पहचान। ४. अंत। अवसान। ५. तप के फल की चाह। ६. शुद्धि।
अव्य० अंत में। आखिर।
वि० अंतिम या निम्न श्रेणी का। निकृष्ट।

**निदारुण**—वि० [सं० ] १. कठिन। घोर भयानक। २. दुःसह। ३. निर्दय।

**निदाह***—संज्ञा पुं० दे० "निदाघ"।

**निदिध्यासन**—संज्ञा पुं० [सं० ] फिर फिर स्मरण। बार बार ध्यान में लाना।

**निदेश**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. शासन। २. आज्ञा। हुक्म। ३. कथन। ४. पास।

**निदेस***-संज्ञा पुं० दे० "निदेश"।

**निदोष*** वि० दे० "निर्दोष"।

**निद्धि**—संज्ञा स्त्री० दे० "निधि"।

**निद्र**—संज्ञा पुं० [सं० ] एक उपसंहारक अस्त्र।

**निद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] सचेष्ट अवस्था के बीच बीच होनेवाली प्राणियों की वह निश्चेष्ट अवस्था जिसमें उनकी चेतन वृत्तियाँ (और कुछ अचेतन वृत्तियाँ भी) रुकी रहती हैं और उसे विश्राम मिलता है। नींद। स्वप्न। सुप्ति।

**निद्रायमान**—वि० [सं० ] जो नींद में हो।

**निद्रालु**—वि० [सं० ] निद्राशील। सोनेवाला।

**निद्रित**—वि० [सं० ] सोया हुआ।

**निंद्रित**—जो सोनेवाला हो। जिसकी आँखों में निद्रा छायी हो।

**निधड़क**—क्रि० वि० [हिं० नि=नहीं+धड़क] १. बे रोक। बिना किसी रुकावट के। २. बिना आगा-पीछा किए। ३ बेखटके।

**निधन**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. नाश। २. मरण। ३. कुल। खानदान। ४. कुल का अधिपति। ५. विष्णु।
वि० धनहीन। निर्धन। दरिद्र।

**निधनी**—वि० [हिं० नि+धनी]

निर्धन।

**निधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आधार। आश्रय। २. निधि। ३. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु लीन हो। लयस्थान।

**निधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गड़ा हुआ खजाना। खजाना। २. कुबेर के नौ प्रकार के रत्न—पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व। ३. वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिए अलग जमा कर दिया जाय। ४. समुद्र। ५. आधार। घर। जैसे, गुणनिधि। ६. विष्णु। ७. शिव। ८ नौ की संख्या।

**निधिनाथ, निधिपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निधियों के स्वामी, कुबेर।

**निनरा**—वि० [ सं० निः+निकट, प्रा० निनिअड़ ] न्यारा। अलग। जुदा। दूर।

**निनरुआ**†—वि० [ हिं० निनारा ] [ स्त्री० निनरुई ] एकमात्र पुत्र।

**निनाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निनादित ] शब्द। आवाज।

**निनादना***—क्रि० अ० [ सं० निनाद ] निनाद या शब्द करना।

**निनादी**—वि० [ सं० निनादिन् ] [ स्त्री० निनादिनी ] शब्द करनेवाला।

**निनान***—संज्ञा पुं० [ सं० निदान ] १. अंत। २. लक्षण।

क्रि० वि० अंत में। आखिर।

वि० १. परले सिरे का। बिल्कुल। एकदम। २. बुरा। निकृष्ट।

**निनारा**—वि० [ सं० निः+निकट ] १. अलग। जुदा। भिन्न। २. दूर। हटा हुआ।

**निनावाँ**—संज्ञा पुं० [ हिं० नन्हा ? ] मुँह के भीतरी भागों में निकलनेवाले महीन महीन लाल दाने जिनमें छर-छराहट होती है।

**निनौना**†—क्रि० स० [ हिं० नवना+झुकना ] नीचे करना। झुकाना। नवाना।

**निन्नानबे**—वि० [ सं० नवनवति ] नब्बे और नौ।

संज्ञा पुं० नब्बे और नौ की संख्या। ९९।

**मुहा०**—निन्नानबे के फेर में आना या पड़ना=धन बढ़ाने की धुन में होना।

**निन्यारा***—वि० दे० "निनारा"।

**निपंग***—वि० [ सं० नि+पंगु ] जिसके हाथ पैर टूटे हों। अपाहिज। निकम्मा।

**निपजना***†—क्रि० अ० [ सं० निष्पद्यते ] १. उपजना। उत्पन्न होना। उगना। २. बढ़ना। पुष्ट होना। पकना। ३. बनना।

**निपजी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निपजना ] १. लाभ। मुनाफा। २. उपज।

**निपट**—अव्य० [ हिं० नि+पट ] १. निरा। विशुद्ध। केवल। एकमात्र। २. सरासर। एकदम। बिल्कुल।

**निपटना**—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

**निपतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निपतित ] अधःपतन। गिरना। गिराव।

**निपत्र**—वि० [ सं० निष्पत्र ] पत्रहीन। ठूँठा।

**निपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पतन। गिराव। पात। २. अधःपतन। ३. विनाश। ४. मृत्यु। क्षय। नाश। ५. शाब्दिकों के मत से वह शब्द जो व्याकरण में दिए नियमों के अनुसार न बना हो।

वि० [ हिं० नि+पत्ता ] बिना पत्तों का।

**निपातन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निपातित ] १. गिराने का कार्य्य। २. नाश। ३. वध करने का कार्य्य।

**निपातना***—क्रि० स० [ हिं० निपातन ] १. नीचे गिराना। २. नष्ट करना। काटकर गिराना। ३. मार गिराना। वध करना।

**निपाती**—वि० [ सं० निपातिन् ] १. गिरानेवाला। फेंकनेवाला। २. मारनेवाला।

संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

*वि० [ हिं० नि+पाती ] बिना पत्ते का।

**निपीड़न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० निपीड़ित, वि० निपीड़क ] १. पीड़ित करना। तकलीफ देना। २. मलना-दलना। ३. पेरना।

**निपीड़ना***—क्रि० स० [ सं० निपीड़न ] १. दबाना। मलना-दलना। २. कष्ट पहुँचाना। पीड़ित करना।

**निपुण**—वि० [ सं० ] दक्ष। कुशल। प्रवीण।

**निपुणता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्षता। कुशलता।

**निपुणाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

**निपुत्री**—वि० [ हिं० नि+पुत्री ] निपूता। निःसंतान।

**निपुन***—वि० दे० "निपुण"।

**निपुनई***—संज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

**निपूत, निपूता***†—[ हिं० नि+पूत ] [ स्त्री० निपूती ] अपुत्र। पुत्र-हीन।

**निपेटी**—संज्ञा पुं० [ हिं० नि+पेटी ] भुक्खड़। भूखा।

**निफन***—वि० [ सं० निष्पन्न ] पूर्ण। पूरा।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।

**निफरना**—क्रि० अ० [हिं० निफारना] घुसकर या धँसकर आर-पार होना।

क्रि० अ० [सं० नि+स्फुट] खुलना। उद्घाटित होना। साफ होना।

**निफल***—वि० [सं० निष्फल] निरर्थक।

**निफाक**—संज्ञा पुं० [अ०] १. विरोध। द्रोह। वैर। २. फूट। बिगाड़। अनबन।

**निफोट**—वि० [सं० नि+स्फुट] स्पष्ट।

**निबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। २. वह व्याख्या जिसमें अनेक मतों का संग्रह हो। ३. लिखित प्रबंध। लेख। ४. गीत।

**निबंधन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निबद्ध] १. बंधन। २. व्यवस्था। नियम। बंदेज। ३. कर्त्तव्य। बंधन। ४. हेतु। कारण।

**निबकौरी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नीम+कौड़ी] १. नीम का फल। २. नीम का बीज।

**निबटना**—क्रि० अ० [संज्ञा निवर्त्तन] [सं० निबटेरा, निबटाव] १. निवृत्त होना। छुट्टी पाना। फुरसत पाना। २. समाप्त होना। पूरा होना। ३. निर्णीत होना। तै होना। ४. चुकना। खतम होना। ५. शौच आदि से निवृत्त होना।

**निबटाना**—क्रि० स० [हिं० निबटना] १. पूरा करना। समाप्त करना। खतम करना। २. चुकाना। बेबाक करना। ३. तै करना।

**निबटाव**—संज्ञा पुं० दे० "निबटेरा"।

**निबटेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० निबटना] १. निबटने का भाव या क्रिया। छुट्टी। २. समाप्ति। ३. फैसला। निश्चय।

**निबड़ना***—क्रि० अ० दे० "निबटना"।

**निबद्ध**—वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २. निरुद्ध। रुका हुआ। ३. ग्रथित। गुथा हुआ। ४. बैठाया या जड़ा हुआ।

**निबर**†—वि० दे० "निर्बल"।

**निबरना**—क्रि० अ० [सं० निवृत्त] १. बँधी या लगी वस्तु का अलग होना। छूटना। २. मुक्त होना। उद्धार पाना। ३. छुट्टी पाना। फुरसत पाना। ४. (काम) पूरा होना। समाप्त होना। ५. निर्णय होना। फैसल होना। ६. एक में मिली-जुली वस्तुओं का अलग होना। ७. उलझन दूर होना। सुलझना। ८. दूर होना।

**निबल***—वि० [सं० निर्बल] [संज्ञा निबलाई] दुर्बल।

**निबह**—संज्ञा पुं० [?] समूह। झुंड।

**निबहना**—क्रि० अ० [हिं० निबाहना] १. पार पाना। निकलना। छुट्टी पाना। २. निर्वाह होना। बराबर चला चलना। ३. पूरा होना। सपरना। ४. निरंतर व्यवहार होना। पालन होना।

**निबहुर**—संज्ञा पुं० [हिं० नि+बहुरना] जहाँ से कोई न लौटे। यमद्वार।

**निबहुरा**—वि० [हिं० नि+बहुरना] जो चला जाय और न लौटे। (गाली)

**निबाह**—संज्ञा पुं० [सं० निर्वाह] १. निबाहने की क्रिया या भाव। रहन। रहायस। गुजारा। २ किसी बात के अनुसार निरंतर व्यवहार। संबंध या परंपरा की रक्षा। ३. पूरा करने का कार्य। पालन। ४. छुटकारे का ढंग। बचाव का रास्ता।

**निबाहना**—क्रि० स० [सं० निर्वाहन] १. (किसी बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए चलना। जारी रखना। २. पालन करना। चरितार्थ करना। ३. बराबर करते जाना। सपराना।

**निबिड़**—वि० दे० "निविड़"।

**निबुआ***—संज्ञा पुं० दे० "नीबू"।

**निबुकना**†*—क्रि० अ० [सं० निर्मुक्त] १. छुटकारा पाना। २. छूटना। ३. बंधन खुलना।

**निबेड़ना**—क्रि० स० [स० निवृत्त] १. (बंधन आदि) छुड़ाना। उन्मुक्त करना। २. बिलगाना। छाँटना। चुनना। ३. उलझन दूर करना। सुलझाना। ४. निर्णय करना। फैसल करना। ५. दूर करना। अलग करना। ६. पूरा करना। निबटाना।

**निबेड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० निबेड़ना] १. छुटकारा। मुक्ति। २. बचाव। उद्धार। ३. बिलगाव। छाँट। चुनाव। ४. सुलझाने की क्रिया या भाव। ५. त्याग। ६. निबटेरा। समाप्ति। ७. निर्णय। फैसला।

**निबेरना**—क्रि० स० दे० "निबेड़ना"।

**निबेरा**—संज्ञा पुं० दे० "निबेड़ा"।

**निबेहना***—क्रि० स० दे० "निबेरना"।

**निबौरी, निबौली**—संज्ञा स्त्री० [सं० निंब+वर्त्तुक] निबकौरी। नीम का फल।

**निभ**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रकाश। प्रभा। वि० तुल्य। समान।

**निभना**—क्रि० अ० [हिं० निबहना] १. पार पाना। छुट्टी पाना। छुटकारा पाना। २. जारी रहना। लगातार बना

रहना । ३. गुजारा होना । सहायक होना । ४. पूरा होना । सफल होना । भुगतना । ५. पालन होना । चरितार्थ होना ।

**निभरम***—वि० [ सं० निर्भ्रम ] जिसे या जिसमें कोई शंका न हो । भ्रम-रहित ।

क्रि० वि० बेखटके । बेधड़क ।

**निभरोसी***†—वि० [ हिं० नि=नहीं+भरोसा ] १.जिसे कोई भरोसा न रह गया हो । निराश । हताश । २. जिसे किसी का आसरा-भरोसा न हो । निराश्रय ।

**निभाउँ***—वि० [ हिं० ( उप० ) नि + सं० भाव ] भाव रहित । जिसमें भाव न हो ।

**निभागा**—वि० [ हिं० नि + भाग्य ] अभागा ।

**निभाना**—क्रि० स० [ हिं० निबाहना ] १. ( किसी बात का ) निर्वाह करना । बराबर चलाए चलना । जारी रखना । २. चरितार्थ करना । पालन करना । ३ बराबर करते जाना । चलाना । भुगताना ।

**निभाव**—संज्ञा पुं० दे० "निबाह" ।

**निभृत**—वि० [ सं० ] १. रखा हुआ । २. निश्चल । अटल । ३. गुप्त । छिपा हुआ । ४ बंद किया हुआ । ५. निश्चित । स्थिर । ६. नम्र । विनीत । ७. शांत । धीर । ८. निर्जन । एकांत । ९. भरा हुआ । पूर्ण ।

**निभ्रांत***—वि० दे० "निर्भ्रांत" ।

**निमंत्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निमंत्रित ] १. किसी कार्य्य के लिए नियत समय पर आने का अनुरोध करना । बुलावा । आह्वान । २. खाने का बुलावा । न्योता ।

**निमंत्रणपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जिसके द्वारा किसी को निमंत्रण दिया जाय ।

**निमंत्रना***—क्रि० स० [ सं० निमंत्रण ] न्योता देना ।

**निमंत्रित**—वि० [ सं० ] जिसे न्योता दिया गया हो । आहूत ।

**निमक**†—संज्ञा पुं० दे० "नमक" ।

**निमकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० नमक ] १ नीबू का अचार । २. मैदे की मोयनदार नमकीन टिकिया ।

**निमकौड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "निबौली" ।

**निमग्न**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निमग्ना ] १. डूबा हुआ । मग्न । २. तन्मय ।

**निमगारना**†*—क्रि० अ० [ ? ] उत्पन्न करना । पैदा करना ।

**निमज्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] डूबकर किया जानेवाला स्नान । अवगाहन ।

**निमज्जना***—क्रि० अ० [ सं० निमज्जन ] डूबना । गोता लगाना । अवगाहन करना ।

**निमज्जित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निमज्जिता ] १. डूबा हुआ । मग्न । २. स्नात । नहाया हुआ ।

**निमटना**—क्रि० अ० दे० "निबटना" ।

**निमता***—वि० [ हिं० निम+माता ] जो उन्मत्त न हो ।

**निमात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा ।

**निमा, नरदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] नाबदान ।

**निमर्म**—वि० [ सं० नि+मर्म ] जिसमें मर्म न हो । मर्म-रहित । क्रूर ।

**निमाज**—संज्ञा स्त्री० दे० "नमाज" । वि० दे० "नवाज" ।

**निमान***—संज्ञा पुं० [ सं० निम्न ] १.नीचा स्थान । गड्ढा । २.जलाशय ।

**निमाना**—वि० [ सं० निम्न ] [ स्त्री० निमानी ] १. नीचा । ढालुआँ । नीचे की ओर गया हुआ । २. नम्र । विनीत । ३. बन्धू । ४. मनचाही करनेवाला ।

**निमि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे । २. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम । इन्हींसे मिथिला का विदेह-वंश चला । आँखों का मिचना । निमेष ।

**निमिख**—संज्ञा पुं० दे० "निमिष" ।

**निमित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हेतु । कारण । २. चिह्न । लक्षण । ३. उद्देश्य ।

**निमित्तक**—वि० [ सं० ] किसी हेतु से होनेवाला । जनित । उत्पन्न ।

**निमित्त कारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने । ( न्याय ) । विशेष—दे० "कारण" ।

**निमिराज***—संज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक ।

**निमिष**—संज्ञा पुं० दे० "निमेष" ।

**निमिस**—संज्ञा स्त्री० दे० "नमिस" ।

**निमीलन**—वि० [सं०] [ वि० निमीलित ] १. बंद करना । मूँदना । २. सिकोड़ना ।

**निमूद**—वि० [ हिं० मुदना ] मुँदा हुआ । बंद ।

**निमेख**—संज्ञा पुं० दे० "निमेष" ।

**निमेट**—वि० [ हिं० नि+ मिटना ] न मिटनेवाला ।

**निमेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पलक का गिरना । आँख का झपकना । २. पलक मारने भर का समय । पल । क्षण ।

**निमोना**—संज्ञा पुं० [ सं० नवान्न ] चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों का बनाया हुआ रसेदार व्यंजन ।

**निम्न**—वि० [ सं० ] नीचा ।

**निम्नगा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] नदी।

**निम्नोक्त**—वि॰ [ सं॰ ] नीचे कहा हुआ।

**नियंता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ नियतृ ] [ स्त्री॰ नियंत्री ] १. नियम बाँधनेवाला। व्यवस्था करनेवाला। २. कार्य्य को चलानेवाला। ३. नियम पर चलानेवाला। शासक।

**नियंत्रण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना।

**नियमित**—॰वि [ सं॰ ] नियम से बँधा हुआ। कायदे का पाबंद। प्रतिबद्ध।

**नियत**—वि॰ [सं॰] १. नियम द्वारा स्थिर। बँधा हुआ। परिमित। २. ठीक किया हुआ। निश्चित। मुकर्रर। ३. नियोजित। स्थापित। तैनात। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "नीयत"।

**नियताप्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] नाटक में अन्य उपायों को छोड़कर एक ही उपाय से फल-प्राप्ति का निश्चय।

**नियति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. नियत होने का भाव। बंधेज। २ स्थिरता। मुकर्ररी। ३. भाग्य। दैव। अदृष्ट। ४. बँधी हुई बात। अवश्य होनेवाली बात। ५. पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम।

**नियम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. विधि या निश्चय के अनुकूल प्रतिबंध। परिमिति। रोक। पाबंदी। २. दबाव। शासन। ३. बँधा हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ४. ठहराई हुई रीति। विधि। व्यवस्था। कानून। जाब्ता। ५. शर्त्त। ६. संकल्प। प्रतिज्ञा। व्रत। ७. योग के आठ अंगों में से एक जिसमें शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान किया जाता है। ८. एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाय; अर्थात् उसका होना एक ही स्थान पर बतलाया जाय। ९. विष्णु। १०. महादेव।

**नियमन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ नियमित, नियम्य] १. नियमबद्ध करने का कार्य्य। कायदा बाँधना। २. शासन।

**नियमबद्ध**—वि॰ [ सं॰ ] नियमों से बँधा हुआ। कायदे का पाबंद।

**नियमित**—वि॰ [सं॰] [ संज्ञा नियमितता ] १. बँधा हुआ। क्रमबद्ध। २. कायदे या कानून के मुताबिक। नियमबद्ध।

**नियर**†—अव्य॰ [सं॰ निकट] समीप। पास।

**नियराई**†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ नियर + आई (प्रत्य॰) ] निकटता। सामीप्य।

**नियराना**†—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ नियर + आना ( प्रत्य॰ ) ] निकट पहुँचना। नजदीक आना।

**नियाई***—वि॰ दे॰ "न्यायी"।

**नियाज**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. इच्छा। २. दीनता। ३. बड़ों का प्रसाद। ४. मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन। ५. बड़ों में होनेवाली भेंट।

**नियान***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ निदान ] परिणाम। अव्य॰ अंत में। आखिर।

**नियामक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [स्त्री॰ नियामिका] १.नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला। ३. मारनेवाला।

**नियामत**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ नेअमत] १. अलभ्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २. स्वादिष्ठ भोजन। उत्तम व्यंजन। ३. धन-दौलत।

**नियार**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ न्यारा ? ] जौहरी या सुनारों की दूकान का कूड़ा-कतवार।

**नियारा**†—वि॰ [ सं॰ निर्निकट ] अलग। दूर।

**नियारिया**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ नियारा] १. सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा-करकट आदि में से माल निकालनेवाला। २ चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

**नियारे***†—अव्य॰ दे॰ "न्यारे"।

**नियाव**†—सं॰ पुं॰ दे॰ "न्याय"।

**नियुक्त**—वि॰ [ सं॰ ] १. नियोजित। लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। २. तत्पर किया हुआ। प्रेरित। ३ स्थिर किया हुआ।

**नियुक्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] मुकर्ररी। तैनाती।

**नियुत**—वि॰ [ सं॰ ] १.एक लाख। लक्ष। २. दस लाख।

**नियुद्ध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बाहुयुद्ध। कुश्ती।

**नियोक्ता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ नियोक्तृ ] १. नियोजित करनेवाला। २. नियोग करनेवाला।

**नियोग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. नियोजित करने का कार्य्य। तैनाती। मुकर्ररी। २. प्रेरणा। ३. अवधारण। ४.प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार यदि किसी स्त्री का पति न होता या उसे अपने पति से संतान न होती तो वह अपने देवर या पति के और किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी। ( मनु ) ५. आज्ञा।

**नियोजक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] काम

में लगानेवाला। मुकर्रर करनेवाला।

**नियोजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० नियोजित, नियोज्य, नियुक्त ] किसी काम में लगाना। तैनात या मुकर्रर करना।

**निरंकार***—संज्ञा पुं० दे० "निराकार"।

**निरंकुश**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निरंकुशा, संज्ञा निरंकुशता ] जिसके लिए कोई अंकुश या प्रतिबंध न हो। बिना डर का।

**निरंग**—वि० [ सं० ] १. अंग-रहित। २. केवल खाली। जिसमें और कुछ न हो।

संज्ञा पुं० रूपक अलंकार का एक भेद।

वि० [ हिं० उप० नि=नहीं+रंग ] १.बेरंग। बदरंग। विवर्ण। २.उदास। बेरौनक।

**निरंजन**—वि० [ सं० ] १. अंजन-रहित। बिना काजल का। जैसे, निरंजन नेत्र। २. कल्मष-शून्य। दोष-रहित। ३. माया से निर्लिप्त। (ईश्वर का एक विशेषण)।

संज्ञा पुं० परमात्मा।

**निरंतर**—वि० [ सं० ] १. अंतर-रहित। जो बराबर चला गया हो। अविच्छिन्न। २. निबिड़। घना। गझिन। ३. लगातार या बराबर होनेवाला। ४. सदा रहनेवाला। अविचल। स्थायी।

क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।

**निरंतरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निरंतर या लगातार होनेवाला भाव। अविच्छिन्नता।

**निरंध**—वि० [ सं० ] १. भारी अंधा। २. महामूर्ख। ३. बहुत अँधेरा।

**निरंभ**—वि० [ सं० निरंभस् ] १. निर्जल। २. बिना पानी पिये रह जानेवाला।

**निरंश**—वि० [ सं० ] १. जिसे उसका भाग न मिला हो। २. बिना अक्षांश का।

**निरकार***—वि० दे० "निराकार"।

**निरकेवल**—वि० [ सं० निस्+केवल ] १. खालिस। बिना मेल का। २. स्वच्छ।

**निरक्षदेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भूमध्य रेखा के आस-पास के देश जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं।

**निरखन***—संज्ञा पुं० दे० "निरीक्षण"।

**निरक्षर**—वि० [ सं० ] १. अक्षर-शून्य। २. अनपढ़। मूर्ख।

**निरक्ष-रेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाड़ीमंडल। निरक्षवृत्त। क्रांतिवृत्त।

**निरखना***-क्रि० स० [ सं० निरीक्षण ] देखना। ताकना। अवलोकन करना।

**निरग**—संज्ञा पुं० दे० "नृग"।

**निरगुन***—वि० दे० "निर्गुण"।

**निरचू**—वि० [ सं० निश्चिंत ] जिसे फुरसत मिल गई हो। निश्चिंत। खाली।

**निरछल***—वि० [ सं० निरक्षि ] अंधा।

**निरजर**—वि० [ हिं० नि+सं० जरा ] जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।

**निरजोस**—संज्ञा पुं० [ सं० निर्यास ] १. निचोड़। २. निर्णय।

**निरजोसी**—वि० [ हिं० निरजोस ] १. निचोड़ निकालनेवाला। २. निर्णय करनेवाला।

**निरझर***-संज्ञा पुं० दे० "निर्झर"।

**निरत**—वि० [ सं० ] किसी काम में लगा हुआ। तत्पर। लीन। मशगूल।

*।—संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।

**निरतना***—क्रि० स० [ सं० नर्तन ] नाचना।

**निरतिशय**—वि० [ सं० ] हद दरजे का। सबसे बढ़कर।

**निरदई***—वि० दे० "निर्दय"।

**निरधातु**—वि० [ सं० निर्धातु ] शक्ति-हीन।

**निरधार***—संज्ञा पुं० दे० 'निर्धार'।

वि० [ सं० निर्धारण ] ठहराया हुआ। निश्चित।

**निरधारना**—क्रि० स० [ सं० निर्धारण ] १. निश्चय करना। स्थिर करना। २. मन में धारण करना। समझना।

**निरनुनासिक**—वि० [ सं० ] (वर्ण) जिसका उच्चारण नाक के संबंध से न हो।

**निरन्न**-वि० [ सं० ] १. अन्नरहित। २. निराहार। जो अन्न न खाए हो।

**निरवा**—वि० [ सं० निरल ] निराहार।

**निरपना***—वि० [ सं० निर+हिं० अपना ] १. जो अपना न हो। २. बेगाना। गैर।

**निरपराध**—वि० [ सं० ] अपराध-रहित। बेकसूर। निर्दोष।

क्रि० वि० बिना कोई कसूर किए।

**निरपराधी***-वि० दे० "निरपराध"।

**निरपवाद**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई अपवाद या दोष न हो। निर्दोष।

**निरपेक्ष**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी ] १. जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो। बेपरवा। २. जो किसी पर निर्भर न हो। ३. अलग। तटस्थ।

**निरबंसी**—वि० [ सं० निर्वंश ] जिसे वंश या संतान न हो।

**निरबल***—वि० दे० "निर्बल"।

**निरबहना***—क्रि स० दे०

"निरवा" ।

**निरवेद***—संज्ञा पुं० [ सं० निर्वेद ] १. वैराग्य । २. ताप ।

**निरवेरा***—संज्ञा पुं० दे० "निबेरा" ।

**निरभिमान**—वि० [ सं० ] जिसे अभिमान न हो । अहंकार-शून्य ।

**निरभिलाष**—वि० [ सं० ] अभिलाषा-रहित ।

**निरभ्र**—वि० [ सं० ] बिना बादल का ।

**निरमना***—क्रि० स० [ सं० निर्माण ] निर्माण करना । बनाना ।

**निरमर, निरमल***—वि० दे० "निर्मल" ।

**निरमान***—संज्ञा पुं० दे० "निर्माण" ।

**निरमाना***—क्रि० स० [ सं० निर्माण ] बनाना । तैयार करना । रचना ।

**निरमायल***—संज्ञा पुं० दे० "निर्माल्य" ।

**निरमूलना***—क्रि० स० [ सं० निर्मूलन ] १. निर्मूल करना । २. नष्ट करना ।

**निरमोल, निरमोलक***—वि० [सं० निर + हिं० मोल ] १. अनमोल । अमूल्य । २. बहुत बढ़िया ।

**निरमोही***—वि० दे० "निर्मोही" ।

**निरय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नरक ।

**निरयण**—संज्ञा पुं० [ सं०] अयन-रहित गणना । ज्योतिष में गणना की एक रीति ।

**निरर्थ**—वि० दे० "निरर्थक" ।

**निरर्थक**—वि० [ सं० ] १. अर्थशून्य । बे-मानी । २. न्याय में एक निग्रह-स्थान । ३. बिना मतलब का । व्यर्थ । ४. निष्फल ।

**निरवच्छिन्न**—वि० [ सं० ] जिसका क्रम न टूटा हो । सिलसिलेवार ।

**निरवद्य**—वि० [ सं० ] निंदा या दोष से रहित ।

**निरवधि**—वि० [ सं० ] जिसकी कोई अवधि न हो ।

क्रि० वि० लगातार । निरंतर ।

**निरवयव**—वि० [ सं० ] निराकार ।

**निरवलंब**—वि० [सं०] १. अवलंब-हीन । आधार-रहित । बिना सहारे । २. निराश्रय । जिसका कोई सहायक न हो ।

**निरवार**—संज्ञा पुं० [ हिं० निरवारना ] १. निस्तार । छुटकारा । बचाव । २. छुड़ाने या सुलझाने का काम । ३. निबटेरा ।

**निरवारना***—क्रि० स० [सं० निवारण] १. टालना । रोकनेवाली वस्तु को हटाना । २. मुक्त करना । छुड़ाना । ३. छोड़ना । त्यागना । ४. गाँठ आदि छुड़ाना । सुलझाना । ५. निर्णय करना । तै करना ।

**निरवाह**†*—संज्ञा पुं० दे० "निर्वाह" ।

**निरशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भोजन न करना । लंघन । उपवास ।

**निरसंक***†—वि० दे० "निःशंक" ।

**निरसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निरसनीय, निरस्य ] १. फेंकना । दूर करना । हटाना । २. खारिज करना । रद करना । ३. निराकरण । परिहार । ४. निकालना । ५. नाश । ६. वध ।

**निरस्त्र**—वि० [ सं० ] अस्त्रहीन । बिना हथियार का ।

**निरहंकार**—वि० [ सं० ] अभिमान-रहित ।

**निरहेतु***—वि० दे० "निर्हेतु" ।

**निरा**—वि० [ सं० निरालय ] [ स्त्री० निरी ] १. विशुद्ध । बिना मेल का । खालिस । २. जिसके साथ और कुछ न हो । केवल । ३. निपट । नितांत । एकदम । बिलकुल ।

**निराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निराना ] १. फसल के पौधों के आसपास उगने-वाले तृण, घास आदि दूर करना । २. निराने की मजदूरी ।

**निराकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निराकरणीय, निराकृत ] १. छाँटना । अलग करना । २. हटाना । दूर करना । ३. मिटाना । रद करना । ४. शमन । निवारण । परिहार । ५. खंडन । युक्ति या दलील को काटने का काम ।

**निराकांक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० निराकांक्षी ] आकांक्षा या कामना का अभाव ।

**निराकार**—वि० [ सं० ] जिसका कोई आकार न हो । जिसके आकार की भावना न हो ।

संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २. आकाश ।

**निराकुल**—वि० [ सं० ] १. जो आकुल न हो । जो घबराया न हो । २. बहुत व्याकुल । बहुत घबराया हुआ ।

**निराखर***†—वि० [ सं० निरक्षर ] १. जिसमें अक्षर न हों । बिना अक्षर का । २. मौन । चुप । ३. अपढ़ । मूढ़ ।

**निराट**—वि० [ हिं० निराल ] एक-मात्र । निरा । बिलकुल । निपट ।

**निरादर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आदर का अभाव । अपमान । बेइज्जती ।

**निराधार**—वि० [ सं० ] १. जिसे सहारा न हो या जो सहारे पर न हो । २. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो । अयुक्त । मिथ्या । झूठ । ३. जिसे या जिसमें जीविका आदि का सहारा न हो । ४. जो बिना अन्न-जल आदि के हो ।

**निरानंद**—वि० [ सं० ] आनंद-रहित । जिसमें आनंद न हो ।

संज्ञा पुं० आनंद का अभाव। दुःख।

**निराना**—क्रि० स० [ सं० निराकरण ] फसल के पौधों के आस-पास की घास खोदकर दूर करना जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके। नींदना। निकाना।

**निरापद**—वि० [ सं० ] १. जिसे कोई आफत या डर न हो। सुरक्षित। २. जिससे हानि या अनर्थ की आशंका न हो। ३. जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।

**निरापन***—वि० [ सं० निः+हिं० अपना ] जो अपना न हो। पराया। बेगाना।

**निरापुन***—वि० दे० "निरापन"।

**निरामय**—वि० [ सं० ] नीरोग। तनुरुस्त।

**निरामिष**—वि० [ सं० ] १. जिसमें मांस न मिला हो। २. जो मांस न खाय।

**निरारा**—वि० [ हिं० निराला ] अलग। पृथक्।

**निरालंब**—वि० [ सं० ] १. बिना आलंब या सहारे का। निराधार। २. निराश्रय।

**निरालस्य**—वि० [ सं० ] जिसमें आलस्य न हो। तत्पर। फुरतीला। चुस्त।

**निराला**—संज्ञा पुं० [ सं० निरालय ] [ स्त्री० निराली ] एकांत स्थान। ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो।

वि० १. जहाँ कोई मनुष्य या बस्ती न हो। एकांत। निर्जन। २. विलक्षण। सब से भिन्न। अद्भुत। अजीब। ३. अनूठा। अपूर्व। बहुत बढ़िया।

**निरावना**—क्रि० स० दे० "निराना"।

**निरावलंब**—वि० [ सं० ] बिना सहारे का।

**निराश्रय**—वि० [ सं० ] बिना

ढँका हुआ।

**निराश**—वि० [ हिं० नि+आशा ] आशाहीन। जिसे आशा न हो। नाउम्मेद।

**निराशा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निर (उप०)+सं० आशा ] नाउम्मेदी।

**निराशावाद**—संज्ञा पुं० [ हिं० निराशा+सं० वाद ] [ वि० निराशावादी ] वह वाद या सिद्धांत जिसमें किसी बात के परिणाम में नैराश्य ही प्रधान रहता हो।

**निराशी***—वि० [ सं० निराश ] १. हताश। नाउम्मेद। २. उदासीन। विरक्त।

**निराश्रय**—वि० [ सं० ] १. आश्रय-रहित। बिना सहारे का। २. असहाय। अशरण।

**निरास***—वि० दे० "निराश"।

**निरासी***—वि० [ सं० निराश ] १. दे० "निराशी"। २. उदास।

**निराहार**—वि० [ सं० ] १. आहार-रहित। जो बिना भोजन के हो। २. जिसके अनुष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

**निरिंद्रिय**—वि० [ सं० ] इंद्रिय-शून्य। जिसे कोई इंद्रिय न हो।

**निरिच्छना***—क्रि० स० [ सं० निरीक्षण ] देखना।

**निरीक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देखनेवाला। २. देख-रेख करनेवाला।

**निरीक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण ] १. देखना। दर्शन। २. देख-रेख। निगरानी। ३. देखने की मुद्रा या ढंग। चितवन।

**निरीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] देखना।

**निरीश्वर**—वि० [ सं० ] जिसमें ईश्वर न हो। ईश्वर से रहित।

संज्ञा पुं० दे० "निरीश्वरवादी"।

**निरीश्वरवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यह सिद्धांत कि कोई ईश्वर नहीं है।

**निरीश्वरवादी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जो ईश्वर का अस्तित्व न माने। नास्तिक।

**निरीह**—वि० [ सं० ] [ भाव० निरीहता ] १. जो किसी बात के लिए प्रयत्न न करे। २. जिसे किसी बात की चाह न हो। ३. उदासीन। विरक्त। ४. शांतिप्रिय।

**निरुआरा**—संज्ञा पुं० दे० "निरुवार"।

**निरुक्त**—वि० [ सं० ] १. निश्चय रूप से कहा हुआ। व्याख्या किया हुआ। २. नियुक्त। ठहराया हुआ।

संज्ञा पुं० छः वेदांगों में से एक जिसमें यास्क मुनि की दी हुई वैदिक शब्दों के निघंटु की व्याख्या है। वेद का चौथा अंग।

**निरुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा कथन हो। २ एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परंतु वह अर्थ सयुक्तिक हो।

**निरुज***—वि० दे० "नीरुज"।

**निरुत्तर**—वि० [ सं० ] १. जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २. जो उत्तर न दे सके।

**निरुत्साह**—वि० [सं०] उत्साहहीन।

**निरुद्देश्य**—वि० [सं०] जिसका कोई उद्देश्य न हो।

क्रि० वि० बिना किसी उद्देश्य के।

**निरुद्ध**—वि० [सं०] रुका या बँधा हुआ।

संज्ञा पुं० योग में चित्त की वह अवस्था जिसमें वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो

जाता है।

**निरुद्यम**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निरुद्यमता ] जिसके पास कोई उद्यम न हो। उद्योगरहित। बेकाम।

**निरुद्यमी**—संज्ञा पुं० [ सं० निरुद्यमिन् ] जो उद्यम न करता हो। बेकार। निकम्मा।

**निरुद्योग**—वि० [ सं० ] उद्योग-रहित। बेकार।

**निरुपद्रव**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई उपद्रव न हो।

**निरुपद्रवी**—संज्ञा पुं० [ सं० निरुपद्रविन् ] जो उपद्रव न करे। शात।

**निरुपम**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निरुपमा ] जिसकी उपमा न हो। उपमा-रहित। बेजोड़।

**निरुपयोगी**—वि० [ सं० ] जो उपयोग में न आ सके। व्यर्थ। निरर्थक।

**निरुपाधि**—वि० [ सं० ] १. उपाधि-रहित। बाधा-रहित। २. माया-रहित। संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म।

**निरुपाय**—वि० [ सं० ] १. जो कुछ उपाय न कर सके। २. जिसका कोई उपाय न हो।

**निरुवरना***†—क्रि० अ० [ सं० निवारण ] कठिनता आदि का दूर होना। सुलझना।

**निरुवार**†—संज्ञा पुं० [ सं० निवारण] १. छुड़ाने का काम। मोचन। २. छुटकारा। बचाव। ३. सुलझाने का काम। ४. तै करना। निबटाना। ५. निर्णय। फैसला।

**निरुवारना***—क्रि० स० [ हिं० निरुवार ] १. छुड़ाना। मुक्त करना। २. सुलझाना। उलझन मिटाना। ३. तै करना। निबटाना। ४. निर्णय करना। फैसला करना।

**निरूढ़**—वि० [ सं० ] १. उत्पन्न। २. प्रसिद्ध। विख्यात। ३. अविवाहित। कुँआरा।

**निरूढ़-लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह लक्षणा जिसमें शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो; अर्थात् वह केवल प्रसंग या प्रयोजनवश ही न ग्रहण किया गया हो।

**निरूढ़ा**—संज्ञा स्त्री० दे० "निरूढ़-लक्षणा"।

**निरूप**—वि० [ हिं० नि+रूप ] १. रूप-रहित। निराकार। २. कुरूप। बदशकल।

**निरूपक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निरूपिका, निरूपिणी ] किसी विषय का निरूपण करनेवाला।

**निरूपण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रकाश। २. किसी विषय का विवेचना-पूर्वक निर्णय। विचार। ३. निदर्शन।

**निरूपना***—क्रि० अ० [ सं० निरूपण ] निर्णय करना। ठहराना। निश्चित करना।

**निरूपित**—वि० [ सं० ] जिसका निरूपण या निर्णय हो चुका हो।

**निरूप्य**—वि० [ सं० ] १. निरूपण या निर्णय करने के योग्य। २. जिसका निरूपण होने को हो।

**निरेखना***—क्रि० स० दे० "निरखना"।

**निरै***—संज्ञा पुं० [ सं० निरय ] नरक।

**निरैठा**†*—संज्ञा पुं० [ ? ] मस्त। मौजी।

**निरोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रोक। अवरोध। रुकावट। बंधन। २. घेरा। घेर लेना। ३. नाश। ४. योग में चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकना जिसमें अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता होती है।

**निरोधक**—वि० [ सं० ] रोकनेवाला।

**निरोधी**—वि० दे० "निरोधक"।

**निर्ख**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] भाव। दर।

**निर्खनामा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह पत्र जिस पर सब चीजों का निर्ख या भाव लिखा हो।

**निर्खबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] चीजों के भाव या दर निश्चित करना।

**निर्गंध**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निर्गंधता ] जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। गंधहीन।

**निर्गत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निर्गता ] निकला हुआ। बाहर आया हुआ।

**निर्गम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निकास।

**निर्गमना**—क्रि० अ० [ सं० निर्गमन ] निकलना।

**निर्गुंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का क्षुप जिसकी जड़ औषध के काम में आती है। सँभालू। सिंदुवार।

**निर्गुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परमेश्वर। वि० [ सं० ] [ संज्ञा निर्गुणता ] १. जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो। २. जिसमें कोई अच्छा गुण न हो। बुरा।

**निर्गुणिया**—वि० [ सं० निर्गुण+इया ( प्रत्य० ) ] वह जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।

**निर्गुणी**—वि० [ सं० निर्गुण ] मूर्ख।

**निर्घंट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शब्द या ग्रंथसूची।

**निर्घात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तेज हवा चलने का शब्द। २. बिजली

की कड़क । ३. एक प्रकार का अन्न ।

**निर्घिन***—वि० दे० "निर्घृण"।

**निर्घृण**—वि० [ सं० ] १. जिसे गंदी वस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो । २. अति नीच । निंदित । ३. निर्दय ।

**निर्घोष**-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निर्घोषित ] शब्द । आवाज ।
वि० [ सं० ] शब्द-रहित ।

**निर्छल***†—वि० दे० "निश्छल" ।

**निर्जन**—वि० [ सं० ] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो । सुनसान । एकांत ।

**निर्जल**—वि० [ सं० ] १. बिना जल का । २. जिसमें जल पीने का विधान न हो ।

**निर्जला एकादशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जेठ सुदी एकादशी तिथि, जिस दिन लोग निर्जल व्रत रखते हैं ।

**निर्जीव**—वि० [ सं० ] १. जीव-रहित । बेजान । मृतक । २. अशक्त या उत्साहहीन ।

**निर्झर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पानी का झरना । सोता । चश्मा ।

**निर्झरिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी । दरिया ।

**निर्णय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षों में से एक पक्ष को ठीक ठहराना । निश्चय । २. वादी और प्रतिवादी की बातों को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के संबंध में कोई विचार स्थिर करना । फैसला । निबटारा ।

**निर्णयोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है ।

**निर्णायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो निर्णय या फैसला करे ।

**निर्णीत**—वि० [ सं० ] निर्णय किया हुआ । जिसका निर्णय हो चुका हो ।

**निर्त***†-संज्ञा पुं० दे० "नृत्य" ।

**निर्तक***†-संज्ञा पुं० दे० "नर्तक" ।

**निर्तना***†—क्रि० अ० [ सं० नृत्य ] नाचना ।

**निर्दंभ**—वि० [ सं० ] जिसे दंभ या अभिमान न हो ।

**निर्दई***†—वि० दे० "निर्दय" ।

**निर्दय**—वि० [सं०] निष्ठुर । बेरहम ।

**निर्दयता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निर्दय होने की क्रिया या भाव । बेरहमी । निष्ठुरता ।

**निर्दयपन**-संज्ञा पु० दे० 'निर्दयता' ।

**निर्दयी***†-वि० दे० "निर्दय" ।

**निर्दल**—वि० [ सं० ] जिसमें दल या पत्र न हों । जो किसी दल का न हो ।

**निर्दहना***†—क्रि० स० [ सं० दहन] जलाना ।

**निर्दिष्ट**—वि० [ सं० ] १. जिसका निर्देश हो चुका हो । २. बतलाया या नियत किया हुआ । ठहराया हुआ ।

**निर्दूषण***†—वि० दे० "निर्दोष" ।

**निर्देश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी पदार्थ को बतलाना । २. ठहराना या निश्चित करना । ३. आज्ञा । हुक्म । ४. कथन । ५. उल्लेख । जिक्र । ६. वर्णन । ७. ऐसा उल्लेख जिसकी सहायता से विशेष ज्ञातव्य बातों का पता चल सके । ८. नाम ।

**निर्दोष**—वि० [ सं० ] १. जिसमें कोई दोष न हो । बे-ऐब । बे-दाग । २. बे-कसूर ।

**निर्दोषता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० निर्दोष+ता ( प्रत्य० ) ] निर्दोष होने की क्रिया या भाव ।

**निर्दोषी**—वि० दे० "निर्दोष" ।

**निर्द्वंद्व, निर्द्वंद्व**—वि० [ सं० ] १. जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो । २. जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वंद्वों से रहित या परे हो । ३. स्वच्छंद ।

**निर्धंधा**—वि० [ हिं० निः+धंधा ] जिसके हाथ में काम-धंधा न हो । बेरोजगार ।

**निर्धन**—वि० [ सं० ] धनहीन । गरीब ।

**निर्धनता**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गरीबी ।

**निर्धार**—संज्ञा पुं० दे० "निर्धारण" ।

**निर्धारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० निर्धारिका, निर्धारिणी ] वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करता हो ।

**निर्धारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ठहराना या निश्चित करना । २. निश्चय । निर्णय । ३. न्याय के अनुसार किसी एक जाति के पदार्थों में से गुण या कर्म आदि के विचार से कुछ को अलग करना ।

**निर्धारना**-क्रि० स० [ सं० निर्धारण ] निश्चित करना । निर्धारित करना । ठहराना ।

**निर्धारित**—वि० [ सं० ] निश्चित किया हुआ ।

**निर्निमेष**—क्रि० वि० [ सं० ] बिना पलक झपकाए । एकटक ।
वि० १. जो पलक न गिरावे । २. जिसमें पलक न गिरे ।

**निर्बंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रुकावट । अड़चन । २. जिद । हठ । ३. आग्रह ।

**निर्बल**—वि० [ सं० ] बलहीन । कम-

ज़ोर।

**निर्बलता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] कमज़ोरी।

**निर्बहना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ निर्वहन ] १. पार होना। अलग होना। दूर होना। २. क्रम का चलना। निभना। पालन होना।

**निर्बाध**—वि॰ [ सं॰ ] जिसमें कोई बाधा न हो। बाधा रहित।
क्रि॰ वि॰ बिना किसी प्रकार की बाधा के।

**निर्बाधित**—वि॰ दे॰ "निर्बाध"।

**निर्बुद्धि**—वि॰ [ सं॰ ] बेवकूफ। मूर्ख।

**निर्बोध**—वि॰ [ सं॰ ] जिसे अच्छे बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।

**निर्भय**—वि॰ [ सं॰ ] जिसे कोई डर न हो। निडर। बेखौफ।

**निर्भयता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] निडरपन। निडर होने का भाव या अवस्था।

**निर्भर**—वि॰ [ सं॰ ] १. पूर्ण। भरा हुआ। २. युक्त। मिला हुआ। ३. अवलंबित। आश्रित। मुनहसर। ४. [ निर+भर=बिना भरा। खाली।

**निर्भीक**—वि॰ [ सं॰ ] बेडर। निडर।

**निर्भीकता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] निर्भीक होने की क्रिया या भाव।

**निर्भ्रम**—वि॰ [ सं॰ ] भ्रमरहित। शंकारहित।
क्रि॰ वि॰ निधड़क। बेखटके।

**निर्भ्रांत**—वि॰ [ सं॰ ] १. भ्रम-रहित। जिसमें कोई संदेह न हो। २. जिसको कोई भ्रम न हो।

**निर्मना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "निर्माना"।

**निर्मम**—वि॰ [ सं॰ ] १. जिसे ममता न हो। निर्मोही। २. जिसको कोई वासना न हो। निष्काम।

**निर्ममता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] निर्मम होने की अवस्था या भाव।

**निर्मर्म**—वि॰ [ सं॰ ] जिसमें मर्म न हो। मर्म-रहित।

**निर्मल**—वि॰ [ सं॰ ] १. मल-रहित। साफ। स्वच्छ। २. पाप-रहित। शुद्ध। पवित्र। ३. निर्दोष। कलंक-हीन।

**निर्मलता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सफाई। स्वच्छता। २. निष्कलंकता। ३. शुद्धता।

**निर्मला**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ निर्मल ] नानकपंथी एक साधु-संप्रदाय।

**निर्मली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ निर्मल ] १. एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, जिसके पके हुए बीजों का औषध-रूप में तथा गँदला पानी साफ करने के लिए व्यवहार होता है। चाकसू। २. रीठे का वृक्ष या फल।

**निर्माण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रचना। बनावट। २. बनाने का काम।

**निर्माता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] निर्माण करनेवाला। बनानेवाला। जो बनावे।

**निर्मात्रिक**—वि॰ [ सं॰ ] बिना मात्रा का।

**निर्मान**—वि॰ [ हिं॰ नि+मान ] बेहद। अपार।
संज्ञा पुं॰ दे॰ "निर्माण"।

**निर्माना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ निर्माण] बनाना।

**निर्मायल***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "निर्माल्य"।

**निर्माल्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ़ चुका हो।

**निर्मित**—वि॰ [ सं॰ ] बनाया हुआ। रचित।

**निर्मूल**—वि॰ [ सं॰ ] १. जिसमें जड़ न हो। बिना जड़ का। २. जड़ से उखाड़ा हुआ। ३. बे-बुनियाद। बे-जड़। ४. जो सर्वथा नष्ट हो गया हो।

**निर्मूलन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] निर्मूल होना या करना। विनाश।

**निर्मोक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. साँप की केंचुली। २. शरीर के ऊपर की खाल। ३ आकाश।

**निर्मोल***†—वि॰ [ सं॰ निः+हिं॰ मोल ] जिसका मूल्य बहुत अधिक हो। अमूल्य।

**निर्मोह**—वि॰ [ सं॰ ] जिसके मन में मोह या ममता न हो।

**निर्मोहिनी**—वि॰स्त्री॰ [हिं॰ निर्मोही +इनी ( प्रत्य॰ ) ] जिसके चित्त में ममता या दया न हो। निर्दय।

**निर्मोही**—वि॰ [ सं॰ निर्मोह ] जिसके हृदय में मोह या ममता न हो। निर्दय।

**निर्यात**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वह जो कहीं से बाहर निकले। २. देश से बाहर जाने की क्रिया या जानेवाला माल।

**निर्यातन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बदला चुकाना। २. प्रतीकार। ३. मार डालना।

**निर्यास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वृक्षों या पौधों में से आप से आप अथवा उनका तना आदि चीरने से निकलनेवाला रस। २. गोंद। ३. बहना या झरना। क्षरण।

**निर्युक्ति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] महात्माओं के निर्युक्तिक वचन जो सूत्र के लिए कहे गये हों।

**निर्लज्ज**—वि॰ [ सं॰ ] बेशर्म। बेहया।

**निर्लज्जता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बेशर्मी । बेहयाई । निर्लज्ज होने का भाव।

**निर्लिप्त**—वि० [ सं० ] १. जो किसी विषय में आसक्त न हो । २. जो लिप्त न हो ।

**निर्लेप**—वि० दे० "निर्लिप्त" ।

**निर्लोभ**—वि० [ सं० ] जिसे लोभ न हो ।

**निर्वंश**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निर्वंशता ] जिसका वंश नष्ट हो गया हो ।

**निर्वचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निश्चित रूप से कोई बात कहना । निरूपण । वि० चुप । मौन । निर्वाक् ।

**निर्वसन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० निर्वसना ] नग्न । नंगा ।

**निर्वहण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निबाह । गुजर। निर्वाह । २. समाप्ति ।

**निर्वहना***†—क्रि० अ० [ सं० निर्वहन ] परंपरा का पालन होना । निभना । चलना ।

**निर्वाक्**—वि० [ सं० ] मौन । चुप ।

**निर्वाचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो निर्वाचन करे या चुने । चुननेवाला ।

**निर्वाचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी काम के लिए बहुतों में से एक या अधिक का चुनना ।

**निर्वाचन-क्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो ।

**निर्वाचित**—वि० [ सं० ] चुना हुआ ।

**निर्वाण**—वि० [ सं० ] १. बुझा हुआ ( दीपक, अग्नि आदि ) । २. अस्त । डूबा हुआ । ३. शांत । धीमा पड़ा हुआ । ४. मृत ।
संज्ञा पुं० १. बुझना । ठंढा होना । २. समाप्ति । न रह जाना । ३. अस्त । गमन । डूबना । ४. शांति । ५. मुक्ति ।

**निर्वापण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निर्वापित, निर्वाप्य ] १. अंत । समाप्ति । २. विनाश । ३. आग का बुझना । ४. दान ।

**निर्वासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो निर्वासन करता हो । २. देश-निकाला देनेवाला ।

**निर्वासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मार डालना । वध । २. गाँव, शहर या देश आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना । देशनिकाला । ३. निकालना ।

**निर्वासित**—वि० [ सं० ] जिसे देश निकाला मिला हो । अपने निवास स्थान से निकाला हुआ ।

**निर्वाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी क्रम या परंपरा का चला चलना । निर्वाह । २. किसी बात के अनुसार बराबर आचरण । पालन । ३. समाप्ति । पूरा होना ।

**निर्वाहना***—क्रि० अ० [ सं० निर्वाह + ना ( हिं० प्रत्य० ) ] निर्वाह करना ।

**निर्विकल्प**—वि० [ सं० ] १. जो विकल्प, परिवर्त्तन या प्रभेदों आदि से रहित हो । २. स्थिर । निश्चित ।

**निर्विकल्प समाधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नहीं रह जाता ।

**निर्विकार**—वि० [ सं० ] जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्त्तन न हो ।

**निर्विघ्न**—वि० [ सं० ] विघ्न-बाधा-रहित ।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के विघ्न के ।

**निर्विरोध**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई विरोध या बाधा न हो ।
क्रि० वि० बिना किसी विरोध या रुकावट के ।

**निर्विवाद**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई विवाद न हो । बिना झगड़े का ।

**निर्विशेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परमात्मा ।

**निर्विषी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक घास जिसकी जड़ का व्यवहार अनेक प्रकार के विषों का नाश करने के लिए होता है । जदवार ।

**निर्वीज**—वि० [ सं० ] १. बीजरहित। जिसमें बीज न हो । २. जो कारण से रहित हो ।

**निर्वीर्य्य**—वि० [ सं० ] वीर्य्यहीन । बल या तेज-रहित । कमजोर । निस्तेज ।

**निर्वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपना अपमान । २. खेद । दुःख । ३. वैराग्य ।

**निर्वेदी**—संज्ञा पुं० [सं० निर् + वेदी ] वेद से परे, ब्रह्म ।

**निर्वैर**—वि० [ सं० ] वैर या द्वेष से रहित ।

**निर्व्यलीक**—वि० [ सं० ] निष्कपट ।

**निर्व्याज**—वि० [ सं० ] १. निष्कपट । छल-रहित । २. बाधा-रहित ।

**निर्हेतु**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई हेतु न हो ।

**निलज**†—वि० दे० "निर्लज्ज" ।

**निलजता***—संज्ञा स्त्री० [ सं० निर्लज्जता ] निर्लज्जता । बेशर्मी । बेहयाई ।

**निलजी***†—वि० स्त्री० [ हिं० निर्लज ] निर्लज्जा । बेशर्म । बेहया । ( स्त्री ) ।

**निलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मकान । घर । २. स्थान । जगह ।

**निलहा**—वि० [ हिं० नील ] १. नीलवाला । जैसे—निलहा गोरा । २. नील संबंधी ।

**निवछरा***—वि० [ देश० ] ( ऐसा

सुनसान) जिसमें बहुत काम-काज न हो।

**निवसन**—संज्ञा पुं० [सं० निस्+ संज्ञ] १. गाँव। २. घर। ३. वस्त्र।

**निवसना**—क्रि० अ० [सं० निवसन] रहना। निवास करना।

**निवह**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. सात वायुओं में से एक वायु।

**निवाई**—वि० [सं० नव] १. नवीन। नया। २. अनोखा। विलक्षण।

**निवाज**—वि० दे० "नवाज"।

**निवाजना***†—क्रि० स० दे० "नवाजना"।

**निवाड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "नवाड़ा"।

**निवार**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नवार] बहुत मोटे सूत की बनी हुई चौड़ी पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। निवाड़। नेवार।

संज्ञा पुं० [सं० नीवार] तिन्नी धान।

**निवारक**—वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला।

**निवारण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रोकने की क्रिया। २. हटाने या दूर करने की क्रिया। ३. निवृत्ति। छुटकारा।

**निवारना***—क्रि० स० [सं० निवारण] १. रोकना। दूर करना। हटाना। २. बचाना। रक्षा के साथ काटना या बिताना। ३. निषेध करना। मना करना।

**निवारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० नेपाली या नेमाली] १. जूही की जाति का एक फैलनेवाला झाड़ या पौधा। २. इस पौधे का फूल।

**निवाला**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कौर। ग्रास।

**निवास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने की क्रिया या भाव। २. रहने का स्थान। ३. घर।

**निवासस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। २. घर। मकान।

**निवासिप**—संज्ञा पुं० दे० "निवासी"।

**निवासी**—संज्ञा पुं० [सं० निवासिन्] [स्त्री० निवासिनी] रहनेवाला। बसनेवाला। वासी।

**निविड़**—वि० [सं०] १. घना। घन। घोर। २. गहरा।

**निविष्ट**—वि० [सं०] १. जिसका चित्त एकाग्र हो। २. एकाग्र। ३. लपेटा हुआ। ४. घुसा या घुसाया हुआ। ५. बाँधा हुआ।

**निवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। प्रवृत्ति का उलटा। २. मोक्ष।

**निवेद***†—संज्ञा पुं० दे० "नैवेद्य"।

**निवेदक**—संज्ञा पुं० [सं०] निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।

**निवेदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनय। विनती। प्रार्थना। २. समर्पण।

**निवेदना***†—क्रि० स० [हिं० निवेदन] १. विनती करना। प्रार्थना करना। २. कुछ भोज्य पदार्थ आगे रखना। नैवेद्य चढ़ाना। ३. अर्पित करना।

**निवेदित**—वि० [सं०] १. अर्पित किया हुआ। २. निवेदन किया हुआ।

**निवेरना***†—क्रि० स० दे० "निबटाना"।

**निवेरा***—वि० [हिं० निबेरना] १. चुना हुआ। छाँटा हुआ। २. नवीन। अनोखा।

**निवेश**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० निवेशित] १. विवाह। २. डेरा। खेमा। ३. प्रवेश। ४. घर। ५. लगाया या रखा जाना। स्थापन।

**निशंक**—वि० [सं० निःशंक] जिसे किसी बात की शंका या भय न हो। निर्भय। निडर।

**निशंग**—संज्ञा पुं० दे० "निषंग"।

**निशा**—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

**निशांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रात्रि का अंत। २. प्रभात। तड़का।

**निशांध**—वि० [सं०] जिसे रात को न सूझे।

**निशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात्रि। रजनी। २. हरिद्रा। हलदी। ३. दारुहरिद्रा।

**निशाकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। चाँद। २. कुक्कुट। मुरगा।

**निशाखातिर**—संज्ञा स्त्री० [अ० खातिर+फ़ा० निशाँ (खातिरनिशाँ)] तसल्ली। दिलजमई।

**निशाचर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राक्षस। २. शृगाल। गीदड़। ३. उल्लू। ४. सर्प। ५. चक्रवाक। ६. भूत। ७. चोर। ८. वह जो रात को चले।

**निशाचरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राक्षसी। २. कुलटा ३ अभिसारिका नायिका।

**निशाधीश**—संज्ञा पुं० दे० "निशापति"।

**निशान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय। चिह्न। २. किसी पदार्थ से अंकित किया हुआ चिह्न। ३. शरीर अथवा और किसी पदार्थ पर बना हुआ स्वाभाविक या और किसी प्रकार का चिह्न, दाग या धब्बा। ४. वह चिह्न जो अपढ़ आदमी अपने हस्ताक्षर के बदले में किसी कागज आदि पर

बनाता है। ५. वह लक्षण या चिह्न जिससे किसी प्राचीन या पहले की घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिले।

**यौ०**—नाम निशान=१. किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। २. अस्तित्व का लेश। बचा हुआ थोड़ा अंश।

६. पता। ठिकाना।

**मुहा०**—निशान देना=असामी को सम्मन आदि तामील करने के लिए पहचनवाना।

७. समुद्र में या पहाड़ों आदि पर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगों को मार्ग आदि दिखाने के लिए कोई प्रयोग किया जाता हो। ८. दे० "लक्षण"। ९. दे० "निशाना"। १०. दे० "निशानी"। ११. ध्वजा। पताका। झंडा।

**मुहा०**—किसी बात का निशान उठाना या खड़ा करना=किसी काम में अगुआ या नेता बनकर लोगों को अपना अनुयायी बनाना।

**निशानची**—संज्ञा पुं० [फ़ा० निशान+ची (प्रत्य०)] वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आगे झंडा लेकर चलता हो। निशान-बरदार।

**निशानदेही**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० निशान+हिं० देना या फा० देह=देना] असामी को सम्मन आदि की तामील के लिए पहचनवाने की क्रिया।

**निशापति**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**निशाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह जिस पर ताककर किसी अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय। लक्ष्य। २. किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करना।

**मुहा०**—निशाना बाँधना=वार करने के लिए अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना जिसमें ठीक लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या लगाना=ताककर अस्त्र आदि का वार करना।

३. वह जिस पर लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या बात कही जाय।

**निशानाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**निशानी**—संज्ञा [फ़ा०] १. स्मृति के उद्देश्य से दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ। यादगार। स्मृति-चिह्न। २. वह चिह्न जिससे कोई चीज पहचानी जाय। निशान।

**निशामणि**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**निशामुख**—संज्ञा पुं० [सं०] संध्या का समय।

**निशास्ता**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला और जमाया हुआ सत या गूदा। २. माड़ी। कलफ।

**निशि**—संज्ञा स्त्री० [सं० निशा] रात। रात्रि।

**निशिकर**—संज्ञा पुं० [हिं० निशि+सं० कर] चंद्रमा।

**निशिचर**—संज्ञा पुं० दे० 'निशाचर'।

**निशिचरराज***—संज्ञा पुं० [हिं० निशिचर+सं० राज] विभीषण।

**निशिचारी**—संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

**निशित**—वि० [सं०] चोखा। तेज। संज्ञा पुं० लोहा।

**निशिनाथ**—संज्ञा पुं० दे० "निशानाथ"।

**निशिपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. एक प्रकार का छंद।

**निशिवासर***—संज्ञा पुं० [सं०] रात-दिन। सदा। सर्वदा। हमेशा।

**निशीथ**—संज्ञा पुं० [सं०] रात।

**निशीथिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात।

**निशुंभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वध। २. हिंसा। ३. एक असुर जो शुंभ तथा निमुचि का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था।

**निशुंभमर्दिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**निश्चय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसी धारणा जिसमें कोई संदेह न हो। निःसंशय ज्ञान। २. विश्वास। यकीन। ३. निर्णय। ४. पक्का विचार। दृढ़ संकल्प। पूरा इरादा। ५. एक अर्थालंकार जिसमें अन्य विषय का निषेध होकर प्रकृत या यथार्थ विषय का स्थापन होता है।

**निश्चयात्मक**—वि० [सं०] जो बिलकुल निश्चित हो। ठीक-ठीक। असंदिग्ध।

**निश्चल**—वि० [सं०] [स्त्री० निश्चला] १. जो अपने स्थान से न हटे। अचल। अटल। २ स्थिर।

**निश्चलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चल होने का भाव। स्थिरता। दृढ़ता।

**निश्चिंत**—वि० [सं०] जिसे कोई चिंता या फिक्र न हो। चितारहित। बे-फिक्र।

**निश्चिंतई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "निश्चिंतता"।

**निश्चिंतता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] निश्चिंत होने का भाव। बे-फिक्री।

**निश्चित**—वि० [सं०] १. जिसके संबंध में निश्चय हो। तै किया हुआ। निर्णीत। २. जिसमें कोई फेर-बदल न हो सके। दृढ़। पक्का।

**निश्चेतन**—वि० [सं०] १. बेसुध। बेहोश। २. जड़।

**निश्चेष्ट**—वि० [सं०] १. बेहोश।

अचेत। चेष्टारहित। २. निश्चल। स्थिर।

**निश्चैक**—संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"।

**निश्छल**—वि० [ सं० ] छलरहित। सीधा।

**निश्रेणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सीढ़ी। जीना। २ मुक्ति।

**निश्रेयस**—संज्ञा पुं० [ सं० निःश्रेयस् ] १. मोक्ष। २. दुःख का अत्यंत अभाव। ३. कल्याण।

**निश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाक या मुँह के बाहर निकलनेवाला श्वास।

**निश्शंक**—वि० [ सं० ] १. निडर। निर्भय। २. संदेह-रहित। जिसमें शंका न हो।

**निश्शेष**—वि० [ सं० ] जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो। जिसका कुछ भी अवशिष्ट न हो।

**निषंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निषंगी ] १. तूण। तूणीर। तरकश। २. खड्ग।

**निषध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार एक पर्वत जो हरिवर्ष की सीमा पर है। २. हरिवंश के अनुसार रामचंद्र के प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम। ३. पुराणानुसार एक देश का प्राचीन नाम जो विंध्याचल पर्वत पर था।

**निषधाभास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अलंकार के पाँच भेदों में से एक। आक्षेप।

**निषाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक बहुत पुरानी अनार्य्य-जाति जो भारत में आर्य्य जाति के आने से पहले निवास करती थी। २. एक प्राचीन देश जो संभवतः शृंगबेरपुर के चारों ओर था। ३. संगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

**निषादी**—संज्ञा पुं० [ सं० निषादिन् ] हाथीवान। महावत।

**निषिद्ध**—वि० [ सं० ] १. जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिए मनाही हो। २. खराब। बुरा। दूषित।

**निषेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वर्जन। मनाही। न करने का आदेश। २. बाधा। रुकावट।

**निषेधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मना करनेवाला।

**निषेधित**—वि० दे० "निषिद्ध"।

**निष्कंटक**—वि० [ सं० ] जिसमें किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति या झंझट आदि न हो। बिना खटके का। निर्विघ्न।

**निष्कंप**—वि० [ सं० ] जो काँपता या हिलता न हो। स्थिर।

**निष्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का या मोहर, भिन्न भिन्न समयों में जिसका मान भिन्न भिन्न था। २. प्राचीन काल में चाँदी की एक प्रकार की तौल जो चार सुवर्ण के बराबर होती थी। ३. वैद्यक में चार माशे की तौल। टंक। ४. सुवर्ण। ५. हीरा।

**निष्कपट**—वि० [ सं० ] निश्छल। छलरहित। सीधा। सरल।

**निष्कपटता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निष्कपट होने का भाव। सरलता। सीधापन।

**निष्करुण**—वि० [ सं० ] जिसमें करुणा न हो। करुणारहित।

**निष्कर्म**—वि० [ सं० निष्कर्मन् ] अकर्मा। जो कामों में लिप्त न हो।

**निष्कर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निश्चय। २. खुलासा। तत्त्व। ३. निचोड़। सार।

**निष्कलंक**—वि० [ सं० ] निर्दोष। बे-ऐब।

**निष्काम**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निष्कामता ] १. (वह मनुष्य) जिसमें किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो। २. (वह काम) जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय।

**निष्कारण**—वि० [ सं० ] १. बिना कारण। बे-सबब। २. व्यर्थ। वृथा।

**निष्कासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निष्कासित ] निकालना। बाहर करना।

**निष्कृत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निष्कृति ] १. निकला हुआ। २. छूटा हुआ। मुक्त।

**निष्क्रमण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० निष्क्रांत ] १. बाहर निकलना। २. एक संस्कार जिसमें जब बालक चार महीने का होता है, तब उसे घर से ... निकलकर सूर्य का दर्शन ...ले।

**निशावरी** ... १।

**निष्क्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेतन। तनखाह। २. विनिमय। बदला। ३. बिक्री।

**निष्क्रांत**—वि० [ सं० ] [ भा० निष्क्रांति ] १ निकला या निकाला हुआ। २. छूटा हुआ। मुक्त।

**निष्क्रिय**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो। निश्चेष्ट।

यौ०—निष्क्रिय प्रतिरोध=किसी अनुचित कार्य या आज्ञा का वह विरोध जिसमें विरोध करनेवाला उचित काम करता रहता है और दंड की परवा नहीं करता।

**निष्क्रियता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

**निष्ठ**—वि० [सं०] १. स्थित। ठहरा हुआ। २. तत्पर। लगा हुआ। ३. जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो।

**निष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्थिति। अवस्था। ठहराव। २. निर्वाह। ३. चित्त का जमना। ४. विश्वास। निश्चय। ५. धर्म्म, गुरु या बड़े आदि के प्रति श्रद्धा-भक्ति। पूज्य बुद्धि। ६. नाश। ७. ज्ञान की वह चरमावस्था जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है।

**निष्ठावान्**—वि० [सं० निष्ठावत्] जिसमें निष्ठा या श्रद्धा हो।

**निष्ठीवन**—संज्ञा पुं० [सं०] थूक।

**निष्ठुर**—वि० [सं०] [स्त्री० निष्ठुरा] १. कठिन। कड़ा। सख्त। २. क्रूर। बे-रहम।

**निष्ठुरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कड़ाई। सख्ती। कठोरता। २. निर्दयता। क्रूरता।

**निष्ण, निष्णात**—वि० [सं०] किसी बात का पूरा पंडित। विज्ञ। निपुण।

**निष्पंद**—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का कंप न हो।

**निष्पक्ष**—वि० [सं०] [संज्ञा निष्पक्षता] जो किसी के पक्ष में न हो। पक्षपात-रहित।

**निष्पत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समाप्ति। अंत। २. सिद्धि। परिपाक। ३. निर्वाह। ४. मीमांसा। ५. निश्चय। निर्धारण।

**निष्पन्न**—वि० [सं०] जो समाप्त या पूरा हो चुका हो।

**निष्पाप**—वि० [सं०] जो पाप से बहुत दूर हो। पापरहित।

**निष्पीडन**—संज्ञा पुं० [सं०] निचोड़ना।

**निष्प्रभ**—वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। प्रभाशून्य।

**निष्प्रयोजन**—वि० [सं०] १. जिसमें कोई मतलब न हो। स्वार्थशून्य। २. व्यर्थ।

क्रि० वि० १. बिना अर्थ या मतलब के। २. व्यर्थ। फजूल।

**निष्प्राण**—वि० [सं०] प्राण रहित। मृत। मुरदा।

**निष्प्रेही***—वि० [सं० निस्पृह] निस्पृह।

**निष्फल**—वि० [सं०] जिसका कोई फल न हो। व्यर्थ। निरर्थक। बे-फायदा।

**निसंक**‡—वि० दे० "निश्शंक"।

**निसंग**—वि० दे० "निस्संग"।

**निसँठ**—वि० [हिं० नि+सँठ=पूँजी] गरीब।

**निसंस***†—वि० [सं० नृशंस] क्रूर।

वि० [हिं० नि+साँस] मुरदा सा। मृतकवत्।

**निसंसना***—क्रि० अ० [सं० निःश्वास] हाँफना। निःश्वास लेना।

**निस***†—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

**निसक**—वि० [सं० निःशक्त] अशक्त। कमजोर। दुर्बल।

**निसकर**†*—संज्ञा पुं० दे० "निशाकर"।

**निसत***‡—वि० [सं० निःसत्य] असत्य।

**निसतरना***†—क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। छुटकारा पाना।

**निसतारना**—क्रि० स० [सं० निस्तार] निस्तार करना। मुक्त करना।

**निसद्योस***†—क्रि० वि० [सं० निशि+दिवस] रात-दिन। नित्य। सदा।

**निसनेहा***—संज्ञा स्त्री० दे० "निःस्नेहा"।

**निसबत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. संबंध। लगाव। ताल्लुक। २. मँगनी। विवाह-संबंध की बात। ३. तुलना। मुकाबला।

**निसयाना***—वि० [हिं० नि+सयाना] जिसके होश-हवास ठिकाने न हों।

**निसरना***—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

**निसरावन**—संज्ञा पुं० [सं० निस्सारण] ब्राह्मण को दिया जानेवाला असिद्ध अन्न। सीधा।

**निसर्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वभाव। प्रकृति। २. रूप। आकृति। ३. दान। ४ सृष्टि।

**निसवादला**‡*—वि० [सं० निःस्वाद] स्वादरहित। जिसमें कोई स्वाद न हो।

**निसवासर***†—संज्ञा पुं० [सं० निशिवासर] रात और दिन।

क्रि० वि० नित्य। सदा। हमेशा।

**निसस***†—वि० [सं० निःश्वास] श्वासरहित। अचेत। बेहोश।

**निसहाय**—वि० दे० "निस्सहाय"।

**निसाँक**‡—वि० दे० "निःशंक"।

**निसाँस, निसाँसा***†—संज्ञा पुं० [सं० निः+श्वास] ठंढी साँस। लंबी साँस।

वि० बेदम। मृतकप्राय।

**निसा**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० निशा? खातिर?]

संतोष।

मुहा०—निसा भर=जी भर के।

*संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

**निसान**—संज्ञा पुं० [फ़ा० निशान] १. दे० "निशान"। २. नगाड़ा। धौंसा।

**निसानन***†—संज्ञा पुं० [सं० निशानन] संध्या का समय। प्रदोष-काल।

**निसाफ***†—संज्ञा पुं० दे० "इनसाफ"।

**निसार**—संज्ञा पुं० [अ०] निछावर। सदका।

*†वि० दे० "निस्सार"।

**निसारना**†—क्रि० स० दे० "निकालना"।

**निसास***—संज्ञा पुं० [सं० निःश्वास] गहरी या ठंढी साँस।

वि० [हिं० निः+साँस] विगतश्वास। बे-दम।

**निसासी***—वि० [सं० निःश्वास] जिसका श्वास न चलता हो। बे-दम।

**निसि**—संज्ञा स्त्री० [सं० निशि] १. दे० "निशि"। २. एक वर्णवृत्त।

**निसिकर**—संज्ञा पुं० दे० "निशिकर"।

**निसिचर***†—संज्ञा पुं० दे० "निशाचर"।

**निसिचारी***—संज्ञा पुं० दे० 'निशाचर'।

**निसिदिन***—क्रि० वि० [सं० निशिदिन] १. रातदिन। आठों पहर। २. सदा। सर्वदा।

**निसि निसि**—संज्ञा स्त्री० [सं० निशि निशि] अर्द्धरात्रि। निशीथ। आधी रात।

**निसियर***—संज्ञा पुं० [सं० निशिकर] चंद्रमा।

**निसिबासर***—क्रि० वि० [सं० निशि+वासर] रातदिन। सदा। सर्वदा। नित्य।

**निसीठी**—वि० [सं० निः+हिं० सीठी] निःसार। नीरस। थोथा।

**निसु***†—संज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।

**निसुका***—वि० [सं० निस्वक] १. गरीब। २ निगोड़ा।

**निसूदन**—संज्ञा पुं० [सं०] हिंसा करना।

**निसृष्ट**—वि० [सं०] १. छोड़ा हुआ। २. मध्यस्थ। ३. भेजा हुआ। प्रेरित। ४. दिया हुआ। दत्त।

**निसृष्टार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह दूत जो दोनों पक्षों का अभिप्राय अच्छी तरह समझ कर स्वयं ही सब प्रश्नों का उत्तर दे देता और कार्य सिद्ध कर लेता है।

**निसेनी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० निःश्रेणी] सीढ़ी।

**निसेष***—वि० दे० "निःशेष"।

**निसेस***—संज्ञा पुं० [सं० निःशेश] चंद्रमा।

**निसैनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "निसेनी"।

**निसोग***†—वि० [सं० निःशोक] जिसे कोई शोक या चिंता न हो।

**निसोच***—वि० [सं० निःशोच] चिंता-रहित।

**निसोत**—वि० [सं० निःसंयुक्त] जिसमें और किसी चीज का मेल न हो। शुद्ध। निरा।

**निसोथ**—संज्ञा स्त्री० [सं० निसुता] एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डंठल अच्छे रेचक समझे जाते हैं।

**निसोधु***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोध या सुध) १. सुध। खबर। २. सँदेसा।

**निस्केवल**—वि० [सं० निष्केवल] बेमेल। शुद्ध। निर्मल। खालिस।

**निस्तंद्र**—वि० [सं०] १. जिसे तंद्रा न हो। २. जागा हुआ। जाग्रत।

**निस्तत्त्व**—वि० [सं०] जिसमें कोई तत्त्व न हो। निस्सार।

**निस्तब्ध**—वि० [सं०] १. जो हिलता-डोलता न हो। २. जड़वत्। निश्चेष्ट।

**निस्तब्धता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध होने का भाव। खामोशी। २. सन्नाटा।

**निस्तरंग**—वि० [सं०] जिसमें तरंग या लहर न हो। शांत।

**निस्तरण**—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार।

**निस्तरना***†—क्रि० अ० [सं० निस्तार] निस्तार पाना। मुक्त होना। छूट जाना।

*क्रि स० निस्तार करना। मुक्त करना।

**निस्तल**—वि० [सं०] [भा० निस्तलता] १ जिसका तल न हो। २. जिसके तल की थाह न हो। बहुत गहरा। ३ गोल। वृत्ताकार। ४. नीचा। निम्न।

**निस्तार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पार होने का भाव। २. छुटकारा। मोक्ष। उद्धार।

**निस्तारण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निस्तार करना। बचाना। छुड़ाना। २ पार करना।

**निस्तारन***—वि० दे० "निस्तारण"।

**निस्तारना**†*—क्रि० स० [सं० निस्तार+ना (प्रत्य०)] छुड़ाना। मुक्त करना। उद्धार।

**निस्तारा***—संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।

**निस्तीर्ण**—वि० [सं०] १. जो तै या पार कर चुका हो। २. छूटा हुआ। मुक्त।

**निस्तेज**—वि० [सं० निस्तेजस्] तेजरहित। जिसमें तेज न हो। अप्रभ। मलिन।

**निस्पंद**—वि० [सं०] [भा०

निस्पंदता ] १. जो हिलता-डोलता न हो। स्थिर। २. निश्चेष्ट। स्तब्ध।

**निस्पृह**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा निस्पृहता ] जिसे किसी प्रकार का लोभ न हो। लालच या कामना आदि से रहित।

**निस्फ**—वि० [अ०] अर्द्ध। आधा।

**निस्वन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ध्वनि। शब्द।

**निस्संकोच**—वि० [ सं० ] संकोच-रहित। जिसमें संकोच या लज्जा न हो। बेधड़क।

**निस्संग**—वि० [ सं० ] १. जो किसी से कोई संबंध न रखता हो। २. विषय-विकार से रहित। ३. निर्जन। एकांत। ४. अकेला।

**निस्संतान**—वि० [ सं० ] जिसे कोई संतान न हो। संतति-रहित।

**निस्संदेह**—क्रि० वि० [ सं० ] अवश्य। जरूर।

वि० जिसमें संदेह न हो।

**निस्संबल**—वि० [सं०] जिसका कोई संबल, सहारा या ठिकाना न हो।

**निस्सत्व**—वि० [ सं० ] जिसमें कुछ भी सत्व न हो। असार।

**निस्सरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निकलने का मार्ग। २. निकलने का भाव या क्रिया।

**निस्सहाय**—वि० [ सं० ] जिसका कोई सहायक न हो। असहाय।

**निस्सार**—वि० [ सं० ] १. सार-रहित। २. जिसमें कोई काम की वस्तु न हो।

**निस्सीम**—वि० [ सं० ] १. असीम। अपार। २. बहुत अधिक।

**निस्सृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

**निस्स्नेह**—वि० [ सं० ] जिसमें स्नेह या प्रेम न हो।

संज्ञा पुं० स्नेह या प्रेम का अभाव।

**निस्स्वार्थ**—वि० [ सं० ] जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो।

**निहंग, निहंगम**—वि० [ सं० निःसंग ] १. एकाकी। अकेला। २. स्त्री आदि से संबंध न रखने वाला (साधु)। ३. नंगा। ४. बेशरम।

**निहंग-लाडला**—वि० [ हिं० निःहंग+लाडला ] जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।

**निहंता**—वि० [ सं० निहंतृ ] [ स्त्री० निहंत्री ] १. नाश करनेवाला। २. प्राण लेनवाला।

**निहकाम***†—वि० दे० "निष्काम"।

**निहचय***†—संज्ञा पुं० दे० "निश्चय"।

**निहचल***†—वि० दे० "निश्चल"।

**निहचीत***—वि० दे० "निश्चिंत"।

**निहत**—वि० [ सं० ] १. फेंका हुआ। २. नष्ट। ३. जो मार डाला गया हो।

**निहत्था**—वि० [ हिं० नि+हाथ ] १. जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो। शस्त्रहीन। २. खाली हाथ। निर्धन। गरीब।

**निहनना***†—क्रि० स० [ सं० निहनन ] मारना। मार डालना।

**निहपाप**†*—वि० दे० "निष्पाप"।

**निहफल**†*—वि० दे० "निष्फल"।

**निहाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० निघाति, मि० फ़ा० निहाली ] सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औजार जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

**निहाउ***—संज्ञा पुं० दे० "निहाई"।

**निहायत**—वि० [ अ० ] अत्यंत। बहुत।

**निहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुहरा। पाला। २. ओस। ३. हिम। बरफ।

**निहारना**—क्रि० स० [ सं० निभालन=देखना ] ध्यानपूर्वक देखना। देखना। ताकना।

**निहाल**—वि० [ फ़ा० ] जो सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो। पूर्णकाम।

**निहालना**—क्रि० स० दे० "निहारना"।

**निहाली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. गद्दा। तोशक। २. निहाई।

**निहित**—वि० [ सं० ] १. स्थापित। २. अंदर रखा हुआ। ३. छिपा हुआ।

**निहुरना**†—क्रि० अ० [ हिं० नि+होड़न ] झुकना। नवना।

**निहुराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निहुरना ] निहुरने या झुकने की क्रिया।

* संज्ञा स्त्री० दे० "निष्ठुरता"।

**निहुराना**—क्रि० स० [ हिं० निहुरना का प्रे० ] झुकाना। नवाना।

**निहोरना**—क्रि० स० [ सं० मनोहार ] १. प्रार्थना करना। विनय करना। २. मनाना। मनौती करना। ३. कृतज्ञ होना।

**निहोरा**—संज्ञा पुं० [सं० मनोहार] १. अनुग्रह। एहसान। कृतज्ञता। उपकार। २. विनती। प्रार्थना। ३. भरोसा। आसरा।

क्रि० वि० १. कारण से। बदौलत। द्वारा। २. के लिए। वास्ते। निमित्त।

**नींद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० निद्रा ] जीवन की एक नित्यप्रति होनेवाली अवस्था जिसमें चेतन क्रियाएँ रुकी

रहती हैं और शरीर तथा अंतःकरण दोनों विश्राम करते हैं । सोने की अवस्था । निद्रा । स्वप्न ।

**मुहा०**—नींद उचटना=नींद का दूर होना । नींद खुलना या टूटना=नींद का छूट जाना । जाग पड़ना । नींद पड़ना=नींद आना । निद्रा की अवस्था होना । नींद भर सोना=जितनी इच्छा हो, उतना सोना । इच्छा भर सोना । नींद लेना=सोना । नींद संचरना=नींद आना । नींद हराम होना=सोना छूट जाना ।

**नींदड़ी|**—संज्ञा स्त्री० दे० "नींद" ।

**नींदना***—क्रि० अ० [ हिं० नींद ] नींद लेना । सोना ।

क्रि० स० दे० "निराना" ।

**नीक, नीका|***—वि० [ सं० निक्त=स्वच्छ ] [ स्त्री० नीकी ] अच्छा । सुंदर । भला ।

संज्ञा पुं० अच्छाई । उत्तमता । अच्छापन ।

**नीके**—क्रि० वि० [ हिं० नीक ] अच्छी तरह ।

**नीच**—वि० [ सं० ] १. जाति, गुण, कर्म या और किसी बात में घटकर या न्यून । क्षुद्र । २. अधम । बुरा । निकृष्ट । तुच्छ । हेठा ।

**यौ०**—नीच-ऊँच=१ अच्छा-बुरा । २. बुराई-भलाई । गुण-अवगुण । ३. अच्छा और बुरा परिणाम । हानि-लाभ । ४. सुख-दुःख ।

**नीचगामी**—वि० [ सं० नीचगामिन् ] [ स्त्री० नीचगामिनी ] १. नीचे जानेवाला । २. ओछा ।

**नीचता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नीचे होने का भाव । २. अधमता । क्षुद्रता । कमीनापन ।

**नीचा**—वि० [ सं० नीच ] [ स्त्री० नीची ] १. जो कुछ उतार या गहराई पर हो । गहरा । ऊँचा का उलटा । निम्न ।

**यौ०**—नीचा-ऊँचा=कहीं गहरा और कहीं उठा हुआ । जो समतल न हो । ऊबड़-खाबड़ ।

२ ऊँचाई में सामान्य की अपेक्षा कम । जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो । ३. जो ऊपर से जमीन की ओर दूर तक आया हो । अधिक लटका हुआ । ४. झुका हुआ । नत । ५. जो तीव्र या जोर का न हो । धीमा । मध्यम । ६. जो जाति, पद, गुण इत्यादि में न्यून या घटकर हो । ओछा । क्षुद्र । बुरा ।

**मुहा०**—नीचा-ऊँचा=१. भला-बुरा । २ भलाई-बुराई । गुण-अवगुण । अच्छा और बुरा परिणाम । हानि-लाभ । ३. संपद-विपद । सुख-दुःख । नीचा खाना=१. तुच्छ बनना । अपमानित होना । २. हारना । परास्त होना । ३. लज्जित होना । झिपना । नीचा दिखाना= १. तुच्छ बनाना । अपमानित करना । २. मानभंग करना । शेखी झाड़ना । ३. परास्त करना । हराना । ४. लज्जित करना । नीचा देखना=दे० "नीचा खाना" । नीची दृष्टि करना=सिर झुकाना । सामने न ताकना ।

**नीचाशय**—वि० [ सं० ] [संज्ञा नीचाशयता ] क्षुद्र । ओछा ।

**नीचू|**—क्रि० वि० दे० "नीचे" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "लीची" ।

**नीचे**—क्रि० वि० [ हिं० नीचा ] १. नीचे की ओर । अधोभाग में । ऊपर का उलटा ।

**मुहा०**—नीचे ऊपर=१. एक पर एक । तले-ऊपर । २. उलट-पलट । अस्त-व्यस्त । अव्यवस्थित । नीचे गिरना=१. प्रतिष्ठा खोना । मान-मर्यादा गँवाना । २. पतित होना । अवनत दशा को प्राप्त होना । ऊपर से नीचे तक=१. सब भागों में । सर्वत्र । २. सर्वाङ्ग में । सिर से पैर तक ।

२ घटकर । कम । न्यून । ३. अधीनता में ।

**नीजन***—संज्ञा पुं० [ सं० निर्जन ] निर्जन स्थान ।

**नीझर***—संज्ञा पुं० [ सं० निर्झर ] निर्झर । झरना । सोता ।

**नीठ**—क्रि० वि० दे० "नीठि" ।

**नीठि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अनिष्टि ] अरुचि । अनिच्छा ।

क्रि० वि० १. ज्यों-त्यों करके । किसी न किसी प्रकार । २. मुश्किल से । कठिनता से ।

**नीठो***—वि० [ सं० अनिष्ट ] अनिष्ट । अप्रिय ।

**नीड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चिड़ियों का घोंसला । २. ठहरने या रहने का स्थान ।

**नीड़ज, नीड़ज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिड़िया । पक्षी ।

**नीत**—वि० [ सं० ] १. लाया हुआ । पहुँचाया हुआ । २. स्थापित । ३. प्राप्त ।

**नीति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १.ले जाने या ले चलने की क्रिया, भाव या ढंग ।

२. व्यवहार की रीति । आचार-पद्धति । ३. व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे । ४. लोक या समाज के कल्याण के लिए उचित ठहराया हुआ आचार-व्यवहार । सदाचार । अच्छी चाल ।

नय। ५. राजा और प्रजा की रक्षा के लिए निर्धारित व्यवस्था। राजविद्या। ६. राज्य की रक्षा के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति। ७. किसी कार्य्य की सिद्धि के लिए चली जानेवाली चाल। युक्ति। उपाय। हिकमत।

**नीतिज्ञ**—वि० [ सं० ] नीति का जाननेवाला। नीतिकुशल।

**नीतिमान्**—वि० [ सं० नीतिमत् ] [ स्त्री० नीतिमती ] नीतिपरायण। सदाचारी।

**नीतिवादी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो सब काम नीति-शास्त्र के अनुसार करना चाहता हो।

**नीतिविज्ञान**—संज्ञा पुं० दे० "नीति-शास्त्र"।

**नीतिशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों। २. वह शास्त्र जिसमें मनुष्य-समाज के हित के लिए आचार, व्यवहार और शासन का विधान हो।

**नीदना***—क्रि० स० [ सं० निंदन ] निन्दा करना।

**नीधना***—वि० [ सं० निर्धन ] दरिद्र।

**नीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कदंब। २. गुलदुपहरिया। ३. पहाड़ का निचला भाग।

**नीपना***—क्रि० स० दे० "लीपना"।

**नीबी***—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवी"।

**नीबू**—संज्ञा पुं० [ सं० निंबूक ] मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसका फल गोल, छोटा और खट्टा होता है और खाया जाता है। मीठे नीबू भी कई प्रकार के होते हैं। खट्टे नीबू के मुख्य भेद ये हैं—कागजी, जंबीरी, बिजौरा, चकोतरा।

मुहा०—नीबू निचोड़=भारी कंजूस।

**नीम**—संज्ञा पुं० [ सं० निंब ] पत्तो झाड़नेवाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुआ होता है।

वि० [ फ़ा० मि० सं० नीम ] आधा। अर्द्ध।

**नीमन**†—वि० [ सं० निर्मल ] १ नीरोग। चंगा। २. दुरुस्त। ठीक। ३. बढ़िया।

**नीमरजा**—वि० [ फ़ा० ] १. थोड़ा बहुत रजामंदी। २. कुछ तोष या प्रसन्नता।

**नीमा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक पहनावा जो जामे के नीचे पहना जाता है।

**नीमावत**—संज्ञा पुं० [ हिं० निंब ] निंबार्काचार्य्य का अनुयायी वैष्णव।

**नीमास्तीन**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० नीम+आस्तीन ] आधी आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।

**नीयत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] आंतरिक लक्ष्य। उद्देश्य। आशय। संकल्प। इच्छा। मंशा।

मुहा०—नीयत डिगना या बद होना=अच्छा या उचित संकल्प दृढ़ न रहना। बुरा संकल्प होना। नीयत बदल जाना=१. संकल्प या विचार और का और होना। इरादा दूसरा हो जाना। २. बुरा विचार होना। अनुचित या बुरी बात की ओर प्रवृत्ति होना। नीयत बाँधना=संकल्प करना। इरादा करना। नीयत भरना=जी भरना। इच्छा पूरी होना। नीयत में फर्क आना=बेईमानी या बुराई सूझना। नीयत लगी रहना=इच्छा बनी रहना। जी ललचाया करना।

**नीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० नीरता ] १. पानी। जल।

मुहा०—नीर ढलना=मरते समय आँख से आँसू बहना। किसी की आँख का नीर ढल जाना=निर्लज्ज या बेहया हो जाना।

२. कोई द्रव पदार्थ या रस। ३. फफोले आदि के भीतर का चेप या रस।

**नीरज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जल में उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. मोती। मुक्ता।

**नीरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] "नीर" का भाव। पानीपन।

**नीरद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बादल।

वि० [ सं० निः+रद ] बे-दाँत का। अदंत।

**नीरधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बादल। मेघ।

**नीरधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**नीरव**—वि० [ सं० ] १. जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। २. जो कुछ न बोलता हो। चुप।

**नीरवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निःशब्द या चुप होने का भाव। चुप्पी। सन्नाटा।

**नीरस**—वि० [ सं० ] १. जिसमें रस या गीलापन न हो। रसहीन। २. सूखा। शुष्क। ३. जिसमें कोई स्वाद या मजा न हो। फीका। ४. जिसमें मन न लगे।

**नीरांजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवता को दीपक दिखाने की विधि। दीपदान। आरती। २. हथियारों को चमकाने या साफ करने का काम।

**नीरा***—क्रि० वि० [ हिं० नियर ] पास। समीप। नज़दीक।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीर"।

**नीराजना***—क्रि० अ० [ सं० नीरांजन ] आरती करना।

**नीरे***—क्रि० वि० दे० "नियरे"।

**नीरुज, नीरोग**—वि० [ सं० ] जिसे रोग न हो। स्वस्थ। चंगा। तंदुरुस्त।

**नील**—वि० [ सं० ] नीले रंग का।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नीला रंग। गहरा आसमानी रंग। २. एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रंग निकाला जाता है।

**मुहा०**—नील का टीका लगाना=कलंक लेना। बदनामी उठाना। नील की सलाई फिरवा देना=आँखें फोड़वा डालना। अंधा कर देना। ३. चोट का नीले या काले रंग का दाग जो शरीर पर पड़ जाता है। ४. लांछन। कलंक। ५. राम की सेना का एक बंदर। ६. इलावृत्त खंड का एक पर्वत। ७. नव निधियों में से एक। ८. नीलाम। ९. एक वर्णवृत्त। १०. सौ अरब की संख्या।

**नीलकंठ**—वि० [ सं० ] जिसका कंठ नीला हो।

संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. एक प्रकार की चिड़िया जिसका कंठ और डैने नीले होते हैं। चाष पक्षी। ३. महादेव। ४. गौरा पक्षी। चटक।

**नीलकांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक पहाड़ी चिड़िया। २. विष्णु। ३. नीलम मणि।

**नीलकांता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विष्णुकांता लता जिसमें बड़े बड़े नीले फूल लगते हैं।

**नीलगाय**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नील+गाय ] नीलापन लिए भूरे रंग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है। गवय।

**नीलचक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र। २. ३० अक्षरों का एक दंडकवृत्त।

**नीलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नीलापन।

**नीलम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा०। मि० सं० नीलमणि ] नीलमणि। नीले रंग का रत्न। इंद्रनील।

**नीलमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीलम।

**नीलमोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नील+मोर ] कुररी नामक पक्षी।

**नीललोहित**—वि० [ सं० ] नीलापन लिए लाल। बैंगनी।

संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

**नीलस्वरूप, नीलस्वरूपक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का वर्णवृत्त।

**नीलांजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नीला सुरमा। २. तूतिया। नीला थोथा।

**नीलांबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीले रंग का कपड़ा ( विशेषतः रेशमी )।

वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला।

**नीलांबुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नील कमल।

**नीला**—वि० [ सं० नील ] आकाश के रंग का। नील के रंग का।

**मुहा०**—नीला-पीला होना=क्रोध दिखाना। क्रुद्ध होना। बिगड़ना। चेहरा नीला पड़ जाना=१. आकृति से भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट होना। २. सजीवता के लक्षण नष्ट होना।

**नीलाथोथा**—संज्ञा पुं० [ सं० नील-तुत्थ ] ताँबे का नील। क्षार या लवण। तूतिया।

**नीलाम**—संज्ञा पुं० [ पुर्त० लीलाम ] बिक्री का एक ढंग जिसमें माल उस आदमी को दिया जाता है जो सबसे अधिक दाम लगाता है। बोली बोलकर बेचना।

**नीलावती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नीलवती ] एक प्रकार का चावल।

**नीलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नीलबरी। २. नीली निर्गुंडी। नील सम्हालू वृक्ष। ३. आँख तिलमिलाने का रोग। ४ मुख पर का एक रोग जिसमें सरसों के बराबर छोटे छोटे कड़े काले दाने निकलते हैं। झाँई।

**नीलिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नीलिमन् ] १. नीलापन। २. श्यामता। स्याही।

**नीली घोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नीली+घोड़ी ] जामे के साथ सिली हुई कागज की घोड़ी जिसे पहन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है। डफाली इसे पहनकर भीख माँगने निकलते हैं।

**नीलोत्पल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नील कमल।

**नीलोफर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा०। मि० सं० नालाराल ] १. नील कमल। २. कुईं। कुमुद।

**नीवँ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नेमि, प्रा० नेइ ] १ घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरंभ होती है।

**मुहा०**—नीवँ देना=गड्ढा खोदकर दीवार खड़ी करने के लिए स्थान बनाना। (किसी बात की) नीवँ देना=कारण या आधार खड़ा करना। जड़ खड़ी करना। उपक्रम करना।

२. दीवार की जड़ या आधार। मूलभित्ति।

**मुहा०**—नीवँ जमाना, डालना या

देना=दीवार उठाने के लिए नींव के गड्ढे में ईंट, पत्थर आदि जमाकर आधार खड़ा करना। दीवार की जड़ जमाना। (किसी बात की) नींव जमाना या डालना=आधार दृढ़ करना। स्थिर करना। स्थापित करना। (किसी वस्तु या बात की) नींव पड़ना=१. घर की दीवार का आधार खड़ा होना। २. सूत्रपात होना। जड़ खड़ी होना या जमना।

३. जड़। मूल। स्थिति। आधार।

**नीव**—संज्ञा स्त्री० दे० "नींव"।

**नीवि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंही बाँधती हैं। २. सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। कटिवस्त्र-बंध। फुँफुदी। ३. साड़ी। धोती।

**नीवी**—संज्ञा स्त्री० दे० "नीवि"।

**नीसक***—वि० [सं० निःशक्त] कमजोर।

**नीसानी**—संज्ञा स्त्री० [?] तेईस मात्राओं का एक छंद। उपमान।

**नीहं**†—संज्ञा स्त्री० दे० "नींव"।

**नीहार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुहरा। २. पाला। हिम। तुषार। बर्फ।

**नीहारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश में धूएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अँधेरी रात में सफेद धब्बे की तरह कहीं कहीं दिखाई पड़ता है।

**नुक़ता**—संज्ञा पुं० [अ० नुक़्तः] बिंदु। बिंदी।

संज्ञा पुं० [अ० नुक्तः] १. चुटकुला। फबती। लगती हुई उक्ति। २. ऐब।

**नुक़ताचीनी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] छिद्रान्वेषण। दोष निकालने का काम।

**नुकती**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० नखुदी] एक प्रकार की मिठाई। बेसन की महीन बुँदिया।

**नुकना***—क्रि० अ० दे० 'लुकना'।

**नुक़रा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. चाँदी। २. घोड़ों का सफेद रंग।

वि० सफेद रंग का (घोड़ा)।

**नुक़सान**—संज्ञा पुं० [अ०] १. कमी। घटी। ह्रास। छीज। २. हानि। घाटा। क्षति।

**मुहा०**—नुकसान उठाना=हानि सहना। क्षतिग्रस्त होना। नुकसान पहुँचाना=हानि करना। क्षतिग्रस्त करना। नुकसान भरना=हानि की पूर्ति करना। घाटा पूरा करना।

३ दोष। अवगुण। विकार।

**मुहा०**—(किसी का) नुकसान करना=दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना।

**नुकीला**—वि० [हिं० नोक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १ नोकदार। जिसमें नोक निकली हो। २. बाँका। तिरछा।

**नुक्कड़**—संज्ञा पुं० [हिं० नोक का अल्पा०] १. नोक। पतला सिरा २. सिरा। छोर। अंत। ३. निकला हुआ कोना। सड़क का छोर।

**नुक़्स**—संज्ञा पुं० [अ०] १. दोष। ऐब। खराबी। बुराई। २. त्रुटि। कसर।

**नुचना**—क्रि० अ० [सं० लुंचन] १. नोचा जाना। खिंचकर उखड़ना। उड़ना। २. खरोंचा जाना। नाखून आदि से छिलना।

**नुचवाना**—क्रि० स० [हिं० नोचना का प्रे०] नोचने का काम दूसरे से कराना।

**नुत्फ़ा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. वीर्य। शुक्र। २. संतति। औलाद।

**नुनखरा, नुनखारा**—वि० [हिं० नून+खारा] स्वाद में नमक का सा खारा। नमकीन।

**नुनना**—क्रि० स० [सं० लवन, लून] लुनना। खेत काटना।

**नुनाई***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० नून] लावण्य। सुंदरता। सलोनापन।

**नुनेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० नून+एरा (प्रत्य०)] १. नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालनेवाला। २. लोनिया। नोनिया।

**नुमाइंदा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] प्रतिनिधि।

**नुमाइश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दिखावट। दिखाव। प्रदर्शन। २. तड़क-भड़क। ठाठ-बाट। सजधज। ३. नाना प्रकार की वस्तुओं का कुतूहल और परिचय के लिए एक स्थान पर दिखाया जाना। प्रदर्शिनी।

**नुमाइशी**—वि० [फ़ा० नुमाइश] जो केवल दिखावट के लिए हो, किसी प्रयोजन का न हो। दिखाऊ। दिखौवा।

**नुसखा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. लिखा हुआ कागज। २. कागज का वह चिट जिस पर हकीम या वैद्य रोगी के लिए औषध और सेवन-विधि लिखते हैं।

**नूत**—वि० [सं० नूतन] १. नया। नूतन। २. अनोखा। अनूठा।

**नूतन**—वि० [सं०] १. नया। नवीन। २. हाल का। ताजा। ३. अनोखा।

**नूतनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नूतन का भाव। नवीनता। नयापन।

**नून**—संज्ञा पुं० [?] १. आल। २. आल की जाति की एक लता।

†संज्ञा पुं० [सं० लवण] नमक।

मुहा०—नून-तेल-लकड़ी=गृहस्थी का सामान।

*वि० दे० "न्यून"।

**नूनताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "न्यूनता"।

**नूपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पैंजनी। घुँघरू। २. नगण के पहले भेद का नाम।

**नूका**—संज्ञा पुं० [ ? ] १४ मात्राओं का एक छंद। कज्जल।

**नूर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. ज्योति। प्रकाश।

मुहा०—नूर का तड़का=प्रातःकाल। नूर बरसना=प्रभा की अधिकता से प्रकट होना।

२. श्री। कांति। शोभा।

**नूरा†**—वि० [ अ० नूर ] नूरवाला। तेजस्वी।

**नूह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ( यहूदी, ईसाई और मुसलमान मतों के अनुसार ) एक पैगंबर जिनके समय में बड़ा तूफान आया था।

**नृ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नर। मनुष्य।

**नृकेशरी**—संज्ञा पुं० [ सं० नृकेशरिन् ] १. नृसिंह अवतार। २. श्रेष्ठ पुरुष।

**नृतक***—संज्ञा पुं० दे० "नर्त्तक"।

**नृतना***—क्रि० अ० [ सं० नृत्य ] नाचना।

**नृत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संगीत के ताल और गति के अनुसार हाथ-पाँव हिलाने, उछलने-कूदने आदि का व्यापार। नाच। नर्त्तन।

**नृत्यकी*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "नर्त्तकी"।

**नृत्यशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाचघर।

**नृदेव, नृदेवता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा। २. ब्राह्मण।

**नृप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नरपति। **नृपति, नृपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा।

**नृमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रेष्ठ पुरुष।

**नृमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नरमेध यज्ञ।

**नृयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पंचयज्ञों में से एक जिसका करना गृहस्थ के लिए कर्त्तव्य है। अतिथिपूजा। अभ्यागत का सत्कार।

**नृशंस**—वि० [ सं० ] १. क्रूर। निर्दय। २. अपकारी। अत्याचारी। जालिम।

**नृशंसता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निर्दयता।

**नृसिंह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिंह-रूपी भगवान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे। इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद की रक्षा की थी। २. श्रेष्ठ पुरुष।

**नृहरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नृसिंह।

**ने**—प्रत्य० [ सं० प्रत्यय टा=एण ] सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति।

**नेई***—संज्ञा स्त्री० दे० "नींव"।

**नेक**—वि० [ फ़ा० ] १. भला। उत्तम। २. शिष्ट। सज्जन।

*† वि० [ हिं० न+एक ] थोड़ा। तनिक।

क्रि० वि० थोड़ा। ज़रा। तनिक।

**नेकचलन**—वि० [ फ़ा० नेक+हिं० चलन ] [ संज्ञा नेकचलनी ] अच्छे चालचलन का। सदाचारी।

**नेकनाम**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा नेकनामी ] जिसका अच्छा नाम हो। यशस्वी।

**नेकनीयत**—वि० [ फ़ा० नेक+अ० नीयत ] [ संज्ञा नेकनीयती ] १. अच्छे संकल्प का। शुभ संकल्पवाला। २. उत्तम विचार का।

**नेकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. भलाई। उत्तम व्यवहार। २. सज्जनता। भलमनसाहत।

यौ०—नेकी बदी=भलाई-बुराई। पाप-पुण्य।

३. उपकार। हित।

**नेकु*†**—वि, क्रि० वि० दे० "नेक"।

**नेग**—संज्ञा पुं० [ सं० नैयमिक ] १. विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा कृत्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ दिए जाने का नियम। २. वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है।

**नेगचार**—संज्ञा पुं० दे० "नेग-जोग"।

**नेग-जोग**—संज्ञा पुं० [ हिं० नेग+जोग ] विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा काम करनेवालों को उनके प्रसन्नतार्थ कुछ दिए जाने का दस्तूर।

**नेगटी†***—संज्ञा पुं० [ हिं० नेग+टा ( प्रत्य० ) ] नेग या रीति का पालन करनेवाला।

**नेगम**—संज्ञा पुं० दे० "निगम"।

**नेगी**—संज्ञा पुं० [ हिं० नेग ] नेग-पानेवाला। नेग पाने का हकदार।

**नेगीजोगी**—संज्ञा पुं० [ हिं० नेग-जोग ] नेग पानेवाले। नेगी। जैसे—नाई, बारी।

**नेछावर†**—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

**नेजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. भाला। बरछा। २. साँग। निशान।

**नेजाबरदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ]

भाला या राजाओं का निशान लेकर चलनेवाला।

**नेजाल**‡*—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नेजा ] भाला।

**नेठना***—क्रि० अ० दे० "नाठना"।

**नेड़े**—क्रि० वि० [ सं० निकट ] निकट। पास।

**नेत**—संज्ञा पुं० [ सं० नियति ] १ ठहराव। निर्धारण। २. निश्चय। संकल्प। इरादा। ३. व्यवस्था। प्रबंध। आयोजन। *

संज्ञा पुं० [ सं० नेत्र ] मथानी की रस्सी।

संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक प्रकार की चादर।*

संज्ञा पु० [ देश० ] एक प्रकार का गहना।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

**नेतक**—संज्ञा पुं० [ देश० ] चुँदरी। चूनर।

**नेता**—संज्ञा पुं० [ सं० नेतृ ] [ स्त्री० नेत्री ] १. अगुआ। नायक। सरदार। २. स्वामी। मालिक। ३. काम चलानेवाला। निर्वाहक।

संज्ञा पुं० [ सं० नेत्र ] मथानी की रस्सी।

**नेतागिरी**-संज्ञा स्त्री० दे० "नेतृत्व"।

**नेति**—[ सं० ] एक संस्कृत वाक्य ( न इति ) जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् "अंत नहीं है"।

**नेती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नेता ] वह रस्सी जो मथानी में लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मथानी फिरती है।

संज्ञा स्त्री० हठयोग की वह क्रिया जिससे डोरा नाक में डालकर मुँह से निकालते हैं।

**नेती-धोती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नेत्र, हिं० नेता+सं० धौति ] हठयोग की एक क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँतें साफ करते हैं। धौति।

**नेतृत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नेता होने का भाव, कार्य या पद। नायकत्व। सरदारी।

**नेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आँख। २. मथानी की रस्सी। ३. एक प्रकार का वस्त्र। ४. वृक्षमूल। पेड़ की जड़। ५. रथ। ६. दो की संख्या का सूचक शब्द।

**नेत्रजल**-संज्ञा पुं० [ सं० ] आँसू।

**नेत्रबाला**—संज्ञा पुं० दे० "सुगंध-बाला"।

**नेत्रमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँख का घेरा। आँख का डेला।

**नेत्रस्राव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँखों से पानी बहना।

**नेत्राभिष्यंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँख आने का रोग।

**नेनुआ, नेनुवा**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक भाजी या तरकारी। घियातरोई।

**नेपचून**—संज्ञा पुं० [ फ़रासीसी ] सूर्य्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह। जिसका पता हरशेल ने लगाया था इसे हरशेल भी कहते हैं।

**नेपथ्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेश-भूषा। सजावट। २. नृत्य, अभिनय आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट वेश सजते हैं। वेशस्थान।

**नेपाल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] हिंदुस्तान के उत्तर में एक प्रसिद्ध पहाड़ी देश।

**नेपाली**—वि० [ हिं० नेपाल ] १. नेपाल में रहने या होनेवाला। २. नेपाल-संबंधी।

**नेपुर***—संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।

**नेफा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पायजामे या लहँगे के घेर में इजारबंद पिरोने का स्थान।

**नेब***—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नायब ] १. सहायक। कार्य्य में सहायता देनेवाला। २. मंत्री।

**नेम**—संज्ञा पुं० [ सं० नियम ] १. नियम। कायदा। बंधेज। २. बँधी हुई बात। ऐसी बात जो टलती न हो, बराबर होती हो। ३. रीति। दस्तूर। ४. धर्म की दृष्टि से कुछ क्रियाओं का पालन।

यौ०—नेम-धरम=पूजा-पाठ व्रत आदि।

**नेमत**—संज्ञा स्त्री० दे० "नियामत"।

**नेमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पहिये का घेरा या चक्कर। चक्रपरिधि। २. कूएँ की जगत। ३. कूएँ की जमवट। ४. प्रांतभाग।

संज्ञा पुं० १. नेमिनाथ तीर्थंकर। २. वज्र।

**नेमी**—वि० [ सं० नियम ] १. नियम का पालन करनेवाला। २. धर्म की दृष्टि से पूजापाठ, व्रत आदि करनेवाला।

**नेरा**‡—अ० दे० "नियर"।

**नेरे**‡—क्रि० वि० [ हिं० नियर ] निकट। पास।

**नेव***—संज्ञा पुं० दे० "नेब"।

**नेवग***—संज्ञा पुं० दे० "नेग"।

**नेवज**—संज्ञा पुं० [ सं० नैवेद्य ] खाने-पीने की चीज जो देवता को चढ़ाई जाय। भोग।

**नेवतना**‡—क्रि० स० [ सं० निमंत्रण ] निमंत्रित करना। नेवता भेजना।

**नेवता**—संज्ञा पुं० दे० "न्योता"।

**नेवर**—संज्ञा पुं० दे० "नूपुर"।

‡वि० [ सं० न+वर=अच्छा ] बुरा।

घोड़ों, बैलों आदि के पैर की रगड़ ।

**नेवरना**—क्रि० अ० [ सं० निवारण ] १. निवारण या दूर होना । २. समाप्त होना ।

**नेवला**—संज्ञा पुं० [ सं० नकुल ] एक मांसाहारी पिंडज छोटा जंतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है । यह साँप को खा जाता है ।

**नेवाज**—वि० दे० "निवाज" ।

**नेवाजना***—क्रि० स० दे० "निवारना" ।

**नेवारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नेपाली ] जूही की जाति का एक पौधा । वनमल्लिका ।

**नेसुक***†—वि० [ हिं० नेकु ] तनिक । जरा ।

क्रि० वि० थोड़ा-सा । जरा-सा । तनिक ।

**नेस्त**—वि० [ फ़ा० ] जो न हो ।

यौ०—नेस्त-नाबूद=नष्ट-भ्रष्ट ।

**नेस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. न होना । अनस्तित्व । २. आलस्य । ३. नाश ।

**नेह**-संज्ञा पुं० [ सं० स्नेह ] १. स्नेह । प्रेम । प्रीति । २.चिकना । तेल या घी ।

**नेही***—वि० [ हिं० नेह+ई (प्रत्य०) ] स्नेह करनेवाला । प्रेमी ।

**नै**—संज्ञा स्त्री० दे० "नय" ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० नदी ] नदी ।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. बाँस की नली । २. हुक्के की निगाली । ३. बाँसुरी ।

**नैऋत***—वि०, संज्ञा पुं० दे० "नैऋ त्य" ।

**नैक, नैकु**—वि० दे० "नेक", "नेकु" ।

**नैकट्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निकटता ।

**नैगम**—वि० [ सं० ] १. निगम-संबंधी । २. जिसमें ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो ।

संज्ञा पुं० १. उपनिषद् भाग । २. नीति ।

**नैचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धूआँ खींचते हैं ।

**नैचाबंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जो हुक्के का नैचा बनाता हो ।

**नैट***—अ० [ ? ] सुअवसर । अच्छा मौका ।

**नैतिक**-वि० [ सं० ] [ संज्ञा नैतिकता ] नीति-संबंधी ।

**नैन***—संज्ञा पुं० दे० "नयन" ।

संज्ञा पुं० [ सं० नवनीत ] मक्खन ।

**नैनसुख**—संज्ञा पुं० [ हिं० नैन=सुख ] एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा ।

**नैनू**—संज्ञा पुं० [ हिं० नैन+आँख ] एक प्रकार का उभरे हुए बेल-बूटे का कपड़ा ।

†संज्ञा पुं० [ सं० नवनीत ] मक्खन ।

**नैपाल**—वि० [ सं० ] १. नेपाल-संबंधी । २. नेपाल में होनेवाला ।

संज्ञा पुं० दे० "नेपाल" ।

**नैपाली**—वि० [ हिं० नैपाल ] १. नैपाल देश का । २. नैपाल में रहने या होनेवाला ।

संज्ञा पुं० नैपाल का रहनेवाला आदमी ।

**नैपुण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निपुणता । चतुराई । होशियारी । दक्षता । कमाल ।

**नैमित्तिक**—वि० [ सं० ] जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए हो ।

**नैमिषारण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन वन जो आजकल हिंदुओं का एक तीर्थ-स्थान माना जाता है । नीमखार ।

**नैया***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नाव ] नाव ।

**नैयायिक**—वि० [ सं० ] न्यायशास्त्र का जानेवाला । न्यायवेत्ता ।

**नैरंतर्य**—संज्ञा पुं०दे० "निरंतरता" ।

**नैर***-संज्ञा पुं० [ सं० नगर ] १. शहर । २. देश । जनपद ।

**नैराश्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निराशा का भाव । नाउम्मेदी ।

**नैऋ त**—वि० [ सं० ] नैऋ ति-संबंधी ।

संज्ञा पुं० १. राक्षस । २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी ।

**नैऋ ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा ।

**नैर्मल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निर्मलता ।

**नैवेद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाय । देवबलि । भोग ।

**नैश**—वि० [ सं० ] निशा संबंधी । रात का ।

**नैषध**—वि० [ सं० ] निषध-देश संबंधी । निषध देश का ।

संज्ञा पुं० १. नल जो निषध-देश के राजा थे । २. श्रीहर्ष-रचित एक संस्कृत काव्य ।

**नैष्ठिक**—वि० [सं०] [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान् । निष्ठायुक्त ।

**नैसर्गिक**—वि० [ सं० ] स्वाभाविक । प्राकृतिक । स्वभावसिद्ध । कुदरती ।

**नैसा***—वि० [ सं० अनिष्ट ] बुरा । खराब ।

**नैसिक, नैसुक**—वि० [ हिं० नेक ] थोड़ा । तनिक ।

**नैहर**—संज्ञा पुं॰ स्त्री के पिता का घर। मायका। पीहर।

**नोइनी, नोई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ नोवना ] वह रस्सी जो गौ दूहते समय उसके पिछले पैरों में बाँधी जाती है।

**नोक**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] [ वि॰ नुकीला ] १. उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। सूक्ष्म अग्र भाग। २. किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा। ३. निकला हुआ कोना।

**नोक झोंक**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ नोक+हिं॰ झोंक ] १. बनाव-सिंगार। ठाट-बाट। सजावट। २. तपाक। तेज। आतंक। दर्प। ३. चुभनेवाली बात। व्यंग्य। ताना। आवाजा। ४. छेड़-छाड़।

**नोकना**—क्रि॰ स॰ [ ? ] ललचना।

**नोकदार**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १. जिसमें नोक हो। २. चुभनेवाला पैना। ३. चित्त में चुभनेवाला। ४. शानदार।

**नोका झोंकी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "नोक-झोंक"।

**नोखा**†—वि॰ दे॰ "अनोखा"।

**नोच**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ नोचना ] १. नोचने की क्रिया या भाव। २. छीनना। लूट।

**नोच-खसोट**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ नोचना+खसोटना ] जबरदस्ती खींच-खाँच करके लेना। छीनाझपटी। लूट।

**नोचना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ लुंचन ] १. जमी या लगी हुई वस्तु को झटके से खींचकर अलग करना। उखाड़ना। २. नख आदि से विदीर्ण करना। ३. दुःखी और हैरान करके माँगना या लेना।

**नोचू**—वि॰ [ हिं॰ नोचना ] नोचने खसोटने या छीनने झपटनेवाला।

**नोट**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] १. टाँकने या लिखने का काम। ध्यान रहने के लिए लिख लेने का काम। २. लिखा हुआ परचा। पत्र। चिट्ठी। ३. आशय या अर्थ प्रकट करनेवाला लेख। टिप्पणी। ४. सरकार की ओर से जारी किया हुआ वह कागज जिस पर कुछ रुपयों की संख्या रहती है और यह लिखा रहता है कि सरकार से उतना रुपया मिल जायगा। सरकारी हुंडी।

**नोदन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. प्रेरणा। चलाने या हाँकने का काम। २. बैलों को हाँकने की छड़ी या कोड़ा। पैना। औगी।

**नोन**†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "नमक"।

**नोनचा**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ नोन] १. नमक मिली हुई आम की फाँकें। २. नमकीन अचार।

**नोन-हरामी**—वि॰ दे॰ "नमक-हराम"।

**नोना**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ लवण] [ स्त्री॰ नोनी ] १. नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों तथा सीड़ की जमीन में लगा मिलता है। २. लोनी मिट्टी। †३. शरीफा। सीताफल।

‡वि॰ [स्त्री॰ नोनी] १. नमक मिला। खारा। २. लावण्यमय। सलोना। सुंदर।

क्रि॰ स॰ दे॰ "नोवना"।

**नोना चमारी**—संज्ञा स्त्री॰ एक प्रसिद्ध जादूगरनी जिसकी दोहाई मंत्रों में दी जाती है।

**नोनिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ नोना ] लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति।

†संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ नोन ] लोनिया। अमलोनी।

**नोनी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ लवण ]. १. लोनी मिट्टी। २. लोनिया। अम-लोनी का पौधा।

**नोनो**†*—वि॰ दे॰ "नोना"।

**नोर, नोल***—वि॰ दे॰ "नवल"।

**नोवना**†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ नद्ध ] दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।

**नौहर**†—वि॰ [ सं॰ नोपलभ्य ] १. अलभ्य। दुर्लभ। जल्दी न मिलने-वाला। २. अनोखा। अद्भुत।

**नौ**—वि॰ [ सं॰ नव ] एक कम दस। **मुहा॰**—नौ दो ग्यारह होना=देखते देखते भाग जाना। चल देना।

**नौकर**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] [ स्त्री॰ नौकरानी ] १. भृत्य। चाकर। टहलुआ। खिदमतगार। २. कोई काम करने के लिए वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य। वैतनिक कर्मचारी।

**नौकरशाही**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ नौकर+शाही ] वह शासन-प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।

**नौकराना**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ नौकर ] नौकरों को मिलनेवाली दस्तूरी।

**नौकरानी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ नौकर+आनी ( प्रत्य॰ ) ] घर का काम धंधा करनेवाली स्त्री। दासी। मजदूरनी।

**नौकरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ नौकर+ई ( प्रत्य॰ ) ] १. नौकर का काम। सेवा। टहल। २. कोई काम जिसके लिए तनखाह मिलती हो।

**नौकरीपेशा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] वह जिसकी जीविका नौकरी से चलती हो।

**नौका**—संज्ञा स्त्री० [ सं ] नाव। किश्ती।

**नौगर,नौगिरही***— संज्ञा स्त्री० दे० "नौग्रह"।

**नौग्रही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० नौ+ग्रह ] हाथ में पहनने का एक गहना।

**नौछावर†**—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

**नौज**—अव्य० [ सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज ] १. ऐसा न हो। ईश्वर न करे। ( अनिच्छा-सूचक ) २. न हो। न सही। ( बेपरवाही ) ( स्त्रि० )

**नौजवान**-वि० [ फ़ा० ] नवयुवक।

**नौजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० लौज ] १. बादाम। २. चिलगोजा।

**नौजी**-संज्ञा स्त्री० दे० "न्योजी"।

**नौतन***-वि० दे० "नूतन"।

**नौतम***—वि० [ सं० नवतम ] १. अत्यंत नवीन। बिल्कुल नया। २. ताजा।

संज्ञा पुं० [ हिं० नवना ] नम्रता। विनय।

**नौता**—वि० [ सं० नव ] नया। ताजा।

**नौधा***-वि० दे० "नवधा"।

**नौनगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नौ+नग ] बाहु पर पहनने का नौ नगों का एक गहना।

**नौना**-क्रि० अ० दे० "नवना"।

**नौबढ़**—वि० [ सं० नया+हिं० बढ़ना ] जिसे हीन दशा से अच्छी दशा में आए थोड़े ही दिन हुए हों। हाल में बढ़ा हुआ।

**नौबत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. बारी। पारी। २. गति। दशा। हालत। ३. उपस्थित दशा। संयोग। ४. वैभव या मंगलसूचक बाद्य, विशेषतः शहनाई और नगाड़ा जो देवमंदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है।

**मुहा०**—नौबत झड़ना=नौबत बजना। नौबत बजना=१. आनंद-उत्सव होना। २. प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।

**नौबतखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है। नक्कारखाना।

**नौबती**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नौबत+ई ( प्रत्य० ) ] १. नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २. फाटक पर पहरा देनेवाला। पहरेदार। ३ बिना सवार का सजा हुआ घोड़ा। ४. बड़ा खेमा या तंबू।

**नौबतीदार**-संज्ञा पुं० दे० "नौबती"।

**नौमि***—क्रि० स० [ सं० नमामि ] एक वाक्य जिसका अर्थ है "मैं नमस्कार करता हूँ"।

**नौमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नवमी ] पक्ष की नवीं तिथि। नवमी।

**नौरंग***-संज्ञा पुं०औरंग (औरंगजेब) का रूपांतर।

**नौरंगी**-संज्ञा स्त्री० दे० "नारंगी"।

**नौरतन**—संज्ञा पुं० दे० "नवरत्न"।

संज्ञा पुं० [ सं० नवरत्न ] नौनगा गहना।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

**नौरोज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। इस दिन बहुत आनंद-उत्सव मनाया जाता था। २. त्योहार।

**नौल***—वि० दे० "नवल"।

**नौलखा**—वि० [ हिं० नौ+लाख ] जिसका मूल्य नौ लाख हो। बड़ा और बहुमूल्य।

**नौशा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दूल्हा। वर।

**नौसत**—संज्ञा पुं० [ हिं० नौ+सात ] सोलहो शृंगार। सिंगार।

**नौसर**—संज्ञा पुं० [ हिं० नौ+सर ] १. धूर्तता। चालबाजी। २. जालसाजी।

**नौसरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० नौ+सर] नौ लड़ों का हार।

**नौसरिया**—वि० [ हिं० नौसर ] १. धूर्त। चालबाज। २. जालसाज।

**नौसादर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० नौशादर ] एक तीक्ष्ण झालदार खार या नमक।

**नौसिखिया,नौसिखुआ**-वि० [ सं० नवशिक्षित ] जिसने कोई काम हाल में सीखा हो। जो दक्ष या कुशल न हुआ हो।

**नौसेन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जलसेना। जल में लड़नेवाली सेना।

**नौहँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० नव=नया+हिं० हाँड़ी ] मिट्टी की नई हाँड़ी।

**न्यग्रोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वटवृक्ष। बरगद। २. शमी वृक्ष। ३. बाहु। ४. विष्णु। ५. महादेव।

**न्यस्त**—वि० [ सं० ] १. रखा हुआ। धरा हुआ। २. स्थापित। बैठाया या जमाया हुआ। ३. चुनकर सजाया हुआ ४. डाला हुआ। फेंका हुआ। ५. त्यक्त। छोड़ा हुआ। ६. अमानत रखा हुआ।

**न्याउ**—संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।

**न्याति***—संज्ञा स्त्री० [ सं० ज्ञाति ] जाति।

**न्याना*†**—वि० [ सं० अज्ञान ] अनजान। नासमझ।

**न्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उचित

बात। नियम के अनुकूल बात। हक बात। इंसाफ। २. किसी मामले मुकदमे में दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। ३. वह शास्त्र जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है। यह छः दर्शनों में है और इसके प्रवर्त्तक मिथिला के गौतम ऋषि कहे जाते हैं। ४. ऐसा दृष्टांत-वाक्य जिसका व्यवहार लोक में कोई प्रसंग आ पड़ने पर होता है और जो किसी उपस्थित बात पर घटती है। कहावत। जैसे—काकतालीय न्याय, काकाक्षिगोलक न्याय आदि।

**न्यायकर्त्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय या फैसला करनेवाला हाकिम।

**न्यायतः**—क्रि० वि० [ सं० ] १. न्याय से। ईमान से। २. ठीक-ठीक।

**न्यायपरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] न्यायशीलता। न्यायी होने का भाव।

**न्यायवान्**—संज्ञा पुं० [ सं० न्यायवत् ] [ स्त्री० न्यायवती ] न्याय पर चलनेवाला। न्यायी।

**न्यायसभा**—संज्ञा स्त्री० दे० "न्यायालय"।

**न्यायाधीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मुकदमे का फैसला करनेवाला अधिकारी। न्यायकर्त्ता।

**न्यायालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जगह जहाँ मुकदमों का फैसला होता हो। अदालत। कचहरी।

**न्यायी**—संज्ञा पुं० [ सं० न्यायिन् ] न्यायपर चलनेवाला। उचित पक्ष ग्रहण करनेवाला।

**न्याय्य**—वि० [ सं० ] न्यायसंगत। उचित।

**न्यारा**—वि० [ सं० निर्निकट ] [ स्त्री० न्यारी ] १. जो पास न हो। दूर। २. अलग। पृथक्। जुदा। ३. और ही। अन्य। भिन्न। ४. निराला। अनोखा। विलक्षण।

**न्यारिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० न्यारा ] सुनारों के नियार ( राख इत्यादि ) को धोकर सोना-चाँदी एकत्र करनेवाला।

**न्यारे**—क्रि० वि० [ हिं० न्यारा ] १. पास नहीं। दूर। २. अलग। पृथक्।

**न्याव**—संज्ञा पुं० [ सं० न्याय ] १. नियम-नीति। आचरण-पद्धति। २. उचित पक्ष। वाजिब बात। ३. विवेक। ४. इंसाफ। न्याय।

**न्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० न्यस्त ] १. स्थापन। रखना। २. धरोहर। थाती। ३. अर्पण। त्याग। ४. संन्यास। ५. देवता के भिन्न भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मंत्र पढ़कर उनपर विशेष वर्णों का स्थापन। ( तंत्र )

**न्यून**—वि० [ सं० ] १. कम। थोड़ा। अल्प। २. घटकर। नीचा।

**न्यूनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमी। २. हीनता।

**न्योछावर**—संज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

**न्योजी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. लीची नामक फल। २. चिलगोजा। नेजा।

**न्योतना**—क्रि० स० [ हिं० न्योता + ना ( प्रत्य० ) ] आनंद उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए बंधु-बांधव आदि को बुलाना। निमंत्रित करना।

**न्योतहरी**—संज्ञा पुं० [ हिं० न्योता ] निमंत्रित। न्योते में आया हुआ आदमी।

**न्योता**—संज्ञा पुं० [ सं० निमंत्रण ] १. आनंद-उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए बंधु-बांधव आदि का आह्वान। बुलावा। निमंत्रण। २. वह भोजन जो दूसरे को अपने यहाँ कराया जाय या दूसरे के यहाँ ( उसकी प्रार्थना पर ) किया जाय। दावत। ३. वह भेंट या धन जो इष्ट-मित्र या संबंधी इत्यादि के यहाँ किसी शुभ या अशुभ कार्य्य के समय भेजा जाता है।

**न्योला**—संज्ञा पुं० दे० "नेवला"।

**न्योली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० नली ] हठयोग की एक क्रिया जिसमें पेट के नलों का पानी से साफ करते हैं।

**न्वैनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "नोइनी"।

**न्हाना***—क्रि० अ० दे० "नहाना"।

—:*:—

# प

**प**—हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण ओठ से होता है।

**पंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कीचड़। कीच। २. पानी के साथ मिला हुआ पोतने योग्य पदार्थ। लेप।

**पंकज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**पंकजयोनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।

**पंकजराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पद्म-राग मणि।

**पंकजवाटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। एकावली।

**पंकजात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**पंकजासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।

**पंकरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**पंकिल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पंकिला ] १. जिसमें कीचड़ हो। २. मलिन। मैला।

**पंक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ऐसा समूह जिसमें एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ एक दूसरी के उपरांत एक सीध में हों। श्रेणी। पाँती। २. चालीस अक्षरों का एक वैदिक छंद। ३. एक वर्णवृत्त। ४. दस की संख्या। ५. सेना में दस दस योद्धाओं की श्रेणी। ६. कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी। ७. भोज में एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी।

**पंक्तिपावन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि में बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है।

**पंक्तिबद्ध**—वि० [ सं० ] श्रेणीबद्ध। कतार में बँधा या रखा हुआ।

**पंख**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष ] पर। डैना।

**मुहा०**—पंख जमना=१. न रहने का लक्षण उत्पन्न होना। २. बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई पड़ना। ३. प्राण जाने का लक्षण दिखाई देना। शामत आना। पंख लगना=पक्षी के समान वेगवान् होना।

**पँखड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।

**पंखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पंख ] [ स्त्री० अल्पा० पंखी ] वह वस्तु जिसे हिलाकर हवा का झोंका किसी ओर ले जाते हैं। बेना।

**पंखा-कुली**—संज्ञा पुं० [ हिं० पंखा + कुली ] वह कुली जो पंखा खींचता हो।

**पंखापोश**—संज्ञा पुं० [ हिं० पंखा + फ़ा० पोश ] पंखे के ऊपर का गिलाफ।

**पंखी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पंख ] १. पक्षी। चिड़िया। २. पाँखी। फतिंगा। ३. पंख। पर। ४. एक प्रकार की ऊनी चादर।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पंखा ] छोटा पंखा।

**पँखुड़ा**†—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष ] कंधे और बाँह का जोड़। पखोरा।

**पँखुड़ी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पंख ] फूल का दल। पखड़ी।

**पंग**—वि० [ सं० पंगु ] १. लगड़ा। २. स्तब्ध।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का नमक।

**पंगत, पंगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पंक्ति ] १. पाँती। पंक्ति। २. भोज के समय भोजन करनेवालों की पंक्ति। ३. भोज। ४. समाज। सभा।

**पंगा**—वि० [ सं० पंगु ] [ स्त्री० पंगी ] १. लँगड़ा। २. स्तब्ध। बेकाम।

**पंगु**—वि० [ सं० ] जो पैर से चल न सकता हो। लँगड़ा।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शनैश्चर। २. एक वातरोग जो मनुष्य की जाँघों में होता है। इसमें रोगी चल-फिर नहीं सकता।

**पंगुगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वर्णिक छंदों का एक दोष जो किसी वर्णिक छंद में लघु के स्थान में गुरु या गुरु के स्थान में लघु आ जाने से होता है।

**पंगुल**—वि० [ सं० पंगु ] पंगु। लँगड़ा।

**पंच**—वि० [ सं० ] जो संख्या में चार से एक अधिक हो। पाँच।

संज्ञा पुं० १. पाँच की संख्या या अंक। २. समुदाय। समाज। ३. जनता। लोक।

**मुहा०**—पंच की भीख=सर्वसाधारण की कृपा। सबका आशीर्वाद। पंच की दुहाई=सब लोगों से अन्याय दूर करने या सहायता करने की पुकार। पंच परमेश्वर=पाँच आदमियों का कहना ईश्वर-वाक्य के तुल्य है।

४. पाँच या अधिक आदमियों का समाज जो किसी झगड़े या मामले को निपटाने के लिए एकत्र हो। न्याय करनेवाली सभा।

**मुहा०**—( किसी को ) पंच मानना या बदना=झगड़ा निपटाने के लिए

किसी को नियत करना । ५. वह जो फौजदारी के दौरे के मुकदमे में दौरा जज की अदालत में फैसले में जज की सहायता के लिए नियत हो ।

**पंचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाँच का समूह । पाँच का संग्रह । २. वह जिसके पाँच अवयव या भाग हों । ३. धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमें किसी नये कार्य्य का आरंभ निषिद्ध है । पचखा । ( फलित ) ४. शकुनशास्त्र । ५. पंचायत । ६. दक्ष, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य ।

**पंचकन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पुराणानुसार अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या ही रहीं अर्थात् विवाह आदि करने पर भी जिनका कौमार्य नष्ट नहीं हुआ ।

**पंचकल्याण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह घोड़ा जिसका सिर ( माथा ) और चारों पैर सफेद हों और शेष शरीर लाल या काला हो ।

**पंचकवल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति के अनुसार खाने के पूर्व कुत्ते, पतित, कोढ़ी, रोगी, कौए आदि के लिए अलग निकाल दिया जाता है । अग्राशन ।

**पंचकोण**—वि० [ सं० ] जिसमें पाँच कोने हों ।

**पंचकोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उपनिषद् और वेदांत के अनुसार शरीर संघटित करनेवाले पाँच कोश ( स्तर ) जिनके नाम ये हैं—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश ।

**पंचकोस**—संज्ञा पुं० [ सं० पंचक्रोश ] [ स्त्री० पंचकोसी ] पाँच कोस की लंबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि ।

**पंचकोसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पंचकोस ] काशी की परिक्रमा ।

**पंचक्रोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पंचकोस । काशी ।

**पंचगंगा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पाँच नदियों का समूह—गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा । पचनद ।

**पंचगव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र, जो बहुत पवित्र माने जाते और प्रायश्चित्त आदि में खिलाए जाते हैं ।

**पंचगौड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देशानुसार विंध्य के उत्तर बसनेवाले ब्राह्मणों के पाँच भेद—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ।

**पंचचामर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक छंद । नाराच । गिरिराज ।

**पंचजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाँच या पाँच प्रकार के जनों का समूह । २. गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस । ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, और निषाद । ४. मनुष्य । जनसमुदाय । ५. पुरुष । ६. मनुष्य, जीव और शरीर से संबंध रखनेवाले प्राण आदि ।

**पंचजन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध शंख जिसे श्रीकृष्णचन्द्र बजाया करते थे ।

**पंचतत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश । पंचभूत ।

**पंचतन्मात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सांख्य में पाँच स्थूल महाभूतों के कारण-रूप सूक्ष्म महाभूत जो अतींद्रिय माने गए हैं । इनके नाम हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ।

**पंचतपा**—संज्ञा पुं० [ सं० पंचतपस् ] चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठकर तप करनेवाला । पंचाग्नि तापनेवाला ।

**पंचता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पाँच का भाव । २. मृत्यु । विनाश ।

**पंचतिक्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आयुर्वेद में इन पाँच कड़ुई ओषधियों का समूह—गिलोय ( गुरुच ), कंटकारि ( भटकटैया ), सोंठ, कुट और चिरायता ( चक्रदत्त ) ।

**पंचतोलिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाँच + तोला ? ] एक प्रकार का झीना महीन कपड़ा ।

**पंचत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाँच का भाव । २. मृत्यु । मरण । मौत ।

**पंचदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाँच प्रधान देवता जिनकी उपासना आजकल हिंदुओं में प्रचलित है—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी ।

**पंचद्रविड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उन ब्राह्मणों के पाँच भेद जो विंध्याचल के दक्षिण बसते हैं—महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़ ।

**पंचनद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पंजाब की वे पाँच प्रधान नदियाँ जो सिंधु में मिलती हैं—सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम । २. पंजाब प्रदेश । ३. काशी के अंतर्गत एक तीर्थ जिसे पंचगंगा कहते हैं ।

**पंचनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० पंच + नाथ ] बदरीनाथ , द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ ।

**पंचनामा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पंच + फ़ा० नामा ] वह कागज जिस पर पंच लोगों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो ।

**पंचपरमेष्ठी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जैन

शास्त्र के अनुसार अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु; इन पाँच का समूह।

**पंचपल्लव**—संज्ञा पुं० [सं०] इन पाँच वृक्षों के पल्लव-आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल।

**पंचपात्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गिलास के आकार का चौड़े मुँह का एक बरतन जो पूजा में काम आता है। २. पार्वण श्राद्ध।

**पचपीरिया**—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+फ़ा० पीर] मुसलमानों के पाँचों पीरों की पूजा करनेवाला।

**पंचप्राण**—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्राण या वायु—प्राण, अपान,समान, व्यान और उदान।

**पंचभर्तारी**—संज्ञा स्त्री० [सं० पंच+भर्तार] द्रौपदी।

**पंचभूत**—संज्ञा पुं० दे० "पंचतत्त्व"।

**पंचम**—वि० [सं०] [स्त्री० पंचमी] १. पाँचवाँ। २. रुचिर। सुंदर। ३ दक्ष। निपुण।

संज्ञा पुं० [सं०] सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर। यह स्वर कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। २. एक राग जो छः प्रधान रागों में तीसरा है।

**पंचमकार**—संज्ञा पुं० [सं०] वाम मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

**पंचमहापातक**—संज्ञा पुं० [सं०] मनुस्मृति के अनुसार ये पाँच महापातक हैं—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग।

**पंचमहायज्ञ**—संज्ञा पुं० [सं०] स्मृतियों के अनुसार पाँच कृत्य जिन का नित्य करना :गृहस्थों के लिए आवश्यक है। कृत्य ये हैं—१. अध्यापन और संध्यावंदन। २. पितृतर्पण या पितृयज्ञ। ३ होम या देवयज्ञ। ४. बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ। ५.अतिथिपूजन-नृयज्ञ या मनुष्ययज्ञ।

**पंचमहाव्रत**—संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार ये पाँच आचरण-अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य्य और अपरिग्रह। इन्हें पतंजलिजी ने 'यम' माना है।

**पंचमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २. द्रौपदी। ३. व्याकरण में अपादान कारक।

**पंचमुखी**—वि० [सं० पंचमुखिन्] पाँच मुखवाला।

**पंचमूल**—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक पाचन औषध जो पाँच ओषधियों की जड़ से बनती है।

**पंचमेल**—वि० [हिं० पाँच+मेल या मिलाना] १. जिसमें पाँच प्रकार की चीजें मिली हों। २. जिसमें सब प्रकार की चीजें मिली हों।

**पँचरंग, पँचरंगा**—वि० [हिं० पाँच+रंग] १. पाँच रंगों का। २ अनेक रंगों का।

**पंचरत्न**—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच प्रकार के रत्न-सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती।

**पंचराशिक**—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में एक प्रकार का हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियों के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

**पँचलड़ा**—वि० [हिं० पाँच+लड़] पाँच लड़ों का। जैसे—पँचलड़ा हार।

**पंचलवण**—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक शास्त्रानुसार पाँच प्रकार के लवण—काँच, सेंधा, सामुद्र, विट और सोंचर।

**पंचवटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रामायण के अनुसार दंडकारण्य के अंतर्गत नासिक के पास एक स्थान जहाँ रामचंद्रजी वनवास में रहे थे। सीताहरण यहीं हुआ था।

**पंचवाँसा**—संज्ञा पुं० [हिं० पाँच+मास] एक रीति जो गर्भ रहने से पाँचवें महीने में की जाती है।

**पंचबाण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव के पाँच बाण जिनके नाम ये हैं—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद। कामदेव के पाँच पुष्पबाणों के नाम ये हैं—कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल। २. कामदेव।

**पंचवान**—संज्ञा पुं० [?] राजपूतों की एक जाति।

**पंचशब्द**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाँच मंगलसूचक बाजे जो मंगलकार्यों में बजाए जाते हैं—तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही। २. व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग।

**पंचशर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव के पाँच बाण। २. कामदेव।

**पंचशिख**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंह। बाजा। २. एक मुनि जो कपिल के पुत्र थे।

**पंचसूना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनु के अनुसार ये पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य्य करने में होती हैं—चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाड़ू देना, कूटना और पानी का घड़ा रखना।

**पंचहजारी**—संज्ञा पुं० दे० "पंज-हजारी"।

**पंचांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाँच अंग या पाँच अंगों से युक्त वस्तु। २. वृक्ष के पाँच अंग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक)। ३. ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र, जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार दिए गए हों। पत्रा। ४. प्रणाम का एक भेद जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर आँख देवता की ओर करके मुँह से प्रणामसूचक शब्द कहा जाता है।

**पंचाक्षर**—वि० [ सं० ] जिसमें पाँच अक्षर हों।
संज्ञा पुं० १. प्रतिष्ठा नामक वृत्ति। २. शिव का एक मंत्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ॐ नमः शिवाय।

**पंचाग्नि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अन्वाहार्य्य, पचन, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ। २. छांदोग्य उपनिषद् के अनुसार सूर्य्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्। ३. एक प्रकार का तप जिसमें तप करनेवाला अपने चारों ओर अग्नि जलाकर दिन में धूप में बैठा रहता है।
वि० १. पंचाग्नि की उपासना करनेवाला। २. पंचाग्नि विद्या जाननेवाला। ३. पंचाग्नि तापनेवाला।

**पंचानन**—वि० [ सं० ] जिसके पाँच मुँह हों।
संज्ञा पुं० १. शिव। २. सिंह।

**पंचामृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का द्रव्य जो दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जाता है।

**पंचायत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पंचायतन ] १. किसी विवाद या झगड़े पर विचार करने के लिए चुने हुए लोगों का समाज। पंचों की बैठक या सभा। कमेटी। २. एक साथ बहुत से लोगों की बकवाद।

**पंचायतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाँच देवताओं की मूर्तियों का समूह। जैसे, राम-पंचायतन।

**पंचायती**—वि० [ हिं० पंचायत ] १. पंचायत का किया हुआ। पंचायत का। २. पंचायत-संबंधी। ३. बहुत से लोगों का मिला-जुला। साझे का। ४. सब लोगों का।

**पंचाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक देश का बहुत प्राचीन नाम। यह देश हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनों ओर था। २. [ स्त्री० पंचाली ] पंचाल देशवासी। ३. पंचाल देश का राजा। ४. महादेव। शिव। ५. एक प्रकार का छंद।

**पंचालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पुतली। गुड़िया। २. नटी। नर्त्तकी।

**पंचाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पुतली। गुड़िया। २. द्रौपदी। ३. एक गीत।

**पंचाशिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह।

**पंचीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदांत में पंचभूतों का विभाग विशेष।

**पंछा**—संज्ञा पुं० [हिं० पानी + छाला] १. स्राव जो प्राणियों के शरीर से या पेड़ पौधों के अंगों से निकलता है। २. छाले आदि के भीतर भरा हुआ पानी।

**पंछाला**—संज्ञा पु० [ हिं० पानी + छाला] १. फफोला। २. फफोले का पानी।

**पंछी**—संज्ञा पुं० [सं० पक्षी] चिड़िया। पक्षी।

**पंजर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हड्डियों का ठट्टर या ढाँचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराए रहता है अथवा बंद या रक्षित रखता है। ठटरी। अस्थिसमुच्चय। कंकाल। २. ऊपरी धड़ ( छाती ) का हड्डियों का घेरा। पार्श्व, वक्षःस्थल आदि की अस्थिपंक्ति। ३. शरीर। देह। ४. पिंजड़ा।

**पँजरना***—क्रि० अ० दे० "पजरना"।

**पंजहजारी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक उपाधि जो मुसलमान राजाओं के समय में सरदारों और दरबारियों को मिलती थी।

**पंजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मि० सं० पंचक ] १. पाँच का समूह। गाही। २. हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह।

**मुहा०**—पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना=हाथ धोकर पीछे पड़ना। जी-जान से लगना या तत्पर होना। पंजे में=१. पकड़ में। मुट्ठी में। ग्रहण में। २. अधिकार में। ३. पंजा लड़ाने की कसरत या बलपरीक्षा। ४. उँगलियों के सहित हथेली का संपुट। चंगुल। ५. जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियाँ रहती हैं। ६. मनुष्य के पंजे के आकार का कटा हुआ किसी धातु का टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदि में बाँधकर झंडे या निशान की तरह ताजिये के साथ लेकर चलते हैं। ७. ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच चिह्न या बूटियाँ हों।

**मुहा०**—छक्का पंजा=दाँव-पेंच। चालबाजी।

**पंजाब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ हिं०

पंजाबी ] भारत के उत्तर-पश्चिम का प्रदेश जहाँ सतलज, ब्यास, रावी, चनाब और झेलम नाम की पाँच नदियाँ बहती हैं। प्राचीन पंचनद।

**पंजाबी**—वि० [ फ़ा० ] पंजाब का।
संज्ञा पुं० [ स्त्री० पंजाबिन ] पंजाब निवासी।

**पंजारा**—संज्ञा पुं० [ सं० पजिकार ] धुनिया।

**पंजिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंचांग।

**पँजीरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँच+ जीरा ] एक प्रकार की मिठाई जो आटे के चूर्ण को घी में भूनकर बनाई जाती है।

**पँजेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाँजना ] बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

**पंडर**—वि० [ सं० पाण्डुर ] पांडु वर्ण का। पीला।
संज्ञा पुं० [सं० पिंड] पिंड। शरीर।

**पँड़वा**—संज्ञा पु० [?] भैंस का बच्चा।

**पंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० पंडित ] [स्त्री० पंडाइन ] किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी। पुजारी।

**पंडाल**—संज्ञा पुं० [ ? ] सभा के अधिवेशन के लिए बनाया हुआ मंडप।

**पंडित**—वि० [ सं० ][ स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी ] १. विद्वान्। शास्त्रज्ञ। ज्ञानी। २. कुशल। प्रवीण। चतुर।
संज्ञा पुं० शास्त्रज्ञ। २. ब्राह्मण।

**पंडिताई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पंडित+ आई ( प्रत्य० )] विद्वत्ता। पांडित्य।

**पंडिताऊ**—वि० [ हिं० पंडित ] पंडितों के ढंग का। जैसे, पंडिताऊ हिंदी।

**पंडितानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पंडित ] १. पंडित की स्त्री। २. ब्राह्मणी।

**पंडु**—वि० [ सं० ] १. पीलापन लिए हुए मटमैला। २. श्वेत। सफेद। ३. पीला।

**पंडुक**—संज्ञा पुं० [ सं० पाण्डु ] [ स्त्री० पंडुकी ] कपोत या कबूतर की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी। पिंडुक। पेंडकी। फाख्ता।

**पंडुर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] पानी में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

**पँतीजना**—क्रि० स० [ सं० पिंजन ] रूई ओटना। पींजना।

**पँतीजी**—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंजक] रूई धुनने की धुनकी।

**पँत्यारी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पंक्ति"।

**पंथ**—संज्ञा पु० [ सं० पथ ] १ मार्ग। रास्ता। राह। २. आचार-पद्धति। चाल। रीति।
**मुहा०**—पंथ गहना=१. रास्ता पकड़ना। चलना। २. चाल पकड़ना। आचरण ग्रहण करना। पंथ दिखाना= १. रास्ता बताना। २. उपदेश देना। पंथ देखना या निहारना =प्रतीक्षा करना। इंतजार करना। पंथ मे या पंथ पर पाँव देना = १. चलना। २. आचरण ग्रहण करना। पंथ पर लगना =१. रास्ते पर होना। २. चाल ग्रहण करना। किसी के पंथ लगना=१. किसी के पीछे होना। अनुयायी होना। २. किसी के पीछे पड़ना। बराबर तंग करना। पंथ सेना=बाट जोहना। आसरा देखना।
३. धर्ममार्ग। संप्रदाय। मत।

**पंथान***—संज्ञा पुं० [ सं० पंथ ] मार्ग।

**पंथकी***—संज्ञा पुं० [ सं० पथिक ] राही। पथिक। मुसाफिर।

**पंथिक***†—संज्ञा पुं० दे० "पथिक"।

**पंथी**—संज्ञा पु० [ सं० पथिन् ] १. राही। बटोही। पथिक। २. किसी संप्रदाय या पंथ का अनुयायी। जैसे, कबीरपंथी।

**पंद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] शिक्षा। उपदेश।

**पंद्रह**—वि० [ सं० पचदश ] दस और पाँच।
संज्ञा पुं० दस और पाँच की सूचक संख्या। १५।

**पंप**—संज्ञा पुं० [ अ० पम्प ] १. वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है। २. एक प्रकार का जूता।

**पंपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दक्षिण देश की एक नदी और उसी से लगा हुआ एक ताल और नगर जिसका उल्लेख रामायण में है।

**पंपाल**—वि० [ हिं० पाप ? ] १. पापी। २. दुष्ट।

**पंपासर**—संज्ञा पु० दे० "पंपा"।

**पँवर**—संज्ञा पुं० [ ? ] सामान। सामग्री।

**पँवरना**†—क्रि० अ० [ सं० प्लवन ] १. तैरना। २. थाह लेना। पता लगाना।

**पँवरि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुर=घर ] प्रवेशद्वार या गृह। ड्योढ़ी।

**पँवरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० पँवरी, पौरि ] १. द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २. मंगल अवसर पर द्वार पर बैठकर मंगल गीत गानेवाला याचक।

**पँवरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँव ] खड़ाऊँ। पाँवरी।

**पँवाड़ा**—संज्ञा पु० [ सं० प्रवाद ] १. लंबी-चौड़ी कथा जिसे सुनते सुनते जी ऊबे। दास्तान। २. व्यर्थ विस्तार

के साथ कही हुई बात। २. एक प्रकार का गीत।

**पँवार**—संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

**पँवारना**†—क्रि० स० [ सं० प्रवारण ] हटाना। दूर करना। फेंकना।

**पंसारी**—संज्ञा पुं० [ सं० पण्यशाली ] मसाले और जड़ी-बूटी बेचनेवाला बनिया।

**पंसासार**—संज्ञा पुं० [ सं० पाशक + सं० सारि=गोटी ] पासे का खेल।

**पंसेरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँच + सेर ] पाँच सेर की तौल या बाट।

**पइठना***—क्रि० अ० दे० "पैठना"।

**पइता**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक छंद जिसे पाईता भी कहते हैं।

**पइसना**†—क्रि० अ० दे० "पैठना"।

**पइसार**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पइसना ] पैठ। प्रवेश।

**पउँरि, पउरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि"।

**पकड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रकृष्ट ] १ पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण। २. पकड़ने का ढंग। ३. लड़ाई में एक एक बार आकर परस्पर गुथना। भिड़ंत। हाथापाई। ४. दोष, भूल आदि ढूँढ़ निकालना।

**पकड़ धकड़**—संज्ञा स्त्री० दे० "धर-पकड़"।

**पकड़ना**—क्रि० स० [ सं० प्रकृष्ट ] १. किसी वस्तु को इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके। धरना थामना। ग्रहण करना। २. काबू में करना। गिरफ्तार करना। ३. कुछ करने से रोक रखना। ठहराना। ४. ढूँढ़ निकालना। पता लगाना। ५. रोकना। टोकना। ६. दौड़ने, चलने या और किसी बात में बढ़े हुए के बराबर हो जाना। ७. किसी फैलनेवाली वस्तु में लगकर उसका अपने में संचार करना। ८. लगकर फैलना या मिलना। संचार करना। ९. अपने स्वभाव या वृत्ति के अंतर्गत करना। १०. आक्रांत करना। ग्रसना। घेरना।

**पकड़वाना**—क्रि० स० [ हिं० पकड़ना का प्रे० ] पकड़ने का काम दूसरे से कराना।

**पकड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० पकड़ना का प्रे० ] १. किसी के हाथ में देना या रखना। थमाना। २. पकड़ने का काम कराना।

**पकना**—क्रि० अ० [ सं० पक्व ] १. फल आदि का पुष्ट होकर खाने के योग्य होना।

**मुहा०**—बाल पकना=( बुढ़ापे के कारण ) बाल सफेद होना।

२. आँच खाकर गलना या तैयार होना। सिद्ध होना। सीझना।

**मुहा०**—कलेजा पकना=जी जलना।

३. फोड़े आदि का इस अवस्था में पहुँचना कि उसमें मवाद आ जाय। पीब से भरना। ४. पक्का होना।

**पकरना**†*—क्रि० स० दे० "पकड़ना"।

**पकवान**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्वान्न ] घी में तलकर बनाई हुई खाने की वस्तु। जैसे, पूरी।

**पकवाना**—क्रि० स० [ हिं० पकाना का प्रे० ] पकाने का काम दूसरे से कराना।

**पकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पकाना ] १. पकाने की क्रिया या भाव। २. पकाने की मजदूरी।

**पकाना**—क्रि० स० [ हिं० पकना ] १. फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। २. आँच या गरमी के द्वारा गलाना या तैयार करना। रींधना। सिझाना। ३. फोड़े, फुंसी, घाव आदि को इस अवस्था में पहुँचाना कि उसमें पीब या मवाद आ जाय। ४. पक्का करना।

**पकावन**—संज्ञा पुं० दे० "पकवान"।

**पकौड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पका + बरी, बड़ी ] [ स्त्री० अल्पा० पकौड़ी ] घी या तेल में पकाकर फुलाई हुई बेसन या पीठी की बड़ी।

**पक्का**—वि० [ सं० पक्व ] [ स्त्री० पक्की ] १. अनाज या फल जो पुष्ट होकर खाने के योग्य हो गया हो। २. पका हुआ। जिसमें पूर्णता आ गई हो। पूरा। ३. जो अपनी पूरी बाढ़ या प्रौढ़ता को पहुँच गया हो। पुष्ट। ४. साफ और दुरुस्त। तैयार। ५. जो आँच पर कड़ा या मजबूत हो गया हो। ६. जिसे अभ्यास हो। ७. जो अभ्यस्त या निपुण व्यक्ति के द्वारा बना हो। ८. तजरबेकार। निपुण। होशियार। ९. आँच पर पका हुआ।

**मुहा०**—पक्का खाना या पक्की रसोई=घी में पका हुआ भोजन। पक्का पानी=१. औटाया हुआ पानी। २. स्वास्थ्यकर जल।

१०. दृढ़। मजबूत। टिकाऊ। ११. स्थिर। दृढ़। न टलने-वाला। निश्चित। १२. प्रमाणों से पुष्ट। प्रामाणिक। नपा-तुला।

**मुहा०**—पक्का कागज=वह कागज जिस पर लिखी हुई बात कानून से दृढ़ समझी जाती है।

१३. जिसका मान प्रामाणिक हो।

**पक्खर***—संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"। वि० [ सं० पक्व ] पक्का। पुख्ता।

**पक्व**—वि० [ सं० ] १. पका हुआ। २. पक्का। ३. परिपुष्ट। दृढ़।

**पक्वता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पक्का-पन ।

**पक्वान्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पका हुआ अन्न । २. घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाकर बनाई हुई खाने की चीज ।

**पक्वाशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पेट में वह स्थान जहाँ अन्न जाता है और यकृत् तथा क्लोमग्रंथियों से आए हुए रस से मिलता है ।

**पक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी विशेष स्थिति से दाहिने और बाएँ पड़नेवाले भाग । ओर । पार्श्व । तरफ । २. किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक । पहलू । ३. वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो और जो किसी दूसरे की बात के विरुद्ध पड़ती हो ।

**मुहा०**—पक्ष गिरना=मत का युक्तियों द्वारा सिद्ध न हो सकना ।

४. अनुकूल मत या प्रवृत्ति । ५. झगड़ा या विवाद करनेवालों में से किसी के अनुकूल स्थिति ।

**मुहा०**—(किसी का) पक्ष करना= दे० "पक्षपात करना" । (किसी का) पक्ष लेना=१. (झगड़े में) किसी की ओर होना । सहायक होना । २. पक्ष-पात करना । तरफदारी करना ।

६. निमित्त । लगाव । संबंध । ७. वह वस्तु जिसमें साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं । जैसे—"पर्वत वह्नि-मान् है" । यहाँ पर्वत पक्ष है जिसमें साध्य वह्निमान् की प्रतिज्ञा की गई है । ( न्याय ) ८. फौज । सेना । बल । ९. सहायकों या सवर्गों का दल । १०. सहायक । सखा । साथी । ११. वादियों प्रति-वादियों के अलग अलग समूह । १२. चिड़ियों का डैना । पंख । पर । १३. शरपक्ष । तीर में लगा हुआ पर । १४. चांद्र मास के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभाग । पाख । १५. गृह । घर ।

**पक्षपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बिना उचित अनुचित के विचार के किसी के अनुकूल प्रवृत्ति या स्थिति । तरफ-दारी ।

**पक्षपाती**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तरफ-दार ।

**पक्षाघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अर्धांग रोग जिसमें शरीर के दहिने या बाएँ किसी पार्श्व के सब अंग क्रियाहीन हो जाते हैं । आधे अंग का लकवा । फालिज ।

**पक्षिराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गरुड़ । २. जटायु । ३. एक प्रकार का धान ।

**पक्षी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिड़िया । २. तरफदार ।

**पक्ष्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आँख की बरौनी ।

**पक्ष्मिल**—वि० [ सं० ] जिसमें बरौनी हो ।

**पखंडी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाखंडी ] १. पाखंडी । २. वह जो कठपुतलियाँ नचाता हो ।

**पख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पक्ष ] १. ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात । तुर्रा । २. ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त । बाधक नियम । अड़ंगा । ३. झगड़ा । बखेड़ा । ४. दोष । त्रुटि ।

**पखड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पक्ष्म ] फूलों का रंगीन पटल जो खिलने के पहले गर्भ या परागकेसर को चारों ओर से बंद किए रहता है और खिलने पर फैला रहता है । पुष्पदल ।

**पखराना**—क्रि० स० [ हिं० पखा-रना का प्रे० ] धुलवाना । पखारने का काम कराना ।

**पखरी**†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाखर" । २. दे० "पखड़ी" ।

**पखरैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाखर+ ऐत ( प्रत्य० ) ] वह घोड़ा, बैल या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो ।

**पखवाड़ा**†—संज्ञा पुं० दे० "पखवारा" ।

**पखवारा**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष+ वार ] १. महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक । २. पंद्रह दिन का काल ।

**पखान***—संज्ञा पुं० दे० "पाषाण" ।

**पखाना**—संज्ञा पुं० [सं० उपाख्यान] कहावत । कहनूत । कथा । मसल । †संज्ञा पुं० दे० "पाखाना" ।

**पखारना**—क्रि० स० [ सं० प्रक्षा-लन ] पानी से धोकर साफ करना । धोना ।

**पखाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पय= पानी + हिं० खाल ] १. बैल के चमड़े की बनी हुई बड़ी मशक जिसमें पानी भरा जाता है । २. धौंकनी ।

**पखाली**—संज्ञा पुं० [ हिं० पखाल ] पखाल या मशक से पानी भरनेवाला । मशकी । भिश्ती ।

**पखावज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पक्ष+ वाद्य ] एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है ।

**पखावजी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पखावज+ ई ] पखावज बजानेवाला ।

**पखी, पखीरी***—संज्ञा पुं० दे० "पक्षी" ।

**पखुरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी" ।

**पखेरू**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्षालु ] पक्षी । चिड़िया ।

**पखौड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पंख ] १. डैना। पर। २. मछली का पर।

**पग**—संज्ञा पुं० [ सं० पदक ] १. पैर। पाँव। २. चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया की समाप्ति। डग। फाल।

**पगडंडी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पग+डंडी ] जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो।

**पगड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पटक ] १. वह लंबा कपड़ा जो सिर पर लपेट कर बाँधा जाता है। पाग। चीरा। साफा। उष्णीष।

**मुहा०**—( किसी से ) पगड़ी अटकना=बराबरी होना। मुकाबला होना। पगड़ी उछालना=१. बेइज्जती करना। दुर्दशा करना। २. उपहास करना। हँसी उड़ाना। पगड़ी उतारना=१. मान या प्रतिष्ठा भंग करना। बेइज्जती करना। २. वस्त्रमोचन करना। ठगना। लूटना। (किसी का) पगड़ी बँधना=१. उत्तराधिकार मिलना। वरासत मिलना। २ उच्च पद या स्थान प्राप्त होना। ३. प्रतिष्ठा मिलना। सम्मान प्राप्त होना। ( किसी के साथ ) पगड़ी बदलना=भाई-चारे का नाता जोड़ना। मैत्री करना।

२. मकान दुकान का किरायेदार की ओर से दिया गया नजराना। भेंट। एक प्रकार की रिश्वत।

**पगतरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पग+तल ] जूता।

**पगदासी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पग+दासी ] १. जूता। २. खड़ाऊँ।

**पगना**—क्रि० अ० [ सं० पाक ] १. शरबत या शीरे में इस प्रकार पकना कि शरबत या शीरा चारों ओर लिपट और घुस जाय। २. रस आदि के साथ ओतप्रोत होना। सनना। ३. किसी के प्रेम में डूबना।

**पगनियाँ**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पग ] जूती।

**पगरा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० पग+रा ( प्रत्य० ) ] पग। डग। कदम।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० पगाह ] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। सवेरा। तड़का।

**पगला**—वि० पुं० दे० "पागल"।

**पगहा**†—संज्ञा पुं० [ सं० प्रग्रह ] [ स्त्री० पगही ] वह रस्सी जिससे पशु बाँधा जाता है। गिराँव। पघा।

**पगा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पाग ] दुपट्टा। संज्ञा पुं० दे० "पघा"।

**पगाना**—क्रि० स० [ सं० पक्व या पाक ] १. पागने का काम कराना। २. अनुरक्त करना। मग्न करना।

**पगार***—संज्ञा पुं० [ सं० प्रकार ] चहारदीवारी।
संज्ञा पुं० [ हिं० पग+गारना ] १. पैरों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा। २. ऐसी वस्तु जिसे पैरों से कुचल सकें। ३. वह पानी या नदी जिसे पैदल चलकर पार कर सकें।

**पगाह**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] यात्रा आरंभ करने का समय। प्रभात। भोर। तड़का।

**पगिआना***†—क्रि० स० दे० "पगाना"।

**पगिया***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी"।

**पगुराना**†—क्रि० अ० [ हिं० पागुर ] १. पागुर या जुगाली करना। २. हजम करना।

**पघा**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रग्रह ] ढोरों को बाँधने की मोटी रस्सी। पगहा।

**पचकना**—क्रि० अ० दे० "पिचकना"।

**पचकल्यान**—संज्ञा पुं० दे० "पंचकल्याण"।

**पचखा**†—संज्ञा पुं० दे० "पचक"।

**पचगुना**—वि० [ सं० पंचगुण ] पाँच बार अधिक। पाँच गुना।

**पचड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाँच ( प्रपंच )+ड़ा ( प्रत्य० ) ] १. झंझट। बखेड़ा। पँवाड़ा। प्रपंच। २. एक प्रकार का गीत जिसे प्रायः ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं। ३. लावनी के ढंग का एक गीत।

**पचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पचाने की क्रिया या भाव। पाक। २. पकने की क्रिया या भाव। ३. अग्नि।

**पचना**—क्रि० अ० [ सं० पचन ] १. खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत होना। हजम होना। २. क्षय होना। समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल इस प्रकार अपने हाथ में आ जाना कि फिर वापस न हो सके। हजम हो जाना। ४. ऐसा परिश्रम होना जिससे शरीर क्षीण हो। बहुत हैरान होना।

**मुहा०**—पच मरना=किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना। हैरान होना।

५. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में पूर्ण रूप से लीन होना। खपना।

**पचपन**—वि० [ सं० पंचपंचाश ] पचास और पाँच।
संज्ञा पुं० पचास और पाँच की सूचक संख्या। ५५।

**पचपनसाला**—सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण करने की अवस्था।

**पचमेल**—वि० दे० "पँचमेल"।

**पचरंग**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाँच+

रंग] चौक पूरने की सामग्री—मेहँदी का चूरा, अबीर-बुक्का, हल्दी और सुरवारी के बीज।

**पचरंगा**—वि० [ हिं० पाँच+रंग ] [ स्त्री० पचरंगी ] १. जिसमें भिन्न भिन्न पाँच रंग हों। २. कई रंगों से रंजित।
संज्ञा पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक।

**पचलड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँच + लड़ी ] माला की तरह का एक आभूषण।

**पचलोना**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँच+ लोन ( लवण ) ] १. जिसमें पाँच प्रकार के नमक मिले हों। २. दे० "पंचलवण"।

**पचवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँच ] एक प्रकार की देशी शराब।

**पचहरा**—वि० [ हिं० पाँच+हरा ] १. पाँच परतों या तहोंवाला। २. पाँच बार किया हुआ। ( अप्रयुक्त )

**पचाना**—क्रि० स० [ हिं० पचना ] १. पचना का सकर्मक रूप। पकाना। आँच पर गलाना। २. जीर्ण करना। हजम करना। ३. समाप्त, नष्ट या क्षय करना। ४. पराए माल को अपना कर लेना। हजम कर जाना। ५. अत्यधिक परिश्रम लेकर या क्लेश देकर शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ६. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने आप में पूर्ण रूप से लीन कर लेना। खपाना।

**पचारना**†—क्रि० स० [सं० प्रचारण] ललकारना।

**पचास**—वि० [ सं० पंचाशत, प्रा० पंचासा ] चालीस और दस।
संज्ञा पुं० चालीस और दस की संख्या।

**पचासा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पचास ] एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह।

**पचित**—वि० [ सं० पचित=पचा हुआ ] पच्ची किया हुआ। जड़ा या बैठाया हुआ।

**पचीस**—वि० [ सं० पंचविंशति ] पाँच और बीस।
संज्ञा पुं० ५ और २० की संख्या या अंक। २५।

**पचीसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पचीस ] १. एक ही प्रकार की २५ वस्तुओं का समूह। २. किसी की आयु के पहले २५ वर्ष। ३. एक विशेष गणना जिसका सैंकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् १२५ का माना जाता है। ४. एक प्रकार का खेल जो चौसर की बिसात पर पासे के बदले ७ कौड़ियों से खेला जाता है।

**पचोतर सौ**—संज्ञा पुं० [ सं० पंचोत्तरशत ] एक सौ पाँच की संख्या का अंक।

**पचौनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पचना ] पेट के अंदर की वह थैली जिसमें भोजन पचता है।

**पचौर, पचौली**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पंच ] गाँव का मुखिया। सरदार। पंच।

**पचौवर**—वि० [ हिं० पाँच+सं० आवर्त ] पाँच तह या परत किया हुआ। पचहरा।

**पच्चड़, पच्चर**—संज्ञा पुं० [ सं० पचित या पच्ची ] लकड़ी की वह गुल्ली जिसे लकड़ी की बनी चीजों में साल या जोड़ को कसने के लिए ठोकते हैं। काठ का पैबंद।

**पच्ची**—संज्ञा स्त्री० [सं० पचित] १. ऐसा जड़ाव जिसमें जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस वस्तु के बिलकुल समतल हो जाय जिसमें वह जड़ी या जमाई जाय। २. किसी धातु-निर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।
मुहा०—(किसी में) पच्ची हो जाना= बिलकुल मिल जाना। लीन हो जाना।

**पच्चीकारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पच्ची+ फ़ा० कारी ] पच्ची करने की क्रिया या भाव।

**पच्छ***†—संज्ञा पुं० दे० "पक्ष"।

**पच्छताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "पक्षपात"।

**पच्छिम**—संज्ञा पुं० दे० "पश्चिम"।

**पच्छी**—संज्ञा पुं० [ स्त्री० पच्छिनी ] दे० "पक्षी"।

**पछड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० पीछा ] १. लड़ने में पटका जाना। २. दे० "पिछड़ना"।

**पछताना***—क्रि० अ० [हिं० पछताव] किसी किए हुए अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से दुखी होना। पश्चात्ताप करना।

**पछतानि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पछतावा"।

**पछतावना**—क्रि० अ० दे० "पछताना"।

**पछतावा**—संज्ञा पुं० [सं० पश्चात्ताप] पश्चात्ताप।

**पछना**—क्रि० अ० [ हिं० पाछना ] पाछा जाना।
संज्ञा पुं० १. वह अस्त्र जिससे कोई चीज पाछी जाय। २. फसद।

**पछमन***—क्रि० वि० [ हिं० पीछा ] पीछे।

**पछलगा**—वि० दे० "पिछलगा"।

**पछलत्त**—संज्ञा स्त्री० दे० 'पिछलत्ती'।

**पछलना**—संज्ञा पुं० दे० "पिछलना"।

**पछवाँ**—वि० [सं० पश्चिम] पच्छिम का।

**पछाँह**—संज्ञा पुं० [सं० पश्चिम] पच्छिम की ओर का देश।

**पछाँहिया, पछाँही**—वि० [हिं० पछाँह+इया (प्रत्य०)] पछाँह का। पश्चिमी प्रदेश का।

**पछाड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] अचेत होकर गिरना। मूर्च्छित होकर गिरना।

**मुहा०**—पछाड़ खाना=खड़े खड़े अचानक बेसुध होकर गिर पड़ना।

**पछाड़ना**—क्रि० स० [हिं० पछाड़] कुश्ती या लड़ाई में पटकना। गिराना। क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] धोने के लिए कपड़े को जोर से पटकना।

**पछानना***—क्रि० स० दे० "पहचानना"।

**पछारना***—क्रि० स० दे० "पछाड़ना"।

**पछावरि***†—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का सिखरन या शरबत। २. छाछ का बना एक पेय पदार्थ।

**पछाहीं**—वि० [हिं० पछाहँ] पछाहँ का।

**पछिआना**†—क्रि० स० [हिं० पीछे+आना] पीछे पीछे चलना। पीछा करना।

**पछिताव**—संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।

**पछुवाँ**—वि० [हिं० पच्छिम] पच्छिम की (हवा)।

**पछेली**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछे+एली (प्रत्य०)] [पुं० पछेला] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा।

**पछोड़ना**†—क्रि० स० [सं० प्रक्षालन] सूप आदि में रखकर (अन्न आदि के दानों को) साफ करना। फटकना।

**पछयावर**†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का सिखरन या शरबत।

**पजरना***—क्रि० अ० [सं० प्रज्वलन] जलना।

**पजारना***—क्रि० स० [हिं० पजरना] जलाना।

**पजावा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० पज़ावः] आवाँ। ईंट पकाने का भट्ठा।

**पजोखा**†—संज्ञा पुं० [?] मातमपुरसी।

**पज्ज**—संज्ञा पुं० [सं० पद्य] शूद्र।

**पज्झटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० पद्धटिका] १६ मात्राओं का एक प्रकार का छंद।

**पटंबर***†—संज्ञा पुं० [सं० पाट+अंबर] रेशमी कपड़ा। कौषेय।

**पट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. कोई आड़ करनेवाली वस्तु। पर्दा। चिक। ३.धातु आदि का वह चिपटा टुकड़ा या पट्टी जिस पर कोई चित्र या लेख खुदा हुआ हो। ४. कागज का वह टुकड़ा जिस पर चित्र खींचा या उतारा जाय। चित्रपट। ५. वह चित्र जो जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मंदिरों से दर्शनप्राप्त यात्रियों को मिलता है। ६. छप्पर। छान। ७. कपास।

संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १. साधारण दरवाजों के किवाड़।

**मुहा०**—पट उघड़ना या खुलना=मंदिर का दरवाजा इसलिए खुलना कि लोग दर्शन करें।

२. पालकी के दरवाजे के किवाड़ जो सरकाने से खुलते और बंद होते हैं। ३. सिंहासन। ४. चिपटी और चौरस भूमि।

वि० ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो। चित का उलटा। औंधा।

**मुहा०**—पट पड़ना=मंद पड़ना। न चलना।

क्रि० वि० चट का अनुकरण। तुरंत।

**पटइन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटवा] पटवा जाति की स्त्री।

**पटकन***—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १. पटकने की क्रिया या भाव। २. चपत। तमाचा। ३. छोटा डंडा। छड़ी।

**पटकना**—क्रि० स० [सं० पतन+करण] १ झोंके के साथ नीचे की ओर गिराना। २. किसी खड़े या बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर जोर से नीचे गिराना। दे मारना।

**मुहा०**—(किसी पर) पटकना=कोई ऐसा काम किसी के सुपुर्द करना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो।

३. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना। †क्रि० अ० १. सूजन बैठना या पचकना। २. पट शब्द के साथ किसी चीज का दरक या फट जाना।

**पटकनिया, पटकनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटकना] १. पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर गिरकर लोटने या पछाड़ खाने की क्रिया या अवस्था।

**पटका**—संज्ञा पुं० [सं० पट्टक] वह दुपट्टा या रूमाल जिससे कमर बाँधी जाय। कमरबंद। कमरपेच।

**पटकान**—संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी"।

**पटकार**—संज्ञा पुं० [सं०] जुलाहा।

**पटझोल***—संज्ञा पुं० [हिं० पट+झोल] अंचल। आँचल।

**पटतर***—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट+तल] १. समता। बराबरी। समानता। २. उपमा। तशबीह।

†वि० चौरस । समतल । बराबर ।

**पटतरना**—क्रि० अ० [ हिं० पटतर ] उपमा देना ।

**पटतारना**—क्रि० स० [ हिं० पटा+तारना=अंदाजना ] खाँड़े, भाले आदि शस्त्रों को किसी पर चलाने के लिये पकड़ना या खींचना । सँभालना ।

क्रि० स० [ हिं० पटतर ] ऊँची-नीची जमीन को चौरस करना । पड़तारना ।

**पटधारी**—वि० पुं० [सं०] जो कपड़ा पहने हो ।

**पटना**—क्रि० स० [ हिं० पट=जमीन की सतह के बराबर ] १. किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आसपास की सतह के बराबर हो जाना । समतल होना । २ किसी स्थान में किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उससे शून्य स्थान न दिखाई पड़े । परिपूर्ण होना । ३. मकान, कूएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना । ४. † सींचा जाना । सेराब होना । ५. दो मनुष्यों के विचार या स्वभाव में समानता होना । मन मिलना । बनना । ६. लेन-देन आदि में उभय पक्ष का मूल्य या शर्तें आदि पर सहमत हो जाना । तै हो जाना । ७. ( ऋण ) चुकना ।

संज्ञा पुं० दे० "पाटलिपुत्र" ।

**पटनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पटना=तै होना ] वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिली हो ।

**पटपट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० पट ] हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति ।

क्रि० वि० बराबर पट ध्वनि करता हुआ ।

**पटपटाना**—क्रि० अ० [ हिं० पट-कना ] १. भूख-प्यास या सरदी-गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना । २. किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना ।

क्रि० स० १ 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना । २. खेद करना । शोक करना ।

**पटपर**—वि० [हिं० पट + अनु० पर] समतल । बराबर । चौरस । हमवार । संज्ञा पुं० १. नदी के आस-पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्रायः सदा डूबी रहती है । २. अत्यंत उजाड़ स्थान ।

**पटबंधक**—संज्ञा पुं० [ हिं० पटना+सं० बंधक ] एक प्रकार का रेहन जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति के लाभ में से सूद लेने के बाद बचा हुआ धन मूल ऋण में मिनहा करता जाता है ।

**पटबीजना**—संज्ञा पुं० दे० "जुगनूँ" ।

**पटमंजरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक रागिनी ।

**पटमंडप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तंबू । खेमा ।

**पटरा**—संज्ञा पुं० [ सं० पटल ] [ स्त्री० अल्पा० पटरी ] १. काठ का लंबा चौकोर और चौरस टुकड़ा । तख्ता । पल्ला ।

**मुहा०**—पटरा कर देना=१. मार-काटकर फैला देना या बिछा देना । २. चौपट कर देना ।

२.धोबी का पाट । ३. हेंगा । पाटा ।

**पटरानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पट्ट+रानी ] वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो । पाटमहिषी ।

**पटरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पटरा ] १. काठ का पतला और लंबोतरा तख्ता ।

**मुहा०**—पटरी जमना या बैठना=मन मिलना । मेल होना । पटना ।

२. लिखने की तख्ती । पटिया । ३. सड़क के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलनेवालों के लिए होता है । ४ बगीचे में क्यारियों के इधर-उधर के पतले पतले रास्ते । ५. सुनहरे या रुपहले तारों से बना हुआ वह फीता जिसे कपड़े की कोर पर लगाते हैं । ६. हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी ।

**पटल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छप्पर । छान । छत । २. आवरण । पर्दा । ३. परत । तह । तबक । ४. पहल । पार्श्व । ५. आँख की बनावट की तहें । आँख के पर्दे । ६ लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा । पटरा । तख्ता । ७. पुस्तक का भाग या अंश विशेष । परिच्छेद । ८. तिलक । टीका । ९. समूह । ढेर । अंबार ।

**पटलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पटल का भाव या धर्म । २. अधिकता ।

**पटवा**—संज्ञा पुं० [ सं० पाट + वाह ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० पटइन ] १. रेशम या सूत में गहने गुथनेवाला । पटहार । २. पटसन । पाट ।

**पटवाना**—क्रि० स० [ हिं० पाटना का प्रे० ] पटने या पाटने का काम दूसरे से कराना ।

**पटवारगरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पटवारी + फ़ा० गरी ] पटवारी का काम या पद ।

**पटवारी**—संज्ञा पुं० [ सं० पट्ट+हिं० वार] गाँव की जमीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखनेवाला एक छोटा सरकारी कर्मचारी ।

संज्ञा स्त्री० [सं० पट + वारी (प्रत्य०)]

कपड़े पहनानेवाली दासी।

**पटवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिविर। तंबू। २. वह वस्तु जिससे वस्त्र सुगन्धित किया जाय। ३. लहँगा।

**पटसन**—संज्ञा पुं० [ सं० पाट+हिं० सन ] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और वस्त्र बनाए जाते हैं। २. पटसन के रेशे। पाट। जूट।

**पटहा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुंदुभी। नगाड़ा।

**पटहार, पटहारा**—संज्ञा पुं०[ स्त्री० पटहारिन ] दे० "पटवा"।

**पटा**—संज्ञा पुं० [ सं० पट ] लोहे की वह फट्टी जिससे तलवार की काट और बचाव सीखे जाते हैं।

*संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] पीढ़ा। पटरा।

**मुहा०**—पटा-फेर=विवाह की एक रस्म जिसमें वर-वधू के आसन परस्पर बदल दिए जाते हैं। पटा बाँधना=पटरानी बनाना।

*संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] अधिकारपत्र। सनद। पट्टा।

*संज्ञा पुं० [ हिं० पटना ] १. लेन-देन। क्रय-विक्रय। सौदा। २. चौड़ी लकीर। धारी। ३. दे० "पट्टा"।

**पटाई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पटाना ] पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**पटाक**—[ अनु० ] किसी छोटी चीज के गिरने का शब्द। जैसे, वह पटाक से गिरा।

**पटाका**—संज्ञा पुं० [ हिं० पट (अनु०) ] १. पट या पटाक शब्द। २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतशबाजी। ३. कोड़े या पटाके की आवाज। ४. तमाचा। थप्पड़।

**पटाना**—क्रि० स० [ हिं० पट=सम-तल ] १. पाटने का काम कराना। २. छत को पीटकर बराबर कराना। ३. पाटन बनवाना। छत बनवाना। ४. ऋण चुका देना। ५. मूल्य तै कर लेना।

† क्रि० अ० शांत होकर बैठना।

**पटापट**—क्रि० वि० [ अनु० पट ] लगातार बार बार 'पट' ध्वनि के साथ।

संज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति।

**पटापटी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] वह वस्तु जिसमें अनेक रंगों के फूल-पत्ते बने हों।

**पटाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाटना ] १. पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। ३. छत की पाटन।

**पटासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बैठने के लिए कपड़े का बना आसन।

**पटिया**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पट्टिका ] १. पत्थर का प्रायः चौकोर और चोरस कटा हुआ टुकड़ा। फलक। २. खाट या पलंग की पट्टी। पाटी। †३. माँग। पट्टी। ४. हेंगा। पाटा। ५. लिखने की पट्टी। तख्ती।

**पटी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० पट ] १. * कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा। पट्टी। २. पटका। कमरबंद। ३. नाटक का पर्दा।

**पटीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का चंदन। २. खैर का वृक्ष। ३. वटवृक्ष।

**पटीलना**—क्रि० अ० [ हिं० पटाना ] १. किसी को उलटी सीधी बातें समझा-बुझाकर अपने अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २. अर्जित करना। कमाना। ३. ठगना। छलना। ४. सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना।

**पटु**—वि० [ सं० ] १. प्रवीण। निपुण। कुशल। दक्ष। २. चतुर चालाक। होशियार। ३. अत्यंत कठोर हृदयवाला। ४. तंदुरुस्त। स्वस्थ। ५. तीक्ष्ण। तीखा। तेज। ६. उग्र। प्रचंड।

**पटुआ**—संज्ञा पुं० दे० "पटुवा"।

**पटुका**—संज्ञा पुं० [ सं० पटिका ] १. दे० "पटका"। २. चादर।

**पटुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पटु होने का भाव। निपुणता। होशियारी।

**पटुत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पटुता।

**पटुली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पट्ट ] १. काठ की पटरी जो झूले के रस्सों पर रखी जाती है। २. चौकी। पीढ़ी।

**पटुवा**—संज्ञा पुं० [ सं० पाट ] १. पटसन। जूट। २. करेमू।

**पटूका***†—संज्ञा पुं० दे० "पटका"।

**पटेबाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० पटा+फ़ा० बाज़ ] १. पटा खेलनेवाला। पटे से लड़नेवाला। पटैत। २. व्यभिचारी और धूर्त्त।

**पटेर**—संज्ञा पुं० [ सं० पटेरक ] पानी में होनेवाली एक घास। गोंदपटेर।

**पटेल**—संज्ञा पुं० [हिं० पट्टा+वाला] १. गाँव का नंबरदार। ( म० प्र० ) २. गाँव का मुखिया। गाँव का चौधरी। ३. एक प्रकार की उपाधि। ( दक्षिण भारत )।

**पटेला**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाटना ] [ स्त्री० अल्पा० पटेली ] १. वह नाव जिसका मध्य भाग पटा हो। २. दे० "पटेर"। ३. हेंगा। ४. सिल। पटिया।

**पटैत**—संज्ञा पुं० दे० "पटेबाज"।

**पटैला**—संज्ञा पुं० [ हिं० पटरा ] १. किवाड़ बंद करने का डंडा। ब्योंड़ा। २. दे० "पटेला"।

**पटोर**—संज्ञा पुं० [ सं० पटोल ] १. पटोल। परवल। २. एक रेशमी कपड़ा।

**पटोरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पाट + ओरी (प्रत्य०) ] रेशमी साड़ी या धोती।

**पटोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। २. परवल।

**पटौतन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पटना ] ऋण आदि का परिशोध। कर्ज चुकना।

**पटौनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पटना ] पटने या पटाने की क्रिया या भाव।

**पटौहाँ**—संज्ञा पुं० [ हिं० पटना ] १. पटा हुआ स्थान। २. पट-बंधक।

**पट्ट, पट्टक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पीढ़ा। पाटा। २. पट्टी। तख्ती। लिखने की पटिया। ३. ताँबे आदि धातुओं की वह चिपटी पट्टी जिस पर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ४. किसी वस्तु का चिपटा या चौरस तल या भाग। ५. शिला। पटिया। ६. वह भूमि-संबंधी अधिकारपत्र जो भूमिस्वामी की ओर से असामी को दिया जाता है। पट्टा। ७. ढाल। ८. पगड़ी। ९. दुपट्टा। १०. नगर। ११. चौराहा। १२. राजसिंहासन। १३. रेशम। १४. पटसन।

वि० [ सं० ] मुख्य। प्रधान।

वि० अनु० दे० "पट"।

**पट्टदेवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पटरानी।

**पट्टन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नगर।

**पट्टमहिषी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पटरानी।

**पट्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० पट्ट ] १. किसी स्थावर संपत्ति विशेषतः भूमि के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को दिया जाय। २. कोई अधिकारपत्र। सनद। ३ चमड़े या बनात आदि की बद्धी जो कुत्तों, बिल्लियों के गले में पहनाई जाती है। ४. पीढ़ा। ५. पुरुषों के सिर के बाल जो पीछे की ओर गिरे और बराबर कटे होते हैं। ६ चपरास। ७. चमड़े का कमरबंद। पट्टी। ८. एक प्रकार की तलवार।

**पट्टिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटी तख्ती। पटिया। २. कपड़े की छोटी पट्टी।

**पट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पट्टिका ] १. लकड़ी की वह चौरस और चिपटी पटरी जिस पर आरंभिक छात्रों को लिखना सिखाया जाता है। पाटी। पटिया। तख्ती। २. पाठ। सबक। ३. उपदेश। शिक्षा। सिखावन। ४ वह शिक्षा जो बुरी नीयत से दी जाय। बहकावा। भुलावा। ५. लकड़ी की वह बल्ली जो खाट के ढाँचे की लंबाई में लगाई जाती है। पाटी। ६ धातु, कागज या कपड़े की धज्जी। ७. लकड़ी की लंबी बल्ला जो छत या छाजन के ठाठ में लगाई जाती है। ८. सन की बनी हुई धज्जियाँ जिनके जोड़ने से ठाठ तैयार होते हैं। ९. कपड़े की कोर या किनारी। १०. एक प्रकार की मिठाई। ११. कपड़े की धज्जी जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिए टाँगों में बाँधते हैं। १२. पंक्ति। पाँती। कतार। १३. माँग के दोनों ओर के, कंघी से खूब बैठाए हुए, बाल जो पट्टी से दिखाई पड़ते हैं। पाटी। पटिया। १४. किसी वस्तु विशेषतः किसी संपत्ति का एक भाग। हिस्सा। भाग। विभाग। पत्ती। १५. *वह अतिरिक्त कर जो जमींदार किसी विशेष प्रयोजन के लिए असामियों पर लगाता है। नेग। अबवाब।

**पट्टीदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० पट्टी + फ़ा० दार ] १. वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति में हिस्सा हो। हिस्सेदार। २. बराबर का अधिकारी।

**पट्टीदारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पट्टीदार ] १. पट्टी या बहुत से हिस्से होना। २. पट्टीदार होने का भाव।

**मुहा०**—पट्टीदारी करना=१. किसी के बराबर अधिकार जताना। २. बराबरी करना।

३. वह जमींदारी जिसके बहुत से मालिक होने पर भी जो अविभक्त संपत्ति समझी जाती हो। भाई-चारा।

**पट्टू**—संज्ञा पुं० [ हिं० पट्टी ] एक खूब गरम ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में होता है।

**पठमान***—वि० [ सं० पठ्यमान ] पढ़ने योग्य।

**पट्ठा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ ] [ स्त्री० पठिया ] १. जवान। तरुण। पाठा। २. कुश्तीबाज लड़ाका। ३ ऐसा पत्ता जो लंबा, दलदार या मोटा हो। ४. वे तंतु जो मांसपेशियों को परस्पर और हड्डियों के साथ बाँधे रखते हैं। मोटी नस। स्नायु।

**मुहा०**—पट्ठा चढ़ना=किसी नस का तन जाना। नस पर नस चढ़ना।

५. एक प्रकार का चौड़ा गोटा। ६. पेड़ू के नीचे कमर और जाँघ के जोड़

का वह स्थान जहाँ छूने से गिलटियाँ मालूम होती हैं।

**पट्ठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पठिया"।

**पठन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पढ़ना।

**पठनीय**—वि० [ सं० ] पढ़ने योग्य।

**पठनेटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पठान+एटा=बेटा ( प्रत्य० ) ] पठान का लड़का।

**पठवना***—क्रि० स० [सं० प्रस्थान] भेजना।

**पठवाना***—क्रि० स० [ हिं० पठाना का प्रे० ] भेजने का काम दूसरे से कराना। भेजवाना।

**पठान**—संज्ञा पुं० [पश्तो० पुख्ताना] एक मुसलमान जाति जो अफगानिस्तान के अधिकांश और भारत के सीमांत प्रदेश आदि में बसती है।

**पठाना***—क्रि० स० [ सं० प्रस्थान ] भेजना।

**पठानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पठान ] १. पठान जाति की स्त्री। २. पठान होने का भाव। ३. क्रूरता, शूरता, रक्तपात-प्रियता आदि पठानोंके गुण। पठानपन।

वि० [ हिं० पठान ] पठानों का।

**पठानी लोध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पट्टिका लोध्र] एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल औषध के काम में आते हैं।

**पठावन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पठाना ] दूत।

**पठावनि, पठावनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पठाना ] १. किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिए भेजना। २. इस प्रकार भेजने की मजदूरी।

**पठित**—वि० [ सं० ] १. पढ़ा हुआ। ( ग्रंथ )। जिसे पढ़ चुके हों। अधीत। २. पढ़ा लिखा। शिक्षित। ( यह अर्थ ठीक नहीं है )।

**पठिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पट्ठा+इया ( प्रत्य० ) ] जवान और तगड़ी स्त्री।

**पठौनी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "पठावनी"।

**पठ्यमान**—वि० [ सं० पाठ्य+मान ( प्रत्य० ) ] पढ़ा जाने के योग्य। सुपाठ्य।

**पड़छती, पड़छत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पटच्छदि ] १. भीत की रक्षा के लिए लगाया जानेवाला छप्पर या टट्टी। २. कमरे आदि के बीच की पाटन जिस पर चीज असबाब रखते हैं। टाँड़।

**पड़त***—संज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता"।

**पड़ता**—संज्ञा पुं० [ हिं० पड़ना ] १. किसी वस्तु की खरीद या तैयारी का दाम। सर्फे की कीमत। लागत।

**मुहा०**—पड़ता खाना या पड़ना=लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना। खर्च और मुनाफा निकल आना। पड़ता फैलाना या बैठाना=किसी चीज के तैयार करने, खरीदने और मँगाने आदि में जो खर्च पड़ा हो, उसे देखते हुए उसका भाव निश्चित करना। २ दर। शरह। ३. भू-कर की दर। लगान की शरह। ४. सामान्य दर। औसत।

**पड़ताल**—संज्ञा स्त्री० [सं०परितोलन]१. पड़तालना क्रिया का भाव। किसी वस्तु की सूक्ष्म छान-बीन। अन्वीक्षण। अनुसंधान। २. गाँव अथवा शहर के पटवारी द्वारा खेतों की एक प्रकार की जाँच।

**पड़तालना**—क्रि० स० [ हिं० पड़ताल+ना ( प्रत्य० ) ] पड़ताल करना। जाँचना।

**पड़ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पड़ना ] वह भूमि जिस पर कुछ काल से खेती न की गई हो।

**मुहा०**—पड़ती उठना=पड़ती का जोता जाना। पड़ती पर खेती होना। पड़ती छोड़ना=किसी खेत को कुछ समय तक यों ही छोड़ना, उसे जोतना नहीं, जिसमें उसकी उर्वरा शक्ति बढ़े।

**पड़ना**—क्रि० अ० [ सं० पतन ] १. प्रायः ऊँचे स्थान से नीचे आना। गिरना। पतित होना। २. ( दुःखद घटना ) घटित होना। जैसे—मुसीबत पड़ना।

**मुहा०**—( किसी पर ) पड़ना=विपत्ति या मुसीबत आना। संकट या कठिनाई प्राप्त होना।

३. बिछाया जाना। फैलाया जाना। ४. पहुँचना या पहुँचाया जाना। दाखिल होना। प्रविष्ट होना। ५. हस्तक्षेप करना। दखल देना। ६. ठहरना। टिकना।

**मुहा०**—पड़ा होना=१. एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना। एक ही जगह पर बने रहना। २. रखा रहना। धरा रहना। ३. बाकी रहना। शेष रहना।

७. विश्राम के लिए सोना या लेटना। आराम करना।

**मुहा०**—पड़े रहना या पड़ा रहना=बिना कुछ काम किए लेटे रहना। निकम्मे रहना।

८. बीमार होना। खाट पर पड़ना। ९. मिलना। प्राप्त होना। १०. पड़ता खाना। ११. आय, प्राप्ति आदि की औसत होना। पड़ता होना। १२. रास्ते में मिलना। मार्ग में मिलना। १३. उत्पन्न होना। पैदा होना। १४. स्थित

होना। १५. संयोगवश होना। उपस्थित होना। १६. जाँच या विचार करने पर ठहरना। पाया जाना। १७. देशांतर या अवस्थांतर होना। १८. अत्यंत इच्छा होना। धन होना।
**मुहा०**—क्या पड़ी है=क्या मतलब है।

**पड़पड़ाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. पड़पड़ शब्द होना। २. अत्यंत कड़ुवे पदार्थ के भक्षण या स्पर्श से जीभ पर किंचित् दुःखद तीक्ष्ण अनुभूति होना। चरपराना।

**पड़पोता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रपौत्र ] [ स्त्री० पड़पोती ] पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

**पड़वा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रतिपदा, प्रा० पडिवआ ] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि।

**पड़ाना**—क्रि० स० [ हि० पड़ना का सक० ] गिराना। झुकाना।

**पड़ाव**—संज्ञा पुं० [ हि० पड़ना + आव ( प्रत्य० ) ] १. यात्री-समूह का यात्रा के बीच में अवस्थान। २. वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों।

**पड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ हि० पँड़वा, पड़वा ] भैंस का मादा बच्चा।

**पड़िवा**—संज्ञा स्त्री० दे० "पड़वा"।

**पड़ोस**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रतिवेश या प्रतिवास ] १. किसी के घर के आस-पास के घर।
**यौ०**—पास पड़ोस=समीपवर्त्ती स्थान।
**मुहा०**—पड़ोस करना=पड़ोस में बसना।
२. किसी स्थान के आस-पास के स्थान।

**पड़ोसी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पड़ोस + ई ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० पड़ोसिन ] वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो। पड़ोस में रहनेवाला।

**पढ़ंत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पढ़ना ] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। २. निरंतर पढ़ना।

**पढ़ंता**—वि० [ हिं० पढ़ना ] पढ़नेवाला।

**पढ़त**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पढ़ना + अंत ( प्रत्य० ) ] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। २. मंत्र।

**पढ़ना**—क्रि० स० [ स० पठन ] १. किसी पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात मालूम हो जाय। २. किसी लिखावट के शब्दों का उच्चारण करना। बाँचना। ३. उच्चारण करना। मध्यम या धीमे स्वर से कहना। ४. स्मरण रखने के लिए किसी विषय का बार बार उच्चारण करना। रटना। ५. मंत्र फूँकना। जादू करना। ६. तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाए हुए शब्द उच्चारण करना। ७. विद्या पढ़ना। शिक्षा प्राप्त करना। अध्ययन करना।
**यौ०**—पढ़ना-लिखना=शिक्षा पाना। पढ़ना-पढ़ाना। पढ़ा-लिखा=शिक्षित।

**पढ़वाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पढ़वाना] पढ़वाने की क्रिया, भाव, पारिश्रमिक।

**पढ़वाना**—क्रि० स० [ हिं० पढ़ना तथा पढ़ाना का प्रे० ] १. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना। बँचवाना। २. किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना।

**पढ़वैया**—वि० [ हि० पढ़ना ] पढ़ने पढ़ानेवाला।

**पढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पढ़ना + आई ( प्रत्य० ) ] १. पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। अध्ययन। पठन। २. पढ़ने का भाव।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० पढ़ाना + आई ( प्रत्य० ) ] १. पढ़ाने का काम। अध्यापन। पाठन। पढ़ौनी। २. पढ़ाने का भाव। ३. पढ़ाने का ढंग। अध्यापन-शैली।

**पढ़ाना**—क्रि० स० [ हिं० पढ़ना का प्रे० ] १. शिक्षा देना। अध्यापन करना। २. कोई कला या हुनर सिखाना। ३. तोते, मैना आदि पक्षियों को बोलने सिखाना। ४. सिखाना। समझाना।

**पढ़िना**—संज्ञा पुं० [ सं० पाठीन ] एक प्रकार की बिना सेहरे की बड़ी मछली। पहिना।

**पढ़ैया**—संज्ञा पुं० [ हिं० पढ़ना ] पढ़नेवाला।

**पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कोई कार्य जिसमें बाजी बदी गई हो। जूआ। द्यूत। २. प्रतिज्ञा। शर्त। मुआहिदा। ३. वह वस्तु जिसके देने का करार या शर्त हो। जैसे, किराया। ४. मोल। कीमत। मूल्य। ५. फीस। शुल्क। ६. धन। संपत्ति। जायदाद। ७. क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा। ८. व्यवहार। व्यापार। व्यवसाय। ९. स्तुति। प्रशंसा। १०. प्राचीन काल का ताँबे का टुकड़ा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति किया जाता था। ११. प्राचीन काल की एक विशेष नाप।

**पणव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छोटा नगाड़ा या ढोल। २. चौपाई की तरह का एक वर्णवृत्त।

**पण्य**—वि० [ सं० ] १. खरीदने या बेचने योग्य। २. प्रशंसा करने योग्य। संज्ञा पुं० १. सौदा। माल। २. व्यापार। रोजगार। ३. बाजार। ४. दूकान।

**पण्यभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह

स्थान जहाँ माल या सौदा जमा किया जाता हो। कोठी। गोदाम। गोला।

**पण्यवीथी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बाजार।

**पण्यशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दूकान।

**पतंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पक्षी। चिड़िया। २. शलभ। टिड्डी। ३. भुनगा। फतिंगा। ४. उड़नेवाला कीड़ा। ५. सूर्य। ६. एक प्रकार का धान। जड़हन। ७. जलमहुआ। ८. कंदुक। गेंद। ९. शरीर। (अने०) १०. नौका। नाव। (अने०)

संज्ञा पुं० [ सं० पत्रंग ] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। इसकी लकड़ी से बहुत बढ़िया लाल रंग निकलता है।

संज्ञा पुं० [ सं० पतग=उड़नेवाली ] हवा में ऊपर उड़ाने का एक खिलौना जो बाँस की तीलियों के ढाँचे पर चौकोना कागज मढ़कर बनाया जाता है। गुड्डी। कनकौवा।

**पतंगबाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० पतंग+फा० बाज़ ] वह जिसको पतंग उड़ाने का व्यसन हो।

**पतंगबाजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पतंग-बाज ] पतंग उड़ाने की कला, क्रिया या भाव।

**पतंगम***—संज्ञा पुं० [ सं० पतंग ] १. पक्षी। २. फतिंगा।

**पतंगसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अश्विनीकुमार।

**पतंगा**—संज्ञा पुं० [ सं० पतंग ] १. पतंग। कोई उड़नेवाला कीड़ा-मकोड़ा। २. एक कीड़ा जो घासों अथवा वृक्ष की पत्तियों पर होता है। फतिंगा। ३. चिनगारी।

**पतंचिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धनुष की डोरी। कमान की ताँत। चिल्ला।

**पतंजलि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योग-शास्त्र की रचना की। २. एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन-कृत उनके वार्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना की थी।

**पत*†**—संज्ञा पुं० [ सं० पति ] १. पति। खसम। २. मालिक। स्वामी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रतिष्ठा ? ] १. कानि। लज्जा। आबरू। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।

**यौ०**—पत-पानी=लज्जा। आबरू।

**मुहा०**—पत उतारना या लेना=बेइज्जती करना। पत रखना=इज्जत बचाना।

**पतझड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पत=पत्ता+झड़ना ] १. वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशिर ऋतु। माघ और फाल्गुन के महीने। २. अवनति-काल।

**पतझर**—संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।

**पतझार†**—संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।

**पतत्प्रकर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काव्य में एक प्रकार का रस-दोष।

**पतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गिरने या नीचे आने की क्रिया या भाव। गिरना। २. बैठना या डूबना। ३. अवनति। अधोगति। जवाल। तबाही। ४. नाश। मृत्यु। ५. पाप। पातक। ६. जातिच्युति। जाति से बहिष्कृत होना। ७. उड़ान। उड़ना।

**पतनशील**—वि० [ सं० ] जो बिना गिरे न रह सके। गिरनेवाला।

**पतना***—क्रि० अ० [ सं० पतन ] गिरना।

**पतनीय**—वि० [ सं० ] गिरनेवाला।

**पतनोन्मुख**—वि० [ सं० ] जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो। जिसका पतन, अधोगति या विनाश निकट आता जाता हो।

**पत-पानी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत+पानी ] १. प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। २. लाज। आबरू।

**पतर*†**—वि० [ सं० पत्र ] १. पतला। कृश। २. पत्ता। पर्ण। ३. पत्तल।

**पतरा†**—वि० दे० "पतला"।

**पतरी†**—संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।

**पतला**—वि० [ सं० पात्रट ] [ स्त्री० पतली ] १. जिसका घेरा, लपेट अथवा चौड़ाई कम हो। जो मोटा न हो। २. जिसकी देह का घेरा कम हो। जो स्थूल या मोटा न हो। कृश। ३. जिसका दल मोटा न हो। झीना। हलका। ४. गाढ़े का उलटा। अधिक तरल। ५. असक्त। असमर्थ।

**मुहा०**—पतला पड़ना = दुर्दशाग्रस्त होना। पतला हाल=दुःख और कष्ट की अवस्था।

**पतलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पतला+पन (प्रत्य०) ] पतला होने का भाव।

**पतलून**—संज्ञा पुं० [ अं० पैंटलून ] वह पाजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायँचा सीधा गिरता है। अँगरेजी पाजामा।

**पतलो**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] सरकंडा। सरपत।

**पतवर†**—क्रि० वि० [ सं० पंक्ति ] पंक्तिवार। पंक्तिक्रम से। बराबर बराबर।

**पतवार, पतवारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पात्रपाल ] नाव का वह

त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है। इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है। कन्हर। कण।

**पता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रत्यय ] १. किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सकें।

**यौ०**— पता-ठिकाना = किसी वस्तु का स्थान और उसका परिचय।

२. खोज। अनुसंधान। टोह।

**यौ०**—पता-निशान= १. वे बातें जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। २. अस्तित्वसूचक चिह्न। नाम-निशान।

३. अभिज्ञता। जानकारी। खबर। ४. गूढ़ तत्त्व। रहस्य। भेद।

**मुहा०**—पते की या पते की बात= भेद प्रकट करनेवाली बात। रहस्य खोलनेवाला कथन।

**पताई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पत्र ] झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।

**पताका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लकड़ी आदि के डंडे के एक सिरे पर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोना कपड़ा। झंडा। झंडी। फरहरा।

**मुहा०**--( किसी स्थान में अथवा किसी स्थान पर ) पताका उड़ना= १. अधिकार होना। राज्य होना। २. सर्वप्रधान होना। सबमें श्रेष्ठ माना जाना। ( किसी वस्तु की ) पताका उड़ाना=प्रसिद्धि होना। धूम होना। पताका उड़ाना = अधिकार करना। विजयी होना। पताका गिरना=हार होना। पराजय होना। विजय की पताका = विजयसूचक पताका।

२. वह डंडा जिसमें पताका पहनाई हुई होती है। ध्वज। ३. सौभाग्य। ४. दस खर्व की संख्या। ५. नाटक में वह स्थल जहाँ एक पात्र एक विषय में कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे के संबंध में कोई बात कहे। ६. पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु-लघु वर्ण के छंद का स्थान जाना जाय।

**पताका-स्थान**—संज्ञा पुं० दे० "पताका" ५।

**पताकिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सेना।

**पतार***†—संज्ञा पुं० [ सं० पाताल ] १. दे० "पाताल"। २. जंगल। सघन वन।

**पताल**—संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

**पताल आँवला**—संज्ञा पुं० [ सं० पाताल आमलकी ] औषध के काम में आनेवाला एक पौधा या क्षुप।

**पताल कुम्हड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पताल + कुम्हड़ा ] एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी गाँठें से शकरकंद की तरह कंद फूटते हैं।

**पतासा**—संज्ञा पुं० दे० "बतासा"।

**पतिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० पतंग ] पतंग। फतिंगा।

**पतिंवरा**—वि० स्त्री० [ सं० ] जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा। (स्त्री)

**पति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पत्नी ] १. मालिक। स्वामी। अधिपति। २. स्त्री विशेष का विवाहित पुरुष। दूल्हा। ३. शिव या ईश्वर। ४. मर्यादा। प्रतिष्ठा।

**पतिआना**†—क्रि० स० [ सं० प्रत्यय + आना (प्रत्य०) ] विश्वास या एतबार करना।

**पतिआर***†—संज्ञा पुं० [ हिं० पतिआना ] १. विश्वास। साख। एतबार। २. विश्वसनीय।

**पतिकामा**—वि० स्त्री० [ सं० ] पति की कामना रखनेवाली स्त्री।

**पतित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पतिता] १. गिरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। २. आचार, नीति या धर्म से गिरा हुआ। नीतिभ्रष्ट। ३. महापापी। अति पातकी। ४. जाति से निकाला हुआ। समाज-बहिष्कृत। ५. अत्यंत मलीन। महा अपावन। ६. अति नीच। अधम।

**पतित-उधारन***—वि० [ सं पतित + हिं० उधारना ] जो पतित का उद्धार करे।

संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार।

**पतितता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पतित होने का भाव। २. नीचता।

**पतितपावन**—वि० [ सं० ] [स्त्री० पतितपावनी ] पतित को पवित्र करनेवाला।

संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. सगुण ईश्वर।

**पतितेस***—संज्ञा पुं० [ सं० पतित + ईश ] पतितों का मुखिया या सरदार। बहुत बड़ा पतित।

**पतित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वामी, प्रभु या मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व। २. पति होने का भाव।

**पति-देवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पति को देवता के समान माननेवाली स्त्री।

**पतिदेवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पतिव्रता।

**पतिनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।

**पतियाना**†—क्रि० स० [ सं० प्रत्यय + हिं० आना (प्रत्य०) ] विश्वास

करना।

**पतियारा***—संज्ञा पुं० [ हिं० पतियाना ] पतियाने का भाव। विश्वास। एतबार।

**पतिलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

**पतिवती**—वि० स्त्री० [ सं० पति+वती (प्रत्य०) ] सधवा। सौभाग्यवती। (स्त्री)

**पतिव्रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पति में (स्त्री की) अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

**पतिव्रता**—वि० [ सं० ] पति मे अनन्य अनुराग रखनेवाली और यथाविधि पतिसेवा करनेवाली। सती। साध्वी। (स्त्री)

**पतीजन, पतीजना***—क्रि० अ० [ हिं० प्रतीत+ना (प्रत्य०) ] पतिआना। एतबार करना।

**पतील**‡—वि० दे० "पतला"।

**पतीली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पातिली=हाँड़ी ] ताँबे या पीतल की एक प्रकार की बटलोई।

**पतुकी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पतीली"।

**पतुरिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पातिली ] वेश्या।

**पतोखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्ता ] [अल्पा० पतोखी] पत्ते का बना पात्र। दोना।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बगला।

**पतोखी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पतोखा ] १. एक पत्ते का दोना। छोटा दोना। २. पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी।

**पतोह, पतोहू**‡—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुत्रवधू ] बेटे की स्त्री। पुत्रवधू।

**पतौआ***‡—संज्ञा पुं० [ सं० पत्र ] पत्ता। पर्ण।

**पत्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नगर। शहर।

**पत्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० पत्र ] धातु का ऐसा चिपटा लंबोतरा टुकड़ा जो पीटकर तैयार किया गया हो। धातु की चादर।

**पत्तल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पत्र ] १. पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ एक पात्र जिससे थाली का काम लिया जाता है।

**मुहा०**—एक पत्तल में खानेवाले=परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करनेवाले। किसी की पत्तल में खाना=किसी के साथ खान-पान आदि का सबंध करना या रखना। जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना=जिससे लाभ उठाना; उसी की हानि करना। कृतघ्नता करना।

२. पत्तल में परसी हुई भोजन-सामग्री। ३. एक आदमी के खाने भर भोजन-सामग्री।

**पत्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० पत्र ] [स्त्री० पत्ती ] १. पेड़ या पौधे के शरीर का वह हरे रंग का फैला हुआ अवयव जो कांड या टहनी से निकलता है। पलास। पत्रक। पर्ण।

**मुहा०**—पत्ता खड़कना=कुछ खटका या आशंका होना। पत्ता न हिलना=हवा का बिलकुल बंद होना। उमस होना।

२. कान में पहनने का एक गहना। ३. मोटे कागज का गोल या चौकोर खंड।

**पत्ति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पैदल सिपाही। प्यादा। पदातिक। २. शूर-वीर पुरुष। योद्धा। बहादुर। ३. प्राचीन काल में सेना का सबसे छोटा विभाग जिसम १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल होते थे।

**पत्तिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राचीन काल में सेना का एक विशेष विभाग जिसमें १० घोड़े, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे। २. उपर्युक्त विभाग का अफसर।

वि० पैदल चलनेवाला।

**पत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पत्ता+ई (प्रत्य०) ] १. छोटा पत्ता। २. भाग। हिस्सा। साझे का अंश। ३. फूल की पँखड़ी। दल। ४. भाँग। ५. पत्ती के आकार की लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई टुकड़ा। पट्टी।

संज्ञा स्त्री० [ ? ] राजपूतों की एक जाति।

**पत्तीदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्ती+फ़ा० दार ] साझीदार। हिस्सेदार।

**पत्थ***—संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।

**पत्थर**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रस्तर ] [ वि० पथरीली, क्रि० पथराना ] १. पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या खंड। भूद्रव्य का कड़ा पिंड।

**मुहा०**—पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=वह हृदय जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियों का स्थान न हो। पत्थर की छाती=बलवान् और दृढ़ हृदय। मजबूत दिल। पक्की तबीयत। पत्थर की लकीर=सदा सर्वदा बनी रहनेवाली (वस्तु)। सार्वकालिक। अमिट। पक्की। स्थायी। पत्थर चटाना=पत्थर पर घिसकर धार तेज करना। पत्थर तले हाथ आना या दबना=ऐसे संकट में फँस जाना जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पड़ता हो। बुरी तरह फँस जाना। पत्थर तले से हाथ निकालना=संकट

या मुसीबत से छूटना । पत्थर पर दूब जमना=अनहोनी बात या असंभव काम होना । पत्थर पसीजना या पिघलना=अत्यंत कठोर चित्त में नरमी या कृपण के मन में दानेच्छा आदि होना । पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=असंभव बात के लिए प्रयत्न करना ।

२. सड़क की नाप सूचित करनेवाला पत्थर । मील का पत्थर । ३. ओला । बिनौली । इंद्रोपल ।

मुहा०—पत्थर पड़ना=चौपट हो जाना । नष्ट-भ्रष्ट हो जाना । पत्थर-पानी=आँधी-पानी आदि का काल । तूफानी समय ।

४. रत्न । जवाहिर । हीरा, लाल, पन्ना आदि । ५. पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा हटने, गलने आदि के अयोग्य वस्तु । ६. कुछ नहीं । बिलकुल नहीं । खाक । (तिरस्कार के साथ अभाव का सूचक)

**पत्थरकला**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्थर+कल ] पुरानी चाल की बंदूक जिसमें बारूद सुलगाने के लिए चकमक पत्थर लगा रहता था । तोड़ेदार या पलीतेदार बंदूक ।

**पत्थरचटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्थर+हिं० चाटना ] १. एक प्रकार की घास । २. एक प्रकार का साँप । ३. एक प्रकार की मछली । ४. कंजूस । मक्खीचूस । एक प्रकार का कीड़ा ।

**पत्थरफूल**—संज्ञा पुं० [ पत्थर+फूल ] छरीला । शैलाख्य ।

**पत्थरफोड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्थर+फोड़ना ] पत्थरों की संधि में होनेवाली एक वनस्पति ।

**पत्नी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री । भार्या । वधू । सहधर्मिणी ।

**पत्नीव्रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम ।

**पत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पति होने का भाव ।

**पत्याना***†—क्रि० स० दे० "पतिआना" ।

**पत्यारा**—संज्ञा पुं० दे० "पतिआरा" ।

**पत्यारी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० पंक्ति ] पंक्ति ।

**पत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वृक्ष का पत्ता । पत्ती । दल । पर्ण । २. वह वस्तु जिस पर कुछ लिखा हो । लिखा हुआ कागज । ३. वह कागज जिस पर किसी खास मामले की सनद या सबूत के लिए कुछ लिखा हो । ४. वसीका, पट्टा या दस्तावेज । ५. चिट्ठी । पत्री । खत । ६. समाचार पत्र । खबर का कागज । अखबार । ७ पुस्तक या लेख का एक पन्ना । पृष्ट । सफा । पत्रा । ८. धातु की चद्दर । वरक । ९. तीर या पक्षी के पख । पक्ष ।

**पत्रक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी विषय की छोटी पुस्तिका या कुछ बड़ा सूचनापत्र ।

**पत्रकार**—संज्ञा पुं० [सं० ] समाचार पत्र का संपादक । पत्रों में लिखकर जिसकी जीविका चलती हो ।

**पत्रकृच्छ्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक व्रत जिसमें पत्तों का काढ़ा पीकर रहा जाता है ।

**पत्र-पुष्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सत्कार या पूजा की बहुत मामूली सामग्री । २. तुच्छ उपहार ।

**पत्रभंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चित्र या रेखाएँ जो सौंदर्य-वृद्धि के लिए स्त्रियाँ भाल, कपोल आदि पर बनाती हैं ।

**पत्रवाह, पत्रवाहक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पत्र ले जानेवाला । चिट्ठीरसाँ । हरकारा ।

**पत्र व्यवहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिट्ठी आने-जाने का क्रम । लिखा-पढ़ी । खत-किताबत ।

**पत्रा**—संज्ञा पुं० [ सं० पत्र ] १. तिथिपत्र । जंत्री । पंचांग । २. पन्ना । वर्क । पृष्ठ ।

**पत्राचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिट्ठियों का आना-जाना । पत्र-व्यवहार ।

**पत्रावली**—संज्ञा स्त्री० दे० पत्र-भंग" ।

**पत्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चिट्ठी । खत । २. कोई छोटा लेख या लिपि । ३. कोई सामयिक पत्र या पुस्तक । समाचारपत्र ।

**पत्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिट्ठी । खत । २. कोई छोटा लेख या लिपि-पत्रिका ।

वि० [ सं० पत्रिन् ] जिसमें पत्ते हों ।

संज्ञा पुं० १. बाण । तीर । २. पक्षी । चिड़िया । ३. श्येन । बाज । ४. वृक्ष । पेड़ ।

**पथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मार्ग । रास्ता । राह । २. व्यवहार आदि की रीति ।

संज्ञा पुं० दे० "पथ्य" ।

**पथगामी**—संज्ञा पुं० [ सं० पथगामिन् ] पथिक ।

**पथदर्शक, पथप्रदर्शक**—संज्ञा पुं०

[ सं० ] मार्गदर्शक। रास्ता दिखानेवाला।

**पथरकला**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्थर या पथरी + कल ] एक प्रकार की बंदूक या कड़ाबीन जो चकमक पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न करके चलाई जाती थी।

**पथरचटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्थर + चाटना ] पाषाणभेद या पखानभेद नाम की औषधि। एक प्रकार का कीड़ा।

**पथराना**—क्रि० अ० [ हिं० पत्थर + आना ( प्रत्य० ) ] १. सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना। २. ताजगी न रहना। नीरस और कठोर हो जाना। ३. स्तब्ध हो जाना। सजीव न रहना।

**पथरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पत्थर + ई ( प्रत्य० ) ] १. कटोरे या कटोरी के आकार का पत्थर का बना हुआ कोई पात्र। २. एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ३. चकमक पत्थर। ४. पत्थर का वह टुकड़ा, जिस पर रगड़कर उस्तरे आदि की धार तेज करते हैं। सिल्ली। ५. कुरंड पत्थर जिससे औजार तेज करने का सान बनाते हैं।

**पथरीला**—वि० [ हिं० पत्थर + ईला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० पथरीली ] पत्थरों से युक्त।

**पथरौटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पत्थर ] [ स्त्री० अल्पा० पथरौटी ] पत्थर का कटोरा।

**पथिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पथिका ] मार्ग चलनेवाला। यात्री। मुसाफिर।

**पथी**—संज्ञा पुं० [ सं० पथिन् ] यात्री। पथिक।

**पथुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० पथ ] पथ। मार्ग।

**पथेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाथना ] १. पाथने का काम करनेवाला। २. कुम्हार।

**पथौरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाथना ] वह स्थान जहाँ कंडे पाथे जाते हैं।

**पथ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हलका और जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिए लाभदायक हो। उपयुक्त आहार।

**मुहा०**—पथ्य से रहना=संयम से रहना। २. हित। मंगल। कल्याण।

**पथ्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्य्या छंद का भेद।

**पद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यवसाय। काम। २. त्राण। रक्षा। ३. योग्यता के अनुसार नियत स्थान। दर्जा। ४. चिह्न। निशान। ५. पैर। पाँव। ६. वस्तु। चीज। ७ शब्द। ८. प्रदेश। ९. पैर का निशान। १०. किसी श्लोक या छंद का चतुर्थांश। श्लोकपाद। ११. उपाधि। १२. मोक्ष। निर्वाण। १३. ईश्वर-भक्ति संबंधी गीत। भजन। १४. पुराणानुसार दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह।

**पदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पूजन आदि के लिए किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। २. सोने, चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ सिक्के की तरह का गोल या चौकोर टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा जनसमूह को कोई विशेष अच्छा कार्य करने के उपलक्ष में दिया जाता है। तमगा।

**पदग**—वि० [ सं० ] पैदल चलनेवाला।

**पदचतुरूर्ध्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विषम वृत्तों का एक भेद।

**पदचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैदल।

**पदचार**—संज्ञा पुं० दे० "पदचारण"।

**पदचारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चलना। २. टहलना।

**पदचारी**—संज्ञा पुं० [ सं० पद + चारिन् ] [ स्त्री० पदचारिणी ] पैदल चलनेवाला।

संज्ञा स्त्री० दे० "पदचारण"।

**पदच्छेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संधि और समासयुक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया।

**पदच्युत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा पदच्युति ] जो अपने पद या स्थान से हट गया हो।

**पदतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैर का तलवा।

**पदत्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जूता।

**पददलित**—वि० [ सं० ] १. पैरों से रौंदा हुआ। २. जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

**पदन्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पैर रखना। चलना। गमन करना। २. पैर रखने की एक मुद्रा। ३. चलन। ढंग। ४. पद रचने का काम।

**पदम**—संज्ञा पुं० दे० "पद्म"।

संज्ञा पुं० [ सं० पद्मकाष्ठ ] बादाम की जाति का एक जंगली पेड़। पद्माख।

**पदमिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी"।

**पदमैत्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अनुप्रास।

**पदयोजना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

कविता के लिए पदों का जोड़ना।

**पदरिपु**—संज्ञा पुं० [ सं० पद+रिपु ] काँटा।

**पदवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पंथ। रास्ता। २. पद्धति। परिपाटी। तरीका। ३. वह प्रतिष्ठा या मान-सूचक पद जो राज्य अथवा किसी संस्था आदि की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है। उपाधि। खिताब। ४. ओहदा। दरजा।

**पदाक्रांत**—वि० [ सं० ] पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।

**पदाति, पदातिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। २. पैदल सिपाही। ३. नौकर। सेवक।

**पदाधिकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो किसी पद पर नियुक्त हो। ओहदेदार।

**पदाना**—क्रि० स० [ हि० पादना का प्रे० ] बहुत अधिक दिक करना। तंग करना।

**पदार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैरों की धूल।

**पदार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पद का अर्थ। शब्द का विषय। वह जिसका कोई नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। २. उन विषयों में कोई विषय जिनका किसी दर्शन में प्रतिपादन हो और जिनके संबंध में यह माना जाता हो कि उनके ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। ३. पुराणानुसार धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ४. वैद्यक में रस, गुण, वीर्य्य, विपाक और शक्ति। ५. चीज। वस्तु।

**पदार्थवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता हो और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न होता हो।

**पदार्थविज्ञान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान हो। विज्ञान-शास्त्र।

**पदार्थविद्या**—संज्ञा स्त्री० दे० "पदार्थ-विज्ञान"।

**पदार्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया। (प्रतिष्ठित व्यक्तियों के संबंध में)

**पदावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वाक्यों की श्रेणी। २. भजनों का संग्रह।

**पदिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैदल सेना।

*संज्ञा पुं० [ सं० पदक ] १. गले में पहनने का जुगनूँ नाम का गहना। २. हीरा।

यौ०—पदिकहार=रत्नहार। मणिमाल।

**पदी***—संज्ञा पुं० [ सं० पद ] पैदल। प्यादा।

**पदुमिनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी"।

**पद्धटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक मात्रिक छंद। पद्धरि। पज्झटिका।

**पद्धति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. राह। पथ। मार्ग। सड़क। २. पंक्ति। कतार। ३. रीति। रस्म। रवाज। ४. कर्म या संस्कार विधि की पोथी। ५. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ या तात्पर्य समझा जाय। ६. ढंग। तरीका। ७. कार्य-प्रणाली। विधि। विधान।

**पद्धरी**—संज्ञा पुं० दे० "पद्धटिका"।

**पद्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमल का फूल या पौधा। २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में का एक विशेष आकार का चिह्न जो भाग्यसूचक माना जाता है। ३. विष्णु का एक आयुध। ४. कुबेर की नौ निधियों में से एक। ५. शरीर पर के सफेद दाग। ६. पद्म या पद्माख वृक्ष। ७. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील)। ८. पुराणानुसार एक नरक का नाम। ९. पुराणानुसार जंबू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश। १०. एक पुराण का नाम। ११. एक वर्णवृत्त।

**पद्मकंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल की जड़। मुरार। भिस्सा। भसीड़।

**पद्मज, पद्मनाभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**पद्मपाणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्मा। २. बुद्ध की एक विशेष मूर्ति। ३. सूर्य्य।

**पद्मबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षरों को ऐसे क्रम से लिखते हैं जिससे एक पद्म या कमल का आकार बन जाता है।

**पद्मयोनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।

**पद्मराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मानिक। लाल।

**पद्मबीज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल-गट्टा।

**पद्मव्यूह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के लिए सेना रखने की एक स्थिति।

**पद्मा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. भादों सुदी एकादशी तिथि।

**पद्माकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

**पद्माख**—संज्ञा पुं० दे० "पदुम"।

**पद्मालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।

**पद्मालया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

**पद्मावती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पटना नगर का प्राचीन नाम। २. पन्ना नगर का प्राचीन नाम। ३. उज्जयिनी का एक प्राचीन नाम। ४. एक मात्रिक छंद। ५. मनसादेवी। ६. लोकप्रचलित कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिससे चित्तौर के राजा रत्नसेन ब्याहे थे।

**पद्मासन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. योग-साधन का एक आसन जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं। २. ब्रह्मा। ३. शिव।

**पद्मिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमलिनी। छोटा कमल।

यौ०—पद्मिनीवल्लभ=सूर्य्य।

२. वह तालाब या जलाशय जिसमें कमल हो। ३. कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। ४. लक्ष्मी।

**पद्मेशय**—संज्ञा पुं० [सं० ] विष्णु।

**पद्य**—वि० [ सं० ] १. जिसका संबंध पैरों से हो। २. जिसमें कविता के पद हों।

संज्ञा पुं० [ सं० ] पिंगल के नियमों के अनुसार नियमित मात्रा या वर्ण का चार चरणोंवाला छंद। कविता। गद्य का उलटा।

**पद्यात्मक**—वि० [ सं० ] जो छंदोबद्ध हो।

**पधरना**—क्रि० अ० [ हिं० पधारना] किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन।

**पधराना**—क्रि० स० [ सं० प्र०+धारण ] १. आदरपूर्वक ले जाना। इज्जत से बैठाना। २. प्रतिष्ठित करना। स्थापित करना।

**पधरावनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पधराना ] १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया।

**पधारना**—क्रि० अ० [ हिं० पग+धारना ] १. जाना। चला जाना। गमन करना। २. आ पहुँचना। आना। ३ चलना।

क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना। पधराना।

**पन**—संज्ञा पुं० [ सं० पण ] प्रतिज्ञा। संकल्प।

संज्ञा ं० [ सं० पर्वन् =विशेष अवस्था ] आयु के चार भागों में से एक।

प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं। जैसे, लड़कपन।

**पनकपड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पानी +कपड़ा ] वह गीला कपड़ा जो शरीर के किसी अंग में चोट लगने पर बाँधा जाता है।

**पनकाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० पानी+अकाल ] अति वृष्टि के कारण होनेवाला अकाल।

**पनग***—संज्ञा पुं० [ सं० पन्नग ] [ स्त्री० पनगिन, पनगनि ] साँप।

**पनघट**—संज्ञा पुं० [ हिं० पानी+घाट ] वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हों।

**पनच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पतंचिका ] धनुष का रोदा या डोरी। प्रत्यंचा।

**पनचक्की**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पानी+चक्की ] पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।

**पन-डब्बा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पान+डब्बा ] [ स्त्री० अल्पा० पनडब्बी ] पानदान।

**पनडुब्बा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पानी+डूबना ] १. पानी में गोता लगाने-वाला। गोताखोर। २. वह पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो। ३. मुरगाबी। ४. एक प्रकार का कल्पित भूत।

**पनडुब्बी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पानी+डूबना ] एक प्रकार की नाव जो प्रायः आनी के अंदर डूबकर चलती है। सब-मेरीन।

**पनपना**—क्रि० अ० [ सं० पर्णय=हरा होना ] १. पानी पाने के कारण फिर से हरा हो जाना। २. फिर से तंदुरुस्त होना।

**पनबट्टा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पान+बट्टा ( डिब्बा ) ] पान रखने का छोटा डिब्बा।

**पनभरा**—संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

**पनव***—संज्ञा पुं० दे० "प्रणव"।

**पनवाड़ी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पान+वाला ] पान बेचनेवाला। तमोली।

**पनवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पान+वार (प्रत्य०) ] १. पत्तों की बनी हुई पत्तल। २. एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के खाने भर को हो।

**पनस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कटहल।

**पनसाखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाँच+शाखा ] एक प्रकार की मशाल जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ एक साथ जलती हैं।

**पनसारी**—संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

**पनसाल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पानी+शाला ] वह स्थान जहाँ सर्व-साधारण को पानी पिलाया जाता हो। पौसरा।

संज्ञा स्त्री० पानी की गहराई नापने का उपकरण।

**पनसुइया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पानी +सूई ] एक प्रकार की छोटी नाव।

**पनसेरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पसेरी"।

**पनह***—संज्ञा स्त्री० दे० "पनाह"।

**पनहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पानी+हारा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी ] वह जो पानी भरने का काम करता हो। पनभरा।

**पनहा**—संज्ञा पुं० [ सं० परिणाह ] १. कपडे या दीवार आदि की चौड़ाई। २. गूढ़ आशय या तात्पर्य। मर्म। भेद।

संज्ञा पुं० [ सं० पण ] चोरी का पता लगानेवाला।

**पनहारा**—संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

**पनहियाभद्र**—संज्ञा पुं० [ हिं० पनही+भद्र=मुंडन ] सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ।

**पनही**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० उपानह ] जूता।

**पना**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रपानक या पानीय ] आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबत। प्रपानक। पन्ना।

**पनाती**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रनप्तृ ] [ स्त्री० पनातिन ] पोते अथवा नाती का पुत्र।

**पनाला**—संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

**पनासना**†—क्रि० स० [ सं० पानाशन ] पोषण करना। परवरिश करना।

**पनाह**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. शत्रु, संकट या कष्ट से बचाव या रक्षा पाने की क्रिया या भाव। त्राण। बचाव।

**मुहा०**—( किसी से ) पनाह माँगना=किसी से बहुत बचने की इच्छा करना।

२. रक्षा पाने का स्थान। शरण। आड़।

**पनिघट***—संज्ञा पुं० दे० "पनघट"।

**पनियाँ**†—वि० दे० "पनिहा"।

**पनियाना**†—क्रि० अ० [हिं० पानी] पानी देना। सींचना।

**पनियासोत**†—वि० [ हिं० पानी+सोत ] ( तालाब, खाईं आदि ) जिसमें पानी का सोता निकला हो। अत्यंत गहरा।

**पनिहा**—वि० [ हिं० पानी+हा ( प्रत्य० ) ] १. पानी में रहनेवाला। २. जिसमें पानी मिला हो। ३. पानी संबंधी।

संज्ञा पुं० भेदिया। जासूस।

**पनिहार**—संज्ञा पुं० [ स्त्री० पनिहारिन ] दे० "पनहार"।

**पनी**†*—संज्ञा पुं० [ सं० पण ] प्रण करनेवाला। प्रतिज्ञा करनेवाला।

**पनीर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. फाड़कर जमाया हुआ दूध। छेना। २. वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

**पनीरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. फूल-पत्तों के वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिए उगाए गए हों। फूल-पत्तों के बेहन। २. वह क्यारी जिसमें पनीरी जमाई गई हो। बेहन की क्यारी।

**पनीला**—वि० [ हिं० पानी+ईला ( प्रत्य० ) ] पानी मिला हुआ। जलयुक्त।

**पनुआँ**†—वि० [हिं० पानी ] फीका। नीरस।

**पनैला**—संज्ञा पु० [ हिं० पनीला=एक प्रकार का सन ] एक प्रकार का गाढ़ा चिकना और चमकीला कपड़ा। परमटा।

वि० [ हिं० पानी ] १. जिसमें पानी मिला हो। २. जो पानी में रहता या होता हो।

**पन्न**—वि० [ सं० ] १. गिरा हुआ। पड़ा हुआ। जैसे, शरणापन्न। २. नष्ट। गत।

**पन्नग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पन्नगी ] १. सर्प। साँप। २. पद्माख।

* [ हिं० पन्ना ] पन्ना। मरकत।

**पन्नगपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शेषनाग।

**पन्नगारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गरुड़।

**पन्ना**—संज्ञा पु० [ सं० पर्ण ? ] पिरोजे की जाति का हरे रंग का एक रत्न। मरकत।

संज्ञा पुं० [ हि० पान ] पृष्ठ। वरक। पत्र।

**पन्नी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पन्ना=पत्रा ] १. राँगे या पीतल के कागज की तरह पतले पत्तर जिन्हें शोभा के लिए अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं। २. सोने या चाँदी के पानी में रंगा हुआ कागज या चमड़ा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पना ] एक भोज्य पदार्थ।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] बारूद की एक तौल।

**पन्नीसाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० पन्नी+फ़ा० साज़ ] पन्नी बनाने का काम करनेवाला।

**पन्हाना**†-क्रि० अ० दे०"पिन्हाना"। क्रि० स० १ दे० "पिन्हाना"। २. दे० "पहनाना"।

**पपड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्पट ] [ स्त्री० अल्पा० पपड़ी ] १. लकड़ी का रूखा करकरा और पतला छिलका। २. रोटी का छिलका।

**पपड़ियाना**—क्रि० अ० [ हिं० पपड़ी+आना ( प्रत्य० ) ] १. किसी चीज की परत का सूखकर सिकुड़

जाना। २. इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी जम जाय।

**पपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पपड़ा का अल्पा० ] किसी वस्तु की ऊपरी परत जो तरी या चिकनाई के अभाव के कारण कड़ी और सिकुड़कर जगह-जगह से चिटक गई हो। २. घाव के ऊपर मवाद के सूख जाने से बना हुआ आवरण या परत। खुरंड। ३. सोहन पपड़ी नामक मिठाई।

**पपड़ीला**—वि० [ हिं० पपड़ी ] जिस पर पपड़ी जमी हो। पपड़ीदार।

**पपीता**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके फल खाए जाते हैं। पपैया। अंड खरबूजा।

**पपीलि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिपीलिका ] च्यूँटी। चींटी।

**पपीहरा**—संज्ञा पुं० दे० "पपीहा"।

**पपीहा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक पक्षी जो वसंत और वर्षा में बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है। चातक।

**पपोटा**—संज्ञा पुं० [ सं० प्र+पट ] आँख के ऊपर का चमड़े का पर्दा। पलक। दृगंचल।

**पपोरना**†—क्रि० स० [ देश० ] बाँहें ऐंठना और उनका भराव या पुष्टता देखना। ( बलाभिमान का सूचक )

**पबारना**—क्रि० स० दे० "पँवारना"।

**पब्बय***—संज्ञा पुं० [ सं० पर्वत ] पहाड़।

**पबि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० पवि ] वज्र।

**पब्लिक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] जन साधारण। जनता।

वि० जन साधारण का। सार्वजनिक।

**पमाना***—क्रि० अ० [ ? ] डींग हाँकना।

**पमार**—संज्ञा पुं० दे० "परमार"।

**पय***—संज्ञा पुं० [ सं० पयस् ] १. दूध। २. जल। पानी। ३. अन्न।

**पयद***—संज्ञा पुं० दे० "पयोद"।

**पयधि***—संज्ञा पुं० दे० "पयोधि"।

**पयनिधि***—संज्ञा पुं० दे० "पयोनिधि"।

**पयस्विनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दूध देनेवाली गाय। २. बकरी। ३. नदी।

**पयस्वी**—वि० [ सं० पयस्विन् ] [ स्त्री० पयस्विनी ] पानीवाला। जिसमें जल हो।

**पयहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० पयस्+आहारी ] दूध पीकर रह जानेवाला तपस्वी या साधु।

**पयान**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रयाण ] गमन। जाना।

**पयार, पयाल**—संज्ञा पुं० [ सं० पलाल ] धान, कोदों आदि के सूखे डंठल जिनके दाने झाड़ लिए गए हों। पुराल।

**मुहा०**—पयाल गाहना या झाड़ना=व्यर्थ मिहनत या सेवा करना।

**पयोज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**पयोद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बादल। मेघ।

**पयोधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्तन। २. बादल। ३. नागरमोथा। ४. कसेरू। ५. तालाब। तड़ाग। ६ गाय का अयन। ७. पर्वत। पहाड़। ८ दोहा छंद का ११ वाँ भेद। ९. छप्पय छंद का २७ वाँ भेद।

**पयोधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**पयोनिधि**-संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**परंच**—अव्य० [ सं० ] १. और भी। २. तो भी। परंतु। लेकिन।

**परंतप**—वि० [ सं० ] १. वैरियों को दुःख देनेवाला। २. जितेंद्रिय।

**परंतु**—अव्य० [ सं० परं+तु ] पर। तो भी। किन्तु। लेकिन। मगर।

**परंपरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक के पीछे दूसरा, ऐसा क्रम [ विशेषतः कालक्रम ]। अनुक्रम। पूर्वापरक्रम। २. वंशपरंपरा। संतति। औलाद।

**परंपरागत**—वि० [ सं० ] परंपरा से चला आता हुआ। जो सदा से होता हो।

**पर**—वि० [ सं० ] १. अपने को छोड़कर शेष। गैर। दूसरा। अन्य। और। २. पराया। दूसरे का। ३. भिन्न। जुदा। अतिरिक्त। ४. पीछे का। बाद का। ५. दूर। अलग। तटस्थ। ६. सबके ऊपर। श्रेष्ठ। ७ प्रवृत्त। लीन। तत्पर। ( समास में )

प्रत्य० [ सं० उपरि ] सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। जैसे—उस पर। तुम पर।

अव्य० [ सं० परम् ] १. पश्चात्। पीछे। २. परंतु। किंतु। लेकिन। तो भी।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] चिड़ियों का डैना और उस पर के धुए या रोएँ। पंख। पक्ष।

**मुहा०** पर कट जाना=शक्ति या बल का आधार न रह जाना। अशक्त हो जाना। पर जमना=१. पर निकलना। २. जो पहले सीधा-सादा रहा हो, उसे शरारत सूझना। ( कहीं जाते हुए ) पर जलना=१. हिम्मत न होना। साहस न होना। २. गति न होना। पहुँच न होना। पर न मारना=पैर न रख सकना।

**परई**—संज्ञा स्त्री० [सं० पार=कटोरा, प्याला] दीए के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन।

**परकटा***—वि० [फ़ा० पर+हिं० कटना] जिसके पर या पंखे कटे हों।

**परकना***†—क्रि० अ० [हिं० परचना] १. परचना। हिलना। मिलना। २. धड़क खुलना। अभ्यास पड़ना। चसका लगना।

**परकसना***—क्रि० अ० [हिं० परकासना] १. प्रकाशित होना। जगमगाना। २. प्रकट होना।

**परकाजी**—वि० [हिं० पर+काज] परोपकारी।

**परकाना**†—वि० स० [हिं० परकना] १. परचाना। २. चसका लगाना।

**परकार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार।

*† संज्ञा पुं० दे० "प्रकार"।

**परकारना**—क्रि० स० [हिं० परकार] १. परकार से वृत्त बनाना। २. चारों ओर फेरना।

**परकाल**—संज्ञा पुं० दे० "परकार"।

**परकाला**—संज्ञा पुं० [सं० प्राकार या प्रकोष्ठ] १. सीढ़ी। जीना। २. चौखट। देहलीज।

संज्ञा पुं० [फ़ा० परगालः] १. टुकड़ा। खंड। २. शीशे का टुकड़ा। ३. चिनगारी।

**मुहा०**—आफत का परकाला=गजब करनेवाला। प्रचंड या भयंकर मनुष्य।

**परकास**—संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।

**परकासना***—क्रि० स० [सं० प्रकाशन] १. प्रकाशित करना। २. प्रकट करना।

**परकिति***†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रकृति"।

**परकीय**—वि० [सं०] पराया। दूसरे का।

**परकीया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीति-संबंध रखनेवाली स्त्री।

**परकोटा**—संज्ञा पुं० [सं० परिकोट] १. किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिए चारों ओर उठाई हुई दीवार। २. धुस। बाँध। धह।

**परख**—संज्ञा स्त्री० [सं० परीक्षा] १. गुण-दोष स्थिर करने के लिए अच्छी तरह देख-भाल। जाँच। परीक्षा। २. गुण-दोष का ठीक पता लगानेवाली दृष्टि। पहचान।

**परखना**—क्रि० स० [सं० परीक्षण] १. गुण-दोष स्थिर करने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना। परीक्षा करना। जाँच करना। २. भला और बुरा पहचानना।

क्रि० स० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना। इंतजार करना। आसरा देखना।

**परखवैया**—संज्ञा पुं० [हिं० परख+वैया (प्रत्य०)] परखनेवाला। जाँचनेवाला।

**परखाना**—क्रि० स० [हिं० 'परखना' का प्रे०] १. परखने का काम दूसरे से कराना। परीक्षा कराना। जँचवाना। २ सहेजवाना। सँभलवाना।

**परखैया**-संज्ञा पुं० दे० "परखवैया"।

**परग**—संज्ञा पुं० [सं० पदक] पग। कदम।

**परगटना***—क्रि० अ० [हिं० प्रगट] प्रकट होना। खुलना। जाहिर होना।

क्रि० स० प्रकट या जाहिर करना।

**परगन**—संज्ञा पुं० दे० "परगना"।

**परगना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०। मि० सं० परिगण=घर] वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों।

**परगसना***—क्रि० अ० [सं० प्रकाशन] प्रकाशित होना। प्रकट होना।

**परगाछा**—संज्ञा पुं० [हिं० पर=दूसरा+गाछ=पेड़] एक प्रकार के पौधे जो प्रायः गरम देशों में दूसरे पेड़ों पर उगते हैं।

**परगास***-संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश"।

**परघट***†—वि० दे० "प्रकट"।

**परचंड***—वि० दे० "प्रचंड"।

**परचत***†—संज्ञा स्त्री० [सं० परिचित] जान-पहचान। जानकारी।

**परचना**—क्रि० अ० [सं० परिचयन] १. हिलना-मिलना। घनिष्ठता प्राप्त करना। २. चसका लगना। धड़क खुलना।

**परचा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. कागज का टुकड़ा। चिट। कागज। पत्र। २. पुरजा। खत। चिट्ठी। ३. परीक्षा में आनेवाला प्रश्न-पत्र।

संज्ञा पुं० [सं० परिचय] १. परिचय। जानकारी। २. परख। परीक्षा। जाँच। ३. प्रमाण। सबूत।

**परचाना**—क्रि० स० [हिं० परचना] १. हिलाना-मिलाना। आकर्षित करना। २. धड़क खोलना। चसका लगाना। टेव डालना।

क्रि० स० [सं० प्रज्वलन] जलाना।

**परचार***—संज्ञा पुं० दे० "प्रचार"।

**परचारना***—क्रि० स० दे० "प्रचारना"।

**परचून**—संज्ञा पुं० [सं० पर+चूर्ण] आटा, दाल, मसाला आदि भोजन का सामान।

**परचूनी**—संज्ञा पुं० [हिं० परचून] आटा, दाल आदि बेचनेवाला बनिया। मोदी।

**परछती**—संज्ञा स्त्री० [सं० परि+

छत ] १. घर या कोठरी के भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक बनाई हुई पाटन जिस पर सामान रखते हैं। टाँड़। पाटा। २. फूस आदि की छाजन।

**परछन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० परि+अर्चन ] विवाह की एक रीति जिसमें बारात द्वार पर आने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती करतीं तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

**परछना**—क्रि० स० [ हिं० परछन ] परछन की क्रिया करना।

**परछाईं**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रतिच्छाया ] १. किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया जो प्रकाश के अवरोध के कारण पड़ती है। छायाकृति। **मुहा०**—परछाईं से डरना या भागना=१. बहुत डरना। अत्यंत भयभीत होना। २. पास तक आने से डरना। २. जल, दर्पण आदि पर पड़ा हुआ किसी पदार्थ का पूरा प्रतिरूप। प्रतिबिंब। अक्स।

**परछालना***—क्रि० स० [ सं० प्रक्षालन ] धोना।

**परजंक***—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

**परज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पराजिका ] एक संकर रागिनी।
वि० [ सं० ] पर-जात। दूसरे से उत्पन्न।

**परजन***—संज्ञा पुं० दे० "परिजन"।

**परजन्य***—संज्ञा पुं० दे० "पर्जन्य"।

**परजरना, परजवलना***—क्रि० अ० [ सं० प्रज्वलन ] १. जलना। दहकना। सुलगना २. क्रुद्ध होना। कुढ़ना। ३. डाह करना।

**परजलना***—क्रि० अ० दे० "परजरना"।

**परजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रजा ] १. प्रजा। रैयत। २. आश्रित जन। काम-धंधा करनेवाला। ३. जमींदार की जमीन पर खेती आदि करनेवाला। असामी।

**परजाति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पर+जाति ] दूसरी जाति।
वि० दूसरी जाति का।

**परजाता**—संज्ञा पुं० [ सं० पारिजात ] मझोले आकार का एक पेड़ जिसमें गुच्छों में फूल लगते हैं। परिजात।

**परजाय***—संज्ञा पुं० दे० "पर्याय"।

**परजौट**—संज्ञा पुं० [ हिं० परजा+औट (प्रत्य०) ] घर बनाने के लिए सालाना किराए पर जमीन लेने-देने का नियम।

**परणना***—क्रि० स० [ सं० परिणयन ] ब्याहना। विवाह करना।

**परतंचा**—संज्ञा स्त्री० दे० "पतंचिका"।

**परतंत्र**—वि० [ सं० ] पराधीन। परवश।

**परतंत्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पराधीनता।

**परतः**—अव्य० [ सं० परतस् ] १. दूसरे से। अन्य से। २. पश्चात्। पीछे। ३. परे। आगे।

**परत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पत्र ] १. मोटाई का फैलाव जो किसी सतह के ऊपर हो। स्तर। तह। २. लपेटी जा सकनेवाली फैलाव की वस्तुओं का इस प्रकार का मोड़ जिससे उनके भिन्न भिन्न भाग ऊपर-नीचे हो जायँ। तह।

**परतच्छ***—वि० दे० "प्रत्यक्ष"।

**परतल**—संज्ञा पुं० [ सं० पट=कपड़ा+तल=नीचे ] लादने वाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा या गून।

**परतला**—संज्ञा पुं० [ सं० परितल ] चमड़े या मोटे कपड़े की चौड़ी पट्टी जो कंधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है और जिसमें तलवार या चपरास आदि लटकाई जाती है।

**परता**—संज्ञा पुं० दे० "पड़ता"।

**परताप***—संज्ञा पुं० दे० "प्रताप"।

**परतिंचा***—संज्ञा स्त्री० दे० "पतंचिका"।

**परतिग्या***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।

**परती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० परना=पड़ना ] वह खेत या जमीन जो बिना जोती हुई छोड़ दी गई हो।

**परतीत***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति"।

**परतेजना***—क्रि० स० [ सं० परित्यजन ] परित्याग करना। छोड़ना।

**परत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पर होने का भाव। पहले या पूर्व होने का भाव।

**परथन**—संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।

**परद***—संज्ञा पुं० दे० "परदा"।

**परदच्छिना***†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिणा"।

**परदनी***—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. धोती। २. दान-दक्षिणा।

**परदा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आड़ करने के काम में आनेवाला कपड़ा, चिक आदि। पट।
**मुहा०**—परदा उठाना या खोलना=छिपी बात प्रकट करना। भेद का उद्घाटन करना। परदा डालना या रखना=छिपाना। प्रकट न होने देना। आँख पर परदा पड़ना=सुझाई न देना। ढँका परदा=१. छिपा हुआ दोष या कलंक। २. बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्यादा।

२. आड़ करनेवाली कोई वस्तु । व्यवधान । ३. लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति । आड़ । ओट । छिपाव ।

मुहा०—परदा रखना=१. परदे के भीतर रहना । सामने न होना । २. छिपाव रखना । दुराव रखना । परदा होना=१. स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम होना । २. छिपाव होना । दुराव होना । परदे में रखना=१. स्त्रियों को घर के भीतर रखना, बाहर लोगों के सामने न होने देना । २. छिपा रखना । प्रकट न होने देना । ४. स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल । ५. वह दीवार जो विभाग करने या ओट करने के लिए उठाई जाय । ६. तह । परत । तल । ७. वह झिल्ली या चमड़ा आदि जो कहीं पर आड़ या व्यवधान के रूप में हो ।

**परदाज**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [ भाव० परदाजी ] १. सजाना । २. चित्र आदि के चारों ओर बेल-बूटे बनाना । ३. चित्रों में अभीष्ट रंगत लाने के लिए बहुत पास पास महीन बिन्दु लगाना ।

**परदादा**—संज्ञा पुं० [ सं० प्र०+ हिं० दादा ] [ स्त्री० परदादी ] प्रपितामह । दादा का बाप ।

**परदानशीन**—वि० [ फ़ा० ] परदे में रहनेवाली । अंतःपुरवासिनी । ( स्त्री ) ।

**परदुम्न***—संज्ञा पुं० दे० 'प्रद्युम्न' ।

**परदेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विदेश । दूसरा देश । पराया शहर ।

**परदेशी**—वि० [सं०] विदेशी । दूसरे देश का । अन्य देशनिवासी ।

**परदोस***—संज्ञा पुं० दे० "प्रदोष" ।

**परधान***—वि० दे० "प्रधान" ।
संज्ञा पुं० दे० "परिधान" ।

**परधाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बैकुंठ धाम ।

**परन**—संज्ञा पुं० [सं० प्रण] प्रतिज्ञा । टेक ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० पड़ना ] बान । आदत ।
*संज्ञा पुं० दे० "पर्ण" ।

**परना***†—क्रि० अ० दे० "पड़ना" ।

**परनाना**—संज्ञा पुं० [ सं० पर+हिं० नाना ] [ स्त्री० परनानी ] नाना का बाप ।

**परनाम**—संज्ञा पुं० दे० "प्रणाम" ।

**परनाला**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रणाली ] [ स्त्री० अल्पा० परनाली ] पनाला । नाबदान । मोरी ।

**परनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पड़ना ] बान । आदत । टेव ।

**परनौत***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० परनवना ] प्रणाम ।

**परपंच***†—संज्ञा पुं० दे० "प्रपंच" ।

**परपंचक***—वि० दे० "परपंची" ।

**परपंची***†—वि० [ सं० प्रपंच ] १. बखेड़िया । फसादी । २. धूर्त । मायावी ।

**परपट**—संज्ञा पुं० [ हिं० पर+सं० पट=चादर ] चौरस मैदान । समतल भूमि ।

**परपरा**—वि० [ अनु० ] १. जो परपराता हो । २. पर पर शब्द के साथ टूटनेवाला ।

**परपराना**—क्रि० अ० [ देश० ] मिर्च आदि कड़ुई चीजों का जीभ में विशेष प्रकार का उग्र संवेदन उत्पन्न करना । चुनचुनाना ।

**परपार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उस ओर का तट । दूसरी तरफ का किनारा ।

**परपीड़क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला । २. पराई पीड़ा को समझनेवाला ।

**पर-पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्रियों के लिए अपने पति के अतिरिक्त दूसरे लोग ।

**परपूठना***—क्रि० स० [सं० परिपुष्ट] परिपुष्ट या पक्का करना ।

**परपूठा***—वि० [ सं० परिपुष्ट ] पक्का ।

**परपोता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रपौत्र ] पोते का बेटा । पुत्र के पुत्र का पुत्र ।

**परफुल्ल***—वि० दे० "प्रफुल्ल" ।

**परब**—संज्ञा पुं० दे० "पर्व" ।

**परबत**—संज्ञा पुं० दे० "पर्वत" ।

**परबल***—वि० दे० "प्रबल" ।

**परबस**—वि० [हिं० पर+वश] दूसरे के वश में पड़ा हुआ । पर-तंत्र ।

**परबसताई***—संज्ञा स्त्री० [सं० परवश्यता ] पराधीनता । परतंत्रता ।

**परबाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० पर=दूसरा+बाल=रोयाँ ] आँख की पलक पर का वह फालतू बाल जिसके कारण बहुत पीड़ा होती है ।
*संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल" ।

**परबीन***—वि० दे० "प्रवीण" ।

**परबेस***—संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश" ।

**परबोध**—संज्ञा पुं० दे० "प्रबोध" ।

**परबोधना***—क्रि० स० [ सं० बोधन ] १. जगाना । २. ज्ञानोपदेश करना । ३. दिलासा देना । तसल्ली देना ।

**परब्रह्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म जो जगत् से परे है । निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म ।

**परमाद***—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाद" ।

**परमाद***—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाद"।

**परमाव***—संज्ञा पुं० दे० "प्रभाव"।

**परम**—वि० [सं०] [स्त्री० परमा] १. सबसे बढ़ा-चढ़ा। अत्यंत। २. जो बढ़-चढ़कर हो। उत्कृष्ट। ३. प्रधान। मुख्य। ४. आद्य। आदिम। संज्ञा पुं० १. शिव। २. विष्णु।

**परमगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

**परमटा**—संज्ञा पुं० दे० "पनैला"।

**परम तत्त्व**—संज्ञा पुं० [सं०] मूल तत्त्व जिससे संपूर्ण विश्व का विकास है।

**परम धाम**—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।

**परम पद**—संज्ञा पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

**परम-पुरुष**—संज्ञा पुं० [सं०] परमात्मा।

**परम भट्टारक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० परम-भट्टारिका] एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि।

**परमल**—संज्ञा पुं० [सं० परिमल] ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना।

**परमहंस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो। २. परमात्मा।

**परमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शोभा। छवि।

**परमाणु**—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसके फिर और विभाग नहीं हो सकते। अत्यंत सूक्ष्म अणु।

**परमाणुवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय और वैशेषिक का वह सिद्धांत कि परमाणुओं से जगत् की सृष्टि हुई है।

**परमात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० परमात्मन्] ईश्वर।

**परमानंद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म के अनुभव का सुख। ब्रह्मानंद। २. आनंद-स्वरूप ब्रह्म।

**परमान***—संज्ञा पुं० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण। सबूत। २. यथार्थ बात। सत्य बात। ३. सीमा। अवधि। हद।

**परमानना***—क्रि० स० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण मानना। ठीक समझना। २. स्वीकार करना।

**परमायु**—संज्ञा स्त्री० [सं० परमायुस्] अधिक से अधिक आयु। जीवित काल की सीमा जो १००अथवा १२० वर्ष मानी जाती है।

**परमार**—संज्ञा पुं० [सं० पर=शत्रु +हिं० मारना] राजपूतों का एक कुल जो अग्नि कुल के अंतर्गत है। पँवार।

**परमारथ***—संज्ञा पुं० दे० "परमार्थ"।

**परमार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सबसे बढ़कर वस्तु। २. वास्तव सत्ता। नाम, रूपादि से परे यथार्थ तत्त्व। ३. मोक्ष।

**परमार्थवादी**—संज्ञा पुं० [सं० परमार्थवादिन्] ज्ञानी। वेदांती। तत्त्वज्ञ।

**परमार्थी**—वि० [सं० परमार्थिन्] १. यथार्थ तत्त्व को ढूँढ़नेवाला। तत्त्व-जिज्ञासु। २. मोक्ष चाहनेवाला। मुमुक्षु।

**परमिति***—संज्ञा स्त्री० [सं० परम] चरम सीमा या मर्यादा।

**परमुख***—वि० [सं० पराङ्मुख] १. विमुख। पीछे फिरा हुआ। २. जो प्रतिकूल आचरण करे।

**परमेश, परमेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार का कर्त्ता और परिचालक सगुण ब्रह्म। २. विष्णु। ३. शिव।

**परमेश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**परमेष्ट**—वि० [सं० परम+इष्ट] जो परम इष्ट या प्रिय हो।

**परमेष्ठी**—संज्ञा पुं० [सं० परमेष्ठिन्] १. ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २. विष्णु। ३. शिव।

**परमेसर***†—संज्ञा पुं० दे० "परमेश्वर"।

**परमोक**—संज्ञा पुं० [परम+ओक] परम धाम। मोक्ष। स्वच्छंदता।

**परमोद***—संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद"।

**परमोदना***†—क्रि० स० [सं० प्रमोदन] १. दे० "परबोधना"। २. मीठी मीठी बातें करके अपनी तरफ मिलाना।

**परयंक***—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

**परलउ, परलय***—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रलय] सृष्टि का नाश या अंत। प्रलय।

**परला**—वि० [सं० पर=उधर+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० परली] उस ओर का। उधर का।

**मुहा०**—परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का। अत्यंत। बहुत अधिक।

**परलै***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रलय"।

**परलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होता है। जैसे, स्वर्ग, वैकुंठ आदि।

**यौ०**—परलोकवासी=मृत। मरा हुआ।

**मुहा०**—परलोक सिधारना=मरना।

२. मृत्यु के उपरांत आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति।

**परलोकगमन**—संज्ञा पुं० [सं०] मृत्यु।

**परवर***—संज्ञा पुं० [सं० पटोल] परवल।

**परवरदिगार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] ईश्वर।

**परवरिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] पालन-पोषण।

**परवल**—संज्ञा पुं० [ सं० पटोल ] एक लता जिसके फलों की तरकारी होती है।

**परवश**—वि० [ सं० ] [ भाव० परवशता ] पराधीन।

**परवश्य**—वि० [ भाव० परवशता ] दे० "परवश"।

**परवस्ती***†—संज्ञा स्त्री० दे० "परवरिश"।

**परवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रतिपदा ] पक्ष की पहली तिथि। पड़वा। परिवा।
संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. चिंता। खटका। आशंका। २. ध्यान। खयाल। ३. आसरा।

**परवाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह"।

**परवान***—संज्ञा पुं० [ सं० प्रमाण ] १. प्रमाण। सबूत। २. यथार्थ बात। सत्य बात। ३. सीमा। मिति। अवधि। हद।

**परवानगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] इजाजत। आज्ञा। अनुमति।

**परवानना***—क्रि० स० [ सं० प्रमाण ] ठीक समझना।

**परवाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. आज्ञापत्र। २. फतिंगा। पंखी। पतंग। ३. बरी चूना आदि नापने का एक मान या पात्र।

**परवाल***—संज्ञा पुं० दे० "प्रवाल"।

**परवाय**—संज्ञा पुं० [ ? ] आच्छादन।

**परवाह**—संज्ञा स्त्री० दे० "परवा"।
संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

**परवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पर्व ] पर्व-काल।

**परवीन***—वि० दे० "प्रवीण"।

**परवेख***—संज्ञा पुं० [ सं० परिवेश ] हलकी बदली के समय दिखाई पड़नेवाला चंद्रमा के चारों ओर का घेरा। चाँद की अथाई। मंडल।

**परवेश***—संज्ञा पुं० दे० "प्रवेश"।

**परश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पारस पत्थर।
संज्ञा पुं० [ सं० स्पर्श ] स्पर्श। छूना।

**परशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार की कुल्हाड़ी जो लड़ाई में काम आती थी। तबर। भलुवा।

**परशुराम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जमदग्नि ऋषि के एक पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रियों का नाश किया था।

**परसंग***—संज्ञा पुं० दे० "प्रसंग"।

**परसंसा***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा"

**परस**—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] छूना। स्पर्श।
संज्ञा पुं० [ सं० परश ] पारस पत्थर।

**परसन***—संज्ञा पु० [ सं० स्पर्शन ] १. छूना। छूने का काम। २. छूने का भाव।
वि० [ सं० प्रसन्न ] प्रसन्न। खुश।

**परसना***—क्रि० स० [ सं० स्पर्शन ] १. छूना। स्पर्श करना। २. स्पर्श कराना।
क्रि० स० [ सं० परिवेषण ] परोसना।

**परसन्न***—वि० दे० "प्रसन्न"।

**परस पखान**—संज्ञा पुं० दे० "पारस"।

**परसा**—संज्ञा पुं० [ हिं० परसना ] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन। पत्तल।

**परसाद***†—संज्ञा पुं० दे० "प्रसाद"।

**परसाना***—क्रि० स० [ हिं० परसना ] छुलाना।
क्रि० स० [ हिं० परसना ] भोजन बँटवाना।

**परसाल**—अव्य० [ सं० पर+फ़ा० साल ] १. गत वर्ष। पिछले साल। २. आगामी वर्ष।

**परसिद्ध***—वि० दे० "प्रसिद्ध"।

**परसु***—संज्ञा पुं० दे० "परशु"।

**परसूत***†—वि०, संज्ञा० पुं० दे० "प्रसूत"।

**परसेद***—संज्ञा पुं० दे० "प्रस्वेद"।

**परसों**—अव्य० [ सं० परश्वः ] १. गत दिन से ठीक पहले का दिन। बीते हुए कल से एक दिन पहले। २. आगामी दिन के बाद का दिन।

**परसोतम***†—संज्ञा पुं० दे० "पुरुषोत्तम"।

**परसौंहाँ**—वि० [ सं० स्पर्श ] छूनेवाला।

**परस्पर**—क्रि० वि० [ सं० ] एक दूसरे के साथ। आपस में।

**परस्परोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय को और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है। उपमेयोपमा।

**परहरना***—क्रि० स० [ सं० परि+हरण ] त्यागना।

**परहार**†—संज्ञा पुं० १. दे० "प्रहार"। २. दे० "परिहार"।

**परहेज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातों से बचना। खाने पीने आदि का संयम। २. दोषों और बुराइयों से दूर रहना।

**परहेजगार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा परहेजगारी ] १. परहेज करनेवाला।

संयमी । २. दोषों से दूर रहनेवाला ।

**परहेलना***—क्रि० स० [ सं० प्रहेलन ] निरादर करना । तिरस्कार करना ।

**परौंठा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पलटना ] घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई चपाती । परौठा ।

**परा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चार प्रकार की वाणियों में पहली वाणी । २. वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो । ब्रह्मविद्या । उपनिषद् विद्या । संज्ञा पुं० [ ? ] पंक्ति । कतार ।

**पराकाष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चरम सीमा । सीमांत । हद । अंत ।

**पराक्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पराक्रमी ] १. बल । २. शक्ति । पुरुषार्थ । उद्योग ।

**पराक्रमी**—वि० [ सं० पराक्रमिन् ] १. बलवान् । बलिष्ठ । २. बहादुर । ३. उद्योगी ।

**पराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह रज या धूलि जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमा रहती है । पुष्परज । २. धूलि । रज । ३. एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण जिसे लगाकर स्नान किया जाता है । ४. चंदन । ५. उपराग ।

**पराग-केसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फूलों के बीच में वे पतले लंबे सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है ।

**परागना***—क्रि० अ० [ सं० उपराग ] अनुरक्त होना ।

**पराङ्मुख**—वि० [ सं० ] १ मुँह फेरे हुए । विमुख । २. जो ध्यान न दे । उदासीन । ३. विरुद्ध ।

**पराजय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विजय का उलटा । हार । शिकस्त ।

**पराजित**—वि० [ सं० ] परास्त । हारा हुआ ।

**परात**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पात्र ] थाली के आकार का एक बड़ा बरतन ।

**परात्पर**—वि० [ सं० ] सर्वश्रेष्ठ । संज्ञा पुं० १. परमात्मा । २. विष्णु ।

**पराधीन**—वि० [ सं० ] जो दूसरे के अधीन हो । परतंत्र । परवश ।

**पराधीनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] परतंत्रता । दूसरे की अधीनता ।

**परान**—संज्ञा पुं० दे० "प्राण" ।

**पराना***†—क्रि० अ० [ सं० पलायन ] भागना ।

**परान्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पराया अन्न या धान्य । दूसरे का दिया हुआ भोजन ।

**पराभव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पराजय । हार । २. तिरस्कार । मानध्वंस । ३. विनाश ।

**पराभूत**—वि० [ सं० ] १. पराजित । हारा हुआ । २. ध्वस्त । नष्ट ।

**परामर्श**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पकड़ना । खींचना । २. विवेचन । विचार । ३. युक्ति । ४. सलाह । मंत्रणा ।

**परायण**—वि० [ सं० ] [ भाव० परायणता ] [स्त्री० परायणा] १. गत । गया हुआ । २. प्रवृत्त । लगा हुआ ।

**पराया**—वि० पुं० [सं० पर ] [ स्त्री० पराई ] १. दूसरे का । अन्य का । २. जो आत्मीय न हो । गैर । बिराना ।

**परार***—वि० दे० "पराया" ।

**परारध***—संज्ञा पुं० दे० "परार्द्ध" ।

**परारब्ध**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध" ।

**परार्थ**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा परार्थता ] दूसरे का काम । दूसरे का उपकार । वि० जो दूसरे के अर्थ हो । पर-निमित्तक ।

**परार्द्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक शंख की संख्या । २. ब्रह्मा की आयु का आधा काल ।

**परालब्ध**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध" ।

**परावधि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पराकाष्ठा । सीमा । हद ।

**परावन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पराना ] एक साथ बहुत से लोगों का भागना । भगदड़ । संज्ञा पुं० [ सं० पर्व ] पुण्यकाल । पर्व ।

**परावर्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परावर्त्तित, परावृत्त ] पलटना । लौटना । पीछे फिरना ।

**परावह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वायु के सात भेदों में से एक ।

**परावा**—संज्ञा पुं० दे० "पराया" ।

**परावृत्त**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा परावृत्ति ] १. लौटा या लौटाया हुआ । २. बदला हुआ । परिवर्त्तित । ३. भागा हुआ ।

**पराशर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक गोत्रकार ऋषि जो पुराणानुसार वसिष्ठ और शक्ति के पुत्र थे । २. एक प्रसिद्ध स्मृतिकार ।

**परास***†—संज्ञा पुं० दे० "पलाश" ।

**परास्त**—वि० [ सं० ] १. पराजित । हारा हुआ । २. विजित । ध्वस्त ।

**परास्तता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पराजय । हार ।

**पराह्न**—वि० [ सं० ] अपराह्न । दोपहर के बाद का समय । तीसरा पहर ।

**परि**—उप० [ सं० ] एक संस्कृत उपसर्ग जिसके लगाने से शब्द में इन

…ओं की वृद्धि होती है—चारों ओर—जैसे, परिक्रमण। अच्छी तरह—जैसे, परिपूर्ण। अतिशय—जैसे, परिवर्द्धन। पूर्णता—जैसे, परित्याग। दोषाख्यान—जैसे, परिहास। नियम, या क्रम—जैसे, परिच्छेद।

**परिकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्यंक। पलँग। २. परिवार। ३. वृन्द। समूह। ४. अनुयायियों का दल। अनुचरवर्ग। ५. समारंभ। तैयारी। ६. कटिबंध। कमरबंद। ७. एक अर्थालंकार जिसमें अभिप्राययुक्त विशेषणों के साथ विशेष्य आता है।

**परिकरमा***—संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।

**परिकरांकुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग विशेष अभिप्राय लिए हुए होता है।

**परिक्रमण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मन बहलाने के लिए घूमना। टहलना। २. परिक्रमा।

**परिक्रमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० परिक्रम ] १. चारों ओर घूमना। फेरी। चक्कर। २. किसी तीर्थ या मंदिर के चारों ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग।

**परिच्छा**—संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।

**परिच्छित**—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।

**परिखक**—वि० [ हिं० परिखना ] रखवाली करनेवाला। रक्षक।

**परिखना**—क्रि० स० दे० "परखना"।

क्रि० अ० [ सं० प्रतीक्षा ] १. आसरा देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली करना।

**परिखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] खंदक। खाई।

**परिख्यात**—वि० [ सं० ] प्रसिद्ध। मशहूर।

**परिगणन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य ] गणना करना। गिनना।

**परिगणित**—वि० [ सं० ] गिना हुआ।

**परिगत**—वि० [ सं० ] १. बीता हुआ। गत। २. मरा हुआ। मृत। ३. भूला हुआ। विस्मृत। ४. जाना हुआ। ज्ञात।

**परिगह**—संज्ञा पुं० [ सं० परिग्रह ] संगी-साथी या आश्रित जन।

**परिगृहीत**—वि० [ सं० ] १. मंजूर किया हुआ। स्वीकृत। २. ग्रहण किया हुआ। लिया हुआ। ३. मिला हुआ। प्राप्त।

**परिग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिग्राह्य ] १. प्रतिग्रह। दान लेना। २. पाना। ३. धनादि का संग्रह। ४. आदरपूर्वक कोई वस्तु लेना। ५. विवाह। ६. पत्नी। भार्या। ७. परिवार।

**परिघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अर्गला। अगड़ी। २. भाला। बर्छी। ३. घोड़ा। ४. फाटक। ५. घर। ६. तीर। ७. बाधा। प्रतिबंध।

**परिघोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तेज या भारी आवाज। २. बादल का गरजना।

**परिचना***—क्रि० अ० दे० "परचना"।

**परिचय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जानकारी। ज्ञान। अभिज्ञता। २. प्रमाण। लक्षण। ३. किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुण-कर्म आदि के संबंध की जानकारी। ४. जान-पहचान।

**परिचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेवक। खिदमतगार। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

**परिचरजा***—संज्ञा स्त्री० दे० "परिचर्या"।

**परिचरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दासी।

**परिचर्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सेवा। टहल। २. रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

**परिचायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परिचय या जान-पहचान करानेवाला। २. सूचित करनेवाला। सूचक।

**परिचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेवा। टहल। २. टहलने या घूमने फिरने का स्थान।

**परिचारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेवक। नौकर। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

**परिचारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेवा करना। खिदमत करना। २. संग करना या रहना।

**परिचारना***—क्रि० स० [ सं० परिचारण ] सेवा करना। खिदमत करना।

**परिचारिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेवक।

**परिचारिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दासी।

**परिचालक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चलानेवाला।

**परिचालन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिचालित ] १. चलने के लिए प्रेरित करना। चलाना। २. कार्य-क्रम को जारी रखना। ३. हिलाना। गति देना।

**परिचालित**—वि० [ सं० ] १. चलाया हुआ। २. बराबर जारी रखा हुआ। ३. हिलाया हुआ।

**परिचित**—वि० [ सं० ] १. जाना-बूझा। ज्ञात। मालूम। २. जिसका परिचय हो चुका हो। अभिज्ञ। वाकिफ। ३. जान-पहचान रखनेवाला। मुलाकाती।

**परिचिति**—संज्ञा स्त्री० दे० "परिचय"।

**परिचौ**†—संज्ञा पुं० दे० "परिचय"।

**परिच्छद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ढकने का कपड़ा। आच्छादन। पट। २. पहनावा। पोशाक। ३. राजचिह्न। ४. राजा का अनुचर। ५. परिवार। कुटुंब।

**परिच्छन्न**—वि० [ सं० ] १. ढका हुआ। छिपा हुआ। २. जो कपड़े पहने हो। वस्त्रयुक्त। ३. साफ किया हुआ।

**परिच्छा***—संज्ञा स्त्री० दे० 'परीक्षा'।

**परिच्छिन्न**—वि० [ सं० ] १. सीमा-युक्त। परिमित। मर्यादित। २.विभक्त।

**परिच्छेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खंड या टुकड़े करना। विभाजन। २. ग्रंथ का कोई स्वतंत्र विभाग। अध्याय। प्रकरण।

**परिछन**—संज्ञा पुं० दे० "परछन"।

**परिछाईं**—संज्ञा स्त्री० दे० "परछाईं"।

**परिजंक***—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

**परिजन**—संज्ञा पुं० १. [सं०] आश्रित या पोष्य वर्ग। परिवार। २. सदा साथ रहनेवाले सेवक।

**परिज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ज्ञान।

**परिज्ञात**—वि० [सं०] जाना हुआ।

**परिज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण ज्ञान।

**परिणत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा परि-णति ] १. झुका हुआ। २. बदला हुआ। रूपांतरित। ३. पका हुआ। ४. पचा हुआ।

**परिणति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बदलना। रूपांतर होना। २. पकना या पचना। परिपाक। ३. प्रौढ़ता। पुष्टि। ४. अंत।

**परिणय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्याह। विवाह।

**परिणयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्याहना।

**परिणाम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बदलने का भाव या कार्य। बदलना। रूपांतर-प्राप्ति। २. स्वाभाविक रीति से रूप-परिवर्त्तन या अवस्थतांर-प्राप्ति। (सांख्य) ३. विकृति। विकार। रूपांतर। ४. एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति। (योग) ५. एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) का प्रकृत (उप-मेय) से एकरूप होकर कोई कार्य करना कहा जाता है। ६. विकास। वृद्धि। परिपुष्टि। ७. समाप्त होना। बीतना। ८. नतीजा। फल।

**परिणामदर्शी**—वि० [ सं० परिणाम-दर्शिन् ] परिणाम या फल को सोच-कर कार्य करनेवाला। सूक्ष्मदर्शी। दूरदर्शी।

**परिणाम-दृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी कार्य के परिणाम को जान लेने की शक्ति।

**परिणामवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सांख्य मत जिसमें जगत् की उत्पत्ति, नाश आदि नित्य परिणाम के रूप में माने जाते हैं।

**परिणामी**—वि० [ सं० परिणामिन् ] [ स्त्री० परिणामिनी ] जो बराबर बद-लता रहे।

**परिणीत**—वि० [ सं० ] १. जिसका ब्याह हो चुका हो। विवाहित। २. समाप्त। पूर्ण।

**परितच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "प्रत्यक्ष"।

**परितप्त**—वि० [सं०] १. तपा हुआ। उत्तप्त। २.जिसे दुःख पहुँचा हो। ३. पछतानेवाला।

**परिताप**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. गरमी। आँच। ताव। २. दुःख। क्लेश। पीड़ा। ३. संताप। रंज। ४. पश्चात्ताप। पछतावा।

**परितापी**—वि० [ सं० परितापिन् ] १ जिसको परिताप हो। दुःखित या व्यथित। २. पीड़ा देनेवाला। सतानेवाला।

**परितुष्ट**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा परि-तुष्टि ] १. खूब संतुष्ट। २. प्रसन्न। खुश।

**परितृप्त**—वि० [सं०] [संज्ञा परितृप्ति] जिसका अच्छी तरह परितोष हो गया हो। भली भाँति तृप्त।

**परितोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। खुशी।

**परितोस***—संज्ञा पुं० दे० "परितोष"।

**परित्यक्त**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० परित्यक्ता ] छोड़ा, फेंका या दूर किया हुआ।

**परित्याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परित्यागी ] निकालना। अलग कर देना। छोड़ना।

**परित्यागना***—क्रि० स० [ सं० परित्याग ] छोड़ देना। त्यागना।

**परित्याज्य**—वि० [ सं० ] छोड़ने या त्यागने योग्य।

**परित्राण**—संज्ञा पुं० [सं०] बचाव। हिफाजत। रक्षा।

**परित्राता**—संज्ञा पुं० [सं० परित्रातृ] परित्राण या रक्षा करनेवाला।

**परिध**—संज्ञा पुं० दे० "परिधि"।

**परिदर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घूम घूमकर देखना। २. निरीक्षण। मुआयना।

**परिदाह**—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत अधिक मानसिक कष्ट।

**परिधन***—संज्ञा पुं० [सं० परिधान] नीचे पहनने का कपड़ा। धोती आदि।

**परिधान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर को कपड़े से लपेटना। कपड़ा पहनना। २. वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।

**परिधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर खींचने से बने। घेरा। २. सूर्य, चन्द्र आदि के आस-पास देख पड़नेवाला घेरा। परिवेश। मंडल। ३. चारों ओर की सीमा। ४. बाड़ा, बँधान या चहार-दीवारी। ५. नियत या नियमित मार्ग। कक्षा। ६. कपड़ा। वस्त्र। पोशाक।

**परिधेय**—वि० [सं०] पहनने योग्य। संज्ञा पुं० वस्त्र। कपड़ा।

**परिनय***-संज्ञा पुं० दे० "परिणय"।

**परिनिर्वाण**—संज्ञा पुं० [सं०] पूर्ण निर्वाण।

**परिन्यास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो। २. नाटक में मुख्य कथा की मूलभूत घटना की संकेत से सूचना करना।

**परिपक्व**—वि० [सं०] [संज्ञा परिपक्वता] १. अच्छी तरह पका हुआ। पूर्ण पक्व। २. जो बिलकुल हजम हो गया हो। ३. पूर्ण विकसित। प्रौढ़। ४. बहुदर्शी। तजरुबेकार। ५. निपुण। कुशल। प्रवीण।

**परिपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय का सूचना-पत्र।

**परिपाक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पकना या पकाया जाना। २. पचना। ३. प्रौढ़ता। पूर्णता। ४. बहुदर्शिता। ५. कुशलता। निपुणता।

**परिपाटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. क्रम। श्रेणी। सिलसिला। २. प्रणाली। शैली। ढंग। ३. पद्धति। रीति। ४. अंकगणित।

**परिपार**—संज्ञा पुं० [सं० पालि] मर्यादा।

**परिपालन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिपाल्य, परिपालित] १. रक्षा करना। बचाना। २. रक्षा। बचाव।

**परिपालना**—संज्ञा स्त्री० दे० "परिपालन"।

**परिपालित**-वि० [सं०] १. जिसका परिपालन किया गया हो। २. पाला-पासा हुआ।

**परिपुष्ट**—वि० [सं०] १. जिसका पोषण भली भाँति किया गया हो। २. पूर्ण पुष्ट।

**परिपूरक**—वि० [सं०] परिपूर्ण करनेवाला।

**परिपूत**—वि० [सं०] १. पवित्र। २. साफ किया हुआ। विशुद्ध।

**परिपूरन**—वि० दे० "परिपूर्ण"।

**परिपूर्ण**—वि० [सं०] [वि० परिपूरित] [संज्ञा परिपूर्णता] १. खूब भरा हुआ। २. पूर्ण तृप्त। अघाया हुआ। ३. समाप्त किया हुआ।

**परिपोषण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० परिपुष्ट] १. पालन। परवरिश करना। २. पुष्ट करना।

**परिप्रोत**—वि० [सं०] पूरी तरह से भरा हुआ। भरपूर।

**परिप्लव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तैरना। २. बाढ़। ३. अत्याचार। जुल्म। ४. नाव।

**परिप्लावित**-वि० दे० "परिप्लुत"।

**परिप्लुत**—वि० [सं०] १. प्लावित। डूबा हुआ। २. गीला। भीगा हुआ। आर्द्र।

**परिबृंहण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उन्नति। तरक्की। २. परिशिष्ट।

**परिभव, परिभाव**-संज्ञा पुं० [सं०] अनादर। तिरस्कार। अपमान।

**परिभावना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिंता। सोच। फिक्र। २. साहित्य में वह वाक्य या पद जिससे कुतूहल या उत्सुकता सूचित अथवा उत्पन्न हो।

**परिभाषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्पष्ट कथन। संशय-रहित कथन या बात। २. किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना जिसमें उसकी विशेषता और व्याप्ति पूर्ण रीति से निश्चित हो जाय। लक्षण। तारीफ। ३. ऐसा शब्द जो किसी शास्त्र, व्यवसाय या वर्ग आदि में किसी निर्दिष्ट अर्थ या भाव का संकेत मान लिया गया हो। जैसे, गणित की परिभाषा, लोहारों की परिभाषा। ४. ऐसी बोल-चाल जिसमें वक्ता अपना आशय पारिभाषिक शब्दों में प्रकट करे।

**परिभाषित**—वि० [सं०] १. जो अच्छी तरह कहा गया हो। २. (वह शब्द) जिसकी परिभाषा की गई हो।

**परिभू**—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर।

**परिभूत**—वि० [सं०] १. हारा या हराया हुआ। पराजित। २. अपमानित।

**परिभ्रमण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घूमना। चक्कर खाना। २. परिधि। घेरा। ३. टहलना। घूमना-फिरना।

**परिभ्रष्ट**—वि० [सं०] गिरा हुआ। पतित।

**परिमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चक्कर। घेरा।

**परिमल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिमलित ] १. सुवास। उत्तम गंध। खुशबू। २. मलना। उबटना। ३. मैथुन। संभोग।

**परिमाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिमित, परिमेय ] १. वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। २. घेरा।

**परिमाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिमापक ] १. नापने की क्रिया या भाव। २. वह पदार्थ या आदर्श जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाय। मानदंड। मानक।

**परिमार्जक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धोने या माँजनेवाला। परिशोधक। परिष्कारक।

**परिमार्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिमार्जित, परिमृज्य, परिमृष्ट ] १. धोने या माँजने का कार्य। २. परिशोधन। परिष्करण।

**परिमार्जित**—वि० [ सं० ] १. धोया या माँजा हुआ। २. साफ किया हुआ।

**परिमित**—वि० [ सं० ] १. जिसकी नाप, तौल की गई हो या मालूम हो। सीमा, संख्या आदि से बद्ध। २. न अधिक न कम। उचित परिमाण में। ३. कम। थोड़ा।

**परिमिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नाप, तौल, सीमा आदि। २. मर्यादा। इज्जत।

**परिमेय**—वि० [ सं० ] १. जो नापा या तौला जा सके। २. ससीम। संकुचित। ३. जिसे नापना या तौलना हो।

**परिमोक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पूर्ण मोक्ष। निर्वाण। २. परित्याग। छोड़ना।

**परिमोक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुक्त करना या होना। २. परित्याग करना।

**परियंक***—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

**परियंत***—अव्य० दे० "पर्यंत"।

**परिया**—संज्ञा पुं० [ तामिल परयान ] दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति।

**परिरंभ, परिरंभण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिरंभ्य, परिरंभी ] गले या छाती से लगाकर मिलना। आलिंगन।

**परिरंभना**—क्रि० स० [ सं० परिरंभ+ना ( प्रत्य० ) ] आलिंगन करना। गले लगाना।

**परिलंबन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भाचक्र का २७° विषुवद्रेखा से एक ओर हिंडोले की तरह जाकर फिर लौट आना और इसी प्रकार दूसरी ओर २७° तक पेंग लेकर पुनः अपने स्थान पर चला आना।

**परिलेख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखाएँ हों। ढाँचा। खाका। २. चित्र। तसवीर। ३. कूँची या कलम जिससे रेखा या चित्र खींचा जाय। ४. उल्लेख। वर्णन।

**परिलेखन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना। २. चित्र अंकित करना। ३. वर्णन या उल्लेख करना।

**परिलेखना**—क्रि० स० [ सं० परिलेख+ना ( प्रत्य० ) ] समझना। मानना।

**परिवर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिवर्जनीय ] मना करना।

**परिवर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फेरा। घुमाव। चक्कर। २. बदला। विनिमय। ३. जो बदले मे लिया या दिया जाय। बदला।

**परिवर्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घूमने, फिरने या चक्कर खानेवाला। २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला। उलटने-पलटनेवाला। ३. बदलनेवाला। ४. जो बदला जा सके।

**परिवर्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती ] १. घुमाव। फेरा। चक्कर। आवर्तन। २. दो वस्तुओं का परस्पर अदल-बदल। विनिमय। तबादला। ३. जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय। ४. एक रूप छोड़ कर दूसरा रूप धारण करना। ५. रूपांतर।

**परिवर्तित**—वि० [ सं० ] १. बदला हुआ। रूपांतरित। २. जो बदले में मिला हो।

**परिवर्ती**—वि० [ सं० परिवर्तिनी ] १. परिवर्तनशील। बार बार बदलनेवाला। २. बदला करनेवाला। ३. जो बराबर घूमे।

**परिवर्द्धन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिवर्धित ] संख्या, गुण आदि में किसी वस्तु की खूब वृद्धि करना या होना। परिवृद्धि।

**परिवर्द्धित**—वि० [ सं० ] बढ़ा या बढ़ाया हुआ।

**परिवह**—संज्ञा [ सं० ] १. सात पवनों में से छठा पवन। २. अग्नि की एक जीभ।

**परिवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रतिपदा ] किसी पक्ष की पहली तिथि। पड़िवा।

**परिवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] निंदा। अपवाद।

**परिवादी**—वि० [ सं० ] निंदा

करनेवाला ।

**परिवार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ढकनेवाली चीज । आवरण । ढकना । २. तलवार की खोली । म्यान । कोष । ३. वे लोग जो किसी राजा या रईस की सवारी में उसके पीछे उसे घेरे हुए चलते हैं । परिषद । ४. कुटुम्ब । कुनबा । खानदान । ५. एक प्रकार, स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह । कुल ।

**परिवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ठहरना । टिकना । २. घर । मकान । ३. सुगंध ।

**परिवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जल का बाँध, मेंड़ या दीवार के ऊपर से उछलकर बहना ।

**परिवृत**—वि० [ सं० ] ढका, छिपाया या घिरा हुआ । वेष्टित । आवृत ।

**परिवृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु । वेष्टन ।

**परिवृत्त**—वि० [ सं० ] १. उलटा पलटा हुआ । २. घेरा हुआ । वेष्टित । ३. समाप्त ।

**परिवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. घुमाव । चक्कर । गरदिश । २. घेरा । वेष्टन । ३. विनिमय । बदला । ४. समाप्ति । अंत । ५. ऐसा शब्द-परिवर्तन जिसमें अर्थ में कोई अंतर न आने पावे । ( व्याकरण )

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु को देकर दूसरी के लेने अर्थात् लेन-देन या अदल-बदल का कथन होता है ।

**परिवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० दे० "परिवर्तन" ।

**परिवेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूरा ज्ञान ।

**परिवेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पूरा ज्ञान । सम्यक् ज्ञान । २. विचरण । ३. लाभ । ४. विद्यमानता । ५. बहस । ६. भारी दुःख या कष्ट । ७. बड़े भाई के पहले छोटे भाई का ब्याह होना ।

**परिवेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घेरा ।

**परिवेष,परिवेषण**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० परिवेष्टव्य, परिवेष्य ] १. ( खाना ) परसना । परोसना । २. घेरा । परिधि । वेष्टन । ३. सूर्य या चंद्र आदि के चारों ओर का मंडल । ४. परकोटा । कोट । शहर-पनाह ।

**परिवेष्टन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिवेष्टित ] १. चारों ओर से घेरना या वेष्टन करना । २. आच्छादन । आवरण । ३. परिधि । घेरा । दायरा ।

**परिव्रज्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. इधर-उधर भ्रमण । २. तपस्या । ३. भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना ।

**परिव्राज,परिव्राजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे । २. संन्यासी । यती । ३. परमहंस ।

**परिव्राट**—संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज" ।

**परिशिष्ट**—वि० [ सं० ] बचा हुआ । संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी पुस्तक या लेख का वह भाग जिसमें वे बातें दी गई हों जो किसी कारण यथास्थान न जा सकी हों और जिनके पुस्तक में न आने से वह अपूर्ण रह जाती हो । २. किसी पुस्तक का वह अतिरिक्त अंश जिसमें कुछ ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उसकी उपयोगिता या महत्त्व बढ़ता हो । ज़मीमा ।

**परिशीलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिशीलित ] १. विषय को खूब सोचते हुए पढ़ना । मननपूर्वक अध्ययन । २. स्पर्श ।

**परिशेष**—वि० [ सं० ] बचा हुआ । संज्ञा पुं० १. जो कुछ बच रहा हो । २. परिशिष्ट । ३. समाप्ति । अंत ।

**परिशोध, परिशोधन**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित ] १. पूरी तरह साफ या शुद्ध करना । २. ऋण या कर्ज की बेबाकी । चुकता ।

**परिश्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उद्यम । आयास । २. श्रम । मेहनत । मशक्कत । ३. थकावट । श्रांति । माँदगी ।

**परिश्रमी**—वि० [ सं० परिश्रमिन् ] जो बहुत श्रम करे । उद्यमी । मेहनती ।

**परिश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आश्रय । पनाह की जगह । २. सभा । परिषद् ।

**परिश्रांत**—वि० [ सं० ] थका हुआ ।

**परिश्रुत**—वि० [ सं० ] विख्यात । प्रसिद्ध ।

**परिषत्**—संज्ञा स्त्री० दे० "परिषद्" ।

**परिषद्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणों की वह सभा जिसे राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था और जिसका निर्णय सर्वमान्य होता था । २. सभा । मजलिस । ३. समूह । समाज । भीड़ ।

**परिषद्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सदस्य । सभासद । २. मुसाहब । दरबारी । ३. दे० "परिषद्" ।

**परिष्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संस्कार । शुद्धि । सफाई । २. [illegible]

ता । निर्मलता । ३. गहना । जेवर । ४. शोभा । ५. सजावट । सिंगार ।

**परिक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शुद्ध करना । शोधन । २. माँजना-धोना । ३. सँवारना । सजाना ।

**परिष्कृत**—वि० [ सं० ] १. साफ या शुद्ध किया हुआ । २. माँजा या धोया हुआ । ३. सँवारा या सजाया हुआ ।

**परिसंख्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गणना । गिनती । २. एक अर्थालंकार जिसमें पूछी या बिना पूछी हुई बात उसी के सदृश दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से वर्जित करने के अभिप्राय से कही जाय । यह दो प्रकार का होता है—प्रश्नपूर्वक और बिना प्रश्न का ।

**परिसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आस-पास की जमीन । २. मैदान । ३. पड़ोस । ४. स्थिति । ५. मृत्यु ।

**परिसर्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परिक्रिया । परिक्रमण । २. घूमना-फिरना । ३. किसी की खोज में जाना । ४. साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक में किसी का किसी की खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना । ५. सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कुष्ठों में से एक ।

**परिसेवना, परिसेवा**—संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा" ।

**परिस्तान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हों । २. वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों विशेषतः स्त्रियों का जमघट हो ।

**परिस्फुट**—वि० [ सं० ] १. बिलकुल प्रकट या खुला हुआ । २. व्यक्त । प्रकाशित । प्रकट । ३. खूब खिला हुआ ।

**परिस्यंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] झरना । क्षरण ।

**परिहँस***—संज्ञा पुं० दे० "परिहास" ।

**परिहृत**—वि० [ सं० ] मृत । मरा हुआ ।

**परिहरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिहरणीय, परिहर्त्तव्य, परिहृत ] १. जबरदस्ती ले लेना । छीन लेना । २. परित्याग । छोड़ना । तजना । ३. दोष, अनिष्टादि का उपचार या उपाय करना । निवारण । निराकरण ।

**परिहरना***—क्रि० स० [ सं० परिहरण ] त्यागना । छोड़ना । तज देना ।

**परिहस***—संज्ञा पुं० [ सं० परिहास ] १. परिहास । हँसी । दिल्लगी । २. ईर्ष्या । डाह ।
संज्ञा पुं० रंज । खेद । दुःख ।

**परिहा**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का छंद ।

**परिहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० परिहारक ] १. दोष, अनिष्ट, खराबी आदि का निवारण या निराकरण । २. दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय । इलाज । उपचार । ३. परित्याग । तजने या त्यागने का कार्य । ४. पशुओं के चरने के लिए परती छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि । चरहा । ५. लड़ाई में जीता हुआ धनादि । ६. कर या लगान की माफी । छूट । ७. खंडन । तरदीद । ८. नाटक में किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना । ( साहित्यदर्पण ) ९. तिरस्कार । १०. उपेक्षा ।
संज्ञा पुं० [ सं० ] राजपूतों का एक वंश जो अग्निकुल के अंतर्गत माना जाता है

**परिहारना***—क्रि० स० [ सं० प्रहार ] प्रहार करना ।

**परिहारना**—क्रि० स० [ सं० परिहार + ना (प्रत्य०) ] १. परिहार करना । दूर करना । २. दे० "परिहरना" ।

**परिहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० परिहारिन् ] निवारण, त्याग, दोषखंडन, हरण या गोपन करनेवाला ।

**परिहार्य**—वि० [ सं० ] १. जिसका परिहार किया जा सके । जिससे बचा जा सके । जो दूर किया जा सके । २. जिसका निवारण, त्याग या उपचार करना उचित हो ।

**परिहास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हँसी । दिल्लगी । मजाक । २. क्रीड़ा । खेल ।

**परिहित**—वि० [ सं० ] १. चारों ओर से छिपा या ढँका हुआ । २. पहना हुआ ।

**परी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्रियाँ । २. परम सुंदरी । अत्यंत रूपवती ।

**परीक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० परीक्षिका ] परीक्षा करने या लेनेवाला । इम्तहान करने या लेनेवाला ।

**परीक्षण**—संज्ञा पुं० दे० "परीक्षा" ।

**परीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गुण, दोष आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने भालने का कार्य । समीक्षा । समालोचना । २. वह कार्य जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि जाने जायँ । इम्तहान । ३. अनुभवार्थ प्रयोग । ४. निरीक्षण । जाँच-पड़ताल । ५. वह विधान जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के [illegible]

या बड़े होने का निश्चय करते थे।

**परीक्षित**—वि॰ [ सं॰ ] जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।
संज्ञा पुं॰ अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा। कहते हैं कि जब तक्षक के काटने से इनकी मृत्यु हो गई, तब कलियुग का आरंभ हुआ था।

**परीक्ष्य**—वि॰ [ सं॰ ] परीक्षा करने योग्य।

**परीखना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "परखना"।

**परीछत***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "परीक्षित"।

**परीछा**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "परीक्षा"।

**परीछित***—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ परीक्षित ] अवश्य ही।

**परीज़ाद**—वि॰ [ फ़ा॰ ] अत्यंत सुंदर।

**परीत***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रेत"।

**परीशान**—वि॰ दे॰ "परेशान"।

**परीषह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] जैन शास्त्रों के अनुसार त्याग या सहन। ये २२ प्रकार के कहे गये हैं।

**परुखा***—वि॰ दे॰ "परुष"।

**परुखाई***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ परुष+आई ( प्रत्य॰ ) ] परुषता। कठोरता।

**परुष**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ परुषा ] १. कठोर। कड़ा। सख्त। २. बुरा लगनेवाला ( शब्द, वचन, आदि )। ३. निष्ठुर। निर्दय। बेरहम।

**परुषता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. कठोरता। कड़ाई। २. ( वचन या शब्द की ) कर्कशता। ३. निर्दयता।

**परुषत्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] परुषता।

**परुषा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. काव्य में वह वृत्ति, रीति या शब्द-योजना की प्रणाली जिसमें टवर्गीय, द्वित्व, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण तथा लंबे लंबे समास अधिक आए हों। २. रावी नदी।

**परे**—अव्य॰ [ सं॰ पर ] १. उस ओर। उधर। २. बाहर। अलग। ३. ऊपर। बढ़कर। ४. बाद। पीछे।

**परेई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ परेवा ] १. पेंडुकी। फाखता। २. मादा कबूतर।

**परेखना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ प्रेक्षण ] १ परखना। जाँचना। २. आसरा देखना।

**परेखा***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ परीक्षा ] १. परीक्षा। जाँच। २. विश्वास। प्रतीति। ३. पछतावा। अफसोस। खेद।

**परेग**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ पेग ] छोटा काँटा।

**परेड**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ] सैनिकों आदि की कवायद। प्रदर्शन।

**परेत**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रेत"।

**परेता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ परितः ] १. जुलाहों का एक औजार जिस पर वे सूत लपेटते हैं। २. पतंग की डोर लपेटने का बेलन

**परेर**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पर=दूर, ऊँचा + एर ] आकाश। आसमान।

**परेवा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पारावत ] [ स्त्री॰ परेई ] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। फाखता। २. कबूतर। ३. तेज उड़नेवाला पक्षी। ४. चिट्ठी-रसाँ। हरकारा।

**परेश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] ईश्वर।

**परेशान**—वि॰ [ फ़ा॰ ] व्यग्र। व्याकुल। उद्विग्न।

**परेशानी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] व्याकुलता। उद्विग्नता। व्यग्रता।

**परों***†—क्रि॰ वि॰ दे॰ "परसों"।

**परोक्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. अनुपस्थिति। अभाव। ग़ैरहाज़िरी। २. परम ज्ञानी।
वि॰ [ सं॰ ] १. जो देख न पड़े। २. गुप्त। छिपा हुआ।

**परोजन**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रयोजन"।

**परोना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "पिरोना"।

**परोपकार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह काम जिससे दूसरों का भला हो। दूसरे के हित का काम।

**परोपकारी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ परोपकारिन् ] [ स्त्री॰ परोपकारिणी ] दूसरों की भलाई करनेवाला।

**परोरना**†—क्रि॰ स॰ [ ? ] मंत्र पढ़कर फूकना।

**परोरा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पटोल ] परवल।

**परोल**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ पेरोल ] सैनिकों का संकेत का शब्द जिसके बोलने से पहरे पर के सिपाही बोलनेवाले को आने या जाने से नहीं रोकते।
परोल पर छूटना = किसी बंदी का अवधि के भीतर कुछ दिनों के लिए जेल से छूटना।

**परोसना**†—क्रि॰ स॰ दे॰ "परसना"।

**परोसा**†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ परोसना ] एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो कहीं भेजा जाता है।

**परोहन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ प्ररोहण ] वह जिस पर कोई सवार हो, या कोई चीज लादी जाय।

**पर्जंक***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पर्यंक"।

**पर्जन्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बादल। मेघ। २. विष्णु। ३. इंद्र।

**पर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ का पत्ता ।

**पर्णकुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] केवल पत्तों की बनी हुई कुटी । पर्णशाला । झोंपड़ी ।

**पर्णशाला**—संज्ञा स्त्री० दे० "पर्णकुटी" ।

**पर्णी**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्णिन् ] वृक्ष । पेड़ ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ ।

**पर्त**—संज्ञा स्त्री० दे० "परत" ।

**पर्दा**—संज्ञा पुं० दे० "परदा" ।

**पर्पट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पित्त-पापड़ा । २ पापड़ ।

**पर्पटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सौराष्ट्र देश की मिट्टी । गोपीचंदन । २. पानड़ी । ३. पपड़ी । ४. स्वर्ण-पर्पटी नामक औषध ।

**पर्पटी रस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैद्यक में एक प्रकार का रस ।

**पर्यंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पलँग ।

**पर्यंत**—अव्य० [ सं० ] तक । लौं ।

**पर्यटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भ्रमण । घूमना-फिरना ।

**पर्यवसान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पर्य्यवसित ] १. अंत । समाप्ति । २. शामिल हो जाना । ३. ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना ।

**पर्यवेक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पर्यवेक्षित ] अच्छी तरह देखना । निरीक्षण ।

**पर्यसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पर्यस्त ] १. दूर करना । हटाना । २. फेंकना । ३. नष्ट करना ।

**पर्यस्तापह्नुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह अर्थालंकार जिसमें वस्तु का गुण गोपन करके उस गुण का किसी दूसरे में आरोपित किया जाना वर्णन किया जाय ।

**पर्याप्त**—वि० [ सं० ] १. पूरा । काफी । यथेष्ट । २. प्राप्त । मिला हुआ । ३. समर्थ ।

**पर्याय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समानार्थवाची शब्द । जैसे, 'विष' का पर्याय 'हलाहल' है । २. क्रम । सिलसिला । ३. वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णित हो या अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होने का वर्णन हो ।

**पर्यायोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह शब्दालंकार जिसमें कोई बात साफ न कहकर घुमाव-फिराव से कही जाय, अथवा जिसमें किसी रमणीय मिस या व्याज से कार्य साधन किए जाने का वर्णन हो ।

**पर्यालोचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पूरी जाँच-पड़ताल । समीक्षा ।

**पर्युपासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेवक । दास ।

**पर्युपासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेवा ।

**पर्व**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्वन् ] १. धर्म, पुण्यकार्य्य अथवा उत्सव आदि करने का समय । पुण्यकाल । २. चातुर्मास्य । ३. प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा अथवा अमावस्या तक का समय । पक्ष । ४. दिन । ५. क्षण । ६. अवसर । मौका । ७. उत्सव । ८. संधिस्थान । ९. भाग । टुकड़ा । हिस्सा ।

**पर्व-काल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह समय जब कि कोई पर्व हो । पुण्य-काल ।

**पर्वणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पूर्णिमा ।

**पर्वत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जमीन के ऊपर आस-पास की जमीन से बहुत अधिक उठा हुआ प्राकृतिक भाग जो प्रायः पत्थर ही होता है । पहाड़ । २. किसी चीज का बहुत ऊँचा ढेर । ३. वृक्ष । पेड़ । ४. दशनामी संप्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी ।

**पर्वतनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती ।

**पर्वतराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बहुत बड़ा पहाड़ । २. हिमालय पर्वत ।

**पर्वतारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र ।

**पर्वतास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकते ही शत्रु की सेना पर बड़े बड़े पत्थर बरसने लगते थे, अथवा अपनी सेना के चारों ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे ।

**पर्वती**—वि० दे० "पर्वतीय" ।

**पर्वतीय**—वि० [ सं० ] १. पहाड़ी । पहाड़ संबंधी । २. पहाड़ पर रहने, होने या बसनेवाला ।

**पर्वतेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिमालय ।

**पर्वर**—संज्ञा पुं० दे० "परवल" ।

वि० दे० "परवर" ।

**पर्वरिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] पालन-पोषण । पालना-पोसना ।

**पर्वसंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय । २. सूर्य्य अथवा चंद्रमा को ग्रहण लगने का समय ।

**पर्वाह**—संज्ञा स्त्री० दे० "परवाह" ।

**पर्विणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पर्व" ।

**पर्हेज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. रोग आदि के समय अपथ्य वस्तु का त्याग । २. अलग रहना । दूर रहना ।

**पर्लंका**‡—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पर+लंका ] बहुत दूर का स्थान ।

**पलँगा**—संज्ञा पुं० [सं० पल्यंक] [स्त्री० अल्पा० पलँगड़ी] अच्छी और बड़ी चारपाई। पर्यंक।

**पलँगपोश**—संज्ञा पुं० [हिं० पलंग+फ़ा० पोश] पलंग पर बिछाने की चादर।

**पलँगिया**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलंग+इया (प्रत्य०)] छोटा पलंग। खटिया।

**पल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समय का एक प्राचीन विभाग जो २½ मिनट या २४ सेकंड के बराबर होता है। घड़ी या दंड का ६०वाँ भाग। २ चार कर्ष की एक तौल। ३. मांस। ४. धान का पयाल। ५. धोखेबाजी। प्रतारणा। ६. तराजू। तुला।

संज्ञा पुं० [सं० पलक] १. पलक। दृगंचल।

मुहा०—पल मारते या पल मारने में=बहुत ही जल्दी। आँख झपकते। तुरंत।

२. समय का अत्यंत छोटा विभाग। क्षण। लहमा।

मुहा०—पल के पल में=बहुत ही अल्पकाल में। क्षण भर में।

**पलक**—संज्ञा स्त्री० [सं० पल+क] १. क्षण। पल। लहमा। २. आँख के ऊपर का चमड़े का परदा। पपोटा तथा बरौनी।

मुहा०—पलक झपकते=अत्यंत अल्प समय में। बात कहते। किसी के रास्ते में या किसी के लिए पलक बिछाना=किसी का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना। पलक भाँजना=पलक गिराना या हिलाना। पलक मारना=१. आँखों से संकेत या इशारा करना। २. पलक झपकाना या गिराना। पलक लगना=१. आँखें मुँदना। पलक झपकना। २. नींद आना। झपकी लगना। पलक से पलक न लगना=१. टकटकी बँधी रहना। २. नींद न आना।

**पलक-दरिया**†—वि० [हिं० पलक+फ़ा० दरिया] बहुत बड़ा दानी। अति उदार।

**पलकनेवाज**†—वि० दे० "पलक-दरिया"।

**पलका***—संज्ञा पुं० [सं० पर्यंक] [स्त्री० पलकी] पलंग। चारपाई।

**पलचर**—संज्ञा पुं० [सं० पल+चर] एक उपदेवता जिसका वर्णन राजपूतों की कथाओं में है।

**पलटन**—संज्ञा स्त्री० [अं० प्लैटून] १. अँगरेजी पैदल सेना का एक विभाग जिसमें २०० के लगभग सैनिक होते हैं। २. दल। समुदाय। झुंड।

**पलटना**—क्रि० अ० [सं० प्रलोठन] १. उलट जाना। (क्व०) २. अवस्था या दशा बदलना। परिवर्त्तन होना। काया-पलट हो जाना। ३. अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना। ४. मुड़ना। घूमना। पीछे फिरना। ५. लौटना। वापस होना।

क्रि० स० १ उलटना। औंधाना। २. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। काया पलट देना। ३. फेरना। बार बार उलटना। ४ बदलना। एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना। ५. बदले में लेना। बदला करना। (अप्रयुक्त) ६. एक बात से मुकरकर दूसरी कहना। * ७. लौटाना। फेरना। वापस करना।

**पलटनिया**—संज्ञा पुं० [हिं० पलटन] पलटन में काम करनेवाला। सिपाही। सैनिक।

**पलटा**—संज्ञा पुं० [हिं० पलटना] १. पलटने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन।

मुहा०—पलटा खाना=दशा या स्थिति का उलट जाना।

२ बदला। प्रतिफल। ३. गाने में जल्दी जल्दी थोड़े से स्वरों पर चक्कर लगाना या उनका उच्चारण करना।

**पलटाना**—क्रि० स० [हिं० पलटना] १. लौटाना। फेरना। वापस करना। २. बदलना। (क्व०)

**पलटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलटना] १. पलटे या पलटे जाने की क्रिया या भाव। २. बदली। तबादला।

**पलटे**†—क्रि० वि० [हिं० पलटा] बदले में। एवज में। प्रतिफल-स्वरूप।

**पलड़ा**†—संज्ञा पुं० [सं० पटल] तराजू का पल्ला। तुलापट।

**पलथी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० पर्यस्त] वह आसन जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठते हैं। स्वस्तिकासन। पालथी।

**पलना**—क्रि० अ० [सं० पालन] १. पालने का अकर्मक रूप। परवरिश पाना। पालापोसा जाना। २. खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट होना। तैयार होना।

*†संज्ञा पुं० दे० "पालना"।

**पलनाना**†*—क्रि० स० [हिं० पलान=जीन+ना (प्रत्य०)] घोड़े पर जीन कसकर उसे चलने के लिए तैयार करना।

**पलवा***†—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] अँजुली। चुल्लू।

**पलवाना**—क्रि० स० [हिं० पालना का प्रेरणा० रूप] किसी से पालन कराना।

**पलवैया**—संज्ञा पुं० [हिं० पालना+

वैया (प्रत्य०)] पालन करनेवाला। पालक।

**पलस्तर**—संज्ञा पुं० [अं० प्लास्टर] दीवार आदि पर का मिट्टी, चूने आदि के गारे का लेप। लेट।

**मुहा०**—पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना= बहुत परेशान होना। नसें ढीली हो जाना।

**पलहना***—क्रि० अ० [सं० पल्लव] पल्लवित होना। पल्लव फूटना। पनपना। लहलहाना।

**पलहा***—संज्ञा पुं० [सं० पल्लव] कोमल पत्ते। कोंपल।

**पलांडु**—संज्ञा पुं० [सं०] प्याज।

**पला**—संज्ञा पुं० [सं० पल] पल। निमिष।

*संज्ञा पुं० [सं० पटल] १. तराजू का पलड़ा। पल्ला। *२. पल्ला। आँचल। ३. पार्श्व। किनारा।

**पलाद्**—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

**पलान**—संज्ञा पुं० [सं० पल्याण] वह गद्दी या चारजामा जो जानवरों की पीठ पर लादने या चढ़ने के लिए कसा जाता है।

**पलानना***—क्रि० स० [हिं० पलान +ना (प्रत्य०)] १. घोड़े आदि पर पलान कसना। २. चढ़ाई की तैयारी करना।

**पलाना***†—क्रि० अ० [सं० पलायन] भागना। पलायन करना।

क्रि० स० पलायन कराना। भगाना।

**पलानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पलान] १. छप्पर। २. दे० "पलान"। एक अलंकार।

**पलायक**—संज्ञा पुं० [सं०] भागनेवाला। भगू।

**पलायन**—संज्ञा पुं० [सं०] भागने की क्रिया या भाव। भागना।

**पलायमान**—वि० [सं०] भागता हुआ।

**पलायित**—वि० [सं०] भागा हुआ।

**पलाश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पलास। ढाक। टेसू। २. पत्र। पत्ता। ३. राक्षस। ४. कचूर। ५. मगध देश।

वि० १. मांसाहारी। २. निर्दय।

**पलाशी**—वि० [सं० पलाशिन्] १. मांसाहारी। २. पत्र-विशिष्ट। पत्रयुक्त। संज्ञा पुं० राक्षस।

**पलास**—संज्ञा पुं० [सं० पलाश] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष जो तीन रूपों में पाया जाता है—वृक्ष रूप में, क्षुप रूप में और लता रूप में। इसके फूल को प्रायः टेसू कहते हैं। पलास। ढाक। टेसू। केसू। २. गीध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी।

**पलास**—संज्ञा पुं० [अं० प्लायर्स] एक प्रकार की सड़सी।

**पलिका***—संज्ञा पुं० दे० "पलका"।

**पलित**—वि० [सं०] [स्त्री० पलिता] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. पका हुआ या सफेद (बाल)।

संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का उजला होना। बाल पकना। २. ताप। गरमी।

**पली**—संज्ञा स्त्री० [सं० पलिघ] तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बड़े बरतन से निकालने का लोहे का एक उपकरण।

**मुहा०**—पली पली जोड़ना = थोड़ा थोड़ा करके संचय या संग्रह करना।

**पलीता**—संज्ञा पुं० [फ़ा० फ़लीतः] [स्त्री० अल्पा० पलीती] १. बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज जिस पर कोई यंत्र लिखा हो। २. वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। ३. कपड़े की वह बत्ती जिसे पनशाखे पर रखकर जलाते हैं।

वि० बहुत क्रुद्ध। आग-बबूला।

**पलीद**—वि० [फ़ा०] १. अपवित्र। गंदा। २. घृणास्पद। ३. नीच। दुष्ट।

संज्ञा पुं० [हिं० पलीत] भूत। प्रेत।

**पलुआ**†—संज्ञा पुं० [हिं० पलना] पालतू। पाला हुआ।

**पलुहना***†—क्रि० अ० [हिं० पल्लव] पल्लवित होना। हरा-भरा होना।

**पलुहाना***†—क्रि० स० [हिं० पलुहना] पल्लवित करना। हरा-भरा करना।

**पलेड़ना***†—क्रि० स० [सं० प्रेरण] ढकेलना। धक्का देना।

**पलेथन**—संज्ञा पुं० [सं० परिस्तरण] १. वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय लोई पर लपेटते हैं। परथन।

**मुहा०**—पलेथन निकालना=१. खूब मार पड़ना या खाना। २. परेशान होना। तंग होना।

२. किसी हानि या अपकार के पश्चात् उसी के संबंध से होनेवाला अनावश्यक व्यय।

**पलोटना**—क्रि० स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। २. दे० "पलटना"।

क्रि० अ० [हिं० पलटना] कष्ट से लोटना-पोटना। तड़फड़ाना।

**पलोथन**—संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।

**पलोवना***—क्रि० स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। पैर मलना। २. सेवा करना।

**पलोसना***—क्रि० स० [हिं० परसना] १. धोना। २. मीठी मीठी बातें करके ढंग पर लाना।

**पल्टा**—संज्ञा पुं० दे० "पलटा"।
**पल्लव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नए निकले हुए कोमल पत्तों का समूह या गुच्छा। कोंपल। कल्ला। २. हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण। ३. विस्तार। ४. बल। ५. पहलव देश। ६. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उड़ीसा से तुंगभद्रा नदी तक था।
**पल्लवग्राही**—वि० [ सं० ] केवल ऊपर ऊपर से ज्ञान प्राप्त करनेवाला।
**पल्लवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पल्लव उत्पन्न करना या निकालना। २. किसी बात या विषय का विस्तार करना।
**पल्लवना***-क्रि० अ० [ सं० पल्लव+ना (प्रत्य०) ] पल्लवित होना। पत्ते फेंकना। पनपना।
**पल्लवित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पल्लविता ] १. जिसमें नए नए पत्ते हों। २. हरा-भरा। ३. लंबा-चौड़ा। ४. जिसके रोंगटे खड़े हों।
**पल्ला**—क्रि० वि० [ सं० पर या पार] दूर।
संज्ञा पुं० दूरी।
संज्ञा पुं० [ ? ] १. कपड़े का छोर। आँचल। दामन।
**मुहा०**—पल्ला छूटना=पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना=किसी से कुछ माँगना। पल्ले पड़ना=प्राप्त होना। मिलना। (किसी के) पल्ले बाँधना=जिम्मे किया जाना। २. दूरी। ३. † पास। अधिकार में। ४. तरफ।
संज्ञा पुं० [ सं० पटल ] १. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। २. किवाड़। पटल। ३. पहल। ४. तीन मन का बोझ।
संज्ञा पुं० [ सं० पल ] तराजू में एक ओर का टोकरा या डलिया। पलड़ा।
**मुहा०**-पल्ला झुकना या भारी होना=पक्ष बलवान् होना।
संज्ञा पुं० [ सं० फल ] कैंची के दो भागों में से एक भाग।
वि० दे० "परला"।
**पल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा गाँव। पुरवा। खेड़ा। २. कुटी।
**पल्लीओर**—दूसरी ओर।
**पल्लू**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पल्ला ] १. आँचल। छोर। दामन। २. चौड़ी गोट। पट्टा।
**पल्ले**†*—वि० दे० १. "परलय"। २. दे० "पल्ला"।
**पल्लेदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० पल्ला+फ़ा० दार ] १. अनाज ढोनेवाला मजदूर। २. गल्ला तौलनेवाला आदमी। बया।
**पल्लेदारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पल्लेदार +ई (प्रत्य०) ] पल्लेदार का काम।
**पल्लौ**†—संज्ञा पुं० [ सं० पल्लव ] पल्लव।
संज्ञा पुं० वह चद्दर या गोन जिसमें अनाज बाँधते हैं। पल्ला।
**पल्वल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छोटा तालाब या गड्ढा।
**पवंगा**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का छंद।
**पवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। हवा।
**मुहा०**—पवन का भूसा होना=उड़ जाना। कुछ न रहना।
२. कुम्हार का आँवाँ। ३. जल। पानी। ४. श्वास। साँस। ५. प्राण-वायु।
*संज्ञा पुं० दे० "पावन"।
**पवन-अस्त्र**—संज्ञा पुं० दे० "पवनास्त्र"।
**पवन-कुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
**पवन-चक्की**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पवन+हिं० चक्की ] वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो।
**पवन-चक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० [ बवंडर।
**पवन-तनय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
**पवन-पति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वायु के अधिष्ठाता देवता।
**पवन-परीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक क्रिया जिसके अनुसार अषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य कहते हैं।
**पवन पुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
**पवन-बाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह बाण जिसके चलाने से हवा वेग से चलने लगे।
**पवन-सुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हनुमान्। २. भीमसेन।
**पवनाशन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] साँप।
**पवनाशी**—संज्ञा पुं० [ सं० पवनाशिन् ] १. वह जो हवा खाकर रहता हो। २. साँप।
**पवनास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अस्त्र। कहते हैं कि इसके चलाने से तेज हवा चलने लगती थी।
**पवनी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाना=प्राप्त करना ] गाँवों में रहनेवाली वह छोटी प्रजा जो अपने निर्वाह के लिए गाँववालों से कुछ पाती है। जैसे, नाऊ, बारी, धोबी।
**पवमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पवन। वायु। हवा। २. गार्हपत्य

अग्नि ।

वि० पवित्र करनेवाला ।

**पवर, पवरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि" ।

**पवर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प, फ, ब, भ, म ये पाँच अक्षर हैं ।

**पवाँर**—संज्ञा पुं० दे० "परमार" ।

**पवाँरना**†—क्रि० स० [ सं० प्रवारण ] फेंकना । गिराना ।

**पवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँव ] १. एक पैर का जूता । २. चक्की का एक पाट ।

**पवाड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पँवाड़ा" ।

**पवाना**†—क्रि० स० [ हिं० पाना, भोजन करना का सकर्मक ] खिलाना । भोजन कराना ।

**पवार**—संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद ।

**पवि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वज्र । २. बिजली । गाज । ३. वाक्य ।

**पवितार्ड***—वि० स्त्री० दे० "पवित्रता" ।

**पवित्तर**†—वि० दे० "पवित्र"

**पवित्र**—वि० [ सं० ] जो गंदा, मैला या खराब न हो । शुद्ध । निर्मल । साफ ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेंह । बारिश । वर्षा । २. कुशा । ३. ताँबा । ४. जल । ५. दूध । ६. यज्ञोपवीत । जनेऊ । ७. घी । ८. शहद । ९. कुशा की बनी हुई पवित्री जिसे श्राद्धादि में उँगलियों में पहनते हैं । १०. विष्णु । ११. महादेव ।

**पवित्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पवित्र या शुद्ध होने का भाव । स्वच्छता । सफाई ।

**पवित्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तुलसी । २. हल्दी । ३. पीपल । ४. रेशमी माला जो कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है ।

**पवित्रात्मा**—वि० [ सं० पवित्रात्मन् ] जिसकी आत्मा पवित्र हो । शुद्ध अंतःकरणवाला ।

**पवित्रित**—वि० [ सं० ] शुद्ध या निर्मल किया हुआ ।

**पवित्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पवित्र ] कुश का बना छल्ला जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है ।

**पशम**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० पश्म ] १. बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं । २. उपस्थ पर के बाल । शष्प । ३. बहुत ही तुच्छ वस्तु ।

**पशमीना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पशम । २. पशम का बना हुआ कपड़ा ।

**पशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार पैरों से चलनेवाला कोई जंतु जिसके शरीर का भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो । जैसे, कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा इत्यादि । २. जीव मात्र । प्राणी । ३. देवता

**पशुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पशु का भाव । जानवरपन । २. मूर्खता और औद्धत्य ।

**पशुत्व**—संज्ञा पुं० दे० "पशुता" ।

**पशुधर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पशुओं का सा आचरण । मनुष्य के लिए निंद्य व्यवहार ।

**पशुपतास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव का शूलास्त्र ।

**पशुपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव । महादेव । २. अग्नि । ३. ओषधि ।

**पशुपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पशुओं को पालनेवाला । पशुओं का रक्षक ।

**पशुभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पशुत्व । जानवरपन । २. तंत्र में मंत्र के साधन के तीन प्रकारों में से एक ।

**पशुराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह ।

**पश्चात्**—अव्य० [ सं० ] पीछे । पीछे से । बाद । फिर । अनंतर ।

**पश्चात्ताप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अनुताप । अफसोस । पछतावा ।

**पश्चात्तापी**—संज्ञा पुं० [ सं० पश्चात्तापिन् ] पछतावा करनेवाला ।

**पश्चानुताप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पश्चात्ताप ।

**पश्चिम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह दिशा जिसमें सूर्य्य अस्त होता है । प्रतीची । पच्छिम ।

**पश्चिमवाहिनी**—वि० [ सं० ] पश्चिम की ओर बहनेवाली । (नदी आदि) ।

**पश्चिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पच्छिम दिशा ।

**पश्चिमाचल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अस्ताचल ।

**पश्चिमी**—वि० [ सं० ] १. पश्चिम की ओर का । २. पश्चिम संबंधी । पच्छिम का ।

**पश्चिमोत्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना । वायुकोण ।

**पश्तो**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] पश्चिमोत्तर-भारत की एक आर्य्य भाषा जिसमें फारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं ।

**पश्म**—संज्ञा स्त्री० दे० "पशम" ।

**पश्मीना**—संज्ञा पुं० दे० 'पशमीना' ।

**पश्यंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाद की दूसरी अवस्था या स्वरूप जब कि वह मूलाधार से उठकर हृदय में आता है ।

**पश्यतोहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह

जो आँखों के सामने से चीज चुरा ले। जैसे, सुनार आदि।

**पश्वाचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० पश्वाचारी ] तांत्रिकों के अनुसार कामना और संकल्पपूर्वक वैदिक रीति से देवी का पूजन। वैदिकाचार।

**पष***†—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष ] १. पंख। डैना। २. तरफ। ओर। ३. पक्ष। पाख।

**पषा**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष ] दाढ़ी। श्मश्रु।

**पषान**—संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

**पषारना***†—क्रि० स० [ सं० प्रक्षालन ] धोना।

**पसंघा**†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पासंग ] वह बोझ जिसे तराजू के पल्लों का बोझ बराबर करने लिए हलके पल्ले की तरफ बाँध देते हैं। पासंग। वि० बहुत ही थोड़ा या कम।

**मुहा०**—पसंघा भी न होना=कुछ भी न होना। बहुत ही तुच्छ होना।

**पसंती***—संज्ञा स्त्री० दे० "पसयंती"।

**पसंद**—वि० [ फ़ा० ] रुचि के अनुकूल। मनोनीत। जो अच्छा लगे। संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति। अभिरुचि।

**पसनी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्र श ] अन्नप्राशन नामक संस्कार।

**पसर**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रसर ] गहरी की हुई हथेली। करतलपुट। आधी अंजली। †संज्ञा पुं० [ सं० प्रसार ] विस्तार। फैलाव।

**पसरना**—क्रि० अ० [ सं० प्रसरण ] १. आगे की ओर बढ़ना। फैलना। २. विस्तृत होना। बढ़ना। ३. पैर फैलाकर लेटना।

**पसरहट्टा**—संज्ञा पुं० [हिं० पसारी + हाट ] वह बाजार जिसमें पंसारियों आदि की दूकानें हों।

**पसराना**—क्रि० स० [ सं० प्रसारण] दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना।

**पसरौहाँ***†—वि० [ हिं० पसरना + औहाँ ( प्रत्य० ) ] जो पसरता हो। फैलनेवाला।

**पसली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पर्शुका ] मनुष्यों और पशुओं आदि के शरीर में छाती पर के पंजर की आड़ी और गोलाकार हड्डियों में से कोई हड्डी।

**मुहा०**—पसली फड़कना या फड़क उठना=मन में उत्साह होना। जोश आना। हड्डी पसली तोड़ना=बहुत मारना-पीटना।

**पसाउ**†*—संज्ञा पुं० [सं० प्रसाद ] प्रसाद। प्रसन्नता। कृपा।

**पसाना**—क्रि० स० [ सं० स्रावण ] १. भात में से माँड़ निकालना। २. पसेव निकालना या गिराना। †*क्रि० अ० [ सं० प्रसन्न ] प्रसन्न होना।

**पसार**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रसार ] १. पसरने की क्रिया या भाव। प्रसार। फैलाव। २. विस्तार। लंबाई-चौड़ाई।

**पसारना**—क्रि० स० [ सं० प्रसारण ] आगे की ओर बढ़ाना। फैलाना।

**पसारा**—संज्ञा पुं० दे० "पसार"।

**पसारी**—संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

**पसाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० पसाना ] पसाने पर निकलनेवाला पदार्थ। माँड़। पीच।

**पसावन**—संज्ञा पुं० दे० "पसाव"।

**पसाहन***—संज्ञा पुं० [ सं० प्रसाधन ] अंगराग।

**पसिंजर**—संज्ञा पुं० [ अं० पैसिंजर ] रेल या जहाज आदि का यात्री। संज्ञा स्त्री० मुसाफिरों के लिए वह गाड़ी जो हर स्टेशन पर ठहरती चलती है।

**पसित***—वि० [ सं० पश ] बँधा हुआ।

**पसीजना**—क्रि० अ० [ सं० प्र+स्विद् ] १. घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंश का रस रसकर बाहर निकलना। रसना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। दयार्द्र होना।

**पसीना**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रस्वेदन ] वह जल जो परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर शरीर से निकलने लगता है। प्रस्वेद। स्वेद। श्रमवारि।

**पसुरी***—†संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

**पसूज**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] वह सिलाई जिसमें सीवे तोपे भरे जाते हैं।

**पसूजना**—क्रि० स० [ देश० ] सीना। सिलाई करना।

**पसेउ**†—संज्ञा पुं० दे० "पसेव"।

**पसेरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँच + सेर + ई ( प्रत्य० ) ] पाँच सेर का बाट। पंसेरी।

**पसेव**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रस्राव ] १. किसी चीज में से रसकर निकला हुआ जल। २. पसीना।

**पसोपेश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पस व पेश ] १. आगा-पीछा। सोच-विचार। हिचक। दुबिधा। २. हानि-लाभ। ऊँच-नीच।

**पस्त**—वि० [ फ़ा० ] १. हारा हुआ। २. थका हुआ। ३. दबा हुआ।

**पस्तहिम्मत**—वि० [ फ़ा० ] भीरु। डरपोक। कायर।

**पस्सी बबूल**—संज्ञा पुं० [ पस्सी ? +

हिं० बबूल ] एक प्रकार का पहाड़ी बबूल।

**पहँ***—अव्य० [ सं० पार्श्व ] १ निकट। पास। २. से।

**पहँसुल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रह=झुका हुआ + शूल ] हँसिया के आकार का तरकारी काटने का एक औजार।

**पह***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।

**पहचनवाना**—क्रि० स० [ हिं० पहचानना का प्रे० ] पहचानने का काम कराना।

**पहचान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रत्यभिज्ञान ] १. पहचानने की क्रिया या भाव। २. किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया या भाव। ३. लक्षण। निशानी। ४. पहचानने या भेद समझने की शक्ति। ५. जान-पहचान। परिचय। (क्व०)

**पहचानना**—क्रि० स० [ हिं० पहचान ] १. देखते ही जान लेना कि यह कौन व्यक्ति, या क्या वस्तु है। चीन्हना। २. किसी वस्तु के रूप-रंग या शक्ल-सूरत से परिचित होना। ३. अंतर समझना या करना। बिलगाना। ४. योग्यता या विशेषता से अभिज्ञ होना।

**पहटना**†—क्रि० स० [ सं० प्रखेट ] पीछा करना। खदेड़ना।

**पहन***—संज्ञा पु० दे० "पाहन"।

**पहनना**—क्रि० स० [ सं० परिधान ] शरीर पर धारण करना। परिधान करना।

**पहनवाना**—क्रि० स० [ हिं० 'पहनना' का प्रे० ] किसी और के द्वारा किसी को कुछ पहनाना।

**पहनाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पहनना ] १. पहनने की क्रिया या भाव। २. पहनाने की मजदूरी या उजरत।

**पहनाना**—क्रि० स० [ हिं० पहनना ] दूसरे को कपड़े, आभूषण आदि धारण कराना।

**पहनावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पहनना ] १. पहनने के मुख्य मुख्य कपड़े। परिच्छद। परिधेय। पोशाक। २. विशेष अवस्था, स्थान अथवा समाज में ऊपर पहने जानेवाले कपड़े। ३. कपड़े पहनने का ढंग या चाल।

**पहपट**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं। २. शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। ३. बदनामी या अपवाद का शोर। ४. छल। धोखा। फरेब।

**पहपटबाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० पहपट + फ़ा० बाज़ ] [ संज्ञा पहपटबाजी ] १. शरारती। झगड़ालू। २. ठग। धोखेबाज।

**पहपटहाई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पहपट+हाई (प्रत्य०) ] झगड़ा कराने या लगानेवाली।

**पहर**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रहर ] १. एक दिन का चतुर्थांश। तीन घंटे का समय। २. समय। जमाना। युग।

**पहरना**†—क्रि० स० दे० "पहनना"।

**पहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पहर ] १. किसी वस्तु या व्यक्ति के लिए आदमियों का यह देखने के लिए बैठना कि वह निर्दिष्ट स्थान से हटने या भागने न पावे। रक्षक-नियुक्ति। रक्षा अथवा निगहबानी का प्रबंध। चौकी।

**मुहा०**—पहरा बदलना=नया रक्षक नियुक्त करके पुराने को छुट्टी देना। रक्षक बदलना। पहरा बैठना=किसी वस्तु या व्यक्ति के आस-पास रक्षक बैठाया जाना।

२. किसी व्यक्ति या वस्तु के संबंध में यह देखते रहने की क्रिया कि वह निर्दिष्ट स्थान से हट न सके। रखवाली। हिफाजत। निगहबानी।

**मुहा०**—पहरा देना=रखवाली करना।

३. उतना समय जितने में एक रक्षक अथवा रक्षक-दल को रक्षाकार्य्य करना पड़ता है। तैनाती। नियुक्ति। ४. वे रक्षक या चौकीदार जो एक समय में काम कर रहे हों। रक्षकदल। गारद। (क्व०) ५. चौकीदार का गश्त या फेरा। ६. चौकीदार की आवाज। ७. पहरे में रहने की स्थिति। हिरासत। हवालात। नजरबंदी।

**मुहा०**—पहरे में देना या रखना=हिरासत में देना। हवालात भेजना। पहरे में होना=हिरासत में होना। नजरबंद होना।

*† ८. समय। युग। जमाना।

संज्ञा पुं० [ हिं० पौर+रा, पौरा ] आ जाने का शुभ या अशुभ प्रभाव। पौरा।

**पहराइत***—संज्ञा पुं० [ हिं० पहरा] पहरेदार।

**पहराना**†—क्रि० स० दे० "पहनाना"।

**पहरावन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पहराना] १. पहनावा। पोशाक। २. दे० "पहरावनी"।

**पहरावनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पहराना ] वह पोशाक जो कोई बड़ा छोटे को दे। खिलअत।

**पहरी**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रहरी ] पहरेदार। चौकीदार। रक्षक। पहरा देनेवाला।

**पहरुआ, पहरू**†—संज्ञा पुं० दे० "पहरेदार"।

**पहरेदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० पहरा + दार (प्रत्य०) ] पहरा देनेवाला।

चौकीदार। रक्षक।

**पहल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पहलू, मि० सं० पटल ] १. किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोरों अथवा कोनों के बीच की समतल भूमि । बगल । पहलू । बाजू । तरफ । २. जमी हुई रूई अथवा ऊन । ३. रजाई, तोशक आदि से निकाली हुई पुरानी रूई । *४. तह । परत ।

संज्ञा पुं० [ हिं० पहला ] किसी कार्य्य का अपनी ओर से आरंभ । छेड़ ।

**पहलदार**—वि० [ हिं० पहल + फ़ा० दार ] जिसमें पहल हों। पहलूदार।

**पहलवान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ संज्ञा पहलवानी ] १. कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष । कुश्तीबाज । मल्ल । २. बलवान् तथा डील-डौलवाला ।

**पहलवानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] पहलवान होने का भाव, काम या पेशा ।

**पहलवी**—संज्ञा पुं० दे० "पह्लवी" ।

**पहला**—वि० [ सं० प्रथम ] [ स्त्री० पहली ] जो क्रम के विचार से आदि में हो । आरंभ का । प्रथम ।

**पहलू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. बगल और कमर के बीच का वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं । पार्श्व । पाँजर । २. दायाँ अथवा बायाँ भाग । पार्श्व भाग । बाजू । बगल । ३. करवट । *बल । दिशा । तरफ । ४. [ वि० पहलूदार ] किसी वस्तु के पृष्ठदेश पर का समतल कटाव । पहल । ५. गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग । पक्ष ।

**पहले**—अव्य० [ हिं० पहला ] १. आरंभ में । सर्व-प्रथम । आदि में । शुरू में । २. देशक्रम में प्रथम । स्थिति में पूर्व । ३. आगे । पेश्तर । ४. बीते समय में । पूर्व काल में ।

**पहले-पहल**—अव्य० [ हिं० पहले ] पहली बार । सबसे पहले । सर्व-प्रथम ।

**पहलौठा**—वि० [ हिं० पहल + औठा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० पहलौठी ] पहली बार के गर्भ से उत्पन्न । (लड़का)

**पहलौठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पहलौठा ] पहले-पहल बच्चा जनना । प्रथम प्रसव ।

**पहाँटना**—क्रि० स० [ ? ] तेज करना ।

**पहाड़**—संज्ञा पुं० [ सं० पाषाण ] [ स्त्री० अल्पा० पहाड़ी ] १ पत्थर, चूने, मिट्टी आदि की चट्टानों का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो । पर्वत । गिरि ।

**मुहा०**—पहाड़ उठाना=भारी काम सिर पर लेना । पहाड़ टूटना या टूट पड़ना=अचानक कोई भारी आपत्ति आ पड़ना । महान् संकट उपस्थित होना । पहाड़ से टक्कर लेना=जबर-दस्त से मुकाबिला करना ।

२. बहुत भारी ढेर । ऊँची राशि । ३. बहुत भारी चीज । ४. वह जिसको समाप्त या शेष न कर सकें । ५. अति कठिन कार्य्य । दुष्कर काम ।

**पहाड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रस्तार ] किसी अंक के गुणनफलों की क्रमागत सूची या नक्शा । गुणन सूची ।

**पहाड़ी**—वि० [ हिं० पहाड़ + ई (प्रत्य०) ] १. जो पहाड़ पर रहता या होता हो । २ जिसका संबंध पहाड़ से हो ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पहाड़ + ई (प्रत्य०) ] १. छोटा पहाड़ । २. पहाड़ के लोगों की गाने की एक धुन ।

**पहार, पहारू**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पहरा ] पहरेदार ।

**पहिचान**—संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान" ।

**पहिचानि***—संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान" ।

**पहित, पहिती***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पहित ] पकी हुई दाल ।

**पहिनना**—क्रि० स० दे० "पहनना" ।

**पहियाँ***‡—अव्य० दे० "पहँ" ।

**पहिया**—संज्ञा पुं० [ सं० परिधि ? ] गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाड़ी या कल भी चलती है । चक्का । चक्र । चक्कर ।

**पहिरना**†—क्रि० स० दे० "पहनना" ।

**पहिरावनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा" ।

**पहिला** वि० [ हिं० पहला ] [ स्त्री० पहिली ] १. दे० "पहला" । २. प्रथम प्रसूता । पहले पहल ब्याई हुई ।

**पहिले**—अव्य० दे० "पहले" ।

**पहीति***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पहिती" ।

**पहुँच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रभूत ] १. किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति । २. किसी स्थान तक लगातार फैलाव । ३. गुजर । पैठ । प्रवेश । रसाई । ४. पहुँचने की सूचना । रसीद । ५. किसी विषय को समझने या ग्रहण करने की शक्ति । पकड़ । दौड़ । ६. अभिज्ञता की सीमा । परिचय । प्रवेश । दखल ।

**पहुँचना**—क्रि० अ० [ सं० प्रभूत ] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या प्राप्त होना ।

**मुहा०**—पहुँचा हुआ=ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ । सिद्ध ।

२. किसी स्थान तक लगातार फैलना। ३. एक हालत से दूसरी हालत में आना। ४. घुसना। पैठना। प्रविष्ट होना; ५. किसी के अभिप्राय या आशय को जान लेना। ताड़ना। समझना। ६. समझने में समर्थ होना।

**मुहा०**—पहुँचनेवाला=जानकार। भेद या रहस्य जानने में समर्थ। पहुँचा हुआ=१. जिसे सब कुछ मालूम हो। अभिज्ञ। पता रखनेवाला। २. दक्ष। निपुण। उस्ताद।

७ आई अथवा भेजी हुई चीज किसी को मिलना। प्राप्त होना। मिलना। ८ अनुभव में आना। अनुभूत होना। ९ समकक्ष होना। तुल्य होना।

**पहुँचा**—संज्ञा पुं० [सं० प्रकोष्ठ] हाथ की कुहनी के नीचे का भाग। कलाई। गट्टा। मणिबंध।

**पहुँचाना**—क्रि० स० [हिं० पहुँचना का सकर्मक] १. किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से ले जाकर दूसरे स्थान पर प्राप्त या प्रस्तुत कराना। पुहाना। उपस्थित कराना। ले जाना। २. किसी के साथ इसलिए जाना जिसमें वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना। ४. प्रविष्ट कराना। ५. कोई चीज लाकर या ले जाकर किसी को प्राप्त कराना। ६. अनुभव कराना। ७. समान बना देना।

**पहुँची**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहुँचा] १. कलाई पर पहनने का एक आभूषण। २. युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

**पहु***—संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।

**पहुड़ना**—क्रि० अ० दे० "पौढ़ना"।

**पहुना**†—संज्ञा पुं० दे० "पाहुना"।

**पहुनाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पहुना + ई (प्रत्य०)] १. पाहुना होने का भाव। अतिथि-रूप में कहीं जाना या आना। २. अतिथिसत्कार। मेहमानदारी।

**पहुप***†—संज्ञा पुं० दे० "पुष्प"।

**पहुमी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।

**पहुला**—संज्ञा पुं० [सं० प्रफुल्ला] कुमुदिनी।

**पहेली**—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १. किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन जो दूसरी वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़े और बहुत सोच-विचार से उस पर घटाया जा सके। बुझौवल। २. घुमाव-फिराव की बात। समस्या।

**मुहा०**—पहेली बुझाना=अपने मतलब को घुमा-फिराकर कहना। चक्करदार बात करना।

**पह्लव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। प्रायः प्राचीन पारसी या ईरानी। २. एक प्राचीन देश जो पह्लव जाति का निवास-स्थान था। वर्त्तमान पारस या ईरान का अधिकांश।

**पह्लवी**—संज्ञा स्त्री० [फा० अथवा सं० पह्लव] अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ता की भाषा और आधुनिक फारस के मध्यवर्ती काल की फारसी भाषा।

**पाँ, पाँइ***—संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव।

**पाँइता***—संज्ञा पुं० दे० "पाँयता"।

**पाँईबाग**—संज्ञा पुं० [फा०] महलों के चारों ओर का छोटा बाग जिसमें राजमहल की स्त्रियाँ सैर करने जाती हैं।

**पाँउँ***†—संज्ञा पुं० [सं० पाद] पाँव। पैर।

**पाँक**—संज्ञा पुं० [सं० पंक] कीचड़। पंक।

**पाँख**†—संज्ञा पुं० [सं० पक्ष] पक्ष। पर।

संज्ञा स्त्री० [सं० पक्ष्म] फूलों की पँखड़ी। पुष्पदल।

**पाँखड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

**पाँखी***†—संज्ञा स्त्री० [सं० पक्षी] १. पतंगा। २. पक्षी। चिड़िया।

**पाँखुरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

**पाँगा, पाँगा नोन**—संज्ञा पुं० [सं० पंक] समुद्री नोन।

**पाँच**—वि० [सं० पंच] जो गिनती में चार और एक हो।

**मुहा०**—पाँचों उँगलियाँ घी में होना=सब तरह का लाभ या आराम होना। खूब बन आना। पाँचों सवारों में नाम लिखाना = औरों के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनाना।

संज्ञा पुं० [सं० पंच] १. पाँच की संख्या या अंक। ५। २. कई एक आदमी। बहुत से लोग। ३. जाति या बिरादरी के मुखिया लोग। पंच।

**पांचजन्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण के बजाने का शंख। २. विष्णु के शंख का नाम। ३. अग्नि।

**पांचभौतिक**—संज्ञा पुं० [सं०] पाँचों भूतों या तत्वों से बना हुआ शरीर।

**पांचाल**—संज्ञा पुं० दे० "पंचाल"।

वि० [सं०] १. पांचाल देश का रहनेवाला। २. पांचाल देश संबंधी।

**पांचाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुड़िया। कपड़े की पुतली। २. साहित्य में एक प्रकार की रीति या वाक्य-रचना-प्रणाली जिसमें बड़े बड़े पाँच-छः समासों से युक्त और कांतिपूर्ण पदावली होती है। ३. पांडवों की स्त्री द्रौपदी।

**पाँचैं†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पंचमी ] किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि। पंचमी।

**पाँजना**—क्रि० स० [ सं० प्रणद्ध ] धातु के टुकड़ों को टाँके लगाकर जोड़ना। झालना। टाँका लगाना।

**पाँजर**—संज्ञा पुं० [ सं० पंजर ] १. बगल और कमर के बीच का वह भाग जिसमें पसलियाँ होती हैं। २. पसली। ३. पार्श्व। पास। बगल।

**पाँजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पदाति ? ] नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें।

**पाँझ**—वि० दे० "पाँजी"।

**पांडव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। २. एक प्राचीन प्रदेश जो वितस्ता ( झेलम ) नदी के तीर पर था।

**पांडवनगर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिल्ली।

**पांडित्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पंडित होने का भाव। विद्वत्ता। पंडिताई।

**पांडु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पांडुफली। पारली। २. परमल। ३ कुछ लाली लिए पीला रंग। ४. सफेद हाथी। ५. सफेद रंग। ६. एक रोग का नाम जिसमें रक्त के दूषित हो जाने से शरीर का चमड़ा पीले रंग का हो जाता है। ७. प्राचीन काल के एक राजा का नाम जो पांडव वंश के आदि पुरुष थे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इनके पुत्र थे जो पांडव कहलाए।

**पांडुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पांडु होने का भाव, धर्म या क्रिया। पांडुत्व। पीलापन।

**पांडुर**—वि० [ सं० ] [भाव० पांडुरता] १. पीला। २. सफेद।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धौ का पेड़। २. कबूतर। ३. बगला। ४. सफेद खड़िया। ५. कामला रोग। ६. सफेद कोढ़।

**पांडुलिपि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लेख आदि का वह पहला रूप जो घटाने-बढ़ाने आदि के लिए तैयार किया जाय। मसौदा।

**पांडुलेख**—संज्ञा पुं० दे० "पांडुलिपि"।

**पाँड़े**—संज्ञा पुं० [ सं० पंडित ] १. सरयूपारी, कान्यकुब्ज और गुजराती आदि ब्राह्मणों की एक शाखा। २. कायस्थों की एक शाखा। ३. पंडित। विद्वान्। ४. शृगाल। गीदड़।

**पांडेय**—संज्ञा पुं० दे० "पाँड़े"।

**पाँत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पंक्ति ] १. कतार। पंगत। २. समूह। ३ एक साथ भोजन करनेवाले बिरादरी के लोग।

**पांथ**—वि० [ सं० ] १. पथिक। २. वियोगी। विरही।

**पांथनिवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सराय। चट्टी।

**पांथशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सराय। चट्टी।

**पाँयँ*†**—संज्ञा पुं० [सं० पाद] चरण। पैर।

**पाँयचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पाखाने आदि में बना हुआ वह स्थान जिस पर पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिए बैठते हैं। २. पायजामे का मोहरी जिससे पैर ढका जाता है।

**पाँयँता**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाँय+तल ] पलँग, खाट या बिस्तर का वह भाग जिसकी ओर पैर किए जाते हैं। पैताना।

**पाँवर*†**—वि० दे० "पामर"।

**पाँवरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँव+री (प्रत्य०) ] १. दे० "पाँवड़ी"। २. सोपान। सीढ़ी। ३. पैर रखने का स्थान। ४. जूता।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पौरि ] १. पौरी। ड्योढ़ी। २. बैठक। दालान।

**पांशु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. धूलि। रज। २. बालू। ३. गोबर की खाद।

**पांशुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

**पांशुल**—वि० [ सं० ] [स्त्री० पांशुला] १. लंपट। व्यभिचारी। २. मलिन। मैला।

**पाँस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पांशु ] १. सड़ी गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिए उनमें डाली जाती हैं। खाद। २. किसी वस्तु को सड़ाने पर उठा हुआ खमीर।

**पाँसना†**—क्रि० स० [ हिं० पाँस+ना (प्रत्य०) ] खेत में खाद देना।

**पाँसा**—संज्ञा पुं० [ सं० पाशक ] चार-पाँच अंगुल लंबे बत्ती के आकार के चौपहल टुकड़े जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।

**मुहा०**—पाँसा उलटना=किसी प्रयत्न का उलटा फल होना।

**पाँसुरी†**—संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

**पाँहा*†**—क्रि० वि० [ हिं० पँह ] निकट। पास। समीप।

**पाइ***—संज्ञा पुं० दे० "पाद"।

**पाइक***—संज्ञा पुं० दे० "पायक"।

**पाइतरी*†**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पादस्थली ] पलँग का वह भाग जहाँ सोनेवाले के पैर रहते हैं। पैताना।

**पाइल***—संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।

**पाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पाद, हिं० पाय ] १. एक ही घेरे में नाचने या चलने की क्रिया। मंडल। घूमना।

२. एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। ३. एक पैसा। (क्व०) ४. वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से एकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है। जैसे, ४।, अर्थात् सवा चार। ५. दीर्घ आकार-सूचक मात्रा। पूर्ण विराम सूचित करनेवाली खड़ी रेखा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पापा=पाई, कीड़ा ] एक छोटा लंबा कीड़ा जो धान को खराब कर देता है।

**पाउँ***|—संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।

**पाउडर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. चूर्ण। बुकनी। २. चेहरे या शरीर पर लगाने का चूर्ण।

**पाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पकाने की क्रिया। रींधना। २. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। ३. रसोई। पकवान। ४. वह औषध जो चाशनी में मिलाकर बनाई जाय। ५. खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। पचन। ६. वह खीर जो श्राद्ध में पिंडदान के लिए पकाई जाती है।

वि० [ फ़ा० ] १. पवित्र। शुद्ध। २. पापरहित। निर्मल। निर्दोष। ३. समाप्त।

**मुहा०**—झगड़ा पाक करना=१. किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। २. झगड़ा तै करना। बाधा दूर करना। ३. मार डालना। ४. साफ। शुद्ध।

**पाकठा**|—वि० [ हिं० पकना ] १. पका हुआ। २. तजरबेकार। ३. बली। मजबूत।

**पाकड़**—संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

**पाकदामन**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा पाकदामनी ] सच्चरित्र। सदाचारी। ( विशेषतः स्त्रियों के लिए )

**पाकना**—क्रि० अ० दे० "पकना"।

**पाकयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पाकयाज्ञिक ] १. गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम जिसमें खीर की आहुति दी जाती है। २. पंच महायज्ञों में ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव होम, बलि-कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि-भोजन।

**पाकर**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्कटी ] एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पंचवटों में माना जाता है। पाखर। पलखन।

**पाकरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पाकर"।

**पाकशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रसोई बनाने का घर। बावरचीखाना।

**पाकशासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**पाकस्थली**—संज्ञा स्त्री० दे० "पक्वाशय"।

**पाका**|—वि० दे० "पक्का"।

**पाकागार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रसोई-घर।

**पाकिस्तान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० पाकिस्तानी ] पूर्वी और पश्चिमी भारत का वह खंड जो उन प्रान्तों को मिलाकर बनाया गया है जिनमें मुसलमानों की बस्ती अधिक है।

**पाकेट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] जेब। खीसा।

**यौ०**—पाकेटमार=गिरहकट।

**पाक्य**—वि० [ सं० ] पचने योग्य।

**पाक्षिक**—वि० [ सं० ] १. पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखनेवाला। २. पक्षपाती। तरफदार। ३. दो मात्राओं का ( छंद )।

**पाखंड**—संज्ञा पुं० [ सं० पाषंड ] १. वेदविरुद्ध आचार। २. ढोंग। आडंबर। ढकोसला। ३. छल। धोखा। ४. नीचता। शरारत।

**मुहा०**—पाखंड फैलाना = किसी को ठगने के लिए उपाय रचना। मकर फैलाना।

**पाखंडी**—वि० [ सं० पाषंडिन् ] १. वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला। २. बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला। कपटाचारी। बगलाभगत। ३. धोखेबाज। धूर्त।

**पाख**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष ] १. पद्रह दिन। पखवाड़ा। २. मकान की चौड़ाई की दीवारों के वे भाग जो लंबाई की दीवारों से त्रिकोण के आकार में अधिक ऊँचे होते हैं और जिन पर 'बँड़ेर' रखते हैं। ३. पख। पर।

**पाखर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रक्षर ] लोहे की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है। चार आईना।

संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।

**पाखा**—संज्ञा पुं० [ सं० पक्ष ] १. कोना। छोर। २. दे० "पाख" (२)।

**पाखान***|—संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।

**पाखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। २. मल। गू। गलीज। पुरीष।

**पाग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पग ] पगड़ी।

संज्ञा पुं० [ सं० पाक ] १. दे० "पाक"। २. वह शीरा या चाशनी जिसमें मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती हैं। ३. चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि। ४. वह दवा या पुष्टई जो शीरे में पकाकर बनाई जाय।

**पागना**—क्रि० स० [ सं० पाक ] मीठी चाशनी में सानना या लपेटना। क्रि० अ० अत्यंत अनुरक्त होना।

**पागल**—वि० [ ? ] [ स्त्री० पगली, पागलिनी ] १. जिसका दिमाग ठीक न हो। बावला। सिड़ी। विक्षिप्त। २. जिसके होश-हवास दुरुस्त न हों। आपे से बाहर। ३. मूर्ख। बेवकूफ।

**पागलखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० पागल + फ़ा० खानः ] वह स्थान जहाँ पागलों का इलाज किया जाता है।

**पागलपन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पागल + पन ( प्रत्य० ) ] १. वह मानसिक रोग जिससे मनुष्य की बुद्धि और इच्छा-शक्ति आदि में अनेक प्रकार के विकार होते हैं। उन्माद। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. मूर्खता।

**पागुर**†—संज्ञा पुं० दे० "जुगाली"।

**पाचक**—वि० [ सं० ] पचाने या पकानेवाला।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह औषध जो पाचनशक्ति को बढ़ाने के लिए खाई जाती है। २. [ स्त्री० पाचिका ] रसोइया। बावर्ची। ३ पाँच प्रकार के पित्तों में से एक पित्त। ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि।

**पाचन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पचाना या पकाना। २. खाए हुए आहार का पेट में जाकर शरीर के धातुओं के रूप में परिवर्त्तन। ३. वह औषधि जो आम अथवा अपक्व दोष को पचावे। ४. प्रायश्चित्त। ५. खट्टा रस। ६. अग्नि।

वि० पचानेवाला। हाजिम।

**पाचनशक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह शक्ति जो भोजन को पचावे। हाजमा।

**पाचना***—क्रि० स० [ सं० पाचन ] अच्छी तरह पकाना। परिपक्व करना।

**पाचनीय**—वि० [ सं० ] पचाने या पकाने योग्य। पाच्य।

**पाचिका**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रसोई-दारिन। रसोई करनेवाली।

**पाच्छाह**†-संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

**पाच्य**—वि० [ सं० ] पचाने या पकाने योग्य। पचनीय।

**पाछ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाछना ] १. जंतु या पौधे के शरीर पर छुरी की धार आदि मारकर किया हुआ हलका घाव। २. पोस्ते के डोडे पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिससे अफीम निकलती है। ३. किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिए लगाया हुआ चीरा।

†संज्ञा पुं० [ सं० पश्चात् ] पीछा। पिछला भाग।

क्रि० वि० पीछे।

**पाछना**—क्रि० स० [ हिं० पाछ ] छुरे या नहरनी आदि से रक्त, पंछा या रस निकालने के लिए हलका चीरा लगाना। चीरना।

**पाछल**—वि० दे० "पिछला"।

**पाछा***—संज्ञा पुं० दे० "पीछा"।

**पाछिल***—वि० दे० "पिछला"।

**पाछे, पाछैं***—क्रि० वि० दे० "पीछे"।

**पाज**—संज्ञा पुं० [ सं० पाजस्य ] पाँजर।

संज्ञा पुं० ( ? ) १ पंक्ति। कतार। २. दीवार। बाँध।

**पाजामा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पैर में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, तमान, इजार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नैपाली आदि।

**पाजी***—संज्ञा पुं० [ सं० पदाति ] १ पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २. रक्षक। चौकीदार।

वि० [ सं० पाय्य ] दुष्ट। लुच्चा।

**पाजीपन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाजी + पन ( प्रत्य० ) ] दुष्टता। कमीनापन। नीचता।

**पाजेब**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] स्त्रियों का एक गहना जो पैरों में पहना जाता है। मंजीर। नूपुर।

**पाटंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रेशमी वस्त्र।

**पाट**—संज्ञा पुं० [सं० पट्ट] १. रेशम। २. बटा हुआ रेशम। नख। ३. रेशम के कीड़े का एक भेद। ४. पटसन के रेशे। ५. राजासन। सिंहासन। गद्दी। ६. चौड़ाई। फैलाव। ७. पटला। पीढ़ा। ८. वह शिला जिस पर धोबी कपड़ा धोता है। ९ चक्की के एक ओर का भाग। १०. वस्त्र। कपड़ा।

**पाटन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाटना ] १. पाटने का क्रिया या भाव। पटाव। २ वह जो पाटकर बनाया जाय। ३. मकान की पहली मंजिल से ऊपर की मंजिलें। ४. सर्प का विष उतारने का एक मंत्र जो रोगी के कान के पास चिल्लाकर पढ़ा जाता है।

**पाटना**—क्रि० स० [ हिं० पाट ] १. किसी गहराई को मिट्टी, कूड़े आदि से भर देना। २. दो दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर-पार बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना। छत बनाना। ३. तृप्त करना। सींचना।

**पाटमहिषी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

**पाटरानी**-संज्ञा स्त्री० दे० "पटरानी"।

**पाटल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाडर या पाढर का पेड़।

**पाटला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाडर का वृक्ष। २. लाल लोध। ३. दुर्गा। ४. एक विशेष कारखाने का तैयार किया सोना।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बढ़िया सोना।

**पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जो इस समय भी बिहार का मुख्य नगर है। पटना।

**पाटली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पाडर। २ पांडुफली। ३. पटने की अधिष्ठात्री देवी।

**पाटव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पटुता। कुशलता। २. दृढता। मजबूती। ३. आरोग्य।

**पाटवी**—वि० [ हिं० पाट ] १. पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। २. रेशमी। कौषेय। (वस्त्र)

**पाटसन**—संज्ञा पुं० दे० "पटसन"।

**पाटा**—संज्ञा पुं० [हिं० पाट] लकड़ी का पीढ़ा।

**पाटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २. जोड़, बाकी, गुणा आदि का क्रम। ३ श्रेणी। पंक्ति।

संज्ञा पु० [ हिं० पाट ] १. लकड़ी की वह पट्टी जिस पर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पटिया। २. पाठ। सबक।

**मुहा०**—पाटी पढ़ना=पाठ पढ़ना। शिक्षा पाना।

३ माँग के दोनों ओर कंघी द्वारा बैठाए हुए बाल। पट्टी। पटिया। ४. चारपाई के ढाँचे में लंबाई की ओर की पट्टी। ५. चटाई। ६. शिला। चट्टान। ७. खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग।

**पाटीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का चंदन।

**पाठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पढने का क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. किसी पुस्तक विशेषतः धर्मपुस्तक का नियमपूर्वक पढ़ने की क्रिया या भाव। ३. वह जो कुछ पढ़ा या पढाया जाय। ४. उतना अंश जो एक बार पढ़ा जाय। सबक। संथा।

**मुहा०**—पाठ पढाना=अपने मतलब के लिए किसी को बहकाना। पट्टी पढ़ाना। उलटा पाठ पढ़ाना=कुछ का कुछ समझा देना। बहका देना।

५. परिच्छेद। अध्याय। ६. शब्दों या वाक्यों का क्रम या योजना।

**पाठक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पढनेवाला। वाचक। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक। ३. धर्मोपदेशक। ४ गौड़, सारस्वत, सरयूपारीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों का एक वर्ग।

**पाठदोष**—संज्ञा पुं० [सं०] पढ़ने का वह ढंग जो निंद्य और वर्जित है। जैसे कठोर स्वर से पढ़ना, या ठहर ठहर कर उच्चारण करना।

**पाठन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पढ़ाने की क्रिया या भाव। पढाना। अध्यापन।

**पाठना***-क्रि० स० दे० "पढ़ाना"।

**पाठभेद**—संज्ञा पुं० दे० "पाठांतर"।

**पाठशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ पढ़ाया जाय। मदरसा। विद्यालय। चटसाल।

**पाठांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थल पर भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम। दूसरा पाठ। पाठभेद।

**पाठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पाढ़ नाम की लता। यह दो प्रकार की होती है—छोटी और बड़ी।

संज्ञा पुं० [ सं० पुष्ट ] [ स्त्री० पाठी ] १. जवान और परिपुष्ट। हृष्ट-पुष्ट। मोटा-तगड़ा। २. जवान बैल, भैंसा या बकरा।

**पाठालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाठशाला।

**पाठावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पाठों का समूह। २. पाठों की पुस्तक।

**पाठी**—संज्ञा पुं० [ सं० पाठिन ] १. पाठ करनेवाला। पाठक। पढ़नेवाला। २. चीता। चित्रक वृक्ष।

**पाठ्य**—वि० [ सं० ] १. पढ़ने योग्य। पठनीय। २. जो पढ़ाया जाय।

**पाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाट ] १. धोती आदि का किनारा। २. मचान। पाइठ। ३ वह जाली जो कुएँ के मुँह पर रखी रहती है। कटकर। चह। ४ बाँध। पुश्ता। ५. वह तख्ता जिस पर खड़ा करके फाँसी दी जाती है। तिकठी।

**पाड़र**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पाटल ] पाटल नामक वृक्ष।

**पाड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० पट्टन ] महल्ला।

**पाढ़**—संज्ञा पुं० [ सं० पाटा ] १. पाटा। २. वह मचान जिस पर फसल की रखवाली के लिए खेतवाला बैठता है।

**पाढ़त***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पढ़ना ] १. जो कुछ पढ़ा जाय। २. मंत्र। जादू। ३. पढ़ने की क्रिया या भाव

**पाडर, पाडल**—संज्ञा पुं० [सं० पाटल] पाडर का पेड़।

**पाढ़ा**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन। चित्रमृग।
संज्ञा स्त्री० दे० "पाठा"।

**पाणि**—संज्ञा पुं० [सं०] हाथ। कर।

**पाणिग्रहण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है। २. विवाह। ब्याह।

**पाणिग्राहक**-संज्ञा पुं० [सं०] पति।

**पाणिज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उँगली। २ नख। नाखून।

**पाणिनि**-संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से प्रायः तीन चार सौ वर्ष पूर्व हुए थे और जिन्होंने अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ की रचना की थी।

**पाणिनीय**—वि० [सं०] १. पाणिनि-कृत (ग्रंथ आदि)। २. पाणिनि का कहा हुआ।

**पाणिनीय दर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण।

**पाणिपीड़न**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पाणिग्रहण। विवाह। २. क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना।

**पाणी**—संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

**पातंजल**—वि० [सं०] पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महाभाष्य)।
संज्ञा पुं० १. पतंजलि-कृत योगसूत्र। २. पतंजलि-प्रणीत महाभाष्य।

**पातंजल दर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] योगदर्शन।

**पातंजल भाष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ।

**पातंजल-सूत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] योगसूत्र।

**पात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। पतन। २. नाश। ध्वंस। मृत्यु। ३ पड़ना। जा लगना। ४. खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रांति-वृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं। ५. राहु।
*संज्ञा पुं० [सं० पत्र] पत्ता। पत्र।

**पातक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कर्म जिसके करने से नरक जाना पड़े। पाप। गुनाह।

**पातकी**—वि० [सं० पातकिन्] पातक करनेवाला। पापी। कुकर्मी।

**पातन**—संज्ञा पुं० [सं०] गिराने की क्रिया।

**पातर***†—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] पत्तल।
संज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या। रंडी।
*†—वि० [सं० पात्रट=पतला] १. पतला। सूक्ष्म। २. क्षीण। बारीक।
*†-वि० [हिं० पतला] १. दुर्बल शरीर का। पतला। २. नीचकुल का। अप्रतिष्ठित।

**पातल**—संज्ञा स्त्री० दे० "पातर"।

**पातव्य**—वि० [सं०] १. रक्षा करने योग्य। २. पीने योग्य।

**पातशाह**—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

**पाता***—संज्ञा पुं० दे० "पत्ता"।

**पाताबा**—संज्ञा पुं० दे० पायताबा।

**पातार***-संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।

**पाताल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। २. पृथ्वी से नीचे के लोक। अधोलोक। नागलोक। ३. विवर। गुफा। बिल। ४. बड़वानल। छंदःशास्त्र में वह चक्र जिसके द्वारा मात्रिक छंद की संख्या, लघु, गुरु, कला आदि का ज्ञान होता है।

**पाताल यंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कड़ी औषधियाँ पिघलाई जाती हैं या उनका तेल बनाया जाता है।

**पाताखत**†—संज्ञा पुं० [हिं० पात+अक्षत] पत्र और अक्षत। तुच्छ भेंट।

**पाति**†—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्र] १. पत्ती। दल। २. चिट्ठी। पत्र।

**पातित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पतित होने का भाव। गिरावट। २. अधःपतन।

**पातिव्रत, पातिव्रत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] पतिव्रता होने का भाव।

**पातिसाहि**—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

**पाती***—संज्ञा स्त्री० [सं० पत्री] १. चिट्ठी। पत्र। २. वृक्ष के पत्ते।
संज्ञा स्त्री० [हिं० पति] इज्जत। प्रतिष्ठा।

**पातुर**†—संज्ञा स्त्री० [सं० पातली] वेश्या।

**पात्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। बरतन। भाजन। २. वह जो किसी विषय का अधिकारी हो। जैसे, दानपात्र। ३. नाटक के नायक, नायिका आदि। ४. अभिनेता। नट। ५. पत्ता। पत्र।

**पात्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग

होने का भाव। योग्यता।

**पात्रत्व**—संज्ञा पुं० दे० "पात्रता"।

**पात्रदुष्ट रस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केशवदास के मत से एक प्रकार का रस-दोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझता है, रचना में उसके विरुद्ध कह जाता है।

**पात्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छोटा बरतन।

**पात्रीय**—वि० [ सं० ] पात्र-संबंधी। पात्र का।

**पाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० पाथस् ] १. जल। २. सूर्य। ३. अग्नि। ४. अन्न। ५. आकाश। ६. वायु।
संज्ञा पुं० [ सं० पथ ] मार्ग। राह।

**पाथना**—क्रि० स० [ सं० प्रथन ] १. सुडौल करना। गढ़ना। बनाना। २. थोप, पीट या दबाकर बड़ी बड़ी टिकिया या पटरी बनाना। ३. पीटना। ठोंकना। मारना।

**पाथनिधि**—संज्ञा पुं० दे० "पाथोधि"।

**पाथर**—संज्ञा पुं० दे० "पत्थर"।

**पाथेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रास्ते का कलेवा। २. पथिक का राहखर्च। संबल। राहखर्च।

**पाथोज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**पाथोधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**पाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चरण। पैर। पाँव। २ श्लोक या पद्य का चतुर्थांश। पद। चरण। ३. चौथा भाग। चौथाई। ४. पुस्तक का विशेष अंश। ५. वृक्ष का मूल। ६. नीचे का भाग। तल। ७. बड़े पर्वत के समीप में छोटा पर्वत। ८. चलना। गमन।
संज्ञा पुं० [ सं० पर्द ] वह वायु जो गुदा के मार्ग से निकले। अपान वायु। अधोवायु।

**पादक**—वि० [ सं० ] चलनेवाला। २ चौथाई। चतुर्थांश।

**पादग्रहण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैर छूकर प्रणाम करना।

**पादज**—वि० [ सं० ] पैर से उत्पन्न। संज्ञा पुं० शूद्र।

**पादटीका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो। फुटनोट।

**पादतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैर का तलवा।

**पादत्र, पादत्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खड़ाऊँ। २. जूता।

**पादना**—क्रि० अ० [ हिं० पाद ] वायु छोड़ना। अपान वायु का त्याग करना।

**पादप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वृक्ष। पेड़। २ बैठने का पीढ़ा।

**पादपीठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीढ़ा।

**पादपूरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्लोक या कविता के किसी चरण को पूरा करना। २. वह अक्षर या शब्द जो किसी पद को पूरा करने के लिए उसमें रखा जाय।

**पादप्रक्षालन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैर धोना।

**पादप्रणाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साष्टांग दंडवत्। पाँव पड़ना।

**पादप्रहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लात मारना। ठोकर मारना।

**पादरक्ष, पादरक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिससे पैरों की रक्षा हो। जैसे, जूता।

**पादरी**—संज्ञा पुं० [ पुर्त० पेड्रे ] ईसाई-धर्म का पुरोहित जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार और उपासना कराता है।

**पादवंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैर पकड़कर प्रणाम करना।

**पादशाह**—संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

**पादहीन**—वि० [ सं० ] १. जिसके तीन ही चरण हों। २. जिसके चरण न हों।

**पादाकुलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चौपाई।

**पादाक्रांत**—वि० [ सं० ] पददलित। पैर से कुचला हुआ। पामाल।

**पादाति, पादातिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पैदल सिपाही।

**पादारघ**—संज्ञा पुं० दे० "पाद्यार्घ"।

**पादी**—संज्ञा पुं० [ सं० पादिन् ] पैर-वाले जल-जंतु। जैसे-गोह, घड़ियाल आदि।

**पादीय** वि० [ सं० ] पदवाला। मर्यादावाला। जैसे, कुमारपादीय।

**पादुका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. खड़ाऊँ। २. जूता।

**पादोदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जल जिसमें पैर धोया गया हो। २. चरणामृत।

**पाद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ।

**पाद्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाद्य देने का एक भेद।

**पाद्यार्घ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २. पूजा की सामग्री। ३. पूजा में भेंट या नजर।

**पाधा**—संज्ञा पुं० [ सं० उपाध्याय ] १. आचार्य। उपाध्याय। २. पंडित।

**पान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी द्रव पदार्थ को गले के नीचे घूँट घूँट करके उतारना। पीना। २. मद्यपान। शराब पीना। ३. पीने का पदार्थ। पेय द्रव्य। ४. मद्य। ५. पानी। ६.

कटोरा । प्याला ।

*संज्ञा पुं० [ सं० प्राण ] प्राण ।

संज्ञा पुं० [ सं० पर्ण ] १. पत्ता । २. एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्तों का बीड़ा बनाकर खाते हैं । तांबूल-वल्ली ।

मुहा०—पान देना=दे० "बीड़ा देना" । पान-पत्ता= १. लगा या बना हुआ पान । २. तुच्छ पूजा या भेंट । पान फूल । पान फूल=१. सामान्य उपहार या भेंट । २. अत्यंत कोमल वस्तु । पान बनाना=१. पान में चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना । २. पान लगाना । पान लेना=दे० "बीड़ा लेना" ।

३. पान के आकार की कोई चीज । ४. ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक । *संज्ञा पुं० दे० "पाणि" ।

**पानगोष्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह सभा या मंडली जो शराब पीने के लिए बैठी हो ।

**पानड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पान+ड़ी (प्रत्य०) ] एक प्रकार की सुगंधित पत्ती ।

**पानदान**—संज्ञा पुं० [ हिं० पान+फ़ा० दान (प्रत्य०) ] वह डिब्बा जिसमें पान और उसके लगाने की सामग्री रखी जाती है । पनडब्बा ।

**पानारा**—संज्ञा पुं० दे० "पनारा" ।

**पानही**—संज्ञा स्त्री० दे० "पनही" ।

**पाना**—क्रि० स० [ सं० प्रापण ] १. अपने पास या अधिकार में करना । उपलब्ध करना । प्राप्त करना । हासिल करना । २. भला या बुरा परिणाम भोगना । ३. दी या खोई हुई चीज वापस मिलना । ४. पता पाना । भेद पाना । समझना । ५. कुछ सुन या जान लेना । ६. देखना । साक्षात् करना । ७. अनुभव करना । भोगना । उठाना । ८. समर्थ होना । सकना । (संयोज्य क्रिया में) ९. पास तक पहुँचना । १०. किसी बात में किसी के बराबर पहुँचना । बराबर होना । ११. भोजन करना । खाना । (साधु) १२. जानना । समझना ।

वि० जिसे पाने का हक हो । प्राप्तव्य । पावना ।

**पानागार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हों ।

**पानात्यय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक एक प्रकार का रोग जो बहुत मद्य पीने से होता है ।

**पानि**†—संज्ञा पुं० [ सं० पाणि ] हाथ ।

* संज्ञा पुं० दे० "पानी" ।

**पानिग्रहण***—संज्ञा पुं० दे० "पाणि-ग्रहण" ।

**पानिप**—संज्ञा पुं० [ हिं० पानी+प (प्रत्य०) ] १. आप । द्युति । कांति । चमक । आब । २. पानी ।

**पानी**—संज्ञा पुं० [ सं० पानीय ] १. एक प्रसिद्ध यौगिक द्रव द्रव्य जो पीने, स्नान करने और खेत आदि सींचने के काम आता है । यह समुद्रों, नदियों और कुओं में मिलता है और आकाश से बरसता है । जल । अंबु । तोय ।

मुहा०—पानी का बतासा या बुल-बुला=क्षणभंगुर वस्तु । पानी की तरह बहाना=अधाधुंध खर्च करना । उड़ाना या लुटाना । पानी के मोल=बहुत सस्ता । पानी टूटना=कुएँ, ताल आदि में इतना कम पानी रह जाना कि निकाला न जा सके । पानी देना= १. पानी से भरना । सींचना । २. पितरों के नाम अंजलि में लेकर गिराना । तर्पण करना । पानी पढ़ना=मंत्र पढ़कर पानी फूँकना । पानी पारना-पानी पढ़ना या फूँकना । पानी पानी होना=लज्जित होना । लज्जा से कट जाना । पानी फूँकना= मंत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना । (किसी पर) पानी फेरना या फेर देना=चौपट कर देना । मटियामेट कर देना । (किसी के सामने) पानी भरना=(किसी से तुलना में) अत्यंत तुच्छ प्रतीत होना । फीका पड़ना । पानी भरी खाल=अनित्य या क्षणभंगुर शरीर । पानी में आग लगाना=जहाँ झगड़ा होना असंभव हो, वहाँ झगड़ा करा देना । पानी में फेंकना या बहाना=नष्ट करना । बरबाद करना । सूखे पानी में डूबना=भ्रम में पड़ना । धोखा खाना । मुँह में पानी आना या छूटना=१. स्वाद लेने का गहरा लालच होना । २. गहरा लाभ होना ।

२. वह पानी का सा पदार्थ जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रसकर निकले । ३. मेंह । वर्षा । वृष्टि । ४. पानी जैसी पतली वस्तु । ५. किसी वस्तु का सार अंश जो जल के रूप में हो । रस । अर्क । जूस । ६. चमक । आब । कांति । छवि । ७. धारदार हथियारों के लोहे का वह हलका स्याह रंग जिससे उसकी उत्त-मता की पहचान होती है । आब । जौहर । ८. मान । प्रतिष्ठा । इज्जत । आबरू ।

मुहा०—पानी उतारना=अपमानित करना । इज्जत उतारना । पानी जाना= प्रतिष्ठा नष्ट होना । इज्जत जाना ।

९. वर्ष । साल । जैसे, पाँच पानी का सूअर । १०. मुलम्मा । ११. मरदा-नगी । जीवट । हिम्मत । १२. पशुओं

की वंशगत विशेषता या कुलीनता । १३. पानी की तरह ठंढा पदार्थ ।

**मुहा०**—पानी करना या कर देना=किसी के चित्त को ठंढा कर देना । किसी का गुस्सा उतार देना ।

१४. पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ । १५. लड़ाई या द्वंद्व-युद्ध । १६. बार । बेर । दफा । १७. जल-वायु । आब-हवा ।

**मुहा०**—पानी लगना=स्थान विशेष के जलवायु के कारण स्वास्थ्य बिगड़ना या रोग होना ।

*संज्ञा पुं० दे० "पाणि" ।

**पानीदार**—वि० [ हि० पानी + फा० दार (प्रत्य०) ] १. आबदार । चमकदार । २. इज्जतदार । माननीय । ३. आनवाला । मरदाना । साहसी ।

**पानीदेवा**—वि० [ हि० पानी + देवा=देनेवाला ] तर्पण या पिंडदान करनेवाला । वंशज ।

**पानीफल**—संज्ञा पुं० [ हि० पानी + सं० फल ] सिंघाड़ा ।

**पानीय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जल । वि० १. पीने योग्य । जो पीया जा सके । २. रक्षा करने योग्य । रक्षा-संबंधी ।

**पानूस***-संज्ञा पुं० दे० "फानूस" ।

**पानौरा**—संज्ञा पुं० [ हि० पान + बरा ] पान के पत्ते का पकौड़ी ।

**पान्यों***-संज्ञा पुं० दे० "पानी" ।

**पाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह कर्म जिसका फल इस लोक और परलोक में अशुभ हो । धर्म या पुण्य का उलटा । बुरा काम । गुनाह । अघ । पातक ।

**मुहा०**—पाप उदय होना=संचित पाप का फल मिलना । पिछले जन्मों के पाप का बदला मिलना । पाप कटना=पाप का नाश होना । पाप कमाना या बटोरना=पाप कर्म करना । पाप लगना=पाप होना । दोष होना ।

२. अपराध । कसूर । जुर्म । ३ वध । हत्या । ४. पाप-बुद्धि । बुरी नीयत । बुराई । ५. अनिष्ट । अहित । खराबी । ६. झंझट । जंजाल ।

**मुहा०**—पाप कटना=झगड़ा दूर होना । जंजाल छूटना । पाप मोल लेना=जान बूझकर किसी बखेड़े के काम में फँसना । पाप पड़ना*=मुश्किल पड़ जाना । कठिन हो जाना ।

७ पापग्रह । अशुभ ग्रह ।

**पापकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह काम जिसके करने में पाप हो ।

**पापकर्मा**—वि० दे० "पापी" ।

**पापगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छंदः-शास्त्र के अनुसार ठगण का आठवाँ भेद ।

**पापग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शनि, राहु, केतु आदि अशुभ फल देनेवाले ग्रह । ( फलित )

**पापघ्न**—वि० [ सं० ] जिससे पाप नष्ट हो ।

**पापचारी**—वि० [ सं० पापचारिन् ] [ स्त्री० पापचारिणी ] पापी । पाप करनेवाला ।

**पापड़**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्पट ] उर्द अथवा मूँग की धोई के आटे से बनाई हुई मसालेदार पतली चपाती ।

**मुहा०**—पापड़ बेलना=१. बड़ी मिहनत करना । २. कठिनाई या दुःख से दिन काटना । बहुत से पापड़ बेलना=बहुत तरह के काम कर चुकना ।

**पापड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्पट ] १. एक पेड़ जिसकी लकड़ी से कंघी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं । २. दे० "पित्तपापड़ा" ।

**पापदृष्टि**—वि० [ सं० ] १. जिसकी दृष्टि पापमय हो । २. जिसकी दृष्टि पड़ने से हानि पहुँचे ।

**पापनाशक, पापनाशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाप का नाश करनेवाला । पापनाशी । २. प्रायश्चित्त । ३. विष्णु । ४. शिव ।

**पापयोनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पाप से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि ।

**पापरोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह रोग जो कोई विशेष पाप करने से होता है । धर्मशास्त्रानुसार कुष्ठ, यक्ष्मा, पीनस, श्वेतकुष्ठ, मूकता, उन्माद, अपस्मार, अंधत्व, काणत्व आदि रोग पापरोग माने गए हैं । २ वसंत रोग । छोटी माता ।

**पापलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नरक ।

**पापहर**—वि० पुं० [ सं० ] पाप-नाशक ।

**पापाचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पापाचारी ] पाप का आचरण । दुराचार ।

**पापात्मा**—वि० [ सं० पापात्मन् ] पाप में अनुरक्त । पापी । दुष्टात्मा ।

**पापिष्ठ**—वि० [ सं० ] अतिशय पापी । बहुत बड़ा पापी ।

**पापी**—वि० [ सं० पापिन् ] [ स्त्री० पापिनी ] १. पाप करनेवाला । अघी । पातकी । २. क्रूर । निर्दय । नृशंस । पर-पीड़क ।

**पापीयस**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पापीयसी ] पापी । पातकी ।

**पापोश**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] जूता ।

**पाबंद**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा स्त्री० पाबंदी ] १. बँधा हुआ। बद्ध। अधीन। कैद। २. किसी बात का नियमित रूप से अनुसरण करनेवाला। ३. नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिए विवश।

**पाबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] पाबंद होने का भाव।

**पामड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पाँवड़ा"।

**पामर**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा पामरता ] १. खल। दुष्ट। कमीना। २. पापी। अधम। ३. नीच कुल या वंश में उत्पन्न। ४. मूर्ख। निर्बुद्धि।

**पामरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रावार ] दुपट्टा।

संज्ञा स्त्री० दे० "पाँवड़ी"।

**पामाल**—वि० [ फ़ा० पा+माल=रौंदना ] [ संज्ञा पामाली ] १. पैर से मला या रौंदा हुआ। पद-दलित। २. तबाह। बरबाद। चौपट।

**पायँ***†—संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।

**पायँजेहरि***—संज्ञा स्त्री० दे० "पाजेब"।

**पायँता**—संज्ञा पुं० [ हिं० पायँ+सं० स्थान ] पलँग या चारपाई का वह भाग जिधर पैर रहता है। सिरहाने का उलटा। पैताना।

**पायती**—संज्ञा स्त्री० दे० "पायँता"।

**पायदाज़**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पैर पोंछने का बिछावन।

**पाय***—संज्ञा पुं० [ सं० पाद ] पैर। पाँव।

**पायक**—संज्ञा पुं० [ सं० पादातिक, पायिक ] १. धावन। दूत। हरकारा। २. दास। सेवक। अनुचर। ३. पैदल सिपाही।

**पायतख्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] राजधानी।

**पायतन***—संज्ञा पुं० दे० "पायँता"।

**पायतावा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पैर का एक पहनावा जिससे उँगलियों से लेकर पूरी आधी टाँगें ढकी रहती हैं। मोजा। जुर्राब। २. जूते के भीतर तले के बराबर बिछा हुआ चमड़े आदि का टुकड़ा। सुखतला।

**पायदार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा पायदारी ] बहुत दिनों तक टिकनेवाला। टिकाऊ। दृढ़। मजबूत।

**पायमाल**—वि० दे० "पामाल"।

**पायरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पाय+रा ] रकाब।

**पायल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाय+ल (प्रत्य०) ] १. नूपुर। पाजेब। २. तेज चलनेवाली हथनी। ३. वह बच्चा, जन्म के समय जिसके पैर पहले बाहर हों।

**पायस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. खीर। २. सरल-निर्यास। सरई का गोंद।

**पायसा***†—संज्ञा पुं० [ सं० पार्श्व ] [ सं० पायस या परास ] पड़ोस। पड़ोस।

**पाया**—संज्ञा पुं० [ सं० पाद ] १. पलँग, चौकी आदि में खड़े डंडे या खंभे के आकार का वह भाग जिसके सहारे उसका ढाँचा ऊपर ठहरा रहता है। गोड़ा। पावा। २. खंभा। स्तंभ। ३. पद। दरजा। ओहदा। ४. सीढ़ी। जीना।

**पायाब**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा पायाबी ] इतना कम गहरा (जल) जो पैदल चलकर पार किया जा सके।

**पायी**-वि० [सं० पायिन्] पीनेवाला।

**पारंगत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पारंगता ] १. पार गया हुआ। २. पूर्ण पंडित। पूरा जानकार।

**पारंपरीण**—वि० [ सं० ] परंपरा से चला आया हुआ। परंपरा-गत।

**पारंपर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परंपरा का भाव। २. परंपराक्रम। ३. वंशपरंपरा।

**पार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नदी, झील आदि जलाशयों के आमने-सामने के दोनों किनारों में उस किनारे से भिन्न किनारा जहाँ (या जिसकी ओर) अपनी स्थिति हो। दूसरी ओर का किनारा।

**यौ०**—आर-पार=१ यह किनारा और वह किनारा। २. इस किनारे से उस किनारे तक।

**मुहा०**—पार उतरना=१. किसी काम से छुट्टी पाना। २. सिद्ध या सफलता प्राप्त करना। ३. समाप्त करना। ठिकाने लगाना। मार डालना। (नदी आदि) पार करना=१. जल आदि का मार्ग तै करना। २ पूरा करना। समाप्ति पर पहुँचाना। ३.निबाहना। बिताना। पार लगना=नदी आदि के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। किसी से पार लगना=पूरा हो सकना। हो सकना। पार लगाना=१. किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुँचाना। २. कष्ट या दुःख से बाहर करना। उद्धार करना। ३.पूरा करना। खतम करना। पार होना=१. किसी दूर तक फैली हुई वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। २. किसी काम को पूरा कर चुकना।

२. सामनेवाला दूसरा पार्श्व। दूसरी

ओर। दूसरी तरफ। ३. आमने-सामने के दोनों किनारों में से एक दूसरे की अपेक्षा से कोई एक। ओर। तरफ। ४. छोर। अंत। अखीर। हद। परिमिति।

**मुहा०**—पार पाना=अंत तक पहुँचना। समाप्ति तक पहुँचना। (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। जीतना।

अव्य० परे। आगे। दूर।

**पारई†**—संज्ञा स्त्री० दे० "पारा"।

**पारख*†**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पारख"। २. दे० "परख"। ३. दे० "पारखी"।

**पारखद***—संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।

**पारखी**—संज्ञा पुं० [हिं० पारख+ई (प्रत्य०)] १. वह जिसे परख या पहचान हो। २. परखनेवाला। परीक्षक।

**पारग**—वि० [सं०] १. पार जानेवाला। २. काम को पूरा करनेवाला। समर्थ। ३. पूरा जानकार।

**पारचा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. टुकड़ा। खंड। धज्जी (विशेषतः कपड़े, कागज आदि की)। २. कपड़ा। पट। वस्त्र। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४. पहनावा।

**पारजात***—संज्ञा पुं० दे० "पारिजात"।

**पारण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन और तत्संबंधी कृत्य। २. तृप्त करने की क्रिया या भाव। ३. मेघ। बादल। ४. समाप्ति।

**पारतंत्र्य**—संज्ञा पुं० [सं०] परतंत्रता।

**पारत्रिक**—वि० दे० "पारलौकिक"।

**पारथ**—संज्ञा पुं० दे० "पार्थ"।

**पारथिव**—संज्ञा पुं० दे० "पार्थिव"।

**पारद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पारा। २. पारस देश की प्राचीन जाति।

**पारदर्शक**—वि० [सं०] जिसमें आर-पार दिखाई पड़े। जैसे-शीशा पारदर्शक पदार्थ है।

**पारदर्शिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पारदर्शी होने का भाव।

**पारदर्शी**—वि० [सं० पारदर्शिन्] [स्त्री० पारदर्शिनी] १. उस पार तक देखनेवाला। २. दूरदर्शी। चतुर। बुद्धिमान्। ३. जो पूरा पूरा देख चुका हो।

**पारधी**—संज्ञा पुं० [सं० परिधान] १. बहेलिया। व्याध। २. शिकारी। ३. हत्यारा।

**पारन**—संज्ञा पुं० दे० "पारण"।

**पारना**—क्रि० स० [हिं० पारना (पड़ना) का स० रूप] १. डालना। गिराना। २. जमीन पर लंबा डालना। ३. लेटाना। ४. कुश्ती या लड़ाई में गिराना। पछाड़ना। ५. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु में रखने, ठहराने या मिलाने के लिए उसमें गिराना या रखना। ६. रखना।

**यौ०**—पिंडा पारना=पिंड-दान करना।

७. किसी के अंतर्गत करना। शामिल करना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनाना। ९. बुरी बात घटित करना। उत्पात मचाना। १०. साँचे आदि में ढालकर या किसी वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना। काजल पारना=काजल दीपक से बनाना।

*क्रि० अ० [हिं० पार लगना] सकना। समर्थ होना।

*क्रि० स० दे० "पालना"।

**पारमार्थिक**—वि० [सं०] १. परमार्थ संबंधी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो। २. सदा ज्यों का त्यों रहनेवाला। वास्तविक।

**पारलौकिक**—वि० [सं०] १. परलोक-संबंधी। २. परलोक में शुभ फल देनेवाला।

**पारवश्य**—संज्ञा पुं० [सं०] परवशता।

**पारशव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। २. एक वर्णसंकर जाति। ३. लोहा। ४. एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।

**पारषद***—संज्ञा पुं० दे० "पार्षद"।

**पारस**—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श] १. एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे छुलाया जाय तो सोना हो जाता है। स्पर्शमणि। २. अत्यंत लाभदायक और उपयोगी वस्तु। ३. वह जो दूसरे को अपने समान कर ले।

वि० १. पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। २. चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त।

संज्ञा पुं० [हिं० परसना] १. खाने के लिए लगाया हुआ भोजन। परसा हुआ खाना। २. पत्तल जिसमें खाने के लिए पकवान, मिठाई आदि हों।

*संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] पास। निकट।

संज्ञा पुं० [सं० पारस्य] अफगानिस्तान के आगे का प्राचीन काबोज और वाह्लीक के पश्चिम का देश।

**पारसनाथ**—संज्ञा पुं० दे० "पार्श्वनाथ"।

**पारसव***—संज्ञा पुं० दे० "पारशव"।

**पारसा**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा पारसाई] धर्म-निष्ठ। सदाचारी।

**पारसी**—वि॰ [ फ़ा॰ फ़ारस ] पारस देश का । पारस देश-संबंधी ।
**संज्ञा पुं॰** १. पारस देश का रहनेवाला आदमी । २. हिंदुस्तान में बंबई और गुजरात की ओर हजारों वर्ष से बसे हुए वे फारस-निवासी जिनके पूर्वज मुसलमान होने के डर से पारस छोड़कर यहाँ आए थे ।

**पारसीक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पारस देश । २. पारस देश का निवासी । ३. पारस देश का घोड़ा ।

**पारस्कर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक देश का प्राचीन नाम । २. गृह्यसूत्र-कार मुनि ।

**पारस्परिक**-वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ पारस्परिकता ] परस्पर होनेवाला । आपस का ।

**पारस्य**-संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पारस देश ।

**पारा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पारद ] चाँदी की तरह सफेद और चमकीली एक धातु जो साधारण गरमी या सरदी में द्रव अवस्था में रहती है ।
**मुहा॰**—पारा पिलाना=किसी वस्तु को इतना भारी करना मानों उसमें पारा भरा हो ।
**संज्ञा पुं॰** [ सं॰ पारि=प्याला ] दीये के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन । परई ।
**संज्ञा पुं॰** [ फ़ा॰ पारः ] १. टुकड़ा । २. वह छोटी दीवार जो केवल पत्थरों के टुकड़े एक दूसरे पर रखकर बनाई गई हो ।

**पारायण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पूरा करने का कार्य । समाप्ति । २. समय बाँधकर किसी ग्रंथ का आद्योपांत पाठ ।

**पारावत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. परेवा । पंडुक । २. कबूतर । कपोत । ३. बंदर । ४. गिरि । पर्वत ।

**पारावार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. आर-पार । दोनों तट । २. सीमा । हद । ३. समुद्र ।

**पाराशर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पराशर का पुत्र या वंशज । २. व्यास ।
वि॰ १. पराशर-संबंधी । २. पराशर का बनाया हुआ ।

**पारि***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ पार ] १ हद । सीमा । २. ओर । तरफ । दिशा । देश । ३. जलाशय का तट ।

**पारिख***†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "परख" ।

**पारिजात**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक देववृक्ष जो स्वर्गलोक में इंद्र के नंदन कानन में है । यह समुद्र मथन के समय निकला था । २. परजाता । हरसिंगार । ३. कोविदार । कचनार । ४. पारिभद्र । फरहद ।

**पारितोषिक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह धन या वस्तु जो किसी पर परितुष्ट या प्रसन्न होकर उसे दी जाय । इनाम ।

**पारिपात्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सप्तकुल पर्वतों में से एक जो विंध्य के अंतर्गत है ।

**पारिपार्श्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पारिषद् । अनुचर । अरदली ।

**पारिपार्श्विक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सेवक । पारिषद् । अरदली । २. नाटक के अभिनय में एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है ।

**पारिभद्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. फरहद का पेड़ । २. देवदार ।

**पारिभाषिक**—वि॰ [ सं॰ ] जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के संकेत के रूप में किया जाय । जैसे, पारिभाषिक शब्द ।

**पारिषद्**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. परिषद् में बैठनेवाला । सभासद । सभ्य । २. अनुयायिवर्ग । गण ।

**पारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बार, बारी ] किसी बात का अवसर जो कुछ अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो । बारी ।

**पारुष्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वचन की कठोरता । बात का कड़वापन । २. इंद्र का वन ।

**पार्क**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] उद्यान । बाग ।

**पार्टी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ] १. दल । २. वह सम्मिलन जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है ।

**पार्थ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पृथ्वीपति । २. ( पृथा का पुत्र ) अर्जुन । ३. युधिष्ठिर और भीम । ४. अर्जुन वृक्ष ।

**पार्थक्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पृथक् होने का भाव । भेद । २. जुदाई । वियोग ।

**पार्थिव**—वि॰ [ सं॰ ] १. पृथिवी-संबंधी । २. पृथिवी से उत्पन्न । मिट्टी आदि का बना हुआ । ३. राजा के योग्य । राजसी ।
संज्ञा पुं॰ मिट्टी का शिवलिंग जिसके पूजन का बड़ा फल माना जाता है ।

**पार्थी**—संज्ञा पुं॰ वि॰ दे॰ 'पार्थिव' ।

**पार्वण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह श्राद्ध जो किसी पर्व में किया जाय ।

**पार्वत**—वि॰ [ सं॰ ] १. पर्वत संबंधी । २. पर्वत पर होनेवाला ।

**पार्वती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी देवी जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामों से पूजी जाती है । शिवा । भवानी । उमा । गिरिजा । गौरी । २. गोपीचंदन ।

**पार्वतीय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पहाड़ का । पहाड़ी ।

**पार्यंतीय**—वि० [ सं० ] पर्यंक पर होनेवाला ।

**पार्श्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ छाती के दाहिने या बायें का भाग । बगल । २. अगल-बगल की जगह । पास । निकटता । समीपता ।

**यौ०**—पार्श्ववर्ती=साथी या मुसाहिब ।

**पार्श्वग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सहचर ।

**पार्श्वनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जैनों के तेईसवें तीर्थंकर जो वाराणसी के इक्ष्वाकुवंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे ।

**पार्श्ववर्ती**—संज्ञा पुं० [ सं० पार्श्ववर्तिन् ] [ स्त्री० पार्श्ववर्तिनी ] पास रहनेवाला । मुसाहब ।

**पार्श्वस्थ**—वि० [ सं० ] पास खड़ा रहनेवाला ।

संज्ञा पुं० अभिनय के नटों में से एक ।

**पार्षद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पास रहनेवाला सेवक । पारिषद । २. मुसाहब । मंत्री ।

**पालंक**—संज्ञा पुं० [ सं० पल्यंक ] १. पालक शाक । पालकी । २. बाज पक्षी । ३. एक रत्न जो काला, हरा और लाल होता है ।

**पालंग**—संज्ञा पुं० दे० "पलंग" ।

**पाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पालनकर्ता । पालक । २. चीते का पेड़ । ३. बंगाल का एक प्रसिद्ध राजवंश जिसने साढ़े तीन सौ वर्ष तक बंग और मगध में राज्य किया था ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पालना ] फलों को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिए पत्ते बिछाकर रखने की विधि ।

संज्ञा पुं० [ सं० पट या पाट ] १. वह लंबा-चौड़ा कपड़ा जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिए तानते हैं जिसमें हवा भरे और नाव को ढकेले । २. तंबू । शामियाना । चँदोवा । ३. गाड़ी या पालकी आदि ढाँकने का कपड़ा । ओहार ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० पालि ] १. पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा । मेड़ । २. ऊँचा किनारा । कगार । ३. कुएँ के भीतर की दीवार गिर जाने की अवस्था ।

**पालक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पालनकर्ता । २. अश्वरक्षक । साईस । ३. पाला हुआ लड़का । दत्तक पुत्र ।

संज्ञा पुं० [ सं० पालक ] एक प्रकार का साग ।

संज्ञा पुं० [ हिं० पलंग ] पलंग । पर्यंक ।

**पालकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पल्यंक ] एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी कंधे पर लेकर चलते हैं । म्याना । खड़खड़िया ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० पालंक ] पालक का शाक ।

**पालकी गाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पालकी+गाड़ी ] वह गाड़ी जिस पर पालकी के समान छत हो ।

**पालट**—संज्ञा पुं० [ सं० पालन ] दत्तक पुत्र ।

**पालतू**—वि० [ सं० पालना ] पाला हुआ । पोसा हुआ ।

**पालथी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पलथी" ।

**पालन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पालनीय, पालित, पाल्य ] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवनरक्षा । भरण-पोषण । परवरिश । २. अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह । भंग न करना । न टालना ।

**पालना**—क्रि० स० [ सं० पालन ] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा करना । भरण पोषण करना । परवरिश करना । २. पशु-पक्षी आदि को रखना । ३. भंग न करना । न टालना ।

संज्ञा पुं० [ सं० पल्यंक ] एक प्रकार का झूला या हिंडोला । पिंगूरा । गहवारा ।

**पालनीय**—वि० [ सं० ] पालन करने योग्य । पाल्य ।

**पालव**—संज्ञा पुं० [ सं० पल्लव ] १. पल्लव । पत्ता । २. कोमल पत्ता ।

**पाला**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रालेय ] १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो पृथ्वी के बहुत ठंडे हो जाने पर उस पर सफेद सफेद जम जाती है । हिम ।

**मुहा०**—पाला मार जाना=पौधे या फसल का पाला गिरने से नष्ट हो जाना ।

२. हिम । बर्फ । ३. ठंढ । सरदी ।

संज्ञा पुं० [ हिं० पल्ला ] व्यवहार करने का संयोग । वास्ता । साबिका ।

**मुहा०**—( किसी से ) पाला पड़ना= व्यवहार करने का संयोग होना । वास्ता पड़ना । काम पड़ना । ( किसी के ) पाले पड़ना=वश में होना । काबू में आना । पकड़ में आना ।

संज्ञा पुं० [ सं० पट्ट, हिं० पाड़ा ] १. प्रधान स्थान । सदर मुकाम । २. सीमा निर्दिष्ट करने के लिए मिट्टी की उठाई हुई मेड़ या छोटा भीटा । धुस । ३. अनाज भरने का बड़ा बरतन जो प्रायः कच्ची मिट्टी का गोल दीवार के रूप में होता है । डेहरी । ४. कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह । अखाड़ा ।

**पाँवलागन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पाँव+लगना ] प्रणाम । दंडवत् । नमः

प्रकार।

**पालि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कान की लौ। २. कोना। ३. पंक्ति। श्रेणी। कतार। ४. किनारा। ५. सीमा। हद। ६. मेड़। बाँध। ७. करार। कगार। भीटा। ८. अंक। गोद। ९. परिधि। १०. चिह्न।

**पालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

**पालित**—वि० [सं०] [स्त्री० पालिता] पाला हुआ। रक्षित।

**पालिनी**—वि० स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।

**पाली**—वि० [सं० पालिन्] [स्त्री० पालिनी] १. पालन करनेवाला। पोषण करनेवाला। २. रखनेवाला। रक्षा करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० [सं० पालि=पंक्ति] एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्म-ग्रंथ लिखे हुए हैं, और जिसका पठन-पाठन स्याम, बरमा, सिंहल आदि देशों में उसी प्रकार होता है जिस प्रकार भारतवर्ष में संस्कृत का।

३. खेलकूद, पढ़ाई आदि के विभाजित भाग।

**पालू**—वि० [हिं० पालना] पालतू।

**पाल्य**—वि० [सं०] पालन के योग्य।

**पावँ**—संज्ञा पुं० [सं० पाद] वह अंग जिससे चलते हैं। पैर।

मुहा०—(किसी काम या बात में) पावँ अड़ाना=किसी बात में व्यर्थ सम्मिलित होना। फजूल दखल देना। पावँ उखड़ जाना=ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। लड़ाई में न ठहरना। पावँ उठाना=१. चलने के लिए कदम बढ़ाना। २. जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। पावँ घिसना=चलते चलते पैर थकना। पावँ जमना=१. पैर ठहरना। स्थिर भाव से खड़ा होना। २. दृढ़ता रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। पावँ तले की मिट्टी निकल जाना=(किसी भयंकर बात को सुनकर) स्तब्ध सा हो जाना। होश उड़ जाना। ठक हो जाना। पावँ तोड़ना=१. बहुत चलकर पैर थकाना। २. बहुत दौड़-धूप करना। इधर-उधर बहुत हैरान होना। घोर प्रयत्न करना। पावँ तोड़कर बैठना=१. कहीं न जाना। अचल होना। स्थिर हो जाना। २. हारकर बैठना। किसी के पावँ धरना=१. पैर छूकर प्रणाम करना। २. दीनता से विनय करना। हा हा खाना। बुरे पंथ पर पावँ धरना=बुरे काम में प्रवृत्त होना। पावँ पकड़ना=१. विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। २. पैर छूना। बड़ी दीनता और विनय करना। हा हा खाना। ३. पैर छूकर नमस्कार करना। पावँ पखारना=पैर धोना। पावँ पड़ना—१. पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत् करना। २. अत्यंत दीनता से विनय करना। पावँ पर गिरना=दे० "पावँ पड़ना"। पावँ पसारना=१. पैर फैलाना। २. आराम से पड़ना या सोना। ३. मरना। ४. आडंबर बढ़ाना। ठाट-बाट करना। पावँ पावँ चलना=पैरों से चलना। पैदल चलना। पावँ पूजना=१. बड़ा आदर सत्कार करना। बहुत पूज्य मानना। २. विवाह में कन्या-दान के समय कन्याकुल के लोगों का वर का पूजन करना और कन्यादान में योग देना। पावँ फूँक फूँक कर रखना=बहुत बचाकर काम करना। बहुत सावधानी से चलना। पावँ फैलाना=१. अधिक पाने के लिए हाथ बढ़ाना। मुँह बाना। पाकर भी अधिक का लोभ करना। २. बच्चों की तरह अड़ना। जिद करना। मचलना। पावँ बढ़ाना=१. चलने में पैर आगे रखना। २. अधिक बढ़ना। अति-क्रमण करना। पावँ भर जाना=थकावट से पैर में बोझ सा मालूम होना। पैर थकना। पावँ भारी होना=गर्भ रहना। हमल होना। पावँ रोपना=प्रण करना। प्रतिज्ञा करना। पावँ लगना=१. प्रणाम करना। २. विनती करना। पावँ से पावँ बाँधकर रखना=१. बराबर अपने पास रखना। पास से अलग न होने देना। २. बड़ी चौकसी रखना। पावँ सो जाना=१. पैर सुन्न हो जाना। स्तब्ध हो जाना। २. पैर झन्ना उठना। (किसी के) पावँ न होना=ठहरने की शक्ति या साहस न होना। दृढ़ता न होना। धरती पर पावँ न रखना=१. बहुत घमंड करना। २. फूले अंग न समाना।

**पावँड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० पावँ+ड़ा (प्रत्य०)] वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिए किसी के मार्ग में बिछाया जाता है। पायंदाज।

**पावँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पावँ+ड़ी (प्रत्य०)] १. पादत्राण। खड़ाऊँ। २. जूता।

**पावर***—वि० [सं० पामर] १. तुच्छ। खल। नीच। दुष्ट। २. मूर्ख। निर्बुद्धि।

संज्ञा पुं० दे० "पावँड़ा"।

संज्ञा स्त्री० दे० "पावँड़ी"।

संज्ञा पुं० [अं०] शक्ति।

**पाव**—संज्ञा पुं० [सं० पाद] १.

चौथाई। चतुर्थ भाग। २. एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक का मान। पासा खेलने का वह दाँव जिसे पौबारह कहते हैं।

**पावक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। तेज। ताप। २. सदाचार। ३. अग्निमंथ वृक्ष। अगेथू का पेड़। ४. वरुण। ५. सूर्य।

वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

**पावकुलक**—संज्ञा पुं० [सं० पादाकुलक] पादाकुलक छंद। चौपाई।

**पावती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना] रुपये पाने का सूचक पत्र। रसीद।

**पावदान**—संज्ञा पुं० [हिं० पाँव+दान (प्रत्य०)] १. पैर रखने के लिए बना हुआ स्थान या वस्तु। २. इक्के, गाड़ी आदि में लोहे की पटरी जिस पर पैर रखकर चढ़ते हैं।

**पावन**—वि० [सं०] [स्त्री० पावनी] १. पवित्र करनेवाला। २. पवित्र। शुद्ध। पाक।

संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित्त। ३. शुद्धि। ३. जल। ४. गोबर। ५. रुद्राक्ष। ६. व्यास का एक नाम। ७. विष्णु।

**पावनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्रता।

**पावना**†*—क्रि० स० [सं० प्रापण] १. पाना। प्राप्त करना। २. अनुभव करना। जानना। समझना। ३. भोजन करना। ४. दे० "पाना"।

संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक। लहना। २. वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।

**पावस**†—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रावृष] वर्षाकाल। बरसात।

**पावा**†—संज्ञा पुं० दे० "पाया"।

संज्ञा पुं० [देश०] गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम है।

**पाश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बधन के अधिक कसकर बैठ जाने से मर भी जाता है। फंदा। फाँस। २. पशु पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. बंधन। फँसानेवाली वस्तु।

**पाशक**—संज्ञा पुं० [सं०] पासा। चौसर।

**पाशकेरली**—संज्ञा स्त्री० [सं० पाश+केरल (देश०)] ज्योतिष की एक गणना जो पासे फेंककर की जाती है।

**पाशव**—वि० [सं०] १. पशु संबंधी। पशुओं का। २. पशुओं का जैसा।

**पाशवता**—संज्ञा स्त्री० दे० "पशुता"।

**पाशा**—संज्ञा पुं० [तु०, फा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि।

**पाशुपत**—वि० [सं०] १. पशुपति-संबंधी। शिव-संबंधी। २. पशुपति का।

संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। एक प्रकार का शैव। २. शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। ३. अथर्ववेद का एक उपनिषद्।

**पाशुपत दर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक साम्प्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शन-संग्रह में है। नकुलीश पाशुपत दर्शन।

**पाशुपतास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था।

**पाश्चात्य**—वि० [सं०] १. पीछे का। पिछला। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिम।

**पाश्चात्यीकरण**—संज्ञा पुं० [सं० पाश्चात्य+करण] किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना। पाश्चात्य ढंग का बनाना।

**पाषंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला। झूठा मत माननेवाला। २. लोगों को ठगने के लिए साधुओं का सा रूप-रंग बनानेवाला। धर्मध्वजी। ढोंगी।

**पाषंडी**—वि० [सं० पाषण्डिन्] १. वेदविरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। ढोंगी। धूर्त।

**पाषर**—संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।

**पाषाण**—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर। प्रस्तर।

वि० [स्त्री० पाषाणी] निर्दय। हृदयहीन।

**पाषाणभेद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जो अपनी पत्तियों की सुंदरता के लिए बगीचों में लगाया जाता है। पखानभेद। पथरचट।

**पाषाणी**—वि० स्त्री० [सं०] पत्थर की तरह कठोर हृदयवाला।

**पाषाणीय**—वि० [सं०] पत्थर का।

**पासंग**—संज्ञा पुं० [फा०] १. तराजू की डंडी को बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा।

**मुहा०**—(किसी का) पासंग भी न होना = किसी के मुकाबिले में बहुत कम होना। २. तराजू की डाँड़ी बराबर न होना।

**पास**—संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] १. बगल। ओर। तरफ। २. सामीप्य। निकटता। समीपता। ३. अधिकार। कब्जा। रक्षा। पल्ला (केवल 'के', 'में' और 'से' विभक्तियों के साथ।)

अव्य० १. निकट। समीप। नजदीक।

यौ०—आस-पास=१. अगल बगल। समीप। २. लगभग। करीब।

मुहा०—(किसी के) पास बैठना=संगत में रहना। पास फटकना=निकट जाना।

२. अधिकार में। कब्जे में। रक्षा में। पल्ले। ३. निकट जाकर, संबोधन करके। किसी के प्रति। किसी से।

*संज्ञा पुं० दे० "पाश"।

*संज्ञा पुं० दे० "पासा"।

वि० [अ०] परीक्षा आदि में सफल। उत्तीर्ण।

संज्ञा पुं० [अं०] वह कागज। जिससे किसी के कहीं बेरोकटोक आने-जाने की इजाजत हो।

**पासनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति। अन्नप्राशन।

**पासबान**—संज्ञा पुं० [फा०] १. चौकीदार। पहरेदार। २. रक्षक। रखवाला।

संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। रखेली। रखनी। (राजपूताना)।

**पासबानी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चौकीदारी। २. रक्षा। हिफाजत।

**पासमान***—संज्ञा पुं० [हिं० पास+मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास। पार्श्ववर्ती।

**पासवर्ती*** वि० दे० "पार्श्ववर्ती"।

**पासा**—संज्ञा पुं० [सं० पाशक, प्रा० पासा] १. हाथीदाँत या हड्डी के छः-पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर खेलते हैं।

मुहा०—(किसी का) पासा पड़ना=भाग्य अनुकूल होना। किस्मत जोर करना। पासा पलटना=१. अच्छे से मंद भाग्य होना। २. युक्ति या तदबीर का उलटा फल होना।

२. वह खेल जो पासों से खेला जाता है। चौसर का खेल। ३. मोटी बत्ती के आकार में लाई हुई वस्तु। कामी। गुल्ली।

**पासि, पासिक***—संज्ञा पुं० [सं० पाश] १. फंदा। २. बंधन।

**पासी**—संज्ञा पुं० [सं० पाशिन्] १. जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला। २. एक जाति जो ताड़ी चुआने का व्यवसाय करती है।

संज्ञा स्त्री० [सं० पाश, हिं० पास+ई (प्रत्य०)] १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।

**पासुरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

**पाहँ***—अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। समीप। पास। २. किसी के प्रति। किसी से।

**पाहन***—संज्ञा पुं० [सं० पाषाण, प्रा० पाहाण] पत्थर।

**पाहरू***—संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार।

**पाहाण***—संज्ञा पुं० दे० "पाहन"।

**पाहि***—अव्य० [सं० पार्श्व] १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।

**पाहि**—एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो', या "बचाओ"।

**पाहीं***—अव्य० दे० "पाहँ"।

**पाहुच**—संज्ञा स्त्री० दे० "पहुँच"।

**पाहुना**—संज्ञा पुं० [सं० प्राघुण] [स्त्री० पाहुनी] १. अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २. दामाद। जामाता।

**पाहुनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाहुना] १. स्त्री अतिथि। अभ्यागत स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।

**पाहुर**—संज्ञा पुं० [सं० प्राभृत] १. भेंट। नजर। २. सौगात।

**पिंग**—वि० [सं०] १. पीला। पीलापन लिए भूरा। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. सुँघनी रंग का।

**पिंगल**—वि० [सं०] १. पीला। पीत। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. भूरापन लिए पीला। सुँघनी रंग का।

संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मुनि जो छंदःशास्त्र के आदि आचार्य्य माने जाते हैं। २. छंदःशास्त्र। ३. साठ संवत्सरों में से एक। ४. एक निधि का नाम। ५. बंदर। कपि। ६. अग्नि। ७. पीतल। ८. उल्लू पक्षी।

**पिंगला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हठ योग और तंत्र में जो तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं, उनमें से एक। २. लक्ष्मी का नाम। ३. गोरोचन। ४. शीशम का पेड़। ५. राजनीति। ६. दक्षिण के दिग्गज की स्त्री।

**पिंग-पांग**—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का अंग्रेजी खेल जो मेज पर छोटा सा जाल टाँगकर छोटे से गेंद और छोटे से बल्ले से खेला जाता है।

**पिंजड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पिंजरा"।

**पिंजर**—वि० [सं०] १. पीला। पीतवर्ण का। २. भूरापन लिए लाल रंग का।

संज्ञा पुं० १. पिंजड़ा। २. शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्टर। पंजर। ३. सोना। ४. भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

**पिंजरा**—संज्ञा पुं० [सं० पंजर]

छोटे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।

**पिंजरापोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० पिंजरा+पोल=फाटक ] वह स्थान जहाँ पालने के लिए गाय, बैल आदि चौपाये रखे जाते हों। पशुशाला। गोशाला।

**पिंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गोल-मटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५. भोजन। आहार। ६. शरीर। देह। ७. नक्षत्र। ग्रह।

**मुहा०**—पिंड छोड़ना=साथ न लगा रहना या संबंध न रखना। तंग न करना।

**पिंडखजूर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड-खजूर ] एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

**पिंडज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गर्भ से सजीव निकलनेवाला जंतु। जैसे मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली।

**पिंडदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

**पिंडरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

**पिंडरोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह रोग जो शरीर में घर किए हो। २. कोढ़।

**पिंडरोगी**—वि० [ सं० ] रुग्ण शरीर का।

**पिंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड ] टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है।

**पिंडवाही**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक प्रकार का कपड़ा।

**पिंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० पिंड ] [ स्त्री० अल्पा० पिंडी ] १. ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २. गोल मटोल टुकड़ा। लुगदा। ३. मधु, तिल मिली हुई खीर आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है।

**मुहा०**—पिंडा पानी देना=श्राद्ध और तर्पण करना।

४. शरीर। देह।

**पिंडारी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] दक्षिण की एक जाति जो पहले खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट-मार करने लगी और मुसलमान हो गई।

**पिंडालू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड+आलू ] १. एक प्रकार का शकरकंद सुथना। पिंडिया। २. एक प्रकार का शफतालू या रतालू।

**पिंडिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा पिंड। पिंडी। २ पिंडली। ३. वह पिंडी जिस पर देवमूर्ति स्थापित की जाती है। वेदी।

**पिंडिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंडिक ] १. गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बाँधा हुआ लंबोतरा टुकड़ा। लंबोतरी पिंडी। २ गुड़ की लंबोतरी भेली। मुट्ठा। ३. लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला।

**पिंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा ढेला या लोंदा। लुगदा। २. गीली या भुरभुरी वस्तु का टुकड़ा। ३. घीया। कद्दू। ४. पिंड खजूर। ५. वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है। ६. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।

**पिंडुरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

**पिअ**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।

**पिअराई***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पीत ] पीलापन।

**पिअरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीली ] हलदी के रंग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह के समय में वर या वधू को पहनाई जाती है, या स्त्रियाँ गंगा जी को चढ़ाती हैं।

वि० स्त्री० दे० "पीली"।

**पिउ**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रिय ] पति।

**पिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पिकी ] [ भाव० पिकता ] कोयल।

**पिघलना**—क्रि० अ० [ सं० प्र+गलन ] १. गरमी से किसी चीज का गलकर पानी सा हो जाना। द्रवीभूत होना। २ चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

**पिघलाना**—क्रि० स० [ हिं० पिघलना का प्रे० ] १. किसी चीज को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना। २. किसी के मन में दया उत्पन्न करना।

**पिचकना**—क्रि० अ० [ सं० पिच्च=दबना ] किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना।

**पिचकाना**—क्रि० स० [ हिं० पिचकना का प्रे० ] फूले या उभरे हुए तल को दबाना।

**पिचकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पिचकना ] एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को जोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

**पिचकी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।

**पिचपिचा**—वि० [ अनु० ] १. रसदार। चिपचिपा। २. दबा हुआ और गुलगुला।

**पिचुकका**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पिच-

काना] १. पिचकारी । २. गोलगप्पा ।

**पिच्चित**—वि० [ सं० पिच्च=दबना, पिचकना] पिचका हुआ । दबा हुआ ।

**पिच्ची**—वि० दे० "पिच्चित" ।

**पिच्छ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पशु की पूँछ । लांगूल । २. मोर की पूँछ । मयूरपुच्छ । ३. मोर की चोटी । चूड़ा ।

**पिच्छल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मोचरस । २. अकासबेल । ३. शीशम ।
वि० रपटनेवाला । चिकना ।
वि० दे० "पिछला" ।

**पिच्छिल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पिच्छिला ] १. गीला और चिकना । २. फिसलनेवाला । जिस पर पड़ने से पैर रपटे । ३ चूड़ायुक्त ( पक्षी ) । ४. लट्टा, कोमल, फूला हुआ और कफकारी ( पदार्थ ) ।

**पिछड़ना**—क्रि० अ० [हिं०पिछाड़ी+ना ( प्रत्य० ) ] पीछे रह जाना । साथ साथ, बराबर या आगे न रहना ।

**पिछलगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पीछे+लगना ] १. वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले । अधीन । आश्रित । २. अनुवर्ती । अनुगामी । शिष्य । ३. सेवक । नौकर ।

**पिछलगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पिछलगा ] पिछलगा होने का भाव । अनुयायी होना । अनुगमन करना ।

**पिछलग्गू**†—संज्ञा पुं० दे० "पिछलगा" ।

**पिछलत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं०पीछा+लात ] घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मारना ।

**पिछला**—वि० [ हिं० पीछा ] [ स्त्री० पिछली ] १. पीछे की ओर का । "अगला" का उलटा । २. बाद का । अनंतर का । पहला का उलटा । ३. अंत की ओर का ।
मुहा०—पिछला पहर=दो पहर या आधी रात के बाद का समय ।
४. बीता हुआ । गत । पुराना । गुजरा हुआ । ५. गत बातों में से अंतिम ।

**पिछवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीछा ] पीछे की ओर लटकाने का परदा ।

**पिछवाड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पीछा+वाड़ा ( प्रत्य० ) ] १. किसी मकान का पीछे का भाग । घर का पृष्ठ भाग । २. घर के पीछे का स्थान या जमीन ।

**पिछवार***—संज्ञा पुं० दे० "पिछवाड़ा" ।

**पिछाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीछा ] १. पिछला भाग । पीछे का हिस्सा । २. वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते

**पिछानना** —क्रि० स० दे० "पहचानना" ।

**पिछेलना**—क्रि० स० [ हिं० पीछे ] १. धक्का देकर पीछे हटाना । २. पीछे छोड़ना ।

**पिछौंहें***†—क्रि० वि० [ हिं० पीछा] पीछे की ओर । पीछे की ओर से ।

**पिछौरा**†—संज्ञा पुं० [ सं० पक्षपट ] [ स्त्री० पिछौरी ] ओढ़ने का दुपट्टा या चादर ।

**पिटंत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीटना+अंत ( प्रत्य० ) ] पीटने की क्रिया या भाव ।

**पिटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पिटारा । २. फुड़िया । फुंसी । ३. किसी ग्रंथ का एक भाग । ग्रंथ-विभाग । खंड । हिस्सा ।

**पिटना**—क्रि० अ० [ हिं० पीटना ] १. मार खाना । ठोंका जाना । २. बजना । आघात पाकर आवाज करना ।
†संज्ञा पुं० [ हिं० पीटना ] चूने आदि की छत पीटने का औजार । थापी ।

**पिटरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पिटारी" ।

**पिटवाना**—क्रि० स० [ हिं० पीटना] पीटने का काम दूसरे से कराना ।

**पिटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीटना ] १. पीटने का काम या भाव । २. प्रहार । मार । ३. पीटने की मजदूरी ।

**पिटारा**—संज्ञा पुं० [ सं० पिटक ] [ स्त्री० अल्पा० पिटारी ] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र ।

**पिटारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पिटारा का स्त्री० और अल्पा० ] १. छोटा पिटारा । झाँपी । २ पान रखने का बरतन । पानदान ।

**पिट्टस**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीटना ] शोक के समय छाती पीटना ।

**पिट्ठी** संज्ञा स्त्री० दे० "पीठी" ।

**पिट्ठू**—संज्ञा पुं० [ हिं० पिठ+ऊ ( प्रत्य० ) ] १. पीछे चलनेवाला । अनुयायी । २. सहायक । मददगार । हिमायती । ३. किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में वह स्वयं खेलता है ।

**पिठवन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पृष्ठपर्णी ] एक प्रसिद्ध लता जो औषध के काम आती है । पिठौनी । पृष्ठिपर्णी ।

**पिठौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पिट्ठी+औरी ( प्रत्य० ) ] पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी ।

**पितंबर**—संज्ञा पुं० दे० "पीतांबर"।

**पितपापड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्पट ] एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है। दवन-पापड़ा।

**पितर**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृ ] मृत पूर्वपुरुष। मरे हुए पुरखे जिनका श्राद्ध किया जाता है।

**पितरायँध**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीतल+गंध ] खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।

**पिता**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृ का कर्त्ता० ] जन्म देकर पालन-पोषण करनेवाला। बाप। जनक।

**पितामह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० पितामही ] १. पिता का पिता। दादा। २.भीष्म। ३.ब्रह्मा। ४.शिव।

**पितिया**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृव्य] [ स्त्री० पितियानी ] चाचा।
वि० चाचा के स्थान का। जैसे पितिया ससुर।

**पितु***—संज्ञा पुं० दे० "पिता"।

**पितृ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "पिता"। २. किसी व्यक्ति के मृत बाप, या दादा, परदादा आदि। ३. किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ४ एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं।

**पितृऋण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धर्म-शास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक। पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है।

**पितृकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृकर्मन् ] श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म जो पितरों के उद्देश्य से होते हैं।

**पितृकुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाप, दादा या उनके भाई-बंधुओं आदि का कुल।

**पितृगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाप का घर। नैहर। मायका ( स्त्रियों के लिए )

**पितृतर्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जल-दान। तर्पण।

**पितृतीर्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गया तीर्थ। २. अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग।

**पितृत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिता या पितृ होने का भाव।

**पितृपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुँआर का कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय। २. पिता के संबंधी। पितृ-कुल।

**पितृपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों का लोक।

**पितृमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैदिक काल के अंत्येष्टि कर्म का एक भेद जो श्राद्ध से भिन्न होता था।

**पितृयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितृ तर्पण।

**पितृयाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु के अनंतर जीव के जाने का वह मार्ग जिससे वह चंद्रमा को प्राप्त होता है।

**पितृलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों का लोक। वह स्थान जहाँ पितृगण रहते हैं।

**पितृवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्मशान।

**पितृव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चचा। चाचा।

**पित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक तरल पदार्थ जो शरीर के अंतर्गत यकृत् में बनता है। यह चिकनाई के पाचन में सहायक होता है।

**मुहा०**—पित्त उबलना या खौलना= दे० "पित्ता उबलना या खौलना"। पित्त गरम होना=शीघ्र क्रुद्ध होने का स्वभाव होना।

**पित्तघ्न**—वि० [ सं० ] पित्तनाशक।

**पित्तज्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो। पैत्तिक ज्वर।

**पित्तपापड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पित-पापड़ा"।

**पित्तप्रकृति**—वि० [ सं० ] जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।

**पित्तप्रकोपी**—वि० [ सं० पित्तप्रकोपिन् ] ( वस्तु ) जिसके भोजन से पित्त की वृद्धि हो।

**पित्तल**—वि० [ सं० पित्त ] जिससे पित्तदोष बढ़े। पित्तकारी। ( द्रव्य ) संज्ञा पुं० १. भोजपत्र। २. हरताल। ३. पीतल धातु।

**पित्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० पित्त ] १. जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय।

**मुहा०**—पित्ता उबलना या खौलना= बड़ा क्रोध आना। मिजाज भड़क उठना। पित्ता निकलना†=बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। पित्ता पानी करना=बहुत परिश्रम करना। जान लड़ाकर काम करना। पित्ता मरना=गुस्सा न रह जाना। पित्ता मारना=१. क्रोध दबाना। जब्त करना। २. कोई अरुचिकर या कठिन काम करने में न ऊबना। २ हिम्मत। साहस। हौसला।

**पित्ताशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।

**पित्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पित्त+ई ]

२. एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे-छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २. लाल महीन दाने जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। अँभौरी। गरमी दाना।

†‡ संज्ञा पुं० पितृव्य। चचा। काका।

**पित्र्य**—वि० [ सं० ] पितृ-संबंधी।

**पिथौरा**—संज्ञा पुं० दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान।

**पिदड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

**पिद्दा**—संज्ञा पुं० दे० "पिद्दी"।

**पिद्दी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बया की जाति की एक सुन्दर छोटी चिड़िया। २. बहुत ही तुच्छ और नगण्य जीव।

**पिधान, पिधानक**-संज्ञा पुं० [सं०] १. आवरण। पर्दा। गिलाफ। २. ढक्कन। ढकना। ३. तलवार की म्यान। ४. किवाड़ा।

**पिनकना**—क्रि० अ० [ हिं० पीनक ] १. अफीम के नशे में सिर का झुक पड़ना। पीनक लेना। २. नींद में आगे को झुकना। ऊँघना।

**पिनपिन**†—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बच्चा का अनुनासिक और स्पष्ट स्वर में रोना। २. धीमी और अनुनासिक आवाज में रोना।

**पिनपिनाना**†-क्रि० अ० [ हिं० पिनपिन ] १ रोते समय नाक से स्वर निकालना। २. रोगी अथवा कमजोर बच्चे का रोना।

**पिनाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव का धनुष जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने जनकपुर में तोड़ा था। अजगव। २. धनुष। ३. त्रिशूल।

**पिनाकी**—संज्ञा पुं० [ सं० पिनाकिन् ] शिव।

**पिन्नी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की मिठाई, जो आटे में चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

**पिन्हाना**†-क्रि० स० दे० "पहनाना"।

**पिपरमेंट**—संज्ञा पुं० [ अं० पेपरमिंट ] १ पुदीने की तरह का एक पौधा। २. इस पौधे का प्रसिद्ध सत्त जो दवा के काम आता है।

**पिपरामूल**—संज्ञा पुं० [ सं० पिप्पलीमूल ] पीपल की जड़।

**पिपासा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० पिपासित ] १. तृषा। प्यास। २ लालच। लोभ।

**पिपासु**—वि० [ सं० ] १. तृषित। प्यासा। २ उग्र इच्छा रखनेवाला। लालची।

**पिपीलिका**- संज्ञा स्त्री० [ सं० ] च्यूँटी।

**पिप्पल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीपल। अश्वत्थ।

**पिप्पली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पीपल।

**पिप्पलामूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिपरामूल।

**पिय***—संज्ञा पुं० [ सं० प्रिय ] पति। स्वामी।

**पियराई**†—संज्ञा [ स्त्री० [ हिं० पीयर + आई ( प्रत्य० ) ] पीलापन। जर्दी।

**पियराना***†—क्रि० अ० [ हिं० पियरा ] पीला पड़ना। पीला होना।

**पियरी**†—वि० स्त्री० दे० "पीला"। संज्ञा स्त्री० [ हिं० पियर ] १. पीली रँगी हुई धोती। पियरी। २. पीलापन।

**पियल्ला**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पीना ] दूध पीनेवाला बच्चा।

**पिया***—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

**पियाबाँसा**—संज्ञा पुं० दे० "कटसरैया"।

**पियार**—संज्ञा पुं० [ सं० पियाल ] महुए की तरह का मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरौंजी कहलाती है।

†वि० दे० "प्यारा"।

†संज्ञा पुं० दे० "प्यार"।

**पियाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिरौंजी का पेड़। दे० "पियार"।

**पियाला**—संज्ञा पुं० दे० "प्याला"।

**पियासाल**-संज्ञा पुं० [ सं० पीतसालक, प्रियसालक ] बहेड़े की जाति का एक बड़ा पेड़।

**पियूख***—संज्ञा पुं० दे० "पीयूष"।

**पिरकी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिड़क ] फुड़िया। फुंसी।

**पिरथी**‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

**पिराई**‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "पियराई"।

**पिराक**—संज्ञा पुं० [ सं० पिष्टक ] एक प्रकार का पकवान। गोझा। गोझिया।

**पिराना**†*क्रि० अ० [ सं० पीड़न ] १. पीड़ित होना। दर्द करना। दुखना। २. पीड़ा अनुभव करना। दुःख समझना।

**पिरारा**‡*-संज्ञा पुं० दे० "पिंडारा"।

**पिरीतम**‡*—संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।

**पिरीता***—वि० [ सं० प्रीत ] प्रीतिवाला। प्यारा।

**पिरोजा**—संज्ञा पुं० दे० "फीरोजा"।

**पिरोना**—क्रि० स० [ सं० प्रोत ] १. छेद के सहारे सूत, तागे आदि में फँसाना। गूथना। पोहना। २. तागे आदि को छेद में डालना।

**पिरोहना***-क्रि० अ० दे० "पिरोना"।

**पिलकना***—क्रि० अ० [ देश० ] गिरना, झूलना या लटकना।

**पिलकुआँ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक

प्रकार का देशी जूता।

**पिलना**—क्रि० अ० [ सं० पिल=प्रेरण ] १. किसी ओर को एकबारगी टूट पड़ना। ढल पड़ना। झुक पड़ना। २. एक बारगी प्रवृत्त होना। लिपट जाना। भिड़ जाना। ३. पेरा जाना। तेल निकालने के लिए दबाया जाना।

**पिलपिला**—वि० [ अनु० ] भीतर से गीला और नरम।

**पिलपिलाना**—क्रि० स० [ हिं० पिलपिला ] रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।

**पिलवाना**—क्रि० स० [ हिं० "पिलाना" का प्रे० ] पिलाने का काम दूसरे से कराना।

क्रि० स० [ हिं० पेलना ] पेलने या पेरने का काम दूसरे से कराना। पेरवाना।

**पिलाना**—क्रि० स० [ हिं० पीना ] १. पान का काम दूसरे से कराना। पान कराना। २. पीने को देना। ३. भीतर भरना।

**पिल्ला**—संज्ञा पुं० [ देश० ] कुत्ते का बच्चा।

**पिल्लू**—संज्ञा पुं० [ सं० पीलु=कृमि ] एक सफेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है। ढोला।

**पिव***—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

**पिवाना**†—क्रि० स० दे० "पिलाना"।

**पिशाच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पिशाचिनी, पिशाची ] एक हीन देवयोनि। भूत।

**पिशुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चुगलखोर।

**पिष्ट**—वि० [ सं० ] पिसा हुआ।

**पिष्टक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पिट्ठी। पीठी। पिट्ठी। २. कचौरी या पूआ। रोट।

**पिष्टपेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पिसे हुए को पीसना। २. कही हुई बात को फिर फिर कहना।

**पिसनहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीसना + हारी (प्रत्य०) ] वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।

**पिसना**—क्रि० अ० [ हिं० पीसना ] १. चूर्ण होना। चूर होकर धूल सा हो जाना। २. पिसकर तैयार होना। ३. दब जाना। कुचला जाना। ४. घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। पीड़ित होना। ५. थककर बेदम होना।

**पिसवाज***—संज्ञा स्त्री० दे० "पेशवाज"।

**पिसवाना**—क्रि० स० [ हिं० पीसना का प्रे० ] पीसने का काम दूसरे से कराना।

**पिसाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीसना ] १. पीसने की क्रिया या भाव। २. पीसने का काम या व्यवसाय। ३ पीसने की मजदूरी। ४. अत्यंत अधिक श्रम। बड़ी कड़ी मिहनत।

**पिसाच***—संज्ञा पुं० दे० "पिशाच"।

**पिसान**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पिसना, पिसा+अन्न ] अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण। आटा।

**पिसाना**—क्रि० स० [ हिं० पीसना ] पीसने का काम दूसरे से कराना।

† क्रि० अ० दे० "पिसना"।

**पिसुन***—संज्ञा पुं० दे० "पिशुन"।

**पिसौनी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीसना ] १ पीसने का काम। २. कठिन काम।

**पिस्तई**—वि० [ फ़ा० पिस्तः ] पिस्ते के रंग का। पीलापन लिए हरा।

**पिस्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पिस्तः ] एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।

**पिस्तौल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० पिस्टल ] तमंचा। छोटी बंदूक।

**पिस्सू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पश्शः ] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और रक्त पीता है। कुटकी।

**पिहकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।

**पिहित**—वि० [ सं० ] छिपा हुआ। संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का कोई भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाय।

**पींजना**—क्रि० स० [ सं० पिंजन ] रूई धुनना।

**पींजरा***—संज्ञा पुं० दे० "पिंजड़ा"।

**पींड़**†—संज्ञा पुं० [ सं० पिंड ] १. शरीर। देह। पिंड। २. वृक्ष का धड़। तना। पेड़ी। ३. गीली वस्तु का गोला। पिंड। पिंडा। ४. दे० "पीढ़"। ५. पिंड खजूर।

**पीड़री***—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

**पी***—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

संज्ञा पुं० [ अनु० ] पपीहे की बोली।

**पीक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिच्च ] थूक से मिला हुआ पान का रस।

**पीकदान**—संज्ञा पुं० [ हिं० पीक+फ़ा० दान ] एक विशेष प्रकार का बना हुआ बरतन जिसमें पान की पीक थूकी जाती है। उगालदान।

**पीकना**—क्रि० अ० [ सं० पिक ] पिहकना। पपीहे या कोयल का बोलना।

**पीका**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।

**पीच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिच्च ]

भौंह ।

**पीछा**—संज्ञा पुं० [ सं० पश्चात् ] १. किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग । पश्चात् भाग । पुश्त । "आगा" का उलटा ।

**मुहा०**—पीछा दिखाना=१. भागना । पीठ दिखाना । २. दे० "पीछा देना" । पीछा देना=किसी काम में पहले साथ देकर फिर किनारा करना । पीछे हट जाना ।

२. किसी घटना के बाद का समय । ३. पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना ।

**मुहा०**—पीछा करना=१. किसी बात के लिए किसी को तंग या दिक करना । गले पड़ना । २. किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि के लिए उसके पीछे पीछे चलना । खदेड़ना । पीछा छुड़ाना=१. पीछा करनेवाले व्यक्ति से जान छुड़ाना । २. अप्रिय या इच्छाविरुद्ध संबंध का अंत करना । पीछा छूटना=१. पीछा करनेवाले से छुटकारा मिलना । पिंड छूटना । जान छूटना । २. अप्रिय कार्य या संबंध से छुटकारा मिलना । पीछा छोड़ना=१. तंग न करना । परेशान न करना । २. जिस बात में बहुत देर से लगे हों उसे छोड़ देना । पीछा पकड़ना ( या लेना )= आश्रय का आकांक्षी बनना । सहारा बनाना ।

**पीछू***†—क्रि० वि० दे० "पीछे" ।

**पीछे**—अव्य० [ हिं० पीछा ] १. पीठ की ओर । आगे या सामने का उलटा । पश्चात् ।

**मुहा०**—( किसी के ) पीछे चलना= १. किसी विषय में किसी को पथ-दर्शक, नेता या गुरु मानना । २. अनुकरण करना । नकल करना । ( किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना= किसी का पीछा करने के लिए किसी को भेजना । ( धन ) पीछे डालना= आगे के लिए बचा रखना । संचय करना । ( किसी काम के ) पीछे पड़ना=किसी काम को कर डालने पर तुल जाना । किसी कार्य के लिए अविराम उद्योग करना । ( किसी व्यक्ति के ) पीछे पड़ना=१. कोई काम करने के लिए किसी से बार बार कहना । घेरना । तंग करना । २. मौका या संधि ढूँढ़ ढूँढ़कर किसी की बुराई करते रहना । पीछे लगना= १. पीछे पीछे घूमना । पीछा करना । २. दुःखजनक वस्तु का साथ हो जाना । ( अपने ) पीछे लगाना=१. आश्रय देना । साथ कर लेना । २. अनिष्ट वस्तु से संबंध कर लेना । ( किसी और के ) पीछे लगाना=१. अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से संबंध करा देना । मढ़ देना । २. भेद लेने या निगाह रखने के लिए किसी का साथ कर देना ।

२ पीछे की ओर कुछ दूर पर ।

**मुहा०**—पीछे छूटना, पड़ना या होना= १ किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा घटकर होना । पिछड़ा होना । २. किसी विषय में किसी ऐसे आदमी से घट जाना जिससे किसी समय बराबरी रही हो । पिछड़ जाना । (किसी को) पीछे छोड़ना=१. किसी विषय में किसी से बढ़कर या अधिक होना । २. किसी विषय में किसी से आगे निकल जाना ।

३. पश्चात् । उपरांत । अनंतर । ४. अंत में । आखिर में । ( क्व० ) ५. किसी की अनुपस्थिति या अभाव में । पीठ पीछे । ६. मर जाने पर । ७. लिए । वास्ते । ८ कारण । निमित्त । बदौलत ।

**पीटना**—क्रि० स० [ सं० पीड़न ] १. चोट पहुँचाना । मारना ।

**मुहा०**—छाती पीटना=दुःख या शोक प्रकट करने के लिए छाती पर हाथ से आघात करना । किसी व्यक्ति को या के लिए पीटना=किसी के मरने पर छाती पीटना । मातम करना ।

२. चोट से चिपटा या चौड़ा करना । ३ मोगना । प्रहार करना । ठोकना । ४. भले या बुरे प्रकार से कर डालना । ५. किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना । फटकार लेना ।

संज्ञा पुं० १ मृत्युशोक । मातम । २. मुसीबत । आफत ।

**पीठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पीठिका ] १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आधार या आसन । पीढ़ा । चौकी । २. विद्यार्थियों आदि के बैठने का आसन । ३ किसी मूर्ति के नीचे का आधार-पिंड । ४. किसी वस्तु के रहने की जगह । अधिष्ठान । ५. सिंहासन । राजासन । तख्त । ६. वेदी । देवपीठ । ७. वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्षपुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा है । भिन्न भिन्न पुराणों में इनकी संख्या ५१, ५३, ७७ या १०८ कही गई है । ८. प्रदेश । प्रांत । ९. बैठने का एक आसन । १०. वृत्त के किसी अंश का पूरक ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० पृष्ठ ] १. पेट की दूसरी ओर का भाग जो मनुष्य में पीछे की ओर और पशुओं, पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर पड़ता है । पृष्ठ । पुश्त ।

मुहा०—पीठ का=दे० "पीठ पर का"। पीठ चारपाई से लग जाना=बीमारी के कारण अत्यंत दुबला और कमजोर हो जाना। पीठ ठोंकना=१. किसी कार्य की प्रशंसा करना। शाबाशी देना। २. हिम्मत बढ़ाना। प्रोत्साहित करना। पीठ दिखाना=युद्ध या मुकाबिले से भाग जाना। पीछा दिखाना। पीठ दिखाकर जाना=स्नेह तोड़कर या ममता छोड़कर जाना। पीठ देना=१. बिदा होना। रुखसत होना। २. विमुख होना। मुँह मोड़ना। ३. भाग जाना पीठ दिखाना। ४. लेटना। आराम करना। पीठ पर=एक ही माता द्वारा जन्मक्रम में पीछे। पीठ पर का=जन्मक्रम में अपने सहोदर के अनंतर का। पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना=दे० "पीठ ठोंकना"। पीठ पर होना=मदद पर होना। हिमायत पर होना। पीठ पीछे=किसी के पीछे। अनुपस्थिति में। परोक्ष में। पीठ फेरना=१. बिदा होना। चला जाना। २. भाग जाना। पीठ दिखाना। ३. मुँह फेर लेना। ४. अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगना=पीठ पर घाव हो जाना। पीठ पक जाना। (चारपाई आदि से) पीठ लगाना=लेटना। सोना। पड़ना। २. किसी वस्तु की बनावट का ऊपरी भाग। पृष्ठ भाग।

**पीठना***—क्रि० स० दे० "पीसना"।

**पीठमर्द**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नायक के चार सखाओं में से एक जो वचन-चातुरी से नायिका का मान-मोचन करने में समर्थ हो। २. वह नायक जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके।

**पीठस्थान**—संज्ञा पुं० दे० 'पीठ (७)'

**पीठा**—संज्ञा पुं० दे० "पीढ़ा"।

संज्ञा पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान।

**पीठि***—संज्ञा स्त्री० दे० "पीठ"।

**पीठिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आधार। २. आसन। ३. छोटा पीढ़ा। ४. परिच्छेद। ५. दे० "पृष्ठिका"।

**पीठी***—संज्ञा स्त्री० [सं० पिष्टक] पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

**पीड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० आपीड़] सिर या बालों पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण।

**पीड़क**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीड़ा देनवाला। दुःखदायी। २. सतानेवाला।

**पीड़न**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दबाना। चापना। २. पेरना। पेलना। ३. दुःख देना। यंत्रणा पहुँचाना। ४. अत्याचार करना। ५. भली भाँति पकड़ना। दबोचना। ६. उच्छेद। नाश।

**पीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेदना। व्यथा। तकलीफ। दर्द। २. रोग। व्याधि।

**पीड़ित**—वि० [सं०] १. पीड़ायुक्त। दुःखित। क्लेशयुक्त। २. रोगी। बीमार। ३. दबाया हुआ। ४. नष्ट किया हुआ।

**पीड़री***—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

**पीढ़ा**—संज्ञा पुं० [सं० पीठक] चौकी के आकार का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा। पीठ। पीठक।

**पीढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० पीठिका] १. कुलपरंपरा में किसी विशेषव्यक्ति से आरंभ करके बाप, दादे, परदादे आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के क्रम से पहला दूसरा आदि कोई स्थान। पुश्त। २. किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी का संतति-समुदाय। ३. किसी विशेष समय में वर्ग-विशेष के व्यक्तियों की समष्टि। संतति। संतान। नस्ल।

†संज्ञा स्त्री० [हि० पीढ़ा] छोटा पीढ़ा।

**पीत**—वि० [सं०] [स्त्री० पीता] १. पीला। पीतवर्ण युक्त। २. भूरा। कपिल वर्ण।

वि० [सं० पान] पिया हुआ।

संज्ञा पुं० [सं०] १. पीला रंग। २. भूरा रंग। ३. हरताल। ४. हरिचंदन। ५. कुसुम। ६. पुखराज। ७. मूँगा।

**पीतक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरताल। २. केशर। ३. अगर। ४. पीतल। ५. पीलाचंदन। ६. शहद।

वि० पीला। पीले रंग का।

**पीतचंदन**—संज्ञा पुं० [सं० द्रविड़-देशीय पीले रंग का चंदन। हरिचंदन।

**पीतता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पीत का भाव। पीलापन। जर्दी।

**पीतधातु***—संज्ञा स्त्री० [सं० पीत+धातु] रामरज। गोपीचंदन।

**पीतपुष्प**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कनेर। २. घिया-तरोई। ३. पीले फूल की कटसरैया। ४. चंपा।

**पीतम***—वि० दे० "प्रियतम"।

**पीतमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] पुखराज।

**पीतल**—संज्ञा पुं० [सं० पित्तल] एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

**पीतवास**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**पीतशाल**—संज्ञा पुं० [सं०] विजयसार।

**पीतसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पीतचंदन । हरिचंदन । २. सफेद चंदन । ३. गोमेद मणि । ४. शिलारस ।

**पीतांबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पीला कपड़ा । २. मरदानी रेशमी धोती जिसे लोग पूजा पाठ आदि के समय पहनते हैं । ३ श्रीकृष्ण ।

**पीदड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी" ।

**पीन**—वि० [ सं० ] १ स्थूल । मोटा । २. पुष्ट । प्रवृद्ध । ३. संपन्न । भरा-पूरा ।

**पीनक**—संज्ञा स्त्री० [ हि० पिनकना ] १. नशे की हालत में अफीमची का आगे की ओर झुक झुक पड़ना । २. ऊँघना ।

**पीनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मोटाई ।

**पीनस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाक का एक रोग जिसमें उसकी घ्राण-शक्ति नष्ट हो जाती है ।
संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० फीनस ] पालकी ।

**पीना**—क्रि० स० [ सं० पान ] १. द्रव वस्तु को घूँट घूँट करके गले के नीचे उतारना । घूँटना । पान करना । २. किसी बात का दबा देना । उपेक्षा करना । ३. क्रोध या उत्तेजना न प्रकट करना । सह जाना । ४. किसी मनोविकार को भीतर ही भीतर दबा देना । मारना । ५. किसी मनोविकार का कुछ भी अनुभव न करना । ६. शराब पीना । ७. हुक्के, चुरुट आदि का धुआँ भीतर खींचना । धूम्रपान करना । ८. सोखना । शोषण ।

**पीप**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पूय ] फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ । पीब । मवाद ।

**पीपर**—संज्ञा पुं० दे० "पीपल" ।

**पीपरपर्न***—संज्ञा पुं० [ हिं० पीपल + पर्न=पत्ता ] कान में पहनने का एक आभूषण

**पीपल**—संज्ञा पुं० [ सं० पिप्पल ] बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है ।
संज्ञा स्त्री० [ सं० पिप्पली ] एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध ओषधि हैं ।

**पीपलामूल**—संज्ञा पुं० [ सं० पिप्पलीमूल ] एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल लता की जड़ है ।

**पीपा**—संज्ञा पुं० [ ? ] बड़े ढोल के आकार का काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं ।

**पीब**—संज्ञा स्त्री० दे० "पीप" ।

**पीय***—संज्ञा पुं० दे० "पिय" ।

**पीयर***—वि० दे० "पीला" ।

**पीयूख**—संज्ञा स्त्री० दे० "पीयूष" ।

**पीयूष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अमृत । सुधा । २. दूध । ३. उस गाय का दूध जिसे ब्याए सात दिन से अधिक न हुआ हो ।

**पीयूषभानु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा ।

**पीयूषवर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा । २. कपूर । ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद । आनंद-वर्द्धक ।

**पीर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पीड़ा ] १. पीड़ा । दुःख । दर्द । २. सहानुभूति । हमदर्दी ।
वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा पीरी ] १. वृद्ध । बूढ़ा । बड़ा । बुजुर्ग । २. महात्मा । सिद्ध ।

**पीरक***—संज्ञा पुं० दे० "पीड़क" ।

**पीरना***—क्रि० स० दे० "पेरना" ।

**पीरा**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पीड़ा" ।
वि० दे० "पीला" ।

**पीरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. बुढ़ापा । वृद्धावस्था । २. चेला मूड़ने का धंधा या पेशा । गुरुआई । ३. इजारा । ठेका । हुकूमत ।

**पील**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. हाथी । गज । हस्ति । २. शतरंज का एक मोहरा । फील । ऊँट ।

**पीलपाल***‡—संज्ञा पुं० दे० "फीलवान" ।

**पीलपाँव**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० फ़ीलपा ] एक प्रसिद्ध रोग । फीलपा । श्लीपद ।

**पीलवान**—संज्ञा पुं० दे० "फीलवान" ।

**पीलसोज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० फतीलसोज ] दीया जलाने की दीवट । चिरागदान ।

**पीला**—वि० [ सं० पीत ] [ स्त्री० पीली ] १. हल्दी, सोने या केसर के रंग का ( पदार्थ ) । जर्द । २. कांतिहीन । निस्तेज ।
**मुहा०**—पीला पड़ना या होना=१. बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना । २. भय से चेहरे पर सफेदी आना ।
संज्ञा पुं० हल्दी या सोने के रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रंग ।

**पीलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० पीला + पन ( प्रत्य० ) ] पीला होने का भाव । पीतता । जर्दी ।

**पीलिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० पीला ] कमल रोग ।

**पीलु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक फलदार वृक्ष । पीलू । २. फूल । पुष्प । ३. परमाणु । ४. हाथी । ५. हड्डी का टुकड़ा । अस्थिखंड ।

**पीलू**—संज्ञा पुं० [ सं० पीलु ] १. एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है । २. वे सफेद लंबे कीड़े जो सड़ने पर फलों आदि में पड़ जाते हैं ।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग ।

**पीखना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "पीना"।

**पीव**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ पिय ] पिय। पति।

**पीवर**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰पीवरा ] [ संज्ञा पीवरता ] १. मोटा। स्थूल। २. भारी। गुरु।

**पीवरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सतावर। २. सरिवन। ३. युवती स्त्री। ४. गाय।

**पीसना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ पेषण ] १. किसी वस्तु को आटे, बुकनी या धूल के रूप में करना। २. किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़ कर बारीक करना। ३. कुचल देना। दबाकर भुरकुस कर देना।

**मुहा॰**—किसी आदमी को पीसना= बहुत भारी अपकार करना या हानि पहुँचाना। नष्टप्राय कर देना। चौपट कर देना।

४. कड़ी मिहनत करना। जान लड़ाना।

संज्ञा पुं॰ १. पीसी जानेवाली वस्तु। २ उतनी वस्तु जो किसी एक आदमी को पीसने को दी जाय।

**पीहर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पितृ+गृह, हिं॰ घर ] स्त्रियों का मायका। स्त्रियों के माता पिता का घर। मैका।

**पुंख**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते थे।

**पुंगव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बैल। वृष।

वि॰ श्रेष्ठ। उत्तम।

**पुंगीफल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पूँगीफल"।

**पुँछार***†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ पूँछ ] मयूर। मोर।

**पुछाला**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पुछल्ला"।

**पुंज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] समूह। ढेर।

**पुंजी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पूँजी"।

**पुंड**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] तिलक। टीका।

**पुंडरी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पुंडरिन् ] स्थलपद्म।

**पुंडरीक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. श्वेत कमल। २. कमल। ३. रेशम का कीड़ा। ४. शेर। बाघ। ५. तिलक। ६. सफेद रंग का हाथी। ७ श्वेत कुष्ठ। सफेद कोढ़। ८. अग्निकोण के दिग्गज का नाम। ९. अग्नि। आग। १०. बाण। शर। ( अनेकार्थ ) ११. आकाश। ( अनेकार्थ )।

**पुंडरीकाक्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] विष्णु।

वि॰ जिसके नेत्र कमल के समान हों।

**पुंड्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. गन्ना। पौंढ़ा। २. श्वेत कमल। ३. तिलक। टीका। ४. भारत के एक भाग का प्राचीन नाम।

**पुंड्रवर्द्धन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पुंड्र देश की प्राचीन राजधानी।

**पुंलिंग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पुरुष का चिह्न। २. शिश्न। ३. पुरुषवाचक शब्द। ( व्या॰ )

**पुंश्चली**—वि॰ स्त्री॰ [ सं॰ ] व्यभिचारिणी। कुलटा। छिनाल।

**पुंस***†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पुरुष। मर्द।

**पुंसवन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. दुग्ध। दूध। २. द्विजातियों के सोलह संस्कारों में से दूसरा जो गर्भिणी को पुत्र प्रसव कराने के अभिप्राय से गर्भाधान से तीसरे महीने होता है। ३. वैष्णवों का एक व्रत।

**पुंसत्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पुरुषत्व। २ पुरुष की स्त्री-सहवास की शक्ति। ३. शुक्र। वीर्य्य।

**पुआ**—संज्ञा पु॰ [ सं॰ पूप ] मीठे के रस में सने हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया।

**पुआल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पयाल"।

**पुकार**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ पुकारना ] १. किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव। हाँक। टेर। २. रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाहट। दुहाई। ३. प्रतिकार के लिए चिल्लाहट। फरियाद। नालिश। ४. गहरी माँग।

**पुकारना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ प्रकुश= पुकारना ] १. नाम लेकर बुलाना। टेरना। आवाज लगाना। २. नाम का उच्चारण करना। रटना। धुन लगाना। ३. चिल्लाकर कहना। घोषित करना। ४. चिल्लाकर माँगना। ५. रक्षा के लिए चिल्लाना। गोहार लगाना। ६ फरियाद करना। नालिश करना।

**पुक्कस**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चांडाल। २. अधम। नीच।

**पुखा**†*—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पुष्य"।

**पुखर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पुष्कर ] तालाब।

**पुखराज**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ पुष्पराग] एक प्रकार का पीला रत्न।

**पुख्य**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पुष्य"।

**पुख्ता**—वि॰ [ फ़ा॰ पुख्तः ] [ संज्ञा पुख्तगी ] पक्का। दृढ़। मजबूत।

**पुजना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "पूजना"।

**पुजाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ पुजाना ] पूरा करना।

**पुचकार**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ पुचकारना ] दे॰ "पुचकारी"।

**पुचकारना**—क्रि॰ स॰ [अनु॰ पुच+

से+हिं० कार+ना (प्रत्य०) ] चूमने का सा शब्द निकालकर प्यार जताना । चुमकारना ।

**पुचकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पुचकारना ] प्यार जताने के लिए ओठों से निकाला हुआ चूमने का सा शब्द । चुमकार ।

**पुचारा**—संज्ञा पुं० [ अनु० पुचपुच या पुतारा ] भींगे कपड़े से पोंछने का काम । २. पतला लेप करने का काम । ३. पोता । हलका लेप । ४. वह गीला कपड़ा जिससे पोतते या पुचारा देते हैं । ५. लेप करने या पोतने के लिए पानी में घोली हुई कोई वस्तु । ६. दगी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिए उस पर गीला कपड़ा फेरने की क्रिया । ७. प्रसन्न करनेवाले वचन । ८. झूठी प्रशंसा । चापलूसी । खुशामद । ९. उत्साह बढ़ानेवाला वचन । बढ़ावा ।

**पुच्छ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुम । पूँछ । २. किसी वस्तु का पिछला भाग ।

**पुच्छल**—वि० [हिं० पुच्छ] दुमदार । पूँछदार ।

यौ० —पुच्छल तारा=दे० "केतु" ।

**पुछल्ला**—संज्ञा पुं० [हिं० पूँछ+ला (प्रत्य० ) ] १. बड़ी पूँछ । लंबी दुम । २. पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु । ३. बराबर पीछे लगा रहनेवाला । साथ न छोड़नेवाला । ४. साथ में लगी हुई वस्तु या व्यक्ति जिसकी उतनी आवश्यकता न हो । ५. पिछलग्गू । चापलूस । आश्रित ।

**पुछवैया**—वि० [ हिं० पूछना ] १. पूछनेवाला । २. खोज खबर लेनेवाला ।

**पुछार**†*—संज्ञा पुं० [हिं० पूछना] आदर करनेवाला । पूछनेवाला ।

**पुजंता**—वि० [ हिं० पूजना ] पूजा करनेवाला । पूजक ।

**पुजना**—क्रि० अ० [ हिं० पूजना ] १. पूजा जाना । आराधना का विषय होना । २. सम्मानित होना ।

**पुजवना**†*—क्रि० स० [ हिं० पूजना ] १. पुजाना । भरना । २. पूरा करना । ३. सफल करना ।

**पुजवाना**—क्रि० स० [ हिं० पूजना का प्रे० ] १. पूजन कराना । पूजा करने में प्रवृत्त करना । २. अपनी पूजा कराना । ३. अपनी सेवा या सम्मान कराना ।

**पुजाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पूजना ] पूजने का भाव, क्रिया या पुरस्कार ।

**पुजाना**—क्रि० स० [ हिं० पूजना का प्रे० ] १. पूजा में प्रवृत्त या नियुक्त करना । २. अपनी पूजा-प्रतिष्ठा कराना । भेंट चढ़वाना । ३. धन वसूल करना ।

क्रि० स० [हिं० पूजना=पूरा होना ] १. भर देना । २. पूरा करना । पूर्ति करना । सफल करना ।

**पुजापा**—संज्ञा पुं० [ सं० पूजा+पात्र ] देवपूजन की सामग्री । पूजा का सामान ।

**पुजारी**—संज्ञा पुं० [ सं० पूजा+कारी ] देवमूर्ति की पूजा करनेवाला ।

**पुजेरी**—संज्ञा पु० दे० "पुजारी" ।

**पुजैया**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पूजना ] पूजा करनेवाला ।

संज्ञा पुं० [ हिं० पूजना=भरना ] पूरा करनेवाला । भरनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० दे० "पूजा" ।

**पुट**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. किसी वस्तु से तर करने या उसका हलका मेल करने के लिए डाला हुआ छींटा । हलका छिड़काव । २. रंग या हलका मेल देने के लिए घुले हुए रंग या और किसी पतली चीज में डुबाना । बोर । ३. बहुत हलका मेल । भावना ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आच्छादन । ढाँकनेवाली वस्तु । २. गोल गहरा पात्र । कटोरा । ३. दोने के आकार की वस्तु । ४. औषध पकाने का मुँहबंद बरतन । ५. दो बराबर बरतनों को मुँह मिलाकर जोड़ने से बना हुआ बंद घेरा । संपुट । ६. घोड़े की टाप । ७ अंतःपट । अँतरौटा । ८ दो नगण, एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त ।

**पुटकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुटक ] पोटली । गठरी ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पटपटाना=मरना ] १. आकस्मिक मृत्यु । २. दैवी आपत्ति । आफत ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० पुट=हलका मेल ] बेसन या आटा जो तरकारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के लिए मिलाते हैं । आलन ।

**पुटपाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पत्ते के दोने में रखकर औषध पकाने का विधान । ( वैद्यक ) २. मुँहबंद बरतन में दवा रखकर उसे गड्ढे के भीतर पकाने का विधान ।

**पुटरी, पुटली**—संज्ञा स्त्री० दे० "पोटली" ।

**पुटियाना**†—क्रि० स० [ ? ] फुसलाना ।

**पुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुट ] १. छोटा दोना । छोटा कटोरा । २. खाली स्थान जिसमें कोई वस्तु रखी जा सके । ३. पुड़िया । ४. कौपीन ।

लँगोटी।

**पुटीन**—संज्ञा पुं० [ अं० पुटी ] किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के जोड़ आदि भरने में काम आनेवाला एक मसाला।

**पुट्ठा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुष्ट या पृष्ठ ] १. चूतड़ का ऊपरी कुछ कड़ा भाग। २. चौपायों का विशेषतः घोड़ों का चूतड़। ३. घोड़ों की संख्या के लिए शब्द। ४. किसी पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।

**पुठवार**—क्रि० वि० [ हिं० पुट्ठा ] पीछे। बगल में।

**पुठवाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० पुट्ठा+वाला ] मददगार। पृष्ठरक्षक।

**पुड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुट ] [ स्त्री० अल्पा० पुड़ी, पुड़िया ] बड़ी पुड़िया या बंडल।

**पुड़िया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुटिका ] १. मोड़ या लपेट कर संपुट के आकार का किया हुआ कागज जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय। २. पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा। ३. आधार-स्थान। खान। भंडार। घर।

**पुढ़ाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रौढ़ता"।

**पुण्य**—वि० [ सं० ] पवित्र। शुभ। अच्छा।

संज्ञा पुं० १. वह कर्म जिसका फल शुभ हो। धर्म का कार्य्य। २. शुभ कर्म का संचय।

**पुण्यकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दान-पुण्य करने का समय। २. पवित्र समय।

**पुण्यक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो। तीर्थ।

**पुण्यभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्यावर्त्त।

**पुण्यवान्**—वि० [ सं० पुण्यवत् ] [ स्त्री० पुण्यवती ] पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।

**पुण्यश्लोक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पुण्यश्लोका ] पवित्र चरित्र या आचरणवाला।

**पुण्यस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीर्थ-स्थान।

**पुण्याई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पुण्य+आई ( प्रत्य० )] पुण्य का फल या प्रभाव।

**पुण्यात्मा**—वि० [ सं० पुण्यात्मन् ] जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। धर्मात्मा।

**पुण्याहवाचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवकार्य्य के अनुष्ठान के पहले मंगल के लिए 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथन।

**पुतना**—क्रि० अ० [ हिं० पोतना ] पोता जाना। पुताई होना।

**पुतरा**—संज्ञा पुं० [ स्त्री० पुतरी ] दे० "पुतला"।

**पुतला**—संज्ञा पुं० [ सं० पुत्रक ] [ स्त्री० पुतली ] लकड़ी, मिट्टी कपड़े आदि का बना हुआ पुरुष का वह आकार या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा ( खेल ) के लिए हो।

**मुहा०**—किसी का पुतला बाँधना=किसी की निंदा करते फिरना। बदनामी करना।

**पुतली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पुतला ] १. लकड़ी, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति जो विनोद या क्रीड़ा (खेल) के लिए हो। गुड़िया। २. आँख के बीच का काला भाग।

**मुहा०**—पुतली फिर जाना=आँखें पथरा जाना; नेत्र स्तब्ध होना। ( मरण चिह्न ) ३. कपड़ा बुनने की कल या मशीन।

**यौ०**—पुतलीघर = कल-कारखाना, विशेषतः कपड़ा बुनने का कारखाना।

**पुताई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पोतना+आई ( प्रत्य० ) ] पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**पुतारा**—संज्ञा पुं० दे० "पुचारा"।

**पुत्त***—संज्ञा पुं० दे० "पुत्र"।

**पुत्तरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पुत्री"।

**पुत्तलिका, पुत्तली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पुतली। २. गुड़िया।

**पुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पुत्री ] लड़का। बेटा।

**पुत्रजीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंगुदी से मिलता-जुलता एक बड़ा और सुंदर पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं।

**पुत्रवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली। पूती। ( स्त्री )

**पुत्रवधू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पुत्र की स्त्री।

**पुत्रवान्**—वि० पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पुत्रवती ] जिसके पुत्र हो।

**पुत्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लड़की। बेटी। २. पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या। ३. गुड़िया। मूर्ति। पुतली। ४. आँख की पुतली। ५. स्त्री का चित्र।

**पुत्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कन्या। बेटी।

**पुत्रेष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है।

**पुदीना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पोदीनः ] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में बहुत अच्छी गंध होती है। इससे

...जिनसे चटनी आदि बनाते हैं।

**पुद्गल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्पर्श, रस और वर्णवाला पदार्थ। (जैन) २. शरीर। देह। (बौद्ध) ३. परमाणु। ४. आत्मा।
वि० सुंदर। प्रिय।

**पुनः**—अव्य० [सं० पुनर] १. फिर। दोबारा। दूसरी बार। २. उपरांत। पीछे। अनंतर।

**पुन***—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

**पुनरपि**—क्रि० वि० [सं०] फिर भी।

**पुनरबसु***†—संज्ञा पुं० दे० "पुनर्वसु"।

**पुनरागमन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फिर से आना। दोबारा आना। २. फिर जन्म लेना।

**पुनरावर्त्तन**—संज्ञा पुं० [सं०] कर्त्ता पुनरावर्त्ती] १. बार बार लौटकर आना। २. बार बार संसार में जन्म लेना।

**पुनरावृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरावृत्त] १. फिर से घूमना। फिर से घूमकर आना। २. किए हुए काम को फिर करना। दोहराना। ३. एक बार पढ़कर फिर पढ़ना।

**पुनरुक्तवदाभास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पड़े, परन्तु यथार्थ में न हो।

**पुनरुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० पुनरुक्त] एक बार कही हुई बात को फिर कहना। कहे हुए वचन को फिर कहना।

**पुनरुज्जीवन**—संज्ञा पुं० [सं०] [संज्ञा पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना।

**पुनरुत्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फिर से उठना। २. पतन होने के बाद फिर से उठना या उन्नति करना।

**पुनर्जन्म**—संज्ञा पुं० [सं०] मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में उत्पत्ति। एक शरीर छूटने पर दूसरा शरीर धारण।

**पुनर्जीवन**—संज्ञा पुं० १. दे० "पुनरुज्जीवन"। २. पुनर्जन्म।

**पुनर्नवता**—संज्ञा पुं० १. नया होना। २ अज्ञान।

**पुनर्नवा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जो फूलों के रंग के भेद से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील। गदहपुन्ना।

**पुनर्भू**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह विधवा स्त्री जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो।

**पुनर्वसु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ताइस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कात्यायन मुनि। ५. एक लोक।

**पुनि***—क्रि० वि० [सं० पुनः] फिर। फिर से। दोबारा।

**पुनी***—संज्ञा पुं० [सं० पुण्य] पुण्यात्मा।
संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण] पूर्णिमा। पूनो।
क्रि० वि० [सं० पुनः] पुनः। फिर।

**पुनीत**—वि० [सं०] [स्त्री० पुनीता] पवित्र। पाक।

**पुन्न**—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

**पुन्नाग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुलतान चंपा। २. श्वेत कमल। ३. जायफल।

**पुन्यता, पुन्यताई***—संज्ञा स्त्री० [सं० पुण्य] १. धर्मशीलता। २. पवित्रता।

**पुपली**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० पोपला] बाँस की पतली पोली नली।

**पुमान्**—संज्ञा पुं० [सं०] मर्द। नर।

**पुरंदर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुर, नगर या घर को तोड़नेवाला। २. इंद्र। ३. विष्णु।

**पुरंध्री**—संज्ञा स्त्री० [सं० पुरन्ध्री] १. पत्नी। भार्या। स्त्री। २. बाल-बच्चोंवाली स्त्री।

**पुरः**—अव्य० [सं० पुरस्] १. आगे। २. पहले।

**पुरःसर**—वि० [सं०] १. अग्रगंता। अगुआ। २. संगी। साथी। ३. समन्वित। सहित।

**पुर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पुरी] १. नगर। शहर। कसबा। २. आगार। घर। ३. कोठा। अटारी। ४. लोक। भुवन। ५. नक्षत्र। पुंज। राशि। ६. देह। शरीर। ७. दुर्ग। किला। गढ़।
वि० [अ०] पूर्ण। भरा हुआ।
संज्ञा पुं० [देश०] कूएँ से पानी निकालने का चमड़े का डोल। चरसा।

**पुरइन***—संज्ञा स्त्री० [सं० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २. कमल।

**पुरइया**†—संज्ञा पुं० [देश०] १. तकली। २. बुनाई में कातना।

**पुरखा**—संज्ञा पुं० [सं० पुरुष] [स्त्री० पुरखिन] १. पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप, दादा, परदादा आदि।
मुहा०—पुरखे तर जाना=पूर्व-पुरुषों का (पुत्र आदि के कृत्य से) परलोक में उत्तम गति प्राप्त होना। बड़ा भारी पुण्य या फल होना। २. घर का बड़ा-बूढ़ा।

**पुरचक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पुच-कार ] १. चुमकार। पुचकार। २. बढ़ावा। उत्साह-दान। ३. प्रेरणा। उसकावा। ४. समर्थन। हिमायत।

**पुरजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. टुकड़ा। खंड।

मुहा०—पुरजे पुरजे करना या उड़ाना=खंड खंड करना। टूक टूक करना।

२. कतरन। धज्जी। कटा टुकड़ा। कत्तल। ३. अवयव। अंग। अंश। भाग।

यौ०-चलता पुरजा=चालाक आदमी।

**पुरट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ण। सोना।

**पुरत्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शहर-पनाह। प्राकार। कोट। परकोटा।

**पुरबला, पुरबुला**†—वि० [ सं० पूर्व+ला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० पुरबली, पुरबुली ] १. पूर्व का। पहले का। २. पूर्वजन्म का।

**पुरबिया**—वि० [ हिं० पूरब ] [स्त्री० पुरबनी ] पूर्वदेश में उत्पन्न या रहनेवाला। पूरब का।

**पुरवट**†—संज्ञा पुं० [ सं० पूर ] चमड़े का बहुत बड़ा डोल जिसे कुएँ में डालकर बैलों की सहायता से सिंचाई के लिए पानी खींचते हैं। चरसा। मोट।

**पुरवना***†—क्रि० स० [ हिं० पूरना] १. पूरना। भरना। पुजाना। २. पूरा करना।

मुहा०—साथ पुरवना =साथ देना।

क्रि० अ० १. पूरा होना। २. यथेष्ट होना। ३. उपयोग के योग्य होना।

**पुरवा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुर ] छोटा गाँव। पुरा। खेड़ा।

संज्ञा पुं० [ सं० पूर्व+वात ] पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु।

संज्ञा पुं० [ सं० पुटक ] मिट्टी का कुल्हड़।

**पुरवाई, पुरवैया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पूर्व+वायु ] वह वायु जो पूर्व से चलती है।

**पुरश्चरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। २. किसी मंत्र, स्तोत्र आदि को किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए नियमपूर्वक जपना। प्रयोग।

**पुरषा**-संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

**पुरसा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।

**पुरस्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पुरस्कृत ] १. आगे करने की क्रिया। २. आदर। पूजा। ३. प्रधानता। ४. स्वीकार। ५. पारितोषिक। उप-हार। इनाम।

**पुरस्कृत**—वि० [ सं० ] १. आगे किया हुआ। २ आहत। पूजित। ३. स्वीकृत। ४. जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो।

**पुरस्सर**-वि० दे० "पुरःसर"।

**पुरहूत***-संज्ञा पुं० दे० "पुरुहूत"।

**पुरांगना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नगर में रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।

**पुरा**—अव्य० [ सं० ] १. पुराने समय में।

वि० २. प्राचीन। पुराना।

संज्ञा पुं० [सं० पुर] गाँव। बस्ती।

**पुराकल्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पूर्वकल्प। पहले का कल्प। २.प्राचीन काल। ३. एक प्रकार का अर्थवाद जिसमें प्राचीन काल का इतिहास कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।

**पुराकृत**—वि० [ सं० ] १. पूर्वकाल में किया हुआ। २. पूर्व-जन्म में किया हुआ।

**पुराण**—वि० [ सं० ] पुरातन। प्राचीन।

संज्ञा पुं० १. सृष्टि, मनुष्य, देवों, दानवों आदि के ऐसे वृत्तांत जो पुरुष परंपरा से चले आते हों। २. हिंदुओं के धर्म-संबंधी आख्यान-ग्रंथ जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तांत रहते हैं। ये अठारह हैं। ३. अठारह की संख्या। ४. शिव। ५. कार्षापण।

**पुरातत्त्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन काल-संबंधी विद्या। प्रत्नशास्त्र।

**पुरातन**—वि० [ सं० ] प्राचीन। पुराना।

संज्ञा पुं० विष्णु।

**पुरातनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राचीनता। पुरानापन।

**पुरान**†—वि० दे० "पुराना"।

संज्ञा पुं० दे० "पुराण"।

**पुराना**—वि० [ सं० पुराण ] [ स्त्री० पुरानी ] १. जिसे उत्पन्न हुए या बने बहुत काल हो गया हो। बहुत दिनों का। प्राचीन। पुरातन। २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। जीर्ण। ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। परिपक्व।

मुहा०—पुराना खुर्राट=१. बूढ़ा। २. बहुत दिनों का अनुभवी। पुराना घाघ=बहुत बड़ा चालाक।

४. अगले समय का। प्राचीन। अतीत। ५. बहुत काल या समय का। ६. जिसका चलन अब न हो।

क्रि० स० [हिं० पूरना का प्रे०] १. पूरा कराना। पुजवाना। भराना। २. पालन कराना। अनुकूल करना।

३. पूरा करना। भरना। ४. पालन करना। अनुसरण करना।

**पुरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**पुराला***—संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।

**पुरावृत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराना वृत्तांत। पुराना हाल। इतिहास।

**पुरि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ पुरी। २. नदी।

संज्ञा पुं० दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

**पुरिखा***—संज्ञा पुं० दे० "पुरखा"।

**पुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नगरी। शहर। २. जगन्नाथपुरी। पुरुषोत्तम धाम।

**पुरीष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्ठा। मल। गू।

**पुरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवलोक। २. दैत्य। ३. पराग। ४. शरीर। ५. एक प्राचीन राजा जो नहुष के पुत्र ययाति के पुत्र थे।

**पुरुख***—संज्ञा पुं० दे० "पुरुष"।

**पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मनुष्य। आदमी। २. नर। ३. सांख्य में प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्त्ता और असंग चेतन पदार्थ। आत्मा। ४ विष्णु। ५. सूर्य्य। ६ जीव। ७. शिव। ८. व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापद वाचक (कहनेवाले) के लिए प्रयुक्त हुआ है अथवा संबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिए अथवा अन्य के लिए। जैसे—'मैं' उत्तम पुरुष हुआ, 'वह' अन्य पुरुष और 'तुम' मध्यम पुरुष। ९. मनुष्य का शरीर या आत्मा। १०. पूर्वज। ११. पति। स्वामी।

**पुरुषत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुरुष होने का भाव। पुंसत्व। मरदानगी।

**पुरुषपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गांधार की प्राचीन राजधानी। आजकल का पेशावर।

**पुरुषमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वैदिक यज्ञ जिसमें नर-बलि की जाती थी।

**पुरुषसूक्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त जो "सहस्रशीर्षा" से आरंभ होता है।

**पुरुषानुक्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुरखों की चली आती हुई परंपरा।

**पुरुषायित बंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काम-शास्त्र के अनुसार विपरीत रति।

**पुरुषारथ***—संज्ञा पुं० दे० "पुरुषार्थ"।

**पुरुषार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुरुष के उद्योग का विषय। पुरुष का लक्ष्य। २. पौरुष। उद्यम। पराक्रम। ३ शक्ति। सामर्थ्य। बल।

**पुरुषार्थी**—वि० [ सं० पुरुषार्थिन् ] १. पुरुषार्थ करनेवाला। २ उद्योगी। ३. परिश्रमी। ४. बली।

**पुरुषोत्तम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ श्रेष्ठ पुरुष। २. विष्णु। ३. जगन्नाथ जिनका मंदिर उड़ीसा में है। ४. कृष्णचंद्र। ५. ईश्वर। नारायण। ६. मल-मास। अधिक मास।

**पुरुहूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**पुरूरवा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन राजा जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है। इनकी पत्नी उर्वशी थी। २. विश्वेदेव।

**पुरैन, पुरैनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुटकिनी ] १. कमल का पत्ता। २. कमल।

**पुरोडाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यव आदि के आटे की बनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिए कपाल में पकाई जाती थी। २. हवि। ३. वह वस्तु जिसका यज्ञ में होम किया जाय। यज्ञभाग। ४. सोमरस।

**पुरोधा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुरोधस् ] पुरोहित।

**पुरोहित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पुरोहितानी ] वह प्रधान याजक जो यजमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करे कराए। कर्मकांड करानेवाला।

**पुरोहिताई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुरोहित + आई ( प्रत्य० ) ] पुरोहित का काम।

**पुर्‌वै***—संज्ञा पुं० दे० "पुरवट"।

**पुर्‌ती**—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्ति"।

**पुर्तगाल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] योरप के दक्षिण-पश्चिम कोने का एक छोटा प्रदेश।

**पुर्तगाली**—वि० [ हिं० पुर्तगाल ] १. पुर्तगाल संबंधी। २. पुर्तगाल का रहनेवाला।

**पुर्तगीज**—वि० [ अं० ] पुर्तगाली।

**पुल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] नदी, जलाशय आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय। सेतु।

**मुहा०**—किसी बात का पुल बाँधना= झड़ी बाँधना। बहुत अधिकता कर देना। अतिशय करना। पुल टूटना= बहुतायत होना। अधिकता होना। अटाला या जमघट लगना।

**पुलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों (छिद्रों) का प्रफुल्ल होना। रोमांच। २. एक प्रकार का रत्न। याकूत। महताब।

**पुलकना**—क्रि० अ० [ सं० पुलक+ना ( प्रत्य० ) ] पुलकित होना। प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना। गद्‌गद होना।

**पुलकाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पुलकना ] पुलकित होने का भाव। गद्‌गद होना।

**पुलकालि, पुलकावलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पुलकावलि। हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली।

**पुलकित**—वि० [ सं० ] प्रेम या हर्ष के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों। गद्‌गद।

**पुलटा†**—संज्ञा स्त्री० दे० "पलट"।

**पुलटिस**—संज्ञा स्त्री० [अं० पाल्टिस ] फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिए उस पर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप।

**पुलपुला**—वि० [ अनु० ] जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दबाने से धँसे।

**पुलपुलाना**—क्रि० स० [वि० पुलपुला] १. किसी मुलायम चीज को दबाना। २. मुँह में लेकर दबाना। चूसना।

**पुलस्त्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ऋषि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है। ये ब्रह्मा के मानस-पुत्रों में थे। २. शिव।

**पुलह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सप्तर्षियों में एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस-पुत्र और प्रजापति थे। २. शिव।

**पुलहना***—क्रि० अ० दे० "पलुहना"।

**पुलाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक कदन्न। अँकरा। २. उबाला हुआ चावल। भात। ३. भात का माँड़। पीच। ४. पुलाव।

**पुलाव**—संज्ञा पुं० [ सं० पुलाक। मि० फ़ा० पुलाव ] एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है। मांसोदन।

**पुलिंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति। २. वह देश जहाँ पुलिंद जाति बसती थी।

**पुलिंदा**—संज्ञा पुं० [ हिं० पूला ] लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा। गड्डी। बंडल।

**पुलिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी के भीतर से हाल की निकली हुई जमीन। चर। २. तट। किनारा।

**पुलिस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुरुष, अं० पुलिस ] प्रजा की जान और माल की हिफाजत के लिए मुकर्रर सिपाही या अफसर।

**पुलिहोरा†**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक पकवान।

**पुलोमजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] इंद्राणी। शची।

**पुलोमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भृगु की पत्नी का नाम।

**पुवा†**—संज्ञा पुं० दे० "मालपूआ"।

**पुश्त**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. पृष्ठ। पीठ। पीछा। २. वंश-परंपरा में कोई एक स्थान। पिता, पितामह, प्रपितामह आदि या पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि का पूर्वापर स्थान। पीढ़ी।

यौ०—पुश्त दर पुश्त=वंशपरंपरा में। पुश्तहा पुश्त=कई पीढ़ियों तक

**पुश्तक**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० पुश्त ] घोड़े, गधे आदि का पीछे के दोनों पैरों से लात मारना। दोलत्ती।

**पुश्तनामा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वंशावली। पीढ़ीनामा। कुरसीनामा।

**पुश्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० पुश्तः ] १. पानी की रोक या मजबूती के लिए किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढालुवाँ टीला। २. बाँध। ऊँची मेंड़। ३. किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा। पुट्ठा।

**पुश्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. टेक। सहारा। आश्रय। थाम। २. सहायता। पृष्ठरक्षा। मदद। ३. पक्ष। तरफदारी। ४. बड़ा तकिया। गाव-तकिया।

**पुश्तैनी**—वि० [हिं० पुश्त] १. जो कई पुश्तों से चला आता हो। दादा, परदादा के समय का पुराना। २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।

**पुष्कर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जल। २. जलाशय। ताल। ३. कमल। ४. करछी का कटोरा। ५. हाथी की सूँड़ का अगला भाग। ६. आकाश। ७. बाण। तीर। ८. सर्प। ९. युद्ध। १०. भाग। अंश। ११. पुष्करमूल। १२. सूर्य्य। १३. एक दिग्गज। १४. सारस पक्षी। १५. विष्णु। १६. शिव। १७. बुद्ध। १८. पुराणों में कहे गए सात द्वीपों में से एक। १९. एक तीर्थ जो अजमेर के पास है।

**पुष्करमूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ओषधि का मूल या जड़ जो आजकल नहीं मिलती।

**पुष्करिणी**—संज्ञा स्त्री [ सं० ] छोटा तालाब।

**पुष्कल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार ग्रास की भिक्षा। २. अनाज नापने का एक प्राचीन मान। ३. राम के भाई भरत के दो पुत्रों में से एक। ४. शिव।

वि० १. बहुत। अधिक। ढेर सा। प्रचुर। २. भरा-पूरा। परिपूर्ण। ३. श्रेष्ठ। ४. उपस्थित। ५. पवित्र।

**पुष्ट**—वि० [ सं० ] १. पोषण किया हुआ। पाला हुआ। २. तैयार।

मोटा-ताजा। बलिष्ठ। ३. मोटा-ताजा करनेवाला। बलवर्द्धक। ४. दृढ़। मजबूत। पक्का।

**पुष्टई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुष्ट+ई (प्रत्य०) ] बलवीर्य्यवर्द्धक औषध। ताकत की दवा।

**पुष्टता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजबूती। पोढ़ापन। दृढ़ता।

**पुष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पोषण। २. मोटा-ताजापन। बलिष्ठता। ३. वृद्धि। संतति की बढ़ती। ४. दृढ़ता। मजबूती। ५. बात का समर्थन। पक्कापन।

**पुष्टिकर, पुष्टिकारक**—वि० [ सं० ] पुष्टि करनेवाला। बलवीर्यकारक।

**पुष्टिमार्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] वल्लभ संप्रदाय। वल्लभाचार्य्य के मतानुकूल वैष्णव भक्ति मार्ग।

**पुष्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पौधों का फूल। २. ऋतुमती स्त्री का रज। ३. आँख का एक रोग। फूली। ४. कुबेर का विमान। पुष्पक। ५. मांस। (वाममार्गी)।

**पुष्पक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फूल। २. कुबेर का विमान जिसे उनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था। ३. आँख का एक रोग। फूला। फूली।

**पुष्पदंत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु-कोण का दिग्गज। २. शिव का अनुचर एक गंधर्व।

**पुष्पधन्वा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुष्पधन्वन् ] कामदेव।

**पुष्पध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**पुष्पपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना) का एक नाम।

**पुष्पमित्र**—संज्ञा पुं० दे० "पुष्यमित्र"।

**पुष्परज**—संज्ञा पुं० [ सं० पुष्परजस् ] पराग। फूलों की धूल।

**पुष्पराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुखराज।

**पुष्परेणु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पराग।

**पुष्पवती**—वि० स्त्री० [ सं० ] १. फूलवाली। फूली हुई। २. रजोवती। रजस्वला। ऋतुमती।

**पुष्पवाटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फुलवारी। फूलों का बगीचा। उद्यान।

**पुष्पबाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**पुष्पवृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फूलों की वर्षा। ऊपर से फूल गिरना या गिराना।

**पुष्पशर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**पुष्पांजलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फूलों से भरी अंजलि। अंजलि भरकर फूल जो किसी देवता या पूज्य पुरुष पर चढ़ाए जायँ।

**पुष्पागम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वसंत ऋतु।

**पुष्पिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अध्याय के अंत में वह वाक्य जिसमें कहे हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है और जो प्रायः "इति श्री" से आरंभ होता है और इसमें प्रायः ग्रंथ, ग्रन्थकार और रचना-काल आदि का उल्लेख रहता है।

**पुष्पित**—वि० [ सं० ] पुष्पों से युक्त। फूला हुआ।

**पुष्पिताग्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्द्धसमवृत्त।

**पुष्पोद्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फुलवारी। पुष्पवाटिका।

**पुष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुष्टि। पोषण। २. मूल या सार वस्तु। ३. आठवाँ नक्षत्र जिसकी आकृति बाण की सी है। तिष्य। ४. पूस का महीना।

**पुष्यमित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मौर्यों के पीछे मगध में शुंग वंश का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा।

**पुसकर***—संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।

**पुसाना***†—क्रि० अ० [ हिं० पोसना ] १. पूरा पड़ना। बन पड़ना। २. अच्छा लगना। शोभा देना।

**पुस्त***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पुश्त"।

**पुस्तक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ स्त्री० अल्पा० पुस्तिका ] पोथी। किताब।

**पुस्तकाकार**—वि० [ सं० ] पोथी के रूप का। पुस्तक के आकार का।

**पुस्तकालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह भवन या घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो।

**पुस्तिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छोटी पुस्तक।

**पुहकर***—संज्ञा पुं० दे० "पुष्कर"।

**पुहना**—क्रि० अ० [ हिं० पोहना का अ० ] पोहा जाना। पिरोया या गूँथा जाना।

**पुहप, पुहुप**—संज्ञा पुं० [ सं० पुष्प ] फूल।

**पुहुमी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० भूमि ] पृथ्वी।

**पुहुरेनु***—संज्ञा पुं० [ सं० पुष्परेणु ] पराग।

**पुहुपराग***—संज्ञा पुं० दे० "पुखराज"।

**पुहुवी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० पृथिवी ] भूमि।

**पूँगी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक

प्रकार की बाँसुरी।

**पूँछ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुच्छ ] १. जंतुओं, पक्षियों, कीड़ों आदि के शरीर में सबसे अंतिम या पिछला भाग। पुच्छ। लांगूल। दुम। २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग। ३. पिछलग्गू। पुछल्ला।

**पूँजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुंज ] १. संचित धन। प्राप्त। जमा। २. वह धन जो किसी व्यापार में लगाया गया हो। ३. धन। रुपया पैसा। ४. किसी विशेष विषय में किसी की योग्यता। ५. समूह। ढेर।

**पूँजीदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० पूँजी+ फ़ा० दार ] पूँजीपति।

**पूँजीदारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पूँजी+ फ़ा० दारी ] ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें पूँजीदारों का स्थान प्रधान और सबसे बढ़कर हो।

**पूँजीपति**—संज्ञा पुं० [ हिं० पूँजी+ सं० पति ] वह जिसके पास पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे। पूँजीदार।

**पूँजीवाद**—संज्ञा पुं० [ हिं० पूँजी+ सं० वाद ] वह सिद्धांत जिसमें आर्थिक क्षेत्र में पूँजीदारों का स्थान आवश्यक रूप से प्रमुख माना जाता हो।

**पूँजीवादी**—संज्ञा पुं० [ हिं० पूँजी+ सं० वादिन् ] वह जो पूँजीवाद के सिद्धांत मानता हो।

**पूँठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पृष्ठ ] पीठ।

**पूआ**—संज्ञा पुं० [ सं० पूप, अपूप ] एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड़ या चीनी के रस में घोलकर घी में छानी जाती है। मालपूआ।

**पूखन***—संज्ञा पुं० दे० "पोषण"।

**पूग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुपारी का पेड़ या फल। २. ढेर। ३. छंद। ४. समूह। ढेर। ५. किसी विशेष कार्य के लिए बना हुआ संघ। कंपनी।

**पूगना**—क्रि० अ० [ हिं० पूजना ] पूरा होना। पूजना।

**पूगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पूगफल ] सुपारी।

**पूगीफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुपारी।

**पूछ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पूछना ] १. पूछने का भाव। जिज्ञासा। २. खोज। चाह। जरूरत। तलब। ३ आदर। इज्जत।

**पूछ-ताछ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पूछना ] किसी बात का पता लगाने के लिए बार बार पूछना। जिज्ञासा।

**पूछना**—क्रि० स० [ सं० पृच्छण ] १. कुछ जानने के लिए किसी से प्रश्न करना। दरियाफ्त करना। जिज्ञासा करना। २. खोज-खबर लेना। ३. किसी के प्रति सत्कार का भाव प्रकट करना।

मुहा०—बात न पूछना= १. तुच्छ जानकर ध्यान न देना। २. आदर न करना।

४. आदर करना। गुण या मूल्य जानना। ५ ध्यान देना। टोकना।

**पूछ-पाछ**—संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-ताछ"।

**पूछरी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पूँछ ] १. दुम। पूँछ। २. पीछे का भाग।

**पूछाताछी, पूछापाछी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-ताछ"।

**पूजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूजा करने वाला।

**पूजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पूजक, पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य ] १. पूजा की क्रिया। देवता की सेवा और वंदना। अर्चना। आराधना। २. आदर। सम्मान।

**पूजना**—क्रि० स० [ सं० पूजन ] १. देवी देवता को प्रसन्न करने के लिए कोई अनुष्ठान या कर्म करना। अर्चना करना। आराधना करना। २. आदर-सत्कार करना। ३. सिर झुकाना। सम्मान करना। ४. घूस देना। रिश्वत देना।

क्रि० अ० [ सं० पूर्यते ] १. पूरा होना। भरना। २. (किसी की) तुलना में आना या बराबरी को पहुँचना। ३. गहराई का भरना या बराबर हो जाना। ४. पटना। चुकता होना। ५. बीतना। समाप्त होना।

*क्रि० स० (किसी वस्तु की कमी को) पूरा करना।

**पूजनीय**—वि० [ सं० ] १. पूजने योग्य। अर्चनीय। २. आदरणीय। सम्मान योग्य।

**पूजमान**—वि० दे० "पूज्य"।

**पूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ईश्वर या देवी-देवता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव प्रकट करनेवाला कार्य्य। अर्चना। आराधन। २. वह धार्मिक कृत्य जो जल, फूल आदि किसी देवी-देवता पर चढ़ाकर या उसके निमित्त रखकर किया जाता है। आराधन। अर्चा। ३. आदर-सत्कार। खातिर। ४. किसी को प्रसन्न करने के लिए कुछ देना। ५. दंड। ताड़ना।

**पूजार्ह**—वि० [ सं० ] पूज्य।

**पूजित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पूजिता ] जिसकी पूजा की गई हो। आराधित। अर्चित।

**पूज्य**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पूज्या ]

१. पूजा के योग्य। पूजनीय। २. आदर के योग्य।

**पूज्यपाद**—वि० [ सं० ] जिसके पैर पूजनीय हों। अत्यंत पूज्य। अत्यंत मान्य।

**पूठि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० पृष्ठ ] पीठ।

**पूड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पूआ"।

**पूड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी"।

**पूत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा पूतता ] पवित्र। शुद्ध।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सत्य। २. शंख। ३. सफेद कुश। ४. पलास। ५. तिल वृक्ष।

संज्ञा पुं० [ सं० पुत्र ] बेटा। पुत्र।

**पूतना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक दानवी जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिए गोकुल आई थी उसे कृष्ण ने मार डाला था। २. एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

**पूतनारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**पूतरा**†—संज्ञा पुं० दे० "पुतला"।

संज्ञा पु० [ सं० पुत्र ] बेटा। पुत्र।

**पूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पवित्रता। शुचिता। २. दुर्गंध। बदबू।

**पूती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पोत=गट्ठा ] १. वह जड़ जो गाँठ के रूप में हो। २. लहसुन की गाँठ।

**पून**—संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

*संज्ञा पुं० दे० "पूर्ण"।

**पूनिउँ***—संज्ञा स्त्री० दे० "पूनो"।

**पूनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंजिका ] धुनी हुई रूई की वह बत्ती जो चरखे पर सूत कातने के लिए तैयार की जाती है।

**पूनौं, पूनो**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णिमा"।

**पूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूआ। मालपूआ।

**पूय**—संज्ञा पु० [ सं० ] पीप। मवाद।

**पूर**—वि० [ सं० पूर्ण ] १. दे० "पूर्ण"। २. वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते हैं।

**पूरक**—वि० [ सं० ] पूरा करनेवाला।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राणायाम विधि के तीन भागों में से पहला जिसमें श्वास को नाक से खींचते हुए भीतर की ओर ले जाते हैं। २. बिजौरा नीबू। ३. वे दस पिंड जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके मरने की तिथि से दसवें दिन तक नित्य दिए जाते हैं। ४. वह अंक जिसके द्वारा गुणा किया जाता है। गुणक अंक।

**पूरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० पूरणीय ] १. भरने की क्रिया। २. समाप्त या तमाम करना। ३. अंकों का गुणा करना। अंकगुणन। ४. पूरक पिंड। दशाह-पिंड। ५. मेह। वृष्टि। ६. समुद्र।

वि० [ सं० ] पूरक। पूरा करनेवाला।

**पूरन***—वि० दे० "पूर्ण"।

**पूरनपरब***†—संज्ञा पुं० दे० "पूर्णमासी"।

**पूरनपूरी**-संज्ञा स्त्री० [सं० पूर्ण+हिं० पूरी ] एक प्रकार की मीठी कचौरी।

**पूरनमासी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी"।

**पूरना**†—क्रि० स० [ सं० पूरण ] १. कमी या त्रुटि को पूरा करना। पूर्ति करना। २. आच्छादित करना। ढाँकना। ३. ( मनोरथ ) सफल करना। सिद्ध करना। ४. मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देवताओं के पूजन आदि के लिए चौखूँटे क्षेत्र आदि बनाना। चौक बनाना। ५. बटना। जैसे, तागा पूरना। ६. फूँकना। बजाना।

क्रि० अ० पूर्ण होना। भर जाना।

**पूरब**—संज्ञा पुं० [ सं० पूर्व ] वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है। पूर्व। प्राची।

*†वि०, क्रि० वि० दे० "पूर्व"।

**पूरबल***†—संज्ञा पुं० [ हिं० पूरबला ] १ पुराना जमाना। २. पूर्वजन्म।

**पूरबला***—वि० पुं० [ सं० पूर्व+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली ] १. प्राचीनकाल का। पुराना। २. पहले जन्म का।

**पूरबी**—वि० दे० "पूर्वी"।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा। ( बिहार )

**पूरा**—वि० पु० [ सं० पूर्ण ] [ स्त्री० पूरी ] १. जो खाली न हो। भरा। परिपूर्ण। २. समूचा। समग्र। समस्त। ३. जिसमें कोई कमी या कसर न हो। पूर्ण। कामिल। ४. भरपूर। यथेच्छ। काफी। बहुत।

**मुहा०**—किसी बात का पूरा=१. जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या प्रचुर हो। २. पक्का। दृढ़। मजबूत। किसी का पूरा पड़ना=कार्य पूर्ण हो जाना। सामग्री न घटना। *पूरा पाना=कार्य की सिद्धि तक पहुँचना। प्रयत्न या उद्देश्य की सिद्धि में सफल होना।

५. संपन्न। पूर्ण संपादित। कृत।

**मुहा०**—( कोई काम ) पूरा उतरना=अच्छी तरह होना। जैसा चाहिए, वैसा ही होना। बात पूरी उतरना=ठीक निकलना। सत्य ठहरना। दिन पूरे करना=समय बिताना। किसी प्रकार कालक्षेप करना। ( दिन ) पूरे

होना=अंतिम समय निकट आना। ६. तुष्ट। पूर्ण।

**पूरित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० पूरिता ] १. भरा हुआ। परिपूर्ण। २. तृप्त। ३. गुणा किया हुआ। गुणित।

**पूरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पूलिका ] १. एक प्रसिद्ध पकवान जिसे रोटी की तरह बेलकर खौलते घी में छान लेते हैं। २. मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा।

**पूर्ण**—वि० [ सं० ] १. पूरा। भरा हुआ। परिपूर्ण। २. जिसे कोई इच्छा या अपेक्षा न हो। अभावशून्य। ३. जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो। परितृप्त। ४. भरपूर। यथेष्ट। काफी। ५. समूचा। अखंडित। सकल। ६. समस्त। सारा। ७. सिद्ध। सफल। ८. जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

**पूर्णकाम**—वि० [ सं० ] १. जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हों। २. निष्काम। कामनाशून्य।

**पूर्णचंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूर्णिमा का चंद्रमा।

**पूर्णतया, पूर्णतः**—क्रि० वि० [ सं० ] पूरी तरह से। पूर्णरूप से।

**पूर्णता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पूर्ण का भाव। पूर्ण होना।

**पूर्णप्रज्ञ**—वि० [ सं० ] पूर्ण ज्ञानी।

संज्ञा पुं० पूर्णप्रज्ञ दर्शन के कर्त्ता मध्वाचार्य।

**पूर्णप्रज्ञ दर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदांतसूत्र के आधार पर बना हुआ एक दर्शन।

**पूर्णमासी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चांद्र मास की अंतिम तिथि, जिसमें चंद्रमा अपनी सारी कलाओं से पूर्ण होता है। पूर्णिमा।

**पूर्णविराम**—संज्ञा पुं० [सं०] लिपिप्रणाली में वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है।

**पूर्णायु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पूर्णायुस् ] १. सौ वर्ष की आयु। २. पूरी आयु।

वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला।

**पूर्णावतार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ईश्वर या किसी देवता का संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।

**पूर्णाहुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं। २. किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया।

**पूर्णिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पूर्णमासी।

**पूर्णोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उसके चारों अंग—अर्थात् उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—प्रकट रूप से प्रस्तुत हों।

**पूर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पालन। २. बावली, देवगृह, आराम (बगीचा), सड़क आदि बनाने का काम।

वि० १. पूरित। २. ढका हुआ।

**पूर्तविभाग**—संज्ञा पुं० [ सं० पूर्त+विभाग ] वह सरकारी महकमा जिसका काम सड़क, पुल आदि बनवाना है। तामीर का महकमा।

**पूर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति। २. पूर्णता। पूरापन। ३. किसी काम में जो वस्तु चाहिए, उसकी कमी को पूरा करने की क्रिया। ४. वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। ५. भरने का भाव। पूरण। ६. गुणा करने का भाव। गुणन।

**पूर्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखाई देता है। पश्चिम के सामने की दिशा।

वि० [ सं० ] १. पहले का। २. आगे का। अगला। ३. पुराना। ४. पिछला।

क्रि० वि० पहले। पेश्तर।

**पूर्वक**—क्रि० वि० [ सं० ] साथ। सहित।

**पूर्वकालिक**—वि० [ सं० ] १. जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्वकाल में हुआ हो। २. पूर्वकालीन। पूर्वकाल-संबंधी।

**पूर्वकालिक क्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।

**पूर्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ा भाई। अग्रज। २. बाप, दादा, परदादा आदि। पूर्व पुरुष। पुरखा।

**पूर्वजन्म**—संज्ञा पुं० [ सं० पूर्वजन्मन् ] वर्त्तमान से पहले का जन्म। पिछला जन्म।

**पूर्वपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शास्त्रीय विषय के संबंध में उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका। २. कृष्ण पक्ष। ३. मुद्दई का दावा।

**पूर्वपक्षी**—संज्ञा पुं० [सं० पूर्वपक्षिन् ] १. वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। २. वह जो दावा दायर करे।

**पूर्वफाल्गुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।

**पूर्वभाद्रपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

**पूर्वमीमांसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हिंदुओं का जैमिनि-कृत एक दर्शन जिसमें कर्मकांड-संबंधी बातों का निर्णय किया गया है।

**पूर्वरंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह

संगीत या स्तुति आदि जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिए होती है।

**पूर्वराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साहित्य में नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनों का संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है। प्रथमानुराग। पूर्वानुराग।

**पूर्वरूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह आकार जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २. किसी वस्तु का वह चिह्न या लक्षण जो उस वस्तु के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो। आगमसूचक लक्षण। आसार।

**पूर्ववत्**—क्रि० वि० [ सं० ] पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही। संज्ञा पुं० किसी कार्य का वह अनुमान जो उसके कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय।

**पूर्ववर्ती**—वि० [ सं० पूर्ववर्तिन् ] पहले का। जो पहले हो या रह चुका हो।

**पूर्ववृत्त**—संज्ञा पुं० [सं०] इतिहास।

**पूर्वानुराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है। पूर्वराग।

**पूर्वापर**—क्रि० वि० [ सं० ] आगे-पीछे।

वि० आगे का और पीछे का। अगला और पिछला।

**पूर्वापर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूर्वापर का भाव।

**पूर्वाफाल्गुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।

**पूर्वाभाद्रपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

**पूर्वार्द्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पहला आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

**पूर्वाषाढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] २७ नक्षत्रों में बीसवाँ नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं।

**पूर्वाह्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सबेरे से दुपहर तक का समय।

**पूर्वी**—वि० [ सं० पूर्वीय ] पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला। पूरब का। संज्ञा पुं० १. पूरब में होनेवाला एक प्रकार का चावल। २. एक प्रकार का दादरा जिसकी भाषा बिहारी होती है। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।

**पूर्वोक्त**—वि० [ सं० ] पहले कहा हुआ। जिसका जिक्र पहले आ चुका हो।

**पूला**—संज्ञा पुं० [सं० पूलक] [स्त्री० अल्पा० पूली ] मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।

**पूषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य्य। २. पुराणानुसार बारह आदित्यों में से एक। ३. एक वैदिक देवता जो कहीं सूर्य्य के रूप में और कहीं पशुओं के पालक के रूप में पाए जाते हैं।

**पूषा**—संज्ञा पुं० दे० "पूषण"।

**पूस**—संज्ञा पुं० [ सं० पौष ] वह चांद्र मास जो अगहन के बाद पड़ता है। पौष।

**पृक्का**—संज्ञा स्त्री० [सं०] असबरग।

**पृच्छक**—वि० [ सं० ] १. पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला। २. जिज्ञासु।

**पृतना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सेना का एक विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे। २. सेना। फौज। ३. युद्ध।

**पृथक्**—वि० [ सं० ] [संज्ञा पृथकता] भिन्न। अलग। जुदा।

**पृथकता**—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथक्ता"।

**पृथक्करण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अलग करने का काम।

**पृथक्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।

**पृथा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुंतिभोज की कन्या कुंती का दूसरा नाम।

**पृथिवी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

**पृथु**—वि० [ सं० ] १. चौड़ा। विस्तृत। २. बड़ा। महान्। ३. अगणित। असंख्य। ४. चतुर। प्रवीण। संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अग्नि। २. विष्णु। ३. शिव। ४. एक विश्वेदेव। ५. राजा वेणु के पुत्र का नाम। वि० जिसकी कीर्ति बहुत अधिक हो।

**पृथुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथु होने का भाव। २. विस्तार। फैलाव।

**पृथुल**—वि० [ सं० ] [संज्ञा पृथुलता] १. स्थूल। बड़ा। २. विशाल। ३. विस्तृत।

**पृथ्वी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सौर-जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब लोग रहते हैं। अवनी। इला। धरा। २. पंच भूतों या तत्त्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गंध है। ३. पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जो मिट्टी और पत्थर आदि का है और जिस पर हम सब लोग चलते-फिरते हैं। भूमि। जमीन। धरती। ( मुहा० के लिए दे० "जमीन" ) ४. मिट्टी। ५. सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**पृथ्वीतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जमीन की सतह। वह धरातल जिस पर हम लोग चलते-फिरते हैं। २. संसार। दुनिया।

**पृथ्वीनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**पृश्नि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुबला.

नामक राजा की रानी का नाम। २. चितले रंग की गाय। चितकबरी गाय। ३. पिठवन। ४. रश्मि। किरण।

**पृष्ट**—वि० [सं०] पूछा हुआ।

**पृष्ठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ। २ किसी वस्तु का ऊपरी तल। ३. पीछे का भाग। पीछा। ४. पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल। ५. पुस्तक का पन्ना। पन्ना।

**पृष्ठपोषक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ ठोंकनेवाला। २. सहायक। मददगार।

**पृष्ठभाग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पीठ। पुश्त। २. पिछला भाग।

**पृष्ठ-भूमि**-संज्ञा स्त्री०दे० "पृष्ठिका"।

**पृष्ठवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] रीढ़।

**पृष्ठिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पिछला भाग। २ मूर्ति, चित्र, विवरण आदि में वह सबसे पीछे का भाग, जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। पृष्ठ-भूमि।

**पेंग**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पटेंग] झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना।

**मुहा०**—पेंग मारना=झूले पर झूलते समय उस पर इस प्रकार जोर पहुँचाना जिसमें उसका वेग बढ़ जाय और दोनों ओर वह दूर तक झूले।

**पेंच**—संज्ञा पुं० दे० "पेच"।

**पेंडुकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० पंडुक] १. पंडुक पक्षी। फाखता। २. सुनारों की फुँकनी।

संज्ञा स्त्री० दे० "गुझिया"।

**पेंदा**—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पेंदी] किसी वस्तु का निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरती हो। तला।

**पेउसी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० पीयूष] १. दे० "पेवस"। २. एक प्रकार का पकवान। इंदर।

**पेखक***—संज्ञा पुं० [सं० प्रेक्षक] देखनेवाला।

**पेखना***†—क्रि० स० [सं० प्रेक्षण] देखना।

**पेच**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. घुमाव। फिराव। चक्कर। २. उलझन। झंझट। बखेड़ा। ३. चालाकी। चालबाजी। धूर्तता। ४. पगड़ी की लपेट। ५. कल। यंत्र। मशीन। ६. मशीन का पुरजा।

**मुहा०**—पेच घुमाना=ऐसी युक्ति करना जिससे किसी के विचार बदल जायँ।

७ वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गड़ारियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है। स्क्रू। ८. पतंग लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों की डोरों का एक दूसरी में फँस जाना। ९. कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। १०. युक्ति। तरकीब। ११. एक प्रकार का आभूषण जो टोपी या पगड़ी में सामने की ओर खोसा या लगाया जाता है। सिर-पेच। १२. एक प्रकार का आभूषण जो कानों में पहना जाता है। गोशपेच।

**पेचक**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० पेचिका] १. उल्लू पक्षी। २. जूँ। ३. बादल। ४. पलंग।

**पेचकश**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बढ़इयों और लोहारों आदि का वह औजार जिससे वे लोग पेच जड़ते अथवा निकालते हैं। २. वह घुमाव-दार पेच जिससे बोतल का काग निकाला जाता है।

**पेच-ताव**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह गुस्सा जो मन ही मन में रहे और निकाला न जा सके।

**पेचदार**—वि० [फ़ा०] १. जिसमें कोई पेच या कल हो। २. दे० "पेचीला"।

**पेचवान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बड़ी सटक जो फर्शी या गुड़गुड़ी में लगाई जाती है। २. बड़ा हुक्का।

**पेचा**†—संज्ञा पुं० [सं० पेचक] [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।

**पेचिश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है। मरोड़।

**पेचीदा**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा पेचीदगी] १. जिसमें पेच हो। पेचदार। २. जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो। मुश्किल।

**पेचीला**—वि० दे० "पेचीदा"।

**पेज**—संज्ञा स्त्री० [सं० पेय] रबड़ी। बसौंधी। पुस्तक के पन्ने का एक पृष्ठ।

**पेट**—संज्ञा पुं० [सं० पेट=थैला] १. शरीर में थैले के आकार का वह भाग जिसमें पहुँच कर भोजन पचता है। उदर।

**मुहा०**—पेट काटना=जान-बूझकर कम खाना जिसमें कुछ बचत हो जाय। पेट का धंधा=रोजी-रोजगार ढूँढ़नेका प्रबंध। जीविका का उपाय। पेट का पानी न पचना=रहा न जाना। रह न सकना। पेट का हलका=क्षुद्र प्रकृति का। ओछे स्वभाव का। पेट की आग=भूख। पेट की बात=गुप्त भेद। भेद की बात। पेट दिखाना=१. अत्यंत दीनता दिखलाना। २. भूखे होने का संकेत

करना। पेट चलना=दस्त होना। बार-बार पाखाना होना। पेट जलना=अत्यंत भूख लगना। † पेट देना=अपने मन की बात बतलाना। पेट पालना = जीवन निर्वाह करना। पेट फूलना = १. किसी बात के लिए बहुत अधिक उत्सुक होना। २. बहुत अधिक हँसने के कारण पेट में हवा भर जाना। ३. पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट मारकर मर जाना=आत्मघात करना। पेट में दाढ़ी होना=बचपन ही में धूर्त चतुर होना। पेट में डालना=खा जाना। पेट में पाँव होना=अत्यंत छली या कपटी होना। चालबाज होना। (कोई वस्तु) पेट में होना=गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पाँव निकालना=१. कुमार्ग में लगना। २. बहुत इतराना।

३. गर्भ। हमल।

मुहा०—पेट गिरना=गर्भपात होना। पेट रहना=गर्भ रहना। हमल रहना। पेटवाली=गर्भवती। पेट से होना=गर्भवती होना।

३. पेट के अंदर की वह थैली जिसमें खाद्य पदार्थ रहता और पचता है। पचौनी। ओझर। ४. अंतःकरण। मन। दिल।

मुहा०—पेट में घुसना या पैठना=रहस्य जानने के लिए मेल बढ़ाना। पेट में होना=मन में होना। ध्यान में होना।

५. पोली वस्तु के बीच का या भीतरी भाग। ६. गुंजाइश। समाई।

**पेटक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पिटारा। मंजूषा। २. समूह। ढेर।

**पेटकैया**†—क्रि० वि० [हिं० पेट+कैया (प्रत्य०)] पेट के बल।

**पेटा**—संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। बीच का हिस्सा। २. तफसील। ब्यौरा। पूरा विवरण। ३. सीमा। हद। ४. घेरा। वृत्त।

**पेटागि***—संज्ञा स्त्री० [सं० पेट+अग्नि] भूख।

**पेटारा**—संज्ञा पुं० दे० "पिटारा"।

**पेटार्थी, पेटार्थू**—वि० [सं० पेट+अर्थिन्] जो पेट भरने को ही सब कुछ समझता हो। भुक्खड़। पेटू।

**पेटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. संदूक। पेटी। २. छोटी पिटारी।

**पेटी**—संज्ञा स्त्री० [सं० पेटिका] १. संदूकची। छोटा संदूक। २. छाती और पेड़ू के बीच का स्थान।

मुहा०—पेटी पड़ना=तोंद निकलना।

३. कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा। कमरबंद। ४. चपरास। ५. हज्जामों की किसबत जिसमें वे कैंची, छूरा आदि रखते हैं।

**पेटू**—वि० [हिं० पेट] जो बहुत अधिक खाता हो। भुक्खड़।

**पेट्रोल**—संज्ञा पुं० [अं०] मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसके ताप से मोटरें आदि चलती हैं।

संज्ञा पुं० [अं० पैट्रोल] १. सैनिक रक्षा के लिए घूम घूमकर पहरा देना। २. वह सिपाही जो इस प्रकार पहरा देता हो।

**पेठा**—संज्ञा पुं० [देश०] सफेद कुम्हड़ा।

**पेड़**—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] वृक्ष। दरख्त।

**पेड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० पिंड] १. खोवे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। २. गुँधे हुए आटे की लोई।

**पेड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० पिंड] १. पेड़ का तना। धड़। कांड। २. मनुष्य का धड़। ३. पान का पुराना पौधा। ४. पुराने पौधे के पान। ५. वह कर जो प्रति वृक्ष पर लगाया जाय।

**पेड़ू**—संज्ञा पुं० [हिं० पेट] १. नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान। उपस्थ। २. गर्भाशय।

**पेन्शन**—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह वृत्ति जो किसी को उसकी पिछली सेवाओं के कारण मिलती है।

**पेन्सिल**—संज्ञा स्त्री० [अं०] एक तरह की कलम जिससे बिना स्याही के लिखा जाता है।

**पेन्हाना**†—क्रि० स० दे० "पहनाना"।

क्रि० अ० [सं० पयःस्रवन] दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

**पेपर**—संज्ञा पुं० [अं०] १. कागज। २. समाचार पत्र।

**पेम***†—संज्ञा पुं० दे० "प्रेम"।

**पेमचा**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**पेय**—वि० [सं०] पीने योग्य।

संज्ञा पुं० [सं०] १. पीने की वस्तु। २. जल। पानी। ३. दूध।

**पेरना**—क्रि० स० [सं० पीडन] १. किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। २. कष्ट देना। बहुत सताना। ३. किसी काम में बहुत देर लगाना।

क्रि० स० [सं० प्रेरण] १. प्रेरणा करना। चलाना। २. भेजना। पठाना।

**पेलना**—क्रि० स० [सं० प्रेरणा] १.

चौथाई। चतुर्थ भाग। २. एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक का मान। पासा खेलने का वह दाँव जिसे पौबारह कहते हैं।

**पावक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। तेज। ताप। २. सदाचार। अग्निमंथ वृक्ष। अगेथू का पेड़। ४. वरुण। ५. सूर्य।

वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

**पावकुलक**—संज्ञा पुं० [सं० पादाकुलक] पादाकुलक छंद। चौपाई।

**पावती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाना] रुपये पाने का सूचक पत्र। रसीद।

**पावदान**—संज्ञा पुं० [हिं० पाँव + दान (प्रत्य०)] १. पैर रखने के लिए बना हुआ स्थान या वस्तु। २. इक्के, गाड़ी आदि में लोहे की पटरी जिस पर पैर रखकर चढ़ते हैं।

**पावन**—वि० [सं०] [स्त्री० पावनी] १. पवित्र करनेवाला। २. पवित्र। शुद्ध। पाक।

संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित्त। शुद्धि। ३. जल। ४. गोबर। ५. रुद्राक्ष। ६. व्यास का एक नाम। ७. विष्णु।

**पावनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पवित्रता।

**पावना**—क्रि० स० [सं० प्रापण] १. पाना। प्राप्त करना। २. अनुभव करना। जानना। समझना। ३. भोजन करना। ४. दे० "पाना"।

संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक। लहना। २. वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।

**पावस**—संज्ञा स्त्री० [सं० प्रावृष] वर्षाकाल। बरसात।

**पावा**—संज्ञा पुं० दे० "पाया"।

संज्ञा पुं० [देश०] गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम है।

**पाश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बंधन के अधिक कसकर बैठ जाने से मर भी जाता है। फंदा। फाँस। २. पशु पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. बंधन। फँसानेवाली वस्तु।

**पाशक**—संज्ञा पुं० [सं०] पासा। चौसर।

**पाशकेरली**—संज्ञा स्त्री० [सं० पाश + केरल (देश०)] ज्योतिष की एक गणना जो पासे फेंककर की जाती है।

**पाशव**—वि० [सं०] १. पशु संबंधी। पशुओं का। २. पशुओं का जैसा।

**पाशवता**—संज्ञा स्त्री० दे० "पशुता"।

**पाशा**—संज्ञा पुं० [तु०, फा० पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि।

**पाशुपत**—वि० [सं०] १. पशुपति-संबंधी। शिव-संबंधी। २. पशुपति का।

संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। एक प्रकार का शैव। २. शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। ३. अथर्ववेद का एक उपनिषद्।

**पाशुपत दर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक सांप्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शन-संग्रह में है। नकुलीश पाशुपत दर्शन।

**पाशुपतास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था।

**पाश्चात्य**—वि० [सं०] १. पीछे का। पिछला। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिम।

**पाश्चात्यीकरण**—संज्ञा पुं० [सं० पाश्चात्य + करण] किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना। पाश्चात्य ढंग का बनाना।

**पाषंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेदविरुद्ध आचरण करनेवाला। झूठा मत माननेवाला। २. लोगों को ठगने के लिए साधुओं का सा रूप-रंग बनानेवाला। धर्मध्वजी। ढोंगी।

**पाषंडी**—वि० [सं० पाषण्डिन्] १. वेदविरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। ढोंगी। धूर्त।

**पाषर**—संज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।

**पाषाण**—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर। प्रस्तर।

वि० [स्त्री० पाषाणी] निर्दय। हृदयहीन।

**पाषाणभेद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक पौधा जो अपनी पत्तियों की सुंदरता के लिए बगीचों में लगाया जाता है। पखानभेद। पथरचट।

**पाषाणी**—वि० स्त्री० [सं०] पत्थर की तरह कठोर हृदयवाला।

**पाषाणीय**—वि० [सं०] पत्थर का।

**पासंग**—संज्ञा पुं० [फा०] १. तराजू की डंडी को बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा।

**मुहा०**—(किसी का) पासंग भी न होना = किसी के मुकाबिले में बहुत कम होना। २. तराजू की डाँड़ी बराबर न होना।

**पास**—संज्ञा पुं० [सं० पार्श्व] १. बगल। ओर। तरफ। २. सामीप्य। निकटता। समीपता। ३. अधिकार। कब्जा। रक्षा। पल्ला (केवल 'के', 'में' और 'से' विभक्तियों के साथ।)

अव्य० १. निकट। समीप। नजदीक।

यौ०—आस-पास=१. अगल बगल। समीप। २. लगभग। करीब।

मुहा०—(किसी के) पास बैठना=संगत में रहना। पास फटकना=निकट जाना।

२. अधिकार में। कब्जे में। रक्षा में। करके। ३. निकट जाकर, संबोधन करके। किसी के प्रति। किसी से।

*संज्ञा पुं० दे० "पाश"।

*संज्ञा पुं० दे० "पासा"।

वि० [अं०] परीक्षा आदि में सफल। उत्तीर्ण।

संज्ञा पुं० [अं०] वह कागज। जिसमें किसी के कहीं बेरोकटोक आने-जाने की इजाजत हो।

**पासनी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० प्राशन] बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति। अन्नप्राशन।

**पासबान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. चौकीदार। पहरेदार। २. रक्षक। रखवाला।

संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। रखेली। रखनी। (राजपूताना)।

**पासबानी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. चौकीदारी। २. रक्षा। हिफाजत।

**पासमान***—संज्ञा पुं० [हिं० पास+मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास। पार्श्ववर्ती।

**पासवर्ती***-वि० दे० "पार्श्ववर्ती"।

**पासा**—संज्ञा पुं० [सं० पाशक, प्रा० पासा] १. हाथीदाँत या हड्डी के छः-पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर खेलते हैं।

मुहा०—(किसी का) पासा पड़ना=भाग्य अनुकूल होना। किस्मत जोर करना। पासा पलटना=१. अच्छे से मंद भाग्य होना। २. युक्ति या तदबीर का उलटा फल होना।

२. वह खेल जो पासों से खेला जाता है। चौसर का खेल। ३. मोटी बत्ती के आकार में लाई हुई वस्तु। कामी। गुल्ली।

**पासि, पासिक***—संज्ञा पुं० [सं० पाश] १. फंदा। २. बंधन।

**पासी**—संज्ञा पुं० [सं० पाशिन्] १. जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला। २ एक जाति जो ताड़ी चुआने का व्यवसाय करती है।

संज्ञा स्त्री० [सं० पाश, हिं० पास+ई (प्रत्य०)] १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।

**पासुरी***-संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

**पाहँ***—अव्य० [सं० पार्श्व] १. निकट। समीप। पास। २. किसी के प्रति। किसी से।

**पाहन***—संज्ञा पुं० [सं० पाषाण, प्रा० पाहाण] पत्थर।

**पाहरू***†-संज्ञा पुं० [हिं० पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार।

**पाहाण***—संज्ञा पुं० दे० "पाहन"।

**पाहि***—अव्य० [सं० पार्श्व] १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।

**पाहि**—एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो', या "बचाओ"।

**पाहीं***—अव्य० दे० "पाहि"।

**पाहुच**†—संज्ञा स्त्री० दे० "पहुँच"।

**पाहुना**—संज्ञा पुं० [सं० प्राघूर्ण] [स्त्री० पाहुनी] १. अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २. दामाद। जमाता।

**पाहुनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पाहुना] १. स्त्री अतिथि। अभ्यागत स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।

**पाहुर**†—संज्ञा पुं० [सं० प्राभृत] १. भेंट। नजर। २. सौगात।

**पिंग**—वि० [सं०] १. पीला। पीलापन लिए भूरा। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. सुँघनी रंग का।

**पिंगल**—वि० [सं०] १. पीला। पीत। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. भूरापन लिए पीला। सुँघनी रंग का।

संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मुनि जो छंदःशास्त्र के आदि आचार्य्य माने जाते हैं। २. छंदःशास्त्र। ३. साठ संवत्सरों में से एक। ४. एक निधि का नाम। ५. बंदर। कपि। ६. अग्नि। ७. पीतल। ८. उल्लू पक्षी।

**पिंगला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हठ योग और तंत्र में जो तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं, उनमें से एक। २. लक्ष्मी का नाम। ३. गोरोचन। ४. शीशम का पेड़। ५. राजनीति। ६. दक्षिण के दिग्गज की स्त्री।

**पिंग-पांग**—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का अंग्रेजी खेल जो मेज पर छोटा सा जाल टाँगकर छोटे से गेंद और छोटे से बल्ले से खेला जाता है।

**पिंजड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पिंजरा"।

**पिंजर**—वि० [सं०] १. पीला। पीतवर्ण का। २. भूरापन लिए लाल रंग का।

संज्ञा पुं० १. पिंजड़ा। २. शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्ठर। पंजर। ३. सोना। ४. भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

**पिंजरा**—संज्ञा पुं० [सं० पंजर]

लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।

**पिंजरापोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० पिंजरा + पोल=फाटक ] वह स्थान जहाँ पालने के लिए गाय, बैल आदि चौपाये रखे जाते हों। पशुशाला। गोशाला।

**पिंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गोल-मटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल आदि का गोल लौंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५. भोजन। आहार। ६. शरीर। देह। ७. नक्षत्र। ग्रह।

**मुहा०**—पिंड छोड़ना=साथ न लगा रहना या संबंध न रखना। तंग न करना।

**पिंडखजूर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड-खजूर ] एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

**पिंडज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गर्भ से सजीव निकलनेवाला जंतु। जैसे मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली।

**पिंडदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

**पिंडरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

**पिंडरोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह रोग जो शरीर में घर किए हो। २. कोढ़।

**पिंडरोगी**—वि० [ सं० ] रुग्ण शरीर का।

**पिंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड ] टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है।

**पिंडवाही**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक प्रकार का कपड़ा।

**पिंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० पिंड ] [ स्त्री० अल्पा० पिंडी ] १. ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। २. गोल मटोल टुकड़ा। लुगदा। ३. मधु, तिल मिली हुई खीर आदि का गोल लौंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है।

**मुहा०**—पिंडा पानी देना=श्राद्ध और तर्पण करना।

४. शरीर। देह।

**पिंडारी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] दक्षिण की एक जाति जो पहले खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट-मार करने लगी और मुसलमान हो गई।

**पिंडालू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड + आलू ] १. एक प्रकार का शकरकंद। सुथनी। पिंडिया। २. एक प्रकार का शफतालू या रतालू।

**पिंडिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा पिंड। पिंडी। २. पिंडली। ३. वह पिंडी जिस पर देवमूर्ति स्थापित की जाती है। वेदी।

**पिंडिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंडिका ] १. गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बाँधा हुआ लंबोतरा टुकड़ा। लंबोतरी पिंडी। २ गुड़ की लंबोतरी भेली। मुट्ठा। ३. लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला।

**पिंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा ढेला या लौंदा। लुगदी। २. गीली या भुरभुरी वस्तु का टुकड़ा। ३. घीया। कद्दू। ४. पिंड खजूर। ५. वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है। ६. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।

**पिंडुरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

**पिअ**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।

**पिअराई***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पीत ] पीलापन।

**पिअरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीली ] हल्दी के रंग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह के समय में वर या वधू को पहनाई जाती है, या स्त्रियाँ गंगा जी को चढ़ाती हैं।

वि० स्त्री० दे० "पीली"।

**पिउ**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रिय ] पति।

**पिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पिकी ] [ भाव० पिकता ] कोयल।

**पिघलना**—क्रि० अ० [ सं० प्र + गलन ] १. गरमी से किसी चीज का गलकर पानी सा हो जाना। द्रवीभूत होना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

**पिघलाना**—क्रि० स० [ हिं० पिघलना का प्रे० ] १. किसी चीज को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना। २. किसी के मन में दया उत्पन्न करना।

**पिचकना**—क्रि० अ० [ सं० पिच्च=दबना ] किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना।

**पिचकाना**—क्रि० स० [ हिं० पिचकना का प्रे० ] फूले या उभरे हुए तल को दबाना।

**पिचकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पिचकना ] एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को जोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

**पिचकी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।

**पिचपिचा**—वि० [ अनु० ] १. लस-दार। चिपचिपा। २. दबा कुचला और गुलगुला।

**पिचुकका**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पिच-

कारा] १. पिचकारी। २. गोलगप्पा।

**पिच्चित**—वि० [सं० पिच्च=दबना, पिचकना] पिचका हुआ। दबा हुआ।

**पिच्ची**—वि० दे० "पिच्चित"।

**पिच्छ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पशु की पूँछ। लांगूल। २. मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। ३. मोर की चोटी। चूड़ा।

**पिच्छल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोचरस। २. अकासबेल। ३. शीशम। वि० रपटनेवाला। चिकना।

वि० दे० "पिछला"।

**पिच्छिल**—वि० [सं०] [स्त्री० पिच्छिला] १. गीला और चिकना। २. फिसलनेवाला। जिस पर पड़ने से पैर रपटे। ३ चूड़ायुक्त (पक्षी)। ४. लहा, कोमल, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ)।

**पिछड़ना**—क्रि० अ० [हिं० पिछाड़ी+ना (प्रत्य०)] पीछे रह जाना। साथ साथ, बराबर या आगे न रहना।

**पिछलगा**—संज्ञा पुं० [हिं० पीछे+लगना] १. वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले। अधीन। आश्रित। २. अनुवर्ती। अनुगामी। शिष्य। ३. सेवक। नौकर।

**पिछलगी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिछलगा] पिछलगा होने का भाव। अनुयायी होना। अनुगमन करना।

**पिछलग्गू**†—संज्ञा पुं० दे० "पिछलगा"।

**पिछलत्ती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा+लात] घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मारना।

**पिछला**—वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १. पीछे की ओर का। "अगला" का उलटा। २. बाद का। अनंतर का। पहला का उलटा। ३. अंत की ओर का।

मुहा०—पिछला पहर=दो पहर या आधी रात के बाद का समय।

४. बीता हुआ। गत। पुराना। गुजरा हुआ। ५. गत बातों में से अंतिम।

**पिछवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] पीछे की ओर लटकाने का परदा।

**पिछवाड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० पीछा+वाड़ा (प्रत्य०)] १. किसी मकान का पीछे का भाग। घर का पृष्ठ भाग। २. घर के पीछे का स्थान या जमीन।

**पिछवार***—संज्ञा पुं० दे० "पिछवाड़ा"।

**पिछाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीछा] १. पिछला भाग। पीछे का हिस्सा। २. वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते

**पिछानना**—क्रि० स० दे० "पहचानना"।

**पिछेलना**—क्रि० स० [हिं० पीछे] १. धक्का देकर पीछे हटाना। २. पीछे छोड़ना।

**पिछौंहें***†—क्रि० वि० [हिं० पीछा] पीछे की ओर। पीछे की ओर से।

**पिछौरा**†—संज्ञा पुं० [सं० पक्षपट] [स्त्री० पिछौरी] ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

**पिटंत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना+अंत (प्रत्य०)] पीटने की क्रिया या भाव।

**पिटक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पिटारा। २. फुड़िया। फुंसी। ३. किसी ग्रंथ का एक भाग। ग्रंथ-विभाग। खंड। हिस्सा।

**पिटना**—क्रि० अ० [हिं० पीटना] १. मार खाना। ठोंका जाना। २. बजना। आघात पाकर आवाज करना।

†संज्ञा पुं० [हिं० पीटना] चूने आदि की छत पीटने का औजार। थापी।

**पिटरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "पिटारी"।

**पिटवाना**—क्रि० स० [हिं० पीटना] पीटने का काम दूसरे से कराना।

**पिटाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना] १. पीटने का काम या भाव। २. प्रहार। मार। ३. पीटने की मजदूरी।

**पिटारा**—संज्ञा पुं० [सं० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र।

**पिटारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिटारा का स्त्री० और अल्पा०] १. छोटा पिटारा। झाँपी। २ पान रखने का बरतन। पानदान।

**पिट्टस**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पीटना] शोक के समय छाती पीटना।

**पिट्ठी**-संज्ञा स्त्री० दे० "पीठी"।

**पिट्ठू**—संज्ञा पुं० [हिं० पीठ+ऊ (प्रत्य०)] १. पीछे चलनेवाला। अनुयायी। २. सहायक। मददगार। हिमायती। ३. किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में वह स्वयं खेलता है।

**पिठवन**—संज्ञा स्त्री० [सं० पृष्ठपर्णी] एक प्रसिद्ध लता जो औषध के काम आती है। पिठौनी। पृष्ठिपर्णी।

**पिठौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० पिट्ठी+औरी (प्रत्य०)] पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

**पितंबर**—संज्ञा पुं० दे० "पीतांबर"।

**पितपापड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० पर्पट ] एक झाड़ या क्षुप जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है। दवन-पापड़ा।

**पितर**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृ ] मृत पूर्वपुरुष। मरे हुए पुरखे जिनका श्राद्ध किया जाता है।

**पितरायँध**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीतल+गंध ] खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।

**पिता**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृ का कर्त्ता० ] जन्म देकर पालन-पोषण करनेवाला। बाप। जनक।

**पितामह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पितामही ] १. पिता का पिता। दादा। २. भीष्म। ३. ब्रह्मा। ४ शिव।

**पितिया**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृव्य ] [ स्त्री० पितियानी ] चाचा। वि० चाचा के स्थान का। जैसे पितिया ससुर।

**पितु***—संज्ञा पुं० दे० "पिता"।

**पितृ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "पिता"। २. किसी व्यक्ति के मृत बाप, या दादा, परदादा आदि। ३. किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ४. एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं।

**पितृऋण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धर्म-शास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक। पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है।

**पितृकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० पितृकर्मन् ] श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म जो पितरों के उद्देश्य से होते हैं।

**पितृकुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाप, दादा या उनके भाई-बंधुओं आदि का कुल।

**पितृगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाप का घर। नैहर। मायका ( स्त्रियों के लिए )

**पितृतर्पण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जल-दान। तर्पण।

**पितृतीर्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गया तीर्थ। २. अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग।

**पितृत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिता या पितृ होने का भाव।

**पितृपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुँआर की कृष्ण प्रतिपदा से अमा-वास्या तक का समय। २. पिता के संबंधी। पितृ-कुल।

**पितृपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों का लोक।

**पितृमेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैदिक काल के अंत्येष्टि कर्म का एक भेद जो श्राद्ध से भिन्न होता था।

**पितृयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितृ-तर्पण।

**पितृयाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु के अनंतर जीव के जाने का वह मार्ग जिससे वह चंद्रमा को प्राप्त होता है।

**पितृलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पितरों का लोक। वह स्थान जहाँ पितृगण रहते हैं।

**पितृवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्मशान।

**पितृव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चचा। चाचा।

**पित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक तरल पदार्थ जो शरीर के अंतर्गत यकृत् में बनता है। यह चिकनाई के पाचन में सहायक होता है।

**मुहा०**—पित्त उबलना या खौलना= दे० "पित्ता उबलना या खौलना"। पित्त गरम होना=शीघ्र क्रुद्ध होने का स्वभाव होना।

**पित्तघ्न**—वि० [ सं० ] पित्तनाशक।

**पित्तज्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो। पैत्तिक ज्वर।

**पित्तपापड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "पित-पापड़ा"।

**पित्तप्रकृति**—वि० [ सं० ] जिसके शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो।

**पित्तप्रकोपी**—वि० [ सं० पित्तप्रकोपिन् ] ( वस्तु ) जिसके भोजन से पित्त की वृद्धि हो।

**पित्तल**—वि० [ सं० पित्त ] जिससे पित्तदोष बढ़े। पित्तकारी। ( द्रव्य ) संज्ञा पुं० १. भोजपत्र। २. हरताल। ३. पीतल धातु।

**पित्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० पित्त ] १. जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है। पित्ताशय।

**मुहा०**—पित्ता उबलना या खौलना= बड़ा क्रोध आना। मिजाज भड़क उठना। पित्ता निकलना†=बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। पित्ता पानी करना=बहुत परिश्रम करना। जान लड़ाकर काम करना। पित्ता मरना=गुस्सा न रह जाना। पित्ता मारना=१. क्रोध दबाना। जब्त करना। २. कोई अरुचिकर या कठिन काम करने में न ऊबना। २ हिम्मत। साहस। हौसला।

**पित्ताशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।

**पित्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पित्त+ई ]

१. एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे-छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २. लाल महीन दाने जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। अँभौरी। गरमी दाना।

†‡ संज्ञा पुं० पितृव्य। चचा। काका।

**पित्र्य**—वि० [ सं० ] पितृ-संबंधी।

**पिथौरा**—संज्ञा पुं० दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान।

**पिदड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "पिद्दी"।

**पिद्दा**—संज्ञा पुं० दे० "पिद्दी"।

**पिद्दी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बया की जाति की एक सुन्दर छोटी चिड़िया। २. बहुत ही तुच्छ और नगण्य जीव।

**पिधान, पिधानक**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आवरण। पर्दा। गिलाफ। २. ढक्कन। ढकना। ३. तलवार की म्यान। ४. किवाड़ा।

**पिनकना**—क्रि० अ० [ हिं० पीनक ] १. अफीम के नशे में सिर का झुक पड़ना। पीनक लेना। २. नींद में आगे को झुकना। ऊँघना।

**पिनपिन**†—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. बच्चों का अनुनासिक और स्पष्ट स्वर में रोना। २. धीमी और अनुनासिक आवाज में रोना।

**पिनपिनाना**†-क्रि० अ० [ हिं० पिनपिन ] १. रोते समय नाक से स्वर निकालना। २. रोगी अथवा कमजोर बच्चे का रोना।

**पिनाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव का धनुष जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने जनकपुर में तोड़ा था। अजगव। २. धनुष। ३. त्रिशूल।

**पिनाकी**—संज्ञा पुं० [ सं० पिनाकिन् ] शिव।

**पिन्नी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की मिठाई, जो आटे में चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

**पिन्हाना**†-क्रि० स० दे० "पहनाना"।

**पिपरमेंट**—संज्ञा पुं० [ अं० पेपरमिंट ] १. पुदीने की तरह का एक पौधा। २. इस पौधे का प्रसिद्ध सत्त जो दवा के काम आता है।

**पिपरामूल**—संज्ञा पुं० [ सं० पिप्पलीमूल ] पीपल की जड़।

**पिपासा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० पिपासित ] १. तृषा। प्यास। २. लालच। लोभ।

**पिपासु**—वि० [ सं० ] १. तृषित। प्यासा। २. उग्र इच्छा रखनेवाला। लालची।

**पिपीलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] च्यूँटी।

**पिप्पल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पीपल। अश्वत्थ।

**पिप्पली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पीपल।

**पिप्पलीमूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पिपरामूल।

**पिय***—संज्ञा पुं० [ सं० प्रिय ] पति। स्वामी।

**पियराई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पीयर + आई (प्रत्य०) ] पीलापन। जर्दी।

**पियराना***†—क्रि० अ० [ हिं० पियरा ] पीला पड़ना। पीला होना।

**पियरी**†—वि० स्त्री० दे० "पीली"। संज्ञा स्त्री० [ हिं० पियर ] १. पीली रँगी हुई धोती। पियरी। २. पीलापन।

**पियल्ला**†—संज्ञा पुं० [ हिं० पीना ] दूध पीनेवाला बच्चा।

**पिया***—संज्ञा पुं० दे० "पिय"।

**पियाबाँसा**—संज्ञा पुं० दे० "कटसरैया"।

**पियार**—संज्ञा पुं० [ सं० पियाल ] महुए की तरह का मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरौंजी कहलाती है।

†वि० दे० "प्यारा"।

†संज्ञा पुं० दे० "प्यार"।

**पियाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिरौंजी का पेड़। दे० "पियार"।

**पियाला**—संज्ञा पुं० दे० "प्याला"।

**पियासाल**-संज्ञा पुं० [ सं० पीतसालक, प्रियसालक ] बहेड़े की जाति का एक बड़ा पेड़।

**पियूख***—संज्ञा पुं० दे० "पीयूष"।

**पिरकी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिड़क ] फाड़िया। फुंसी।

**पिरथी**‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

**पिराई**‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "पियराई"।

**पिराक**—संज्ञा पुं० [ सं० पिष्टक ] एक प्रकार का पकवान। गोझा। गोझिया।

**पिराना**†*क्रि० अ० [ सं० पीड़न ] १. पीड़ित होना। दर्द करना। दुखना। २. पीड़ा अनुभव करना। दुःख समझना।

**पिरारा**‡*-संज्ञा पुं० दे० "पिंडारा"।

**पिरीतम**‡*—संज्ञा पुं० दे० "प्रियतम"।

**पिरीता***—वि० [ सं० प्रीत ] प्रिय। प्यारा।

**पिरोजा**—संज्ञा पुं० दे० "फीरोजा"।

**पिरोना**—क्रि० स० [ सं० प्रोत ] १. छेद के सहारे सूत, तागे आदि में फँसाना। गूथना। पोहना। २. तागे आदि को छेद में डालना।

**पिरोहना***-क्रि० अ० दे० "पिरोना"।

**पिलकना***—क्रि० अ० [ देश० ] गिरना, झुलना या लुढ़कना।

**पिलकुआँ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक

प्रकार का देशी जूता।

**पिलना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ पिल=प्रेरण ] १. किसी ओर को एकबारगी टूट पड़ना। ढल पड़ना। झुक पड़ना। २. एक बारगी प्रवृत्त होना। लिपट जाना। भिड़ जाना। ३. पेरा जाना। तेल निकालने के लिए दबाया जाना।

**पिलपिला**—वि॰ [ अनु॰ ] भीतर से गीला और नरम।

**पिलपिलाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ पिलपिला ] रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।

**पिलवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ "पिलाना" का प्रे॰ ] पिलाने का काम दूसरे से कराना।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ पेलना ] पेलने या पेरने का काम दूसरे से कराना। पेरवाना।

**पिलाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ पीना ] १. पान का काम दूसरे से कराना। पान कराना। २. पीने को देना। ३. भीतर भरना।

**पिल्ला**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] कुत्ते का बच्चा।

**पिल्लू**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पीलु=कृमि ] एक सफेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है। ढोला।

**पिव**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पिय"।

**पिवाना**†—क्रि॰ स॰ दे॰ "पिलाना"।

**पिशाच**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ पिशाचिनी, पिशाची ] एक हीन देवयोनि। भूत।

**पिशुन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] चुगलखोर।

**पिष्ट**—वि॰ [ सं॰ ] पिसा हुआ।

**पिष्टक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पिठ्ठी। चोटी। पिट्ठी। २. कचौरी या पूआ। रोट।

**पिष्टपेषण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पिसे हुए को पीसना। २. कही हुई बात को फिर फिर कहना।

**पिसनहारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ पीसना+हारी (प्रत्य॰) ] वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।

**पिसना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ पीसना ] १. चूर्ण होना। चूर होकर धूल सा हो जाना। २. पिसकर तैयार होना। ३. दब जाना। कुचला जाना। ४. घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। पीड़ित होना। ५. थककर बेदम होना।

**पिसवाज***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पेशवाज"।

**पिसवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ पीसना का प्रे॰ ] पीसने का काम दूसरे से कराना।

**पिसाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ पीसना ] १. पीसने की क्रिया या भाव। २. पीसने का काम या व्यवसाय। ३. पीसने की मजदूरी। ४. अत्यंत अधिक श्रम। बड़ी कड़ी मिहनत।

**पिसाच***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पिशाच"।

**पिसान**†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ पिसना, पिसा+अन्न ] अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण। आटा।

**पिसाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ पीसना ] पीसने का काम दूसरे से कराना।

† क्रि॰ अ॰ दे॰ "पिसना"।

**पिसुन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पिशुन"।

**पिसौनी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ पीसना ] १. पीसने का काम। २. कठिन काम।

**पिस्तई**—वि॰ [ फ़ा॰ पिस्तः ] पिस्ते के रंग का। पीलापन लिए हरा।

**पिस्ता**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ पिस्तः ] एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।

**पिस्तौल**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ पिस्टल ] तमंचा। छोटी बंदूक।

**पिस्सू**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ पश्शः ] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और रक्त पीता है। कुटकी।

**पिहकना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।

**पिहित**—वि॰ [ सं॰ ] छिपा हुआ। संज्ञा पुं॰ एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का कोई भाव जानकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाय।

**पींजना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ पिंजन ] रूई धुनना।

**पींजरा***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पिंजड़ा"।

**पींड़**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पिंड ] १. शरीर। देह। पिंड। २. वृक्ष का धड़। तना। पेड़ी। ३. गीली वस्तु का गोला। पिंड। पिंडा। ४. दे॰ "पाड़"। ५. पिंड खजूर।

**पींडुरी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पिंडली"।

**पी***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पिय"।

संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] पपीहे की बोली।

**पीक**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ पिच्च ] थूक से मिला हुआ पान का रस।

**पीकदान**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ पीक+फ़ा॰ दान ] एक विशेष प्रकार का बना हुआ बरतन जिसमें पान की पीक थूकी जाती है। उगालदान।

**पीकना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ पिक ] पिहकना। पपीहे या कोयल का बोलना।

**पीका**†—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] नया कोमल पत्ता। कोंपल। पल्लव।

**पीच**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ पिच्च ]

औंड़ ।

**पीछा**—संज्ञा पुं० [ सं० पश्चात् ] १. किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग । पश्चात् भाग । पुश्त। "आगा" का उलटा ।

मुहा०—पीछा दिखाना=१. भागना । पीठ दिखाना । २. दे० "पीछा-देना" । पीछा देना=किसी काम में पहले साथ देकर फिर किनारा करना । पीछे हट जाना ।

२. किसी घटना के बाद का समय । ३. पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना ।

मुहा०—पीछा करना=१. किसी बात के लिए किसी को तंग या दिक करना । गले पड़ना । २. किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि के लिए उसके पीछे पीछे चलना । खदेड़ना । पीछा छुड़ाना=१. पीछा करनेवाले व्यक्ति से जान छुड़ाना । २. अप्रिय या इच्छाविरुद्ध संबंध का अंत करना । पीछा छूटना=१. पीछा करनेवाले से छुटकारा मिलना । पिंड छूटना । जान छूटना । २. अप्रिय कार्य या संबंध से छुटकारा मिलना । पीछा छोड़ना=१. तंग न करना । परेशान न करना । २. जिस बात में बहुत देर से लगे हों उसे छोड़ देना । पीछा पकड़ना ( या लेना ) = आश्रय का आकांक्षी बनना । सहारा बनाना ।

**पीछू**—क्रि० वि० दे० "पीछे" ।

**पीछे**—अव्य० [ हिं० पीछा ] १. पीठ की ओर । आगे या सामने का उलटा । पश्चात् ।

मुहा०—( किसी के ) पीछे चलना= १. किसी विषय में किसी को पथ-दर्शक, नेता या गुरु मानना । २. अनुकरण करना । नकल करना । ( किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना= किसी का पीछा करने के लिए किसी को भेजना । ( धन ) पीछे डालना= आगे के लिए बटोरना । संचय करना । ( किसी काम के ) पीछे पड़ना=किसी काम को कर डालने पर तुल जाना । किसी कार्य के लिए अविराम उद्योग करना । ( किसी व्यक्ति के ) पीछे पड़ना=१. कोई काम करने के लिए किसी से बार-बार कहना । घेरना । तंग करना । २. मौका या संधि ढूँढ़ ढूँढ़कर किसी की बुराई करते रहना । पीछे लगना= १. पीछे पीछे घूमना । पीछा करना । २. दुःखजनक वस्तु का साथ हो जाना । ( अपने ) पीछे लगाना=१. आश्रय देना । साथ कर लेना । २. अनिष्ट वस्तु से संबंध कर लेना । ( किसी और के ) पीछे लगाना=१. अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से संबंध करा देना । मढ़ देना । २. भेद लेने या निगाह रखने के लिए किसी का साथ कर देना ।

२ पीछे की ओर कुछ दूर पर ।

मुहा०—पीछे छूटना, पड़ना या होना= १. किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा घटकर होना । पिछड़ा होना । २. किसी विषय में किसी ऐसे आदमी से घट जाना जिससे किसी समय बराबरी रही हो । पिछड़ जाना । (किसी को) पीछे छोड़ना=१. किसी विषय में किसी से बढ़कर या अधिक होना । २. किसी विषय में किसी से आगे निकल जाना ।

३. पश्चात् । उपरांत । अनंतर । ४. अंत में । आखिर में । ( क्व० ) ५. किसी की अनुपस्थिति या अभाव में । पीठ पीछे । ६. मर जाने पर । ७. लिए । वास्ते । ८. कारण । निमित्त । बदौलत ।

**पीटना**—क्रि० स० [ सं० पीडन ] १. चोट पहुँचाना । मारना ।

मुहा०—छाती पीटना=दुःख या शोक प्रकट करने के लिए छाती पर हाथ से आघात करना । किसी व्यक्ति को या के लिए पीटना=किसी के मरने पर छाती पीटना । मातम करना ।

२. चोट से चिपटा या चौड़ा करना । ३ भोगना । प्रहार करना । ठोंकना । ४. भले या बुरे प्रकार से कर डालना । ५. किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना । फटकार लेना ।

संज्ञा पुं० १. मृत्युशोक । मातम । २. मुसीबत । आफत ।

**पीठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० पीठिका ] १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आधार या आसन । पीढ़ा । चौकी । २. विद्यार्थियों आदि के बैठने का आसन । ३. किसी मूर्ति के नीचे का आधार-पिंड । ४. किसी वस्तु के रहने की जगह । अधिष्ठान । ५. सिंहासन । राजासन । तख्त । ६. वेदी । देवपीठ । ७. वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्षपुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा है । भिन्न भिन्न पुराणों में इनकी संख्या ५१, ५३, ७७ या १०८ कही गई है । ८. प्रदेश । प्रांत । ९. बैठने का एक आसन । १०. वृत्त के किसी अंश का पूरक ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० पृष्ठ ] १. पेट की दूसरी ओर का भाग जो मनुष्य में पीछे की ओर और पशुओं, पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर पड़ता है । पृष्ठ । पुश्त ।

**प्रचंडा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा। चंडी।

**प्रचरना***†—क्रि० अ० [सं० प्रचार] प्रचारित होना। चलना। फैलना।

**प्रचलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रचार।

**प्रचलित**—वि० [सं०] जारी। चलता हुआ। जिसका चलन हो।

**प्रचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार या उपयोग। चलन। रवाज। २. प्रकाश।

**प्रचारक**—वि० [ सं० ] [स्त्री० प्रचारिणी ] फैलानेवाला। प्रचार करनेवाला।

**प्रचारणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रकट करना। फैलाना। २. चलाना।

**प्रचारना***†—क्रि० स० [ सं० प्रचारण ] १. प्रचार करना। फैलाना। २. सामना करने के लिए ललकारना।

**प्रचारित**—वि० [ सं० ] फैलाया हुआ। प्रचार किया हुआ।

**प्रचुर**—वि० [ सं० ] बहुत। अधिक।

**प्रचुरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रचुर होने का भाव। ज्यादती। अधिकता।

**प्रचेता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रचेतस् ] १. एक प्राचीन ऋषि। २. वरुण। ३. पुराणानुसार पृथु के परपोते और प्राचीन बर्हि के दस पुत्र।

**प्रचोदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रेरणा। उत्तेजना। २. आज्ञा।

**प्रच्छक**—वि० [ सं० ] पूछनेवाला।

**प्रच्छन्न**—वि० [ सं० ] ढका हुआ। लपेटा हुआ। छिपा हुआ।

**प्रच्छादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रच्छादित ] १. ढाँकना। २. छिपाना। ३. उत्तरीय वस्त्र।

**प्रच्छाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घनी छाया।

**प्रच्छालना***—क्रि० स० [ सं० प्रक्षालन ] धोना।

**प्रजंत***†—अव्य० दे० "पर्यंत"।

**प्रजनन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संतान उत्पन्न करने का काम। २. जन्म। ३. दाई का काम। धात्री-कर्म। (सुश्रुत)।

**प्रजरना***—क्रि० अ० [ सं० प्रत्य० प्र+हिं० जरना ] अच्छी तरह जलना।

**प्रजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संतान। औलाद। २. वह जनसमूह जो किसी एक राज्य में रहता हो। रिआया। रैयत।

**प्रजातंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें कोई राजा नहीं होता, प्रजा ही समय समय पर अपना प्रधान शासक चुन लेती है।

**प्रजातंत्री**—वि० [ सं० ] १. प्रजातंत्र संबंधी। २. प्रजातंत्र के सिद्धांतों के अनुसार हो।

**प्रजापति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला। सृष्टिकर्त्ता। २. ब्रह्मा। ३. मनु। ४. राजा। ५. सूर्य। ६. आग। ७. पिता। बाप। ८. घर का मालिक या बड़ा। ९. दे० "प्राजापत्य"।

**प्रजारना***†—क्रि० स० [ सं० प्रत्य० प्र०+हिं० जारना ] अच्छी तरह जलाना।

**प्रजावती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कई बच्चों की माता। २. गर्भवती। ३. बड़ी भौजाई।

**प्रजावान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रजावती ] जिसके आगे बाल बच्चे हों।

**प्रजासत्ता**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रजातंत्र"।

**प्रजासत्तात्मक**—वि० [ सं० ] (वह शासनप्रणाली ) जिसमें प्रजा या देश के प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राजसत्तात्मक' का उलटा।

**प्रजुरना***—क्रि० अ० [ सं० प्रज्वलन ] १. प्रज्वलित होना। २. चमकना।

**प्रजुलित***—वि० दे० "प्रज्वलित"।

**प्रजोग**—संज्ञा पुं० दे० "प्रयोग"।

**प्रज्झटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १६ मात्राओं का एक छंद। पद्धरी। पद्धटिका।

**प्रज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विद्वान्। जानकार।

**प्रज्ञप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बताने का भाव। २. सूचना। ३. संकेत। इशारा।

**प्रज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बुद्धि। ज्ञान। २. सरस्वती।

**प्रज्ञाचक्षु**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रज्ञा+चक्षुस् ] १. धृतराष्ट्र। २. ज्ञानी। ३. अंधा। (व्यंग्य)

**प्रज्वलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित ] जलने की क्रिया। जलना।

**प्रज्वलित**—वि० [ सं० ] १. जलता हुआ। धधकता हुआ। २. बहुत स्पष्ट।

**प्रज्झटिया**—संज्ञा पुं० दे० "प्रज्झटिका"।

**प्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० पण ] अटल निश्चय। प्रतिज्ञा।

**प्रणत**—वि० [ सं० ] १. झुका हुआ। २. प्रणाम करता हुआ। ३. नम्र। दान।

**प्रणतपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दीनों, दासों या भक्तजनों का पालन करनेवाला। दीनरक्षक।

**प्रणति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रणाम। दंडवत। २. नम्रता। ३. विनती।

**प्रणमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.

झुकना। २. प्रणाम करना।

**प्रणम्य**—वि० [ सं० ] प्रणाम करने के योग्य।

**प्रणय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रीतियुक्त प्रार्थना। २ प्रेम। ३. विश्वास। भरोसा। ४. निर्वाण। मोक्ष।

**प्रणयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रचना। बनाना।

**प्रणयिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रियतमा। प्रेमिका। २ स्त्री। पत्नी।

**प्रणयी**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रणयिन् ] [ स्त्री० प्रणयिनी ] १.प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. स्वामी। पति।

**प्रणव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ॐकार। ओंकार मंत्र। २. परमेश्वर।

**प्रणवना**—क्रि० स० [ सं० प्रणमन ] प्रणाम करना। नमस्कार करना।

**प्रणाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] झुककर अभिवादन करना। नमस्कार। दंडवत्।

**प्रणाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पानी निकलने का मार्ग। २. रीति। चाल। प्रथा। ३. ढंग। तरीका। कायदा। ४. वह छोटा जलमार्ग जो जल के दो बड़े भागों को मिलाता हो। ५. बरतन में लगी हुई टोंटी।

**प्रणिधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रखा जाना। २. प्रयत्न। ३. समाधि। ( योग ) ४. अत्यंत भक्ति। ५. ध्यान। चित्त की एकाग्रता।

**प्रणिधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजदूत। २. प्रार्थना। निवेदन। ३. मन की एकाग्रता। ४. तत्परता।

**प्रणिपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रणाम।

**प्रणीत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रचित। बनाया हुआ। २. सुधारा हुआ। संशोधित। ३. भेजा हुआ। लाया हुआ।

**प्रणेता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रणेतृ ] [ स्त्री० प्रणेत्री ] रचयिता। बनानेवाला। कर्त्ता।

**प्रतंचा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यंचा"।

**प्रतच्छ***†—वि० दे० "प्रत्यक्ष"।

**प्रतति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ऊँचाई-चौड़ाई। विस्तार। २. लंबी चौड़ी और बड़ी लता।

**प्रतनु**—वि० [ सं० ] १. हलके या छोटे शरीर वाला। २. दुबला-पतला। ३. सूक्ष्म।

**प्रतप्त**—वि० [ सं० ] तपा हुआ।

**प्रतर्दन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काशी का एक प्रख्यात राजा जो राजा दिवोदास का पुत्र था। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. विष्णु।

**प्रतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाताल के सातवें भाग का नाम।

**प्रताप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पौरुष। मरदानगी। वीरता। २. बल, पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके कारण विरोधी शांत रहें। तेज। इकबाल। ३. ताप। गरमी।

**प्रतापी**—वि० [ सं० प्रतापिन् ] १. इकबालमंद। जिसका प्रताप हो। २. सतानेवाला।

**प्रतारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वंचक। ठग। २ धूर्त्त। चालाक।

**प्रतारणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वंचना। ठगी।

**प्रतारित**—वि० [ सं० ] जो ठगा गया हो। जिसे धोखा दिया गया हो।

**प्रतिंचा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पर्तिचिका ] धनुष की डोरी। ज्या। चिल्ला।

**प्रति**—अव्य० [ सं० ] एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत; जैसे, प्रतिकूल। सामने; जैसे, प्रत्यक्ष। बदले में, जैसे, प्रत्युपकार। हर एक; जैसे, प्रत्येक। समान; जैसे, प्रतिनिधि। मुकाबले का; जैसे, प्रतिवादी।

अव्य० १. सामने। मुकाबिले में। २. ओर। तरफ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नकल। कापी।

**प्रतिकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बदला। बचाव।

**प्रतिकूल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा प्रतिकूलता ] जो अनुकूल न हो। खिलाफ। उलटा। विरुद्ध। विपरीत।

**प्रतिकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिबिंब। छाया। ४. बदला। प्रतिकार।

**प्रतिक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रतिकार। बदला। २. एक ओर कोई क्रिया होने पर परिणाम-स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया।

**प्रतिगृहीता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। धर्म्मपत्नी।

**प्रतिग्या***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा"।

**प्रतिग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वीकार। ग्रहण। २. उस दान का लेना जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक दिया जाय। ३. पकड़ना। अधिकार में लाना। ४. पाणिग्रहण। विवाह। ५. ग्रहण। उपराग।

**प्रतिग्राही**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो दान ले।

**प्रतिघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह आघात जो किसी दूसरे के आघात के करने पर किया जाय। २. टक्कर। ३. रुकावट। बाधा।

**प्रतिघाती**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रतिघातिन् ] [ स्त्री० प्रतिघातिनी ] १.

शत्रु । वैरी । दुश्मन । २. मुकाबला करनेवाला ।

**प्रतिच्छवि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रतिबिंब । परछाईं ।

**प्रतिच्छा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा" ।

**प्रतिच्छाया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चित्र । तसवीर । २. परछाईं । प्रतिबिंब ।

**प्रतिच्छायित**—वि० [ सं० ] १. जिसकी परछाईं पड़ी हो । २. जिस पर किसी की परछाईं पड़ी हो ।

**प्रतिछाँई, प्रतिछाँह**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया २" ।

**प्रतिछाया**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया" ।

**प्रतिज्ञांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तर्क में एक निग्रह-स्थान ।

**प्रतिज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कोई काम करने या न करने आदि के संबंध में दृढ़ निश्चय । प्रण । २. शपथ । सौगंद । कसम । ३. अभियोग । दावा । ४. न्याय में उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो ।

**प्रतिज्ञात**—वि० [ सं० ] जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो ।

**प्रतिज्ञापत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा या शर्तें लिखी गई हों । इकरारनामा ।

**प्रतिज्ञाहानि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तर्क में एक प्रकार का निग्रह-स्थान ।

**प्रतिदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रतिदत्त ] १. लौटाना । वापस करना । २. परिवर्तन । बदला ।

**प्रतिद्वंद्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बराबरीवालों का विरोध । टक्कर ।

**प्रतिद्वंद्विता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बराबर वालों की लड़ाई या विरोध ।

**प्रतिद्वंद्वी**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रतिद्वंद्विन् ] [ भाव० प्रतिद्वंद्विता ] मुकाबले का लड़नेवाला । शत्रु ।

**प्रतिध्वनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अपनी उत्पत्ति के स्थान पर फिर से टकराकर सुनाई पड़नेवाला शब्द । प्रतिशब्द । गूँज । २. शब्द से व्याप्त होना । गूँजना । ३. दूसरों के विचारों आदि का दोहराया जाना ।

**प्रतिनाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रतिध्वनि ।

**प्रतिना**—संज्ञा स्त्री० दे० "पृतना" ।

**प्रतिध्वनित**—वि० [ सं० ] प्रतिध्वनि से व्याप्त । गूँजा हुआ ।

**प्रतिनायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाटकों और काव्यों आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र ।

**प्रतिनिधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० प्रतिनिधित्व ] १. प्रतिमा । प्रतिमूर्ति । २. वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त हो ।

**प्रतिनिधित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रतिनिधि होने की क्रिया या भाव ।

**प्रतिनिधि सत्तात्मक**—वि० [ सं० ] ( वह शासनप्रणाली ) जिसमें प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो । 'राज-सत्तात्मक' का उलटा ।

**प्रतिपक्षी**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रतिपक्षिन् ] विपक्षी । विरोधी । शत्रु ।

**प्रतिपत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राप्ति । पाना । २. ज्ञान । ३. अनुमान । ४. देना । दान । ५. कार्य्यरूप में लाना । ६. प्रतिपादन । निरूपण । ७. जी में बैठाना । ८. मानना । स्वीकृति ।

**प्रतिपदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी पक्ष की पहली तिथि । प्रतिपद् । परिवा ।

**प्रतिपन्न**—वि० [ सं० ] १. अवगत । जाना हुआ । २. अंगीकृत । स्वीकृत । ३. प्रमाणित । ४. साबित । निश्चित । ५. भरापूरा । ६. शरणागत । ७. प्राप्त ।

**प्रतिपादक**—संज्ञा पुं० [सं० ] [स्त्री० प्रतिपादिका ] प्रतिपादन करनेवाला ।

**प्रतिपादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रतिपादित ] १. अच्छी तरह समझाना । प्रतिपत्ति । २. किसी बात का प्रमाणपूर्वक कथन । ३. प्रमाण । सबूत ।

**प्रतिपार***†—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिपाल" ।

**प्रतिपाल, प्रतिपालक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० प्रतिपालिका ] १. पालन-पोषण करनेवाला । पोषक । रक्षक । २. राजा ।

**प्रतिपारना***—दे० "प्रतिपालना" ।

**प्रतिपालन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रतिपालित ] १. पालन करने की क्रिया या भाव । २. रक्षण । निर्वाह । तामील ।

**प्रतिपालना***†—क्रि० स० [ सं० प्रतिपालन ] १. पालन करना । २. रक्षा करना । बचाना ।

संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिपालन" ।

**प्रतिफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रतिबिंब । छाया । २. परिणाम । नतीजा । ३. बदला ।

**प्रतिफलक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह यंत्र जो कोई वस्तु प्रतिबिंब करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो ।

**प्रतिफलित**—वि० [ सं० ] जिसे प्रतिफल या बदला मिला हो ।

**प्रतिबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि०

प्रतिबद्ध ] १. रोक। रुकावट। अटकाव। २. विघ्न। बाधा।

**प्रतिबंधक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रोकनेवाला। २. बाधा डालनेवाला।

**प्रतिबद्ध**—वि॰ [ सं॰ ] जिसमें कोई प्रतिबंध हो।

**प्रतिबिंब**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ प्रतिबिंबित ] १. परछाईं। छाया। २. मूर्ति। प्रतिमा। ३. चित्र। तसवीर। ४. शीशा। दर्पण।

**प्रतिबिंबवाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब है।

**प्रतिभा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. बुद्धि। समझ। २. वह असाधारण मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है। असाधारण बुद्धिबल। ३. दीप्ति। चमक। ( क्व॰ )

**प्रतिभात**—वि॰ [ सं॰ ] १. चमकता हुआ। प्रकाशित। प्रदीप्त। २. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ। ३. प्रतीत। ४. ज्ञात।

**प्रतिभावान्, प्रतिभाशाली**—वि॰ [ सं॰ ] जिसमें प्रतिभा हो। प्रतिभावाला।

**प्रतिभू**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] जमानत में पड़नेवाला। जामिन।

**प्रतिभौ**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ प्रतिमा ?] शरीर का बल और तेज।

**प्रतिम**—अव्य॰ [ सं॰ ] समान। सदृश।

**प्रतिमा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. किसी की आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र आदि। अनुकृति। २. मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति। ३. प्रतिबिंब। छाया। ४. एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के अभाव में उसी के सदृश किसी और पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन होता है।

**प्रतिमान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रतिबिंब। परछाईं। २. समानता। बराबरी। ३. दृष्टांत। उदाहरण।

**प्रतिमुख**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] नाटक की पाँच अंग-संधियों में से एक।

**प्रतिमूर्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] प्रतिमा।

**प्रतिमोक्षण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मोक्ष की प्राप्ति।

**प्रतियोग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शत्रुता। विरोध। २. विरुद्ध संयोग।

**प्रतियोगिता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] प्रतिद्वंद्विता। चढ़ा-ऊपरी। मुकाबला। विरोध।

**प्रतियोगी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. हिस्सेदार। शरीक। २. शत्रु। विरोधी वैरी। ३ सहायक। मददगार।

**प्रतिरूप**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रतिमा। मूर्ति। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिनिधि।

**प्रतिरोध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ प्रतिरोधक ] १. विरोध। २. रुकावट। रोक। बाधा।

**प्रतिलिपि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] लेख की नकल। किसी लिखी हुई चीज की नकल।

**प्रतिलोम**—वि॰ [ सं॰ ] १. प्रतिकूल। विपरीत। २. जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो। उलटा। अनुलोम का उलटा।

**प्रतिलोम विवाह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।

**प्रतिवचन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. उत्तर ( जवाब )। प्रतिध्वनि।

**प्रतिवर्त्तन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [ वि॰ प्रतिवर्तित ] चक्कर काटना। फेरा लगाना। घूमना।

**प्रतिवस्तूपमा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग अलग वाक्यों में किया जाय।

**प्रतिवाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वह कथन जो किसी मत को मिथ्या ठहराने के लिए हो। विरोध। खंडन। २. विवाद। बहस।

**प्रतिवादी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ प्रतिवादिन् ] १. प्रतिवाद या खंडन करनेवाला। २. वह जो वादी की बात का उत्तर दे। प्रतिपक्षी।

**प्रतिवास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पड़ोस। समीप का निवास।

**प्रतिवासी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ प्रतिवासिन् ] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।

**प्रतिविधान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] किसी विधान के मुकाबिले में किया जानेवाला विधान। प्रतिकार।

**प्रतिवेश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पड़ोस।

**प्रतिवेशी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ प्रतिवेशिन् ] पड़ोस में रहनेवाला। पड़ोसी।

**प्रतिशब्द**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रतिध्वनि। २. पर्यायवाची शब्द। समानार्थक।

**प्रतिशोध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ प्रति+शोध ] वह काम जो किसी बात का बदला चुकाने के लिए किया जाय। बदला।

**प्रतिश्याय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] जुकाम।

**प्रतिश्रुति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ प्रतिश्रुत] १. प्रतिध्वनि। २. प्रतिज्ञा। ३. मंजूरी। स्वीकृति।

**प्रतिषेध**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक] १. निषेध। मनाही। २. खंडन। ३. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले।

**प्रतिष्ठा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. स्थापना। रखा जाना। २. देवता की प्रतिमा की स्थापना। ३. मान-मर्यादा। गौरव। ४. यश। कीर्ति। ५. आदर। सत्कार। इज्जत। ६. व्रत का उद्यापन। ७. एक प्रकार का छंद। ८. चार वर्णों का वृत्त।

**प्रतिष्ठान**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना। बैठाना। २. देवमूर्ति की स्थापना। ३. प्रतिष्ठानपुर।

**प्रतिष्ठानपुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुना के संगम पर वर्त्तमान झूसी नामक स्थान के पास था। २. गोदावरी के तट का एक प्राचीन नगर।

**प्रतिष्ठापत्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] प्रतिष्ठा करने के लिए दिया जानेवाला पत्र। सम्मानपत्र।

**प्रतिष्ठित**—वि॰ [सं॰] १. जिसकी प्रतिष्ठा हुई हो। आदर-प्राप्त। इज्जतदार। २. जो स्थापित किया गया हो।

**प्रतिस्पर्द्धा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का उद्योग। लागडाँट। चढ़ा-ऊपरी।

**प्रतिस्पर्द्धी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ प्रतिस्पर्द्धिन्] वह जो प्रतिस्पर्द्धा करे। मुकाबला या बराबरी करनेवाला।

**प्रतिहत**—वि॰ [सं॰] जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। चोट खाया हुआ।

**प्रतिहार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २. द्वार। दरवाजा। ३. प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था। ४. चोबदार। नकीब।

**प्रतिहारी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] स्त्री द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

**प्रतिहिंसा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वैर चुकाना। बदला लेना।

**प्रतीक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. पता। चिह्न। निशान। २. मुख। मुँह। ३. आकृति। रूप। सूरत। ४. प्रतिरूप। स्थानापन्न वस्तु। ५. प्रतिमा। मूर्ति।

**प्रतीकार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] प्रतिकार।

**प्रतीकोपासना**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] किसी विशेष पदार्थ में ब्रह्म की भावना करके उसे पूजना।

**प्रतीक्षा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] किसी कार्य्य के होने या किसी के आने की आशा में रहना। आसरा। इंतजार। प्रत्याशा।

**प्रतीक्ष्य**—वि॰ [सं॰] १. प्रतीक्षा करने योग्य। २. जिसकी प्रतीक्षा की जाय।

**प्रतीची**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पश्चिम दिशा।

**प्रतीच्य**—वि॰ [सं॰] पश्चिमी।

**प्रतीत**—वि॰ [सं॰] १. ज्ञात। विदित। जाना हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर। ३. आनंद। प्रसन्न। खुश।

**प्रतीति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. ज्ञान। जानकारी। २. विश्वास। ३. प्रसन्नता।

**प्रतीप**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. प्रतिकूल घटना। आशा के विरुद्ध फल। २. वह अर्थालंकार जिसमें उपमान को ही उपमेय के समान कहते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार वर्णन करते हैं। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ४. विमुख।

**प्रतीयमान**—वि॰ [सं॰] जान पड़ता हुआ।

**प्रतीहार**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रतिहार"।

**प्रतीहारी**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रतिहारी"।

**प्रतुद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वे पक्षी जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं।

**प्रतोद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. चाबुक। कोड़ा। २. अंकुश।

**प्रतोली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. चौड़ी सड़क। शाहराह। २. गली। कूचा। ३. दुर्ग का द्वार।

**प्रत्न**—वि॰ [सं॰] पुराना। प्राचीन।

**प्रत्नतत्त्व**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "पुरातत्त्व"।

**प्रत्यंचा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ पतंचिका] धनुष की डोरी जिसमें लगाकर बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।

**प्रत्यक्ष**—वि॰ [सं॰] [संज्ञा प्रत्यक्षता] १. जो देखा जा सके। जो आँखों के सामने हो। २. जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके।

संज्ञा पुं॰ चार प्रकार के प्रमाणों में से एक।

क्रि॰ वि॰ आँखों के आगे। सामने।

**प्रत्यक्षदर्शी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ प्रत्यक्षदर्शिन्] १. वह जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो। २. साक्षी। गवाह।

**प्रत्यक्षवाद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह सिद्धांत जिसमें केवल प्रत्यक्ष को ही प्रधान मानते हैं।

**प्रत्यक्षवादी**—संज्ञा पुं० [सं० प्रत्यक्षवादिन्] [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने।

**प्रत्यक्षीकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान करना।

**प्रत्यनीक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहनेवाले या संबंधी के प्रति किसी हित या अहित का किया जाना वर्णन किया जाय। २. शत्रु। दुश्मन। ३. प्रतिपक्षी। विरोधी।

**प्रत्यपकार**—संज्ञा पुं० [सं०] अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार।

**प्रत्यभिज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मृति की सहायता से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान।

**प्रत्यभिज्ञा दर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] माहेश्वर संप्रदाय का एक दर्शन जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

**प्रत्यभिज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।

**प्रत्यय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विश्वास। एतबार। २. प्रमाण। सबूत। ३. विचार। खयाल। ४. बुद्धि। समझ। ५. व्याख्या। शरह। ६. कारण। हेतु। ७. आवश्यकता। जरूरत। ८. प्रख्याति। प्रसिद्धि। ९. चिह्न। लक्षण। १०. निर्णय। फैसला। ११. सम्मति। राय। १२. वे नौ रीतियाँ जिनके द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या जानी जाय। १३. व्याकरण में वह अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से लगाया जाय। जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है।

**प्रत्यवाय**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रत्यवायी] १. पाप। दुष्कर्म। २. विरोध। ३. अपकार। हानि। ४. बाधा। ५. निराशा।

**प्रत्याख्यान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंडन। २. निराकरण। ३. निरादरपूर्वक लौटाना। ४ ग्रहण या मान्य न करना।

**प्रत्यागत**—वि० [सं०] जो लौट आया हो।

**प्रत्यागमन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लौट आना। वापसी। २. दोबारा आना।

**प्रत्यालीढ़**—संज्ञा पुं० [सं०] धनुष चलानेवालों के बैठने का एक प्रकार।

**प्रत्यावर्त्तन**—संज्ञा पुं० [सं०] लौट आना।

**प्रत्याशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० प्रत्याशित] आशा। उम्मेद।

**प्रत्याहार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. योग के आठ अंगों में से एक अंग जिसमें इंद्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है। इंद्रियनिग्रह। २ प्रतिकार। ३. किसी काम को न होने के बराबर करना।

**प्रत्युत**—अव्य० [सं०] बल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।

**प्रत्युत्तर**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर। जवाब का जवाब।

**प्रत्युत्पन्न**—वि० [सं०] १. जो फिर से उत्पन्न हो। २. जो ठीक समय पर उत्पन्न हो।

यौ०—प्रत्युत्पन्नमति=जो तुरंत ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले। तत्परबुद्धिवाला।

**प्रत्युपकार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।

**प्रत्यूष**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रभात। तड़का।

**प्रत्येक**—वि० [सं०] समूह अथवा बहुतों में से हर एक। अलग अलग।

**प्रथम**—वि० [सं०] १. जो गिनती में सबसे पहले आवे। पहला। अव्वल। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे अच्छा। क्रि० वि० [सं०] पहले। पेश्तर। आगे।

**प्रथम कारक**—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में "कर्त्ता" (कारक)।

**प्रथम पुरुष**—संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष"।

**प्रथमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मदिरा। शराब। (तांत्रिक) २. व्याकरण का कर्त्ता कारक।

**प्रथमी**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

**प्रथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रीति। रिवाज। चाल। प्रणाली। नियम।

**प्रथित**—वि० [सं०] [स्त्री० प्रथिता] १. लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

**प्रथी**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।

**प्रथु**—संज्ञा पुं० दे० "पृथु"।

**प्रद**—वि० [सं०] देनेवाला। जो दे। दाता। (यौगिक में) जैसे, आनंदप्रद।

**प्रदक्षिण**—संज्ञा पुं० [सं०] देव-मूर्ति आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा।

**प्रदक्षिणा**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण"।

**प्रदत्त**—वि० [सं०] दिया हुआ।

**प्रदर**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहता है।

**प्रदर्शक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री०

प्रदर्शिका ] १. दिखलानेवाला। वह जो कोई चीज दिखलावे। २. दर्शक।

**प्रदर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिखलाने का काम। २. दे० "प्रदर्शनी"।

**प्रदर्शनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीजें लोगों को दिखाने के लिए रखी जायँ। नुमाइश।

**प्रदर्शित**—वि० [सं०] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

**प्रदाता**—त्रि० [सं० प्रदातृ] दाता। देनेवाला।

**प्रदान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. देने की क्रिया। २. दान। बखशिश। ३. विवाह। शादी।

**प्रदायक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। जो दे।

**प्रदायी**—संज्ञा पुं० दे० "प्रदायक"।

**प्रदाह**—संज्ञा पुं० [सं०] ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

**प्रदिशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

**प्रदीप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दीपक। दीआ। चिराग। २. रोशनी। प्रकाश।

**प्रदीपक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।

**प्रदीपति***†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदीप्ति"।

**प्रदीपन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. उजाला करना। २. उज्ज्वल करना। चमकाना।

**प्रदीप्त**—वि० [सं०] १. जगमगाता हुआ। प्रकाशवान्। २. उज्ज्वल। चमकीला।

**प्रदीप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रोशनी। प्रकाश। २. चमक। आभा।

**प्रदुमन***—संज्ञा पुं० दे० "प्रद्युम्न"।

**प्रदेय**—वि० [सं०] प्रदान करने के योग्य।

**प्रदेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसकी भाषा, रीतिव्यवहार, शासन-पद्धति आदि उसी देश के अन्य विभागों की इन सब बातों से भिन्न हो। प्रांत। सूबा। २. स्थान। जगह। मुकाम। ३ अंग। अवयव।

**प्रदोष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संध्या-काल। सूर्य्य के अस्त होने का समय। २. त्रयोदशी का व्रत जिसमें संध्या समय शिव का पूजन करके भोजन करते हैं। ३. बड़ा दोष। भारी अपराध।

**प्रद्युम्न**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामदेव। कंदर्प। २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

**प्रद्योत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। आभा। चमक।

**प्रधान**—त्रि० [सं०] मुख्य। खास। संज्ञा पुं० [सं०] १. मुखिया। सरदार। २. सचिव। मंत्री। वजीर। ३. सभापति।

**प्रधानता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य्य या पद।

**प्रधानी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० प्रधान+ई (प्रत्य०)] प्रधान का पद या कर्म्म।

**प्रध्वंस**—संज्ञा पुं० [सं०] नाश। विनाश।

**प्रन***†—संज्ञा पुं० दे० "प्रण"।

**प्रनति***†—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रणति"।

**प्रनवना***†—क्रि० स० दे० "प्रणमना"।

**प्रनामी***†—संज्ञा पुं० [सं० प्रणामिन्] प्रणाम करनेवाला। जो प्रणाम करे।

संज्ञा स्त्री० [सं० प्रणाम+ई (प्रत्य०)] वह दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय देते हैं।

**प्रनिपात***†—संज्ञा पुं० दे० "प्रणिपात"।

**प्रपंच**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संसार। सृष्टि। भव-जाल। २. विस्तार। फैलाव। ३. दुनिया का जंजाल। ४. झगड़ा। बखेड़ा। ५. आडंबर। ढोंग। ६. छल। धोखा।

**प्रपंची**—वि० [सं० प्रपंचिन्] १. प्रपंच रचनेवाला। २. छली। कपटी। ढोंगी।

**प्रपत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनन्य शरणागत होने की भावना। अनन्य भक्ति।

**प्रपन्न**—वि० [सं०] १. प्राप्त। आया हुआ। २. शरणागत। आश्रित।

**प्रपा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पौसरा। प्याऊ।

**प्रपाठक**—संज्ञा पुं० [सं०] वेद के अध्यायों और श्रौत ग्रंथों का एक अंश।

**प्रपात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो। २. एकबारगी नीचे गिरना। ३. ऊँचे से गिरती हुई जलधारा। झरना। दरी।

**प्रपितामह**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म।

**प्रपीड़न**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रपीड़ित] बहुत अधिक कष्ट देना।

**प्रपुंज**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ ] भारी झुंड।

**प्रपुत्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ प्रपुत्री ] पुत्र का पुत्र। पोता।

**प्रपूर्ण**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा प्रपूर्णता] अच्छी तरह भरा हुआ।

**प्रपौत्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ प्रपौत्री ] परपोता। पुत्र का पोता। पोते का पुत्र।

**प्रफुकना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "प्रफुलना"।

**प्रफुलना***—क्रि॰ अ॰ [सं॰ प्रफुल्ल] फूलना।

**प्रफुला***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ प्रफुल्ल ] १. कुमुदिनी। कुँई। २. कमलिनी। कमल।

**प्रफुलित***—वि॰ [ सं॰ प्रफुल्ल ] १. खिला हुआ। कुसुमित। २. प्रफुल्ल। आनंदित।

**प्रफुल्ल**—वि॰ [ सं॰ ] १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसमें फूल लगे हों। ३. खुला हुआ। ४. प्रसन्न। आनंदित।

**प्रफुल्लित**—वि॰ [ सं॰ प्रफुल्ल का अशुद्ध रूप ] दे॰ "प्रफुल्ल"।

**प्रबंध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बाँधने की डोरी आदि। २. बंधान। योजना। ३. बँधा हुआ सिलसिला। ४. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। निबंध। ५. आयोजन। उपाय। ६. व्यवस्था। बंदोबस्त। इंतजाम।

**प्रबंध कल्पना**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] ऐसा प्रबंध जिसमें थोड़ी सी सत्य कथा में बहुत सी बातें ऊपर से मिलाई गई हों।

**प्रबंध-कारिणी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबंध करती हो।

**प्रबल**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ प्रबला ] १. बलवान्। प्रचंड। २. जोर का। तेज। उग्र। ३. घोर। महान्।

**प्रबला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] बहुत बलवती।

**प्रबुद्ध**—वि॰ [ सं॰ ] १. जागा हुआ। २. होश में आया हुआ। ३. पंडित। ज्ञानी। ४. खिला हुआ।

**प्रबोध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ प्रबोधक ] १. जागना। नींद का हटना। २. यथार्थ ज्ञान। पूर्णबोध। ३. ढारस। तसल्ली। दिलासा। ४. चेतावनी।

**प्रबोधन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. जागरण। जागना। २. जगाना। नींद से उठाना। ३. यथार्थ ज्ञान। बोध। चेत। ४. बताना। ज्ञान देना। ५. सांत्वना।

**प्रबोधना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ प्रबोधन ] १. जगाना। नींद से उठाना। २ सचेत करना। होशियार करना। ३. समझाना-बुझाना। ४. सिखाना। पाठ पढ़ाना। पट्टी पढ़ाना। ५. ढारस देना। तसल्ली देना।

**प्रबोधिता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक वर्णवृत्ति। सुनंदिनी। मंजुभाषिणी।

**प्रबोधिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] देवोत्थान या कार्त्तिक शुक्ला एकादशी।

**प्रभंजन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. तोड़-फोड़। नाश। २. प्रचंड वायु। आँधी।

**प्रभद्रक**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रभद्रिका"।

**प्रभद्रिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक वर्णवृत्ति।

**प्रभव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. उत्पत्ति-कारण। २. उत्पत्ति स्थान। आकर। ३. जन्म। उत्पत्ति। ४. सृष्टि। संसार।

**प्रभविष्णु**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा प्रभविष्णुता ] १. प्रभावशाली। २. बलवान्।

**प्रभा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. प्रकाश। आभा। चमक। २. सूर्य की एक पत्नी। ३. एक द्वादशाक्षरा वृत्ति। मंदाकिनी।

**प्रभाउ***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रभाव"।

**प्रभाकर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सूर्य। २. चंद्रमा। ३. अग्नि। ४. समुद्र।

**प्रभात**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सवेरा। तड़का।

**प्रभात फेरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ प्रभात + हिं॰ फेरी ] प्रचार आदि के लिए बहुत सवेरे दल बाँधकर शहर का चक्कर लगाना।

**प्रभाती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ प्रभात ] एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है।

**प्रभाव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. उद्भव। प्रादुर्भाव। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. असर। ४. महिमा। माहात्म्य। ५. इतना मान या अधिकार कि जो बात चाहे, कर या करा सके। साख या दबाव।

**प्रभावक**—वि॰ [ सं॰ ] प्रभाव करने या डालनेवाला।

**प्रभावती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सूर्य की पत्नी। २. तेरह अक्षरों का एक छंद। रुचिरा।
वि॰ स्त्री॰ प्रभाववाली।

**प्रभावान्वित**—वि॰ [ सं॰ ] जिस पर प्रभाव पड़ा हो। प्रभावित।

**प्रभावित**—वि॰ [ सं॰ प्रभाव ] जिस पर प्रभाव पड़ा हो।

**प्रभास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. दीप्ति। ज्योति। २. एक प्राचीन तीर्थ।

सोमतीर्थ।

**प्रभासना***—क्रि० अ० [ सं० प्रभासन ] भासित होना। दिखाई पड़ना।

**प्रभु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अधिपति। नायक। २. स्वामी। मालिक। ३. ईश्वर। भगवान्।

**प्रभुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बड़ाई। महत्त्व। २. हुकूमत। शासनाधिकार। ३. वैभव। ४. साहिबी। मालिकपन।

**प्रभुताई**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रभुता"।

**प्रभुत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रभुता।

**प्रभू***—संज्ञा पुं० दे० "प्रभु"।

**प्रभूत**—वि० [ सं० ] १. निकला हुआ। उत्पन्न। २. उन्नत। ३. प्रचुर। बहुत।

संज्ञा पुं० पंचभूत। तत्त्व।

**प्रभृति**—अव्य० [ सं० ] इत्यादि। वगैरह।

**प्रभेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भेद। विभिन्नता।

**प्रभेव***—संज्ञा पुं० दे० "प्रभेद"।

**प्रमत्त**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा प्रमत्तता ] १. मस्त। नशे में चूर। २. पागल। बावला। ३. जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

**प्रमथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मथन या पीड़ित करनेवाला। २. शिव के एक प्रकार के गण या पारिषद।

**प्रमथन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मथना। २. दुःख पहुँचाना। ३. वध या नाश करना।

**प्रमथनाथ**—संज्ञा पुं० [सं० ] शिव।

**प्रमद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मतवालापन। २. हर्ष। आनंद।

वि० मत्त। मतवाला।

**प्रमदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] युवती स्त्री।

**प्रमर्दन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छी तरह मलना दलना। २. कुचलना। रौंदना।

वि० खूब मर्दन करनेवाला।

**प्रमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शुद्ध बोध। यथार्थ ज्ञान। (न्याय) २. माप।

**प्रमाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो। सबूत। २. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है। ३. सत्यता। सचाई। ४. निश्चय। प्रतीति। यकीन। ५. मर्य्यादा। मान। आदर। ६. प्रामाणिक बात या वस्तु। मानने की बात। ७. इयत्ता। हद। मान। ८. प्रमाणपत्र।

वि० १. प्रमाणित। चरितार्थ। ठीक घटता हुआ। २. माना जानेवाला। ठीक। ३. बड़ाई आदि में बराबर।

अव्य० पर्य्यंत। तक।

**प्रमाणकोटि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा।

**प्रमाणना**—क्रि० स० दे० "प्रमानना"।

**प्रमाणपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह कागज जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो। सर्टिफिकेट।

**प्रमाणिक**—वि० दे० "प्रामाणिक"।

**प्रमाणिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नगस्वरूपिणी वृत्त का दूसरा नाम।

**प्रमाणित**—वि० [ सं० ] प्रमाण द्वारा सिद्ध। साबित। निश्चित।

**प्रमाता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रमा ] १. वह जिसे प्रमा का ज्ञान हो। २. ज्ञानकर्त्ता आत्मा या चेतन पुरुष। ३. द्रष्टा। साक्षी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दादी। पिता की माता।

**प्रमाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भूल। चूक। भ्रम। भ्रांति। २. अंतःकरण की दुर्बलता। ३. समाधि के साधनों की भावना न करना या उन्हें ठीक न समझना। (योग)

**प्रमादी**—वि० [ सं० प्रमादिन् ] [ स्त्री० प्रमादिनी ] प्रमादयुक्त। भूल-चूक करनेवाला।

**प्रमान***—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"।

**प्रमानना***—क्रि० स० [ सं० प्रमाण+ना (प्रत्य०) ] १. प्रमाण मानना। ठीक समझना। २. प्रमाणित करना। साबित करना। ३. स्थिर करना। निश्चित करना।

**प्रमानी***—वि० [ सं० प्रामाणिक ] मानने योग्य। प्रमाण योग्य। माननीय।

**प्रमित**—वि० [ सं० ] १. परिमित। २. निश्चित। ३. अल्प। थोड़ा।

**प्रमिताक्षरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक द्वादशाक्षरा वर्णवृत्ति।

**प्रमीला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तंद्रा। २. थकावट। शैथिल्य। ग्लानि।

**प्रमुख**—वि० [ सं० ] १. प्रथम। पहला। २. प्रधान। श्रेष्ठ। ३. मान्य। प्रतिष्ठित।

अव्य० इत्यादि। वगैरह।

**प्रमुद**—वि० दे० "प्रमुदित"।

संज्ञा पुं० दे० "प्रमोद"।

**प्रमुदना**—क्रि० अ० [ सं० प्रमोद ] प्रमुदित होना। प्रसन्न होना।

**प्रमुदित**—वि० [ सं० ] हर्षित। प्रसन्न।

**प्रमुदितवदना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बारह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। मंदाकिनी।

**प्रमेय**—वि० [ सं० ] १. जो प्रमाण का विषय हो सके। २. जिसका मान बताया जा सके। ३. जिसका निर्धा-

सिद्ध कर सकें।

—संज्ञा पुं० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें।

**प्रमेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें मूत्रमार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएँ निकला करती हैं।

**प्रमोद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। २. सुख। ३. दे० "प्रमोदा"।

**प्रमोदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सांख्य में आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

**प्रयंक***—संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

**प्रयंत***—अव्य० दे० "पर्यंत"।

**प्रयत्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जानेवाली क्रिया। प्रयास। चेष्टा। कोशिश। २. प्राणियों की क्रिया। जीवों का व्यापार। ( न्याय ) ३. वर्णों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया। ( व्याकरण )

**प्रयत्नवान्**—वि० [ सं० प्रयत्नवत् ] [ स्त्री० प्रयत्नवती ] प्रयत्न में लगा हुआ।

**प्रयाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-जमुना के संगम पर है। इलाहाबाद।

**प्रयागवाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० प्रयाग+वाला ( प्रत्य० )] प्रयाग तीर्थ का पंडा।

**प्रयाण** संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गमन। प्रस्थान। यात्रा। २. युद्ध-यात्रा। चढ़ाई।

**प्रयास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २. श्रम। मेहनत।

**प्रयुक्त**—वि० [ सं० ] १. अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। २. जो खूब काम में लाया गया हो।

**प्रयुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दस लाख की संख्या।

**प्रयोक्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रयोक्तृ ] १. प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। २. ऋण देनेवाला।

**प्रयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी काम में लगाना। आयोजन। साधन। २. व्यवहार। इस्तेमाल। बरता जाना। ३. क्रिया का साधन। विधान। अमल। ४. मारण, मोहन आदि तांत्रिक उपचार या साधन जो बारह कहे जाते हैं। ५. अभिनय। नाटक का खेल। ६. यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। ७. दृष्टांत। निदर्शन।

**प्रयोगातिशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाटक में प्रस्तावना का एक भेद।

**प्रयोगी, प्रयोजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रयोगकर्त्ता। अनुष्ठान करनेवाला। २. काम में लगानेवाला। प्रेरक। ३. प्रदर्शक।

**प्रयोजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कार्य्य। काम। अर्थ। २. उद्देश्य। अभिप्राय। मतलब। आशय। ३. उपयोग। व्यवहार।

**प्रयोजनवती लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे। ( शब्दशक्ति)

**प्रयोजनीय**—वि० [ सं० ] काम का। मतलब का।

**प्रयोज्य**—वि० [ सं० ] प्रयोग के योग्य। काम में लाने लायक।

**प्ररोचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चाह या रुचि उत्पन्न करना। २. उत्तेजना। बढ़ावा। ३. नाटक के अभिनय में प्रस्तावना के बीच में सूत्रधार, नट आदि का नाटक और नाटककार की प्रशंसा में कुछ कहना।

**प्ररोहण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आरोह। चढ़ाव। २. उगना। जमना।

**प्रलंब**—वि० [ सं० ] १. नीचे की ओर दूर तक लटकता हुआ। २. लंबा। ३. टँगा हुआ। टिका हुआ। ४. निकला हुआ।

**प्रलंबन**—संज्ञा पुं० [सं०] अवलंबन। सहारा।

**प्रलंबी**—वि० [ सं० प्रलंबिन् ] [ स्त्री० प्रलंबिनी ] १. दूर तक लटकनेवाला। २. सहारा लेनेवाला।

**प्रलयंकर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रलयंकरी ] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।

**प्रलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लय को प्राप्त होना। न रह जाना। २. जगत् के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना। संसार का तिरोभाव। ३. साहित्य में एक सात्त्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्व स्मृति का लोप हो जाता है। ४. मूर्च्छा। बेहोशी।

**प्रलयकर**—वि० दे० "प्रलयंकर"।

**प्रलाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रलापी ] १. कहना। बकना। २. व्यर्थ की बकवाद। पागलों की सी बड़बड़।

**प्रलेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना। लेप। पुल्टिस।

**प्रलेपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रलेपक, प्रलेप्य ] लेप करने की क्रिया। पोतने का काम।

**प्रलोभ, प्रलोभन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रलोभक ] लोभ दिखाना। लालच दिखाना।

**प्रवंचन**—संज्ञा पुं० दे० "प्रवंचना"।

**प्रवंचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० प्रवंचक ] छल। ठगपना। धूर्तता।

**प्रवंचित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रवंचिता ] जो ठगा गया हो।

**प्रवक्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रवक्तृ ] १. अच्छी तरह बोलने या कहनेवाला। २. वेदादि का उपदेश देनेवाला।

**प्रवचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रवचनीय ] १. अच्छी तरह समझाकर कहना। २. व्याख्या। ३. वेदांग।

**प्रवण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० प्रवणता ] १. क्रमशः नीची होती हुई भूमि। ढाल। उतार। २. चौराहा। ३. उदर। पेट। ४. दक्ष। निपुण। ५. समर्थ।

वि० [ भाव० प्रवणता ] १. ढालुआँ। जो क्रमशः नीचा होता गया हो। २. झुका हुआ। नत। ३. प्रवृत्त। रत। ४. नम्र। विनीत। ५. उदार। ६. दक्ष। निपुण।

**प्रवत्स्यत्पतिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

**प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रवत्स्यत्पतिका।

**प्रवर**—वि० [ सं० ] श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य।

संज्ञा पुं० १. किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष प्रवर्त्तक मुनि। २. संतति।

**प्रवरललिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**प्रवर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कार्य्यारंभ। ठानना। २. एक प्रकार के मेघ।

**प्रवर्त्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी काम को चलानेवाला। संचालक। २. आरंभ करनेवाला। जारी करनेवाला। ३. काम में लगानेवाला। प्रवृत्त करनेवाला। ४. उभारनेवाला। उसकानेवाला। ५. निकालनेवाला। ईजाद करनेवाला। ६. नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्त्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी का संबंध लिए पात्र का प्रवेश हो।

**प्रवर्त्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रवर्त्तित, प्रवर्त्तनीय, प्रवर्त्य ] १. कार्य्य आरंभ करना। ठानना। २. काम को चलाना। ३. प्रचार करना। जारी करना।

**प्रवर्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वर्षा। बारिश। २. किष्किंधा के समीप का एक पर्वत।

**प्रवह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खूब बहाव। २. सात वायुओं में से एक वायु।

**प्रवहमान**—वि० [ सं० प्रवहमत् ] जोरों से बहता या चलता हुआ।

**प्रवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बातचीत। २. जनश्रुति। जनरव। अफवाह। ३. झूठी बदनामी। अपवाद।

**प्रवान***—संज्ञा पुं० दे० "प्रमाण"।

**प्रवाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मूँगा। विद्रुम।

**प्रवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना। २. विदेश।

**प्रवासी**—वि० [ सं० प्रवासिन् ] परदेश में रहनेवाला। परदेसी।

**प्रवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जल का स्रोत। बहाव। २. बहता हुआ पानी। धारा। ३. काम का जारी रहना। ४. चलता हुआ क्रम। तार। सिलसिला।

**प्रवाहक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रवाहिका ] १. अच्छी तरह वहन करनेवाला। २. जोर से चलने या बहनेवाला।

**प्रवाहित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रवाहिता ] बहता हुआ।

**प्रवाही**—वि० [ सं० प्रवाहिन् ] [ स्त्री० प्रवाहिनी ] १. बहानेवाला। २. बहनेवाला। ३. तरल। द्रव।

**प्रविष्ट**—वि० [ सं० ] जिसका प्रवेश हुआ हो। घुसा हुआ।

**प्रविसना**—क्रि० अ० [ सं० प्रविश ] घुसना।

**प्रवीण**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा प्रवीणता ] निपुण। कुशल। दक्ष। चतुर। होशियार।

**प्रवीर**—वि० [ सं० ] भारी योद्धा। बहादुर।

**प्रवृत्त**—वि० [ सं० ] १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २. तत्पर। उद्यत। तैयार।

**प्रवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रवाह। बहाव। २. मन का लगाव। लगन। ३. न्याय में एक यत्नविशेष। ४. प्रवर्त्तन। काम का चलना। ५. सांसारिक विषयों का ग्रहण। निवृत्ति का उलटा।

**प्रवृद्ध**—वि० [ सं० ] १. खूब बढ़ा हुआ। २. प्रौढ़। खूब पका।

संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

**प्रवेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भीतर जाना। घुसना। पैठना। २. गति। पहुँच। रसाई। ३. किसी विषय की जानकारी।

**प्रवेशक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रवेश करानेवाला। २. नाटकों में वह अंश जिसमें बीच की किसी घटना का परि-

पथ्य केवल बात-चीत से कराया जाता है।

**प्रवेशिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ। २. प्रवेश के लिए दिया जानेवाला धन। दाखिला।

**प्रव्रज्या**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संन्यास।

**प्रशंसा***—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रशंसा"। वि० [ सं० प्रशंस्य] प्रशंसा के योग्य।

**प्रशंसक**—वि० [ सं० ] १. प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

**प्रशंसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य ] गुण-कीर्तन। स्तुति करना। सराहना। तारीफ करना।

**प्रशंसना***—क्रि० स० [ सं० प्रशंसन ] सराहना। गुणानुवाद करना। तारीफ करना।

**प्रशंसनीय**—वि० [ सं० ] प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

**प्रशंसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० प्रशंसित ] गुण-वर्णन। स्तुति। बड़ाई। तारीफ।

**प्रशंसित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रशंसिता ] जिसकी प्रशंसा की गई हो।

**प्रशंसोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान की प्रशंसा द्योतित की जाती है।

**प्रशंस्य**—वि० [ सं० ] प्रशंसनीय।

**प्रशमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शमन। शांति। २. नाशन। ध्वंस करना। ३. मारण। वध।

**प्रशस्त**—वि० [ सं० ] १. प्रशंसनीय। सुन्दर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. भव्य।

**प्रशस्तपाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन आचार्य्य जिनका वैशेषिक दर्शन पर पदार्थ-धर्म-संग्रह नामक ग्रंथ है।

**प्रशस्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रशंसा। स्तुति। २. राजा की ओरसे एक प्रकार के आज्ञापत्र जो चट्टानों या ताम्रपत्रादि पर खोदे जाते थे। ३. प्राचीन पुस्तकों के आदि और अंत की कुछ पंक्तियाँ जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, कालादि का परिचय मिलता हो।

**प्रशांत**—वि० [ सं० ] १. चंचलता-रहित। स्थिर। २. शांत। निश्चल वृत्तिवाला।

संज्ञा पुं० एक महासागर जो एशिया और अमरीका के बीच है।

**प्रशांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रशांत या निश्चल होने का भाव। पूर्ण शांति।

**प्रशाखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शाखा की शाखा। टहनी। पतली शाखा।

**प्रश्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल। २. पूछने की बात। ३. विचारणीय विषय। ४. एक उपनिषद्।

**प्रश्नोत्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सवाल-जवाब। प्रश्न और उत्तर। संवाद। २. वह काव्यालंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।

**प्रश्नोत्तरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रश्नोत्तर ] किसी विषय के प्रश्नों और उनके उत्तरों का संग्रह।

**प्रश्रय**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आश्रय-स्थान। २. टेक। सहारा। आधार।

**प्रश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है।

**प्रष्टव्य**—वि० [ सं० ] १. पूछने योग्य। २.पूछने का। जिसे पूछना हो।

**प्रष्टा**—वि० [ सं० ] पूछने या प्रश्न करनेवाला।

**प्रसंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संबंध। लगाव। संगति। २. विषय का लगाव। अर्थ की संगति। ३. स्त्री-पुरुष का संयोग। ४. बात। वार्ता। विषय। ५. उपयुक्त संयोग। अवसर मौका। ६. हेतु। कारण। ७. विषयानुक्रम। प्रस्ताव; प्रकरण। ८.विस्तार। फैलाव।

**प्रसंसना***—क्रि० स० दे० "प्रशंसना"।

**प्रसन्न**—वि० [ सं० ] १. संतुष्ट। तुष्ट। २. खुश। हर्षित। प्रफुल्ल। ३. अनुकूल।

†वि० [फ़ा० पसंद] मनोनीत। पसंद।

**प्रसन्नता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तुष्टि। संतोष। २. प्रफुल्लता। हर्ष। आनंद। ३. कृपा।

**प्रसन्नित***†—वि० दे० "प्रसन्न"।

**प्रसरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रसरणीय, प्रसरित ] १. आगे बढ़ना। खिसकना। सरकना। २. फैलना। फैलाव। ३. व्याप्ति। ४. विस्तार।

**प्रसव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। २. जन्म। उत्पत्ति। ३. बच्चा। संतान।

**प्रसवना***—क्रि० स० [ सं० प्रसव ] उत्पन्न करना। जन्म देना।

**प्रसवा, प्रसविनी**—वि० स्त्री० [सं०] प्रसव करनेवाली। जननेवाली।

**प्रसाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। मिहरबानी। ३. वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। ४. वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें। ५. देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ६. भोजन।

मुहा०—प्रसाद पाना=भोजन करना। ७. काव्य का एक गुण। जिसकी भाषा स्वच्छ और साधु हो और सुनने के साथ ही जिसका भाव समझ में आ जाय। ८. शब्दालंकार के अंतर्गत एक वृत्ति। कोमला वृत्ति। *१–९. दे० "प्रासाद"।

**प्रसादना***—क्रि० स० [ सं० प्रसादन ] प्रसन्न करना।

**प्रसादनीय***—वि० [ सं० ] प्रसन्न करने योग्य।

**प्रसादी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० प्रसाद ] १. देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ। २. नैवेद्य। ३. वह पदार्थ जो पूज्य और बड़े लोग छोटों को दें।

**प्रसाधक**-संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० प्रसाधिका ] १. वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे। संपादक। २. सजावट का काम करनेवाला। ३. दूसरे के शरीर या अंगों का शृंगार करनेवाला।

**प्रसाधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अलंकार आदि से युक्त करना। शृंगार करना। सजाना। २. शृंगार की सामग्री। सजावट का सामान। ३.कार्य का संपादन। ४.कंघी से बाल झाड़ना।

**प्रसाधिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह दासी जो रानियों का शृंगार करती हो।

**प्रसार**-संज्ञा पुं० [ सं० ] १.विस्तार। फैलाव। पसार। २. संचार। ३. गमन। ४. निर्गम। निकास।

**प्रसारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रसारित, प्रसार्य्य ] १. फैलाना। २. बढ़ाना।

**प्रसारिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गंध प्रसारिणी लता। २. लजालू। लाजवंती।

**प्रसारित**—वि० [ सं० ] फैलाया हुआ।

**प्रसिद्ध**—वि० [ सं० ] १. भूषित। अलंकृत। २. ख्यात। विख्यात। मशहूर।

**प्रसिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ख्याति। शोहरत। २. भूषा। बनाव-सिंगार।

**प्रसुप्त**—वि० [ सं० ] सोया हुआ।

**प्रसुप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नींद।

**प्रसू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जननेवाली। उत्पन्न करनेवाली।

**प्रसूत** – वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रसूता ] १. उत्पन्न। संजात। पैदा। २. निकला हुआ। ३. उत्पादक। संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के पीछे होता है।

**प्रसूता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बच्चा जननेवाली स्त्री। जच्चा।

**प्रसूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रसव। जनन। २. उद्भव। ३. कारण। प्रकृति।

**प्रसूतिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसूता"।

**प्रसून**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फूल। २. फल।

**प्रसृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० प्रसृत ] १ फैलाव। विस्तार। २. संतति। संतान।

**प्रसेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.सेचन। सींचना। २. निचोड़। ३. छिड़काव। ४. एक असाध्य रोग। जिरियान। ( सुश्रुत )

**प्रसेद***—संज्ञा पुं० [ सं० प्रस्वेद ] पसीना।

**प्रस्तर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पत्थर। २. बिछावन। ३. चौड़ी सतह। ४. प्रस्तार।

**प्रस्तर-युग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रस्तर-युगीन ] पुरातत्त्व के अनुसार किसी देश या जाति की संस्कृति के इतिहास में वह समय जब अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के ही बनते थे। यह सभ्यता का बिलकुल आरंभिक काल था और इसमें लोगों को धातुओं का पता नहीं था।

**प्रस्तार**—संज्ञा पुं० [सं०] १.फैलाव। विस्तार। २. आधिक्य। वृद्धि। ३. परत। तह। ४. छंदःशास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से पहला जिससे छंदों के भेद की संख्याओं और रूपों का ज्ञान होता है।

**प्रस्ताव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रसंग। छिड़ी हुई बात। २. अवसर पर कही हुई बात। जिक्र। चर्चा। ३. सभा के सामने उपस्थित मंतव्य। (आधुनिक) ४. प्राक्कथन। भूमिका। विषय-परिचय।

**प्रस्तावक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रस्ताव करनेवाला। तजवीज करनेवाला।

**प्रस्तावकर्त्ता**—संज्ञा पुं० दे० "प्रस्तावक"।

**प्रस्तावना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. आरंभ। २. प्राक्कथन। भूमिका। उपोद्घात। ३. नाटक में अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने के लिए उठाया हुआ प्रसंग।

**प्रस्तावित**—वि० [ सं० ] जिसके लिए या जिसका प्रस्ताव किया गया हो।

**प्रस्तुत**—वि० [ सं० ] १. जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २. जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ३. उपस्थित। सामने आया हुआ।

मौजूद। ४. उद्यत। तैयार।

**प्रस्तुतालंकार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत के संबंध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत के प्रति घटाया जाता है।

**प्रस्तोता**—संज्ञा पुं० [सं० प्रस्तोतृ] प्रस्ताव करनेवाला। प्रस्तावक।

**प्रस्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़ के ऊपर की चौरस भूमि। २. प्राचीन काल का एक मान।

**प्रस्थान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गमन। यात्रा। रवानगी। २. पहनने के कपड़े आदि जिसे लोग यात्रा के मुहूर्त पर घर से निकालकर यात्रा की दिशा में कहीं पर रखवा देते हैं।

**प्रस्थानिक**—वि० [सं०] जिसने प्रस्थान किया हो। जो चला गया हो।

**प्रस्थानी**—वि० [हिं० प्रस्थान] जानेवाला।

**प्रस्थापन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रस्थापित, प्रस्थाप्य] १. प्रस्थान कराना। भेजना। २. प्रेरण। ३. स्थापन।

**प्रस्थित**—वि० [सं०] १. ठहराया हुआ। टिका हुआ। २. दृढ़। ३. जो गया हो। गत।

**प्रस्फुटन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फटना या खुलना। २. खिलना।

**प्रस्फुटित**—वि० [सं०] १. फूटा या खुला हुआ। २. खिला हुआ। विकसित।

**प्रस्फुरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। २. प्रकाशित होना।

**प्रस्फोटन**—संज्ञा पुं० [सं०] एकबारगी जोर से खुलना या फूटना। फोट।

**प्रस्रवण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल आदि का टपक या गिर कर बहना। २. सोता। ३. प्रपात। झरना। निर्झर।

**प्रस्राव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल आदि का टपकना या रसना। २. पेशाब।

**प्रस्वेद** संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

**प्रह**—संज्ञा पुं० दे० "प्रातःकाल"।

**प्रहर**—संज्ञा पुं० [सं०] दिन-रात के आठ सम भागों में से एक भाग। पहर।

**प्रहरखना***—क्रि० अ० [सं० प्रहर्षण] हर्षित होना। आनंदित होना।

**प्रहरणकलिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चौदह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**प्रहरी**—वि० [सं० प्रहरिन्] १. पहर पहर पर घंटा बजानेवाला। घड़ियाली। २. पहरा देनेवाला।

**प्रहर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

**प्रहर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आनंद। २. एक अलंकार जिसमें बिना उद्योग के अनायास किसी के वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है।

**प्रहर्षणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

**प्रहसन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसी। दिल्लगी। परिहास। २. चुहल। खिल्ली। ३. हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का काव्य-मिश्र नाट्य जो रूपक के दस भेदों में से है।

**प्रहसित**—वि० [सं०] १. हँसी से भरा हुआ। २. जिसकी हँसी उड़ाई जाय। उपहास्यास्पद।

**प्रहान***—संज्ञा पुं० [सं० प्रहाण] १. परित्याग। २. चित्त की एकाग्रता। ध्यान।

**प्रहार**—संज्ञा पुं० [सं०] आघात। वार। चोट। मार।

**प्रहारक**—वि० [सं०] [स्त्री० प्रहारिका] प्रहार करनेवाला।

**प्रहारना***—क्रि० अ० [सं० प्रहार] १. मारना। आघात करना। २. मारने के लिए चलाना। ३. नष्ट करना। मिटाना।

**प्रहारित***—वि० [सं० प्रहार] जिस पर प्रहार हो। प्रताड़ित।

**प्रहारी**—वि० [सं० प्रहारिन्] [स्त्री० प्रहारिणी] १. मारनेवाला। प्रहार करनेवाला। २. चलानेवाला। छोड़नेवाला। ३. नाशक।

**प्रहेलिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पहेली।

**प्रह्लाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. आमोद। आनंद। २. एक भक्त दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

**प्रांगण**—संज्ञा पुं० [सं०] मकान के बीच का खुला हुआ भाग। आँगन। सहन।

**प्रांजल**—वि० [सं०] १. सरल। सीधा। २. सच्चा। ३. बराबर। समान।

**प्रांत**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० प्रांतिक] १. अंत। शेष। सीमा। २. किनारा। छोर। सिरा। ३. ओर। दिशा। तरफ। ४. खंड। प्रदेश।

**प्रांतर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्रदेश जिसमें जल या वृक्ष न हों। उजाड़। २. जंगल। वन। ३. वृक्ष या कोटर।

**प्रांतिक, प्रांतीय**—वि० [सं०] किसी एक प्रांत से संबंध रखनेवाला।

**प्रांतीयता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. प्रांतीय होने का भाव। २. अपने प्रांत का

विशेष पक्षपात या मोह।

**प्राइमर**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] प्रारंभिक पाठ्य-पुस्तक।

**प्राइवेट**—वि० [ अं० ] व्यक्तिगत। निजी।

**प्राकाम्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियों में से एक।

**प्राकार**—संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

**प्राकृत**—वि० [ सं० ] १. प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति-संबंधी। २. स्वाभाविक। नैसर्गिक। ३. भौतिक। ४. सहज।

संज्ञा स्त्री० १. बोलचाल की भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रांत में हो अथवा रहा हो। २. एक प्राचीन भारतीय भाषा। भारत की बोलचाल की आर्य्य भाषाएँ जो बोलचाल की प्राकृतों से बनी हैं।

**प्राकृतिक**—वि० [ सं० ] १. जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। २.प्रकृति-संबंधी। प्रकृति का। ३. स्वाभाविक। सहज।

**प्राकृतिक भूगोल**—संज्ञा पुं० [सं०] भूगोलविद्या का वह अंग जिसमें पृथ्वी की वर्त्तमान स्थिति तथा भिन्न भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओं का वर्णन होता है।

**प्राक्**—वि० [ सं० ] पहले का। अगला।

संज्ञा पुं० पूर्व। पूरब।

**प्राखर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रखरता।

**प्रागैतिहासिक**—वि० [ सं० ] जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का। इतिहास पूर्वकाल का।

**प्राग्भाव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी विशेष समय के पूर्व न होना। २. वह पदार्थ जिसका आदि न हो, पर अंत हो।

**प्राग्ज्योतिष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महाभारत आदि के अनुसार कामरूप देश।

**प्राग्ज्योतिषपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी। आधुनिक गोहाटी।

**प्राङ्मुख**—वि० [ सं० ] जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो। पूर्वाभिमुख।

**प्राची**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। पूरब।

**प्राचीन**—वि० [ सं० ] १. पूरब का। २. पिछले जमाने का। पुराना। पुरातन। ३. वृद्ध।

संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

**प्राचीनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राचीन होने का भाव। पुरानापन।

**प्राचीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

**प्राचुर्य्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रचुर होने का भाव। अधिकता। बहुतायत।

**प्राच्छित***—संज्ञा पुं० दे० "प्रायश्चित्त"।

**प्राच्य**—वि० [ सं० ] १. पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न। पूर्व का। २. पूर्वीय। पूर्वसंबंधी। ३. पुराना। प्राचीन।

**प्राच्यवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साहित्य में वैताली वृत्ति का एक भेद।

**प्राजापत्य**—वि० [ सं० ] १. प्रजापति संबंधी। २. प्रजापति से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० १. आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा। इसमें कन्या का पिता वर और कन्या को एकत्र कर उनसे यह प्रतिज्ञा कराता है कि हम दोनों मिलकर गार्हस्थ्य धर्म का पालन करेंगे। २. यज्ञ।

**प्राज्ञ**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी ] १. बुद्धिमान्। समझदार। चतुर। २. पंडित। विद्वान्।

**प्राड्विवाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. न्याय करनेवाला। न्यायाधीश। २. वकील।

**प्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। हवा। २. शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। ३. श्वास। साँस। ४. काल का वह विभाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके। ५. बल शक्ति। ६. जीवन। जान।

**मुहा०**—प्राण उड़ जाना=१. बहुत घबराहट हो जाना। हक्का-बक्का हो जाना। २. डर जाना। भयभीत होना। प्राण का गले तक आना=मरने पर होना। मरणासन्न होना। प्राण या प्राणों का मुँह को आना या चले आना=१. मरने पर होना। २. अत्यंत दुःख होना। बहुत अधिक कष्ट होना। प्राण जाना, छूटना या निकलना=जीवन का अंत होना। मरना। प्राण डालना=जीवन प्रदान करना। प्राण त्यागना, तजना या छोड़ना=मरना। प्राण देना=मरना। किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना=१. किसी के किसी काम से बहुत दुःखी या रुष्ट होकर मरना। २. किसी को बहुत अधिक चाहना। प्राणों से भी बढ़कर चाहना। प्राण निकलना=१. मर जाना। मरना। २. बहुत घबरा जाना। भयभीत होना। प्राण पयान होना=प्राण निकलना। प्राण या प्राणों पर बीतना=१. जीवन संकट में पड़ना। २. मर जाना। प्राण रखना=१. जिलाना।

जीवन देना। २. जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। प्राण लेना या हरना=मार डालना। प्राण हारना=१. मर जाना। २. साहस टूट जाना।

७. परम प्रिय। ८. ब्रह्मा। ९. विष्णु। १०. अग्नि। आग।

**प्राणआधार***—संज्ञा पुं० [ सं० प्राण+आधार ] १. बहुत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

**प्राणघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हत्या। वध।

**प्राणजीवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राणाधार। २. परम प्रिय व्यक्ति।

**प्राणता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] 'प्राण' का भाव। जीवन।

**प्राणत्याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मर जाना।

**प्राणदंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हत्या आदि [illegible] के बदले में मार डालना।

**प्राणद**—वि० [ सं० ] १. जो प्राण दे। २. प्राणों की रक्षा करनेवाला।

**प्राणदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी को मारे जाने से बचाना।

**प्राणधन**—वि० [ सं० ] अत्यंत प्रिय।

**प्राणधारी**—वि० [ सं० प्राणधारिन् ] १. जीवित। प्राणयुक्त। २. जो साँस लेता हो। चेतन।

संज्ञा पुं० प्राणी। जंतु। जीव।

**प्राणनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० प्राणनाथा ] १. प्रियव्यक्ति। प्यारा। प्रियतम। २. पति। स्वामी। ३. एक संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य्य जो क्षत्रिय थे और औरंगजेब के समय में हुए थे।

**प्राणनाथी**—संज्ञा पुं० [ सं० प्राणनाथ ] १. प्राणनाथ के संप्रदाय का पुरुष। २. स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय।

**प्राणनाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हत्या या मृत्यु।

**प्राणपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पति। स्वामी। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा।

**प्राणप्यारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० प्राण+प्यारा ] [ स्त्री० प्राणप्यारी ] १. प्रियतम। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

**प्राणप्रतिष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी नई मूर्ति को मंदिर आदि में स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोप।

**प्राणप्रद**—वि० [ सं० ] १. प्राणदाता। जो प्राण दे। २. स्वास्थ्यवर्धक।

**प्राणप्रिय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्राणप्रिया ] जो प्राण के समान प्रिय हो। प्रियतम।

**प्राणमय**—वि० [ सं० ] जिसमें प्राण हों।

**प्राणमय कोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा। यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है।

**प्राणवल्लभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अत्यंत प्रिय। २. स्वामी। पति।

**प्राणवायु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राण।

**प्राणविज्ञान**—संज्ञा पुं० दे० "प्राणिविद्या"।

**प्राणशरीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है।

**प्राणांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मरण। मृत्यु।

**प्राणांतक**—वि० [ सं० ] प्राण लेनेवाला। जान लेनेवाला। घातक।

**प्राणाधार, प्राणाधिक**—वि० [ सं० ] अत्यंत प्रिय। बहुत प्यारा।

संज्ञा पुं० पति। स्वामी।

**प्राणायाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में चौथा। श्वास और प्रश्वास, इन दोनों प्रकार की वायुओं की गतियों को धीरे धीरे कम करना।

**प्राणिद्यूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह बाजी जो मेढ़े, तीतर आदि जीवों की लड़ाई आदि पर लगाई जाय।

**प्राणिविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १३. शास्त्र अथवा विद्या जिसमें जलचर, थलचर, नभचर सभी जीवधारियों का अध्ययन हो। प्राणिशास्त्र। प्राणविज्ञान।

**प्राणी**—वि० [ सं० प्राणिन् ] प्राणधारी।

संज्ञा पुं० १. जंतु। जीव। २. मनुष्य।

‡ संज्ञा स्त्री०, पु० पुरुष या स्त्री।

**प्राणेश, प्राणेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० प्राणेश्वरी ] १. पति। स्वामी। २. बहुत प्यारा।

**प्रात**—अव्य० [ सं० प्रातः ] सबेरे। तड़के।

संज्ञा पुं० सबेरा। प्रातःकाल।

**प्रातः**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रातर ] सबेरा। प्रभात।

**प्रातःकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह कर्म जो प्रातःकाल किया जाता हो; जैसे—स्नान।

**प्रातःकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रातःकालीन ] १. रात के अंत में सूर्योदय के पूर्व का काल। यह तीन मुहूर्त का माना गया है। २. सबेरे

का समय।

प्रातःस्मरण—संज्ञा पुं० [ सं० ] सवेरे के समय ईश्वर का भजन करना।

प्रातःस्मरणीय—वि० [ सं० ] जो प्रातःकाल स्मरण करने के योग्य हो। श्रेष्ठ। पूज्य।

प्रातनाथ—संज्ञा पुं० [सं० प्रातः+ नाथ ] सूर्य्य।

प्रातिकूल्य—संज्ञा पुं० दे० "प्रतिकूलता"।

प्रातिपदिक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अग्नि। २. संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो। जैसे, पेड़, अच्छा आदि।

प्रातिलोमिक—वि० [ सं० ] प्रतिलोम संबंधी। प्रतिलोम का।

प्रातिवेश्मिक—संज्ञा पुं० [ सं० ] पड़ोसी।

प्राथमिक—वि० [ सं० ] १. पहले का। प्रथम-संबंधी। २. आरंभ का। प्रारंभिक।

प्रादुर्भाव—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आविर्भाव। प्रकट होना। २. उत्पत्ति।

प्रादुर्भूत—वि० [ सं० ] १. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। प्रकटित। २. उत्पन्न।

प्रादुर्भूतमनोभवा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] केशव के अनुसार मध्या के चार भेदों में से एक।

प्रादेशिक—वि० [ सं० ] प्रदेश-संबंधी। किसी एक प्रदेश का। प्रांतिक।

संज्ञा पुं० सामंत। जमींदार या सरदार।

प्राधान्य—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रधानता।

प्राध्यापक—संज्ञा पुं० [सं० प्र+ अध्यापक ] महाविद्यालय या कालेज का अध्यापक। प्रोफेसर।

प्रान—संज्ञा पुं० दे० "प्राण"।

प्रापण—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त ] १. प्राप्ति। मिलना। २. प्रेरण।

प्रापति‡—संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति"।

प्रापना‡—क्रि० स० [ सं० प्रापण ] प्राप्त होना। मिलना।

प्राप्त—वि० [ सं० ] १. पाया हुआ। जो मिला हो। २. समुपस्थित।

प्राप्तकाल—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उपयुक्त काल। उचित समय। २. मरण योग्य काल।

वि० जिसका काल आ गया हो।

प्राप्तव्य—वि० दे० "प्राप्य"।

प्राप्ति—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उपलब्धि। मिलना। २. पहुँच। ३. अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। ४. आय। ५. लाभ। फायदा। ६. नाटक का सुखद उपसंहार।

प्राप्तिसम—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय में वह आपत्ति जो हेतु और साध्य को, ऐसी अवस्था में जब कि दोनों प्राप्य हों, अविशिष्ट बतलाकर की जाय।

प्राप्य—वि० [ सं० ] १. पाने योग्य। प्राप्त करने योग्य। प्राप्तव्य। २.गम्य। ३. जो मिल सके। मिलने योग्य।

प्राबल्य—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रबलता।

प्रामाणिक—वि० [ सं० ] १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो। २. माननीय। मानने योग्य। ३.ठीक। सत्य।

प्रामाण्य—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रमाण का भाव। २. मान-मर्यादा।

प्राय—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समान। तुल्य। जैसे, मृतप्राय। २. लगभग। जैसे, प्रायद्वीप।

प्रायः—वि० [ सं० ] १. विशेषकर। बहुत। अकसर। २. लगभग। करीब करीब।

प्रायद्वीप—संज्ञा पुं० [सं० प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायशः—क्रि० वि० [ सं० ] प्रायः। बहुधा।

प्रायश्चित्त—संज्ञा पुं० [ सं० ] शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रायश्चित्तिक—वि० [ सं० ] १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त-संबंधी।

प्रायश्चित्ती—वि० [ सं० प्रायश्चित्तिन् ] १. प्रायश्चित्त के योग्य। २. प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रायिक—वि० [सं० ] प्रायः होनेवाला।

प्रायोगिक—वि० [ सं० ] १. प्रयोग संबंधी। २. प्रयोग के रूप में किया जानेवाला।

प्रारंभ—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आरंभ। शुरू। २. आदि।

प्रारंभिक—वि० [ सं० ] १. प्रारंभ का। २. आदिम। ३. प्राथमिक।

प्रारब्ध—वि० [ सं० ] आरम्भ किया हुआ।

संज्ञा पुं० १. तीन प्रकार के कर्मों में से वह जिसका फल-भोग आरंभ हो चुका हो। २. भाग्य। किस्मत।

प्रारब्धी—वि० [ सं० प्रारब्धिन् ]. भाग्यवान्।

प्रारूप—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी विधान अथवा नियम का प्रारंभिक रूप

को विचार करने के लिए उपस्थित किया जाय। मसविदा।

**प्रार्थना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी से कुछ माँगना। याचना। २. विनती। विनय। निवेदन।

क्रि० स० प्रार्थना या विनती करना।

**प्रार्थनापत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी।

**प्रार्थनासमाज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्म समाज की तरह का एक नवीन समाज या संप्रदाय।

**प्रार्थनीय**—वि० [ सं० ] प्रार्थना करने योग्य।

**प्रार्थित**—वि० [ सं० ] जिसके लिए प्रार्थना की गई हो।

**प्रार्थी**—वि० [ सं० प्रार्थिन् ] [ स्त्री० प्रार्थिनी ] प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

**प्रालब्ध**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रारब्ध"।

**प्रालेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हिम। तुषार। २. बर्फ।

**प्रावरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उत्तम आवरण। २. उत्तरीय। उपरना। दुपट्टा।

**प्रावृट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वर्षा ऋतु।

**प्राशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खाना। भोजन। २. चखना। जैसे, अन्न-प्राशन।

**प्राश**—संज्ञा पुं० दे० "प्राशन"।

**प्राशी**—वि० [ सं० प्राशिन् ] [ स्त्री० प्राशिनी ] प्राशन करनेवाला। खानेवाला। भक्षक।

**प्रासंगिक**—वि० [ सं० ] १. प्रसंग-संबंधी। प्रसंग का। २. प्रसंग द्वारा प्राप्त।

**प्रासाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऊँचा कोठा, ऊँचा और कई भूमियों का पक्का या पत्थर का घर। विशाल भवन। महल।

**प्रिंटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] छापनेवाला। मुद्रक।

**प्रिंटिंग**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] छपाई का काम। मुद्रण।

**प्रिंस**—संज्ञा पुं० [ अं० ] राजकुमार।

**प्रिंसिपल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. किसी विद्यालय का प्रधान अध्यापक। २. मूल धन। पूँजी।

**प्रियंगु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कँगनी नामक अन्न।

**प्रियंवद**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रियंवदा ] प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।

**प्रियंवदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**प्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० प्रिया ] स्वामी। पति।

वि० १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुन्दर।

**प्रियतम**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रियतमा ] प्राणों से भी बढ़कर प्रिय।

संज्ञा पुं० स्वामी। पति।

**प्रियदर्शन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रियदर्शना ] जो देखने में प्रिय लगे। सुन्दर।

**प्रियदर्शी**—वि० [ सं० ] सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला।

**प्रियभाषी**—वि० [ सं० प्रियभाषिन् ] [ स्त्री० प्रियभाषिणी ] मधुर वचन बोलनेवाला।

**प्रियवर**—वि० [ सं० ] अति प्रिय। सबसे प्यारा। ( पत्रों आदि में संबोधन )

**प्रियवादी**—संज्ञा पुं० दे० "प्रियभाषी"।

**प्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नारी। स्त्री। २. भार्या। पत्नी। जोरू। ३. प्रेमिका स्त्री। ४. एक वृत्त का नाम। सुर्गा। ५. सोलह मात्राओं का एक छंद।

**प्रियाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिरौंजी।

**प्रिवीकाउंसिल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] इंग्लैंड की एक संस्था जिसके एक विभाग में न्याय के सर्वप्रधान अधिकारी होते हैं और दूसरा विभाग शासन-संबंधी कार्यों में सम्राट् को परामर्श देता है।

**प्रीत**—वि० [ सं० ] प्रीतियुक्त।

संज्ञा पुं० दे० "प्रीति"।

**प्रीतम**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रियतम ] १. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्यारा।

**प्रीति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संतोष। तृप्ति। २. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता। ३. प्रेम। प्यार।

**प्रीतिकर, प्रीतिकारक**—वि० [सं०] प्रसन्नता। उत्पन्न करनेवाला। प्रेम-जनक।

**प्रीतिपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जिसके साथ प्रीति की जाय। प्रेमभाजन। प्रेमी।

**प्रीतिभोज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह खान-पान जिसमें मित्र, बंधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों।

**प्रीत्यर्थ**—अव्य० [ सं० ] १. प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के वास्ते। २. लिए। वास्ते।

**प्रीमियम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] जान-बीमे की किस्त।

**प्रीमियर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] प्रधान मंत्री।

**प्रूफ**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. प्रमाण। सबूत। २. छपनेवाली चीज का वह छपा हुआ नमूना जिसमें अशुद्धियाँ ठीक की जाती हैं।

**प्रूम**—संज्ञा पुं० [ ? ] सीसे आदि का

बना हुआ लट्टू के आकार का वह यंत्र जिसे समुद्र में डुबाकर उसकी गहराई नापते हैं।

**प्रेंखण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छी तरह हिलना या झूलना। २. अठारह प्रकार के रूपकों में से एक।

**प्रेक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देखनेवाला। दर्शक।

**प्रेक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आँख। २. देखने की क्रिया।

**प्रेक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देखना। २. नाच-तमाशा देखना। ३. दृष्टि। निगाह। ४. प्रज्ञा। बुद्धि।

**प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान। मंत्रणागृह। २. नाट्यशाला।

**प्रेत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मरा हुआ मनुष्य। मृतक प्राणी। २. पुराणानुसार वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरांत प्राप्त होता है। ३. नरक में रहनेवाला प्राणी। ४. पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोनि।

**प्रेतकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रेतकर्म्मन् ] हिंदुओं में मृतदाह आदि से लेकर सपिंडी तक का कर्म। प्रेतकार्य्य।

**प्रेतकार्य**—संज्ञा पुं० दे० "प्रेतकर्म"।

**प्रेतगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्मशान। मरघट। २. कबरिस्तान।

**प्रेतगेह***—संज्ञा पुं० दे० "प्रेतगृह"।

**प्रेतत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रेत का भाव या धर्म्म। प्रेतता।

**प्रेतदाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृतक को जलाने आदि का कार्य्य।

**प्रेतदेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है।

**प्रेतनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रेत+नी (प्रत्य०) ] भूतनी। चुड़ैल।

**प्रेतयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का यज्ञ जिसके करने से प्रेतयोनि प्राप्त होती है।

**प्रेतलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यमपुर।

**प्रेतविधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृतक का दाह आदि करना।

**प्रेता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पिशाची। २. भगवती कात्यायिनी।

**प्रेताशिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भगवती।

**प्रेताशौच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अशौच जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है।

**प्रेती**—संज्ञा पुं०[सं० प्रेत+ई (प्रत्य०)] प्रेत की उपासना करनेवाला। प्रेतपूजक।

**प्रेतोन्माद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

**प्रेम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्नेह। मुहब्बत। अनुराग। प्रीति। २. पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण अथवा काम-वासना के कारण होता है। प्यार। मुहब्बत। प्रीति। ३. केशव के अनुसार एक अलंकार।

**प्रेमगर्विता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साहित्य में वह नायिका जो अपने पति के अनुराग का अहंकार रखती हो।

**प्रेमजल**—संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु"।

**प्रेमपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिससे प्रेम किया जाय। माशूक।

**प्रेमवंत**—वि० [ सं० प्रेम+वंत (प्रत्य०) ] १. प्रेम से भरा हुआ। २. प्रेमी।

**प्रेमवारि**—संज्ञा पुं० दे० "प्रेमाश्रु"।

**प्रेमा**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रेमन् ] १. स्नेह। २. इंद्र। ३. उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद।

**प्रेमाक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केशव के अनुसार आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें प्रेम का वर्णन करते ही उसमें बाधा पड़ती हुई दिखाई जाती है।

**प्रेमालाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो। मुहब्बत की बातचीत।

**प्रेमालिंगन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रेमपूर्वक गले लगाना।

**प्रेमाश्रु**—संज्ञा पुं० [सं०] वे आँसू जो प्रेम के कारण आँखों से निकलते हैं।

**प्रेमिक**—संज्ञा पुं० दे० "प्रेमी"।

**प्रेमी**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रेमिन् ] १. प्रेम करनेवाला। २. आशिक। आसक्त।

**प्रेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी का अंग होता है।

वि० प्रिय। प्यारा।

**प्रेयसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रेमिका।

**प्रेरक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी काम में प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला।

**प्रेरण**—संज्ञा पुं० दे० "प्रेरणा"।

**प्रेरणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। २. दबाव। जोर।

**प्रेरणार्थक क्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुआ है। जैसे, लिखना का प्रेर-

आर्वक विखलाना।

**प्रेरणा**—क्रि० स० [ सं० प्रेरणा ] प्रवृत्त करना। प्रेरणा करना।

**प्रेरित**—वि० [ सं० ] १. भेजा हुआ। प्रेषित। २. जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो।

**प्रेषक**—संज्ञा पुं० [सं०] भेजनेवाला।

**प्रेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रेषित] १.प्रेरणा करना। २.भेजना। रवाना करना।

**प्रेस**—संज्ञा पुं० [अं०] १.छापाखाना। २. छापने की कल। ३. समाचारपत्रों का वर्ग।

**प्रेसिडेंट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. सभापति। २. राष्ट्रपति।

**प्रोक्त**—वि० [ सं० ] कहा हुआ। कथित।

**प्रोक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.पानी छिड़कना। २. पानी का छींटा।

**प्रोग्राम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] कार्यक्रम।

**प्रोत**—वि० [सं०] १. किसी में अच्छी तरह मिला हुआ। २. छिपा हुआ।

**प्रोत्साह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत अधिक उत्साह या उमंग।

**प्रोत्साहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० प्रोत्साहित ] खूब उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।

**प्रोत्साहित**—वि० [ सं० ] (जिसका) उत्साह बढ़ाया गया हो। (जिसकी) हिम्मत खूब बँधाई गई हो।

**प्रोफेसर**—संज्ञा पुं० [अं०] १. किसी विषय का बड़ा विद्वान्। २. कालिज या महाविद्यालय का अध्यापक। प्राध्यापक।

**प्रोफेसरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० प्रोफेसर+हिं० ई ( प्रत्य० ) ] प्रोफेसर का कार्य या पद।

**प्रोषित**—वि० [ सं० ] जो विदेश में गया हो। प्रवासी।

**प्रोषित नायक या पति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो। विरही नायक।

**प्रोषितपतिका ( नायिका )**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ( वह नायिका ) जो अपने पति के परदेश में होने के कारण दुखी हो। प्रवत्स्यत्प्रेयसी।

**प्रोषितभर्तृका**—संज्ञा स्त्री० दे० "प्रोषितपतिका"।

**प्रोषितभार्य्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह नायक जो अपनी भार्या के विदेश जाने के कारण दुखी हो।

**प्रौढ़**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० प्रौढ़ा ] १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३. पक्का। मजबूत। दृढ़। ४. गंभीर। गूढ़। ५. चतुर।

**प्रौढ़ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व।

**प्रौढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अधिक वयसवाली स्त्री। २. साहित्य में वह नायिका जो काम-कला आदि अच्छी तरह जानती हो। साधारणतः ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली स्त्री।

**प्रौढ़ा अधीरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह प्रौढ़ा जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हों।

**प्रौढ़ा धीरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रौढ़ा।

**प्रौढ़ा धीराधीरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा जिसमें धीराधीरा के गुण हों।

**प्रौढ़ोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अलंकार जिसमें जिसके उत्कर्ष का जो हेतु नहीं है, वह हेतु कल्पित किया जाय।

**प्लक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाकर वृक्ष। पिलखन। २. पुराणानुसार सात कल्पित द्वीपों में से एक। ३. अश्वत्थ। पीपल।

**प्लवंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बानर। बंदर। २. मृग। हिरन। ३. प्लक्ष। पाकर।

**प्लवंगम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मात्रिक छंद।

**प्लवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उछलना। कूदना। २. तैरना।

**प्लांचेट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पान के आकार की एक तख्ती जिससे मेस्मेरिज्मवाले प्रेतात्माओं की बात जानते हैं।

**प्लाट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. कथावस्तु। २. षड्यंत्र। ३. जमीन का बड़ा टुकड़ा।

**प्लावन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाढ़। सैलाब। २.खूब अच्छी तरह धोना। ३. तैरना।

**प्लावित**—वि० [ सं० ] जो जल में डूब गया हो। पानी में डूबा हुआ।

**प्लीहा**—संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"।

**प्लुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. टेढ़ी चाल। उछाल। २. स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है।

**प्लेग**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. महामारी। २. एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन।

**प्लैटफार्म**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. मंच। चबूतरा। २. वह बड़ा चबूतरा जो मुसाफिरों के रेल पर चढ़ने उतरने के लिए होता है।

# फ

**फ**—हिंदी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान ओंठ है।

**फंका***—संज्ञा पुं० [ हिं० फाँकना ] [ स्त्री० फंकी ] १. उतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जा सके। २. कतरा। टुकड़ा।

**फंकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फंका ] १. फाँकने की दवा। २. उतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जाय।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० फाँक ] छोटी फाँक।

**फंग***—संज्ञा पुं० [ सं० बंध ] १. बंधन। फंदा। २. राग। अनुराग।

**फंद**—संज्ञा पुं० [ सं० बंध, हिं० फंदा ] १. बंध। बंधन। २. फंदा। जाल। फाँस। ३. छल। धोखा। ४. रहस्य। मर्म। ५. दुःख। कष्ट। ६. नथ की काँटी फँसाने का फंदा। गूँज।

**फँदना***—क्रि० अ० [ सं० बंधन या फंदा ] फंदे में पड़ना। फँसना।
क्रि० स० [ हिं० फाँदना ] फाँदना। लाँघना।

**फँदवार**—वि० [ हिं० फंदा ] फंदा लगानेवाला।

**फंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० पाश या बंध ] १. रस्सी, तागे आदि का वह घेरा जो किसी को फँसाने के लिए बनाया गया हो। फनी। फाँद। २. पाश। फाँस। जाल।

**मुहा०**—फंदा लगाना=१. किसी को फँसाने के लिए जाल लगाना। २. धोखा देना। फंदे में पड़ना=१. धोखे में पड़ना। २. किसी के वश में होना। ३. बंधन। ४. दुःख। कष्ट।

**फँदाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "फँदा"।

**फँदाना**—क्रि० स० [ हिं० फँदना ] फंदे में लाना। जाल में फँसाना।
क्रि० स० [ सं० स्पंदन ] फाँदने का काम दूसरे से कराना। कुदाना।

**फँसौरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फाँसी ] फाँसी की रस्सी। २. जाल। फंदा।

**फँफाना**†—क्रि० अ० [ अनु० ] शब्द-उच्चारण के समय जिह्वा का काँपना। हकलाना।

**फँसना**—क्रि० स० [ हिं० फाँस ] १. बंधन या फंदे में पड़ना। २. अटकना। उलझना।

**मुहा०**—बुरा फँसना=आपत्ति में पड़ना।

**फँसाना**—क्रि० स० [ हिं० फँसना ] १. फंदे में लाना या अटकाना। बझाना। २. वशीभूत करना। अपने जाल या वश में लाना। ३. अटकाना। बझाना।

**फँसिहारा**—वि० [ हिं० फाँस + हारा ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० फँसिहारिन ] फँसानेवाला।

**फक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कटुवाक्य। रूखा वचन। २. फुत्कार। फुफकार। ३. निष्फल भाषण।

**फक**—वि० [ सं० स्फटिक ] १. स्वच्छ। सफेद। २. बदरंग।

**मुहा०**—रंग फक हो जाना या फक पड़ जाना=घबरा जाना। चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

**फकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फक्कड़+ ई ( प्रत्य० ) ] दुर्दशा। दुर्गति।

**फकत**—वि० [ अ० ] १. बस। अलम्। पर्याप्त। २. केवल। सिर्फ।

**फकीर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० फकीरन, फकीरनी ] १. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २. साधु। संसारत्यागी। ३. निर्धन मनुष्य।

**फकीरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फकीर+ ई ] भिखमंगापन। २. साधुता। ३. निर्धनता।

**फक्कड़**—संज्ञा पुं० [ सं० फक्किका ] गालीगलौज। गंदी बातें। २. सदा दरिद्र परंतु मस्त रहनेवाला। ३. वाहियात और उद्दंड आदमी।

**फक्कड़बाजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फक्कड़ + फ़ा० बाजी ( प्रत्य० ) ] गंदी और वाहियात बातें बकना।

**फक्किका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कूट प्रश्न। २. अनुचित व्यवहार। ३. धोखेबाजी।

**फख्र**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० फ़ख्र ] गौरव। गर्व।

**फग***—संज्ञा पुं० दे० "फंग"।

**फगुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० फागुन ] १. होली। होलिकोत्सव का दिन। २. फागुन के महीने में लोगों का आमोद-प्रमोद। फाग।

**मुहा०**—फगुआ खेलना या मनाना=होली के उत्सव में रंग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

३. फागुन में गाए जानेवाले अश्लील गीत। ४. फगुआ खेलने के उपलक्ष में दिया जानेवाला उपहार।

**फगुनहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फागुन+

हट ( प्रत्य० ) ] फागुन में चलनेवाली तेज हवा ।

**फगुहारा**—संज्ञा पुं० [हिं० फगुआ+हारा ( प्रत्य० ) [ स्त्री० फगुहारी, फगुहारिन ] वह जो फाग खेलने लिए होली में किसी के यहाँ जाय ।

**फजर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] सवेरा ।

**फजल**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़ज़्ल ] अनुग्रह । कृपा ।

**फजीहत**—संज्ञा स्त्री० [अ० ] दुर्दशा । दुर्गति ।

**फजूल**—वि० [ अ० फ़ज़ूल ] जो किसी काम का न हो । व्यर्थ । निरर्थक ।

**फजूलखर्च**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा फ़ज़ूलखर्ची ] अपव्ययी । बहुत खर्च करनेवाला ।

**फट**—संज्ञा स्त्री [ अनु० ] १. हलकी पतली चीज के हिलने या गिरने-पड़ने का शब्द । २. एक तांत्रिक मंत्र । अस्त्र-मंत्र ।

**फटक**—संज्ञा पुं० [ सं० स्फटिक ] बिल्लौर ।

क्रि० वि० [ अनु० ] तत्क्षण । झट ।

**फटकन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० फटकना ] वह भूसी जो अन्न का फटकने पर निकले ।

**फटकना**—क्रि० स० [ अनु० फट ] १. हिलाकर फट फट शब्द करना । फटफटाना । २. पटकना । झटकना । ३. फेंकना । चलाना । मारना । ४. सूप पर अन्न आदि को हिलाकर साफ करना ।

**मुहा०**—फटकना पछोरना=१. सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना । २. अच्छी तरह जाँचना । परखना ।

५. रूई आदि को फटके से धुनना ।

क्रि० अ० [ अनु० ] १. जाना । पहुँचना । २. दूर होना । अलग होना । ३. तड़फड़ाना । हाथ-पैर पटकना । ४. श्रम करना । हाथ-पैर हिलाना ।

**फटका**†—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. रूई धुनने की धुनकी । २. कोरी तुकबंदी । रस और गुण से हीन कविता ।

संज्ञा पुं० दे० "फाटक" ।

**फटकाना**†—क्रि० स० [ हिं० फटकना ] १. अलग करना । फेंकना । २. फटकने का काम दूसरे से कराना ।

**फटकार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फटकारना ] १. फटकारने की क्रिया या भाव । झिड़की । दुतकार । २. दे० "फिटकार" ।

**फटकारना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. ( शस्त्र आदि ) मारना । चलाना । २. बहुत सी चीजों को एक साथ झटका मारना जिसमें वे छितरा जायँ । ३. लेना । लाभ उठाना । ४. अच्छी तरह पटक पटककर धोना । ५. झटका देकर दूर फेंकना । ६. खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना ।

**फटना**—क्रि० अ० [ हिं० फाड़ना का अ० रूप ] १. किसी पोली चीज में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिसमें भीतर की चीजें बाहर निकल पड़ें अथवा दिखाई देने लगें ।

**मुहा०**—छाती फटना=असह्य दुःख होना । बहुत अधिक दुःख पहुँचना । ( किसी से ) मन या चित्त फटना=विरक्ति होना । संबंध रखने को जी न चाहना । फटेहाल=बहुत ही दुरवस्था में ।

२. किसी वस्तु का कोई भाग बीच से अलग हो जाना । बीच से कटकर छिन्न-भिन्न हो जाना । ३. अलग हो जाना । पृथक् हो जाना । ४. द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसका पानी और सार भाग दोनों अलग अलग हो जायँ । ५. किसी बात का बहुत अधिक होना ।

**मुहा०**—फट पड़ना=अचानक आ पहुँचना ।

६. बहुत अधिक पीड़ा होना ।

**फटफटाना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. व्यर्थ बकवाद करना । २. फटफट शब्द करना । फड़फड़ाना । ३. हाथ-पैर मारना । प्रयास करना । ४. इधर-उधर टक्कर मारना ।

क्रि० अ० फट फट शब्द होना ।

**फटहा**—वि० [ हिं० फटना ] १. फटा हुआ । २. गाली-गलौज बकनेवाला ।

**फटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फटना ] छिद्र । छेद ।

**मुहा०**—किसी के फटे में पावँ देना=दूसरे को आपत्ति अपने ऊपर लेना ।

**फटिक**—संज्ञा पुं० [ सं० स्फटिक ] १. बिल्लौर । स्फटिक । २. मरमर पत्थर । संग-मरमर ।

**फट्टा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फटना ] [ स्त्री० फट्टी ] बाँस को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा । फलटा ।

**फड़**—संज्ञा पुं० [ सं० पण ] १. जूए का दाँव जिसपर जुआरी बाजी लगाते हैं । दाँव । २. जूआखाना । जूए का अड्डा । ३. वह स्थान जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरीदता या बेचता हो । ४. पक्ष । दल ।

संज्ञा पुं० [ सं० पटल या फल ] वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है । चरख ।

**फड़क, फड़कन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] फड़कने की क्रिया या भाव ।

**फड़कना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १.

बार बार नीचे ऊपर या इधर-उधर हिलना। फड़फड़ाना। उछलना।

मुहा०—फड़क उठना या जाना=आनंदित होना। प्रसन्न होना। मुग्ध होना।

२. किसी अंग में अचानक स्फुरण होना। ३. हिलना-डोलना। गति होना।

मुहा०—बोटी फड़कना=अत्यंत चंचल होना।

४. चंचल होना। किसी क्रिया के लिए उद्यत होना।

**फड़काना**—क्रि० स० [ हिं० फड़कना का प्रे० ] दूसरे को फड़कने में प्रवृत्त करना।

**फड़नवीस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० फ़र्दनवीस ] मराठों के राजत्व-काल का एक राजपद।

**फड़फड़ाना**—क्रि० स०, अ० दे० "फटफटाना"।

**फड़बाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० फड़+फ़ा० बाज़ ] वह जो लोगों को अपने यहाँ जूआ खेलाता हो।

**फड़िया**—संज्ञा पुं० [ हिं० फड़ ] १. खुदरा अन्न बेचनेवाला। २. फड़बाज।

**फण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अल्पा० फणा ] १. साँप का फन। २. रस्सी का फंदा। मुद्धी।

**फणधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साँप।

**फणिक**—संज्ञा पुं० [ सं० फणी ] साँप। नाग।

**फणिपति**—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

**फणिमुक्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साँप की मणि।

**फणींद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शेष। २. वासुकि। ३. बड़ा साँप।

**फणी**—संज्ञा पुं० [ सं० फणिन् ] साँप।

**फणीश**—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

**फतवा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं।

**फतह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. विजय। जीत। २. सफलता। कृतकार्यता।

**फतहमंद**—वि० [ अ०+फ़ा० ] विजयी। विजेता।

**फतिंगा**—संज्ञा पुं० [ सं० पतंग ] [ स्त्री० फतिंगी ] १. किसी प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा। २. पतिंगा। पतंग।

**फतीलसोज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. धातु की दीवट जिसमें एक या अनेक दीए ऊपर-नीचे बने होते हैं। चौमुखा। २. दीवट। चिरागदान।

**फतीला**—संज्ञा पुं० दे० "पलीता"।

**फतूर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. विकार। दोष। २. हानि। नुकसान। ३. विघ्न। बाधा। ४. उपद्रव। खुराफात।

**फतूरिया**—वि० [ अ० फ़तूर+इया (प्रत्य०) ] खुराफात करनेवाला। उपद्रवी।

**फतूही**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती। सदरी। २. लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

**फते**‡*—संज्ञा स्त्री० दे० "फतह"।

**फतेह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० फ़तह ] विजय। जीत।

**फदकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. फद फद शब्द करना। २. दे० "फुदकना"।

**फदफदाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. शरीर का फुंसियों आदि से भर जाना। २. वृक्ष का शाखाओं में भरना।

**फन**—संज्ञा पुं० [ सं० फण ] साँप का सिर उस समय जब वह उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है। फण।

**फन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. गुण। खूबी। २. विद्या। ३. दस्तकारी। ४. छलने का ढंग। मकर।

**फनकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] हवा में सन सन करते हुए हिलना या चलना।

**फनकार**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फनफन शब्द।

**फनगा**‡—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

**फनफनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. फन फन शब्द उत्पन्न करना। २. चंचलता के कारण हिलना।

**फनाना***—क्रि० स० [ ? ] १. तैयार करना। २. तैयार कराना।

**फनिग***—संज्ञा स्त्री० [ सं० फणींद्र ] साँप।

**फनिंद***‡—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

**फनि***—संज्ञा पुं० १. दे० "फणी"। २. दे० "फण"।

**फनिग**—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

**फनिराज**—संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।

**फनी***—संज्ञा पुं० दे० "फणी"।

**फनूस***—संज्ञा पुं० दे० "फानूस"।

**फन्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं० फण] लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज की जड़ में उसे कसने के लिए ठोका जाता है। पच्चर।

**फफूँदी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फुफुदी ] स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं०=रुई का फाहा ]

...ाई की तरह की, पर सफेद, वह जो बरसात में फल, लकड़ी आदि पर लगती है। भुकड़ी।

**फफोला**—संज्ञा पुं० [ सं० प्रस्फोट ] जलने पर का पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है। छाला। झलका।

**मुहा०**—दिल के फफोले फोड़ना=अपने दिल की जलन या क्रोध प्रकट करना।

**फबती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फबना ] १. वह बात जो समय के अनुकूल हो। २. हँसी की बात जो किसी पर घटती हो। व्यंग्य। चुटकी।

**मुहा०**—फबती उड़ाना=हँसी उड़ाना। फबती कहना=चुभती हुई पर हँसी की बात कहना।

**फबन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फबना ] फबने का भाव। शोभा। छवि। सुंदरता।

**फबना**—क्रि० अ० [ सं० प्रभवन ] सुंदर या भला जान पड़ना। खिलना। सोहना।

**फबाना**—क्रि० स० [ हिं० फबना का सक० रूप ] ऐसी जगह लगाना जहाँ भला जान पड़े।

**फबिक**†—संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"।

**फबीला**—वि० [ हिं० फबि+ईला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० फबीली ] जो फबता या भला जान पड़ता हो। शोभा देनेवाला। सुन्दर।

**फरक**†—संज्ञा पुं० दे० "फल"।

संज्ञा पुं० [ ? ] १. कामना। मुका-बिला। २. बिछावन। बिछौना।

**फरक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फरकना ] १. फरकने की क्रिया या भाव। २. फड़क।

**फरक**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़र्क़ ] १. पार्थक्य। अलगाव। २. बीच का अंतर। दूरी।

**मुहा०**—फरक फरक होना='दूर हो' या 'राह छोड़ो' की आवाज होना। 'हटो बचो' होना।

३. भेद। अंतर। ४. दुराव। पराया-पन। अन्यता। ५. कमी। कसर।

**फरकन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फरकना ] १. फड़कने की क्रिया या भाव। दे० "फड़क"। २. फरकने की क्रिया या भाव। फरक।

**फरकना***†—क्रि० अ० [ सं० स्फुरण ] १. दे० "फड़कना"। २. आप से आप बाहर आना। उमड़ना। ३. उड़ना।

**फरका**—संज्ञा पुं० [ सं० फलक ] १. वह छप्पर जो अलग छा कर बँडेर पर चढ़ाया जाता है। २. बँडेर के एक ओर की छाजन। पल्ला। ३. दरवाजे का टट्टर।

**फरकाना**—क्रि० स० [ हिं० फरकना ] १. फरकने का सकर्मक रूप। हिलाना। संचालित करना। २. फड़फड़ाना।

क्रि० स० [ हिं० फरक ] अलग करना।

**फरचा**†—वि० [ सं० स्पृश्य ] [ क्रि० फरचाना ] १. जो जूठा न हो। शुद्ध। पवित्र। २. साफ-सुथरा।

**फरजंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पुत्र। बेटा।

**फरजी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं।

वि० नकली। बनावटी। कल्पित।

**फरजीबंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] शत-रंज के खेल में एक योग।

**फरद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० फ़र्द ] १. लेखा या वस्तुओं की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी कागज पर अलग लिखी गई हो। २. एक ही तरह के अथवा एक साथ काम में आनेवाले कपड़ों के जोड़े में से एक कपड़ा। पल्ला। ३. रजाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला। ४. दो पदों की कविता।

वि० अनुपम। बेजोड़।

**फरना***†—क्रि० अ० [ सं० फल ] फलना।

**फरफंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० फर+अनु० फंदा ( जाल ) ] [ वि० फरफंदी ] १. दाँव-पेंच। छल-कपट। माया। २. नखरा। चोचला।

**फरफर**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] किसी पदार्थ के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द।

**फरफराना**—क्रि० स०, अ० दे० "फड़फड़ाना"।

**फरफुंदा***†—संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।

**फरमाँ-बरदार**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा फरमाँ-बरदारी ] आज्ञाकारी।

**फरमा**—संज्ञा पुं० [ अं० फ्रेम ] १. लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिस पर रखकर चमार जूता बनाते हैं। कालबूत। २. वह साँचा जिसमें कोई चीज ढाली जाय।

संज्ञा पुं० [ अं० फ़ार्म ] कागज का पूरा तख्ता जो एक बार प्रेस में छापा जाता है।

**फरमाइश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] आज्ञा, विशेषतः वह आज्ञा जो कोई चीज लाने या बनाने आदि के लिए दी जाय।

**फरमाइशी**—वि० [ फ़ा० ] विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।

**फरमान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] राज-कीय आज्ञापत्र। अनुशासनपत्र।

**फरमाना**—क्रि० स० [ फ़ा० ] आज्ञा देना । कहना । (आदरसूचक)

**फरराना**†—क्रि० अ० दे० "फहराना" ।

**फरलांग**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक मील का आठवाँ भाग ।

**फरवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्फुरण ] एक प्रकार का भूना हुआ चावल । मुरमुरा । लाई ।

**फरश**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़र्श ] १. बैठने के लिए बिछाने का वस्त्र । बिछावन । २. धरातल । समतल भूमि । ३. पक्की बनी हुई जमीन । गच ।

**फरशबंद**—संज्ञा पुं० दे० "फरश" ।

**फरशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] धातु का वह बरतन जिस पर नैचा, सटक आदि लगाकर लोग तमाकू पीते हैं । गुड़गुड़ी । २. इस प्रकार बना हुआ हुक्का ।

**फरस***—संज्ञा पुं० दे० "फरश" ।
*संज्ञा पुं० दे० "फरसा" ।

**फरसा**—संज्ञा पुं० [ सं० परशु ] १ पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी । २. फावड़ा ।

**फरहद**—संज्ञा पुं० [ सं० पारिभद्र ] एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है ।

**फरहरना**†—क्रि० अ० [ अनु० फरफर ] १. फरफराना । फरकना । २. फहराना ।

**फरहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फहराना ] पताका । झंडा ।

**फरहरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "फलहरी" ।

**फराक***—संज्ञा पुं० [ फ़ा० फ़राख़ ] मैदान ।
वि० लंबा-चौड़ा । विस्तृत ।
संज्ञा स्त्री० [ अं० फ्राक ] स्त्रियों और बच्चों का एक पहनावा ।
*वि० दे० "फराख" ।

**फराकत**—वि० [ फ़ा० फ़राख़ ] लंबा-चौड़ा और समतल । विस्तृत ।
वि० संज्ञा पुं० दे० "फरागत" ।

**फराख**—वि० [ फ़ा० ] लंबा-चौड़ा ।

**फराखी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. चौड़ाई । विस्तार । आढ्यता । संपन्नता ।

**फरागत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. छुटकारा । छुट्टी । मुक्ति । २.निश्चिंतता । बेफिक्री । ३. मल-त्याग । पाखाना फिरना ।

**फराना***—क्रि० स० दे० "फलाना" ।

**फरामोश**—वि० [ फ़ा० ] भूला हुआ । विस्मृत ।

**फरामोशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] भूल जाना । विस्मृति ।

**फरार**—वि० [ अ० ] भागा हुआ ।

**फरारी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] भागने की क्रिया या भाव ।

**फरास***-संज्ञा पुं० दे० "फर्राश" ।

**फरासीस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. फ्रांस देश । २. फ्रांस का रहनेवाला । ३ एक प्रकार की लाल छींट ।

**फरासीसी**—वि० [ हिं० फरासीस ] १. फ्रांस का रहनेवाला । २. २. फ्रांस का ।

**फरिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फरना ] वह लहँगा जो सामने की ओर से सिला नहीं रहता ।

**फरियाद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. दुःख से बचाए जाने के लिए पुकार । शिकायत । नालिश । २. विनती । प्रार्थना ।

**फरियादी**—वि० [ फ़ा० ] फरियाद करनेवाला ।

**फरियाना**—क्रि० स० [ सं० फलीकरण ] १. छाँटकर अलग करना । २. साफ करना । ३.निपटाना । तै करना ।
क्रि० अ० १. छँटकर अलग होना । २. साफ होना । ३. तै होना । निबटना । ४. समझ पड़ना ।

**फरिश्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता हो । ( मुसल० ) २. देवता ।

**फरी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० फल ] १. फाल । कुशी । २. गाड़ी का हरसा । फड़ । ३. चमड़े की गोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोकते हैं ।

**फरीक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. मुकाबला करनेवाला । प्रतिद्वंद्वी । विरोधी । विपक्षी । २. दो पक्षों में से किसी पक्ष का मनुष्य ।
यौ०—फरीक सानी = प्रतिवादी । ( कानून )

**फरुही**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फावड़ा ] १. छोटा फावड़ा । २. लकड़ी का एक औजार जिससे क्यारी बनाने के लिए खेत की मिट्टी हटाई जाती है । ३. मथानी । लाई ।
संज्ञा स्त्री० दे० "फरवी" ।

**फरेंदा**†—संज्ञा पुं० [ सं० फलेंद्र ] [ स्त्री० फरेंदी ] एक प्रकार का बढ़िया जामुन ।

**फरेब**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] छल । कपट ।

**फरेबी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कपटी ।

**फरेरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फल+ री ( प्रत्य० ) ] जंगल के फल । जंगली मेवा ।

**फरोख्त**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] विक्रय । बिक्री ।

**फरोश**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] [ संज्ञा

फरोशी ] बेचनेवाला। ( यौ० के अंत में )

**फर्क़**—संज्ञा पुं० दे० "फरक"।

**फर्ज़ंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बेटा। पुत्र।

**फ़र्ज़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कर्तव्य-कर्म। २. कल्पना। मान लेना।

**फ़र्ज़ी**—वि० [ फ़ा० ] १. कल्पित। माना हुआ। २. नाम मात्र का। सत्ताहीन।
संज्ञा पुं० दे० "फरजी"।

**फ़र्द**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. कागज या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. कागज का वह टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची आदि लिखी गई हो। ३ रजाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता है। चद्दर। पल्ला।

**फर्राटा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. वेग। तेजी। क्षिप्रता। २. दे० "खर्राटा"।

**फ़र्राश**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वह नौकर जिसका काम डेरा गाड़ना, फर्श बिछाना और दीपक जलाना आदि होता है। २. नौकर। खिदमतगार।

**फ़र्राशी**—वि० [फ़ा०] फर्श या फर्राश के कामों से संबंध रखनेवाला।
यौ०—फर्राशीपंखा=बड़ा पंखा जिससे फर्श भर पर हवा की जा सकती हो।
संज्ञा स्त्री० फर्राश का काम या पद।

**फ़र्श**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फरश"।

**फ़र्शी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] एक प्रकार का बड़ा हुक्का।
वि० फर्श-संबंधी। फर्श का।
मुहा०—फर्शी सलाम=जमीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम।

**फलंक***—संज्ञा पुं० दे० "फलाँग"।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० फ़लक ] आकाश।

**फल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वनस्पति में होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूलों के आने के बाद उत्पन्न होता है। २. लाभ। ३. प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ४. धर्म या परलोक की दृष्टि से कर्म का परिणाम जो सुख और दुःख है। कर्म-भोग। ५. गुण। प्रभाव। ६. शुभ कर्मों के परिणाम जो संख्या में चार माने जाते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ७. प्रतिफल। बदला। प्रतीकार। ८. बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ९. हल की फाल। १०. फलक। ११. ढाल। १२. उद्देश्य की सिद्धि। १३. न्यायशास्त्र के अनुसार वह अर्थ जो प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न होता है। १४. गणित की किसी क्रिया का परिणाम। १५. त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति में प्रथम निष्पत्ति का द्वितीय पद। १६. फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का परिणाम जो सुख-दुःख आदि के रूप में होता है।

**फलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पटल। तखता। पट्टी। २. चादर। ३. वरक। तबक। ४. पत्र। वरक। पृष्ठ। ५. हथेली। ६. फल।

**फलक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. आकाश। २. स्वर्ग।

**फलकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. छलकना। उमगना। २. दे० "फरकना"।

**फलकर**—संज्ञा पुं० [ हिं० फल+कर ] वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाय।

**फलका**—संज्ञा पुं० [ सं० स्फोटक ] फफोला। छाला। झलका।

**फलतः**—अव्य० [ सं० ] फल-स्वरूप। परिणामतः। इसलिए।

**फलद**—वि० [ सं० ] फल देनेवाला।

**फलदान**—संज्ञा पुं० [ हिं० फल+दान ] हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति। बरच्छा।

**फलदार**—वि० [ हिं० फल+दार ( फ़ा० प्रत्य० ) ] १. जिसमें फल लगे हों। २. जिसमें फल लगें।

**फलना**—क्रि० अ० [ सं० फलन ] १ फल से युक्त होना। फल लाना। २. फल देना। लाभदायक होना।
मुहा०—फलना फूलना=सुखी और संपन्न होना।
३. शरीर में छोटे-छोटे दानों का निकल आना जिससे पीड़ा होती है।

**फलयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति या उसके नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती है।

**फललक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की लक्षणा।

**फलवान**—वि० [ सं० ] १. फलों से युक्त। २. सफल।

**फलहरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फल+हरी ( प्रत्य० ) ] १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २. फल। मेवा।

**फलहार**—संज्ञा पुं० दे० "फलाहार"।

**फलहारी**—वि० [ हिं० फलहार+ई ( प्रत्य० ) ] जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, बल्कि फलों से बना हो।

**फलाँ**—वि० [ फ़ा० ] अमुक। फलाना।

**फलाँग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रलंघन ] १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

**फलाँगना**—क्रि० अ० [ हिं० फलाँग+ना ( प्रत्य० ) ] एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना।

**फलांश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तात्पर्य। सारांश।

**फलाकना***—क्रि० स० दे० "फलाँगना"।

**फलागम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फल लगने की ऋतु या मौसिम। २. शरद् ऋतु।

**फलादेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जन्म-कुंडली आदि देखकर ग्रहों आदि का फल कहना। ( ज्योतिष )

**फलाना**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़लाँ+ना ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० फलानी ] अमुक। कोई अनिश्चित।

†क्रि० स० [ हिं० फलना का प्रेरणा० ] किसी को फलने में प्रवृत्त करना।

**फलालीन, फलालेन**—संज्ञा पुं० [ अं० फ्लानेल ] एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

**फलार्थी**—संज्ञा पुं० [ सं० फलार्थिन् ] वह जो फल की कामना करे। फलकामी।

**फलाशी**—वि० [ सं० फलाशिन् ] फल खानेवाला।

**फलाहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] केवल फल खाना। फल-भोजन।

**फलाहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० फलाहारिन् ] [ स्त्री० फलाहारिणी ] जो फल खाकर निर्वाह करता हो।

वि० [ हिं० फलाहार+ई (प्रत्य०)] फलाहार संबंधी। जो केवल फलों से बना हो।

**फलित**—वि० [ सं० ] १. फला हुआ। २. संपन्न। पूर्ण।

**यौ०**—फलित ज्योतिष=ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के योग से शुभाशुभ फल का निरूपण किया जाता है।

**फली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फल+ई ( प्रत्य० ) ] छोटे पौधों में लगनेवाले लंबे और चिपटे फल जिनमें छोटे छोटे बीज होते हैं।

**फलीता**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़तीला ] १. बड़ आदि के रेशों से बटी हुई रस्सी जिसमें तोड़ेदार बंदूक दागने के लिए आग लगाकर रखी जाती है। पलीता। २ बत्ती।

**फलीभूत**—वि० [ सं० ] फलदायक। जिसका फल या परिणाम निकले।

**फलेंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० फलेंद्रा ] एक प्रकार का जामुन। फरेंदा।

**फसकड़ा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] पलथी ( तिर० )

**फसल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० फ़स्ल ] १. ऋतु। मौसम। २. समय। काल। ३. शस्य। खेत की उपज। अन्न।

**फसली**—वि० [ सं० ] ऋतु का।

संज्ञा पुं० १. अकबर का चलाया हुआ एक संवत्। इसका प्रचार उत्तरीय भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है। २. हैजा।

**फसाद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० फसादी ] १. बिगाड़। विकार। २. बलवा। विद्रोह। ३. ऊधम। उपद्रव। ४. झगड़ा। लड़ाई।

**फसादी**—वि० [ फ़ा० ] १. फसाद खड़ा करनेवाला। उपद्रवी। २. झगड़ालू।

**फस्द**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] नस को छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

**मुहा०**—फस्द खुलवाना या लेना=१. शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। २. हाथ की दवा कराना।

**फहम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] ज्ञान। समझ।

**फहरना**—क्रि० अ० [ सं० प्रसरण ] [फहराना का अकर्मक रूप ] वायु में उड़ना।

**फहरान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फहराना ] फहराने का भाव या क्रिया।

**फहराना**—क्रि० स० [ सं० प्रसारण] कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवा में हिले और उड़े। उड़ाना।

क्रि० अ० हवा में रह रहकर हिलना या उड़ना। फहरना।

**फहरानि***—संज्ञा स्त्री० दे० "फहरान"।

**फहश**—वि० [ अ० फ़ुह्श ] फूहड़। अश्लील।

**फाँक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० फलक ] १. किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। २. खंड। टुकड़ा।

**फाँकना**—क्रि० स० [ हिं० फंकी ] दाने या बुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना।

**मुहा०**—धूल फाँकना=दुर्दशा भोगना।

**फाँग, फाँगी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक प्रकार का साग।

**फाँट**—संज्ञा पुं० [ देश० ] काढ़ा। क्वाथ।

**फाँटना**—क्रि० स० [ हिं० फाँट ] काढ़ा बनाना।

**फाँड़ा**†—संज्ञा पुं० दे० "फाँड़ा"।

**फाँड़ा**†—संज्ञा पुं० [ सं० फाँड़=पेट ] दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

**फाँद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फाँदना ] उछलने या फाँदने का भाव। उछाल।
संज्ञा स्त्री०, पुं० [ हिं० फंदा ] फंदा। पाश।

**फाँदना**—क्रि० अ० [ सं० फणन ] एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना। उछलना।
क्रि० स० कूदकर लाँघना।
क्रि० स० [ हिं० फंदा ] फंदे में फँसाना।

**फाँफी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पर्पटी ] १. बहुत महीन झिल्ली। २. माँड़ा। जाला। ( रोग )

**फाँस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पाश ] १. पाश। बंधन। फंदा। २. वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशु-पक्षी फाँसते हैं।
संज्ञा स्त्री० [ सं० पनस ] १. बाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में चुभ जाता है। २. पतली तीली या कमाची।

**फाँसना**—क्रि० स० [ सं० पाश ] १ पाश में बाँधना। जाल में फँसाना। २ धोखा देकर अपने अधिकार में करना।

**फाँसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पाश ] १. फँसाने का फंदा। पाश। २. वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है।
मुहा०—फाँसी चढ़ना=पाश द्वारा प्राणदंड पाना।
३. वह दंड जो अपराधी को फंदे के द्वारा मार कर दिया जाय।
मुहा०—फाँसी देना=गले में फंदा डालकर मार डालना।

**फाइल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. कागजों आदि की नत्थी। २. कागज-पत्रों का समूह। मिसिल।

**फाका**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़ाक़ः ] उपवास।

**फाकामस्त, फाकेमस्त**—वि० [ फ़ा० ] जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो।

**फाखता**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पंडुक। धवँरखा।

**फाग**—संज्ञा पुं० [ हिं० फागुन ] १. फागुन में होनेवाला उत्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं। २ वह गीत जो फाग के उत्सव में गाया जाता है।

**फागुन**—संज्ञा पुं० [ सं० फाल्गुन ] माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

**फाजिल**—वि० [ अ० ] १. आवश्यकता से अधिक। २. विद्वान्।

**फाटक**—संज्ञा पुं० [ सं० कपाट ] १. बड़ा द्वार। बड़ा दरवाजा। तोरण। २. मवेशीखाना। काँजी हौस।
संज्ञा पुं० [ हिं० फटकना ] भूसी जो अनाज फटकने से बची हो। पछोड़न। फटकन।

**फाटना**—क्रि० अ० दे० "फटना"।

**फाड़खाऊ**—वि० [ हिं० फाड़ना + खाना ] फाड़ खानेवाला। हिंसक।

**फाड़न**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फाड़ना ] कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले।

**फाड़ना**—क्रि० स० [ सं० स्फाटन ] १. चीरना। विदीर्ण करना। २. टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। ३. संधि या जोड़ फैलाकर खोलना। ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायँ।

**फातिहा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. प्रार्थना। २. वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय। (मुसल०)

**फानूस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रकार की बड़ी कंदील। २. एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

**फाफर**—संज्ञा पुं० दे० "कूटू"।

**फाब*** - संज्ञा स्त्री० दे० "फबन"।

**फाबना***†-क्रि० अ० दे० "फबना"।

**फायदा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. लाभ। नफा। प्राप्ति। २. प्रयोजन-सिद्धि। मतलब पूरा होना। ३. अच्छा फल। भला परिणाम। ४. उत्तम प्रभाव। अच्छा असर।

**फायदेमंद**—वि० [ फ़ा० ] लाभदायक।

**फार***†—संज्ञा पुं० दे० "फाल"।

**फारखती**—संज्ञा स्त्री० [ अ० फ़ारिग़ + खत्ती ] वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया। चुकती। बेबाकी।

**फारना***†-क्रि० स० दे० "फाड़ना"।

**फारम**—संज्ञा पुं० [ अं० फार्म ] १. दरख्वास्तों और रसीदों आदि के वे नमूने जिनमें यह लिखा रहता है कि कहाँ क्या लिखना चाहिए। २. दे० "फरमा"।
संज्ञा पुं० [ अं० फार्म ] जमीन का वह बड़ा टुकड़ा जिसमें बहुत से खेत होते हैं और जिनमें व्यवस्थित रूप से बड़े पैमाने पर खेती-बारी होती है।

**फारस**—संज्ञा पुं० दे० "पारस"।

**फारसी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] फारस देश की भाषा।

**फाता**—संज्ञा पुं० [ सं० फाक ] १. फाक। कतरा। कटी हुई फाँक। २. दे० "फाक"।

**फारिग**—वि० [ अ० ] १. जो कोई काम करके छुट्टी पा गया हो। २. मुक्त। स्वतंत्र।

**फार्म**—संज्ञा पुं० १. दे० "फारम"। २. दे० "फरमा"।

**फाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लोहे का चौकोर लंबा छड़ जो हल के नीचे लगा रहता है। जमीन इसी से खुदती है। कुस। कुसी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० फलक ] १. काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकड़ा। २. कटी हुई सुपारी। छालिया।

संज्ञा पुं० [ सं० प्लव ] १. डग। फलाँग।

**मुहा०**—फाल बाँधना=उछलकर लाँघना। २. कदम भर का फासला। पैंड़।

**फालतू**—वि० [ हिं० फाल=टुकड़ा+तू (प्रत्य०) ] १. आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २. व्यर्थ। निकम्मा।

**फालसई**—वि० [ फ़ा० फ़ालसा ] फालसे के रंग का। ललाई लिए हुए हलका ऊदा।

**फालसा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा०, सं० परूषक ] एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

**फालिज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक रोग जिसमें आधा अंग सुन्न हो जाता है। अर्धांग। पक्षाघात।

**फालूदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पीने के लिए गेहूँ के सत्त से बनाई हुई एक चीज। ( मुसल० )

**फाल्गुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक चांद्रमास। दे० "फागुन"। २. अर्जुन का एक नाम।

**फाल्गुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

**फावड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० फाल ] [ स्त्री० अल्पा० फावड़ी ] मिट्टी खोदने और टाकने का एक औजार। फरसा। करसी।

**फाश**—वि० [ फ़ा० ] खुला। प्रकट।

**फासला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] दूरी। अंतर।

**फाहा**—संज्ञा पुं० [ सं० फाल ] तेल, घी या मरहम आदि में तर की हुई कपड़े की पट्टी या रूई। फ़ाया।

**फाहिशा**—वि० स्त्री० छिनाल। पुंश्चली।

**फिकरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वाक्य। २. झाँसा-पट्टी। ३ व्यंग्य।

**फिकर,फिकिर**—संज्ञा स्त्री० दे० "फिक्र"।

**फिकैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेंकना ] वह जो फरी गदका चलाता हो।

**फिक्र**-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. चिंता। सोच। खटका। २. ध्यान। विचार। ३. उपाय का विचार। यत्न। तदबीर।

**फिक्रमंद**—वि० [ अ०+फ़ा० ] चिंताग्रस्त।

**फिचकुर**—संज्ञा पुं० [ सं० पिच्छ=लार ] फेन जो मूर्छा या वेहोशी आने पर मुँह से निकलता है।

**फिट**—अव्य० [ अनु० ] धिक्। छी। थुड़ी। ( धिक्कारने का शब्द ) [अं०] ठीक। उचित।

**फिटकार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फिट+कार ] १. धिक्कार। लानत। २. शाप। कोसना। बद-दुआ।

**फिटकिरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्फटिका ] एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।

**फिटन**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] चार पहिये की एक प्रकार की खुली गाड़ी।

**फिटाना**—क्रि० स० [ देश० ] हटाना। दूर करना।

**फिट्टा**—वि० [ हिं० फिट ] फटकार खाया हुआ। अपमानित। श्रीहत।

**फितना**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. झगड़ा। दंगा-फसाद। उत्पात करनेवाला। २. एक प्रकार का इत्र।

**फितूर**—संज्ञा पुं० [ अ० फुतूर ] वि० फितूरी ] १. विकार। विपर्य्यय। खराबी। २. झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव।

**फिदवी**-वि० [ अ० फिदाई से फ़ा० ] स्वामिभक्त। आज्ञाकारी।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० फ़िदविया ] दास।

**फिनिया**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का गहना जो कान में पहना जाता है।

**फिरंग**--संज्ञा पुं० [ अं० फ्रांक ] १. युरप का एक देश। गोरों का मुल्क। फिरंगिस्तान। २. गरमी। आतशक। ( रोग )

**फिरंगी**--वि० [ हिं० फिरंग ] १. फिरंग देश में उत्पन्न। २. फिरंग देश मे रहनेवाला। गोरा। ३. फिरंग देश का।

संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।

**फिरंट**--वि० [ हिं० फिरना या अं० फ्रंट ] १. फिरा हुआ। विरुद्ध। खिलाफ। २. विरोध या लड़ाई पर उद्यत।

**फिर**--क्रि० वि० [ हिं० फिरना ] १. एक बार और। दोबारा। पुनः।

**यौ०**-फिर फिर=बार बार। कई दफा।

२. भविष्य में किसी समय। और

वक्त। ३. पीछे। अनंतर। उपरांत। ४. तब। उस अवस्था में।

**मुहा०**—फिर क्या है !=तब क्या पूछना है ! तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।

५. और चलकर। आगे और दूरी पर। ६. इसके अतिरिक्त।

**फिरका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. जाति। २. जत्था। ३. पंथ। संप्रदाय।

**फिरकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फिरना ] १. वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीच की कीली को एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। २. लड़कों का एक खिलौना जिसे वे नचाते हैं। फिरहरी। ३. चकई नाम का खिलौना। ४. चमड़े का गोल टुकड़ा जो चरखे के तकले में लगाया जाता है।

**फिरगाना***—संज्ञा पुं० दे० "फिरंगी"।

**फिरता**—संज्ञा पुं० [ हिं० फिरना ] [ स्त्री० फिरती ] १. वापसी। २. अस्वीकार।

वि० वापस लौटाया हुआ।

**फिरना**—क्रि० अ० [ हिं० फेरना का अकर्मक रूप ] १ इधर-उधर चलना। भ्रमण करना। २. टहलना। विचरना। सैर करना। ३. चक्कर लगाना। बार बार फेरे खाना। ४. ऐंठा जाना। मरोड़ा जाना। ५. लौटना। वापस होना। ६. सामना। दूसरी तरफ हो जाना। ७. मुड़ना।

**मुहा०**—किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना। जी फिरना=चित उचट जाना। विरक्त हो जाना।

८. लड़ने या मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाना। ९. उलटा होना। विपरीत होना।

**मुहा०**—सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट होना।

१०. बात पर दृढ़ न रहना। ११. झुकना। टेढ़ा होना। १२. चारों ओर प्रचारित होना। घोषित होना। १३. किसी वस्तु के ऊपर पोता जाना। चढ़ाया जाना।

**फिरनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "फीरनी"।

**फिरवाना**—क्रि० स० [ हिं० 'फेरना' का प्रे० ] फेरने या फिराने का काम कराना।

**फिराऊ**—वि० [ हिं० फिरना ] १. फिरनेवाला। २. जाकड़।

**फिराक**—संज्ञा पुं० [ अ० ]* १. वियोग। बिछोह। २ चिंता। सोच। ३. खोज।

**फिराना**—क्रि० स० [ हिं० फिरना ] १. कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। २. टहलाना। ३. चक्कर देना। बार बार फेरे खिलाना। ४. ऐंठना। मरोड़ना। ५. लौटाना। पलटाना। ६. सामना एक ओर से दूसरी ओर करना। ७. दे० "फेरना"।

**फिरार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० फिरारी ] भागना। भाग जाना।

**फिरि***—क्रि० वि० दे० "फिर"।

**फिरियाद***|—संज्ञा स्त्री० दे० "फरियाद"।

**फिल्ली**—संज्ञा स्त्री० [देश०] पिंडली। ( अंग )

**फिस**—वि० [ अनु० ] कुछ नहीं। ( हास्य )

**मुहा०**—टाँय टाँय फिस=थी तो बड़ी धूम, पर हुआ कुछ नहीं।

**फिसड्डी**—वि० [ अनु० फिस ] १. जिससे कुछ करते-धरते न बने। २. जो काम में सबसे पीछे रहे।

**फिसलन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फिसलना ] १. फिसलने की क्रिया या भाव। रपटन। २. चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले।

**फिसलना**—क्रि० अ० [ सं० प्र+सरण ] १. चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। रपटना। २. प्रवृत्त होना। झुकना।

**फिहरिस्त**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] तालिका। सूची।

**फी**—अव्य० [ अ० ] प्रति एक। हर एक।

**फीका**—वि० [ सं० अपक्व ] १. स्वादहीन। सीठा। नीरस। बे-जायका। २. जो चटकीला न हो। धूमला। मलिन। ३. बिना तेज का। कांतिहीन। बे-रौनक। ४. प्रभावहीन। व्यर्थ। निष्फल।

**फीता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पतली धज्जी, सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है।

**फीरनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० फ़िरनी ] एक प्रकार की खीर।

**फीरोजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हरापन लिए नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

**फीरोजी**—वि० [ फ़ा० ] हरापन लिए नीला।

**फील**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हाथी।

**फीलखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।

**फीलपा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथी के पैर की तरह मोटा हो जाता है।

**फीलपाया**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. खंभा। २. कमरकोट। कमरकल्ला।

**फ़ीलबान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हाथीवान ।

**फ़ीली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पिंड ] पिंडली ।

**फुँकना**—क्रि० अ० [ हिं० फूँकना ] १. फूँकने का अकर्मक रूप । २. जलना । भस्म होना । ३. नष्ट होना । बरबाद होना ।

संज्ञा पुं० १. दे० "फुँकनी" । २. प्राणियों के शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है ।

**फुँकनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूँकना ] १. वह नली जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं । २. भाथी ।

**फुँकरना**—क्रि० अ० [ हिं० फुंकार ] फूत्कार छोड़ना । फूँ फूँ शब्द करना ।

**फुँकवाना, फुँकाना**—क्रि० स० [ हिं० 'फूँकना' का प्रे० ] फूँकने का काम दूसरे से कराना ।

**फुँकार**—संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार" ।

**फुँदना**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूल+फंद ] फूल के आकार की गाँठ जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिए बनाते हैं । फुलरा । झब्बा ।

**फुँदिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना" ।

**फुँदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फंदा ] फंदा । गाँठ ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिंदी ] बिंदी । टीका ।

**फुँसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पनसिका ] छोटी फोड़िया ।

**फुकना**—क्रि० अ० दे० "फुँकना" ।

**फुचड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] कपड़े आदि की बनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा ।

**फुट**—वि० [ सं० स्फुट ] १. जिसका जोड़ा न हो । एकाकी । अकेला । २. जो लगाव में न हो । पृथक् । अलग ।

संज्ञा पुं० [ अं० फुट ] लंबाई-चौड़ाई नापने की एक माप जो १२ इंच या ३६ जौ के बराबर होती है ।

**फुटकर, फुटकल**—वि० [ सं० स्फुट+कर ( प्रत्य० ) ] १. विषम । फुट । एकाकी । अकेला । २. अलग । पृथक् । ३. कई प्रकार का । कई मेल का । ४. थोड़ा थोड़ा । इकट्ठा नहीं । थोक का उलटा ।

**फुटका**—संज्ञा पुं० [ सं० स्फोटक ] फफोला ।

**फुटकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुटक ] १. किसी वस्तु के जमे हुए कण जो पानी, दूध आदि में अलग अलग दिखाई पड़ते हैं । २. खून, पीब आदि का छींटा जो किसी वस्तु में दिखाई दे ।

**फुटेहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूटना+हरा=फल ] मटर या चने का दाना जो भुनने से खिल गया हो ।

**फुट्ट**—वि० दे० "फुट" ।

**फुट्टल**—वि० [ सं० स्फुट ] जोड़े, झुंड या समूह से अलग ।

वि० [ हिं० फूटना ] फूटे भाग्य का । अभागा ।

**फुतकार***—संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार" ।

**फुदकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. उछल-उछलकर कूदना । २. उमंग में आना ।

**फुदकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फुदकना ] एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

**फुनंग**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुनगी" ।

**फुनि**†—अव्य० [ सं० पुनः ] पुनः । फिर ।

**फुनगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० पुलक ] वृक्ष या पौधे की शाखाओं का अग्र-भाग । अंकुर ।

**फुप्फुस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फेफड़ा ।

**फुफँदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल+फंद ] लहँगे के इजारबंद या स्त्रियों की धोती कसने की डोरी की गाँठ । नीवी ।

**फुफकाना**—क्रि० अ० दे० "फुफकारना" ।

**फुफकार**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द । फुंकार ।

**फुफकारना**—क्रि० अ० [ हिं० फुफकार ] साँप का मुँह से फूँक निकालना । फूत्कार करना ।

**फुफू***†—संज्ञा स्त्री० दे० "फूफी" ।

**फुफेरा**—वि० [ हिं० फूफा+रा ] [ स्त्री० फुफेरी ] फूफा से उत्पन्न । जैसे, फुफेरा भाई ।

**फुर**†—वि० [ हिं० फुरना ] सत्य । सच्चा ।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] उड़ने में परों का शब्द ।

**फुरकत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वियोग । जुदाई ।

**फुरती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्फूर्ति ] शीघ्रता । तेजी ।

**फुरतीला**—वि० [ हिं० फुरती+ईला ] [ स्त्री० फुरतीली ] जिसमें फुरती हो । तेज ।

**फुरना***—क्रि० अ० [ सं० स्फुरण ] १. निकलना । उद्भूत होना । प्रकट होना । प्रकाशित होना । चमक उठना । ३. फड़कना । फड़फड़ाना । ४. उच्चरित होना । मुँह से शब्द निकलना । ५. पूरा उतरना । सत्य ठहरना । ६. प्रभाव उत्पन्न करना ।

**फुरफुराना**—क्रि० स० [ अनु० फुरफुर ] १. "फुर फुर" करना । उड़-

कर परों का शब्द करना। २. हवा में लहराना।
क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो।

**फुरफुरी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० फुर-फुर ] 'फुरफुर' शब्द होने या पख फड़फड़ाने का भाव।

**फुरमान**—संज्ञा पुं० दे० "फरमान"।

**फुरमाना**†—क्रि० स० दे० "फरमाना"।

**फुरसत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. अवसर। समय। २. अवकाश। निवृत्ति। छुट्टी। ३. रोग से मुक्ति। आराम।

**फुरहरना**†-क्रि० अ० [ सं० स्फुरण ] स्फुरित होना। निकलना। प्रादुर्भूत होना।

**फुरहरी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. पर को फुलाकर फड़फड़ाना। २.फड़फड़ाहट। फड़कना। ३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। फरफराहट। ४. कँपकँपी। ५. दे० "फुरेरी"।

**फुराना***—क्रि० स० [ हिं० फुर ] १. सच्चा ठहराना। ठीक उतारना। २. प्रमाणित करना।
क्रि० अ० दे० "फुरना"।

**फुरेरी**—संज्ञा स्त्री० [ हि० फुरफुराना] १. वह सींक जिसके सिरे पर हलकी रूई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि में डुबाकर काम में लायी जाय। २. रोमांच-युक्त कंप।
मुहा०—फुरेरी लेना=१. सरदी, भय आदि के कारण काँपना। थरथराना। २. फड़फड़ाना। फड़कना। हिलना।

**फुलका**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूलना ] १. फफोला। छाला। २. हलकी और पतली रोटी। चपाती।

**फुलचुही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल+चूसना ] काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।

**फुलझड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल+झड़ना ] १. एक प्रकार की आतशबाजी। २. उपद्रव खड़ा करनेवाली बात।

**फुलवर**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूल+वार ] एक प्रकार का रेशमी बूटी का कपड़ा।

**फुलवाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।

**फुलवार**—वि० [ सं० फुल्ल] प्रफुल्ल। प्रसन्न।

**फुलवारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल+वारी ] १. पुष्पवाटिका। उद्यान। बगीचा। २. कागज के बने हुए फूल और वृक्षादि जो बरात के साथ निकाले जाते हैं।

**फुलसुंघनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुलचुही"।

**फुलहारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूल+हारा ( प्रत्य० ) [ स्त्री० फुलहारी ] माली।

**फुलाना**—क्रि० स० [ हिं० फूलना ] १. किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना।
मुहा०—मुँह फुलाना=मान करना। रूठना। २. किसी को पुलकित या आनंदित कर देना। ३. किसी में गर्व उत्पन्न करना। ४. कुसुमित करना। फूलों से युक्त करना।
क्रि० अ० दे० "फूलना"।

**फुलायल**-संज्ञा पुं० दे० "फुलेल"।

**फुलाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूलना ] फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।

**फुलिंग***—संज्ञा पुं० [ सं० स्फुलिंग ] चिनगारी।

**फुलिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल ] १. किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। २. वह कील या काँटा जिसका सिरा फूल की तरह हो। ३. एक प्रकार का लौंग। ( गहना )

**फुलेल**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूल+तेल ] फूलों की महक से बासा हुआ सिर में लगाने का तेल। सुगंधयुक्त तेल।

**फुलेहरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० फूल+हार ] सूत, रेशम आदि के बंदनवार जो उत्सवों में द्वार पर लगाए जाते हैं।

**फुलौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल+बरी ] चने या मटर आदि के बेसन की पकौड़ी।

**फुल्ल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा फुल्लता] फूला हुआ। विकसित।

**फुल्लदाम**—संज्ञा पुं० [ सं० फुल्लदामन् ] उन्नीस वर्णों की एक वृत्ति।

**फुस**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] धीमी आवाज।

**फुसकारना***†—क्रि० अ० [अनु०] फूँक मारना। फूत्कार छोड़ना।

**फुसफुसा**—वि० [ हिं० फूस या अनु० फुस ] १ जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। २. कमजोर। ३. मंदा। मद्धिम।

**फुसफुसाना**—क्रि० स० [ अनु० ] बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना।

**फुसलाना**—क्रि० स० [ हिं० फिसलाना ] अनुकूल या संतुष्ट करने के लिए मीठी मीठी बातें कहना। चकमा देना। बहकाना।

**फुहार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० फूत्कार ]

१. पानी का महीन छींटा। जलकण। २. महीन बूँदों की झड़ी। झींसी।

**फुहारा**—संज्ञा पुं० [हिं० फुहार] १. जल का महीन छींटा। २. जल की वह टोंटी जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं। जलयंत्र।

**फुही**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

**फूँक**—संज्ञा स्त्री० [अनु० फू फू] १. मुँह को बटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। मुँह की हवा।

**मुहा०**—फूँक निकल जाना=प्राण निकल जाना।

३. मंत्र पढ़कर मुँह से छोड़ी हुई वायु।

**यौ०**—झाड़-फूँक=मंत्र-तंत्र का उपचार।

**फूँकना**—क्रि० स० [हिं० फूँक] १. मुँह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।

**मुहा०**—फूँक फूँककर पैर रखना या चलना=बहुत सावधानी से कोई काम करना। २. मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूँक मारना। ३. शंख, बाँसुरी आदि मुँह से बजाए जानेवाले बाजों को फूँककर बजाना। ४. फूँककर प्रज्वलित करना। ५. जलाना। भस्म करना। ६. फजूल खर्च कर देना। उड़ाना।

**यौ०**—फूँकना तापना=व्यर्थ खर्च कर देना।

**फूँका**—संज्ञा पुं० [हिं० फूँक] १. बाँस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हें स्तन में लगाकर फूँकना जिससे गायों का सारा दूध बाहर निकल आवे। २. बाँस आदि की वह नली जिससे फूँका मारा जाता है। ३. फफोला।

**फूँद**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना"।

**फूँदा***†—संज्ञा पुं० १. दे० "फुँदना"।

**यौ०**—फूँद फुँदारा=फुँदनेवाला। २. फफुँदी।

**फूट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव। २. बैर। विरोध। बिगाड़। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

**फूटन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटकर अलग होनेवाला अंश। २. हड्डियों का दर्द।

**फूटना**—क्रि० अ० [सं० स्फुटन] १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. ऐसी वस्तुओं का फटना जिनके भीतर या तो पोला हो अथवा मुलायम या पतली चीज भरी हो। ३. नष्ट होना। बिगड़ना।

**मुहा०**—फूटी आँखों न भाना=तनिक भी न सुहाना। बहुत बुरा लगना। फूटी आँखों न देख सकना=बुरा मानना। जलना। कुढ़ना।

४. भीतर से झोंक के साथ बाहर आना। ५. शरीर पर दाने या घाव के रूप में प्रकट होना। ६. कली का खिलना। प्रस्फुटित होना। ७. अंकुर, शाखा आदि का निकलना। ८. शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ९. बिखरना। फैलना। व्याप्त होना। १०. पक्ष छोड़ना। दूसरे पक्ष में हो जाना। ११. शब्द का मुँह से निकलना।

**मुहा०**—फूट फूटकर रोना=विलापकरना। १२. व्यक्त होना। प्रकट होना। प्रकाशित होना। १३. गुप्त बात का प्रकट हो जाना। १४. बाँध, मेड़ आदि का टूट जाना। १५. जोड़ों में दर्द होना।

**फूत्कार**—संज्ञा पुं० [सं०] मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

**फूफा**—संज्ञा पुं० [स्त्री० फूफी] फूफी का पति। बाप का बहनोई।

**फूफी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] बाप की बहिन। बूआ।

**फूल**—संज्ञा पुं० [सं० फुल्ल] १. गर्भाधानवाले पौधों में वह ग्रंथि जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है और जिसे उद्‌भिदों की जननेंद्रिय कह सकते हैं। पुष्प। कुसुम। सुमन।

**मुहा०**—फूल झड़ना=मुँह से प्रिय और मधुर बातें निकलना। फूल सा=अत्यंत सुकुमार, हलका या सुंदर। फूल सूँघकर रहना=बहुत कम खाना। (स्त्री० व्यंग्य) पान फूल सा=अत्यंत सुकुमार।

२. फूल के आकार के बेल-बूटे या नक्काशी। ३. फूल के आकार का कोई गहना। जैसे, करनफूल। सीसफूल। ४. पीतल आदि की गोल गाँठ या घुंडी। फुलिया। ५. सफेद या लाल धब्बा जो कुष्ठ रोग के कारण शरीर पर पड़ जाता है। सफेद दाग। श्वेत कुष्ठ। ६. स्त्रियों का मासिक रज। पुष्प। ७. वह हड्डी जो शव जलाने के पीछे बच रहती है। (हिंदू) ८. एक मिश्रधातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है।

संज्ञा स्त्री० [हिं० फूलना] १. फूलने की क्रिया या भाव। २. उत्साह। उमंग। ३. आनंद। प्रसन्नता।

**फूलगोभी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० फूल+गोभी] गोभी की एक जाति जिसमें पत्तों का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है। गाँठगोभी।

**फूलदान**—संज्ञा पुं० [ हिं० फूल+दान ( प्रत्य० ) ] गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का बरतन। गुलदान।

**फूलदार**—वि० [ हिं० फूल+दार ( प्रत्य० ) ] जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे बने हों।

**फूलना**—क्रि० अ० [ हिं० फूल+ना ( प्रत्य० ) ] १. फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना।

**मुहा०**—फूलना फलना=सुखी और संपन्न होना। उन्नति करना। फूलना फालना=उल्लास में रहना। प्रसन्न होना।

२. फूल का संपुट खुलना जिससे उसकी पँखड़ियाँ फैल जायँ। विकसित होना। खिलना। ३. भीतर किसी वस्तु के भर आने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना। ४. शरीर के किसी भाग का सूजना। ५. मोटा होना। स्थूल होना। ६. गर्व करना। घमंड करना। इतराना। ७. आनंदित होना। बहुत खुश होना।

**मुहा०**—फूला फूला फिरना=प्रसन्न घूमना। आनंद में रहना। फूले अंग न समाना=अत्यंत आनंदित होना।

८. मुँह फुलाना। रूठना। मान करना।

**फूलमती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल+मती ( प्रत्य० ) ] एक देवी का नाम।

**फूली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फूल ] वह सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

**फूस**—संज्ञा पुं० [ सं० तुष ] १. वह सूखी लंबी घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। खर। तिनका।

**फूहड़**—वि० [ सं० पव=गोबर+घट=गढ़ना ] १. जिसे कुछ करने का ढंग न हो। बे-शऊर। २. बेढंगा। भद्दा।

**फूही**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

**फेंकना**—क्रि० स० [ सं० प्रेषण ] १. झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. एक स्थान से ले जाकर और स्थान पर डालना। ३. असावधानी या भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना या रखना। ४. तिरस्कार के साथ त्यागना। छोड़ना। ५. अपव्यय करना। फजूल खर्च करना।

**फेंकरना***†—क्रि अ० [ अनु० फें फें+करना ] चिल्ला चिल्लाकर रोना।

**फेंट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पेट या पेटी ] १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमर में बाँधा हुआ कोई कपड़ा। पटुका। कमरबंद।

**मुहा०**—फेंट धरना या पकड़ना=इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पावे। फेंट कसना या बाँधना=कमर कसकर तैयार होना।

४. फेरा। लपेट। घुमाव।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० फेंटना ] फेंटने की क्रिया या भाव।

**फेंटना**—क्रि० स० [ सं० पिष्ट ] १. गाढ़े द्रव पदार्थ को उँगली घुमा घुमाकर हिलाना। २. गड्डी के ताशों को उलट-पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना। ३. किसी बात को बार बार दुहराना।

**फेंटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेंट ] १. दे० "फेंट"। २. छोटी पगड़ी।

**फेकरना**—क्रि० अ० [ हिं० फेका-रना ] ( सिर का ) खुलना। नंगा होना।

क्रि० अ० दे० "फेंकना"।

**फेकैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेंकना ] १. वह जो फेंकता हो। २. पहलवान। ३. दे० "फिकैत"।

**फेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० फेनिल ] महीन महीन बुलबुलों का गठा हुआ समूह। झाग।

**फेना***—संज्ञा पुं० दे० "फेन"।

**फेनिल**—वि० [ सं० ] फेन या झाग से भरा हुआ।

**फेनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० फेनिका ] १. सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई। २. दे० "फेन"।

**फेफड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० फुप्फुस+ड़ा ( प्रत्य० ) ] वक्षःस्थल के भीतर का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।

**फेफड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० पपड़ी ] फाके या गरमी में सूखे हुए होंठ पर का चमड़ा। पपड़ी।

**फेफरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "फेफड़ी"।

**फेर**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेरना ] १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव।

**मुहा०**—फेर खाना=सीधा न जाकर इधर उधर घूमकर अधिक चलना।

२. मोड़। झुकाव। ३. परिवर्तन। उलट-पलट। रद-बदल।

**मुहा०**—दिनों का फेर=एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति ( विशेषतः अच्छी से बुरी दशा की )। कुफेर=बुरे दिन। बुरी दशा। सुफेर=१. अच्छी दशा। २. अच्छा अवसर।

४. अंतर। फर्क। भेद। ५. असमंजस। उलझन। दुबधा।

**मुहा०**—फेर में पड़ना=असमंजस में

होना।

६. भ्रम। संशय। धोखा। ७. षट्चक्र। चालबाजी। ८. बखेड़ा। झंझट।

**मुहा०**—निन्नानबे का फेर=निन्नानबे रुपए पाकर सौ रुपये पूरे करने की धुन। रुपया बढ़ाने का चसका।

९. युक्ति। उपाय। ढंग। १०. अदला-बदला। एवज।

**यौ०**—हेर-फेर=लेन-देन। व्यवसाय।

११. हानि। टोटा। घाटा। १२. भूत-प्रेत का प्रभाव। *१३. ओर। दिशा।

*अव्य० फिर। पुनः। एक बार और।

**फेरना**—क्रि० स० [ सं० प्रेरण, प्रा० पेरन ] १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। घुमाना। मोड़ना। २. पीछे चलाना। लौटाना। वापस करना। ३. जिसने दिया हो, उसी को फिर देना। लौटाना। वापस करना। ४. वापस लेना। लौटा लेना। ५. चक्कर देना। घुमाना। ६. ऐंठना। मरोड़ना। ७. रखकर इधर-उधर स्पर्श कराना। ८. पोतना। तह चढ़ाना।

**मुहा०**—पानी फेरना=नष्ट करना।

९. उलट-पलट या इधर-उधर करना। १०. चारों ओर सबके सामने ले जाना। घुमाना। ११. प्रचारित करना। घोषित करना। १२. घोड़े आदि को ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना। निकालना।

**फेरफार**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेर ] १. परिवर्त्तन। उलट-फेर। २. अंतर। फर्क। ३. टालमटूल। बहाना। ४. घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर।

**फेरवट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फेरना ] १. फिरने का भाव। २. घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर।

**फेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेरना ] १. कीलों के चारों ओर गमन। परिक्रमण। चक्कर। २. लपेटने में एक एक बार का घुमाव। लपेट। मोड़। बल। ३. बार बार आना-जाना। ४. घूमते-फिरते आ जाना या जा पहुँचना। ५. लौटकर फिर आना। पलटकर आना। ६. आवर्त्त। घेरा। मंडल।

**फेरि***—अव्य० [ हिं० फिर ] फिर। पुनः।

संज्ञा पुं० [ हिं० फेर ] अंतर। फर्क।

**फेरी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फेरना ] १. दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. योगी या फकीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिए बराबर आना। ५. कई बार आना-जाना। चक्कर।

**फेरीवाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० फेरी+वाला ] घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

**फेल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] कर्म। काम।

वि० [ अं० ] १. जो परीक्षा में पूरा न उतरे। अनुत्तीर्ण। २. जो समय पर ठीक या पूरा काम न दे।

**फेलो**—संज्ञा पुं० [ अं० ] सभ्य। सदस्य। व्यक्ति, साथी।

**फेल्ट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] नमदा।

**फेहरिस्त**—संज्ञा स्त्री० दे० "फिहरिस्त"।

**फैंसी**—वि० [ अं० ] अच्छी काट-छाँट का। देखने में सुंदर।

**फैक्टरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] कारखाना।

**फैज**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. उपकार। २. फायदा।

**फैयाज**—वि० [अ०] [संज्ञा फैयाजी] बहुत अधिक उदार और दानी।

**फैल***—संज्ञा पुं० [ अ० फेल ] १. काम। कार्य्य। २. क्रीड़ा। खेल। ३. नखरा।

**फैलना**—क्रि० अ० [ सं० प्रसृत ] १. कुछ दूर तक स्थान घेरना। २. विस्तृत होना। पसरना। अधिक बड़ा या लम्बा-चौड़ा होना। ३. मोटा होना। स्थूल होना। ४. बढ़ती होना। वृद्धि होना। ५. छितराना। बिखरना। ६. तनकर किसी ओर बढ़ना। ७. प्रचार पाना। बहुतायत से मिलना। ८. प्रसिद्ध होना। मशहूर होना। ९. आग्रह करना। हठ करना। जिद करना। १०. भाग का ठीक ठीक लग जाना।

**फैलसूफ**—वि० [ यू० फिलसफ ] फजूलखर्च।

**फैलसूफी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० फैलसूफ ] फजूलखर्ची। अपव्यय।

**फैलाना**—क्रि० स० [ हिं० फैलना ] १. लगातार कुछ दूर तक स्थान घिरवाना। २. विस्तृत करना। पसारना। विस्तार बढ़ाना। ३. व्यापक करना। छा देना। भर देना। ४. बिखेरना। अलग अलग दूर तक कर देना। ५. बढ़ती करना। वृद्धि करना। ६. तानकर किसी ओर बढ़ाना। ७. प्रचलित करना। जारी करना। ८. इधर-उधर दूर तक पहुँचाना। ९. प्रसिद्ध करना। चारों ओर प्रकट करना। १०. हिसाब किताब करना। लेखा लगाना। ११. गुणा-भाग के ठीक होने की परीक्षा करना।

**फैलाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० फैलना ] १. विस्तार। प्रसार। २. प्रचार।

**फैशन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. ढंग। तर्ज। २. रीति। प्रथा।

**फैसला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका

निबटेरा। २. किसी मुकदमे में अदालत की आखिरी राय।

**फैसिज्म**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] फैसिस्ट दल का संघटन और सिद्धांत।

**फैसिस्ट**—संज्ञा पुं॰ [अं॰] १. इटली के राष्ट्रवादियों का एक आधुनिक दल जो बोल्शेविकों का विरोध करने के लिए बना था और जिसने देश के बाकी सब दलों का नाश कर डाला था। २. वह जो मनमानी करे और अपने सामने किसी की चलने न दे।

**फोंक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ पुंख ] तीर के पीछे की नोक जिसके पास पर लगाये जाते हैं।

**फोंदा***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "फुँदना"।

**फोक**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ फोकला ] १. सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश। सीठी। २. भूसी। तुष। ३. फीकी या नीरस चीज।

**फोकट**—वि॰ [ हिं॰ फोक ] जिसका कुछ मूल्य न हो। निःसार। व्यर्थ।

**मुहा॰**—फोकट में=मुफ्त में। योंही।

**फोकला**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वल्कल ] छिलका।

**फोका**—वि॰ [हिं॰ फोकला] थोथा। निस्सार।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "फोकला"।

**फोट**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्फोट"।

**फोटक***—वि॰ दे॰ "फोकट"।

**फोटा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्फोट ] बिंदी। टीका।

**फोटो**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] १. फोटोग्राफी के द्वारा उतरा हुआ चित्र। छायाचित्र। २. प्रतिबिंब।

**फोटोग्राफी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ] प्रकाश की किरणों द्वारा रासायनिक पदार्थों की सहायता से आकृति या चित्र तैयार करने की क्रिया।

**फोड़ना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ स्फोटन ] १. खरी वस्तुओं को खंड खंड करना। भग्न करना। विदीर्ण करना। २. केवल आघात या दबाव से भेदन करना। ३. शरीर में ऐसा विकार उत्पन्न करना जिससे घाव या फोड़े हो जायँ। ४. अंकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना। ५. शाखा के रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना। ६. दूसरे पक्ष से अलग करके अपने पक्ष में कर लेना। ७. भेदभाव उत्पन्न करना। ८. फूट डालकर अलग करना। ९. एकबारगी भेद खोलना।

**फोड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्फोटक ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ फोड़िया ] वह शोथ जो शरीर में कहीं पर कोई दोष संचित होने से उत्पन्न होता है और जिसमें रक्त सड़कर पीब के रूप में हो जाता है। व्रण।

**फोड़िया**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ फोड़ा ] छोटा फोड़ा।

**फोता**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. भूमिकर। पोत। २. थैली। कोष। थैला। ३. अंडकोष।

**फोतेदार**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. खजांची। कोषाध्यक्ष। २. रोकड़िया।

**फोनोग्राफ**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] एक यंत्र जिसमें कही हुई बातें या गाये हुए गाने बाद में ज्यों के त्यों सुनाई देते हैं। ग्रामोफोन।

**फोरना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "फोड़ना"।

**फौआरा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "फुहारा"।

**फौज**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. झुंड। जत्था। २. सेना। लशकर।

**फौजदार**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] सेनापति।

**फौजदारी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. लड़ाई-झगड़ा। मार-पीट। २. वह अदालत जहाँ ऐसे मुकदमों का निर्णय होता हो जिनमें अपराधी को दंड मिलता है।

**फौजी**—वि॰ [ फ़ा॰ ] फौज संबंधी। सैनिक।

**फौत**—वि॰ [ अ॰ ] मृत। गत।

**फौती**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ फौत ] मरने की वह सूचना जो सरकारी कागजों में लिखाई जाती है।

**फौरन**—क्रि॰ वि॰ [ अ॰ ] तुरंत। चटपट।

**फौलाद**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ पोलाद ] एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा। खेड़ी।

**फौवारा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "फुहारा"।

**फ्रांसीसी**—वि॰ [ फ्रांस ] १. फ्रांस देश का। २. फ्रांस देशवासी।

**फ्रॉक**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] स्त्रियों और बच्चों का एक प्रकार का कुरता।

**फ्रेम**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] चौखटा जिसमें चित्र या दर्पण लगाये जाते हैं। चश्मे की कमानी।

**फ्रेंच**—वि॰ [ अं॰ ] फ्रांस देश का। संज्ञा स्त्री॰ फ्रांस देश की भाषा।

—:o:—

# ब

**ब**—हिंदी का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण। यह ओष्ठ्य वर्ण है।

**बंक**—वि० [ सं० वक्र, बंक ] १. टेढ़ा। तिरछा। २.पुरुषार्थी। विक्रमशाली। ३. दुर्गम। जिस तक पहुँच न हो सके।

संज्ञा पुं० [ अं० बैंक ] वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

**बंकराज**—संज्ञा पुं० [ सं० वंकराज ] एक प्रकार का सर्प।

**बंका**†—वि० [ सं० वंक ] १. टेढ़ा। तिरछा। २. बाँका। ३. पराक्रमी।

**बंकाई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बंकुरता"।

**बंकुरता***—संज्ञा स्त्री० [सं० वक्रता] टेढ़ाई। टेढ़ापन।

**बंग**—संज्ञा पुं० दे० "वग"।

*वि० [ सं० वक्र ] १. टेढ़ा। २. उद्दंड। ३. अभिमानी।

**बँगला**—वि० [ हिं० बंगाल ] बंगाल देश का। बंगाल संबंधी।

संज्ञा पुं० १. वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंजिल का मकान जिसके चारों ओर बरामदे हों। २. वह छोटा हवादार कमरा जो प्रायः ऊपरवाली छत पर बनाया जाता है। ३. बंगाल देश का पान।

संज्ञा स्त्री० बंगाल देश की भाषा।

**बँगली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बंग ] १. एक प्रकार का पान। २. एक प्रकार का गहना।

**बंगाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० बंगाल ] बंगाल प्रांत।

संज्ञा स्त्री० बंगालिका नाम की रागिनी।

**बंगाली**—संज्ञा पुं० [ हिं० बंगाल + ई ( प्रत्य० ) ] बंगाल देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बंग ] बंग देश की भाषा।

**बंचक**—संज्ञा पुं० [ सं० वंचक ] धूर्त। ठग।

**बंचकता, बंचकताई***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंचकता ] छल। धूर्तता। चालबाजी।

**बंचनता**—संज्ञा स्त्री० [सं० वंचकता ] ठगी। संज्ञा

**बंचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंचना ] ठगी।

*†क्रि० स० [ सं० वचन ] ठगना। छलना।

**बँचवाना**—क्रि० स० [ हिं० बाँचना ] पढ़वाना।

**बंछना***†—क्रि० स० [ सं० वाछा ] अभिलाषा करना। इच्छा करना। चाहना।

**बंछित***†—वि० दे० "वांछित"।

**बंज**†—पुं० दे० "बनिज"।

**बंजर**—संज्ञा पुं० [ सं० वन + ऊजड़ ] ऊसर।

**बंजारा**—संज्ञा पुं० दे० "बनजारा"।

**बंजुल**—संज्ञा पुं० [ सं० वंजुल ] १. अशोक वृक्ष। २. बेंत।

**बंझा**—वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "बाँझ"।

**बँटना**—क्रि० अ० [ सं० वितरण ] १. विभाग होना। अलग अलग हिस्सा होना। २. कई व्यक्तियों को अलग अलग दिया जाना।

**बँटवाना**—क्रि० स० [ सं० वितरण ] बाँटने का काम दूसरे से कराना।

**बँटवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँटना ] बाँटने की क्रिया। विभाग। तकसीम।

**बंटा**—संज्ञा पुं० [ सं० वटक ] [ स्त्री० अल्पा० बंटी ] गोल या चौकोर छोटा डब्बा।

**बँटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँटना ] १. बाँटने का काम या भाव। २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फसल का कुछ अंश मिलता है।

**बंटाधार**—वि० [ देश० ] चौपट। बरबाद।

**बँटाना**—क्रि० स० [ हिं० बाँटना ] १. बँटवाना। २. दूसरे का बोझ हलका करने के लिए शामिल होना।

**बँटावन***†—वि० [ हिं० बँटाना ] बँटानेवाला।

**बंडल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पुलिंदा। गड्डी।

**बंडा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बंटा ] एक प्रकार का कच्चू या अरुई।

**बंडी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँड़ा=कटा हुआ ] १. फतुही। कुरती। २. बगलबंदी।

**बँडेरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरदंड ] वह लकड़ी जो खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगती है।

**बंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मि० सं० बंध ] १. वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. पुश्ता। मेड़। बाँध। ३. शरीर के अंगों का कोई जोड़। ४. फीता। तनी। ५. कागज

का लंबा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा। ६. बंधन। कैद।

वि० [ फ़ा० ] १. जिसके चारों ओर कोई अवरोध हो। २. जिसके मुँह अथवा मार्ग पर ढकना या ताला आदि लगा हो। ३. जो खुला न हो। ४. किवाड़, ढकना आदि जो ऐसी स्थिति में हो जिससे कोई वस्तु भीतर से बाहर न जा सके और बाहर की चीज अंदर न आ सके। ५. जिसका कार्य्य रुका हुआ या स्थगित हो। ६. रुका हुआ। थमा हुआ। ७. जो किसी तरह की कैद में हो।

**बंदगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. भक्तिपूर्वक ईश्वर की वंदना। २. सेवा। खिदमत। ३. आदाब। प्रणाम। सलाम।

**बंदगोभी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बंद+गोभी ] करमकल्ला। पातगोभी।

**बंदन**—संज्ञा पुं० दे० "वंदन"।

संज्ञा पुं० [ सं० वंदनीय=गोरोचन ] १. रोचन। रोली। २. ईंगुर। सेंदुर।

**बंदनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंदनता ] वंदनीयता। आदर या वंदना किए जाने की योग्यता।

**बंदनवार**—संज्ञा पुं० [ सं० वंदनमाला ] फूलों या पत्तों की झालर जो मंगल-सूचनार्थ दीवारों आदि में बाँधी जाती है। तोरण।

**बंदना**—संज्ञा स्त्री० दे० "वंदना"।

क्रि० स० [ सं० वंदन ] प्रणाम करना।

**बंदनी***—वि० दे० "वंदनीय"।

**बंदनीमाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंदनमाल ] वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो।

**बंदर**—संज्ञा पुं० [ सं० वानर ] एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो मनुष्य से बहुत मिलता-जुलता होता है। कपि। मर्कट।

**मुहा०**—बंदर-घुड़की या बंदर-भबकी= ऐसी धमकी या डाँट-डपट जो केवल डराने या धमकाने के लिए ही हो।

संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।

**बंदरगाह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।

**बंदवान**—संज्ञा पुं० [ सं० बंदी+वान ] बंदीगृह का रक्षक। कैदखाने का अफसर।

**बंदशाला**†—संज्ञा पुं० [ सं० बंदीशाला ] कैदखाना। जेल।

**बंदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सेवक। दास।

संज्ञा पुं० [ सं० बंदी ] बंदी। कैदी।

**बंदारु**—वि० [ सं० वंदारु ] १. वंदनीय। २. पूजनीय। आदरणीय।

**बंदाल**—संज्ञा पुं० [ ? ] देवदाली।

**बंदि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बंदिन् ] कैद।

**बँदिया**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बंदनी ] बेंदी। ( आभूषण )

**बंदिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. बाँधने की क्रिया या भाव। २. प्रबंध। रचना। योजना। ३. षड्यंत्र।

**बंदी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक जाति जो राजाओं का कीर्तिगान करती थी। भाट। चारण।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बंदनी ] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कैदी।

**बंदीखाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कैदखाना।

**बंदीछोर***†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बंदी+हिं० छोर ] कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।

**बंदीवान***—संज्ञा पुं० [ सं० बंदिन् ] कैदी।

**बंदूक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोली रखकर बारूद की सहायता से चलाई जाती है।

**बंदूकची**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बंदूक चलानेवाला सिपाही।

**बँदेरा***—संज्ञा पुं० [ सं० बंदी ] [ स्त्री० बँदेरी ] १. बंदी। कैदी। २. सेवक। दास।

**बंदोबस्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. प्रबंध। इंतजाम। २. खेती के लिए भूमि को नापकर उसका राज्यकर निर्धारित करने का काम। ३. वह महकमा या विभाग जिसके सुपुर्द खेती आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

**बंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंधन। २. गाँठ। गिरह। ३. कैद। ४. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ५. कोकशास्त्र के अनुसार रति का आसन। ६. योगशास्त्र के अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा। ७. निबंध-रचना। गद्य या पद्य लेख तैयार करना। ८. चित्रकाव्य में छंद की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। ९. वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। बंद। १०. लगाव। फँसाव। ११. शरीर।

**बंधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह वस्तु जो लिए हुए ऋण के बदले में

धनी के यहाँ रख दी जाय। रेहन। २. बाँधनेवाला।
संज्ञा पुं० [ सं० बंध ] स्त्री-संभोग का कोई आसन। बंध।

**बंधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाँधने की क्रिया। २. वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। ३. वह जो किसी की स्वतंत्रता आदि में बाधक हो। प्रतिबंध। ४. वध। हत्या। ५. रस्सी। ६. कारागार। कैदखाना। ७. शरीर का संधिस्थान। जोड़।

**बँधना**-क्रि०अ० [सं० बंधन] १. बंधन में आना। बद्ध होना। बाँधा जाना। २. कैद होना। बंदी होना। ३. प्रतिबंध में रहना। फँसना। अटकना। ४. प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। ५. ठीक होना। दुरुस्त होना। ६. क्रम निर्धारित होना। स्थिर होना। ७ प्रेमपाश में बद्ध या मुग्ध होना।
संज्ञा पुं० [ सं० बंधन ] वह वस्तु जिससे किसी चीज को बाँधें। बाँधने का साधन।

**बँधनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बंधन, हिं० बँधना ] १. बंधन। जिसमें कोई चीज बँधी हुई हो। २. उलझने या फँसानेवाली चीज।

**बँधवाना**—क्रि० स० [ हिं० बाँधना का प्रे० ] बाँधने का काम दूसरे से कराना।

**बँधान**—संज्ञा पुं० [ हिं० बँधना ] १. लेन-देन या व्यवहार आदि की नियत परिपाटी। २. वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ३. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ४. ताल का सम। ( संगीत )

**बँधाना**—क्रि० स० [ हिं० बंधन ] १. धारण कराना। २. दे० "बँधवाना"।

**बंधी**—संज्ञा पुं० [ सं० बंधिन् ] बँधा हुआ।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० बँधना=नियत होना ] वह कार्यक्रम जिसका नित्य होना निश्चित हो। बंधेज।

**बंधु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाई। भ्राता। २. सहायक। मददगार। ३. मित्र। दोस्त। ४. एक वर्णवृत्त। दोधक। ५. बंधूक पुष्प।

**बँधुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० बँधना ] कैदी। बंदी।

**बंधुक, बंधुजीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुपहरिया का फूल।

**बंधुता**-संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुत्व"।

**बंधुत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंधु होने का भाव। बंधुता। २. भाई-चारा। ३. मित्रता। दोस्ती।

**बंधूक**—संज्ञा पुं० [ सं० बन्धु ] १. दे० "बंधुक"। २. दोधक नामक वृत्त। बंधु।

**बंधेज**—संज्ञा पुं० [ हिं० बँधना+एज ( प्रत्य० ) १. नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। ३. रुकावट। प्रतिबंध।

**बंधोदय**--संज्ञा पुं० [ सं० ] कर्मफल प्राप्ति का प्रवृत्तिकाल।

**बंध्या**—वि० स्त्री० [ सं० ] ( वह स्त्री ) जो संतान न पैदा कर सके। बाँझ।

**बंध्यापन**-संज्ञा पुं० दे० "बाँझपन"।

**बंध्यापुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ठीक वैसा ही असंभव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज।

**बंपुलिस**-संज्ञा स्त्री० मलत्याग के लिए म्यूनिसिपैलिटी आदि का बनवाया हुआ सार्वजनिक स्थान।

**बंब**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. युद्धारंभ में वीरों का उत्साहवर्द्धक नाद। रणनाद। हल्ला। २. नगारा। दुंदुभी। डंका।
संज्ञा पुं० दे० "बम"।

**बंबा**—संज्ञा पुं० [ अ० मबा ] १. जल-कल। पानी की कल। पंप। २. सोता। स्रोत।

**बँबाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना। रँभाना।

**बंबू**—संज्ञा पुं० [ मलाया० बैंबू=बाँस ] चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

**बँभनाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ब्राह्मण ] ब्राह्मणत्व।

**बंस**—संज्ञा पुं० दे० "वंश"।

**बंसकार**—संज्ञा पुं० [ सं० वंश ] बाँसुरी।

**बंसलोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० वंश-लाचन ] बाँस का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। वंसकपूर।

**बँसवाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँस ] बाँसों का झुरमुट।

**बंसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंशी ] १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। वंशी। मुरली। २. मछली फँसाने का एक औजार। ३. विष्णु, कृष्ण और रामजी के चरणों का रेखा-चिह्न।

**बंसीधर**—संज्ञा पुं० [ सं० वंशीधर ] श्रीकृष्ण।

**बँहगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वह ] भार ढोने का वह उपकरण जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरों पर रस्सियों के बड़े बड़े छींके लटका दिए जाते हैं।

**बँहोलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँह ] आस्तीन ।

**ब**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वरुण । २. सिंधु । ३. जल । ४. सुगंधि ।

**बइठना***—क्रि० अ० दे० "बैठना" ।

**बउरा***—संज्ञा पुं० दे० "बौर" या "मौर" ।

**बउरा***—वि० दे० "बावला" ।

**बक**—संज्ञा पुं० [ सं० बक ] १. बगला । २. अगस्त्य नामक पुष्प का वृक्ष । ३. कुबेर । ४. बकासुर ।
वि० बगले सा सफेद ।
संज्ञा स्त्री० [ बकना ] प्रलाप । बकवाद ।

**बकतर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार की झिरह या कवच जिसे योद्धा लड़ाई में पहनते हैं । सन्नाह ।

**बकता, बकतार***—वि० दे० "वक्ता" ।

**बकध्यान**—संज्ञा पुं० [सं० बकध्यान] ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में तो बहुत साधु जान पड़े, पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो । बनावटी साधु भाव ।

**बकना**—क्रि० स० [ सं० वचन ] १. ऊटपटाँग बात कहना । व्यर्थ बहुत बोलना । २. प्रलाप करना । बड़बड़ाना ।

**बकबक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बकना ] बकने की क्रिया या भाव ।

**बकमौन**—संज्ञा पुं० [ सं० बक + मौन ] दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना ।
वि० चुपचाप काम साधनेवाला ।

**बकर-कसाब**—संज्ञा पुं० [ हिं० बकरी + अ० क़स्साब=कसाई ] बकरी का मांस बेचनेवाला पुरुष । चिक ।

**बकरना**—क्रि० स० [ हिं० बकना ] १. आपसे आप बकना । बड़बड़ाना । २. अपना दोष या करतूत आपसे आप कहना ।

**बकरम**—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो कपड़ों के भीतर कोई भाग कड़ा करने के लिए दिया जाता है ।

**बकरा**—संज्ञा पुं० [ सं० बर्कर ] [ स्त्री० बकरी ] एक प्रसिद्ध चतुष्पाद पशु जिसके सींग पीछे झुके हुए, पूँछ छोटी और खुर फटे होते हैं ।

**बकलस**—संज्ञा पुं० [ अं० बकल्स ] एक प्रकार की विलायती अँकुसी जो किसी बंधन के दो छोरों को मिलाए रखने या कसने के काम में आती है । बकसुआ ।

**बकला**—संज्ञा पुं० [ सं० वल्कल ] १. पेड़ की छाल । २. फल का छिलका ।

**बकवाद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बक-वास ] व्यर्थ की बात । बकबक ।

**बकवादी**—वि० [ हिं० बकवाद ] बहुत बकबक करनेवाला । बक्की ।

**बकवास**—संज्ञा स्त्री० दे० "बक-वाद" ।

**बक-वृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बक-ध्यान लगानेवालों की वृत्ति ।
वि० बक-ध्यान लगानेवाला ।

**बकस**—संज्ञा पुं० [ अं० बाक्स ] १. कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक । २. छोटा डिब्बा । खाना ।

**बकसना***—क्रि० स० [ फ़ा० बख्श + हिं० ना ] १. कृपापूर्वक देना । प्रदान करना । २. क्षमा करना । माफ करना ।

**बकसाना***†—क्रि० स० [ हिं० बकसना ] क्षमा कराना । माफ कराना ।

**बकसी***—संज्ञा पुं० दे० "बख्शी" ।

**बकसीस***—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बख़्शिश ] १. दान । २. इनाम । पारितोषिक ।

**बकसुआ**—संज्ञा पुं० दे० "बकलस" ।

**बकाउर**—संज्ञा स्त्री० दे० "बका-वली" ।

**बकाना**—क्रि० स० [ हिं० बकना का प्रेरणा० रूप ] १. बकबक कराना । २. रटाना ।

**बकायन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बकका + नीम ? ] नीम की जाति का एक पेड़ ।

**बकाया**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बचा हुआ । बाकी । २. बचत ।

**बकारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० 'व' कार या वाक्य ] मुँह से निकलनेवाला शब्द ।

**बकावर**—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल-बकावली" ।

**बकावली**—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल-बकावली" ।

**बकासुर**—संज्ञा पुं० [ सं० बकासुर ] एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

**बकिनव***—संज्ञा पुं० दे० "बका-यन" ।

**बकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बकी ] बका-सुर की बहिन पूतना का एक नाम जो अपने स्तन में विष लगाकर कृष्ण को मारने गई थी ।

**बकुचना***—क्रि० अ० [ सं० विकुंचन ] सिमटना । सिकुड़ना । संकुचित होना ।

**बकुचा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बकुचना ] [ स्त्री० बकुची ] छोटी गठरी । बकचा ।

**बकुची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वाकुची ]

एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बकुचा ] छोटी गठरी।

**बकुचौहाँ‡**—वि० [ हिं० बकुचा+औहाँ ( प्रत्य० )] [स्त्री० बकुचौहीं ] बकुचे की भाँति।

**बकुरना***—क्रि० स० दे० "बर-करना"।

**बकुल**—संज्ञा पुं० [सं० ] मौलसिरी।

**बकुला†**—संज्ञा पुं० दे० "बगुला"।

**बकेन, बकेना†**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वष्कयणी] वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो। लवाई का उलटा।

**बकैयाँ**—संज्ञा पुं० [ सं० वक्र+ऐयाँ ( प्रत्य० ) ] बच्चों का घुटनों के बल चलना।

**बकोट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० प्रकोष्ठ या अभिकोष्ठ ] बकोटने की मुद्रा, क्रिया या भाव।

**बकोटना**—क्रि० स० [ हिं० बकोट ] नाखूनों से नोचना। पंजा मारना। निकोटना।

**बकौरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "गुल-बकावली"।

**बक्कम**—संज्ञा पुं० [ अ० बक्कम ] एक छोटा कँटीला वृक्ष। इसकी लकड़ी, छिलके और फलों से लाल रंग निकलता है। पतंग।

**बक्कल**—संज्ञा पुं० [ सं० वल्कल ] १. छिलका। २. छाल।

**बक्काल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वणिक्। बनिया।

**बक्की**—वि० [ हिं० बकना ] बहुत बोलने या बकबक करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का धान।

**बक्खर**—संज्ञा पुं० दे० "बाखर"।

**बक्स**—संज्ञा पुं० दे० "बकस"।

**बख़त**—संज्ञा पुं० १. दे० "बख्त"। २. दे० "वक्त"।

**बखतर**—संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।

**बखर**—संज्ञा पुं० १. दे० "बाखर"। २. दे० "बक्खर"।

**बखरा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बखरः ] १. भाग। हिस्सा। बाँट। २. दे० "बाखर"।

**बखरी‡**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बखार ] मिट्टी, ईंटों आदि का बना हुआ मकान। ( गाँव )

**बखसीस*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "बख़शीश"।

**बखान**—संज्ञा पुं० [ सं० व्याख्यान ] १. वर्णन। कथन। २. प्रशंसा। स्तुति। बड़ाई।

**बखानना**—क्रि० स० [ हिं० बखान+ना ] १. वर्णन करना। कहना। २. प्रशंसा करना। सराहना। ३. गाली-गलौज देना।

**बखार†**—संज्ञा पुं० [ सं० प्राकार ] [ स्त्री० अल्पा० बखारी ] दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है।

**बखिया**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।

**बखियाना**—क्रि० स० [हिं० बखिया] किसी चीज पर बखिया की सिलाई करना।

**बखीर†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० खीर का अनु० ] मीठे रस में उबाला हुआ चावल।

**बखील**—वि० [ अ० ] कृपण। सूम।

**बखूबी**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] १. अच्छे प्रकार से। भली भाँति। २. पूर्ण रूप से।

**बखेड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बखेरना ] १. उलझाव। झंझट। उलझन। २. झगड़ा। टंटा। विवाद। ३. कठिनता। मुश्किल। ४. व्यर्थ विस्तार। आडंबर।

**बखेड़िया**—वि० [ हिं० बखेड़ा+इया ( प्रत्य० ) ] बखेड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

**बखेरना**—क्रि० स० [ सं० विकिरण ] चीजों को इधर उधर या दूर दूर फैलाना। छितराना।

**बखोरना‡**—क्रि० स० [हिं० बकुर] छेड़ना।

**बख्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] भाग्य। किस्मत।

**बख्तर**—संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।

**बख्शना**—क्रि० स० [ फ़ा० बख्श ] १. देना। प्रदान करना। २. त्यागना। छोड़ना। ३. क्षमा करना। माफ करना।

**बख्शवाना, बख्शाना**—क्रि० स० [ हिं० बख्शना का प्रे० ] किसी को बख्शने में प्रवृत्त करना।

**बख्शिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. उदारता। २. दान। ३. क्षमा।

**बग†**—संज्ञा पुं० [ सं० बक ] बगुला।

**बगई‡**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है। कुकुरमाछी। २. एक प्रकार की घास।

**बगछुट, बगटुट**—क्रि० वि० [ हिं० बाग+छूटना या टूटना ] सरपट। बेतहाशा। बड़े वेग से।

**बगदना‡**—क्रि० अ० [ हिं० बिगड़ना ] १. बिगड़ना। [illegible]

२. भ्रम में पड़ना। ३. लुढ़कना। गिरना।

**बगदर**—संज्ञा पुं० दे० "मच्छड़। (बुंदेल०)"

**बगदहा†**—वि० [हिं० बगदना + हा (प्रत्य०)] [स्त्री० बगदही] चौंकने या बिगड़नेवाला। बिगड़ैल।

**बगदाना**—क्रि० स० [हिं० बगदना] १. बिगाड़ना। खराब करना। २. ठीक रास्ते से हटाना। ३. भुलाना। भटकाना।

**बगना†**—क्रि० अ० [सं० वक] घूमना फिरना।

**बगली**—संज्ञा स्त्री० [देश०] बगई। (घास)

**बगमेल**—संज्ञा पुं० [हिं० बाग + मेल] १. दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। बराबर बराबर चलना। २. बराबरी। समानता। तुलना।

क्रि० वि० बाग मिलाए हुए। साथ साथ।

**बगर†**—संज्ञा पुं० [सं० प्रघण] १. महल। प्रासाद। २. बड़ा मकान। घर। ३. कोठरी। ४. सहन। आँगन। ५. वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। बगार। बाटी।

संज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।

**बगरना*†**—क्रि० अ० [सं० विकिरण] फैलना। बिखरना। छितराना।

**बगराना*†**—क्रि० स० [हिं० बगरना का सक० रूप] फैलाना। छितराना। छिटकाना।

क्रि० अ० बगरना। फैलना। बिखरना।

**बगरी†**—संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।

**बगलंबा***—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

**बगल**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बाहु-मूल के नीचे की ओर का गड्ढा। काँख। २. छाती के दोनों किनारों का भाग। पार्श्व।

मुहा०—बगल में दबाना या करना=अधिकार करना। ले लेना। बगलें बजाना=बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। खूब खुशी मनाना।

३. इधर-उधर का भाग। किनारेका हिस्सा।

मुहा०—बगलें झाँकना=इधर-उधर भागने का यत्न करना।

४. कपड़े का वह टुकड़ा जो कुरते आदि में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया जाता है। ५. समीप का स्थान। पास की जगह।

**बगलगंध**—संज्ञा पुं० [हिं० बगल+गंध] १. वह फोड़ा जो बगल में होता है। कँखवार। २. एक प्रकार का रोग जिसमें बगल से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है।

**बगलबंदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बगल+बंद] एक प्रकार की मिरजई या कुरती।

**बगला**—संज्ञा पुं० [सं० वक+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० बगली] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है।

मुहा०—बगला भगत=१. धर्मध्वजी। २. कपटी। धोखेबाज।

**बगलामुखी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] तांत्रिकों की एक देवी।

**बगलियाना**—क्रि० अ० [हिं० बगल+इयाना (प्रत्य०)] बगल से होकर जाना। अलग हटकर चलना या निकलना।

क्रि० स० १. अलग करना। २. बगल में लाना या करना।

**बगली**—वि० [हिं० बगल+ई (प्रत्य०)] बगल से संबंध रखनेवाला। बगल का। कुश्ती का एक दाँव।

मुहा०—बगली घूँसा=वह वार जो आड़ में छिपकर या धोखे से किया जाय।

संज्ञा स्त्री० १. वह थैली जिसमें दर्जी सुई तागा रखते हैं। तिलादानी। २. कुरते आदि में कपड़े का वह टुकड़ा जो कंधे के नीचे लगाया जाता है। बगल।

**बगलेंदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बगला] एक प्रकार का पक्षी।

**बगलौहाँ†**—वि० [हिं० बगल+औहाँ] [स्त्री० बगलौहीं] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा।

**बगसना*†**—क्रि० स० दे० "बख्शना"।

**बगा*†**—संज्ञा पुं० [हिं० बागा] जामा। बागा।

*संज्ञा पुं० [सं० वक] बगला।

**बगाना*†**—क्रि० स० [हिं० बगना का प्रे०] टहलाना। सैर कराना। घुमाना। फिराना।

क्रि० अ० भागना। जल्दी जल्दी जाना।

**बगार**—संज्ञा पुं० [देश०] वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। बाटी।

**बगारना**—क्रि० स० [सं० विकिरण, हिं० बगरना] १. फैलाना। छिटकाना। बिखेरना। २. दे० "बगराना"।

**बगावत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. बागी होने का भाव। २. बलवा। ३. राजद्रोह।

**बगिया*†**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बाग+हिं० इया (प्रत्य०)] बागीचा। उपवन। छोटा बाग।

**बगीचा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० बागीचा]

[स्त्री० अल्पा० बगीची] वाटिका। छोटा बाग।

**बगुला**—संज्ञा पुं० दे० "बगला"।

**बगूला**—संज्ञा पुं० [हिं० बाउ+गोला] वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है। बवंडर। वातचक्र।

**बगेदना†**—क्रि० स० [हिं० बगदना] १. धक्का देकर गिराना या हटाना। २. विचलित करना।

**बगेरी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। बघेरी। भरुही।

**बगैर**—अव्य० [अ०] बिना।

**बग्गी, बग्घी**—संज्ञा स्त्री० [अं० बोगी] चार पहियों की पाटनदार घोड़ा-गाड़ी।

**बघंबर**—संज्ञा पुं० [सं० व्याघ्रांबर] बाघ की खाल जिस पर साधू लोग बैठते हैं।

**बघछाला**—संज्ञा स्त्री० दे० "बघंबर"।

**बघनख, बघनखा**—संज्ञा पुं० [हिं० बाघ+नहँ=नाखून] [स्त्री० अल्पा० बघनहीं] १. एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नहँ के समान चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं। शेरपंजा। २. एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं।

**बघनहँ**—संज्ञा पुं० दे० "बघनखा"।

**बघनहियाँ*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "बघनखा (२)"।

**बघनाँ***—संज्ञा पुं० दे० "बघनखा (२)"।

**बघरूरा‡**—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

**बघार**—संज्ञा पुं० [हिं० बघारना] वह मसाला जो बघारते समय घी में डाला जाय। तड़का। छौंक।

**बघारना**—क्रि० स० [सं० अवघारण=बघारण] १. छौंकना। दागना। तड़का देना। २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना।

**बघूरा**—संज्ञा पुं० दे० "बगूला"।

**बच***—संज्ञा पुं० [सं० वचः] वचन। वाक्य।

संज्ञा स्त्री० [सं० वचा] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं।

**बचका**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

**बचकाना‡**—वि० [हिं० बच्चा+काना (प्रत्य०)] [स्त्री० बचकानी] १. बच्चों के योग्य। २. बच्चों का सा।

**बचत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बचना] १. बचने का भाव। बचाव। रक्षा। २. बचा हुआ अंश। शेष। ३. लाभ। मुनाफा।

**बचन*†**—संज्ञा पुं० [सं० वचन] १. वाणी। वाक्। २. वचन।

मुहा०—वचन डालना=माँगना। याचना करना। बचन ताड़ना या छोड़ना=प्रतिज्ञा से विचलित होना। कहकर न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। बचन बाँधना=प्रतिज्ञा कराना। बचन-बद्ध करना। बचन हारना=प्रतिज्ञा-बद्ध होना। बात हारना।

**बचना**—क्रि० अ० [सं० वंचन=न पाना] १. कष्ट या विपत्ति आदि से अलग रहना। रक्षित रहना। २. किसी बुरी बात से अलग रहना। ३. छूट जाना। रह जाना। ४. काम में आने पर शेष रह जाना। बाकी रहना। ५. दूर या अलग रहना।

क्रि० स० [सं० वचन] कहना।

**बचपन**—संज्ञा पुं० [हिं० बच्चा+पन (प्रत्य०)] १. लड़कपन। २. बच्चा होने का भाव।

**बचवैया*‡**—संज्ञा पुं० [हिं० बचाना+वैया (प्रत्य०)] बचानेवाला। रक्षक।

**बचा†***—संज्ञा पुं० [फ़ा० बच्चः। सं० वत्स] [स्त्री० बच्ची] लड़का। बालक।

**बचाना**—क्रि० स० [हिं० बचना] १. आपत्ति या कष्ट आदि में न पड़ने देना। रक्षा करना। २. प्रभावित न होने देना। अलग रखना। ३. खर्च न होने देना। ४. छिपाना। चुराना। ५. अलग रखना। दूर रखना।

**बचाव**—संज्ञा पुं० [हिं० बचाना] बचने का भाव। रक्षा। त्राण।

**बच्चा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०। मि० सं० वत्स] [स्त्री० बच्ची] १. किसी प्राणी का नवजात शिशु। २. लड़का। बालक।

मुहा०—बच्चों का खेल=सहज काम।

वि० अज्ञान। अनजान।

**बच्चादान, बच्चादानी**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गर्भाशय।

**बच्ची**—संज्ञा स्त्री० [?] पाजेब आदि का घुँघरू।

**बच्छ**—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] १. बच्चा। बेटा। २. गाय का बच्चा। बछड़ा।

**बच्छल*†**—वि० [सं० वत्सल] माता-पिता के समान प्यार करनेवाला। वत्सल।

**बच्छस*†**—संज्ञा पुं० [सं० वक्षस्] छाती।

**बच्छा†**—संज्ञा पुं० [सं० वत्स] [स्त्री० बछिया] गाय का बच्चा। बछड़ा। बछवा।

**बछ*†**—संज्ञा पुं० दे० "बच्छा"।

**बछड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बच्छ+ड़ा ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० बछड़ी, बछिया ] गाय का बच्चा।

**बछनाग**—संज्ञा पुं० [ सं० वत्सनाभ ] एक स्थावर विष। यह नेपाल में होनेवाले एक पौधे की जड़ है। सींगिया। तेलिया। मीठा विष।

**बछरा***-संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।

**बछरू**†—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।

**बछल***†—वि० दे० "वत्सल"।

**बछवा**‡—संज्ञा पुं० दे० "बछेड़ा"।

**बछेड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० वत्स ] घोड़े का बच्चा।

**बछेरू***—संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।

**बजंत्री**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाजा ] बाजा बजानेवाला। बजनियाँ।

**बजकना**—क्रि० अ० दे० "बजबजाना"।

**बजट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] आय-व्यय का अनुमान-पत्र।

**बजड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "बजरा"।

संज्ञा पुं० दे० "बाजरा"।

**बजना**—क्रि० अ० [ हिं० बाजा ] १. किसी प्रकार के आघात या बाजे आदि में से शब्द उत्पन्न होना। बोलना। २. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर इस प्रकार पड़ना कि शब्द उत्पन्न हो। ३. शस्त्रों का चलना। ४. अड़ना। हठ करना। जिद करना। ५. प्रख्यात होना। प्रसिद्ध होना।

**बजनियाँ**†—संज्ञा पुं० स्त्री० [ हिं० बजाना+इया ( प्रत्य० ) ] बाजा बजानेवाला।

**बजनी**—वि० [ हिं० बजना ] जो बजता हो।

**बजबजाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] तरल पदार्थ का सड़कर बुलबुले छोड़ना।

**बज्रमारा***†—वि०[हिं० वज्र+मारा] [ स्त्री० बज्रमारी ] वज्र से मारा हुआ। जिस पर वज्र पड़ा हो।

**बजरंग***—वि० [ सं० वज्राङ्ग ] वज्र के समान दृढ़ शरीरवाला।

**बजरंगबली**—संज्ञा पुं० [ सं० वज्राङ्ग + बली ] हनूमान्। महावीर।

**बजर***†—संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

**बजरबट्टू**—संज्ञा पुं० [ हिं० वज्र+बट्टा ] एक वृक्ष के फल का दाना या बीज जिसकी माला बच्चों को नजर से बचाने के लिए पहनाते हैं।

**बजरा**—संज्ञा पुं० [ सं० वज्रा ] एक प्रकार की बड़ी और पटी हुई नाव।

संज्ञा पुं० दे० "बाजरा"।

**बजरागि***—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

**बजरी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वज्र ] १. कंकड़ के छोटे टुकड़े। कंकड़ी। २. ओला। ३. किले आदि की दीवारों के ऊपर छोटा नुमायशी कँगूरा। ४. दे० "बाजरा"।

**बजवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बजवाना ] बजवाने की मजदूरी।

**बजवाना**—क्रि० स० [ हिं० बजाना का प्रे० ] किसी को बजाने में प्रवृत्त करना।

**बजवैया**—वि० [ हिं० बजाना ] बजानेवाला। जो बजाता हो।

**बजा**—वि० [ फ़ा० ] उचित। ठीक।

मुहा०—बजा लाना=१. पूरा करना। पालन करना। २. करना।

**बजागि***‡—संज्ञा स्त्री० [ हिं० वज्र+आगि ] वज्र की आग। विद्युत।

**बजाज**—संज्ञा पुं० [ अ० बज्जाज़ ] [ स्त्री० बजाजिन ] कपड़े का व्यापारी। कपड़ा बेचनेवाला।

**बजाजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ बजाजों की दूकानें हों।

**बजाजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] कपड़ा बेचने का व्यापार। बजाज का काम।

**बजाना**—क्रि० स० [ हिं० बाजा ] १ किसी बाजे आदि पर आघात पहुँचाकर अथवा हवा का जोर पहुँचाकर उससे शब्द उत्पन्न करना। २. चोट पहुँचाकर आवाज निकालना।

मुहा०—बजाकर=डंका पीटकर। खुल्लमखुल्ला। ठोंकना बजाना=देख भालकर भली भाँति जाँचना।

३. किसी चीज से मारना। आघात पहुँचाना।

क्रि० स० पूरा करना।

**बजाय**—अव्य० [फ़ा०] स्थान पर। बदले में।

**बजार***‡—संज्ञा पुं० दे० "बाजार"।

**बजूला**—संज्ञा पुं० दे० "बिजूला"।

**बज्जर***†—संज्ञा पुं० दे० "वज्र"।

**बझना***†—क्रि० अ० [ सं० बद्ध ] १. बंधन में पड़ना। बँधना। २. ... फँसना। ३. हठ करना। ... उलझना। फिर... क्रि० स० [ हिं० बझना ... क्रि० अ० ... का रूप ] बंधन में लाना। ...ना। ...। फँसाना।

**...गार**—संज्ञा पुं० [ हिं० बझना ] ... जहाँ गौएँ ... की क्रिया या भाव। उलझाव।

**...गारना**—... [ हिं० बगरना ] ... स्त्री० दे० "बझाव"। ...ना। बिखेरना। ... —क्रि० स० दे० "बझाना"।

**बट**—संज्ञा पुं० [ सं० वट ] १. दे० "वट"। २. बड़ा नाम का पकवान। बरा। ३. गोला। गोल वस्तु। ४. बट्टा। लोढ़िया। ५. बाट। बटखरा। ६. रस्सी की ऐंठन। बटाई। बल।

संज्ञा पुं० [ हिं० बाट ] मार्ग।

रास्ता ।

**बटई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्त्तक ] बटेर चिड़िया ।

**बटखरा**—संज्ञा पुं० [ सं० वटक ] पत्थर, लोहे आदि का वह टुकड़ा जो वस्तुओं के तौलने के काम में आता है । बाट ।

**बटन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बटना ] बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव । ऐंठन । बल ।
संज्ञा पुं० [ अं० ] पहनने के कपड़ों में चिपटे आकार की कड़ी गोल घुंडी ।

**बटना**—क्रि० स० [ सं० वट=बटना ] कई तागों या तारों को एक साथ मिलाकर घुमाना जिसमें वे मिलकर एक हो जायँ ।
क्रि० अ० [ हिं० बट्टा ] सिल पर रखकर पीसा जाना । पिसना ।
संज्ञा पुं० [ सं० उद्वर्त्तन, प्रा० उव्वट्टन ] सरसों, चिरौंजी आदि का लेप जो शरीर पर मला जाता है । उबटन ।

**बटपरा***—संज्ञा पुं० दे० "बटमार" ।

**बटपार**—संज्ञा पुं० दे० "बटमार" ।

**बटमार**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाट+मारना ] मार्ग में मारकर छीन लेनेवाला । ठग । डाकू ।

**बटला**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्तुल ] बड़ी बटलोई । देग । देगचा ।

**बटली, बटलोई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बटला ] दाल, चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बरतन । देग । देगची । पतीली ।

**बटवार**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाट+वाला ] १. पहरेदार । २. रास्ते का कर उगाहनेवाला ।

**बटा***—संज्ञा पुं० [ सं० वटक ] [ स्त्री० अल्पा० बटिया ] १. गोल । वर्त्तुलाकार वस्तु । २. गेंद । ३. ढोंका । रोड़ा । ढेला । ४. बटोही । पथिक ।

**बटाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बटना ] बटने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।
संज्ञा स्त्री० दे० "बँटाई" ।

**बटाऊ**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाट+आऊ (प्रत्य०) ] बाट चलनेवाला । पथिक । मुसाफिर ।
मुहा०—बटाऊ होना=चलता होना । चल देना ।

**बटाक***—वि० [ हिं० बड़ा+क ? ] बड़ा । ऊँचा ।

**बटाना**†—क्रि० अ० [ पू० हिं० पटाना =बंद होना ] बंद हो जाना । जारी न रहना ।

**बटिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बटा=गोला ] १ छोटा गोला । २. छोटा बट्टा । लोढ़िया ।

**बटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वटी ] १. गोली । २. बड़ा नाम का पकवान ।
*संज्ञा स्त्री० [ सं० वाटी ] वाटिका । उपवन ।

**बटुआ**—संज्ञा पुं० दे० "बटुवा" ।
संज्ञा पुं० [ हिं० बटना ] सिल आदि पर पीसा हुआ ।

**बटुक**—संज्ञा पुं० दे० "बटुक" ।

**बटुरना**†—क्रि० अ० [ सं० वर्तुल+ना (प्रत्य०) ] १. सिमटना । सरककर थोड़े स्थान में होना । २. इकट्ठा होना । एकत्र होना ।

**बटुवा**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्तुल ] १. एक प्रकार की गोल थैली जिसके भीतर कई खाने होते हैं । २. बड़ी बटलोई या देग ।

**बटेर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्त्तक ] लवा की तरह की एक छोटी चिड़िया ।

**बटेरबाज़**—संज्ञा पुं० [ हिं० बटेर+फ़ा० बाज़ ] बटेर पालने या लड़ानेवाला ।

**बटोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० बटोरना ] १. बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना । जमावड़ा । २. वस्तुओं का ढेर ।

**बटोरना**—क्रि० स० [ हिं० बटुरना ] १. बिखरी हुई वस्तुओं को समेटकर एक स्थान पर करना । समेटना । २. चुनकर एकत्र करना । जुटाना ।

**बटोही**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाट+वाह (प्रत्य० ) ] रास्ता चलनेवाला । पथिक । मुसाफिर ।

**बट्ट**—संज्ञा पुं [ हिं० बटा ] १. बटा । गोला । २. गेंद ।

**बट्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० वार्त्त, प्रा० वाट्ट=बानयाई ] १. वह कमी जो व्यवहार या लेन-देन में किसी वस्तु के मूल्य में हो जाता है । २. दलाली । दस्तूरी । ३. खोटे सिक्के, धातु आदि के बदलने में वह कमी जो उसके पूरे मूल्य में हो जाती है ।
मुहा०—बट्टा लगाना=दाग या कलंक लगाना ।
४. टोटा । घाटा । नुकसान । हानि ।
संज्ञा पुं० [ सं० वटक ] [ स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया ] १. कूटने या पीसने का पत्थर । लोढ़ा । २. पत्थर आदि का गोल टुकड़ा । ३. छोटा गोल डिब्बा ।

**बट्टाखाता**—संज्ञा पुं० [ हिं० बट्टा+खाता ] डूबी हुई रकम का लेखा या बही ।

**बट्टाढाल**—वि० [ हिं० बट्टा+ढालना ] खूब समतल और चिकना ।

**बट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बट्टा ] १.

छोटा बट्टा। गोल छोटा टुकड़ा। २. कूटने-पीसने का पत्थर। लोढ़िया। ३. बड़ी टिकिया।

बट्टू—संज्ञा पुं० दे० "बजरबट्टू"।
संज्ञा पुं० [ सं० वर्वट ] बोड़ा। लोबिया।

बड़बोला—वि० [ हिं० बड़ा + फ़ा० बाज ] [ संज्ञा बड़बाजी ] १. आडंबर। २ धूर्त। चालाक।

बड़—संज्ञा स्त्री० [ अनु० बड़बड़ ] बकवाद।
संज्ञा पुं० [ सं० वट ] बरगद का पेड़।
†वि० दे० "बड़ा"।

बड़क—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बड़ ] १. डींग। शेखी। २. दे० "बड़"।

बड़प्पन—संज्ञा पुं० [ हिं० बड़ा + पन ] बड़ाई। श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव। महत्त्व।

बड़बड़—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बकवाद। प्रलाप।

बड़बड़ाना—क्रि० अ० [ अनु० बड़बड़ ] १. बक बक करना। बकवाद करना। २. कोई बात बुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना। बुड़बुड़ाना।

बड़बड़िया—वि० [ हिं० बड़ ] व्यर्थ की बातें करनेवाला। बकवादी।

बड़बेरी—संज्ञा स्त्री० दे० "झड़बेरी"।

बड़बोल, बड़बोला—वि० [ हिं० बड़ा + बोल ] बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला। डींटनेवाला।

बड़भाग, बड़भागी—वि० [ हिं० बड़ा + भाग्य ] बड़े भाग्यवाला। भाग्यवान्।

बड़रा—वि० [ हिं० बड़ा ] [ स्त्री० बड़री ] बड़ा। विशाल।

बड़वाग्नि—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्राग्नि। समुद्र के भीतर की आग या ताप।

बड़वानल—संज्ञा पुं० दे० "बड़वाग्नि"।

बड़वार†—वि० दे० "बड़ा"।

बड़हना†—संज्ञा पुं० [ हिं० बड़ी + धान ] एक प्रकार का धान।

बड़हल—संज्ञा पुं० [ हिं० बड़ा + फल ] एक बड़ा पेड़ जिसके फल पकने पर अमरूद के बराबर गेरुए रंग के पर बड़े बेडौल होते हैं।

बड़हार—संज्ञा पुं० [ हिं० बर + आहार ] विवाह के पीछे बरातियों की पक्की ज्योनार।

बड़ा—वि० [ सं० वर्द्धन ] १. खूब लंबा-चौड़ा। अधिक विस्तार का। विशाल। बृहत्। महान्।
मुहा०—बड़ा घर=कैदखाना। कारागार।
२. जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक वयस् का। ३. अधिक परिमाण, विस्तार या अवस्था का। मान, माप या वयस् का। ४. गुरु। श्रेष्ठ। बुजुर्ग। ५. महत्त्व का। भारी। ६. बढ़कर। ज्यादा।
संज्ञा पुं० [ सं० वटक ] [ स्त्री० अल्पा० बड़ी ] एक पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल टिकियों को तलकर बनाया जाता है।

बड़ाई—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बड़ा + ई (प्रत्य०) ] १. बड़े होने का भाव। परिमाण या विस्तार का आधिक्य। २ बड़प्पन। श्रेष्ठता। बुजुर्गी। ३. परिमाण या विस्तार। ४. महिमा। प्रशंसा। तारीफ।
मुहा०—बड़ाई देना=आदर करना। सम्मान करना। बड़ाई मारना=शेखी हाँकना।

बड़ा दिन—संज्ञा पुं० [ हिं० बड़ा + दिन ] २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों का त्योहार है। इसी तिथि को ईसा मसीह का जन्म हुआ था।

बड़ी—वि० स्त्री० दे० "बड़ा"।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० बड़ा ] आलू, पेठा आदि मिली हुई पीठी की छोटी छोटी सुखाई हुई टिकिया। बरी। कुम्हड़ौरी।

बड़ीमाता—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बड़ी + माता ] शीतला। चेचक।

बड़ेरर—संज्ञा पुं० [ देश० ] बवंडर। चक्रवात।

बड़ेरा*†—वि० [ हिं० बड़ा+एरा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० बड़ेरी ] १. बड़ा। बृहत्। महान्। २. प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० [ सं० वडभि ] [ स्त्री० अल्पा० बड़ेरी ] छाजन में बीच की लकड़ी।

बड़ौना†*—संज्ञा पुं० [हिं० बड़ापन] प्रशंसा।

बढ़—संज्ञा स्त्री० दे० "बढ़ती"।

बढ़ई—संज्ञा पुं० [ सं० वर्द्धकि, प्रा० बड्ढइ ] काठ को गढ़कर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला।

बढ़ती—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बढ़ना + ती (प्रत्य०) ] १. तौल या गिनती में अधिकता। मात्रा का आधिक्य। २. धन-संपत्ति आदि का बढ़ना। उन्नति।

बढ़ना—क्रि० अ० [ सं० वर्द्धन ] १. विस्तार या परिमाण में अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना। २. गिनती या नाप-तौल में ज्यादा होना। ३. मर्यादा, अधिकार, विद्या-बुद्धि, सुख-संपत्ति आदि में अधिक होना। तरक्की

करना ।

मुहा०—बढ़कर चलना=इतराना । घमंड करना ।

४. किसी स्थान से आगे जाना । अग्रसर होना । चलना । ५. किसी से किसी बात में अधिक हो जाना । ६. लाभ होना । मुनाफे में मिलना । ७. दूकान आदि का समेटा जाना । बंद होना । ८. चिराग का बुझना ।

क्रि० स० [ हिं० ] बुझाना । विस्तृत करना ।

**बढ़नी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्द्धनी ] झाड़ू ।

**बढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बढ़ाना ] १. बढ़ाने की क्रिया या भाव । २. बढ़ाने की मजदूरी ।

**बढ़ाना**—क्रि० स० [ हिं० बढ़ना ] १. विस्तार या परिमाण में अधिक करना । विस्तृत करना । २. गिनती या नाप-तौल आदि में ज्यादा करना । ३. फैलाना । लंबा करना । ४. अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना । ५. उन्नत करना । तरक्की देना । ६. आगे गमन कराना । चलाना । ७. सस्ता बेचना । ८. विस्तार करना । फैलाना । ९. दूकान आदि बंद करना । १०. दीपक । निर्वाण करना । चिराग बुझाना ।

क्रि० अ० चुकना । समाप्त होना ।

**बढ़ाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बढ़ना + आव ( प्रत्य० ) ] बढ़ने की क्रिया या भाव ।

**बढ़ावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बढ़ाव ] १. किसी काम की ओर मन बढ़ानेवाली बात । प्रोत्साहन । उत्तेजना । २. साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात ।

**बढ़िया**—वि० [ हिं० बढ़ना ] उत्तम । अच्छा ।

**बढ़ैया**†—वि० [ हिं० बढ़ाना, बढ़ना ] १. बढ़ानेवाला । २. बढ़नेवाला ।

संज्ञा पुं० दे० "बढ़ई" ।

**बढ़ोतरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाढ़ + उत्तर ] १. उत्तरोत्तर वृद्धि । बढ़ती । २. उन्नति ।

**बणिक्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यापार, व्यवसाय करनेवाला । बनिया । सौदागर । २. बेचनेवाला । विक्रेता ।

**बणिज**—संज्ञा पुं० दे० "वणिक्" ।

**बतकहाव**—संज्ञा पुं० दे० "बतकही" ।

**बतकही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बात + कहना ] १. बातचीत । वार्तालाप । २. वाद-विवाद ।

**बतख**—संज्ञा स्त्री० [ अ० बत ] हंस की जाति की पानी की एक सफेद प्रसिद्ध चिड़िया ।

**बतचल**—वि० [ हिं० बात + चलाना ] बकवादी ।

**बतबढ़ाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बात + बढ़ाव ] व्यर्थ बात बढ़ाना । झगड़ा-बखेड़ा बढ़ाना ।

**बतबाती***—संज्ञा स्त्री० [ ? ] बेबात की बात, छेड़छाड़ ।

**बतरस**—संज्ञा पुं० [ हिं० बात + रस ] बातचीत का आनंद । बातों का मजा ।

**बतर***—वि० दे० "बदतर" ।

**बतरान***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बात ] १. बातचीत । २. बोली ।

**बतराना**†—क्रि० अ० [ हिं० बात + आना ( प्रत्य० ) ] बातचीत करना ।

**बतरौहाँ***†—वि० [ हिं० बात ] [ स्त्री० बतरौहीं ] बातचीत की ओर प्रवृत्त । वार्तालाप का इच्छुक ।

**बतलाना**—क्रि० स० दे० "बताना" ।

**बताना**—क्रि० स० [ हिं० बात + ना ( प्रत्य० ) ] १. कहना । अभिज्ञ करना । जताना । २. समझाना बुझाना । हृदयंगम कराना । ३. निर्देश करना । दिखाना । प्रदर्शित करना । ४. नाचने-गाने में हाथ उठाकर भाव प्रकट करना । भाव बताना । ५. ठीक करना । मार-पीटकर दुरुस्त करना ।

**बताशा**—संज्ञा पुं० दे० "बतासा" ।

**बतास**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वातास ] १. बात का रोग । गठिया । २. वायु । हवा ।

**बतासा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बतास = हवा ] १. एक प्रकार की मिठाई जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है । २. एक प्रकार की आतशबाजी । ३. बुलबुला । बुद्बुद ।

**बतिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्तिका, प्रा० बत्तिआ=बत्ती ] छोटा, कोमल और कच्चा फल ।

**बतियाना**†—क्रि० अ० [ हिं० बात ] बातचीत करना ।

**बतियार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बात ] बातचीत ।

**बतीसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बत्तीसी" ।

**बतू**—संज्ञा पुं० दे० "कलाबत्तू" ।

**बतौर**—क्रि० वि० [ अ० ] १. तरह पर । रीति से । तरीके पर । २. सदृश । समान ।

**बतौरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वात ] मांस का उभड़ा हुआ अंश । गुम्मड़ ।

**बत्तक**—संज्ञा स्त्री० दे० "बतख" ।

**बत्तिस**†—वि० दे० "बत्तीस" ।

**बत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्ति, प्रा० बत्ति ] १. चिराग जलाने के लिये रुई या सूत का बटा हुआ लच्छा ।

२. मोमबत्ती। ३. दीपक। चिराग। रोशनी। प्रकाश। ४. फलीता। पलीता। ५. पतले छड़ या सलाई के आकार में बनाई हुई कोई वस्तु। ६. फूस का पूला जो छप्पन में लगाते हैं। मूठा। ७. कपड़े की वह लंबी धज्जी जो घाव में मवाद साफ करने के लिए भरते हैं।

**बत्तीस**—वि० [ सं० द्वात्रिंशत् प्रा० बत्तीसा ] जो गिनती में तीस से दो ज्यादा हो।
संज्ञा पुं० तीस से दो अधिक की संख्या या अंक। ३२।

**बत्तीसा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बत्तीस ] सुस्टई के बत्तीस मसालों का एक प्रकार का लड्डू।

**बत्तीसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बत्तीस ] १. बत्तीस का समूह। २. मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति।

**बथुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० वास्तुक ] एक छोटा पौधा जिसके पत्तों का साग खाते हैं।

**बद**—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्ध्म=गिलटी] गोहिया। बाघी रोग।
वि० [ फ़ा० ] १. बुरा। खराब। निकृष्ट। २. दुष्ट। खल। नीच।
संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्त ] पलटा। बदला।
मुहा०—बद में=एवज में। बदले में।

**बद-अमली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बद+अ० अमल ] राज्य का कुप्रबंध। अशांति। हलचल।

**बद-इंतजामी**—संज्ञा स्त्री० [ अ०+फ़ा० ] कुप्रबंध। अव्यवस्था।

**बदकार**—वि० [ फ़ा० ] १. कुकर्मी। २. व्यभिचारी।

**बदकिस्मत**—वि० [फ़ा० बद+ अ० किस्मत] बुरी किस्मत का। मंदभाग्य। अभागा।

**बद-खत**—वि० [ अ०+फ़ा० ] लिखने में जिसके अक्षर अच्छे न हों।

**बद ख्वाह**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बदख्वाही ] बुरा चाहनेवाला। अशुभ-चिंतक।

**बद-गुमान**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बदगुमानी ] संदेह की दृष्टि से देख-नेवाला।

**बद-गो**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बद-गोई ] १. बुरी बातें कहनेवाला। २. निंदक।

**बदचलन**—वि० [ फ़ा० ] कुमार्गी। लंपट।

**बद-जबान**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बदजबानी ] गाली-गलौज बकनेवाला।

**बदजात**—वि० [ फ़ा० बद+अ० जात ] खोटा। नीच।

**बदतर**—वि० [फ़ा०] और भी बुरा। किसी की अपेक्षा बुरा।

**बददुआ**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०+अ०] शाप।

**बदन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] शरीर। देह।

**बदनसीब**—वि० [ फ़ा०+अ० ] अभागा।

**बदना**—क्रि० स० [सं० वद=कहना] १. कहना। वर्णन करना। २. मान लेना। स्वीकार करना। ३. नियत करना। ठहराना। निश्चित करना।
मुहा०—बदा होना=भाग्य में लिखा होना। बदकर ( कोई काम करना ) =१. जानबूझकर। पूरे हठ के साथ। २. ललकारकर।
४. बाजी लगाना। शर्त लगाना। ५. कुछ समझना। बड़ा या महत्त्व का मानना।

**बदनाम**—वि० [ फ़ा० ] जिसकी निंदा हो रही हो। कलंकित।

**बदनामी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] लोकनिंदा।

**बद-परहेज**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बदपरहेजी ] जो ठीक तरह से परहेज न करे।

**बदबू**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] दुर्गंध। बुरी गंध।

**बद-मस्त**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बदमस्ती ] नशे में चूर। मत्त।

**बदमाश**—वि० [ फ़ा० बद+अ० मआश=जीविका ] १. बुरे कर्म से जीविका करनेवाला। दुर्वृत्त। २. दुष्ट। पाजी। लुच्चा। ३. दुराचारी।

**बदमाशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बद+अ० मआश ] १. दुष्कर्म। खोटाई। २. दुष्टता। पाजीपन। ३. व्यभिचार।

**बदमिजाज**—वि० [ फ़ा० ] दुःस्व-भाव।

**बदरंग**—वि० [ फ़ा० ] १. भद्दे रंग का। २. जिसका रंग बिगड़ गया हो। विवर्ण।

**बदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेर का पेड़ या फल।
क्रि० वि० [ फ़ा० ] बाहर।

**बदरा**‡—संज्ञा पुं० [ हिं० ] बादल। मेघ।

**बद-रोब**—वि० [फ़ा०+अ०] [ संज्ञा बदरोबी ] १. जिसका कुछ रोब न हो। २. तुच्छ। ३. भद्दा।

**बदराह**—वि० [ फ़ा० ] १. कुमार्गी। बुरी राह पर चलनेवाला। २. दुष्ट। बुरा।

**बदरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेर का पौधा या फल।

**बदरिकाश्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीर्थ-विशेष जो हिमालय पर है। यहाँ नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है।

**बदरिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।

**बदरीनारायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।

**बदरौंहा**—वि० [ फ़ा० बद+री= चाल ] कुमार्गी। बदचलन।

संज्ञा पुं० [ हिं० बादर+औंहँ (प्रत्य०) ] बदली का आभास।

**बदल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. एक के स्थान पर दूसरा होना। परिवर्त्तन। हेर-फेर। २. पलटा। एवज। प्रतिकार।

**बदलना**—क्रि० अ० [ हिं० बदल+ना (प्रत्य०) ] १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न हो जाना। परिवर्त्तित होना। २. एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। ३. एक जगह से दूसरी जगह तैनात होना।

क्रि० स० १. जैसा रहा हो, उससे भिन्न करना। परिवर्त्तित करना। २. एक वस्तु के स्थान की पूर्त्ति दूसरी वस्तु से करना।

मुहा०—बात बदलना=पहले एक बात कहकर फिर उससे विरुद्ध दूसरी बात कहना।

३. विनिमय करना।

**बदलवाना**—क्रि० स० [ हिं० 'बदलना' का प्रे० ] बदलने का काम कराना।

**बदला**—संज्ञा पुं० [ हिं० बदलना ] १. परस्पर लेने और देने का व्यवहार। विनिमय। २. एक वस्तु की हानि या स्थान की पूर्ति के लिए उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु। पलटा। एवज। ३. एक पक्ष के किसी व्यवहार के उत्तर में दूसरे पक्ष का वैसा ही व्यवहार। पलटा। एवज। प्रतीकार।

मुहा०—बदला लेना=किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना।

४. किसी कर्म का परिणाम। नतीजा।

**बदलाना**—क्रि० स० दे० "बदलवाना"।

**बदली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बादल का अल्पा० ] फैलकर छाया हुआ बादल। घन-विस्तार।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बदलना ] १. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। तबदीली। तबादला।

**बदलौवल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बदलना ] अदल-बदल। हेर-फेर।

**बदशकल**—वि० [ फ़ा० ] भद्दा। कुरूप।

**बदस्तूर**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] जैसा था या रहता है, वैसा ही। जैसे का तैसा। ज्यों का त्यों।

**बदहजमी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] अपच। अजीर्ण

**बदहवास**—वि० [ फ़ा० ] १. बेहोश। अचेत। २. व्याकुल। विकल। उद्विग्न।

**बदा**—वि० [ हिं० बदना ] भाग्य में लिखा हुआ।

**बदान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बदना ] बदे जाने की क्रिया या भाव।

**बदाबदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बदना ] दो पक्षों की एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ। लाग-डाँट।

**बदाम**—संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।

**बदि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्त्त ] पलटा। बदला।

अव्य० १. बदले में। एवज में। २. लिए। वास्ते। खातिर।

**बदी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] बुराई। अपकार। अहित।

**बदूख**—संज्ञा स्त्री० दे० "बंदूक"।

**बदौलत**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] १. द्वारा। अवलंब से। कृपा से। २. कारण से।

**बद्दर, बद्दल**—संज्ञा पुं० दे० "बादल"।

**बद्ध**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा बद्धता ] १. बँधा हुआ। जो बाँधा गया हो। २. संसार के बंधन में पड़ा हुआ। जो मुक्त न हो। ३. जिसके लिए कोई रोक हो। ४. जो किसी हद हिसाब के भीतर रखा गया हो। ५. निर्धारित। ठहराया हुआ।

**बद्धकोष्ठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मल अच्छी तरह न निकलने का रोग। कब्ज। कब्जियत।

**बद्धपरिकर**—वि० [ सं० ] कमर बाँधे हुए। तैयार।

**बद्धांजलि**—वि० [ सं० ] जो हाथ जोड़े हुए हो। करबद्ध।

**बद्धी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बद्ध ] १. वह जिससे कुछ कसें या बाँधें। डोरी। रस्सी। तसमा। २. चार लड़ों का एक गहना।

**बध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हनन। हत्या।

**बधना**—क्रि० स० [ सं० बध+ना (प्रत्य०) ] मार डालना। बध करना। हत्या करना।

संज्ञा पुं० [ सं० वर्द्धन=मिट्टी का गडुआ ] मुसलमानों का मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

**बधाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्द्धन ] १. वृद्धि। बढ़ती। २. मंगल अवसर का गाना बजाना। मंगलाचार। ३. आनंद। मंगल। उत्सव। ४. किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या सँदेसा। मुबारकबाद।

**बधाना**—क्रि० स० [ हिं० "बधना"

का प्रे० ] वध कराना। दूसरे से मरवाना।

**बधाया**—संज्ञा पुं० दे० "बधाई"।

**बधावन, बधावना, बधावरा**—संज्ञा पुं० दे० "बधावा"।

**बधावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बधाई ] १. बधाई। २. वह उपहार जो संबंधियों या इष्ट-मित्रों के यहाँ से मंगल अवसरों पर आता है।

**बधिक**—संज्ञा पुं० [ सं० वधक ] [ स्त्री० बधिकता ] १. बध करनेवाला। हत्यारा। २. जल्लाद। ३. व्याध। बहेलिया।

**बधिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० बध=मारना ] वह बैल या और कोई पशु जो अंडकोश निकालकर षंढकर दिया गया हो। खस्सी। आखता।

**मुहा०**—बधिया बैठना=बहुत हानि होना।

**बधिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जिसमें सुनने की शक्ति न हो। बहरा।

**बधूटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वधूटी ] १. पुत्र की स्त्री। पतोहू। २. सुहागिन स्त्री। ३. नई आई हुई बहू।

**बघूरा**|—संज्ञा पुं० [ हिं० बहुधूर ] बगूला। बवंडर।

**बधैया***—संज्ञा स्त्री० दे० "बधाई"।

**बध्य**—वि० [ सं० ] मार डालने के योग्य।

**बन**—संज्ञा पुं० [ सं० वन ] १. जंगल। कानन। अरण्य। २. समूह। ३. जल। पानी। ४. बगीचा। बाग। ५. कपास का पौधा। ६. दे० "वन"।

**बन-कंडा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बन+कंडा ] गोबर के आप से आप सूख जाने से बना हुआ कंडा।

**बनक***|—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनना ] १. सज-धज। सजावट। २. बाना। वेश। भेस।

**बनकट**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बाँस।

**बनकटा**—वि० [ हिं० बन ] जंगली।

**बनकर**—संज्ञा पुं० [ सं० वनकर ] जंगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि की आमदनी।

**बनखंड**—संज्ञा पुं० [ सं० वनखंड ] जंगली प्रदेश।

**बनखंडी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बन+खंड=टुकड़ा ] १. बन का कोई भाग। २. छोटा सा बन।

संज्ञा पुं० बन में रहनेवाला।

**बनचरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की मछली।

**बनचर**—संज्ञा पुं० [ सं० वनचर ] १. जंगल में रहनेवाला पशु। २. जंगली आदमी।

**बनचारी**—वि० [ सं० वनचारिन् ] १. बन में घूमनेवाला। २. बन में रहनेवाला।

**बनज**—संज्ञा पुं० [ सं० वनज ] १. कमल। २. जल में होनेवाला पदार्थ।

संज्ञा पुं० [ सं० वाणिज्य ] वाणिज्य। व्यापार।

**बनजना***—क्रि० अ० [ हिं० बनज ] व्यापार या रोजगार करना।

**बनजात**—संज्ञा पुं० [ सं० वनजात ] कमल।

**बनजारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बनिज+हारा ] १. वह व्यक्ति जो बैलों पर अन्न लादकर बेचने के लिए एक देश से दूसरे देश को जाता है। टँड़िया। बंजारा। २. व्यापारी।

**बनजी***|—संज्ञा पुं० [ सं० वाणिज्य ] १. व्यापार। रोजगार। २. व्यापारी।

**बनज्योत्स्ना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनज्योत्स्ना ] माधवी लता।

**बनत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनना+त (प्रत्य०) ] १. रचना। बनावट। २. अनुकूलता। सामंजस्य। मेल।

**बनताई***|—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बन+ताई (प्रत्य०) ] बन की सघनता या भयंकरता।

**बनतुलसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वन+तुलसी ] बबई नाम का पौधा। बबरी।

**बनद***—संज्ञा पुं० [ सं० घनद ] बादल।

**बनदाम**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनदाम ] बनमाला।

**बनदेवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनदेवी ] किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।

**बनधातु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी।

**बनना**—क्रि० अ० [ सं० वर्णन ] १. तैयार होना। रचा जाना।

**मुहा०**—बना रहना=१. जीता रहना। संसार में जीवित रहना। २. उपस्थित रहना।

२. काम में आने के योग्य होना। ३ जैसा चाहिए, वैसा होना। ४. किसी एक पदार्थ का रूप परिवर्तित करके दूसरा पदार्थ हो जाना। ५. किसी दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखनेवाला हो जाना। ६. कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। ७. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ८. वसूल होना। प्राप्त होना। ९ मरम्मत होना। दुरुस्त होना। १०. संभव होना। हो सकना। ११. निभना। पटना। मित्रभाव होना। १२. अच्छा, सुंदर या स्वादिष्ट होना। १३. सुयोग मिलना। सुअवसर मिलना। १४. स्वरूप धारण करना। १५. मूर्ख ठहरना। उपहासास्पद होना। १६. अपने आप को

अधिक योग्य या गंभीर प्रमाणित करना।

**मुहा०**—बनकर=अच्छी तरह। भली भाँति।

१७. सजना। सजावट करना।

**बननि***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनना ] १. बनावट। २. बनाव-सिंगार।

**बनपट**—संज्ञा पुं० [ सं० वन+पट ] वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ। कपड़ा।

**बनपाती***†—संज्ञा स्त्री० दे० "वनस्पति"।

**बनफ़्शा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

**बनबास**—संज्ञा पुं० [ सं० वनवास ] १. वन में बसने की क्रिया या अवस्था। २. प्राचीन काल का देशनिकाले का दंड।

**बनबासी**—संज्ञा पुं० [ सं० वनवासिन् ] १. वह जो वन में बसे। २. जंगली।

**बनबाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० वनवाहन ] नाव।

**बनबिलाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बन+बिलाव=बिल्ला ] बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जंगली जंतु।

**बनमानुस**—संज्ञा पुं० [ हिं० बन+मानुष ] मनुष्य से मिलता-जुलता कोई जंगली जंतु। जैसे—गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि।

**बनमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनमाला ] तुलसी, कुंद, मंदार, परजाता और कमल इन पाँच चीजों की बनी हुई माला।

**बनमाली**—संज्ञा पुं० [ सं० वनमाली ] १. वनमाला धारण करनेवाला। २. कृष्ण। ३. विष्णु। नारायण। ४. मेघ। बादल। ५. वह प्रदेश जिसमें घने वन हों।

**बनर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का अस्त्र।

**बनरखा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बन+रखना=रक्षा करना ] १. जंगल की रखवाली करनेवाला। वन-रक्षक। २. बहेलियों की एक जाति।

**बनरा***†—संज्ञा पुं० दे० "बंदर"। संज्ञा पुं० [ हिं० बनना ] १. वर। दूल्हा। २. विवाह-समय का एक प्रकार का गीत।

**बनराज, बनराय***†—संज्ञा पुं० [ सं० वनराज ] १. सिंह। शेर। २. बहुत बड़ा पेड़। ३. वृन्दाबन।

**बनरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनरा का स्त्री० ] नववधू। नई ब्याही हुई वधू।

**बनरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० वनरुह ] १. जंगली पेड़। २. कमल।

**बनवना***†—क्रि० स० दे० "बनाना"।

**बनबसन***—संज्ञा पुं० [ सं० वन-वसन ] वृक्षों की छाल का बना हुआ कपड़ा।

**बनवाना**—क्रि० स० [ हिं० बनाना का प्रे० रूप ] दूसरे को बनाने में प्रवृत्त करना।

**बनवारी**—संज्ञा पुं० [ सं० वनमाली ] श्रीकृष्ण।

**बनस्थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनस्थली ] जंगल का कोई भाग। बनखंड।

**बना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बनना ] [ स्त्री० बनी ] दूल्हा। वर।

संज्ञा पुं० [ ? ] 'दंडकला' नामक छंद।

**बनाइ (य)**—क्रि० वि० [ हिं० बनाकर=अच्छी तरह ] १. बिलकुल। अत्यंत। नितांत। २. भली भाँति। अच्छी तरह।

**बनाउरि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "बाणावली"।

**बनाग्नि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनाग्नि ] दावानल।

**बनात**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाना ] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

**बनाना**—क्रि० स० [ हिं० बनना का स० रूप ] १. रूप या अस्तित्व देना। रचना। तैयार करना।

**मुहा०**—बनाकर=खूब अच्छी तरह। भली भाँति।

२. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३. ठीक दशा या रूप में लाना। ४. एक पदार्थ के रूप को बदलकर दूसरा पदार्थ तैयार करना। ५. दूसरे प्रकार का भाव या संबंध रखनेवाला कर देना। ६. कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ७. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ८ उपार्जित करना। वसूल करना। प्राप्त करना। ९. मरम्मत करना। दोष दूर करके ठीक करना। १०. मूर्ख ठहराना। उपहासास्पद करना।

**बनाफर**—संज्ञा पुं० [ सं० वन्यफल ] ( ? ) क्षत्रियों की एक जाति।

**बनावंत, बनावनत***†—संज्ञा पुं० [ हिं० बनना+अबनना ] विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

**बनाम**—अव्य० [ फ़ा० ] नाम पर। नाम से। किसी के प्रति।

**बनाय**†—क्रि० वि० [ हिं० बनाकर=अच्छी तरह ] १. बिलकुल। २. अच्छी तरह से।

**बनार**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की अधिक

सीमा पर था ।

**बनाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बनना + आव ( प्रत्य० ) ] १. बनावट । रचना । २. शृंगार । सजावट । ३. तरकीब । युक्ति । तदबीर ।

**बनावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनाना + वट ( प्रत्य० ) ] १. बनने या बनाने का भाव । रचना । गढ़न । २. ऊपरी दिखावा । आडंबर ।

**बनावटी**—वि० [ हिं० बनावट ] बनाया हुआ । नकली । कृत्रिम ।

**बनावनहारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बनाना + हारा ( प्रत्य० ) ] १. बनानेवाला । रचयिता । २. वह जो बिगड़े हुए को बनावे ।

**बनावलि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बाणावलि ] बाणों की अवली या पंक्ति ।

**बनासपती, बनासपाती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनस्पति ] १. जड़ी, बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि । २. घास, पात-पात इत्यादि ।

**बनिक‡**—वि० [ हिं० बनाना ] समस्त । सब ।

**बनिज**—संज्ञा पुं० [ सं० वाणिज्य ] १. व्यापार । रोजगार । २. व्यापार की वस्तु । सौदा ।

**बनिजना*†**—क्रि० स० [ सं० वाणिज्य ] १. व्यापार करना । खरीदना और बेचना । २. अपने अधीन कर लेना ।

**बनिजारिन, बनिजारी*†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बंजारा ] बनजारा जाति की स्त्री ।

**बनित*†**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बनना] बानक । वेष । साज-बाज ।

**बनिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वनिता ] १. स्त्री । औरत । २. भार्या । पत्नी ।

**बनिया**—संज्ञा पुं० [ सं० वणिक् ] [ स्त्री० बनियाइन, बनैनी ] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति । व्यापारी । वैश्य । २. आटा, दाल आदि बेचनेवाला । मोदी ।

**बनियाइन**—संज्ञा स्त्री० [ अं० बेनियन ] जुर्राब की बुनावट की कुरती या बंडी जो शरीर से चिपकी रहती है । गंजी । बनिया की स्त्री ।

**बनिस्बत**—अव्य० [ फ़ा० ] अपेक्षा । मुकाबले में ।

**बनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बन ] १. वनस्थली । वन का एक टुकड़ा । २. वाटिका । बाग ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बना ] १. दुलहिन । २. स्त्री । नायिका ।

संज्ञा पुं० [ सं० वणिक् ] बनिया ।

**बनीनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बनैनी" ।

**बनीर***—संज्ञा पुं० [ सं० वानीर ] बेंत ।

**बनेठी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बन + सं० यष्टि ] पटेबाजों की वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरोंपर गोल लट्टू लगे रहते हैं ।

**बनैनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनिया ] बनिये की स्त्री । वैश्य स्त्री ।

**बनैला**—वि० [ हिं० बन + ऐला ( प्रत्य० ) ] जंगली । वन्य ।

**बनोबास*†**—संज्ञा पुं० दे० "बनवास" ।

**बनौटी**—वि० [ हिं० बन + औटी ( प्रत्य० ) ] कपास के फूल का सा । कपासी ।

**बनौरी‡**—संज्ञा स्त्री० [सं० घन=जल + ओला ] वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला । पत्थर ।

**बनौवा**—वि० दे० "बनावटी" ।

**बन्हि**—संज्ञा स्त्री० दे० "वह्नि" ।

**बप*†**—संज्ञा पुं० [ सं० वप्र ] बाप । पिता ।

**बपमार**—वि० [हिं० बाप + मारना] १. वह जो अपने पिता की हत्या करे । २. सबके साथ धोखा करनेवाला ।

**बपतिस्मा**—संज्ञा पुं० [ अं० बैप्टिज्म ] ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है ।

**बपना*†**—क्रि० स० [ सं० वपन ] बीज बोना ।

**बपु***—संज्ञा पुं० [ सं० वपु ] १. शरीर । देह । २. अवतार । ३. रूप ।

**बपुख***—संज्ञा पुं० [ सं० वपुस् ] शरीर । देह ।

**बपुरा†**—वि० [ सं० वराक ? ] बेचारा । गरीब ।

**बपौती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाप + औती ( प्रत्य० ) ] बाप से पाई हुई जायदाद ।

**बप्पा†**—संज्ञा पुं० [हिं० बाप] पिता । बाप ।

**बफारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाप + आरा ( प्रत्य० ) ] औषध-मिश्रित जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना ।

**बफौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाफ= भाप ] भाप से पकी हुई बरी ।

**बबर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बर्बरी देश का शेर । बड़ा शेर । सिंह ।

**बबा**—संज्ञा पुं० दे० "बाबा" ।

**बबुआ†**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाबू ] [ स्त्री० बबुई ] १. बेटे या दामाद के लिए प्यार का संबोधन शब्द । ( पूरब ) २. जमींदार । रईस ।

**बबूल**—संज्ञा पुं० [ सं० बब्बूर ] मझोले कद का एक प्रसिद्ध काँटेदार पेड़ ।

**बबूला**—संज्ञा पुं० १. दे० "बगूला"। २. दे० "बुलबुला"।

**बभूत**—संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूति"।

**बम**—संज्ञा पुं० [ अं० बॉंब ] विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना वह गोला जो शत्रुओं पर फेंकने के लिए बनाया जाता है।

**यौ०**—बम-मार।

संज्ञा पुं० [ अनु० ] शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द।

**मुहा०**—बम बोलना या बोल जाना= शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना। कुछ न रह जाना।

संज्ञा पुं० [ कनाड़ीबंबू=बाँस ] बग्घी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

**बमकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] बहुत शेखी हाँकना। डींग हाँकना।

**बमना*†**—क्रि० स० [ सं० वमन ] मुँह से उगलना। वमन करना। कै करना।

**बमपुलिस**—संज्ञा पुं० दे० "बंपुलिस"।

**बमबाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० बम+ फ़ा० बाज ] [ भा० बमबाजी ] शत्रुओं पर बम के गोले फेंकनेवाला।

**बममार**—वि० [ हिं० बम+मारना ] बम मारनेवाला।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा हवाई जहाज जिससे शत्रुओं पर बम के गोले फेंके जाते हैं।

**बमीठा**—संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।

**बमूजिब**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] अनुसार। मुताबिक।

**बम्हनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ब्राह्मण, हिं० बाम्हन ] १. छिपकिली की तरह का एक पतला कीड़ा। २. आँख का एक रोग। बिलनी।

**बयन*†**—संज्ञा पुं० [ सं० वचन ] वाणी। बात।

**बयना*†**—क्रि० स० [ सं० वपन ] बोना। बीज जमाना या लगाना।

क्रि० स० [सं० वचन] वर्णन करना। कहना।

संज्ञा पुं० दे० "बैना"।

**बयनी*†**—वि० [ हिं० बयन] बोलनेवाली।

**बयस**—संज्ञा स्त्री० दे० "वय"।

**बयस-सिरोमनि*†**—संज्ञा पुं० [सं० वयसशिरोमणि] युवावस्था। जवानी। यौवन।

**बया**—संज्ञा पुं० [ सं० वयन=बुनना ] गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।

संज्ञा पुं० [ अ० बायः=बेचनेवाला ] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।

**बयान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. बखान। वर्णन। जिक्र। २. हाल। विवरण। वृत्तांत।

**बयाना**—संज्ञा पुं० [ अ० बै+फ़ा० आना ( प्रत्य० ) ] किसी काम के लिए दिए जानेवाले पुरस्कार का कुछ अंश जो बातचीत पक्की करने के लिए दिया जाय। पेशगी।

**बयाबान**—संज्ञा पुं० दे० "बियाबान"।

**बयार, बयारि*†**—संज्ञा स्त्री० [सं० वायु ] हवा।

**बयारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू", "बयारि"।

**बयाला†**—संज्ञा पुं० [ सं० बाह्य+ आला ] १. दीवार में का वह छेद जिससे झाँककर बाहर की ओर की वस्तु देखी जा सके। २. ताख। आला। ३. गढ़ों में वह स्थान जहाँ तोपें लगी रहती हैं।

**बरंगा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] वह पटिया या कड़ी जिससे छत पाटते हैं।

**बर**—संज्ञा पुं० [ सं० वर ] १. वह जिसका विवाह होता हो। दूल्हा। दे० "वर"। २. आशीर्वाद-सूचक वचन। दे० "वर"।

वि० श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम।

**मुहा०**—बर परना=श्रेष्ठ होना।

संज्ञा पुं० [ सं० बल ] बल। शक्ति।

संज्ञा पुं० [ ? ] व्यापार, व्यवसाय आदि का कोई विशेष अंग। जैसे—पीतल की चीजों में बरतनों का बर, मूर्त्तियों का बर, खिलौनों का बर।

संज्ञा पुं० [ सं० वट ] वट वृक्ष। बरगद।

संज्ञा पुं० [ हिं० बल=सिकुड़न ] रेखा। लकीर।

संज्ञा पुं० [ ? ] किसी व्यापार या व्यवसाय की कोई विशेष शाखा।

**मुहा०**—बर खींचना=१. किसी विषय में बहुत दृढ़ता सूचित करना। २. जिद करना।

अव्य० [ फ़ा० ] ऊपर।

**मुहा०**—बर आना या पाना=बढ़कर निकलना। मुकाबले में अच्छा ठहरना।

वि० १ बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठ। २. पूरा। पूर्ण। ( आशा )

*अव्य० [ सं० वरं ] वरन्। बल्कि।

**बरई†**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाड़= क्यारी ] [ स्त्री० बरइन ] पान पैदा करने या बेचनेवाला। तमोली।

**बरकंदाज**—संज्ञा पुं० [ अ०+फ़ा० ] १. वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो। २. तोड़ेदार बंदूक

रखनेवाला सिपाही।

**बरकत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. किसी पदार्थ की बहुलता या आवश्यकता से अधिकता। बढ़ती। बहुतायत। २. लाभ। फायदा। ३. समाप्ति। अंत। ४. एक की संख्या। ५. धन-दौलत। ६. प्रसाद। कृपा।

**बरकती**—वि० [ अ० बरकत+ई (प्रत्य०) ] १. बरकतवाला। जिसमें बरकत हो। २. बरकत-संबंधी। बरकत का।

**बरकना**†—क्रि० अ० [ हिं० बरकाना ] १. कोई बुरी बात न होने पाना। निवारण होना। २. हटना। दूर रहना।

**बरकरार**—वि० [ फ़ा० बर+अ० क़रार ] १. कायम। स्थिर। २. उपस्थित। मौजूद।

**बरकाज**—संज्ञा पुं० [ सं० वर+कार्य ] विवाह।

**बरकाना**†—क्रि० अ० [ सं० वारण, वारक ] १. कोई बुरी बात न होने देना। निवारण करना। २. बहलाना। फुसलाना।

**बरख***†—संज्ञा पुं० [ सं० वर्ष ] बरस।

**बरखना**-क्रि० अ० दे० "बरसना"।

**बरखा***-संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

**बरखास***†-वि० दे० "बरखास्त"।

**बरखास्त**—वि० [ फ़ा० ] १. (सभा आदि) जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २. जो नौकरी से हटा या छुड़ा दिया गया हो। मौकूफ़।

**बरखिलाफ़**—क्रि० वि० [ फ़ा० बर+अ० ख़िलाफ़ ] प्रतिकूल। उलटा। विरुद्ध।

**बरग***—संज्ञा पुं० १. दे० "वर्ग"। २. दे० "वरक"।

**बरगद**—संज्ञा पुं० [ सं० वट, हिं० बड़ ] पीपल की जाति का एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। इसकी छाया बहुत घनी और ठंडी होती है। बड़ का पेड़।

**बरछा**—संज्ञा पुं० [ सं० ब्रश्चन=काटनेवाला ? ] [ स्त्री० बरछी ] भाला नामक हथियार।

**बरछैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० बरछा+ऐत (प्रत्य०) ] बरछा चलानेवाला। भाला-बर्दार।

**बरजन***†—क्रि० अ० [ सं० वर्जन ] मना करना। रोकना। निषेध करना।

**बरजनि***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्जन ] १. मनाही। २. रुकावट। ३. रोक।

**बरजबान**—वि० [ फ़ा० ] मुखाग्र। कंठस्थ।

**बरजोर**—वि० [ हिं० बल+फ़ा० ज़ोर ] १. प्रबल। बलवान्। जबरदस्त। २ अत्याचारी। बल प्रयोग करनेवाला।

क्रि० वि० जबरदस्ती। बलपूर्वक।

**बरजोरी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बरजोर ] जबरदस्ती। बलप्रयोग।

क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।

**बरणना**-क्रि० स० दे० "बरनना"।

**बरत**—संज्ञा पुं० दे० "व्रत"।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बरना=बटना ] १. रस्सी। २. नट की रस्सी जिस पर चढ़कर वह खेल करता है।

**बरतन**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्तन ] मिट्टी या धातु आदि की इस प्रकार बनी वस्तु कि उसमें खाने-पीने की वस्तु रख सकें। पात्र। भाँड़। भाँड़ा।

**बरतना**—क्रि० अ० [ सं० वर्तन ] व्यवहार करना। बरताव करना।

क्रि० स० काम में लाना। व्यवहार में लाना। इस्तेमाल करना।

**बरतरफ़**—वि० [ फ़ा० बर+अ० तरफ़ ] १. किनारे। अलग। एक ओर। २. नौकरी से छुड़ाया हुआ। मौकूफ़। बरखास्त।

**बरताना**—क्रि० स० [ सं० वर्तन या वितरण ] वितरण करना। बाँटना।

**बरताव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बरतना का भाव ] बरतने का ढंग। व्यवहार।

**बरती**—वि० [ सं० व्रतिन्, हिं० व्रती ] जिसने उपवास किया या व्रत रखा हो।

**बरतोर**†—संज्ञा पुं० दे० "बाल-तोड़"।

**बरदाना**†—क्रि० स० [ हिं० बरधा=बैल ] गौ, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का उनकी जाति के नर-पशुओं से संयोग कराना। जोड़ा खिलाना।

क्रि० अ० गौ, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं का अपनी जाति के नर-पशुओं से जोड़ा खाना।

**बरदार**-वि० [ फ़ा० ] १. वहन करनेवाला। ढोनेवाला। धारण करनेवाला। २. पालन करनेवाला। माननेवाला।

**बरदाश्त**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सहन करने की क्रिया या भाव। सहन।

**बरध-मुतान**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोमूत्रिका"।

**बरधा**—संज्ञा पुं० [ सं० बलीवर्द ] बैल।

**बरधाना**—क्रि० स० अ० दे० "बरदाना"।

**बरन***—संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

**बरनन***†—संज्ञा पुं० दे० "वर्णन"।

**बरनना***†—क्रि० स० [ सं० वर्णन ] वर्णन करना। बयान करना।

**बरना**—क्रि० स० [ सं० वरण ] १. वर या वधू के रूप में ग्रहण करना। ब्याहना। २. कोई काम करने के लिए

किसी को चुनना या नियुक्त करना। २. दान देना।

‡क्रि० अ० दे० "बलना"।

**बरनेत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरण ] विवाह की एक रीति।

**बरपा**—वि० [ फ़ा० ] खड़ा हुआ। उठा हुआ। मचा हुआ। ( झगड़ा, आफत )

**बरफ़**—संज्ञा स्त्री० दे० "बर्फ़"।

**बरफ़ानी**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें या जिस पर बरफ हो।

**बरफी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बरफ ] एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।

**बरफीला**—वि० दे० "बरफानी"।

**बरबंड**‡—वि० [ सं० बलवंत ] १. बलवान्। ताकतवर। २. प्रतापशाली। ३. उद्दंड। उद्धत। ४. प्रचंड। प्रखर।

**बरबट***—क्रि० वि० दे० "बरबस"।

**बरबर**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बक-बक।

संज्ञा पुं० दे० "बर्बर"।

**बरबस**—क्रि० वि० [ सं० बल+वश] १. बलपूर्वक। जबरदस्ती। हठात्। २. व्यर्थ।

**बरबाद**—वि० [ फ़ा० ] नष्ट। चौपट।

**बरबादी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] नाश। तबाही।

**बरम***—संज्ञा पुं० [ सं० वर्म ] जिरह बक्तर। कवच। शरीर-त्राण।

**बरमा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] [ स्त्री० अल्पा० बरमी ] लकड़ी आदि में छेद करने का, लोहे का एक प्रसिद्ध औजार। भारत के पूर्व का एक देश।

**बरमी**—संज्ञा पुं० [ हिं० बरमा+ई (प्रत्य०) ] बरमा देश का निवासी। छोटा बरमा।

संज्ञा स्त्री० बरमा देश की भाषा।

वि० बरमा-संबंधी। बरमा देश का।

**बरम्हा**—संज्ञा पुं० १. दे० "ब्रह्मा"। २. दे० "बरमा"।

**बरम्हाना***†—क्रि० [ सं० ब्रह्म ] ( ब्राह्मण का ) आशीर्वाद देना।

**बरम्हाव***†—संज्ञा पुं० [ सं० ब्रह्म+आव (प्रत्य०) ] १. ब्राह्मणत्व। २. ब्राह्मण का आशीर्वाद।

**बरवट**—संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली" (रोग)।

**बरवै**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १९ मात्राओं का एक छंद। ध्रुव। कुरंग।

**बरषना***†—क्रि० अ० दे० "बरसना"।

**बरषा***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्षा ] १. पानी बरसना। वृष्टि। २. वर्षा-काल। बरसात।

**बरषाना***†—क्रि० स० दे० "बरसाना"।

**बरषासन***†—संज्ञा पुं० [ सं० वर्षाशन ] एक वर्ष की भोजन-सामग्री।

**बरस**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्ष ] बारह महीनों या ३६५ दिनों का समूह। वर्ष। साल।

**बरसगाँठ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बरस+गाँठ ] वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। जन्म-दिन। सालगिरह।

**बरसना**—क्रि० स० [ सं० वर्षण ] १. वर्षा का जल गिरना। मेह पड़ना। २. वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना। ३. बहुत अधिक मात्रा में चारों ओर से आना।

**मुहा०**—बरस पड़ना=बहुत अधिक क्रुद्ध होकर डाँटने-डपटने लगना। ४. बहुत अच्छी तरह झलकना। खूब प्रकट होना। ५. दाँए हुए गल्ले का इस प्रकार हवा में उड़ाया जाना जिसमें दाना अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाया जाना।

**बरसाइत**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वट+सावित्री ] जेठ बदी अमावस, जिस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री का पूजन करती हैं।

**बरसात**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्षा ] सावन-भादों के दिन जब वर्षा होती है। वर्षा-काल। वर्षा-ऋतु।

**बरसाती**—वि० [ सं० वर्षा ] बरसात का।

संज्ञा पुं० [ हिं० बरसात ] एक प्रकार का कपड़ा जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भीगता। घर या बंगले के सामने वह स्थान जहाँ गाड़ी, मोटर इत्यादि खड़े होते हैं।

**बरसाना**—क्रि० स० [ हिं० बरसना का प्रे० ] १. वर्षा करना। वृष्टि करना। २. वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सा गिराना। ३. बहुत अधिक संख्या या मात्रा में चारों ओर से प्राप्त कराना। ४. दाँए हुए अनाज को इस प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय। ओसाना। डाली देना।

**बरसायत**—संज्ञा स्त्री० दे० "बरसाइत"।

**बरसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बरस+ई ( प्रत्य० ) ] मृतक के उद्देश्य से किया जानेवाला वार्षिक श्राद्ध।

**बरसीला**—वि० [ हिं० बरसना ] बरसनेवाला।

**बरसौहाँ**—वि० [ हिं० बरसना+औहाँ ( प्रत्य० ) ] बरसनेवाला।

**बरहा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहा ] [ स्त्री० अल्पा० बरही ] खेतों में सिंचाई के लिए बनी हुई छोटी

बाली।

संज्ञा पुं० [ देश० ] मोटा रस्सा।

संज्ञा पुं० [ सं० बर्हि ] मोर। मयूर।

**बरही**—संज्ञा पुं० [ सं० बर्हि ] १. मयूर। मोर। २. साही नाम का जंतु। ३. मुरगा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बारह ] १. प्रसूता का वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होती हैं।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा। २. जलाने की लकड़ी आदि का भारी बोझ।

**बरहीपीड़***†—संज्ञा पुं० [ सं० बर्हि-पीड़ ] मोर के परों का बना हुआ मुकुट। मोर-मुकुट।

**बरहीमुख***†—संज्ञा पुं० [सं० बर्हि-मुख ] देवता।

**बरहौं**—संज्ञा पुं० दे० "बरही"।

**बरह्मंड**—संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

**बरह्मावना**—क्रि० स० [ सं० ब्रह्म+ अपना ] आशीर्वाद देना। असीस देना।

**बरांडी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ब्रांडी ] एक प्रकार की विलायती शराब।

**बरा**—संज्ञा पुं० [ सं० वटी ] उड़द को पीसी हुई दाल का बना हुआ एक प्रकार का पक्वान्न। बड़ा।

संज्ञा पुं० [ ? ] भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। बहुँटा। टाँड़।

**बराई**—संज्ञा स्त्री० दे० "बड़ाई"।

**बराक**—संज्ञा पुं० [ सं० वराक ] १. शिव। २. युद्ध। लड़ाई।

वि० १. शोचनीय। २. नीच। अधम। ३. बापुरा। बेचारा।

**बराट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरा-टिका ] कौड़ी।

**बरात**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरयात्रा ] वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर के साथ कन्यावालों के यहाँ जाते हैं। जनेत।

**बराती**—संज्ञा पुं० [ हिं० बरात+ई (प्रत्य०) ] बरात में वर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।

**बराना**—क्रि० अ० [ सं० वारण ] १. प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात न कहना। बचाना। २. जान-बूझकर अलग करना। बचाना। ३. रक्षा करना। हिफाजत करना।

क्रि० स० [ सं० वरण ] बहुत सी चीजों में से कुछ चीजें चुनना। छाँटना।

†क्रि० स० दे० "बालना" (जलाना)।

**बराबर**—वि० [ फ़ा० बर ] १. मात्रा, गुण, मूल्य आदि के विचार से समान। तुल्य। एक सा। २. जिसकी सतह ऊँची-नीची न हो। समतल।

**मुहा०**—बराबर करना = समाप्त कर देना।

क्रि० वि० १. लगातार। निरंतर। २. एक ही पंक्ति में। एक साथ। ३. साथ। ( क्व० ) ४. सदा। हमेशा।

**बराबरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बराबर +ई ( प्रत्य० ) ] १. बराबर होने की क्रिया या भाव। समानता। तुल्यता। २. सादृश्य। ३. मुकाबला। सामना।

**बरामद**—वि० [ फ़ा० ] १. बाहर या सामने आया हुआ। २. खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।

संज्ञा स्त्री० १. दियारा। गंग-बरार। २. निकासी। आमदनी।

**बरामदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. मकानों में वह छाया हुआ लंबा भाग जो मकान की सीमा के कुछ बाहर निकला रहता है। बारजा। छज्जा। २. दालान। ओसारा।

**बराय**—अव्य० [ फ़ा० ] वास्ते। लिए।

**बरायन**—संज्ञा पुं० [ सं० वर + आयन ( प्रत्य० ) ] लोहे का वह छल्ला जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ में पहनाया जाता है।

**बरार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कर। चंदा।

वि० १. लानेवाला। २. लाया हुआ। ( यौ० के अंत में )

**बराव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बराना+ आव (प्रत्य०) ] 'बराना' का भाव। बचाव। परहेज।

**बरास**—संज्ञा पुं० [ सं० पोतास ? ] एक प्रकार का कपूर। भीमसेनी कपूर।

**बराह**—संज्ञा पु० दे० "वराह"।

क्रि० वि० [ फ़ा० ] १. के तौर पर। २. जरिये से। द्वारा।

**बरिआत***-संज्ञा स्त्री० दे० "बरात"।

**बरिया***—वि० [ सं० बलिन् ] बलवान्।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बारी ] कम उम्र की स्त्री। नवयौवना।

**बरियाई**†—क्रि० वि० [ सं० बलात् ] बलपूर्वक। हठात्। जबर्दस्ती।

संज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव।

**बरियारा**--संज्ञा पुं० [ सं० बला ] एक छोटा झाड़दार छतनार पौधा। खिरेंटी। बीजबंद। बनमेथी।

**बरिला**†—संज्ञा पुं० [ हिं० बड़ा, बरा ] पकौड़ी या बड़े की तरह का एक पकवान।

**बरिबंड***—वि० दे० "बरबंड"।

**बरिषा***—संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।

**बरियाइन***—क्रि० वि० दे० "बरियाई"।

**बरियाई**†—क्रि० वि० [ सं० बलात् ] बलात्। जबर्दस्ती से।

**बरियाई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बरियार ] १. बलशालिता। २. जबर्दस्ती।

**बरिस**†—संज्ञा पुं० [सं० वर्ष ] वर्ष। साल।

**बरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वटी ] १. गोल टिकिया। बटी। २ उर्द या मूँग की पीठी के सुखाये हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।

वि० [ फ़ा० ] मुक्त। छूटा हुआ।

*† वि० दे० "बली।

**बरीस**† - संज्ञा पुं० दे० "वर्ष"।

**बरीसना**— क्रि० अ० दे० "बरसना"।

**बरु***—अव्य० [ सं० वर = श्रेष्ठ, भला ] भले ही। चाहे कुछ हर्ज नहीं।

संज्ञा पुं दे० "वर"।

**बरुआ**†—संज्ञा पुं० [ सं० वटुक ] १. वटु। ब्रह्मचारी। २. ब्राह्मण-कुमार। ३. उपनयन।

**बरुक**†—अव्य० दे० "बरु"।

**बरुनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरण= ढाँकना ] पलक के किनारे पर के बाल।

**बरूथी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरूथ ] एक नदी जो सई और गोमती के बीच में है।

**बरेंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० वरंडक ] १. लकड़ी का वह मोटा गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजन की लंबाई के बल रहता है। २. छाजन या खपरैल के बीचोबीच का सबसे ऊँचा भाग।

**बरे***†—क्रि० वि० [ सं० बल ] १. जोर से। बलपूर्वक। २. जबरदस्ती से। ३. ऊँची आवाज से। ऊँचे स्वर से।

अव्य० [ सं० वर्त्त ] १. पलटे में। २. वास्ते।

**बरेखी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँह + रखना ] स्त्रियों का भुजा पर पहनने का एक गहना।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० वर + देखना, वर-देखा ] विवाह-संबंध के लिए वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी।

**बरेठा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] [ स्त्री० बरेठन ] धोबी।

**बरेत**†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] मकान की रस्सी।

**बरेषी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बरेखी"।

**बरोक**—संज्ञा पुं [ हिं० वर + रोक ] वह द्रव्य जो कन्यापक्ष से वरपक्ष को संबंध पक्का करने के लिये दिया जाता है। बरच्छा। फलदान।

*संज्ञा पुं० [ सं० बलौक ] सेना।

क्रि० वि० [ सं० बलौकः ] बलपूर्वक।

**बरोठा**—संज्ञा पुं० [ सं० द्वार + कोष्ठ, हिं० बार + कोठा ] १ ड्योढ़ी। पौरी। २. बैठक। दीवानखाना।

मुहा०—बरोठे का चार=द्वारपूजा।

**बरोरु***—वि० दे० "वरोरु"।

**बरोह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वट + रोह = उगनेवाला ] बरगद के पेड़ के ऊपर की डालियों में टँगी हुई वह शाखा जो जमीन पर जाकर जम जाता है। बरगद की जटा।

**बरौठा**†—संज्ञा पुं० दे० "बरोठा"।

**बरौनी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बरुनी"।

**बरौरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बड़ी, बरी ] बड़ी या बरी नाम का पकवान।

**बर्क़**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बिजली। विद्युत्।

वि० तेज। चालाक।

**बर्ज**—वि० दे० "वर्य"।

**बर्जना**—क्रि० स० दे० "बरजना"।

**बर्णना***—क्रि० स० [ हिं० वर्णन ] वर्णन करना। बयान करना।

**बर्तन**—संज्ञा पुं० १. दे० "बरतन"। २. दे० "वर्तन"।

**बर्तना**—क्रि० स० दे० "बरतना"।

**बर्ताव**—संज्ञा पुं० दे० "बरताव"।

**बर्दाना***—क्रि० अ० दे० "बरदाना"।

**बर्न***—संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

**बर्फ़**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १ हवा में मिली हुई भाप के अत्यन्त सूक्ष्म अणुओं की तह जो वातावरण की ठंढक के कारण जमीन पर गिरती है। २. बहुत अधिक ठंढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पार-दर्शी होता है। ३. मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिए जल आदि ठंढा करते हैं। ४. कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस। ५. दे० "ओला"।

**बर्फ़िस्तान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह स्थान जहाँ बर्फ़ ही बर्फ़ हो।

**बर्फ़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बरफ़ी"।

**बर्बर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घुँघराले बाल। २. वर्णाश्रम-विहीन असभ्य मनुष्य। जंगली आदमी। ३. अस्त्रों की झनकार।

वि० १. जंगली। असभ्य। २. उद्दंड।

**बर्बरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बन-तुलसी। २. ईंगुर। ३. पीत चंदन।

**बर्राक़**—वि० [ अ० ] १. चमकीला, जगमगाता हुआ। २. तेज। तीव्र। ३. चतुर। चालाक। ४. बहुत उजला। धवला। सफ़ेद। ५. पूर्ण

स्म से अभ्यस्त ।

**बर्राना**—क्रि० अ० [ अनु० बर बर ] १. व्यर्थ बोलना । फजूल बकना । २. नींद या बेहोशी में बकना ।

**बर्रे**†—संज्ञा पुं० [ सं० वरवट ] भिड़ नाम का कीड़ा । तितैया ।

**बलंद**—वि० [ फ़ा० ] [संज्ञा बलंदी] ऊँचा ।

**बल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शक्ति । सामर्थ्य । ताकत । जोर । बूता । २. भार उठाने की शक्ति । सँभार । ३. आश्रय । सहारा । ४. आसरा । भरोसा । बिर्ता । ५.सेना । फौज । ६. पार्श्व । पहलू ।

संज्ञा पुं० [ सं० बलि ] १. ऐंठन । मरोड़ । २. फेरा । लपेट । ३. लहरदार घुमाव ।

मुहा०—बल खाना=घुमाव के साथ टेढ़ा होना । कुंचित होना ।

४. टेढ़ापन । कज । खम । ५. सिकुड़ना । शिकन । गुलझट । ६ लचक । झुकाव ।

मुहा०—बल खाना—लचकना । झुकना ।

७. कसर । कमी । अंतर ।

मुहा०—बल खाना=घाटा सहना । हानि सहना । बल पड़ना=अंतर होना । फर्क रहना ।

**बलकट**—वि० [?] पेशगी । अगाऊ ।

**बलकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. उबलना । खौलना । २. उमगना । जोश में होना ।

**बलकल***—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल" ।

**बलकारक**—वि० [ सं० ] बलजनक ।

**बलकल***†—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल" ।

**बलकाना**†—क्रि० स० [ हिं० बलकना ] १. उबालना । खौलाना । २. उभारना । उमगाना । उत्तेजित करना ।

**बलगना**—क्रि० अ० दे० "बलकना" ।

**बलगम**—संज्ञा पुं० [ अ० बिं० बलगमी ] श्लेष्मा । कफ ।

**बलतंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शक्ति या सेना आदि का प्रबंध । सैनिक व्यवस्था ।

**बलद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बैल ।

**बलदाऊ, बलदेव**—संज्ञा पुं० दे० "बलराम" ।

**बलना**—क्रि० अ० [ सं० बर्हण या या ज्वलन ] जलना । लपट फेंककर जलना । दहकना ।

क्रि० स० [ हिं० बल ] बल डालना । बटना ।

**बलबलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. ऊँट का बोलना । २. व्यर्थ बकना ।

**बलबलाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बलबलाना ] १. ऊँट का बोलना । २ व्यर्थ अहंकार ।

**बलबीर***—संज्ञा पुं० [ हिं० बल=बलराम + बीर=भाई ] बलराम के भाई श्रीकृष्ण ।

**बलभद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] बलदेवजी ।

**बलभी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बलभि ] मकान में सबसे ऊपरवाला कोठरी । चौबारा ।

**बलम**—*संज्ञा पुं० [ सं० बल्लभ ] पति । नायक ।

**बलमीक**—संज्ञा स्त्री० दे० "बाँबी" ।

**बलय***—संज्ञा पुं० दे० "वलय" ।

**बलराम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्णचन्द्र के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे ।

**बलवंड***—वि० [ सं० बलवंतः ] बली ।

**बलवंत**—वि० [ सं० बलवंतः ] बलवान् ।

**बलवत्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बलवान् होने का भाव । शक्ति-संपन्नता ।

**बलवा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. दंगा । हुल्लड़ । खलबली । विप्लव । २. बगावत । विद्रोह ।

**बलवाई**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बलवा + ई ( प्रत्य० ) ] १. बलवा करनेवाला । विद्रोही । २. उपद्रवी ।

**बलवान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० बलवती ] १. मजबूत । ताकतवर । २. सामर्थ्यवान् ।

**बलशाली**—वि० दे० "बलवान्" ।

**बलशील**—वि० [ सं० ] बली । शक्तिवाला ।

**बलसूदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र ।

**बला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बरियारा नामक क्षुप । २. वैद्यक के अनुसार पानी का एक जाति । ३.पृथिवी । ४. लक्ष्मी ।

संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आपत्ति । विपत्ति । आफत । २. दुःख । कष्ट । ३. भूत-प्रेत या उसकी बाधा । ४. रोग । व्याधि ।

मुहा०—बला का=जोर । अत्यंत ।

**बलाइ***—संज्ञा स्त्री० दे० "बलाय" ।

**बलाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बक । बगला ।

**बलाका**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बगला । २. बगलों की पंक्ति ।

**बलाग्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेनापति । २. सेना का अगला भाग ।

वि० बलशाली । बली ।

**बलाढ्य**—वि० [सं० बलवान्] बली ।

**बलात**—क्रि० वि० [ सं० ] १. बलपूर्वक । २. जबरदस्ती से । ३. हठात् । हठ से ।

**बलात्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जबरदस्ती कोई काम करना । २. किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के

विरुद्ध संभोग करना।

**बलाध्यक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेनापति।

**बलाय**—संज्ञा स्त्री० दे० "बला"।

**बलाह**—संज्ञा पुं० [ सं० बोल्लाह ] बुलाह ( घोड़ा )।

**बलाहक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेघ। बादल। २. एक दैत्य। ३. एक नाग। ४. शाल्मलि द्वीप का एक पर्वत। ५. एक प्रकार का बगला।

**बलि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मालगुजारी। कर। राजकर। २. उपहार। भेंट। ३. पूजा की सामग्री या उपकरण। ४. पंच-महायज्ञों में चौथा। भूतयज्ञ। ५. किसी देवता को उत्सर्ग किया हुआ कोई खाद्य पदार्थ। ६. भक्ष्य। अन्न। खाने की वस्तु। ७. चढ़ावा। नैवेद्य। भोग। ८. वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।

**मुहा०**—बलि चढ़ना=मारा जाना। बलि चढ़ाना=देवता के उद्देश्य से घात करना। बलि जाना=निछावर होना। बलिहारी जाना।

**मुहा०**—बलि जाऊँ या बलि !=मैं तुम पर निछावर हूँ।

९. प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यों का राजा था।

संज्ञा स्त्री० [ सं० बला=छोटी बहिन ] सखी।

**बलित***—वि० [ हिं० बलि ] १. बलिदान चढ़ाया हुआ। २. मारा हुआ। हत।

**बलिदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढ़ाना। २. बकरे आदि पशु देवता के उद्देश्य से मारना।

**बलिदानी**—वि० [ सं० बलिदान ] बलिदान संबंधी।

संज्ञा पुं० वह जो बलिदान करता हो।

**बलिपशु**—संज्ञा पुं० [ हिं० बलि+पशु ] वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।

**बलिप्रदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बलिदान।

**बलिया**—वि० [ हिं० बल ] बलवान्। बनारस के पूरब बनारस कमिश्नरी का जिला।

**बलिवर्द**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. साँड़। २. बैल।

**बलिवैश्वदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाँच महायज्ञों में से चौथा महायज्ञ। इसमें गृहस्थ पके हुए अन्न से एक एक ग्रास लेकर भिन्न भिन्न स्थानों पर रखता है।

**बलिष्ठ**—वि० [ सं० ] अधिक बलवान्।

**बलिहारना***—क्रि० स० [ हिं० बलि+हारना ] निछावर कर देना। कुर्बान कर देना।

**बलिहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बलि+हारना ] प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को उत्सर्ग कर देना। निछावर। कुर्बान।

**मुहा०**—बलिहारी जाना=निछावर होना। कुरबान जाना। बलैया लेना। बलिहारी लेना=बलैया लेना। प्रेम दिखाना।

**बली**—वि० [ सं० बलिन् ] बलवान्।

**बलीमुख***—संज्ञा पुं० [ सं० वलीमुख ] बंदर।

**बलीयस्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० बलीयसी ] बहुत अधिक बलवान्।

**बलु***—अव्य० "बरु"।

**बलुआ**—वि० [ हिं० बालू ] [ स्त्री० बलुई ] जिसमें बालू मिला हो। रेतीला।

**बलूच**—संज्ञा पुं० एक जाति जिसके नाम पर देश का नाम बलूचिस्तान पड़ा है।

**बलूची**—संज्ञा पुं० [देश०] बलूचिस्तान का निवासी।

**बलूत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] माजूफल की जाति का एक पेड़।

**बलैया**—संज्ञा स्त्री० [ अ० बला, हिं० बलाय ] बला। बलाय।

**मुहा०** ( किसी की ) बलैया लेना=अर्थात् किसी का रोग, दुःख अपने ऊपर लेना। मंगलकामना करते हुए प्यार करना।

**बल्कि**—अव्य० [ फ़ा० ] १. अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २. और अच्छा है। बेहतर है।

**बल्लभ***—संज्ञा पुं० दे० "वल्लभ"।

**बल्लम**—संज्ञा पुं० [ सं० बल, हिं० बल्ला ] १. छड़। बल्ला। २. सोंटा। डंडा। ३. वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसे चोबदार राजाओं के आगे लेकर चलते हैं। ४. बरछा।

**बल्लमटेर**—संज्ञा पुं० [ अं० वालंटियर ] १. स्वेच्छापूर्वक सेना में भरती होनेवाला। २. स्वेच्छासेवक। स्वयंसेवक।

**बल्लमबर्दार**—संज्ञा पुं० [ हिं० बल्लम+फ़ा० बर्दार ] वह जो सवारी या बरात के साथ बल्लम लेकर चलता है।

**बल्ला**—संज्ञा पुं० [ सं० बल ] [स्त्री० अल्पा० बल्ली ] १. डंडे के आकार का लंबा मोटा टुकड़ा। शहतीर का डंडा। २. मोटा डंडा। दंड। ३. वह डंडा जिससे नाव खेते हैं। डाँड़ा। ४. गेंद मारने का लकड़ी का डंडा। बैट।

**बल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बल्ला ]

छोटा बछड़ा ।

*संज्ञा स्त्री० दे० "बल्ली" ।

**बवँड़ना†**—क्रि० अ० [ सं० व्यावर्त्तन ] इधर उधर घूमना । व्यर्थ फिरना ।

**बवंडर**—संज्ञा पुं० [ सं० वायु+मंडल ] १. चक्र की तरह घूमती हुई वायु । चक्रवात । बगूला । २. आँधी । तूफान ।

**बवंडा†**-संज्ञा पुं० दे० "बवंडर" ।

**बवघूरा***-संज्ञा पुं० दे० "बवंडर" ।

**बवन*†**—संज्ञा पुं० दे० "वमन" ।

**बवना***—क्रि० स० [ सं० वपन ] १. दे० "बोना" । २. छितराना । बिखराना ।

क्रि० अ० छितराना । बिखरना ।

संज्ञा पुं० दे० "वामन" ।

**बवरना** -क्रि० अ० दे० "बौरना" ।

**बवासीर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं । अर्श ।

**बसंत**—संज्ञा पुं० दे० "वसंत" ।

**बसंती**—वि० [ हिं० बसंत ] १. वसंत का । वसंत-ऋतु-संबंधी । २. खुलते हुए पीले रंग का ।

**बसंदर**—संज्ञा पुं० [ सं० वैश्वानर ] आग ।

**बस**—वि० [ फ़ा० ] प्रयोजन के लिए पूरा । पर्याप्त । भरपूर । बहुत । काफी ।

अव्य० १. पर्याप्त । काफ़ी । अलम् । २. सिर्फ । केवल । इतना मात्र ।

संज्ञा पुं० दे० "वश" ।

**बसति, बसती**—संज्ञा स्त्री० दे० "बस्ती" ।

**बसना**—क्रि० अ० [ सं० वसन ] १. स्थायी रूप से स्थित होना । निवास करना । रहना । २ निवासियों से भरा पूरा होना । आबाद होना ।

**मुहा०**—घर बसना=कुटुंब सहित सुखपूर्वक स्थिति होना । गृहस्थी का बनना । घर में बसना=सुखपूर्वक गृहस्थी में रहना । ३. टिकना । ठहरना । डेरा करना ।

**मुहा०**—मन में बसना=ध्यान में बना रहना । स्मृति में रहना ।

*४. बैठना ।

क्रि० अ० [ हिं० वासना ] बासा जाना । सुगंधित होना । महक से भर जाना ।

संज्ञा पुं० [ सं० वसन=कपड़ा ] १. वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेट कर रखी जाय । बेष्टन । बेठन । २. थैली

**बसनि*†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बसना ] रहन । निवास । वास ।

**बसवार**—संज्ञा पुं० [ हिं० बास ] छौंक । बघार ।

**बसवास**—संज्ञा पुं० [ हिं० बसना+वास ] १ निवास । रहना । २. रहन का ढंग । स्थिति । ३. रहने का सुभीता । निवास के योग्य परिस्थिति । ठिकाना ।

**बसर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गुजर । निर्वाह ।

**बसह**—संज्ञा पुं० [ सं० वृषभ ] बैल ।

**बसाँधा**—वि० [ हिं० बास ] बसाया या बासा हुआ । सुगंधित ।

**बसा**—संज्ञा स्त्री० दे० "वसा" ।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] बर्रे । भिड़ ।

**बसाना**—क्रि० स० [ हिं० बसना ] १. बसने के लिए जगह देना । रहने को ठिकाना देना । २. जनपूर्ण करना । आबाद करना ।

**मुहा०**—घर बसाना । गृहस्थी जमाना । सुखपूर्वक कुटुंब के साथ रहने का ठिकाना करना ।

३. टिकाना । ठहराना ।

*क्रि० अ० १. बसना । ठहरना । रहना २. दुर्गंध देना । बदबू करना ।

क्रि० स० [ सं० वेशन ] १. बैठाना । २. रखना ।

*क्रि० अ० [ हिं० वश ] वश या जोर चलना ।

क्रि० अ० [ हिं० बास ] बास देना । महकना ।

**बसिऔरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बासी ] १. वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती हैं । २. बासी भोजन ।

**बसीकत, बसीगत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बसना ] १. बस्ती । आबादी । २. बसने का भाव या क्रिया । रहन ।

**बसीकर**—वि० [ सं० वशीकर ] वशीकर । वश में करनेवाला ।

**बसीकरन***—संज्ञा पुं० दे० "वशीकरण" ।

**बसीठ**—संज्ञा पुं० [ सं० अवसृष्ट ] संदेशा ले जानेवाला दूत ।

**बसीठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बसीठ ] सँदेशा पहुँचाने का काम । दूतत्व ।

**बसीता***—संज्ञा पुं० [ हिं० बसना ] १. निवास । २. निवास-स्थान ।

**बसीना†***—संज्ञा पुं० [ हिं० बसना ] रहायश । रहन ।

**बसूला**—संज्ञा पुं० [ सं० वासि+ ल (प्रत्य० ) ] [ स्त्री० अल्पा० बसूली ] एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते और गढ़ते हैं ।

**बसेरा**—वि० [ हिं० बसना ] बसनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ रह कर

यात्री रात बिताते हैं। टिकने की जगह। २.वह स्थान जहाँ पर चिड़ियाँ ठहरकर रात बिताती हैं।

**मुहा०**—बसेरा करना=१. डेरा करना। निवास करना। ठहरना। २. घर बनाना। बस जाना। बसेरा लेना= निवास करना। रहना। बसेरा देना= आश्रय देना।

३.टिकने या बसने का भाव। रहना।

**बसेरी***—वि० [ हिं० बसेरा ] निवासी।

**बसैया*†**—वि० [ हिं० बसना ] बसनेवाला।

**बसोबास**—संज्ञा पुं० [ हिं० बास+ आवास ] निवास-स्थान। रहने की जगह।

**बसौंधी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बास+ सोंधा ] एक प्रकार की सुगंधित और लच्छेदार रबड़ी।

**बस्ता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें कागज, बही या पुस्तकादि बाँधकर रखते हैं। बेठन।

**बस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वसति ] १. बहुत से मनुष्यों का घर बनाकर रहने का भाव। आबादी। निवास। २. जनपद। एक प्रकार की यौगिक क्रिया।

**बस्साना**—क्रि० अ० [ हिं० बास ] दुर्गंध देना।

**बहँगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विहंगिका] बोझ ले चलने के लिये तराजू के आकार का एक ढाँचा। काँवर।

**बहकना**—क्रि० अ० [ हिं० बहना ] १. भूल से ठीक रास्ते से दूसरी ओर जा पड़ना। मार्गभ्रष्ट होना। भटकना। २. ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना। चूकना। ३. किसी की बात या भुलावे में आ जाना। ४. किसी बात में लग जाने के कारण शांत होना। बहलना ( बच्चों के लिए )। ५. आपे में न रहना। रस या मद में चूर होना।

**मुहा०**—बहकी बहकी बातें करना=१. मदोन्मत्त की सी बातें करना। २. बहुत बढ़ी-चढ़ी बातें करना।

**बहकाना**-क्रि० स० [ हिं० बहकना ] १. ठीक रास्ते से दूसरी ओर ले जाना या फेरना। रास्ता भुलवाना। भटकना। २. ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर कर देना। लक्ष्यभ्रष्ट करना। ३.भुलावा देना। भरमाना। बातों से फुसलाना। ४. ( बातों से ) शांत करना। बहलाना।

**बहकावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहकाना ] बहकाने की क्रिया या भाव।

**बहतोल*†**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहता +ल ( प्रत्य० ) ] जल बहाने की नाली। बरहा।

**बहन**—संज्ञा स्त्री० दे० "बहिन"। संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहना ] बहने की क्रिया या भाव।

**बहना**—क्रि० अ० [ सं० वहन ] १. द्रव वस्तुओं का किसी ओर चलना। प्रवाहित होना।

**मुहा०**—बहती गंगा में हाथ धोना= किसी ऐसी बात से लाभ उठाना जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हों।

२. पानी की धारा में पड़कर जाना। ३ स्रवित होना। लगातार बूँद या धार के रूप में निकलकर चलना। ४. वायु का संचरित होना। हवा का चलना। ५. हट जाना। दूर होना। ६. ठीक लक्ष्य या स्थान से सरक जाना। फिसल जाना। ७. मारा मारा फिरना। ८. कुमार्गी होना। आवारा होना। बिगड़ना। ९. अधम या बुरा होना। १०. गर्भपात होना। अड़ाना। ( चौपायों के लिए ) ११. बहुतायत से मिलना। सस्ता मिलना। १२. ( रुपया आदि ) डूब जाना। नष्ट हो जाना। १३. लादकर ले चलना। वहन करना। १४. खींचकर ले चलना। ( गाड़ी आदि ) १५. धारण करना। १६. उठना। चलना। १७. निर्वाह करना। निबाह करना।

**बहनापा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहिन+ आपा ( प्रत्य० ) ] बहिन का संबंध।

**बहनी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वह्नि ] अग्नि। आग।

**बहनु***—संज्ञा पुं० [ सं० वहन ] सवारी।

**बहनेली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहन ] वह जिसके साथ बहनपने का संबंध स्थापित हो। ( स्त्रियो )। मुँहबोली बहन।

**बहनोई**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहन से ] बहिन का पति।

**बहनौता**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहन+ पुत्र ] भानजा।

**बहबहा***—वि० [ ? ] शरारत। नटखटपना।

**बहर**—क्रि० वि० [ फा० ] वास्ते। लिए।

संज्ञा पुं० [ अ० बह्र ] १. समुद्र २. छंद।

*क्रि० वि० दे० "बाहर"।

**बहरा**—वि० [ सं० बधिर ] [ स्त्री० बहरी ] जो कान से सुन न सके या कम सुने।

**बहराना**—क्रि० स० [ हिं० भुराना ] १. ऐसी बात कहना या करना जिससे दुःख की बात भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। २. बहकाना।

भुलाना। फुसलाना।

संज्ञा पुं० [ हिं० बाहर ] शहर या बस्ती का बाहरी भाग।

क्रि० स० दे० "बहरियाना"।

**बहरियाना**†—क्रि० स० [ हिं० बाहर + इयाना (प्रत्य०) ] १. बाहर की ओर करना। निकालना। २. अलग करना। जुदा करना।

क्रि० अ० १. बाहर की ओर होना। २. अलग होना। जुदा होना।

**बहरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया। बाहरी।

**बहल**—संज्ञा स्त्री० दे० "बहली"।

**बहलना**—क्रि० अ० [ हिं० बहलना ] २. झंझट या दुःख की बात भूलना और चित्त का दूसरी ओर लगना। ३. मनोरंजन होना। चित्त प्रसन्न होना।

**बहलाना**—क्रि० स० [ फ़ा० बहाल ] १. झंझट या दुःख की बात भुलवाकर चित्त दूसरी ओर ले जाना। २. मनोरंजन करना। चित्त प्रसन्न करना। ३. भुलावा देना। बातों में लगाना। बहकाना।

**बहलाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहलना] बहलने की क्रिया या भाव। मनोरंजन। प्रसन्नता।

**बहली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वहन ] रथ के आकार की बैलगाड़ी। खड़खड़िया।

**बहलोल**‡*—संज्ञा पुं० [हिं० बहलना ] आनंद।

**बहली**—संज्ञा पुं० कुश्ती का एक दाँव।

**बहस**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. वाद। दलील। तर्क। खंडन-मंडन की युक्ति। २. विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३. होड़। बाजी। बदाबदी।

**बहसना***—क्रि० अ० [ अ० बहस + ना ] १. बहस करना। विवाद करना। तर्क वितर्क करना। २. शर्त लगाना।

**बहादुर**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बहादुरी ] १. उत्साही। साहसी। २. शूरवीर। पराक्रमी।

**बहादुराना**—वि० [ फ़ा० ] बहादुरों का सा। वीरतापूर्ण।

**बहाना**—क्रि० स० [ हिं० बहना ] १ द्रव पदार्थों को निम्नतल की ओर छोड़ना या गमन कराना। प्रवाहित करना। २. पानी की धारा में डालना। प्रवाह के साथ छोड़ना। ३ लगातार बूँद या धार के रूप में छोड़ना। ढालना। लुढ़ाना। ४. वायु संचालित करना। हवा चलाना। ५. व्यर्थ व्यय करना। खोना। गँवाना। †६. फेंकना। डालना। ७. सस्ता बेचना।

क्रि० स० [ हिं० बाहना ] बहाने का काम दूसरे से कराना।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० बहानः ] १. किसी बात से बचने या मतलब निकालने के लिए झूठ बात कहना। मिस। हीला। २. उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठ बात। ३. कहने सुनने के लिए एक कारण। निमित्त।

**बहार**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वसंत ऋतु। २. मौज। आनंद। ३. यौवन का विकास। जवानी का रंग। ४. रमणीयता। सुहावनापन। रौनक। ५. विकास। प्रफुल्लता। ६. मजा। तमाशा। कौतुक।

**बहाल**—वि० [ फ़ा० ] १. पूर्ववत् स्थित। ज्यों का त्यों। २. भला-चंगा। स्वस्थ। ३ प्रसन्न। खुश।

**बहाला***—संज्ञा पुं० दे० "बल्लभ"।

**बहाली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] पुनर्नियुक्त। फिर उसी जगह पर मुकर्री।

संज्ञा स्त्री० [ बहकाना ] बहाना। मिस।

**बहाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहना ] १. बहने का भाव या क्रिया। प्रवाह। २. बहता हुआ जल आदि।

**बहिः**—अव्य० [ सं० बहिस् ] बाहर।

**बहिक्रम***—संज्ञा पुं० [ सं० वयः क्रम ] अवस्था। उम्र।

**बहित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० वहित्र ] नाव।

**बहिन**—संज्ञा स्त्री [ सं० भगिनी ] माता की कन्या। भगिनी। बहना।

**बहिनोला***—संज्ञा पुं० दे० "बहनापा"।

**बहियाँ**‡*-संज्ञा स्त्री० दे० "बाँह"।

**बहिरंग**—वि० [ सं० बाहरी] बाहरवाला। 'अंतरंग' का उलटा।

**बहिरा*** वि० दे० "बहरा"।

**बहिरत***†—अव्य० [ सं० बहिः ] बाहर।

**बहिर्गत**—वि० [ सं० ] बाहर आया या निकला हुआ।

**बहिर्जगत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाहरी दृश्य या जगत।

**बहिर्भूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बस्ती से बाहरवाली भूमि।

**बहिर्मुख**—वि० [ सं० ] विमुख। विरुद्ध।

**बहिर्लापिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काव्यरचना में एक प्रकार की पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों के बाहर रहता है, भीतर नहीं। अंतर्लापिका का उलटा।

**बहिश्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बहिश्त ] मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग।

**बहिष्कार**—संज्ञा पुं० [ सं०]

[ वि० बहिष्कृत ] १. बाहर करना। निकालना। २. हटाना।

**बहिष्कृत**—वि० [ सं० ] बाहर किया हुआ। निकाला हुआ।

**बही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बद्ध, हिं० बँधी ? ] हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।

**बहीर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भीड़ ] १. भीड़। जन-समूह। २. सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड़ जिसमें साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं। फौज का लवाजमा। ३. सेना की सामग्री।

*अव्य० [ सं० बहिस् ] बाहर।

**बहुँटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँह ] बाँह पर पहनने का एक गहना।

**बहु**-वि० [ सं० ] १. बहुत। अनेक। २. ज्यादा। अधिक।

संज्ञा स्त्री० दे० "बहू"।

**बहुगुना**—संज्ञा पुं० [हिं० बहु+गुण] चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन।

**बहुज्ञ**—वि० [ सं० ] बहुत बातें करनेवाला। अच्छा जानकार।

**बहुटनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहुँटा] बाँह पर पहनने का एक गहना। छोटा बहुँटा।

**बहुत**—वि० [ सं० बहुतर ] १. एक या दो से अधिक। अनेक। २. जो मात्रा में अधिक हो। ३. यथेष्ट। बस। काफी।

मुहा०—बहुत अच्छा=स्वीकृति-सूचक वाक्य। बहुत करके=१. अधिकतर। ज्यादातर। बहुधा। प्रायः। २. अधिक संभव है। बीस बिस्वे। बहुत कुछ=कम नहीं। गिनती करने योग्य। बहुत खूब=१. वाह। क्या कहना है! २. बहुत अच्छा।

क्रि० वि० अधिक परिमाण में। ज्यादा।

**बहुतक***—वि० [ हिं० बहुत+क ] बहुत से। बहुतेरे।

**बहुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अधिकता।

वि० बहुत। अधिक।

**बहुताई**—संज्ञा स्त्री० दे० "बहुतायत"।

**बहुतात, बहुतायत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहुत ] अधिकता। ज्यादती।

**बहुतेरा**—वि० [ हिं० बहुत+एरा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० बहुतेरी ] बहुत सा। अधिक।

क्रि० वि० बहुत प्रकार से।

**बहुतेरे**—वि० [ हिं० बहुतेरा ] संख्या में अधिक। बहुत से। अनेक।

**बहुत्व**-संज्ञा पुं० [ सं० ] अधिकता।

**बहुदर्शिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बहुत सी बातों की समझ। बहुज्ञता।

**बहुदर्शी**—संज्ञा पुं० [ सं० बहुदर्शिन् ] जिसने बहुत कुछ देखा हो। जानकार। बहुज्ञ।

**बहुधा**—क्रि० वि० [ सं० ] १. अनेक प्रकार से। २. बहुत करके। प्रायः। अकसर।

**बहुबाहु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण।

**बहुभाषज्ञ**—वि० [ सं० ] बहुत सी भाषाएँ जाननेवाला।

**बहुभाषी**—वि० [ सं० बहुभाषिन् ] बहुत बोलनेवाला।

**बहुमत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बहुत से लोगों की अलग अलग राय। २. बहुत से लोगों की मिलकर एक राय। ३. वह जिनके मत या पक्ष में बहुत से लोग हों।

**बहुमूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें रोगी को मूत्र बहुत उतरता है।

**बहुमूल्य**—वि० [ सं० ] अधिक मूल्य का। कीमती। दामी।

**बहुरंग**—वि० दे० "बहुरंगा"।

**बहुरंगा**—वि० [ हिं० बहु+रंग ] १. कई रंगों का। चित्र-विचित्र। २. बहुरूपधारी।

**बहुरंगी**—वि० [ हिं० बहुरंगा+ई ] १. बहुरूपिया। २. अनेक प्रकार के करतब या चाल दिखानेवाला।

**बहुरना**†-क्रि० अ० [ सं० प्रघूर्णन ] १. लौटना। वापस आना। २. फिर मिलना।

**बहुरि***†-क्रि० वि० [ हिं० बहुरना ] १. पुनः। फिर। २. इसके उपरांत। पीछे।

**बहुरिया**†—संज्ञा स्त्री० [सं० वधूटी] नई बहू।

**बहुरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भौरना=भूनना ] भुना हुआ खड़ा अन्न। चर्वण। चबेना।

**बहुरूपिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० बहु+रूप ] वह जो तरह तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलाता हो।

**बहुल**—वि० [ सं० ] अधिक। ज्यादा।

**बहुलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अधिकता। ज्यादती। २. फालतूपन। व्यर्थता।

**बहुली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बहुला ] इलायची।

**बहुवचन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है।

**बहुविद्य**—वि० दे० "बहुज्ञ"।

**बहु-विवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पुरुष का कई स्त्रियों के साथ एक ही समय में विवाह करना।

**बहुव्रीहि**—संज्ञा पुं० [सं०] व्याकरण में छः प्रकार के समासों में से एक

जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह एक अन्य पद का विशेषण होता है।

**बहुशः**—वि० [ सं० ] बहुत। अधिक।

**बहुश्रुत**—वि० [ सं० ] [ भाव० बहुश्रुतत्व ] जिसने बहुत सी बातें सुनी हों। अनेक विषयों का जानकार।

**बहुसंख्यक**—वि० [ सं० ] १. गिनती में बहुत। अधिक। २. जो संख्या के विचार से औरों से अधिक हो।

**बहुँटा**—संज्ञा पुं० [ सं० बाहुस्थ ] [ स्त्री० अल्पा० बहुँटी ] बाँह पर पहनने का एक गहना।

**बहू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वधू ] १. पुत्रवधू। पतोहू। २. पत्नी। स्त्री। ३. दुलहिन।

**बहूपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायँ।

**बहेड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० विभीतक, प्रा० बहेडअ ] एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

**बहेतू**—वि० [ हिं० बहना ] इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला।

**बहेरी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहराना ] बहाना। हीला।

**बहेलिया**—संज्ञा पुं० [ सं० बध+हेला ] पशुपक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला। व्याध। चिड़ीमार।

**बहोर***†—संज्ञा पुं० [ हिं० बहुरना ] फेरा। वापसी। पलटा।

क्रि० वि० दे० "बहोरि"।

**बहोरना**†—क्रि० स० [ हिं० बहुरना ] लौटाना। वापस करना। फेरना।

**बहोरि**†*—अव्य० [ हिं० बहोर ] पुनः। फिर।

**बाँ**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] गाय के बोलने का शब्द।

†संज्ञा पुं० [ हिं० बेर ] बार। दफा। बेर।

**बाँक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंक ] १. भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। २ एक प्रकार का चाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है। ३. हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी। ४. कमान। धनुष। ५. एक प्रकार की छुरी।

संज्ञा पुं० टेढ़ापन। वक्रता।

वि० [ सं० वंक ] १. टेढ़ा। घुमावदार। २. बाँका। तिरछा।

**बाँकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंक+ड़ी (प्रत्य०) ] बादले और कलाबत्तू का बना हुआ एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता।

**बाँकडोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँक ] एक प्रकार का शस्त्र।

**बाँकना**†—क्रि० स० [ सं० वंक ] टेढ़ा करना।

†क्रि० अ० टेढ़ा होना।

**बाँकपन**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँका+पन (प्रत्य०) ] १. टेढ़ापन। तिरछापन। २. छैलापन। अलबेलापन। ३. छवि। शोभा।

**बाँका**—वि० [ सं० वंक ] १. टेढ़ा। तिरछा। २ बहादुर। वीर। ३. सुन्दर और बना ठना। छैला।

**बाँकिया**—संज्ञा पुं० [ सं० वंक= टेढ़ा ] नरसिंहा नाम का टेढ़ा बाजा।

**बाँकुर, बाँकुरा***†—वि० [ हिं० बाँका ] १. बाँका। टेढ़ा। २. पैना। पतली धार का। ३. कुशल। चतुर।

**बाँग**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. पुकार। चिल्लाहट। २. वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण जो नमाज का समय बताने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है। अजान। ३. प्रातःकाल के समय मुरगे के बोलने का शब्द।

**बाँगड़**—संज्ञा पुं० [ देश० ] हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत। हरियाना।

**बाँगड़ू**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँगड़ ] बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा। जाटू। हरियानी।

**बाँगुर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल। फंदा। एक मछली।

**बाँचना**†—क्रि० स० [ सं० वाचन ] पढ़ना।

†क्रि० स० दे० "बचना"।

क्रि० स० [ हिं० बचाना ] बचाना। छुड़ाना।

*क्रि० अ० [ हिं० बचना ] १. रक्षित होना। बचना। २. शेष रहना। बाकी बचना।

**बाँछना**†*—संज्ञा स्त्री० [ सं० वांछा ] इच्छा।

†क्रि० स० १. चाहना। इच्छा करना। २. चुनना। छाँटना।

**बाँछा***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वांछा ] इच्छा।

**बाँछित***—वि० [ सं० वांछित ] अभिलषित। इच्छित। जिसकी इच्छा की जाय।

**बाँछी**—संज्ञा पुं० [ सं० वांछिन् ] अभिलाषा करनेवाला। चाहनेवाला।

**बाँझ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वंध्या ] वह स्त्री या मादा जिसे संतान होती ही न हो। वंध्या।

**बाँझपन, बाँझपना**—संज्ञा पुं० [ सं०

बंध्या + पन (प्रत्य०) ] बाँझ होने का भाव। बंध्यात्व।

**बाँट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँटना का भाव ] १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग।

मुहा०—बाँटे पड़ना=हिस्से में आना।

**बाँटना**—क्रि० स० [ सं० वितरण ] १. किसी चीज के कई भाग करके अलग अलग रखना। २. हिस्सा लगाना। विभाग करना। ३. थोड़ा थोड़ा सबको देना। वितरण करना।

**बाँटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँटना ] १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग। हिस्सा।

**बाँड़ा**—वि० [ देश० ] १. बिना पूँछ का। २. असहाय। दीन।

**बाँदा**†—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बंदा ] [ स्त्री० बाँदी ] सेवक। दास।

**बाँदर**—संज्ञा पुं० [ सं० वानर ] बंदर।

**बाँदा**—संज्ञा पुं० [ सं० वंदाक ] एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उगकर पुष्ट होती है।

**बाँदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बंदा ] लौंडी। दासी।

**बाँदू**—संज्ञा पुं० [सं० बंदी] बँधुआ। कैदी।

**बाँध**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँधना=रोकना ] नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स। बंद।

**बाँधना**—क्रि० स० [ सं० बंधन ] १. कसने या जकड़ने के लिए किसी चीज के घेरे में लाकर गाँठ देना। २. कसने या जकड़ने के लिए रस्सी, कपड़ा आदि लपेटकर उसमें गाँठ लगाना। ३. कैद करना। पकड़कर बंद करना। ४. नियम, अधिकार, प्रतिज्ञा या शपथ आदि की सहायता से मर्य्यादित रखना। पाबंद करना। ५. मंत्र, तंत्र आदि की सहायता से शक्ति या गति आदि को रोकना। ६. प्रेम-पाश में बद्ध करना। ७. नियत करना। मुकर्रर करना। ८. पानी का बहाव रोकने के लिए बाँध आदि बनाना। ९. चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। १०. मकान आदि बनाना। ११. उपक्रम करना। योजना करना। १२. क्रम या व्यवस्था आदि ठीक करना। १३. मन में बैठाना। स्थिर करना। १४. किसी प्रकार का अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना।

**बाँधनीपौरि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँधना + पौरि ] पशुओं के बाँधने का स्थान।

**बाँधनूँ**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँधना ] १ पहले से ठीक की हुई तरकीब या विचार। उपक्रम। मंसूबा। २. कोई बात होनेवाली मानकर पहले से ही उसके संबंध में तरह तरह के विचार। खयाली पुलाव। ३. झूठा दोष। तोहमत। कलंक। ४. मन से गढ़ी हुई बात। ५. कपड़े की रँगाई में वह बंधन जो रँगरेज चुनरी या लहरियेदार रँगाई आदि रँगने के लिए कपड़े में बाँधते हैं। ६. चुनरी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँधकर रँगा गया हो।

**बांधव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाई। बंधु। २. नातेदार। रिश्तेदार। ३. मित्र। दोस्त।

**बाँबी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वल्मीक ] १. दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का भीटा। बँबीटा। २. साँप का बिल।

**बाँभना***†—क्रि० स० [ ? ] रखना।

**बाँस**—संज्ञा पुं० [ सं० वंश ] १. तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं और गाँठों के बीच का स्थान प्रायः कुछ पोला होता है। इसकी छोटी-बड़ी अनेक जातियाँ होती हैं।

मुहा०—बाँस पर चढ़ना=बदनाम होना। बाँस पर चढ़ाना=१. बदनाम करना। २. बहुत बढ़ा देना। मिजाज बढ़ा देना। बहुत आदर करके धृष्ट या घमंडी बना देना। बाँसों उछलना=बहुत अधिक प्रसन्न होना।

२. एक नाप जो सवा तीन गज की होती है। लाठा। ३. नाव खेने की लग्गी। ४. पीठ के बीच की हड्डी। रीढ़।

**बाँसपूर**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाँस + पूरना ] एक प्रकार का महीन कपड़ा।

**बाँसली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँस + ली (प्रत्य०) ] १. बाँसुरी। मुरली। २. जालीदार लंबी पतली थैली जिसमें रुपया-पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं। हिमयानी।

**बाँसा**†—संज्ञा पुं० [ सं० वंश=रीढ़ ] नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के ऊपर बीचोबीच रहती है। संज्ञा पुं० [सं० वंश] पीठ की रीढ़।

**बाँसुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाँस ] बाँस का बना हुआ प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। बाँसुरी।

**बाँह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बाहु ] १. कंधे से निकलकर दंड के रूप में गया हुआ अंग जिसके छोर पर हथेली या पंजा होता है। भुजा। हाथ। बाहु।

मुहा०—बाँह गहना या पकड़ना=१. किसी की सहायता करने के लिए हाथ बढ़ाना। सहारा देना। अपनाना।

२. विवाह करना । बाँह देना=सहारा देना ।

बाँह—बोल=रक्षा करने या सहायता देने का वचन ।

२. बल । शक्ति । ३. सहायक ।

मुहा०—बाँह टूटना=सहायक या रक्षक आदि का न रह जाना ।

४. भरोसा । आसरा । सहारा । शरण । ५. एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं । ६. कुरते, कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है । आस्तीन ।

बा—संज्ञा पुं० [ सं० वा = जल ] जल । पानी ।

संज्ञा पुं० [फ़ा० बार ] बार । दफा । मरतबा ।

बाइबिल—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] ईसाइयों की धर्म-पुस्तक ।

बाइसिकिल—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] दो पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जो पैरों से चलाई जाती है ।

बाई—संज्ञा स्त्री० [ सं० वायु ] त्रिदोषों में से वात दोष । दे० "वात" ।

मुहा०—बाई की झोंक=१. वायु का प्रकोप । २. आवेश । बाई चढ़ना=१. वायु का प्रकोप होना । २. घमंड आदि के कारण व्यर्थ की बातें करना । बाई पचना=१. वायु का प्रकोप शांत होना । २. घमंड टूटना ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाबा, बाबी ] १. स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द । २. एक शब्द जो उत्तरी प्रांतों में प्रायः वेश्याओं के नाम के साथ लगाया जाता है ।

बाईस—संज्ञा पु० [ सं० द्वाविंशति ] बीस और दो की संख्या या अंक । २२ । वि० जो बीस और दो हो ।

बाईसी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाईस+ई ( प्रत्य० ) ] बाईस वस्तुओं का समूह ।

बाउ‡—संज्ञा पुं० [ सं० वायु ] हवा । पवन ।

बाउर†—वि० [ सं० वातुल ] [ स्त्री० बाउरी ] १. बावला । पागल । २. सीधा-सादा । ३. मूर्ख । अज्ञान । ४. गूँगा ।

बाँएँ—क्रि० वि० [हिं० बायाँ ] बाईं ओर । बाईं तरफ़ । दाहिने का उलटा ।

बाक*—संज्ञा पुं० [ सं० वाक्य ] बात । वचन ।

बाकचाली—वि० [ सं० वाक्+चलना ] बहुत अधिक बोलनेवाला । बक्की । बातूनी ।

बाकना*‡—क्रि० अ० [ सं० वाक् ] बकना ।

बाकल†—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल" ।

बाकला—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. एक प्रकार की बड़ी मटर या मोठ । २. उबाला हुआ मोठ ।

बाका*‡—संज्ञा स्त्री० [ सं० वाक् ] वाणी ।

बाकी—वि० [ अ० ] जो बच रहा हो । अवशिष्ट । शेष ।

संज्ञा स्त्री० १. गणित में दो संख्याओं या मानों का अंतर निकालने की रीति । २. घटाने के पीछे बची हुई संख्या या मान ।

अव्य० लेकिन । मगर । परंतु ।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का धान ।

बाकुल*—संज्ञा पुं० दे० "वल्कल" ।

बाखरि*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"

बाग—संज्ञा पुं० [ अ० ] उद्यान । उपवन । वाटिका ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वल्गा ] लगाम ।

मुहा०—बाग मोड़ना=किसी ओर प्रवृत्त करना । किसी ओर घुमाना । बाग बाग होना=प्रसन्न होना ।

बागडोर—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाग+डोर ] लगाम ।

बागना†—क्रि० अ० [ सं० वक+चलना ] चलना । फिरना । घूमना । टहलना ।

‡क्रि० अ० [ सं० वाक् ] बोलना ।

बागबान—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] माली ।

बागबानी—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] माली का काम ।

बागर—संज्ञा पु० [ देश० ] नदी-किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं ।

बागल*†—संज्ञा पुं० [ सं० बक ] बगला । बक ।

बागा—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बाग ] अंगे की तरह का पुराने समय का एक पहनावा । जामा ।

बागी—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जो राज्य के विरुद्ध विद्रोह करे । राज-द्रोही ।

बागीचा—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बागचः] छोटा बाग ।

बागुर*—संज्ञा पुं० [ ? ] जाल । फंदा ।

बागेसरी‡—संज्ञा स्त्री० [ सं० वागीश्वरी ] १. सरस्वती । २. एक प्रकार की रागिनी ।

बाघंबर—संज्ञा पुं० [ सं० व्याघ्रांबर ] १. बाघ की खाल जिसे लोग बिछाने आदि के काम में लाते हैं । २. एक प्रकार का कंबल ।

बाघ—संज्ञा पुं० [ सं० व्याघ्र ] शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जंतु ।

बाघी—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक

प्रकार की फुंसी जो अधिकतर गरमी के रोगियों के पेड़ू और जाँघ की संधि में होती है।

**बाच्य***—वि० [सं० वाच्य] १. वर्णन करने के योग्य। २. सुंदर।

**बाचना†**—क्रि० अ० [हिं० बचना] बचना।

क्रि० स० बचाना। सुरक्षित रखना।

**बाचा**—संज्ञा स्त्री० [सं० वाचा] १. बोलने की शक्ति। २. वचन। बातचीत। वाक्य। ३. प्रतिज्ञा। प्रण।

**बाचाबंध***—वि० [सं० वाचा + बद्ध] जिसने किसी प्रकार का प्रण किया हो। प्रतिज्ञा-बद्ध।

**बाछा**—संज्ञा पुं० [सं० वत्स, प्रा० बच्छ] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २. लड़का।

**बाज**—संज्ञा पुं० [अ० बाज़] १. एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी। २ तीर में लगा हुआ पर।

प्रत्य० [फ़ा०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है। जैसे-दगाबाज, कबूतरबाज। नशेबाज।

वि० [फ़ा०] वंचित। रहित।

मुहा०—बाज आना=१. खोना। रहित होना। २. दूर होना। पास न जाना। बाज करना=रोकना। मना करना। बाज रखना=रोकना। मना करना।

वि० [अ० बअ़ज़] कोई कोई। कुछ। थोड़े कुछ। विशिष्ट।

क्रि० वि० बगैर। बिना। (क्व०)

संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] १. बाजे। बाजा। २. बजने या बाजे का शब्द।

**बाजदावा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] अपने दावे या स्वत्व से बाज आना।

**बाजन***†—संज्ञा पुं० दे० "बाजा"।

**बाजना**—क्रि० अ० [हिं० बजना] १. बाजे आदि का बजना। २. लड़ना। झगड़ना। ३. प्रसिद्ध होना। पुकारा जाना। ४. लगना। आघात पहुँचना।

**बाजरा**—संज्ञा पुं० [सं० वर्जरी] एक प्रकार की बड़ी घास जिसकी बालों के दानों की गिनती मोटे अन्नों में होती है। जोंधरी।

**बाजा**—संज्ञा पुं० [सं० वाद्य] कोई ऐसा यंत्र जो स्वर (विशेषतः राग-रागिनी) उत्पन्न करने अथवा ताल देने के लिए बजाया जाता हो। बजाने का यंत्र। वाद्य।

यौ०—बाजा गाजा=अनेक प्रकार के बजते हुए बाजों का समूह।

**बाजाब्ता**—क्रि० वि० [फ़ा०] जाब्ते के साथ। नियमानुकूल।

वि० जो नियमानुसार हो।

**बाजार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थों की दूकानें हों।

मुहा०—बाजार करना=चीजें खरीदने के लिए बाजार जाना। बाजार गर्म होना=१. बाजार में चीजों या ग्राहकों आदि की अधिकता होना। २. खूब काम चलना। बाजार तेज होना=१. बाजार में किसी चीज की माँग बहुत अधिक होना। २. किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। ३. काम जोरों पर होना। खूब काम चलना। बाजार उतरना या मंदा होना=१. बाजार में किसी चीज की माँग कम होना। २. दाम घटना। ३. कारबार कम चलना।

२. वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय या अवसर पर सब तरह की दूकानें लगती हों। हाट। पैंठ।

**बाजारी**—वि० [फ़ा०] १. बाजार-संबंधी। बाजार का। २. मामूली। साधारण। ३. अशिष्ट।

**बाजारू**—वि० दे० "बाजारी"।

**बाजि***—संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १. घोड़ा। २. बाण। ३. पक्षी। ४. अडूसा।

वि० चलनेवाला।

**बाजी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. ऐसी शर्त जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। शर्त। दाँव। बदाम।

मुहा०—बाजी मारना=बाजी जीतना। दाँव जीतना। बाजी ले जाना=किसी बात में आगे बढ़ जाना। श्रेष्ठ ठहरना।

२. आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें शर्त या दाँव लगा हो।

संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

**बाजीगर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] जादूगर।

**बाजू**—अव्य० [सं० वर्जन। मि० फ़ा० बाज़] १. बिना। बगैर। २. अतिरिक्त। सिवा।

**बाजू**—संज्ञा पुं० [फ़ा० बाज़ू] १. भुजा। बाहु। बाँह। २. बाजूबंद नाम का गहना। ३. सेना का किसी ओर का एक पक्ष। ४. वह जो हर काम में बराबर साथ रहे और सहायता दे। ५. पक्षी का डैना।

**बाजूबंद**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना। बाजू। बिजायठ। भुजबंध।

**बाजूबीर**†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बाजूबंद"।

**बाझ***—अव्य॰ [ देश॰ ] बगैर। बिना।

**बाझन***†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बझना=फँसना ] १. बझने या फसने का भाव। फसावट। २. उलझन। पेंच। ३. झंझट। बखेड़ा।

**बाझना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "बझना"।

**बाट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वाट ] मार्ग। रास्ता।

**मुहा॰**—बाट करना=रास्ता खोलना। मार्ग बनाना। बाट जोहना या देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। बाट पड़ना=तंग करना। पीछे पड़ना। बाट पड़ना=डाका पड़ना। बाट पारना=डाका मारना।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वटक ] १. बटखरा। २. पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाय। बट्टा।

**बाटकी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बटलोई"।

**बाटना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ बट्टा या बाट ] सिल पर बट्टे आदि से पीसना। चूर्ण करना।

क्रि॰ स॰ दे॰ "बटना"।

**बाटिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. बाग। फुलवारी। २. वह गद्य जिसमें कुसुम और गुच्छ गद्य मिला हो।

**बाटी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वटी ] १. गोली। पिंड। २. अंगारों या उपलों आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की मोटी। अँगा-कड़ी। लिट्टी।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वर्तुल। मि॰ हिं॰ बटुआ ] चौड़ा और कम गहरा कटोरा।

**बाड़***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बाढ़"।

**बाड़व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बड़वाग्नि। वि॰ बड़वा-संबंधी।

**बाड़वानल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बड़वानल"।

**बाड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वाट ] १. चारों ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। २. पशुशाला।

**बाड़ी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वारी ] वाटिका।

**बाढ़**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बढ़ना ] १. बढ़ाव। वृद्धि। अधिकता। २. अधिक वर्षा आदि के कारण नदी या जलाशय के जल का बहुत अधिक मान में बढ़ना। जलप्लावन। सैलाब। ३. व्यापार आदि से होनेवाला लाभ। ४. बंदूक या तोप आदि का लगातार छूटना। ५. एक प्रकार का गहना।

**मुहा॰**—बाढ़ दगना=तोप का लगातार छूटना।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वाट ] [ हिं॰ बारी ] तलवार, छुरी आदि शस्त्रों की धार। सान।

**बाढ़ना***†—क्रि॰ अ॰ दे॰ "बढ़ना"।

**बाढ़ि, बाढ़ी***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बाढ़"।

**बाढ़ीवान**—वि॰ [ हिं॰ बाढ़ ] शस्त्रों आदि पर बाढ़ या सान रखनेवाला।

**बाण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. तीर। सायक। शर। २. गाय का थन। ३. आग। ४. निशाना। लक्ष्य। ५. पाँच की संख्या। ६. शर का अगला भाग।

**बाणासुर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] राजा बलि के सौ पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत गुणी और सहस्रबाहु था।

**बाणिज्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] व्यापार। रोजगार। सौदागरी।

**बात**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वार्ता ] १. सार्थक शब्द या वाक्य। कथन। वचन। वाणी।

**मुहा॰**—बात उठाना=१. कठोर वचन सहना। २. बात मानना। बात कहते=तुरंत। झट। फौरन। बात काटना=१. किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। २. कथन का खंडन करना। बात की बात में=झट। फौरन। तुरंत। बात खाली जाना=प्रार्थना या कथन का निष्फल होना। बात टलना=कथन का अन्यथा होना। बात टालना=१. सुनी अनसुनी करना। २. कही हुई बात पर न चलना। बात न पूछना=कुछ भी कदर न करना। (किसी की) बात पर जाना=१. बात का खयाल करना। बात पर ध्यान देना। २. कहने पर भरोसा करना। बात पूछना=१. खोज रखना। खबर लेना। २. कदर करना। बात बढ़ना=बात का विवाद के रूप में हो जाना। झगड़ा होना। बात बढ़ाना=विवाद करना। झगड़ा करना। बात बनाना=झूठ बोलना। बहाना करना। बातें बनाना=१. झूठमूठ इधर-उधर की बातें कहना। २. बहाना करना। ३. खुशामद करना। बातों में उड़ाना=१. (किसी विषय को) हँसी में टालना। २. टालमटूल करना। बातों में लगाना=बातें कहकर उनमें लीन रखना।

२. चर्चा। जिक्र। प्रसंग।

**मुहा॰**—बात उठाना=चर्चा चलाना। जिक्र करना। बात चलना या छिड़ना=प्रसंग आना। चर्चा छिड़ना। बात निकालना=बात चलाना। बात पड़ना=चर्चा छिड़ना।

३. खबर। अफवाह। किंवदन्ती। प्रवाद।

**मुहा॰**—बात उड़ना=चारों ओर चर्चा फैलना। बात गढ़ना=चारों ओर चर्चा फैलना।

४. मामला। हाल। व्यवस्था।

मुहा०—बात का बतंगड़ करना=साधारण विषय या छोटे से मामले को व्यर्थ बहुत पेचीला या भारी बना देना। बात न पूछना=दशा पर ध्यान न देना। परवा न रखना। बात बढ़ना=किसी प्रसंग या घटना का घोर रूप धारण करना। बात बनना=१. काम बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। २. अच्छी परिस्थिति होना। बोल-बाला होना। बात बनाना या सँवारना=काम बनाना। कार्य सिद्ध करना। बात बात पर या बात बात में=प्रत्येक प्रसंग पर। हर काम में। बात बिगड़ना=काम चौपट होना। मामला खराब होना। विफलता होना।

५. घटित होनेवाली अवस्था। प्राप्त योग। परिस्थिति। ६. संदेश। सँदेसा। पैगाम। ७. वार्त्तालाप। गप-शप। वाग्विलास।

मुहा०—बातों बातों में=बातचीत करते हुए। कथोपकथन के बीच में।

८. कोई मामला ते करने के लिए उसके संबंध में चर्चा।

मुहा०—बात ठहरना=१. विवाह संबंध स्थिर होना। २. किसी प्रकार का निश्चय होना।

९. फँसाने या धोखा देने के लिए कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार।

मुहा०—बातों में आना या जाना=कथन या व्यवहार से धोखा खाना।

१०. झूठ या बनावटी कथन। मिस। बहाना। ११. वचन। प्रतिज्ञा। वादा।

मुहा०—बात का धनी, पक्का या पूरा=प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला। दृढ़-प्रतिज्ञ। बात पक्की करना=१. दृढ़ निश्चय करना। २. प्रतिज्ञा या संकल्प पुष्ट करना। (अपनी) बात रखना=वचन पूरा करना। प्रतिज्ञा का पालन करना। बात हारना=वचन देना।

१२. साख। प्रतीति। विश्वास।

मुहा०—(किसी की) बात जाना=बात का प्रमाण न रहना (लोगों को)। एतबार न रह जाना। बात खोना=साख बिगाड़ना। बात बनना=साख रहना। विश्वास रहना।

१३. मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—बात खोना=प्रतिष्ठा नष्ट करना। इज्जत गँवाना। बात जाना=इज्जत न रह जाना। बात बनना=प्रतिष्ठा प्राप्त होना।

१४. अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के संबंध में कथन या वाक्य। १५. आदेश। उपदेश। सीख। नसीहत। १६. रहस्य। भेद। १७. तारीफ की बात। प्रशंसा का विषय। १८. चमत्कारपूर्ण कथन। उक्ति। १९. गूढ़ अर्थ। अभिप्राय। मानी।

मुहा०—बात पाना=छिपा हुआ अर्थ समझ जाना। गूढ़ार्थ जान जाना।

२०. गुण या विशेषता। खूबी। २१. ढंग। ढब। तौर। २२. प्रश्न। सवाल। समस्या। २३. अभिप्राय। तात्पर्य्य। आशय। २४. कामना। इच्छा। चाह। २५. कथन का सार। तत्त्व। मर्म। २६. काम। कार्य्य। आचरण। व्यवहार। २७. संबंध। लगाव। तअल्लुक। २८. स्वभाव। गुण। प्रकृति। लक्षण। २९. वस्तु। पदार्थ। चीज। विषय। ३०. मूल्य। दाम। मोल। ३१. उचित पथ या उपाय। कर्त्तव्य।

संज्ञा पुं० दे० "वात"।

**बात-चीत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बात+चितन ] दो या कई मनुष्यों के बीच कथोपकथन। वार्त्तालाप।

**बाती**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बत्ती"।

**बातुल**—वि० [ सं० वातुल ] पागल। सनकी।

**बातूनिया, बातूनी**—वि० [ हिं० बात+ऊनी (प्रत्य०) ] बहुत बातें करनेवाला। बकवादी।

**बाथा**†—संज्ञा पुं० [ ? ] गोद। अंक। संज्ञा पुं० [ अं० ] स्नान।

यौ०—बाथ-रूम=स्नान आदि का कमरा।

**बाद**—संज्ञा पुं० [ सं० वाद ] १. बहस। तर्क। २. विवाद। झगड़ा। हुज्जत। ३. झकझक। तूल-कलामी। ४. शर्त। बाजी।

मुहा०—बाद मेलना=बाजी लगाना।

अव्य० [ सं० वाद ] व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

अव्य० [ अ० ] अनंतर। पीछे।

वि० १. अलग किया या छोड़ा हुआ। २. दस्तूरी या कमीशन जो दाम में से काटा जाय। ३. अतिरिक्त। सिवाय।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वात। हवा।

**बादना**—क्रि० अ० [ सं० वाद+ना (प्रत्य०) ] १. बकवाद करना। तर्क-वितर्क करना। २. हुज्जत करना। ३. ललकारना।

**बादबान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पाल।

**बादर**†*—संज्ञा पुं० [ सं० वारिद ] बादल। मेघ।

वि० [ देश० ] आनंदित। प्रसन्न।

**बादरायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेद-व्यास।

**बादरिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"।

**बादल**—संज्ञा पुं० [ सं० वारिद, हिं० बादर ] पृथ्वी पर के जल से उठी हुई

वह भाप जो घनी होकर आकाश में छा जाती है और फिर पानी की बूँदों के रूप में गिरती है। मेघ। घन।

मुहा०—बादल उठना या चढ़ना= बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में बढ़ते हुए दिखाई पड़ना। बादल गरजना=मेघों के संघर्ष का घोर शब्द। बादल घिरना= मेघों का चारों ओर छाना। बादल छँटना= मेघों का खंड खंड होकर हट जाना।

**बादला**—संज्ञा पुं० [ हिं० पतला ? ] सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार। कामदानी का तार।

**बादशाह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. राजा। शासक। २. सबसे श्रेष्ठ पुरुष। सरदार। ३. स्वतंत्र। मनमाना करनेवाला। ४. शतरंज का एक मुहरा। ५. ताश का एक पत्ता।

**बादशाहत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] राज्य। शासन।

**बादशाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. राज्य। राज्याधिकार २. शासन। हुकूमत। ३. मनमाना व्यवहार।
वि० बादशाह-संबंधी।

**बाद-हवाई**—क्रि० वि० [ फ़ा० बाद + अ० हवा ] योंही। व्यर्थ। फजूल।
वि० बे-सिर-पैर का। ऊट-पटाँग।

**बादाम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] मझोले आकार का एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवों में गिने जाते हैं। उसका फल।

**बादामी**—वि० [ फ़ा० बादाम + ई (प्रत्य०) ] १. बादाम के छिलके के रंग का। कुछ पीलापन लिए लाल। २. बादाम के आकार का। अंडाकार।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की छोटी डिबिया। २. किलकिला पक्षी। ३. बादाम के रंग का घोड़ा।

**बादि**—अव्य० [ सं० वादि ] व्यर्थ। फजूल।

**बादित**—[ सं० वादन ] बजाया हुआ।

**बादी**—वि० [ फ़ा० ] १. वायु-संबंधी। २. वायुविकार संबंधी। वायु या बात का विकार उत्पन्न करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० वातविकार। वायु का दोष।

**बादीगर**—संज्ञा पुं० दे० "बाजीगर"।

**बादुर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] चमगादड़।

**बाध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० बाधिका ] १. बाधा। रुकावट। अड़चन। २. पीड़ा। कष्ट। ३. कठिनता। मुश्किल। ४. अर्थ की असंगति। व्याघात। ५. वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो। (न्याय)
संज्ञा पुं० [ सं० बद्ध ] मूँज की रस्सी।

**बाधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रुकावट डालनेवाला। विघ्नकर्ता। २. दुःखदायी।

**बाधकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बाधा।

**बाधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० बाधित, बाधनीय, बाध्य ] १. रुकावट या विघ्न डालना। २. कष्ट देना।

**बाधना**—क्रि० स० [ सं० बाधन ] बाधा डालना। रुकावट डालना। रोकना।

**बाधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विघ्न। रुकावट। रोक। अड़चन। २. संकट। कष्ट।

**बाधित**—वि० [ सं० ] १. जो रोका गया हो। बाधायुक्त। २. जिसके साधन में रुकावट पड़ी हो। ३. जो तर्क से ठीक न हो। असंगत। ४. ग्रस्त। गृहीत। ५. दे० "बाध्य"।

**बाध्य**—वि० [ सं० ] [ भाव० बाध्यता ] १. जो रोका या दबाया जानेवाला हो। २. मजबूर होनेवाला।

**बान**—संज्ञा पुं० [ सं० बाण ] १. बाण। तीर। २. एक प्रकार की आतशबाजी। ३. समुद्र या नदी की ऊँची लहर।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनना ] १. बनावट। सजधज। वेश-विन्यास। २. आदत।
संज्ञा पुं० [ सं० वर्ण ] आब। कांति।
संज्ञा पुं० [ सं० बाण ] बाना। (हथियार)
संज्ञा पुं० [ ? ] गोला।

**बानइत**†—वि० दे० "बानैत"।
वि० [ हिं० बाण ] १. बाण चलानेवाला। २. योद्धा। वीर। बहादुर।

**बानक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनाना ] वेश। भेस। सजधज। मुद्रा।

**बानगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनाना ] नमूना।

**बानना***—क्रि० स० दे० १. "बनाना"। २. किसी बात का बाना ग्रहण करना। ३. ठानना। उपक्रम करना।

**बानर**—संज्ञा पुं० दे० "बंदर"।

**बानरेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० वानरेंद्र ] सुग्रीव।

**बाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बनाना ] १. पहनावा। पोशाक। वेश-विन्यास। भेस। २. रीति। चाल। स्वभाव।
संज्ञा पुं० [ सं० बाण ] १. तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। २. सांग या भाले के आकार का एक हथियार।
संज्ञा पुं० [ सं० वयन=बुनना ] १. बुनावट। बुनन। बुनाई। २. कपड़े की बुनावट जो ताने में की जाती है।

३. कपड़े की बुनावट में वह तागा जो आड़े बल ताने में जाता है। भरनी। ४. बारीक महीन सूत जिससे पतंग उड़ाई जाती है।

क्रि० स० [ सं० व्यापन ] १. किसी छिड़कने और फैलनेवाले छेद को फैलाना। २. बालों में कंघी करना।

**बानावरी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बान + आवरी ( फ़ा० प्रत्य० ) ]. बाण चलाने की क्रिया।

**बानि**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनना या बनाना ] १. बनावट। सजधज। २. टेव। आदत।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्ण ] चमक। आभा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वाणी ] वाणी। वचन।

**बानिक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्णक या हिं० बनना ] वेश। भेस। सज-धज। बनाव-सिंगार। मुद्रा।

**बानिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनिया ] बनिये की स्त्री।

**बानिया**—संज्ञा पुं० दे० "बनिया"।

**बानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वाणी ] १. १. वचन। मुँह से निकला हुआ शब्द। २. मनौती। प्रतिज्ञा। ३. सरस्वती। ४. साधु-महात्मा का उप-देश। जैसे, कबीर की बानी। ५. बाना नामक हथियार। ६. गोला।

संज्ञा पुं० [ सं० वणिक् ] बनिया।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वर्ण ] चमक। आभा।

संज्ञा पुं० [ अ० ] चलानेवाला। प्रवर्तक।

संज्ञा स्त्री० दे० "वाणिज्य"।

**बानीर**—संज्ञा पुं० दे० "वानीर"।

**बानैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाना + ऐत ( प्रत्य० ) ] १. बाना फेरनेवाला। २. बाण चलानेवाला। तीरंदाज। ३. योद्धा। सैनिक।

संज्ञा पुं० [ हिं० बाना ] बाना धारण करनेवाला।

**बाप**—संज्ञा पुं० [ सं० वाप=बीज बोनेवाला ] पिता। जनक।

मुहा०—बाप-दादा=पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप-माँ=रक्षक। पालन करनेवाला।

**बापिका***—संज्ञा स्त्री० दे० "वापिका"।

**बापुरा**—वि० [ सं० बर्बर=तुच्छ ] [ स्त्री० बापुरी ] १. जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। २. दीन। बेचारा।

**बापू**—संज्ञा पुं० १. दे० "बाप"। २. दे० "बाबू"।

**बाफ**†—संज्ञा स्त्री० दे० "भाप"।

**बाफता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

**बाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] परिच्छेद। अध्याय।

**बाबत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. संबंध। २. विषय।

**बाबा**—संज्ञा पुं० [ तु० ] १. पिता। २. पितामह। दादा। ३. साधु-संन्या-सियों के लिए आदर-सूचक शब्द। ४. बूढ़ा पुरुष।

संज्ञा पुं० [ अ० ] लड़कों के लिए प्यार का शब्द।

**बाबी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाबा ] १. साधु-स्त्री। संन्यासिन। २. लड़-कियों के लिए प्यार का शब्द।

**बाबुल**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाबू ] बाबू।

संज्ञा पुं० पश्चिमी एशिया का एक बहुत प्रसिद्ध प्राचीन नगर। बेबि-लोन।

**बाबू**—संज्ञा पुं० [ हिं० बाबा ] १. राजा के नीचे उनके बंधु-बांधवों या और क्षत्रिय जमींदारों के लिए प्रयुक्त शब्द। २. एक आदर-सूचक शब्द। भलामानुस। †३. पिता का संबोधन।

**बाबूना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।

**बाभन**—संज्ञा पुं० दे० १. "ब्राह्मण"। २. दे० "भूमिहार"।

**बाम**—वि० दे० "वाम"।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. अटारी। कोठा। २. मकान के ऊपर की छत।

संज्ञा स्त्री० दे० "वामा"।

**बायँ**—वि० [ सं० वाम ] १. बायाँ। २. चूका हुआ। दावँ या लक्ष्य पर न बैठा हुआ।

मुहा०—बायँ देना=१. बचा जाना। छोड़ना। २. तरह देना। कुछ ध्यान न देना। ३. फेरा देना। चक्कर देना।

**बाय***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वायु ] १. वायु। हवा। २. बाई। वात का कोप।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वापी ] बावली। बेहर।

**बायक***—संज्ञा पुं० [ सं० वाचक ] १. कहनेवाला। बतलानेवाला। २. पढ़नेवाला। बाँचनेवाला। ३. दूत।

**बायकाट**—संज्ञा पुं० [ अं० ] बहि-ष्कार।

**बायन***—संज्ञा पुं० [ सं० वायन ] १. वह मिठाई आदि जो उत्सवादि के उपलक्ष में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजते हैं। २. भेंट।

संज्ञा पुं० [ अ० बयाना ] बयाना। अगाऊ।

मुहा०—बायन देना=छेड़-छाड़ करना मरतबा।

**बायबिडंग**—संज्ञा पुं० [सं० बिडंग] एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते हैं जो औषध के काम आते हैं।

**बायबी**—वि० [सं० वायवीय] १. बाहरी। अपरिचित। अजनबी। २. नया आया हुआ।

**बायला**†—वि० [सं० वात] वायु या वात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला।

**बायस**—संज्ञा पुं० [सं० वायस] कौआ।

**बायस्कोप**—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध यंत्र जिससे परदे पर चलते फिरते चित्र दिखाये जाते हैं।

**बायाँ**—वि० [सं० वाम] [स्त्री० बाई] १. किसी प्राणी के शरीर के उस पार्श्व में पड़नेवाला जो उसके पूर्वाभिमुख खड़े होने पर उत्तर की ओर हो 'दहिना' का उलटा।

मुहा०—बायाँ देना=१. किनारे से निकल जाना। बचा जाना। २. जान-बूझकर छोड़ना।

२. उलटा। ३. विरुद्ध। खिलाफ। अहित में प्रवृत्त।

संज्ञा पुं० वह तबला जो बायें हाथ से बजाया जाता है।

**बायें**—क्रि० वि० [हिं० बायाँ] १. बाईं ओर। २. विपरीत। विरुद्ध।

मुहा०—बायें होना=१. विरुद्ध होना। २. अप्रसन्न होना।

**बारंबार**—क्रि० वि० [सं० वारंवार] बार बार। पुनः पुनः। लगातार।

**बार**—संज्ञा पुं० [सं० द्वार] १. द्वार। दरवाजा। २. आश्रय-स्थान। ठिकाना। ३. दरबार।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काल। समय। २. देर। बेर। विलंब। ३. दफा। मरतबा।

मुहा०—बार बार=फिर फिर।

संज्ञा पुं० [सं० वाट] १. घेरा या रोक जो किसी स्थान के चारों ओर हो। बाढ़। २. किनारा। छोर। ३. धार। बाढ़।

†संज्ञा पुं० १. दे० "बाल"। २. दे० "बाढ़"।

संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० भार] बोझ।

†वि० दे० "बाल" और "बाला"।

**बारगह**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० बार-गाह] १. डेवढ़ी। २. डेरा। खेमा। तंबू।

**बारजा**—संज्ञा पुं० [हिं० बार=द्वार] १. मकान के सामने दरवाजों के ऊपर पाट कर बढ़ाया हुआ बरामदा। २. कोठा। अटारी। ३. बरामदा। ४. कमरे के आगे का छोटा दालान।

**बारता***—संज्ञा स्त्री० दे० "वार्त्ता"।

**बारतिय***—संज्ञा स्त्री० दे० "बार-स्त्री"।

**बारदाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. व्यापार की चीजों के रखने का बरतन या बेठन। २. फौज के खाने-पीने का सामान। रसद।

**बारन***—संज्ञा पुं० दे० "वारण"।

**बारना**—क्रि० अ० [सं० वारण] निवारण करना। मना करना। रोकना।

क्रि० स० [हिं० बरना] बालना। जलाना।

क्रि० स० दे० "वारना"।

**बारवधू***—संज्ञा स्त्री० [सं० बारवधू] वेश्या।

**बारबरदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो सामान ढोता हो। बोझ ढोने-वाला।

**बारबरदारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सामान ढोने का काम या मजदूरी।

**बारमुखी**—संज्ञा स्त्री० [सं० बार-मुख्या] वेश्या।

**बारह**—वि० [सं० द्वादश] [वि० बारहवां] जो संख्या में दस और दो हो।

मुहा०—बारह बाट करना या घालना=तितर-बितर या छिन्न-भिन्न करना। इधर-उधर कर देना। बारह बाट जाना या होना=१. तितर-बितर होना। २. नष्ट-भ्रष्ट होना।

संज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक। १२।

**बारहखड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० द्वादश+अक्षरी] वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों को, मात्रा के रूप में लगाकर, बोलते या लिखते हैं।

**बारहदरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बारह+फ़ा० दर] चारों ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हो।

**बारहबान**—संज्ञा पुं० [सं० द्वादश-वर्ण] एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना।

**बारहबाना**—वि० दे० "बारह बानी"।

**बारहबानी**—वि० [सं० द्वादश (आदित्य)+वर्ण, पा० बारस वण्ण] १. सूर्य के समान दमकवाला। २. खरा। चोखा। (सोने के लिये) ३. निर्दोष। सच्चा। ४. पूरा। पूर्ण। पक्का।

संज्ञा स्त्री० सूर्य की सी चमक।

**बारह-वफात**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] मुहम्मद साहब के जीवन के वे अंतिम बारह दिन जिनमें वे बीमार थे।

**बारहमासा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बारह+मास ] वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन विरही के मुँह से कराया गया हो।

**बारहमासी**—वि० [ हिं० बारह+मास ] १. सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। सदाबहार। सदाफल। २. बारहों महीने होनेवाला।

**बारहसिंगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बारह+सींग ] हिरन की जाति का एक प्रसिद्ध पशु।

**बारहाँ**—वि० [ ? ] बहादुर। वीर। क्रि० वि० दे० "बारहा"।

**बारहा**—क्रि० वि० [ फ़ा० बार ] बार बार। कई बार। अक्सर।

**बारही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बारह ] बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही।

**बारा**—वि० [ सं० बाल ] बालक। संज्ञा पुं० बालक। लड़का।

**बारात**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वरयात्रा ] किसी के विवाह में उसके घर के लोगों और इष्ट-मित्रों का मिलकर वधू के घर जाना। वरयात्रा।

**बारानी**—वि [ फ़ा० ] बरसाती। संज्ञा स्त्री० १. वह भूमि जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। २ वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिए बरसात में पहना या ओढ़ा जाता हो।

**बारिगर***—संज्ञा पुं० [ हिं० बारी+गर ] हथियारों पर बाढ़ रखनेवाला। सिकलीगर।

**बारिज***—संज्ञा पुं० [ सं० वारिज ] कमल।

**बारिधर**—संज्ञा पुं० [ सं० वारिधर] १. बादल। वारिद। मेघ। २. एक वर्णवृत्त।

**बारिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वर्षा। वृष्टि। २. वर्षा ऋतु।

**बारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अवार ] १. किनारा। तट। २. छोर पर का भाग। हाशिया। ३. बगीचे, खेत आदि के चारो ओर रोकने के लिए बनाया हुआ घेरा। बाड़। ४. बरतन के मुँह का घेरा। औंठ। ५. पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़।
संज्ञा स्त्री० [सं० वाटी] १. वह स्थान जहाँ पेड़ लगाए गए हो। बगीचा। २. मेंड़ आदि से घिरा स्थान। क्यारी। ३. घर। मकान। ४. खिड़की। झरोखा। ५. जहाजों के ठहरने का स्थान। बंदरगाह।
संज्ञा पुं० एक जाति जो अब पत्तल, दोने बनाती और सेवा करती है।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० बार ] आगे पीछे के सिलसिले के मुताबिक आनेवाला मौका। अवसर। पारी।
मुहा०—बारी बारी से=काल-क्रम में एक के पीछे एक इस रीति से। बारी बँधना= आगे पीछे अलग अलग नियत समय होना।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० बार=छोटा ] १. लड़की। कन्या। वह जो सयानी न हो। २. थोड़े वयस की स्त्री। नवयौवना।
†संज्ञा स्त्री० दे० "बाली"।

**बारीक**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बारीकी ] १. महीन। पतला। २. बहुत ही छोटा। सूक्ष्म। ३. जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हों। ४. जिसकी रचना में दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। ५. जो बिना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ में न आवे।

**बारीकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. महीनपन। पतलापन। २. गुण। विशेषता। खूबी।

**बारू**†—संज्ञा पुं० दे० "बालू"।

**बारूद**—संज्ञा स्त्री० [ तु० बारूत ] १. एक प्रकार का चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बंदूक चलती हैं। दारू। २. एक प्रकार का धान।
मुहा०—गोली-बारूद = लड़ाई की सामग्री।

**बारूदखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बारूद+खाना ] वह स्थान जहाँ गोले और बारूद आदि रहती है।

**बारे**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] अंत को।

**बारे में**—अव्य० [ फ़ा० बारः+हिं० में ] प्रसंग में। विषय में। संबंध में।

**बारो***—संज्ञा पुं० दे० "बाल"।

**बारोठा**—संज्ञा पुं० [ सं० द्वार ] ब्याह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर होती है।

**बाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० बाला ] १. बालक। लड़का। २. नासमझ आदमी। ३. किसी पशु का बच्चा।
*संज्ञा स्त्री० दे० "बाला"।
वि० १. जो सयाना न हो। जो पूरी बाढ़ को न पहुँचा हो। २. जिसे उगे या निकले हुए थोड़ी ही देर हुई हो।
संज्ञा पुं० [ सं० ] सूत की सी वह वस्तु जो जंतुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है और जो अधिकतर जंतुओं में इतनी अधिक होती है कि उनका चमड़ा ढका रहता है। रोम। केश।

मुहा०—बाल बाँका न होना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। बाल न बाँकना=बाल बाँका न होना। नहाते बाल न खिसकना=कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। (किसी काम में) बाल पकाना=(कोई काम करते करते) बुड्ढा हो जाना। बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना। बाल बाल बचना=कोई आपत्ति पड़ने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना।

संज्ञा स्त्री० [?] कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं।

संज्ञा पुं० [अं०] विलायती नाच।

**बालक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लड़का। पुत्र। २. थोड़ी उम्र का बच्चा। शिशु। ३. अनजान आदमी। ४. हाथी या घोड़े का बच्चा। ५. बाल। केश।

**बालकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लड़कपन।

**बालकताई**—संज्ञा स्त्री० [सं० बालकता+ई (प्रत्य०)] १. बाल्यावस्था। २. नासमझी।

**बालकपन**—संज्ञा पुं० [सं० बालक+पन (प्रत्य०)] १. बालक होने का भाव। २. लड़कपन। नासमझी।

**बालकृष्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] बाल्यावस्था के कृष्ण।

**बालखिल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार ऋषियों का एक समूह जिसका प्रत्येक ऋषि अँगूठे के बराबर माना गया है।

**बालखोरा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सिर के बाल झड़ने का रोग।

**बालगोविंद**—संज्ञा पुं० दे० "बालकृष्ण"।

**बालग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के प्राणघातक नौ ग्रह।

**बालचर**—संज्ञा पुं० [सं०] वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाओं की शिक्षा मिली हो।

**बालछड़**—संज्ञा स्त्री० [देश०] जटामासी।

**बालटी**—संज्ञा स्त्री० [अं० बकेट] एक प्रकार की डोलची जिसमें उठाने के लिए एक दस्ता लगा रहता है।

**बालतंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] बालकों के लालन पालन आदि की विद्या। कौमारभृत्य। दायागिरी।

**बालतोड़**—संज्ञा पुं० [हिं० बाल+तोड़ना] बाल टूटने के कारण होनेवाला फोड़ा।

**बालधि**—संज्ञा पुं० [सं०] दुम पूँछ।

**बालना**—क्रि० स० [सं० ज्वलन] १. जलाना। २. रोशन करना। प्रज्वलित करना।

**बालपन**—संज्ञा पुं० [सं० बाल+पन (प्रत्य०)] १. बालक होने का भाव। २ लड़कपन।

**बाल-बच्चे**—संज्ञा पुं० [सं० बाल+हिं० बच्चा] लड़के-बाले। संतान। औलाद।

**बालबोध**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवनागरी लिपि।

**बाल-ब्रह्मचारी**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हो।

**बालभोग**—संज्ञा पुं० [सं०] वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण आदि की मूर्त्तियों के सामने प्रातःकाल रखा जाता है।

**बालम**—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] १. पति। स्वामी। २. प्रणयी। प्रेमी। यार।

**बालम खीरा**—संज्ञा पुं० [हिं० बालम+खीरा] एक प्रकार का बड़ा खीरा।

**बालमुकुंद**—संज्ञा पुं० [सं०] बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण।

**बाललीला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालकों के खेल। बालकों की क्रीड़ा।

**बाल-विधवा**—वि० [सं०] (स्त्री) जो बाल्यावस्था से ही विधवा हो गई है।

**बालविधु**—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।

**बालसूर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रातःकाल के उगते हुए सूर्य।

**बाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जवान स्त्री। बारह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २. पत्नी। भार्या। जोरू। ३. स्त्री। औरत। ४. दो वर्ष तक की अवस्था की लड़की। ५. पुत्री। कन्या। ६. हाथ में पहनने का कड़ा। ७. दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या का नाम। ८. एक वर्णवृत्त।

वि० [फ़ा०] जो ऊपर की ओर हो। ऊँचा।

मुहा०—बाल बाला रहना=सम्मान और आदर का सदा बढ़ा रहना।

संज्ञा पुं० [हिं० बाल] जो बालकों के समान हो। अज्ञान। सरल। निश्छल।

यौ०—बाला भोला=बहुत ही सीधा सादा।

**बालाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।

वि० [फ़ा०] १. ऊपरी। ऊपर का। २. वेतन या नियत आय के अतिरिक्त।

**बालाखाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] कोठे के ऊपर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।

**बालापन**—संज्ञा पुं० दे० "बालापन"।

**बालाबर**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] एक प्रकार का अँगरखा।

**बालार्क**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रातःकाल का सूर्य्य। २. कन्या राशि में स्थित सूर्य्य।

**बालि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पंपा, किष्किंधा का वानर राजा जो अंगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था।

**बालिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. छोटी लड़की। कन्या। २. पुत्री। बेटी।

**बालिग**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो। जवान। प्राप्त-वयस्क। नाबालिग का उलटा।

**बालिश**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] तकिया।

वि॰ [ सं॰ ] अबोध। अज्ञान। नासमझ।

**बालिश्त**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बित्ता"।

**बाली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ बालिका ] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण।

संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बाल ] जौ, गेहूँ आदि के पौधों की बाल।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "बालि"।

**बालुका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] रेत। बालू।

**बालू**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ बालुका ] चट्टानों आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों परसे बह आता है और नदियों के किनारों पर, अथवा ऊसर जमीन या रेगिस्तानों में बहुत पाया जाता है। रेणुका। रेत।

**मुहा॰**—बालू की भीत=ऐसी वस्तु जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न हो।

**बालूदानी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बालू + फ़ा॰ दानी ] एक प्रकार की झँझरी-दार डिबिया जिसमें लोग बालू रखते हैं। इस बालू से स्याही सुखाने का काम लेते हैं।

**बालूसाही**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बालू +शाही =अनुरूप ] एक प्रकार की मिठाई।

**बाल्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बालक का भाव। लड़कपन। बचपन। २. बालक होने की अवस्था।

वि॰ १ बालक का। २. बचपन का।

**बाल्यावस्था**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।

**बाव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वायु ] १. वायु। हवा। २. बाई। ३. अपान वायु। पाद।

**बावड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "बावली"।

**बावन**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वामन"।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ द्विपंचाशत ] पचास और दो की संख्या। ५२।

वि॰ पचास और दो।

**मुहा॰**—बावन तोले पाव रत्ती=जो हर तरह से बिलकुल ठीक हो। बिल-कुल दुरुस्त। बावन वीर=बड़ा बहा-दुर और चालाक।

**बावर***।—वि॰ दे॰ "बावला"।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "भामर"।

संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] यकीन। विश्वास।

**बावरची**-संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] भोजन पकानेवाला। रसोइया। ( मुसल॰ )

**बावरचीखाना**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] भोजन पकने का स्थान। रसोईघर। ( मुसल॰ )

**बावरा**—वि॰ दे॰ "बावला"।

**बावला**—वि॰ [ सं॰ वातुल, प्रा॰ बाउल ] १. पागल। विक्षिप्त। सनकी। २ मूर्ख।

**बावलापन**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ बावला +पन ( प्रत्य॰ ) ] पागलपन। सिड़ीपन। झक।

**बावली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वाप+ ड़ी या ली ( प्रत्य॰ ) ] १. चौड़े मुँह का कुआँ जिसमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों। २. छोटा गहरा तालाब।

**बावाँ***।—वि॰ [ सं॰ वाम ] १. बाईं ओर का। २. प्रतिकूल। विरुद्ध।

**बाशिंदा**— संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] निवासी।

**बाष्प**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वाष्प ] १. भाप। २. लोहा। ३. अश्रु। आँसू।

**बासंतिक**—वि॰ [ सं॰ ] १. वसंत ऋतु संबंधी। २. वसंत ऋतु में होने-वाला।

**बास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वास ] १. रहने की क्रिया या भाव। निवास। २. रहने का स्थान। निवास-स्थान। ३. बू। गंध। महक। ४. एक छंद का नाम। ५. वस्त्र। कपड़ा। पोशाक।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वासना ] वासना। इच्छा।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वसन ] छोटा कपड़ा।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वाशि. ] १. अग्नि। आग। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३. तेज धारवाली छुरी, चाकू, बर्छी इत्यादि छोटे शस्त्र जो तोपों में भरकर फेंके जाते हैं।

**बासकसज्जा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि-सामग्री

सजित करे।

**बासन**—संज्ञा पुं० [ ? ] बरतन। भाँड़ा।

**बासना**—संज्ञा स्त्री० दे० "वासना"। [ सं० वास ] गंध। महक। बू। क्रि० स० [ सं० वास ] सुगंधित करना। महकाना। सुवासित करना।

**बासमती**—संज्ञा पुं० [ हिं० बास=महक+मती ( प्रत्य० ) ] एक प्रकार का धान। इसका चावल पकने पर सुगंध देता है।

**बासर**—संज्ञा पुं० [ सं० वासर ] १. दिन। २. सबेरा। प्रातःकाल। सुबह। ३. वह राग जो सबेरे गाया जाता है।

**बासव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**बासवी**—संज्ञा पुं० [ सं० वासस् ] कपड़ा।

**बासा**—संज्ञा पुं० [ सं० वास ] वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है।
संज्ञा पुं० दे० "वास"।

**बासी**—वि० [ सं० वास=गंध ] १. देर का बना हुआ। जो ताजा न हो। ( खाद्य पदार्थ ) २. जो कुछ समय तक रखा रहा हो। ३. सूखा या कुम्हलाया हुआ।

**मुहा०**—बासी कढ़ी में उबाल आना= १. बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। २. किसी बात का समय बिलकुल बीत जाने पर उसके संबंध में कोई वासना उत्पन्न होना।

**बासुकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बास ] सुगंधित फूलों की माला।
संज्ञा पुं० दे० "वासुकि"।

**बासौंधी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बसौंधी"।

**बाह**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बाहना ] १. बाहने की क्रिया या भाव। २. खेत की जोताई।
संज्ञा पुं० दे० "प्रवाह"।

**बाहक**—संज्ञा पुं० [ सं० वाहन ] १. सवार। २. वह जो कोई चीज ले जाता हो। *३. हाँकने या चलानेवाला।

**बाहकी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वाहक+ई ( प्रत्य० ) ] पालकी ले चलनेवाली स्त्री। कहारिन।

**बाहना**—क्रि० स० [ सं० वहन ] १. ढोना, लादना या चढ़ाकर ले जाना। २. चलाना। फेंकना। ( हथियार ) ३. गाड़ी, घोड़े आदि को हाँकना। ४. धारण करना। लेना। पकड़ना। ५. बहना। प्रवाहित होना। ६. खेत जोतना। ७. चाक आदि कर्षा की सहायता से एक तरफ करना।

**बाहनी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वाहिनी ] सेना।

**बाहम**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] आपस में।

**बाहर**—क्रि० वि० [ सं० बाह्य ] १. किसी निश्चित अथवा कल्पित सीमा या मर्य्यादा से हटकर, अलग या निकला हुआ। भीतर या अंदर का उलटा।

**मुहा०**—बाहर आना या होना=सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना= दूर करना। हटाना। बाहर बाहर= अलग या दूर से। बिना किसी को जताए।
२. किसी दूसरी जगह। अन्य नगर में।

**मुहा०**—बाहर का=बेगाना। पराया।
३. प्रभाव, अधिकार या संबंध आदि से अलग। ४. बगैर। सिवा। ( क्व० )

**बाहरजामी***†—संज्ञा पुं० [ सं० बाह्ययामी ] ईश्वर का सगुण रूप। राम, कृष्ण इत्यादि।

**बाहरी**—वि० [ हिं० बाहर+ई ( प्रत्य० ) ] १. बाहर का। बाहरवाला। २. पराया। गैर। ३. जो आपस का न हो। अजनबी। ४. जो केवल बाहर से देखने भर को हो। ऊपरी।

**बाहाँजोरी**—क्रि० वि० [ हिं० बाँह+जोड़ना ] भुजा से भुजा मिलाकर। हाथ से हाथ मिलाकर।

**बाहिज***—संज्ञा पुं० [ सं० बाह्य ] ऊपर से देखने में।

**बाहिनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी"।

**बाहु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भुजा। बाँह।

**बाहुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा के सारथी बने थे। २. नकुल।

**बाहुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रिय।

**बाहुत्राण***—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह दस्ताना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिए पहना जाता है।

**बाहुबल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पराक्रम। बहादुरी।

**बाहुमूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कंधे और बाँह का जोड़।

**बाहुयुद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुश्ती।

**बाहुल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बहुतायत। अधिकता। ज्यादती। २. व्यर्थता। फालतूपन।

**बाहुहजार**—संज्ञा पुं० दे० "सहस्रबाहु"।

**बाह्य**—वि० [ सं० ] बाहरी।

बाहर का।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भार ढोनेवाला पशु। २. सवारी। यान।

**बाह्लीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कांबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख।

**बिंग***†—संज्ञा पुं० दे० "व्यंग्य"।

**बिंजन***†—संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

**बिंद***†—संज्ञा पुं० [ सं० बिंदु ] १. पानी की बूँद। २. दोनों भवों के मध्य का स्थान। भ्रूमध्य। ३. वीर्य्य की बूँद। ४. बिंदी। माथे का गोल तिलक।

**बिंदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वृंदा ] एक गोपी का नाम।

संज्ञा पुं० [ सं० बिंदु ] माथे पर का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। बुंदा।

**बिंदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बिंदु ] १. सुन्ना। शून्य। सिफर। बिंदु। २. माथे पर का गोल और छोटा टीका। बिंदुली। ३. इस आकार का कोई चिह्न।

**बिंदुका**—संज्ञा पुं० दे० "बिंदी"।

**बिंदुली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बिंदु ] बिंदी। टिकुली।

**बिंध**†—संज्ञा पुं० दे० "विन्ध्याचल"।

**बिंधना**—क्रि० अ० [ सं० वेधन ] १. बींधा जाना। छेदा जाना। २. फँसना।

**बिंब**—संज्ञा पुं० [ सं० बिंब ] १ प्रतिबिंब। छाया। अकस। २. कमंडलु। ३. प्रतिमूर्त्ति। ४. कुँदरू नामक फल। ५. सूर्य्य या चंद्रमा का मंडल। ६. कोई मंडल। ७. आभास। ८. एक प्रकार का छंद।

संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।

**बिंबा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुंदरू। २. बिंब। प्रतिच्छाया। ३. चंद्रमा या सूर्य का मंडल।

**बिंबित**—वि० [ सं० बिम्बित ] जिसका बिंब या अकस उतर रहा हो।

**बिंबिसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन राजा जो अजातशत्रु के पिता और गौतम बुद्ध के समकालीन थे।

**बि***—वि० [ सं० द्वि ] दो। एक और एक।

**बिअहुता**†—वि० [ सं० विवाहित ] १. जिसके साथ विवाह संबंध हुआ हो। २. विवाह संबंधी। विवाह का।

**बिआधि**—संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।

**बिआधु**†—संज्ञा पु० दे० "व्याध"।

**बिआना**—क्रि० स० [ हिं० ब्याह ] बच्चा देना। जनना ( पशुओं के संबंध में )

**बिआहना***—क्रि० स० दे० "ब्याहना"।

**बिकना**—क्रि० अ० [ सं० विक्रय ] मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना।

मुहा०—किसी के हाथ बिकना=किसी का अनुचर, सेवक या दास होना।

**बिकरम**†—संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।

**बिकरार**†—वि० [ सं० विकराल ] भयानक। डरावना।

**बिकल**†—वि० [ सं० विकल ] १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. बेचैन।

**बिकलाई**-संज्ञा स्त्री० [ ० बिकल + आई ( प्रत्य० ) ] व्याकुलता। बेचैनी।

**बिकलाना**†—क्रि० अ० [ सं० विकल ] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।

क्रि० स० व्याकुल करना। बेचैन करना।

**बिकवाना**—क्रि० स० [ हिं० बिकना का प्रे० ] बेचने का काम दूसरे से कराना।

**बिकसना**—क्रि० अ० [ सं० विकसन ] १. खिलना। फूलना। २. बहुत प्रसन्न होना।

**बिकसाना**—क्रि० अ० दे० "बिकसना"।

क्रि० स० १. विकसित करना। खिलाना। २. प्रसन्न करना।

**बिकाऊ**—वि० [ हिं० बिकना + आऊ ( प्रत्य० ) ] जो बिकने के लिए हो। बिकनेवाला।

**बिकाना**†—क्रि० अ० दे० "बिकना"।

**बिकार***†—संज्ञा पुं० दे० "विकार"।

संज्ञा पुं० [ सं० विकराल ] विकट। भीषण।

**बिकारी**†—वि० [ सं० विकार ] १. जिसका रूप बिगड़कर और का और हो गया हो। २. बुरा। हानिकारक।

संज्ञा स्त्री० [ सं० विकृत या वक्र ] एक प्रकार की टेढ़ी पाई जो अंकों आदि के आगे संख्या या मान सूचित करने के लिए लगाते हैं।

**बिकासना***—क्रि० स० [ सं० विकासन ] १. विकसित करना। २. ( फूल आदि ) खिलाना।

**बिकुंठ***—संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ"।

**बिक्ख***—संज्ञा पुं० [ सं० विष ] जहर।

**बिक्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विक्रय ] १. किसी पदार्थ के बेचे जाने की क्रिया या भाव। विक्रय। २. बेचने से मिलनेवाला धन।

**बिख**†—संज्ञा पुं० दे० "विष"।

**बिखम**—वि० दे० "विषम"।

**बिखरना**-क्रि० अ० [ सं० विकीर्ण ] छितराना। तितर-बितर हो जाना।

**बिखराना**-क्रि० स० दे० "बिखेरना"।

**बिखाद***—संज्ञा पुं० दे० "विषाद"।

**बिखान***-संज्ञा पुं० दे० "विषाण"।

**बिखौला**-वि० [सं० विष] जहरीला।

**बिखेरना**—क्रि० स० [हिं० बिखरना का स० रूप] इधर-उधर फैलाना। छितराना।

**बिग**†—संज्ञा पुं० दे० "बीग"।

**बिगड़ना**—क्रि० अ० [सं० विकृत] १. किसी पदार्थ के गुण या रूप आदि में विकार होना। खराब हो जाना। २. किसी पदार्थ के बनते समय उसमें कोई ऐसा विकार होना जिससे वह ठीक न उतरे। ३. दुरवस्था को प्राप्त होना। खराब दशा में आना। ४. नीति-पथ से भ्रष्ट होना। बद-चलन होना। ५. क्रुद्ध होना। अप्रसन्नता प्रकट करना। ६. विरोधी होना। विद्रोह करना। ७. (पशुओं आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। ८. परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ९. बेफायदा खर्च होना।

**बिगड़ेदिल**-संज्ञा पुं० [हिं० बिगड़ना + फ़ा० दिल] १. हर बात में लड़ने-झगड़नेवाला। २. कुमार्ग पर चलनेवाला।

**बिगड़ैल**—वि० [हिं० बिगड़ना + ऐल (प्रत्य०) या बिगड़ेदिल] १. हर बात में बिगड़ने या क्रोध करनेवाला। २. हठी। जिद्दी।

**बिगर**†—क्रि० वि० दे० "बगैर"।

**बिगरना**-क्रि० अ० दे० "बिगड़ना"।

**बिगराइल**†-वि० दे० "बिगड़ैल"।

**बिगसना***-क्रि० अ० दे० "विकसना"।

**बिगहा**—संज्ञा पुं० दे० "बीघा"।

**बिगाड़**—संज्ञा पुं० [हिं० बिगड़ना] १. बिगड़ने की क्रिया या भाव। २. खराबी। दोष। ३. वैमनस्य। झगड़ा। लड़ाई।

**बिगाड़ना**—क्रि० स० [सं० विकार] १. किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। २. किसी पदार्थ को बनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३. दुरवस्था को प्राप्त कराना। बुरी दशा में लाना। ४. नीति या कुमार्ग में लगाना। ५. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ६. बुरी आदत लगाना। ७. बहकाना। ८. व्यर्थ व्यय करना।

**बिगाना**†—वि० [फ़ा० बेगाना] जिससे आपसदारी का कोई संबंध न हो। पराया। गैर।

**बिगार**†—संज्ञा पुं० दे० "बिगाड़"।

**बिगारि***†-संज्ञा स्त्री० दे० "बेगार"।

**बिगारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बेगारी"।

**बिगास***†-संज्ञा पुं० दे० "विकास"।

**बिगासना**—क्रि० स० [हिं० विकास] विकसित करना।

**बिगिर***†—क्रि० वि० दे० "बगैर"।

**बिगुन***†—वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुण रहित।

**बिगुर**—वि० [हिं० वि + गुरु] जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।

**बिगुरचिन***†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिगूचन"।

**बिगुरदा***†—संज्ञा पुं० [देश०] प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार।

**बिगुल***†—संज्ञा पुं० [अं०] अंगरेजी ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्रायः सैनिकों को एकत्र करने के लिए बजाई जाती है।

**बिगुलर***†—संज्ञा पुं० [अं०] फौज में बिगुल बजानेवाला।

**बिगूचन**—संज्ञा स्त्री० [सं० विकुंचन अथवा विवेचन] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य किं-कर्तव्य-विमूढ़ हो जाता है। असमंजस। अड़चन। २. कठिनता। दिक्कत।

**बिगूचना**—क्रि० अ० [सं० विकुंचन] १. अड़चन या असमंजस में पड़ना। २. दबाया जाना। पकड़ा जाना।

क्रि० स० [सं० विकुंचन] दबोचना। धर दबाना। छाप लेना।

**बिगोना**—क्रि० स० [सं० विगोपन] १. नष्ट करना। बिगाड़ना। २. छिपाना। दुराना। ३. तंग करना। दिक करना। ४. भ्रम में डालना। बहकाना। ५. बिताना।

**बिग्गाहा**—संज्ञा पुं० [सं० विगाथा] आर्या छंद का एक भेद। उद्गीति।

**बिग्रह**—संज्ञा पुं० दे० "विग्रह"।

**बिघटना**—क्रि० स० [सं० विघटन] विनाश करना। बिगाड़ना। तोड़ना-फोड़ना।

**बिघन**—संज्ञा पुं० दे० "विघ्न"।

**बिघनहरन***†—वि० [सं० विघ्न-हरण] विघ्न या बाधा को हटानेवाला।

संज्ञा पुं० गणेश। गजानन।

**बिघार**†—संज्ञा पुं० दे० "बाघ"।

**बिच***†—क्रि० वि० दे० "बीच"।

**बिचकना**—क्रि० अ० [अनु०] १. मुँह का टेढ़ा होना। २. भड़कना। चौंकना।

**बिचकाना**—क्रि० स० [अनु०] १. बिराना। चिढ़ाना। (मुँह) २. (मुँह को, स्वाद बिगड़ने के कारण) टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना। ३. भड़काना। चौंकाना।

**बिचच्छन*†**—वि० दे० "विचक्षण"।

**बिचरना**—क्रि० अ० [ सं० विचरण ] १. इधर-उधर घूमना। चलना-फिरना। २. यात्रा करना। सफर करना।

**बिचलना**—क्रि० अ० [ सं० विचलन ] १. विचलित होना। इधर-उधर हटना। २. हिम्मत हारना। ३. कहकर मुकरना।

**बिचला**—वि० [ हिं० बीच+ला (प्रत्य०) ] [ स्त्री० बिचली ] जो बीच में हो। बीच का।

**बिचलाना*†**—क्रि० स० [सं० विचलन] १ विचलित करना। डिगाना। २. हिला देना। ३. तितर-बितर करना।

**बिचवई**—संज्ञा पुं० दे० "बिचवान"।

**बिचवान, बिचवानी**—संज्ञा पुं० [ हिं० बीच+वान ] बीच-बचाव करनेवाला। मध्यस्थ।

**बिचहुत**—संज्ञा पुं० [ हिं० बीच ] अंतर। फरक। दुबधा। संदेह।

**बिचारना*†**—क्रि० अ० [सं० विचार+ना (प्रत्य०) ] १. विचार करना। सोचना। गौर करना। २. पूछना। प्रश्न करना।

**बिचारमान**—वि० [ हिं० विचार ] १. विचार करनेवाला। २. विचारने के योग्य।

**बिचारा**—वि० दे० "बेचारा"।

**बिचारी*†**—संज्ञा पुं० [ सं० विचारिन् ] विचार करनेवाला।

**बिचाल***—संज्ञा पुं० [ सं० विचाल ] १. अलग करना। २. अंतर। फर्क।

**बिचेत*†**—वि० [ सं० विचेतस् ] १. मूर्छित। बेहोश। अचेत। २. बदहवास

**बिचौनी, बिचौहाँ**—संज्ञा पुं० दे० "बिचवान"।

**बिच्छित्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शृंगार रस के ११ हावों में से एक जिसमें किंचित् शृंगार से ही पुरुष को मोहित कर लिया जाना वर्णन किया जाता है।

**बिच्छी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बिच्छू"।

**बिच्छू**—संज्ञा पुं० [ सं० वृश्चिक ] १. एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर। इसके अंतिम भाग में एक जहरीला डंक होता है। २. एक प्रकार की जहरीली घास।

**बिच्छेद***—संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

**बिच्छेप*†**—संज्ञा पुं० दे० "विक्षेप"।

**बिछना**—क्रि० अ० [ सं० विस्तरण ] बिछाना का अकर्मक रूप। बिछाया जाना।

**बिछलन**—क्रि० अ० दे० "फिसलन"।

**बिछलना**—क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

**बिछवाना**—क्रि० स० [ हिं० बिछाना का प्रे० ] बिछाने का काम दूसरे से कराना।

**बिछाना**—क्रि० स० [ सं० विस्तरण ] १. (बिस्तर या कपड़े आदि को) जमीन पर उतनी दूर तक फैलाना, जितनी दूर तक फैल सके। २. किसी चीज को जमीन पर कुछ दूर तक फैला देना। बिखेरना। बिखराना। ३. (मार मारकर) जमीन पर गिरा या लेटा देना।

**बिछायत**—संज्ञा स्त्री० दे० "बिछौना"।

**बिछावन†**—संज्ञा पुं० दे० "बिछौना"।

**बिछिया†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिच्छू+इया (प्रत्य०) ] पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

**बिछिप्त*†**—वि० दे० "विक्षिप्त"।

**बिछुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिच्छू ] १. पैर में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार की छुरी। ३. एक प्रकार की करधनी।

**बिछुड़न†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिछुड़ना ] बिछुड़ने या अलग होने का भाव।

**बिछुड़ना**—क्रि० अ० [ सं० विच्छेद ] १. अलग होना। जुदा होना। २. प्रेमियों का एक दूसरे से अलग होना। वियोग होना।

**बिछुरंता*†**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिछुड़ना+अंता (प्रत्य०) ] १. बिछुड़नेवाला। २. जो बिछुड़ गया हो।

**बिछुरना***—क्रि० अ० दे० "बिछुड़ना"।

**बिछूना*†**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिछुड़ना ] बिछुड़ा हुआ। जो बिछुड़ गया हो।

**बिछेद***—संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

**बिछोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिछुड़ना ] १. बिछुड़ने की क्रिया या भाव। २. विरह।

**बिछोय, बिछोह**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिछुड़ना ] बिछोड़ा। जुदाई। विरह।

**बिछौना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिछाना] वह कपड़ा जो बिछाया जाता हो। बिछावन। बिस्तर।

**बिजन*†**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यजन ] छोटा पंखा। बेना।

वि० [ सं० विजन ] एकांत स्थान।

वि० जिसके साथ कोई न हो।

**बिजयसार**—संज्ञा पुं० [ सं० विजयसार ] एक प्रकार का बहुत बड़ा

बंगाली मेढ़ ।

**बिजली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विद्युत् ] १. एक प्रसिद्ध शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है । विद्युत् । २. आकाश में सहसा उत्पन्न होनेवाला वह प्रकाश जो एक बादल से दूसरे बादल में जानेवाली वातावरण की बिजली के कारण उत्पन्न होता है । चपला ।

मुहा०—बिजली गिरना या पड़ना=बिजली का आकाश से पृथ्वी की ओर बड़े वेग से आना और मार्ग में पड़नेवाली चीजों को जलाकर नष्ट करना । बिजली कड़कना=बिजली के विसर्जन के कारण आकाश में बहुत जोर का शब्द होना ।

३. आम की गुठली के अंदर की गिरी । ४. गले में पहनने का एक गहना । ५. कान में पहनने का एक गहना ।

वि० १. बहुत अधिक चंचल या तेज । २. बहुत अधिक चमकनेवाला ।

**बिजली-घर**—संज्ञा पुं० [हिं० बिजली+घर ] वह स्थान जहाँ से सारे नगर या आस-पास के स्थानों को बिजली पहुँचाई जाती हो ।

**बिजहन**—वि० [ हिं० बीज+हनन ] जिसका बीज नष्ट हो गया हो ।

**बिजाती**—वि० [ सं० विजातीय ] १ दूसरी जाति का । और जाति या तरह का । २. जाति से निकाला हुआ । अजाती ।

**बिजान***†—संज्ञा पुं० [ हिं० बि+ज्ञान ] अज्ञान । अनजान ।

**बिजायठ**—संज्ञा पुं० [ सं० विजय ] बाँह पर पहनने का बाजूबंद । अंगद । भुजबंद । बाजू ।

**बिजुरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली" ।

**बिजूका, बिजूखा**‡—संज्ञा पुं० [ देश० ] खेतों में पक्षियों आदि को डराकर दूर रखने के उद्देश्य से लकड़ी के ऊपर उलटी रखी हुई काली हाँड़ी ।

**बिजोग***†—संज्ञा पुं० दे० "वियोग" ।

**बिजोरा**—वि० [ सं० वि+फ़ा० ज़ोर=ताकत ] कमजोर । अशक्त । निर्बल ।

**बिजोहना**—क्रि० स० [ हिं० जोवना ] अच्छी तरह देखना ।

**बिजोहा**—संज्ञा पुं० दे० "बिज्जूहा" ।

**बिजौरा**—संज्ञा पुं० [सं० बीजपूरक ] नीबू की जाति का एक वृक्ष । इसके फल बड़ी नारंगी के बराबर होते हैं ।

**बिजौरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "कुम्हड़ौरी" ।

**बिज्जु***‡—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली" ।

**बिज्जुपात***‡—संज्ञा पुं० [ सं० विद्युत्पात] बिजली गिरना । वज्रपात ।

**बिज्जुल***‡—संज्ञा पुं० [ सं० विज्जुल] त्वचा । छिलका ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० विद्युत् ] बिजली । दामिनी ।

**बिज्जू**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जंगली जानवर । बीजू ।

**बिज्जूहा**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक वर्णिक वृत्त । विमोहा । बिजोहा ।

**बिझुकना***—क्रि० अ० [हिं० झोंका] १. भड़कना । २. डरना । भयभीत होना । ३. टेढ़ा होना । तनना ।

**बिझुकाना***—क्रि० स० [ हिं० बिझुकना का स० रूप ] १. भड़काना । २. डराना ।

**बिट**—संज्ञा पुं० [ सं० विट् ] १. साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो । २. वैश्य । ३. नीच । खल ।

**बिटरना**—क्रि० अ० [ हिं० बिटारना का अ० रूप ] १. घँघोला जाना । २ गंदा होना ।

**बिटारना**—क्रि० स० [ सं० विलोडन ] १. घँघोलना । २. गंदा करना ।

**बिटिया**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी" ।

**बिट्ठल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम । २ बंबई प्रांत में शोलापुर के अंतर्गत पंढरपुर की एक देवमूर्ति ।

**बिठाना**—क्रि० स० दे० "बैठाना" ।

**बिडंब**—संज्ञा पुं० [ सं० विडंब ] आडंबर ।

**बिडंबना***—क्रि० अ० [ सं० विडंबन ] १. नकल । स्वरूप बनाना । २. उपहास । हँसी । निंदा ।

**बिड**—संज्ञा पुं० दे० "विट्" ।

**बिडूई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "ईंडुरी" ।

**बिडर**—वि० [ हिं० बिडरना ] छितराया हुआ । अलग अलग । दूर दूर । बिरल ।

†वि० [ हिं० बि=बिना+डर=भय ] १. न डरनेवाला । निर्भय । २. ढीठ ।

**बिडरना**—क्रि० अ० [ सं० विट् ] १. इधर-उधर होना । तितर-बितर होना । २. पशुओं का भयभीत होना । बिचकना । ३. बरबाद होना । नष्ट होना ।

**बिडराना**—क्रि० ० [ सं० विट् ] १. इधर-उधर या तितर-बितर करना । २. भगाना ।

**बिडवना***†—क्रि० स० [ सं० विट् ] तोड़ना ।

**बिडारना**—क्रि० स० [ हिं० बिडरना ] १. भयभीत करके भगाना । २.

नष्ट करना ।

**बिड़ाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बिल्ली । बिलाव । २. बिड़ालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था । ३. दोहे का बीसवाँ भेद ।

**बिड़ौजा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र ।

**बिढ़तो***†—संज्ञा पुं० [ हिं० बढ़ना =अधिक होना ] कमाई । नफा । लाभ ।

**बिढ़वना***†—क्रि० स० [ हिं० बढ़ाना ] १ कमाना । २. संचय करना । इकट्ठा करना ।

**बिढ़ाना***†—क्रि० स० दे० "बिढ़वना" ।

**बित***†—संज्ञा पुं० [ सं० वित्त ] १. धन । द्रव्य । २. सामर्थ्य । शक्ति । ३. कद । आकार ।

**बितत***—वि० [ सं० व्यतीत ] बीता हुआ ।

**बितताना**—क्रि० अ० [ हिं० बिलखना ] बिलखाना । व्याकुल होना । संतप्त होना ।

क्रि० स० संतप्त करना । सताना ।

**बितना**†—संज्ञा पुं० दे० "बित्ता" ।

**बितरना***†—क्रि० स० [ सं० वितरण ] बाँटना ।

**बितवना***†— क्रि० स० दे० "बिताना" ।

**बिताना**—क्रि० स० [ सं० व्यतीत ] ( समय ) व्यतीत करना । गुजारना । काटना ।

**बितावना***†— क्रि० स० दे० "बिताना" ।

**बितीतना**—क्रि० अ० [ सं० व्यतीत] व्यतीत होना । गुजरना ।

क्रि० स० बिताना । गुजारना ।

**बित्तु***†—संज्ञा पुं० दे० "वित्त" ।

**बित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० वित्त ] १. धन । दौलत । २. हैसियत । औकात । ३. सामर्थ्य ।

**बित्ता**—संज्ञा पुं० [ ? ] हाथ की सब उँगलियाँ फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी । बालिश्त ।

**बिथकना**—क्रि० अ० [ हिं० थकना] १. थकना । २. चकित होना । हैरान होना । ३. मोहित होना ।

**बिथरना, बिथुरना**†—क्रि० अ० [ सं० वितरण ] १. छितराना । बिखरना । २. अलग अलग होना । खिल जाना ।

**बिथा***—संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा" ।

**बिथारना**—क्रि० स० [ हिं० बिथरना ] छितराना । छिटकाना । बिखेरना ।

**बिथित***—वि० दे० "व्यथित" ।

**बिथुरना**—क्रि० अ० दे० "बिथरना" ।

**बिथुरित**—वि० [ हिं० बिथरना ] बिखरा या छितराया हुआ ।

**बिथोरना***—क्रि० स० दे० "बिथारना" ।

**बिदकना**—क्रि० अ० [ सं० विदारण ] १. फटना । चिरना । २. घायल होना । जख्मी होना । ३. भड़कना ।

**बिदकाना**—क्रि० स० [ सं० विदारण ] १. फाड़ना । विदीर्ण करना । २. घायल करना । जख्मी करना ।

**बिदर**—संज्ञा पुं० [ सं० विदर्भ ] १. विदर्भ देश । बरार । २. एक प्रकार की उपधातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है ।

**बिदरन***—संज्ञा स्त्री० [सं० विदीर्ण] दरार । दरज । शिगाफ ।

वि० फाड़नेवाला । चीरनेवाला ।

**बिदरना***—क्रि० अ० [ सं० विदीर्ण ] फटना ।

**बिदरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विदर्भ ] १. जस्ते और ताँबे के मेल से बरतन आदि बनाने का काम जिसमें बीच बीच में सोने या चाँदी के तारों से नक्काशी की हुई होती है । २. बिदर की धातु का बना हुआ सामान ।

**बिदा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० विदाअ ] १. प्रस्थान । गमन । रवानगी । रुखसत । २. जाने की आज्ञा । ३. द्विरागमन । गौना ।

**बिदाई**—संज्ञा स्त्री० [ अ० विदाअ ] १. बिदा होने की क्रिया या भाव । २. बिदा होने की आज्ञा । ३. वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाय ।

**बिदारना**†—क्रि० स० [ सं० विदारण ] १. चीरना । फाड़ना । २. नष्ट करना ।

**बिदारीकंद**—संज्ञा पुं० [ सं० विदारीकंद ] एक प्रकार का लाल कंद । बिलाईकंद ।

**बिदीरना***—क्रि० स० [सं० विदीर्ण] फाड़ना ।

**बिदुराना***†—क्रि० अ० [ सं० विदुर=चतुर ] मुस्कराना । धीरे धीरे हँसना ।

**बिदुरानी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिदुराना ] मुस्कराहट । मुसक्यान ।

**बिदूखना***†—क्रि० अ० [ सं० विदूषण ] दोष लगाना । कलंक लगाना । बिगाड़ना ।

**बिदेश**—संज्ञा पुं० [ सं० विदेश ] परदेश ।

**बिदोख***†—संज्ञा पुं० [ सं० विद्वेष ] बैर । वैमनस्य ।

**बिदोरना**†—क्रि० अ० [ सं० विदा-

न ] ( मुँह ) या ( दाँत ) खोलकर दिखाना ।

**बिद्दत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० विद्अत ] १. खराबी । बुराई । दोष । २. कष्ट । तकलीफ । ३. विपत्ति । आफत । ४. अत्याचार । जुल्म । ५. दुर्दशा ।

**बिधँसना***†—क्रि० स० [ सं० विध्वंसन ] नाश करना । विध्वंस करना । नष्ट करना ।

**बिध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विधि ] १. प्रकार । तरह । भाँति । २. ब्रह्मा । संज्ञा स्त्री० [ सं० विधा=काम ] जमा-खर्च का हिसाब । आय-व्यय का लेखा ।

मुहा०—बिध मिलाना=यह देखना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं ।

**बिधना**—संज्ञा पुं० [ सं० विधि ] ब्रह्मा । विधि । विधाता । क्रि० अ० दे० "बिधना" ।

**बिधवपन***—संज्ञा पुं० दे० "वैधव्य" ।

**बिधवा**—संज्ञा स्त्री० दे० "विधवा" ।

**बिधाँसना***†—क्रि० स० [ सं० विध्वंसन ] विध्वंस करना । नष्ट करना । नाश करना ।

**बिधाई***—संज्ञा पुं० [ सं० विधायक ] वह जो विधान करता हो । विधायक ।

**बिधाना**—क्रि० अ० दे० "बिँधाना" ।

**बिधानी***†—संज्ञा पुं० [ सं० विधान ] विधान करनेवाला । बनानेवाला । रचनेवाला ।

**बिधुंसना***—क्रि० स० [ सं० विध्वंसन ] नष्ट करना ।

**बिन***†—अव्य० दे० "बिना" ।

**बिनई***†—संज्ञा पुं० दे० "विजयी" ।

**बिनउ***†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनय" ।

**बिनकार**—वि० [ हिं० बुनना ] [ संज्ञा बिनकारी ] कपड़ा बुननेवाला । जुलाहा ।

**बिनठना***—क्रि० अ० [ सं० विनष्ट ] नष्ट होना ।

**बिनति, बिनती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विनय ] प्रार्थना । निवेदन । अर्ज ।

**बिनन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिनना=चुनना ] १. बिनने या चुनने की क्रिया या भाव । २. वह कूड़ा-कर्कट आदि जो किसी चीज में से चुनकर निकाला जाय । चुनन ।

**बिनना**—क्रि० स० [ सं० वीक्षण ] १. छोटी छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना । चुनना । २. छाँट छाँट कर अलग करना । क्रि० स० दे० "बुनना" ।

**बिनवट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बनेठी ] पटा-बनेठी चलाने की क्रिया या खेल । पत्थर या धातु की गोली जिसमें डोरा लगा होता है और जिसे चलाकर आक्रमण किया जाता है ।

**बिनवना***†—क्रि० अ० [ सं० विनय ] विनय करना । मिन्नत करना । प्रार्थना करना ।

**बिनवाना**—क्रि० अ० [ हिं० बीनना या बुनना ] बुनने या बीनने का काम दूसरे से कराना ।

**बिनसना***†—क्रि० अ० [ सं० विनाश ] नष्ट होना । बरबाद होना । क्रि० स० विनाश करना । नष्ट करना ।

**बिनसाना***—क्रि० स० [ सं० विनाश ] विनाश करना । बिगाड़ डालना । नष्ट कर देना । क्रि० अ० विनष्ट होना ।

**बिना**—अव्य० [ सं० विना ] छोड़कर । बगैर । संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मूल आधार । कारण ।

**बिनाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिनना या बीनना ] १. बीनने या चुनने की क्रिया या भाव । २. बुनने की क्रिया या भाव । बुनावट ।

**बिनाती**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिनती" ।

**बिनानी**—वि० [ सं० विज्ञानी ] १. अज्ञानी । अनजान । २. विज्ञानी । संज्ञा स्त्री० [ सं० विज्ञान ] विशेष विचार । गौर ।

**बिनावट**—संज्ञा स्त्री० दे० "बुनावट" ।

**बिनास***—संज्ञा पुं० दे० "विनाश" ।

**बिनासना**—क्रि० स० [ सं० विनष्ट ] विनष्ट करना । संहार करना । बरबाद करना ।

**बिनाह***—संज्ञा पुं० दे० "विनाश" ।

**बिनि, बिनु***—अव्य० दे० "बिना" ।

**बिनूठा***†—वि० [ हिं० अनूठा ] अनोखा ।

**बिनौरी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] ओले के छोटे टुकड़े ।

**बिनै***†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनय" ।

**बिनौला**—संज्ञा पुं० [ ? ] कपास का बीज । बनौर कुकटी ।

**बिपच्छ***†—संज्ञा पुं० [ सं० विपक्ष ] शत्रु । वि० १. अप्रसन्न । नाराज । २. प्रतिकूल । विमुख । विरुद्ध ।

**बिपच्छी***†—संज्ञा पुं० [ सं० विपक्षिन् ] १ वह जो विपक्ष का हो । विरोधी । २. शत्रु । दुश्मन ।

**बिपत, बिपद***†—संज्ञा स्त्री० दे० "विपत्ति" ।

**बिपर***†—संज्ञा पुं० [ सं० विप्र ] ब्राह्मण ।

**बिपरीति***—संज्ञा स्त्री० [ सं० विपरीत + ई ( प्रत्य० ) ] विपरीत,

होने का भाव।

**बिफल***†—वि० दे० "विफल"।

**बिफरना***†—क्रि० अ० [ सं० विप्लवन ] १. बागी होना। विद्रोही होना। २. बिगड़ उठना। नाराज होना।

**बिबछना***†—क्रि० अ० [ सं० विपक्ष ] १. विरोधी होना। २. उलझना। फँसना।

**बिबरन***—वि० [ सं० विवर्ण ] १. जिसका रंग खराब हो गया हो। बदरंग। २. जिसके मुख की कांति नष्ट हो गई हो।

संज्ञा पुं० दे० "विवरण"।

**बिबस***†—वि० [ सं० विवश ] १. मजबूर। विवश। २. परतंत्र। पराधीन।

क्रि० वि० [ सं० विवश ] विवश होकर।

**बिबसना***—क्रि० अ० [ हिं० बिबस ] विवश होना।

**बिबहार***†—संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।

**बिवाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विपादिका ] एक रोग जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है।

**बिवाक***—वि० दे० "बेबाक"।

**बिबि**—वि० [ सं० द्वि ] दो।

**बिभाना***—क्रि० अ० [ सं० विभा ] चमकना।

**बिभिचारी***—वि० दे० "व्यभिचारी"।

**बिभोर**—वि० दे० "विभोर"।

**बिमन***†—वि० [ सं० विमनस् ] १. जिसे बहुत दुःख हो। २. उदास। सुस्त।

क्रि० वि० बिना मन के। अनमना होकर।

**बिमानी***—वि० [ सं० वि०+मान ] मान-रहित। निरभिमान।

**बिमोहना**—क्रि० स० [ सं० विमोहन ] मोहित करना। लुभाना। मोहना।

क्रि० अ० मोहित होना। लुभाना।

**बिय***†—वि० [ सं० द्वि ] १. दो। युग्म। २. दूसरा।

*†—संज्ञा पुं० दे० "बीज"।

**बियत**—संज्ञा पुं० [ सं० वियत् ] आकाश।

**बिया**†—संज्ञा पुं० दे० "बीज"।

वि० [ सं० द्वि ] दूसरा। अन्य। अपर।

**बियाधा***†—संज्ञा पुं० दे० "व्याधा"।

**बियाधि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।

**बियान**†—संज्ञा पुं० दे० "ब्यान"।

**बियापना***†—क्रि० स० दे० "व्यापना"।

**बियाबान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बहुत उजाड़ स्थान या जंगल।

**बियारी, बियालू***†—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।

**बियाह***†—संज्ञा पुं० दे० "विवाह"।

**बियाहता**†—वि० स्त्री० [ सं० विवाहित ] जिसके साथ विवाह हुआ हो।

**बिरंग**—वि० [ हिं० वि (प्रत्य०)+रंग ] १. कई रंगों का। २. बिना रंग का।

**बिरई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिरवा ] १. छोटा बिरवा। २. जड़ी-बूटी।

**बिरचना***—क्रि० स० दे० "विरचना"।

**बिरछ, बिरछा***—संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।

**बिरछिक***†—संज्ञा पुं० दे० "वृश्चिक"।

**बिरझना**†—क्रि० अ० [ सं० विरुद्ध ] झगड़ना।

**बिरतंत***†—संज्ञा पुं० दे० "वृत्तांत"।

**बिरता**—संज्ञा पुं० [ देश० ] सामर्थ्य। बूता। शक्ति।

**बिरताना***†—क्रि० स० [ सं० वर्त्तन ] बाँटना।

**बिरथा**†—वि० दे० "व्यर्थ"।

**बिरद**†—संज्ञा पुं० दे० "विरद"।

**बिरदैत**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिरद+ऐत (प्रत्य०) ] बहुत अधिक प्रसिद्ध वीर या योद्धा।

वि० नामी। प्रसिद्ध।

**बिरध**—वि० दे० "वृद्ध"।

**बिरधाई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० वृद्ध ] वृद्धावस्था।

**बिरमना**†—क्रि० अ० [ सं० विलंबन ] १. ठहरना। रुकना। २. सुस्ताना। आराम करना। ३. मोहित होकर फँस रहना।

**बिरमाना**†—क्रि० स० [ हिं० बिरमना का स० रूप ] १. ठहराना। रोक रखना २. मोहित करके फँसा रखना। ३. बिताना।

**बिरला**—वि० [ सं० विरल ] बहुतों में से कोई एकाध। इक्का-दुक्का।

**बिरवा**—संज्ञा पुं० [ सं० विरुह ] वृक्ष। पेड़।

**बिरह**—संज्ञा पुं० दे० "विरह"।

**बिरहा**—संज्ञा पुं० [ सं० विरह ] एक प्रकार का देहाती गीत।

**बिरहाना**—क्रि० अ० [ सं० विरह ] विरह से पीड़ित होना।

**बिरही**—संज्ञा पुं० [ सं० विरहिन् ] [ स्त्री० बिरहिन, बिरहिनी ] वह पुरुष जो अपनी प्रेमिका के विरह से दुःखित हो। विरही।

**बिराजना**—क्रि० अ० [ सं० वि०+राजन ] १. शोभित होना। २. बैठना।

**बिरादर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] भाई।

भ्राता।

**बिरादरी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. भाईचारा। २. एक ही जाति के लोगों का समूह।

**बिरान, बिराना***—वि० दे० "बेगाना"।

**बिराना***—क्रि० स० [ सं० विरव=शब्द ] किसी को चिढ़ाने के हेतु मुँह की कोई विलक्षण मुद्रा बनाना। मुँह चिढ़ाना।

वि० दे० "बेगाना"।

**बिरावना**†—क्रि० स० दे० "बिराना"।

**बिरिख***†—संज्ञा पुं० १. दे० "वृष"। २. दे० "वृक्ष"।

**बिरिछ***†—संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।

**बिरियाँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेला ] समय।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वार ] बार। दफ़ा।

**बिरीं***†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "बीड़ी"। २. दे० "बीड़ा"।

**बिरुझना**†—क्रि० अ० [ सं० विरुद्ध ] झगड़ना।

**बिरुदैत**—संज्ञा पुं० दे० "बिरदैत"।

**बिरुधाई**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "बुढ़ापा"। २. दे० "विरोध"।

**बिरोग**—संज्ञा पुं० [ सं० वियोग ] १. वियोग। बिछोह। २. दुःख। चिंता।

**बिरोजा**—संज्ञा पुं० दे० "गंधा-बिरोजा"।

**बिरोधना**†—क्रि० अ० [ सं० विरोध ] विरोध करना। वैर करना। द्वेष करना।

**बिरोलना***—क्रि० स० दे० "बिलो-रना"।

**बिलंद**—वि० [ फ़ा० बुलंद ] १. ऊँचा। २. बड़ा। ३. जो विफल हो गया हो। ( व्यंग्य )

**बिलंबना***†—क्रि० अ० [ सं० विलंब ] १. विलंब करना। देर करना। २. ठहरना। रुकना।

**बिल**—संज्ञा पुं० [ सं० बिल ] १. छेद। दरज। विवर। २. जमीन के अंदर खोद कर बनाया हुआ कुछ जंगली जीवों के रहने का स्थान। कानून का वह रूप जो व्यवस्थापिका सभा या संसद में उपस्थित किया जाय। किसी उधार खरीदी हुई वस्तु का पुरजा।

संज्ञा पुं० [ अं० ] १. वह हिसाब का पुरजा जिसमें प्राप्य मूल्य या पारि-श्रमिक का ब्योरा लिखा रहता है। २. कानून का मसौदा जो स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाय।

**बिलकुल**—क्रि० वि० [अ०] १. पूरा पूरा। सब। २. आदि से अंत तक। निरा। निपट। ३. सब। पूरा पूरा।

**बिलखना**—क्रि० अ० [ सं० विलाप] १. विलाप करना। रोना। २. दुःखी होना। ३. संकुचित होना। सिकुड़ जाना।

**बिलखाना**—क्रि० स० [ सं० विकल ] बिलखना का सकर्मक रूप।

क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

**बिलग**—वि० [ हिं० बि० (प्रत्य०)+लगना ] अलग। पृथक्। जुदा।

संज्ञा पुं० [ हिं० बि० ( प्रत्य० )+लगना ] १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २. द्वेष या और कोई बुरा भाव। रंज।

**बिलगाना**—क्रि० अ० [ हिं० बिलग+आना (प्रत्य०) ] अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।

क्रि० स० १. अलग करना। पृथक् करना। दूर करना। २. छाँटना। चुनना।

**बिलच्छन**—वि० दे० "विलक्षण"।

**बिलछना***—क्रि० अ० [ सं० लक्ष ] लक्ष करना। ताकना।

**बिलटी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० बिलेट ] रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद।

**बिलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिल ] काली भौंरी जो दीवारों पर मिट्टी की बाँबी बनाती है। भ्रमरी।

संज्ञा स्त्री० आँख की पलक पर होने-वाली एक छोटी फुंसी। गुहांजनी।

**बिलपना***†—क्रि० अ० [ सं० विलाप ] रोना।

**बिलफेल**—क्रि० वि० [ अ० ] इस समय।

**बिलबिलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. छोटे छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना। २. व्याकुल होकर बकना या रोना-चिल्लाना।

**बिलम***†—संज्ञा पुं० दे० "विलंब"।

**बिलमना***†—क्रि० अ० [सं० विलंब] १. विलंब करना। देर करना। २. ठहर जाना। रुकना। ३. किसी के प्रेमपाश में फँसकर कहीं रुक रहना।

**बिलमाना**—क्रि० स० [ हिं० बिल-मना का सक० रूप ] प्रेम के कारण रोक या ठहरा रखना।

**बिललाना**—क्रि० अ० दे० "बिल-खना"।

**बिलवाना**†—क्रि० स० [ सं० बि+लय ] १. खो देना। नष्ट करना। बरबाद करना। २. दूसरे के द्वारा नष्ट कराना। बरबाद कराना। ३. छिपाना। ४. छिपवाना।

**बिलसना***†—क्रि० अ० [ सं० विल-सन] शोभा देना। भला जान पड़ना।

क्रि० स० भोग करना। भोगना।

**बिलसाना***†—क्रि० स० [ हिं० बिल-

सना ] १. भोग करना । बरतना । काम में लाना । २. दूसरे से भोग-वाना ।

**बिलहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बेल ? ] बाँस की तीलियों का एक प्रकार का संपुट जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं ।

**बिला**—अव्य० [ अ० ] बिना । बगैर ।

**बिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिल्ली ] १. बिल्ली । बिलारी । २. कुँए में गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा । ३. किवाड़ बंद करने की एक प्रकार की सिटकिनी ।

**बिलाईकंद**—संज्ञा पुं० दे० "बिदारी-कंद" ।

**बिलाना**—क्रि० अ० [ सं० विलयन ] १. नष्ट होना । न रह जाना । २. अदृश्य होना ।

**बिलापना***—क्रि० अ० [सं० विलाप] विलाप करना ।

**बिलारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली" ।

**बिलारीकंद**—संज्ञा पुं० दे० "बिदारी-कंद" ।

**बिलाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिल्ली ] बड़ी या नर बिल्ली ।

**बिलावल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राग ।

**बिलासना**—क्रि० स० [सं० विलसन] भोगना ।

**बिलुठना***—क्रि० अ० [ सं० लुंठन ] जमीन पर लेटना ।

**बिलूर***—संज्ञा पुं० दे० "बिल्लौर" ।

**बिलेशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बिल में रहनेवाले चूहे, साँप आदि जानवर ।

**बिलैया**‡—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बिल्ली ] १. बिल्ली । २. कदूकश ।

**बिलोकना***—क्रि० स० [ सं० विलो-कन ] १. देखना । २. जाँच करना । परीक्षा करना ।

**बिलोकनि***—संज्ञा स्त्री० [सं० विलो-कन ] १. देखने की क्रिया । २. दृष्टि-पात । कटाक्ष ।

**बिलोचन**—संज्ञा पुं० [सं० लोचन] आँख ।

**बिलोड़ना***—क्रि० स० [ सं० विलो-ड़न ] १. दूध आदि मथना । २. अस्त-व्यस्त करना ।

**बिलोन**—वि० [ सं० वि० + लवण ] १. बिना लवण का । २. कुरूप । बद-सूरत ।

**बिलोना**—क्रि० स० [ सं० विलोड़न ] १. दूध आदि मथना । किसी वस्तु विशेषतः पानी की सी वस्तु को खूब हिलाना । २. ढालना । गिराना ।

**बिलोरना***—क्रि० स० [ सं० विलो-ड़न ] १. दे० "बिलोड़ना" । २. छिन्न-भिन्न करना ।

**बिलोलना**—क्रि० स० [ सं० विलो-लन ] हिलना ।

**बिलोवना**†*—क्रि० स० दे० "बिलोना" ।

**बिलमुक्ता**—वि० [ अ० ] जो घट बढ़ न सके ।

संज्ञा पुं० वह लगान जो घट बढ़ न सके ।

**बिल्ला**—संज्ञा पुं० [ सं० बिडाल ] [ स्त्री० बिल्ली ] मार्जार । बिल्ली का नर ।

संज्ञा पुं० [ सं० पटल, हिं० पल्ला, पल्ला ] चपरास की तरह की पीतल की पतली पट्टी ।

**बिल्लाना**—क्रि० अ० [ सं० विलाप ] विकल होकर चिल्लाना । विलाप करना ।

**बिल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बिडाल, हिं० बिलार ] १. एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन सबसे छोटा होता है । २. एक प्रकार की किवाड़ की सिटकिनी । बिलैया ।

**बिल्लौर**—संज्ञा पुं० [ सं० वैदूर्य, मि० फा० बिल्लूर ] १. एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर । स्फटिक । २. बहुत स्वच्छ शीशा ।

**बिल्लौरी**—वि० [ हिं० बिल्लौर ] बिल्लौर का ।

**बिवरना**—क्रि० अ० दे० "ब्योरना" ।

**बिवराना**—क्रि० स० [ हिं० बिवरना का प्रे० ] १. बालों को सुलझाकर सुलझवाना । २. बाल सुलझाना ।

**बिवाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० विपादिका] पैरों की उँगलियाँ फटने का रोग ।

**बिसंच***—संज्ञा पुं० [ सं० वि+संचय ] १. संचय का अभाव । वस्तुओं की सँभाल न रखना । बेपरवाई । २. कार्य की हानि । बाधा । ३. भय । डर ।

**बिसंभर***‡—संज्ञा पुं० दे० "विश्वंभर" ।

*†वि० [सं० उप० वि + हिं० सँभार] १. जिसे ठीक और व्यवस्थित न रख सकें । २. बेखबर । असावधान ।

**बिसँभार**†—वि० [ सं० उप० वि+हिं० सँभार ] जिसे तन-बदन की खबर न हो । बेखबर ।

**बिस**—संज्ञा पुं० दे० "विष" ।

**बिसखपरा**—संज्ञा पुं० [ सं० विष+खर्पर ] १. गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु । २. एक प्रकार की जंगली बूटी ।

**बिसतरना***—क्रि० अ० [ सं० विस्तरण ] विस्तार करना । बढ़ाना । फैलाना ।

**बिसद***—वि० दे० "विशद"।

**बिसन***—संज्ञा पुं० दे० "व्यसन"।

**बिसनी**—वि० [ सं० व्यसन ] १. जिसे किसी बात का व्यसन या शौक हो। शौकीन। २. छैला। चिकनिया। शौकीन।

**बिसमउ**†—संज्ञा पुं० दे० "विस्मय"।

**बिसमरना***—क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूल जाना।

**बिसमिल**—वि० [ फ़ा० बिस्मिल ] घायल।

**बिसयक***†—संज्ञा पुं० [सं० विषय] १. देश। प्रदेश। २. रियासत।

**बिसरना**—क्रि० स० [सं० विस्मरण] भूलना।

**बिसरात**†*—संज्ञा पुं० [सं० वेशरः] खच्चर।

**बिसराना**—क्रि० स० [हिं० बिसरना] भूलना। विस्मृत करना। ध्यान में न रखना।

**बिसराम***—संज्ञा पुं० दे० "विश्राम"।

**बिसरामी***—वि० [ सं० विश्राम ] १. विश्राम करनेवाला। सुख देनेवाला। सुखद।

**बिसरावना***—क्रि० स० दे० "बिसराना"।

**बिसवास***—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

**बिसवासिनी**—वि० स्त्री० [ सं० विश्वासिन् ] १. विश्वास करनेवाली। २ जिस पर विश्वास हो।

* वि० स्त्री० [ सं० अविश्वासिन् ] १. जिस पर विश्वास न हो। २. विश्वासघातिनी।

**बिसवासी**—वि० [ सं० विश्वासिन् ] १. जो विश्वास करे। २. जिस पर विश्वास हो।

वि० [ सं० अविश्वासिन् ] जिस पर विश्वास न किया जा सके। बेएतबार। विश्वासघाती।

**बिससना***—क्रि० स० [ सं० विश्वसन ] विश्वास करना। एतबार करना।

क्रि० स० [ सं० विशसन ] १. वध करना। मारना। घात करना। २. शरीर काटना।

**बिसहना***†—क्रि० स० [ हिं० बिसाह ] १. मोल लेना। खरीदना। २. जान बूझकर अपने साथ लगाना।

**बिसहर***—संज्ञा पुं० [ सं० विषधर ] सर्प।

**बिसाँयँध**—वि० [ सं० वसा=चरबी+गंध ] जिसमें सड़ी मछली की-सी गंध हो।

संज्ञा स्त्री० सड़े माँस की-सी गंध।

**बिसाख***—संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा"।

**बिसात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. हैसियत। समाई। वित्त। औकात। २. जमा। पूँजी। ३. सामर्थ्य। हकीकत। स्थिति। ४. शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा जिसपर खाने बने होते हैं।

**बिसातखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिसात+खाना ] बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीजें।

**बिसाती**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सूई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुओं का बेचनेवाला।

**बिसाना**—क्रि० अ० [सं० वश] वश चलना। बल चलना। काबू चलना।

†क्रि० अ० [ हिं० विष+ना (प्रत्य०) ] विष का प्रभाव करना। जहर का असर करना।

**बिसारद***—संज्ञा पुं० दे० "विशारद"।

**बिसारना**—क्रि० स० [ हिं० बिसरना ] भुलाना। स्मरण न रखना। ध्यान में न रखना।

**बिसारा***—वि० [ सं० विषालु ] [ स्त्री० बिसारी ] विष भरा। विषाक्त। विषैला।

**बिसास***—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

**बिसासिन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० अविश्वासिनी ] (स्त्री०) जिस पर विश्वास न किया जा सके।

**बिसासी***—वि० [सं० अविश्वासी] [ स्त्री० बिसासिन ] जिस पर विश्वास न किया जा सके। दगाबाज। छली। कपटी।

**बिसाहना**—क्रि० स० [हिं० बिसाह+ना (प्रत्य०)] १. खरीदना। मोल लेना। २. जान-बूझकर अपने पीछे लगाना।

संज्ञा पुं० १. काम की चीज जिसे खरीदें। सौदा। २. मोल लेने की क्रिया। खरीद।

**बिसाहनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिसाहना] सौदा। वह वस्तु जो मोल ली जाय।

**बिसाहा**—संज्ञा पुं० दे० "बिसाहनी"।

**बिसिख***—संज्ञा पुं० दे० "विशिख"।

**बिसियर***—वि० [ सं० विषधर ] विषैला।

**बिसूरना**—क्रि० अ० [ सं० विसूरण=शोक ] १. खेद करना। मन में दुख मानना। २. सिसक सिसककर रोना।

संज्ञा स्त्री० चिंता। फिक्र। सोच।

**बिसेख***—वि० दे० "विशेष"।

**बिसेखना***—क्रि० अ० [सं० विशेष]

१. विशेष प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन करना । २. निर्णय करना । निश्चित करना । ३. विशेष रूप से होना या प्रतीत होना ।

**बिसेन**—संज्ञा पुं० [ ? ] क्षत्रियों की एक शाखा ।

**बिसेस***—वि० दे० "बिशेष" ।

**बिसेसर***†—संज्ञा पुं० दे० "विश्वेश्वर" ।

**बिस्तर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सं० विस्तर ] १. बिछौना । बिछावन । २. विस्तार । बढ़ाव ।

**बिस्तरना***—क्रि० अ० [ सं० विस्तरण ] फैलना । इधर-उधर बढ़ना ।

क्रि० स० १. फैलाना । बढ़ाना । २. बढ़ाकर वर्णन करना ।

**बिस्तरा**—संज्ञा पुं० दे० "बिस्तर" ।

**बिस्तारना**—क्रि० स० [सं० विस्तारण ] विस्तार करना । फैलाना ।

**बिस्तुइया**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० विष+तुना=टपकना ] छिपकली । गृहगोधा ।

**बिस्मिल्लाह**—[ अ० ] एक अरबी पद का पूर्वार्द्ध जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से । इसका प्रयोग मुसलमान लोग कोई कार्य आरंभ करते समय करते हैं ।

**बिस्वा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बीसवाँ ] एक बीघे का बीसवाँ भाग ।

**मुहा०**—बीस बिस्वा=निश्चय । निस्संदेह ।

**बिस्वास**—संज्ञा पुं० दे० "विश्वास" ।

**बिहंग**—संज्ञा पुं० दे० "विहंग" ।

**बिहंगी***—वि० [ हिं० बेढंगा ] कुरूप । भद्दी शक्ल का ।

**बिहंडना**—क्रि० स० [ सं० विघटन, प्रा० विहंडन ] १. खंड खंड कर डालना । तोड़ना । २. नष्ट कर देना । मार डालना ।

**बिहसना**—क्रि० अ० [ सं० विहसन ] मुस्कराना ।

**बिहँसाना**—क्रि० अ० [ सं० विहसन ] १. दे० "बिहँसना" । २. प्रफुल्ल होना । खिलना । (फूल का)

क्रि० स० हँसाना । हर्षित करना ।

**बिहँसौहाँ**—वि० [ सं० विहसन ] हँसता हुआ ।

**बिहग***—संज्ञा पुं० दे० "विहंग" ।

**बिहद***—वि० [ फ़ा० बेहद ] असीम । परिमाण से बहुत । अधिक ।

**बिहबल***—वि० [ सं० विह्वल ] व्याकुल ।

**बिहरना**—क्रि० अ० [ सं० विहरण ] घूमना फिरना । सैर करना । भ्रमण करना ।

*† क्रि० स० [ सं० विघटन ] १. फूटना । विदीर्ण होना । २. टूटना-फूटना ।

**बिहराना**†*—क्रि० अ० [ हिं० बिहरना ] फटना ।

**बिहाग**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का राग ।

**बिहान**—संज्ञा पुं० [ सं० विभात ] १. सबेरा । २. आनेवाला दूसरा दिन । कल ।

**बिहाना***—क्रि० स० [ सं० वि०+हा=छोड़ना ] छोड़ना । त्यागना ।

क्रि० अ० व्यतीत होना । गुजरना । बीतना ।

**बिहारना**—क्रि० अ० [ सं० विहरण ] विहार करना । केलि या क्रीड़ा करना ।

**बिहारी**—संज्ञा पुं० दे० "विहारी" ।

**बिहाल**—वि० [ फ़ा० बेहाल ] व्याकुल । बेचैन ।

**बिहिश्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] स्वर्ग । बैकुंठ ।

**बिही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] एक पेड़ जिसके फल अमरूद से मिलते जुलते होते हैं ।

**बिहीदाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है ।

**बिहीन**—वि० [ सं० विहीन ] रहित । बिना ।

**बिहुरना***—क्रि० अ० दे० "बिछुरना" ।

**बिहून**—वि० [ हिं० विहीन ] बिना । रहित ।

**बिहोरना**—क्रि० अ० [हिं० बिहरना] बिछुड़ना ।

**बींड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बींड़ी+आ (प्रत्य०)] १. टहनियों से बनाया हुआ लंबा नाल जो कच्चे कूएँ में इसलिए दिया जाता है कि उसका भगाड़ न गिरे । २. घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी । ३. बाँस आदि को बाँधकर बनाया हुआ बोझ ।

**बींदना***—क्रि० स० दे० "बींनना" ।

क्रि० स० [ ? ] अनुमान करना ।

**बींधना***—क्रि० अ० [ सं० विद्ध ] फँसना ।

क्रि० स० विद्ध करना । छेदना । बेधना ।

**बीका**†—वि० [ सं० वक्र ] टेढ़ा ।

**बीखा***—संज्ञा पुं० [ सं० वीक्षा ] कदम । डग ।

**बीग**†—संज्ञा पुं० [ सं० वृक ] [स्त्री० बीगिन ] भेड़िया ।

**बीगना**†—क्रि० स० [ सं० विकीर्ण ] १. छींटना । छितराना । २. गिराना । फेंकना ।

**बीघा**†—संज्ञा पुं० [ सं० विग्रह ] खेत नापने का बीस बिस्वे का एक

वर्ग मान।

बीच†—संज्ञा पुं० [ सं० विच=अलग करना ] १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य।

मुहा०—बीच खेत=खुले मैदान। सबके सामने। २. अवश्य। जरूर। बीच बीच में=१. थोड़ी थोड़ी देर में। २. थोड़े थोड़े अंतर पर।

२. भेद। अंतर। फरक।

मुहा०—बीच करना=१. लड़नेवालों को लड़ने से रोकने के लिए अलग अलग करना। २. झगड़ा निबटाना। झगड़ा मिटाना। बीच पड़ना=१. झगड़ा निबटाने के लिए पंच बनना। २. मध्यस्थ होना। बीच पारना या डालना=१. परिवर्तन करना। २. विभेद या पार्थक्य करना। बीच में पड़ना=१. मध्यस्थ होना। २. जिम्मेदार बनना। प्रतिभू बनना। बीच रखना=दुराव रखना। पराया समझना। बीच में कूदना=अनावश्यक हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग अड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना=(ईश्वर आदि को) शपथ खाना। कसम खाना।

३. बीच का अंतर। अवकाश। ४. अवसर। मौका। अवकाश।

क्रि० वि० दरमियान। अंदर में।

संज्ञा स्त्री० [ सं० वीचि ] लहर। तरंग।

बीचि—संज्ञा स्त्री० [ सं० वीचि ] लहर। तरंग।

बीचु‡—संज्ञा पुं० [ हिं० बीच ] १. अवसर। मौका। २. अंतर। फरक।

बीचोबीच—क्रि० वि० [ हिं० बीच ] बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछना*†—क्रि० स० [ सं० विच या विचयन ] चुनना। पसंद करके छाँटना।

बीछी*†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वृश्चिक] बिच्छू।

बीछू*†—संज्ञा पुं० दे० "बिच्छू"। २. दे० "बिछुआ" ] (हथियार)

बीज—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फूलवाले वृक्षों का गर्भांड जिससे वृक्ष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है। बीया। तुख्म। दाना। २. प्रधान कारण। मूल प्रकृति। ३. जड़। मूल। ४. हेतु। कारण। ५. शुक्र। वीर्य्य। ६. कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्ण, समुदाय या शब्द। ७. दे० "बीजगणित"। ८. अव्यक्त-संख्या-सूचक संकेत। ९. वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें तंत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो।

*संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूची। फिहरिस्त। २. वह सूची जिसमें माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। ३. वह सूची जो किसी गड़े हुए धन की, उसके साथ, रहती है। ४. बीज। ५. कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक।

बीजगणित—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।

बीजत्व—संज्ञा पुं० [ सं० ] बीज का भाव।

बीजदर्शक—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।

बीजन*—संज्ञा पुं० [ सं० व्यजन ] बेना। पंखा।

बीजपूर, बीजपूरक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बिजौरा नीबू। २. चकोतरा।

बीजबंद—संज्ञा पुं० [ हिं० बीज+बाँधना] खिरैंटी या बरियारे के बीज। बला।

बीजमंत्र—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित मूलमंत्र। २. गुर।

बीजरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजा—वि० [ सं० द्वितीय ] दूसरा।

बीजाक्षर—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर।

बीजी—संज्ञा स्त्री० [ सं० बीज+ई (प्रत्य०) ] १. गिरी। मींगी। २. गुठली।

बीजु, बिजुरी—संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बीजू—वि० [ हिं० बीज+ऊ (प्रत्य०)] जो बीज बोने से उत्पन्न हो। कलमी का उलटा।

संज्ञा पुं० दे० "बिज्जु"।

बीझना*†—क्रि० अ० [ सं० विद्ध ] लिप्त होना। फँसना।

बीझा, बीझा*†—वि० [ सं० विजन] निर्जन। एकांत।

बीट—संज्ञा स्त्री० [सं० विट्] पक्षियों की विष्ठा। चिड़ियों का गुह।

बीड़—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बीड़ा ] एक के ऊपर एक रखे हुए रुपए जो साधारणतः गुल्ली का आकार धारण कर लेते हैं।

बीड़ा—संज्ञा पुं० [ सं० वीटक ] पान की सादी गिलौरी। खीली।

मुहा०—बीड़ा उठाना=१. कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना। २. उद्यत होना।

बीड़ी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बीड़ा ] १.

दे० "बीछा"। २. मादी। दे० "बीज"। ३. मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रँगने के लिए मुँह में मलती हैं। ४. पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरट आदि की तरह सुलगाकर पीते हैं।

बीतना—क्रि० अ० [ सं० व्यतीत ] १. समय का विगत होना। वक्त कटना। गुजरना। २. दूर होना। जाता रहना। छूट जाना। ३. संघटित होना। घटना। पड़ना।

बीता†—संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।

बीथित‡†—वि० [ सं० व्यथित ] दुःखित।

बीधना‡†—क्रि० अ० [ सं० विद्ध ] फँसना। २. रंगना।

क्रि० स० दे० "बींधना"।

बीन—संज्ञा स्त्री० [ सं० वीणा ] सितार की तरह का पर उससे बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा। वीणा।

बीनकार—संज्ञा पुं० [ हिं० बीन + फ़ा० कार ] वह जो बीन बजाता हो। बीन बजानेवाला।

बीनना†—क्रि० स० [ सं० विनयन ] १. छोटी छोटी चीजों को उठाना। चुनना। २. छाँटकर अलग करना। छाँटना।

क्रि० स० दे० "बीधना"।

क्रि० स० दे० "बुनना"।

बीफै—संज्ञा पुं० [ सं० बृहस्पति ] बृहस्पतिवार।

बीबी—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. कुल-वधू। कुलीन स्त्री। २. पत्नी। स्त्री।

बीभत्स—वि० [ सं० ] १. जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २. क्रूर। ३. पापी।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों के अंतर्गत सातवाँ रस, इसमें रक्त मांस आदि ऐसी बातों का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।

बीमा—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बीम=भय ] १. किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि पूरा करने की जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है। २. वह पत्र या पार-सल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो।

बीमार—वि० [ फ़ा० ] वह जिसे कोई बीमारी हुई हो। रोगग्रस्त। रोगी।

बीमारी—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. रोग। व्याधि। २. झंझट। ३. बुरी आदत। ( बोलचाल )

बीय‡†—वि० दे० "दूजा"।

बीया‡—वि० [ सं० द्वितीय ] दूसरा।

संज्ञा पुं० [ सं० बीज ] बीज। दाना।

बीर—वि० दे० "वीर"।

संज्ञा पुं० [ सं० वीर ] भाई। भ्राता।

संज्ञा स्त्री० १. सखी। सहेली। २. कान का एक आभूषण। तरना। बीरी। ३. कलाई में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।

बीरउ‡†—संज्ञा पुं० दे० "बिरवा"।

बीरज‡—संज्ञा पुं० दे० "वीर्य"।

बीरन—संज्ञा पुं० [ सं० वीर ] भाई।

बीरबहूटी—संज्ञा स्त्री० [ सं० वीर + वधूटी ] गहरे लाल रंग का एक छोटा रेंगनेवाला बरसाती कीड़ा। इंद्रवधू।

बीरा‡—संज्ञा पुं० [ हिं० बीड़ा ] १. पान का बीड़ा। वि० दे० "बीड़ा"। २. वह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद-स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है।

बीरी†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वीटिका हिं० बीड़ा ] १. पान का बीड़ा। २. कान में पहनने का एक गहना। तरना।

बीरौ†—संज्ञा पुं० [ हिं० बिरवा ] वृक्ष। पेड़।

बील—वि० [ सं० बिल ] पोला। खोखला।

संज्ञा पुं० नीची भूमि।

संज्ञा पुं० [ ? ] मेंढ़।

बीवी—संज्ञा स्त्री० दे० "बीबी"।

बीस—वि० [ सं० विंशति ] १. जो संख्या में उन्नीस से एक अधिक हो। मुहा०—बीस बिस्वे=अधिक संभवतः। २. श्रेष्ठ। अच्छा। उत्तम।

संज्ञा स्त्री० बीस की संख्या या अंक—२०।

बीसी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बीस ] १. बीस चीजों का समूह। कोड़ी। २. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रभव संवत्सरों के तीन विभागों में से कोई विभाग।

बीह‡—वि० [ सं० विंशति ] बीस।

बीहड़—वि० [ सं० विकट ] १. ऊँचा नीचा। विषम। ऊबड़ खाबड़। २. जो सरल या सम न हो। विकट। वि० [ सं० विकग ] अलग। जुदा।

बुंद—संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।

बुंदकी—संज्ञा स्त्री० [ सं० बिंदु + की (प्रत्य०)] १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।

बुंदा—संज्ञा पुं० [ सं० बिंदु ] १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।

बुँदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।

बुंदीदार—वि० [ हिं० बूँदी + फ़ा० दार ]

दार (प्रत्य०) ] जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।

**बुँदेलखंड**—संज्ञा पुं० [हिं० बुँदेला] संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं।

**बुँदेलखंडी**—वि० [हिं० बुँदेलखंड+ई (प्रत्य०)] बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेलखंड का।

संज्ञा पुं० बुँदेलखंड का निवासी।

संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।

**बुँदेला**—संज्ञा पुं० [हिं० बूँद+एला (प्रत्य०)] १. क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है। २. बुँदेलखंड का निवासी।

**बुँदौरी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूँद+औरी (प्रत्य०)] बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।

**बुआ**—संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।

**बुक**—संज्ञा स्त्री० [अ० बकरम] एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा।

**बुकचा**—संज्ञा पुं० [तु० बुकचः] गठरी।

**बुकची**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुकचा+ई (प्रत्य०)] १. छोटी गठरी। २. दर्जियों की वह थैली जिसमें वे सुई, डोरा रखते हैं।

**बुकनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बूकना+ई (प्रत्य०)] किसी चीज का महीन पीसा हुआ चूर्ण।

**बुकवा**—संज्ञा पुं० [हिं० बूकना] १. उबटन। २. बुक्का।

**बुकुन**†—संज्ञा पुं० [हिं० बुकना] १. बुकनी। २. किसी प्रकार का पाचक। चूर्ण।

**बुक्का**—संज्ञा पुं० [हिं० बूकना पीसना] कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।

**बुखार**—संज्ञा पुं० [अ०] १. वाष्प। भाप। २. ज्वर। ताप। ३ शोक, क्रोध, दुःख आदि का आवेग।

**बुजदिल**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बुजदिली] कायर। डरपोक।

**बुजुर्ग**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बुजुर्गी] वृद्ध। बड़ा।

संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।

**बुझना**—क्रि० अ० [?] १. अग्नि या अग्निशिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज का पानी में पड़कर ठंढा होना। ३. पानी का किसी गरम या तपाई हुई चीज से छौंका जाना। ४. पानी पड़ने या मिलने के कारण ठंढा होना। ५. चित्त का आवेग या उत्साह आदि मंद पड़ना।

**बुझाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुझाना+ई (प्रत्य०)] बुझाने की क्रिया या भाव।

**बुझाना**—क्रि० स० [हिं० बुझना का सक० रूप] १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज को पानी में डालकर ठंढा करना।

**मुहा०**—जहर में बुझाना=छुरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रों के फलों को तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ में बुझाना जिसमें वह फल भी जहरीला हो जाय।

३. पानी को छौंकना। ४. पानी डालकर ठंढा करना। ५. चित्त का आवेग या उत्साह आदि शांत करना।

क्रि० स० [हिं० बूझना का प्रे० रूप] १. बूझने का काम दूसरे से कराना। २. बोध कराना। समझाना। ३. संतोष देना।

**बुट***†—संज्ञा स्त्री० दे० "बूटी"।

**बुटना***† क्रि० अ० [?] भागना।

**बुड़ना**†—क्रि० अ० दे० "बूड़ना"।

**बुड़बुड़ाना**—क्रि० अ० [अनु०] मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट स्वर से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।

**बुड़ाना***†—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

**बुड़्डी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बुड़ना] डुबकी। गोता।

**बुड्ढा**†—वि० [सं० वृद्ध] [स्त्री० बुड्ढ़िया] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।

**बुढ़वा**†—वि० दे० "बुड्ढा"।

**बुढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

**बुढ़ाना**—क्रि० अ० [हिं० बूढ़ा+ना (प्रत्य०)] वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना।

**बुढ़ापा**—संज्ञा पुं० [हिं० बूढ़ा+पा (प्रत्य०)] वृद्धावस्था। बुड्ढे होने की अवस्था।

**बुढ़िया**—संज्ञा स्त्री० [सं० वृद्धा] ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाली स्त्री। वृद्धा

**यौ०**—बुढ़िया का काता=एक प्रकार की मिठाई जो काते हुए सूत के लच्छों की तरह होती है।

**बुढ़ौती**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

**बुत**—संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं० बुद्ध] १. मूर्त्ति। प्रतिमा। पुतला। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय। प्रियतम।

वि० मूर्त्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला।

**बुतना**†—क्रि० अ० दे० "बुझना"।

**बुतपरस्त**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [संज्ञा बुतपरस्ती] मूर्त्तिपूजक।

**बुत-शिकन**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बुतशिकनी ] मूर्त्तियों को तोड़नेवाला । मूर्त्ति पूजा का विरोधी ।

**बुताना**†—क्रि० अ० दे० "बुझना"। क्रि० स० दे० "बुझाना" ।

**बुताम**—संज्ञा पुं० [ अं० बटन ] १. बटन । २. घुंडी ।

**बुत्ता**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. धोखा । झाँसा । पट्टी । २. बहाना । हीला ।

**बुदबुद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुलबुला । बुल्ला ।

**बुद्ध**—वि० [ सं० ] १. जो जागा हुआ हो । जागरित । २ ज्ञानवान् । ज्ञानी । ३. पंडित । विद्वान् ।
संज्ञा पुं०—बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था ।

**बुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विवेक या निश्चय करने की शक्ति । अक्ल । समझ । २. उपजाति वृत्त का चौदहवाँ भेद । सिद्धि । ३. एक प्रकार का छंद । लक्ष्मी । ४. छप्पय का ४२ वाँ भेद ।

**बुद्धिजीवी**—वि० [ सं० ] वह जो केवल बुद्धिबल से जीविका उपार्जन करता हो ।

**बुद्धिपर**—वि० [ सं० ] जिस तक बुद्धि न पहुँच सके ।

**बुद्धिमत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुद्धिमान् होने का भाव । समझदारी । अक्लमंदी ।

**बुद्धिमान्**—वि० [ सं० ] वह जो बहुत समझदार हो । अक्लमंद ।

**बुद्धिमानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता" ।

**बुद्धिवंत**—वि० दे० "बुद्धिमान्" ।

**बुद्धि-वाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धि-संगत बातें ही मानी जाती हैं ।

**बुद्धिशाली**—वि० दे० "बुद्धिमान्" ।

**बुधंगड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० बुद्धू ] मूर्ख । बेवकूफ ।

**बुद्धिहीन**—वि० [ सं० ] मूर्ख । बेवकूफ ।

**बुध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य्य के सबसे अधिक समीप रहता है । २. भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रहों में से चौथा ग्रह । ३. देवता । ४. बुद्धिमान् अथवा विद्वान् ।

**बुधजामी**—संज्ञा पुं० [ सं० बुध हिं० जन्म ] बुध के पिता, चंद्रमा ।

**बुधवान***†—वि० दे० "बुद्धिमान्"।

**बुधवार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है ।

**बुधि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि" ।

**बुनकर**—संज्ञा पुं० [ हिं० बुनना ] कपड़ा बुननेवाला । जुलाहा ।

**बुनत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बुनना ] बुनने की क्रिया या भाव । बुनाई ।

**बुनना**—क्रि० स० [ सं० वयन ] १. जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं । बिनना । २. बहुत से सीधे और बेड़ सूतों को मिलाकर उनको कुछ के ऊपर और कुछ के नीचे से निकालकर कोई चीज बनाना ।

**बुनाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बुनना + ई ( प्रत्य० ) ] १. बुनने की क्रिया या भाव । बुनावट । २. बुनने की मजदूरी ।

**बुनावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बुनना + आवट ] बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग ।

**बुनिया**—संज्ञा पुं० दे० "बुनकर" ।
†संज्ञा स्त्री० दे० "बुँदिया" ।

**बुनियाद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. जड़ । मूल । नींव । २. असलियत । वास्तविकता ।

**बुनियादी**—वि० [ फ़ा० ] १. बुनियाद या जड़ से संबंध रखनेवाला । २. नितांत आरंभिक ।

**बुबुकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] जोर जोर से रोना । पुक्का फाड़ना । ढाड़ मारना ।

**बुबुकारी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० बुबुक + आरी (प्रत्य०) ] पुक्का फाड़कर रोना । जोर जोर से रोना ।

**बुभुक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] क्षुधा । भूख ।

**बुभुक्षित**—वि० [ सं० ] भूखा । क्षुधित ।

**बुयाम**—संज्ञा पुं० [ अं० ? ] चीनी मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का गोल और ऊँचा बड़ा पात्र । जार ।

**बुरकना**—क्रि० स० [ अनु० ] पिसी हुई या महीन चीज को किसी दूसरी चीज पर छिड़कना । भुरभुराना ।

**बुरका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं ।

**बुरा**—वि० [ सं० विरूप ] जो अच्छा या उत्तम न हो । खराब । निकृष्ट । मंदा ।

**मुहा०**—बुरा मानना=द्वेष रखना । खार खाना ।

**यौ०**—बुरा भला=१. हानि-लाभ । अच्छा और खराब । २. गाली-

अजमत । शानत-शौकत ।

**बुराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बुरा + ई (प्रत्य०) ] १. बुरे होने का भाव । बुरापन । खराबी । २. खोटापन । नीचता । ३. अवगुण । दोष । दुर्गुण । ४. शिकायत । निंदा ।

**बुरादा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है । कुनाई ।

**बुरुश**—संज्ञा पुं० [ अं० ब्रश ] रँगने या सफाई करने के लिए खास तरह की बनी हुई कूँची ।

**बुर्ज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिए थोड़ा सा स्थान होता है । गरगज । २. मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार का इमारत का कोई अंग । ३. गुंबद ।

**बुर्द**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. ऊपरी आमदनी । ऊपरी लाभ । नफा । २. शर्त । होड़ । बाजी । ३. शतरंज के खेल में वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते हैं और केवल बादशाह रह जाता है ।

**बुलंद**—वि० [ फ़ा० बलंद ] [ संज्ञा बुलंदी ] १. भारी । उत्तुंग । २. बहुत ऊँचा ।

**बुलबुल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० फ़ा० ] एक प्रसिद्ध गानेवाली काली छोटी चिड़िया ।

**बुलबुला**—संज्ञा पुं० [ सं० बुद्बुद ] पानी का बुल्ला । बुदबुदा ।

**बुलवाना**—क्रि० स० [ हिं० बुलाना का प्रे० रूप ] बुलाने काम दूसरे से कराना ।

**बुलाक**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [ तु० ] वह लंबोतरा या सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं । वह मोती या सोने का गहना जो नाक में स्त्रियाँ पहनती हैं ।

**बुलाकी**—संज्ञा पुं० [ तु० बुलाक ] घोड़े की एक जाति ।

**बुलाना**—क्रि० स० [ हिं० बोलना का स० रूप ] १. आवाज देना । पुकारना । २. अपने पास आने के लिए कहना । ३. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना ।

**बुलावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बुलाना + आवा (प्रत्य०) ] बुलाने की क्रिया या भाव । निमंत्रण ।

**बुलाह**—संज्ञा पुं० [ सं० बोल्लाह ] वह घोड़ा जिसकी गर्दन और पूँछ के बाल पीले हों ।

**बुलौआ**—संज्ञा पुं० दे० "बुलावा" ।

**बुल्ला**—संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला" ।

**बुहारना**—क्रि० स० [ सं० बहुकर + ना (प्रत्य०) ] झाड़ू से जगह साफ करना । झाड़ना ।

**बुहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बुहारना + ई (प्रत्य०) ] झाड़ू । बढ़नी । सोहनी ।

**बूँद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बिंदु ] १. जल आदि का वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदि के समय प्रायः छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है । कतरा । टोप ।

मुहा०—बूँदें गिरना या पड़ना = धीमी वर्षा होना ।

२. वीर्य्य । ३. एक प्रकार का कपड़ा ।

**बूँदाबाँदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बूँद + अनु० बाँद ] हलकी या थोड़ी वर्षा ।

**बूँदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बूँद + ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की मिठाई । बुँदिया । २. वर्षा के जल की बूँद ।

**बू**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वास । गंध । महक । २. दुर्गंध । बदबू ।

**बूआ**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. पिता की बहन । फूफी । २. बड़ी बहन ।

**बूक**—संज्ञा पुं० [ हिं० बकना ] कोई वस्तु उठाने के लिए हथेली की गहरी की हुई मुद्रा । चंगुल । चकोटा ।

**बूकना**—क्रि० स० [ देश० ] १. महीन पीसना । पीसकर चूर्ण करना । २. गढ़कर बातें करना । जैसे—अँगरेजी बूकना ।

**बूका**—संज्ञा पुं० १. दे० "अबीर" । २. दे० "बुक्का" ।

**बूकी***—संज्ञा स्त्री० दे० "बुकनी" ।

**बूचड़**—संज्ञा पुं० [ अं० बुचर ] कसाई ।

**बूचड़खाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बूचड़ + फ़ा० खाना ] वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है । कसाई-बाड़ा ।

**बूचा**—वि० [ सं० बुस = विभाग करना] १. जिसके कान कटे हुए हों । कन-कटा । २. जिसके ऐसे अंग कट गए हों अथवा न हों, जिनके कारण वह कुरूप जान पड़ता हो ।

**बूजना**-क्रि० स० [ ? ] धोखा देना ।

**बूझ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बुद्धि ] १. समझ । बुद्धि । अक्ल । ज्ञान । २. पहेली ।

**बूझन***†—संज्ञा स्त्री० दे० "बूझ" ।

**बूझना**—क्रि० स० [हिं० बूझ (बुद्धि)] १. समझना । जानना । २. पूछना ।

**बूट**—संज्ञा पुं० [ सं० विटप, हिं० बूटा ] १. चने का हरा पौधा । २. चने का हरा दाना । ३. वृक्ष । पेड़ । पौधा ।

**बूटना***—क्रि० अ० [ ? ] भागना ।

**बूटनि***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बूटना ]

बीरबहूटी नामक का कीड़ा।

**बूटा**—संज्ञा पुं० [ सं० विटप ] १. छोटा वृक्ष। पौधा। २. फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न जो कपड़ों या दीवारों आदि पर बनाए जाते हैं। बड़ी बूटी।

**बूटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बूटा का स्त्री० रूप ] १. वनस्पति। वनौषधि। जड़ी। २. भाँग। भंग। ३. फूलों के छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर बनाए जाते हैं। छोटा बूटा। ४. खेलने के ताश के पत्तों पर बनी हुई टिक्की।

**बूड़ना**—क्रि० अ० [ सं० ब्रुड=डूबना ] १. डूबना। निमज्जित होना। २. लीन होना। निमग्न होना।

**बूड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० डूबना ] वर्षा आदि के कारण होनेवाली जल की बाढ़।

**बूढ़ा**—वि० दे० "बुड्ढा"।
संज्ञा पुं० [ ? ] १. लाल रंग। २. बीरबहूटी।

**बूढ़ा**—संज्ञा पुं० दे० "बुड्ढा"।

**बूता**—संज्ञा पुं० [ हिं० बित्त ] बल। शक्ति।

**बूरना***—क्रि० अ० दे० "डूबना"।

**बूरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भूरा ] १. कच्ची चीनी जो भूरे रंग की होती है। शक्कर। २. साफ की हुई चीनी। ३. सफूफ।

**बृच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।

**बृहती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कटाई। बरहंटा। बनभंटा। २. विश्वावसु गंधर्व की वीणा का नाम। ३. उत्तरीय वस्त्र। उपरना। ४. नौ अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**बृहत्**—वि० [ सं० ] १. बहुत बड़ा। विशाल। २. दृढ़। बलिष्ठ। ३. उच्च। ऊँचा। ( स्वर आदि )

**बृहदारण्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।

**बृहद्**—वि० दे० "बृहत्"।

**बृहद्रथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. शतधन्वा के पुत्र का नाम। ३. जरासंध के पिता का नाम।

**बृहन्नल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अर्जुन का एक नाम। २ बाहु।

**बृहन्नला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अर्जुन का उस समय का नाम जिस समय वे अज्ञातवास में स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट की कन्या को नाच-गाना सिखाते थे।

**बृहस्पति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २. सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।

**बेंच**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. लकड़ी, लोहे आदि की एक प्रकार की लंबी चौकी। २. सरकारी न्यायालय के न्याय-कर्ता।

**बेंड़ना***—क्रि० स० दे० "बेड़ना"।

**बेंग**—संज्ञा पुं० [ सं० भेक ] मेढक।

**बेंट, बेंठ**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] औजारों में लगा हुआ काठ का दस्ता। मूठ।

**बेंड़ा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेड़ा ] टेक। चाँड़।

**बेंड़ा**—वि० [ हिं० आड़ा ] १. आड़ा। तिरछा। २. कठिन। मुश्किल। टेढ़ा।

**बेंत**—संज्ञा पुं० [ सं० वेतस् ] १. एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठल से छड़ियाँ और टोकरियाँ आदि बनती हैं। २. बेंत के डंठल की बनी हुई छड़ी।

**मुहा०**—बेंत की तरह काँपना=थर थर काँपना। बहुत अधिक डरना।

**बेंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० बिंदु ] १. माथे पर लगाने का गोल तिलक। टीका। २. एक आभूषण। बंदी। बिंदी। ३. बड़ी गोल टिकली।

**बेंदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बिंदु, हिं० बिंदा ] १. टिकली। बिंदी। २. शून्य। सुन्ना। ३. दावनी या बेंदी नाम का गहना।

**बेंवड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बेंड़ा=आड़ा ] बंद किवाड़ के पीछे लगाने की लकड़ी। अरगल। गज। ब्योंड़ा।

**बेंवत**—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्योंत"।

**बे**—अव्य० [ फ़ा० बे मि० सं० वि ] बिना। बगैर। जैसे, बेगैरत, बेइज्जत।
अव्य० [ हिं० बे ] छोटों के लिए संबोधन।

**बेअंत***—क्रि० वि० [ हिं० बे+सं० अंत ] जिसका कोई अंत न हो। अनंत। बेहद।

**बेअकल**—वि० [फ़ा० बे+अ० अक्ल] मूर्ख।

**बेअदब**—वि० [फ़ा० बे+अ० अदब] [ संज्ञा बेअदबी ] जो बड़ों का आदर-सम्मान न करे।

**बेआब**—वि० [ फ़ा० बे+फ़ा० आब ] १ जिसमें आब ( चमक ) न हो। २. तुच्छ।

**बेआबरू**—वि० [ फ़ा० ] बेइज्जत।

**बेइंसाफी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] अन्याय।

**बेइज्जत**—वि० [फ़ा० बे+अ० इज्जत] [ संज्ञा बेइज्जती ] १. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।

**बेउरा***—संज्ञा पुं० दे० "ब्योरा"।

**बेईमान**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेईमानी] १. जिसे धर्म का विचार न हो। अधर्मी। २. जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो।

**बेउज्र**—वि० [फ़ा० बे+अ० उज़्र] जो आज्ञा पालन करने में कोई आपत्ति न करे।

**बेकदर**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेकदरी] बेइज्जत। अप्रतिष्ठित।

**बेकरार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेकरारी] जिसे शांति या चैन न हो। व्याकुल। विकल।

**बेकल***†—वि० [सं० विकल] व्याकुल।

**बेकली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेकल+ई (प्रत्य०)] १. घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २. गर्भाशय-संबंधी एक रोग।

**बेकसूर**—वि० [फ़ा० बे+अ० कसूर] जिसका कोई दोष या कसूर न हो। निरपराध।

**बेकहा**—वि० [हिं० बे+कहना] जो किसी का कहना न माने।

**बेकाबू**—वि० [फ़ा० बे+अ० क़ाबू] १. विवश। लाचार। २. जो किसी के वश में न हो।

**बेकाम**—वि० [फ़ा०बे+हिं०काम] १. जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। निठल्ला। २. जो किसी काम में न आ सके।

**बेकायदा**—वि० [फ़ा० बे+अ० कायदा] कायदे के खिलाफ। नियमविरुद्ध।

**बेकार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेकारी] १. निकम्मा। निठल्ला। २. निरर्थक। व्यर्थ।

**बेकार्यो***†—संज्ञा पुं० [हिं० बिकारी] बुलाने का शब्द। जैसे, अरे, हो आदि।

**बेकुसूर**—वि० [फ़ा० बे+अ० क़ुसूर] जिसका कोई कसूर न हो। निरपराध।

**बेख***†—संज्ञा पुं० [सं० वेष] १. भेष। स्वरूप। २. सर्वांग। नकल।

**बेखटके**—क्रि० वि० [फ़ा० बे+हिं० खटका] बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमंजस के। निस्संकोच।

**बेखतर**—वि० [फ़ा०] निर्भय। निडर।

**बेखबर**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेखबरी] १. अनजान। नावाकिफ। बेहोश। बेसुध।

**बेग**—संज्ञा पुं० दे० "वेग"।

**बेगम**—संज्ञा स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] रानी। रानी। राजपत्नी।

**बेगर**—वि० दे० "बेहर"। क्रि० वि० दे० "बगैर"।

**बेगरज**—वि० [फ़ा० बे+अ० ग़रज़] जिसे कोई गरज या परवाह न हो।

**बेगवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णाद्ध वृत्त।

**बेगाना**—वि० [फ़ा०] १. गैर। दूसरा। पराया। २. नावाकिफ। अनजान।

**बेगार**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बिना मजदूरी का जबरदस्ती लिया हुआ काम। २. वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय।

**मुहा०**—बेगार टालना=बिना चित्त लगाए कोई काम करना।

**बेगारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बेगार में काम करनेवाला आदमी।

**बेगि***†—क्रि० वि० [सं० वेग] १. जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २. चटपट। तुरंत।

**बेगुनाह**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेगुनाही] जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो। बेकसूर। निर्दोष।

**बेगैरत**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेगैरती] निर्लज्ज। बेशरम।

**बेचना**—क्रि० स० [सं० विक्रय] मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। विक्रय करना।

**मुहा०**—बेच खाना=खो देना। गँवा देना।

**बेचाना***†—क्रि० स० दे० "बिकवाना"।

**बेचारा**—वि० [फ़ा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और निस्सहाय। गरीब। दीन।

**बेचैन**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेचैनी] जिसे चैन न पड़ता हो। व्याकुल। विकल। बेकल।

**बेजड़**—वि० [फ़ा० बे+हिं० जड़] जिसकी कोई जड़ या बुनियाद न हो।

**बेजबान**—वि० [फ़ा०] १. जिसमें बातचीत करने की शक्ति न हो। गूँगा। मूक। २. दीन। गरीब।

**बेजा**—वि० [फ़ा०] १. बेठिकाने। बेमौके। २. अनुचित। नामुनासिब। ३. खराब।

**बेजान**—वि० [फ़ा०] १. मुरदा। मृतक। २. जिसमें कुछ भी दम न हो। ३. मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ। ४. निर्बल। कमजोर।

**बेजाब्ता**—वि० [फ़ा० बे+अ० जाब्ता] कानून या नियम आदि के विरुद्ध।

**बेजार**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेजारी] १. नाराज। २. दुःखी।

**बेजोड़**—वि० [फ़ा० बे+हिं० जोड़] १. जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २. जिसकी समता न हो सके। अद्वि-

तीय । निरुपम ।

**बेझना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "बेधना"।

**बेझा*।**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वेध ] निशाना । लक्ष्य ।

**बेटकी*।**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बेटा] बेटी ।

**बेटला*।**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बेटा" ।

**बेटा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ बटु=बालक ] [ स्त्री॰ बेटी ] पुत्र । सुत । लड़का ।

**बेटौना।**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बेटा" ।

**बेठन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वेष्टन ] वह कपड़ा जो किसी चीज को लपेटने के काम में आवे । बँधना ।

**बेठिकाने**—वि॰ [ फ़ा॰ बे + हिं॰ ठिकाना ] १. जो अपने उचित स्थान पर न हो । स्थान-च्युत । २. ऊल-जलूल । ३. व्यर्थ । निरर्थक ।

**बेड़**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ बाड़ ] १. वृक्ष के चारों ओर लगाई हुई बाड़ । मेंड़ । २. रुपया । ( दलाल )

**बेड़ना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "बेढ़ना" ।

**बेड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वेष्ट ] १. बड़े बड़े लट्ठों या तख्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं । तिरना ।

**मुहा॰**—बेड़ा पार करना या लगाना= किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना ।

२. बहुत सी नावों आदि का समूह ।

वि॰ [ हिं॰ आड़ा का अनु॰ ] १. जो आँखों के समानांतर दाहिने बाजू गया हो । आड़ा । २. कठिन । मुश्किल । विकट ।

**बेड़िन, बेड़िनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ ? ] नट जाति की वह स्त्री जो नाचती-गाती हो ।

**बेड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ वलय ] १. लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों को इसलिए पहनाई जाती है, जिसमें वे भाग न सकें । निगड़ । २. बाँस की एक प्रकार की टोकरी ।

**बेडौल**—वि॰ [ हिं॰ बे+डौल=रूप ] १. जिसका डौल या रूप अच्छा न हो । भद्दा । २. दे॰ "बेढ़ंगा" ।

**बेढंगा**—वि॰ [ फ़ा॰ बे + हिं॰ ढंग +आ ( प्रत्य॰ ) ] [ संज्ञा बेढंगापन ] १. जिसका ढंग ठीक न हो । बुरे ढंगवाला । २. जो ठीक तरह से लगाया, रखा या सजाया न गया हो । बेतरतीब । ३. भद्दा । कुरूप ।

**बेढ़**—संज्ञा पुं॰ [ ? ] नाश । बरबादी ।

**बेढ़ई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ बेढ़ना ] कचौड़ी ।

**बेढ़ना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ वेष्टन ] १. वृक्ष या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिए, चारों ओर से किसी प्रकार घेरना । रूँधना । २. चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना ।

**बेढब**—वि॰ [ हिं॰ बे+ढब ] १. जिसका ढब अच्छा न हो । २. बेढंगा । भद्दा ।

क्रि॰ वि॰ बुरी तरह से । बेतरह ।

**बेढ़ा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ बेढ़ना= घेरना ] १. हाथ में पहनने का एक प्रकार का कड़ा ( गहना ) । २. घर के आस पास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हैं ।

**बेणीफूल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वेणी + हिं॰ फूल ] फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना । सीसफूल ।

**बेतकल्लुफ**—वि॰ [ फ़ा॰ बे+अ॰ तकल्लुफ़ ] [ संज्ञा बेतकल्लुफी ] १. जिसे तकल्लुफ की कोई परवा न हो । २. जो अपने हृदय की बात साफ-साफ कह दे ।

क्रि॰ वि॰ १. बिना किसी प्रकार के तकल्लुफ के । २. बेधड़क । निःसंकोच ।

**बेतना**-क्रि॰ अ॰ [ सं॰ वेतन ] जान पड़ना ।

**बेतमीज**—वि॰ [ फ़ा॰ बे+अ॰ तमीज़ ] [ संज्ञा बेतमीजी ] जिसे शऊर या तमीज न हो । बेहूदा । उजड्ड ।

**बेतरह**—क्रि॰ वि॰ [ फ़ा॰ बे+अ॰ तरह ] १. बुरी तरह से । अनुचित रूप से । २. असाधारण रूप से ।

वि॰ बहुत अधिक । बहुत ज्यादा ।

**बेतरीका**—वि॰ क्रि॰ वि॰ [ फ़ा॰ बे+अ॰ तरीका ] तरीके या नियम के विरुद्ध । अनुचित ।

**बेतहाशा**--क्रि॰ वि॰ [ फ़ा॰ बे+ अ॰ तहाशा ] १. बहुत अधिक तेजी से । २. बहुत घबराकर । ३. बिना सोचे समझे ।

**बेताब**—वि॰ [ फ़ा॰ ] [ संज्ञा बेताबी ] १. दुर्बल । कमजोर । २. विकल । व्याकुल ।

**बेतार**--वि॰ [ हिं॰ बे+तार ] बिना तार का । जिसमें तार न हो ।

**यौ॰**—बेतार का तार = विद्युत् की सहायता से भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तार की सहायता के बिना ही भेजा गया हो ।

**बेताल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "वैताल" ।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वैतालिक ] भाट । बंदी ।

**बेतुका**--वि॰ [ फ़ा॰ बे+हिं॰ तुक ] १. जिसमें सामंजस्य न हो । बेमेल । २. बेढंगा । बेढब ।

**बेतुका छंद**-संज्ञा पुं॰ [हिं॰ बेतुका+

सं० छंद ] ऐसा छंद जिसके तुकांत आपस में न मिलते हों। अमित्राक्षर छंद।

**बेदखल**—वि० [ फ़ा० ] जिसका दखल, कब्जा या अधिकार न हो। अधिकार च्युत।

**बेदखली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] जमीन पर से दखल या कब्जे का हटाया जाना अथवा न होना।

**बेदम**—वि० [ फ़ा० ] १. मृतक। मुरदा। २. मृतप्राय। अधमरा। ३. जर्जर। बोदा।

**बेदमजनूँ**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का वृक्ष। इसकी छाल और फलों आदि का व्यवहार औषध में होता है।

**बेदमुश्क**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक वृक्ष जिसमें कोमल और सुगंधित फूल लगते हैं। इसकी सूखी टहनी को कलम बनाते हैं।

**बेदर्द**—वि० [ फ़ा० ] [संज्ञा बेदर्दी ] जो किसी के व्यथा को न समझे। कठोरहृदय।

**बेदाग**—वि० [फ़ा०] १. जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो। साफ। २. निर्दोष। शुद्ध। ३.निरपराध। बेकसूर।

**बेदाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० बिहीदाना ] १. एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार। २. बिहीदाना नामक फल का बीज। दारुहल्दी। चित्रा।

वि० [ हिं० बे (प्रत्य० ) + फ़ा० दाना=बुद्धिमान् ] मूर्ख। बेवकूफ।

**बेदाम**—वि० [ फ़ा० ] बिना दाम का। मुफ्त।

संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।

**बेदार**—वि० [ फ़ा० ] [संज्ञा बेदारी] जागा हुआ। जाग्रत।

**बेध**—संज्ञा पुं० [ सं० वेध ] १. छेद। २. दे० "वेध"।

**बेधड़क**—क्रि० वि० [ फ़ा० बे+ हिं० धड़क ] १. बिना किसी प्रकार के संकोच के। बिना खटके। २. बेखौफ। निडर होकर। ३. बिना आगा पीछा किए।

वि० १. जिसे किसी प्रकार का संकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २. निर्भय।

**बेधना**—क्रि० स० [ सं० वेधन ] नुकीली चीज की सहायता से छेद करना। छेदना। भेदना।

**बेधर्म**—वि० [ सं० विधर्म ] जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो। धर्मच्युत।

**बेधिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० बेधना ] अंकुश।

**बेधीर***—वि० [ फ़ा० बे+ हिं० धीर ] अधीर।

**बेन**—संज्ञा पुं० [सं० वेणु] १.बंसी। मुरली। २ बाँसुरी। ३. सँपेरों के बजाने की तूमड़ी। महुवर। ४.बाँस।

**बेनजीर**—वि० [ फ़ा० ] अनुपम। बेजोड़।

**बेनसीब** वि० [फ़ा० बे + अ० नसीब] अभागा। बदकिस्मत।

**बेना**—संज्ञा पुं० [ सं० वेणु ] [स्त्री० अल्पा० बेनिया ] १. बाँस का बना हुआ छोटा पंखा। २. खस। उशीर। ३. बाँस।

**बेनिमून***—वि० [ फ़ा० बे+नमूना ] अद्वितीय। अनुपम।

**बेनिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेना ] छोटा पंखा। पंखी।

**बेनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वेणी ] १. स्त्रियों की चोटी। २. गंगा सरस्वती और यमुना का संगम। त्रिवेणी। ३. किवाड़ों के पल्ले में लगी हुई एक छोटी लकड़ी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।

**बेनु**—संज्ञा पुं० [ सं० वेणु ] १. दे० "वेणु"। २. बंसी। मुरली। ३. बाँस।

**बेपनाह**—वि० [ हिं० बे+फ़ा० पनाह ] जिससे किसी प्रकार रक्षा न हो सके। बहुत भीषण।

**बेपरद**—वि० [ फ़ा० बे+परदा ] [ संज्ञा बेपर्दगी ] १. जिसके आगे कोई आड़ न हो। अनावृत। २. नंगा। नग्न।

**बेपरवा, बेपरवाह**—वि० [ फ़ा० बेपरवाह ] [संज्ञा बेपरवाही ] १. जिसे कोई परवा न हो। बेफिक्र। २. मनमौजी। ३. उदार।

**बेपाइ***—वि० [ हिं० बे+सं० उपाय ] जिसे कोई उपाय न सूझे। भौचक। हक्का-बक्का।

**बेपीर**—वि० [ फ़ा० बे+हिं० पीर=पीड़ा ] १ दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला। २. निर्दय। बेरहम।

**बेपेंदी** वि० [ हिं० बे+पेंदा] जिसमें पेंदा न हो।

मुहा० बेपेंदी का लोटा=किसी के जरा से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी।

**बेफायदा**—वि०, क्रि० वि० [ फ़ा० ] व्यर्थ। निरर्थक।

**बेफिक्र**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बेफिक्री ] जिसे कोई फिक्र न हो। निश्चिन्त। बेपरवा।

**बेबस**—वि० [ सं० विवश ] [ संज्ञा बेबसी ] १ जिसका कुछ वश न चले। लाचार। २. पराधीन। परवश।

**बेबहा**—वि० [ फ़ा० ] बहुमूल्य।

**बेबाक**—वि० [ अ०+फ़ा० ] [ संज्ञा बेबाकी ] निडर। निर्लज्ज।

**बेबाक**—वि० [ फ़ा० ] चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ। (ऋण)

**बेब्याहा**—वि० [ फ़ा० बे+हिं० ब्याहा ] [ स्त्री० बेब्याही ] अविवाहित। कुँआरा।

**बेभाव**—क्रि० वि० [ फ़ा० बे+हिं० भाव ] जिसकी कोई गिनती न हो। बेहद।

**बेमालूम**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] बिना किसी को पता लगे।
वि० जो मालूम न पड़ता हो।

**बेमुरव्वत**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बेमुरव्वती ] जिसमें मुरव्वत न हो। तोता-चश्म।

**बेमौका**—वि० [ फ़ा० ] जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो।
संज्ञा पुं० मौके का न होना।

**बे-मौसिम**—वि० [ फ़ा० ] १. मौसिम न होने पर भी होनेवाला। २. जिसका मौसिम न हो।

**बेर**—संज्ञा पुं० [ सं० बदरी ] १. एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं। २. इस वृक्ष का फल।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० बार ] १. बार। दफा। २. विलंब। देर।

**बेरझरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेर+झड़ी ? ] झड़बेरी।

**बेरवा**—संज्ञा पुं० [ ? ] चाँदी का कड़ा।
संज्ञा पुं० दे० "बेवरा"।

**बेरहम**—वि० [ फ़ा० बेरहम ] [संज्ञा बेरहमी ] निर्दय। निठुर। दयाशून्य।

**बेरा**—संज्ञा पुं० [ सं० वेला ] १. समय। वक्त। २. तड़का। प्रातःकाल।

**बेरामा**—वि० दे० "बीमार"।

**बेरियाँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेर ] समय। वक्त।

**बेरी**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "बेर"। २. दे० "बेड़ी"।

**बेरुख**—वि० [ फ़ा० ] [संज्ञा बेरुखी] १. जो समय पड़ने पर रुख (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत। २. नाराज। क्रुद्ध।

**बेलंद**—वि० [ फ़ा० बलंद ] १. ऊँचा। २. जो बुरी तरह विफल-मनोरथ हुआ हो।

**बेलंब***—संज्ञा पुं० "विलंब"।

**बेल**—संज्ञा पुं० [ सं० बिल्व ] मँझोले आकार का एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष। इसमें गोल फल लगते हैं। श्रीफल।
संज्ञा स्त्री० [ सं० वल्ली ] १. वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर की ओर उठकर नहीं बढ़ सकते। वल्ली। लता। लतर।
मुहा०—बेल मँढ़े चढ़ना=किसी कार्य का अंत तक ठीक ठीक पूरा उतरना।
२. संतान। वंश। ३. कपड़े या दीवार आदि पर बनी हुई फूल-पत्तियाँ आदि। ४. फीते आदि पर बनी हुई इसी प्रकार की फूल-पत्तियाँ। ५. नाव खेने का डाँड़।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० बेलचः ] १. एक प्रकार की कुदाली। २. सड़क आदि बनाने में सीमा निर्धारित करने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर।
*संज्ञा पुं० बेले का फूल।

**बेलचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कुदाल। कुदारी।

**बेलज्जत**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बेलज्जती ] जिसमें कोई लज्जत या स्वाद न हो।

**बेलदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह मजदूर जो फावड़ा चलाने का काम करता हो।

**बेलन**—संज्ञा पुं० [ सं० वेल्लन ] १. वह भारी, गोल और दंड के आकार का खंड जिसे लुढ़काकर किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़-पत्थर आदि कूटकर सड़कें बनाते हैं। रोलर। २. किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरजा। ३. कोल्हू का जाठ। ४. रूई धुनकने की मुठिया या हत्था। ५. दे० "बेलना"।

**बेलना**—संज्ञा पुं० [ सं० वेल्लन ] काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।
क्रि० स० १. रोटी, पूरी आदि को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। २. चौपट करना। नष्ट करना।
मुहा०—पापड़ बेलना=काम बिगाड़ना।
३. विनोद के लिए पानी के छींटे उड़ाना।

**बेलपत्ती**—संज्ञा स्त्री० दे० "बेलपत्र"।

**बेलपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० बिल्वपत्र ] बेल के वृक्ष की पत्तियाँ जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं।

**बेलरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "बेल"।

**बेलसना***—क्रि० अ० [सं० विलास+ना (प्रत्य०)] भोग करना। सुख लूटना।

**बेलहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बेल=पान+हरा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० अल्पा० बेलहरी ] लगे हुए पान रखने के लिए एक लंबोतरी पिटारी।

**बेला**—संज्ञा पुं० [ सं० मल्लिका ? ] चमेली आदि की जाति का एक छोटा पौधा जिसमें सुगंधित सफेद फूल लगते हैं।

संज्ञा पुं० [ सं० वेला ] १. लहर। २. चमड़े की एक प्रकार की छोटी कुप्पियाँ जिनसे तेल दूसरे पात्र में भरते हैं। ३. कटोरा। ४. समुद्र का किनारा। ५. समय। वक्त।

**बेलाग**—वि० [ फ़ा० बे+हिं० लाग=लगावट] १. बिलकुल अलग। २. साफ। खरा।

**बेली**—संज्ञा पुं० [ सं० बल ] संगी। साथी।

**बेलौस**—वि० [ हिं० बे+फ़ा० लौस ] १. सच्चा। खरा। २. बेमुरव्वत। (क्व०)

**बेवकूफ**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बेवकूफी ] मूर्ख। निर्बुद्धि। नासमझ।

**बेवक्त**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] कुसमय में।

**बेवट**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. संकट। २. विवशता।

**बेवपार***—संज्ञा पुं दे० "व्यापार"।

**बेवफ़ा**—वि० [ फ़ा० बे+अ० वफ़ा ] [ संज्ञा बे-वफ़ाई ] १. जो मित्रता आदि का निर्वाह न करे। २. बेमुरव्वत। दुःशील।

**बेवरा***—संज्ञा पुं० [ हिं० ब्योरा ] विवरण।

**बेवरेवार**—वि० [ हिं० बेवरा+वार (प्रत्य०) ] तफसीलवार। विवरण सहित।

**बेवसाय***—संज्ञा पुं० दे० "व्यवसाय"।

**बेवहरना***†—क्रि० अ० [ सं० व्यवहार ] व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना।

**बेवहरिया***†—संज्ञा पुं० [ सं० व्यवहार+इया (प्रत्य०) ] लेन-देन करनेवाला। महाजन।

**बेवा**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] विधवा। राँड़।

**बेवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "बिवाई"।

**बेवान***†—संज्ञा पुं० दे० "विमान"।

**बेशक**—क्रि० वि० [ फ़ा० बे+अ० शक ] अवश्य। निःसंदेह। जरूर।

**बेशकीमत, बेशकीमती**—वि० [फ़ा०] बहुमूल्य।

**बेशरम** वि० [ फ़ा० बेशर्म ] निर्लज्ज। बेहया।

**बेशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] अधिकता।

**बेशुमार**—वि० [ फ़ा० ] अगणित। असंख्य।

**बेश्म**—संज्ञा पुं० [ सं० वेश्म ] घर। गृह।

**बेसंदर***†—संज्ञा पुं० [ सं० वैश्वानर ] अग्नि।

**बेसँभर, बेसँभार***†—वि० [ फ़ा० बे+हिं० सँभाल ] बेहोश।

**बेस***—संज्ञा पुं० [ सं० वेष ] भेस।

**बेसन**—संज्ञा पुं० [ देश० ] चने की दाल का आटा। रेहन।

**बेसनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेसन ] बेसन की बनी या भरी हुई पूरी।

**बेसमझ**—वि० [ हिं० बे+समझ ] [ संज्ञा बेसमझी ] नासमझ। मूर्ख।

**बेसबरा**—वि० [ फ़ा० बे+अ० सब्र ] जिसे सब्र या संतोष न हो। अधीर।

**बेसर**—संज्ञा ° ] १. खच्चर। २. नाक में पहनने की नथ।

**बेसरा**—वि० [ फ़ा० बे+सरा=ठहरने का स्थान ] जिसे ठहरने का स्थान न हो। आश्रयहीन।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का पक्षी।

**बेसवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वेश्या ] रंडी।

**बेसा***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० वेश्या ] रंडी।

संज्ञा पुं० दे० "वेष"।

**बेसारा***†—वि० [ हिं० बैठाना ] १. बैठानेवाला। २. रखने या जमानेवाला।

**बेसाहना**† क्रि० अ० [देश० ] १. मोल लेना। खरीदना। २.जान-बूझकर अपने पीछे लगाना। (झगड़ा, विरोध आदि)

**बेसाहनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बेसाहना ] माल लेने की क्रिया।

**बेसाहा**†—संज्ञा पुं० [हिं० बेसाहना] खरीदी हुई चीज। सौदा। सामग्री।

**बेसिक**—संज्ञा वि० [ अ० बेसिक ] प्रारंभिक।

**बेसिक शिक्षा**—प्रारंभिक शिक्षा।

**बे-सिलसिले**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें कोई क्रम या सिलसिला न हो। अव्यवस्थित।

**बेसुध**—वि० [ हिं० बे+सुध=होश ] १. अचेत। बेहोश। २. बेखबर। बदहवास।

**बेसुर, बेसुरा**—वि० [ हिं० बे+सुर=स्वर ] १. जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो। (संगीत) २. बेमौका।

**बेसूद**—वि० [ फ़ा० ] व्यर्थ। बेफायदा।

**बेहंगम**—वि० [ सं० विहंगम ] १. भद्दा। बेढंगा। २. बेढब। विकट।

**बेहँसना***†—क्रि० अ० [हिं० हँसना] ठठाकर हँसना। जोर से हँसना।

**बेह***†—संज्ञा पुं० [ सं० वेध ] छेद। छिद्र।

**बेहड़**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "बीहड़"।

**बेहतर**—वि० [ फ़ा० ] किसी के मुकाबिले में अच्छा। किसी से बढ़कर।

अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। अच्छा।

**बेहतरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] बेहतर का भाव। अच्छापन। भलाई।

**बेहद**—वि० [ फ़ा० ] १. असीम । अपरिमित । अपार । २. बहुत अधिक ।

**बेहना**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. जुलाहों की एक जाति । २. धुनिया ।

**बेहबूदी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] भलाई । बेहरी ।

**बेहया**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा बेह-याई ] जिसे हया या लज्जा आदि बिलकुल न हो । निर्लज्ज । बेशर्म ।

**बेहर**—वि० [ देश० ] १. अचर । स्थावर । २. अलग । पृथक् । जुदा ।

**बेहरा**—वि० [ देश० ] अलग । पृथक् । जुदा ।

**बेहराना***—क्रि० अ० [ ? ] फटना ।

**बेहरी**†—संज्ञा स्त्री० [ ? ] बहुत से लोगों से चंदे के रूप में माँगकर एकत्र किया हुआ धन ।

**बेहला**—संज्ञा पुं० [ अं० वायोलिन ] सारंगी के आकार का एक प्रकार का अँगरेजी बाजा । बेला ।

**बेहाल**—वि० [ फ़ा० बे+अ० हाल ] [ संज्ञा बेहाली ] व्याकुल । विकल । बेचैन ।

**बेहिसाब**—क्रि० वि० [ फ़ा० बे+अ० हिसाब ] बहुत अधिक । बहुत ज्यादा । बेहद ।

**बेहुनरा**—वि० [ हिं० बे+फ़ा० हुनर ] जिसे कोई हुनर न आता हो । मूर्ख ।

**बेहूदगी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बेहूदा-पन" ।

**बेहूदा**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा बेहूदगी] १. जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो । बदतमीज । २. अशिष्टतापूर्ण ।

**बेहूदापन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० बेहूदा+पन ( प्रत्य० ) ] बेहूदगी । अशिष्टता । असभ्यता ।

**बेहून***†—क्रि० वि० [ सं० विहीन ] बिना । बगैर ।

**बेफ़िक्र**—वि० [ फ़ा० ] बेफ़िक्र । चिंता-रहित ।

**बेहोश**—वि० [ फ़ा० ] मूर्च्छित । बेसुध ।

**बेहोशी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] मूर्च्छा । अचेतनता ।

**बैंक**—संज्ञा पुं० [ अं० ] महाजनी लेन देन की बड़ी कोठी । बंक ।

**बैंगन**—संज्ञा पुं० [ सं० वंगण ? ] एक वार्षिक पौधा जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है । भंटा ।

**बैंगनी, बैंजनी**—वि० [ हिं० बैंगन ] जो ललाई लिए नीले रंग का हो ।

**बैंड**—संज्ञा पुं० [ अं० ] अँगरेजी बाजे या उनके बजानेवालों का समूह ।

**बैंड़ा***—वि० दे० "बेंड़ा" ।

**बैंत**—संज्ञा पुं० दे० "बेत" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "बेंत" ।

**बै**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वाय ] १. बैसर । कंघी । ( जुलाहे ) २. दे० "वय" ।

संज्ञा स्त्री० [ अ० ] बेचना । बिक्री ।

**बैकना***—क्रि० अ० दे० "बहकना" ।

**बैकल**—वि० [ सं० विकल ] पागल । उन्मत्त ।

**बैकुंठ**—संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ" ।

**बैजंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वैजयंती ] १. एक प्रकार का पौधा, जिसके फूल लंबे होते और गुच्छों में लगते हैं । २. विष्णु की माला ।

**बैजनाथ**—संज्ञा पुं० दे० "वैद्यनाथ" ।

**बैजयंती**—संज्ञा स्त्री० [सं० वैजयंती] वैजंती माला ।

**बैठक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बैठना ] १. बैठने का स्थान । २. वह स्थान जहाँ बहुत से लोग आकर बैठा करते हों । चौपाल । अथाई । ३. बैठने का आसन । पीठ । ४. किसी मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी । आधार । पदस्तल । ५. बैठाई । जमावड़ा । ६. अधिवेशन । सभासदों का एकत्र होना । ७. बैठने की क्रिया या ढंग । ८. साथ उठना बैठना । संग । मेल । ९. दे० बैठकी ।

**बैठकबाज**—वि० [ हिं० ] [ संज्ञा बैठकबाजी ] बातें बनाकर काम निकालनेवाला । धूर्त । चालाक ।

**बैठका**—संज्ञा पुं० [ हिं० बैठक ] वह कमरा जहाँ लोग बैठते हों । बैठक ।

**बैठकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बैठक+ई ( प्रत्य० ) ] १. बार बार बैठने और उठने की कसरत । बैठक । २. आसन । आधार । ३. धातु आदि का दीवट ।

**बैठन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बैठना ] १. बैठने की क्रिया, भाव, ढंग या दशा । २. बैठक । आसन ।

**बैठना**—क्रि० अ० [ सं० वेशन ] १. स्थित होना । आसीन होना । आसन जमाना ।

**मुहा०**—बैठे बैठाए=१. अकारण । निरर्थक । २. अचानक । एकाएक । बैठे बैठे=१. निष्प्रयोजन । २. अचानक । ३. अकारण । बैठते उठते=सदा । सब अवस्था में । हर दम । २. किसी स्थान या अवकाश में ठीक रूप से जमना । ३. कैंडे पर आना । अभ्यस्त होना । ४. जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे आधार में जा लगना । ५. दबना या धँसना । ६. पचक जाना । धँसना । ७. (कार-बार ) चलता न रहना । बिगड़ना । ८. लोक में ठहरना या [illegible]

९. छापते लगाना। वर्षा होना। १०. ठीक पर पड़ना। निशाने पर लगाना। ११. पौधे का जमीन में गाड़ा जाना। जमना। १२. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। घर में पड़ना। १३. पक्षियों का अंडे सेना। १४. काम से खाली रहना। बेरोजगार रहना।

**बैठवाना**—क्रि० स० [ हिं० बैठाना का प्रेरणा० ] बैठाने का काम दूसरे से कराना।

**बैठाना**—क्रि० स० [ हिं० बैठना ] १. स्थित करना। आसीन करना। उपविष्ट करना। २. आसन पर विराजने को कहना। ३. पद पर स्थापित करना। नियत करना। ४. ठीक जमाना। अड़ाना या टिकाना। ५. किसी काम को बार बार करके हाथ को अभ्यस्त करना। माँजना। ६. पानी आदि में घुली हुई वस्तु को तल में ले जा कर जमाना। ७. धँसाना या डुबाना। ८. पचकाना या धँसाना। ९. (कारबार) चलता न रहने देना। बिगाड़ना। १०. फेंक या चलाकर कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। लक्ष्य पर जमाना। ११. पौधे को पालने के लिए जमीन में गाड़ना। जमाना। १२. किसी स्त्री को पत्नी के रूप में रख लेना। घर में डालना।

**बैठारना, बैठालना***—क्रि० स० दे० "बैठाना"।

**बैढ़ना**†—क्रि० स० [ हिं० बाड़ा, बेढ़ा ] बंद करना। घेरना। (पशुओं को)

**बैत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पद्य। श्लोक।

**बैतरनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वैतरणी"।

**बैताल**—संज्ञा पुं० दे० "वैताल"।

**बैद**—संज्ञा पुं० [ सं० वैद्य ] [ स्त्री० बैदिन ] चिकित्सा-शास्त्र जाननेवाला। पुरुष। वैद्य।

**बैदगी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बैद ] वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।

**बैदाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "बैदगी"।

**बैदेही**—संज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।

**बैन***—संज्ञा पुं० [ सं० वचन ] १. वचन। बात।

मुहा०—बैन झरना=मुँह से बात निकलना।

२. वेणु। बाँसुरी।

**बैना**—संज्ञा पुं० [ सं० वायन ] वह मिठाई आदि जो विवाहादि में इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

*क्रि० स० [ सं० वपन ] बोना।

**बैपार**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यापार ] व्यवसाय।

**बैपारी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यापारी ] रोजगारी।

**बैयर***†—संज्ञा स्त्री [ सं० वधूवर ] औरत। स्त्री।

**बैया***†—संज्ञा पुं० [ सं० वाय ] बै। बेसर।

**बैयाँ***—क्रि० वि० [ ? ] घुटनों के बल।

**बैरंग**—वि० [ अं० बेयरिंग ] १. वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल भेजने वाले ने न दिया हो। २. विफल।

**बैर**—संज्ञा पुं० [ सं० वैर ] १. शत्रुता। विरोध। अदावत। दुश्मनी। २. वैमनस्य। द्वेष।

मुहा०—बैर काढ़ना या निकालना=बदला लेना। बैर ठानना=दुश्मनी मान लेना। दुर्भाव रखना आरंभ करना। बैर पड़ना=शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना। बैर बिसाहना या मोल लेना=किसी से दुश्मनी पैदा करना। बैर लेना=बदला लेना। कसर निकालना।

† संज्ञा पुं० [ सं० बदरी ] बेर का फल।

**बैरक**—संज्ञा पुं० [ अं० बैरेक ] छावनी, बारिक।

**बैरख**—संज्ञा पुं० [ तु० बैरक ] सेना का झंडा। ध्वजा। पताका। निशान।

**बैराग**—संज्ञा पुं० दे० "वैराग्य"।

**बैरागी**—संज्ञा पुं० [ सं० विरागी ] [ स्त्री० बैरागिन ] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।

**बैराना**†—क्रि० अ० [ हिं० बायु ] वायु के प्रकोप से बिगड़ना।

**बैरिस्टर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] [ भाव० बैरिस्टरी ] एक प्रकार के कानून-दाँ जिनकी मर्यादा वकीलों से बढ़कर होती है और जिसकी पढ़ाई तथा परीक्षा इंगलैंड में होती है।

**बैरी**—वि० [ सं० वैरी ] [ स्त्री० बैरिन ] १. बैर रखनेवाला। शत्रु। दुश्मन। २. विरोधी।

**बैल**—संज्ञा पुं० [ सं० बलद ] [ स्त्री० गाय ] १. एक चौपाया जिसकी मादा को गाय कहते हैं। यह हल में जोता जाता, बोझ ढोता और गाड़ियाँ को खींचता है। २. मूर्ख।

**बैल-मुतनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "गोमूत्रिका"।

**बैलून**—संज्ञा पुं० [ अं० ] गुब्बारा।

**बैसंदर***—संज्ञा पुं० [ सं० वैश्वानर ] अग्नि।

**बैस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वयस् ] १. आयु। उम्र। २. यौवन। जवानी।

† संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

**बैसनाॐ†**—क्रि० स० [ सं० वेशन ] बैठना।

**बैसर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बय ] जुलाहों का एक औजार जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं। कंघी। बय।

**बैसवारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बैस + वारा ( प्रत्य० ) ] [ वि० बैसवारी ] अवध का पश्चिमी प्रांत।

**बैसाख**—संज्ञा पुं० दे० "वैशाख"।

**बैसाखी**—संज्ञा स्त्री० [सं० विशाख] वह लाठी जिसके सिरे को कंधे के नीचे बगल में रखकर लँगड़े लोग टेकते हुए चलते हैं।

**बैसाना**ॐ—क्रि० स० [ हिं० बैसना ] बैठाना।

**बैसारना**ॐ†—क्रि० स० दे० "बैठाना"।

**बैसिक**ॐ†—संज्ञा पुं० [ सं० वैशिक ] वेश्या से प्रीति करनेवाला। नायक।

**बैहर**ॐ†—वि० [ सं० वैर=भयानक ] भयानक। क्रोधालु।

†ॐसंज्ञा स्त्री० [ सं० वायु ] वायु।

**बोंड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बारूद में आग लगाने का पलीता।

**बोंडी**—संज्ञा स्त्री० दे० "बौंडी"।

**बोआई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोना ] १. बोने का काम। २. बोने की मजदूरी।

**बोका**†—संज्ञा पुं० [ हिं० बकरा ] बकरा।

**बोज**—संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़ों का एक भेद।

**बोजा**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बोज़ः ] चावल से बना हुआ मद्य।

**बोझ**—संज्ञा [ ? ] १. ऐसी राशि, गट्ठर या वस्तु जो उठाने या ले चलने में भारी जान पड़े। भार। २. भारीपन। गुरुत्व। वजन। ३. मुश्किल काम। कठिन बात। ४. किसी कार्य्य को करने में होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय। ५. वह व्यक्ति या वस्तु जिसके सम्बन्ध में कोई ऐसी बात करनी हो जो कठिन जान पड़े। ६. उतना ढेर जितना एक आदमी या पशु लादकर ले चल सके। गट्ठा।

**बोझना**—क्रि० स० [ हिं० बोझ ] बोझ लादना।

**बोझल, बोझिल**—वि० [हिं० बोझ] वजनी। भारी। वजनदार। गुरु।

**बोझा**—संज्ञा पुं० दे० "बोझ"।

**बोट**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] नाव। नौका।

**बोटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोटा ] मांस का छोटा टुकड़ा।

**मुहा०**—बोटी बोटी काटना=शरीर का काटकर खंड खंड करना।

**बोड़ना**ॐ—क्रि० स० दे० "बोरना"।

**बोड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. अजगर। २. एक प्रकार की पतली लंबी फली जिसकी तरकारी होती है। लोबिया। ३ वह व्यक्ति जिसके दाँत टूट गये हों।

**बोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. दमड़ी। दमड़ी कौड़ी। २. अति अल्प धन। ३. वह स्त्री जिसके दाँत टूट गये हों। संज्ञा स्त्री० दे० "बौड़ी"।

**बोत**—संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़ों की एक जाति।

**बोतल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० बॉटल् ] काँच का लंबी गरदन का एक गहरा बरतन।

**बोदरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] खसरा रोग।

**बोदा**—वि० [ सं० अबोध ] [ भाव० बोदापन ] १. मूर्ख। गावदी। २. सुस्त। मट्ठर। ३. जो दृढ़ या कड़ा न हो। फुसफुसा।

**बोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्ञान। जानकारी। २. तसल्ली। धीरज। संतोष।

**बोधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्ञान करानेवाला। बतानेवाला। २. शृंगार रस के हावों में से एक हाव जिसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरे को अपना मनोगत भाव जताया जाता है।

**बोधगम्य**—वि० [ सं० ] समझ में आने योग्य।

**बोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० बोधनीय, बोध्य, बोधित ] १. सूचित करना। २. जगाना।

**बोधना**ॐ†—क्रि० स० [ सं० बोधन ] १ बोध देना। समझाना। २. ज्ञान देना।

**बोधितरु, बोधिद्रुम**—संज्ञा पुं० [सं०] गया में स्थित पीपल का वह पेड़ जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने संबोधि ( बुद्धत्व ) प्राप्त की थी।

**बोधिसत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो।

**बोना**—क्रि० स० [ सं० वपन ] १. बीज को जमने के लिए जुते हुए खेत या भुरभुरी की हुई जमीन में छितराना। २. बिखराना।

ॐक्रि० स० [ हिं० बोरना ] डुबोना।

**बोबा**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] [ स्त्री० बोबो ] १. स्तन। थन। चूँची। २. घर का साज-सामान। अंगड़-खंगड़। ३. गट्ठर। गठरी।

**बोय**†—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० बू ] गंध। बास।

**बोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० बोरना ] डुबाने

की क्रिया । डुबाव ।

**बोरका**†—संज्ञा पुं० [ हिं० बोरना ] दाबात ।

संज्ञा पुं० दे० "बुरका" ।

**बोरना**†—क्रि० स० [ हिं० बूड़ना ] १. जल या किसी और द्रव पदार्थ में निमग्न कर देना । डुबाना । २. कलंकित करना । बदनाम कर देना । ३. युक्त करना । योग देना या मिलाना । ४. घुले हुए रंग में डुबाकर रँगना ।

**बोरसी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गोरसी ] अँगीठी ।

**बोरा**—संज्ञा पुं० [ सं० पुट=दोना या पात्र ] टाट का बना हुआ थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं ।

संज्ञा पुं० दे० "बार" ।

**बोरिया**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] चटाई । बिस्तर ।

**मुहा०**—बोरिया बधना उठाना=चलने की तैयारी करना । प्रस्थान करना ।

**बोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोरा ] टाट की छोटी थैली । छोटा बोरा ।

**बोरो**—संज्ञा पुं० [ हिं० बोरना ] एक प्रकार का मोटा धान ।

**बोर्ड**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति । २. माल के मामलों का फैसला करनेवाली कमेटी । ३. कागज की मोटी दफ्ती । ४. नाम-पट्ट । साइनबोर्ड । ५. मनुसपलटी ।

**बोर्डिंगहाउस**—संज्ञा पुं० [ अं० ] विद्यार्थियों के रहने का स्थान । छात्रावास ।

**बोल**—संज्ञा पुं० [ हिं० बोलना ] १. वचन । वाणी । २. ताना । व्यंग्य । लगती हुई बात । ३. बाजों का बँधा या गठा हुआ शब्द । ४. कथन या प्रतिज्ञा ।

**मुहा०**—( किसी का ) बोल बाला रहना या होना=१. बात की साख बनी रहना । २. मान-मर्यादा का बना रहना ।

५. गीत का टुकड़ा । अंतरा ।

**बोल-चाल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोल + चाल ] १. बातचीत । कथनोपकथन । २. मेल-मिलाप । परस्पर सद्भाव । ३. छेड़छाड़ । ४. चलती भाषा । नित्य के व्यवहार की बोली ।

**बोलता**—संज्ञा पुं० [ हिं० बोलना ] १. ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्त्व । आत्मा । २. जीवन तत्त्व । प्राण ।

वि० खूब बोलनेवाला । वाचाल ।

**बोलती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोलना ] बोलने की शक्ति ।

**मुहा०**—बोलती मारी जाना=मुँह से बात न निकलना ।

**बोलनहारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० बोलना + हारा ( प्रत्य० ) ] क्षुद्र आत्मा । बोलता ।

**बोलना**—क्रि० अ० [ सं० ब्रू, ब्रूयते ] १. मुख से शब्द उच्चारण करना ।

**यौ०**—बोलना-चालना = बातचीत करना ।

**मुहा०**—बोल जाना=१. मर जाना । ( अशिष्ट ) २. बाकी न रह जाना । चुक जाना । ३. व्यवहार के योग्य न रह जाना ।

२. किसी चीज का आवाज निकालना । क्रि० स० १. कुछ कहना । कथन करना । २. आज्ञा देकर कोई बात स्थिर करना । ठहराना । बदना । ३. रोक-टोक करना । ४. छेड़-छाड़ करना । *† ५. आवाज देना । बुलाना । पुकारना । *† ६. पास आने के लिए कहना या कहलाना ।

**मुहा०**—*बोलि पठाना=बुला भेजना ।

**बोलवाना**—क्रि० स० दे० "बुलवाना" ।

**बोलसरी**†—संज्ञा पुं० दे० "मौलसिरी" ।

संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का घोड़ा ।

**बोलाचाली**—संज्ञा स्त्री० दे० "बोलचाल" ।

**बोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोलना ] १. मुँह से निकली हुई आवाज । वाणी । २. अर्थयुक्त शब्द या वाक्य । वचन । बात । ३. नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना । ४. वह शब्द-समूह जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी अपने विचार प्रकट करने के लिए करते हैं । भाषा । ५. हँसी-दिल्लगी । ठठोली ।

**मुहा०**—बोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना ।

**बोल्लाह**—संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़ों की एक जाति ।

**बोल्शेविक**—संज्ञा पुं० [ अं० ] रूस के साम्यवादी दल का चरम-पंथी सदस्य ।

**बोल्शेविज्म**—संज्ञा पुं० [ अं० ] रूस के साम्यवादी दल के चरमपंथ का सिद्धांत ।

**बोवना**†—क्रि० स० दे० "बोना" ।

**बोवाना**—क्रि० स० [ हिं० बोना का प्रे० ] बोने का काम दूसरे से कराना ।

**बोह**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बोर ] डुबकी । गोता ।

**बोहनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बोधन=जगाना ] किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री ।

**बोहित***—संज्ञा पुं० [ सं० बोहित्थ ] बड़ी नाव ।

**बौंड़**†—संज्ञा स्त्री० [ *० बोण्ड

टहनी ] १. टहनी जो दूर तक गई हो । २. लता ।

**बौंड़ना**†—क्रि० अ० [ हिं० बौंड़ ] लता की तरह बढ़ना । टहनी फेंकना ।

**बौंडर**—संज्ञा पुं० दे० "बवंडर" ।

**बौंड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बौंड़ ] १. पौधों या लताओं के कच्चे फल । ढेंढ़ी । ढोंढ़ । †२. फली । छीमी । ३. दमड़ी । छदाम ।

**बौआना**†—क्रि० अ० [ हिं० बाउ+आना ( प्रत्य० ) ] १. स्वप्नावस्था का प्रलाप । २. पागल या बाई चढ़े मनुष्य की भाँति अट्ट-सट्ट बक उठना । बर्राना ।

**बौखल**—वि० [ हिं० बाउ ] पागल ।

**बौखलाना**—क्रि० अ० [ हिं० बाउ+सं० स्खलन ] कुछ कुछ सनक जाना ।

**बौछाड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वायु+क्षरण ] १. बूँदों की झड़ी जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा पड़े । झटास । २. वर्षा की बूँदों के समान किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में कहीं आकर पड़ना । ३. बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना । झड़ी । ४. किसी के प्रति कहे हुए वाक्यों का तार । ५. ताना । कटाक्ष । बोली-ठोली ।

**बौछार**†—संज्ञा स्त्री० दे० "बौछाड़" ।

**बौड़ना***—क्रि० अ० दे० "बौरना" ।

**बौड़हा**—वि० दे० "बावला" ।

**बौद्ध**—वि० [ सं० ] बुद्ध द्वारा प्रचारित ।

संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का अनुयायी ।

**बौद्ध-धर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म । गौतम बुद्ध का चलाया मत । इसकी दो प्रधान शाखाएँ हैं—हीनयान और महायान ।

**बौना**—संज्ञा पुं० [ सं० वामन ] [ स्त्री० बौनी ] अत्यंत ठिंगना या नाटा मनुष्य ।

**बौर**†—संज्ञा पुं० [ सं० मुकुल ] आम की मंजरी । मौर ।

**बौरना**—क्रि० अ० [ हिं० बौर+ना ( प्रत्य० )] आम के पेड़ में मंजरी निकलना । मौरना ।

**बौरहा**†—वि० दे० "बावला" ।

**बौरा**—वि० [ सं० वातुल ] [ स्त्री० बौरी ] १. बावला । पागल । २. नादान । मूर्ख ।

**बौराई***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बौर+ई ] पागलपन ।

**बौराना**†—क्रि० अ० [ हिं० बौरा+ना ( प्रत्य० )] १. पागल हो जाना । सनक जाना । २. विवेक या बुद्धि से रहित हो जाना ।

क्रि० स० किसी को ऐसा कर देना कि वह भला-बुरा न विचार सके ।

**बौराह***†—वि० [ हिं० बौरा ] बावला । पागल ।

**बौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बौरा ] बावली स्त्री ।

**बौलसिरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी" ।

**ब्यतीतना***—क्रि० स० [ सं० व्यतीत+हिं० ना ( प्रत्य० ) ] १. गुजर जाना । बीत जाना । २. गुजराना । बिताना ।

**ब्यवहर**†—संज्ञा पुं० [ सं० व्यवहार ] उधार ।

**ब्यवहरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० ब्यवहार ] रुपए का लेन-देन करनेवाला । महाजन ।

**ब्यवहार**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यवहार ] १. दे० "व्यवहार" । २. रुपए का लेन-देन । ३. रुपए के लेन-देन का संबंध । ४. सुख-दुःख में परस्पर सम्मिलित होने का संबंध ।

**ब्यवहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यवहारिन् ] १. कार्यकर्ता । मामला करनेवाला । २. लेन-देन करनेवाला । व्यापारी ।

**ब्याज**—संज्ञा पुं० [ सं० व्याज ] १. दे० "व्याज" । २. वृद्धि । सूद ।

**ब्याजू**—वि० [ हिं० ब्याज ] ब्याज या सूद पर दिया जानेवाला (धन) ।

**ब्याना**—क्रि० स० [ हिं० बिया+ना (प्रत्य०) ] जनना । उत्पन्न करना । गर्भ से निकालना ।

**ब्यापना***†—क्रि० अ० [ सं० व्यापन ] १. किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाकी न रह जाय । ओतप्रोत होना । २. चारों ओर जाना । फैलना । ३. घेरना । ग्रसना । ४. प्रभाव करना ।

**ब्यार**—संज्ञा स्त्री० दे० "बयार" ।

**ब्यारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू" ।

**ब्याल**—संज्ञा पुं० दे० "व्याल" ।

**ब्याली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० व्याला ] सर्पिणी ।

वि० [ सं० व्यालिन् ] सर्प धारण करनेवाला ।

**ब्यालू**—संज्ञा पुं० [ सं० विहार ? ] रात का भोजन । ब्यारी ।

**ब्याह**—संज्ञा पुं० [ सं० विवाह ] वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित होता है । विवाह । परिणय । दारपरिग्रह । पाणिग्रहण ।

**ब्याहता**—वि० [ सं० विवाहित ] जिसके साथ विवाह हुआ हो ।

**ब्याहना**—क्रि० स० [ सं० विवाह+ना (प्रत्य०) ] [ वि० ब्याहता ] १. देश, काल और जाति की रीति के

अनुसार पुरुष का किसी स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का किसी पुरुष को अपना पति बनाना। २. किसी का किसी के साथ विवाह-संबंध कर देना।

**ब्याहुला**†—वि० [हिं० ब्याह] विवाह का।

**ब्योंचना**—क्रि० अ० [सं० विकुंचन] एकबारगी झोंके के साथ मुड़ जाने या टेढ़े हो जाने से नसों का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुरकना।

**ब्योंत**—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यवस्था] १. व्यवस्था। मामला। माजरा। २. ढब। तरीका। साधन-प्रणाली। ३. युक्ति। उपाय। ४. आयोजन। उपक्रम। तैयारी। ५. संयोग। अवसर। नौबत। ६. प्रबंध। इंतजाम। व्यवस्था। ७. काम पूरा उतारने का हिसाब-किताब। ८. साधन या सामग्री आदि की सीमा। समाई। ९. पहनावा बनाने के लिए कपड़े की काट-छाँट। तराश। किता।

**ब्योंतना**—क्रि० स० [हिं० ब्योंत] कोई पहनावा बनाने के लिए कपड़े को नापकर काटना-छाँटना।

**ब्योंताना**—क्रि० स० [हिं० ब्योंतना का प्रेरणा०] शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।

**ब्योपार**—संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।

**ब्योरन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० ब्योरना] बालों को सँवारने की क्रिया या ढंग।

**ब्योरना**—क्रि० स० [सं० विवरण] १. गुथे या उलझे हुए बालों आदि का सुलझाना। २. विवेकपूर्वक किसी समस्या को सुलझाना।

**ब्योरा**—संज्ञा पुं० [हिं० ब्योरना] १. किसी घटना के अंतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन। विवरण। तफसील।

यौ०—ब्योरेवार=विस्तार के साथ।

२. किसी एक विषय के भीतर की सारी बात। ३. वृत्त। वृत्तांत। हाल। समाचार। ४. अंतर। भेद। फरक।

**ब्योहर**—संज्ञा पुं० [हिं० व्यवहार] लेन-देन का व्यापार। रुपया ऋण देना।

**ब्योहरिया**—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] सूद पर रुपए के लेन-देन का व्यापार करनेवाला।

**ब्योहार**—संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।

**ब्रंद***—संज्ञा पुं० दे० "वृंद"।

**ब्रज**—संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।

**ब्रजना***—क्रि० अ० [सं० व्रजन] चलना।

**ब्रह्मंड***—संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

**ब्रह्मंड**—संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।

**ब्रह्म**—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मन्] १. एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत् का कारण और सत्, चित्, आनंद-स्वरूप है। २. ईश्वर। परमात्मा। ३. आत्मा। चैतन्य। ४. ब्राह्मण (विशेषतः समस्त पदों में)। ५. ब्रह्मा (समास में)। ६. ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो। ब्रह्मराक्षस। ७. वेद। ८. एक की संख्या।

**ब्रह्मगाँठ**—संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मग्रंथि"।

**ब्रह्मग्रंथि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ।

**ब्रह्मघोष**—संज्ञा पुं० [सं०] वेद-ध्वनि।

**ब्रह्मचर्य्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. योग में एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। २. चार आश्रमों में पहला आश्रम, जिसमें पुरुष को स्त्री-संभोग आदि व्यसनों से दूर रहकर केवल अध्ययन में लगा रहना चाहिए।

**ब्रह्मचारिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री। २. दुर्गा। पार्वती। ३. सरस्वती।

**ब्रह्मचारी**—संज्ञा पुं० [सं० ब्रह्मचारिन्] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] १. ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाला। २. ब्रह्मचर्य्य आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति। प्रथमाश्रमी।

**ब्रह्मज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्म, पारमार्थिक सत्ता या अद्वैत सिद्धांत का बोध।

**ब्रह्मज्ञानी**—वि० [सं० ब्रह्मज्ञानिन्] परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला। अद्वैत-वादी।

**ब्रह्मण्य**—वि० [सं०] १. ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला। २. ब्रह्म या ब्रह्मा-संबंधी।

**ब्रह्मत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्म का भाव। २. ब्राह्मणत्व।

**ब्रह्मदिन**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा का एक दिन जो १००० चतुर्युगियों का माना जाता है।

**ब्रह्मदोष**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ब्रह्मदोषी] ब्राह्मण को मारने का दोष या पाप।

**ब्रह्मद्रोही**—वि० [सं०] ब्राह्मणों से बैर रखनेवाला।

**ब्रह्मद्वार**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मरंध्र।

**ब्रह्मनिष्ठ**—वि० [सं०] १. ब्राह्मण-भक्त। २. ब्रह्मज्ञान-संपन्न।

**ब्रह्मपद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मत्व। २. ब्राह्मणत्व। ३. मोक्ष। मुक्ति।

**ब्रह्मपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा का पुत्र। २. नारद। ३. वशिष्ठ। ४. मनु। ५. मरीचि। ६.

सनकादिक। ७ एक नद जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है।

**ब्रह्मपुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह पुराणों में से एक। पुराणों में इसका नाम पहले आने से कुछ लोग इसे आदि पुराण भी कहते हैं।

**ब्रह्मपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ब्राह्मणों की बस्ती। २. उन बहुत से मकानों का समूह जो राजा-महाराजा ब्राह्मणों को दान करते हैं। ३. ब्रह्मलोक।

**ब्रह्मभट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेदों का ज्ञाता। २ ब्रह्मवेत्ता। ३. एक प्रकार के ब्राह्मण

**ब्रह्मभोज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मण-भोजन।

**ब्रह्ममुहूर्त**-संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रभात। तड़का।

**ब्रह्मयज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विधिपूर्वक वेदाभ्यास। २. वेदाध्ययन वेद पढ़ाना।

**ब्रह्मरंध्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

**ब्रह्मराक्षस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो।

**ब्रह्मरात्रि**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है।

**ब्रह्मरूपक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १६ अक्षरों का एक छंद। चंचला। चित्र।

**ब्रह्मरेखा**-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मलेख"।

**ब्रह्मलेख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।

**ब्रह्मर्षि**-संज्ञा पुं० [ सं० ] "ब्राह्मण-ऋषि"।

**ब्रह्मलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। २. मोक्ष का एक भेद।

**ब्रह्मवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वेद का पढ़ना-पढ़ाना। वेदपाठ। २. अद्वैत।

**ब्रह्मवादी**—वि० [ सं० ब्रह्मवादिन् ] [ स्त्री० ब्रह्मवादिनी ] वेदांती। अद्वैतवादी।

**ब्रह्मविद्**—वि० [ सं० ] १. ब्रह्म को जानने या समझनेवाला। २. वेदार्थ-ज्ञाता।

**ब्रह्मविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ब्रह्म को जानने की विद्या। उपनिषद्।

**ब्रह्मवैवर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म के कारण हो जैसे—जगत् की। २. ब्रह्म के कारण प्रतीत होनेवाला जगत्। ३. श्रीकृष्ण। ४. अठारह पुराणों में से एक पुराण जो कृष्ण भक्ति-संबंधी है।

**ब्रह्मसमाज**—संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्म-समाज"।

**ब्रह्मसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जनेऊ। यज्ञोपवीत। २ व्यास-कृत शारीरिक सूत्र।

**ब्रह्महत्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ब्राह्मण-वध। ब्राह्मण को मार डालना। (महापाप)

**ब्रह्मांड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौदहों भुवनों का समूह। संपूर्ण विश्व, जिसके भीतर अनंत लोक हैं। २. खोपड़ी। कपाल।

**ब्रह्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप। विधाता। पितामह। २. यज्ञ का एक ऋत्विक्।

**ब्रह्माणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति। २. सरस्वती।

**ब्रह्मानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद।

**ब्रह्मावर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।

**ब्रह्मास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से चलाया जाता था।

**ब्रात***—संज्ञा पुं० दे० "व्रात्य"।

**ब्राह्म**—वि० [ सं० ] ब्रह्म-संबंधी। संज्ञा पुं० विवाह का एक भेद।

**ब्राह्मण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० ब्राह्मणी ] १. चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके प्रधान कर्म पठन पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २. उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। ३. वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता। ४. विष्णु। ५. शिव।

**ब्राह्मणत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मण का भाव, अधिकार या धर्म। ब्राह्मणपन।

**ब्राह्मणभोजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मणों का भोजन। ब्राह्मणों को खिलाना।

**ब्राह्मण्य** संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मणत्व"।

**ब्राह्ममुहूर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय

**ब्राह्मसमाज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक नया संप्रदाय जिसमें एक मात्र ब्रह्म की ही उपासना की जाती है।

**ब्राह्मी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १.

दर्शो। २. शिव की अष्टमातृकाओं में से एक। ३. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। ४. एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण-शक्ति और बुद्धि बढ़ानेवाली है।

ब्रिगेड—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. सेना का एक समूह। २. सैनिक ढंग पर बना हुआ समूह।

ब्रिटिश—वि० [ अं० ] ग्रेटब्रिटेन या इंगलिस्तान से संबंध रखनेवाला। अँगरेजी।

ब्रीड़ना*—क्रि० अ० [ सं० ब्रीडन ] लज्जित होना। लजाना।

ब्लाउज—संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार की जनानी कुरती।

ब्लाक—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. छापे के काम के लिए काठ, ताँबे या जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रों आदि का ठप्पा। २. इमारतों का वह समूह जिसके बीच में खाली जगह न हो।

—:*:—

# भ

भ—हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है।

भंकार*—संज्ञा पुं० [ अनु० ] विकट शब्द।

भंग—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तरंग। लहर। २. पराजय। हार। ३. खंड। टुकड़ा। ४. भेद। ५. कुटिलता। टेढ़ापन। ६. भय। ७. टूटने का भाव। विनाश। विध्वंस। ८. बाधा। अड़चन। रोक। ९. टेढ़े होने या झुकने का भाव।

संज्ञा स्त्री० दे० "भाँग"।

भंगड़—वि० [ हिं० भाँग+अड़ (प्रत्य०) ] बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भँगना†—क्रि० अ० [ हिं० भंग ] १. टूटना। २. दबना। हार मानना।

क्रि० स० १. तोड़ना। २. दबाना।

भँगरा—संज्ञा पुं० [ हिं० भाँग+रा= का ] भाँग के रेशे से बुना हुआ एक कपड़ा।

संज्ञा पुं० [ सं० भृंगराज ] एक प्रकार की वनस्पति जो औषध के काम में आती है। भँगरैया। भंगराज।

भंगराज—संज्ञा पुं० [ सं० भृंगराज ] १ काले रंग की एक चिड़िया। २. दे० "भँगरा"।

भंगरैया†—संज्ञा स्त्री० दे० "भँगरा"।

भँगार—संज्ञा पुं० [ सं० भंग ] १ वह गड्ढा जिसमें वर्षा का पानी समाता है। २. वह गड्ढा जो कूआँ बनाते समय खोदते हैं।

संज्ञा पुं० [ हिं० भाँग ] घास-फूस। कूड़ा।

भंगि, भंगिमा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टेढ़ापन। कुटिलता। २. स्त्रियों का हाव-भाव। अंगनिवेश। अंदाज। ३ लहर। ४. प्रतिकृति।

भंगी—संज्ञा पुं० [ सं० भंगिन् ] [ स्त्री० भंगिनी ] १. भंगशील। नष्ट होनेवाला। २. भंग करनेवाला। भंगकारी।

संज्ञा पुं० [ सं० भक्ति ] [ स्त्री० भंगिन ] एक जाति जिसका काम मल्मूत्र आदि उठाना है।

वि० [ हिं० भाँग ] भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगुर—वि० [ सं० ] १. भंग होनेवाला। नाशवान्। २. कुटिल। टेढ़ा।

भँगेड़ी—वि० दे० "भंगड़"।

भँगेला—संज्ञा पुं० दे० "भँगरा"।

भंजक—वि० [ सं० ] [ स्त्री० भंजिका ] भंगकारी। तोड़नेवाला।

भंजन—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तोड़ना। भंग करना। २. भंग। ध्वंस। ३. नाश।

वि० भंजक। तोड़नेवाला।

भँजना—क्रि० अ० [ सं० भंजन ] १. टुकड़े टुकड़े होना। टूटना। २. किसी बड़े सिक्के का छोटे-छोटे सिक्कों से बदला जाना। भुनना।

क्रि० अ० [ हिं० भाँजना ]. १. बटा जाना। २ कागज के तख्तों का कई परतों में मोड़ा जाना। भाँजा जाना।

**भँजाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाँजना ] भाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाँजना ] भँजाने या भुनाने की मजदूरी।

**भँजना***—क्रि० स० [ सं० भंजन ] तोड़ना।

**भँजाना**†—क्रि० स० [ हिं० भँजना ] १. भँजने का सकर्मक रूप। तुड़वाना। २ बड़ा सिक्का आदि देकर उतने ही मूल्य के छोटे सिक्के लेना। भुनाना। ३. भाँजने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० स० [ हिं० भाँजना ] दूसरे को भाँजने के लिए प्रेरणा करना या नियुक्त करना।

**भँटा**†—संज्ञा पुं० [ सं० वृंताक ] बैंगन।

**भंड**—संज्ञा पुं० दे० "भाँड़"।
वि० [ सं० ] १. अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। २. धूर्त। पाखंडी।

**भँड़ताल**†—संज्ञा पुं० [ हिं० भाँड़ + ताल ] एक प्रकार का गाना और नाच जिसमें तालियाँ पीटते हैं। भँड़तिल्ला।

**भँड़तिल्ला**—संज्ञा पुं० दे० "भँड़ताल"।

**भंडना**—क्रि० स० [ सं० भंडन ] १. हानि पहुँचाना। बिगाड़ना। २. तोड़ना। ३. नष्ट-भ्रष्ट करना। ४. बदनाम करना।

**भँड़फोड़**†—संज्ञा पुं० [ हिं० भँड़ा + फोड़ना ] १. मिट्टी के बर्तनों का गिराना या तोड़ना-फोड़ना। २. मिट्टी के बर्तनों का टूटना-फूटना। ३. रहस्योद्घाटन। भंडाफोड़।

**भँड़भाँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० भांडीर ] एक कँटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवा के काम आती है। भड़भाँड़।

**भँडरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भड्डरि ] एक जाति का नाम। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों का भविष्य बताकर निर्वाह करते हैं। भड्डर।
वि० १. पाखंडी। २. धूर्त। मक्कार।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० भंडार + इया ( प्रत्य० ) ] दीवारों में बना हुआ पटरेदार ताख।

**भँड़सार, भँड़साल**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाँड़ + शाला ] वह गोदाम जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाता है। खत्ती। खत्ता।

**भंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० भांड ] १. बरतन। पात्र। भाँड़ा। २ भंडारा। ३. भेद।
मुहा०—भंडा फूटना=भेद खुलना।

**भँडाना**—क्रि० स० [ हिं० भांड ] १. उछल कूद मचाना। उपद्रव करना। २ तोड़ना-फोड़ना। नष्ट करना।

**भंडार**—संज्ञा पुं० [ सं० भांडागार ] १. कोष। खजाना। २. अन्नादि रखने का स्थान। कोठार। ३. पाकशाला। भंडारा। ४. पेट। उदर। ५. दे० "भंडारा"।

**भंडारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भंडार ] १. दे० "भंडार"। २. समूह। झुंड। ३ साधुओं का भोज। ४. पेट।

**भंडारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भंडार + ई ( प्रत्य० ) ] १ छोटी कोठरी। २. कोष। खजाना।
संज्ञा पुं० [ हिं० भंडार + ई (प्रत्य०)] १. खजानची। कोषाध्यक्ष। २. तोशाखाने का दारोगा। भंडारे का प्रधान अध्यक्ष। ३. रसोइया। रसोईदार।

**भँडेरिया**—संज्ञा पुं० दे० "भड्डर"।

**भँड़ौआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाँड़ ] १. भाँड़ों के गाने का गीत। ऐसा गीत जो सभ्य समाज में गाने के योग्य न हो। २. हास्य आदि रसों की साधारण अथवा निम्न कोटि की कविता।

**भँभाना**—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

**भँभीरी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] लाल रंग का एक बरसाती पतिंगा। जुलाहा।

**भँभेरि***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भँभरना ] भय।

**भँवन*** —संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रमण ]. घूमना। फिरना।

**भँवना**—क्रि० अ० [ सं० भ्रमण ] १. घूमना। फिरना। २. चक्कर लगाना।

**भँवर**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रमर ] १. भौंरा। २. बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है। ३ गड्ढा। गर्त।

**भँवरकली** —संज्ञा स्त्री० [ हिं० भँवर + कली ] लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे, उधर सहज में घूम सकती है।

**भँवरजाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० भँवर + जाल ] सांसारिक झगड़े-बखेड़े। भ्रमजाल।

**भँवरभीख**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भँवर + भीख ] वह भीख जो भौंरे के समान घूम-फिरकर माँगी जाय।

**भँवरी** —संज्ञा स्त्री० [ हिं० भँवरा ] १. पानी का चक्कर। भँवर। २. जंतुओं के शरीर के ऊपर वह स्थान जहाँ के रोएँ और बाल एक केंद्र पर

घूमे हुए हों।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० भँवरना या भँवना ] १. दे० "भाँवर"। २. बनियों का सौदा लेकर घूम घूमकर बेचना। ३. फेरी। गश्त।

**भँवाना***—क्रि० स० [ हिं० भँवना ] १. घुमाना। चक्कर देना। २. भ्रम में डालना।

**भँवारा†**—वि० [ हिं० भँवना + आरा (प्रत्य०) ] भ्रमणशील। घूमनेवाला। फिरनेवाला।

**भँसना**—क्रि० अ० [ हिं० बहना ] पानी में डाला या फेंका जाना।

**भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नक्षत्र। २. ग्रह। ३. राशि। ४. शुक्राचार्य्य। ५. भ्रमर। भौंरा। ६. भूधर। पहाड़। ७. भ्रांति। ८ दे० "भगण"।

**भइया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाई+इया (प्रत्य०) ] १ भाई। २. बराबरवालों के लिए आदरसूचक शब्द।

**भक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।

**भकभकाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. भकभक शब्द करके जलना। २. चमकना।

**भकभूर*†**—वि० [ ? ] मूढ़। मूर्ख। उजड्ड।

**भकाऊँ**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] हौवा।

**भकुआ†**—वि० [ सं० भेक ] मूर्ख। मूढ़।

**भकुआना**—क्रि० अ० [ हिं० भकुआ ] चकपका जाना। घबरा जाना।

क्रि० स० १. चकपका देना। घबरा देना। २. मूर्ख बनाना।

**भकूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विवाह के लिए शुभ मानी जानेवाली कुछ राशियाँ।

**भकोसना**—क्रि० स० [ सं० भक्षण ] जल्दी या भद्देपन से खाना। निगलना।

**भक्त**—वि० [ सं० ] १. भागों में बाँटा हुआ। २. बाँटकर दिया हुआ। प्रदत्त। ३. अलग किया हुआ। ४. अनुयायी। ५. सेवा करनेवाला। भक्ति करनेवाला।

**भक्तता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भक्ति।

**भक्तवत्सल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा भक्तवत्सलता ] १ जो भक्तों पर कृपा करता हो। २. विष्णु।

**भक्ताई*†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भक्त ] भक्ति।

**भक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ अनेक भागों में विभक्त करना। बाँटना। २. भाग। विभाग। ३. अंग। अवयव। ४ विभाग करनेवाली रेखा। ५. सेवा-शुश्रूषा। ६. पूजा। अर्चन। ७. श्रद्धा। ८. भक्तिसूत्र के अनुसार ईश्वर में अत्यंत अनुराग का होना। इसके नौ प्रकार ये है—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। ९. एक वृत्त का नाम।

**भक्तिसूत्र**— संज्ञा पुं० [ सं० ] शांडिल्य मुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र-ग्रंथ।

**भक्ष**—संज्ञा पुं० दे० "भक्षण"।

**भक्षक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० भक्षिका ] खानेवाला। भोजन करनेवाला। खादक।

**भक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय ] १ भोजन करना। किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना। २. भोजन।

**भक्षना***—क्रि० स० [ सं० भक्षण ] खाना।

**भक्षित**—वि० [ सं० ] खाया हुआ।

**भक्षी**—वि० [ सं० भक्षिन् ] [ स्त्री० भक्षिणी ] खानेवाला। भक्षक।

**भक्ष्य**—वि० [ सं० ] खाने के योग्य।

संज्ञा पुं० खाद्य। अन्न। आहार।

**भख***—संज्ञा पुं० [ सं० भक्ष ] आहार। भोजन।

**भखना***—क्रि० स० [ सं० भक्षण ] खाना।

**भगंदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का फोड़ा जो गुदावर्त के किनारे होता है।

**भग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. योनि। २ सूर्य्य। ३. बारह आदित्यों में से एक। ४ ऐश्वर्य। ५. सौभाग्य। ६. धन। ७ गुदा।

**भगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खगोल में ग्रहों का पूरा चक्कर जो ३६० अंश का होता है २. छंदःशास्त्रानुसार एक गण जिसमें आदि का एक वर्ण गुरु और अंत के दो वर्ण लघु होते हैं।

**भगत**—वि० [ सं० भक्त ] [ स्त्री० भगतिन ] १. सेवक। उपासक। २. वह साधु जो मांस आदि न खाता हो। सकट का उलटा।

संज्ञा पुं० १. वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो। २. दे० "भगतिया"। ३. होली में वह स्वाँग जो भगत का किया जाता है। ४. भूत-प्रेत उतारनेवाला पुरुष। ओझा।

**भगतबछल***—वि० दे० "भक्तवत्सल"।

**भगति***—संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।

**भगतिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भक्त ] [ स्त्री० भगतिन ] राजपूताने की एक जाति। इस जाति के लोग गाने-बजाने

का काम करते हैं और इनकी कन्याएँ वेश्याओं की वृत्ति करती और भगतिन कहलाती हैं।

**भगती**—संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति"।

**भगदड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भागना + दौड़ना ] भागने की क्रिया या भाव।

**भगदर**—संज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़"।

**भगन***—वि० दे० "भग्न"।

**भगना**†—क्रि० अ० दे० "भागना"। संज्ञा पुं० दे० "भानजा"।

**भगर***†—संज्ञा पुं० [ देश० ] छल। फरेब

**भगल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. छल। कपट। ढोंग। २. जादू। इंद्रजाल।

**भगली**—संज्ञा पुं० [ हिं० भगल + ई ( प्रत्य० ) ] १. ढोंगी। छली। २ बाजीगर।

**भगवंत***†—संज्ञा पुं० दे० "भगवत्"।

**भगवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवी। २. गौरी। ३. सरस्वती। दुर्गा।

**भगवत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ ईश्वर। परमेश्वर। २. विष्णु शिव।

**भगवदीय**—वि० [ सं० भगवत् ] १. भगवत्-संबंधी। २. भगवान् का भक्त।

**भगवद्गीता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] महाभारत के भीष्मपर्व के अंतर्गत एक प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ प्रकरण। इसमें उन उपदेशों और प्रश्नोत्तरों का वर्णन है जो भगवान् कृष्णचंद्र ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिए उससे युद्ध-स्थल में किए थे।

**भगवान्, भगवान**—वि० [ सं० भगवत् ] १. भगवत्। ऐश्वर्ययुक्त। २. पूज्य।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. विष्णु। ३. कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

**भगाना** क्रि० स० [ सं० व्रज ] १. किसी को भागने में प्रवृत्त करना। दौड़ाना। २ हटाना। दूर करना।
*क्रि० अ० दे० "भागना"।

**भगिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बहन।

**भगीरथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो राजा दिलीप के पुत्र थे। ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे।
वि० [ सं० ] भगीरथ की तपस्या के समान भारी। बहुत बड़ा।

**भगेड़ा**—वि० [ हिं० भागना + एड़ा ( प्रत्य० ) ] १. भागा हुआ। २ भागनेवाला। कायर।

**भगोल**—संज्ञा पुं० दे० "खगोल"।

**भगौता***†—संज्ञा स्त्री० दे० "भगवत्ता"।

**भगौहाँ**—वि० [ हिं० भागना + औहाँ ( प्रत्य० ) ] १. भागने को उद्यत। २. कायर।
वि० [ हिं० भगवा ] भगवा। गेरुआ।

**भग्घी**†-संज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़"।

**भग्गुल***†—वि० [ हिं० भागना ] १. रण से भागा हुआ। २. भगोड़ा। भग्गू।

**भग्गू**†—वि० [ हिं० भागना + ऊ ( प्रत्य० ) ] जो विपत्ति देखकर भागता हो। कायर।

**भग्न**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० भग्ना ] १. टूटा हुआ। २. जो हारा या हराया गया हो। पराजित।

**भग्नावशेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी टूटे फूटे मकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। खँडहर। २. किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े।

**भग्नाश**—वि० [ सं० ] जिसकी आशा भग्न हो गई हो। निराश।

**भचक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भचकना ] भचककर चलने का भाव। लँगड़ापन।

**भचकना**—क्रि० अ० [ हिं० भौचक ] आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना। क्रि० अ० [ अनु० भच ] चलने के समय पैर का इस प्रकार टेढ़ा पड़ना कि देखने में लँगड़ापन मालूम हो।

**भचक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग। कक्षा। २. नक्षत्रों का समूह।

**भच्छ***†—संज्ञा पुं० दे० "भक्ष्य"।

**भच्छना***†—क्रि० स० [ सं० भक्षण ] खाना।

**भजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बार-बार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना। स्मरण। जप। २. वह गीत जिसमें देवता आदि के गुणों का कीर्तन हो।

**भजना**—क्रि० स० [ सं० भजन ] १. सेवा करना। २. आश्रय लेना। आश्रित होना। ३. देवता आदि का नाम रटना। जपना।
क्रि० अ० [ सं० व्रजन, प्रा० वजन ] १. भागना। भाग जाना। २. पहुँचना। प्राप्त होना।

**भजनानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भजन से मिलनेवाला आनंद।

**भजनानंदी**—संज्ञा पुं० [ सं० भजनानंद + ई ] भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला।

**भजनी, भजनीक**—संज्ञा पुं० [ हिं० भजन + ईक (प्रत्य०) ] भजन गानेवाला।

**भजाना**—क्रि० अ० [ हिं० भजना = दौड़ना ] दौड़ना। भागना।

क्रि० अ० [ हि० भजना का सक० रूप ] भगाना। दूर कर देना।

**भजियाउर†**—संज्ञा स्त्री० [ हि० भाजी + चाउर (चावल) ] चावल, दही, घीआ आदि एक साथ पकाकर बनाया हुआ भोजन। उझिया। मिझिमाउर।

**भट**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. युद्ध करनेवाला। योद्धा। २. सिपाही। सैनिक।

**भटकटाई, भटकटैया**—संज्ञा स्त्री० [ हि० कटाई ] एक छोटा और कॉंटेदार क्षुप।

**भटकना**—क्रि० अ० [ सं० भ्रम ? ] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते फिरना। २. रास्ता भूल जाने के कारण इधर-उधर घूमना। ३. भ्रम में पड़ना।

**भटकाना**—क्रि० स० [ हि० भटकना का स० रूप ] १. गलत रास्ता बताना। २. भ्रम में डालना।

**भटकैया***—संज्ञा पुं० [ हि० भटकना + ऐया (प्रत्य०) ] १. भटकनेवाला। २.भटकानेवाला।

**भटकौहाँ*†**—वि० [ हि० भटकना + औहाँ (प्रत्य०) ] भटकानेवाला।

**भटनास**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की लता। इसमें एक प्रकार की फलियाँ लगती हैं जिनके दानों की दाल बनती है।

**भटभटी***—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] देखते हुए भी न दिखाई पड़ना।

**भटभेरा*†**—संज्ञा पुं० [ हि० भट + भिड़ना ] १. दो वीरों का मुकाबला। भिड़ंत। २. धक्का। टक्कर। ठोकर। ३. ऐसी भेंट जो अनायास हो जाय।

**भटा†**—संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।

**भट्टा†**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भट ] स्त्रियों के संबोधन के लिए एक आदर-सूचक शब्द।

**भट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० भट ] १. ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. भाट। ३. योद्धा। सूर।

**भट्टारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० भट्टारिका ] १. नृप। २. पंडित। ३. सूर्य। ४. राजा। ५. देवता। वि० माननीय। मान्य।

**भट्ठा**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्राष्ट्र ] १. बड़ी भट्ठी। २ ईंटें या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा।

**भट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ ] १. ईंटों आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा जिसपर हलवाई, लोहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं। २. वह स्थान जहाँ देशी शराब बनता है

**भठियारपन**—संज्ञा पुं० [ हि० भठियारा + पन (प्रत्य०) ] १. भठियारे का काम। २. भठियारों की तरह लड़ना और गालियाँ बकना।

**भठियारा**—संज्ञा पुं० [ हि० भट्ठी + इयारा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० भठियारी या भठियारिन ] सराय का प्रबन्ध करनेवाला या रक्षक।

**भड़ुवा**—संज्ञा पुं० [ सं० विडंबा ] आडंबर।

**भड़क**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. दिखाऊ चमक-दमक। चमकीलापन। भड़कीले होने का भाव। २. भड़कने का भाव। सहम।

**भड़कदार**—वि० [ हि० भड़क + फा० दार ] १ चमकीला। भड़कीला। २. रोबदार।

**भड़कना**—क्रि० अ० [ भड़क (अनु०) + ना ( प्रत्य० ) ] १ तेजी से जल उठना। २ भड़कना। चौंकना। डरकर पीछे हटना। ( पशुओं के लिए ) ३. क्रुद्ध होना।

**भड़काना**—क्रि० स० [ हि० भड़कना का स० रूप ] १. प्रज्वलित करना। जलाना। २. उत्तेजित करना। उभारना। ३. भयभीत कर देना। चमकाना। ( पशुओं के लिए )

**भड़कीला**—वि० दे० "भड़कदार"।

**भड़भड़**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. भड़भड़ शब्द जो प्रायः आघातों से होता है। २. भीड़। भब्भड़। ३. व्यर्थ की और बहुत अधिक बातचीत।

**भड़भड़ाना**—क्रि० स० [ अनु० ] भड़भड़ शब्द करना।

**भड़भड़िया**—वि० [ हि० भड़भड़ ] बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करनेवाला।

**भड़भाँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० भाडीर ] एक कँटीला पौधा। सत्यानासी। घमोय।

**भड़भूँजा**—संज्ञा पुं० [ हि० भाँड़ + भूँजना ] एक जाति जो भाड़ में अन्न भूनती है।

**भड़साई**—संज्ञा स्त्री० दे० "भाड़"।

**भड़ार*†**—संज्ञा पु० दे० "भंडार"।

**भड़ास**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] मन में छिपा हुआ असंतोष का क्रोध।

**भड़िहाई*†**—क्रि० वि० [हि० भड़िहा] चोरों की तरह। लुक छिपकर या दबकर।

**भड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हि० भड़काना ] झूठा बढ़ावा।

**भड़ुआ**—संज्ञा पुं० [ हि० भाँड़ ] १. वह जो वेश्याओं की दलाली करता हो। २. सफरदाई।

**भड़ेरिया**—संज्ञा पुं० दे० "भड्डर"।

**भड़ैत**—संज्ञा पुं० [ हि० भाड़ा ] किरायेदार।

**भड्डर**—संज्ञा पुं० [ सं० भद्र ]

ब्राह्मणों में बहुत निम्न श्रेणी की एक जाति। भंडर।

**भणना***†—क्रि० अ० [ सं० भणन ] कहना।

**भणित**—वि० [ सं० ] कहा हुआ।

**भतार**†—संज्ञा पुं० [ सं० भर्तार ] पति। खसम।

**भतीजा**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रातृज ] [ स्त्री० भतीजी ] भाई का पुत्र। भाई का लड़का।

**भत्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० भरण ] दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय मिलता है।

**भथिस्थान**†—संज्ञा पुं० [ ? ] स्त्री की गुह्येंद्रिय। भग।

**भदंत**—वि० [ सं० भद्र ] पूज्य। मान्य। संज्ञा पुं० बौद्ध भिक्षु या साधु।

**भदई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भादों ] वह फसल जो भादों में तैयार होती है।

**भदावर**—संज्ञा पुं० [ सं० भद्रवर ] एक प्रांत जो आजकल ग्वालियर राज्य में है।

**भदेसल**†—वि० [ हिं० भद्दा ] भद्दा। भोंडा।

**भदौंहा**†—वि० [ हिं० भादों ] भादों मास में होनेवाला।

**भदौरिया**—वि० [ हिं० भदावर ] भदावर प्रांत का। भदावर संबंधी। संज्ञा पुं० [ हिं० भदावर ] क्षत्रियों की एक जाति।

**भद्दा**—वि० पुं० [ अनु० भद ] [ स्त्री० भद्दी ] जो देखने में मनोहर न हो। कुरूप।

**भद्दापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० भद्दा + पन (प्रत्य०) ] भद्दे होने का भाव।

**भद्र**—वि० [ सं० ] १. सभ्य। सुशिक्षित। २. कल्याणकारी। ३. श्रेष्ठ। ४. साधु।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महादेव। २ उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। ३. सुमेरु पर्वत। ४. सोना। स्वर्ण।

संज्ञा पुं० [ सं० भद्राकरण ] सिर, दाढ़ी, मूँछों आदि सबके बालों का मुंडन।

**भद्रक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन देश। २. एक वर्ण-वृत्त का नाम।

**भद्रकाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा-देवी की एक मूर्ति। २. कात्यायिनी।

**भद्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भद्र होने का भाव। शिष्टता। सभ्यता। शराफत। भलमनसी।

**भद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ केकय-राज की एक कन्या जो श्रीकृष्णजी की ब्याही थी। २. आकाशगंगा। ३. गाय। ४ दुर्गा। ५. पिंगल में उप-जाति वृत्त का दसवाँ भेद। ६. पृथ्वी। ७. सुभद्रा का एक नाम। ८. फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग। ९. बाधा। ( बोलचाल )

**भाद्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**भद्री**—वि० [सं० भद्रिन्] भाग्यवान्।

**भनक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भणन ] १. धीमा शब्द। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।

**भनकना***†—क्रि० स० [ सं० भणन ] कहना।

**भनना***—क्रि० स० [ सं० भणन ] कहना।

**भनभनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] भनभन शब्द करना। गुंजारना।

**भनभनाहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भनभनाना + आहट ( प्रत्य० ) ] भनभनाने का शब्द। गुंजार।

**भनित***—वि० दे० "भणित"।

**भपका**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाप ] अर्क आदि उतारने का एक प्रकार का बंद घड़ा घड़ा।

**भभक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] भभकने की क्रिया या भाव।

**भभकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. उबलना। २. गरमी पाकर किसी चीज का फूटना। ३. जोर से जलना। भड़कना।

**भभकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भभक ] घुड़की।

**भभ्भड़, भभ्भड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़ ] भीड़भाड़। अव्यवस्थित जन-समुदाय।

**भभरना***†—क्रि० अ० [ हिं० भय ] १. भयभीत होना। डरना। २. घबरा जाना। ३ भ्रम में पड़ना।

**भभूका**—संज्ञा पुं० [ हिं० भभक ] ज्वाला।

**भभूत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विभूति ] भस्म जिसे शैव लोग भुजाओं आदि पर लगाते हैं।

**भमीरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "भँमीरी"।

**भयंकर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० भयं-करी ] जिसे देखने से भय लगता हो। डरावना। भयानक। भीषण।

**भयंकरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भयं-कर होने का भाव। डरावनापन। भीषणता।

**भय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध मनोविकार जो किसी आनेवाली भीषण आपत्ति की आशंका से उत्पन्न होता है। डर। खौफ।

**मुहा०**—भय खाना=डरना।

*अ० दे० "हुआ"।

**भयकर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० भय-करी ] भयानक। भयंकर।

**भयप्रद**—वि० [ सं० ] दे० "भया-

नक" ।

**भयभीत**—वि० [ सं० ] डरा हुआ ।

**भयवाद**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाई + आद ( प्रत्य० ) ] एक ही गोत्र या वंश के लोग । भाई-बंद ।

**भयहारी**—वि० [ सं० भयहारिन् ] डर छुड़ानेवाला । डर दूर करनेवाला ।

**भयाऊ***†—वि० दे० "हुआ" ।

**भयातुर**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा भयातुरता ] भय से विकल । डरा और घबराया हुआ ।

**भयान***†—वि० [ सं० भयानक ] डरावना ।

**भयानक**—वि० [ सं० ] जिसे देखने से भय लगता हो । भीषण । भयंकर । डरावना ।

संज्ञा पुं० साहित्य में रसों में छठा रस जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन होता है ।

**भयाना***†—क्रि० अ० [ सं० भय ] डरना ।

क्रि० स० भयभीत करना । डराना ।

**भयारा**—वि० दे० "भयानक" ।

**भयावना**-वि० [ हिं० भय ] डरावना ।

**भयावह**—वि० [ सं० ] भयंकर । डरावना ।

**भरंत***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रांति ] संदेह ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० भरना ] भरने की क्रिया या भाव । भराई ।

**भर**—वि० [ हिं० भरना ] कुल । पूरा । सब ।

*†क्रि० वि० [ हिं० भार ] बल से । द्वारा ।

संज्ञा पुं० [ सं० भार ] १. भार । बोझ । वजन । २. पुष्टि । मोटाई ।

संज्ञा पुं० [ सं० भरत ] एक जाति ।

**भरकना***†—क्रि० अ० दे० "भड़कना" ।

**भरका**—संज्ञा पुं० [ देश० ] पहाड़ों या जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर डाकू छिपते हैं ।

**भरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पालन । पोषण ।

**भरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र । तीन तारों के कारण इसकी आकृति त्रिकोण सी है ।

वि० भरण या पालन करनेवाला ।

**भरत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई जिनका विवाह मांडवी के साथ हुआ था । २. दे० "जड़भरत" । ३. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था । इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है । ४. एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य्य माने जाते हैं । ५ संगीत शास्त्र के एक आचार्य्य का नाम । ६. वह जो नाटकों में अभिनय करता हो । नट ७. प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश जिसका उल्लेख वाल्मीकि-रामायण में है ।

संज्ञा पुं० [ सं० भरद्वाज ] लवा पक्षी का एक भेद ।

संज्ञा पुं० [ देश० ] १. काँसा नामक धातु । कसकुट । काँसा । †२. ठठेरा ।

**भरतखंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड । भारतवर्ष । हिंदुस्तान ।

**भरता**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का नमकीन सालन जो बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जाता है । चोखा । पति ।

**भरतार**—संज्ञा पुं० [ सं० भर्त्ता ] पति । खसम ।

**भरती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भरना ] १. किसी चीज में भरे जाने का भाव । भरा जाना ।

**मुहा०**—भरती करना=किसी के बीच में रखना, लगाना या बैठाना । भरती का=बहुत ही साधारण या रद्दी ।

२. दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव ।

**भरत्थ***†—संज्ञा पुं० दे० "भरत" ।

**भरथरी**—संज्ञा पुं० दे० "भर्तृहरि" ।

**भरदूल**—संज्ञा पुं० दे० "भरत" ( पक्षी ) ।

**भरद्वाज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक वैदिक ऋषि जो गोत्र-प्रवर्त्तक और मंत्रकार थे । ये राजा दिवोदास के पुरोहित और सप्तर्षियों में से भी एक माने जाते हैं । २. इन ऋषि के वंशज या गोत्रापत्य ।

**भरना**—क्रि० स० [ सं० भरण ] १. खाली जगह को पूरा करने के लिए कोई चीज डालना । पूर्ण करना । २. उँडेलना । उलटना । डालना । ३. तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि डालना । ४. पद पर नियुक्त करना । रिक्त पद की पूर्ति करना । ५. ऋण का परिशोध या हानि की पूर्ति करना । चुकाना । देना ।

**मुहा०**—( किसी का ) घर भरना=( किसी को ) खूब धन देना ।

६. गुप्त रूप से किसी की निंदा करना । ७. निर्वाह करना । निबाहना । ८. काटना । डसना । ९. सहना । झेलना । १०. सारे शरीर में लगाना । पोतना ।

क्रि० अ० १. किसी रिक्त पात्र आदि का कोई और पदार्थ पड़ने के कारण

पूर्ण होना। २. उँडेला या डाला जाना। ३. तोप या बंदूक आदि में गोली बारूद आदि का होना। ४. ऋण आदि का परिशोध होना। ५. मन में क्रोध होना। असंतुष्ट या अप्रसन्न रहना। ६. घाव में अंगूर आना। घाव का ठीक और बराबर होना। ७. किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करने लगना। ८. शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना। ९. घोड़ी आदि का गर्भवती होना।

संज्ञा पुं० १. भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

**भरनि***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० भरण ] पहनावा। पोशाक। कपड़े-लत्ते।

**भरनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भरना ] करघे की ढरकी। नार।

**भरपाई**—क्रि० वि० [ हिं० भरना+पाना ] पूर्ण रूप से। भली भाँति।

संज्ञा स्त्री० जो कुछ बाकी हो, वह पूरा पूरा पा जाना।

**भरपूर**—वि० [ हिं० भरना+पूरा ] १. पूरी तरह से भरा हुआ। पूरा पूरा। २. जिसमें कोई कमी न हो। परिपूर्ण।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।

**भरभराना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. (रोओं) खड़ा होना। २. घबराना।

**भरभेंटा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० भर+भेंटना ] सामना। मुकाबला। मुठभेड़।

**भरम***—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रम ] १. संशय। संदेह। धोखा। २. भेद। रहस्य।

मुहा०—भरम गँवाना=भेद खोलना। धोखे में पड़ना।

संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रम ] १. भूल। गलती। २. धोखा। भ्रांति। भ्रम।

**भरमना***†—क्रि० अ० [सं० भ्रमण] १. घूमना। चलना। फिरना। २. मारा मारा फिरना। भटकना। ३.

**भरमाना**—क्रि० स० [ हिं० भरमना का सक० रूप ] १. भ्रम में डालना। बहकाना। २. भटकाना। व्यर्थ इधर-उधर घुमाना।

क्रि० अ० चकित होना। हैरान होना।

**भरमार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भरना+मार=अधिकता ] बहुत ज्यादती। अत्यंत अधिकता।

**भरराना**—क्रि० अ० [अनु०] १. भरर शब्द के साथ गिरना। अरराना। २. टूट पड़ना।

**भरवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भरवाना] भरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**भरवाना**—क्रि० स० [ हिं० भरना का प्रे० रूप ] भरने का काम दूसरे से कराना।

**भरसक**—क्रि० वि० [हिं० भर=पूरा+सक=शक्ति ] यथाशक्ति। जहाँ तक हो सके।

**भरसन***†—संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।

**भरसाई**—संज्ञा पुं० दे० "भाड़"।

**भरहरना**—क्रि० अ० दे० "भरभराना"।

**भरांति***—संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रांति"।

**भराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भरना ] भरने या भराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**भराना**—क्रि० स० दे० "भरवाना"।

**भराव**—संज्ञा पुं० [ हिं० भरना+आव (प्रत्य०) ] भरने का काम या भाव। भरत।

**भरित**—वि० [ सं० ] [स्त्री० भरिता] भरा हुआ।

**भरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भर] दस माशे या एक रुपए के बराबर एक तौल।

**भरुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० भार ] बोझ। वजन।

**भरुआ**—संज्ञा पुं० दे० "भड़ुआ"।

**भरुहाना**†—क्रि० अ० [ हिं० भारी+हाना (प्रत्य०) ] घमंड करना। अभिमान करना।

क्रि० स० [हिं० भ्रम] १. बहकाना। धोखा देना। २. उत्तेजित करना। बढ़ावा देना।

**भरैया**†—वि० [ सं० भरण ] पालन करनेवाला। पालक। रक्षक।

वि० [ हिं० भरना ] भरनेवाला।

**भरोसा**—संज्ञा पुं० [ सं० वर+आशा ] १. आश्रय। आसरा। २. सहारा। अवलंब। ३. आशा। उम्मेद। ४. दृढ़ विश्वास।

**भर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। महादेव। २. सूर्य का तेज। ३. एक प्राचीन देश।

**भर्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० भर्तृ ] १. अधिपति। स्वामी। २. मालिक। खाविन्द। ३. विष्णु।

**भर्तार**—संज्ञा पुं० [ सं० भर्तृ ] पति। स्वामी।

**भर्तृहरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई थे।

**भर्त्सना**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निंदा। शिकायत। २. डाँट-डपट। फटकार।

**भर्म***—संज्ञा पुं० दे० "भ्रम"।

**भर्मन***†—संज्ञा पुं० दे० "भ्रमण"।

**भर्रा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] झाँसा। दमपट्टी।

**भर्राना**—क्रि० अ० [ भर से अनु० ] भर्र भर्र शब्द होना।

**भर्सना***—संज्ञा स्त्री० दे० "भर्त्सना"।

**भलका**†—संज्ञा पुं० [ हिं० फल ? ] तीर का फल। गाँसी।

**भलपति**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाला + सं० पति ] भाला रखनेवाला। नेजे-बरदार।

**भलमनसत, भलमनसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भला + मनुष्य ] भलेमानस होने का भाव। सज्जनता। शराफत।

**भला**—वि० [ सं० भद्र ] १. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २. बढ़िया। अच्छा।

यौ०—भला-बुरा=१.उलटी-सीधी बात। अनुचित बात। २. डाँट-फटकार।

संज्ञा पुं० १. कल्याण। कुशल। भलाई। २. लाभ। नफा।

यौ०—भला बुरा=हानि और लाभ।

अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. "नहीं" का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में रखा जाता है।

मुहा०—भले ही=ऐसा हुआ करे। इससे कोई हानि नहीं। अच्छा ही है।

**भलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भला + ई ( प्रत्य० ) ] १. भले होने का भाव। भलापन। २. उपकार। नेकी।

**भले**—क्रि० वि० [ हिं० भला ] भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।

अव्य० खूब। वाह।

**भलेरा***†—संज्ञा पुं० दे० "भला"।

**भवंग, भवंगम***—संज्ञा पुं० [ सं० भुजंग ] साँप।

**भवंत**—वि० [ सं० भवत् ] भवत् का बहुवचन। आप लोगों का। आपका।

**भव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उत्पत्ति। जन्म। २. शिव। ३. मेघ। बादल। ४. कुशल। ५. संसार। जगत्। ६. सत्ता। ७. कामदेव। ८. जन्म-मरण का दुःख।

वि० १. शुभ। २. उत्पन्न।

संज्ञा पुं० [ सं० भय ] डर। भय।

**भव-जाल**—संज्ञा पुं० [ सं० भव + जाल ] १. संसार का जाल या माया। २. झंझट। बखेड़ा।

**भवदीय**—सर्व० [ सं० ] [ स्त्री० भवदीया ] आपका। तुम्हारा।

**भवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मकान। २. महल। ३. छप्पय का एक भेद।

संज्ञा पुं० [ सं० भुवन ] जगत्। संसार।

**भवना***†—क्रि० अ० [ सं० भ्रमण ] घूमना।

**भवनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भवन ] भार्या। स्त्री।

**भवबंधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार की झंझट। सांसारिक दुःख और कष्ट।

**भवभंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परमेश्वर।

**भवभय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार में बार बार जन्म लेने और मरने का भय।

**भवभामिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती।

**भव-भूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सृष्टि।

**भवभूति**—एक प्रसिद्ध संस्कृत भाषा के नाटककार।

**भवभूप***†—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार के भूषण।

**भवमोचन**—वि० [ सं० ] संसार के बंधनों से छुड़ानेवाले, भगवान्।

**भवविलास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. माया। २ संसार के सुख जो ज्ञान के अंधकार से उदित होते हैं।

**भवसंभव**—वि० [ सं० ] सांसारिक।

**भव-सागर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार-रूपी सागर।

**भवाँ**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भवना ] फेरी। चक्कर।

**भवाँना**†—क्रि० स० [ सं० भ्रमण ] घुमाना। फिराना।

**भवानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा। पार्वती।

**भवाब्धि, भवार्णव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार रूपी सागर।

**भवितव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] होनहार।

**भवितव्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. होनी। भावी। होनहार। २. भाग्य। किस्मत।

**भविष्य**—वि० [ सं० भविष्यत् ] वर्तमान काल के उपरांत आनेवाला काल।

**भविष्यगुप्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह गुप्त नायिका जो रति में प्रवृत्त होनेवाली हो और पहले से उसे छिपाने का उद्योग करे।

**भविष्यत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भविष्य।

**भविष्यद्वक्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भविष्यद्वाणी करनेवाला। २. ज्योतिषी।

**भविष्यद्वाणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भविष्य में होनेवाली वह बात जो पहले से ही कह दी गई हो।

**भवीला***†—वि० [ हिं० भाव + ईला ( प्रत्य० ) ] १. भावयुक्त। भावपूर्ण। २. बाँका-तिरछा।

**भवेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव। शिव।

**भव्य**—वि० [ सं० ] १. देखने में भारी और सुंदर। शानदार। २. शुभ। मंगलसूचक। ३. सत्य। सच्चा। ४. भविष्य में होनेवाला।

**भव्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भव्य

होने का भाव।

**भख***—संज्ञा पुं० [ सं० भक्ष्य ] भोजन।

**भखना**†—क्रि० स० [ सं० भक्षण ] खाना।

**भसना**†—क्रि० अ० [ बँ० ] १. पानी के ऊपर तैरना। २. पानी में डूबना।

**भसम**—संज्ञा पुं० दे० "भस्म"।

**भसमा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० वस्मा का अनु० ] एक प्रकार का खिजाब।

**भसाना**—संज्ञा पुं० [ बँ० भसाना ] काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना।

**भसाना**†—क्रि० स० [ बँ० ] १. किसी चीज को पानी में तैरने के लिए छोड़ना। २. पानी में डालना।

**भसींड़**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कमलनाल। मुरार। कमल की जड़।

**भसुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० भुशुंड ] हाथी। गज।

**भसुर**—संज्ञा पुं० [ हिं० ससुर का अनु० ] पति का बड़ा भाई। जेठ।

**भस्मंत**—वि० दे० "भस्म"।

**भस्म**—संज्ञा पुं० [ सं० भस्मन् ] १. लकड़ी आदि के जलने पर बचा हुई राख। २. अग्निहोत्र में की राख जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा शरीर में लगाते हैं। ३. आयुर्वेद में धातुओं अथवा रत्नों को विशेष प्रकार से जलाकर बनाई हुई औषधे।

वि० जो जलकर राख हो गया हो।

**भस्मक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें भोजन तुरंत पच जाता है।

**भस्मता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भस्म होने का धर्म्म या भाव।

**भस्मासुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य।

**भस्मीभूत**—वि० [ सं० ] जो जलकर राख हो गया हो।

**भहराना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. टूट पड़ना। २. एकाएक गिरना।

**भाँउ***—संज्ञा पुं० [ सं० भाव ] अभिप्राय।

**भाँउर**—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

**भाँग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भृंगा या भृंगी ] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं। भंग। विजया। बूटी। पत्ती।

मुहा०—भाँग खा जाना या पी जाना=नशे की सी या पागलपन की बातें करना। घर में भूँजी भाँग न होना=अत्यंत दरिद्र होना।

**भाँज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाँजना ] १. भाँजने या घुमाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई।

**भाँजना**—क्रि० स० [ सं० भंजन ] १. तह करना। मोड़ना। २. मुगदर आदि घुमाना। (व्यायाम)

**भाँजी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाँजना=मोड़ना ] वह बात जो किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही जाय। चुगली।

**भाँटा**†—संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।

**भांड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बरतन। भाँड़ा। पात्र।

**भाँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० भंड ] १. विदूषक। मसखरा। २. एक प्रकार के पेशेवर जो महफिलों आदि में जाकर नाचते गाते और हास्यपूर्ण नकलें उतारते हैं। ३. नंगा। बेहया। ४. सत्यानाश। बरबादी।

संज्ञा पुं० [ सं० भांड ] १. बरतन। भाँड़ा। २. भंडाफोड़। रहस्योद्घाटन। ३. उपद्रव। उत्पात।

**भाँड़ना***†—क्रि० अ० [ सं० भंड ] व्यर्थ इधर-उधर घूमना। मारे मारे फिरना।

क्रि० स० १. किसी को बहुत बदनाम करते फिरना। २. नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाड़ना।

**भाँड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० भांड ] बरतन। पात्र।

मुहा०—भाँड़े में जी देना=किसी पर दिल लगा होना। भाँड़े भरना=पश्चात्ताप करना।

**भांडागार**—संज्ञा पुं० [सं०] भंडार। कोश।

**भांडागारिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भंडारी।

**भांडार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह स्थान जहाँ काम में आनेवाली बहुत सी चीजें रखी जाती हों। भंडार। २. वह जिसमें एक ही तरह की बहुत सी चीजें या बातें हों। ३. खजाना। कोश।

**भाँति, भाँति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भेद ] तरह। किस्म। प्रकार। रीति।

**भाँपना**†—क्रि० स० [?] १. ताड़ना। पहचानना। २. देखना। (बाजारू)

**भाँय भाँय**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] नितांत एकांत स्थान या सन्नाटे में होनेवाला शब्द।

**भाँरी**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

**भाँवना**†—क्रि० स० [ सं० भ्रमण ] १. खरादना। कुनना। २. अच्छी तरह गढ़कर सुंदरतापूर्वक बनाना।

**भाँवर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रमण ] १. चारों ओर घूमना। परिक्रमा करना। २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं।

संज्ञा पुं० दे० "भौंरा"।

**भौंसा**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] आवाज़। शब्द।

**भा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। छटा। ३. किरण। रश्मि। ४. बिजली। विद्युत।

[illegible]† अव्य० चाहे। यदि इच्छा हो। या।

**भाइ**†—संज्ञा पुं० [ सं० भाव ] १. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। २. स्वभाव। भाव। ३. विचार।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाँति ] १. भाँति। प्रकार। २. चाल-ढाल। रंग-ढंग।

**भाइप**†—संज्ञा पुं० दे० "भाई-चारा"।

**भाई**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रातृ ] १. बंधु। सहोदर। भ्राता। भैया। २. किसी वंश की किसी एक पीढ़ी के किसी व्यक्ति के लिए उसी पीढ़ी का दूसरा पुरुष। जैसे—चचेरा या ममेरा भाई। ३. बराबरवालों के लिए एक प्रकार का संबोधन।

**भाईचारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाई + चारा (प्रत्य०) ] भाई के समान परम मित्र होने का भाव।

**भाई दूज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाई + दूज ] यमद्वितीया। कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भैया दूज।

**भाईबंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाई + बंधु ] भाई और मित्र-बंधु आदि।

**भाईबिरादरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाई + बिरादरी ] जाति या समाज के लोग।

**भाउ**†—संज्ञा पुं० [ सं० भाव ] १. चित्तवृत्ति। विचार। २. भाव। ३. प्रेम।

संज्ञा पुं० [ सं० भव ] उत्पत्ति। जन्म।

**भाऊ**—संज्ञा पुं० [ सं० भाव ] १. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। २. भावना। ३. स्वभाव। ४. हालत। अवस्था। ५. महत्त्व। महिमा। ६. शक्ल। स्वरूप। ७. सत्ता। ८. वृत्ति। विचार। ९. भाई।

**भाएँ**†—क्रि० वि० [ सं० भाव ] समझ में। बुद्धि के अनुसार।

**भाकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य। भास्कर।

**भाकसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भस्त्री ] भट्ठी।

**भाकुर**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. एक प्रकार की मछली। २. हौआ।

वि० भद्दा और भयानक।

**भाखन**†—संज्ञा पुं० दे० "भाषण"।

**भाखना**†—क्रि० स० [ सं० भाषण ] कहना।

**भाखा**†—संज्ञा स्त्री० दे० "भाषा"।

**भाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हिस्सा। खंड। अंश। २. पार्श्व। तरफ। ओर। ३. नसीब। भाग्य। किस्मत। ४. सौभाग्य। खुशनसीबी। ५. भाग्य का कल्पित स्थान, माथा। ललाट। ६. प्रातःकाल। भोर। ७. गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

**भागड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भागना ] बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना।

**भागत्याग**—संज्ञा पुं० दे० "जहद-जहल्लक्षणा"।

**भाग-दौड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भागना + दौड़ना ] १. भगदड़। भागड़। २. दौड़धूप।

**भागधेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाग्य। २. राजकर। ३. दायाद। सपिंड।

**भागना**—क्रि० अ० [ सं० भाज् ] १. किसी स्थान से हटने के लिए दौड़कर निकल जाना। पलायन करना। मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना=बहुत तेजी से भागना। २. टल जाना। हट जाना। कोई काम करने से बचना। पीछा छुड़ाना।

**भागनेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भानजा।

**भागफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि।

**भागवंत**†—वि० दे० "भाग्यवान्"।

**भागवत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अठारह पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं। यह वेदांत का तिलक-स्वरूप माना जाता है। श्रीमद्भागवत। २. देवी भागवत। ३. ईश्वर का भक्त। ४. १३ मात्राओं का एक छंद।

वि० भगवत्संबंधी।

**भागाभाग**—संज्ञा स्त्री० दे० "भागड़"।

**भागिनेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० भागिनेयी ] बहिन का लड़का। भानजा।

**भागी**—संज्ञा पुं० [ सं० भागिन् ] [ स्त्री० भागिनी ] १. हिस्सेदार। शरीक। २. अधिकारी। हकदार।

वि० [ सं० भाग्य ] भाग्यवाला। (यौ० के अंत में)

**भागीरथ**—संज्ञा पुं० दे० "भगीरथ"।

**भागीरथी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंगा नदी। जाह्नवी।

**भाग्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह अवश्यंभावी दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य पहले ही से निश्चित रहते हैं। २. तकदीर। किस्मत। नसीब।

वि॰ हिस्सा करने के लायक।

**भाग्यवान्**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ भाग्यवती ] वह जिसका भाग्य अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।

**भाजक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कालि-वृत्त।

**भाजक**—वि॰ [ सं॰ ] विभाग करने-वाला।

संज्ञा पुं॰ वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय। विभाजक। ( गणित )

**भाजन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बर-तन। २. आधार। ३. योग्य। पात्र।

**भाजना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "भागना"।

**भाजी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ ] १. माँड़। पीच। २. तरकारी, साग आदि।

**भाज्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है।

वि॰ विभाग करने के योग्य।

**भाट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भट्ट ] [ स्त्री॰ भाटिन ] १. राजाओं का यश वर्णन करनेवाला। चारण। बंदी। २. खुशामदी।

**भाटा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ भाट ] १. पानी का उतार की ओर जाना। २. समुद्र के चढ़ाव का उतरना। ज्वार का उलटा।

**भाटौआ**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ भाट ] भाट का काम। भटई। यशकीर्तन।

**भाठी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "भट्ठी"।

**भाड़**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भ्राष्ट ] भड़-भूँजों की भट्ठी जिसमें वे अनाज भूनते हैं।

मुहा॰—भाड़ झोंकना=तुच्छ या अयोग्य काम। भाड़ में झोंकना या डालना=१. फेंकना। नष्ट करना। २. जाने देना।

**भाड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भाट ] किराया।

मुहा॰—भाड़े का टट्टू=१. जो स्थायी न हो। क्षणिक। २. निकम्मा।

**भाण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. हास्य-रस का एक प्रकार का दृश्यकाव्य-रूपक जो एक अंक का होता है। २. व्याज। मिस।

**भात**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भक्त ] १. पानी में उबाला हुआ चावल। २. विवाह की एक रसम। इसमें कन्या-वाला समधी को भात खिलाता है।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रभात। २. प्रकाश।

**भाति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] शोभा। कांति।

**भाथा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भस्त्रा, प्रा॰ भत्था ] १. तरकश। तूणीर। २. बड़ी भाथी।

**भाथी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ भस्त्री ] वह धौंकनी जिससे भट्ठी की आग सुल-गाते हैं।

**भादों**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भाद्र, प्रा॰ भद्दा ] सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना। भाद्र। भाद्रपद।

**भाद्र, भाद्रपद**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "भादों"।

**भाद्रपदा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक नक्षत्रपुंज जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।

**भान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रकाश। रोशनी। २. दीप्ति। चमक। ३. ज्ञान। ४. प्रतीति। आभास।

**भानजा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ बहिन +जा ] [ स्त्री॰ भानजी ] बहिन का लड़का। भागिनेय।

**भानना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ भंजन ] १. तोड़ना। भंग करना। २. नष्ट करना। मिटाना। ३. दूर करना। ४. काटना।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मान ] समझना।

**भानमती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ भानु-मती ] जादूगरनी।

**भानवी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ भान-वीया ] यमुना।

**भाना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ भान=ज्ञान ] १. जान पड़ना। मालूम होना। २. अच्छा लगना। पसंद आना। ३. शोभा देना।

क्रि॰ स॰ [ सं॰ भा=प्रकाश ] चमकाना।

**भानु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सूर्य। २. विष्णु। ३. किरण। ४. राजा।

**भानुज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ भानुजा ] १. यम। २. शनिश्चर। ३. कर्ण।

**भानुजा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] यमुना।

**भानुतनया**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] यमुना।

**भानुमत्**—वि॰ [ सं॰ ] प्रकाशमान।

संज्ञा पुं॰ सूर्य।

**भानुसुत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. यम। २. मनु। ३. शनिश्चर। ४. कर्ण।

**भानुसुता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] यमुना।

**भाप, भाफ**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ बाष्प, प्रा॰ बप्प ] १. पानी के बहुत छोटे छोटे कण जो उसके खौलने की दशा में ऊपर को उठते दिखाई पड़ते हैं। वाष्प। २. भौतिक शास्त्रानुसार घनी-भूत या द्रवीभूत पदार्थों की वह अवस्था जो उनके पर्याप्त ताप पाने पर प्राप्त होती है।

**भाभर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वप्र ] वह जंगल जो पहाड़ों के नीचे तराई में होते हैं।

**भामरा***—वि॰ [ हिं॰ भा+भरना ] लाल।

**भामी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ माई ] भौजाई।

**भाम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक वर्णवृत्त। *संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ भामा ] स्त्री।

**भामता***—वि॰ दे॰ "भावता"।

**भामा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] स्त्री। औरत।

**भामिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] स्त्री। औरत।

**भाय**†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ भाई ] भाई। *संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भाव ] १. अंतः॰करण की वृत्ति। भाव। २. परिमाण। ३. दर। भाव। ४. भाँति। ढंग।

**भायप**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "भाईचारा"।

**भाया**—वि॰ [ हिं॰ भाना ] प्रिय। प्यारा।

**भारंगी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक प्रकार का पौधा। इसकी पत्तियों का साग बनाकर खाते हैं। भनेटी। असबरग।

**भार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक परिमाण जो बीस पसेरी का होता है। २. बोझ। ३. वह बोझ जिसे बहँगी पर रखकर ले जाते हैं। ४. सँभाल। रक्षा। ५. किसी कर्तव्य के पालन का उत्तरदायित्व।

मुहा॰—भार उठाना=उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। भार उतरना=कर्तव्य के ऋण से मुक्त होना।

६. आश्रय। सहारा। ७. २० तुला या २००० पल का एक मान या तौल।

*संज्ञा पुं॰ दे॰ "भाड़"।

**भारत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. महा॰भारत का पूर्व-रूप या मूल जो २४,००० श्लोकों का था। २. दे॰ "भारतवर्ष"। ३. भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ४. लंबी कथा। ५. घोर युद्ध। भारी लड़ाई।

**भारतखंड**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "भारतवर्ष"।

**भारतवर्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह देश जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। आर्यावर्त। हिंदुस्तान।

**भारतवासी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] भारतवर्ष का रहनेवाला। भारतीय।

**भारती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. वचन। वाणी। २. सरस्वती। ३. एक वृत्ति जिसके द्वारा रौद्र और बीभत्स रस का वर्णन किया जाता है। ४. ब्राह्मी। ५. दशनामी सन्यासियों में से एक।

**भारतीय**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ भारतीयता ] भारत-संबंधी। संज्ञा पुं॰ भारत का निवासी।

**भारथ***—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ भारत ] १. दे॰ "भारत"। २. युद्ध। संग्राम।

**भारथी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भारत ] सैनिक।

**भारद्वाज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २. द्रोणाचार्य्य। ३. भरदूल पक्षी। ४. एक ऋषि जिनका रचा हुआ श्रौत सूत्र और गृह्य सूत्र है।

**भारना***†—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ भार ] १. बोझ लादना। भार डालना। २. दबाना।

**भारवाह**—वि॰ दे॰ "भारवाहक"।

**भारवाहक**—वि॰ [ सं॰ ] बोझ ढोनेवाला।

**भारवाही**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भारवाहिन् ] [ स्त्री॰ भारवाहिनी ] भार या बोझ ढोनेवाला।

**भारवि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्राचीन कवि जो किरातार्जुनीय महा॰काव्य के रचयिता थे।

**भारशिव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्राचीन शैवसंप्रदाय जिसके अनुसार पापी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।

**भारा**†—वि॰ दे॰ "भारी"।

**भाराक्रांता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक वर्णिक वृत्त।

**भारावलंबकत्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

**भारी**—वि॰ [ हिं॰ भार ] १. जिसमें बोझ हो। गुरु। बोझिल। २. कठिन। कराल। भीषण। ३. विशाल। बड़ा।

मुहा॰—भारी भरकम=बड़ा और भारी।

४. अधिक। अत्यंत। बहुत। ५. असह्य। दूभर। ६. सूजा हुआ। फूला हुआ। ७. प्रबल। ८. गंभीर। शांत।

**भारीपन**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ भारी+पन (प्रत्य॰) ] भारी होने का भाव। गुरुत्व।

**भार्गव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। २. परशुराम। ३. शुक्राचार्य। ४. मार्कंडेय। ५. एक उपपुराण का नाम। ६. जमदग्नि। ७. एक प्रसिद्ध व्यवसायी जाति। दूसर।

वि॰ भृगु-संबंधी। भृगु का।

**भार्गवेश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ भार्गव+ईश ] परशुराम।

**भार्य्या**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पत्नी। जोरू। स्त्री।

**भाल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कपाल। ललाट। संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ भाला ] १. भाला।

बरछा । २. तीर का फल । गाँसी ।
संज्ञा पुं० [ सं० भल्लुक ] रीछ । भालू ।

**भालचंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महादेव । २. गणेश ।

**भालना**—क्रि० स० [ ? ] १. अच्छी तरह देखना । † २. ढूँढ़ना । तलाश करना ।

**भाललोचन**—संज्ञा [ सं० ] शिव ।

**भाला**—संज्ञा पुं० [ सं० भल्ल ] बरछा । नेजा ।

**भालाबरदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाला + फ़ा० बरदार ] बरछा चलानेवाला । बरछैत ।

**भालि**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाला ] १. बरछी । साँग । २. शूल । काँटा ।

**भाली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाला ] १. भाले की गाँसी या नोक । २ शूल । काँटा ।

**भालुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भालू । रीछ ।

**भालुनाथ**—संज्ञा पुं० दे० "जामवंत"।

**भालू**—संज्ञा पुं० [ सं० भल्लुक ] एक प्रसिद्ध स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है । मदारी इसे पकड़कर नाचना और खेल करना सिखाते हैं । रीछ ।

**भावंता***†—संज्ञा पुं० [ हिं० भाना ] प्रेमपात्र । प्रिय । प्रीतम ।
संज्ञा पुं० [ सं० भावी ] होनहार । भावी ।

**भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सत्ता । अस्तित्व । अभाव का उलटा । २. मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति । विचार । खयाल । ३. अभिप्राय । तात्पर्य । मतलब । ४. मुख की आकृति या चेष्टा । ५. आत्मा । ६. जन्म । ७. चित्त । ८. पदार्थ । चीज । ९. प्रेम । मुहब्बत । १०. कल्पना । ११. प्रकृति । स्वभाव । १२. ढंग । तरीका । १३. प्रकार । तरह । १४. दशा । अवस्था । हालत । १५. भावना । १६. विश्वास । भरोसा । १७. आदर । प्रतिष्ठा । १८. बिक्री आदि का हिसाब । दर । निर्ख ।
मुहा०—भाव उतरना या गिरना=किसी चीज का दाम घट जाना । भाव चढ़ना=दाम बढ़ जाना ।
१९. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति । २०. नायक आदि को देखने के कारण अथवा और किसी प्रकार नायिका के मन में उत्पन्न होनेवाला विकार । २१ गीत के विषय के अनुसार शरीर या अंगों का संचालन ।
मुहा०—भाव देना=आकृति आदि से अथवा अंग संचालित करके मन का भाव प्रकट करना ।
२२. नाज । नखरा । चोचला ।

**भावइ***†—अव्य० [ हिं० भाना ] जी चाहे । इच्छा हो तो ।

**भावक***—क्रि० वि० [ सं० भाव ] किंचित् । थोड़ा सा । जरा सा । कुछ एक ।
वि० [सं०] भाव से भरा । भावपूर्ण ।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १ भावना करनेवाला । २. भाव-संयुक्त । ३. भक्त । प्रेमी ।

**भावगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भाव + गति ] इरादा । इच्छा । विचार ।

**भावगम्य**—वि० [ सं० ] भक्ति भाव से जानने योग्य ।

**भावग्राह्य**—वि० [ सं० ] भक्ति से ग्रहण करने योग्य ।

**भावज**—संज्ञा स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की स्त्री । भाभी । भौजाई ।

**भावज्ञ**—वि० [ सं० ] [ भाव० भावज्ञता ] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला ।

**भावता**-वि० [ हिं० भावना ] [ स्त्री० भावती ] जो भला लगे । प्रिय ।
संज्ञा पुं० प्रेमपात्र । प्रियतम ।

**भाव-ताव**-संज्ञा पुं० [ हिं० भाव + ताव ] किसी चीज का मूल्य या भाव आदि । निर्ख । दर ।

**भावन***†—वि० [ हिं० भावना ] अच्छा या प्रिय लगनेवाला । जो भला लगे ।

**भावना**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ध्यान । विचार । खयाल । २. चित्त का एक संस्कार जो अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है । ३. इच्छा । चाह । ४. साधारण विचार या कल्पना । ५. वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी प्रकार के तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना जिसमें उस औषध में तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जाय । पुट ।
*क्रि० अ० अच्छा लगना । पसंद आना ।
वि० [ हिं० भावना ] प्रिय । प्यारा ।

**भावनि***†-संज्ञा स्त्री० [ हिं० भाना ] जो कुछ जी में आवे । इच्छानुसार बात ।

**भावनीय**—वि० [ सं० ] भावना करने योग्य ।

**भावप्रवण**—वि० दे० "भावुक" ।

**भावभक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं० भाव + भक्ति ] १. भक्ति-भाव । २. आदर । सत्कार ।

**भावली**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] जमींदार और असामी के बीच उपज की बँटाई ।

**भाववाचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो । जैसे—सज्जनता ।

**भाववाच्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है । इसमें तृतीया की विभक्ति रहती है । जैसे—मुझसे बोला नहीं जाता ।

**भावसंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का अलंकार जिसमें दो विरुद्ध भावों की संधि का वर्णन होता है ।

**भावशबलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का अलंकार जिसमें कई एक भावों का एक साथ वर्णन किया जाता है ।

**भावाभास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का अलंकार ।

**भावार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय । २. अभिप्राय । तात्पर्य ।

**भावालंकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का अलंकार ।

**भाविक**—वि० [ सं० ] जाननेवाला । मर्मज्ञ ।

**भावित**—वि० [ सं० ] १. जिसका ध्यान या विचार किया गया हो । जो सोचा गया हो । २. चिंतित । उद्विग्न । ३. जिसमें किसी पदार्थ की भावना या सुगन्ध दी गई हो ।

**भावी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भाविन् ] १. भविष्यत् काल । आनेवाला समय । २. भविष्य में अवश्य होनेवाली बात । भवितव्यता । ३. भाग्य । तकदीर ।

**भावुक**—वि० [ सं० ] १. भावना करनेवाला । सोचनेवाला । २. जिस पर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो । ३. अच्छी बातें सोचनेवाला ।

**भावै**†—अव्य० [ हिं० भाना ] चाहे ।

**भाव्य**—वि० [ सं० ] चिंता करने या सोचने योग्य ।

**भाषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कथन । बात-चीत । कहना । २. व्याख्यान । वक्तृता ।

**भाषना***†—क्रि० अ० [ सं० भाषण ] बोलना ।

क्रि० अ० [ सं० भक्षण ] भोजन करना ।

**भाषांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अनुवाद । उल्था ।

**भाषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मुख से उच्चरित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह जिसके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है । बोली । जबान । वाणी । २. किसी विशेष जन-समुदाय में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग । बोली । ३. आधुनिक हिंदी । ४. वाक्य । ५. वाणी ।

**भाषाबद्ध**—वि० [ सं० ] साधारण देशभाषा में बना हुआ ।

**भाषासम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का शब्दालंकार । काव्य में केवल ऐसे शब्दों की योजना जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हों ।

**भाषित**—वि० [ सं० ] कथित । कहा हुआ ।

**भाषी**—संज्ञा पुं० [ सं० भाषिन् ] [ स्त्री० भाषिणी ] बोलनेवाला ।

**भाष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूत्रों की की हुई व्याख्या या टीका । २. किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या ।

**भाष्यकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूत्रों की व्याख्या करनेवाला । भाष्य बनानेवाला ।

**भास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दीप्ति । प्रकाश । चमक । २. मयूख । किरण । ३. इच्छा । ४. एक प्रसिद्ध संस्कृत के नाटककार ।

**भासना**—क्रि० अ० [ सं० भास ] १. प्रकाशित होना । चमकना । २. मालूम होना । प्रतीत होना । ३. देख पड़ना । ४. फँसना । लिप्त होना ।

*†—क्रि० अ० [ सं० भाषण ] कहना ।

**भासमान**—वि० [ सं० ] जान पड़ता हुआ । भासता हुआ । दिखाई देता हुआ ।

**भासित**—वि० [ सं० ] १. चमकीला । प्रकाशित । २. कुछ कुछ प्रकट होनेवाला ।

**भास्कर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुवर्ण । सोना । २. सूर्य्य । ३. अग्नि । आग । ४. वीर । ५. महादेव । शिव । ६. पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे आदि बनाना ।

**भास्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दिन । २. सूर्य्य ।

वि० दीप्तियुक्त । चमकदार ।

**भिंग***—संज्ञा पुं० [ सं० भृंग ] १. भौंरा । २. बिलनी । ( कीड़ा ) ।

**भिंगाना**-क्रि० स० दे० "भिगोना" ।

**भिंजाना**-क्रि० स० दे० "भिगोना" ।

**भिंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भिंडा ] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है ।

**भिंदिपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था

**भिक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. याचना । माँगना । २. दीनता दिखलाते हुए अपने उदर निर्वाह के लिए माँगने का काम । भीख । ३. एक

प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु। भीख।

**भिक्षापात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं।

**भिक्षु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भीख माँगनेवाला। भिखारी। २. संन्यासी। [ स्त्री० भिक्षुणी ] ३. बौद्ध संन्यासी।

**भिक्षुक**—संज्ञा पुं० [सं० ] भिखमंगा।

**भिखमंगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भीख+ माँगना ] जो भीख माँगे। भिखारी। भिक्षुक।

**भिखारिणी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० वह स्त्री जो भिक्षा माँगे। भिखमगिन।

**भिखारिन**—संज्ञा स्त्री० दे० "भिखारिणी"।

**भिखारी**—संज्ञा पुं० [ हिं० भीख+ आरी ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी ] भिक्षुक। भिखमगा।

**भिगाना**—क्रि० स० दे० "भिगोना"।

**भिगोना**—क्रि० स० [ स० अभ्यंज ] किसी चीज को पानी से तर करना। भगाना।

**भिच्छा**—संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।

**भिच्छु**—संज्ञा पुं० दे० "भिक्षु"।

**भिजवना***†—क्रि० स० [ हिं० भिगोना ] भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।

**भिजवाना**—क्रि० स० [ हिं० भेजना का प्रे० ] किसी को भेजने में प्रवृत्त करना।

**भिजाना**—क्रि० स० [ सं० अभ्यंज ] भिगोना।

क्रि० स० दे० "भजवाना"।

**भिजोना***†—क्रि० स० दे०"भिगोना"।

**भिड़ंत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भिड़ना ] भिड़ने की क्रिया या भाव। मुठ-भेड़।

**भिड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बरें ? ] बरें। ततैया।

**भिड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० भड़ अनु० ? ] १ टक्कर खाना। टकराना। २. कड़ना-झगड़ना। कड़ाई करना। ३. सटना।

**भितरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भीतर ] मंदिर के बिलकुल भीतरी भाग में रहनेवाला पुजारी।

वि० भीतरी। अंदर का।

**भितल्ला**—संज्ञा पुं० [ हिं० भीतर+ तल ] दोहरे कपड़े में भीतरी ओर का पल्ला। अस्तर।

वि० भीतर का। अंदर का।

**भिताना***†—क्रि० स० [सं० भीति] डरना।

**भित्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दीवार। २. डर। भय। भीति। ३. वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाय।

**भित्तिचित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।

**भिद**—संज्ञा पुं० [ सं० भिद् ] भेद। अंतर।

**भिदना**—क्रि० अ० [ सं० भिद् ] १. पैवस्त होना। घुस जाना। २. छेदा जाना। ३. घायल होना।

**भिदुर**—संज्ञा पुं० [ सं० भिदिर ] वज्र।

**भिनकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. भिन भिन शब्द करना। ( मक्खियों का ) २. घृणा उत्पन्न होना।

**भिनभिनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] भिन भिन शब्द करना।

**भिनसार**†—संज्ञा पुं० [सं० विनिशा] सबेरा।

**भिन्न**—वि० [ सं० ] १. अलग। पृथक्। जुदा। २. इतर। दूसरा। अन्य।

संज्ञा पुं० वह संख्या जो एकाई से कुछ कम हो। ( गणित )

**भिन्नता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भिन्न होने का भाव। अलगाव। भेद। अंतर।

**भिन्नाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] ( दुर्गंध आदि से ) सिर चकराना।

**भियना***†—क्रि० अ० [ सं० भीत ] डरना।

**भिरना***†—क्रि० स० दे० "भिड़ना"।

**भिरिंग***†—संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।

**भिलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भील ] भील जाति की स्त्री।

**भिलावाँ**—संज्ञा पुं० [ सं० भल्लातक ] एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष। इसका फल औषध के काम में आता है।

**भिल्ल**—संज्ञा पुं० दे० "भील"।

**भिश्त***†—संज्ञा पुं० दे० "बिहिश्त"।

**भिश्ती**—संज्ञा पुं० [ ? ] मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का। माशकी।

**भिषक्, भिषज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैद्य।

**भींगना**—क्रि० अ० दे० "भीगना"।

**भींचना**†—क्रि० स० [हिं० खींचना] १. खींचना। कसना। २. दे० "मीचना"।

**भींजना***†—क्रि० अ० [हिं० भीगना] १. गीला होना। तर होना। भीगना। २. पुलकित या गद्गद हो जाना। ३. मेलमिलाप पैदा करना। ४. नहाना। ५ समा जाना।

**भी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भय। डर।

अव्य० [ हिं० ही ] १. अवश्य। जरूर। २. अधिक। ज्यादा। ३. तक। लौं।

**भीउँ***—संज्ञा पुं० [ सं० भीम ]

भीमसेन।

**भीख**—संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।

**भीखन***—वि० दे० "भीषण"।

**भीखम***†—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

**भीगना**—क्रि० अ० [सं० अभ्यंज] पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना। आर्द्र होना।

**भीजना**†—क्रि० अ० १. दे० "भींगना"। २. भारी। अधिक। गंभीर। अधिकता। वृद्धि।

**भीटा**—संज्ञा पुं० [देश०] १. ऊँची या टीलेदार जमीन। २. वह बनाई हुई ऊँची जमीन जिस पर पान की खेती होती है।

**भीड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भिड़ना] १. आदमियों का जमाव। जन-समूह। ठठ।

मुहा०—भीड़ छँटना=भीड़ के लोगों का इधर-उधर हो जाना। भीड़ न रह जाना।

२. संकट। आपत्ति। मुसीबत।

**भीड़न***—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़ना] मलने, लगाने या भरने की क्रिया।

**भीड़ना***†—क्रि० स० [हिं० भिड़ाना] १. मिलाना। लगाना। २. मलना।

**भीड़भड़क्का**—संज्ञा पुं० दे० "भीड़-भाड़"।

**भीड़भाड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़ +भाड़ (अनु०)] मनुष्यों का जमाव। जन-समूह। भीड़

**भीड़ा**†—वि० [हिं० भिड़ना] संकुचित। तंग।

**भीड़ी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।

**भीत**—संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] १. दीवार।

मुहा०—भीत में दौड़ना = अपनी सामर्थ्य से बाहर अथवा असंभव कार्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना= बे सिर पैर की बात करना।

२. विभाग करनेवाला परदा। ३. चटाई। ४. छत। गच।

वि० [सं०] [स्त्री० भीता] डरा हुआ।

**भीतर**—क्रि० वि० [?] अंदर।

संज्ञा पुं० १. अंतःकरण। हृदय। २. रनिवास। जनानखाना।

**भीतरी**—वि० [हिं० भीतर + ई (प्रत्य०)] १. भीतरवाला। अंदर का। २. गुप्त।

**भीति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर। भय। खौफ। २. कंप।

संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार।

**भीती***†—संज्ञा स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार

संज्ञा स्त्री० [सं० भीति] डर। भय।

**भीन***†—संज्ञा पुं० [हिं० बिहान] सवेरा।

**भीनना**—क्रि० अ० [हिं० भीगना] भर जाना। समा जाना। पैवस्त हो जाना।

**भीम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भयानक रस। २. शिव। ३. विष्णु। ४. महादेव की आठ मूर्तियों में से एक। ५. पाँचों पांडवों में से एक जो वायु के संयोग से कुंती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ये बहुत बड़े वीर और बलवान् थे। भीमसेन।

मुहा०—भीम के हाथी= भीमसेन के फेंके हुए हाथी। (कहा जाता है कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी आकाश में फेंक दिए थे जो आज तक वायुमंडल में ही घूमते हैं।)

वि० १. भयानक। २ बहुत बड़ा।

**भीमता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भयं-करता।

**भीमराज**—संज्ञा पुं० [सं० भृंगराज] काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया।

**भीमसेन**—संज्ञा पुं० [सं०] युधिष्ठिर के छोटे भाई। भीम।

**भीमसेनी एकादशी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीमसेनी+एकादशी] १. ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २. माघ शुक्ला एकादशी।

**भीमसेनी कपूर**—संज्ञा पुं० [हिं० भीमसेन +कपूर] एक प्रकार का बढ़िया कपूर। बरास।

**भीमाथली**—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

**भीर***—संज्ञा स्त्री० [हिं० भीड़] १. दे० "भीड़"। २. कष्ट। दुःख। तकलीफ। ३. विपत्ति। आफत।

*वि० [सं० भीरु] १. डरा हुआ। भयभीत। २. डरपोक। कायर।

**भीरना***—क्रि० अ० [हिं० भीरु] डरना।

**भीरु**—वि० [सं०] डरपोक। कायर।

**भीरुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर-पोकपन। कायरता। बुजदिली। २. डर। भय।

**भीरुताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता"।

**भीरे***†—क्रि० वि० [हिं० भिड़ना] समीप। नजदीक। पास।

**भील**—संज्ञा पुं० [सं० भिल्ल] [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति।

**भीम***—संज्ञा पुं० [सं० भीम] भीमसेन।

**भीष***—संज्ञा स्त्री० [सं० भिक्षा] भीख।

**भीषज***†—संज्ञा स्त्री० [सं० भेषज] वैद्य।

**भीषण**—वि० [सं०] १. देखने में बहुत भयानक। डरावना। २. उग्र या दुष्ट।

संज्ञा पुं० [ सं० ] भयानक रस ।

**भीषणता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भीषण होने का भाव । डरावनापन । भयंकरता ।

**भीषन***—वि० दे० "भीषण" ।

**भीषम***—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म" ।

**भीष्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भयानक रस । ( साहित्य ) २. शिव । महादेव । ३. राक्षस । ४. राजा शांतनु के पुत्र जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । देवव्रत । गांगेय ।

वि० भीषण । भयंकर ।

**भीष्मक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विदर्भ देश के एक राजा जो रुक्मिणी के पिता थे ।

**भीष्मपंचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पंचमी तक के पाँच दिन ।

**भीष्मपितामह**—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म" ।

**भीसम***—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म" ।

**भुँइ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भूमि ] पृथिवी । भूमि ।

**भुँइफोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० भुइँ + फोड़ना ] एक प्रकार की बरसाती खुंभी । गरजुआ ।

**भुँइँहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भुइँ + घर ] १. वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो । २. तहखाना ।

**भुँकाना**—क्रि० स० [ हिं० भूँकना ] किसी को भूँकने में प्रवृत्त करना ।

**भुंज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भोजन ।

**भुँजना**—क्रि० अ० दे० "भूनना" ।

**भुंडा**—वि० [ सं० रुंड का अनु० ] १. बिना सींग का । २. दुष्ट । बदमाश ।

**भुअंग***—संज्ञा पुं० [ सं० भुजंग ] साँप ।

**भुअंगम***—संज्ञा पुं० [ सं० भुजंगम ] साँप ।

**भुअन***—संज्ञा पुं० दे० "भुवन" ।

**भुआर***—संज्ञा पुं० दे० "भुआल" ।

**भुआल***—संज्ञा पुं० [ सं० भूपाल ] राजा ।

**भुइँ***—संज्ञा स्त्री० [ सं० भूमि ] भूमि । पृथ्वी ।

**भुइँआँवला**—संज्ञा पुं० [ सं० भूम्यामलक ] एक घास जो ओषधि के काम में आती है ।

**भुइँचाल, भुइँडोल**—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप" ।

**भुइँपाल**—संज्ञा पुं० दे० "भूपाल" ।

**भुइँहार**—संज्ञा पुं० दे० "भूमिहार" ।

**भुक***—संज्ञा पुं० [ सं० भुज् ] १. भोजन । खाद्य । आहार । २. अग्नि । आग ।

**भुकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] सड़े हुए खाद्य पदार्थों पर निकलनेवाली एक वनस्पति ।

**भुकराँद, भुकरायँध**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भुकड़ी ] सड़ने की दुर्गंध ।

**भुक्खड़**—वि० [ हिं० भूख + अड़ ( प्रत्य० ) ] १. जिसे भूख लगी हो । भूखा । २. वह जो बहुत खाता हो । पेटू । ३. दरिद्र । कंगाल ।

**भुक्त**—वि० [ सं० ] १. जो खाया गया हो । भक्षित । २. भोगा हुआ । उपभुक्त ।

**भुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भोजन । आहार । २. लौकिक सुख-भोग । ३. कब्जा ।

**भुखमरा**—वि० [ हिं० भूख + मरना ] १. जो भूखों मरता हो । भुक्खड़ । २. पेटू ।

**भुखाना**‡—क्रि० अ० [ हिं० भूख ] भूख से पीड़ित होना । भूखा होना ।

**भुखालु**—वि० दे० "भूखा" ।

**भुगत***†—संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति" ।

**भुगतना**—क्रि० स० [ सं० भुक्ति ] सहना । झेलना । भोगना ।

क्रि० अ० १. पूरा होना । निबटना । २. बीतना । चुकना ।

**भुगतान**—संज्ञा पुं० [ हिं० भुगतना ] १. निपटारा । फैसला । २. मूल्य या देन चुकाना । बेबाकी । ३. देना । देन ।

**भुगताना**—क्रि० स० [ हिं० भुगतना का स० रूप ] १. भुगतने का सकर्मक रूप । पूरा करना । संपादन करना । २. बिताना । लगाना । ३. चुकाना । बेबाक करना । ४. भुगतना का प्रेरणार्थक रूप । झेलना । भोग कराना ५. दुःख देना ।

**भुगाना**—क्रि० स० दे० "भोगनेवाला" ।

**भुगुति***—संज्ञा स्त्री० दे० "भुक्ति" ।

**भुच्च, भुच्चड़**—वि० [ हिं० भूत + चढ़ना ] मूर्ख ।

**भुजंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री भुजंगिना ] साँप ।

**भुजंगप्रयात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णिक वृत्त ।

**भुजंगविजृंभित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णिक वृत्त ।

**भुजंगसंगता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वृत्त ।

**भुजंगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भुजंग ] १. काले रंग का एक पक्षी । भुजैटा । २. दे० "भुजंग" ।

**भुजंगिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गोपाल नामक छंद का दूसरा नाम । २. साँपिन ।

**भुजंगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. साँपिन । नागिन । २. एक वर्णिक वृत्ति ।

**भुजंगेंद्र, भुजंगेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

शेषनाग।

**भुज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाहु। बाँह।

**मुहा०**—भुज में भरना=आलिंगन करना।

२. हाथ। ३. हाथी का सूँड़। ४. शाखा। डाली। ५. प्रांत। किनारा। ६. ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। ७. त्रिभुज का आधार। ८. समकोणों का पूरक कोण। ९. दो की संख्या का बोधक शब्द या संकेत।

**भुजइल***—संज्ञा पुं० दे० "भुजंगा"।

**भुजग**—संज्ञा पुं [सं०] साँप।

**भुजगशिसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति।

**भुजगशिशुसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्ति। भुजगशिशुसुता।

**भुजदंड**—संज्ञा पुं० [सं०] बाहु-दंड।

**भुजपात***—संज्ञा पुं० दे० "भोज-पत्र"।

**भुजपाश**—संज्ञा पुं० [सं०] गल-बाँही। गले में हाथ डालना।

**भुजप्रतिभुज**—संज्ञा पुं० [सं०] सरल क्षेत्र की आमने सामने की भुजाएँ।

**भुजबंद**—संज्ञा पुं० [सं० भुजबंद] बाजूबंद।

**भुजबाथ***—संज्ञा पुं० [हिं० भुज+बाँधना] अँकवार।

**भुजमूल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खवा। पखुआ। मोढ़ा। २. काँख।

**भुजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँह। हाथ।

**मुहा०**—भुजा उठाना या टेकना=प्रतिज्ञा करना।

**भुजाली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भुज+आली (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की बड़ी टेढ़ी छुरी। कुकरी। खुखरी। २. छोटी बरछी।

**भुजिया**—संज्ञा पुं० [हिं० भूजना=भूनना] १. उबाले हुए धान का चावल। २. सूखी भूनी हुई तरकारी।

**भुजैल**—संज्ञा पुं० [सं० भुजंग] भुजंगा पक्षी।

**भुजौना**—संज्ञा पुं० [हिं० भूजना] १. भुना हुआ अन्न। भूना। भूजा। भुजैना। २. भूनने या भुनाने की मजदूरी।

**भुट्टा**—संज्ञा पुं० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्ठ] १. मक्के की हरी बाल। २. जुआर या बाजरे की बाल। ३. गुच्छा। झौद।

**भुठौर**-संज्ञा पुं० [हिं० भूड़+ठौर] घोड़ों की एक जाति।

**भुथरा**—वि० [अनु०] (शस्त्र) जिसकी धार तेज न हो।

**भुथराई**—संज्ञा स्त्री० दे० "भुथरा-पन"।

**भुथरापन**—संज्ञा पुं० [हिं० भुथरा+पन (प्रत्य०)] भुथरा, कुंठित या कुंद होने का भाव।

**भुन**—संज्ञा पुं० [अनु०] मक्खी आदि का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।

**भुनगा**—संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] १. एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा। २. कीड़ा। पतिंगा।

**भुनना**—क्रि० अ० [हिं० भूनना] भूनने का अकर्मक रूप। भूना जाना। क्रि० अ० भुनाने का अकर्मक रूप।

**भुनभुनाना**—क्रि० अ० [अनु०] १. भुन भुन शब्द करना। २. मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना। बड़बड़ाना।

**भुनवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "भुनाई"।

**भुनाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भुनाना] भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**भुनाना**—क्रि० स० [हिं० भूनना] भूनने का प्रेरणार्थक रूप।

क्रि० स० [सं० भंजन] बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना।

**भुवि***—संज्ञा स्त्री० [सं० भू] पृथ्वी। भूमि।

**भुरकना**—क्रि० अ० [सं० भुरण] १. सूखकर भुरभुरा हो जाना। २. भूलना

क्रि० स० दे० "भुरभुराना"।

**भुरकाना**—क्रि० स० [हिं० भुरकना] १. भुरभुरा करना। २. छिड़कना। भुरभुराना। ३. भुलवाना। बहकाना।

**भुरकुस**—संज्ञा पुं० [हिं० भुरकना] चूर्ण।

**मुहा०**—भुरकुस निकलना=१. चूर चूर होना। २. इतनी मार खाना कि हड्डी पसली चूर चूर हो जाय। ३. नष्ट होना।

**भुरता**—संज्ञा पुं० [भुरकना या भुरभुरा] १. दबकर विकृतावस्था को प्राप्त पदार्थ। २. चोखा या भरता नाम का सालन।

**भुरभुरा**—वि० [अनु०] [स्त्री० भुरभुरी] जिसके कण थोड़ा आघात लगने पर भी अलग हो जायँ। बलुआ।

**भुरभुराना**—क्रि० स० [अनु०] १. (चूर्ण आदि) छिड़कना। भुरकना। २. भुरभुरा करना।

**भुरवना***—क्रि० स० [सं० भ्रमण] भुलवाना। भ्रम में डालना। भुल-वाना

**भुरहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भोर ] सवेरा। तड़का।

**भुराई***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भोला ] भोलापन।

संज्ञा पुं० [ हिं० भूरा ] भूरापन।

**भुराना***†—क्रि० स० दे० "भुरवना"।

क्रि० अ० दे० "भूलना"।

**भुलक्कड़**—वि० [ हिं० भूलना ] जो बराबर भूल जाता हो। जिसका स्वभाव भूलने का हो।

**भुलवाना**—क्रि० स० [ हिं० भूलना का प्रेर० ] १. भूलना का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २. दे० "भुलाना"।

**भुलसना** —क्रि० स० [ हिं० भुलभुला ] गरम राख में झुलसना।

**भुलाना**—क्रि० स० [ हिं० भूलना ] १. भूलने का प्रेरणार्थक रूप। भ्रम में डालना। २. भूलना। विस्मृत करना।

*†क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। २. भटकना। भरमना। राह भूलना। ३. भूल जाना। विस्मरण होना।

**भुलावा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भूलना ] धोखा।

**भुवंग**—संज्ञा पुं० [ सं० भुजंग ] साँप।

**भुवंगम**—संज्ञा पुं० [ सं० भुजंगम ] साँप।

**भुवः**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य्य के अंतर्गत है। अंतरिक्ष लोक।

**भुव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अग्नि।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रू ] भौंह। भ्रू।

**भुवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जगत्। २. जल। ३. जन। लोग। ४ लोक। पुराणानुसार लोक चौदह हैं। भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात स्वर्ग लोक हैं और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत्, महातल, रसातल और पाताल ये सात पाताल हैं। ५. चौदह की संख्या का द्योतक शब्द संकेत। ६. सृष्टि।

**भुवनकोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भूमंडल। पृथिवी। २. ब्रह्मांड।

**भुवनपति, भुवपाल**†*—संज्ञा पुं० दे० "भूपाल"।

**भुवर्लोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात लोकों में दूसरा लोक। अंतरिक्ष लोक।

**भुवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० घूआ ] घूआ। रुई।

**भुवार***—संज्ञा पुं० दे० "भुवाल"।

**भुवाल***—संज्ञा पुं० [ सं० भूपाल ] राजा।

**भुवि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भू ] भूमि। पृथिवी।

**भुशुंडी**—संज्ञा पुं० दे० "काक भुशुंडी"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्राचीन अस्त्र।

**भुस**—संज्ञा पुं० [ सं० तुष ] भूसा।

**भुसी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भूसा ] भूसी।

**भूँकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना ( कुत्तों का )। ( कुत्तों की बोली ) २. व्यर्थ बकना।

**भूँचाल**—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

**भूँजना**†—क्रि० स० [ हिं० भूनना ] १. दे० "भूनना"। २. दुःख देना। सताना।

क्रि० स० [ सं० भोग ] भोगना।

**भूँजा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० भूनना ] १. भूना हुआ। चबेना। २. भड़भूँजा।

**भूँडोल**—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

**भू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। २. स्थान।

संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रू ] भौंह।

**भूआ**—संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।

*संज्ञा पुं० दे० "घूआ"।

**भूई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० घूआ ] रूई के समान मुलायम छोटा टुकड़ा।

**भूकंप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा कुछ प्राकृतिक कारणों से हिल उठना। भूचाल। भूडोल।

**भूख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बुभुक्षा ] १. खाने की इच्छा। क्षुधा। २. आवश्यकता। जरूरत। ( व्यापारी ) ३. कामना।

**भूखन***—संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।

**भूखना**†*—क्रि० स० [ सं० भूषण ] सजाना।

**भूख-हड़ताल**—संज्ञा स्त्री० दे० "अनशन"।

**भूखा**—वि० पुं० [ हिं० भूख ] [ स्त्री० भूखी ] १. जिसे भूख लगी हो। क्षुधित। चाहनेवाला। इच्छुक। २. दरिद्र। गरीब।

**भूगर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पृथ्वी का भीतरी भाग। २. विष्णु।

**भूगर्भशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन किन तत्वों का बना है और उसका वर्त्तमान रूप किन कारणों से हुआ है।

**भूगोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पृथ्वी। २. वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों आदि का ज्ञान होता है।

२. वह ग्रंथ जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक विभागों आदि का वर्णन हो।

**भूचर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. भूमि पर रहनेवाला प्राणी। ३. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।

**भूचरी**—संज्ञा स्त्री [सं०] योग में समाधि अंग की एक मुद्रा।

**भूचाल**—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

**भूटान**—संज्ञा पुं० [देश०] हिमालय का एक प्रदेश जो नेपाल के पूर्व में है।

**भूटानी**—वि० [हिं० भूटान+ई (प्रत्य०)] भूटान देश का। भूटान-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. भूटान देश का निवासी। २. भूटान देश का घोड़ा।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

**भूटिया बादाम**—संज्ञा पुं० [हिं० भूटान+फा० बादाम] एक पहाड़ी वृक्ष। इस वृक्ष का फल खाया जाता है। कपासी।

**भूडोल**—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

**भूत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य। महाभूत। २. सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी।

यौ०—भूतदया=जड़ और चेतन सबके साथ की जानेवाली दया।

३. प्राणी। जीव। ४. सत्य। ५. बीता हुआ समय। ६. व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता हो कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। ७. पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं। ८. मृत-शरीर। शव। ९. मृत-प्राणी की आत्मा। १०. प्रेत। जिन। शैतान।

मुहा०—भूत चढ़ना या सवार होना=१. बहुत अधिक आग्रह या हठ होना। २. बहुत अधिक क्रोध होना। भूत की मिठाई या पकवान=१. वह पदार्थ जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो। २. सहज में मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय।

वि० १. गत। बीता हुआ। गुजरा हुआ। भूत काल। २. युक्त। मिला हुआ। ३ समान। सदृश। ४. जो हो चुका हो।

**भूतगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भूत की सी गति। २. विलक्षण चाल।

**भूतत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भूत होने का भाव। २. भूत का धर्म्म।

**भूतत्वविद्या**—संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भशास्त्र"।

**भूतनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**भूतपूर्व**—वि० [सं०] वर्तमान से पहले का। इससे पहले का।

**भूतभावन**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**भूत भाषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैशाची भाषा।

**भूत यज्ञ**—संज्ञा पुं० [सं०] पंचयज्ञ में से एक यज्ञ। भूतबलि। बलिवैश्वदेव।

**भूतल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पृथ्वी का ऊपरी तल। २. संसार। दुनिया। ३. पाताल।

**भूतवाद**—संज्ञा पुं० दे० "पदार्थ-वाद"।

**भूतांकुश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कश्यप ऋषि। २. गाव जुबान।

**भूतागति**—संज्ञा स्त्री० दे० "भूत-गति"।

**भूतात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० भूतात्मन्] १. शरीर। २. परमेश्वर। ३. शिव। ४. जीवात्मा।

**भूति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैभव। धनसंपत्ति। राज्य श्री। २. भस्म। राख। ३. उत्पत्ति। ४. वृद्धि। अधिकता। ५. अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ।

**भूतिनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० भूत] १. भूत योनि में प्राप्त स्त्री। २. शाकिनी, डाकिनी।

**भूतृण**—संज्ञा पुं० [सं०] रूसा घास।

**भूतेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**भूतोन्माद**—संज्ञा पुं० [सं०] वह उन्माद जो पिशाचों के आक्रमण के कारण हो।

**भूदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण।

**भूधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पहाड़। २. शेषनाग। ३. विष्णु। ४. राजा।

**भून***—संज्ञा पुं० दे० "भ्रूण"।

**भूनना**—क्रि० स० [सं० भर्जन] १. आग पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। २. गरम घी या तेल आदि में डालकर कुछ देर तक चलाना। ३. तलना। ४. बहुत अधिक कष्ट देना।

**भूप, भूपति**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**भूपाल**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**भूपाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

**भूभल**—संज्ञा स्त्री० [सं० भू+भर्ज या अनु० ?] गर्म राख या धूल। गर्म रेत। तत्तूरी।

**भूमुरि***—संज्ञा स्त्री० दे० "भूभल"।

**भूभृत्**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

**भूमंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी।

**भूमध्यसागर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] युरोप और अफ्रिका के बीच का समुद्र।

**भूमा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ईश्वर। परमात्मा।

वि० बहुत अधिक।

**भूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। जमीन।

मुहा०—भूमि : होना=पृथ्वी पर गिर पड़ना। २. स्थान। जगह। ३. आधार। जड़। बुनियाद। ४. देश। प्रदेश। प्रांत। ५. योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएँ जो क्रम क्रम से योगी को प्राप्त होती हैं। ६. क्षेत्र।

**भूमिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रचना। २. भेष बदलना। ३. किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुखबंध। दीबाचा। ४. वेदांत के अनुसार चित्त की ये पाँच अवस्थाएँ—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ५. वह आधार जिस पर कोई दूसरी चीज खड़ी की जाय। पृष्ठभूमि। ६. अभिनय।

संज्ञा स्त्री० [ सं० भूमि ] पृथ्वी। जमीन।

**भूमिज**—वि० [सं० ] भूमि से उत्पन्न।

**भूमिजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीताजी।

**भूमिपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं० ] मंगल ग्रह।

**भूमिया**—संज्ञा पुं० [ सं० भूमि+इया (प्रत्य०) ] १. जमींदार। २. ग्राम-देवता।

**भूमिसुत**—संज्ञा पुं० [सं०] मंगल ग्रह।

**भूमिसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] जानकी।

**भूमिहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बिहार और उत्तर प्रदेश में बसनेवाली एक प्रतिष्ठित जाति।

**भूय**—अव्य० [ सं० भूयस् ] पुनः। फिर।

**भूयसी**—वि० [ सं० ] १. बहुत अधिक। २. बार बार।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह दक्षिणा जो विवाह आदि शुभकार्य होने पर सभी उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।

**भूर**—वि० [ सं० भूरि] बहुत अधिक।

संज्ञा पुं० [ हिं० भुरभुरा ] बालू।

**भूरज**—संज्ञा पुं० [ सं० भूर्ज ] भोजपत्र।

संज्ञा पुं० [ सं० भू+रज ] धूल। गर्द। मिट्टी।

**भूरजपत्र**—संज्ञा पुं० दे० "भोजपत्र"।

**भूरपूर***†—वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर"।

**भूरसी दक्षिणा**—संज्ञा स्त्री० दे० "भूयसी"।

**भूरा**—संज्ञा पुं० [ सं० बभ्रु ] १. मिट्टी का सा रंग। खाकी रंग। २. कच्ची चीनी। ३. चीनी।

वि० मटमैले रंग का। खाकी।

**भूरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० भूरता ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र। ५. स्वर्ण। सोना।

वि० [ सं० ] १. अधिक। बहुत। २. भारी।

**भूरितेज**—संज्ञा पुं० [ सं० भूरितेजस् ] १ अग्नि। २. सोना।

**भूर्जपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भोजपत्र।

**भूल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भूलना ] १. भूलने का भाव। २. गलती। चूक। ३. कसूर। दोष। अपराध। ४. अशुद्धि। गलती।

**भूलक***†—संज्ञा पुं० [ हिं० भूल+क (प्रत्य०) ] भूल करनेवाला। जिससे भूल होती हो।

**भूलना**—क्रि० स० [ सं० विह्वल ? ] १. विस्मरण करना। याद न रखना। २. गलती करना। ३. खो देना।

क्रि० अ० १. विस्मृत होना। याद न रहना। २. चूकना। गलती होना। ३. आसक्त होना। लुभाना। ४. घमंड में होना। इतराना। ५. खो जाना।

वि० भूलनेवाला। जैसे—भूलना स्वभाव।

**भूलभूलैयाँ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भूल+भुलाना+ऐयाँ (प्रत्य०) ] १. वह घुमावदार और चक्कर में डालनेवाली इमारत जिसमें जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २. चक्कर। ३. घुमाव-फिराव की बात या घटना।

**भूलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार। जगत्।

**भूवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० घुआ ] रूई।

वि० उजला। सफेद।

**भूशायी**—वि० [ सं० भूशायिन् ] १. पृथ्वी पर सोनेवाला। २. पृथ्वी पर गिरा हुआ। ३. मृतक। मरा हुआ।

**भूषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अलंकार। गहना। जेवर। २. वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़ती हो।

**भूषन***—संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।

**भूषना***†—क्रि० स० [ सं० भूषण ] भूषित करना। अलंकृत करना। सजाना।

**भूषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भूषण ] १. गहना। जेवर। २. सजाने की क्रिया।

**भूषित**—वि० [ सं० ] १. गहना पहने हुआ। अलंकृत। २. सजाया हुआ। सँवारा हुआ।

**भूसन***†—संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।

**भूसना***—क्रि० अ० दे० "भूँकना"।

**भूसा**—संज्ञा पुं० [ सं० तुष ] गेहूँ, जौ आदि की बालों का महीन और टुकड़े टुकड़े किया हुआ छिलका।

**भूसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भूसा ] १. भूसा। २. किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।

**भूसुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता।

**भूसुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मण।

**भूहरा***—संज्ञा पुं० दे० "भुँइहरा"।

**भृंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भौंरा। २. एक प्रकार का कीड़ा। बिलनी।

**भृंगराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भँगरा नामक वनस्पति। भँगरैया। २. काले रंग का एक पक्षी। भीमराज।

**भृंगी**—संज्ञा पुं० [ सं० भृंगिन् ] शिव जी का एक पारिषद् या गण।
संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भौंरी। २. बिलनी।

**भृकुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भौंह।

**भृगु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध मुनि। प्रसिद्ध है कि इन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी। २. परशुराम। ३. शुक्राचार्य। ४. शुक्रवार। ५. शिव।

**भृगुकच्छ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आधुनिक भड़ोच जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था।

**भृगुनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परशुराम।

**भृगुसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परशुराम।

**भृगुरेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।

**भृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [स्त्री० भृता] दास।
वि० [ सं० ] १. भरा हुआ। पूरित। २. पाला हुआ। पोषण किया हुआ।

**भृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नौकरी। २. मजदूरी। ३. वेतन। तनखाह। ४. मूल्य। दाम। ५. भरना। ६. पालन करना।

**भृत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० भृत्या ] नौकर।

**भृश**—क्रि० वि० [ सं० ] बहुत। अधिक।

**भेंगा**—वि० [ देश० ] जिसकी आँखों की पुतलियाँ टेढ़ी तिरछी रहती हों। ढेरा।

**भेंट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भेंटना ] १. मिलना। मुलाकात। २. उपहार। नजराना।

**भेंटना***†—क्रि० स० [ हिं० भेंट ] १. मुलाकात करना। २. गले लगाना।

**भेंवना**—क्रि० स० [ हिं० भिगोना ] भिगोना।

**भेद, भेउ***†—संज्ञा पुं० [ सं० भेद ] रहस्य।

**भेक**—संज्ञा पुं० दे० "मेंढक"।

**भेख**—संज्ञा पुं० दे० "वेष"।

**भेखज***—संज्ञा पुं० दे० "भेषज"।

**भेजना**—क्रि० स० [ सं० व्रजन् ] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना।

**भेजवाना**—क्रि० स० [ हिं० भेजना का प्रेर० ] भेजने का काम दूसरे से कराना।

**भेजा**—संज्ञा पुं० [ ? ] खोपड़ी के भीतर का गूदा। मग्ज।

**भेड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मेष ] [ पुं० भेड़ा ] बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर।

**मुहा०**—भेड़िया धसान=बिना परिणाम सोचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।

**भेड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भेड़ ] भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।

**भेड़िया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भेड़ ] कुत्ते की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली मांसाहारी जंतु। सियार। शृगाल।

**भेड़िहर**†—संज्ञा पुं० दे० "गड़ेरिया"।

**भेड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़"।

**भेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भेदने या छेदने की क्रिया। २. शत्रु-पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना। ३ भीतरी छिपा हुआ हाल। रहस्य। ४. मर्म। तात्पर्य ५. फर्क। ६. प्रकार। किस्म।

**भेदक**—वि० [ सं० ] १. छेदनेवाला। २. रेचक। दस्तावर। (वैद्यक)

**भेदकातिशयोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें "औरै" "औरै" शब्द द्वारा किसी वस्तु की 'अति' वर्णन की जाती है।

**भेदड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] रबड़ी। बसौंधी।

**भेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० भेदनीय, भेद्य] भेदने की क्रिया। छेदना। बेधना।

**भेदना**—संज्ञा पुं० [ सं० भेदन ] बेधना। छेदना।

**भेदभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंतर। फरक।

**भेदिया**—संज्ञा पुं० [ सं० भेद+इया (प्रत्य०) ] १. जासूस। गुप्तचर। २. गुप्त रहस्य जाननेवाला।

**भेदी**—संज्ञा पुं० दे० "भेदिया"।
वि० [सं० भेदिन् ] भेदन करनेवाला।

**भेदीसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बढ़इयों का छेदने का औजार। बरमा।

**भेड़ू**—संज्ञा पुं० दे० "भेड़िया" ।

**भेद्य**—वि० [ सं० ] जो भेदा या छेदा जा सके ।

**भेना**—संज्ञा. स्त्री० [ हिं० बहिन ] बहिन ।

**भेना**†—क्रि० स० दे० "भेजना" ।

**भेरा***†—संज्ञा पुं० दे० "बेड़ा" ।

**भेरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बड़ा ढोल या नगाड़ा । ढक्का । दुंदुभी ।

**भेरीकार**—संज्ञा पुं० [ सं० भेरी + कार ( प्रत्य० ) [ स्त्री० भेरीकारी ] भेरी बजानेवाला ।

**भेल**—क्रि० [ सं० भव ( मैथिल ) ] हुआ

**भेला***†—संज्ञा पुं० [ हिं० भेंट ] १. भिड़ंत । २. भेंट । मुलाकात ।
संज्ञा पुं० दे० "भिलावाँ" ।
संज्ञा पुं० [ ? ] बड़ा गोला या पिंड ।

**भेली**†—संज्ञा स्त्री० [ ] गुड़ या और किसी चीज का गोल बट्टी या पिंडी ।

**भेव***†—संज्ञा पुं० [ सं० भेद १. मर्म की बात । भेद । रहस्य । २. बारी । पारी ।

**भेवना***†—क्रि० स० [हिं० भिगोना] भिगोना ।

**भेष**—संज्ञा पुं० दे० "वेष" ।

**भेषज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] औषध । दवा ।

**भेषना***—क्रि० स० [ हिं० भेष ] १. भेष बनाना । स्वाँग बनाना । २. पहनना ।

**भेस**—संज्ञा पुं० [सं० वेष] १. बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि । वेष । २. कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि ।

**भेसज***—संज्ञा पुं० दे० "भेषज" ।

**भेसना***†—क्रि० स० [ सं० वेश, हिं० भेस] वेश धारण करना । वस्त्रादि पहनना ।

**भैंस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० महिष ] १. गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उससे बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग दूध के लिए पालते हैं । २. एक प्रकार की मछली ।

**भैंसा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भैंस ] भैंस का नर ।

**भैंसासुर**—संज्ञा पुं० दे० "महिषासुर" ।

**भै***—संज्ञा पुं० दे० "भय" ।

**भैक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव । २. भीख ।

**भैक्षचर्या, भैक्षवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भिक्षा माँगने की क्रिया ।

**भैचक, भैचक्क***†—वि० [ हिं० भय + चक्र=चकित ] चकपकाया हुआ । चकित ।

**भैजन***—वि० [ हिं० भय + जनक ] भयप्रद ।

**भैदा***—वि० [ सं० भय + दा (प्रत्य०) ] भयप्रद ।

**भैन, भैना**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० बहिन ] बहिन ।

**भैने**—संज्ञा पुं० भांजा ।

**भैयंसा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० भाई + अंश ] सम्पत्ति में भाइयों का हिस्सा या अंश ।

**भैया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भाई ] १. भाई । भ्राता । २. बराबरवालों या छोटों के लिए संबोधन शब्द ।

**भैयाचारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "भाई-चारा" ।

**भैयादूज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रातृ द्वितीया ] कार्तिक शुक्ल द्वितीया । भाईदूज । इस दिन बहनें भाइयों को टीका लगाती हैं ।

**भैरव**—वि० [ सं० ] १. देखने में भयंकर । भयानक । २. भीषण शब्द-वाला ।
संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शंकर । महादेव । २. शिव के एक प्रकार के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं । ३. साहित्य में भयानक रस । ४. एक राग जो छः रागों में से मुख्य है । ५. भयानक शब्द ।

**भैरवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की एक मूर्ति मानी जाती हैं । चामुंडा । (तंत्र) २. एक रागिनी जो सबेरे गाई जाती है ।

**भैरवीचक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तान्त्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट समयों में देवी का पूजन करने के लिए एकत्र होता है ।

**भैरवीयातना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भैरवी + यातना ] पुराणानुसार वह यातना जो प्राणियों को मरते समय भैरवजी देते हैं ।

**भैषज, भैषज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] औषध । दवा ।

**भैहा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० भय + हा ( प्रत्य० ) ] १. भयभीत । डरा हुआ । २. जिस पर भूत या किसी देव का आवेश आता हो ।

**भोंकना**—क्रि० स० [ भक से अनु० ] बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज जोर से धँसाना । घुसेड़ना ।

**भोंडा**—वि० [ हिं० भद्दा या भौं से अनु० ] [ स्त्री० भोंडी ] भद्दा । बद-सूरत । कुरूप ।

**भोंडापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० भोंडा + पन (प्रत्य०) ] १. भद्दापन । २. बेहूदगी ।

**भोंदू**—वि० [ हिं० बुद्धू ] बेवकूफ । मूर्ख ।

**भोंपा, भोंपू**—संज्ञा पुं० [ भों अनु०+पू (प्रत्य०) ] १. एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाते हैं। २. कल-कारखानों आदि की बहुत जोर से बजनेवाली सीटी।

**भोयाक**†—वि० [ ? ] १. युक्त। सहित। २. डुबाया हुआ। भींगा हुआ।

**भोंसले**—संज्ञा पुं० [ देश० ] महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि। (महाराज शिवाजी और रघुनाथराव आदि इसी कुल के थे।)

**भो**—क्रि० अ० [ हिं० भया ] भया। हुआ।

**भोकस***†—वि० [ हिं० भूख ] भुक्खड़।

संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार के राक्षस।

**भोकार**—संज्ञा स्त्री० [ भो से अनु० +कार (प्रत्य०) ] जोर जोर से रोना।

**भोक्ता**—वि० [ सं० भोक्तृ ] [ संज्ञा भोक्तृत्व ] १. भोजन करनेवाला। २. भोग करनेवाला। भोगनेवाला। ३. ऐयाश।

**भोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुख या दुःख आदि का अनुभव करना। २. सुख। विलास। ३. दुःख। कष्ट। ४. स्त्रीसंभोग। विषय। ५. धन। ६. पालन। ७. भक्षण। आहार करना। ८. देह। ९. पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया या भोगा जाता है। प्रारब्ध। १०. फल। अर्थ। ११. देवता आदि के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य। १२. सूर्य आदि ग्रहों के राशियों में रहने का समय।

**भोगना**—क्रि० अ० [ सं० भोग ] १. सुख-दुःख या शुभाशुभ कर्मफलों का अनुभव करना। भुगतना। २. सहन करना। सहना।

**भोगबंधक**—संज्ञा पुं० [ सं० भोग्य +हिं० बंधक=रेहन ] बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि भोगने का अधिकार होता है। दृष्टबंधक का उलटा।

**भोगली**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. नाक में पहनने का लौंग। २. टेढ़का या तरकी नाम का कान में पहनने का गहना। ३. वह छोटी पतली पोली कील जो लौंग या कान के फूल आदि को अटकाने के लिए उसमें लगाई जाती है।

**भोगवना***—क्रि० अ० [ सं० भोग ] भोगना।

**भोगवाना**—क्रि० स० [ हिं० भोगना का प्रेर० रूप ] दूसरे से भोग कराना।

**भोग-विलास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आमोद-प्रमोद। सुख-चैन।

**भोगाना**—क्रि० स० दे० "भोगवाना"।

**भोगी**—संज्ञा पुं० [ सं० भोगिन् ] [ स्त्री० भोगिनी ] भोगनेवाला।

वि० १. सुखी। २. इंद्रियों का सुख चाहनेवाला। ३. भुगतनेवाला। ४. विषयासक्त। ५. आनंद करनेवाला। ६. सांप।

**भोग्य**—वि० [ सं० ] भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

**भोग्यमान**—वि० [ सं० ] जो भोगा जाने को हो, अभी भोगा न गया हो।

**भोज**—संज्ञा पुं० [ सं० भोजन ] १. बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना-पीना। जेवनार। दावत। २. खाने की चीज।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भोजकट नामक देश जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं। २. चंद्रवंशियों के एक वंश का नाम। ३. श्रीकृष्ण के सखा एक ग्वाल का नाम। ४. कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा जो महाराज रामभद्र देव के पुत्र थे। ५. मालवे के परमार-वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् कवि थे।

**भोजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भोग करनेवाला। भोगी। २. ऐयाश। विलासी।

**भोजदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कान्यकुब्ज के महाराज भोज।

वि० दे० "भोज" (५)।

**भोजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भक्षण करना। खाना। २. खाने की सामग्री।

**भोजनखानी***—संज्ञा स्त्री० दे० "भोजनालय"।

**भोजनभट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० भोजन +भट ] बहुत अधिक खानेवाला।

**भोजनशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रसोईघर।

**भोजनालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रसोईघर।

**भोजपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० भूर्जपत्र ] एक प्रकार का मँझोले आकार का वृक्ष। इसकी छाल प्राचीन काल में ग्रंथ और लेख आदि लिखने में बहुत काम आती थी।

**भोजपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भोजपुर+ई (प्रत्य०) ] भोजपुर की बोली।

संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी।

वि० भोजपुर का। भोजपुर-संबंधी।

**भोजराज**—संज्ञा पुं० दे० "भोज" (५)।

**भोजविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भोज+विद्या ] इंद्रजाल। बाजीगरी।

**भोजी**—संज्ञा पुं० [ सं० भोजिन् ] खानेवाला।

**भोजू***—संज्ञा पुं० [ सं० भोजन ] भोजन ।

**भोज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खाद्य पदार्थ । वि० खाने योग्य । जो खाया जा सके ।

**भोट**—संज्ञा पुं० [ सं० भोटंग ] १. भूटान देश । २. एक प्रकार का बड़ा पत्थर ।

**भोटा***—वि० दे० "भोला" ।

**भोटिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० भोट+इया ( प्रत्य० ) ] भोट या भूटान देश का निवासी ।
संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा ।
वि० भूटान देश-संबंधी । भूटान का ।

**भोटिया बादाम**—संज्ञा पुं० [ हिं० भोटिया+फ़ा० बादाम ] १. आलू-बुखारा । २. मूँगफली ।

**भोडर, भोडल**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. अभ्रक । अबरक । २. अभ्रक का चूर । बुकनी ।

**भोथरा**—वि० [ अनु० ] जिसकी धार तेज न हो । कुंठित । कुंद ।

**भोना***—क्रि० अ० [ हिं० भीनना ] १. भीनना । संचरित होना । २. लिप्त होना । लीन होना । ३. आसक्त होना ।

**भोपा**—संज्ञा पुं० [ भों से अनु० ] १. एक प्रकार की तुरही । भोंपू । २. मूर्ख ।

**भोर**—संज्ञा पुं० [ सं० विभावरी ] तड़का ।
*† संज्ञा पुं० [ सं० भ्रम ] धोखा । भ्रम ।
वि० चकित । स्तंभित ।
* वि० [ हिं० भोला ] भोला । सीधा ।

**भोरना***—क्रि० स० दे० "भोराना" ।

**भोरा***†—संज्ञा पुं० दे० "भोर" ।
*† वि० भोला । सीधा । सरल ।

**भोराई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "भोलापन" ।

**भोराना***—क्रि० स० [ हिं० भोर+आना ( प्रत्य० ) ] भ्रम में डालना । बहकाना ।
क्रि० अ० धोखे में आना ।

**भोरानाथ***—संज्ञा पुं० [ हिं० भोलानाथ ] शिव ।

**भोल***—संज्ञा पुं० दे० "भोर" ।

**भोलना***—क्रि० स० [ हिं० भुलाना ] भुलावा देना । बहकाना ।

**भोला**—वि० [ हिं० भूलना ] १. सीधा-सादा । सरल । २. मूर्ख । बेवकूफ ।

**भोलानाथ**—संज्ञा पुं० [ हिं० भोला+सं० नाथ ] महादेव । शिव ।

**भोलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० भोला+पन ( प्रत्य० ) ] १. सिधाई । सरलता । सादगी । २. नादानी । मूर्खता ।

**भोला-भाला**—वि० [ हिं० भोला+अनु० भाला ] सीधा-सादा । सरल चित्त का ।

**भोहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० भुँइहरा ] १. भुँइहरा । २. खोह । गुफा ।

**भौं**—संज्ञा स्त्री० दे० "भौंह" ।

**भौंकना**—क्रि० अ० [ भौं भौं से अनु० ] १. भौं भौं शब्द करना । कुत्तों का बोलना । भूँकना । २. बहुत बकवाद करना ।

**भौंचाल**†—संज्ञा पुं० दे० "भूकंप" ।

**भौंतुआ**—संज्ञा पुं० [ हिं० भ्रमना=घूमना ] १. काले रंग का एक कीड़ा जो प्रायः वर्षा ऋतु में जलाशयों आदि में जल-तल के ऊपर चक्कर काटता हुआ चलता है । २. एक प्रकार का रोग जिसमें ज्वर के साथ शरीर का कोई अंग फूल जाता है । फाइलेरिया । ३. तेली का बैल जो सबेरे से ही कोल्हू में जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है ।

**भौंर**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रमर ] १. भौंरा । २. तेज बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्कर । आवर्त्त । नाँद । ३. मुश्की घोड़ा ।

**भौंरा**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रमर ] [ स्त्री० भँवरी ] १. काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा जो देखने में बहुत हढांग प्रतीत होता है । २. बड़ी मधुमक्खी । सारंग । डंगर । ३. काली या लाल भिड़ । ४. एक प्रकार का खिलौना । ५. हिंडोले की वह लकड़ी जिसमें डोरी बँधी रहती है । ६. वह कुत्ता जो गड़रियों की भेड़ों की रखवाली करता है ।
संज्ञा पुं० [ सं० भ्रमण ] १. मकान के नीचे का घर । तहखाना । २. वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है । खात । खत्ता ।

**भौंराना***—क्रि० स० [ सं० भ्रमण ] १. घुमाना । परिक्रमा कराना । २. विवाह की भाँवर दिलाना ।
क्रि० अ० घूमना । चक्कर काटना ।

**भौंराला**—वि० [ हिं० भँवर ] घुँघराला या छल्लेदार ( बाल ) ।

**भौंरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रमण ] १. पशुओं के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ वह चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण-दोष का निर्णय होता है । २. विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना । भाँवर । ३. तेज बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर । आवर्त्त । ४. अंगाकड़ी । बाटी ( पकवान ) ।

**भौंह**—संज्ञा स्त्री० [ सं० भ्रू ] आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या

बाल। भृकुटी। भौं।

मु०—भौं चढ़ाना या तानना=१. नाराज होना। क्रुद्ध होना। २. त्योरी चढ़ाना। बिगड़ना। भौंह जोहना=खुशामद करना।

**भौंहरा***—संज्ञा पुं० दे० "भुइँहरा"।

**भौ***—संज्ञा पुं० [ सं० भव ] संसार। जगत्।

संज्ञा पुं० [ सं० भय ] डर। खौफ। भय।

**भौकना***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० भभकना ] आग की लपट। ज्वाला।

**भौगिया***†—संज्ञा पुं० [ हिं० भोग+इया ( प्रत्य० ) ] संसार के सुखों का भोगनेवाला।

**भौगोलिक**—वि० [सं०] भूगोल का।

**भौचक**—वि० [ हिं० भय+चकित ] हक्का-बक्का। चकपकाया हुआ। स्तंभित।

**भौज***—संज्ञा स्त्री० दे० "भौजाई"।

**भौजल***—संज्ञा पुं० दे० "भवजाल"।

**भौजाई, भौजी**—संज्ञा स्त्री० दे० "भावज"।

**भौज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह राज्य जो केवल सुख भोग के विचार से होता हो, प्रजापालन के विचार से नहीं।

**भौतिक**—वि० [ सं० ] [ भाव० भौतिकता ] १. पंचभूत-संबंधी। २. पाँचों भूतों से बना हुआ। पार्थिव। ३. शरीर-संबंधी। शरीर का। ४. भूतयोनि का।

**भौतिकवाद**—संज्ञा पुं० दे० "पदार्थवाद"।

**भौतिक विद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भूतों प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

**भौतिक सृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आठ प्रकार की देव योनि, पाँच प्रकार की तिर्यग् योनि और मनुष्य योनि, इन सबकी समष्टि।

**भौन***—संज्ञा पुं० [ सं० भवन ] घर। मकान।

**भौना***†—क्रि० अ० [ सं० भ्रमण ] घूमना।

**भौम**—वि० [ सं० ] १. भूमि-संबंधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न। पृथ्वी से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० मंगल ग्रह।

**भौमवार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंगलवार।

**भौमिक**—संज्ञा पुं० [सं०] जमींदार।

वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।

**भौर***—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रमर ] १. दे० "भौंरा"। २. घोड़ों का एक भेद। ३. दे० "भँवर"।

**भौलिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० बहुला ] एक प्रकार की छायादार नाव।

**भौसा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. भीड़-भाड़। जन-समूह। २. हा-हुल्लड़। गड़बड़।

**भ्रंग***—संज्ञा पुं० दे० "भृंग"।

**भ्रंश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अधःपतन। नीचे गिरना। २. नाश। ध्वंस। ३. भागना।

वि० भ्रष्ट। खराब।

**भ्रकुटि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भृकुटी। भौंह।

**भ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी चीज या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। धोखा। २. संशय। संदेह। शक। ३. एक प्रकार का रोग जिसमें चक्कर आता है। ४. मूर्च्छा। बेहोशी। ५. भ्रमण।

संज्ञा पुं० [ सं० सम्भ्रम ] मान। प्रतिष्ठा। इज्जत।

**भ्रमण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घूमना-फिरना। विचरण। २. आना-जाना। ३. यात्रा। सफर। ४. मंडल। चक्कर। फेरी।

**भ्रमना**—क्रि० अ० [ सं० भ्रमण ] घूमना।

क्रि० अ० [ सं० भ्रम ] १. धोखा खाना। भूल करना। २. भटकना। भूलना।

**भ्रमनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "भ्रमण"।

**भ्रममूलक**—वि० [ सं० ] जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

**भ्रमर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० भ्रमरी ] १. भौंरा।

यौ० भ्रमर-गुफा=योगशास्त्र के अनुसार हृदय के अंदर का एक स्थान।

२. उद्धव का एक नाम।

यौ०—भ्रमरगीत=वह गीत या काव्य जिसमें उद्धव के प्रति व्रज की गोपियों का उपालंभ हो। ३. दोहे का एक भेद। ४. छप्पय का तिरसठवाँ भेद।

**भ्रमरविलासिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त।

**भ्रमरावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भँवरों की श्रेणी। २. मनहरण वृत्त। नलिनी।

**भ्रमवात**—संज्ञा पुं० [सं०] आकाश का वह वायुमंडल जो सर्वदा घूमा करता है।

**भ्रमात्मक**—वि० [सं०] जिससे अथवा जिसके संबंध में भ्रम होता हो। संदिग्ध।

**भ्रमाना***†—क्रि० स० [ हिं० भ्रमना का स० ] १. घुमाना। फिराना। २. बहकाना।

**भ्रमित**—वि० [ सं० ] १. भ्रम में पड़ा हुआ। २. चक्कर खाता हुआ।

**भ्रमी**—वि० [ सं० भ्रमिन् ] १.

जिसे भ्रम हुआ हो। २. चकित भौंचक।

**भ्रष्ट**—वि० [ सं० ] १. गिरा हुआ। पतित। २. जो खराब हो गया हो। बहुत बिगड़ा हुआ। ३. दूषित। ४. बदचलन।

**भ्रष्टा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुलटा। छिनाल।

**भ्रांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तलवार के ३२ हाथों में से एक।

वि० [ सं० ] १. जिसे भ्रांति या भ्रम हुआ हो। भूला हुआ। २. व्याकुल। विकल। ३. उन्मत्त। ४. घुमाया हुआ।

**भ्रांतापह्नुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक काव्यालंकार जिसमें किसी भ्रांति को दूर करने के लिए सत्य वस्तु का वर्णन होता है।

**भ्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १ भ्रम। धोखा। २. संदेह। शक। ३ भ्रमण। ४. पागलपन। ५. भँवरी। घुमेर। ६. भूल-चूक। ७. मोह। प्रमाद। ८. एक प्रकार का काव्यालंकार। इसमें किसी वस्तु को, दूसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से वह दूसरी वस्तु ही समझ लेना वर्णित होता है।

**भ्राजना***—क्रि० अ० [ सं० भ्राजन] शोभा पाना। शोभायमान होना।

**भ्राजमान***—वि० [ हिं० भ्राजना + मान ( प्रत्य० ) ] शोभायमान।

**भ्रात***—संज्ञा पुं० दे० "भ्राता"।

**भ्राता**—संज्ञा पुं० [ सं० भ्रातृ ] सगा भाई।

**भ्रातृजाया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भावज।

**भ्रातृत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भाई होने का भाव या धर्म्म। भाईपन।

**भ्रातृद्वितीया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया। यमद्वितीया। भाई दूज।

**भ्रातृपुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भतीजा।

**भ्रातृभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भाई का सा प्रेम या संबंध। भाई-चारा। भाईपन।

**भ्रातृव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भतीजा।

**भ्रामक**—वि० [ सं० ] १. भ्रम में डालनेवाला। बहकानेवाला। २. घुमानेवाला। चक्कर दिखानेवाला।

**भ्रामर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मधु। शहद। २. दोहे का दूसरा भेद।

वि० भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का।

**भ्रू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भौं। भौंह।

**भ्रूण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्त्री का गर्भ। २. बालक की वह अवस्था जब वह गर्भ में रहता है।

**भ्रूणहत्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गर्भ के बालक की हत्या।

**भ्रूभंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] त्योरी चढ़ाना।

**भ्रूविक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देखना। २. त्योरी चढ़ाना।

**भ्वहरना***†—क्रि० अ० [ हिं० भय + हरना ( प्रत्य० ) ] भयभीत होना। डरना।

—:*:—

# म

**म**—हिंदी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण। इसका उच्चारण स्थान होंठ और नासिका है।

**मंकुर***—संज्ञा पुं० [ सं० मुकुर ] शीशा। आइना।

**मंग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० माँग ] स्त्रियों के सिर की माँग।

**मंगता**—संज्ञा पुं० [ हिं० माँगना + ता ( प्रत्य० ) ] भिखमंगा। भिक्षुक।

**मंगन**—संज्ञा पुं० [ हिं० माँगना ] भिक्षुक।

**मँगनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० माँगना + ई ( प्रत्य० ) ] १. वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त को माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत लौटा दिया जायगा। २. इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। ३. विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चित होता है।

**मँगाना**—क्रि० स० दे० "माँगना"।

**मंगल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.अभीष्ट

की सिद्धि। मनोकामना का पूर्ण होना। २. कल्याण। कुशल। भलाई। ३. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले-पहल पड़ता है और जो सूर्य से १४ करोड़ १५ लाख मील दूर है। भौम। कुज। ४. मंगलवार। ५. मैंगनीज नामक धातु।

**मंगलकलश** (घट)—संज्ञा पुं० [सं०] जल से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल-अवसरों पर पूजा के लिए रखा जाता है।

**मंगलपाठ**—संज्ञा पुं० दे० "मंगलाचरण"।

**मंगल-पाठक**—संज्ञा पुं० [सं०] बंदीजन।

**मंगलवार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है। भौमवार।

**मंगलसूत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद-रूप में कलाई में बाँधा जाता है।

**मंगलस्नान**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है।

**मंगला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पार्वती।

**मंगलाचरण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह श्लोक या पद आदि जो किसी शुभ कार्य के आरंभ में मंगल की कामना से पढ़ा, लिखा या कहा जाय।

**मंगलामुखी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मंगल+मुखी] वेश्या। रंडी।

**मंगली**—वि० [सं० मंगल (ग्रह)] जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो। (अशुभ)

**मँगवाना**—क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रेर०] १. माँगने का काम दूसरे से कराना। २. किसी को कोई चीज मोल खरीदकर या किसी से माँगकर लाने में प्रवृत्त करना।

**मँगाना**—क्रि० स० [हिं० माँगना का प्रेर०] १. दे० "मँगवाना"। २. मँगनी का संबंध कराना।

**मँगेतर**—वि० [हिं० मँगनी+एतर (प्रत्य०)] जिसकी किसी के साथ मँगनी हुई हो।

**मंगोल**—संज्ञा पुं० [मंगोलिया प्रदेश से] मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर (तातार, चीन, जापान में) बसनेवाली एक जाति।

**मंच, मंचक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खाट। खटिया। २. छोटी पीढ़ी। मचिया। ३. ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय।

**मंछर***—संज्ञा पुं० १. दे० "मत्सर"। २. दे० "मच्छर"।

**मंजन**—संज्ञा पुं० [सं० मज्जन] १. दाँत साफ करने का चूर्ण। २. स्नान।

**मँजना**—क्रि० अ० [हिं० माँजना] १. माँजा जाना। २. अभ्यास होना। मश्क होना।

**मंजरित**—वि० [सं० मंजरी+त (प्रत्य०)] जिसमें मंजरी लगी हो। मंजरियों या कोंपलों से युक्त।

**मंजरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मंजरित] १. नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २. कुछ विशिष्ट पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सींक में लगे हुए बहुत से दानों का समूह। ३. बेल। लता।

**मँजाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मँजाना] मँजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**मँजाना**—क्रि० स० [हिं० माँजना] १. माँजने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "माँजना"।

**मँजार**—संज्ञा स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।

**मंजिल**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. मकान का खंड। मरातिब।

**मंजिष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मजीठ।

**मंजीर**—संज्ञा पुं० [सं०] नूपुर। घुँघरू।

**मंजु**—वि० [सं०] [भाव० मंजुता] सुंदर। मनोहर।

**मंजुघोष**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य। मंजुश्री।

**मंजुल**—वि० [सं०] [स्त्री० मंजुला, भाव० मंजुलता] सुंदर। मनोहर।

**मंजुश्री**—संज्ञा पुं० दे० "मंजुघोष"।

**मंजूर**—वि० [अ०] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।

**मंजूरी**—संज्ञा स्त्री० [अ० मंजूर+ई (प्रत्य०)] मंजूर होने का भाव। स्वीकृति।

**मंजूषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी। २. पिंजड़ा।

**मंझा***†—वि० [सं० मध्य] मध्य का। संज्ञा पुं० [सं० मंच] पलंग। खाट। संज्ञा पुं० दे० "माँझा"।

**मँझार**†—क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।

**मँझियार**†—वि० [सं० मध्य] बीच का।

**मंड**—संज्ञा पुं० [सं०] भात का पानी। माँड़।

**मँडई**—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] झोंपड़ी।

**मंडन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शृंगार करना। सजाना। सँवारना। २. प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध

करना। 'खंडन' का उलटा।

**मंडना***—क्रि० स० [ सं० मंडन ] १. भूषित करना। शृंगार करना। युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादित करना। ३. भरना। ४. रचना। बनाना।

क्रि० स० [ सं० मर्दन ] दलित करना।

**मंडप**—संज्ञा पुं० [ सं० ][ स्त्री० अल्पा० मंडपिका, मंडपी ] १. विश्राम-स्थान। २. बारहदरी। ३. किसी उत्सव या समारोह के लिए बाँस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। ४. देवमंदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा। ५. चँदोवा। शामियाना।

**मंडर***—संज्ञा पुं० दे० "मंडल"।

**मँडरना**—क्रि० अ० [ सं० मंडल ] मंडल बाँधकर छा जाना। चारों ओर से घेर लेना।

**मँडराना**—क्रि० अ० [ सं० मंडल ] १. किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। २. किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रमण करना। ३. किसी के आस-पास ही घूम-फिरकर रहना।

**मंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परिधि। चक्कर। गोलाई। वृत्त। २. गोल फैलाव। गोला। ३. चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा। परिवेश। ४. क्षितिज। ५. समाज। समूह। समुदाय। ६. ग्रह के घूमने की कक्षा। ७. ऋग्वेद का एक खंड। ८. बारह राज्यों का समूह।

**मंडलाकार**—वि० [ सं० ] गोल।

**मँडलाना**—क्रि० अ० दे० "मँडराना"।

**मंडली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समूह। समाज।

संज्ञा पुं० [ सं० मडलिन् ] १. वट-वृक्ष। २. बिल्ली। बिड़ाल। ३. सूर्य।

**मंडलीक**—संज्ञा पुं० [ सं० मांडलीक ] एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति।

**मंडलेश्वर**—संज्ञा पुं० दे० "मंडलीक"।

**मँड़वा**—संज्ञा पुं० [ सं० मंडप ] मंडप।

**मँडारा†**—संज्ञा पुं० [ सं० मंडल ] झाबा। डलिया।

**मंडित**—वि० [ सं० ] १. सजाया हुआ। २. छाया हुआ। ३. भरा हुआ।

**मंडी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मंडप ] बहुत भारी बाजार जहाँ व्यापार की चीजें बहुत आती हों। बड़ा हाट।

**मंडील**—संज्ञा पुं० दे० "मंदील"।

**मँडुआ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का कदन्न।

**मंडूक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेंढक। २. एक ऋषि। ३. दोहा छंद का पाँचवाँ भेद।

**मंडूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लोह-कीट। गलाए हुए लोहे की मैल। सिंघान।

**मँड़ैया†**—संज्ञा स्त्री० दे० "मँड़ई"।

**मंत*†**—संज्ञा पुं० [ सं० मंत्र ] १. सलाह। २. मंत्र।

यौ०—तंत-मंत=उद्योग। प्रयत्न।

**मंतव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विचार। मत।

**मंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गोप्य या रहस्यपूर्ण बात। सलाह। परामर्श। २. देवाधिसाधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो। ३. वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है। संहिता। ४. तंत्र में वे शब्द या वाक्य जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिए करने का विधान है।

यौ०—मंत्रयंत्र या यंत्रमंत्र=जादू-टोना।

**मंत्रकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंत्र रचनेवाला ऋषि।

**मंत्र-गृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंत्रणा करने का स्थान।

**मंत्रणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. परामर्श। सलाह। मशविरा। २. कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।

**मंत्र-पूत**—वि० [ सं० ] मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। जिस पर मंत्र पढ़कर फूँका गया हो।

**मंत्रविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तंत्र-विद्या। भोजविद्या। मंत्रशास्त्र। तंत्र।

**मंत्रसंहिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वेदों का वह अंश जिसमें मंत्रों का संग्रह हो।

**मंत्रित**—वि० [ सं० ] मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित।

**मंत्रिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मंत्रणा देनेवाली स्त्री।

**मंत्रिता**—संज्ञा स्त्री० दे० "मंत्रित्व"।

**मंत्रित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंत्री का कार्य्य या पद। मंत्रिता। मंत्रीपन।

**मंत्री**—संज्ञा पुं० [ सं० मंत्रिन् ] [ स्त्री० मंत्रिणी ] १. परामर्श देनेवाला। सलाह देनेवाला। २. वह पुरुष जिसके परामर्श से राज्य के कामकाज होते हों। सचिव। अमात्य।

**मंत्रेसा†**—संज्ञा पुं० [ सं० मंत्र ]

मंत्र-तंत्र जाननेवाला ।

मंथ—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मथना । बिलोना । २. हिलाना । ३. मर्द्दन । मलना । ४. मारना । ध्वस्त करना । ५ मथानी ।

मंथन—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मथना । बिलोना । २. खूब डूब डूबकर तत्वों का पता लगाना । ३. मथानी ।

मंथर—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० मथरता ] १. मथानी । २. एक प्रकार का ज्वर । मंथ ज्वर ।

वि० १. मट्ठर । मंद । सुस्त । २. जड़ । मंदबुद्धि । ३. भारी । ४. नीच ।

मंथरा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कैकेयी की एक दासी । इसी के बहकाने पर कैकेयी ने रामचन्द्र को वनवास और भरत को राज्य देने के लिए दशरथ से अनुरोध किया था ।

मंथान—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णिक छंद ।

मंद—वि० [ सं० ] १. धीमा । सुस्त । २. ढीला । शिथिल । ३. आलसी । ४. मूर्ख । कुबुद्धि । ५. खल । दुष्ट ।

मंदग—वि० [ सं० ] धीरे धीरे चलनेवाला ।

मंदभाग्य—वि० [ सं० ] दुर्भाग्य । अभाग्य ।

मंदर—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था । २. मदार । ३. स्वर्ग । ४. दर्पण । आईना । ५. एक वर्ण-वृत्त ।

वि० मंद । धीमा ।

मंदरगिरि—संज्ञा पुं० [ सं० ] मंदराचल ।

मँदरा—वि० [ सं० मंदर ] नाटा । ठिंगना ।

मंदुरा—संज्ञा पुं० [ सं० मंडल ] एक प्रकार का बाजा ।

मंदा—वि० [ सं० मंद ] [ स्त्री० मंदी ] १. धीमा । मंदा । २. ढीला । शिथिल । ३. जिसका दाम थोड़ा हो । सस्ता । ४. खराब । निकृष्ट ।

मंदाकिनी—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है । २. आकाश-गंगा । ३. एक नदी जो चित्रकूट के पास है । पयस्विनी । ४. बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति ।

मंदाक्रांता—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सत्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त ।

मंदाग्नि—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक रोग जिसमें अन्न नहीं पचता । बदहजमी । अपच ।

मंदार—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वर्ग का एक देववृक्ष । २. आक । मदार । ३. स्वर्ग । ४. हाथी । ५. मंदराचल पर्वत ।

मंदारमाला—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बाइस अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति ।

मंदिर—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वासस्थान । २. घर । मकान । ३. देवालय ।

मंदिल*†—संज्ञा पुं० दे० "मंदिर" ।

मंदिलरा—संज्ञा पुं० दे० "मंदिर" ।

मंदी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मंद ] भाव का उतरना । महँगी का उलटा । सस्ती ।

मंदील—संज्ञा पुं० [ सं० मुंड ? ] एक प्रकार का कामदार साफा ।

मंदोदरी—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रावण की पटरानी का नाम । यह मय की कन्या थी ।

मँदोवै*—संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी" ।

मंद्र—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गंभीर ध्वनि । २. संगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक ।

वि० १. मनोहर । सुंदर । २. प्रसन्न । ३. गंभीर । ४. धीमा । ( शब्द आदि )

मंशा—संज्ञा स्त्री० [ अ० मि० सं० मनस् ] १. इच्छा । चाहना । अभिरुचि । २. आशय । अभिप्राय । मतलब ।

मंसब—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. पद । स्थान । पदवी । २. काम । कर्त्तव्य । ३. अधिकार ।

मंसबदार—संज्ञा पुं० [ अ०+फ़ा० ] बादशाही जमाने के एक प्रकार के अधिकारी ।

मंसा—संज्ञा स्त्री० दे० "मंशा" ।

मंसूख—वि० [ अ० ] खारिज किया हुआ । काटा हुआ । रद ।

मंसूबा—संज्ञा पुं० दे० "मनसूबा" ।

मंहगा—वि० दे० "महँगा" ।

म—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव । २. चंद्रमा । ३. ब्रह्मा । ४. यम । ५. मधुसूदन ।

मइँ†—सर्व० दे० "मैं" ।

मइका*—संज्ञा पुं० दे० "मायका" ।

मइमंत*—वि० दे० "मैमंत" ।

मकई†—संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार" । ( अन्न )

मकड़ा—संज्ञा पुं० [ हिं० मकड़ी ] बड़ी मकड़ी ।

मकड़ी—संज्ञा स्त्री० [ सं० मर्कटक ] आठ पैरों और आठ आँखोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जिसकी सैकड़ों हजारों जातियाँ होती हैं ।

मकतब—संज्ञा पुं० [ अ० ] छोटे बालकों के पढ़ने का स्थान । पाठशाला । मदरसा ।

मकदूर—संज्ञा पुं० [अ०] सामर्थ्य । शक्ति ।

**मकना**—संज्ञा पुं० दे० "मकुना"।

**मकनातीस**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० मकनातीसी ] चुंबक पत्थर।

**मकफूल**—वि० [ अ० ] [ भा० मकफूलियत ] रेहन या बंधक रखा हुआ।

**मकबरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो। रौजा। मजार।

**मकबूल**—वि० [ अ० ] १. जो कबूल किया गया हो। २. प्रिय।

**मकरंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौरे आदि चूसते हैं। २. एक वृत्त का नाम। माधवी। मजरी। राम। ३. फूल का केसर।

**मकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु। २. बारह राशियों में से दसवीं राशि। ३. फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। ४ सेना का एक प्रकार का व्यूह। ५. माघ मास। ६. मछली। ७. छप्पय के उनतालीसवें भेद का नाम।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. छल। कपट। फरेब। धोखा। २. नखरा।

**मकरकुंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मगर के आकार का कुंडल।

**मकरकेतन, मकरकेतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव

**मकरतार**-संज्ञा पुं० [ हिं० मुक्कैश ] बादले का तार।

**मकरध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कामदेव। । २. रस-सिंदूर। चंद्रोदय रस।

**मकर संक्रांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह समय जब कि सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

**मकरा**—संज्ञा पुं० [ सं० वरक ] मडुआ नामक अन्न।

संज्ञा पुं० [ हिं० मकड़ा ] एक प्रकार का कीड़ा।

**मकराकृत**—वि० [ सं० ] मकर या मछली के आकारवाला।

**मकराक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रावण का पुत्र एक राक्षस।

**मकराज***—संज्ञा स्त्री० दे० "मिकराज"।

**मकरालय**-संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**मकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मगर की मादा।

**मकसद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अभिप्राय। उद्देश्य।

**मकान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. गृह। घर। २. निवासस्थान। रहने की जगह।

**मकुंद**—संज्ञा पुं० दे० "मुकुंद"।

**मकु**—अव्य० [ सं० म ] १. चाहे। २. बल्कि। ३. कदाचित्। क्या जाने। शायद।

**मकुना**—संज्ञा पुं० [ सं० मनाक=हाथी ] वह नर हाथी जिसके दाँत न हों।

**मकुनी, मकुनी**-संज्ञा स्त्री० [देश०] आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी। बेसनी रोटी।

**मकूला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कहावत। २. उक्ति। कथन।

**मकोई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मकोय ] जंगली मकोय।

**मकोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० कीड़ा का अनु० ] कोई छोटा कीड़ा।

**मकोय**—संज्ञा स्त्री० [सं० काकमाता ] १. एक क्षुप जो दो प्रकार का होता है। एक में लाल रंग के और दूसरे में काले रंग के बहुत छोटे छोटे फल लगते हैं। २. इस क्षुप का फल। ३. एक कँटीला पौधा या उसका फल। रसभरी।

**मकोरना***—क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

**मक्का**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है।

संज्ञा पुं० [ देश० ] ज्वार। मकई।

**मक्कार**—वि० [ अ० ] [ संज्ञा मक्कारी ] फरेबी। कपटी। छली।

**मक्खन**—संज्ञा पुं० [ सं० मथज ] दूध में का वह सार भाग जो दही या मठे को मथने पर निकलता है और जिसको तपाने से घी बनता है। नवनीत। नैनू।

**मुहा०**-कलेजे पर मक्खन मला जाना=शत्रु की हानि देखकर प्रसन्नता होना।

**मक्खी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मक्षिका ] १. एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो साधारणतः सब जगह उड़ता फिरता है मक्षिका।

**मुहा०**—जीती मक्खी निगलना=१. जानबूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य करना जिसके कारण पीछे से हानि हो। मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना=किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। मक्खी मारना या उड़ाना = बिलकुल निकम्मा रहना।

२ मधुमक्खी। मुमाखी।

**मक्खीचूस**-संज्ञा पुं० [ हिं० मक्खी+चूसना ] बहुत अधिक कृपण। भारी कंजूस।

**मक्दूर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सामर्थ्य। शक्ति। २. वश। काबू। ३. समाई। गुंजाइश।

**मक्षिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मक्खी।

**मख**—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

**मखज़न**—संज्ञा पुं० [अ०] खज़ाना। भंडार।

**मखतूल**—संज्ञा पुं० [सं० महर्घ तूल] काला रेशम।

**मखतूली**—वि० [हिं० मखतूल+ई (प्रत्य०)] काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

**मखन***—संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।

**मखनिया**†—संज्ञा पुं० [हिं० मक्खन+इया (प्रत्य०)] मक्खन बनाने या बेचनेवाला।

वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

**मखमल**—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मखमली] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

**मखलूक**—संज्ञा स्त्री० [अ०] सृष्टि के प्राणी और जीव आदि।

**मखशाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञशाला।

**मखाना**—संज्ञा पुं० दे० "तालमखाना"।

**मखी***—संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।

**मखोना**†—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कपड़ा।

**मखौल**—संज्ञा पुं० [देश०] हँसी। ठट्ठा।

**मखौलिया**—वि० [हिं० मखौल] दिल्लगीबाज।

**मग**—संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता। राह।

संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। २. मगध देश। मगह।

**मगज़**—संज्ञा पुं० [अ० मग्ज़] १. दिमाग। मस्तिष्क।

मुहा०—मगज़ खाना या चाटना=बककर तंग करना। मगज खाली करना या पचाना=बहुत अधिक दिमाग लड़ाना। सिर खपाना। २. गिरी। मींगी। गूदा।

**मगजपच्ची**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मगज+पचाना] किसी काम के लिए बहुत दिमाग लड़ाना। सिर खपाना।

**मगजी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।

**मगण**—संज्ञा पुं० [सं०] कविता के आठ गणों में से एक जिसमें ३ गुरु वर्ण होते हैं।

**मगद, मगदल**—संज्ञा पुं० [सं० मुद्ग] मूँग या उड़द का एक प्रकार का लड्डू।

**मगदा**—वि० [सं० मग+दा (प्रत्य०)] मार्गप्रदर्शक। रास्ता दिखलानेवाला।

**मगदूर***—संज्ञा पुं० दे० "मकदूर"।

**मगध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। कीकट। २. बंदीजन।

**मगन**—वि० [सं० मग्न] १. डूबा हुआ। समाया हुआ। २. प्रसन्न। ३. लीन।

**मगना***†—क्रि० अ० [सं० मग्न] १. लीन होना। तन्मय होना। २. डूबना।

**मगर**—संज्ञा पुं० [सं० मकर] १. घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु। २. मीन। मछली।

संज्ञा पुं० [सं० मग] अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति बसती है।

अव्य० लेकिन। परंतु। पर।

**मगरमच्छ**—संज्ञा पुं० [हिं० मगर+मच्छ] १. मगर या घड़ियाल नामक जल-जंतु। २. बड़ी मछली।

**मगरिब**—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० मगरिबी] पश्चिम दिशा।

**मगरूर**—वि० [अ०] घमंडी। अभिमानी।

**मगरूरी**—संज्ञा स्त्री० [अ० मगरूर+ई (प्रत्य०)] घमंड। अभिमान।

**मगह**†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।

**मगहपति***—संज्ञा पुं० [सं० मगधपति] मगध देश का राजा, जरासंध।

**मगहय***†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।

**मगहर***†—संज्ञा पुं० [सं० मगध] मगध देश।

**मगही**—वि० [सं० मगह+ई (प्रत्य०)] १. मगध-संबंधी। मगध देश का। २. मगह में उत्पन्न।

**मगु, मग्ग***†—संज्ञा पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।

**मग्ज**—संज्ञा पुं० [अ०] १. मस्तिष्क। दिमाग। भेजा। २. गिरी। मींगी। गूदा।

**मग्न**—वि० [सं०] [स्त्री० मग्ना] १. डूबा हुआ। निमज्जित। २. तन्मय। लीन। लिप्त। ३. प्रसन्न। हर्षित। खुश। ४. नशे आदि में चूर।

**मघवा**—संज्ञा पुं० [सं० मघवन्] इंद्र।

**मघवाप्रस्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रप्रस्थ।

**मघा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

**मघोनी***—संज्ञा स्त्री० [सं० मघवन] इंद्राणी।

**मघौना**—संज्ञा पुं० [सं० मेघ+वर्ण] नीले रंग का कपड़ा।

**मचक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मचकना] दबाव।

**मचकना**—क्रि० स० [मच मच से अनु०] किसी पदार्थ को इस प्रकार

ज़ोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले।

क्रि० अ० इस प्रकार दबना जिसमें मच मच शब्द हो। झटके से हिलना।

**मचका**—संज्ञा पुं० [ हिं० मचकना ] [ स्त्री० मचकी] १. धक्का। २. झोंका। ३. पेंग।

**मचना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोर-गुल हो। २. छा जाना। फैलना।

क्रि० अ० दे० "मचकना"।

**मचमचाना**—क्रि० स० [ अनु० ], इस प्रकार दबाना कि मच मच शब्द हो।

**मचलना**—क्रि० अ० [अनु० ][संज्ञा मचल ] किसी चीज के लिए जिद बाँधना। हठ करना। अड़ना।

**मचला**—वि० [ हिं० मचलना मि० पं० मचला ] १. जो बोलने के अवसर पर जान-बूझकर चुप रहे। २. मचलनेवाला।

**मचलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मचलना ] मचलने की क्रिया या भाव।

**मचलाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] कै मालूम होना। जी मतलाना। आकाई आना।

क्रि० स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना।

*†—क्रि० अ० दे० "मचलना"।

**मचान**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मच+आन ( प्रत्य० ) ] १. बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं। २. मंच। कोई ऊँची बैठक।

**मचाना**—क्रि० स० [ हिं० मचना का स० ] कोई ऐसा कार्य्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो।

**मचिया**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० मंच+इया ( प्रत्य० ) ] छोटी चारपाई। पलँगड़ी। पीढ़ी।

**मचिलाई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मचलना ] १. मचलने का भाव। २. मचलापन।

**मच्छ**—संज्ञा पुं० [ सं० मत्स्य, प्रा० मच्छ ] १. बड़ी मछली। २. दोहे का सोलहवाँ भेद।

**मच्छड़, मच्छर**—संज्ञा पुं० [ सं० मशक ] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती पतिंगा। इसकी मादा काटती और डंक से रक्त चूसती है।

**मच्छरता***—संज्ञा स्त्री० [ सं० मत्सर+ ता ( प्रत्य० ) ] मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष।

**मच्छरदानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मसहरी"।

**मच्छी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।

**मच्छोदरी***— संज्ञा स्त्री० [ सं० मत्स्योदरी ] व्यास जी की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती।

**मछरंगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अन्य० ] एक प्रकार का जलपक्षी। राम-चिड़िया।

**मछली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मत्स्य ] १. जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं। मीन। २. मछली के आकार का कोई पदार्थ।

**मछुआ, मछुवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मछली+उआ ( प्रत्य०) ] मछली मारनेवाला। मल्लाह।

**मजकूर**—वि० [ अ० ] जिसका ज़िक्र हुआ हो। उक्त।

संज्ञा पुं० लिखित विवरण।

**मजकूरी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सम्मन तामील करनेवाला चपरासी।

**मजदूर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ][ स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन ] १. बोझ ढोनेवाला। मजूरा। कुली। मोटिया। २. कल-कारखानों में छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी।

**मजदूरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मजदूर का काम। २. बोझ ढोने या और कोई छोटा-मोटा काम करने का पुरस्कार। ३. परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन। उजरत। पारिश्रमिक।

**मजना***†—क्रि० अ० [ सं० मज्जन ] १. डूबना निमज्जित होना। २. अनुरक्त होना।

**मजनूँ**—संज्ञा पुं० [अ०] १. पागल। सिड़ी। बावला। २. अरब के एक प्रसिद्ध सरदार का लड़का जिसका वास्तविक नाम कैस था और जो लैला नाम की एक कन्या पर आसक्त होकर उसके लिए पागल हो गया था। ३. आशिक। प्रेमी। आसक्त। ४. एक प्रकार का वृक्ष। बेद मजनूँ।

**मजबूत**—वि० [ अ० ][ संज्ञा मजबूती ] १. दृढ़। पुष्ट। पक्का। २. बलवान्। सबल।

**मजबूर**—वि० [ अ० ] विवश। लाचार।

**मजबूरन**—क्रि० वि० [अ० ] लाचारी की हालत में।

**मजबूरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मजबूर+ई (प्रत्य०) ] असमर्थता। लाचारी। बे-बसी।

**मजमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बहुत से लोगों का जमाव। भीड़-भाड़। जमघट।

**मजमूआ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बहुत सी चीज़ों का समूह। संग्रह।

वि० एकत्र किया हुआ।

**मजमूई**—वि० [ अ० ] सामूहिक।
**मजमून**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. विषय, जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २. लेख।
**मजल†**—संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।
**मजलिस**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० मजलिसी ] १. सभा। समाज। जलसा। २. महफिल। नाच-रंग का स्थान।
**मजलूम**—वि० [ सं० ] जिस पर जुल्म हो। सताया हुआ। पीड़ित।
**मजहब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० मजहबी ] धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।
**मजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. स्वाद। लज्जत।
**मुहा०**—मजा चखाना=किए हुए अपराध का दंड देना।
२. आनंद। सुख। ३. दिल्लगी। हँसी।
**मुहा०**—मजा आ जाना=परिहास का साधन प्रस्तुत होना। दिल्लगी का सामान होना।
**मजाक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] हँसी। ठट्ठा।
**मजाकन्**—क्रि० वि० [ अ० ] मजाक या हँसी में।
**मजाकिया**—वि० [अ०] १. मजाक संबंधी। २ हँसोड़। ठठोल। क्रि० वि० दे "मजाकन"।
**मजाज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] नियमानुसार मिला हुआ अधिकार।
**मजाजी**—वि० [ अ० ] १. नकली। २. सांसारिक। लौकिक।
**मजार**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. समाधि। मकबरा। २. कब्र।
**मजारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मार्जार ] बिल्ली।

**मजाल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] सामर्थ्य। शक्ति।
**मजिल*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "मंजिल"।
**मजीठ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मंजिष्ठा ] एक प्रकार की लता। इसकी जड़ और डंठलों से लाल रंग निकलता है।
**मजीठी**—संज्ञा पुं० [ हिं० मजीठ ] मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख।
**मजीर***—संज्ञा स्त्री० [ सं० मंजरी ] घौद।
**मजीरा**—संज्ञा पुं० [ सं० मंजीर ] बजाने के लिए काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी। जोड़ी। ताल।
**मजूर***—संज्ञा पुं० [सं० मयूर] मोर। संज्ञा पुं० दे० "मजदूर"।
**मजूरी†**—संज्ञा स्त्री० दे० "मजदूरी"।
**मजेज*†**—वि० [ फ़ा० मिजाज ] अहंकार।
**मजेदार**—वि० [ फ़ा० ] १. स्वादिष्ट। जायकेदार। २. अच्छा। बढ़िया। ३. जिसमें आनंद आता हो।
**मज्ज***—संज्ञा स्त्री० दे० "मज्जा"।
**मज्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० मज्जित ] स्नान। नहाना।
**मज्जना***—क्रि० अ० [ सं० मज्जन ] १. गोता लगाना। नहाना। २. डूबना।
**मज्जा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नली की हड्डी के भीतर का गूदा।
**मझ, मझि***—क्रि० वि० [ सं० मध्य ] बीच।
**मझधार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मझ=मध्य+धार ] १. नदी के मध्य की धारा। २. किसी काम का मध्य।
**मझला**—वि० [ सं० मध्य ] बीच का।
**मझाना*†**—क्रि० स० [ सं० मध्य ] प्रविष्ट करना। बीच में धँसाना। क्रि० अ० प्रविष्ट होना। पैठना।

**मझार***—क्रि० वि० [ सं० मध्य ] बीच में।
**मझावना*†**—क्रि० अ०, स० दे० "मझाना"।
**मझियाना*†**—क्रि० अ० [ हिं० माझी ] नाव खेना। मल्लाही करना। क्रि० अ० [ सं० मध्य+इयाना (प्रत्य०) ] बीच से होकर निकलना।
**मझियारा*†**—वि० [ सं० मध्य ] बीच का।
**मझेला***—वि० दे० "मझोला"।
**मझु***—सर्व० [ हिं० मैं ] १. मैं। २. मेरा।
**मझोला**—वि० [सं० मध्य] १. मझला। बीच का। मध्य का। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा। मध्यम आकार का।
**मझोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मझोला] एक प्रकार की बैलगाड़ी।
**मट†**—संज्ञा पुं० [ हिं० मटका ] मटका। मटकी।
**मटक**—संज्ञा स्त्री० [सं० मट=चलना+क (प्रत्य०)] १. गति। चाल। २. मटकने की क्रिया या भाव।
**मटकना**—क्रि० अ० [ सं० मट=चलना ] १. अंग हिलाते हुए चलना। लचककर नखरे से चलना। २. अंगों का इस प्रकार संचालन जिसमें कुछ लचक या नखरा जान पड़े। ३. हटना। लौटना। फिरना। ४. विचलित होना। हिलना।
**मटकनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मटकना ] १. दे० "मटक"। २. नाचना। नृत्य। ३. नखरा। मटक।
**मटका**—संज्ञा पुं० [ हिं० मिट्टी+क (प्रत्य०) ] मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट। माट।
**मटकाना**—क्रि० स० [ हिं० मटकना

का स०] नखरे के साथ अंगों का संचालन करना चमकाना।
क्रि० स० दूसरे को मटकने में प्रवृत्त करना।

**मटकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका।
संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकने या मटकाने का भाव। मटक।

**मटकीला**—वि० [हिं० मटकना + ईला (प्रत्य०)] मटकनेवाला। नखरे से हिलने डोलनेवाला।

**मटकौअल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मटकाना] मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।

**मटमैला**—वि० [हिं० मिट्टी + मैल] मिट्टी के रंग का। खाकी। धूलिया।

**मटर**—संज्ञा पुं० [सं० मधुर] एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। इसकी लंबी फलियों को छीमी या छीबी कहते हैं, जिनमें गोल दाने रहते हैं।

**मटरगश्त**—संज्ञा पुं० [हिं० मट्टर = मंद + फ़ा० गश्त] १. टहलना। २. सैरसपाटा।

**मटिआना**†—क्रि० स० [हिं० मिट्टी + आना (प्रत्य०)] १. मिट्टी लगाकर माँजना। २. मिट्टी से ढाँकना।

**मटिया मसान**—वि० [हिं० मटिया + मसान] गया बीता। नष्टप्राय।

**मटियामेट**—वि० दे० "मटिया-मसान"।

**मटियाला, मटीला**—वि० दे० "मटमैला"।

**मटुका**—संज्ञा पुं० दे० "मुकुट"।

**मटुका**—संज्ञा पुं० दे० "मटका"।

**मटुकी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

**मटटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।

**मट्ठर**†—वि० [देश०] सुस्त। काहिल।

**मट्ठा**—संज्ञा पुं० [सं० मंथन] मथा हुआ दही जिसमें से नैनूँ निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।

**मट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

**मठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निवास-स्थान। रहने की जगह। २. वह मकान जिसमें साधु आदि रहते हों।

**मठधारी**—संज्ञा पुं० [सं० मठधारिन्] वह साधु या महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो। मठाधीश।

**मठरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मट्ठी"।

**मठा**—संज्ञा पुं० दे० "मट्ठा"।

**मठाधीश**—संज्ञा पुं० दे० "मठधारी"।

**मठिया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मठ + इया (प्रत्य०)] छोटी कुटी या मठ।
संज्ञा स्त्री० [देश०] फूल (धातु) की बनी हुई चूड़ियाँ।

**मठी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मठ + ई (प्रत्य०)] १. छोटा मठ। २. मठ का महंत। मठधारी।

**मठोठा**†—संज्ञा पुं० [देश०] कुएँ की जगत।

**मठोर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मट्ठा] दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

**मड़ई**†—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] १. छोटा मंडप। २. कुटिया। पर्णशाला।

**मड़क**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी बात का भीतरी रहस्य।

**मड़वा**—संज्ञा पुं० दे० "मंडप"।

**मड़हट***—संज्ञा पुं० दे० "मरघट"।

**मड़ाड़**†—संज्ञा पुं० [देश०] छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।

**मड़ुआ**—संज्ञा पुं० [देश०] बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।

**मड़ैया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मड़ई"।

**मड्ड**—वि० [हिं० मट्ठर] अड़कर बैठनेवाला।

**मढ़ना**—क्रि० स० [सं० मंडन] १. आवेष्टित करना। चारों ओर से लपेट लेना। २. बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना। ३. किसी के गले लगाना। थापना।
†क्रि० अ० आरंभ होना। मचना। (क्व०)

**मढ़वाना**—क्रि० स० [हिं० मढ़ना का प्रेर०] मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

**मढ़ाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मढ़ना] मढ़ने का भाव, काम या मजदूरी।

**मढ़ाना**—क्रि० स० दे० "मढ़वाना"।

**मढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मठ] १. छोटा मठ। २. कुटी। झोंपड़ी। ३. छोटा घर।

**मणि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २. सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।

**मणिगुण**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्णिक वृत्त। शशिकला। शरभ।

**मणिगुणनिकर**—संज्ञा पुं० [सं०] मणिगुण नामक छंद का एक रूप। चंद्रावती।

**मणिधर**—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प। साँप।

**मणिपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक चक्र जो नाभि के पास माना जाता है। (तंत्र)

**मणिबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नवाक्षरी वृत्त। २. कलाई। गट्टा।

**मणिमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह अक्षरों का एक वृत्त। २.

अणियों की माला।

**मणी**—संज्ञा पुं० [सं० मणिन्] सर्प।
संज्ञा स्त्री० दे० "मणि"।

**मतंग, मतंगज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २. बादल। ३. एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे।

**मतंगी**—संज्ञा पुं० [सं० मतंगिन्] हाथी का सवार।

**मत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निश्चित सिद्धांत। सम्मति। राय।
मुहा०—मत उपाना=सम्मति स्थिर करना।
२. धर्म। पंथ। मजहब। संप्रदाय।
३. भाव। आशय।
क्रि० वि० [सं० मा] न। नहीं। (निषेध)

**मतना***—क्रि० अ० [सं० मति+ना (प्रत्य०)] सम्मति निश्चित करना।
क्रि० अ० [सं० मत्त] मत्त होना।

**मत-भिन्नता**—संज्ञा स्त्री० दे० "मत-भेद"।

**मतभेद**—संज्ञा पुं० [सं०] दो व्यक्तियों या पक्षों के मत न मिलना।

**मतरिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
*वि० [सं० मंत्र] १. मंत्री। सलाहकार। २. मंत्र से प्रभावित। मंत्रित।

**मतलब**—संज्ञा पुं० [अ०] १. तात्पर्य। अभिप्राय। आशय। २. अर्थ। मानी। ३. अपना हित। स्वार्थ। ४. उद्देश्य। विचार। ५. संबंध। वास्ता।

**मतलबी**—वि० [अ० मतलब] स्वार्थी।

**मतली**—संज्ञा स्त्री० दे० "मिचली"।

**मतवार, मतवारा***—वि० दे० "मतवाला"।

**मतवाला**—वि० पुं० [सं० मत्त+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १. नशे आदि के कारण मस्त। मदमस्त। २. उन्मत्त। पागल।
संज्ञा पुं० १. वह भारी पत्थर जो किले या पहाड़ पर से नीचे के शत्रुओं को मारने के लिए लुढ़काया जाता है। २. एक प्रकार का गावदुमा खिलौना।

**मता**†—संज्ञा पुं० दे० "मत"।
संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

**मताधिकार**—संज्ञा पुं० [सं०] मत या वोट देने का अधिकार।

**मतानुयायी**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के मत को माननेवाला। मतावलंबी।

**मतारी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"।

**मतावलंबी**—संज्ञा पुं० [सं० मतावलम्बिन्] किसी एक मत या संप्रदाय का अवलंबन करनेवाला।

**मति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। समझ। अक्ल। २. राय। सलाह। सम्मति।
*क्रि० वि० दे० "मत"।
अव्य० [सं० मत] समान। सदृश।

**मतिमत**—वि० [सं० मतिमत्] बुद्धिमान्।

**मतिमान**—वि० [सं०] बुद्धिमान्।

**मतिमाह***—वि० दे० "मतिमान"।

**मती**—संज्ञा स्त्री० दे० "मति"।
क्रि० वि० दे० "मति"।

**मतीरा**—संज्ञा पुं० [सं० मेट] तरबूज। कलिंदा।

**मतौस**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

**मतेई***†—संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ] विमाता।

**मत्कुण**—संज्ञा पुं० [सं०] खटमल।

**मत्त**—वि० [सं०] १. मस्त। २. मतवाला। ३. उन्मत्त। पागल। ४. प्रसन्न। खुश।
*†—संज्ञा स्त्री० [सं० मात्रा] मात्रा।

**मत्तकाशिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अच्छी स्त्री।

**मत्तगयंद**—संज्ञा पुं० [सं०] सवैया छंद का एक भेद। मालती इंदव।

**मत्तता***—संज्ञा स्त्री० [सं०] मतवालापन।

**मत्तताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "मत्तता"।

**मत्तमयूर**—संज्ञा पुं० [सं०] पंद्रह अक्षरों का एक वृत्त।

**मत्तमातंगलीलाकर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक दंडक वृत्त।

**मत्तसमक**—संज्ञा पुं० [सं०] चौपाई छंद का एक भेद।

**मत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बारह अक्षरों का एक वृत्त। २. मदिरा। शराब।
प्रत्य० भाववाचक प्रत्यय। पन। जैसे—बुद्धिमत्ता। नीतिमत्ता।
*संज्ञा स्त्री० दे० "मात्रा"।

**मत्ताक्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेईस अक्षरों का एक छंद।

**मत्था**†—संज्ञा पुं० दे० "माथा"।

**मत्सर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. डाह। हसद। जलन। २. क्रोध। गुस्सा।

**मत्सरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाह। हसद।

**मत्सरी**—संज्ञा पुं० [सं० मत्सरिन्] मत्सरपूर्ण व्यक्ति।

**मत्स्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मछली। २. प्राचीन विराट् देश का नाम। ३. छप्पय छंद के २३वें भेद का नाम। ४. विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।

**मत्स्यगंधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०]

व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।

**मत्स्यपुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह पुराणों में से एक महापुराण।

**मत्स्यावतार**—संज्ञा पुं० दे० "मत्स्य" (४)।

**मत्स्येंद्रनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध साधु और हठ-योगी जो गोरखनाथ के गुरु थे।

**मथन**-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मथित] १. मथने का भाव या क्रिया। बिलोना। २. एक अस्त्र।
वि० मारनेवाला। नाशक।

**मथना**—क्रि० स० [ सं० मथन ] १. तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना या चलाना। बिलाना। रिड़कना। २. चलाकर मिलाना। ३. नष्ट करना। ध्वंस करना। ४. घूम घूमकर पता लगाना। ५. किसी कार्य्य को बहुत अधिक बार करना।
संज्ञा पुं० मथानी। रई।

**मथनियाँ***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी"।

**मथनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मथना ] १. वह मटका जिसमें दही मथा जाता है। २. दे० "मथानी"। ३. मथने की क्रिया।

**मथवाह***—संज्ञा पुं० [हिं० माथा + वाह ( प्रत्य० ) ] महावत।

**मथानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मथना ] काठ का एक प्रकार का दंड जिससे दही से मथकर मक्खन निकाला जाता है।
मुहा०—मथानी पड़ना या बहना = खलबली मचना।

**मथाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० मथना + आव ( प्रत्य० ) ] मथने की क्रिया या भाव।

**मथित**—वि० [ सं० ] मथा हुआ।

**मथी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।

**मथुरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मधुपुर = मथुरा ] पुराणानुसार सात पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना के किनारे पर है।

**मथुरिया**—वि० [ हिं० मथुरा + इया ( प्रत्य० ) ] मथुरा से संबंध रखनेवाला। मथुरा का।

**मथूल***—संज्ञा पुं० दे० "मस्तूल"।

**मथौरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मथना ] एक प्रकार का भद्दा रंदा।

**मथ्था**†—संज्ञा पुं० दे० "माथा"।

**मदंध***-वि० दे० "मदांध"।

**मद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हर्ष। आनंद। २. वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है। दान। ३. वीर्य्य। ४. कस्तूरी। ५. मद्य। ६. मतवालापन। नशा। ७. उन्मत्तता। पागलपन। ८. गर्व। अहंकार। घमंड।
वि० मत्त। मतवाला। मस्त।
संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. विभाग। सीगा। सरिश्ता। २. खाता।

**मदक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मद ] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत से बनता है। इसे चिलम पर रखकर पीते हैं।

**मदकची**—वि० [ हिं० मदक + ची ( प्रत्य० ) ] जो मदक पीता हो। मदक पीनेवाला।

**मदकल**—वि० [ सं० ] मत्त। मतवाला।

**मदगल**—वि० [ सं० मदकल ] मत्त। मस्त।
संज्ञा पुं० दे० "मगदल"।

**मदजल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथी का मद।

**मदद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सहायता। सहारा। २. मजदूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर लगाए जाते हैं।

**मददगार**—वि० [ फ़ा० ] मदद करनेवाला।

**मदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कामदेव। २. काम-क्रीड़ा। ३. मैनफल। ४. भ्रमर। ५. मैना पक्षी। सारिका। ६. प्रेम। ७ रूपमाला छंद। ८. छप्पय का एक भेद।

**मदनकदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**मदनगोपाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० मदन + गोपाल ] श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।

**मदनफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मैनफल।

**मदनबाण**—संज्ञा पुं० [हिं० मदन + बाण ] एक प्रकार का बेला। (फूल)

**मदनमनोरमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] केशव के अनुसार सवैया का एक भेद। दुर्मिल।

**मदनमनोहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दंडक का एक भेद। मनहर।

**मदनमल्लिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मालिका वृत्ति का एक नाम।

**मदनमस्त**—संज्ञा पुं० [हिं० मदन + मस्त ] चंपे की जाति का एक प्रकार का फूल।

**मदन-महोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्य्यंत होता था।

**मदनमोदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सवैया छंद का एक भेद। सुंदरी। ( केशव )

**मदनमोहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्ण-

चाँद।

**मदनललिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णिक वृत्ति

**मदनहरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चालीस मात्राओं का एक छंद।

**मदनोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मदनमहोत्सव।

**मदमत्त**-वि० [सं०] मस्त। मतवाला।

**मदर***—संज्ञा पुं० [ सं० मडल ] मँडराना।

**मदरसा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पाठशाला।

**मदलेखा**—संज्ञा स्त्री [ सं० ] एक वर्णिक वृत्त।

**मदांध**—वि० [ सं० ] मदमत्त। मदोन्मत्त।

**मदाखिलत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दखल देना। २. दखल जमाना।

**मदानि***—वि० [ ? ] मंगलकारक।

**मदार**—संज्ञा पुं० [ सं० मंदार ] आक।

**मदारी**—संज्ञा पुं० [ अ० मदार] १. एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो बंदर, भालू आदि नचाते और लोग के तमाशे दिखाते हैं। मदारिया। कलंदर। २. बाजीगर।

**मदालसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पुराणानुसार विश्वावसु गंधर्व की कन्या जिसे पातालकेतु दानव ने उठा के जाकर पाताल में रखा था।

**मदिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "मादा"।

**मदिर**—वि० [ सं० ] १. मत्तता उत्पन्न करनेवाला। मस्त करनेवाला। २. नशीला।

**मदिरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शराब। दारू। मद्य। २. बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मालिनी। उमा। दिवा।

**मदिराक्ष**—वि० [ सं० ] १. मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। २. मस्त। मतवाला।

**मदिरालय**—संज्ञा पुं० [सं० मदिरा + आलय ] शराब की दूकान। कलवरिया।

**मदिरालस**-संज्ञा पुं० [ सं० मदिरा + अलस ] मदिरा से उत्पन्न होनेवाला आलस्य। खुमारी।

**मदीय**—वि० [ सं० ] [स्त्री० मदीया] मेरा।

**मदीला**—वि० [ हि० मद] नशीला।

**मदीयून**—वि० [ अ० ] कर्जदार। ऋणी।

**मदुकल**—संज्ञा पुं० [ ? ] दोहे का एक भेद।

**मदोद्धत, मदोन्मत्त**—वि० [ सं० ] मद में पागल। मदांध।

**मदोवै***-संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।

**मद्द***—संज्ञा स्त्री० [ अ० मदद ] सहायता।

संज्ञा स्त्री० [ अ० मद ] प्रशंसा। तारीफ।

**मद्धिम***—वि० [ सं०] १. मध्यम। अपेक्षाकृत कम अच्छा। २ मंदा।

**मद्धे**—अव्य० [ सं० मध्ये ] १ बीच में। में। २.विषय में। बाबत। संबंध में। ३. लेखे में। बाबत।

**मद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मदिरा। शराब।

**मद्यप**—वि० [ सं० ] मद्य पीनेवाला। शराबी।

**मद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन देश। उत्तर कुरु। २.पुराणानुसार रावी और झेलम नदियों के बीच का देश।

**मध,मधि***—संज्ञा पुं० दे० "मध्य"। अव्य० [ सं० मध्य] में।

**मधिम***—वि० दे० "मध्यम"।

**मधु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पानी। जल। २. शहद। ३. मदिरा। शराब। ४. फूल का रस। मकरंद। ५. वसंत ऋतु। ६. चैत्र मास। ७. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। ८. दो लघु अक्षरों का एक छंद। ९. शिव। महादेव। १०. मुलेठी। ११. अमृत। वि० [ सं० ] १. मीठा। २. स्वादिष्ठ।

**मधुकंठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कोयल।

**मधुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महुआ।

**मधुकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० मधुकरी ] भौंरा। भ्रमर।

**मधुकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मधुकर ] वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो। मधूकरी।

**मधुकैटभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार मधु और कैटभ नाम के दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा था।

**मधुकोष, मधुचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] शहद की मक्खी का छत्ता।

**मधुजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी।

**मधुप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भौंरा। २. उद्धव।

**मधुपति**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**मधुपर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह, जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।

**मधुपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मथुरा नगरी।

**मधुप्रमेह**—संज्ञा पुं० दे० "मधुमेह"।

**मधुबन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रज का एक वन।

**मधुभार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मात्रिक छंद।

**मधुमक्खी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मधुमक्षिका ] एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी

जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है। मुमाखी।

**मधुमक्षिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।

**मधुमती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दो नगण और एक गुरु का एक वर्णवृत्त।

**मधुमती भूमिका**—योग की एक अवस्था। तन्मयता।

**मधुमाधवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वासंती या माधवी लता। २. एक प्रकार की रागिनी।

**मधुमालती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मालती लता।

**मधुमेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रमेह का बढ़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है।

**मधुयष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मुलेठी।

**मधुर**—वि० [ सं० ] १. जिसका स्वाद मधु के समान हो। मीठा। २. जो सुनने में भला जान पड़े। ३. सुंदर। मनोरंजक। ४. जो क्लेशप्रद न हो। हलका।

**मधुरई***—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।

**मधुरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मधुर होने का भाव। २. मिठास। ३. सौंदर्य। सुंदरता। ४. सुकुमारता। कोमलता।

**मधुरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर। मदुरा। मदूरा। २. मथुरा नगर।

**मधुराई***-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।

**मधुराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भौंरा।

**मधुराना***†—क्रि० अ० [ हिं० मधुर + आना ( प्रत्य० ) ] १. मीठा होना। २. सुंदर होना।

**मधुरान्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मिठाई।

**मधुरिपु**-संज्ञा पुं० दे० "मधुसूदन"।

**मधुरिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मधुरिमन् ] १. मीठास। मीठापन। २. सुंदरता। सौंदर्य।

**मधुरी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० माधुर्य ] सौंदर्य। मीठी।

**मधुवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। २. किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन।

**मधुवामन**-संज्ञा पुं० [ सं० ] भौंरा।

**मधुशर्करा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शहद से बनाई हुई चीनी।

**मधुसख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**मधुसूदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**मधूक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महुआ।

**मधूकरी**-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुकरी"।

**मध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी पदार्थ के बीच का भाग। दरमियानी हिस्सा। २. कमर। कटि। ३ सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। ४. अंतर। भेद। फरक।

**मध्य-गत**—वि० [ सं० ] बीच का।

**मध्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मध्य का भाव।

**मध्यतापिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक उपनिषद्।

**मध्य देश**—संज्ञा पुं० [सं०] भारतवर्ष का वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विन्ध्याचल के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।

**मध्यम**—वि० [ सं० ] न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा। मध्य का। बीच का।

संज्ञा पुं० १. संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर। २. वह उपपति जो नायिका के क्रोध करने पर अनुराग न प्रकट करे।

**मध्यमपदलोपी**—संज्ञा पुं० [ सं० मध्यमपदलोपिन् ] वह समास जिसमें पहले पद से दूसरे पद का संबंध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है। लुप्त-पद समास। ( व्या० )

**मध्यम पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पुरुष जिससे बात की जाय। ( व्या० )

**मध्यमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बीच की उँगली। २. वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर-मान या अपमान करे।

**मध्य-युग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का समय। २. युरोप के इतिहास में ईसवी छठी शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक का समय।

**मध्य-युगीन**—वि० [ सं० ] मध्य युग का।

**मध्यवर्ती**—वि० [ सं० ] बीच का।

**मध्यस्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बीच में पड़कर विवाद मिटानेवाला। २. तटस्थ।

**मध्यस्थता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मध्यस्थ होने का भाव या धर्म।

**मध्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान हों। २. तीन अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**मध्यान्ह**—संज्ञा पुं० दे० "मध्याह्न"।

**मध्याह्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ठीक दोपहर।

**मध्ये**—क्रि० वि० दे० "मद्धे"।

**मध्वाचार्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य और माध्व या मध्वाचारि नामक संप्रदाय के प्रवर्तक जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।

**मनःपूत**—वि० [सं०] १. मन-चाहा। २. मन को प्रसन्न करने-वाला।

**मनःशिला**—संज्ञा पुं० [सं०] मैन-सिल।

**मन**—संज्ञा पुं० [सं० मनस्] १. प्राणियों में वह शक्ति जिससे उनमें वेदना, संकल्प, इच्छा और विचार आदि होते हैं। अंतःकरण। चित्त। २. अंतःकरण की चार वृत्तियों में से एक जिससे संकल्प-विकल्प होता है।

**मुहा०**—किसी से मन अटकना या उलझना=प्रीति होना। प्रेम होना। मन टूटना=साहस छूटना। हताश होना। मन बढ़ना=साहस बढ़ना। उत्साह बढ़ना। किसी का मन बूझना=किसी के मन की थाह लेना। मन हरा होना=चित्त प्रसन्न रहना। मन के लड्डू खाना=व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। मन चलना=इच्छा होना। प्रवृत्ति होना। किसी का मन टटोलना=किसी के मन की थाह लेना। मन डोलना=१. मन का चंचल होना। २. लालच उत्पन्न होना। लोभ आना। मन देना=१. जी लगाना। मन लगाना। २. ध्यान देना। किसी पर मन धरना=ध्यान देना। मन लगाना। मन छोड़ना या हारना=साहस छोड़ना। मन फेरना=मन को किसी ओर से हटाना। मन बढ़ाना=साहस दिलाना। उत्साह बढ़ाना। मन में बसना=पसंद आना। अच्छा लगना। रुचना। मन बहलाना=खिन्न या दुःखी चित्त को किसी काम में लगा-कर आनंदित करना। मन भरना=१. निश्चय या विश्वास होना। २. संतोष होना। मन भर जाना=१. अघा जाना। तृप्ति होना। २. अधिक प्रवृत्ति न रह जाना। मन भाना=भला लगना। पसंद होना। रुचना। मन मानना=१. संतोष होना। तसल्ली होना। २. निश्चय होना। प्रतीत होना। ३. अच्छा लगना। पसंद आना। ४. स्नेह होना। अनु-राग होना। मन में रखना=१. गुप्त रखना। प्रकट न करना। २. स्मरण रखना। मन में लाना=विचार करना। सोचना। मन मिलना=दो मनुष्यों की प्रकृति या प्रवृत्तियों का अनुकूल अथवा एक समान होना। मन मारना=१. खिन्न चित्त होना। उदास होना। २. इच्छा को दबाना। मन मैला करना=अप्रसन्न या असंतुष्ट होना। मन मोटा होना=विराग होना। उदासीन होना। मन मोड़ना=प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। किसी का मन रखना=किसी की इच्छा पूर्ण करना। मन लगना=१. जी लगना। तबीयत लगना। २. चित्तविनोद होना। मन लाना*=१. मन लगाना। जी लगाना। २. प्रेम करना। आसक्त होना। मन से उतरना=१ मन में आदर-भाव न रह जाना। २. याद न रहना। विस्मृत होना। मन ही मन=हृदय में। चुपचाप।

३. इच्छा। इरादा। विचार।

**मुहा०**—मनमाना=अपने मन के अनुसार। यथेच्छ।

*संज्ञा पुं० [सं० मणि] १. मणि। बहुमूल्य पत्थर। २. चालीस सेर की एक तौल।

**मनई**—संज्ञा पुं० [सं० मानव] मनुष्य।

**मनकना**—क्रि० अ० [अनु०] हिलना डोलना।

**मनकरा***—वि० [हिं० मणि+कर] चमकदार।

**मनका**—संज्ञा पुं० [सं० मणिका] पत्थर, लकड़ी आदि का बेधा हुआ दाना जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरिया।

संज्ञा पुं० [सं० मन्यका] गरदन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ के बिलकुल ऊपर होती है।

**मुहा०**—मनका ढलना या ढलकना=मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

**मनकामना**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मन+कामना] इच्छा।

**मनकूला**—वि० स्त्री० [अ०] स्थिर या स्थावर का उलटा। चर।

यौ०—जायदाद मनकूला=चर संपत्ति। गैर मनकूला=स्थिर। स्थायी। स्थावर।

**मन-गढ़ंत**—वि० [हिं० मन+गढ़ना] जिसकी वास्तविक सत्ता न हो, केवल कल्पना कर ली गई हो। कपोल कल्पित।

संज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना। कपोल-कल्पना।

**मनचला**—वि० [हिं० मन+चलना] १. धीर। निडर। २. साहसी। ३.

**मनचाहा**—वि० [हिं० मन+चाहना] इच्छित।

**मनचीतना**—क्रि० स० [हिं० मन+चाहना] मन को अच्छा लगना।

**मनचीता**—वि० [हिं० मन+चेतना] [स्त्री० मनचीती] मनचाहा। मन में सोचा हुआ।

**मनजात**—संज्ञा पुं० [हिं० मन+सं० जात] कामदेव।

**मनन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिंतन।

सोचना। २. भली भाँति अध्ययन करना।

**मननशील**—वि॰ [ सं॰ मनन+शील ] विचारशील। विचारवान्।

**मननाना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] गुंजारना।

**मनबांछित**—वि॰ दे॰ "मनोवांछित"।

**मनभाया**—वि॰ [हिं॰ मन+भाना] [ स्त्री॰ मनभाई ] जो मन को भावे। मनोनुकूल।

**मनभावता**—वि॰ [ हिं॰ मन+भाना ] [ स्त्री॰ मनभावती ] १. जो भला लगता हो। २. प्रिय। प्यारा।

**मनभावन**—वि॰ [हिं॰ मन+भाना] मन को अच्छा लगनेवाला।

**मनमत***†—वि॰ दे॰ "मैमंत"।

**मनमति**—वि॰ [ हिं॰ मन+मति ] अपने मन का काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

**मनमथ**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मन्मथ"।

**मनमानता**—वि॰ दे॰ "मनमाना"।

**मनमाना**—वि॰ [हिं॰ मन+मानना] [ स्त्री॰ मनमानी ] १. जो मन को अच्छा लगे। २. मन के अनुकूल। पसंद। ३. यथेच्छ।

**मनमुखी**†—वि॰ [ हिं॰ मन+मुख ] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।

**मनमुटाव**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मन+मोटा ] मन में भेद पड़ना। वैमनस्य होना।

**मनमोदक**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मन+मोदक ] अपनी प्रसन्नता के लिए मन में बनाई हुई असंभव बात। मन का लड्डू।

**मनमोहन**—वि॰ [ हिं॰ मन+मोहन] [ स्त्री॰ मनमोहिनी ] १. मन को मोहनेवाला। चित्ताकर्षक। २. प्रिय। प्यारा।

संज्ञा पुं॰ १. श्रीकृष्ण। २. एक मात्रिक छंद।

**मनमौजी**—वि॰ [ हिं॰ मन+मौज ] मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला।

**मनरंज***—वि॰ दे॰ "मनोरंजक"।

**मनरंजन**—वि॰, संज्ञा पुं॰ दे॰ "मनोरंजन"।

**मनरोचन**—वि॰ [ हिं॰ मन+रोचन] सुंदर।

**मन-लाडू***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मनमोदक"।

**मनवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मानना का प्रेर॰ ] मानने का प्रेरणार्थक रूप। मनाना।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मनाना ] दूसरे को मनाने में प्रवृत्त करना।

**मनशा**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. इच्छा। विचार। इरादा। २. तात्पर्य। मतलब।

**मनसना***—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मानस] १. इच्छा करना। इरादा करना। २. संकल्प करना। दृढ़ निश्चय या विचार करना। ३. हाथ में जल लेकर संकल्प का मंत्र पढ़कर कोई चीज दान करना।

**मनसब**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. पद। स्थान। ओहदा। २. कर्म। काम। ३. अधिकार।

**मनसबदार**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] वह जो किसी मनसब पर हो। ओहदेदार।

**मनसा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक देवी का नाम।

संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ मनशा ] १. कामना। इच्छा। २. संकल्प। इरादा। ३. अभिलाषा। मनोरथ। ४. मन। ५. बुद्धि। ६. अभिप्राय। तात्पर्य।

वि॰ १. मन से उत्पन्न। २. मन का।

क्रि॰ वि॰ मन से। मन के द्वारा।

**मनसाकर**—वि॰ [हिं॰ मनसा+कर] मनोरथ पूरा करनेवाला।

**मनसाना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ मनसा ] उमंग में आना। तरंग में आना।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मनसना का प्रेर॰ ] मनसने का काम दूसरे से कराना।

**मनसायन**†—वि॰ [ हिं॰ मानस ] १. वह स्थान जहाँ मनबहलाव के लिए कुछ लोग हों। २. मनोरम स्थान। गुलजार।

**मनसिज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कामदेव।

**मनसूख**—वि॰ [ अ॰ ] [ संज्ञा मनसूखी ] १. जो अप्रामाणिक ठहरा दिया गया हो। अतिवर्तित। २. परित्यक्त। त्यागा हुआ।

**मनसूबा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. युक्ति। ढंग।

मुहा॰—मनसूबा बाँधना = युक्ति सोचना।

२. इरादा। विचार।

**मनस्क**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मन का अल्पार्थक रूप। (समस्त पदों में )

**मनस्ताप**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. मनःपीड़ा। आंतरिक दुःख। २. पश्चात्ताप। पछतावा।

**मनस्विता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] बुद्धिमत्ता।

**मनस्वी**—वि॰ [ सं॰ मनस्विन् ] [ स्त्री॰ मनस्विनी ] १. बुद्धिमान्। २. स्वेच्छाचारी।

**मनहंस**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मन+हंस ] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। मानसहंस।

**मनहर**—वि० दे० "मनोहर"।
संज्ञा पुं० मनाक्षरी छंद का एक नाम।

**मनहरण**—संज्ञा पुं० [ हिं० मन+हरण ] १. मन हरने की क्रिया या भाव। २. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद। नलिनी। भ्रमरावली।
वि० मनोहर। सुंदर।

**मनहार, मनहारि**—वि० दे० "मनोहारी"।

**मनहुँ***—अव्य० [ हिं० मानों ] जैसे। यथा।

**मनहूस**—वि० [ अ० ] [ भाव० मनहूसियत, मनहूसी ] १. अशुभ। बुरा। २. अप्रिय-दर्शन। देखने में बेरौनक।

**मना**—वि० [ अ० ] १. जिसके संबंध में निषेध हो। निषिद्ध। वर्जित। २. वारण किया हुआ। ३. अनुचित। नामुनासिब।

**मनाक, मनाग**—वि० [सं० मनाक् ] थोड़ा।

**मनादी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुनादी"।

**मनाना**—क्रि० स० [ हिं० मानना का प्रे० ] १. स्वीकार कराना। सकराना। २. रूठे हुए को प्रसन्न करना या करने का प्रयत्न करना। राजी करना। ३. देवता आदि से किसी काम के होने के लिए प्रार्थना करना। ४. प्रार्थना करना। स्तुति करना।

**मनावना**—संज्ञा पुं० [ हिं० मनाना ] रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम या भाव।

**मनाही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मना ] न करने की आज्ञा। रोक। अवरोध। निषेध।

**मनिधर***—संज्ञा पुं० दे० "मणिधर"।

**मनिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० माणिक्य ] १. गुरिया। मनिका। दाना जो माला में पिरोया हो। २. कंठी। माला।

**मनियार†***—वि० [ हिं० मणि+आर (प्रत्य०) ] १. उज्ज्वल। चमकीला। २. दर्शनीय। शोभायुक्त। सुहावना।
संज्ञा पुं० दे० "मनिहार"।

**मनिहार**—संज्ञा पुं० [ हिं० मणिकार ] [ स्त्री० मनिहारिन, मनिहारी ] चूड़ी बनानेवाला। चुड़िहारा।

**मनी***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मान ] अहंकार।
संज्ञा स्त्री० १. दे० "मणि"। २. वीर्य।

**मनीषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुद्धि। अक्ल।

**मनीषी**—वि० [ सं० ] १. पंडित। ज्ञानी। २. बुद्धिमान्। मेधावी। अक्लमंद।

**मनु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं। यथा—स्वायंभुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्म सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि और इंद्र सावर्णि। २. विष्णु। ३. अंतःकरण। मन। ४. वैवस्वत मनु। ५. १४ की संख्या। ६. मनन।
*अव्य० [ हिं० मानना ] मानों। जैसे।

**मनुआँ†***—संज्ञा पुं० [ हिं० मन ] मन।
संज्ञा पुं० [ हिं० मानव ] मनुष्य।
संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की कपास। नरमा।

**मनुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मनुष्य। आदमी।

**मनुजता**—संज्ञा स्त्री० दे० "मनुजत्व"।

**मनुजत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यत्व। आदमीयत।

**मनुजोचित**—वि० [ सं० ] जो मनुष्य के लिए उचित हो। मनुष्य के उपयुक्त।

**मनुष***—संज्ञा पुं० [ सं० मनुष्य ] १. मनुष्य। आदमी। २. पति। खाविंद।

**मनुष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक स्तनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क या बुद्धि-बल की अधिकता के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। आदमी। नर।

**मनुष्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मनुष्य का भाव। आदमीयत। २. दया-भाव। शील। ३. शिष्टता। तमीज।

**मनुष्यत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्यता।

**मनुष्यलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मर्त्यलोक।

**मनुसाई*†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मनुस+आई ] १. पुरुषार्थ। पराक्रम। बहादुरी। २. मनुष्यता। आदमीयत।

**मनुस्मृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो मनु-प्रणीत है। मानव-धर्मशास्त्र।

**मनुहार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मान+हरना ] १. वह विनती जो किसी का मान छुड़ाने या उसे प्रसन्न करने के लिए की जाती है। मनौआ। खुशामद। २. विनय। प्रार्थना। ३. सत्कार। आदर। ४. शांति। तुष्टि।

**मनुहारना*†**—क्रि० स० [ हिं० मान+हरना ] १. मनाना। खुशामद करना। २. विनय करना। प्रार्थना करना। ३. सत्कार करना। आदर

करना।

**मनों†**—अव्य० [हिं० मानना] मानो।

**मनोकामना**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मन+कामना] इच्छा। अभिलाषा।

**मनोगत**—वि० [सं०] जो मन में हो। दिली।

संज्ञा पुं० कामदेव। मदन।

**मनोगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मन की गति। चित्त वृत्ति। २. इच्छा। ख्वाहिश।

**मनोज**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव। मदन।

**मनोजव**—वि० [सं०] अत्यंत वेगवान्।

संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वायु का एक पुत्र।

**मनोज्ञ**—वि० [सं०] [भाव० मनोज्ञता] मनोहर। सुंदर।

**मनोदेवता**—संज्ञा पुं० [सं०] विवेक।

**मनोनिग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] मन का निग्रह। मन को वश में रखना। मनोगुप्ति।

**मनोनियोग**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में मन लगाना।

**मनोनीत**—वि० [सं०] १. जो मन के अनुकूल हो। पसंद। २. चुना हुआ।

**मनोभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] मन में उत्पन्न होनेवाला भाव।

**मनोभिराम**—वि० [सं०] सुंदर। मनोहर।

**मनोभूत**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**मनोमय**—वि० [सं०] १. मन से युक्त या पूर्ण। २. मानसिक। मन-संबंधी।

**मनोमयकोश**—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच कोशों में से तीसरा। मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी जाती हैं। (वेदांत)

**मनोमालिन्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मन मुटाव। रंजिश।

**मनोयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] मन का एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना।

**मनोरंजक**—वि० [सं०] चित्त को प्रसन्न करनेवाला।

**मनोरंजन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मनोरंजक] मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। मनोविनोद। दिल-बहलाव।

**मनोरथ**—संज्ञा पुं० [सं०] अभिलाषा।

**मनोरम**—वि० [सं०] [स्त्री० मनोरमा, भाव० मनोरमता] मनोहर। सुंदर।

संज्ञा पुं० सखी छंद का एक भेद।

**मनोरमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोरोचन। २. सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम। ३. एक प्रकार का छंद। ४. चन्द्रशेखर के अनुसार आर्य्या के ५७ भेदों में से एक वर्णिक वृत्त। ५. दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ६. केशव के अनुसार चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त। ७. केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक नाम। ८. सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।

**मनोरा**—संज्ञा पुं० [सं० मनोहर] दीवार पर गोबर से बनाए हुए चित्र जो दिवाली के पीछे बनाकर पूजे जाते हैं। झिंझिया।

यौ०—मनोरा झूमक=एक प्रकार का गीत।

**मनोराज**—संज्ञा पुं० [सं० मनोराज्य] मानसिक कल्पना। मन की कल्पना।

**मनोवांछा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मनोवांछित] इच्छा। कामना।

**मनोवांछित**—वि० [सं०] इच्छित। मनमाँगा।

**मनोविकार**—संज्ञा पुं० [सं०] मन की वह अवस्था जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है। जैसे क्रोध, दया।

**मनोविज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है।

**मनोविश्लेषण**—संज्ञा पुं० [सं०] इस बात का विश्लेषण या जाँच कि मनुष्य का मन किस समय किस प्रकार कार्य करता है।

**मनोवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनोविकार।

**मनोवेग**—संज्ञा पुं० [सं०] मनोविकार।

**मनोवैज्ञानिक**—वि० [सं०] मनोविज्ञान-संबंधी।

**मनोव्यापार**—संज्ञा पुं० [सं०] विचार।

**मनोसर***—संज्ञा पुं० [सं० मन] मनोविकार।

**मनोहर**—वि० [सं०] [संज्ञा मनोहरता] १. मन को आकर्षित करनेवाला। २. सुंदर।

संज्ञा पुं० छप्पय छंद का एक भेद।

**मनोहरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।

**मनोहरताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "मनोहरता"।

**मनोहारी**—वि० [स्त्री० मनोहारिणी, भाव० मनोहारिता] दे० "मनोहर"।

**मनौती***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मनौत"।

**मनौत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मानना] किसी देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा जो किसी कामना-विशेष की

निर्जीव।

संज्ञा पुं० घाटा। टोटा।

**मराल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० मराली ] १. एक प्रकार का बत्तख। २. घोड़ा। ३. हाथी। ४. हंस।

**मरिंद**—संज्ञा पुं० १. दे० "मकिंद"। २. दे० "मरंद"।

**मरिच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मिरिच। मिर्च।

**मरियम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कुमारी। २. ईसा मसीह की माता का नाम।

**मरियल**—वि० [ हिं० मरना ] बहुत दुर्बल।

**मरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मारी ] वह संक्रामक रोग जिसमें एक साथ बहुत से लोग मरते हैं। महामारी।

**मरीचि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ऋषि जिन्हें पुराणों में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और सप्तर्षियों में माना है। २. एक मरुत् का नाम। ३. एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किरण। २. प्रभा। कांति। ३. मरीचिका। मृग-तृष्णा।

**मरीचिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मृगतृष्णा। सिरोह। २. किरण।

**मरीची**—संज्ञा पुं० [ सं० मरीचिन् ] १. सूर्य्य। २. चंद्रमा।

**मरीज़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० मरीज़ो ] रोगी। बीमार।

**मरीना**—संज्ञा पुं० [ स्पेनी० मेरिनो ] एक प्रकार का मुलायम ऊनी पतला कपड़ा।

**मरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० मरुता ] १. मरुस्थल। निर्जल स्थान। रेगिस्तान। २. मारवाड़ और उसके आस-पास के देश का नाम।

**मरुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० मरुव ] बन तुलसी या बबँरी की जाति का एक पौधा।

संज्ञा पुं० [ सं० मेरु ] १. मकान की छाजन में सबसे ऊपर की बल्ली। बँडेर। २. वह लकड़ी जिसमें हिंडोला लटकाया जाता है।

**मरुत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक देवगण का नाम। वेदों में इन्हें रुद्र और पृश्नि का पुत्र लिखा है, पर पुराणों में इन्हें कश्यप और दिति का पुत्र लिखा है। २. वायु। हवा। ३. प्राण। ४. दे० "मरुत्वान्"।

**मरुतवान***—संज्ञा पुं० दे० "मरु-त्वान्"।

**मरुत्वान्**—संज्ञा पुं० [ सं० मरुत्वत् ] १. इंद्र। २. देवताओं का एक गण जो धर्म के पुत्र माने जाते हैं। ३. हनुमान।

**मरुथल**—संज्ञा पुं० दे० "मरुस्थल"।

**मरुद्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह उपजाऊ और सजल हरा-भरा स्थान जो मरुस्थल में हो।

**मरुधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मारवाड़ देश।

**मरुभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बालू का निर्जल मैदान। रेगिस्तान।

**मरुरना***—क्रि० अ० [ हिं० मरो-ड़ना ] 'मरोरना' का अकर्मक रूप। ऐंठना।

**मरुस्थल**—संज्ञा पुं० दे० "मरुभूमि"।

**मरू***—वि० [ हिं० मरना ] कठिन। दुरूह।

**मुहा०**—मरू करिके या मरू करि*= ज्यों त्यों करके। बहुत मुश्किल से।

**मरूरा***—संज्ञा पुं० दे० "मरोड़"।

**मरोड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० मरोड़ना ] १. मरोड़ने का भाव या क्रिया।

**मुहा०**—मरोड़ खाना=चक्कर खाना। मन में मरोड़ करना=कपट करना। मरोड़ की बात=घुमाव-फिराव की बात।

२. घुमाव। ऐंठन। बल। ३. व्यथा। क्षोभ।

**मुहा०**—मरोड़ खाना=उलझन में पड़ना।

४. पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। ५. घमंड। गर्व। ६. क्रोध। गुस्सा।

**मुहा०**—मरोड़ गहना=क्रोध करना।

**मरोड़ना**—क्रि० स० [ हिं० मोड़ना ] १. बल डालना। ऐंठना।

**मुहा०**—अँग मरोड़ना=अँगड़ाई लेना। भौंह मरोड़ना या दृग (आदि) मरोड़ना=१. आँख से इशारा करना या कनखी मारना। २. नाक-भौंह चढ़ाना। भौंह सिकोड़ना।

२. ऐंठ कर नष्ट करना या मार डालना। ३. पीड़ा देना। दुःख देना। ४. मसलना।

**मुहा०**—हाथ मरोड़ना*=पछताना।

**मरोड़फली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मरोड़ + फली ] एक प्रकार की फली। मुर्रा। अवर्तनी।

**मरोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मरोड़ना ] १. ऐंठन। मरोड़। उमेठ। बल। २. पेट की वह पीड़ा जिसमें कुछ ऐंठन भी जान पड़ती हो।

**मरोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मरोड़ना ] ऐंठन।

**मुहा०**—मरोड़ी करना=खींचातानी करना।

**मरोरना**—क्रि० स० [ भाव० मरोर* ] दे० "मरोड़ना"।

**मर्कट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंदर। वानर। २. मकड़ा। ३. दोहे के

एक भेद का नाम। ४. छप्पय का आठवाँ भेद।

**मर्कटी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बानरी। बँदरी। २. मकड़ी। ३. छंद के ९ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।

**मर्कत***—संज्ञा पुं० दे० "मरकत"।

**मर्तबान**—संज्ञा पुं० [हिं० अमृत-बान] रोगनी बर्तन जिसमें अचार, घी आदि रखा जाता है। अमृतबान।

**मर्त्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य। २. भूलोक। ३. शरीर।

**मर्त्यलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी।

**मर्द**—संज्ञा पुं० [फ़ा० मि० सं०, मर्त्त और मर्त्य] १ मनुष्य। आदमी। २. साहसी पुरुष। पुरुषार्थी। ३. वीर पुरुष। योद्धा। ४ पुरुष। नर। ५. पति। भर्ता।

**मर्दना***—क्रि० स० [सं० मर्दन] १. मालिश करना। मलना। २. तोड़-फोड़ डालना। ३ नाश करना। ४. कुचलना। रौंदना।

**मर्दुम**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मनुष्य।

**मर्दुमशुमारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. किसी देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना। मनुष्य-गणना। २. जन-संख्या। आबादी।

**मर्दुमी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] मर-दानगी। पौरुष।

**मर्दन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मर्दित] १. कुचलना। रौंदना। २. मलना। मसलना। ३. तेल, उबटन आदि शरीर में लगाना। मलना। ४. द्वंद्व युद्ध में एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथों से घस्सा लगाना। घस्सा। ५. ध्वंस। नाश। ६. पीसना। घोटना। रगड़ना।

वि० [स्त्री० मर्दिनी] नाशक। संहारकर्त्ता।

**मर्दल**—संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग की तरह का एक बाजा। इसका प्रचार बंगाल में है।

**मर्दित**—वि० [सं०] जो मर्दन किया गया हो।

**मर्दूद**—वि० दे० "मरदूद"।

**मर्म**—संज्ञा पुं० [सं० मर्म्म] १. स्वरूप। २. रहस्य। तत्त्व। भेद। ३. संधिस्थान। ४. प्राणियों के शरीर में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है।

**मर्मज्ञ**—वि० [सं०] [भाव० मर्म-ज्ञता] १ जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो। तत्त्वज्ञ। २. रहस्य जाननेवाला।

**मर्मभेदक**—वि० दे० "मर्मभेदी"।

**मर्मभेदी**—वि० [सं० मर्मभेदिन्] हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। आंतरिक कष्ट देनेवाला।

**मर्मर**—संज्ञा पुं० दे० "मरमर"।

संज्ञा पुं० [अनु०] पत्तों आदि का "मरमर" शब्द।

**मर्मरित**—वि० [अनु० मर मर से] जिसमें मर मर शब्द होता हो।

**मर्मवचन**—संज्ञा पुं० [हिं० मर्म+वचन] वह बात जिससे सुननेवाले को आंतरिक कष्ट हो।

**मर्मवाक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] रहस्य की बात। भेद की या गूढ़ बात।

**मर्मविद्**—वि० [सं०] मर्मज्ञ।

**मर्मस्पर्शी**—वि० [सं० मर्मस्पर्शिन्] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी] [भाव० मर्म-स्पर्शिता] मर्म पर प्रभाव डालनेवाला।

**मर्मांतक**—वि० [सं०] मर्म में चुभनेवाला। मर्मभेदक। हृदयस्पर्शी।

**मर्मांतिक**—वि० दे० "मर्मांतक"।

**मर्मी**—वि० [हिं० मर्म] तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।

**मर्याद**—संज्ञा स्त्री० [सं० मर्य्यादा] १. दे० "मर्य्यादा"। २. रीति। रस्म। प्रथा। ३. विवाह में बड़हार। बढ़ार।

**मर्य्यादा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. कूल। नदी का किनारा। ३. प्रतिज्ञा। मुआहिदा। करार। ४. नियम। ५. सदाचार। ६. मान। प्रतिष्ठा। ७. धर्म।

**मर्य्यादित**—वि० [सं०] १. जिसकी सीमा या हद निश्चित हो। २. जो अपनी मर्य्यादा या सीमा के अंदर हो।

**मर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० मर्षणीय] १. क्षमा। माफी। २. रगड़। घर्षण।

वि० १. नाशक। २. दूर करनेवाला।

**मलंग**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. एक प्रकार के मुसलमान साधु। २. एक प्रकार का पक्षी।

**मल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मैल। कीट। २. शरीर के अंगों से निकलने-वाली मैल या विकार। ३. विष्ठा। पुरीष। ४. दूषण। विकार। ५. पाप। ६. ऐब।

**मलकना***—क्रि० स०, अ० दे० "मचकना"।

**मलका**—संज्ञा स्त्री० [अ० मलिका] बादशाह की पटरानी। महारानी।

**मलकुलमौत**—संज्ञा पुं० [अ०] जीवों के प्राण लेनेवाला देवदूत। यमराज।

**मलखंभ**—संज्ञा पुं० दे० "मलखम"।

**मलखम**—संज्ञा पुं० [सं० मल्ल+हिं० खंभा] १. लकड़ी का एक

प्रकार का खंभा जिसपर फुर्ती से चढ़ और उतरकर कसरत करते हैं। मालखंभ। २. वह कसरत जो मलखम पर की जाय।

**मलखाना***—वि० [हिं० मल+खाना] मल खानेवाला।

संज्ञा पुं० [सं० मल्ल+सेन] पश्चिमी संयुक्त प्रांत में बसनेवाले एक प्रकार के राजपूत जो अब मुसलमान से हिंदू बन गए हैं।

**मलगजा***—वि० [हिं० मलना+गींजना] मला-दला हुआ। गींजा हुआ। मरगजा।

संज्ञा पुं० बेसन में लपेटकर तेल या घी में छाने हुए बैंगन के पतले टुकड़े।

**मलगिरी**—संज्ञा पुं० [हिं० मलयगिरि] एक प्रकार का हलका कत्थई रंग।

**मलता**—वि० [हिं० मलना] घिसा हुआ (सिक्का)।

**मलद्वार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। २. गुदा।

**मलना**—क्रि० स० [सं० मलन] १. हाथ या किसी और चीज से दबाते हुए घिसना। मर्दन। मींजना। मसलना।

मुहा०—दलना-मलना=१. चूर्ण करना। पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। २. मसलना। घिसना। हाथ मलना=१. पछताना। पश्चात्ताप करना। २. क्रोध प्रकट करना।

२. मालिश करना। ३. मसलना। मींजना। ४. मरोड़ना। ऐंठना। ५. हाथ से बार बार रगड़ना या दबाना।

**मलबा**—संज्ञा पुं० [हिं० मल ?] १. कूड़ाकर्कट। कतवार। २. टूटी या गिराई हुई इमारत की ईंट, पत्थर और चूना आदि।

**मलमल**—संज्ञा स्त्री० [सं० मल्लक] एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।

**मलमलाना**—क्रि० स० [हिं० मलना] १. बार बार स्पर्श कराना। २. बार बार खोलना और ढकना। ३. पुनः पुनः आलिंगन करना। ४. पश्चात्ताप करना।

**मलमास**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अमांत मास जिसमें संक्रांति न पड़ती हो। अधिक मास। पुरुषोत्तम। अधिमास।

**मलय**—संज्ञा पुं० [सं० मलय=पर्वत] १. पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावंकोर के पूर्व में है। २. मलाबार देश। ३. मलाबार देश के रहनेवाले मनुष्य। ४. सफेद चंदन। ५. नंदन वन। ६. छप्पय के एक भेद का नाम।

**मलयगिरि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मलय नामक पर्वत जो दक्षिण में है। २. मलयगिरि में उत्पन्न चंदन। ३. हिमालय पर्वत का वह देश जहाँ आसाम है।

**मलयज**—संज्ञा पुं० [सं०] चंदन।

वि० मलय पर्वत का।

**मलयागिरि**—संज्ञा पुं० दे० "मलयगिरि"।

**मलयाचल**—संज्ञा पुं० [सं०] मलय पर्वत।

**मलयानिल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। २. सुगंधित वायु। ३. वसंत काल की वायु।

**मलयाली**—वि० [ता० मलयालम] मलाबार देश का। मलाबार देश-संबंधी।

संज्ञा स्त्री० मलाबार देश की भाषा।

**मलयुग**—संज्ञा पुं० दे० "कलियुग"।

**मलराना***—क्रि० स० दे० "मल्हाना"।

**मलरुचि**—वि० [सं०] दूषित रुचि का। पापी।

**मलवाना**—क्रि० स० [हिं० मलना का प्रे० रूप] मलने का काम दूसरे से कराना।

**मलहम**—संज्ञा पुं० दे० "मरहम"।

**मलाई**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. बहुत गरम किए हुए दूध का ऊपरी सार भाग। दूध की साढ़ी। २. सार। तत्व। रस।

संज्ञा स्त्री० [हिं० मलना] मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**मलाट**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा घटिया कागज जिसमें चीजें लपेटी जाती हैं।

**मलान***—वि० दे० "म्लान"।

**मलानि***—संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि"।

**मलामत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लानत। फटकार। दुतकार।

यो०—लानत-मलामत।

२. निकृष्ट या खराब अंश। गंदगी।

**मलार**—संज्ञा पुं० [सं० मल्लार] एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

मुहा०—मलार गाना=बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषतः गाना।

**मलाल**—संज्ञा पुं० [अ०] १. दुःख। रंज। २. उदासीनता। उदासी।

**मलाह***—संज्ञा पुं० दे० "मल्लाह"।

**मलिंग**—संज्ञा पुं० दे० "मलंग"।

**मलिंद**—संज्ञा पुं० [सं० मिलिंद] भौंरा।

**मलिक**—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मलिका] १ राजा। २. अधीश्वर।

**मलिच्छ, मलिच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

**मलिन**—वि० [सं०] [स्त्री० मलिना, मलिनी] १. मलयुक्त। मैला। गँदला। २. दूषित। खराब। ३. मटमैला। धूमिल। बदरंग। ४. पापात्मा। पापी। ५. धीमा। फीका। ६. म्लान। उदासीन।

संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला कपड़ा पहनते हैं।

**मलिनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैलापन।

**मलिनाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

**मलिनाना***—क्रि० अ० [हि० मलिन] मैला होना।

**मलिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० मल्लिका] १. तंग मुँह का मिट्टी का एक बर्तन। घेरा। २. चक्कर।

**मलियामेट**—संज्ञा पुं० [हि० मलिया+मिटाना] सत्यानाश। तहस-नहस।

**मलीदा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।

**मलीन**—वि० [सं० मलिन] १. मैला। अस्वच्छ। २. उदास।

**मलीनता**—संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

**मलूक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का कीड़ा। २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० "अमलूक"।

वि० [देश०] सुंदर। मनोहर।

**मलेच्छ**—संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

**मलेरिया**—संज्ञा पुं० [अं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

**मलोला**—संज्ञा पुं० दे० "मलाला"।

**मलोलना**—क्रि० अ० [हि० मलाला] १. मन का दुखी होना। २. पछताना।

**मलोला**—संज्ञा पुं० [अ० मलूल या मलाल] १. मानसिक व्यथा। दुःख। रंज।

मुहा०—मलोला या मलोले आना=दुःख होना। पछतावा होना। मलोले खाना=मानसिक व्यथा सहना।

२. वह इच्छा जो मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करे। अरमान।

**मल्ल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्वंद्व युद्ध में बड़े निपुण होते थे, इसी लिए कुश्ती लड़नेवाले का नाम मल्ल पड़ गया है। २. पहलवान। ३. एक प्राचीन देश जो विराट देश के पास था। ४. दीप-शिखा।

**मल्लभूमि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती लड़ने की जगह। अखाड़ा।

**मल्लयुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] परस्पर द्वंद्व युद्ध जो बिना शस्त्र के केवल हाथों से किया जाय। बाहुयुद्ध। कुश्ती।

**मल्लविद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुश्ती की विद्या।

**मल्लशाला**—संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।

**मल्लार**—संज्ञा पुं० दे० "मलार"।

**मल्लाह**—संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन] एक अंत्यज जाति जो नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करती है। केवट। धीवर। माँझी।

**मल्लिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बेला। मोतिया। २. आठ अक्षरों का एक वर्णिक छंद। ३. सुमुखी वृत्ति।

**मल्लिनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम।

**मल्ली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मल्लिका। २. सुंदरी वृत्ति का दूसरा नाम।

**मल्लू**—संज्ञा पुं० [सं०] बंदर।

**मल्हाना, मल्हारना†**—क्रि० स० [सं० मल्ह=गोस्तन] चुमकारना। पुचकारना।

**मवक्किल**—संज्ञा पुं० [अ० मुवक्किल] मुकदमे में अपनी ओर से कचहरी में काम करने के लिए वकील नियत करनेवाला पुरुष।

**मवाजिब**—संज्ञा पुं० [अ०] नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ; जैसे, वेतन।

**मवाजी**—वि० [अ०] १. कुल। सब। २. प्रायः बराबर। लगभग।

**मवाद**—संज्ञा पुं० [अ०] १. पीब। २. मसाला। सामग्री।

**मवास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा का स्थान। त्राणस्थल। आश्रय। शरण।

मुहा०—मवास करना=निवास करना।

२. किला। दुर्ग। गढ़। ३. वे पेड़ जो दुर्ग के प्राकार पर होते हैं।

**मवासी**—संज्ञा स्त्री० [हि० मवास] छोटा गढ़।

संज्ञा पुं० १. गढ़पति। किलेदार। २. प्रधान। मुखिया। अधिनायक।

**मवेशी**—संज्ञा पुं० [अ० मवाशी] पशु। ढोर।

**मवेशीखाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह बाड़ा जिसमें मवेशी रखे जाते हैं।

**मशक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मच्छड़। २. मसा नामक चर्म-रोग।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।

**मशक्कत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेहनत। श्रम। परिश्रम। २. वह परि-

श्रम जो जेलखाने के कैदियों को करना पड़ता है।

**मशगूल**—वि० [ अ० ] काम में लगा हुआ।

**मशरू**—संज्ञा पुं० [ अ० मशरूअ ] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

**मशविरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सलाह। परामर्श।

**मशहूर**—वि० [ अ० ] प्रख्यात। प्रसिद्ध।

**मशाल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] डंडे में लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती।

**मुहा०**—मशाल लेकर या जलाकर ढूँढ़ना=अच्छी तरह ढूँढ़ना। बहुत ढूँढ़ना।

**मशालची**-संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ स्त्री० मशालचिन ] मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला।

**मशीन**—संज्ञा स्त्री० [ अं० मेशीन ] पेंचों और पुरजों से बनी हुई वह वस्तु जिससे कुछ काम होता हो। कल। यंत्र।

**मश्क**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अभ्यास।

**मशीन-गन**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] वह मशीन जो गोलियाँ चलाती है।

**मष**—संज्ञा पुं० दे० "मख"।

**मष्ट**—वि० [ सं० मष्ट ] १. संस्कार-शून्य। जो भूल गया हो। २. उदासीन। मौन।

**मुहा०**—मष्ट करना, मारना या मारना=चुप रहना। न बोलना।

**मस***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० मसि ] रोशनाई।

संज्ञा स्त्री० [ सं० श्मश्रु ] मोछ निकलने से पहले उसके स्थान पर की रोमावली।

**मुहा०**—मस भीगना=मूछों का निकलना आरंभ होना।

**मसक**—संज्ञा पुं० [ सं० मशक ] मशा। मच्छड़।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] मसकने की क्रिया।

**मसकत***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मशक्कत"।

**मसकना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. कपड़े को इस प्रकार दबाना कि बुनावट के सब तंतु टूटकर अलग हो जायँ। २. इस प्रकार दबाना कि बीच में से फट जाय। ३. जोर से दबाना या मलना।

क्रि० अ० १. किसी पदार्थ का दबाव या खिंचाव आदि के कारण बीच में से फट जाना। २. ( चित्त का ) चिंतित होना।

**मसकरा**—संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।

**मसकला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. सिकलीगरों का एक औजार। इससे रगड़ने से धातुओं पर चमक आ जाती है। २. सैकल या सिकली करने की क्रिया।

**मसकली**—संज्ञा स्त्री० दे० "मसकला"।

**मसका**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. नवनीत। मक्खन। नैनू। २. ताजा निकला हुआ घी। ३. दही का पानी। ४. चूने की बरी का वह चूर्ण जो उस पर पानी छिड़कने से बने।

**मसकीन***†—वि० [ अ० मिसकीन ] १. गरीब। दीन। बेचारा। २. साधु। ३. दरिद्र। ४. भोला। ५. सुशील।

**मसखरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बहुत हँसीमजाक करनेवाला। हँसोड़। ठट्ठेबाज।

**मसखरापन**—संज्ञा पुं० [ अ० मसखरा+पन ( प्रत्य० ) ] दिल्लगी। ठठोली। हँसी। ठट्ठा।

**मसखरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मसखरा+ई ( प्रत्य० ) ] दिल्लगी। हँसी। मजाक।

**मसखवा**†—संज्ञा पुं० [ हि० मांस+खाना ] वह जो मांस खाता हो। मांसाहारी।

**मसजिद**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मस्जिद] मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने तथा ईश्वर-वंदना करने का स्थान या घर।

**मसनद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. बड़ा तकिया। गाव तकिया। २. अमीरों के बैठने की गद्दी।

**मसनवी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] एक प्रकार की कविता। ( उर्दू-फ़ारसी )

**मसना**†—क्रि० स० दे० "मसलना"।

**मसमुंद***†—वि० [मस ?+मूँदना=बंद होना] कशमकश। ठेलमठेल। धक्कमधक्का।

**मसयारा***†—संज्ञा पुं० [ अ० मशअल ] १. मशाल। २. मशालची।

**मसरना**—क्रि० स० दे० "मसलना"।

**मसरफ़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] व्यवहार में आना। काम में आना। उपयोग।

**मसरूफ़**—वि० [ अ० ] काम में लगा हुआ।

**मसल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] कहावत। लोकोक्ति।

**मसलति***—संज्ञा स्त्री० दे० "मसलहत"।

**मसलन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मसलना] मसलने की क्रिया या भाव।

**मसलन्**—वि० [अ०] उदाहरणार्थ। यथा। जैसे

**मसलना**—क्रि० स० [ हि० मलना ]

[ भाव० मसलन ] १. हाथ से दबाते हुए रगड़ना । मलना । २. जोर से दबाना । ३. आटा गूँधना ।

**मसलहत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] ऐसा गुप्त युक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके । अप्रकट शुभ हेतु ।

**मसला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कहावत । लोकोक्ति । २. विचारणीय विषय ।

**मसवासी**—संज्ञा पुं० [ सं० मासवासी ] वह साधु आदि जो एक मास से अधिक किसी स्थान में न रहे ।

संज्ञा स्त्री० गणिका । वेश्या ।

**मसांधुआ**—संज्ञा पुं० दे० "मसौदा"।

**मसहरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मशहरी] १. पलंग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छड़ों आदि से बचने के लिए होता है । २. ऐसा पलंग जिसमें मसहरी लग सके ।

**मसहार***—संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी" ।

**मसा**—संज्ञा पुं० [ सं० मांसकील ] १. शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मांस का छोटा दाना । २. बवासीर रोग में मांस का दाना ।

संज्ञा पुं० [ सं० मशक ] मच्छड़ ।

**मसान**—संज्ञा पुं० [ सं० श्मशान ] १. मरघट ।

**मुहा०**—मसान जगाना=तंत्रशास्त्र के अनुसार श्मशान पर बैठकर शव की सिद्धि करना ।

२. भूत, पिशाच आदि । ३. रणभूमि ।

**मसाना**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पेट की वह थैली जिसमें पेशाब रहता है । मूत्राशय ।

संज्ञा पुं० दे० "मसान" ।

**मसानिया**—संज्ञा पुं० [हि० मसान] १. मसान पर रहनेवाला । २. डोम । वि० मसान संबंधी ।

**मसानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्मशानी] श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि ।

**मसाला**—संज्ञा पुं० [फ़ा० मसालह] १. वे चीजें जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो । २. ओषधियों अथवा रासायनिक द्रव्यों का योग या समूह । ३. साधन । ४. तेल । ५. आतिशबाजी ।

**मसालेदार**—वि० [ अ० मसालह + फ़ा० दार ] जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो ।

**मसि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लिखने की स्याही । रोशनाई । २. काजल । ३. कालिख ।

**मसिदानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मसि+ फ़ा० दानी ] दावात । मसिपात्र ।

**मसिपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दावात।

**मसिबुंदा**—संज्ञा पुं० दे० "मसिबिंदु"।

**मसिमुख**—वि० [ सं० ] जिसके मुँह में स्याही लगी हो । दुष्कर्म करनेवाला ।

**मसियर***—संज्ञा स्त्री० दे० "मशाल"।

**मसियाना**—क्रि० अ० [ ? ] भली भाँति भर जाना । पूरा हो जाना ।

**मसियारा***—संज्ञा पुं० दे० "मशालची ।"

**मसिबिंदु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काजल का बुंदा जो नजर से बचने के लिए बच्चों को लगाया जाता है । डिठौना ।

**मसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मसि" ।

**मसीत, मसीद***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद" ।

**मसीना**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] मोटा अन्न ।

**मसीह, मसीहा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० मसीही ] ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा ।

**मसू***†—संज्ञा स्त्री० [ हि० मरू ] कठिनाई ।

**मुहा०**—मसू करके=बहुत कठिनता से ।

**मसूड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० श्मश्रु ] मुँह के अंदर का वह मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं ।

**मसूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न । मसूरी ।

**मसूरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मसूर की दाल । २. मसूर की बनी हुई बरी ।

**मसूरिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शीतला । माता । चेचक । २. छोटी माता ।

**मसूरिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "मसूरी"।

**मसूरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. माता । चेचक । २. दे० "मसूर" ।

**मसूस, मसूसन**—संज्ञा स्त्री० [ हि० मसूसना ] मन मसूसने का भाव । आंतरिक व्यथा ।

**मसूसना**—क्रि० अ० दे० "मसोसना" ।

**मसृण**—वि० [ सं० ] चिकना और मुलायम ।

**मसेवरा**†—संज्ञा पुं० [ हि० मांस ] मांस की बनी हुई खाने की चीजें ।

**मसोसना**—क्रि० अ० [ फ़ा० अफ़सोस ? ] १. किसी मनोवेग को रोकना । जब्त करना । २. मन ही मन रंज करना । कुढ़ना । ३. ऐंठना । मरोड़ना । ४. निचोड़ना ।

**मसोसा**—संज्ञा पुं० [ हि० मसोसना] मन का दुःख ।

**मसौदा**—संज्ञा पुं० [ अ० मसविदा ] १. काट-छाँट करने और साफ करने के उद्देश्य से पहली बार लिखा हुआ लेख। खर्रा। मसविदा। २. उपाय। युक्ति। तरकीब।

मुहा०—मसौदा गाँठना या बाँधना=कोई काम करने की युक्ति या उपाय सोचना।

**मसौदेबाज**—संज्ञा पुं० [ अ० मसौदा + फ़ा० बाज़ ( प्रत्य० ) ] १. अच्छी युक्ति सोचनेवाला। २. धूर्त। चालाक।

**मस्करा***—संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।

**मस्कला**—संज्ञा पुं० दे० "मसकला"।

**मस्त**—वि० [ फ़ा०, मि० सं० मत्त ] १. जो नशे आदि के कारण मत्त हो। मतवाला। मदोन्मत्त। २. सदा प्रसन्न और निश्चित रहनेवाला। ३. यौवन मद से भरा हुआ। ४. जिसमें मद हो। मदपूर्ण। ५. परम प्रसन्न। मग्न। आनंदित।

**मस्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिर।

**मस्तगी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मस्तकी ] एक प्रकार का बढ़िया गोंद।

**मस्ताना**—वि० [ फ़ा० मस्तानः ] १. मस्तों का सा। मस्तों की तरह का। २. मस्त।

क्रि० अ० [ फ़ा० मस्त ] मस्त होना।

क्रि० स० मस्ती पर लाना। मस्त करना।

**मस्तिष्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मस्तक के अंदर का गूदा। भेजा। मगज। २. बुद्धि के रहने का स्थान। दिमाग।

**मस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मस्त होने की क्रिया या भाव। मत्तता। मतवालापन। २. वह स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि के पास उनके मस्त होने के समय होता है। मद। ३. वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि में से होता है।

**मस्तूल**—संज्ञा पुं० [ पुर्त० ] बड़ी नावों आदि के बीच का वह बड़ा शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

**मस्सा**—संज्ञा पुं० दे० "मसा"।

**महँ***†—अव्य० [ सं० मध्य ] में।

**महँ***†—वि० [ सं० महा ] महान्। भारी।

अव्य० दे० "महँ"।

**महँगा**—वि० [ सं० महार्घ ] जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो।

**महँगाई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "महँगी"।

**महँगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० महँगा + ई ( प्रत्य० ) ] १. महँगे होने का भाव। महँगापन। २. महँगे होने की अवस्था। ३. दुर्भिक्ष। अकाल। कहत।

**महंत**—संज्ञा पुं० [ सं० महत्=बड़ा ] साधुमंडली या मठ का अधिष्ठाता।

वि० श्रेष्ठ। प्रधान। मुखिया।

**महंती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० महंत + ई ( प्रत्य० ) ] १. महंत का भाव। २. महंत का पद।

**मह**—अव्य० दे० "महँ"।

वि० [ सं० महत् ] १. महा। अति। बहुत। २. महत्। श्रेष्ठ। बड़ा।

**महक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गमक ] गंध। बास।

**महकना**—क्रि० अ० [ हिं० महक + ना ( प्रत्य० ) ] गंध देना। बास देना।

**महकमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] किसी विशिष्ट कार्य के लिए अलग किया हुआ विभाग। सीगा। सरिश्ता।

**महकाना***—संज्ञा स्त्री० दे० "महक"।

**महकीला**—वि० [ हिं० महक ] खुशबूदार।

**महज**—वि० [ अ० ] १. शुद्ध। खालिस। २. केवल। मात्र। सिर्फ।

**महजिद**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मसजिद"।

**महज्जन**—संज्ञा पुं० [सं०] महापुरुष।

**महत्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० महती ] १. महान्। बृहत्। बड़ा। २. सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।

संज्ञा पुं० १. प्रकृति का पहला विकार, महत्तत्व। २ ब्रह्म।

**महत**—संज्ञा पुं० दे० "महत्त्व"।

वि० दे० "महत्"।

**महता**—संज्ञा पुं० [ सं० महत् ] १. गाँव का मुखिया। महतो। २. मुहर्रिर। मुंशी।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० महत्ता ] अभिमान।

**महताब**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. दे० "महताबी"।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] चाँद। चंद्रमा।

**महताबी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मोटी बत्ती के आकार की एक प्रकार की आतशबाजी। २. बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।

**महतारी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० माता] माँ। माता।

**महती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नारद की वीणा का नाम। २. महिमा। महत्त्व। बड़ाई।

वि० स्त्री० बहुत बड़ी। महान्। बृहत्।

**महतु***—संज्ञा पुं० दे० "महत्त्व"।

**महतो**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ महता ] १. कहार। २. प्रधान।

**महत्तत्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सांख्य में प्रकृति का पहला कार्य्य या विकार जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है। बुद्धितत्व। २ जीवात्मा।

**महत्तम**—वि॰ [ सं॰ ] सबसे अधिक श्रेष्ठ।

**महत्तर**—वि॰ [ सं॰ ] दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ।

**महत्ता**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "महत्त्व"।

**महत्त्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. महत् का भाव। बड़ाई। गुरुता। २. श्रेष्ठता। उत्तमता।

**महदूद**—वि॰ [ अ॰ ] परिमित। सीमित।

**महन***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मथन"।

**महना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "मथना"।

**महनीय**—वि॰ [ सं॰ भाव॰ महनीयता ] १. मान्य। पूज्य। २. महत्। महान्।

**महनु***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मथन ] विनाशक।

**महफिल**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. मजलिस। सभा। समाज। जलसा। २. नाच-गाना होने का स्थान।

**महफूज़**—वि॰ [ अ॰ ] सुरक्षित।

**महबूब**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] [ स्त्री॰ महबूबा ] वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रिय।

**महमंत***—वि॰ [ सं॰ महा + मत्त ] मस्त। मदमत्त।

**महमद***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मुहम्मद"।

**महमह**—क्रि॰ वि॰ [ महकना ] सुगंध के साथ। खुशबू के साथ।

**महमहा**—वि॰ [ हिं॰ मह मह ] सुगंधित।

**महमहाना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ मह मह अथवा महकना ] गमकना। सुगंधि देना।

**महमा***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "महिमा"।

**महमेज़**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] एक प्रकार की लोहे की नाल जो जूते में एँड़ी के पास लगाई जाती है और जिसकी सहायता से घोड़े के सवार उसे एड़ लगाते हैं।

**महम्मद**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मुहम्मद"।

**महर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ महत्] [स्त्री॰ महरि] १. एक आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार विशेषतः जमींदारों आदि के संबंध में होता है (व्रज) २. एक प्रकार का पक्षी। ३ दे॰ "महरा"।

वि॰ [ हिं॰ महक ] महमहा। सुगंधित।

**महरम**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. मुसलमानों में किसी कन्या या स्त्री के लिए उसका कोई ऐसा बहुत पास का संबंधी जिसके साथ उसका विवाह न हो सकता हो। जैसे—पिता, चाचा, नाना, भाई, मामा आदि। २. भेद का जाननेवाला।

संज्ञा स्त्री॰ १. अँगिया की कटोरी। २. अँगिया।

**महरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ महता ] [ स्त्री॰ महरी ] १. कहार। २. सरदार। नायक।

**महराइ***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ महाराज] दे॰ "महाराज"।

**महराई***†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ महर + आई (प्रत्य॰) ] प्रधानता। श्रेष्ठता।

**महराज**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "महाराज"।

**महराना**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ महर + आना (प्रत्य॰) ] महरों के रहने का स्थान।

**महराब**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मेहराब"।

**महरि,महरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ महर ] १. एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार व्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के संबंध में होता है। २. मालकिन। घरवाली। ३. ग्वालिन नामक पक्षी। दहिगल।

**महरूम**—वि॰ [ अ॰ ] जिसे न मिले। वंचित।

**महरेटा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ महर + एटा (प्रत्य॰) ] श्रीकृष्ण।

**महरेटी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ महरेटा ] श्री राधिका।

**महर्घ**—वि॰ दे॰ "महार्घ"।

**महर्लोक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पुराणानुसार चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।

**महर्षि**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ महा + ऋषि] बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि। ऋषीश्वर।

**महल**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २. रनिवास। अंतःपुर। ३. बड़ा कमरा। ४ अवसर।

**महलसरा**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] अंतःपुर।

**महल्ला**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों।

**महसिल**—संज्ञा पुं॰ [अ॰ मुहस्सिल] महसूल आदि वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

**महसूल**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. वह धन जो राजा या कोई अधिकारी किसी विशिष्ट कार्य्य के लिए ले। कर। २. भाड़ा। किराया। ३. मालगुजारी। लगान।

**महसूली**—वि॰ [ हिं॰ महसूल ] जिस पर महसूल लगता हो।

**महसूस**—वि॰ [ अ॰ ] जिसका ज्ञान

का अनुभव हो। अनुकूल।

**महाँ***—अव्य० दे० "महँ"।

**महा**—वि० [सं०] १. अत्यंत। बहुत अधिक। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे बढ़कर। ३. बहुत बड़ा। भारी।

संज्ञा पुं० [हिं० महना] मट्ठा। छाछ।

**महाआरंभ**—वि० [सं० महा+रंभ] बहुत शोर।

**महाई**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० महना+आई (प्रत्य०)] मथने का काम या मजदूरी।

**महाउत***—संज्ञा पुं० दे० "महावत"।

**महाउर**—संज्ञा पुं० दे० "महावर"।

**महाकल्प**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। ब्रह्मकल्प।

**महाकवि**—संज्ञा पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा कवि जिसने किसी महाकाव्य की रचना की हो।

**महाकाय**—वि० [सं०] जिसका शरीर बहुत बड़ा हो।

संज्ञा पुं० १. शिव का एक गण। २. हाथी।

**महाकाल**-संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**महाकाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. महाकाल (शिव) की पत्नी। २. दुर्गा की एक मूर्त्ति।

**महाकाव्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा सर्गबद्ध काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृत दृश्यों तथा सामाजिक कृत्यों आदि का वर्णन हो।

**महाखर्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सौ खर्व की संख्या या अंक।

**महागौरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**महाजन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष। २. साधु। ३. धनवान्। दौलतमंद। ४. रुपये-पैसे का लेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ५. बनिया। ६. भलामानुस।

**महाजनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० महाजन+ई (प्रत्य०)] १. रुपये के लेने-देने का व्यवसाय। कोठीवाली। २. एक लिपि जो महाजनों के यहाँ बही-खाता लिखने में काम आती है। मुड़िया।

**महाजल**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**महातत्त्व**—संज्ञा पुं० दे० "महत्तत्त्व"।

**महातम**—†*संज्ञा पुं० दे० "माहात्म्य"।

**महातल**—संज्ञा पुं० [सं०] चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल।

**महात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० महात्मन्] १. वह जिसकी आत्मा या आशय बहुत उच्च हो। महानुभाव। २. बहुत बड़ा साधु या संन्यासी।

**महादंडधारी**—संज्ञा पुं० [सं०] यमराज।

**महादान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वे बहुत बड़े दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। २. वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है।

**महादेव**—संज्ञा पुं० [सं०] शंकर। शिव।

**महादेवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी।

**महाद्वीप**—संज्ञा पुं० [सं०] पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों।

**महाधन**—वि० [सं०] १. बहुमूल्य। अधिक मूल्य का। २. बहुत धनी।

**महान्**—वि० [सं०] बहुत बड़ा। विशाल।

**महानंद**—संज्ञा पुं० [सं०] मगध देश का एक प्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था।

**महानद**—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा नद।

**महानवमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ल नवमी।

**महानस**—संज्ञा पुं० [सं०] रसोईघर।

**महानाटक**—संज्ञा पुं० [सं०] नाटक के लक्षणों से युक्त दस अंकोंवाला नाटक।

**महानाम**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मंत्र जिससे शत्रु के शस्त्र व्यर्थ जाते हैं।

**महानिद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मृत्यु। मरण।

**महानिधान**—संज्ञा पुं० [सं०] बुभुक्षित धातुमेदी पारा जिसे "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं।

**महानिर्वाण**—संज्ञा पुं० [सं०] परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्ध हैं।

**महानिशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आधी रात। २. कल्पांत या प्रलय की रात्रि।

**महानुभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] कोई बड़ा और आदरणीय व्यक्ति। महापुरुष।

**महानुभावता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बड़प्पन।

**महापथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लंबा और चौड़ा रास्ता। राजपथ। २. मृत्यु।

**महापद्म**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नौ निधियों में से एक। २. सफेद कमल। ३. सौ पद्म की संख्या।

**महापातक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाँच बहुत बड़े पाप—ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ व्यभिचार और ये सब पाप करनेवालों का साथ करना ।

**महापातकी**—संज्ञा पुं० [ सं० महापातकिन् ] वह जिसने महापातक किया हो ।

**महापात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रेष्ठ ब्राह्मण । ( प्राचीन ) २. महाब्राह्मण या कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक-कर्म का दान लेता है ।

**महापुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नारायण । २. श्रेष्ठ पुरुष । महात्मा । महानुभाव ।

**महाप्रभु**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. वल्लभाचार्य जी की एक आदरसूचक पदवी । २. बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी । ३ ईश्वर ।

**महाप्रलय** संज्ञा पुं० [सं०] वह काल, जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता ।

**महाप्रसाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर या देवताओं का प्रसाद । २. जगन्नाथ जी का चढ़ा हुआ भात । ३ मांस ।

**महाप्रस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना । २. मरण । देहांत ।

**महाप्राज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत बड़ा पंडित । दिग्गज विद्वान् ।

**महाप्राण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राण वायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है । हिंदी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है ।

**महाबल**—वि० [ सं० ] अत्यंत बलवान् ।

**महाबाहु**—वि० [ सं० ] १. लंबी भुजाओंवाला । २. बली । बलवान् ।

**महाब्राह्मण**—संज्ञा पुं० दे० "महापात्र" । ( २ )

**महाभाग**—वि० [ सं० ] भाग्यवान ।

**महाभागवत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. २६ मात्राओं के छंदों की संज्ञा । २. परम वैष्णव । ३. दे० "भागवत" ( पुराण ) ।

**महाभारत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अठारह पर्वों का एक परम प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है । २. कोई बहुत बड़ा ग्रंथ । ३. कौरवों और पांडवों का प्रसिद्ध युद्ध । ४. कोई बड़ा युद्ध ।

**महाभाष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य ।

**महाभूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पंचतत्त्व ।

**महामंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र । २. अच्छी सलाह ।

**महामति**—वि० [ सं० ] बड़ा बुद्धिमान् ।

**महामना**—वि० [ सं० महामनस् ] बहुत उच्च और उदार मनवाला । महानुभाव ।

**महामहिम**—वि० [ सं० ] जिसकी महिमा बहुत अधिक हो ।

**महामहोपाध्याय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. गुरुओं का गुरु । २. एक प्रकार की उपाधि जो भारत में संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती थी ।

**महामांस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गोमांस । गौ का गोश्त । २. मनुष्य का मांस ।

**महामाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० महा + हिं० माई ] १. दुर्गा । २. काली ।

**महामात्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महामंत्री ।

**महामाया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रकृति । २. दुर्गा । ३. गंगा । ४. आर्या छंद का तेरहवाँ भेद ।

**महामारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह संक्रामक भीषण रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें । वबा । मरी । जैसे —प्लेग ।

**महामालिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाराच छंद ।

**महामृत्युंजय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव ।

**महामेदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का कंद ।

**महामोदकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णिक वृत्त । क्रीड़ाचक्र ।

**महाय***—वि० [ सं० महा ] महान् । बहुत ।

**महायज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किये जानेवाले कर्म । ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ ।

**महायात्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृत्यु । मौत ।

**महायान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय ।

**महायुग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चारों युगों का समूह ।

**महायुद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा युद्ध जिसमें बहुत से बड़े बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों।

**महायौगिक**—संज्ञा पुं० [सं०] २९ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

**महारंभ**—वि० [सं०] बहुत बड़ा।

**महारथ**—संज्ञा पुं० [सं०] भारी योद्धा।

**महारथी**—संज्ञा पुं० दे० "महारथ"।

**महाराज**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। २. ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए एक संबोधन।

**महाराजाधिराज**—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा राजा।

**महाराज्ञी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] महारानी।

**महाराणा**—संज्ञा पुं० [सं० महा + हिं० राणा] मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।

**महारात्रि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाप्रलयवाली रात, जब कि ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प होता है।

**महारानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० महाराज्ञी] महाराज की रानी। बहुत बड़ी रानी।

**महारावण**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।

**महारावल**—संज्ञा पुं० [सं० महा+ हिं० रावल] जैसलमेर, डूँगरपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

**महाराष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २. इस देश के निवासी। ३. बहुत बड़ा राष्ट्र।

**महाराष्ट्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की प्राकृतिक भाषा। २. दे० "मराठी"।

**महारुद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**महारोग**—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा रोग। जैसे—दमा, भगंदर आदि।

**महारौरव**—संज्ञा पुं० [सं०] एक नरक।

**महार्घ**—वि० [सं०] [संज्ञा महार्घता] १. बहुमूल्य। बड़े मोल का। २. महँगा।

**महाल**—संज्ञा पुं० [अ० महल का बहु०] १. मुहल्ला। टोला। पाड़ा। २. बन्दोबस्त में जमीन का एक भाग, जिसमें कई गाँव होते हैं। ३. भाग। पट्टी। हिस्सा।

**महालक्ष्मी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मीदेवी की एक मूर्ति। २. एक वर्णिक वृत्त।

**महालय**—संज्ञा पुं० [सं०] "पितृपक्ष"।

**महालया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावस्या, पितृविसर्जन की तिथि।

**महावट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० माह= माघ+वट] पूस माघ की वर्षा। जाड़े की झड़ी।

**महावत**—संज्ञा पुं० [सं० महामात्र] हाथी हाँकनेवाला। फीलवान। हाथीवान।

**महावतारी**—संज्ञा पुं० [सं० महावतारिन्] २५ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

**महावर**—संज्ञा पुं० [सं० महावर्ण ?] एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैरों को चित्रित कराती हैं। यावक।

**महावरा**—संज्ञा पुं० दे० "मुहावरा"।

**महावरी**—संज्ञा पुं० [हिं० महावर] महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।

**महावारुणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा-स्नान का एक योग।

**महाविद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तंत्र में मानी हुई ये दस देवियाँ—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। २. दुर्गादेवी।

**महावीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान जी। २. गौतम बुद्ध। ३. जैनियों के चौबीसवें और अंतिम जिन या तीर्थंकर।

वि० बहुत बड़ा बहादुर।

**महाव्याहृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भूः, भुवः और स्वः ये तीन ऊपर के लोक।

**महाव्रत**—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत बड़ा और ऊँचा व्रत।

वि० [स्त्री० महाव्रता] बहुत बड़ा व्रत धारण करनेवाला।

**महाशंख**—संज्ञा पुं० [सं०] एक बहुत बड़ी संख्या का नाम। सौ शंख।

**महाशक्ति**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**महाशय**—संज्ञा पुं० [सं०] उच्च आशयवाला व्यक्ति। महानुभाव। महात्मा। सज्जन।

**महाश्मशान**—संज्ञा पुं० [सं०] काशी नगरी।

**महाश्वेता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

**महा-संस्कार**—संज्ञा पुं० [सं०] मृतक की अंत्येष्टि क्रिया।

**महिं**—अव्य० दे० "महँ"।

**महि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी ।

**महिख***—संज्ञा पुं० दे० "महिष" ।

**महिजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता जी ।

**महिदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्राह्मण ।

**महिधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्वत । २. शेषनाग ।

**महिपाल***—संज्ञा पुं० दे० "महीपाल" ।

**महिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० महिमन् ] १.महत्त्व । माहात्म्य । बड़ाई । गौरव । २. प्रभाव । प्रताप । ३. आठ प्रकार की सिद्धियों में से पाँचवीं जिससे सिद्ध योगी अपने आप को बहुत बड़ा बना लेता है ।

**महिमावान्**—वि० [ सं० ] महिमा या गौरववाला ।

**महिम्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव का एक प्रधान स्तोत्र ।

**महियाँ***—अव्य० [सं० मध्य] में ।

**महियाउर**†—संज्ञा पुं० [ मही= मट्ठा + चाउर ] मठे में पका हुआ चावल ।

**महिरावण**—संज्ञा पुं० [सं० महि + रावण ] एक राक्षस जो रावण का लड़का था ।

**महिला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भली स्त्री ।

**महिष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० महिषी ] १. भैंसा । २. वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो । ३. एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मारा था ।

**महिषमर्दिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा ।

**महिषासुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक असुर जो रंभ नामक दैत्य का पुत्र था । इसकी आकृति भैंसे की थी । इसे दुर्गा जी ने मारा था ।

**महिषी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भैंस । २. रानी, विशेषतः पटरानी । ३. सैरिंध्री ।

**महिषेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महिषासुर । २. यमराज ।

**महिसुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सीता जी ।

**महिसुर**—संज्ञा पुं० दे० "महीसुर" ।

**मही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी । २. मिट्टी । ३. देश । स्थान । ४. नदी । ५. एक की संख्या । ६. एक लघु और एक गुरु मात्रा का एक छंद ।

संज्ञा पुं० [हिं०महना] मठा । छाछ ।

**महीतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी । संसार ।

**महीधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्वत । २. शेषनाग । ३. एक वर्णिक वृत्त ।

**महीन**—वि० [ सं० महा + क्षीण ( सं० क्षीण ) ] १. जिसकी मोटाई बहुत कम हो । "मोटा" का उलटा । पतला । २. बारीक । झीना । पतला । ३. कोमल । धीमा । मंद ( शब्द या स्वर) ।

**महीना**—संज्ञा पुं० [ सं० मास ] १. काल का एक परिमाण जो प्रायः साधारणतया तीस दिन का होता है । २. मासिक वेतन । दरमाहा । ३. स्त्रियों का मासिक धर्म ।

**महीप, महीपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा ।

**महीर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मठा + खीर ] १. मठे में पकाया हुआ चावल । २. तपाये हुए मक्खन की तलछट ।

**महीसुर** संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण ।

**महुँ***—अव्य० दे० "मह" ।

**महुअर**—संज्ञा पुं० [ सं० मधुकर ] १. एक प्रकार का बाजा । तुमड़ी । तूँबी । २. एक प्रकार का इंद्रजाल का खेल जो महुअर बजाकर किया जाता है ।

**महुआ**—संज्ञा पुं० [ सं० मधूक, प्रा० महुआ ] एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे, मीठे, गोल फूलों से शराब बनती है ।

**महुकम***—वि० [ अ० मुहकम ] पक्का । दृढ़ ।

**महुर्खा***†—संज्ञा पुं० दे० "महोत्सव" ।

**महुवरि**—संज्ञा स्त्री० दे० "महुअर" ।

**महूख***—संज्ञा पुं० [ सं० मधूक ] १. महुआ । २. जेठी मधु । मुलेठी । ३. शहद ।

**महूम***—संज्ञा स्त्री० दे० "मुहिम" ।

**महूरत***—संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त" ।

**महूष***—संज्ञा पुं० दे० "महूख" ।

**महेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु । २. इंद्र । ३. भारतवर्ष का एक पर्वत जो सात कुल-पर्वतों में गिना जाता है ।

**महेंद्रवारुणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बड़ा इंद्रायण ।

**महेर**†—संज्ञा पुं० दे० "महेरा" ।

संज्ञा पुं० [देश०] झगड़ा । बखेड़ा ।

**महेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० महेर या मही ] एक प्रकार का व्यंजन या खाद्य पदार्थ । महा ।

**महेरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० महेरा ] उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक मिर्च से खाते हैं ।

वि० [ हिं० महेर ] अड़चन डालनेवाला ।

**महेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव । २. ईश्वर ।

**महेशानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "महेशी"।

**महेशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० महेश ] पार्वती।

**महेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० महेश्वरी ] १. ईश्वर। २. परमेश्वर।

**महेस***—संज्ञा पुं० दे० "महेश"।

**महोख**—संज्ञा पुं० [ सं० मधूक ] एक पक्षी जो तेज दौड़ता है, पर उड़ नहीं सकता।

**महोगनी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत ही अच्छी, दृढ़ और टिकाऊ होती है।

**महोच्छव, महोछा***†—संज्ञा पुं० [ सं० महोत्सव ] बड़ा उत्सव। महोत्सव।

**महोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ा उत्सव।

**महोदधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**महोदय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० महोदया ] १. आधिपत्य। २. स्वर्ग। ३. स्वामी। ४. कान्यकुब्ज देश। ५. महाशय।

**महोला***†—संज्ञा पुं० [ अ० मुहैल ] १. हीला। बहाना। २. धोखा। चकमा।

**महौघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्री तूफान।

**मह्यो***—संज्ञा पुं० [ हिं० मही ] मठा। छाछ।

**माँ**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंबा या माता] जन्म देनेवाली माता।

**माँ०**—माँ-जाया=सगा भाई। सहोदर।
† अव्य० [ सं० मध्य ] में।

**माँखना***†—क्रि० अ० दे० "माखना"।

**माँखी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।

**माँग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० माँगना ] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिए होनेवाली आवश्यकता या चाह।
संज्ञा स्त्री० [ सं० मार्ग ? ] सिर के बालों के बीच की रेखा जो बालों को विभक्त करके बनाई जाती है। सीमंत।

**मुहा०**—माँग-कोख से सुखी रहना या जुड़ाना=स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती रहना। माँग-पट्टी करना=कंघी करना।

**माँग टीका**—संज्ञा पुं० [ हिं० माँग+टीका ] स्त्रियों का माँग पर का एक गहना।

**माँगन***†—संज्ञा पुं० [ हिं० माँगना ] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. भिक्षुक।

**माँगना**—क्रि० स० [ सं० मार्गण=याचना ] १. किसी से यह कहना कि तुम अमुक पदार्थ मुझे दो। याचना करना। २. कोई आकांक्षा पूरी करने के लिए कहना।

**माँग-फूल**—संज्ञा पुं० दे० "माँग-टीका"।

**मांगलिक**—वि० [ सं० ] [ भाव० मांगलिकता ] मंगल करनेवाला।
संज्ञा पुं० नाटक का वह पात्र जो मंगलपाठ करता है।

**मांगल्य**—वि० [ सं० ] शुभ। मंगलकारक।
संज्ञा पुं० मंगल का भाव।

**माँचना***†—क्रि० अ० [ हिं० मचना] १. आरंभ होना। जारी होना। २. प्रसिद्ध होना।

**माँचा**†—संज्ञा पुं० [ सं० मंच ] [ स्त्री० अल्पा० माँची ] १. पलँग। खाट। मंजा। २. छोटी पीढ़ी। ३. मचान।

**माँछ**†—संज्ञा पुं० [ सं० मत्स्य ] मछली।

**माँजना**—क्रि० स० [ सं० मज्जन ] १. किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २. सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को दृढ़ करना। माँझा देना।
क्रि० अ० अभ्यास करना।

**माँजर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "पंजर"।

**माँजा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक होता है।

**माँझ***†—अव्य० [ सं० मध्य ] में। भीतर।
*†संज्ञा पुं० अंतर। फरक।

**माँझा**—संज्ञा पुं० [ सं० मध्य ] १. नदी में का टापू। २. एक प्रकार का आभूषण जो पगड़ी पर पहना जाता है। ३. वृक्ष का तना। ४. वे पीले कपड़े जो वर और कन्या को हलदी चढ़ने पर पहनाए जाते हैं।
संज्ञा पुं० [ हिं० माँजना ] पतंग या गुड्डी के डोरे या नख पर चढ़ाया जानेवाला कलक।
संज्ञा पुं० दे० "मझा"।

**माँझिल***†—क्रि० वि० [ सं० मध्य ] बीच का।

**माँझी**—संज्ञा पुं० [ सं० मध्य ] १. नाव खेनेवाला। केवट। मल्लाह। २. झगड़ा या मामला ते करानेवाला।

**माँट***†—संज्ञा पुं० [ सं० मट्टक ] १. मटका। कुंडा। २. घर का ऊपरी भाग। अटारी।

**माँठ**—संज्ञा पुं० [सं० मट्टक] मटका। कुंडा।

**माँठी***—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. एक प्रकार की चूड़ी। २. मट्ठी या मठरी नामक पकवान।

**माँड़**—संज्ञा पुं० [सं० मंड] पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी। पीच।

**माँड़ना***†—क्रि० स० [सं० मडन] १. मलना। सानना। गूँधना। २. पोतना। लेपन करना। ३. बनाना। सजाना। ४. अन्न की बाल में से दाने झाड़ना। ५. मचाना। ६. चलना। ७ रौंदना। कुचलना।

**माँड़ना**—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडन] मोजा गाट।

**मांड़या***†—संज्ञा पुं० [सं० मंडप] १. आतप-शाला। २. विवाह का मंडप। मँड़वा।

**माँडलिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो किसी मंडल या प्रांत की रक्षा अथवा शासन करता हो। २. वह छोटा राजा जो किसी बड़े राजा को कर देता हो।

वि० मंडल संबंधी। मंडल का।

**माँड़व**—संज्ञा पुं० [सं० मंडप] विवाह आदि शुभ कृत्यों के लिए छाया हुआ मंडप।

**माँडवी**—संज्ञा स्त्री० [सं० माण्डवी] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत को ब्याही थी।

**मांडव्य**—संज्ञा पुं० [सं० माण्डव्य] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने यमराज को शाप दिया था कि तुम शूद्र हो जाओ।

**माँड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० मंड] आँख का एक रोग जिसमें उसके अन्दर महीन झिल्ली सी पड़ जाती है।

संज्ञा पुं० [सं० मंडप] मंडप। मँड़वा।

संज्ञा पुं० [हिं० माँड़ना=गूँधना] १. मैदे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी। लुचई। २. एक प्रकार की रोटी। परौंठा। उलटा।

**माँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मंड] १. भात का पसावन। पीच। माँड़। २. कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।

**मांडूक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपनिषद्।

**माँढ़ौ***†—संज्ञा पुं० दे० "माँड़व"।

**माँढ़ा**—संज्ञा पुं० दे० "माँड़व"।

**माँत***—वि० [सं० मत्त] उन्मत्त। मस्त।

वि० [हिं० मात-मंद] बे-रौनक। उदास।

**मातना***†—क्रि० अ० [सं० मत्त+ना (प्रत्य०)] उन्मत्त होना। पागल होना।

**माँता***†—वि० [सं० मत्त] मतवाला।

**माँत्रिक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो तंत्र-मंत्र का काम करता हो।

**माँद**—वि० [सं० मंद] १. बेरौनक। उदास। २. किसी के मुकाबले में खराब या हलका। ३. पराजित। हारा हुआ। मात।

संज्ञा स्त्री० [देश०] हिंसक जंतुओं के रहने का विवर। बिल। गुफा। चुर। खोह।

**माँदगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बीमारी। रोग।

**माँदर**—संज्ञा पुं० [हिं० मर्दल] मदल। (बाजा)

**माँदा**—वि० [फ़ा० माँद] १. थका हुआ। २. बचा हुआ। बाकी। ३. रोगी।

**मांद्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मंद होने का भाव।

**मांधाता**—संज्ञा पुं० [सं० मांधातृ] एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा।

**माँपना***†—क्रि० अ० [हिं० माँतना] नशे में चूर होना। उन्मत्त होना।

**माँभ**—अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। मध्य।

**मांस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर का वह प्रसिद्ध, मुलायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ होता है। २. कुछ विशिष्ट पशुओं के शरीर का उक्त अंश। गोश्त।

**मांसपेशी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर होनेवाला मांस-पिंड।

**मांसभक्षी, मांसभोजी**—संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी"।

**मांसल**—वि० [सं०] [संज्ञा मांसलता] १. मांस से भरा हुआ। मांसपूर्ण। (अंग) २. मोटा-ताजा। पुष्ट।

संज्ञा पुं० काव्य में गौड़ी रीति का एक गुण।

**मांसाहारी**—संज्ञा पुं० [सं० मांसाहारिन्] मांसभक्षी। मांस भोजन करनेवाला।

**माँसु***—संज्ञा पुं० दे० "मांस"।

**माँह***†—अव्य० [सं० मध्य] में। बीच। अंदर।

**माँहा***†—अव्य० दे० "माँह"।

**माँहि, माँहीं***†—अव्य० दे० "माँह"।

**मा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. माता। ३. दीप्ति। प्रकाश।

**माइँ, माई**—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] छोटा पूआ जिससे विवाह में मातृ-पूजन किया जाता है।

**मुहा०**—माइँन से पापना=पितरों के समान आदर करना।

संज्ञा स्त्री० [अनु०] पुत्री। लड़की।

**माइ***†—संज्ञा स्त्री० दे० "माई"।

**माइक**—संज्ञा पुं० [अं०] वह यंत्र जिसके सम्मुख बोलने से दूर तक

चोर से सुनाई देता है।

**माइका**—संज्ञा पुं० दे० "मायका"।

**माई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मातृ ] १. माता। माँ।

यौ०—माई का लाल=१. उदार चित्तवाला व्यक्ति। २. वीर। शूर। बली।

२. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए संबोधन।

**माउल्लहम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] हिकमत में मांस का बना हुआ एक प्रकार का पुष्टिकारक अरक।

**माकूल**—वि० [ अ० ] १. उचित। वाजिब। ठीक। २. लायक। योग्य। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. जिसने वाद-विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।

**माक्षिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शहद। २. सोनामक्खी। ३. रूपा मक्खी।

**माख***—संज्ञा पुं० [ सं० मख ] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। रिस। २. अभिमान। घमंड। ३. पछतावा। ४. अपने दोष को ढकना।

**माखन**—संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।

यौ०—माखनचोर=श्रीकृष्ण।

**माखना***†—क्रि० अ० [ हिं० माख] अप्रसन्न होना। नाराज होना। क्रोध करना।

**माखी***†—संज्ञा स्त्री०[ सं० मक्षिका ] १. मक्खी। २. सोनामक्खी।

**मागध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग विरुदावली का वर्णन करते हैं। भाट। २. जरासंध।

वि० [ सं० मगध ] मगध देश का।

**मागधी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।

**माघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह चांद्र मास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २. संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। ३. उपर्युक्त कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ।

संज्ञा पुं० [ सं० माध्य ] कुंद का फूल।

**माघी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० माघ+ई ] माघ मास की पूर्णिमा।

वि० माघ का। जैसे—माघी मिर्च।

**माच***†—संज्ञा पुं० दे० "मचान"।

**माचना***†—क्रि० स० दे० "मचना"।

**माचल***†—वि० [ हिं० मचलना ] १. मचलनेवाला। जिद्दी। हठी। २. मनचला।

**माचा**†—संज्ञा पुं० [ सं० मंच ] खाट की तरह की बैठने की पीढ़ी। बड़ी मचिया।

**माची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मंच ] छोटा माचा।

**माछ**†—संज्ञा पुं० [ सं० मत्स्य ] मछली।

**माछर***†—संज्ञा पुं० दे० "मच्छड़"।

संज्ञा पुं० [ सं० मत्स्य ] मछली।

**माछी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० मक्षिका ] मक्खी।

**माजरा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. हाल। वृत्तांत। २. घटना।

**माजूम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] औषध के रूप में काम आनेवाला कोई मीठा अवलेह।

**माजूफल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० माजू+फल ] माजू नामक झाड़ी का गोटा या गोंद जो औषधि तथा रँगाई के काम में आता है।

**माजूर**—वि० [ अ० ] [ संज्ञा माजूरी ] १. जिसमें उज्र हो। २. असमर्थ।

**माट**—संज्ञा पुं० [ हिं० मटका ] १. मिट्टी का वह बरतन जिसमें रँगरेज रंग बनाते हैं। मठोर। २. बड़ी मटकी।

**माटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मटा ] एक प्रकार की लाल च्यूँटी।

**माटी***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मिट्टी ] १. दे० "मिट्टी"। २. शव। लाश। ३. शरीर। ४. पृथ्वी नामक तत्त्व। ५. धूल। रज।

**माठ**—संज्ञा पुं० [ हिं० मीठा ] एक प्रकार की मिठाई।

**माठर**—सं० पुं०।

**माड़ना***†—क्रि० अ० [ सं० मंडन ] ठानना। मचाना। करना।

क्रि० स० [ सं० मंडन ] १. मंडित करना। भूषित करना। २. धारण करना। पहनना। ३. आदर करना। पूजना।

क्रि० स० दे० "माँड़ना"।

**माड़ा***†—संज्ञा पुं० [ सं० मंडप ] अटारी पर का चौबारा।

**माड़ी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मढ़ी"।

**माणवक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सोलह वर्ष की अवस्थावाला युवक। २. विद्यार्थी। बटु। ३. निंदित या नीच आदमी।

**माणिक**—संज्ञा पुं० दे० "माणिक्य"।

**माणिक्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लाल रंग का एक रत्न। लाल। पद्मराग। चुन्नी।

वि० सर्वश्रेष्ठ। परम। आदरणीय।

**मातंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हाथी। २. श्वपच। चांडाल। ३. एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे। ४. अश्वत्थ।

**मातंगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दस

महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या। (तंत्र)

**मात**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "माता"। संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] पराजय। हार। वि॰ [अ॰] पराजित। *वि॰ [सं॰ मत्त] मदमस्त। मतवाला।

**मातदिल**—वि॰ [अ॰ मोऽतदिल] जो गुण के विचार से न बहुत ठंढा हो, न बहुत गरम।

**मातना***†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ मत्त] मस्त होना। मदमत्त होना। नशे में हो जाना।

**मातबर**—वि॰ [अ॰ मोतबिर] विश्वसनीय।

**मातबरी**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] विश्वसनीयता।

**मातम**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] वह रोना-पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है।

**मातमपुर्सी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना।

**मातमी**—वि॰ [फ़ा॰] शोक-सूचक।

**मातलि**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] इंद्र का सारथी।

**मातलिसूत**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] इंद्र।

**मातहत**—वि॰ [अ॰] [संज्ञा मातहती] किसी की अधीनता में काम करनेवाला।

**माता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ मातृ] १. जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। २. कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री। बड़ी स्त्री। ३. गौ। ४. भूमि। ५. लक्ष्मी। ६. शीतला। चेचक। वि॰ [सं॰ मत्त] [स्त्री॰ माती] मतवाला।

**मातामह**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ मातामही] माता का पिता। नाना।

**मातु***—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ मातृ] माता। माँ।

**मातुल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ मातुला, मातुलानी] १. माता का भाई। मामा। २. धतूरा।

**मातुली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. मामा की स्त्री। मामी। २. भाँग।

**मातुश्री**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ माता + श्री] माताजी।

**मातृ**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "माता"।

**मातृक**—वि॰ [सं॰] माता-संबंधी।

**मातृका**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. दाई। धाय। २. माता। जननी। ३. तांत्रिकों की ये सात देवियाँ—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा।

**मातृत्व**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] 'माता' होने का भाव। माँ-पन।

**मातृपूजा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ मातृ-पूजन] विवाह की एक रीति जिसमें पूर्वो से पितरों का पूजन किया जाता है। मातृकापूजन।

**मातृभाषा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए बोलना सीखता है।

**मातृष्वसा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] माँ की बहन। मौसी।

**मात्र**—अव्य॰ [सं॰] केवल। भर। सिर्फ।

**मात्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. परिमाण। मिकदार। २. एक बार खाने योग्य औषध। ३. उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है। कल। कला। ४. वह स्वरसूचक रेखा जो अक्षर के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाती है।

**मात्रासमक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक मात्रिक छंद।

**मात्रिक**—वि॰ [सं॰] १. मात्रा-संबंधी। २. जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

**मात्सर्य**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ईर्ष्या। डाह।

**माथ***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "माथा"।

**माथना***—क्रि॰ स॰ दे॰ "मथना"।

**माथा**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ मस्तक] १. सिर का ऊपरी भाग। मस्तक।

मुहा॰—माथा ठनकना=पहले से ही किसी दुर्घटना या विपरीत बात के होने की आशंका होना। माथे चढ़ाना या धरना=शिरोधार्य करना। सादर स्वीकार करना। माथे पर बल पड़ना=आकृति से क्रोध, दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना। माथे मानना=सादर स्वीकार करना।

यौ॰—माथा-पच्ची=बहुत अधिक बकना या समझाना। सिर खाना। २. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

**माथुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ माथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २. ब्राह्मणों की एक जाति। चौबे। ३. कायस्थों की एक जाति।

**माथे**—क्रि॰ वि॰ [हिं॰ माथा] १. मस्तक पर। सिर पर। २. भरोसे। सहारे पर।

**माद***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मद"।

**मादक**—वि॰ [सं॰] नशा उत्पन्न करनेवाला। जिससे नशा हो। नशीला।

**मादकता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] मादक होने का भाव। नशीलापन।

**मादन**—वि॰ [सं॰] १. मादक। २. मस्त करनेवाला। संज्ञा पुं॰ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

**मादर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] माँ। माता।

**मादरजाद**—वि० [ फ़ा० ] १. जन्म का। पैदाइशी। २. सहोदर (भाई)। ३. बिलकुल नंगा। दिगम्बर।

**मादरिया***—संज्ञा स्त्री० दे० "मादर"।

**मादरी**—वि० [ फ़ा० ] मादर या माता से संबंध रखनेवाला। माता का। जैसे-मादरी ज़बान।

**मादा**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा। (जीवजंतु)

**माद्दा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ मूल तत्त्व। २. योग्यता। ३. मवाद। पीब।

**माद्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पांडु राजा की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।

**माधव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ विष्णु। नारायण। २. वैशाख मास। ३. वसंत ऋतु। ४. एक वृत्त। मुक्तहरा। वि० [ स्त्री० माधवी, माधविका ] १. मधु-संबंधी। २. मस्त करनेवाला।

**माधविका**—संज्ञा स्त्री० दे० "माधवी"।

**माधवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं। २ सवैया छंद का एक भेद। ३. एक प्रकार की शराब। ४. तुलसी। ५. दुर्गा। ६. माधव की पत्नी।

**माधुरई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० माधुरी] मधुरता।

**माधुरता***—संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।

**माधुरिया***—संज्ञा स्त्री० दे० "माधुरी"।

**माधुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मिठास। २. शोभा। सुंदरता। ३. मद्य। शराब।

**माधुर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मधुरता। २. सुंदरता। ३. मिठास। मीठापन। ४. पांचाली रीति के अंतर्गत काव्य का एक गुण जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।

**माधैया***—संज्ञा पुं० दे० "माधव"।

**माधो**—संज्ञा पुं० [ सं० माधव ] १. श्रीकृष्ण। २. श्री रामचन्द्रजी।

**माध्यंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

**माध्यम**—वि० [ सं० ] मध्य का। बीचवाला।

संज्ञा पुं० १ कार्य सिद्धि का उपाय या साधन। २. वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय।

**माध्यमिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बौद्धों का एक भेद। २. मध्य देश।

**माध्यस्थ**—संज्ञा पुं० दे० "मध्यस्थ"।

**माध्याकर्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।

**माध्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैष्णवों के चार मुख्य संप्रदायों में से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

**माध्वी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मदिरा। शराब।

**मान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. माप, तौल या नाप आदि। परिमाण। मिकदार। २. वह साधन जिसके द्वारा कोई चीज नापी या तौली जाय। पैमाना। ३. अभिमान। शेखी।

**मुहा०**—मान मथना=गर्व चूर्ण करना।

४ प्रतिष्ठा। इज्जत। सम्मान।

**मुहा०**—मान रखना=प्रतिष्ठा करना।

**यौ०**—मान महत = आदर-सत्कार। प्रतिष्ठा।

५. मन का वह विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को कोई दोष या अपराध करते देखकर होता है। (साहित्य)

**मुहा०**—मान मनाना=रूठे हुए को मनाना। मान मारना=मान छोड़ देना।

६ सामर्थ्य। शक्ति।

**मानकंद**—संज्ञा पुं० [ सं० माणक ] १. एक प्रकार का मीठा कंद। २. मालिब मिस्री।

**मानक**—संज्ञा पुं० [ सं० मान+क ] किसी वस्तु का वह निश्चित रूप या माप जिसके अनुसार उस वर्ग की और चीजों के गुण-दोष का माप होता हो। मानदंड।

**मानकच्चू**—संज्ञा पुं० दे० "मानकंद"।

**मानक्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सूदन के अनुसार एक प्रकार का छंद।

**मानगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कोप-भवन।

**मानचित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी स्थान का नकशा।

**मानता**—संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

**मानदंड**—संज्ञा पुं० [ सं० मान+दंड ] वह निश्चित या स्थिर किया हुआ माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि का अंदाज लगाया जाय।

**मानधन**—वि० [ सं० ] जो अपने मान या इज्जत को ही धन समझता हो।

**मानना**—क्रि० अ० [ सं० मानन ] १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. कल्पना करना। फर्ज करना। समझना। ३. ध्यान में लाना। समझना। ४. ठीक मार्ग पर आना।

क्रि० स० १. स्वीकृत करना। मंजूर करना। २. किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। आदर करना। ३. पारंगत समझना। उस्ताद

समझना। ४. धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। ५. देवता आदि को भेंट करने का प्रण करना। मन्नत करना। ६. ध्यान में लाना। समझना।

**माननीय**—वि० [सं०] [स्त्री० माननीया] जो मान करने योग्य हो। पूजनीय।

**मान-परेखा**—संज्ञा पुं० [?] आशा। भरोसा।

**मानमंदिर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोपभवन। २. वह स्थान जिसमें ग्रहों आदि का वेध करने के यंत्र तथा सामग्री हो। वेधशाला।

**मान-मनौती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मान + मनौती] १. मन्नत। मनौती। २. रूठने और मानने की क्रिया।

**मानमरोर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मनमुटाव"।

**मानमोचन**—संज्ञा पुं० [सं०] रूठे हुए प्रिय को मनाना।

**मानव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य। आदमी। २. १४ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

**मानवता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मनुष्यत्व। आदमीयत। आदमीपन।

**मानवपन**—संज्ञा पुं० दे० "मानवता"।

**मानवशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मानवजाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है।

**मानवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्त्री। नारी।

वि० [सं० मानवीय] मानव-संबंधी।

**मानवीय**—वि० [सं०] मानव संबंधी।

**मानवेंद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। २. श्रेष्ठ पुरुष।

**मानस**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० मानसता] १. मन। हृदय। २. मानसरोवर। ३. कामदेव। ४. संकल्प-विकल्प। ५. मनुष्य। ६. दूत।

वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। २. मन का विचारा हुआ।

क्रि० वि० मन के द्वारा।

**मानसपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो।

**मानसर**—संज्ञा पुं० दे० "मानसरोवर"।

**मान सरोवर**—संज्ञा पुं० [सं० मानस + सरोवर] हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।

**मानसशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] मनोविज्ञान।

**मानस हंस**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वृत्त का नाम। मानहंस। रणहंस।

**मानसिक**—वि० [सं०] १. मन की कल्पना से उत्पन्न। २. मन-संबंधी। मन का।

**मानसी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह पूजा जो मन ही मन की जाय। २. एक विद्या देवी।

वि० मन का। मन से उत्पन्न।

**मानहंस**—संज्ञा पुं० [सं०] मन-हंस। वृत्त।

**मानहानि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रतिष्ठा। अपमान। बेइज्जती। हतक इज्जत।

**मानहुँ***—अव्य० दे० "मानो"।

**माना**—संज्ञा पुं० [इब०] एक प्रकार का मीठा रेचक निर्यास।

*क्रि० स० [सं० मान] १. नापना। तौलना। २. जाँचना।

क्रि० अ० दे० "समाना" या "अमाना"।

**मानिंद**—वि० [फा०] समान। तुल्य। सम्मानित।

**मानिक**—संज्ञा पुं० [सं० माणिक्य] लाल रंग की एक मणि। पद्मराग।

**मानिकचंदी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मानिकचंद] साधारण छोटी सुपारी।

**मानिक रेत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मानिक + रेत] मानिक का चूरा जिससे गहने साफ करते हैं।

**मानित**—वि० [सं०] सम्मानित। प्रतिष्ठित।

**मानिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गौरव। सम्मान। २. अभिमान।

**मानिनी**—वि० स्त्री० [सं०] १. मानवती। गर्ववती। २. मान करनेवाली। रुष्टा।

संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।

**मानी**—वि० [सं० मानिन्] [स्त्री० मानिनी] १. अहंकारी। घमंडी। २. सम्मानित।

संज्ञा पुं० वह नायक जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो।

संज्ञा स्त्री० [अ०] अर्थ। मतलब। तात्पर्य।

**मानुस***—संज्ञा पुं० दे० "मनुष्य"।

**मानुष**—वि० [सं०] [स्त्री० मानुषी] मनुष्य का।

संज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

**मानुषिक**—वि० [सं०] मनुष्य का।

**मानुषी**—वि० [सं० मानुषीय] मनुष्य-संबंधी।

**मानुष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनुष्य का धर्म या भाव। मनुष्यता। २. मनुष्य का शरीर।

**मानुस**—संज्ञा पुं० [सं० मानुष] मनुष्य।

**माने**—संज्ञा पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।

**मानो**—अव्य० [हिं० मानना] जैसे। गोया।

**मान्य**—वि० [सं०] [स्त्री० मान्या] १. मानने योग्य। माननीय। २. पूजनीय। पूज्य।

**मान्यता**—संज्ञा [सं०] आदर्श। मानदंड। स्वीकृति।

**माप**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मापना] १. मापने की क्रिया या भाव। नाप। २. वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। मान।

**मापक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मान। माप। पैमाना। २. वह जिससे कुछ मापा जाय। ३. वह जो मापता हो।

**मापना**—क्रि० स० [सं० मापन] १. किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना। २. किसी पदार्थ का परिमाण जानने के लिए कोई क्रिया करना। नापना।
क्रि० अ० [सं० मत्त] मतवाला होना।

**मापमान**—संज्ञा पुं० दे० "मानदंड"।

**माफ**—वि० [अ०] जो क्षमा कर दिया गया हो। क्षमित।

**माफकत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. अनुकूलता। २. मेल। मैत्री।

**माफिक**—वि० [अ० मुआफ़िक़] १. अनुकूल। अनुसार। २. योग्य।

**माफी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क्षमा। २. वह भूमि जिसका कर सरकार से माफ हो।
यौ०—माफीदार=वह जिसकी भूमि की मालगुजारी सरकार से माफ की हो।

**मामर्†**—संज्ञा पुं० [सं० मम] १. ममता। अहंकार। २. शक्ति। अधिकार।

**मामता**—संज्ञा स्त्री० [सं० ममता] १. अपनापन। आत्मीयता। २. प्रेम। मुहब्बत।

**मामलत, मामलतिक†**—संज्ञा स्त्री० [अ० मुआमिलत] १. मामला। व्यवहार की बात। २. विवादास्पद विषय।

**मामला**—संज्ञा पुं० [अ० मुआमिला] १. व्यापार। काम। धंधा। उद्यम। २. पारस्परिक व्यवहार। ३. व्यावहारिक, व्यापारिक या विवादास्पद विषय। ४. झगड़ा। विवाद। ५. मुकदमा।

**मामा**—संज्ञा पुं० [अनु०] [स्त्री० मामी] माता का भाई। माँ का भाई।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १ माता। माँ। २. रोटी पकानेवाली स्त्री। ३. नौकरानी।

**मामी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मा=निषेधार्थक] अपने दोष पर ध्यान न देना।
मुहा०—मामी पीना=मुकर जाना।

**मामूल**—संज्ञा पुं० [अ०] रीति। रिवाज।

**मामूली**—वि० [अ०] १. नियमित। नियत। २. सामान्य। साधारण।

**माय†**—संज्ञा स्त्री० [सं० मातृ] १. माता। माँ। जननी। २. बड़ी या आदरणीय स्त्री।
संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।
अव्य० [सं० मध्य] दे० "माहि"।

**मायक**—संज्ञा पुं० दे० "मायको"।

**मायका**—संज्ञा पुं० [सं० मातृ] स्त्री के लिए उसके माता-पिता का घर। नैहर। पीहर।

**मायन†**—संज्ञा पुं० [सं० मातृका + आनयन] १. वह दिन या तिथि जिसमें विवाह में मातृका पूजन और पितृ-निमंत्रण होता है। २. उपर्युक्त दिन का कृत्य।

**मायनी†**—संज्ञा स्त्री० दे० "मायाविनी"।

**मायल**—वि० [फ़ा०] १. झुका हुआ। कज। प्रवृत्त। २. मिश्रित। मिला हुआ। (रंग)

**माया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. द्रव्य। धन। संपत्ति। दौलत। ३. अविद्या। अज्ञानता। भ्रम। ४. छल। कपट। धोखा। ५. सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण। प्रकृति। ६. ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब काम करती हुई मानी गई है। ७. इंद्रजाल। जादू। ८. इंद्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद। ९. एक वर्णवृत्त। १०. मय दानव की कन्या जिससे खर, दूषण, त्रिशिरा और शूर्पनखा पैदा हुए थे। ११. किसी देवता की कोई लीला, शक्ति या प्रेरणा। १२. दुर्गा। १३. बुद्धदेव (गौतम) की माता का नाम।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० माता] माँ। जननी।
*†संज्ञा स्त्री० [हिं० ममता] १. किसी को अपना समझने का भाव। ममत्व। २. कृपा। दया। अनुग्रह।

**मायादेवी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध की माता का नाम।

**मायापात्र**—वि० [सं०] धनवान्।

**मायावाद**—संज्ञा पुं० [सं०] ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत।

**मायावादी**—संज्ञा पुं० [सं० मायावादिन्] वह जो सारी सृष्टि को

माया या भ्रम उपजे।

**मायाविनी** संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छल या कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।

**मायावी**—संज्ञा पुं० [ सं० मायाविन् ] [ स्त्री० मायाविनी ] १. बहुत बड़ा चालाक। धोखेबाज। फरेबी। २. एक दानव जो मय का पुत्र था। परमात्मा। ३. जादूगर।

**मायास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र। कहते हैं कि इसका प्रयोग विश्वामित्र ने श्रीरामचंद्र जी को सिखाया था।

**मायिक**—वि० [ सं० ] १. माया से बना हुआ। बनावटी। जाली। २. मायावी।

**मायूस**—वि० [ अ० ] [ संज्ञा मायूसी ] निराश। ना-उम्मेद।

**मार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कामदेव। २. विष। जहर। ३. धतूरा।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० मारना ] १. मारने की क्रिया या भाव। २. आघात। चोट। ३. निशाना। ४. मार-पीट।

अव्य० [ हिं० मारना ] अत्यंत। बहुत।

*संज्ञा स्त्री० [ हिं० माला ] माला।

**मारकंडेय**—संज्ञा पुं० दे० "मार्कंडेय"।

**मारक**—वि० [ सं० ] १. मार डालनेवाला। संहारक। २. किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला।

**मारका**—संज्ञा पुं० [ अं० मार्क ] १. चिह्न। निशान। २. विशेषता-सूचक चिह्न।

संज्ञा पुं० [ अ० ] १. युद्ध। लड़ाई। २. बहुत बड़ी या महत्त्वपूर्ण घटना।

**मार-काट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मारना + काटना ] १. युद्ध। लड़ाई। जंग। २. मारने काटने का काम या भाव।

**मारकीन**—संज्ञा पुं० [ अं० नैनकिन् ] एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।

**मारकेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ग्रहों का वह योग जो किसी मनुष्य के लिए घातक होता है।

**मारग**—संज्ञा पुं० [ सं० मार्ग ] रास्ता।

मुहा०—मारग मारना=रास्ते में पथिक को लूट लेना। मारग लगना=रास्ता लेना।

**मारगन**—संज्ञा पुं० [ सं० मार्गण ] १. बाण। तीर। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

**मारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मार डालना। हत्या करना। २. एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्य के मारने के लिए यह प्रयोग किया जाता है, वह मर जाता है।

**मारतंड**—संज्ञा पुं० दे० "मार्तंड"।

**मारतौल**—संज्ञा पुं० [पुर्त० मोर्टेलो] एक प्रकार का हथौड़ा।

**मारना**—क्रि० स० [ सं० मारण ] १. वध करना। हनन करना। प्राण लेना। २. पीटना या आघात पहुँचाना। ३. जरब लगाना। ४. दुःख देना। सताना। ५. कुश्ती या मल्ल-युद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना। ६. बंद कर देना। ७. शस्त्र आदि चलाना। फेंकना।

मुहा०—गोली मारना=१. किसी पर बंदूक चलाना या छोड़ना। २. जाने देना।

८. किसी शारीरिक आवेग या मनो-विकार आदि को रोकना। ९. नष्ट कर देना। न रहने देना। १०. शिकार करना। आखेट करना। ११. गुप्त रखना। छिपाना। १२. चलाना। संचालित करना।

मुहा०—फूँक पढ़कर मारना=मंत्र से फूँककर कोई चीज किसी पर फेंकना। जादू मारना=जादू का प्रयोग करना। मंत्र मारना=जादू करना।

१३. धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना। १४ बिना परि-श्रम के अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना। १५. विजय प्राप्त करना। जीतना। १६. अनुचित रूप से रख लेना। १७. बल या प्रभाव कम करना। १८. निर्जीव या जड़ देना। १९. लगाना। देना।

**मार-पीट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना + पीटना ] ऐसी लड़ाई जिसमें लोग मारे और पीटे जायँ।

**मारपेच**—संज्ञा पुं० [ हिं० मारना + पेच ] धूर्तता। चालबाजी।

**मारफत**—अव्य० [ अ० ] द्वारा। जरिये से।

**मारवाड़**—संज्ञा पुं० [ हिं० मेवाड़ ] १. मेवाड़ राज्य। दे० "मेवाड़"। २. राजपूताने में मेवाड़ के आस-पास का प्रांत।

**मारवाड़ी**—संज्ञा पुं० [हिं० मारवाड़] [ स्त्री० मारवाड़िन ] मारवाड़ देश का निवासी।

संज्ञा स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा।

वि० [ हिं० मारना ] मारवाड़ देश का।

**मारा**—वि० [ हिं० मारना ] जो मार डाला गया हो। मारा हुआ। निहत।

मुहा०—मारा फिरना, मारा मारा फिरना=बुरी दशा में इधर-उधर घूमना।

**मारामार**—क्रि० वि० [हिं० मारना] अत्यंत शीघ्रता से। बहुत जल्दी।

**मारिष**—संज्ञा पुं० दे० "मारीष"।

**मारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मारना] महामारी।

**मारीच**—संज्ञा पुं० [सं०] वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बनकर रामचन्द्र को धोखा दिया था।

**मारुत**—संज्ञा पुं० [सं०] वायु। हवा।

**मारुति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान। २. भीम।

**मारू**—संज्ञा पुं० [हिं० मारना] १. एक राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है। २. बहुत बड़ा डंका या धौंसा।

संज्ञा पुं० [सं० मरुभूमि] मरुदेश-निवासी।

वि० [हिं० मारना] १. मारनेवाला। २. हृदयवेधक। कटीला।

**मारे**—अव्य० [हिं० मारना] वजह से।

**मार्कंडेय**—संज्ञा पुं० [सं०] मृकंड ऋषि के पुत्र। कहते हैं कि वे अपने तपोबल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे।

**मार्का**—संज्ञा पुं० दे० "मारका"।

**मार्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रास्ता। पंथ। २. अगहन का महीना। ३. मृगशिरा नक्षत्र।

**मार्गण**—संज्ञा पुं० [सं०] अन्वेषण। ढूँढ़ना।

**मार्गन**—संज्ञा पुं० [सं० मार्गण] बाण।

**मार्गशीर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] अगहन मास। कातिक के बाद का महीना।

**मार्गी**—संज्ञा पुं० [सं० मार्गिन] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री। बटोही।

**मार्जन**—संज्ञा पुं० दे० "मार्जना"।

**मार्जना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० मार्जनीय] १. सफ़ाई। २. क्षमा। माफ़ी।

**मार्जनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] झाड़ू।

**मार्जार**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।

**मार्जित**—वि० [सं०] साफ़ किया हुआ।

**मार्तंड**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

**मार्दव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अहंकार का त्याग। २. दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होना। ३. सरलता।

**मार्फ़त**—अव्य० [अ०] द्वारा। जरिए से।

**मार्मिक**—वि० [सं०] १. जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े। विशेष प्रभावशाली। २. मर्मज्ञ।

**मार्मिकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मार्मिक होने का भाव। २. पूर्ण अभिज्ञता।

**मार्शल-ला**—संज्ञा पुं० [अं०] १. फ़ौजी कानून। २. फ़ौजी कानूनों और अधिकारियों का शासन जो बहुत कठोर होता है।

**माल**—संज्ञा पुं० [सं० मल्ल] पहलवान। कुश्ती लड़नेवाला।

संज्ञा स्त्री० [सं० माला] १. माला। हार। २. वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे में टेकुए को घुमाती है। ३. पंक्ति। पाँती।

संज्ञा पुं० [अ०] १. संपत्ति। धन।

मुहा०—माल चीरना या मारना=पराया धन हड़पना। दूसरे की संपत्ति दबा बैठना। २. सामग्री। सामान। असबाब।

यौ०—माल-टाल=धन संपत्ति। माल-मता=माल-असबाब।

३. क्रय-विक्रय का पदार्थ। ४. वह धन जो कर में मिलता है। ५. फ़सल की उपज। ६. उत्तम और सुस्वादु भोजन। ७. गणित में वर्ग का घात। वर्ग अंक। ८. वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो।

**मालकँगनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० माल? + कँगुनी] एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।

**मालकोश**—संज्ञा पुं० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग। कौशिक राग। हनुमत् ने इसे छः रागों के अंतर्गत माना है।

**मालखाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह स्थान जहाँ माल-असबाब रहता हो। भंडार।

**माल गाड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० माल + गाड़ी] रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है।

**मालगुजार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मालगुजारी देनेवाला पुरुष।

**मालगुजारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. वह भूमि-कर जो जमींदार से सरकार लेती है। २. लगान।

**माल गोदाम**—संज्ञा पुं० [हिं० माल + गोदाम] स्टेशन पर वह स्थान जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।

**मालती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है। २. छः अक्षरों की एक वर्णवृत्ति। ३. बारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति। ४. सवैया का मत्तगयंद नामक भेद। ५. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ६. रात्रि। रात।

**मालदार**—वि० [ फ़ा० ] धनी। संपन्न।

**मालद्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० मलय-द्वीप ] भारतवर्ष के पश्चिम ओर का एक द्वीपपुंज।

**मालपूआ**—संज्ञा पुं० [ सं० पूप ] पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान।

**मालव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मालवा देश। २. एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं। ३. मालव देश-वासी या मालव का पुरुष।

वि० मालव देश-सम्बन्धी। मालवे का।

**मालवा**—संज्ञा पुं० [ सं० मालव ] एक प्राचीन देश जो अब मध्य भारत में है।

**मालवीय**—वि० [ सं० ] १. मालवे का। २. मालव देश का निवासी।

**माला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पंक्ति। अवली। २ फूलों का हार। गजरा।

मुहा०—माला फेरना=जपना। भजना।

३ समूह। झुंड। ४. दूब। ५. उपजाति छंद का एक भेद।

**मालादीपक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अलंकार जिसमें पूर्व कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।

**मालाधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्रह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त।

**मालामाल**—वि० [ फ़ा० ] बहुत संपन्न।

**मालिक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० मालिका ] १. ईश्वर। अधिपति। २. स्वामी। ३. पति। शौहर।

**मालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पंक्ति। २. माला। ३. मालिन।

**मालिकाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] स्वामी का अधिकार या स्वत्व मिलकियत। स्वामित्व।

क्रि० वि० मालिक की तरह।

**मालिकी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मालिक] १. मालिक होने का भाव। २. मालिक का स्वत्व।

**मालिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मालिन। २. चंपा नगरी का एक नाम। ३. स्कंद की सात माताओं में से एक। ४. गौरी। ५. एक वर्णिक वृत्त। ६. मादरा नाम की एक शराब।

**मालिन्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मलिनता। मैलापन।

**मालियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कीमत। मूल्य। २. संपत्ति। ३. कीमती चीज।

**मालिया**—संज्ञा पुं० [ अ० माल ] जमीन का लगान। राजस्व। कर।

**मालिवान***—संज्ञा पुं० दे० "माल्य-वान्।"

**मालिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] मलने का भाव या क्रिया। मलाई। मर्दन।

**माली**—संज्ञा पुं० [ सं० मालिक ] [ स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी ] १. बाग को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला पुरुष। २. एक छोटी जाति। इस जाति के लोग बागों में फूल और फल के वृक्ष लगाते हैं।

वि० [ सं० मालिन् ] [स्त्री० मालिनी ] जो माला धारण किए हो। माला पहने हुए।

संज्ञा पुं० १. एक राक्षस जो माल्य-वान् और सुमाली का भाई था। २. राजीवगण नामक छंद।

वि० [ फ़ा० ] आर्थिक। धन-संबंधी।

**मालीदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. मलीदा। चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत कोमल और गरम ऊनी कपड़ा।

**मालूम**—वि० [ अ० ] जाना हुआ। ज्ञात।

**मालोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक उपमान के भिन्न भिन्न धर्म होते हैं।

**माल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फूल। २. माला।

**माल्यकोश**—संज्ञा पुं० दे० "मालकोश"।

**माल्यवंत**—संज्ञा पुं० दे० "माल्यवान्"।

**माल्यवान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २. एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था।

**मावत***†—संज्ञा पुं० दे० "महावत"।

**मावली**—संज्ञा पुं० [ देश० ] दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति का नाम।

**मावस***—संज्ञा स्त्री० दे० "अमावस"।

**मावा**—संज्ञा पुं० [ सं० मंड ] १. माँड़। पीच। २. सत। निष्कर्ष। ३. प्रकृति। ४. खोया।

**माशकी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मशक ] मशक में पानी भरने वाला। भिश्ती।

**माशा**—संज्ञा पुं० [ सं० माष ] ८ रत्ती का एक बाट या मान।

**माशी**—संज्ञा पुं० [हिं० माष=उड़द ] एक रंग जो कालापन लिए हरा होता है।

वि० कालापन लिए हरे रंग का।

**माशूक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० माशूका ] प्रेम-पात्र। प्रिय।

**माष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उड़द। २. माशा। ३. शरीर के ऊपर का काले रंग का मसा।

*संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "माशा"।

**माषपर्णी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] जंगली उड़द।

**मास**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] काल का एक विभाग जो वर्ष के बारहवें भाग के बराबर या प्रायः ३० दिनों का होता है। महीना।

*संज्ञा पुं॰ दे॰ "मांस"।

**मासना***†—क्रि॰ अ॰ [सं॰ मिश्रण] मिलना।

क्रि॰ स॰ मिलाना।

**मासांत**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. महीने का अंत। २. अमावस्या। ३. संक्रांति।

**मासा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "माशा"।

**मासिक**—वि॰ [सं॰] १. मास-संबंधी। महीने का। २. महीने में एक बार होनेवाला।

**मासी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ मातृष्वसा] माँ की बहिन। मौसी।

**मासूम**—वि॰ [अ॰] [संज्ञा मासूमियत] १. निरपराध। बेगुनाह। २. निरीह।

**माहँ***—अव्य॰ [सं॰ मध्य] बीच। में।

**माह***†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ माघ] माघ मास।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ माष] माष। उड़द।

संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] मास। महीना।

**माहत***—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ महत्ता] महत्त्व।

**माहताब**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] चंद्रमा।

**माहताबी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] १. दे॰ "महताबी"। २. एक प्रकार का कपड़ा।

**माहना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "उमा-हना"।

**माहर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ माहिर] इंद्रासन।

वि॰ दे॰ "माहिर"।

**माहली**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ महल] १. अंतःपुर में जानेवाला सेवक। महली खोजा। २. सेवक। दास।

**माहवार**—क्रि॰ वि॰ [फ़ा॰] प्रति मास।

वि॰ हर महीने का। मासिक।

**माहवारी**—वि॰ [फ़ा॰] हर महीने का।

**माहाँ**†—अव्य॰ दे॰ "महँ"।

**माहात्म्य**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. महिमा। गौरव। महत्त्व। बड़ाई। २. आदर। मान।

**माहिं***—अव्य॰ [सं॰ मध्य] १. भीतर। अंदर। २. अधिकरण कारक का चिह्न। 'में' या 'पर'।

**माहिर**—वि॰ [अ॰] निपुण। तत्त्वज्ञ।

**माहिला***†—संज्ञा पुं॰ [अ॰ मल्लाह] माँझी।

**माहिष्मती**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।

**माहीं***—अव्य॰ दे॰ "माँहि"।

**माही**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] मछली।

**माही मरातिब**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।

**माहुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ मधुर] विष। जहर।

**माहेंद्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक अस्त्र का नाम।

**माहेश्वर**—वि॰ [सं॰] महेश्वर-संबंधी।

संज्ञा पुं॰ १. एक यज्ञ का नाम। २. एक उपपुराण का नाम। ३. पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। ४. शैव संप्रदाय का एक भेद। ५. एक अस्त्र।

**माहेश्वरी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. दुर्गा। २. एक मातृका। ३. वैश्यों की एक जाति।

**मिंड़ाई**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ मींड़ना] १. मींड़ने या मींजने की क्रिया या भाव। २. मींड़ने की मजदूरी। ३. देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जिसमें छींट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है।

**मिंत***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मित्र"।

**मिकदार**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] परि-माण। मात्रा।

**मिचकना**†—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ मिचना] (आँखों का) बार बार खुलना और बंद होना।

**मिचकाना**†—क्रि॰ स॰ [हिं॰ मिचना] बार बार (आँखें) खोलना और बंद करना।

**मिचकी**†—संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] छलाँग।

**मिचना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ मींचना का अक॰ रूप] (आँखों का) बंद होना।

**मिचलाना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ मत-लाना] कै आने को होना। मतली आना।

**मिचली**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ मिच-लाना] जी मिचलाने की क्रिया। मतली।

**मिचौनी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "आँख-मिचौली"।

**मिछा***†—वि॰ दे॰ "मिथ्या"।

**मिजराब**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] तार का एक प्रकार का छल्ला जिससे

सितार आदि बजाते हैं। डंक। नाखुना।

**मिज़ाज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे। तासीर। २. प्रवृत्ति। स्वभाव। प्रकृति। ३. शरीर या मन की दशा। तबीयत। दिल।

**मुहा०**—मिज़ाज ख़राब होना=१. मन में अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। २. अस्वस्थता होना। मिज़ाज बिगड़ना=किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना। मिज़ाज पाना=१. किसी के स्वभाव से परिचित होना। २. किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिज़ाज पूछना=यह पूछना कि आप का शरीर तो अच्छा है।

४. अभिमान। घमंड। शेखी।

**मुहा०**—मिज़ाज न मिलना=घमंड के कारण किसी से बात न करना।

**मिज़ाजदार**—वि० [ अ० मिज़ाज+फ़ा० दार ( प्रत्य० ) ] जिसे बहुत अभिमान हो। घमंडी।

**मिज़ाज-पुरसी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मिज़ाज+फ़ा० पुरसी ] किसी का मिज़ाज या कुशल समाचार पूछना।

**मिज़ाज शरीफ़ ?**—[ अ० ] आप अच्छे तो हैं आप सकुशल तो हैं ?

**मिज़ाजी**—वि० दे० "मिज़ाजदार"।

**मिटना**—क्रि० अ० [ सं० मृष्ट ] १. किसी अंकित चिह्न आदि का न रह जाना। २.ख़राब या नष्ट हो जाना। न रह जाना।

**मिटाना**—क्रि० स० [ हिं० मिटना का सक० रूप ] १. रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना। २. नष्ट करना। ३. ख़राब करना।

**मिट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मृत्तिका ] १. पृथ्वी। भूमि। ज़मीन। २. वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है। ख़ाक। धूल।

**मुहा०**—मिट्टी करना=नष्ट करना। ख़राब करना। मिट्टी के मोल=बहुत सस्ता। मिट्टी डालना=१. किसी बात को जाने देना। २.किसी के दोष को छिपाना। मिट्टी देना=१. मुसलमानों में किसी के मरने पर सब लोगों का उसकी क़ब्र में तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डालना। २. क़ब्र में गाड़ना। मिट्टी में मिलना=१. नष्ट होना। चौपट होना। २. मरना।

**यौ०**—मिट्टी का पुतला=मानव शरीर। मिट्टी ख़राबी=१. दुर्दशा। २. बरबादी। नाश।

३. राख। भस्म। ४.शरीर। बदन।

**मुहा०**—मिट्टी पलीद या बरबाद करना=दुर्दशा करना। ख़राबी करना।

५. शव। लाश। ६. शारीरिक गठन। बदन की बनावट। ७. चंदन का ज़मीन जो इत्र में दी जाती है।

**मिट्टी का तेल**—संज्ञा पुं० [ हिं० मिट्टी+तेल ] एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसका व्यवहार प्रायः दीपक आदि जलाने के लिए होता है।

**मिट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मीठा ] चुंबन। चूमा।

**मिट्ठू**—संज्ञा पुं० [ हिं० मीठा+ऊ ( प्रत्य० ) ] १. मीठा बोलनेवाला। २. तोता।

वि० १. चुप रहनेवाला। न बोलने वाला। २. प्रिय बोलनेवाला।

**मिठ**—वि० [ हिं० मीठा ] मीठा का संक्षिप्त रूप। ( यौगिक में ) जैसे—मिठबोला।

**मिठबोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० मीठा+बोलना ] १. मधुर-भाषी। २. वह जो मन में कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करता हो।

**मिठलोना**—संज्ञा पुं० [ हिं० मीठा=कम+नोन ] थोड़े नमकवाला।

**मिठाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मीठा+आई ( प्रत्य० ) ] १. मिठास। माधुरी। २. कोई मीठी खाने की चीज़। ३. कोई अच्छा पदार्थ।

**मिठाना**—क्रि० अ० [ हिं० मीठा ] मीठा होना।

**मिठास**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मीठा+आस ( प्रत्य० ) ] मीठे होने का भाव। मीठापन। माधुर्य्य।

**मितंग***—संज्ञा पुं० [ सं० मितंगम ] हाथी।

**मित**—वि० [ सं० ] १. जो सीमा के अंदर हो। परिमित। २. थोड़ा। कम।

**मितभाषी**—संज्ञा पुं० [ सं० मितभाषिन् ] कम या थोड़ा बोलनेवाला।

**मितमति**—वि० [ सं० ] थोड़ी बुद्धिवाला।

**मितव्यय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कम खर्च करना। किफ़ायत।

**मितव्ययता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कम खर्च करने का भाव।

**मितव्ययी**—संज्ञा पुं० [ सं० मितव्ययिन् ] वह जो कम खर्च करता हो।

**मिताई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

**मिताक्षरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वर कृत टीका।

**मितार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह दूत जो थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करे।

**मिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मान। परिमाण। २. सीमा। हद। ३. काल की अवधि।

**मिती**—संज्ञा स्त्री० [सं० मिति] १. देशी महीने की तिथि या तारीख।
मुहा०—मिती पुगना या पूजना=हुंडी का नियत समय पूरा होना।
२. दिन। दिवस।

**मितीकाटा**—संज्ञा पुं० [हिं० मिती + काटना] सूद जोड़ने का एक देशी सहज ढंग।

**मित्त***—संज्ञा पुं० दे० "मित्र"।

**मित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो अपना साथी, सहायक और शुभचिंतक हो। बंधु। सखा। दोस्त। २. सूर्य का एक नाम। ३. बारह आदित्यों में से पहला। ४. पुराणानुसार मरुद्गण में से पहला। ५. आर्यों के एक प्राचीन देवता। ६. भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उदुंबर और पांचाल आदि में था।

**मित्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मित्र होने का भाव। दोस्ती। २. मित्र का धर्म्म।

**मित्रत्व**—संज्ञा पुं० दे० "मित्रता"।

**मित्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मित्र नामक देवता की स्त्री। २. शत्रुघ्न की माता सुमित्रा।

**मित्राई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मित्रता"।

**मित्राक्षर**—संज्ञा पुं० [सं०] छंद के रूप में बना हुआ पद।

**मित्रावरुण**—संज्ञा पुं० [सं०] मित्र और वरुण नामक देवता।

**मिथः**—अव्य० [सं०] १. आपस में। २. एकान्त में। ३. गुप्त रूप से।

**मिथिला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्त्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम।

**मिथुन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २. संयोग। समागम। ३. मेष आदि राशियों में से तीसरी राशि।

**मिथ्या**—वि० [सं०] असत्य। झूठ।

**मिथ्याचार**—संज्ञा पुं० [सं०] कपटपूर्ण व्यवहार।

**मिथ्यात्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिथ्या होने का भाव। २. माया।

**मिथ्याध्यवसिति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें कोई एक असंभव या मिथ्या बात निश्चित करके कोई दूसरी बात कही जाती है।

**मिथ्यापन**—संज्ञा पुं० दे० "मिथ्यात्व"।

**मिथ्यायोग**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य्य जो रूप रस या प्रकृति आदि के विरुद्ध हो। (वैद्यक)।

**मिथ्यावादी**—संज्ञा पुं० [सं० मिथ्यावादिन्] [स्त्री० मिथ्यावादिनी] वह जो झूठ बोलता हो। झूठा।

**मिथ्याहार**—संज्ञा पुं० [सं०] अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।

**मिनती**†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

**मिनहा**—वि० [अ०] जो काट या घटा लिया गया हो। मुजरा किया हुआ।

**मिनमिन**—क्रि० वि० [अनु०] मंद या अस्पष्ट स्वर में।

**मिनमिनाना**—क्रि० अ० [अनु०] धीमे स्वर में या नाक से बोलना।

**मिनिस्टर**—संज्ञा पुं० [अं०] १. एक प्रकार का पादरी या ईसाई धर्माधिकारी। २. प्रान्तीय शासन में किसी विभाग का मंत्री।
यौ०—प्राइम मिनिस्टर=प्रधान मंत्री।

**मिनिस्टरी**—संज्ञा स्त्री० [अं० मिनिस्टर] मिनिस्टर का कार्य या पद।

**मिन्नत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थना। निवेदन।

**मिमियाई**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मोमियाई"।

**मिमियाना**—क्रि० अ० [मिन मिन से अनु०] भेड़ या बकरी का बोलना।

**मियाँ**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. स्वामी। मालिक। २. पति। खसम। ३. महाशय। [मुसल०] ४. मुसलमान।

**मियाँमिट्ठू**—संज्ञा पुं० [हिं० मियाँ + मिट्ठू] १. मीठी बोली बोलनेवाला। मधुर-भाषी।
मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना=अपने मुँह अपनी प्रशंसा करना।
२. तोता। ३. मूर्ख। बेवकूफ।

**मियाद**—संज्ञा स्त्री० दे० "मीयाद"।

**मियान**—संज्ञा स्त्री० दे० "म्यान"।

**मियाना**—वि० [फ़ा०] मध्यम आकार का।
संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।

**मिरग***†—संज्ञा पुं० [सं० मृग] मृग। हरिन।

**मिरगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मृगी] एक प्रसिद्ध मानसिक रोग जिसमें रोगी प्रायः मूर्छित होकर गिर पड़ता है। अपस्मार रोग।

**मिरचा**—संज्ञा पुं० [सं० मरिच] लाल मिर्च।

**मिरजई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मिरजा] कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा।

**मिरजा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. मीर या अमीर का लड़का। अमीरजादा। २. राजकुमार। कुँवर। ३. मुगलों की एक उपाधि।

**मिरियास***—संज्ञा स्त्री० दे० "मीरास"।

**मिर्च**—संज्ञा स्त्री० [सं० मरिच] १. कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों और फलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत काली मिर्च, लाल मिर्च आदि हैं। २. कुछ

…की एक प्रसिद्ध तिक्त जिसकी फली जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। लाल मिर्च। मिरचा। ३. एक प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना जिसका व्यवहार व्यंजनों में मसाले के रूप में होता है। गोल मिर्च।

**मिल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] कारखाना।

**मिलमालिक**—संज्ञा पुं० कारखानों का चलानेवाला। पूँजीवाला।

**मिलक†**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मिल्क ] १. जमीनजायदाद। जमींदारी। २. जागीर।

**मिलकना०**—क्रि० स० [?] चलाना।

**मिलकी**—संज्ञा स्त्री० [ हि० मिलक + ई (प्रत्य०) ] १. जमींदार। २. दौलतमंद। अमीर।

**मिलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। भेंट। २. मिश्रण। मिलावट।

**मिलनसार**—वि० [ हिं० मिलन + सार (प्रत्य०) ] [ संज्ञा मिलनसारी ] सद्व्यवहार रखनेवाला और सुशील।

**मिलना**—क्रि० अ० [ सं० मिलन ] १. सम्मिलित होना। मिश्रित होना। २. दो भिन्न भिन्न पदार्थों का एक होना। ३. समूह या समुदाय के भीतर होना।

यौ०—मिला-जुला=१. सम्मिलित। २. मिश्रित।

४. सटना। जुड़ना। चिपकना। ५. बिलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। ६. आलिंगन करना। गले लगाना। ७. भेंट होना। मुलाकात होना। ८. मेल-मिलाप होना। ९. लाभ होना। १०. प्राप्त होना।

**मिलनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मिलना + ई (प्रत्य०) ] विवाह की एक रस्म। इसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं।

**मिलवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलाना] मिलाने की क्रिया, भाव, या मजदूरी।

**मिलवाना**—क्रि० स० [हिं० मिलाना का प्रे० रूप] मिलाने का काम दूसरे से कराना।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० मिलाना + ई (प्रत्य०) ] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. विवाह की मिलनी नामक रस्म।

**मिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मिलना ] १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। ( जेल के कैदियों के साथ )।

**मिलान**—संज्ञा पुं० [ हिं० मिलाना ] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. तुलना। मुकाबला। ३. ठीक होने की जाँच।

**मिलाना**—क्रि० स० [ सं० मिलन ] १. मिश्रण करना। २. दो भिन्न-भिन्न पदार्थों को एक करना। ३. सम्मिलित करना। एक करना। ४. सटाना। जोड़ना। चिपकाना। ५. तुलना करना। मुकाबला करना। ६. ठीक होने की जाँच करना। ७. भेंट या परिचय कराना। ८. सुलह या संधि कराना। ९. अपना भेदिया या साथी बनाना। गाँठना। १०. बजाने से पहले बाजों का सुर ठीक करना।

**मिलाप**—संज्ञा पुं० [ हिं० मिलना + आप (प्रत्य०) ] १. मिलने की क्रिया या भाव। २. मित्रता। ३. भेंट। मुलाकात।

**मिलावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मिलाना + आवट (प्रत्य०) ] १. मिलाये जाने का भाव। २. बढ़िया चीज में घटिया चीज का मेल। खोट।

**मिलिंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भौंरा।

**मिलिकत†**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मिल्क ] १. जमींदारी। मिल्कियत। २. जागीर।

**मिलिटरी**—वि० [ अं० ] सेना संबंधी। फौजी।

**मिलित**—वि० [ सं० ] मिला हुआ। युक्त।

**मिलौना†**—क्रि० स० [हिं० मिलाना] १. दे० "मिलाना"। २. गौ का दूध दुहना।

**मिलौनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मिलाई"।

**मिल्कियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. जमींदारी। २. जागीर। माफी। ३. धन-संपत्ति। जायदाद। ४. वह धन-संपत्ति जिस पर मालिकों का हक हो।

**मिल्लत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मिलना + त (प्रत्य०)] १ मेल-जोल। घनिष्ठता। मिलाप। २. मिलनसारी।

संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मजहब। संप्रदाय। पंथ।

**मिशन**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. किसी विशिष्ट कार्य के लिए आना या भेजा जाना। २. इस प्रकार भेजे जानेवाले व्यक्ति। ३. ईसाई धर्म-प्रचारकों का निवासस्थान।

**मिशनरी**—संज्ञा पुं० [ अं० ] ईसाई धर्मप्रचारक। सेवाभाव।

वि० मिशन संबंधी। मिशन का।

**मिश्र**—वि० [ सं० ] १. मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। संयुक्त। २. श्रेष्ठ। बड़ा। ३. जिसमें कई भिन्न-भिन्न प्रकार की रकमों की संख्या हो। ( गणित )

संज्ञा पुं० [ सं० ] सरयूपारीण,

कान्यकुब्ज और सारस्वत आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।

**मिश्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० मिश्रणीय ] १. दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया। मेल। मिलावट। २. जोड़ लगाने की क्रिया। जोड़ना। ( गणित )।

**मिश्रित**—वि० [ सं० ] एक में मिला या हुआ।

**मिष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छल। कपट। २. बहाना। हीला। मिस। ३. ईर्ष्या। डाह।

**मिष्ट**—वि० [ सं० ] मीठा। मधुर।

**मिष्टभाषी**—संज्ञा पुं० [ सं० मिष्टभाषिन् ] वह जो मीठा बोलता हो। मधुरभाषी।

**मिष्टान्न**—संज्ञा पुं० [सं०] मिठाई।

**मिस**—संज्ञा पुं० [ सं० मिष ] १. बहाना। हीला। २. नकल। पाखंड।

**मिस**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] कुमारी।

**मिसकीन**—वि० [ अ० मिस्कीन ] [ संज्ञा मिसकीनी ] १. बेचारा। दीन। २. गरीब। निर्धन।

**मिसकीनता**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मिसकीन+ता ( सं० प्रत्य० ) ] दीनता। गरीबी।

**मिसनाॐ**—क्रि० अ० [सं० मिश्रण] मिश्रित होना। मिलना।

क्रि० अ० [ हिं० मीसना का अक० रूप ] मीजा या मला जाना। मीसा जाना।

**मिसरा**—संज्ञा पुं० [ अ० मिसरअ ] उर्दू या फारसी आदि की कविता का एक चरण। पद।

**मिसरी**—संज्ञा स्त्री० [ मिस्र देश से ] १ मिस्र देश का निवासी। २. मिस्र देश की भाषा। ३. दोबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।

**मिसल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मिस्ल ] सिक्खों के अनेक समूह जो रणजीतसिंह के बाद स्वतंत्र हो गए थे।

**मिसहा**†—वि० [ हिं० मिस ] १. बहानेबाज। २. कपटी।

**मिसाल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. उपमा। २. उदाहरण। नमूना। नजीर। ३. कहावत।

**मिसिल**—वि० दे० "मिस्ल"।

संज्ञा स्त्री० किसी एक मुकदमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागज-पत्र।

**मिस्टर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] साहब। महाशय।

**मिस्कोट**—संज्ञा पुं० [ अं० मेस ] १ भोजन। २ गुप्त परामर्श।

**मिस्तर**—संज्ञा पुं० [हिं० मिस्तरी ? ] काठ का वह औजार जिससे राज लोग छत पीटते हैं। पिटना।

संज्ञा पुं० [ अ० ] डोरे में कसा हुआ दफ्ती का वह टुकड़ा जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिए लिखे जानेवाले कागज के नीचे रख लिया जाता है।

संज्ञा पुं० दे० "मेहतर"।

**मिस्तरी**—संज्ञा पुं० [ अं० मास्टर ] वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।

**मिस्तरीखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० मिस्तरी+फ़ा० खाना ] वह स्थान जहाँ लोहार, बढ़ई आदि काम करते हैं।

**मिस्र**—संज्ञा पुं० [ अ०=नगर ] एक प्रसिद्ध देश जो अफ्रिका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।

**मिस्री**—संज्ञा स्त्री० दे० "मिसरी"।

**मिस्ल**—वि० [ अ० ] समान। तुल्य।

**मिस्सा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मिसना ] कई तरह की दालों आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।

**मिस्सी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मिसी=ताँबे का ] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो सधवा स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।

**मिहचनाॐ**-क्रि० स० दे० "मीचना"।

**मिहानीॐ**-संज्ञा स्त्री० दे० "मथानी"।

**मिहिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. आक का पौधा। ३. बादल। ४. चंद्रमा। ५. दे० "वराहमिहिर"।

**मिहिरकुल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मेहगुल का सं० रूप ] शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध हूण राजा तोरमाण (तुरमान) के पुत्र का नाम।

**मिहीं**—वि० दे० "महीन"।

**मींगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मुद्ग=दाल] बीज के अंदर का गूदा। गिरी।

**मींजना**†—क्रि० स० [ हिं० मींडना ] १. हाथों से मलना। मसलना। २. मर्दन करना।

**मींड़**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मीडम् ] संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाय। गमक।

**मींडकॐ**—संज्ञा पुं० दे० "मेंढक"।

**मींडना**†—क्रि० स० [ हिं० मींडना ] हाथों से मलना। मसलना।

**मीआद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] किसी कार्य्य की समाप्ति आदि के लिए नियत समय। अवधि।

**मीआदी**—वि० [ हिं० मीआद+ई ( प्रत्य० ) ] जिसके लिए कोई अवधि नियत हो।

**मीच**—संज्ञा स्त्री० दे० "मीचु"।

**मींचना**—क्रि० स० [ सं० मिष=झपकना ] (आँखें) बंद करना। मूँदना।

**मीचु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मृत्यु ] मृत्यु।

**मीजान**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] कुल संख्याओं का योग। जोड़। (गणित)

**मीठा**—वि० [ सं० मिष्ट ] [ स्त्री० मीठी ] १. चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर।

मुहा०—मीठा होना=किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना।

२. स्वादिष्ठ। जायकेदार। ३. धीमा। सुस्त। ४. साधारण या मध्यम श्रेणी का। मामूली। ५. हलका। मद्धिम। मंद। ६. नामर्द। नपुंसक। ७. बहुत अधिक सीधा। ८. प्रिय। रोचक।

संज्ञा पुं० १ मिठाई। २. गुड़।

**मीठा जहर**—संज्ञा पुं० दे० "बछनाग"।

**मीठा तेल**—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा + तेल] तिल का तेल।

**मीठा नीबू**—संज्ञा पुं० [ हिं० मीठा + नीबू ] अमारी नीबू। चकोतरा।

**मीठा पानी**—संज्ञा पुं० [हिं० मीठा + पानी] नींबू का अँगरेजी सत मिला हुआ पानी। लेमनेड।

**मीठी छुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मीठा + छुरी ] १ वह जो देखने में मित्र, पर वास्तव में शत्रु हो। विश्वासघातक। २. कपटी।

**मीत**—संज्ञा पुं० दे० "मित्र"।

**मीन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० मीनता ] १. मछली। २. मेष आदि १२ राशियों में से अंतिम राशि।

**मीनकेतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**मीना**—संज्ञा पुं० [ देश० ] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। २. सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग-बिरंग का काम। ३. शराब रखने का कंटर।

**मीनाकारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] [ कर्त्ता मीनाकार ] सोने या चाँदी पर होनेवाला रंगीन काम।

**मीनार**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मनार ] वह इमारत जो प्रायः गोलाकार चलती है और ऊपर की ओर बहुत अधिक ऊँचाई तक चली जाती है। स्तंभ। लाट।

**मीमांसक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो किसी बात की मीमांसा करता हो। २. वह जो मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता हो।

**मीमांसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनुमान, तर्क आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कोई बात कैसी है। २. हिंदुओं के छः दर्शनों में से दो दर्शन जो पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा कहलाते हैं। ३. जैमिनि-कृत दर्शन जिसे पूर्व मीमांसा कहते हैं।

**मीमांस्य**—वि० [ सं० ] मीमांसा करने के योग्य।

**मीयाद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] किसी कार्य के लिए नियत समय। अवधि।

**मीयादी**—वि० [ अ० ] जिसके लिए मीयाद निश्चित हो। जैसे—मीयादी हुंडी। मियादी बुखार।

**मीर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. सरदार। प्रधान। नेता। २. धार्मिक आचार्य। ३. सैयद जाति की उपाधि। ४. वह जो सबसे बढ़के कोई काम, विशेषतः प्रतियोगिता का काम, कर डाले।

**मीरजा**—संज्ञा पुं० दे० "मिरजा"।

**मीर फर्श**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वे बड़े बड़े पत्थर आदि जो फर्शों आदि के कोनों पर उन्हें उड़ने से रोकने के लिए रखे जाते हैं।

**मीरमजलिस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सभापति।

**मीरास**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] तरका। बपौती।

**मीरासी**—संज्ञा पुं० [ अ० मीरास ] [ स्त्री० मीरासिन ] एक प्रकार के मुसलमान जो प्रायः गाने-बजाने का काम या मसखरापन करते हैं।

**मील**—संज्ञा पुं० [ अ० माइल ] दूरी की एक नाप जो १७६० गज की होती है।

**मीलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० मीलनीय, मीलित ] १. बंद करना। २. संकुचित करना।

**मीलित**—वि० [ सं० ] १. बंद किया हुआ। २. सिकोड़ा हुआ।

संज्ञा पुं० एक अलंकार जिसमें यह कहा जाता है कि एक होने के कारण उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं जान पड़ता।

**मुँगरा**—संज्ञा पुं० [ सं० मुद्गर ] [ स्त्री० मुँगरी ] हथौड़े के आकार का काठ का एक औजार।

†संज्ञा पुं० [ हिं० मूँगरा ] नमकीन बुँदिया

**मुँगौछी, मुँगौरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मूँग + बरी ] मूँग की बनी हुई बरी।

**मुँचना**—क्रि० स० [ सं० मोचन ] मुक्त करना।

**मुँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मस्तक

के ऊपर का अंग । सिर । २. शुंभ का सेनापति एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था । ३. राहु ग्रह । ४. वृक्ष का ठूँठ । ५. कटा हुआ सिर । ६. एक उपनिषद् का नाम ।

वि॰ मुँड़ा हुआ । मुंडा ।

**मुंडचिरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मूँड़+चीरना ] १. एक प्रकार के फकीर जो प्रायः अपना सिर, आँख या नाक आदि नुकीले हथियार से घायल करके भिक्षा माँगते हैं । २. वह जो लेन-देन में बहुत हुज्जत और हठ करे ।

**मुंडन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सिर को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया । २ हिंदुओं के १६ संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँड़ा जाता है ।

**मुंडना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ मुंडन ] १. मूँड़ा जाना । सिर के बालों की सफाई होना । २. लुटना । ३. ठगा जाना ।

**मुंडमाला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला जो शिव या काली देवी के गले में होती है ।

**मुंडमालिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] काली देवी ।

**मुंडमाली**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मुंड-मालिन् ] शिव ।

**मुंडा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मुंडी ] [ स्त्री॰ मुंडी ] १. वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों । २. वह जो किसी साधु या जोगी का शिष्य हो गया हो । ३. वह पशु जिसके सींग होने चाहिएँ, पर न हों । ४. वह जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर निकलनेवाले अंग न हों । ५. एक प्रकार की लिपि जिसमें मात्राएँ आदि नहीं होतीं । कोठीवाली । ६. एक प्रकार का जूता ।

संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] छोटा नागपुर में रहनेवाली एक असभ्य जाति

**मुँड़ाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ मूँड़ना + आई ( प्रत्य॰ ) ] मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मजदूरी ।

**मुँड़ासा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मुड़= सिर + आसा ( प्रत्य॰ ) ] सिर पर बाँधने का साफा ।

**मुंडिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मुँडना + इया ( प्रत्य॰ ) ] साधु या स्वामी आदि का शिष्य । संन्यासी ।

**मुंडी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ मूँडना + ई ( प्रत्य॰ ) ] १. वह स्त्री जिसका सिर मुँड़ा हो । २. विधवा । राँड़ । ( गाली )

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] गोरखमुंडी ।

**मुँडेर**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मुँडेरा" ।

**मुँडेरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मूँड़=सिर + एरा ( प्रत्य॰ ) ] दीवार का वह ऊपरी उठा हुआ भाग जो सबसे ऊपर की छत पर होता है ।

**मुंतज़िम**—वि॰ [ अ॰ ] इंतज़ाम करनेवाला । प्रबंधक ।

**मुंतज़िर**—वि॰ [ अ॰ ] जो इंतज़ार या प्रतीक्षा करे ।

**मुँदना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ मुद्रण ] १. खुली हुई वस्तु का बंद हो जाना । बंद होना । २. लुप्त होना । छिपना । ३. छेद, बिल आदि बंद होना ।

**मुँदरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मुँदरी ] १. एक प्रकार का कुंडल जो जोगी लोग कान में पहनते हैं । २. कान का एक आभूषण ।

**मुँदरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ मुद्रा ] छल्ला । अँगूठी ।

**मुंशियाना**—वि॰ [ अ॰ मुंशी ] मुंशियों का सा ।

**मुंशी**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] निबंध या लेख आदि लिखनेवाला । मुहर्रिर । लेखक ।

**मुंसरिम**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. इंतजाम करनेवाला । २. कचहरी का वह कर्मचारी जो दफ्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुर्द मिसलें आदि ठिकाने से रखना रहता है ।

**मुंसिफ**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. इंसाफ करनेवाला । २. दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश ।

**मुंसिफी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ मुंसिफ + ई (प्रत्य॰) ] १. न्याय करने का काम । २. मुंसिफ का काम या पद । ३. मुंसिफ की कचहरी ।

**मुँह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मुख ] १. प्राणी का वह अंग जिससे वह बोलता और भोजन करता है । मुख-विवर । २. मनुष्य का मुख-विवर ।

**मुहा॰**—मुँह आना=मुँह के अंदर छाले पड़ना और चेहरा सूजना । ( प्रायः गरमी आदि के रोग में ) मुँह खराब करना=जबान से गंदी बातें कहना । मुँह खुलना=उद्दंडतापूर्वक बातें करने का आदी पड़ना । मुँह चलना =१. भोजन होना । खाया जाना । २. मुँह से व्यर्थ की बातें या दुर्वचन निकलना । मुँह चिढ़ाना=किसी की आकृति, हाव-भाव या कथन की बहुत बिगाड़कर नकल करना । मुँह छूना [ संज्ञा मुँह-छुआई ]=नाममात्र के लिए कहना । मन से नहीं बल्कि ऊपर से कहना । मुँह पर लाना=मुँह से कहना । वर्णन करना । मुँह पेट चलना=के दस्त होकर हैजा होना । मुँह फाड़कर कहना=

बेहया बनकर जबान पर लाना। मुँह बाँधकर बैठना=चुपचाप बैठना। कुछ न बोलना। मुँह भरना=रिश्वत देना। घूस देना। मुँह मीठा करना=१. मिठाई खिलाना। २. देकर प्रसन्न करना। मुँह में खून या लहू लगना=चसका पड़ना। चाट पड़ना। मुँह में जबान होना=कहने की सामर्थ्य होना। मुँह में पानी भर आना=कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिए ललचना। मुँह में लगाम न होना=जो मुँह में आवे, सो कह देना। (अपना) मुँह सीना=बोलने से रुकना। मुँह से बात न निकलना। बिलकुल चुप रहना। मुँह सूखना=प्यास या रोग आदि के कारण गला खुश्क होना। गले और जबान में काँटे पड़ना। मुँह से दूध टपकना=बहुत ही अनजान या बालक होना। (परिहास) मुँह से निकालना=कहना। उच्चारण करना। मुँह से फूल झड़ना=मुँह से बहुत ही सुंदर और प्रिय बातें निकलना।

२. मनुष्य अथवा किसी और जीव के सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुँह, कान, ठोढ़ी और गाल आदि अंग होते हैं। चेहरा।

मुहा०—अपना सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित होकर रह जाना। (अपना) मुँह काला करना=१. व्यभिचार करना। २. अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) मुँह काला करना=उपेक्षा से हटाना। त्यागना। मुँह की खाना=१. बेइज्जत होना। दुर्दशा कराना। २. मुँहतोड़ उत्तर सुनना। मुँह के बल गिरना=धोखा खाना। धोखा खाना। मुँह छिपाना=लज्जा के मारे सामने न होना। (किसी का) मुँह ताकना=१. किसी के मुँह की ओर, कुछ पाने आदि की आशा से, देखना। २. विवश या चकित होकर देखना। मुँह ताकना=अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। मुँह दिखाना=सामने आना। मुँह देखकर बात कहना=खुशामद करना। (किसी का) मुँह देखना=१. सामना करना। किसी के सामने आना। २. चकित होकर देखना। मुँह धो रखना=किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। मुँह पर=सामने। प्रत्यक्ष। मुँह पर या से बरसना=आकृति से प्रकट होना। चेहरे से जाहिर होना। मुँह फुलाना या फुलाकर बैठना=आकृति से असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट करना। मुँह फूँकना=१. मुँह में आग लगाना। मुँह झुलसना। (स्त्री० गाली) २ दाह-कर्म करना। (किसी के) मुँह लगना=१. किसी के सामने बढ़ बढ़कर बातें करना। उद्दंड बनना। २. जवाब सवाल करना। मुँह लगाना=सिर चढ़ाना। उद्दंड बनाना। मुँह सूखना=भय या लज्जा आदि से चेहरे का तेज जाता रहना।

४. किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का विवर। ५. सूराख। छेद। छिद्र। ६. मुलाहजा। मुरव्वत। लिहाज।

मुहा०—मुँह देखे का=जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी या दिखौआ हो। मुँह पर जाना=किसी का ध्यान करना। लिहाज करना। मुँह मुलाहजे का=जान पहचान का परिचित। मुँह रखना=किसी का लिहाज रखना।

७. योग्यता। सामर्थ्य। शक्ति। ८. साहस। हिम्मत।

मुहा०—मुँह पड़ना=साहस होना।

९. ऊपर की सतह या किनारा।

मुहा०—मुँह तक आना या भरना=पूरी तरह से भर जाना। लबालब होना।

मुँहअखरी—वि० [हिं० मुँह+अक्षर] जबानी। शाब्दिक।

मुँहकाला—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+काला] १. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। २. बदनामी।

मुँहचंग—संज्ञा पुं० दे० "मुरचंग"।

मुँहचोर—वि० [हिं० मुँह+चोर] जो किसी के सामने जाने में हिचकता हो।

मुँहछुट—वि० दे० "मुँहफट"।

मुँहजोर—वि० [हिं० मुँह+जोर] १ वह जो बहुत अधिक बोलता हो। बकवादी। २. दे० "मुँहफट"। ३. तेज। उद्दंड।

मुँहदिखाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह+दिखाना] १. नई वधू का मुँह देखने की रस्म। मुँहदेखनी। २. वह धन जो मुँह देखने पर वधू को दिया जाय।

मुँहदेखा—वि० [हिं० मुँह+देखना] [स्त्री० मुँहदेखी] केवल सामना होने पर होनेवाला (काम या व्यवहार)।

मुँहनाल—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह+नाल=नली] वह नली जो हुक्के की सटक या नैचे आदि में लगा देते हैं और जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं।

मुँहपातर—वि० [हिं० मुँह+पतला] १. बकवादी। २. मुँहफट।

मुँहफट—वि० [हिं० मुँह+फटना] ओछी या कटु बात कहने में संकोच न करनेवाला।

मुँहबोला—वि० [हिं० मुँह+बोलना] (संबंधी) जो वास्तविक

न हो, केवल मुँह से कहकर बनाया गया हो।

**मुँहभराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुँह+भरना+आई (प्रत्य०)] १. मुँह भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

**मुँहमाँगा**—वि० [हिं० मुँह+माँगना] अपने माँगने के अनुसार। मनोनुकूल।

**मुँहामुँह**—क्रि० वि० [हिं० मुँह+मुँह] मुँह तक। लबालब। भरपूर।

**मुँहासा**—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+आसा (प्रत्य०)] मुँह पर के वे दाने या फुंसियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं।

**मुअज्जन**—संज्ञा पुं० [अ०] वह जो नमाज के समय अजान या बाँग देता हो।

**मुअत्तल**—वि० [अ०] [संज्ञा मुअत्तली] जो काम से कुछ समय के लिए, दंड-स्वरूप, अलग कर दिया गया हो।

**मुआफ़िक**—वि० [अ०] [संज्ञा मुआफ़िकत] १. जो विरुद्ध न हो। अनुकूल। २. सदृश। समान। ३. मनोनुकूल।

**मुआयना**—संज्ञा पुं० [अ०] देखभाल करना। जाँच-पड़ताल। निरीक्षण।

**मुआवज़ा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. बदला। पलटा। २. वह धन जो किसी कार्य्य अथवा हानि आदि के बदले में मिले।

**मुकटा**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की रेशमी धोती।

**मुकता**—संज्ञा पुं० दे० "मुक्त"।

वि० [हिं० (प्रत्य०) अ+मुकता=समाप्त होना] [स्त्री० मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ट।

**मुकतावली**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्तावली"।

**मुकति**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।

**मुकदमा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. दो पक्षों के बीच का धन या अधिकार आदि से संबंध रखनेवाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का मामला जो विचार के लिए न्यायालय में जाय। अभियोग। २. दावा। नालिश।

**मुकदमेबाज़**—संज्ञा पुं० [अ० मुकदमा+फ़ा० बाज़ (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेबाज़ी] वह जो प्रायः मुकदमे लड़ा करता हो।

**मुकद्दमा**—संज्ञा पुं० दे० "मुकदमा"।

**मुकद्दर**—संज्ञा पुं० [अ०] भाग्य।

**मुकना**—संज्ञा पुं० दे० "मकुना"।

*क्रि० अ० [सं० मुक्त] १. मुक्त होना। छूटना। २. खतम होना। चुकना।

**मकरना**—क्रि० अ० [सं० मा=नहीं+करना] कोई बात कहकर उससे फिर जाना। नटना।

**मुकरवा***—वि०, संज्ञा पुं० [हिं० मुकरना] कोई बात कहकर उससे इनकार कर जानेवाला।

**मुकरनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुकरी"।

**मुकरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुकरना+ई (प्रत्य०)] एक प्रकार की कविता जिसमें कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है। कह-मुकरी।

**मुकर्रर**—क्रि० वि० [अ०] दोबारा। फिर से।

**मुकर्रर**—वि० [अ०] [संज्ञा मुकर्ररी] १. जिसका इकरार किया गया हो। निश्चित। २. तैनात। नियुक्त।

**मुकाबला**—संज्ञा पुं० [अ०] १. आमना-सामना। २. मुठभेड़। ३. बराबरी। समानता। ४. तुलना। ५. मिलान। ६. विरोध। लड़ाई।

**मुकाबिल**—क्रि० वि० [अ०] सम्मुख। सामने।

संज्ञा पुं० १. प्रतिद्वंद्वी। २. शत्रु। दुश्मन।

**मुकाम**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ठहरने का स्थान। टिकान। पड़ाव। २. ठहरने की क्रिया। कूच का उलटा। विराम। ३. रहने का स्थान। ४. अवसर।

**मुकियाना**—क्रि० स० [हिं० मुक्की+इयाना (प्रत्य०)] १. मुक्कियों से बार बार आघात करना। २. घूँसे लगाना।

**मुकुंद**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**मुकुट**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो प्रायः राजा आदि धारण किया करते थे

**मुकुता***—संज्ञा पुं० दे० "मुक्ता"।

**मुकुर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शीशा। आईना। दर्पण। २. मौलसिरी। ३. कली।

**मुकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कली। २. शरीर। ३. आत्मा। ४. एक प्रकार का छंद।

**मुकुलित**—वि० [सं०] १. जिसमें कलियाँ आई हों। २. कुछ खिली हुई। (कली) ३. आधा खुला, आधा बंद। ४. झपकता हुआ। (नेत्र)

**मुकेस***—संज्ञा पुं० दे० "मुकैश"।

**मुक्का**—संज्ञा पुं० [सं० मुष्टिका] [स्त्री० अल्पा० मुक्की] बँधी मुट्ठी जो मारने के लिए उठाई जाय या जिससे मारा जाय।

मुक्की—संज्ञा पुं० [ हिं० मुक्का+ई ( प्रत्य० ) ] १. मुक्का । घूँसा । २. वह लड़ाई जिसमें मुक्कों की मार हो । ३. मुट्ठियाँ बाँधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे धीरे आघात करना, जिससे शरीर की शिथिलता और पीड़ा दूर होती है।

मुक्केबाजी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मुक्का+बाजी ( प्रत्य० ) ] मुक्कों की लड़ाई । घूँसेबाजी ।

मुक्कैश—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बादला । २. वह कपड़ा जिस पर कलाबत्तू आदि का काम हो ।

मुक्त—वि० [ सं० ] १. जिसे मुक्ति मिल गई हो । २. जो बंधन से छूट गया हो । ३. चलने के लिए छूटा हुआ । फेंका हुआ ।

मुक्तकंठ—वि० [ सं० ] १. चिल्लाकर बोलनेवाला । २. जिसे कहने में आगा पीछा न हो ।

मुक्तक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था । २. वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न चले । फुटकर कविता । उद्भट । 'प्रबंध' का उलटा ।

मुक्तता—संज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति"।

मुक्त-व्यापार—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐसा व्यापार जिसमें किसी के लिए कोई रुकावट न हो ।

मुक्तहस्त—वि० [ सं० ] [ संज्ञा मुक्तहस्तता ] जो खुले हाथों दान करता हो ।

मुक्ता—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मोती ।

मुक्ताफल—संज्ञा पुं० [ सं० ] मोती ।

मुक्तावली—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मोतियों की माला या लड़ी ।

मुक्ताहल—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० "मुक्ताफल" ।

मुक्ति—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छुटकारा । २. आत्मा का मोक्ष ।

मुक्तिका—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक उपनिषद् ।

मुख—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुँह । आनन । २ घर का द्वार । दरवाजा । ३. नाटक में एक प्रकार की संधि । ४. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग । ५. आदि । आरंभ । ६. किसी वस्तु से पहले पड़नेवाली वस्तु ।

वि० प्रधान । मुख्य ।

मुखचपला—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आर्या छंद का एक भेद ।

मुखचित्र—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी पुस्तक के मुखपृष्ठ पर या बिलकुल आरंभ में दिया हुआ चित्र ।

मुखड़ा—संज्ञा पुं० [ सं० मुख+हिं० ड़ा ( प्रत्य० ) ] मुख । चेहरा । आनन ।

मुखतार—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने का अधिकार दिया हो । २. एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और काम करनेवाला ।

मुखतारनामा—संज्ञा पुं० [ अ० मुखतार+फ़ा० नामा ] वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने के लिए मुख्तार बनाया जाय ।

मुखतारी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मुख्तार+ई ( प्रत्य० ) ] १. मुखतार होकर दूसरे के मुकदमे लड़ने का काम या पेशा । २. प्रतिनिधित्व ।

मुखन्नस—वि० [ अ० ] नपुंसक ।

मुखपृष्ठ—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ । पहला आवरण पृष्ठ ।

मुखबंध—संज्ञा पुं० [ सं० ] ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका ।

मुखबिर—संज्ञा पुं० [ अ० ] जासूस । गोइंदा ।

मुखबिरी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मुखबिर+ई ( प्रत्य० ) खबर देने का काम । मुखबिर का काम ।

मुखभेड़—संज्ञा स्त्री० दे० "मुठभेड़" ।

मुखर—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मुखरा ] १. जो अप्रिय बोलता हो । कटुभाषी । २. बकवादी । ३. बहुत बढ़ बढ़कर बोलनेवाला । ४. दे० "मुखरित" ।

मुखरित—वि० [ सं० ] शब्दों या ध्वनियों से युक्त ।

मुखशुद्धि—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मुँह साफ करना । २. भोजन के उपरांत पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना ।

मुखस्थ—वि० दे० "मुखाग्र" ।

मुखाग्र—वि० [ सं० ] जो जबानी याद हो । कंठस्थ । बर-जबान ।

मुखातिब—संज्ञा पुं० [ अ० ] किसी से कुछ कहनेवाला । वक्ता ।

मुखापेक्षा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दूसरों का मुँह ताकना । दूसरों के आश्रित रहना ।

मुखापेक्षी—संज्ञा पुं० [ सं० मुखापेक्षिन् ] वह जो दूसरों का मुँह ताकता हो । आश्रित ।

मुखालिफ—वि० [ अ० ] [ संज्ञा मुखालिफ़त ] १. जो खिलाफ हो । विरोधी । २. शत्रु । दुश्मन । ३. प्रतिद्वंद्वी ।

मुखिया—संज्ञा पुं० [ सं० मुख+इया ( प्रत्य० ) ] १. नेता । प्रधान ।

सरदार । २. वह जो किसी काम में सबसे आगे हो । अगुआ ।

**मुख्तलिफ**—वि० [अ०] १. भिन्न । २. भिन्न भिन्न ।

**मुख्तसर**—वि० [अ०] १ जो थोड़े में हो । संक्षिप्त । २. छोटा । ३. थोड़ा । कोड़ा ।

**मुख्य**—वि० [सं०] [संज्ञा मुख्यता] सब में बड़ा । अवर या आगे रहनेवाला । प्रधान ।

**मुख्यतः**—क्रि० वि० [सं०] मुख्य रूप से । खास तौर पर ।

**मुगदर**—संज्ञा पुं० [सं० मुद्‌गर] एक प्रकार की गावदुमी, भारी मुँगरी जिसका प्रायः जोड़ा होता है और जिसका उपयोग व्यायाम के लिए किया जाता है । जोड़ी ।

**मुगल**—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुगलानी] १. मंगोल देश का निवासी । २. तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश का निवासी था । ३. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग ।

**मुगलई**—वि० [फा० मुगल+ई (प्रत्य०)] मुगलों का सा । मुगलों की तरह का ।

**मुगलाई**—वि० दे० "मुगलई" । संज्ञा स्त्री० [फा० मुगल+आई (प्रत्य०)] मगल होने का भाव । मुगलपन ।

**मुगलानी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मुगल] १. मुगल स्त्री । २. दासी । ३. कपड़े सीनेवाली ।

**मुगवन**—संज्ञा पुं० [सं० वनमुद्ग] मोठ ।

**मुगालता**—संज्ञा पुं० [अ०] धोखा । छल ।

**मुचलका**—वि० [देश०] (बात) जो बहुत खोलकर या स्पष्ट करके न कही जाय ।

**मुग्ध**—वि० [सं०] [संज्ञा मुग्धता] १ मोह या भ्रम में पड़ा हुआ । मूढ़ । २ सुंदर । खूबसूरत । ३. आसक्त । मोहित ।

**मुग्धकर**—वि० [सं०] [स्त्री० मुग्धकरी] मुग्ध करनेवाला । मोहक ।

**मुग्धा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो यौवन को तो प्राप्त हो चुकी हो, पर जिसमें काम-चेष्टा न हो ।

**मुचकुंद**—संज्ञा पुं० [सं० मुचुकुंद] एक बड़ा पेड़ जिसमें सुगंधित फूल होते हैं ।

**मुचना**—क्रि० अ० [सं० मोचन] मोचन होना ।

**मुचलका**—संज्ञा पुं० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो ।

**मुछंदर**—संज्ञा पुं० [हिं० मूछ] १. जिसकी मूछें बड़ी बड़ी हों । २. कुरूप और मूर्ख ।

**मुजरा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. वह जो जारी किया गया हो । २. वह रकम जो किसी रकम में से काट दी गई हो । ३. किसी बड़े या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना । अभिवादन । ४. वेश्या का बैठकर गाना ।

**मुजरिम**—संज्ञा पुं० [अ०] जिस पर अभियोग लगाया गया हो । अभियुक्त ।

**मुजायका**—संज्ञा पुं० [अ०] हर्ज । हानि ।

**मुजावर**—संज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान जो किसी रौजे पर रहकर वहाँ का चढ़ावा आदि लेता हो ।

**मुझ**—सर्व० [हिं० मुझे] "मैं" का वह रूप जो उसे कर्ता और संबंध कारक को छोड़कर शेष कारकों में, विभक्ति लगने से पहले, प्राप्त होता है । जैसे—मुझको, मुझसे ।

**मुझे**—सर्व० [सं० मह्यम्] "मैं" का वह रूप जो उसे कर्म और संप्रदान कारक में प्राप्त होता है ।

**मुटकना**—वि० [हिं० मोटा+कना (प्रत्य०)] आकार में छोटा, पर सुन्दर ।

**मुटका**—संज्ञा पुं० [हिं० मोटा ?] एक प्रकार की रेशमी धोती । मुकटा ।

**मुटाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोटा+ई (प्रत्य०)] १. मोटापन । स्थूलता । २. पुष्टि । ३. अहंकार । घमंड । शेखी ।

**मुटाना**—क्रि० अ० [हिं० मोटा+आना (प्रत्य०)] १ मोटा हो जाना । २. अहंकारी हो जाना ।

**मुटासा**—वि० [हिं० मोटा+आसा (प्रत्य०)] वह जो कुछ धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो ।

**मुटिया**—संज्ञा पुं० [हिं० मोट=गठरी+इया (प्रत्य०)] बोझ ढोनेवाला मजदूर ।

**मुट्ठा**—संज्ञा पुं० [हिं० मूठ] १. घास, फूस, तृण या डंठल का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके । २. चंगुल भर वस्तु । ३. पुलिंदा । ४. दस्ते या यंत्र आदि की बेंट । दस्ता ।

**मुट्ठी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिआ] १. हाथ की वह मुद्रा जो उँगलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने से बनती है । बँधी मुट्ठी

हथेली। २. उतनी वस्तु जितनी उपर्युक्त मुद्रा के समय हाथ में आ सके। मुहा०—मुट्ठी में=कब्जे में। अधिकार में। मुट्ठी गरम करना=रुपया देना। धन देना।

३. बँधी हथेली के बराबर का विस्तार। ४. हाथों से किसी के अंगों को पकड़-पकड़कर दबाने की क्रिया जिससे शरीर की थकावट दूर होती है। चंपी।

**मुठभेड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूठ+भिड़ना] १. टक्कर। भिड़ंत। लड़ाई। २ भेंट। सामना।

**मुठिका***—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिक] १ मुट्ठी। २. घूँसा। मुक्का।

**मुठिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० मुष्टिका] औजारों का दस्ता। बेंट।

संज्ञा स्त्री० भिखमंगों को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया।

**मुठी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

**मुड़कना**—क्रि० अ० दे० 'मुरकना'।

**मुड़ना**—क्रि० अ० [सं० मुरण] १. सीधी वस्तु का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना। २. किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना। ३. लकीर की तरह सीधे न जाकर घूमकर किसी ओर झुकना। ४. दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना। ५. पलटना। लौटना।

क्रि० अ० दे० "मुड़ना"।

**मुड़ला***†—वि० [सं० मुंड] [स्त्री० मुड़ली] जिसके सिर पर बाल न हों। मुंडा।

**मुड़वाना**—क्रि० स० [हिं० मूँड़ना का प्रेर० रूप] किसी को मूँड़ने में प्रवृत्त करना।

क्रि० स० [हिं० मुड़ना का० प्रेर० रूप] मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।

**मुड़वारी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँड़+वारी (प्रत्य०)] १. अटारी की दीवार का सिरा। मुँडेरा। २. सिरहाना।

**मुड़हर**†—संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़+हर (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।

**मुड़ाना**—क्रि० स० दे० "मुँड़ाना"।

**मुँड़िया**†—संज्ञा पुं० [हिं० मूँड़ना+इया (प्रत्य०)] वह जिसका सिर मूँड़ा हुआ हो।

**मुतअल्लिक**—वि० [अ०] १. संबंध रखनेवाला। संबद्ध। २. सम्मिलित। क्रि० वि० संबंध में। विषय में।

**मुतक्का**—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+टेक] १. कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे खड़ी की हुई पटिया या नीची दीवार। २. खंभा। ३. मीनार। लाट।

**मुतफन्नी**—वि० [अ०] धूर्त। चालाक।

**मुतफर्रिक**—वि० [अ०] [बहु० मुतफर्रिकात] १. तरह तरह के। २. खराब हुआ।

**मुतबन्ना**—संज्ञा पुं० [अ०] दत्तक पुत्र।

**मुतलक**—क्रि० वि० [अ०] जरा भी। तनिक भी। रत्ती भर भी।

वि० बिलकुल। निरा। निपट।

**मुतवज्जह**—वि० [अ०] किसी ओर तवज्जह या ध्यान देनेवाला।

**मुतवफ्फा**—वि० [अ०] स्वर्गवासी।

**मुतवल्ली**—संज्ञा पुं० [अ०] धार्मिक संस्था की संपत्ति का रक्षक।

**मुतसद्दी**—संज्ञा पुं० [अ०] १. लेखक। मुंशी। २. पेशकार। दीवान। ३. इन्तजाम करनेवाला। प्रबंधकर्ता। ४. मुनीम।

**मुतासिरी***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोती+सं० श्री] कंठ में पहनने की मोतियों की कंठी।

**मुताबिक**—क्रि० वि० [अ०] अनुसार।

वि० अनुकूल।

**मुतालबा**—संज्ञा पुं० [अ०] उतना धन जितना पाना वाजिब हो। बाकी रुपया।

**मुताह**—संज्ञा पुं० [अ० मुतअः] मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

**मुतिलाडू***†—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

**मुतेहरा***†—संज्ञा पुं० [हिं० मोती+हार] कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

**मुद**—संज्ञा पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

**मुदगर**—संज्ञा पुं० दे० "मुग्दर"।

**मुदवंत***—वि० [सं० मोद] प्रसन्न। खुश।

**मुदर्रिस**—संज्ञा पुं० [अ०] अध्यापक।

**मुदा***†—अव्य० [अ० मुद्दआ=अभिप्राय] १. तात्पर्य यह कि। २. मगर। लेकिन।

संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्ष। आनंद।

**मुदामी**—वि० [फ़ा०] जो सदा होता रहे।

**मुदित**—वि० [सं०] [स्त्री० मुदिता] प्रसन्न। खुश।

**मुदिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परकीया के अंतर्गत एक प्रकार की नायिका। २. हर्ष।

**मुदिर**—संज्ञा पुं० [सं०] बादल।

मेघ।

**मुदीर**—संज्ञा पुं० दे० "मुदिर"।

**मुद्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मूँग नामक अन्न।

**मुद्गर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "मुगदर"। २. प्राचीन काल का एक अस्त्र।

**मुद्गल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उपनिषद्।

**मुद्दई**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० मुद्दइया ] १ दावा करनेवाला। दावादार। वादी। २. दुश्मन। वैरी। शत्रु।

**मुद्दत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० मुद्दती ] १. अवधि। २ बहुत दिन। अरसा।

**मुद्दती**—वि० [ अ० ] जिसकी कोई मुद्दत या अवधि निश्चित हो।

**मुद्दामलेह, मुद्दालेह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय। प्रतिवादी।

**मुद्धा**—वि० दे० "मुग्ध"।

**मुद्धी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] रस्सी की वह गाँठ जिसके अन्दर से उसका दूसरा सिरा खिसक सके।

**मुद्रक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छापनेवाला।

**मुद्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी चीज पर अक्षर आदि अंकित करना। छपाई।

**मुद्रणालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छापाखाना।

**मुद्रांकित**—वि० [ सं० ] १. मोहर किया हुआ। २. जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हों। ( वैष्णव )

**मुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी के नाम की छाप। मोहर। २. रुपया, अशरफी आदि। सिक्का। ३. अँगूठी। छाप। छल्ला। ४. टाइप से छपे हुए अक्षर। ५. गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्णभूषण। ६. हाथ, पाँव, आँख, मुँह, गर्दन आदि की कोई स्थिति। ७. बैठने, लेटने या खड़े होने का कोई ढंग। ८. मुख की आकृति या चेष्टा। ९. विष्णु के आयुधों के चिह्न जो प्रायः भक्त लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं या गरम लोहे से दगवाते हैं। छाप। १०. हठयोग में विशिष्ट अंगविन्यास। ये मुद्राएँ पाँच होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी। ११ वह अलंकार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय नाम हों।

**मुद्रातत्त्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।

**मुद्रायंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छापने या मुद्रण करने का यंत्र। छापे आदि की कल।

**मुद्राविज्ञान**—संज्ञा पुं० दे० "मुद्रातत्त्व"।

**मुद्राशास्त्र**—संज्ञा पुं० दे० "मुद्रातत्त्व"।

**मुद्रिक**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका"।

**मुद्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अँगूठी। २. कुश की बनी हुई अँगूठी जो पितृ-कार्य्य में अनामिका में पहनी जाती है। पवित्री। पैंती। ३. मुद्रा। सिक्का। रुपया।

**मुद्रित**—वि० [ सं० ] १. मुद्रण या अंकित किया हुआ। छपा हुआ। २. मुँदा हुआ। बंद।

**मुधा**—क्रि० वि० [ सं० ] व्यर्थ। वृथा।

वि० १. व्यर्थ का। निष्प्रयोजन। २. असत्। मिथ्या। झूठ।

संज्ञा पुं० असत्य। मिथ्या।

**मुनक्का**—संज्ञा पुं० [ अ० मि० सं० मृद्वीका ] एक प्रकार की बड़ी किशमिश।

**मुनगा**—संज्ञा पुं० दे० "सहिजन"।

**मुनहसर**—वि० [ अ० ] निर्भर। आश्रित।

**मुनादी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहर में हो। ढिंढोरा। डुग्गी।

**मुनाफा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] लाभ। नफा।

**मुनारा**—संज्ञा पुं० दे० "मीनार"।

**मुनासिब**—वि० [ अ० ] उचित। वाजिब।

**मुनासिबत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मनासिबत ] १. संबंध। २ उपयुक्तता। ३. किसी चित्र में का दृष्टि-क्रम।

**मुनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति। २. तपस्वी। त्यागी। ३ सात की संख्या।

**मुनियाँ**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] लाल नामक पक्षी की मादा।

**मुनीब, मुनीम**—संज्ञा पुं० [ अ० मुनीब ] १. मददगार। सहायक। २. साहूकारों का हिसाब-किताब लिखनेवाला।

**मुनीश, मुनीश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मुनियों में श्रेष्ठ। २. बुद्धदेव। ३. विष्णु।

**मुन्ना, मुन्नू**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. छोटों के लिए प्रेमसूचक शब्द। २. प्रिय। प्यारा।

**मुफलिस**—वि० [ अ० ] निर्धन। दरिद्र।

**मुफस्सल**—वि० [ अ० ] ब्योरेवार। विस्तृत।

संज्ञा पुं० किसी केंद्रस्थ नगर के चारो ओर के कुछ दूर के स्थान।

**मुफ्त**—वि० [ अ० ] जिसमें कुछ मूल्य न लगे। बिना दाम का। मेंत का।

**यौ**०—मुफ्तखोर=वह व्यक्ति जो दूसरों के धन पर सुख-भोग करे।

**मुफ्त**०—मुफ्त में=१. बिना मूल्य दिए या लिए। २. व्यर्थ। बेफायदा।

**मुफ्तखोर**—वि० [ अ०+फ़ा० ] [ भाव० मुफ्तखोरी ] मुफ्त का माल खानेवाला।

**मुफ्ती**—संज्ञा पुं० [ अ० ] धर्म-शास्त्री। ( मुस० )

वि० [ अ० मुफ्त+ई ( प्रत्य० ) ] मुफ्त का।

**मुबलिग**—संज्ञा पुं० [ अ० ] धन की संख्या। रकम।

**मुबारक**—वि० [ अ० ] १ जिसके कारण बरकत हो। २ शुभ। मंगल-प्रद। नेक।

**मुबारकबाद**—संज्ञा पुं० [ अ० मुबारक+फ़ा० बाद ] कोई शुभ बात होने पर यह कहना कि "मुबारक हो"। बधाई। धन्यवाद।

**मुबारकी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुबारक-बाद"।

**मुब्तिला**—वि० [ अ० ] संकट आदि में फँसा हुआ।

**मुमकिन**—वि० [ अ० ] संभव।

**मुमानियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मनाही।

**मुमुक्षु**—वि० [ सं० ] मुक्ति पाने का इच्छुक। जो मुक्ति की कामना करता हो।

**मुमूर्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मरने की इच्छा।

**मुमूर्षु**—वि० [ सं० ] जो मरने के समीप हो।

**मुयस्सर**—वि० दे० "मयस्सर"।

**मुरकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मुरकना ] कान में पहनने की एक प्रकार की बाली।

**मुरचा**—संज्ञा पुं० दे० "मोरचा"।

**मुरडा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] भूने हुए गरमागरम गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू। गुड़-धानी।

वि० सूखा हुआ। शुष्क।

**मुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेष्टन। बटन। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।

अव्य० फिर। दोबारा।

**मुरक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मुरकना ] मुरकने की क्रिया या भाव।

**मुरकना**—क्रि० अ० [ हिं० मुड़ना ] १. लचककर किसी ओर झुकना। मुड़ना। २. फिरना। घूमना। ३. लौटना। वापस होना। ४. किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि जल्दी सीधा न हो। मोच खाना। ५. हिचकना। रुकना। ६. विनष्ट होना। चौपट होना।

**मुरकाना**—क्रि० स० [ हिं० मुरकना का स० रूप ] १. फेरना। घुमाना। २ लौटाना। वापस करना। ३. किसी अंग में मोच लाना। ४. नष्ट करना। चौपट करना।

**मुरखाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।

**मुरगा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मुर्ग ] [ स्त्री० मुर्गी ] एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रंगों का होता है। नर के सिर पर कलगी होती है।

**मुरगाबी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] मुरगे की जाति का एक पक्षी।

**मुरचंग**—संज्ञा पुं० [ हिं० मुँहचंग ] मुँह से बजाने का एक प्रकार का बाजा। मुँहचंग।

**मुरछना, मुरछाना***—क्रि० अ० [ सं० मूर्च्छन ] १. शिथिल होना। २. अचेत होना।

**मुरछावंत***—वि० [ सं० मूर्च्छा+वंत (प्रत्य०) ] मूर्छित। बेहोश। अचेत।

**मुरछित***—वि० दे० "मूर्छित"।

**मुरज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृदंग। पखावज।

**मुरझना***—क्रि० अ० दे० "मुर-झाना"।

**मुरझाना**—क्रि० अ० [ सं० मूर्च्छन ] १. फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना। २. सुस्त या उदास होना।

**मुरदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**मुरदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मि० सं० मृतक ] वह जो मर गया हो। मरा हुआ प्राणी। मृत।

वि० १. मरा हुआ। मृत। २. जिसमें कुछ भी दम न हो। ३. मुरझाया हुआ।

**मुरदार**—वि० [ फ़ा० ] १. मरा हुआ। मृत। २. अपवित्र। ३. बेदम। बेजान।

**मुरदासंख**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० मुरदार संग ] एक प्रकार का औषध जो फुँके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।

**मुरदासन***—संज्ञा पुं० दे० "मुरदा-संख"।

**मुरधर**—संज्ञा पुं० [ सं० मरुधर ] मारवाड़।

**मुरना***—क्रि० अ० दे० "मुड़ना"।

**मुर-परैना**†—संज्ञा पुं० [ हिं० मूड़=सिर+पारना=रखना ] फेरी करके सौदा बेचनेवालों का बकवा।

**मुरब्बा**—संज्ञा पुं० [ अ० मुरब्बः ] चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।

**मुरमुराना**—क्रि० अ० [ मुरमुर से अनु० ] चूर चूर हो जाना। चुरमुर होना।

**मुररिपु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मुरारि।

**मुररिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्री"।

**मुरलिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] मुरली। वंशी।

**मुरलिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।

**मुरली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बाँसुरी। वंशी।

**मुरलीधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**मुरलीमनोहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**मुरवा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा।

†संज्ञा पुं० दे० "मोर"।

**मुरव्वत**-संज्ञा स्त्री० दे० "मुरौवत"।

**मुरवी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० मौर्वी ] धनुष की डोरी। चिल्ला।

**मुरशिद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. गुरु। पथदर्शक। १. पूज्य।

**मुरसुत**—संज्ञा पुं० [सं० ] वत्सासुर।

**मुरहा**†—संज्ञा पुं० दे० "मुड़धारी"।

**मुरहा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण। †वि० [ सं० मूल (नक्षत्र) +हा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० मुरही ] १. (बालक) जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो। २. अनाथ। यतीम। ३. नटखट। उपद्रवी।

**मुरहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**मुरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध गंधद्रव्य। एकांगी। मुरामासी। २ कथासरित्सागर के अनुसार उस स्त्री का नाम जिसके गर्भ से महानंद का पुत्र चंद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था।

**मुराड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] जलती लकड़ी।

**मुराद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. अभिलाषा।

**मुहा०**—मुराद पाना=मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना=मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।

२ अभिप्राय। आशय। मतलब।

**मुराना***†—क्रि० स० [ अनु० मुरमुर ] मुँह में कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना। *†क्रि० स० दे० "मोड़ना"।

**मुरायठा**†- संज्ञा पुं० दे० "मुरेठा"।

**मुरार**—संज्ञा पुं० [ सं० मृणाल ] कमल की जड़। कमलनाल। *संज्ञा पुं० दे० "मुरारि"।

**मुरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रीकृष्ण। २ डगण के तीसरे भेद (।ऽ।) की संज्ञा।

**मुरारी**—संज्ञा पुं० दे० "मुरारि"।

**मुरारे**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हे मुरारि! (संबो०)

**मुरासा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० मुरना ] कर्णफूल।

**मुरीद**—संज्ञा पु० [अ० ] १. शिष्य। चेला। २. अनुगामी। अनुयायी।

**मुरु***—संज्ञा पुं० दे० "मुर"।

**मुरुआ**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] एड़ी के ऊपर का घेरा। पैर का गट्ठा।

**मुरुख***†—वि० दे० "मूर्ख"।

**मुरुछना***—क्रि० अ० दे० "मुरझाना"। संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छना"।

**मुरुझा***†—क्रि० अ० दे० "मुरझाना"।

**मुरेठा**—संज्ञा पु० [ हिं० मूँड़=सिर +एठा ( प्रत्य० ) ] पगड़ी। साफा।

**मुरेरना**†-क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।

**मुरौवत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मुरव्वत ] १. शील। संकोच। लिहाज। २. भलमनसी।

**मुर्ग**—संज्ञा पुं० दे० "मुरगा"।

**मुर्गकेश**—संज्ञा पु० [ फा० मुर्ग+केश ( चोटी ) ] मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी।

**मुर्दनी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० मुर्दन=मरना ] १. मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न। २. शव के साथ उसकी अंत्येष्टि क्रिया के लिए जाना।

**मुर्दाबली**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुर्दनी"। वि० मृतक के संबंध का। मुरदे का।

**मुर्रा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मरोड़ या मुड़ना ] १. मरोड़फली। २. पेट में पेंठन होकर बार बार दस्त होना। मरोड़। ३. एक प्रकार की अधिक दूध देनेवाली भैंस।

**मुर्री**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मरोड़ना ] १. दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं। २. कपड़े आदि में लपेटकर डाली हुई पेंठन या बल। ३. कपड़े आदि को मरोड़कर बटी हुई बत्ती।

**मुर्रीदार**—वि० [ हिं० मुर्री+फा० दार ( प्रत्य० ) ] जिसमें मुर्री पड़ी हो। पेंठनदार।

**मुर्रकना***†—क्रि० अ० [ सं० पुल.

कित ?] १. पुलकित होना। नेत्रों में हँसी प्रकट करना। २. मचकना।

**मुलकित**—वि० [ सं० पुलकित ? ] मुस्कराता हुआ।

**मुलकी**—वि० [ अ० मुल्क ] १. शासन या व्यवस्था संबंधी। २. देशी। विलायती का उलटा।

**मुलजिम**—वि० [अ०] जिस पर कोई अभियोग हो। अभियुक्त।

**मुलतवी**—वि० [ अ० मुल्तवी ] जिसका समय टाल दिया गया हो। स्थगित।

**मुलतानी**—वि० [ हिं० मुलतान (नगर) ] मुलतान का। मुलतान-संबंधी।
संज्ञा स्त्री० १. एक रागिनी। २. एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।

**मुलना**†—संज्ञा पुं० [ अ० मौलाना] मौलवी।

**मुलम्मची**—संज्ञा पुं० [ हिं० मुलम्मा +ची प्रत्य० ] गिलट करनेवाला। मुलम्मसाज।

**मुलम्मा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह। गिलट। कलई।
**यौ०**—मुलम्मासाज=मुलम्मा चढ़ानेवाला। मुलमची।
२. ऊपरी तड़क-भड़क।

**मुलहठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुलेठी"।

**मुलहा**†—वि० [ सं० मूल=नक्षत्र ] १. जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो। २. उपद्रवी। शरारती।

**मुलाँ**†—संज्ञा पुं० [ अ० मुल्ला ] मौलवी।

**मुलाकात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आपस में मिलना। भेंट। मिलन। २. मेल-मिलाप।

**मुलाकाती**—संज्ञा पुं० [ अ० मुलाकात ] १. वह जिससे जान-पहचान हो। परिचित। २. मुलाकात करनेवाला।
**यौ०** मुलाकाती कार्ड=वह कार्ड जो कोई मुलाकाती अपने आने की सूचना और परिचय देने के लिए भेजता है।

**मुलाजिम**—संज्ञा पुं० [अ० ] नौकर। सेवक।

**मुलाजिमत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] नौकरी। सेवा।

**मुलायम**—वि० [ अ० ] १ सख्त का उलटा। जो कड़ा न हो। २. हलका। मंद। धीमा। ३. नाजुक। सुकुमार। ४. जिसमें किसी प्रकार की कठोरता या खिंचाव न हो।
**यौ०**—मुलायम चारा=१. वह जो सहज में दूसरों की बातों में आ जाय। २. वह जो सहज में प्राप्त किया जा सके।

**मुलायमियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मुलायमत ] १. मुलायम होने का भाव। नर्मी। २. नजाकत।

**मुलायमी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुलायमियत"।

**मुलाहजा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. निरीक्षण। देख-भाल। २. संकोच। ३. रिआयत।

**मुलेठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मूलयष्टी ] घुँघची नाम की लता की जड़ जो औषध के काम में आती है। जेठी मधु। मुलहठी।

**मुल्क**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० मुल्की ] १. देश। २. प्रांत। प्रदेश। ३. संसार।

**मुल्की**—वि० [ अ० ] १. शासन-संबंधी। २. राजनीतिक। ३. मुल्क या देश-संबंधी।

**मुल्लढ़**†—वि० [ देश० ] मूर्ख। बेवकूफ।

**मुल्ला**—संज्ञा पुं० दे० "मौलवी"।

**मुवक्किल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जो अपने किसी काम के लिए कोई वकील नियुक्त करे।

**मुवना***†—क्रि० अ० [ सं० मृत ] मरना।

**मुवाना***†—क्रि० स० [ हिं० मुवना का स० रूप ] हत्या करना। मार डालना।

**मुश्क**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. कस्तूरी। मृगमद। †२. गंध। बू।
संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कंधे और कोहनी के बीच का भाग। भुजा। बाँह।
**मुहा०**—मुश्कें कसना या बाँधना=(अपराधी आदि को) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना।

**मुश्कदाना**—संज्ञा [ फ़ा० ] एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है।

**मुश्कनाफा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है।

**मुश्कबिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मुश्क + हिं० बिलाई=बिल्ली ] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है। गंध बिलाव।

**मुश्किल**—वि० [ अ० ] कठिन। दुष्कर।
संज्ञा स्त्री० १. कठिनता। दिक्कत। २. मुसीबत। विपत्ति।

**मुश्की**—वि० [ फ़ा० ] १. कस्तूरी के रंग का। काला। श्याम। २. जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो।

संज्ञा पुं० काले रंग का घोड़ा।

**मुश्त**—संज्ञा पुं० [ फा० ] मुट्ठी।

यौ०—एकमुश्त=एक साथ। एक ही बार। ( रुपयों के लेन-देन में )

**मुश्तबहा**—वि० [ अ० ] जिस पर कोई शुबहा या शक हो। संदिग्ध।

**मुषुर***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुखर] गूँजने का शब्द। गुंजार।

**मुष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मुट्ठी। २. मुक्का। घूँसा। ३. चोरी। ४. दुर्भिक्ष। अकाल। ५. मुष्टिक मल्ल।

**मुष्टिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेवजी ने मारा था। २. मुक्का। घूँसा। ३. चार अँगुल की नाप। ४. मुट्ठी।

**मुष्टिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मुक्का। घूँसा। २. मुट्ठी।

**मुष्टियुद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह लड़ाई जिसमें मुक्कों से प्रहार हो। घूँसेबाजी।

**मुष्टियोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हठ योग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं। २. छोटा और सहज उपाय।

**मुसकनि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

**मुसकनियाँ**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकान"।

**मुसकराना**-क्रि० अ० [ सं०स्मय+कृ ] बहुत ही मंद रूप से हँसना। मृदु हास।

**मुसकराहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मुसकराना+आहट ( प्रत्य० ) ] मुसकराने की क्रिया या भाव। मंद हास।

**मुसकान**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

**मुसकाना**—क्रि० अ० दे० "मुसकराना"।

**मुसक्यान**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

**मुसना**—क्रि० अ० [ सं० मूषण ] मूसा जाना। चुराया जाना। ( धन आदि )

**मुसन्ना**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. असल कागज की दूसरी नकल। २. रसीद आदि का वह दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है।

**मुसब्बर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] जमाया हुआ घीकुवार का रस जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

**मुसमुद, मुसमुध***†—वि० [देश०] ध्वस्त। नष्ट। बरबाद।

संज्ञा पुं० नाश। ध्वंस। बरबादी।

**मुसम्मात**—वि० स्त्री० [अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप ] मुसम्मा शब्द का स्त्रीलिंग रूप। नाम्नी। नामधारिणी।

संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

**मुसरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० मूसल ] पेड़ की जड़ जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर उधर शाखाएँ न हों।

**मुसलधार**—क्रि० वि० दे० "मूसलधार"।

**मुसलमान**—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० मुसलमानी ] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो। मुहम्मदी।

**मुसलमानी**—वि० [ फा० ] मुसलमान संबंधी। मुसलमान का।

संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रसम जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।

**मुसल्लम**—वि० [ फा० ] जिसके खंड न किए गए हों। साबुत। पूरा। अखंड।

संज्ञा पुं० दे० "मुसलमान"।

**मुसव्विर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] चित्रकार।

**मुसव्विरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] चित्रकारी।

**मुसहर** संज्ञा पुं० [ हिं० मूस=चूहा+हर ( प्रत्य० ) ] एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली जड़ी-बूटी आदि बेचना है।

**मुसाहिब**—वि० [ अ० ] दस्तावर। रेचक।

**मुसाफिर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] यात्री। पथिक।

**मुसाफिरखाना**—संज्ञा पुं० [ अ० मुसाफिर+फा० खाना ] १ यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के, ठहरने का स्थान। २ धर्मशाला। सराय।

**मुसाफिरत, मुसाफिरी**-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मुसाफिर होने की दशा। २. यात्रा। प्रवास।

**मुसाहब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्ती। सहवासी।

**मुसाहबी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मुसाहब+ई ( प्रत्य० )] मुसाहब का पद या काम।

**मुसीबत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. तकलीफ। कष्ट। २. विपत्ति। संकट।

**मुसौवर**—संज्ञा पु० दे० "मुसव्विर"।

**मुस्कराना**—क्रि० अ० दे० "मुसकराना"।

**मुस्की**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

**मुस्क्यान**-*संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

**मुस्टंडा**—वि० [ सं० पुष्ट ] १.

मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ बदमाश। गुंडा।

**मुस्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मोथा।

**मुस्तकिल**—वि० [ अ० ] १ अटल। स्थिर। २. पक्का। मजबूत। दृढ़।

**मुस्तगीस**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अभियोग उपस्थित करनेवाला। मुद्दई।

**मुस्तसना**—वि० [ अ० ] अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ।

**मुस्तहक**—वि० [ अ ] १. जिसका हक हासिल हो। २. पात्र। अधिकारी।

**मुस्तैद**—वि० [ अ० मुस्तअद ] १. तत्पर। सन्नद्ध। २. चालाक। तेज।

**मुस्तैदी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० मुस्तअद+ई (प्रत्य०) ] १. मुस्तैदता। तत्परता। २. फुरती।

**मुहकम**—वि० [ अ० ] दृढ़। पक्का।

**मुहकमा**—संज्ञा पुं० [अ०] सरिश्ता। विभाग। सीगा।

**मुहताज**—वि० [ अ० ] दे० "मोहताज"।

**मुहब्बत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. प्रीति। प्रेम। प्यार। चाह। २. दोस्ती। मित्रता। ३. इश्क। लगन। लौ।

**मुहम्मद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अरब के एक प्रसिद्ध धर्म्माचार्य्य जिन्होंने मुसलमानी धर्म्म का प्रवर्त्तन किया था।

**मुहम्मदी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमान।

**मुहर**—संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।

**मुहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मुँह+रा (प्रत्य०) ] १. सामने का भाग। आगा सामना।

**मुहा०**—मुहरा लेना=मुकाबिला करना। २. निशाना। ३. मुँह की आकृति। ४. शतरंज की कोई गोटी। ५. घोड़े का एक साज जो उसके मुँह पर रहता है। शतरंज के खेल की गोटियाँ।

**मुहर्रम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे।

**मुहर्रमी**—वि० [ अ० मुहर्रम+ई (प्रत्य०) ] १. मुहर्रम संबंधी। मुहर्रम का। २. शोक व्यंजक। ३. मनहूस।

**मुहर्रिर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] लेखक। मुंशी।

**मुहर्रिरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मुहर्रिर का काम। लिखने का काम।

**मुहल्ला**—संज्ञा पुं० दे० "महल्ला"।

**मुहासल**—वि० [ अ० मुहासिल ] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

संज्ञा पुं० प्यादा। फेरीदार।

**मुहाफिज**—वि० [ अ० ] हिफाजत करनेवाला सरक्षक। रखवाला।

**मुहाल**—वि० [ अ० ] १ असभव। नामुमकिन। २ कठिन दुष्कर। दुःसाध्य।

संज्ञा पुं० १. दे० "महाल"। २. दे० "महल्ला"।

**मुहाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० मुँह+आला (प्रत्य०) ] पीतल की वह चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिए चढ़ाई जाती है।

**मुहावरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो। रोजमर्रा। बोलचाल। २. अभ्यास। आदत।

**मुहासिबा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. हिसाब। लेखा। २. पूछ-ताछ।

**मुहासिरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] किले या शत्रुसेना को चारों ओर से घेरना। घेरा।

**मुहासिल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. आय। आमदनी। २ लाभ। मुनाफा। नफा।

**मुहिं***—सर्व० दे० "मोहि"।

**मुहिम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कठिन या बड़ा काम। २ लड़ाई। युद्ध। ३. फौज की चढ़ाई। आक्रमण।

**मुहीम***—संज्ञा स्त्री० दे० "मुहिम"।

**मुहुः**—अव्य० [ सं० ] बार बार।

**मुहूर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दिन-रात का तीसवाँ भाग। २. निर्दिष्ट क्षण या काल। ३ फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय जिस पर कोई शुभ काम किया जाय।

**मुह्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूर्च्छित होने की प्रवृत्ति या अवस्था। जड़ता।

**मुह्यमान**—वि० [सं० ] १. मूर्च्छित। बेसुध। २. बहुत अधिक मोहित।

**मूँग**—संज्ञा स्त्री० पुं० [ सं० मुद्ग ] एक अन्न जिसकी दाल बनती है।

**मूँगफली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मूँग+फली ] १. एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती फलों के लिए की जाती है। २. इस वृक्ष का फल। चिनिया बादाम।

**मूँगरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की तोप।

**मूँगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मूँग ] समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है। प्रवाल। विद्रुम।

**मूँगिया**—वि० [ हिं० मूँग+इया

(प्रत्य०) ] मूँग के रंग का। हरा। संज्ञा पुं० एक प्रकार का हरा रंग।

**मूँछ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्मश्रु ] ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं।

**मुहा०**—मूँछ उखाड़ना=घमंड चूर करना। मूँछों पर ताव देना=अभिमान से मूँछ मरोड़ना। मूँछें नीची होना=१ घमंड दूर जाना। २ अप्रतिष्ठा होना। बेइज्जती होना।

**मूँछी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।

**मूँज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुंज ] एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली लंबी पत्तियां चारों ओर रहती हैं।

**मूँठ**—संज्ञा स्त्री० दे० "मूठ"।

**मूँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० मुंड ] सिर।

**मुहा०**—मूँड़ मारना=बहुत हैरान होना। बहुत कोशिश करना। मूँड़ मुँड़ाना=संन्यासी होना।

**मूँड़न**—संज्ञा पुं० [ सं० मुंडन ] चूड़ाकरण संस्कार। मुंडन।

**मूँड़ना**—क्रि० स० [ सं० मुंडन ] १. सिरके बाल बनाना। हजामत करना। २. धोखा देकर माल उड़ाना। ठगना। ३.चेला बनाना।

**मूँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुंड ] १. सिर। २. किसी वस्तु का मूँड़ के आकार का भाग।

**मूँदना**—क्रि० स० [ सं० मुद्रण ] १. ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर छिपाना। आच्छादित करना। ढाँकना। २. द्वार, मुँह आदि पर कोई वस्तु रखकर उसे बंद करना।

**मूँदर**—संज्ञा स्त्री० दे० "मुंदरी"।

**मूक**—वि० [सं०] १. गूँगा। अवाक्। २. विवश। लाचार।

**मूकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गूँगापन।

**मूकना***†—क्रि० स० [ सं० मुक्त ] १. दूर करना। छोड़ना। त्यागना। २. बंधन से छुड़ाना।

**मूका**†—संज्ञा पुं० [सं० मूषा=गवाक्ष] छोटा गोल झरोखा। मोखा। संज्ञा पुं० दे० "मुक्का"।

**मूकु***—वि० [ सं० मूक ] अपना दोष जानते हुए भी चुप रहनेवाला। मचला।

**मूखना***—क्रि० स० दे० "मूसना"।

**मूगा**—संज्ञा पुं० दे० "मूँगा"

**मूचना***—क्रि० स० दे० "मोचना"।

**मूजी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कष्ट पहुँचानेवाला। २.दुष्ट। खल।

**मूझना***†—क्रि० अ० [सं० मूर्छना] मूर्च्छित होना। बेसुध होना।

**मूठ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुष्टि ] १. मुट्ठी। मुट्ठा। २. किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। ३ उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। ४. एक प्रकार का जुआ। ५. जादू। टोना।

**मुहा०**—मूठ चलाना या मारना=जादू करना। मूठ लगना=जादू का असर होना।

**मूठना***—क्रि० अ० [ सं० भ्रष्ट ] नष्ट होना।

**मूठी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

**मूड़**—संज्ञा पुं० दे० "मूँड़"।

**मूढ़**—वि० [ सं० ] १. मूर्ख। जड़-बुद्धि। बेवकूफ। २. ठक। स्तब्ध। ३. जिसे आगापीछा न सूझता हो। टगमारा।

**मूढ़गर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ]गर्भ का बिगड़ना जिससे गर्भ-स्राव आदि होता है।

**मूढ़ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मूर्खता।

**मूत**—संज्ञा पुं० दे० "मूत्र"।

**मूतना**—क्रि० अ० [ हिं० मूत+ना (प्रत्य०) ] पेशाब करना।

**मूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला जल। पेशाब। मूत।

**मूत्रकृच्छ्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक-रुककर होता है।

**मूत्राघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पेशाब बंद होने का रोग। मूत्र का रुक जाना।

**मूत्राशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाना। फुकना।

**मूना**†—क्रि० अ० दे० "मरना"।

**मूर***†—संज्ञा पुं० [ सं० मूल ] १. मूल। जड़। २. जड़ी। ३. मूलधन। ४. मूल नक्षत्र।

**मूरख***†—वि० दे० "मूर्ख"।

**मूरखताई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्खता"।

**मूरचा**—संज्ञा पुं० दे० "मोरचा"।

**मूरछना***—संज्ञा स्त्री० १. दे० "मूर्छना"। २. दे० मूर्च्छा। क्रि० अ० मूर्च्छित या बेहोश होना।

**मूरछा**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छा"।

**मूरत***†—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।

**मूरतिवंत**—वि० [ सं० मूर्ति+वत् (प्रत्य०) ] मूर्तिमान्। देहधारी। सशरीर।

**मूरधा**—संज्ञा पुं० दे० "मूर्द्धा"

**मूरि, मूरी***—संज्ञा स्त्री० [सं० मूल] १. मूल। जड़। २. जड़ी। बूटी।

**मूरुख***†—वि० दे० "मूर्ख"।

**मूर्ख**—वि० [ सं० ] बेवकूफ। अज्ञ। मूढ़।

**मूर्खता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मूढ़ता। नासमझी। बेवकूफी।

**मूर्खत्व**—संज्ञा पुं० दे० "मूर्खता"।

**मूर्खिनी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० मूर्ख ] मूढ़ा स्त्री।

**मूर्च्छन**—संज्ञा [ सं० ] १. संज्ञा लोप होना या करना। बेहोश करना। २. मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग। ३. पारे का तीसरा संस्कार। ४. कामदेव का एक बाण।

**मूर्च्छना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह।

**मूर्च्छा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है। संज्ञा का लोप। अचेत होना। बेहोशी।

**मूर्च्छित, मूर्छित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मूर्च्छिता ] १. जिसे मूर्च्छा आई हो। बेसुध। बेहोश। अचेत। २ मारा हुआ। (पारा आदि धातुओं के लिए)

**मूर्त्त**—वि० [ सं० ] १. जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप या आकार हो। साकार। २. ठोस।

**मूर्त्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ शरीर। देह। २ आकृति। शकल। सूरत। ३ किसी के रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु। प्रतिमा। विग्रह। ४. चित्र। तसवीर।

**मूर्त्तिकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मूर्ति बनानेवाला। २. तसवीर बनानेवाला।

**मूर्त्तित**—वि० [ सं० ] १. मूर्त्ति के रूप में बनाया हुआ। २. दे० "मूर्त्त"।

**मूर्त्तिपूजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो।

**मूर्त्तिपूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना।

**मूर्त्तिभंजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो मूर्त्तियों को तोड़ता हो। बुतशिकन। २. मुसलमान।

**मूर्त्तिमत**—वि० दे० "मूर्त्तिमान्"।

**मूर्त्तिमान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मूर्त्तिमती ] १. जो रूप धारण किए हो। सशरीर। २ साक्षात्। प्रत्यक्ष।

**मूर्द्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० मूर्द्धन् ] सिर।

**मूर्द्धकर्णी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छाया आदि के लिए सिर पर रखी हुई वस्तु।

**मूर्द्धकपारी***—संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्द्धकर्णी"।

**मूर्द्धन्य**—वि० [ सं० ] १ मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। २. मस्तक में स्थित।

**मूर्द्धन्य वर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, [illegible]

**मूर्द्धा**—संज्ञा पुं० [ सं० मूर्द्धन ] सिर।

**मूर्द्धाभिषेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० मूर्द्धाभिषिक्त ] सिर पर अभिषेक या जल-सिंचन।

**मूर्वा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मरोड़फली।

**मूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ पेड़ों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है। जड़। २. खाने के योग्य मोटी जड़। कंद। ३. आदि। आरंभ। शुरू। ४. आदि कारण। उत्पत्ति का हेतु। ५. असल जमा या धन। पूँजी। ६. आरंभ का भाग। ७. नींव। बुनियाद। ८. ग्रंथकार का निज का वाक्य या लेख जिस पर टीका आदि की जाय। ९. उन्नीसवाँ नक्षत्र।

वि० [ सं० ] मुख्य। प्रधान।

**मूलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मूली। २ मूल स्वरूप।

वि० उत्पन्न करनेवाला। जनक।

**मूलद्रव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आदिम द्रव्य या मूल जिससे और द्रव्य बने हों।

**मूलद्वार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सदर फाटक।

**मूलधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह असल धन जो किसी व्यापार में लगाया जाय। पूँजी।

**मूलपुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी वंश का आदि-पुरुष जिससे वंश चला हो।

**मूलभूत**—वि० [ सं० ] किसी वस्तु के नितांत मूल या तत्त्व से संबंध रखनेवाला। असली।

**मूलस्थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] थाला। आलवाल।

**मूलस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ बाप-दादा की जगह। पूर्वजों का स्थान। २. प्रधान स्थान। ३. मुलतान नगर।

**मूलाधार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मानव शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र। (योग)।

**मूलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जड़ी।

**मूली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मूलक ] १. एक पौधा जिसकी जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती और खाई जाती है।

**मुहा०**—(किसी को) मूली गाजर समझना=अति तुच्छ समझना।

२. जड़ी-बूटी। मूलिका।

**मूल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन। दाम। कीमत।

**मूल्यवान्**—वि० [ सं० ] जिसका दाम अधिक हो। बड़े दाम का। कीमती।

**मूष, मूषक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चूहा।

**मूस**—संज्ञा पुं० [ सं० मूष ] चूहा।

**मूसदानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मूस + दानी ( सं० आधान )] चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

**मूसना**—क्रि० स० [ सं० मूषण ] चुराकर ले जाना।

**मूसर, मूसल**—संज्ञा पुं० [ सं० मुशल ] १. धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। २. एक अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे।

**मूसलचंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० मूसल ] हट्टाकट्टा पर निकम्मा मनुष्य।

**मूसलधार**—क्रि० वि० [ हिं० मूसल + धार ] मूसल के समान मोटी धार से। ( वृष्टि )

**मूसला**—संज्ञा पुं० [ हिं० मूसल ] मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हों। झखरा का उलटा।

**मूसली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुशली ] एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

**मूसा**—संज्ञा पुं० [ सं० मूषक ] चूहा।

संज्ञा पुं० [ इबरानी ] यहूदियों के एक पैगम्बर जिनको खुदा का नूर दिखाई पड़ा था।

**मूसाकानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मूषा-कर्णी ] एक लता। इसके सब अंग औषधि के काम में आते हैं।

**मृग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० मृगी ] १. पशुमात्र, विशेषतः वन्य पशु। जंगली जानवर। २. हिरन। ३. हाथियों की एक जाति। ४. मार्गशीर्ष। अगहन का महीना। ५. मृगशिरा नक्षत्र। ६. मकर राशि। ७. कस्तूरी का नाफा। ८. पुरुष के चार भेदों में से एक। (कामशास्त्र)

**मृगचर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिरन का चमड़ा जो पवित्र माना जाता है।

**मृगछाला**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म"।

**मृगजल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृगतृष्णा की लहरें।

**मृगतृषा, मृगतृष्णा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों में कड़ी धूप पड़ने के समय होती है। मृगमरीचिका।

**मृगदाव**—संज्ञा पुं० [ सं० मृग + दाव=मृगों का वन ] काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।

**मृगधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**मृगनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह।

**मृगनाभि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कस्तूरी।

**मृगनैनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचनी"।

**मृगभद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथियों की एक जाति।

**मृगमद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कस्तूरी।

**मृगमरीचिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृगतृष्णा।

**मृगमित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**मृगमेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कस्तूरी।

**मृगया**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिकार। आखेट।

**मृगरोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कस्तूरी।

**मृगलांछन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**मृगलोचना**—वि० स्त्री० [ सं० ] हिरन के समान सुन्दर नेत्रोंवाली ( स्त्री )।

**मृगलोचनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचना"।

**मृगवारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृगतृष्णा का जल।

**मृगशिरा**—संज्ञा पुं० [ सं० मृगशिरस् ] सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।

**मृगशीर्ष**—संज्ञा पुं० दे० "मृगशिरा"।

**मृगांक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा। २. वैद्यक में एक प्रकार का रस।

**मृगाक्षी**—वि० स्त्री० [ सं० ] हरिण के से नेत्रोंवाली।

**मृगाशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह।

**मृगिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मृग ] हरिणी।

**मृगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हरिणी। हिरनी। २. एक वर्ण-वृत्त। प्रियवृत्त। ३. कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है। ४. अपस्मार नामक रोग। ५. कस्तूरी।

**मृगेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह।

**मृगेक्षिणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृगाक्षी"।

**मृडा, मृडानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा।

**मृणाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमल का डंठल। कमल-नाल। २. कमल की जड़। मुरार। भसींड़।

**मृणालिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

**मृणालिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १.

कमलिनी। २. वह स्थान जहाँ कमल हो।

**मृणाली**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।

**मृण्मय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मृण्मयी ] मिट्टी का।

**मृण्मूर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मिट्टी की बनी हुई मूर्ति।

**मृत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मृता ] मरा हुआ। मुर्दा।

**मृतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मरा हुआ प्राणी।

**मृतक-कर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृतक पुरुष की शुद्ध गति के लिए किया जानेवाला कृत्य। प्रेतकर्म। अंत्येष्टि।

**मृतकधूम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राख। भस्म।

**मृतजीवनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह विद्या जिससे मुर्दे को जिलाया जाता है।

**मृतसंजीवनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक बूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।

**मृताशौच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।

**मृति**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृत्यु"।

**मृत्तिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मिट्टी। खाक।

**मृत्युंजय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसने मृत्यु को जीता हो। २. शिव का एक रूप।

**मृत्यु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शरीर से जीवात्मा का वियोग। प्राण छूटना। मरण। मौत। २. यमराज।

**मृत्युलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यमलोक। २. मर्त्यलोक।

**मृथा**—*†—क्रि० वि० १. दे० "वृथा"। २. दे० "मृषा"।

**मृदंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।

**मृदव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन। ( नाट्यशास्त्र )

**मृदु**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मृद्वी ] १. कोमल। मुलायम। नरम। २. जो सुनने में कर्कश या अप्रिय न हो। ३. सुकुमार। नाजुक। ४. धीमा। मंद।

**मृदुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कोमलता। मुलायमियत। २. धीमापन। मंदता।

**मृदुत्पल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नील कमल।

**मृदुल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० मृदुला ] १. कोमल। नरम। २. कोमल हृदय। दयामय। कृपालु। ३. नाजुक। सुकुमार।

**मृदुलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मृदुल, कोमल या सुकुमार होने का भाव।

**मृदुलाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "मृदुलता"।

**मृनाल***—संज्ञा पुं० दे० "मृणाल"।

**मृन्मय**—वि० [ सं० ] मिट्टी का बना हुआ।

**मृषा**—अव्य० [ सं० ] झूठमूठ। व्यर्थ। वि० असत्य। झूठ।

**मृषात्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मिथ्यात्व।

**मृषाभाषी**—वि० [ सं० मृषाभाषिन् ] झूठ बोलनेवाला। झूठा।

**मृष्ट**—वि० [ सं० ] शोधित।

**मृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शोधन।

**में**—अव्य [ सं० मध्य ] अधिकरण कारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है। आधार या अवस्थान-सूचक शब्द।

**मेंगनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मींगी ? ] छोटी गोलियों के आकार की विष्ठा। लेंड़ी।

**मेंड़**—संज्ञा स्त्री० दे० "मेड़"।

**मेंह**—संज्ञा स्त्री० दे० "मेह"।

**मेकल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें अमरकंटक है।

**मेख**—संज्ञा पुं० दे० "मेष"।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. गाड़ने के लिए एक ओर नुकीली गढ़ी हुई काठ। खूँटी। २. कील। काँटा। ३. लकड़ी का पच्चड़।

**मेखल**—संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।

**मेखला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य भाग में उसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो। २. करधनी। तागड़ी। किंकिणी। ३. मंडल। मेंडरा। ४. डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद। सामी। सान। ५. पर्वत का मध्य भाग। ६. कपड़े का वह टुकड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।

**मेखली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मेखला ] १ एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं। २. करधनी। कटिबंध।

**मेघ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है। बादल। २. संगीत में छः रागों में से एक।

**मेघडंबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेघगर्जन। २. बड़ा शामियाना।

दलबादल।

**मेघनाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ का गर्जन। २. वरुण। ३. रावण का पुत्र इंद्रजित्। ४. मयूर। मोर।

**मेघपुष्प**—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र का घोड़ा। २. श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

**मेघमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बादलों की घटा। कादंबिनी।

**मेघराज**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**मेघवर्त**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रलय-काल के मेघों में से एक का नाम।

**मेघवाई***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० मेघ+वाई (प्रत्य०)] बादलों की घटा।

**मेघविस्फूर्जित**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

**मेघा**†—संज्ञा पुं० [सं० मेघ] मेढक।

**मेघागम**—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा ऋतु का आरंभ।

**मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित**—वि० [सं०] बादलों से ढका या छाया हुआ।

**मेघावरि***†—संज्ञा स्त्री० [सं० मेघा-वलि] बादलों की घटा।

**मेचक**—वि० [सं०] [भाव० मेच-कता] १. काला। श्याम। २. अँधेरा।

संज्ञा पुं० १. धूआँ। २. बादल।

**मेचकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कालापन।

**मेचकताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "मेच-कता"।

**मेज**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] लंबी चौड़ी ऊँची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढ़ने के लिए रखी जाती है। टेबुल।

**मेजबान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] आतिथ्य करनेवाला। मेहमानदार।

**मेजा**†—संज्ञा पुं० [सं० मंडूक] मेढक। मंडूक।

**मेट**—संज्ञा पुं० [अं०] मजदूरों का अफसर या सरदार। टंडैल। जमा-दार।

**मेटक***†—संज्ञा पुं० [हिं० मेटना] नाशक। मिटानेवाला

**मेटनहारा***†—संज्ञा पुं [हिं०मेटना+हार (प्रत्य०)] मिटानेवाला। दूर करनेवाला।

**मेटना**[1]—क्रि० स० दे० "मिटाना"।

**मेटा**†—संज्ञा पुं० दे० "मटका"।

**मेटिया**†—संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।

**मेड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० मिति?] १. मिट्टी डालकर बनाया हुआ खेत या जमीन का घेरा। छोटा बाँध। २. दो खेतों के बीच में हद या सीमा के रूप में बना हुआ रास्ता। ३. सम्मान। गौरव।

**मेड़रा**—संज्ञा पुं० [सं० मंडल हिं० मँडरा] [स्त्री० अल्पा० मेंडरी] किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढाँचा।

**मेड़िया**—संज्ञा स्त्री० [सं० मंडप] मढ़ी।

**मेढक**—संज्ञा पुं० [सं०मंडूक] एक जल स्थलचारी जंतु जो एक बालिश्त तक लंबा होता है। मंडूक। दर्दुर।

**मेढ़ा**—संज्ञा पुं० [सं० मेढ़्र=भेंस की तरह का] [स्त्री० मेढ़] सींगवाला एक चौपाया जो घने रोयों से ढका होता है।

**मेढ़ासिंगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मेढ़्-शृंगी] एक झाड़ीदार लता। इसकी जड़ ओषधि है।

**मेढ़ी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेणी] तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी।

**मेथी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती हैं।

**मेथौरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मेथी+बरी] मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।

**मेद**—संज्ञा पुं० [सं० मेदस्, मेद] १ शरीर के अंदर की वसा नामक धातु। चरबी। २ मोटाई या चरबी बढ़ना। ३. कस्तूरी।

**मेदपाट**—संज्ञा पुं० [सं०] मेवाड़ देश।

**मेदा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध ओषधि।

संज्ञा पुं० [अ०] पाकाशय। पेट।

**मेदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं] पृथ्वी। धरती।

**मेदुर**—वि० [सं०] १. चिकना। स्निग्ध। २. मोटा या गाढ़ा।

**मेध**—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञ।

**मेधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति। धारणावाली बुद्धि। २. षोडश मातृ-काओं में से एक। ३ छप्पय छंद का एक भेद।

**मेधावी**—वि० [सं० मेधाविन्] [स्त्री० मेधाविनी] १. जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २. बुद्धिमान्। चतुर। ३. पंडित। विद्वान्।

**मेध्य**—वि० [सं०] १. यज्ञ संबंधी। २. पवित्र।

संज्ञा पुं० १. बकरी। २. जौ। ३. खैर।

**मेनका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वर्ग की एक अप्सरा। २. उमा या पार्वती की माता।

**मेना**—क्रि० स० [हिं० मोयन] पक-वान में मोयन डालना।

संज्ञा स्त्री० [सं० मेनका] पार्वती

की माता, मेनका।

**मेम**—संज्ञा स्त्री० [अं० मैडम का संक्षिप्त रूप] १. युरोप या अमरिका आदि की स्त्री। २. ताश का एक पत्ता। बीबी। रानी।

**मेमना**—संज्ञा पुं० [अनु० में में] १. भेड़ का बच्चा। २. घोड़े की एक जाति।

**मेमार**—संज्ञा पुं० [अ०] इमारत बनानेवाला। थवई। राजगीर।

**मेय**—वि० [सं०] जो नापा जा सके।

**मेयना**†—क्रि० स० दे० "मेना"।

**मेर***†—संज्ञा पुं० दे० "मेल"।

**मेरवना**†—क्रि० स० [सं० मेलन] १. मिश्रित करना। मिलाना। २. संयोग कराना।

**मेरा**—सर्व० [हिं० मैं+रा] [स्त्री० मेरी] "मैं" के संबंधकारक का रूप। मदीय। मम।

*†संज्ञा पुं० दे० "मेला"।

**मेराउ, मेराव**†—संज्ञा पुं० [हिं० मेर=मेल] मेल। मिलाप। समागम।

संज्ञा स्त्री० अहंकार।

**मेरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मेरा] अहंभाव। ममता।

**मेरु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है। सुमेरु। हेमाद्रि। २. जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना। सुमेरु। ३. छंदःशास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने-कितने लघु गुरु के कितने छंद हो सकते हैं।

**मेरुदंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रीढ़। २. पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा।

**मेरे**—सर्व० [हिं० मेरा] १. 'मेरा' का बहुवचन। २. 'मेरा' का वह रूप जो उसे संबंधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त होता है।

**मेल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव। संयोग। समागम मिलाप। २. एकता। सुलह। ३. मैत्री। मित्रता। दोस्ती। ४. उपयुक्तता। संगति।

**मुहा०**—मेल खाना, बैठना या मिलना =१. संगति का उपयुक्त होना। साथ निभना। २. दो चीजों का जोड़ ठीक बैठना।

५. जोड़। टक्कर। बराबरी। समता। ६. ढंग। प्रकार। चाल। तरह। ७. मिश्रण। मिलावट।

**मेलक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संग-साथ। सहवास। २. मिलान। ३. समूह। मेला।

वि० [हिं० मेल] मेल कराने या मिलानेवाला।

**मेलना***†—क्रि० स० [हिं० मेल+ना (प्रत्य०)] १. मिलाना। २. डालना। रखना। ३. पहनाना।

क्रि० अ० इकट्ठा होना। एकत्र होना।

**मेला**—संज्ञा पुं० [सं० मेलक] १. भीड़ भाड़। २. देवदर्शन, उत्सव, तमाशे आदि के लिए बहुत से लोगों का जमावड़ा।

**मेलान**—संज्ञा पुं० [हिं० मेलक] १. ठहराव। २ पड़ाव। डेरा।

संज्ञा पुं० [अ० मैलान] १. प्रवृत्ति। झुकाव। २. अनुराग। चाह।

**मेलाना**†—क्रि० स० दे० "मिलाना"।

**मेली**—संज्ञा पुं० [हिं० मेल] मुलाकाती।

वि० जल्दी हिल मिल जानेवाला।

**मेल्हना**†—क्रि० अ० [?] १. छटपटाना। बेचैन होना। २. आनाकानी करके समय बिताना।

**मेव**—संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति। मेवाती।

**मेवा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल।

**मेवाटी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० मेवा+बाटी] एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं।

**मेवाड़**—संज्ञा पुं० [देश०] राजपूताने की एक प्रांत जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी।

**मेवात**—संज्ञा पुं० [सं०] राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

**मेवाती**—संज्ञा पुं० [हिं० मेवात+ई (प्रत्य०)] मेवात का रहनेवाला।

**मेवाफरोश**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मेवे बेचनेवाला।

**मेवासा***†—संज्ञा पुं० [हिं० मवास] १. किला। गढ़। २. रक्षा का स्थान। ३ घर।

**मेवासी**—संज्ञा पुं० [हिं० मेवासा] १ घर का मालिक। २. किले में रहनेवाला। ३. सुरक्षित और प्रबल।

**मेष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भेड़। २. बारह राशियों में से एक।

***मुहा०**—मेष करना=आगा-पीछा करना।

**मेषवृषण**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**मेषसंक्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या काल। (पर्व)

**मेस**—संज्ञा पुं० [अं०] बहुत से लोगों की मिली जुली भोजनशाला।

**मेसू**—संज्ञा पुं० [देश०] बेसन की एक प्रकार की बरफी।

**मेहँदी**—संज्ञा स्त्री० [सं० मेन्धी] एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर

लगाने से लाल रंग आता है। इसी से स्त्रियाँ इसे हाथ पैर में लगाती हैं।

**मेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रस्राव। मूत्र। २. प्रमेह रोग।

संज्ञा पुं० [ सं० मेघ ] १. मेघ। बादल। २. वर्षा। झड़ी। मेह।

**मेहतर**—संज्ञा पुं० [ फा० ] [ स्त्री० मेहतरानी ] मुसलमान भंगी। हलालखोर।

**मेहनत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] श्रम। प्रयास।

**मेहनताना**—संज्ञा पुं० [अ० + फ़ा०] किसी काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

**मेहनती**—वि० [ हिं० मेहनत ] मेहनत करनेवाला परिश्रमी।

**मेहमान**—संज्ञा पुं० [फा० ] अतिथि। पाहुना।

**मेहमानदारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा०] अतिथिसत्कार। आतिथ्य।

**मेहमानी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० मेहमान + ई ( प्रत्य० ) ] १ आतिथ्य। अतिथि-सत्कार। पहुनाई।

**मुहा०**——मेहमानी करना=खूब गत बनाना। मारना पीटना। दंड देना। (व्यंग्य)

२. मेहमान बनकर रहने का भाव।

**मेहर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] कृपा। दया।

संज्ञा स्त्री० दे० "मेहरी"।

**मेहरबान**—वि० [फा० ] कृपालु। दयालु।

**मेहरबानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] दया। कृपा।

**मेहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मेहरी ] स्त्रियों की सी चेष्टावाला। जनखा।

**मेहराब**—संज्ञा स्त्री० [ अ०] द्वार के ऊपर का अर्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग।

**मेहरारू, मेहरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मेहना ] १. स्त्री। औरत। २. पत्नी। जोरू।

**मैं**—सर्व० [ सं० अहं ] सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद।

* अव्य० दे० "में"।

**मैंड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मेंड़ ] १. सीमा। २.सम्मान। गौरव। ३ दे० "मेंड़"।

**मै**—अव्य० दे० "मय"।

संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शराब। मद्य।

**मैका**—संज्ञा पुं० दे० "मायका"।

**मैगल**—संज्ञा पुं० [ सं० मदकल ] मस्त हाथी।

वि० मस्त ( हाथी के लिए )

**मैच**—संज्ञा पुं० [ अं० ] खेल की प्रतियोगिता।

**मैटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. तत्त्व। २. साधन या सामग्री। ३. लेख या उसका वह अंश जो छपने को दिया जाय।

**मैड़**—संज्ञा स्त्री० दे० "मेंड़"।

**मैत्रायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उपनिषद्।

**मैत्रावरुणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

**मैत्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मित्रता। दोस्ती।

**मैत्रेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक बुद्ध जो अभी होनेवाले हैं। २. भागवत के अनुसार एक ऋषि। ३. सूर्य।

**मैत्रेयी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २. अहल्या।

**मैथिल**—वि० [ सं० ] १. मिथिला देश का। मिथिला-संबंधी।

संज्ञा पुं० मिथिला देश का निवासी।

**मैथिली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।

**मैथुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग। रति क्रीड़ा।

**मैदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बहुत महीन आटा।

**मैदान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. लंबा-चौड़ा समतल स्थान जिसमें पहाड़ी या घाटी आदि न हों। सपाट भूमि। २. वह लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय।

**मुहा०**—मैदान में आना=मुकाबले पर आना। मैदान साफ होना=मार्ग में कोई बाधा आदि न होना। मैदान मारना=खेल, बाजी आदि में जीतना।

३ युद्धक्षेत्र। रणक्षेत्र।

**मुहा०**—मैदान करना=लड़ना। युद्ध करना। मैदान मारना=विजय प्राप्त करना।

**मैन**—संज्ञा पुं० [ सं० मदन ] १. कामदेव। मदन। २. मोम।

**मैनफल**—संज्ञा पुं० [ सं० मदनफल] १. मझोले आकार का एक कँटीला वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल जो अखरोट की तरह होता है और औषध के काम में आता है।

**मैनमय***—वि० [ हिं० मैन ] कामासक्त।

**मैनसिल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मनःशिला ] एक प्रकार की पीली धातु।

**मैना**—संज्ञा स्त्री० [सं० मदना ] काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की सी बोली बोलने लगता है। सारिका।

संज्ञा स्त्री० दे० "मेनका"।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक जाति जो राजपूताने में पाई जाती और "मीना" कहलाती है।

**मैनाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। २ हिमालय की एक ऊँची चोटी।

**मैनावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**मैमंत***†—वि० [ सं० मदमत्त ] १. मदोन्मत्त, मतवाला। २. अहंकारी। अभिमानी।

**मैया**—संज्ञा स्त्री० माता। माँ।

**मैर**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० मृदर, प्रा० मिअर=क्षणिक ] साँप के विष की लहर।

**मैल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मलिन ] १. गर्द, धूल आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक दमक नष्ट हो जाती है। मल। गंदगी।

**मुहा०**—हाथ पैर की मल तुच्छ वस्तु।

२ दोष। विकार।

**मैलखोरा**—वि० [ हिं० मैल+फ़ा० खोर ] ( रंग आदि ) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे।

**मैला**—वि० [ सं० मलिन, प्रा० मइल ] १ जिस पर मैल जमी हो। मलिन। अस्वच्छ। २. विकार-युक्त। दूषित। ३. गंदा। दुर्गंधयुक्त।

संज्ञा पुं० गलीज। गू। कूड़ा कर्कट।

**मैला-कुचैला**—वि० [ हिं० मैला+सं० कुचैल=गंदा वस्त्र ] १. जो बहुत मैले कपड़े पहने हुए हो। २. बहुत मैला। गंदा।

**मैलान**—संज्ञा पुं० दे० "मैलान"।

**मैलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० मैला+पन ( प्रत्य० ) ] मलिनता। गंदापन।

**मों***†—अव्य० दे० "मैं"।

सर्व० दे० "मो"।

**मोंगरा**—संज्ञा पुं० १. दे० "मोगरा"। २. दे० "मुँगरा"।

**मोंछ**—संज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ"।

**मोंढ़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० मूर्द्धा ] १. बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन। २ कंधा।

**मो***—सर्व० [ सं० मम ] १. मेरा। २. अवधी और ब्रजभाषा में "मैं" का वह रूप जो उसे कर्त्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।

**मोकना***†—क्रि० स० [ सं० मुक्त ] १. छोड़ना। परित्याग करना। २. क्षिप्त करना। फेंकना।

**मोकल***†—वि० [ सं० मुक्त ] छूटा हुआ जो बँधा न हो। आज़ाद। स्वच्छंद।

**मोकला**†—वि० [ हिं० मोकल ] १. अधिक चौड़ा। कुशादा। २ छूटा हुआ। स्वच्छंद।

**मोक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंधन से छूट जाना। छुटकारा। २. शास्त्रों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना। मुक्ति। ३. मृत्यु। मौत।

**मोक्षद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मोक्ष देनेवाला।

**मोख***†—संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

**मोखा**—संज्ञा पुं० [ सं० मुख ] बहुत छोटी खिड़की। झरोखा।

**मोगरा**—संज्ञा पुं० [ सं० मुद्गर ] १. एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला ( पुष्प )। २. दे० "मोंगरा"।

**मोगल**—संज्ञा पुं० दे० "मुगल"।

**मोगा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १ एक प्रकार का रेशम। २. इस रेशम का बना हुआ कपड़ा।

**मोघ**—वि० [ सं० ] निष्फल। चूकनेवाला।

**मोच**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मुच् ] शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना।

**मोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंधन आदि से छुड़ाना। मुक्त करना। २. दूर करना। हटाना। ३. रहित करना। ले लेना।

**मोचना**—क्रि० स० [ सं० मोचन ] १ छोड़ना। २. गिराना। बहाना। ३. छुड़ाना।

संज्ञा पुं० [ सं० मोचन ] हज्जामों का वह औजार जिससे व बाल उखाड़ते है।

**मोचरस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेमल का गोंद।

**मोची**—संज्ञा पुं० [ सं० मोचन ] वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो।

वि० [ सं० मोचिन् [स्त्री० मोचिनी] १. छुड़ानेवाला। २. दूर करनेवाला।

**मोच्छ***†—संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

**मोछ**—संज्ञा स्त्री० दे० "मूछ"।

*संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

**मोजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पैरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा। पायताबा। जुर्राब। २. पैर में पिंडली के नीचे का भाग। ३. कुश्ती का एक दांव।

**मोट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोटरी ] गठरी मोटरी।

संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे

बैल खींचने के लिए कूँए से पानी निकालते हैं। चरसा। पुर।

*वि॰ [ हिं॰ मोटा ] १. दे॰ "मोटा"। २ कम मोल का। साधारण।

**मोटनक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक वर्णवृत्त।

**मोट-मरदी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ मोटा + मर्द ] अभिमान। अहंकार।

**मोटर**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] एक प्रकार का यंत्र जो दूसरे यंत्रों का संचालन करता है।

संज्ञा स्त्री॰ वह प्रसिद्ध गाड़ी जो इस यंत्र से चलती है।

**मोटरकार**—संज्ञा पुं॰ हवा गाड़ी।

**मोटरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ तैलंग॰ मूटा= गठरी ] गठरी।

**मोटा**—वि॰ [ सं॰ मुष्ट ] [ स्त्री॰ मोटी ] १. जिसका शरीर चरबी आदि के कारण बहुत फूल गया हो। दुबला का उलटा। स्थूल शरीरवाला। २. पतला का उलटा। दबीज। दल-दार। गाढ़ा। ३. जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो।

**मुहा॰**—मोटा असामी=अमीर। मोटा भाग्य=सौभाग्य। खुशकिस्मती।

४. जिसके कण खूब महीन न हो गए हों। दरदरा। ५. घटिया। खराब।

**मुहा॰**—मोटी बात= साधारण बात। मामूली बात। मोटे हिसाब से= अंदाज से। अटकल से।

६ भारी या कठिन।

**मुहा॰**—मोटा दिखाई देना=आँख की ज्योति में कमी होना। कम दिखाई देना।

७. घमंडी। अहंकारी।

**मोटाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ मोटा + ई ( प्रत्य॰ ) ] १. मोटे होने का भाव। स्थूलता। पीवरता। २. शरा-रत। पाजीपन।

**मुहा॰**—मोटाई चढ़ना=बदमाश या घमंडी होना।

**मोटाना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ मोटा + आना ( प्रत्य॰ ) ] १ मोटा होना। स्थूलकाय हो जाना। २. अभिमानी होना। ३ धनवान् होना।

क्रि॰ स॰ दूसरे को मोटा करना।

**मोटापा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मोटाई"।

**मोटा मोटी**—क्रि॰ वि॰ [ हिं॰ मोटा] मोटे हिसाब से। अनुमानतः।

**मोटिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मोटा + इया ( प्रत्य॰ ) ] मोटा और खुर-खुरा देशी कपड़ा। गाढ़ा। खद्दड़। खादी।

संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मोट=बोझ ] बोझ ढोनेवाला।

**मोट्टायित**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] साहित्य मे एक हाव जिसमें नायिका अपने आतरिक प्रेम को कटु भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।

**मोठ**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ मकुष्ठ ] मूँग की तरह का एक मोटा अन्न। मोट। मोथी। बन मूँग।

**मोठस**—वि॰ [ ? ] मौन। चुप।

**मोड़**—संज्ञा पु॰ [ हि॰ मुड़ना ] १. रास्ते आदि मे घूम जाने का स्थान। २. घुमाव या मुड़ने की क्रिया या भाव।

**मोड़ना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मुड़ना का प्रेर॰ ] १. फेरना। लौटाना।

**मुहा॰**—मुँह मोड़ना=विमुख होना।

२. किसी फैली हुई सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। ३. धार मुथरी करना। कुंठित करना। जैसे—धार मोड़ना।

**मोड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] महा-राष्ट्र देश की लिपि।

**मोतियदाम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मौक्तिकदाम ] चार जगण का एक वर्णवृत्त।

**मोतिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मोती + इया ( प्रत्य॰ ) ] १. एक प्रकार का बेला। २. एक प्रकार का सलमा।

वि॰ १. हलका गुलाबी या पीलें और गुलाबी रंग के मेल का ( रंग )। २. छोटे गोल दानों का।

**मोतियाबिंद**—संज्ञा पु॰ [ हिं॰ मोतिया + सं॰ बिंदु ] आँख का एक रोग जिसमें उसके एक परदे में गोल झिल्ली सी पड जाती है।

**मोती**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मौक्तिक, प्रा॰ मोत्तिअ ] एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपी में से निकलता है।

**मुहा॰** मोती गरजना=मोती चटकना या कड़क जाना। मोती रोलना= बिना परिश्रम अथवा थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियों से मुँह भरना=बहुत अधिक धन-संपत्ति देना।

संज्ञा स्त्री॰ बाली जिसमें मोती पड़े रहते हैं।

**मोतीचूर**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मोती + चूर ] छोटी बूँदियों का लड्डू।

**मोतीझरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मोती + झिरा ? ] एक ज्वर। टाइफाइड।

**मोती-बेल**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ मोतिया + बेल ] मोतिया बेला। ( फूल )

**मोती-भात**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मोती + भात ] एक विशेष प्रकार का भात।

**मोतीसिरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ मोती

+सं० श्री ] मोतियों की कंठी। मोतियों की माला।

**मोथा**—संज्ञा पुं० [ सं० मुस्तक ] नागरमोथा नामक घास या उसकी जड़।

**मोद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० मोदी] १. आनन्द। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। २. एक वर्णवृत्त। ३ सुगंध। महक। खुशबू।

**मोदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लड्डू। मिठाई। २ औषध आदि का बना हुआ लड्डू। ३. गुड़। ४. चार नगण का एक वर्णवृत्त।

**मोदकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की गदा

**मोदना***—क्रि० अ० [ सं० मोदन ] १. प्रसन्न होना। खुश होना। २. सुगंधि फैलना।

क्रि० स० प्रसन्न करना। खुश करना।

**मोदित**—वि० दे० "मुदित"।

**मोदी**—संज्ञा पुं० [ सं० मोदक=लड्डू ] आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया। परचूनिया।

**मोदीखाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० मोदी +फा० खाना ] अन्नादि रखने का घर। भंडारा।

**मोधुक**—संज्ञा पुं० [ सं० मोदक=एक जाति ] मछली पकड़नेवाला। धीवर। मछुआ।

**मोघू**—वि० [ सं० मुग्ध ] बेवकूफ। मूर्ख।

**मोन**—संज्ञा पुं० दे० "मोना"।

**मोना***—क्रि० स० [ हिं० मोयन ] भिगोना।

संज्ञा पुं० [सं० मोण] [स्त्री० अल्पा० मोनी ] झाबा। पिटारा।

**मोम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं।

**मोमजामा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो। तिरपाल।

**मोममति***—संज्ञा पुं० दे० "ममत्व"।
संज्ञा स्त्री० [ मो+मति ] मेरी मति। मेरी सम्मति।

**मोमबत्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मोम +हिं० बत्ती ] मोम या ऐसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।

**मोमिन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. धर्मनिष्ठ मुसलमान। २. मुसलमान जुलाहों की एक जाति।

**मोमियाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] नकली शिलाजीत।

**मोमी**—वि० [ फ़ा० ] मोम का बना हुआ।

**मोयन**—संज्ञा पुं० [ हिं० मैन=मोम ] माँडे हुए आटे में घी या चिकना देना जिसमें उससे बनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो।

**मोरंग**—संज्ञा पुं० [ देश० ] नैपाल का पूर्वी भाग।

**मोर**—संज्ञा पुं० [ सं० मयूर ] [स्त्री० मोरनी ] १. एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध बड़ा पक्षी। २ नीलम की आभा।
*सर्व० [स्त्री० मोरी] दे० "मेरा"।

**मोरचंदा**—संज्ञा पुं० दे० "मोरचंद्रिका"।

**मोरचंद्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोर +चंद्रिका ] मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी।

**मोरचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. लोहे की सतह पर चढ़नेवाली वह लाल या पीले रंग की बुकनी की सी तह जो वायु और नमी के योग से रासायनिक विकार होने से उत्पन्न होती है। जंग। २. दर्पण पर जमी मैल।
संज्ञा पुं० [ फ़ा० मोरचाल ] १. वह गड्ढा जो गढ़ के चारों ओर रक्षा के लिए खोदा जाता है। २. वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है।

मुहा०—मोरचाबंदी करना=गढ़ के चारों ओर यथास्थान सेना नियुक्त करना। मोरचा जीतना या मारना=शत्रु के मोरचे पर अधिकार कर लेना। मोरचा बाँधना=दे० "मोरचा बंदी करना"। मोरचा लेना=युद्ध करना।

**मोरछड़***—संज्ञा पुं० दे० "मोरछल"।

**मोरछल**—संज्ञा पुं० [ हिं० मोर+छड़ ] मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है।

**मोरछली**—संज्ञा पुं० दे० "मोलसिरी"।
संज्ञा पुं० [ हिं० मोरछल+ई (प्रत्य० )] मोरछल हिलानेवाला।

**मोरछाँह**—संज्ञा स्त्री० दे० "मोरछल"।

**मोरजुटना**—संज्ञा पुं० [ हिं० मोर+जुटना ] एक प्रकार का आभूषण।

**मोरन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोड़ना ] मोड़ने की क्रिया या भाव। मोड़ना।
संज्ञा स्त्री० [ सं० मोरट ] बिलोया हुआ दही जिसमें मिठाई और सुगंधित वस्तुएँ डाली गयी हों। शिखरन।

**मोरना***—क्रि० स० दे० "मोड़ना"।
क्रि० स० [ हिं० मोरना ] दही को मथकर मक्खन निकालना।

**मोरनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोर का स्त्री० रूप ] १. मोर पक्षी की मादा। २. मोर के आकार का टिकड़ा जो

नथ में पिरोया जाता है।

**मोरपंख**—संज्ञा पुं० [ हिं० मोर+पंख ] मोर का पर।

**मोरपंखी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोरपंख+ई (प्रत्य०) ] वह नाव जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना और रँगा हुआ हो।
संज्ञा पुं० मोर के पर से मिलता-जुलता गहरा चमकीला नीला रंग।
वि० मोर के पंख के रंग का।

**मोरपंखा***†—संज्ञा पुं० [ हिं० मोरपंख ] १. मोर का पर। २. मोरपंख की कलगी।

**मोर पखौआ***—संज्ञा पुं० दे० "मोर पंख"।

**मोरमुकुट**—संज्ञा पुं० [ हिं० मोर+मुकुट ] मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।

**मोरवा***†—संज्ञा पुं० दे० "मोर"।

**मोरशिखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० मयूर+शिखा ] एक प्रकार की जड़ी।

**मोरा***†—वि० दे० "मेरा"।

**मोराना***†—क्रि० स० [ हिं० मोड़ना का प्रे० ] चारो ओर घुमाना। फिराना।

**मोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोहरी ] वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो। पनाली।
*संज्ञा स्त्री० [ हिं० मोर ] मोर की मादा।

**मोल**—संज्ञा पुं० [ सं० मूल्य ] कीमत। दाम। मूल्य।
**यौ०**—मोल-चाल=१. अधिक मूल्य। २. किसी चीज का दाम घटा-बढ़ाकर तै करना।

**मोलना**†—संज्ञा पुं० [ अ० मौलाना ] मौलवी।

**मोलाना***—क्रि० स० [ हिं० मोल ] मोल पूछना या तै करना।

**मोवना***†—क्रि० स० दे० "मोना"।

**मोष**—संज्ञा पुं० दे० "मोक्ष"।

**मोषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लूटना। २. चोरी करना। ३. वध करना।

**मोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अज्ञान। भ्रम। भ्रांति। २. शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की दुःखदायिनी बुद्धि। ३. प्रेम। मुहब्बत। प्यार। ४. साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक। भय, दुःख, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ५. दुःख। कष्ट। ६. मूर्छा। बेहोशी। गश।

**मोहक**—वि० [ सं० ] [ भाव० मोहकता ] १. मोह उत्पन्न करनेवाला। २. लुभानेवाला। मनोहर।

**मोहठा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। बाला।

**मोहड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मुँह+ड़ा (प्रत्य०) ] १. किसी पात्र का मुँह या खुला भाग। २. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

**मोहतामिम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] प्रबंधकर्ता।

**मोहताज**—वि० [ अ० मुह्ताज ] १. दरिद्र। कंगाल। २. विशेष कामना रखनेवाला। इच्छुक।

**मोहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जिसे देखकर जी लुभा जाय। २. श्रीकृष्ण। ३. एक वर्णवृत्त। ४. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी को बेहोश या मूर्छित करते हैं। ५. एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्छित किया जाता था। ६. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० [ सं० ] [ स्त्री० मोहनी ] मोह उत्पन्न करनेवाला।

**मोहनभोग**—संज्ञा पुं० [ हिं० मोहन+भोग ] १. एक प्रकार का हलुआ। २. एक प्रकार का आम।

**मोहनमाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला।

**मोहना**—क्रि० अ० [ सं० मोहन ] १. मोहित होना। रीझना। २. मूर्छित होना।
क्रि० स० [ सं० मोहन ] १. अपने ऊपर अनुरक्त करना। मोहित करना। लुभा लेना। २. भ्रम में डालना। धोखा देना।

**मोहनास्त्र**—संज्ञा पुं० दे० "मोहन" (५)।

**मोहनिशा**—संज्ञा स्त्री० दे० "मोहरात्रि"।

**मोहनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक वर्णवृत्त। २. भगवान् का वह स्त्री-रूप जो उन्होंने समुद्र मंथन के उपरांत अमृत बाँटने समय धारण किया था। ३. वशीकरण का मंत्र।
**मुहा०**—मोहनी डालना या लाना=माया के वश करना। जादू करना। मोहनी लगना=मोहित होना। लुभाना।
४. माया।
वि० स्त्री० [ सं० ] मोहित करनेवाली। अत्यंत सुंदरी।

**मोहर**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा। २. उपर्युक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपड़े आदि पर ली गई हो। ३. अशरफी।

**मोहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० मुँह+रा (प्रत्य०) ] १. किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। २. किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। ३. सेना की अगली पंक्ति। ४. फौज

चढ़ाई का वस्त्र।

मुहा०—मोहरा लेना=१. सेना का मुकाबला करना। २. भिड़ जाना। प्रतिद्वंद्विता करना।

५. कोई छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। ६. चोली आदि की तनी।

संज्ञा पुं० [फा० मोहरः] १. शतरंज की कोई गोटी। २. मिट्टी का साँचा जिसमें चीजें ढालते हैं। ३. रेशमी वस्त्र घोटने का घोटना। ४. यशब या अकीक पत्थर की वह छोटी गुल्ली जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं। ओपनी। ५. सिंगिया विष। ६. जहर-मोहरा।

**मोहरात्रि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है। २. कृष्ण जन्माष्टमी।

**मोहरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मोहरा] १. बरतन आदि का छोटा मुँह। २. पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं। ३. दे० "मोरी"।

**मोहर्रिर**—संज्ञा पुं० [अ०] लेखक। मुंशी।

**मोहलत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. फुरसत। अवकाश। छुट्टी। २. अवधि।

**मोहारा**—संज्ञा पुं० [हिं० मुँह+आर (प्रत्य०)] १. द्वार। दरवाजा। २. मुँहड़ा।

**मोहिं***—सर्व० [सं० मह्यम्] मुझको। मुझे। (ब्रज और अवधी)।

**मोहित**—वि० [सं०] [स्त्री० मोहिता] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २. मोहा हुआ। आसक्त।

**मोहिनी**—वि० स्त्री० [सं०] मोहनेवाली।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु के एक अवतार का नाम। २. माया। जादू। टोना। ३. एक अर्द्धसमवृत्ति। ४. पंद्रह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।

**मोही**—वि० [सं० मोहिन्] मोहित करनेवाला।

वि० [हिं० मोह+ई (प्रत्य०)] १. मोह करनेवाला। प्रेम करनेवाला। २. लोभी। लालची। अज्ञानी।

**मोहोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जो केशव दास के अनुसार उपमा का एक भेद है, पर और आचार्य जिसे "भ्रांति" अलंकार कहते हैं।

**मौं***—अव्य० [ब्रज भाषा में अधिकरण कारक का चिह्न] में।

**मौंगा***—संज्ञा पुं० [सं० मौन] मौन। चुप।

**मौंगी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० मौन] चुप्पी। मौन।

**मौंजबंधन**—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत संस्कार।

**मौंड़ा***†—संज्ञा पुं० [सं० माणवक] [स्त्री० मौंड़ी] लड़का। बालक।

**मौका**—संज्ञा पुं० [अ०] १. घटना-स्थल। वारदात की जगह। २. देश। स्थान। जगह। ३. अवसर। समय।

**मौकूफ**—वि० [अ०] [संज्ञा मौकूफी] १. रोका हुआ। बंद किया हुआ। २. नौकरी से अलग किया गया। बरखास्त। ३. रद्द किया गया। ४. अवलंबित। निर्भर।

**मौक्तिक**—संज्ञा पुं० [सं०] मुक्ता। मोती।

वि० मोतियों का। मुक्ता संबंधी।

**मौक्तिकदाम**—संज्ञा पुं० [सं०] बारह अक्षरों का एक वर्णिक छंद।

**मौक्तिकमाल**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ग्यारह अक्षरों की एक वर्णिक वृत्ति।

**मौखा**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मसाला।

**मौखरी**—संज्ञा पुं० [सं०] भारत का एक प्राचीन राजवंश।

**मौखर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मुखर होने का भाव। मुखरता।

**मौखिक**—वि० [सं०] १. मुख का। २. जबानी।

**मौज**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लहर। तरंग। २. मन की उमंग। उछंग। जोश।

मुहा०—किसी की मौज पाना=मरजी जानना। इच्छा से अवगत होना।

३. धुन। ४. सुख। आनंद। मजा। ५. प्रभूति। विभव। विभूति।

**मौजा**—संज्ञा पुं० [अ०] गाँव। ग्राम।

**मौजी**—वि० [हिं० मौज+ई (प्रत्य०)] १. जो जी में आवे, वही करनेवाला। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनंदी।

**मौजूँ**—वि० [अ०] [भाव० मौजूनियत] उपयुक्त।

**मौजूद**—वि० [अ०] १. उपस्थित। हाजिर। विद्यमान। २. प्रस्तुत। तैयार।

**मौजूदगी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] उपस्थिति।

**मौजूदा**—वि० [अ०] वर्त्तमान काल का।

**मौड़ा***†—संज्ञा पुं० दे० "मौंड़ा"।

**मौत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मरण। मृत्यु।

मुहा०—मौत का सिर पर खेलना=१. मरने को होना। २. आपत्ति समीप होना।

२. मरने का समय। काल। ३. अत्यंत कष्ट। आपत्ति।

**मौआद**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ मआद ]

**मौन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।

**मुहा॰**—मौन ग्रहण या धारण करना=चुप रहना। न बोलना। मौन खोलना=चुप रहने के उपरांत बोलना। मौन तजना=चुप्पी छोड़ना। बोलने लगना। मौन बाँधना=चुप हो जाना। मौन लेना या साधना=चुप होना। न बोलना। मौन सँभारना*=मौन साधना। चुप होना।

२. मुनियों का व्रत। मुनिव्रत।

वि॰ [ सं॰ मौनी ] जो न बोले। चुप।

*संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मोण ] १. बरतन। पात्र। २. डब्बा।

**मौनव्रत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने का व्रत।

**मौना**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मौना"।

**मौनी**—वि॰ [ सं॰ मौनिन् ] १. चुप रहनेवाला। मौन धारण करनेवाला। २. मुनि।

**मौर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मुकुट ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ मौरी ] १. विवाह के समय का एक शिरोभूषण जो ताड़ पत्र या खुखड़ी आदि का बनाया जाता है। २. शिरोमणि। प्रधान।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मुकुल ] मंजरी। बौर।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ मौलि=सिर ] गरदन।

**मौरना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ मौर=ना ( प्रत्य॰ ) ] वृक्षों पर मंजरी लगना। बौर लगना।

**मौरसिरी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मौलसिरी"।

**मौरूसी**—वि॰ [ अ॰ ] बाप-दादा के समय से चला आया हुआ। पैतृक।

**मौर्ख्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मूर्खता।

**मौर्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट् स्कंदगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।

**मौर्वी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] धनुष की डोरी।

**मौलवी**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] मुसलमान धर्म का आचार्य जो अरबी फारसी आदि का पंडित होता है।

**मौलसिरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ मौलि+श्री ] एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। बकुल।

**मौलि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चोटी। सिरा। चूड़ा। २. मस्तक। सिर। ३. किरीट। ४. जटाजूट। ५. प्रधान। सरदार।

**मौलिक**—वि॰ [ सं॰ ] १. मूल से संबंध रखनेवाला। २. असली। ३. ( ग्रंथ या विचार आदि ) जो किसी का अनुवाद, नकल या आधार पर न हो बल्कि अपनी उद्भावना से निकला हो।

**मौलिकता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. मौलिक होने का भाव। २. अपनी उद्भावना से कुछ कहने या लिखने की शक्ति।

**मौली**—वि॰ [ सं॰ मौलिन् ] मौलि धारण करनेवाला।

**मौलूद**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] मुहम्मद साहब के जन्म का उत्सव ( मुसल॰ )।

**मौसर***†—वि॰ दे॰ "मयस्सर"।

**मौसा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ मौसी का पुं॰ ] [ स्त्री॰ मौसी ] माता की बहिन का पति।

**मौसिम**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] [ वि॰ मौसिमी ] १. उपयुक्त समय। २. ऋतु।

**मौसिया**—वि॰ दे॰ "मौसेरा"।

**मौसी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ मातृष्वसा ] [ वि॰ मौसेरा ] माता की बहिन। मासी।

**मौसेरा**—वि॰ [ हिं॰ मौसी+एरा ( प्रत्य॰ ) ] मौसी के द्वारा संबद्ध। मौसी के संबंध का।

**म्याँउँ**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] बिल्ली की बोली।

**मुहा॰**—म्याँउँ म्याँउँ करना=भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना।

**म्यान**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ मियान ] १. तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। २. अन्नमय कोश। शरीर।

**म्याना***—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ म्यान ] म्यान में रखना।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "मियाना"।

**म्यूजियम**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] अद्भुत पदार्थ। संग्रहालय। अजायबघर।

**म्यौं**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] बिल्ली की बोली।

**म्योंढ़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ निर्गुण्डी ] एक सदाबहार झाड़ जिसमें पीले छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती हैं।

**म्रजाद***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मर्यादा"।

**म्रियमाण**—वि॰ [ सं॰ ] मरने के तुल्य। मरा हुआ।

**म्लान**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ संज्ञा म्लानता ] १. मलिन। कुम्हलाया हुआ। २. दुर्बल। ३. मैला। मलिन।

**म्लानता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. म्लान होने का भाव। मलिनता। २.

दुर्बलता।

**म्लानि**-संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानता"।

**म्लेच्छ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म्म न हो।

वि० १. नीच। २. पाप-रत। पापी।

**म्हां***—सर्व० दे० "मुझ"।

**म्हारा***—सर्व० दे० "हमारा"।

—:o:—

# य

**य**—हिंदी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान तालू है।

**यंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि। जंतर। २. वह उपकरण, जो किसी विशेष कार्य के लिये प्रस्तुत किया जाय। औजार। ३ किसी खास काम के लिये बनाई हुई कल या औजार। ४. बंदूक। ५. बाजा। वाद्य। ६. ताला।

**यंत्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रक्षा करना। २. बाँधना। ३. नियम में रखना। नियंत्रण।

**यंत्रणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. क्लेश। तकलीफ। २. दर्द। वेदना। पीड़ा।

**यंत्र-मंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जादू-टोना।

**यंत्रविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कलों के चलाने और बनाने की विद्या।

**यंत्रशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वेधशाला। २. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र हों।

**यंत्र-सज्ज**—वि० [ सं० ] मशीनगनों और टैंकों आदि से युक्त और सजी हुई (सेना)।

**यंत्रालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह स्थान जहाँ कलें हों। २. छापाखाना।

**यंत्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ताला।

**यंत्रित**—वि० [ सं० ] १. यंत्र आदि की सहायता से रोका या बंद किया हुआ। २. ताले में बंद।

**यंत्री**—संज्ञा पुं० [ सं० यंत्रिन् ] १. यंत्र मंत्र करनेवाला। तांत्रिक। २. बाजा बजानेवाला। ३. यंत्र या मशीन की सहायता से काम करनेवाला।

**यंत्रीकरण**—संज्ञा पुं० दे० "यांत्रीकरण"।

**य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यश। २. योग। ३. सवारी। ४. संयम। ५. छंदःशास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप।

**यकअंगी**—वि० दे० "एकांगी"।

**यक-बयक, यकबारगी**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] यकबयक। अचानक। एकाएक। सहसा।

**यकसाँ**—वि० [ फ़ा० ] एक समान। बराबर।

**यकायक**—क्रि० वि० दे० "यक-बयक"।

**यकीन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] विश्वास। एतबार।

**यकृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। जिगर। कालखंड। २. वह रोग जिसमें यह अंग दूषित होकर बढ़ जाता है। बर्म-जिगर।

**यक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार के देवता जो कुबेर की निधियों के रक्षक माने जाते हैं। २. कुबेर।

**यक्षकर्दम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का अंग लेप।

**यक्षपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कुबेर।

**यक्षपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अलकापुरी।

**यक्षिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. यक्ष की पत्नी। २. कुबेर की पत्नी।

**यक्षी**—संज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

संज्ञा पुं० [ सं० यक्ष+ई (प्रत्य०) ]

वह जो यक्ष की साधना करता हो।

**यक्षेश्वर**-संज्ञा पुं० [ सं० ] कुबेर।

**यक्ष्मा**-संज्ञा पुं० [ सं० यक्ष्मन् ] क्षयी रोग। तपेदिक।

**यखनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] उबले हुए मांस का रसा। शारबा।

**यगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छंदःशास्त्र में एक गण। यह लघु और दो गुरु मात्राओं का होता है ( । ऽऽ )। संक्षिप्त रूप 'य'।

**यच्छ***†—संज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।

**यजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ करना।

**यजना***—क्रि० स० [ सं० यजन ] १. पूजा करना। २. यज्ञ करना।

**यजमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो यज्ञ करता हो। यष्टा। २. वह जो ब्राह्मणों को दान देता हो।

**यजमानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यजमान +ई (प्रत्य०) ] १. यजमान का भाव या धर्म। २. यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।

**यजु**—संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।

**यजुर्वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार प्रसिद्ध वेदों में से एक वेद जिसमें विशेषतः यज्ञ कर्मों का विस्तृत विवरण है।

**यजुर्वेदी**—संज्ञा पुं० [सं० यजुर्वेदिन् ] यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करनेवाला।

**यज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था। मख। याग।

**यज्ञकुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हवन करने की वेदी या कुंड।

**यज्ञपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. वह जो यज्ञ करता हो।

**यज्ञपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।

**यज्ञपशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय।

**यज्ञपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ में काम आनेवाले काठ के बने हुए बरतन।

**यज्ञपुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**यज्ञभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो। यज्ञक्षेत्र।

**यज्ञमंडप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ करने के लिए बनाया हुआ मंडप।

**यज्ञशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यज्ञ-मंडप।

**यज्ञसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञोपवीत।

**यज्ञेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**यज्ञोपवीत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. हिंदुओं में द्विजों का एक संस्कार। व्रतबन्ध। उपनयन। जनेऊ।

**यति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संन्यासी। त्यागी। योगी। २. ब्रह्मचारी। ३. छप्पय के ६६ वें भेद का नाम। संज्ञा स्त्री० [ सं० यती ] छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय, लय ठीक रखने के लिये थोड़ा विश्राम हो। विरति। विराम।

**यतिधर्म**-संज्ञा पुं० [सं०] संन्यास।

**यतिभंग**-संज्ञा पुं० [ सं० ] काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।

**यति-भ्रष्ट**-वि० [ सं० ] ( काव्य ) जिसमें यतिभंग दोष हो।

**यती**—संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "यति"।

**यतीम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] जिसके माता-पिता न हों। अनाथ।

**यतीमखाना**—संज्ञा पुं० [अ० फ़ा०] अनाथालय।

**यत्किंचित्**—क्रि० वि० [ सं० ] थोड़ा। कुछ।

**यत्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. न्याय में रूप आदि २४ गुणों के अंतर्गत एक गुण। २. उद्योग। कोशिश। ३. उपाय। तदबीर। ४. रक्षा का आयोजन। हिफ़ाजत।

**यत्नवान्**—वि० [ सं० यत्नवत् ] यत्न करनेवाला।

**यत्र**—क्रि० वि० [ सं० ] जिस जगह। जहाँ।

**यत्रतत्र**—क्रि० वि० [ सं० ] १. जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। २. जगह जगह।

**यथा**—अव्य० [ सं० ] जिस प्रकार। जैसे।

**यथाक्रम**—क्रि० वि० [ सं० ] तरतीबवार। क्रमशः। क्रमानुसार।

**यथातथ्य**—अव्य० [ सं० ] [ भाव० यथातथ्यता ] ज्यों का त्यों। हूब-हू। जैसा हो, वैसा ही।

**यथानुक्रम**—क्रि० वि० दे० "यथाक्रम"।

**यथापूर्व**—अव्य० [ सं० ] १. जैसा पहले था, वैसा ही। २. ज्यों का त्यों।

**यथामति**—अव्य० [ सं० ] बुद्धि के अनुसार। समझ के मुताबिक।

**यथायथ**—क्रि० वि० [ सं० ] जैसा चाहिए, वैसा। वि० पूर्ववर्त्तियों का अनुयायी।

**यथायोग्य**—अव्य० [ सं० ] जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त। मुनासिब।

**यथारथ***—अव्य० दे० "यथार्थ"।

**यथार्थ**—अव्य० [ सं० ] १. ठीक। वाजिब। उचित। २. जैसा होना

चाहिए, वैसा।

**यथार्थता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सच्चाई। सत्यता।

**यथार्थतः**—अव्य० [सं०] यथार्थ में। सचमुच।

**यथार्थवादी**—संज्ञा पुं० [सं०] यथार्थ या सत्य कहनेवाला। सत्यवादी।

**यथालाभ**—वि० [सं०] जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर।

**यथावत्**—अव्य० [सं०] १. ज्यों का त्यों। जैसा था, वैसा ही। २. जैसा चाहिए, वैसा। ३. अच्छी तरह।

**यथाविधि**—अव्य० [सं०] विधि के अनुसार ठीक।

**यथाशक्ति**—अव्य० [सं०] सामर्थ्य के अनुसार। जितना हो सके। भरसक।

**यथाशक्य**—अव्य० दे० "यथाशक्ति"।

**यथासंभव**—अव्य० [सं०] जहाँ तक हो सके।

**यथासाध्य**—अव्य० दे० "यथाशक्ति"।

**यथेच्छ**—अव्य० [सं०] इच्छा के अनुसार। मनमाना।

**यथेच्छाचार**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० यथेच्छाचारी] जो जी में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।

**यथेच्छित**—वि० दे० "यथेच्छ"।

**यथेष्ट**—वि० [सं०] जितना इष्ट हो, जितना चाहिए, उतना। काफी। पूरा।

**यथोक्त**—अव्य० [सं०] जैसा कहा गया हो।

**यथोचित**—वि० [सं०] मुनासिब। ठीक।

**यदपि***—अव्य० दे० "यद्यपि"।

**यदा**—अव्य० [सं०] १. जिस समय जिस वक्त। जब। २. जहाँ।

**यदाकदा**—अव्य० [सं०] कभी कभी।

**यदि**—अव्य० [सं०] अगर। जो।

**यदिचेत्**—अव्य० [सं०] यद्यपि। अगरचे।

**यदु**—संज्ञा पुं० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का बड़ा पुत्र।

**यदुनंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

**यदुपति**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**यदुराई**—संज्ञा पुं० दे० "यदुराज"।

**यदुराज**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**यदुवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा यदु का कुल। यदु का खानदान।

**यदुवंशमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

**यदुवंशी**—संज्ञा पुं० [सं० यदुवंशिन्] यदुकुल में उत्पन्न। यदुकुल के लोग। यादव।

**यद्यपि**—अव्य० [सं०] अगरचे। हरचंद।

**यदृच्छया**—क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। २. दैवसंयोग से। ३. मनमाने तौर पर।

**यदृच्छा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्वेच्छाचार। २. आकस्मिक संयोग।

**यद्वातद्वा**—क्रि० वि० [सं०] कभी कभी।

**यम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "यमज"। २. भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं। ३. मन, इंद्रिय आदि को वश या रोक में रखना। निग्रह। ४. चित्त को धर्म में स्थित रखनेवाले कर्मों का साधन। ५. दो की संख्या।

**यमक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का शब्दालंकार या अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न भिन्न होते हैं। २. एक वृत्त।

**यमकातर**—संज्ञा पुं० [सं० यम + हिं० कातर] १. यम का छुरा या खाँड़ा। २. एक प्रकार की तलवार।

**यमघंट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दुष्ट योग जो कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है। २. दीपावली का दूसरा दिन।

**यमज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चों का जोड़ा। जौंआँ। २. अश्विनीकुमार।

**यमदग्नि**—संज्ञा पुं० दे० "जमदग्नि"।

**यमद्वितीया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाई दूज।

**यमधार**—संज्ञा पुं० [सं०] वह तलवार जिसमें दोनों ओर धार हो।

**यमन***—संज्ञा पुं० दे० "यवन"।

**यमनाह***—संज्ञा पुं० [सं० यमनाथ] यमराज।

**यमनिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।

**यमपुर**—संज्ञा पुं० दे० "यमलोक"।

**यमपुरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमलोक।

**यम-यातना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नरक की पीड़ा। २. मृत्यु के समय की पीड़ा।

**यमराज**—संज्ञा पुं० [सं०] यमों के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।

**यमल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. युग्म। जोड़। २. यमज।

**यमलार्जुन**—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव

जो नारद के शाप से पेड़ हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।

**यमलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं। यमपुरी।

**यमानुजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

**यमालय**—संज्ञा पुं० [सं०] यमपुर।

**यमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी होकर बही।

**यमुना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. यम की बहन यमी। ३. उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी।

**ययाति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।

**यव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जौ नामक अन्न। २. १२ सरसों या एक जौ को तौल। ३. एक नाप जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ४. सामुद्रिक के अनुसार जौ के आकार की एक प्रकार की रेखा जो उँगली में होती है। ( शुभ )

**यवद्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जावा द्वीप।

**यवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० यवनी ] १. यूनान देश का निवासी। यूनानी। २. मुसलमान। ३. कालयवन नामक राजा।

**यवनानी**—वि० [ सं० ] यवन देश संबंधी।

**यवनाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जुआर।

**यवनिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाटक का परदा।

**यवमती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्ण वृत्त।

**यश**—संज्ञा पुं० [ सं० यशस् ] १. नेकनामी। कीर्ति। सुख्याति। २. बड़ाई। प्रशंसा।

**मुहा०**—यश गाना=१. प्रशंसा करना। २. एहसान मानना। यश मानना= कृतज्ञ होना।

**यशब, यशम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी नादली बनती है।

**यशस्वी**—वि० [ सं० यशस्विन् ] [ स्त्री० यशस्विनी ] जिसका खूब यश हो। कीर्तिमान्।

**यशी**—वि० [ सं० यश+ई (प्रत्य०)] यशस्वी।

**यशील***—वि० दे० "यशस्वी"।

**यशुमति**—संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

**यशोदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। २. एक वर्णवृत्त।

**यशोधरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।

**यशोमति** संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

**यष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लाठी। छड़ी। लकड़ी। २. टहनी। शाखा। डाल। ३. जेठी मधु। मुलेठी।

**यष्टिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छड़ी। लकड़ी।

**यह**—सर्व० [ सं० इदं ] एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता को छोड़कर निकट के और सब मनुष्यों तथा पदार्थों के लिए होता है।

**यहाँ**—क्रि० वि० [ सं० इह ] इस स्थान में। इस जगह पर।

**यहि**—सर्व० वि० [ हिं० यह ] १. 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिंदी में उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। २. 'ए' का विभक्तियुक्त रूप इसको।

**यही**—अव्य० [ हिं० यह + ही (प्रत्य०) ] निश्चित रूप से यह। यह ही।

**यहूद**—संज्ञा पुं० [ इब्रानी ] वह देश जहाँ हजरत ईसा पैदा हुए थे।

**यहूदी**—संज्ञा पुं० [ हिं० यहूद ] [ स्त्री० यहूदिन ] यहूद देश का निवासी।

**याँ**—क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

**यांत्रिक**—वि० [ सं० ] यंत्र संबंधी।

**यांत्रीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यंत्रों आदि से युक्त सज्जित करना।

**या**—अव्य० [ फ़ा० ] अथवा। वा। सर्व०, वि० 'यह' का वह रूप जो उसे व्रजभाषा में कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।

**याकी**—वि० दे० "एक"।

**याक**—संज्ञा पुं० दक्षिण अमरीका का पहाड़ों पर का ऊल के समान पशु।

**याकूत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। लाल।

**याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ।

**याचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जो माँगता हो। माँगनेवाला। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

**याचना**—क्रि० स० [ सं० याचन ] [ वि० याच्य, याचक, याचित ] पाने के लिये विनती करना। माँगना। संज्ञा स्त्री० माँगने की क्रिया।

**याचित**—वि० [ सं० ] माँगा हुआ।

**याजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ करनेवाला।

**याजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ की क्रिया।

**याजी**—वि० दे० "याजक"।

**याज्ञवल्क्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध ऋषि जो वैशंपायन के

शिष्य थे। वाजसनेय। २. एक ऋषि। योगीश्वर याज्ञवल्क्य। ३. योगप्रवर याज्ञवल्क्य के वंशधर एक स्मृतिकार।

**याज्ञिक** संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ करने या करानेवाला।

**यातना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तकलीफ। पीड़ा। २. वह पीड़ा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।

**याता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यातृ ] पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।

**यानायात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गमनागमन। आना जाना। आमदरफ्त।

**यातुधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राक्षस।

**यात्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया। सफर। २. प्रयाण। प्रस्थान। ३. दर्शनार्थ देवस्थानों को जाना। तीर्थाटन।

**यात्रावाल**—संज्ञा पुं० [ सं० यात्रा + हिं० वाल ( प्रत्य० ) ] वह पंडा जो यात्रियों का देव-दर्शन कराता हो।

**यात्री**—संज्ञा पुं० [ सं० यात्रा ] १. यात्रा करनेवाला। मुसाफिर। २ तीर्थाटन के लिए जानेवाला।

**याथातथ्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यथातथ्य होने का भाव। ज्यों का त्यों होना।

**याद**—संज्ञा स्त्री० [फा० ] १. स्मरण-शक्ति। स्मृति। २. स्मरण करने की क्रिया।

**यादगार, यादगारी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] स्मृति-चिह्न।

**याददाश्त**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. स्मरणशक्ति। स्मृति। २. स्मरण रखने के लिए लिखी हुई कोई बात।

**यादव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० यादवी ] १. यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।

**यादृश**—वि० [ सं० ] जिस तरह का। जैसा।

**यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गाड़ी, रथ आदि सवारी। वाहन। २. विमान। आकाशयान। ३. शत्रु पर चढ़ाई करना।

**यानी, याने**—अव्य० [अ०] अर्थात्।

**यापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० यापित, याप्य ] १. चलाना। वर्तन। २.व्यतीत करना। बिताना। ३ मिटाना।

**यापना**—संज्ञा स्त्री० दे० "यापन"।

**याबू**—संज्ञा पुं० [फा०] छोटा घोड़ा। टट्टू।

**याम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तीन घंटे का समय। पहर। २. एक प्रकार के देवगण। ३. काल। समय।

संज्ञा स्त्री० [ सं० यामि] रात।

**यामल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यमज संतान। जोड़ा। २. एक प्रकार का तंत्र ग्रंथ।

**यामिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रात। रात्रि।

**याम्य**—वि० [ सं० ] १. यम-संबंधी। यम का। २. दक्षिण का।

**याम्योत्तर दिगंश**—संज्ञा पुं० [सं०] लंबांश। दिगंश। ( भूगोल, खगोल)

**याम्योत्तर रेखा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर मानी गई है।

**यायावर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो एक जगह टिककर न रहता हो। २. संन्यासी। ३. ब्राह्मण। ४. अश्वमेध का घोड़ा।

**यार**—संज्ञा पुं० [ फा० ] १. मित्र। दोस्त। २. उपपति। जार।

**यारबाश**—वि० [ फा० ] [ भाव० यारबाशी ] यार दोस्तों में प्रसन्नता से समय बितानेवाला।

**याराना**—संज्ञा पुं० [फा०] मित्रता। मैत्री।

वि० मित्र का सा। मित्रता का।

**यारी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. मित्रता। २. स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।

**यावज्जीवन**—क्रि० वि० [ सं० ] जब-तक जीवन रहे। जीवन भर।

**यावत्**—अव्य० [ सं० ] १. जब तक जिस समय तक। २. सब। कुल।

**यावनी**—वि० [ सं० ] यवन-संबंधी।

**यासु**—सर्व० दे० "जासु"।

**यास्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

**याहि**—सर्व० [ हिं० या+हि ] इसको। इसे।

**युंजन**—क्रि० अ० [ सं० ] कर्मों से जुड़ना।

**युंजान**—संज्ञा पुं० [सं० ] वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो, पर मुक्त न हुआ हो।

**युक्त**—वि० [ सं० ] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. मिलित। सम्मिलित। ३. नियुक्त। मुकर्रर। ४. संयुक्त। साथ। ५. उचित। ठीक। वाजिब।

**युक्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दो नगण और एक मगण का एक वृत्त।

**युक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. उपाय। ढंग। तरकीब। २. कौशल। चातुरी। ३. चाल। रीति। प्रथा। ४. न्याय। नीति। ५. तर्क। ऊहा। ६. उचित विचार। ठीक तर्क। ७.योग। मिलन। ८. एक अलंकार जिसमें अपने मर्म को छिपाने के लिए दूसरे को किसी

क्रिया या युक्ति द्वारा सिद्ध करने का वर्णन होता है। ५. केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।

**युक्तियुक्त** वि० [सं०] उपयुक्त तर्क के अनुकूल। युक्ति-संगत। ठीक। वाजिब।

**युगंधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कूबर। हरस। २. गाड़ी का बम। ३. एक पर्वत।

**युग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जोड़ा। युग्म। २. जुआ। जुआठा। ३. पाँसे के खेल का गोटी गोटियाँ। ४. पाँसे के खेल की वे दो गोटियाँ जो एक घर में साथ आ बैठती हैं। ५. बारह वर्ष का काल। ६. समय। काल। ७. पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये संख्या में चार माने गए हैं, सतयुग, त्रेता द्वापर और कलियुग।

**मुहा०**—युग युग=बहुत दिनों तक। युगधर्म=समय के अनुसार चाल या व्यवहार।

**युगति**—संज्ञा स्त्री० दे० "युक्ति"।

**युगपत्**—अव्य० [सं०] साथ साथ।

**युगपुरुष**—संज्ञा पुं० [सं०] अपने समय का बहुत बड़ा आदमी।

**युगल**—संज्ञा पुं० दे० "युग्म"।

**युगल**—संज्ञा पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।

**युगांत**—संज्ञा पुं० [सं०] युग का अंत।

**युगांतर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूसरा युग। २. दूसरा समय। और जमाना।

**मुहा०**—युगांतर उपस्थित करना=किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना।

**युगादा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह तिथि जिसमें किसी युग का आरम्भ हुआ हो।

**युग्म, युग्मक**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० युग्मता] १. जोड़ा। युग। २. द्वंद्व। ३. मिथुन राशि।

**युग्मज**—संज्ञा पुं० दे० "यमज"।

**युत**—वि० [सं०] १. युक्त। सहित। २. मिला हुआ। मिलित।

**युति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] योग। मिलाप।

**युद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई। संग्राम। रण।

**मुहा०**—युद्ध माँडना=लड़ाई ठानना।

**युद्ध-पोत**—संज्ञा पुं० [सं०] लड़ाई का जहाज।

**युद्ध-मंत्री**—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का वह मंत्री जिसके जिम्मे युद्ध-विभाग हो।

**युद्धमान**—वि० [सं०] युद्ध करनेवाला।

**युधाजित्**—संज्ञा पुं० [सं०] भरत के मामा और कैकेयी के भाई का नाम।

**युधिष्ठिर**—संज्ञा पुं० [सं०] पाँच पांडवों में एक जो सबसे बड़े और बहुत धर्मपरायण थे।

**युयुत्सा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध करने की इच्छा। २. शत्रुता। विरोध।

**युयुत्सु**—वि० [सं०] लड़ने की इच्छा रखनेवाला। जो लड़ना चाहता हो।

**युयुधान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. क्षत्रिय। ३. योद्धा।

**युरोप**—संज्ञा पुं० [अं०] पूर्वी गोलार्द्ध का एक महाद्वीप जो एशिया के पश्चिम में है।

**युरोपियन**—वि० [सं०] १. युरोप का। २. युरोप का रहनेवाला।

**युरोपीय**—वि० [अं० युरोप] १. युरोप का। २. युरोप का रहनेवाला।

**युवक**—संज्ञा पुं० [सं०] सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य। जवान। युवा।

**युवति, युवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान स्त्री।

**युवनाश्व**—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा जो प्रसेनजित् का पुत्र था।

**युवराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० युवराज] युवराज का पद।

**युवराज**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० युवराज्ञी] राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जिसे आगे चलकर राज्य मिलनेवाला हो।

**युवराजी**—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराज + ई (प्रत्य०)] युवराज का पद। यौवराज्य।

**युवरानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० युवराज्ञी] युवराज की पत्नी।

**युवा**—वि० [सं० युवन्] [स्त्री० युवती] जवान युवक।

**यूँ**—अव्य० दे० "यों"।

**यूत**—संज्ञा पुं० [सं० यूति] मिलावट। मेल।

**यूथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। गरोह। २. दल। ३. सेना। फौज।

**यूथप, यूथपति**—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

**यूथिका**—संज्ञा स्त्री० [ जूही का फूल।

**यूनान**—संज्ञा पुं० [ग्रीक आयोनिया] यूरोप का एक प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिए प्रसिद्ध था।

**यूनानी**—वि० [यूनान + ई (प्रत्य०)] यूनान देश संबंधी। यूनान का।

संज्ञा स्त्री० १. यूनान देश की भाषा। २. यूनान देश का निवासी। ३. यूनान देश की चिकित्सा प्रणाली। हकीमी।

**यूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यज्ञ में वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।

**यूआ**—संज्ञा पुं० [ सं० द्यूत ] जूआ। द्यूतकर्म।

**यूह**—संज्ञा पुं० [ सं० यूथ ] समूह। झुंड।

**ये**—सर्व० [ हिं० यह का बहु० ] यह सब।

**येई**—सर्व० [ हिं० यह + ई (प्रत्य०)] यही।

**येऊ**—सर्व० [ हिं० ये + ऊ (प्रत्य०)] यह भी।

**येतो**—वि० दे० "एतो"।

**येन-केन-प्रकारेण**—क्रि० वि० [सं०] जैसे तैसे। किसी तरह से।

**येहु**—अव्य० [ हिं० यह + हु ] यह भी।

**यों**—अव्य० [ सं० एवमेव ] इस तरह पर। इस भाँति। ऐसे।

**योंही**—अव्य० [ हिं० यों ही ] १. इसी प्रकार से। ऐसे ही। २. बिना काम। व्यर्थ ही। ३. बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।

**योग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलना। संयोग। मेल। २. उपाय। तरकीब। ३. ध्यान। ४. संगति। ५. प्रेम। ६. छल। धोखा। दगाबाजी। ७ प्रयोग। ८. औषध। दवा ९. धन। दौलत। १०. लाभ। फायदा। ११. कोई शुभ काल। १२. नियम। कायदा। १३. साम, दाम, दंड और भेद ये चारो उपाय। १४. संबंध। १५. धन और संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। १६. तप और ध्यान। वैराग्य। १७. गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़। १८. एक प्रकार का छंद। १९. सुभीता। जुगाड़। तार-घात। २०. फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर। २१. मुक्ति या मोक्ष का उपाय। २२. दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना। २३. छः दर्शनों में से एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन होने का विधान है।

**योगक्षेम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नया पदार्थ प्राप्त करना और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना। २. जीवन-निर्वाह। गुजारा। ३. कुशल-मंगल। खैरियत। ४. राष्ट्र की सुव्यवस्था। मुल्क का अच्छा इंतजाम।

**योगतत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उपनिषद्।

**योगत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] योग का भाव।

**योगदर्शन**—संज्ञा पुं० दे० "योग" (२३)।

**योग-दान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी काम म साथ देना।

**योगनिद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो युग मानी जाती है।

**योगफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या।

**योगबल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त हो। तपोबल।

**योगमाया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भगवती। २. वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मारडाला था।

**योग-रूढ़**—वि० [ सं० ] (यौगिक शब्द) जो अपना मूल और व्याकरण-सिद्ध अर्थ छोड़कर किसी और अर्थ में प्रचलित हो गया हो।

**योगरूढ़ि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे।

**योगवाशिष्ठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदांत शास्त्र का वशिष्ठ कृत एक प्रसिद्ध ग्रंथ।

**योगशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पतंजलि ऋषि-कृत योग-साधन पर एक दर्शन जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए हैं।

**योगसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महर्षि पतंजलि के बनाए हुए योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह।

**योगांजन**—संज्ञा पुं० दे० "सिद्धांजन"।

**योगात्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० योगात्मन् ] योगी।

**योगाभ्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।

**योगाभ्यासी**—संज्ञा पुं० [ सं० योगाभ्यासिन् ] योगी।

**योगासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] योग-साधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग।

**योगिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रण-पिशाचिनी। २. योगाभ्यासिनी। तपस्विनी। ३. ये आठ विशिष्ट देवियाँ शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंद-माता, कालरात्रि, चंडिका, कूष्मांडी, कात्यायनी और महागौरी। ४. देवी। योगमाया।

**योगिराज, योगींद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत बड़ा योगी।

**योगी**—संज्ञा पुं० [ सं० योगिन् ] १. आत्मज्ञानी । २. वह जिसने योगाभ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो । ३. महादेव । शिव ।

**योगीश, योगीश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत बड़ा योगी । २. याज्ञवल्क्य ।

**योगीश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा ।

**योगेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत बड़ा योगी ।

**योगेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रीकृष्ण । २. शिव । ३. बहुत बड़ा योगी । सिद्ध ।

**योगेश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा ।

**योग्य**—वि० [ सं० ] १. ठीक ( पात्र ) । काबिल । लायक । अधिकारी । २. श्रेष्ठ । अच्छा । ३ युक्ति भिड़ानेवाला । उपायी । ४. उचित । मुनासिब । ठीक । ५. आदरणीय । माननीय ।

**योग्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. क्षमता । लायकी । २. बड़ाई । ३. बुद्धिमानी । लियाकत । ४. सामर्थ्य । ५. अनुकूलता । मुनासिबत । ६. औकात । ७. गुण । ८. इज्जत । ९. उपयुक्तता ।

**योजक**—वि० [ सं० ] मिलाने या जोड़नेवाला ।

**योजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परमात्मा । २. योग । ३. संयोग । मिलान । योग । ४. दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती है ।

**योजनगंधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] व्यास की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती ।

**योजना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० योजनीय, योज्य, योजित ] १. नियुक्त करने की क्रिया । नियुक्ति । २. प्रयोग । व्यवहार । ३. जोड़ । मिलान । मेल । ४. बनावट । रचना । ५. भावी कार्यों की व्यवस्था । आयोजन ।

**योजनीय, योज्य**—वि० [ सं० ] योजना करने के योग्य ।

**योद्धा**—संज्ञा पुं० [ सं० योद्धृ ] वह जो युद्ध करता हो । सिपाही ।

**योनि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. आकर । खानि । २. उत्पत्ति-स्थान । उद्गम । ३ स्त्रियों की जननेंद्रिय । भग । ४. प्राणियों के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी संख्या ८४ लाख कही गई है । ५. देह । शरीर ।

**योनिज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो ।

**योषिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्त्री । औरत ।

**यौं***†—अव्य० दे० "यों"।

**यौ***†—सर्व० [ हिं० यह ] यह ।

**यौक्तिक**—वि० [ सं० ] १. युक्तिसंबंधी । २. युक्ति युक्त ।

**यौगंधर**—संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रों को निष्फल करने का एक प्रकार का अस्त्र ।

**यौगंधरायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उदयन का एक प्रसिद्ध महामंत्री ।

**यौगिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिला हुआ । २. प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द । ३. दो शब्दों से मिलकर बना हुआ शब्द । ४. अट्ठाईस मात्राओं के छंदों की संज्ञा ।

**यौतक, यौतुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो । दाइजा । जहेज । दहेज ।

**यौद्धिक**—वि० [ सं० ] युद्ध-संबंधी ।

**यौधेय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. योद्धा । २ एक प्राचीन देश का नाम । ३. प्राचीन काल की एक योद्धा जाति ।

**यौवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरांत और वृद्धावस्था के पहले होता है । २. युवा होने का भाव । जवानी । ३ दे० "जोबन"।

**यौवराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. युवराज होने का भाव । २. युवराज का पद ।

**यौवराज्याभिषेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अभिषेक तथा उत्सव जो किसी के युवराज बनाए जाने के समय हो ।

—:o:—

# र

**र**—हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पर्श कराने से होता है।

**रंक**—वि॰ [ सं॰ ] १. धनहीन। गरीब। दरिद्र। २. कृपण। कंजूस। ३. सुस्त।

**रंग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. राँगा नामक धातु। २. नृत्य गीत आदि। नाचना-गाना। ३. वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। ४. युद्धस्थल। रणक्षेत्र। ५. आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखों से ही होता है। वर्ण। जैसे—लाल, काला। ६. वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रँगने के लिए होता है। ७. बदन और चेहरे की रंगत। वर्ण।

मुहा॰—(चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना=भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाता रहना। कांतिहीन होना। रंग निखरना=चेहरा साफ और चमकदार होना। रंग बदलना=क्रुद्ध होना। नाराज होना।

८. जवानी। युवावस्था।

मुहा॰—रंग चूना या टपकना=युवावस्था का पूर्ण विकास होना। यौवन उमड़ना।

९. शोभा। १०. प्रभाव। सौंदर्य। असर।

मुहा॰—रंग जमना= प्रभाव या असर पड़ना।

११. गुण या महत्त्व का प्रभाव। धाक।

मुहा॰—रंग जमाना या बाँधना=प्रभाव डालना। रंग लाना=प्रभाव या गुण दिखलाना।

१२. क्रीड़ा। कौतुक। आनंद-उत्सव।

यौ॰—रंग-रलियाँ=आमोद-प्रमोद। मौज।

मुहा॰—रंग रचना=आमोद-प्रमोद करना। रंग में भंग पड़ना=आनंद में विघ्न पड़ना।

१३. युद्ध। लड़ाई। समर।

मुहा॰ रंग मचाना=रण में खूब युद्ध करना।

१४. मन की उमंग या तरंग। मौज। १५. आनंद। मजा।

मुहा॰ रंग जमना=आनन्द का पूर्णता पर आना। खूब मजा होना। रंग मचाना=धूम मचाना। रंग रचाना=उत्सव करना।

१६. दशा। हालत। १७. अद्भुत व्यापार। कांड। दृश्य। १८ प्रसन्नता। कृपा। दया। १९. प्रेम। अनुराग। २०. ढंग। चाल। तर्ज।

यौ॰—रंग-ढंग=१. दशा। हालत। २. चाल-ढाल। तौर तरीका। ३. व्यवहार। बरताव। ४. लक्षण।

मुहा॰—रंग काछना=ढंग अख्तियार करना।

२१. भाँति। प्रकार। तरह। २२. चौपड़ की गोटियों के दो कृत्रिम विभागों में से एक।

मुहा॰—रंग मारना=बाजी जीतना। विजय पाना।

**रंगक्षेत्र**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रंगभूमि"।

**रंगत**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रंग + त (प्रत्य॰) ] १. रंग का भाव। २. मजा। आनंद। ३. हालत। दशा। अवस्था।

**रंगतरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रंग ] एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी। संगतरा।

**रंगना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रंग + ना (प्रत्य॰) ] १. रंग में डुबाकर किसी चीज को रंगीन करना। २. कागज आदि पर कुछ लिखना। ३. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ४ अपने अनुकूल करना।

क्रि॰ अ॰ किसी पर आसक्त होना

**रंगबत्ती**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रंग + बत्ती ] शरीर पर मलने के लिए सुगंधित द्रव्यों की बत्ती।

**रंगबिरंगा**—वि॰ [ हिं॰ रंगबिरंग ] १. अनेक रंगों का। चित्रित। २. तरह तरह का।

**रंगभवन**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रंगमहल"।

**रंगभूमि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. वह स्थान जहाँ कोई जलसा हो। २. खेल या तमाशे का स्थान। ३. नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला। रंगस्थल। ४. अखाड़ा। रणभूमि। ५. युद्धक्षेत्र।

**रंगमंडप**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रंगभूमि"।

**रंगमहल**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रंग + अ॰ महल ] भोग-विलास करने का स्थान।

**रंगमार**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रंग +

मारना ] ताश का एक खेल।

**रंग-रली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रंग+रलना ] आमोद-प्रमोद। आनंद। क्रीड़ा चैन।

**रंगरस**—संज्ञा पुं० दे० "रंगरली"।

**रंगरसिया**—संज्ञा पुं० [हिं० रंग+रसिया ] भोग-विलास करनेवाला। विलासी पुरुष।

**रंगराता**—वि० [ हिं० रंग+राता ] अनुरागपूर्ण।

**रँगरूट**—संज्ञा पुं० [ अं० रिक्रूट ] १. सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही। २. किसी काम में पहले पहल हाथ डालनेवाला आदमी।

**रँगरेज**—संज्ञा पुं० [फ़ा० ] [ स्त्री० रँगरेजिन ] वह जो कपड़े रँगने का काम करता हो।

**रँगरेली**—संज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली"।

**रँगवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "रँगाई"।

**रँगवाना**—क्रि० स० [ हिं० रँगना का प्रेर० रूप ] रँगने का काम दूसरे से कराना।

**रंगशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नाटक खेलने का स्थान। नाट्यशाला।

**रंगसाज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ भाव० रंगसाजी ] १. वह जो चीजों पर रंग चढ़ाता हो। २. रंग बनानेवाला।

**रँगाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रंग+आई ( प्रत्य० ) ] रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**रँगाना**—क्रि० स० दे० "रँगवाना"।

**रँगावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रंग ] रँगने का भाव।

**रंगी**—वि० [ हिं० रंग+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० रंगिणी, रंगिनी ] १. आनंदी। मौजी। विनोदशील। २. रंगवाला।

**रंगीन**—वि० [ फ़ा० ] [ भाव० संज्ञा रंगीनी ] १ रँगा हुआ। रंगदार। २. विलास-प्रिय। आमोद प्रिय। ३. चमत्कारपूर्ण। मजेदार।

**रँगीला**—वि० [ हिं० रंग +ईला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० रँगीली ] १. आनंदी। रसिया। रसिक। २ सुंदर। खूबसूरत। ३. प्रेमी।

**रंगोपजीवी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अभिनेता। नट।

**रंच, रंचक***—वि० [ सं० न्यंच ] थोड़ा। अल्प।

**रंज**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ वि० रंजीदा ] १ दुःख। खेद। २. शोक। संज्ञा स्त्री० [ हिं० रंज=अहा] १ थोड़ी सी बारूद जो बत्ता लगाने के वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है। २. वह बात जो किसी को भड़काने के लिए कही जाय।

**रंजक**—वि० [ सं० ] १ रँगनेवाला। जो रँगे। २. प्रसन्न करनेवाला।

**रंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० रंजनीय ] १. रँगने की क्रिया। २. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। ३. लाल चंदन। ४. छप्पय छंद का पचासवाँ भेद।

वि० [ स्त्री० रंजिनी ] मन प्रसन्न करनेवाला। ( यौ० के अंत में )

**रंजना***—क्रि० स० [ सं० रंजन ] १. प्रसन्न करना। आनंदित करना। २. भजना। स्मरण करना। ३. रँगना।

**रंजित**—वि० [ सं० ] १. रँगा हुआ। २. आनंदित। प्रसन्न। ३. अनुरक्त।

**रंजिश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. रंज होने का भाव। २. मन-मुटाव। ३. शत्रुता।

**रंजीदा**—वि० [फ़ा०] [ भाव० संज्ञा रंजीदगी ] १. जिसे रंज हो। दुःखित। २. नाराज।

**रंडा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] राँड़। विधवा।

**रँडापा**—संज्ञा पुं० [ हिं० राँड़+आपा (प्रत्य०) ] विधवा की दशा। वैधव्य। बेवापन।

**रंडी**—संज्ञा स्त्री [सं० रंडा] वेश्या। कसबी।

**रंडीबाज**—वि० [ हिं० रंडी+फ़ा० बाज ] [ संज्ञा रंडीबाजी ] वेश्यागामी।

**रँडुआ, रँडुवा**—संज्ञा पुं० [हिं० राँड़ +उआ (प्रत्य०) ] वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो।

**रंता***—वि० [ सं० रत ] अनुरक्त।

**रंति**—संज्ञा स्त्री० [सं०]क्रीड़ा। केली।

**रंध्र**—संज्ञा पुं० [ सं० रंध्र ] १. रोशनदान। २. किले की दीवारों का वह मोखा जिसमें से बंदूक या तोप चलाई जाती है। मार।

**रँदना**—क्रि० स० [ हिं० रंदा+ना (प्रत्य०) ] रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना।

**रंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० रदन=काटना, चीरना ] एक औजार जिससे लकड़ी की सतह छीलकर चिकनी की जाती है।

**रंधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० रंधित, रंधक ] रसोई बनाना।

**रंध्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छेद। सूराख।

**रंभ**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. बाँस। २. एक प्रकार का बाण। ३. भारी शब्द।

**रंभण**—संज्ञा पुं० [सं०] गले लगाना। आलिंगन।

**रंभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. केला। २. गौरी। ३. उत्तर दिशा। ४.

मेनका। ९. पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा।

संज्ञा पुं० [सं० रंभ] लोहे का वह मोटा भारी डंडा जिससे दीवारों आदि को खोदते हैं।

**रँभाना**—क्रि० अ० [सं० रंभण] गाय का बोलना। गाय का शब्द करना।

**रँहचटा**—संज्ञा पुं० [हिं० रहस+चाट] मनोरथसिद्धि की लालसा। लालच। चस्का।

**र**—संज्ञा पुं० [सं०] . पावक। अग्नि। २. कामाग्नि। ३ सितार का एक बोल।

**रअय्यत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।

**रइकौ***†—क्रि० वि० [हिं० रची+कौ (प्रत्य०)] जरा भी। तनिक भी। कुछ भी।

**रइनि***†—संज्ञा स्त्री० [सं० रजनी] रात।

**रई**—संज्ञा स्त्री० [सं० रय] मथानी। खैलर।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रवा] १. दरदरा आटा। २. सूजी। ३. चूर्णमात्र।

वि० स्त्री० [सं० रंजन] १. डूबी हुई। पगी हुई। २. अनुरक्त। ३. युक्त। सहित। संयुक्त। ४. मिली हुई।

**रईस**—संज्ञा पुं० [अ०] [भाव० रईसी] १. जिसके पास रियासत या इलाका हो। तअल्लुकेदार। २. बड़ा आदमी। अमीर। धनी।

**रउताई***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावत+आई (प्रत्य०)] मालिक होने का भाव। स्वामित्व।

**रउरे**†—सर्व० [हिं० राव, रावल] मध्यम पुरुष के लिए आदर-सूचक शब्द। आप। जनाब।

**रकछा**†—संज्ञा पुं० [हिं० रिकवँच] पत्तों की पकौड़ी। पतौड़।

**रकत***—संज्ञा पुं० [सं० रक्त] लहू। खून।

वि० लाल। सुर्ख।

**रकतांक***—संज्ञा पुं० [सं० रक्तांग] १ प्रवाल। मूँगा। (डिं०) २. केसर। ३. लाल चंदन।

**रकबा**—संज्ञा पुं० [अ०] क्षेत्रफल।

**रकबाहा**—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़ों का एक भेद

**रकम**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लिखने की क्रिया या भाव। २. छाप। मोहर। ३. धन। संपत्ति। दौलत। ४. गहना। जेवर। ५. चालाक। धूर्त्त। ६. प्रकार। तरह।

**रकाब**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] घोड़े की काठी का पावदान जिसमें बैठने में सहारा लेते हैं।

**मुहा०**—रकाब पर या में पैर रखना= चलने के लिए बिलकुल तैयार होना।

**रकाबदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १ हलवाई। २. खानसामा। ३. साईस।

**रकाबी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] एक प्रकार की छिछली छोटी थाली। तश्तरी।

**रकीब**—संज्ञा पुं० [अ०] प्रेमिका का दूसरा प्रेमी। सपत्न।

**रक्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लाल रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो शरीर की नसों आदि में से होकर बहा करता है। लहू। रुधिर। खून। २. कुंकुम। केसर। ३ ताँबा। ४. कमल। ५. सिंदूर। ६. शिंगरफ। ईंगुर। ७. लाल चंदन। ८. लाल रंग। ९ कुसुंभ।

वि० [सं०] १. रँगा हुआ। २. लाल। सुर्ख।

**रक्तकंठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोयल। २. भाँटा। बैंगन।

**रक्तकमल**—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

**रक्तचंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] लालचंदन।

**रक्तज**—वि० [सं०] रक्त के विकार के कारण उत्पन्न होनेवाला। (रोग)।

**रक्तता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

**रक्तपात**—संज्ञा पुं० [सं०] ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें लोग जख्मी हों। खून-खराबा।

**रक्तपायी**—वि० [सं० रक्तपायिन्] [स्त्री० रक्तपायिनी] रक्तपान करनेवाला। खून पीनेवाला।

**रक्तपित्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २. नाक से लहू बहना। नकसीर।

**रक्त-प्रदर**—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों का एक रोग।

**रक्तबीज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अनार। बीदाना। २. एक राक्षस जो शुंभ और निशुंभ का सेनापति था। कहते हैं कि युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थीं, उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।

**रक्तवृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना।

**रक्तस्राव**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी अंग से रक्त का बहना या निकलना।

**रक्तातिसार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अतिसार जिसमें लहू

के दस्त आते हैं।

**रक्ताभ**—वि० [सं०] लाल रंग की आभा से युक्त।

**रक्तार्श**—संज्ञा पुं० [सं० रक्तार्शस] वह बवासीर जिसमें मसों में से खून भी निकलता है। खूनी बवासीर।

**रक्तिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] घुँघची। रत्ती।

**रक्तिम**—वि० [सं०] लाल रंग का।

**रक्तिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

**रक्तोत्पल**—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

**रक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षक। रखवाला। २. रक्षा। हिफाजत। ३. छप्पय के सातवें भेद का नाम। संज्ञा पुं० [सं० रक्षस्] राक्षस।

**रक्षक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा करनेवाला। बचानेवाला। २. पहरेदार।

**रक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रक्षा करना। हिफाजत करना। २. पालन पोषण।

**रक्षणीय**—वि० [सं०] [स्त्री० रक्षणीया] जिसकी रक्षा करना उचित हो। रखने लायक।

**रक्षन***—संज्ञा पुं० दे० "रक्षण"।

**रक्षना***—क्रि० स० [सं० रक्षण] रक्षा करना।

**रक्षस***—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

**रक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाव। रक्षण। २. वह सूत्र आदि जो बालकों को भूत, प्रेत, नजर आदि से बचाने के लिए बाँधा जाता है।

**रक्षाइत***—संज्ञा पुं० [हिं० रक्षा + आइत (प्रत्य०)] रक्षक।

**रक्षागृह**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ प्रसूता प्रसव करे। सूतिकागृह। जच्चाखाना। २. हवाई हमलों आदि से बचने के लिए बना हुआ स्थान।

**रक्षाबंधन**—संज्ञा पुं० [सं०] हिन्दुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। सलोनो।

**रक्षामंगल**—संज्ञा पुं० [सं०] वह धार्मिक क्रिया जो भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के लिए की जाय।

**रक्षित**—वि० [सं०] [स्त्री० रक्षिता] १. जिसकी रक्षा की गई हो। हिफाजत किया हुआ। २. पाला पोसा। ३. रखा हुआ।

**रक्षित राज्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य की रक्षा में हो और जिसे स्वराज्य के बहुत ही परिमित अधिकार प्राप्त हों।

**रक्षिता**—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षित] रखी हुई स्त्री। रखेली।

**रक्षी**—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षस + ई (प्रत्य०)] राक्षसों के उपासक। राक्षस पूजनेवाले। संज्ञा पुं० दे० "रक्षक"।

**रक्ष्य**—वि० [सं०] रक्षा करने के योग्य।

**रक्ष्यमाण**—वि० [सं०] १. जिसकी रक्षा हो सके। २. जिसकी रक्षा होती है।

**रखना**—क्रि० स० [सं० रक्षण] १. किसी वस्तु पर या किसी वस्तु में स्थित करना। ठहराना। टिकाना। धरना। २. रक्षा करना। हिफाजत करना। बचाना।

यौ०—रख-रखाव=रक्षा। हिफाजत। ३. वृथा या नष्ट न होने देना। ४. संग्रह करना। जोड़ना। ५. सुपुर्द करना। सौंपना। ६. रेहन करना। बंधक में देना। ७. अपने अधिकार में करना। ८. मनोविनोद या व्यवहार आदि के लिए अपने अधिकार में करना। ९. नियत करना। १०. व्यवहार करना। धारण करना। ११. जिम्मे लगाना। मढ़ना। १२. ऋणी होना। कर्जदार होना। १३. मन में अनुभव या धारण करना। १४. स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना। उपपत्नी (या उपपति) बनाना।

**रखनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना + ई (प्रत्य०)] रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली। सुरैतिन।

**रखया**—वि० स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षा करनेवाली।

**रखला***—संज्ञा पुं० दे० "रहँकला"।

**रखवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना, या रखाना] १. खेतों की रखवाली। चौकीदारी। २. रखवाली की मजदूरी। ३. रखने या रखवाने की क्रिया या ढंग।

**रखवाना**—क्रि० स० [हिं० रखना का प्रे०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखाना।

**रखवार***—संज्ञा पुं० दे० "रखवाला"।

**रखवाला**—संज्ञा पुं० [हिं० रखना + वाला (प्रत्य०)] १. रक्षक। २. पहरेदार।

**रखवाली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना + वाली (प्रत्य०)] रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

**रखा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना] गौओं के लिए रक्षित भूमि। गोचरभूमि।

**रखाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना +

आई (प्रत्य० )] १. हिफ़ाज़त। रखवाली। २. रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

**रखाना**—क्रि० स० [हिं० रखना का प्रेर०] रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

क्रि० अ० रखवाली करना। रक्षा करना।

**रखिया***†—संज्ञा पुं० [हिं० रखना+इया (प्रत्य०)] १. रक्षक। २. रखनेवाला।

**रखीसर***—संज्ञा पुं० [सं० ऋषीश्वर] बहुत बड़ा ऋषि।

**रखेली**—संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।

**रखैया**†—संज्ञा पुं० दे० "रक्षक"।

**रखैल**—संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।

**रग**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शरीर में की नस या नाड़ी।

**मुहा०**—रग दबना=दबाव मानना। किसी के प्रभाव या अधिकार में होना। रग रग फड़कना=शरीर में बहुत अधिक उत्साह या आवेश के लक्षण प्रकट होना। रग रग में=सारे शरीर में।

२. पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।

संज्ञा स्त्री० [?] हठ। जिद।

**रगड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। २. वह चिह्न जो रगड़ने से उत्पन्न हो। ३. हुज्जत। झगड़ा। ४. भारी श्रम।

**रगड़ना**—क्रि० स० [सं० घर्षण या अनु०] १. घर्षण करना। घिसना। जैसे—चंदन रगड़ना। २. पीसना। ३. किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रम पूर्वक करना। ४. तंग करना।

क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।

**रगड़वाना**—क्रि० स० [हिं० रगड़ना का प्रेर० रूप] रगड़ने का काम दूसरे से कराना।

**रगड़ा**—संज्ञा पुं० [हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। रगड़। २. अत्यंत परिश्रम। ३. वह झगड़ा जो बराबर होता रहे।

**रगण**—संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है। (ऽ।ऽ)।

**रगत***—संज्ञा पुं० [सं० रक्त] रक्त। रुधिर।

**रगदना***—क्रि० स० दे० "रगेदना"।

**रग-पट्ठा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० रग+हिं० पट्ठा] शरीर के भीतरी भिन्न भिन्न अंग।

**रगबत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। ख्वाहिश।

**रगमगा***—संज्ञा पुं० [?] लीन।

**रगर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।

**रग-रेशा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० रग+रेशा] १. पत्तियों की नसें। २. शरीर के अंदर का प्रत्येक अंग।

**रगवाना***†—क्रि० स० [हिं० रगाना का प्रेर०] चुप कराना। शांत कराना।

**रगाना**†—क्रि० अ० [देश०] चुप होना।

क्रि० स० चुप कराना। शांत करना।

**रगीला**—वि० [हिं० रग] १. हठी। जिद्दी। २. दुष्ट। पाजी।

वि० [फ़ा० रग] जिसमें रगें हों।

**रगेद**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रगेदना] रगेदने की क्रिया या भाव।

**रगेदना**—क्रि० स० [सं० खेट, हिं० खेदना] भगाना। खदेड़ना। दौड़ाना।

**रघु**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और श्रीरामचन्द्र के परदादा थे।

**रघुकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा रघु का वंश।

**रघुनंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र।

**रघुनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र।

**रघुनायक**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र।

**रघुपति**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र।

**रघुराई***—संज्ञा पुं० [सं० रघुराज] श्रीरामचन्द्र।

**रघुराज**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र।

**रघुवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाराज रघु का वंश या खानदान। २. महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक महाकाव्य।

**रघुवंशी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रियों के अंतर्गत एक जाति।

**रघुवर**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचंद्र।

**रघुवीर**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीरामचन्द्र जी।

**रचक**—संज्ञा पुं० [सं०] रचना करनेवाला। रचयिता

वि० दे० "रंचक"।

**रचना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव। बनावट। निर्माण। २. बनाने का ढंग या कौशल। ३. बनाई हुई वस्तु। निर्मित वस्तु। ४. वह गद्य या पद्य जिसमें कोई विशेष चमत्कार हो।

क्रि॰ स॰ [ सं॰ रचन ] १. हाथों से बनाकर तैयार करना। बनाना। सिरजना। २. विधान करना। निश्चित करना। ३. ग्रंथ आदि लिखना। ४. उत्पन्न करना। पैदा करना। ५. अनुष्ठान करना। ठानना। ६. काल्पनिक सृष्टि करना। कल्पना करना। ७ शृंगार करना। सँवारना। सजाना। तरतीब या क्रम से रखना।

**रचि रचि**—रचि रचि=बहुत होशियारी और कारीगरी के साथ ( कोई काम करना )।

क्रि॰ स॰ [ सं॰ रंजन ] रँगना। रंजित करना।

क्रि॰ अ॰ [ सं॰ रंजन ] १. अनुरक्त होना। २. रंग चढ़ना। रँगा जाना।

**रचयिता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रचयितृ ] रचनेवाला। बनानेवाला।

**रचयित्री**—रचयिता का स्त्री॰।

**रचवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रचना का प्रेर॰] १. रचना कराना। बनवाना। २. मेहँदी या महावर लगवाना।

**रचाना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ रचन ] १. अनुष्ठान करना या कराना। बनाना। २. दे॰ "रचवाना"।

क्रि॰ स॰ [ सं॰ रंजन ] मेहँदी, महावर आदि से हाथ-पैर रँगाना।

**रचित**—वि॰ [ सं॰] बनाया हुआ। रचा हुआ।

**रचौहाँ***—वि॰ [ हिं॰ रचना ] १. रचा या रँगा हुआ। २. अनुरक्त।

**रच्छस***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राक्षस"।

**रच्छा***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रक्षा"।

**रज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रजस् ] १. वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी आदि के मादा प्राणियों के योनि-मार्ग से प्रति मास तीन चार दिन तक निकलता है। आर्त्तव। कुसुम। ऋतु। २. दे॰ "रजोगुण"। ३. पाप। ४. जल। पानी। ५. फूलों का पराग। ६. आठ परमाणुओं का एक मान।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. धूल। गर्द। २. रात। ३. ज्योति। प्रकाश।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रजत ] चाँदी।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रजक ] रजक। धोबी।

**रजक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ रजकी ] धोबी।

**रजगुण**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रजोगुण"।

**रजतंत**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ राजतंत्र] वीरता।

**रजत**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. चाँदी। रूपा। २. सोना। ३. रक्त। लहू।

वि॰ १. सफेद। शुक्ल। २. लाल। सुर्ख।

**रजताई***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रजत ] सफेदी।

**रजधानी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "राजधानी"।

**रजन**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "राल"।

**रजन, रजना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ रंजन ] रँगा जाना।

क्रि॰ स॰ रंग में डुबाना। रँगना।

**रजनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. रात। २. हल्दी।

**रजनीकर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] चंद्रमा।

**रजनीगंधा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को खूब महकता है। गुलशब्बो।

**रजनीचर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] राक्षस।

**रजनीपति**-संज्ञा पुं॰ [सं॰] चंद्रमा।

**रजनीमुख**-संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] संध्या।

**रजनीश**-संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] चंद्रमा।

**रजपूत***।—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ राजपुत्र ] १. दे॰ "राजपूत"। २ वीर पुरुष. योद्धा।

**रजपूती**।—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ राजपूत+ई ( प्रत्य॰ ) ] १. क्षत्रियता। क्षत्रियत्व। २. वीरता।

वि॰ राजपूत संबंधी।

**रजबहा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ राज=बड़ा+हिं॰ बहना ] वह बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।

**रजभर** संज्ञा पुं॰ एक हिंदू जाति।

**रजवती** –वि॰ दे॰ "रजस्वला"।

**रजवाड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ राज्य+बाड़ा ] १. राज्य। देशी रियासत। २. राजा।

**रजवार***।—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ राजद्वार ] दरबार।

**रजस्वला**—वि॰ स्त्री॰ [ सं॰ ] जिसका रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमती। रजस्वला।

**रजा**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. मरजी। इच्छा। २. रुखसत। छुट्टी। ३. अनुमति। आज्ञा। ४. स्वीकृति।

**रजाइ, रजाइय***—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ रजा ] १. आज्ञा। हुक्म। २. दे॰ "रजा"।

**रजाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रजक=कपड़ा ? ] एक प्रकार का रुईदार ओढ़ना। लिहाफ।

संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ राजा+आई ( प्रत्य॰ ) ] राजा होने का भाव। राजापन।

संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रजाइ"।

**रजाना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ राज्य ] राज्य-सुख का भोग कराना।

**रजामंद**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा रजामंदी ] जो किसी बात पर राजी हो गया हो। सहमत।

**रजाय, रजायसु***†—संज्ञा स्त्री० दे० "रजा"।

**रजील**—वि०[अ०] छोटी जाति का। नीच।

**रजोकुल***—संज्ञा पुं० [ सं० राज-कुल ] राजवंश।

**रजोगुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग विलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।

**रजोदर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्रियों का मासिक धर्म्म। रजस्वला होना।

**रजोधर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्रियों का मासिक धर्म्म।

**रज्जु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रस्सा। जेवरी। २. लगाम की डोरी। बाग डोर।

**रटंत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रटना ] रटने की क्रिया या भाव।

**रट,रटन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रटना] किसी शब्द को बार बार उच्चारण करने की क्रिया।

**रटना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. किसी शब्द को बार बार कहना। २. जबानी याद करने के लिए बार बार उच्चारण करना। ३. बार बार शब्द करना। बजाना।
संज्ञा स्त्री० दे० "रट"।

**रठा**†—वि० [ ? ] रूखा। शुष्क।

**रढ़ना***—क्रि० स० दे० "रटना"।

**रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लड़ाई। युद्ध। जंग।

**रणक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लड़ाई का मैदान।

**रणछोड़**—संज्ञा पुं० [ सं० रण + हिं० छोड़ना ] श्रीकृष्ण का एक नाम।

**रणखेत***—संज्ञा पुं० दे० "रणक्षेत्र"।

**रणन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० रणित] १. शब्द या गुंजार करना। २. बजना

**रणभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रण-क्षेत्र।

**रणरंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लड़ाई का उत्साह। २. युद्ध। लड़ाई। ३. युद्धक्षेत्र।

**रणरोझ***—संज्ञा पुं० [ सं० अरण्य रोदन ] बन में रोना। व्यर्थ का रोदन। निरर्थक गुहार

**रणलक्ष्मी**—संज्ञा स्त्री० दे० "विजय-लक्ष्मी"।

**रणसिंघा**—संज्ञा पुं० [ सं० रण + हिं० सिंघा ] तुरही। नरसिंघा।

**रणस्तंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विजय के स्मारक मे बनवाया हुआ स्तंभ।

**रणस्थल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रण-भूमि।

**रणहंस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

**रणांगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] युद्ध-क्षेत्र।

**रणित**—वि० [ सं० ] १. शब्द या गुंजार करता हुआ। २. बजता हुआ।

**रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मैथुन। २. प्रीति।
वि० [ स्त्री० रता ] १. अनुरक्त। आसक्त। २. (कार्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।
*संज्ञा पुं० [सं० रक्त] रक्त। खून।

**रतजगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० रात + जागना ] उत्सव या विहार आदि के लिए सारी रात जागना।

**रतनारी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] कुटकी।

**रतन**—संज्ञा पुं० दे० "रत्न"।

**रतनजोत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रत्न + ज्योति ] १. एक प्रकार की मणि। २. एक प्रकार का बहुत छोटा क्षुप। इसकी जड़ से लाल रंग निकाला जाता है।

**रतनागर***—संज्ञा पुं० [ सं० रत्नाकर ] समुद्र।

**रतनार,रतनारा**—वि० [ सं० रक्त] कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए।

**रतनारी**—संज्ञा पुं० [हिं० रतनार + ई (प्रत्य०)] एक प्रकार का धान।
संज्ञा स्त्री० लाली। लालिमा। सुर्खी।

**रतनारिया***†—वि० दे० "रतनारा"।

**रतमुहाँ**—वि० [ हिं० रत (लाल) + मुँह ] [ स्त्री० रतमुँही ] लाल मुँह-वाला।

**रतल**—संज्ञा स्त्री० दे० "रत्तल"।

**रतना***†—क्रि० अ० [ सं० रत ] रत होना।
क्रि० स० किसी को अपनी ओर रत करना।

**रतालू**—संज्ञा पुं० [ सं० रक्तालु ] १. पिंडालू नामक कंद। २. आलू-कंद। गेंठी।

**रति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. काम-देव की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौंदर्य्य की साक्षात् मूर्ति मानी जाती है। २. काम-क्रीड़ा। संभोग। मैथुन। ३. प्रीति। प्रेम। अनुराग। मुहब्बत। ४. शोभा। छवि। ५. साहित्य में शृंगार रस का स्थायी भाव। ६. नायक और नायिका की परस्पर प्रीति या प्रेम।
क्रि० वि० दे० "रती"।
*संज्ञा स्त्री० [ हिं० रात ] रात। रात्रि। रैन।

**रतिक***†—क्रि॰ वि॰ [ हिं॰ रत्ती ] बहुत थोड़ा। ज़रा सा।

**रतिज**—वि॰ [ सं॰ रति+ज (प्रत्य॰) ] रति या मैथुन के कारण उत्पन्न।

**रतिदान**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] संभोग। मैथुन।

**रतिनायक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कामदेव।

**रतिनाह***—संज्ञा पुं॰ [सं॰ रतिनाथ] कामदेव।

**रतिपति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कामदेव।

**रतिपद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक वर्णवृत्त।

**रतिप्रीता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह नायिका जिसका रति में प्रेम हो। कामिनी।

**रतिबंध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मैथुन या संभोग करने का प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं।

**रतिभवन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रति-क्रीड़ा करते हों।

**रतिभौन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रति-भवन"।

**रतिमंदिर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] रतिभवन।

**रतियाना***†—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ रति ] प्रेम करना।

**रतिरमण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. कामदेव। २. मैथुन।

**रतिराई***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रति-राज"।

**रतिराज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कामदेव।

**रतिवंत**—वि॰ [ सं॰ रति ] सुंदर। खूबसूरत।

**रतिशास्त्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कामशास्त्र।

**रती***†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रति ] १. कामदेव की पत्नी। रति। २. सौंदर्य। शोभा। ३. मैथुन। ४. कांति। ५. दे॰ "रति"।

†*—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रत्ती"।

क्रि॰ वि॰ जरा सा। रत्ती भर। किंचित्।

**रतीक***—क्रि॰ वि॰ दे॰ "रतिक"।

**रतोपल***†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रक्तो-त्पल ] लाल कमल।

**रतौंधी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रात+अंधा ] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता।

**रत्त***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रक्त"।

**रत्तल**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] एक पौंड या आध सेर के लगभग एक तौल।

**रत्ती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रक्तिका ] आठ चावल का मान या बाट। २. घुँघची का दाना। गुंजा।

**मुहा॰**—रत्ती भर=बहुत थोड़ा सा। जरा सा।

वि॰ बहुत थोड़ा। किंचित्।

*संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रति ] शोभा। छबि।

**रत्थी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रथ ] वह ढाँचा या संदूक आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिए ले जाते हैं। टिकठी। अरथी।

**रत्न**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वे छोटे, चमकीले, बहुमूल्य खनिज पदार्थ, जिनका व्यवहार आभूषणों आदि में जड़ने के लिए होता है। मणि। जवाहिर। नगीना। २. मानिक। लाल। ३. सर्वश्रेष्ठ।

**रत्नगर्भा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पृथ्वी। भूमि।

**रत्ननिधि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] समुद्र।

**रत्नपारखी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ रत्न+हिं॰ पारखी ] जौहरी।

**रत्नमाला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] रत्नों या जवाहिरात की माला।

**रत्नसू**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पृथ्वी।

**रत्नाकर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. समुद्र। २. खान। ३. रत्नों का समूह।

**रत्नावली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. मणियों की श्रेणी या माला। २. एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ और वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं।

**रथ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक प्रकार की पुरानी सवारी जिसमें चार या दो पहिए हुआ करते थे। गाड़ी। बहल। २. शरीर। ३. चरण। पैर। ४. शतरंज में, ऊँट।

**रथयात्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है।

**रथवान**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रथ+वान ] रथ चलानेवाला। सारथी।

**रथवाह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रथवाह ] १. रथ चलानेवाला। सारथी। २. घोड़ा।

**रथांग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रथ का पहिया। २. चक्र नामक अस्त्र। ३. चकवा।

**रथांगपाणि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] विष्णु।

**रथिक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] रथी।

**रथी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रथिन् ] १.

रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। २. एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करने-वाला योद्धा।

वि० रथ पर चढ़ा हुआ।

संज्ञा स्त्री० दे० "रथी"।

**रथोद्धता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**रथ्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रास्ता। सड़क। २ नाली। नाबदान।

**रद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दंत। दाँत। वि० दे० "रद्द"।

**रदच्छद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ओंठ। ओष्ठ।

**रदछद***—संज्ञा पुं० [सं० रदच्छद ] ओठ।

संज्ञा पुं० [ सं० रदक्षत ] रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न।

**रददान**—संज्ञा पुं० [ सं० रद+दान ] ( रति के समय ) दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।

**रदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दशन। दाँत।

**रदनी**—वि० [ सं० रदनिन् ] दाँत-वाला।

**रदपट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ओष्ठ। ओठ।

**रद्द**—वि० [ अ० ] १. जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो।

यौ०—रद्द बदल=परिवर्त्तन। फेरफार।

२. जो खराब या निकम्मा हो गया हो।

संज्ञा स्त्री० के। वमन।

**रद्दा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. ईंटों की, बेड़े बल की, एक पंक्ति जो दीवार पर चुनी जाती है। २. थाली में स्तरों के रूप में मिठाइयों का चुनाव। ३. नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।

मुहा०—रद्दा कसना, जमाना, देना या लगाना=१. रोब जमाना। २. चपेटना।

**रद्दी**—वि० [ फ़ा० रद ] निकम्मा। निष्प्रयोजन। बेकार।

**रन***—संज्ञा पुं० [ सं० रण ] युद्ध। लड़ाई।

संज्ञा पुं० [ सं० अरण्य ] जंगल। वन।

संज्ञा पुं० [ ? ] १. झील। ताल। २. समुद्र का छोटा खंड। ३. संज्ञा पुं० [ अंग० ] 'क्रिकेट' खेल संबंधी दौड़। दौड़।

**रनकना***†—क्रि० अ० [ सं० रणन=शब्द करना ] घुँघरू आदि का मंद शब्द होना।

**रनना***—क्रि० अ० [ सं० रणन ] बजना। शब्द करना। झनकार होना।

**रनबंका, रनबाँकुरा**—संज्ञा पुं० [ सं० रण+हिं० बाँका ] शूरवीर। योद्धा।

**रनवादी***—संज्ञा पुं० [ सं० रण+वादी ] योद्धा।

**रनवास**—संज्ञा पुं० [ हिं० रानी+वास ] १. रानियों के रहने का महल। अंतःपुर। २. जनानखाना।

**रनसाजी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रण+फ़ा० साजी ] लड़ाई छेड़ना।

**रनित***—वि० [ हिं० रनना ] बजता हुआ। झनकार करता हुआ।

**रनिवास**—संज्ञा पुं० दे० "रनवास"।

**रनी***—संज्ञा पुं० [ सं० रण+ई ( प्रत्य० ) ] योद्धा।

**रपट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रपटना ] १. रपटने की क्रिया या भाव। फिसलाहट। २. दौड़। ३. जमीन की ढाल।

संज्ञा स्त्री० [ अं० रिपोर्ट ] सूचना। इत्तला।

**रपटना**†—क्रि० अ० [ सं० रफन ] १. नीचे या आगे की ओर फिसलना। २ बहुत जल्दी जल्दी चलना। झपटना।

**रपटाना**—क्रि० स० [ हिं० रपटना] रपटने का काम दूसरे से कराना।

**रपट्टा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० रपटना ] १. फिसलने की क्रिया। फिसलाव। २ दौड़-धूप। ३. झपट्टा। चपेट।

**रफल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० राइफल ] विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक।

संज्ञा पुं० [अं० रैपर] ऊनी चादर।

**रफ़ा**—वि० [ अ० ] १. दूर किया हुआ। २. निवृत्त। शांत। निवारित। दबाया हुआ।

**रफ़ा दफ़ा**—वि० दे० "रफ़ा"।

**रफ़ीक़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. साथी। २. मित्र।

**रफ़ू**—संज्ञा पुं० [ अ० ] फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।

**रफ़ूगर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] रफ़ू करने का व्यवसाय करनेवाला। रफ़ू बनानेवाला।

**रफ़ूचक्कर**—वि० [ अ० रफ़ू+हिं० चक्कर ] चंपत। गायब।

**रफ़्तनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. जाने की क्रिया या भाव। २. माल का बाहर जाना।

**रफ़्ता रफ़्ता**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] धीरे धीरे। क्रम क्रम से।

**रफ़्तार**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] चाल।

बति।

**रब**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] ईश्वर। परमेश्वर।

**रबड़**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ रबर ] १. एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से बनता है। २. एक वृक्ष जो वट वर्ग के अंतर्गत है। इसी के दूध से उपर्युक्त लचीला पदार्थ बनता है।

**रबड़ना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रपटना ] १ घुमाना। चलाना। २. फेरना।

**रबड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रबड़ना ] औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध। बसौंधी।

**रबड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रबड़ना ] १. चलने में होनेवाला श्रम। २. कीचड़।

**मुहा॰**—रबदा पड़ना = खूब पानी बरसना।

**रबर**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रबड़"।

**रबाना**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] एक प्रकार का डफ।

**रबाब**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**रबाबिया, रबाबी**—वि॰ [ हिं॰ रबाब ] रबाब बजानेवाला।

**रबी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ रबीअ ] १. वसंत ऋतु। २. वह फसल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।

**रब्त**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. अभ्यास। मश्क। मुहावरा। २. संबंध। मेल।

**यौ॰**-रब्त-जब्त=मेलजोल। घनिष्ठता।

**रब्ब**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रब"।

**रभस**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वेग। तेजी। २. हर्ष। आनंद। ३. प्रेम का उत्साह। ४. पछतावा। रंज।

**रम**—वि॰ [ सं॰ ] १. प्रिय। २. सुंदर।

संज्ञा पुं पति।

संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ ] जौ की शराब।

**रमक**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रमना ? ] १. झूले की पेंग। २. तरंग। झकोरा।

**रमकना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ रमना ] १. हिंडोले पर झूलना। २. झूमते या इतराते हुए चलना।

**रमजान**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

**रमण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. विलास। क्रीड़ा। केलि। २. मैथुन। ३ गमन। घूमना। ४. पति। ५. कामदेव। ६. एक वर्णिक छंद।

वि॰ १ मनोहर। सुंदर। २ प्रिय। ३. रमनेवाला।

**रमणगमना**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह नायिका जो यह समझकर दुःखी होती है कि संकेत-स्थान पर नायक आया होगा, और मैं वहाँ उपस्थित न थी।

**रमणी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] नारी। स्त्री।

**रमणीक**—वि॰ [ सं॰ रमणीय ] सुंदर।

**रमणीय**—वि॰ [ सं॰ ] सुंदर। मनोहर।

**रमणीयता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं ] १. सुंदरता। २. साहित्य-दर्पण के अनुसार वह माधुर्य्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे।

**रमता**—वि॰ [ हिं॰ रमना ] एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता। जैसे, रमता जोगी।

**रमन***—संज्ञा पुं॰ वि॰ दे॰ "रमण"।

**रमना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ रमण ] १. भोग विलास के लिए कहीं रहना या ठहरना। २. आनंद करना। मजा उड़ाना। ३ व्याप्त होना। भीनना। ४. अनुरक्त होना। लग जाना। ५. फिरना। घूमना। ६ चलता होना। चल देना।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ आराम या रमण ] १. चरागाह। २. वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिए या पालने के लिए छोड़ दिए जाते हैं। ३. बाग। ४. कोई सुंदर और रमणीक स्थान।

**रमनी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रमणी"।

**रमनीक***—वि॰ दे॰ "रमणीक"।

**रमल**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।

**रमली**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ रमल + ई ( प्रत्य॰ ) ] वह जो रमल की सहायता से भविष्य की बातें बतलाता हो।

**रमसरा***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रामशर"।

**रमा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] लक्ष्मी।

**रमाकांत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] विष्णु।

**रमानरेश***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रमाकांत"।

**रमाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रमना का सं॰ रूप ] १. मोहित करना। लुभाना। २. अपने अनुकूल बनाना। ३. ठहराना। रोक रखना। ४. लगाना। जोड़ना।

**मुहा॰**—रास रमाना = रास रचना।

**रमानिवास**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रमा + निवास ] विष्णु।

**रमापति, रमारमण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] विष्णु।

**रमित***—वि॰ [ हिं॰ रमना ] लुभाया हुआ। मुग्ध।

**रमैनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रामायण ] कबीरदास के बीजक का एक भाग।

**रमैया**‡*—संज्ञा पुं० [ हिं० राम+ ऐया ( प्रत्य० ) ] १. राम। २. ईश्वर।

**रम्माल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] रमल फेंकनेवाला।

**रम्य**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० रम्या ] १. मनोहर। सुंदर। २ मनोरम। रमणीय।

**रम्हाना**—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

**रय***—संज्ञा पुं० [ सं० रज ] रज। धूल। गर्द।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेग। तेजी। २ प्रवाह। ३. ऐल के छः पुत्रों में से चौथा।

**रयन***‡—संज्ञा स्त्री० [ सं० रजनि ] रात। रात्रि।

**रयना***‡—क्रि० स० [ सं० रंजन ] रंग से भिगोना। तराबोर करना।

क्रि० अ० १. अनुरक्त होना। २. संयुक्त होना। मिलना।

**रयवारा***—संज्ञा पुं० [ हिं० रज वाड़ा ] राजा।

**रयासत**—संज्ञा स्त्री० दे० "रियासत"।

**रय्यत**‡—संज्ञा स्त्री० [ अ० रअय्यत] प्रजा।

**ररंकार**—संज्ञा पुं० [ सं० रकार ] रकार की ध्वनि।

**रर***‡—संज्ञा स्त्री० [ हिं० ररना ] रटन। रट।

**ररकना**‡—क्रि० अ० [ अनु० ] [ संज्ञा ररक ] कसकना। सालना। पीड़ा देना।

**ररना**‡—क्रि० अ० [ सं० रटन ] लगातार एक ही बात कहना। रटना।

**ररिहा, ररुआ***‡—संज्ञा पुं० [हिं० ररना + हा (प्रत्य०) ] १. ररनेवाला। २. रटुआ या रुरुआ नामक पक्षी। ३. भारी मंगन।

**ररी**—संज्ञा पुं० [ हिं० ररना ] १. बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २. अधम। नीच।

**रलना***—क्रि० अ० [ सं० ललन ] एक में मिलना। सम्मिलित होना।

**रलमल**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रलना + मिलना ] १. रलने मिलने की क्रिया या भाव। २. सम्मिश्रण।

**रलाना***‡—क्रि० स० [ रलना का सक० रूप ] एक में मिलाना। सम्मिलित करना।

**रलिका***—संज्ञा स्त्री० दे० "रली"।

**रली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ललन=केलि, क्रीड़ा ] १. विहार। क्रीड़ा। २. आनंद। प्रसन्नता।

**रल्ला***‡—संज्ञा पुं० [ हिं० रेला ] रेला। हल्ला।

**रव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गुंजार। नाद। २. आवाज। शब्द। ३. शोर। गुल।

संज्ञा पुं० *‡ [ सं० रवि ] सूर्य।

**रवकना**—क्रि० अ० [ हिं० रमना= चलना ] १. दौड़ना। २. उमगना। उछलना।

**रवताई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रावत +आई (प्रत्य०) ] १. राजा या रावत होने का भाव। २. प्रभुत्व। स्वामित्व।

**रवन***—संज्ञा पुं० [ सं० रमण ] पति। स्वामी।

वि० रमण करनेवाला। क्रीड़ा करने- वाला।

**रवनना***—क्रि० अ० [ सं० रमण ] क्रीड़ा करना।

क्रि० अ० [ हिं० रव=शब्द ] शब्द करना।

‡संज्ञा पुं० दे० "रावण"।

**रवनि, रवनी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० रमणी ] १. स्त्री। भार्या। पत्नी। २. रमणी। सुंदरी।

**रवन्ना**—संज्ञा पुं० [ फा० रवाना ] १. वह कागज जिस पर रवाना किए हुए माल का ब्योरा होता है। २. राहदारी का परवाना।

**रवाँ**—वि० [ फ़ा० ] १. चलता हुआ। २. बहता हुआ। ३. जिसका अभ्यास हो।

**रवा**—संज्ञा पुं० [ सं० रज ] १. बहुत छोटा टुकड़ा। कण। दाना। २. सूजी। ३. बारूद का दाना।

वि० [ फ़ा० ] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. प्रचलित। चलनसार।

**रवाज**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] परि- पाटी। चाल। प्रथा। रस्म। चलन। रीति।

**रवादार**—वि० [ फ़ा० रवा + दार (प्रत्य०) ] संबंध या लगाव रखने- वाला।

वि० [ हिं० रवा + फ़ा० दार ] जिसमें कण या दाने हों। रवेवाला।

**रवानगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान।

**रवाना**—वि० [ फ़ा० ] १. जो कहीं से चल पड़ा हो। प्रस्थित। २. भेजा हुआ।

**रवानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. प्रवाह। २. तेजी।

**रवा रवी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० रवा +अनु० रवी ] जल्दी। शीघ्रता।

**रवि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. मदार का पेड़। आक। ३ अग्नि। ४ नायक। सरदार।

**रविकुल**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य-वंश।

**रविचंचल**—संज्ञा पुं० [सं०] लोलार्क नामक तीर्थस्थल जो काशी में है।

**रविजा**—संज्ञा [सं०] यमुना।

**रवितनय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यमराज। २. शनैश्चर। ३. सुग्रीव। ४. कर्ण। ५. अश्विनीकुमार।

**रवितनया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

**रविनंदन**—संज्ञा पुं० दे० "रवि-तनय"।

**रविनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

**रविपुत्र**—संज्ञा पुं० दे० "रवि-नंदन"।

**रविमंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य के चारों ओर का लाल मंडल या गोला। रविबिंब।

**रविवाण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह बाण जिसके चलने से सूर्य का सा प्रकाश हो।

**रविवार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोम-वार के पहले पड़ता है। आदित्यवार। एतवार।

**रविश**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. गति। चाल। २. तौर। तरीका। ढंग। ३. क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

**रविसुवन**—संज्ञा पुं० दे० "रवि-तनय"।

**रवीला**—वि० [हिं० रवाँ] जिसमें कण या रवे हों। रवेवाला।

**रवैया**—संज्ञा पुं० [फ़ा० रविश या रवाँ] १. चलन। चाल चलन। २. तौर। ढंग।

**रशना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमर में पहनने की करधनी। २. दे० "रसना"।

**रश्क**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] ईर्ष्या। डाह।

**रश्मि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किरण। २. घोड़े की लगाम। बाग।

**रस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खाने की चीज का स्वाद। रसनेंद्रिय का संवेदन या ज्ञान। (वैद्यक में मधुर अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छः रस माने गए हैं।) २. छः की संख्या। ३. वैद्यक के अनुसार शरीर के अन्दर की सात धातुओं में से पहली धातु। ४. किसी पदार्थ का सार। तत्व। ५. मन में उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनंद जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने से उत्पन्न होता है। (साहित्य) ६. नौ की संख्या। ७. आनंद। मजा। **मुहा०**—रस भीजना या भींजना=यौवन का आरंभ या संचार होना। ८. प्रेम। रीति। मुहब्बत। **यौ०**—रस रंग=प्रेम-क्रीड़ा। केलि। रस-रीति=प्रेम का व्यवहार। ९. काम-क्रीड़ा। केलि। विहार। १०. उमंग। जोश। वेग। ११. गुण। १२. तरल या द्रव पदार्थ। १३. जल। पानी। १४. किसी चीज को दबा या निचोड़कर निकाला हुआ द्रव पदार्थ। १५. वह पानी जिसमें चीनी घुली हुई हो। शरबत। १६. पारा। १७. धातुओं को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। १८. केशव के अनुसार रगण और सगण। १९. भाँति। तरह। प्रकार। २०. मन की तरंग। मौज। इच्छा।

**रसकपूर**—संज्ञा पुं० [सं० रसकर्पूर] सफेद रंग की एक प्रसिद्ध उपधातु।

**रसकेलि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विहार। क्रीड़ा। २. हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी।

**रसकोरा**—संज्ञा पुं० दे० "रसगुल्ला"।

**रसखीर**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रस+खीर] ऊख के रस में पकाया चावल।

**रसगुनी**—संज्ञा पुं० [सं० रस+गुणी] काव्य या संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

**रसगुल्ला**—संज्ञा पुं० [हिं० रस+गोला] एक प्रकार की छेने की मिठाई।

**रसज्ञ**—वि० [सं०] [भाव० रस-ज्ञता] १. वह जो रस का ज्ञाता हो। २. काव्य मर्मज्ञ। ३. निपुण। कुशल।

**रसता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रस का भाव या धर्म। रसत्व।

**रसद**—वि० [सं०] १. आनंद-दायक। सुखद। २. स्वादिष्ठ। मजे-दार।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. बाँट। बखरा। **मुहा०**—हिस्सा रसद=बँटने पर अपने अपने हिस्से के अनुसार लाभ। २. कच्चा अनाज जो पकाया न गया हो।

**रसदार**—वि० [हिं० रस+दार (प्रत्य०)] १. जिसमें किसी प्रकार का रस हो। २. स्वादिष्ट। मजेदार।

**रसन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वाद लेना। चखना। २. ध्वनि। ३. जीभ। जबान।

**रसना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जिह्वा। जीभ। **मुहा०**—रसना खोलना=बोलना आरंभ करना। रसना तालू से लगाना=बोलना बंद होना।

३. वह स्वाद, जिसका अनुभव जीभ से किया जाता है। ३. रस्सी। ४. लगाम।
क्रि० अ० [ हिं० रस + ना (प्रत्य०) ] १. धीरे धीरे बहना या टपकना। २. किसी वस्तु का गीला होकर जल या और कोई द्रव पदार्थ छोड़ना या टपकाना।

मुहा०—रस रस या रसे रसे=धीरे धीरे।

३. रस में मग्न होना। प्रफुल्लित होना। ४. तन्मय होना। ५. रस लेना स्वाद लेना। ६. प्रेम में अनुरक्त होना।

**रसनेंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रसना। जीभ।

**रसनोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की उपमा जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान होता जाता है। गमनोपमा।

**रसपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रमा। २. राजा। ३. पारा। ४. शृंगार रस

**रस-प्रबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाटक। २. वह कविता जिसमें एक ही विषय बहुत से संबद्ध पद्यों में वर्णित हो।

**रसभरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० रैस्पबेरी ] १. एक प्रकार का स्वादिष्ठ फल। २. [ सं० रस + हिं० भरी ] मकोय।

**रसभीना**—वि० [ हिं० रस + भीगना ] [ स्त्री० रसभीनी ] १. आनंद में मग्न। २. आर्द्र। तर। गीला।

**रसम**—संज्ञा स्त्री० [ अ० रस्म ] १. प्रथा। परिपाटी। चाल। प्रणाली। २. मेलजोल।

**रसमसा**—वि० [ हिं० रस + मस (अनु०) ] [ स्त्री० रसमसी ] १. आनंदमग्न। अनुरक्त। २. तरगीला। ३. पसीने से भरा।

**रसमि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० रश्मि ] १. किरण। २. आभा। प्रकाश। चमक।

**रसरा**—संज्ञा पुं० दे० "रस्सा"।

**रसराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पारद। पारा। २. शृंगार रस।

**रसराय***—संज्ञा पुं० दे० "रसराज"।

**रसरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "रस्सी"।

**रसल**—वि० दे० "रसीला"।

**रसवंत**—संज्ञा पुं० [ सं० रसवत् ] रसिक। प्रेमी।
वि० जिसमें रस हो। रसीला।

**रसवंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रसवती ] रसोई।

**रसवत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह काव्यालंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस अथवा भाव का अंग होकर आवे।

**रसवत**—संज्ञा स्त्री० दे० "रसौत"।

**रसवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रेम या आनंद की बात-चीत। २. मनोरंजन के लिए कहा-सुनी। छेड़-छाड़। ३. बकवाद।

**रसवान्**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० रसवती ] १. सरस। रसीला। २. मधुर।

**रसविरोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों की स्थिति। जैसे—शृंगार और रौद्र की।

**रसाँ**—वि० [ फा० ] पहुँचानेवाला। जैसे—चिट्ठीरसाँ।

**रसांजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रसौत।

**रसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी। भूमि। २. जीभ। रसना। ३. [illegible]
संज्ञा पुं० [ हिं० रस ] तरकारी आदि का झोल। शोरबा।
वि० [ फा० ] १. पहुँचनेवाला। २. ऊँचा होने या दूर जानेवाला।

**रसाइनी***—संज्ञा पुं० [ हिं० रसायन ] रसायन विद्या जाननेवाला।

**रसाई**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।

**रसातल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक।

मुहा०—रसातल में पहुँचाना=मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।

**रसाना***—क्रि० स० [ सं० रस ] १. रसपूर्ण करना। २. प्रसन्न करना।
क्रि० अ० १. रसयुक्त होना। २. आनंद लेना।

**रसाभास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. साहित्य में किसी रस का अनुचित विषय में अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन। २. एक प्रकार का अलंकार जिसमें उक्त ढंग का वर्णन होता है।

**रसायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो। २. पदार्थों के तत्वों का ज्ञान। विशेष दे० "रसायन शास्त्र"। ३. वह कल्पित योग जिसके द्वारा ताँबे से सोना बनना माना जाता है।

**रसायन शास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें यह विवेचन हो कि पदार्थों में कौन कौन से तत्व होते हैं और उनके अणुओं में परिवर्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है।

**रसायनिक**—वि० दे० "रासायनिक"।

**रसाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० रसाला ] १. आम। २. [illegible]

आम। ३. कटहल। ४. गोधूम। गेहूँ।

वि० [ स्त्री० रसाला ] १. मधुर। मीठा। २. रसीला। ३. सुंदर। मनोहर।

संज्ञा पुं० [ अं० इरसाल ] कर। राजस्व।

रसालक—संज्ञा पुं० [ हिं० रसाल ] कौतुक।

रसालिका—वि० स्त्री० [ सं० रसात्मक ] मधुर।

रसावर, रसावल—संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसाव—संज्ञा पुं० [ हिं० रसना ] रसने की क्रिया या भाव।

रसासव—संज्ञा पुं० [ सं० ] शराब।

रसियावर†—संज्ञा पुं० [ हिं० रस + चावल ] १. रसौर। २. एक प्रकार का गीत जो विवाह की एक रीति में गाया जाता है।

रसिक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वह जो रस या स्वाद लेता हो। २. काव्य मर्मज्ञ। ३. आनन्दी। रसिया। ४. अच्छा श्रोता। मर्मज्ञ। ५. भावुक। सहृदय। ६. एक प्रकार का छंद।

रसिकता—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रसिक होने का भाव या धर्म्म। २. हँसी-ठट्ठा।

रसिकबिहारी—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

रसिकाई*—संज्ञा स्त्री० दे० "रसिकता"।

रसित—संज्ञा पुं० [ सं० ] ध्वनि। शब्द।

रसिया—संज्ञा पुं० [ सं० रसिक ] १. रसिक। २. एक प्रकार का गाना जो फागुन में ब्रज आदि में गाया जाता है।

रसियाव—संज्ञा पुं० दे० "रसौर"।

रसीक*†—संज्ञा पुं० दे० "रसिक"।

रसीद—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. किसी चीज के पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया। प्राप्ति। पहुँच। २. किसी चीज के पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र।

रसीत्ना—वि० दे० "रसीला"।

रसीला—वि० [ हिं० रस + ईला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० रसीली ] १. रस में भरा हुआ। रस-युक्त। २. स्वादिष्ठ। मजेदार। ३. रस या आनंद लेनेवाला। ४. बाँका। सुंदर।

रसूम—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. रस्म का बहुवचन। २. नियम। कानून। ३. वह धन, जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाता हो। नेग। लाग।

रसूल—संज्ञा पुं० [ अ० ] ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेंद्र—संज्ञा पुं० [ सं० ] पारा।

रसेश्वर—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पारा। २. एक दर्शन जो छः दर्शनों में नहीं है।

रसेस*—संज्ञा पुं० [ सं० रसेश ] श्रीकृष्ण।

रसोइया—संज्ञा पुं० [ हिं० रसोई + इया ( प्रत्य० ) ] रसोई बनानेवाला। रसोईदार।

रसोई, रसोई—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रस + ओई ( प्रत्य० ) ] १. पका हुआ खाद्य पदार्थ।

मुहा०—रसोई तपना=भोजन पकाना।

२. चौका। पाकशाला।

रसोईघर—संज्ञा पुं० [ हिं० रसोई + घर ] खाना बनाने की जगह। पाकशाला। चौका।

रसोईदार—संज्ञा पुं० दे० "रसोइया"।

रसोड़ा†—संज्ञा पुं० दे० "रसोई"।

रसोय*†—संज्ञा स्त्री० दे० "रसोई"।

रसौत—संज्ञा स्त्री० [ सं० रसोद्भूत ] एक प्रसिद्ध औषध जो दारुहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तैयार की जाती है।

रसौर—संज्ञा पुं० [ हिं० रस + औरं ( प्रत्य० ) ] ऊख के रस में पके हुए चावल।

रसौली—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गिलटी निकल आती है।

रस्ता—संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।

रस्तोगी—संज्ञा पुं० [ देश० ] वैश्यों की एक जाति।

रस्म—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मेल-जोल।

यौ०—राह-रस्म=मेलजोल। व्यवहार।

२. रवाज। परिपाटी। चाल।

रश्मि*—संज्ञा स्त्री० दे० "रश्मि"।

रस्सा—संज्ञा पुं० [ सं० रसना ] [ स्त्री० अल्पा० रस्सी ] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रस्सा ] रूई, सन आदि के रेशों या डोरों को बटकर बनाया हुआ लंबा खंड। डोरी। गुण। रज्जु।

रहँकला—संज्ञा पुं० [ हिं० रथ + कल ] १. एक प्रकार की हलकी गाड़ी। २. तोप लादने की गाड़ी। ३. रहँकले पर लदी हुई तोप।

रहँचटा—संज्ञा पुं० [ हिं० रस + चाट ] प्रीति की चाह। चसका। लिप्सा।

रहँट—संज्ञा पुं० [ सं० अरघट्ट, प्रा० अरहट्ट ] कुएँ से पानी निकालने का

एक प्रकार का यंत्र।

**रहँकला**—संज्ञा पुं० [ हिं० रहँट ] सूत कातने का चर्खा।

**रहचह**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] चिड़ियों का बोलना। चहचहाहट।

**रहठा**—संज्ञा पुं० [ ? ] अरहर के पौधों का सूखा डंठल।

**रहठान***—संज्ञा पुं० [ हिं० रहना + सं० स्थान ] निवास-स्थान। रहने की जगह।

**रहन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रहना ] १. रहने की क्रिया या भाव। २. व्यवहार। आचार।

**रहन-सहन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रहना + सहना ] जीवन-निर्वाह का ढंग। तौर। चाल-ढाल।

**रहना**—क्रि० अ० [ सं० राज=विराजना ] १ स्थित होना। अवस्थान करना। ठहरना। २ न जाना। रुकना। थमना।

मुहा०—रह चलना या जाना=रुक जाना। ३. बिना किसी परिवर्त्तन या गति के एक ही स्थिति में अवस्थान करना। ४. निवास करना। बसना या टिकना ५. कोई काम करना बंद करना। थमना। ६. चलना बंद करना। रुकना। ७. विद्यमान होना। उपस्थित होना। ८. चुपचाप समय बिताना।

मुहा०—रह जाना=१ कुछ कार्रवाई न करना। २. सफल न होना। लाभ न उठा सकना।

९. नौकरी करना। काम काज करना। १०. स्थित होना। स्थापित होना। ११. समागम करना। मैथुन करना। १२. जीवित रहना। जीना। १३. बचना। छूट जाना।

यौ०—रहा सहा=बचा-बचाया। अवशिष्ट।

मुहा०—( अंग आदि का ) रह जाना=थक जाना। शिथिल हो जाना। रह जाना=१. पीछे छूट जाना। २. अवशिष्ट होना। खर्च या व्यवहार से बचना।

**रहनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रहना ] १. दे० "रहन"। २. प्रेम। प्रीति।

**रहम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. करुणा। दया। २. अनुकंपा। अनुग्रह।

यौ०—रहमदिल=दयालु। कृपालु।

संज्ञा पुं० [ अ० रहम ] गर्भाशय।

**रहरू**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रिढ़ना ] एक प्रकार की छोटी देहाती गाड़ी।

**रहल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] एक प्रकार की छोटी चौकी जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है।

**रहलू***†—संज्ञा स्त्री० दे० "रहरू"।

**रहवैया**—वि० [ हिं० रहना + वैया ( प्रत्य० ) ] रहनेवाला।

**रहस**—संज्ञा पुं० [ सं० रहस् ] १. गुप्त भेद। छिपी बात। २. आनंद-मय लीला। क्रीड़ा। ३. आनंद। सुख। ४. गूढ़ तत्त्व। मर्म। ५. एकांत स्थान।

**रहसना**—क्रि० अ० [ हिं० रहस + ना ( प्रत्य० ) ] आनंदित होना। प्रसन्न होना।

**रहसबधावा**—संज्ञा पुं० [ सं० रहस् + बधाई ] विवाह की एक रीति।

**रहास***—संज्ञा स्त्री० [ सं० रहस् ] गुप्त स्थान। एकांत स्थान।

**रहस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गुप्त भेद। गोप्य विषय। २. मर्म्म या भेद की बात। ३. वह जिसका तत्त्व सहज में समझ में न आ सके। ४. हँसी-ठट्ठा। मजाक।

**रहस्यवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी परोक्ष सत्ता का अवलंब लेकर हृदय की आकुलता प्रकट करना। छायावाद

**रहस्यवादी**—वि० [ सं० ] १. रहस्यवाद का अनुयायी। २. रहस्य-वाद संबंधी।

**रहाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रहना ] १. दे० "रहन"। २. कल। चैन। आराम।

**रहाना***—क्रि० अ० [ हिं० रहना ] १. होना। २. रहना।

**रहावना**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रहना + आवन ( प्रत्य० ) ] वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खड़े हों। रहुनिया।

**रहित**-वि० [ सं० ] बिना। बगैर। हीन।

**रहिला**—संज्ञा पुं० [ ? ] चना।

**रहीम**-वि० [ अ० ] कृपालु। दयालु। संज्ञा पुं० [ अ० ] १. रहीम खाँ खानखानाँ का उपनाम। २. ईश्वर।

**रहुवा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० रहना ] रोटियों पर रहनेवाला मनुष्य। टुकड़ा। रोटी-तोड़।

**राँक**†—वि० दे० "रंक"।

**राँग**—संज्ञा पुं० दे० "राँगा"।

**राँगा**—संज्ञा पुं० [ सं० रंग ] एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रंग में सफेद होती है। रंग। वंग।

**राँच***†—अव्य० दे० "रंच"।

**राँचना***†—क्रि० अ० [ सं० रंजन ] १. अनुरक्त होना। प्रेम करना। चाहना। २. रंग पकड़ना। क्रि० स० [ सं० रंजन ] रंग चढ़ाना। रँगना।

**राँजना**—क्रि० स० [ सं० रंजन ] काजल लगाना। क्रि० स० रंजित करना। रँगना।

**राँटा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] टिटि-हरी चिड़िया।

**राँड़**—वि० स्त्री० [ सं० रंडा ] १. विधवा। बेवा। २. रंडी। वेश्या।

**राँड़ना†**—क्रि० अ० [सं० रुदन] रोना।

**राँध**—संज्ञा पुं० [सं० प्रान्त] निकट। पास।

**राँधना**—क्रि० स० [सं० रंधन] (भोजन आदि) पकाना। पाक करना।

**राँपी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] पतली खुरपी के आकार का मोचियों का एक औजार।

**राँभना**—क्रि० अ० [सं० रंभण] (गाय का) बोलना या चिल्लाना। रँभाना।

**राआ*†**—संज्ञा पुं० दे० "राजा"।

**राइ**—संज्ञा पुं० [सं० राजा] छोटा राजा। राय। सरदार।

**राइट**—संज्ञा पुं० [अं०] अधिकार। हक।
वि० ठीक। दुरुस्त।

**राई**—संज्ञा स्त्री० [सं० राजिका] १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों।
मुहा०—राई नोन उतारना=नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग में डालना। राई से पर्वत करना=थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। राई काई करना=टुकड़े टुकड़े कर डालना।
२. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।
संज्ञा पुं० १. राजा। २. सर्वश्रेष्ठ।
†संज्ञा स्त्री० [हिं० राइ] राजापन। राजश्री।

**राउ**—संज्ञा पुं० [सं० राजा] राजा। नरेश।

**राउत**—संज्ञा पुं० [सं० राज+पुत्र] १. राजवंश का कोई व्यक्ति। २. क्षत्रिय। ३. वीर पुरुष। बहादुर।

**राउर*†**—संज्ञा पुं० [सं० राज+पुर] अंतःपुर। रनिवास। जनानखाना।
वि० श्रीमान् का। आपका।

**राउल*†**—संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] १. राजकुल में उत्पन्न पुरुष। २. राजा।

**राकस*†**—संज्ञा पुं० [सं० राक्षस] [स्त्री० राकसिन] राक्षस।

**राका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पूर्णिमा की रात। २. पूर्णमासी।

**राकापति, राकेश**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**राक्षस**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राक्षसी] १. निशाचर। दैत्य। असुर। २. कुबेर के धन-कोश के रक्षक। ३. कोई दुष्ट प्राणी। ४. एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या प्राप्त करने के लिए युद्ध करना पड़ता है।

**राख**—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा ?] भस्म। खाक।

**राखना*†**—क्रि० स० [सं० रक्षण] १. रक्षा करना। बचाना। २. रखवाली करना। ३. छिपाना। कपट करना। ४. रोक रखना। जाने न देना। ५. आरोप करना। बताना। ६. दे० "रखना"।

**राखी**—संज्ञा स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षाबंधन का डोरा। रक्षा।
संज्ञा स्त्री० दे० "राख"।

**राग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रिय या अभिमत वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। सांसारिक सुखों की चाह। २. कष्ट। पीड़ा। ३. मत्सर। ईर्ष्या। द्वेष। ४. अनुराग। प्रेम। प्रीति। ५. अंग में लगाने का सुगंधित लेप। अंगराग। ६. एक वर्णवृत्त। ७. रंग विशेषतः लाल रंग। ८. पैर में लगाने का अलता। ९. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर जिनके उच्चारण से गान होता हो। प्राचीन आचार्यों ने छः राग माने हैं; परंतु इन रागों के नामों के संबंध में कुछ मतभेद है।
मुहा०—अपना राग अलापना=अपनी ही बात कहना।

**रागना*†**—क्रि० अ० [सं० राग] १. अनुराग करना। अनुरक्त होना। २. रँग जाना। रंजित होना। ३. निमग्न होना।
*क्रि० स० [सं० राग] गाना। अलापना।

**रागिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री। प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं।

**रागी**—संज्ञा पुं० [सं० रागिन्] [स्त्री० रागिनी] १. अनुरागी। प्रेमी। २. छः मात्रावाले छंदों का नाम।
वि० १. रँगा हुआ। २ लाल। सुर्ख। ३. विषय वासना में फँसा हुआ। विरागी का उलटा। ४. रँगनेवाला।
†*संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] रानी।

**राघव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २. श्रीरामचंद्र।

**राचना***—क्रि० स० दे० "रचना"।
क्रि० अ० रचा जाना। बनना।
क्रि० अ० [सं० रंजन] १. रँगा जाना। रंजित होना। २. अनुरक्त होना। प्रेम करना। ३ लीन होना। मग्न होना। डूबना। ४. प्रसन्न होना। ५. शोभा देना। भला जान पड़ना। ६. सोच या चिंता में पड़ना।

**राछ**—संज्ञा पुं० [सं० रक्ष] १. कारीगरों का औजार। २. जुलाहों के करघे में एक औजार जिससे ताने

[illegible]—उपज, बीज, लकड़ी और मिलता है। २. बराड़। खल्ल।

राजुलका—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजुल"।

राज—संज्ञा पुं॰ [सं॰ राज्य] १. हुकूमत। राज्य। शासन।

मुहा॰—राज काज=राज्य का प्रबंध। राज पर बैठना=राज-सिंहासन पर बैठना। राज रजना=१. राज्य करना। २. बहुत सुख से रहना।

यौ॰—राजपाट=१. राज-सिंहासन। २. शासन।

२. एक राजा द्वारा शासित देश। जनपद। राज्य। ३. पूरा अधिकार। खूब चलती। ४. अधिकार काल। समय। ५. देश।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ राजन्] १. राजा। २. दे॰ "राजगीर"।

राज—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] रहस्य। भेद।

राजकर—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह कर जो प्रजा से राजा लेता है। खिराज।

राजकीय—वि॰ [सं॰] राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुँअर*—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजकुमार"।

राजकुमार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजकुल—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजवंश"।

राजगद्दी—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ राज+गद्दी] १. राजसिंहासन। २. राज्याभिषेक। राज्यारोहण। ३. राज्याधिकार।

राजगिरि—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. मगध देश के एक पर्वत का नाम। २. दे॰ "राजगृह"।

राजगीर—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ राज+गर] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगृह—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. राजा का महल। २. एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है। प्राचीन गिरिव्रज जहाँ मगध की राजधानी थी।

राजतरंगिणी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] कल्हण-कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास।

राजतिलक—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राज्याभिषेक"।

राजत्व—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. राजा का भाव या कर्म। २. राजा का पद।

राजदंड—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय।

राजदंत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बीच का वह दाँत जो और दाँतों से बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदूत—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह दूत जो एक राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य में भेजा जाता है।

राजद्रोह—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। बगावत।

राजद्वार—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. राजा की ड्योढ़ी। २. न्यायालय।

राजधर्म—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राजा का कर्त्तव्य या धर्म्म।

राजधानी—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।

राजनाना—क्रि॰ अ॰ [सं॰ राजन] १. उपस्थित होना। रहना। २. शोभित होना।

राजनीति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह नीति जिससे राज्य और शासन का संचालन होता है।

राजनीतिक—वि॰ [सं॰] राजनीति सम्बन्धी।

राजनीतिज्ञ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राजनीति का ज्ञाता।

राजन्य—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. क्षत्रिय। २. राजा।

राजपंखी—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजहंस"।

राजपंथ—संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजपथ"।

राजपथ—संज्ञा पुं॰ [सं॰] बड़ी सड़क।

राजपुत्र—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. राजा का पुत्र। राजकुमार। २. एक वर्णसंकर जाति।

राजपुरुष—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राज्य का कर्मचारी।

राजपूत—संज्ञा पुं॰ [सं॰ राजपुत्र] १. दे॰ "राजपुत्र"। २. राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजप्रासाद—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राजा का महल।

राजबहा—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ राज+बहना] वह बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें निकाली जाती हैं।

राजबाड़ी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "राजप्रासाद"।

राजभक्त—वि॰ [सं॰] [संज्ञा राजभक्ति] जिसमें राजा या राज्य के प्रति भक्ति हो।

राजभक्ति—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम।

राजभवन—संज्ञा पुं॰ [सं॰] राजा का महल।

राजभोग—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक प्रकार का महीन धान। २. राजा का भोजन।

राजमहल—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ राज+महल] १. राजा का महल। राज-

प्रासाद। २. एक प्राचीन जो संथाल परगने के पास है।

**राजमाता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी देश के राजा या शासक की माता।

**राजमार्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] चौड़ी सड़क।

**राजयक्ष्मा**—संज्ञा पुं० [सं० राजयक्ष्मन्] यक्ष्मा। क्षयरोग। तपेदिक।

**राजयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है। २. ग्रहों का ऐसा योग जिसके जन्मकुंडली में पड़ने से मनुष्य राजा होता है।

**राजराजेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजराजेश्वरी] राजाओं का राजा। अधिराज।

**राजरोग**—संज्ञा पुं० [हिं० राजा+रोग] १. वह रोग जो असाध्य हो। २. क्षय रोग।

**राजर्षि**—संज्ञा पुं० [सं०] वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।

**राजलक्ष्मी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजश्री। राजवैभव। २. राजा की शोभा।

**राजलोक***—संज्ञा पुं० दे० "राजप्रासाद"।

**राजवंत**—वि० [हिं० राज+वंत] राजा के कर्म्म से युक्त।

**राजवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा का कुल या वंश। राजकुल।

**राजवार**-संज्ञा पुं० दे० "राजद्वार"।

**राजश्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजलक्ष्मी। राजा का ऐश्वर्य।

**राजस**—वि० [सं०] [स्त्री राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी। संज्ञा पुं० १. आवेश। क्रोध। २. राज्याभिमान।

**राजसत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजशक्ति। २. राज्य की सत्ता। ३. वह शासन जिसमें सारी शक्ति राजा के ही हाथ में हो, प्रजा के हाथ में न हो।

**राजसत्तात्मक**—वि० [सं०] (वह शासनप्रणाली) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो। प्रजासत्तात्मक का उलटा।

**राजसभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दरबार। २. राजाओं की सभा।

**राजसमाज**—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं का दरबार या समाज। राजमंडली।

**राजसिंहासन**—संज्ञा पुं० [सं०] राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

**राजसिक**—वि० दे० "राजस"।

**राजसिरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "राजश्री"।

**राजसी**—वि० [हिं० राजा] राजा के योग्य, बहुमूल्य या भड़कीला। वि० स्त्री० [सं०] जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुणमयी।

**राजसूय**—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो।

**राजस्थान**—संज्ञा पुं० दे० "राजपूताना"।

**राजस्व**—संज्ञा पुं० दे० "राजकर"।

**राजहंस**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का हंस। सोना पक्षी।

**राजा**—संज्ञा पुं० [सं० राजन्] [स्त्री० रानी, रानी] १. किसी देश या जाति का प्रधान शासक जो उस देश या जाति की, दूसरों के आक्रमण से, रक्षा करता है। बादशाह। अधिराज। प्रभु। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. एक उपाधि जो अँगरेजी सरकार भारत के बड़े रईसों को प्रदान करती थी।

**राजाज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा की आज्ञा।

**राजाधिराज**—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं का राजा। शाहंशाह। बड़ा बादशाह।

**राजावर्त**—संज्ञा पुं० [सं०] लाजवर्द नामक उपरत्न।

**राजिंद***—सं० पुं० [सं० राजेंद्र] श्रेष्ठराजा। महाराज। २. अतिप्रिय।

**राजि, राजिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राई। २. राजि। पंक्ति। ३. रेखा। लकीर।

**राजित**—वि० [सं०] १. फबता हुआ। शोभित। २. विराजा हुआ।

**राजिव***—संज्ञा पुं० [सं० राजीव] कमल।

**राजी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पंक्ति। श्रेणी।

**राजी**—वि० [अ०] १. कही हुई बात मानने को तैयार। सम्मत। २. नीरोग। चंगा। ३. खुश। प्रसन्न। ४ सुखी।

**यौ०**—राजी-खुशी=सही-सलामत।

संज्ञा स्त्री० रजामंदी। अनुकूलता।

**राजीनामा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।

**राजीव**—संज्ञा पुं० [सं०] कमल। पद्म।

**राजीवगण**—संज्ञा पुं० [सं०] १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

**राजुल**—संज्ञा पुं० [सं०] मौर्य

...का एक राजकर्मचारी या सूबेदार।

**राजेंद्र, राजेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० राजेश्वरी] राजाओं का राजा। महाराज।

**राज्ञी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रानी। राजमहिषी। २. सूर्य्य की पत्नी, संज्ञा।

**राज्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १ राजा का काम। शासन। २. वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो। बादशाहत। ३ प्रांत। प्रदेश।

**राज्यतंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य की शासनप्रणाली।

**राज्यव्यवस्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजनियम। नीति। कानून।

**राज्यश्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] राज्य की शोभा और वैभव।

**राज्याभिषेक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक। २. राजगद्दी पर बैठने की रीति। राज्यारोहण।

**राट्**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा। बादशाह। २. श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार।

**राठ***—संज्ञा पुं० [सं० राष्ट्र] १. राज्य। २. राजा।

**राठौर**—संज्ञा पुं० [सं० राष्ट्रकूट] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश।

**राढ़**—वि० [सं० राढ़?] १. नीच। निकम्मा। २. कायर। भगोड़ा।

**राढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० राढ़ि] १. रार। झगड़ा। २. निकम्मा। ३. कायर।

**राति**—संज्ञा ... [सं०] ... के ... का नाम।

**रात**—संज्ञा पुं० [सं० रात्रि] ...

**रातिंधा**—संज्ञा स्त्री० [सं० रात्रि] संध्या से प्रातःकाल तक का समय। रजनी। निशा।

मुहा०—रात-दिन=सदा। हमेशा।

**रातड़ी, रातरी**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "रात"।

**रातना***—क्रि० अ० [सं० रक्त] १. लाल रंग से रँग जाना। २. रँगा जाना। ३. अनुरक्त होना।

**राता***—वि० [सं० रक्त] [स्त्री० राती] १. लाल। सुर्ख। २. रँगा हुआ। ३. अनुरागमय।

**रातिचर***—संज्ञा पुं० दे० "राक्षस"।

**रातिब**—संज्ञा पुं० [अ०] पशुओं का भोजन।

**रातुल**—वि० [सं० रक्तालु] सुर्ख। लाल।

**रात्रि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। निशा।

**रात्रिचारी**—संज्ञा पुं० [सं०] राक्षस।

वि० रात के समय विचरनेवाला।

**राधन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. साधने की क्रिया। साधना। २. मिलना। प्राप्ति। ३. संतोष। तुष्टि। ४. साधन।

*[सं० आराधन] आराधन। पूजन।

**राधना***—क्रि० स० [सं० आराधना] १. आराधना करना। पूजा करना। २. सिद्ध करना। पूरा करना। ३. काम निकालना।

**राधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैशाख की पूर्णिमा। २. प्रीति। ३. वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। ४. एक वर्णवृत्त। ५. बिजली।

**राधारमण**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**राधावल्लभ**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**राधावल्लभी**—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।

**राधिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वृषभानु गोप की कन्या, राधा। २. बाइस मात्राओं का एक छंद।

**रान**—संज्ञा स्त्री० [फा०] जंघा। जाँघ।

**राना**—संज्ञा पुं० दे० "राणा"।

*क्रि० अ० [हिं० राचना] अनुरक्त होना।

**रानी**—संज्ञा स्त्री० [सं० राज्ञी] १. राजा की स्त्री। २. स्वामिनी। मालकिन।

**रानी-काजर**—संज्ञा पुं० [हिं० रानी + काजल] एक प्रकार का धान।

**राब**—संज्ञा स्त्री० [सं० द्रावक] औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

**राबड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "रबड़ी"।

**राम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. परशुराम। २. बलराम। बलदेव। ३. सूर्य्यवंशी महाराज दशरथ के पुत्र जो दस अवतारों में से एक माने जाते हैं। रामचंद्र।

मुहा०—राम शरण होना=१. साधु होना। विरक्त होना। २. मर जाना। राम राम करना=१. अभिवादन करना। प्रणाम करना। २. भगवान् का नाम जपना। राम राम करके=बड़ी कठिनता से। राम राम हो जाना=मर जाना।

४. तीन की संख्या। ५. ईश्वर। भगवान्। ६. एक प्रकार का मात्रिक छंद।

**रामकेरा**—संज्ञा पुं० दे० "रामकेला"।

**रामकेला**—संज्ञा पुं० [हिं० राम + केला] १. एक प्रकार का बढ़िया ...

केला। २. एक प्रकार का बढ़िया आम।

**रामगिरि**—संज्ञा पुं० दे० "रामटेक"।

**रामगीती**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ५० मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

**रामचंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं।

**रामजनी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की तोप।

**रामजना**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + जना=उत्पन्न ] [ स्त्री० रामजनी ] १. एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या वृत्ति करती हैं। २. वर्णसंकर।

**रामटेक**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + टेक=पहाड़ी ] नागपुर जिले की एक पहाड़ी।

**रामतरोई**—संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।

**रामता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] राम का गुण। रामत्व।

**रामतारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रामजी का मंत्र जो इस प्रकार है— रां रामाय नमः।

**रामति***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रमन] भिक्षा के लिए इधर-उधर घूमना।

**रामदल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रामचंद्रजी की बंदरोंवाली सेना। २. कोई बड़ी और प्रबल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो।

**रामदाना**—संज्ञा पुं० [ सं० राम + हिं० दाना ] मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा।

**रामदास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हनुमान्। २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।

**रामदूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हनुमान् जी।

**राम-धनुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र-धनुष।

**रामधाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साकेत लोक।

**रामनवमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चैत्र सुदी नौमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था।

**रामना***†—क्रि० अ० दे० "रमना"।

**रामनामी**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + नाम + ई ( प्रत्य० ) ] १. वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है। २. एक प्रकार का हार।

**रामबाँस**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + बाँस ] १. एक प्रकार का मोटा बाँस। २. केतकी या केवड़े की जाति का एक पौधा जिसके पत्तों के रेशे से रस्से बनते हैं।

**रामबाण**—वि० [ सं० ] जो तुरंत उपयोगी सिद्ध हो। तुरंत प्रभाव दिखानेवाला। ( औषध )

**राम-भोग**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + भोग ] १. एक प्रकार का आम। २. एक प्रकार का चावल।

**राम-मंत्र**—संज्ञा पुं० दे० "राम-तारक"।

**रामरज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं।

**रामरस**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + रस ] नमक।

**रामराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अत्यंत सुखदायक शासन।

**राम-रौला**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + रौला] व्यर्थ का हल्ला। शोर-गुल।

**रामलीला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. राम के चरित्रों का अभिनय। २. एक मात्रिक छंद।

**रामशर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।

**रामसनेही**—संज्ञा पुं० [ हिं० राम + स्नेह ] वैष्णवों का एक संप्रदाय। वि० राम से स्नेह रखनेवाला। राम-भक्त।

**रामसुंदर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० राम + सुंदर ] एक प्रकार की नाव।

**रामसेतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

**रामा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सुंदर स्त्री। २. नदी। ३. लक्ष्मी। ४. सीता। ५. रुक्मिणी। ६. राधा। ७. इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक उपजाति वृत्त। ८. आर्या छंद का १७ वाँ भेद। ९. आठ अक्षरों का एक वृत्त।

**रामानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य जिनका चलाया हुआ रामावत नामक संप्रदाय अब तक प्रचलित है। ये विक्रमीय १४ वीं शताब्दी में हुए थे।

**रामानंदी**—वि० [ हिं० रामानंद + ई ( प्रत्य० ) ] रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

**रामानुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रामचंद्र के छोटे भाई, लक्ष्मण आदि। २. श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य। वेदांत में इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

**रामायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रामचंद्र के चरित्र से संबंध रखने-वाला ग्रंथ। संस्कृत में रामायण नाम के बहुत से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकि कृत रामायण सबसे प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है। अध्यात्म-रामायण आदि। २. तुलसी कृत रामचरित-

मानस" नामक ग्रंथ ।

**रामायणी**—वि० [सं० रामायणीय] रामायण का ।

संज्ञा पुं० [सं० रामायण+ई (प्रत्य०)] वह जो रामायण की कथा कहता हो ।

**रामावत**—संज्ञा पुं० [सं०] वैष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय ।

**रामेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण भारत के समुद्र तट का शिवलिंग ।

**राय**—संज्ञा पुं० [सं० राजा] १. राजा । २. सरदार । सामंत । ३. भाट । बंदीजन ।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सम्मति । मत । सलाह ।

वि० १. बड़ा । २. बढ़िया ।

**रायकरौंदा**—संज्ञा पुं० [हिं० राय+करौंदा] एक प्रकार का बड़ा करौंदा ।

**रायज**—वि० [अ०] जिसका रवाज हो । प्रचलित । चलनसार ।

**रायता**—संज्ञा पुं० [सं० राजिकाक्त] दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या बुँदिया आदि ।

**रायभोग**—संज्ञा पुं० दे० "राजभोग" ।

**रायमुनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० राय+मुनिया] लाल नामक पक्षी की मादा । सदिया ।

**रायरासि***—संज्ञा स्त्री० [सं० राजराशि] राजा का कोष । शाही खजाना ।

**रायल्टी**—संज्ञा स्त्री० [अं०] वह धन जो किसी आविष्कारक या ग्रंथकर्ता आदि को उसके आविष्कार या कृति से होनेवाले लाभ के अंश के रूप में बराबर मिलता रहता है ।

**रायसा**—संज्ञा पुं० दे० "रासो" ।

**रार**—संज्ञा पुं० [सं० राटि] झगड़ा । टंटा । हुज्जत । तकरार ।

**राल**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा पेड़ । २. इसका निर्यास जो "राल" नाम से प्रसिद्ध है । धूना । धूप ।

संज्ञा स्त्री० [सं० लाला] १. पतला लसदार थूक । २. लार ।

मुहा०—राल गिरना, चूना या टपकना-किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना ।

**राव**—संज्ञा पुं० दे० "राय" ।

**राव-चाव**—संज्ञा पुं० [हिं० चाव] लाड़-प्यार । दुलार ।

**रावट***—संज्ञा पुं० [हिं० रावल] राजमहल ।

**रावटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रावट] १. कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा घर या डेरा । छोलदारी । २. कोई छोटा घर । ३. बारहदरी ।

**रावण**—संज्ञा पुं० [सं०] लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था । दशकंधर । दशानन ।

**रावत**—संज्ञा पुं० [सं० राजपुत्र] १. छोटा राजा । २. शूर । वीर । बहादुर । ३. सामंत । सरदार ।

**रावनगढ़***—संज्ञा पुं० दे० "लंका" ।

**रावना***—क्रि० स० [सं० रावण] रुलाना ।

**रावर***—संज्ञा पुं० [सं० राजपुर] रनिवास । राजमहल । अंतःपुर ।

वि० [हिं० राउर] [स्त्री० राउरी] आपका ।

**रावल**—संज्ञा पुं० [सं० राजकुल] अंतःपुर । राजमहल । रनिवास ।

संज्ञा पुं० [फ़ा० राउल] [स्त्री० रावलि, रावली] १. राजा । २. कहलाने के कुछ संप्रदायों की उपाधि । ३. प्रधान [illegible]

**राशि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढेर । पुंज । २. किसी का उत्तराधिकारी ३. क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारासमूह जो बारह हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन ।

**राशिचक्र**—संज्ञा पुं० [सं०] मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल । भचक्र ।

**राशिनाम**—संज्ञा पुं० [सं० राशिनामन्] किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म समय की राशि के अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न होता है ।

**राष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राज्य । २. देश । मुल्क । ३. प्रजा । ४. एक देश या राज्य में बसनेवाला जन समुदाय ।

**राष्ट्रकूट**—संज्ञा पुं० दे० "राठौर" ।

**राष्ट्रतंत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] राज्य का शासन करने की प्रणाली ।

**राष्ट्रपति**—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक प्रजातंत्र शासनप्रणाली में वह सर्व-प्रधान शासक जो शासन करने के लिए चुना जाता है । २. भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का सभापति ।

**राष्ट्रवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० राष्ट्रवादी] वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है ।

**राष्ट्रीय**—वि० [सं०] राष्ट्र संबंधी । राष्ट्र का । विशेषतः अपने राष्ट्र या देश का ।

**राष्ट्रीयता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १.

किसी राष्ट्र के विशेष गुण। २. अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।

**रास**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे। २. एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस क्रीड़ा का अभिनय होता है।

संज्ञा स्त्री० [अ०] लगाम। बाग-डोर।

संज्ञा स्त्री० [सं० राशि] १. ढेर। समूह। २. दे० "राशि"। ३. एक प्रकारका छंद। ४ जोड़। ५. चौपायों का झुंड। ६. गोद। दत्तक। ७. सूद। ब्याज।

वि० [फ़ा० रास्त] अनुकूल। ठीक।

**रासक**—संज्ञा पुं० [सं०] हास्य रस के नाटक का एक भेद जो केवल एक अंक का होता।

**रासधारी**—संज्ञा पुं० [सं० रासधारिन्] वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।

**रासनशीन**—संज्ञा पुं० [सं० राशि + फ़ा० नशीन] गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक।

**रासना**—संज्ञा पुं० दे० "रास्ना"।

**रासभ**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० रासभी] १. गर्दभ। गधा। २. अश्वतर। खच्चर।

**रासमंडल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रास-क्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली। २. रासधारियों का अभिनय।

**रासमंडली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का समाज या टोली।

**रासलीला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रासधारियों का कृष्णलीला संबंधी अभिनय।

**रास-विलास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रास-क्रीड़ा। २. आनंद मंगल।

**रासायनिक**—वि० [सं०] १. रसायन शास्त्र-संबंधी। २. रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

**रासि**—संज्ञा स्त्री० दे० "राशि"।

**रासु**‡—वि० [फा० रास्त] १ सीधा। सरल। २. ठीक।

**रासो**—संज्ञा पुं० [सं० रहस्य] १ किसी राजा का वह पद्यमय जीवन-चरित्र जिसमें उसके युद्धों और वीरता आदि का वर्णन हो। २ झगड़ा।

**रास्त**—वि० [फ़ा०] १. सीधा। सरल। २. दुरुस्त। ठीक। ३. उचित। वाजिब।

**रास्ता**—संज्ञा पुं० [फा०] १. मार्ग। राह।

**मुहा०**—रास्ता देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। रास्ता पकड़ना=चल देना। चल जाना। रास्ता बताना=१. चलता करना। टालना। २. सिखाना। तरकीब बताना।

२.प्रथा। चाल। ३. उपाय। तरकीब।

**रास्ना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंधना-कुली नामक कंद। घोड़रासन।

**राह**—संज्ञा पुं० दे० "राहु"।

संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. मार्ग। रास्ता।

**मुहा०**—राह देखना या ताकना=प्रतीक्षा करना। राह पड़ना=डाका पड़ना। लूट पड़ना।

२. प्रथा चाल। ३. नियम। कायदा।

संज्ञा स्त्री० दे० "रोहू"।

**राहखर्च**—संज्ञा पुं० [फ़ा० राह + खर्च] रास्ते में होनेवाला खर्च। मार्ग व्यय।

**राहगीर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मुसाफिर। पथिक।

**राहचलता**—संज्ञा पुं० [फ़ा० राह + हिं० चलता] १. पथिक। राहगीर। बटोही। २. अजनबी। गैर।

**राहचौरंगी**—संज्ञा स्त्री० दे० "चौमुहाना"।

**राहजन**—संज्ञा पुं० [फा०] [भाव० राहजनी] डाकू। लुटेरा।

**राहत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] आराम। सुख।

**राहदारी**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. राह पर चलने का महसूल। सड़क का कर।

यौ०—परवाना राहदारी=वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी मार्ग से होकर जाने या माल ले जाने का अधिकार प्राप्त होता है। २ चुंगी। महसूल।

**राहना**‡*—क्रि० अ० दे० "रहना"।

**राहित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] 'रहित' का भाव। खालीपन। अभाव।

**राहिन**—वि० [अ०] रेहन या बंधक रखनेवाला।

**राही**—संज्ञा पुं० [फा०] मुसाफिर। यात्री।

**राहु**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक।

संज्ञा पुं० [सं० राघव] रोहू मछली।

**राहुल**—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।

**रिंगन**—संज्ञा स्त्री० [सं० रिंगण] घुटनों के बल चलने की क्रिया। रेंगना।

**रिंगना***—क्रि० अ० दे० "रेंगना"।

**रिंगाना***†—क्रि० स० [सं० रिंगण] १. रेंगने की क्रिया कराना। रेंगाना। २. घुमाना-फिराना। चलाना। (बच्चों के लिये)

**रिताना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रीता= खाली या रिक्त+आना ( प्रत्य॰ ) ] खाली करना। रिक्त होना।
क्रि॰ अ॰ खाली होना। रिक्त होना।

**रिंद**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष। २. मनमौजी आदमी। स्वच्छंद पुरुष।
वि॰ [ फ़ा॰ ] १. मतवाला। २. मस्त।

**रिंदा**—वि॰ [फ़ा॰ रिंद ] निरंकुश। उद्दंड।

**रिआयत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. कोमल और दयापूर्ण व्यवहार। नरमी। २. न्यूनता। कमी। ३. छूट। ४. खयाल। ध्यान। विचार।

**रिआयती**—वि॰ १. बिना मूल्य अथवा कम मूल्य में प्राप्त। २. विशेष छूट अथवा सुविधा संबंधी।

**रिआया**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] प्रजा।

**रिकवँच, रिकवँछ** संज्ञा स्त्री॰ [देश॰] एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बनता है।

**रिकाब**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रकाब"।

**रिक्त**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा रिक्तता ] १. खाली। शून्य। २. निर्धन। गरीब।

**रिक्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. रिक्त होने का भाव। खालीपन। २. खाली जगह।

**रिक्शा**—संज्ञा पुं॰ [ जा॰ ] एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी खींचते हैं।

**रिक्ष**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "ऋक्ष"।

**रिखभ***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "ऋषभ"।

**रिच***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "ऋक्"।

**रिचा**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ऋचा"।

**रिच्छ**†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ऋक्ष ] भालू।

**रिजु**—वि॰ दे॰ "ऋजु"।

**रिझकवार, रिझवार**†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रीझना+वार (प्रत्य॰) ] १. किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। २. रूप पर मोहित होनेवाला। ३. अनुराग करनेवाला। प्रेमी। ४. कदरदान। गुणग्राहक।

**रिझाना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ रंजन ] १. किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना। २. अपना प्रेमी बनाना। अनुरक्त करना।

**रिझायल***†—वि॰ [ हिं॰ रीझना ] रीझनेवाला।

**रिझाव**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रीझना+आव (प्रत्य॰) ] प्रसन्न होने या रीझने का भाव।

**रिझावना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "रिझाना"।

**रिढ़ना**†—क्रि॰ अ॰ [ ? ] घसीटते हुए चलना।

**रित रितु**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ऋतु"।

**रितवना***—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रीता ] खाली करना।

**रिद्धि**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ऋद्धि"।

**रिन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "ऋण"।

**रिनिआँ, रिनी**†—वि॰ [सं॰ ऋण] जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार।

**रिपु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शत्रु। दुश्मन। वैरी।

**रिपुता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वैर। दुश्मनी।

**रिपोर्ट**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] १. किसी घटना की सूचना। २. कार्य-विवरण।

**रिपोर्टर**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] समाचार पत्र का संवाददाता।

**रियायत**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रिआयत"।

**रिमझिम**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] वर्षा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना।
क्रि॰ वि॰ वर्षा की छोटी छोटी बूँदों से।

**रियासत**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] [ वि॰ रियासती ] १. राज्य। अमलदारी। २. अमीरी। रईसी। ३. वैभव। ऐश्वर्य।

**रिर***†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रार ] हठ। जिद।

**रिरना**†—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] गिड़गिड़ाना।

**रिरिहा**†—वि॰ [ हिं॰ रिरना ] बहुत गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक भीख माँगनेवाला।

**रिलना***†—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ रेलना] १. पैठना। घुसना। २. मिल जाना।

यौ॰—रिलना-मिलना = १. अच्छी तरह मिलना। २. मेल-मिलाप रखना।

**रिलमिल**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रिलना+मिलना ] मेल-जोल। मेल-मिलाप।

**रिवाज**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] प्रथा। रस्म।

**रिश्ता**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] नाता। संबंध।

**रिश्तेदार**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] संबंधी। नातेदार।

**रिश्वत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] घूस। उत्कोच।

**रिश्वतखोर**—वि॰ [ अ॰+फ़ा॰ ] रिश्वत खानेवाला।

**रिश्वती**—वि॰ दे॰ "रिश्वतखोर"।

**रिष्ट***—वि॰ [सं॰ हृष्ट] १. प्रसन्न। २. मोटा-ताजा।

**रिष्यमूक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ ऋष्यमूक] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

**रिस**—संज्ञा स्त्री० [सं० रिष] क्रोध। गुस्सा।

मुहा०—रिस मारना = क्रोध को रोकना।

**रिसना**†—क्रि० स० [हिं० रसना] [illegible] छनकर बाहर निकल जाना। रसना।

**रिसवाना**†—क्रि० स० दे० "रिसाना"।

**रिसहा**†—वि० [हिं० रिस] क्रोधी।

**रिसहारा**†—वि० [हिं० रिस] [स्त्री० रिसहाई] क्रुद्ध। कुपित। नाराज।

**रिसाना**†—क्रि० अ० [हिं० रिस] क्रुद्ध होना।

क्रि० स० किसी पर क्रुद्ध होना। बिगड़ना।

**रिसानी***—संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।

**रिसाला**†—संज्ञा पुं० [अ० इरसाल] [illegible]।

**रिसालदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] घुड़सवार सेना का एक अफसर।

**रिसाला**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] घोड़सवारों की सेना। अश्वारोही सेना।

**रिसि***—संज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।

**रिसिआना, रिसियाना**†—क्रि० अ० [हिं० रिस + आना (प्रत्य०)] क्रुद्ध या कुपित होना।

क्रि० स० किसी पर क्रुद्ध होना। बिगड़ना।

**रिष्टिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० रिष्टिक] तलवार।

**रिसौहाँ**—वि० [हिं० रिस + औहाँ (प्रत्य०)] १. कुछ कुपित सा। कोपयुक्त। नाराज। २. क्रोध से भरा। क्रोधसूचक।

**रिहल**—संज्ञा स्त्री० [अ० ] काठ की चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।

**रिहा**—वि० [फ़ा० ] [संज्ञा रिहाई] (बंधन या बाधा आदि से) मुक्त। छूटा हुआ।

**रिहाई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० ] छुटकारा। मुक्ति।

**रिहाना***—क्रि० स० [फ़ा० रिहा] मुक्त कराना। छुड़ाना।

**रींधना**—क्रि० स० दे० "राँधना"।

**री**—अव्य० [सं० ] सखियों के लिये संबोधन। अरी। एरी।

**रीछ**—संज्ञा पुं० [सं० ऋक्ष] भालू।

**रीछराज***—संज्ञा पुं० [सं० ऋक्षराज] जामवंत।

**रीझ**—संज्ञा स्त्री० [सं० रंजन] १. किसी की किसी बात पर प्रसन्नता। २. मुग्ध होने का भाव।

**रीझना**—क्रि० अ० [सं० रंजन] १. किसी बात पर प्रसन्न होना। २. मोहित होना।

**रीठ***—संज्ञा स्त्री० [सं० रिष्ट] १. तलवार। २. युद्ध। (डिं० ) वि० अशुभ। खराब।

**रीठा**—संज्ञा पुं० [सं० रिष्ट] १. एक बड़ा जंगली वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।

**रीडर**—संज्ञा स्त्री० [अं० ] किसी भाषा की शिक्षा देनेवाली आरंभिक पुस्तक।

संज्ञा पुं० [अं० ] किसी अधिकारी या न्यायालय का पेशकार।

**रीढ़**—संज्ञा स्त्री० [सं० रीढक] पीठ के बीचो-बीच की लंबी खड़ी हड्डी जिसमें पसलियाँ मिली रहती हैं। मेरुदंड।

**रीत**—संज्ञा स्त्री० दे० "रीति"।

**रीतना***†—क्रि० अ० [सं० रिक्त] खाली होना। रिक्त होना।

क्रि० स० खाली करना। रिक्त करना।

**रीता**—वि० [सं० रिक्त] खाली।

**रीति**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. ढंग। प्रकार। तरह। ढब। २. रस्म। रिवाज। परिपाटी। ३. कायदा। नियम। ४. साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह योजना जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता है।

**रीतिकाल**—संज्ञा पुं० [सं० रीति + काल] हिंदी इतिहास का एक विशेष कालखंड जो लगभग संवत् १७०० वि० से १९०० तक माना जाता है।

**रीषमूक***—संज्ञा पुं० दे० "ऋष्यमूक"।

**रीस**—संज्ञा स्त्री० दे० "रिसि"।

संज्ञा स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. डाह। २. स्पर्द्धा। बराबरी।

**रीसना**—क्रि० अ० [हिं० रिस] क्रुद्ध होना।

**रुंज**—संज्ञा पुं० [देश० ] एक प्रकार का बाजा।

**रुंड**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. बिना सिर का धड़। कबंध। २. वह शरीर जिसके हाथ-पैर कटे हों।

**रुंदवाना**—क्रि० स० [हिं० रौंदना का प्रे० ] पैरों से कुचलवाना। रौंदवाना।

**रुंधती*** संज्ञा स्त्री० दे० "अरुंधती"।

**रुंधना**—क्रि० अ० [सं० रुद्ध] १. मार्ग न मिलने के कारण अटकना। रुकना। २. उलझना। फँस जाना। ३. किसी काम में लगना। ४. घेरा जाना।

**रु***—अव्य० [हिं० अरु] और।

**रुआँ**†—संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोम। रोआँ।

**रुखाना***†-क्रि॰ स॰ दे॰ "रुलाना"।

**रुखाव**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रोंव"।

**रुई**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रूई"।

**रुकना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ रोक ] १. ठहर जाना। अवरुद्ध होना। अटकना। २. किसी कार्य्य का बीच में ही बंद हो जाना। ३. किसी चलते क्रम का बंद होना।

**रुकमंगद**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रुक्मांगद"।

**रुकमिनी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रुक्मिणी"।

**रुकवाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ रुकना का प्रेर॰ ] रोकने का काम दूसरे से कराना।

**रुकाव**—संज्ञा पुं॰ दे "रुकावट"।

**रुकावट**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं रुकना ] १. रुकने की क्रिया या भाव। रोक। २. बाधा। विघ्न।

**रुकम***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रुक्म"।

**रुकमी***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रुक्मी"।

**रुक्का**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ रुक्कअः ] छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरजा। परचा।

**रुक्ख***†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वृक्ष ] पेड़। वृक्ष।

**रुक्म**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. स्वर्ण। सोना। २. धतूरा। धतूरा। ३. रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

**रुक्मवती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक वृत्त। रूपवती। चंपकमाला।

**रुक्मसेन**-संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] रुक्मिणी का छोटा भाई।

**रुक्मांगद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक राजा।

**रुक्मिणी**-संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी।

**रुक्मी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रुक्मिन् ] राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।

**रुक्ष**—वि॰ [ सं॰ रूक्ष ] १. जिसमें चिकनाहट न हो। रूखा। २. ऊबड़-खाबड़। खुरदरा। ३. नीरस। ४. सूखा। शुष्क।

**रुक्षता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रूक्षता ] रुखाई।

**रुख**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. कपोल। गाल। २. मुख। मुँह। ३. आकृति। चेष्टा। ४. मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो। ५. कृपा-दृष्टि। ६. सामने या आगे का भाग। ७. शतरंज का एक मोहरा।

क्रि॰ वि॰ १. तरफ। ओर। २. सामने।

**रुखसत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. आज्ञा। परवानगी। (क्व॰) २. रवानगी। कूच। प्रस्थान। ३. काम से छुट्टी। अवकाश।

वि॰ जो कहीं से चल पड़ा हो।

**रुखसताना**-संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] वह धन जो विदा होने के समय दिया जाय। विदाई।

**रुखसती**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ रुखसत ] बिदाई, विशेषतः दुलहिन की बिदाई।

**रुखसार**—संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] कपोल। गाल।

**रुखाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रूखा + आई (प्रत्य॰) ] १. रूखे होने की क्रिया या भाव। रूखापन। रुखावट। २. शुष्कता। खुश्की। ३. शील का त्याग। बेमुरौवती।

**रुखाना***†—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ रूखा ] १. रूखा होना। २. नीरस होना। सूखना।

**रुखानी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रोक + खनित्र ] बढ़इयों का कोई का एक औजार।

**रुखावट**-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रुखाई"।

**रुखिता***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रुषिता ] मानवती नायिका।

**रुखौहाँ**—वि॰ [ हिं॰ रूखा + औहाँ (प्रत्य॰) ] [ स्त्री॰ रुखौहीं ] रुखाई लिए हुए। रूखा-सा।

**रुग्न**—वि॰ [ सं॰ ] रोगी। बीमार।

**रुच***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रुचि"।

**रुचना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ रुच + ना (प्रत्य॰) ] रुचि के अनुकूल होना। भला होना। अच्छा लगना।

मुहा॰—रुच रुच=बहुत रुचि से।

**रुचि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ वि॰ रुचित, संज्ञा॰ रुचिता ] १. प्रवृत्ति। तबीयत। २. अनुराग। प्रेम। चाह। इच्छा। ३. किरण। ४. शोभा। सुंदरता। ५. खाने की इच्छा। भूख। ६. स्वाद। ७. एक अप्सरा का नाम।

वि॰ फबता हुआ। योग्य। मुनासिब।

**रुचिकर**—वि॰ [ सं॰ ] अच्छा लगनेवाला। रुचि उत्पन्न करनेवाला। दिलपसंद।

**रुचिकारक**—वि॰ दे॰ "रुचिकर"।

**रुचिता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सौंदर्य। २. रोचकता। ३. अनुराग।

**रुचिमान**—वि॰ [ सं॰ रुचि + मान हिं॰ प्रत्य॰ ] मनोहर। सुंदर। रुचिर।

**रुचिर**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा रुचिरता ] १. सुंदर। २. मीठा।

**रुचिरवृत्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] अस्त्र का एक प्रकार का संहार।

**रुचिरा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. एक प्रकार का छंद। २. एक वृत्त।

**रुचिराई***†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रुचिर + आई (प्रत्य॰) ] सुंदरता।

मनोहरता।

**रुचिवर्द्धक**—वि० [सं०] १. रुचि उत्पन्न करनेवाला। २. भूख बढ़ानेवाला।

**रुच्छ***—वि० दे० "रूखा"।
संज्ञा पुं० दे० "रूख"।

**रुज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भंग। घाँव। २. वेदना। कष्ट। ३. क्षत। घाव।

**रुजाली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कष्टों का समूह।

**रुजी**—वि० [सं० रुज] अस्वस्थ। बीमार।

**रुजू**—वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो। प्रवृत्त।

**रुझना***†—क्रि० अ० [सं० रुद्ध] घाव आदि का भरना या पूजना।
क्रि० अ० दे० "उलझना"।

**रुझान**—संज्ञा पुं० [अ०] किसी ओर आकृष्ट अथवा प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव। प्रवृत्ति। झुकाव।

**रुट**—संज्ञा पुं० [सं० रुष्ट] क्रोध। गुस्सा।

**रुठाना**—क्रि० स० [सं० रुष्ट] नाराज करना।

**रुणित**—वि० [सं०] झनकारता या बजता हुआ।

**रुत**—संज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु"।
संज्ञा पुं० [सं०] १. पक्षियों का शब्द। कलरव। २. शब्द। ध्वनि। ३. कांति। चमक। आब। पानी।

**रुतबा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. ओहदा। पद। २. इज्जत। प्रतिष्ठा।

**रुदन**—संज्ञा पुं० [सं० रोदन] रोना। क्रंदन।

**रुदराछ***†—संज्ञा पुं० दे० "रुद्राक्ष"।

**रुदित**—वि० [सं०] जो रो रहा हो।

**रुद्ध**—वि० [सं०] १. घेरा हुआ। वेष्टित। आवृत। २. मुँदा हुआ। बंद। ३. जिसकी गति रोक ली गई हो।
यौ०—रुद्धकंठ=जो प्रेम आदि के कारण बोलने में असमर्थ हो गया हो।

**रुद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के गणदेवता जो कुल मिलाकर ग्यारह हैं। २. ग्यारह की संख्या। ३. शिव का एक रूप। ४. रौद्र रस।
वि० भयंकर। डरावना। भयानक।

**रुद्रक**†—संज्ञा पुं० [सं० रुद्राक्ष] रुद्राक्ष।

**रुद्रगण**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार शिव के बहुत से पारिषद।

**रुद्रजटा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का क्षुप।

**रुद्रट**—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका बनाया हुआ 'काव्यालंकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है।

**रुद्रतेज**—संज्ञा पुं० [सं० रुद्रतेजस्] कार्त्तिकेय।

**रुद्रपति**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

**रुद्रपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

**रुद्रयामल**—संज्ञा पुं० [सं०] तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें भैरव और भैरवी का संवाद है।

**रुद्रलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह लोक जिसमें शिव का निवास माना जाता है।

**रुद्रवंती**—संज्ञा स्त्री० [सं० रुद्रवती] एक प्रसिद्ध वनौषधि जो दिव्यौषधि वर्ग में है।

**रुद्रविंशति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रभव आदि साठ संवत्सरों या वर्षों में से अंतिम बीस वर्षों का समूह। रुद्र-बीसी।

**रुद्राक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। इस वृक्ष का गोल बीज। प्रायः शैव लोग इनकी मालाएँ पहनते हैं।

**रुद्राणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पार्वती। भवानी। २. रुद्र जटा नाम की लता।

**रुद्री**—संज्ञा स्त्री० [सं० रुद्र+ई (प्रत्य०)] वेद के रुद्रानुवाक् या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ।

**रुधिर**—संज्ञा पुं० [सं०] शरीर में का रक्त। शोणित। लहू। खून।

**रुधिराशी**—वि० [सं०] लहू पीनेवाला।

**रुनझुन**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नूपुर, किंकिणी आदि का शब्द। कलरव। झनकार।

**रुनाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० अरुण] अरुणता। लाली।

**रुनित***—वि० [सं० रणित] बजता हुआ।

**रुनुकझुनुक**—संज्ञा स्त्री० दे० "रुनझुन"।

**रुपना**—क्रि० अ० [हिं० रोपना का अकर्मक] १. रोपा जाना। जमीन में गाड़ा या लगाया जाना। २. डटना। अड़ना। ३. ठनना।

**रुपमनी***—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूपवती] सुंदरी स्त्री।

**रुपया**—संज्ञा पुं० [सं० रूप्य] १. भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोलह आने का सिक्का। २. धन। संपत्ति।

**रुपहला**—वि० [हिं० रुपा+हला (स्त्री० रुपहली)] चाँदी के रंग का। चाँदी का सा।

**रुबाई**—संज्ञा स्त्री० [अ०] चार चरणों का पद्य। चौबोला।

**रुमंचक***—संज्ञा पुं० दे० "रोमांच"।

**रुमण्वान**—संज्ञा पुं० [सं० रुमण्वत्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक पर्वत का नाम।

**रुमांचित***—वि० दे० "रोमांचित"।

**रुमाली**—संज्ञा स्त्री० [फा० रूमाल] छोटा रूमाल। रूमाल।

**रुमावली***—संज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।

**रुराई***—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूरा] सुंदरता।

**रुरु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कस्तूरी मृग। २. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. एक भैरव का नाम।

**रुरुआ**—संज्ञा पुं० [हिं० ररना] बड़ी जाति का उल्लू।

**रुरुक्षु**—वि० [सं०] रूखा। रुक्ष।

**रुलना**।—क्रि० अ० [सं० लुलन=इधर उधर डोलना] इधर-उधर मारा फिरना।

**रुलाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना+आई प्रत्य०)] १. रोने की क्रिया या भाव। २. रोने की प्रवृत्ति।

**रुलाना**—क्रि० स० [हिं० रोना का प्रेर०] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।

क्रि० स० [हिं० रुलना का सक०] १. इधर-उधर फिराना। २. खराब करना।

**रुवाँ**।—संज्ञा पुं० [हिं० रोवाँ] सेमल के फूल में का घूआ। भूआ।

**रुष**—संज्ञा पुं० [सं०] क्रोध। गुस्सा।

संज्ञा पुं० "रुख"।

**रुष्ट**—वि० [सं०] क्रुद्ध। नाराज। कुपित।

**रुष्टता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अप्रसन्नता।

**रुसना***—क्रि० अ० दे० "रूसना"।

**रुसवा**—वि० [फा०] [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो। निंदित। जलील।

**रुसित***—वि० [सं० रुषित] रुष्ट। नाराज।

**रुसूम**—संज्ञा पुं० दे० "रसूम"।

**रुस्तम**—संज्ञा पुं० [अ०] १. फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २. भारी वीर।

**मुहा०**—छिपा रुस्तम=वह जो देखने में सीधा सादा पर वास्तव में बहुत वीर हो।

**रुहठि***।—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोहट=रोना] रूठने की क्रिया या भाव।

**रुहिर***—संज्ञा पुं० दे० "रुधिर"।

**रुहेलखंड**—संज्ञा पुं० [हिं० रुहेला] अवध के उत्तर पश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश।

**रुहेला**—संज्ञा पुं० [?] पठानों की एक जाति जो प्रायः रुहेलखंड में बसी है।

**रूँध**—वि० [सं० रुद्ध] रुका हुआ। अवरुद्ध।

**रूँधना**—क्रि० स० [सं० रुंधन] १. कँटीले झाड़ आदि से घेरना। बाड़ लगाना। २. चारों ओर से घेरना। रोकना। छेकना।

**रू**—संज्ञा पुं० [फा०] १. मुँह। चेहरा। २. द्वार। कारण। ३. आगा। सामना।

**रूई**—संज्ञा स्त्री० [सं० रोम] १. कपास के डोडे या कोष के अन्दर का घूआ जिसे बट या कातकर सूत बनाते अथवा जिसे गद्दे, रजाई या जाड़े के पहनने के कपड़ों में भरते हैं। २. बीजों के ऊपर का रोआँ।

**रूईदार**—वि० [हिं० रूई+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें रूई भरी गई हो।

**रूख**—संज्ञा पुं० [सं० वृक्ष] पेड़। वृक्ष।

वि० दे० "रूखा"।

**रूखड़ा**।—संज्ञा पुं० [हिं० रूख] पेड़। वृक्ष।

**रूखना***—क्रि० अ० [सं० रुष] रूठना।

**रूखा**—वि० [सं० रुक्ष] १. जो चिकना न हो। अस्निग्ध। २. जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पड़े हों। ३. जो खाने में स्वादिष्ठ न हो। सीठा।

**मुहा०**—रूखा सूखा = जिसमें चिकना और चरपरा पदार्थ न हो। बहुत साधारण भोजन।

४. सूखा। शुष्क। नीरस। ५. खुरदुरा। ६. नीरस। उदासीन। ७. परुष। कठोर।

**मुहा०**—रूखा पड़ना या होना=१. बेमुरौवती करना। २. क्रुद्ध होना। नाराज होना।

८. उदासीन। विरक्त।

**रूखापन**—संज्ञा पुं० [हिं० रूखा+पन (प्रत्य०)] रूखे होने का भाव। रुखाई।

**रूचना***—क्रि० स० दे० "रुचना"।

**रूझना***—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

**रूठ, रूठन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रूठना] रूठने की क्रिया या भाव। नाराजगी।

**रूठना**—क्रि० अ० [सं० रुष्ट] नाराज होना। कोप करना। मान करना।

**रूढ़, रूढ़ा**—वि० [हिं० [illegible]] [illegible]।

उत्तम।

**रूढ़**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० रूढ़ा ] १. चढ़ा हुआ। आरूढ़। २. उत्पन्न। जात। ३. प्रसिद्ध। ख्यात। ४. गँवार। उजड्ड। ५. कठोर। कड़ा। ६. अकेला। ७. अविभाज्य।

संज्ञा पुं० अर्थानुसार शब्द का वह भेद जो दो शब्दों या शब्द और प्रत्यय के योग से बना हो। यौगिक का उलटा। रूढ़ि।

**रूढ़यौवना**—संज्ञा स्त्री० दे० "आरूढ़-यौवना"।

**रूढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह लक्षणा जो प्रचलित हो और जिसका व्यवहार प्रसिद्ध से भिन्न अभिप्राय-व्यंजन के लिये न हो।

**रूढ़ि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चढ़ाई। चढ़ाव। २. उभार। उठान। ३. उत्पत्ति। जन्म। ४. ख्याति। प्रसिद्धि। ५. प्रथा। चाल। ६. विचार। निश्चय। ७. रूढ़ शब्द की शक्ति जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है।

**रूमी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़ों की एक जाति।

**रूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शकल। सूरत।

यौ०—रूपरेखा=आकार। शकल। ढाँचा।

२. स्वभाव। प्रकृति। ३. सौंदर्य।

मुहा०—रूप हरना=लज्जित करना।

यौ०—रूप-रेखा=१. चिह्न। २. पता।

४. शरीर। देह।

मुहा०—रूप लेना=रूप धारण करना।

४. वेष। भेस।

मुहा०—रूप भरना=भेस बनाना।

६. दशा। अवस्था। ७. समान। तुल्य। सदृश। ८. चिह्न। लक्षण। आकार। ९. रूपक। १० चाँदी। रूपा।

वि० रूपवान्। खूबसूरत।

**रूपक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ मूर्ति। प्रतिकृति। २. वह काव्य जिसका अभिनय किया जाता है। दृश्यकाव्य। इसके प्रधान दस भेद हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन। ३. एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय में उपमान के साधर्म्य का आरोप करके उसका वर्णन उपमान के रूप से या अभेदरूप से किया जाता है। ४. रुपया।

**रूपकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० रूप+करण ] एक प्रकार का घोड़ा।

**रूपकातिशयोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाते हैं।

**रूपकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मूर्ति बनानेवाला।

**रूपकांता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**रूपगर्विता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह गर्विता नायिका जिसे अपने रूप का अभिमान हो।

**रूपघनाक्षरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ३२ वर्णों का एक प्रकार का दंडक छंद।

**रूपजीविनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वेश्या।

**रूपजीवी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुरूपिया।

**रूपधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रूपधारण करनेवाला। रूपधारी।

**रूपधारी**—संज्ञा पुं० दे० "रूपधर"।

**रूपमंजरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार का फूल। २. एक प्रकार का धान।

**रूपमनी**—वि० [ हिं० रूपमान ] रूपवती।

**रूपमय**—वि० [ हिं० रूप+मय ] [ स्त्री० रूपमयी ] अति सुंदर। बहुत खूबसूरत।

**रूपमान**—वि० दे० "रूपवान्"।

**रूपमाला**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रूप+माला ] २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

**रूपमाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नौ दीर्घ वर्णों का एक छंद।

**रूपरूपक**—संज्ञा पुं० [ सं० रूप+रूपक ] रूपकालंकार के 'सावयव रूपक' भेद का एक नाम।

**रूपवंत**—वि० [ सं० रूपवत् ] [ स्त्री० रूपवंती ] खूबसूरत। रूपवान्। सुंदर।

**रूपवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गौरी नामक छंद। २. चंपकमाला वृत्ति का एक नाम।

वि० स्त्री० सुंदरी। खूबसूरत। (स्त्री०)

**रूपवान्, रूपवान**—वि० [सं० रूपवत् ] [ स्त्री० रूपवती ] सुंदर। रूपवाला। खूबसूरत।

**रूपसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुंदरी स्त्री।

**रूपा**—संज्ञा पुं० [ सं० रूप्य ] १. चाँदी। २. घटिया चाँदी। ३. स्वच्छ सफेद रंग का घोड़ा। नुकरा।

**रूपित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह उपन्यास, जिसमें ज्ञान, वैराग्यादि पात्र हों।

**रूपी**—वि० [ सं० रूपिन् ] [ स्त्री० रूपिणी ] १. रूप विशिष्ट। रूपवाला। रूपधारी। २. तुल्य। सदृश।

**रूप्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रुपया।

**रूबकार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १ सामने उपस्थित करने का भाव। पेशी। २. अदालत का हुक्म। ३. आज्ञापत्र।

**रू-बरू**—क्रि० वि० [फ़ा० ] सम्मुख। सामने।

**रूम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] टर्की या तुर्की देश का एक नाम।

संज्ञा पुं० [ अं० ] बड़ी कोठरी। कमरा।

**रूमना***—क्रि० स० [ हिं० झूमना का अनु० ] झूमना। झूलना।

**यौ०**—झूम झूमकर=उमड़-घुमड़कर। मस्ती से।

**रूमाल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं। २. चौकोना शाल या दुपट्टा।

**रूमाली**—संज्ञा स्त्री० दे० "रुमाली"।

**रूमी**—वि० [ फ़ा० ] १. रूम देश संबंधी। रूम का। २. रूम देश का निवासी।

**रूरना***—क्रि० अ० [ सं० रोरवण ] चिल्लाना।

**रूरा**—वि० [ सं० रूढ़=प्रशस्त ] [ स्त्री० रूरी ] १. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. सुंदर। ३. बहुत बड़ा।

**रूल**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. नियम। कायदा। २. वह लकड़ी जिसकी सहायता से सीधी लकीरें खींची जाती हैं। ३. सीधी खींची हुई लकीर।

**रूलना**—क्रि० स० [ ? ] दबाना।

**रूलर**—संज्ञा पुं० [अं०] १. शासक। राजा। २. सीधी लकीर खींचने की पट्टी या डंडा।

**रूव**—संज्ञा पुं० दे० "रूल"।

**रूषीकेश***—संज्ञा पुं० [ सं० हृषीकेश ] इंद्रियों का स्वामी। संयमी।

**रूस**—संज्ञा पुं० [ अं० रशा ] योरोप और एशिया के उत्तर में स्थित एक बड़ा देश।

**रूसना**—क्रि० अ० दे० "रूठना"।

**रूसा**—संज्ञा पुं० [ सं० रूषक ] अड़ूसा। अरूसा।

संज्ञा पुं० [ सं० रोहिण ] एक सुगंधित घास जिसका तेल निकाला जाता है।

**रूसी**—वि० [ हिं० रूस ] १. रूस देश का निवासी। २. रूस देश का।

संज्ञा स्त्री० रूस देश की भाषा।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] सिर के चमड़े पर जमा हुआ भूसी के समान छिलका।

**रूह**—संज्ञा स्त्री० [अ० ] १. आत्मा। जीवात्मा। २. सत्व। सार। ३. इत्र का एक भेद।

**रूहना***—क्रि० अ० [ सं० रोहण ] चढ़ना। उमड़ना।

क्रि० अ० [ हिं० रूँधना ] आवेष्ठित करना। घेरना।

**रूहानी**—वि० [ अ० ] १. रूह या आत्मा संबंधी। २. आध्यात्मिक।

**रेंकना**—क्रि० अ० [अनु०] १ गदहे का बोलना। २. बुरे ढंग से बोलना।

**रेंगना**—क्रि० अ० [ सं० रिंगण ] [ स० क्रि० रेंगाना] १. च्यूँटी आदि कीड़ों का चलना। २. धीरे धीरे चलना।

**रेंट**—संज्ञा पुं० [ देश० ] नाक का मल।

**रेंड़**—संज्ञा पुं० [ सं० एरंड ] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

**रेंड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रेंड़ ] रेंड़ के बीज।

**रे**—अव्य० [ सं० ] एक तुच्छ संबोधन शब्द।

संज्ञा पुं० [ सं० ऋषभ ] ऋषभ स्वर।

**रेख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रेखा ] १. लकीर।

**मुहा०**—रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना=१. लकीर बनाना। २. (कहने में) जोर देना। प्रतिज्ञा करना।

२. चिह्न। निशान।

**यौ०**—रूप-रेखा=दे० "रूप"।

३. गिनती। गणना। शुमार। ४. नई निकलती हुई मूछें।

**मुहा०**—रेख भींजना या भीनना=निकलती हुई मूछों का दिखाई पड़ना।

**रेखता**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार की गजल।

**रेखना***—क्रि० स० [ सं० रेखन या लेखन ] १. रेखा खींचना। लकीर खींचना। २. खरोंचना। खरोंच डालना।

**रेखांकण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चित्र का खाका बनाने के लिए रेखाएँ अंकित करना। २. दे० "रेखा-चित्र"।

**रेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सूत के आकार का लंबा चिह्न। डाँड़ी। लकीर। २. किसी वस्तु का सूचक चिह्न।

**यौ०**—कर्मरेखा=भाग्य का लेख।

३. गणना। शुमार। गिनती। ४. आकृति। आकार। सूरत। ५. हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का निर्णय होता है।

**रेखा-कर्म**—संज्ञा पुं० दे० "रेखांकन"।

**रेखागणित**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं। ज्यामिती।

**रेखा-चित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु का केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र। खाका।

**रेखित**—वि० [सं० रेखा] १. जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो। २. फटा हुआ।

**रेग**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बालू।

**रेगमाल**—संज्ञा पुं० [फ़ा० रेग+हिं० मलना] एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर धातुएँ साफ की जाती हैं।

**रेगिस्तान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बालू का मैदान। मरु देश।

**रेचक**—वि० [सं०] जिसके खाने से दस्त आवे। दस्तावर।

संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमें खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।

**रेचन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ दस्त लाना। कोष्ठशुद्धि करना। २. जुल्लाब।

**रेचना***—क्रि० स० [सं० रेचन] वायु या मल को बाहर निकालना।

**रेजगारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "रेजगी"।

**रेजगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० रेज़ा] १. दुअन्नी चवन्नी आदि छोटे सिक्के। २. छोटे खंड या कतरन आदि।

**रेज़ा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २. नग। थान। अदद।

**रेडियम**—संज्ञा पुं० [अं०] एक उज्ज्वल मूल द्रव्य (धातु) जिसमें बहुत शक्ति संचित रहती है।

**रेडियो**—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध विद्युतयंत्र जिससे बिना तार के संबंध के बहुत दूर से कही हुई बातें आदि सुनाई देती हैं।

**रेढ़ना†**—क्रि० स० [?] १. लुढ़कना। २. घसीटते हुए चलने में प्रवृत्त करना। ३. रुक-रुककर बोलना। धीरे धीरे गिड़गिड़ाना।

**रेढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रिढ़ना] बैलगाड़ी। लढ़िया।

**रेणु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. धूल। २. बालू। ३. अत्यंत लघु परिमाण। कणिका।

**रेणुका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बालू। रेत। २. रज। धूल। ३. पृथ्वी। ४. परशुराम की माता का नाम।

**रेत**—संज्ञा पुं० [सं० रेतस्] १. वीर्य। शुक्र। २. पारा। ३ जल।

संज्ञा स्त्री० [सं० रेतजा] १. बालू। २. बलुआ मैदान। मरुभूमि।

**रेतना**—क्रि० स० [हिं० रेत] १. रेती से रगड़कर किसी वस्तु में से छोटे छोटे कण गिराना। २. औजार से रगड़कर काटना।

**मुहा०**—गला रेतना—हानि पहुँचाना।

**रेता**—संज्ञा पुं० [हिं० रेत] १. बालू। २. मिट्टी। ३. बालू का मैदान।

**रेती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेतना] एक औजार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके महीन कण कटकर गिरते हैं।

संज्ञा स्त्री [हिं० रेत+ई (प्रत्य०)] नदी या समुद्र के किनारे पड़ी हुई बलुई जमीन। बलुआ किनारा।

**रेतीला**—वि० [हिं० रेत+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० रेतीली] बालूवाला। बलुआ।

**रेनु***—संज्ञा पुं० दे० "रेणु"।

**रेफ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हलंत रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मस्तक पर रहता है। जैसे, सर्प, दर्प, हर्ष में। २. रकार ( ˚ )।

**रेल**—संज्ञा स्त्री० [अं०] लोहे की पटरियों पर चलनेवाली गाड़ी जिसमें कई डब्बे होते हैं। रेलगाड़ी।

संज्ञा स्त्री० [हिं० रेलना] १. बहाव। धारा। २. आधिक्य। भरमार।

**रेलठेल**—संज्ञा स्त्री० दे० "रेलपेल"।

**रेलना**—क्रि० स० [देश०] १. आगे की ओर ढकेलना। धक्का देना। २. अधिक भोजन करना।

क्रि० अ० ठसाठस भरा होना।

**रेलपेल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेलना+पेलना] १. भारी भीड़। २. भरमार। अधिकता।

**रेल-मेल**—संज्ञा पुं० [हिं० रिलना+मिलना] मेल-जोल। हेल-मेल।

**रेलवे**—संज्ञा स्त्री० [अं०] १ रेलगाड़ी की सड़क। २. रेल का महकमा।

**रेला**—संज्ञा पुं० [देश०] १. जल का प्रवाह। बहाव। तोड़। २. समूह में चढ़ाई। धावा। दौड़। ३. धक्कमधक्का। ४. अधिकता। बहुतायत।

**रेवंद**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी रेवंद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम में आती है।

**रेवड़**—संज्ञा पुं० [देश०] भेड़-बकरी का झुंड। लेहड़ा। गल्ला।

**रेवड़ी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध

मिठाई।
**रेवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सत्ताइसवाँ नक्षत्र जो ३२ तारों से मिलकर बना है। २. गाय। ३. दुर्गा। ४. बलराम की पत्नी जो राजा रेवत की कन्या थी।
**रेवतीरमण**—संज्ञा पुं० [सं०] बलराम।
**रेवा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नर्मदा नदी। २. काम की पत्नी रति। ३. दुर्गा। ४. रीवाँ राज्य। बघेलखंड।
**रेशम**—संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ़ तंतु जिससे कपड़े बुने जाते हैं। यह तंतु कोश में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़े तैयार करते हैं। कोशय।
**रेशमी**—वि० [फ़ा०] रेशम का बना हुआ।
**रेशा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] तंतु या महीन सूत जो पौधों की छालों आदि से निकलता है।
**रेष***—संज्ञा स्त्री० दे० "रेख"।
**रेस**—संज्ञा स्त्री० [अं०] दौड़, विशेषतः घोड़ों की दौड़ जिसमें प्रतियोगिता होती है।
**रेह**—संज्ञा स्त्री० [?] खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है।
**रेहन**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] महाजन के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब वह रुपया पा जाय, तब माल या जायदाद वापस कर दे। बंधक। गिरवी।
**रेहनदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।
**रेहननामा**—संज्ञा पुं० [फा०] वह कागज जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।
**रैहल**—संज्ञा स्त्री० दे० "रिहल"।
**रैहु**—संज्ञा स्त्री० दे० "रोहु"।
**रैअति***—संज्ञा स्त्री० दे० "रैयत"।
**रैकेट**—संज्ञा पुं० [अं०] टेनिस के खेल में गेंद मारने का डंडा जिसका अगला भाग वृत्ताकार और ताँत से बुना हुआ होता है।
**रैतुआ**—संज्ञा पुं० दे० "रायता"।
**रैदास**—संज्ञा पुं० १. एक सिद्ध चमार भक्त जो रामानंद का शिष्य और कबीर का समकालीन था। २. चमार।
**रैन, रैनि***—संज्ञा स्त्री० [सं० रजनि] रात्रि।
**रैनिचर**—संज्ञा पुं० [सं० रजनिचर] राक्षस।
**रैयत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रिआया।
**रैयाराव**—संज्ञा पुं० [हिं० राजा+राव] छोटा राजा।
**रैला**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रेला] प्रवाह। रेला।
**रैवतक**—संज्ञा पुं० [सं०] गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरनार कहलाता है।
**रोंगटा**—संज्ञा पुं० [सं० रोमक] सारे शरीर पर के बाल।
मुहा०—रोंगटे खड़े होना=किसी भयानक कांड को देख या सोचकर शरीर में बहुत क्षोभ उत्पन्न होना।
**रोंगटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना] खेल में बुरा मानना या बेईमानी करना।
**रोंवा***—संज्ञा पुं० [सं० रोम] रोआँ। लोम।
**रोआं**†—संज्ञा पुं० दे० "रोयाँ"।
**रोआब**—संज्ञा पुं० [अ० रोअब] रोब। आतंक।
**रोउँ***—संज्ञा पुं० दे० "रोवँ"।
**रोऊ***—वि० दे० "रोना"।
**रोक**—संज्ञा स्त्री० [सं० रोधक] १. गति में बाधा। अटकाव। छेंक। अवरोध। २. मनाही। निषेध। ३. काम में बाधा। ४. रोकनेवाली वस्तु।
संज्ञा पुं० दे० "रोकड़"।
**रोक-टोक, रोक-थाम**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोकना+टोकना, रोकना+थामना] १. बाधा। प्रतिबंध। २. मनाही। निषेध।
**रोकड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० रोक=नकद] १. नगद रुपया पैसा आदि। २. जमा। धन। पूँजी।
**रोकड़िया**—संज्ञा पुं० [हिं० रोकड़] खजानची।
**रोकना**—क्रि० स० [हिं० रोक] १. चलने या बढ़ने न देना। २. कहीं जाने से मना करना। ३. किसी चली आती हुई बात को बंद करना। ४. छेंकना। ५. अड़चन डालना। बाधा डालना। ६. ऊपर लेना। ओढ़ना। ७. वश में रखना। काबू में रखना।
**रोख***†—संज्ञा पुं० दे० "रोष"।
**रोग**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० रोगी, रुग्न] व्याधि। मर्ज। बीमारी।
**रोगदई, रोगदैया**—संज्ञा स्त्री० [हिं० रोना?] १. बेईमानी। २. अन्याय। (लड़के)
**रोगन**—संज्ञा पुं० [फ़ा० रौग़न] १. तेल। चिकनाई। २. वह पतला लेप जिसे किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे। पालिश। वारनिश। ३. वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतनों आदि पर चढ़ाते हैं।

**रोगनी**—वि० [ फ़ा० ] रोगन किया हुआ।
**रोगिया**—संज्ञा पुं० दे० "रोगी"।
**रोगी**—वि० [ सं० रोगिन् ] [ स्त्री० रोगिनी ] जो स्वस्थ न हो। व्याधिग्रस्त। बीमार।
**रोचक**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा रोचकता ] १. रुचिकारक। अच्छा लगनेवाला। प्रिय। २. मनोरंजक। दिलचस्प।
**रोचन**—वि० [ सं० ] १. अच्छा लगनेवाला। रोचक। २. शोभा देनेवाला। ३. लाल।
संज्ञा पुं० १. काला सेमर। प्याज। २. स्वारोचिष मन्वंतर के इंद्र। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. रोली।
**रोचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रक्त-कमल। २. गोरोचन। ३. वसुदेव की स्त्री। ४. रोली।
**रोचि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रोचिस् ] १. प्रभा। दीप्ति। २. प्रकट होती हुई शोभा। ३. किरण। रश्मि।
**रोचित**—वि० [ सं० रोचना ] शोभित।
**रोज***—संज्ञा पुं० [ सं० रोदन ] रोना। रुदन।
**रोज़**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दिन। दिवस।
अव्य० प्रतिदिन। नित्य।
**रोज़गार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. जीविका या धन संचय के लिए हाथ में लिया हुआ काम। व्यवसाय। धंधा। पेशा। कारबार। २. व्यापार। तिजारत।
**रोज़गारी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] व्यापारी।
**रोज़नामचा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह किताब जिस पर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है।
**रोज़मर्रा**—अव्य० [ फ़ा० ] प्रतिदिन। नित्य।
**रोज़ा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. व्रत। उपवास। २. वह उपवास जो मुसलमान रमजान के महीने में करते हैं।
**रोज़ी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. नित्य का भोजन। २. जीवन-निर्वाह का अवलंब। जीविका।
**रोज़ीना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] दैनिक वृत्ति या मजदूरी।
**रोझ**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] नील गाय।
**रोट**—संज्ञा पुं० [ हिं० रोटी ] १. बहुत मोटी रोटी। लिट्ट। २. मीठी मोटी रोटी।
**रोटा**†—वि० [ हिं० रोटी ] पिसा हुआ।
**रोटिहा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० रोटी+हा (प्रत्य०) ] केवल भोजन पर रहनेवाला चाकर।
**रोटी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. गुँधे हुए आटे की आँच पर सेंकी हुई लोई या टिकिया। चपाती। फुलका। २. भोजन। रसोई।
**मुहा०**—रोटी कपड़ा = भोजन वस्त्र। जीवन निर्वाह की सामग्री। किसी बात की रोटी खाना = किसी बात से जीविका कमाना। किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना=किसी के घर पड़ा रहकर पेट पालना। रोटी दाल चलना=जीवन-निर्वाह होना।
**रोटीफल**—संज्ञा पुं० [ हिं० रोटी + फल ] एक वृक्ष का फल जो खाने में अच्छा होता है।
**रोडा***—संज्ञा पुं० दे० "रोड़ा"।
**रोड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० लोष्ट ] ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। बड़ा कंकड़।
**मुहा०**—रोड़ा अटकाना या डालना=विघ्न या बाधा डालना।
**रोदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] क्रंदन। रोना।
**रोदसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्वर्ग। २. भूमि।
**रोदा**—संज्ञा पुं० [ सं० रोध ] कमान की डोरी। चिल्ला।
**रोध, रोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० रोधित ] १. रोक। रुकावट। अवरोध। २. दमन।
संज्ञा पुं० [ सं० रुदन ] रोना। विलाप।
**रोधना***—क्रि० स० [ सं० रोधन ] रोकना।
**रोना**—क्रि० अ० [ सं० रोदन ] १. चिल्लाना और आँसू बहाना। रुदन करना। २. संज्ञा पुं० रुलाई। विलाप।
**मुहा०**—रोना-पीटना = बहुत विलाप करना। रो रोकर=१. ज्यों-त्यों करके। कठिनता से। २. बहुत धीरे-धीरे। रोना गाना=विनती करना। गिड़गिड़ाना।
**यौ०**—रोनी धोनी=रोने-कलपने की वृत्ति।
२. बुरा मानना। चिढ़ना। ३. दुःख करना।
संज्ञा पुं० दुःख। रंज। खेद।
वि० [ स्त्री० रोनी ] १. थोड़ी सी बात पर भी रोनेवाला। २. चिड़चिड़ा। ३. रोनेवाले का सा। मुहर्रमी। रोवाँसा।
**रोप**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रोपना ] रोपने की क्रिया या भाव।
**रोपक**—वि० [ सं० ] रोपनेवाला।
**रोपण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि०

रोपित, रोप्य ] १. ऊपर रखना या स्थापित करना। २. लगाना। जमाना। बैठाना। (बीज या पौधा) ३. मोहित करना। मोहन।

**रोपना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ रोपण ] १. जमाना। लगाना। बैठाना। २. पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३. अड़ाना। ठहराना। ४. बीज डालना। बोना। ५. लेने के लिए हथेली या कोई बरतन सामने करना। ६. रोकना।

**रोपनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रोपना ] धान आदि के पौधों को गाड़ने का काम। रोपाई।

**रोपित**—वि॰ [ सं॰ ] १ लगाया हुआ। जमाया हुआ। २. स्थापित। रखा हुआ। ३. मोहित। भ्रांत।

**रोब**—संज्ञा पुं॰ [अ॰ रुअब ] [वि॰ रोबीला] बड़प्पन की धाक। आतंक। दबदबा।

**मुहा॰**—रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना। रोब में आना=१. आतंक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना जो यों न की जाती हो। २. भय मानना।

**रोबकार**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "रूबकार"।

**रोबदार**—वि॰ [ अ॰ ] रोबदाब-वाला। प्रभावशाली। तेजस्वी।

**रोम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रोमन् ] १. देह के बाल। रोयाँ। लोम।

**मुहा॰**—रोम रोम में=शरीर भर में। रोम रोम से=तन मन से। पूर्ण हृदय से। २. छेद। सूराख। ३. जल। ४. ऊन।

**रोमक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रोम नगर का वासी। रोमन। २. रोम नगर या देश।

**रोमकूप**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शरीर के वे छिद्र जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं।

**रोमन**—वि॰ [ अं॰ ] रोम नगर या राष्ट्रसंबंधी।

संज्ञा स्त्री॰ वह लिपि जिसमें अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

**रोमपट, रोमपाट**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] ऊनी कपड़ा।

**रोमपाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अंग देश के एक प्राचीन राजा।

**रोमराजी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रोमावलि"।

**रोमलता**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रोमावली"।

**रोमहर्ष**-संज्ञा पुं॰ दे॰ "रोमहर्षण"।

**रोमहर्षण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] रोयों का खड़ा होना जो अत्यंत आनंद के सहसा अनुभव से अथवा भय से होता है। रोमांच। सिहरन।

वि॰ भयंकर। भीषण।

**रोमांच**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ रोमांचित ] १. आनंद से रोयों का उभर आना। पुलक। २. भय से रोंगटे खड़े होना।

**रोमाली***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "रोमावलि"।

**रोमावलि, रोमावली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] रोयों की पंक्ति जो पेट के बीचोबीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमाली। रोमराजी।

**रोमिल**—वि॰ [ सं॰ रोम ] रोएँ-दार।

**रोयाँ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रोमन् ] वे बाल जो प्राणियों के शरीर पर थोड़े या बहुत उगते हैं। लोम। रोम।

**मुहा॰**—रोयाँ खड़ा होना=हर्ष या भय से रोमकूपों का उभरना। रोयाँ पसीजना=हृदय में दया उत्पन्न होना। तरस आना।

**रोर**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रवण ] १. हल्ला। कोलाहल। शोर-गुल। २. बहुत से लोगों के रोने-चिल्लाने का शब्द। ३. उपद्रव। हलचल।

वि॰ १. प्रचंड। तेज। दुर्दमनीय। २. उपद्रवी। उद्धत। दुष्ट।

**रोरी**†—संज्ञा स्त्री॰ "रोली"।

*संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रोर ] चहल-पहल। धूम।

वि॰ स्त्री॰ [ हिं॰ रुरा ] सुंदर। रुचिर।

**रोल***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रवण ] १. रार। हल्ला। कोलाहल। २. शब्द। ध्वनि।

संज्ञा पुं॰ पानी का तोड़। रेला। बहाव।

**रोला**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रावण ] १. रार। शोरगुल। कोलाहल। २. घमासान युद्ध।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] २४ मात्राओं का एक छंद।

**रोली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रोचनी ] चूने और हल्दी से बनी लाल बुकनी जिसका तिलक लगाते हैं। श्री।

**रोवनहार**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ रोवना +हारा (प्रत्य॰) ] १. रोनेवाला। २. किसी के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला कुटुंबी।

**रोवना**—क्रि॰ अ॰, वि॰ दे॰ "रोना"।

**रोवनिहारा***—वि॰ दे॰ "रोवन-हार"।

**रोवनी, धोवनी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ रोवनाधोवना ] रोने धोने की वृत्ति। मनहूसी।

**रोवासा**—वि॰ [ हिं॰ रोना ] [स्त्री॰

रोवासी ] जो रो देना चाहता हो।

**रोशन**—वि० [ फ़ा० ] १. जलता हुआ। प्रदीप्त। प्रकाशित। २. प्रकाशमान। चमकदार। ३. प्रसिद्ध। मशहूर। ४ प्रकट। ज़ाहिर।

**रोशन चौकी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] शहनाई का बाजा। नफीरी।

**रोशनदान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] प्रकाश आने का छिद्र। गवाक्ष। मोखा।

**रोशनाई**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. लिखने की स्याही। मसि। २. प्रकाश। रोशनी।

**रोशनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. उजाला। प्रकाश। २ दीपक। चिराग। ३ दीपमाला का प्रकाश। ४. ज्ञान का प्रकाश।

**रोष**—संज्ञा पुं० [ सं० रुष्ट ] १. क्रोध। कोप। गुस्सा। २. चिढ़। कुढ़न। ३. वैर। विरोध। ४. लड़ाई का उमंग। जोश।

**रोषी**—वि० [ सं० रोषिन् ] क्रोधी। गुस्सैल।

**रोस**—संज्ञा पुं० दे० "रोष"।

**रोह**—संज्ञा पुं० [ देश० ] नील गाय।

**रोहन***—संज्ञा पुं० [ ? ] नेत्र।

**रोहण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चढ़ना। चढ़ाई। २.ऊपर का बढ़ना। ३. पौधे का उगना।

**रोहना***—क्रि० अ० [ सं० रोहण ] १.चढ़ना। २. ऊपर की ओर जाना। ३. सवार होना।

क्रि० स० १. चढ़ाना। ऊपर करना। २. सवार कराना। ३. धारण करना।

**रोहिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गाय। २. बिजली। ३. वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थी। ४. नौ वर्ष की कन्या की संज्ञा। (स्मृति) ५. सत्ताइस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र।

**रोहित**—वि० [ सं० ] लाल रंग का। लोहित।

संज्ञा पुं० १. लाल रंग। २. रोहू मछली। ३. एक प्रकार का मृग। ४. इंद्र-धनुष। ५. केसर। कुंकुम। ६. रक्त। लहू। खून।

**रोहिताश्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अग्नि। २. राजा हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम।

**रोही**—वि० [ सं० रोहिन् ] [ स्त्री० रोहिणी ] चढ़नेवाला।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक हथियार।

**रोहू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रोहित ] एक प्रकार की बड़ी मछली।

**रौंद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रौंदना ] रौंदने का भाव या क्रिया।

संज्ञा स्त्री० [ अं० राउंड ] चक्कर। गश्त।

**रौंदन**—संज्ञा स्त्री० दे० "रौंद"।

**रौंदना**—क्रि० स० [ सं० मर्दन ] पैरों से कुचलना। मर्दित करना।

**रौ**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. गति। चाल। २. वेग। झोंक। ३. पानी का बहाव। तोड़। ४. किसी बात की धुन। झोंक। ५. चाल। ढंग।

*† संज्ञा पुं० दे० "रव"।

**रौगन**—संज्ञा पुं० दे० "रोगन"।

**रौज़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] कब्र। समाधि।

**रौताइन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० राव, रावत ] राव या रावत की स्त्री। ठकुराइन।

**रौताई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० रावत + आई ( प्रत्य० ) ]१. राव या रावत होने का भाव। २. ठकुराई। सरदारी।

**रौद्र**—वि० [ सं० ] [भाव० रौद्रता] १. रुद्र संबंधी। २. प्रचंड। भयंकर। डरावना। ३. क्रोधपूर्ण।

संज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक जिसमें क्रोधसूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन होता है। २. ग्यारह मात्राओं के छन्दों की संज्ञा। ३. एक प्रकार का अस्त्र।

**रौद्रार्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] २३ मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

**रौन***—संज्ञा पुं० दे० "रमण"।

**रौनक़**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. वर्ण और आकृति। रूप। २. चमक-दमक। दीप्ति। कांति। ३. प्रफुल्लता। विकास। ४. शोभा। छटा। सुहावनापन।

**रौना**—संज्ञा पुं० दे० "रोना"।

**रौनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

**रौप्य**—संज्ञा पुं०[सं०] चाँदी। रूपा।

वि० चाँदी का बना हुआ। रूपे का।

**रौर***—संज्ञा स्त्री० दे० "रौरा"।

**रौरव**—वि० [ सं० ] भयंकर। डरावना।

संज्ञा पुं० एक भीषण नरक का नाम।

**रौरा**—संज्ञा पुं० दे० "रौला"।

†सर्व० [ हिं० रावरा ] [ स्त्री० रौरी ] आपका।

**रौराना**—क्रि० स० [ हिं० रौरा ] प्रलाप करना। बकना।

**रौरे**—सर्व० हिं० [ राव, रावल ] आप। ( संबोधन )

**रौल**—संज्ञा पुं० दे० "रौला"।

संज्ञा स्त्री० दे० "रौलि"।

**रौला**—संज्ञा पुं० [ सं० रवण ] १. हल्ला। गुल। शोर। २. हुल्लड़। धूम।

**रौलि**—संज्ञा स्त्री [ देश० ] धौल। चपत।

**रौशन**—वि० दे० "रोशन"।

**रविश**—संज्ञा स्त्री० [फा० रविश] १. गति। चाल। २. रंग ढंग और तरीका। ३. बाग की क्यारियों के बीच का मार्ग।

**रौहाल**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. घोड़े की एक चाल। २. घोड़े की एक जाति।

—:※:—

# ल

**ल**—व्यंजन वर्ण का अट्ठाइसवां वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत होता है। यह अल्पप्राण है।

**लंक**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमर। कटि।
संज्ञा स्त्री० [सं० लंका] लंका नामक द्वीप।

**लंकनाथ, लंकनायक**—संज्ञा पुं० [हिं० लंक+सं० पति या नायक] १. रावण। २. विभीषण।

**लंकलाट**—संज्ञा पुं० [अं० लांग क्लाथ] एक प्रकार का मोटा बढ़िया कपड़ा।

**लंका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण का राज्य था।

**लंकापति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रावण। २. विभीषण।

**लंकेश, लंकेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] रावण।

**लंग**—संज्ञा स्त्री० दे० "लाँग"।
संज्ञा पुं० [फा०] लँगड़ापन।

**लंगड़**—वि० दे० "लँगड़ा"।
संज्ञा पुं० दे० "लंगर"।

**लँगड़ा**—वि० [फा० लंग] जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया आम।

**लंगड़ाना**—क्रि० अ० [हिं० लँगड़ा] लंग करते हुए चलना। लँगड़े होकर चलना।

**लँगड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लँगड़ा] एक प्रकार का छंद।

**लंगर**—संज्ञा पुं० [फा०] १. लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसका व्यवहार बड़ी बड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराए रखने के लिए होता है। २. लकड़ी का वह कुन्दा जो किसी हरहाई गाय के गले में बाँधा जाता है। ठेंगुर। ३. लटकती हुई कोई भारी चीज। ४. लोहे की मोटी और भारी जंजीर। ५. चाँदी का तोड़ा जो पैर में पहना जाता है ६. पहलवानों का लँगोट। ७. कपड़े में के वे टाँके जो दूर दूर पर डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ८. वह भोजन जो प्रायः नित्य दरिद्रों को बाँटा जाता है। ९. वह स्थान जहाँ दरिद्रों आदि को भोजन बाँटा जाता हो।
वि० १. भारी। वजनी। २. नटखट ढीठ।
मुहा०—लंगर करना=शरारत करना।

**लंगरई, लँगराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंगर+आई (प्रत्य०)] ढिठाई। शरारत।

**लंगरखाना**—संज्ञा पुं० दे० "लंगर"।

**लंगरगाह**—संज्ञा पुं० दे० "बंदरगाह"।

**लंगी**—वि० [हिं० लँगड़ा] लँगड़ी।

**लंगूर**—संज्ञा पुं० [सं० लांगूली] १. बंदर। २. पूँछ। दुम। (बंदर की) ३. एक प्रकार का बड़ा और काले मुँह का बंदर।

**लंगूरफल**—संज्ञा पुं० दे० "नारियल"।

**लँगूल**—संज्ञा पुं० [सं० लांगूल] पूँछ। दुम।

**लँगोट, लँगोटा**—संज्ञा पुं० [सं० लिंग+ओट] [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र जिससे केवल उपस्थ

ढका जाता है। रूमाली।

यौ०—लँगोटबंद=ब्रह्मचारी। स्त्री-त्यागी।

**लँगोटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लँगोट ] कौपीन। कछनी। भगई। धज्जी।

मुहा०—लँगोटिया यार=बचपन का मित्र। लँगोटी पर फाग खेलना=कम सामर्थ्य होने पर भी बहुत अधिक व्यय करना

**लंघन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उपवास। अनाहार। फाका। २. लाँघने की क्रिया। डाँकना। ३. अतिक्रमण।

**लँघना**—क्रि० स० दे० "लाँघना"।

**लंच**—संज्ञा पुं० [ अं० ] दोपहर का भोजन या जलपान।

**लंठ**—वि० [ हिं० लट्ठ ] मूर्ख। उजड्ड।

**लँडूरा**—वि० [देश० या सं० लांगूल] जिसकी सब पूँछ कट गई हो। बाँड़ा।

**लंतरानी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] व्यर्थ की बड़ी बड़ी बात। शेखी।

**लंप**—संज्ञा पुं० [ अं० लैंप ] दीपक। लालटेन।

**लंपट**—वि० [ सं० ] व्यभिचारी। विषयी। कामी। कामुक।

**लंपटता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुराचार। कुकर्म।

**लंब**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह रेखा जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण बनावे। २. एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ३. अंग। ४. पति।

संज्ञा स्त्री० दे० "विलंब"।

वि० [ सं० ] लंबा।

**लंबकर्ण**—वि० [ सं० ] जिसके कान लंबे हों।

**लंबतड़ंग**—वि० [ सं० लंब+ताड़+अंग ] ताड़ के समान लंबा। बहुत लंबा।

**लंबमान**—वि० दे० "लंबायमान"।

**लंबा**—वि० [ सं० लंब ] [ स्त्री० लंबी ] १. जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो। "चौड़ा" का उलटा।

मुहा०—लंबा करना=१. रवाना करना। चलता करना। २. जमीन पर पटक या लेटा देना।

२. जिसकी ऊँचाई अधिक हो। ३. (समय) जिसका विस्तार अधिक हो। ४. विशाल। दीर्घ। बड़ा।

**लंबाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लंबा ] लंबा होने का भाव। लंबापन।

**लंबान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लंबा ] लम्बाई।

**लंबायमान**—वि० [ हिं० लंब ] १. बहुत लंबा। २. लेटा हुआ।

**लंबित**—वि० [ सं० ] लंबा।

**लंबी**—वि० स्त्री० [ हिं० लंबा ] लंबा का स्त्रीलिंग रूप।

मुहा०—लंबी तानना=लेटकर सो जाना।

**लंबोतरा**—वि० [ हिं० लंबा ] लंबे आकारवाला। जो कुछ लंबा हो

**लंबोदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणेश।

**ल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. पृथ्वी।

**लउटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लकुटी"।

**लकड़बग्घा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लकड़ी+बाघ ] एक मांसाहारी जंगली जंतु जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है। लग्घड़।

**लकड़हारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लकड़ी+हारा ] जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला।

**लकड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लकड़ी ] लकड़ी का मोटा कुंदा। लक्कड़।

**लकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लगुड़ ] १. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर उससे अलग हो गया हो। काष्ठ। काठ। २. ईंधन। जलावन। ३. गतका। ४. छड़ी। लाठी।

मुहा०—लकड़ी फेरना या सुँघाना=किसी को अपने अनुकूल या वश में करना। लकड़ी होना=१. बहुत दुबला पतला होना। २. सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।

**लक-दक**—वि० [ अ० ] वनस्पति आदि से रहित और खुला (मैदान)।

**लकब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] उपाधि। खिताब।

**लकलक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] सारस। वि० बहुत दुबला पतला।

**लकवा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक वात रोग जिसमें शरीर का कोई भाग शून्य पड़ जाता है। पक्षाघात।

**लकीर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रेखा, हिं० लीक ] १. वह सीधी आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध में चली गई हो। रेखा

मुहा०—लकीर का फकीर=आँखें बंद करके पुराने ढंग पर चलनेवाला। लकीर पीटना=बिना समझे बूझे पुरानी प्रथा पर चले चलना।

२. धारी। ३. पंक्ति। सतर।

**लकुच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़हर। संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।

**लकुट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लगुड ] लाठी। छड़ी।

संज्ञा पुं० [ सं० लकुच ] १. एक प्रकार का फलदार वृक्ष। २. लुकाट। लखोट।

**लकुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लगुड ]

लाठी। छड़ी।

**लक्कड़**—संज्ञा पुं० [हिं० लकड़ी] काठ का बड़ा कुंदा।

**लक्का**—संज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूँछ पंखे सी होती है।

**लक्खी**—वि० [हिं० लाख] लाख के रंग का। लाखी।
संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।
संज्ञा पुं० [हिं० लाख (संख्या)] लखपती।
वि० लाखों से संबंध रखनेवाला। जैसे—लक्खी मेला।

**लक्ष**—वि० [सं०] एक लाख। सौ हजार।
संज्ञा पुं० [सं०] १. वह अंक जिससे एक लाख की संख्या का ज्ञान हो। २. अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ३. दे० "लक्ष्य"।

**लक्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। आसार। २. नाम। ३. परिभाषा। ४. शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हों। ५. सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों में होनेवाले कुछ विशेष चिह्न जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। ६. शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग। लच्छन। ७. चालढाल। तौर-तरीका। ८. दे० "लक्ष्मण"।

**लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।

**लक्षना***—क्रि० स० दे० "लखना"।

**लक्षि**—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।
*संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्य"।



**लक्षित**—वि० [सं०] १. बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २. देखा हुआ। ३. अनुमान से समझा या जाना हुआ।
संज्ञा पुं० वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।

**लक्षित लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा।

**लक्षिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसका परपुरुष-प्रेम दूसरों को ज्ञात हो।

**लक्षी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ रगण होते हैं। गंगाधर। खंजन।
वि० [सं० लक्षित] लक्ष रखनेवाला।

**लक्ष्म**—संज्ञा पुं० [सं०] चिह्न। लक्षण।

**लक्ष्मण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा दशरथ के दूसरे पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और जो रामचन्द्र के साथ वन में गये थे। शेषनाग के अवतार माने जाते हैं।

**लक्ष्मी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिंदुओं की एक प्रसिद्ध देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती है। कमला। रमा। २. धन संपत्ति। दौलत। ३. शोभा। सौंदर्य। छवि। ४. दुर्गा का एक नाम। ५. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण, एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। ६. आर्या छंद का पहला भेद। ७. घर की मालकिन। गृहस्वामिनी।
वि० अत्यंत सद्गुणी (स्त्री०)

**लक्ष्मीधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम। २. विष्णु।

**लक्ष्मीपति**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**लक्ष्मीपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] धनवान्। अमीर।

**लक्ष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना। २. वह जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। ३. अभिलषित पदार्थ। उद्देश्य। ४. अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। ५. वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलता हो।

**लक्ष्यभेद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का निशाना जिसमें चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं।

**लक्ष्यार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अर्थ जो लक्षणा से निकले।

**लखधर**—संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

**लखन***†—संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।
संज्ञा स्त्री० [हिं० लखना] लखने की क्रिया या भाव।

**लखना***†—क्रि० स० [सं० लक्ष] १. लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना। २. देखना।

**लखपती**—संज्ञा पुं० [सं० लक्ष + पति] जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

**लखरांव**—संज्ञा पुं० [हिं० लाख] १. वह बाग जिसमें लाख पेड़ हों। २. बहुत बड़ा बाग।

**लखलखा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मूर्च्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।

**लखलुट**—वि० [हिं० लाख + लुटाना] १. बहुत बड़ा अपव्ययी।

**लखाउ***—संज्ञा पुं० [हिं० लखना] १. लक्षण। पहचान। चिह्न। २. चिह्न के रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।

**लखाना***†—क्रि० अ० [हिं० लखना]

दिखाई पड़ना।
क्रि० स० १. दिखलाना। २. अनुमान करा देना। समझा देना।

**लखाव***—संज्ञा पुं० दे० "लखाउ"।

**लखिमी***†—संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मी"।

**लखिया***†—संज्ञा पुं० [हिं० लखना +इया (प्रत्य०)] लखनेवाला। जो लखता हो।

**लखी**—संज्ञा पुं० [हिं० लाखी] लाख के रंग का घोड़ा। लाखी।

**लखेदना**†—क्रि० स० दे० "खदेड़ना"।

**लखेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० लाख+एरा (प्रत्य०)] वह जो लाख की चूड़ी आदि बनाता हो।

**लखौटा**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख+ओट (प्रत्य०)] लाख की चूड़ी जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं।

**लखौटा**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाख+औटा (प्रत्य०)] १. चंदन, केसर आदि से बना हुआ अंगराग। २. एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ प्रायः सिंदूर आदि रखती हैं।

**लखौरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० लाक्षा, हिं० लाखा +औरी (प्रत्य०)] १. एक प्रकार की भ्रमरी या भृङ्गी का घर। २. एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ-तेरही ईंट। ककैया ईंट।
संज्ञा स्त्री० [सं० लक्ष] किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल आदि चढ़ाना।

**लगंत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना+अंत (प्रत्य०)] लगने या लगन होने की क्रिया या भाव।

**लग**—क्रि० वि० [हिं० लौं] १. तक। पर्यंत। ताईं। २. निकट। समीप। पास।
संज्ञा स्त्री०. लगन। लाग। प्रेम।
अव्य० १. वास्ते। लिये। २. साथ। संग।

**लगडग**—क्रि० वि० दे० "लगभग"।

**लगन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया। लौ। २. प्रेम। स्नेह। मुहब्बत। प्यार। ३. लगाव। संबंध।
संज्ञा पुं० [सं० लग्न] १. ब्याह का मुहूर्त्त या साइत। २. वे दिन जिनमें विवाह आदि होते हों। सहालग। ३. दे० "लग्न"।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार की थाली।

**लगनपत्री**—संज्ञा स्त्री० [सं० लग्न-पत्रिका] विवाह-समयके निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।

**लगनवट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगन] प्रेम। मुहब्बत।

**लगना**—क्रि० अ० [सं० लग्न] १. दो पदार्थों के तल आपस में मिलना। सटना। २. मिलना। जुड़ना। ३. एक चीज का दूसरी चीज पर सीया, जड़ा, टाँका या चिपकाया जाना। ४. सम्मिलित होना। शामिल होना। मिलना। ५. छोर या प्रात आदि पर पहुँचकर टिकना या रुकना। ६. क्रम से रखा या सजाया जाना। ७. व्यय होना। खर्च होना। ८. जान पड़ना। मालूम होना। ९. स्थापित होना। कायम होना। १०. संबंध या रिश्ते में कुछ होना। ११. आघात पड़ना। चोट पहुँचना। १२. किसी पदार्थ का किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना। १३. खाद्य पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना। १४. आरंभ होना। शुरू होना। १५. जारी होना। चलना। १६. सड़ना। गलना। १७. प्रभाव पड़ना। असर होना।
मुहा०—लगती बात कहना=मर्मभेदी बात कहना। चुटकी लेना।
१८ आरोप होना। १९. हिसाब होना। गणित होना। २०. पीछे पीछे चलना। साथ होना। २१. गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं का दूहा जाना। २२. गड़ना। चुभना। धँसना। २३. छेड़खानी करना। छेड़छाड़ करना। २४. बंद होना। मुँदना। २५. दाँव पर रखा जाना। बदना। २६. घात में रहना। ताक मे रहना। २७ होना।
**विशेष**—यह क्रिया बहुत से शब्दों के साथ लगकर भिन्न भिन्न अर्थ देती है।
संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार का जंगली मृग।

**लगनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"।

**लगनी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० लगन=थाली] १. छोटी थाली। रिकाबी। २. परात।

**लगभग**—क्रि० वि० [हिं० लग=पास+भग (अनु०)] प्रायः। करीब करीब।

**लगमात**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना+सं० मात्रा] स्वरों के वे चिह्न जो उच्चारण के लिए व्यंजनों में जोड़े जाते

**लगर***†—संज्ञा पुं० [देश०] लग्घड़ पक्षी।

**लगलग**—वि० [अ० लक्लक्] बहुत दुबला पतला। अति सुकुमार।

**लगवा***†—वि० [अ० लग़ो] १. झूठ। मिथ्या। असत्य। २. व्यर्थ। बेकार।

**लगवाना**—क्रि० स० [हिं० लगाना

का प्रेर० ] लगाने का काम दूसरे से कराना।

**लगवार**†—संज्ञा पुं० [ हिं० लगना ] उपपति। यार। आशना।

**लगातार**—क्रि० वि० [ हिं० लगना +तार=सिलसिला ] एक के बाद एक। बराबर। निरंतर।

**लगान**—संज्ञा पुं० [ हिं० लगना या लगाना ] १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर लगनेवाला कर। राजस्व। जमाबंदी। पोत।

**लगाना**—क्रि० स० [ हिं० लगना का स० रूप ] १. सतह पर सतह रखना। सटाना। २. मिलाना। जोड़ना। ३. किसी पदार्थ के तल पर कोई चीज डालना, फेंकना, रगड़ना, चिपकाना या गिराना। ४. सम्मिलित करना। शामिल करना। ५. वृक्ष आदि आरोपित करना। जमाना। ६. एक ओर या किसी उपयुक्त स्थान पर पहुँचना। ७. क्रम से रखना या सजाना। सजाना। चुनना। ८. खर्च करना। व्यय करना। ९. अनुभव करना। मालूम कराना। १० आघात करना। चोट पहुँचाना। ११ किसी में कोई नई प्रवृत्ति आदि उत्पन्न करना। १२ उपयोग में लाना। काम में लाना। १३. आरोपित करना। अभियोग लगाना।

**मुहा०**—किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना=बीच में किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना।

१४. प्रज्वलित करना। जलाना। १५. ठीक स्थान पर बैठाना। जड़ना। संबद्ध करना। १६. गणित करना। हिसाब करना। १७. कान भरना। चुगली खाना।

**यौ०**-लगाना बुझाना=लड़ाई झगड़ा कराना। दो आदमियों में वैमनस्य उत्पन्न करना। १८. नियुक्त करना। १९. गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं को दुहना। २०. गाड़ना। धँसाना। ठोकना। २१. स्पर्श कराना। छुआना। २२. जूए की बाजी पर रखना। दाँव पर रखना। २३. किसी बात का अभिमान करना। २४. अंग पर पहनना, ओढ़ना या रखना। २५. करना।

**लगाम**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वह ढाँचा जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सा या चमड़े का तस्मा बँधा रहता है। २. इस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सा या चमड़े का तस्मा जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहता है। रास। बाग।

**लगाय***—संज्ञा स्त्री० दे० "लगावट"।

**लगार***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लगना +आर ( प्रत्य० ) ] १. नियमित रूप से कोई काम करना या कोई चीज देना। बंधी। बँधेज। २. लगाव। संबंध। ३. तार। क्रम। सिलसिला। ४. लगन। प्रीति। मुहब्बत। ५. वह जो किसी की ओर से भेद लेने के लिये भेजा गया हो। ६. मेली। संबंधी।

**लगालगी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना ] १. लाग। लगन। प्रेम। स्नेह। प्रीति। २. संबंध। मेल-जोल। ३. लाग-डाँट। ४. चढ़ा-ऊपरी।

**लगाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० लगना + आव ( प्रत्य० ) ] लगे होने का भाव। संबंध। वास्ता।

**लगावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लगना +आवट ( प्रत्य० ) ] १. संबंध। वास्ता। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत।

**लगावन***†— संज्ञा स्त्री० दे० "लगाव"।

**लगावना**—क्रि० स० दे० "लगाना"।

**लगि***†—अव्य० दे० "लग"।
संज्ञा दे० "लग्गी"।

**लगी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।

**लगु***†—अव्य० दे० "लग"।

**लगुड़**—संज्ञा पुं० [ सं० ] डंडा। लाठी।

**लगूर***—संज्ञा स्त्री० [ सं० लांगूल ] पूँछ। दुम।

**लगूल***—संज्ञा स्त्री० [ सं० लांगूल ] पूँछ। दुम।

**लगे**†—अव्य० दे० "लग"।

**लगौहाँ***—वि० [ हिं० लगना + औहाँ (प्रत्य०) ] जिसे लगन लगाने की कामना हो। रिझवार।

**लग्गा**—संज्ञा पुं० [ सं० लगुड़ ] १. लंबा बाँस। २. वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लंबा बाँस। लकसी। लग्गा।
संज्ञा पुं० [ हिं० लगना ] कार्य्य आरंभ करना। काम में हाथ लगाना।

**लग्गी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गा"।

**लग्घड़**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. बाज। शचान। २. एक प्रकार का चीता। लकड़बग्घा।

**लग्घा, लग्घी**—संज्ञा पुं० दे० "लग्गा"।

**लग्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्योतिष में दिन का उतना अंश, जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है। २. कोई शुभ कार्य्य करने का मुहूर्त्त। ३. विवाह का समय। ४. विवाह। शादी। ५. विवाह के दिन।

लहालगा ।

वि० [ स्त्री० लग्ना ] १. लगा हुआ । मिला हुआ । २. लज्जित । ३. आसक्त ।

संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "लगन" ।

**लग्नपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्रिका जिसमें विवाह के कृत्यों का लग्न ब्योरेवार लिखा जाता है ।

**लग्नेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जन्मकुंडली में लग्न का स्वामी ग्रह ।

**लघिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं० लघिमन्] १. एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है । २. लघु या ह्रस्व होने का भाव । लघुत्व ।

**लघु**—वि० [सं०] १. शीघ्र । जल्दी । २. कनिष्ठ । छोटा । ३. सुंदर । बढ़िया । ४. निःसार । ५. थोड़ा । कम । ६. हलका ।

संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है । जैसे—अ, इ । २. वह जिसमें एक ही मात्रा हो । इसका चिह्न "।" है ।

**लघुचेता**—संज्ञा पुं० [ सं० लघुचेतस् ] वह जिसके विचार तुच्छ और बुरे हों । नीच ।

**लघुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लघु होने का भाव । छोटापन । २. हलकापन । तुच्छता ।

**लघुपाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह खाद्य पदार्थ जो सहज में पच जाय ।

**लघुमति**—वि० [ सं० ] कम समझ । मूर्ख ।

**लघुमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नायिका का वह मान जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है ।

**लघुशंका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पेशाब करना ।

**लच,लचक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लचकाना ] १. लचकने की क्रिया या भाव । लचन । झुकाव । २. वह गुण जिसके रहने से कोई वस्तु झुकती हो ।

**लचकना**—क्रि० अ० [ हिं० लच ( अनु० ) ] [ स० क्रि० लचकाना ] १. लंबे पदार्थ का दबने आदि के कारण बीच से झुकना । लचना । २. स्त्रियों की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना ।

**लचकनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लचकना ] १. लचीलापन । २. लचक ।

**लचकाना**—क्रि० स० [ हिं० लचकना ] लचकने में प्रवृत्त करना ।

**लचकीला**—वि० दे० "लचीला" ।

**लचकौहाँ**—वि० दे० "लचीला" ।

**लचन**—संज्ञा स्त्री० दे० "लचक" ।

**लचना**—क्रि० अ० दे० "लचकना" ।

**लचलचा**—वि० दे० "लचीला" ।

**लचार***†—वि० दे० "लाचार" ।

**लचारी**-संज्ञा स्त्री० दे० "लाचारी" ।

संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. भेंट । नजर । २. एक प्रकार का गीत ।

**लचीला**—वि० [ हिं० लचना + ईला ( प्रत्य० ) ] १. जो सहज में लच या झुक सकता हो । लचकदार । २. जिसमें सहज में परिवर्त्तन या उतार चढ़ाव हो सकता हो ।

**लचीलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० लचीला + पन ( प्रत्य० ) ] वस्तुओं का वह गुण जिससे वे लचकती, दबती या झुकती हैं ।

**लच्छ***—संज्ञा पुं० [ सं० लक्ष्य ] १. व्याज । बहाना । मिस । २. निशाना । ताक ।

संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या । लाख ।

संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी" ।

**लच्छन***—संज्ञा पुं० दे० "लक्षण" ।

**लच्छना***—क्रि० स० दे० "लखना" ।

**लच्छमी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी" ।

**लच्छा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. गुच्छे या झुप्पे आदि के रूप में लगाए हुए तार । २. किसी चीज के सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े । ३. हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना ।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० लाक्षा ] लाख । लाह ।

**लच्छागृह***—संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह" ।

**लच्छि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० लक्ष्मी ] लक्ष्मी ।

संज्ञा पुं० [ सं० लक्ष ] लाख की संख्या ।

**लच्छित***—वि० [ सं० लक्षित ] १. आलोचित । देखा हुआ । २. निशान किया हुआ । अंकित । ३. लक्षणवाला ।

**लच्छिनिवास***—संज्ञा पुं० [ सं० लक्ष्मीनिवास ] विष्णु । नारायण ।

**लच्छी**—वि० [ देश० ] एक प्रकार का घोड़ा ।

संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी" ।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० लच्छा ] छोटा लच्छा । अंटी

**लच्छेदार**—वि० [ हिं० लच्छा + फ़ा० दार ( प्रत्य० ) ] १. ( खाद्य पदार्थ ) जिसमें लच्छे पड़े हों । २. (बात चीत ) मजेदार या श्रुतिमधुर ।

**लछन**—संज्ञा पुं० [ सं० लक्ष्मण ] लक्ष्मण ।

संज्ञा पुं० दे० "लक्षण" ।

**लछना**†—क्रि० अ० दे० "लखना" ।

**लछमन**—संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण" ।

**लछमन झूला**—संज्ञा पुं० [ हिं०

लछमन + झूला ] रस्सों या तारों आदि से बना पुल।

**लछमना**—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मणा"।

**लछमी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

**लछारा***—वि० दे० "लंबा"।

**लज***—संज्ञा स्त्री० दे० "लाज"।

**लजना**—क्रि० अ० दे० "लजाना"।

**लजवाना**—क्रि० स० [हिं० लजाना] दूसरे को लज्जित करना।

**लजाधुर**†—वि० [सं० लज्जाधर] जो बहुत लज्जा करे। लजावान्। शर्मीला।

संज्ञा पुं० लजालू नाम का पौधा।

**लजाना**—क्रि० अ० [सं० लज्जा] लज्जित होना। शर्म में पड़ना।

क्रि० स० लज्जित करना।

**लजारू**†—संज्ञा पुं० [सं० लज्जालु] लजालू पौधा।

**लजालू**—संज्ञा पुं० [सं० लज्जालु] एक कँटेदार पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़कर बंद हो जाती हैं।

**लजावन***†—क्रि० स० दे० "लजाना"।

**लजियाना***†—क्रि० अ० स० दे० "लजाना"।

**लजीज़**—वि० [अ०] अच्छे स्वाद-वाला। स्वादिष्ट।

**लजीला**—वि० दे० "लज्जाशील"।

**लजुरी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० रज्जु] कूएँ से पानी भरने की डोरी। रस्सी।

**लजोर***†—वि० दे० "लज्जाशील"।

**लजोहा, लजौना, लजौहाँ**—वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री० लजौहीं] जिसमें लज्जा हो। लज्जाशील।

**लज्जा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० लज्जित] १. लाज। शर्म। हया। २. मान मर्य्यादा। पत। इज्जत।

**लज्जाप्राया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक। (केशव)

**लज्जालु**—वि० [सं०] लज्जाशील।

संज्ञा पुं० दे० "लजालू"।

**लज्जावती**—वि० स्त्री० [सं०] शर्मीली।

**लज्जावान्**—वि० [स्त्री० लज्जावती] दे० "लज्जाशील"।

**लज्जाशील**—वि० [सं०] जिसमें लज्जा हो। लजीला।

**लज्जित**—वि० [सं०] शर्म में पड़ा हुआ। शर्माया हुआ।

**लट**—संज्ञा स्त्री० [सं० लट्वा] १. बालों का गुच्छा। केशपाश। अलक। केशलता।

**मुहा०**—लट छिटकाना=सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना। २. एक में उलझे हुए बालों का गुच्छा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लपट] लपट। लौ।

**लटक**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लटकना] १. लटकने की क्रिया या भाव। २. झुकाव। लचक। ३. अंगों की मनोहर चेष्टा। अंग-भंगी।

**लटकन**—संज्ञा पुं० [हिं० लटकना] १. दे० "लटक"। २. लटकनेवाली चीज। लटक। ३. नाक में पहनने का एक गहना। ४. कलँगी या सिर-पेंच में लगे हुए रत्नों का गुच्छा।

संज्ञा पुं० [?] एक पेड़ जिसके बीजों से बढ़िया गेरुआ रंग निकलता है।

**लटकना**—क्रि० अ० [सं० लटन=झूलना] १. ऊँचे स्थान से लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक फैला रहना। झूलना। २. किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर अधर में हों। टँगना। ३. किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ४. ऊँचे-कना। बल खाना।

**मुहा०**—लटकती चाल=बल खाती हुई मनोहर चाल।

५. किसी काम का बिना पूरा हुए पड़ा रहना। देर होना।

**लटकवाना**—क्रि० स० [हिं० लटकाना का प्रेर०] लटकने का काम दूसरे से कराना।

**लटका**—संज्ञा पुं० [हिं० लटक] १. गति। चाल। ढब। २. बनावटी चेष्टा। हाव-भाव। ३. बातचीत का बनावटी ढंग। ४. मंत्र-तंत्र या उपचार आदि की छोटी युक्ति। टोटका। संक्षिप्त उपचार।

**लटकाना**—क्रि० स० [हिं० लटकना का सक० रूप] किसी को लटकने में प्रवृत्त करना।

**लटकीला**—वि० [हिं० लटक] [स्त्री० लटकीली] लटकता या झूमता हुआ।

**लटकौआँ**—वि० [हिं० लटकाना] लटकनेवाला। जो लटकता हो।

**लटजीरा**—संज्ञा पुं० [लट ? + हिं० जीरा] १. अपामार्ग। चिचड़ा। २. एक प्रकार का जड़हन धान।

**लटना**—क्रि० अ० [सं० लड] १. थककर गिर जाना। लड़खड़ाना। २. अशक्त होना। दुबला और कमजोर होना। ३. शक्ति और उत्साह से रहित या निकम्मा होना। ४. व्याकुल या विकल होना।

क्रि० अ० [सं० लल] १. ललचाना। चाह करना। लुभाना। २. प्रेमपूर्वक तत्पर होना। लीन होना।

**लटपट, लटपटा**—वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लटपटी] १. गिरता पड़ता। लड़खड़ाता हुआ। २. ढीला-

ढाला। जो चुस्त और दुरुस्त न न हो। अस्त व्यस्त। ३. (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले। टूटा-फूटा। ४ अव्यवस्थित। अंडबंड। ५. थककर गिरा हुआ। अशक्त। वि० १. जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा। लुटपुटा। २. गिंजा हुआ। मला दला हुआ। (कपड़ा आदि)

**लटपटान**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १. लड़खड़ाहट। २. लटक। लचक।

**लटपटाना**-क्रि० अ० [सं० लड+पत्] १. गिरना पड़ना। लड़खड़ाना। २. डिगना। चूक जाना। ठीक तरह से न चलना।

क्रि० अ० [सं० लल] १. लुभाना। मोहित होना। २. लीन होना। अनुरक्त होना।

**लटा**†—वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १. लोलुप। २. लंपट। लुच्चा। नीच। ३. तुच्छ। हीन। ४. बुरा। खराब।

**लटापटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लटपटाना] १. लटपटाने की क्रिया या भाव। २. लड़ाई झगड़ा।

**लटापोट***†—वि० [हिं० लोटपोट] मोहित। मुग्ध।

**लटी**—स्त्री० [हिं० लटा=बुरा] १. बुरी बात। २. झूठी बात। गप। ३. साधुनी। भक्तिन। ४. वेश्या। रंडी।

**लटुआ**—संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।

**लटुक**—संज्ञा पुं० दे० "लकुट"।

**लटुरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लट्टूरी"।

**लटू**—संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।

**लटूरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लट] सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा। केश। अलक।

**लटोरा**—संज्ञा पुं० [हिं० लस=चिपचिपाहट] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसके फलों में बहुत सा लसदार गूदा होता है।

**लटपटा**†—वि० दे० "लथपथ"।

**लट्टू**—संज्ञा पुं० [सं० लुठन=लुढ़कना] एक गोल खिलौना जिसे सूत के द्वारा जमीन पर फेंककर नचाते हैं।

**मुहा०**—(किसी पर) लट्टू होना=१. मोहित होना। आसक्त होना। २. प्राप्ति के लिए उत्कंठित होना।

**लट्ठ**—संज्ञा पुं० [सं० यष्टि] बड़ा लाठी।

**लठबाँस***—वि० [हिं० ल+बाँस (प्रत्य०)] लट्ठबाज। लठैत।

**लट्ठबाज**—वि० [हिं० लट्ठ+फ़ा० बाज] लाठी लड़नेवाला। लठैत।

**लट्ठमार**—वि० [हिं० लट्ठ+मारना] १. लट्ठ मारनेवाला। २. अप्रिय और कठोर। कर्कश। कड़वा।

**लट्ठा**—संज्ञा पु० [हिं० लट्ठ] १. लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा। बल्ला। शहतीर। २. लकड़ी का बल्ला। धरन। कड़ी। ३. एक प्रकार का गाढ़ा मोटा कपड़ा।

**लठिया**—संज्ञा स्त्री० दे० "लाठी"।

**लठैत**—संज्ञा पुं० दे० "लट्ठबाज"।

**लड़ंत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़ना] १. लड़ाई। २. भिड़ंत। ३. सामना। मुकाबला।

**लड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० यष्टि] १. एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला। २. रस्सी का एक तार। पान। ३. पंक्ति। श्रेणी।

**लड़कई**—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

**लड़कखेल**—संज्ञा पुं० [हिं० लड़का+खेल] १. बालकों का खेल। २. सहज काम।

**लड़कना**—क्रि० अ० दे० "लड़कपन"।

**लड़कपन**—संज्ञा पुं० [हिं० लड़का+पन] १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य बालक हो। बाल्यावस्था। २. चपलता। चंचलता।

**लड़कबुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लड़का+बुद्धि] बालकों की सी समझ। नासमझी।

**लड़का**—संज्ञा पुं० [सं० लट अथवा [हिं० लाड़=दुलार] [स्त्री० लड़की] १. थोड़ी अवस्था का मनुष्य। बालक। २. पुत्र। बेटा।

**मुहा०**—लड़कों का खेल=१. बिना महत्त्व की बात। २. सहज बात या काम।

**लड़काई***—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

**लड़का-बाला**—संज्ञा पुं० [हिं० लड़का+सं० बाल] १. संतान। औलाद। २. परिवार।

**लड़कानि***—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कई"।

**लड़कीला**—संज्ञा स्त्री० [सं० लल्न+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़कीली] अभिलाषा से भरा। चाव भरा। इच्छुक। उत्सुक।

**लड़कौरी**-वि० स्त्री० [हिं० लड़का] (स्त्री०) जिसकी गोद में लड़का हो।

**लड़खड़ाना**—क्रि० अ० [सं० लड़=डोलना=लड़ा] १. पूर्णरूप से स्थित न रहने के कारण इधर-उधर झुक पड़ना। झोंका खाना। डगमगाना। २. डगमगाकर गिरना। विचलित होना। चूकना।

**लड़ना**—क्रि० अ० [सं० रणन] १.

एक दूसरे को चोट पहुँचाना। युद्ध करना। भिड़ना। २. मल्ल युद्ध करना। ३. झगड़ा करना। हुज्जत करना। तकरार करना ४. बहस करना। ५. टक्कर खाना। टकराना। भिड़ना। ६. व्यवहार आदि में सफलता के लिए एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। ७. पूर्ण रूप से घटित होना। सटीक बैठना। ८. बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना। ९. लक्ष्य पर पहुँचना। भिड़ना।

**लड़खड़ाना**—क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना"।

**लड़बावला**—वि० [ सं० लड़=लड़कों का सा+बावला ] [ स्त्री० लड़बावरी ] १. अल्हड़। मूर्ख। नासमझ। अहमक। २. गँवार। अनाड़ी। ३. जिससे मूर्खता प्रकट हो।

**लड़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लड़ना+आई (प्रत्य०) ] १. एक दूसरे पर वार। भिड़ंत। युद्ध। २. संग्राम। जंग। युद्ध। ३. मल्लयुद्ध। कुश्ती। ४. झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ५. वादविवाद। बहस। ६. टक्कर। ७. व्यवहार या मामले में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। ८. अनबन। विरोध। वैर।

**लड़ाका, लड़ाकू**—वि० [ हिं० लड़ना+आका (प्रत्य०) ] [ स्त्री० लड़ाकी ] १. योद्धा। सिपाही। २. झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

**लड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० लड़ना का प्रेर० ] १. दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २. झगड़े में प्रवृत्त करना। ३. टक्कर खिलाना। भिड़ाना। ४. लक्ष्य पर पहुँचाना। ५. पतंग उलझाना। ६. सफलता के लिये व्यवहार में लाना।

क्रि० स० [ हिं० लाड़=प्यार ] लाड़ प्यार करना। दुलार करना।

**लड़ायता**†—वि० दे० "लड़ैता"।

**लड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।

**लड़ीला**—वि० दे० "लाडला"।

**लडुआ**—संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।

**लड़ैता**—वि० [ हिं० लाड़=प्यार+ऐता (प्रत्य०) ] [ स्त्री० लड़ैती ] १. लाड़ला। दुलारा। २. जो लाड़-प्यार के कारण बहुत इतराया हो। धृष्ट। शोख। ३. प्यारा। प्रिय।
वि० [ हिं० लड़ना ] लड़नेवाला। योद्धा।

**लड्डू**—संज्ञा पुं० [ सं० लड्डुक ] गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।
**मुहा०**—ठग के लड्डू खाना=पागल होना। नासमझी करना। होश-हवास में न रहना। मन के लड्डू खाना या फोड़ना=व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना।

**लड्यावना***†—क्रि० स० [ हिं० लाड़=प्यार ] लाड़ प्यार करना। दुलार करना।

**लढ़ा**—संज्ञा पुं० दे० "लढ़िया"।

**लढ़िया**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लुढ़कना ] बैल-गाड़ी।

**लत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० रति ] बुरी आदत। व्यसन। कु[illegible]।

**लतखोर, लतखोरा**—वि० [ हिं० लात+फ़ा० खोर=खानेवाला ] [ स्त्री० लतखोरिन ] १. सदा लात खानेवाला। २. नीच। कमीना। ३. दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का कपड़ा। पायंदाज। गुलमगर्दा।

**लत-मर्दन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लात+सं० मर्दन ] पैरों से रौंदने की क्रिया।

**लतर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लता ] बेल। वल्ली।

**लतरी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है।

**लता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह पौधा जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। वल्ली। बेल। बौर। २. कोमल कांड या शाखा। ३. सुंदरी स्त्री।

**लताकुंज, लतागृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।

**लताड़**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लताड़ना ] १. लताड़ने की क्रिया या भाव। २. दे० "लथाड़"।

**लताड़ना**—क्रि० स० [ हिं० लात ] १. पैरों से कुचलना। रौंदना। २. हैरान करना।

**लता-पता**—संज्ञा पुं० [ सं० लता-पत्र ] १. पेड़पत्ते। २. जड़ी-बूटी।

**लताभवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लतागृह।

**लतामंडप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लतागृह।

**लतिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] छोटी लता। बेल।

**लतियर, लतियल**—वि० दे० "लतखोर"

**लतियाना**†—क्रि० स० [ हिं० लात+आना (प्रत्य०) ] १ पैरों से दबाना या रौंदना। खूब लातें मारना।

**लतीफा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. चोज की बात। चुटकुला। २. हँसी की छोटी कहानियाँ।

**लत्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० लत्तक ] १. फटा पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २.

कपड़े का टुकड़ा।
यौ०—कपड़ा-लत्ता=पहनने के वस्त्र।
लत्ती—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लात ] पशुओं का पाद-प्रहार। लात
संज्ञा स्त्री० [ हिं० लत्ता ] कपड़े की लंबी धज्जी।
लथपथ—वि० [ अनु० ] १. भींगा हुआ। तराबोर। २. ( कीचड़ आदि में ) सना हुआ।
लथाड़—संज्ञा स्त्री० [ अनु० लथपथ] १. जमीन पर पटककर लोटने या घसीटने की क्रिया। चपेट। २. पराजय। हार। ३. झिड़की।
लथाड़ना—क्रि० स० दे० "लथेड़ना"।
लथेड़ना—क्रि० स० [अनु० लथपथ] १. कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना। २. पटककर इधर-उधर लोटाना या घसीटना। ३. हैरान करना। थकाना। ४. डाँटना। डपटना।
लदना—क्रि० अ० [ सं० लब्ध ] १. भारयुक्त होना। बोझ ऊपर लेना। २. आच्छादित होना। पूर्ण होना। ३. सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना। ४. बोझ का डाला या रखा जाना। ५. जेलखाने जाना। कैद होना।
लदवाना—क्रि० स० [ हिं० लादना का प्रेर० ] लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाऊ*†—वि० दे० "लदाव"।
लदाव—संज्ञा पुं० [ हिं० लादना ] १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार। बोझ। ३. छत आदि का पटाव। ४. ईंटों की जुड़ाई जो बिना धरन या कड़ी के अधर में ठहरी हो।
लदुआ, लद्दू—वि० [हिं० लादना] बोझ ढोनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।
लद्धड़—वि० [ हिं० लादना ] सुस्त। आलसी।
लद्धना*—क्रि० स० [ सं० लब्ध ] प्राप्त करना।
लप—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. लचीली चीज को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २. छुरी, तलवार आदि के चमक की गति।
संज्ञा पुं० [ देश० ] अँजली।
लपक—संज्ञा स्त्री० [ अनु० लप ] १. ज्वाला। लपट। लौ। २. चमक। लपलपाहट। ३. तेजी। वेग।
लपकना—क्रि० अ० [ हिं० लपक ] १. झपट पड़ना। तुरंत दौड़ पड़ना।
मुहा०—लपककर=१. तुरंत तेजी से जाकर। २. तुरंत। झट से।
२. आक्रमण करने या लेने के लिये झपटना।
लपका—संज्ञा पुं० [ हिं० लपकना ] लत। आदत। चस्का।
क्रि० अ० लगना-लगाना।
लपझप—वि० [ अनु० ] १. चंचल। चपल। २. तेज। फुरतीला।
लपट—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लौ+पट ] १. अग्निशिखा। ज्वाला। आग की लौ। २. तपी हुई वायु। आँच। ३. गंध से भरा वायु का झोंका। ४. गंध। महक। बू।
लपटना†—क्रि० अ० दे० "लिपटना"।
लपटा—संज्ञा पुं० [ हिं० लपटना ] १. गाढ़ी गीली वस्तु। २. लपसी। ३. कढ़ी।
लपटाना—क्रि० स० दे० १. "लिपटाना"। २. दे० "लपेटना"।
*क्रि० अ० १. संलग्न होना। सटना। २. उलझना। फँसना।
लपना†—क्रि० अ० [ अनु० लप लप ] १. झोंक के साथ इधर-उधर लचना। २. झुकना। लचना। ३. लपकना। ललचना। ४. हैरान होना।
लपलपाना—क्रि० अ० [ अनु० लप लप ] [ संज्ञा लपलपाहट ] १. लपना। २. लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर हिलना-डुलना। ३. छुरी, तलवार आदि का चमकना। झलकना।
क्रि० स० १. दे० "लपाना"। २. छुरी, तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।
लपसी—संज्ञा स्त्री० [ सं० लप्सिका ] १. थोड़े घी का हलुआ। २. गीली गाढ़ी वस्तु। ३. पानी में औटाया हुआ आटा जो बंदियों को दिया जाता है। लपटा।
लपाना—क्रि० स० [ अनु० लपलप ] १. लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना। फटकारना। २. आगे बढ़ाना।
लपेट—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लपटना ] १. लपेटने की क्रिया या भाव। २. बंधन का चक्कर। घुमाव। फेरा। ३. ऐंठन। बल। मरोड़। ४. घेरा। परिधि। ५. उलझन। जाल या चक्कर।
लपेटन—संज्ञा स्त्री० दे० "लपेट"।
संज्ञा पुं० [ हिं० लपेटना ] १. लपेटनेवाली वस्तु। २. बाँधने का कपड़ा। वेष्टन। बेठन। ३. पैरों में उलझनेवाली वस्तु।
लपेटना—क्रि० स० [ हिं० लिपटना ] १. घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर फँसाना। चक्कर देकर चारों ओर ले जाना। २. फैली हुई वस्तु को लच्छे या मुट्ठे के रूप में करना।

समेटना । ३. कपड़े आदि के अंदर बाँधना । ४. पकड़ लेना । ५. गति-विधि बंद करना । ६. उलझन में डालना । झंझट में फँसाना ।

**लपेटवाँ**—वि० [ हिं० लपेटना ] १. जो लपेटा हो । २. जिसमें सोने चाँदी के तार लपेटे गए हों । ३. जिसका अर्थ छिपा हो । गूढ़ । व्यंग्य ।

**लपेटा**—संज्ञा पुं० दे० "लपेट" ।

**लफंगा**—वि० [ फ़ा० लफ़ंग ] १. लंपट । दुश्चरित्र । २. शोहदा । आवारा ।

**लफना***†—क्रि० अ० दे० "लचना" ।

**लफलफानि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "लपलपाना" ।

**लफाना***†—क्रि०स०दे०"लचाना" ।

**लफ्ज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] शब्द ।

**लबझना***†—क्रि० अ० [ देश० ] उलझना ।

**लबड़-घोंघों**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लबाड़+धूम ] १. झूठमूठ का हल्ला । २. गड़बड़ी । अंधेर । कुव्य-वस्था । ३. बेईमानी की चाल ।

**लबड़ना***†—क्रि० अ० [ सं० लप=बकना ] १. झूठ बोलना । २. गप हाँकना ।

**लबरा**†—वि० दे० "लबार" ।

**लबादा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. रूईदार चोगा । दगला । २. अबा । चोगा ।

**लबार**†—वि० [ सं० लपन=बकना ] १. झूठा । मिथ्यावादी । २. गप्पी । चोगा ।

**लबारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लबार ] झूठ बोलने का काम ।

वि० १. झूठा । २. चुगुलखोर ।

**लबालब**—क्रि० वि० [ फ़ा० ] मुँह या किनारे तक । छलकता हुआ ।

**लबासी***†—संज्ञा, वि०दे०"लबासी" ।

**लबेद**—संज्ञा पुं० [ सं० वेद का अनु० ] लोकाचार की भद्दी या भोंड़ी बात ।

**लबेदा**—संज्ञा पुं० [ सं० लगुड़ ] [ स्त्री० अल्पा० लबेदी ] मोटा बड़ा डंडा ।

**लब्ध** वि० [ सं० ] १. मिला हुआ । प्राप्त । २. भाग करने से आया हुआ फल । ( गणित )

**लब्धकाम**—वि० [ सं० ] जिसकी कामना पूरी हो गई हो ।

**लब्धप्रतिष्ठ**—वि० [ सं० ] प्रति-ष्ठित ।

**लब्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राप्ति । लाभ ।

**लभ्य**—वि० [ सं० ] १. पाने योग्य । जो मिल सके । २. उचित । मुना-सिब ।

**लमकना**†—क्रि० अ० [ हिं० लप-कना ] १. लपकना । २. उत्कंठित होना । लटकना ।

**लमछड़**—वि० [ हिं० लंबा ] बिल-कुल लंबा ।

संज्ञा पुं० भाला । बरछा ।

**लमटंगा**—वि० [ हिं० लंबा+टाँग ] लंबी टाँगोंवाला ।

**लमतड़ंग**—वि० [ हिं० लंबा+ताड़+अंग ] [ स्त्री० लमतड़ंगी ] बहुत लंबा या ऊँचा ।

**लमधी**†—संज्ञा पुं० [देश० ] समधी का बाप ।

**लमाना***†—क्रि० स० [ हिं० लंबा+ना ( प्रत्य० ) ] १. लंबा करना । २. दूर तक आगे बढ़ाना ।

क्रि० अ० दूर निकल जाना ।

**लय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक पदार्थ का दूसरे में मिलना । प्रवेश । २. विलीन होना । मग्नता । ३. ध्यान में डूबना । एकाग्रता । ४. अनुराग । प्रेम । ५. कार्य्य का फिर कारण के रूप में परिणत हो जाना । ६. जगत् का नाश । प्रलय । ७. विनाश । लोप । ८. मिल जाना । संश्लेष । ९. संगीत में नृत्य, गीत और वाद्य की समता ।

संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग या तर्ज । धुन । २. संगीत में, सम ।

**लयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लय होने की क्रिया या भाव ।

**लयमान**—वि० [ सं० लय ] जो लय हो गया हो । लय हो जानेवाला ।

**लर***†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़" ।

**लरकई***—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़क-पन" ।

**लरकना***†—क्रि० अ० दे० "लटकना" ।

**लरकिनी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की" ।

**लरखरना***†—क्रि० अ० दे० "लड़खड़ाना" ।

**लरखरनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लड़-खड़ाना ] लड़खड़ाने की क्रिया या भाव ।

**लरजना**—क्रि० अ० [ फ़ा० लरजा=कंप ] १. काँपना । हिलना । २. दहल जाना । डरना ।

**लरझर***†—वि० [ हिं० लड़+झड़ना ] बहुत अधिक । प्रचुर ।

**लरना***—क्रि० अ० दे० "लड़ना" ।

**लरनि***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लड़ना ] लड़ाई ।

**लराई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ाई" ।

**लरिकई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "लड़क-पन" ।

**लरिक-सलोरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं०

लरिका+लोल=चंचल ] लड़कों का खेल। खेलवाड़।

**लरिका***†–संज्ञा पुं० दे० "लड़का"।

**लरिकाई***†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।

**लरियां**†–संज्ञा पुं० [ ? ] दुपट्टा।

**लरी***–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ी"।

**लल***–संज्ञा पुं० [ ? ] सार। तत्त्व।

**ललक**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ललन ] प्रबल अभिलाषा। गहरी चाह।

**ललकना**–क्रि० अ० [ हिं० ललक ] १. पाने की गहरी इच्छा करना। लालसा करना। ललचना। २. चाह की उमंग से भरना।

**ललकार**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० ले ले अनु० + कार ] ललकारने की क्रिया या भाव।

**ललकारना**–क्रि० स० [ हिं० ललकार ] १. युद्ध या प्रतिद्वंद्विता के लिए उच्च स्वर से आह्वान करना। प्रचारण। २. लड़ने के लिए उसकाना या बढ़ावा देना।

**ललकित**–वि० [ हिं० ललक ] गहरी चाह से भरा हुआ।

**ललचना**–क्रि० अ० [ हिं० लालच ] १. लालच करना। २. मोहित होना। लुब्ध होना। ३. अभिलाषा से अधीर होना।

**ललचाना**–क्रि० स० [ हिं० ललचना ] १. किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। २. मोहित करना। लुभाना। ३. कोई वस्तु दिखाकर उसके पाने के लिए अधीर करना।

मुहा०–जी या मन ललचाना=मन मोहित करना। मुग्ध करना। लुभाना।

*†क्रि० अ० दे० "ललचना"।

**ललचौहाँ**–वि० [ हिं० लालच + औहाँ ( प्रत्य० ) ] [स्त्री० ललचौहीं] लालच से भरा। ललचाया हुआ।

**ललन**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्यारा बालक। २. प्रिय नायक या पति। ३. क्रीड़ा।

**ललना**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्त्री। कामिनी। २. जिह्वा। जीभ। ३. एक वर्णवृत्त।

**लला**–संज्ञा पुं० [ हिं० लाल ] [स्त्री० लली ] १. प्यारा या दुलारा लड़का। २. प्रिय नायक या पति।

**ललाई**–संज्ञा स्त्री० दे० "लाली"।

**ललाट**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाल। मस्तक। माथा। २. किस्मत का लिखा।

**ललाट-पटल**–संज्ञा पुं० [ सं० ] मस्तक का तल। माथे की सतह।

**ललाट-रेखा**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कपाल का लेख। भाग्यलेख।

**ललाना***†–क्रि० अ० [सं० ललन] लोभ करना। ललचना। लालायित होना।

**ललाम**–वि० [ सं० ] [ भाव० ललामता ] १. रमणीय। सुंदर। २. लाल। सुर्ख। ३. श्रेष्ठ। प्रधान।

संज्ञा पुं० १. अलंकार। गहना। २. रत्न। ३. चिह्न। निशान। ४. घोड़ा।

**ललामी**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ललाम ] १. सुंदरता। २. लालिमा। लाली।

**ललित**–वि० [ सं० ] [ स्त्री० ललिता ] १. सुंदर। मनोहर। २. मनचाहा। प्यारा। ३. हिलता डोलता हुआ।

संज्ञा पुं० १. शृंगार रस में एक कायिक हाव या अंग-चेष्टा जिसमें सुकुमारता ( नजाकत ) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। २. एक विषम वर्णवृत्त। ३. एक अलंकार जिसमें वर्ण्य-वस्तु ( बात ) के स्थान पर उसके प्रतिबिंब का वर्णन किया जाता है।

**ललितई***†–संज्ञा स्त्री० दे० "ललिताई"।

**ललित कला**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ललित + कला ] वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा हो, जैसे–संगीत, चित्र-कला, वास्तुकला आदि।

**ललितपद**–संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं। नरेंद्र। दोवे। सार।

**ललिता**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में त, भ, ज, र होते हैं। २. राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक।

**ललिताई***–संज्ञा स्त्री० [ हिं० ललित ] सुंदरता।

**ललितोपमा**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिए सम, तुल्य आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाए जाते हैं, जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि भाव प्रकट होते हैं।

**लली**–संज्ञा स्त्री० [ हिं० लला ] १. लड़की के लिए प्यार का शब्द। २. नायिका। प्रेयसी। प्रेमिका।

**ललौहाँ**–वि० [ हिं० लाल ] [स्त्री० ललौहीं] सुर्खी मायल। ललाई लिए हुए।

**लल्ला**–संज्ञा पुं० दे० "लला"।

**लल्ला**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ललना ] जीभ। जबान।

**लल्लो-चप्पो**–संज्ञा स्त्री० [ सं० लल + अनु० चप ] चिकनी-चुपड़ी बात। ठकुर सोहाती।

**लल्लो-पत्तो**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लल्लो-चप्पो"।

**लवंग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] लौंग। (मसाला)

**लव**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. बहुत थोड़ी मात्रा। २. दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमेष का अल्प समय। ३. लवा नाम की चिड़िया। ४. लवंग। ५. श्री रामचंद्र के दो यमज पुत्रों में से एक।

**लवकना**†—क्रि॰ स॰ दे॰ "लौकना"।

**लवका**†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लौकना] बिजली। विद्युत्।

**लवण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ नमक। नोन। २. दे॰ "लवणासुर"। ३. दे॰ "लवणसमुद्र"।

**लवणसमुद्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] पुराणोक्त सात समुद्रों में से एक। खारे पानी का समुद्र।

**लवणासुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] मधु नामक असुर का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।

**लवन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. काटना। छेदना। २. खेत की कटाई। लुनाई। लौनी।

**लवना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "लुनना"।

**लवनाई***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लावण्य"।

**लवनि, लवनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ लवन] खेत में अनाज की पकी फसल की कटाई। लुनाई।

संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ नवनीत] मक्खन।

**लवर**†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लपट] आग की लपट। ज्वाला।

**लवलासी***†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लव =प्रेम+लासी=लसी, लगाव] प्रेम की लगावट।

**लवली**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल। २. एक विषम वर्णवृत्त।

**लवलीन**—वि॰ [हिं॰ लय+लीन] तन्मय। तल्लीन। मग्न।

**लवलेश**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. अत्यंत अल्प मात्रा। २.अल्प संसर्ग।

**लवा**†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ लाजा] भुने हुए धान या ज्वार की खील। लावा।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ बल] तीतर की जाति का एक पक्षी।

**लवाई**—वि॰ [देश॰] वह गाय जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो।

संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लवना+आई (प्रत्य॰)] खेत की फसल की कटाई। लुनाई।

**लवाजमा**—संज्ञा पुं॰ [अ॰ लवाजिम] १. किसी के साथ रहनेवाला दल-बल और साज-समान। २.आवश्यक सामग्री।

**लवारा**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ लवाई] गौ का बच्चा।

†वि॰ दे॰ "आवारा"।

**लवासी***†—वि॰ [सं॰ लव=बकना +आसी (प्रत्य॰)] १. गप्पी। बकवादी। २. लंपट।

**लशकर**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. सेना। फौज। २. भीड़भाड़। दल। ३. सेना का पड़ाव। छावनी। ४. जहाज में काम करनेवालों का दल।

**लशकरी**—वि॰ [फ़ा॰ लशकर] १. फौज का। सेना-संबंधी। २. जहाज पर काम करनेवाला। खलासी। जहाजी।

संज्ञा स्त्री॰ जहाजियों या खलासियों की भाषा।

**लषन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "लखन"।

**लस**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. चिपकने या चिपकाने का गुण। चिपचिपाहट। २. वह जिसके लगाव से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय। लासा। ३. चित्त लगने की बात। आकर्षण।

**लसदार**—वि॰ [हिं॰ लस+फ़ा॰ दार (प्रत्य॰)] जिसमें लस हो। लसीला।

**लसना**—क्रि॰ स॰ [सं॰ लसन] एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना। चिपकाना।

*क्रि॰ अ॰१.शोभित होना। छजना। फबना। २. विराजना।

**लसनि***—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लसना] १. स्थिति। विद्यमानता। २. शोभा। छटा।

**लसम**—वि॰ [देश॰] दूषित। खोटा।

**लसलसा**—वि॰ दे॰ "लसदार"।

**लसलसाना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ लस] चिपचिपा होना।

**लसित**—वि॰ [सं॰] सजता हुआ। सुशोभित।

**लसी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लस] १. लस। चिपचिपाहट। २. दिल लगने की वस्तु। आकर्षण। ३. लाभ का योग। फायदे का डौल। ४. संबंध। लगाव। ५. दूध और पानी मिला शरबत।

**लसीला**—वि॰ [हिं॰ लस] [स्त्री॰ लसीली] १. लसदार। २. सुंदर। शोभायुक्त।

**लसोड़ा**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ लस= चिपचिपाहट] एक प्रकार का पेड़ जिसके फल ओषध के काम में आते हैं।

**लस्टम-पस्टम**†—क्रि॰ वि॰ [देश॰] किसी न किसी तरह से। ज्यों त्यों।

**लस्त**—वि॰ [हिं॰ लटना] १. थका हुआ। शिथिल। २. अशक्त।

**लस्सी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लयस ] १. चिपचिपाहट। लसी। २. छाछ। मठा। तक्र।

**लहँगा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लंक=कमर+अंगा ] कमर के नीचे का सारा अंग ढाँकने के लिए स्त्रियों का एक घेरेदार पहनावा।

**लहक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लहकना ] १. लहकने की क्रिया या भाव। २. आग की लपट। ३. शोभा। छवि। ४. चमक। द्युति।

**लहकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. झोंके खाना। लहराना। २. हवा का बहना। ३. आग का इधर-उधर लपट छोड़ना। दहकना। ४. लपकना। ५. उत्कंठित होना।

**लहकाना, लहकारना**—क्रि० स० [ हिं० लहकना ]। लहकने में किसी को प्रवृत्त करना।

**लहकौर, लहकौरि**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना+कौर ( ग्रास ) ] विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह में कौर ( ग्रास ) डालते हैं।

**लहजा**—संज्ञा पुं० [ अ० लहजः ] गाने या बोलने का ढंग। स्वर। लय।

**लहनदार**—संज्ञा पुं० [ हिं० लहना +फ़ा० दार ] ऋण देनेवाला। महाजन।

**लहना**—क्रि० स० [ सं० लभन ] प्राप्त करना।

संज्ञा पुं० [ सं० लभन ] १. उधार दिया हुआ रुपया-पैसा। २. रुपया-पैसा जो किसी कारण किसी से मिलनेवाला हो।

**लहनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लहना ] १. प्राप्ति। २. फलभोग।

**लहबर**—संज्ञा पुं० [ हिं० लहर ? ] १. एक प्रकार का लंबा पहनावा। लबादा। चोगा। २. झंडा। निशान।

**लहर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लहरी ] १. ऊँची उठती हुई जल की राशि। बड़ा हिलोरा। मौज। २. उमंग। जोश। ३. मन की मौज। ४. बेहोशी, पीड़ा आदि का वेग जो कुछ अंतर पर रह रहकर उत्पन्न हो। झोंका।

**मुहा०**—साँप काटने की लहर=साँप से काटे गए आदमी की वह अवस्था जिसमें बेहोशी से बीच बीच में वह जाग उठता है।

५. आनंद की उमंग। मजा। मौज।

**यौ०**—लहर बहर=आनंद और सुख।

६. इधर-उधर मुड़ती हुई टेढ़ी चाल। ७. चलते हुए सर्प की सी कुटिल रेखा। ८. हवा का झोंका। महक। लपट।

**लहरदार**—वि० [ हिं० लहर+फ़ा० दार ( प्रत्य० ) ] जो सीधा न जाकर बल खाता हुआ गया हो।

**लहरना**—क्रि० अ० दे० "लहराना"।

**लहर-पटोर**—संज्ञा पुं० [ हिं० लहर +पट ] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

**लहरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लहर ] १. लहर। तरंग। २. मौज। आनंद। मजा।

**लहरान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लहर ] लहराने की क्रिया या भाव।

**लहराना**—क्रि० अ० [ हिं० लहर+आना ( प्रत्य० ) ] १. हवा के झोंके से इधर उधर हिलना-डोलना। लहरें खाना। २. पानी का हवा के झोंके से उठना और गिरना। बहना या हिलोरा मारना। ३. इधर-उधर मुड़ते या झोंका खाते हुए चलना। ४. मन का उमंग में होना। ५. उत्कंठित होना। लपकना। ६. आग की लपट का हिलना। दहकना। भड़कना। ७. शोभित होना। लसना। विराजना।

क्रि० स० १. हवा के झोंके में इधर-उधर हिलाना। २. वक्र गति से ले जाना।

**लहरिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० लहर ] १. लहरदार चिह्न। टेढ़ी-मेढ़ी गई हुई लकीरों की श्रेणी। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग-बिरंगी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी होती हैं। ३. उपर्युक्त प्रकार के कपड़े की साड़ी या धोती।

संज्ञा स्त्री० दे० "लहर"।

**लहरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लहर। तरंग।

†वि० [ हिं० लहर+ई ( प्रत्य० ) ] मन की तरंग के अनुसार चलनेवाला। मनमौजी।

**लहलहा**—वि० [ हिं० लहलहाना ] [ स्त्री० लहलही ] १. लहलहाता हुआ। हरा-भरा। २. आनन्द से पूर्ण। प्रफुल्ल। ३. हृष्ट-पुष्ट।

**लहलहाना**—क्रि० अ० [ हिं० लहरना ( पत्तियों का )] १. हरी पत्तियों से भरना। हरा भरा होना। २. प्रफुल्लित होना। खुशी से भरना। ३. सूखे पड़ या पौधे में फिर से पत्तियाँ निकलना। पनपना।

**लहसुन**—संज्ञा पुं० [ सं० लशुन ] एक पौधा जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और मसाले के काम में आती है।

**लहसुनिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० लहसुन ] धूमिल रंग का एक रत्न। रुद्राक्षक।

**लहा***—संज्ञा पुं० दे० "लाह"।

**लहालेह**—संज्ञा पुं० [ ? ] १. नाच

की एक गति। २. नाचने में तेजी और झपट। ३. तीव्रता। तेजी।

**लहालहा***—वि० दे० "लहलहा"।

**लहालोट**—वि० [हिं० लाभ, लाह+लोटना] १. हँसी से लोटता हुआ। २. खुशी से भरा हुआ। ३. प्रेम-मग्न। मोहित। लट्टू।

**लहास**।—संज्ञा स्त्री० दे० "लाश"।

**लहासी**—संज्ञा स्त्री०*[सं० लमस] मोटी रस्सी।

**लहि**।—अव्य० [हिं० लहना] पर्यंत। तक।

**लहु***।—अव्य० दे० "लौ"।

**लहुरा**।—वि० [सं० लघु] [स्त्री० लहुरी] छोटा।

**लहू***।—संज्ञा पुं० [सं० लोह] रक्त। खून।

**मुहा०**—लहू-लुहान होना=खून से भर जाना। अत्यंत लहू बहना।

**लहेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० लाह=लाख+एरा (प्रत्य०)] लाह का पक्का रंग चढ़ानेवाला।

**लाँक**।—संज्ञा स्त्री० [हिं० लंक] कमर। कटि।

**लाँग**—संज्ञा स्त्री० [सं० लांगूल=पूँछ] धोती का वह भाग जो पीछे की ओर कमर में खोंस लिया जाता है। काछ।

**लाँगल**—संज्ञा पुं० [सं०] खेत जोतने का हल।

**लांगली**—संज्ञा पुं० [सं० लांगलिन्] १. बलराम। २. नारियल। ३. साँप। संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुराणानुसार एक नदी का नाम। २. कलियारी। ३. मजीठ।

**लांगूली**—संज्ञा पुं० [सं० लांगूलिन्] बंदर।

**लाँघना**—क्रि० स० [सं० लंघन] इस पार से उस पार जाना। डाँकना। नाँघना।

**लाँच**—संज्ञा स्त्री० [देश०] रिश्वत। घूस।

**लाञ्छन**—संज्ञा पुं० [सं०] १ चिह्न। निशान। २. दाग। ३. दोष। कलंक।

**लांछना**—संज्ञा स्त्री० दे० "लांछन"।

**लाछित**—वि० दे० "लाछित"।

**लांछित**—वि० [सं०] जिसे लांछन लगा हो। कलंकित।

**लाँझ***—संज्ञा स्त्री० [सं० लंघन] बाधा। रुकावट।

**लांपट्य**—संज्ञा पुं० [सं०] 'लंपट' का भाव। लंपटता।

**लाँबा**।*—वि० दे० "लंबा"

**लाइ***।—संज्ञा पुं० [सं० अलात=लुक] अग्नि।

**लाइक**—वि० दे० "लायक"।

**लाइट**—संज्ञा स्त्री० [अं०] प्रकाश। रोशनी।

**लाइट हाउस**—संज्ञा पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पहुँचनेवाला प्रकाश जलता है। प्रकाशगृह।

**लाइन**—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. पंक्ति। कतार। २. सतर। ३. रेखा। लकीर। ४. रेल की सड़क। ५. घरों की वह पंक्ति जिसमें सिपाही रहते हैं। बारिक। लैन।

**लाई**।—संज्ञा स्त्री० [सं० लाजा] धान का लावा।

संज्ञा स्त्री० [हिं० लगाना] चुगली। निंदा।

**यौ०**—लाई लुतरी=१. चुगली। शिकायत। २. चुगलखोर। (स्त्री०)

**लाकड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लकड़ी"।

**लाक्षणिक**—वि० [सं०] १. जिससे लक्षण प्रकट हो। २. लक्षण-संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं०] १. वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ हों। २. लक्षण जाननेवाला।

**लाक्षा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाख। लाह।

**लाक्षागृह**—संज्ञा पुं० [सं०] लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।

**लाक्षारस**—संज्ञा पुं० [सं०] महावर।

**लाक्षिक**—वि० [सं०] १. लाख का बना हुआ। २. लाख संबंधी।

**लाख**—वि० [सं० लक्ष] १. सौ हजार। २. बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।

संज्ञा पुं० सौ हजार की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००००।

क्रि० वि० बहुत। अधिक।

**मुहा०**—लाख से लीख होना=सब कुछ से कुछ न रह जाना।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है। लाह। २. वे छोटे लाल कीड़े जिनसे उक्त द्रव्य निकलता है।

**लाखना**—क्रि० अ० [हिं० लाख+ना (प्रत्य०)] लाख लगाकर कोई छेद बंद करना।

*। क्रि० स० [सं० लक्षण] जानना।

**लाखागृह**—संज्ञा पुं० दे० "लाक्षागृह"।

**ला-खिराज**—वि० [अ०] (जमीन) जिसका खिराज या लगान न देना पड़ता हो। माफी।

**लाखी**—वि० [हिं० लाख+ई(प्रत्य०)] लाख के रंग का। मटमैला लाल।

संज्ञा पुं० लाख के रंग का घोड़ा।

**लाग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लगना ] १. संपर्क। संबंध। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। ३. लगन। मन की तत्परता। ४. युक्ति। तरकीब। उपाय। ५. वह स्वाँग आदि जिसमें कोई विशेष कौशल हो। ६. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। ७. बैर। शत्रुता। दुश्मनी। ८. जादू। मंत्र। टोना। ९. वह नियत धन जो शुभ अवसरों पर ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है। १०. भूमि-कर। लगान। ११. एक प्रकार का नृत्य।

क्रि० वि० [ हिं० लौं ] पर्य्यंत। तक।

**लाग-डाँट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं लाग=बैर+डाँट ] १. शत्रुता। दुश्मनी। २. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० लग्नदंड ] नृत्य की एक क्रिया।

**लागत**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लगना] वह खर्च जो किसी चीज की तैयारी या बनाने में लगे।

**लागना***—क्रि० अ० दे० "लगना"।

**लागि***†—अव्य० [ हिं० लगना ] १. कारण। हेतु। २. निमित्त। लिए। ३. द्वारा।

क्रि० वि० [हिं० लौं] तक। पर्य्यंत।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० लग्गी ] लग्गी।

**लागू**†- वि० [ हिं० लगना ] जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला।

**लागे**†—अव्य० [ हिं० लगना ] वास्ते। लिए।

**लाघव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लघु होने का भाव। लघुता। २. कमी। अल्पता। ३. हाथ की सफाई। फुर्ती। तेजी। ४. आरोग्य। तंदुरुस्ती।

अव्य० [ सं० ] फुर्ती से। सहज में।

**लाघवी***—संज्ञा स्त्री० [सं० लाघव+ई ( प्रत्य० ) ] फुर्ती। शीघ्रता।

**लाचार**—वि० [ फ़ा० ] जिसका कुछ वश न चलता हो। विवश। मजबूर।

क्रि० वि० विवश या मजबूर होकर।

**लाचारी**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] मजबूरी। विवशता।

**लाछन*** —संज्ञा पुं० दे० "लांछन"।

**लाज**—संज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"।

**मुहा०**—लाज रखना=प्रतिष्ठा बचाना। आबरू खराब न होने देना। लाज सँभालना=दे० "लाज रखना"।

**लाजक**—संज्ञा पुं० [ सं० लाजा ] धान का लावा।

**लाजना***†—क्रि० अ० [हिं० लाज+ना ( प्रत्य० ) ] लज्जित होना। शरमाना।

क्रि० स० लज्जित करना।

**लाजवंत**—वि० [ हिं० लाज+वंत ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० लाजवंती ] जिसे लज्जा हो। शर्मदार।

**लाजवंती**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लजालू] लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई। लजाधुर।

**लाजवर्द**—संज्ञा पुं० [ फा० ] एक प्रकार का प्रसिद्ध कीमती पत्थर। राजवर्तक।

**ला-जवाब**—वि० [ फ़ा० ] १. अनुपम। बेजोड़। २. निरुत्तर। चुप। खामोश।

**लाजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चावल। २. भूनकर फुलाया हुआ धान। लावा।

**लाज़िम**—वि० [ अ० ] १. जो अवश्य कर्त्तव्य हो। २. उचित। मुनासिब। वाजिब।

**लाज़िमी**—वि० [ अ० लाजिम ] जरूरी। आवश्यक।

**लाट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लट्ठा ? ] मोटा और ऊँचा खंभा।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं। २. इस देश के निवासी। ३. दे० "लाटानुप्रास"।

**लाटरी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] वह योजना जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठाकर केवल उनके भाग्य के अनुसार धन आदि बाँटा जाता है।

**लाटानुप्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परन्तु अन्वय के हेर-फेर से तात्पर्य्य भिन्न हो जाता है।

**लाटिका**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साहित्य में एक प्रकार की रचना या रीति। इसमें छोटे छोटे पद और समास होते हैं।

**लाटी**†—संज्ञा स्त्री० [ अनु० लट लट=गाढ़ा या चिपचिपा होना ] वह अवस्था जिसमें मुँह का थूक और होंठ सूख जाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लाटिका रीति।

**लाठ** संज्ञा स्त्री० दे० "लाट"।

**लाठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यष्टि ] डंडा। लकड़ी।

**मुहा०**—लाठी चलना=लाठियों की मार-पीट होना।

**लाठी-चार्ज**—संज्ञा पुं० [ हिं० लाठी+अं० चार्ज ] भीड़ आदि हटाने के लिए पुलिस आदि का लोगों पर लाठियाँ चलाना।

**लाड़**—संज्ञा पुं० [ सं० लालन ] बच्चों का लालन। प्यार। दुलार।

**लाड़लड़ैता**—वि० दे० "लाड़ला"।

**लाड़ला**-वि० [ हिं० लाड़ ] [ स्त्री० लाड़ली ] जिसका लाड़ किया जाय। प्यारा। दुलारा।

**लाड़ू**†—संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।

**लात**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. पैर। पाँव। पद। २. पैर से किया हुआ आघात या पाद-प्रहार।

**मुहा०**—लात खाना=पैरों की ठोकर या मार सहना। लात मारना=तुच्छ समझकर छोड़ देना। त्याग देना।

**लाद**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लादना ] १. लादने की क्रिया या भाव। लदाई। २. पेट। उदर। ३. आँत। अँतड़ी।

**लादना**—क्रि० स० [ सं० लब्ध ] १. किसी चीज पर बहुत सी वस्तुएँ रखना। २. ढोने या ले जाने के लिए वस्तुओं का भरना। किसी बात का भार रखना।

**लादिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० लादना ] वह जो एक स्थान से माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाता है।

**लादी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लादना ] वह गठरी जो किसी पशु पर लादी जाती है।

**लाधना***†—क्रि० स० [ सं० लब्ध ] प्राप्त करना। पाना।

**लानत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० लअनत ] धिक्कार। फिटकार। भर्त्सना।

**लाना**—क्रि० अ० [ हिं० लेना+आना ] १. कोई चीज उठाकर या अपने साथ लेकर आना। २. उपस्थित करना। सामने रखना।

क्रि० स० [ हिं० लाय=आग ] आग लगाना। जलाना।

*† क्रि० स० [ हिं० लगाना ] लगाना।

**लाने***†—अव्य० [ हिं० लाना ] वास्ते। लिए।

**लाप**—संज्ञा पुं० [ अनु० संलाप ] बातचीत। संवाद।

**लापता**—वि० [ अ० ला=बिना+हिं० पता ] १. जिसका पता न लगे। २. गुम। गायब।

**लापरवा, लापरवाह**—वि० [ अ० ला+फ़ा० परवाह ] १. जिसे किसी बात का परवा न हो। बेफिक्र। २. असावधान।

**लापरवाही**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ला+फ़ा० परवाह ] १. बेफिक्री। २. असावधानी।

**लापसी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "लप्सी"।

**लाबर***†—वि० दे० "लबार"।

**लाबी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. धारा-सभाओं आदि का वह कमरा जिसमें उनके सदस्यों से बाहरी लोग भी मिल-जुल सकते हैं। २. धारा सभाओं के वे दो अलग अलग गलियारे जिनमें किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में मत देनेवाले एकत्र होते हैं।

**लाभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलना। प्राप्ति। लब्धि। २. मुनाफा। नफा। ३. उपकार। भलाई।

**लाभकारी लाभदायक**—वि० [ सं० लाभकारिन् ] फायदा करनेवाला। गुणकारक।

**लाम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० लाम ] १. सेना। फौज। २. बहुत से लोगों का समूह।

**लामज**—संज्ञा पुं० [ सं० लामज्जक ] खास की तरह का एक प्रकार का तृण। पीला बाला।

**लामन**—संज्ञा पुं० [ देश० ] लहँगा।

**लामा**—संज्ञा० पुं० [ ति० ] तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्म्माचार्य।

वि० दे० "लंबा"।

**लामे**†—क्रि० वि० [ हिं० लाम=लंबा ] दूर। अंतर पर

**लाय***—संज्ञा स्त्री० [ सं० अलात ] १. लपट। ज्वाला। २. आग। अग्नि।

**लायक**—वि० [ अ० ] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. उपयुक्त। मुनासिब। ३. सुयोग्य। गुणवान्। ४. समर्थ। सामर्थ्यवान्।

संज्ञा पुं० [ सं० लाजा ] धान का लावा।

**लायकियत, लायकी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० लायक ] लायक होने का भाव या धर्म्म। योग्यता।

**लायची**—संज्ञा स्त्री० दे० "इलायची"।

**लार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लाला ] १. वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है।

**मुहा०**—मुँह से लार टपकना=किसी चीज को देखकर उसके पाने की परम लालसा होना।

२. कतार। पंक्ति। ३. लासा। लुआब।

क्रि० वि० [ मार० लैर=पीछे ] साथ। पीछे।

**मुहा०**—लार लगाना=फँसाना। बझाना।

**लारी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] वह लंबी मोटर गाड़ी जिसपर बहुत से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।

**लाल**—संज्ञा पुं० [ सं० लालक ] १. छोटा और प्रिय बालक। २. बेटा। पुत्र। लड़का। ३. प्यारा आदमी। ४. श्रीकृष्णचंद्र।

संज्ञा पुं० [ सं० लालन ] दुलार।

लाड़। प्यार।
संज्ञा पुं० दे० "लार"।
...ा संज्ञा स्त्री० [ सं० लालसा ] इच्छा। चाह।
संज्ञा पुं० दे० "मानिक"।
वि० १. रक्तवर्ण। सुर्ख। २. बहुत अधिक क्रुद्ध।
मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना। नाराज होना। लाल पीले होना=गुस्सा होना। क्रोध करना।
३. (खेलाड़ी) जो खेल में औरों से पहले जीत गया हो।
मुहा०—लाल होना=बहुत अधिक संपत्ति पाकर संपन्न होना।
संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया। इसकी मादा को "मुनियाँ" कहते हैं।

**लालचंदन**—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+चंदन] एक प्रकार का चंदन जिसे घिसने से लाल रंग और अच्छी सुगंध निकलती है। रक्तचंदन। देवी चंदन।

**लालच**—संज्ञा पुं० [सं० लालसा] [वि० लालची] १. कोई चीज पाने की बहुत बुरी तरह इच्छा करना। २. लोभ। लोलुपता।

**लालचहा†**—वि० दे० "लालची"।

**लालची**—वि० [हिं० लालच+ई (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक लालच हो। लोभी।

**लालटेन**—संज्ञा स्त्री० [अं० लैंटर्न] किसी प्रकार का वह खाना आदि जिसमें तेल का खजाना और जलाने के लिए बत्ती लगी रहती है; और जिसके चारों ओर शीशा या कोई पारदर्शी पदार्थ लगा रहता है। कंदील।

**लालड़ी**—संज्ञा पुं० [हिं० लाल (रत्न)+ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार का लाल नगीना।

**लालन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० लालनीय] प्रेमपूर्वक बालक का आदर करना। लाड़। प्यार।
संज्ञा पुं० [हिं० लाला] १ प्रिय पुत्र। प्यारा बच्चा। २. कुमार। बालक।
क्रि० अ० लाड़ करना। प्यार करना।

**लालना***—क्रि० स० [सं० लालन] दुलार करना। लाड़ करना। प्यार करना।

**लाल-बुझक्कड़**—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+बूझना] बातों का अटकल-पच्चू मतलब लगानेवाला।

**लालमन**—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+मणि] १. श्रीकृष्ण। २. एक प्रकार का तोता।

**लालमिर्च**—संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च"।

**लालरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लालड़ी"।

**लालस**—वि० [सं०] ललचाया हुआ। लोलुप।

**लाल-समुद्र**—संज्ञा पुं० दे० "लाल सागर"।

**लालसा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुत अधिक इच्छा या चाह। लिप्सा। २. उत्सुकता।

**लाल सागर**—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+सागर] भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रिका के मध्य में पड़ता है।

**लालसिखा†**—संज्ञा पुं० [हिं० लाल+शिखा] मुर्गा।

**लालसी***—वि० [सं० लालसा] अभिलाषा या इच्छा करनेवाला। उत्सुक।

**लाला**—संज्ञा पुं० [सं० लालक] १. एक प्रकार का संबोधन। महाशय। साहब। २. छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन।
संज्ञा स्त्री० [सं०] मुँह से निकलनेवाली लार। थूक।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] पोस्त का लाल रंग का फूल।
वि० [हिं० लाल] लाल रंग का।

**लालायित**—वि० [सं०] [स्त्री० लालायिता] ललचाया हुआ।

**लालित**—वि० [सं०] [स्त्री० लालिता] १ दुलारा। प्यारा। २. जो पाला पोसा गया हो।

**लालित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] ललित का भाव। सौंदर्य। सुंदरता। सरसता।

**लालिमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लाली। सुर्खी।

**लाली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाल+ई (प्रत्य०)] १. लाल होने का भाव। ललाई। लालपन। सुर्खी। २. इज्जत। पत। आबरू।
संज्ञा पुं० दे० "लाल"।

**लाले**—संज्ञा [सं० लाला] लालसा। अभिलाषा।
मुहा०—किसी चीज के लाले पड़ना=किसी चीज के लिए बहुत तरसना।

**लावड़ा†**—संज्ञा पुं० दे० "मरसा"। (साग)

**लाव*†**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लाय] आग।
संज्ञा स्त्री० [देश०] मोटा रस्सा।

**लावक**—संज्ञा ० [सं०] लवा पक्षी।

**लावण्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लवण का भाव या धर्म। नमकपन। २. अत्यंत सुंदरता।

**लावदार**—वि० [हिं० लाव=आग+फ़ा० दार (प्रत्य०)] (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिए

तयार हो।
संज्ञा पुं० तोप छोड़नेवाला। तोपची।

**लावनता***—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

**लावना***†—क्रि० स० दे० "लाना"।
क्रि० स० [ हिं० लगाना ] १. लगाना। स्पर्श कराना। २. जलाना। आग लगाना।

**लावनि***—संज्ञा स्त्री० [सं० लावण्य] सौंदर्य।

**लावनी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. एक प्रकार का छंद। २. इस छंद का एक प्रकार जो प्रायः चंग बजाकर गाया जाता है। ख्याल।

**लाव-लश्कर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सेना और उसके साथ रहने वाले लोग तथा सामग्री।

**लावल्द**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा लावल्दी ] निःसंतान।

**लावा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लवा नामक पक्षी।
संज्ञा पुं० [ सं० लाजा ] भूना हुआ धान, या रामदाना आदि जो भुनने के कारण फूटकर फूल जाता है। खील। लाई। फुल्ला। ज्वालामुखी पर्वत से निकला पदार्थ।

**लावा-परछन**—संज्ञा पुं० [ हिं० लावा + परछना ] विवाह के समय की एक रीति।

**लावारिस**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० लावारिसी ] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।

**लाश**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] किसी प्राणी का मृतक देह। लोथ। मुरदा। शव।

**लाष***—संज्ञा पुं०, वि० दे० "लाख"।

**लाषना***†—क्रि० स० दे० "लखना"।

**लास**—संज्ञा पुं० [ सं० लास्य ] १. एक प्रकार का नाच। २. मटक।

**लासा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लस ] १. कोई लसदार चीज। चेप। लुआब। २. एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ जो बहेलिये लोग चिड़ियों को फँसाने के लिए बनाते हैं।

**लासानी**—वि० [ अ० ] अद्वितीय। बेजोड़।

**लासि**—संज्ञा पुं० दे० "लास्य"।

**लास्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नृत्य। नाच। २. वह नृत्य जो कोमल अंगों के द्वारा और जिससे शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता हो।

**लाह***—संज्ञा स्त्री० [ सं० लाक्षा ] लाख। चपड़ा।
संज्ञा पुं० [सं० लाभ] लाभ। नफा।
संज्ञा स्त्री० [ ? ] चमक। आभा। कांति।

**लाहक***—संज्ञा पुं० [ हिं० लाह (लाभ) + क (प्रत्य०) ] इच्छुक। चाहनेवाला।

**लाही***—संज्ञा स्त्री० [ सं० लाक्षा ] १. दे० "लाख"। २. लाख से मिलता-जुलता एक कीड़ा जो फसल को प्रायः हानि पहुँचाता है।
वि० मटमैलापन लिए लाल।

**लाहु***—संज्ञा पुं० [ सं० लाभ ] नफा। लाभ।

**लिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. वह जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो। ३. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति। ४. पुरुष की गुप्त इंद्रिय। शिश्न। ५. शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति। ६. व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है। जैसे, पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग।

**लिंगदेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों के फल भोगने के लिए जीवात्मा के साथ लगा रहता है। (अध्यात्म)

**लिंगपुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह पुराणों में से एक जिसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है।

**लिंगशरीर**—संज्ञा पुं० दे० "लिंगदेह"।

**लिंगायत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक शैव संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।

**लिंगी**—संज्ञा पुं० [ सं० लिंगिन् ] १. चिह्नवाला। निशानवाला। २. आडंबरी। धर्मध्वजी।

**लिंगेंद्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

**लिए**—हिंदी का एक कारक-चिह्न जो संप्रदान में आता है, और जिस शब्द के आगे लगता है, उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है। जैसे—उसके लिए।

**लिक्खाड़**—संज्ञा पुं० [हिं० लिखना] बहुत लिखनेवाला। भारी लेखक। (व्यंग्य)।

**लिक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जूँ का अंडा। लीख। २. एक परिमाण जो कई प्रकार का कहा गया है।

**लिखत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लिखित ] १. लिखी हुई बात। लेख। २. दस्तावेज।

**लिखधार***—संज्ञा पुं० दे० "लिखहार"।

**लिखना**—क्रि० स० [ सं० लिखन ] १. चिह्न करना। अंकित करना। २. स्याही में डूबी हुई कलम से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपिबद्ध

करना। ३. चित्रित करना। चित्र बनाना। ४. पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना।

**लिखनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "लेखनी"।

**लिखवार**—संज्ञा पुं० दे० "लिखहार"।

**लिखहार***—संज्ञा पुं० [हिं० लिखना + हार (प्रत्य०)] लिखनेवाला। मुहर्रिर या मुंशी।

**लिखाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना] १. लेख। लिपि। २. लिखने का कार्य्य। ३. लिखने का ढंग। लिखावट। ४. लिखने की मजदूरी। ५. चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव।

**लिखाना**—क्रि० स० [सं० लिखन] दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।

**लिखापढ़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना + पढ़ना] १. पत्र-व्यवहार। चिट्ठियों का आना जाना। २. किसी विषय को कागज पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।

**लिखावट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लिखना + आवट (प्रत्य०)] १. लेख। लिपि। २. लिखने का ढंग।

**लिखित**—वि० [सं०] लिखा हुआ। अंकित।

**लिखितक**—संज्ञा पुं० [सं० लिखित] एक प्रकार के प्राचीन चौखूँटे अक्षर।

**लिख्या**—संज्ञा स्त्री० दे० "लिक्षा"।

**लिच्छवि**—संज्ञा पुं० [सं०] एक इतिहास-प्रसिद्ध राजवंश जिसका राज्य नैपाल, मगध और कोशल मे था।

**लिटाना**—क्रि० स० [हिं० लेटना] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

**लिट्ट**—संज्ञा पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० लिट्टी] मोटी रोटी। अंगा-कड़ी। बाटी।

**लिड़ार**†—संज्ञा पुं० [देश०] शृगाल। गीदड़।

वि० डरपोक। कायर। बुजदिल।

**लिपटना**—क्रि० अ० [सं० लिप्त] १. एक वस्तु का दूसरी को घेरकर उससे खूब सट जाना। चिमटना। २. गले लगाना। आलिंगन करना। ३. किसी काम में जी-जान से लग जाना।

**लिपटाना**—क्रि० स० [हिं० लिपटना का स० रूप] १. संलग्न करना। चिमटाना। २. आलिंगन करना। गले लगाना।

**लिपड़ा**—संज्ञा पुं० [देश०] कपड़ा।

वि० [हिं० लेप] गीला और चिपचिपा।

संज्ञा स्त्री० दे० "लिबड़ी"।

**लिपना**—क्रि० अ० [हिं० लिप्] १. लीपा या पोता जाना। २. रंग या गीली वस्तु का फैल जाना।

**लिपवाना**—क्रि० स० [हिं० लीपना] लीपने का काम दूसरे से कराना।

**लिपाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लीपना] लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**लिपाना**—क्रि० स० [हिं० लीपना] १. रंग या किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना। पुताना। २. चुने, मिट्टी, गोबर आदि लेप कराना।

**लिपि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न। लिखावट। २. अक्षर लिखने की प्रणाली। जैसे—ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि। ३. लिखे हुए अक्षर या बात। लेख।

**लिपिकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिखनेवाला। लेखक। २. प्रतिलिपि करनेवाला।

**लिपिबद्ध**—वि० [सं०] लिखा हुआ। लिखित।

**लिप्त**—वि० [सं०] १. लिपा हुआ। पुता हुआ। २. जिसकी पतली तह चढ़ी हो। ३. खूब तत्पर। लीन। अनुरक्त।

**लिप्सा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लालच। लोभ।

**लिफाफा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. कागज की बनी हुई वह चौकोर थैली जिसके अंदर कागज-पत्र रखकर भेजे जाते हैं। २. दिखावटी कपड़े-लत्ते। ३. ऊपरी आडंबर। मुलम्मा। कलई। ४. जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।

**लिथड़ना**—क्रि० अ० [अनु०] कीचड़ आदि में लथपथ होना।

क्रि० स० कीचड़ आदि में लथपथ करना।

**लिबड़ी**—संज्ञा [हिं० लुगड़ी ?] कपड़ा-लत्ता।

**यौ०**—लिबड़ी बरतना या बारदाना = निर्वाह का मामूली सामान। असबाब।

**लिबरल**—संज्ञा पुं० [अं०] वह राजनातिक दल जो प्रतिपक्षी के साथ उदारता का व्यवहार करना चाहता हो। भारतीय राजनीति मे वह दल जो धीरे धीरे राजनीतिक प्रगति चाहता है।

वि० उदार।

**लिबास**—संज्ञा पुं० [अ०] पहनने का कपड़ा। आच्छादन। पहनावा। पोशाक।

**लियाकत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता। काबिलीयत। २. गुण। हुनर। ३. सामर्थ्य। ४. शील। शिष्टता।

**लिलाड़, लिलार***†—संज्ञा पुं० दे० "ललाट"।

**लिलोही**†—वि० [ सं० लल=चाह करना ] लालची।

**लिव***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लौ ] लगन।

**लिवाना**—क्रि० स० [ हिं० लेना या लाना ] १. लेने या लाने का काम दूसरे से कराना। २. अपने साथ ले आना।

**लिवाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० लेना + वाल (प्रत्य०) ] खरीदने या लेने वाला।

**लिवैया**—वि० [ हिं० लेना ] लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

**लिसोड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लस= चिपचिपाहट ] एक मँझोला पेड़ जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं।

**लिहाज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान। २. मेहरबानी का खयाल। कृपा दृष्टि। ३. मुरव्वत। मुलाहजा। शील-संकोच। ४. पक्षपात। तरफदारी। ५. सम्मान या मर्य्यादा का ध्यान। ६. लज्जा। शर्म। हया।

**लिहाड़ा**—वि० [ देश० ] १. नीच। वाहियात। गिरा हुआ। २. खराब। निकम्मा।

**लिहाड़ी**†—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] उपहास। निंदा।

**लिहाफ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] रात को सोते समय ओढ़ने का रूईदार कपड़ा। भारी रजाई।

**लिहित**—वि० [ सं० लिह ] चाटता हुआ।

**लीक**—संज्ञा स्त्री० [ लिख् ] १. लकीर। रेखा।

**मुहा०**—लीक करके=दे० "लीक खींचकर"। लीक खिंचना=१. किसी बात का अटल और दृढ़ होना। २. मर्य्यादा बँधना। ३. साख बँधना। प्रतिष्ठा स्थिर होना। लीक खींचकर= निश्चयपूर्वक। जोर देकर।

२. गहरी पड़ी हुई लकीर।

**मुहा०**—लीक पीटना=चली आई हुई प्रथा का ही अनुसरण करना।

३. मर्य्यादा। नाम। यश। ४. बँधी हुई मर्य्यादा। लोक-नियम। ५. रीति। प्रथा। चाल। दस्तूर। ६. हद। प्रतिबंध। ७. धब्बा। बदनामी। लाछन। ८. गिनती। गणना।

**लीख**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लिक्षा ] १. जूँ का अंडा। २. लिक्षा नामक परिमाण।

**लीग**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. कुछ विशिष्ट दलों का किसी उद्देश्य से आपस में मिलन। २. बहुत बड़ी सभा या संस्था। ३. लंबाई की एक नाप जो स्थल के लिए तीन मील की और समुद्र के लिए साढ़े तीन मील की होती है।

**लीचड़**—वि० [ देश० ] १. सुस्त। काहिल। निकम्मा। २. जल्दी न छोड़नेवाला। ३. जिसका लेन-देन ठीक न हो।

**लीची**—संज्ञा स्त्री० [ चीनी लीचू ] एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसका फल मीठा होता है।

**लीझी**—वि० [ देश० ] १. नीरस। निस्सार। २. निकम्मा।

**लीद**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल।

**लीन**—वि० [ सं० ] [भाव० लीनता] १. जो किसी वस्तु में समा गया हो। २. तन्मय। मग्न। ३. बिल्कुल लगा हुआ। तत्पर।

**लीपना**—क्रि० स० [ सं० लेपन ] किसी गीली वस्तु की पतली तह चढ़ाना। पोतना।

**मुहा०**—लीप पोतकर बराबर करना= चौपट करना। चौका लगाना।

**लीबड़***—वि० [ हिं० लिबड़ना ] कीचड़ आदि से भरा हुआ।

**लीर**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० चीर ] कपड़े की धज्जी। चिथड़ा।

**लील**†—संज्ञा पुं० [सं० नील] नील। वि० नीला। नीले रंग का।

**लीलना**—क्रि० स० [ सं० गिलन या लीन ] गले के नीचे पेट में उतारना। निगलना।

**लीलया**—क्रि० वि० [ सं० ] १. खेल में। २. सहज में ही। बिना प्रयास।

**लीला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह व्यापार जो केवल मनोरंजन के लिए किया जाय। केलि। क्रीड़ा। खेल। २. प्रेम का खेलवाड़। प्रेम-विनोद। ३. नायिकाओं का एक हाव जिसमें वे प्रायः वेश, गति, वाणी आदि का अनुकरण करती हैं। ४. विचित्र काम। ५. मनुष्यों के मनोरंजन के लिए किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय। चरित्र। ६. बारह मात्राओं का एक छंद। ७. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है। ८. एक छंद जिसमें २४ मात्राएँ और अंत में सगण होता है।

संज्ञा पुं० [ सं० नील ] स्याह रंग का घोड़ा।

वि० नीला।

**लीलापुरुषोत्तम**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

**लीलांबर**—संज्ञा पुं० दे० "नीलांबर"।

**लीलावती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य्य की

पत्नी जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। २. ३२ मात्राओं का एक छंद।

**लुँगाड़ा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] शोहदा। लुच्चा।

**लुंगी**—संज्ञा स्त्री० धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा। तहमत।

**लुंचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चुटकी से पकड़कर उखाड़ना। नोचना। उत्पाटन।

**लुंज**—वि० [ सं० लुंचन ] १. बिना हाथ पैर का। लँगड़ा लूला। २. बिना पत्ते का। ठूँठ। ( पेड़ )

**लुंठन**—क्रि० स० [ सं० ] [ वि० लुंठित ] १. लुढ़कना। २. लूटना। चुराना।

**लुंठित**—वि० [ सं० ] १. जो जमीन पर गिरा या लुढ़का हुआ हो। २. जो लूटा खसोटा गया हो।

**लुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० रुंड ] बिना सिर का धड़। कबंध। रुंड।

**लुंड-मुंड**—वि० [ सं० रुंड+मुंड ] १. जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों, केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो। २. बिना पत्ते का। ठूँठ।

**लुंडा**—वि० [ सं० रुंड ] [ स्त्री० लुंडी ] जिसकी पूँछ और पर झड़ गए हों। ( पक्षी )।

**लुंबिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कपिलवस्तु के पास का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

**लुआठा**—संज्ञा पुं० [ सं० लोक=काष्ठ ] [ स्त्री० अल्पा० लुआठी ] सुलगती हुई लकड़ी। लुआती।

**लुआब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] लसदार गूदा। चिपचिपा गूदा। लासा।

**लुआर**—संज्ञा स्त्री० दे० "लू"।

**लुकंजन***†—संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

**लुक**—संज्ञा पुं० [ सं० लोक=चमकना ] १. चमकदार रोगन। वार्निश। २. आग की लपट। लौ। ज्वाला।

**लुकठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लुक ] लुआठा।

**लुकना**—क्रि० अ० [ सं० लुक=लोप ] आड़ में होना। छिपना।

**लुकाठ**—संज्ञा पुं० [ सं० लकुच ] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल जो खाया जाता है। लक्कुट।

*संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।

**लुकाना**—क्रि० स० [ हिं० लुकना ] आड़ मे करना। छिपाना।

† क्रि० अ० लुकना। छिपना।

**लुकार**—संज्ञा स्त्री० दे० "लुक"।

**लुकेठा**†—संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।

**लुकाना**—क्रि० स० दे० "लुकाना"।

**लुगड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "लूगड़ा"।

**लुगदी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] गीली वस्तु का पिंड या गाला। छोटा लोंदा।

**लुगरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० लूगा+ड़ा (प्रत्य०) ] १. कपड़ा। वस्त्र। २. ओढ़नी। छोटी चादर। ३. फटा पुराना कपड़ा। लत्ता।

**लुगरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लूगरा ] फटी पुरानी धोती।

**लुगाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोग ] स्त्री। औरत।

**लुगी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लूगा ] १. पुराना कपड़ा। २. लहँगे का संजाफ या फटा चौड़ा किनारा।

**लुग्गा**†—संज्ञा पुं० दे० "लूगा"।

**लुचकना***—क्रि० स० [ सं० लुंचन ] छानना-झपटना।

**लुचुई**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० रुचि ] मैदे की पतली पूरी। लुची।

**लुच्चा**—वि० १. दुराचारी। कुमार्गी। कुचाली। २. शोहदा। बदमाश।

**लुच्ची**—संज्ञा स्त्री० दे० "लुचुई"।

**लुटंत***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लूट ] लूट।

**लुटकना**—क्रि० अ० दे० "लटकना"।

**लुटना**—क्रि० अ० [ सं० लुट्=लुटना ] १. दूसरे के द्वारा लूटा जाना। २. तबाह होना। बरबाद होना।

* क्रि० अ० दे० "लुठना"।

**लुटरना**—क्रि० अ० [ सं० लुंठन ] इधर उधर लुढ़कना या लोटना।

**लुटाना**—क्रि० स० [ हिं० लूटना का प्रे० ] १. दूसरे को लूटने देना। २. मुफ्त में बिना पूरा मूल्य लिए देना। ३. व्यर्थ फेंकना या व्यय करना। ४. बहुतायत से बाँटना। अंधाधुंध दान करना।

**लुटावना***†—क्रि० स० दे० "लुटाना"।

**लुटिया**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोटा ] छोटा लोटा।

**लुटेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लूटना+एरा (प्रत्य०) ] लूटनेवाला। डाकू। दस्यु।

**लुठना***—क्रि० अ० [ सं० लुंठन ] १. भूमि पर पड़ना। लोटना। २. लुढ़कना।

**लुठाना***—क्रि० स० [ हिं० लुठना ] १. भूमि पर डालना। लोटाना। २. लुढ़काना।

**लुड़कना**—क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"।

**लुढ़कना**—क्रि० अ० [ सं० लुंठन ] गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते हुए गमन करना। ढुलकना।

**लुढ़काना***†—क्रि० स० [ हिं० लुढ़कना ]

इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय। लुढ़काना।

**लुढ़ना***†—क्रि० अ० दे० "लुढ़कना"।

**लुढ़ाना***—क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।

**लुतरा**—वि० [ देश० ] [ स्त्री० लुतरी ] १. चुगुलखोर। २. नटखट। शरारती।

**लुत्थ***—संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ"।

**लुनना**—क्रि० स० [ सं० लवन ] १. खेत की तैयार फसल काटना। २. नष्ट करना।

**लुनाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

**लुनेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० लुनना ] खेत की फसल काटनेवाला। लुननेवाला।

**लुपना***—क्रि० अ० [ सं० लुप ] छिपना।

**लुप्त**—वि० [ सं० ] १. छिपा हुआ। गुप्त। अंतर्हित। २. गायब। अदृश्य।

**लुप्तोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह उपमा अलंकार जिसमें उसका कोई अंग लुप्त हो, अर्थात् न कहा गया हो।

**लुबुध***†—वि० दे० "लुब्ध"।

**लुबुधना**†—क्रि० अ० [ हिं० लुबुध+ना (प्रत्य०) ] लुब्ध होना। लुभाना।

संज्ञा पुं० [ सं० लुब्धक ] अहेरी। बहेलिया।

**लुबुधा***—वि० [ सं० लुब्ध ] १. लोभी। लालची। २. चाहनेवाला। इच्छुक। ३. प्रेमी।

**लुब्ध**—वि० [ सं० ] १. लुभाया हुआ। ललचाया हुआ। २. तन-मन की सुध भूला हुआ। मोहित।

**लुब्धक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्याध। बहेलिया। शिकारी। २. उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत तेजवान् तारा। ( आधुनिक )

**लुब्धना***—क्रि० अ० दे० "लुबुधना"।

**लुब्धापति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह प्रौढ़ा नायिका जो पति और कुल के लोगों की लज्जा करे।

**लुभाना**—क्रि० अ० [ हिं० लोभ ] १. लुब्ध होना। मोहित होना। रीझना। २. लालच में पड़ना। ३. तन मन की सुध भूलना।

क्रि० स० १. लुब्ध करना। मोहित करना। रिझाना। २. प्राप्त करने की गहरी चाह उत्पन्न करना। ललचाना। ३. सुधबुध भुलाना। मोह में डालना।

**लुरकना**†—क्रि० अ० [ सं० लुलन ] लटकना। झूलना।

**लुरकी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लुरकना=लटकना ] कान में पहनने की बाली। मुरकी।

**लुरना***†—क्रि० अ० [ सं० लुलन ] १. झूलना। लहराना। २. ढल पड़ना। झुक पड़ना। ३. कहीं से एकबारगी आ जाना। ४. आकर्षित होना। प्रवृत्त होना।

**लुरियाना**†—क्रि० अ० दे० "लुरना"।

**लुरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लेरुवा=बछड़ा ? ] वह गाय जिसे बच्चा दिए थोड़े ही दिन हुए हों।

**लुलना***—क्रि० अ० दे० "लुरना"।

**लुवार**†—वि० दे० "लू"।

**लुहना***—क्रि० अ० दे० "लुभाना"।

**लुहार**—संज्ञा पुं० [ सं० लौहकार ] [ स्त्री० लुहारिन, लुहारी ] १. लोहे की चीजें बनानेवाला। २. वह जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।

**लुहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लुहार ] १. लुहार जाति की स्त्री। २. लोहे की वस्तु बनाने का काम।

**लूँबरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।

**लू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लुक=जलना या हिं० लौ=लपट ] गरमी के दिनों की तपी हुई हवा।

**मुहा०**—लू मारना या लगना=शरीर में तपी हवा लगने से ज्वर आदि उत्पन्न होना।

**लूक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लुक ] १. आग की लपट। २. जलती हुई लकड़ी। लुत्ती।

**मुहा०**—लूक लगाना=जलती लकड़ी या बत्ती छुलाना। आग लगाना।

३. गरमी के दिनों की तपी हवा। ४. टूटा हुआ तारा। उल्का।

**लूकट***—संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।

**लूकना***—क्रि० स० [ हिं० लूक+ना ] आग लगाना। जलाना।

*† क्रि० अ० दे० "लुकना"।

**लूका**—संज्ञा पुं० [ सं० लुक ] [ स्त्री० अल्पा० लूकी ] १. आग की लौ या लपट। २. लुआठा।

**लूकी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लूका ] १. आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २. लूका।

**लूखा***—वि० [ सं० रूक्ष ] रूखा।

**लूगा**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. वस्त्र। कपड़ा। २. धोती।

**लूट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लूटना ] १. किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना। डकैती।

**यौ०**—लूटमार, लूटपाट=लोगों को मारना पीटना और उनका धन छीनना।

२. लूटने से मिला हुआ माल।

**लूटक**—संज्ञा पुं० [ हिं० लूट ] १.

लूटनेवाला । लुटेरा । २. कांति हरनेवाला ।

**लूटना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ लुट्=लूटना ] १. मार पीटकर या छीन-झपटकर ले लेना । २. अनुचित रीति से किसी का माल लेना । ३. वाजिब से बहुत ज्यादा दाम लेना । ठगना । ४ मोहित करना । मुग्ध करना ।

**लूटा***—वि॰ [ हिं॰ लूटना+आ ( प्रत्य॰ ) ] लूटने वाला । लुटेरा ।

**लूटि***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लूट" ।

**लूत**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ लूता ] मकड़ी ।

**लूता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] मकड़ी । संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लूका ] लूका । लुआठा ।

**लूनना***†—क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुनना" ।

**लूम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पूँछ । दुम ।

संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ हैंडलूम ] कपड़ा बुनने का करघा ।

**लूमड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लोमड़ी" ।

**लूमना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ लंबन ] लटकना ।

**लूरना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "लुरना" ।

**लूला**—वि॰ [ सं॰ लून=कटा हुआ ] [ स्त्री॰ लूली ] १. जिसका हाथ कट गया हो । लुंजा । टुंडा । २. बेकाम । असमर्थ ।

**लूलू**—वि॰ [ अनु॰ ] मूर्ख । बेवकूफ ।

**लूह,लूहर**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लू" ।

**लेंड़**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "लेंड़ी" ।

**लेंड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] १. मल की बत्ती । बँधा मल । २. बकरी या ऊँट की मेंगनी ।

**लेंहड़, लेंहड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] झुंड । दल । समूह । गल्ला । (चौपायों के लिए )

**ले**—अव्य॰ [ हिं॰ लेकर ] आरंभ होकर ।

‡[ सं॰ लग्न, हिं॰ लग, लगि ] तक । पर्यंत ।

**लेई**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ लेही, लेह्य ] १. किसी चूर्ण का गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ । अवलेह । २. लपसी ।

यौ॰—लेईपूँजी=सारी जमा । सर्वस्व। ३. घुला हुआ आटा जिसे आग पर पकाकर कागज आदि चिपकाने के काम में लाते हैं । ४. सुरखी मिला हुआ बरी का गीला चूना जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है ।

**लेकचर**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] व्याख्यान । भाषण ।

**लेख**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. लिखे हुए अक्षर । लिपि । २. लिखावट । लिखाई । ३. लेखा । हिसाब-किताब । ४. देव । देवता ।

*वि॰ लेख्य । लिखने योग्य ।

संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ लीक ] पक्की बात । लकीर ।

**लेखक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ लेखिका ] १. लिखनेवाला । लिपिकार । २. ग्रंथकार ।

**लेखन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ लेखनीय, लेख्य ] १. लिखने का कार्य्य । अक्षर बनाना । २. लिखने की कला या विद्या । ३. चित्र बनाना । ४. हिसाब करना । लेखा लगाना ।

**लेखनहार***—वि॰ दे॰ "लेखक" ।

**लेखना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ लेखन ] १. अक्षर या चित्र बनाना । लिखना । २. गिनना ।

यौ॰—लेखना-जोखना=१.ठीक ठीक अंदाज करना । हिसाब करना । २. परीक्षा करना । ३. समझना । सोचना । विचारना । ४. मानना ।

**लेखनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] कलम ।

**लेखा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लिखना ] १.गणना । गिनती । हिसाब-किताब । २. ठीक ठीक अंदाज । कूत । ३. आय-व्यय का विवरण ।

मुहा॰—लेखा डेवढ़ करना=१. हिसाब चुकता करना । २. चौपट करना । नाश करना । ४. अनुमान । विचार । समझ ।

मुहा॰—किसी के लेखे=किसी की समझ में । किसी के विचार के अनुसार ।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. हाथ की लिखावट । लेख । २. रचना । ३. चित्र । ४. रेखा । ५. श्रेणी । पंक्ति । ६. किरण । रश्मि ।

**लेखिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. लिखनेवाली । २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली ।

**लेख्य**—वि॰ [ सं॰ ] १. लिखने योग्य । २. जो लिखा जाने को हो ।

संज्ञा पुं॰ १. लेख । २. दस्तावेज ।

**लेजम**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है । २. वह कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते हैं ।

**लेजुर,लेजुरी**†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ रज्जु ] १. डोरी । २. कुएँ से पानी खींचने की रस्सी ।

**लेट**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] चूने-सुरखी की वह परत जो छत या फर्श बनाने के लिए डाली जाती

है। गच।

**लेटना**—क्रि० अ० [सं० लुंटन,हिं० लोटना] १. पीठ, जमीन या बिस्तरे आदि से लगाकर बदन की सारी लंबाई उस पर ठहराना। पौढ़ना। २. किसी चीज का बगल की ओर झुककर जमीन पर गिर जाना।

**लेटाना**—क्रि० स० [हिं० लेटना का प्रेर०] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

**लेदो**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

**लेन**—संज्ञा पुं० [हिं० लेना] १. लेने की क्रिया या भाव। २. लहना। पावना।

**लेनदार**—संज्ञा पुं० [हिं० लेन + फ़ा० दार (प्रत्य०)] जिसका कुछ बाकी हो। महाजन। लहनेदार।

**लेन-देन**—संज्ञा पुं० [हिं० लेना + देना] १. लेने और देने का व्यवहार। आदान-प्रदान। २. ऋण देने और लेने का व्यवहार।

**मुहा०**—लेन-देन=सरोकार। संबंध।

**लेनहार**—वि० [हिं० लेना + हार] लेनेवाला।

**लेना**—क्रि० स० [हिं० लहना] १. दूसरे के हाथ से अपने हाथ में करना। ग्रहण करना। प्राप्त करना। २. थामना। पकड़ना। ३. माल लेना। खरीदना। ४. अपने अधिकार में करना। ५. जीतना। ६. धरना। ७. अगवानी करना। अभ्यर्थना करना। ८. भार ग्रहण करना। जिम्मे लेना। ९. सेवन करना। पीना। १०. धारण करना। स्वीकार करना। ११. किसी को उपहास द्वारा लज्जित करना।

**मुहा०**—आड़े हाथों लेना=गूढ़ व्यंग्य द्वारा लज्जित करना। लेने के देने पड़ना=लेने के स्थान पर उलटे देना पड़ना। (किसी मामले में) लाभ के बदले हानि होना। ले डालना= १ खराब करना। चौपट करना। २. पराजित करना। हराना। ३. पूरा करना। समाप्त करना। ले दे करना=हुज्जत करना। तकरार करना। लेना एक न देना दो=कुछ मतलब नहीं। कुछ सरोकार नहीं। ले मरना=अपने साथ नष्ट या बरबाद करना। कान में लेना=सुनना।

**लेप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. लेई के समान। २. गाढ़ी गीली वस्तु की वह तह जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय।

**लेपन**—संज्ञा पुं० [सं०] लेपने की क्रिया या भाव।

**लेपना**—क्रि० स० [सं० लेपन] गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। छोपना।

**ले-पालक**—संज्ञा पुं० [हिं० लेना + पालना] गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक। पालट।

**लेरुआ**—संज्ञा पुं० [सं० लेह] बछड़ा।

**लेलिहान**—वि० [सं०] १. बारबार चखने या चाटनेवाला। २. ललचाया हुआ।

संज्ञा पुं० सर्प। साँप।

**लेव**—संज्ञा पुं० [सं० लेप्य] १. लेप। २. मिट्टी का लेप जो बर्तनों की पेंदी पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पहले किया जाता है। ३. दे० "लेवा"।

**लेवा**—संज्ञा पुं० [सं० लेप्य] १. गिलावा। २. मिट्टी का गिलावा। कहगिल। ३. लेप।

वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

**मुहा०**—लेवा देई=लेन देन।

**लेवाल**—संज्ञा पुं० [हिं० लेना + वाल (प्रत्य०)] लेने या खरीदनेवाला।

**लेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अणु। २. छोटाई। सूक्ष्मता। ३. चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। लगाव। संबंध। ५. एक अलंकार, जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में रोचकता आती है।

वि० अल्प थोड़ा।

**लेश्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जैनियों के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। २. जीव।

**लेखना***—क्रि० स० १. दे० "लखना"। २. दे० "लिखना"।

**लेसना**—क्रि० स० [सं० लेश्या] जलाना।

क्रि० स० [हिं० लस] १. किसी चीज पर लेप लगाना। पोतना। २. दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। कहगिल करना। ३. चिपकाना। सटाना। ४. चुगली खाना।

**लेहन**—संज्ञा पुं० [सं० लेहक] १. चखना। २. चाटना।

**लेहना**—संज्ञा पुं० दे० "लहना"।

**लेह्य**—वि० [सं०] चाटने के योग्य।

**लैंगिक**—संज्ञा पुं० [सं०] वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो। अनुमान।

**लै***—अव्य० [हिं० लगना] तक। पर्यंत।

**लैन**†—संज्ञा स्त्री० दे० "लाइन"।

**लैया**—संज्ञा स्त्री० दे० "लाई"।

**लैरा**†—संज्ञा पुं० [?] १. बछड़ा। २. बच्चा।

**लैस**—वि० [ अं० लेस ] वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। कटिबद्ध। तैयार।
संज्ञा पुं० कपड़े पर चढ़ाने का फीता।
संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बाण।

**लों**—अव्य० दे० "लौं"।

**लोंदा**—संज्ञा पुं० [ सं० लुंठन ] किसी गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा अंश।

**लोइ***—संज्ञा पुं० [ सं० लोक ] लोग।
संज्ञा स्त्री० [ सं० रोचि ] १. प्रभा। दीप्ति। २. लव। शिखा।

**लोइन***—संज्ञा पुं० १. दे० "लावण्य"। २. दे० "लोयन"।

**लोई**—संज्ञा स्त्री० [सं०लोप्ती] गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं।
संज्ञा स्त्री० [ सं० लोमीय ] एक प्रकार का कम्मल।

**लोकंजन***—संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।

**लोकंदा**†—संज्ञा पुं० [हिं०लोकना ?] [ स्त्री० लोकंदी ] विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

**लोकंदी**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० लोकना ?] वह दासी जो कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है।

**लोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्थान-विशेष जिसका बोध प्राणी को हो।
**विशेष**—उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है—पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल में इन सात लोकों की कल्पना हुई—भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपलोक और सत्यलोक। फिर पीछे इनके साथ सात पाताल—अतल, वितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल, और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए।
२. संसार। जगत्। ३. स्थान। निवास-स्थान। ४. प्रदेश। दिशा। ५. लोग। जन। ६. समाज। ७. प्राणी। ८. यश। कीर्त्ति।

**लोकटी***—संज्ञा स्त्री० दे० "लोमड़ी"।

**लोकधुनि***—संज्ञा स्त्री० [ सं० लोकध्वनि ] अफवाह।

**लोकना**—क्रि० स० [ सं० लोपन ] १. ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। २. बीच में से ही उड़ा लेना।

**लोकनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "लोकंदी"।

**लोकप**, **लोकपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३. राजा।

**लोकपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी दिशा का स्वामी। दिक्पाल। २. राजा।

**लोक-मत**—संज्ञा [ सं० ] किसी विषय में लोक या जनता की राय। समाज के बहुत से लोगों का मत।

**लोकल**—वि० [ अं० ] अपने नगर या स्थान का। स्थानीय।

**लोकलीक***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोक+लीक ] लोक की मर्यादा।

**लोकसंग्रह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० लोकसंग्रही ] १ संसार के लोगों को प्रसन्न करना। २. सबकी भलाई।

**लोकसत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार लोक या जनता के हाथ में हो।

**लोकहार**—वि० [ सं० लोक-हरण ] लोक या संसार को नष्ट करनेवाला।

**लोकांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है।

**लोकांतरित**—वि० [ सं० ] मरा हुआ। मृत।

**लोकाचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार में बरता जानेवाला व्यवहार। लोक व्यवहार।

**लोकाट**—संज्ञा पुं० [ चीनी लुः+क्यू ] एक पौधा जिसमें बड़े बेर के बराबर मोटे, गुदार फल लगते हैं।

**लोकाना**†—क्रि० स० [ हिं० लोकना का प्र० ] ऊपर में फेंकना। उछालना।

**लोकापवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लोगों में होनेवाली बदनामी। लोकनिंदा।

**लोकायत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। २. चार्वाक दर्शन। ३. दुर्मिल नामक छंद।

**लोकेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सब लोगों का स्वामी, ईश्वर।

**लोकेश्वर**—संज्ञा पुं० दे० "लोकेश"।

**लोकोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कहावत। मसल। २. काव्य में वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय।

**लोकोत्तर**—वि० [ सं० ] [ भाव० लोकोत्तरता ] बहुत ही अद्भुत और विलक्षण। अलौकिक।

**लोखर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोह+खंड ] १. नाई के औजार। २. लोहारों या बढ़इयों आदि के औजार।

**लोग**—संज्ञा पुं० बहु० [ सं० लोक ] [ स्त्री० लुगाई ] जन। मनुष्य। आदमी।

**लोगाई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोग ] स्त्री।

**लोच**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ लचक ] १. लचलचाहट। लचक। २. कोमलता।
संज्ञा पुं॰ [ सं॰ रुचि ] अभिलाषा।

**लोचन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] आँख। नेत्र।

**लोचना**†—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ लोचन ] १. प्रकाशित करना। २. रुचि उत्पन्न करना। ३. अभिलाषा करना।
क्रि॰ अ॰ शोभित होना।
क्रि॰ अ॰ १. अभिलाषा करना। कामना करना। २. ललचना। तरसना। ३. विचार करना।

**लोट**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ लोटना ] लोटने का भाव। लुढ़कना।
संज्ञा पुं॰ [हिं॰ लोटना] १. उतार। घाट। *२. त्रिवली।

**लोटन**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोटना ] १. एक प्रकार का कबूतर। २. राह में की छोटी कंकड़ियाँ।

**लोटना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ लुंठन ] १. सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। २. लुढ़कना। ३. कष्ट से करवट बदलना। तड़पना।

**मुहा॰**—लोट जाना= १. बेसुध होना। बेहोश हो जाना। २. मर जाना। ४. विश्राम करना। लेटना। ५. मुग्ध होना। चकित होना।

**लोटपटा**†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोटना + पाटा ] १. विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। २. दाँव का उलट-फेर।

**लोट-पोट**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ लोटना] लेटना। आराम करना।
वि॰ १ हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट लेट जानेवाला। २. बहुत अधिक प्रसन्न।

**लोटक-पोट***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ लोटना + पोट ( अनु॰ )] उलटने-पुलटने या मिलने-जुलाने की क्रिया।

**लोटा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोटना ] [ स्त्री॰ अल्पा॰ लुटिया ] धातु का एक गोल पात्र जो पानी रखने के काम में आता है।

**लोटिया**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ लोटा ] छोटा लोटा।

**लोड़ना***†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ लोड़= आवश्यकता ] आवश्यकता होना। दरकार होना।

**लोढ़ना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ लुंचन ] १. चुनना। तोड़ना। २. ओटना।

**लोढ़ा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ लोष्ठ ] [स्त्री॰ अल्पा॰ लोढ़िया] पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर किसी चीज को रखकर पीसते हैं। बट्टा।

**मुहा॰**—लोढ़ा डालना=बराबर करना। लोढ़ाढाल=चौपट। सत्यानाश।

**लोढ़िया**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ लोढ़ा ] छोटा लोढ़ा।

**लोथ, लोथि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ लोष्ठ] मृतशरीर। लाश। शव।

**मुहा॰**—लोथ गिरना=मारा जाना। लोथ डालना=मार गिराना। हत्या करना।

**लोथड़ा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोथ ] मांसपिंड।

**लोध**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ लोध्र ] एक प्रकार का वृक्ष। वैद्यक में इसकी छाल और लकड़ी दोनों का प्रयोग होता है।

**लोध्र**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "लोध"।

**लोध्रतिलक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्रकार का अलंकार जो उपमा का एक भेद है।

**लोन***†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ लवण ] १. लवण। नमक।

**मुहा॰**—किसी का लोन खाना=अन्न खाना। पाला जाना। किसी का लोन निकलना=नमकहरामी का फल मिलना। लोन न मानना=उपकार न मानना। जले पर लोन लगाना या देना=दुःख पर दुःख देना। किसी बात का लोन सा लगाना=अप्रिय होना। अप्रिय होना।
२. सौंदर्य। लावण्य।
वि॰ दे॰ "नमक"।
संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] १. ऋण। २. उधार।

**लोनहरामी**†—वि॰ दे॰ "नमकहराम"।

**लोना**—वि॰ [ हिं॰ लोन ] [ भाव॰ लोनाई ] १. नमकीन। सलोना। २. सुंदर।
संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोन ] १. दीवारों का एक प्रकार का रोग जिसमें वह झड़ने लगतीं और कमजोर हो जाती हैं। २. वह धूल जो लोना लगने पर दीवार या मिट्टी से झड़कर गिरती है। ३. नमकीन मिट्टी, जिससे शोरा बनाया जाता है। ४. अमलोनी।
संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] एक कल्पित चमारी जो जादू-टोने में प्रवीण मानी जाती है।
क्रि॰ स॰ [ सं॰ लवण ] फसल काटना।

**लोनाई**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लावण्य"।

**लोनार**†—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोन ] वह स्थान जहाँ नमक होता है।

**लोनिका**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लोनी"।

**लोनिया**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ लोन ] एक जाति जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है। नोनिया।
वि॰ [ सं॰ लावण्य ] सुंदर।

**लोनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लवण, लोन ] कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग।

**लोप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ संज्ञा लोपन ] [ वि० लुप्त, लोपक, लोप्ता, लोप्य ] १. नाश। क्षय। २. विच्छेद। ३. अदर्शन। अभाव। ४. व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द के साधन में किसी वर्ण को उड़ा देते हैं। ५. छिपना। अंतर्धान होना।

**लोपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लुप्त करना। तिरोहित करना। २. नष्ट करना।

**लोपना***†—क्रि० स० [ सं० लोपन ] १. लुप्त करना। मिटाना। २. छिपाना।

क्रि० अ० लुप्त होना। मिटना।

**लोपांजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

**लोपामुद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अगस्त्य ऋषि की स्त्री का नाम। २. एक तारा जो अगस्त्य-मंडल के पास उदय होता है।

**लोबा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोमड़ी ] लोमड़ी।

**लोबान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक वृक्ष का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।

**लोबिया**—संज्ञा पुं० [ सं० लभ्य ] एक प्रकार का बड़ा बोड़ा। ( फली)

**लोभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० लुब्ध, लोभी ] दूसरे के पदार्थ को लेने की कामना। लालच। लिप्सा।

**लोभना***†—क्रि० स० [ हिं० लोभना का सक० ] मोहित करना। मुग्ध करना।

क्रि० अ० मोहित होना। मुग्ध होना।

**लोभनीय**—वि० [ सं० लोभ ] जिस पर लोभ हो सके। सुंदर। मनोहर।

**लोभाना**—क्रि० स० दे० "लोभना"।

**लोभार***†—वि० [ हिं० लोभ ] लुभानेवाला।

**लोभित**—वि० [ हिं० लोभ ] लुब्ध। मुग्ध।

**लोभी**—वि० [ सं० लोभिन् ] १. जिसे किसी बात का लोभ हो। लालची। २. लुब्ध। भाया हुआ।

**लोम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीर पर के छोटे छोटे बाल। रोआँ। रोम। २. बाल।

संज्ञा पुं० [ सं० लोमश ] लोमड़ी।

**लोमड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लोमश ] गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु।

**लोमपाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंग देश के एक राजा जो दशरथ के मित्र थे।

**लोमश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक ऋषि जिनको पुराणों में अमर माना गया है।

वि० अधिक और बड़े बड़े रोएँवाला।

**लोमहर्षण**—वि० [ सं० ] ऐसा भीषण जिससे रोएँ खड़े हो जायँ। बहुत भयानक।

**लोय***†—संज्ञा पुं० [ सं० लोक ] लोग।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० लव या लाव ] लौ। लपट।

संज्ञा पुं० [ सं० लोचन ] आँख। नेत्र।

अव्य० दे० "लौं"।

**लोयन***—संज्ञा पुं० [ सं० लोचन ] आँख।

**लोर**†—वि० [ सं० लोल ] १. लोल। चंचल। २. उत्सुक। इच्छुक।

**लोरना***—क्रि० अ० [ सं० लोल ] १. चंचल होना। २. लपकना। ललकना। ३. लिपटना। ४. झुकना। ५ लोटना।

**लोरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लोल ] एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं।

**लोल**—वि० [ सं० ] १. हिलता-डोलता। कंपायमान। २. परिवर्तनशील। ३. क्षणिक। क्षणभंगुर। ४. उत्सुक।

**लोलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लटकन जो बालियों में पहना जाता है। २. कान की लव। लोलकी।

**लोलदिनेश**—संज्ञा पुं० दे० "लोलार्क"।

**लोलना***—क्रि० अ० [ सं० लोल ] हिलना।

**लोला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जिह्वा। जीभ। २. लक्ष्मी। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, यगण, भगण और अंत में दो गुरु होते हैं।

**लोलार्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काशी के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम।

**लोलिनी**—वि० स्त्री० [ सं० लोल ] चंचल प्रकृतिवाली।

**लोलुप**—वि० [ सं० ] १. लोभी। लालची। २. चटोरा। चट्टू। ३. परम उत्सुक।

**लोवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लोमश ] लोमड़ी।

**लोष्ठ**—संज्ञापुं० [ सं० ] १. पत्थर। २. ढेला।

**लोहँडा**—संज्ञा पुं० [ सं० लोह-भांड ] [ स्त्री० लोहँडी ] १. लोहे

का एक प्रकार का पात्र। २. तसला।

**लोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लोहा। (धातु)।

**लोहचून**—संज्ञा पुं० [ हिं० लोहा + चूर ] लोहे का चूरा या बुरादा।

**लोहबान**—संज्ञा पुं० दे० "लोबान"।

**लोहसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फौलाद। २. फौलाद की बनी हुई जंजीर।

**लोहा**—संज्ञा पुं० [ सं० लोह ] १. काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिसके बरतन, शस्त्र और मशीनें आदि बनती हैं।

**मुहा०**—लोहे के चने=अत्यंत कठिन काम।

२. अस्त्र। हथियार।

**मुहा०**—लोहा गहना=हथियार उठाना। युद्ध करना। लोहा बजाना=युद्ध होना। किसी का लोहा मानना=१. किसी विषय में किसी का प्रभुत्व स्वीकार करना। २. पराजित होना। हार जाना। लोहा लेना=लड़ना। युद्ध करना।

३. लोहे की बनाई हुई कोई चीज या उपकरण। ४. लाल रंग का बैल।

**लोहाना**—क्रि० अ० [ हिं० लोहा + आना (प्रत्य०) ] किसी पदार्थ में लोहे का रंग या स्वाद आ जाना।

**लोहार**—संज्ञा पुं० [ सं० लोहकार ] [ स्त्री० लोहारिन, लोहाइन ] एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।

**लोहारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लोहार + ई (प्रत्य०) ] लोहारी का काम।

**लोहित**—वि० [ सं० ] रक्त। लाल।
संज्ञा पुं० [सं० लोहितक] मंगल ग्रह।

**लोहित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २. एक समुद्र का नाम।

**लोहिया**—संज्ञा पुं० [हिं० लोहा + इया (प्रत्य०) ] १. लोहे की चीजों का व्यापार करनेवाला। २. बनियों और मारवाड़ियों की एक जाति। ३. लाल रंग का बैल।

**लोही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लौहित्य ] उषःकाल की लाली।
संज्ञा स्त्री० दे० "लोई"।

**लोहू**—संज्ञा पुं० दे० "लहू"।

**लौं**‡—अव्य० [ हिं० लग ] १. तक। पर्यंत। २. समान। तुल्य। बराबर।

**लौकना***†—क्रि० अ० [सं० लोकन] १. दृष्टिगोचर होना। दिखाई देना। २ चमकना।

**लौंग**—संज्ञा पुं० [ सं० लवंग ] १. एक झाड़ की कली जो खिलने के पहले ही तोड़कर सुखा ली जाती है। यह मसाले और दवा के काम में आती है। २. लौंग के आकार का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ नाक या कान में पहनती हैं।

**लौंगलता**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लौंग + लता ] एक प्रकार की बँगला मिठाई।

**लौंडा**—संज्ञा पुं० [ ? ] [ स्त्री० लौंडी, लौंडिया ] छोकरा। बालक। लड़का।

**लौंडी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० लौंडा] दासी।

**लौंद**—संज्ञा पुं० [ ? ] अधिमास। मलमास

**लौंदा***—संज्ञा पुं० दे० "लोंदा"।

**लौ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० दावा ] १. आग की लपट। ज्वाला। २. दीपक की टेम।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० लाग ] १. लाग। चाह। २. चित्त की वृत्ति।

**यौ०**—लौलीन=किसी के ध्यान में डूबा हुआ।

३. आशा। कामना।

**लौआ**†—संज्ञा पुं० [ सं० लावुक ] कद्दू।

**लौकना**—क्रि० अ० [ हिं० लौ ] दूर से दिखाई पड़ना।

**लौका**—संज्ञा पुं० [ सं० लावुक ] [ स्त्री० अल्पा० लौकी ] कद्दू।

**लौकिक**—वि० [ सं० ] १ लोक-संबंधी। सांसारिक। २. व्यावहारिक।
संज्ञा पुं० सात मात्राओं के छंदों का नाम।

**लौकी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "कद्दू"।

**लौगारा***†—संज्ञा पुं० [हिं० लौ + जाड़ना ] धातु गलानेवाला कारीगर।

**लौट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लौटना ] लौटने की क्रिया, भाव या ढंग।

**लौटना**—क्रि० अ० [हिं० उलटना ] १. वापस आना। पलटना। २. पीछे की ओर मुड़ना।
क्रि० स० पलटना। उलटना।

**लौट-फेर**—संज्ञा पुं० [ हिं० लौट + फेर ] उलट-फेर। हेर-फेर। भारी परिवर्तन।

**लौटाना**—क्रि० स० [ हिं० लौटना का सक० ] १. फेरना। पलटाना। २. वापस करना। ३. ऊपर-नीचे करना।

**लौन***—संज्ञा पुं० [ सं० लवण ] नमक।

**लौना**†—संज्ञा पुं० दे० "लौनी"
*वि० [ सं० लावण्य=लोन ] [ स्त्री० लौनी ] लावण्ययुक्त। सुंदर।

**लौनी**‡—संज्ञा स्त्री० [ हिं० लौना ] फसल की कटनी। कटाई।
*संज्ञा स्त्री० [ सं० नवनीत ] मक्खन। नैनू।

**लौरी**†—संज्ञा स्त्री० [ ? ] बछिया।

**लौह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लोहा।
वि० लोहे का।

**लौह-युग**—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृति के इतिहास में वह समय जब कि अस्त्र-शस्त्र और औजार लोहे के ही बनते थे। (पुरा०)

**लौहित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मपुत्र नद। २. लाल सागर।
वि० लाल रंग का।

**ल्याना***—क्रि० स० दे० "लाना"।

**ल्यारी**†-संज्ञा पुं० [देश०] भेड़िया।

**ल्यावना***-क्रि० स० दे० "लाना"।

**ल्यार***†-संज्ञा स्त्री० दे० "लूह"।

—:o:—

# व

**व**—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अंतस्थ अर्द्ध व्यंजन माना जाता है।

**वंक**—वि० [सं०] [भाव० वंकता] टेढ़ा। वक्र।

**वंकट**—वि० [सं० वंक] १. टेढ़ा। बाँका। कुटिल। २. विकट। दुर्गम।

**वंकनाली**—संज्ञा स्त्री० [सं० वंक+नाड़ी] सुषुम्ना नामक नाड़ी।

**वंकिम**—वि० [सं०] टेढ़ा। झुका हुआ। बाँका।

**वंक्षु**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आक्सस नदी जो हिंदूकुश पर्वत से निकलकर आरल समुद्र में गिरती है।

**वंग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंगाल प्रदेश। २. राँगा नाम की धातु। ३. राँगे का भस्म।

**वंगज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंदूर। २. पीतल।
वि० बंगाल में उत्पन्न होनेवाला।

**वंचक**—वि० [सं०] १. धूर्त। धोखेबाज। ठग। २. खल।

**वंचन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धोखा। छल। २. धोखा देना। ठगना।

**वंचना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धोखा। छल।
* क्रि० स० [सं० वंचन] धोखा देना। ठगना।
†क्रि० स० [सं० वाचन] पढ़ना। बाँचना।

**वंचित**—वि० [सं०] १. जो ठगा गया हो। २. अलग किया हुआ। ३. अलग। हीन। रहित।

**वंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुति और प्रणाम। पूजन।

**वंदनमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंदनवार।

**वंदना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति। २. प्रणाम। वंदन।

**वंदनीय**—वि० [सं०] वंदना करने योग्य। आदर करने योग्य।

**वंदित**—वि० [सं०] [स्त्री० वंदिता] १. जिसकी वंदना की जाय। २. पूज्य। आदरणीय।

**वंदी**—संज्ञा पुं० [स्त्री० वंदिनी] दे० "बंदी"।

**वंदीजन**—संज्ञा पुं० [सं०] राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।

**वंद्य**—वि० [सं०] [संज्ञा वंद्यता] वंदनीय। पूजनीय।

**वंश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस। २. पीठ की हड्डी। ३. नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसा। ४. बाँसुरी। ५. बाहु आदि की लंबी हड्डियाँ।

**वंशज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँस का चावल। २. संतान। संतति। औलाद।

**वंशतिलक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक छंद।

**वंशधर**—संज्ञा पुं० [सं०] कुल में उत्पन्न। वंशज। संतति। संतान।

**वंशलोचन**—संज्ञा पुं० [सं०] बंसलोचन।

**वंशस्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त।

**वंशावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची।

**वंशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। मुरली।

**वंशीधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**वंशीय**—वि० [सं०]कुल में उत्पन्न।

**वंशीवट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वृन्दावन में वह बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे।

**व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। २. बाण। ३. वरुण। ४. बाहु। ५. कल्याण। ६. समुद्र। ७. वस्त्र। ८. वंदन।
अव्य० [ फ़ा० ] और। जैसे—राजा व रईस।

**बक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बगला पक्षी। २. अगस्त का पेड़ या फूल। ३. एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ४. एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था।

**बकवृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] धोखा देकर काम निकालने की घात में रहना।

**वकालत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दूत-कर्म। २. दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात-चीत करना। ३. मुकदमे में किसी फरीक की तरफ से बहस करने का पेशा।

**वकालतनामा**—संज्ञा पुं० [ अ० फ़ा० ] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे में बहस करने के लिए मुकर्रर करता है।

**बकासुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक राक्षस।

**वकील**—संज्ञा पुं०[ अ० ] १. दूत। २. राजदूत। एलची। ३. प्रतिनिधि। ४. दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला। ५. वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में मुद्दई या मुद्दालय की ओर से बहस करे।

**वकुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अगस्त का पेड़ या फूल।

**वक्त**—संज्ञा पुं० [ अ० १. समय। काल। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फ़ुरसत।

**वक्तव्य**—वि० [सं० ] कहने योग्य। वाच्य।
संज्ञा पुं० [सं०] १. कथन। वचन। २. वह बात जो किसी विषय में कहनी हो।

**वक्ता**—वि० [ सं० वक्तृ ] १. वाग्मी। बोलनेवाला। २. भाषणपटु।
संज्ञा पुं० कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास।

**वक्तृता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वाक्पटुता। २. व्याख्यान। ३. कथन। भाषण।

**वक्तृत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वक्तृता। वाग्मिता। २. व्याख्यान। ३. कथन।

**वक्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुख। २. एक प्रकार का छंद।

**वक्फ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। २. किसी के लिए कोई चीज छोड़ देना। ( क्व० )

**वक्र**-वि० [ सं० ] १. टेढ़ा। बाँका। २ झुका हुआ। तिरछा। ३. कुटिल।

**वक्रगामी**—वि० [ सं० वक्रगामिन् ] १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। २. शठ। कुटिल।

**वक्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टेढ़े या तिरछे होने का भाव। टेढ़ापन। २. कुटिलता।

**वक्रतुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणेश।

**वक्रदृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टेढ़ी दृष्टि। २. क्रोध की दृष्टि।

**वक्री**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २. बुद्धदेव।

**वक्रोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २. काकूक्ति। ३. बढ़िया उक्ति।

**वक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० वक्षस् ] छाती। उरस्थल।

**वक्षःस्थल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उर। छाती।

**वक्षु**—संज्ञा पुं० दे० "वंक्षु"।

**वक्षोज, वक्षोरुह**—संज्ञा पुं० [सं०] स्तन। कुच।

**वगलामुखी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक महाविद्या।

**वगैरह**—अव्य० [ अ० ] इत्यादि। आदि।

**वच**—संज्ञा पुं० [ सं० वचन ] वाक्य।

**वचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २. कथन। उक्ति। ३. व्याकरण में शब्द के रूप में वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन।

**वचनलक्षिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसके उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता हो।

**वचनविदग्धा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती हो।

**वचा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बच नाम की ओषधि।

**वच्छ***—संज्ञा पुं० [ सं० वक्षस् ] उर। छाती।

**वज़न**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. भार। बोझ। २. तौल। ३. मान। मर्यादा। गौरव। ४. वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अंग दूसरे से न्यून या विषम हो जाय।

**वज़नी**—वि० [ अ० वज़न+ई ] जिसका बहुत बोझ हो। भारी।

**वजह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] कारण। हेतु।

**वज़ीफा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों, संन्यासियों आदि को दी जाती है। २. जप या पाठ। ( मुसलमान )

**वज़ीर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. मंत्री। अमात्य। दीवान। २. शतरंज की एक गोटी।

**वज्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार भाले के फल समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि। २. विद्युत्। बिजली। ३. हीरा। ४. फौलाद। ५. भाला। बरछा।

वि० १. बहुत कड़ा या मजबूत। २. घोर। दारुण। भीषण।

**वज्रपाणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**वज्रलेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मजबूत हो जाती हैं।

**वज्रसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हीरा।

**वज्रावर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक मेघ का नाम।

**वज्रासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हठयोग के चौरासी आसनों में से एक।

**वज्री**—संज्ञा पुं० [ सं० वज्रिन् ] इंद्र।

**वज्रोली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० वज्र ] हठ योग की एक मुद्रा का नाम।

**वट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बरगद का पेड़।

**वटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ी टिकिया या गोला। बड़ा। २. बड़ा। पकौड़ी।

**वटसावित्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।

**वटिका, वटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गोली या टिकिया। बटी।

**वटु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बालक। २. ब्रह्मचारी। माणवक।

**वटुक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बालक। २. ब्रह्मचारी। ३. एक भैरव।

**वणिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रोजगार करनेवाला। २. वैश्य। बनिया।

**वतंस**—संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।

**वतन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] जन्मभूमि।

**वत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समान। तुल्य।

**वत्स**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गाय का बच्चा। बछड़ा। २. बालक। ३. वत्सासुर।

**वत्सनाभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक विष जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं। यह एक पौधे की जड़ है। मीठा जहर।

**वत्सर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वर्ष। साल।

**वत्सल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० वत्सला ] १. बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। २. अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु।

संज्ञा पुं० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।

**वदतोव्याघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।

**वदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मुख। मुँह। २. अगला भाग। ३. कथन। बात कहना।

**वदान्य**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा वदान्यता ] १. अतिशय दाता। उदार। २. मधुरभाषी।

**वदि**—संज्ञा पुं० [ सं० अवदिन ] कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।

**वदूखना***—क्रि० स० [ सं० विदूषण ] दोष देना। भला-बुरा कहना। इलजाम लगाना।

**वध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जान से मार डालना। घात। हत्या।

**वधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घातक। हिंसक। २. व्याध। ३. मृत्यु।

**वधभूमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ वध किया जाता हो।

**वधू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नवविवाहिता स्त्री। दुलहन। २. पत्नी। भार्य्या। ३. पुत्र की बहू। पतोहू।

**वधूटी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।

**वधूत***—संज्ञा पुं० दे० "अवधूत"।

**वध्य**—वि० [ सं० ] मार डालने योग्य।

**वन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वन। जंगल। २. वाटिका। ३. जल। ४. घर। आलय। ५. शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की एक उपाधि।

**वनचर**—वि० [ सं० ] वन में भ्रमण करने या रहनेवाला।

**वनचारी**—संज्ञा पुं० [ स्त्री० वनचारिणी ] दे० "वनचर"।

**वनज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] . वह जो वन ( जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २. कमल।

**वनदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० वनदेवी ] वन का अधिष्ठाता देवता।

**वनप्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कोयल।

**वनमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] १. वन के फूलों की माला। २. एक विशेष प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण धारण करते थे।

**वनमाली**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**वनराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह।

**वनराजि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १.वन की श्रेणी। २. वन के बीच की पगडंडी।

**वनरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**वनलक्ष्मी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वन की शोभा। वनश्री।

**वनवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जंगल में रहना। २. बस्ती छोड़कर जंगल में रहने की व्यवस्था या विधान।

**वनवासी**—वि० [ सं० वनवासिन् ] [ स्त्री० वनवासिनी ] बस्ती छोड़कर जंगल में निवास करनेवाला।

**वनस्थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वनभूमि।

**वनस्पति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वृक्ष मात्र। पेड़-पौधे।

**वनस्पति शास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों, जातियों और भिन्न भिन्न अंगों का विवेचन होता है। वनस्पति विज्ञान।

**वनिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रिया। प्रियतमा। २. स्त्री। औरत। ३. छः वर्णों की एक वृत्ति। तिलका। डिल्ला।

**वनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा वन।

**वनेचर**—वि० दे० "वनचर"।

**वनौषध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वन की ओषधियाँ। जंगली जड़ी बूटी।

**वन्य**—वि० [ सं० ] १. वन में उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २. जंगली।

**वन्यचर**—वि० दे० "वनचर"।

**वपन**—संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोना।

**वपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चरबी। मेदा।

**वपित**—वि० [ सं० ] बोया हुआ।

**वपु**—संज्ञा पुं० [ सं० वपुस् ] शरीर। देह।

**वपुमान**—संज्ञा पुं० [सं० वपुष्मान्] सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला।

**वपुष्टमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काशिराज की एक कन्या, जो जनमेजय से ब्याही थी।

**वफा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. वादा पूरा करना। बात निबाहना। २. निर्वाह। पूर्णता। ३. मुरौवत। सुशीलता।

**वफादार**—वि० [ अ० वफ़ा + फ़ा० दार ] [ संज्ञा वफादारी ] वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला।

**वबाल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बोझ। भार। २. आपत्ति। कठिनाई। आफत।

**वभ्र**—संज्ञा पुं० दे० "बभ्रु"।

**वमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वमित ] १. कै करना। उलटी करना। २. वमन किया हुआ पदार्थ।

**वमि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वमन का रोग।

**वयं***—सर्व० [ सं० प्र० ] हम।

**वयःक्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अवस्था। उम्र।

**वयःसंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति।

**वय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वयस् ] अवस्था। उम्र।

**वयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुनने का काम। बुनाई।

**वयस**—संज्ञा पुं० [ सं० वयस् ] बीता हुआ जीवनकाल। उम्र। अवस्था।

**वयस्क**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० वयस्का ] १. उमर का। अवस्थावाला। ( यौ० में ) २. पूर्ण अवस्था को पहुँचा हुआ। सयाना। बालिग।

**वयस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समान अवस्था या उम्रवाला। २. मित्र। दोस्त।

**वयोवृद्ध**—वि० [ सं० ] बड़ा-बूढ़ा।

**वरंच**—अव्य० [ सं० ] १. ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। २. परंतु। लेकिन।

**वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। २. किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। ३. पति या दूल्हा। वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे—प्रियवर।

**वरक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. पत्र । २. पुस्तकों का पन्ना । पन्ना । ३. सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर ।

**वरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी को किसी काम के लिए चुनना या मुकर्रर करना । २. मंगल-कार्य्य के विधान में होता आदि कार्य्य-कर्त्ताओं को नियत करके उनका सत्कार करना । ३. मंगल-कार्य्य में नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान । ४. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति । ५. पूजा । अर्चना । सत्कार । ६. ग्रहण या धारण करना ।

**वरणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वरण" २. ।

**वरणीय**—वि० [ सं० ] १. वरण करने के योग्य । २. पूजनीय ।

**वरद**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० वरदा ] वर देनेवाला ।

**वरदाता**—वि० [सं०] वर देनेवाला ।

**वरदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना । २. किसी फल का लाभ जो किसी की प्रसन्नता से हो ।

**वरदानी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वर देनेवाला ।

**वरदी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरों और नौकरों के लिए मुकर्रर हो ।

**वरन्**—अव्य० [ सं० वरम ] ऐसा नहीं । बल्कि ।

**वरना**—संज्ञा पुं० [ सं० वरण ] ऊँट ।

क्रि० स० [ सं० वरण ] १. किसी को किसी काम के लिए चुनना या मुकर्रर करना । २. विवाह के समय कन्या का वर को अंगीकार करना । ३. ग्रहण या धारण करना ।

अव्य० [ अ० वर्नः ] नहीं तो । यदि ऐसा न होगा तो ।

**वरम**—संज्ञा पुं० दे० "वर्म" ।

**वरयात्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दूल्हे का बाजे-गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिए जाना । बारात ।

**वररुचि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि ।

**वरहीक्ष**—संज्ञा पुं० दे० "वर्ही" ।

**वराक**—वि० [सं०] बेचारा । बापुरा ।

**वराटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कौड़ी । कपर्दिका ।

**वरानना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुंदर स्त्री ।

**वरासत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० विरासत ] १. वारिस होने का भाव । उत्तराधिकार । २. उत्तराधिकार से मिला हुआ धन । तरका । बपौती ।

**वराह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शूकर, सूअर । २. विष्णु । ३. अठारह द्वीपों में से एक ।

**वराहक्रांता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वाराही । २. लज्जालु । लजालू ।

**वराहमिहिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए बृहत्संहिता आदि ग्रंथ प्रचलित हैं ।

**वरिष्ठ**—वि० [ सं० ] श्रेष्ठ । पूजनीय ।

**वरुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओं का नाशक और देवताओं का रक्षक कहा गया है । इसका अस्त्र पाश है । २. वरुना का पेड़ । ३. जल । पानी । ४. सूर्य । ५. एक ग्रह जिसे अँगरेजी में "नेप्चून" कहते हैं ।

**वरुणपाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वरुण का अस्त्र-पाश या फंदा ।

**वरुणानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वरुण की स्त्री ।

**वरुणालय**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र ।

**वरूथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कवच । २. ढाल । ३. सेना । फौज ।

**वरूथिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सेना । फौज ।

**वरेण्य**—वि० [ सं० ] १. प्रधान । मुख्य । २. पूज्य । श्रेष्ठ ।

**वर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह । जाति । कोटि । श्रेणी । २. एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह । ३. शब्द शास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन-वर्णों का समूह । ४. परिच्छेद । प्रकरण । अध्याय । ५. दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणन-फल । ६. वह चौखूँटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारो कोण समकोण हो । ( रेखा-गणित )

**वर्गफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह गुणन-फल जो दो समान राशियो के घात से प्राप्त हो ।

**वर्गमूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करे तो गुणन वही वर्गांक हो । जैसे–२५ का वर्गमूल ५ होगा ।

**वर्गलाना**—क्रि० स० [ फ़ा० 'वरग़लानीदन' से ] १. कोई काम करने के लिए उभारना । उकसाना । २. बहकाना । फुसलाना ।

**वर्गीकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] [ वि० वर्गीकृत ] बहुत सी वस्तुओं को उनके अलग अलग वर्ग के अनुसार छाँटना और लगाना ।

**वर्चस्वी**—वि० [सं० वर्चस्विन्] तेजस्वी ।

**वर्जन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १. त्याग । छोड़ना । २. मनाही । मुमानियत ।

**वर्जना**—संज्ञा स्त्री० दे० "वर्जन" ।

क्रि० स० [सं० वर्जन] मना करना । रोकना ।

**वर्जित**—वि० [सं०] १. त्यागा हुआ । त्यक्त । २. जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो । निषिद्ध ।

**वर्ज्य**—वि० [सं०] १. छोड़ने योग्य । त्याज्य । २. जो मना हो ।

**वर्ण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम । रंग । २. जन समुदाय के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—जो प्राचीन आर्यों ने किए थे । जाति । ३. भेद । प्रकार । किस्म । ४. अकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत । अक्षर । ५. रूप ।

**वर्णखंड मेरु**—संज्ञा पुं० [सं०] पिंगल में वह क्रिया जिसमें बिना मेरु बनाए यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं ।

**वर्णतूलिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रंग पोतने की कूँची या बुरुश ।

**वर्णन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १. चित्रण । रँगना । २. सविस्तर कहना । कथन । बयान । ३. गुणकथन । तारीफ ।

**वर्णनष्ट**—संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिसाब से कैसा होगा ।

**वर्णनातीत**—वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके । वर्णन के बाहर ।

**वर्णनीय**—वि० दे० "वर्ण्य" ।

**वर्णपताका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छंदःशास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौन सा ऐसा है, जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे ।

**वर्णप्रस्तार**—संज्ञा पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे ।

**वर्णमाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षरों के रूपों की यथा-श्रेणी लिखित सूची ।

**वर्णविचार**—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो । प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था ।

**वर्णवृत्त**—संज्ञा पुं० [सं०] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रमोंमें समानता हो ।

**वर्णसंकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो । २. व्यभिचारी से उत्पन्न मनुष्य । दोगला ।

**वर्णसूची**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छंदःशास्त्र या पिंगल में एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अंत लघु और आदि अंत गुरु की संख्या जानी जाती है ।

**वर्णिक वृत्त**—संज्ञा पुं० दे० "वर्णवृत्त" ।

**वर्णिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट रंगों का समवाय जो किसी चित्र या शैली में विशेष रूप से बरता जाय ।

**वर्णिका भंग**—संज्ञा पुं० [सं०] चित्र के विषय और भाव के अनुसार उपयुक्त रंगों का व्यवहार ।

**वर्णित**—वि० [सं०] १. कथित । कहा हुआ । २. जिसका वर्णन हो चुका हो ।

**वर्ण्य**—वि० [सं०] १. वर्णन के योग्य । २. जो वर्णन का विषय हो ।

**वर्तन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्तित] १. बरताव । व्यवहार । २. व्यवसाय । वृत्ति । रोजी । ३. फेरना । घुमाना । ४. परिवर्तन । फेर-फार । ५. स्थापन । रखना । ६. सिल बट्टे से पीसना । ७. पात्र । बरतन ।

**वर्तमान**—वि० [सं०] १. चलता हुआ । जो जारी हो । २. उपस्थित । मौजूद । विद्यमान । ३. आधुनिक । हाल का ।

संज्ञा पुं० १. व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है । २. वृत्तांत । समाचार । ३. चलता व्यवहार ।

**वर्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बत्ती । २. अंजन । ३. गोली । बटी ।

**वर्तिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बत्ती । २. शलाका । सलाई ।

**वर्तित**—वि० [सं०] १. संपादित किया हुआ । २. चलाया हुआ । जारी किया हुआ ।

**वर्ती**—वि० [सं० वर्तिन्] [स्त्री० वर्तिनी] १. बर्तनशील । बरतनेवाला । २. स्थित रहनेवाला ।

**वर्तुल**—वि० [सं०] गोल । वृत्ताकार ।

**वर्त्म**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मार्ग । पथ । २. किनारा । औंठ । बारी ।

३. आँख की पलक। ४. आधार। आश्रय।

**वर्दी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वरदी"।

**वर्द्धक**—वि० [ सं० ] बढ़ानेवाला। पूरक।

**वर्द्धन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वर्द्धित ] १. बढ़ाना। २. वृद्धि। बढ़ती। उन्नति। ३. काटना। तराशना।

**वर्द्धमान**—वि० [ सं० ] १. जो बढ़ता जा रहा हो। २. बढ़नेवाला। वर्द्धनशील।

संज्ञा पुं० १. एक वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न अर्थात् १४, १३, १८ और १५ होती है। २. जैनियों के २४वें जिन महावीर।

**वर्द्धित**—वि० [ सं० ] १. बढ़ा हुआ। २. पूर्ण। ३. छिन्न। कटा हुआ।

**वर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्म्मन् ] १. कवच। बकतर। २. घर।

**वर्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्म्मन् ] क्षत्रियों, खत्रियों तथा कायस्थों आदि की उपाधि जो उनके नाम के अंत में लगायी जाती है।

**वर्य्य**—वि० [ सं० ] श्रेष्ठ। जैसे—विद्वद्वर्य्य।

**वर्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक देश का नाम। २. इस देश के असभ्य निवासी जिनके बाल घुघराले कहे गए हैं। ३. पामर। नीच।

**वर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वृष्टि। जलवर्षण। २. काल का एक मान जिसमें बारह महीने होते हैं। संवत्सर। साल। वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र, सावन और नाक्षत्र। ३. पुराणों में माने हुए सात द्वीपों का एक विभाग। ४. किसी द्वीप का प्रधान भाग। ५. मेघ। बादल।

**वर्षक**—वि० [ सं० ] १. वर्षा करनेवाला। २. बरसानेवाला।

**वर्षगाँठ**—संज्ञा स्त्री० दे० "बरसगाँठ"।

**वर्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वर्षित ] वृष्टि। बरसना।

**वर्षफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फलित ज्योतिष में वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।

**वर्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है। २. पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि।

**मुहा०**—( किसी वस्तु की ) वर्षा होना=१. बहुत अधिक परिमाण में ऊपर से गिरना। २. बहुत अधिक संख्या में मिलना।

**वर्षाकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बरसात।

**वर्ह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मोर का पर। मोरपंख। २. पत्ता।

**वर्ही**—संज्ञा पुं० [ सं० वर्हिन् ] मयूर। मोर।

**वल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेघ। २. एक असुर जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया।

**वलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का सायनांश से हटकर चलना। विचलन।

**वलभी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़ में थी। २. सदर फाटक। तोरण। ३. छत। ४. छत के ऊपर का कमरा। अटारी।

**वलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मंडल। २. कंकण। ३. चूड़ी। ४. वेष्टन।

**वलवला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] उमंग। आवेश।

**वलाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० वलाका ] बगला।

**वलाहक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेघ। बादल। २. पर्वत। ३. एक दैत्य का नाम।

**वलि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रेखा। लकीर। २. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा। बल। ३. देवता को चढ़ाने की वस्तु। ४. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ५. श्रेणी। पंक्ति।

**वलित**—वि० [ सं० ] १. बल खाया हुआ। २. झुकाया या मोड़ा हुआ। ३. घेरा हुआ। ४. जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों। ५. लिपटा हुआ। लगा हुआ। ६. ढका हुआ। ७. युक्त। सहित।

**वली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. झुर्री। शिकन। २. अवली। श्रेणी। ३. रेखा। लकीर।

संज्ञा पुं० [ अ० ] १. मालिक। स्वामी। २. शासक। हाकिम। ३. साधु। फकीर।

**वल्कल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वृक्ष की छाल। त्वक्। २. वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे तपस्वी पहना करते थे।

**वल्द**—संज्ञा पुं० [ अ० ] औरस बेटा। पुत्र। जैसे "गोकुल वल्द बलदेव" अर्थात् 'गोकुल, बेटा बलदेव का'।

**वल्दियत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ]

पिता के नाम का परिचय।

**वल्मीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २. वाल्मीकि। मुनि।

**वल्लकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वीणा। २. सलाई का पेड़।

**वल्लभ**-वि० [ सं० ] [ भाव० वल्लभता ] प्रियतम। प्यारा।

संज्ञा पुं० १. प्रिय मित्र। नायक। २. पति। स्वामी। ३. अध्यक्ष। मालिक। ४. वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

**वल्लभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रिय स्त्री।

**वल्लभाचार्य**—संज्ञा पुं० दे० "वल्लभ" ४।

**वल्लभी**—संज्ञा पुं० दे० "वलभी"।

**वल्लरि, वल्लरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बल्ली। लता। २. मंजरी।

**वल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लता। बेल।

**वल्वल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था। इल्वल।

**वश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इच्छा। चाह। २. काबू। इख्तियार। अधिकार।

**मुहा०**—वश का=जिस पर अधिकार हो।

३. शक्ति की पहुँच। काबू।

**मुहा०**—वश चलना=शक्ति काम करना।

४. अधिकार। कब्जा। प्रभुत्व।

**वशवर्ती**—वि० [ सं० वशवर्त्तिन् ] जो दूसरे के वश में रहे। अधीन। ताबे।

**वशिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अधीनता। ताबेदारी। २. मोहने की क्रिया या भाव।

**वशित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वशता। २. योग के अणिमादि आठ ऐश्वर्यों में से एक।

**वशिष्ठ**—संज्ञा पुं० दे० "वसिष्ठ"।

**वशी**—वि० [ सं० वशिन् ] [ स्त्री० वशिनी ] १. अपने को वश में रखनेवाला। २. अधीन।

**वशीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वशीकृत ] १. वश में लाने की क्रिया। २. मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।

**वशीभूत**—वि० [ सं० ] १. अधीन। ताबे। २. दूसरे की इच्छा के अधीन।

**वश्य**—वि० [ सं० ] वश में आनेवाला।

**वश्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अधीनता।

**वसंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती ] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और वैशाख के महीने माने गए हैं। बाहर का मौसिम। २. शीतला रोग। चेचक। ३. छः रागों में से दूसरा राग।

**वसंततिलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चौदह वर्णों का एक वर्णवृत्त।

**वसंततिलका**—संज्ञा स्त्री० दे० "वसंततिलक"।

**वसंतदूत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आम का वृक्ष। २. कोयल। ३. चैत्र मास।

**वसंतदूती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कोकिला। कोयल। २. माधवी लता।

**वसंत पंचमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] माघ महीने की शुक्ल पंचमी। श्रीपंचमी।

**वसंती**—संज्ञा पुं० दे० "बसंती"।

**वसंतोत्सव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था। मदनोत्सव। २. होली का उत्सव।

**वसति, वसती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. निवास। २. घर। ३. बस्ती।

**वसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वस्त्र। २. ढकने की वस्तु। आवरण। ३. निवास।

**वसवास**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ वि० वसवासी ] १. भ्रम। संदेह। २. प्रलोभन या मोह।

**वसह**—संज्ञा पुं० [ सं० वृषभ ] बैल।

**वसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मेद। २. चरबी।

**वसिष्ठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन ऋषि जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है। २. सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

**वसिष्ठ पुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उपपुराण। कुछ लोग कहते हैं कि लिंग पुराण ही वसिष्ठ पुराण है।

**वसीका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे। २. ऐसे धन से आया हुआ सूद। वृत्ति।

**वसीयत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है।

**वसीयतनामा**—संज्ञा पुं० [ अ०

वसीयत + फ़ा॰ नामा ] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो।

**वसुंधरा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पृथ्वी।

**वसु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। २. आठ की संख्या। ३. रत्न। ४. धन। ५. अग्नि। ६. रश्मि। किरण। ७. जल। ८. सुवर्ण। सोना। ९. कुबेर। १०. शिव। ११. सूर्य्य। १२. विष्णु। १३. साधु पुरुष। सज्जन। १४. सरोवर तालाब। १५. छप्पय का ६९वाँ भेद।

**वसुदा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. पृथ्वी। २. माली राक्षस की पत्नी। इसके अनल, निल, हर और संपाति नामक चार पुत्र थे।

**वसुदेव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] यदुवंशियों के शूर कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

**वसुधा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पृथ्वी।

**वसुधारा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. जैनों की एक देवी। २. कुबेर की पुरी, अलका।

**वसुमती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. पृथ्वी। २. छः वर्णों का एक वृत्त।

**वसुहंस**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम।

**वसूल**—वि॰ [ अ॰ ] १. मिला हुआ। प्राप्त। २. जो चुका लिया गया हो। लब्ध।

**वसूली**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ वसूल ] दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम। प्राप्ति।

**वस्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. पेड़। २. मूत्राशय। ३. पिचकारी।

**वस्तिकर्म**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना।

**वस्तु**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ वि॰ वास्तव, वास्तविक ] १. वह जिसका अस्तित्व या सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। २. सत्य। ३. गोचर पदार्थ। चीज। ४. नाटक का कथन या आख्यान। कथावस्तु।

**वस्तुतः**—अव्य॰ [ सं॰ ] यथार्थतः। सचमुच।

**वस्तुनिर्देश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है।

**वस्तुवाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे—न्याय और वैशेषिक।

**वस्तु-स्थिति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] परिस्थिति।

**वस्त्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कपड़ा।

**वस्त्र-भवन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कपड़े का बना घर। जैसे—खेमा, रावटी आदि।

**वह**—सर्व॰ [ सं॰ सः ] १. एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। २. एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर की या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते हैं।

वि॰ वाहक। ( समास में )

**वहन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ वहनीय, वहमान, वहित ] १. बेड़ा। तरेंदा। २. खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ३. ऊपर लेना। उठाना।

**वहम**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. मिथ्या धारणा। झूठा खयाल। २. भ्रम। ३. व्यर्थ की शंका। मिथ्या संदेह।

**वहमी**—वि॰ [ अ॰ वहम ] वहम करनेवाला। जो व्यर्थ संदेह में पड़े।

**वहशी**—वि॰ [ अ॰ ] १. जंगल में रहनेवाला। २. जो पालतू न हो। ३ असभ्य।

**वहाँ**—अव्य॰ [हिं॰ वह] उस जगह।

**वहाबी**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय। २. इस संप्रदाय का अनुयायी।

**वहिः**—अव्य॰ [ सं॰ ] जो अन्दर न हो। बाहर।

**वहित्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वहित्थ ] जहाज।

**वहिरंग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शरीर का बाहरी भाग। २. बाहरी भाग। अंतरंग का उलटा। ३. कहीं बाहर से आया हुआ आदमी। बाहरी आदमी।

वि॰ ऊपर ऊपर का। बाहरी।

**वहिर्गत**—वि॰ [ सं॰ ] जो बाहर गया हो। निकला हुआ। बाहर का।

**वहिर्द्वार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बाहरी फाटक। सदर फाटक। तोरण।

**वहिर्भूत**—वि॰ [ सं॰ ] वहिर्गत।

**वहिर्मुख**—वि॰ [ सं॰ ] विमुख।

**वहिर्लापिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पहेली।

**वहिष्कार**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "बहिष्कार"।

**वहीं**—अव्य॰ [ हिं॰ वहाँ + ही ] उसी जगह।

**वही**—सर्व॰ [ हिं॰ वह + ही ] उस

तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो। पूर्वोक्त व्यक्ति। २. निर्दिष्ट व्यक्ति। अन्य नहीं।

**वही***—वि॰ [हिं॰ वह + ई (प्रत्य॰)] वही।

**वह्नि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. अग्नि। २. कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

**वांछनीय**—वि॰ [ सं॰ ] १. चाहने योग्य। २. जिसकी इच्छा हो।

**वांछा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ वि॰ वांछित, वांछनीय ] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

**वांछित**—वि॰ [ सं॰ ] इच्छित। चाहा हुआ।

**वा**—अव्य॰ [ सं॰ ] विकल्प या संदेहवाचक शब्द। या। अथवा।

*सर्व॰ [ हिं॰ वह ] ब्रज भाषा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारकचिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे—वाको, वासों।

**वाह***†—सर्व॰ दे॰ "वाहि"।

**वाक्**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वाणी। २. सरस्वती। ३. बोलने की इंद्रिय।

**वाकई**—वि॰ [ अ॰ ] सच। वास्तव। अव्य॰ सचमुच। यथार्थ में। वास्तव में।

**वाकफियत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. जानकारी। ज्ञान। २. परिचय। जान-पहचान।

**वाकया**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. घटना। २ वृत्तांत। समाचार।

**वाकिफ**—वि॰ [ अ॰ ] १. जानकार। ज्ञाता। २. जानकारी रखनेवाला। अनुभवी।

**वाक्छल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक।

**वाक्पटु**—वि॰ [ सं॰ ] बात करने में चतुर।

**वाक्पति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बृहस्पति। २. विष्णु।

**वाक्फियत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] जानकारी।

**वाक्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह पद-समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। जुमला।

**वाक्सिद्धि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।

**वागीश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. वाग्मी। कवि।

वि॰ अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

**वागीश्वरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] सरस्वती।

**वाग्जाल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बातों का लपट। बातों का आडंबर या भरमार।

**वाग्दंड**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] भला-बुरा कहने का दंड। डाँट-डपट। लिथाड़।

**वाग्दत्त**—वि॰ [ सं॰ ] जिसे दूसरे को देने के लिए कह चुके हो।

**वाग्दत्ता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।

**वाग्दान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा।

**वाग्देवी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] सरस्वती। वाणी।

**वाग्भट्ट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. अष्टांगहृदय संहिता नामक वैद्यक के ग्रंथ के रचयिता। २. भावप्रकाश, शास्त्रदर्पण आदि के रचयिता। ३. वैद्यक निघंटु के रचयिता।

**वाग्मी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वाचाल। अच्छा वक्ता। २. पंडित। ३. बृहस्पति।

**वाग्विलास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] आनंदपूर्वक परस्पर बात-चीत करना।

**वाङ्मय**—वि॰ [ सं॰ ] १. वचन-संबंधी। २. वचन द्वारा किया हुआ। संज्ञा पुं॰ गद्य-पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो। साहित्य।

**वाङ्मुख**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्रकार का गद्य-काव्य। उपन्यास।

**वाच्**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वाचा। वाणी।

**वाच**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "वाच्"।

**वाचक**—वि॰ [ सं॰ ] बतानेवाला। सूचक।

संज्ञा पुं॰ नाम। संज्ञा। संकेत।

**वाचकधर्मलुप्ता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।

**वाचकलुप्ता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह उपमालंकार जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप हो।

**वाचकोपमानधर्मलुप्ता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह उपमा जिसमें वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनो लुप्त हो, केवल उपमेय हो।

**वाचकोपमेयलुप्ता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह उपमालंकार जिसमें वाचक और उपमेय का लोप होता है।

**वाचक्नवी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] गार्गी। वाचक्नवी।

**वाचन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १.

पढ़ना। पठन। बाँचना। २. कहना। ३ प्रतिपादन।

**वाचनालय**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचारपत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों।

**वाचसांपति**—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

**वाचस्पति**—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

**वाचा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाणी। २. वाक्य। वचन। शब्द।

**वाचाबंध**—वि० [सं० वाचाबद्ध] प्रतिज्ञाबद्ध।

**वाचाल**—वि० [सं०] [संज्ञा वाचालता] १. बोलने में तेज। वाक्पटु। २ बकवादी।

**वाचिक**—वि० [सं०] १. वक्ता-संबंधी। २ वाणी से किया हुआ। संज्ञा पुं० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्य-विन्यास द्वारा अभिनय का कार्य्य संपन्न होता है।

**वाची**—वि० [सं० वाचिन्] प्रकट करनेवाला। सूचक।

**वाच्य**—वि० [सं०] १. कहने योग्य। २. शब्दसंकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधेय।
संज्ञा पुं० १. अभिधेयार्थ। २. दे० "वाच्यार्थ"।

**वाच्यार्थ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। मूल शब्दार्थ।

**वाच्यावाच्य**—संज्ञा पुं० [सं०] भला-बुरा या कहने न कहने योग्य बात।

**वाजपेई**—संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी"।

**वाजपेय**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है।

**वाजपेयी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३. अत्यंत कुलीन पुरुष।

**वाजसनेय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यजुर्वेद की एक शाखा। २. याज्ञवल्क्य ऋषि।

**वाजिब**—वि० [अ०] उचित। ठीक।

**वाजिबी**—वि० [अ०] उचित। ठीक।

**वाजी**—संज्ञा पुं० [सं० वाजिन्] १. घोड़ा। २. फटे हुए दूध का पानी।

**वाजीकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य्य की वृद्धि हो।

**वाट**—संज्ञा पुं० [सं०] मार्ग। रास्ता।

**वाटधान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक जनपद जो काश्मीर के नैर्ऋत्य कोण में कहा गया है। २. एक वर्ण-संकर जाति।

**वाटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाग। बगीचा।

**वाडवाग्नि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. समुद्र के अंदर की आग। २. समुद्री आग।

**वाण**—संज्ञा पुं० [सं०] धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष द्वारा छोड़ा जाता है। तीर।

**वाणावली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बाणों का अवली। २. तीरों की लगातार वर्षा। ३. एक साथ बने हुए पाँच श्लोक।

**वाणिज्य**—संज्ञा पुं० दे० "बाणिज्य"।

**वाणिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

**वाणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन।
मुहा०—वाणी फुरना=मुँह से शब्द निकलना।
३. वाक्शक्ति। ४. जीभ। रसना।

**वात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

**वातज**—वि० [सं०] वायु द्वारा उत्पन्न।

**वातजात**—संज्ञा पुं० [सं० वात+जात] हनुमान्।

**वात-प्रकोप**—संज्ञा पुं० [सं०] वायु का बढ़ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

**वातापि**—संज्ञा पुं० [सं०] एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।

**वातायन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. झरोखा। छोटी खिड़की। २. रामायण के अनुसार एक जनपद।

**वातावरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है। २. आस-पास की परिस्थिति जिसका जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

**वातुल**—संज्ञा पुं० [सं०] बावला। उन्मत्त।

**वातोर्मी**—संज्ञा पुं० [सं०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**वात्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बवंडर।

**वात्सरिक**—वि० [सं०] सालाना। वार्षिक।

**वात्सल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रेम। स्नेह। २. माता-पिता का

प्रकृति के प्रति प्रेम।

**वात्स्यायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २. कामसूत्र-प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

**वाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह बात-चीत जो किसी तत्व के निर्णय के लिए हो। तर्क। शास्त्रार्थ। दलील। २. किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित सिद्धांत। उसूल। जैसे—अद्वैतवाद। ३. बहस। झगड़ा।

**वादक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाजा बजानेवाला। २. वक्ता। ३. तर्क या शंका करनेवाला।

**वादग्रस्त**—वि० [ सं० ] जिसके संबंध में विवाद या मतभेद हो।

**वादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाजा बजाना।

**वाद-प्रतिवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शास्त्रीय विषयों में होनेवाला कथोपकथन बहस।

**वादरायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदव्यास।

**वाद-विवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहस।

**वादा**—संज्ञा पुं० [ अ० वाइदा ] वचन। प्रतिज्ञा। इकरार।

**मुहा०**—वादाखिलाफी करना=कथन के विरुद्ध कार्य्य करना। वादा लेना= वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।

**वादानुवाद**—संज्ञा पुं० दे० "वाद-विवाद"।

**वादित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वाद्य। बाजा।

**वादी**—संज्ञा पुं० [ सं० वादिन् ] १. वक्ता। बोलनेवाला। २. मुकदमा लानेवाला। फरियादी। मुद्दई। ३. पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

**वाद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाजा।

**वानप्रस्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्राचीन भारतीय आर्य्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।

**वानर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बंदर। २. दोहे का एक भेद।

**वानवासिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सोलह मात्राओं के छंदों या चौपाई का एक भेद।

**वानीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेंत।

**वापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बीज बोना।

**वापस**—वि० [ फ़ा० ] लौटा हुआ। फिरता।

**वापसी**—वि० [ फ़ा० वापस ] लौटा हुआ या फेरा हुआ। वापस होने के संबंध का।

संज्ञा स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्त्तन।

**वापिका, वापी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।

**वाम**—वि० [ सं० ] १. बायाँ। दक्षिण या दाहिने का उलटा। २. प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। ३. टेढ़ा। कुटिल। ४. दुष्ट।

संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. एक रुद्र का नाम। वामदेव। ३. वरुण। ४. धन। ५. २४ अक्षरों का एक वर्णवृत्त। मंजरी। मकरंद। माधवी।

**वामकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक देवी जिनकी पूजा जादूगर करते हैं।

**वामदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि।

**वामन**—वि० [ सं० ] १. बौना। छोटे डील का। २. ह्रस्व। खर्व।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. शिव। ३. एक दिग्गज का नाम। ४. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिए हुआ था। ५. अठारह पुराणों में से एक।

**वाम-मार्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि का विधान है।

**वामांगिनी, वामांगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पत्नी।

**वामा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्त्री। २. दुर्गा। ३. दस अक्षरों का एक वृत्त।

**वामावर्त**—वि० [ सं० ] १ दक्षिणावर्त का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु की बाईं ओर से आरंभ की जाय। २. जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भँवरी हो।

**वाय***—सर्व० दे० "वाहि"।

**वायव्य**—वि० [सं०] वायु संबंधी। संज्ञा पुं० १. उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २. एक अस्त्र का नाम।

**वायस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कौआ। काक।

**वायु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हवा। वात।

**वायुकोण**—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा।

**वायुमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आकाश।

**वायु-यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हवा में उड़नेवाला यान। हवाई जहाज।

**वायुलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुराणानुसार एक लोक का नाम। २. आकाश।

**वारंवार**—अव्य० दे० "बारंबार"।

**वार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. द्वार। दरवाजा। २. रोक। रुकावट। ३.

आवरण। ४. अवसर। दफा। मरतबः। ५. क्षण। ६. सप्ताह का दिन। जैसे—आज कौन वार है ? ७. दाँव। बारी।

संज्ञा पुं० [सं० वार] चोट। आघात आक्रमण। हमला।

**वारक**—वि० [सं०] १. वारण या निषेध करनेवाला। २. दूर करनेवाला।

**वारण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वारक] १. किसी बात को न करने की आज्ञा। निषेध। मनाही। २. रुकावट। बाधा। ३. कवच। बकतर। ४. छप्पय छंद का एक भेद।

**वारणावत**—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद जो गंगा के किनारे था।

**वारतिय***—संज्ञा स्त्री० [सं० वारस्त्री] वेश्या।

**वारद***—संज्ञा पुं० [सं० वारिद] बादल।

**वारदात**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कोई भीषण कांड। दुर्घटना। २. मार-पीट। दंगा-फसाद।

**वारन***—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर। बलि।

संज्ञा पुं० [सं० वंदन] वंदनवार। वंदनमाला।

**वारना**—क्रि० सं० [हिं० उतारना] निछावर करना। उत्सर्ग करना।

संज्ञा पुं० निछावर। उत्सर्ग।

**मुहा०**—वारने जाना=निछावर होना।

**वारनारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वार-वधू"।

**वार-पार**—संज्ञा पुं० [सं० अवर+पार] १. (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। पूरा विस्तार। २. यह छोर और वह छोर। अंत।

अव्य० १. इस किनारे से उस किनारे तक। २. एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक।

**वारफेर**—संज्ञा पुं० [हिं० वारना+फेर] निछावर। बलि।

**वार-वधू**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

**वारमुखी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या।

**वारांगना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

**वारांनिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**वारा**—संज्ञा पुं० [सं० वारण] १. खर्च की बचत। किफायत। २. लाभ। फायदा।

वि० किफायत। सस्ता।

**वाराणसी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] काशी नगरी।

**वारा-न्यारा**—संज्ञा पुं० [हिं० वार+न्यारा] १. किसी ओर निश्चय। फैसला। २. झंझट या झगड़े का निबटेरा।

**वाराह**—संज्ञा पुं० दे० "वराह"।

**वाराही**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आठ मातृकाओं में से एक। २. एक योगिनी।

**वाराहीकंद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का महाकंद जो गेंठी कहलाता है।

**वारि**—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी।

**वारिज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कमल। २. शंख। ३. घोंघा। ४. कौड़ी। ५. खरा सोना।

**वारित**—वि० [सं०] जो मना किया गया हो। निवारित।

**वारिद**—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

**वारिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**वारियाँ**—संज्ञा स्त्री० [हिं० वारी] निछावर। बलि।

**वारिवर्त***—संज्ञा पुं० [सं० वारि+आवर्त] एक मेघ का नाम।

**वारिवाह**—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

**वारिस**—संज्ञा पुं० [अ०] वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी हो उत्तराधिकारी।

**वारींद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**वारी-फेरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वारफेर"।

**वारीश**—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

**वारुणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मदिरा। शराब। २. वरुण की स्त्री। वरुणानी। ३. उपनिषद् विद्या। ४. पश्चिम दिशा। ५. एक पर्व जिसमें गंगा-स्नान करते हैं।

**वारेंद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद जहाँ आजकल का राजशाही जिला है।

**वार्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जनश्रुति। अफवाह। २. संवाद। वृत्तांत हाल। ३. विषय। मामला। ४. बात-चीत। ५. वैश्य-वृत्ति, जिसके अंतर्गत कृषि, वाणिज्य गोरक्षा और कुसीद है।

**वार्तालाप**—संज्ञा पुं० [सं०] बात चीत।

**वार्तावह**—संज्ञा पुं० [सं०] संदेश ले आनेवाला दूत।

**वार्तिक**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ।

**वार्धक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २. वृद्धि। बढ़ती।

**[illegible]**—वि० [ सं० ] १. [illegible] करने योग्य । २. [illegible] करने योग्य ।

**वार्षिक**—वि० [ सं० ] १. वर्ष-संबंधी । २. जो प्रतिवर्ष होता हो । सालाना ।

**वार्ष्णेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कृष्ण-चंद्र ।

**वाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की उपजाति । वृत्त ।

प्रत्य० [ स्त्री० वाली ] एक संबंध-सूचक प्रत्यय । जैसे—मकानवाला ।

**वालिद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० वालिदा ] पिता । बाप ।

**वाल्मीकि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक भृगुवंशी मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि कहे जाते हैं ।

**वाल्मीकीय**—वि० [ सं० ] १. वाल्मीकि संबंधी । २. वाल्मीकि का बनाया हुआ ।

**वावैला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. विलाप । रोना-पीटना । २. शोरगुल । हल्ला ।

**वाशिष्ठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक उपपुराण ।

वि० [ सं० ] वशिष्ठ-संबंधी । वशिष्ठ का ।

**वाष्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आँसू । २. भाप ।

**वासंत**—वि० [ सं० ] वसंत का । वसंती ।

**वासंतिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भाँड़ । विदूषक । २. नाचनेवाला । नर्तक ।

वि० [ संज्ञा वासंतिकता ] वसंत-संबंधी ।

**वासंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. माधवी लता । २. जूही । ३. [illegible] लता । ४. दुर्गा । ५. चौदह वर्णों का एक वृत्त ।

वि० [ संज्ञा वासंतिक ] १. वसंत-संबंधी । २. वसंती ।

**वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रहना । निवास । २. गृह । घर । मकान । ३. सुगंध । बू ।

**वासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अड़ूसा ।

**वासकसज्जा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किये हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो ।

**वासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वासित ] १. सुगंधित करना । २. वस्त्र । ३. वास ।

**वासना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रत्याशा । २. ज्ञान । ३. भावना । संस्कार । स्मृतिहेतु । ४. इच्छा । कामना ।

**वासर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दिन । दिवस ।

**वासव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र ।

**वासित**—वि० [ सं० ] १. सुगंधित किया हुआ । २. कपड़े से ढका हुआ । ३. बासी ।

**वासिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्त्री । २. आर्या छंद का एक भेद ।

**वासिष्ठ**—वि० [ सं० ] वशिष्ठ-संबंधी ।

**वासी**—संज्ञा पुं० [ सं० वासिन् ] रहनेवाला ।

**वासुकी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आठ नागों में से दूसरा नागराज ।

**वासुदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचंद्र । २. पीपल का पेड़ ।

**वास्कट**—संज्ञा स्त्री० [ अं० वेस्ट-कोट ] एक प्रकार की कुरती या फतुही ।

**वास्तव**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा वास्तवता ] प्रकृत । यथार्थ ।

**वास्तविक**—वि० [ सं० ] यथार्थ । ठीक ।

**वास्तव्य**—वि० [ सं० ] रहने या बसने योग्य ।

संज्ञा पुं० बस्ती । आबादी ।

**वास्ता**—संज्ञा पुं० [ अ० ] संबंध । लगाव ।

**वास्तु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह स्थान जिस पर घर उठाया जाय । डीह । २. घर । मकान । ३. इमारत ।

**वास्तु-कला**—संज्ञा स्त्री० दे० "वास्तु-विद्या" ।

**वास्तु-पूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वास्तु पुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृह प्रवेश के आरंभ में की जाती है ।

**वास्तु-विद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह विद्या जिसमें इमारत के संबंध की सारी बातों का परिज्ञान होता है ।

**वास्तुशास्त्र**—संज्ञा पुं० दे० "वास्तुविद्या" ।

**वास्ते**—अव्य० [ अ० ] १. लिए । निमित्त । २. हेतु । सबब ।

**वाह**—अव्य० [ फ़ा० ] १. प्रशंसा-सूचक शब्द । धन्य । २. आश्चर्य-सूचक शब्द । ३. घृणाद्योतक शब्द ।

**वाहक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० वाहिका ] १. बोझ ढोने या खींचनेवाला । २. सारथी ।

**वाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सवारी ।

**वाहवा**—अव्य० स० दे० "वाहवाह" ।

**वाहवाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] लोगों की प्रशंसा । स्तुति । साधुवाद ।

**वाहित**—वि० [ सं० ] १. [illegible]

लिया हुआ। ढोया हुआ। २. बिताया हुआ।

**वाहिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सेना। २. सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे।

**वाहिनीपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेनापति।

**वाहियात**—वि० [ अ० वाही + फ़ा० यात ] १. व्यर्थ। फजूल। २. बुरा। खराब।

**वाही**—वि० [ सं० वाहिन् ] [ स्त्री० वाहिनी ] वहन करनेवाला।

वि० [ अ० ] १. सुस्त। ढीला। २. निकम्मा। ३. मूर्ख। ४. आवारा।

**वाही-तबाही**—वि० [ अ० वाही + तबाही ] १. बेहूदा। २. आवारा। ३. अंडबंड। बेसिर-पैर का।

संज्ञा स्त्री० अंडबंड बातें। गाली-गलौज।

**वाह्य**—क्रि० वि० [ सं० ] बाहर। अलग।

**वाह्यांतर**—वि० [ सं० ] भीतर और बाहर का।

**वाह्येंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पाँचों ज्ञानेंद्रियाँ जिनका काम बाह्य विषयों का ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।

**वाह्लीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गांधार के पास का एक प्रदेश। २. वाह्लीक देश का घोड़ा।

**विंजन**—संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

**विंद**—संज्ञा पुं० दे० "वृन्द" और "विंदु"।

**विंदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राप्त करनेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।

**विंदु**—संज्ञा पुं० [ सं० विंदु ] १. जलकण। बूँद। २. बुँदकी। बिंदी। ३. अनुस्वार। ४. शून्य। ५. एक बूँद परिमाण। ६. रेखा-गणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। ७. बहुत छोटा टुकड़ा।

**विंदुमाधव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति का नाम।

**विंदुर**—संज्ञा पुं० [ सं० विंदु ] बुँदकी।

**विंदुसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्र-गुप्त के एक पुत्र का नाम। सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था।

**विंध**—संज्ञा पुं० [ सं० विंध्य ] विंध्य पर्वत।

**विंध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैली है।

**विंध्यकूट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विंध्य पर्वत।

**विंध्यवासिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जा-पुर जिले में है।

**विंध्याचल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विंध्य पर्वत।

**विंश**—वि० [ सं० ] बीसवाँ।

**विंशोत्तरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फलित ज्योतिष में मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

**वि**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर इस प्रकार अर्थ देता है—१. विशेष, जैसे—विकराल। २ वैरूप्य; जैसे-विविध। ३. निषेध; जैसे-विक्रय।

**विकंकत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक जंगली वृक्ष जिसे कँटाई, किंकिणी और बंज कहते हैं।

**विकंपन**—संज्ञा पुं० दे० "कंपन"।

**विकंपित**—वि० दे० "कंपित"।

**विकच**—वि० [ सं० ] १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसके कच या बाल न हों।

संज्ञा पुं० बालों का समूह या लट।

**विकट**—वि० [ सं० ] १. विशाल। २. भयंकर। भीषण। ३. वक्र। टेढ़ा। ४. कठिन। मुश्किल। ५. दुर्गम। ६. दुस्साध्य।

**विकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रोग। व्याधि। २. तलवार के ३२ हाथों में से एक।

**विकरार***—वि० दे० "विकराल"।

वि० [ अ० फ़ा० बेकरार ] विकल। बेचैन।

**विकराल**—वि० [ सं० ] भीषण। डरावना।

**विकर्म**—वि० [ सं० ] बुरा काम करनेवाला।

संज्ञा पुं० बुरा काम। दुष्काम।

**विकर्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकर्षण। २. एक शास्त्र जिसमें आकर्षण करने की विद्या का वर्णन है।

**विकल**—वि० [ सं० ] १. विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २. कलाहीन। ३. खंडित। अपूर्ण।

**विकलांग**—वि० [ सं० ] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो। न्यू-नांग। अंगहीन।

**विकला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कला का साठवाँ अंश। २. समय का एक बहुत छोटा भाग।

**विकलाना***—क्रि० अ० [ सं० विकल ] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।

**विकलित**—वि० दे० "विकल"।

**विकल्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.

भ्रांति। भ्रम। धोखा। २. एक बात मन में बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच-विचार। ३. किसी विषय में कई प्रकार की विधियों का मिलना। ४. योगशास्त्रानुसार पंचविध चित्त-वृत्तियों में एक। ५. अवांतर कल्प। ६. एक काव्यालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों का लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या वही। ७. समाधि का एक भेद। सविकल्प। ८. व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमों में से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण।

**विकसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विकसित ] प्रस्फुटन। फूटना। खिलना।

**विकसना**—क्रि० अ० दे० "बिकसना"।

**विकसाना**—क्रि० स० दे० "बिकसाना"।

**विकसित**—वि० [ सं० ] १. खिला हुआ। प्रस्फुटित। २. प्रसन्न। प्रफुल्लित।

**विकस्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक काव्यालंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है।

**विकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। २. बिगड़ना। खराबी। ३. दोष। बुराई। अवगुण। ४. मनोवेग या प्रवृत्ति। वासना। ५. किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम।

**विकारी**—वि० [ सं० विकारिन् ] १. जिसमें विकार या परिवर्तन हुआ हो। युक्त। २. क्रोधादि मनोविकारों से युक्त। ३. अक्षर के साथ लगनेवाली मात्रा।

**विकाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रकाश। २. प्रसार। फैलाव। ३. एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है। ४. दे० "विकास"।

**विकास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विकासक ] १. प्रसार। फैलाव। २. खिलना। प्रस्फुटित होना। ३. किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर भिन्न भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। ४. एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि आधुनिक समस्त सृष्टि और जीव-जंतु तथा वृक्ष आदि एक ही मूल तत्त्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं।

**विकासना***—क्रि० स० [ सं० विकास ] १. प्रकट करना। निकालना। २ विकसित करना। खिलने में प्रवृत्त करना।

क्रि० अ० १. खिलना। २. प्रकट होना।

**विकिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पक्षी। चिड़िया।

**विकिरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत-सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना। जैसे आतशी शीशे से।

**विकीर्ण**—वि० [ सं० ] १. चारों ओर फैला या छितराया हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

**विकुंठ***—संज्ञा पुं० [ सं० वैकुंठ ] वैकुंठ।

**विकृत**—वि० [ सं० ] १. जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २. जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। ३. असाधारण। अस्वाभाविक।

**विकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विकार। खराबी। बिगाड़। २. बिगड़ा हुआ रूप। ३. रोग। बीमारी। ४. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। ५. परिवर्त्तन। ६. मन में होनेवाला क्षोभ। ७. बेमूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप। ८. २१ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

**विकृष्ट**—वि० [सं०] खींचा हुआ। आकृष्ट।

**विकेन्द्रीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी केंद्राभूत कार्य या वस्तु का भिन्न भिन्न भागों में विभाजित होना।

**विक्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. बहादुरी। पराक्रम। ३. ताकत। बल। ४. गति। ५. दे० "विक्रमादित्य"।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

**विक्रमाजीत**—संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।

**विक्रमादित्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके संबंध में अनेक प्रकारके प्रवाद प्रचलित हैं। विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

**विक्रमाब्द**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ संवत्। विक्रम संवत्।

**विक्रमी**—संज्ञा पुं० [ सं० विक्रमिन् ] १. विक्रमवाला। पराक्रमी। २. विष्णु।

वि० विक्रम का। विक्रम-संबंधी।

**विक्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेचना। बिक्री।

**विक्रयी**—वि० [ सं० विक्रयिन् ] बेचनेवाला।

**विक्रांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैक्रांत मणि। २. शूर। वीर। बहादुर। ३. विक्रम। बल। ४. व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है।

**विक्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वीरता। बहादुरी। २. बल। शक्ति।

**विक्रियोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपमालंकार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय का अवलंबन कहा जाता है।

**विक्रेता**—संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला।

**विक्रेय**—वि० [सं०] जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

**विक्षत**—वि० [सं०] चोट खाया हुआ। घायल।

**विक्षिप्त**—वि० [सं०] १. फेंका या छितराया हुआ। २. जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। ३. विकल। व्याकुल।

संज्ञा पुं० [सं०] योग में चित्त की एक अवस्था जिसमें चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।

**विक्षिप्तता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पागलपन।

**विक्षुब्ध**—वि० [सं०] जिसमें क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।

**विक्षेप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर अथवा इधर-उधर फेंकना। डालना। २. इधर-उधर हिलाना। झटका देना। ३. (धनुष की डोरी) खींचना। चिल्ला चढ़ाना। ४. मन को इधर-उधर भटकाना। संयम का उलटा। ५. एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर चलाया जाता था। ६. बाधा। विघ्न।

**विक्षोभ**—संज्ञा पुं० [सं०] मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ।

**विखान**—संज्ञा पुं० [सं० विषाण] सींग।

**विख्यात**—वि० [सं०] प्रसिद्ध।

**विख्याति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि। शोहरत।

**विगंध**—वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार।

**विगत**—वि० [सं०] १. जो गत हो गया हो। जो बीत चुका हो। २. अंतिम या बीते हुए से पहले का। ३. रहित। विहीन।

**विगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विगत का भाव। २. दुर्दशा। दुर्गति।

**विगर्हणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाँट। फटकार।

**विगर्हित**—वि० [सं०] १. जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। २. बुरा। खराब।

**विगलन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विगलित] १. गलना। २. गिरना। ३. शिथिल होना। ४. बिगड़ना।

**विगाथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद। विग्गाहा। उद्गीति।

**विगुण**—वि० [सं०] गुण-रहित। निर्गुण।

**विग्गाहा**—संज्ञा स्त्री० दे० "विगाथा"।

**विग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दूर या अलग करना। २. विभाग। ३. यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना। (व्याकरण) ४. कलह। झगड़ा। ५. युद्ध। ६. विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना। ७. आकृति। ८. शरीर। ९. मूर्ति।

**विग्रही**—संज्ञा पुं० [सं० विग्रहिन्] १. लड़ाई झगड़ा करनेवाला। २. युद्ध करनेवाला।

**विघटन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विघटित] १. तोड़ना-फोड़ना। २. नष्ट करना। ३. बुरी घटना घटित होना।

**विघटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] समय का एक छोटा मान। घड़ी का २३ वाँ भाग।

**विघात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोट। आघात। २. नाश। ३. हत्या। ४. विकलता। ५. बाधा।

**विघ्न**—संज्ञा पुं० [सं०] अड़चन। बाधा।

**विघ्नविनायक**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

**विघ्नविनाशक**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश।

**विचकित**—वि० दे० "चकित"।

**विचक्षण**—वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २. निपुण। पारदर्शी। ३. पंडित। विद्वान्। ४. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।

**विचच्छन**—संज्ञा पुं० दे० "विचक्षण"।

**विचरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चलना। २. घूमना-फिरना। पर्य्यटन करना।

**विचरन**—संज्ञा पुं० दे० "विचरण"।

**विचरना**—क्रि० अ० [सं० विचरण] चलना-फिरना।

**विचल**—वि० [सं०] १. जो स्थिर न हो। अस्थिर। २. स्थान से हटा हुआ।

**विचलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चंचलता। अस्थिरता। २. घबराहट।

**विचलना**—क्रि० अ० [सं०

विचक्रम ] १. अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। २. अधीर होना। घबराना। ३. प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ न रहना।

**विचलाना***†—क्रि० स० [ सं० विचलन ] विचलित करना।

**विचलित**—वि० [ सं० ] १. अस्थिर। चंचल। २. प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

**विचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो कुछ मन से सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चित किया जाय। २. मन में उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। ३. मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

**विचारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० विचारिका ] १. विचार करनेवाला। २. फैसला करनेवाला। न्यायकर्ता।

**विचारणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विचार करने की क्रिया या भाव

**विचारणीय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विचारणीया ] १. जिसपर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। २. जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। चिंत्य। संदिग्ध।

**विचारना**—क्रि० स० [ सं० विचार + ना ( प्रत्य० ) ] १. विचार करना। सोचना। समझना। २. पूछना। ३. ढूँढ़ना। पता लगाना।

**विचारपति**—संज्ञा पुं० [ सं० विचार + पति ] विचारक। न्यायाधीश।

**विचारवान्**—संज्ञा पुं० दे० "विचारशील"।

**विचारशक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सोचने या भला-बुरा पहचानने की शक्ति।

**विचारशील**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्।

**विचारशीलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बुद्धिमत्ता।

**विचारालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्यायालय।

**विचारित**—वि० [ सं० ] जिसपर विचार हुआ।

**विचारी**—संज्ञा पुं० [ सं० विचारिन् ] वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला।

**विचार्य**—वि० दे० "विचारणीय"।

**विचिकित्सा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संदेह। शक।

**विचित्र**—वि० [ सं० ] १. कई तरह के रंग या वर्णोंवाला। २. अद्भुत। विलक्षण। ३. विस्मित या चकित करनेवाला।

संज्ञा पुं० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है, जब किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।

**विचित्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रंग बिरंगे होने का भाव। २. विलक्षण होने का भाव।

**विचित्रवीर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रवंशी राजा शांतनु के पुत्र का नाम।

**विचुंबन**—वि० दे० "चुंबन"।

**विचुंबित**—वि० दे० "चुंबित"।

**विचेतन**—वि० [ सं० ] बेहोश।

**विचेष्ट**—वि० [ सं० ] चेष्टा-रहित।

**विच्छित्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विच्छेद। अलगाव। २. कमी। त्रुटि। ३. रंगों आदि से शरीर को चित्रित करना। ४. कविता में की यति। ५. साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

**विच्छिन्न**—वि० [ सं० ] १. जो काट या छेद कर अलग कर दिया गया हो। विभक्त। २. जुदा। अलग।

संज्ञा पुं० योग में चारों क्लेशों की वह अवस्था जिसमें बीच में उनका विच्छेद हो जाता है।

**विच्छेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विच्छेदक ] १. काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २. क्रम का बीच से टूट जाना। ३. टुकड़े टुकड़े करना। ४. नाश। ५. विरह। वियोग। ६. कविता में की यति।

**विच्छेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काट या छेदकर अलग करना। २. नष्ट करना।

**विच्युत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विच्युति ] अपने स्थान आदि से गिरा हुआ। च्युत।

**विछलना***†—क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

**विछेद***—संज्ञा पुं० दे० "विच्छेद"।

**विछोई***†—संज्ञा पुं० दे० "वियोगी"।

**विछोह***†—संज्ञा पुं० [ सं० विच्छेद ] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग।

**विजड़ित**—वि० दे० "जड़ित"।

**विजन**—वि० [ सं० ] १. जिसमें जन या मनुष्य न हों। २. एकांत। निराला।

संज्ञा पुं० [ सं० व्यजन ] पंखा। बीजन।

**विजना***†—संज्ञा पुं० [ सं० विजन ] पंखा।

**विजय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत।

जय। २. एक प्रकार का छंद जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयंद नामक भेद है।

**विजय-पताका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है।

**विजय-यात्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह यात्रा जो किसी पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

**विजयलक्ष्मी, विजयश्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

**विजया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. भाँग। सिद्धि। भंग। ३. श्रीकृष्ण की माला का नाम। ३. दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद। ५. आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त। ६. दे० "विजया दशमी"।

**विजया दशमी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिंदुओं का बहुत बड़ा त्योहार है।

**विजयी**—संज्ञा पुं० [सं० विजयिन्] [स्त्री० विजयिनी] वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। विजेता।

**विजयोत्सव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विजया दशमी का उत्सव। २. वह उत्सव जो विजय प्राप्त करने पर होता है।

**विजल**—वि० [सं०] जल-रहित। संज्ञा पुं० वर्षा का अभाव। अवर्षण।

**विजात**—संज्ञा पुं० [सं०] सखी छंद का एक भेद।

**विजाति, विजातीय**—वि० [सं०] दूसरा जाति का।

**विजानना***—क्रि० स० [हिं० जानना] अच्छी तरह जानना।

**विजानु**—संज्ञा पुं० [सं०] तलवार चलाने के ३२ हाथों में से एक हाथ या प्रकार।

**विजिगीषा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [विजिगीषु] विजय की इच्छा रखनेवाला।

**विजित**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो जीत लिया गया हो। २. जीता हुआ देश।

**विजेता**—संज्ञा पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय पाई हो। जीतनेवाला।

**विजै***†—संज्ञा स्त्री० दे० "विजय"।

**विजैसार**—संज्ञा पुं० [सं० विजयसार] साखू की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

**विजोग***—संज्ञा पुं० [सं० वियोग] वियोग।

**विजोर**—वि० [हिं० वि+जोर] कमजोर।

**विजोहा**—संज्ञा पुं० [सं० विमोह] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। जोहा। विमोहा। विज्जोहा।

**विज्जु, विज्जुलता***—संज्ञा स्त्री० दे० "विद्युत"।

**विज्जोहा**—संज्ञा पुं० दे० "विजोहा"।

**विज्ञ**—वि० [सं०] [भाव० विज्ञता] १. जानकार। २. बुद्धिमान्। ३. विद्वान्। पंडित।

**विज्ञप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० विज्ञप्त] १. बताने या सूचित करने की क्रिया। २. सूचना। ३ विज्ञापन।

**विज्ञान**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २. किसी विषय की जानी हुई बातों का संग्रह जो एक अलग शास्त्र के रूप में हो। शास्त्र। जैसे—पदार्थ विज्ञान। ३. माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ४. ब्रह्म। ५. आत्मा। ६. निश्चयात्मिका बुद्धि।

**विज्ञानमय कोष**—संज्ञा पुं० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह। (वेदांत)

**विज्ञानवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो। २. वह सिद्धांत जिसमें आधुनिक विज्ञान की बातें मान्य हों।

**विज्ञानी**—संज्ञा पुं० [सं० विज्ञानिन्] १. वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। २. वैज्ञानिक।

**विज्ञापन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय, विज्ञापित] १. जानकारी कराना। सूचना देना। २. वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाय। इश्तहार।

**विज्ञापित**—वि० [सं०] जिसका विज्ञापन हुआ हो।

**विट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कामुक। लंपट। २. वेश्यागामी। ३. धूर्त। चालाक। ४. साहित्य में वह धूर्त और स्वार्थी नायक जो विषय भोग में सारी संपत्ति नष्ट कर चुका हो। ५. विष्ठा। मल।

**विटप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नई शाखा। कोंपल। २. वृक्ष। पेड़।

**विटपी**—संज्ञा पुं० दे० "विटप"।

**विट लवण**—संज्ञा पुं० [सं०] सौंचर नमक।

**विट्ठल**—संज्ञा पुं० [?] दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम।

**विडंबना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० विडंबनीय, विडंबित] १. किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिए उसकी नकल उतारना। २. हँसी उड़ाना। मजाक करना।

**विडरना***†—क्रि० अ० [?] १. तितर-बितर होना। २. भागना। दौड़ना।

**विडराना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "बिडारना"।

**विडारना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ बिडरना का स॰ रूप ] १. तितर-बितर करना। छितराना। २. नष्ट करना। ३. भगाना। दौड़ाना।

**विडाल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बिल्ली।

**विडौजा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ विडौजस् ] इंद्र का एक नाम।

**वितंडा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। २. व्यर्थ का झगड़ा या कहा-सुनी।

**वितंत***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वि+तंत्र ] वह बाजा जिसमें तार न लगे हों।

**वित***—वि॰ [सं॰ विद् ] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २. चतुर। निपुण।

**वितताना***†—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ व्यथा ] व्याकुल होना। बेचैन होना।

**वितति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] विस्तार।

**वितथ**—वि॰ [ सं॰ ] १. जिसमें कुछ तथ्य न हो। २. मिथ्या। झूठ।

**वितद्रु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] झेलम नदी।

**वितपन्न*** संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ब्युत्पन्न ] वह जो किसी काम में कुशल हो। दक्ष। प्रवीण।

वि॰ घबराया हुआ। व्याकुल।

**वितरक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वितरण ] बाँटनेवाला।

**वितरण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. दान या अर्पण करना। देना। २. बाँटना।

**वितरन***—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वितरण] १. बाँटनेवाला। २. दे॰ "वितरण"।

**वितरना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ वितरण ] बाँटना।

**वितरिक्त***—अव्य॰ दे॰ "अतिरिक्त"।

**वितरित**—वि॰ [ सं॰ ] बाँटा हुआ।

**वितरेक***—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ व्यतिरिक्त ] छोड़कर। सिवा।

**वितर्क**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक तर्क के उपरांत होनेवाला दूसरा तर्क। २. संदेह। शक। ३. एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है।

**वितल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा पाताल।

**वितस्ता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] झेलम नदी।

**विताड़न**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "ताड़ना"।

**वितान**—सं॰ पुं॰ [ सं॰ ] १. यज्ञ। २. विस्तार। फैलाव। ३. बड़ा चँदोआ या खेमा। ४. समूह। संघ। जमाव। ५. शून्य। खाली स्थान। ६. एक प्रकार का छंद। ७. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण और दो गुरु होते हैं।

**वितानना***†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ वितान ] शामियाना आदि तानना।

**वितिक्रम***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "व्यतिक्रम"।

**वितीत***†—वि॰ दे॰ "व्यतीत"।

**वितुंड**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ वि+तुंड] हाथी।

**वितु***†—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ वित्त ] धन। संपत्ति।

**वित्त**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] धन। संपत्ति।

**वित्तपति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कुबेर।

**वित्तहीन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] दरिद्र। गरीब।

**विथक**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ थकना ] पवन।

**विथकना***†—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ थकना] १. थकना। शिथिल होना। २. मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।

**विथकित***—वि॰ [ हिं॰ विथकना ] १. थका हुआ। शिथिल। २. जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप हो।

**विथराना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ वितरण ] १. फैलाना। २. इधर-उधर करना।

**विथा***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "व्यथा"।

**विथारना***—क्रि॰ स॰ [ स॰ वितरण ] फैलाना।

**विथित***—वि॰ [ सं॰ व्यथित ] दुःखी।

**विदग्ध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. रसिक पुरुष। २. पंडित। विद्वान्। ३. चतुर। चालाक।

**विदग्धता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] विद्वत्ता।

**विदग्धा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ पर-पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।

**विदमान***—अव्य॰ दे॰ "विद्यमान"।

**विदरना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ विदरण ] फटना।

क्रि॰ स॰ विदीर्ण करना। फाड़ना।

**विदर्भ**—संज्ञा पुं॰ [ स॰ ] आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम।

**विदर्भराज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] दमयंती के पिता राजा भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।

**विदल**—वि० [सं०] १. जिसमें दल न हों। २. खिला हुआ।

**विदलन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विदलित] १. मलने दलने या दबाने आदि की क्रिया। २. फाड़ना।

**विदलना***—क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।

**विदा**—संज्ञा स्त्री० [सं० विदाय] १. प्रस्थान। रवाना होना। २. कहीं से चलने की अनुमति।

**विदाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. रुखसत। प्रस्थान। २. विदा होने की आज्ञा या अनुमति। ३. वह वस्तु जो विदा होने के समय दी जाय।

**विदारक**—वि० [सं०] फाड़ डालनेवाला।

**विदारण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. फाड़ना। २. मार डालना।

**विदारना***—क्रि० स० [हिं० विदरना] फाड़ना।

**विदारी**—वि० [सं० विदारिन्] फोड़नेवाला।

**विदारीकंद**—संज्ञा पुं० [सं०] भुइँ-कुम्हड़ा।

**विदाही**—संज्ञा पुं० [सं० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो।

**विदित**—वि० [सं०] जाना हुआ। ज्ञात।

**विदिश्**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच का कोना। कोण।

**विदिशा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २. दे० "विदिश्"।

**विदीर्ण**—वि० [सं०] १.फाड़ा हुआ। २. मार डाला हुआ। निहत।

**विदुर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकार। ज्ञाता। २. पंडित। ज्ञानी। ३. कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री जो राजनीति और धर्मनीति में बहुत निपुण थे।

**विदुष**—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।

**विदुषी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वान् स्त्री।

**विदूर**—वि० [सं०] जो बहुत दूर हो। संज्ञा पुं० दे० "वैदूर्य" (मणि)।

**विदूषक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० विदूषिका] १. विषयी। कामुक। २. वह जो तरह तरह की नकलें अथवा बात-चीत करके दूसरों को हँसाता हो। मसखरा। ३. एक प्रकार का नायक जो अपने परिहास आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है। ४. भाँड़।

**विदूषण**—संज्ञा पुं० [सं०] दोष लगाना।

**विदूषना**—क्रि० स० [सं० विदूषण] १. सताना। दुःख देना। २. दोष लगाना।

क्रि० अ० दुःखी होना।

**विदेश**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विदेशी, विदेशीय] अपने देश को छोड़कर दूसरा देश। परदेश।

**विदेशी**—वि० [हिं० विदेश] १. दूसरे देश का। २ परदेशी।

**विदेह**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो शरीर से रहित हो। २ वह जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हो। ३.राजा जनक। ४.प्राचीन मिथिला।

वि० [सं०] १. शरीर रहित। २. संज्ञा-रहित। बेसुध। अचेत।

**विदेह-कुमारी, विदेहजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] जानकी। सीता।

**विदेहपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] जनकपुर।

**विदेही**—संज्ञा पुं० [सं० विदेहिन्] ब्रह्म।

वि० [स्त्री० विदेहिनी] दे० "विदेह"।

**विद्**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जानकार। २. पंडित। विद्वान्। ३. बुध ग्रह।

**विद्ध**—वि० [सं०] १. बीच में से छेद किया हुआ। २. फटा हुआ। ३. जिसको चोट लगी हो। ४. टेढ़ा। ५. सटा हुआ।

**विद्यमान**—वि० [सं०] उपस्थित। मौजूद।

**विद्यमानता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

**विद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया जाता है। इल्म। २. वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है यथा—चारों वेद,छओं अंग, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और अर्थशास्त्र। ३. दुर्गा। ४. आर्या छंद का पाँचवाँ भेद।

**विद्यागुरु**—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षक।

**विद्यादान**—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढ़ाना।

**विद्याधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की देवयोनि जिसके अंतर्गत खेचर, गंधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३. विद्वान्। पंडित।

**विद्याधरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।

**विद्याधारी**—संज्ञा पुं० [सं० विद्याधारिन्] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं।

**विद्यापीठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिक्षा का बड़ा केंद्र। महाविद्यालय।
**विद्यारंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह संस्कार जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है।
**विद्यार्थी**—संज्ञा पुं० [ सं० विद्यार्थिन् ] वह जो विद्या पढ़ता हो। छात्र। शिष्य।
**विद्यालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।
**विद्यावान्**—संज्ञा पुं० दे० "विद्वान्"।
**विद्युत्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बिजली।
**विद्युत् चालक**—वि० [ सं० ] [ भाव० विद्युत चालकता ] ( वह पदार्थ ) जिसमें बिजली का प्रवाह हो सके। विद्युत्प्रवाही। जैसे—धातुएँ आदि।
**विद्युत्प्रवाही**—वि० [ सं० ] [भाव० विद्युत्प्रवाहकता ] दे० 'विद्युत् चालक'।
**विद्युत्मापक**—संज्ञा पुं० [ सं० विद्युत् + मापक ] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है।
**विद्युत्माला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बिजली का समूह या सिलसिला। २. आठ गुरु वर्णों का एक छंद।
**विद्युत्माली**—संज्ञा पुं० [ सं० विद्युत्मालिन् ] १. पुराणानुसार एक राक्षस। २. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में भगण, मगण और दो गुरु होते हैं।
**विद्युल्लेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दो मगण का एक वृत्त। शेषराज। २. विद्युत्।

**विद्रधि**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [ सं० ] पेट के अंदर का एक प्रकार का घातक फोड़ा।
**विद्रावण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भागना। २. पिघलना। ३. उड़ना। ४. फाड़ना। ५. वह जो नष्ट करता हो।
**विद्रुम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रवाल। मूँगा।
**विद्रोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. द्वेष। २. वह भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो। बलवा। बगावत।
**विद्रोही**—संज्ञा पुं० [सं० विद्रोहिन् ] १. विद्रोह या द्वेष करनेवाला। २. राज्य का अनिष्ट करनेवाला। बागी।
**विद्वत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पांडित्य।
**विद्वान्**—संज्ञा पुं० [ सं० विद्वस् ] वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पंडित।
**विद्वेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शत्रुता। वैर।
**विद्वेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शत्रुता। वैर। २. एक क्रिया जिससे दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है। ( तंत्र ) ३. शत्रु। वैरी। ४. दुष्टता।
**विधंस***—संज्ञा पुं० [ सं० विध्वंस ] नाश।
वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।
**विधंसना***†—क्रि० स० [ सं० विध्वंसन ] नष्ट करना। बरबाद करना।
**विधि***—संज्ञा पुं० [ सं० विधि ] ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० विधि। प्रकार।
**विधन**—वि० [ सं० ] निर्धन। कंगाल।

**विधना**—क्रि० स० [ सं० विधि ] प्राप्त करना। अपने साथ लगाना। ऊपर लेना।
संज्ञा स्त्री० [ सं० विधि] वह जो कुछ होने को हो। भवितव्यता। होनी।
संज्ञा पुं० विधि। ब्रह्मा।
**विधर**†—क्रि० वि० दे० "उधर"।
**विधर्म्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूसरे किसी का धर्म्म। पराया धर्म्म।
**विधर्मी**—संज्ञा पुं० [सं० विधर्म्मिन् ] १. वह जो धर्म्म के विपरीत आचरण करता हो। धर्म्मभ्रष्ट। २. किसी दूसरे धर्म्म का अनुयायी।
**विधवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। राँड़। बेवा।
**विधवापन**—संज्ञा पुं० [ सं० विधवा + हिं० पन ] विधवा होने की अवस्था। रँडापा। वैधव्य।
**विधवाश्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० विधवा + आश्रम] वह स्थान जहाँ विधवाओं के पालन-पोषण आदि का प्रबंध किया जाता है।
**विधाँसना***†—क्रि० स० दे० "विधंसना"।
**विधाता**—संज्ञा पुं० [ सं० विधातृ ] [ स्त्री० विधात्री ] १. विधान करनेवाला। २. उत्पन्न करनेवाला। ३. प्रबंध करनेवाला। ४. सृष्टि बनानेवाला। ब्रह्मा या ईश्वर।
**विधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी कार्य्य का आयोजन। अनुष्ठान। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. विधि। प्रणाली। पद्धति। ४. रचना। निर्माण। ५. ढंग। उपाय। युक्ति। ६. वे नियम आदि जिनके अनुसार किसी देश या राष्ट्र का राजनीतिक संघटन और

शासन होता है। ७. नियम। नियमावली। ८. आज्ञा करना। ९. नाटक में वह स्थान जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दुःख दोनों प्रकट किए जाते हैं।

**विधानवाद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह सिद्धांत जिसमें विधान या राज-नियम ही सर्वप्रधान माना जाय और उसके विरुद्ध कुछ करना मना हो।

**विधानवादी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विधान+वादिन्] विधानवाद को मानने और उसका अनुकरण करनेवाला।

**विधायक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ विधायिका, विधायिनी] १. विधान करनेवाला। २. बनानेवाला। ३. प्रबंध करनेवाला।

**विधायी**—वि॰ दे॰ "विधायक"।

**विधि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. कार्य्य करने की रीति। प्रणाली। ढंग। २. व्यवस्था। योजना। करीना।

**मुहा॰**—विधि बैठना=१. परस्पर अनुकूलता होना। मेल बैठना। २. इच्छानुकूल व्यवस्था होना। विधि मिलना=आय और व्यय के अनुसार हिसाब का ठीक-ठीक मिल जाना।

३. किसी शास्त्र या ग्रंथ में लिखी हुई व्यवस्था। शास्त्रोक्त विधान। ४. शास्त्र में इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे। ५. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। ६. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ७. आचार-व्यवहार। चाल-ढाल।

**यौ॰**—गतिविधि=चेष्टा और कार्रवाई।

८. भाँति। प्रकार।

संज्ञा पुं॰ [सं॰] ब्रह्मा।

**विधिपुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विधि+पुर] ब्रह्मलोक।

**विधिरानी***—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ विधि+हिं॰ रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

**विधिवत्**—क्रि॰ वि॰ [सं॰] १. विधिपूर्वक। विधि या पद्धति के अनुसार। २. जैसा चाहिए। उचित रूप से।

**विधुंतुद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विधु+तुद] राहु।

**विधु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु।

**विधुदार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विधु+दारा] चंद्रमा की स्त्री, रोहिणी।

**विधुबंधु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कुमुद का फूल।

**विधुबैनी***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "विधुवदनी"।

**विधुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ विधुरा] १. दुःखी। २. घबराया हुआ। व्याकुल। ३. असमर्थ। अशक्त। ४. वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो। ५. वृद्ध।

**विधुवदनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सुंदरी स्त्री।

**विधूत**—वि॰ [सं॰] १. काँपता या हिलता हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३. दूर किया हुआ।

**विधूनन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ विधूनित] काँपना।

**विधेय**—वि॰ [सं॰] १. जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। कर्तव्य। २. जिसका विधान होनेवाला हो। ३. जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। ४. वशीभूत। अधीन। ५. वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय। (व्या॰)।

**विधेयाविमर्श**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] साहित्य में एक वाक्य-दोष। जो बात प्रधानतः कहनी है, उसका वाक्य-रचना के बीच दबा रहना।

**विध्याभास**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक अर्थालंकार जिसमें घोर अनिष्ट की संभावना दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है।

**विध्वंस**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] नाश। बरबादी।

**विध्वंसक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का लड़ाई का जहाज।

वि॰ दे॰ "विध्वंसी"।

**विध्वंसी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ विध्वंसिन्] [स्त्री॰ विध्वंसिनी] नाश या बरबाद करनेवाला।

**विध्वस्त**—वि॰ [सं॰] नष्ट किया हुआ।

**विन**†—सर्व॰ [हिं॰ उस] "उस" का बहुवचन। उन।

**विनत**—वि॰ [सं॰] १. झुका हुआ। २. विनीत। नम्र। ३. शिष्ट।

**विनतडी***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "विनति"।

**विनता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप की स्त्री और गरुड़ की माता थी।

**विनति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. झुकाव। २. नम्रता। विनय। शिष्टता। सुशीलता। ३. प्रार्थना। विनती।

**विनती**—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।

**विनम्र**—वि० [ सं० ] [ भाव० विनम्रता ] १. झुका हुआ। २. विनीत। सुशील।

**विनय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नम्रता, आजिजी। २. शिक्षा। ३. प्रार्थना। विनती। ४. शासन। तंबीह। ५. नीति।

**विनयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विनय। नम्रता। २. शिक्षा। ३. निर्णय। निराकरण। ४. दूर करना। मोचन।

**विनय-पिटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आदि बौद्ध शास्त्रों में से एक।

**विनयशील**—वि० [ सं० ] नम्र। सुशील।

**विनयी**—वि० [ सं० विनयिन् ] विनययुक्त। नम्र।

**विनशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विनष्ट, विनश्वर ] नष्ट होने की क्रिया। नाश। बरबादी।

**विनश्य**—वि० [ सं० ] विनष्ट होने के योग्य।

**विनश्वर**—वि० [ सं० ] सब दिन या बहुत दिन न रहनेवाला। अनित्य।

**विनष्ट**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विनष्टि ] जो बरबाद हो गया हो। ध्वस्त। २. मृत। मरा हुआ। ३. बिगड़ा हुआ। ४. भ्रष्ट। पतित।

**विनष्टि**—संज्ञा स्त्री० दे० "विनाश"।

**विनसना***—क्रि० अ० [ सं० विनशन ] नष्ट होना।

**विनसाना***—क्रि० स० [ हिं० विनसना का स० रूप ] १. नष्ट करना। २. बिगाड़ना।

क्रि० अ० दे० "विनसना"।

**विना**—अव्य० [ सं० ] १. अभाव में। न रहने की अवस्था में। बगैर। २. छोड़कर। अतिरिक्त। सिवा।

**विनाती***†—संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] विनय।

**विनाथ**—वि० दे० "अनाथ"।

**विनायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणेश।

**विनाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विनाशक ] १. नाश। ध्वंस। बरबादी। २. लोप। ३. बिगड़ जाने का भाव। खराबी।

**विनाशक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० विनाशिनी ] विनाश करनेवाला।

**विनाशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विनाशी, विनाश्य ] १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. संहार करना। वध करना। ३ खराब करना।

**विनाशा**-वि० स्त्री० [ सं० ] विनाश करनेवाली।

**विनास***†—संज्ञा पुं० दे० "विनाश"।

**विनासन***—संज्ञा पुं० दे० "विनाशन"।

**विनासना***—क्रि० स० [ सं० विनाशन ] १. नष्ट करना। बरबाद करना। २. संहार करना। ३. बिगाड़ना।

क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।

**विनिमय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्त्तन।

**विनियोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। प्रयोग। २. वैदिक कृत्य में मंत्र का प्रयोग। ३. प्रेषण। भेजना।

**विनीत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विनीता] १. विनययुक्त। सुशील। २. शिष्ट। नम्र। ३. नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला। धार्मिक।

**विनु***†—अव्य० दे० "विना"।

**विनूठा**†—वि० [ हिं० अनूठा ] अनूठा। सुंदर।

**विनोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है।

**विनोद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कुतूहल। तमाशा। २. क्रीड़ा। खेल-कूद। ३. हँसी-दिल्लगी। परिहास। ४. हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

**विनोदी**—वि० [ सं० विनोदिन् ] [ स्त्री० विनोदिनी ] १. आमोद-प्रमोद करनेवाला। २. कुतूहली। ३. आनंदी। ४. खेल-कूद या हँसी-ठट्ठे में रहनेवाला।

**विन्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विन्यस्त ] १. स्थापन। रखना। धरना। २. यथास्थान स्थापन। सजाना। ३. जड़ना। ४. सजावट। शृंगार।

**विपंची**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार की वीणा। २. बाँसुरी। ३. क्रीड़ा। खेल।

**विपक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विरुद्ध पक्ष। २. विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। ३. प्रतिवादी या शत्रु। ४. विरोध। खंडन। ५. व्याकरण में बाधक नियम। अपवाद।

**विपक्षी**—संज्ञा पुं० [ सं० विपक्षिन् ] १. विरुद्ध पक्ष का। दूसरी तरफ का। २. शत्रु। प्रतिद्वंद्वी। प्रतिवादी। ३. बिना पंख का।

**विपत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कष्ट, दुःख या शोक की प्राप्ति। आफत। २. संकट की अवस्था। बुरे दिन।

**मुहा०**—( किसी पर ) विपत्ति

दहना=सहसा कोई दुःख या शोक उपस्थित होना ।

३. कठिनाई । झंझट । बखेड़ा ।

**विपथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बुरा या खराब रास्ता । कुपथ ।

**विपथगामी**—संज्ञा पुं० [ सं० विपथगामिन् ] [ स्त्री० विपथगामिनी ] १. बुरे या खराब रास्ते पर चलनेवाला । कुमार्गी । २. चरित्रहीन । बदचलन ।

**विपद्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विपत्ति । आफत ।

**विपदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विपत्ति । आफत ।

**विपन्न**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विपन्ना, संज्ञा विपन्नता ] १. जिस पर विपत्ति पड़ी हो । २. दुःखी । आर्त्त ।

**विपरीत**—वि० [ सं० ] १. उलटा । विरुद्ध । खिलाफ । २. प्रतिकूल । ३. अनिष्ट साधन में तत्पर । रुष्ट । ४. हित साधन के अनुपयुक्त ।

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें कार्य्य की सिद्धि में स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है । ( केशव )

**विपरीतोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अलंकार जिसमें कोई भाग्यवान् व्यक्ति अति हीन दशा में दिखाया जाय । ( केशव )

**विपर्यय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उलट-पलट । इधर का उधर । २. और का और । व्यतिक्रम । ३. और का और समझना । ४. भूल । गलती । ५. गड़बड़ी । अव्यवस्था ।

**विपर्यस्त**—वि० [ सं० ] १. जिसका विपर्यय हुआ हो । २. अस्त-व्यस्त । गड़बड़ ।

**विपर्यास**—संज्ञा पुं० दे० "विपर्यय" ।

**विपल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पल का साठवाँ भाग ।

**विपाक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परिपक्व होना । पकना । २. पूर्ण दशा को पहुँचना । ३. फल । परिणाम । ४. कर्म का फल । ५. पचना । ६. दुर्गति । दुर्दशा ।

**विपादिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बिवाई नामक रोग । २. प्रहेलिका । पहेली ।

**विपाशा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] व्यास नदी ।

**विपिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वन । जंगल । २. उपवन । वाटिका ।

**विपिनतिलका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण होते हैं ।

**विपिनपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिंह ।

**विपिनविहारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वन में विहार करनेवाला । २. श्रीकृष्ण ।

**विपुल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विपुला ] १. विस्तार, संख्या या परिमाण में बहुत अधिक । २. वृहत् । बड़ा । अगाध ।

**विपुलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आधिक्य ।

**विपुला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पृथ्वी । वसुंधरा । २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं । ३. आर्य्या छंद के तीन भेदों में से एक ।

**विपुलाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "विपुलता" ।

**विपोहना**—क्रि० स० [ सं० वि० + प्रोत ] १. पोतना । लीपना । २. नाश करना । ३. दे० "पोहना" ।

**विप्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्राह्मण । २. पुरोहित ।

**विप्रचरण**—संज्ञा पुं० [ सं० विप्र + चरण ] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है ।

**विप्रचित्ति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक दानव जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु हुआ था ।

**विप्रपद**—संज्ञा पुं० दे० "विप्रचरण" ।

**विप्रराम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परशुराम ।

**विप्रलंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चाही हुई वस्तु का न मिलना । २. प्रिय का न मिलना । वियोग । विरह । ३. अलग होना । विच्छेद । ४. धोखा । छल । धूर्त्तता ।

**विप्रलब्ध**—वि० [ सं० ] १. जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो । रहित । वंचित । २. वियोग-दशा को प्राप्त ।

**विप्रलब्धा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह नायिका जो संकेतस्थान में प्रिय को न पाकर दुःखी हो ।

**विप्लव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उपद्रव । अशांति और हलचल । २. विद्रोह । बलवा । ३. उथल-पुथल । अव्यवस्था । ४. आफत । विपत्ति । ५. जल की बाढ़ ।

**विप्लवी**—वि० [ सं० विप्लविन् ] विप्लव करनेवाला ।

**विप्लावक**—वि० दे० "विप्लवी" ।

**विप्सा**—संज्ञा स्त्री० दे० "वीप्सा" ।

**विफल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विफलता ] १. जिसमें फल न लगा हो । २. निष्फल । व्यर्थ । बेफायदा ।

२. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। नाकामयाब।

**विबुध**—संज्ञा पुं० [सं० वि+बुध] १. पंडित। बुद्धिमान्। २. देवता। ३. चंद्रमा।

**विबुधविलासिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. देवांगना। देवता की स्त्री। २. अप्सरा।

**विबुधवेलि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्पलता।

**विबोध**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विबोधक] १. जागरण। जागना। २. सम्यक् बोध। अच्छा ज्ञान। ३. सचेत होना। सावधान होना।

**विभंग**—संज्ञा पुं० [सं०] उपल।

**विभक्त**—वि० [सं० वि० + भज्] १. बँटा हुआ। विभाजित। २. अलग किया हुआ।

**विभक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रिया पद से क्या संबंध है। (व्याकरण)

**विभव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धन। संपत्ति। २. ऐश्वर्य्य। ३. बहुतायत। ४. मोक्ष।

**विभवशाली**—वि० [सं०] १. विभववाला। २. प्रतापवाला। ऐश्वर्य्यवाला।

**विभांडक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि जो ऋष्यशृंग के पिता थे।

**विभाँति**—संज्ञा स्त्री० [सं० वि० + हिं० भाँति] प्रकार। भेद। किस्म। वि० अनेक प्रकार का। अव्य० अनेक प्रकार से।

**विभा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दीप्ति। चमक। २. प्रकाश। रोशनी। ३. किरण।

**विभाकर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. अग्नि। ३. राजा।

**विभाग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। तकसीम। २. भोग। अंश। हिस्सा। बखरा। ३. प्रकरण। अध्याय। ४. कार्य्य-क्षेत्र। मुहकमा।

**विभाजक**—वि० [सं०] विभाग या [illegible] करनेवाला

**विभाजन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विभाग करना। बाँटना। बँटवारा। विभाग।

**विभाजित**—वि० [सं०] जिसका विभाग किया गया हो। विभक्त।

**विभाज्य**—वि० [सं०] १. विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो।

**विभाति**—संज्ञा स्त्री० [सं० विभा] शोभा।

**विभाना***—क्रि० अ० [सं० विभा + ना (प्रत्य०)] १. चमकना। झलकना। २. शोभित होना।

**विभारना***—क्रि० अ० दे० "विभाना"।

**विभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में वह वस्तु जो रति आदि भावों को आश्रय में उत्पन्न करनेवाली या उद्दीप्त करनेवाली हो।

**विभावना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना कार्य्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है।

**विभावरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रात्रि। रात। २. वह रात जिसमें तारे चमकते हों। ३. कुटनी। कुटनी। दूती।

**विभावसु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वसुओं के एक पुत्र। २. सूर्य्य। ३. अग्नि। ४. चंद्रमा।

**विभास**—संज्ञा पुं० [सं०] चमक। दीप्ति।

**विभासना**—क्रि० अ० [सं० विभास + ना (हिं० प्रत्य०)] चमकना। झलकना।

**विभिन्न**—वि० [सं०] १. बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २. अनेक प्रकार का।

**विभीति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर। भय। २. शंका। संदेह।

**विभीषण**—संज्ञा पुं० [सं०] रावण का भाई एक राक्षस जो रावण के मारे जाने पर लंका का राजा बनाया गया था।

**विभीषिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. डर दिखाना। २. भयानक कांड या दृश्य।

**विभु**—वि० [सं०] [भाव० विभुता, विभूति] १. जो सर्वत्र वर्त्तमान हो। सर्वव्यापक। २. जो सब जगह जा सकता हो। जैसे, मन। ३. बहुत बड़ा। महान्। ४. सर्वकाल-व्यापी। नित्य। ५. दृढ़। अचल। ६. शक्तिमान्। संज्ञा पुं० १. ब्रह्म। २. जीवात्मा। ३. प्रभु। ४. ईश्वर। ५. शिव। ६. विष्णु।

**विभूति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहुतायत। वृद्धि। बढ़ती। २. विभव। ऐश्वर्य। ३. संपत्ति। धन। ४. दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं। ५. शिव के अंग में चढ़ाने की राख या

भस्म। ६. लक्ष्मी। ७.एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ८. सुचि।

**विभूषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भूषण। गहना। २. गहनों आदि से सजाना। अलंकरण।

**विभूषना***—क्रि० स० [ सं० विभूषण ] १. गहने आदि से सजाना। २.सुशोभित करना। ३. आगमन से सुशोभित करना।

**विभूषित**—वि० [ सं० ] १. गहनों आदि से सजाया हुआ। अलंकृत। २. (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त। सहित। ३. शोभित।

**विभेंटन***—संज्ञा पुं० [ हिं० भेंट ] गले मिलना।

**विभेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विभिन्नता। फरक। अंतर। २. अनेक भेद। कई प्रकार। ३. छेदकर घुसना। धँसना।

**विभेदना***—क्रि० स० [ सं० विभेदन ] १. भेदन करना। छेदना। २. घुसना। ३. भेद या फर्क डालना।

**विभोर**—वि० [ सं० विह्वल ] १. विह्वल। विकल। २. मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

**विभौ***—संज्ञा पुं० दे० "विभव"।

**विभ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भ्रमण। चक्कर। फेरा। २. भ्रांति। धोखा। ३. संदेह। संशय। ४. घबराहट। ५. स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम से उलटे-पलटे भूषण वस्त्र पहनकर कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती हैं।

**विभ्राट्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आपत्ति। विपत्ति। संकट। २. उपद्रव। बखेड़ा।

**विमंडन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विमंडित ] सजाना। शृंगार करना। सँवारना।

**विमंडित**—वि० [ सं० ] १ अलंकृत। सजा हुआ। २. शोभित। ३. सहित। युक्त। (अ ।वस्तु से)

**विमत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धांत। २. प्रतिकूल सम्मति।

**विमत्सर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अधिक अहंकार।

**विमन**—वि० [ सं० विमनस् ] अनमना। उदास।

**विमनस्क**—वि० [ सं० अन्यमनस्क। उदास। अनमना।

**विमर्दन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [वि० विमर्दनीय, विमर्दित ] १. अच्छी तरह मलना-दलना। २. नष्ट करना। ३. मार डालना।

**विमर्श**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी बात का विवेचन या विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३. परीक्षा। ४. परामर्श।

**विमर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "विमर्श"। २. नाटक का एक अंग जिसके अंतर्गत अपवाद, व्यवसाय, शक्ति, प्रसंग, खेद, विरोध और आदान आदि का वर्णन होता है।

**विमल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विमलता ] [स्त्री० विमला] १. निर्मल। स्वच्छ। साफ। २. निर्दोष। शुद्ध। ३. सुंदर। मनोहर।

**विमलध्वान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छः चरणों का एक छंद।

**विमला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सरस्वती।

**विमलापति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा।

**विमाता**—संज्ञा स्त्री० [सं० विमातृ ] सौतेली माँ।

**विमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकाश-मार्ग से गमन करनेवाला रथ। उड़नखटोला। २. हवाई जहाज। वायुयान। ३. मरे हुए वृद्ध मनुष्य का अरथी जो सजधज के साथ निकाला जाता है। ४. रथ। गाड़ी। ५. घोड़ा।

**यौ०** विमान-वेधी=हवाई जहाज को मार गिरानेवाला (यंत्रास्त्र)।

**विमार्ग**—वि० [ सं० ] बुरा रास्ता। कुमार्ग।

**विमुक्त**—वि [ सं० ] १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। २. स्वतंत्र। स्वच्छंद। ३. (हानि, दंड आदि से) बचा हुआ। ४. अलग किया हुआ। बरी। ५. फेंका हुआ। छोड़ा हुआ।

**विमुक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष।

**विमुख**—वि० [ सं० ] [ भाव० विमुखता ] १. मुख रहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। विरत। निवृत्त। ३. जिसे परवाह न हो। उदासीन। ४. विरुद्ध। खिलाफ। अप्रसन्न। ५. अप्राप्त-मनोरथ। निराश।

**विमुग्ध**—वि० [ सं० ] बहुत मुग्ध।

**विमुद**—वि० [ सं० ] उदास। खिन्न।

**विमूढ़**—वि० [सं०] [स्त्री० विमूढ़ा] १. विशेष रूप से मुग्ध। अत्यंत विमोहित। २. भ्रम में पड़ा हुआ। ३. बेसुध। अचेत। ४. ज्ञान-रहित। मूर्ख। नासमझ।

**विमूढ़गर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव में बड़ी कठिनता हो।

**विमोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य ] १. बंधन, गाँठ आदि खोलना। २. बंधन से छुड़ाना। मुक्त करना। ३. निकालना। ४. छोड़ना। फेंकना।

**विमोचना***—क्रि० सं० [ सं० विमोचन ] १. बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। छोड़ना। २. निकालना। बाहर करना।

**विमोह**—संज्ञा० पुं० [ सं० ] [ वि० विमोहक ] १. मोह। अज्ञान। भ्रम। २. बेसुध होना। बेहोशी। ३. मोहित होना। आसक्ति।

**विमोहक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विमोहिनी ] मोहित करनेवाला।

**विमोहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विमोहित, विमोही ] १. मोहित करना। मन लुभाना। २. सुध-बुध भुलाना। ३. कामदेव के पंच बाणों में से एक।

**विमोहना***—क्रि० अ० [ सं० विमोहन ] १. मोहित होना। लुभा जाना। २. बेसुध होना। ३. धोखा खाना। क्रि० स० १. मोहित करना। लुभाना। २. बेसुध करना। ३. धोखे में डालना।

**विमोहा**—संज्ञा स्त्री० दे० "विजोहा"।

**विमोहित**—वि० [ सं० ] १ लुभाया हुआ। मुग्ध। २. तन मन की सुध भूला हुआ। ३. मूर्च्छित।

**विमोही**—वि० [ सं० विमोहिन् ] [ स्त्री० विमोहिनी ] १. मोहित करनेवाला। जी लुभानेवाला। २. सुध-बुध भुलानेवाला। ३. मूर्च्छित या बेहोश करनेवाला। ४. भ्रम में डालनेवाला। ५. निष्ठुर। कठोर-हृदय।

**विमौट**—संज्ञा पुं० [ सं० वल्मीकि ] दीमकों का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह। बाँबी।

**वियंग***—संज्ञा पुं० [ हिं० विय + अंग ] महादेव।

**विय***—वि० [ सं० द्वि ] १. दो। जोड़ा। २. दूसरा।

**वियुक्त**—वि० [ सं० ] १. बिछुड़ा हुआ। वियोग-प्राप्त। २. जुदा। अलग। ३. रहित। हीन।

**वियो***—वि० [ सं० द्वितीय ] दूसरा। अन्य।

**वियोग***—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलाप का न होना। विच्छेद। २. अलगाव। ३. विरह। जुदाई।

**वियोगांत**—वि० [ सं० ] ( नाटक या उपन्यास आदि ) जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।

**वियोगिनी**—वि० स्त्री० [ सं० ] जो अपने पति या प्रिय से अलग हो।

**वियोगी**—वि० [ सं० वियोगिन् ] [ स्त्री० वियोगिनी ] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो।

**वियोजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला। २. गणित में वह संख्या जिसे किसी दूसरी बड़ी संख्या में से घटाना हो।

**विरंग**—वि० [ सं० ] १. बुरे रंग का। बदरंग। फीका। २. अनेक रंगों का।

**विरंचि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा। विधाता।

**विरंचिसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नारद।

**विरक्त**—वि० [ सं० ] १. जिसका जी हटा हो। विमुख। २. उदासीन। ३ अप्रसन्न।

**विरक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनुराग का अभाव। २. उदासीनता। ३. अप्रसन्नता।

**विरचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निर्माण। बनाना। २. विशेष प्रेम।

**विरचना***—क्रि० स० [ सं० विरचन ] १. रचना। बनाना। निर्माण करना। २. सजाना।
क्रि० अ० [ सं० वि + रंजन ] विरक्त होना।

**विरचित**—वि० [ सं० ] १. बनाया हुआ। निर्मित। २. रचा हुआ। लिखित।

**विरज**—वि० [ सं० ] १. रजोगुण से रहित। २. साफ। निर्दोष।

**विरत**—वि० [ सं० ] १. जो अनुरक्त न हो। विमुख। २. जो लीन या तत्पर न हो। निवृत्त। ३. विरक्त। वैरागी। ४. विशेष रूप से रत। बहुत लीन।

**विरति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चाह का न होना। २. उदासीनता। ३. वैराग्य।

**विरथ**—वि० [ सं० ] १. जिसके पास रथ या सवारी न हो। २. पैदल।

**विरद**—संज्ञा पुं० [ सं० विरुद ] १. ख्याति। प्रसिद्धि। २. यश। कीर्त्ति। दे० "विरुद"।

**विरदावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० विरुदावली ] यश की कथा। कीर्त्ति की गाथा।

**विरदैत***—वि० [ हिं० विरद + ऐत (प्रत्य०) ] बड़े विरदवाला। कीर्त्ति

या यशवाला।

**विरमण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रमण करना। रमना। २. निवृत्त होना। ३. रुकना। ठहरना।

**विरमना***†—क्रि० अ० [ सं० विरमण ] १. रम जाना। मन लगाना। २. विराम करना। ठहरना। ३. मोहित होकर रुक जाना। ४. वेग आदि का थमना या कम होना।

क्रि० अ० दे० "विलंबना"।

**विरमाना***†—क्रि स० [ हिं० विरमना का स० रूप ] दूसरे को विरमने में प्रवृत्त करना।

**विरल**—वि० [सं०] १. जो घना न हो। 'सघन' का उलटा। २. जो दूर दूर पर हो। ३. दुर्लभ। ४. पतला। ५. शून्य। निर्जन। ६. अल्प। थोड़ा।

**विरस**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विरसता ] १. रसहीन। फीका। नीरस। २. जो अच्छा न लगे। अप्रिय। अरुचिकर। ३. (काव्य) जिसमें रस का निर्वाह न हो सका हो।

**विरह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वस्तु से रहित होने का भाव। २. किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। विच्छेद। वियोग। जुदाई। ३. वियोग का दुःख।

**विरहिणी**—वि० स्त्री० दे० "वियोगिनी"।

**विरहित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विरहिता ] १. रहित। शून्य। बिना। २. दे० "विरही"।

**विरही**—वि० [सं० विरहिन्] [स्त्री० विरहिणी ] जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो। वियोगी।

**विरहोत्कंठिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह दुःखी नायिका जिसके मन में पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी वह किसी कारणवश न आवे।

**विराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विरागी ] १. अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २. विषय-भोग आदि से निवृत्ति। वैराग्य।

**विराजना**—क्रि० अ० [ सं० विराजन ] १. शोभित होना। सोहना। फबना। २. मौजूद रहना। उपस्थित होना। ३. बैठना।

**विराजमान**—वि० [ सं० ] १. चमकता हुआ। २. उपस्थित। मौजूद। ३. बैठा हुआ।

**विराजित**—वि० दे० "विराजमान"।

**विराट्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्म का वह स्थूल स्वरूप, जिसका शरीर संपूर्ण विश्व है। २. क्षत्रिय। ३. कांति। दीप्ति।

वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

**विराट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मत्स्य देश। २. मत्स्य देश का राजा जिसके यहाँ अज्ञातवास के समय पांडव नौकर रहे थे।

**विराध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पीड़ा। तकलीफ। २. सतानेवाला। ३. एक राक्षस जिसे दंडकारण्य में लक्ष्मण ने मारा था।

**विराम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रुकना या थमना। ठहरना। २. सुस्ताना। विश्राम करना। ३. वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पड़ता हो। ४. छंद के चरण में यति।

**विराव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शब्द। बोली। कलरव। २. हल्ला-गुल्ला। शोर-गुल।

**विरासी***—वि० दे० "विलासी"।

**विरुज**—वि० [ सं० ] नीरोग। रोग रहित।

**विरुझना***†—क्रि० अ० दे० "उलझना"।

**विरुद**—संज्ञा पु० [ सं० ] १. राजाओं की स्तुति या प्रशंसा जो सुंदर भाषा में की गई हो। यश-कीर्तन। प्रशस्ति। २. यश या प्रशंसा-सूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल में धारण करते थे। ३. यश।

**विरुदावली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तर कथन। यश-वर्णन। प्रशंसा।

**विरुद्ध**—वि० [ सं० ] १. जो हित के अनुकूल न हो। प्रतिकूल। खिलाफ। २. अप्रसन्न। ३. विपरीत। ४. अनुचित।

क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ।

**विरुद्धकर्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० विरुद्धकर्मन् ] १. बुरे चलन का आदमी। २. श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं।

**विरुद्धता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विरुद्ध होने का भाव। २. प्रतिकूलता। विपरीतता।

**विरुद्धरूपक**—संज्ञा पु० [ सं० ] केशव के अनुसार रूपक अलंकार का एक भेद जो "रूपकातिशयोक्ति" ही है।

**विरुद्धार्थ दीपक**—संज्ञा पुं० [सं०] दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता।

**विरूप**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विरूपा ] १. कई रंग रूप का । २. कुरूप । बदसूरत । भद्दा । ३. बदला हुआ । परिवर्तित । ४. शोभाहीन । ५. विरुद्ध । उलटा ।

**विरूपता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] 'विरूप' का भाव । शकल का भद्दा-पन । बदसूरती ।

**विरूपाक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव । शंकर । २. शिव के एक गण का नाम । ३. रावण का एक सेनानायक । ४. एक दिग्गज ।

**विरेचक**—वि० [ सं० ] दस्त लानेवाला । मलभेदक । दस्तावर ।

**विरेचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दस्त लानेवाली दवा । जुलाब । २. दस्त लाना ।

**विरोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चमकना । प्रकाशित होना । २.प्रकाशमान । ३. सूर्य्य की किरण । ४. सूर्य । ५. चंद्रमा । ६. अग्नि । ७. विष्णु । ८.प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता ।

**विरोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विरोधक ] १. मेल में न होना । विपरीत भाव । अनैक्य । २. वैर । शत्रुता । बिगाड़ । अनबन । ३. दो बातों का एक साथ न हो सकना । व्याघात । ४. उलटी स्थिति । ५. नाश । ६. नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है । ७. एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य में से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विरोध होता है ।

**विरोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य ] १. विरोध करना । वैर करना । २. नाश । बरबादी । ३. नाटक में विमर्श का एक अंग जो उस समय होता है, जब किसी कारणवश कार्य्यध्वंस का उपक्रम ( सामान ) होता है ।

**विरोधना***—क्रि० स० [ सं० विरोधन ] विरोध करना । शत्रुता या झगड़ा करना ।

**विरोधाभास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पड़ता है ।

**विरोधी**—वि० [ सं० विरोधिन् ] [ स्त्री० विरोधिनी] १. विरोध करनेवाला । बाधा डालनेवाला । २. विपक्षी । शत्रु । वैरी ।

**विरोधी श्लेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है । (केशव)

**विरोधोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है ।

**विलंब**—वि० [सं० विलंब ] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात में लगे) । अतिकाल । देर ।

**विलंबना**—क्रि० अ० [ सं० विलंबन] १. देर करना । विलंब करना । २. मन लगने के कारण बस जाना । ३. लटकना । ४. सहारा लेना ।

**विलंबित**—वि० [ सं० ] १. लटकता हुआ । झूलता हुआ । २. लंबा किया हुआ । ३. जिसमें देर हुई हो ।

**विलक्षण**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विलक्षणता ] असाधारण । अनोखा । अनूठा ।

**विलखना**—क्रि० अ० दे० "बिलखना" ।

*क्रि० अ० [ सं० लक्ष ] ताड़ना । पता पाना ।

**विलग**—वि० [ हिं० वि (उप०) + लगना ] अलग ।

**विलगाना**—क्रि० अ० [ हिं० विलग + ना (प्रत्य०) ] १. अलग होना । पृथक् होना । २. विभक्त या अलग दिखाई देना ।

क्रि० स० पृथक् करना । अलग करना ।

**विलच्छन**—वि० दे० "विलक्षण" ।

**विलपना***—क्रि० अ० [सं० विलपन] रोना ।

**विलपाना***—क्रि० स० [ हिं० विलपना का स० ] दूसरे को विलाप में प्रवृत्त करना । रुलाना ।

**विलम***—संज्ञा पुं० [ सं० विलंब ] देर । अबेर ।

**विलमना***—क्रि० अ० दे० "बिलमना" ।

**विलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विलीन होना । लोप । २. नाश । ३. मृत्यु । ४. प्रलय ।

**विलसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विलसित ] १. चमकने की क्रिया । २. क्रीड़ा । भाव ।

**विलसना***—क्रि० अ० [सं० विलस] १. शोभा पाना । २. विलास करना । ३. आनंद मनाना ।

**विलाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया । क्रंदन । रुदन ।

**विलापना***—क्रि० अ० [सं० विलापन ] शोक करना । विलाप करना ।

**विलायत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. पराया देश। दूसरों का देश। २. दूर का देश।

**विलायती**—वि० [ अ० ] १. विलायत का। विदेशी। २. दूसरे देश में बना हुआ।

**विलास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाली क्रिया। २. मनोरंजन। मनोविनोद। ३. आनंद। हर्ष। ४. वे प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं। हाव-भाव। नाज-नखरा। ५. किसी अंग की मनोहर चेष्टा। कर-विलास। ६. किसी चीज का हिलना-डोलना। ७. अतिशय सुख-भोग।

**विलासिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का रूपक जिसमें एक ही अंक होता है।

**विलासिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सुंदरी स्त्री। कामिनी। २. वेश्या। गणिका। ३. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण और दो गुरु होते हैं।

**विलासी**—संज्ञा पुं० [ सं० विलासिन् ] [ स्त्री० विलासिनी ] १. सुख-भोग में अनुरक्त पुरुष। कामी। २. क्रीडाशील। हँसोड़। कौतुकशील। ३. आराम-तलब।

**विलीक***—वि० पुं० [ सं० व्यलीक] अनुचित।

**विलीन**—वि० [ सं० ] १. जो अदृश्य हो गया हो। लुप्त। २. जो किसी दूसरे में मिल गया हो। ३. छिपा हुआ।

**विलेख**—अव्य० [ सं० वि+लेख ] निश्चयपूर्वक।

**विलेशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बिल या दरार में रहनेवाले जीव। २. सर्प। साँप।

**विलोकना**—क्रि० स० [ सं० विलोकन ] देखना।

**विलोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नेत्र। नयन। आँख। २. आँख फोड़ने की क्रिया।

**विलोड़न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विलोड़ित ] १. आलोड़न। मथना। २. आंदोलन। उथल-पुथल।

**विलोड़ना**—क्रि० स० [ सं० विलोड़न ] १. मथना। २. उथल-पथल करना।

**विलोप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लुप्त या गायब होना।

**विलोपना***—क्रि० स० [सं० विलोप] लुप्त या नष्ट करना।

**विलोम**—वि० [ सं० ] विपरीत। उलटा।

संज्ञा पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आना।

**विलोल**—वि० [ सं० ] १ चंचल। २. सुंदर।

**विल्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेल का पेड़।

**विल्वपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेल का पत्ता, जो शिव पर चढ़ाते हैं। बेलपत्र।

**विल्वमंगल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महाकवि सूरदास का अंधे होने से पूर्व का नाम।

**विव***—वि० दे० "द्वि"।

**विवक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कोई बात कहने की इच्छा। २. अर्थ। तात्पर्य्य। ३. अनिश्चय। शक।

**विवक्षित**—वि० [ सं० ] जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। अपेक्षित।

**विवदना***—क्रि० अ० [ सं० विवाद +हिं० ना ] शास्त्रार्थ करना। विवाद करना।

**विवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छिद्र। बिल। २. गड्ढा। दरार। गर्त। ३. गुफा। कंदरा।

**विवरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विवेचन। व्याख्या। २. वृत्तांत। बयान। हाल। ३. भाष्य। टीका।

**विवर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विवर्जित ] मना करना।

**विवर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदल जाता है।

वि० [ सं० ] १. नीच। कमीना। २. कुजाति। ३. बदरंग। बुरे रंग का। ४. जिसके चेहरे का रंग उतरा हुआ हो। कांतिहीन।

**विवर्त्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समुदाय। समूह। २. आकाश। ३. भ्रांति। भ्रम। ४. परिवर्त्तन। उलट-फेर। ५. परिणाम। फल।

**विवर्त्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घूमना। फिरना। २. परिवर्त्तन। फेर-बदल।

**विवर्त्तवाद**—संज्ञा पुं० [सं० ] वेदांत में एक सिद्धांत जिसके अनुसार ब्रह्म को सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति-स्थान और संसार को माया मानते हैं। परिणामवाद।

**विवर्द्धन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विवर्द्धित ] विशेष रूप से बढ़ाना।

**विवश**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विवशता] १. जिसका कुछ वश न चले। लाचार। बेबस। २. पराधीन।

**विवसन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विवसना ] जो कोई वस्त्र न पहने हो।

नग्न । नंगा ।

**विवस्त्र**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० विवस्त्रा ] नग्न । नंगा ।

**विवस्वत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य्य । २. सूर्य्य का सारथी, अरुण ।

**विवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी बात पर जबानी झगड़ा । वाक्-युद्ध । २. झगड़ा । कलह । ३. मुकदमेबाजी ।

**विवादास्पद**—वि० [ सं० ] जिस पर विवाद या झगड़ा हो । विवाद योग्य । विवादयुक्त ।

**विवादी**—संज्ञा पुं० [ सं० विवादिन् ] १. कहासुनी या झगड़ा करनेवाला । २. मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक पक्ष ।

**विवाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस में दांपत्य सूत्र में बँधते हैं । शादी । ब्याह । परिणय । पाणिग्रहण ।

**विवाहना**—क्रि० स० दे० "ब्याहना" ।

**विवाहित**—वि० पुं० [ सं० ] [ स्त्री० विवाहिता ] जिसका विवाह हो गया हो । ब्याहा हुआ ।

**विवाही**—वि० स्त्री० [ सं० विवाहिता ] जिसका विवाह हो चुका हो ।

**विवाह्य**—वि० [ सं० ] विवाह के योग्य । ब्याहने लायक ।

**विवि***—वि० [ सं० द्वि ] १. दो । २. दूसरा ।

**विविचार**—वि० [ सं० ] १. विचार-रहित । विवेक-रहित । २. आचार-रहित ।

**विविध**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विविधता ] बहुत प्रकार का । अनेक तरह का ।

**विविर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खोह । गुफा । २. बिल । ३. दरार ।

**विवृत**—वि० [ सं० ] [ भाव० विवृति ] १. विस्तृत । फैला हुआ । २. खुला हुआ । ३. वर्णन किया हुआ ।

संज्ञा पुं० ऊष्म स्वरों के उच्चारण करने का एक प्रयत्न । (व्या०)

**विवृतोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अलंकार जिसमें श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वयं अपने शब्दों द्वारा प्रकट कर देता है ।

**विवृत्त**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विवृत्ति ] १. घूमता हुआ । २. लौटा हुआ । परावृत ।

**विवेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भली-बुरी वस्तु का ज्ञान । २. मन की वह शक्ति जिससे भले-बुरे का ज्ञान होता है । ३. बुद्धि ।

**विवेकी**—संज्ञा पुं० [ सं० विवेकिन् ] १. वह जिसे विवेक हो । भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला । २. बुद्धिमान् । समझदार । ३. ज्ञानी । ४. न्यायशील । ५. न्यायाधीश ।

**विवेचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भली भाँति परीक्षा करना । जाँचना । २. यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नहीं । निर्णय । तर्क-वितर्क । ३. मीमांसा ।

**विवेचनीय**—वि० [ सं० ] विवेचन करने योग्य । विचार करने लायक ।

**विव्वोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्रियाँ संयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं ।

**विशद**—वि० [ सं० ] १. स्वच्छ । विमल । २. साफ । स्पष्ट । ३. जो दिखाई पड़ता हो । व्यक्त । ४. सफेद । ५. सुंदर । खूबसूरत ।

**विशांपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा ।

**विशाख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कार्त्तिकेय । २. एक देवता जिनका जन्म कार्त्तिकेय के वज्र लगने से हुआ था । ३. शिव ।

**विशाखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जिसे राधा भी कहते हैं । २. एक प्राचीन जनपद जो कौशांबी के पास था ।

**विशारद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो । २. कुशल । दक्ष ।

**विशाल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विशालता ] १. बहुत बड़ा और विस्तृत । लंबा-चौड़ा । २. सुंदर और भव्य । ३. प्रसिद्ध । मशहूर ।

**विशालाक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महादेव । शिव । २. विष्णु । ३. गरुड़ ।

**विशालाक्षी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह स्त्री जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों । २. पार्वती । ३. देवी की एक मूर्ति ।

**विशिख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाण ।

**विशिष्ट**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विशिष्टता ] १. मिला हुआ । युक्त । २. जिसमें किसी प्रकार की विशेषता हो । ३. विलक्षण ।

**विशिष्टाद्वैत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव में भिन्न नहीं हैं ।

**विशुद्ध**—वि० [ सं० ] [ भाव० विशुद्धता, विशुद्धि ] १. जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो । २. सत्य । सच्चा । ठीक ।

**विशुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शुद्धता ।

**विशूचिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "विसूचिका"।

**विशृंखल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विशृंखलता ] जिसमें क्रम या शृंखला न हो। अस्त-व्यस्त। गड़बड़।

**विशेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भेद। अंतर। २. वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। ३. वस्तु। पदार्थ। ४. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें (क) बिना आधार के आधेय या (ख) थोड़ा काम करने पर बहुत सी प्राप्ति या (ग) एक ही चीज का अनेक स्थानों में होना वर्णित होता है। ५. सात प्रकार के पदार्थों में से एक। (वैशेषिक)

वि० [ सं० ] साधारण या सामान्य के अतिरिक्त। अधिक।

**विशेषज्ञ**—संज्ञा पुं० [सं०] [ भाव० विशेषज्ञता ] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो।

**विशेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। २. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्या-वाचक।

**विशेषता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विशेष का भाव या धर्म।

**विशेषना**—क्रि० अ० [ सं० विशेष ] १. निश्चय या निर्णय करना। २. विशेष रूप देना।

**विशेषोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य्य के न होने का वर्णन रहता है।

**विशेष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता हो।

**विश्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रजा।

**विश्पति**—संज्ञा पुं० [सं० ] राजा।

**विश्रंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विश्वास। एतबार। २. प्रेमी और प्रेमिका में रति के समय होनेवाला झगड़ा। ३. प्रेम।

**विश्रब्ध**—वि० [ सं० ] १. शांत। २. विश्वसनीय। ३. निर्भय। निडर।

**विश्रब्ध नवोढ़ा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नवोढ़ा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो।

**विश्रवा**—संज्ञा पुं० [ सं० विश्रवस् ] एक प्राचीन ऋषि जो कुबेर के पिता थे।

**विश्रांत**—वि० [ सं० ] १. जो विश्राम करता हो। २. ठहरा या रुका हुआ। ३. थका हुआ।

**विश्रांति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विश्राम। आराम।

**विश्राम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। २. ठहरने का स्थान। ३. आराम। चैन। सुख।

**विश्रामालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्थान जहाँ यात्री विश्राम करते हों।

**विश्री**—वि० [ सं० ] १. श्री या कांति से रहित। २. भद्दा। कुरूप।

**विश्रुत**—वि० [ सं० ] प्रसिद्ध। मशहूर।

**विश्लिष्ट**—वि० [सं० ] १. जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २. विकसित। खिला हुआ। ३. प्रकट। प्रकाशित।

**विश्लेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वियोग। बिछोह। २. दे० "विश्लेषण"।

**विश्लेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग अलग करना।

**विश्वंभर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परमेश्वर। २. विष्णु। ३. एक उपनिषद् का नाम।

**विश्वंभरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पृथ्वी।

**विश्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चौदहों भुवनों का समूह। समस्त ब्रह्मांड। २. संसार। जगत्। दुनिया। ३. देवताओं का एक गण जिसमें ये दस देवता हैं—वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा। ४. विष्णु। ५. शरीर।

वि० १. समस्त। सब। २. बहुत।

**विश्वकर्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० विश्वकर्मन् ] १. ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३. सूर्य्य। ४. एक प्रसिद्ध देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता माने जाते हैं। बढ़ई। देववर्द्धन। ५. शिव। ६. बढ़ई। ७. मेमार। राज। ८. लोहार।

**विश्वकोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।

**विश्वनाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**विश्वरूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. शिव। ३. श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखा-

आया था।

**विश्वलोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य और चंद्रमा।

**विश्वविद्यालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो। यूनिवर्सिटी।

**विश्वव्यापी**—संज्ञा पुं० [ सं० विश्वव्यापिन् ] ईश्वर।
वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।

**विश्वश्रवा**—संज्ञा पुं० [ सं० विश्वश्रवस् ] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।

**विश्वसनीय**—वि० [ सं० ] विश्वास करने के योग्य। जिसका एतबार किया जा सके।

**विश्वस्त**—वि० [ सं० ] विश्वसनीय।

**विश्वात्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० विश्वात्मन् ] १. विष्णु। २. शिव। ३. ब्रह्मा।

**विश्वाधार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] परमेश्वर।

**विश्वामित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि ये बहुत बड़े क्रोधी थे और प्रायः लोगों को शाप दे दिया करते थे।

**विश्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एतबार। यकीन।

**विश्वासघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विश्वासघातक ] अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य्य करना जो उसके विश्वास के बिलकुल विपरीत हो। धोखा।

**विश्वासपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विश्वसनीय।

**विश्वासी**—संज्ञा पुं० [ सं० विश्वासिन् ] [ स्त्री० विश्वासिनी ] १. विश्वास करनेवाला। २. विश्वसनीय।

**विश्वेदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अग्नि। २. देवताओं का एक गण जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।

**विश्वेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर। २. शिव की एक मूर्त्ति का नाम।

**विष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गरल। जहर। २. वह जो किसी की सुख-शांति आदि में बाधक हो।

**मुहा०**—विष की गाँठ=वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो।

३. बछनाग। ४. कलिहारी।

**विषकंठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

**विषकन्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।

**विषण्ण**—वि० [ सं० ] दुःखी। विषादयुक्त।

**विषदंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल की नाल।

**विषधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साँप।

**विषमंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २. सँपेरा।

**विषम**—वि० [ सं० ] १. जो सम या समान न हो। असमान। २. ( वह संख्या ) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। ताक। ३. बहुत कठिन। ४. बहुत तीव्र। बहुत तेज।
५. भीषण। विकट।
संज्ञा पुं० १. वह वृत्त जिसके चारों चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। २. एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है।

**विषमज्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का ज्वर जो होता तो नित्य है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता। २. नागा देकर आनेवाला ज्वर।

**विषमता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विषम होने का भाव। २. वैर। विरोध।

**विषमबाण, विषमायुध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कामदेव।

**विषमवृत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह वृत्त या छंद जिसके चरण या पद समान न हों।

**विषय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिस पर कुछ विचार किया जाय। २. मजमून। ३. स्त्री-संभोग। ४. संपत्ति। ५. बड़ा प्रदेश या राज्य। ६. संबंध।

**विषयक**—अव्य० [ सं० ] विषय का। संबंधी।

**विषयानुक्रमणिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विषयसूची।

**विषयी**—संज्ञा पुं० [ सं० विषयिन् ] १. वह जो भोग-विलास में बहुत आसक्त हो। विलासी। कामी। २. कामदेव। ३. धनवान्। अमीर।

**विषविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मंत्र आदि की सहायता से विष

उतारने की विद्या।

**विषवैद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो मंत्र-तंत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो।

**विषांगना**—संज्ञा स्त्री० दे० "विष-कन्या"।

**विषान्वित**—वि० [ सं० ] जिसमें विष मिला हो। विष-युक्त। विषपूर्ण। जहरीला।

**विषाण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पशु का सींग। २. सूअर का दाँत।

**विषाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० विषादी ] १. खेद। दुःख। रंज। २. जड़ या निश्चेष्ट होने का भाव।

**विषुव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह समय जब कि सूर्य्य विषुवत रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। ऐसा समय वर्ष में दो बार आता है।

**विषुवत रेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ज्योतिष के कार्य्य के लिए कल्पित एक रेखा जो पृथ्वीतल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर मानी जाती है।

**विषूचिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "विसू-चिका"।

**विष्कंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ज्योतिष में एक प्रकार का योग। २. विस्तार। ३. बाधा। विघ्न। ४. नाटक का एक प्रकार का अंक। जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमें मध्यम पात्रों द्वारा सूचना दी जाती है।

**विष्कंभक**—संज्ञा पुं० दे० "विष्कंभ"।

**विष्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पक्षी। चिड़िया।

**विष्टंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाधा। रुकावट। २. पेट फूलने का रोग। अनाह।

**विष्टंभन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रोकने या संकुचित करने की क्रिया।

**विष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बेगार। २. मजदूरी। ३. दे० "विष्टिभद्रा"

**विष्टिभद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो यात्रा और शुभ कर्मों के लिए निषिद्ध माना जाता है। भद्रा।

**विष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मल। मैला। गुह। पाखाना।

**विष्णु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरण-पोषण और पालन करनेवाले तथा ब्रह्म का एक विशेष रूप माने जाते हैं। २. बारह आदित्यों में से एक।

**विष्णुक्रांता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नीली अपराजिता। नीली कोयल लता।

**विष्णुगुप्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे। २. प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम।

**विष्णुपदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंगा नदी।

**विष्णुलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैकुण्ठ।

**विष्वकसेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. एक मनु का नाम। ३. शिव।

**विसदृश**—वि० [सं०] १. विपरीत। विरुद्ध। उलटा। २. विलक्षण। अद्भुत।

**विसर्ग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दान। २. त्याग। ३. व्याकरण में एक वर्ण जिसमें ऊपर-नीचे दो बिंदु होते हैं और जिनका उच्चारण प्रायः अर्ध ह के समान होता है। ४ मोक्ष। ५. मृत्यु। ६. प्रलय ७. वियोग। बिछोह।

**विसर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परित्याग। छोड़ना। २. बिदा होना। चला जाना। ३. षोडशोप-चार पूजन में अंतिम उपचार। आवाहन किए हुए देवता से पुनः स्वस्थानगमन की प्रार्थना करना। ४. समाप्ति।

**विसर्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रोग जिसमें ज्वर के साथ फुंसियाँ हो जाती हैं।

**विसर्पी**—वि० [ सं० विसर्पिन् ] फैलनेवाला।

**विसूचिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वैद्यक के अनुसार एक रोग जिसे कुछ लोग "हैजा" मानते हैं।

**विस्तर**—वि० [सं०] बहुत। अधिक। संज्ञा पुं० दे० "विस्तार"।

**विस्तार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लंबे या चौड़े होने का भाव। फैलाव।

**विस्तारना**—क्रि० स० [ सं० ] विस्तार करना। फैलाना।

**विस्तीर्ण**—वि० [सं०] १. विस्तृत। २. विशाल। बहुत बड़ा। ३. बहुत अधिक।

**विस्तीर्णता**—संज्ञा स्त्री० दे० "विस्तार"।

**विस्तृत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विस्तार, विस्तृति ] १. लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। २. यथेष्ट विवरण-वाला। ३. बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा। विशाल।

**विस्फारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

वि० विस्फारित ] १. खोलना। फैलाना। २. फाड़ना।

**विस्फोट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना। २. जहरीला और खराब फोड़ा।

**विस्फोटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जहरीला फोड़ा। २. वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भभक उठे। भभकनेवाला पदार्थ। ३. शीतला का रोग। चेचक।

**विस्मय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आश्चर्य। ताज्जुब। २. साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी भाव।

**विस्मरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भूल जाना।

**विस्मित**—वि० [ सं० ] जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो। चकित।

**विस्मृत**—वि० [ सं० ] जो स्मरण न हो। जो याद न हो। भूला हुआ।

**विस्मृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विस्मरण।

**विहंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पक्षी। चिड़िया। २. बाण। तीर। ३. मेघ। बादल। ४. चंद्रमा। ५. सूर्य।

**विहंसना**—क्रि० अ० दे० 'हँसना'।

**विहग**—संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

**विहरना**—क्रि० अ० [ सं० विहार ] १. विहार करना। २. घूमना फिरना।

**विहसित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह हास्य जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।

**विहान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रातः काल। सबेरा।

**विहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. टहलना। घूमना। फिरना। २. रति क्रीड़ा। संभोग। ३. बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ। संघाराम।

**विहारक**—वि० [ स्त्री० विहारिका ] दे० "विहारी"।

**विहारना**—क्रि० अ० दे० "विहरना"।

**विहारी**—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण। वि० [स्त्री० विहारिणी] विहार करनेवाला।

**विहित**—वि० [ सं० ] जिसका विधान किया गया हो।

**विहीन**—वि० [ सं० ] [संज्ञा विहीनता ] १. बगैर। बिना। २. त्यागा हुआ।

**विहून**—वि० दे० "विहीन"।

**विह्वल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा विह्वलता ] घबराया हुआ। व्याकुल।

**वीक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देखना।

**वीचि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लहर। तरंग।

**वीचिमाली**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र।

**वीची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] तरंग। लहर।

**वीज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मूल कारण। २. शुक्र। वीर्य्य। ३. तेज। ४. अन्न आदि का बीज। बीआ। ५. अंकुर। ६. तत्त्व। ७. तान्त्रिकों के अनुसार एक प्रकार के मंत्र। ८. बीज गणित

**वीजगणित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का गणित जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिए कुछ सांकेतिक चिह्नों आदि की सहायता से गणना की जाती है।

**वीटिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पान का बीड़ा।

**वीणा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा। बीन।

**वीणापाणि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सरस्वती।

**वीत**—वि० [ सं० ] १. जो छोड़ दिया गया हो। २ जो छूट गया हो। मुक्त। ३. जो बीत गया हो। ४. जो निवृत्त हो चुका हो।

**वीतराग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो। २. बुद्ध का एक नाम।

**वीतिहोत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अग्नि। २. सूर्य। ३. राजा प्रियव्रत के एक पुत्र

**वीथिका**—संज्ञा स्त्री० दे० "वीथी"।

**वीथी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दृश्य काव्य या रूपक का एक भेद जो एक ही अंक का होता है और जिसमें एक ही नायक होता है। २. मार्ग। रास्ता। सड़क। ३. वह आकाश-मार्ग जिससे होकर सूर्य चलता है। रविमार्ग। ४. आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं।

**वीथ्यंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रूपक में वीथी के अंग जो १३ माने गए हैं।

**वीप्सा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. व्याप्त होने की इच्छा। २. द्विरुक्ति। ३. एक प्रकार का शब्दालंकार।

**वीभत्स**—वि० दे० "बीभत्स"।

**वीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. साहसी और बलवान्। शूर। बहादुर। २. योद्धा। सैनिक। सिपाही। ३. वह जो किसी काम में और लोगों से बहुत बढ़कर हो। ४. पुत्र। लड़का। ५. पति। खसम। ६. भाई। (स्त्री०) ७. साहित्य में एक रस जिसमें उत्साह

और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है। ८. तांत्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक भाव।

**वीरकर्मा**—वि० [ सं० वीरकर्म्मन् ] वीरतापूर्ण कार्य करनेवाला।

**वीरकेसरी**—संज्ञा पुं० [ सं० वीरकेसरिन् ] वह जो वीरों में सिंह के समान श्रेष्ठ हो।

**वीरगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने से प्राप्त होती है।

**वीरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शूरता। बहादुरी।

**वीरप्रसू**—वि० दे० "वीरमाता"।

**वीरभद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। २. उशीर। खस। ३. शिव के एक प्रसिद्ध गण जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं।

**वीरमंगल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] हाथी।

**वीरमाता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वीरमातृ ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करे। वीर-जननी।

**वीरललित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वीरों का सा, पर साथ ही कोमल, स्वभाव।

**वीरव्रती**—संज्ञा पुं० [ सं० वीरव्रतिन् ] वह जिसने वीरता का व्रत लिया हो। परम वीर।

**वीरशय्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] रणभूमि।

**वीरशैव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शैवों का एक भेद।

**वीरसू**—वि० स्त्री० [ सं० ] वीरों को उत्पन्न करनेवाली।

**वीरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मदिरा। शराब। २. वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हों।

**वीराचारी**—संज्ञा पुं० [ सं० वीराचारिन् ] एक प्रकार के वाममार्गी जो देवताओं की वीर भाव से उपासना करते हैं।

**वीरान**—वि० [ फ़ा० ] १. उजड़ा हुआ। जिसमें आबादी न रह गई हो २. श्रीहीन।

**वीराना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० वीरानः ] उजाड़ जगह।

**वीरासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

**वीरुध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लता। २. पौधा।

**वीर्य्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीर के सात धातुओं में से एक धातु जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है। शुक्र। रेत। बीज। २. दे० "रज"। ३. पराक्रम। बल। शक्ति। ४. बीज। बीआ।

**वृंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्तन का अगला भाग। कुचमुख। २. बौंड़ी। ढेंढ़ी।

**वृंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समूह। झुंड।

**वृंदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. तुलसी। २. राधिका का एक नाम।

**वृंदारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवता।

**वृंदावन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मथुरा जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का क्रीड़ा-क्षेत्र माना जाता है।

**वृक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भेड़िया। २. श्रृगाल। गीदड़। ३. कौवा। ४. क्षत्रिय।

**वृकोदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भीमसेन।

**वृक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पेड़। द्रुम। विटप। २. वृक्ष से मिलती-जुलती वह आकृति जिससे किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ आदि दी गई हों। जैसे—वंशवृक्ष।

**वृक्षायुर्वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।

**वृज**—संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।

**वृजिन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पाप। गुनाह। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ। ३. खाल।

**वृत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चरित्र। चरित। २. आचार। चाल-चलन। ३. समाचार। वृत्तांत। हाल। ४. जीविका का साधन। वृत्ति। ५. वह छंद जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। ६. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बीस वर्ण होते हैं। गंडका। दंडिका। ७. वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। ८. वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक विंदु उसके अन्दर के मध्यविंदु से समान अन्तर पर हो ( ज्यामिति )।

**वृत्तखंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २. मेहराब।

**वृत्तगंधि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह गद्य जिसमें अनुप्रास और समास अधिक हों।

**वृत्तचूड़**—वि० [ सं० ] मेहराबदार। संज्ञा पुं० मेहराब।

**वृत्तबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वृत्त या छंद के रूप में बना हुआ वाक्य।

**वृत्तांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घटना का विवरण। समाचार। हाल।

**वृत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह

कार्य जिसके द्वारा जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका। रोजी। २. वह धन जो किसी दीन या छात्र आदि को बराबर उसके सहायतार्थ दिया जाय। ३. सूत्रों आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए की जाती है। कारिका। ४. नाटकों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली जो चार प्रकार की कही गई है। ५. योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ६. व्यापार। कार्य्य। ७. स्वभाव। चेष्टा। प्रकृति। ८. संहार करने का एक प्रकार का शस्त्र।

**वृत्त्यनुप्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का अनुप्रास या शब्दालंकार। इसमें एक या कई व्यंजन वर्ण एक हो या भिन्न भिन्न रूपों में बार बार आते हैं।

**वृत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अँधेरा। २. मेघ। बादल। ३. शत्रु। दुश्मन। ४. पुराणानुसार त्वष्टा का पुत्र एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिए दधीचि ऋषि की हड्डियों का वज्र बना था।

**वृत्रहा**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**वृत्रासुर**—संज्ञा पुं० दे० "वृत्र" ४।

**वृथा**—वि० [ सं० ] [भाव० वृथात्व] बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।

क्रि० वि० बिना मतलब के। बेफायदा।

**वृद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मनुष्य की एक अवस्था जो सबके अंत में प्रायः ६० वर्ष के उपरांत आती है। बुढ़ापा। जरा।

वि० [ सं० ] वह जो वृद्धावस्था में पहुँच गया हो। बुड्ढा। पंडित। विद्वान्।

**वृद्धता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वृद्ध का भाव या धर्म। बुढ़ापा। २. पांडित्य।

**वृद्धश्रवा**—संज्ञा पुं० [ सं० वृद्धश्रवस् ] इंद्र।

**वृद्धा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो गई हो। बुड्ढी।

**वृद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव। बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। २. ब्याज। सूद। ३. वह अशौच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर होता है। ४. अभ्युदय। समृद्धि। ५. अष्टवर्ग के अंतर्गत एक प्रसिद्ध लता।

**वृश्चिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बिच्छू नामक प्रसिद्ध कीड़ा। २. वृश्चिककाली या बिच्छू नाम की लता। ३. मेष आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि जिसके सब तारों से बिच्छू का आकार बनता है।

**वृश्चिककाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बिच्छू नाम की लता जिसके रोएँ शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होती है।

**वृष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गौ का नर। साँड़। २. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ३. श्रीकृष्ण। ४. बारह राशियों में से दूसरी राशि।

**वृषकेतन, वृषकेतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**वृषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. कर्ण। ३. विष्णु। ४. साँड़। ५. घोड़ा। ६. अंडकोश। पोता।

**वृषध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। महादेव। २. गणेश। ३. पुराणानुसार एक पर्वत।

**वृषभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बैल या साँड़। २. साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ३. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष।

**वृषभध्वज**—संज्ञा पुं० दे० "वृषध्वज"।

**वृषभध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**वृषभानु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्री राधिकाजी के पिता जो नारायण के अंश से उत्पन्न माने जाते हैं।

**वृषल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शूद्र। २. पापी और दुष्कर्मी। ३. घोड़ा। ४. सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम।

**वृषली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्मृतियों के अनुसार वह कुँआरी कन्या जो रजस्वला हो गई हो। २. कुलटा। दुराचारिणी। ३. नीच जाति की स्त्री। ४. रजस्वला स्त्री।

**वृषवासी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिवजी।

**वृषवाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**वृषासुर**—संज्ञा पुं० दे० "भस्मासुर"।

**वृषादित्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वृषराशि में का सूर्य।

**वृषी**—संज्ञा पुं० [ सं० वृषिन् ] मयूर। मोर।

**वृषोत्सर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के नामपर साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।

**वृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वर्षा। बारिश। मेह। २. ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना या गिराया जाना। ३. किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना।

**वृष्टिमान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई।

**वृष्णि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेघ। बादल। २. यादववंश। ३. श्रीकृष्ण। ४. इंद्र। ५. अग्नि। ६. वायु।

**वृष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह चीज जिससे वीर्य, बल और आनंद बढ़ता हो।

**वृहती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कंटकारी। २. बनभंटा। बड़ी कटाई। ३. बैंगन। ४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में मगण, यगण और सगण होता है।

**वृहत्**—वि० [ सं० ] बड़ा। भारी। महान्।

**वृहद्रथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. यज्ञपात्र। ३. सामवेद।

**वृहन्नला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे अज्ञातवास में राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश में रहते थे।

**वृहस्पति**—संज्ञा पुं० दे० "बृहस्पति"।

**वेंकटगिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।

**वे**—वि० [ हिं० वह ] 'वह' का बहु० रूप।

**वेक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अच्छी तरह देखना या ढूँढ़ना।

**वेग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रवाह। बहाव। २. शरीर में से मल, मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति। ३. किसी ओर प्रवृत्त होने का जोर। तेजी। ४. शीघ्रता। जल्दी। ५. आनंद। प्रसन्नता। खुशी।

**वेग-धारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मल-मूत्र आदि का वेग रोकना।

**वेगवान्**—वि० [ सं० ] तेज चलनेवाला।

**वेगी**—संज्ञा पुं० [ सं० वेगिन् ] वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो। वेगवान्।

**वेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। २. राजा पृथु के पिता का नाम।

**वेणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी।

**वेणु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाँस। २. बाँस की बनी हुई वंशी। ३. दे० "वेण"।

**वेतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २. तनखाह। दर-माहा। महीना।

**वेतनभोगी**—संज्ञा पुं० [ सं० वेतनभोगिन् ] वह जो वेतन लेकर काम करता हो। वैतनिक।

**वेतस**—संज्ञा पुं० दे० "वेत्र"।

**वेतसी**—संज्ञा स्त्री० दे० "वेत्र"।

**वेताल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. द्वारपाल। संतरी। २. शिव के एक गणाधिप। ३. पुराणों के अनुसार भूत की एक प्रकार की योनि। ४. वह शव जिसपर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ५. छप्पय का छठा भेद।

**वेत्ता**—वि० [ सं० ] जाननेवाला। ज्ञाता।

**वेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बेंत।

**वेत्रधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] द्वारपाल। संतरी।

**वेत्रवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बेतवा नदी।

**वेत्रासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह आसन जिसमें बैठने की जगह बेंत से बुनी हो। जैसे कुर्सी, कोच आदि।

**वेत्रासुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर जो प्राग्ज्योतिष का राजा था।

**वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ जिनकी संख्या चार है। आम्नाय। श्रुति। आरम्भ में वेद केवल तीन ही थे—ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद। चौथा अथर्ववेद पीछे से वेदों में सम्मिलित हुआ था। २. किसी विषय का, विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञान। ३. वृत्त। ४. चित्त। ५. यज्ञांग।

**वेदज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो वेदों का ज्ञाता हो। २. ब्रह्मज्ञानी।

**वेदन**—संज्ञा पुं० दे० "वेदना"।

**वेदना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पीड़ा। व्यथा।

**वेदनिंदक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेदों की बुराई करनेवाला। २. नास्तिक।

**वेदमंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदों के मंत्र।

**वेदमाता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वेदमातृ ] १. गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। ३. सरस्वती।

**वेदवाक्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात जिसका खंडन न हो सकता हो।

**वेदव्यास**—संज्ञा पुं० दे० "व्यास" (१)।

**वेदांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदों के अंग या शास्त्र जो छः हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद।

**वेदांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उपनिषद् और आरण्यक आदि जो वेद

के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है। ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म। ज्ञानकांड। २. छः दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है। उत्तर मीमांसा। अद्वैतवाद।

**वेदांतसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महर्षि बादरायण-कृत सूत्र जो वेदांत-शास्त्र के मूल माने जाते हैं।

**वेदांती**—संज्ञा पुं० [ सं० वेदांतिन् ] वह जो वेदांत का अच्छा ज्ञाता हो। ब्रह्मवादी।

**वेदिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है। कुरसी। २. दे० "वेदी"।

**वेदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी शुभ कार्य, विशेषतः धार्मिक कार्य के लिए तैयार की हुई ऊँची भूमि।

**वेध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छेदना। बेधना। विद्ध करना। २. यंत्रों आदि की सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि को देखना।

**वेधक**—वि० [ सं० ] वेध करनेवाला। २. छेदनेवाला।

**वेधशाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ ग्रहों और नक्षत्रों आदि के वेध करने के यंत्र आदि रखे हों।

**वेधा**—संज्ञा पुं० [ सं० वेधस् ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य।

**वेधालय**—संज्ञा पुं० दे० "वेधशाला"।

**वेधी**—संज्ञा पुं० [ सं० वेधिन् ] [ स्त्री० वेधिनी ] वह जो वेध करता हो। वेध करनेवाला।

**वेपथु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कँपकपी। कंप।

**वेपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काँपना। कंप।

**वेला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. काल। समय। वक्त। २. दिन और रात का चौबीसवाँ भाग। ३. समुद्र की लहर।

**वेल्लि, वेल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० वल्ली ] वेल। लता।

**वेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कपड़े-लत्ते आदि से अपने आप को सजाना। २. किसी के कपड़े-लत्ते आदि पहनने का ढंग।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना=किसी के रूप-रंग और पहनावे की नकल करना।

३ पहनने के वस्त्र। पोशाक।

यौ०—वेशभूषा=पहनने के कपड़े आदि।

४. खेमा। तंबू। ५. घर। मकान।

**वेशधारी**—संज्ञा पुं० [ सं० वेशधारिन् ] वेश धारण करनेवाला।

**वेशवधू**—संज्ञा स्त्री० [सं० ] वेश्या।

**वेश्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घर। मकान।

**वेश्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गाने और कसब कमानेवाली औरत। रंडी। गणिका।

**वेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "वेश"। २ रंगमंच में नेपथ्य।

**वेष्टन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० वेष्टित] १. वह कपड़ा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय। बेठन। २. घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव। ३. उष्णीष। पगड़ी।

**वेष्टित**—वि० [ सं० ] किसी चीज से घेरा या लपेटा हुआ।

**वैं**—वि० १. दे० "वे"। २. दे० "वो"।

**वैकट्य**—संज्ञा पुं० [सं०] विकटता।

**वैकल्पिक**—वि० [ सं० ] १. जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। २. संदिग्ध। ३. जो अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके।

**वैकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीसरा पहर। अपराह्न।

**वैकाली**—वि० [ सं० ] तीसरे पहर का।

संज्ञा स्त्री० तीसरे पहर का जलपान।

**वैकुंठ**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. पुराणानुसार वह स्थान जहाँ भगवान् या विष्णु रहते हैं। २. विष्णु। ३. स्वर्ग।

**वैकृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विकार। खराबी। २. वीभत्स रस। वीभत्स रस का आलंबन; जैसे—रक्त, मांस, मज्जा, आदि।

वि० १. जो विकार से उत्पन्न हुआ हो। २. जो जल्दी ठीक न हो सके। दुःसाध्य।

**वैक्रम, वैक्रमीय**—वि० [सं०] विक्रम का। विक्रम संबंधी।

**वैक्रांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चुन्नी नामक मणि।

**वैकल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विकलता। व्याकुलता।

**वैखरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह स्वर जो उच्च और गंभीर हो और बहुत स्पष्ट सुनाई पड़े। २. वाक्शक्ति। ३. वाग्देवी।

**वैखानस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। २. एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन में रहते थे।

**वैक्लव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विक्लवता।

**वैचित्र्य**—संज्ञा पुं० दे० "विचित्रता"।

**वैजयंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र की पुरी का नाम। २. इंद्र।

**वैजयंती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पताका। झंडी। २. पाँच रंगों की एक प्रकार की माला।

**वैज्ञानिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। २. निपुण। दक्ष।

वि० विज्ञान-संबंधी। विज्ञान का।

**वैतनिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तनखाह लेकर काम करनेवाला। नौकर। भृत्य।

**वैतरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर है।

**वैताल,वैतालिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्तुति-पाठक जो राजाओं को स्तुति करके जगाता था।

**वैतालीय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त।

वि० वेताल-संबंधी। वेताल का।

**वैदग्ध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विदग्धता।

**वैदर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विदर्भ देश का राजा या शासक। २. दमयंती के पिता भीमसेन। ३. रुक्मिणी के पिता भीष्मक।

वि० विदर्भ देश का।

**वैदर्भी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. काव्य की वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों के द्वारा मधुर रचना होती है। २. दमयंती। ३. रुक्मिणी।

**वैदिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वेदों का पंडित।

वि० वेद-संबंधी। वेद का।

**वैदूर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का रत्न जिसे 'लहसुनिया' कहते हैं।

**वैदेशिक**—वि० [ सं० ] विदेश-संबंधी।

**वैदेही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विदेह राजा जनक की कन्या, सीता।

**वैद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पंडित। विद्वान्। २. वह जो आयुर्वेद के अनुसार रोगियों की चिकित्सा आदि करता हो। भिषक्। चिकित्सक।

**वैद्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद।

**वैद्युत**—वि० [ सं० ] विद्युत-संबंधी।

**वैध**—वि० [ सं० ] जो विधि के अनुसार हो। कायदे या कानून के मुताबिक। ठीक।

**वैधर्म्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विधर्मी होने का भाव। २. नास्तिकता।

**वैधव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विधवा होने का भाव। रँड़ापा।

**वैधानिक**—वि० [ सं० ] १. विधान या संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला। २. विधान या नियमों के अनुकूल।

**वैधेय**—वि० [ सं० ] विधि-संबंधी। विधि का।

**वैनतेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विनता की संतान। २. गरुड़। ३. अरुण।

**वैपरीत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विपरीतता।

**वैभव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धन-संपत्ति। दौलत। विभव। २. महत्त्व। बड़प्पन।

**वैभवशाली**—संज्ञा पुं० [सं०] जिसके पास बहुत धन-संपत्ति हो। मालदार।

**वैमनस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मनमुटाव। २. वैर। दुश्मनी।

**वैमात्र, वैमात्रेय**—वि० [ सं० ] [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

**वैमानिक**—वि० [ सं० ] विमान-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. वह जो विमान पर सवार हो। २. हवाई जहाज चलानेवाला।

**वैयक्तिक**—वि० [ सं० ] किसी एक व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। व्यक्तिगत। 'सामूहिक' का उलटा।

**वैयाकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो व्याकरण का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पंडित।

**वैर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० वैरता ] शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

**वैरशुद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी से वैर का बदला चुकाना।

**वैरागी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २. उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

**वैराग्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मन की वह वृत्ति जिससे लोग संसार की झंझटें छोड़कर एकांत में ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति।

**वैराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परमात्मा। २. ब्रह्मा। ३. दे० "वैराज्य"।

**वैराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ही देश में दो राजाओं का शासन। २. वह देश जहाँ इस प्रकार की शासन-प्रणाली हो।

**वैरी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दुश्मन। शत्रु।

**वैरूप्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विरूपता। शकल का भद्दापन।

**वैलक्षण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विलक्षणता। २. विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

**वैवस्वत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. एक रुद्र। ३. एक मनु। ४. वर्त्तमान मन्वंतर का नाम।

**वैवाहिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कन्या अथवा वर का श्वशुर। समधी।
वि० विवाह-संबंधी। विवाह का।

**वैशंपायन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

**वैशाख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

**वैशाखी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वैशाख मास की पूर्णिमा।

**वैशाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी। विशाल नगरी। विशालपुरी। ( मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ़ नामक गाँव। )

**वैशिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साहित्य के अनुसार वेश्यागामी नायक।

**वैशेषिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छः दर्शनों में से एक जो महर्षि कणाद-कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ-विद्या। औलूक्य दर्शन। २. वैशेषिक दर्शन का माननेवाला।
वि० किसी विशेष विषय आदि से संबंध रखनेवाला। जैसे, वैशेषिक विद्यालय।

**वैश्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण। इनका धर्म्म यजन, अध्ययन और पशुपालन तथा वृत्ति कृषि और वाणिज्य है।

**वैश्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वैश्य का भाव या धर्म्म। वैश्यत्व।

**वैश्वजनीन**—वि० [ सं० ] विश्व भर के लोगों से संबंध रखनेवाला। सब लोगों का।

**वैश्वदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय।

**वैश्वानर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अग्नि। २. परमात्मा। ३. चेतन।

**वैषम्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विषमता।

**वैषयिक**—वि० [ सं० ] विषय-संबंधी। विषय का।
संज्ञा पुं० विषयी। लंपट।

**वैष्णव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० वैष्णवी ] १. विष्णु की उपासना करनेवाला। २. हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग विष्णु की उपासना करते और विशेष आचार-विचार से रहते हैं।
वि० विष्णु-संबंधी। विष्णु का।

**वैष्णवी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विष्णु की शक्ति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी।

**वैसा**—वि० [ हिं० वह+सा ] उस तरह का।

**वैसे**—क्रि० वि० [ हिं० वैसा ] उस तरह।

**वोक**—संज्ञा पुं० [ ? ] ओर। तरफ।

**वोट**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] किसी चुनाव में दी जानेवाली राय। मत।

**वोटर**—संज्ञा पुं० [ अं० ] वह जो किसी चुनाव में राय देता हो। मत-दाता।

**वोटिंग**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] किसी चुनाव के लिए वोट या मत लिया जाना।

**वोल्लाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह घोड़ा जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रंग के हों।

**वोहित्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बड़ी नाव।

**व्यंग्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शब्द का वह गूढ़ अर्थ जो उसकी व्यंजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो। २. ताना। बोली। चुटकी।

**व्यंजक**—वि० [ सं० ] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला।

**व्यंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। २. अवयव। अंग। ३. तरकारी और साग आदि जो चावल, रोटी आदि के साथ खाये जाते हैं। ४. पका हुआ भोजन। ५. वर्णमाला में का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जा सकता हो। हिंदी वर्णमाला में "क" से "ह" तक के सब वर्ण।

**व्यंजना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रकट करने की क्रिया। २. शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो।

**व्यक्त**—वि० [ सं० ] [ भाव० व्यक्तता ] १. प्रकट। जाहिर। २. साफ। स्पष्ट।

**व्यक्तगणित**—संज्ञा पुं० दे० "अंक-गणित"।

**व्यक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकट होना।

संज्ञा पुं० मनुष्य या किसी और शरीर धारी का शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाती है। समष्टि का उलटा। व्यष्टि। मनुष्य। आदमी।

**व्यक्तिगत**—वि० [ सं० ] किसी व्यक्ति से संबंध रखनेवाला। निजी।

**व्यक्तित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. व्यक्ति का गुण या भाव। २. वे विशिष्ट गुण जिनके कारण किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सिद्ध होती है।

**व्यग्र**—वि० [ सं० ] [ भाव० व्यग्रता ] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. काम में फँसा हुआ।

**व्यजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पंखा।

**व्यतिक्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. क्रम में होनेवाला उलट-फेर। २. बाधा। विघ्न।

**व्यतिरिक्त**—क्रि० वि० [ सं० ] अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

**व्यतिरेक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अभाव। २. भेद। अंतर। ३. अतिक्रम। ४. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है।

**व्यतिरेकी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यतिरेकिन् ] वह जो किसी को अतिक्रमण करके जाता हो।

**व्यतिव्यस्त**—वि० [ सं० ] अस्त-व्यस्त।

**व्यतीत**—वि० [ सं० ] बीता हुआ। गत।

**व्यतीतना***—क्रि० अ० दे० "बीतना"।

**व्यतीपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बहुत बड़ा उत्पात। २. ज्योतिष में एक योग जिसमें यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध है।

**व्यत्यय**—संज्ञा पुं० दे० "व्यतिक्रम"।

**व्यथा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पीड़ा। वेदना। तकलीफ। २. दुःख। क्लेश।

**व्यथित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० व्यथिता ] १. जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो। २. दुःखित। रंजीदा।

**व्यभिचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बुरा या दूषित आचार। बदचलनी। २. स्त्री का पर-पुरुष से अथवा पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित संबंध। छिनाला।

**व्यभिचारी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यभिचारिन् ] [ स्त्री० व्यभिचारिणी ] १. मार्ग-भ्रष्ट। २. बदचलन। ३. पर-स्त्री-गामी। ४. दे० "संचारी" ( भाव )।

**व्यय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खर्च। २. खपत। ३. नाश। बरबादी।

**व्ययी**—वि० [ सं० व्ययिन् ] व्यय करनेवाला। खर्चीला।

**व्यर्थ**—वि० [ सं० ] [ भाव० व्यर्थता ] १. बिना माने का। अर्थ-रहित। २. जिसमें कोई लाभ न हो। निरर्थक।

क्रि० वि० फजूल। योंही।

**व्यलीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपराध। कसूर। २. छल-कपट। ३. दुःख। ४. विट।

**व्यवकलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रकम में से दूसरी रकम घटाना। बाकी निकालना।

**व्यवच्छेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० व्यवच्छिन्न ] १. पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव। २. विभाग। हिस्सा। ३. विराम। ठहराव।

**व्यवधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह चीज जो बीच में पड़कर आड़ करती हो। परदा। २. भेद। विभाग। खंड। ३. विच्छेद।

**व्यवसाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रोजगार। व्यापार। २. जीविका। ३. काम-धंधा।

**व्यवसायी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यवसायिन् ] १. व्यवसाय करनेवाला। २. रोजगारी।

**व्यवस्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी कार्य्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो।

**मुहा०**—व्यवस्था देना=पंडितों आदि का किसी विषय में शास्त्रों का विधान बतलाना।

२. चीजों को सजाकर या ठिकाने से रखना। ३. प्रबंध। इंतजाम। ४. स्थिरता। स्थिति।

**व्यवस्थाता**—संज्ञा पुं० दे० "व्यवस्थापक"।

**व्यवस्थापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला। २. वह जो किसी कार्य्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो। ३. प्रबन्धकर्ता। इंतजामकार।

**व्यवस्थापत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो।

**व्यवस्थापिका सभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी देश के प्रतिनिधियों आदि की वह सभा जो देश के लिए कानून आदि बनाती है।

**व्यवस्थित**—वि० [ सं० ] जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। कायदे का।

**व्यवहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. क्रिया । कार्य्य । काम । २. आपस में एक दूसरे के साथ बरतना । बरताव । ३. व्यापार । रोजगार । ४. लेन-देन का काम । महाजनी । ५. झगड़ा । विवाद । ६. मुकदमा ।

**व्यवहारतः**—क्रि० वि० [ सं० ] व्यवहार की दृष्टि से । उपयोग के विचार से ।

**व्यवहार-शास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निर्णय करना चाहिए और किस अपराध के लिए कितना दंड देना चाहिए आदि । धर्म्मशास्त्र ।

**व्यवहार्य**—वि० [ सं० ] व्यवहार या काम में लाने के योग्य ।

**व्यवहृत**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा व्यवहृति ] १. जिसका आचरण या अनुष्ठान किया गया हो । २. जो काम में लाया गया हो ।

**व्यष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समष्टि का एक विशिष्ट और पृथक् अंश । समष्टि का उलटा ।

**व्यसन**-संज्ञा पुं० [सं०] १. विपत्ति । आफत । २. कोई बुरी या अमंगल बात । ३. विषयों के प्रति आसक्ति । ४. वह दोष जो काम या क्रोध आदि विकारों से उत्पन्न हुआ हो । ५. किसी प्रकार का शौक ।

**व्यसनी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यसनिन्] वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो ।

**व्यस्त**—वि० [ सं० ] १. घबराया हुआ । व्याकुल । २. काम में लगा या फँसा हुआ । ३. व्याप्त ।

**व्याकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है ।

**व्याकुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [भाव० व्याकुलता] घबराया हुआ । विकल । २. बहुत अधिक उत्कंठित ।

**व्याक्रोश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना । २. चिल्लाना ।

**व्याख्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० व्याख्यात ] १. वह वाक्य आदि जो किसी जटिल वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो । टीका । व्याख्यान । २. कहना । वर्णन ।

**व्याख्याता**—संज्ञा पुं० [ सं० व्याख्यातृ ] १ व्याख्या करनेवाला । २. भाषण करनेवाला ।

**व्याख्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम । २. वक्तृता । भाषण ।

**व्याघात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विघ्न । खलल । बाधा । २. आघात । प्रहार । मार । ३. ज्योतिष में एक अशुभ योग । ४. एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय या साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है ।

**व्याघ्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाघ । शेर ।

**व्याघ्रचर्म्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बाघ या शेर की खाल जिस पर प्रायः लोग बैठते हैं ।

**व्याघ्रनख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शेर का नाखून जो प्रायः बच्चों के गले में, उन्हें नजर से बचाने के लिए, पहनाया जाता है । २. नख नामक गंध-द्रव्य ।

**व्याज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कपट । छल फरेब । २. बाधा । विघ्न । खलल । ३. विलंब । देर । संज्ञा पुं० दे० "ब्याज" ।

**व्याजनिंदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े । २. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार की निंदा की जाती है ।

**व्याजस्तुति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े । २. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है ।

**व्याजोक्ति**—संज्ञा ० [ सं० ] १. कपट भरी बात । २. एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिए किसी प्रकार का बहाना किया जाता है ।

**व्याडि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था ।

**व्याध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो जंगली पशुओं आदि का शिकार करता हो । शिकारी । २. एक प्राचीन जाति जो जंगली पशुओं को मारकर अपना निर्वाह करती थी ।

**व्याधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रोग । बीमारी । २. आफत । झंझट । ३. विरह या काम आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग होना । ( साहित्य )

**व्यान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शरीर की पाँच वायुओं में से एक जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी जाती है ।

**व्यापक**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा व्यापकता ] १. चारों ओर फैला हुआ। २. घेरने या ढकनेवाला। आच्छादक।

**व्यापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याप्त होना। फैलना।

**व्यापना**—क्रि० अ० [ सं० व्यापन ] किसी चीज के अंदर फैलना। व्याप्त होना।

**व्यापार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कर्म। कार्य। काम। २. क्रय-विक्रय का कार्य। रोजगार। व्यवसाय।

**व्यापारिक**—वि० [ सं० ] व्यापार-संबंधी। रोजगार का।

**व्यापारी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्यापारिन् ] व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी।
वि० [ सं० व्यापार ] व्यापार-संबंधी।

**व्यापित**—वि० [ स्त्री० व्यापिता ] दे० "व्याप्त"।

**व्याप्त**—वि० [ सं० ] चारों ओर फैला या भरा हुआ।

**व्याप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव। २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। ३. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

**व्यामोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मोह। अज्ञान।

**व्यायाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह शारीरिक श्रम जो बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है। कसरत। जोर। २. परिश्रम।

**व्यायोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

**व्याल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० व्याली ] १. साँप। २. बाघ। शेर। ३. राजा। ४. विष्णु। ५. दंडक छंद का एक भेद।

**व्यालि**—संज्ञा पुं० दे० "व्याडि"।

**व्यालू**†—संज्ञा स्त्री०, पुं० [ सं० वेला ] रात के समय का भोजन। रात का खाना।

**व्यावहारिक**—वि० [ सं० ] १. व्यवहार-संबंधी। व्यवहार या बरताव का। २. व्यवहारशास्त्र-संबंधी।

**व्यासंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।

**व्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि अठारहो पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्हीं ने की थी। २. वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणों आदि की कथाएँ लोगों को सुनाता हो। कथावाचक। ३. वह रेखा जो किसी बिलकुल गोल रेखा या वृत्त के किसी एक स्थान से बिलकुल सीधी चलकर केंद्र से होती हुई दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ४. विस्तार। फैलाव।
**यौ०**—व्यास-समास=घटाना-बढ़ाना। काट-छाँट।

**व्याहत**—वि० [ सं० ] १. मना किया हुआ। निषिद्ध। २. व्यर्थ।

**व्याहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वाक्य। जुमला।

**व्याहृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कथन। उक्ति। २. भूः, भुवः, स्वः इन तीनों का मंत्र।

**व्युत्पत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति-स्थान। २. शब्द का वह मूल-रूप, जिससे वह शब्द निकला हो। ३. किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान।

**व्युत्पन्न**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा व्युत्पन्नता ] जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

**व्यूह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३. शरीर। बदन। ४. सेना। फौज। ५. युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। सेना का विन्यास।

**व्योम**—संज्ञा पुं० [ सं० व्योमन् ] १. आकाश। आसमान। २. जल। ३. बादल।

**व्योमकेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

**व्योमचारी**—संज्ञा पुं० [ सं० व्योमचारिन् ] १. देवता। २. पक्षी। चिड़िया। ३. वह जो आकाश में विचरण करता हो।

**व्योमयान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह यान या सवारी जिस पर चढ़कर मनुष्य आकाश में उड़ सकता हो। विमान। हवाई जहाज।

**व्रज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जाना या चलना। गमन। २. समूह। झुंड। ३. मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का प्रांत जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीला-क्षेत्र है।

**व्रजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चलना। जाना।

**व्रजभाषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मथुरा, आगरा और इसके आस-पास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा। इधर चार-पाँच सौ वर्षों के उत्तर भारत के अधिकांश कवियों ने प्रायः इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमें से सूर, तुलसी, बिहारी, आदि बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं।

**व्रजमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

**व्रजराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**व्रजांगना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] व्रज की स्त्री।

**व्रजेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] श्रीकृष्ण।

**व्रज्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. घूमना फिरना। पर्य्यटन। २. गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई।

**व्रण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीर में का फोड़ा। २. क्षत। घाव।

**व्रणी**—वि० [ सं० व्रण ] १. जिसे फोड़ा हुआ हो। २. घायल।

**व्रत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भोजन करना। भक्षण। खाना। २. किसी पुण्यतिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति के विचार से नियमपूर्वक उपवास करना। ३. संकल्प।

**व्रतिक, व्रती**—संज्ञा पुं० [ सं० व्रतिन् ] १. वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २. यजमान। ३. ब्रह्मचारी।

**व्राचड़**—संज्ञा स्त्री० [ अप० ] १. अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में था। २. पैशाचिक भाषा का एक भेद।

**व्रात्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. वह जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो। ऐसा मनुष्य पतित या अनार्य्य समझा जाता है। ३. दोगला। वर्ण-संकर।

**व्रीड़ा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लज्जा। शरम।

**व्रीहि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धान। चावल।

—:o:—

# श

**श**—हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण प्रधानतया तालू की सहायता से होता है, इससे इसे तालव्य श कहते हैं।

**शं**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कल्याण। मंगल। २. सुख। ३. शांति। ४. वैराग्य। वि० शुभ।

**शंक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भय। डर। आशंका।

**शंकना**—क्रि० अ० [ सं० शंका ] १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना।

**शंकर**—वि० [ सं० ] १. मंगल करनेवाला। २. शुभ। ३. लाभदायक।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। शंभु। २. दे० "शंकराचार्य्य"। ३. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

संज्ञा पुं० दे० "संकर"।

**शंकरशैल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कैलास।

**शंकरस्वामी**—संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य्य"।

**शंकराचार्य्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अद्वैत मत के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य्य जिनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल देश में हुआ था और जो ३२ वर्ष की अल्प आयु में स्वर्गवासी हुए थे।

**शंकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती।

**शंका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनिष्ट का भय। डर। खौफ। खटक। २. संदेह। आशंका। संशय। शक। ३. अपने किसी अनुचित व्यवहार आदि से होनेवाली इष्ट-हानि की चिंता। साहित्य का एक संचारी भाव।

**शंकालु**—वि० [ सं० ] जिसे शीघ्र शंका हो। संदेहशील। शक्की।

**शंकित**—वि० [सं०] [स्त्री० शंकिता] १. डरा हुआ। २. जिसे संदेह हुआ हो। ३. अनिश्चित। संदेहयुक्त।

**शंकु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोई नुकीली वस्तु। २. मेख। कील। ३. खूँटी। ४. भाला। बरछा। ५. गाँसी। फल। ६. लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटिकी एक संख्या। शंख। ७. कामदेव। ८. शिव। ९. वह खूँटी जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सूर्य्य या दीए की छाया आदि नापने में होता था।

**शंख**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है इसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता और देवताओं के आगे बाजे की भाँति बजाया जाता है। कंबु। २. दस खर्व की एक संख्या। ३. हाथी का गंडस्थल। ४. एक दैत्य। शंखासुर। ५. एक निधि। ६. छप्पय का एक भेद। ७. दंडक वृत्त के अंतर्गत प्रचित का एक भेद। ८. वि० (व्यंग्यार्थक) मूर्ख। ढपोरशंख।

**शंखचूड़**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक राक्षस जो कृष्ण द्वारा मारा गया था। २. कुबेर के दूत और सखा का नाम। ३. एक प्रकार का जहरीला साँप।

**शंखद्राव**—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का अर्क जिसमें शंख भी गल जाता है।

**शंखधर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

**शंखनारी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छः वर्णों का एक वृत्त। सोमराजी।

**शंखपाणि**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**शंख-विष**—संज्ञा पुं० दे० "संखिया"।

**शंखासुर**—संज्ञा पुं० [सं०] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था। इसी को मारने के लिए विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था।

**शंखाहुली**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शंखपुष्पी। दे० "कौड़ियाला"। २. सफेद अपराजिता।

**शंखिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की वनौषधि। २. पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक भेद।

**शंखिनी-डंकिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उन्माद।

**शंजरफ**—संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।

**शंठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नपुंसक। हीजड़ा। २. मूर्ख। बेवकूफ।

**शंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नपुंसक। हीजड़ा। २. वह जिसे संतान न होती हो। ३. साँड़।

**शंडामर्क**—संज्ञा पुं० [सं०] शंड और मर्क नाम के दो दैत्य।

**शंतनु**—संज्ञा पुं० दे० "शांतनु"।

**शंतनु-सुत**—संज्ञा पुं० दे० "भीष्मपितामह"।

**शंपा**—संज्ञा स्त्री० [सं० शम्पा] १. विद्युत्। बिजली। २. कमर। कटि।

**शंबर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक दैत्य जो इंद्र के बाण से मारा गया था। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ३. युद्ध। लड़ाई।

**शंबरारि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शंबर का शत्रु, कामदेव। मदन। २. प्रद्युम्न।

**शंबुक**—संज्ञा पुं० [सं०] घोंघा।

**शंबूक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तपस्वी शूद्र, जिसकी तपस्या के कारण रामराज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल-मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मण-पुत्र को जिलाया था। २. घोंघा। ३. शंख।

**शंभु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २. ग्यारह रुद्रों में से एक। ३. एक दैत्य का नाम। ४. उन्नीस वर्णों का एक वृत्त।
संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।

**शंभुगिरि**—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

**शंभुबीज**—संज्ञा पुं० [सं०] पारा। पारद।

**शंभुभूषण**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**शंभुलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] कैलास।

**श**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. कल्याण। मंगल। ३. शस्त्र। हथियार।

**शऊर**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. काम करने की योग्यता। ढंग। २. बुद्धि। अक्ल।

**शऊरदार**—संज्ञा पुं० [अ० शऊर + फ़ा० दार (प्रत्य०)] जिसमें शऊर हो। हुनरमंद।

**शक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति। पुराणों में इस जाति की उत्पत्ति सूर्य्यवंशी राजा नरिष्यंत से कही गई है; पर पीछे यह म्लेच्छों में गिनी जाने लगी थी। २. वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई संवत् चले। ३. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।
संज्ञा पुं० [अ०] शंका। संदेह।

**शकट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. छकड़ा। बैलगाड़ी। २. भार। बोझ। ३. शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने

मारा था। ४. शरीर। देह।

**शकटासुर**—संज्ञा पुं० दे० "शकट" ३.।

**शकड़**—संज्ञा पुं० [ सं० शकट ] मचान

**शकर**—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्कर"।

**शकरकंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० शकर+ सं० कंद ] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद। कंदा।

**शकरपारा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। २. चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान। ३. शकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।

**शकल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० शक्ल ] १. मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। २. मुख का भाव। चेष्टा। ३. बनावट। गढ़न। ढाँचा। ४. आकृति। स्वरूप। ५. उपाय। तरकीब। ढब। संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चमड़ा। २. छाल। ३. अंश। खंड। टुकड़ा।

**शकाब्द**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत्। ( ईसवी संवत् में से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है। )

**शकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शक-वंशीय व्यक्ति।

**शकारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विक्रमादित्य।

**शकुंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पक्षी। चिड़िया। २. विश्वामित्र के लड़के का नाम।

**शकुंतला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी।

**शकुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं।

मुहा०—शकुन विचारना या देखना = कोई कार्य्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं। २. शुभ मुहूर्त्त या उसमें होनेवाला कार्य। ३. पक्षी। चिड़िया।

**शकुनशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो।

**शकुनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पक्षी। चिड़िया। २. एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र था। ३. कौरवों का मामा जो दुर्योधन का मंत्री और कौरवों के नाश का मुख्य कारण था।

**शक्कर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शर्करा, मि० फ़ा० शकर ] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

**शक्करी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वर्ण-वृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की संज्ञा।

**शक्की**—वि० [ अ० शक+ई ( प्रत्य० ) ] जिसे हर बात में संदेह हो। शक करनेवाला।

**शक्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शक्तिसंपन्न। समर्थ।

**शक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बल। पराक्रम। ताकत। जोर। २. दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालनेवाला बल। ३. वश। अधिकार। ४. राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाती है। ५. बड़ा और पराक्रमी राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो। ६. न्याय के अनुसार वह संबंध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करनेवाले शब्द में होता है। ७. प्रकृति। माया। ८. तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। ९. दुर्गा। भगवती। १०. गौरी। ११. लक्ष्मी। १२. एक प्रकार का शस्त्र। साँग। १३. तलवार।

**शक्तिधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कार्त्तिकेय।

**शक्तिपूजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शाक्त। २. तांत्रिक। वाममार्गी।

**शक्तिपूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शक्ति का शाक्त द्वारा होनेवाला पूजन।

**शक्तिमत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शक्तिमान् होने का भाव। ताकत।

**शक्तिमान्**—वि० [ सं० शक्तिमत् ] [ स्त्री० शक्तिमती ] बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर।

**शक्तिशाली**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० शक्तिशालिनी ] बलवान्। ताकतवर।

**शक्तिशील**—वि० [ स्त्री० शक्तिशीला ] दे० "शक्तिशाली"।

**शक्तिहीन**—वि० [ सं० ] १. बल-हीन। निर्बल। असमर्थ। २. नामर्द। नपुंसक।

**शक्ती**—संज्ञा पुं० [ सं० शक्ति ] अठारह मात्राओं के एक मात्रिक छंद का नाम।

**शक्तु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्तू।

**शक्य**—वि० [ सं० ] १. किया जाने योग्य। संभव। क्रियात्मक। २. जिसमें शक्ति हो।

संज्ञा पुं० शब्द-शक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ। ( व्याकरण )

**शक्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शक्य होने का भाव या धर्म। क्रियात्मकता।

**शक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. रगण का चौथा भेद जिसमें छः

माशाएँ होती हैं।

**शक्रचाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र-धनुष।

**शक्रप्रस्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र-प्रस्थ।

**शक्ल**—संज्ञा स्त्री० दे० "शकल"।

**शख्स**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ भाव० शख्सियत ] व्यक्ति। जन।

**शगल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. व्यापार। काम-धंधा। २. मनोविनोद।

**शगुन**—संज्ञा पुं० [ सं० शकुन ] १. दे० "शकुन"। २. एक प्रकार की रसम जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है। तिलक। टीका।

**शगुनियाँ**—संज्ञा पुं० [हिं० शगुन + इयाँ ( प्रत्य० )] साधारण कोटि का ज्योतिषी।

**शगूफा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. बिना खिला हुआ फूल। कली। २. पुष्प। फूल। ३. कोई नई और विलक्षण घटना।

**शचि, शची**—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो पुलोमा की कन्या थी।

**शचीपति, शचीश**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**शजरा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वंश-वृक्ष। कुर्सीनामा। वंशावली। २. पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नकशा।

**शठ**—वि० [ सं० ] १. धूर्त। चालाक। धोखेबाज। २. पाजी। लुच्चा। बदमाश। ३. मूर्ख। बेव-कूफ।

संज्ञा पुं० साहित्य में वह पति या नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।

**शठता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शठ का भाव या धर्म्म। धूर्तता। २. बदमाशी।

**शत**—वि० [ सं० ] दस का दस गुना। सौ।

संज्ञा पुं० सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००।

**शतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शतिका ] १. सौ का समूह। २. एक ही तरह की सौ चीजों का संग्रह। ३. शताब्दी।

**शतघ्नी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्राचीन काल का एक कार का शस्त्र।

**शतदल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पद्म।

**शतद्रु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सतलज नदी।

**शतधा**—अव्य० [ सं० ] १. सैकड़ों बार। २. सैकड़ो प्रकार से। ३. सैकड़ों टुकड़ो में।

**शतपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कमल। २. सेवती। शतपत्री। ३. मोर नामक पक्षी।

**शतपथ ब्राह्मण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण। इसके कर्त्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

**शतपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कन-खजूरा। गोजर। चींटी।

**शतभिषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चौबीसवाँ नक्षत्र जो सौ तारों का समूह है और जिसकी आकृति मंडलाकार है।

**शतरंज**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मि० सं० चतुरंग ] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।

**शतरंजी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वह दरी जो कई प्रकार के रंग-बिरंगे सूतों से बनी हो। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

**शतरूपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी जिसके गर्भ से स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति हुई थी।

**शतशः**—वि० [ सं० ] १. सैकड़ों। २. सौ गुना।

**शतांश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सौ हिस्सों में से एक। १०० वाँ भाग।

**शतानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कृष्ण। ४. गोतम मुनि। ५. राजा जनक के एक पुरोहित।

**शतानीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वृद्ध पुरुष। २. पुराणानुसार चंद्र-वंश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था। ३. सौ सिपाहियों का नायक।

**शताब्दी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सौ वर्षों का समय। २. किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय।

**शतायुध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रोंवाला।

**शतायु**—संज्ञा पुं० [ सं० शतायुस् ] वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो।

**शतावधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

**शतावर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शता-वरी ] सतावर नाम की ओषधि। सफेद मुसली।

**शती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शतिन् ]

१. सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे—दुर्गा सप्तशती। २. किसी संवत् या सन् का सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्षों तक का समय। शताब्दी। सदी।

**शत्रु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] रिपु। अरि। दुश्मन।

**शत्रुघ्न**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] राम के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

**शत्रुता**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शत्रु का भाव या धर्म्म। दुश्मनी। वैर भाव।

**शत्रुताई**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शत्रुता"।

**शत्रुदमन**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शत्रुघ्न"।

**शत्रुमर्दन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शत्रुघ्न।

**शत्रुसाल**—वि॰ [ सं॰ शत्रु+हिं॰ सालना ] शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला।

**शनाख्त**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. पहचानने की क्रिया पहचान। २. जान-पहचान। परिचय।

**शनि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। सूर्य से इसका अंतर ८८२०००००० मील है और सूर्य की परिक्रमा में इसको २९ वर्ष और १६७ दिन लगते हैं। २. दुर्भाग्य। अभाग्य।

**शनिवार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार।

**शनिश्चर**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शनि"।

**शनैः**—अव्य॰ [ सं॰ ] धीरे। आहिस्ता।

**शनैश्चर**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शनि"।

**शपथ**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. कसम। सौगंद। २. दे॰ "दिव्य"। ३. प्रतिज्ञा या दृढ़तापूर्वक कोई काम करने या न करने के संबंध में कथन। कौल। वचन।

**शफ़तालू**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] एक प्रकार का बड़ा आड़ू। सताल्।

**शबल**—वि॰ [ सं॰ ] १. चितकबरा। २. रंगबिरंगा। बहुरंगा।

**शबलित**—वि॰ दे॰ "शबल"।

**शब्द**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] ध्वनि। आवाज। २. वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो। ३. किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद।

**शब्दचित्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अनुप्रास नामक अलंकार।

**शब्द-प्रमाण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के ही आधार पर हो।

**शब्दब्रह्म**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वेद।

**शब्दभेद**—संज्ञा पुं॰ १. व्याकरण के अनुसार शब्द की कोटि। २. दे॰ "शब्दवेध"।

**शब्दभेदी**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शब्दवेधी"।

**शब्दवेध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] लक्ष्य को बिना देखे केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके उसपर निशाना लगाना।

**शब्दवेधी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शब्दवेधिन् ] १. वह जो बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारता हो। २. अर्जुन। ३. दशरथ।

**शब्दशक्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है। यह तीन प्रकार की है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

**शब्दशास्त्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] व्याकरण।

**शब्दसाधन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है।

**शब्दाडंबर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बड़े बड़े शब्दों का ऐसा प्रयोग जिसमें भाव की बहुत ही न्यूनता हो। शब्द-जाल।

**शब्दानुशासन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] व्याकरण।

**शब्दालंकार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे—अनुप्रास आदि।

**शब्दित**—वि॰ [ सं॰ ] १. जिसमें शब्द होता हो। २. बोलता हुआ।

**शम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ शमता ] १. शांति। २. मोक्ष। ३. उपचार। ४. अंतःकरण तथा बाह्य इंद्रियों का निग्रह। ५. साहित्य में शांत रस का स्थायी भाव। ६. क्षमा।

**शमन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान। २. यम। ३. हिंसा। ४. शांति। ५. दमन।

**शमलोक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्वर्ग।

**शमशेर**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] तलवार।

**शमा**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ शमअ ] मोमबत्ती।

**शमादान**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं।

**शमित**—वि॰ [ सं॰ ] १. जिसका शमन किया गया हो। २. शांत। ठहरा हुआ।

**शमी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शिवा ? ]

एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। विजया-दशमी पर इसका पूजन भी करते हैं। सफेद कीकर। छिकुर। छोंकर।

**शमीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि। परीक्षित ने इनके गले में एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया था, परन्तु कुछ बाले

**शयन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निद्रा लेना। सोना। २. शय्या। बिछौना।

**शयन आरती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शयन+आरती ] देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है।

**शयनगृह**—संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।

**शयनबोधिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

**शयनागार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सोने का स्थान। शयन-मंदिर। शयनगृह।

**शयनालय**—संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।

**शयित**—वि० [ सं० ] १. सोया हुआ। निद्रित। २. शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।

**शय्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बिस्तर। बिछौना। बिछावन। २. पलंग। खाट। खटिया।

**शय्यादान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृतक के उद्देश्य से महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जा-दान।

**शर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाण। तीर। नाराच। २. सरकंडा। सरई। ३. सरपत। रामशर। ४. दूध या दही की मलाई। ५. भाले का फल। ६. चिता। ७. पाँच की संख्या। ८. एक असुर का नाम।

**शरण**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रक्षा। आड़। आश्रय। २. बचाव की जगह। ३. घर। मकान। ४. अधीन। मातहत।

**शरणगृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिए छिपकर रहते हैं।

**शरणागत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरण में आया हुआ व्यक्ति। २. शिष्य। चेला।

**शरणार्थी**—संज्ञा पुं० [ सं० शरणार्थिन् ] १. शरण माँगनेवाला। अपनी रक्षा की प्रार्थना करनेवाला। २. विपत्ति आदि के कारण किसी दूसरे स्थान से भागकर आया हुआ।

**शरणालय**—संज्ञा पुं० दे० "शरण-गृह"।

**शरणी**—वि० [ सं० शरण ] शरण देनेवाली।

**शरण्य**—वि० [ सं० ] शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला।

**शरत**—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्त" और "शरत्"।

**शरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. "शर" का भाव। २. तीरंदाजी।

**शरतिया**—क्रि० वि० दे० "शर्तिया"।

**शरद्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वर्ष। साल। २. एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है।

**शरत्काल**—संज्ञा पुं० दे० "शरद्" २।

**शरद**—संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।

**शरद पूर्णिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कुआर मास की पूर्णमासी। शरद पूनो।

**शरदचंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० शरच्चंद्र ] शरद् ऋतु का चंद्रमा।

**शरद्वत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन ऋषि।

**शरपट्टा**—संज्ञा पुं० [ सं० शर+हिं० पट्टा ] एक प्रकार का शस्त्र।

**शरपुंख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सरफोंका। २. तीर में लगा हुआ पंख।

**शरबत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. पीने की मीठी वस्तु। रस। २. चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क। ३. पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड़।

**शरबती**—संज्ञा पुं० [ हिं० शरबत+ई (प्रत्य०) ] १. एक प्रकार का हल्का पीला रंग। २. एक प्रकार का नगीना। ३. एक प्रकार का नीबू। ४. एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

**शरभंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन महर्षि। वनवास के समय रामचन्द्र इनके दर्शन करने गये थे।

**शरभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राम की सेना का एक बंदर। २. टिड्डी। ३. हाथी का बच्चा। ४. विष्णु। ५. एक प्रकार का पक्षी। ६. आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। ७. एक वृत्त का नाम। शशिकला। मणिगुण। ८. दोहे का एक भेद। ९. शेर।

**शरम**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० शर्म ] १. लज्जा। हया।

मुहा०—शरम से गड़ना या पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना।

२. लिहाज। संकोच। ३. प्रतिष्ठा। इज्जत।

**शरमनाक**—वि० दे० "शर्मनाक"।

**शरमाना**—क्रि० अ० [ फ़ा० शर्म + आना ( प्रत्य० ) ] शर्मिंदा होना। लज्जित होना।

क्रि० स० शर्मिंदा करना। लज्जित करना।

**शर्मिंदगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] शर्मिंदा होने का भाव। लाज।

**शर्मिंदा**—वि० [ फ़ा० ] लज्जित।

**शरमीला**—वि० [ फ़ा० शर्म+ईला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० शरमीली ] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। लज्जालु।

**शराफत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] शरीफ होने का भाव। भलमनसी। सज्जनता।

**शराब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मदिरा। मद्य।

**शराबखाना**—संज्ञा पुं० [ अ० शराब + फ़ा० खाना ] वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

**शराबखोर**—संज्ञा पुं० दे० "शराबी"।

**शराबखोरी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] मदिरा-पान।

**शराबी**—संज्ञा पुं० [ हिं० शराब + ई (प्रत्य०) ] वह जो शराब पीता हो। मद्यप।

**शराबोर**—वि० [ फ़ा० ] जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ। लथ-पथ। तर-बतर।

**शरारत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पाजीपन। दुष्टता।

**शरालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तरकश।

**शरासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धनुष। कमान।

**शरिष्ठ**—वि० दे० "श्रेष्ठ"।

**शरीअत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मुसलमानों का धर्म-शास्त्र।

**शरीक**—वि० [ अ० ] शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ।

संज्ञा पुं० १. साथी। २. साझी। हिस्सेदार। ३. सहायक। मददगार।

**शरीफ**—संज्ञा पुं० [अ०] १. कुलीन मनुष्य। २. सभ्य पुरुष। भला मानुस।

वि० पाक। पवित्र।

**शरीफा**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रीफल या सीताफल ] १. मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध फलदार वृक्ष। २. इस वृक्ष का खाकी रंग का फल जो गोल होता है। श्रीफल। सीताफल।

**शरीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देह। तन। बदन। जिस्म। काया।

वि० [ अ० ] [ संज्ञा शरारत ] दुष्ट। नटखट।

**शरीरत्याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु। मौत।

**शरीरपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु। मौत।

**शरीररक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो राजा आदि के साथ उसकी रक्षा के लिए रहता हो। अंगरक्षक।

**शरीर शास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिससे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या काम करता है। शरीर-विज्ञान।

**शरीरांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मृत्यु। मौत।

**शरीरार्पण**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य के निमित्त अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।

**शरीरी**—संज्ञा पुं० [ सं० शरीरिन् ] १. शरीरवाला। शरीरवान्। २. आत्मा। जीव। ३. प्राणी। जीवधारी।

**शर्करा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शक्कर। चीनी। खाँड़। २. बालू का कण।

**शर्करी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चौदह अक्षरों की एक वृत्ति।

**शर्त**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. वह बाजी जिसमें हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन भी हो। दाँव। बदान। २. किसी कार्य की सिद्धि के लिए आवश्यक या अपेक्षित बात या कार्य।

**शर्तिया**—क्रि० वि० [ अ० ] शर्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।

वि० बिलकुल ठीक। निश्चित।

**शर्म**—संज्ञा स्त्री० दे० "शरम"।

**शर्म्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुख। आनंद। २. गृह। घर।

**शर्म्मद**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० शर्म्मदा ] आनंद देनेवाला। सुखदायक।

**शर्म्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० शर्म्मन् ] ब्राह्मणों की उपाधि।

**शर्मिष्ठा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की सखी थी।

**शर्य्यणावत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर।

**शर्वरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रात। रात्रि। निशा। २. संध्या। शाम। ३. स्त्री।

**शल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कंस के एक मल्ल का नाम। २. ब्रह्मा। ३. भाला।

**शलगम**—संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

**शलजम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] गाजर की तरह का एक कंद।

**शलभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. टीड़ी। टिड्डी। शरभ। २. पतंग। फतिंगा। ३. छप्पय के ६१ वें भेद

का नाम।

**शलाका**–संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लोहे आदि की लंबी सलाई। शलाख। सीख। २. बाण। तीर। ३. जुआ खेलने का पासा।

**शलातुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवास-स्थान था।

**शलूका**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

**शल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मद्र देश के एक राजा जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्ल युद्ध में भीमसेन से हार गए थे। २. अस्त्र-चिकित्सा। ३. छप्पय के ५६वें भेद का नाम। ४. हड्डी। अस्थि। ५. शलाका। ६. साँग नामक अस्त्र। ७. दुर्वाक्य।

**शल्यकी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्लकी] साही। ( जंतु )

**शल्यक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चीर फाड़ का इलाज। शस्त्र-चिकित्सा।

**शल्ल**—वि० [ अ० ] शिथिल। सुन्न। ( हाथ पैर )

**शल्व**—संज्ञा पुं० दे० "शाल्व"।

**शव**—संज्ञा पुं० [सं० ] मृत शरीर। लाश।

**शवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शव का भाव। लाशपन। २. मुरदापन।

**शवदाह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया।

**शवभस्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चिता की भस्म।

**शवरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शबर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी। २. शबर जाति की स्त्री।

**शवल**—वि० दे० "शबल"।

**शश**–संज्ञा पुं० [ सं० ] १ खरहा। खरगोश। २. चंद्रमा का लाञ्छन या कलंक। ३. कामशास्त्र में मनुष्य के चार भेदों में से एक।

**शशक**—संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश।

**शशधर**—संज्ञा पुं [ सं० ] चंद्रमा।

**शशशृंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैसा ही असंभव कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है।

**शशांक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा।

**शशा**—संज्ञा पुं० दे० "शश"।

**शशि**—संज्ञा पुं० [ सं० शशिन् ] १. चंद्रमा। इंदु। २. छप्पय के ५४वें भेद का नाम। रगण के दूसरे भेद (ISS) की संज्ञा। ३. छः की संख्या।

**शशिकला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चंद्रमा की कला। २. एक प्रकार का वृत्त।

**शशिकांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चंद्रकांतमणि। २. कोई। कुमुद।

**शशिकुल**-संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंश।

**शशिज**—संज्ञा पुं० [सं० ] बुध ग्रह।

**शशिधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव।

**शशिप्रभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ज्योत्स्ना। चाँदनी।

**शशिभाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**शशिभूषण**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

**शशिमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्रमा का घेरा या मंडल। चंद्रमंडल।

**शशिमुख**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० शशिमुखी ] (वह) जिसका मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो।

**शशिवदना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वृत्त। चौवंसा। चंडरसा। पादाकुलक।

वि० स्त्री शशिमुखी।

**शशिशाला**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० शीशा + सं० शाला ] वह घर जिसमें बहुत से शीशे लगे हुए हों। शीशमहल।

**शशिशेखर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिव। महादेव।

**शशिहीरा**—संज्ञा पुं० [सं० शशि + हिं० हीरा ] चंद्रकांत मणि।

**शसा***—संज्ञा पुं० [ सं० शश ] खरगोश। खरहा।

**शसि, शसी***—संज्ञा पुं० दे० "शशि"।

**शस्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वे उपकरण जिनसे किसी को काटा या मारा जाय। हथियार। २. कार्य्य-सिद्धि का अच्छा उपाय।

**शस्त्रक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फोड़ों आदि की चीर-फाड़। नश्तर लगाने की क्रिया।

**शस्त्रगृह**—संज्ञा पुं० दे० "शस्त्रागार"।

**शस्त्रधारी**— वि० [ सं० शस्त्रधारिन् ] [ स्त्री० शस्त्रधारिणी ] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

**शस्त्रविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हथियार चलाने की विद्या। २. यजुर्वेद का उपवेद, धनुर्वेद, जिसमें युद्ध करने की और अस्त्र चलाने की विधि दी गई है।

**शस्त्रशाला**—संज्ञा स्त्री० दे० "शस्त्रागार"।

**शस्त्रागार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रशाला।

**शस्त्रीकरण**—संज्ञा पुं० [सं० ] सेना या राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

**शस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नई

घास। २. वृक्षों का फल। ३. खेती। फसल। ४. अन्न।

**शहंशाह**—संज्ञा पुं० दे० "शाहंशाह"।

**शह**—संज्ञा पुं० [फा० शाह का संक्षिप्त रूप] १. बादशाह। २. वर। दूल्हा।

वि० बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठतर।

संज्ञा स्त्री० १. शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किश्त। २. गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव।

**शहजादा**—संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।

**शहजोर**—वि० [फ़ा०] बली। बलवान्।

**शहत**—संज्ञा पुं० दे० "शहद"।

**शहतीर**—संज्ञा पुं० [फा०] लकड़ी का बहुत बड़ा और लम्बा लट्ठा।

**शहतूत**—संज्ञा पुं० दे० "तूत"।

**शहद**—संज्ञा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ जो मधुमक्खियाँ फूलों के मकरंद से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं।

**मुहा०**—शहद लगाकर चाटना=किसी निरर्थक पदार्थ को व्यर्थ लिये रहना। (व्यंग्य)

**शहना**—संज्ञा पुं० [अ० शिहनः] १. शासक। २. कोतवाल। ३. कर संग्रह करनेवाला।

**शहनाई**—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. नफीरी नामक बाजा। २. दे० "रोशनचौकी"।

**शहबाला**—संज्ञा पुं० [फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ जाता है।

**शहमात**—संज्ञा स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

**शहर**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] मनुष्यों की बड़ी बस्ती। नगर। पुर।

**शहरपनाह**—संज्ञा स्त्री० [फा०] शहर की चारदीवारी। प्राचीर। नगर-कोटा।

**शहरी**—वि० [फा०] १. शहर का। २. नगर-निवासी। नागरिक।

**शहादत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गवाही। साक्षी। २. सबूत। प्रमाण। ३. शहीद होना।

**शहाना**—संज्ञा पुं० [देश० या फ़ा० शाह?] संपूर्ण जाति का एक राग।

वि० [फा०] [स्त्री० शहानी] १. शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।

**शाँहजदा***—संज्ञा पुं० दे० "शाहजादा"।

**शहीद**—संज्ञा पुं० [अ०] धर्म्म आदि के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति। (मुसल०)

**शांकर**—वि० [सं०] १. शंकर-संबंधी। २. शंकराचार्य का।

संज्ञा पुं० एक छंद का नाम।

**शांडिल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] एक स्मृतिकार मुनि जो भक्तिसूत्र के कर्त्ता माने जाते हैं।

**शांत**—वि० [सं०] १. जिसमें वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। रुका हुआ। बंद। २. नष्ट। मिटा हुआ। ३. जिसमें क्रोध आदि न रह गया हो। स्थिर। ४. मृत। मरा हुआ। ५. धीर। सौम्य। गंभीर। ६. मौन। चुप। ७. रागादिशून्य। जितेंद्रिय। ८. उत्साह या तत्परतारहित। शिथिल। ढीला। ९. विघ्न। बाधा-रहित। १०. स्वस्थ-चित्त।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों में से एक जिसका स्थाई भाव "निर्वेद" है। इस रस में संसार की दुःखपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलंबन होता है।

**शांतता**—संज्ञा स्त्री० दे० "शांति"।

**शांतनु**—संज्ञा पुं० [सं०] द्वापर युग के इक्कीसवें चंद्रवंशी राजा।

**शांता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्य-शृंग की पत्नी। २. रेणुका।

**शांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वेग, क्षोभ, क्रिया का अभाव। २. स्तब्धता। सन्नाटा। ३. चित्त का ठिकाने होना। स्वस्थता। ४. रोग आदि का दूर होना। ५. मृत्यु। मरण। ६. धीरता। गंभीरता। ७. वासनाओं से छुटकारा। विराग। ८. दुर्गा। ९. अमंगल दूर करने का उपचार।

**शांतिकर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] बुरे ग्रह आदि से होनेवाले अमंगल के निवारण का उपचार।

**शांतिवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि सब लोगों को यथासाध्य शांति-पूर्वक रहना चाहिए और संसार से लड़ाई-झगड़े और युद्ध आदि का अंत हो जाना चाहिए।

**शांतिवादी**—संज्ञा पुं० [सं० शान्तिवादिन्] वह जो शांतिवाद का समर्थक और पक्षपाती हो।

**शाइस्तगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. शिष्टता। सभ्यता। २. भलमनसी। आदमियत।

**शाइस्ता**—वि० [फ़ा० शाइस्तः] १. शिष्ट। सभ्य। तहजीबवाला। २. विनीत। नम्र।

**शाकंभरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०]

खिसा। कुर्ता।

**शाक**—संज्ञा पुं० [सं०] भाजी। तरकारी।

वि० [सं०] शक जाति-संबंधी।

**शाकटायन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि ने किया है। २. एक अर्वाचीन वैयाकरण।

**शाकद्वीप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप। २. ईरान और तुर्किस्तान के बीच में पड़नेवाला वह प्रदेश जिसमें आर्य और शक बसते थे।

**शाकद्वीपीय**—वि० [सं०] शाकद्वीप का।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद। मग ब्राह्मण।

**शाकल**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंड। टुकड़ा। २. ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३. मद्र देश का एक नगर।

**शाकाहार**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाकाहारी] अनाज का भोजन। मांसाहार का उलटा।

**शाकिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] डाइन। चुड़ैल।

**शाक्त**—वि० [सं०] शक्ति-संबंधी।

संज्ञा पुं० शक्ति का उपासक। तंत्र-पद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

**शाक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नैपाल की तराई में बसती थी।

**शाक्य मुनि, शाक्यसिंह**—संज्ञा पुं० [सं०] गौतम बुद्ध।

**शाख**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. टहनी। डाल।

**मुहा०**—शाख निकालना=दोष निकालना।

२. लगा हुआ टुकड़ा। खंड। फाँक। ३. दे० "शाखा"।

**शाखा**—संज्ञा स्त्री० [सं] १. पेड़ की टहनी। डाल। २. हाथ और पैर। ३ किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद। प्रकार। ४. विभाग। हिस्सा। ५. अंग। ६. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद।

**शाखामृग**—संज्ञा पुं० [सं०] वानर। बंदर।

**शाखी**—वि० [सं० शाखिन्] शाखाओंवाला।

संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

**शाखोच्चार**—संज्ञा पुं० [सं०] विवाह के समय वंशावली का कथन।

**शागिर्द**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [भाव० शागिर्दी] किसी से विद्या प्राप्त करनेवाला। शिष्य।

**शाठ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] शठता।

**शाण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शाणित] १. सान रखने का पत्थर। कुरंड। २. पत्थर। ३. कसौटी।

**शातवाहन**—संज्ञा पुं० दे० "शालिवाहन"।

**शातिर**—संज्ञा पुं० [अ० ] १. शतरंज का खेलाड़ी। २. धूर्त। चालाक।

**शादियाना**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. खुशी का बाजा। आनंद और मंगल-सूचक वाद्य। २. बधावा। बधाई।

**शादी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] खुशी। आनंद। २. आनंदोत्सव। ३. विवाह। ब्याह।

**शाद्वल**—वि० [सं०] हरी हरी घास से ढका हुआ। हराभरा।

संज्ञा पुं० १. हरी घास। दूब। २. बैल। ३. रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती।

**शान**—संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शानदार] १. तड़क भड़क। ठाट-बाट। सजावट। २. गर्वीली चेष्टा। ठसक। ३. भव्यता। विशालता। ४. शक्ति। करामात। विभूति। ५. प्रतिष्ठा। इज्जत।

**मुहा०**—किसी की शान में=किसी बड़े के संबंध में।

**शान-शौकत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] तड़क भड़क। ठाट-बाट। तैयारी। सजावट।

**शाप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अहित-कामनासूचक शब्द। कोसना। २. धिक्कार। फटकार। भर्त्सना।

**शापग्रस्त**—वि० दे० "शापित"।

**शापना***—क्रि० स० [सं० शाप] शाप देना।

**शापित**—वि० [सं०] जिसे शाप दिया गया हो। शाप-ग्रस्त।

**शाबर भाष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] मीमांसा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्यवस्था।

**शाबरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शबरों की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

**शाबाश**—अव्य० [फ़ा०] [संज्ञा शाबाशी] एक प्रशंसा-सूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो।

**शाब्द**—वि० [सं०] [स्त्री० शाब्दी] १. शब्दसंबंधी। शब्द का। २. शब्द विशेष पर निर्भर।

**शाब्दिक**—वि० [सं०] शब्द-संबंधी।

**शाब्दी**—वि० स्त्री० [सं०] १. शब्द-संबंधिनी। २. केवल शब्द विशेष पर निर्भर रहनेवाली।

**शाब्दी व्यंजना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह व्यंजना जो शब्दविशेष के प्रयोग

पर ही निर्भर हो; अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय। आर्थी व्यंजना का उलटा।

**शाम**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] साँझ। संध्या।
*वि० संज्ञा पुं० दे० "श्याम"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।
संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है। सीरिया।

**शामकर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० श्यामकर्ण ] वह घोड़ा जिसके कान श्याम रंग के हों।

**शामत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दुर्भाग्य। २. विपत्ति। आफत। ३. दुर्दशा। दुरवस्था।
**मुहा०**—शामत का घेरा या मारा=जिसके दुर्दशा का समय आया हुआ हो। शामत सवार होना या सिर पर खेलना=दुर्दशा का समय आना।

**शामियाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शाम ? ] एक प्रकार का बड़ा तंबू।

**शामिल**—वि० [ फ़ा० ] जो साथ में हो। मिला हुआ। सम्मिलित।

**शामी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] धातु का वह छल्ला जो लकड़ियों या औजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिए लगाया जाता है। शाम।
वि० [ शाम (देश) ] शाम देश का।

**शायक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाण। तीर। शर। २. खड्ग। तलवार।

**शायद**—अव्य० [ फ़ा० ] कदाचित्। संभव है।

**शायर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० शायरा ] कवि।

**शायरी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. कविताएँ रचना। २. काव्य।

**शायी**—वि० [ सं० शायिन् ] सोनेवाला।

**शारंग**—संज्ञा पुं० दे० "सारंग"।

**शारंगपाणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. राम।

**शारद**—वि० [सं०] शरद् काल का।

**शारदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सरस्वती। २. दुर्गा। ३. प्राचीन काल की एक लिपि।

**शारदीय**—वि० [ सं० ] शरद् काल का।

**शारदीय महापूजा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शरत्काल में होनेवाली नवरात्रि की दुर्गा-पूजा।

**शारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना। (चिड़िया)

**शारिवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अनंतमूल। सालसा। २. जवासा। धमासा।

**शारीर**—वि० [ सं० ] शरीर-संबंधी।

**शारीरिक**—वि० [ सं० ] शरीर-संबंधी।

**शारीरिक भाष्य**—संज्ञा पुं० [सं०] शंकराचार्य्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

**शारीरिकसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वेदांत सूत्र।

**शारीर विज्ञान ( शास्त्र )**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २. दे० "शरीर-शास्त्र"।

**शार्ङ्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष।

**शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

**शार्दूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चीता। बाघ। २. राक्षस। ३. शरभ नामक जंतु। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. दोहे का एक भेद। ६. सिंह।
वि० सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

**शार्दूलललित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त।

**शार्दूलविक्रीड़ित**—संज्ञा पुं० [सं०] उन्नीस अक्षरों का एक प्रकार का वर्णवृत्त।

**शालंकि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाणिनि ऋषि।

**शाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का बहुत बड़ा और विशाल वृक्ष। साखू।
संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर। दुशाला।

**शालग्राम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु की एक प्रकार की पत्थर की मूर्त्ति।

**शालपर्णी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सरिवन"।

**शाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. घर। गृह। मकान। २. जगह। स्थान। जैसे—पाठशाला। ३. इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बननेवाला एक वृत्त।

**शालातुरीय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पाणिनि ऋषि।

**शालि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जड़हन धान। २. बासमती चावल। ३. गन्ना। पौंढ़ा।

**शालिधान**—संज्ञा पुं० [ सं० शालिधान्य ] बासमती चावल।

**शालिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त।

**शालिवाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

एक प्रसिद्ध शक राजा जिसने "शक" नामक संवत् चलाया था।

**शालिहोत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. घोड़ा। २. शालिहोत्री का विद्या। अश्व-विद्या।

**शालिहोत्री**—संज्ञा पुं० [ सं० शालिहोत्र + ई (प्रत्य० ) ] वह जो पशुओं आदि का चिकित्सा करता हो। अश्व-वैद्य।

**शालीन**—वि० [ सं० ] [ भाव० शालीनता ] १. विनीत। नम्र। २. जिसे लज्जा आती हो। ३. सदृश। समान। तुल्य। ४. अच्छे आचार-विचारवाला। ५. धनवान्। अमीर। ६. दक्ष। चतुर।

**शाल्मलि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेमल का पेड़। २. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ३. एक नरक का नाम।

**शाल्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सौभ-राज्य के एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे। २. एक प्राचीन देश का नाम।

**शावक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बच्चा; विशेषतः पशु या पक्षी का बच्चा।

**शाश्वत**—वि० [ सं० ] जो सदा स्थायी रहे। कभी नष्ट न हो। नित्य।

**शासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शासिका ] १. वह जो शासन करता हो। २. हाकिम।

**शासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आज्ञा। आदेश। हुक्म। २. अधिकार या वश में रखना। ३. लिखित प्रतिज्ञा। पट्टा। ठीका। ४. राजा की दान की हुई भूमि। मुआफी। ५. वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय। ६. शास्त्र। ७. इंद्रिय-निग्रह। ८. हुकूमत। सरकार। ९. दंड। सजा।

**शासित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० शासिता ] १. जिसका शासन किया जाय। जिस पर शासन हो। २. जिसे दंड दिया जाय।

**शास्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० शास्तृ ] १. शासक। २. राजा। ३. पिता। ४. उपाध्याय। गुरु।

**शास्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शासन। २. दंड। सजा।

**शास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वे धार्म्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिए बनाए गए हैं। इनकी संख्या १८ कही गई है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्म्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद, और अर्थशास्त्र। २. किसी विशिष्ट विषय के संबंध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो। विज्ञान।

**शास्त्रकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसने शास्त्रों की रचना की हो। शास्त्र बनानेवाला।

**शास्त्रज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शास्त्र-वेत्ता।

**शास्त्री**—संज्ञा पुं० [ सं० शास्त्रिन् ] १. शास्त्रज्ञ। २. वह जो धर्म्म शास्त्र का ज्ञाता हो।

**शास्त्रीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी विषय को शास्त्र का रूप देना।

**शास्त्रीय**—वि० [ सं० ] १. शास्त्र-संबंधी। २. शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार।

**शास्त्रोक्त**—वि० [ सं० ] शास्त्रों में कहा हुआ।

**शाहंशाह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बादशाहों का बादशाह। महाराजाधिराज।

**शाहंशाही**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. शाहंशाह का कार्य्य या भाव। २. व्यवहार का खरापन। ( बोलचाल )।

**शाह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. महाराज। बादशाह। २. मुसलमान फकीरों की उपाधि।

वि० बड़ा। भारी। महान्।

**शाहखर्च**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा शाहखर्ची ] बहुत खर्च करनेवाला।

**शाहजादा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] [ स्त्री० शाहजादी ] बादशाह का लड़का। महाराजकुमार।

**शाहाना**—वि० [ फ़ा० ] राजसी।

संज्ञा पुं० १. विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है। जामा। २. दे० "शहाना" ( राग )।

**शाही**—वि० [ फ़ा० ] शाहों या बादशाहों का।

**शिंगरफ़**—संज्ञा पुं० दे० "ईंगुर"।

**शिंजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० शिंजित ] १. मधुर ध्वनि। २. आभूषणों की झंकार।

वि० मधुर-ध्वनि करनेवाला।

**शिंजिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नूपुर। पैंजनी। २. अँगूठी। ३. धनुष की डोरी।

**शिंबी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छीमी। फली। बोंड़ी। २. सेम। ३. कौंछ। केवाँच।

**शिंबी धान्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] द्विदल अन्न। दाल।

**शिंशपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।

**शिशुपा॰**-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शिंशपा"।

**शिशुमार**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] सूँस। (जलजंतु)

**शिकंजा**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। २. एक यंत्र जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते और उसके पन्ने काटते हैं। ३. अपराधियों को कठोर दंड देने के लिए एक प्राचीन यंत्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं।

**मुहा॰**—शिकंजे में खिंचवाना=घोर यंत्रणा दिलाना। साँसत कराना।

**शिकन**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी। सिलवट। बल।

**शिकमी काश्तकार**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिए खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

**शिकरम**—संज्ञा स्त्री॰ [?] एक प्रकार की गाड़ी।

**शिकवा**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] शिकायत। गिला।

**शिकस्त**—वि॰ [फ़ा॰] पराजय। हार।

**शिकायत**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. बुराई करना। गिला। चुगली। २. उपालंभ। उलाहना। ३. रोग। बीमारी।

**शिकार**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] १. जंगली पशुओं को मारने का कार्य्य या क्रीड़ा। आखेट। मृगया। अहेर। २. वह जानवर जो मारा गया हो। ३. गोश्त। मांस। ४. आहार। भक्ष्य। ५. कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने से बहुत लाभ हो। असामी।

**मुहा॰**—शिकार खेलना=शिकार करना। किसी का शिकार होना=१. किसी के द्वारा मारा जाना। २. वश में आना। फँसना।

**शिकारगाह**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] शिकार खेलने का स्थान।

**शिकारी**—वि॰ [फ़ा॰] १. शिकार करनेवाला। २. शिकार में काम आनेवाला।

**शिक्षक**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु। उस्ताद।

**शिक्षण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] तालीम। शिक्षा।

**शिक्षणालय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की शिक्षा दी जाय। विद्यालय।

**शिक्षा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। सीख। तालीम। २ गुरु के निकट विद्या का अभ्यास। ३. उपदेश। मंत्र। सलाह। ४. छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है। ५. शासन। दबाव। ६. सबक। दंड।

**शिक्षाक्षेप**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है। (केशव)

**शिक्षागुरु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विद्या पढ़ानेवाला गुरु।

**शिक्षार्थी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षार्थिन्] विद्यार्थी।

**शिक्षालय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] विद्यालय।

**शिक्षाविभाग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिक्षा+विभाग] वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।

**शिक्षित**—वि॰ पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ शिक्षिता] १. जिसने शिक्षा पाई हो। २. विद्वान्।

**शिखंड**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ। २. चोटी। शिखा। चुटिया। ३. काकपक्ष। काकुल।

**शिखंडिका**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] चोटी। शिखा।

**शिखंडिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. मोरनी। मयूरी। २. द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।

**शिखंडी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शिखंडिन्] १. मोर। मयूर पक्षी। २. मुर्गा। ३. बाण। ४. विष्णु। ५. कृष्ण। ६. शिव। ७. शिखा। ८. दे॰ "शिखंडिनी"।

**शिख॰**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शिखा"।

**शिखर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सिरा। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। ३. मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। कलश। ४. मंडप। गुंबद। ५. जैनियों का एक तीर्थ। ६. एक अस्त्र का नाम।

**शिखरन**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।

**शिखरिणी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. रसाल। २. नारी-रत्न। स्त्रियों में श्रेष्ठ। ३. रोमावली। ४. दही और चीनी का रस। शिखरन। ५. सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**शिखरी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ शिखर] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचंद्र को दी थी।

**शिखा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १.

चोटी। चुटैया।
यौ०—शिखासूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के चिह्न हैं।
२. पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी। कलगी। ३. आग की लपट। ज्वाला। ४. दीपक की लौ। टेम। ५. प्रकाश की किरण। ६. नुकीला छोर या सिरा। नोक। ७. चोटी। शिखर। ८. शाखा। डाली। ९. एक विषम वृत्त।

**शिखी**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिखिनी] १. मोर। मयूर। २. कामदेव। ३. अग्नि। ४. तीन की संख्या।

**शिखिध्वज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. धूम। धूआँ। २. कार्त्तिकेय। ३. मयूरध्वज।

**शिखी**—वि० [शिखिन्] [स्त्री० शिखिनी] शिखावाला। चोटीवाला। संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. मुर्गा। ३. बैल। साँड़। ४. घोड़ा। ५. अग्नि। ६. तीन की संख्या। ७. पुच्छल तारा। केतु। ८. बाण। तीर।

**शिगूफा**—संज्ञा पुं० दे० "शगूफा"।

**शित***—वि० दे० "सित"।

**शिति**—वि० [सं०] १. सफेद। शुक्ल। श्वेत। २. काला। कृष्ण।

**शितिकंठ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मुरगाबी। जलकाक। २. पपीहा। चातक। ३. मोर। मयूर। ४. शिव। महादेव।

**शिथिल**—वि० [सं०] १. जो कसा या जकड़ा न हो। ढीला। २. सुस्त। मंद। धीमा। ३. थका हुआ। श्रांत। ४. जो पूरा मुस्तैद न हो। आलस्ययुक्त। ५. जिसकी पूरी पाबंदी न हो।

**शिथिलता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ढीलापन। ढिलाई। २. थकावट। थकान। ३. मुस्तैदी का न होना। आलस्य। ४. नियम-पालन की कड़ाई का न होना। ५. वाक्यों में शब्दों का परस्पर गठा हुआ अर्थ-संबंध न होना।

**शिथिलाई***†—संज्ञा स्त्री० दे० "शिथिलता"।

**शिथिलाना***—क्रि० अ० [सं० शिथिल+आना (प्रत्य०)] १. शिथिल होना। २. थकना।

**शिथिलित**—वि० [सं० शिथिल] १. जो शिथिल हो गया हो। २. थका-माँदा। सुस्त।

**शिद्दत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेजी। जोर। उग्रता। २. अधिकता। ज्यादती।

**शिनाख्त**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। पहचान। २. परख। तमीज।

**शिया**—संज्ञा पुं० [अ० शीया] हजरत अली को पैगंबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।

**शिर**—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्] १. सिर। कपाल। खोपड़ा। २. मस्तक। माथा। ३. सिरा। चोटी। ४. शिखर।

**शिरत्राण**—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

**शिरधरू**—संज्ञा पुं० दे० "सिर-धरू"।

**शिरनेत**—संज्ञा पुं० [देश०] १. गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियों की एक शाखा।

**शिरफूल**—संज्ञा पुं० दे० "सीस-फूल"।

**शिरमौर**—संज्ञा पुं० [सं० शिरस्+सं० मुकुट] १. शिरोभूषण। मुकुट। २. प्रधान।

**शिरस्त्राण**—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी। कूँड़। खोद।

**शिरहन**†—संज्ञा पुं० [हिं० शिर+आधान] १. उसीसा। तकिया। २. सिरहाना।

**शिरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. रक्त की छोटी नाड़ी। २. पानी का सोता या धारा।

**शिरीष**—संज्ञा पुं० [सं०] सिरस। (पेड़)

**शिरोधार्य**—वि० [सं०] सिर पर धरने या आदरपूर्वक मानने के योग्य।

**शिरोभूषण***—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना। २. मुकुट। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।

**शिरोमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिर पर का रत्न। चूड़ामणि। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

**शिरोरुह**—संज्ञा पुं० [सं०] सिर के बाल।

**शिल**—संज्ञा पुं० दे० "उंछ"। संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।

**शिला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाषाण। पत्थर। २. पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा। चट्टान। ३. शिलाजीत। ४. पत्थर की कंकड़ी अथवा बटिया। ५. उंछ वृत्ति।

**शिलाजतु**—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

**शिलाजीत**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [सं० शिलाजतु] काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक ओषधि जो शिलाओं का रस है। मोमियाई।

**शिलादित्य**—संज्ञा पुं० दे० "हर्ष-वर्द्धन"।

**शिलान्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिर के बाल। २. भवन आदि की नींव का पत्थर रखना।

**शिलापट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पत्थर की चट्टान।

**शिलारस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] लोहबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद।

**शिलारोपण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० "शिलान्यास"।

**शिलालेख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख।

**शिलावृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ओले गिरना।

**शिलाहरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शालिग्राम।

**शिलीपद**—संज्ञा पुं० दे० "श्लीपद"।

**शिलीमुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भ्रमर। भौंरा।

**शिल्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। कारीगरी। २. कला-संबंधी व्यवसाय।

**शिल्पकला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हाथ से चीजें बनाने की कला। कारीगरी। दस्तकारी।

**शिल्पकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिल्पी। कारीगर। २. राज। मेमार।

**शिल्पविद्या**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिल्प-कला"।

**शिल्पशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिल्प-संबंधी शास्त्र। २. गृह-निर्माण का शास्त्र।

**शिल्पी**—संज्ञा पुं० [ सं० शिल्पिन् ] १. शिल्पकार। कारीगर। २. राज। थवई।

**शिव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मंगल। कल्याण। क्षेम। २. जल। पानी। ३. पारा। ४. मोक्ष। ५. वेद। ६. देव। ७. रुद्र। काल। ८. वसु। ९. लिंग। १०. ग्यारह मात्राओं का एक छंद। ११. परमेश्वर। भगवान्। १२. हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करने वाले और पौराणिक त्रिमूर्ति के अंतिम देवता हैं। महादेव।

**शिवता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शिव का भाव या धर्म। २. मोक्ष।

**शिवनंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] गणेश जी।

**शिव-निर्माल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह पदार्थ जो शिवजी को अर्पित किया गया हो। ( ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है। ) २. परम त्याज्य वस्तु।

**शिवपुराण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अठारह पुराणों में से एक। यह शिव-प्रोक्त माना जाता है और इसमें शिव का माहात्म्य है।

**शिवपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] काशी।

**शिवरात्रि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] फाल्गुन बदी चतुर्दशी। शिव चतुर्दशी।

**शिवरानी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शिव + हिं० रानी ] पार्वती।

**शिवलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है।

**शिवलिंगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० लिंगिनी ] एक प्रसिद्ध लता जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

**शिवलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कैलास।

**शिववृषभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिवजी की सवारी का बैल।

**शिवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. पार्वती। गिरिजा। ३. मुक्ति। मोक्ष। ४. शृगाली। सियारिन।

**शिवालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिवजी का मंदिर। २. कोई देव-मंदिर। ( क्व० )

**शिवाला**—संज्ञा पुं० [ सं० शिवालय ] १. शिवजी का मंदिर। शिवालय। २. देव-मन्दिर।

**शिवि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा जो अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं।

**शिविका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पालकी। डोली।

**शिविर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. डेरा। खेमा। निवेश। २. फौज के ठहरने का पड़ाव। छावनी। ३. किला। कोट।

**शिशिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है। २. जाड़ा। शीतकाल। ३. हिम।

**शिशिरांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वसंत ऋतु।

**शिशु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छोटा बच्चा, विशेषतः आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा।

**शिशुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बच-पन। शिशुत्व।

**शिशुताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "शिशुता"।

**शिशुत्व**—संज्ञा पुं० दे० "शिशुता"।

**शिशुनाग**—संज्ञा पुं० दे० "शैशुनाग"।

**शिशुपन***—संज्ञा पुं० दे० "शिशुता"।

**शिशुपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

**शिशुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूंस नामक जल-जंतु। २. नक्षत्र-मंडल। ३. कृष्ण।

**शिशुमार चक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सब ग्रहों सहित सूर्य। सौर जगत्।

**शिश्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुरुष का लिंग।

**शिष**—संज्ञा पुं० दे० "शिष्य"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० शिक्षा ] सीख। शिक्षा।

संज्ञा स्त्री० [ सं० शिखा ] शिखा। चोटी।

**शिषरी**—वि० [ सं० शिखर ] शिखरवाला।

**शिषा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।

**शिषि**—संज्ञा पुं० दे० "शिष्य"।

**शिषी**—संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।

**शिष्ट**—वि० पुं० [ सं० ] १. धर्मशील। २. शांत। धीर। ३. अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। सुशील। ४. बुद्धिमान। ५. सभ्य। सज्जन। ६. भला। उत्तम।

**शिष्टता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शिष्ट होने का भाव या धर्म्म। २. सभ्यता। सज्जनता। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता।

**शिष्टाचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। साधु-व्यवहार। २. आदर। सम्मान। खातिरदारी। ३. विनय। नम्रता। ४. दिखावटी सभ्य व्यवहार। ५. आव-भगत।

**शिष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शिष्या ] [ भाव० शिष्यता ] १. वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। २. विद्यार्थी। अंतेवासी। ३. शागिर्द। चेला। ४. मुरीद। चेला।

**शिष्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सात गुरु अक्षरों का एक वृत्त। शीर्षरूपक।

**शीघ्र**—क्रि० वि० [ सं० ] बिना विलंब। बिना देर के। झटपट। तुरंत। जल्द।

**शीघ्रगामी**—वि० [ सं० शीघ्रगामिन् ] जल्दी या तेज चलनेवाला।

**शीघ्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] जल्दी। फुरती।

**शीत**—वि० [ सं० ] ठंडा। सर्द। शीतल।

संज्ञा पुं० १. जाड़ा। सर्दी। ठंढ। २. ओस। तुषार। ३. जाड़े का मौसिम। ४. जुकाम। सरदी। प्रतिश्याय।

**शीत कटिबन्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमि-खंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं।

**शीतकर**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**शीतकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अगहन और पूस के महीने। २. जाड़े का मौसिम।

**शीतज्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

**शीतपित्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जुड़पित्ती।

**शीतल**—वि० [ सं० ] १. ठंढा। सर्द। गरम का उलटा। २. क्षोभ या उद्वेग-रहित। शांत।

**शीतल चीनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० शीतल+चीन देश ] कबाब चीनी।

**शीतलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ठंढापन।

**शीतलताई**—संज्ञा स्त्री० दे० "शीतलता"।

**शीतला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विस्फोटक रोग। चेचक। २. एक देवी जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं।

**शीतलाष्टमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

**शीया**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसल-मानों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है।

**शीरा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] चीनी या गुड़ को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी।

**शीरीं**—वि० [ फ़ा० ] १. मीठा। मधुर। २. प्रिय। प्यारा।

**शीर्ण**—वि० [ सं० ] १. टूटा-फूटा हुआ। २. जीर्ण। फटा-पुराना। ३. मुरझाया हुआ। ४. कृश। दुबला। पतला।

**शीर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिर। कपाल। २. माथा। ३. सिरा। चोटी। ४. सामना। अग्रभाग।

**शीर्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दे० "शीर्ष"। २. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिए किसी लेख के ऊपर हो।

**शीर्षबिंदु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिर के ऊपर और ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

**शील**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० शीलता ] १. चाल। व्यवहार। आचरण। चरित्र। २. स्वभाव। प्रवृत्ति। मिजाज। ३. उत्तम आचरण। सद्वृत्ति। ४. उत्तम स्वभाव। अच्छा मिजाज। ५. संकोच का स्वभाव। मुरौवत।

वि० [ स्त्री० शीला ] प्रवृत्त। तत्पर।

( शो॰ में )

**शीलवान्**—वि॰ [ सं॰ शीलवत् ] [ स्त्री॰ शीलवती ] १. अच्छे आचरण का। २. सुशील।

**शीर्षा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शीर्ष"।

**शीशम**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] एक पेड़ जिसकी लकड़ी भारी, सुंदर और मजबूत होती है।

**शीशमहल**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ शीशः + अ॰ महल ] वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।

**शीशा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. एक पारदर्शी मिश्र धातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है। काँच। २. दर्पण। आइना। ३. झाड़, फानूस आदि काँच के बने सामान।

**शीशी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ शीशा ] शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।

**मुहा॰**—शीशी सुँघाना=दवा सुँघाकर बेहोश करना। ( अस्त्र-चिकित्सा आदि में )

**शुंग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक क्षत्रिय-वंश जो मौर्य्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।

**शुंठि, शुंठी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] सोंठ।

**शुंड**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] हाथी की सूँड़।

**शुंडा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सूँड़। २. एक तरह की शराब।

**शुंडिक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शराब बनानेवाला। कलवार।

**शुंडी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शुंडिन् ] १. हाथी। २. मद्य बनानेवाला। कलवार।

**शुंभ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।

**शुक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. तोता सुग्गा। २. शुकदेव। ३. वस्त्र। कपड़ा।

**शुकदेव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कृष्ण-द्वैपायन के पुत्र जो पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।

**शुक्त**—वि॰ [ सं॰ ] १. सड़ाकर खट्टा किया हुआ। २. खट्टा। अम्ल। ३. कड़ा। कठोर। ४. अप्रिय। नापसंद। ५. सुनसान। उजाड़।

**शुक्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] सीप। सीपी।

**शुक्तिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] सीपी।

**शुक्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. अग्नि। २. एक बहुत चमकीला ग्रह जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है। ३. वीर्य्य। मनी। ४. बल। सामर्थ्य। शुक्र। ५. सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है।

संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] धन्यवाद।

**शुक्राचार्य्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु थे।

**शुक्रिया**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] धन्यवाद। कृतज्ञता-प्रकाश।

**शुक्ल**—वि॰ [ सं॰ ] सफेद। उजला। धवल।

संज्ञा पुं॰ ब्राह्मणों की एक पदवी।

**शुक्ल पक्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अमावस्या के उपरांत प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष।

**शुक्ला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. सरस्वती। २. वि॰ स्त्री॰ शुक्ल पक्ष की ( तिथि )। उजली।

**शुचि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ शुचिता ] पवित्रता। स्वच्छता। शुद्धता।

वि॰ १. शुद्ध। पवित्र। २. स्वच्छ। साफ। ३. निर्दोष। ४. स्वच्छ हृदयवाला।

**शुचिकर्म्मा**—वि॰ [ सं॰ शुचिकर्म्मन् ] पवित्र कार्य्य करनेवाला। सदाचारी। कर्मनिष्ठ।

**शुतुर**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] ऊँट।

**शुतुरनाल**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ + फ़ा॰ ] ऊँट पर रखकर चलाई जाने-वाली तोप।

**शुतुर-मुर्ग**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लम्बी होती है।

**शुदनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] भावी। होनी। होनहार। नियति।

**शुद्ध**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ शुद्धता ] १. पवित्र। साफ। स्वच्छ। २. सफेद। उज्ज्वल। ३. जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो। ठीक। सही। ४. निर्दोष। बे-ऐब। ५. जिसमें मिलावट न हो। खालिस।

**शुद्ध पक्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शुक्ल पक्ष।

**शुद्धांत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अंतःपुर। जनाना महल।

**शुद्धापह्नुति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक अलंकार जिसमें उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है।

**शुद्धि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. शुद्ध होने का कार्य्य। २. सफाई। स्वच्छता। ३. वह कृत्य या संस्कार जो किसी धर्मच्युत, विधर्मी, अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है।

**शुद्धिपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

**शुद्धोदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे।

**शुनःशेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

**शुनासीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**शुनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शुनी ] कुत्ता।

**शुबहा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. संदेह। शक। २. धोखा। वहम। भ्रम।

**शुभंकर**—वि० [ सं० ] मंगलकारक।

**शुभंकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती।

**शुभ**—वि० [ सं० ] १. अच्छा। भला। उत्तम। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद।

संज्ञा पुं० मंगल। कल्याण। भलाई।

**शुभचिंतक**—वि० [ सं० ] शुभ या भला चाहनेवाला। हितैषी।

**शुभदर्शन**—वि० [ सं० ] सुंदर। खूबसूरत।

संज्ञा पुं० विवाह संस्कार का एक कृत्य जिसमें वर-वधू एक दूसरे को देखते हैं।

**शुभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शोभा। २. कांति। ३. देव-सभा।

संज्ञा पुं० दे० "शुबहा"।

**शुभाकांक्षी**—वि० [ स्त्री० शुभाकांक्षिणी ] दे० "शुभचिंतक"।

**शुभाशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसका आशय या विचार शुभ हो।

**शुभ्र**—वि० [ सं० ] सफेद। श्वेत। उज्वला।

**शुभ्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।

**शुमार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. गिनती। संख्या। २. हिसाब। लेखा।

**शुरू**—संज्ञा पुं० [ अ० शुरूअ ] १. आरंभ। प्रारंभ। २. वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो। उत्थान।

**शुल्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह महसूल जो घाटों आदि पर वसूल किया जाता है। २.दहेज। दायजा। ३. बाजी। शर्त्त। ४. किराया। भाड़ा। ५. मूल्य। दाम। ६. वह धन जो किसी कार्य्य के बदले में लिया या दिया जाय। फीस। चंदा।

**शुश्रूषा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [वि० शुश्रूष्य ] १. सेवा। टहल। परिचर्य्या। २.खुशामद।

**शुष्क**—वि० [ सं० ] [ भाव० शुष्कता ] १. आर्द्रतारहित। सूखा। २. नीरस। रसहीन। ३. जिसमें मन न लगता हो। ४. निरर्थक। व्यर्थ। ५. स्नेह आदि से रहित। निर्मोही।

**शूक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अन्न की बाल या सींका। २. यव। जौ। ३. एक प्रकार का कीड़ा।

**शूकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शूकरी ] १. सूअर। वाराह। २. विष्णु का तीसरा अवतार। वाराह अवतार।

**शूकरक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। ( आज-कल का सोरों। )

**शूची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सूची ] सूई।

**शूद्र**—संज्ञा पुं०[सं०] [स्त्री०शूद्रा,शूद्री] १. आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण। इसका कार्य्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना माना गया है। २. शूद्र जाति का पुरुष। ३. खराब। निकृष्ट।

**शूद्रक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' का रचयिता महाकवि। २. शूद्र जाति का एक राजा। शंबूक।

**शूद्रता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शूद्र का भाव या धर्म्म। शूद्रत्व। शूद्रपन।

**शूद्रद्युति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीला रंग।

**शूद्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शूद्र की स्त्री।

**शूना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि।

**शून्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० शून्यता ] १. खाली स्थान। २. आकाश। ३. एकांत स्थान। ४. बिंदु। बिंदी। सिफर। ५. अभाव। कुछ न होना ६. स्वर्ग। ७. विष्णु। ८. ईश्वर।

वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २. जिसमें क्रियाशीलता न हो। अवसन्न। ३. निराकार। ४. विहीन। रहित।

**शून्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शून्य होने का भाव। खालीपन।

**शून्यवाद**—संज्ञा पुं० [सं० ] बौद्धों का एक सिद्धांत।

**शून्यवादी**—संज्ञा पुं० [ सं० शून्यवादिन् ] १. वह व्यक्ति जो ईश्वर

और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।

**शूप**—संज्ञा पुं० [ सं० शूर्प ] सूप जिसमें अन्न आदि पछोरा जाता है। फटकनी।

**शूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। सिपाही। ३. सूर्य। ४. सिंह। ५. कृष्ण के पितामह का नाम। ६. विष्णु।

**शूरता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहादुरी। वीरता।

**शूरताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।

**शूरवीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।

**शूरसेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे। २. मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।

**शूरा***†—संज्ञा पुं० [ सं० शूर ] सामंत। वीर।

संज्ञा पुं० [ सं० सूर्य ] सूर्य।

**शूर्प**—संज्ञा पुं० दे० "सूप"।

**शूर्पणखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी। वन में लक्ष्मण ने इसके नाक और कान काटे थे।

**शूर्पनखा**—संज्ञा पुं० दे० "शूर्पणखा"।

**शूर्पारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बंबई प्रांत के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

**शूल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राचीन काल का बरछे के आकार का एक अस्त्र। २. सूली, जिससे प्राचीन काल में प्राण दंड दिया जाता था। ३. दे० "त्रिशूल"। ४. बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ५. वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द। ६. कौंच। टीस। ७. पीड़ा। दुःख। दर्द। ८. ज्योतिष में एक अशुभ योग। ९. छड़। सलाख। सींक। १०. मृत्यु। मौत। ११. झंडा। पताका।

वि० काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला।

**शूलधारी**—संज्ञा पुं० [ सं० शूलधारिन् ] महादेव।

**शूलना***—क्रि० अ० [ हिं० शूल+ना (प्रत्य०) ] १. शूल के समान गड़ना। २. दुःख देना।

**शूलपाणि** संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

**शूलहस्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

**शूलि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।

**शूलिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूली देनेवाला।

**शूली**—संज्ञा पुं० [ सं० शूलिन् ] १. शिव। महादेव। २. वह जिसे शूल रोग हुआ हो। ३. एक नरक का नाम।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० शूल ] पीड़ा। शूल।

**शृंखल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेखला। २. हाथी आदि बाँधने की लोहे की जंजीर। साँकल। सिक्कड़। ३. हथकड़ी-बेड़ी।

**शृंखलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।

**शृंखला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. क्रम। सिलसिला। २. जंजीर। साँकल। ३. कटिवस्त्र। मेखला। ४. करधनी। तागड़ी। ५. श्रेणी। कतार। ६. एक प्रकार का अलंकार जिसमें कथित पदार्थों का वर्णन सिलसिलेवार किया जाता है।

**शृंखलाबद्ध, शृंखलित**—वि० [सं०] १. सिलसिलेवार। २. जो शृंखला से बाँधा हुआ हो।

**शृंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। चोटी। २. गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग। ३. कँगूरा। ४. सिंगी बाजा। ५ कमल। पद्म। दे० "ऋष्यशृंग"।

**शृंगपुर**—संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।

**शृंगवेरपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निषाद राजा गुह की राजधानी थी।

**शृंगार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. साहित्य के नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। २. स्त्रियों का वस्त्राभूषण आदि से शरीर को सुशोभित करना। ३. सजावट। बनाव-चुनाव। ४. भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको पत्नी के रूप में और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं। ५. वह जिससे किसी चीज की शोभा हो।

**शृंगारना**—क्रि० स० [हिं० शृंगार+ना (प्रत्य०) ] शृंगार करना। सजाना। सँवारना।

**शृंगारहाट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शृंगार+हिं० हाट ] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हों।

**शृंगारिक**—वि० [ सं० ] शृंगार-संबंधी।

**शृंगारिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

स्रग्विणी छंद।

**शृंगारित**—वि० [ सं० ] जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ।

**शृंगारिया**—संज्ञा पुं० [ सं० शृंगार+इया (प्रत्य०) ] १. वह जो देवताओं आदि का शृंगार करता हो। २. बहुरूपिया।

**शृंगि**— संज्ञा पुं०[सं०] सिंगी मछली। संज्ञा पुं० [सं० शृंगिन्] सींगवाला जानवर।

**शृंगी**—संज्ञा पुं० [ सं० शृंगिन् ] १. हाथी। हस्ती। २. वृक्ष। पेड़। ३. पर्वत। पहाड़। ४. एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्हीं के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। ५. ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ६. सींगवाला पशु। ७. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। ८. महादेव। शिव।

**शृंगीगिरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि तप करते थे।

**शृग***—संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"।

**शृगाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गीदड़। सियार।

**शृष्टि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कंस के एक भाई।

**शेख**—संज्ञा पुं० [ अ० ] [ स्त्री० शेखानी ] १. पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला वर्ग। ३. इसलाम धर्म का आचार्य।

**शेख***—संज्ञा पुं० दे० "शेष"।

**शेखचिल्ली**—संज्ञा पुं० [ अ०+हिं० ] १. एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति। २. बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला। वि० चंचल और शरारती। चिकबिला।

**शेखर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शीर्ष। सिर। माथा। २ मुकुट। किरीट। ३. सिरा। चोटी। शिखर। ( पर्वत आदि का ) ४. सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। ५. टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा। ( ।।ऽ। )

**शेखावत**—संज्ञा पुं० [ अ० शेख ] कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

**शेखी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० शेख ] १. गर्व। अहंकार। घमंड २. शान। एँठ। अकड़। ३. डींग।

**मुहा०**—शेखी बघारना, हाँकना या मारना=बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग मारना।

**शेखीबाज**—वि० [ फ़ा० शेखी+फ़ा० बाज़ ] १. अभिमानी। २. डींग मारनेवाला व्यक्ति।

**शेफालिका, शेफाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नील सिंधुवार का पौधा। निर्गुंडी।

**शेर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ स्त्री० शेरनी ] १. बिल्ली की जाति का एक भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर।

**मुहा०**—शेर होना=निर्भय और धृष्ट होना। २. अत्यंत वीर और साहसी पुरुष।

संज्ञा पुं० [ अ० ] उर्दू कविता के दो चरण।

**शेर-पंजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शेर+हिं० पंजा ] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनखा।

**शेर बच्चा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] एक प्रकार की तोप।

**शेर बबर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सिंह। केसरी।

**शेर-मर्द**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वीर। बहादुर।

**शेरवानी**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का अंगा। अचकन।

**शेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बची हुई वस्तु बाकी। २. वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिए ऊपर से लगाया जाय। अध्याहार। ३. घटाने से बची हुई संख्या। बाकी। ४. समाप्ति। अंत। खातमा। ५. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है। ६ लक्ष्मण। ७. बलराम। ८. दिग्गजों में से एक। ९. परमेश्वर। १०. पिंगल में टगण के पाँचवें भेद का नाम। ११. छप्पय छंद के पचीसवें भेद का नाम।

वि० १. बचा हुआ। बाकी। २.अंत को पहुँचा हुआ। समाप्त। खतम।

**शेषधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिवजी।

**शेषनाग**—संज्ञा पुं० दे० "शेष" ५.।

**शेषर***—संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

**शेषराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दो मगण का एक वर्णवृत्त। विद्युल्लेखा।

**शेषवत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय में कार्य्य को देखकर कारण का निश्चय।

**शेषशायी**—संज्ञा पुं० [ सं० शेषशायिन् ] विष्णु।

**शेषांश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बचा हुआ अंश। अवशिष्ट भाग। २. अंतिम अंश।

**शेषाचल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दक्षिण का एक पर्वत।

**शेषोक्त**—वि० [ सं० ] अंत में कहा हुआ।

**शैतान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. तमोगुणमय देवता जो मनुष्यों को बहका-

कर धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है।
—की आँत—बहुत लंबी वस्तु।
२. दुष्ट। देवयोनि। भूत। प्रेत। ३. दुष्ट।
**शैतानी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० शैतान ] दुष्टता। शरारत। पाजीपन।
वि० १. शैतान-संबंधी। शैतान का। २. नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण।
**शैत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] "शीत" का भाव। शीतता।
**शैथिल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शिथिलता।
**शैल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्वत। पहाड़। २. चट्टान। ३. शिलाजीत।
**शैलकुमारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती।
**शैलगंगा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी।
**शैलजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती। दुर्गा।
**शैलतटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पहाड़ की तराई।
**शैलनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती।
**शैलपुत्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३. गंगा नदी।
**शैलसुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पार्वती।
**शैली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चाल। ढब। ढंग। २. प्रणाली। तर्ज। तरीका। ३. रीति। प्रथा। रस्म। रवाज। ४. वाक्यरचना का प्रकार। ५. हाथ से बनाई जानेवाली ऐसी चीजों का वर्ग जिनकी विशेषताओं में उनके कर्त्ताओं की मनोवृत्ति की एकता के कारण साम्य हो। कलम। जैसे—मुगल या पहाड़ी शैली के चित्र।
**शैलूष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाटक खेलनेवाला। नट। २. धूर्त।
**शैलेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिमालय।
**शैलेय**—वि० [ सं० ] १. पत्थर का। पथरीला। २. पहाड़ी
संज्ञा पुं० १. छरीला। २. शिलाजीत।
**शैव**—वि० [ सं० ] शिव-संबंधी। शिव का।
संज्ञा पुं० १. शिव का अनन्य उपासक। २. पाशुपत अस्त्र। ३. धतूरा।
**शैवल**—संज्ञा पुं० दे० "शैवाल"।
**शैवलिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी।
**शैवाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सिवार। सेवार।
**शैव्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम।
**शैशव**—वि० [ सं० ] १. शिशु-संबंधी। बच्चों का। २. बाल्यावस्था-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. बचपन। २. बच्चों का सा व्यवहार। लड़कपन।
**शैशुनाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वंशज।
**शोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ। रंज। गम।
**शोकहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] तीन मात्राओं के एक छंद का नाम। शुभंगी।
**शोख**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा शोखी ] १. ढीठ। धृष्ट। २. शरीर। नटखट। ३. चंचल। चपल। ४. गहरा और चमकदार ( रंग )।
**शोच**—संज्ञा पुं० [ सं० शोचन ] १. दुःख। रंज। अफसोस। २. चिंता। फिक्र।
**शोचनीय**—वि० [ सं० ] १. जिसकी दशा देखकर दुःख हो। २. बहुत हीन या बुरा।
**शोच्य**—वि० [ सं० ] १. सोचने या विचार करने के योग्य। २. दे० "शोचनीय"।
**शोण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लाल रंग। २. लाली। अरुणता। ३. अग्नि आग। ४. रक्त। ५. एक नद का नाम। सोन।
वि० लाल रंग का। सुर्ख।
**शोणित**—वि० [ सं० ] लाल। रक्त वर्ण का।
संज्ञा पुं० रक्त। रुधिर। खून।
**शोथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम।
**शोध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शुद्धि-संस्कार। सफाई। २. ठीक किया जाना। दुरुस्ती। ३. चुकता होना। अदा होना। ४. जाँच। परीक्षा। ५. खोज। ढूँढ़। तलाश।
**शोधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शोधिका ] १. शोधनेवाला। २. सुधार करनेवाला। सुधारक। ३. ढूँढ़नेवाला। खोजनेवाला।
**शोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य ] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३. धातुओं का औषध-रूप में व्यवहार करने के लिए संस्कार। ४. छानबीन। जाँच। ५. ढूँढ़ना। तलाश करना। ६. ऋण चुकाना। ७. प्राय-

विरेचन। ८. साफ करना। ९. दस्त लाकर कोठा साफ करना। विरेचन।

**शोधना**—क्रि० स० [ सं० शोधन ] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३. औषध के लिए धातु का संस्कार करना। ४. ढूँढ़ना।

**शोधवाना**—क्रि० स० [ सं० शोधना का प्रेर० ] १. शुद्ध कराना। २. तलाश कराना।

**शोधित**—वि० [ सं० शोध ] १. शुद्ध या साफ किया हुआ। २. जिसका या जिसके संबंध में शोध हुआ हो।

**शोभन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० शोभिनी ] १. शोभायुक्त। सुंदर। २. सुहावना। ३. उत्तम। ४. शुभ। संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. शिव। ३. ग्रहयोग। ४. २४ मात्राओं का एक छंद। सिंहिका। ५. आभूषण। गहना। ६. मंगल। कल्याण। ७. दीप्ति। सौंदर्य।

**शोभना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सुंदरी स्त्री। २. हल्दी। हरिद्रा।

क्रि० अ० [ सं० शोभन ] शोभित होना।

**शोभनीय**—वि० दे० "शोभन"।

**शोभांजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सहिजन।

**शोभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दीप्ति। कांति। चमक। २. छवि। सुंदरता। छटा। ३. सजावट। ४. वर्ण। रंग। ५. बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**शोभायमान**—वि० [ सं० ] सोहता हुआ। सुंदर।

**शोभित**—वि० [ सं० ] १. सुंदर। सजीला। २. अच्छा लगता हुआ।

**शोर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. जोर की आवाज। गुल-गपाड़ा। कोलाहल। २. धूम। प्रसिद्धि।

**शोरबा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। जूस। रसा।

**शोरा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शोर ] एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में निकलता है।

**शोला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] आग की लपट।

**शोशा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. निकली हुई नोक। २. अद्भुत या अनोखी बात।

**शोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूखने का भाव। खुश्क होना। २. शरीर का घुलना या क्षीण होना। ३. राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी। ४. बच्चों का सुखंडी रोग।

**शोषक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शोषिका ] १. जल, रस या अन्य द्रव पदार्थ खींचनेवाला। सोखनेवाला। २. सुखानेवाला। ३. क्षीण करनेवाला।

**शोषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० शोषी, शोषित, शोषणीय ] १. जल या रस खींचना। सोखना। २. सुखाना। खुश्क करना। ३. घुलाना। क्षीण करना। ४. नाश करना। ५. कामदेव के एक बाण का नाम।

**शोषणीय**—वि० [ सं० ] शोषण करने के योग्य। जो शोषित हो सके।

**शोषित**—वि० [ सं० ] जिसका शोषण किया गया हो।

**शोषी**—वि० दे० "शोषक"।

**शोहदा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. व्यभिचारी। लंपट। २. गुंडा। बदमाश।

**शोहरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. नामवरी। ख्याति। प्रसिद्धि। २. धूम। जनरव।

**शोहरा**—संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।

**शौंडिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कलवार।

**शौक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग के लिए होनेवाली तीव्र अभिलाषा। प्रबल लालसा।

मुहा०—शौक करना=किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। शौक से=प्रसन्नतापूर्वक।

२. आकांक्षा। लालसा। हौसला। ३. व्यसन। चसका। ४. प्रवृत्ति। झुकाव।

**शौकत**—संज्ञा स्त्री० दे० "शान"।

**शौकिया**—वि० शौकवाला।

क्रि० वि० शौक से।

**शौकीन**—संज्ञा पुं० [ अ० शौक+ईन ( प्रत्य० ) ] १. वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। २. सदा बना-ठना रहनेवाला।

**शौकीनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० शौकीन+ई ( प्रत्य० ) ] शौकीन होने का भाव या काम।

**शौक्तिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मोती।

**शौच**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शुद्धता। पवित्रता। २. शास्त्रीय परिभाषा में, सब प्रकार से शुद्धता-पूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। ४. पाखाने जाना। टट्टी जाना। ५. दे० "अशौच"।

**शौत**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

**शौध**—वि० [ सं० शुद्ध ] निर्मल। पवित्र।

**शौनक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्राचीन ऋषि ।

**शौरसेन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] आधुनिक व्रजमंडल का प्राचीन नाम ।

**शौरसेनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश में बोली जाती थी । २. एक प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश-भाषा जो नागर भी कहलाती थी ।

**शौर्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शूर का भाव । शूरता । वीरता । बहादुरी । २. नाटक में आरभटी नाम की वृत्ति ।

**शौहर**—संज्ञा पुं॰ [ फा॰ ] स्त्री का पति । स्वामी । मालिक ।

**श्मशान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों । मसान । मरघट ।

**श्मशानपति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शिव ।

**श्मशान-यात्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] शव या मृत शरीर का श्मशान जाना ।

**श्मश्रु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मुँह पर के बाल । दाढ़ी । मूँछ ।

**श्याम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. श्रीकृष्ण का एक नाम । २. मेघ । बादल । ३. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था । ४. स्याम नामक देश ।

वि॰ १. काला और नीला मिला हुआ ( रंग ) । २. काला । साँवला ।

**श्यामकर्ण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला हो ।

**श्याम-जीरा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ श्याम + जीरक ] १. एक प्रकार का धान । २. काला जीरा ।

**श्याम टीका**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ श्याम + हिं॰ टीका ] वह काला टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है ।

**श्यामता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. श्याम का भाव या धर्म्म । २. कालापन । साँवलापन । ३. मलिनता । उदासी ।

**श्यामल**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ श्यामला, भाव॰ श्यामलता ] जिसका वर्ण कृष्ण हो । काला । साँवला ।

**श्यामसुन्दर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. श्रीकृष्ण का एक नाम । २. एक प्रकार का वृक्ष ।

**श्यामा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. राधा । राधिका । २. एक गोपी का नाम । ३. एक प्रसिद्ध काला पक्षी । इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है । ४. सोलह वर्ष की तरुणी । ५. काले रंग की गाय । ६. तुलसी । सुरसा क्षुप । ७ कोयल नामक पक्षी । ८. यमुना । ९ रात । रात्रि । १०. स्त्री । औरत ।

वि॰ श्याम रंगवाली । काली ।

**श्याल, श्यालक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पत्नी का भाई । साला । २. बहन का पति । बहनोई ।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शृगाल ] गीदड़ । सियार ।

**श्येन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शिकरा या बाज पक्षी । २. दोहे के चौथे भेद का नाम ।

**श्येनिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] ११ अक्षरों का एक प्रकार का वृत्त । श्येनी ।

**श्येनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. दे॰ "श्येनिका" । २. मार्कंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या जो पक्षियों की जननी थी ।

**श्योनाक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सोनापाढ़ा वृक्ष । २. लोध । लोध ।

**श्रंग**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शृंग" ।

**श्रद्धा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव । २. वेदादि शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचनों पर विश्वास । भक्ति । आस्था । ३. कर्द्दम मुनि की कन्या जो अंगि ऋषि की पत्नी थीं । ४. वैवस्वत मनु की पत्नी ।

**श्रद्धादेव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वैवस्वत मनु जो श्रद्धा के पति थे ।

**श्रद्धालु**—वि॰ [ सं॰ ] जिसके मन में श्रद्धा हो । श्रद्धायुक्त । श्रद्धावान् ।

**श्रद्धावान्**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ श्रद्धावत् ] १. श्रद्धायुक्त । श्रद्धालु पुरुष । २. धर्म्मनिष्ठ ।

**श्रद्धास्पद**—वि॰ [ सं॰ ] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके । श्रद्धेय । पूजनीय ।

**श्रद्धेय**—वि॰ [ सं॰ ] श्रद्धास्पद ।

**श्रम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. परिश्रम । मेहनत । मशक्कत । २. थकावट । क्लांति । ३. साहित्य में संचारी भावों में से एक । कोई कार्य्य करते करते संतुष्ट और शिथिल हो जाना । ४. क्लेश । दुःख । तकलीफ । ५. दौड़-धूप । परेशानी । ६. पसीना । स्वेद । ७. व्यायाम । कसरत । ८. प्रयास । ९. अभ्यास ।

**श्रमकण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पसीने की बूँदें ।

**श्रमजल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "श्रमजीवी" ।

**श्रमजल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पसीना । स्वेद ।

**श्रमजित**—वि॰ [ सं॰ श्रम + जित् ] जो बहुत परिश्रम करने पर भी न

सके।

**श्रमजीवी**—वि० [सं० श्रमजीविन्] मेहनत करके पेट पालनेवाला।

**श्रमण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बौद्ध मतावलंबी संन्यासी। २. यति। मुनि। ३. मजदूर

**श्रमबिंदु**—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

**श्रमवारि**—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

**श्रम-विभाग**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी कार्य्य के भिन्न-भिन्न अंगों के संपादन के लिए अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति।

**श्रमसीकर**—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना।

**श्रमिक**—संज्ञा पुं० १. श्रम या काम करनेवाला। कमकर। २. मजदूर। ३. दे० "श्रमजीवी"।

**श्रमित**—वि० [सं० श्रम] जो श्रम से शिथिल हो गया हो। थका हुआ। श्रांत।

**श्रमी**—संज्ञा पुं० [सं० श्रमिन्] १. मेहनती। परिश्रमी। २. श्रमजीवी। मजदूर।

**श्रवण**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्रवणीय] १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। कर्ण। २. शास्त्रों में लिखी हुई बातें सुनना और उसके अनुसार कार्य्य करना अथवा देवताओं आदि के चरित्र सुनना। ३. एक प्रकार की भक्ति। ४. वैश्य तपस्वी अंधक मुनि के पुत्र का नाम। ५. बाईसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार तीर का सा है।

**श्रवणीय**—वि० [सं०] सुनने योग्य।

**श्रवन***—संज्ञा पुं० [सं० श्रवण] श्रवण। कान।

**श्रवना***—क्रि० स० [सं० स्राव] बहना। चूना। रसना। क्रि० स० गिराना। बहाना।

**श्रवित***—वि० [सं० स्राव] बहा हुआ।

**श्रव्य**—वि० [सं०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य। जैसे—संगीत।

यौ०—श्रव्य काव्य=वह काव्य जो केवल सुना जा सके, अभिनय आदि के रूप में देखा न जा सके।

**श्रांत**—वि० [सं०] १. जितेंद्रिय। २. शांत। ३. परिश्रम से थका हुआ। ४. दुःखी।

**श्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. परिश्रम। मेहनत। २. थकावट। ३. विश्राम।

**श्राद्ध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह कार्य्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। जैसे—तर्पण, पिंडदान तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना। ३. पितृ-पक्ष।

**श्राप**—संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

**श्रावक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध साधु या संन्यासी। २. जैन धर्म्म का अनुयायी। जैनी। ३. नास्तिक।

वि० श्रवण करनेवाला। सुननेवाला।

**श्रावग**—संज्ञा पुं० दे० "श्रावक"।

**श्रावगी**—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैनी।

**श्रावण** संज्ञा पुं० [सं०] आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना। सावन।

**श्रावणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सावन मास की पूर्णमासी। इस दिन प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षा-बंधन' तथा पूजन आदि होते हैं।

**श्रावना***—क्रि० स० [हिं० स्रवना] गिराना।

**श्रावस्ती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] उत्तर कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत-महेत कहलाती है।

**श्राव्य**—वि० [सं०] सुनने के योग्य। सुनने लायक। श्रोतव्य।

**श्रिय**—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रिया] मंगल। कल्याण।

संज्ञा स्त्री० [सं० श्री] शोभा। प्रभा।

**श्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। कमला। २. सरस्वती। ३. कमल। पद्म। ४. सफेद चंदन। संदल। ५. धर्म्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। ६. संपत्ति। धन। दौलत। ७. विभूति। ऐश्वर्य। ८. कीर्त्ति। यश। ९. प्रभा। शोभा। १०. कांति। चमक। ११. एक प्रकार का पद चिह्न। • स्त्रियों का बेंदी नामक आभूषण। १३. आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है।

संज्ञा पुं० १. वैष्णवों का एक संप्रदाय। २. एक एकाक्षरा वृत्त का नाम। ३. संपूर्ण जाति का एक राग।

**श्रीकंठ**—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

**श्रीकांत**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**श्रीकृष्ण**—संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण"।

**श्रीक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] जगन्नाथ-पुरी।

**श्रीखंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हरिचंदन। मलयागिरि चंदन। २. दे० "शिखरण"।

**श्रीखंड शैल**—संज्ञा पुं० [सं०] मलय पर्वत।

**श्रीगदित**—संज्ञा पुं० [सं०] उप-

रूपक के अठारह भेदों में से एक । श्रीरासक ।

**श्रीदामा**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रीदामन् ] श्रीकृष्ण के एक बाल-सखा का नाम । राधा के बड़े भाई ।

**श्रीधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु ।

**श्रीधाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग ।

**श्रीनिकेतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वैकुंठ । २. लाल कमल । ३. स्वर्ण । सोना ।

**श्रीनिवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु । २. वैकुंठ ।

**श्रीपंचमी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वसंत पंचमी ।

**श्रीपति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु । नारायण । हरि । २. रामचंद्र । ३. कृष्ण । ४. कुबेर । ५. नृप । राजा ।

**श्रीपद**—संज्ञा पुं० दे० "श्रीपाद" ।

**श्रीपाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूज्य । श्रेष्ठ ।

**श्रीफल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बेल । २. नारियल । ३. खिरनी । ४. आँवला । ५. धन-संपत्ति ।

**श्रीमंत**—संज्ञा पुं० [ सं० सीमंत ] १. एक प्रकार का शिरोभूषण । २. स्त्रियों के सिर के बीच की माँग । वि० श्रीमान् । धनवान् धनी ।

**श्रीमत्**—वि० [ सं० ] १. धनवान् । अमीर । २. जिसमें श्री या शोभा हो । ३. सुंदर ।

**श्रीमती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. "श्रीमान्" का स्त्रीलिंग । २. लक्ष्मी । ३. राधा ।

**श्रीमान्**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रीमत् ] १. आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है । श्रीयुत । २. धनवान् । अमीर ।

**श्रीमाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्री+माला ] गले में पहनने का एक आभूषण । कंठ-श्री ।

**श्रीमाली**—संज्ञा पुं० विष्णु ।

**श्रीमुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शोभित या सुंदर मुख । २. वेद । ३. सूर्य्य

**श्रीयुक्त**—वि० [ सं० ] १. जिसमें श्री या शोभा हो । २. आदमियों के नाम के पूर्व प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक विशेषण । श्रीमान् ।

**श्रीयुत**—वि० दे० "श्रीयुक्त" ।

**श्रीरंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु ।

**श्रीरमण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु ।

**श्रीवत्स**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु । २. विष्णु के वक्षस्थल पर का एक चिह्न, जो भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न माना जाता है ।

**श्रीवास, श्रीवासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गंधाबिरोजा । २. देवदारु । ३. चंदन । ४. कमल । ५. विष्णु । ६. शिव ।

**श्रीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु ।

**श्रीहत**—वि० [ सं० ] १. शोभा-रहित । २ निस्तेज । निष्प्रभ । प्रभाहीन ।

**श्रीहर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि । २. रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवतः कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे ।

**श्रुत**—वि० [ सं० ] १ सुना हुआ । २. जिसे परंपरा से सुनते आते हों । ३. प्रसिद्ध ।

**श्रुतकीर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी ।

**श्रुतपूर्व**—वि० [ सं० ] जो पहले सुना हो ।

**श्रुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. श्रवण करना । सुनना । २. सुनने की इंद्रिय । कान । ३. सुनी हुई बात । ४. शब्द । ध्वनि । आवाज । ५. खबर । [illegible] । किंवदंती । ६. वह पवित्र ज्ञान जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षियों द्वारा सुना गया और जिसे परंपरा से ऋषि सुनते आए । वेद । निगम । ७. चार की संख्या । ( वेद चार होने से ) । ८. अनुप्रास का एक भेद । ९. त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा । १०. नाम । ११. विद्या ।

**श्रुतिकटु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का व्यवहार । ( दोष ) ।

**श्रुतिकुहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुनने की इंद्रिय । कर्ण । कान ।

**श्रुतिपथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रवण-मार्ग । श्रवणेंद्रिय । २. वेद-विहित मार्ग । सन्मार्ग ।

**श्रुत्य**—वि० [ सं० ] १. सुनने योग्य । २. प्रसिद्ध । ३. प्रशस्त ।

**श्रुत्यनुप्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अनुप्रास जिसमें एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन दो या अधिक बार आवें ।

**श्रुवा**—संज्ञा पुं० दे० "स्रुवा" ।

**श्रेणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. पंक्ति । पाँती । कतार । २. क्रम । शृंखला । परंपरा । सिलसिला । ३. दल । समूह । ४. सेना । फौज । ५. एक ही कारबार करनेवालों की मंडली । कंपनी । ६. सिकड़ी । जंजीर । ७. सीढ़ी । जीना ।

**श्रेणीबद्ध**—वि० [ सं० ] पंक्ति में

रूप में स्थित। कतार बाँधे हुए।

**श्रेय**—वि० [ सं० श्रेयस् ] [ स्त्री० श्रेयसी ] १. अधिक अच्छा। बेहतर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। ३. मंगलदायक। शुभ। संज्ञा पुं० १. अच्छापन। २. कल्याण। मंगल। ३. धर्म। पुण्य। ४. सदाचार। यश। कीर्त्ति।

**श्रेयस्कर**—वि० [ सं० ] शुभदायक।

**श्रेष्ठ**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० श्रेष्ठा ] १. उत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २. मुख्य! प्रधान। ३. पूज्य। बड़ा। ४. वृद्ध।

**श्रेष्ठता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. उत्तमता। २. गुरुता। बड़ाई। बड़प्पन।

**श्रेष्ठी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्यापारियों या वणिकों का मुखिया। महाजन। सेठ।

**श्रोत**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रोतस् ] श्रवणेंद्रिय। कान।

**श्रोता**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रोतृ ] सुननेवाला।

**श्रोत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्रवणेंद्रिय। कान। २. वेदज्ञान।

**श्रोत्रिय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेद-वेदांग में पारंगत। २. ब्राह्मणों का एक भेद।

**श्रोत्री**—संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।

**श्रोन***—संज्ञा पुं० दे० "शोण"।

**श्रोनित***—संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।

**श्रौत**—वि० [ सं० ] १. श्रवण-संबंधी। २. श्रुति-संबंधी। ३. जो वेद के अनुसार हो। ४. यज्ञ-संबंधी।

**श्रौतसूत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमें यज्ञों का विधान है।

**श्रौन***—संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।

**श्लथ**—वि० [ सं० ] १. शिथिल। ढीला। २. मंद। धीमा। ३. दुर्बल। अशक्त।

**श्लाघनीय**—वि० [ सं० ] १. प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

**श्लाघा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रशंसा। तारीफ। २. स्तुति। बड़ाई। ३. खुशामद। चापलूसी। ४. इच्छा। चाह।

**श्लाघ्य**—वि० [ सं० ] १. प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. श्रेष्ठ। अच्छा।

**श्लिष्ट**—वि० [ सं० ] १. मिला हुआ। एक में जड़ा हुआ। २. (साहित्य में) श्लेष युक्त। जिसके दोहरे अर्थ हों।

**श्लीपद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] टाँग फूलने का रोग। फीलपाव।

**श्लील**—वि० [ सं० ] [ भाव० श्लीलता ] १. उत्तम। भद्र। जो भद्दा न हो। २. शुभ।

**श्लेष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलना। जुड़ना। २. संयोग। जोड़। मिलान। ३ साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं।

**श्लेषक**—वि० [ सं० ] जोड़नेवाला। संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।

**श्लेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट ] १. मिलाना। जोड़ना। २. आलिंगन।

**श्लेषोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं।

**श्लेष्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० श्लेष्मन् ] १. शरीर की तीन धातुओं में से एक। कफ। बलगम। २. लिसोड़े का फल। लसेरा।

**श्लोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शब्द। आवाज। २. पुकार। आह्वान। ३. स्तुति। प्रशंसा। ४. कीर्ति। यश। ५. अनुष्टुप छंद। ६. संस्कृत का कोई पद्य।

**श्वन्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० शुनी ] कुत्ता।

**श्वपच**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चांडाल। डोम।

**श्वफल्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।

**श्वशुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पत्नी अथवा पति का पिता। ससुर।

**श्वश्रू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पत्नी अथवा पति की माता। सास।

**श्वसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. श्वास। साँस। २. जीवन।

**श्वसित**—वि० [ सं० ] जो श्वास लेता हो। जीवित। संज्ञा पुं० निश्वास।

**श्वान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० श्वानी ] १. कुत्ता। कुक्कुर। २. दोहे का इक्कीसवाँ भेद। ३. छप्पय का पंद्रहवाँ भेद।

**श्वापद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिंसक पशु।

**श्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। दम। २. जल्दी जल्दी साँस लेना। हाँफना। ३. दम फूलने का रोग। दमा।

**श्वासा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्वास ] १. साँस। दम। २. प्राण। प्राणवायु।

**श्वासोच्छ्वास**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

वेग से साँस खींचना और निकालना।

**श्वेत**—वि० [ सं० ] १. सफेद। धौला। चिट्टा। २. उज्ज्वल। साफ। ३. निर्दोष। निष्कलंक। ४. गोरा।

संज्ञा पुं० १. सफेद रंग। २. चाँदी। रजत। ३. पुराणानुसार एक द्वीप। ४. शिव का एक अवतार। ५. श्वेत वराह।

**श्वेत-कृष्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सफेद और काला। २. यह और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात।

**श्वेतकेतु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. एक केतु ग्रह।

**श्वेतगज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐरावत हाथी।

**श्वेतता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। उज्ज्वलता।

**श्वेतद्वीप**—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं।

**श्वेतपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सफेद रंग के कागज पर छपा हुआ कोई राजकीय पत्र जिसमें किसी प्रकार की घोषणा या निश्चय होता है।

**श्वेतप्रदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह प्रदर रोग जिसमें स्त्रियों को सफेद रंग की धातु गिरती है।

**श्वेतवाराह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वराह भगवान् की एक मूर्त्ति। २. एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है।

**श्वेत-सार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अनाजों और तरकारियों आदि का सफेद सत्त्व जो प्रायः कपड़ों में कलफ देने या दवाओं आदि में काम आता है। माड़ी। कलफ।

**श्वेतांग**—वि० [ सं० ] जिसके अंग का रंग सफेद हो।

संज्ञा पुं० गोरी जाति का व्यक्ति। गोरा।

**श्वेतांबर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक।

**श्वेतांशु**—संज्ञा पुं० [सं० ] चंद्रमा।

**श्वेता**—संज्ञा स्त्री० [ सं०] १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. कौड़ी। ३. श्वेत या शंख नामक हस्ती की माता। शंखिनी। ४. चीनी। शक्कर।

**श्वेताश्वतर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। २. कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

—:०:—

# ष

**ष**—संस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१वाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य वर्णों में कहा गया है। इसका उच्चारण दो प्रकार से होता है—'श' के समान और 'ख' के समान।

**षंड, षंढ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हीजड़ा। नपुंसक। नामर्द। २. शिव का एक नाम। ३. साँड़।

**षंडत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नामर्दी। हीजड़ापन।

**षंडामर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

**षट्**—वि० [ सं० ] गिनती में ६। छः।

संज्ञा पुं० छः की संख्या।

**षट्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ६ की संख्या। २. ६ वस्तुओं का समूह।

**षट्कर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० षट्कर्मन्] १. ब्राह्मणों के छः कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना और दान लेना। २. बखेड़ा। झंझट। खटराग।

**षट्कोण**—वि० [ सं० ] छः कोनों-वाला। छः कोना। छःपहला।

**षट्चक्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हठयोग में माने हुए कुंडलिनी के ऊपर पड़नेवाले छः चक्र। २. भीतरी चाल। षड्यंत्र।

**षट्तिला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

**षट्पद**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० षट्-पदी ] छः पैरोंवाला।
संज्ञा पुं० भ्रमर। भौंरा।

**षट्पदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. भ्रमरी। २. छप्पय।

**षट्रस**—संज्ञा पुं० दे० "षड्रस"।

**षट्मुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कार्त्तिकेय।

**षट्राग**—संज्ञा पुं० [ सं० षट्+राग ] १. संगीत के छः राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २. बखेड़ा। झंझट। खटराग।

**षट्रिपु**—संज्ञा पुं० दे० "षड्रिपु"।

**षट्शास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिंदुओं के छः दर्शन।

**षट्वांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] खट्-वांग नामक राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

**षडंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। २. शरीर के छः अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़।
वि० जिसके छः अंग या अवयव हों।

**षडानन**—वि० [ सं० ] जिसे छः मुँह हों।
संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।

**षड्गुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छः गुणों का समूह।

**षड्ज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर।

**षड्दर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छः दर्शन।

**षड्दर्शनी**—संज्ञा पुं० [ सं० षड्-दर्शन+ई ( प्रत्य० ) ] दर्शनों को जाननेवाला। ज्ञानी।

**षड्यंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। भीतरी चाल। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

**षड्रस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छः प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

**षड्रिपु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छः विकार।

**षण्मुख**—संज्ञा पुं० दे० "षडानन"।

**षष्ठ**—वि० [ सं० ] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

**षष्ठी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. षोडश मातृकाओं में से एक। ३. कात्यायिनी। दुर्गा। ४. संबंधकारक ( व्याकरण )। ५. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

**षाड़व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह राग जिसमें केवल छः स्वर लगते हों।

**षाण्मातुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कार्त्तिकेय।

**षाण्मासिक**—वि० [ सं० ] छः महीने का। छठे महीने में पड़ने-वाला। छमाही।

**षोडश**—वि० [ सं० ] सोलहवाँ।
वि० [ सं० षोडशन् ] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। सोलह।
संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।

**षोडश कला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं।

**षोडश पूजन**—संज्ञा पुं० "षोडशो-पचार"।

**षोडश मातृका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह मानी गई हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देव-सेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातरः और आत्म-देवता।

**षोडश शृंगार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है।

**षोडश संस्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गर्भाधान, पुंसवन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सोलह वैदिक संस्कार।

**षोडशी**—वि० स्त्री० [ सं० ] १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की ( लड़की या स्त्री )।
संज्ञा स्त्री० १. दस महाविद्याओं में से एक। २. मृतक-संबंधी एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।

**षोडशोपचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

**ष्ठीवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] थूकना। थूक।

स

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान दंत है, इसलिए यह दंती या दंत्य स कहा जाता है।

सं—अव्य॰ [ सं॰ सम् ] १. एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिए शब्द के आरंभ में होता है। जैसे—संयोग, संताप, संतुष्ट आदि। २. से।

सँइतना†—क्रि॰ स॰ [सं॰ संचय] १. ढाँपना। पोतना २. संचय करना। ३. सहेजना।

सँउपना*‡—क्रि॰ स॰ दे॰ "सौंपना"।

संक*†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शंका"।

संकट—वि॰ [ सं॰ सम+कृत ] सँकरा। तंग।

संज्ञा पुं॰ १. विपत्ति। आफत। मुसीबत। २. दुःख। कष्ट। तकलीफ। ३. दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता।

संकटा—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. एक प्रसिद्ध देवी। २. ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

संकत*—संज्ञा पुं॰ दे॰ "संकेत"।

संकना*†—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ शंका ] १. शंका करना। संदेह करना। २. डरना।

संकर—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. दो चीजों का आपस में मिलना। २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "शंकर"।

संकर-घरनी*—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शंकर+गृहिणी ] शंकर की पत्नी, पार्वती।

संकरता—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] संकर होने का भाव या धर्म। मिलावट। घालमेल।

सँकरा†—वि॰ [ सं॰ संकीर्ण ] [ स्त्री॰ सँकरी ] पतला और तंग।

संज्ञा पुं॰ कष्ट। दुःख। विपत्ति।

*संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शृंखला ] साँकल। जंजीर।

सँकराना*—क्रि॰ स॰ [ हि॰ सँकरा] सँकरा या संकुचित करना।

क्रि॰ अ॰ सँकरा या संकुचित होना।

संकर्षण—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. खींचने की क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम। ४. वैष्णवों का एक संप्रदाय।

संकल†—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शृंखला ] १ सिकड़ी। जंजीर। २. पशुओं को बाँधने का सिक्कड़।

संकलन—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ संकलित ] १. संग्रह करना। जमा करना। २. संग्रह। ढेर। ३. गणित की योग नाम की क्रिया। जोड़। ४. अनेक ग्रंथों से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया।

संकलप—संज्ञा पुं॰ दे॰ "संकल्प"।

संकलपना*†—क्रि॰ स॰ [ सं॰ संकल्प ] १. किसी बात का दृढ़ निश्चय करना। २. किसी धार्मिक कार्य्य के निमित्त कुछ दान देना। संकल्प करना।

क्रि॰ अ॰ विचार करना। इच्छा करना।

संकलयिता—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ संकलयित्री ] संकलन करनेवाला।

संकलित—वि॰ [ सं॰ ] १. चुना हुआ। संगृहीत। २. इकट्ठा किया हुआ।

संकल्प—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. कार्य्य करने की इच्छा। विचार। इरादा। २. कोई देवकार्य्य करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना। ३. ऐसे समय पढ़ा जानेवाला मंत्र। ४. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार।

संकल्पित—वि॰ [ सं॰ ] जिसका संकल्प या निश्चय किया गया हो।

संकष्ट—संज्ञा पुं॰ दे॰ "संकट"।

सकाना*†—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ शंका ] डरना।

संकार‡—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ संकेत ] इशारा।

संकारना†—क्रि॰ स॰ [हि॰ संकार] संकेत करना।

संकाश—अव्य॰ [ सं॰ ] १. समान। सदृश। २. समीप। निकट। पास।

संज्ञा पुं॰ [ ? ] प्रकाश। चमक।

संकीर्ण—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ संकीर्णता ] १. संकुचित। तंग। सँकरा। २. मिश्रित। मिला हुआ। क्षुद्र। छोटा।

संज्ञा पुं॰ १. वह राग जो दो अन्य रागों को मिलाकर बने। २. संकट। विपत्ति।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्रकार का गज जिसमें कुछ भद्रगंधि और कुछ अभद्रगंधि का मेल होता है।

संकीर्तन—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १.

मेल। संयोग। २. नायक-नायिका का संयोग। मिलाप। ३. रचना। ४. बनावट। ५. दे० "संघटन"।

**संघटित**—वि० [सं०] १. जिसका संघटन हुआ हो। २. दे० "संगठित"।

**संघट्ट, संघट्टन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बनावट। रचना। २. मिलन। संयोग। ३. दे० "संघटन"।

**संघती**—संज्ञा पुं० दे० "संघाती"।

**संघपति**—संज्ञा पुं० [सं०] संघ या दल का नायक।

**संघरना**—क्रि० स० [सं० संहार] १. संहार या नाश करना। २. मार डालना।

**संघर्ष, संघर्षण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रगड़ खाना। रगड़। घिस्सा। २. प्रतियोगिता। स्पर्धा। ३. रगड़ना। घिसना।

**संघ-स्थविर**—संज्ञा पुं० [सं०] संघाराम का प्रधान बौद्ध भिक्षु।

**संघात**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समूह। समष्टि। २. आघात। चोट। ३. हत्या। वध। ४. नाटक में एक प्रकार की गति। ५. शरीर। ६. निवासस्थान।

**संघाती**—संज्ञा पुं० [सं० संघ] १. साथी। सहचर। २. मित्र।

**संघार*†**—संज्ञा पुं० दे० "संहार"।

**संघारना***—क्रि० स० [सं० संहार] १. संहार करना। नाश करना। २. मार डालना।

**संघाराम**—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ। विहार।

**संघोष**—संज्ञा पुं० [सं०] शोर का शब्द।

**संचन†**—संज्ञा पुं० [सं० संचय] १. संग्रह करना। संचय। २. रक्षा। देखभाल।

**संचक***—संज्ञा पुं० दे० "संचकर"।

**संचकर***—संज्ञा पुं० [सं० संचय+कर] १. संचय करनेवाला। २. कंजूस।

**संचना*†**—क्रि० स० [सं० संचयन] १. संग्रह करना। संचय करना। २. रक्षा करना।

**संचय**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० संचयी] १. समूह। ढेर। २. एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।

**संचरण**—संज्ञा पुं० [सं०] संचार करने की क्रिया। चलना। गमन।

**संचरना*†**—क्रि० अ० [सं० संचरण] १. घूमना। फिरना। चलना। २. फैलना। प्रसारित होना। ३. प्रचलित होना।

**संचरित**—वि० [सं०] जिसमें संचार हुआ हो।

**संचान**—संज्ञा पुं० [सं०] बाज पक्षी।

**संचार**—संज्ञा पुं० [सं०] [कर्त्ता संचारक, वि० संचारित] १. गमन। चलना। २. फैलना। ३. चलना।

**संचारक**—वि० [सं०] [स्त्री० संचारिणी] संचार करनेवाला।

**संचारना*†**—क्रि० स० [सं० संचारण] १. किसी वस्तु का संचार करना। २. प्रचार करना। फैलाना। ३. जन्म देना।

**संचारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूती। कुटनी।

**संचारी**—संज्ञा पुं० [सं० संचारिन्] १. वायु। हवा। २. साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं। ३. व्यभिचारी भाव।

वि० [स्त्री० संचारिणी] संचरण करनेवाला। गतिशील।

**संचालक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० संचालिनी] चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।

**संचालन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २. काम जारी रखना।

**संचालित**—वि० [सं०] जिसका संचालन किया गया हो। चलाया या जारी किया हुआ।

**संचित**—वि० [सं०] संचय या जमा किया हुआ।

**संजम***—संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

**संजय**—संज्ञा पुं० [सं०] धृतराष्ट्र का मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।

**संजात**—वि० [सं०] १. उत्पन्न। २. प्राप्त।

**संजाफ**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजाफ़ या संजाफ़] १. झालर। किनारा। २. चौड़ी और आड़ी गोट जो रजाइयों आदि में लगाई जाती है। गोट। मगजी।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग आधा लाल और आधा सफेद या आधा हरा होता है।

**संजाफी**—संज्ञा पुं० [हिं० संजाफ] आधा लाल और आधा हरा घोड़ा।

**संजाब**—संज्ञा पुं० दे० "संजाफ"।

**संजीदा**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा संजीदगी] १. गंभीर। शांत। २. समझदार। बुद्धिमान्।

**संजीवन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति जीवन व्यतीत करना। २. जीवन देनेवाला।

**संजीवनी**—वि० स्त्री० [सं० ] जीवन देनेवाली ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित ओषधि । कहते हैं कि इसके सेवन से मरा हुआ मनुष्य जी उठता है ।

**संजीवनी विद्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की कल्पित विद्या । कहते हैं कि मरे हुए व्यक्ति को इस विद्या के द्वारा जिलाया जा सकता है ।

**संजुक्त***—वि० दे० "संयुक्त" ।

**संजुग***—संज्ञा पुं० [ सं० संयुक्त ] संग्राम । युद्ध ।

**संजुत***—वि० दे० "संयुत" ।

**संजुता**—संज्ञा स्त्री० "संयुत" । (छंद)

**सँजोइ***—क्रि० वि० [ सं० संयोग ] साथ में ।

**सँजोइल***—वि० [ सं० सज्जित, हिं० सँजोना ] १. अच्छी तरह सजाया हुआ । सुसज्जित । २. जमा किया हुआ । एकत्र ।

**सँजोऊ***—संज्ञा पुं० [ हिं० सँजोना] १. तैयारी । उपक्रम । २. सामान । सामग्री ।

**सँजोग**—संज्ञा पुं० दे० "संयोग" ।

**सँजोगी**—संज्ञा पुं० दे० "संयोगी" ।

**सँजोना**†—क्रि० स० [ सं० सज्जा ] सजाना ।

**सँजोवल***†—वि० [ हिं० सँजोना ] १. सुसज्जित । २. सेना-सहित । ३. सावधान ।

**सँजोवना***—क्रि० स० [ सं० सज्जा] सजाना ।

**संज्ञक**—वि० [ सं० ] संज्ञावाला । जिसकी संज्ञा हो । ( यौगिक में )

**संज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चेतना । होश । २. बुद्धि । अक्ल । ३. ज्ञान । ४. नाम । आख्या । ५. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है । जैसे—मकान, नदी । ६. सूर्य्य की पत्नी जो विश्वकर्मा की कन्या थी ।

**संज्ञाहीन**—वि० [ सं० ] बेहोश । बेसुध ।

**सँझला**‡—वि० [ सं० संध्या ] संध्या का ।

**सँझवाती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० संध्या +वती ] १. संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक । २. वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है ।

**संझा**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० संध्या ] संध्या । शाम ।

**संझोखे***—संज्ञा स्त्री० [ सं० संध्या ] संध्या का समय । शाम का वक्त ।

**संड**—संज्ञा पुं० [ सं० शंड ] साँड़ ।

**संड मुसंड**—वि० [ हिं० संड+मुसंड (अनु०) ] हट्टा-कट्टा । मोटा-ताजा । बहुत मोटा ।

**सँड़सा**—संज्ञा पुं० [ सं० संदंश ] [ स्त्री० अल्पा० सँड़सी ] कैंची के आकार का एक औजार जिससे कोई वस्तु कसकर पकड़ी जाती है । गहुआ । जंबूरा ।

**संडा**—वि० [ सं० शंड ] मोटा-ताजा । हृष्ट-पुष्ट ।

**संडास**—संज्ञा पुं० [ ? ] कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना । शौच-कूप ।

**संत**—संज्ञा पुं० [ सं० सत् ] १. साधु, संन्यासी या त्यागी पुरुष । महात्मा । २. ईश्वरभक्त । धार्मिक पुरुष । ३. २१ मात्राओं का एक छंद ।

**संतत**—अव्य० [ सं० ] सदा । निरंतर । बराबर ।

**संतति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. बाल-बच्चे । संतान । औलाद । २. प्रजा । रिआया ।

**संतपन**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. अच्छी तरह तपना । २. बहुत दुःख देना ।

**संतप्त**—वि० [ सं० ] १. बहुत तपा हुआ । जला हुआ । दग्ध । २. दुखी । पीड़ित ।

**संतरण**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. अच्छी तरह से तरना या पार होना । २. जल आदि द्रव पदार्थ के ऊपरी तल पर चलना, जैसे नाव । ३. तैरना । पैंड़ना । ४. उतराना । ५. तारनेवाला ।

**संतरा**—संज्ञा पुं० [ पुर्त्त० संगतरा ] एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू ।

**संतरी**—संज्ञा पुं० [ अं० सेंटरी ] १. पहरा देनेवाला । पहरेदार । २. द्वारपाल ।

**संतान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाल-बच्चे । संतति । औलाद । २. कल्पवृक्ष ।

**संताप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ताप । जलन । आँच । २. दुःख । कष्ट । ३. मानसिक कष्ट ।

**संतापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संताप देना । जलाना । २. बहुत दुःख या कष्ट देना । ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

**संतापना***†—क्रि० स० [ सं० संतापन ] संताप देना । दुःख देना । कष्ट पहुँचाना ।

**संतापित**—वि० दे० "संतप्त" ।

**संतापी**—संज्ञा पुं० [ सं० संतापिन् ] संताप देनेवाला ।

**संती**‡—अव्य० [ सं० संति ? ] १. बदले में । एवज में । स्थान में । २. द्वारा । से ।

**संतुलन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तौल

या भार बराबर और ठीक करना। २. दो पक्षों का बल बराबर रखना।

**संतुष्ट**—वि० [ सं० ] १. जिसका संतोष हो गया हो। तृप्त। २. जो मान गया हो।

**संतोखा**—संज्ञा पुं० दे० "संतोष"।

**संतोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हर हालत में प्रसन्न रहना। संतुष्टि। सब्र। २. तृप्ति। शांति। इतमीनान। ३. प्रसन्नता। सुख। आनंद।

**संतोषना**†—क्रि० स० [ सं० संतोष+ना ( प्रत्य० ) ] संतोष दिलाना। संतुष्ट करना।

क्रि० अ० संतुष्ट होना। प्रसन्न होना।

**संतोषित**—वि० दे० "संतुष्ट"।

**संतोषी**—संज्ञा पुं० [ सं० संतोषिन् ] वह जो सदा संतोष रखता हो। सब्र करनेवाला।

**संत्रस्त**—वि० [ सं० त्रस्त ] १. डरा हुआ। भयभीत। २. घबराया हुआ। व्याकुल। ३. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।

**संत्री**—संज्ञा पुं० दे० "संतरी"।

**संथा**—संज्ञा पुं० [ सं० संहिता ? ] एक बार में पढ़ाया हुआ अंश। पाठ। सबक।

**संदा**†—संज्ञा पुं० [ ? ] दबाव।

**संदर्भ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रचना। बनावट। २. निबंध। लेख। ३. कोई छोटी पुस्तक।

**संदर्शन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अच्छी तरह देखना।

**संदल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] श्रीखंड। चंदन।

**संदली**—वि० [ फ़ा० संदल ] १. संदल के रंग का। हलका पीला ( रंग )। २. चंदन का।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का हाथी। ३. घोड़े की एक जाति।

**संदि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० संधि ] मेल। संधि।

**संदिग्ध**—वि० [ सं० ] १. जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। २. जिस पर संदेह हो।

**संदिग्धत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संदिग्ध होने का भाव या धर्म। संदिग्धता। २. अलंकार-शास्त्रानुसार एक दोष। किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट न होना।

**संदीपन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संदीपक ] १. उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। २. कृष्ण के गुरु का नाम। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

वि० उद्दीपन या उत्तेजना करनेवाला।

**संदूक**—संज्ञा पुं० [ अ० संदूक ] [ अल्पा० संदूकचा ] लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा। पेटी। बक्स।

**संदूकचा**—संज्ञा पुं० दे० "संदूकड़ी"।

**संदूकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० संदूक ] छोटा संदूक।

**संदूर**—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

**संदेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समाचार। हाल। खबर। २. एक प्रकार की बँगला मिठाई।

**सँदेसा**—संज्ञा पुं० [ सं० संदेश ] जबानी कहलाया हुआ समाचार। खबर। हाल।

**सँदेसी**—संज्ञा पुं० [ हिं० सँदेसा ] सँदेसा ले जानेवाला। दूत। बसीठ।

**संदेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी विषय में निश्चित न होनेवाला विश्वास। संशय। शंका। शक। २. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है।

**संदोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समूह। झुंड।

**संधा**†—संज्ञा स्त्री० दे० "संधि"।

**संधना**—क्रि० अ० [ सं० संधि ] संयुक्त होना।

**संधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २. योजन। मिलाना। ३. अन्वेषण। खोज। ४. काठियावाड़ का एक नाम। ५. संधि। ६. काँजी।

**संधानना**†—क्रि० स० [ सं० संधान+ना ( प्रत्य० ) ] १. निशाना लगाना। २. बाण छोड़ना।

**संधाना**—संज्ञा पुं० [ सं० संधानिका ] अचार।

**संधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मेल। संयोग। २. मिलने की जगह। जोड़। ३. राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है अथवा मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है। ४. सुलह। मित्रता। मैत्री। ५. शरीर में का कोई जोड़। गाँठ। ६. व्याकरण में वह विकार जो दो अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से होता है। ७. नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ८. चोरी आदि करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ९. एक अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के आरंभ के बीच का समय। वयःसंधि। १० बीच की खाली जगह। अवकाश। दरार।

**संधितट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संधि-स्थल। जोड़ का स्थान।

**संध्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधिकाल। २. शाम। सायंकाल। ३. आर्य्यों की एक विशिष्ट उपासना जो प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है।

**संनिवेश**—संज्ञा पुं० दे० "सन्निवेश"।

**संन्यस्त**—वि० [ सं० संन्यास ] १. जिसने संन्यास लिया हो। २. पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ। कटिबद्ध।

**संन्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भारतीय आर्य्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। इनमें काम्य और नित्य आदि कर्म्म निष्काम भाव से किए जाते हैं।

**संन्यासी**—संज्ञा पुं० [ सं० संन्यासिन् ] संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

**संपजना***—क्रि० अ० [ सं० सम्+हिं० उपजना ] १. उपजना। पैदा होना। उगना। २. प्रकाशित होना।

**संपति**—संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।

**संपत्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ऐश्वर्य्य। वैभव। २. धन। दौलत। जायदाद।

**संपद्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सिद्धि। पूर्णता। २. ऐश्वर्य्य। वैभव। गौरव। ३. सौभाग्य।

**संपदा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० संपद् ] १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

**संपन्न**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा स्त्री० संपन्नता ] १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। २. सहित। युक्त। ३. धनी। दौलतमंद।

**संपर्क**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संपृक्त ] १. मिश्रण। मिलावट। २. लगाव। संसर्ग। वास्ता। ३. स्पर्श। सटना।

**संपर्कित**—वि० दे० "संपृक्त"।

**संपा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विद्युत्। बिजली।

**संपात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. संसर्ग। मेल। ३. संगम। समागम। ४. वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।

**संपाति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नाम राक्षस का एक पुत्र।

**संपाती**—संज्ञा पुं० दे० "संपाति"।

**संपादक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २. तैयार करनेवाला। ३. किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालनेवाला।

**संपादकत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संपादन करने का भाव या अवस्था।

**संपादकीय**—वि० [ सं० ] संपादक का।

**संपादन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. काम को पूरा करना। २. प्रदान करना। ३. ठीक करना। दुरुस्त करना। ४. किसी पुस्तक या संवाद-पत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना।

**संपादित**—वि० [ सं० ] १. पूरा किया हुआ। २. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ ( पत्र, पुस्तक आदि )।

**संपुट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० अल्पा० संपुटी ] १. पात्र के आकार की कोई वस्तु। २. खप्पर। ठीकरा। कपाल। ३. दोना। ४. डिब्बा। ५. अंजली। ६. फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच में खाली जगह हो। कोश। ७. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं।

**संपुटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० संपुट ] कटोरी। प्याली।

**संपूर्ण**—वि० [ सं० ] १. खूब भरा हुआ। २. सब। बिलकुल। ३. समाप्त। खतम।

संज्ञा पुं० १. वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। २. आकाश भूत।

**संपूर्णतः**—क्रि० वि० [ सं० ] पूरी तरह से।

**संपूर्णतया**—क्रि० वि० [सं० ] पूरी तरह से।

**संपूर्णता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संपूर्ण होने का भाव। पूरापन। २. समाप्ति।

**संपृक्त**—वि० [ सं० ] जिससे संपर्क हो।

**सँपेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँप+एरा ( हिं० प्रत्य० ) ] [ स्त्री० सँपेरिन ] साँप पालनेवाला। मदारी।

**संपै***—संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।

**सँपोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँप ] साँप का बच्चा।

**संपोषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संपोषित ] अच्छी तरह पालन पोषण करना।

**संप्रज्ञात**—संज्ञा पुं० [ सं० ] योग में वह समाधि जिसमें आत्मा अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।

**संप्रति**—अव्य० [ सं० ] १. इस समय। अभी। आजकल। २. मुका-

करके दें।

**संप्रदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा। मंत्रोपदेश। ३. व्याकरण में एक कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न "को" है।

**संप्रदाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० सांप्रदायिक ] १. गुरुमंत्र। २. कोई विशेष धर्म-संबंधी मत। ३. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। फिरका। ४. परिपाटी। रीति। चाल।

**संप्राप्त**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा संप्राप्ति ] १. पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. पाया हुआ। ३. घटित। जो हुआ हो।

**संबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २. लगाव। संपर्क। वास्ता। ३. नाता। रिश्ता। ४. संयोग। मेल। ५. विवाह। सगाई। ६. व्याकरण में एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध सूचित होता है। जैसे—राम का घोड़ा।

**संबंधातिशयोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखाया जाता है।

**संबंधित**—वि० दे० "संबद्ध"।

**संबंधी**—वि० [ सं० संबंधिन् ] [ स्त्री० संबंधिनी ] १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. विषयक।
संज्ञा पुं० १. रिश्तेदार। २. समधी।

**संबत्**—संज्ञा पुं० दे० "संवत्"।

**संबद्ध**—वि० [ सं० ] १. बँधा हुआ। जुड़ा हुआ। २. संबंध-युक्त। ३. बंद।

**संबल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रास्ते का भोजन। सफर-खर्च। पाथेय। २. सहारा। सहायता।

**संबुद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ संज्ञा संबुद्धि ] १. ज्ञानी। ज्ञानवान्। २. जाना हुआ। ज्ञात। ३. बुद्ध। ४. जिन।

**संबोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संबोधित, संबोध्य ] १. जगाना। नींद से उठाना। २. पुकारना। ३. व्याकरण में व कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिए प्रयोग सूचित होता है। जैसे—हे राम! ४. जताना। विदित कराना। ५. नाटक में आकाश-भाषित। ६. समझाना-बुझाना।

**संबोधना***—क्रि० स० [ सं० ] समझाना-बुझाना।

**सँभरना***†—क्रि० अ० दे० "सँभलना"।

**सँभलना**—क्रि० अ० [ हिं० सँभालना ] १. किसी बोझ आदि का थामा जा सकना। २. किसी सहारे पर रुका रह सकना। ३. होशियार होना। सावधान होना। ४. चोट या हानि से बचाव करना। ५. कार्य का भार उठाया जाना। ६. स्वस्थता प्राप्त करना। चंगा होना।

**संभव**—संज्ञा पुं० [ सं० सम्भव ] १. उत्पत्ति। जन्म। २. मेल। संयोग। ३. होना। ४. हो सकने के योग्य होना।
वि० उत्पन्न। ( यौ० के अंत में )

**संभवतः**—अव्य० [ सं० ] हो सकता है। मुमकिन है। शायद।

**संभवना***—क्रि० स० [ सं० संभव ] उत्पन्न करना।
क्रि० अ० १. उत्पन्न होना। पैदा होना। २. संभव होना। हो सकना।

**संभवनीय**—वि० [ सं० ] संभव। मुमकिन।

**संभार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संचय। एकत्र करना। २. तैयारी। साज-सामान। ३. धन। संपत्ति। ४. पालन। पोषण।

**सँभार**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० सँभालना ] १. देख-रेख। खबरदारी। २. पालन-पोषण।
यौ०—सार सँभार = पालन-पोषण और निरीक्षण का भार।
३. वश में रखने का भाव। रोक। निरोध। ४. तन-बदन की सुध।

**सँभारना**†*—क्रि० स० [सं० संभार] १. दे० "सँभालना"। २. याद करना।

**सँभाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० संभार ] १. रक्षा। हिफाजत। २. पोषण का भार। ३. देख-रेख। निगरानी। ४. तन-बदन की सुध।

**सँभालना**—क्रि० स० [ सं० संभार ] १. भार ऊपर ले सकना। २. रोके रहना। काबू में रखना। ३. गिरने न देना। थामना। ४. रक्षा करना। हिफाजत करना। ५. बुरी दशा को प्राप्त होने से बचाना। उद्धार करना। ६. पालन-पोषण करना। ७. देख-रेख करना। निगरानी करना। ८. निर्वाह करना। चलाना। ९. कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना। सहेजना। १०. किसी मनोवेग को रोकना।

**सँभाला**—संज्ञा पुं० [ हिं० सँभाल ] मरने के पहले कुछ चेतनता-सी आना।

**सँभालू**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिंधुवार ] श्वेत सिंधुवार वृक्ष। मेवड़ी।

**संभावना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सम्भावना ] १. कल्पना। अनुमान।

२. हो सकना। मुमकिन होना। ३. प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। ४. एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है।

**संभावित**—वि० [ सं० सम्भावित ] १. कल्पित। मन में माना हुआ। २. जुटाया हुआ। ३. संभव। मुमकिन।

**संभाव्य**—वि० [सं० सम्भाव्य] संभव। मुमकिन।

**संभाषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० सम्भाषणीय, संभाषित, संभाष्य ] कथोपकथन। बातचीत।

**संभाषी**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० संभाषिणी ] कहनेवाला। बोलनेवाला।

**संभाष्य**—वि० [ सं० सम्भाष्य ] जिससे बातचीत करना उचित हो।

**संभूत**—वि० [ सं० सम्भूत ] [ संज्ञा संभूति ] १. एक साथ उत्पन्न। २. उत्पन्न। उद्भूत। पैदा। ३. युक्त। सहित।

**संभूय**—अव्य० [ सं० ] साझे में।

**संभूय समुत्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साझे का कारबार।

**संभोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुखपूर्वक व्यवहार। २. रति। क्रीड़ा। मैथुन। ३. संयोग शृंगार। मिलाप की दशा।

**संभ्रम**—संज्ञा पुं० [ सं० सम्भ्रम ] १. घबराहट। व्याकुलता। २. सहम। सिटपिटाना। अभिभव। ३. आदर। मान। गौरव।

**संभ्रांत**—वि० [ सं० सम्भ्रान्त ] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २. सम्मानित। प्रतिष्ठित।

**संभ्रामना**—क्रि० अ० [ सं० संभ्रम ] पूर्णतः द्योतित होना।

**संमत**—वि० दे० "सम्मत"।

**संयत**—वि० [ सं० ] १. बद्ध। बँधा हुआ। २. दबाव में रखा हुआ। ३. दमन किया हुआ। वशीभूत। ४. बंद किया हुआ। कैद। ५. क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ६. जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। निग्रही। ७. उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।

**संयम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संयमी, संयमित, संयत ] १. रोक। दाब। २. इंद्रियनिग्रह। चित्त-वृत्ति का निरोध। ३. हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज। ४. बाँधना। बंधन। ५. बंद करना। मूँदना। ६. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

**संयमन**—संज्ञा पुं० दे० "संयम"।

**संयमनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यमपुरी।

**संयमित**—वि० [ सं० ] १. जो संयम के अधीन हो। २. रोका या बाँधा हुआ।

**संयमी**—वि० [ सं० संयमिन् ] १. रोक या दबाव में रखनेवाला। २. मन और इंद्रियों को वश में रखनेवाला। आत्म-निग्रही। योगी। ३. परहेजगार।

**संयुक्त**—वि० [ सं० ] [ भाव० संयुक्तता ] १. जुड़ा हुआ। लगा हुआ। २. मिला हुआ। ३. संबद्ध। लगाव रखता हुआ। ४. सहित। साथ।

**संयुक्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक छंद का नाम।

**संयुग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेल। मिलाप। संयोग। २. युद्ध। लड़ाई।

**संयुत**—वि० [ सं० ] १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. सहित। साथ। संज्ञा पुं० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।

**संयोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मेल। मिलान। मिलावट। मिश्रण। २. समागम। मिलाप। ३. लगाव। संबंध। ४. सहवास। स्त्री-पुरुष का प्रसंग। ५. विवाह-संबंध। ६. जोड़। योग। ७. दो या कई बातों का इकट्ठा होना। इत्तफाक।

**मुहा०**—संयोग से=बिना पहले से निश्चित हुए। इत्तफाक से। दैववशात्।

**संयोगी**—संज्ञा पुं० [ सं० संयोगिन् ] [ स्त्री० संयोगिनी ] १. संयोग करनेवाला। २. वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो।

**संयोजक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलानेवाला। २. व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्य के बीच केवल जोड़ने के लिए आता है। ३. वह व्यक्ति जो किसी सभा या समिति के द्वारा किसी समिति या उपसमिति के अधिवेशन कराने और उसका कार्य संचालित करने के लिए नियुक्त होता है और उस समिति या उपसमिति के मंत्री और अध्यक्ष के रूप में काम करता है।

**संयोजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित ] १. जोड़ने या मिलाने की क्रिया। २. चित्र अंकित करने में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को ठीक जगह पर बैठाना। जुड़ाना।

**सँयोना**—क्रि० स० दे० "सँजोना"।

**संरक्षक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री०

संरक्षिता ] १. रक्षा करनेवाला। रक्षक। २. देख-रेख और पालन-पोषण करनेवाला। ३. आश्रय देनेवाला।

**संरक्षण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय ] १. हानि या नाश आदि से बचाने का काम। हिफाजत। २. देख-रेख। निगरानी। ३. अधिकार। कब्जा। ४. दूसरों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा।

**संरक्षित**—वि० [ सं० ] १. हिफाजत से रखा हुआ। २. अच्छी तरह से बचाया हुआ। ३. अपनी देख-रेख में लिया हुआ।

**संलक्ष्य**—वि० [ सं० ] जो लखा जाय।

**संलक्ष्य-क्रम-व्यंग्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो। ( साहित्य )

**संलग्न**—वि० [ सं० ] [स्त्री० संलग्ना] १. सटा हुआ। २. साथ में लगा हुआ। संबद्ध। ३. लड़ाई में गुथा हुआ।

**संलाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वार्तालाप। बात-चीत। २. नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें धीरता होती है।

**संलापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक प्रकार का उपरूपक। २. "संलाप"।

**संवत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वर्ष। साल। २. वर्ष-विशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है। सन्। ३. महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्ष-गणना।

**संवत्सर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वर्ष। साल।

**सँवर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्मृति ] १. स्मरण। याद। २. खबर। ३. हाल। ४. पुल। ५. चुनना।

**संवरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संवरणीय, संवृत ] १. हटाना। दूर रखना। २. बंद करना। ३. आच्छादित करना। छोपना। ४. छिपाना। गोपन करना। ५. किसी चित्तवृत्ति को दबाना या रोकना। निग्रह। ६. पसंद करना। चुनना। ७. कन्या का विवाह के लिए वर या पति चुनना।

**सँवरना**—क्रि० अ० [ सं० संवर्णन] १. दुरुस्त होना। २. सजना। अलंकृत होना।

क्रि० स० [ हिं० सुमिरना ] स्मरण करना।

**सँवरिया**—वि० दे० "साँवला"।

**संवर्द्धक**—संज्ञा पुं०[सं०] बढ़ानेवाला।

**संवर्द्धन**—संज्ञा पुं० [ सं० ][ वि० संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध ] १. बढ़ना। २. पालना। पोसना। ३. बढ़ाना।

**संवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० कर्त्ता० संवादक ] १. बात-चीत। कथोपकथन। २. खबर। हाल। समाचार। ३. प्रसंग। चर्चा। ४. मामला। मुकदमा।

**संवाददाता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो समाचारपत्रों में स्थानीय समाचार भेजता हो।

**संवादी**—वि० [ सं० संवादिन् ] [ संज्ञा स्त्री० संवादिता, संवादिनी ] १. संवाद या बात-चीत करनेवाला। २. सहमत या अनुकूल होनेवाला। संज्ञा पुं० संगीत में वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलता और सहायक होता है।

**सँवार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ढाँकना। छिपाना। २. शब्दों के उच्चारण में बाह्य प्रयत्नों में से एक जिसमें कंठ का आकुंचन होता है।

**सँवार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्मृति ] हाल। खबर।

संज्ञा स्त्री० सँवारने की क्रिया या भाव।

**सँवारना**—क्रि० स० [ सं० संवर्णन ] १. सजाना। अलंकृत करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। ३. क्रम से रखना। ४. काम ठीक करना।

**संवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संवासित ] १. सुगंधि। खुशबू। २. श्वास के साथ मुँह से निकलनेवाली दुर्गंध। ३. सार्वजनिक निवास-स्थान। ४. मकान। घर।

**संवाहन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संवाहनीय, संवाहित, संवाही, संवाह्य] १. उठाकर ले चलना। ढोना। २. ले जाना। पहुँचाना। ३. चलाना। परिचालन।

**संविद्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. चेतना। ज्ञानशक्ति। २. बोध। समझ। ३. बुद्धि। महत्तत्व। ४. संवेदन। अनुभूति। ५. मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया हो। ६. वृत्तांत। हाल। संवाद। ७. नाम। ८. युद्ध। लड़ाई। ९. संपत्ति। जायदाद।

**संविद्**—वि० [सं०] चेतन। चेतना-युक्त।

**संविधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राज-नियम। २. प्रबंध। व्यवस्था। ३. रीति। दस्तूर। ४. रचना।

**संवृत**—वि० [ सं० ] १. ढका या घिरा हुआ। २. रक्षित।

**संवेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अनुभव। वेदना। २. ज्ञान। बोध।

**संवेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य ] १. अनुभव करना। सुख-दुःख आदि की प्रतीति करना। २. ज्ञान। ३. जताना। प्रकट करना।

**संवेदना**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "संवेदन"। २. दे० "समवेदना"।

**संवेद्य**—वि० [ सं० ] १. अनुभव करने योग्य। २. जताने योग्य। बताने लायक।

**संशय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अनिश्चयात्मक ज्ञान। संदेह। शक। शुबहा। २. आशंका। डर। ३. संदेह नामक काव्यालंकार।

**संशयात्मक**—वि० [ सं० ] जिसमें संदेह हो। संदिग्ध। शुबहे का।

**संशयात्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० संशयात्मन् ] जो किसी बात पर विश्वास न करे।

**संशयी**—वि० [ सं० संशयिन् ] १. संशय या संदेह करनेवाला। २. शक्की।

**संशयोपमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक उपमा अलंकार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय के रूप ही कही जाती है।

**संशुद्ध**—वि० [ सं० ] जिसका संशोधन हुआ हो।

**संशोधक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुधारनेवाला। ठीक करनेवाला। २. बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला।

**संशोधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य ] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। ३. चुकता करना। अदा करना। ( ऋण आदि )

**संशोधित**—वि० [ सं० ] १. शुद्ध किया हुआ। २. सुधारा हुआ।

**संश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संयोग। मेल। २. संबंध। लगाव। ३. आश्रय। शरण। ४. सहारा। अवलंब। ५. मकान। घर।

**संश्रयण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित ] १. सहारा लेना। २. शरण लेना।

**संश्रित**—वि० [ सं० ] १. लगा हुआ। २. शरण में आया हुआ। ३. दूसरे के सहारे रहनेवाला। आश्रित।

**संश्लिष्ट**—वि० [ सं० ] १. मिला हुआ। सम्मिलित। २. आलिंगित। परिरंभित।

**संश्लेषण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट ] १. एक में मिलाना। सटाना। २. अँटकाना। टाँगना।

**संस, संसा**—संज्ञा पुं० [ सं० संशय ] आशंका।

**संसक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० संसक्त ] १. लगाव। संबंध। २. आसक्ति। लगन। ३. लीनता। ४. प्रवृत्ति।

**संसद्**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बहुत से आदमियों का जमाव। सभा। परिषद्। समिति।

**संसरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संसरणीय, संसरित, संसृत ] १. चलना। गमन करना। २. संसार। जगत्। ३. सड़क। रास्ता।

**संसर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संबंध। लगाव। २. मेल। मिलाप। ३. संग। साथ। ४. स्त्री-पुरुष का सहवास।

**संसर्ग-दोष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे।

**संसर्गी**—वि० [ सं० संसर्गिन् ] [ स्त्री० संसर्गिणी ] संसर्ग या लगाव रखनेवाला।

**संसा**—संज्ञा पुं० दे० "संशय"।

**संसार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता रहना। २. बार बार जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। ३. जगत्। दुनिया। सृष्टि। ४. इहलोक। मर्त्यलोक। ५. गृहस्थी।

**संसार-तिलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का उत्तम चावल।

**संसारी**—वि० [ सं० संसारिन् ] [ स्त्री० संसारिणी ] १. संसार-संबंधी। लौकिक। २. संसार की माया में फँसा हुआ। लोकव्यवहार में कुशल। ३. बार बार जन्म लेनेवाला।

**संसिक्त**—वि० [ सं० ] बहुत गीला या आर्द्र।

**संसृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। २. संसार।

**संसृष्ट**—वि० [ सं० ] १. एक में मिला-जुला। मिश्रित। २. संबद्ध। परस्पर लगा हुआ। ३. अंतर्गत। शामिल।

**संसृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। २. मिलावट। मिश्रण। ३. संबंध। लगाव। ४. हेल-मेल। घनिष्ठता। ५. इकट्ठा करना। संग्रह। ६. दो या अधिक काव्यालंकारों का ऐसा मेल जिसमें सब अलग अलग हों।

**संसेवन**—संज्ञा पुं० [ वि० संसेवित ] दे० "सेवन"।

**संस्करण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.

ठीक करना। दुरुस्त करना। २. शुद्ध करना। सुधारना। ३. द्विजातियों के लिए विहित संस्कार करना। ४. पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति। (आधुनिक)

**संस्कर्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संस्कार करनेवाला।

**संस्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ठीक करना। दुरुस्ती। सुधार। २. सजाना। ३. साफ करना। परिष्कार। ४. शिक्षा, उपदेश, संगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। ५. पिछले जन्म की बातों का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है। ६. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। ७. वे १६ कृत्य जो जन्म से लेकर मरण-काल तक द्विजातियों के संबंध में आवश्यक होते हैं। ८. मृतक की क्रिया। ९. इंद्रियों के विषयों के ग्रहण से मन में उत्पन्न प्रभाव।

**संस्कारहीन**—वि० [ सं० ] जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

**संस्कृत**—वि० [ सं० ] १. संस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। २. परिमार्जित। परिष्कृत। ३. साफ किया हुआ। ४. सुधारा हुआ। ठीक किया हुआ। ५. सँवारा हुआ। सजाया हुआ। ६. जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्य्यों की प्राचीन साहित्यक भाषा जिसमें उनके धर्म्मग्रंथ आदि हैं। देववाणी।

**संस्कृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. शुद्धि। सफाई। २. संस्कार। सुधार। ३. सजावट। ४. सभ्यता। शाइस्तगी। ५. २४ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।

**संस्था**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २. व्यवस्था। विधि। मर्य्यादा। ३. जत्था। गरोह। ४. संघटित समुदाय। समाज। मंडल। सभा।

**संस्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ठहराव। स्थिति। २. खड़ा रहना। डटा रहना। ३. बैठाना। स्थापन। ४. अस्तित्व। जीवन। ५. डेरा। घर। ६. बस्ती। जनपद। सार्वजनिक स्थान। ७. सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। ८. राज्य। ९. समष्टि। योग। जोड़। १०. प्रबंध। व्यवस्था। ११. नाश। मृत्यु।

**संस्थापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० संस्थापिका ] संस्थापन करनेवाला।

**संस्थापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य ] १. खड़ा करना। उठाना। ( भवन आदि ) २. जमाना। बैठाना। ३. कोई नई बात चलाना।

**संस्मरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० संस्मरणीय, संस्मृत ] १. पूर्ण स्मरण। खूब याद। २. किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटना। ३. अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

**संहत**—वि० [ सं० ] १. खूब मिला हुआ। जुड़ा या सटा हुआ। २. संयुक्त। सहित। ३. कड़ा। सख्त। ४. गठा हुआ। घना। ५. मजबूत। ६. एकत्र। इकट्ठा।

**संहति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मिलाव। मेल। २. जुटाव। बटोर। ३. राशि। ढेर। ४. समूह। झुंड। ५. ठोसपन। घनत्व। ६. संधि। जोड़।

**संहरना**—क्रि० अ० [ सं० संहार ] नष्ट होना। संहार होना।

क्रि० स० संहार करना।

**संहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इकट्ठा करना। बटोरना। २. समेटकर बाँधना। गूँथना। ( केशों का ) ३. छोड़े हुए बाण को फिर वापस लेना। ४. नाश। ध्वंस। ५. समाप्ति। अंत। ६. निवारण। परिहार।

**संहारक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० संहारिका ] संहार करनेवाला। नाशक।

**संहार काल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रलय-काल।

**संहारना***—क्रि० स० [ सं० संहरण ] १. मार डालना। २. नाश करना। ध्वंस करना।

**संहित**—वि० [ सं० ] १. एकत्र किया हुआ। २. मिलाया हुआ। ३. जुड़ा हुआ।

**संहिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मेल। मिलावट। २. व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का मिलकर एक होना। संधि। ३. वह ग्रंथ जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। जैसे—धर्म-संहिताएँ या स्मृतियाँ।

**स**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईश्वर। २. शिव। महादेव। ३. साँप। ४. पक्षी। चिड़िया। ५. वायु। हवा। ६. जीवात्मा। ७. चंद्रमा। ८. ज्ञान। ९. संगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। १०. छंदःशास्त्र में "सगण" शब्द का संक्षिप्त रूप।

उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दों के आरंभ में, कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिए, होता है। जैसे—(क) सजीव=सह+जीव। (ख) सपौत्र। (ग) सपूत।

**सउ***—अव्य० [ सं० सह ] से। साथ।

*अव्य० [ प्रा० सुंतो ] एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

**सउयो***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० सखी ] सखी।

**सई**—संज्ञा स्त्री० [ ?] वृद्धि। बढ़ती।

**सउँ***—अव्य० दे० "सौं"।

**सक**†—संज्ञा स्त्री० दे० "शाक" या "सकत"।

संज्ञा पुं० [ हिं० साका ] साका। धाक।

**सकट**—संज्ञा पुं० [ सं० शकट ] गाड़ी। छकड़ा।

**सकत**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० शक्ति ] १. बल। शक्ति। सामर्थ्य। २. वैभव। संपत्ति।

क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। भरसक।

**सकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शक्ति ] १. शक्ति। ताकत। बल। २. सामर्थ्य।

संज्ञा पुं० [ अ० सकतः] १. बेहोशी की बीमारी। २. विराम। यति।

**मुहा०**—सकता पड़ना=छंद में यति-भंग दोष होना।

**सकती**—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

**सकना**—क्रि० अ० [ सं० शक् या शक्य ] कोई काम करने में समर्थ होना। करने योग्य होना।

**सकपकाना**—क्रि० अ० [ अनु० सकपक ] १. आश्चर्ययुक्त होना। २. हिचकना। ३. लज्जित होना। ४. प्रेम, लज्जा या शंका के कारण उद्भूत एक प्रकार की चेष्टा। ५. हिलना-डोलना।

**सकरना**—क्रि० अ० [ सं० स्वीकरण ] १. सकारा जाना। मंजूर होना। २. कबूला जाना।

**सकरपारा**—संज्ञा पुं० दे० "शकरपारा"।

**सकर्मक**—वि० [ सं० ] १. कर्म से युक्त। २. काम में लगा हुआ। क्रियाशील।

**सकर्मक क्रिया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे—खाना, देना, लेना।

**सकल**—वि० [ सं० ] सब। समस्त। कुल।

संज्ञा पुं० निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।

**सकलात**—संज्ञा पुं० [ ? ] १. ओढ़ने की रजाई। दुलाई। २. सौगात। उपहार। ३. मखमल।

**सकलाती**—वि० [ हिं० सकलात ] १. उपहार में देने के योग्य। बहुत बढ़िया। २. मखमल का।

**सकसकाना, सकसना***†—क्रि० अ० [ अनु० ] डर के मारे काँपना।

**सकाना***†—क्रि० अ० [ सं० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. भय के कारण संकोच करना। हिचकना। ३. दुःखी होना।

क्रि० स० "सकना" का प्रेरणार्थक। (क्व०)

**सकाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। ३. काम-वासना-युक्त व्यक्ति। कामी। ४. वह जो कोई कार्य फल मिलने की इच्छा से करे।

वि० फल मिलने की इच्छा से किया जानेवाला।

**सकारना**—क्रि० अ० [ सं० स्वीकरण ] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले उस पर हस्ताक्षर करना।

**सकारे**†—क्रि० वि० [ सं० सकाल ] सवेरे।

**सकाश**—अव्य० दे० "संकाश"।

**सकिलना**†—क्रि० अ० [ हिं० फिसलना का अनु० ] १. फिसलना। सरकना। २. सिमटना।

**सकुच***†—संज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लाज। शर्म।

**सकुचना**—क्रि० अ० [ सं० संकोच ] १. लज्जा करना। शरमाना। २. (फूलों का) संपुटित होना। बंद होना।

**सकुचाई***—संज्ञा स्त्री० [सं० संकोच] लज्जा।

**सकुचाना**—क्रि० अ० [सं० संकोच ] संकोच करना।

क्रि० स० १. सिकोड़ना। २. किसी को संकुचित या लज्जित करना।

**सकुची**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शकुल मत्स्य ] कछुए के आकार की एक प्रकार की मछली।

**सकुचीला, सकुचौहाँ**—वि० [हिं० संकोच ] संकोच करनेवाला। लजीला।

**सकुन***—संज्ञा पुं० [ सं० शकुंत ] पक्षी। चिड़िया।

संज्ञा पुं० दे० "शकुन"।

**सकुनी***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० शकुंत ] चिड़िया।

**सकुपना***—क्रि० अ० दे० "सकोपना"।

**सकूनत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] निवास-स्थान।

**सकृत्**—अव्य० [ सं० ] १. एक

बार। एक मरतबा। २. सदा। ३. साथ। सह।

**सकेतना**†—संज्ञा पुं० [ सं० संकेत ] १. संकेत। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान। वि० [ सं० संकीर्ण] तंग। संकुचित। संज्ञा पुं० विपत्ति। दुःख। कष्ट।

**सकेलना**॰†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

**सकेरना**†—क्रि० स० [?] बुहारना। झाड़ू देना।

क्रि० स० दे० "सकेलना"।

**सकेलना**†—क्रि० स० [सं० संकल ?] एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना।

**सकेला**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सैक़ल ] एक प्रकार की तलवार।

**सकोच**—संज्ञा पुं० दे० "संकोच"।

**सकोचना**—क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"।

**सकोपना**॰†—क्रि० अ० [सं० कोप] कोप करना। क्रोध करना। गुस्सा करना।

**सकोरा**—संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।

**सक्का**—संज्ञा पुं० [अ०] भिश्ती। माशकी।

**सक्ति**—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

**सक्तु, सक्तुक**—संज्ञा पुं० [ सं० शक्तु ] भुने हुए अनाज का आटा। सत्तू।

**सक्र**॰—संज्ञा पुं० [ सं० शक्र ] इंद्र।

**सक्रारि**॰—संज्ञा पुं० [ सं० शक्रारि ] मेघनाद।

**सक्रिय**—वि० [ सं०] [ भाव० सक्रियता ] १. जिसमें क्रिया भी हो। २. क्रियात्मक रूप में। जिससे कुछ करके दिखलाया जाय।

**सक्षम**—वि० [ सं० ] [ भाव० सक्षमता ] १. जिसमें क्षमता हो। क्षमताशाली। २. समर्थ।

**सख**—संज्ञा पुं० [ सं० सखिन् ] सखा। मित्र।

**सखरच**—वि० दे० "शाहखर्च"।

**सखरज**—संज्ञा पुं० [?] मक्खन।

**सखरा**—संज्ञा पुं० दे० "सखरी"।

**सखरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० निखरा या निखरी ] कच्ची रसोई। जैसे—दाल भात।

**सखा**—संज्ञा पुं० [ सं० सखिन् ] १. साथी। संगी। २. मित्र। दोस्त। ३. सहयोगी। सहचर। ४. साहित्य में 'नायक' का सहचर। ये चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

**सखावत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. दानशीलता। २.उदारता। फैयाज़ी।

**सखी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहेली। सहचरी। २. संगिनी। ३. साहित्य में वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे। ४. १४ मात्राओं का एक छंद।

वि० [ अ० सखी ] दाता। दानी। दानशील।

**सखी भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करते हैं।

**सखुआ**—संज्ञा पुं० दे० "शाल"। (वृक्ष)।

**सखुन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सखुन ] १. बातचीत। वार्तालाप। २.कविता। काव्य। ३. कौल। वचन। ४. कथन। उक्ति।

**सखुन-तकिया**—संज्ञा पुं० [ फ़ा०] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों के मुँह से प्रायः निकला करता है। तकिया कलाम।

**सख्त**—वि० [ फ़ा० ] १. कठोर। कड़ा। २. मुश्किल। कठिन। क्रि० वि० बहुत अधिक।

**सख्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. कड़ापन। कड़ाई। २. व्यवहार की कठोरता।

**सख्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सखा का भाव। सखापन २. मित्रता। दोस्ती। ३. वैष्णव-मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें ईश्वरावतार को भक्त अपना सखा मानता है।

**सख्यता**—संज्ञा स्त्री० दे० "सख्य"।

**सग**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] कुत्ता।

**सगण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छंदःशास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इसका रूप ।।ऽ है।

**सगपन**—संज्ञा पुं० दे० "सगापन"।

**सग-पहती, सग-पहिता**—संज्ञा स्त्री० [हिं०साग+पहिती=दाल] एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

**सगबग**—वि० [अनु०] १. सराबोर। लथपथ। २. द्रवित। ३. परिपूर्ण। क्रि० वि० तेजी से। जल्दी से। चटपट।

**सगबगाना**—क्रि० अ० [ अनु० सगबग ] १. लथपथ होना। भीगना या सराबोर होना। २. सकपकाना। शंकित होना। ३. हिलना-डोलना।

**सगर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा तथा प्रजा-रंजक थे। इन्हें ६० हजार पुत्र हुए थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वंश के थे।

**सगरा**†—वि० [ सं० सकल ] [ स्त्री० सगरी ] सब । तमाम । सकल । कुल ।

**सगल***†—वि० दे० "सकल" ।

**सगा**—वि० [ सं० स्वक ] [ स्त्री० सगी ] १. एक माता से उत्पन्न । सहोदर । २. जो संबंध में अपने ही कुल का हो ।

**सगाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सगा + आई ( प्रत्य० ) ] १. विवाह-संबंधी निश्चय । मँगनी । २. स्त्री-पुरुष का वह संबंध जो छोटी जातियों में विवाह के तुल्य माना जाता है । ३. संबंध । नाता । रिश्ता ।

**सगापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० सगा + पन ] सगा होने का भाव । संबंध की आत्मीयता ।

**सगारत**†—संज्ञा स्त्री० दे० "सगापन" ।

**सगुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. परमात्मा का वह रूप जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है । साकार ब्रह्म । २. वह संप्रदाय जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है ।

**सगुन**—संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन" । २. दे० "सगुण" ।

**सगुनाना**—क्रि० स० [ सं० शकुन + आना ( प्रत्य० ) ] १. शकुन बतलाना । २. शकुन निकालना या देखना ।

**सगुनिया**—संज्ञा पुं० [ सं० शकुन + इया ( प्रत्य० ) ] शकुन विचारने और बतलानेवाला ।

**सगुनौती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सगुन + औती ( प्रत्य० ) ] १. शकुन विचारने की क्रिया । २. मंगल-पाठ ।

**सगोती**—संज्ञा पुं० [ सं० सगोत्र ] १. एक गोत्र के लोग । सगोत्र । २. भाई-बंधु ।

**सगोत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक गोत्र के लोग । सजातीय । २. कुल । जाति ।

**सग्गड़**—संज्ञा पुं० [ सं० शकट ] [ अल्पा० सगड़ी ] दो पहिए की हाथ से खींची जानेवाली मजबूत गाड़ी जो भारी बोझ लादने के काम में आती है ।

**सघन**—वि० [ सं० ] [ भाव० सघनता ] १. घना । गझिन । अविरल । गुंजान । २. ठोस । ठस ।

**सच**—वि० [ सं० सत्य ] जो यथार्थ हो । सत्य । वास्तविक । ठीक । दे० "सत्य" ।

**सचना***†—क्रि० स० [ सं० संचयन ] १. संचय करना । एकत्र करना । २. पूरा करना ।

क्रि० अ० स० दे० "सजना" ।

**सचमुच**—अव्य० [ हिं० सच + मुच ( अनु० ) ] १. यथार्थतः । ठीक ठीक । वास्तव में । २. अवश्य । निश्चय ।

**सचरना***—क्रि० अ० [ सं० संचरण ] १. संचरित होना । फैलना । २. बहुत प्रचलित होना । ३. संचार करना । प्रवेश करना ।

**सचराचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ ।

**सचल**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा सचलता ] १. जो अचल न हो । चलता हुआ । २. चंचल । ३. जंगम ।

**सचाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सत्य, प्रा० सच्च + आई ( प्रत्य० ) ] १. सत्यता । सच्चापन । २. वास्तविकता । यथार्थता ।

**सचान**—संज्ञा पुं० [ सं० संचान + श्येन ] श्येन पक्षी । बाज ।

**सचारना***†—क्रि० स० [ सं० संचारण ] सचरना का सकर्मक रूप । फैलाना ।

**सचिंत**—वि० [ सं० ] जिसे चिंता हो ।

**सचिक्कण**—वि० [ सं० ] अत्यंत चिकना ।

**सचिव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मित्र । दोस्त । २. मंत्री । वजीर । ३. सहायक ।

**सची**—संज्ञा स्त्री० दे० "शची" ।

**सचु***†—संज्ञा पुं० [ ? ] १. सुख । आनंद । २. प्रसन्नता । खुशी ।

**सचेत**—वि० दे० "सचेतन" ।

**सचेतन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० सचेतनता ] १. वह जिसमें चेतना हो । २. वह जो जड़ न हो । चेतन । वि० १. चेतनायुक्त । २. सावधान । होशियार । ३. समझदार । चतुर ।

**सचेष्ट**—वि० [ सं० ] १. जिसमें चेष्टा हो । २. जो चेष्टा करे ।

**सच्चरित**—वि० [ सं० ] अच्छे चरित्र या चालचलनवाला । सदाचारी ।

**सच्चरित्र**—वि० दे० "सच्चरित" ।

**सच्चा**—वि० [ सं० सत्य ] [ स्त्री० सच्ची ] १. सच बोलनेवाला । सत्यवादी । २. यथार्थ । ठीक । वास्तविक । ३. असली । विशुद्ध । ४. बिलकुल ठीक और पूरा ।

**सच्चाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सच्चा + आई ( प्रत्य० ) ] सच्चा होने का भाव । सच्चापन । सत्यता ।

**सच्चापन**—संज्ञा पुं० दे० "सच्चाई" ।

**सच्चिक्कन***—वि० दे० "सचिक्कण" ।

**सच्चिदानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ( सत्, चित् और आनंद से युक्त )

परमात्मा। ईश्वर।

**सछत***—वि० [सं० सक्षत] घायल। जख्मी।

**सछंद***—वि० दे० "स्वच्छंद"।

**सछी***—संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "साक्षी"।

**सज**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजावट] १. सजने की क्रिया या भाव। २. डौल। शकल। ३. शोभा। सौंदर्य। सजावट।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

**सजग**—वि० [सं० जागरण] [भाव० सजगता] सावधान। सचेत। सतर्क। होशियार।

**सजदार**—वि० [हिं० सज+फ़ा० दार (प्रत्य०)] जिसकी आकृति अच्छी हो। सुंदर।

**सज-धज**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सज+धज (अनु०)] बनाव-सिंगार। सजावट।

**सजन**—संज्ञा पुं० [सं० सत+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी] १. भला आदमी। सज्जन। शरीफ। २. पति। भर्ता। ३. प्रियतम। यार।

**सजना**—क्रि० स० [सं० सज्जा] १. सज्जित करना। अलंकृत करना। शृंगार करना। २. शोभा देना। भला जान पड़ना।

क्रि० अ० सुसज्जित होना।

**सजल**—वि० [सं०] [स्त्री० सजला] १. जल से युक्त या पूर्ण। २. आँसुओं से पूर्ण। (आँख)

**सजवट**—संज्ञा पुं० [हिं० सजना] तैयारी।

**सजवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजना+वाई (प्रत्य०)] सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**सजवाना**—क्रि० स० [हिं० सजाना का प्रेर०] किसी के द्वारा सुसज्जित कराना।

**सजा**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. दंड। २. जेल में रखने का दंड। कारावास।

**सजाइ***†—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सज़ा] सजा। दंड।

**सजाई**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सजाना] सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**सजागर**—वि० [सं०] १. जागता हुआ। २. सजग। होशियार।

**सजाति, सजातीय**—वि० [सं०] एक जाति या गोत्र का।

**सजान***—संज्ञा पुं० [सं० सज्ञान] १. जानकार। जाननेवाला। २. चतुर। होशियार।

**सजाना**—क्रि० स० [सं० सज्जा] १. वस्तुओं को यथास्थान रखना। तरतीब लगाना। २. अलंकृत करना। शृंगार करना।

**सजाय***†—संज्ञा स्त्री० दे० "सजा"।

**सजायाफ्ता, सजायाब**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह जो कैद की सजा भोग चुका हो।

**सजाव**—संज्ञा पुं० [हिं० सजाना ?] एक प्रकार का बढ़िया दही।

**सजावट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सजाना+आवट (प्रत्य०)] सज्जित होने का भाव या धर्म्म।

**सजावन***†—संज्ञा पुं० [हिं० सजाना] सजाने या तैयार करने की क्रिया।

**सजावल**—संज्ञा पुं० [तु० सज़ावुल] १. सरकारी कर उगाहनेवाला कर्म्मचारी। तहसीलदार। २. सिपाही। जमादार।

**सजावार**—वि० [फ़ा०] उचित। वाजिब।

वि० [फ़ा० सज़ा] दंड पाने के योग्य। दंडनीय।

**सजीउ***†—वि० दे० "सजीव"।

**सजीला**—वि० [हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १. सजधज के साथ रहनेवाला। छैला। २. सुंदर। मनोहर।

**सजीव**—वि० [सं०] १. जिसमें प्राण हों। २. फुरतीला। तेज। ३. ओजयुक्त।

**सजीवन**—संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी"।

**सजीवन मूल***—संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी"।

**सजीवनी मंत्र**—संज्ञा पुं० [सं० संजीवन+मंत्र] वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है।

**सजुग***†—वि० [हिं० सजग] सचेत।

**सजुता**—संज्ञा स्त्री० दे० "संयुक्ता"। (छंद)

**सजूरी**—संज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई।

**सजोना**†—क्रि० स० दे० "सजाना"।

**सजोयल***—वि० दे० "सँजोइल"।

**सज्ज***—संज्ञा पुं० दे० "साज"।

**सज्जन**—संज्ञा पुं० [सं० सत्+जन] १. भला आदमी। शरीफ। २. प्रिय मनुष्य। प्रियतम। ३. सजाने की क्रिया या भाव।

**सज्जनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सज्जन होने का भाव। भलमंसाहत। सौजन्य।

**सज्जनताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता"।

**सज्जा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सजाने की क्रिया या भाव। सजा-

सट । २. वेश-भूषा ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० शय्या ] १. सोने की चारपाई । शय्या । २. दे० "शय्यादान" ।

**सजित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सजिता ] १. सजा हुआ । अलंकृत । २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त ।

**सजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सर्जिका ] भूरे रंग का एक प्रसिद्ध क्षार ।

**सजीखार**—संज्ञा पुं० दे० "सजी" ।

**सज्युता**—संज्ञा स्त्री० दे० "संयुता" । ( छंद )

**सज्ञान**—वि० [ सं० ] १. ज्ञानयुक्त । २. चतुर । बुद्धिमान् । ३. सावधान ।

**सज्या***—संज्ञा स्त्री० १. दे० "सजा" । २. दे० "शय्या" ।

**सटक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० सट से ] १. सटकने की क्रिया । धीरे से चंपत होना । २. तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा । ३. पतली लचनेवाली छड़ी ।

**सटकना**—क्रि० अ० [ अनु० सट से ] धीरे से खिसक जाना । चंपत होना ।

**सटकाना**—क्रि० स० [ अनु० सट से ] छड़ी, कोड़े आदि से मारना ।

**सटकार**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० सट ] १. सटकाने की क्रिया या भाव । २. गौ आदि को हाँकने की क्रिया । हटकार ।

**सटकारना**—क्रि० स० [ अनु० सट से ] छड़ी या कोड़े से मारना । सट सट मारना ।

**सटकारा**—वि० [ अनु० ] चिकना और लंबा । ( बाल )

**सटकारी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] पतली छड़ी ।

**सटना**—क्रि० अ० [ सं० स+स्था ] १. दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ । २. चिपकना । ३. मार-पीट होना ।

**सटपट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. सिटपिटाने की क्रिया । चकपकाहट । २. शील । संकोच । ३. दुविधा । असमंजस ।

**सटपटाना**—क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना" ।

**सटरपटर**—वि० [ अनु० ] छोटा मोटा । तुच्छ । मामूली ।

संज्ञा स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम ।

**सटसट**—क्रि० वि० [ अनु० ] १. सट शब्द के साथ । सटासट । २. शीघ्र । जल्दी ।

**सटाना**—क्रि० स० [ सं० स+स्था या स+निष्ठ ] १. दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना । मिलाना । २. लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना । ( बदमाश )

**सटियल**—वि० [ ? ] घटिया ।

**सटिया***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० साँठ ( गाँठ ) ] षड्यंत्र ।

**सटीक**—वि० [ सं० ] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो । व्याख्या-सहित । वि० [ हिं० ठीक ] बिलकुल ठीक ।

**सटोरिया**—संज्ञा पुं० दे० "सट्टेबाज" ।

**सट्टक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक । २. एक छंद का नाम ।

**सट्टा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. इकरारनामा । २. साधारण व्यापार से भिन्न खरीद बिक्री का वह प्रकार जो केवल तेजी और मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता है । खेला ।

**सट्टा बट्टा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सटना + अनु० बट्टा ] १. मेल-मिलाप । हेल-मेल । २. धूर्ततापूर्ण युक्ति । चालबाजी ।

**सट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाट या हट्टी ] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की चीजें लोग लाकर बेचते हों । हाट ।

**सट्टेबाज**—संज्ञा पुं० [ हिं० + फ़ा० ] [ भाव० सट्टेबाजी ] वह जो केवल तेजी मंदी के विचार से खरीद बिक्री करता हो । सटोरिया ।

**सठ**—संज्ञा पुं० दे० "शठ"

**सठता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शठ ] १. शठ होने का भाव । शठता । २. मूर्खता । बेवकूफी ।

**सठियाना**—क्रि० अ० [ हिं० साठ + याना ( प्रत्य० ) ] १. साठ बरस का होना । २. बुड्ढा होना । वृद्धावस्था के कारण बुद्धि का कम हो जाना ।

**सठोरा**—संज्ञा पुं० दे० "सोंठौरा" ।

**सड़क**—संज्ञा स्त्री० [ अ० शरक ] आने-जाने का चौड़ा रास्ता । राजमार्ग । राजपथ ।

**सड़ना**—क्रि० अ० [ सं० सरण ] १. किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग अलग हो जायँ और उसमें दुर्गन्ध आने लगे । २. किसी पदार्थ में खमीर उठना या आना । ३. दुर्दशा में पड़ा रहना ।

**सड़ाना**—क्रि० स० [ हिं० सड़ना का स० ] किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना ।

**सड़ायँध, सड़ाँध**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सड़ना + गंध ] सड़ी हुई चीजों की गंध ।

**सड़ाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० सड़ना ] सड़ने की क्रिया या भाव।

**सड़ासड़**—अव्य० [ अनु० सड़ से ] सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो।

**सड़ियल**—वि० [हिं० सड़ना+इयल (प्रत्य०)] १. सड़ा हुआ। गला हुआ। २. रद्दी। खराब। ३. नीच। तुच्छ।

**सत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्म।
वि० १. सत्य। २. साधु। सज्जन। ३. धीर। ४. नित्य। स्थायी। ५. विद्वान्। पंडित। ६. शुद्ध। पवित्र। ७. श्रेष्ठ।

**सतंत***—अव्य० दे० "सतत"।

**सत**—वि० दे० "सत्"।
संज्ञा पुं० [ सं० सत् ] सत्यतापूर्ण धर्म्म।
मुहा०—सत पर चढ़ना=पति के मृत शरीर के साथ सती होना। सत पर रहना=पतिव्रता रहना।
वि० दे० "शत"।
संज्ञा पुं० [ सं० सत्त्व ] १. मूल तत्त्व। सार भाग। २. जीवनी-शक्ति। ताकत।
वि० "सात" (संख्या) का संक्षिप्त रूप। (यौगिक)

**सतकार**—संज्ञा पुं० दे० "सत्कार"।

**सतकारना***—क्रि० स० [ सं० सत्कार+ना (प्रत्य०) ] सत्कार करना। सम्मान करना।

**सतगुरु**—संज्ञा पुं० [ हिं० सत=सच्चा+गुरु ] १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा। परमेश्वर।

**सतजुग**—संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

**सतत**—अव्य० [ सं० ] सदा। हमेशा।

**सतनजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सात+अनाज ] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।

**सतपदी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सप्तपदी"।

**सतपुतिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सप्तपुत्रिका ] एक प्रकार की तरोई।

**सतफेरा**—संज्ञा पुं० दे० "सप्तपदी"।

**सतभाय***—संज्ञा पुं० दे० "सद्भाव"।

**सतमासा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सात+मास ] १. वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो। २. गर्भाधान के सातवें महीने होनेवाला कृत्य।

**सतयुग**—संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।

**सतरंगा**—वि० [ हिं० सात+रंग ] सात रंगोंवाला।
संज्ञा पुं० इंद्रधनुष।

**सतर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. लकीर। रेखा। पंक्ति। अवली। कतार।
वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. कुपित। क्रुद्ध।
संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मनुष्य की गुह्य इंद्रिय। २. ओट। आड़। परदा।

**सतराना**—क्रि० अ० [ हिं० सतर या सं० सतर्जन ] १. क्रोध करना। २. चिढ़ना।

**सतरौंहाँ**—वि० [ हिं० सतराना ] १. कुपित। क्रोधयुक्त। २. कोपसूचक।

**सतर्क**—वि० [ सं० ] [ भाव० सतर्कता ] १. तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट। २. सावधान।

**सतर्पना**—क्रि० स० [ सं० संतर्पण ] अच्छी तरह संतुष्ट या तृप्त करना।

**सतलज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शतद्रु ] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

**सतलड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सात+लड़ ] सात लड़ों की माला।

**सतवंती**—वि० स्त्री० [ हिं० सत्य+वन्ती (प्रत्य०) ] सतवाली। सती। पतिव्रता।

**सतवाँसा**—दे० "सतमासा"।

**सतसंग**—संज्ञा पुं० दे० "सत्संग"।

**सतसई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सप्तशती ] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।

**सतह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २. वह विस्तार जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई हो।

**सतांग**—संज्ञा पुं० [ सं० शतांग ] रथ। यान।

**सतानंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

**सताना**—क्रि० स० [ सं० संतापन ] १. संताप देना। दुःख देना। २. हैरान करना।

**सतालू**—संज्ञा पुं० [ सं० सप्तालुक ] शफतालू। आड़ू।

**सतावना***†—क्रि० स० दे० "सताना"।

**सतावर**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शतावरी ] एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली।

**सति***—संज्ञा पुं० दे० "सत्य"।

**सतिवन**—संज्ञा पुं० [ सं० सप्तपर्ण ] छतिवन।

**सती**—वि० स्त्री० [ सं० ] साध्वी। पतिव्रता।
संज्ञा स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी। २. पतिव्रता स्त्री। ३. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले।

४. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण और एक गुरु होता है।

**सतीत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सती होने का भाव। पातिव्रत्य।

**सतीत्व-हरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पर-स्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।

**सतीपन**—संज्ञा पुं० दे० "सतीत्व"।

**सतुआ**†—संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।

**सतुआन**†—संज्ञा स्त्री० दे० "सतुआ संक्रांति"।

**सतुआ संक्रांति**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सतुआ + संक्रांति ] मेष की संक्रांति।

**सतृष्ण**—वि० [ सं० ] तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण।

**सतोखना***†—क्रि० स० [ सं० संतोषण ] १. संतुष्ट करना। २. ढारस देना।

**सतोगुण**—संज्ञा पुं० दे० "सत्त्व गुण"।

**सतोगुणी**—संज्ञा पुं० [ हिं० सतोगुण + ई (प्रत्य०) ] सत्त्वगुणवाला। सात्त्विक।

**सत्कर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० सत्कर्मन् ] १. अच्छा काम। २. धर्म का काम। पुण्य।

**सत्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आदर सम्मान। खातिरदारी। २. आतिथ्य।

**सत्कार्य्य**—वि० [ सं० ] सत्कार करने योग्य।

संज्ञा पुं० उत्तम कार्य्य। अच्छा काम।

**सत्कीर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यश। नेकनामी।

**सत्कुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।

**सत्कृत**—वि० [ सं० ] जिसका सत्कार किया जाय। आदृत।

**सत्कृति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो अच्छे कार्य करता हो। सत्कर्मी।

संज्ञा स्त्री० अच्छी कृति। उत्तम कार्य।

**सत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० सत्त्व ] १. सार भाग। असली जुज। २. तत्त्व। काम की वस्तु।

*संज्ञा पुं० [ सं० सत्य ] १. सत्य। सच बात। २. सतीत्व। पातिव्रत्य।

**सत्तम**—वि० [ सं० ] १. सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ। २. परमपूज्य। ३. परमसाधु।

**सत्तर**—वि० [ सं० सप्तति ] साठ और दस।

संज्ञा पुं० साठ और दस की संख्या। ७०।

**सत्तरह**—वि० [ सं० सप्तदश ] दस और सात।

संज्ञा पुं० दस और सात की संख्या। १७।

**सत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ होने का भाव। अस्तित्व। हस्ती। २. शक्ति। दम। ३. अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत।

संज्ञा पुं० [ हिं० सात ] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।

**सत्ताधारी**—संज्ञा पुं० [ सं० सत्ताधारिन् ] अधिकारी। अफसर। हाकिम।

**सत्ताशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

**सत्तू**—संज्ञा पुं० [ सं० सक्तुक ] भूने हुए अन्न का चूर्ण। सतुआ।

**सत्पथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल।

**सत्पात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी।

**सत्पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भला आदमी।

**सत्य**—वि० [ सं० ] १. यथार्थ। ठीक। वास्तविक। सही। २. असल।

संज्ञा पुं० १. ठीक बात। यथार्थ तत्त्व। २. उचित पक्ष। धर्म की बात। ३. वह वस्तु जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो। ( वेदांत ) ४. ऊपर के सात लोकों में से सब से ऊपर का लोक। ५. विष्णु। ६. चार युगों में से पहला युग। कृतयुग।

**सत्यकाम**—वि० [ सं० ] सत्य का प्रेमी।

**सत्यतः**—अव्य० [ सं० ] वास्तव में। सचमुच।

**सत्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सत्य होने का भाव। वास्तविकता। सच्चाई।

**सत्यनारायण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**सत्यनिष्ठ**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा सत्यनिष्ठा ] सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला। सत्यव्रत।

**सत्यप्रतिज्ञ**—वि० [ सं० ] अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।

**सत्यभामा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।

**सत्ययुग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार युगों में से पहला जो सबसे उत्तम माना जाता है।

**सत्यलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ]

सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्मा रहते हैं।

**सत्यवती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मत्स्यगंधा नामक धीवर-कन्या जिसके गर्भ से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी। २. गाधि की पुत्री और ऋचीक की पत्नी।

**सत्यवादी**—वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १. सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २. वचन को पूरा करनेवाला।

**सत्यवान**—संज्ञा पुं० [सं० सत्यवत्] शाल्वदेश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।

**सत्यव्रत**—संज्ञा पुं० [सं०] सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।

**सत्यसंध**—वि० [सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] सत्य-प्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला।

संज्ञा पुं० १. रामचन्द्र। २. जनमेजय।

**सत्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्यभामा।

संज्ञा स्त्री० १. दे० "सत्ता"। २. दे० "सत्यता"।

**सत्याग्रह**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शांति-पूर्वक निरंतर हठ करना।

**सत्याग्रही**—संज्ञा पुं० [सं० सत्याग्रहिन्] वह जो सत्याग्रह करता हो।

**सत्यानास**—संज्ञा पुं० [सं० सत्ता+नाश] सर्वनाश। मटियामेट। ध्वंस। बरबादी।

**सत्यानासी**—वि० [हिं० सत्यानास] सत्यानास करनेवाला। चौपट करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा। भड़-भाँड़।

**सत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ। २. एक सोमयाग। ३. घर। मकान। ४. धन। ५. वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। छेत्र। सदावर्त्त।

**सत्रह**—वि० संज्ञा पुं० दे० "सत्तरह"।

**सत्राई***—संज्ञा स्त्री० [सं० शत्रुता] शत्रुता। दुश्मनी।

**सत्रुहन***—संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।

**सत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सत्ता। अस्तित्व। हस्ती। २. सार। तत्त्व। ३. चित्त की प्रवृत्ति। ४. आत्मतत्त्व। चैतन्य। चित्तत्व। ५. प्राण। जीव। तत्त्व।

**सत्वगुण**—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे कर्म्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण।

**सत्वर**—अव्य० [सं०] शीघ्र। जल्द।

**सत्संग**—संज्ञा पुं० [सं०] साधुओं या सज्जनों के साथ उठना-बैठना। भली संगत।

**सत्संगति**—संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग"।

**सत्संगी**—वि० [सं० सत्संगिन्] [स्त्री० सत्संगिनी] १. अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २. मेल-जोल रखनेवाला।

**सथर***—संज्ञा स्त्री० [सं० स्थल] भूमि।

**सथिया**—संज्ञा पुं० [सं० स्वस्तिक] १. एक प्रकार का मंगल-सूचक या सिद्धिदायक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न 卐। २. फोड़े आदि की चीरफाड़ करनेवाला। जर्राह।

**सद**—संज्ञा स्त्री० [सं० सत्व] प्रकृति। आदत।

**सदई***—अव्य० [सं० सदैव] सदा।

**सदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. विराम। स्थिरता। ३. एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई।

**सदबर्ग**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] हजारा गेंदा।

**सदमा**—संज्ञा पुं० [अ० सद्मः] १. आघात। धक्का। चोट। २. रंज। दुःख।

**सदय**—वि० [सं०] [भाव० सदयता] दयायुक्त। दयालु।

**सदर**—वि० [अ० सद्र] प्रधान। मुख्य।

संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ कोई बड़ा हाकिम रहता हो। केंद्र-स्थल। २. सभापति।

**सदर-आला**—संज्ञा पुं० [अ०] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो। छोटा जज।

**सदरी**—संज्ञा स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती। जवाहर-बंडी।

**सदर्थना***—क्रि० स० [सं० सदर्थ या समर्थन] समर्थन करना। पुष्टि करना।

**सदसद्विवेक**—संज्ञा पुं० [सं०] अच्छे और बुरे की पहचान। भले बुरे का ज्ञान।

**सदस्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. यज्ञ करनेवाला। २. सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। मेंबर।

**सदस्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सदस्य का भाव या पद। सभासदी।

**सदा**—अव्य० [सं०] १. नित्य। हमेशा। सर्वदा। २. निरंतर। लगातार।

संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गूँज। प्रतिध्वनि। २. आवाज। शब्द। ३. पुकार।

**सदागति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। २. सूर्य।

**सदाचरण, सदाचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छा आचरण। २. भलमनसाहत।

**सदाचारिता**—संज्ञा स्त्री० दे० "सदाचरण"।

**सदाचारी**—संज्ञा पुं० [ सं० सदाचारिन् ] [ स्त्री० सदाचारिणी ] १. अच्छे आचरणवाला पुरुष। २. धर्मात्मा।

**सदाफल**—वि० [ सं० ] सदा फलने वाला।

संज्ञा पुं० १. गूलर। ऊमर। २. श्रीफल। बेल। ३. नारियल। ४. एक प्रकार का नीबू।

**सदाबरत**—संज्ञा पुं० दे० "सदावर्त"।

**सदारत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सद्र या प्रधान का धर्म, भाव या कार्य। २. सभापतित्व।

**सदावर्त**—संज्ञा पुं० [ सं० सदाव्रत ] १. नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना। २. वह भोजन जो नित्य गरीबों को बाँटा जाय। खैरात।

**सदा-बहार**—वि० [ हिं० सदा + फ़ा० बहार ] १. जो सदा फूले। २. जो सदा हरा रहे। ( वृक्ष )

**सदाशय**—वि० [ सं० ] [ भाव० सदाशयता ] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। सज्जन। भला-मानस।

**सदाशिव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महादेव।

**सदा-सुहागिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सदा + सुहागिन ] वेश्या। रंडी। ( विनोद )

**सदिया**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सादः ] वह लाल पक्षी जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। लाल पक्षी की मादा।

**सदी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। २. सैकड़ा।

**सदुपदेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २. अच्छी सलाह।

**सदूर***—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

**सदृश**—वि० [ सं० ] १. समान। अनुरूप। २. तुल्य। बराबर।

**सदेह**—क्रि० वि० [ सं० ] १. इसी शरीर से। बिना शरीर-त्याग किए। २. मूर्त्तिमान्। सशरीर।

**सदैव**—अव्य० [ सं० ] सदा। हमेशा।

**सद्गति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति।

**सद्गुण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ हिं० सद्गुणी ] १. अच्छा गुण। २. भलमनसाहत।

**सद्गुरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छा गुरु। उत्तम शिक्षक। २. परमात्मा।

**सद्ग्रंथ**—संज्ञा पुं० [ सं० सत् + ग्रंथ ] अच्छा ग्रंथ। सन्मार्ग बतानेवाली पुस्तक।

**सद्द***†—संज्ञा पुं० [ सं० शब्द ] शब्द। ध्वनि।

अव्य० [ सं० सद्य ] तुरंत। तत्काल।

**सद्धर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छा या उत्तम धर्म। २. बौद्ध धर्म।

**सद्भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रेम और हित का भाव। २. मेल-जोल। मैत्री। ३. सच्चा भाव। अच्छी नीयत।

**सद्म**—संज्ञा पुं० [ सं० सद्मन् ] [ स्त्री० अल्पा० सद्मिनी ] १. घर। मकान। २. संग्राम। युद्ध। ३. पृथ्वी और आकाश।

**सद्य**—अव्य० [ सं० ] १. आज ही। २. इसी समय। अभी। ३. तुरंत। शीघ्र।

**सद्यः**—अव्य० दे० "सद्य"।

**सद्र**—संज्ञा पुं० दे० "सदर"।

**सद्व्रत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सद्व्रता ] १. जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो। २. सदाचारी।

**सधना**—क्रि० अ० [ हिं० साधना ] १. सिद्ध होना। पूरा होना। काम होना। २. काम चलना। मतलब निकलना। ३. अभ्यस्त होना। मँजना। ४. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल होना। गौं पर चढ़ना। ५. निशाना ठीक होना।

**सधर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऊपर का होंठ।

**सधवा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० विधवा का अनु० ] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।

**सधाना**—क्रि० स० [ हिं० सधना का प्रेर० ] साधने का काम दूसरे से कराना।

**सनंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक मानस पुत्र।

**सन्**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. वर्ष। साल। संवत्सर। २. कोई विशेष वर्ष। संवत्। ३. ईसवी वर्ष।

**सन**—संज्ञा पुं० [ सं० शण ] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सियाँ आदि बनती हैं।

*† प्रत्य० [ सं० संग ] अवधी में करण कारक का चिह्न। से। साथ।

संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] वेग से निकलने का शब्द।

वि० [ अनु० सुन ] १. सन्नाटे में आया हुआ। स्तब्ध। ठक। २. मौन। चुप।

**सनई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सन ] छोटी जाति का सन।

**सनक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शंका

खटका ] १. किसी बात की धुन । मन की झोंक । वेग के साथ मन की प्रवृत्ति ।

मुहा०—सनक सवार होना=धुन होना

२. खब्त । झक्क ।

संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक ।

**सनकना**—क्रि० अ० [ हिं० सनक ] १. पागल हो जाना । पगलाना । २.बहकी बहकी बातें करना । ३.डींग मारना ।

**सनकारना***†—क्रि० स० [ हिं० सेन+करना ] संकेत करना । इशारा करना ।

**सनकियाना**—क्रि० स० [ हिं० सनक ] पागल बनाना ।

क्रि० स० [ हिं० सैन ] संकेत या इशारा करना ।

**सनकी**—वि० [ हिं० सनक ] १. जो सनक गया हो । पागल । सिड़ी । २. जो किसी धुन में विशेष रूप से रहे ।

संज्ञा [ सं० संकेत] इशारा, विशेषतः आँख से किया गया इशारा ।

**सनत्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा ।

**सनत्कुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक । वैधात्र ।

**सनद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० सनदी ] १. प्रमाण । सबूत । दलील । २. प्रमाण-पत्र । सर्टिफिकेट ।

**सनदयाफ्ता**—वि० [ अ० सनद+फ़ा० याफ्तः ] जिसे किसी बात की सनद मिली हो ।

**सनना**—क्रि० अ० [ सं० संधम् ] १. गीला होकर लेई के रूप में मिलना । २. एक में मिलना । लीन होना ।

**सनम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] प्रिय । प्यारा ।

**सनमान**—संज्ञा पुं० दे० "सम्मान" ।

**सनमानना***—क्रि० स० [ सं० सम्मान ] खातिर करना, सत्कार करना ।

**सनमुख***—अव्य० दे० "सम्मुख" ।

**सनसनाना**—क्रि० अ० [ अनु० ] (हवा का) सन सन शब्द करते हुए बहना ।

**सनसनाहट**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] सन सन शब्द होने का भाव या क्रिया ।

**सनसनी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० सन-सन ] १. संवेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन । झनझनाहट । झनझनी । २. भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता । ३. उद्वेग । घबराहट ।

**सनहकी**—संज्ञा स्त्री० [अ० सनहक] मिट्टी का एक बरतन । (मुसलमान)

**सनहना**—संज्ञा पुं० [ हिं० सानना, अ० सनहक ] वह गड्ढा या पात्र जिसमें माँजने के पूर्व जले हुए बरतन कालिख फूलने के लिए रखे जाते हैं ।

**सनाढ्य**—संज्ञा पुं० [ सं० सन ] ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत है ।

**सनातन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राचीन काल । अत्यंत पुराना समय । २. प्राचीन परंपरा । बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम । ३.ब्रह्मा । ४. विष्णु ।

वि० १. अत्यंत प्राचीन । बहुत पुराना । २. जो बहुत दिनों से चला आता हो । परंपरागत । ३. नित्य । शाश्वत ।

**सनातनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राचीनता । पुरानापन । २. परंपरागत होने का भाव ।

**सनातन धर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्राचीन या परंपरागत धर्म । २. वर्त्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय है ।

**सनातन पुरुष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु भगवान् ।

**सनातनी**—संज्ञा पुं० [ सं० सनातन+ई ( प्रत्य० ) ] १. जो बहुत दिनों से चला आता हो । सनातन धर्म का अनुयायी ।

**सनाथ**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सनाथा ] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो ।

**सनाय**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सनाऽ ] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं । सोनामुखी ।

**सनाह**—संज्ञा पुं० [ सं० सन्नाह ] कवच । बकतर ।

**सनित**—वि० [ हिं० सनना ] सना या एक में मिलाया हुआ । मिश्रित ।

**सनीचर**—संज्ञा पुं० दे० "शनैश्चर" ।

**सनीचरी**—संज्ञा पुं० [ हिं० सनीचर ] शनि की दशा, जिसमें अधिक दुःख होता है ।

**सनेस, सनेसा**†—संज्ञा पुं० दे० "संदेश" ।

**सनेह***†—संज्ञा पुं० दे० "स्नेह" ।

**सनेहरा***†—संज्ञा पुं० दे० "सनेह" ।

**सनेहिया***†—संज्ञा पुं० दे० "सनेही" ।

**सनेही**—वि० [ सं० स्नेही, स्नेहिन् ] स्नेह या प्रेम रखनेवाला । प्रेमी ।

**सनोवर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] चीड़ (पेड़) ।

**सन्न**—वि॰ [ सं॰ शून्य ] १. संज्ञा-शून्य । स्तब्ध । जड़ । २. भौचक । ठक । ३. डर से चुप ।

**सन्नद्ध**—वि॰ [ सं॰] १. बँधा हुआ । २. तैयार । उद्यत । ३. लगा हुआ । जुड़ा हुआ ।

**सन्नाटा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शून्य ] १. निःशब्दता । नीरवता । निःस्तब्धता । २. निर्जनता । निरालापन । एकांतता । ३. ठक रह जाने का भाव । स्तब्धता ।

**मुहा॰**—सन्नाटे में आना=ठक रह जाना । कुछ कहते-सुनते न बनना ।

४. एकबारगी खामोशी । चुप्पी ।

**मुहा॰**—सन्नाटा खींचना या मारना=एक बारगी चुप हो जाना ।

५. चहल-पहल का अभाव । उदासी । ६. काम-धंधे से गुलजार न रहना । वि॰ १. नीरव । स्तब्ध । २. निर्जन । संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ सन सन ] १. हवा के जोर से चलने की आवाज । २. हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द ।

**सन्नाह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कवच । बकतर ।

**सन्निकट**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ सान्निकटता ] समीप । पास ।

**सन्निकर्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ सन्निकृष्ट ] १. संबंध । लगाव । २. नाता । रिश्ता । ३. सामीप्य । समीपता ।

**सन्निधान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. निकटता । समीपता । २. स्थापित करना ।

**सन्निधि**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. समीपता । निकटता । २. सामने-सामने की स्थिति ।

**सन्निपात**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक साथ गिरना या पड़ना । २. संयोग । मेल । ३. इकट्ठा होना । एक साथ जुटना । ४.कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना । त्रिदोष । सरसाम ।

**सन्निविष्ट**—वि॰ [ सं॰ ] १. एक साथ बैठा हुआ । जमा हुआ । २. रखा हुआ । धरा हुआ । ३. स्थापित । प्रतिष्ठित । ४. प्रविष्ट । ५. पास का । समीप का ।

**सन्निवेश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक साथ बैठना । २. जमना । स्थित होना । ३. रखना । धरना । ४. अँटाना । जड़ना । ५. अँटना । समाना । ६. निवास । घर । ७. एकत्र होना । जुटना । ८. समूह । समाज । ९. गढ़न । गठन । बनावट । १०. प्रवेश ।

**सन्निहित**—वि॰ [ सं॰ ] १. एक साथ या पास रखा हुआ । २. समीपस्थ । निकटस्थ । ३. ठहराया हुआ । टिकाया हुआ । ४. प्रविष्ट । सम्मिलित ।

**सन्मान**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सम्मान" ।

**सन्मुख**—अव्य॰ दे॰ "सम्मुख" ।

**सन्यास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ संन्यास ] १. छोड़ना । त्याग । २. दुनिया के जंजाल से अलग होने की अवस्था । वैराग्य । ३. चतुर्थ आश्रम । यतिधर्म ।

**सन्यासी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ संन्यासिन् ] [ स्त्री॰ संन्यासिनी, संन्यासिन ] १. वह पुरुष जिसने संन्यास धारण किया हो । चतुर्थ आश्रमी । २. विरागी । त्यागी ।

**सपक्ष**—वि॰ [ सं॰ ] १. जो अपने पक्ष में हो । तरफदार । २. समर्थक । पोषक । संज्ञा पुं॰ १.तरफदार । मित्र । सहायक । २. न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो ।

**सपत्नी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक ही पति की दूसरी स्त्री । सौत । सौतिन ।

**सपत्नीक**—वि॰ [ सं॰ ] पत्नी के सहित ।

**सपदि**—अव्य॰ [ सं॰ ] उसी समय । तुरंत ।

**सपना**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्वप्न] वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े । स्वप्न ।

**सपरदाई**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ संप्रदायी ] तवायफ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला । भड़ुआ । समाजी ।

**सपरना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ संपादन ] १. काम का पूरा होना । समाप्त होना । निबटना । २. काम का किया जा सकना । हो सकना ।

**सपरिकर**—वि॰ [ सं॰ ] अनुचर-वर्ग के साथ । ठाठ-बाट के साथ ।

**सपाट**—वि॰ [ सं॰ स+पट्ट ] १. बराबर । समतल । २. जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो । चिकना ।

**सपाटा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सर्पण ] १. चलने या दौड़ने का वेग । झोंक । तेजी । २. तीव्र गति । दौड़ । झपट ।

**यौ॰**—सैर-सपाटा=घूमना-फिरना ।

**सपाद**—वि॰ [ सं॰ ] १. चरण-सहित । २. जिसमें एक का चौथाई और मिला हो । सवाया ।

**सपिंड**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंडदान करता हो ।

**सपिंडी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] मृतक के निमित्त वह कर्म्म जिसमें वह और

पित्तों के साथ मिलाया जाता है।

**सपुर्द**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सिपुर्द ] अमानत । धरोहर ।
वि० किसी के जिम्मे किया हुआ । सौंपा हुआ ।

**सपुर्दगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सपुर्द करने या होने की क्रिया ।

**सपूत**—संज्ञा पुं० [ सं० सत्पुत्र ] वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र ।

**सपूती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सपूत+ई ( प्रत्य० ) ] १. सपूत होने का भाव । लायकी । २. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता ।

**सपेद्**—वि० दे० "सफेद"।

**सपोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँप+ ओला (प्रत्य०) ] साँप का छोटा बच्चा

**सप्त**—वि० [ सं० ] गिनती में सात ।

**सप्तऋषि**—संज्ञा पुं० दे० "सप्तक"। दे० "सप्तर्षि" २. ।

**सप्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सात वस्तुओं का समूह । २. सातों स्वरों का समूह ।

**सप्तद्वीप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग । जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप ।

**सप्तपदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं । भाँवर । भँवरी ।

**सप्तपर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] छतिवन ( पेड़ ) ।

**सप्तपर्णी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] लजावंती लता ।

**सप्त-पाताल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी के नीचे के ये सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

**सप्तपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गये हैं—अयोध्या, मथुरा, माया ( हरिद्वार ), काशी, कांची, अवंतिका ( उज्जयिनी ) और द्वारका ।

**सप्तम**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सप्तमी ] सातवाँ ।

**सप्तमी**—वि० स्त्री० [ सं० ] सातवीं ।
संज्ञा स्त्री० १. किसी पक्ष की सातवीं तिथि । २. अधिकरण कारक की विभक्ति । ( व्याकरण )

**सप्तर्षि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सात ऋषियों का समूह या मंडल । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि । महाभारत के अनुसार—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ । २. उत्तर दिशा के सात तारे जो ध्रुव के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

**सप्तशती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सात सौ का समूह । २. सात सौ पद्यों का समूह । सतसई । ३. दुर्गापाठ ।

**सप्ताह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सात दिनों का काल । हफ्ता । २. भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय ।

**सफ़**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. पंक्ति । कतार । २. लंबी चटाई । सीतल पाटी ।

**सफ़र**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. प्रस्थान । यात्रा । २. रास्ते में चलने का समय या दशा ।

**सफ़रमैना**—संज्ञा स्त्री० [ अं० सैपर माइनर ] सेना के वे सिपाही जो खाई आदि खोदने को आगे चलते हैं ।

**सफ़री**—वि० [ अ० सफ़र ] १. सफ़र में का । सफ़र में काम आनेवाला । २. छोटा और हलका ।
संज्ञा पुं० १. राह-खर्च । २. अमरूद ।

**सफरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शफरी ] सौरी मछली ।

**सफल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सफला ] १. जिसमें फल लगा हो । २. जिसका कुछ परिणाम हो । सार्थक । ३. कृतकार्य्य । कामयाब ।

**सफलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सफल होने का भाव । कामयाबी । सिद्धि । २. पूर्णता ।

**सफलित**—वि० दे० "सफलीभूत" ।

**सफलीभूत**—वि० [ सं० ] जो सफल हुआ हो । जो सिद्ध या पूरा हुआ हो ।

**सफ़ा**—वि० [ अ० ] १. साफ । स्वच्छ । २. पाक । पवित्र । ३. चिकना । बराबर । ४. पृष्ठ । पन्ना ।

**सफ़ाई**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सफ़ा+ई (प्रत्य०) ] १. स्वच्छता । निर्म्मलता । २. मैल या कूड़ा करकट आदि हटाने की क्रिया । ३. स्पष्टता । मन में मैल न रहना । ४. कपट या कुटिलता का अभाव । ५. दोषारोप का हटना । निर्दोषता । ६. मामले का निबटेरा । निर्णय ।

**सफ़ाचट**—वि० [ हिं० सफ़ा ] एकदम स्वच्छ । बिलकुल साफ या चिकना ।

**सफ़ीर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एलची । राजदूत ।

**सफ़ूफ़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] बुकनी । चूर्ण ।

**सफ़ेद**—वि० [ फ़ा० सुफ़ेद ] १. चूने के रंग का । धौला । श्वेत । चिट्टा । २. जिस पर कुछ लिखा न हो । कोरा । सादा ।

मुहा०—स्याह सफेद=भला-बुरा। इष्ट-अनिष्ट।

**सफेदपोश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ भाव० सफेदपोशी ] १. साफ कपड़े पहननेवाला। २. भलामानस। शिष्ट।

**सफेदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सुफ़ैदा ] १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाई के काम में आता है। २. आम का एक भेद। ३. खरबूजे का एक भेद।

**सफेदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सुफ़ैदी ] १. सफेद होने का भाव। श्वेतता। धवलता।

मुहा०—सफेदी आना=बुढ़ापा आना। २. दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी।

**सब**—वि० [ सं० सर्व ] १. जितने हों, वे कुल। समस्त। २. पूरा। सारा।

वि० [ अं० ] किसी बड़े कर्मचारी का सहायक। जैसे—सब-एडिटर। सब-जज।

**सबक**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. पाठ। २. शिक्षा।

**सबज**—वि० दे० "सब्ज"।

**सबद**—संज्ञा पुं० [ सं० शब्द ] १. दे० "शब्द"। २. किसी महात्मा के वचन।

**सबब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. कारण। वजह। हेतु। २. द्वार। साधन।

**सब-मरीन**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] पानी के नीचे डूबकर चलनेवाला एक प्रकार का जहाज। पनडुब्बी।

**सबर**—संज्ञा पुं० दे० "सब्र"।

**सबल**—वि० [ सं० ] [ भाव० सबलता ] १. बलवान्। ताकतवर। २. जिसके साथ सेना हो।

**सबार**—क्रि० वि० [ हिं० सबेरा ] शीघ्र।

**सबील**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मार्ग। सड़क। २. उपाय। तरकीब। ३. प्याऊ। पौसला।

**सबूत**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जिससे कोई बात प्रमाणित की जाय। प्रमाण। वि० जो खंडित न हो। पूरा।

**सबेरा**—संज्ञा पुं० दे० "सवेरा"।

**सब्ज**—वि० [ फ़ा० ] १. कच्चा और ताजा। (फल फूल आदि)।

मुहा०—सब्ज बाग दिखलाना=काम निकालने के लिए बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना।

२. हरा। हरित। (रंग) ३. शुभ। उत्तम।

**सब्ज-कदम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] वह जिसका आना अशुभ माना जाय। मनहूस।

**सब्जा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सब्ज़ः ] १. हरियाली। २. भंग। भाँग। विजया। ३. पन्ना नामक रत्न। ४. घोड़े का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन होता है।

**सब्जी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. वनस्पति आदि हरियाली। २. हरी तरकारी। ३. भाँग।

**सब्र**—संज्ञा पुं० [ अ० ] संतोष। धैर्य।

मुहा०—किसी का सब्र पड़ना=किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना।

**सभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. परिषद्। गोष्ठी। समिति। मजलिस। २. वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिए संघटित हो।

**सभागा**—वि० [ सं० सौभाग्य ] १. भाग्यवान्। २. सुंदर। खूबसूरत।

**सभागृह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान। मजलिस की जगह।

**सभापति**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सभानेत्री ] वह जो सभा का प्रधान नेता हो। सभा का मुखिया।

**सभासद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो। सदस्य। सामाजिक।

**सभीत**—वि० दे० "भीत"।

**सभ्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सभासद। सदस्य। २. वह जिसका आचार-व्यवहार उत्तम हो। भला आदमी।

**सभ्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सभ्य होने का भाव। २. सदस्यता। ३. सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४. भलमनसाहत। शराफत।

**समंजस**—वि० [ सं० ] उचित। ठीक।

**समंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सीमा। सिरा।

**समंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] घोड़ा। संज्ञा पुं० [ सं० समुद्र ] १. सागर। समुद्र। २. बड़ा तालाब या झील।

**सम**—वि० [सं०] [स्त्री० समा] १. समान। तुल्य। बराबर। २. सब। कुल। तमाम। ३. जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो। चौरस। ४. (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस।

संज्ञा पुं० १. संगीत में वह स्थान जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर या हाथ आप से आप हिल जाता है। २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंध का वर्णन होता है।

संज्ञा पुं० [ अ० ] विष। जहर।

**समकक्ष**—वि॰ [सं॰] समान। तुल्य।

**समकालीन**—वि॰ [सं॰] जो (दो या कई) एक ही समय में हों। सामयिक।

**समकोण**—वि॰ [सं॰] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।

**समक्ष**—अव्य॰ [सं॰] सामने।

**समग्र**—वि॰ [सं॰] कुल। पूरा। सब।

**समग्री***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सामग्री"।

**सम चतुर्भुज**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।

**समचर**—वि॰ [सं॰] समान आचरण करनेवाला।

**समझ**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ ज्ञान] बुद्धि। अक्ल।

**समझदार**—वि॰ [हिं॰ समझ+फ़ा॰ दार] बुद्धिमान्।

**समझना**—क्रि॰ अ॰ [हिं॰ समझ] किसी बात को अच्छी तरह मन में बैठाना।

**समझाना**—क्रि॰ स॰ [हिं॰ समझना] दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।

**समझाव, समझावा**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ समझाना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

**समझौता**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ समझ] आपस का निपटारा।

**समतल**—वि॰ [सं॰] जिसकी सतह बराबर हो। हमवार।

**समता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता।

**समतूल***—वि॰ दे॰ "समतोल"।

**समतोल**—वि॰ [सं॰ सम+सं॰ तोल] महत्त्व आदि के विचार से समान। बराबर।

**समतोलन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. महत्त्व आदि के विचार से सबको समान रखना। २. दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना।

**समत्रिभुज**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज समान हों।

**समत्व**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "समता"।

**समदन**—संज्ञा स्त्री॰ [?] भेंट। नजर।

**समदना**—क्रि॰ अ॰ [?] प्रेमपूर्वक मिलना।

**समदर्शी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ समदर्शिन्] सबको एक सा देखनेवाला।

**समधिक**—वि॰ [सं॰] बहुत। अधिक।

**समधियाना**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ समधी] समधी का घर।

**समधी**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ संबंधी] पुत्र या पुत्री का ससुर।

**समनाम**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. समान नामवाला। नामराशी। २. समानार्थ। पर्याय।

**समन्वय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. संयोग। मिलन। मिलाप। २. विरोध का न होना। कार्य्य-कारण का प्रवाह या निर्वाह।

**समन्वित**—वि॰ [सं॰] मिला हुआ। संयुक्त।

**समपाद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह छंद या कविता जिसके चारों चरण समान हों।

**समय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. वक्त। काल। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फुरसत। ४. अंतिम काल।

**समर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] युद्ध। लड़ाई।

**समरथ**—वि॰ दे॰ "समर्थ"।

**समरभूमि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

**समरस**—वि॰ [सं॰ सम+रस] [भाव॰ समरसता] १. एक ही प्रकार के रसवाले (पदार्थ)। २. एक ही तरह के।

**समरांगण**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "समरभूमि"।

**समराना***—क्रि॰ स॰ [हिं॰ सँवारना] सजाना या सजवाना।

**समर्चना**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] भली भाँति की हुई अर्चना।

**समर्थ**—वि॰ [सं॰] जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।

**समर्थक**—वि॰ [सं॰] जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला।

**समर्थता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सामर्थ्य। शक्ति।

**समर्थन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ समर्थनीय, समर्थक, समर्थ्य] १. यह निश्चय करना कि अमुक बात उचित है या अनुचित। २. यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी के मत का पोषण करना। ३. विवेचन।

**समर्थित**—वि॰ [सं॰] जिसका समर्थन हुआ हो।

**समर्पक**—वि॰ [सं॰] समर्पण करनेवाला।

**समर्पण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. आदरपूर्वक भेंट करना। प्रतिष्ठापूर्वक देना। २. दान देना।

**समर्पना***—क्रि॰ स॰ [सं॰ समर्पण] समर्पण करना। सौंपना।

**समर्पित**—वि॰ [सं॰] जो समर्पण

किया गया हो। असमर्थ किया हुआ।

**समल**—वि० [ सं० ] मलीन। मैला। गंदा।

**समवकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का वीर-रस-प्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है।

**समवयस्क**—वि० [ सं० ] समान वयस या उम्रवाला। हमउम्र।

**समवर्ती**—वि० [ सं० समवर्तिन् ] १. जो समान रूप से स्थित हो। २. जो पास में स्थित हो।

**समवाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। झुंड। २. न्यायशास्त्र के अनुसार वह संबंध जो अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का होता है।

**समवायी**—वि० [ सं० समवायिन् ] जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो।

**समवृत्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह छंद जिसके चारों चरण समान हों।

**समवेत**—वि० [ सं० ] १. इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २. जमा किया हुआ। संचित।

**समवेदना**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सम + वेदना ] किसी के शोक, दुःख, कष्ट या हानि के प्रति सहानुभूति।

**समशीतोष्ण कटिबंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक है।

**समष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सबका समूह। कुल। व्यष्टि का उलटा।

**समस्त**—वि० [ सं० ] १. सब। कुल। समग्र। २. एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। ३. जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समासयुक्त।

**समस्थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंगा और यमुना के बीच का देश। अंतर्वेद।

**समस्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. संघटन। २. मिलाने की क्रिया। मिश्रण। ३. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अन्तिम पद जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है। ४. कठिन अवसर या प्रसंग।

**समस्यापूर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी समस्या आधार पर छंद आदि बनाना।

**समाँ**—संज्ञा पुं० [ सं० समय ] समय। वक्त।

**मुहा०**—समाँ बँधना=( संगीत आदि का ) इतनी उत्तमता से होना कि लोग स्तब्ध हो जायँ।

**समा**—संज्ञा पुं० दे० "समाँ"। वि० 'सम' का स्त्री०।

**समाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० समाना ] १. समाने की क्रिया या भाव। २. सामर्थ्य। शक्ति।

**समागत**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० समागता ] जिसका आगमन हुआ हो। आया हुआ।

**समागम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आगमन। आना। २. मिलना। भेंट। ३. मैथुन।

**समाचार**—संज्ञा पुं० [सं०] संवाद। खबर। हाल।

**समाचारपत्र**—संज्ञा पुं० [सं० समाचार + पत्र ] वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। अखबार।

**समाज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। गरोह। दल। २. सभा। ३. एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगों का समूह। समुदाय। ४. वह संस्था जो बहुत से लोगों ने मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हो। सभा।

**समाजवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सिद्धांत जिसमें सारी संपत्ति समाज या समूह की मानी जाती है और सब लोग सबके लाभ के लिए काम करते हैं।

**समाजवादी**—वि० [ सं० ] वह जो समाजवाद का सिद्धांत मानता हो।

**समाजशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जो मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानकर मनुष्य के समाज और संस्कृति की उत्पत्ति तथा उन्नति का विवेचन करता है।

**समाज-शास्त्री**—संज्ञा पुं० [ सं० समाजशास्त्रिन् ] समाज-शास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

**समादर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० समादृत, समादरणीय ] आदर। सम्मान। खातिर।

**समादृत**—वि० [ सं० ] जिसका खूब आदर हुआ हो। सम्मानित।

**समाधान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० समाधानीय ] १. चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। समाधि। २. किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। ३. किसी प्रकार का विरोध दूर करना। ४. निष्पत्ति। निराकरण। ५. बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो। ( नाटक )

**समाधानना***—क्रि० स० [ सं० समाधान ] १. समाधान या संतोष करना। २. सांत्वना देना।

**समाधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. समर्थन । २. ग्रहण करना । अंगीकार । ३. ध्यान । ४. प्रतिज्ञा । ५. निद्रा । नींद । ६. योग । ७. योग का चरम फल । इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के क्लेशों से मुक्त हो जाता है और उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं । ८. किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना । ९. वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों । १०. काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैव-संयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है । ११. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से कोई कार्य्य बहुत ही सुगमतापूर्वक होना बतलाया जाता है ।
संज्ञा स्त्री० दे० "समाधान" ।

**समाधि-क्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हों । २. कब्रिस्तान ।

**समाधित**—वि० [ सं० ] जिसने समाधि लगाई या की हो ।

**समाधिस्थ**—वि० [ सं० ] जो समाधि लगाए हुए हो ।

**समान**—वि० [ सं० ] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्त्व आदि में एक से हों । बराबर । तुल्य ।
संज्ञा स्त्री० दे० "समानता" ।

**समानता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समान होने का भाव । तुल्यता । बराबरी ।

**समाना**—क्रि० अ० [ सं० समावेश ] अंदर आना । भरना । अँटना ।
क्रि० स० अंदर करना । भरना ।

**समानाधिकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आता है ।

**समानार्थ, समानार्थक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो । पर्य्याय ।

**समानिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण और एक गुरु होता है । समानी ।

**समापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समाप्त करनेवाला । पूरा करनेवाला ।

**समापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० समाप्य, समापनीय ] १. समाप्त करना । पूरा करना । २. मार डालना । वध ।

**समापिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है ।

**समापित**—वि० [ सं० ] समाप्त, खतम या पूरा किया हुआ ।

**समाप्त**—वि० [ सं० ] जो खतम या पूरा हो गया हो ।

**समाप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी कार्य्य या बात आदि का खतम या पूरा होना ।

**समाप्य**—वि० जो समाप्त होनेवाला या समाप्त होने योग्य हो ।

**समायोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संयोग । २. लोगों का एकत्र होना ।

**समारंभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अच्छी तरह आरंभ होना । २. समारोह । आयोजन ।

**समारना***—क्रि० स० दे० "सँवारना" ।

**समारोह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तड़क-भड़क । धूम-धाम । २. कोई ऐसा कार्य्य या उत्सव जिसमें बहुत धूम-धाम हो । आयोजन ।

**समालोचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समालोचना करनेवाला ।

**समालोचन**—संज्ञा पुं० दे० "समालोचना" ।

**समालोचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. खूब देखना भालना । २. किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना । ३. वह कथन या लेख आदि जिसमें इस प्रकार गुण और दोषों की विवेचना हो । आलोचना ।

**समावर्त्तन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० समावर्त्तनीय ] १. वापस आना । लौटना । २. वैदिक काल का एक संस्कार जो उस समय होता था, जब ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरुकुल में रहकर और विद्याओं का अध्ययन करके स्नातक बनकर घर लौटता था ।

**समाविष्ट**—वि० [ सं० ] जिसका समावेश हुआ हो । समाया हुआ । सम्मिलित ।

**समावेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक साथ या एक जगह रहना । २. एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना । ३. मनोनिवेश ।

**समाश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आश्रय । शरण ।

**समाश्रित**—वि० [ सं० ] आश्रय या शरण में रहनेवाला ।

**समास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संक्षेप । २ समर्थन । ३. संग्रह । ४. सम्मिलन । ५. व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना । यह चार प्रकार का होता है—अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व ।

**समासीन**—वि० [ सं० ] भली भाँति आसीन या बैठा हुआ । आसीन ।

**समासोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक अर्थालंकार जिसमें समान कार्य्य और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।

**समाहरण**—संज्ञा पुं० दे० "समाहार"।

**समाहर्त्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० समाहर्तृ ] १. समाहार करनेवाला। मिलानेवाला। २. प्राचीन काल का राज-कर एकत्र करनेवाला एक कर्मचारी।

**समाहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २. समूह। राशि। ढेर। ३. मिलना।

**समाहार द्वंद्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो। जैसे–सेठ साहूकार।

**समाहित**—वि० [ सं० ] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ। केंद्रित। २. शांत। ३. समाप्त। ४. स्वीकृत।

**समिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सभा। समाज। २. प्राचीन वैदिक काल की एक संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। ३. किसी विशिष्ट कार्य्य के लिए नियुक्त की हुई सभा।

**समिद्ध**—वि० [ सं० ] १. प्रज्वलित। २. उत्तेजित। भड़का या भड़काया हुआ।

**समिध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अग्नि।

**समिधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० समिध् ] हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

**समीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समान या बराबर करना। २. गणित में एक क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं।

**समीक्षक**—वि० [ सं० ] १. अच्छी तरह देखने-भालनेवाला। २. आलोचना करनेवाला। समालोचक।

**समीक्षा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ वि० समीक्षित, समीक्ष्य ] १. अच्छी तरह देखना। २. आलोचन। समालोचना। ३. बुद्धि। ४. यत्न। कोशिश। ५. मीमांसा शास्त्र।

**समीचीन**—वि० [ सं० ] [ भाव० समीचीनता ] १. यथार्थ। ठीक। २. उचित। वाजिब।

**समीति***—संज्ञा स्त्री० दे० "समिति"।

**समीप**—वि० [ सं० ] [ भाव० समीपता ] दूर का उलटा। पास। निकट। नजदीक।

**समीपवर्त्ती**—वि० [ सं० समीपवर्तिन् ] समीप का। पास का।

**समीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वायु। हवा। २. प्राण-वायु।

**समीरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वायु। हवा।

**समुंद, समुंदर**—संज्ञा पुं० दे० "समुद्र"।

**समुंदरफूल**—संज्ञा पुं० [ हिं० समुंदर+फूल ] एक प्रकार का विधारा।

**समुचित**—वि० [ सं० ] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

**समुच्चय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिलान। समाहार। मिलन। २. समूह। राशि। ढेर। ३. साहित्य में एक अलंकार जिसके दो भेद हैं। एक तो वह जहाँ आश्चर्य्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावों के एक साथ उदित होने का वर्णन हो। दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य्य के लिए बहुत से कारणों का वर्णन हो।

**समुज्ज्वल**—वि० [ सं० ] [ भाव० समुज्ज्वलता ] विशेष रूप से उज्ज्वल। प्रकाशमान। चमकीला।

**समुझ***†—संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

**समुत्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उठने की क्रिया। २. उत्पत्ति। ३. आरंभ।

**समुत्सुक**—वि० [ सं० ] [ भाव० समुत्सुकता ] विशेष रूप से उत्सुक।

**समुदय**—संज्ञा पुं०, वि० दे० "समुदाय"।

**समुदाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समूह। ढेर। २. झुंड। गरोह। ३. समुत्थान। उदय।

वि० सब। समस्त। कुल।

**समुदाव**—संज्ञा पुं० दे० "समुदाय"।

**समुद्यत**—वि० [ सं० ] जो भली भाँति उद्यत या तैयार हो।

**समुद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जल-राशि जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वी-तल के प्रायः तीन चतुर्थांश में व्याप्त है। सागर। अंबुधि। उदधि। २. किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।

**समुद्रफेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] समुद्र के पानी का फेन या झाग जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। समुंदर-फेन।

**समुद्रयात्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

**समुद्रयान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जहाज।

**समुद्रलवण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है।

**समुद्रीय**—वि० [ सं० ] समुद्र-

संबंधी।

**समुन्नत**—वि॰ [सं॰] भली भाँति उन्नत।

**समुन्नति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ समुन्नत] १. यथेष्ट उन्नति। काफी तरक्की। २.महत्त्व। बड़ाई। ३.उच्चता।

**समुपस्थित**—वि॰ दे॰ "उपस्थित"।

**समुल्लास**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ समुल्लसित] १. उल्लास। आनंद। खुशी। २. ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद।

**समुहा**—वि॰ [सं॰ सम्मुख] सामने का।

क्रि॰ वि॰ सामने। आगे।

**समुहाना**—क्रि॰ अ॰ [सं॰ सम्मुख] सामने आना।

**समूर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] शंबर या साबर नामक हिरन।

**समूल**—वि॰ [सं॰] १. जिसमें मूल या जड़ हो। २. जिसका कोई हेतु हो। कारण सहित।

क्रि॰ वि॰ जड़ से। मूल सहित।

**समूह**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. बहुत सी चीजों का ढेर राशि। २. समुदाय। झुंड। गरोह।

**समृद्ध**—वि॰ [सं॰] संपन्न। धनवान्।

**समृद्धि**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] बहुत अधिक संपन्नता। अमीरी।

**समेटना**—क्रि॰ स॰ [हिं॰ सिमटना] १. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। किसी फैली हुई वस्तु को सिकोड़ना। २. अपने ऊपर लेना।

**समेत**—वि॰ [सं॰] संयुक्त। मिला हुआ।

अव्य॰ सहित। साथ।

**समै,समैया***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "समय"।

**समोखना**—क्रि॰स॰ [सं॰ सम्मुख ?] बहुत ताकीद से कहना।

**समोना**—क्रि॰ स॰ [?] मिलोना।

**समोसा**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का नमकीन पकवान। तिकोना।

**समौ***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "समय"।

**समौरिया**—वि॰[सं॰सम+उमरिया] बराबर की उमरवाला। समवयस्क।

**सम्मत**—वि॰ [सं॰] जिसकी राय मिलती हो। सहमत। अनुमत।

**सम्मति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. सलाह। राय। २. अनुमति। आदेश। अनुज्ञा। ३. मत। अभिप्राय।

**सम्मन**—संज्ञा पुं॰ [अं॰ समन्स] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाजिर होने का हुक्म दिया जाता है।

**सम्मान**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] समादर। इज्जत। मान। गौरव। प्रतिष्ठा

**सम्मानना**-संज्ञा स्त्री॰ दे॰"सम्मान"।

*क्रि॰ स॰ सम्मान या आदर करना।

**सम्मानित**—वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ सम्मानिता] जिसका सम्मान हुआ हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

**सम्मार्जनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] झाड़ू।

**सम्मिलन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] मिलाप। मेल।

**सम्मिलित**—वि॰ [सं॰] मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।

**सम्मिश्रण**-संज्ञा पुं॰ [सं॰][वि॰ सम्मिश्र] १. मिलने की क्रिया। २. मेल। मिलावट। ३. एक साथ मिली हुई एकाधिक वस्तुएँ।

**सम्मुख**—अव्य॰ [सं॰] सामने। समक्ष।

**सम्मेलन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। सभा। समाज। २. जमावड़ा। जमघट। ३. मिलाप। संगम।

**सम्मोहन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [वि॰ सम्मोहक] १. मोहित या मुग्ध करना। २. मोह उत्पन्न करनेवाला। ३. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

**सम्यक्**—वि॰ [सं॰] पूरा। सब।

क्रि॰ वि॰ १. सब प्रकार से। २. अच्छी तरह। भली भाँति।

**सम्याना***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शामियाना"।

**सम्राज्ञी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. सम्राट् की पत्नी। २. साम्राज्य की अधीश्वरी।

**सम्राट्**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सम्राज्] बहुत बड़ा राजा। महाराजाधिराज। शाहंशाह।

**सम्हलना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "सँभलना"।

**सयन***—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शयन] दे॰ "शयन"।

**सयान***—संज्ञा पुं॰ १.दे॰"सयाना"। २. दे॰ "सयानापन"।

**सयानपत**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सयानपन"।

**सयानप,सयानपन**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ सयाना+पन] चालाकी।

**सयाना**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सज्ञान] १. अधिक अवस्थावाला। वयस्क।

२. बुद्धिमान्। होशियार । ३. चालाक। धूर्त्त ।

**सरंजाम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सर+अंजाम ] १. कार्य की समाप्ति । २. व्यवस्था । प्रबंध । ३. सामग्री। सामान।

**सर**—संज्ञा पुं० [ सं० सरस् ] ताल। तालाब।

*संज्ञा पुं० दे० "शर"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० शर ] चिता।

संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. सिर । २. सिरा। चोटी।

संज्ञा पुं० [ अवसर का अनुकरण ] अवसर के अनुकरण पर बना हुआ एक निरर्थक शब्द जिसका प्रयोग 'अवसर' से पहले होता है।

वि० १. दमन किया हुआ। २. जीता हुआ। पराजित। अभिभूत।

**सरअंजाम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सामग्री।

**सरकंडा**—संज्ञा पुं० [ सं० शरकांड] सरपत की जाति का एक पौधा।

**सरक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सरकना ] १. सरकने की क्रिया या भाव। २. शराब की खुमारी।

**सरकना**—क्रि० अ० [ सं० सरक, सरण ] १. जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से बढ़ना। खिसकना। २. नियत काल से और आगे जाना। टलना। ३. काम चलना। निर्वाह होना।

**सरकश**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा सरकशी ] १. उद्धत । उद्दंड । २. विरोध में सिर उठानेवाला।

**सरकस**—संज्ञा पुं० [ अं० ] पशुओं और कलाबाजी आदि का कौशल या उसे दिखलानेवालों का दल।

**सरकार**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा०] [वि० सरकारी ] १. मालिक। प्रभु। २. राज्य संस्था । शासन-सत्ता । ३. रियासत।

**सरकारी**—वि० [ फ़ा० ] १. सरकार या मालिक का । २. राज्य का। राजकीय।

यौ०—सरकारी कागज=१. राज्य के दफ्तर का कागज । २. प्रामिसरी नोट।

**सरखत**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह दस्तावेज जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २. दिए और चुकाए हुए ऋण आदि का ब्योरा। ३. आज्ञापत्र। परवाना।

**सरग***—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

**सरगतिय***—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्वर्ग+तिय ] अप्सरा।

**सरगना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सरदार। अगुआ।

**सरगम**—संज्ञा पुं० [ हिं० सा, रे, ग, म, ] संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम। स्वरग्राम।

**सर-गर्म**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा सरगर्मी ] १. जोशीला। आवेशपूर्ण। २. उमंग से भरा हुआ। उत्साही।

**सर-घर**—संज्ञा पुं० [ सं० शर+हिं० घर ] तीर रखने का खाना। तरकश।

**सरघा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मधुमक्खी।

**सरजना**—क्रि० स० [ सं० सृजन ] १. सृष्टि करना। २. रचना। बनाना।

**सरज**—संज्ञा पुं० दे० 'सर्ज' ४.।

**सरजा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सरजाह ] १. श्रेष्ठ व्यक्ति। सरदार. २. सिंह।

**सरजीवन**—वि० [ सं० संजीवन ] १. जिलानेवाला। २. हरा-भरा। उपजाऊ।

**सर-जोर**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा सरजोरी ] १. बलवान। ताकतवर। २. प्रबल। जबरदस्त। ३. उद्दंड। ४. विद्रोही।

**सरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मार्ग। रास्ता। २. दर्रा। ३. लकीर।

**सर-ताज**—संज्ञा पुं० दे० "सिर-ताज"।

**सरतरा**।—वि० [ हिं० सिर+तरना ? ] जो अपने काम करके निश्चिंत हो गया हो।

**सरद**—वि० दे० "सर्द"।

**सरदई**—वि० [ फ़ा० सरदः ] सरदे के रंग का। हरापन लिए पीला।

**सर-दर**—क्रि० वि० [ फ़ा० सर+दर =भाव ] १. एक सिरे से। २. सब एक साथ मिलाकर। औसत में।

**सरदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सर्दः] एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूजा।

**सरदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. नायक। अगुवा। श्रेष्ठ व्यक्ति। २. शासक। ३. अमीर। रईस। ४. श्रेष्ठतासूचक उपाधि।

**सरदारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सरदार का पद या भाव।

**सरधन***—वि० [ सं० स+धन ] धनवान। अमीर।

**सरधा***—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"।

संज्ञा पुं० दे० "सरदा"।

**सरन***।—संज्ञा स्त्री० दे० "शरण"।

**सरनदीप**—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल द्वीप"।

**सरना**—क्रि० अ० [ सं० सरण ] १. सरकना। खिसकना। २. हिलना। डोलना। ३. काम चलना। पूरा पड़ना। ४. किया जाना। निबटना।

**सरनाम**—वि० [ फ़ा० ] प्रसिद्ध।

मशहूर।

**सरनामा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. शीर्षक। २. पत्र का आरंभ या संबोधन। ३. पत्र पर लिखा जानेवाला पता।

**सरनी***—संज्ञा स्त्री० [ सं० सरणी ] मार्ग। रास्ता।

**सरपंच**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सर+हिं०पंच] पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

**सर-पंजर***—संज्ञा पुं० [ सं० सर+पिंजरा ] बाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।

**सरपट**—क्रि० वि० [ सं० सर्पण ] घोड़े की बहुत तेज दौड़ जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।

**सरपत**—संज्ञा पुं० [ सं० शरपत्र ] कुश की तरह की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है।

**सर-परस्त**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] [ भाव० सरपरस्ती ] अभिभावक। संरक्षक।

**सरपेच**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

**सरपोश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।

**सरफ़राज़**—वि० [ फ़ा० ] [ संज्ञा सरफ़राज़ी ] उच्च पद पर पहुँचा हुआ। सम्मानित।

**सरफराना***—क्रि० अ० [ अनु० ] व्याकुल होना। घबराना।

**सरफोका**—संज्ञा पुं० दे० "सरफ़ोंका"।

**सरबंधी***—संज्ञा पुं० [ सं० शरबंध ] तीरंदाज। धनुर्धर।

**सरब***†—वि० दे० "सर्व"।

**सरबर**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० सर+बरौना ] बहुत सवाल-जवाब करना। मुँह लगना। कहासुनी। झगड़ा।

**सर-बराह**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. प्रबंधकर्त्ता। कारिंदा। २. मजदूरों आदि का सरदार। ३. रास्ते के खान-पान और ठहरने आदि का प्रबन्ध।

**सरबराहकार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सरबराह+कार ] किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा।

**सरबस***†—संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।

**सरमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया। ( वैदिक ) २. कुतिया।

**सरयू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।

**सरराना**†—क्रि० अ० [ अनु० सर सर ] हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।

**सरल**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सरला ] १. जो टेढ़ा न हो। सीधा। २. निष्कपट। सीधा-साधा। सहज। आसान।

संज्ञा पुं० १. चीड़ का पेड़। २. सरल का गोंद। गंधा बिरोजा।

**सरलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। २. निष्कपटता। सिधाई। ३. सुगमता। आसानी। ४. सादगी। भोलापन।

**सरल-निर्यास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गंधा बिरोजा। २. तारपीन का तेल।

**सरलपन**—संज्ञा पुं० दे० "सरलता"।

**सरवन**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रमण ] अंधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।

*†संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।

**सरवर**—संज्ञा पुं० दे० "सरोवर"।

**सरवरि***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० सदृश ] बराबरी। तुलना। समता।

**सरवरिया**—वि० [ हिं० सरवार ] सरवार या सरयू पार का।

संज्ञा पुं० सरयूपारी।

**सरवाक**—संज्ञा पुं० [ सं० शरावक ] १. संपुट। प्याला। २. दीया। कसोरा।

**सरवान**—संज्ञा पुं० [ ? ] तंबू। खेमा।

**सरवार**—संज्ञा पुं० [ सं० सरयू+पार ] सरयू नदी के उस पार का देश जिसमें गोरखपुर और बस्ती आदि जिले हैं।

**सरविस**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. नौकरी। २. सेवा। खिदमत।

**सरवे**—संज्ञा पुं० [ अं० ] १. जमीन का पैमाइश। २. यह पैमाइश करनेवाला सरकारी विभाग।

**सरस**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सरसा, भाव० सरसता ] १. रसयुक्त। रसीला। २. गीला। भीगा। सजल। ३. हरा। ताजा। ४. सुंदर। मनोहर। ५. मधुर। मीठा। ६. जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। ७. बढ़कर। उत्तम। ८. रसिक। सहृदय।

संज्ञा पुं० छप्पय छंद के ३५वें भेद का नाम।

**सरसई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० सरस्वती ] सरस्वती नदी या देवी।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० सरस ] १. सरसता। रसपूर्णता। २. हरापन। ताजापन।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० सरसों ] फल के छोटे अंकुर या दाने जो पहले दिखाई

पड़ते हैं।

**सरसता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. 'सरस' होने का भाव। २. रसीलापन। ३. गीलापन। आर्द्रता। ४. सुंदरता। ५. मधुरता। ६. भावपूर्णता। रसिकता।

**सरसना**—क्रि० अ० [ सं० सरस+ना (प्रत्य०) ] १. हरा होना। पनपना। २. वृद्धि को प्राप्त होना। बढ़ना। ३. शोभित होना। सोहाना। ४. रसपूर्ण होना। ५. भाव की उमंग से भरना।

**सरसब्ज़**—वि० [ फ़ा० ] १. हरा-भरा। लहलहाता हुआ। २. जहाँ हरियाली हो।

**सर सर**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. ज़मीन पर रेंगने का शब्द। २. वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।

**सरसराना**—क्रि० अ० [ अनु० सर सर ] १. वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना। सनसनाना। २. साँप आदि का रेंगना।

**सरसराहट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सरसर+आहट (प्रत्य०) ] १. साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २. खुजली। सुरसुराहट। ३. वायु बहने का शब्द।

**सरसरी**—वि० [ फ़ा० सरासरी ] १. जमकर या अच्छी तरह नहीं। जल्दी में। २. स्थूल रूप से। मोटे तौर पर।

**सरसाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सरस+आई (प्रत्य०) ] १. सरसता। २. शोभा। सुंदरता। ३. अधिकता।

**सरसाना**—क्रि० स० [ हिं० सरसना] १. रसपूर्ण करना। २. हरा भरा करना।

*क्रि० अ० दे० "सरसना"।

*क्रि० अ० शोभा देना। सजना।

**सरसाम**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सन्निपात।

**सरशार**—वि० [ फ़ा० सरशार ] १. डूबा हुआ। मग्न। २. चूर। मदमस्त (नशे में)।

**सरसिज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जो ताल में होता हो। २. कमल।

**सरसिरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**सरसी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. छोटा सरोवर। तलैया। २. पुष्करिणी। बावली। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, ज, ज, ज और र होते हैं।

**सरसीरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**सरसेटना**—क्रि० स० [ अनु० ] १. खरी-खोटी सुनाना। फटकारना। २. दुराग्रह करना।

**सरसों**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सर्षप ] एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकलता है।

**सरसौंहाँ**—वि० [ हिं० सरस ] सरस बनाया हुआ।

**सरस्वती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रयाग में त्रिवेणी संगम में मिलनेवाली एक प्राचीन नदी जो अब लुप्त हो गई है। २. पंजाब की एक प्राचीन नदी। ३. विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा। ४. विद्या। इल्म। ५. ब्राह्मी बूटी। ६. सोमलता। ७. एक छंद का नाम।

**सरस्वती-पूजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंतपंचमी को और कहीं आश्विन में होता है।

**सरहंग**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. सेनापति। २. पहलवान। ३. कोतवाल। ४. सिपाही।

**सरह**—संज्ञा पुं० [ सं० शलभ ] १. पतंग। फतिंगा। २. टिड्डी।

**सरहज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्यालजाया ] साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

**सरहटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सर्पाक्षी ] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।

**सरहद**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सर+अ० हद ] १. सीमा २. किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न।

**सरहदी**—वि० [ फ़ा० सरहद+ई ( प्रत्य० ) ] सरहद संबंधी। सीमासंबंधी।

**सरहरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शर ] मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।

**सरा***—संज्ञा स्त्री० [ सं० शर ] चिता।

संज्ञा स्त्री० दे० "सराय"।

**सराई**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० शलाका ] १. शलाका। सलाई। २. सरकंडे की पतली छड़ी।

संज्ञा स्त्री० [ सं० शराव ] दीया। सकोरा।

**सराक**†—संज्ञा पुं० [ सं० शलाका ] लोहे का सीख। सीखचा। छड़।

**सराजाम**†—संज्ञा पुं० दे० "सरंजाम"।

**सराध***†—संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।

**सराना***†—क्रि० स० [ हिं० सारना का प्रेर० ] १. पूर्ण करना। संपादित कराना। ( काम ) २. कराना।

**सराप**—संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

**सरापना***†—क्रि० स० [ सं० शाप+हिं० ना ( प्रत्य० ) ] शाप देना। बद दुआ देना।

**सराफ**—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ] १. सोने-चाँदी का व्यापारी । २. बदले के लिए रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार ।

**सराफा**—संज्ञा पुं० [अ० सर्राफ़ः] १. सराफी का काम । रुपए-पैसे या सोने-चाँदी के लेन-देन का काम । २. सराफों का बाजार । ३. कोठी । बंक ।

**सराफी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सराफ+ई (प्रत्य०)] १. चाँदी-सोने या रुपए-पैसे के लेन-देन का रोजगार । २. महाजनी लिपि । मुंडा ।

**सराबोर**—वि० [सं० स्राव+हिं० बोर] बिल्कुल भीगा हुआ । तरबतर । आप्लावित ।

**सराय**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. घर । मकान । २. यात्रियों के ठहरने का स्थान । मुसाफिरखाना ।

**सराव***†—संज्ञा पुं० [सं० शराव] १. मद्यपात्र । प्याला (शराब पीने का) । २. कसोरा । कटोरा । ३. दीया ।

**सरावग,सरावगी**—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैन धर्म माननेवाला । जैन ।

**सरासन***—संज्ञा पुं० दे० "शरासन" ।

**सरासर**—अव्य० [फ़ा०] १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक । २. बिल्कुल । पूर्णतया । ३. साक्षात् । प्रत्यक्ष ।

**सरासरी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. आसानी । फुरती । २. शीघ्रता । जल्दी । ३. मोटा अंदाज ।

क्रि० वि० १. जल्दी में । हड़बड़ी में । २. मोटे तौर पर ।

**सराह***—संज्ञा स्त्री० [सं० श्लाघा] प्रशंसा ।

**सराहना**—क्रि० स० [सं० श्लाघन] तारीफ करना । बड़ाई करना । प्रशंसा करना ।

संज्ञा स्त्री० प्रशंसा । तारीफ ।

**सराहनीय***—वि० [हिं० सराहना] १. प्रशंसा के योग्य । २. अच्छा । बढ़िया ।

**सरि***—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] नदी ।

*संज्ञा स्त्री० [सं० सदृश] बराबरी । समता ।

वि० सदृश । समान । बराबर ।

**सरित**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नदी ।

**सरिता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सरित्] १. धारा । २. नदी ।

**सरियाना**†—क्रि० स० [?] १. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना । २. मारना । लगाना । (बाजारू)

**सरिवन**—संज्ञा पुं० [सं० शालपर्णी] शालपर्ण नाम का पौधा । त्रिपर्णी ।

**सरिवरि***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरि+सं० प्रति] बराबरी । समता ।

**सरिश्ता**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्तः] १. अदालत । कचहरी । २. कार्यालय का विभाग । महकमा । दफ्तर ।

**सरिश्तेदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्तःदार] १. किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी । २. अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी ।

**सरिस***—वि० [सं० सदृश] सदृश । समान ।

**सरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. छोटा सर या तालाब । २. झरना । चश्मा । सोता ।

**सरीक**—वि० दे० "शरीक" ।

**सरीकता***—संज्ञा स्त्री० [अ० शरीक+सं० ता (प्रत्य०)] साझा । हिस्सा ।

**सरीखा**—वि० [सं० सदृश] समान । तुल्य ।

**सरीफा**—संज्ञा पुं० [सं० श्रीफल] एक छोटा पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं ।

**सरीर***†—संज्ञा पुं० दे० "शरीर" ।

**सरीसृप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रेंगनेवाला जंतु । २. सर्प । साँप ।

**सरुज**—वि० [सं०] रोगी । रोग-युक्त ।

**सरुष**—वि० [सं०] क्रोध-युक्त । कुपित ।

**सरूहाना**—क्रि० स० [?] रोगमुक्त करना ।

**सरूप**—वि० [सं०] १. रूप युक्त । आकार-वाला । २. सदृश । समान । ३. रूपवान् । सुंदर ।

‡संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप" ।

**सरूर**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सुरूर] १. खुशी । प्रसन्नता । २. हलका नशा ।

**सरेख, सरेखा***†—वि० [सं० श्रेष्ठ] [स्त्री० सरेखी] बड़ा और समझदार । चालाक । सयाना ।

**सरेखना**—क्रि० स० दे० "सहेजना" ।

**सरेबाजार**—क्रि० वि० [फ़ा०] १. बाजार में । जनता के सामने । खुल्लमखुल्ला

**सरेस**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरेश] एक लसदार वस्तु जो ऊँट, भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं । सहरेस । सरेश ।

**सरोट***†—संज्ञा पुं० [हिं० सिलवट] कपड़ों में पड़ी हुई सिलवट । शिकन । बली ।

**सरो**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सर्व] एक सीधा पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता है । बनझाऊ ।

**सरोकार**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १.

परस्पर व्यवहार का संबंध । २. लगाव । वास्ता ।

**सरोज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल ।

**सरोजना**—क्रि० स० [ ? ] पाना ।

**सरोजिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. कमलों से भरा हुआ ताल । २. कमलों का समूह । ३. कमल का फूल ।

**सरोद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा ।

**सरोरुह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल ।

**सरोवर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तालाब । पोखरा । २. झील । ताल ।

**सरोष**—वि० [ सं० ] क्रोधयुक्त । कुपित ।

**सरो-सामान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सर + व + सामान ] सामग्री । उपकरण । असबाब ।

**सरौता**—संज्ञा पुं० [ सं० सार=लोहा + पत्र ] [ स्त्री० अल्पा० सरौती ] सुपारी, कच्चा आम आदि काटने का एक प्रसिद्ध औजार ।

**सर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. गमन । गति । चलना या बढ़ना । २. संसार । सृष्टि । ३. बहाव । प्रवाह । ४. छोड़ना । चलाना । फेंकना । ५. उद्‌गम । उत्पत्ति-स्थान । ६. प्राणी । जीव । ७. संतान । औलाद । ८. स्वभाव । प्रकृति । ९. किसी ग्रंथ ( विशेषतः काव्य ) का अध्याय । प्रकरण ।

**सर्गबद्ध**—वि० [ सं० ] जो कई अध्यायों में विभक्त हो । जैसे—सर्गबद्ध काव्य ।

**सर्गुना**—वि० दे० "सगुण" ।

**सर्ज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ी जाति का शाल-वृक्ष । २. राल । धूना । ३. सलई का पेड़ । ४. एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।

**सर्जन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० सर्जनीय, सर्जित ] १. छोड़ना । फेंकना । २. निकालना । ३. सृष्टि ।

**सर्जू**—संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू" ।

**सर्द**—वि० [ फ़ा० ] १. ठंढा । शीतल । २. सुस्त । काहिल । ढीला । ३. मंद । धीमा । ४. नपुंसक । नामर्द ।

**सर्दी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. सर्द होने का भाव । ठंढ । शीतलता । २. जाड़ा । शीत । ३. जुकाम । नजला ।

**सर्प**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सर्पिणी ] १. रेंगना । २. साँप । ३. एक म्लेच्छ जाति ।

**सर्पकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गरुड़ ।

**सर्पयज्ञ, सर्पयाग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक यज्ञ जो नागों के संहार के लिए जनमेजय ने किया था ।

**सर्पराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सर्पों के राजा, शेषनाग । २. वासुकि ।

**सर्पविद्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या ।

**सर्पिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. साँपिन । मादा साँप । २. भुजगी लता ।

**सर्पिल**—वि० [ सं० ] साँप के आकार का । साँप की तरह कुंडली मारे हुए ।

**सर्फ़**—संज्ञा पुं० [ अ० ] व्यय किया हुआ । खर्च किया हुआ ।

**सर्फ़ा**—संज्ञा पुं० [ अ० सर्फ़ः ] खर्च । व्यय ।

**सर्बस**—संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व" ।

**सर्रक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] सर्राते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव ।

**सर्राटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सर्र से अनु० ] १. हवा के जोर से चलने से होनेवाला सर्र सर्र शब्द । २. इस प्रकार तेजी से भागना कि सर्र सर्र शब्द हो ।

**मुहा०**—सर्राटा भरना=तेजी के साथ सर्र सर्र शब्द करते हुए इधर से उधर जाना ।

**सर्राफ़**—संज्ञा पुं० दे० "सराफ़" ।

**सर्व**—वि० [ सं० ] सब । तमाम । कुल ।

संज्ञा पुं० १. शिव । २. विष्णु । ३. पारा ।

**सर्वकाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सब इच्छाएँ रखनेवाला । २. सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला । ३. शिव ।

**सर्वक्षार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सब कुछ जला देना या नष्ट कर देना; विशेषतः युद्धस्थल से पीछे हटनेवाली सेना का अपनी वह समस्त रणसामग्री नष्ट कर देना जो साथ न आ सके ।

**सर्वगत**—वि० [ सं० ] सर्वव्यापक ।

**सर्वग्रास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चंद्र या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण । खग्रास ग्रहण ।

**सर्वजनीन**—वि० दे० "सार्वजनिक" ।

**सर्वजित्**—वि० [ सं० ] सब को जीतनेवाला ।

**सर्वज्ञ**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सर्वज्ञा ] सब कुछ जाननेवाला । जिसे कुछ अज्ञात न हो ।

संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २. देवता । ३. बुद्ध या अर्हत् । ४. शिव ।

**सर्वज्ञता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] 'सर्वज्ञ' का भाव ।

**सर्वतंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सब प्रकार के शास्त्र-सिद्धांत ।

वि० जिसे सब बाजा मानते हों।

**सर्वतः**—अव्य० [ सं० ] १. सब ओर। चारों तरफ। २. सब प्रकार से।

**सर्वतोभद्र**—वि० [ सं० ] १. सब ओर से मंगल। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुड़े हों।
संज्ञा पुं० १. वह चौखूँटा मंदिर जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। ३. एक प्रकार का चित्रकाव्य। ४. एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खंडाक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिए जाते हैं। ५. विष्णु का रथ।

**सर्वतोभाव**—अव्य० [ सं० ] सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।

**सर्वतोमुख**—वि० [ सं० ] १. जिसका मुँह चारों ओर हो। २. पूर्ण। व्यापक।

**सर्वत्र**—अव्य० [ सं० ] सब कहीं। सब जगह।

**सर्वथा**—अव्य० [ सं० ] १. सब प्रकार से। सब तरह से। २. बिलकुल। सब।

**सर्वदर्शी**—संज्ञा पुं० [सं० सर्वदर्शिन्] [ स्त्री० सर्वदर्शिणी ] सब कुछ देखनेवाला।

**सर्वदा**—अव्य० [ सं० ] हमेशा। सदा।

**सर्वदैव**—अव्य० [ सं० ] सदा ही।

**सर्वनाम**—संज्ञा पुं० [ सं० सर्वनामन् ] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। जैसे—मैं, तू, वह।

**सर्वनाश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्यानाश। विध्वंस। पूरी बरबादी।

**सर्वप्रिय**—वि० [ सं० ] सब को प्यारा। जो सब को अच्छा लगे।

**सर्वभक्षी**—संज्ञा पुं० [ सं० सर्वभक्षिन् ] [ स्त्री० सर्वभक्षिणी ] सब कुछ खानेवाला।
संज्ञा पुं० अग्नि।

**सर्वभोगी**—वि० [ सं० सर्वभोगिन् ] [ स्त्री० सर्वभोगिनी ] १. सब का आनंद लेनेवाला। २. सब कुछ खानेवाला।

**सर्वमंगला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

**सर्वरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।

**सर्वव्यापक**—संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।

**सर्वव्यापी**—वि० [ सं० सर्वव्यापिन् ] [ स्त्री० सर्वव्यापिनी ] सब में रहनेवाला। सब पदार्थों में रमणशील।

**सर्वशक्तिमान्**—वि० [ सं० सर्वशक्तिमत् ] [ स्त्री० सर्वशक्तिमती ] सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।

**सर्वश्रेष्ठ**—वि० [ सं० ] सबसे उत्तम।

**सर्वसाधारण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साधारण लोग। जनता। आम लोग।
वि० जो सबमें पाया जाय। आम।

**सर्वसामान्य**—वि० [ सं० ] जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

**सर्वस्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सारी संपत्ति। सब कुछ। कुल माल-मता।

**सर्वहर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सब कुछ हर लेनेवाला। २. महादेव। शंकर। ३. यमराज। ४. काल।

**सर्वहारा**—वि० जिसका सब कुछ नष्ट हो गया है। जो अपनी समस्त संपत्ति और अधिकारों से वंचित हो।

**सर्वांग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २. सब अवयव या अंश।

**सर्वांगीण**—वि० [ सं० ] १. सब अंगों से संबंध रखनेवाला। २. सब अंगों से युक्त। संपूर्ण।

**सर्वात्मा**—संज्ञा पुं० [ सं० सर्वात्मन् ] १. सारे विश्व की आत्मा। ब्रह्म। २. शिव।

**सर्वाधिकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार।

**सर्वाधिकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसके हाथ में पूरा इख्तियार हो। २ हाकिम।

**सर्वाशी**—वि० [ सं० सर्वाशिन् ] [ स्त्री० सर्वाशिनी ] सब कुछ खानेवाला। सर्वभक्षी।

**सर्वास्तिवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] यह दार्शनिक सिद्धांत कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है, वे असत् नहीं हैं।

**सर्विस**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. सेवा का भाव या काम। २. नौकरी। सेवा।

**सर्वेश, सर्वेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सब का स्वामी। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्ती राजा।

**सर्वोत्तम**—वि० [सं०] सब से उत्तम। सबसे बढ़कर।

**सर्वोपरि**—वि० [ सं० ] सबसे ऊपर या बढ़कर।

**सर्वौषधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं।

**सर्षप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सरसों। २. सरसों भर का मान या तौल।

**सलई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शल्लकी ] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २. चीड़

का गोंद। कुंदुर।

**सलजम**—संज्ञा पुं० दे० "शलजम"।

**सलज्ज**—वि० [ सं० ] जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावाला। लज्जाशील।

**सलतनत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सल्तनत ] १. राज्य। बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. इंतजाम। प्रबंध। ४. सुभीता। आराम।

**सलना**—क्रि० अ० [ सं० शल्य ] १. साला जाना। छिदना। भिदना। २. छेद में डाला या पहनाया जाना।

**सलब**—वि० [ अ० सल्ब ] नष्ट। बरबाद।

**सलमा**—संज्ञा पुं० [ अ० सलम ? ] सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

**सलवट**—संज्ञा स्त्री० दे० "सिलवट"।

**सलवात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. शुभ कामना। २. सलाम। ३. दुर्वचन। गाली-गलौज।

**सलहज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० साला ] सरहज।

**सलाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शलाका ] १. धातु या अन्य पदार्थ का पतला छोटा टुकड़ा। तीली। २. दे० "दियासलाई"।

**मुहा०**—सलाई फेरना=सलाई गरम करके अंधा करने के लिए आँखों में लगाना।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० सालना ] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**सलाक**—संज्ञा पुं० [ सं० शलाका ] १. तीर। २. सलाई।

**सलाख**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० मि० सं० शलाका ] धातु का बना हुआ छड़। शलाका। सलाई।

**सलाद**—संज्ञा पुं० [ अं० सैलड ] १. मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेजी ढंग से डाला हुआ अचार। २. एक प्रकार के कंद के पत्ते जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।

**सलाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] प्रणाम करने की क्रिया। प्रणाम। बंदगी। आदाब।

**मुहा०**—दूर से सलाम करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। सलाम लेना=सलाम का जवाब देना। सलाम देना=सलाम करना।

**सलामत**—वि० [ अ० ] १. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। २. जीवित और स्वस्थ। तंदुरुस्त और जिंदा। ३. कायम। बर-करार।

क्रि० वि० कुशलपूर्वक। खैरियत से।

**सलामती**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सलामत+ई ( प्रत्य० ) ] १. तंदुरुस्ती। स्वस्थता। २. कुशल। क्षेम।

**सलामी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सलामत+ई ( प्रत्य० ) ] १. प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। २. सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। ३. तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है। ४. वह द्रव्य जो जमींदार, महाजन आदि वास्तविक किराए या मूल्य इत्यादि के अतिरिक्त लेते हैं। पगड़ी। नजराना।

**मुहा०**—सलामी उतारना=किसी के स्वागतार्थ बन्दूकों या तोपों की बाढ़ दागना।

**सलार**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का पक्षी।

**सलाह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] सम्मति। परामर्श। राय। मशवरा।

**सलाहकार**—संज्ञा पुं० [ अ० सलाह+फ़ा० कार ( प्रत्य० ) ] वह जो परामर्श देता हो। राय देनेवाला।

**सलाही**—संज्ञा पुं० दे० "सलाहकार"।

**सलिल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जल। पानी।

**सलिलपति, सलिलेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वरुण। २. समुद्र।

**सलीका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. काम करने का अच्छा ढंग। शऊर। २. हुनर। लियाकत। ३. चाल-चलन। बरताव। ४. तहजीब। सभ्यता।

**सलीकामंद**—वि० [ अ० सलीका+फ़ा० मंद ( प्रत्य० ) ] १. शऊरदार। तमीजदार। २. हुनरमंद। ३. सभ्य।

**सलीता**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।

**सलील**—वि० [ सं० ] १. लीलायुक्त। २. क्रीड़ाशील। खेलवाड़ी। ३. कुतूहल-प्रिय। कौतुकी। ४. किसी प्रकार की भाव-भंगी से युक्त। ५. लीला या क्रीड़ा से युक्त।

**सलीस**—वि० [ अ० ] १. सहज। सुगम। २. मुहावरेदार और चलती हुई ( भाषा )।

**सलूक**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बरताव। व्यवहार। आचरण। २. मिलाप। मेल। ३. भलाई। नेकी। उपकार।

**सलेमशाही**—संज्ञा पुं० [ सलीमशाह (नाम) ] एक प्रकार का देशी जूता।

**सलोतर**—संज्ञा पुं० [ सं० शालिहोत्र ] पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा का विज्ञान।

**सलोतरी**—संज्ञा पुं० [ सं० शालिहोत्री ] पशुओं, विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला। शालिहोत्री।

**सलोना**—वि० [ हिं० स+लोन=नमक ] [ स्त्री० सलोनी ] १. जिसमें नमक पड़ा हो । नमकीन । २. रसीला । सुंदर ।

**सलोनापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० सलोना +पन ( प्रत्य० ) ] सलोना होने का भाव ।

**सलोनो**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रावणी ? ] हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण मास में पूर्णिमा को पड़ता है । रक्षा-बंधन । राखी पूनो ।

**सल्लम**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का मोटा कपड़ा । गजी । गाढ़ा ।

**सल्लाह**—संज्ञा स्त्री० दे० "सलाह" ।

**सवत**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत" ।

**सवत्स**—वि० [ सं० ] बच्चे के सहित । जिसके साथ बच्चा हो ।

**सवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रसव । बच्चा जनना । २. यज्ञस्नान । ३. यज्ञ । ४. चंद्रमा । अग्नि ।

**सवर्ण**—वि० [ सं० ] १. समान । सदृश । २. समान वर्ण या जाति का ।

**सवाँग**—संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग" ।

**सवा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स+पाद ] चौथाई सहित । संपूर्ण और एक का चतुर्थांश ।

**सवाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सवा+ई ( प्रत्य० ) ] १. ऋण का एक प्रकार जिसमें मूलधन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है । २. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि ।

वि० एक और चौथाई । सवा ।

**सवाद**—संज्ञा पुं० दे० "स्वाद" ।

**सवादिक***†—वि० [ हिं० सवाद +इक ( प्रत्य० ) ] स्वाद देनेवाला । स्वादिष्ठ ।

**सवाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में मिलेगा । पुण्य । २. भलाई । नेकी ।

**सवाया**—वि० [ हिं० सवा ] पूरे से एक चौथाई अधिक । सवागुना ।

**सवार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह जो घोड़े पर चढ़ा हो । अश्वारोही । २. अश्वारोही सैनिक । ३. वह जो किसी चीज पर चढ़ा हो ।

वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ ।

**सवारा***—संज्ञा पुं० दे० "सवेरा" ।

**सवारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. किसी चीज पर विशेषतः चलने के लिए चढ़ने की क्रिया । २. सवार होने की वस्तु । चढ़ने की चीज । ३. वह व्यक्ति जो सवार हो । ४. जलूस ।

**सवाल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. पूछने की क्रिया । २. वह जो कुछ पूछा जाय । प्रश्न । ३. दरख्वास्त । माँग । ४. निवेदन । प्रार्थना । ५. गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिए दिया जाता है ।

**सवाल-जवाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बहस । वाद-विवाद । २. तकरार । हुज्जत । झगड़ा ।

**सविकल्प**—वि० [ सं० ] १. विकल्प-सहित । संदेह-युक्त । संदिग्ध । २ जो किसी विषय के दोनों पक्षों या मतों आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण, मानता हो ।

संज्ञा पुं० वह समाधि जो किसी आलम्बन की सहायता से होती है ।

**सविता**—संज्ञा पुं० [ सं० सवितृ ] १. सूर्य्य । २. बारह की संख्या । ३. आक । मदार ।

**सवितापुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० सवितृ-पुत्र ] सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि ।

**सवितासुत**—संज्ञा पुं० [ सं० सवितृ-सुत ] शनैश्चर ।

**सविनय अवज्ञा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सविनय+अवज्ञा ] राज्य की किसी आज्ञा या कानून को न मानना ।

**सवेरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० स+सं० वेला ] १. प्रातःकाल । सुबह । २. निश्चित समय के पूर्व का समय । (क्व०)

**सवैया**—संज्ञा पुं० [ हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०) ] १. तौलने का सवा सेर का बाट । २. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है । मालिनी । दिवा । ३. वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया रहता है ।

**सव्य**—वि० [ सं० ] १. वाम । बायाँ । २. दक्षिण । दाहिना । ३. प्रतिकूल । विरुद्ध ।

संज्ञा पुं० १. यज्ञोपवीत । २. विष्णु ।

**सव्यसाची**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अर्जुन ।

**सव्रण**—वि० [ सं० ] १. जिसे व्रण हो । २. जिसे घाव लगे हों । घायल ।

**सशंक**—वि० [ सं० ] १. जिसे शंका हो । शंकित । भयभीत । २. भयानक ।

**सशंकना***—क्रि० अ० [ सं० सशंक +ना (प्रत्य०) ] १. शंका करना । २. भयभीत होना ।

**सस***—संज्ञा पुं० [ सं० शशि ] चंद्रमा ।

संज्ञा पुं० [ सं० शस्य ] खेती-बारी ।

**ससक, ससा**†—संज्ञा पुं० [ सं० शशक ] खरगोश ।

**ससाना***—क्रि० अ० [ ? ] १. घबराना । २. काँपना ।

**ससि***—संज्ञा पुं० [ सं० शशि ] चंद्रमा ।

**ससिधर***—संज्ञा पुं० [ सं० शशि-

धर ] चंद्रमा ।

**ससिहर**—संज्ञा पुं० दे० "ससिधर" ।

**ससी***—संज्ञा पुं० दे० "शशि" ।

**ससुर**—संज्ञा पुं० [ सं० श्वशुर ] पति या पत्नी का पिता । श्वशुर ।

**ससुरा**—संज्ञा पुं० [ सं० श्वशुर ] १. श्वशुर । ससुर । २. एक प्रकार की गाली । ३. दे० "ससुराल" ।

**ससुराल**—संज्ञा स्त्री० [ श्वशुरालय ] श्वशुर का घर । पति या पत्नी के पिता का घर ।

**सस्ता**—वि० [ सं० स्वस्थ ] [ स्त्री० सस्ती ] १.जो महँगा न हो । थोड़े मूल्य का । २. जिसका भाव बहुत उतर गया हो ।

मुहा०—सस्ते छूटना=थोड़े व्यय, परिश्रम या कष्ट में कोई काम हो जाना ।

३. घटिया । साधारण । मामूली । (क्व०)

**सस्ताना**†—क्रि० अ० [ हिं० सस्ता +ना (प्रत्य०) ] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना ।

क्रि० स० सस्ते दामों पर बेचना ।

**सस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सस्ता ] १. सस्ता होने का भाव । सस्तापन । २. वह समय जब कि सब चीजें सस्ती मिलें ।

**सस्त्रीक**—वि० [ सं० ] जिसके साथ स्त्री हो । स्त्री या पत्नी के सहित ।

**सस्मित**—वि० [ सं० स+स्मित ] मुस्कराता या हँसता हुआ ।

क्रि० वि० मुस्कराकर । हँसकर ।

**सहँगा**—वि० [ हिं० महँगा का अनु० ] सस्ता ।

**सह**—अव्य० [ सं० ] सहित । समेत ।

वि० [ सं० ] १. उपस्थित । मौजूद । २. सहनशील । ३. समर्थ । योग्य ।

**सहकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुगंधित पदार्थ । २. आम का पेड़ । ३. सहायक । ४. सहयोग ।

**सहकारता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सहायता ।

**सहकारिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सहकारी या सहायक होने का भाव । २. सहायता ।

**सहकारी**—संज्ञा पुं० [ सं० सहकारिन् ] [ स्त्री० सहकारिणी ] १. एक साथ काम करनेवाला । साथी । सहयोगी । २. सहायक । मददगार ।

**सहगमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पति के शव के साथ पत्नी का सती होना ।

**सहगामिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो । २. स्त्री । पत्नी । ३. सहचरी । साथिन ।

**सहगामी**—संज्ञा पुं० [ सं० सहगामिन् ] [ स्त्री० सहगामिनी ] साथ चलनेवाला । साथी ।

**सहगौन***-संज्ञा पुं० दे० "सहगमन" ।

**सहचर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सहचरी ] १. साथ चलनेवाला । साथी । २. सेवक । नौकर । ३. दोस्त । मित्र ।

**सहचरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सहचर का स्त्री० रूप । २. पत्नी । जोरू । ३. सखी ।

**सहचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. संगी । साथी । २. साथ । संग । सोहबत ।

**सहचारिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. साथ में रहनेवाली । सखी । २. पत्नी । स्त्री ।

**सहचारिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सहचारी होने का भाव ।

**सहचारी**-संज्ञा पुं० [सं० सहचारिन्] [ स्त्री० सहचारिणी ] १. संगी । साथी । २. सेवक ।

**सहज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सहजा, भाव० सहजता ] १. सहोदर भाई । सगा भाई । २. स्वभाव ।

वि० १. स्वाभाविक । प्राकृतिक । २. साधारण । ३. सरल । सुगम । आसान ।

४. साथ उत्पन्न होनेवाला ।

**सहजपंथ**—संज्ञा पुं० [ हिं० सहज+पंथ ] गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग ।

**सहजात**—वि० [ सं० ] १. सहोदर । २. यमज ।

**सहजिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० सहज पंथ ] वह जो सहज पंथ का अनुयायी हो ।

**सहतमहत**-संज्ञा पुं० दे० "श्रावस्ति" ।

**सहतरा**—संज्ञा पुं० [ फा० शाहतरह ] पित्त पापड़ा । पर्पटक ।

**सहताना***†—क्रि० अ० दे० "सुस्ताना" ।

**सहत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. "सह" का भाव । २. एकता । ३. मेल-जोल ।

**सहदानी***-संज्ञा स्त्री० [ सं० सज्ञान] निशानी । पहचान । चिह्न ।

**सहदूल***-संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल" ।

**सहदेई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सहदेवा ] क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनौषधि ।

**सहदेव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र । माद्री के गर्भ और अश्विनीकुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था ।

**सहधर्म्मचारिणी, सहधर्मिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] पत्नी ।

**सहधर्म्मी**—वि० [ सं० ] समान धर्मवाला ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० सहधर्मिणी] पति ।

**सहन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहन की क्रिया। बरदाश्त करना। २. क्षमा। शांति। तितिक्षा।
संज्ञा पुं० [अ०] १. मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग। आँगन। चौक। २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

**सहनभंडार**—संज्ञा पुं० [सहन + सं० भंडार] १. कोष। खजाना। २. धन राशि। दौलत।

**सहनशील**—वि० [सं०] [भाव० सहनशीलता] १. बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २. संतोषी।

**सहना**—क्रि० स० [सं० सहन] १. बरदाश्त करना। झेलना। भोगना। २. परिणाम भोगना। अपने ऊपर लेना। ३. बोझ बर्दास्त करना।

**सहनायगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शहनाई] शहनाई बजानेवाली स्त्री।

**सहनीय**—वि० [सं०] सहन करने योग्य।

**सहपाठी**—संज्ञा पुं० [सं० सहपाठिन्] वह जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।

**सहबाला**—संज्ञा पुं० दे० "शहबाला"।

**सहभोज, सहभोजन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक साथ बैठकर भोजन करना। साथ खाना।

**सहभोजी**—संज्ञा पुं० [सं० सहभोजिन्] वे जो एक साथ बैठकर खाते हों।

**सहम**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. डर। भय। खौफ। २. संकोच। लिहाज। मुलाहजा।

**सहमत**—वि० [सं०] जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का।

**सहमना**—क्रि० अ० [फ़ा० सहम + ना (प्रत्य०)] भयभीत होना। डरना।

**सहमरण**—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्री का मृत पति के शव के साथ सती होना।

**सहमाना**—क्रि० स० [हिं० सहमना का सक०] भयभीत करना। डराना।

**सहमृता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सहमरण करनेवाली स्त्री। सती।

**सहयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. साथ मिलकर काम करने का भाव। २. साथ। संग। ३. मदद। सहायता।

**सहयोगी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहायक। मददगार। २. सहयोग करनेवाला। साथ मिलकर कोई काम करनेवाला। ३. वह जो किसी के साथ एक ही समय में वर्त्तमान हो। समकालीन।

**सहरगही**—संज्ञा स्त्री० [अ० सहर + फ़ा० गह] वह भोजन जो निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के किया जाता है। सहरी।

**सहरा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. जंगल। बन। २. मैदान। ३. बन-बिलाव।

**सहराना***—क्रि० स० दे० "सहलाना"।
*क्रि० अ० [हिं० सिहरना] डर से काँपना।

**सहरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] सफरी मछली।
संज्ञा स्त्री० दे० "सहरगही"।

**सहल**—वि० [अ० मि० सं० सरल] जो कठिन न हो। सरल। सहज। आसान।

**सहलाना**—क्रि० स० [अनु०] १. धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना। २. मलना। ३. गुदगुदाना।
क्रि० अ० गुदगुदी होना। खुजलाना।

**सहवास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. संग। साथ। २. मैथुन। रति। संभोग।

**सहव्रता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मपत्नी। स्त्री।

**सहस**—वि० दे० "सहस्र"।

**सहसकिरन**—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रकिरण] सूर्य्य।

**सहसगो***—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रगु] सूर्य्य।

**सहसा**—अव्य० [सं०] एकदम से। एकाएक। अचानक। अकस्मात्।

**सहसाखि***—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र।

**सहसाखी***—संज्ञा पुं० [सं० सहस्राक्ष] इंद्र।

**सहसानन***—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रानन] शेषनाग।

**सहस्र**—संज्ञा पुं० [सं०] दस सौ की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।
वि० जो गिनती में दस सौ हो।

**सहस्रकर**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

**सहस्रकिरण**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य।

**सहस्रचक्षु**—संज्ञा पुं० [सं० सहस्रचक्षस्] इंद्र।

**सहस्रदल**—संज्ञा पुं० [सं०] पद्म। कमल।

**सहस्रधारा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवताओं को स्नान कराने का एक प्रकार का छेददार पात्र।

**सहस्रनाम**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

**सहस्रनेत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

**सहस्रपत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

**सहस्रपाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य्य। २. विष्णु। ३. सारस पक्षी।

**सहस्रबाहु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। २. कार्त्तवीर्यार्जुन, जो क्षत्रिय राजा कृतवीर्य्य का पुत्र था। इसका दूसरा नाम हैहय था।

**सहस्रभुजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] देवी का एक रूप।

**सहस्ररश्मि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य्य।

**सहस्रलोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**सहस्रशीर्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विष्णु।

**सहस्राक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. विष्णु।

**सहस्राब्दी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी संवत् या सन् के हजार हजार वर्षों का समूह। साहस्री।

**सहाइ, सहाई***†—संज्ञा पुं० [ सं० साहाय्य ] सहायक। मददगार। संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

**सहाउ**—संज्ञा पुं० दे० "सहाय"।

**सहाध्यायी**—संज्ञा पुं० दे० "सह-पाठी"।

**सहाना***—वि० [ स्त्री० सहानी ] दे० "सुहाना"।

**सहानुगमन**—संज्ञा पुं० दे० "सह-गमन"।

**सहानुभूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुःखी होना। हमदर्दी।

**सहाय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सहायता। मदद। सहारा। २. आश्रय। भरोसा। ३. सहायक। मददगार।

**सहायक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सहायिका ] १. सहायता करनेवाला। मददगार। २. (वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी में मिलती हो। ३. किसी की अधीनतामें रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला।

**सहायता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. किसी के कार्य्य में शारीरिक या और किसी प्रकार का योग देना। मदद। साहाय्य। २. वह धन जो किसी का कार्य्य आगे बढ़ाने के लिए दिया जाय। मदद।

**सहायी**—संज्ञा पुं० [ सं० सहाय+ई (प्रत्य०) ] १. सहायक। मददगार। २. सहायता। मदद।

**सहार**—संज्ञा पुं० [ हिं० सहना ] १. बर्दाश्त। सहनशीलता। २. सहना।

**सहारना**†—क्रि० स० [ सं० सहन या हिं० सहारा ] १. सहन करना। बर्दाश्त करना। सहना। २. अपने ऊपर भार लेना

**सहारा**—संज्ञा पुं० [ सं० सहाय ] १. मदद। सहायता। २. आश्रय। आसरा। ३. भरोसा। ४. इतमीनान। ५. टेक। आड़। ६. एक प्रसिद्ध मरुस्थल जो अफ्रीका में है।

**सहालग**—संज्ञा पुं० [ सं० साहित्य ] वे मास या दिन जिसमें विवाह के मुहूर्त्त हों। ब्याह-शादी के दिन। लगन।

**सहावल**—संज्ञा पुं० दे० "साहुल"।

**सहिजन**—संज्ञा पुं० [ सं० शोभांजन ] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी होती है। शोभांजन। मुनगा।

**सहिजानी***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० सज्ञान ] निशानी। चिह्न। पहचान।

**सहित**—अव्य० [ सं० ] समेत। संग।

**सहिदान***†—संज्ञा पुं० दे० "सहि-दानी"।

**सहिदानी**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० सज्ञान ] चिह्न। पहचान। निशान।

**सहिष्णु**—वि० [ सं० ] सहनशील।

**सहिष्णुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सहनशीलता।

**सही**—वि० [ फ़ा० सहीह ] १. सत्य। सच। २. प्रामाणिक। यथार्थ। ३. शुद्ध। ठीक।

**मुहा०**—सही भरना=मान लेना। ४. हस्ताक्षर। दस्तखत।

**सही-सलामत**—वि० [ फ़ा० अ० ] १. आरोग्य। भला-चंगा। तंदुरुस्त। २. जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

**सहुँ**—अव्य० [ सं० सम्मुख ] १. सन्मुख। सामने। २. ओर। तरफ़।

**सहुलियत**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. सुविधा। सुगमता। २. अदब। कायदा। शऊर।

**सहृदय**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सहृदया, भाव० सहृदयता ] १. जो दूसरे के दुःख सुख आदि समझता हो। २. दयालु। दयावान्। ३. रसिक। ४. सज्जन। भला आदमी।

**सहेजना**—क्रि० स० [ अ० सही ? ] १. भली भाँति जाँचना। सँभालना। २. अच्छी तरह कह-सुनकर सुपुर्द करना।

**सहेजवाना**—क्रि० स० [ हिं० सहेजना का प्रेर० ] सहेजने का काम दूसरे से कराना।

**सहेट**—संज्ञा पुं० दे० "सहेत"।

**सहेत***†—संज्ञा पुं० [ सं० संकेत ] वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी-प्रेमिका मिलते हैं।

**सहेतुक**—वि० [ सं० ] जिसका कुछ हेतु, उद्देश्य या मतलब हो।

**सहेली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सह+हिं० एली ( प्रत्य० ) ] १. साथ में रहने-

वाली स्त्री। संगिनी। २. परिचारिका। दासी।

**सहैया***†—संज्ञा पुं० [ हिं० सहाय ] सहायक।

वि० [ सं० सहन ] सहन करनेवाला।

**सहोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक काव्यालंकार जिसमें 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है और अनेक कार्य्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं।

**सहोदर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सहोदरा ] एक ही माता के उदर से उत्पन्न संतान।

वि० सगा। अपना। खास। (क्व०)

**सह्य**—संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

वि० [ सं० ] सहने योग्य। बर्दाश्त करने लायक।

**सह्याद्रि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत।

**साँई**—संज्ञा पुं० [ सं० स्वामी ] १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। परमेश्वर। ३. पति। शौहर। भर्ता। ४. मुसलमान फकीरों की एक उपाधि।

**साँक***†-संज्ञा स्त्री० दे० "शंका"।

**साँकड़ा**—संज्ञा पुं० [ सं० शृंखला ] पैरों में पहनने का एक आभूषण।

**साँकर***†—संज्ञा स्त्री० [ शृंखल ] शृंखला। जंजीर। सीकड़।

संज्ञा पुं० [ सं० संकीर्ण ] संकट। कष्ट।

वि० १. संकीर्ण। तंग। सँकरा। २. दुःखमय। कष्टमय।

**साँकरा**†—वि० दे० "सँकरा"।

**सांकेतिक**—वि० [ सं० ] जो संकेत रूप में हो। इशारे का।

**सांख्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] महर्षि कपिल-कृत एक प्रसिद्ध दर्शन।

**साँग**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शक्ति ] एक प्रकार की बरछी जो फेंककर मारी जाती है। शक्ति।

संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग"।

वि० [ सं० साङ्ग ] संपूर्ण। पूरा।

**साँगी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शंकु ] बरछी। साँग।

**सांगोपांग**—अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] अंगों और उपांगों सहित। संपूर्ण। समस्त।

**सांघातिक**—वि० [ सं० संघात ] इकट्ठा करनेवाला।

वि० [ सं० संघात ] १. संघातसंबंधी। २. प्राणों को संकट में डालने या मार डालनेवाला।

**साँच***†—वि० पुं० [ सं० सत्य ] [ स्त्री० साँची ] सत्य। यथार्थ। ठीक।

**साँचला**†—वि० [ हिं० साँच+ला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० साँचली ] सच्चा। सत्यवादी।

**साँचा**—संज्ञा पुं० [ सं० स्थाता ] १. वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। फरमा।

मुहा०—साँचे में ढला होना=अंग-प्रत्यंग से बहुत ही सुंदर होना।

२. वह छोटी आकृति जो कोई बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है। ३. कपड़े पर बेल-बूटा छापने का ठप्पा। छापा।

**साँची**—संज्ञा पुं० [ साँची नगर ? ] एक प्रकार का पान जो खाने में ठंढा होता है।

संज्ञा पुं० [ ? ] पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं।

**साँझ**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० संध्या ] संध्या।

**साँझा**—संज्ञा पुं० दे० "साझा"।

**साँझी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] देव-मंदिरों में जमीन पर की हुई फूल-पत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है।

**साँट**—संज्ञा स्त्री० [ सट से अनु० ] १. छड़ी। पतली कमची। २. कोड़ा। ३. शरीर पर का वह दाग जो कोड़े आदि का आघात पड़ने से होता है।

**साँटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँट=छड़ी ] १. कोड़ा। २. ईख। गन्ना।

**साँटिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँटी ] डौंड़ी या डुग्गी पीटनेवाला।

**साँटी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० यष्टिका या सट से अनु० ] पतली छोटी छड़ी।

संज्ञा स्त्री० [ हिं० सटना ] १. मेल-मिलाप। २. बदला। प्रतिकार। प्रतिहिंसा।

**साँठ**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. दे० "साँकड़ा"। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।

यौ०—साँठ-गाँठ=१. मेल मिलाप। २. गुप्त और अनुचित संबंध।

**साँठना**—क्रि० स० [ हिं० साँठ ] पकड़े रहना।

**साँठी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० गाँठ ? ] पूँजी। धन।

**साँड़**—संज्ञा पुं० [ सं० षंड ] १. वह बैल ( या घोड़ा ) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिए पालते हैं। २. वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

**साँड़नी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँड़िनी]

ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज चलती है।

**साँड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँड़ ] एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम में आती है।

**साँड़िया**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँड़ ? ] १. बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट। २. साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

**सांत**—वि० [ सं० ] जिसका अंत होता हो। अंतयुक्त।

**सांत्वन**—संज्ञा पुं० दे० "सांत्वना"।

**सांत्वना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुखी व्यक्ति को उसका दुःख हलका करने के लिए शांति देना। ढारस। आश्वासन।

**सांदीपनि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।

**साँध***—संज्ञा पुं० [ सं० सँधान ] वह जिस पर संधान किया जाय। लक्ष्य।

**साँधना**—क्रि० स० [ सं० संधान ] निशाना साधना। लक्ष्य करना। ध्यान करना।

क्रि० स० [ सं० साधन ] पूरा करना। साधना।

क्रि० स० [ सं० संधि ] मिलाना। मिश्रण।

**सांध्य**—वि० [ सं० ] संध्या-संबंधी। संध्या का।

**साँप**—संज्ञा पुं० [ सं० सर्प, प्रा० सप्प ] [ स्त्री० साँपिन ] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा जिसकी सैकड़ों जातियाँ होती हैं। कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भुजंग। विषधर।

**मुहा०**—कलेजे पर साँप लोटना= अत्यंत दुःख होना ( ईर्ष्या आदि के कारण )। साँप सूँघ जाना=भय या आशंका से अभिभूत हो जाना। काठ मारना। साँप छछूँदर की दशा=भारी असमंजस की दशा।

**सांपत्तिक**—वि० [ सं० साम्पत्तिक ] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। आर्थिक।

**साँपधरन***—संज्ञा पुं० [हिं० साँप + धारण ] शिव। महादेव।

**साँपिन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० साँप + इन ( प्रत्य० ) ] साँप की मादा।

**साँपिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँप ] साँप के रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रंग।

वि० साँप के रंग का।

**सांप्रत**—अव्य० [ सं० साम्प्रत ] इसी समय। सद्यः। अभी। तत्काल।

**सांप्रतिक**—वि० [ सं० ] इस समय का। तात्कालिक।

**सांप्रदायिक**—वि० [ सं० साम्प्रदायिक ] १. किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का। २. जो अपने ही संप्रदाय या उसके अनुयायियों के हित का ध्यान रखता हो।

**सांप्रदायिकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सांप्रदायिक होने का भाव। २. केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना, दूसरे संप्रदायों या उनके अनुयायियों को कुछ न समझना।

**सांब**—संज्ञा पुं० [ सं० साम्ब ] जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुंदर थे; पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गए थे।

**सांब-शिव, सांब-सदाशिव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंब ( पार्वती ) के सहित शिव। हर गौरी।

**साँभर**—संज्ञा पुं० [ सं० सम्भल या साम्भल ] १. राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २. उक्त झील के जल से बना हुआ नमक। ३. भारतीय मृगों की एक जाति।

संज्ञा पुं० [ सं० संबल ] रास्ते का जलपान। संबल। पाथेय।

**साँमुहे**†—अव्य० [ सं० सम्मुख ] सामने।

संज्ञा पुं० [ सं० श्यामक ] साँवाँ नामक अन्न।

**साँवत**†—संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

**सांवत्सरिक**—वि० [ सं० ] १. संवत्सर-संबंधी या संवत्सर का। वार्षिक। २. जो प्रति वर्ष हो।

**साँवर**†—वि० दे० "साँवला"।

**साँवलताई**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० साँवला] साँवला होने का भाव। श्यामता।

**साँवला**—वि० [ सं० श्यामल ] [ स्त्री० साँवली ] जिसका रंग कुछ कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम। ( गीतों में )

**साँवलापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँवला + पन ( प्रत्य० ) ] साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

**साँवाँ**—संज्ञा पुं० [ सं० श्यामक ] कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न।

**साँस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्वास ] १. नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अंदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की

क्रिया। श्वास। दम।

**मुहा०**—साँस उखड़ना=मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से साँस लेना। साँस टूटना। साँस ऊपर-नीचे होना=साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना। साँस रुकना। साँस चढ़ना=बहुत परिश्रम करने के कारण साँस का जल्दी-जल्दी आना और जाना। साँस टूटना= दे० "साँस उखड़ना"। साँस तक न लेना=बिलकुल चुपचाप रहना। कुछ न बोलना। साँस फूलना=बार बार साँस आना और जाना। साँस चढ़ना। साँस रहते=जीते जी। उलटी साँस लेना= १. दे० "गहरी साँस लेना"। २. मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम साँस लेना। गहरी, ठंढी या लंबी साँस लेना=बहुत अधिक दुःख आदि के कारण बहुत देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना।

२. अवकाश। फुरसत।

**मुहा०**—साँस लेना=विश्राम लेना। ठहरना।

३. गुंजाइश। दम। ४. संधि या दराज जिसमें से हवा जा या आ सकती हो। ५. किसी अवकाश के अंदर भरी हुई हवा।

**मुहा०**—साँस भरना=किसी चीज के अंदर हवा भरना।

६. दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

**साँसत**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० साँस+त (प्रत्य०) ] १. दम घुटने का सा कष्ट। २. बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा। ३. झंझट। बखेड़ा। ४. फजीहत।

**साँसतघर**—संज्ञा पुं० [ हिं० साँसत+घर ] वह तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें अपराधियों को विशेष दंड देने के लिए रखा जाता है। काल-कोठरी।

**साँसना*†**—क्रि० स० [सं० शासन] १. शासन करना। दंड देना। २. डाँटना। डपटना। ३. कष्ट देना। दुःख देना।

**सांसर्गिक**—वि० [ सं० ] १. संसर्ग-संबंधी। २. संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला।

**साँसा†**—संज्ञा पुं० [ सं० श्वास ] १. साँस। श्वास। २. जीवन। जिंदगी। ३. प्राण।

संज्ञा पुं० [ सं० संशय ] १ संशय। संदेह। शक। २. डर। भय। दहशत।

**सांसारिक**—वि० [ सं० ] [ भाव० सांसारिकता ] इस संसार का। लौकिक। ऐहिक।

**सांस्कृतिक**—वि० [ सं० ] संस्कृति से संबंध रखनेवाला। संस्कृति-संबंधी।

**सा**—अव्य० [ सं० सदृश ] १. समान। तुल्य। सदृश। बराबर। २. एक मानसूचक शब्द; जैसे—थोड़ा सा।

**साइँ**—संज्ञा पुं० [ सं० स्वामी ] १. स्वामी। मालिक। २. ईश्वर। ३. पति। खाविंद।

**साइक***—संज्ञा पुं० दे० "शायक"।

**साइकिल**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] दो या अधिक पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसे पैर से चलाते हैं। बाइ-सिकिल। पैरगाड़ी।

**साइकिल-रिक्शा**—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार की रिक्शा-गाड़ी जिसमें चलाने के लिए साइकिल जैसी यांत्रिक व्यवस्था होती है।

**साइत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० साअत ] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. पल। लमहा। ३. मुहूर्त। शुभ लग्न।

**साइनबोर्ड**—संज्ञा पुं० [ अं० ] नाम और व्यवसाय आदि का सूचक तख्ता। नामपट्ट।

**साइन्स**—संज्ञा स्त्री० [अं०] विज्ञान।

**साइयाँ**—संज्ञा पुं० दे० "साईं"।

**साइर†**—संज्ञा पुं० दे० "सायर"।

**साई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० साइत ? ] वह धन जो पेशेकारों को, किसी अवसर के लिए उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है। पेशगी। बयाना।

**साईस**—संज्ञा पुं० [ हिं० रईस का अनु० ] वह नौकर जो घोड़ों की खबरदारी और सेवा करता है।

**साईसी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० साईस+ई (प्रत्य०)] साईस का काम, भाव या पद।

**साउज***—संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

**साकंभरी**—संज्ञा पुं० [सं० शाकंभरी] साँभर झील या उसके आस-पास का प्रांत।

**साकचेरि†**—संज्ञा स्त्री० [?] मेहँदी।

**साकट, साकत**—संज्ञा पुं० [ सं० शाक्त ] १ शाक्त मत का अनुयायी। २. वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। ३. दुष्ट। पाजी।

**साकरा†**—वि० दे० "सँकरा"।

**साकल्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सकल का भाव। २. समुदाय। समूह। ३. हवन की सामग्री।

**साँका, साका**—संज्ञा पुं० [ सं० शाका ] १. संवत्। शाका। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. यश। कीर्ति। ४. कीर्ति का स्मारक। ५. धाक। रोब। ६. अवसर। मौका।

**मुहा०**—साँका चलाना=रोब जमाना। साँका बाँधना=दे० "साँका चलाना"।

७. कोई ऐसा बड़ा काम जिससे कर्त्ता की कीर्ति हो।

**साकार**—वि० [ सं० ] [ भाव० साकारता ] १. जिसका कोई आकार या स्वरूप हो। २. मूर्त्तिमान्। साक्षात्। ३. स्थूल।
संज्ञा पुं० [ सं० ] ईश्वर का साकार रूप।

**साकारोपासना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

**साकिन**—वि० [ अ० ] निवासी। रहनेवाला।

**साकी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. शराब पिलानेवाला। २. माशूक।

**साकेत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अयोध्या नगरी।

**साकेतवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० साकेतवासी ] १. पुण्यलाभ के लिए अयोध्या नगरी में निवास करना। २. स्वर्गवास। मृत्यु। (रामोपासकों के लिए)

**साक्षर**—वि० [ सं० ] [भाव० साक्षरता ] जो पढ़ना-लिखना जानता हो। शिक्षित।

**साक्षात्**—अव्य० [ सं० ] सामने। सम्मुख। प्रत्यक्ष।
वि० मूर्त्तिमान्। साकार।
संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा-देखी।

**साक्षात्कार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भेंट। मुलाकात। २. पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

**साक्षी**—संज्ञा पुं० [ सं० साक्षिन् ] [ स्त्री० साक्षिणी ] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। चश्मदीद गवाह। २. देखनेवाला। दर्शक।
संज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।

**साक्ष्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गवाही। शहादत।

**साख**—संज्ञा पुं० [ हिं० साखी ] साक्षी। गवाह।
संज्ञा स्त्री० गवाही। प्रमाण। शहादत।
संज्ञा पुं० [ सं० शाखा ] १. धाक। रोब। २. मर्य्यादा। ३. लेन-देन की प्रामाणिकता।

**साखना***—क्रि० स० [ सं० साक्षि ] साक्षी देना। गवाही देना। शहादत देना।

**साखर***†—वि० दे० "साक्षर"।

**साखा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"

**साखी**—संज्ञा पुं० [ सं० साक्षिन् ] गवाह।
संज्ञा स्त्री० १. साक्षी। गवाही।
मुहा०—साखी पुकारना=गवाही देना।
२. ज्ञान-संबंधी पद या कविता।
संज्ञा पुं० [ सं० शाखिन् ] वृक्ष। पेड़।

**साखू**—संज्ञा पुं० [ सं० शाल ] शाल वृक्ष।

**साखोच्चारन***†—संज्ञा पुं० [ सं० शाखोच्चारण ] विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंशगोत्रादि का परिचय देने की क्रिया। गोत्रोच्चार।

**साग**—संज्ञा पुं० [ सं० शाक ] १. पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २. पकाई हुई भाजी। तरकारी।
यौ०—साग-पात=रूखा-सूखा भोजन।

**सागर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र। उदधि। २. बड़ा तालाब। झील। ३. संन्यासियों का एक भेद।

**सागू**—संज्ञा पुं० [ अं० सेगो ] १. ताड़ की जाति का एक पेड़। २. दे० "सागूदाना"।

**सागूदाना**—संज्ञा पुं० [ हिं० सागू+दाना ] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है। साबूदाना।

**सागौन**—संज्ञा पुं० दे० "शाल"(१)

**साग्निक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि किया करता हो।

**साग्र**—वि० [ सं० ] समस्त। कुल। सब।

**साग्रह**—क्रि० वि० [ सं० ] आग्रहपूर्वक। जोर देकर।

**साज**—संज्ञा पुं० [ फा०, मि० सं० सज्जा ] १. सजावट का काम। ठाठ-बाट। २. सजावट का सामान। उपकरण। सामग्री। जैसे—घोड़े का साज। नाव का साज। ३. वाद्य। बाजा। ४. लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। ५. मेल-जोल।
वि० मरम्मत या तैयार करनेवाला। बनानेवाला। (यौगिक में, अंत में)

**साजन**—संज्ञा पुं० [ सं० सज्जन ] १. पति। स्वामी। २. प्रेमी। वल्लभ। ३. ईश्वर। ४. सज्जन। भला आदमी।

**साजना***†—क्रि० स० दे० "सजाना"
संज्ञा पुं० दे० "साजन"।

**साज-बाज**—संज्ञा पुं० [सं० साज+बाज (अनु०)] १. तैयारी। २. मेल-जोल।

**साज-सामान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. सामग्री। उपकरण। असबाब। २. ठाठ-बाट।

**साजिंदा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ साजिंदा ] १. साज या बाजा बजानेवाला। २. सपरदाई। समाजी।

**साजिश**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. मेल। मिलाप। २. किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। षड्यंत्र।

**साजुज्य***—संज्ञा पुं॰ दे॰ 'सायुज्य'।

**साझा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सहार्घ्य ] १. शराकत। हिस्सेदारी। २. हिस्सा। भाग। बाँट।

**साझी**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "साझेदार"।

**साझेदार**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ साझा+दार ( प्रत्य॰ ) ] शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी।

**साटक**—संज्ञा पुं॰ [ ? ] १. भूसी। छिलका। २. तुच्छ और निकम्मी चीज। ३. एक प्रकार का छंद।

**साटन**—संज्ञा स्त्री॰ [ अं॰ सैटिन ] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

**साटना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "सटाना"।

**साटिका**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] साड़ी।

**साठ**—वि॰ [ सं॰ षष्टि ] पचास और दस।

संज्ञा पुं॰ पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

**साठ-नाठ**—वि॰ [ हिं॰ साँठि+नाठ ( नष्ट ) ] १. निर्धन। दरिद्र। २. नीरस। रूखा। ३. इधर-उधर। तितर-बितर।

**साठसाती**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "साढ़े-साती"।

**साठा**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] १. ईख। गन्ना। ऊख। २. साठी धान।

वि॰ [ हिं॰ साठ ] साठ वर्ष की उम्रवाला।

**साठी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ षष्टिक ] एक प्रकार का धान।

**साड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शाटिका ] स्त्रियों के पहनने की धोती। सारी।

संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "साढ़ी"।

**साढ़साती**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "साढ़े-साती"।

**साढ़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ असाढ़ ] वह फसल जो असाढ़ में बोई जाती है। असाढ़ी।

संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ सार ? ] दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई।

संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "साड़ी"।

**साढ़ू**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ श्यालिवोढ़ृ ] साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

**साढ़े**—अव्य॰ [ सं॰ सार्द्ध ] एक अव्यय जो पूरे के साथ और आधे का सूचक होता है। जैसे साढ़े चार।

**मुहा॰**—साढ़े बाईस=व्यर्थ। तुच्छ।

**साढ़ेसाती**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ साढ़े+सात+ई ( प्रत्य॰ ) ] शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा। ( अशुभ )

**सात**—वि॰ [ सं॰ सप्त ] पाँच और दो।

संज्ञा पुं॰ पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।

**मुहा॰**—सात पाँच = चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। सात समुद्र पार= बहुत दूर। सात राजाओं की साक्षी देना=किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। सात सींके बनाना=शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं।

**सात-फेरी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सात+फेरी ] विवाह की भाँवर नामक रीति।

**सातला**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सप्तला ] एक प्रकार का थूहर। सप्तला। स्वर्ण-पुष्पी।

**सातिक***†—वि॰ दे॰ "सात्विक"।

**सात्मक**—वि॰ [ सं॰ ] आत्मा के सहित।

**सात्म्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सारूप्य। सरूपता।

**सात्यकि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष किया था। युयुधान।

**सात्वत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. बलराम। २. श्रीकृष्ण। ३. विष्णु। ४. यदुवंशी।

**सात्वती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. शिशुपाल की माता का नाम। २. सुभद्रा।

**सात्वती वृत्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] साहित्य में एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों में होता है।

**सात्विक**—वि॰ [ सं॰ ] १. सत्त्व-गुणवाला। सतोगुणी। २. सत्वगुण से उत्पन्न।

संज्ञा पुं॰ १. सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अंग-विकार। यथा—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय। २. सात्वती वृत्ति। (साहित्य)

**साथ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सहित ] १. मिलकर या संग रहने का भाव। संगत। सहचार। २. बराबर पास रहनेवाला। साथी। संगी। ३. मेल-मिलाप। घनिष्ठता।

अव्य॰ १. संबंधसूचक अव्यय जिससे सहचार का बोध होता है। सहित। से।

मुहा०—साथ ही=सिवा। अतिरिक्त। साथ ही साथ=एक साथ। एक सिलसिले में। एक साथ=एक सिलसिले में।

२. विरुद्ध। ३. प्रति। से। ४. द्वारा।

**साथरा**—संज्ञा पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० साथरी] १. बिछौना। बिस्तर। २. कुश की बनी चटाई।

**साथी**—संज्ञा पुं० [हिं० साथ] [स्त्री० साथिन] १. साथ रहनेवाला। हमराही। संगी। २. दोस्त। मित्र।

**सादगी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सादापन। सरलता। २. सीधापन। निष्कपटता।

**सादा**—वि० [फ़ा० सादः] [स्त्री० सादी] १. जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २. जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। ३. बिना मिलावट का। खालिस। ४. जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो। ५. जो कुछ छल-कपट न जानता हो। सरल हृदय। सीधा। ६. मूर्ख।

**सादापन**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सादा + पन (प्रत्य०)] सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

**सादिर**—वि० [अ०] निकलने या जारी होनेवाला।

**सादी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सादः] १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। सदिया। २. वह पूड़ी जिसमें पीठी आदि नहीं भरी होती।

संज्ञा पुं० १. शिकारी। २. घोड़ा। ३. सवार।

**सादुल, सादूर**—संज्ञा पुं० [सं० शार्दूल] १. शार्दूल। सिंह। २. कोई हिंसक पशु।

**सादृश्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समानता। एक-रूपता। २. बराबरी। तुलना।

**साध**—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. साधु। महात्मा। २. योगी। ३. सज्जन।

संज्ञा स्त्री० [सं० उत्साह] १. इच्छा। ख्वाहिश। कामना। २. गर्भ धारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।

संज्ञा पुं० फर्रुखाबाद और कन्नौज के आसपास पाई जानेवाली एक जाति।

वि० [सं० साधु] उत्तम। अच्छा।

**साधक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० साधिका] १. साधना करनेवाला। साधनेवाला। २. योगी। तपस्वी। ३. करण। वसीला। जरिया। ४. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो।

**साधन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. सामग्री। सामान। उपकरण। ३. उपाय। युक्ति। हिकमत। ४. उपासना। साधना। ५. धातुओं को शोधने की क्रिया। शोधन। ६. कारण। हेतु।

**साधनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साधन का भाव या धर्म्म। २ साधना।

**साधनहार***—संज्ञा पुं० [सं० साधन + हार] १. साधनेवाला। २. जो साधा जा सके।

**साधना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कोई कार्य्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिए उसकी उपासना। ३. दे० "साधन"।

क्रि० स० [सं० साधन] १. कोई कार्य्य सिद्ध करना। पूरा करना। २. निशाना लगाना। संधान करना। ३. नापना। पैमाइश करना। ४. अभ्यास करना। आदत डालना। ५. शोधना। शुद्ध करना। ६. पक्का करना। ठहराना। ७. एकत्र करना। इकट्ठा करना। ८. वश में करना। ९. बनावट को असल के रूप में दिखाना।

**साधर्म्य**—संज्ञा पुं० [सं०] समान धर्म होने का भाव। एक-धर्मता।

**साधार**—वि० [सं० स + आधार] जिसका आधार हो। आधार-सहित।

**साधारण**—वि० [सं०] १. मामूली। सामान्य। २. सरल। सहज। ३. सार्वजनिक। आम। ४. समान। सदृश।

**साधारणतः**—अव्य० [सं०] १. मामूली तौर पर। सामान्यतः। २. बहुधा। प्रायः।

**साधिकार**—क्रि० वि० [सं०] अधिकार पूर्वक। अधिकार सहित।

वि० जिसे अधिकार प्राप्त हो।

**साधित**—वि० [सं०] जो सिद्ध किया या साधा गया हो।

**साधु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कुलीन। आर्य्य। २. धार्मिक पुरुष। महात्मा। संत। ३. भला आदमी। सज्जन।

मुहा०—साधु साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना।

वि० १. अच्छा। उत्तम। भला। २. सच्चा। ३. प्रशंसनीय। ४. उचित।

**साधुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. साधु होने का भाव या धर्म्म। २. सज्जनता। भलमनसाहत। ३. सीधापन। सिधाई।

**साधुवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी के कोई उत्तम कार्य्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना।

**साधु साधु**—अव्य० [ सं० ] धन्य धन्य । वाह वाह । बहुत खूब ।

**साधू**—संज्ञा पुं० दे० "साधु" ।

**साधो**—संज्ञा पुं० [ सं० साधु ] संत । साधु ।

**साध्य**—वि० [ सं० ] १. सिद्ध करने योग्य । २. जो सिद्ध हो सके । ३. सहज । सरल । आसान । ४. जो प्रमाणित करना हो ।

संज्ञा पुं० १. देवता । २. न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय । ३. शक्ति । सामर्थ्य ।

**साध्यता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साध्य का भाव या धर्म्म । साध्यत्व ।

**साध्यवसानिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लक्षणा । (सा० द० )

**साध्यसम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] न्याय में वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पड़े ।

**साध्वी**—वि० स्त्री० [ सं० ] १. पतिव्रता । (स्त्री) २. शुद्ध चरित्रवाली । ( स्त्री )

**सानंद**—वि० [ सं० ] आनंद के साथ । आनंदपूर्वक ।

**सान**—संज्ञा पुं० [ सं० शाण ] वह पत्थर जिसपर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं । कुरंड ।

**मुहा०**—सान देना या धरना=धार तेज करना ।

**सानना**†—क्रि० स० [ हिं० सनना का सक० ] १. चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना । गूँधना । २. उत्तरदायी बनाना । ३. मिलाना । मिश्रित करना ।

**सानी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सानना ] वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को देते हैं ।

वि० [ अ० ] १. दूसरा । द्वितीय । २. बराबरी का । मुकाबले का ।

**यौ०**—लासानी=अद्वितीय ।

**सानु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पर्वत की चोटी । शिखर । २. अंत । सिरा । ३. चौरस जमीन । ४. वन । जंगल । ५. सूर्य । ६. विद्वान् । पंडित । ७. अगला भाग ।

वि० १. लंबा-चौड़ा । २. चौरस ।

**सानुज**—क्रि० वि० [ सं० स+अनुज ] अनुज या छोटे भाई के साथ ।

**सान्निध्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समीपता । सामीप्य । सन्निकटता । २. एक प्रकार की मुक्ति । मोक्ष ।

**सान्निपातिक**—वि० [ सं० ] सन्निपात-संबंधी ।

**साप***—संज्ञा पुं० दे० "शाप" ।

**सापत्न्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सपत्नी का भाव या धर्म्म । सौतपन । २. सौत का लड़का ।

**सापना***†—क्रि० स० [ सं० शाप ] १. शाप देना । बददुआ देना । २. गाली देना । कोसना ।

**सापेक्ष**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा सापेक्षता ] १. एक दूसरे की अपेक्षा रखनेवाले । २. जिसे किसी की अपेक्षा हो ।

**सापेक्षवाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह सिद्धांत जिसमें दो वस्तुओं या बातों का अपेक्षक माना जाय ।

**साप्ताहिक**—वि० [ सं० ] १. सप्ताह-संबंधी । २. प्रति सप्ताह होनेवाला ।

**साफ**—वि० [ अ० ] १. जिसमें किसी प्रकार की मैल आदि न हो । स्वच्छ । निर्मल । २. शुद्ध । खालिस । ३. निर्दोष । बे-ऐब । ४. स्पष्ट । ५. उज्ज्वल । ६. जिसमें कोई बखेड़ा या झंझट न हो । ७. स्वच्छ । चमकीला । ८. जिसमें छल-कपट न हो । निष्कपट । ९. समतल । हमवार । १०. सादा । कोरा । ११. जिसमें से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो । १२. जिसमें कुछ तत्व न रह गया हो ।

**मुहा०**-साफ करना=१. मार डालना । हत्या करना । २. नष्ट करना । बरबाद करना ।

१३. लेन-देन आदि का निपटना । चुकती ।

क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के । २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए । ३. इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे । ४. बिलकुल । नितांत ।

**साफल्य**—संज्ञा पुं० दे० "सफलता" ।

**साफा**—संज्ञा पुं० [ अ० साफ़ ] १. पगड़ी । २. मुरेठा । मुँड़ासा । ३. नित्य के पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ करना । कपड़े धोना ।

**साफी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० साफ़ ] १. रूमाल । दस्ती । २. वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं । ३. भाँग छानने का कपड़ा । ४. छनना ।

**साबर**—संज्ञा पुं० [ सं० शंबर ] १. दे० "साँभर" । २. साँभर मृग का चमड़ा । ३. मिट्टी खोदने का एक औजार । सबरी । ४. शिव-कृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र ।

**साबस**†—संज्ञा पुं० दे० "शाबाश" ।

**साबिक**—वि० [ अ० ] पूर्व का । पहले का ।

**यौ०**—साबिक दस्तूर=जैसा पहले था, वैसा ही । पहले की ही तरह ।

**साबिका**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. मुलाकात। भेंट। २. संबंध। सरोकार।

**साबित**—वि० [ फ़ा० ] जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध।

वि० [ अ० सबूत ] १. साबूत। पूरा। २. दुरुस्त। ठीक।

**साबुत**—वि० [ फ़ा० सबूत ] १. साबूत। संपूर्ण। २. दुरुस्त।

**साबुन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किए जाते हैं।

**साबूदाना**—संज्ञा पुं० दे० "सागूदाना"।

**साभार**—वि० [ सं० स+आभार ] भार से युक्त।

क्रि० वि० १. भार-सहित। भारपूर्वक। २. आभार या कृतज्ञतापूर्वक।

**सामंजस्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. औचित्य। २. उपयुक्तता। ३. अनुकूलता। ४. एकरसता।

**सामंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वीर। योद्धा। २. बड़ा जमींदार या सरदार।

**साम**—संज्ञा पुं० [ सं० सामन् ] १. वेद मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। २. दे० "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। ४. राजनीति में अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना। ५. सामान।

संज्ञा पुं० दे० "स्याम" और "श्याम"।

संज्ञा स्त्री० दे० "शाम" और "श्यामा"।

**सामग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सामगी ] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

**सामग्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य्य में उपयोग होता हो। २. असबाब। सामान। ३. आवश्यक द्रव्य। जरूरी चीज। ४. साधन।

**सामना**—संज्ञा पुं० [ हिं० सामने ] १. किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव।

मुहा०—सामने होना=( स्त्रियों का ) परदा न करके समक्ष आना।

२. भेंट। मुलाकात। ३. किसी पदार्थ का अगला भाग। ४. विरोध। मुकाबला।

मुहा०—सामना करना=धृष्टता करना। सामने होकर जवाब देना।

**सामने**—क्रि० वि० [ सं० सम्मुख ] १. सम्मुख। समक्ष। आगे। २. उपस्थिति में। मौजूदगी में। ३. सीधे। आगे। ४. मुकाबले में। विरुद्ध।

**सामयिक**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा सामयिकता ] १. समय संबंधी। २. वर्त्तमान समय से संबंध रखनेवाला। ३. समय के अनुसार।

यौ०—सामयिक पत्र=समाचार-पत्र।

**सामरथ**—संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

**सामरिक**—वि० [ सं० ] समर-संबंधी। युद्ध का।

**सामर्थ**—संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य"।

**सामर्थी**—संज्ञा पुं० [ सं० सामर्थ्य ] १. सामर्थ्य रखनेवाला। २. पराक्रमी। बलवान्।

**सामर्थ्य**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [ सं० सामर्थ्य ] १. समर्थ होने का भाव। २. शक्ति। ताकत। ३. योग्यता। ४. शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है।

**सामवायिक**—वि० [ सं० ] १. समवाय संबंधी। २. समूह या झुंड-संबंधी।

**सामवेद**—संज्ञा पुं० [ सं० सामन् ] भारतीय आर्य्यों के चार वेदों में से तीसरा। यज्ञों के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्हीं स्तोत्रों का इस वेद में संग्रह है।

**सामवेदीय**—वि० [ सं० ] सामवेद संबंधी।

संज्ञा पुं० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।

**सामशाली**—संज्ञा पुं० [ सं० साम+शाली ] राजनीतिज्ञ।

**सामहिं**—अव्य० [ सं० सन्मुख ] सामने।

**सामाजिक**—वि० [ सं० ] १. समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। २. सभा से संबंध रखनेवाला। ३. सभा में उपस्थित या संमिलित।

**सामाजिकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सामाजिक का भाव। लौकिकता। २. दे० "समाजवाद"।

**सामान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. किसी कार्य्य के साधन की आवश्यक वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। २. माल। असबाब। ३. बंदोबस्त। इंतजाम।

**सामान्य**—वि० [ सं० ] जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली।

संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समानता। बराबरी। २. वह गुण जो किसी जाति की सब चीजों में समान रूप से पाया जाय। जैसे—मनुष्यों में मनुष्यत्व। ३. साहित्य में एक अलंकार। एक ही आकार की दो या

अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन जिनमें देखने में कुछ भी अंतर नहीं जान पड़ता।

**सामान्यतः, सामान्यतया**—अव्य० [सं०] सामान्य या साधारण रीति से। साधारणतः।

**सामान्यतोदृष्ट**—संज्ञा पुं० [सं०] १. तर्क में अनुमान संबंधी एक प्रकार की भूल। किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करना जो न कार्य्य हो और न कारण। २. दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य जो कार्य्य कारण संबंध से भिन्न हो।

**सामान्य भविष्यत्**—संज्ञा पुं० [सं०] भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है। (व्या०)

**सामान्य भूत**—संज्ञा पुं० [सं०] भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूत काल की विशेषता नहीं पाई जाती। जैसे—खाया।

**सामान्य लक्षणा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करानेवाली शक्ति।

**सामान्य वर्तमान**—संज्ञा पुं० [सं०] वर्त्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्त्ता का उसी समय कोई कार्य्य करते रहना सूचित होता है। जैसे—जाता है।

**सामान्य विधि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म। जैसे—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो।

**सामान्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।

**सामासिक**—वि० [सं०] समास से संबंध रखनेवाला। समास का।

**सामिग्री**—संज्ञा स्त्री० दे० "सामग्री"।

**सामिष**—वि० [सं०] मांस, मत्स्य आदि के सहित। निरामिष का उलटा।

**सामी***†—संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"। संज्ञा स्त्री० दे० "शामी"।

**सामीप्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निकटता। २. वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है।

**सामुझि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।

**सामुदायिक**—वि० [सं०] समुदाय का।

**सामुद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. समुद्र से निकला हुआ नमक। २. समुद्रफेन। ३. दे० "सामुद्रिक"।

वि० १. समुद्र से उत्पन्न। २. समुद्र-संबंधी। समुद्र का।

**सामुद्रिक**—वि० [सं०] सागर-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. फलित ज्योतिष का एक अंग जिसमें हथेली की रेखाओं और शरीर पर के तिलों आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं। २. वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो।

**सामुहाँ***†—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने।

**सामुहें***†—अव्य० [सं० सन्मुख] सामने।

**सामूहिक**—वि० [सं०] समूह से संबंध रखनेवाला। वैयक्तिक का उलटा।

**सामूहिकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. 'सामूहिक' का भाव। २. साम्यवाद का वह सिद्धांत कि स्त्रियों आदि पर व्यक्ति का नहीं बल्कि समूह या समाज का अधिकार हो।

**साम्य**—संज्ञा पुं० [सं०] समान होने का भाव। तुल्यता। समानता।

**साम्यता**—संज्ञा स्त्री० दे० "साम्य"।

**साम्यवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का पाश्चात्य सामाजिक सिद्धांत। इसके प्रचारक समाज में बहुत अधिक साम्य स्थापित करना चाहते हैं और उसका वर्त्तमान वैषम्य दूर करना चाहते हैं।

**साम्यवादी**—संज्ञा पुं० [सं० साम्य-वादिन्] वह जो साम्यवाद के सिद्धांत मानता हो।

**साम्यावस्था**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों। प्रकृति।

**साम्राज्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट् का शासन हो। सार्वभौम राज्य। सल्तनत। २. आधिपत्य। पूर्ण अधिकार।

**साम्राज्यवाद**—संज्ञा पुं० [सं०] साम्राज्य को बराबर बढ़ाते रहने का सिद्धांत।

**सायं**—वि० [सं०] संध्या-संबंधी। संज्ञा पुं० संध्या। शाम।

**सायंकाल**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग। संध्या। शाम।

**सायंसंध्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह संध्या (उपासना) जो सायंकाल में की जाती है।

**सायक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २. खड्ग। ३. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और

एक गुण होता है। ४. पाँच की संख्या।

**सायंकिल**—संज्ञा स्त्री० दे० "साइकिल"।

**सायण**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने वेदों के प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

**सायत**—संज्ञा स्त्री० [अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. दंड। पल। ३. शुभ मुहूर्त। अच्छा समय।

**सायन**—संज्ञा पुं० दे० "सायण"।
वि० [सं०] अयनयुक्त। जिसमें अयन हो। (ग्रह आदि)
संज्ञा पुं० सूर्य्य की एक प्रकार की गति।

**सायबान**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सायःबान] मकान के आगे की वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिए बनाई गई हो।

**सायर**—संज्ञा पुं० [सं० सागर] १. सागर। समुद्र। २. ऊपरी भाग। शीर्ष।
संज्ञा पुं० [अ०] १. वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २. मुतफर्रकात। फुटकर। ३. दे० "सायर"।

**सायल**—संज्ञा पुं० [अ०] १. सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २. माँगनेवाला। ३. भिखारी। फकीर। ४. प्रार्थना करनेवाला। ५. उम्मीदवार। आकांक्षी।

**साया**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सायः] १. छाया।
मुहा०—साये में रहना=शरण में रहना। २. परछाईं। ३. जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। ४. असर। प्रभाव।
संज्ञा पुं० [अं० शिमीज] घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

**सायास**—क्रि० वि० [सं० स+आयास] परिश्रमपूर्वक। मेहनत से।

**सायाह्न**—संज्ञा पुं० [सं०] संध्या। शाम।

**सायुज्य**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सायुज्यता] १. ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २. वह मुक्ति जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।

**सारंग**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का मृग। २. कोकिल। कोयल। ३. श्येन। बाज। ४. सूर्य्य। ५. सिंह। ६. हंस पक्षी। ७. मयूर। मोर। ८. चातक। ९. हाथी। १०. घोड़ा। अश्व। ११. छाता। छत्र। १२. शंख। १३. कमल। कंज। १४. स्वर्ण। सोना। १५. आभूषण। गहना। १६. सर। तालाब। १७. भ्रमर। भौंरा। १८. एक प्रकार की मधुमक्खी। १९. विष्णु का धनुष। २०. कर्पूर। कपूर। २१. श्रीकृष्ण। २२. चंद्रमा। शशि। २३. समुद्र। सागर। २४. जल। पानी। २५. बाण। तीर। २६. दीपक। दीया। २७. पपीहा। २८. शंभु। शिव। २९. सर्प। साँप। ३०. चंदन। ३१. भूमि। जमीन। ३२. केश। बाल। अलक। ३३. शोभा। सुंदरता। ३४. स्त्री। नारी। ३५. रात्रि। रात। ३६. दिन। ३७. तलवार। खड्ग। (डिं०) ३८. एक प्रकार का छंद जिसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ३९. छप्पय के २६ वें भेद का नाम। ४०. मृग। हिरन। ४१. मेघ। बादल। ४२. हाथ। कर। ४३. [illegible]। ४४. खंजन पक्षी। सोनचिड़ी। ४५. मेंढक। ४६. गगन। आकाश। ४७. पक्षी। चिड़िया। ४८. सारंगी नामक वाद्य-यंत्र। ४९. ईश्वर। भगवान्। ५०. कामदेव। मन्मथ। ५१. विद्युत्। बिजली। ५२. पुष्प। फूल। ५३. संपूर्ण जाति का एक राग।
वि० १. रँगा हुआ। रंगीन। २. सुंदर। सुहावना। ३. सरस।

**सारंगपाणि**—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

**सारंगलोचन**—वि० [सं०] [स्त्री० सारंगलोचना] जिसके नेत्र मृग के समान हों।

**सारंगिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चिड़ीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पद में न, य, स ह हैं।

**सारंगिया**—संज्ञा पुं० [हिं० सारंगी+इया (प्रत्य०)] सारंगी बजानेवाला। साजिंदा।

**सारंगी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सारंग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध तारवाला बाजा।

**सार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ में का मूल या असली भाग। तत्त्व। सत्त। २. मुख्य अभिप्राय। निष्कर्ष। ३. निर्यास या अर्क आदि। रस। ४. जल। पानी। ५. गूदा। मग्ज। ६. दूध पर की साढ़ी। मलाई। ७. लकड़ी का हीर। ८. परिणाम। फल। नतीजा। ९. धन दौलत। १०. नवनीत। मक्खन। ११. अमृत। १२. बल। शक्ति। ताकत। १३. मज्जा। १४. जूआ खेलने का पासा। १५. तलवार। (डिं०) १६. २८ मात्राओंका एक

कुंद। १७. एक प्रकार का वर्णवृत्त। वि० दे० "ग्वाल"। १८ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है। उदार।

वि० १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. दृढ़। मजबूत।

*संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।

संज्ञा पुं० [हिं० सारना] १. पालन-पोषण। २. देख-रेख। ३. शय्या। पलंग।

†संज्ञा पुं० [सं० श्याल] पत्नी का भाई। साला।

**सारखा**—वि० दे० "सरीखा"।

**सारगर्भित**—वि० [सं०] जिसमें तत्त्व भरा हो। सार-युक्त। तत्त्वपूर्ण।

**सारता**†—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार का भाव या धर्म। सारत्व।

**सारथी**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारथ्य] १. रथादि का चलानेवाला। सूत। २. समुद्र। सागर।

**सारथ्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सारथी का कार्य, पद या भाव।

**सारद***—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती।

वि० शारद। शरद-संबंधी।

संज्ञा पुं० [सं० शरद्] शरद ऋतु।

**सारदा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।

**सारदी**—वि० दे० "शारदीय"।

**सारदूल**—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

**सारना**—क्रि० स० [हिं० सरना का सक०] १. पूर्ण करना। समाप्त करना। २. साधना। बनाना। दुरुस्त करना। ३. सुशोभित करना। सुंदर बनाना। ४. रक्षा करना। सँभालना। ५. आँखों में अंजन आदि लगाना। ६. अस्त्र चलाना।

**सारभाटा**—संज्ञा पुं० [हिं० ज्वार का अनु०+भाटा] ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले समुद्र के तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

**सारमेय**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारमेयी] १. सरमा की संतान। २. कुत्ता।

**सारल्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सरलता।

**सारवती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] तीन भगण और एक गुरु का एक छंद।

**सारवत्ता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सार ग्रहण करने का भाव। सार-ग्राहिता।

**सारस**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सारसी] १. एक प्रकार का बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन और पैर बहुत लम्बे होते हैं। २. हंस। ३. चंद्रमा। ४. कमल। जलज। ५. छप्पय का ३७ वाँ भेद।

**सारसी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आर्य्या छंद का २३ वाँ भेद। २. मादा सारस।

**सारसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुर-सुता] यमुना।

**सारसुती***†—संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"

**सारस्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सरसता।

**सारस्वत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिल्ली के उत्तर पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमें पंजाब का कुछ भाग सम्मिलित है। २. इस देश के ब्राह्मण। ३. एक प्रसिद्ध व्याकरण।

वि० १. सरस्वती-संबंधी। विद्या-संबंधी। बौद्धिक। २. सारस्वत देश का।

**सारांश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खुलासा। संक्षेप। सार। २. तात्पर्य। मतलब। ३. नतीजा। परिणाम।

**सार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है।

†संज्ञा पुं० दे० "साला"।

वि० [स्त्री० सारी] समस्त। संपूर्ण। पूरा।

**सारावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारावली छंद।

**सारि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २. जूआ खेलने का पासा।

**सारिक**—संज्ञा पुं० दे० "सारिका"।

**सारिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मैना पक्षी।

**सारिखा***†—वि० दे० "सरीखा"।

**सारिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सहदेई। नागबला। २. कषाय। ३. गंधप्रसारिणी। ४. रक्त पुनर्नवा।

**सारिवा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अनंतमूल।

**सारी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सारिका पक्षी। मैना। २. पासा। गोटी। ३. थूहर।

संज्ञा स्त्री० दे० "साड़ी"।

संज्ञा पुं० [सं० सारिन्] अनुकरण करनेवाला।

**सारु***†—संज्ञा पुं० दे० "सार"।

**सारूप्य**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सारूप्यता] १. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। २. समान रूप होने का भाव। एकरूपता। सरूपता।

**सारूप्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सारूप्य का भाव या धर्म।

**सारो***†—संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

संज्ञा पुं० दे० "साला"।

**सारोपा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य में एक लक्षणा जो वहाँ होती है जहाँ एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कुछ विशिष्ट अर्थ निकलता है।

**सारौं***—संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

**सार्थ**—वि० [सं०] अर्थ सहित।

**सार्थक**—वि० [सं०] [भाव० सार्थकता] १. अर्थ सहित। २. सफल। पूर्ण-मनोरथ। ३. उपकारी। गुणकारी।

**सार्दूल**—संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

**सार्द्ध**—वि० [सं०] जिसमें पूरे के साथ आधा भी मिला हो। अर्ध-युक्त।

**सार्द्र**—वि० [सं०] आर्द्र। गीला।

**सार्व**—वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला।

**सार्वकालिक**—वि० [सं०] जो सब कालों में होता हो। सब समयों का।

**सार्वजनिक, सार्वजनीन**—वि० [सं०] सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्वसाधारण-संबंधी।

**सार्वत्रिक**—वि० [सं०] सर्वत्र-व्यापी।

**सार्वदेशिक**—वि० [सं०] संपूर्ण देशों का। सर्वदेश-संबंधी।

**सार्वभौतिक**—वि० [सं०] सब भूतों या तत्त्वों से संबंध रखनेवाला।

**सार्वभौम**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सार्वभौमिक] १. चक्रवर्त्ती राजा। २. हाथी।
वि० समस्त भूमि संबंधी।

**सार्वराष्ट्रीय**—वि० [सं०] [भाव० सार्वराष्ट्रीयता] जिसका संबंध अनेक राष्ट्रों से हो।

**सालंक**—संज्ञा पुं० [सं०] वह राग जिसमें किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

**साल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सालना] १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। सूराख। ३. चारपाई के पावों में किया हुआ चौकोर छेद। ४. घाव। जख्म। ५. दुःख। पीड़ा। वेदना। ६. एक प्रकार की मोच या चटक जो बहुधा गर्दन से लेकर कमर तक के बीच आती है।
संज्ञा पुं० [सं०] १. जड़। २. राल। ३. वृक्ष।
संज्ञा पुं० [फ़ा०] वर्ष। बरस।
संज्ञा पुं० दे० "शालि" और "शाल"।
संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

**सालक**—वि० [हिं० सालना] सालनेवाला। दुःख देनेवाला।

**सालगिरह**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बरस-गाँठ। जन्म दिन।

**सालग्रामी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शालग्राम] गंडक नदी।

**सालन**—संज्ञा पुं० [सं० सलवण] मांस, मछली या साग-सब्जी की मसालेदार तरकारी।

**सालना**—क्रि० अ० [हिं० शूल] १. दुःख देना। खटकना। कसकना। २. चुभना।
क्रि० स० १ दुःख पहुँचाना। २. चुभाना।

**सालनिर्यास**—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

**सालम मिश्री**—संज्ञा स्त्री० [अ० सालब+मिस्री] एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद पौष्टिक होता है। सुधा-मूली। वीरकंदा।

**सालरस**—संज्ञा पुं० [सं०] राल। धूना।

**सालसा**—संज्ञा पुं० [अं०] खून साफ करने का एक प्रकार का अँगरेजी ढंग का काढ़ा।

**साला**—संज्ञा पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १. पत्नी का भाई। २ एक प्रकार की गाली।
संज्ञा पुं० [सं० सारिका] सारिका। मैना।
संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।

**सालाना**—वि० [फ़ा०] साल का। वार्षिक।

**सालिग्राम**—संज्ञा पुं० दे० "शालग्राम"।

**सालिब मिश्री**—संज्ञा स्त्री० दे० "सालम मिश्री"।

**सालियाना**—वि० दे० "सालाना"।

**सालु***†—संज्ञा पुं० [हिं० सालना] १. ईर्ष्या। २. कष्ट।

**सालू**—संज्ञा पुं० [देश०] १. एक प्रकार का लाल कपड़ा (मांगलिक)। २. सारी।

**सालोक्य**—संज्ञा पुं० [सं०] वह मुक्ति जिसमें मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता।

**सावंत**—संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

**साव**—संज्ञा पुं० दे० "साहु"।

**सावक***—संज्ञा पुं० दे० "शावक"।

**सावकाश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अवकाश। फुर्सत। छुट्टी। २. मौका। अवसर।

**सावचेत***†—वि० दे० "सावधान"।

**सावज**—संज्ञा पुं० [?] वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाय।

**सावत**—संज्ञा पुं० [हिं० सौत] १. सौतों का पारस्परिक द्वेष। २. ईर्ष्या। डाह।

**सावधान**—वि० [सं०] सचेत।

सतर्क । होशियार । खबरदार । सजग ।

**सावधानता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सावधान होने का भाव । सतर्कता । होशियारी ।

**सावधानी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सावधानता" ।

**सावन**—संज्ञा पुं० [ सं० श्रावण ] १. आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना । श्रावण । २. एक प्रकार का गीत जो श्रावण महीने में गाया जाता है । ( पूरब )

संज्ञा पुं० [ सं० ] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय । ६० दंड ।

**सावनी**-संज्ञा स्त्री० [ हिं० सावन + ई ( प्रत्य० ) ] १. वह बायन जो सावन महीने में वर-पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है । २. दे० "श्रावणी" ।

वि० सावन-संबंधी । सावन का ।

**सावर**—संज्ञा पुं० [ सं० शाबर ] १. शिव-कृत एक प्रसिद्ध तंत्र । २. एक प्रकार का लोहे का लंबा औजार ।

संज्ञा पुं० [ सं० शबर ] एक प्रकार का हिरन

**सावर्णि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे । २. एक मन्वंतर का नाम ।

**सावित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य । २. शिव । ३. वसु । ४. ब्राह्मण । ५. यज्ञोपवीत । ६. एक प्रकार का अस्त्र ।

वि० १. सविता-संबंधी । सविता का । २. सूर्यवंशी ।

**सावित्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वेदमाता गायत्री । २. सरस्वती । ३. ब्रह्मा की पत्नी । ४. वह संस्कार जो उपनयन के समय होता है । ५. धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या । ६. मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी । ७. यमुना नदी । ८. सरस्वती नदी । ९. सधवा स्त्री ।

**साशंक**—वि० दे० "सशंक" ।

**सास्रु**—क्रि० वि० [ सं० स + अश्रु ] आँखों में आँसू भरकर ।

वि० जिसमें आँसू भरे हों ।

**साष्टांग**—वि० [ सं० ] आठों अंग सहित ।

यौ०—साष्टांग प्रणाम=मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना ।

मुहा०—साष्टांग प्रणाम करना=बहुत बचना । दूर रहना । ( व्यंग्य )

**सास**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्वश्रु ] पति या पत्नी की माँ ।

**सासन***—संज्ञा पुं० दे० "शासन" ।

**सासनलेट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा ।

**सासना***—संज्ञा स्त्री० दे० १. "शासन" । २. दण्ड । सजा । ३. कष्ट ।

**सासरा**† संज्ञा पुं० दे० "ससुराल" ।

**सासा***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० संशय ] संदेह ।

संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "श्वास" या "साँस" ।

**सासुरा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० ससुर ] १. ससुर । २. ससुराल ।

**साहु**—संज्ञा पुं० [ सं० साधु ] १. साधु । सज्जन । भला आदमी । २. व्यापारी । साहूकार । ३. धनी । महाजन । सेठ । ४. दे० "शाह" ।

**साहचर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सहचर होने का भाव । सहचारिता । २. संग । साथ ।

**साहजिक**—वि० [ सं० ] १. सहज में होनेवाला । स्वाभाविक ।

**साहनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सेनानी या अ० शहना ? ] सेना ।

संज्ञा पुं० १. साथी । संगी । २. पारिषद ।

**साहब**—संज्ञा पुं० [ अ० साहिब ] [ स्त्री० साहिबा ] [ बहु० साहबान ] १. मित्र । दोस्त । २. मालिक । स्वामी । ३. परमेश्वर । ४. एक सम्मान-सूचक शब्द । महाशय । ५. गोरी जाति का कोई व्यक्ति ।

**साहबजादा**—संज्ञा पुं० [ अ० साहिब + फा० जादा ] [ स्त्री० साहबजादी ] १. भले आदमी का लड़का । २. पुत्र । बेटा ।

**साहब-सलामत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] परस्पर अभिवादन । बंदगी । सलाम ।

**साहबी**-वि० [ अ० साहिब ] साहब का ।

संज्ञा स्त्री० १. साहब होने का भाव । २. प्रभुता । मालिकपन । ३. बड़ाई । बड़प्पन ।

**साहस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढ़तापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है । हिम्मत । हियाव । २. जबरदस्ती दूसरे का धन लेना । लूटना । ३. कोई बुरा काम । ४. दंड । सजा । ५. जुर्माना ।

**साहसिक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० साहसिकता ] १. वह जिसमें साहस हो । हिम्मतवर । पराक्रमी । २. डाकू । चोर । ३. निर्भीक । निर्भय । निडर ।

**साहसी**—वि० [ सं० साहसिन् ]

वह जो साहस करता हो। हिम्मती। दिलेर।

**साहस्र, साहस्रिक**—वि० [सं०] सहस्र-संबंधी। हजार का।

**साहस्री**—संज्ञा स्त्री० [सं० साहस्रिक] किसी सन् या संवत् के हजार हजार वर्षों का समूह। सहस्राब्दी।

**साहा**—संज्ञा पुं० [सं० साहित्य] विवाह आदि शुभ कार्यों के लिए निश्चित लग्न या मुहूर्त।

**साहाय्य**—संज्ञा पुं०[सं०] सहायता।

**साहि**†—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाह] १. राजा। २. दे० "साहु"।

**साहित्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सहित का भाव। एकत्र होना। मिलना। २. वाक्य में पदों का एक प्रकार का संबंध जिसमें उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। ३. गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रंथों का समूह जिनमें सार्वजनीन हित-संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं। वाङ्मय। ४. किसी विशेष या अन्य उपयोगी वस्तु का विवरणात्मक परिचय। इस प्रकार की परिचय पुस्तिका।

**साहित्य-कार**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० साहित्य-कारिता] वह जो साहित्य की रचना करता हो।

**साहित्य-सेवी**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो साहित्य की सेवा और रचना करता हो। साहित्यकार।

**साहित्यिक**—वि० [सं०] साहित्य-संबंधी।

संज्ञा पुं० दे० "साहित्य-सेवी"।

**साहिनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "साहनी"।

**साहिब**—संज्ञा पुं० दे० "साहब"।

**साहियाँ***†—संज्ञा पुं० दे० "साँई"।

**साही**—संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] एक प्रसिद्ध जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं।

**साहु**—संज्ञा पुं० [सं० साधु] १. सज्जन। २. महाजन। साहूकार। चोर का उलटा।

**साहुल**—संज्ञा पुं० [फ़ा० शाकूल] राजगीरों का एक यंत्र जिसमें पतली रस्सी के सहारे एक दोलन (भार) लटकता है और जिससे यह ज्ञात होता है कि दीवार पृथ्वी पर ठीक-ठीक लंब है। दोला-यंत्र।

**साहू**—संज्ञा पुं० दे० "साहु"।

**साहूकार**—संज्ञा पुं० [हिं० साहु+कार (प्रत्य०)] बड़ा महाजन या व्यापारी। कोठीवाल।

**साहूकारा**—संज्ञा पुं० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १. रुपयों का लेन-देन। महाजनी। २. वह बाजार जहाँ बहुत से साहूकार कारबार करते हों।

वि० साहूकारों का।

**साहूकारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० साहूकार+ई] साहूकार होने का भाव। साहूकारपन।

**साहेब**—संज्ञा पुं० दे० "साहब"।

**साहैं***†—संज्ञा स्त्री० [हिं० बाँह] भुजदंड। बाहु।

अव्य० [हिं० सामुहें] सामने। सम्मुख।

**सिउँ***†—प्रत्य० दे० "सों"।

**सिकना**—क्रि० अ० [हिं० सेंकना] आँच पर गरम होना या पकना। सेंका जाना।

**सिंगा**—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] १. फूँककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का एक बाजा। तुरही। रणसिंगा। २. डंगा (अमधान्य)।

**सिंगार**—संज्ञा पुं० [सं० शृंगार] १. सजावट। सजा। बनाव। २. शोभा। ३. शृंगार रस। ४. [illegible]।

संज्ञा पुं० दे० "हरसिंगार"।

**सिंगारदान**—संज्ञा पुं० [हिं० सिंगार+फ़ा० दान] वह छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखी जाती है।

**सिंगारना**—क्रि० स० [हिं० सिंगार] सुसज्जित करना। सजाना। सँवारना।

**सिंगारहाट**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार+हाट] वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला।

**सिंगारहार**—संज्ञा पुं० [सं० हार-शृंगार] हरसिंगार नामक फूल। परजाता।

**सिंगारिया**—वि० [सं० शृंगार] देवमूर्त्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी।

**सिंगारी**—वि० पुं० [हिं० सिंगार+ई] शृंगार करनेवाला। सजानेवाला।

**सिंगिया**—संज्ञा पुं० [सं० शृंगिक] एक प्रसिद्ध स्थावर विष।

**सिंगी**—संज्ञा पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा।

संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मछली। २. सींग की नली जिसमें जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं।

**सिंगोटी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सींग] बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सिंगार+औटी] सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी।

**सिंघ***†—संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।

**सिंघल**—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

**सिंघाड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० शृंगाटक] १. पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं। पानीफल। २. इस आकार का

सिलाई या बेल-बूटा । ३. समोसा नाम का नमकीन पकवान । सिकोना ।

**सिंघासन**—संज्ञा पुं० दे० "सिंहासन" ।

**सिंघी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सींग ] १. एक प्रकार की छोटी मछली । २. सोंठ । सुंठी ।

**सिंघेला**—संज्ञा पुं० [ सं० सिंह ] शेर का बच्चा ।

**सिंचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० सिंचित ] १. जल छिड़कना । २. सींचना ।

**सिंचना**—क्रि० अ० [ हिं० सींचना] सींचा जाना ।

**सिंचाई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सिंचन ] १. पानी छिड़कने का काम । २. सींचने का काम । ३. सींचने का कर या मजदूरी ।

**सिंचाना**—क्रि० स० [ हिं० सींचना का प्रेर० ] सींचने का काम दूसरे से कराना ।

**सिंचित**—वि० [सं०] सींचा हुआ ।

**सिंजा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिंजा" ।

**सिंजित**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सिंजा ] शब्द । ध्वनि । झनक । झंकार ।

**सिंदन**—संज्ञा पुं० दे० "स्यंदन" ।

**सिंदुवार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सँभालू वृक्ष । निर्गुंडी ।

**सिंदूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग में भरती हैं । २. सौभाग्य ।

मुहा०—सिंदूर पुछना, मिटना आदि =विधवा होना ।

**सिंदूरदान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना ।

**सिंदूरपुष्पी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं । वीरपुष्पी ।

**सिंदूरबंदन**—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूरदान" ।

**सिंदूरिया**—वि० [ सं० सिंदूर + इया (प्रत्य०) ] सिंदूर के रंग का । खूब लाल ।

**सिंदूरी**—वि० [ सं० सिंदूर + ई ( प्रत्य० ) ] सिंदूर के रंग का ।

**सिंधोरा**—संज्ञा पुं० दे० "सिंधोरा" ।

**सिंध**—संज्ञा पुं० [ सं० सिन्धु ] भारत के पश्चिम का एक प्रदेश ।

संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्रधान नदी । २. भैरव राग की एक रागिनी ।

**सिंधव**—संज्ञा पुं० दे० "सैंधव" ।

**सिंधी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिंध + ई ( प्रत्य० ) ] सिंध देश की बोली ।

वि० सिंध देश का ।

संज्ञा पुं० १. सिंध देश का निवासी । २. सिंध देश का घोड़ा ।

**सिंधु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. नद । नदी । २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिमी भाग में है । ३. समुद्र । सागर । ४. चार की संख्या । ५. सात की संख्या । ६. सिंध प्रदेश । ७. एक राग ।

**सिंधुज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेंधा नमक ।

**सिंधुजा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]लक्ष्मी ।

**सिंधुपुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ]चंद्रमा ।

**सिंधुमाता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सिंधुमातृ ] सरस्वती ।

**सिंधुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सिंधुरा ] १. हस्ती । हाथी । २. आठ की संख्या ।

**सिंधुरमणि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गजमुक्ता ।

**सिंधुरवदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गणेश ।

**सिंधुरगामिनी**—वि० स्त्री० [ सं० ] गजगामिनी । हाथी की सी चालवाली ।

**सिंधुविष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हलाहल विष ।

**सिंधुसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जलंधर राक्षस ।

**सिंधुसुता**—संज्ञा स्त्री०[सं०] लक्ष्मी ।

**सिंधुसुतासुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मोती ।

**सिंधूरा**—संज्ञा पुं० [ सं० सिंधुर ] संपूर्ण जाति का एक राग ।

**सिंधोरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिंधुर ] सिंदूर रखने का पात्र ।

**सिंह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सिंहनी ] १. बिल्ली की जाति का सबसे बलवान्, पराक्रमी और भव्य जंगली जंतु जिसके नरवर्ग की गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं । शेर बबर । मृगराज । मृगेंद्र । केसरी । २. ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि । ३ वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द । जैसे—पुरुषसिंह । ४. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद ।

**सिंहद्वार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सदर फाटक ।

**सिंहनाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिंह की गरज । २. युद्ध में वीरों की ललकार । ३. जोर देकर कहना । ललकारकर कहना । ४. एक वर्णवृत्त । कल-हंस । नंदिनी ।

**सिंहनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सिंह की मादा । शेरनी । २. एक छंद जिसके चारों पदों में क्रम से

१२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। इसका उलटा गाहिनी है।

**सिंहपौर**—संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार"।

**सिंहल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रामायणवाली लंका अनुमान करते हैं।

**सिंहलद्वीप**—संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"

**सिंहलद्वीपी**—वि० दे० "सिंहली"।

**सिंहली**—वि० [ हिं० सिंहल ] १. सिंहल द्वीप का। २. सिंहल द्वीप का निवासी।

संज्ञा स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

**सिंहवाहिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा देवी।

**सिंहस्थ**—वि० [ सं० ] सिंह राशि में स्थित ( बृहस्पति )।

**सिंहारहार***—संज्ञा पुं० दे० "हरसिंगार"।

**सिंहावलोकन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। ३. पद्य-रचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।

**सिंहासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

**सिंहिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लंका जाते समय हनुमान् ने मारा था। २. शोभन छंद का एक नाम।

**सिंहिकासुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राहु।

**सिंहिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] शेरनी।

**सिंही**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सिंह की मादा। शेरनी। २. आर्या का पचीसवाँ भेद। इसमें ३ गुरु और ५१ लघु होते हैं।

**सिंहोदरी**—वि० स्त्री० [ सं० ] सिंह के समान पतली कमरवाली।

**सिअन**—संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।

**सिअरा***—वि० [सं० शीतल] ठंढा। संज्ञा पुं० छाया। छाहँ।

**सिआना**—क्रि० स० दे० "सिलाना"

**सिआर**—संज्ञा पुं० [ सं० शृगाल ] [ स्त्री० सिआरी ] शृगाल। गीदड़।

**सिकंजबीन**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

**सिकंदरा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिकंदर] रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो झुककर आती हुई गाड़ी की सूचना देता है। सिगनल।

**सिकटा**†—संज्ञा पुं० [ देश० ] [स्त्री० अल्पा० सिकटी ] १. मिट्टी के बर्तन का छोटा टुकड़ा। २. कंकड़।

**सिकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंखला] १ किवाड़ की कुंडी। साँकल। जंजीर। २. जंजीर के आकार का गले में पहनने का गहना। ३. करधनी। तागड़ी।

**सिकत***—संज्ञा स्त्री० दे० "सिकता"।

**सिकता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १ बालू। रेत। २. बलुई जमीन। ३. चीनी। शर्करा।

**सिकतिल**—वि० [ सं० सिकता ] रेतीला।

**सिकत्तर**—संज्ञा पुं० [ अं० सेक्रेटरी ] किसी संस्था या सभा का मंत्री। सेक्रेटरी।

**सिकरवार**—संज्ञा पुं० [ देश० ] क्षत्रियों की एक शाखा।

**सिकली**—संज्ञा स्त्री० [ अ० सैकल ] धारदार हथियारों को माँजने और उनपर सान चढ़ाने की क्रिया।

**सिकलीगर**—संज्ञा पुं० [ अ० सैकल + फ़ा० गर ] तलवार आदि पर सान धरनेवाला।

**सिकहर**—संज्ञा पुं० [ सं० शिक्य + धर ] छींका।

**सिकुड़न**—संज्ञा स्त्री० [सं० संकुचन] १. संकोच। आकुंचन। २. बल। शिकन।

**सिकुड़ना**—क्रि० अ० [ सं० संकुचन ] १. सिमटकर थोड़े स्थान में होना। सिकुड़ना। आकुंचित होना। बटुरना। २. संकीर्ण होना। ३. बल पड़ना। शिकन पड़ना।

**सिकुरना***†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

**सिकोड़ना**—क्रि० स० [ हिं० सिकुड़ना ] १. समेटकर थोड़े स्थान में करना। संकुचित करना। २. समेटना। बटोरना।

**सिकोरना***†—क्रि० स० दे० "सिकोड़ना"।

**सिकोरा**—संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।

**सिकोली**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] कास, मूँज, बेंत आदि की बनी डलिया।

**सिक्कड़**—संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।

**सिक्का**—संज्ञा पुं० [ अ० सिक्कः ] १. मुहर। छाप। ठप्पा। २. रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। मुद्रित। चिह्न। ३. टकसाल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है। रुपया, पैसा आदि। मुद्रा।

**मुहा०**—सिक्का बैठना या जमना= १. अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व

होना। ३. आतंक जमना। रोब जमना।

४. पदक। तमगा। ५. मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा।

**सिक्का**—संज्ञा पुं० दे० "सिख"।

**सिक्त**—वि० [सं०] [स्त्री० सिक्ता] १. सींचा हुआ। २. भींगा हुआ। तर। गीला।

**सिखंड**—संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।

**सिख**—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख।

संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी।

संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] १. शिष्य। चेला। २. गुरु नानक आदि दस गुरुओं का अनुयायी। नानकपंथी।

**सिखना***—क्रि० स० दे० "सीखना"।

**सिखर**—संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।

**सिखरन**—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रीखंड] दही मिला हुआ शरबत।

**सिखलाना**—क्रि० स० दे० "सिखाना"।

**सिखा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिखा"।

**सिखाना**—क्रि० स० [सं० शिक्षण] १. शिक्षा देना। उपदेश देना। २. पढ़ाना।

यौ०—सिखाना-पढ़ाना = चालाकी सिखाना।

**सिखापन, सिखावन**—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा + हिं० पन या वन] १. शिक्षा। उपदेश। २. सिखाने का काम।

**सिखावना***—क्रि० स० दे० "सिखाना"।

**सिखिर***—संज्ञा पुं० दे० "शिखर"।

**सिखी**—संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।

**सिगरा, सिगरो***—वि० [सं० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। संपूर्ण। सारा।

**सिचान***—संज्ञा पुं० [सं० संचान] बाज पक्षी।

**सिच्छा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिक्षा"।

**सिजदा**—संज्ञा पुं० [अ०] प्रणाम। दंडवत।

**सिझना**—क्रि० अ० [सं० सिद्ध] आँच पर पकना। सिझाया जाना।

**सिझाना**—क्रि० स० [सं० सिद्ध] १. आँच पर पकाकर गलाना। २. तपस्या करना।

**सिटकिनी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] किवाड़ों के बंद करने के लिए लोहे या पीतल का छड़। अगरी। चटकनी। चटखनी।

**सिटपिटाना**—क्रि० अ० [अनु०] १. दब जाना। मंद पड़ जाना। २. भय या घबराहट से किंकर्तव्यविमूढ़ होना। सहमना। ३. सकुचना।

**सिट्टी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढ़ बढ़कर बोलना। वाक्पटुता।

मुहा०—सिट्टी भूलना=सिटपिटा जाना।

**सिट्ठी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सीठी"।

**सिठनी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अशिष्ट] विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली। सीठना।

**सिठाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सीठी] १. फीकापन। नीरसता। २. मंदता।

**सिड़**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागलपन। उन्माद। २. सनक। धुन।

**सिड़ी**—वि० [सं० शृणीक] [स्त्री० सिड़िन] १. पागल। बावला। उन्मत्त। २. सनकी। धुनवाला।

**सित**—वि० [सं०] [स्त्री० सिता, भाव० सितता] १. श्वेत। सफेद। २. उज्ज्वल। चमकीला। ३. साफ।

संज्ञा पुं० १. शुक्लपक्ष। उजाला पाख। २. चीनी। शक्कर। ३. चाँदी।

**सितकंठ**—वि० [सं०] सफेद गर्दनवाला।

संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।

**सितकर**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सितता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेदी। श्वेतता।

**सितपक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] हंस।

**सितभानु**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सितम**—संज्ञा पुं० [फा०] १. गजब। अनर्थ। २. जुल्म। अत्याचार।

**सितमगर**—संज्ञा पुं० [फा०] जालिम। अन्यायी। दुःखदायी।

**सितवराह**—संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत वराह।

**सितवराहपत्नी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**सितसागर**—संज्ञा पुं० [सं०] क्षीर-सागर।

**सिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चीनी। शक्कर। २. शुक्ल पक्ष। ३. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ४. मल्लिका। मोतिया। ५. मद्य। शराब।

**सिताखंड**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शहद से बनाई हुई शक्कर। २. मिस्री।

**सिताब***—क्रि० वि० [फा० शिताब] जल्दी। तुरंत। झटपट।

**सितार**—संज्ञा पुं० [सं० सप्त + तार, फा० सेहतार] एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।

**सितारा**—संज्ञा पुं० [फा० सितारः] १. तारा। नक्षत्र। २. भाग्य। प्रारब्ध। नसीब।

मुहा०—सितारा चमकना या बलंद होना=भाग्योदय होना। [illegible] होना।

२. चाँदी या सोने के तबक की बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये चीजों पर लगाई जाती है। चमकी।
संज्ञा पुं० दे० "सितार"।

**सितारिया**—संज्ञा पुं० [हिं० सितार+इया] सितार बजानेवाला।

**सितारेहिंद**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक उपाधि जो अँगरेजी सरकार की ओर से दी जाती थी।

**सितासित**—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्वेत और श्याम। सफेद और काला। २. बलदेव।

**सिति**—वि० दे० "शिति"।

**सितिकंठ**—संज्ञा पुं० [सं० शितिकंठ] महादेव।

**सिथिल**—वि० दे० "शिथिल"।

**सिद्धौसि**—क्रि० वि० [सं०] जल्दी। शीघ्र।

**सिद्ध**—वि० [सं०] १. जिसका साधन हो चुका हो। संपन्न। संपादित। २. प्राप्त। हासिल। उपलब्ध। ३. प्रयत्न में सफल। कृतकार्य्य। ४. जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो। ५. योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। ६. मोक्ष का अधिकारी। ७. जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। ८. जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो। प्रमाणित। साबित। निरूपित। ९. जो अनुकूल किया गया हो। कार्य्य-साधन के उपयुक्त बनाया हुआ। १०. आँच पर पका हुआ। उबला हुआ।
संज्ञा पुं० १. वह जिसने योग या तप में सिद्धि प्राप्त की हो। २. ज्ञानी या भक्त महात्मा। ३. एक प्रकार के देवता। ४. ज्योतिष में एक योग।

**सिद्धकाम**—वि० [सं०] १. जिसकी कामना पूरी हुई हो। २. सफल। कृतार्थ।

**सिद्धगुटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मंत्र-सिद्ध गोली जिसे मुँह में रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है।

**सिद्धता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध होने की अवस्था। २. प्रामाणिकता। सिद्धि। ३. पूर्णता।

**सिद्धत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] सिद्धता।

**सिद्धपीठ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।

**सिद्धरस**—संज्ञा पुं० [सं०] पारा।

**सिद्ध रसायन**—संज्ञा पुं० [सं०] वह रसौषध जिससे दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो।

**सिद्धहस्त**—वि० [सं०] १. जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २. निपुण।

**सिद्धांजन**—संज्ञा पुं० [सं०] वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से भूमि में गड़ी वस्तुएँ भी दिखाई देती हैं।

**सिद्धांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. भली भाँति सोच-विचारकर स्थिर किया हुआ मत। उसूल। २. मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय। ३. वह बात जो विद्वान उनके किसी वर्ग या संप्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो। मत। ४. निर्णीत अर्थ या विषय। तत्व की बात। ५. पूर्व-पक्ष के खंडन के उपरांत स्थिर मत। ६. किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक।

**सिद्धांती**—वि० [सं० सिद्धांत] १. शास्त्रों आदि के सिद्धांत जाननेवाला। २. अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।

**सिद्धा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २. आर्य्या छंद का १५ वाँ भेद, जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

**सिद्धाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० सिद्ध+हिं० आई] सिद्धपन। सिद्ध होने की अवस्था।

**सिद्धार्थ**—वि० [सं०] जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हों। पूर्णकाम।
संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. जैनों के २४वें अर्हत् महावीर के पिता का नाम।

**सिद्धासन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. योग का एक आसन। २. सिद्धपीठ।

**सिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. काम का पूरा होना। प्रयोजन निकलना। २. सफलता। कामयाबी। ३. प्रमाणित होना। साबित होना। ४. किसी बात का ठहराया जाना। निश्चय। ५. निर्णय। फैसला। ६. पकना। सीझना। ७. तप या योग के पूरे होने का अलौकिक फल। विभूति। योग की अष्ट सिद्धियाँ प्रसिद्ध हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। ८. मुक्ति। मोक्ष। ९. कौशल। निपुणता। दक्षता। १०. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ११. गणेश की दो स्त्रियों में से एक। १२. भाँग। विजया। १३ छप्पय छंद के ४१वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण होते हैं।

**सिद्धिगुटिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] रसायन आदि बनाने की गुटिका।

**सिद्धिदाता**—संज्ञा पुं० [सं० सिद्धि-दातृ] गणेश।

**सिद्धेश्वर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [स्त्री॰ सिद्धेश्वरी ] १. बड़ा सिद्ध। महायोगी। २. महादेव।

**सिधाई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ सीधा ] सीधापन।

**सिधाना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "सिधारना"।

**सिधारना**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ सिधाना ] १. जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २. मरना। स्वर्गवास होना।

‡*क्रि॰ स॰ दे॰ "सुधारना"।

**सिधि**‡*—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सिद्धि"।

**सिन**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] उम्र। अवस्था।

**सिनक**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ सिनकना ] नाक से निकला हुआ कफ या मल।

**सिनकना**—क्रि॰ अ॰ [सं॰ सिंघाणक + ना ] जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना। छिनकना।

**सिनि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शिनि ] १. एक यादव जो सात्यकि का पिता था। २. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा।

**सिनी**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शिनि"।

**सिनीवाली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. एक वैदिक देवी। २. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा।

**सिनेमा**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ ] परदे पर दिखलाया जानेवाला नाटकों आदि का चलता-फिरता छाया-चित्र।

**सिन्नी**†—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ शीरीनी] १. मिठाई। २. वह मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

**सिपर**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] ढाल।

**सिपहगरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] सिपाही का काम। युद्ध-व्यवसाय।

**सिपहसालार**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] सेनापति।

**सिपारस**†—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ सिफारिश ] १. सिफारिश। २. खुशामद।

**सिपास**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] १. कृतज्ञता। २. प्रशंसा।

**सिपाह**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] फौज। सेना।

**सिपाहगिरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] दे॰ "सिपहगरी"।

**सिपाहियाना**—वि॰ [ फ़ा॰ ] सिपाहियों या सैनिकों का सा।

**सिपाही**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. सैनिक। शूर। योद्धा। २. कांस्टेबिल। तिलंगा।

**सिपुर्द**‡—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सपुर्द"।

**सिप्पर**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सिपर"।

**सिप्पा**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] १. निशाने पर किया हुआ वार। २. कार्य्य-साधन का उपाय। तदबीर। ३. सूत्रपात।

**मुहा॰**—सिप्पा जमाना=किसी कार्य्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बाँधना।

४. रंग। प्रभाव। धाक। ५. एक प्रकार की तोप।

**सिप्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. चंद्रमा। २. पसीना।

**सिप्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. महिषी। भैंस। २. मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

**सिफत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] [ बहु॰ सिफात ] १. विशेषता। गुण। २. लक्षण। ३. स्वभाव।

**सिफर**—संज्ञा पुं॰ [ अं॰ साइफर ] शून्य। सुन्ना।

**सिफात**—संज्ञा स्त्री॰ अ॰ 'सिफत' का बहु॰

**सिफारिश**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] किसी के दोष क्षमा करने के लिए या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना। संस्तुति।

**सिफारिशी**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १. जिसमें सिफारिश हो। २. जिसकी सिफारिश की गई हो।

**सिफारिशी टट्टू**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ सिफारिशी + हिं॰ टट्टू ] वह जो केवल सिफारिश से किसी पद पर पहुँचा हो।

**सिबिका***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शिविका"।

**सिमंत**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सीमंत"।

**सिमटना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ समित + ना ] १. सिकुड़ना। संकुचित होना। २. शिकन पड़ना। सलवट पड़ना। ३. बटुरना। इकट्ठा होना। ४. व्यवस्थित होना। तरतीब से लगना। ५. पूरा होना। निबटना। ६. लज्जित होना। ७. सहमना।

**सिमरना**†—क्रि॰ स॰ दे॰ "सुमिरना"।

**सिमाना**†—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सीमान्त] सिवाना। हद।

*† क्रि॰ स॰ दे॰ "सिलाना"।

**सिमिटना**†*—क्रि॰ अ॰ दे॰ "सिमटना"।

**सिमृति***‡ संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्मृति"।

**सिमेटना***†—क्रि॰ स॰ दे॰ "समेटना"।

**सियः***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ सीता ] जानकी।

**सियना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ सृजन ] उत्पन्न करना। रचना।

**सियरा***—वि॰ [ सं॰ शीतल ] [ स्त्री॰ सियरी ] १. ठंढा। शीतल। २. कच्चा।

**सिअराई***—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिअरा] शीतलता।

**सिअराना***—क्रि० अ० [ हिं० सिअरा + न ] ठंडा होना। जुड़ाना। शीतल होना।

**सिआ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सीता ] जानकी।

**सियापा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सियाह-पोश ] १. मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति। २. निस्तब्धता। सन्नाटा।

**सियार**†—संज्ञा पुं० [ सं० शृगाल] [ स्त्री० सियारी, सियारिन ] गीदड़। जंबुक।

**सियाल**—संज्ञा पुं० [ सं० शृगाल ] गीदड़।

**सियाला**—संज्ञा पुं० [सं० शीतकाल] शीतकाल। जाड़े का मौसिम।

**सियासत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] [ वि० सियासती, सियासी ] १. देश की रक्षा और शासन। २. प्रबंध। व्यवस्था। ३. राजनीति।

**सियासी**—वि० [अ०] राजनीतिक।

**सियाह**—वि० दे० "स्याह"।

**सियाहा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. आय-व्यय की बही। रोजनामचा। २. सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमींदारों से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है।

**सियाहानवीस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] सरकारी खजाने में सियाहा लिखने-वाला।

**सियाही**—संज्ञा स्त्री० दे० "स्याही"।

**सिर**—संज्ञा पुं० [ सं० शिरस् ] १. शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल। कपाल। खोपड़ी। २. शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोल या लंबोतरा अंग जिसमें आँख, कान, नाक आदि होते हैं।

मुहा०—सिर-आँखों पर होना=सहर्ष स्वीकार होना। माननीय होना। सिर आँखों पर बैठाना=बहुत आदर-सत्कार करना। (भूत-प्रेत या देवी-देवता का) सिर पर आना=आवेश होना। प्रभाव होना। खेलना। सिर उठाना=१. विरोध में खड़ा होना। २. ऊधम मचाना। ३. सामने मुँह करना। लज्जित न होना। ४. प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। (अपना) सिर ऊँचा करना=प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच खड़ा होना। सिर करना=(स्त्रियों के) बाल सँवारना। चोटी गूँथना। सिर के बल जाना=बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। सिर खाली करना=१. बकवाद करना। २ माथा-पच्ची करना। सोच-विचार में हैरान होना। सिर खाना या चाटना=बकवाद करके जी उबाना। सिर खपाना=१. सोचने-विचारने में हैरान होना। २. कार्य में व्यग्र होना। सिर चकराना=दे० "सिर घूमना"। सिर चढ़ाना=१. माथे से लगाना। पूज्य भाव दिखाना। २. बहुत बढ़ा देना। मुँह लगाना। सिर घूमना=१. सिर में दर्द होना। २. घबराहट या मोह होना। बेहोशी होना। सिर झुकाना=१. सिर नवाना। नमस्कार करना। २. लज्जा से गर्दन नीची करना। सिर देना=प्राण निछावर करना। जान देना। सिर धरना=सादर स्वीकार करना। अंगीकार करना। सिर धुनना=शोक या पछतावे से सिर पीटना। पछताना। सिर नीचा करना=लज्जा से सिर झुकाना। शर्माना। सिर पटकना=१. सिर फोड़ना। सिर धुनना। २. बहुत परिश्रम करना। ३. अफसोस करना। हाथ मलना। सिर पर पाँव रखना=बहुत जल्द भाग जाना। हवा होना। सिर पर पड़ना=१. जिम्मे पड़ना। २. अपने ऊपर घटित होना। गुज-रना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना=१.जान लेने पर उतारू होना। २. हत्या के कारण आपे में न रहना। सिर पर होना=थोड़े ही दिन रह जाना। बहुत निकट होना। सिर पड़ना=१. जिम्मे पड़ना। मार ऊपर दिया जाना। २. हिस्से में आना। सिर फिरना=१. सिर घूमना। सिर चकराना। २. पागल हो जाना। उन्माद होना। सिर मारना=१. समझाते समझाते हैरान होना। २. सोचने विचारने में हैरान होना। सिर खपाना। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना=प्रारंभ में ही कार्य्य बिगड़ना। कार्य्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। सिर पर सेहरा होना=किसी कार्य्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। सिर से पैर तक=आरंभ से अंत तक। सर्वांग में। पूर्णतया। सिर से पैर तक आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना। सिर से कफन बाँधना=मरने के लिए उद्यत होना। सिर से खेल जाना=प्राण दे देना। सिर पर सींग होना=कोई विशेषता होना। सुर्खाब के पर होना। सिर होना=१. पीछे पड़ना। पीछा न छोड़ना। २. बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना। ३. उलझ पड़ना। झगड़ा करना। (किसी बात के) सिर होना=ताड़ लेना। समझ लेना। ३. ऊपर का छोर। सिरा। चोटी। वि० बड़ा। श्रेष्ठ।

**सिरकटा**—वि० [ हिं० सिर + कटना ] [ स्त्री० सिरकटी ] १. जिसका सिर कट गया हो। २. दूसरों का अनिष्ट करनेवाला।

**सिरका**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदि का रस।

**सिरकी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सरकंडा] १. सरकंडा। सरई। २. सरकंडे की बनी हुई टट्टी जो प्रायः दीवार या गाड़ियों पर धूप और वर्षा से बचाव के लिए डालते हैं। ३. चार-छः अंगुल की सरकंडे की पतली नली।

**सिरखना**—क्रि० अ० दे० "सिलगना"।

**सिरगा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] घोड़े की एक जाति।

**सिरचंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + चंद्र ] हाथी का एक प्रकार का अर्द्ध-चंद्राकार गहना।

**सिरजक***—संज्ञा पुं० [ हिं० सिरजना ] बनानेवाला। रचनेवाला। सृष्टिकर्त्ता।

**सिरजनहार***—संज्ञा पुं० [ सं० सृजन + हिं० हार ] १. रचनेवाला। २. परमेश्वर।

**सिरजना***—क्रि० स० [सं० सृजन] रचना। उत्पन्न करना। सृष्टि करना। क्रि० स० [ सं० संचय ] संचय करना।

**सिरजित***—वि० [ सं० सर्जित ] रचा हुआ।

**सिरताज**—संज्ञा पुं० [ सं० सिर + फ़ा० ताज ] १. मुकुट। २. शिरोमणि। ३. सरदार।

**सिरत्राण**—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।

**सिरदार***†—संज्ञा पुं० दे० "सरदार"।

**सिर-धरा**—संज्ञा पुं० [ स्त्री० सिर-धरी ] दे० "सिर-धरू"।

**सिर-धरू**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + धरना ( पकड़ना ) ] सिर पर रहनेवाला। रक्षक। पृष्ठपोषक।

**सिरनामा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सर + नामा=पत्र ] १. लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। २. किसी लेख के विषय का निर्देश करनेवाला शब्द या वाक्य। शीर्षक। सुर्खी।

**सिरनी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीरीनी] मिठाई आदि जो देवताओं या गुरु आदि के आगे रखी जाय।*

**सिरनेत**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + सं० नेत्री] १. पगड़ी। पटा। चीरा। २. क्षत्रियों की एक शाखा।

**सिर-पच्ची**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिर + पचाना ] सिर खपाना। माथा-पच्ची।

**सिरपाव**—संज्ञा पुं० दे० "सिरोपाव"।

**सिरपेच**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सर + पेच ] १. पगड़ी। २. पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

**सिरपोश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सरपोश ] १. सिर पर का आवरण। २. टोप। कुलाह।

**सिरफूल**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + फूल ] सिर पर पहना जानेवाला एक आभूषण। शीशफूल।

**सिरफेंटा**—संज्ञा पुं० दे० "सिरबंद"।

**सिरबंद**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + फ़ा० बंद ] साफा

**सिरबंदी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिर + फ़ा० बंदी ] माथे पर पहनने का एक आभूषण

**सिर-मग्जन**—संज्ञा पुं० १. दे० "सिरपच्ची"।

**सिरमनि***—संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

**सिरमौर**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + मौर ] १. सिर का मुकुट। २. सिरताज। शिरोमणि।

**सिररुह**—संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

**सिरस**—संज्ञा पुं० [ सं० शिरीष ] शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

**सिरहाना**—संज्ञा पुं० [ सं० शिरस् + आधान ] चारपाई में सिर की ओर का भाग।

**सिरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर ] १. लंबाई का अंत। छोर। टोंक। २. ऊपर का भाग। ३. अंतिम भाग। आखिरी हिस्सा। ४. आरंभ का भाग। ५. नोक। अनी।

मुहा०—सिरे का=अव्वल दरजे का। संज्ञा स्त्री० [ सं० शिरा ] १. रक्त-नाड़ी। २. सिंचाई की नाली।

**सिराजी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शीराज़ ( नगर ) ] १. शीराज का घोड़ा। २. शीराज का कबूतर। ३. शीराज की शराब।

**सिराना***†—क्रि० अ० [ हिं० सीरा + ना ] १. ठंढा होना। शीतल होना। २. मंद पड़ना। हतोत्साह होना। ३. समाप्त होना। खतम होना। ४. मिटना। दूर होना। ५. बीत जाना। गुजर जाना। †६. काम से फुरसत मिलना।

क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २. समाप्त करना। ३. बिताना।

**सिरावन***†—क्रि० स० दे० "सिराना"।

**सिरिश्ता**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सरिश्ता] विभाग।

**सिरिश्तेदार**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ]

अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमे के कागज पत्र रखता है।

**सिरिस**—संज्ञा पुं० दे० "सिरस"।

**सिरी***‡—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्री ] १. लक्ष्मी। २. शोभा। कांति। ३ रोली। रोचना। ४. माथे पर का एक गहना।

**सिरोपाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर + पाँव ] सिर से पैर तक का पहनावा जो राज-दरबार से सम्मान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।

**सिरोमनि**—संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।

**सिरोरुह**—संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।

**सिरोही**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की काली चिड़िया।

संज्ञा पुं० १. राजपूताने में एक स्थान जहाँ की तलवार बहुत बढ़िया होती है। २. तलवार।

**सिर्फ**—क्रि० वि० [ अ० ] केवल। मात्र।

वि० १. एकमात्र। अकेला। २. शुद्ध।

**सिल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शिला ] १. पत्थर। चट्टान। शिला। २. पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ३. पत्थर की चौकोर पटिया। ४. धातु-उपधातु आदि का चौकोर खंड।

संज्ञा पुं० दे० "शिल", "उंछ"।

संज्ञा पुं० [ अ० ] राजयक्ष्मा। क्षयरोग।

**सिलकी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] बेल। लता।

**सिलखड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिल + खड़िया ] १. एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। २. खड़िया मिट्टी। दुद्धी।

**सिलगना**—क्रि० अ० दे० "सुलगना"।

**सिलप***‡—संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।

**सिलपट**—वि० [ सं० शिलापट्ट ] १. साफ। बराबर। चौरस। २. घिसा हुआ। ३. चौपट। सत्यानाश।

**सिलपोहनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिल + पोहना ] विवाह की एक रीति।

**सिलबची**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सैलाबची ] चिलमची।

**सिलवट**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर। शिकन। सिकुड़न।

**सिलवाना**—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

**सिलसिला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बँधा हुआ तार। क्रम। परंपरा। २. श्रेणी। पंक्ति। ३. शृंखला। जंजीर। लड़ी। ४. व्यवस्था। तरतीब।

वि० [ सं० सिक्त ] १. भीगा हुआ। गीला। २. जिस पर पैर फिसले। ३. चिकना।

**सिलसिलेवार**—वि० [अ० + फ़ा०] तरतीबवार। क्रमानुसार।

**सिलह**—संज्ञा पुं० [ अ० सिलाह ] हथियार।

**सिलहखाना**—संज्ञा पुं० [ अ० सिलाह + फ़ा० खानः ] अस्त्रागार। हथियार रखने का घर।

**सिलहारा**—संज्ञा पुं० [ सं० शिलकार ] खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।

**सिलहिला**—वि० [ हिं० सीड़ + हीला = कीचड़ ] [ स्त्री० सिलहिली ] जिस पर पैर फिसले। कीचड़ से चिकना।

**सिला**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।

संज्ञा पुं० [ सं० शिल ] १. कटे खेत में से चुना हुआ दाना। २. कटे हुए खेत में गिरे अनाज के दाने चुनना। शिलवृत्ति।

संज्ञा पुं० [ अ० सिलह: ] बदला। एवज।

**सिलाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सीना + आई (प्रत्य०) ] १. सीने का काम या ढंग। २. सीने की मजदूरी। ३. टाँका। सीवन।

**सिलाजीत**—संज्ञा पुं० दे० "शिलाजतु"।

**सिलाना**—क्रि० स० [ हिं० सीना का प्रे० ] सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।

* क्रि० स० दे० "सिराना"।

**सिलारस**—संज्ञा पुं० [ सं० शिलारस ] १. सिल्हक वृक्ष। २. सिल्हक वृक्ष का गोंद।

**सिलावट**—संज्ञा पुं० [ सं० शिला + पट्ट ] पत्थर काटने और गढ़नेवाला। संगतराश।

**सिलाह**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १ जिरह बकतर। कवच। २. अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

**सिलाहबंद**—वि० [ अ० + फ़ा० ] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।

**सिलाहर**—संज्ञा पुं० "सिलहार"।

**सिलाही**—संज्ञा पुं० [ अ० सिलाह] सैनिक।

**सिलिका**—संज्ञा पुं० दे० "सिल्क"।

**सिलिप**‡*—संज्ञा पुं० दे० "शिल्प"।

**सिलीमुख**—संज्ञा पुं० दे० "शिलीमुख"।

**सिलोच्च**—संज्ञा पुं० [सं० शिलोच्च] एक प्राचीन पर्वत।

**सिलौट, सिलौटा**—संज्ञा पुं० [हिं० सिल + बट्टा ] [ स्त्री० अल्पा० सिलौटी ] १. सिल। २. सिल तथा बट्टा।

**सिल्क**—संज्ञा पुं० [अं०] १. रेशम। २. रेशमी कपड़ा।

**सिला**—संज्ञा पुं० [ सं० शिल ] अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं।

**सिल्ली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शिला ] १. हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। २. पत्थर की छोटी पतली पटिया। ३. धातु-उपधातु आदि का चौकोर खंड।

**सिलहक**—संज्ञा पुं० [सं०] सिलारस।

**सिव***—संज्ञा पुं० दे० "शिव"।

**सिवई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० समिता ] गुँधे हुए आटे के सूत से सूखे लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।

**सिवा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शिवा"।
अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा।
वि० अधिक। ज्यादा। फालतू।

**सिवाइ**—अ० दे० "सिवाय", "सिवा"।

**सिवाई**—संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की मिट्टी।

**सिवान**—संज्ञा पुं० [ सं० सीमंत ] हद। सीमा।

**सिवाय**—क्रि० वि० [ अ० सिवा ] अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर। बाद देकर।
वि० १. अधिक। ज्यादा। २. ऊपरी।

**सिवार, सिवाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शैवाल ] पानी में लच्छों की तरह फैलनेवाला एक तृण।

**सिवाला**—संज्ञा पुं० दे० "शिवालय"।

**सिविर**—संज्ञा पुं० दे० "शिविर"।

**सिष्ट**—सं० स्त्री० [ फ़ा० शिस्त ] बंसी की डोरी।
*वि० दे० "शिष्ट"।

**सिसकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. रोने में रुक रुककर निकलती हुई साँस छोड़ना। २. भीतर ही भीतर रोना। खुलकर न रोना। ३. जी धड़कना। ४. उलटी साँस लेना। मरने के निकट होना। ५. तरसना।

**सिसकारना**—क्रि० अ० [ अनु० सी सी + करना ] १. सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। सुसकारना। २. अत्यंत पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से साँस खींचना। सीत्कार करना।

**सिसकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिसकारना ] १. सिसकारने का शब्द। सीटी का सा शब्द। २. पीड़ा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द। सीत्कार।

**सिसकी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. खुलकर न रोने का शब्द। २. सिसकारी। सीत्कार।

**सिसिर***—संज्ञा पुं० दे० "शिशिर"।

**सिसु***—संज्ञा पुं० दे० "शिशु"।

**सिसुमार***—संज्ञा पुं० दे० "शिशुमार"।

**सिसोदिया**—संज्ञा पुं० [ सिसोद (स्थान) ] गुहलौत राजपूतों की एक शाखा।

**सिहद्दा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सेह + हद ] वह स्थान जहाँ तीन सीमाएँ मिलती हों।

**सिहरन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सिहरना] सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरी।

**सिहरना**†—क्रि० अ० [सं० शीत + ना] १. ठंढ से काँपना। २. काँपना। ३. डरना।

**सिहरा**—संज्ञा पुं० दे० "सेहरा"।

**सिहराना**†—क्रि० स० [ हिं० सिहरना ] १. सरदी से कँपाना। २. डराना।

**सिहरावना**—संज्ञा पुं० दे० "सिहरन"।

**सिहरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सिहरना] १. कँपकँपी। कंप। २. भय से दहलना। ३. जूड़ी का बुखार। ४. रोंगटे खड़े होना। लोमहर्ष।

**सिहाना**†—क्रि० अ० [ सं० ईर्ष्या ] १. ईर्ष्या करना। डाह करना। २. स्पर्द्धा करना। ३. पाने के लिए ललचना। लुभाना। ४. मुग्ध होना। मोहित होना।
क्रि० स० १. ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २. अभिलाष की दृष्टि से देखना। ललचना।

**सिहारना***†—क्रि० स० [ देश० ] १. तलाश करना। ढूँढ़ना। २. जुटाना।

**सिहोड़, सिहोर**†—संज्ञा पुं० दे० "सेहुँड़"।

**सींक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० इषीका ] १. मूँज आदि की पतली तीली। २. किसी घास का महीन डंठल। ३. तिनका। ४. शंकु। ५. नाक का एक गहना। लौंग। कील।

**सींका**—संज्ञा पुं० [ हिं० सींक ] पेड़-पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी। डाँड़ी।

**सींकिया**—संज्ञा पुं० [ हिं० सींक ] एक प्रकार का रंगीन धारीदार कपड़ा।
वि० सींक सा पतला।

**सींग**—संज्ञा पुं० [ सं० शृंग ] १. खुरवाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए कड़े नुकीले अवयव। विषाण।
मुहा०—(किसी के सिर पर) सींग होना=कोई विशेषता होना। (व्यंग्य) सींग कटाकर बछड़ों में मिलना=बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना। कहीं

सींग समाना=कहीं ठिकाना मिलना। २. सींग का बना फूँककर बजाया जानेवाला एक बाजा। सिंगी।

**सींगदाना**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "मूँगफली"।

**सींगरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ देश॰ ] एक प्रकार का लोबिया या फली। मोगरे की फली।

**सींगी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ सींग ] १. हिरन के सींग का बना बाजा। सिंगी। २. वह पोला सींग जिससे जर्राह शरीर से दूषित रक्त खींचते हैं। ३. एक प्रकार की मछली।

**सींच**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ सींचना ] सिंचाई।

**सींचना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ सिंचन ] १. पानी देना। आबपाशी करना। २. पानी छिड़ककर तर करना। भिगोना। ३. छिड़कना।

**सींढ़**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सिंहारण ] नाक से निकला हुआ मल या कफ।

**सींव***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सीमा ] सीमा। हद।

**मुहा॰**—सींव चरना या काढ़ना=अधिकार दिखाना। जबरदस्ती करना।

**सी**—वि॰ स्त्री॰ [ सं॰ सम ] समान। तुल्य। सदृश। जैसे, वह स्त्री बावली सी है।

**मुहा॰**—अपनी सी=अपने इच्छानुसार। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक।

संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] सीत्कार। सिसकारी।

**सीउ***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शीत ] शीत। ठंढ।

**सीकर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. जलकण। पानी की बूँद। छींट। २. पसीना।

*संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शृंखला ] जंजीर।

**सीकल**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ सैकल ] हथियारों का मोरचा छुड़ाने की क्रिया।

**सीका**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] ऊसर।

**सीकुर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शूक ] गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत। शूक।

**सीख**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शिक्षा ] १. शिक्षा। तालीम। २. वह बात जो सिखाई जाय। ३. परामर्श। सलाह। मंत्रणा।

**सीख**—संज्ञा स्त्री॰ [ फ़ा॰ ] लोहे की लंबी पतली छड़। शलाका। तीली।

**सीखचा**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] १. लोहे की सींक जिस पर मांस लपेटकर भूनते हैं। २. लोहे का छड़।

**सीखन***†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सीखना] शिक्षा।

**सीखना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ शिक्षण ] १. ज्ञान प्राप्त करना। किसी से कोई बात जानना। २. काम करने का ढंग आदि जानना।

**सीगा**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. विभाग। महकमा। २. प्रयोजन। कार्य। हीला।

**सीझ**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ सिद्धि ] सीझने की क्रिया या भाव। गरमी से गलाव।

**सीझना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ सिद्ध ] १. आँच या गरमी पाकर गलना। पकना। चुरना। २. आँच या गरमी से मुलायम पड़ना। ३. सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भीगकर मुलायम होना। ४. कष्ट सहना। क्लेश झेलना। ५. तपस्या करना। ६. मिलने के योग्य होना।

**सीटना**—क्रि॰ स॰ [ अनु॰ ] डींग मारना। शेखी मारना। बढ़ बढ़कर बातें करना।

**सीटपटाँग**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ सीटना+(ऊट) पटाँग ] घमंड भरी बातें।

**सीटी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शीत्] १. वह महीन शब्द जो ओठों को सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। २. इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यंत्र आदि से होता है। ३. वह यंत्र, बाजा या खिलौना जिसे फूँकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

**सीठना**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ अशिष्ट ] वह अश्लील गीत जो स्त्रियाँ विवाहादि मांगलिक अवसरों पर गाती हैं। सीठनी।

**सीठनी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सीठना"।

**सीठा**—वि॰ [ सं॰ शिष्ट ] नीरस। फीका।

**सीठी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शिष्ट ] १. किसी फल, पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश। खूद। २. सारहीन पदार्थ। ३. फीकी चीज।

**सीड़**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शीत] तरी। नमी।

**सीढ़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ श्रेणी ] १. ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिए एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान। निसेनी। जीना। पैड़ी। २. धीरे धीरे आगे बढ़ने की परंपरा।

**सीत***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शीत"।

**सीतकर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शीतकर] चंद्रमा।

**सीतल***—वि॰ दे॰ "शीतल"।

**सीतलपाटी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ शीतल+हिं॰ पाटी ] एक प्रकार की

बढ़िया चटाई।

**सीतला**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शीतला"।

**सीता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल से पड़ती जाती है। कूँड़। २. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्र जी की पत्नी थीं। वैदेही। जानकी। ३. एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं।

**सीताध्यक्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेती-बारी आदि का प्रबंध करता हो।

**सीतापति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] श्री रामचंद्र।

**सीताफल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

**सीत्कार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह सी सी शब्द जो पीड़ा या आनन्द के समय मुँह से निकलता है। सिसकारी।

**सीथ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सिक्थ ] पके हुए अन्न का दाना। भात का दाना।

**सीद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सूदखोरी। कुसीद।

**सीदना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ सीदति ] दुःख पाना।

**सीध**—संज्ञा स्त्री॰ [ हि॰ सीधा ] १. वह लंबाई जो बिना इधर-उधर मुड़े एक-तार चली गई हो। २. लक्ष्य। निशाना।

**सीधा**—वि॰ [ सं॰ शुद्ध [ स्त्री॰ सीधी ] १. जो टेढ़ा न हो। अवक्र। सरल। ऋजु। २. ठीक लक्ष्य की ओर हो। ३. सरल प्रकृति का। भोला-भाला। ४. शांत और सुशील।

**मुहा॰**—सीधी तरह=शिष्ट व्यवहार से।

**यौ॰**—सीधा-साधा=भोला-भाला।

**मुहा॰**—( किसी को ) सीधा करना= दंड देकर ठीक करना।

५. सुकर। आसान। सहज। ६. दहिना।

क्रि॰ वि॰ ठीक सामने की ओर सम्मुख।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ असिद्ध ] बिना पका हुआ अन्न।

**सीधापन**—संज्ञा पुं॰ [हि॰ सीधा+ पन ( प्रत्य॰ ) ] सीधा होने का भाव। सिधाई।

**सीधे**—क्रि॰ वि॰ [ हि॰ सीधा ] १. बराबर सामने की ओर। सम्मुख। २. बिना कहीं मुड़े या रुके। ३. नरमी से। शिष्ट व्यवहार से।

**सीना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ सीवन ] १. कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई तागों से जोड़ना। २. टाँका मारना।

संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ सीना ] छाती। वक्षःस्थल।

**सीनाबंद**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ ] अँगिया। चोली।

**सीनियर**—वि॰ [ अं॰ ] १. बड़ा। वयस्क। २.पद या मर्यादा में ऊँचा। श्रेष्ठ।

**सीप**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ शुक्ति प्रा॰ सुत्ति ] १ कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जल-जंतु। सीपी। सितुही। २. इस समुद्री जलजंतु का सफेद, कड़ा, चमकीला आवरण जो बटन आदि बनाने के काम में आता है। ३. ताल के सीप का संपुट जो चम्मच आदि के समान काम में लाया जाता है।

**सीपति**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ श्रीपति ] विष्णु।

**सीपर**॰†—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ सिपर ] ढाल।

**सीपसुत**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ सीप+सुत] मोती।

**सीपा**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] कड़ा जाड़ा।

**सीपिज**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ सीपी ] मोती।

**सीपी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सीप"।

**सीबी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ सी सी ] सी सी शब्द। सिसकारी। सीत्कार।

**सीमंत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. स्त्रियों का माँग। २. हड्डियों का संधि-स्थान। ३. दे॰ "सीमंतोन्नयन"।

**सीमंतिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] स्त्री। नारी।

**सीमंतोन्नयन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] द्विजों के दस संस्कारों में से तीसरा संस्कार जो प्रथम गर्भ के चौथे, छठे या आठवें महीने होता है।

**सीम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सीमा ] सीमा। हद्द।

**मुहा॰**—सीम चरना या काँड़ना= अधिकार जताना। दबाना। जबर-दस्ती करना।

**सीमांत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह स्थान जहाँ सीमा का अन्त होता हो। सरहद।

**सीमा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ ] १. माँग। २. किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद। सरहद। मर्य्यादा।

**मुहा॰**—सीमा से बाहर जाना=

उचित से अधिक बढ़ जाना।
**सीमाब**—संज्ञा पुं० [ फा० ] पारा।
**सीमाबद्ध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ।
**सीमोल्लंघन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सीमा का उल्लंघन करना। २.विजय-यात्रा। सीमातिक्रमणोत्सव। ३ मर्य्यादा के विरुद्ध कार्य करना।
**सीय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सीता ] जानकी।
**सीयन**†—संज्ञा स्त्री० दे० "सीवन"।
**सीयरा***—वि० दे० "सियरा"।
**सीर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हल। २. हल जोतनेवाले बैल। ३. सूर्य्य।
संज्ञा स्त्री० [ सं० सीर=हल ] १. वह जमीन जिसे भूस्वामी या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा हो। २. वह जमीन जिसकी उपज कई हिस्सेदारों में बँटती हो।
संज्ञा पुं० [ सं० शिरा ] रक्त की नाड़ी।
*†वि० [ सं० शीतल ] ठंढा। शीतल।
**सीरक***—संज्ञा पुं० [ हिं० सीरा ] ठंढा करनेवाला।
**सीरख***—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।
**सीरध्वज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा जनक।
**सीरनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० शीरीनी ] मिठाई।
**सीरष***—संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।
**सीरा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शीर ] १. पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी। २ हलवा।
*†वि० [ सं० शीतल ] [ स्त्री० सीरी ] १. ठंढा। शीतल। २. शांत। मौन। चुपचाप।
**सीरीज़**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] एक ही तरह की बहुत सी चीजों की क्रमिक स्थापना। माला।
**सील**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शीतल ] आर्द्रता। सीड़। नमी। तरी।
*†संज्ञा पुं० दे० "शील"।
संज्ञा स्त्री० [ अं० ] मोहर। छाप। मुद्रा।
संज्ञा पुं० [ अं० ] एक प्रकार की समुद्री मछली।
**सीला**—संज्ञा पुं० [ सं० शिल ] १. अनाज के वे दाने जो खेत में से तपस्वी या गरीब चुनते हैं। सिल्ला। २. खेत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति।
वि० [ सं० शीतल ] [ स्त्री० सीली ] गीला।
**सीव***—संज्ञा स्त्री० दे० "सीमा"।
**सीवन**—संज्ञा पुं०, स्त्री० [ सं० ] १. सीने का काम सिलाई। २. सीने में पड़ी हुई लकीर। ३. दरार। संधि। दराज।
**सीवना**—संज्ञा पुं० दे० "सिवाना"।
क्रि० स० दे० "सीना"।
**सीस**—संज्ञा पुं० [ सं० शीर्ष ] सिर। माथा।
**सीसक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सीसा (धातु)।
**सीसताज**—संज्ञा पुं० [ हिं० सीस फ़ा० ताज ] वह टोपी जो शिकारी जानवरों के सिर पर रहती और शिकार के समय खोली जाती है। कुलाह।
**सीसत्राण**—संज्ञा पुं० दे० "शिरस्त्राण"।
**सीसफूल**—संज्ञा पुं० [ हिं० सीस+फूल ] सिर पर पहनने का फूल। (गहना)
**सीसमहल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शीशा अ० महल ] वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
**सीसा**—संज्ञा पुं० [ सं० सीसक ] नीलापन लिए काले रंग की एक मूल धातु
*† संज्ञा पुं० दे० "शीशा"।
**सीसी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] शीत, पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकला हुआ शब्द। सीत्कार। सिसकारी।
*† संज्ञा स्त्री० दे० "शीशी"।
**सीसोदिया**—संज्ञा पुं० दे० "सिसोदिया"।
**सीहु**—संज्ञा स्त्री० [सं० साधु] महक। गंध।
* संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।
**सीहगोस**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सियहगोश ] एक प्रकार का जंतु जिसके कान काले होते हैं।
**सुँ***†—प्रत्य० दे० "सो"।
**सुँघनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूँघना ] तंबाकू के पत्ते का बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है। हुलास। नस्य।
**सुँघाना** क्रि० स० [ हिं० सूँघना ] आघ्राण कराना। सूँघने की क्रिया कराना।
**सुंड भुसुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० शुंड-भुशुंडि ] हाथी, जिसका अस्त्र सूँड़ है।
**सुंडा**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूँड़] सूँड़। शुंड।
**सुंडाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथी।
**सुंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुंद का भाई था।
**सुंदर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुंदरी ] १. जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्। खूबसूरत। मनोहर। २.

अच्छा। बढ़िया।

**सुंदरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुंदर होने का भाव। सौंदर्य। खूबसूरती।

**सुंदरताई, सुंदराई**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुंदरता"।

**सुंदरापा**—संज्ञा पुं० दे० "सुंदरता"।

**सुंदरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सुंदर स्त्री। २. त्रिपुर-सुंदरी देवी। ३. एक योगिनी का नाम। ४. सवैया नामक छंद का एक भेद जिसमें आठ सगण और एक गुरु होता है। ५. बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। द्रुतविलंबित। ६. तेईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

**सुँधावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सोंधा ] सोंधापन।

**सुंबा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. हसंज। २. तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिए गीला कपड़ा। पुचारा।

**सु**—उप० [ सं० ] एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है। जैसे—सुनाम, सुशील आदि।

वि० १. सुंदर। अच्छा। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. शुभ। भला।

* अव्य० [ सं० सह ] तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न।

सर्व० [ सं० स ] सो। वह।

**सुअटा**†—संज्ञा पुं० [ सं० शुक ] सुग्गा। तोता।

**सुअन***—संज्ञा पुं० [सं० सुत] पुत्र। बेटा।

संज्ञा पुं० [ सं० सुमन ] पुष्प। फूल।

**सुअनजर्द**—संज्ञा पुं० दे० "सोनजर्द"।

**सुअना***—क्रि० अ० [ हिं० सुअन] उत्पन्न होना। उगना। उदय होना।

संज्ञा पुं० दे० "सुअटा"।

**सुआ**—संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।

**सुआउ***—वि० [ सं० सु+आयु ] बड़ी उम्रवाला। दीर्घजीवी।

**सुआन***—संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।

**सुआना**†—क्रि० स० [ हिं० सूना का प्रेरणा० ] उत्पन्न कराना। पैदा कराना।

**सुआमी***—संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।

**सुआर**†—संज्ञा पुं० [ सं० सूपकार] रसोइया।

**सुआरव**—वि० [ सं० ] मीठे स्वर से बोलने या बजानेवाला।

**सुआसिनी***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुवासिना ? ] १. स्त्री०, विशेषतः पास रहनेवाली स्त्री। २. सौभाग्यवती स्त्री। सधवा।

**सुआहित**—संज्ञा पुं० [ सं० सु+आहत ? ] तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

**सुकंठ**—वि० [ सं० ] १. जिसका कंठ सुंदर हो। २. सुग्रीव।

संज्ञा पुं० [ सं० ] सुग्रीव।

**सुक**—संज्ञा पुं० दे० "शुक"।

**सुकचाना***—क्रि० अ० दे० "सकुचाना"।

**सुकड़ना**—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

**सुकनासा***—वि० [ सं० शुक+नासिका ] जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुंदर हो।

**सुकर**—वि० [ सं० ] सुसाध्य। सहज।

**सुकरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सहज में होने का भाव। सौकर्य। २. सुंदरता।

**सुकराना**—संज्ञा पुं० दे० "शुकराना"।

**सुकरित***—वि० [ सं० सुकृति ] शुभ। अच्छा।

**सुकर्मी**—वि० [ सं० सुकर्म्मिन् ] १. अच्छा काम करनेवाला। २. धार्मिक। ३ सदाचारी।

**सुकल**—संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल"।

**सुकचाना**—क्रि० अ० [ ? ] अचंभे में आना।

**सुकाना***—क्रि० स० दे० "सुखाना"।

**सुकाल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उत्तम समय। २. वह समय जिसमें अन्न आदि की उपज अच्छी हो। अकाल का उलटा।

**सुकावना***—क्रि० स० दे० "सुखाना"।

**सुकित***—संज्ञा पुं० [ सं० सुकृत ] शुभ कर्म।

**सुकिया***—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।

**सुकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शुक ] तोते की माता। सुग्गी। सारिका। तोती।

**सुकीअ***—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"। ( नायिका )

**सुकुआर**—वि० दे० "सुकुमार"।

**सुकुति***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० शुक्ति ] सीप।

**सुकुमार**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुकुमारी ] जिसके अंग बहुत कोमल हों। नाजुक।

संज्ञा पुं० १. कोमलांग बालक। २. काव्य का कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त होना।

**सुकुमारता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुकुमार का भाव या धर्म्म। कोमलता। नजाकत।

**सुकुमारी**—वि० [ सं० ] कोमल अंगोंवाली। कोमलांगी।

**सुकुरना***†—क्रि० अ० दे० "सिकुड़ना"।

**सुकुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. उत्तम

कुल । १. वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो । कुलीन । २. ब्राह्मणों की एक उपजाति ।

संज्ञा पुं० दे० "शुक्ल" ।

**सुकुवाँर, सुकुवार**—वि० दे० "सुकुमार" ।

**सुकृत्**—वि० [ सं० ] १. उत्तम और शुभ कार्य्य करनेवाला । २. धार्मिक ।

**सुकृत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. पुण्य । २. दान । ३. उत्तम कार्य ।

वि० १. भाग्यवान् । २. धर्म्मशील ।

**सुकृतात्मा**—वि० [सं० सुकृतात्मन् ] धर्म्मात्मा ।

**सुकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] [ भाव० सुकृतित्व ] शुभ कार्य्य । अच्छा काम । पुण्य । सत्कर्म ।

**सुकृती**—वि० [ सं० सुकृतिन् ] १. धार्म्मिक । पुण्यवान् । २. भाग्यवान् । ३. बुद्धिमान् ।

**सुकृत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुण्य । धर्मकार्य ।

**सुकेशि**—संज्ञा पुं० [सं० ] विद्युत्केश राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता ।

**सुकेशी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उत्तम केशोंवाली स्त्री ।

संज्ञा पुं० [ सं० सुकेशिन् ] [ स्त्री० सुकेशिनी ] वह जिसके बाल बहुत सुंदर हों ।

**सुक्ख**—संज्ञा पुं० दे० "सुख" ।

**सुक्ति**—संज्ञा स्त्री० दे० "शुक्ति" ।

**सुक्रित**—संज्ञा पुं० दे० "सुकृत" ।

**सुक्षम***†—वि० दे० "सूक्ष्म" ।

**सुखंडी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूखना ] बच्चों का एक रोग जिसमें शरीर सूख जाता है ।

वि० बहुत दुबला-पतला ।

**सुखंद**—वि० [सं० सुखद] सुखदायी ।

**सुख**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सब को अभिलाषा रहती है । दुःख का उलटा । आराम ।

मुहा०—सुख मानना=परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था में रहना । सुख की नींद सोना =निश्चिंत होकर रहना ।

२. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और २ लघु होते हैं । ३.आरोग्य । तंदुरुस्ती । ४. स्वर्ग । ५.जल । पानी ।

क्रि० वि० १. स्वभावतः । २. सुख-पूर्वक ।

**सुखआसन**—संज्ञा पुं० [ सं० सुख + आसन ] पालकी ।

**सुखकंद**—वि० [ सं० सुख + कंद ] सुखद ।

**सुखकंदन**—वि० दे० "सुखकंद" ।

**सुखकंदर**—वि० [सं० सुख + कंदरा] सुख का घर । सुख का आकर ।

**सुखक***†—वि० [ हिं० सूखा ] सूखा । शुष्क ।

**सुखकर**—वि० [ सं० ] १. सुख देनेवाला । २. जो सहज में किया जाय । सुकर ।

**सुखकरण**†—वि० [ सं० सुख + करण ] सुखद ।

**सुखकारक**—वि० [ सं० ] सुखदायक ।

**सुखकारी**—वि० दे० "सुखकारक" ।

**सुखजननी**—वि० स्त्री० [ सं० ] सुख देनेवाली ।

**सुखज्ञ**—वि० [ सं० सुख + ज्ञ ] सुख का ज्ञाता ।

**सुखतरस**—वि० दे० "सुखद" ।

**सुखथर***†—संज्ञा पुं० [ सं० सुख + स्थल ] सुख का स्थल । सुख देनेवाला स्थान ।

**सुखद**—वि० [ सं० ] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला । आनंद देनेवाला । सुखदायी ।

**सुखदगीत**—वि० [ सं० सुखद + गीत ] प्रशंसनीय ।

**सुखदनियाँ***—वि० दे० "सुखदानी" ।

**सुखदा**—वि० स्त्री० [ सं० ] सुख देनेवाली ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद ।

**सुखदाइन***—वि० दे० "सुखदायिनी" ।

**सुखदाई**—वि० दे० "सुखदायी" ।

**सुखदाता**—वि० [ सं० सुखदातृ ] सुखद ।

**सुखदान**—वि० दे० "सुखदाता" ।

**सुखदानी**—वि० स्त्री० [ हिं० सुखदान ] सुख देनेवाली । आनंद देनेवाली ।

संज्ञा स्त्री० ८ सगण और १ गुरु का एक वृत्त । सुंदरी । मल्ली । चंद्रकला ।

**सुखदायक**—वि० [ सं० ] सुख देनेवाला ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का छंद ।

**सुखदायी**—वि० [ सं० सुखदायिन् ] [ स्त्री० सुखदायिनी ] सुख देनेवाला । सुखद ।

**सुखदायो***—वि० दे० "सुखदायी" ।

**सुखदास**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का अगहनी बढ़िया धान ।

**सुखदेनी**—वि० दे० "सुखदायिनी" ।

**सुखदैन**—वि० दे० "सुखदायी" ।

**सुखदैनी**—वि० [ सं० सुखदायिनी ] सुख देनेवाली ।

**सुखधाम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुख का घर । आनंद-सदन । २. वैकुंठ । स्वर्ग ।

**सुखना***—क्रि० अ० दे० "सूखना"।

**सुखपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० सुख+पाल ( की ) ] एक प्रकार की पालकी।

**सुखमन***†—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषम्ना"।

**सुखमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुषमा ] १. शोभा। छवि। २. एक प्रकार का वृत्त वामा।

**सुखरास, सुखरासी***—वि० [ सं० सुख+राशि ] जो सर्वथा सुखमय हो।

**सुखलाना**-क्रि० स० दे० "सुखाना"।

**सुखवंत**—वि० [ सं० सुखवत् ] १. सुखी। प्रसन्न। खुश। २. सुखदायक।

**सुखवन**†—संज्ञा पुं० [ हिं० सूखना] वह कमी जो किसी चीज के सूखने के कारण होती है।

संज्ञा पुं० [ हिं० सूखना ] १. वह बालू जिससे लिखे हुए अक्षरों आदि पर की स्याही सुखाते हैं। २ अन्नादि की वह राशि जो सूखने के लिए धूप में पड़ी हो।

**सुखवार**—वि० [ सं० सुख ] [ स्त्री० सुखवारी ] सुखी। प्रसन्न। खुश।

**सुखसाध्य**—वि० [ सं० ] सुकर। सहज।

**सुखसार**—संज्ञा पुं० [ सं० सुख+सार ] मोक्ष।

**सुखांत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसका अंत सुखमय हो। २. वह नाटक, कहानी आदि जिसके अंत में कोई सुखपूर्ण घटना ( जैसे संयोग ) हो।

**सुखाना**—क्रि० स० [ हिं० सूखना का प्रेर० ] १. गीली या नम चीज को धूप आदि में इस प्रकार रखना जिससे उसकी नमी दूर हो। २. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो।

†क्रि० अ० दे० "सूखना"।

**सुखारा, सुखारी***†—वि० [ हिं० सुख+आरा ( प्रत्य० ) ] १. सुखी। प्रसन्न। २. सुखद।

**सुखाला**—वि० [ सं० सुख ] [ स्त्री० सुखाली ] १. सुखदायक। आनंददायक। २. सहज।

**सुखावह**—वि० [ सं० ] सुख देनेवाला।

**सुखासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुखद आसन। २. पालकी। डोली।

**सुखिआ**—वि० दे० "सुखिया"।

**सुखित**—वि० [ हिं० सूखना ] सूखा हुआ।

वि० [ हिं० सुखी ] [स्त्री० सुखिता] सुखी। प्रसन्न। खुश।

**सुखिता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुख। आनंद।

**सुखिया**—वि० दे० "सुखी"।

**सुखिर**—संज्ञा पुं० [ देश० ] साँप का बिल।

**सुखी**—वि० [ सं० सुखिन् ] जिसे सब प्रकार का सुख हो। आनंदित। खुश।

**सुखेन**—संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।

**सुखेलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, र आता है। प्रभद्रिका। प्रभद्रक।

**सुखैना***†—वि० [ सं० सुख ] सुख देनेवाला।

**सुख्याति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रसिद्धि। शोहरत। कीर्ति। यश। बड़ाई।

**सुगंध**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अच्छी और प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २. वह जिससे अच्छी महक निकलती हो। ३. श्रीखंड। चंदन।

वि० सुगंधित। खुशबूदार।

**सुगंधबाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुगंध+हिं० बाला ] एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि।

**सुगंधि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुगंध ] १ अच्छी महक। सौरभ। सुगंध। सुवास। खुशबू। २. परमात्मा। ३. आम।

**सुगंधित**—वि० [सं० सुगंधि] जिसमें अच्छी गंध हो। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।

**सुगत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बुद्धदेव। २ बौद्ध।

**सुगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।

**सुगना**†—संज्ञा [ सं० शुक] तोता।

**सुगम**—वि० [ सं० ] १. जिसमें गमन करने में कठिनता न हो। २. सरल। सहज।

**सुगमता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुगम होने का भाव। सरलता। आसानी।

**सुगम्य**—वि० [ सं० ] जिसमें सहज में प्रवेश हो सके।

**सुगर***†—वि० १. दे० "सुघड़"। २ दे० "सुकंठ"। ३ दे० "सुग्गा"।

**सुगल**—संज्ञा पुं० [सं० सु+हिं० गला=गला ] बालि का भाई सुग्रीव।

**सुगाना***—क्रि० अ० [ सं० शोक ] १. दुःखित होना। २. बिगड़ना। नाराज होना।

क्रि० अ० [ ? ] संदेह करना। शक करना।

**सुगंधिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक

छंद जिसके प्रत्येक चरण में २५ मात्राएँ और आदि में लघु और अंत में गुरु लघु होते हैं।

**सुगुरा**—संज्ञा पुं० [ सं० सुगुरु ] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो।

**सुगैया**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुग्गा ] मादा।

**सुग्गा**†—संज्ञा पुं० [ सं० ] तोता। सुआ।

**सुग्रीव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बालि का भाई, बानरों का राजा और श्रीरामचन्द्र का सखा। २. इंद्र। ३. शंख।

वि० जिसकी ग्रीवा सुंदर हो।

**सुघट**—वि० [ सं० ] १. सुंदर। सुडौल। २. जो सहज में बन सकता हो।

**सुघटित**—वि० [ सं० सुघट ] अच्छी तरह से बना या गढ़ा हुआ।

**सुघड़**—वि० [ सं० सुघट ] १. सुंदर। सुडौल। २. निपुण। कुशल। प्रवीण।

**सुघड़ई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुघड़ ] १. सुंदरता। सुडौलपन। २. चतुरता। निपुणता।

**सुघड़ता**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़पन"।

**सुघड़पन**—संज्ञा पुं० [ हिं० सुघड़ + पन ( प्रत्य० ) ] १. सुंदरता। २. निपुणता। कुशलता।

**सुघड़ाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"।

**सुघड़ापा**—संज्ञा पुं० दे० "सुघड़पन"।

**सुघर**—वि० दे० "सुघड़"।

**सुघराई**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुघड़ई"।

**सुघरी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सु + घड़ी ] अच्छी घड़ी। शुभ समय।

वि० स्त्री० [ हिं० सुघड़ ] सुंदर। सुडौल।

**सुच**—वि० दे० "शुचि"।

**सुचना**—क्रि० स० [ सं० संचय ] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना।

**सुचरित, सुचरित्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सुचरित्रा ] उत्तम आचरणवाला। नेक-चलन।

**सुचा**—वि० दे० "शुचि"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० सूचना ] ज्ञान। चेतना।

**सुचान**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुचाना + आन ( प्रत्य० ) ] १. सुचाने की क्रिया या भाव। २. सुझाव। सूचना।

**सुचाना**—क्रि० स० [ हिं० सोचना का प्रेर० ] १. किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। २. दिखलाना। ३. किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना।

**सुचार***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुचाल"।

वि० [ सं० सुचारु ] सुंदर। मनोहर।

**सुचारु**—वि० [ सं० ] [ भाव० सुचारुता ] अत्यंत सुंदर।

**सुचाल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु + हिं० चाल ] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार।

**सुचाली**—वि० [ हिं० सु + चाल ] अच्छे चालचलनवाला। सदाचारी।

**सुचाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० सुचाना + आव ( प्रत्य० ) ] सुचाने की क्रिया या भाव। २. सुझाव। सूचना।

**सुचि**—वि० दे० "शुचि"।

**सुचित**—वि० [ सं० सु + चित्त ] १. जो ( किसी काम से ) निवृत्त हो गया हो। २. निश्चिंत। बे-फिक्र। ३. एकाग्र। स्थिर। सावधान।

**सुचिताई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुचित + ई ( प्रत्य० ) ] १. निश्चिंतता। बे-फिक्री। २. एकाग्रता। शांति। ३. छुट्टी। फुरसत।

**सुचितो**†—वि० दे० "सुचित"।

**सुचित्त**—वि० [ सं० ] १. जिसका चित्त स्थिर हो। शांत। २. जो (किसी काम से ) निवृत्त हो गया हो।

**सुचिमंत**—वि० [ सं० शुचि + मत् ] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी। शुद्धाचारी।

**सुचिर**—वि० [ सं० ] १. चिरस्थायी। पुराना।

**सुची**—संज्ञा स्त्री० दे० "शुची"।

**सुचेत**—वि० [ सं० सुचेतस् ] चौकन्ना। सावधान। सतर्क। होशियार।

**सुच्छंद***†—वि० दे० "स्वच्छंद"।

**सुच्छ***†—वि० दे० "स्वच्छ"।

**सुच्छम***—वि० दे० "सूक्ष्म"।

**सुजन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सज्जन। सत्पुरुष। भला आदमी। शरीफ।

संज्ञा पुं० [ सं० स्वजन ] परिवार के लोग।

**सुजनता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुजन का भाव। सौजन्य। भद्रता। भलमनसत।

**सुजनी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सोज़नी ] एक प्रकार की बिछाने की बड़ी चादर।

**सुजन्मा**—वि० [ सं० सुजन्मन् ] उत्तम कुल का।

**सुजल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल।

**सुज्ञ**—वि० [ सं० ] सुविज्ञ। विद्वान्।

**सुजस**—संज्ञा पुं० दे० "सुयश"।

**सुजागर**—वि० [ सं० सु + आगर ] देखने में बहुत सुंदर। प्रकाशमान। सुशोभित।

**सुजात**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुजाता ] १. विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न। २. अच्छे कुल में उत्पन्न। ३. सुंदर।

**सुजाति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उत्तम

जाति।
वि० उत्तम जाति या कुल का।
**सुजातिया**—वि० [ हिं० सुजाति + इया ( प्रत्य० ) ] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।
वि० [ सं० स्व + जाति ] अपनी जाति का।
**सुजान**—वि० [ सं० सज्ञान ] १. समझदार। चतुर। सयाना। २. निपुण। कुशल। प्रवीण। ३. विज्ञ। पंडित। ४. सज्जन।
संज्ञा पुं० १. पति या प्रेमी। २. ईश्वर।
**सुजानता**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुजान + ता ( प्रत्य० ) ] सुजान होने का भाव या धर्म्म।
**सुजानी**—वि० [ हिं० सुजान ] पंडित। ज्ञानी।
**सुजोग***†—संज्ञा पुं० [ सं० सु + योग ] १. अच्छा अवसर। सुयोग। २. अच्छा संयोग।
**सुजोधन***—संज्ञा पुं० दे० "सुयोधन"।
**सुजोर**—वि० [ सं० सु + फ़ा० जोर ] दृढ़।
**सुझाना**—क्रि० स० [ हिं० सूझना + का प्रेर० ] दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना। दिखाना।
**सुझाव**—संज्ञा पुं० [ हिं० सुझाना + आव ( प्रत्य० ) ] १. सुझाने की क्रिया या भाव। २. वह बात जो सुझाई जाय। सुभाव। सूचना।
**सुटुकना**—क्रि० अ० १. दे० "सुड़कना"। २. दे० "सिकुड़ना"।
क्रि० स० [ अनु० ] चाबुक लगाना।
**सुठ**—वि० दे० "सुठि"।
**सुठहर**†—संज्ञा पुं० [ सं० सु + हिं० ठहर=जगह ] अच्छा स्थान। बढ़िया जगह।
**सुठार***†—वि० [ सं० सुष्ठु ] सुडौल। सुंदर।
**सुठि***†—वि० [ सं० सुष्ठु ] १. सुंदर। बढ़िया। अच्छा। २. अत्यंत। बहुत।
अव्य० [ सं० सुष्ठु ] पूरा पूरा। बिलकुल।
**सुठौना***†—वि० दे० "सुठि"।
**सुड़सुड़ाना**—क्रि० स० [ अनु० ] सुड़सुड़ शब्द उत्पन्न करना।
**सुड़कना**—क्रि० अ० [ अनु० ] सुड़ सुड़ शब्द के साथ पीना या निगलना।
**सुडौल**—वि० [ सं० सु + हिं० डौल ] सुंदर डौल या आकार का। सुंदर।
**सुढंग**—संज्ञा पुं० [ सं० सु + हिं० ढंग ] १. अच्छा ढंग। अच्छी रीति। २. सुघड़।
**सुढर**—वि० [ सं० सु + हिं० ढलना ] प्रसन्न और दयालु। जिसकी अनुकंपा हो।
वि० [ हिं० सुघड़ ] सुंदर। सुडौल।
**सुढार, सुढारु***†—वि० [ सं० सु + हिं० ढलना ] [ स्त्री० सुढारी ] सुंदर। सुडौल।
**सुतंत, सुतंतर***—वि० दे० "स्वतंत्र"।
**सुतंत्र***—वि० दे० "स्वतंत्र"।
क्रि० वि० स्वतंत्रतापूर्वक।
**सुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुत्र। बेटा। लड़का।
वि० १. पार्थिव। २. उत्पन्न। जात।
**सुतधार***—संज्ञा पुं० दे० "सूत्रधार"।
**सुतनु**—वि० [ सं० ] सुंदर शरीरवाला।
संज्ञा स्त्री० सुंदर शरीरवाली स्त्री। कृशांगी।
**सुतर***†—संज्ञा पुं० दे० "शुतुर"।
**सुतरनाल**—संज्ञा स्त्री० दे० "शुतुरनाल"।
**सुतरां**—अव्य० [ सं० सुतराम् ] १. अतः। इसलिए। २. और भी। किंबहुना।
**सुतरी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० तुरही ] तुरही।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुतली"।
**सुतल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सात पाताल लोकों में से एक लोक।
**सुतली**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूत + ली ( प्रत्य० ) ] रस्सी। डोरी। सुतरी।
**सुतवाना**†—क्रि० स० दे० "सुलवाना"।
**सुतहर, सुतहार**†—संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।
**सुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कन्या। पुत्री। बेटी।
**सुतार**—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रकार ] १. बढ़ई। २. शिल्पकार। कारीगर।
वि० [ सं० सु + तार ] अच्छा। उत्तम।
संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।
**सुतारी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सूत्रकार ] १. मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं। २. सुतार या बढ़ई का काम।
संज्ञा पुं० [ हिं० सुतार ] शिल्पकार। कारीगर।
**सुतिन***—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुतनु ] रूपवती स्त्री।
**सुतिहार**†—संज्ञा पुं० दे० "सुतार"।
**सुती**—वि० [ सं० सुतिन् ] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।
**सुतीक्ष्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास में श्रीरामचंद्र से मिले थे।

**सुतीक्ष्णक**—संज्ञा पुं० दे० "सुतीक्ष्ण"।

**सुतुही**†—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ति] १. सीपी जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २. वह सीप जिससे अचार के लिए कच्चा आम छीला जाता है। सीपी।

**सुतून**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] खंभा। स्तंभ।

**सुत्रामा**—संज्ञा पुं० [सं० सुत्रामन्] इंद्र।

**सुथना**—संज्ञा पुं० दे० "सूथन"।

**सुथनी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा। सूथन। २. पिंडालू। रतालू।

**सुथरा**—वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ।

**सुथराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुथरा] सुथरापन।

**सुथरापन**—संज्ञा पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] स्वच्छता। निर्मलता। सफाई।

**सुथरेशाही**—संज्ञा पुं० [सुथराशाह (महात्मा)] १. गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। २. इस संप्रदाय के अनुयायी।

**सुदंती**—वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।

**सुदर्शन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु भगवान् के चक्र का नाम। २. शिव। ३. सुमेरु।
वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोरम।

**सुदामा**—संज्ञा पुं० [सं० सुदामन्] एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सखा था और जिसे पीछे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था।

**सुदामन**—संज्ञा पुं० दे० "सुदामा"।

**सुदास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दिवोदास का पुत्र। २. एक प्राचीन जनपद।

**सुदि**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुदी"।

**सुदिन**—संज्ञा पुं० [सं० सु+दिन] शुभ दिन।

**सुदी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।

**सुदीपति***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।

**सुदीप्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रकाश। खूब उजाला।

**सुदूर**—वि० [सं०] बहुत दूर। अति दूर।

**सुदृढ़**—वि० [सं०] बहुत दृढ़। खूब मजबूत।

**सुदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

**सुदेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुंदर देश। उत्तम देश। २ उपयुक्त स्थान।
वि० सुंदर। खूबसूरत।

**सुदेह**—वि० [सं०] सुंदर। कमनीय।

**सुद्धोसों**†—क्रि० वि० [?] शीघ्र। जल्दी।

**सुद्ध***—वि० दे० "शुद्ध"।

**सुद्धाँ**†—अव्य० [सं० सह] सहित। समेत।

**सुद्धि**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"। दे० "शुद्धि"।

**सुधंग**—संज्ञा पुं० [हिं० सु+ढंग या अंग ?] अच्छा ढंग।
वि० सब प्रकार से ठीक और अच्छा।

**सुध**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुद्ध (बुद्धि)] १. स्मृति। स्मरण। याद। चेत।
मुहा०—सुध दिलाना=याद दिलाना। सुध न रहना=भूल जाना। याद न रहना। सुध बिसरना=भूल जाना। सुध बिसराना या बिसारना=किसी को भूल जाना। सुध भूलना=दे० "सुध बिसरना"।
२. चेतना। होश।
यौ०—सुध-बुध=होश-हवास।
मुहा०—सुध बिसरना=होश में न रहना। सुध बिसारना=अचेत करना।
३. खबर। पता।
वि० दे० "शुद्ध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुधा"।

**सुधन्वा**—संज्ञा पुं० [सं० सुधन्वन्] १. अच्छा धनुर्धर। २. विष्णु। ३. विश्वकर्मा। ४. आंगिरस।

**सुधमना***†—वि० [हिं० सुध+हाथ=मन] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

**सुधरना**—क्रि० अ० [सं० शोधन] बिगड़े हुए का बनना। संशोधन होना।

**सुधराई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुधरना] १. सुधरने की क्रिया। सुधार। २. सुधारने की मजदूरी।

**सुधर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम धर्म। पुण्य कर्त्तव्य।

**सुधर्मा, सुधर्मी**—वि० [सं० सुधर्मिन्] धर्मनिष्ठ।

**सुधवाना**—क्रि० स० [हिं० सुधरना का प्रेर० रूप] दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना। दुरुस्त कराना।

**सुधाँ**—अव्य० दे० "सुद्धाँ"।

**सुधांग**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सुधांशु**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सुधा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अमृत। पीयूष। २. मकरंद। ३. गंगा। ४. जल। ५. दूध। ६. रस।

आर्क। ७. पृथ्वी। धरती। ८. विष। ईंट। ९. एक प्रकार का वृत्त।

**सुधाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सूधा= सीधा] सीधापन। सिधाई। सरलता।

**सुधाकर**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सुधागेह**—संज्ञा पुं० [सं० सुधा+ हिं० गेह] चंद्रमा।

**सुधाघट**—संज्ञा पुं० [सं० सुधा+ घट] चंद्रमा।

**सुधाधर**—संज्ञा पुं० [सं० सुधा+ धर] चंद्रमा।
वि० [सं० सुधा+अधर] जिसके अधरों में अमृत हो।

**सुधाधाम**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सुधाधार**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सुधाभो**—वि० [सं० सुधा] सुधा के समान।

**सुधाना**—क्रि० स० [हिं० सुध] सुध कराना। स्मरण कराना। याद दिलाना।
क्रि० स० १. सोधने का काम दूसरे से कराना। दुरुस्त कराना। २. (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना।

**सुधानिधि**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. समुद्र। ३. दंडक वृत्त का एक भेद। इसमें १६ बार क्रम से गुरु लघु आते हैं।

**सुधापाणि**—संज्ञा पुं० [सं०] धन्वंतरि।

**सुधार**—संज्ञा पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने की क्रिया या भाव। संशोधन। संस्कार।

**सुधारक**—संज्ञा पुं० [हिं० सुधार+ क (प्रत्य०)] १. वह जो दोषों या त्रुटियों का सुधार करता हो। संशोधक। २ वह जो धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करता हो।

**सुधारना**—क्रि० स० [हिं० सुधरना] दोष या बुराई दूर करना। संशोधन करना।
वि० [स्त्री० सुधारनी] सुधारने वाला।

**सुधारा**—वि० [हिं० सूधा] सीधा। निष्कपट।

**सुधास्रवा**—संज्ञा पुं० [सं० सुधा+ स्रवण] अमृत बरसानेवाला।

**सुधासदन**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सुधि**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।

**सुधी**—संज्ञा पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।
वि० १. बुद्धिमान्। चतुर। २. धार्मिक।

**सुनंदिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में स ज स ज ग रहते हैं। प्रबोधिता। मंजुभाषिणी।

**सुनकिरवा**—संज्ञा पुं० [हिं० सोना +किरवा=कीड़ा] १. एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पत्ते के रंग के होते हैं। २. जुगनू।

**सुन-गुन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना +अनु० गुन] १. भेद। टोह। सुराग। २. कानाफूसी।

**सुनत, सुनति**॰†—संज्ञा स्त्री० दे० "सुन्नत"।

**सुनना**—क्रि० स० [सं० श्रवण] १. कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना।
**मुहा०**—सुनी अनसुनी कर देना=कोई बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना। २. किसी के कथन पर ध्यान देना। ३. भली बुरी बातें श्रवण करना।

**सुनरि**॰†—संज्ञा स्त्री० [सं० सुन्दरी] सुंदर स्त्री सुंदरी।

**सुनबहरी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुन+ भारी ?] फीलपा। (रोग)

**सुनय**—संज्ञा पुं० [सं०] सुनीति। उत्तम नीति।

**सुनवाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुनना+ वाई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना। ३. स्वीकृति। मंजूरी।

**सुनवैया**—वि० [हिं० सुनना+वैया (प्रत्य०)] १. सुननेवाला। २. सुनानेवाला।

**सुनसान**—वि० [सं० शून्य+स्थान] १. जहाँ कोई न हो। खाली। निर्जन। जनहीन। २. उजाड़। वीरान।
संज्ञा पुं० सन्नाटा।

**सुनहरा**—वि० दे० "सुनहला"।

**सुनहला**—वि० [हिं० सोना+हला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुनहली] १. सोने के रंग का। स्वर्णिम। २. सोने का।

**सुनाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुनवाई"।

**सुनाना**—क्रि० स० [हिं० सुनना का प्रे०] १. दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना। श्रवण कराना। २. खरी खोटी कहना।

**सुनाम**—संज्ञा पुं० [सं०] यश। कीर्ति।

**सुनार**—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।

**सुनारी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सुनार+ई (प्रत्य॰)] १. सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री।

**सुनावनी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सुनना+आवनी (प्रत्य॰)] १. कहीं विदेश से किसी संबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना। २. वह स्नान आदि कृत्य जो ऐसा समाचार आने पर होता है।

**सुनाहक**॰—क्रि॰ वि॰ दे॰ "नाहक"।

**सुनीति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. उत्तम नीति। २. राजा उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।

**सुनैया**—वि॰ [हिं॰ सुनना+ऐया (प्रत्य॰)] सुननेवाला।

**सुनौवी**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] एक प्रकार का घोड़ा।

**सुन्न**—वि॰ [सं॰ शून्य] निर्जीव। स्पंदन-हीन। निःस्तब्ध। निश्चेष्ट।
संज्ञा पुं॰ शून्य। सिफर।

**सुन्नत**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] मुसलमानों की एक रस्म जिसमें लड़के की लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।

**सुन्ना**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ शून्य] बिंदी। सिफर।

**सुन्नी**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] मुसलमानों का एक भेद जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चारयारी।

**सुपक्व**—वि॰ [सं॰] अच्छी तरह पका हुआ।

**सुपच**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ श्वपच] चांडाल। डोम।

**सुपत**—वि॰ [सं॰ सु+हिं॰ पत=प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठायुक्त।

**सुपत्थ**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सुपथ"।

**सुपथ**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. उत्तम पथ। अच्छा रास्ता। सदाचरण। २. एक वृत्त जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।
वि॰ [सं॰ सु+पथ] समतल। हमवार।

**सुपन, सुपना**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वप्न"।

**सुपनाना**॰—क्रि॰ स॰ [हिं॰ सुपना] स्वप्न दिखाना।

**सुपरस**॰—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्पर्श"।

**सुपर्ण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. गरुड़। २. पक्षी। चिड़िया। ३. किरण। ४. विष्णु। ५. घोड़ा। अश्व।

**सुपर्णी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. गरुड़ की माता। सुपर्णा। २. कमलिनी। पद्मिनी।

**सुपात्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह जो किसी कार्य्य के लिए योग्य या उपयुक्त हो। अच्छा पात्र।

**सुपारी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुप्रिय] नारियल की जाति का एक पेड़। इसके फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं। पूग। गुवाक।
**मुहा॰**—सुपारी लगना=खाने में सुपारी का कलेजे में अटकना जो कष्टप्रद होता है।

**सुपार्श्व**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] जैनियों के २४ तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर।

**सुपास**—संज्ञा पुं॰ [देश॰] १. सुख। आराम। २. सहूलियत। सुविधा।

**सुपासी**—वि॰ [हिं॰ सुपास] सुख देनेवाला।

**सुपुत्र**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अच्छा और योग्य पुत्र।

**सुपुर्द**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सपुर्द"।

**सुपूत**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सपूत"।

**सुपूती**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सुपूत+ई (प्रत्य॰)] सुपूत होने का भाव। सुपूत-पन।

**सुपेती**॰†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सफेदी"।

**सुपेद**†—वि॰ दे॰ "सफेद"।

**सुपेदी**॰†—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰ सफेदी] १. सफेदी। उज्ज्वलता। २. ओढ़ने की रजाई। ३. बिछाने की तोशक। ४. बिछौना। बिस्तर।

**सुपेली**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सूप] छोटा सूप।

**सुप्त**—वि॰ [सं॰] १. सोया हुआ। निद्रित। २. ठिठुरा हुआ। ३. बंद। मुँदा हुआ।

**सुप्ति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. निद्रा। नींद। २. निंदास। ऊँघाई।

**सुप्रज्ञ**—वि॰ [सं॰] बहुत बुद्धिमान्।

**सुप्रतिष्ठ**—वि॰ [सं॰] १. उत्तम प्रतिष्ठावाला। २. बहुत प्रसिद्ध। मशहूर।

**सुप्रतिष्ठा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाँच वर्ण होते हैं। २. प्रसिद्धि। शोहरत।

**सुप्रतिष्ठित**—वि॰ [सं॰] उत्तम रूप से प्रतिष्ठित। विशेष माननीय।

**सुप्रसिद्ध**—वि॰ [सं॰] बहुत प्रसिद्ध। सुविख्यात। बहुत मशहूर।

**सुप्रिया**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक प्रकार की चौपाई जिसमें अंतिम वर्ण के अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं।

**सुफल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ सुफला] १. सुंदर फल। २. अच्छा परिणाम।
वि॰ १. सुंदर फलवाला। (अन्न) २. सफल। कृतकार्य्य। कृतार्थ। कामयाब।

**सुबल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शिवजी। २. गंधार का एक राजा और शकुनि का पिता।

वि० अत्यन्त बलवान्। बहुत मजबूत।

**सुबह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] प्रातः-काल। सवेरा।

**सुबहान**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पवित्र। शुद्ध।

**सुबहान अल्लाह**—अव्य० [ अ० ] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।

**सुबास**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु+वास ] अच्छी महक। सुगंध।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

**सुबासना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु+वास ] सुगंध। खुशबू।

क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।

**सुबासिक**—वि० [ सं० सु+वास ] सुगंधित।

**सुबाहु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. धृत-राष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा। २. सेना। फौज।

वि० दृढ़ या सुंदर बाँहोंवाला।

**सुबिस्ता, सुबीता**—संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।

**सुबुक**—वि० [ फ़ा० ] १. हलका। भारी का उलटा। २. सुंदर। खूबसूरती।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

**सुबुद्धि**—वि० [ सं० ] बुद्धिमान्।

संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी अक्ल।

**सुबू**—संज्ञा पुं० दे० "सुबह"।

संज्ञा पुं० दे० "सबू"।

**सबूत**—संज्ञा पुं० दे० "सबूत"।

संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण।

**सुबोध**—वि० [ सं० ] १. अच्छी बुद्धिवाला। २. जो कोई बात सहज में समझ सके। ३. जो आसानी से समझ में आ जाय। सरल।

**सुब्रह्मण्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। २. विष्णु। ३. दक्षिण का एक प्राचीन प्रांत।

**सुभ***—वि० दे० "शुभ"।

**सुभग**—वि० [ सं० ] [ भाव० संज्ञा सुभगता ] १. सुंदर। मनोहर। २. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। ३. प्रिय। प्रियतम। ४. सुखद।

**सुभगा**—वि० [ स्त्री० ] १. सुंदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २. (स्त्री) सौभाग्यवती। सुहागिन।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। २. पाँच वर्ष की कुमारी।

**सुभग्य**—वि० दे० "सुभग"।

**सुभट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] भारी योद्धा।

**सुभटवंत**—वि० [ सं० सुभट ] अच्छा योद्धा।

**सुभद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. विष्णु। २. सनत्कुमार। ३. श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ४. सौभाग्य। ५. कल्याण। मंगल।

वि० १. भाग्यवान्। २. सज्जन।

**सुभद्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी। २. दुर्गा।

**सुभद्रिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न न र ल ग होता है।

**सुभर***—वि० दे० "शुभ्र"।

**सुभा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शुभा ] १. सुधा। २. शोभा। ३. पर-नारी। ४. हरीतकी। हड़।

**सुभाइ, सुभाउ***†—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

क्रि० वि० सहज भाव से। स्वभावतः।

**सुभाग***†—संज्ञा पुं० दे० "सौभाग्य"।

**सुभागा**—वि० [ सं० सुभाग्य ] भाग्यवान्।

**सुभागीन**—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] [ स्त्री० सुभागिनी ] भाग्यवान्। सुभग।

**सुभान**—अव्य० दे० "सुबहान"।

**सुभाना***†—क्रि० अ० [हिं० शोभना] शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना।

**सभाय***†—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

**सुभायक***—वि० दे० "स्वाभाविक"।

**सुभाव***†—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

**सुभाषित**—वि० [ सं० ] सुंदर रूप से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ।

**सुभाषी**—वि० [ सं० सुभाषिन् ] [ स्त्री० सुभाषिणी ] उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्टभाषी।

**सुभिक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ऐसा समय जिसमें अन्न खूब हो। सुकाल।

**सुभी**—वि० स्त्री० [ सं० शुभ ] शुभ-कारक।

**सुभीता**—संज्ञा पुं० [ सं० सुविध ] १. सुगमता। सहूलियत। २. सुअव-सर। सुयोग।

**सुभौटी***†—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] शोभा।

**सुभ्र**—वि० दे० "शुभ्र"।

**सुमंगली**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुमंगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरो-हित को दी जानेवाली दक्षिणा।

**सुमंत**—संज्ञा पुं० दे० "सुमंत्र"।

**सुमंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राजा दशरथ का मंत्री और सारथि।

**सुमंथन**—संज्ञा पुं० दे० "मंदर" (पर्वत)

**सुमंद**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] २७ मात्राओं का एक वृत्त जिसके अंत में गुरु लघु होते हैं। सरसी।

**सुम**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। टाप।

**सुमत**—संज्ञा स्त्री दे॰ "सुमति"।

**सुमति**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १ सगर की पत्नी। २. सुंदर मति। सुबुद्धि। अच्छी बुद्धि। ३. मेल-जोल। ४. भक्ति। प्रार्थना।

वि॰ अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

**सुमन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुमनस्] १. देवता। २. पंडित। विद्वान्। ३. पुष्प। फूल।

वि॰ १. सहृदय। दयालु। २. सुंदर।

**सुमनचाप**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] कामदेव।

**सुमनस**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुमनस्] १. देवता। २. विद्वान्। पंडित। ३. पुष्प। फूल। ४. फूलों की माला।

वि॰ १. प्रसन्न-चित्त। २. महात्मा।

**सुमनित**—वि॰ [सं॰ सुमणि+त (प्रत्य॰)] उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।

**सुमरन**॰—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्मरण"।

**सुमरना**॰†—क्रि॰ स॰ [सं॰ स्मरण] १. स्मरण करना। ध्यान करना। २. जपना।

**सुमरनी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ सुमरना] नाम जपने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।

**सुमालिका**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] सात अक्षरों का एक वृत्त।

**सुमार्ग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सुपथ। सन्मार्ग।

**सुमालिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं।

**सुमाली**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुमालिन्] एक राक्षस, जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण हुए थे।

**सुमित्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं।

**सुमित्रानन्दन**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

**सुमिरन**॰—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्मरण"।

**सुमिरना**॰†—क्रि॰ स॰ दे॰ "सुमरना"।

**सुमिरनी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सुमरनी"।

**सुमिल**—वि॰ [सं॰ सु+हिं॰ मिलना] सरलता से मिलने योग्य। सुलभ।

**सुमिष्ट**—वि॰ [सं॰] बहुत मीठा।

**सुमुख**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. शिव। २. गणेश। ३. पंडित। आचार्य।

वि॰ १. सुंदर मुखवाला। २. सुंदर। मनोहर। ३. प्रसन्न। ४. कृपालु।

**सुमुखी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. सुंदर मुखवाली स्त्री। २. दर्पण। आइना। ३. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।

**सुमृत, सुमृति**॰—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्मृति"।

**सुमेध**—वि॰ दे॰ "सुमेधा"।

**सुमेधा**—वि॰ [सं॰ सुमेधस्] बुद्धिमान्।

**सुमेर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ सुमेरु] सुमेरु पर्वत।

**सुमेरु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। २. शिवजी। ३. जप-माला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना। ४. उत्तर-ध्रुव। ५. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं।

वि॰ १. बहुत ऊँचा। २. सुंदर।

**सुमेरुवृत्त**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

**सुयश**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति। सुनाम।

वि॰ [सं॰ सुयशस्] यशस्वी। कीर्तिमान्।

**सुयोग**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सुंदर योग। संयोग। सुअवसर। अच्छा मौका।

**सुयोग्य**—वि॰ [सं॰] बहुत योग्य। लायक।

**सुयोधन**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "दुर्योधन"।

**सुरंग**—वि॰ [सं॰] १. सुंदर रंग का। २. सुंदर। सुडौल। ३. रसपूर्ण। ४. लाल रंग का। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ।

संज्ञा पुं॰ १. शिंगरफ। २. नारंगी। ३. रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।

संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ सुरंगा] १. जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २. किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३. एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे शत्रुओं के जहाज नष्ट किए जाते हैं। सेंध।

**सुर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. देवता। २. सूर्य। ३. पंडित। विद्वान्। ४. मुनि। ऋषि।

संज्ञा पुं॰ [सं॰ स्वर] स्वर। ध्वनि।

मुहा०—सुर में सुर मिलाना=हाँ में हाँ मिलाना। चापलूसी करना।

सुरकंत*—संज्ञा पुं० [सं० सुर+कान्त] इंद्र।

सुरक—संज्ञा पुं० [सं० सुर] नाक पर का वह तिलक जो भाले की आकृति का होता है।

सुरकना—क्रि० स० [अनु०] १. हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना। २. सुड़-सुड़ शब्द के साथ पान करना सुड़कना।

सुरकरी—संज्ञा पुं० [सं० सुर-करिन्] देवताओं का हाथी। दिग्गज। सुरगज।

सुर-कुदाव*—संज्ञा पुं० [सं० स्वर, स० कु+हिं० दाँव=धोखा] धोखा देने के लिए स्वर बदलकर बोलना।

सुरकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवताओं या इंद्र की ध्वजा। २. इंद्र।

सुरक्षण, सुरक्षा—संज्ञा पुं० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करना। रखवाली। हिफाजत।

सुरक्षित—वि० [सं०] १. जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो। उत्तम रूप से रक्षित। २. किसी विशेष प्रयोजन के लिए निर्धारित।

सुरख, सुरखा—वि० दे० "सुर्ख"।

सुरखाब—संज्ञा पुं० [फ़ा०] चकवा।

मुहा०—सुरखाब का पर लगाना=विलक्षणता या विशेषता होना। अनोखापन होना।

सुरखी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सुर्ख]१. ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० "सुर्खी"।

सुरखुरू—वि० दे० "सुर्खरू"।

सुरखसी—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

सुरगज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का हाथी। ऐरावत।

सुरगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] सुमेरु।

सुरगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बृहस्पति।

सुरगैया—संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।

सुरचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरजसी—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य"।

सुरजन—संज्ञा पुं० [सं०] देवसमूह।

वि० १. सज्जन। सुजन। २. चतुर।

सुरझना—क्रि० अ० दे० "सुलझना"।

सुरझाना—क्रि० स० दे० "सुलझाना"।

सुरत—संज्ञा पुं० [सं०] संभोग। मैथुन।

संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। याद। सुध।

मुहा०—सुरत बिसारना=भूल जाना।

सुरतरंगिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा।

सुरतरु—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुर या देवता का भाव या कार्य। देवत्व। २. देव-समूह।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सुरत] १. चिंता। ध्यान। २. चेत। सुध।

वि० सयाना। होशियार। चतुर।

सुरतान*—संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।

सुरति—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+रति] भोग-विलास। कामकेलि। संभोग।

संज्ञा स्त्री० [सं० स्मृति] स्मरण। सुधि।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूरत"।

सुरतिगोपना—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह नायिका जो रति-क्रीड़ा करके अपनी सखियों आदि से छिपाती हो।

सुरतिवंत—वि० [सं० सुरत+वान्] कामातुर।

सुरतिविचित्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह मध्या जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।

सुरती—संज्ञा स्त्री० [सूरत (नगर)] तंबाकू। खैनी।

सुरत्राण—संज्ञा पुं० दे० "सुरत्राता"।

सुरत्राता—संज्ञा पुं० [सं० सुर+त्रातृ] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. इंद्र।

सुरत्व—संज्ञा पुं० [सं०] सुर या देवता होने का भाव। देवत्व। देवतापन।

सुरथ—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक चंद्रवंशी राजा, पुराणों के अनुसार, जिन्होंने पहले-पहल दुर्गा की आराधना की थी। २. जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। ३. एक पर्वत।

सुरदार—वि० [हिं० सुर+फा० दार] जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुस्वर। सुरीला।

सुरदीर्घिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आकाशगंगा।

सुरद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] कल्पवृक्ष।

सुरधनु—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

सुरधाम—संज्ञा पुं० [सं० सुरधामन्] स्वर्ग।

सुरधुनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा

सुरधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] कामधेनु।

सुरनदी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गंगा। २. आकाश-गंगा।

सुरनारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] देववधू।

सुरनाह—संज्ञा पुं० [सं० सुरनाथ] इंद्र।

**सुरनिलय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुमेरु पर्वत।

**सुरप***—संज्ञा पुं० [ सं० सुरपति ] इंद्र।

**सुरपति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र। २. विष्णु।

**सुरपथ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आकाश।

**सुरपादप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्पवृक्ष।

**सुरपाल**—संज्ञा पुं० [ सं० सुर+पालक ] इंद्र।

**सुरपुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग।

**सुरबहार**—संज्ञा पुं० [ हिं० सुर+फ़ा० बहार ] सितार की तरह का एक बाजा।

**सुरबाला**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

**सुरबृच्छ***—संज्ञा पुं० दे० "सुरवृक्ष"।

**सुरबेल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुर+वल्ली ] कल्पलता।

**सुरभंग**—संज्ञा पुं० [ सं० स्वरभंग ] प्रेम, भय आदि में होनेवाला स्वर का विपर्य्यास जो सात्त्विक भावों के अन्तर्गत है।

**सुरभवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मंदिर। २. सुरपुरी। अमरावती।

**सुरभान**—संज्ञा पुं० [ सं० सुर+भानु ] १. इंद्र। २. सूर्य्य।

**सुरभि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वसंत-काल। २. चैत्र मास। ३. सोना। स्वर्ण।

संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. गौ। ३. गायों की अधिष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आदि जननी। ४. सुरा। शराब। ५. तुलसी। ६. सुगंधि। खुशबू।

वि० १. सुगंधित। सुवासित। २. मनोरम। सुंदर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

**सुरभित**—वि० [ सं० ] सुगंधित। सौरभित।

**सुरभिषक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अश्विनीकुमार।

**सुरभी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सुगंधित। खुशबू। २. गाय। ३. चंदन।

**सुरभीपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] गोलोक।

**सुरभूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. विष्णु।

**सुरभोग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अमृत।

**सुरभौन***—संज्ञा पुं० दे० "सुरभवन"।

**सुरमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवताओं का मंडल। २. एक प्रकार का बाजा।

**सुरमई**—वि० [ फ़ा० ] सुरमे के रंग का। हलका नीला।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का हलका नीला रंग। २. इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा।

**सुरमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] चिंतामणि।

**सुरमा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सुरमः ] नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं।

**सुरमादानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सुरमः+दान ( प्रत्य० ) ] वह शीशीनुमा पात्र जिसमें सुरमा रखते हैं।

**सुरमै***—वि० दे० "सुरमई"।

**सुरमौर**—संज्ञा पुं० [ सं० सुर+हिं० मौर ] विष्णु।

**सुरम्य**—वि० [ सं० ] अत्यन्त मनोरम। सुंदर।

**सुरराइ***—संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

**सुरराज**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. विष्णु।

**सुरराय***—संज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

**सुररिपु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] असुर। राक्षस।

**सुररूख**—संज्ञा पुं० दे० "सुरतरु"।

**सुरला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु+हिं० रला ] सुंदर क्रीड़ा।

**सुरलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग।

**सुरवधू**—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवांगना।

**सुरवा**—संज्ञा पुं० दे० "सुवा"।

**सुरवृक्ष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्पतरु।

**सुरवैद्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार।

**सुरश्रेष्ठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. देवताओं में श्रेष्ठ। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इंद्र।

**सुरस**—वि० [ सं० ] १. सरस। रसीला। २. स्वादिष्ठ। मधुर। ३. सुंदर। ४. प्रेम।

**सुरसती***—संज्ञा स्त्री० दे० 'सरस्वती'।

**सुरसदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग।

**सुरसर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मानसरोवर।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।

**सुरसरसुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सरयू नदी।

**सुरसरि, सुरसरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सुरसरित ] १. गंगा। २. गोदावरी।

**सुरसरिता**—संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।

**सुरसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रसिद्ध नागमाता जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था। २. एक अप्सरा। ३. तुलसी। ४. ब्राह्मी। ५. दुर्गा। ६. एक वृक्ष का नाम।

**सुरसाइँ**—संज्ञा पुं० [ सं० सुर+हिं० साइँ ] १. इंद्र। २. शिव।

**सुरसारी***—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुरसरी'।

**सुरसालु***—वि० [ सं० सुर+हिं० सालना ] देवताओं को सतानेवाला।

**सुरसाहब**—संज्ञा पुं० [ सं० सुर+ फ़ा० साहब ] देवताओं के स्वामी। इंद्र।

**सुरसिंधु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गंगा।

**सुरसुंदरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अप्सरा। २. दुर्गा। ३. देवकन्या। ४. एक योगिनी।

**सुरसुरभी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] कामधेनु।

**सुरसुराना**—क्रि० अ० [ अनु० ] [ भाव० सुरसुराहट, सुरसुरी ] १. कीड़ों आदि का रेंगना। २. खुजली होना।

**सुरसैयाँ***—संज्ञा पुं० [ सं० सुर+ हिं० सैयाँ ] इंद्र।

**सुरस्वामी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**सुरहरा**—वि० [ अनु० ] जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुरसुर शब्द से युक्त।

**सुरही**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सोलह ] १. एक प्रकार की सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २. इन कौड़ियों से होनेवाला जूआ।

**सुरांगना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. देवपत्नी। देवांगना। २. अप्सरा।

**सुरा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मदिरा। शराब।

**सुराई***—संज्ञा स्त्री० [ सं० शूर+ आई ( प्रत्य० ) ] शूरता। वीरता। बहादुरी।

**सुराख**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सूराख़ ] छेद।

संज्ञा पुं० दे० "सुराग"।

**सुराग**—संज्ञा पुं० [ सं० सु+राग] १. अत्यन्त प्रेम। अत्यंत अनुराग। २. सुंदर राग।

संज्ञा पुं० [ अ० सुराग़ ] टोह। पता।

**सुरागाय**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुर+ गाय ] एक प्रकार की दो नस्ली गाय जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।

**सुराज**—संज्ञा पुं० १. दे० "सुराज्य"। २. दे० "स्वराज्य"।

**सुराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विराजती हो।

**सुराधिप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्र।

**सुरानीक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं की सेना।

**सुरापगा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] गंगा।

**सुरापान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शराब पीना।

**सुरापात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मदिरा रखने या पीने का पात्र।

**सुरापी**—वि० [ सं० सुरापिन् ] शराब पीनेवाला। मद्यप।

**सुरारि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] राक्षस। असुर।

**सुरालय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वर्ग। २. सुमेरु। ३. देवमंदिर। ४. शराबखाना।

**सुरावट**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुर ] १. स्वरों का विन्यास या उतार-चढ़ाव। २. सुरीलापन।

**सुरावती**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुरावनि ] कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति।

**सुराष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन देश। किसी के मत से वह सूरत और किसी के मत से काठियावाड़ है।

**सुरासुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुर और असुर। देवता और दानव।

**सुरासुरगुरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शिव। २. कश्यप।

**सुराही**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र। २. बाजू, जोशन आदि में घुंडी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकड़ा।

**सुराहीदार**—वि० [ अ० सुराही+ फ़ा० दार ] सुराही की तरह का गोल और लंबोतरा।

**सुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] देवांगना।

**सुरीला**—वि० [ हिं० सुर+ईला ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० सुरीली ] मीठे सुरवाला। सुस्वर। सुकंठ।

**सुरुख**—वि० [ सं० सु+फ़ा० रुख ] अनुकूल। सदय। प्रसन्न।

वि० दे० "सुर्ख"।

**सुरुखुरू**—वि० [ फ़ा० सुर्खरू ] जिसे किसी काम में यश मिला हो। यशस्वी।

**सुरुचि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. राजा उत्तानपाद की एक पत्नी जो उत्तम की माता और ध्रुव की विमाता थी। २. उत्तम रुचि।

वि० जिसकी रुचि उत्तम हो।

**सुरुज***†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्य"।

**सुरुजमुखी**†—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यमुखी"।

**सुरुवा**†—संज्ञा पुं० दे० "शोरबा"।

**सुरूप**—वि० [ सं० ] [स्त्री० सुरूपा] सुंदर रूपवाला। खूबसूरत।

संज्ञा पुं० कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति। यथा कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरूरवा, नलकूबर और सांब।

*संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।

**सुरूपता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरता।

**सुरूपा**—वि० स्त्री० [ सं० ] सुंदरी।

**सुरेंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. राजा।

**सुरेंद्रचाप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] इंद्रधनुष।

**सुरेंद्रवज्रा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक वर्णवृत्त जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इंद्रवज्रा।

**सुरेब**—संज्ञा पुं० [ ? ] सूँस। शिशुमार।

**सुरेश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४. कृष्ण। ५. लोकपाल।

**सुरेश्वर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. इंद्र। २. ब्रह्मा। ३. शिव। ४. रुद्र।

**सुरेश्वरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. स्वर्ग गंगा।

**सुरैत, सुरैतिन**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुरति ] उपपत्नी। रखनी। रखेली।

**सुरोचि**—वि० [ सं० सुरुचि ] सुंदर।

**सुर्ख**—वि० [ फ़ा० ] रक्त वर्ण का। लाल।

संज्ञा पुं० गहरा लाल।

**सुर्खरू**—वि० [ फ़ा० ] [ भाव० सुर्खरूई ] १. तेजस्वी। कांतिवान्। २. प्रतिष्ठित। ३. सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

**सुर्खी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. लाली। अरुणता। २. लेख आदि का शीर्षक। ३. रक्त। लहू। खून। ४. दे० "सुरखी"।

**सुर्ता**—वि० [ हिं० सुरति=स्मृति ] समझदार होशियार। बुद्धिमान्।

**सुर्लक**—संज्ञा पुं० दे० "सोलक"।

**सुर्लकी**—संज्ञा पुं० दे० "सोलंकी"।

**सुलक्षण**—वि० [ सं० ] १. अच्छे लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्। किस्मतवर।

संज्ञा पुं० १. शुभ लक्षण। शुभ चिह्न। २. १४ मात्राओं का एक छंद जिसमें सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है।

**सुलक्षणा**—वि० स्त्री० [ सं० ] अच्छे लक्षणोंवाली।

**सुलच्छनी**—वि० स्त्री० दे० "सुलक्षणा"।

**सुलग**—अव्य० [ हिं० सु+लगना ] पास। निकट।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुलगन"।

**सुलगन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुलगना] सुलगने की क्रिया या भाव।

**सुलगना**—क्रि० अ० [ सं० सु+हिं० लगना ] १. (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना। २. बहुत संताप होना।

**सुलगाना**—क्रि० स० [ हिं० सुलगना का स० रूप ] १. जलाना। प्रज्वलित करना। २. दुःखी करना।

**सुलच्छन**—वि० दे० "सुलक्षण"।

**सुलच्छनी**—वि० दे० "सुलक्षणा"।

**सुलच्छ**—वि० [ सं० सुलक्ष ] सुंदर।

**सुलझन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सुलझना ] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।

**सुलझना**—क्रि० अ० [ हिं० सुलझना ] १. उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। २. जटिलताओं का दूर होना।

**सुलझाना**—क्रि० स० [ हिं० सुलझना का स० रूप ] उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओं को दूर करना।

**सुलझाव**—संज्ञा पुं० दे० "सुलझन"।

**सुलटा**—वि० [ हिं० उलटा ] [ स्त्री० सुलटी ] सीधा। उलटा का विपरीत।

**सुलतान**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बादशाह।

**सुलताना चंपा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सुलतान+हिं० चंपा ] एक प्रकार का पेड़। पुन्नाग।

**सुलतानी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सुलतान ] १ बादशाही। बादशाहत। राज्य। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

वि० लाल रंग का।

**सुलप***—वि० दे० "स्वल्प"।

संज्ञा पुं० [ सं० सु+आलाप ] सुंदर आलाप।

**सुलफ**—वि० [ सं० सु+हिं० लपना ] १. लचीला। लचनेवाला। २. नाजुक। कोमल।

**सुलफा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सुल्फ़ः ] १. वह तमाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २. चरस।

**सुलफेबाज**—वि० [ हिं० सुल्फा+फ़ा० बाज ] गाँजा या चरस पीनेवाला।

**सुलभ**—वि० [ सं० ] [ भाव० सुलभता, सुलभत्व ] १. सहज में मिलनेवाला। २. सहज। सुगम। आसान। ३. साधारण। मामूली।

**सुलह**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई समाप्त होने पर हो।

**सुलहनामा**—संज्ञा पुं० [अ० सुल्ह+फ़ा० नामः ] १. वह कागज जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। २. वह कागज जिस पर लड़नेवाले व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं।

**सुलागना***†—क्रि० अ० दे० "सुलगना"।

**सुलाना**—क्रि० स० [ हिं० सोना का प्रे० ] १. सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। २. लिटाना। लाक

देना।

**सुलाह***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुलह"।

**सुलिपि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु+लिपि ] १. उत्तम लिपि। २. स्पष्ट लिपि।

**सुलूक**—संज्ञा पुं० दे० "सलूक"।

**सुलेखक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला। लेखक।

**सुलेमान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २. एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है। ३. अपनी भारत और चीन की यात्रा के लिए प्रसिद्ध फारस का एक मुसलमान व्यापारी जो नवीं शताब्दी में यहाँ आया था।

**सुलेमानी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों। २. एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।
वि० सुलेमान का। सुलेमान-संबंधी।

**सुलोचन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुलोचना ] सुंदर आँखोंवाला। सुनेत्र। सुनयन।

**सुलोचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक अप्सरा। २. राजा माधव की पत्नी। ३. मेघनाद की पत्नी।

**सुलोचनी**—वि० स्त्री० [ सं० सुलोचना ] सुंदर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुंदर हों।

**सुल्तान**—संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।

**सुव**—संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।

**सुवक्ता**—वि० [ सं० सु+वक्तृ ] उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। वाग्मी।

**सुवचन**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुवचनी ] १. सुंदर बोलनेवाला। २. मिष्टभाषी।

**सुवटा**—संज्ञा पुं० दे० "सुग्गा"।

**सुवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य। २. अग्नि। ३. चंद्रमा।
संज्ञा पुं० १. दे० "सुअन"। २. दे० "सुमन"।

**सुवनवा**—संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।

**सुवर्ण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। संपत्ति। ३. एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा जो दस माशे की होती थी। ४. सोलह माशे का एक मान। ५. धतूरा। ६. एक वृत्त का नाम।
वि० १. सुंदर वर्ण या रंग का। उज्ज्वल। २. सोने के रंग का। पीला।

**सुवर्णकरणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुवर्ण+करण ] शरीर के वर्ण को सुंदर करनेवाली एक प्रकार की जड़ी।

**सुवर्णरेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक नदी जो बिहार के राँची जिले से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

**सुवस***—वि० [ सं० स्व+वश ] जो अपने वश या अधिकार में हो।

**सुवाँग**†—संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग"।

**सुवा**—संज्ञा पुं० दे० "सुआ"।

**सुवाना***†—क्रि० स० दे० "सुलाना"।

**सुवार***†—संज्ञा पुं० [ सं० सूपकार ] रसोइया।
संज्ञा पुं० [ सं० सु+वार ] अच्छा दिन।

**सुवाल***†—संज्ञा पुं० दे० "सवाल"।

**सुवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुगंध। अच्छी महक। खुशबू। २. सुंदर घर। ३. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, ल (।।।,।ऽ।,।) होता है।

**सुवासिका**—वि० स्त्री० [ सं० सुवासिक ] सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली।

**सुवासित**—वि० [सं०] खुशबूदार।

**सुवासिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. युवावस्था में माँ पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। चिरंटी। २. सधवा स्त्री।

**सुविचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० सुविचारी ] १. सूक्ष्म या उत्तम विचार। २. अच्छा फैसला। सुंदर न्याय।

**सुविज्ञ**—वि० [ सं० ] बहुत चतुर।

**सुविधा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सुविध ] दे० "सुभीता"।

**सुवृत्ता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. एक अप्सरा का नाम। २. १९ अक्षरों का एक वृत्त।

**सुवेल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] त्रिकूट पर्वत जो रामायण के अनुसार लंका में था।

**सुवेश**—वि० [ सं० ] १. वस्त्रादि से सुसज्जित। सुंदर वेशयुक्त। २. सुंदर। रूपवान्।

**सुवेष**—वि० दे० "सुवेश"।

**सुवेषित**—वि० दे० "सुवेश"।

**सुवेशल**—वि० [ सं० ] सुवेश। सुंदर। मनोहर।

**सुव्रत**—वि० [ सं० ] दृढ़ता से व्रत पालन करनेवाला।

**सुशिक्षित**—वि० [सं०] उत्तम रूप से शिक्षित। अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ।

**सुशील**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुशीला ] [ भाव० सुशीलता ] १. उत्तम शील या स्वभाववाला। २. सच्चरित्र। साधु। ३. विनीत। नम्र।

**सुश्रव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [illegible] ऋषि।

**सुशोभन**—वि० [ सं० ] १. अत्यंत

शोभायुक्त। दिव्य। २. बहुत सुंदर।

**सुशोभित**—वि० [ सं० ] उत्तम रूप से शोभित। अत्यंत शोभायमान।

**सुश्राव्य**—वि० [ सं० ] जो सुनने में अच्छा लगे।

**सुश्री**—वि० [ सं० ] १ बहुत सुंदर। शोभायुक्त। २. बहुत धनी।

वि० स्त्री० आदर-सूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है।

**सुश्रुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका रचा हुआ "सुश्रुत-संहिता" ग्रंथ बहुत मान्य है।

**सुश्रूखा***—संज्ञा स्त्री० दे० "शुश्रूषा"।

**सुष***—संज्ञा पुं० दे० "सुख"।

**सुषमना***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

**सुषमनि**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

**सुषमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. परम शोभा। अत्यंत सुंदरता। २. दस अक्षरों का एक वृत्त।

**सुषाना***—क्रि० अ० दे० "सुखाना"।

**सुषारा***—वि० दे० "सुखारा"।

**सुषिर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाँस। २. बेत। ३. अग्नि। आग। ४. संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो।

वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। पोला।

**सुषुप्त**—वि० [ सं० ] गहरी नींद में सोया हुआ। घोर निद्रित।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

**सुषुप्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. घोर निद्रा। गहरी नींद। २. अज्ञान। (वेदांत) ३. पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है, परन्तु उसे उसका ज्ञान नहीं होता।

**सुषुम्ना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो नासिका के मध्य भाग ( ब्रह्मरंध्र ) में स्थित है। २. वैद्यक में चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक जो नाभि के मध्य में है।

**सुषेण**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. विष्णु। २. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। ३. एक वानर जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था।

**सुषोपति***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

**सुष्टु**—वि० [ सं० दुष्ट का अनु० ] अच्छा। भला। दुष्ट का उलटा।

**सुष्ठु**—क्रि० वि० [ सं० ] अच्छी तरह।

वि० सुंदर। उत्तम।

**सुष्ठुता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सौभाग्य। २. सुंदरता।

**सुष्मना***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

**सुसंग**—संज्ञा पुं० दे० "सुसंगति"।

**सुसंगति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु + हिं० संगत ] अच्छी संगत। अच्छी सोहबत। सत्संग।

**सुस**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुसा"।

**सुसकना**—क्रि० अ० दे० "सिसकना"।

**सुसज्जित**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सुसज्जिता] भली भाँति सजाया हुआ। शोभायमान।

**सुसताना**—क्रि० अ० [फ़ा० सुस्त + आना ( प्रत्य० ) ] थकावट दूर करना। विश्राम करना।

**सुसमय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वे दिन जिनमें अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष।

**सुसमा**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषमा"।

**सुसमुझ***—वि० दे० "समझदार"।

**सुसर, सुसरा**—संज्ञा पुं० दे० "ससुर"।

**सुसराल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्वशुरालय ] ससुर का घर। ससुराल।

**सुसरित**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सु + सरित् ] गंगा।

**सुसरी**—संज्ञा स्त्री० १. दे० "ससुरी"। २. दे० "सुरसुरी"।

**सुसा***†—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्वसृ ] बहन।

संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का पक्षी।

**सुसाध्य**—वि० [ सं० ] [संज्ञा सुसाधन ] जो सहज में किया जा सके। सुखसाध्य।

**सुसाना**—क्रि० अ० [ हिं० साँस ] सिसकना।

**सुसिद्धि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] साहित्य में एक अलंकार। जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है, पर उसका फल दूसरा भोगता है, वहाँ यह अलंकार माना जाता है।

**सुसीतलाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुशीतलता"।

**सुसुकना**-क्रि० अ० दे० "सिसकना"।

**सुसुप्ति, सुसुप्ति**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

**सुसेन**—संज्ञा पुं० दे० "सुषेण"।

**सुस्त**—वि० [ फ़ा० ] १. दुर्बल। कमजोर। २. चिंता आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। ३. जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो। ४. जिसमें तत्परता न हो। आलसी। ५. धीमी चालवाला।

**सुस्तना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सुंदर स्तनों से युक्त स्त्री।

**सुस्ताई**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुस्ती"।

**सुस्ताना**—क्रि० अ० दे० "सुसताना"।

**सुस्ती**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० सुस्त ]

१. सुस्त होने का भाव। २. आलस्य। शिथिलता।

**सुस्तैन**—संज्ञा पुं० दे० "स्वस्त्ययन"।

**सुस्थ**—वि० [सं०] [भाव० सुस्थता, सुस्थत्व] १. भला चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। २. प्रसन्न। खुश। ३. भली भाँति स्थित।

**सुस्थिर**—वि० [सं०] [स्त्री० सुस्थिरा] १. अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल। २. कार्य की अधिकता से मुक्त। निश्चिंत।

**सुस्वर**—वि० [सं०] [स्त्री० सुस्वरा] [भाव० सुस्वरता] जिसका सुर मधुर हो। सुकंठ। सुरीला।

**सुस्वादु**—वि० [सं०] अत्यंत स्वाद-युक्त। बहुत स्वादिष्ठ।

**सुहँगा***—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता।

**सुहंगम***—वि० [सं० सुगम] सहज।

**सुहटा***—वि० [हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहटी] सुहावना। सुंदर।

**सुहनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "सोहनी"।

**सुहराना**†—क्रि० स० दे० "सह-लाना"।

**सुहल***—संज्ञा पुं० दे० "सुहेल"।

**सुहव**—संज्ञा पुं० दे० "सूहा" (राग)।

**सुहवी***—संज्ञा स्त्री० दे० "सूहा"। (राग)

**सुहाग**—संज्ञा पुं० [सं० सौभाग्य] १. स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य। २. वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३. मांगलिक गीत जो वर पक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं। ४. पति। ५. सिंदूर।

**सुहागा**—संज्ञा पुं० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।

**सुहागिन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सुहाग] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री। सौभाग्यवती।

**सुहागिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहा-गिन"।

**सुहागिल***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहा-गिन"।

**सुहाता**—वि० [हिं० सहना] सहने योग्य। सह्य।

**सुहाना**—क्रि० अ० [सं० शोभन] १. शोभायमान होना। शोभा देना। २. अच्छा लगना। भला मालूम होना।

वि० दे० "सुहावना"।

**सुहाया***—वि० दे० "सुहावना"।

**सुहारी**†—संज्ञा स्त्री० [सं० सु+आहार] सादी पूरी।

**सुहाल**—संज्ञा पुं० [सं० सु+आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान।

**सुहाव***—वि० दे० "सुहावना"।

संज्ञा पुं० [सं० सु+हाव] सुंदर हाव।

**सुहावता***—वि० दे० "सुहावना"।

**सुहावन***—वि० दे० "सुहावना"।

**सुहावना**—वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] देखने में भला। सुंदर। प्रियदर्शन।

क्रि० अ० दे० "सुहाना"।

**सुहावला***—वि० दे० "सुहाना"।

**सुहास**—वि० [सं०] [स्त्री० सुहासा] सुंदर या मधुर मुसकान-वाला।

**सुहासी**—वि० [सं० सुहासिन्] [स्त्री० सुहासिनी] मधुर मुसकान-वाला। चारुहासी।

**सुहृत्**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सुहृत्ता] १. अच्छे हृदयवाला। २. मित्र। सखा। दोस्त।

**सुहृद्**—संज्ञा पुं० दे० "सुहृत्"।

**सुहेल**—संज्ञा पुं० [अ०] एक चम-कीला तारा जिसका उदय शुभ माना जाता है।

**सुहेलरा***†—वि० दे० "सुहेला"।

**सुहेला**—वि० [सं० शुभ ?] १. सुहा-वना। सुंदर। २. सुखदायक। सुखद।

संज्ञा पुं० १. मंगल गीत। २. स्तुति।

**सूँ***†—अव्य० [स० सह] करण और अपादान का चिह्न। सों। से।

**सूँघना**—क्रि० स० [सं० स+घ्राण] १. नाक द्वारा गंध का अनुभव करना। बास लेना।

**मुहा०**—सिर सूँघना=बड़ों का मंगल-कामना के लिए छोटों का मस्तक सूँघना। २. बहुत कम भोजन करना। (व्यंग्य) ३. (साँप का) काटना।

**सूँघा**—संज्ञा पुं० [हिं० सूँघना] १. वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। २. भेदिया। जासूस।

**सूँड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्डा] १. हाथी की लंबी नाक जो प्रायः जमीन तक लटकती है। शुंड। शुंडादंड। २. कीट पतंग आदि छोटे जानवरों का आगे निकला हुआ वह नुकीला अवयव जिससे वे आहार करते और काटते हैं।

**सूँड़ी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुंडी] एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो पौधों को हानि पहुँचाता है।

**सूँस**—संज्ञा स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जंतु। सूस। सूसमार।

**सूँहा***†—अव्यय [सं० सम्मुख]

जानवर।

**सूअर**—संज्ञा पुं० [ सं० शूकर ] [ स्त्री० सूअरी ] १. एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी जंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। २. एक प्रकार की गाली।

**सूआ**†—संज्ञा पुं० [ सं० शुक ] सुग्गा। तोता।

संज्ञा पुं० [हिं० सूई] बड़ी सूई। सूजा।

**सूई**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सूची ] १. एक छोटा पतला कड़ा तार जिसके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा सिया जाता है। सूची। २. वह तार या काँटा जिससे कोई बात सूचित हो। ३. इंजेक्शन। ४. अनाज, कपास आदि का अँखुआ।

**सूका**†—संज्ञा पुं० दे० "शुक"।

संज्ञा पुं० दे० "शुक्र" ( नक्षत्र )।

**सूकना**†—क्रि० अ० दे० "सूखना"।

**सूकर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूअर। शूकर।

**सूकरक्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन तीर्थ जो मथुरा जिले में है। सोरों।

**सूकरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मादा सूअर।

**सूका**†—संज्ञा पुं० [ सं० संपादक ] चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

**सूक्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। २. उत्तम कथन।

वि० भली भाँति कहा हुआ।

**सूक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि। सुभाषित।

**सूक्षम**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्म"।

**सूक्ष्म**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सूक्ष्मा ] १. बहुत छोटा। २. बारीक या महीन।

संज्ञा पुं० १. परमाणु। २. परब्रह्म। ३. लिंग शरीर। ४ एक काव्यालंकार जिसमें चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है।

**सूक्ष्मता**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन। सूक्ष्मत्व।

**सूक्ष्मदर्शक यंत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। खुर्दबीन।

**सूक्ष्मदर्शिता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।

**सूक्ष्मदर्शी**—वि० [ सं० सूक्ष्मदर्शिन् ] बारीक बात को सोचने-समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।

**सूक्ष्मदृष्टि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायँ।

संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।

**सूक्ष्म शरीर**—संज्ञा पुं० [ सं ] पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्त्वोंका समूह।

**सूख***†—वि० दे० "सूखा"।

**सूखना**—क्रि० अ० [ सं० शुष्क ] १. नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। २. जल का न रहना या कम हो जाना। ३. उदास होना। तेज नष्ट होना। ४. नष्ट होना। बरबाद होना। ५. डरना। सन्न होना। ६. दुबला होना।

**सूखा**—वि० [ सं० शुष्क ] [ स्त्री० सूखी ] १. जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। २. जिसकी आर्द्रता निकल गई हो। ३. उदास। तेज-रहित। ४. हृदयहीन। कठोर। ५. कोरा। ६. केवल। निरा।

मुहा०—सूखा जवाब देना=साफ इनकार करना।

संज्ञा पुं० १. पानी न बरसना। अनावृष्टि। २. नदी का किनारा। जहाँ पानी न हो। ३. ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। ४. सूखी हुई तंबाकू। ५. एक प्रकार की खाँसी। हब्बा-डब्बा। ६. दे० "सुखंडी"।

**सूघर***—वि० दे० "सुघड़"।

**सूचक**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सूचिका ] सूचना देनेवाला। बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक।

संज्ञा पुं० १. सूई। सूची। २. सीनेवाला। दरजी। ३. नाटककार। सूत्रधार। ४. कुत्ता।

**सूचना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। विज्ञापन। विज्ञप्ति। २. वह पत्र आदि जिस पर किसी को सूचित करने के लिये कोई बात लिखी हो। विज्ञापन। इश्तहार। ३. बेधना। छेदना।

* क्रि० अ० [सं० सूचन] बतलाना।

**सूचनापत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] विज्ञापन। विज्ञप्ति। इश्तहार।

**सूचा**—संज्ञा स्त्री० दे० "सूचना"।

† संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूचित ] जो होश में हो। सावधान।

**सूचिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सूई। २. हाथी की सूँड़। हस्तिशुंड।

**सूचिकाभरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार की औषध जो सन्निपात आदि प्राण-नाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।

**सूचित**—वि० [ सं० ] जिसकी सूचना दी गई हो। बताया हुआ। ज्ञापित। प्रकाशित।

**सूची**—संज्ञा पुं० [ सं० सूचिन् ] १. चर। भेदिया। २. चुगलखोर। ३. खल। दुष्ट।

संज्ञा स्त्री० १. कपड़ा सीने की सूई। २. दृष्टि। नजर। ३. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ४. नामावली। तालिका। ५. दे० "सूचीपत्र"। ६. पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके द्वारा मात्रिक छंदों के भेदों में आदि-अंत लघु या आदि-अंत गुरु की संख्या जानी जाती है।

**सूचीकर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० सूचीकर्मन् ] सिलाई या सूई का काम।

**सूचीपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पुस्तिका आदि जिसमें एक ही प्रकार की बहुत-सी चीजों अथवा उनके अंगों की नामावली हो। तालिका। फेहरिस्त। सूची।

**सूछम**•—वि० दे० "सूक्ष्म"।

**सूच्छम**•†—वि० दे० "सूक्ष्म"।

**सूच्य**—वि० [ सं० ] सूचित करने योग्य।

**सूच्यग्र**—संज्ञा पुं० [ सं० सूची+अग्र ] सूई की नोक।

वि० अत्यल्प। बिंदु मात्र।

**सूच्यार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना-शक्ति से जाना जाता हो।

**सूछम**•†—वि० दे० "सूक्ष्म"।

**सूज**†—संज्ञा स्त्री० १. दे० "सूजन"। २. दे० "सूई"।

**सूजन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूजना ] १. सूजने की क्रिया या भाव। २. फुलाव। शोथ।

**सूजना**—क्रि० अ० [ फा० सोजिश ] रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।

**सूजनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

**सूजा**—संज्ञा पुं० [ सं० सूची ] बड़ी मोटी सूई। सूआ।

**सूजाक**—संज्ञा पुं० [ फा० ] मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाह युक्त रोग। औपसर्गिक प्रमेह।

**सूजी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शुचि ] गेहूँ का दरदरा आटा जिससे पकवान बनाते हैं।

संज्ञा स्त्री० [ सं० सूची ] सूई।

संज्ञा पुं० [ सं० सूची ] दरजी। सूचिक।

**सूझ**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सूझना ] १. सूझने का भाव। २. दृष्टि। नजर।

यौ०—सूझ-बूझ=समझ। अक्ल।

३. अनूठी कल्पना। उद्भावना। उपज।

**सूझना**—क्रि० अ० [ सं० संज्ञान ] १. दिखाई देना। नजर आना। २. ध्यान में आना। खयाल में आना। ३. छुट्टी पाना।

**सूट**—संज्ञा पुं० [ अँ० ] पहनने के कपड़े, विशेषतः कोट पतलून आदि।

**सूट-केस**—संज्ञा पुं० [ अँ० ] पहनने के कपड़े रखने का चिपटा बक्स।

**सूँटा**†—संज्ञा पुं० [ अनु० ] मुँह से तंबाकू या गाँजे का धूँआँ जोर से खींचना।

**सूत**—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्र ] १. रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। तंतु। सूता। २. तागा। धागा। डोरा। सूत्र। ३. नापने का एक मान। ४. संगतराशों और बढ़इयों की पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की डोरी। ५. पेंच, बाल्टू आदि का वह कटाव जिसके सहारे वे कसे या खोले जाते हैं। चूड़ी।

मुहा०—सूत भरना=निशान लगाना।

संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सूती ] १. एक वर्णसंकर जाति। २. रथ हाँकनेवाला। सारथि। ३. बंदी। भाट। चारण। ४. पुराण-वक्ता। पौराणिक। ५. बढ़ई। ६. सूत्रकार। सूत्रधार। ७. सूर्य्य।

वि० [ सं० ] प्रसूत। उत्पन्न।

संज्ञा पुं० [ सं० सूत्र ] थोड़े शब्दों में ऐसा पद या वचन जिसमें बहुत अर्थ हो।

वि० [ सं० सूत्र=सूत ] भला। अच्छा।

संज्ञा पुं० दे० "सुत"।

**सूतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जन्म। २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है।

**सूतक-गेह**—संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

**सूतकी**—वि० [ सं० सूतकिन् ] परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।

**सूतता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सूत का भाव। २. सूत या सारथी का काम।

**सूतधार**—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्रधार ] बढ़ई।

**सूतना**†—क्रि० अ० दे० "सोना"।

**सूतपुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सारथि। २. कर्ण।

**सूता**—संज्ञा पुं० [ सं० सूत्र ] तंतु। सूत।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] प्रसूता।

**सूति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जन्म। २. प्रसव। जनन। ३. उत्पत्ति का स्थान। उद्गम।

**सूतिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना

हो। जच्चा।

**सूतिकागार, सूतिकागृह**—संज्ञा पुं० [सं०] सौरी। प्रसव-गृह।

**सूतिया†**—संज्ञा पुं० दे० "सूतक"।

**सूती**—वि० [हिं० सूत] सूत का बना हुआ।

संज्ञा स्त्री [सं० शुक्ति] सीपी।

**सूतीघर**—संज्ञा पुं० दे० "सूतिकागार"।

**सूत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. रेखा। लकीर। ४. करधनी। कटि-भूषण। ५. नियम। व्यवस्था। ६. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे। ७. पता। सुराग।

**सूत्रकर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बढ़ई या मेमार का काम। २. जुलाहे का काम।

**सूत्रकार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा।

**सूत्रग्रंथ**—संज्ञा पुं० [सं०] वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यसूत्र।

**सूत्रधर, सूत्रधार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। २. बढ़ई। काष्ठशिल्पी। ३. पुराणानुसार एक वर्ण-संकर जाति।

**सूत्रपात**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रारंभ। शुरू।

**सूत्रपिटक**—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।

**सूत्रात्मा**—संज्ञा पुं० [सं० सूत्रात्मन्] जीवात्मा।

**सूथन**—संज्ञा स्त्री० [देश०] पायजामा। सुथना।

**सूथनी**—संज्ञा स्त्री० [देश०] १. पायजामा। सुथना। २. एक प्रकार का कंद।

**सूद**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. लाभ। फायदा। ब्याज। वृद्धि।

**मुहा०**—सूद दर सूद=ब्याज पर ब्याज। चक्रवृद्धि ब्याज।

**सूदखोर**—वि० [फ़ा०] [संज्ञा सूदखोरी] बहुत सूद या ब्याज लेनेवाला।

**सूदन**—वि० [सं०] विनाश करने-वाला।

संज्ञा पुं० [सं०] १. वध करने की क्रिया। हनन। २. अंगीकरण। ३. फेंकने की क्रिया।

**सूदना**—क्रि० स० [सं० सूदन] नाश करना।

**सूदी**—वि० [फ़ा० सूद] (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर हो। ब्याजू।

**सूध***—वि० १. दे० "सीधा"। २. दे० "शुद्ध"।

**सूधना**—क्रि० अ० [सं० शुद्ध] सिद्ध होना। सत्य होना। ठीक होना।

**सूधरा†**—वि० दे० "सूधा"।

**सूधा**—वि० दे० "सीधा"।

**सूधे**—क्रि० वि० [हिं० सूधा] सीधे से।

**सून**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. कली। कलिका। ३. फूल। पुष्प। ४. फल। ५. पुत्र।

*†संज्ञा पुं०, वि० दे० "शून्य"।

**सूना**—वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] जिसमें या जिस पर कोई न हो। निर्जन। सुनसान। खाली।

संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. कसाईखाना। ३. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की आदि चीज जिनसे जीवहिंसा की संभावना रहती है। ४. हत्या। घात।

**सूनापन**—संज्ञा पुं० [हिं० सूना + पन (प्रत्य०)] १. सूना होने का भाव। २. सन्नाटा।

**सूनु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुत्र। संतान। २. छोटा भाई। ३. नाती। दौहित्र। ४. सूर्य।

**सूप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पकी हुई दाल या उसका रसा। २. रसे की तरकारी आदि व्यंजन। ३. रसोइया। पाचक। ४. बाण।

संज्ञा पुं० [सं० सूर्प] अनाज फट-कने का सरई या सींक का छाज।

**सूपक**—संज्ञा पुं० [सं० सूप] रसोइया।

**सूपकार**—संज्ञा पुं० [सं०] रसो-इया। पाचक।

**सूपच*†**—संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"।

**सूपनखा**—संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"

**सूपशास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] पाक-शास्त्र।

**सूफ**—संज्ञा पुं० [अ०] १. पश्म। ऊन। २ वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात में डाला जाता है।

**सूफी**—संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों का एक धार्मिक उदार संप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग अपेक्षाकृत अधिक उदार विचार के होते हैं।

**सूबा**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २. दे० "सूबेदार"।

**सूबेदार**—संज्ञा पुं० [फ़ा० सूबादार (प्रत्य०)] १. किसी सूबे या प्रांत का शासक। २. एक छोटा फौजी ओहदा।

**सूबेदारी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सूबे-दार का ओहदा या पद।

**सूमर***—वि० [सं० शुभ्र] १. सुंदर

छिद्र । २. दवेत । सफेद ।

**सूम**—वि० [ अ० शूम ] कृपण । कंजूस ।

**सूर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सूरा ] १. सूर्य । २. आक । मदार । ३. पंडित । आचार्य । ४. दे० "सूरदास" । ५. अंधा । ६. छप्पय छंद के ५५ वें भेद का नाम जिसमें १६ गुरु और १२० लघु होते हैं ।

*संज्ञा पुं० [सं० शूर] वीर । बहादुर ।

*संज्ञा पुं० [ सं० शूकर ] १. सूअर । २. भूरे रंग का घोड़ा ।

संज्ञा पुं० दे० "शूल" ।

संज्ञा पुं० [ देश० ] पठानों की एक जाति ।

**सूरकांत**—संज्ञा पुं० दे० "सूर्यकांत" ।

**सूरकुमार**—संज्ञा पुं० [ सं० शूरसेन + कुमार ] वसुदेव ।

**सूरज**—संज्ञा पुं० [ सं० सूर्य ] १. सूर्य ।

मुहा०—सूरज पर थूकना या धूल फेंकना=किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लांछन लगाना । सूरज को दीपक दिखाना=१. जो स्वयं अत्यंत गुणवान् हो, उसे कुछ बतलाना । २. जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना ।

२. दे० "सूरदास" ।

संज्ञा पुं० [सं० सूर + ज] १. शनि । २. सुग्रीव ।

संज्ञा पुं० [ सं० शूर + ज ] शूर का पुत्र ।

**सूरजतनी**‡—संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्य-तनया" ।

**सूरजमुखी**—संज्ञा पुं० [ सं० सूर्य-मुखी ] १. एक प्रकार का पौधा जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है । २. एक प्रकार की आतिशबाजी । ३. एक प्रकार का छत्र या पंखा ।

**सूरजसुत**—संज्ञा पुं० [ हिं० सूरज + सं० सुत ] सुग्रीव ।

**सूरजसुता**—संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्य-सुता" ।

**सूरत**—संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. रूप । आकृति । शक्ल ।

मुहा०—सूरत बिगड़ना=चेहरे की रंगत फीकी पड़ना । सूरत बनाना=१. रूप बनाना । २. भेष बदलना । ३. मुँह बनाना । नाक-भौं सिकोड़ना । सूरत दिखाना=सामने आना ।

२. छवि । शोभा । सौंदर्य । ३. उपाय । युक्ति । ढंग । ४. अवस्था । दशा । हालत ।

संज्ञा स्त्री० [ अ० सूरः ] कुरान का प्रकरण ।

*संज्ञा स्त्री० [ सं० स्मृति ] सुध । स्मरण ।

वि० [ सं० सुरत ] अनुकूल । मेहरबान ।

**सूरता, सूरताई***—संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता" ।

**सूरति**—संज्ञा स्त्री० दे० "सूरत" ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० स्मृति ] सुध । स्मरण ।

**सूरदास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे । ये हिंदी भाषा के दो सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं ।

**सूरन**—संज्ञा पुं० [ सं० सूरण ] एक प्रकार का कंद । जमीकंद । ओल ।

**सूरपनखा***‡—संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पनखा" ।

**सूरपुत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुग्रीव ।

**सूरमा**—संज्ञा पुं० [ सं० शूरमानी ] योद्धा । वीर ।

**सूरमापन**—संज्ञा पुं० [हिं० सूरमा + पन ] वीरत्व । शूरता । बहादुरी ।

**सूरमुखी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य-मुखी शीशा ।

**सूरमुखीमनि**—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य-कांतमणि" ।

**सूरवाँ**—संज्ञा पुं० दे० "सूरमा" ।

**सूर-सावंत**—संज्ञा पुं० [ सं० शूर + सामंत ] १. युद्धमंत्री । २. नायक । सरदार ।

**सूरसुत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शनि ग्रह । २. सुग्रीव ।

**सूरसुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना ।

**सूरसेन***—संज्ञा पुं० दे० "शूरसेन" ।

**सूरसेनपुर***—संज्ञा पुं० दे० "मथुरा" ।

**सूराख**—संज्ञा पुं० [ फा० ] छेद । छिद्र ।

**सूरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. यज्ञ करानेवाला । ऋत्विज् । २. पंडित । विद्वान् । आचार्य । ३. कृष्ण का एक नाम । ४. सूर्य । ५. जैन साधुओं की एक उपाधि ।

**सूरी**—संज्ञा पुं० [ सं० सूरिन् ] विद्वान् । पंडित ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. विदुषी । पंडिता । २. सूर्य की पत्नी । ३. कुंती ।

*‡ संज्ञा स्त्री० दे० "शूली" ।

*‡ संज्ञा पुं० [ सं० शूल ] भाला ।

**सूरुज***‡—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य" ।

**सूरवाँ**‡*—संज्ञा पुं० दे० "सूरमा" ।

**सूर्पनखा***—संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पनखा" ।

**सूर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सूर्या, सूर्याणी ] १. अंतरिक्ष में ग्रहों के बीच सबसे बड़ा ज्वलंत पिंड जिसकी सब ग्रह परिक्रमा करते हैं

और जिससे सब ग्रहों को गरमी और रोशनी मिलती है। सूरज। आफताब। भास्कर। भानु। प्रभाकर। दिनकर। २. बारह की संख्या। ३. मदार। आक।

**सूर्य्यकांत**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। २. सूरजमुखी शीशा। आतशी शीशा।

**सूर्य्यग्रहण**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य का ग्रहण या चंद्रमा की ओट में आना।

**सूर्य्यतनय**—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यपुत्र"।

**सूर्य्यतनया**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना।

**सूर्य्यतापिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

**सूर्य्यपुत्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शनि। २. यम। ३. वरुण। ४. अश्विनीकुमार। ५. सुग्रीव। ६. कर्ण।

**सूर्य्यपुत्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यमुना। २. विद्युत। बिजली। (क्व०)

**सूर्य्यप्रभ**—वि० [सं०] सूर्य्य के समान दीप्तिमान्।

**सूर्य्यमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] "सूर्य्यकांतमणि"।

**सूर्य्यमुखी**—संज्ञा पुं० दे० "सूरजमुखी"।

**सूर्य्यलोक**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य का लोक। कहते हैं कि युद्ध में मरनेवाले इसी लोक को प्राप्त होते हैं।

**सूर्य्यवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान कुलों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।

**सूर्य्यवंशी**—वि० [सं० सूर्य्यवंशिन्] सूर्य्यवंश का। जो सूर्य्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।

**सूर्य्यसंक्रांति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

**सूर्य्यसुत**—संज्ञा पुं० दे० "सूर्य्यपुत्र"।

**सूर्य्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूर्य्य की पत्नी संज्ञा।

**सूर्य्यावर्त्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हुलहुल का पौधा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आधासीसी।

**सूर्य्यास्त**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य का छिपना या डूबना। २. सायंकाल।

**सूर्य्योदय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य्य का उदय या निकलना। २. प्रातःकाल।

**सूर्य्योपासक**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य की उपासना करनेवाला। सूर्य-पूजक। सौर।

**सूर्य्योपासना**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य्य की आराधना या पूजा।

**सूल**—संज्ञा पुं० [सं० शूल] १. बरछा। भाला। साँग। २. कोई चुभनेवाली नुकीली चीज। काँटा। ३. भाला चुभने की सी पीड़ा। ४. दर्द। पीड़ा। ५. भाला का ऊपरी भाग।

**सूलना**—क्रि० स० [हिं० सूल+ना (प्रत्य०)] १. भाले से छेदना। २. पीड़ित करना।

क्रि० अ० १. भाले से छिदना। २. पीड़ित होना। व्यथित होना। दुखना।

**सूलपानि***—संज्ञा पुं० दे० "शूलपाणि"।

**सूली**—संज्ञा स्त्री० [सं० शूल] १. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था। २. फाँसी।

*संज्ञा पुं० [सं० शूलिन्] महादेव। शिव।

**सूवना***†—क्रि० अ० [सं० स्रवण] बहना।

संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।

**सूस**—संज्ञा पुं० [सं० शिशुमार] दे० "सूँस"।

**सूसि***†—संज्ञा ० दे० "सूस"।

**सूहा**—संज्ञा पुं० [हिं० सोहना] १. एक प्रकार का लाल रंग। २. एक संकर राग।

वि० [स्त्री० सूही] लाल रंग का। लाल।

**सूही**—वि० स्त्री० दे० "सूहा"।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सूहा] लालिमा। लाली।

**सृंखला***—संज्ञा स्त्री० दे० "शृंखला"।

**सृंग***—संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।

**सृंगवेरपुर***—संज्ञा पुं० दे० "शृंगवेरपुर"।

**सृंगी**—संज्ञा पुं० दे० "शृंगी"।

**सृंजय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनु के एक पुत्र का नाम। २. एक वंश जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।

**सृक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूल। भाला। २. बाण। तीर। ३. वायु। हवा।

*संज्ञा पुं० [सं० स्रज्, स्रक्] माला।

**सृकाल**—संज्ञा पुं० दे० "शृगाल"।

**सृग***—संज्ञा पुं० [सं० सृक] १. बरछा। भाला। २. बाण। तीर।

संज्ञा पुं० [सं० स्रज्, स्रक] माला। गजरा।

सृंगिनी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सृगिणी"।

सृजक*—संज्ञा पुं० [सं० सृज्] सृष्टि करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। सर्जक।

सृजन*—संज्ञा पुं० [सं० सृज्, सर्जन] १. सृष्टि करने की क्रिया। उत्पादन। २. सृष्टि।

सृजनहार*—संज्ञा पुं० [सं० सृज्, सर्जन+हिं० हार] सृष्टिकर्त्ता।

सृजना*—क्रि० स० [सं० सृज्+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। उत्पन्न करना। बनाना।

सृत—वि० [सं०] चला या खिसका हुआ।

सृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पथ। रास्ता। २. गमन। चलना। ३. सरकना।

सृष्ट—वि० [सं०] १. उत्पन्न। पैदा। २. निर्मित। रचित। ३. युक्त। ४. छोड़ा हुआ।

सृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २. निर्माण। रचना। बनावट। ३. संसार की उत्पत्ति। दुनिया की पैदाइश। ४. संसार। दुनिया। ५. प्रकृति। निसर्ग।

सृष्टिकर्त्ता—संज्ञा पुं० [सं० सृष्टि-कर्तृ] १. संसार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २. ईश्वर।

सृष्टिविज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो।

सेंक—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।

सेंकना—क्रि० स० [सं० श्रेषण] १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। २. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना।

मुहा०—आँख सेंकना=सुंदर रूप देखना। धूप सेंकना=धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुँचाना।

सेंगर—संज्ञा पुं० [सं० शृंगार] १. एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २. एक प्रकार का अगहनी धान।

संज्ञा पुं० [सं० शृंगीकर] क्षत्रियों की एक जाति।

सेंठ—संज्ञा स्त्री० [?] दूध की धार।

सेंट—संज्ञा पुं० [अं०] १. खुशबू। सुगंध। २. पाश्चात्य ढंग से तैयार किया हुआ सुगंधित द्रव्य।

सेंटर—संज्ञा पुं० [अं०] केंद्र।

सेंट्रल—वि० [अं०] केंद्रीय।

सेंत—संज्ञा स्त्री० [सं० संहति] पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना।

मुहा०—सेंत का=१. जिसमें कुछ दाम न लगा हो। मुफ्त का। †२. बहुत। ढेर का ढेर। सेंत में=१. बिना कुछ दाम दिए। मुफ्त में। २. व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।

सेंतना*†—क्रि० स० दे० "सैंतना"।

सेंत-मेत—क्रि० वि० [हिं० सेंत+मेत (अनु०)] १. बिना दाम दिये। मुफ्त में। २. व्यर्थ।

सेंति, सेंती*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेंत"।

प्रत्य० [प्रा० सुंतो] पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति।

सेंथी†—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी। भाला।

सेंदुर*†—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

मुहा०—सेंदुर चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। सेंदुर देना=विवाह के समय पति का पत्नी की माँग भरना।

सेंदुरिया—संज्ञा पुं० [हिं० सिंदूर] एक सदाबहार पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं।

वि० सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सेंदुरी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेंदुर] लाल गाय।

सेंद्रिय—वि० [सं०] जिसमें इंद्रियाँ हों।

सेंध—संज्ञा स्त्री० [सं० संधि] चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद। संधि। सुरंग। सेन।

सेंधना—क्रि० स० [हिं० सेंध] सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा—संज्ञा पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार का खनिज नमक। सैंधव। लाहौरी नमक।

सेंधिया—वि० [हिं० सेंध] दीवार में सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।

संज्ञा पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजवंश की उपाधि।

सेंधुआर—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का मांसाहारी जंतु।

सेंधुर†—संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

सेंवई—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] मैदे के सुखाए हुए सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।

सेंवर*†—संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।

सेंहुड़—संज्ञा पुं० दे० "थूहर"।

से—प्रत्य० [प्रा० सुंतो] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति।

वि० [हिं० 'सा' का बहुवचन] समान। सदृश।

*सर्व० [हिं० 'सो' का बहुवचन] वे।

सेउ*†—संज्ञा पुं० दे० "सेब"।

सेकंड—संज्ञा पुं० [अं०] एक मिनट

का आठवाँ भाग।
वि० दूसरा। द्वितीय।

**सेक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. जल-सिंचन। सिंचाई। २. जल-प्रक्षेप। छिड़काव।

**सेकेंड**—संज्ञा पुं०, वि० दे० "सेकंड"।

**सेक्रेटरी**—संज्ञा पुं० [अं०] मंत्री।

**सेख***—संज्ञा पुं० दे० "शेष" और "शेख"।

**सेखर***—संज्ञा पुं० दे० "शेखर"।

**सेगा**—संज्ञा पुं० [अ०] १. विभाग। महकमा। २. विषय। क्षेत्र।

**सेचक**—वि० [सं०] सींचनेवाला।

**सेचन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित, सेच्य] १. जल-सिंचन। सिंचाई। २. मार्जन। छिड़काव। ३ अभिषेक।

**सेज**—संज्ञा स्त्री० [सं० शय्या] शय्या। पलंग।

**सेजपाल**—संज्ञा पुं० [हिं० सेज+पाल] राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। शयनागार-रक्षक।

**सेजरिया*†**—संज्ञा स्त्री० दे० "सेज"।

**सेज्या***—संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।

**सेझ्याद्रि***—संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

**सेझना**—क्रि० अ० [सं० सेधन] दूर होना।

**सेटना*†**—क्रि० अ० [सं० मत] १. समझना। मानना। २. कुछ समझना। महत्त्व स्वीकार करना।

**सेठ**—संज्ञा पुं० [सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी] १. बड़ा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २. बड़ा या थोक व्यापारी। ३. मालदार आदमी। ४. सुनार।

**सेढ़ा**—संज्ञा पुं० दे० "सीढ़"।

**सेत***—संज्ञा पुं० दे० "सेतु" और "श्वेत"।

**सेतकुली**—संज्ञा पुं० [सं० श्वेत-कुलीय] सफेद जाति के नाग।

**सेतद्युति***—संज्ञा पुं० [सं० श्वेत-द्युति] चंद्रमा।

**सेतवाह***—संज्ञा पुं० [सं० श्वेत-वाहन] १. अर्जुन। २. चंद्रमा। (डिं०)

**सेतिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० साकेत ?] अयोध्या।

**सेती†**—अव्य० दे० "से"।

**सेतु**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बंधन। बँधाव। २. बाँध। धुस्स। ३. मेंड़। डाँड़। ४. नदी आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो लकड़ी आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बना हो। पुल। ५. सीमा। हदबंदी। ६. मर्य्यादा। नियम या व्यवस्था। ७. प्रणव। ओंकार। ८. व्याख्या।

**सेतुक***—संज्ञा पुं० दे० "सौतुख"।
संज्ञा पुं० [सं०] १. पुल। २. बाँध।

**सेतुबंध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. पुल की बँधाई। २. वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर बँधवाया था।

**सेतुआ†**—संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।

**सेथिया**—संज्ञा पुं० [तेलगू० चेट्टि] आँखों का इलाज करनेवाला।

**सेद***—संज्ञा पुं० दे० "स्वेद"।

**सेदज***—वि० दे० "स्वेदज"।

**सेन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर। २. जीवन। ३. एक भक्त नाई।
संज्ञा पुं० [सं० श्येन] बाज पक्षी।
*संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

**सेनजित्**—वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

**सेनप, सेनपति***—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

**सेन वंश**—संज्ञा पुं० [सं०] बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११ वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था।

**सेना**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. युद्ध की शिक्षा पाए हुये और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए मनुष्यों का बड़ा समूह। फौज। पलटन। २. भाला। बरछी। ३. इंद्र का वज्र। ४. इंद्राणी।
क्रि० स० [सं० सेवन] १. सेवा करना। खिदमत करना। टहल करना।
मुहा०—चरण सेना=तुच्छ चाकरी बजाना।
२. आराधना करना। पूजना। ३. नियमपूर्वक व्यवहार करना। ४. पड़ा रहना। निरंतर वास करना। ५. लिए बैठे रहना। दूर न करना। ६ मादा चिड़ियों का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना।

**सेनाजीवी**—संज्ञा पुं० [सं० सेनाजीविन्] सैनिक। सिपाही। योद्धा।

**सेनादार**—संज्ञा पुं० दे० "सेनानायक"।

**सेनाध्यक्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

**सेनानायक**—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का अफसर। फौजदार।

**सेनानी**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेनापति। २. कार्त्तिकेय। ३. एक रुद्र का नाम।

**सेनापति**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का नायक। फौज का अफसर। २. कार्तिकेय। ३. शिव।

**सेनापत्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति का कार्य, पद या अधिकार।

**सेनापाल**—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

**सेनामुख**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेना का अग्रभाग। २. सेना का एक खंड जिसमें ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे।

**सेनावास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २. खेमा।

**सेनाव्यूह**—संज्ञा पुं० [सं०] युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य-विन्यास।

**सेनि***—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।

**सेनिका**—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनिका] १. मादा बाज पक्षी। २. एक छंद। दे० "श्येनिका"।

**सेनी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सीनी] तश्तरी।

*संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनी] मादा बाज पक्षी।

*संज्ञा स्त्री० [सं० श्रेणी] १. पंक्ति। कतार। २. सीढ़ी। जीना।

संज्ञा पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ नाम।

**सेब**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।

**सेम**—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंबी] एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।

**सेमई***—संज्ञा स्त्री० दे० "सेंवई"।

**सेमल**—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मली] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं, और जिसके फलों में केवल रुई होती है।

**सेमा**—संज्ञा पुं० [हिं० सेम] एक प्रकार की बड़ी सेम।

**सेमेटिक**—संज्ञा पुं० [अं०] मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग-विभाग जिसमें यहूदी, अरब, सीरियन और मिस्री आदि जातियाँ हैं। शामी। सामी।

**सेर**—संज्ञा पुं० [सं० सेटक] सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल।

संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का धान।

संज्ञा पुं० दे० "शेर"।

वि० [फ़ा०] तृप्त।

**सेरसाहि**—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेरशाह] दिल्ली का बादशाह शेरशाह।

**सेरा**—संज्ञा पुं० [हिं० सिर] चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती हैं।

संज्ञा पुं० [फा० सेराब] सींची हुई जमीन।

**सेराना***—क्रि० अ० [सं० शीतल] १. ठंढा होना। शीतल होना। २. तृप्त होना। तुष्ट होना। ३ जीवित न रहना। ४. समाप्त होना। ५. चुकना। तै होना।

क्रि० स० १. ठंढा करना। शीतल करना। २. मूर्त्ति आदि जल में प्रवाह करना।

**सेराब**—वि० [फ़ा०] १. पानी से भरा हुआ। २. सिंचा हुआ। तराबोर।

**सेरी**—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] तृप्ति। तुष्टि।

**सेल**—संज्ञा पुं० [सं० शल] बरछा। भाला।

संज्ञा स्त्री० [देश०] बद्धी। माला।

**सेलखड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।

**सेलना**—क्रि० अ० [सं० शेल] मर जाना।

**सेला**—संज्ञा पुं० [सं० शाटक] रेशमी चादर।

**सेलिया**—संज्ञा पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

**सेली**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सेल] छोटा भाला।

संज्ञा स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३. वह बद्धी या माला जिसे योगी यती लोग गले में डालते या सिर में लपेटते हैं। ४. स्त्रियों का एक गहना।

**सेल्ला**—संज्ञा पुं० [सं० शल] भाला। सेल।

**सेल्ह**—संज्ञा पुं० दे० "सेल"।

**सेल्हा**—संज्ञा पुं० दे० "सेला"।

**सेवँर***—संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।

**सेवँई**—संज्ञा स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाये जाते हैं।

**सेव**—संज्ञा पुं० [सं० सेविका] सूत या डोरी के रूप में बेसन का एक पकवान।

*संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।

संज्ञा पुं० दे० "सेब"।

**सेवक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी] १. सेवा करनेवाला। नौकर। चाकर। २. भक्त। आराधक। उपासक। ३. काम में लानेवाला। इस्तेमाल करनेवाला। ४. छोड़कर कहीं न जानेवाला। वास करनेवाला। ५. सीनेवाला। दरजी।

**सेवकाई**—संज्ञा स्त्री० [सं० सेवक + आई (प्रत्य०)] सेवा। टहल। खिदमत।

**सेवग***—संज्ञा पुं० दे० "सेवक"।

**सेवड़ा**—संज्ञा पुं० [?] जैन साधुओं

एक भेद।

संज्ञा पुं० [ हिं० सेव ] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।

सेपति●†—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

सेवती—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सफेद गुलाब।

सेवड़ाना—संज्ञा पुं० [ अं० सोयाबीन] एक प्रकार की फलियों के दाने जो मटर की तरह होते हैं।

सेवन—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य ] १. परिचर्या। खिदमत। २. उपासना। आराधना। ३. प्रयोग। उपयोग। नियमित व्यवहार। इस्तेमाल। ४. छोड़कर न जाना। वास करना। ५. उपभोग। ६. सीना। ७. गूँथना।

सेवना●†—क्रि० स० दे० "सेना"।

सेवनी—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सेवकिनी] दासी।

सेवनीय—वि० [ सं० ] १. सेवा योग्य। २. पूजा के योग्य। ३. व्यवहार के योग्य। ४. सीने के योग्य।

सेवर—संज्ञा पुं० दे० "शबर"।

सेवरा●†—संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा"।

सेवरी●†-संज्ञा स्त्री० दे० "शबरी"।

सेवा—संज्ञा पुं० [ देश० ] ब्याह की एक रस्म।

सेवा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। खिदमत। टहल। परिचर्य्या। २. नौकरी। चाकरी। ३. आराधना। उपासना। पूजा

मुहा०—सेवा में=समीप। सामने। ४. आश्रय। शरण। ५. रक्षा। हिफाजत। ६. संभोग। मैथुन।

सेवा-टहल—संज्ञा स्त्री० [ सं० सेवा+हिं० टहल ] परिचर्य्या। खिदमत। सेवा-शुश्रूषा।

सेवाती—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

सेवाधारी-संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।

सेवापन—संज्ञा पुं० [ सं० सेवा+हिं० पन ] दासत्व। सेवावृत्ति। नौकरी।

सेवा-बंदगी—संज्ञा स्त्री० [ सेवा+फ़ा० बंदगी ] आराधना। पूजा।

सेवार, सेवाल—संज्ञा स्त्री० [ सं० शैवाल ] पानी में फैलनेवाली एक घास।

सेवावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] नौकरी। दासत्व। चाकरी की जीविका।

सेवि—संज्ञा पुं० [ सं० ] 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है।

●वि० दे० "सेव्य", "सेवित"।

सेविका—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सेवा करनेवाली। दासी। नौकरानी।

सेवित—वि० [सं०] [ स्त्री० सेविता] १. जिसकी सेवा की गई हो। २. जिसकी पूजा की गई हो। पूजित। ३. जिसका प्रयोग किया गया हो। व्यवहृत। ४. उपभोग किया हुआ।

सेवी—वि० [ सं० सेविन् ] १. सेवा करनेवाला। २. पूजा करनेवाला। ३. संभोग करनेवाला।

सेव्य—वि० [ सं० ] [ स्त्री० सेव्या ] १. जिसकी सेवा करना उचित हो। २. जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। ३. पूजा या आराधना के योग्य। ४. काम में लाने लायक। ५. रक्षण के योग्य। ६. संभोग के योग्य।

संज्ञा पुं० १ स्वामी। मालिक। २. अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ३. जल। पानी।

सेव्य-सेवक—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वामी और सेवक।

यौ०—सेव्य-सेवक भाव=उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में मानना। (भक्तिमार्ग में उपासना का एक भाव)

सेश्वर—वि० [ सं० ] १. ईश्वरयुक्त। २. जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।

सेष●—संज्ञा पुं० दे० "शेष", "शेषनाग"।

सेस●—संज्ञा पुं०, वि० दे० "शेष"।

सेसनाग●†—संज्ञा पुं० दे० "शेषनाग"।

सेस रंग●—संज्ञा पुं० [ सं० श्वेत+रंग ] सफेद रंग।

सेहर—संज्ञा पुं० [ फ़ा० सेह=तीन+सर=बाजी ] १. ताश का एक खेल। २. चालबाजी। ३. चाल। ४. मुँह लगाना। बहुत अधिक लगाव-बझाव।

सेहरिया—वि० [ हिं० सेहर+इया (प्रत्य०) ] छल-कपट कर दूसरों का माल मारनेवाला। चालिया।

सेहत—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. सुख। चैन। २. रोग से छुटकारा। रोगमुक्ति।

सेहतखाना—संज्ञा पुं० [ अ० सेहत+फ़ा० खाना ] पाखाने पेशाब आदि की कोठरी।

सेहरा—संज्ञा पुं० [ हिं० सिर+हार] १. फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है। २. विवाह का मुकुट। मौर।

मुहा०—किसी के सिर सेहरा बँधना=किसी का कृतकार्य्य होना।

३. वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं।

सेही—संज्ञा स्त्री० [ सं० सेधा ] साही। (जंतु)

सेहुँड़●†—संज्ञा पुं० [ सं० सेहुंड ] थूहर।

सेहुआँ—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्रकार का चर्म-रोग।

सैंतना—क्रि० स० [ सं० संचय, सिंचन ] १. संचित करना। बटोरना। इकट्ठा करना। २. हाथों से समेटना। बटोरना। ३. सहेजना। सँभालकर रखना। ४. भूमि को पानी, गोबर, मिट्टी आदि से लीपना।

सैंथी†—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. भाला। २. बरछी।

सैंधव—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेंधा नमक। २. सिंध का घोड़ा। ३. सिंध देश का निवासी।

वि० १. सिंध देश का। २. समुद्र-संबंधी।

सैंधवपति—संज्ञा पुं० [ सं० सैंधव+पति=राजा ] सिंध-वासियों के राजा जयद्रथ।

सैंधवी—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संपूर्ण जाति की एक रागिनी।

सैंधू—संज्ञा स्त्री० दे० "सैंधवी"।

सैंबर†—संज्ञा पुं० दे० "साँभर"।

सैंहुँ*†—क्रि० वि० दे० "सौंह"।

सैंहथी—संज्ञा स्त्री० दे० "सैंथी"।

सै—वि०, संज्ञा पुं० [ सं० शत ] सौ। संज्ञा स्त्री० [ सं० तत्त्व ] १. तत्त्व। सार। २. वीर्य। शक्ति। ३. बढ़ती। बरकत।

सैकड़ा—संज्ञा पुं० [ सं० शतकांड ] सौ का समूह। शत-समष्टि।

सैकड़े—क्रि० वि० [ हिं० सैकड़ा ] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फी सदी।

सैकड़ों—वि० [ हिं० सैकड़ा ] १. कई सौ। २. बहु-संख्यक। गिनती में बहुत।

सैकत, सैकतिक—वि० [ सं० ] [स्त्री० सैकती] १. रेतीला। बलुआ। २. बालू का बना।

सैकल—संज्ञा पुं० [ अ० ] हथियारों को साफ करने और उन पर सान चढ़ाने का काम।

सैकलगर—संज्ञा पुं० [अ० सैकल+फा० गर ] तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला।

सैथी—संज्ञा स्त्री० [ सं० शक्ति ] बरछी।

सैदा*†—संज्ञा पुं० दे० "सैयद"।

सैद्धांतिक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सिद्धांत को जाननेवाला। विद्वान्। २. तांत्रिक।

वि० सिद्धांत-संबंधी। तत्त्व-संबंधी।

सैन—संज्ञा स्त्री० [ सं० संज्ञपन ] १. संकेत। इंगित। इशारा। २. चिह्न। निशान।

*संज्ञा पुं० १. दे० "शयन"। २. दे० "श्येन"।

*संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

*संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बगला।

सैनपति*—संज्ञा पुं० दे० "सेनापति"।

सैनभोग—संज्ञा पुं० [ सं० शयन+भोग ] रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरों में चढ़ता है।

सैना*†—संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

सैनापत्य—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेना-पति का पद या कार्य। सेनापतित्व। वि० सेनापति-संबंधी।

सैनिक—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सेना या फौज का आदमी। सिपाही। २. संतरी।

वि० सेना-संबंध। सेना का

सैनिकता—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सेना या सैनिक का कार्य्य। २. युद्ध। लड़ाई।

सैनिका—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यैनिका] एक छंद।

सैनी—संज्ञा पुं० [ सेना नगर ] हज्जाम।

*संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।

सैनू—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैनू।

सैनेय*—वि० [ सं० सेना ] लड़ने के योग्य।

सैनेश—संज्ञा पुं० [ सं० सैन्येश ] सेनापति।

सैन्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३. शिबिर। छावनी।

वि० सेना-संबंधी। फौज का।

सैन्य-सज्जा—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सेना का आवश्यक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करना।

सैन्याध्यक्ष—संज्ञा पुं० [ सं० ] सेनापति।

सैमंतिक—संज्ञा पुं० [ सं०] सिंदूर। सेंदुर।

सैयद—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. मुह-म्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।

सैयाँ*†—संज्ञा पुं० [ सं० स्वामी ] पति।

सैया*—संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या"।

सैरंध्र—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० सैरंध्री ] १. घर का नौकर। २. एक संकर जाति।

सैरंध्री—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री। २. अंतःपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। ३. द्रौपदी।

सैर—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. मन बहलाने के लिए घूमना-फिरना। २. बहार। मौज। आनंद। ३. मित्र-

मंडली का कहीं बगीचे आदि में खान-पान और नाच-रंग । ४. मनोरंजक दृश्य । कौतुक । तमाशा ।
**सैरगाह**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सैर करने की अच्छी जगह ।
**सैल†**—संज्ञा स्त्री० दे० "सैर" ।
संज्ञा पुं० दे० "शैल" ।
संज्ञा स्त्री० [फ़ा० सैलाब] १. बाढ़ । जलप्लावन । २. स्रोत । बहाव ।
**सैलजा***—संज्ञा स्त्री० दे० "शैलजा" ।
**सैलसुता***—संज्ञा स्त्री० दे० "शैलसुता" ।
**सैलात्मजा***—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती ।
**सैलानी**—वि० [फ़ा० सैर] १. सैर करनेवाला । मनमाना घूमनेवाला । २. आनंदी । मनमौजी ।
**सैलाब**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] बाढ़ । जलप्लावन ।
**सैलाबी**—वि० [फ़ा०] जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो । बाढ़वाला ।
संज्ञा स्त्री० तरी । सील । सीड़ ।
**सैलूष***—संज्ञा पुं० दे० "शैलूष" ।
**सैव*†**—संज्ञा पुं० दे० "शैव" ।
**सैवाल***—संज्ञा पुं० दे० "शैवाल" ।
**सैवलिनी***—संज्ञा स्त्री० दे० "शैवलिनी" ।
**सैव्य***—संज्ञा पुं० दे० "शैव्य" ।
**सैशव***—संज्ञा पुं० दे० "शैशव" ।
**सैहथी**—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्ति] बरछी ।
**सों*†**—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न । द्वारा । से ।
वि० दे० "सा" । अव्य० दे० "सौंह" । क्रि० वि० संग । साथ ।
सर्व० दे० "सो" । संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह" ।
**सोंच**—संज्ञा पुं० दे० "सोच" ।
**सोंचर नमक**—संज्ञा पुं० दे० "काला नमक" ।
**सोंटा**—संज्ञा पुं० [सं० शुण्ड या हिं० सटना] १. मोटी छड़ी । डंडा । काठा । २. भंग घोटने का मोटा डंडा ।
**सोंटा-बरदार**—संज्ञा पुं० [हिं० सोंटा + फ़ा० बरदार] आसाबरदार । बल्लमदार ।
**सोंठ**—संज्ञा स्त्री० [सं० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुंठि।
वि० शुष्क, नीरस ।
**सोंठौरा†**—संज्ञा पुं० [हिं० सोंठ + औरा (प्रत्य०)] एक प्रकार का लड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पड़ती है । (प्रसूती स्त्री के लिए)
**सोंध***—अव्य० दे० "सौंह" ।
**सोंधा**—वि० [सं० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] [भाव० सोंधाहट] १. सुगंधित । खुशबूदार । महकनेवाला । २. मिट्टी के नये बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान ।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं । २. एक सुगंधित मसाला जो नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिए मिलाते हैं ।
संज्ञा पुं० सुगंध ।
**सोंधु***—वि० दे० "सोंधा" ।
**सोंपना**—क्रि० स० दे० "सौंपना" ।
**सोंवर्णिया**—संज्ञा पुं० [सं० सुवर्ण] एक आभूषण जो नाक में पहना जाता है ।
**सोंह*†**—संज्ञा स्त्री०, अव्य० दे० "सौंह" ।
**सोंही***—अव्य० दे० "सौंह" ।
**सो**—सर्व० [सं० स] वह ।
*वि० दे० "सा" ।
अव्य० अतः । इसलिए । निदान ।
**सोऽहम्**—[सं० सः + अहम्] वही मैं हूँ—अर्थात् मैं ब्रह्म हूँ । (वेदांत का सिद्धांत है कि जीव और ब्रह्म एक ही है । इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिए वेदांती लोग कहा करते हैं सोऽहम्; अर्थात् मैं वही ब्रह्म हूँ । उपनिषदों में यह बात "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" रूप में कही गई है ।)
**सोऽहमस्मि**—दे० "सोऽहम्" ।
**सोअना***—क्रि० अ० दे० "सोना" ।
**सोआ**—संज्ञा पुं० [सं० मिश्रेया] एक प्रकार का साग ।
**सोई**—सर्व० दे० "वही" ।
अव्य० दे० "सो" ।
**सोक***—संज्ञा पुं० दे० "शोक" ।
**सोकन**—संज्ञा पुं० दे० "सोखन" ।
**सोकना***—क्रि० स० [सं० शोक] शोक करना । रंज करना ।
**सोकित***—वि० [सं० शोक] शोकयुक्त ।
**सोक्कन**—संज्ञा पुं० दे० "सोखन" ।
**सोखक***—वि० [सं० शोषक] १. शोषण करनेवाला । २. नाश करनेवाला ।
**सोखता**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोख्ता" ।
**सोखन†**—संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जंगली धान ।
**सोखना**—क्रि० स० [सं० शोषण] १. शोषण करना । चूस लेना । २. सुखा डालना ।
**सोख्ता**—संज्ञा पुं० [फ़ा०] एक प्रकार का खुरखुरा कागज जो स्याही सोख लेता है ।

वि० थका हुआ।

सोग–संज्ञा पुं० [सं० शोक] दुःख। रंज।

सोगिनी–वि० स्त्री० [हिं० सोग] शोक करनेवाली। शोकार्त्ता। शोकाकुला।

सोगी–वि० [सं० शोक] [स्त्री० सोगिनी] शोक मनानेवाला। शोकाकुल। दुःखित।

सोच–संज्ञा पुं० [सं० शोच] १. सोचने की क्रिया या भाव। २. चिंता। फिक्र। ३. शोक। दुःख। रंज। ४. पछतावा।

सोचना–क्रि० अ० [सं० शोचन] १. मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। २. चिंता करना। फिक्र करना। ३. खेद करना। दुःख करना।

सोच-विचार–संज्ञा पुं० [हिं० सोच+सं० विचार] १. समझ-बूझ। गौर। २. आगा-पीछा। असमंजस।

सोचाना–क्रि० स० दे० "सुचाना"।

सोचु–संज्ञा पुं० दे० "सोच"।

सोझ–संज्ञा स्त्री० [हिं० सूझना] १. सूझ। सोच। २. दे० "सौंझ"।

सोझनी–संज्ञा स्त्री० दे० "सुजनी"।

सोझ, सोझा–वि० [सं० संमुख] [स्त्री० सोझी] १. सीधा। सरल। २. सामने की ओर गया हुआ। सीधा।

सोटा–संज्ञा पुं० दे० "सुजटा"।

सोठर–वि० [देश०] भोंदू। बेवकूफ।

सोढ़ा–संज्ञा पुं० दे० "सोढ" या "सोढा"।

सोत–संज्ञा पुं० [सं० स्रोत] [स्त्री० अल्पा० सोतिया] १. जल की बराबर बहनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। २. नदी की शाखा। नहर।

सोति–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोता] स्रोत। धारा।
संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
संज्ञा पुं० दे० "श्रोत्रिय"।

सोदर–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सहोदर भ्राता। सगा भाई।
वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

सोध†–संज्ञा पुं० [सं० शोध] १. खोज। खबर। पता। टोह। २. संशोधन। सुधारना। ३. चुकता होना। अदा होना।
संज्ञा पुं० [सं० सौध] महल। प्रासाद।

सोधन–संज्ञा पुं० [सं० शोधन] ढूँढ़। खोज।

सोधना†–क्रि० स० [सं० शोधन] १. शुद्ध करना। साफ करना। २. गलती या दोष दूर करना। ३. निश्चित करना। निर्णय करना। ४. खोजना। ढूँढ़ना। ५. धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिए संस्कार। ६. ठीक करना। दुरुस्त करना। ७. ऋण चुकाना। अदा करना।

सोधाना†–क्रि० स० [हिं० सोधना] सोधने का काम दूसरे से कराना।

सोन–संज्ञा पुं० [सं० शोण] एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिला है।
संज्ञा पुं० दे० "सोना"।
संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का जलपक्षी।
वि० [सं० शोण] लाल। अरुण।

सोनकीकर–संज्ञा पुं० [हिं० सोना+कीकर] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला–संज्ञा पुं० [हिं० सोना+केला] चंपा केला। सुवर्ण-कदली। पीला केला।

सोनचिरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+चिड़िया] नटी।

सोनजर्द–संज्ञा स्त्री० दे० "सोनजूही"।

सोनजूही–संज्ञा स्त्री० [हिं० सोना+जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले होते हैं। पीली जूही। स्वर्ण-यूथिका।

सोनभद्र–संज्ञा पुं० दे० "सोन"।

सोनवाना–वि० दे० "सुनहला"।

सोनहला–वि० दे० "सुनहला"।

सोनहा–संज्ञा पुं० [सं० शुन=कुत्ता] कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।

सोनहार–संज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

सोना–संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ण] १. सुंदर उज्ज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने बनते हैं। स्वर्ण। कनक। कांचन। हेम।

मुहा०–सोना छूते मिट्टी होना=अच्छे या बने-बनाए कार्य में योग देते ही उसका नष्ट होना (घोर विपत्ति का सूचक)। सोने का घर मिट्टी होना=सब कुछ नष्ट होना। सोने में घुन लगना=असंभव या अनहोनी बात होना। सोने में सुगंध=किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना।

२. बहुत सुंदर वस्तु। ३. राजहंस।
संज्ञा पुं० मझोले कद का एक वृक्ष।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।
क्रि० अ० [सं० शयन] १.

लेना। घायल करना। आँख लगाना।
मुहा०—सोते जागते=हर समय।
२. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।

**सोनागेरू**—संज्ञा पुं० [हिं० सोना+गेरू] गेरू का एक भेद।

**सोनापाठा**—संज्ञा पुं० [सं० शोण+हिं० पाठा] १. एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं। २. इसी वृक्ष का एक और भेद।

**सोनामक्खी**—संज्ञा स्त्री० [सं० स्वर्णमाक्षिक] एक खनिज पदार्थ जिसकी गणना उपधातुओं में है।

**सोनार**—संज्ञा पुं० दे० "सुनार"।

**सोनित***—संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।

**सोनी**|—संज्ञा पुं० [हिं० सोना] सुनार।

**सोपत**—संज्ञा पुं० [सं० सूपपत्ति] सुबीता। सुपास। आराम का प्रबंध।

**सोपान**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० सोपानित] सीढ़ी। जीना।

**सोपि**—वि० [सं० सः+अपि] १. वही। २. वह भी।

**सोफता**—संज्ञा पुं० [हिं० सुभीता] १. एकांत स्थान। निराली जगह। २. रोग आदि में कुछ कमी होना।

**सोफा**—संज्ञा पुं० [अं०] एक प्रकार का लंबा गद्दीदार आसन। कोच।

**सोफियाना**—वि० [अ० सूफी+इयाना (फा० प्रत्य०)] १. सूफियों का। सूफी संबंधी। २. जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।

**सोबी**—संज्ञा पुं० दे० "सूबी"।

**सोभ***—संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।

**सोभना***—क्रि० अ० [सं० शोभन] सोहना। शोभित होना।

**सोभाकारी**—वि० [सं० शोभाकर] सुंदर।

**सोभार**—वि० [सं० स+हिं० उभार] जिसमें उभार हो। उभारदार। क्रि० वि० उभार के साथ।

**सोमित**—वि० दे० "शोभित"।

**सोम**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। २. एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है। ३. वैदिक काल के एक प्राचीन देवता। ४. चंद्रमा। ५. सोमवार। ६. कुबेर। ७. यम। ८. वायु। ९. अमृत। १०. जल। ११. सोमयज्ञ। १२. स्वर्ग। आकाश।

**सोमकर**—संज्ञा पुं० [सं० सोम+कर] चंद्रमा की किरण।

**सोमजाजी**—संज्ञा पुं० दे० "सोमयाजी"।

**सोमन**—संज्ञा पुं० [सं० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।

**सोमनस**—संज्ञा पुं० दे० "सौमनस्य"।

**सोमनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।

**सोमपान**—संज्ञा पुं० [सं०] सोम पीना।

**सोमपायी**—वि० [सं० सोमपायिन्] [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।

**सोमप्रदोष**—संज्ञा पुं० [सं०] सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत।

**सोमयज्ञ**—संज्ञा पुं० [सं०] एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोम-रस पान किया जाता था।

**सोमयाजी**—संज्ञा पुं० [सं० सोमयाजिन्] वह जो सोमयाग करता हो।

**सोमरस**—संज्ञा पुं० [सं०] सोमलता का रस।

**सोमराज**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा।

**सोमराजी**—संज्ञा पुं० [सं० सोमराजिन्] १. बकुची। २. दो यगण का एक वृत्त।

**सोमवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रवंश।

**सोमवंशीय**—वि० [सं०] १. चंद्रवंश में उत्पन्न। २. चंद्रवंश-संबंधी।

**सोमवती अमावस्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्यतिथि मानी जाती है।

**सोमवल्लरी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ब्राह्मी। २. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। चामर। तूण।

**सोमवल्ली**—संज्ञा स्त्री० दे० "सोम" १.।

**सोमवार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वार जो सोम अर्थात् चंद्रमा का माना जाता और रविवार के बाद पड़ता है। चंद्रवार।

**सोमवारी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।
वि० सोमवार-संबंधी।

**सोमसुत**—संज्ञा पुं० [सं०] बुध।

**सोमावती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] चंद्रमा की माता।

**सोमास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक अस्त्र जो चंद्रमा का अस्त्र माना जाता है।

**सोमेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दे० "सोमनाथ"। २. संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम।

**सोइ***—सर्व० [ हिं० सो + ही, ई ] वही।
सर्व० दे० "सो"।

**सोया**—वि० निद्रित।
संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।

**सोर***—संज्ञा पुं० [ फ़ा० शोर ] १. शोर। हल्ला। कोलाहल। २. प्रसिद्धि। नाम।
संज्ञा स्त्री० [ सं० शटा ] जड़। मूल।

**सोरठ**—संज्ञा पुं० [ सं० सौराष्ट्र ] १. गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी, सूरत।
संज्ञा पुं० एक ओड़व राग।

**सोरठा**—संज्ञा पुं० [ सं० सौराष्ट्र ] अड़तालीस मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं।

**सोरनी**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सँवारना + ई ( प्रत्य० ) ] १. झाड़। बुहारी। कूचा। २. मृतक का त्रिरात्रि नामक संस्कार।

**सोरह***—वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।

**सोरही**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सोलह ] १. जूआ खेलने के लिए सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. वह जूआ जो सोलह कौड़ियों से खेलते हैं।

**सोरा***†—संज्ञा पुं० दे० "शोरा"।

**सोलंकी**—संज्ञा पुं० [ देश० ] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनों तक था।

**सोलह**—वि० [ सं० षोडश ] जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोडश।
संज्ञा पुं० दस और छः की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।
**मुहा०**—सोलह परियों का नाच=दे० 'सोरही' २। सोलहो आने=संपूर्ण। पूरा पूरा।

**सोला**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक प्रकार का ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलके से अँगरेजी ढंग की टोपी बनती है।

**सोवज**—संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

**सोवन***†—संज्ञा पुं० [ हिं० सोवना ] सोने की क्रिया या भाव।

**सोवना***†—क्रि० अ० दे० "सोना"।

**सोवरी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।

**सोवा**—संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।

**सोवाना**—क्रि० स० दे० "सुलाना"।

**सोवियट, सोवियत**—संज्ञा पुं० [ रूसी ] १. रूस में सैनिकों या मजदूरों के प्रतिनिधियों की सभा। २. आधुनिक रूसी प्रजातंत्र जो इन सभाओं के प्रतिनिधियों में चलता है।

**सोवैया***†—संज्ञा पुं० [ हिं० सोवना ] सोनेवाला।

**सोषण***—संज्ञा पुं० दे० "शोषण"।

**सोषना***—क्रि० अ० दे० "सोखना"।

**सोषु, सोषू***—वि० [ हिं० सोखना ] सोखनेवाला।

**सोसाइटी, सोसायटी**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] १. समाज। २. सभा। समिति।

**सोस्मि***—दे० "सोऽहम्"।

**सोहँ***—क्रि० वि० दे० "सौंह"।

**सोहं, सोहंग**—दे० "सोऽहम्"।

**सोहगी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सोहाग ] १. तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिए कपड़े, गहने आदि जाते हैं। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ।

**सोहन**—वि० [ सं० शोभन ] [ स्त्री० सोहनी ] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना।
संज्ञा पुं० सुंदर पुरुष। नायक।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।

**सोहन पपड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सोहन + पपड़ी ] एक प्रकार की मिठाई।

**सोहन हलवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सोहन + अ० हल्वा ] एक प्रकार की स्वादिष्ठ मिठाई।

**सोहना**—क्रि० अ० [ सं० शोभन ] १. शोभित होना। सजना। २. अच्छा लगना।
†वि० [ स्त्री० सोहनी ] सुंदर। मनोहर।

**सोहनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शोधनी ] झाड़ू।
वि० स्त्री० [ हिं० सोहना ] सुंदर। सुहावनी।

**सोहबत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. संग-साथ। संगत। २. संभोग। स्त्री-प्रसंग।

**सोहमस्मि**—दे० "सोऽहम्"।

**सोहर**—संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।
संज्ञा स्त्री० [ सं० सूतका ] सूतिका-गृह। सौरी।

**सोहराना**—क्रि० स० दे० "सहलाना"।

**सोहला**—संज्ञा पुं० [ हिं० सोहना ] १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।

**सोहावन***†—वि० दे० "सुहावना"।

**सोहाग**†—संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।

**सोहागिन**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

**सोहागिल**—संज्ञा स्त्री० दे० "सुहा-

गिन"।

**सोहाता**—वि० [ हिं० सोहना ] [ स्त्री० सोहाती ] सुहावना। शोभित। सुंदर। अच्छा।

**सोहाना**—क्रि० अ० [ सं० शोभन ] १. शोभित होना। सजना। २. रुचिकर होना। अच्छा लगना। रुचना।

**सोहाया**—वि० [ हिं० सोहाना ] [ स्त्री० सोहाई ] शोभित। शोभायमान। सुंदर।

**सोहरद**†*—संज्ञा पुं० दे० "सौहार्द"।

**सोहारी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० सोहाना] पूरी।

**सोहावना**—वि० दे० "सुहावना"। क्रि० अ० दे० "सोहाना"।

**सोहासित***†—वि० [ हिं० सोहना ] १. प्रिय लगनेवाला। रुचिकर। २. ठकुर-सोहाती।

**सोहिं**†—क्रि० वि० दे० "सौंह"।

**सोहिनी**—वि० स्त्री० [ हिं० सोहना] सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

**सोहिल**—संज्ञा पुं० [अ० सुहैल ] अगस्त्य तारा।

**सोहिला**—संज्ञा पुं० दे० "सोहला"।

**सोहीं***†—क्रि० वि० [ सं० सम्मुख ] सामने।

**सोहैं***—क्रि० वि० [ सं० सम्मुख ] सामने। आगे।

**सौं***—संज्ञा स्त्री० दे० "सौंह"।
अव्य०,प्रत्य० दे० "सों" या "सा"।

**सौंकारा, सौंकेरा**—संज्ञा पुं० [ सं० सकाल ] सवेरा। तड़का।

**सौंकेरे**—क्रि० वि० [ हिं० सौंकारा ] १. सवेरे। तड़के। २. जल्दी।

**सौंघा**—वि० [ हिं० महँगा का उलटा ] १. अच्छा। उत्तम। २. उचित। ठीक।

**सौंघाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सौंघा ] अधिकता।

**सौंचना**†—क्रि० स० [ सं० शौच ] १. मल त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना। २. पानी छूना। आबदस्त लेना।

**सौंचर**—संज्ञा पुं० दे० "सोंचर नमक"।

**सौंचाना**†—क्रि० स० [हिं० सौंचना] १. शौच कराना। मल त्याग कराना। हगाना। २. मल त्याग के अनंतर किसी की गुदा को पानी से साफ करना। पानी छुलाना। आबदस्त कराना।

**सौंज***—संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।

**सौंजाई***—संज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।

**सौंड़, सौंड़ा***—संज्ञा पुं० [ हिं० सोना+ओढ़ना ] ओढ़ने का भारी कपड़ा।

**सौंतुख***—संज्ञा पुं० [ सं० सम्मुख ] सामने।
क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।

**सौंदन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सौंदना ] धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।

**सौंदना**—क्रि० स० [ सं० संधम् ] आपस में मिलाना। सानना। ओत-प्रोत करना।

**सौंदर्ज**—संज्ञा पुं० दे० "सौंदर्य"।

**सौंदर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुंदर होने का भाव या धर्म। सुंदरता। खूबसूरती।

**सौंध***—संज्ञा पुं० दे० "सौध"।
संज्ञा स्त्री० [ सं० सुगंध ] सुगंध। खुशबू।

**सौंधना**—क्रि० स० [सं० सुगंधि ] सुगंधित करना। सुवासित करना। वासना।

**सौंधा**—वि० [ हिं० सौंधा ] १. दे० "सोंधा"। २. रुचिकर। अच्छा।

**सौंनमक्खी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सोनामक्खी"।

**सौंपना**—क्रि० स० [ सं० समर्पण ] १. सपुर्द करना। हवाले करना। २. सहेजना।

**सौंफ**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शतपुष्पा ] एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।

**सौंफिया, सौंफी**—वि० [ हिं० सौंफ+इया (प्रत्य०) ] १. सौंफ का बना हुआ। २. जिसमें सौंफ का योग हो।
संज्ञा स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।

**सौंभरि**—संज्ञा पुं० दे० "सौभरि"।

**सौंर**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौरी"।

**सौंरई**†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० साँवर ] साँवलापन।

**सौंरना***—क्रि० स० [ सं० स्मरण ] स्मरण करना।
क्रि० अ० दे० "सँवारना"।

**सौंह***†—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सौगंद ] शपथ। कसम।
संज्ञा पुं०, क्रि० वि० [ सं० सम्मुख ] सामने।

**सौंहन**—संज्ञा पुं० दे० "सोहन"।

**सौंही**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] एक प्रकार का हथियार।

**सौ**—वि० [ सं० शत ] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। शत।
संज्ञा पुं० नब्बे और दस की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

**मुहा०**—सौ बात की एक बात= सारांश। तात्पर्य। निचोड़।

वि० दे० "सा"।

**सौक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० सौत ] सौत। सपत्नी।

वि० [ हिं० सौ+एक ] एक सौ।

**सौकन**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

**सौकर्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुकरता। सुसाध्यता। २. सुविधा। सुभीता। ३. सूकरता। सूअरपन।

**सौकुमार्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुकुमारता। कोमलता। नाजुकपन। २. यौवन। जवानी। ३. काव्य का एक गुण जिसमें ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।

**सौख*†**—संज्ञा पुं० दे० "शौक"।

**सौख्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुख का भाव। सुखता। सुखत्व। २. सुख। आराम।

**सौगंद**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सौगंध ] शपथ। कसम।

**सौगंध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सुगंधित तेल। इत्र आदि का व्यापार करनेवाला। गंधी। २. सुगंध। खुशबू।

संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।

**सौगत, सौगतिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २. अनीश्वरवादी। नास्तिक।

**सौगरिया**—संज्ञा पुं० [ ? ] क्षत्रियों की एक जाति।

**सौगात**—संज्ञा स्त्री० [ तु० ] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट-मित्रों को देने के लिए लाई जाय। भेंट। उपहार। तोहफा।

**सौगाती**—वि० [ हिं० सौगात ] १. सौगात संबंधी। २. सौगात में देने योग्य। बढ़िया।

**सौघा†**—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। कम दाम का। महँगा का उलटा।

**सौच***—संज्ञा पुं० दे० "शौच"।

**सौज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सज्जा ] उपकरण। सामग्री। साज-सामान।

**सौजना**—क्रि० अ० दे० "सजना"।

**सौजन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुजन का भाव। सुजनता। भलमनसत।

**सौजा**—संज्ञा पुं० [ हिं० सावज ] वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।

**सौत**—संज्ञा स्त्री० [ सं० सपत्नी ] किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सपत्नी। सवत।

**मुहा०**—सौतिया डाह=१. दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या। २. द्वेष। जलन।

**सौतन, सौतिन**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।

**सौतुक, सौतुख***—संज्ञा पुं० दे० "सौतुख"।

**सौतेला**—वि० [ हिं० सौत ] [ स्त्री० सौतेली ] १. सौत से उत्पन्न। सौत का। २. जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो।

**सौत्रामणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] इंद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

**सौदा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. क्रय-विक्रय की वस्तु। चीज। माल। २. लेन-देन। व्यवहार। ३. क्रय-विक्रय। व्यापार।

**यौ०**—सौदा सुलुफ=खरीदने की चीजवस्तु। सौदा सूत=व्यवहार।

संज्ञा स्त्री० [ फा० ] पागलपन। उन्माद।

**सौदाई**—संज्ञा पुं० [ अ० सौदा ] पागल। बावला।

**सौदागर**—संज्ञा पुं० [ फा० ] व्यापारी। व्यवसायी। तिजारत करनेवाला।

**सौदागरी**—संज्ञा पुं० [ फा० ] व्यापार। व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।

**सौदामनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बिजली। विद्युत।

**सौदामिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौदामनी"।

**सौध**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भवन। प्रासाद। २. चाँदी। रजत। ३. दूधिया पत्थर।

**सौधना**—क्रि० स० दे० "सौंधना"।

**सौन***—क्रि० वि० [ सं० सम्मुख ] सामने।

**सौनक**—संज्ञा पुं० दे० "शौनक"।

**सौनन†**—संज्ञा स्त्री० दे० "सौंदन"।

**सौना***—संज्ञा पुं० दे० "सोना"।

**सौपना***—क्रि० स० दे० "सौंपना"।

**सौबल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।

**सौभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राजा हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। २. एक प्राचीन जनपद। ३. उक्त जनपद के राजा।

**सौभग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सौभाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। आनंद। ३. ऐश्वर्य। धन-दौलत। सुंदरता। सौंदर्य।

**सौभद्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. वह युद्ध जो सुभद्रा के कारण हुआ था।

वि० सुभद्रा-संबंधी।

**सौभरि**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मांधाता की पचास कन्याओं से विवाह करके ५००० पुत्र उत्पन्न किए थे।

**सौभागिनी**-संज्ञा स्त्री० [सं०सौभाग्य] सधवा स्त्री। सोहागिन।

**सौभाग्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. अच्छा भाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। आनंद। ३. कल्याण। कुशल क्षेम। ४. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ५. ऐश्वर्य। वैभव। ६.सुंदरता। सौंदर्य।

**सौभाग्यवती**—वि०स्त्री०[सं०] (स्त्री) १. जिसका सौभाग्य या सुहाग (पति) बना हो। सधवा। सुहागिन। २.एक आदर सूचक उपाधि जो सधवा स्त्रियों के नाम के पूर्व लगता है।

**सौभाग्यवान्**—वि० [सं० सौभाग्यवत्] [स्त्री० सौभाग्यवती] १. अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। २. सुखी और संपन्न।

**सौभिक्ष्य**—संज्ञा पुं०[सं०] 'सुभिक्ष' का भाव-वाचक रूप।
वि० दे० 'सुभिक्ष'।

**सौम***—वि० दे० "सौम्य"।

**सौमन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र।

**सौमनस**—वि० [सं०] १. फूलों का। २. मनोहर। रुचिकर। प्रिय।
संज्ञा पुं० १. प्रफुल्लता। आनंद। २. पश्चिम दिशा का हाथी। (पुराण) ३. अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र।

**सौमनस्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसन्नता। २. प्रेम। प्रीति। ३. संतोष। ४. अनुकूलता।

**सौमित्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. मित्रता। दोस्ती।

**सौमित्रा***—संज्ञा स्त्री० दे० "सुमित्रा"।

**सौम्य**—वि० [सं०] [स्त्री० सौम्या] १. सोमलता-संबंधी। २. चंद्रमा-संबंधी। ३. शीतल और स्निग्ध। ४. सुशील। शांत। ५. मांगलिक। शुभ। ६. मनोहर। सुंदर।
संज्ञा पुं० १. सोम यज्ञ २. चंद्रमा के पुत्र, बुध। ३. ब्राह्मण। ४. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ५. साठ संवत्सरों में से एक। ६. सज्जनता। ७. एक दिव्यास्त्र।

**सौम्यकृच्छ्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत।

**सौम्यता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सौम्य होने का भाव या धर्म। २. सुशीलता। शांतता। ३ सुंदरता। सौंदर्य।

**सौम्यदर्शन**—वि० [सं०] सुंदर। प्रियदर्शन।

**सौम्यशिखा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुक्तक विषमवृत्त के दो भेदों में से एक।

**सौम्या**—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्य्या छंद का एक भेद।

**सौर**—[सं०] १. सूर्य्य-संबंधी। सूर्य्य का। २. सूर्य्य से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. शनि। २. सूर्य्य का उपासक। ३. सूर्य्यवंशी।
*संज्ञा स्त्री० [हिं० सौड़] १. चादर। ओढ़ना। २.दे० 'सौरी' १।

**सौरज***—संज्ञा पुं० दे० "शौर्य्य"।

**सौर दिवस**—संज्ञा पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

**सौरभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुगंध। खुशबू। महक। २. केसर। ३. आम आम्र।

**सौरभक**—संज्ञा पुं० [सं०] एक वर्ण-वृत्त।

**सौरभित**—वि० [सं० सौरभ] सौरभ-युक्त। सुगंधित। खुशबूदार।

**सौर मास**—संज्ञा पुं० [सं०] एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।

**सौर वर्ष**—संज्ञा पुं० [सं०] एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का समय।

**सौरसेन**—संज्ञा पुं० दे०"शौरसेन"।

**सौरस्य**—संज्ञा पुं० [सं०] 'सुरस' का भाव। सुरसता।

**सौराष्ट्र**—संज्ञा पुं० [सं०] १ गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। २. उक्त प्रदेश का निवासी। ३. एक वर्णवृत्त।

**सौराष्ट्र-मृत्तिका**-संज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी चंदन।

**सौराष्ट्रिक**—वि० [सं०] सौराष्ट्र देश-संबंधी।

**सौरास्त्र**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

**सौरि**—संज्ञा पुं० दे० "शौरि"।

**सौरी**—संज्ञा स्त्री० [सं० सूतिका] वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने, सूतिकागार।
संज्ञा स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली।

**सौर्य**—वि० [सं०] सूर्य्य-संबंधी। सूर्य्य का।

**सौवर्चल**—संज्ञा पुं० [सं०] सोंचर नमक।

**सौवर्ण**—वि० [सं०] सोने का।
संज्ञा पुं० स्वर्ण। सोना।

**सौवीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सिंधु नद के आस-पास का प्राचीन प्रदेश। २. उक्त प्रदेश का निवासी या राजा।

**सौवीरांजन**—संज्ञा पुं० [सं०] सुरमा।

**सौष्ठव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुडौलपन। उपयुक्तता। २. सुंदरता।

सौंदर्य। २. नाटक का एक अंग।

**सौसन**—संज्ञा पुं० दे० "सोसन"।

**सौसनी**—वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोसनी"।

**सौहँ**—संज्ञा स्त्री० [सं० शपथ]। कसम।

क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सामने। आगे।

**सौहार्द, सौहार्द्य**—संज्ञा पुं० [सं०] सुहृद् का भाव। मित्रता। मैत्री।

**सौहीं**—क्रि० वि० [हिं० सौंह] सामने। आगे।

**सौहृद**—संज्ञा पुं० [सं०] [भाव० सौहृद्य] १. मित्रता। दोस्ती। २. मित्र। दोस्त।

**स्कंद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. निकलना। बहना। गिरना। २. विनाश। ध्वंस। ३. कार्त्तिकेय जो शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४. शिव। ५. शरीर। देह। ६. बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।

**स्कंदगुप्त**—संज्ञा पुं० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध सम्राट्। (ई० ४५० से ४६७ तक)

**स्कंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कोठा साफ होना। रेचन। २. निकलना। बहना। गिरना।

**स्कंदपुराण**—संज्ञा पुं० [सं०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।

**स्कंदित**—वि० [सं०] निकला हुआ। गिरा हुआ। स्खलित। पतित।

**स्कंध**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कंधा। मोढ़ा। २. वृक्ष के तने का वह भाग जहाँ से डालियाँ निकलती हैं। कांड। दंड। ३. डाल। शाखा। ४. समूह। गरोह। झुंड। ५. सेना का अंग। व्यूह। ६. ग्रंथ का विभाग जिसमें कोई पूरा प्रसंग हो। खंड। ७. शरीर। देह। ८. मुनि। आचार्य। ९. युद्ध। संग्राम। १०. आर्या छंद का एक भेद। ११. बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पाँचों पदार्थ। १२. दर्शन-शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

**स्कंधावार**—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजा का डेरा या शिविर। कैंप। २. छावनी। सेनानिवास। ३. सेना। फौज।

**स्कंभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। स्तंभ। २. परमेश्वर। ईश्वर।

**स्कालर**—संज्ञा पुं० दे० "बालचर"।

**स्कूल**—संज्ञा पुं० [अं०] [वि० स्कूली] १. विद्यालय। २. संप्रदाय या शाखा।

**स्खलन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. चीरना। फाड़ना। २. हत्या। ३. पतन। गिरना।

**स्खलित**—वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। च्युत। २. फिसला हुआ। लड़खड़ाया हुआ। विचलित। ३. चूका हुआ।

**स्टांप**—संज्ञा पुं० [अं०] १. वह सरकारी कागज जिस पर किसी तरह की लिखा-पढ़ी होती है। २. डाक या अदालत का टिकट। ३. मोहर। छाप।

**स्टाक**—संज्ञा पुं० [अं०] १. बिक्री या बेचने का माल। २. गोदाम।

**स्टीम**—संज्ञा पुं० [अं०] भाप। वाष्प।

**स्टीमर**—संज्ञा पुं० [अं०] भाप से चलनेवाला जहाज।

**स्टूल**—संज्ञा पुं० [अं०] तिपाई।

**स्टेज**—संज्ञा पुं० [अं०] १. रंगमंच। २. रंग-भूमि। ३. मंच।

**स्टेट**—संज्ञा पुं० [अं०] १. राज्य। २. देशी राज्य।

संज्ञा पुं० [अं० एस्टेट] १. बड़ी जमींदारी। २. स्थावर और जंगम संपत्ति।

**स्टेशन**—संज्ञा पुं० [अं०] १. रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियत स्थान।

यौ०—स्टेशन मास्टर=किसी स्टेशन का प्रधान कर्मचारी।

**स्तंभ**—संज्ञा पुं० [सं०] १. खंभा। थंभा। थूनी। २. पेड़ का तना। तरुस्कंध। ३. साहित्य में एक प्रकार का सात्त्विक भाव। किसी कारण से संपूर्ण अंगों की गति का अवरोध। जड़ता। अचलता। ४. प्रतिबंध। रुकावट। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी शक्ति को रोकते हैं।

**स्तंभक**—वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २. कब्जा करनेवाला। ३. वीर्य रोकनेवाला।

**स्तंभन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुकावट। अवरोध। निवारण। २. वीर्य आदि के स्खलन में बाधा या विलंब। ३. वीर्यपात रोकने की दवा। ४. जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। ६. कब्ज। मलावरोध। ७. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

**स्तंभित**—वि० [सं०] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। निश्चल। निःस्तब्ध। सुन्न। २. रुका या रोका हुआ। अवरुद्ध।

**स्तन**—संज्ञा पुं० [सं०] स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है।

मुहा०—स्तन पीना=स्तन में मुँह लगाकर उसका दूध पीना।

**स्तनन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बादल का गरजना। २. ध्वनि या शब्द करना। ३. आर्त्तनाद।

**स्तनपान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्तन में के दूध का पीना। स्तन्यपान।

**स्तनपायी**—वि० [ सं० स्तनपायिन् ] जो माता के स्तन से दूध पीता हो।

**स्तनहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

**स्तनित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बादल की गरज। २. बिजली की कड़क। ३. ताली बजाने का शब्द। वि० गरजता या शब्द करता हुआ।

**स्तन्य**—वि० [ सं० ] स्तन-संबंधी। संज्ञा पुं० दे० "दूध"।

**स्तब्ध**—वि० [ सं० ] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। जड़ीभूत। स्तंभित। निश्चेष्ट। २. दृढ़। स्थिर। ३. मंद। धीमा।

**स्तब्धता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. स्तब्ध का भाव। जड़ता। २. स्थिरता। दृढ़ता।

**स्तर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. तह। परत। तबक। थर। २. सेज। शय्या। तल्प। ३. भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है।

**स्तरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फैलाने या बिखेरने की क्रिया।

**स्तव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप-कथन या गुण गान। स्तुति। स्तोत्र।

**स्तवक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। २. समूह। ढेर। ३. पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छेद। ४. वह जो किसी की स्तुति या स्तव करता हो।

**स्तवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्तुति करने की क्रिया। गुण-कीर्त्तन। स्तव। स्तुति।

**स्तिमित**—वि० [ सं० ] १. ठहरा हुआ। निश्चल। २. भीगा हुआ। गीला।

**स्तीर्ण**—वि० [ सं० ] फैलाया, बिखेरा या छितराया हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।

**स्तुत**—वि० [ सं० ] जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। प्रशंसित।

**स्तुति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. गुणकीर्त्तन। स्तव। प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई। २. दुर्गा।

**स्तुतिपाठक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्तुतिपाठ करनेवाला। २. चारण। भाट। मागध। सूत।

**स्तुतिवाचक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।

**स्तुत्य**—वि० [ सं० ] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

**स्तूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ऊँचा ढूह या टीला। २. वह ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्न सुरक्षित हों।

**स्तेन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चोर। २. चोरी।

**स्तेय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चोरी। चौर्य्य।

**स्तैन्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चोर का काम। चोरी।

**स्तोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बूँद। बिंदु। २. पपीहा। चातक।

**स्तोता**—वि० [ सं० स्तोतृ ] स्तुति करनेवाला।

**स्तोत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप-कथन या गुणकीर्त्तन। स्तव। स्तुति।

**स्तोम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्तुति। प्रार्थना। २. यज्ञ। ३. एक विशेष प्रकार का यज्ञ। ४. समूह। राशि।

**स्त्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. नारी। औरत। २. पत्नी। जोरू। ३. मादा। ४. एक वृत्ति जिसके प्रति चरण में दो गुरु होते हैं। संज्ञा स्त्री० दे० "इस्तिरी"।

**स्त्रीत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्त्री का भाव या धर्म। स्त्रीपन। जनानपन। २. व्याकरण में वह प्रत्यय जो स्त्रीलिंग का सूचक होता है।

**स्त्रीधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो।

**स्त्रीधर्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन।

**स्त्रीप्रसंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मैथुन। संभोग।

**स्त्रीलिंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भग। योनि। २. हिंदी व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो स्त्री-वाचक होता है। जैसे—घोड़ा शब्द पुंलिंग और घोड़ी स्त्रीलिंग है।

**स्त्रीव्रत**—संज्ञा पुं० [सं०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। पत्नीव्रत।

**स्त्रीसमागम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मैथुन। प्रसंग।

**स्त्रैण**—वि० [ सं० ] १. स्त्री-संबंधी। स्त्रियों का। २. स्त्रियों के कहने के अनुसार चलनेवाला। जोरू का गुलाम। मेहरा।

**स्थ**—प्रत्य० [ सं० ] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर नीचे ...

अर्थ देता है- (क) स्थित। कायम। (ख) उपस्थित। वर्तमान। (ग) रहनेवाला। निवासी। (घ) लीन। रत।

**स्थकित**—वि० [ हिं० थकित ] थका हुआ।

**स्थगित**—वि० [ सं० ] १. ढका हुआ। आच्छादित। २ रोका हुआ। अवरुद्ध। ३. जो कुछ समय के लिए रोक या टाल दिया गया हो। मुलतवी।

**स्थल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भूमि। भूभाग। जमीन। २. जलशून्य भूभाग। खुश्की। ३. स्थान। जगह। ४. अवसर। मौका। ५. निर्जल और मरु भूमि। भाग।

**स्थलकमल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कमल की आकृति का एक पुष्प जो स्थल में होता है।

**स्थलचर, स्थलचारी**—वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

**स्थलज**—वि० [ सं० ] स्थल या भूमि में उत्पन्न। स्थल में उत्पन्न होनेवाला।

**स्थलपद्म**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्थल-कमल।

**स्थली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. खुश्क जमीन। भूमि। २. स्थान। जगह।

**स्थलीय**—वि० [ सं० ] १. स्थल या भूमि संबंधी। स्थल का। २. किसी स्थान का। स्थानीय।

**स्थविर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ वृद्ध। बुड्ढा। २. ब्रह्मा। ३. वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।

**स्थाई**—वि० दे० "स्थायी"।

**स्थाणु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. खंभ। थूनो स्तंभ। २. पेड़ का वह धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों। ठूँठ। ३. शिव।

वि० स्थिर। अचल।

**स्थान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ ठहराव। टिकाव। स्थिति। २. भूमिभाग। जमीन। मैदान। ३. जगह। ठाम। स्थल। ४. डेरा। घर। आवास। ५. काम करने की जगह। पद। ओहदा। ६. मंदिर। देवालय। ७. अवसर। मौका।

**स्थानच्युत**—वि० [ सं० ] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।

**स्थानभ्रष्ट**—वि० दे० "स्थानच्युत"।

**स्थानांतर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दूसरा स्थान। प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान।

**स्थानांतरण** संज्ञा पुं० [ सं० ] १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की क्रिया। २. बदली।

**स्थानांतरित**—वि० [ सं० ] जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो।

**स्थानापन्न** वि० [ सं० ] दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। कायम-मुकाम। एवजी।

**स्थानिक**—वि० [ सं० ] उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।

**स्थानीय**—वि० [ सं० ] उस स्थान का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। स्थानिक।

**स्थापक** - वि० [ सं० ] १. रखने या कायम करनेवाला। स्थापनकर्त्ता। २. मूर्त्ति बनानेवाला। ३. सूत्रधार का सहकारी। ( नाटक ) ४. कोई संस्था खोलने या खड़ा करनेवाला। संस्थापक।

**स्थापत्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. भवन-निर्माण। राजगीरी। मेमारी। २. वह विद्या जिसमें भवन-निर्माण-संबंधी सिद्धान्तों आदि का विवेचन होता है।

**स्थापत्य वेद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तु-शिल्प या भवन-निर्माण का विषय वर्णित है।

**स्थापन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० स्थापनीय ] १. खड़ा करना। उठाना। २. रखना। जमाना। ३. नया काम जारी करना। ४. (प्रमाण-पूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन। ५. निरूपण।

**स्थापना**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठाना। थापना। २. जमा कर रखना। ३. सिद्ध करना। साबित करना। प्रतिपादन करना। ४. युक्ति, तर्क अथवा प्रमाणपूर्वक निश्चित मत।

**स्थापित**—वि० [ सं० ] १. जिसकी स्थापना की गई हो। प्रतिष्ठित। २. व्यवस्थित। निर्दिष्ट। ३. निश्चित।

**स्थायित्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्थायी होने का भाव। २. स्थिरता। दृढ़ता। मजबूती।

**स्थायी**—वि० [ सं० स्थायिन् ] १. ठहरनेवाला। जो स्थिर रहे। २. बहुत दिन चलनेवाला। टिकाऊ।

**स्थायी भाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जिसकी सदा रस में स्थिति रहती है। ये विभाव आदि में अभिव्यक्त होकर रसत्व को प्राप्त होते हैं। ये संख्या में नौ हैं; यथा—रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निंदा, विस्मय और निर्वेद।

**स्थायी समिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

वह समिति जो किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्यों का संचालन करती है।

**स्थाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हंडी। हँड़िया। २. मिट्टी की रिकाबी।

**स्थालीपुलाक न्याय**—संज्ञा पुं०[सं०] एक बात का देखकर उस संबंध की और सब बातों का मालूम होना।

**स्थावर**—वि० [ सं० ] [ भाव०संज्ञा स्थावरता ] १. अचल। स्थिर। २. जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया न जा सके। जंगम का उलटा। अचल।

संज्ञा पुं० १. पहाड़। पर्वत। २. अचल संपत्ति।

**स्थावर विष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्थावर पदार्थों में होनेवाला जहर।

**स्थित**—वि० [ सं० ] १. अपने स्थान पर ठहरा हुआ। अवलंबित। २. बैठा हुआ। आसीन। ३. अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। ४. विद्यमान। मौजूद। ५. रहनेवाला। निवासी। अवस्थित। ६. खड़ा हुआ। ७. ऊर्ध्व।

**स्थितता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ठहराव। स्थिति।

**स्थितप्रज्ञ**—वि० [ सं० ] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. समस्त मनोविकारों से रहित। आत्म-संतोषी।

**स्थिति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. रहना। ठहरना। टिकाव। ठहराव। २. निवास। अवस्थान। ३. अवस्था। दशा। ४. पद। दर्जा। ५. एक स्थान या अवस्था में रहना। अवस्थान। ६. निरंतर बना रहना। अस्तित्व। ७. पालन। ८. स्थिरता।

**स्थितिस्थापक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह गुण जिससे कोई वस्तु नवीन स्थिति में आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय।

वि० १. किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था में प्राप्त करानेवाला। २. लचीला।

**स्थितिस्थापकता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] लचीलापन।

**स्थिर**—वि० [ सं० ] १. निश्चल। ठहरा हुआ। २. निश्चित। ३. शांत। ४. दृढ़। अटल। ५ स्थायी। सदा बना रहनेवाला। ६. नियत। मुकर्रर।

संज्ञा पुं० १. शिव। २. ज्योतिष में एक योग। ३. देवता। ४. पहाड़। पर्वत। ५. एक प्रकार का छंद।

**स्थिरचित्त**—वि० [ सं० ] जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। दृढ़चित्त।

**स्थिरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्थिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। २. दृढ़ता। मजबूती। ३. स्थायित्व। ४. धैर्य।

**स्थिरबुद्धि**—वि० [ सं० ] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। दृढ़चित्त।

**स्थिरीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्थिर या दृढ़ करना।

**स्थूल**—वि० [ सं० ] १. मोटा। पीन। २. सहज में दिखाई देने या समझ में आने योग्य। सूक्ष्म का उलटा।

संज्ञा पुं० वह पदार्थ जिसका इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। गोचर पिंड।

**स्थूलता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्थूल होने का भाव। २. मोटापन। मोटाई। ३. भारीपन।

**स्थैर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्थिरता। २. दृढ़ता।

**स्नात**—वि० [ सं० ] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ।

**स्नातक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह जिसने ब्रह्मचर्य्यव्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो। २. वह जो किसी गुरुकुल, विद्यालय आदि की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ हो।

**स्नान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. शरीर को स्वच्छ करने के लिए उसे जल से धोना। अवगाहन। नहाना। २. शरीर के अंगों को धूप या वायु के सामने इस प्रकार करना कि उनके ऊपर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे—वायु-स्नान।

**स्नानागार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह कमरा जिसमें स्नान किया जाता है।

**स्नायविक**—वि० [ सं० ] स्नायु-संबंधी।

**स्नायु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शरीर के अंदर की वह नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

**स्निग्ध**—वि० [ सं० ] जिसमें स्नेह या तेल हो।

**स्निग्धता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्निग्ध या चिकना होने का भाव। चिकनापन। २. प्रिय होने का भाव।

**स्नेह**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. प्रेम। प्यार। मुहब्बत। २. चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज; विशेषतः तेल। ३. कोमलता।

**स्नेहपात्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] प्रेम-पात्र। प्यारा।

**स्नेहपान**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैद्यक की एक क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं।

**स्नेही**—संज्ञा पुं० [ सं० स्नेहिन् ] वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी।

मित्र ।

**स्पंद, स्पंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्पंदित] १. धीरे धीरे हिलना । काँपना । २. (अंगों आदि का) फड़कना ।

**स्पंदित**—वि० [सं०] हिलता, काँपता या फड़कता हुआ ।

**स्पर्द्धा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] [वि० स्पर्द्धिन्] १. संघर्ष । रगड़ । २. किसी के मुकाबिले में आगे बढ़ने की इच्छा । होड़ । ३. साहस । हौसला । ४. साम्य । बराबरी ।

**स्पर्द्धी**—वि० [सं० स्पर्द्धिन्] स्पर्द्धा करनेवाला ।

**स्पर्धा**—संज्ञा स्त्री० दे० "स्पर्द्धा" ।

**स्पर्श**—संज्ञा पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का आपस में इतना पास पहुँचना कि उनके तलों का कुछ अंश आपस में सट जाय । छूना । २. त्वगिंद्रिय का वह गुण जिसके कारण ऊपर पड़नेवाले दबाव का ज्ञान होता है । ३. त्वगिंद्रिय का विषय । ४. (व्याकरण में) "क" से लेकर "म" तक के २५ व्यंजन । ५. ग्रहण या उपराग में सूर्य्य अथवा चंद्रमा पर छाया पड़ने का आरंभ ।

**स्पर्शजन्य**—वि० [सं०] १. जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो । २. संक्रामक । छुतहा ।

**स्पर्शनेंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० "स्पर्शेंद्रिय" ।

**स्पर्शमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] पारस पत्थर ।

**स्पर्शास्पर्श**—संज्ञा पुं० [सं० स्पर्श + अस्पर्श] छूने या न छूने का भाव या विचार ।

**स्पर्शी**—वि० [सं० स्पर्शिन्] [स्त्री० स्पर्शिनी] छूनेवाला ।

**स्पर्शेंद्रिय**—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह इंद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है । त्वगिंद्रिय । त्वचा ।

**स्पष्ट**—वि० [सं०] साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला ।

संज्ञा पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं ।

**स्पष्ट कथन**—संज्ञा पुं० [सं०] वह कथन जिसमें किसी की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हुई होती है ।

**स्पष्टतया, स्पष्टतः**–क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट रूप से । साफ साफ ।

**स्पष्टता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्पष्ट होने का भाव । सफाई ।

**स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी**—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कहने में किसी का मुलाहजा न करता हो ।

**स्पष्टीकरण**—संज्ञा पुं० [सं०] स्पष्ट करने की क्रिया । किसी बात को स्पष्ट या साफ करना ।

**स्पीकर**—संज्ञा पुं० [अं०] १. वक्ता । व्याख्यानदाता । २. असेम्बली या काउन्सिल आदि का सभापति ।

**स्पीच**—संज्ञा स्त्री० [अं०] व्याख्यान । भाषण ।

**स्पीड**—संज्ञा स्त्री० [अं०] गति । चाल ।

**स्पृक्का**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. असबरग । २. लजालू । लाजवंती । ३. ब्राह्मी बूटी ।

**स्पृश**—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला ।

**स्पृश्य**—वि० [सं०] जो स्पर्श करने के योग्य हो । छूने लायक ।

**स्पृष्ट**—वि० [सं०] छुआ हुआ ।

**स्पृहणीय**—वि० [सं०] १. जिसके लिए अभिलाषा या कामना की जा सके । वांछनीय । २. गौरवशाली ।

**स्पृहा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] इच्छा । कामना ।

**स्पृही**—वि० [सं० स्पृहिन्] [वि० स्पृहा] इच्छा करनेवाला ।

**स्पेशल**—वि० [अं०] विशेष । खास ।

**स्प्रिंग**—संज्ञा स्त्री० [अं०] कमानी ।

**स्प्रिट**—संज्ञा स्त्री० [अं०] १. आत्मा । २. मुख्य सिद्धांत या अभिप्राय । ३. एक प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो जलाने और दवा के काम में आता है ।

**स्फटिक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर जो काँच के समान पारदर्शी होता है । २. सूर्य्यकांत मणि । ३. शीशा । काँच । ४. फिटकिरी ।

**स्फार**—वि० [सं०] १. प्रचुर । विपुल । बहुत । २. विकट ।

**स्फाल**—संज्ञा पुं० दे० "स्फूर्ति" ।

**स्फीत**—वि० [सं०] [भाव० स्फीति] १. बढ़ा हुआ । वर्द्धित । २. फूला हुआ । ३. समृद्ध ।

**स्फुट**—वि० [सं०] १. जो सामने दिखाई देता हो । प्रकाशित । व्यक्त । २. खिला हुआ । विकसित । ३. स्पष्ट । साफ । ४. फुटकर । अलग अलग ।

**स्फुटन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सामने आना । २. खिलना । फूलना । ३. फूटना ।

**स्फुटित**—वि० [सं०] १. विकसित । खिला हुआ । २. जो स्पष्ट किया गया हो । ३. हँसता हुआ ।

**स्फुरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. किसी

पदार्थ का थरा थरा हिलना। कंपन। २. अंग का फड़कना। ३. दे० "स्फूर्ति"।

**स्फुरति**—संज्ञा स्त्री० दे० "स्फूर्ति"।

**स्फुरित**—वि० [ सं० ] जिसमें स्फुरण हो।

**स्फुलिंग**—संज्ञा पुं० [सं० ] चिनगारी।

**स्फूर्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. धीरे धीरे हिलना। फड़कना। स्फुरण। २. कोई काम करने के लिए मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३. फुरती। तेजी।

**स्फोट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना। फूटना। २. शरीर में होनेवाला फोड़ा, फुंसी आदि।

**स्फोटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] फोड़ा। फुंसी।

वि० जोर से भभकने या फूटनेवाला।

**स्फोटन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अंदर से फाड़ना। २ विदारण। फाड़ना।

**स्मर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. कामदेव। मदन। २. स्मरण। स्मृति। याद।

**स्मरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी देखी-सुनी या अनुभव में आई हुई बात का फिर से मन में आना। याद आना। २ नौ प्रकार की भक्तियों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देव को बराबर याद किया करता है। ३. एक अलंकार जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर किसी विशिष्ट पदार्थ या बात का स्मरण हो आने का वर्णन होता है।

**स्मरणपत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह पत्र जो किसी को कोई बात स्मरण दिलाने के लिए लिखा जाय।

**स्मरणशक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके रख छोड़ती है। याद रखने की शक्ति। धारणा शक्ति।

**स्मरणीय**—वि० [ सं० ] स्मरण रखने योग्य। याद रखने लायक।

**स्मरना**—क्रि० स० [ सं० स्मरण ] स्मरण करना। याद करना।

**स्मरारि**—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

**स्मर्न**—संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।

**स्मशान**—संज्ञा पुं० दे० "श्मशान"।

**स्मारक**—वि० [ सं० ] स्मरण करानेवाला।

संज्ञा पुं० १. वह कृत्य या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिए प्रस्तुत की जाय। यादगार। २. वह चीज जो किसी को अपना स्मरण रखने के लिए द जाय। यादगार।

**स्मार्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वे कृत्य आदि जो स्मृतियों में लिखे हुए हैं। २. वह जो स्मृतियों में लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो। ३. स्मृतिशास्त्र का पंडित।

वि० स्मृति संबंधी। स्मृति का।

**स्मित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] धीमी हँसी।

वि० १. खिला हुआ। विकसित। प्रस्फुटित। २. मुस्कराता हुआ।

**स्मिति**—संज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।

**स्मृत**—वि० [ सं० ] याद किया हुआ। जो स्मरण में आया हो।

**स्मृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. स्मरण शक्ति के द्वारा संचित होनेवाला ज्ञान। स्मरण। याद। २. हिंदुओं के धर्मशास्त्र जिनमें धर्म, दर्शन, आचार-व्यवहार, शासननीति आदि के विवेचन हैं। ३. १८ की संख्या। ४. एक प्रकार का छंद।

**स्मृतिकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्मृति या धर्म-शास्त्र जाननेवाला।

**स्यंदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चूना। टपकना। रसना। २. गलना। ३. जाना। चलना। ४. रथ, विशेषतः युद्ध में काम आनेवाला रथ। ५. वायु। हवा।

**स्यमंतक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्णचंद्र पर लगा था।

**स्यात्**—अव्य० [ सं० ] कदाचित्। शायद।

**स्याद्वाद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] जैन दर्शन जिसमें किसी वस्तु के संबंध में कहा जाता है कि स्यात् यह भी है, स्यात् वह भी है आदि। अनेकांतवाद।

**स्यान**—वि० दे० "स्याना"।

**स्यानप**—संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन"।

**स्यानपन**—संज्ञा पुं० [हिं० स्याना + पन ( प्रत्य० ) ] १. चतुरता। बुद्धिमानी। २. चालाकी।

**स्याना**—वि० [ सं० सज्ञान ] [ स्त्री० स्यानी ] १.चतुर। बुद्धिमान्। होशियार। २. चालाक। धूर्त। ३.वयस्क। बालिग।

संज्ञा पुं० १. बड़ा-बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. ओझा। ३. चिकित्सक। हकीम।

**स्यानापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० स्याना + पन ( प्रत्य० ) ] १. स्याने होने की अवस्था। युवावस्था। २. चतुराई। होशियारी। ३. चालाकी। धूर्त्तता।

**स्यापा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० स्याहपोश] मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर

रोने और शोक मनाने की रीति।

मुहा०—स्यापा पड़ना=१. रोना चिल्लाना मचना। २. बिलकुल उजाड़ या सुनसान होना।

स्याबास*—अव्य० दे० "शाबाश"।

स्याम*—संज्ञा पुं०, वि० दे० "श्याम"।

संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश।

स्यामक—संज्ञा पुं० दे० "श्यामक"।

स्यामकरन—संज्ञा पुं० दे० "श्यामकर्ण"।

स्यामता*—संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामता"।

स्यामल—वि० दे० "श्यामल"।

स्यामलिया—संज्ञा पुं० दे० "साँवला"।

स्यामा*—संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामा"।

स्यार—संज्ञा पुं० [हिं० सियार] [स्त्री० स्यारनी] सियार। गीदड़। शृगाल।

स्यारपन—संज्ञा पुं० [हिं० सियार+पन (प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का सा स्वभाव।

स्यारी—संज्ञा स्त्री० [हिं० सियारी] सियार की मादा। गीदड़ी।

स्याल—संज्ञा पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला। स्याल। स्यालक।

संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार"।

स्यालिया—संज्ञा पुं० [हिं० सियार] गीदड़।

स्यावज*—संज्ञा पुं० दे० "सावज"।

स्याह—वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण का।

संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

स्याहगोश—संज्ञा पुं० दे० "सियाहगोश"।

स्याहा—संज्ञा पुं० दे० "सियाहा"।

स्याही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक प्रसिद्ध रंगीन तरल पदार्थ जो लिखने के काम में आता है। रोशनाई। मसि। २. कालापन। कालिमा।

यौ०—स्याहीसोख=सोख्ता। बालूदानी।

मुहा०—स्याही जाना=बालों का कालापन जाना। जवानी का बीत जाना।

३. कालिख। कालिमा।

संज्ञा स्त्री० [सं० शल्यकी] साही। (जंतु)

स्यों, स्यो*—अव्य० [सं० सह] १. सह। सहित। २. पास। समीप।

स्रंग*—संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।

स्रक्—संज्ञा स्त्री० पुं० [सं०] १. फूलों की माला। २. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण होता है।

स्रग—संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "स्रक्"।

स्रग्धरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य होता है।

स्रग्विणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।

स्रज—संज्ञा स्त्री० [सं०] माला।

स्रजना*—क्रि० स० दे० "सृजना"।

स्रद्धा*—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रद्धा"।

स्रम*—संज्ञा पुं० दे० "श्रम"।

स्रमित*—वि० दे० "श्रमित"।

स्रवण—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। बहाव। प्रवाह। २. टपकना। चूना। ३. कच्चे गर्भ का गिरना। गर्भपात। ४. मूत्र। पेशाब। ५. पसीना।

स्रवन*—संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।

स्रवना*—क्रि० अ० [सं० स्रवण] १. बहना। चूना। टपकना। २. गिरना।

क्रि० स० १. बहाना। टपकाना। २. गिराना।

स्रष्टा—संज्ञा पुं० [सं० स्रष्टृ] १. सृष्टि या विश्व की रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।

वि० सृष्टि रचनेवाला। जगत् का रचयिता।

स्रस्त—वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल।

स्राद्ध—संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।

स्राप*—संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

स्रापित*—वि० दे० "शापित"।

स्राव—संज्ञा पुं० [सं०] १. बहना। झरना। क्षरण। २. गर्भपात। गर्भस्राव। नियास। रस।

स्रावक—वि० [सं०] बहाने, चुआने या टपकानेवाला। स्राव करानेवाला।

स्रावण—संज्ञा पुं० [सं०] बहाने, चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।

स्रावी—वि० [सं० स्राविन्] बहानेवाला।

स्रिंग*—संज्ञा पुं० दे० "शृंग"।

स्रिजन*—संज्ञा पुं० दे० "सृजन"।

स्रिय*—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रिय"।

स्रुत*—वि० दे० "श्रुत"।

स्रुति—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रुति"।

स्रुतिमाथ*—संज्ञा पुं० [सं० श्रुति+मस्तक] विष्णु।

स्रुवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लकड़ी की एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं। सुरवा।

स्रेनी—संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।

स्रोत—संज्ञा पुं० [सं० स्रोतस्] १. पानी का बहाव या झरना। धारा।

२. नदी। ३. वह कार्य या मार्ग जिसके द्वारा किसी वस्तु की उपलब्धि हो। जरिया।

**स्रोतस्विनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] नदी।

**स्रोता***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "श्रोता"।

**स्रोन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "श्रवण"।

**स्रोमकन***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ श्रमकण ] स्वेद-कण। पसीने की बूँद।

**स्रोनित***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "शोणित"।

**स्वः**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्वर्ग।

**स्व**—वि॰ [ सं॰ ] अपना। निज का।

**स्वकीय**-वि॰ [सं॰] अपना। निजका।

**स्वकीया**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] अपने ही पति में अनुराग रखनेवाली स्त्री। ( साहित्य )।

**स्वच्छ***—वि॰ दे॰ "स्वच्छ"।

**स्वगत**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वगत-कथन"।

क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] आप ही आप। अपने आप से। (कहना या बोलना)

वि॰ १. अपने में आया या लाया हुआ। आत्मगत। २. मन में आया हुआ। मनोगत।

**स्वगत-कथन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] नाटक में पात्र का आप ही आप इस प्रकार बोलना कि मानो वह किसी को सुनाना नहीं चाहता और न कोई उसकी बात सुनता ही है। आत्मगत। अश्राव्य।

**स्वच्छंद**—वि॰ [ सं॰ ] १. [ भाव॰ स्वच्छंदता ] जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य्य करे। स्वाधीन। स्वतंत्र। आजाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।

क्रि॰ वि॰ मनमाना। बेधड़क। निर्द्वंद्व।

**स्वच्छ**—वि॰ [ सं॰ ] [ भाव॰ स्वच्छता ] १. जिसमें किसी प्रकार की गंदगी न हो। निर्मल। साफ। २. उज्ज्वल। शुभ्र। ३. स्पष्ट। साफ। ४. शुद्ध। पवित्र।

**स्वच्छना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ स्वच्छ] निर्मल करना। शुद्ध करना। साफ करना।

**स्वच्छी**—वि॰ दे॰ "स्वच्छ"।

**स्वजन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २. रिश्तेदार।

**स्वजनि, स्वजनी**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. अपने कुटुंब की या आपसदारी की स्त्री। आत्मीया। २. सखी। सहेली।

**स्वजन्मा**—वि॰ [ सं॰ स्वजन्मन् ] अपने आप से उत्पन्न ( ईश्वर आदि )।

**स्वजात**—वि॰ [ सं॰ ] अपने से उत्पन्न।

संज्ञा पुं॰ पुत्र। बेटा।

**स्वजाति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰] अपनी जाति।

वि॰ अपनी जाति या काम का।

**स्वजातीय**—वि॰ [ सं॰ ] अपनी जाति का। अपने वर्ग का।

**स्वतंत्र** -वि॰ [ सं॰ ] १. जो किसी के अधीन न हो। स्वाधीन। मुक्त। आजाद। २. मनमानी करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरंकुश। ३. अलग। जुदा। पृथक्। ४. किसी प्रकार के बंधन या नियम आदि से रहित।

**स्वतंत्रता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] स्वतंत्र होने का भाव। स्वाधीनता। आजादी।

**स्वतः**—अव्य॰ [सं॰ स्वतस् ] अपने आप। आप ही।

**स्वतोविरोधी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्वतः+विरोधी ] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।

**स्वत्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] किसी वस्तु को अपने अधिकार में रखने, या लेने का अधिकार। अधिकार। हक।

संज्ञा पुं॰ "स्व" या अपने होने का भाव।

**स्वत्वाधिकारी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्वत्वाधिकारिन् ] १. वह जिसके हाथ में किसी विषय का पूरा स्वत्व हो। २. स्वामी। मालिक।

**स्वदेश**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अपना और अपने पूर्वजों का देश। मातृ-भूमि। वतन।

**स्वदेशी**—वि॰ [ सं॰ स्वदेशीय ] अपने देश का। अपने देश संबंधी।

**स्वधर्म**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अपना धर्म।

**स्वधा**—अव्य॰ [ सं॰ ] एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है।

संज्ञा स्त्री॰ १. पितरों को दिया जाने-वाला अन्न या भोजन। पितृ-अन्न। २. दक्ष की एक कन्या।

**स्वन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शब्द। आवाज

**स्वनामधन्य**—वि॰ [ सं॰ ] जो अपने नाम के कारण धन्य हो।

**स्वपच***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "श्वपच"।

**स्वपन, स्वपना***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वप्न"।

**स्वप्न**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. निद्रा-वस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। २. वह घटना आदि जो इस प्रकार निद्रित अवस्था में दिखाई दे अथवा मन में आवे। ३. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद।

४. मन में उठनेवाली ऊँची या असम्भव कल्पना या विचार।

**स्वप्नगृह**—संज्ञा पुं० [सं०] शयनागार।

**स्वप्नदोष**—संज्ञा पुं० [सं०] निद्रावस्था में वीर्य्यपात होना जो एक प्रकार का रोग है।

**स्वप्नाना**—क्रि० स० [सं० स्वप्न + आना (प्रत्य०)] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।

**स्वप्निल**—वि० [सं०] १. सोया हुआ। २. स्वप्न देखता हुआ। ३. स्वप्न-संबंधी। स्वप्न का।

**स्वबरन***—संज्ञा पुं० दे० "सुवर्ण"।

**स्वभाउ***—संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।

**स्वभाव**—संज्ञा पुं० [सं०] १. सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण। तासीर। २. मन की प्रवृत्ति। मिजाज। प्रकृति। ३. आदत। बान।

**स्वभावज**—वि० [सं०] प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

**स्वभावतः**—अव्य० [सं० स्वभावतस्] स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से। सहज ही।

**स्वभावसिद्ध**—वि० [सं०] सहज। प्राकृतिक। स्वाभाविक।

**स्वभावोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी जाति या अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक स्वरूप का वर्णन होता है।

**स्वभू**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ब्रह्मा २. विष्णु।

वि० आप से आप होनेवाला।

**स्वयं**—अव्य० [सं० स्वयम्] १. खुद। आप। २. आप से आप। खुद ब खुद।

**स्वयंदूत**—संज्ञा पुं० [सं०] नायिका पर अपनी कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक।

**स्वयंदूती**—संज्ञा स्त्री० [सं०] नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

**स्वयंदेव**—संज्ञा पुं० [सं०] प्रत्यक्ष देवता।

**स्वयंपाक**—संज्ञा पुं० [सं०] [कर्त्ता स्वयंपाकी] अपना भोजन आप पकाना। अपने हाथ से बनाकर खाना।

**स्वयंप्रकाश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो। २. परमात्मा। परमेश्वर।

**स्वयंभू**—संज्ञा पुं० [सं० स्वयंभू] १. ब्रह्मा। २. काल। ३. कामदेव। ४. विष्णु। ५. शिव। ६. दे० "स्वायंभुव"।

वि० जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो।

**स्वयंभूत**—वि० दे० "स्वयंभू"।

**स्वयंवर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विधान जिसमें कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिये स्वयं वर चुनती थी। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार कन्या अपने लिये वर चुने।

**स्वयंवरण**—संज्ञा पुं० दे० "स्वयंवर"।

**स्वयंवरा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपने इच्छानुसार अपना पति नियत करनेवाली स्त्री। पतिंवरा। वर्य्या।

**स्वयंसिद्ध**—वि० [सं०] (बात) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो।

**स्वयंसेवक**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० स्वयंसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार के किसी काम्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वेच्छा-सेवक।

**स्वयमागत**—वि० [सं०] १. अपने आप आया हुआ। बिना बुलाए आया हुआ।

संज्ञा पुं० अभ्यागत। अतिथि।

**स्वयमेव**—क्रि० वि० [सं०] खुद ही। स्वयं ही।

**स्वर्**—संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. परलोक। आकाश।

**स्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्राणी के कंठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द, जिसमें कोमलता, तीव्रता, उदात्तता, अनुदात्तता आदि गुण हों। २. संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसके उतार-चढ़ाव आदि का, सुनते ही, सहज में अनुमान हो सके। सुर। सुभीते के लिए सात स्वर नियत किए गए हैं। इन सातों स्वरों के नाम क्रम से षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद रखे गए हैं जिनके संक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं।

**मुहा०**—स्वर उतारना=स्वर नीचा या धीमा करना। स्वर चढ़ाना=स्वर ऊँचा करना।

३. व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतंत्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण में सहायक होता है। ४. वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव।

संज्ञा पुं० [सं० स्वर्] आकाश।

**स्वरग***—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"

**स्वरपात**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके

किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना।

**स्वरभंग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] आवाज का बैठना जो एक रोग माना गया है।

**स्वरमंडल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का वाद्य जिसमें तार लगे होते हैं।

**स्वरलिपि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] संगीत में किसी गीत या तान आदि में लगनेवाले स्वरों का उल्लेख।

**स्वरवेधी**—संज्ञा पुं० दे० "शब्दवेधी"।

**स्वरशास्त्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें स्वर संबंधी बातों का विवेचन हो। स्वरविज्ञान।

**स्वरस**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस।

**स्वरसाधना**—संगीत के सातों स्वरों का साधन या अभ्यास करना।

**स्वरांत**—वि० [ सं० ] (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला, टोपी।

**स्वराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने देश का सब प्रबन्ध करते हों। अपना राज्य।

**स्वराट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ब्रह्मा। २. ईश्वर। ३. वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो जिसमें स्वराज्य शासनप्रणाली प्रचलित हो।

वि० जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

**स्वरित**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से हो और न बहुत धीरे हो।

वि० १. स्वर से युक्त। २. गूँजता हुआ।

**स्वरूप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. आकार। आकृति। शक्ल। २. मूर्ति या चित्र आदि। ३. देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ४. वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो।

वि० [ स्त्री० स्वरूपा ] १. खूबसूरत। २. तुल्य। समान।

अव्य० रूप में। तौर पर।

संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

**स्वरूपज्ञ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जो परमात्मा और आत्मा का स्वरूप पहचानता हो। तत्त्वज्ञ।

**स्वरूपमान***—संज्ञा पुं० दे० "स्वरूपवान्"।

**स्वरूपवान्**—वि० [ सं० स्वरूपवत् ] [ स्त्री० स्वरूपवती ] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर। खूबसूरत।

**स्वरूपी**—वि० [ सं० स्वरूपिन् ] १. स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २. जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो।

* संज्ञा पुं० दे० "सारूप्य"।

**स्वरोचिष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गंधर्व के पुत्र थे।

**स्वरोद**—संज्ञा पुं० [ सं० स्वरोदय ] एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।

**स्वरोदय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

**स्वर्गंगा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मंदाकिनी।

**स्वर्ग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हिंदुओं के सात लोकों में से तीसरा लोक। कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। नाक। देवलोक।

मुहा०—स्वर्ग के पंथ पर पैर देना=१. मरना। २. जान जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना=मरना। देहांत होना।

यौ०—स्वर्ग-सुख=बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख। स्वर्ग की धार=आकाश-गंगा।

२. ईश्वर। ३. सुख। ४. वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सा सुख मिले। ५. आकाश।

**स्वर्गत, स्वर्गगत**—वि० [ सं० ] मृत। स्वर्गीय।

**स्वर्गगमन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] मरना।

**स्वर्गगामी**—वि० [ सं० स्वर्गगामिन् ] १. स्वर्ग जानेवाला। २. मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय।

**स्वर्गतरु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कल्प वृक्ष।

**स्वर्गद**—वि० [ सं० ] स्वर्ग देनेवाला।

**स्वर्गनदी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० स्वर्ग+नदी ] आकाशगंगा।

**स्वर्गपुरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अमरावती।

**स्वर्गलोक**—संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।

**स्वर्गवधू**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अप्सरा।

**स्वर्गवाणी**—संज्ञा स्त्री० दे० "आकाश वाणी"।

**स्वर्गवास**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्वर्ग को प्रस्थान करना। मरना।

**स्वर्गवासी**—वि० [ सं० स्वर्गवासिन् ] [ स्त्री० स्वर्गवासिनी ] १. स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मर गया हो। मृत।

**स्वर्गस्थ**—वि० दे० "स्वर्गवासी"।

**स्वर्गारोहण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १.

स्वर्ग की ओर जाना। २. स्वर्ग सिधारना। मरना।

**स्वर्गिक**—वि॰ दे॰ "स्वर्गीय"।

**स्वर्गीय**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ स्वर्गीया ] १. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत।

**स्वर्ण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। कनक। २. धतूरा।

**स्वर्णकमल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] लाल कमल।

**स्वर्णकार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सुनार।

**स्वर्णगिरि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सुमेरु पर्वत।

**स्वर्णपर्पटी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध जो संग्रहणी के लिये बहुत गुणकारी मानी जाती है।

**स्वर्णपुरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] लंका।

**स्वर्णमय**—वि॰ [ सं॰ ] जो बिलकुल सोने का हो।

**स्वर्णमाक्षिक**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सोनामक्खी"।

**स्वर्णमुद्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] अशरफी।

**स्वर्णयुग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सब से अच्छा और श्रेष्ठयुग का समय।

**स्वर्णयूथिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पीली जुही।

**स्वर्णिम**—वि॰ [ सं॰ स्वर्ण ] सोने के रंग का। सुनहला।

**स्वर्धुनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] गंगा।

**स्वर्नगरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] अमरावती।

**स्वर्नदी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] स्वर्गंगा।

**स्वर्लोक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्वर्ग।

**स्वर्वेश्या**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] अप्सरा।

**स्वर्वैद्य**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अश्विनी कुमार।

**स्वल्प**—वि॰ [ सं॰ ] बहुत थोड़ा।

**स्वसरन***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "सुवर्ण"।

**स्वसा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ स्वसृ ] बहिन।

**स्वस्ति**—अव्य॰ [ सं॰ ] कल्याण हो। मंगल हो। ( आशीर्वाद )

संज्ञा स्त्री॰ १. कल्याण। मंगल। २. ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक। ३. सुख।

**स्वस्तिक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. हठयोग में एक प्रकार का आसन। २. चावल पीसकर और पानी में मिलाकर बनाया हुआ एक मंगलद्रव्य जिसमें देवताओं का निवास माना जाता है। ३. प्राचीन काल का एक मंगल चिह्न जो शुभ अवसरों पर मांगलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था। आज-कल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है 卐। ४. शरीर के विशिष्ट अंगों में होनेवाला उक्त आकार का एक चिह्न। (शुभ)

**स्वस्तिवाचन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ स्वस्तिवाचक ] कर्मकांड के अनुसार मंगल कार्य्यों के आरंभ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें पूजन और मंगलसूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है।

**स्वस्त्ययन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य्य में शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है।

**स्वस्थ**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा स्वस्थता ] १. नीरोग। तंदुरुस्त। भला। चंगा। २. जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान।

**स्वस्थता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. स्वस्थ या तंदुरुस्त होने का भाव। तंदुरुस्ती। २. निर्दोष और ठीक अवस्था में होने का भाव। ३. दे॰ "स्वास्थ्य"।

**स्वहाना***—क्रि॰ अ॰ दे॰ "सोहाना"।

**स्वाँग**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ सु+अंग ] १. बनावटी वेष जो दूसरे का रूप बनने के लिए धारण किया जाय। भेस। रूप। २. मजाक का खेल या तमाशा। नकल। ३. धोखा देने के उद्देश्य से बनाया हुआ कोई रूप या क्रिया।

**स्वाँगना***—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ स्वाँग ] स्वाँग बनाना। बनावटी वेष धारण करना।

**स्वाँगी**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ स्वाँग ] १. वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता हो। २. अनेक रूप धारण करनेवाला। बहुरूपिया।

वि॰ रूप धारण करनेवाला।

**स्वांत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अंतःकरण। मन।

**स्वाँस**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "साँस"।

**स्वाँसा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "साँस"।

**स्वाक्षर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] हस्ताक्षर। दस्तखत।

**स्वाक्षरित**—वि॰ [ सं॰ ] अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना दस्तखत किया हुआ।

**स्वागत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनंदन करना। अगवानी। अभ्यर्थना। पेशवाई।

**स्वागतकारिणी सभा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह सभा जो किसी विराट् सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रति-

निधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिए संघटित हो।

**स्वागतपतिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न हो। आगतपतिका।

**स्वागतप्रिया**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो।

**स्वागता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ( र, न, भ, ग, ग, ) ऽ।ऽ+।।।+ऽ।।+ऽऽ होता है।

**स्वातंत्र्य**-संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वतंत्रता"।

**स्वात**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्वाति"।

**स्वाति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] पंद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित में शुभ माना गया है।

**स्वातिपंथ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्वाति + पंथ ] आकाश-गंगा।

**स्वातिसुत, स्वातिसुवन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] मोती। मुक्ता।

**स्वाती**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्वाति"।

**स्वात्म**—वि॰ [ सं॰ स्व + आत्म ] अपना।

**स्वाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव। जायका। २. रसानुभूति। आनंद।

**मुहा॰**—स्वाद चखाना=किसी को उसके किए हुए अपराध का दंड देना।

३. चाह। इच्छा। कामना।

**स्वादक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्वाद ] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है। स्वादु-विवेकी।

**स्वादन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ स्वादित ] १. चखना। स्वाद लेना। २. मजा लेना। आनंद लेना।

**स्वादिष्ठ, स्वादिष्ठ**—वि॰ [ सं॰ स्वादिष्ठ ] जिसका स्वाद अच्छा हो। जायकेदार। सुस्वादु।

**स्वादी**—वि॰ [ सं॰ स्वादिन् ] १. स्वाद चखनेवाला। २. मजा लेनेवाला। रसिक।

**स्वादीला**—वि॰ दे॰ "स्वादिष्ठ"।

**स्वादु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. मीठा रस। मधुरता। २. गुड़। ३. दूध। दुग्ध।

वि॰ १. मीठा। मधुर। मिष्ट। २. जायकेदार। स्वादिष्ठ। ३. सुंदर।

**स्वाद्य**—वि॰ [सं॰] स्वाद लेने योग्य।

**स्वाधिकार**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।

**स्वाधीन**—वि॰ [ सं॰ ] १. जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद। २. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।

संज्ञा पुं॰ समर्पण। हवाला। सपुर्द।

**स्वाधीनता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] स्वाधीन होने का भाव। स्वतंत्रता। आजादी।

**स्वाधीनपतिका**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।

**स्वाधीनभर्तृका**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्वाधीनपतिका"।

**स्वाधीनी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्वाधीनता"।

**स्वाध्याय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना। वेदाध्ययन। २. अनुशीलन। अध्ययन। ३ वेद।

**स्वान**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "श्वान"।

**स्वाना**—क्रि॰ स॰ दे॰ "सुलाना"।

**स्वाप**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. निद्रा। नींद। २. अज्ञान।

**स्वापन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे।

वि॰ नींद लानेवाला। निद्राकारक।

**स्वाभाविक**—वि॰ [ सं॰ ] [ संज्ञा स्वाभाविकता ] १. जो आप ही आप हो। २ स्वभावसिद्ध। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती।

**स्वाभाविकी**—वि॰ दे॰ "स्वाभाविक"।

**स्वाभिमान**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ वि॰ स्वाभिमानी ] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

**स्वामि**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वामी"।

**स्वामिकार्तिक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] शिव के पुत्र कार्तिकेय। स्कंद।

**स्वामिता**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्वामित्व"।

**स्वामित्व**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] स्वामी होने का भाव। प्रभुत्व। मालिकपन।

**स्वामिन**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "स्वामिनी"।

**स्वामिनी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. मालकिन। स्वत्वाधिकारिणी। २. घर की मालकिन। गृहणी। ३. श्री राधिका।

**स्वामी**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ स्वामिन् ] [ स्त्री॰ स्वामिनी ] १. मालिक। प्रभु। अन्नदाता। २. घर का प्रधान पुरुष। ३. स्वत्वाधिकारी। मालिक। ४. पति। ५. भगवान्। ६. राजा। नरपति। ७. कार्तिकेय। ८. साधु, संन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि।

**स्वाम्य**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वामित्व"।

**स्वायंभुव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] चौदह मनुओं में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।

**स्वायंभ***—संज्ञा पुं० दे० "स्वायंभुव"।

**स्वायत्त**—वि० [ सं० ] जो अपने अधीन हो। जिस पर अपना ही अधिकार हो।

**स्वायत्त शासन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह शासन जो अपने अधिकार में हो। स्थानिक स्वराज्य।

**स्वारथ***—संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ"। वि० [ सं० स्वार्थ ] सफल। सिद्ध। सार्थक।

**स्वारथी**—वि० दे० "स्वार्थी"।

**स्वारस्य**—वि० [ सं० ] १. सरसता। रसीलापन। २. स्वाभाविकता।

**स्वाराज्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. स्वाधीन राज्य। २. स्वर्ग का राज्य। स्वर्गलोक।

**स्वारी***—संज्ञा स्त्री० दे० "सवारी"।

**स्वारोचिष**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ( स्वरोचिष के पुत्र ) दूसरे मनु का नाम।

**स्वार्थ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपना उद्देश्य या मतलब। २. अपना लाभ। अपनी भलाई। अपना हित।

**मुहा०**—(किसी बात में) स्वार्थ लेना=दिलचस्पी लेना। अनुराग रखना। (आधुनिक)

वि० [ सं० सार्थक ] सार्थक। सफल।

**स्वार्थता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्वार्थ का भाव या धर्म्म। खुदगर्जी।

**स्वार्थत्याग**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

**स्वार्थत्यागी**—वि० [ सं० स्वार्थत्यागिन् ] दूसरे के भले के लिये अपने लाभ का विचार न रखनेवाला।

**स्वार्थपर**—वि० [ सं० ] स्वार्थी। खुदगरज।

**स्वार्थपरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्वार्थपर होने का भाव। खुदगरजी।

**स्वार्थपरायण**—वि० [ सं० ] [ संज्ञा स्वार्थ-परायणता ] स्वार्थपर। स्वार्थी। खुदगरज।

**स्वार्थसाधन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० स्वार्थसाधक ] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम निकालना।

**स्वार्थांध**—वि० [ सं० ] जो अपने स्वार्थ के वश होकर अंधा हो जाता हो।

**स्वार्थी**—वि० [ सं० स्वार्थिन् ] [ स्त्री० स्वार्थिनी ] अपना ही मतलब देखनेवाला। मतलबी। खुदगरज।

**स्वाल***—संज्ञा पुं० दे० "सँवाल"।

**स्वावलंब**—संज्ञा पुं० दे० "स्वावलंबन"।

**स्वावलंबन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपने ही भरोसे पर रहना। अपने बल पर काम करना।

**स्वावलंबी**—वि० [ सं० स्वावलम्बिन् ] अपने ही अवलंब या सहारे पर रहनेवाला।

**स्वाश्रय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह जिसे केवल अपना ही सहारा हो; दूसरों का सहारा न हो।

**स्वाश्रित**—वि० [ सं० ] केवल अपने सहारे पर रहनेवाला।

**स्वास***—संज्ञा पुं० [ सं० श्वास ] साँस। श्वास।

**स्वासा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० श्वास ] साँस। श्वास।

**स्वास्थ्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था। आरोग्य। तंदुरुस्ती।

**स्वास्थ्यकर**—वि० [ सं० ] तंदुरुस्त करनेवाला। आरोग्यवर्द्धक।

**स्वाहा**—अव्य० [ सं० ] एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है।

**मुहा०**—स्वाहा करना=नष्ट करना।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की पत्नी का नाम।

**स्वीकरण**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १ अपनाना। अंगीकार करना। २. मानना। राजी होना।

**स्वीकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपनाने की क्रिया। अंगीकार। कबूल। २. लेना।

**स्वीकारोक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह बयान जिसमें अभियुक्त अपना अपराध स्वयं ही स्वीकृत कर ले।

**स्वीकार्य**—वि० [ सं० ] स्वीकार करने या मानने के योग्य।

**स्वीकृत**—वि० [ सं० ] स्वीकार किया हुआ। माना हुआ। मंजूर।

**स्वीकृति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] स्वीकार का भाव। मंजूरी। सम्मति। रजामंदी।

**स्वीय**—वि० [ सं० ] अपना। निज का।

संज्ञा पुं० स्वजन। आत्मीय। संबंधी।

**स्वीयत्व**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपनापन। निजत्व। २. आपसदारी आत्मीयता।

**स्वीया**—वि० स्त्री० दे० "स्वकीया"।

**स्वे***—वि० दे० "स्व"।

**स्वेच्छा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] अपनी इच्छा।

**स्वेच्छाचार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० स्वेच्छाचारिता ] जो जी में आवे, वही करना। यथेच्छाचार।

**स्वेच्छाचारी**—वि० [ सं० स्वेच्छाचारिन् ] [ स्त्री स्वेच्छाचारिणी ] मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। अबाध्य।

**स्वेच्छासेवक**—संज्ञा पुं० दे० "स्वयंसेवक"।

**स्वेतक**—वि० दे० "श्वेत"।
**स्वेद**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. पसीना। प्रस्वेद। २. भाप। वाष्प। ३. ताप। गरमी।
**स्वेदक**—वि० [ सं० ] पसीना लानेवाला।
**स्वेदज**—वि० [ सं० ] पसीने से उत्पन्न होनेवाला। ( जूँ, खटमल, मच्छर आदि। )
**स्वेदन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] पसीना निकलना।
**स्वेदित**—वि० [ सं० ] १. पसीने से युक्त। २. भफारा दिया हुआ। सेंका हुआ।
**स्वै**०—वि० [ सं० स्वीय ] अपना। निज का।
सर्व० दे० "सो"।
**स्वैर**—वि० [ सं० ] १. मनमाना काम करनेवाला। स्वच्छंद। स्वतंत्र। २. धीमा। मंद। ३. यथेच्छ। मनमाना।
**स्वैरचारी**—वि० [ सं० स्वैरचारिन् ] [ स्त्री० स्वैरचारिणी ] १. मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश। २. व्यभिचारी।
**स्वैरता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] यथेच्छाचारिता।
**स्वैराचार**—संज्ञा पुं० दे० "स्वेच्छाचार"।
**स्वैरिणी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] व्यभिचारिणी स्त्री।
**स्वैरिता**—संज्ञा स्त्री० दे० "स्वैरता"।
**स्वोपार्जित**—वि० [ सं० ] अपना उपार्जन किया या कमाया हुआ।

—:o:—

# ह

**ह**—संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण विभाग के अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है।
**हक**—संज्ञा स्त्री० दे० "हाँक"।
**हँकड़ना**—क्रि० अ० [ हिं० हाँक ] १. दर्प के साथ बोलना। ललकारना। २. चिल्लाना।
**हँकरना**—क्रि० अ० दे० "हँकड़ना"।
**हँकवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाँक ] शेर के शिकार का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं।
**हँकवाना**—क्रि० स० [हिं० हाँकना का प्रेर० ] १. हाँक लगवाना। बुलवाना। २. हाँकने का काम दूसरे से कराना।
**हँकवैया**०†—संज्ञा पुं० [ हिं० हाँकना + वैया ( प्रत्य० ) ] हाँकनेवाला।
**हँका**—संज्ञा स्त्री०[हिं०हाँक]ललकार।
**हँकाई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाँकना ] हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
**हँकाना**—क्रि० स० [ हिं० हाँक ] १. दे० "हाँकना"। २. पुकारना। बुलाना। ३. हँकवाना।
**हँकार**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हक्कार ] १. आवाज लगाकर बुलाना। पुकार। २. ऊँचा शब्द जो किसी को बुलाने या संबोधन करनेके लिए किया जाय। पुकार।
मुहा०—हँकार पड़ना=बुलाने के लिए आवाज लगाना।
**हंकार**०†—संज्ञा पुं० दे०"अहंकार"।
संज्ञा पुं० [ सं० हुंकार ] ललकार। दपट।
**हँकारना**†०—क्रि० स० [ हिं० हाँक] १. हाँक देकर बुलाना। २. बुलाना। पुकारना। ३. पुकारने का काम दूसरे से कराना। बुलवाना।
**हँकारना**—क्रि० स० [ हिं० हँकार ] १. जोर से पुकारना। टेरना। २. बुलाना। पुकारना। ३. युद्ध के लिए आह्वान करना। ललकारना।
**हंकारना**—क्रि० अ० [ हिं० हुंकार] हुंकार शब्द करना। दपटना।
**हँकारा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हँकारना ] १. पुकार। बुलाहट। २. निमंत्रण। बुलौवा। न्योता।
**हँकारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हँकार ]

१. वह जो लोगों को बुलाकर लाता हो। २. दूत।

**हंगामा**—संज्ञा पुं० [फ़ा० हंगामः] १. उपद्रव। दंगा। लड़ाई-झगड़ा। २. घोर गुल। कलकल। हल्ला।

**हंडना**—क्रि० अ० [सं० अभ्यटन] १. घूमना फिरना। २. व्यर्थ इधर-उधर फिरना। ३. इधर-उधर ढूढ़ना। ४. वस्त्र आदि का पहना या ओढ़ा जाना।

**हंडा**—संज्ञा पुं० [सं० भांडक] पीतल या ताँबे का बहुत बड़ा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।

**हँडाना**—क्रि० स० [हिं० हँडना] १. घुमाना। फिराना। २. काम में लाना।

**हँडिया**—संज्ञा स्त्री० [सं० भांडिका] १. बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँडी। २. इस आकार का शीशे का पात्र जो शोभा के लिए लटकाया जाता है।

**हंडी**—संज्ञा स्त्री० दे० "हँडिया"। "हाँडी"।

**हंत**—अव्य० [सं०] खेद या शोक-सूचक शब्द।

**हंता**—संज्ञा पुं० [सं० हंतृ] [स्त्री० हंत्री] मारनेवाला। वध करनेवाला।

**हँफनि**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव।

**मुहा०**—हँफनि मिटाना=सुस्ताना।

**हँबाना**—क्रि० अ० दे० "रँभाना"।

**हंस**—संज्ञा पुं० [सं०] १. बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलोंमें रहता है। २. सूर्य। ३. ब्रह्म। परमात्मा। ४. माया से निर्लिप्त आत्मा। ५. जीवात्मा। जीव। ६. विष्णु। ७. संन्यासियों का एक भेद। ८. प्राणवायु। ९. घोड़ा। १० शिव। महादेव। ११. दोहे के नवें भेद का नाम जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। (पिंगल) १२. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। पंक्ति।

**हंसक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हंस पक्षी। २. पैर की उँगलियों में पहनने का बिछुआ।

**हंसगति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस के समान सुंदर धीमी चाल। २. सायुज्य मुक्ति। ३. बीस मात्राओं का एक छंद।

**हंसगामिनी**—वि० स्त्री० [सं०] हंस के समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।

**हँसता-मुखी**—संज्ञा पुं० दे० "हँसमुख"।

**हँसन**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] हँसने की क्रिया, भाव या ढंग।

**हँसना**—क्रि० अ० [सं० हसन] १. खुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज करना। खिलखिलाना। हास करना। कहकहा लगाना।

**यौ०**—हँसना बोलना=आनंद की बात-चीत करना। हँसना खेलना=आनंद करना।

**मुहा०**—किसी पर हँसना=विनोद की बात कहकर तुच्छ या मूर्ख ठहराना। उपहास करना। हँसते-हँसते=प्रसन्नता से। खुशी से। ठठाकर हँसना=जोर से हँसना। अट्टहास करना। बात हँसकर उड़ाना=तुच्छ या साधारण समझकर विनोद में टाल देना।

२. रमणीय लगना। गुलजार या रौनक होना। ३. दिल्लगी करना। हँसी करना। ४. प्रसन्न या सुखी होना। खुशी मनाना।

क्रि० स० किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना।

**हँसनि***†—संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

**हंसिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

**हंसपदी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक लता।

**हँसमुख**—वि० [हिं० हँसना+मुख] १. प्रसन्नवदन। जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो। २. विनोदशील। हास्यप्रिय।

**हंसराज**—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। समलपत्ती। २. एक प्रकारका अगहनी धान।

**हँसली**—संज्ञा स्त्री० [सं० अंसली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी। २. गले में पहनने का स्त्रियों का एक मंडलाकार गहना।

**हंसवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्यवंश।

**हंसवाहन**—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा।

**हंसवाहिनी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

**हंससुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

**हँसाई**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। २. निंदा। बदनामी।

**हँसाना**—क्रि० स० [हिं० हँसना] दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।

**हँसाय***†—संज्ञा स्त्री० दे० "हँसाई"।

**हंसालि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] ३७ मात्राओं का एक छंद।

**हंसिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।

**हँसिया**—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक औजार जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है।

**हंसी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हंस की मादा। २. बाईस अक्षरों की एक

वर्णवृत्ति ।

**हँसी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हँसना ] १. हँसने की क्रिया या भाव । हास ।

**यौ॰**—हँसी खुशी=प्रसन्नता । हँसी ठट्ठा=आनंद-क्रीड़ा । मज़ाक ।

**मुहा॰**—हँसी छूटना=हँसी आना ।

२ मज़ाक । दिल्लगी । विनोद ।

**यौ॰**—हँसी खेल= १. विनोद और क्रीड़ा । २. साधारण या सहज बात ।

**मुहा॰**—हँसी समझना या हँसी-खेल समझना=साधारण बात समझना । आसान बात समझना । हँसी में उड़ाना=परिहास की बात कहकर टाल देना । हँसी में ले जाना=किसी बात को मजाक समझना ।

३. अनादर-सूचक हास । उपहास ।

**मुहा॰**—हँसी उड़ाना=व्यंगपूर्ण निंदा करना । उपहास करना ।

४. लोक-निंदा । बदनामी । अनादर ।

**हँसुआ, हँसुवा**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हासिया" ।

**हँसोड़**—वि॰ [ हिं॰ हँसना + ओड़ (प्रत्य॰) ] हँसी ठट्ठा करनेवाला । दिल्लगीबाज । मसखरा ।

**हँसोर**—वि॰ दे॰ "हँसोड़" ।

**हँसौहाँ**—वि॰ [ हिं॰ हँसना ] [ स्त्री॰ हँसौहीं ] १. ईषद् हास्ययुक्त । कुछ हँसी लिए । २. हँसने का स्वभाव रखनेवाला । ३. दिल्लगी का । मज़ाक से भरा ।

**ह**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. हास । हँसी । २. शिव । महादेव । ३. जल । पानी । ४. शून्य । सिफर । ५. शुभ । मंगल । ६. आकाश । ७. ज्ञान । ८. घोड़ा । अश्व ।

**हई**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हयिन् ] घुड़सवार ।

संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ ह ! ] आश्चर्य ।

**हउँ**—क्रि॰ अ॰, सर्व॰ दे॰ "हौं" ।

**हक**—वि॰ [ अ॰ ] १. सत्य । सत्य । २. वाजिब । ठीक । उचित । न्याय्य । संज्ञा पुं॰ १ किसी वस्तु को अपने कब्जे में रखने, काम में लाने या लेने का अधिकार । स्वत्व । २. कोई काम करने या किसी से कराने का अधिकार । इख्तियार ।

**मुहा॰**—हक में=विषय में । पक्ष में ।

३. कर्तव्य । फर्ज ।

**मुहा॰**—हक अदा करना=कर्त्तव्य पालन करना ।

४. वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम में लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो । ५. किसी मामले में दस्तूर के मुताबिक मिलनेवाली कुछ रकम । दस्तूरी । ६. ठीक या वाजिब बात । ७. उचित पक्ष । न्याय्य पक्ष ।

**मुहा॰**—हक पर होना=उचित बात का आग्रह करना ।

८. खुदा । ईश्वर । ( मुसलमान )

**हकतलफी**—संज्ञा स्त्री॰ किसी का हक मारना । अन्याय ।

**हक-दक**—वि॰ [ अनु॰ ] चकित । भौचक्का ।

**हकदार**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ हक + फा॰ दार ] स्वत्व या अधिकार रखनेवाला ।

**हक-नाहक**—अव्य॰ [ अ॰ फा॰ ] १. जबरदस्ती । धींगाधींगी से । २. बिना कारण या प्रयोजन । व्यर्थ । फजूल ।

**हकबक**—वि॰ दे॰ "हक्का-बक्का" ।

**हकबकाना**—क्रि॰ अ॰ [अनु॰ हक्का बक्का ] हक्का बक्का हो जाना । घबरा जाना ।

**हकला**—वि॰ [ हिं॰ हकलाना ] रुक रुककर बोलनेवाला । हकलानेवाला ।

**हकलाना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ हक ] बोलने में अटकना । रुक रुककर बोलना ।

**हकशफा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ हक्के-शफअ ] किसी जमीन को खरीदने का औरों से ऊपर या अधिक वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है ।

**हकीकत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. तत्त्व । सचाई । असलियत । २. तथ्य । ठीक बात । ३. असल हाल । सत्य वृत्त ।

**मुहा॰**—हकीकत में=वास्तव में । सचमुच । हकीकत खुलना=असल बात का पता लगना ।

**हकीकी**—वि॰ [ अ॰ ] १. असली । २. सगा ।

**हकीम**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. विद्वान् । आचार्य । २. यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला । वैद्य । चिकित्सक ।

**हकीमी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ हकीम + ई ( प्रत्य॰ ) ] १. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र २. हकीम का पेशा या काम ।

**हकूमत**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हुकूमत" ।

**हक्काक**—संज्ञा पुं॰ [ ? ] नग को काटने, सान पर चढ़ाने, जड़ने आदि का काम करनेवाला ।

**हक्का बक्का**—वि॰ [ अनु॰ हक, धक ] भौचक । घबराया हुआ । दंग ।

**हगना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ भग ? ] १. मल त्याग करना । झाड़ा फिरना । पाखाना फिरना । २. झख मारकर अदा कर देना ।

**हगाना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हगना ] हगने की क्रिया कराना ।

**हगास**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हगना + आस ( प्रत्य॰ ) ] मलत्याग का वेग या इच्छा ।

**हचकोला**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हचकना ] वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई

आदि पर हिलने-डोलने से लगे। धचका।

**हचना‡**—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

**हज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिए मक्के जाना।

**हजम**—संज्ञा पुं० [अ०] पेट में पचने की क्रिया या भाव। पाचन।
वि० १. पेट में पचा हुआ। २. बेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ।

**हजरत**—संज्ञा पुं० [अ०] १. महात्मा। महापुरुष। २. महाशय। ३. नटखट या खोटा आदमी। (व्यंग्य)।

**हजामत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. हज्जाम का काम। बाल बनाने का काम। क्षौर। २. बाल बनाने की मजदूरी। ३. सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो।

मुहा०—हजामत बनाना=१. दाढ़ी या सिर के बाल साफ करना या काटना। २. लूटना। धन हरण करना। ३. मारना-पीटना।

**हजार**—वि० [ फ़ा० ] १. जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र। २. बहुत से। अनेक।
संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।
क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक।

**हजारहा**—वि० [ फ़ा० ] १. कई हजार। हजारों। २. बहुत से।

**हजारा**—वि० [ फ़ा० ] (फूल) जिसमें हजार या बहुत अधिक पंखड़ियाँ हों। सहस्रदल।
संज्ञा पुं० १. फुहारा। फौवारा। २. सिंचाई या छिड़काव के लिए प्रयुक्त डोल जिसकी चौड़ी टोंटी में छोटे-छोटे बहुत से छिद्र होते हैं। ३. एक प्रकार की छोटी नारंगी।

**हजारी**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. एक हजार सिपाहियों का सरदार। २. दोगला। वर्ण-संकर।

**हजूम**—संज्ञा पुं० [ अ० हुजूम ] जन-समूह। भीड़।

**हजूर**—संज्ञा पुं० दे० "हुजूर"।

**हजूरी**—संज्ञा पुं० [ अ० हजूर ] [ स्त्री० हजूरी ] बादशाह या राजा के सदा पास रहनेवाला सेवक।

**हज्जो**—संज्ञा स्त्री० [अ० हज्व] निंदा। बुराई।

**हज्ज**—संज्ञा पुं० दे० "हज"।

**हज्जाम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

**हटक‡†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हटकना] १. वारण। वर्जन।

मुहा०—हटक मानना=मना करने पर किसी काम से रुकना।
२. गायों को हाँकने की क्रिया या भाव।

**हटकन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हटकना ] १. दे० "हटक"। २. चौपायों को हाँकने की छड़ी या लाठी।

**हटकना**—क्रि० स० [ हिं० हट=दूर होना+करना ] १. मना करना। निषेध करना। रोकना। २. चौपायों को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी तरफ हाँकना।

मुहा०—हटकि=१. जबरदस्ती। २. बिना कारण।

**हटतार†**—संज्ञा पुं० दे० "हरताल"।
संज्ञा स्त्री० [ हिं० हठतार ] माला का सूत।

**हटताल**—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ताल"।

**हटना**—क्रि० अ० [ सं० घट्टन ] १. एक जगह से दूसरी जगहपर जा रहना। खिसकना। सरकना। टलना। २. पीछे सरकना। ३. जी चुराना। भागना। ४. सामने से दूर होना। सामने से चला जाना। ५. टलना। ६. न रह जाना। दूर होना। ७. बात पर दृढ़ न रहना।
‡† [ हिं० हटकना ] मना या निषेध करना।

**हटवा**—संज्ञा पुं० [हिं० हाट] दूकानदार।

**हटवाई‡†**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाट +वाई (प्रत्य०) ] सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।

**हटवाना**—क्रि० स० [ हिं० हटाना ] हटाने का काम दूसरे से कराना।

**हटवार‡†**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाट+वारा (वाला) ] हाट में सौदा बेचनेवाला। दूकानदार।

**हटाना**—क्रि० स० [ हिं० हटना का स० ] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना। सरकाना। खिसकाना। २. किसी स्थान पर न रहने देना। दूर करना। ३. आक्रमण-द्वारा भगाना। ४. जाने देना।

**हट्ट**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बाजार। २. दूकान।

यौ०—चौहट्ट=बाजार का चौक।

**हट्टा कट्टा**—वि० [ सं० हृष्ट+काष्ठ ] [ स्त्री० हट्टी कट्टी ] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

**हट्टी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाट ] दूकान।

**हठ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० हठी, हठीला ] १. किसी बात के लिए अड़ना। टेक। जिद। आग्रह।

मुहा०—हठ पकड़ना=जिद करना। हठ रखना=जिस बात के लिए कोई अड़े, उसे पूरा करना। हठ में पड़ना=हठ करना। हठ माँड़ना=हठ ठानना।

२. दृढ़ प्रतिज्ञा। अटल संकल्प। ३. बलात्कार। जबरदस्ती।

**हठधर्म**—संज्ञा पुं० [सं०] अपने मत पर, सत्य असत्य का विचार छोड़कर, जमा रहना। दुराग्रह। कट्टरपन।

**हठधर्मी**—संज्ञा स्त्री० [सं० हठ+धर्म] १. उचित अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दुराग्रह। २. अपने मत या संप्रदाय की बात लेकर अड़ने की क्रिया या प्रवृत्ति। कट्टरपन।

**हठना**—क्रि० अ० [हिं० हठ] १. हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना।

मुहा०—हठ कर=बलात्। जबरदस्ती।

२. प्रतिज्ञा करना। दृढ़ संकल्प करना।

**हठयोग**—संज्ञा पुं० [सं०] वह योग जिसमें शरीर को साधने के लिए बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है। नेती, धौती आदि क्रियाएँ इसी में हैं।

**हठात्**—प्रत्य० [सं०] १. हठपूर्वक। दुराग्रह के साथ। जबरदस्ती से। २. अवश्य।

**हठाहठ***—क्रि० वि० दे० "हठात्"।

**हठी**—वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला। जिद्दी। टेकी।

**हठीला**—वि० [सं० हठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १. हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। २. दृढ़-प्रतिज्ञ। बात का पक्का। ३. लड़ाई में जमा रहनेवाला। वीर।

**हड़**—संज्ञा स्त्री० [सं० हरीतकी] १. एक बड़ा पेड़ जिसका फल औषध के रूप में काम में लाया जाता है। २. हड़ के आकार का एक प्रकार का गहना। लटकन।

**हड़कंप**—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+काँपना] भारी हलचल। तहलका।

**हड़क**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए गहरी आकुलता। २. किसी वस्तु को पाने की गहरी झक। उत्कट इच्छा। रट। धुन।

**हड़कना**—क्रि० अ० [हिं० हड़क] किसी वस्तु के अभाव से दुःखी होना। तरसना।

**हड़काना**—क्रि० स० [देश०] १. आक्रमण करने या तंग करने आदि के लिए पीछे लगा देना। लहकारना। २. किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना। तरसाना। ३. कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना।

**हड़काया**—वि० [हिं० हड़क] पागल। (कुत्ता)

**हड़गीला**—संज्ञा पु० [हिं० हाड़+गिलना ?] बगले की जाति का एक पक्षी।

**हड़जोड़**—संज्ञा पुं० [हिं० हाड़+जोड़ना] एक प्रकार की लता। कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

**हड़ताल**—संज्ञा स्त्री० [सं० हट्ट=दूकान+ताला] किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिए दूकानदारों का दूकानें बन्द कर देना।

संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

**हड़ताली**—वि० [हिं० हड़ताल] १. हड़ताल करनेवाला। २. हड़ताल संबंधी।

**हड़ना**—क्रि० अ० [हिं० हड़ा] तौल में जाँचा जाना।

**हड़प**—वि० [अनु०] १. पेट में डाला हुआ। निगला हुआ। २. गायब किया हुआ।

**हड़पना**—क्रि० स० [अनु० हड़प] १. मुँह में डाल लेना। खा जाना। २. अनुचित रीति से ले लेना। उड़ा लेना।

**हड़बड़**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] जल्दबाजी प्रकट करनेवाली गति-विधि।

**हड़बड़ाना**—क्रि० अ० [अनु०] जल्दी करना। उतावलापन करना। आतुर होना।

क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिए कहना।

**हड़बड़िया**—वि० [हिं० हड़बड़ी+इया (प्रत्य०)] हड़बड़ी करनेवाला। जल्दबाज। उतावला।

**हड़बड़ी**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] १. जल्दी। उतावली। २. जल्दी के कारण घबराहट।

**हड़हड़ाना**—क्रि० स० [अनु०] जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

**हड़ावरि, हड़ावल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाड़+सं० आवलि] १. हड्डियों का ढाँचा। ठठरी। २. हड्डियों की माला।

**हड़ीला**—वि० [हिं० हाड़] १. जिसमें हड्डियाँ हों। २. दुबला-पतला।

**हड़ूड़ा**—संज्ञा पुं० [सं० हड़ाचिका] मधुमक्खियों की तरह का एक कीड़ा। भिड़। बर्रे।

**हड्डी**—संज्ञा स्त्री० [सं० अस्थि] १. शरीर के अंदर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि।

मुहा०—हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना=खूब मारना। खूब पीटना। हड्डियाँ

निकल आना या रह जाना=शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हड्डी=पुराने आदमी का दृढ़ शरीर। २. कुल। वंश। खानदान।

यो०—हड्डीतोड़=घोर, कठोर। (परिश्रम)।

**हत**—वि० [ सं० ] १. वध किया हुआ। मारा हुआ। २. पीटा हुआ। ताड़ित। ३. खोया हुआ। गँवाया हुआ। विहीन। ४. जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो। ५. नष्ट किया हुआ। बिगाड़ा हुआ। ६. पीड़ित। ग्रस्त। ७. गुणा किया हुआ। गुणित। ( गणित )

**हतक**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हतक=फाड़ना ] हेठी। बेइज्जती। अप्रतिष्ठा।

**हतक इज्जती**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हतक+इज्जत ] अप्रतिष्ठा। मान-हानि। बेइज्जती।

**हतचेत**—वि० दे० "हतज्ञान"।

**हतज्ञान**—वि० [ सं० ] बेहोश। बेसुध।

***हतदैव**—वि० [ सं० ] अभागा।

**हतना**—क्रि० स० [ सं० हत+ना ( हिं० प्रत्य० ) ] १. वध करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३. पालन न करना। न मानना। ४. नष्ट-भ्रष्ट करना। तोड़-फोड़ देना।

**हतप्रभ**—वि० [ सं० ] जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो।

**हतबुद्धि**—वि० [ सं० ] बुद्धिशून्य। मूर्ख।

**हतभागा, हतभागी**—वि० [ सं० हत+हिं० भाग्य ] [ स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी ] अभागा। भाग्यहीन। बदकिस्मत।

**हतबोध**—वि० दे० "हतबुद्धि"।

**हतभाग्य**—वि० [ सं० ] भाग्यहीन। बदकिस्मत।

**हतवाना**—क्रि० स० [ हिं० हतना का प्रेर० ] वध कराना। मरवाना।

**हतश्री**—वि० [ सं० ] १. जिसके चेहरे पर कांति न रह गई हो। २. मुरझाया हुआ। उदास।

**हता***†—क्रि० अ० [ होना का भूत-काल ] था।

**हताना**—क्रि० स० दे० "हतवाना"।

**हताश**—वि० [ सं० ] जिसे आशा न रह गई हो। निराश। नाउम्मीद।

**हताहत**—वि० [ सं० ] मारे गए और घायल।

**हते***†—क्रि० अ० [ होना का भूत-काल ] थे।

**हतोत्साह**—वि० [ सं० ] जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

**हत्थ***—संज्ञा पुं० दे० "हाथ"।

**हत्था**—संज्ञा पुं० [ हिं० हत्थ, हाथ ] १. औजार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूठ। २. लकड़ी का वह बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है। हाथा। हथेरा। ३. केले के फलों का घौद।

**हत्थी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हत्था, हाथ ] औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता। मूँठ।

**हत्थे**—क्रि० वि० [ हिं० हाथ, हत्थ ] हाथ में।

मुहा०—हत्थे चढ़ना=१. हाथ में आना। प्राप्त होना। २. वश में होना।

**हत्या**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मार डालने की क्रिया। वध। खून।

मुहा०—हत्या लगना=हत्या का पाप लगना। किसी के वध का दोष ऊपर आना। २. झंझट। बखेड़ा।

**हत्यारा**—संज्ञा पुं० [ सं० हत्या+कार ] [ स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी ] हत्या करनेवाला। जान लेनेवाला। कसाई।

**हत्यारी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हत्यारा ] १. हत्या करनेवाली। २. हत्या का पाप। प्राणवध का दोष।

**हथ**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ ] 'हाथ' का संक्षिप्त रूप ( समस्त पदों में )।

**हथउधार**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ+उधार ] दे० "हथफेर" ३.।

**हथकंडा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ+सं० कांड ] १. हाथ की सफाई। हस्तलाघव। हस्तकौशल। २. गुप्त चाल। चालाकी का ढंग।

**हथकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाथ+कड़ा ] लोहे का वह कड़ा जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है।

**हथगोला**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ+गोला ] हाथ से फेंककर मारा जानेवाला गोला।

**हथछुट**—वि० [ हिं० हाथ+छोड़ना ] जरा सी बात पर मार बैठनेवाला।

**हथनाल**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथी+नाल ] वह तोप जो हाथी पर चलती थी। गजनाल।

**हथनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाथी+नी ( प्रत्य० ) ] हाथी की मादा।

**हथफूल**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ+फूल ] हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना। हथसाँकर। हथसंकर।

**हथफेर**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ+फेरना ] १. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २. दूसरे के माल को सफाई से उड़ा लेना। ३. थोड़े दिनों के लिए लिया या दिया हुआ कर्ज। हाथ-उधार।

**हथलेवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ + लेना ] विवाह में वर का कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति। पाणिग्रहण।

**हथवाँस**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ ] नाव चलाने के समान। जैसे—पतवार, डाँड़ा।

**हथवाँसना**†—क्रि० स० [ हिं० हाथ ] १. हाथ में लेना। पकड़ना। २. काम में लाना। प्रयोग करना।

**हथसाँकर**-संज्ञा पुं० दे० "हथफूल"।

**हथसार**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाथी + सं० शाला ] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। फीलखाना।

**हथा**†—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ ] हाथ का छापा जो शुभ अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

**हथाहथी***†—अव्य० [ हिं० हाथ ] १. हाथोंहाथ। २. शीघ्र। तुरंत।

**हथिनी**—संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

**हथिया**—संज्ञा पुं० [ सं० हस्त ] हस्त नक्षत्र।

**हथियाना**—क्रि० स० [ हिं० हाथ + आना (प्रत्य०) ] १. हाथ में करना। ले लेना। २. धोखा देकर ले लेना। उड़ा लेना। ३. हाथ में पकड़ना।

**हथियार**—संज्ञा पुं० [ हिं० हथियाना ] १. हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधन-वस्तु। औजार। २. तलवार, भाला आदि आक्रमण करने का साधन। अस्त्र-शस्त्र।

**मुहा०**—१. मारने के लिए अस्त्र हाथ में लेना। २. लड़ाई के लिए तैयार होना।

**हथियारबंद**—वि० [ हिं० हथियार + फा० बंद ] जो हथियार बाँधे हो। सशस्त्र।

**हथेरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

**हथेली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हस्ततल ] हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें उँगलियाँ लगी होती हैं। करतल। गदोरा।

**मुहा०**—हथेली में आना=१. मिलना। प्राप्त होना। २. वश में होना। हथेली पर जान होना=ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें जान जाने का भय हो।

**हथेव**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ ] हथौड़ी।

**हथोरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

**हथौटी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाथ + औटी (प्रत्य०) ] १. किसी काम में हाथ लगाने का ढंग। हस्तकौशल। २. किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव।

**हथौड़ा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हाथ + औड़ा (प्रत्य०) ] [ स्त्री० अल्पा० हथौड़ी ] १. वह औजार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते, पीटते या गढ़ते हैं। मारतौल। २. कील ठोंकने, खूँटे गाड़ने आदि का औजार।

**हथौड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हथौड़ा ] छोटा हथौड़ा।

**हथ्याना***—क्रि० स० दे० "हथियाना"।

**हथ्यार***†—संज्ञा पुं० दे० "हथियार"।

**हद**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. किसी चीज की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई की सबसे अधिक पहुँच। सीमा। मर्यादा।

**मुहा०**—हद बाँधना=सीमा निर्धारित करना।

२. किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिमाण जो ठहराया गया हो।

**मुहा०**—हद से ज्यादा=बहुत अधिक। अत्यंत। हद व हिसाब नहीं=बहुत ही ज्यादा। अत्यंत।

३. किसी बात की उचित सीमा। मर्यादा।

**हदका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] धक्का। आघात।

**हदस**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हादसा=दुर्घटना ] डर। भय। आशंका।

**हदीस**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत कुछ स्मृति के रूप में होता है।

**हनन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० हननीय, हनित ] १. मार डालना। वध करना। २. गुन या न्यून करना। ३. आघात करना। पीटना। गुणा करना। (गणित)

**हनना***—क्रि० स० [ सं० हनन ] १. मार डालना। वध करना। २. आघात करना। प्रहार करना। ३. पीटना। ठोंकना। ४. लकड़ी से पीट या ठोंककर बजाना।

**हनवाना**—क्रि० स० [ हिं० हनना का प्रेरणा० ] हनने का कार्य्य दूसरे से कराना।

**हनिवंत***†—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

**हनुँव**—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

**हनु**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। * २. ठुड्डी। चिबुक।

**हनुमंत**—संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

**हनुमान्**—संज्ञा पुं० पंपा के एक वीर बंदर जिन्होंने सीता-हरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी। महावीर।

वि० [ सं० हनुमत् ] १. दाढ़वा

चलनेवाला। २. भारी डाकू या लड़ने-वाला। ३. बहुत बड़ा वीर या बहादुर।

**हनूफाल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ हनु+हिं॰ फाल] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अन्त में गुरु लघु होते हैं।

**हनूमान्**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हनुमान्"।

**हनोज़**—अव्य॰ [फ़ा॰] अभी। अभी तक।

**हप**—संज्ञा पुं॰ [अनु॰] मुँह में चट से लेकर ओंठ बंद करने का शब्द।

**मुहा॰**—हप कर जाना=झट से मुँह में डालकर खा जाना।

**हफ़्ता**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] सप्ताह।

**हपकना**—क्रि॰ अ॰ [अनु॰ हप] खाने या दाँत काटने के लिए झट से मुँह खोलना।

क्रि॰ स॰ दाँत काटना।

**हबर हबर**—क्रि॰ वि॰ [अनु॰ हड़-बड़] १. जल्दी जल्दी। उतावली से। २. जल्दी के कारण ठीक तौर से नहीं। हड़बड़ी से।

**हबराना**॰—क्रि॰ अ॰ दे॰ "हड़-बड़ाना"।

**हबशी**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] हबश देश का निवासी जो बहुत काला होता।

**हब्बा डब्बा**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हाँफ+अनु॰ डब्बा] जोर जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है।

**हम**—सर्व॰ [सं॰ अहम्] उत्तम पुरुष बहुवचन-सूचक सर्वनाम शब्द। "मैं" का बहुवचन।

संज्ञा पुं॰ अहंकार। 'हम' का भाव।

अव्य॰ [फ़ा॰] १. साथ। संग। २. समान। तुल्य।

**हमजोली**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰ हम+हिं॰ जोड़ी ?] साथी। संगी। सह-योगी। सखा।

**हमता**॰—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हम+ता (प्रत्य॰)] अहंभाव। अहंकार।

**हमदर्द**—संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] दुःख में सहानुभूति रखनेवाला।

**हमदर्दी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] सहानु-भूति।

**हमरा**—सर्व॰ दे॰ "हमारा"।

**हमराह**—अव्य॰ [फ़ा॰] (कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में।

**हमल**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] स्त्री के पेट में बच्चे का होना। गर्भ।

वि॰ दे॰ "गर्भ"।

**हमला**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. लड़ाई करने के लिए चढ़ दौड़ना। युद्ध-यात्रा। चढ़ाई। धावा। २. मारने के लिए झपटना। आक्रमण। ३. प्रहार। वार। ४. विरोध में कही हुई बात।

**हमहमी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हमाहमी"।

**हमाम**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हम्माम"।

**हमारा**—सर्व॰ [हिं॰ हम+आरा (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ हमारी] 'हम' का संबंधकारक रूप।

**हमाहमी**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हम] १. अपने अपने लाभ का आतुर प्रयत्न। स्वार्थपरता। २. अहंकार।

**हमीर**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हम्मीर"।

**हमें**—सर्व॰ [हिं॰ हम] 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको।

**हमेल**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰ हमायल] सिक्कों आदि की माला जो गले में पहनी जाती है।

**हमेव**॰—संज्ञा पुं॰ [सं॰ अहम्] अहंकार।

**हमेशा**—अव्य॰ [फ़ा॰] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा। सदैव।

**हमेस**॰—अव्य॰ दे॰ "हमेशा"।

**हमैं**॰—अव्य॰ दे॰ "हमें"।

**हम्माम**—संज्ञा पुं॰ [अ॰] नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है। स्नानागार।

**हम्मीर**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. एक संकर राग। २. रणथम्भोर गढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई॰ में अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था।

**हयंद**॰—संज्ञा पुं॰ [सं॰ हयेंद्र] बड़ा या अच्छा घोड़ा।

**हय**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ हया, हयी] १. घोड़ा। अश्व। २. कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द। ३. चार मात्राओं का एक छंद। ४. इंद्र।

**हयग्रीव**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक अवतार। २. एक राक्षस जो कल्पांत में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था।

**हयना**॰—क्रि॰ स॰ [सं॰ हत+ना (प्रत्य॰)] १. वध करना। मार डालना। २. मारना-पीटना। ३. ठोंककर बजाना। ४. नष्ट करना। न रहने देना।

**हयनाल**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ हय+हिं॰ नाल] वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

**हयमेध**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] अश्व-मेध यज्ञ।

**हयशाला**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] अस्त-

वक। मुक्ताक।

**हया**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] लज्जा। शर्म।

**हयादार**—संज्ञा पुं० [ अ० हया + फ़ा० दार ] [भाव० हयादारी ] वह जिसे हया हो। लज्जाशील। शर्मदार।

**हर**—वि० [ सं० ] [ स्त्री० हरी ] १. हरण करनेवाला। छीनने या लूटनेवाला। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला। ३. वध या नाश करनेवाला। ४. ले जानेवाला। वाहक।

संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. एक राक्षस जो विभीषण का मंत्री था। ३. वह संख्या जिससे भाग दें। भाजक। (गणित) ४. अग्नि। आग। ५. छप्पय के दसवें भेद का नाम। ६. टगण के पहले भेद का नाम।

†संज्ञा पुं० [ सं० हल ] हल।

वि० [ फ़ा० ] प्रत्येक। एक एक।

**मुहा०**—हर एक=प्रत्येक। एक एक। हर रोज=प्रतिदिन। हर दम=सदा।

**हरखा**†—संज्ञा पुं० [ ? ] शिशुओं को सुलाने के गीत। लोरी।

**हरएँ***—अव्य० [ हिं० हरुवा ] धीरे धीरे।

**हरकत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. गति। चाल। हिलना-डोलना। २. चेष्टा। क्रिया। ३. दुष्ट व्यवहार। नटखटी।

**हरकना***†—क्रि० स० दे० "हट-कना"।

**हरकारा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला। २. चिट्ठी-रसाँ। डाकिया।

**हरख***†—संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

**हरखना**—क्रि० अ० [ सं० हर्ष, हिं० हरख ] हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

**हरखाना**—क्रि० अ० दे० "हरखना"।

क्रि० स० [ हिं० हरखना ] प्रसन्न करना। खुश करना। आनंदित करना।

**हरगिज**—अव्य० [ फ़ा० ] किसी दशा में भी। कदापि। कभी।

**हरचंद**—अव्य० [ फ़ा० ] १. कितना ही। बहुत या बहुत बार। २. यद्यपि। अगरचे।

**हरज**—संज्ञा पुं० दे० "हर्ज"।

**हरजा**—संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" और "हरजाना"।

**हरजाई**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. हर जगह घूमनेवाला। २. बहल्ला। आवारा।

संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

**हरजाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हानि का बदला। क्षतिपूर्ति।

**हरट्ट***—वि० [ सं० हृष्ट ] हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

**हरण**—संज्ञा पुं० [सं०] १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। मिटाना। ३. नाश। संहार। ४. ले जाना। वहन। ५. भाग देना। तकसीम करना। (गणित)

**हरता**—संज्ञा पुं० दे० "हर्त्ता"।

**हरता धरता**—संज्ञा पुं० [ सं० हर्त्ता + धर्त्ता ] [ ( वैदिक ) ] सब बातों का अधिकार रखनेवाला। पूर्ण अधिकारी।

**हरतार**—संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।

**हरताल**—संज्ञा स्त्री० [सं० हरिताल] पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो खानों में मिलता है और बनाया भी जा सकता है। (प्राचीन काल में इसका प्रयोग अशुद्ध लेख को काटने के लिए किया जाता था।

**मुहा०**—( किसी बात पर ) हरताल फेरना या लगाना=नष्ट करना। रद करना।

**हरतालिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक व्रत जो भाद्रपद शुक्ल ३ को स्त्रियाँ रखती हैं।

**हरताली**—संज्ञा पुं० [ हिं० हरताल ] एक तरह का पीला रंग।

वि० हरताल के रंग का।

**हरद, हरदी***—संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

**हरद्वान**—संज्ञा पुं० [?] एक प्राचीन स्थान जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

**हरद्वार**—संज्ञा पुं० दे० "हरिद्वार"।

**हरना**—क्रि० स० [ सं० हरण ] १. छीनना, लूटना या चुराना। २. दूर करना। हटाना। ३. मिटाना। नाश करना। ४. उठाकर ले जाना।

**मुहा०**—मन हरना=मन आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना=१. मार डालना। २. बहुत संताप या दुःख देना।

*क्रि० अ० दे० "हारना"

*† संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

**हरनाकस***†—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

**हरनाच्छ***†—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।

**हरनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हिरन ] हिरन की मादा। मृगी।

**हरनौटा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हिरन ] हिरन का बच्चा।

**हरपा**—संज्ञा पुं० [ देश० ] १. खिंचोरा। २. डिब्बा।

**हरफ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अक्षर। वर्ण।

**मुहा०**—किसी पर हरफ आना=दोष लगना। कलंक लगना। हरफ उठाना

= अक्षर पहचानकर पढ़ लेना।

**हरका-रेवड़ी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हरिपर्वरी ] १. कमरख की जाति का एक पेड़। २. उक्त पेड़ का फल।

**हरबड़ाना***†—क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

**हरबा**—संज्ञा पुं० [ अ० हरबः ] हथियार।

**हरबोंग**—वि० [ हिं० हर+बोंग ] १. गँवार। लट्ठमार। अक्खड़। २. मूर्ख। जड़।

संज्ञा पुं० १. अंधेर। कुशासन। २. उपद्रव।

**हरम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अंतःपुर। जनानखाना।

संज्ञा स्त्री० १. मुताही। रखेली स्त्री। २. दासी। ३. पत्नी।

**हरमजदगी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० हरामजादः ] शरारत। नटखटी। बदमाशी।

**हरयाली***—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।

**हरये***—अव्य० दे० "हरए"।

**हरवल***—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

**हरवली**—संज्ञा स्त्री० [ तु० हरावल ] सेना का अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

**हरवा**†—संज्ञा पुं० दे० "हार"।

वि० दे० "हलवा"।

**हरवाना**—क्रि० अ० [ हिं० हड़बड़ ] जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावली करना।

क्रि० स० [ हिं० हारना ] 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप।

**हरवाहा**—संज्ञा पुं० दे० "हलवाहा"।

**हरष**†—संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

**हरषना***—क्रि० अ० [ हिं० हर्ष+ना (प्रत्य०) ] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. पुलकित होना। रोमांच से प्रफुल्ल होना।

**हरषाना***—क्रि० अ० [ हिं० हरष+आना (प्रत्य०) ] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २. रोमांच से प्रफुल्ल होना।

क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

**हरषित***—वि० दे० "हर्षित"।

**हरसना***—क्रि० अ० दे० "हरषना"।

**हरसा**—संज्ञा पुं० दे० "हारस"।

**हरसिंगार**—संज्ञा पुं० [ सं० हार+सिंगार ] एक पेड़ जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डाँड़ी होती है। परजाता।

**हरहाई**—वि० स्त्री० [ ? ] नटखट (गाय)।

**हरहार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. (शिव का हार) सर्प। साँप। २. शेषनाग।

**हरास**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हिरास ] भय। डर। २. दुःख। चिन्ता ३ थकावट। ४. हरारत।

**हरा**—वि० [ सं० हरित ] [ स्त्री० हरी ] १. घास या पत्तों के रंग का। हरित। सब्ज। २. प्रफुल्ल। प्रसन्न। ताजा ३ जो मुरझाया न हो। ताजा। ४. (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५. दाना या फल जो पका न हो।

**मुहा०**—हरा बाग=व्यर्थ आशा बँधानेवाली बात। हरा भरा=१. जो सूखा या मुरझाया न हो। २. जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

संज्ञा पुं० घास या पत्तों का सा रंग। हरित वर्ण।

†संज्ञा पुं० [ हिं० हार ] हार माला।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हर की स्त्री। पार्वती।

**हराई**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हारना ] हारने की क्रिया या भाव। हार।

**हराना**—क्रि० स० [ हिं० हारना ] १. युद्ध में प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना। परास्त करना। पराजित करना। २. शत्रु को विफल मनोरथ करना। ३. प्रयत्न में शिथिल करना। थकाना।

**हरापन**—संज्ञा पुं० [ हिं० हरा+पन (प्रत्य०) ] हरे होने का भाव। हरितता। सब्जी।

**हराम**—वि० [ अ० ] निषिद्ध। विधिविरुद्ध। बुरा। अनुचित। दूषित।

संज्ञा पुं० १. वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो। २. सूअर। (मुसल०)

**मुहा०**—(कोई बात) हराम करना=किसी बात का करना मुश्किल कर देना। (कोई बात) हराम होना=किसी बात का मुश्किल हो जाना।

३. बेईमानी। अधर्म। पाप।

**मुहा०**—हराम का=१. जो बेईमानी से प्राप्त हो। २. मुफ्त का।

४. स्त्री-पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार।

**हरामखोर**—संज्ञा पुं० [ अ०+फ़ा० ] [ भाव० हरामखोरी ] १. पाप की कमाई खानेवाला। २. मुफ्तखोर। ३. आलसी। निकम्मा।

**हरामजादा**—संज्ञा पुं० [ अ०+फ़ा० ] [ स्त्री० हरामजादी ] १. दोगला। वर्णसंकर। २. दुष्ट। पाजी। बदमाश।

**हरामी**—वि० [ अ० हराम+ई (प्रत्य०) ] १. व्यभिचार से उत्पन्न। २. दुष्ट। पाजी।

**हरारत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. गर्मी। ताप। २. हलका ज्वर। ज्वरांश।

**हरावरि***—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ावरि"।
संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

**हरावल**—संज्ञा पुं० [तु०] सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है।

**हरास**—संज्ञा पुं० [फ़ा० हिरास] १. भय। डर। २. आशंका। खटका। ३. दुःख। रंज। ४. नैराश्य। नाउम्मेदी।
संज्ञा स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव।

**हराहर***—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

**हरि**—वि० [सं०] १. भूरा या बादामी। २. पीला। हरा। हरित्।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. इंद्र। ३. घोड़ा। ४. बंदर। ५. सिंह। ६. सूर्य्य। ७. चंद्रमा। ८. मोर। मयूर। ९. सर्प। साँप। १०. अग्नि। आग। ११. वायु। १२. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। १३. श्रीराम। १४. शिव। १५. एक पर्वत का नाम। १६. एक वर्ष या भू-भाग का नाम। १७. अठारह वर्णों का एक छंद।
अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते।

**हरिअर***†—वि० [सं० हरित्] हरा। सब्ज।

**हरिअरी***†—संज्ञा स्त्री० दे० 'हरियाली'।

**हरिआली**—संज्ञा स्त्री० [सं० हरित् + आलि] १. हरेपन का विस्तार। २. घास और पेड़-पौधों का फैला हुआ समूह। ३. ताजगी। प्रसन्नता।

**हरिकथा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] भगवान् या उनके अवतारों का चरित्र-वर्णन।

**हरिकीर्त्तन**—संज्ञा पुं० [सं०] भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान।

**हरिगीतिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद जिसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु और अंत में लघु गुरु होता है।

**हरिचंद**—संज्ञा पुं० दे० "हरिश्चंद्र"।

**हरिचंदन**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।

**हरिजन**—संज्ञा पुं० [सं०] १. ईश्वर का भक्त। २ उस जाति का व्यक्ति जो पहले नीच या अस्पृश्य समझी जाती थी (आधु०)।

**हरिजान***—संज्ञा पुं० दे० "हरियान"।

**हरिण**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हरिणी] १. मृग। हिरन। २. हिरन की एक जाति। ३. हंस। ४. सूर्य्य।

**हरिणप्लुता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक वर्णार्द्धसम वृत्त जिसके विषम चरणों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण होता है।

**हरिणाक्षी**—वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली। सुंदरी।

**हरिणी**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हिरन की मादा। २. स्त्रियों के चार भेदों में से एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं। (कामशास्त्र) ३. एक वर्ण-वृत्त का नाम जिसमें सत्रह वर्ण होते हैं। ४. दस वर्णों का एक वृत्त।

**हरित्**—वि० [सं०] १. भूरे या बादामी रंग का। कपिश। २. हरा। सब्ज।
संज्ञा पुं० १. सूर्य्य के घोड़े का नाम। २. मरकत। पन्ना। ३. सिंह। ४. सूर्य्य।

**हरित**—वि० [सं०] १. भूरे या बादामी रंग का। २. पीला। जर्द। ३. हरा। सब्ज।

**हरितमणि**—संज्ञा पुं० [सं०] मरकत। पन्ना।

**हरिताभ**—वि० [सं०] जिसमें हरे रंग की आभा हो। हरापन लिए हुए।

**हरितालिका**—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'हरतालिका'।

**हरिद्रा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. हलदी। २. वन। जंगल। ३. मंगल। ४. सीसा धातु। (अनेकार्थ०)

**हरिद्राराग**—संज्ञा पुं० [सं०] साहित्य में वह पूर्वराग जो स्थायी या पक्का न हो।

**हरिद्वार**—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ से गंगा पहाड़ों को काटकर मैदान में आती है।

**हरिधाम**—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।

**हरिन**—संज्ञा पुं० [सं० हरिण] [स्त्री० हरिनी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्रायः सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में रहता है। मृग।

**हरिनग***—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प का मणि।

**हरिनाकुस***†—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

**हरिनाक्ष**—संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।

**हरिनाथ**—संज्ञा पुं० [सं०] हनुमान्।

**हरिनाम**—संज्ञा पुं० [सं० हरिनामन्] भगवान् का नाम।

**हरिनी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरिन] मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग।

**हरिपद**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का लोक। वैकुंठ। २. एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु होता है।

**हरिपुर**—संज्ञा पुं० [सं०] वैकुंठ।

**हरिप्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लक्ष्मी। २. एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में गुरु होता है। चंचरी। ३. तुलसी। ४. लाल चंदन।

**हरिप्रोता**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का शुभ मुहूर्त। (ज्योतिष)

**हरिभक्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर का भजन करनेवाला।

**हरिभक्ति**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] ईश्वर-प्रेम।

**हरियर**†—वि० दे० "हरा"।

**हरियाना**—संज्ञा पुं० [ ? ] हिसार और रोहतक तक के आस-पास का प्रांत।

**हरियाई**†*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।

**हरियाली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हरित+आलि ] १. हरे रंग का फैलाव। २. हरे हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार। ३. दूब। ४. आनंद। प्रसन्नता। ताजगी।

मुहा०—हरियाली सूझना=चारों ओर आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना।

**हरियाली तीज**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हरियाली+तीज ] सावन बदी तीज।

**हरिलीला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**हरिलोक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वैकुंठ।

**हरिवंश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. कृष्ण का कुल। २. एक ग्रंथ जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तांत है।

**हरिवासर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. रविवार। २. विष्णु का दिन, एकादशी।

**हरिशयनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] आषाढ़ शुक्ल एकादशी।

**हरिश्चंद्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सूर्य वंश के अट्ठाईसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे। यह बड़े दानी और सत्यव्रती प्रसिद्ध हैं।

**हरिस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हलीषा ] हल का वह लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जूआ रहता है। ईषा।

**हरिसौरभ**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कस्तूरी। मृग-मद।

**हरिहर क्षेत्र**—संज्ञा पुं० [ सं० ] बिहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्त्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है।

**हरिहाई***—वि० स्त्री० दे० "हरहाई"।

**हरी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १४ वर्णों का एक वृत्त। अनंद।

वि० 'हरा' का स्त्री०।

संज्ञा पुं० दे० "हरि"।

**हरीकेन**—संज्ञा स्त्री० [ अं० ] एक प्रकार की लालटेन।

**हरीतकी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हड़। हर्रे।

**हरीतिमा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हरे-भरे पेड़ों का विस्तार। हरियाली।

**हरीरा**—संज्ञा पुं० [ अ० हरीरः ] एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दूध में मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है।

*† वि० [ हिं० हरिअर ] [ स्त्री० हरीरी ] १. हरा। सब्ज। २. हर्षित। प्रसन्न। प्रफुल्ल।

**हरीस**—संज्ञा स्त्री० दे० "हरिस"।

**हरुआ**†*—वि० [सं० लघुक ] हलका।

**हरुआ**†*—वि० दे० "हलका"।

**हरुआई**†—संज्ञा स्त्री० [हिं० हरुआ] १. हलकापन। २. फुरती।

**हरुआना**—क्रि० अ० [हिं० हरुआ] १. हलका होना। लघु होना। २. फुरती करना।

**हरुए**†*—क्रि० वि० [ हिं० हरुआ ] १. धीरे धीरे। आहिस्ता से। २. इस प्रकार जिसमें आहट न मिले। चुपचाप।

**हरू***—वि० दे० "हलका"।

**हरूफ**—संज्ञा पुं० [ अ० हरफ का बहु० ] अक्षर।

**हरे***—क्रि० वि० [ हिं० हरुए ] १. धीरे से। आहिस्ता से। मंद। २. (शब्द) जो ऊँचा या जोर का न हो। ३. हलका। कोमल। (आघात, स्पर्श आदि)

**हरेक**—वि० दे० "हरएक"।

**हरेरी***—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।

**हरेव**—संज्ञा पुं० [देश०] १. मंगोलों का देश। २. मंगोल जाति।

**हरेवा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हरा ] हरे रंग की एक चिड़िया। हरी बुलबुल।

**हरैं***—क्रि० वि० दे० "हरे"।

**हरैया**†*—संज्ञा पुं० [ हिं० हरना ] हरनेवाला। दूर करनेवाला।

**हरौल**—संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

**हरौहर***†—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] लूट। बलपूर्वक छीनना।

**हर्ज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. काम में रुकावट। बाधा। अड़चन। २. हानि। नुकसान।

यौ०—हर्ज-मर्ज=बाधा। अड़चन।

**हर्त्ता**—संज्ञा पुं० [ सं० हर्तृ ] [ स्त्री० हर्त्री ] १. हरण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।

**हर्त्तार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हर्त्ता।

**हर्फ**—संज्ञा पुं० दे० "हरफ"।

**हर्म**—संज्ञा पुं० [ अ० ] अंतःपुर। जनानखाना।

**हर्म्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सुंदर प्रासाद। महल।

**हर्रे**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हड़"।

**हर्रा**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हरीतकी ] बड़ी जाति की हड़।

**हर्रै**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हड़"।

**हर्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लता। आनंद। खुशी।

**हर्षण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. प्रफुल्लता या भय से रोंगटों का खड़ा होना। २. प्रफुल्लित करना या होना। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

**हर्षना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हर्षण ] प्रसन्न होना।

**हर्षवर्द्धन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] भारत का वैस क्षत्रिय-वंशी एक बौद्ध सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे।

**हर्षाना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हर्ष ] आनंदित होना। प्रसन्न होना। प्रफुल्ल होना।

क्रि॰ स॰ हर्षित करना। आनंदित करना।

**हर्षित**—वि॰ [ सं॰ ] आनंदित। प्रसन्न।

**हलंत**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हल्"।

**हल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वह औजार जिससे जमीन जोती जाती है। सीर। लांगल।

**मुहा॰**—हल जोतना=१. खेत में हल चलाना। २. खेती करना।

२. एक अस्त्र का नाम।

संज्ञा पुं॰ [अ॰] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २. किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना।

**हलकंप**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हलना (हिलना)+कंप ] १. हलचल। खल-कंप। २. चारों ओर फैली हुई घबराहट।

**हलक**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] गले की नली। कंठ।

**मुहा॰**—हलक के नीचे उतरना=१. पेट में जाना। २. ( किसी बात का ) मन में बैठना।

**हलकई**†—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हलका+ई ( प्रत्य॰ )] १. हलकापन। २. ओछापन। तुच्छता। ३. हेठी। अप्रतिष्ठा।

**हलकन**—संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हलकना] हलकने की क्रिया या भाव। हिलना।

**हलकना**†*—क्रि॰ अ॰ [सं॰ हल्लन] १. किसी वस्तु में भरे हुए जल का हिलाने से हिलना-डोलना या शब्द करना। २. हिलोरें लेना। लहराना। ३. बत्ती की लौ का झिलमिलाना। ४. हिलना। डोलना।

**हलका**—वि॰ [ सं॰ लघुक ] [ स्त्री॰ हलकी ] १. जो तौल में भारी न हो। २. जो गाढ़ा न हो। पतला। ३. जो गहरा या चटकीला न हो। ४. जो गहरा न हो। उथला। ५. जो उपजाऊ न हो। ६. कम। थोड़ा। ७. जो जोर का न हो। मंद। ८. ओछा। तुच्छ। टुच्चा। ९. आसान। सुख-साध्य। १०. जिसे किसी बातके करने की फिक्र न रह गई हो। निश्चिंत। ११. प्रफुल्ल। ताजा। १२. पतला। महीन। १३. कम अच्छा। घटिया। १४. खाली। छूँछा।

**मुहा॰**—हलका करना=अपमानित करना। तुच्छ ठहराना। हलके-हलके=धीरे-धीरे।

†संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ हलहल ] तरंग। लहर।

**हलका**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ हल्कः ] १. वृत्त। मंडल। गोलाई। २. घेरा। परिधि। ३. मंडली। झुंड। दल। ४. हाथियों का झुंड। ५. कई मुहल्लों, गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिए नियत हो।

**हलकाई**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हलकापन"।

**हलकान**‡—वि॰ दे॰ "हलाकान"।

**हलकाना**†—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ हलका+ना ( प्रत्य॰ ) हलका होना। बोझ कम होना।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हलकना ] हिलोरा देना।

क्रि॰ स॰ दे॰ "हिलगाना"।

**हलकापन**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हलका+पन ( प्रत्य॰ ) ] १. हलका होने का भाव। लघुता। २. ओछापन। नीचता। तुच्छ बुद्धि। ३. अप्रतिष्ठा। हेठी।

**हलकारा**‡—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हरकारा"।

**हलकोरा**†—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] तरंग। लहर।

**हलचल**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हलना+चलना ] १. लोगों के बीच फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़-धूप, शोर-गुल आदि। खलबली। धूम। २. उपद्रव। दंगा। कंप। विचलन।

वि॰ डगमगाता हुआ। कंपायमान।

**हल-जुता, हल-जोता**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हल जोतना] हल जोतनेवाला। किसान। (उपेक्षा)

**हलद-हात**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हलदी+हाथ ] विवाह में हलदी चढ़ाने की रस्म।

**हलदी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हरिद्रा ] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप में होती है, मसाले के रूप में और रँगाई के काम में भी

आती है। २. उक्त पौधों की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है।

**मुहा०**—हलदी उठना या चढ़ना=विवाह के पहले दूल्हे और दुलहिन के शरीर में हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना। हलदी लगना=विवाह होना। हलदी लगे न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च किए। मुफ्त में।

**हलदू**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़। करन।

**हलधर**—संज्ञा पुं० [सं०] बलरामजी।

**हलना**†*—क्रि० अ० [ सं० हल्लन ] १. हिलना-डोलना। २. घुसना। पैठना।

**हलफ**—संज्ञा पुं० [ अ० ] किसी पवित्र वस्तु की शपथ। कसम। सौगंध।

**मुहा०**—हलफ उठाना=कसम खाना।

**हलफनामा**—संज्ञा पुं० [अ०+फा०] वह कागज जिस पर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो।

**हलफा**—संज्ञा पुं० [ अनु० हलहल ] १. बच्चों को होनेवाला एक प्रकार का श्वास रोग। २. लहर। तरंग।

**हलबल***—संज्ञा पुं० [ हिं० हल+बल ] खलबली। हलचल। धूम।

**हलबलाना**†—क्रि० अ०, स० दे० "हड़बड़ाना"।

**हलबी, हलब्बी**—वि० [ हलब देश ] हलब देश का ( शीशा )। बढ़िया ( शीशा )।

**हलमुखी**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

**हलराना**—क्रि० स० [ हिं० हिलोरा ] ( बच्चों को ) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना।

**हलवा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन। मोहनभोग।

**मुहा०**—हलवे माँडे से काम=केवल स्वार्थ-साधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से मतलब।

**हलवाई**—संज्ञा पुं० [ अ० हलवा+ई ( प्रत्य० ) ] [ स्त्री० हलवाइन ] मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

**हलवाह, हलवाहा**—संज्ञा पुं० [ सं० हलवाह ] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो।

**हलहल**—संज्ञा पुं० [ अनु० हल ] १. जल के हिलने डुलने की ध्वनि। २. किसी द्रव्य में जलादि द्रव पदार्थ का अत्यधिक मिश्रण।

**हलहलाना**†—क्रि० स० [ अनु० हलहल ] खूब जोर से हिलाना डुलाना। झकझोरना।

क्रि० अ० काँपना। थरथराना।

**हलाक**—वि० [ अ० हलाकत ] मारा हुआ।

**हलाकान**†—वि० [ अ० हलाक ] [ स्त्री० हलाकानी ] परेशान। हैरान। तंग।

**हलाकी**—वि० [ अ० हलाक ] मार डालनेवाला। मारू। घातक।

**हलाकू**—वि० [ हलाक ] हलाक करनेवाला।

संज्ञा पुं० एक तुर्क सरदार जो चंगेज खाँ का पोता और उसी के समान हत्याकारी था।

**हला-भला**—संज्ञा पुं० [ हिं० भला+हला ( अनु० )] १. निबटारा। निर्णय। २. परिणाम।

**हलायुध**—संज्ञा पुं० [सं०] बलराम।

**हलाल**—वि० [ अ० ] जो शरअ या मुसलमानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो। जायज।

संज्ञा पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म पुस्तक में आज्ञा हो।

**मुहा०**—हलाल करना=खाने के लिए पशुओं को मुसलमानी शरअ के मुताबिक ( धीरे धीरे गला रेतकर ) मारना। जबह करना। हलाल का=ईमानदारी से पाया हुआ।

संज्ञा पुं० दे० "हिलाल"।

**हलालखोर**—संज्ञा पुं० [ अ० फा० ] [ स्त्री० हलालखोरी, हलालखोरिन ] १. मिहनत करके जीविका करनेवाला। २. मेहतर। भंगी।

**हलाहल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. वह प्रचंड विष जो समुद्र-मंथन के समय निकला था। २. भारी जहर। ३. एक जहरीला पौधा। दे० "हलहल"।

**हली**—संज्ञा पुं० [ सं० हलिन् ] १. बलराम। २. किसान।

**हलीम**—वि० [ अ० ] सीधा। शांत।

**हलुवा**—संज्ञा पुं० "हलवा"।

**हलुका***—वि० दे० "हलका"।

**हलूक**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] वमन। के।

**हलरा-हलोर**†*—संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

**हलोरना**—क्रि० स० [ हिं० हिलोर ] १. पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना डुलाना। २. मथना। ३. अनाज फटकना। ४. बहुत अधिक मान में किसी पदार्थ का संग्रह करना।

**हलोरा***—संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

**हल्**—संज्ञा पुं० [ सं० ] शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।

**हल्दी**—संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

**हल्ला**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. चिल्लाहट। शोर-गुल। कोलाहल। २. लड़ाई के समय की ललकार।

हाँक । ३. आक्रमण । धावा । हमला ।

**हल्लीश**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक प्रकार का उपरूपक जिसमें एक ही अंक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।

**हवन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. किसी देवता के निमित्त मंत्र पढ़कर घी, जौ तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य । होम । २. अग्नि । आग । ३. हवन करने का चमचा । स्रुवा ।

**हवनीय**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हवन के योग्य ।

संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो हवन करने के समय अग्नि में डाला जाता है।

**हवलदार**—संज्ञा पुं० [अ० हवाल+फ़ा० दार ] १. बादशाही जमाने का वह अफसर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिए तैनात रहता था । २. फौज में एक सबसे छोटा अफसर ।

**हवस**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. लालसा । कामना । चाह । २. तृष्णा ।

**हवा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. वह सूक्ष्म प्रवाह रूप पदार्थ जो भूमंडल को चारों ओर से घेरे हुए है और जो प्राणियों के जीवन के लिए सबसे अधिक आवश्यक है । वायु । पवन ।

**मुहा०**—हवा उड़ना=१. खबर फैलना । २. अफवाह फैलना । हवा करना=पंखे से हवा का झोंका लाना । पंखा हाँकना । हवा के घोड़े पर सवार=बहुत उतावली में । बहुत जल्दी में । हवा खाना=१. शुद्ध वायु के सेवन के लिए बाहर निकलना । टहलना । २. प्रयोजन सिद्धि तक न पहुँचना । अकृतकार्य्य होना । हवा पीकर रहना=बिना आहार के रहना । ( व्यंग्य ) हवा बताना=किसी वस्तु से वंचित रखना । टाल देना । हवा बाँधना=१. लंबी चौड़ी बातें कहना । शेखी हाँकना । २. गप हाँकना । हवा पलटना, फिरना या बदलना=१. दूसरी ओर की हवा चलने लगना । २. दूसरी स्थिति या अवस्था होना । हालत बदलना । हवा बिगड़ना=१. संक्रामक रोग फैलना । २. रीति या चाल बिगड़ना । बुरे विचार फैलना । हवा सा=बिलकुल महीन या हलका । हवा से लड़ना=किसी से अकारण लड़ना । हवा से बातें करना=१. बहुत तेज दौड़ना या चलना । २. आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना । किसी की हवा लगना=किसी की संगत का प्रभाव पड़ना । हवा हो जाना=१. झटपट कर चल देना । भाग जाना । २. न रह जाना । एकबारगी गायब हो जाना ।

२. भूत । प्रेत । ३. अच्छा नाम । प्रसिद्धि । ख्याति । ४. बड़प्पन या उत्तम व्यवहार का विश्वास । साख ।

**मुहा०**—हवा बँधना=१. अच्छा नाम हो जाना । २. बाजार में साख होना ।

५. किसी बात की सनक । धुन ।

**हवाई**—वि० [ अ० हवा ] १. हवा का । वायु-संबंधी । २. आकाश में होनेवाला । ३. आकाश में से होकर आनेवाला । ४. आकाश में स्थित । ५. कल्पित या झूठ । निर्मूल । ६. हवा की भाँति झीना या हलका ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाजी । बान । आसमानी ।

**मुहा०**—(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ जाना । विवर्णता होना । हवाई किला बनाना=ऐसे मनसूबे गाँठना जो कभी संभव न हों । ख्याली पुलाव पकाना ।

**हवाई जहाज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] हवा में उड़नेवाली सवारी । वायुयान ।

**हवागाड़ी**—संज्ञा स्त्री० दे० "मोटर" ।

**हवाचक्की**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हवा+चक्की ] आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो । २. हवा की गति से चलनेवाला कोई यंत्र ।

**हवादार**—वि० [ फ़ा० ] जिसमें हवा आने-जाने के लिये खिड़कियाँ या दरवाजे हों ।

संज्ञा पुं० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हलका तख्त ।

**हवाबाज**—संज्ञा पुं० [ अ० हवा फ़ा० बाज ] वह जो हवाई जहाज चलाता या उड़ाता हो । उड़ाका ।

**हवाबाजी**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हवा+फ़ा० बाजी ] हवाई जहाज चलाने का काम ।

**हवाल**—संज्ञा पुं० [ अ० अहवाल ] १. हाल । दशा । अवस्था । २. गति । परिणाम । ३. समाचार । वृत्तांत ।

**हवालदार**—संज्ञा पुं० दे० "हवलदार" ।

**हवाला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. प्रमाण का उल्लेख । २. उदाहरण । दृष्टांत । मिसाल । ३. सुपुर्दगी । जिम्मेदारी ।

**मुहा०**—( किसी के ) हवाले करना=किसी के सुपुर्द करना । सौंपना ।

**हवालात**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव । नजरबंदी । २. अभियुक्त की वह साधारण कैद जो मुकदमे के फैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिए

दी जाती है। हाजत। २. वह मकान जिसमें ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

**हवास**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. इंद्रियाँ। २. संवेदन। ३. चेतना। संज्ञा। होश।

**मुहा०**—हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। भय आदि से स्तंभित होना।

**हवि**—संज्ञा पुं० [ सं० हविस् ] वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय। हवन की वस्तु।

**हविष्य**—वि० [ सं० ] हवन करने योग्य।

संज्ञा पुं० वह वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय। बलि। हवि।

**हविष्यान्न**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।

**हविस**—संज्ञा स्त्री० दे० "हवस"।

**हवेली**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. पक्का बड़ा मकान। प्रासाद। २. पत्नी। स्त्री।

**हव्य**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हवन की सामग्री।

**हसद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] ईर्ष्या। डाह।

**हसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हँसना। २. परिहास। दिल्लगी। ३. विनोद।

**हसब**—अव्य० [ अ० ] अनुसार। मुताबिक।

**हसरत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. रंज। अफसोस। २. हार्दिक कामना।

**हसित**—वि० [ सं० ] १. जिस पर लोग हँसते हों। २. जो हँसा हो। ३. खिला हुआ।

संज्ञा पुं० १. हँसना। २. हँसी-ठट्ठा। ३. कामदेव का धनुष।

**हसीन**—वि० [ अ० ] सुंदर। खूब-सूरत।

**हसील†**—वि० [ अ० असील ] सीधा। सादा।

**हस्त**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. एक नाप जो २४ अंगुल की होती है। हाथ। ४. हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५. एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है।

**हस्तक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हाथ। २. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। ३. करताल। ४. नृत्य की मुद्रा।

**हस्तकौशल**—संज्ञा पुं० [सं०] किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता।

**हस्तक्रिया**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हाथ का काम। दस्तकारी। २. हाथ से इंद्रियसंचालन। सरका कूटना।

**हस्तक्षेप**—संज्ञा पुं० [ सं० ] किसी होते हुए काम में कुछ कारवाई कर बैठना। दखल देना।

**हस्तगत**—वि० [ सं० ] हाथ में आया हुआ। प्राप्त। लब्ध। हासिल।

**हस्तत्राण**—संज्ञा पुं० [सं० ] अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।

**हस्तमैथुन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथ के द्वारा इंद्रिय-संचालन। सरका कूटना।

**हस्तरेखा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हथेली में पड़ी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।

**हस्तलाघव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हाथ की फुरती। हाथ की सफाई।

**हस्तलिखित**—वि० [ सं० ] हाथ का लिखा हुआ। ( ग्रंथ आदि )

**हस्तलिपि**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] हाथ की लिखावट। लेख।

**हस्ताक्षर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा जाय। दस्तखत।

**हस्तामलक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ साफ जाहिर हो गया हो।

**हस्तायुर्वेद**—संज्ञा पुं० [सं०] हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

**हस्ति**—संज्ञा पुं० दे० "हस्ती"।

**हस्तिकंद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पौधा जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

**हस्तिदंत**—संज्ञा पुं० [ सं० ] दे० "हाथीदाँत"।

**हस्तिनापुर**—संज्ञा पुं० [ सं० ] कौरवों की राजधानी जो वर्त्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी।

**हस्तिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. मादा हाथी। हथिनी। २. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से निकृष्ट भेद।

**हस्ती**—संज्ञा पुं० [ सं० हस्तिन् ] [ स्त्री० हस्तिनी ] हाथी।

संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] अस्तित्व। होने का भाव। सत्ता।

**हस्ते**—अव्य० [ सं० ] हाथ से। मारफत।

**हहर**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हहरना ] १. थर्राहट। कँपकँपी। २. भय। डर।

**हहरना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. काँपना। थरथराना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। थर्राना। ३. दंग रह जाना। चकित रह जाना। ४. डाह करना। चिढ़ाना। ५. अधिकता देखकर चकपकाना।

**हहराना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. काँपना। थरथराना। २. डरना।

भयभीत होना। ३. दे॰ "हरहराना"।

क्रि॰ स॰ दहलाना। भयभीत करना।

**हहा**—संज्ञा स्त्री॰ [ अनु॰ ] १. हँसने का शब्द। ठट्ठा। २. दीनतासूचक शब्द। गिड़गिड़ाने का शब्द।

**मुहा॰**—हहा खाना=बहुत गिड़गिड़ाना।

३. हाहाकार।

**हाँ**—अव्य॰ [ सं॰ आम् ] १. स्वीकृति-सूचक शब्द। सम्मतिसूचक शब्द। २. एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि वह बात जो पूछी जा रही है, ठीक है।

**मुहा॰**—हाँ करना=सम्मत होना। राजी होना। हाँ जी हाँ जी करना=खुशामद करना। हाँ में हाँ मिलाना=(खुशामद के लिए) बुरी भली सभी बातों का अनुमोदन करना।

३. वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में, या अंशतः माना जाना प्रकट किया जाता है। ४. दे॰ "यहाँ"।

**हाँक**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हुंकार ] १. किसी को बुलाने के लिए जोर से निकाला हुआ शब्द।

**मुहा॰**—हाँक देना या हाँक लगाना=जोर से पुकारना। हाँक मारना=दे॰ "हाँक लगाना"। हाँक पुकारकर कहना=सबके सामने निर्भय और निस्संकोच कहना।

२. ललकार। हुंकार। गर्जन। ३. उत्साह दिलाने का शब्द। बढ़ावा। ४. सहायता के लिए की हुई पुकार। दुहाई।

**हाँकना**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हाँक ] १. जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २. लड़ाई या धावे के समय गर्व से चिल्लाना। हुंकार करना। ३. बढ़ बढ़कर बोलना। सीटना। ४. मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। जानवरों को चलाना। ५. खींचनेवाले जानवर को चलाकर गाड़ी, रथ आदि चलाना। ६. मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना। ७. पंखे से हवा पहुँचाना।

**हाँका**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हाँक ] १. पुकार। टेर। हाँक। २. ललकार। ३. गरज। ४. दे॰ "हुँकवा"।

**हाँगी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हाँ ] हामी। स्वीकृति।

**मुहा॰**—हाँगी भरना=स्वीकार करना।

**हाँड़ना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ भंडन ] व्यर्थ इधर-उधर फिरना। आवारा घूमना।

वि॰ [ स्त्री॰ हाँड़नी ] आवारा फिरनेवाला।

**हाँड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ भांड ] १. मिट्टी का सा छोटा बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँडिया।

**मुहा॰**—हाँड़ी पकना=१. हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। २. भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। कोई षट्चक्र रचा जाना। हाँड़ी चढ़ना= चीज पकाने के लिए हाँड़ी का आग पर रखा जाना।

२. इसी आकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिए कमरे में टाँगा जाता है।

**हाँता**—वि॰ [ सं॰ हात ] [ स्त्री॰ हाँती ] १. अलग किया हुआ। छोड़ा हुआ। २. दूर किया हुआ। हटाया हुआ।

**हाँपना, हाँफना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ हँफ हँफ ] कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण जोर जोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना।

**हाँफा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हाँफना ] हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास।

**हाँसना**—क्रि॰ अ॰ दे॰ "हँसना"।

**हाँसल**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हाँस ] वह घोड़ा जिसका रंग मेंहदी सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों। कुम्मैत हिनाई।

**हाँसी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हास ] १. हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २. परिहास। हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी। मजाक। ३. उपहास। निंदा।

**हाँ हाँ**—अव्य॰ [ हिं॰ अहाँ=नहीं ] निषेध या वारण करने का शब्द।

**हा**—अव्य॰ [ सं॰ ] १. शोक या दुःखसूचक शब्द। २. आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द। भयसूचक शब्द।

संज्ञा पुं॰ हनन करनेवाला। मारनेवाला।

**हाइ**—अव्य॰ दे॰ "हाय"।

**हाउ**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ घात ] १. दशा। हालत। अवस्था। २. ढंग। घात। तौर। ढब।

**हाऊ**—संज्ञा पुं॰ [ अनु॰ ] हौवा। भकाऊँ।

**हाकल**—संज्ञा पुं॰ [ ] एक छंद प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।

**हाकलिका**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] पंद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**हाकली**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

**हाकिम**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. हुकूमत करनेवाला। शासक। २. बड़ा अफसर।

**हाकिमी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ हाकिम ] हाकिम का काम। हुकूमत। प्रभुत्व।

शासन।

वि० हाकिम का। हाकिम-संबंधी।

**हाजत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. जरूरत। आवश्यकता। २. चाह। पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।

**मुहा०**—हाजत में देना या रखना=पहरे के भीतर देना। हवालात में डालना।

**हाजमा**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पाचन-क्रिया। पाचन-शक्ति। भोजन पचने की क्रिया।

**हाजिर**—वि० [ अ० ] १. सम्मुख। उपस्थित। २. मौजूद। विद्यमान।

**हाजिर-जवाब**—वि० [अ०] [ संज्ञा हाजिर-जवाबी ] बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न-मति।

**हाजिर-बाश**—वि० [ अ०+फा० ] [ संज्ञा हाजिरबाशी ] सदा हाजिर रहनेवाला।

**हाजी**—संज्ञा पुं० [ अ० ] वह जो हज कर आया हो। ( मुसल० )

**हाट**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हट्ट ] १. दूकान। २. बाजार।

**मुहा०**— हाट करना=१. दूकान रखकर बैठना। २. सौदा लेने के लिए बाजार जाना। हाट लगना=दूकान या बाजार में बिक्री की चीजें रखी जाना। हाट चढ़ना=बाजार में बिकने के लिए आना।

३. बाजार लगने का दिन।

**हाटक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] सोना। स्वर्ण।

**हाटकपुर**—संज्ञा पुं० [ सं०] लंका।

**हाटकलोचन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हिरण्याक्ष।

**हाड़**†—संज्ञा पुं० [ सं० हड्डी ] १. हड्डी। अस्थि। २. वंश या जाति की मर्य्यादा। कुलीनता।

**हाता**—संज्ञा पुं० [ अ० इहातः ] १. घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २. देश-विभाग। हलका या सूबा। प्रांत। ३. सीमा। हद।

वि० [ सं० हृत ] [ स्त्री० हाती ]१. अलग। दूर किया हुआ। २. नष्ट। बरबाद।

संज्ञा पुं० [ सं० हंता ] मारनेवाला।

**हातिम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. निपुण। चतुर। कुशल। २. किसी काम में पक्का आदमी। उस्ताद। ३. एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है।

**मुहा०**—हातिम की कब्र पर लात मारना=बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना। ( व्यंग्य )

४. अत्यंत दानी मनुष्य।

**हाथ**—संज्ञा पुं० [ सं० हस्त ] १. बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। कर। हस्त।

**मुहा०**—हाथ में आना या पड़ना=अधिकार या वश में आना। मिलना। ( किसी को ) हाथ उठाना=सलाम करना। प्रणाम करना। ( किसी पर ) हाथ उठाना=किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना। मारना। हाथ ऊँचा होना=१. दान देने में प्रवृत्त होना। २. संपन्न होना। हाथ कट जाना=१. कुछ करने लायक न रह जाना। २. प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। हाथ की मैल=तुच्छ वस्तु। हाथ के हाथ=तुरंत। उसी समय। हाथ खाली होना=पास में कुछ द्रव्य न रह जाना। हाथ खुजलाना=१. मारने को जी करना २. प्राप्ति के लक्षण दिखाई पड़ना। हाथ खींचना=१. किसी काम से अलग हो जाना। योग न देना। २ देना बंद कर देना। हाथ चलाना=मारने के लिये थप्पड़ तानना। मारना। हाथ चूमना=किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना। हाथ छोड़ना=मारना। प्रहार करना। हाथ जोड़ना=१. प्रणाम करना। नमस्कार करना। २. अनुनय-विनय करना। ( दूर से ) हाथ जोड़ना=संसर्ग या संबंध न रखना। किनारे रहना। हाथ डालना=किसी काम में हाथ लगाना। योग देना। हाथ तंग होना=खर्च करने के लिये रुपया-पैसा न रहना। ( किसी वस्तु या बात से ) हाथ धोना=खो देना। प्राप्ति की संभावना न रखना। नष्ट करना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=किसी काम में जी-जान से लग जाना। हाथ पकड़ना=१. किसी काम से रोकना। २. आश्रय देना। शरण में लेना। ३ पाणिग्रहण करना। विवाह करना। हाथ पत्थर तले दबना=१. संकट या कठिनता की स्थिति में पड़ना। २. लाचार होना। विवश होना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना=खाली बैठे रहना। कुछ काम-धंधा न करना। हाथ पसारना या फैलाना=कुछ माँगना। याचना करना। हाथ-पाँव चलना=काम धंधे के लिए सामर्थ्य होना। कार्य करने की योग्यता होना। हाथ-पाँव ठंढे होना=१. मरणासन्न होना। २. भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना। हाथ-पाँव निकलना=१. मोटा ताजा होना। २.

२.सीमा का आतिक्रमण करना।३.अत्या-चार करना। हाथ-पाँव फूलना=डर या शोक से घबरा जाना। हाथ-पाँव पट-कना=छटपटाना। हाथ-पाँव मारना या हिलाना=१. प्रयत्न करना। कोशिश करना। २. बहुत परिश्रम करना। हाथ-पैर जोड़ना=विनती करना। अनुनय विनय करना। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना=किसी वस्तु को उड़ा लेना। ले लेना। (किसी काम में) हाथ बँटाना=शामिल होना। शरीक होना। हाथ बाँधे खड़ा रहना=सेवा में बराबर उप-स्थित रहना। हाथ मलना=१. बहुत पछताना। २. निराश और दुःखी होना। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना=उड़ा लेना। गायब कर लेना। हाथ में करना=वश में करना। ले लेना। (मन) हाथ में करना=मोहित करना। लुभाना। हाथ में होना=१. अधिकार में होना। २. वश में होना। हाथ रँगना=घूस लेना। हाथ रोपना या ओड़ना=हाथ फैलाना। माँगना। (कोई वस्तु) हाथ लगना=हाथ में आना। मिलना। प्राप्त होना। (किसी काम में) हाथ लगना=१. आरंभ होना। शुरू किया जाना। २. किसी के द्वारा किया जाना। (किसी वस्तु में) हाथ लगना=छू जाना। स्पर्श होना। किसी काम में हाथ लगाना=१. आरंभ करना। शुरू करना। २. योग देना। हाथ लगाना=छूना। स्पर्श करना। हाथ लगे मैला होना=इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मैला होना। हाथों हाथ=एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। हाथों-हाथ लेना=बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना। लगे हाथ=(जो काम हो रहा हो) उसी सिल-सिले में। साथ ही।

२. लंबाई की एक नाप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक की मानी जाती है। ३. ताश, जुए आदि के खेल में एक एक आदमी के खेलने की बारी। दाँव।

**हाथपान**—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+पान] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

**हाथफूल**—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ+फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

**हाथा**—संज्ञा पुं० [हिं० हाथ] १. मुठिया। दस्ता। २. पंजे की छाप या चिह्न जो गीले पिसे चावल और हल्दी आदि पोतकर दीवार पर छापने से बनता है। छापा।

**हाथाजोड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ+जोड़ना] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

**हाथापाई, हाथाबाँही**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ+पाँव या बाँह] वह लड़ाई जिसमें हाथ पैर चलाए जायँ। भिड़ंत। धौल-धप्पड़।

**हाथी**—संज्ञा पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी] एक बहुत बड़ा स्तनपायी चौपाया जो सूँड़ के रूप में बढ़ी हुई नाक के कारण और सब जानवरों से विलक्षण दिखाई पड़ता है।

**मुहा०**—हाथी की राह=आकाश-गंगा। डहर। हाथी पर चढ़ना=बहुत अमीर होना। हाथी बाँधना=बहुत अमीर होना। हाथी के संग गाँड़े खाना=बहुत बड़े बलवान् की बराबरी करना।

संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथ] हाथ का सहारा। करावलंब।

**हाथीखाना**—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+फ़ा० खानः] वह घर जिसमें हाथी रखा जाय। फीलखाना।

**हाथीदाँत**—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+दाँत] हाथी के मुँह के दोनों छोरों पर निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

**हाथीनाल**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाथी+नाल] हाथी पर चलनेवाली तोप। हथनाल। गजनाल।

**हाथीपाँव**—संज्ञा पुं० दे० "फीलपा"।

**हाथीवान**—संज्ञा पुं० [हिं० हाथी+वान (प्रत्य०)] हाथी को चलाने के लिए नियुक्त पुरुष। फीलवान, महावत।

**हान**—संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

संज्ञा पुं० त्याग। छोड़ना।

**हानि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. नाश। अभाव। क्षय। २. नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। घाटा। टोटा। ३. स्वास्थ्य में बाधा। ४. अनिष्ट। अप-कार। बुराई।

**हानिकर**—वि० [सं०] १. हानि करनेवाला। जिससे नुकसान पहुँचे। २. बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। ३. तंदुरुस्ती बिगाड़नेवाला।

**हानिकारक**—वि० दे० "हानिकर"।

**हानिकारी**—वि० दे० "हानिकर"।

**हाफ़िज़**—संज्ञा पुं० [अ०] वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठ हो।

**हामी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हाँ] 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार।

**मुहा०**—हामी भरना=मंजूर करना।

संज्ञा पुं० १. वह जो हिमायत करता हो। २. सहायता करनेवाला। सहा-

चक।

**हाय**—अव्य॰ [ सं॰ हा ] शोक, दुःख या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द।

संज्ञा स्त्री॰ १. कष्ट। पीड़ा। दुःख। २. ईर्ष्या। डाह।

**मुहा॰**—( किसी की ) हाय पड़ना=पहुँचाए हुए दुःख या कष्ट का बुरा फल मिलना।

**हायन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] वर्ष। साल।

**हायल***—वि॰ [ हिं॰ घायल ] १. घायल। २. शिथिल। मूर्च्छित। बेकाम।

वि॰ [ अ॰ ] दो वस्तुओं के बीच में पड़नेवाला। रोकनेवाला। अंतरवर्ती।

**हाय हाय**—अव्य॰ [ सं॰ हा हा ] शोक, दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे॰ "हाय"।

संज्ञा स्त्री॰ १. कष्ट। दुःख। शोक। २. घबराहट। परेशानी। झंझट।

**हाया***—प्रत्य॰ [हिं॰ हारी ] (किसी वस्तु के लिए ) आतुर। व्याकुल।

**हार**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हारि ] १. लड़ाई, खेल, बाजी या चढ़ा-ऊपरी में जोड़ या प्रतिद्वंद्वी के सामने न जीत सकने का भाव। पराजय।

**मुहा॰**—हार खाना=हारना।

२. शिथिलता। थकावट। ३. हानि। क्षति। ४. जब्ती। राज्य-द्वारा हरण। ५. विरह। वियोग।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सोने, चाँदी या मोतियों आदि की माला जो गले में पहनी जाय। २. ले जानेवाला। वहन करनेवाला। ३. मनोहर। सुंदर। ४. अंकगणित में भाजक। ५. पिंगल या छंदःशास्त्र में गुरु मात्रा। ६. नाश करनेवाला। नाशक।

प्रत्य॰ दे॰ "हारा"।

**हारक**—वि॰ [सं॰ ] [स्त्री॰ हारिणी] १. हरण करनेवाला। २. मनोहर। सुंदर।

संज्ञा पुं॰ १. चोर। लुटेरा। २. गणित में भाजक। ३. हार। माला।

**हारद***—वि॰ दे॰ "हार्दिक"।

**हारना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हार ] १. प्रतिद्वंद्विता आदि में शत्रु के सामने विफल होना। पराजित होना। शिकस्त खाना। २. शिथिल होना। थक जाना। ३. प्रयत्न में निराश होना। असमर्थ होना।

**मुहा॰**—हारे दर्जे=लाचार होकर। विवश होकर। हारकर=१. असमर्थ होकर। २. लाचार होकर।

क्रि॰ स॰ १. लड़ाई, बाजी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना। २. गँवाना। खोना। ३. छोड़ देना। न रख सकना। ४. दे देना।

**हारबंध**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक चित्र-काव्य जिसमें पद्य हार के आकार में रखे जाते हैं।

**हारवार***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हड़बड़ी"।

**हारसिंगार**—संज्ञा पुं॰ दे॰'परजाता'।

**हारा**—प्रत्य॰ [ सं॰ धार=रखनेवाला ] [ स्त्री॰ हारी ] एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्त्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है। वाला।

**हारिल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक प्रकार का वर्णवृत्त।

*वि॰ हारा हुआ। २. खोया हुआ। ३. दे॰ "हारा"।

**हारिल**—संज्ञा पुं॰ [ देश॰ ] एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है।

**हारी**—वि॰ [ सं॰ हारिन् ] [ स्त्री॰ हारिणी ] १. हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला। पहुँचानेवाला। ३. चुरानेवाला। ४. दूर करनेवाला। ५. नाश करनेवाला। ६. मोहित करनेवाला।

संज्ञा पुं॰ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और दो गुरु होते हैं।

**हारीत**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ ] १. चोर। लुटेरा। २. चोरी। लुटेरापन। ३. कण्व ऋषि के एक शिष्य।

**हारौल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हरावल"।

**हार्दिक**—वि॰ [ सं॰ ] १. हृदय-संबंधी। २. हृदय से निकला हुआ। सच्चा।

**हाल**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] १. दशा। अवस्था। २. परिस्थिति। ३. माजरा। संवाद। समाचार। वृत्तांत। ४. ब्योरा। विवरण। कैफ़ियत। ५. कथा। आख्यान। चरित्र। ६. ईश्वर में तन्मयता। लीनता। ( मुसल॰ )

वि॰ वर्त्तमान। चलता। उपस्थित।

**मुहा॰**—हाल में=थोड़े ही दिन हुए। हाल का=नया। ताजा।

अव्य॰ १. इस समय। अभी। २. तुरंत।

संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ हालना] १. हिलने की क्रिया या भाव। २. लोहे का वह बंद जो पहिए के चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है।

**यौ॰**—हाल-चाल=समाचार।

**हालगोला**—संज्ञा पुं॰ [हिं॰ हाल? + गोला ] गेंद।

**हालडोल**-संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हालना + डोलना ] १. हिलने की क्रिया या

भाव। गति। २. हलकंप। हलचल। ३. भूकंप।

**हालत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. दशा। अवस्था। २. आर्थिक दशा। सांपत्तिक स्थिति। ३. संयोग। परिस्थिति।

**हालना***—क्रि० अ० [ सं० हल्लन] १. हिलना। डोलना। हरकत करना। २. काँपना। झूमना।

**हालरा**—संज्ञा पुं० [ हिं० हालना ] १. बच्चों को लेकर हिलाना-डुलाना। २. झोंका। ३. लहर। हिलोर।

**हालाँकि**—अव्य० [ फा० ] यद्यपि। गो कि। ऐसी बात है, फिर भी।

**हाला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] मद्य। शराब।

**हालाहल**—संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

**हालिम**—संज्ञा पुं० [ देश० ] एक पौधा जिसके बीज औषध के काम में आते हैं। चंसुर।

**हाली**—अव्य० [ अ० हाल ] जल्दी शीघ्र।

**हाली रुपया**—संज्ञा पुं० [ अ० + हिं० ] दक्षिण हैदराबाद का रुपया।

**हालों**—संज्ञा पुं० दे० "हालिम"।

**हाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] संयोग के समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। इनकी संख्या ११ है।

**हावभाव**—संज्ञा पुं० [ सं० ] स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है। नाज-नखरा।

**हाशिया**—संज्ञा पुं० [ अ० हाशियः ] १. किनारा। कोर। पाड़। २. गोट। मगजी। ३. हाशिए या किनारे पर का लेख। नोट।

**मुहा०**—हाशिए का गवाह=वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। हाशिया चढ़ाना=किसी बात में मनोरंजन आदि के लिए कुछ और बात जोड़ना।

**हास**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ३. उपहास।

**हासक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ स्त्री० हासिका] हँसने-हँसानेवाला। हँसोड़।

**हासिल**—वि० [अ०] प्राप्त। लब्ध। पाया हुआ। मिला हुआ।

संज्ञा पुं० १. गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २. उपज। पैदावार। ३. लाभ। नफा। ४. गणित की क्रिया का फल। ५. जमा। लगान।

**हासी**—वि० [ सं० हासिन् ] [ स्त्री० हासिनी ] हँसनेवाला।

**हास्य**—वि० [ सं० ] १. जिस पर लोग हँसें। २. उपहास के योग्य।

संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। ३. उपहास। निंदापूर्ण हँसी। ४. दिल्लगी। मजाक।

**हास्यक**—संज्ञा पुं० [ सं० हास्य + क (प्रत्य०) ] हँसी की बात या किस्सा। चुटकुला।

**हास्यास्पद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० हास्यास्पदता ] वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ावें।

**हा हंत**—अव्य० [सं०] अत्यंत शोक-सूचक शब्द।

**हाहा**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. हँसने का शब्द।

**यौ०**—हाहा हीही, हाहा ठीठी=हँसी ठट्ठा।

२. बहुत विनती की पुकार। दुहाई।

**मुहा०**—हाहा करना या खाना=गिड़गिड़ाना। बहुत विनती करना।

**हाहाकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घबराहट की चिल्लाहट। कुहराम।

**हाहाहूत***—संज्ञा पुं० दे० "हाहाकार"।

**हाही**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हाय ] कुछ पाने के लिए 'हाय हाय' करते रहना।

**हाहू***—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. हल्लागुल्ला। कोलाहल। २. हलचल। धूम।

**हाहूबेर**—संज्ञा पुं० [ हाहू ? + हिं० बेर ] जंगली बेर। झड़बेरी।

**हिकरना**—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

**हिंकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] गाय के रँभाने का शब्द।

**हिंगलाज**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हिंगुलाजा ] दुर्गा या देवी की एक मूर्ति जो सिंध में है।

**हिंगु**—संज्ञा पुं० [ सं० ] हींग।

**हिंगुल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] ईंगुर। शिंगरफ।

**हिंगोट**—संज्ञा पुं० [ सं० हिंगुपत्र ] एक कँटीला जंगली पेड़। इसके गोल छोटे फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।

**हिंछा***†—संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।

**हिंडन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] घूमना। फिरना।

**हिंडोरा**—संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।

**हिंडोल**—संज्ञा पुं० [ सं० हिन्दोल ] १. हिंडोला। २. एक प्रकार का राग।

**हिंडोलना**†—संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।

**हिंडोला**—संज्ञा पुं० [ सं० हिन्दोल ] १. नीचे-ऊपर घूमनेवाला एक चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिए छोटे छोटे मंच बने रहते हैं। २. पालना। ३. झूला।

**हिंताल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] एक

प्रकार का खजूर।

**हिंद**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।

**हिंदवाना**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० हिंद +वान ] तरबूज। कलींदा।

**हिंदवी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] हिंदी भाषा।

**हिंदी**—वि० [ फ़ा० ] हिंदुस्तान का। भारतीय।

संज्ञा पुं० हिंद का रहनेवाला। भारतवासी।

संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. हिंदुस्तान के उत्तरी या प्रधान भाग की भाषा जिसके अंतर्गत कई बोलियाँ हैं और जो सारे देश की एक सामान्य भाषा है।

**हिंदुस्तान**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० हिंदोस्तान ] १. भारतवर्ष। २. भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग जो दिल्ली से पटने तक है (प्राचीन)।

**हिंदुस्तानी**—वि० [ फ़ा० ] हिंदुस्तान का।

संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी।

संज्ञा स्त्री० १. हिंदुस्तान की भाषा। २. बोल-चाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमें न तो बहुत अरबी, फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के। ३. उर्दू भाषा (प्रचलित अँगरेजी अर्थ)।

**हिंदुस्थान**—संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।

**हिंदू**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्य्य जाति के वंशज। वेद, स्मृति, पुराण आदि अथवा इनमें से किसी एक के अनुसार चलनेवाला।

**हिंदूपन**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० हिंदू+ पन (प्रत्य०) ] हिंदू होने का भाव या गुण।

**हिंदोस्तान**—संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।

**हियाँ**‡—अव्य० दे० "यहाँ"।

**हिंव**—संज्ञा पुं० दे० "हिम"।

**हिंवार**—संज्ञा पुं० [ सं० हिमालि ] हिम। बर्फ। पाला।

**हिंस**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० हिं हिं ] घोड़ों के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट।

**हिंसक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ भाव० हिंसकता ] १. हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २. बुराई या हानि करनेवाला। ३. जीवों को मारनेवाला पशु। ४. शत्रु। दुश्मन।

**हिंसन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] [ हिंसनीय, हिंसित, हिंस्य ] १. जीवों का वध करना। जान मारना। २. पीड़ा पहुँचाना। सताना। ३. अनिष्ट करना या चाहना।

**हिंसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. प्राण मारना या कष्ट देना। २. हानि पहुँचाना।

**हिंसात्मक**—वि० [ सं० ] जिसमें हिंसा हो।

**हिंसालु**—वि० [ सं० ] हिंसा करनेवाला।

**हिंस्र, हिंसक**—वि० [ सं० ] हिंसा करनेवाला। खूँखार।

**हि**—एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर पीछे कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया।

‡अव्य० दे० "ही"।

**हिअ, हिआ**-संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।

**हिआव**—संज्ञा पुं० दे० "हियाव"।

**हिकमत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. विद्या। तत्वज्ञान। २. कला-कौशल। निर्माण की बुद्धि। ३. युक्ति। तदबीर। उपाय। ४. चतुराई का ढंग। चाल। ५. हकीम का काम या पेशा। हकीमी। वैद्यक।

**हिकमती**—वि० [ अ० हिकमत ] १. कार्यसाधन की युक्ति निकालनेवाला। तदबीर सोचनेवाला। कार्य्यपटु। २. चतुर। चालाक। ३. किफायती।

**हिक्का**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. हिचकी। २. बहुत हिचकी आने का रोग।

**हिचक**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हिचकना] किसी काम के करने में वह रुकावट जो मन में मालूम हो। आगा-पीछा।

**हिचकना**—क्रि० अ० [ सं० हिक्का ] १. हिचकी लेना। २. किसी काम के करने में कुछ अनिच्छा, भय या संकोच के कारण प्रवृत्त न होना। आगा-पीछा करना।

**हिचकिचाना**—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

**हिचकिचाहट**—संज्ञा स्त्री० दे० "हिचक"।

**हिचकी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० हिच या सं० हिक्का ] १. पेट की वायु का झोंक के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना।

मुहा०—हिचकियाँ लगना=मरने के निकट होना।

२. रह रहकर सिसकने का शब्द।

**हिचर-मिचर**—संज्ञा स्त्री० [अनु० ] १. सोचविचार। २. आना-कानी। टाल-मटोल।

**हिजड़ा**—संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा"।

**हिजरी**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख ( १५ जुलाई सन् ६२२ ई॰ ) से आरंभ होता है।

**हिज्जे**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ हिज्जः ] किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना। वर्तनी।

**हिज्र**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] जुदाई। वियोग।

**हिडिंब**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था।

**हिडिंबा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] हिडिंब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।

**हित**—वि॰ [ सं॰ ] भलाई करने या चाहनेवाला। खैरखाह।

संज्ञा पुं॰ १. लाभ। फायदा। २. कल्याण। मंगल। भलाई। उपकार। बेहतरी। ३. स्वास्थ्य के लिए लाभ। ४. प्रेम। स्नेह। अनुराग। ५. मित्रता। खैरखाही। ६. भला चाहनेवाला आदमी। मित्र। ७. संबंधी। नातेदार।

अव्य॰ १. ( किसी के ) लाभ के हेतु। खातिर या प्रसन्नता के लिए। २. हेतु। लिए। वास्ते।

**हितकर, हितकारक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ हितकरी ] १. भलाई करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला। फायदेमंद। ३. स्वास्थ्यकर।

**हितकारिता**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] 'हितकारक' होने का भाव।

**हितकारी**—वि॰ दे॰ "हितकर"।

**हितचिंतक**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] भला चाहनेवाला। खैरखाह।

**हितचिंतन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] किसी की भलाई की कामना या इच्छा। खैरखाही।

**हितता***—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हित + ता ] भलाई।

**हितवना***†—क्रि॰ अ॰ दे॰ 'हिताना'।

**हितवादी**—वि॰ [ सं॰ हितवादिन् ] [ स्त्री॰ हितवादिनी ] हित की बात कहनेवाला।

**हिताई**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हित ] नाता। रिश्ता।

**हिताना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हित ] १. हितकारी होना। अनुकूल होना। २. प्रेमयुक्त होना। ३. प्यारा या अच्छा लगना।

**हितावह**—वि॰ दे॰ "हितकारी"।

**हिताहित**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] भलाई-बुराई। लाभ-हानि। नफा-नुकसान।

**हिती, हितू**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ हित ] १. भलाई करने या चाहनेवाला। खैरखाह। २. संबंधी। नातेदार। ३. सुहृद। स्नेही।

**हितेच्छु**—वि॰ दे॰ "हितैषी"।

**हितैषिता**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] भलाई चाहने की वृत्ति। खैरखाही।

**हितैषी**—वि॰ [सं॰ हितैषिन् ] [स्त्री॰ हितैषिणी ] भला चाहनेवाला। खैरखाह।

**हितौना***—क्रि॰ अ॰ दे॰"हिताना"।

**हिदायत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] अधिकारी की शिक्षा। आदेश। निर्देश।

**हिनती***†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰"हीनता"।

**हिनहिनाना**—क्रि॰ अ॰ [ अनु॰ ] [ संज्ञा हिनहिनाहट ] घोड़े का बोलना। हींसना।

**हिना**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] मेंहदी।

**हिफाजत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे। रक्षा। २. देख-रेख। खबरदारी।

**हिब्बा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ हिब्बः ] १. दाना। २. दान।

**हिब्बानामा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ + फ़ा॰ ] दानपत्र।

**हिमचल**†*—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हिमाचल"।

**हिमंत**†*—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हेमंत"।

**हिम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. पाला। बर्फ। तुषार। २. जाड़ा। ठंढ। ३. जाड़े की ऋतु। ४. चंद्रमा। ५. चंदन। ६. कपूर। ७. मोती। ८. कमल।

वि॰ ठंढा। सर्द।

**हिम-उपल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] ओला। पत्थर।

**हिमकण**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] बर्फ या पाले के महीन टुकड़े।

**हिमकर**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰] चंद्रमा।

**हिमकिरण**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] चंद्रमा।

**हिमभानु**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] चंद्रमा।

**हिमयानी**—संज्ञा स्त्री॰ [फ़ा॰] रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।

**हिमवत्**—संज्ञा पुं॰ दे॰"हिमवान्"।

**हिमवान्**—वि॰ [ सं॰ हिमवत् ] [ स्त्री॰ हिमवती ] बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।

संज्ञा पुं॰ १. हिमालय। २. कैलाश पर्वत। ३. चंद्रमा।

**हिमांशु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] चंद्रमा।

**हिमाकत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] बेवकूफी।

**हिमाचल**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] हिमालय।

**हिमाद्रि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] हिमालय पहाड़।

**हिमानी**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. तुषार। पाला। २. बरफ। ३. बरफ

की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर होती हैं। ग्लेशियर।

**हिमामदस्ता**—संज्ञा पुं॰ [ फ़ा॰ हावनदस्तः ] खरल और बट्टा।

**हिमायत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. पक्षपात। २. मंडन। समर्थन।

**हिमायती**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १. समर्थन या मंडन करनेवाला। २. सहायता करनेवाला। मददगार।

**हिमालय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है।

**हिमि***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हिम"।

**हिम्मत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. कठिन या कष्टसाध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता। साहस। जिगरा। २. बहादुरी। पराक्रम।

**मुहा॰**—हिम्मत हारना=साहस छोड़ना।

**हिम्मती**—वि॰ [ फ़ा॰ ] १. साहसी। दृढ़। २. पराक्रमी। बहादुर।

**हिय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हृदय, प्रा॰ हिअ ] १. हृदय। मन। २. छाती। वक्षःस्थल।

**मुहा॰**—हिय हारना=हिम्मत छोड़ना।

**हियरा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हिय ] १. हृदय। मन। २. छाती। वक्षःस्थल।

**हियाँ**†—अव्य॰ दे॰ "यहाँ"।

**हिया**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हृदय ] १. हृदय। मन। २. छाती। वक्षःस्थल।

**मुहा॰**—हिये का अंधा=अज्ञान। मूर्ख। हिये की फूटना=बुद्धि न होना। हिय जलना=अत्यंत क्रोध में होना। हिये लगाना=गले से लगाना। हिये में लोन सा लगना=बहुत बुरा लगना। विशेष—मुहा॰ दे॰ "जी" और "कलेजा"।

**हियाव**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हिय ] साहस। हिम्मत। जीवट।

**मुहा॰**—हियाव खुलना=१. साहस हो जाना। हिम्मत बँधना। २. संकोच या भय न रहना। हियाव पड़ना=साहस होना।

**हिरकना**†*—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हरुक्=समीप ] १. पास होना। निकट जाना। २. सटना।

**हिरकाना**†*—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हिरकना ] १. पास करना। नजदीक ले जाना। २. सटाना। भिड़ाना।

**हिरण***†—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हिरन"।

**हिरण्मय**—वि॰ [ सं॰ ] सोने का। सुनहला।

**हिरण्य**—संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. सोना। स्वर्ण। २. वीर्य। शुक्र। ३. कौड़ी। ४. धतूरा। ५. अमृत।

**हिरण्य-कशिपु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था। भगवान् ने नृसिंहावतार धारण करके इसे मारा था।

**हिरण्य कश्यप**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हिरण्यकशिपु"।

**हिरण्यगर्भ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २. ब्रह्मा। ३. सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा। ४. विष्णु।

**हिरण्यनाभ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. विष्णु। २. मैनाक पर्वत।

**हिरण्यरेता**—संज्ञा पुं॰ [सं॰ हिरण्यरेतस् ] १. अग्नि। आग। २. सूर्य। ३. शिव।

**हिरण्याक्ष**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था।

**हिरदया***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हृदय"।

**हिरन**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हरिण ] हरिन। मृग।

**मुहा॰**—हिरन हो जाना=भाग जाना।

**हिरनाकुस**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हिरण्यकशिपु"।

**हिरनौटा**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हिरन ] हिरन का बच्चा।

**हिरफतबाज**—वि॰ [ अ॰+फ़ा॰ ] चालबाज।

**हिरमजी**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।

**हिरस**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हिर्स"।

**हिराती**—संज्ञा पुं॰ [ हिरात देश ] एक जाति का घोड़ा जो अफगानिस्तान के उत्तर हिरात देश में होता है। यह गरमी में नहीं थकता।

**हिराना**†—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हरण ] १. खो जाना। गायब होना। २. न रह जाना। ३. मिटना। दूर होना। ४. हक्का-बक्का होना। अत्यंत चकित होना। ५. अपने को भूल जाना। क्रि॰ स॰ भूल जाना। ध्यान में न रहना।

**हिरावल**—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हरावल"।

**हिरास**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. चिंता। दुःख। २. भय। वि॰ निराशा।

**हिरासत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. पहरा। चौकी। २. कैद। नजरबंदी।

**हिरौंजी**†—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हिरमजी"।

**हिरौल***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हरावल"।

**हिर्स**—संज्ञा स्त्री॰ [अ॰] १. लालच। तृष्णा। लोभ। २. इच्छा का वेग।

**मुहा॰**—हिर्स छूटना=लालच होना। ३. किसी की देखादेखी कुछ काम करने की इच्छा। स्पर्द्धा।

**हिलकना**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हिक्का ] १. हिचकी लेना। २. हिलकना। ३.

दे० "हिलगना"।

**हिलकी**†०—संज्ञा स्त्री० [ सं० हिक्का] १. हिचकी। २. सिसकने का शब्द। सिसक।

**हिलकोर, हिलकोरा**—संज्ञा पुं० [ सं० हिल्लोल ] हिलोर। लहर। तरंग।

**हिलग**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हिलगना ] १. लगाव। संबंध। २. लगन। प्रेम। ३. परिचय।

**हिलगना**—क्रि० अ० [ सं० अधिलग्न ] १. अटकना। टँगना। २. फँसना। बझना। ३. हिल-मिल जाना। परचना।

क्रि० अ० [ सं० हिरुक=पास ] पास होना। सटना। भिड़ना। हिरकना।

**हिलगाना**—क्रि० स० [ हिं० हिलगना ] १. अटकाना। टाँगना। २. फँसाना। बझाना। ३. मेल जोल करना। ४. परचाना। परिचित और अनुरक्त करना।

क्रि० स० [ सं० हिरुक = पास ] सटाना।

**हिलना**—क्रि० अ० [ सं० हल्लन ] १. चलायमान होना। स्थिर न रहना। हरकत करना।

मुहा०—हिलना डोलना= १. चलायमान होना। २. चलना। फिरना। घूमना। ३. प्रयत्न करना। उद्योग करना।

२. हटना। सरकना। चलना। ३. काँपना। थरथराना। ४. खूब जमकर बैठा न रहना। ढीला होना। ५. धसना। लहराना। ६. पैठना। प्रवेश करना। (विशेषतः पानी में)

क्रि० अ० [ हिं० हिलगना ] परिचित और अनुरक्त होना। परचना।

यौ०—हिलना मिलना=घनिष्ठ संबंध रखना।

क्रि० अ० [ देश० ] प्रवेश करना। घुसना। ( विशेषतः पानी में )

**हिलसा**—संज्ञा स्त्री० [ सं० इल्लिश ] एक प्रकार की मछली।

**हिलाना**—क्रि० स० [ हिं० हिलना ] १. डुलाना। चलायमान करना। हरकत देना। २. स्थान से उठाना। टालना। हटाना। ३. कँपाना। कंपित करना। ४. नीचे ऊपर या इधर-उधर डुलाना। झुलाना।

क्रि० स० [ हिं० हिलगना ] परिचित और अनुरक्त करना। परचाना।

क्रि० स० [ देश० ] घुसाना। पैठाना।

**हिलोर, हिलोरा**—संज्ञा पुं० [ सं० हिल्लोल ] तरंग। लहर। मौज।

मुहा०—हिलोरे लेना=लहराना।

**हिलोरना**—क्रि० स० [ हिं० हिलोर+ना(प्रत्य०) ] १. पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें। २. लहराना। ३. किसी वस्तु की ढेरी इस प्रकार हिलाना-डुलाना जिसमें बड़ी बड़ी या स्वच्छ वस्तुएँ ऊपर हो जायँ।

**हिलोल**—संज्ञा पुं० दे० "हिलोर"।

**हिल्लोल**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. हिलोरा। तरंग। लहर। २. आनंद की तरंग। मौज।

**हिवंचल**—संज्ञा पुं० [ सं० हिम ] पाला। बरफ।

**हिवार**—संज्ञा पुं० [ सं० हिम ] बर्फ। पाला।

**हिसका**—संज्ञा पुं० [ सं० ईर्ष्या ] १. ईर्ष्या। डाह। २. स्पर्द्धा। देखा-देखी किसी बात की इच्छा।

**हिसाब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. गिनती। गणित। लेखा। २. लेन-देन या आमदनी खर्च आदि का लिखा हुआ ब्योरा। लेखा। उचापत।

मुहा०—हिसाब चुकाना या चुकता करना=जो कुछ जिम्मे निकलता हो, उसे दे देना। हिसाब करना=जो जिम्मे आता हो उसे दे देना। हिसाब देना=जमा खर्च का ब्योरा बताना। हिसाब लेना या समझना=यह पूछना या जानना कि कितनी रकम कहाँ खर्च हुई। बेहिसाब=बहुत अधिक। अत्यंत। हिसाब रखना=आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा लिखकर रखना। हिसाब बैठना=१. ठीक ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबन्ध होना। २. सुबीता होना। सुपास होना। हिसाब से=१. संयम से। परिमित। २. लिखे हुए ब्योरे के मुताबिक। बेढ़ा या टेढ़ा हिसाब=१. कठिन कार्य। मुश्किल काम। २. अव्यवस्था। गड़बड़।

३. वह विद्या जिसके द्वारा संख्या, मान आदि निर्धारित हों। गणित विद्या। ४. गणित विद्या का प्रश्न। ५. भाव। दर।

मुहा०—हिसाब से=१. परिमाण, क्रम या गति के अनुसार। मुताबिक। २. विचार से। ध्यान से।

६. नियम। कायदा। व्यवस्था। ७. धारणा। समझ। मत। विचार। ८. हाल। दशा। अवस्था। ९. चाल। व्यवहार। रहन। १०. ढंग। रीति। तरीका। ११. किफायत। मितव्यय।

**हिसाब-किताब**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. आमदनी, खर्च आदि का ब्योरा जो लिखा हो। २. ढंग। चाल। रीति। कायदा।

**हिसिषा**†—संज्ञा स्त्री० [ सं० ईर्ष्या] १. स्पर्द्धा। बराबरी करने का भाव। होड़। २. समता। तुल्य भावना।

**हिस्सा**—संज्ञा पुं० [अ० हिस्सा] १. भाग। अंश। २. टुकड़ा। खंड। ३. उतना अंश जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले। बखरा। ४. विभाग। तकसीम। ५. विभाग। खंड। ६. अंग। अवयव। अंतर्भूत वस्तु। ७. साझा।

**हिस्सेदार**—संज्ञा पुं० [अ० हिस्सः + फ़ा० दार (प्रत्य०)] १. वह जिसे कुछ हिस्सा मिला या मिलने वाला हो। २. रोजगार में शरीक। साझेदार।

**हिहिनाना**—क्रि० अ० दे० "हिनहिनाना"।

**हींग**—संज्ञा स्त्री० [सं० हिंगु] १. एक छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस में आप से आप और बहुत होता है। २. इस पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और जिसका व्यवहार दवा और मसाले में होता है।

**हींछना†**—क्रि० अ० [सं० इच्छा] उत्साह करना। चाहना।

**हींछा†**—संज्ञा स्त्री० [सं० इच्छा] चाह। ख्वाहिश।

**हींस**—संज्ञा स्त्री० [सं० हेष] घोड़े या गधे के बोलने का शब्द। रेंक या हिनहिनाहट।

**हींसना**—क्रि० अ० [अनु०] १. दे० "हिनहिनाना"। २. गदहे का बोलना। रेंकना।

**हींही**—संज्ञा स्त्री० [अनु०] हँसने का शब्द।

**ही**—अव्य० [सं० हि० (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका व्यवहार जोर देने के लिए या निश्चय, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिए होता है।
संज्ञा पुं० दे० "हिय", "हृदय"।
क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'होनो' (=होना) क्रिया के भूतकाल 'हो' (=था) का स्त्री० रूप। थी।

**हीअ**—संज्ञा पुं० दे० "हिय"।

**हीक**—संज्ञा स्त्री० [सं० हिक्का] १. हिचकी। २ हलकी अरुचिकर गंध।

**हीचना‡**—क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

**हीठना**—क्रि० अ० [सं० आघट्ट] १. पास जाना। समीप होना। फटकना। २. जाना। पहुँचना।

**हीन**—वि० [सं०] [स्त्री० हीना] १. परित्यक्त। छोड़ा हुआ। २. रहित। शून्य। वंचित। ३. निम्नकोटि का। निकृष्ट। घटिया। ४. ओछा। नीच। बुरा। ५. तुच्छ। नाचीज। ६. सुख-समृद्धि-रहित। दीन। ७. अल्प। कम। थोड़ा। ८. दीन। नम्र।
संज्ञा पुं० १. प्रमाण के अयोग्य साक्षी। बुरा गवाह। २. अधम नायक। (साहित्य)

**हीनकला**—वि० [सं०] जिसमें कला न हो। कला-रहित।

**हीनकुल**—वि० [सं०] नीच कुल का।

**हीनक्रम**—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गए हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जायँ।

**हीनचरित**—वि० [सं०] बुरे आचरणवाला।

**हीनता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमी। त्रुटि। २. क्षुद्रता। तुच्छता। ३. ओछापन। ४. बुराई। निकृष्टता।

**हीनत्व**—संज्ञा पुं० [सं०] हीनता।

**हीनबल**—वि० [सं०] कमजोर।

**हीनबुद्धि**—वि० [सं०] दुर्बुद्धि। मूर्ख।

**हीनयान**—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध सिद्धांत की आदि और प्राचीन शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा में हैं। इसकी रचना बरमा और स्याम आदि में हुई है।

**हीनयोनि**—वि० [सं०] नीच कुल या जाति का।

**हीनरस**—संज्ञा पुं० [सं०] काव्य में एक दोष जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है। यह वास्तव में रस-विरोध ही है।

**हीनवीर्य**—संज्ञा पुं० [सं०] कमजोर।

**हीनांग**—वि० [सं०] १. जिसका कोई अंग न हो। खंडित अंगवाला। २. अधूरा।

**हीनोपमा**—संज्ञा स्त्री० [सं०] काव्य में वह उपमा जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लाया जाय।

**हीय, हीया‡**—संज्ञा पुं० दे० "हिय"।

**हीर**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा नामक रत्न। २. वज्र। बिजली। ३. सर्प। साँप। ४. छप्पय के ६२ वें भेद का नाम। ५. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, सगण, नगण, जगण और रगण होते हैं। ६. एक मात्रिक छंद जिसमें ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं।
संज्ञा पुं० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गूदा या सत। सार। २. लकड़ी के भीतर का सार भाग। ३. शरीर की सार वस्तु। धातु। वीर्य। ४. शक्ति। बल।

**हीरक**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हीरा नामक रत्न। २. हीर छंद।

**हीरा**—संज्ञा पुं० [ सं० हीरक ] एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कड़ाई के लिए प्रसिद्ध है। वज्रमणि।
मुहा०—हीरे की कनी चाटना=हीरे का चूर खाकर आत्म-हत्या करना।

**हीरा कसीस**—संज्ञा पुं० [ हिं० हीर+सं० कसीस ] लोहे का वह विकार जो देखने में कुछ हरापन लिए मटमैले रंग का होता है।

**हीरामन**—संज्ञा पुं० [ हिं० हीरा+मणि ] तोते की एक कल्पित जाति जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

**हीलना**‡*—क्रि० अ० दे० "हिलना"।

**हीला**—संज्ञा पुं० [ अ० हीलः ] १. बहाना। मिस।
यौ०—हीला हवाला=बहाना।
२. निमित्त। द्वार। वसीला। व्याज।

**ही ही**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] ही ही शब्द के साथ हँसने की क्रिया।

**हीसका, हीसा**‡—संज्ञा स्त्री० [ सं० हिंसा ] १. ईर्ष्या। डाह। २. प्रतियोगिता। होड़।

**हुँ**—अव्य० दे० "हूँ"।
अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। हाँ।

**हुँकरना**—क्रि० अ० दे० "हुंकारना"।

**हुंकार**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ललकार। डाँटने का शब्द। २. गर्जन। गरज। ३. चीत्कार। चिल्लाहट।

**हुंकारना**—क्रि० अ० [सं० हुंकार+ना (प्रत्य० )] १. डपटना। डाँटना। २. गरजना। ३. चिग्घाड़ना। चिल्लाना।

**हुँकारी**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० हुँ हुँ+करना] १. 'हुँ' करने की क्रिया। २. स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी।
संज्ञा स्त्री० दे० "हिकारी"।

**हुंकृति**—संज्ञा स्त्री० दे० "हुंकार"।

**हुँड़ार**—संज्ञा पुं० दे० "भेड़िया"।

**हुँडावन**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हुंडी+आवन (प्रत्य० )] १.हुंडी की दर। २. हुंडी की दस्तूरी। ३. हुंडी लिखने की क्रिया या भाव।

**हुंडी**—संज्ञा स्त्री० [ ? ] १. वह कागज जिस पर एक महाजन दूसरे महाजन को, कुछ रुपया देने के लिए लिखकर किसी को रुपए के बदले में देता है। निधिपत्र। लोटपत्र। चेक।
मुहा०—हुंडी सकारना=हुंडी के रुपए का देना स्वीकार करना। दर्शनी हुंडी=वह हुंडी जिसके दिखाते ही रुपये चुकता कर देने का नियम हो।
२. उधार रुपये देने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को साल भर में २०) का २५) या १५) का २०) देना पड़ता है।

**हुँत**—प्रत्य० [ प्रा० विभक्ति हिंतो ] १. पुरानी हिंदी की पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २. लिये। निमित्त। वास्ते। खातिर। ३. द्वारा। जरिए से।

**हु***‡—अव्य० [ सं० उप ] अतिरेक-सूचक शब्द। कथित के अतिरिक्त और भी।

**हुआना**—क्रि० अ० [ अनु० हुआँ ] 'हुआँ हुआँ' करना। गीदड़ों का बोलना।

**हुक**—संज्ञा पुं० [ अँ० ] १. टेढ़ी कील। २. अँकुसी।
संज्ञा स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार का नस या दर्द जो प्रायः पीठ में होता है।

**हुकरना**—क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।

**हुकारना**—क्रि० अ० दे० "हुँकारना"।

**हुकुम**‡—संज्ञा पुं० दे० "हुक्म"।

**हुकूमत**—संज्ञा स्त्री० [अ०] १.प्रभुत्व। शासन। आधिपत्य। अधिकार।
मुहा०—हुकूमत चलाना=प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। हुकूमत जताना=अधिकार या बड़प्पन प्रकट करना। रोब दिखाना।
२.राज्य। शासन। राजनीतिक आधिपत्य।

**हुक्का**—संज्ञा पुं० [ अ० ] तंबाकू का धुआँ खींचने या तंबाकू पीने के लिए विशेष रूप से बना एक नलयंत्र। गड़गड़ा। फरशी।

**हुक्का-पानी**—संज्ञा पुं० [ अ० हुक्का+हिं० पानी ] एक दूसरे के हाथ से हुक्का तंबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्यवहार। बिरादरी की राह-रस्म।
मुहा०—हुक्का पानी बंद करना=बिरादरी से अलग करना।

**हुक्काम**—संज्ञा पुं० [ अ० 'हाकिम' का बहुवचन रूप ] हाकिम लोग। अधिकारीवर्ग।

**हुक्म**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. बड़े का वचन जिसका पालन कर्त्तव्य हो। आज्ञा। आदेश।
मुहा०—हुक्म उठाना= १. हुक्म रद करना। २. आज्ञा पालन करना। हुक्म की तामील=आज्ञा का पालन। हुक्म चलाना या जारी करना=आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना=आज्ञा भंग करना। हुक्म देना=आज्ञा करना। हुक्म बजाना या बजा लाना=आज्ञा पालन करना। हुक्म मानना=आज्ञा पालन करना।
२. स्वीकृति। अनुमति। इजाजत। ३. अधिकार। प्रभुत्व। शासन।

४. विधि। नियम। शिक्षा। ५. ताश का एक रंग।

**हुक्मनामा**—संज्ञा पुं० [ अ० + फ़ा० ] वह कागज जिस पर हुक्म लिखा हो। आज्ञा-पत्र।

**हुक्मबरदार**—संज्ञा पुं० [ अ० + फ़ा० ] आज्ञाकारी। सेवक। अधीन।

**हुक्मी**—वि० [ अ० हुक्म ] १. दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पराधीन। २. ज़रूर असर करनेवाला। अचूक। अव्यर्थ। ३. अवश्य कर्त्तव्य। लाज़िमी। ज़रूरी।

**हुचकी**†—संज्ञा स्त्री० दे० "हिचकी"।

**हुजूम**—संज्ञा पुं० [ अ० ] भीड़।

**हुजूर**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी बड़े का सामीप्य। समक्षता। २. बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी। ३. बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

**हुजूरी**—संज्ञा पुं० [ अ० हुजूर ] १. खास सेवा में रहनेवाला नौकर। २. दरबारी। मुसाहब। ३. खुशामदी। वि० हुजूर का। सरकारी।

**हुज्जत**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. व्यर्थ का तर्क। २. विवाद। झगड़ा। तकरार।

**हुज्जती**—वि० [ हिं० हुज्जत ] हुज्जत करनेवाला।

**हुड़क**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] हुड़कने की क्रिया या भाव।

**हुड़कन**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] हुड़कने की क्रिया या भाव।

**हुड़कना**—क्रि० अ० [ अनु० ] [स० हुड़काना ] १. वियोग के कारण बहुत दुःखी होना। २. भयभीत और चिंतित होना। ३. तरसना।

**हुड़दंग**—संज्ञा पुं० [ अनु० हुड़ + हिं० दंगा ] धमाचौकड़ी। उपद्रव। उत्पात।

**हुड़ुक**—संज्ञा पुं० [ सं० हुडुक ] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।

**हुड्डु**—वि० [ देश० ] १. जंगली। गँवार। २. उद्दंड। ३. बहुत ऊँचा। लंबा-तड़गा।

**हुडुक्का***—संज्ञा पुं० दे० "हुडुक"।

**हुत**—वि० [ सं० ] हवन किया हुआ। आहुति दिया हुआ।

*क्रि० अ० 'होना' क्रिया का प्राचीन भूतकालिक रूप। था।

**हुता**†*—क्रि० अ० [ हिं० हुत ] 'होना' क्रिया का पुरानी अवधी हिंदी का भूतकालिक रूप। था।

**हुताशन**—संज्ञा पुं० [ सं० ] अग्नि। आग।

**हुति***—अव्य० [ प्रा० हिंतो ] १. अपादान और करण कारक का चिह्न। द्वारा। २. ओर से। तरफ़ से।

**हुँते**—अव्य० [ प्रा० हिंतो ] १. से। द्वारा। २. ओर से। तरफ़ से।

**हुते***—क्रि० अ० [ 'होना' का ब्रज० भूतकालिक बहुवचनांत रूप ] थे।

**हुतो***—क्रि० अ० [ 'होना' क्रि०का ब्रज० भूतकालिक रूप ] था।

**हुदकाना**†*—क्रि० स० [ देश० ] उसकाना। उभारना।

**हुदना***†—क्रि० अ० [ सं० हुंडन ] स्तब्ध होना। रुकना।

**हुदहुद**—संज्ञा पुं० [ अ० ] एक चिड़िया।

**हुन**—संज्ञा पुं० [ सं० हूण ] १. मोहर। अशरफ़ी। २. सोना। सुवर्ण।

**मुहा०**—हुन बरसना=धन की बहुत अधिकता होना।

**हुनना**†—क्रि० स० [ सं० हवन ] १. आहुति देना। २. हवन करना।

**हुनर**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. कला। कारीगरी। २. गुण। करतब। ३. कौशल। युक्ति। चतुराई।

**हुनरमंद**—वि० [फ़ा०] कला-कुशल। निपुण।

**हुन्न***—संज्ञा पुं० दे० "हुन"।

**हुब्ब**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हुब ] १. प्रेम। मुहब्बत। २. मित्रता। ३. इच्छा।

**हुमकना**—क्रि० अ० [ अनु० हुँ ] १. उछलना कूदना। २. पैरों से ज़ोर लगाना। ३. पैरों को आघात के लिए ज़ोर से उठाना। ४. चलने का प्रयत्न करना। ठुमकना। (बच्चों का) ५. दबाने के लिए ज़ोर लगाना।

**हुमगना**—क्रि० अ० दे० "हुमकना"।

**हुमसना**—क्रि० अ० [ ? ] [ स० क्रि० हुमसाना ] १. उछलना। २. दे० "उमसना"।

**हुमेल**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हमायल ] सिक्कों को गूँथकर बनी हुई एक प्रकार की माला।

**हुर**—संज्ञा पुं० [ ? ] सिन्ध में रहनेवाले एक प्रकार के मुसलमान।

**हुरदंगा**—संज्ञा पुं० दे० "हुड़दंगा"।

**हुल्लमयी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार का नृत्य।

**हुलसना**—क्रि० अ० [ हिं० हुलास] १. आनंद से फूलना। खुशी से भरना। २. उभरना। उठना। ३. उमड़ना। बढ़ना।

*क्रि० स० आनंदित करना।

**हुलसाना**—क्रि० स० [ हिं० हुलसना ] आनंदित करना।

क्रि० अ० दे० "हुलसना"।

**हुलसित***—वि० [ हिं० हुलास ] आनंद की उमंग से भरा हुआ। खुशी से भरा हुआ।

**हुलसी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० हुलसना] १. हुलास। उल्लास। आनंद की उमंग। २. किसी किसी के मत से तुलसीदासजी की माता का नाम।

**हुलहुल**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक छोटा पौधा।

**हुलाना**†—क्रि० स० दे० "हूलना"।

**हुलास**—संज्ञा पुं० [ सं० उल्लास ] १. आनंद की उमंग। उल्लास। आह्लाद। २. उत्साह। हौसला। ३. उमगना। बढ़ना।
संज्ञा स्त्री० सुँघनी। नस्यरोचन।

**हुलिया**—संज्ञा पुं० [ अ० हुलियः ] १. शकल। आकृति। २. किसी मनुष्य के रूप-रंग आदि का विवरण।
मुहा०—हुलिया कराना या लिखाना=किसी आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल सूरत आदि पुलिस में दर्ज कराना।

**हुल्लड़**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. शोरगुल। हल्ला। कोलाहल। २. उपद्रव। ऊधम। धूम। ३. हलचल। आंदोलन।

**हुल्लास**—संज्ञा पुं० [ सं० उल्लास ] चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बना एक छंद।

**हुश**—अव्य० [ अनु० ] अनुचित बात मुँह से निकालने पर रोकने का शब्द।

**हुशियार***†—वि० दे० "होशियार"।

**हुसैन**—संज्ञा पुं० [ अ० ] मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गये थे। मुहर्रम इन्हीं के शोक में मनाया जाता है।

**हुस्न**—संज्ञा पुं० [अ०] १. सौंदर्य्य। सुंदरता। लावण्य। २. तारीफ की बात। खूबी।

**हुस्न-परस्त**—वि० [ अ० + फ़ा० ] [ संज्ञा हुस्न परस्ती ] सौंदर्य का उपासक या प्रेमी।

**हुस्यार**†*—वि० दे० "होशियार"।

**हूँ**—अव्य० [ अनु० ] स्वीकार-सूचक शब्द।
अव्य० दे० "हू"।
सर्व० वर्त्तमान कालिक क्रिया "है" का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।

**हूँकना**—क्रि० अ० [ अनु० ] १. गाय का दुःख सूचित करने के लिए धीरे धीरे बोलना। हुँकना। २. हुंकार शब्द करना। वीरों का ललकारना या डपटना।

**हूँठ**—वि० [ सं० अध्युष्ठ ] साढ़े तीन।

**हूँठा**—संज्ञा पुं० [ सं० अध्युष्ठ ] साढ़े तीन का पहाड़ा।

**हूँस**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हिंसा ] १. ईर्ष्या। डाह। २. बुरी नजर। टोक। ३. कोसना। फटकार।

**हूँसना**—क्रि० स० [ हिं० हूँस ] नजर लगाना।
क्रि० अ० १. ईर्ष्या से ललचाना। २. ललचाना। ३. कोसना।

**हू**†—अव्य० [ सं० उप=आगे ] एक अतिरेक बोधक शब्द। भी।

**हूक**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हिक्का ] १. छाती या कलेजे का दर्द। साल। २. दर्द। पीड़ा। कसक। ३. संताप। दुःख। ४. आशंका। खटका।

**हूकना**—क्रि० अ० [ हिं० हूक ] १. सालना। दुखना। दर्द करना। २. पीड़ा से चौंक उठना।

**हूटना***†—क्रि० अ० [ सं० हुड्=चलना ] १. हटना। टलना। २. मुड़ना। पीठ फेरना।

**हूठा**—संज्ञा पुं० [ हिं० अँगूठा ] १. अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। २. भद्दी या गँवारू चेष्टा।
मुहा०—हूठा देना=ठेंगा दिखाना। अशिष्टता से हाथ मटकाना।

**हूड़**—वि० दे० "हुड्ड"।

**हूण**—संज्ञा पुं० [ ? ] एक प्राचीन मंगोल जाति जो प्रबल होकर एशिया और योरप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई फैली थी।

**हूत**—वि० [ सं० ] बुलाया हुआ।

**हूनना**†—क्रि० स० [ सं० हवन ] १. आग में डालना। २. विपत्ति में डालना।

**हू-बहू**—वि० [ अ० ] ज्यों का त्यों। ठीक वैसा ही। बिलकुल समान।

**हूर**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा।
संज्ञा पुं० दे० "हूर"।

**हूरना**†—क्रि० स० [ अनु० ] १. बहुत अधिक भोजन करना। २. मारना। ३. हूलना।

**हूल**—संज्ञा स्त्री० [ सं० शूल ] १. भाले, डंडे आदि की नोक को जोर से ठेलना अथवा भोंकना। २. हूक। शूल। पीड़ा।
संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. कोलाहल। हल्ला। धूम। २. हर्षध्वनि। ३. ललकार। ४. खुशी। आनंद। ५. उबकाई। मिचली।

**हूलना**—क्रि० स० [ हिं० हूल ] १. लाठी, भाले आदि की नोक का जोर से ठेलना या घुसाना। गड़ाना। २. शूल उत्पन्न करना।

**हूला**—संज्ञा पुं० [ हिं० हूलना ] हूलने की क्रिया या भाव।

**हूश**—वि० [ हिं० हूड़ ] १. असभ्य। उजड्ड। २. अशिष्ट। बेहूदा।

**हूह**—संज्ञा स्त्री० [ अनु० ] हुंकार। कोलाहल। युद्धनाद।

**हहू**—संज्ञा पुं० [अनु०] अग्नि के जलने का शब्द। धायँ धायँ।

**हृत**—वि० [सं०] १. पहुँचाया हुआ। २. हरण किया हुआ। छीनकर लिया हुआ।

**हृति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. ले जाना। हरण। २. नाश। ३. लूट।

**हृत्कंप**—संज्ञा पुं० [सं०] १. हृदय की कँपकँपी। २. अत्यंत भय। दहशत।

**हृत्तंत्री**—संज्ञा स्त्री० [सं०] हृदय-रूपी तंत्री या वीणा।

**हृत्तल**—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय। कलेजा। दिल।

**हृत्पिंड**—संज्ञा पुं० [सं०] कलेजा।

**हृद्**—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय। दिल।

**हृदयंगम**—वि० [सं०] मन में बैठा हुआ। समझ में आया हुआ।

**हृदय**—संज्ञा पुं० [सं०] १. छाती के भीतर बाईं ओर का मांसकोश जिसमें से होकर शुद्ध लाल रक्त नाड़ियों के द्वारा शरीर में संचार करता है। दिल। कलेजा। २. छाती। वक्षस्थल।

**मुहा०**—हृदय विदीर्ण होना=अत्यंत शोक होना।

३. प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकारों का स्थान। ४. अंतःकरण। मन। ५. अंतरात्मा। विवेक-बुद्धि।

**हृदयग्राही**—संज्ञा पुं० [सं० हृदय-ग्राहिन्] [स्त्री० हृदयग्राहिणी] मन को मोहित करनेवाला।

**हृदयनिकेत**—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव।

**हृदय-विदारक**—वि० [सं०] अत्यंत शोक, करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला।

**हृदयवेधी**—वि० [सं० हृदय-वेधिन्] [स्त्री० हृदयवेधिनी] १. मन को अत्यंत मोहित या दुखी करनेवाला। २. अत्यंत शोक करनेवाला। अत्यंत कटु।

**हृदयस्पर्शी**—वि० [सं० हृदयस्पर्शिन्] [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी] हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।

**हृदयहारी**—वि० [सं० हृदयहारिन्] [स्त्री० हृदयहारिणी] मन को लुभानेवाला।

**हृदयाला**—वि० [स्त्री० हृदयाली] दे० "हृदयालु"।

**हृदयालु**—वि० [सं०] १. दृढ़ हृदयवाला। साहसी। २. उदार हृदयवाला। ३ सहृदय।

**हृदयेश, हृदयेश्वर**—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० हृदयेश्वरी] १. प्यारा। प्रियतम। २. पति।

**हृदि**—क्रि० वि० [सं० हृद्] हृदय में।

**हृद्गत**—वि० [सं०] १. हृदय का। आंतरिक। भीतरी। २. मन में बैठा या जमा हुआ। ३. प्रिय। रुचिकर।

**हृद्य**—वि० [सं०] १. हृदय का। भीतरी। २. अच्छा लगनेवाला। ३. सुंदर। लुभावना। ४. स्वादिष्ट। जायकेदार।

**हृद्रोग**—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय में होनेवाला रोग। जैसे धड़कन आदि।

**हृद्रोध**—संज्ञा पुं० [सं०] हृदय की गति का रुक जाना।

**हृषि**—संज्ञा स्त्री० [सं०] हर्ष। आनंद।

**हृषीकेश**—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. पूस का महीना।

**हृष्ट**—वि० [सं०] [संज्ञा हृष्टि] हर्षित। अत्यंत प्रसन्न।

**हृष्ट-पुष्ट**—वि० [सं०] मोटा-ताजा। तगड़ा।

**हृष्टरोम**—वि० [सं० हृष्टरोमा] जिसे रोमांच हो आया हो। पुलकित। रोमांचित।

**हें हें**—संज्ञा पुं० [अनु०] १. धीरे से हँसने का शब्द। २. गिड़गिड़ाने का शब्द।

**हेंगा†**—संज्ञा पुं० [सं० अभ्यंग] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। पहटा।

**हे**—अव्य० [सं०] संबोधन का शब्द।

†क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'हो' (=था) का बहुवचन। थे।

**हेकड़**—वि० [हिं० हिया+कड़ा] १. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। २. जबरदस्त। प्रबल। प्रचंड। बली। ३. अक्खड़। उजड्ड।

**हेकड़ी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हेकड़] १. अक्खड़पन। उग्रता। ऐंठ। २. जबरदस्ती। बलात्कार।

**हेच**—वि० [फ़ा०] १. तुच्छ। नाचीज। २. निःसार। पोच।

**हेठ**—क्रि० वि० [सं० अधस्थः] नीचे।

**हेठा**—वि० [हिं० हेठ=नीचे] १. नीचा। २. घटकर। कम। ३. तुच्छ। नीच।

**हेठापन**—संज्ञा पुं० [हिं० हेठा+पन (प्रत्य०)] तुच्छता। नीचता। क्षुद्रता।

**हेठी**—संज्ञा स्त्री० [हिं० हेठा] प्रतिष्ठा में कमी। मानहानि। तौहीन।

**हेतक***—संज्ञा पुं० दे० "हेतु"।

**हेति**—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। लौ। २. वज्र। ३. सूर्य की किरण। ४. भाला। ५. चोट।

आघात ।

**हेती***—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "हेति" ।

**हेतु**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. वह बात जिसे ध्यान में रखकर कोई दूसरी बात की जाय । अभिप्राय । उद्देश्य । २. कारक या उत्पादक विषय । कारण । वजह । सबब । ३. उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति या वस्तु । ४. वह बात जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो । ५. तर्क । दलील । ६. एक अर्थालंकार जिसमें कारण ही कार्य्य कह दिया जाता है ।

संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हित ] १. लगाव । प्रेमसंबंध । २. प्रेम । प्रीति । अनुराग ।

**हेतुवाद**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. तर्कविद्या । २. कुतर्क । नास्तिकता ।

**हेतुशास्त्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] तर्कशास्त्र ।

**हेतुहेतुमद्भाव**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] कार्य्यकारण भाव । कारण और कार्य्य का संबंध ।

**हेतुहेतुमद्भूत काल**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिनमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है । (व्या॰)

**हेतूपमा**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "उत्प्रेक्षा" (२) ।

**हेत्वपह्नुति**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] वह अपह्नुति अलंकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय ।

**हेत्वाभास**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] किसी बात को सिद्ध करने के लिए उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो । असत् हेतु ।

**हेमंत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] छः ऋतुओं में से एक । अगहन और पूस । शीतकाल ।

**हेम**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हेमन् ] १. हिम । पाला । बर्फ । २. सोना । स्वर्ण ।

**हेमकूट**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] हिमालय के उत्तर का एक पर्वत । (पुराण)

**हेमगिरि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सुमेरु पर्वत ।

**हेमचन्द्र**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य्य जो ईसवी सन् १०८९ और ११७३ के बीच हुए थे और गुजरात के राजा कुमारपाल के गुरु थे । इन्होंने व्याकरण और कोश के कई ग्रन्थ लिखे हैं ।

**हेमपर्वत**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] सुमेरु पर्वत ।

**हेम-मुद्रा**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] सोने का सिक्का । अशरफी । मोहर ।

**हेमाद्रि**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. सुमेरु पर्वत । २. ईसा की १३वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध ग्रंथकार ।

**हेमाभ**—वि॰ [ सं॰ ] हेम या सोने की सी आभावाला । सुनहला ।

**हेय**—वि॰ [ सं॰ ] १. छोड़ने योग्य । त्याज्य । २. बुरा । खराब । निकृष्ट

**हेरंब**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] गणेश ।

**हेर***—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हेरना ] ढूँढ़ । तलाश ।

संज्ञा पुं॰ दे॰ "अहेर" ।

**हेरना***—क्रि॰ स॰ [ सं॰ आखेट ] १. ढूँढ़ना । खोजना । पता लगाना । २. देखना । ताकना । ३. जाँचना । परखना ।

**हेरना फेरना**—क्रि॰ स॰ [ हेरना (अनु॰)+हिं॰ फेरना ] १. इधर का उधर करना । २. बदलना । परिवर्तन करना ।

**हेर फेर**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हेरना + फेरना ] १. घुमाव । चक्कर । २. बात का आडंबर । ३. कुटिल युक्ति । दावँ पेच । चाल । ४. अदल-बदल । उलट-पलट । ५. अंतर । फर्क । ६. अदला-बदला । विनिमय ।

**हेरवाना†**—क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हेराना ] गँवाना ।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हेरना का प्रेर॰ ] ढुँढ़वाना ।

**हेराना†**—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हरण ] १. खो जाना । पास से निकल जाना । २. न रह जाना । अभाव हो जाना । ३. लुप्त हो जाना । नष्ट हो जाना । ४. फीका पड़ जाना । मंद पड़ जाना । ५. सुध-बुध भूलना । तन्मय होना ।

क्रि॰ स॰ [ हिं॰ हेरना का प्रेर॰ ] खोजवाना । ढुँढ़वाना । तलाश कराना ।

**हेराफेरी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ हेरना + फेरना ] १. हेर-फेर । अदल-बदल । २. इधर का उधर होना या करना ।

**हेरी†***—संज्ञा स्त्री॰ [ संबोधन हे+री ] पुकार ।

मुहा॰—हेरी देना=पुकारना । आवाज देना ।

**हेल**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हील ] १. कीचड़, गोबर इत्यादि । २. गोबर का खेप ।

**हेलना***—क्रि॰ अ॰ [ सं॰ हेलन ] १. क्रीड़ा करना । केलि करना । २. हँसी ठट्ठा करना ।

क्रि॰ स॰ तुच्छ समझना ।

†क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ हिलना ] १. प्रवेश करना । घुसना । २. तैरना ।

**हेल मेल**—संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हिलना + मिलना ] १. मिलने जुलने आदि का

संबंध । घनिष्ठता । मित्रता । रब्त-जब्त । २. संग । साथ । सुहबत । ३. परिचय ।

**हेलया**—क्रि॰ वि॰ [ सं॰ ] खेल-वाड़ में ।

**हेला**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. तुच्छ समझना । तिरस्कार । २. खेलवाड़ । क्रीड़ा । ३. प्रेम की क्रीड़ा । केलि । ४. नायक से मिलने के समय नायिका का विविध विलास या विनोद-सूचक मुद्रा । ( साहित्य )

संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हल्ला ] १. पुकार । हाँक । २. धावा । आक्रमण । चढ़ाई ।

संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ रेलना ] ठेलने की क्रिया या भाव ।

संज्ञा पुं॰ [ हिं॰ हेल ] [स्त्री॰ हेलिन, हेलिनी ] गलीज उठानेवाला । हलाल-खोर । मेहतर ।

**हेली***—अव्य॰ [ संबो॰ हे+अली ] हे सखी !

संज्ञा स्त्री॰ सहेली । सखी ।

**हेवंत***—संज्ञा पुं॰ दे॰ "हेमंत" ।

**हैं**—अव्य॰ १. एक आश्चर्य-सूचक शब्द । २. एक निषेध या असम्मति-सूचक शब्द ।

क्रि॰ अ॰ सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्त्तमान रूप "है" का बहुवचन ।

**है**—क्रि॰ अ॰ [ हिं॰ क्रि॰ 'होना' का वर्त्तमान-कालिक एक-वचन रूप । ]

†*संज्ञा पुं॰ दे॰ "हय" ।

**हैकड़**—वि॰ दे॰ "हेकड़" ।

**हैकल**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ हय+गल ] १. एक गहना जो घोड़ों के गले में पहनाया जाता है । २. तावीज । हुमेल ।

**हैजा**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ हैजः ] दस्त और कै की बीमारी । विसूचिका ।

**हैना**—क्रि॰ स॰ [ सं॰ हनन ] मार डालना ।

**हैवर***—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ हयवर ] अच्छा घोड़ा ।

**हैम**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ हैमी ] १. सोने का । स्वर्णमय । २. सुनहरे रंग का ।

वि॰ [ सं॰ ] १. हिम-संबंधी । २. जाड़े या बर्फ में होनेवाला ।

**हैमवत**—वि॰ [ सं॰ ] [ स्त्री॰ हैम-वती ] हिमालय का । हिमालय-संबंधी ।

संज्ञा पुं॰ १. हिमालय का निवासी । २. एक राक्षस । ३. एक संप्रदाय का नाम ।

**हैमवती**—संज्ञा स्त्री॰ [ सं॰ ] १. पार्वती । २. गंगा ।

**हैरत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] आश्चर्य । अचंभा ।

**हैरान**—वि॰ [ अ॰ ] [ संज्ञा हैरानी ] १. आश्चर्य से स्तब्ध । चकित । भौचक्का । २. परेशान । व्यग्र । तंग ।

**हैवान**—संज्ञा पुं॰ [ अ॰ ] [ भाव॰ हैवानियत, हैवानी ] १. पशु । जान-वर । २. बेवकूफ, गँवार या अत्यंत निर्दयी आदमी ।

**हैवानी**—वि॰ [ अ॰ हैवान ] १. पशु का । २. पशु के करने के योग्य ।

**हैसियत**—संज्ञा स्त्री॰ [ अ॰ ] १. योग्यता । सामर्थ्य । शक्ति । २. वित्त । बिसात । आर्थिक दशा । ३. श्रेणी । दरजा । ४. धन । दौलत ।

**हैहय**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] १. एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है और कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है । २. हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन ।

**हैहयराज, हैहयाधिराज**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] हैहयवंशी कार्त्तवीर्य्य सहस्रार्जुन ।

**है है**—अव्य॰ [ हा हा ! ] शोक या दुःख-सूचक शब्द । हाय । अफसोस ।

**हों**—क्रि॰ अ॰ सत्तार्थक क्रिया 'होना' का बहुवचन संभाव्य काल का रूप ।

**होंठ**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ओष्ठ ] मुख-विवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढके रहते हैं । ओष्ठ । रदच्छद ।

मुहा॰—होंठ काटना या चबाना= भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना ।

**हो**—संज्ञा पुं॰ [ सं॰ ] पुकारने का शब्द या संबोधन ।

क्रि॰ अ॰ सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष संभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्त्तमान काल का रूप ।

*व्रज की वर्त्तमान-कालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप । था ।

**होई**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ होना ] एक पूजन जो दीवाली के आठ दिन पहले होता है ।

**होड़**—संज्ञा स्त्री॰ [सं॰ हार=विवाद] १. शर्त । बाजी । २. एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न । स्पर्द्धा । ३. समान होने का प्रयास । बराबरी । ४. हठ । जिद ।

संज्ञा पुं॰ १. एक आदिवासी जाति जो छोटा नागपुर के आस-पास रहती है । २. इस जाति का कोई व्यक्ति । ३. इस जाति की भाषा ।

**होड़ाबादी**—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "होड़ा-होड़ी" ।

**होड़ाहोड़ी**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ होड़ ] १. लागडाँट । चढ़ा-ऊपरी । २. शर्त । बाजी ।

**होता**—संज्ञा स्त्री॰ [ हिं॰ होना ] १. पास में धन होने की दशा । संपन्नता । २. वित्त । सामर्थ्य ।

समाई।

**होतव, होतव्य**—संज्ञा पुं० दे० "होनहार"।

**होतव्यता**—संज्ञा स्त्री० दे० "होनहार"।

**होता**—संज्ञा पुं० [ सं० होतृ ][ स्त्री० होत्री ] यज्ञ में आहुति देनेवाला।

**होनहार**—वि० [ हिं० होना + हारा ( प्रत्य० ) ] १. जो अवश्य होगा। जो होने को है। भावी। २. जिसके बढ़ने या श्रेष्ठ होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला।

संज्ञा पुं० वह बात जो होने को हो। वह बात जो अवश्य हो। होनी। भवितव्यता।

**होना**—क्रि० अ० [ सं० भवन ] १. प्रधान सत्तार्थक क्रिया। अस्तित्व रखना। उपस्थित या मौजूद रहना।

**मुहा०**—किसी का होना=१. किसी के अधिकार में, अधीन या आज्ञावर्ती होना। २. किसी का प्रेमी या प्रेमपात्र होना। ३. किसी का आत्मीय, कुटुंबी या संबंधी होना। सगा होना। कहीं का हो रहना=( कहीं से ) न लौटना। बहुत रुक या ठहर जाना। ( कहीं से ) होकर या होते हुए=१. गुजरते हुए। बीच से। मध्य से। २. बीच में ठहरते हुए। ३. पहुँचना। जाना। मिलना। हो आना=भेंट करने के लिए जाना। मिल आना। होते पर=पास में धन होने की दशा में। संपन्नता में।

२. एक रूप से दूसरे रूप में आना। अन्य दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना।

**मुहा०**—हो बैठना=१. बन जाना। अपने को समझने लगना या प्रकट करने लगना। २. मासिक धर्म से होना।

३. साधित किया जाना। कार्य्य का संपन्न किया जाना। भुगतना। सरना।

**मुहा०**—हो जाना या चुकना=समाप्ति पर पहुँचना। पूरा होना।

४. बनना। निर्माण किया जाना। ५. किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना। घटित किया जाना।

**मुहा०**—होकर रहना=अवश्य घटित होना। न टलना। जरूर होना।

६. किसी रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतबाधा आदि का आना। ७. बीतना। गुजरना। ८. परिणाम निकलना। फल देखने में आना। ९. प्रभाव या गुण दिखाई पड़ना। जन्म लेना। १०. काम निकलना। प्रयोजन या कार्य सधना। ११. काम बिगड़ना। हानि पहुँचना।

**होनी**—संज्ञा स्त्री० [ हिं० होन. ] १. उत्पत्ति। पैदाइश। २. हाल वृत्तांत। ३. होनेवाली बात या घटना। वह बात जिसका होना ध्रुव हो। भावी। भवितव्यता। ४. वह बात जिसका होना संभव हो।

**होम**—संज्ञा पुं० [ सं० ] देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृत, जौ आदि डालना। हवन। यज्ञ।

**मुहा०**—होम कर देना=१. जला डालना। भस्म कर देना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. उत्सर्ग करना। छोड़ देना। होम करते हाथ जलना=अच्छा कार्य करने का बुरा परिणाम होना या अपयश मिलना।

**होमकुंड**—संज्ञा पुं० [ सं० ] होम की अग्नि रखने का गड्ढा।

**होमना**—क्रि० स० [ सं० होम + ना ( प्रत्य० ) ] १. देवता के उद्देश्य से अग्नि में डालना। हवन करना। २. उत्सर्ग करना। छोड़ देना। ३. नष्ट करना। बरबाद करना।

**होमीय**—वि० [ सं० ] होम-संबंधी। होम का।

**होरसा**—संज्ञा पुं० [सं० घर्ष=घिसना] पत्थर की गोल छोटी चौकी जिस पर चंदन घिसते या रोटी बेलते हैं। चौका। चकला।

**होरहा**—संज्ञा पुं० [ सं० होलक ] १. चने का पौधा। २ हरा चना।

**होरा**—संज्ञा पुं० दे० "होला"।

संज्ञा स्त्री० [ सं० ( यूनानी भाषा से गृहीत ) ] १. एक अहोरात्र का २४ वाँ भाग। घंटा। ढाई घड़ी का समय। २. एक राशि या लग्न का आधा भाग। ३. जन्मकुंडली।

**होरिल**—संज्ञा पुं० [ देश० ] नवजात बालक।

**होरिहार***†—संज्ञा पुं० [हिं० होरी] होली खेलनेवाला।

**होरी**—संज्ञा स्त्री० दे० "होली"।

**होला**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] होली का त्योहार।

संज्ञा पुं० सिखों की होली जो होली के दूसरे दिन होती है।

संज्ञा पुं० [ सं० होलक ] १. आग में भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २. चने का हरा दाना। होरहा।

**होलाष्टक**—संज्ञा पुं० [ सं० ] होली के पहले के आठ दिन जिनमें विवाह-कृत्य नहीं किया जाता। अरता-बरता।

**होलिका**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. होली का त्योहार। २. लकड़ी, घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है। ३. एक राक्षसी का नाम।

**होली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० होलिका ] १. हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जो

फाल्गुन के अन्त में मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालते हैं।

**मुहा०**—होली खेलना=१.एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना। २. नष्ट करना। अपव्यय करना।

२. लकड़ी,घास-फूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है।

३. एक प्रकार का गीत जो होली के उत्सव में गाया जाता है।

**होश**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. बोध या ज्ञान की वृत्ति। संज्ञा। चेतना। चेत।

**यौ०**—होश व हवास=चेतना और बुद्धि।

**मुहा०**—होश उड़ना,गुम होना या जाता रहना=भय या आशंका से चित्त व्याकुल होना। सुध बुध भूल जाना। होश करना=सचेत होना। बुद्धि ठीक करना। होश दंग होना=चित्त चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना। होश सँभालना=अवस्था बढ़ने पर सब बातें समझने-बूझने लगना। सयाना होना। होश में आना=चेतना प्राप्त करना। बोध या ज्ञान की वृत्ति फिर लाभ करना। होश की दवा करो=बुद्धि ठीक करो। समझ-बूझकर बोलो। होश ठिकाने होना=१. बुद्धि ठीक होना। भ्रांति या मोह दूर होना। २. चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। ३. दंड पाकर भूल का पछतावा। होना।

२. स्मरण। सुध। याद।

**मुहा०**—होश दिलाना=याद दिलाना।

३. बुद्धि। समझ। अक्ल।

**होशमंद**—वि० दे० "होशियार"।

**होशियार**—वि० [ फ़ा० ] १. चतुर। समझदार। बुद्धिमान्। २. दक्ष। निपुण। कुशल। ३. सचेत। सावधान। खबरदार। ४. जिसने होश सँभाला हो। सयाना। ५. चालाक। धूर्त्त।

**होशियारी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] १. समझदारी। बुद्धिमानी। चतुराई। २. निपुणता। कौशल। सावधानी।

**होस***†—संज्ञा पुं० दे० "होश" व "हौस"।

**हौं***†—सर्व० [ सं० अहम् ] ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक-वचन सर्वनाम। मैं।

क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एक-वचन रूप। हूँ।

**हौंकना***†—क्रि० अ० [ हिं० हुंकार] १. गरजना। हुंकार करना। २. हाँफना। ३. पंखा झलना।

**हौंस**—संज्ञा स्त्री० दे० "हौस"।

**हौ***—अव्य० [ हिं० हाँ ] स्वीकृति-सूचक शब्द। हाँ। ( मध्य प्रदेश )।

क्रि० अ० १. होना क्रिया का मध्यम पुरुष एक-वचन का वर्तमान-कालिक रूप। हो। २. होना का भूतकाल। था।

**हौआ**—संज्ञा पुं० [ अनु० हौ ] लड़कों को डराने के लिए एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। मकाऊँ।

संज्ञा स्त्री० दे० "हौवा"।

**हौका**—संज्ञा पुं० [ अनु० ] १. किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा। २. दीर्घ निश्वास।

**हौज**—संज्ञा पुं० [ अ० ] पानी जमा रहने का बहबच्चा। कुंड।

**हौड़ा**†—संज्ञा स्त्री० दे० "होड़"।

**हौद**—संज्ञा पुं० दे० "हौज"।

**हौदा**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० हौदज ] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन जिसके चारों ओर रोक रहती है।

**हौदी**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० हौज ] १. छोटा हौदा। २. छोटा हौज, विशेषतः नल का।

**हौमै**†—संज्ञा पुं० [ सं० अहम् ] अपनापन निजत्व।

**हौरा**—संज्ञा पुं० [ अनु० हाव, हाव ] शोर। गुल। हल्ला। कोलाहल।

**हौरे***—क्रि० वि० दे० "हौले"।

**हौल**—संज्ञा पुं० [ अ० ] डर। भय।

**मुहा०**—हौल पैठना या बैठना=जी में डर समाना।

**हौल-जौल** ( **जौल** )—[ अ० हौल ] भय या शीघ्रता के कारण होनेवाली घबराहट।

**हौलदिल**—संज्ञा पुं० [ फ़ा० ] १. कलेजा धड़कना। दिल की धड़कन। २. दिल धड़कने का रोग।

वि० १. जिसका दिल धड़कता हो। २. दहशत में पड़ा हुआ। डरा हुआ।

**हौलदिला**—वि० [ फ़ा० हौलदिल ] डरपोक।

**हौलदिली**—संज्ञा स्त्री० [ फ़ा० ] संग-यशब (पत्थर) का वह टुकड़ा जो गले में हृदय-संबंधी रोग दूर करने के लिए पहना जाता है।

**हौलनाक**—वि० [ अ० + फ़ा० ] भयानक।

**हौली**—संज्ञा स्त्री० [ सं० हाला=मद्य] वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। कलवरिया।

**हौलू**—वि० [ हिं० हौल ] जिसके मन में जल्दी हौल या भय उत्पन्न हो।

**हौले**—क्रि० वि० [ हिं० हलका ] १. धीरे। आहिस्ता। मंद गति से।

हिम्मता के साथ नहीं। २. हलके हाथ से। जोर से नहीं।
**हौवा**—संज्ञा स्त्री० [ अ० ] पैगम्बरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य जाति की आदि माता मानी जाती है।
संज्ञा पु० दे० "हौआ"।
**हौस**—संज्ञा स्त्री० [ अ० हवस ] १. चाह। प्रबल इच्छा। लालसा। कामना। २.उमंग। हर्षोत्कंठा। ३. हौसला। उत्साह। साहसपूर्ण इच्छा।
**हौसला**—संज्ञा पुं० [ अ० ] १. किसी काम करने की आनंदपूर्ण इच्छा। उत्कंठा। लालसा।
**मुहा०**—हौसला निकालना = इच्छा पूरी होना। अरमान निकलना।
२. उत्साह। जोश और हिम्मत।
**मुहा०**—हौसला पस्त होना=उत्साह न रह जाना। जोश ठंडा पड़ना।
३. प्रफुल्लता। उमंग। बढ़ी हुई तबीयत।
**हौसलामंद**—वि० [फ़ा०] १.लालसा रखने वाला। २. बढ़ी हुई तबीयत का। ३. उत्साही। साहसी।
**ह्याँ***—अव्य० दे० "यहाँ"।
**ह्यो***—संज्ञा पुं० दे० "हियो", "हिया"।
**ह्रद**—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. बड़ा ताल। झील। २. सरोवर। तालाब। ३. ध्वनि। आवाज। ४. किरण।
**ह्रदिनी**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] नदी।
**ह्रस्व**—वि० [ सं० ] १. छोटा। जो बड़ा न हो। २. नाटा। छोटे आकार का। ३. कम। थोड़ा। ४. नीचा। ५. तुच्छ। नाचीज।
संज्ञा पुं० १. वामन। बौना। २. दीर्घ की अपेक्षा कम खींचकर बोला जानेवाला स्वर। जैसे—अ, इ, उ।
**ह्रस्वता**—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटाई। लघुता।
**ह्रास**—संज्ञा पुं० [सं० ] १. कमी। घटती। घटाव। क्षीणता। अवनति। २. शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी। ३. ध्वनि। आवाज।
**ह्री**—संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. लज्जा। शर्म। हया। २. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।
**ह्वाँ***—अव्य० दे० "वहाँ"।

—:*:—

# परिशिष्ट-( क )

## अ

**अंकक**—सं० पु० [सं०] १. गणक। २. चिह्न लगाने वाला। ३. रबर की मुहर।

**अंकपत्र**—सं० पु० [सं०] कागज पर लगाया जानेवाला निश्चित मूल्य का सरकारी टिकट ( स्टाम्प )

**अंकखरी**—सं० स्त्री० [ सं० कर्करी ] पत्थर तथा कंकड़ों के छोटे टुकड़े। कंकड़ी।

**अँकवाना**—क्रि० स० [ हि० ] १. जाँच कराना। २. मूल्य निश्चित कराना।

**अंकास्य**—सं० पु० [ सं० ] रूपक का एक भेद।

**अंकितक**—सं० पु० [ सं० ] किसी वस्तु की पहचान के लिये उसपर लगाया जानेवाला कागज का टुकड़ा जिस पर नाम, संख्या इत्यादि लिखी हो। चिप्पी। ( लेबेल )।

**अँकुरी**—सं० स्त्री० [ सं० अंकुर ] अँकुरित चने की घुघुनी।

**अँकूल**—सं० पु० [ सं० अंकुर ] अंकुर। अँखुआ। कल्ला।

**अंगपाल**—सं० पु० [ सं० ] शरीर की रक्षा करनेवाला।

**अंगसंस्थान**—सं० पु० [ सं० ] प्राणियों तथा वनस्पतियों आदि के अंगों और आकृतियों आदि का विवेचन करनेवाला जीव विज्ञान का एक अंग। ( मार्फोलोजी )

**अंगारक**—सं० पु० [ सं० ] जंतुओं, वनस्पतियों तथा खनिज पदार्थों में पाया जानेवाला एक अधातवीय तत्व जिसमें जलने की शक्ति होती है। ( कार्बन )।

**अँगुसा**—सं० पु० [ सं० अंकुर ] अंकुर। अँखुआ।

**अँगुसाना**—क्रि० स० [ हि० ] अंकुर फूटना। अँखुआ निकलना।

**अंगोट**—सं० स्त्री० [ सं० अंगेट ] शरीर की बनावट।

**अंगौटी**—सं० स्त्री० [ सं० अंगेट ] आकृति। बनावट।

**अंगौड़ा**—सं० पु० [ ? ] किसी देवता को अर्पण करने के लिये निकाला गया पदार्थ। देवांश।

**अघराई**—सं० स्त्री० [ ? ] पशुधन पर लगनेवाला कर।

**अचवन**—सं० पु० [ सं० आचमन ] १. भोजनापरात अथवा पहले जल पीने तथा मुँह हाथ धोने का काम। आचमन।

**अजारना**—क्रि० स० [ सं० अर्जन ] कमाना। संचित करना।

**अजीरी**—सं० स्त्री० दे० अजीर।

**अठुली**—सं० स्त्री० [ देश० ] १. अंकुरित होता हुआ स्तन। २. मांस की कड़ी गिल्टी। गुठली।

**अंतरण**—सं० पु० [ सं० ] १. किसी पदार्थ का एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाना। किसी कार्यकर्ता का एक विभाग या स्थान से दूसरे विभाग या स्थान में जाना। तबादला। एक खाते का हिसाब दूसरे खाते में करना। ( ट्रांसफर )।

**अंतरण-पत्र**—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति, स्वत्व, सत्ता आदि दूसरे के हाथ सौंपता है। ( ट्रांसफरेंस डीड )।

**अंतरदशा**—सं० स्त्री० [ सं० अंतर्दशा ] १. फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों का भोग काल। २. रहस्य।

**अंतरायण**—सं० पु० [ सं० ] किसी व्यक्ति का राज्य द्वारा इस प्रकार पहरे में रखा जाना जिससे वह कहीं आ जा न सके। नजरबंदी। ( इंटर्नमेंट )।

**अंतरितक**—सं० पु० [ सं० ] अपनी संपत्ति या उससे संबंध रखनेवाले अधिकार आदि को अंतरित करने वाला। ( ट्रांसफरर )।

**अंतरिती**—सं० पु० [ सं० अंतरित ] वह जिस के हाथ अधिकार या संपत्ति आदि का अंतरण किया जाय। ( ट्रांसफरी )।

**अंतरिम**—वि० [ सं० अंतर ] दो अलग समयों के बीच का। मध्यवर्ती ( इंटेरिम )।

**अँतरीखा**—दे० 'अंतरिक्ष'।

**अंतरु**—सं० पु० [ सं० अंतर ] १ भेद। २. ओट। ३. मनमुटाव। ४. हृदय।

**अंतरे**—क्रि० वि० [ सं० अंतर ] बीच में।

**अँतरौटी**—सं० स्त्री० [ सं० अंतर्पटी ] किसी वस्तु के नीचे का पाट।

**अंतर्देशीय**—वि० [सं०] १. भीतरी। २. किसी देश के भीतरी भागों में होने या उससे संबंध रखनेवाला। ( इनलैंड )।

**अंतर्भावित**—वि० [सं०] जो किसी के अंदर आ या समा गया हो। समाविष्ट। (इन्कारपोरेटेड)

**अंतर्भौम**—वि० [सं०] पृथ्वी के भीतरी भाग का। भूगर्भ का। (सब-टेरेनियन)

**अंतर्वर्ग**—सं० पु० [सं०] किसी वर्ग या विभाग के अंतर्गत का कोई छोटा वर्ग या विभाग। (सब आॅर्डर)।

**अंतर्वाणिज्य**—सं० पु० [सं०] किसी देश के भीतरी भागों में होनेवाला वाणिज्य। (इंटरनल ट्रेड)

**अंतर्वस्तु**—सं० पु० [सं०] किसी वस्तु के अंदर रहनेवाली वस्तु। किसी पुस्तक लेख आदि में रहनेवाला विषय, विवेचन आदि। (कंटेंट्स)।

**अंतिमेत्थम्**—सं० पु० [सं०; अंगरेजी अल्टिमेटम का अनु०] अंतिम बात। अंतिम चुनौती।

**अंत्यशेष**—सं० पु० [सं०] किसी खाते को बंद करते समय शेष रूप में बचा हुआ धन। (बैलेंस)।

**अंदोरा**—सं० पु० [सं० आंदोलन] कोलाहल। हो हल्ला।

**अंधल**—वि० [?] १. अंधा। २. अंधड़। आंधी।

**अंधसुत**—सं० पु० [सं०] १. अंधे की संतान। २. कौरव।

**अंधर**—सं० पु० [हि०] हवा का धूल से भरा हुआ झोंका। आँधी। २. अँधेरा।

**अँधियार**—सं० पु० दे० अंधकार।

**अँधियारक टोला**—सं० पु० [सं० अंधक + हि० टोला] अंधकों का स्थान (अंधक यदुवंशियों की एक शाखा है।)

**अँबराऊँ**—सं० पु० [सं० आम्रराजि] आमों की बगिया।

**अंभ-थंभि**—सं० पु० [सं० अंभस्थंभन] एक प्रकार का मंत्र-प्रयोग जिसके द्वारा जल का प्रभाव या वर्षा रोक दी जाती है।

**अँविरित**—सं० पु० [सं० अमृत] अमृत।

**अंशदाता**—[सं० पु०] वह जो औरों के साथ साथ, देन, सहायता आदि के रूप में अपना भी हिस्सा देता हो। (कौंट्रिब्यूटर)। *

**अंशदान**—सं० पु० [सं०] औरों के साथ साथ अपना अंश या हिस्सा भी देन या सहायता के रूप में देना। (कौंट्रिब्यूशन)।

**अंशल**—सं० पु० [सं०] चाणक्य।

**अंशुजाल**—सं० पु० [सं० अंशु + जाल] किरण-समूह। २. प्रकाश।

**अंशुधर**—सं० पु० [सं० अंशु + धर] १. किरणधारी। २. रवि। ३. आग। ४. चद्रमा। ५. दीप। ६. देव ७. ब्रह्मा। ८. प्रतापशाली।

**अंसल**—वि० [सं०] पराक्रमशील। प्रतापी। बलवान्।

**अंसु**—सं० स्त्री० [सं० अंशु] किरण। रश्मि। पु० [सं० अश्रु] आँसू।

**अइस**—क्रि० वि० [सं० ईदृश] ऐसा। इस प्रकार का।

**अइसइ**—क्रि० वि० [इहगोहि] ऐसे ही। इसी प्रकार का ही।

**अउ**—संयो० [सं० अपर] और।

**अउगाह**—वि० [सं० अवगाध] १. अथाह, बहुत गहरा। २. कठिन।

**अउधानू**—सं० पु० [सं० अवधान] गर्भाधान। गर्भस्थिति।

**अउपन**—सं० पु० [प्रा० ओप्पा] शान पर घिसना। सान देना।

**अउहेरी**—सं० स्त्री० [सं० अवहेला] अवहेलना। अपमान।

**अकच**—सं० पु० [सं० अ + कच] केतु। वि० बिना बालों का।

**अकड़ा**—सं० पु० [देश०] ऐंठन। तनाव। एक प्रकार का रोग।

**अकपट**—वि० [सं० अ + कपट] निश्छल। बिना कपट का।

**अकवार**—सं० पु० [सं० अकमाल] १. आलिंगन। गले मिलना। २. अंक। गोद।

**अकाल पुरुष**—सं० पु० [सं०] सिख धर्मानुसार ईश्वर का एक नाम।

**अकिल्विष**—वि० [सं० अ + किल्विष] पापरहित। निर्दोष। पुण्यशील।

**अकुशल**—वि० [सं० अ + कुशल] १. अपटु। जो चतुर न हो। २. अमंगल।

**अकूट**—वि० [सं०] अकृत्रिम। सच्चा।

**अकूर्च**—सं० पु० [सं०] बुद्धदेव का एक नाम। वि० [अ + कूर्च] बिना मूँछ का।

**अक्र**—वि० [सं० अक्रिय] स्तंभित। हक्का बक्का।

**अक्लांत**—वि० [सं० अ + क्लांत] जो श्रमित न हो। बिना थका हुआ।

**अखानी**—सं० स्त्री० [देश०] एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी। जिस से फसलों की मड़ाई करते समय भूसे को उलटते हैं।

**अखेटक**—सं० पु० [सं० आखेटक] शिकारी।

**अखैपदु**—सं० पु० [सं० अक्षय पद] मुक्ति। निर्वाण। अक्षपद।

**अख्यायिका**—सं० स्त्री० [ सं० आख्यायिका ] दे० "आख्यायिका"।

**अगरज**—सं० पु० [ सं० अग्रज ] पहले उत्पन्न होनेवाला। बड़ा भाई।

**अगरासन**—सं० पु० [ सं० अग्र + अशन ] भोजन करने के पूर्व किसी देवता का नाम लेकर निकाली गई बलि।

**अगिआँ**—सं० स्त्री० [ सं० आज्ञा ] आज्ञा।

**अगिडाहू**—सं० पु० [ सं० ] अग्निदाह ] आग का लगना। आग।

**अगेंद्र**—सं० पु० [ सं० अग + इंद्र ] पहाड़ों का राजा। हिमालय।

**अगेज**—वि० [फा० अंगेज] मिला हुआ।

सं० स्त्री०—सहन। अँगेज।

**अग्निज**—सं० पु० [सं०] १. अग्नि से उत्पन्न। अग्नि या उसके ताप से होने या निर्मित होने वाला। (इग्नियस)

**अग्नियंत्र**—सं० पु० [ स० ] बंदूक। तोप। तमंचा।

**अग्रसारण**—सं० पु० [ सं० ] १. आगे की ओर बढ़ाना। २ किसी निवेदन या प्रार्थना पत्रादि को उचित कार्यवाही के लिये अपने से उच्च अधिकारी के पास प्रेषित करना। (फारवर्डिंग)।

**अग्रसारित**—वि० [ सं० ] आगे की ओर बढ़ाया हुआ। उचित आज्ञा के लिये उच्च अधिकारी के पास भेजा हुआ। (फारवर्डेड)

**अचोना**—क्रि० स० [सं० आचमन] आचमन करना। पीना। पान करना।

**अचोल**—वि० [ अ + फा० चोल ] जो चोखा न हो। मटमैला। बुरा।

**अजाई**—सं० स्त्री० [ अ० अजाब ] १. संकट। २. पाप।

वि० व्यर्थ। फजूल।

**अजैव**—वि० [ सं० ] जिस में जीवन या प्राण न हो। प्राणरहित (इनआर्गेनिक)।

**अटेक**—सं० पु० [ हि० अ + टेक ] बिना टेक का। भ्रष्ट प्रतिज्ञ।

**अट्टा**—सं० पु० [ सं० अट्टालिका ] कोठा। अटारी। महल। अटा।

**अड़बंध**—स० पु० [ हि० अड़ + सं० बंध ] मृतक को पहनाया जानेवाला कौपीन। लंगोट।

**अड़बल**—वि० [हि०] अड़नेवाला। अड़ियल। हठी।

**अड़िया**—सं० स्त्री० [ हि० ] १. काठ की एक विशेष आकृति की बनी हुई टेकनी जिस पर साधु लोग टेक लगाकर बैठते हैं। २. सूत की लंबी पिंडी।

**अड़ैच**—सं० स्त्री० [देश०] शत्रुता। द्वेष। मन-मुटाव।

**अदन**—सं० पु० [ दे० ] १. अनुशासन। आज्ञा। २. मर्यादा।

**अतार**—सं० पु० [ अ० अत्तार ] गंधी। इत्र बेचने या निकालने वाला।

**अतिचरण**—सं० पु० [ सं० ] अपने अधिकार से अवैध रूप में अतिक्रमण करके दूसरों के अधिकारों में अव्यवस्था उत्पन्न करना। (ट्रांसग्रेशन)।

**अतिदिष्ट**—वि० [ सं० ] प्रकृति, गुण, स्वरूपादि के विचार से किसी के सदृश। (ऐनैलोगस)।

**अतिदेश**—सं० पु० [ सं० ] विभिन्न या विरोधी वस्तुओं में पाई जानेवाली कुछ विशेष तत्वों की समानता। (एनालोजी)।

**अतिपात**—सं० पु० [ सं० ] अव्यवस्था। बाधा।

**अतिप्रजन**—सं० पु० [ सं० ] किसी देश या नगर में रहनेवालों की संख्या इतनी अधिक हो जाना, जिससे वहाँ उनके निर्वाह में कठिनाई उत्पन्न हो जाय। (ओवर पापुलेशन)

**अतिभोग**—सं० पु० [ सं० ] किसी संपत्ति का नियत काल के उपरांत या बहुत दिनों से उपभोग करना।

**अतिरिक्त अनुदान**—सं० पु० [सं०] किसी भी प्रकार की संस्था को सरकार से नियमित रूप में प्राप्त होने वाले अनुदान के अलावा किसी विशेष अवसर पर प्राप्त होने वाला अधिक अनुदान। [एडिशनल ग्रांट]

**अतिरिक्त लाभ-कर**—सं० पु० [सं०] किसी व्यापार में एक निश्चित लाभ के बाद होने वाले लाभ पर लगाया हुआ कर।

**अतिवाहिक**—सं० पु० [ सं० ] १. पाताल में रहनेवाला। २. लिंगशरीर।

**अतिसय**—वि० [ सं० अतिशय ] बहुत। अधिक।

**अतिसै**—वि० [ सं० अतिशय ] दे० 'अतिशय'।

**अतिहायन**—सं० पु० [ सं० ] उस अवस्था पर पहुँचना जब कार्य से अवकाश ग्रहण करना आवश्यक हो। जीर्ण। (सुपर एनुएशन)।

**अत्ता**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. जननी। २. बड़ी बहन। ३. स्त्री की माँ। सास।

**अद्वंद**—वि० [सं० अद्वंद] १. शांत। द्वंद्वहीन। २. अकेला।

**अद्रिपति**—सं० पु० [ सं० ] पर्वतों का राजा। हिमालय।

**अदीठि**—सं० स्त्री० [ सं० अदृष्टि ] कुदृष्टि। बुरी नजर।

**अदेव**—सं० पु० [ सं० ] राक्षस। दैत्य। रजनीचर।

**अधऊरध**—क्रि० वि० [सं० अधोर्ध्व] ऊपर नीचे।

**अधरबुधि**—सं० स्त्री० [ सं० अधोबुद्धि ] १. तुच्छबुद्धि। नीच। मूर्ख।

**अधरा**—सं० पु० [ सं० अधर ] ओष्ठ। होठ।

**अधवार**—सं० पु० [सं० अर्द्धभाग] १. आधे का भागी। २. अर्द्ध भाग।

**अधस्तात**—क्रि० वि० [ सं० ] नीचे की ओर।

**अधिकरण शुल्क**—सं० पु० [ सं० ] किसी न्यायालय में प्रार्थना-पत्र देते समय आवेदनपत्र पर अंकपत्रक [ स्टांप ] के रूप में दिया गया शुल्क। ( कोर्ट फी )।

**अधिकरण्य**—सं० पु० [ सं० ] न्यायालय द्वारा निकाला हुआ वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को पकड़ने की सरकारी आज्ञा लिखी हो। ( वारंट )।

**अधिकर्मी**—सं० पु० [ सं० ] कुछ लोगों के ऊपर उनके कामों की देख भाल करनेवाला अधिकारी। ( ओवरसियर )।

**अधिपत्र**—सं० पु० [ सं० ] वह सरकारी पत्र जिसमें किसी को कोई काम करने का आदेश दिया गया हो।

**अधिप्रचार**—सं० पु० [ सं० ] [ अधिप्रचारक ] संघटित या सामूहिक रूप से किसी विचार, मत या सिद्धांत के प्रसार के लिए किया जानेवाला कार्य। ( प्रोपेगेंडा )

**अधिभार**—सं० पु० [ सं० ] कर या शुल्क का वह विशेष या अतिरिक्त अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये अथवा किसी विशेष परिस्थिति में अलग से लिया जाय।

**अधिमान**—सं० पु० [ सं० ] [वि० अधिमानित, अधिमान्य] किसी वस्तु को तुलनात्मक विशिष्टता के कारण प्राप्त होने वाला आदर। (प्रिफरेंस)।

**अधिमुद्रण**—सं० पु० [ सं० ] किसी पुस्तक, पत्र, अधिसूचना-पत्रिका इत्यादि के किसी प्रकरण, लेख इत्यादि की जो प्रतियाँ अतिरिक्त रूप में उन्हीं बैठाए अक्षरों से छाप ली जाती हों। ( आफ प्रिंट )।

**अधियाचन**—सं० पु० [ सं० ] वि० [ अधियाचक ] किसी विशेष कार्य के लिये अधिकारपूर्वक किसी वस्तु की प्रार्थना। ( रिक्विजिशन )।

**अधियुक्त**—वि० [ सं० ] वेतन या पारिश्रमिक लेकर काम करनेवाला। ( एम्प्लायड )।

**अधियुक्ती**—सं० पु० [ सं० ] वेतन या पारिश्रमिक पाकर काम में लगा हुआ। ( एम्प्लॉई )।

**अधियोजक**—सं० पु० [सं०] वेतन या पारिश्रमिक देकर काम करानेवाला। ( एम्प्लायर )।

**अधियोजन**—सं० पु० [ सं० ] किसी को वेतन आदि देकर अपने यहाँ किसी काम में लगा रखने का कार्य। २. वेतन आदि पर काम में लगे रहने का कार्य। ( एम्प्लायमेंट )

**अधिरक्षी**—सं० पु० [ सं० ] आरक्षी या आरक्षिक [ पुलिस ] विभाग के आरक्षियों का प्रधान ( हेड कान्स्टेबुल )।

**अधिरोप**—सं० पु० [ सं० ] किसी पर किसी प्रकार के दोष का आरोप करना। ( चार्ज )।

**अधिलाभ**—सं० पु० [ सं० ] किसी संस्था के कार्यकर्ताओं को साधारण लाभांश या वेतन के अतिरिक्त दिया जानेवाला विशेष लाभांश। (बोनस)

**अधिवर्ष**—सं० पु० [ सं ] जिस वर्ष में मलमास [ अधिक मास ] पड़ता हो।

**अधिशुल्क**—सं० पु० [ सं० ] किसी विशेष परिस्थिति में निश्चित शुल्क के अतिरिक्त लिया जानेवाला विशेष शुल्क।

**अधिसूचना**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी कार्य के करने के ढंग को बतलाने की क्रिया। हिदायत। (इन्स्ट्रक्शन)।

**अधीक्षक**—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्यालय या विभाग का वह उच्च अधिकारी जो अपने अधीनस्थ सब कार्यकर्ताओं या विभाग की देख-रेख करता है ( सुपरिंटेंडेंट )।

**अधीक्षण**—सं० पु० [ सं० किसी कार्यालय के उच्चाधिकारी के निरीक्षण का कार्य। ( सुपरवीज़न )।

**अधीति**—सं० स्त्री० [ सं० ] पठन कार्य। पढ़ना।

**अधीनीकरण**—सं० पु० [ सं० ] किसी को अपने अधिकार या अधीन करने का कार्य। ( सबजुगेशन )।

**अधीरज**—सं० पु० [ सं० अधैर्य ] उतावली। चंचलता। व्याकुलता।

**अधीरता**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. व्याकुलता। २. आतुरता। ३. उतावलापन। ४. अशांति।

**अभ्यर्थन**—सं० पु० [ सं० ] किसी वस्तु पर अपना उचित अधिकार बताना या प्रकट करना। ( क्लेम )

**अध्यादेश**—सं० पु० [ सं० ] राज्य या सरकार द्वारा निकाला हुआ वह आदेश जो किसी विशेष व्यवस्था या कार्य के लिये आधिकारिक रूप में दिया जाता है। ( आर्डिनेंस )

**अध्यारोहण**—सं० पु० [ सं० ] चढ़ना। आरोहण करना।

**अध्यासनि**—वि० [ सं० ] किसी समाज या वर्ग में सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हुआ।

**अध्येता**—सं० पु० [ सं० ] अध्ययन करनेवाला। छात्र। पाठक।

**अध्येषण**—सं० पु० [सं०] १. याचना करना। माँगना। २. पढ़ने की इच्छा करना।

**अध्येषणा**—सं० स्त्री० [ सं० ] याचना। माँगना। मंगनरन।

**अध्र**—सं० पु० [ सं० ] मार्ग। पथ। राह।

**अध्वगा**—सं० स्त्री० [ सं० ] गंगा। भागीरथी।

**अनंगवति**—वि० [अनंगवती] कामवती। कामिनी।

**अनंतता**—सं० स्त्री० [ सं० ] असीमत्व। अमितत्व। अत्यंत। अधिकता।

**अनंतरित**—वि० [सं०] १. निकटस्थ। २. अखंडित। अटूट।

**अनंश**—वि० [ सं० ] जो पैत्रिक संपत्ति पाने का अधिकारी न हो।

**अनखाये**—क्रि० वि० [ हि० ] १. बिना भोजन किए हुए। २ कोपित। ३. अनमना।

**अनघरी**—सं० स्त्री० [ सं० अन = विरुद्ध + घरी = घड़ी ] असमय। कुसमय।

**अनचीतो**—वि० [ अन + चीतना ] १. बिना विचार किए हुए। २. अचिंतित।

क्रि० वि० अचानक।

**अनडुह्**—सं० पु० [ सं० ] बैल। साँड़।

**अनतेऽ**—क्रि० वि० [ सं० अन्यत्र ] १. दूसरी जगह। अन्यत्र। २. अलग। ३. दूर।

**अनदविनोदी**—वि० [ सं० आनंद विनोदी ] आनंद-विनोद से युक्त। सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला।

**अनधिगम्य**—वि० [ सं० ] जो पहुँच के बाहर हो। अप्राप्य।

**अनपत्रप**—वि० [ सं० ] लज्जा न रखनेवाला। निर्लज्ज।

**अनपाय**—वि० [ सं० ] १. जिसका कभी नाश न हो। २. दृढ़। स्थिर।

**अनपायिनी**—वि० [ सं० ] निश्चल। स्थिर। अचल। दृढ़। अनश्वर।

**अनभाया**—वि० [ सं० अन + हि० भावना ] जो न भावे। जिसकी चाह न हो। अप्रिय। अरुचिकर।

**अनभिग्रह**—वि० [ सं० ] भेद-शून्य। समभाव विशिष्ट।
सं० पु० १. जिसमें भेद न हो। एकरूपता। समकक्षता।

**अनभिप्रेत**—वि० [ सं० ] १. इच्छा के विरुद्ध। अनिष्ट। २. अनचाहा। अनभिमत।

**अनभ्र**—वि० [ सं० ] १. बिना बादल का। २. निर्मल। स्वच्छ।

**अनम्र**—वि० [ सं० ] विनय रहित। उद्दंड। धृष्ट।

**अनवकांक्षा**—सं० स्त्री० [ सं० ] अनिच्छा। निरपेक्षता। निस्पृहता।

**अनवग्रह**—सं० पु० [ सं० ] प्रतिबन्ध शून्य। स्वच्छंद। जो पकड़ में न आवे। जिसे कोई रोक न सके।

**अनवाप्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] अप्राप्ति। अनुपलब्धि।

**अनार्जव**—सं० पु० [ सं० ] १. टेढ़ापन। वक्रता। २. बेइमानी।

**अनावासिक**—वि० [ सं० ] स्थायी रूप से कहीं पर न बसने वाला। कुछ दिनों के लिए ही कहीं पर आकर रहने वाला।

**अनिश**—क्रि० वि० [ सं० ] निरंतर। लगातार।

**अनीहा**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. अनिच्छा। निस्पृहता। निष्कामता। २. निश्चेष्टता। बेपरवाही।

**अनुकूलन**—सं० पु० [ सं० ] १. अपने आपको किसी के अनुकूल बनाना। २. किसी स्थिति आदि को अपने अनुकूल बनाना। ( एडाप्टेशन )

**अनुगम**—सं० पु० [ सं० ] तर्क शास्त्र में कोई बात सिद्ध करने के लिये भिन्न भिन्न तथ्यों या तत्वों के आधार पर स्थिर किया जानेवाला परिणाम। ( इंडक्शन )

**अनुघात**—सं० पु० [ सं० ] नाश। संहार।

**अनुचिंतन**—सं० पु० [ सं० ] १. विचार। २. भूली हुई बात को मन में लाना।

**अनुच्छेद**—सं० पु० [ सं० ] १. किसी पुस्तक, विवेचन, लेख आदि के किसी प्रकरण के अन्तर्गत वह विशिष्ट विभाग, जिसमें किसी एक विषय या उसके किसी एक अंग का एक साथ विवेचन होता हो। ( पैराग्राफ ) २. किसी नियमावली, विधान आदि का कोई एक विशिष्ट अंग, जिसमें किसी एक विषय, प्रतिबंध आदि का एक साथ विवेचन होता हो। ( आर्टिकिल )

**अनुज्ञापन**—सं० पु० [सं०] १. आज्ञा

देना। आदेश देना। २. जताना। बतलाना।

अनुज्ञप्ति—सं० स्त्री० [सं०] १. कोई काम करनेकी अनुज्ञा या स्वीकृति देने की क्रिया। अनुमति। (सैंक्शन) २. एक काव्यालंकार, जिसमें दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसे पाने की इच्छा का वर्णन हो।

अनुतोष—सं० पु० [सं०] १. किसी काम से होनेवाला सतोष। २ वह धन आदि जो किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने के लिए दिया जाय।

अनुतोषण—सं० पु० [सं०] १. किसी को 'संतुष्ट' करने की क्रिया या भाव। २. किसी को कुछ देकर अपने अनुकूल बनाना। (ग्रेटिफिकेशन)

अनुदान—सं० पु० [सं०] राज्य, शासन आदि की ओर से किसी संस्था आदि को सहायता रूप में प्राप्त होनेवाला धन। (ग्रांट)।

अनुदृष्टि—सं० स्त्री० [सं०] बहुत सी वस्तुओं में से प्रत्येक वस्तु को और सब वस्तुओं के अनुपात का ध्यान रखते हुए ठीक रूप में देखने की क्रिया। (पर्सपेक्टिव)।

अनुधर्मक—वि० [सं०] धर्म, स्वरूप, प्रकृति आदि के विचार से किसी के समान। (एनैलॉगस)।

अनुपूरक—सं० पु० [सं०] १. किसी के साथ लग या मिलकर उसकी पूर्ति करनेवाला। २. छूट, त्रुटि आदि की पूर्ति के लिये बाद में बढ़ाया हुआ। (सप्लिमेंटरी)।

अनुबंध—सं० पु० [सं०] ५. व्याकरण में प्रत्यय का वह लोप होने वाला इत्संज्ञक सांकेतिक वर्ण जो गुण वृद्धि आदि के लिये उपयोगी हो। ६. कोई काम करने के लिए दो पक्षों में होनेवाला ठहराव या समझौता। (एग्रीमेंट)।

अनुबंधी—वि० [सं०] १. संबंधी। लगाव रखनेवाला। २. फलस्वरूप। परिणाम स्वरूप।

सं० पु० समझौता करने वाला।

अनुबोध—सं० पु० [सं०] १. वह स्मरण या बोध जो बाद में हो।

अनुबोधक—सं० पु० [सं०] १. वह पत्र जो किसी को कुछ स्मरण रखने के लिये दिया जाय। २. किसी सभा, संस्था आदि के उद्देश्यों और व्यवस्था आदि से संबंध रखनेवाला पत्र या पुस्तिका। (मेमोरैंडम)

अनुभक्त—वि० [सं०] लोगों की आवश्यकता का ध्यान कर उनके अंश या हिस्से के रूप में दी जानेवाली वस्तु। (राशन)

अनुभाजन—सं० पु० [सं०] लोगों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए उनके अंश या हिस्से के रूप में किसी वस्तु को देने की व्यवस्था या क्रिया। (राशनिंग)

अनुयुक्त—वि० [सं०] १. जिसके विषय में अनुयोग किया गया हो। जिसके विषय में कुछ प्रश्न किया गया हो। जिज्ञासित। २. निंदित।

अनुयोग—सं० पु० [सं०] १. कोई बात जानने के लिये कुछ पूछना या उसपर आपत्ति करना। २. किसी बात की सत्यता में संदेह प्रकट करना। (क्वेश्चन)

अनुयोजन—सं० पु० [सं०] पूछने की क्रिया। पूँछ-ताछ। प्रश्न करना।

अनुरति—सं० स्त्री० [सं०] १. लीनता। आसक्ति। २. प्रेम।

अनुलंब—सं० पु० [सं०] किसी कर्मचारी के कार्य की वह अवस्था जिसमें उसके दोषी या निर्दोष होने का ठीक निर्णय न हुआ हो। (सस्पेंस)

अनुलंबन—सं० पु० [सं०] [वि० अनुलंबित] किसी कर्मचारी के दोष या अपराध की सूचना पाने पर उसकी ठीक जाँच होने तक के लिये उसको अपने पद से हटाने की क्रिया। (सस्पेंशन)

अनुलग्न—वि० [सं०] लगा हुआ। मिला या जुड़ा हुआ। (अटैच्ड)

अनुलाप—सं० पु० [सं०] कही हुई बात को फिर से कहना।

अनुलेख—सं० पु० [सं०] किसी लेख या पत्र पर अपनी स्वीकृति या सहमति आदि लिखकर उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। (एन्डोर्समेंट)

अनुविष्ट—वि० [सं०] जो अपने स्थान पर लिख लिया गया हो। चढ़ा या चढ़ाया हुआ। (एन्टर्ड)।

अनुवृत्ति—सं० स्त्री० [सं०] २. वेतन का वह अंश जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करने पर उसकी वृद्धावस्था में अथवा उसकी सेवा के विचार से वृत्ति के रूप में या भरणपोषण के लिये कार्य से अवकाश ग्रहण करने पर मिलता है। (पेंशन)

अनुशंसा—सं० स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, प्रार्थना आदि के संबंध में उसे अच्छा, उपयुक्त और ग्राह्य तथा मान्य बतलाने की क्रिया। सिफारिश (रिकमेंडेशन)

अनुशंसित—वि० [ सं० ] जिसके संबंध में अनुशंसा की गई हो। जिसकी सिफारिश की गई हो। ( रिकमेंडेड )

अनुषक्ति—सं० स्त्री० [ सं० ] अपने राजा या राज्य के प्रति जनता या नागरिक का कर्तव्य और निष्ठा। ( एलीजियंस )

अनुसूची—सं० स्त्री० [सं०] कोष्ठक, सूची आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अंत में परिशिष्ट के रूप में दी गई हो। ( शेड्यूल )

अनेसौ—सं० पु० [ फा० अंदेशा ] संदेह। अंदेशा। शंका।

अनेह—सं० पु० [ सं० अस्नेह ] अप्रेम। अप्रीति। विरक्ति।

अनेहा—सं० पु० [ सं० ] समय। काल।

अन्यारी—वि० [ अ + हि० न्यारी ] १. पार्थक्यहीन। २. अनोखी। निराली। ३. अद्वैत।

अन्विति—सं० स्त्री० [ सं० ] १. संबद्धता। २. युक्ति। ३. औचित्य। ( यूनिटी )

अपकृष्ट—वि० [ सं० ] १. जिसका अपकर्ष हुआ हो या किया गया हो। २. जिसका महत्व, मूल्य, मान आदि कम हुआ हो या कम किया गया हो।

अपचरण—सं० पु० [ सं० ] अपने अधिकार-क्षेत्र या सीमा से निकलकर दूसरे के अधिकार-क्षेत्र या सीमा में जाना जो अनुचित या आपत्तिजनक माना जाता हो। ( ट्रेसपासिंग )

अपजात—वि० [ सं० ] जिसमें अपने जनक, उत्पादक, वर्ग या मूल के पूरे पूरे धर्म न पाए जायँ। वंश-परंपरा में अपेक्षाकृत कम या हीन गुणोंवाला। ( डीजेनेरेटेड )

अपटी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. परदा। २ कपड़े की दीवार। कनात। ३. आवरण। आच्छादन।

अपड़ाई—सं० स्त्री० [हि० अपड़ाना] खींच-तान। असमंजस।

अपतह—वि० [ हि० अपत ] निर्लज्ज। बिना प्रतिष्ठा का।

अपनीत—वि० [ सं० ] १. भगाया हुआ। २. हटाया हुआ। दूर किया हुआ।

अपनेता—सं० पु० [ सं० ] भगानेवाला। दूर करनेवाला। हटानेवाला।

अपरक्ति—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी के प्रति प्रेम श्रद्धा या सद्भावना का न होना। उदासीनता। द्वेष। ( डिसअफेक्शन )।

अपवर्तन—सं० पु० [ सं० ] १. परिवर्तन। पलटाव। उलट फेर। २. पीछे की ओर अथवा अपने मूल-स्थान की ओर लौटना। ३. राज्य या उसके अधिकारी द्वारा किसी की धन-संपत्ति पर अधिकार कर लेना। जब्ती। ( फॉरफीचर )

अपसरक—सं० पु० [ सं० ] किसी प्रकार की सेवा, विशेषतः सैनिक सेवा से भाग जानेवाला। अपने कर्तव्य या उत्तरदायित्व से अलग हो जानेवाला। ( डिजर्टर )

अपसरण—सं० पु० [ सं० ] पीछे हटना। कार्य या उत्तरदायित्व छोड़कर भाग जाना। ( डिजर्शन )

अपसर्जन—सं० पु० [ सं० ] [वि० अपसर्जित। ] २. दान। ३. अपने उत्तरदायित्व से बचने के लिये किसी को असहाय अवस्था में छोड़कर हट जाना। ( अबंडन )

अपसारी—वि० [ सं० ] एक दूसरे से भिन्न या विरुद्ध दिशा में जाने, चलने, होने, या रहनेवाला। ( डाइवर्जेंट )

अपासन—सं० पु० [ सं० ] [ वि० अपासित ] १. असहमति। अस्वीकृति। नामंजूरी। ( रिजेक्शन )

अप्रतिदेय—वि० [ सं० ] जो स्थायी रूप से या सदा के लिये दिया गया हो तथा जिसे लौटाना या चुकाना न पड़े। ( परमेनेंट एडवांस )

अब्दकोश—सं० पु० [ सं० ] प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाला वह कोश जिसमें किसी देश, समाज या वर्ग आदि से संबंध रखनेवाली सभी जानने योग्य बातों का संग्रह हो। ( ईयरबुक )

अभ्यंत—क्रि० वि० [सं० अभ्यंतर] मध्य में। अंदर। भीतर।

अभयपत्र—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिसे दिखाकर कोई व्यक्ति किसी संकट की स्थिति से निरापद पार हो सके। ( सेफ कन्डक्ट )

अभाय—सं० पु० [सं० अ + भाव] विकलता। व्यग्रता। घबड़ाहट।

अभिकथन—सं० पु० [ सं० ] किसी व्यक्ति या पक्ष की ओर से कही जानेवाली ऐसी बात अथवा किया जानेवाला ऐसा आरोप जो अभी प्रमाणित न हुआ हो अथवा जिसके प्रमाणित होने में कुछ संदेह हो। (एलिगेशन)

अभिकरण—सं० पु० [सं०] १. किसी की ओर से उसके अभिकर्ता (एजेन्ट) के रूप में काम करना। २. वह स्थान जहाँ किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसका अभिकर्ता रहता

और काम करता हो। ( एजेंसी )

**अभिकर्ता**—सं० पु० [ सं० ] किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में काम करने के लिये नियुक्त व्यक्ति। ( एजेंट )

**अभिक्रांति**—सं० स्त्री० [ सं० ] [ वि० अभिक्रांत ] किसी वस्तु का अपने स्थान से हट या हटा दिया जाना। ( डिस्प्लेसमेंट )

**अभिदत्त**—वि० [ सं० ] अपने स्थान पर या उचित अधिकारी के पास पहुँचाया हुआ।

**अभिदान**—सं० पु० [ सं० ] किसी की वस्तु उसके पास पहुँचाना या देना। ( डेलिवरी )

**अभिदिष्ट**—वि० [ सं० ] १. उल्लिखित। निर्देशित। किसी प्रसंग में उद्धृत। ( रिफर्ड ) २. जिसे कहीं भेजकर उसके विषय में किसी का मत या आदेश माँगा गया हो।

**अभिदेश**—सं० पु० [ सं० ] पूर्व की किसी घटना, उल्लेख आदि की ऐसी चर्चा जो साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूपमें की गई हो। २. किसी विषय में किसी का मत या आदेश लेने के लिये उसे या तत्संबंधी कागज-पत्र को मतदाता के पास भेजना। ( रिफरेंस )

**अभिनिर्णय**—सं० पु० [ सं० ] किसी के दोषी या निर्दोष होने के संबंध में निर्णायकों (जूरी) द्वारा दिया हुआ मत। ( वर्डिक्ट आफ जूरी )

**अभिन्यस्त**—वि० [ सं० ] किसी मद या विभाग में रखा या डाला हुआ। जमा किया हुआ। ( डिपाजिटेड )

**अभिन्यास**—सं० पु० [ सं० ] किसी मद या विभाग में रखना। जमा करना। ( डिपाजिट )

**अभिरक्षक**—सं० पु० [ सं० ] किसी सम्पत्ति या व्यक्ति को अपने अधिकार में लेकर उसकी रक्षा करनेवाला। ( कस्टोडियन )

**अभिरक्षा**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी सम्पत्ति या व्यक्ति को रक्षा पूर्वक रखने के लिये उसे अपनी देख-रेख में रखने की क्रिया। ( कस्टडी )

**अभिरति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. अनुराग। प्रीति। लगन। २. संतोष हर्ष।

**अभिरामी**—वि० [ सं० ] भ्रमण करने वाला। संचरण करनेवाला। व्याप्त होनेवाला।

**अभिरूप**—वि० [ सं० ] रमणीय। मनोहर। सुन्दर।

सं० पु० १. शिव। २. विष्णु। ३. काम। ४. चन्द्रमा। ५. पंडित।

**अभिलेख**—सं० पु० [ सं० ] किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई सब बातें। ( रेकार्ड )।

**अभिलेख अधिकरण**—सं० पु० [सं०] वह अधिकरण या न्यायालय जो राज्य के प्रधान अभिलेख-विभाग के अभिलेखों आदि में लिपि संबंधी अथवा इसी प्रकार की दूसरी भूलें सुधारने का एक मात्र अधिकारी हो। ( कोर्ट आफ रेकर्डस )

**अभिलेखन**—सं० पु० [ सं० ] किसी विषय की सब बातें किसी विशेष उद्देश्य से लिखना। ( रेकार्डिंग )

**अभिवक्ता**—सं० पु० [ सं० ] न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से वाद करने वाला विधिज्ञ। वकील। ( प्लीडर )

**अभिवचन**—सं० पु० [सं०] न्यायालय में अपने नियोजक की ओर से विधिक प्रतिनिधि या वक्ता द्वारा कही जानेवाली बात। ( प्लीडिंग )

**अभिषंगी**—सं० पु० [सं०] १. निंदक। २. दूसरे पर मिथ्या अपराध लगानेवाला। ३. किसी के साथ गुप्त संबंध रखनेवाला।

**अभिसमय**—सं० पु० [ सं० ] राष्ट्रों के पारस्परिक समान हित या व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाले विषयों पर होनेवाला समझौता, जो विधान रूप में उन सब राष्ट्रों के लिये मान्य होता है। २. परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों का युद्ध स्थगित करने का समझौता। ३ किसी प्रथा या परिपाटी के मूल में रहनेवाला सब लोगों का वह समझौता जो मानक के रूप में ग्राह्य हो। ४. उक्त प्रकार के समझौतों का निर्णय करने के लिये होनेवाला कोई सम्मेलन या सभा। ( कन्वेंशन )

**अभिस्रावण**—सं० पु० [ सं० ] भभके आदि की सहायता से शराब, अर्क आदि टपकाना। (डिस्टिलेशन)

**अभिस्रावणी**—सं० स्त्री० [ सं० ] शराब, आसव इत्यादि चुवाने की भट्ठी या कारखाना। ( डिस्टिलरी )

**अभिसूचना**—सं० स्त्री० [ सं० ] कोई कार्य करने के लिये दी हुई विशेष सूचना। २. विशिष्ट रूप से कोई काम करने के लिये कहना ( इन्स्ट्रक्शन )

**अभेदवादी**—वि० [ सं० ] जीवात्मा और परमात्मा में भेद न माननेवाला। अद्वैतवादी।

**अभ्याख्यान**—सं० पु० [सं०] मिथ्या अभियोग। झूठा दोष लगाना।

**अभ्यागारिक**—वि० [ सं० ] कुटुम्ब

के पालन में तत्पर। लड़के बालों में फँसा हुआ। घरबारी। २. कुटुंब पालन में व्यग्र।

अभ्युपगत—वि० [सं०] १. पास आया हुआ। सामने आया हुआ। प्राप्त। २. स्वीकृत। अंगीकृत।

अमिश्र राशि—सं० स्त्री० [सं०] गणित में वह राशि जो एक ही एकाई द्वारा प्रकट की जाती है। जैसे १ से ९ की संख्या।

अर्थ प्रक्रिया—सं० स्त्री० [सं०] १. अर्थ संबंधी कार्य। २. अर्थ न्यायालय के द्वारा होने वाली प्रक्रिया या कार्य। (सिविलप्रोसीडयोर)

अर्थ प्रसर—सं० पु० [सं०] अर्थ न्यायालय से निकली हुई आज्ञा या सूचना। (सिविल प्रोसेस, समन)

अर्थ विधि—सं० स्त्री० [सं०] वह विधि या कानून जो राज्य की ओर से जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाया गया हो। (सिविल ला)

अर्थापन—सं० पु० [सं०] किसी गूढ़ पद या वाक्य का अर्थ लगाना। (इंटरप्रेटेशन)

अर्थाधिकरण—सं० पु० [सं०] वह न्यायालय जहाँ केवल सम्पत्ति संबंधी वादों का निराकरण होता है। (सिविल कोर्ट)

आर्थिक—सं० पु० [सं०] कोई पद, कार्य, या सेवा प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला। उम्मेदवार। (कैंडिडेट)

अर्थोपचार—सं० पु० [सं०] वह उपचार या क्षति पूर्ति आदि जो अर्थ-न्यायालय या अर्थ विधि द्वारा प्राप्त हो। (सिविल रेमेडी)

अवगन—सं० पु० [सं० आवागमन] १ आना-जाना। जन्म-मरण। २. उत्पत्ति-प्रलय।

अवझेरा—सं० पु० [देश०] १. उलझन। झंझट २. भेद। छिपाव। रहस्य। ३. कठिनाई।

अवमति—सं० स्त्री० [सं०] अवज्ञा। अपमान। तिरस्कार। निंदा।

अवमूल्यन—सं० पु० [सं०] किसी वस्तु का निश्चित मूल्य, विशेषतः विनिमय के लिए सिक्कों आदि का मूल्य या दर घटा कर कम करना। (डिवेलुएशन)

अवरति—सं० स्त्री० [सं०] १. विराम। विश्राम। २. निवृत्ति। छुटकारा। मुक्ति।

अवाय—वि० [सं० अवाक] स्तब्ध। हक्का बक्का। किंकर्तव्य विमूढ़।

अवारी—सं० स्त्री० [सं० वारण] १. बाग। लगाम। २. मुख विवर। मुख का छिद्र। सं० स्त्री० [सं० अवर] किनारा। मोड़।

अहिरव—सं० पु० [?] भोजन। आहार।

अहोई—क्रि० वि० [सं० अहो रात्र] दिन-रात। सदैव। सर्वदा।

आंकन—सं० पु० [सं० अकण] ज्वार की वह बाल जिसमें से दाने निकाल लिए गये हों। खुखुंडी।

आंतरिक—वि० [सं०] १ भीतरी। २. आत्मिक। ३. किसी देश के भीतरी भाग से संबंधित।

आकड़ा—सं० पु० [हि० आक + ड़ा (प्रत्य०)] मदार। अकौआ। अर्क।

आकन—सं० पु० [सं० आखनन] १. खेत खोद कर उसमें से निकाली गई घास फूस। २. जोते हुए खेत से घास फूस निकालने की क्रिया।

आकलनपत्र—सं० पु० [सं०] खाते या हिसाब का वह पत्र या अंग जिसमें आया हुआ धन जमा किया जाता है। (क्रेडिट साइड)

आकलनपत्रक—सं० पु० [सं०] वह पत्रक जो खाते में किसी के समुचित आकलनपत्र या यथेष्ट धन जमा होने का सूचक होता है। (क्रेडिट नोट)

आकल्प—सं० पु० [सं०] वेश रचना। शृंगार करना। २. कल्प पर्यंत।

आकस्मिकी—सं० स्त्री० [सं० आकस्मिक] अकस्मात् या अचानक हो जाने वाली घटना या बात। (कैजुएलिटी)

आका—सं० पु० [सं० आकाय] १. अलाव। कौड़ा। २. भट्ठी। ३. पजावा। आवाँ।

आकारक—सं० पु० [सं० न्यायालय द्वारा निकाला गया वह आज्ञा पत्र जो किसी को किसी व्यवहार में साक्षी रूप में आने के लिए सूचित करता है। (सम्मन)

आकरण—सं० पु० [सं०] आकारक द्वारा बुला भेजने की क्रिया। (सम्मनिंग)

आक्लांत—वि० [सं०] १. सना हुआ। पुता हुआ। लिप्त। २. थका हुआ।

आक्लिन्न—वि० [सं०] १. भींगा हुआ। आर्द्र। तर। २. कोमल। नरम।

आख—सं० पु० [सं०] लोहे का एक यंत्र जो सिरे पर चपटा और धारदार होता है। इससे भूमि खोदने का काम लेते हैं। खंता। खंती। रंभा।

आखी—सं० स्त्री० [सं० आखनन] गड्ढे से खोदकर निकाली गई मिट्टी।

आख्या—सं० स्त्री० [ सं० ] ४. किसी को सूचित करने के लिए किसी घटना या कार्य का लिखित विवरण। ( रिपोर्ट )

आख्यापक—सं० पु० [ सं० ] किसी घटना या कार्य का विवरण देने वाला ( रिपोर्टर )

आख्यापन—सं० पु० [ सं० ] १. प्रकटीकरण। प्रकाशन। २. कथन। ३. किसी घटना का विवरण देने की क्रिया। ( रिपोर्टिंग )

आगणन—सं० पु० [ सं० ] पहले से किसी कार्य के व्यय या लागत आदि का अनुमान। कूत। ( एस्टिमेट )

आगणक—सं० पु० [ सं० ] अनुमान लगाने वाला। कूत करने वाला।

आगृहीत—वि० [ सं० ] १. ग्रहण किया हुआ। २. जमा किए हुए धन में से निकाला हुआ धन।(ड्रॉन)

आगृहीती—सं० पु० [ सं० ] १. ग्रहण करने वाला। २. जमा किए हुए धन में से कुछ धन निकालने वाला। ( ड्राई )

आग्रहण—सं० पु० [ सं० ] १. ग्रहण करने की क्रिया या भाव। २. जमा किए हुए रुपयों में से कुछ रुपये निकालना या निकलवाना। (ड्रॉ)

आग्राहक—वि० [ सं० ] १. ग्रहण करने वाला। २. लेने वाला। जमा किए हुए धन में से कुछ धन निकालने वाला। ( ड्राअर )

आघातपत्र—सं० पु० [ सं० ] किसी चिकित्सक द्वारा प्राप्त वह पत्र जिसमें घायल व्यक्ति के घावों का विवरण हो। ( इंजरी लेटर )

आघार—सं० पु० [ सं० ] १. मन्त्रों द्वारा देवता को घृत अर्पण करने की क्रिया। २. धूप। ३. हवि। ४. घृत।

आचका—अव्य० [ हि० ] अकस्मात्। हठात्। अचानक।

आछरी—सं० स्त्री० [ सं० अप्सरी ] १. अप्सरा। २. वेश्या। ३. नर्तकी।

आछी—वि० [ हि० ] अच्छी। सुन्दरी। भली। वि० [सं० आशिन] भोजन करने वाला। भोक्ता। स० पु० एक प्रकार का सुगंधित पुष्पों वाला वृक्ष।

आज्ञप्ति—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी न्यायालय अथवा उच्च अधिकारी की विधानरूप में दी गई आज्ञा। २. किसी व्यवहार का निर्णयसूचक लेख। ( डिक्री )

आज्ञाफलक—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिस पर किसी विषय या व्यवहार के संबंध की आज्ञा लिखी हो। ( ऑर्डर शीट )

आदी—वि० [ हि० आधी ] आधी। अर्द्ध।

आतर—सं० पु० [हि०] १. उतराई। पार कराई। खेवा। २. अंतर। बीच।

आदिमान—सं० पु० [ सं० ] वह आदर या मान जो किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्य को औरों की अपेक्षा पहले प्राप्त होता है। ( प्रेरोगेटिव )

आधर्षण—सं० पु० [ सं० ] अभियुक्त को दोषी पाकर न्यायालय द्वारा उसे अपराधी मानने तथा दंड देने की क्रिया। अभिशस्ति। (कन्विक्शन)

आधर्षित—वि० [ सं० ] न्यायालय द्वारा अपराधी सिद्ध होने वाला तथा दंड पाने वाला। अभिशस्त। ( कन्विक्टेड )

आधिकरणिक—वि० [ सं० ] १. अधिकरण या न्यायालय से संबंध रखने वाला। २. न्यायालय की आज्ञा से होने वाला।

आधिकारिक—वि० [ सं० ] २. किसी प्रकार के अधिकार से युक्त। अधिकार सम्पन्न। सं० पु० ३. अधिकारी। अधिकार का प्रयोक्ता। ( ऑथॉरिटेटिव )

आधिकारिकी—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी प्रकार के अधिकार का प्रयोग या व्यवहार करने वाले व्यक्तियों का संघात या समूह। ( ऑथारिटी )।

आनति—सं० स्त्री० [ सं० ] पारिश्रमिक के रूप में किसी को आदरपूर्वक भेंट किया हुआ धन। आदरार्पण। ( आनरेरियम )

आनुतोषिक—सं० पु० [ सं० ] किसी को प्रसन्न या तुष्ट करने के लिए दिया जाने वाला धन। ( ग्रेचुइटी )

आपजात्य—सं० पु० [ सं० ] किसी का अपने पिता, वंश या मूल से गुण आदि के विचार से कम या हीन होना।

आपण—सं० पु० [ स० ] वस्तुओं के बिकने का स्थान। विक्रयशाला। दूकान। हाट।

आपणिक—सं० पु० [सं०] विक्रेता। दूकानदार। २. वणिक। व्यापारी।

आपत्तिपत्र—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिसमें किसी कार्य या विषय के बारे में किसी की आपत्ति या मतभेद लिखा हो।

आपाक—सं० पु० [ सं० ] मिट्टी के बरतनों को पकाने का स्थान। आँवाँ। पजावा।

आबंध—सं० पु० [ सं० ] [ वि० आबंधक ] कोई निश्चित की हुई बात या समझौता। २. भूमि का राजस्व या कर निश्चित करने का कार्य। ( सेटिलमेंट )

**आवंधक अधिकारी**—सं० पु० [सं० ] वह राजकीय अधिकारी जो भूमि का कर या राजस्व निश्चित करता है ।

**आभाष**—सं० पु० [सं०] प्राक्कथन । भूमिका । उपक्रमणिका ।

**आभुक्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] पहले से प्राप्त होने वाला किसी सुख या सुभीते का लाभ । जैसे राजनीतिक बन्दियों को बन्दीगृह में मिलने वाली सुविधा । ( ईजमेंट )

**आमण्डक**—सं० पु० [ सं० ] फर्श पर झाड़ू देने वाला । फर्श बिछाने वाला। फर्राश ।

**आमण्डन**—सं० पु० [ सं० ] १. सजावट। परिष्करण। २. फर्श झाड़ने बुहारने का कार्य । फर्राशी ।

**आयति**—सं० स्त्री० [ सं० ] परवर्ती काल । उत्तर काल । आनेवाला समय ।

**आयव्ययक**—सं० पु० [ सं० ] आने वाले कुछ निश्चित समय के लिए आयव्यय का अनुमानित लेखा । व्याकल्प । ( बजट )

**आयव्ययफलक**—सं पु० [सं०] वह फलक या पत्र जिस पर एक ओर सारी आय का और दूसरी ओर सारे व्यय का सारांश लिखा हो । ( बैलेंस शीट )

**आयुधविधान**—सं० पु० [ सं० ] वह विधान जिसमें जनता द्वारा आयुध रखने और उसके प्रयोग करने से सम्बन्धित नियम हों । (आर्म्स एक्ट)

**आरक्षी**—सं० पु० [ सं० ] राज्य की ओर से आन्तरिक सुरक्षा के लिए नियत वैतनिक कर्मचारी । सिपाही । राजपुरुष । ( पुलिस )

**आरक्षिक**—वि० [ सं० ] आरक्षी विभाग से सम्बन्ध रखने वाला। पुलिस का ।

**आरोपफलक**—सं० पु० [ सं० ] न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ वह फलक या पत्र जिसमें किसी पर लगाए हुए अभियोगों या आरोपों की सूची या विवरण हो । (चार्ज शीट)

**आल जाल**—क्रि० वि० [ हिं० ] १. उलटे-सीधे ।
२. अस्तव्यस्त । जैसे हो वैसे ।

**आलोक चित्रण**—सं० पु० [ सं० ] वह प्रक्रिया जिसमें प्रकाश में रहने वाली वस्तु की छाया लेकर चित्र बनाया जाता है । ( फोटोग्राफी )

**आलोक पत्र**—सं० पु० [सं०] किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए स्मारक के रूप में लिखा जाने वाला पत्र या लेख । ( मेमोरैंडम )

**आवर्तक**—( आवर्ती ) वि० [ सं० ] १. घूमने या चक्कर खाने वाला । २. कुछ निश्चित समय पर बार बार होने वाला ।

**आवासिक**—वि० [सं०] स्थायी रूप से किसी स्थान पर रहने वाला । ( रेजीडेंट )

**आवेदनिक**—सं० पु० [ सं० ] वह धन जो पुरुष विवाह करने के पूर्व अपनी पहली स्त्री को उसके संतोष के लिए दे ।

**आसञ्जन**—सं० पु० [ सं० ] न्यायालय की ओर से किसी अपराधी या देनदार की सम्पत्ति पर अधिकार करने की वह आज्ञा या कार्य जो ऋण चुकाने या दण्ड वसूल करने के लिए होती है । कुर्की । ( अटैचमेंट )

**आसीविष**—सं० पु० [ सं० आशीविष ] सर्प । साँप ।

**आसेध**—सं० पु० [सं०] १. रक्षण । २. संरक्षण । पहरा । हिरासत । ( कस्टडी )

**आहक**—सं० पु० [ सं० हाहा ] एक गंधर्व विशेष ।

**आहचरज**—सं० पु० [सं० आश्चर्य] अचम्भा । आश्चर्य ।

## ई

**ईंगन**—सं० पु० [ सं० ] १. संकेत । इशारा । २. चलना । काँपना । हिलना । डोलना ।

**ईंटकोहरा**—सं० पु० [ हिं० ईंट + ओहरा ] ( प्रत्य० ) ईंटका फूटा टुकड़ा । ईंट की गिट्टी ।

**इँदारुन**—सं० पु० [ सं० इन्द्रावारुणी ] एक प्रकारकी तिक्त फलों वाली लता । कौवाठोंठी । इद्रायन । माहुर ।

**इँदुदह**—सं० पु० [ सं० ] चंद्रमा में पड़ने वाला श्याम भाग । चन्द्रकलंक ।

**इकइस**—सं० पु० [ सं० एकविंशति ] बीस और एक की संख्या । इक्कीस ।

**इताल**—क्रि० वि० [ सं० एतत्काल ] तत्काल शीघ्र । अभी ।

**इसुधि**—सं० पु० [ सं० ] वाण रखने

## ई

की पीठ पर लटकाई जाने वाली थैली। तरकस। तूण।

ईढ—वि० [सं० ईदृश] १. बराबर। समान। २. ऐसा ही।

ईंदूर—सं० पु० [दे०] शीघ्र की ब्याई हुई गाय के दूध से बनी हुई एक प्रकार की मिठाई। प्यौसी। इनरी।

ईछो—सं० स्त्री० [सं०] इच्छा। अभिलाषा।

ईठी—सं० स्त्री० [सं० इष्ट] इच्छा। चाह। अभिलाषा। वि० १. अभिलषित। २. भला।

—

## उ

उँकोत—सं० पु० [देश०] एक प्रकार का रोग जो प्रायः पैरों में होता है।

उँखारी—सं० स्त्री० [सं० इक्षवाटिका] १. वह खेत जिसमें गन्ना बोया जाता हो। २. गन्ने वाले खेत की जुताई।

उँगनी—सं० स्त्री० [देश०] बैलगाड़ी के पहियों में तेल देने का कार्य।

उँघाना—क्रि० अ० [हि०] १. ऊँघना। नींद आना। २. आलस्य युक्त होना।

उँजरिया—सं० स्त्री० [देश०] चाँदनी। उजियाली चन्द्रमा का प्रकाश।

उहूँ—अव्य० [हि०] अस्वीकार सूचक शब्द।

उकवाँ—क्रि० वि० [देश०] अनुमानतः।

उकीरना—क्रि० सं० [उत्कीर्णन] १. उखाड़ना। २. खोदना। ३. चिह्नित करना।

उकुति—सं० स्त्री० [उक्ति] कथन। बचन। उक्ति।

उग्र—वि० [सं०] १. बड़ा। वृहत २. शुद्ध। परिष्कृत।

उखलना—क्रि० अ० [हि० खौलना] १. पानी या किसी तरल पदार्थ का खौलना। २. गर्म होना।

उगाहन—सं० पु० [सं० उद्ग्रहण] वसूली। उगाही।

उग्रगंधा—सं० स्त्री० [सं०] १. बच। २. अजमोदा। ३. प्याज।

उच्छ्रित—वि० [सं०] १. ऊँचा। उच्च। २. उन्नत।

उच्छौ—सं० पु० [सं० उत्सैध] उत्सव। समारोह।

उछास—सं० पु० [सं० उच्छ्वास] ऊपर खींची हुई श्वास। उसास।

उच्छिन्न—वि० [सं० उच्छिन्न] १. जड़मूल से नष्ट कर देना। उखाड़ फेकना। २. नष्ट कर देना।

उच्छिष्ट—वि० [सं० उच्छिष्ट] १. जूठा। २. उपभुक्त। ३. बचा हुआ। अवशिष्ट।

उजवना—क्रि० सं० [हि०] १. फेंकना। चलाना। २. अपने से दूर हटाना।

उजू—सं० पु० [अ० वजू] मुसलमानों का एक धार्मिक नियम, जिसमें नमाज पढ़ने के पूर्व हाथ पैर धोया जाता है।

उजेरो—सं० पु० [हि० उजेला] उजाला। प्रकाश। २. शोभा। कान्ति।

उज्यारी—सं० स्त्री० [हि०] चाँदनी। उजियाली।

उज्यास—सं० पु० [हि० उजास] १. प्रकाश। उजाला। २. कान्ति। शोभा।

उडुंत छाला—सं० पु० [सं० उड्डयंत-चैल] वह छाल या वस्त्र जिसे ओढ़ कर मनुष्य उड़ सकता है।

उत्क्रम—सं० पु० [सं०] परिवर्तन। उलट पलट। व्यतिक्रम।

उत्क्रोश—सं० पु० [सं०] हल्ला। चिल्लाहट। भीड़ में होने वाला शब्द। कोलाहल।

उत्क्षिप्त—वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. हटाया हुआ। ३. उछाला हुआ।

उत्तरित—वि० [सं०] १. उत्तर दिया हुआ। (रिप्लायड) २. उतारा हुआ। नीचे आया हुआ।

उत्तरण—सं० पु० [सं०] उतरना। नीचे आना। यानों आदि पर से पृथ्वी पर आना (लैंडिंग)

उत्तारण—सं० पु० [सं०] १. पार कर देना। पार उतारना। २. कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर पहुँचाना (ट्रांसपोर्टेशन) ३. विपत्ति या संकट में पड़े हुए को बचाना। (रेसक्यूइंग)।

उत्थानक—वि० [सं०] ऊपर उठाने वाला। उन्नति कराने वाला। सं० पु० १. बिजली द्वारा परिचालित वह ऊपर नीचे आने वाला संदूक के आकार का यंत्र जिसकी सहायता से लोग ऊँचे घरों या खानों में आते जाते हैं। (लिफ्ट)

उदाहृत—वि० [सं०] उदाहरण दिया हुआ। वर्णन किया हुआ। कथित।

उदियान—सं० पुं० [सं० उद्यान] वाटिका। फुलवारी।

उद्दीपन—सं० पु० [सं० उद्दीपन] १. उत्तेजन। उभाड़। बढ़ाव। जागरण। २. काव्य में आने वाला एक प्रकार का विभाव।

उद्दीर्ण—वि० [ सं० ] १. उदित। २. बढ़ा हुआ। ३. कथित। ४. प्रबल।

उद्गीत—सं० स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। उदय। २. उपज। ३. उत्थान।

उद्घोष—सं० पु० [सं०] किसी बात को उच्च स्वर से कहने की क्रिया। डंके की चोट कहना।

उद्घोषणा—सं० स्त्री० [सं०] सार्वजनिक रूप से दी जाने वाली सूचना। ( प्रोक्लेमेशन )

उद्धारण—सं० पु० [ सं० ] १. उद्धार करने की क्रिया या भाव। २. वाक्य, पद, शब्द आदि किसी उद्देश्य से कहीं से निकाल या अलग कर देना। ( डिलीशन )

उद्याम—सं०पु० [सं०] रस्सी। रज्जु। रसरी।

उद्योगधन्धा—सं०पु० [सं०] व्यापार आदि लोक व्यवहार के लिए कच्चे माल से पक्का माल या सामान बनाना। ( इन्डस्ट्री )

उद्योग पति—सं० पु० [सं०] कच्चे माल से पक्का माल बनाने वाले किसी भी प्रकार के कारखाने का मालिक। ( इन्डस्ट्रीअलिस्ट )

उद्योजक—सं० पु० [ सं० ] किसी व्यवहार में अपने पक्ष को सिद्ध करने का प्रयास करने वाला। पैरवीकार।

उद्योजन—सं० पु० [सं० पु०] किसी व्यवहार में अपने पक्ष को सिद्ध करने का प्रयास। पैरवी।

उद्वाहिनी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. कोड़ा। २. रस्सी। रज्जु।

उद्वीक्षण—सं० पु० [सं०] ऊपर की ओर देखना। ऊर्ध्व दृष्टि।

उद्वेजित—वि० [सं०] व्यग्र। व्याकुल। घबड़ाया हुआ। उद्विग्न।

उद्योत—सं०पु० [सं० उद्योत] उदय। उन्नति।

उधलना—क्रि० अ० [हि०] १. मस्त होना। मतवाला होना। २. काम से घबड़ाना। ३. नष्ट भ्रष्ट हो जाना। विगड़ जाना। ४. किसी स्त्री का किसी पुरुष के साथ भग जाना।

उनइस—सं० पु० [सं०एकोनविंशति] उन्नीस। १९ की संख्या।
वि० कम। न्यून।

उनमनि—सं० स्त्री० [?] योग की एक प्रकार की मुद्रा जिसमें प्रवृत्तियाँ अंतर्मुखी और स्थिर हो जाती हैं।

उन्नतांश—सं० पु० [ सं० ] किसी आधार, स्तर, रेखा से ऊपर की ओर का विस्तार। ऊँचाई। (एल्टिच्यूड)

उन्मुक्ति—सं० स्त्री० [सं०] १. छुटकारा। २. उदारना। ३. अभियोग आदि से छुटकारा। ( एक्विटल ) ४. किन्हीं विशेष कारणों द्वारा बंधनों से मुक्त होना। (एग्जेम्पशन)

उन्मोचन—सं० पु० [सं०] १. मुक्त या अलग रखना। २. प्रतिबंध हटा लेना। ३. किसी विशेष कारण से किसी को किसी नियम के बंधन आदि से मुक्त या अलग रखना।

उपंत—वि० [ सं० उत्पन्न ] प्रकट। उत्पन्न।

उपकंठ—सं० पु० [सं०] किनारा। तट।
क्रि० वि० समीप। पास।

उपकथन—सं० पु० [सं०] प्रत्युत्तर।

उपकल्पन—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्य की तैयारी। आयोजन। कार्य की सफलता के लिए किया जाने वाला अभ्यास। ( प्रिपरेशन )।

उपकारिका—सं०स्त्री० [ सं० ] राजमहल। प्रासाद। वस्त्र-गृह। तंबू।
वि० उपकार करने वाली स्त्री।

उपकूल—सं० पु० [ सं० ] तालाब इत्यादि के तट का भाग। क्रि० वि० समीप। सन्निकट।

उपक्रोश—सं० पु० [सं०] भर्त्सना। निंदा। विगर्हणा। कुत्सा।

उपक्षेप—सं० पु० [ सं० ] ३. कोई कार्य या ठेका पाने के लिए उसके व्यय आदि के विवरणों से युक्त वह पत्र जो कार्य या ठेका पाने के पहले उपस्थित किया जाता है। ( टेंडर )।

उपखंड—सं०पु० [सं०] विधि-विधानों में किसी धारा या उपधारा के अंश या खंड का कोई विभाग। ( सब क्लॉज )

उपगूहन—सं०पु० [सं०] आलिंगन। अँकवार। भेंट।

उपचना—क्रि० अ० [ सं०उपचय ] इकट्ठा होना। बढ़ना। उफना कर बाहर की ओर निकलना।

उपचित—वि० [ सं० ] एकत्रित। सचित। वर्द्धित।

उपच्छाया—सं० स्त्री० [सं०] किसी वस्तु की मूल छाया के अतिरिक्त इधर उधर पड़ने वाली उसकी कुछ आभा। ( पेनम्ब्रा )।

उपजीविका—सं०स्त्री० [सं०] प्रधान जीविका के अतिरिक्त निर्वाह या जीवन बिताने का अन्य आर्थिक साधन। २. जीवन निर्वाह के लिए प्राप्त होने वाली अतिरिक्त सहायता या वृत्ति। ( एलाउन्स )

उपज्ञा—सं०स्त्री० [सं०] आदि ज्ञान। ईश्वर दत्त ज्ञान। बिना किसी उपदेश के प्राप्त होने वाला ज्ञान।

इस्तेहाम।
उपढौकन—सं० पु० [सं०] किसी को उपहार रूप में दी गई वस्तु। भेंट। डाली।
उपदल—सं० पु० [सं०] १. पान। २. पत्ता। ३. मुकुल। ४. फूल की पंखड़ियाँ।
उपदिस्सा—सं० स्त्री० [सं०] वसीयत नामे के अन्त में लिखा हुआ परिशिष्ट रूप में कोई संक्षिप्त लेख या टिप्पणी। (कौंडिसिल)
उपधारा—सं० स्त्री० [सं०] किसी विधान की किसी धारा के अंतर्गत उसकी अंगीभूत कोई छोटी धारा। (सब सेक्शन)
उपनिबन्धक—सं० पु० [सं०] किसी निबन्धक का सहायक कर्मचारी। (सब रजिस्ट्रार)
उपनियम—सं० पु० [सं०] किसी नियम के अंतर्गत बनाया हुआ उसका एक विशिष्ट अंगीभूत नियम।
उपनिर्वाचन—सं० पु० [सं०] किसी स्थान, पद, सदस्यता आदि के लिए होने वाला वह निर्वाचन जो किसी सत्र की अवधि पूरी होने के पहले रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए होता है। (बाई एलेक्शन)
उपपत्नी—सं० स्त्री० [सं०] पाणि गृहीत भार्या के अतिरिक्त अन्य स्त्री जो भार्या के रूप में रखी गई हो। रखेली।
उपमण्डल—सं० पु० [सं०] किसी मंडल (जिला) का एक विशेष छोटा भाग। तहसील।
उपयाजन—सं० पु० [सं०] अपने उपयोग या काम में लाना। उपभोग करने की क्रिया।
उपरंजन—सं० पु० [सं०] किसी वस्तु पर किसी वस्तु का ऐसा अनिष्ट प्रभाव पड़ना जिससे प्रभावित वस्तु की उपयोगिता कुछ कम हो जाय। (एफेक्टेशन)
उपरक्त—वि० [सं०] विपन्न। आक्रांत। ग्रस्त। जिस पर किसी का प्रतिकूल या अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो। (एफेक्टेड)
उपलभ—सं० पु० [सं०] ज्ञान। अनुभव।
उपलिप्त—वि० [सं०] लिपटा हुआ। चुपड़ा हुआ।
उपली—सं० स्त्री० [देश०] छोटी छोटी गोल आकृति की बनाई गई गोहरी। कंडी।
उपवाक्य—सं० पु० [सं०] किसी बड़े वाक्य का वह अंश जिसमें समापिका क्रिया हो।
उपविधि—किसी विधि के अधीन या अंतर्गत बनी हुई कोई छोटी विधि।
उपसभापति—सं० पु० [सं०] किसी संस्था का वह अधिकारी जिसका पद सभापति से छोटा किन्तु प्रधान मन्त्री से बड़ा होता है। (वाइस प्रेसिडेण्ट)
उपसमिति—सं० स्त्री० [सं०] किसी बड़ी समिति या सभा की बनाई हुई छोटी समिति, जिसका कार्य उस समिति के कार्य के किसी एक भाग तक सीमित होता है।
उपस्करण—सं० पु० [सं०] घर, स्थान आदि सजाने की क्रिया या भाव। (फरनिशिंग)
उपस्कार—सं० पु० [सं०] प्रायः घर की सजावट के लिए प्रयुक्त होने वाली वस्तुएँ। (फरनीचर)
उपस्कृत—वि० [सं०] सुसज्जित। उपस्कार युक्त। (फरनिश्ड)
उपस्थापक—सं० पु० [सं०] १. उपस्थित करने वाला। सम्मुख लाने वाला। २. न्यायालय का वह कर्मचारी जो वादों और अभियोगों संबंधी कागजों को न्यायकर्ता के सम्मुख उपस्थित करता है। पेशकार। (रीडर)
उपस्थापन—सं० पु० [सं०] किसी अधिकारी या सभा समिति के सम्मुख कोई पत्र या प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित करने का कार्य।
उपस्थितिअधिकारी—सं० पु० [सं०] किसी भी कार्यालय का वह अधिकारी जो उसके कर्मचारियों की उपस्थिति का देख भाल करता है। २. शिक्षा संस्थाओं का वह अधिकारी जो उन संस्थाओं के छात्रों की उपस्थिति की देखभाल करता तथा उसे बढ़ाने का प्रबन्ध करता हो। (एटेन्डेंस आफिसर)
उपस्थिति पंजिका—सं० स्त्री० [सं०] किसी भी प्रकार की संस्था या कार्यालय की वह पंजिका जिसमें सदस्यों कर्मचारियों इत्यादि की उपस्थिति लिखी जाती है। (एटेन्डेंस रजिस्टर)
उपहृत—वि० [सं०] लाया हुआ। प्रदत्त। हरण किया हुआ।
उपांतस्थ—वि० [सं०] उपांत (मार्जिन) पर होने रहने या लिखा जानेवाला। (मार्जिनल)
उपाध्यक्ष—सं० पु० [सं०] किसी संस्था आदि में अध्यक्ष के सहायक पर उसके अधीन काम करनेवाला अधिकारी (वाइस चेयरमैन)
उपाश्रित—वि० [सं०] १. किसी के आश्रय में रहने वाला। २. वह नियम या विधि जो दूसरे नियम या विधि के आश्रित हो।
उबट—सं० पु० [सं० उद्वाट] १.

भ्रष्ट मार्ग । कुपथ । २. टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग ।

उबसना—क्रि० अ० [ हि० ] किसी वस्तु का गर्मी के कारण दुर्गंध पूर्ण हो जाना । सड़ना । गल जाना ।

उबहन—सं० पु० [ सं० उद्वहन ] कुएँ से पानी खींचने की रस्सी ।

उभयत्र—क्रि० वि० [ सं० ] दोनों ओर । दोनों तरफ

उभारना—क्रि० स० [ हि० ] १. उभाड़ना । २. भड़काना । उत्तेजित करना । ३. उठाना ।

उमात्यो—वि० [ दे० ] मदहीन । निर्मद ।

उरगाय—सं० पु० [ सं० ] १. सूर्य । २. विष्णु । ३. प्रशंसा । वि० प्रशंसित । प्रसरित ।

उरबिजा—सं० स्त्री० [ सं० उर्विजा ] पृथ्वी की पुत्री । सीता । जनकजा ।

उलाहिते—क्रि० वि० [ हि० ] जल्दी से । शीघ्रता से ।

उलू—सं० पु० दे० 'उलूक' ।

उल्मुक—सं० पु० [ सं० ] १. अंगारा । लुकाठी । लूका ।

उवनि—सं० स्त्री० [ देश० ] १. उदय । २. उठान ३. उन्नति ।

उसतति—सं० स्त्री० [ सं० स्तुति ] विनय । प्रार्थना ।

उसि—असमा० क्रि० [ सं० उषित्वा ] बस कर । रहकर ।

उसिसर्वा—सं० पु० [ सं० उत्शीर्ष ] तकिया ।

उहिया—सं० पु० [ देश० ] एक प्रकार का कड़ा जिसको कनफटे साधु या योगी हाथों में पहिनते है ।

उहूल—सं० स्त्री० [ देश० ] १. तरंग । उमंग । २ धक्का ।

## ऊ

ऊखर—सं० पु० [ सं० ऊषर ] दे० 'ऊसर' ।

ऊजरी—वि० [ सं० उज्ज्वल ] उजली । चमकती हुई ।

ऊध—क्रि० वि० [ सं० ऊर्ध्व ] ऊपर । वि० ऊँचा । खड़ा ।

ऊपना—क्रि० अ० [ सं० उत्पन्न ] उत्पन्न होना । पैदा होना ।

ऊभा—वि० [ ? ] १. खड़ा । २. चैतन्य ।

ऊष—सं० स्त्री० [ सं० उषा ] उषाकाल । अरुणोदय ।

ऊषन—वि० [ सं० उष्ण ] गरम । उष्ण ।

एकवर्षी—वि० [ सं० एक + वर्षा ] १. एक वर्ष से संबंधित । २. एक वर्ष तक ही रहने वाला । ( ऐनुअल )

एकसार—वि० [ हि० ] १. समान । एकसाँ । २. एक रस ।

एकांतरिक—वि० [ सं० ] एक एक को छोड़ कर होने वाला । एक को छोड़ कर उससे परवर्ती से संबंधित । ( आल्टरनेटिव )

एकात्मता—सं० स्त्री० [ सं० ] रूप, प्रकृति, गुण आदि के विचार से किसी के तुल्य इस प्रकार होना कि वह दोनों एक ही प्रतीत हो ( आइडेंटिटी )

ओरखना—क्रि० अ० [ हि० ] आँखों के सामने अँगुलियाँ करके उनकी सन्धियों से देखना ।

ओरवार—सं० पु० [ सं० पारावार ] समुद्र । सागर ।

ओलक—सं० पु० [ ? ] ओट । आड़ । ओझल ।

ओसरी—क्रि० वि० [ सं० अवसर ] अवसर । समय । काल । सं० स्त्री० बारी ।

## क

कंकेलि—[ सं० कंकेल्लि ] अशोक वृक्ष । अशोक वृक्ष के लाल पुष्प ।

कंगसी—सं० स्त्री० [ देश० ] ग्रंथि । गाँठ । एक प्रकार की कसरत ।

कंचनक—सं० पु० [ सं० ] १. कचनार । २. मैन फल । ३. स्वर्ण ।

कंटकफल—सं० पु० [ सं० ] १. कटहल । पनस । २. सिंघाड़ा ।

कँटार—वि० [ हि० काँटा ] काँटेदार । कँटीला । खुरदरा ।

कँटिका—सं० स्त्री० [ सं० ] सूई के आकार की घुण्डीदार लोहे पीतल आदि की तीली । ( पिन ) ।

कंठसिरी—सं० स्त्री० [ सं० कंठश्री ] गले में पहिनने का एक प्रकार का आभूषण । २. कंठी ।

कंठीरव—सं० पु० [ सं० ] १. सिंह । व्याघ्र । शेर ।

कँधेली—सं० स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की अंडाकार मेखला, जो गाड़ी

में जोते जाने वाले घोड़ों या बैलों की गर्दन पर रखी जाती है।

**कँपनी**—सं० स्त्री० [ सं० कम्प ] कँपकँपी। थरथराहट। २. रोंगटों का खड़ा हो जाना।

**कसकार**—सं० पु० [ सं० ] बर्तन बेचने वाली एक जाति। कसेरा।

**कउतुक**—सं० पु० [ सं० कौतुक ] १. लीला। खिलवाड़। २. आश्चर्य। अचम्भा।

**ककुत्स्थ**—सं० पु० [ सं० ] १. इक्ष्वाकु राजा के प्रपौत्र। २. इनके वंश के लोग।

**कखरी**—सं० स्त्री० [ देश० ] काँख। कोख। बगल। कुक्षि।

**कचकड़**—सं० पु० [ देश० ] १. कछुवे का खोपड़ा। कछुवे की हड्डी।

**कचबांसी**—सं० स्त्री० [ हि० ] भूमि नापने की एक प्रकार की माँप।

**कटन**—सं० स्त्री० [ देश० ] किसी वस्तु के काटने से इधर उधर की निकली हुई वस्तु। कतरन।

**कटाछ**—सं० स्त्री० [ सं० कटाक्ष ] १. तिरछी चितवन। २. व्यंग्य। ३. आक्षेप।

**कटुवादी**—वि० [ सं० ] कड़ी बात बोलने वाला। अप्रिय वक्ता।

**कटौती**—सं० स्त्री० [ हि० कटना ] २. किसी निश्चित धन या पदार्थ में से कुछ भाग काट लेना। जैसे-वेतन कटौती।

**कठ्याना**—क्रि० अ० [सं० कंटकित] शरीर पर रोंगटे खड़े हो जाना। रोमांचित होना। कंटकित होना।

**कठोदर**—सं० पु० [ सं० कष्ठोदर ] पेट में होने वाला एक प्रकार का रोग।

**कड़काना**—क्रि० सं० [ हि० कड़क ] १. कड़ कड़ शब्द के साथ किसी वस्तु को तोड़ना। २. तेल या घी को अच्छी प्रकार गरम करना।

**कड़का**—सं० स्त्री० [ सं० करका ] १. ओले की वृष्टि। पत्थर वर्षा। [ देश० ] बिजली। २. कड़कड़ाती हुई ध्वनि।

**कतनई**—सं० स्त्री० [ हि० कातना ] १. सूत कातने की क्रिया। २. सूत कातने पर मिलने वाली मजदूरी।

**कदे**—क्रि० वि० [सं० कदा] कभी। कब।

**कन्हरीया**—सं० पु० [सं० कर्णधार] मल्लाह। माझी। केवट। नाविक।

**कन्हावर**—सं० पु० [स० स्कन्धपट] १. कंधे पर डाला जाने वाला चद्दर। २. जुवे का वह भाग जो बैल के कंधे पर रहता है।

**कपाल-माली**—सं० पु० [ सं० ] शंकर। महादेव।

**कपूरमनि** - सं० पु० [सं० कर्पूरमणि] एक प्रकार की मणि।

**कफोणी**—सं० स्त्री० [ सं० ] बाँह के बीच की गाँठ। कोहनी।

**कबारू**—सं० पु० [ देश० ] व्यवसाय। धंधा। जीविका निर्वाह का साधन।

**कव्य**—सं० पु० [ सं० ] १. पितृ-श्राद्ध। पितृ दान। २. श्राद्धीय द्रव्य।

**कमंडली**—सं० पु० [ सं० ] ब्रह्मा। विधाता।

**करण**—सं० पु० [ सं० ] १. विधिक क्षेत्र में वह लेख्य जो किसी कार्य, व्यवहार, संविदा, प्रक्रिया आदि का सूचक हो। साधन-पत्र।

**करणिक**—सं० पु० [ सं० ] १. किसी का कोई काम करने वाला। २. किसी कार्यालय में लिखा पढ़ी का काम करने वाला कर्मचारी। (क्लर्क)

**करधृत**—वि० [ सं० ] हस्तगत। गृहीत। २. विवाहित।

**करपुट**—सं० पु० [ सं० ] बँधी हुई अंजुलि। अँजुरी।

**करिंदा**—सं० पु० [ अ० कारिंदा ] जमींदार की ओर से जमींदारी का प्रबंध करने के लिए नियुक्त वैतनिक कर्मचारी।

**करिष्णु**—वि० [ सं० ] कार्यपरायण कर्तव्य-शील।

**करिसन**—सं० पु० [ सं० कृषि ] कृषि। खेती।

**करीया**—सं० पु० [ सं० कर्णधार ] दे० 'करिया'।

**कर्णगोचर**—सं० पु० [ सं० ] कान में पड़ना। सुनाई देना।

**कर्तृ निरीक्षक**—सं० पु० [ सं० ] कार्यालय के कर्मचारियों का निरीक्षण करने वाला। ( स्टारइन्स्पेक्टर )

**कर्तृ वर्ग**—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्यालय के कर्मचारियों का समूह। ( स्टाफ )

**कलकली**—सं० स्त्री० [ देश० ] १. काकली। २. मधुरध्वनि। ३. रोष। क्रोध।

**कलकिन**—सं० पु० [देश०] मुर्गा। कुक्कुट।

**कलघोष**—सं० पु० [सं०] कोकिल। कोयल।

वि० मधुरभाषी।

**कलट**—सं० पु० [ सं० ] घूस की छाजन। छप्पर। टपरा।

**कलतु**—सं० पु० [सं० कलत्र] स्त्री। पत्नी। भार्या।

**कलपविरिछ**—सं० पु० [ सं० कल्प वृक्ष ] एक प्रकार का स्वर्गीय वृक्ष जो इच्छित फल को देने वाला होता है।

कउयिता—सं० पु० [ सं० ] कलन करने या हिसाब लगाने वाला। गणित करने वाला। ( कैलकुलेटर )

कलही—वि०[ सं० कलह ] कलह-प्रिय। झगड़ालू।

कलांच—वि० [ देश० ] अंशभूत। थोड़ा। अल्प।

कलाना—क्रि० अ० [दे०] भूलना। अकोरना।

कलापंजी—सं० स्त्री० [सं०] किसी सभासमिति के संक्षिप्त कार्य-विवरण लिखने की पुस्तिका। ( मिनट बुक )

कलुखी—वि० [ सं० कलुषी ] १. पापी। दुष्कर्मी। २. दोषी। ३. निन्दित।

कलोलिनी—सं० स्त्री० [ सं० कल्लोलिनी ] नदी। सरिता।

वि० कलोल करने वाली। क्रीड़ा करने वाली।

कल्पन—सं० पु० [सं०] १. रचना। बनावट। २. विधान। ३. पुनर्निर्माण।

कवला—सं० स्त्री० [ सं० कमला ] १. लक्ष्मी। २. धन।

सं० पु० [ सं० कमल ] कमल। कमल का पुष्प।

कसमल—सं० पु० [ सं० कल्मष ] १. दोष। २. पाप। ३. अवगुण। बुराई।

कांजिक—वि० [ सं० ] खट्टा। काँजी के स्वाद जैसा या उससे संबंधित।

सं० पु० [ सं० ] सिरका।

काइ—अव्य० [सं० कथं] १. क्यों। कैसे। २. कौन।

काकुत्स्थ—सं० पु० [ सं० ] १. रघुवंशी राजे। २. रामचन्द्रजी।

काको—सर्व० [ हिं० ] किस का किस को।

काचली—सं० स्त्री० ( कंचुली ) केंचुल। केंचुली।

काथ—सं० पु० ( सं० क्वाथ ) १. कत्था। खैर। २. किसी वस्तु को पानी में डाल कर एक निश्चित समय तक उबालने पर बना हुआ रस। कढ़ा।

कान्ध्से—सं० स्त्री० ( हिं० कानि ) मर्यादा। लज्जा।

काबरि—सं० पु० [ देश० ] भील नाम की एक जंगली जाति।

कामत:—क्रि० वि० [ सं० ] मन में कोई कामना या इच्छा रख कर। किसी उद्देश्य के लिए। (परपजुली)

कामिता—सं० स्त्री० [ सं० ] कामीपन। जीवों में कामवासना उत्पन्न करने वाली शक्ति, वृत्ति या गुण।

कारगह—सं० पु० [ हिं० करगह ] हाथ से वस्त्र बनाने का यंत्र। करघा।

कारणिक—वि० [ सं ] किसी कार्यालय में लिखने पढ़ने का काम करने वाले कर्मचारी या करणिक से संबंध रखने वाला। ( मिनिस्टीरियल )

कारवी—सं० स्त्री० [ सं० ] मोर की शिखा। २. शंकर जी की जटा। ३ अजमोदा।

कारारोध—सं० पु० [ सं० ] कारागार में बंद करने या होने की क्रिया या भाव। ( इम्प्रिजनमेंट )

कार्यक्रम—सं० पु० ( सं० ) १. होने या किए जाने वाले कार्यों का क्रम। २. इस प्रकार के कार्यों की सूची। ( प्रोग्राम )

कार्यावली—सं० स्त्री० [सं०] किसी सभासमिति की एक बैठक में होने वाले कार्यों की सूची। ( एजेंडा )

कासु—सं० पु० ( सं० आकाश ) आसमान। सर्व० किसको। किसका।

कार्श्य—सं० पु० [ सं० ] क्षीणता। दुर्बलता। कृशता।

कितेव—सं० पु० [ सं० कैतव ] बहाना। छल। प्रपंच। धोखा।

किबलनवी—सं० पु० ( फा० किबलानुमा ] अरब के मल्लाहों द्वारा जहाजों पर प्राचीन काल में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का यंत्र जिससे पश्चिम दिशा का ज्ञान होता था।

किरचें—सं० पु० [ देश० ] १. टुकड़े। २. पलकें। ३. किरच।

किसोर—सं० पु० दे० 'किशोर'।

कुंचर—सं० पु० [ सं० कुञ्जर ] हाथी। हस्ती।

कुण्डलीस—सं० पु० ( सं० कुण्डलीश ] सर्पराज। शेष नाग।

कुंदमघा—सं पु० (?) बरसाती कुंद। कुंद जुही की तरहका एक प्रकार का पुष्प वृक्ष।

कुतरुक—सं० पु० [ सं० कुतर्क ] बुरा तर्क। बेढंगी दलील।

कुनसमपंज—सं० पु० [?] किंकर्तव्यविमूढ़ता। हकबकी।

कुभकु—सं० पु० [ सं० कुंभक ] दे० 'कुंभक'।

कुमारामात्य—सं० पु० [ सं० ] प्राचीन भारतीय राज्यों में होने वाला एक अधिकारी, जो किसी मन्त्री या दंड नायक के अधीन उसके सहायक रूपमें काम करता था। वह राजवंश का ही होता था।

कुरुवक—सं० पु० [ सं० कुरबक ] एक प्रकार का पुष्प वृक्ष। उस वृक्ष का पुष्प।

कूब—सं० पु० [ सं० कूबर ] पीठ या किसी वस्तु का टेढ़ापन। कूबड़।

कृतघन—वि० [ सं० कृतघ्न ] किए

हुए उपकारको न मानने वाला। अकृतज्ञ।

कृषिक—वि० [ सं० ] कृषी या खेती बारी से संबंध रखने वाला। ( एग्रिकलचरल )

केंद्रीकरण—सं० पु० [ सं० ] वस्तुओं, शक्तियों और अधिकारों आदि को किसी एक केन्द्र में लाकर इकट्ठा करना।

कोषाणु—सं० पु० [ सं० ] अत्यन्त छोटे कणों या कोषों के रूप में वह मूल तत्व जिससे प्राणियों के शरीर का निर्माण होता है। ( सेल )

कोशागार—सं० पु० [ सं० ] वह स्थान जहां बहुत-सा धन रहता हो। खजाना। ( ट्रेजरी )

कौंहर—सं० पु० [ कटुफल या काकफल ] इंद्रायण का फल जो पकने पर अत्यन्त रक्त वर्ण का हो जाता है। माहर।

कौरई—सं० स्त्री० [ सं० कवल ] कौर। निवाला। ग्रास।

कौल—सं० पु० [ सं० कमल ] कमल का फूल। कमल।

क्रयशक्ति—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी राष्ट्र, देश या व्यक्ति का वह आर्थिक बल जिससे वह जीवन निर्वाह की वस्तुओं को खरीदता है। ( परचेजिंग पावर )

क्षारोद्—स० पु० [ सं० ] वह वनस्पति या जीवजन्तुओंके अंग या दूसरे पदार्थ जिनमें क्षार का अंश हो। ( अलकलायड )

क्षेत्रमिति—सं० स्त्री० [ सं० ] गणितशास्त्र का वह अंग जिसमें रेखाओं की लंबाई धरातल का क्षेत्रफल और ठोस पदार्थों का घनफल निकालने के नियमों का विवेचन होता है। ( मेन्सुरेशन )

## ख

खक—वि० [सं० कंकाल] १. दुर्बल। बलहीन। जिसकी हड्डी मात्र बची हो। २. निर्धन। ३. रिक्त। छूछा।

खंगड़—वि० [ देश० ] उद्दंड। उग्र। उजड्ड।

खँडला—सं० पु० [ सं० खंड ] भाग। टुकड़ा। फाँक।

खंडिका—सं० स्त्री० [सं०] किसी पूर्ण देन का वह अंश जो निश्चित अवधि पर थोड़ा थोड़ा करके दिया जाता है।

खंडिनी—सं० स्त्री० [ सं० ] भूमि। पृथ्वी।

खंभावति—सं० स्त्री० [ हि० ] एक प्रकार की रागिनी। खंभावती। खम्माच।

खगहा—सं० पु० [ हि० खाग+हा (प्रत्य०) ] १. गैंडा। २. [ 'खग+हंता ] बाज पक्षी। ३. गरुड़।

खड़का—सं० पु० दे० "खटका"

खदुका—सं० पु० [ सं० खादक ] १. ऋणी। २. महाजन से ऋण लेकर व्यापार करने वाला आदमी।

खपुआ—सं०पु० [ हि० ] लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा जो दो लकड़ियों की सन्धि के बैठाने के काम में आता है। वि० डरपोक। कायर। भगोड़ा।

खरची—सं० स्त्री० [हि०] १. खाने पीने की वस्तु। २ जीविकानिर्वाह का साधन। ३. वेश्याओं को उनकी वृत्ति के बदले प्राप्त होने वाला धन।

खरभरी—सं० स्त्री० [ हि० ] खलबली। हलचल। व्यग्रता।

खातक—सं० पु० [ सं० ] १. छोटा तालाब। तलैया। २. खाई। ३. ऋणी।

खिंथा—सं० स्त्री० [ सं० कंथा ] गुदड़ी। जोगियों का पहनावा।

खिनकु—क्रि० वि० [सं० क्षणिक ] क्षण मात्र। थोड़ी देर।

खीण—वि० [सं० क्षीण] क्षीण। दुर्बल। २. पतला।

खींधा—सं० स्त्री० [ सं० कंथा ] १. कंथा। गुदड़ी। २. कम्बल।

खीवा—सं० पु० [सं० क्षीवन] मतवालापन। मस्ती।

खुसरै—सं० पु० [ अ० खुसियः ] अंडकोष।

खूंटी—सं० स्त्री० [ देश० ] कान में पहिनने का एक प्रकार का प्राचीन आभूषण। खुभी।

खूहड़ी—सं० स्त्री० [ दे० ] छोटा कुआँ। छोटा सरोवर।

खेवरा—सं० पु० [ देश० ] एक प्रकार का तांत्रिकों का सम्प्रदाय, इसके मानने वाले हाथ में खप्पर लिए रहते हैं।

खोरभोर—वि० [ देश० ] चंदन से लिप्त। चंदन चर्चित।

ग

**गंगोझ**—सं॰ पु॰ [सं॰ गंगोदक] गंगा जी का पानी। गंगाजल।

**गँजिया**—सं॰ स्त्री॰ [सं॰ गंजिका] १. सूत की बनी हुई जाली दार थैली। २. घसियारों की घास रखने की रस्सी की थैली।

**गँठिछोरा**—सं॰ पु॰ [सं॰ ग्रंथि + छेपक] गठरी मारने वाला। चाई।

**गँडोल**—सं॰ पु [सं॰] १. कच्ची-शकर। गुड़। २. ईख। ३. ग्रास। कौर।

**गइ**—सं॰ पु॰ [हि॰ गय] हाथी। गज।

**गछ**—सं॰ पु॰ [हि॰ गाछ] १. पेड़। वृक्ष। २. पौधा।

**गजरौटी**—सं॰ स्त्री॰ [हि॰ गाजर + औटी (प्रत्य॰)] १. गाजर की पत्तियाँ। २. छोटी माला।

**गजही**—सं॰ स्त्री॰ [हि॰ गाज + ही (प्रत्य॰)] वह पतली लकड़ियाँ जिन से दूध को मथ कर फेन निकालते हैं।

**गटना**—क्रि॰ अ॰ [सं॰ ग्रथन] गँठना। बँधना।

**गड़**—सं॰ पु॰ [देश॰] मिट्टी का वह पात्र जिसमें महुए की शराब बनाते हैं।

**गड़ोर**—वि॰ [देश॰] १. निचास। गडढे वाले। २ वह स्थान जहाँ की मिट्टी चिकनी हो और बरसात में पानी जमा हो जाता हो। ३. गड़ीले। कँटीले। नोकदार।

**गडोल**—सं॰ पु॰ [सं॰] ग्रास। कवल।

**गड़ौना**—सं॰ पु॰ [देश॰] १. पान की एक जाति। २. काँटा।

**गतंड**—सं॰ पु॰ [सं॰ गतांड] हिंजड़ा। नपुंसक।

**गपिहा**—वि॰ [हि॰ गप्प + हा (प्रत्य॰)] १. गप्पी। झूठ बोलने वाला। २. बकवादी।

**गरहर**—सं॰ पु॰ [हि॰ गर + हार] नट खट चौपायों के गले में बाँधा जाने वाला काठ। कुंदा। ठेंकुर।

**गलबल**—सं॰ पु॰ [अनु॰] कोलाहल। खलबली। गड़बड़ी।

**गहरि**—क्रि॰ अ॰ [हि॰ गहरना] रूठकर। नाराज हो कर। क्रोध करके।

**गहिला**—वि॰ [हि॰ गहेला] बावला। पागल। उन्मत्त।

**गाँछना**—क्रि॰ स॰ [सं॰ ग्रंथन] गूँथना। गाँथना। गुहना। पिरोना।

**गाड़रू**—सं॰ पु॰ [सं॰ गारुडी] मत्र द्वारा सर्प का विष उतारने वाला।

**गाडा**—सं॰ पु॰ [स॰ गर्त] गड्ढा। गाड़।

**गाधर**—सं॰ पु॰ [सं॰ गाध] दे॰ 'गाध'।

**गारुरी**—सं॰ पु॰ [सं॰ गारुडिक] मंत्र द्वारा सर्प का विष उतारने वाला।

**गालन**—सं॰ पु॰ [सं॰] १. गलाने की क्रिया या भाव। २. किसी तरल पदार्थ को किसी वस्तु में से इस प्रकार इस पार से दूसरे पार निकालना कि उसमें की मैल आदि बीच में रुक कर अलग हो जाय। (फिल्टरेशन)

**गींजना**—क्रि॰ स॰ [हि॰ मींजना] किसी कोमल पदार्थ विशेषतः कपड़े फूल आदि को हाथ से इस प्रकार मसलना जिससे वह खराब हो जाय।

**गुझाना**—क्रि॰ स॰ [हि॰] छिपाना। गुप्त रखना। बचाना।

**गूझना**—क्रि॰ अ॰ [हि॰] सम्हालना ध्यान रखना।

**गुरज**—सं॰ पु॰ [फा॰ गुर्ज] गदा। सोंटा।

**गृंजन**—सं॰ पु॰ [सं॰] गाजर। शलगम।

**गृह-पाल** स॰ पु॰ [सं॰] १. घर का रक्षक। चौकीदार। पाहरू। २. कुत्ता।

**गैना**—सं॰ पु॰ [?] नाटा बैल। नाटे कद का अकदार बैल।

**गोचना**—क्रि॰ स॰ [हि॰] रोकना। छेकना।

सं॰ पु॰ [गेहूँ + चना] गेहूँ-चना मिला हुआ अन्न।

**गोसेट**—सं॰ स्त्री॰ [सं॰ गोष्ठी] गोष्ठी बात-चीत।

**गोस्तनी**—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] अंगूर। द्राक्षा।

**गौहरे**—सं॰ पु॰ [सं॰ गोष्ठ] गायों के बाँधने का स्थान। घोष्ठ। गोशाला।

## घ

**घटहा**—सं० पु० [ हि० घाट+हा (प्रत्य०) ] घाट का ठेकेदार।

**घटिक**—सं० पु० [ सं० ] घण्टा पूरा होने पर घड़ियाल बजाने वाला व्यक्ति। घंटा बजाने वाला।

**घटनाई**—सं० स्त्री० [ सं० घटनौका ] घवनई। उडुप।

**घटार**—सं० पु० [ देश० ] निचली भूमि।
वि० श्याम। काली।

**घनताल**—सं० पु० [ सं० ] १. पपीहा। चातक। २. करताल। ताली।

**घनरस**—सं० पु० [सं०] १. जल। पानी। २. कपूर। ३. हाथियों के नाखून में होने वाला एक प्रकार का रोग।

**घनेरे**—वि० [ हि० घने ] बहुत। अधिक। अगणित।

**घवई**—सं० स्त्री० [ सं० घटनौका ] मिट्टी के घड़ों और बाँस के दो टुकड़ों को बाँध कर बनाया गया बेड़ा।

**घपुआ**—वि० [ हि० भकुआ ] मूर्ख। जड़। नासमझ।

**घमरौल**—सं० स्त्री० [ देश० ] हल्ला गुल्ला। ऊधम। गड़बड़।

**घमसा**—सं० पु० [ हि० घाम ] १. वायु के रुकने और अधिक धूप से होने वाली ऊमस। २. घनापन। अधिकता।

**घमोई**—सं० स्त्री० [ देश० ] बाँस का एक प्रकार का रोग।

**घरनाई**—सं० स्त्री० [ सं० घटनौका] दे० 'घटनाई'।

**घरहाइन**—सं० पु० [ देश० ] कुचर्चा बदनामी।

**घरियारा**—सं० पु० [देश०] राज दरबार का घंटा। इसकी आकृति घरियार ( जलयंत्र ) जैसी होती थी।

**घाटौ**—क्रि० स० [ हि० घाटना ] अंतर करना। घटा देना। ढक देना। पाट देना।

**घावरिया**—सं० पु० [ हि० घाव + बरिया ] घावों की चिकित्सा करने वाला। जर्राह।

**घासी**—सं० स्त्री० [ हि० घास ] घास। चारा। तृण।

**घीस**—सं० पु० दे० घूस।

**घुमरी**—सं० स्त्री० [ ? ] १. घुमनी। २. भौंरी। भँवर ( पानी का )। ३. घुमनी नाम का एक रोग।

**घुरहुरी**—सं० स्त्री० [ हि० खुर+हर ] १. जंगलों में पशुओं के चलने से बना हुआ रास्ते का सा निशान। खुरहरी। २. पगडंडी।

**घूक**—सं० पु० [सं०] घुग्घू। उल्लू पक्षी। रुरुआ।

**घूक**—सं० पु० देश० 'घूक'।

**घुरला**—सं० पु० [ दे० ] टेढ़ा मेढ़ा पतला मार्ग। पगडंडी। खुरहुरी।

**घैहल**—वि० [ हि० घाव ] घायल चोट खाया हुआ।

**घौंरि**—सं० स्त्री० [ हि० ] गुच्छा। झोंपा घौद।

## च

**चंकुर**—सं० पु० [ सं० ] १. रथ। यान। सवारी। २. वृक्ष। पेड़।

**चंडालपक्षी**—सं० पु० [सं०] काक। कौवा।

**चंद्रकी**—सं० पु० [ सं० चंद्रकिन ] १. मोर। मयूर। कलापी। २. शिव।

**चउक**—सं० पु० [ सं० चतुष्क ] १. मांगलिक कार्यों में आँटे इत्यादि से बनाया जाने वाला चौकोर चित्र। २. मांगलिक पीढ़ा।

**चक्कवा**—सं० पु० [सं० चक्रवाक] चकवा पक्षी।

**चक्र**—सं० पु० [सं०] १८. बन्दूक से गोली चलाने की क्रिया। (संख्या के विचार से )

**चक्रचर**—सं० पु० [ सं० ] १. तेली। कुम्हार।

**चक्रांग**—सं० पु० [सं०] १. चकवा। २. रथ या गाड़ी। ३. हंस।

**चटकई**—सं० स्त्री० [ हि० चटक ] १. चमक-दमक। कांति। २. फुर्ती। शीघ्रता।

**चट्टिया**—सं० पु० [ देश० ] १. शिष्य। विद्यार्थी। छात्र २. एक साथ पढ़ने वाले बालक।

**चदिर**—सं० पु० [सं०] १. कपूर। २. चन्द्रमा। ३. हाथी। ४. सर्प।

**चपराना**—क्रि० स० [ देश० ] १. झूठा बनाना। झुठलाना। २. लाह से बन्द करना। चपरा लगाना।

**चबकना**—क्रि० अ० [ देश० ] १. रह रह कर दर्द करना। टीसना। २। हूल मारना। चिलकना।

**चमरौट**—सं० स्त्री० [ देश० ] वह स्थान जहाँ बहुत से चमारों के घर

बने हों। चमारों की बस्ती।
चरणायुध—सं० पु० [ सं० ] मुर्गा। कुक्कुट।
चर्मी—सं० पु० [सं०] ढाल धारण करने वाला। ढलैत।
चलचाल—क्रि० वि० [हि०] चल-विचल। चंचल। अस्थिर।
चवना—क्रि० अ०० [ सं० च्यै ]१. टपकना। बहना। निकलना। २ गर्भपात हो जाना।
चहुँकना—क्रि० अ० [ हि० ] चौंकना। घबराना।
चांचल्य—सं० पु० [सं०] चंचलता चपलता।
चाइन—सं पु० [ देश० ] चुगली करनेवाला। चुगलखोर।
चाउर—सं० पु० [ देश० ] चावल। तंडुल।
चाख—सं० पु० [ सं० चाष ] नील-कंठ नाम का एक पक्षी।
चाड़ी—सं० स्त्री० [ सं० चाटु ] पीठ पीछे की निंदा। चुगली।
चाबुन—सं० पु० [ सं० चवक ] चना। चबैना।
चिटुकी—सं स्त्री० [ देश० ] चुटकी।
चित्य—सं० पु० [ सं० ] समाधि-स्थल। मकबरा।
चिरम—सं० पु० [ देश० ] गुंजा। घुँघची।
चिहुँटनी—सं०स्त्री० [देश०] गुंजा। घुँघची। चिरमिटु।
चीठा—सं० पु० दे० चिट्ठा।
चीरु—सं० पु० दे० चीर।
चीह—सं० स्त्री० [ फा० चीख ] चिल्लाहट। चीत्कार।
चुखाना—क्रि० स० [ सं० चुष ] गाय दूहने के समय उसके थन में दूध उतारने के लिए पहले उसके बछड़े को पिलाना।
चुक्आ—सं० पु० [ देश० ]चोंगा।
शराब उतारने की नली।
चुचुक—सं० पु० [ सं० ] स्तन के सिरे या नोक पर का भाग जो गोल घुंडी के रूप में होता है। कुचाग्र।
चूड़—सं० पु० [ सं० ] १. चोटी। शिखा। २. मस्तक की कलँगी। ३. किसी वस्तु का शीर्ष भाग।
चेजा—सं० पु० [ हि० छेद ] छेद। छिद्र।
चोवा—सं० पु० [हि०] एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ।
चोलकी—सं० पु० [सं० चोलकिन] १. करील का पेड़। २. बाँस का कल्ला।
चौपहिलू—वि० [ हि० चौ + फा० पहलू ] जिसके चार पहल या पार्श्व हों।
चौहट—सं० पु० [ हि० चौ + हाट ] वह स्थान जिसके चारों ओर दूकानें हों। चौक। चौमुहानी। चौराहा।

## छ

छंगा—वि० [ देश० ] जिसके एक पंजे में छ अँगुलियाँ हो।
छंदक—वि० [सं०] १. रक्षक। २. कपटी। छली।
सं० पु० १. श्रीकृष्ण। २. बुद्ध देव का सारथी। ३. छल।
छकाछक—वि० [ हि० छकना १. तुस। अघाया हुआ। २. परिपूर्ण। भरा हुआ। ३. उन्मत्त। नशे में चूर।
छटपट—वि० [ देश ] चंचल। चपल। चुस्त।
छड़ीदार—सं० पु० [ हि० ] द्वार-पाल। दरवान। द्वार रक्षक।
छत्तीस—सं पु० [सं० षट् त्रिंशति] तीस और छ। ३६ की संख्या।
वि० विमुख।
छनहरी—सं० स्त्री० [ हि० अपछरी] नाचने वाली। नर्तकी।
छपकना—क्रि० स० [ हि० ] १. किसी तेज हथियार से किसी पदार्थ को एक ही बार में काट डालना। २. पतली लचीली छड़ी से मारना।
छपटना—क्रि० अ० [ हि० चिप-टना ] किसी वस्तु से लगना या सटना। चिपकना। २. आलिंगित होना।
छपवैया—सं० पु० [ हि० छापना ] १. छापने वाला। २. छपवाने वाला।
छपाचर—सं० [ सं० क्षपाचर ] १. निशाचर। राक्षस। २. चन्द्रमा। शशि।
छबड़ा—सं० पु० [ देश० ] १. टोकरा। डला। झाबा।
छरकायल—वि० [ ? ] छरकीले। लंबे लंबे। सटकौर।
छरिया—सं० पु० [ हि० छड़ी ] छड़ीदार। पहरेदार। द्वारपाल।

छरोरा—सं० पु० [ सं० छुर ] शरीर में किसी नुकीली वस्तु के चुभ कर कुछ दूर तक छिद जाने से पड़ी हुई लकीर। खरौंच।

छलंगू—सं० पु० [ देश० ] छलांग। चौकड़ी।

छाँक—सं० पु० [ फा० चाक ] खंड। टुकड़ा। भाग।

छाँछ—सं० पु० [ सं० छच्छिका ] देखो 'छाछ'।

छिउला—सं० पु० [ सं० छुप + ला प्रत्य० ] छोटा पेड़। पौधा।

छिगुनियाँ—सं० स्त्री० [ सं० क्षुद्रांगुली ] सबसे छोटी उँगली। कनिष्ठिका।

छिटकी—सं० स्त्री० [ सं० क्षिप्तिका ] किसी तरल पदार्थ की नन्ही बूँदें। छींट। छींटा।

छिदरा—वि० [ हि० ] १. विरल। छितराया हुआ। २. झँझरीदार। छेददार। ३. फटा कटा। जर्जर।

छिनदा—सं० स्त्री० [ सं० क्षणदा ] विद्युत। बिजली। बिजुरी।

छींमर—सं० पु० [ ? ] छींट की साड़ी। छींट वाला कपड़ा।

छीरज—सं० पु० [ सं० क्षीरज ] १. दधि। दही। मक्खन। २. चन्द्रमा। शशि।

छीव—वि० [?] मतवाला। मदमस्त।

छुही—सं० स्त्री० [ हि० ] सफेद मिट्टी। खड़िया।

वि० चित्रित की हुई। चित्रलिखित के समान। ठगीसी।

छौड़ि—सं० स्त्री० [ सं क्ष्वेडिका ] १. मथानी। रई। २. [सं० क्षोणि] बड़ा बरतन।

## ज

जंबाल—सं० पु० [ सं० ] कीचड़। पंक। २ सेवार। शैवाल। ३. काई। ४. केवड़ा।

जंबालिनी—सं० स्त्री० [ सं० ] नदी। तटिनी।

जगत्र—सं० पु० [ सं० जगत ] संसार।

जज्जर—सं० पु० [ हिं ] सूखे हुए बाँसों की ठठरी। सूखा बाँस।

जड़ताई—सं०स्त्री० [सं० जाड्य] १. मूर्खता। नासमझी। २. अचेतनता।

जड़ाना—क्रि० अ० [ हिं० जड़ ] १. जड़ हो जाना। २. हठ करना। अपनी बात पर अड़े रहना।

जथारथ—अव्य० दे० 'यथार्थ'

जनजाति—सं० स्त्री० [ सं० ] ऐसे लोगों का समूह या वर्ग जो किसी विशिष्ट स्थान में निवास करता है तथा एक ही पूर्वज की संतान होता है और सभ्यता संस्कृति आदि के विचार से अपने आस पास के लोगों से भिन्न होता है। ( ट्राइब )

जमजाई—सं० स्त्री० [ सं० यमजाया ] मृत्यु। मौत।

जमलतरु—सं० पु० [ सं० यमलार्जुन ] यमल और अर्जुन नामक दो व्यक्ति जो शाप वश वृक्ष योनि में पड़े थे।

जरदरू—वि० [ फा० जर्दरू ] १. पीले मुख वाला २. लज्जित।

जलदस्यु—सं० पु० [ सं० ] समुद्री डाकू। समुद्री लुटेरा। ( पाइरेट )

जालिया—सं० पु० [ से० ] मल्लाह। धीवर। केवट।

जष्ट मुष्ट—सं० पु० [ सं० यष्टिमुष्टि ] लाठी और मुक्का।

जहूर—वि [ अ० जाहिर ] जो सबके सामने हो। प्रकट। प्रकाशित।

जाँचकता—सं० स्त्री [ सं० याचकता ] भीख माँगने का काम दरिद्रता।

जाउर—सं० स्त्री० [ हि० ] दूध में मीठा और चावल डाल कर पकाया हुआ पदार्थ। खीर। पायस।

जाखन—क्रि० वि० [ सं० यत्क्षण ] जिस समय। जब। सं० पु० पहिए के आकार का लकड़ी का गोल चक्कर जो कुवों की नींव में दिया जाता है। जमवट। नेवार।

जातरूप—सं० पु० [ सं० ] सुवर्ण। सोना।

जातवेद—सं० पु० [ सं० ] १. अग्नि। आग २. रवि। सूर्य। ३ परमेश्वर।

जादमा—सं० पु० [ सं० यादव ] यादव। यदुवंशी

जानपद—वि० [ सं० ] १. जनपद संबंधी। जनपद का। २. सारे देश से संबंध रखने वाला पर सैनिक और धार्मिक क्षेत्रों से भिन्न।

जालक—सं० पु० [ सं० ] १. जाल। २. कली। ३. समूह। ४. झरोखा। गवाक्ष। ५. एक प्रकार का मोती का हार। ६. घोसला। ७. अभिमान। गर्व।

जालिक—सं० पु० [ सं० ] १. मछु-

था। केवट।
२. बहेलिया। जाल फैलाने वाला।

जिति—सं० स्त्री० [सं०] किसी व्यवहार में जीत जाना। (डिक्री)

जितिपत्र—सं० स्त्री० (सं०) किसी व्यवहार में जीत जाने पर न्यायालय द्वारा प्राप्त होनेवाला विजय पत्र।

जीभी—सं स्त्री (हि० जीभ) १. धातु का वह पतला पत्तर, जिससे जीभ छील कर साफ करते हैं। २. कलम के आगे लगने वाली धातु का टुकड़ा जिससे लिखा जाता है। (निब)

जली—सं० स्त्री० (फा० जीर) धीमा शब्द। नीचा स्वर।

जीवधातु—सं० पु० [सं०] जीव जंतुओं और बनस्पतियों आदि के भौतिक रूप का मूल आधार। (प्रोटोप्लाज्म)

जीवनि—सं० स्त्री० [सं० जीवनी] १. संजीवनी बूटी। जिलाने वाली वस्तु। २. अत्यन्त प्रिय।

जीवा—सं० स्त्री० [सं०] १. वह सीधी रेखा जो किसी चाप के एक सिरेसे दूसरे सिरे तक हो। ज्या। २. धनुष की डोरी ३ भूमि। पृथ्वी। ४. जीविका।

जीवावशेष—सं० पु० [सं०] अत्यन्त प्राचीन काल के जीव जंतुओं तथा-बनस्पतियों आदि के वे अवशिष्ट रूप जो भूमि की खुदाई होने पर उसके भीतरी स्तरों में पाये जाते हैं। (फॉसिल)

जुटिका—सं० स्त्री० [सं०] १. शिखा। चुंदी। २. गुच्छा। लट।

जुमुकना—क्रि० अ० [सं० यमक] १. निकट आ जाना। पास आ जाना। २. जुटना। इकट्ठा होना।

जुरी—सं० स्त्री० [सं० जूर्ति] धीमा ज्वर। ज्वरांश। हरारत।

जुलोक—सं० पु० (द्युलोक) स्वर्ग। देवलोक।

जेष्ठ—सं० पु० [सं० ज्येष्ठ] १. जेठ मास। २. जेठ। पति का बड़ा भाई। वि अग्रजन्मा। बड़ा।

जेतिग—क्रि० वि० दे० 'जेतिक'।

जेन्य—वि० [सं०] १. उच्च कुल में उत्पन्न। २. जो बनावटी न हो। असली। सच्चा। (जेनुइन)।

जैत्र—सं० पु० [सं०] १. विजेता। विजयी। २. पारा। ३. औसध।

जैव—वि० [सं०] १. जीवन या जीव से संबंध रखने वाला। २. जीवों या उनके शारीरिक अवयवों से संबंध रखनेवाला। ३. जीवन शक्ति तथा शारीरिक अंगों से पूर्ण। (आर्गेनिक)

जोत—सं० स्त्री० [हि०] १. किसी की वह भूमि जिसपर जोतने बोने वाले को कुछ विशेष अधिकार मिल गये हों। (होल्डिंग)

जौर—सं० पु० [फा०] अत्याचार। अनीति।

ज्योतिरिंग—सं० पु० (सं०) जुगनूँ।

ज्वरी—सं० पु० दे० जुर्री।

ज्वारी—वि० (हि० जुआ) जुआड़ी। सं० पु० जवानी।

ज्वालक—सं० पु० [सं०] दीपक या लैंप का वह भाग जो बत्ती के जलने वाले अंश के नीचे रहता है। (बर्नर) वि० प्रज्वलित करने वाला।

## झ

झँकिया—सं० स्त्री० [हि० झाँकना] १. छोटी खिड़की। झरोखा। २. झँझरी। जाली।

झँगिया—सं० स्त्री० [देश०] छोटे बालकों के पहिनने का ढीला कुरता। झंगुली।

झंग्ग—सं० पु० [देश०] एक प्रकार का बाजा। झाँझ।

झंझार—सं० पु० [हि० झंझा] आग की वह लपट जिसमें से कुछ अव्यक्त शब्द के साथ धुआँ और चिनगारियाँ निकलें।

झईं—सं० स्त्री० [देश] अंधकार। अंधेरा।

झखिया—सं० स्त्री० [सं० झष] झख। मछली। मीन।

झझिया—सं० स्त्री० [देश०] फूटी हुई कौड़ी।

झपका—सं० पु० [अनु०] हवाका झोंका। झपटा

झपनी—सं० स्त्री० [देश] १. ढकना। २. पिटारी। ३. झपकी। नींद।

झबिया—सं० स्त्री० [देश०] सोने चाँदी की छोटी छोटी कटोरी जो बाजूबंद, हुमेल, झुमके आदि गहने में पिरोई रहती हैं।

झमकड़ा—सं० पु [देश] १. झनझनाहट।

झमझमाना—क्रि० अ० [अनु०] १. झम झम शब्द होना। २. चमचमा-

ना। चमकना।

झरनी—वि०[ देश० ] झरनेवाली। गिरानेवाली। सं० स्त्री०—चलनी।

झल्लक—सं० पु०[ सं० ] काँसे का बना हुआ करताल। झाँझ। मजीरा। जोड़ी।

झारि—सं० स्त्री० दे 'झार'।

झिंझिया—सं० स्त्री० [ अनु० ] छोटे छोटे छेदोंवाला वह घड़ा जिसमें दीपक जला कर क्वार के महीने में लड़कियाँ घुमाती हैं।

झिझक—सं० स्त्री०[ देश० ] हिचक। किसी काम के करने में होनेवाला संकोच।

झिरझिर—क्रि० वि० [ अनु० ] १. मंद मंद। धीरे धीरे। २. झिर झिर शब्द के साथ।

झुनझुनियाँ—सं० स्त्री० [ अनु० ] १. पैर में पहिनने का एक आभूषण। २ बेड़ी। निगड़।३. सनई का पौधा।

झुमरी—सं० स्त्री० [ देश० ] १. काठ की मुँगरी। २. गच पीटने का एक औजार। ३. ( हि० झमकी ) झुंड। टोली।

झूरि—वि० [देश०] कृश। दुर्बल। दुखी।

## ट

टंकक—सं० पु० [सं०] १. चाँदी का सिक्का या रुपया। २. टाइप करने वाला।

टँकाना—क्रि० स० [ सं० टंक ] सिक्कों का परखना। सिक्कों की जाँच करना।

टंकिका—सं० स्त्री० [ सं० ] पत्थर काटने का औजार। टाँकी। छेनी।

टँकौरी— [ सं० टंक ] सोना चाँदी आदि को तौलने का छोटा तराजू।

टंग—सं० पु० [ सं० ] १. टाँग। २. कुल्हाड़ी। ३ कुदाली। ४. सुहागा।

टँड़िया—सं० स्त्री० [ स० ताड ] अनंत के आकार का पर उससे भारी और बिना घुंडी का एक प्रकार का गहना जो बाहों में पहिना जाता है।

टकहाई—सं० स्त्री० [ देश० ] अत्यन्त निम्न भिक्षावृत्ति।

वि० टकेटके पर तन बेंचने वाली स्त्री।

टकाटकी—सं० स्त्री० [ देश० ] टकटकी। स्थिर दृष्टि।

टकी—सं० स्त्री० दे 'टकटकी'।

टकौरी—सं० स्त्री० [सं० टंक] सोना आदि तौलने का छोटा तराजू। छोटा काँटा।

टटिया—सं० स्त्री० [ सं० स्थात्री ] बाँस की फट्टियों, घास फूस और सरकंडों से बनाया गया वह ढाँचा जो आड़, ओट या रक्षा के लिए द्वार, बरामदे या खिड़कियों पर लगाया जाता है।

टहटहा—वि० [ हि० टटका ] १. ताजा। टटका। २. खिला हुआ। ३. प्रसन्न।

टाठी—सं० स्त्री० [ सं० स्थाली ] थाली।

टेउ—सं० स्त्री० [ देश० ] टेव। आदत। स्वभाव।

टेकड़ी—सं० स्त्री० [ हि० टेक ] १. टीला। ऊँचा धुस्स। २. छोटी पहाड़ी।

टैना—सं० पु० [ देश० ] घास का पुतला, या डंडे पर रखी हुई काली हांड़ी, जिसे खेतों में पशुओं पक्षिओं को डराने के लिए रखते हैं। मूढ़। धोखा।

टोनहाई—सं० स्त्री० [ हि० टोना + हाई ( प्रत्य० ) ] १. टोना करने वाली। जादू करने वाली। २. मन्त्र और झाड़ फूँक करने वाली।

## ठ

ठगहाई—सं॰ स्त्री॰ [ हि॰ ठग ] ठगी । धूर्तता ।

ठगाठगी—सं॰ स्त्री॰ ( हि॰ ठठा ) धोखेबाजी । वंचकता । धोखाधड़ी ।

ठठुकना—क्रि॰ अ॰ ( हि॰ ठिठक ) १ रुक रुक कर चलना । २। चलते चलते रुक जाना । ठिठकना । १२

ठुनकना—क्रि॰ अ॰ ( अनु॰ ) १. बच्चों का रह रह कर रोने का सा शब्द निकालना । २. रोने का नखरा करना ।

ठेपी—सं॰ स्त्री॰ (देश) डाट । काग ।

## ड

डँकौरी—सं॰ स्त्री॰ [ हि॰ डंग + औरी ] भिड़ । बर्रै । ततैया । हड्डा ।

डिंब—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] जीव जंतुओं में स्त्री जाति का वह जीवाणु जो पुरुष जाति के वीर्य के संयोग से नये जीव या प्राणि का रूप धारण कर लेता है ।

डिंबाशय—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] स्त्री जाति के जीवों में वह भीतरी अंग जिस में डिंब रहता या उत्पन्न होता है ।

डूँगा—सं॰ पु॰ [ सं॰ द्रोण ] १. चम्मच । २। एक प्रकार की नाव ।

डेउढ़ी—सं॰ स्त्री॰ [ सं॰ देहली ] ड्योढ़ी । देहली ।

डौलना—सं॰ पु॰ [ हि॰ डौल ] उपाय । प्रयत्न । युक्ति । ब्योंत ।

डौल डाल—क्रि॰ सं॰ [ हि॰डौल ] गढ़ना किसी वस्तु को काट छाँट कर किसी ढाँचे पर लाना ।

## ढ

ढँढरच—सं॰ पु॰ [ हि॰ ] ढंग रचना । धोखा देने का आयोजन । पाखंड । बहाना । हीला ।

ढिलढिला—वि॰ [ हि॰ ढीला ] १ ढीला ढाला । २. पानी की तरह पतला । तरल ।

ढीमड़ो—सं॰ पु॰ ( देश ) कूप । कुआँ ।

ढूँका—सं॰ पु॰ [ हि॰ ढूँकना ] किसी बात या वस्तु को गुप्त रूप से सुनने या देखने के लिये ओट में छिपने का कार्य ।

ढौकन—सं॰ पु [ सं॰ ] १. घूस । रिश्वत । २. उपहार ।

## त

तँई—अव्य॰ दे॰ तईं ।

तंक—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] १. भय । डर । आतंक । २. प्रिय वियोग से होने वाला दुःख । ३. टाँकी । छेनी ।

तंडक—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] १. खंजन पक्षी । २. फेन ।

तंतुर—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] १. कमल की डंठल । मृणाल २. कमल की जड़ । भसींड़ ।

तवाँर—( तवाँरी ) सं॰ स्त्री॰ [हि॰] १. सिर में आने वाला चक्कर । घुमटा । २. हरारत । ज्वरांश ।

तगड़ी—सं॰ स्त्री॰ दे॰ 'तागड़ी' वि॰ मोटी । स्वस्थ ।

तड़कीला—वि॰ [ हि॰ तड़कना + ईला (प्रत्य॰) ] १. चमकीला । भड़कीला । २. तड़कने वाला । ३. चुस्त । फुरतीला ।

तत्वावधान—सं॰ स्त्री॰ [ सं॰ ] देख-रेख । जाँच पड़ताल । निरीक्षण ।

तदनु—क्रि० वि० [सं०] उसके पीछे। तदनंतर। उसके अनुसार। २. उसी तरह। वैसा ही।
तनक—वि० [सं० तनु] १. थोड़ा। अल्प। २. छोटा।
तनतना—सं० पु० [हि० तनतनाना या अ० तनतनः] १. रोब दाब। दबदबा। २. क्रोध। तिनक। गुस्सा।
तनपोषक—सं० पु० [हि० तन + पोषक] जो केवल अपने ही शरीर या लाभ का ध्यान रखे। स्वार्थी
तनाऊ—सं० पु० देखो 'तनाव'।
तनुरुह—(तनूरुह) सं० पु० [सं०] १. रोआँ। रोम
तनोज—सं० पु० [सं० तनूज] १. रोम। लोम। रोआँ। २. पुत्र।
तपु—सं० पु० [सं० तपुस्] १. अग्नि। आग। २. सूर्य। रवि। ३. शत्रु। ४. तप।
वि० तप्त। उष्ण।
तपेला—सं० पु० [देश०] वह पात्र जिसमें किसी वस्तु को रख कर गरम किया जाता है।
तमस्विनी—सं० स्त्री० [सं०] रात्रि। रात। हल्दी।
तरंगक—सं० पु० [सं०] १. पानी की लहर। हिलोर। २. स्वरलहरी।
तरंड—सं० पु० [सं०] १. नाव। नौका। २. मछली मारने की डोरी में लगी हुई छोटी सी लकड़ी। ३. नाव खेने का डांडा।
तरपन—सं० पु० दे० 'तर्पण'।
तरवन—सं० पु० दे० 'तरिवन'।
तरीकत—सं० स्त्री० [अ० तरीकत] १. रास्ता। मार्ग। २. आचरण। ३. हृदय की शुद्धता।
तर्कणा—सं० स्त्री० [सं०] विचार। विवेचना। ऊहा। २. युक्ति। दलील।
तर्णक—सं० पु० [सं०] तुरंत का जन्मा हुआ गाय का बच्चा। २. शिशु
तर्ष—सं० पु० [सं०] १. अभिलाषा। २ तृष्णा। असंतोष। ३. बेड़ा। ४ समुद्र। ५. सूर्य।
तलिन—वि० [सं०] १. दुबला। क्षीण। २. अलग अलग। विरल। ३. थोड़ा। कम। ४. स्वच्छ। साफ।
सं० स्त्री० [सं०] शय्या। पलंग।
तलीय—वि० [सं०] १. तल, पेंदे या नीचे के भाग से संबन्ध रखने वाला। २. ऊपरी अंश के हटने, दे देने आदि से नीचे का बचा हुआ अंश। (रेसिडुअरी)
तल्ल—सं० पु० [सं०] बिल। गड्ढा। २. ताल। पोखरा।
ताँतड़ी—सं० स्त्री० [हि० ताँत] ताँत। रस्सी।
ताँवरी—सं० पु० [सं०] १. ताप। ज्वर। हरारत। २. जूड़ी। ३ मूर्छा। घुमटा। चक्कर।
तानता—सं० स्त्री० [सं०] वह गुण या शक्ति जिससे वस्तुएँ या उनके अंग आपस में दृढ़ता पूर्वक सटे जुड़े या मिले रहते हैं। (टेनेसिटी)।
तापक्रम—सं० पु० [सं०] किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अवस्थाओं में घटता बढ़ता रहता है।
तापक्रमयंत्र—सं० पु० [सं०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या पदार्थ के घटने या बढ़ने वाले ताप क्रम का पता चलता है (बैरोमीटर)
तापतरंग—सं० पु० [सं०] ग्रीष्म ऋतु में चलनेवाली उष्ण वायु जो कुछ विशिष्ट प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न हो कर किसी दिशामें बढ़ती है (हीट वेव)
तापमान—सं० पु० [सं०] किसी पदार्थ अथवा शरीर की गर्मी की नाप।
तालवृंत—सं० पु० [सं०] ताड़ के पत्ते से बना हुआ पंखा।
तिगना—क्रि० स० [देश०] देखना। नजर डालना। भाँपना।
तिघरा—सं० पु० [सं० त्रिघट] मिट्टी का चौड़े मुँह का बर्तन। मटकी।
तितीर्षा—सं० स्त्री० [सं०] १. तैरने की इच्छा। २. मोक्ष पाने की इच्छा।
तिनूका—सं० पु० दे० 'तिनका'।
तिम—सं० पु० [हि० डिंडिम] नगारा। डंका। दुंदुभी।
तिमाना—क्रि० सं० [देश०] भिगोना। तर करना।
तिमिष—सं० पु० [सं०] ककड़ी। फूट। २. सफेद कुम्हड़ा। पेठा। ३. तरबूज।
तिरकस—वि० [सं० तिरस] टेढ़ा। वक्र।
तिरकाना—सं० पु० [?] १ ढीला छोड़ना। २. रस्सी ढीली करना। लहासी छोड़ना।
तिरखावंत—वि० [सं० तृषावंत] १. प्यासा हुआ। २. लालायित।
तिरफला—सं० पु० दे० 'त्रिफला'।
तिरवाह—सं० पु० [सं० तीरवाह] नदी के किनारे की भूमि।
क्रि० वि०—किनारे किनारे। तटसे।
तिरस्करिणी—सं० स्त्री० [सं०] १. ओट। आड़। २. परदा। कनात। चिक। ३. एक प्रकार की विद्या जिसके द्वारा मनुष्य अदृश्य हो सकता है।

तिरस्क्रिया—सं० स्त्री० [ सं० ] १. तिरस्कार। अनादर। २. आच्छादन। ३. वस्त्र। पहनावा।
तिरास—सं० पु० दे० 'त्रास'।
तिरासना—क्रि० सं० [ सं० त्रासन ] त्रास दिखाना। डराना। भयभीत करना।
तिरोधायक—सं० पु० [ सं० ] आड़ करने वाला। छिपाने वाला। गुप्त करने वाला।
तीर्ण—वि० [ सं० ] १. जो पार हो गया हो। उत्तीर्ण। २. जो सीमा का उल्लंघन कर चुका हो। ३. जो भींगा हुआ हो। ४. विधान सभा या किसी भी सभा में किसी प्रस्ताव का स्वीकृत हो जाना।
तीर्थिक—सं० पु० [ सं० ] तीर्थ का ब्राह्मण। पंडा। २. बौद्धों के अनुसार बौद्ध धर्म का विद्वेषी ब्राह्मण।
तुंडिका—सं० स्त्री० [ सं० ] १. टोंटी। २. चोंच। ३. बिंबाफल। कुदुरू।
तुक्कड़—सं० पु० [ हि० तुक + अक्कड़ ] तुक जोड़ने वाला। तुकबन्दी करने वाला। भद्दी कविता बनाने वाला।
तुफान—सं० पु० दे० 'तूफान'
तूर्य—सं० पु० [ सं० ] तुरही। सिंघा।
तुलापत्र—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिसमें आय-व्यय, बचत, लाभ आदि का लेखा लिखा रहता है। ( बैलेन्स-शीट )
तुषार-रेखा—सं० स्त्री० [ सं० ] पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा जिसके ऊपरी भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है और नीचे के भाग का बरफ गरमी के दिनों में गल जाता है। ( स्नो-लाइन )
तृषालु—वि० [ सं० ] प्यासा। पिपासित। तृषित। तृषार्त।
तृष्णालु—वि० [ सं० ] १. प्यासा। २. लालची। लोभी।
तेजस्कर—सं० पु० [ सं० ] तेज बढ़ाने वाला।
तैक्त—सं० पु० [ सं० ] तिक्त का भाव। तीतापन। चरपराहट। तिताई।
तैक्ष्ण्य—सं० पु० [ सं० ] तीक्ष्णता। तीखापन।
तैलिक—सं० पु० [ सं० ] तिलों से तेल निकालने वाला। तेली। वि० तेल संबंधी।
यौ०-(यंत्र)कोल्हू। तेल पेरने का यंत्र।
त्रिवर्ग—सं० पु० [ सं० ] धर्म, अर्थ और काम का समूह।
वि० तीन वस्तुओं का समूह।
त्रिनाभ—सं० पु० [ सं० ] विष्णु।
त्रिपत्र—सं० पु० [ सं० ] १. बेल का वृक्ष जिसके पत्ते एक साथ तीन तीन लगे होते हैं। २. पलाश का वृक्ष। ३. तुलसी, कुंद और बेल के पत्तों का समूह।
त्रिपुटी—सं० स्त्री० [ सं० ] तीन वस्तुओं का समूह। जैसे-ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय।
त्रिशूली—सं० पु० [ सं० ] त्रिशूल को धारण करने वाले। शंकर।
त्रिस्रोता—सं० स्त्री० [ सं० त्रिस्रोतस ] गंगा। जाह्नवी।
त्रैकोणिक—वि० [ सं० ] तीन कोण वाला। तिपहला।
त्रोटी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. टोंटी। टूँटी। २. चिड़िया की चोंच।
त्विषा—सं० स्त्री० [सं०] १. प्रभा। दीप्ति। २. किरण।

## थ

थँइ—सं० स्त्री०-( हि० ठाँव ) १. स्थान ठाँव। जगह। २. ढेर। अटाला।
थकरी—सं० स्त्री० ( दे० ) स्त्रियों के बाल झाड़ने की कूँची।
थत्ती—सं० स्त्री० ( हि० थाती ) ढेर। राशि। अटाला।
थपड़ी—सं० स्त्री० [ अनु० थपथप ] दोनो हथेलियों को एक दूसरे से टकरा कर ध्वनि उत्पन्न करने की क्रिया। ताली।
थरहरी—सं० स्त्री० [ हि० थरथराना ] भय के कारण होने वाली कँपकँपी।
थाई—वि० [ सं० स्थायी ] स्थिर रहने वाला। बना रहने वाला।
सं०पु०-१. बैठने की जगह। चौपाल। अथाई। २. गति का प्रथम पद। टेक। ३. स्थायी भाव।
थानक—सं०पु० [०सं० स्थानक] १. स्थान। जगह। २. नगर। ३.थाला। आलबाल। ४. फेन। बबूला।

थुथाना—क्रि० अ० [ हि० थूथन ] मुँह फुलाना । नाराज होना ।
थुनी—सं० स्त्री० [ सं० स्थूण ] थूनी । खंभा । चाँड़ ।

थुरना—क्रि० स० [ सं० थर्वण ] १. कूटना । २. मारना । पीटना ।
थुली—सं० स्त्री० [ सं० स्थूल । हि० थूला ] किसी अन्न को दलने पर उससे होने वाले मोटे कण । दलिया ।
थूथरा—वि० [ देश० ] थूथन जैसा निकला हुआ मुख । बुरा चेहरा । भद्दा । कुरूप ।

## द

दंगैत—वि० [ हि० दंगा + ऐत ] दंगा करने वाला । उपद्रवी । बागी ।
दंडाधिकारी—सं० पु० [ सं० ] वह राजकीय अधिकारी जिसे अपराधिक अभियोगों का विचार करने और अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है । ( मजिस्ट्रेट )
दंदारू—सं० पु० [ हि० दंद + आरू ] (प्रत्यय०) छाला । फफोला ।
दंष्ट्रा—स० पु० [ सं० ] मोटे दाँत । स्थूल दाँत । दाढ़ । चौभर ।
दक्षिण गोल—सं० पु० [ सं० ] विषुवत रेखा से दक्षिण पड़ने वाली राशियाँ तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन ।
दक्षिणपक्ष—सं० पु० [ सं० ] आधुनिक राजनीति का वह मार्ग जो साधारण और वैधानिक ढंग से विकास चाहता हो और उग्र उपायो द्वारा परिवर्तन का विरोधी हो । ( राइट विंग )
दक्षिणाचार—सं० पु० [ सं० ] १. सदाचार । शुद्ध और उत्तम आचरण । २. तान्त्रिकों में एक प्रकार का आचार, जिसमें अपने आप को शिव मान कर पंचतत्वों से शिव की पूजा की जाती है ।
दगरी—सं० स्त्री० [ ? ] बिना मलाई या साढ़ी वाला दही ।

दत्तविधान—सं० पु० [ सं० ] किसी के लड़के को दत्तक के रूप में अपना लड़का बनाना । गोद लेना ( एडाप्शन )
दपट—सं० स्त्री० [ हि० डाँट के साथ अनु० [घुड़की] । डपट । चपेट
दबार—सं० पु० [ देश० ] १. लेखक । मुंशी । २. एक प्रकार के महाराष्ट्र ब्राह्मणों की उपाधि ।
दबैल—वि० [ हि० दबना + ऐल (प्रत्य०) ] जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो । प्रभाव में पड़ा हुआ । अधीन । जो बहुत डरता या दबता हो । दब्बू ।
दभ्र—वि० [ सं० ] अल्प । कम । न्यून ।
दमनी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. एक प्रकार का पौधा जिसे अग्नि दमनी भी कहते हैं । २. संकोच । लज्जा ।
दमान—सं० पु० [ देश० ] दामन । नाव के पाल में बँधी हुई चादर ।
दय—सं० पु० [ सं० ] दया । कृपा । करुणा ।
दयावीर—सं० पु० [ सं० ] वह जो दया करने में वीर हो । साहित्य में वीर-रस के चार भेदों में से एक भेद ।
दरकच—सं० स्त्री० [ ? ] वह चोट जो जोर से रगड़ या ठोकर खाने से लगे । २. कुचल जानेसे लगने वाली चोट ।
दरिद्—सं० पु० [ सं० दारिद्र्य ] १. कंगाली । निर्धनता । गरीबी । वि० कंगाल । निर्धन ।
दर्शन प्रतिभू—सं० पु० [ सं० ] वह प्रतिभू या जमानत दार जो इस बात की जिम्मे दारी लेता है कि अभियुक्त अमुक समय पर न्यायालय में उपस्थित होजायगा । ( श्योरिटी फॉर एपीयरेन्स )
दलित वर्ग—सं० पु० [सं०] समाज का वह वर्ग जो दुखी और दरिद्र हो तथा समाज के अन्य वर्ग के लोग उन्हें उठने न दे रहे हों ।
दवाग्नि—सं० स्त्री० [ सं० दावाग्नि ] जंगलों में लगने वाली आग । दावानल ।
दाँतना—क्रि० अ० [ हि० दाँत ] १. दाँत वाला होना । जवान होना । ( पशुओं के लिए ) २. किसी हथियार का बीच बीच से कट कर मुड़ जाना ।
द्राक्ष शर्करा—सं० स्त्री० [ सं० ] दाख या अंगूर से निकाली हुई चीनी । ( ग्ल्यूकोज )
दानादेश—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र या आदेश जिसके अनुसार किसी को कुछ दिया जाता या कोई

देन चुकाया जाता है। पेमेंटआर्डर

दानिया—सं० पु० [ हि० ] १. दान देने वाला। दाता। २. कर लेने वाला। महसूल उगाहने वाला।

दामक—सं० पु० [ सं० ] १. गाड़ी के जुए की रस्सी। २. लगाम। बागडोर।

दामनी—सं० स्त्री० [ सं० ] रज्जु। रस्सी।

सं० स्त्री० [फा०] वह चौड़ा कपड़ा जो घोड़ों की पीठ पर डाला जाता है।

दायित—वि० [ सं० ] दिया हुआ। दान किया हुआ।

दारद्—सं० पु० [ सं० ] १. दरद देश में पैदा होने वाला एक प्रकार का विष। २. पारा। ३. ईंगुर।

वि० (फा०) दर्द देनेवाला। पीडक।

दिग्ध—सं० पु० [ सं० ] १. विषाक्त बाण। २. तेल। ३ अग्नि।

वि० [ सं० ] १. विषाक्त। २. लिप्त। ३. लंबा। बड़ा।

दिनांक—सं० पु० [ सं० ] गिनती के विचार से महीने का कोई दिन। तारीख।

दिनातीत—वि० [ सं० ] आज कल की रुचि या प्रचलन के विचार से पिछड़ा हुआ, जिसकी अब चलन या उपयोगिता न हो। ( आउट आफ डेट )।

दिनाप्त—वि० [ सं० ] आज कल की रुचि उपयोगिता या प्रचलन के अनुसार। ( अपटुडेट )।

दिवारी—सं० स्त्री० [सं० दीपावली] दिवाली। दीपावली।

दिवा-स्वप्न—सं० पु० [ सं० ] दिन के समय जागते रहने पर भी स्वप्न देखने के समान तरह तरह की असंभव कल्पनाएँ करना। ( डे-ड्रीम )

दीप-स्तंभ—सं०पु० [ सं० ] १. वह स्तंभ जिसके ऊपर दीपक जलाया जाय। २. जलयानों को बाधापूर्ण मार्ग या बाधाओं की ओर संकेत करनेवाला समुद्र में बना हुआ स्तंभ। ( लाइट हाउस ).

दीर्घा—सं० स्त्री० [ सं० ] १. आने जाने के लिए कोई लंबा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग। २. किसी भवन के अंदर कुछ ऊँचाई पर दर्शकों आदि के बैठने के लिए बना हुआ छायादार स्थान। ( गैलरी )

दीवला—सं० पु० [ हि० दीवा + ला ( प्रत्य० ) दीपक। दीया।

दुंका—सं० पु० [ सं० स्तोक ] १. छोटा कण। ( अनाज का ) कन। दाना।

दुबराई—सं० स्त्री० [ हि० दुबरा + ई ] ( प्रत्य० ) १. दुर्बलता। कृशता। २. अशक्तता। निर्बलता।

दुपटी—सं० स्त्री० [ हि० दुपटा ] चादर। दुपट्टा। छोटी चादर।

दुरालाप—सं० पु० [ सं० ] १. बुरा-बचन। बुरी बात-चीत। २. गाली। वि० दुर्वचन कहने वाला। कटु-भाषी।

दुरिष्ट—सं० पु० [ सं० ] १. पाप। पातक। २. मारण, मोहन, उच्चाटनादि के लिये किया गया अनुष्ठान।

दुरोदर—सं० पु० [सं०] १. जुआरी। २. जुआ। ३. पासे की खेल।

दुर्ग्रह—वि० [ सं० ] जिसे कठिनता से पकड़ सकें। २. कठिनाई से समझ में आने वाला।

दुर्नय—सं० पु० [ सं० ] १. कुनीति। बुरी चाल। नीति विरुद्ध आचरण। २. अन्याय। अनीति।

दुर्निरीक्ष्य—वि० [ सं० ] १. जिसे देखते न बने। २. भयंकर। ३. कुरूप।

दुर्भर—वि० [ सं० ] १. जिसे उठाना कठिन हो। जो लादा न जा सके। २. भारी। गुरु।

दुर्मर—वि० [ सं० ] १. जो सहज में न मरे। २. जो उन्नति, सुधार अथवा उदार विचारों का घोर विरोधी हो। ( डाई हार्ड )

दुस्त्यज—वि० [ सं० दुस्त्याज्य ] जो कठिनाई से छोड़ा जा सके। जिसका त्याग करना कठिन हो।

दुहनि—सं० स्त्री० [ सं० दुहिता ] कन्या। कुमारी।

दृखत—सं० पु० [ सं० दृषत ] पत्थर। पाषाण। पाहन।

दृत—वि० [ सं० ] सम्मानित। आदृत।

दृषत्—सं० स्त्री० [ सं० ] १. शिला। पर्वत की चट्टान। २. सिल। पट्टी। ३. पत्थर।

दृश्यालेख्य—सं० पु० [ सं० ] किसी घटना आदि के घटने के स्थान का रेखा चित्र। ( साइट-प्लान )

देउ—सं० पु० [ सं० देव ] देवता। देव।

क्रि० स०-देना क्रिया का विधि रूप। दो।

देवमास—सं० पु० [ सं० ] १. गर्भ का आठवाँ मास। २. देवताओं का महीना जो मनुष्यों के तीस वर्ष के समान होता है।

देहांतर—सं० पु० [ सं० ] १. दूसरा शरीर। २. दूसरे शरीर की प्राप्ति। जन्मांतर। ३. मृत्यु। मरण।

द्वारप—सं० पु० [ सं० ] १. द्वार पाल। २. विष्णु।

द्वितक—सं० पु० [ सं० ] किसी दी जाने वाली रसीद, सूचना-पत्र इत्यादि की वह प्रतिलिपि जो अपने पास रखी जाती है। ( डुप्लीकेट )

द्वितीयक—वि० [ सं० ] जिसका स्थान सबसे पहले वाले के बाद हो। दूसरे स्थान का। ( सेकंडरी )

द्विपक्षी—वि० [ सं० ] १. दो पक्षों या पार्श्वों से संबंध रखने वाला। २. दो पक्षों या दलों में होने वाला।

द्वैमिथ—वि० [ ? ] दोनों।

## ध

धंगर—सं० पु०-[ देश० ] चरवाहा। गोपाल। ग्वाला। अहीर।

धँधाला—सं० स्त्री० [ हि० धंधा ] कुटनी। दूती।

धँसनि—सं० स्त्री० [ हि० धँसना ] दे० 'धँसनि'।

धगरिन-धगरी—सं० स्त्री० [ सं० धातृ ] बच्चों का नाल काटने वाली दाई।

धटी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. चीर। कपड़े की धज्जी। २. कौपीन। लंगोटी। ३. गर्भाधान के बाद स्त्रियों को पहिनने को दिया जाने वाला वस्त्र।

धन्या—वि० स्त्री० [ सं ] प्रशंसनीया। पुण्यशीला। सं० स्त्री० १. उपमाता। २. वनदेवी। ३. धनियाँ।

धपाना—क्रि० स० [हि० धपना] १. दौड़ाना। २. इधर उधर फिराना। घुमाना। सैर कराना। टहलाना।

धमना—क्रि० सं० [ सं० धमन ] १. धौंकना। २. फूँकना। ३. नल आदि में हवा भर कर वेग से छोड़ना।

धमसा—सं० पु० [ देश० ] धौंसा। नगाड़ा। दमामा।

धमारिन—सं० पु० [ हि० धमार ] एक प्रकार का राग। होली।

धाड़स—सं० स्त्री० दे० 'ढाढ़स'।

धातुमल—सं० पु० [ सं० ] खनिज पदार्थों या धातुओं को गलाने पर उनमें से निकलनेवाली मैल या कीचड़। ( स्लैग )

धारणी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. नाड़िका। नाड़ी। २. श्रेणी। पंक्ति। ३. पृथ्वी। धरा।

धारयित्री—सं० स्त्री० [ सं० ] धारण करने वाली। पृथ्वी। भूमि।

धिषण—सं० पु० [ सं० ] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. नारायण। ४. गुरु।

धिषणा—सं० स्त्री० [ सं० ] बुद्धि। मति। २. स्तुति। ३. वाक्शक्ति। ४. पृथ्वी।

धींगरा—सं० पु० [ सं० डिंगर ] दे० 'धींगड़ा'।

धीति—सं० स्त्री० [ सं० ] १. पान करने की क्रिया। पीना। २. प्यास।

धुमारा—वि० [ सं० धूम्र + आया ] (प्रत्य०) धूयें के रंग का। धूमिल।

धूक—सं० पु० [ सं० ] १. वायु। हवा। २. धूर्त। ३. काल। मृत्यु।

धूँधौ—क्रि० सं० [ हि० धूँधना ] ठगना। धोखा देना।

धूमजात—सं० पु० [ सं० धूम्रजात ] बादल। मेघ।

धूमाभ—वि० [ सं० ] धुयें के रंग जैसा। धुँधला। ३. मलिन।

धूर्धर—सं० पु० [ सं० ] बोझ ढोने वाला। भारवाहक।

धूरी—सं० स्त्री० [ सं० ] रथ का अगला भाग।

धूलिका—सं० स्त्री० [ सं० ] महीन जलकणों की झड़ी। कुहरा। कुहासा।

## न

नंदन—सं० पु० [ सं० ] १. बेटा। २. राजा। ३. मित्र।

नदनु—सं० पु० [ सं० ] १. मेघ। बादल। २. सिंह। शेर। ३. शब्द। ध्वनि।

नक्तचर—सं० पु० [ सं० ] रजनीचर। राक्षस। २. उल्लू पक्षी। ३. चोर। ४. बिल्ली।

नक्तांध—सं० पु० [ सं० ] जिसे रात को दिखाई न देता हो। जिसे रतौंधी आती हो।

नक्षत्रमाल—सं० स्त्री० [ सं० ]२७ मोतियों के दाने वाली माला। २. तारों की पंक्ति।

नखकुट्ट—सं० पु० [ सं० ] हजाम। नाई।

नगर-विवाद—सं० पु० [ सं० ] दुनियाँ के झगड़े बखेड़े। संघर्ष।

नगौक—सं० पु० [ सं० नगौकस ] १.पक्षी। चिड़िया २.सिंह। व्याघ्र। ३.काक। कौआ।

नग्रोध—सं० पु० [ सं० न्यग्रोध ] वट वृक्ष। बड़ का पेड़।

नटकनि—सं० स्त्री० [ देश० ]१. नृत्य। नाँच। २. वेशभूषा। ३. चाल-ढाल।

नतरक—क्रि० वि० [ हि० न + तो ] नहीं तो।

नतांगी—सं० स्त्री० [सं०] १.स्त्री। औरत। २. पतली कमर वाली औरत। लजालु स्त्री।

नतोदर—वि० [ सं० ] जिसका ऊपरी भाग या तल कुछ नीचे या अंदर की ओर दबा या झुका हो।

नत्वर्थक—वि० [ सं० ] १.जिसमें किसी बात का अस्तित्व न माना गया हो। २.जिसमें कोई प्रस्ताव या सुझाव मान्य न किया गया हो। (निगेटिव)

नदीमातृक—सं० पु० [ सं० ] वह देश जहाँ का कृषि संबंधी कार्य केवल नदी के जल से होता हो।

नभःप्राण—सं० पु० [ सं० ] वायु। हवा।

नभसरित—सं० स्त्री० [ सं० ] आकाश गंगा। क्षीरपथ। उडर।

नम्रक—सं० पु० [ सं० ] बेंत। वानीर।

नरपुर—सं० पु० [सं०] १.नरलोक। भूलोक। २.पृथ्वी। ३.संसार।

नलकूप—सं० पु० [ हि० नल + सं० कूप ] भूमि के भीतर से पानी निकालने का यंत्र विशेष जिसका एक सिरा जलतल तक पहुँचा होता है। (ट्यूब वेल)

नवद्वार—सं० पु० [ सं० ] शरीर के नव छिद्र जिन्हें शरीर का द्वार कहते हैं। जैसे, दो आँखें, दो कान, दो नाक, एक मुख, एक गुदा, एक लिंग या भग।

नवनी—सं० स्त्री० [ सं० ] मक्खन।

नसीनी—सं० स्त्री० [सं० निःश्रेणी] निसेनी। सीढ़ी। जीना।

नसीला—वि० [ हि० नस + ईला (प्रत्य०) ] नशादार। नसोंवाला। वि० दे० 'नशीला'।

नाइ—सं० पु० [ सं० नाम ] नाम। नाँव।

नाकनटी—सं० स्त्री० [ सं० ] स्वर्ग की नर्तकी। अप्सरा।

नाकारो—वि० [फा० नाकारा] बुरा। खराब। निकम्मा।

नाकु—सं० पु० [ सं० ] दीमक की मिट्टी का ढूह। विमौट। २. भीटा। टीला। ३.पहाड़। पर्वत। ४.[सं० नाक] १.स्वर्ग। २. नासिका।

नाकेश—सं० पु० [ सं० ] इन्द्र। देवराज।

नागचूड़—सं० पु० [ सं० ] शिव। शंकर।

नागदंत—सं० पु० [ सं० ] १. हाथी का दाँत। २.दीवार में गड़ी हुई खूँटी

नागर-युद्ध—सं० पु० [ सं० ] किसी राष्ट्र के नागरिकों में होने वाला आपसी युद्ध। ( सिविल वार )

नागर-विवाह—सं० पु० [ सं० ] धार्मिक बंधनों से रहित विशुद्ध नागरिक की हैसियत से न्यायालय की स्वीकृति द्वारा होने वाला विवाह। ( सिविल मैरेज )

नागरीट—सं० पु० [ सं० ] १.लंपट। व्यभिचारी। २. जार।

नागर्य—सं० पु० [ सं० ] १.नागरिकता। २.चतुराई। बुद्धिमत्ता।

नागांतक—सं० पु० [ सं० ] १.गरुड़। २.मयूर। मोर। ३.सिंह।

नाड़ी व्रण—सं० पु० [ सं० ] वह घाव जिस में भीतर ही भीतर नली की तरह छेद हो जाय और उसमें से बराबर मवाद निकला करे।

नातवान—वि० [ फा० नातवाँ ] दुर्बल। क्षीण। कमजोर।

नाफुरमा—वि० [ फा० नाफरमा ] आज्ञा न मानने वाला।

नामलेवा—सं० पु० [ हि० नाम + लेवा ] १. नाम लेने वाला। नामस्मरण करने वाला। २. उत्तराधिकारी। संतति।

नामांक—सं० पु० [ सं० ] किसी तालिका में आये हुए बहुत से नामों में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक। ( रोलनंबर )

**नामांकन**—सं० पु० [ सं० ] वि० [ नामांकित ] किसी कार्य विशेषतः किसी प्रकार के निर्वाचन में संमिलित होने के लिये किसी का नाम लिखा जाना। नाम जदगी। ( नामिनेशन )

**नामांतरण**—सं० पु० [ सं० ] किसी संपत्ति पर से एक अधिकारी का नाम हटा कर उसकी जगह अन्य का नाम लिखा जाना। ( म्यूटेशन )

**नामनिवेश**—सं० पु० [ सं० ] किसी विशेष कार्य के लिए किसी बही या नामावली में किसी का नाम लिखा जाना। ( एनरोलमेंट )

**नामपट्ट**—सं० पु० [ सं० ] वह पट्ट जिस पर किसी व्यक्ति, दूकान, या संस्था का नाम तथा स्थान लिखा रहता है। ( साइन बोर्ड )

**नामिक**—वि० [ सं० ] जो केवल नाम के लिये या संकेत रूप में हो। नाम भर का। ( नॉमिनल )

**नाय**—सं० पु० [ हिं० ] नय। नीति। २. उपाय। युक्ति। [ सं० ] नेता। अगुआ।

**नारा**—सं० पु० [ अ० नअरा ] किसी विशेष सिद्धांत, पक्ष या दल का वह घोष जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए होता है। ( स्लोगन )

**नावाधिकरण**—सं० पु० [सं० किसी राष्ट्र की सामुद्रिक शक्ति, नाविक विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग तथा उनका कार्यालय। ( एडमिरैल्टी )

**नाव्य**—वि० [ सं० ] वह नदी या तालाब जिसमें नावें चल सकें। ( नैविगेबुल )

**निक्षेप्ता**—सं० पु० [ सं० निक्षेप्तृ ] फेंकने वाला। २. छोड़ने वाला। ३. धरोहर रखने वाला।

**निगरण**—सं० पु० [ सं० ] १. भक्षण। निगल जाना। २. गला।

**निगराना**—क्रि० स० [ सं० नय + करण ] १. निर्णय करना। निबटाना। २. छाँट छाँट कर अलग अलग करना। पृथक् पृथक् करना। ३. स्पष्ट करना।

**निगह**—सं० स्त्री० [ फा० ] निगाह। दृष्टि। नजर।

**निग्रहण**—सं० पु० [ सं० ] १. रोक थाम। २. दंड देने का कार्य।

**निग्राह**—सं० पु० [ सं० ] आक्रोश। शाप।

**निघात**—सं० पु० [ सं० ] प्रहार। आहनन। चोट।

**निघ्न**—वि० [ सं० ] अधीन। स्वायत्त। वशीभूत। २. निर्भर। अवलंबित।

**निचुल**—सं० पु० [ सं० ] बेंत। एक प्रकार का वृक्ष।

**निझाना**—क्रि० अ० [ देश० ] ताक झांक करना। ओट में छिप कर देखना।

**निझोंटना**—क्रि० स० [ हिं० नि ( उप० ) + झपटना ] २. खींचकर छीनना। झपटना।

**नितराम्**—अव्य० [ सं० ] सदा। सर्वदा।

**निदाघकर**—सं० पु० [ सं० ] १. सूर्य। २. मदार। आक।

**निदारा**—वि० [ सं० निर्दारा ] स्त्री रहित। बिना दारा के।

**निधरक**—क्रि० वि० [ हिं० निधड़क ] बेखटके। बिना रोक टोक।

**निधरक**—क्रि० वि० [ हिं० ] १. निधड़क। बिना रोकटोक। २. निर्भय।

**निधुवन**—सं० पु० [ सं० ] १. हँसी ठट्ठा। २. नर्म। केलि। ३. मैथुन। ४. कंप।

**निधेय**—वि० [ सं० ] स्थापनीय। स्थापन करने योग्य।

**निनद**—सं० पु० [सं०] १. निनाद। ध्वनि। शब्द। २. कोलाहल। घरघराहट।

**निनय**—सं० स्त्री० [ सं० ] नम्रता। विनयशीलता।

**नियान**—सं० पु० [ सं० ] १. तालाब। गड्ढा। खाता। २. कुएँ के पास बनाया हुआ वह गड्ढा जहाँ पशु पक्षिओं के पीने के लिये पानी भरा रहता है। ३. दूध दूहने का पात्र। दोहनी।

**निबंधक**—सं० पु० [ सं० ] वह राज्याधिकारी जो लेखादि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उन्हें राज्यपंजी में निबंधित करता है। २. किसी विभाग या संस्था के सब प्रकार के पत्रों की व्यवस्था या निबंधन करने वाला अधिकारी। ( रजिस्ट्रार )

**निबंधन**—सं० पु० [ सं० ] लेखों आदि का प्रामाणिक सिद्ध होने के लिये किसी राजकीय पंजी में लिखा या चढ़ाया जाना। ( रजिस्ट्रेशन )

**निबंधनी**—सं० स्त्री० [सं०] बंधन। २. बेड़ी निगड़।

**निबारना**—क्रि० सं० [ देश० ] निवारण करना। रोकना।

**निमेषण**—सं० पु० [ सं० ] पलक गिरना। आँख मुँद जाना।

**नियारो**—वि० [ हिं० न्यारा ] १. विलक्षण। भिन्न। अलग।

**निरति**—सं० स्त्री० [ सं० ] अत्यंत रति। अधिक प्रीति। लिप्तता।

निरवग्रह—वि० [ सं० ] १. प्रतिबंध रहित। स्वतंत्र। स्वच्छंद। २. बिना विघ्न या बाधा का।

निरस्त—वि० [ सं० ] फेंका हुआ। त्यक्त। अलग किया हुआ। २. बिगड़ा हुआ। निराकृत। ३. वर्जित।

निराकृति—सं० स्त्री० [ सं० ] निराकरण। परिहार।

वि० आकृति रहित। निराकार।

निरुदन—सं० पु० [ सं० ] [ वि० निरुदित ] रासायनिक तत्वों, वनस्पतियों आदि में से जल या उसका कोई अंश निकालना। ( डी०–हाईड्रेशन )

निर्ग्रंथ—सं० पु० [ सं० ] १. बौद्ध क्षपणक। २. दिगंबर। ३. एक प्राचीन मुनि का नाम।

निर्णायक मत—सं० पु० [ सं० ] किसी सभा या संस्था आदि के सभापति का वह मत जो वह उस समय में देता है जब किसी विषय में उपस्थित सदस्यों के मत पक्ष विपक्ष में समान होते हैं। ( कास्टिंग वोट )

निर्देशक—सं० पु० [ सं० ] १. किसी प्रकार का निर्देश करने वाला। २. आधुनिक रजत पटों की कला का वह अधिकारी जो पात्रों की वेश-भूषा, भूमिका, या आचरण और दृश्यों के स्वरूपादि का निर्णय देता है। ( डाइरेक्टर )

निर्देशन—सं० पु० [ सं० ] निर्देश करने की क्रिया या भाव। २. चलचित्रों के निर्देशकों द्वारा भूमिका, आचरण, स्वरूप, दृश्यों आदि का निर्णय। ( डाइरेक्शन )

निर्देशिका—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी भी व्यापार व्यवसाय, विभागादि की जानने योग्य सब बातों और उनसे संबंधित लोगों के पूर्ण विवरणों को बताने वाली पुस्तिका। ( डाइरेक्टरी )

निर्धूत—वि० [ सं० ] धोया हुआ। प्रक्षालित।

निर्वाहण—सं० पु० [ सं० ] [ वि० निर्वाहणिक ] १. निर्वाह करना। निभाना। २. किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक ढंग से काम करना। ३. कुछ समय के लिये किसी दूसरे का काम या भार अपने ऊपर लेना।

निलजई—सं० स्त्री० [ हि० निलज + ई (प्रत्य०)] निर्लज्जता। बेहयाई।

निलज्जता—सं० स्त्री० [ सं० निर्लज्जता ] दे० 'निलजई'।

निवान—सं० पु० [ सं० निम्न ] १. नीची भूमि जहाँ सीड़, कीचड़ या पानी भरा रहता हो। २ जलाशय। झील। बड़ा तालाब।

निवृत्त—वि० [ सं० ] छुटकारा पाया हुआ। मुक्त। छुट्टी पाया हुआ।

निषिद्धि—सं० स्त्री० [ सं० ] निषेध। मनाही। रोक।

निषेक—सं० पु० [ सं० ] १. गर्भाधान। २. वीर्य। रेत। ३. क्षरण।

निष्कृति—सं० स्त्री० [ सं० ] निस्तार। छुटकारा। २. प्रायश्चित्त।

निहसंसय—अव्य० [ निस्संशय ] संदेह रहित। निस्संदेह।

नीवार—सं० पु० [ सं० ] तिन्नी का चावल। तीना।

नृग—सं०पु० [ सं० ] एक प्रसिद्ध दानशील राजा जो एक ब्राह्मण के शाप से गिरगिट योनि में जन्म लिए थे।

नेउर—सं० पु० [ सं० नकुल ] नेवला नामक एक जंतु। नकुल। [ हि० नूपुर ] पैर में पहिनने का एक आभूषण।

नेत—सं० पु० [ दे० ] निश्चय। ठहराव। व्यवस्था।

नोखी—वि० [ देश० ] अनोखी। विलक्षण।

नौढ़ा—सं० स्त्री० [ सं० नवोढ़ा ] दे० 'नवोढ़ा,'।

न्यान—सं० पु० [ सं० न्याय ] न्याय। नीति।

न्यायाधिकरण—सं० पु० [ सं० ] विवादग्रस्त विषयों पर विचार करके उनका न्याय या निर्णय करने वाला अधिकारी। अधिकारी वर्ग या न्यायालय। ( ट्रिब्यूनल )

## प

**पँखिया**—सं० स्त्री० [ हि० पख ] १. भूसे या भूसी के महीन टुकड़े । २. पंखड़ी । ३. छोटे छोटे भुनगों की पाँखें ।

**पँघलाना**—क्रि० सं० [ देश० ] बहलाना । फुसलाना ।

**पंचपितर**—सं० पु० [ सं० पंचपितृ ] पाँच प्रकार के पिता—पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता और भयसे रक्षक ।

**पंजक**—सं० पु० [ हि० पंजा ] हाथ के पंजे का निशान जो मांगलिक अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है । थापा ।

**पँजरी**—सं० स्त्री० [ सं० पंजर ] १. अर्थी । टिकठी । पास । पार्श्व ।

**पंजी**—सं० स्त्री० [सं०] १. पंचांग । २. पंजिका । हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका । ( रजिस्टर ) ३. गोलाई में लिपटा हुआ लंबे कागज का मुट्ठा । ( रोल )

**पंजीयन**—सं० पु० [सं०] १. किसी प्रकार के हिसाब या लेख का पंजी में अंकित करना । २. नाम का नाम की सूची में चढ़ा लेना । ( एन रोलमेंट )

**पक्षक**—सं० पु० [ सं० ] एक मत के लोगों का समूह । दल ( पार्टी )

**पक्षधर**—सं० पु० [ सं० ] १. पक्षी । चिड़िया । २. अपने पक्ष का व्यक्ति ।

**पगारा**—सं० स्त्री० [ हि० पँवरी ] देहली । ड्योढ़ी । (हि० पगड़ी) पाग । साफा ।

**पचतोरिया**—सं० स्त्री० [ देश० ] एक प्रकार की अत्यंत झीनी साड़ी जिसकी तौल पाँच तोला होती थी ।

**पटंतर**—सं० पु० [ सं० पट्ट तल ] १. समता । बराबरी । समानता । २. उपमा ।

**पटणु**—सं० पु० [सं० पत्तन] नगर । पट्टन ।

**पटलक**—सं० पु० [ सं० ] १. आवरण । पर्दा । झिलमिली । २. छोटी संदूक । डलिया । ३. राशि । ढेर । समूह ।

**पढ़नसाल**—सं० पु० [सं० पठनशाला] पाठशाला । चटसार । विद्यालय ।

**पणबंध**—सं० पु० [ सं० ] बाजी लगाना । शर्त लगाना ।

**पण्यस्त्री**—स० स्त्री० [ सं० ] वेश्या । वारवनिता ।

**पतई**—स० स्त्री० [ सं० पत्र ] १. पत्ती । पत्ता । २. लज्जा । मान ।

**पतराई**—सं० स्त्री० [ हि० पतला + ई ( प्रत्य० ) ] १. पतलापन, सूक्ष्मता । २. कृशता । दुबलापन ।

**पतीतना**—क्रि० अ० [ हि० प्रतीतना ] विश्वास करना । सच मानना ।

**पतोनना**—क्रि० अ० [ हि० पतोजना ] १. विश्वास करना । २. पर चना । ३.लग जाना । तल्लीन होना ।

**पत्रक**—सं० पु० [ सं० ] सूचना आदि के रूप में लिखा हुआ कागज का टुकड़ा । ( मेमो, नोट )

**पत्रजात**—सं० पु० [ सं० ] १. किसी विषय से संबंधित संपूर्ण कागज-पत्र । ( पेपर्स ) २. पत्रों की नत्थी । ( फाइल )

**पत्रपंजी**—सं० स्त्री० [ सं० ] आने वाले पत्रों तथा उनके उत्तरों का विवरण जिस पंजी में लिखा जाय । ( लेटर बुक )

**पत्रवाह**—सं० पु० [ सं० ] पत्र ले आने ले जाने वाला आफिस । ( पियन )

**पत्राली**—सं० स्त्री० [ सं० ] सादे और लिखे जाने वाले चिट्ठी के कागजों का समूह जो प्रायः गड्डी के रूप में होता है । ( पैड )

**पदचिह्न**—सं० पु० [ सं० ] चलते समय भूमि पर पैरों का पड़ने वाला चिह्न । ( फुटप्रिंट )

**पथवान**—सं० पु० [ सं० पार्थ ] पृथा के पुत्र । अर्जुन ।

**पदच्युति**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी उच्च पद से निम्न पद पर आना या होना ।

**पदादिका**—सं० स्त्री० [ सं० पदातिक ] पैदल सेना ।

**पदुम**—सं० पु० [ सं० पद्म ] १. पद्म । कमल । २. गणना की एक संख्या । ३. घोड़े का एक विशेष चिह्न ।

**पदेन**—क्रि० वि० [ सं० ] किसी पद के अथवा किसी पद पर आरूढ़ होने के अधिकार से (एक्स आफीशिओ)

**पदोन्नति**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी अधिकारी या कर्मचारी के पद में होने वाली उन्नति । वर्तमान पद से उच्च स्थान पर पहुँचना या होना । ( प्रोमोशन )

**परक**—प्रत्य० [ सं० ] एक प्रत्यय, जो शब्दों के अंत में लगाकर 'पीछे या अंत में लगा हुआ' का अर्थ सूचित करते हैं ।

**परनै**—सं० पु० [सं० परिणय] पाणिग्रहण । विवाह । ब्याह ।

**परमाज्ञा**—सं० स्त्री० [ सं० ] अंतिम आज्ञा, जिसमें किसी प्रकार का

वर्तन न हो सके। (एब्सोल्यूट आर्डर)

**परमेष्टि**—सं० स्त्री० [सं०] अंतिम अभिलाषा। मोक्ष। मुक्ति।

**परमोधना**—क्रि० अ० [हि० परबोधना] समझाना। संतोष देना। ढाढ़स बँधाना।

**परशुधर**—सं० पु० [सं०] परशु धारण करने वाला। परशुराम।

**परांगभक्षी**—सं० पु० [सं० परांग + भक्षिन] १. दूसरों के अंग भक्षण पर जीवित रहने वाला। २. कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियाँ और कीड़े मकोड़े जो दूसरे वृक्षों या जीव जंतुओं के शरीर पर रह कर उनके रस या रक्त पर अपना निर्वाह करते हैं।

**परामृष्ट**—वि० [सं०] १. पकड़ कर खींचा हुआ। २. पीड़ित। ३. निर्णीत। विचारित।

**परायत्त**—वि० [सं०] पराधीन। परवश।

**पराश्रय**—सं० पु० [स०] १. दूसरे का सहारा। दूसरे का भरोसा। परावलंबन। २. पराधीनता।

**परिकलक**—सं० पु० [सं०] १. हिसाब या लेखा ठीक करने वाला। २. एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से बहुत बड़े हिसाब सहज में तथा थोड़े समय में लगाये जा सकते हैं। (कैलकुलेटर)

**परिकलन**—सं० पु० [सं०] [वि० परिकलित] गिनने या हिसाब लगाने का कार्य। गणना। (कैलकुलेशन)

**परिकल्पन**—सं० पु० [सं०] [वि० परिकल्पित] १. मनन। चिंतन। २. बनावट। रचना।

**परिकल्पना**—सं० स्त्री० [सं०] [वि० परिकल्पित] १. अत्यधिक संभावित बात को पहले ही से मान लेना। २. केवल तर्क के लिए कोई बात मान लेना। ३. प्रमाणित हो सकने वाली बात को प्रमाणित होने के पहिले मान लेना। (हाइपॉथेसिस) ४. कुछ विशिष्ट आधारों पर कोई बात मान लेना। (प्रिजम्पशन)

**परिक्रम**—सं० पु० [सं०] किसी काम की जाँच या निरीक्षण के लिए स्थान स्थान पर भ्रमण करना। दौरा। (टूर)

**परिघात**—सं० पु० [सं०] [वि० परिघाती] १. हत्या। हनन। मारण। २ वह अस्त्र जिससे किसी की हत्या की जा सकती हो।

**परिचय-पत्र**—सं० पु० [सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी का संक्षिप्त परिचय लिखा हो। २. किसी वस्तु या संस्था से संबंधित वह पत्रक या पुस्तिका जिसमें वस्तु की सब बातों या संस्था के उद्देश्यों, कार्यों तथा कार्य-प्रणालियों आदि का पूर्ण विवरण हो। (मेमोरेंडम)

**परिज्ञप्ति**—सं० स्त्री० [सं०] १. बात-चीत। कथोपकथन २. जान पहिचान।

**परिणायक**—सं० पु० [सं०] नेता। चलाने वाला। पथ-प्रदर्शक। २. सेनापति। ३. स्वामी। भर्त्ता।

**परिणाह**—सं० पु० [सं०] १. विस्तार। फैलाव। विशालता। २. चौड़ाई। ३. लंबी साँस। उछ्वास।

**परिणेता**—सं० पु० [सं०] स्वामी। पति। भर्त्ता।

**परितुष्टि**—सं० स्त्री० [सं०] १. संतोष। परितोष। २. प्रसन्नता। खुशी।

**परितोषण**—सं० पु० [सं०] १. किसी को संतुष्ट रखने का कार्य या भाव। २. किसी का परितोष करने के लिए दिया जाने वाला धन। (ग्रेटिफिकेशन)

**परिदेवन**—सं० पु० [सं०] विलाप। रोना-धोना। अनुशोचन।

**परिधिक**—वि० [सं०] १. परिधि संबन्धी। वह अधिकारी जिसका कार्य-क्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो।

**परिपत्र**—सं० पु० [सं०] जिसमें किसी संस्था या दल के उद्देश्य, विचार, कार्य-प्रणाली या संघटन के मूल नियम, अथवा किसी विषय पर विचार या सम्मतियाँ आदि दी गई हों।

**परिप्रश्न**—सं० पु० [सं०] पूछ-ताछ। किसी विषय की जानकारी के लिए किया जाने वाला प्रश्न। (इन्क्वायरी)

**परिवेश**—सं० पु० [सं० परिवेष] १. परिधि। घेरा। २. मंडल। ३. वेष्टन।

**परिभूति**—सं० स्त्री० [सं०] १. निरादर। तिरस्कार। अपमान।

**परिम्लान**—वि० [सं०] मुरझाया हुआ। उदास। कुम्हलाया हुआ।

**परिरंभण**—सं० पु० [सं०] गले या छाती से लगा कर मिलना। आलिंगन।

**परिवहन**—सं० पु० [सं०] किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना। समुद्री या हवाई जहाज आदि चलाना।

**परिवाद**—सं० पु० [सं०] अधिकारियों के सामने की जाने वाली किसी की शिकायत। (कम्प्लेंट)

**परिवृत्त**—सं० पु० [सं०] १. किसी

के सामने उपस्थित किया जाने वाला किसी घटना आदि का विवरण। ( स्टेटमेंट )

परिवेषण—सं० पु० [ सं० ] १. भोजन परोसना। २. घेरा। परिधि। ३. सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर का मंडल। ४. प्राचीर। परकोटा।

परिव्यय—सं० पु० [ सं० ] १. मूल्य। २. शुल्क। ३. परिश्रमिक। ४. भाड़े आदि के रूप में होने वाला वह व्यय जो किसी से लिया या किसी को दिया जाय। ( चार्ज )

परिशिष्ट—वि० [सं०] बचा हुआ। सं० पु० [सं०] किसी पुस्तक, लेख आदि का वह अंतिम भाग जिसमें आवश्यक या उपयोगी बातें रहती हैं जो पहले अपने स्थान पर न आ सकी हों। ( एपेंडिक्स )

परिष्करण—सं० पु० [ सं० ] १. स्वच्छ या शुद्ध करना २. दोष या त्रुटियाँ दूर करके शुद्ध करना। ( माडिफिकेशन )

परिसंख्यान—सं० पु० [ सं० ] [ वि० परिसंख्यात ] किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अंत में परिशिष्ट के रूप में लगी हुई नामावली। ( शेड्यूल )

परिसंघ—सं० पु० [ सं० ] एक दूसरे की सहायता तथा कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए राज्यों, राष्ट्रों आदि का संघटन। ( कौंनफेडरेशन )

परिसर—सं० पु० [ सं० ] १. आस पास की भूमि। २. मैदान। ३. पड़ोस। ४. स्थिति।

परिसिद्धक—सं० पु० [ सं० ] किसी मुकदमे का वह अपराधी जो सरकारी गवाह बनकर अन्य अपराधियों के अपराध को प्रमाणित करने में सहायता देता है। ( एप्रूवर )

परिस्पर्द्धा—सं० स्त्री० [ सं० ] प्रतिस्पर्धा। प्रतियोगिता। लाग-डाँट।

परिहेलु—सं० पु० [हि० परिहेलना] त्याग। छोड़ना।

परीक्षणिक—वि० [ सं० ] परीक्षण के लिए अस्थायी रूप से रखा जाने वाला कर्मचारी। ( प्रोबेशनरी )

पर्यवलोकन—सं० पु० [ सं० ] किसी काम को आदि से अंत तक समझने देखने या जाँचने की क्रिया या भाव।

पर्यवेक्षक—सं० पु० [ सं० ] १. देखभाल करने वाला। ( सुपरवाइजर ) २. किसी व्यवहार, बात, या काम को ध्यान से देखने वाला। ( आवजर्वर )

पर्यवेक्षण—सं० पु० [ सं० ] १. अच्छी प्रकार देखना। निरीक्षण। २. देख भाल या निगरानी। किसी काम को ध्यान पूर्वक देखते रहना।

पलघ—सं० पु० [ सं० पर्यंक ] १. पलंग। २. बिछौना। शय्या।

पहीआ—सं० पु० [ हि० पाहुन ] १. पाहुन। अतिथि। २. संबन्धी।

पारण—सं० पु० [ सं० ] ५. परीक्षा या जाँच में पूरा उतरना। उत्तीर्ण होना। ( पासिंग ) ६. रुकावट या बंधन की जगह को पार करके आगे बढ़ना।

पारण-पत्र—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिसे दिखा कर कोई रोकवाले स्थान में आ जा सके ( पास )।

पारित—वि० [ सं० ] १. जिसका पारण हो चुका हो। २ परीक्षित। ३. जो नियमानुसार ठीक मान लिया गया हो। जो पास हो चुका हो।

पारिभाव्य—वि० [ सं० ] कोई शर्त पूरी करने या अमानत आदि के रूप में लिया हुआ। जैसे-पारिभाव्यधन ( काशन मनी )

पारिभाषिकी—सं० स्त्री० [ सं० ] विधान आदि का वह पूरक अंग या अंश जिसमें उनके विशिष्ट शब्दों की परिभाषायें रहती हैं।

पारिश्रमिक—सं० पु० [ सं० ] परिश्रम करने पर उसके बदले में प्राप्त होने वाला धन। ( रिम्यूनरेशन )

पाली—सं० स्त्री० [ सं० ] १. कान की लौ। २. गड्ढा। ३. किनारा। ४. सीमा।

[ हि० ] पारी। बारी। ( शिफ्ट )

पावती—सं० स्त्री० [ हि० पावना ] रुपये या और कोई चीज पाने का सूचक-पत्र। रसीद।

पासारी—सं० पु० [ फा० पासदार ] रक्षक। बचाने वाला।

पासिका—सं० स्त्री० [ सं० पाश ] पाश। फंदा। जाल। बंधन।

पिंगलिका—सं० स्त्री० [ सं० ] १. बगला। बलाका। २. मक्खी जाति का एक कीड़ा।

पिंगाक्ष—वि० [ सं० ] जिसकी आँखें भूरी तामड़े रंग की हों।
सं० पु० १. शिव। २. नाक। ३. बिल्ली।

पिकी—सं० स्त्री० [ सं० ] कोयल। कोकिला।

पीठिका—सं० स्त्री० [ सं० ] १. पीढ़ा। २. मूर्ति, खम्भे आदि का मूल आधार। ३. अंश या अध्याय।

पीताभ—वि० [ सं० ] पीले रंग की चमक वाला। पीला। पीत वर्ण का।

पुलोत—क्रि० सं० [ हि० पोसना ] पोषण करना। पालन करना।

पुनर्वाद—सं० पु० [ सं० ] किसी

न्यायालय से विवाद का निर्णय हो जाने पर उसके विरोध में उससे उच्च न्यायालय में फिर से उस विवाद पर विचार होने के लिए की जाने वाली प्रार्थना। ( अपील )

**पुनर्वासन**—सं० पु० [ सं० ] उजड़े हुए लोगों को फिर से बसाने या आबाद करने का कार्य।

**पूँगरा**—वि० [ हि० पोंगा ] १. मूर्ख। २. निकम्मा। बेकार।

**पूर्वदत्त**—वि० [ सं० ] ( शुल्क, कर आदि ) पहले ही चुकाया हुआ।

**पूर्वदान**—सं० पु० [ सं० ] शुल्क, कर, देन इत्यादि का पहले से दिया हुआ कुछ भाग। ( एडवांस ) ( प्री-पेड )

**पृक्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. संबंध। लगाव। २. स्पर्श। छूना।

**पेंठ**—सं० स्त्री० [ सं० पैंठ ] पैंठ। बाजार।

**पैकाबर**—सं० पु० [ फा० पैगंबर ] ईश्वर का संदेश लेकर मनुष्यों के पास आने वाला।

**पौर्वापर्य्य**—सं० पु० [ सं० ] आगे पीछे का भाव। अनुक्रम। सिलसिला।

**प्रकंपन**—सं० स्त्री० [ सं० प्रकम्प ] १. कँपकँपी थरथराहट। २. वायु का झोंका।

**प्रकथन**—सं० पु० [ सं० ] किसी किए हुए कार्य या कही हुई बात का पुष्टीकरण। ( एफरमेशन )

**प्रकल्पना**—सं० स्त्री० [ सं० ] निश्चित करना। स्थिर करना।

**प्रक्षेपण**—सं० पु० [ सं० ] १. फेंकने, छितराने, या बिखेरने की क्रिया या भाव।

**प्रखंड**—सं० पु० [ सं० ] किसी विशेष कार्य या विभाग के लिए बनाया हुआ कोई खंड या भाग ( विशेषः प्रांत या सेना ) ( डिवीजन )

**प्रख्या**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. विख्याति। प्रसिद्धि। २ समता। तुल्यता। ३. उपमा।

**प्रख्याति**—सं० स्त्री० [ सं० ] प्रसिद्धि। विख्याति। यश। कीर्ति।

**प्रख्यापन**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० प्रख्यापित ] १. किसी बात का स्पष्टीकरण। २. किसी प्रकार के कार्य या अपने उत्तरदायित्व के संबंध में किसी अधिकारी के सामने उपस्थित किया लिखित वक्तव्य।

**प्रगास**—सं० पु० [ सं० प्रकाश ] १. प्रकाश। उजेला। २. ज्ञान।

**प्रजंक**—सं० पु० [ सं० ] पर्यंक। शय्या। बिछौना।

**प्रज्ञाप्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] ४. किसी माल के साथ सूचना रूप में भेजा जाने वाला वह पत्र जिसमें माल का विवरण तथा उसका मूल्य आदि रहता है। बीजक

**प्रज्ञापक**—सं० पु० [ सं० ] १. प्रज्ञापन कराने वाला। २. बड़े बड़े मोटे अक्षरों में लिखा या छपा हुआ विज्ञापन। ( पोस्टर )

**प्रतिंच**—सं० स्त्री० [ सं० प्रत्यंचा ] धनुष की। डोरी। ज्या। प्रत्यंचा। चिल्ला।

**प्रतिकर**—सं० पु० [ सं० ] हानि हो जाने के बदले में दिया जाने वाला धन। हरजाना। ( कम्पेन्सेशन )

**प्रतिकरण**—सं० पु० [ सं० ] वह कार्य जो किसी कार्य के विरोध में या उत्तर में किया जाता है। ( काउंटर ऐक्शन )

**प्रतिकरस्वत्व**—सं० पु० [ सं० ] किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की कृति को प्रकाशित करने का वह अधिकार जो उसके कर्ता की अनुमति के बिना औरों को नहीं प्राप्त हो सकता। ( कॉपी राइट )

**प्रतितुलन**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० प्रतितुलित ] किसी एक ओर पड़े हुए भार की बराबरी करनेवाला दूसरी ओर का भार। प्रति भार। ( काउंटर वैलेंस )

**प्रतिनंदन**—सं० पु० [ सं० ] बधाई। धन्यवाद। ( कॉंग्रेचुलेशन )

**प्रतिनिचयन**—सं० पु० [ सं० ] किसी जमा किए हुए धन का लौटाना। किसी खाते के जमा धनको दूसरे खाते में करना। ( रिफंड )

**प्रतिनिधायन**—सं० पु० [ सं० ] १. प्रतिनिधिरूप में कुछ लोगों को कहीं भेजना। ( डेलिगेशन ) २. जनता की ओर से उसकी माँग उपस्थित करने के लिए किसी अधिकारी के पास भेजा गया प्रतिनिधियों का दल। ( डेपुटेशन )

**प्रतिनिर्देश**—सं० पु० [सं०] [ वि० प्रतिनिर्दिष्ट ] साक्षी, सकेत, प्रमाण आदि के रूप में किसी लेख, पद या घटना का उल्लेख। ( रिफरेंस )

**प्रतिभाग**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० प्रतिभागिक ] राज्य में बनने या उत्पन्न होने वाले कुछ विशिष्ट पदार्थों ( नमक, मादक द्रव्य, वस्त्र इत्यादि ) पर लगने वाला कर। ( एक्साइज ड्यूटी )

**प्रतिभूति**—सं० स्त्री० [सं०] [ वि० प्रतिभूत ] जमानत रूप में जमा किया गया धन।

**प्रतिलिपिक**—सं० पु० [सं०] लेखादि की प्रतिलिपि करने वाला। (कॉपिस्ट)

प्रविलेखा—सं० स्त्री० [ सं० ] बैंक की ओर से उसमें रुपया जमा करने वालों को मिलने वाली वह पुस्तिका जिसमें जमा किए हुए तथा निकाले हुए रुपयों का हिसाब होता है। ( पास बुक )

प्रतिश्रुति—सं० स्त्री० [ सं० ] १. प्रतिध्वनि । २. प्रतिरूप । ३. मंजूरी । ४. किसी कार्य के लिए दिया जाने वाला वचन । ( प्रामिस )

प्रत्यभिज्ञापत्र—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जो किसी की पहिचान का द्योतक हो । ( आइडेन्टिटी कार्ड )

प्रत्ययपत्र—सं० पु० [ सं० ] वह पत्र जिसमें उसके लेजाने वाले को भेजने वाले के खाते से धन देने या ऋण देने की बात लिखी हो। ( क्रेडिट लेटर )

प्रत्यवेक्षण—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्य या पदार्थ का किसी व्यक्ति की देख रेख में रहना। ( चार्ज )

प्रत्यवाय—सं० पु० [ सं० ] १. पाप । दुष्कर्म । २. विरोध । ३. अपकार या हानि । ४. बाधा । ५. निराशा ।

प्रत्यानयन—सं० पु० [ सं० ] १. गई हुई वस्तु लौटाकर लाना या उसके बदले में दूसरी वस्तु देना । टूटी हुई वस्तु को पुनः उसी रूप में लाना । ( रेस्टोरेशन )

प्रत्यापतन—सं० पु० [ सं० ] किसी संपत्ति का उत्तराधिकारी के अभाव में राज्य के अधिकार में चला जाना । ( एस्चेट )

प्रथित—वि० [ सं० ] १. प्रख्यात । प्रसिद्ध । २. विस्तृत । लंबा-चौड़ा ।

प्रदिशा—सं० स्त्री० [ सं० ] दो दिशाओं के बीच की दिशा । कोण ।

प्रदिष्ट—वि० [ सं० ] जिसके संबंध में आज्ञा नियम आदि के रूप में यह बताया गया हो कि यह इस प्रकार होना चाहिए । ( प्रेसक्राइब्ड )

प्रदेशन—सं० पु० [ सं० ] आज्ञा, नियम, निर्देश आदि के रूप में किसी काम के होने का स्वरूप बतलाना । ( प्रेसक्रिप्शन )

प्रनियम—सं० पु० [ सं० ] विधि विधानों में व्याकृति आदि के सर्व सामान्य नियम । ( क्लाज )

प्रन्यास—सं० पु० [ सं० ] किसी विशेष कार्य के लिए किसी को या कुछ लोगों को सौंपा हुआ धन । ( ट्रस्ट )

प्रभृत—सं० पु० [ सं० परभृत ] कोकिल । कोयल ।

अव्य० [ सं० प्रभृति ] इत्यादि ।

प्रमंडल—सं० पु० [ सं० ] प्रदेश ( राज्य ) का वह विभाग जिसमे कई मंडल हों । ( कमिश्नरी या डिवीजन )

प्रमाणीकरण—सं० पु० [ सं० ] प्रमाणित करने का कार्य । ( सरटिफिकेशन )

प्रमिति—सं० पु० [ सं० ] प्रमाण द्वारा प्राप्त होने वाला यथार्थ ज्ञान । प्रमा ।

प्रमीत—वि० [ सं० ] स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरा हुआ । मृत ( डिसीज्ड )

प्रमीति—सं० स्त्री० [ सं० ] साधारण मृत्यु । प्राकृतिक मौत ।

प्रमुद—वि० [ सं० ] १. हृष्ट । आनंदित । प्रसन्न । २. प्रफुल्ल । विकसित ।

प्रवरसमिति—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी विषय के विशेषज्ञों की चुनी हुई वह समिति जो उस विषय पर राय देने के लिए बनी होती है। ( सेलेक्ट कमेटी )

प्रवेक्षा—सं० स्त्री० [सं०] किसी काम या बात के होने के संबंध में पहले से की जाने वाली आशा या अनुमान ( एंटिसिपेशन )

प्रवेश पत्र—सं० पु० [ सं० ] किसी स्थान में प्रवेश दिलाने वाला पत्र । ( पास या टिकट )

प्रशम्य—वि० [सं०] १. जिसका शमन किया जा सके। २. वह झगड़ा या विवाद जिसे निबटा लेने का अधिकार दोनों पक्षों को हो। ( कंपाउंडेबुल )

प्रशासन—सं० पु० [ सं० ] राज्य के सुचारु रूप में परिचालन की व्यवस्था तथा प्रबन्ध । ( एडमिनिस्ट्रेशन )

प्रशासनिक—वि० [ सं० ] शासन या राज्य से संबंधित । ( एडमिनिस्ट्रेटिव )

प्रशिक्षण—सं० पु० [ सं० ] कला-कौशल तथा किसी भी पेशे की दी जाने वाली प्रयोगात्मक तथा व्यावहारिक शिक्षा । ( ट्रेनिंग )

प्रशिक्षण महाविद्यालय—सं० पु० [ सं० ] वह महाविद्यालय जिसमें उच्च कक्षा के शिक्षकों को शिक्षण-पद्धति तथा शिक्षण-विज्ञान की सैद्धांतिक तथा प्रयोगात्मक प्रणाली सिखाई जाती है। ( ट्रेनिंग कालेज )

प्रश्रुति—सं० स्त्री० [ सं० ] प्रतिज्ञा । कार्य पूर्ति के लिए दिया जाने वाला वचन । ( प्रामिस )

प्रश्रुति पत्र—सं० पु० [ सं० ] वह प्रतिज्ञा पत्र जो किसी से ऋण लेने पर उसे चुकता करने के बारे में लिख कर दिया जाता है। (प्रोनोट)

**प्रसर**—सं० पु० [ सं० ] न्यायालय में किसी वस्तु या व्यक्ति को उपस्थित करने के लिए उसी द्वारा निकाला गया आदेश पत्र। ( प्रोसेस )

यौ० प्रसर-पाल ( प्रोसेस सर्वर )

**प्रसारण**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० प्रसारित ] १. फैलाना। २. बढ़ाना। ३. रेडियो द्वारा, समाचार कविता, गीत इत्यादि को चारों ओर फैलाना। ( ब्रॉडकास्टिंग )।

**प्रस्तर-मुद्रण**—सं० पु० [ सं० ] छापे या मुद्रण की एक प्रक्रिया, इसमें लेख आदि एक विशेष कागज पर लिख कर पहले एक प्रकार के पत्थर पर उतारे जाते हैं। फिर उस पत्थर पर से छापे जाते हैं। ( लिथोग्राफ )

**प्रस्तर-युग**—[ सं० ] किसी देश का वह प्राचीन सांस्कृतिक युग जब कि अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य औजारों का निर्माण पत्थर द्वारा होता था। ( स्टोन-एज )

**प्रस्तावितो**—सं० पु० [ सं० ] जिसके सामने भेंट करने का प्रस्ताव देने वाले की ओर से उपस्थित किया जाय। ( आफरी )

**प्राक्कथन**—सं० पु० [ सं० ] किसी पुस्तक के प्रारंभ में उसके विषय के परिचय मात्र के लिए कही हुई बात। भूमिका। आमुख। ( फारवर्ड )

**प्राखंडिक**—वि० [ सं० ] किसी विशिष्ट भूभाग ( प्रखंड ) से संबंध रखने वाला। ( डिविजनल )

**प्रातिभागिक**—वि० [ सं० ] प्रतिभाग नामक शुल्क या विभाग से संबंधित ( एक्साइस )

**प्राधिकार**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० प्राधिकृत ] किसी व्यक्ति को कुछ कठिनाइयों या बाधाओं से बचाने वाला विशेष रूप से प्राप्त सुविधा या अधिकार। ( प्रिविलेज )

**प्राध्यापक**—सं० पु० [ सं० ] महाविद्यालयों के अध्यापक। बड़ा अध्यापक। ( प्रोफेसर )

**प्राप्तिका**—सं० स्त्री० [ सं० प्राप्ति ] किसी वस्तु के प्राप्त हो जाने पर दिया जाने वाला उसका प्राप्ति सूचक-पत्र। पावती। रसीद ( रिसीट )

**प्राप्यक**—सं० पु० [ सं० ] शेष या प्राप्य धन का सूचक-पत्र जिसमें प्राप्य धन तथा माल का ब्यौरा लिखा रहता है। ( बिल )

**प्राभ्यास**—सं० पु० [ सं० ] किसी प्रकार के अभिनय का करने के पहले किया जाने वाला अभ्यास ( रिहर्सल )

**प्रायिक**—वि० [ सं० ] १. बहुधा होने वाला। २. सर्वदा साधारण नियमों से होता रहने वाला। ( यूजुअल ) ३. अनुमान या गणना से बहुत कुछ ठीक। लगभग। ( एप्राक्सिमेट )

**प्रायौगिक**—वि० [सं०] १. प्रयोग संबंधी। प्रयोग के रूप में किया जाने वाला। ( अप्लाएड )

**प्रारूप**—सं० पु० [ सं० ] किसी भी लेख्य या विधानादि का वह प्रारंभिक रूप जिसे काट छाँट या घटाने बढ़ाने के लिए तैयार किया जाता है। मसौदा। प्रालेख्य। ( ड्राफ्ट )

**प्राविधानिक**—वि० [ सं० ] १. प्रविधान संबंधी। २. जिसे प्रविधान में स्थान मिला हो। ( स्टेट्यूटरी )

**प्रेषण**—सं० पु० [ सं० ] १. कोई चीज कहीं से किसी के पास भेजना। रवाना करना। ( रेमिट )

**प्रेषितक**—सं० पु० [ सं० ] वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। ( कंसाइन्मेंट )

**प्रेषिती**—सं० पु० [ सं० प्रेषित ] वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। ( एड्रेसी, कन्साइनी )

**प्रोक्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] दूसरे की कही हुई बात या उक्ति जो कहीं उद्धृत की गई हो या की जाय। ( कोटेशन )

**प्रोन्नति**—सं० पु० [ सं० ] पद, मर्यादा आदि में ऊपर चढ़ाना या उन्नत करना। ( प्रोमोशन )

**प्लावनिक**—वि० [ सं० ] प्लावन या बाढ़ से संबंध रखने वाला। ( डिल्यूवियल )

## फ

**फंका**—सं॰ पु॰ [ हि॰ फाँकना ] १. किसी वस्तु का उतना चूर्ण भाग जितना एक बार में फाँका जा सके। २. अंश। भाग। फाँक।

**फणिपति**—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] शेष नाग। वासुकी। बड़ा सर्प।

**फल्का**—सं॰ पु॰ [ हि॰ फलका ] फफोला। छाला। भलका।

**फल्गु**—वि॰ [ सं॰ ] १. क्षुद्र। तुच्छ। २. निस्सार। तत्व हीन। ३. छोटा। सं॰ स्त्री॰ गया की एक नदी। फलगू।

**फसकना**—क्रि॰ अ॰ [ देश॰ ] १. फटना। मसक जाना। २. फिसलना। ३. धँसना। ४. फूटना।

**फुत्कार**—सं॰ पु॰ [सं॰ फूत्कार] १. मुँह से हवा छोड़ने से होने वाला शब्द। फुफकार। फूँक। २. दुत्कार। तिरस्कार।

**फुरहरू**—सं॰ पु॰ [ ? ] जाड़े के समय रोंगटों का खड़ा होना। कम्प। कँपकँपी।

**फुलरा**—सं॰ पु॰ [ हि॰ फूल + रा (प्रत्य॰) ] सूत या ऊन का फूल जैसा गुच्छा। फुँदना।

**फौकना**—क्रि॰ अ॰ [ हि॰ फफकना ] डींग हाकना। बढ़ बढ़ कर बातें करना।

## ब

**बंकता**—सं॰ स्त्री॰ [ वक्रता ] तिरछापन। टेढ़ा पन।

**बंकट**—वि॰ [ सं॰ वक्र ] १. टेढ़ा। तिरछा। २. दुष्ट।

**बंकवा**—सं॰ पु॰ [सं॰] एक प्रकार का विशेष धान। इसका चावल सैकड़ों वर्षों तक रह सकता है।

**बंचर**—सं॰ पु॰ [ सं॰ वनचर ] १. जंगली मनुष्य। जगल में रहने वाले पशु।

**बँदेरी**—सं॰ स्त्री॰ [ फा॰ बंदा + एरी (प्रत्य॰) ] सेविका। दासी। चेरी।

**बंधनी**—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] १. शरीर के संधि स्थान की नसें। २. रस्सी। ३. सिक्कड़। सीकड़।

**बंधुजीव**—सं॰ पु॰ [ सं॰ ] एक प्रकार का पुष्प वृक्ष। उस वृक्ष का पुष्प।

**बंधुर**—सं॰ पु॰ [सं॰] १. मुकुट। २. बधिर। ३. हंस। ४. गुलदुपहरिया नामक पुष्प। वि॰ १. सुंदर। २. नम्र।

**बई**—क्रि॰ वि॰ [ अ॰ बईद या हि॰ बियो ] अन्यत्र। अलग।

**बकचन**—सं॰ पु॰ [ सं॰ वकचंदन ] एक प्रकार का वृक्ष। इसका फल ऊपर ललाई लिए हुए और भीतर पीलापन लिए भूरे रंग का होता है।

**बकवृत्त**—वि॰ [ सं॰ वकवृत्त ] बगले के समान कपटी। बाहर से शात किंतु हृदय से दुष्ट।

**बकिनव**—सं॰ पु॰ [ देश॰ ] एक प्रकार का वृक्ष।

**बकी**—सं॰ स्त्री॰ [ सं॰ ] १. पूतना नाम की राक्षसी जो बकासुर की बहिन थी। २. मादा बगुला।

**बजारी**—वि॰ [ हि॰ बाजार + ई (प्रत्य॰) ] १. बाजार से संबंध रखनेवाला। बाजारू। २. साधारण। सामान्य।

**बगऊ**—सं॰ पु॰ [देश॰] हिस्सेदार। भागी। हिस्सा लेने वाला।

**बधू**—सं॰ स्त्री॰ [ सं॰ वधू ] १. पुत्र की पत्नी। २ नव परिणीत स्त्री।

**बनकस**—सं॰ पु॰ [सं॰ वन + कुश] एक प्रकार की जगली घास जिससे रस्सियाँ बनाई जाती है।

**बननिधि**—सं॰ पु॰ [ सं॰ वननिधि ] समुद्र। सागर।

**बनपथ**—सं॰ पु॰ [ सं॰ वनपथ ] १. समुद्र। समुद्री मार्ग। २. जगली मार्ग।

**बनिक**—सं॰ पु॰ दे॰ 'वणिक'।

**बनौ**—सं॰ पु॰ [ सं॰ वन ] १. जंगल। वन। २. पानी। ३. कपास का वृक्ष।

**बबकना**—क्रि॰ अ॰ [अनु॰] उत्तेजित होकर जोर से बोलना। बमकना।

**बरग**—सं॰ पु॰ [ फा॰ बर्ग ] पत्ता। पत्र।
[ सं॰ वर्ग ] समुदाय। झुंड।

**बरियार**—वि॰ [ सं॰ ] बलवान। बली।
सं॰ पु॰ [ सं॰ बला ] एक प्रकार का

पौधा। बरियारा।

बरेखा—सं० पु० [सं० वाटिका] १. पान का बाग। पान का भीटा। २. किसी भी प्रकार की वाटिका।

बलिभुज—सं० पु० [सं०] बलि का अन्न खाने वाला काग। कौवा।

बलिश—सं० पु० [सं०] बंसी। कटिया।

बसुरी—सं० स्त्री० [सं० वंशी] देखो 'बंसी'।

बहिनापुली—सं० स्त्री० [हि० बहिनापा] बहिन का सा व्यवहार।

बहिर्वाणिज्य—सं० पु० [सं०] किसी देश का दूसरे या बाहरी देशों के साथ होनेवाला व्यापार। (इक्सटर्नल ट्रेड)

बहुक—वि० [सं०] १. बहुतोंसे संबंध रखने वाला। २. जिसमें बहुत से लोग हों।

बहुला—सं० पु० [सं०] १. गाय। २. एक गाय जिसके सत्यव्रत की कथा पुराणों में हैं और जिसके नाम पर लोग भाद्र कृष्ण ४ को व्रत करते हैं।

बाई—सं० स्त्री० [सं० वायु] वात। हवा।

बाधु—सं० पु० [सं० बाधा]. देखो 'बाधा'।

बापी—सं० स्त्री० [सं० वापी] बावली। वापिका।

बामा—सं० स्त्री० [सं० वामा] १. स्त्री। भार्या। २. कुलटा स्त्री।

बारक—क्रि० वि० [हि० एकबार] एक बार। एक दफा।

बारनु—सं० पु० [सं० वारण] १. हाथी। हस्ती। २. मनाही। रोक। निषेध।

बारीस—सं० पु० [सं० वारीश] सागर। समुद्र।

बारुणी (बारुनी)—सं० स्त्री० [सं० वारुणी] शराब। मद्य। मदक।

बालिश्य—सं० पु० [सं०] १. बाल्यावस्था। लड़कपन। २. किसी मनुष्य में ज्ञान उत्पन्न ही न होना या उत्पन्न होने पर भी बहुत कम विकसित होना। बड़े होने पर भी बालकों की तरह अबोध और कम समझ होना।

बावरी—वि० [सं० वातुली] पगली। बावली।

सं० स्त्री० [सं० वापिका] वापी। बावली। वापिका।

बाषरि—सं० स्त्री० [?] घर। घर की दीवार। बखरी।

बिक्री कर—सं० पु० [हि०] वह राजकीय कर जो ग्राहकों से उनके हाथ बेंची हुई चीजों पर दूकानदार ले लेता है और उसे सरकार में जमा कर देता है।

बिगसाना—क्रि० सं० दे० 'विकसना'।

बितान—सं० पु० [सं० वितान] दे० 'वितान'।

बिपुंगवासन—सं० पु० [सं० विपुंगव + आसन] गरुड़ की सवारी करने वाला। गरुड़वाहन। विष्णु।

बिपरजय—सं० पु [सं० विपर्यय] उलट—फेर। परिवर्तन।

बिभव—सं० पु० [सं० विभव] धन। ऐश्वर्य। बढ़ती।

बिभौ—सं० पु० [सं० विभव] दे० 'वैभव'।

बिमौरा—सं० पु० [सं० वल्मीक] टीले के आकार में बना हुआ दीमकों का घर। बामी।

बियाजू—वि० [सं० ब्याज] १. ब्याज। सूद। २. ब्याज पर दिया हुआ धन।

बिरधापन—सं० पु० [सं० वृद्ध + हि० पन (प्रत्य०)] बुढ़ाई। बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

बिराव—सं० पु० [?] शब्द। ध्वनि।

बिरुझाना—क्रि० अ० [सं० विरुद्ध] उलझना। अटकना। झगड़ना।

बिलगु—क्रि० वि० दे० 'बिलग'।

बिहठि—क्रि० वि० [हि०] हठ पूर्वक। जिद के साथ।

बीजुरी—सं० स्त्री० [सं० विद्युत] बिजली। बिजुरी। बिज्जु।

बीज—सं० पु० [हि०] मंत्र।

बीसी—सं० स्त्री० [हि० बीस] बीस वस्तुओं का समूह। कोड़ी। २.ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार साठ संवत्सरों के तीन विभागों (ब्रह्मबीसी, विष्णु बीसी और रुद्रबीसी) में से कोई एक। ३. एक प्रकार की भूमि की नाप।

बुड़का— सं० स्त्री० [हि० बूड़ना] डुबकी। गोता।

बुदबुदा—सं० पु० [सं० बुद्बुद] बुलबुला। बुल्ला।

बुद्धि-भ्रश—स० पु० [सं०] एक प्रकार का मानसिक रोग जो पागलपन के अंतर्गत माना जाता है और जिसमें बुद्धि ठीक तरह से पूरा पूरा काम नहीं दे पाती।

बुधाधिप—सं० पु० [सं०] चंद्रमा। शशि।

बुस—सं० पु० [सं० तुष] अनाज आदि के ऊपर का छिलका। भूसी।

बृष—सं० पु० [सं० वृष] १.साँड़। बैल। २. मोरपंख। ३. इंद्र। ४. बारह राशियों में से दूसरी राशि।

बृषादित—सं० पु० [वृषादित] १. वृष राशि का सूर्य। २. जेठ का महीना।

बेकस—सं० पु० [ फा० ] १. निःसहाय। निराश्रय। २. दरिद्र। दीन।
बेदन—सं० पु० [सं० वेदना] पीड़ा। कष्ट। पीड़ा, दुख।
बेहु—सं० पु० [ हि० बहक ] बहक। भुलावा। भटकाव।
बैदई—सं० स्त्री० [ हि० बैद ] वैद्यविद्या। वैद्य का व्यवसाय। वैद्यक कर्म।
बौरई—सं० स्त्री० [ देश० ] पागलपन। व्याकुलता।
ब्योहर—सं० स्त्री० [ सं० वधूवर हि० बहुवर ] वधू। दुलहिन। स्त्री। पत्नी।

# भ

भंगि—सं० स्त्री० [ सं० ] १. विच्छेद। कुटिलता। ३. विन्यास। ४. कल्लोल। लहर।
भंजना—क्रि० स० [ स० भंजन ] तोड़ना। टुकड़े करना।
भंडन—सं० पु० [ सं० ] १. हानि। क्षति। २. युद्ध। ३. कवच।
भँभरना—क्रि० अ० [ हि० भय + रना ( प्रत्य० ) ] १. डरजाना। भयभीत हो जाना। २. भय के कारण रोंगटे खड़े होना।
भंभार—सं० पु० [ देश० ] धुआँ और लपट मिली हुई आग की ज्वाला
भँभूरा—सं० पु० [ देश० ] १. बवंडर। वायुग्रन्थि २. जलती हुई राख। भौरा।
भमर—सं० पु० [ सं० भ्रमर ] १. बड़ी मधुमक्खी। सारंग। २. बर्रे। भिड़। ३. भौंरा।
भँवरगीत—सं० पु० [ सं० भ्रमरगीत ] दे० 'भ्रमरगीत'।
भकवछ्छल—वि० [ सं० भक्तवत्सल ] दे० 'भक्तवत्सल'
भच्छक—सं० पु० दे० 'भक्षक,
भजक—सं० पु० [ सं० ] १. भजन करने वाला। भजने वाला। २. विभाग करने वाला।
भज्य—वि० [ सं० ] १. विभाग करने योग्य। २. सेवा करने योग्य। ३. भजने योग्य।
भतरौंड़—सं० पु० [ हि० ] मथुरा और वृन्दावनके बीच का एक स्थान। २. ऊँचा-स्थान। ३.मंदिर की शिखर।
भल्लूक—सं० पु० [सं०] १.भालू। २. कुत्ता।
भवँ—सं० स्त्री० [सं० भ्र ] १. भौं। २. पानी का चक्कर। भौंरी।
भँवर—सं० पु० [ सं० भ्रमर ] १. भ्रमर। अलि। २. पानी की लहरों में पड़ने वाला गोलाकार वृत्त। जलावर्त।
भवचाप—सं० पु० [ सं० ] शिवजी के धनुष का नाम। पिनाक।
भस्मा—सं० स्त्री० [ सं० ] आग
भांडार-पञ्जी—सं० स्त्री० [ सं० ] वह बही या पंजी जिसमें भंडारमें रहने वाली वस्तुओं की सूची और उनके आने जाने का लेखा रहता है। ( स्टॉक बुक )
भांडारपाल—सं० पु० [ सं० ] भांडार की देख रेख करने वाला। भांडार का मुख्य अधिकारी। ( स्टॉक कीपर )
भांडरीक—सं० पु० [ सं० ] बेचने के लिये अपने पास वस्तुओंका भंडार रखने वाला व्यक्ति। ( स्टॉकिस्ट )
भांडरि—सं० पु० [ सं० ] १. वटवृक्ष। बड़ का पेड़। २. एक प्रकार का पौधा।
भाटक—सं० पु० [ सं० ] भाड़ा। किराया। ( रेंट )
भाटकाधिकारी—सं० पु० [ सं० ] लोगों से भाड़ा इकट्ठा करने वाला अधिकारी। ( रेंट आफिसर )
भाटकसमाहर्ता—सं० पु० [ सं० ] भाड़ा उगाहने वाला अधिकारी। ( रेंट कलक्टर )
भामी—वि० [ सं० ] क्रुद्ध। कुपित।
सं० स्त्री० [ सं० ] तेज स्वभाव की स्त्री।
भारद—वि० [ भार + द (प्रत्य०) ] भार स्वरूप। बोझल।
भारधारक—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्य के करने कराने, तथा किसी वस्तु की रक्षा का भार अपने ऊपर लेने वाला व्यक्ति। ( चार्ज होल्डर )
भार-प्रमाणक—सं० पु० [ सं० ] किसी व्यक्ति को कोई कार्य, पद, कर्तव्य आदि का भार सौंपने का प्रमाण स्वरूप लेख। ( चार्ज सर्टिफिकेट।
भाविता—सं० स्त्री० [ सं० ] भावी।

भविष्य। होनी। होनहार।

भावक—सं० पु० [सं०] बोलने वाला। कहने वाला। भावना करने वाला।

भासमंत—वि० [सं०] चमकदार। ज्योतिपूर्ण।

भास्वत—सं० पु० [सं०] १. सूर्य। २. मदार का पेड़। ३. चमक। दीप्ति। ४. बहादुर। वीर।

भ्रामरी—सं० पु० [सं० भ्रामरिन्] जिसे भ्रामर या अपस्मार रोग हुआ हो।

सं० स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. एक प्रकार की पुत्रदायी नाम की लता।

भिंगराज—सं० पु० [सं० भृंगराज] एक प्रकार का पक्षी। एक प्रकार का पौधा। भँगरैया।

भिक्षाटन—सं० पु० [सं०] भीख माँगने के लिये किया जाने वाला भ्रमण।

भुअग—सं० पु० [सं० भुजग] दे० 'भुजग'

भुआ—सं० पु० [हि०] सेमर, कपास आदि की रुई जो ढोंड़ी के भीतर भरी रहती है।

भुजग-भोजन—सं० पु० [सं०] सर्प का भोजन। वायु। हवा।

भुरका—सं० पु० [हि० भुरकाना] बुकनी। चूर्ण अबीर।

भुवभंग—सं० पु० [सं० भ्रूभंग] कटाक्ष।

भूमिधर—सं० पु० [सं०] १. पर्वत। २. शेषनाग। ३. वह किसान जो नवीन कृषि विधान से अपनी जोत के पूर्ण मालिक ठहरा दिए गए हैं।

भूराजस्व—सं० पु० [सं०] वह कर जो जोती बोई जाने वाली भूमि पर सरकार द्वारा लिया जाता है। लगान। (लैंड रेवेन्यू)

भूरुह—सं० पु० [सं०] १. वृक्ष। २. शाल का वृक्ष।

भ्र-विक्षेप—सं० पु० [सं०] त्योरी बदलना। नाराजगी दिखलाना। भ्रूभंग।

भैषज्य—सं० पु० [सं०] औषध। दवा।

भौमिक अभिलेख—सं० पु० [सं०] भूमि की नाप-जोख, स्वामित्व आदि से संबंध रखने वाला अभिलेख। (लैंड रेकर्ड्स)

भौमी—सं० स्त्री० [सं०] पृथ्वी की कन्या। सीता।

—※—

## म

मंजरीक—सं० पु० [सं०] तुलसी का पौधा। २. तिल का पौधा। ३. अशोक वृक्ष। ४. बेंत। ५. कोंपल। नया कल्ला।

मंडलाधीश—सं० पु० [सं०] मंडल का मालिक। जिले भर का शासक। (कलेक्टर)

मंत्रजल—सं० पु० [सं०] मंत्र से अभिमंत्रित किया गया जल।

मंत्रज्ञ—वि० [सं०] मंत्र जानने वाला। परामर्श देने की योग्यता रखने वाला। भेदज्ञ।

सं० पु० १. गुप्तचर। २. दूत या चर।

मंत्र-सूत्र—सं० पु० [सं०] मंत्र पढ़कर बनाया गया रेशम या सूत का तागा। गंडा।

मंथिनी—सं० स्त्री० [सं०] माठ। मटका।

मंदक—वि० [सं०] १. मंद बुद्धि। मूर्ख। निर्विरोध।

मंदता—सं० स्त्री० [सं०] १. आलस्य। २. धीमापन। ३. क्षीणता।

मंदभागी—वि० [सं०] अभागा। मंद भाग्य।

मंसना—क्रि० सं० [सं० मनस] १. इच्छा करना। २ मन में संकल्प करना। ३. किसी वस्तु को दान देनेका संकल्प करना।

मउर—सं० पु० [सं० मुकुट] फूलों का बना हुआ वह मुकुट या सेहरा जो विवाह के समय दूल्हे के सिर पर पहनाया जाता है।

मउरी—सं० स्त्री० [हि० मउर] एक प्रकार का कागज का बना हुआ तिकोना छोटा मउर जो विवाह के समय कन्या के सिर पर रखाजाता है।

मकर-केतन (मकरकेतु)—सं० पु० [सं०] काम देव। मनोज।

मकरसङ्‌क्रान्ति—सं० स्त्री० [सं० मकर संक्रांति] मकर की संक्रांति।

मकराज—सं० स्त्री० [अ० मिकराज] कैंची। कतरनी।

मक्कर—सं० पु० [अ० मक] १. छल। कपट। धोखा। २. नखरा।

मघारना—क्रि० सं० [हि० माघ+

आरना] आगामी वर्षा ऋतु में धान बोने के लिये खेत को माघ मास में हल से जोतना।
मणिक—सं० पु० [ सं० ] मिट्टी का घड़ा।
सं० पुं० [ सं० माणिक ] रत्न।
मति भ्रंश— [ सं० ] उन्माद रोग। पागल पन।
मत्स—सं० पु० [ सं० मत्स्य ] मछली। मीन।
मत्स्यजीवी - सं० पु० [ सं० मत्स्य-जीविन् ] मछली मार कर जीविका चलाने वाली एक जाति। निषाद। केवट।
मथौरी—सं० स्त्री० [ हि० माथा + औरी ] स्त्रियों का सिर में पहिनने का अर्द्ध चंद्राकृति एक आभूषण।
मदिर—वि० [ सं० ] मस्ती भरी हुई। मस्त। उन्माद पूर्ण। उन्मत्त।
मदिराक्ष—वि०। [ सं० ] मदभरी आँखों वाला। मस्त आँखों वाला।
मदोत्कट—वि० [ सं० ] मदगर्वित। मदोद्धत। अत्यंत मतवाला।
सं० पु०मद गिराने वाला हाथी।
मधुवाही—वि० [सं०] मधु को वहन करने वाला। सौरभ संयुक्त। मृदुल।
मधूलिका—सं० स्त्री० [ सं० ] १. मूर्वा। २. मुलेठी। ३. एक प्रकार की घास। ४. महुवे के फूल की माला। ५. एक प्रकार की जहरीली मक्खी।
मनःक्षेप—सं० पु० [ सं० ] मन का उद्वेग। मानसिक चांचल्य।
मनवाँ (मनवा)—सं० पु० [ देश० ] नरमा। देव कपास।
मनस्कांत—सं० पु० [ सं० ] १. मनोनीत। मन के अनुकूल। २. प्रिय। प्यारा।
मनस्काम—सं० पु० [ सं० ] मनोभिलाषा। मनोरथ।
मनिका—सं० स्त्री० [ सं० मणि ] माला में पिरोया हुआ दाना। गुरिया।
मनीषिता—सं० स्त्री० [ सं० ] बुद्धिमानी।
मनुजाधिप—सं० पु० [ सं० ] राजा। नृपति।
मने—वि० देखो 'मना'।
मनोयज्ञता—सं० स्त्री० [सं०] सुन्दरता। मनोहरता। खूबसूरती।
मनोभिराम—वि० [ सं० ] मनोज्ञ। सुंदर।
मन्यु—सं० पु० [सं०] १. कोप क्रोध। २. अग्नि। ३. अहंकार। ४. शिव ५. शोक। ६. कर्म।
मरुकांतार—सं० पु० [सं०] बालू या रेत का मैदान। रेगिस्तान। मरुभूमि।
मरुत्पथ—सं० पु० [सं०] आकाश। गगन।
मर्मस्थल—सं० पु० [ सं० ] शरीर के वे कोमल अवयव जहाँ चोट लगने से प्राणांत हो जाने की संभावना हो।
मर्ष—सं० पु० [सं०] शांति। क्षमा।
मलकना—क्रि० अ० दे० 'मचकना'।
मलिंग (मलंग)—सं० पु० [फा०] एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो बहुत कम कपड़े पहिनते हैं और शरीर को साँकलों में जकड़ कर भगवान का नाम लेते रहते हैं।
मलिष्ठ—वि० [सं०] अत्यंत मलिन। बहुत अधिक मैला कुचैला।
मशान—सं० पु० [ सं० श्मशान ] मरघट। मसान।
मषि—सं० स्त्री० [सं०] १. काजल। २. सुरमा। ३. स्याही।
मसाल—सं० स्त्री० दे० 'मशाल'।
महकीला—वि० [ हि० महक + ईला प्रत्य० ] जिससे अच्छी महक आती हो। सुगंधित। महकदार।
महाप्रतिहार—सं० पु० [ सं० ] प्राचीनकाल का एक उच्च कर्मचारी जो प्रतिहारों अथवा नगर या प्रासाद की रक्षा करने वाले चौकीदारों का प्रधान होता था।
महामात्र—सं० पु० [ सं० ] १. महामात्य। २. महावत। ३. हाथियों का प्रधान निरीक्षक।
महच्चिति—सं० स्त्री० [ सं० ] जगत की सृष्टि करने वाली महाशक्ति। आदि शक्ति।
महुकम—वि० [ अ० मुहकम ] दृढ़। मजबूत पक्का।
माँथ—सं० पु० [ सं० मस्तक ] १. माथा। सिर। ललाट।
मानक—सं० पु० [ सं० ] वह स्थिर या निश्चित किया हुआ सर्वमान्य मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाय। ( स्टैंडर्ड )
मानकीकरण—सं० पु० [ सं० ] एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं का मानक स्थिर करना। ( स्टैंडर्डाइ-जेशन )
मानदेय—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्य के अवैतनिक रूप में करने पर उसके बदले पारिश्रमिक रूपमें सम्मान पूर्वक दिया जाने वाला धन। ( आनरेरियम )
मानसता—सं० स्त्री० [ सं० ] मन की भाव। या स्थिति। मन को कार्य में प्रेरित करने वाली स्थिति विशेष।

(मैंटेशिटी)

मानिता—सं० स्त्री० [सं०] १. सम्मान। आदर। २. गौरव। ३. अहंकार।

मान्यक—वि० [सं०] किसी प्रतिष्ठित पद पर अवैतनिक रूप में काम करना।

मार्गकर—सं० पु० [सं०] किसी विशेष मार्ग पर चलने के कारण पथिकों से लिया जाने वाला कर (टोल टैक्स)

माल न्यायालय—सं० पु० [सं०] वह न्यायालय जिसमें केवल माल विभाग के मुकदमों का विचार होता है। (रेवन्यू कोर्ट)

मालूर—सं० पु० [सं०] १. विल्व वृक्ष। बेलका पेड़। २. बेल का पत्र।

मिहीं—वि० [दे०] महीन। बारीक। पतला।

मुकताई—सं० स्त्री० [सं० मुक्ति] मोक्ष। छुटकारा। उद्धार।

मुकुताहल—सं० पु० [सं० मुक्ताफल] मोती।

मुक्तद्वारनीति—सं० स्त्री० [सं०] किसी देश की वह व्यापार प्रणाली जिसके द्वारा उस देश के साथ किसी अन्य देशको व्यापार करने पर कोई भी प्रतिबंध नहीं होता।

मुक्तागृह—सं० पु० [सं०] १. शुक्ति। सीप। २. समुद्र।

मुक्ति-क्षेत्र—सं० पु० [सं०] १. वह स्थान जहाँ मुक्ति प्राप्त हो सके। २. वाराणसी। काशी। ३. कावेरी नदी के किनारे का एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

मुख्यावास—सं० पु० [सं०] वह मुख्य या प्रधान स्थान जहाँ कोई प्रधान अधिकारी मुख्य रूप से रहता हो। प्रधान अधिकारी के मुख्य कार्यालय का स्थान।

मुचना—क्रि० सं० [सं० मुच्] छोड़ना। त्यागना। २ छुट्टी पाना। ३. मुक्त करदेना।

मुत्तिय— सं० पु० [सं० मुक्ता] मोती।

मुद्रण-यंत्र—सं० पु० [सं०] छापे की कल। पुस्तक समाचार पत्र इत्यादि छापने का यंत्र।

मुद्राविस्फीति—सं० स्त्री० [सं०] कृत्रिम रूप से मुद्रा के बढ़े हुए प्रचलन या स्फीति को घटाकर साधारण स्थिति में लाना। (डिफ्लेशन)

मुद्रा-स्फीति—सं० स्त्री० [सं०] किसी देश में कागजी मुद्रा या नोटों आदि का अधिक प्रचलन होने से मुद्रा के बहुत बढ़ जाने की दशा। (इन्फ्लेशन।)

मुनरा—सं० मुद्रा] १. कुंडल। नाथ पंथी योगियों के कान में पहिनने का एक विशेष कुंडल। २. कुमायूँ आदि पहाड़ी प्रांतो की स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

मुनरी—सं० स्त्री० [सं० मुद्रिका] मुँदरी। मुद्रिका। अंगूठी।

मुर्वी—सं० स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी। प्रत्यंचा।

मुष्क—सं० पु० [सं०] १. अंड कोष। २. चोर। ३. ढेर। राशि।

मुह्वी—वि० [सं०] १. मृदु। २. कोमल। ३. कोमलांगी।

सं० स्त्री० सफेद अंगूर की लता।

मेघ-वाहन—सं० पु० [सं०] इंद्र। देवराज।

मेघानंद—सं० पु० [सं०] १. मयूर मोर। २. बगुला। बलाका।

मेध्य—वि० [सं०] १. बुद्धि वर्धक। २. मेधाजनक। ३. पवित्र। शुचि।

मेलन—सं० पु० [सं०] १. एक साथ होना। इकट्ठा होना। मिलन। २. जमावड़ा। ३. मिलने की क्रिया या भाव।

मैमत—वि० दे० 'मैमंत'।

## य

यंद—सं० पु० [सं० इंद्र] राजा। स्वामी।

यंत, यंता—सं० पु० [सं० यंतृ] रथ हाँकने वाला। सारथी। रथवान।

यंत्रक—सं० पु० [सं०] घाव इत्यादि पर बाँधा जाने वाला कपड़ा। पट्टी।

यक्षु—सं० पु० [सं०] १. यज्ञकर्ता। २. वैदिक काल का एक जनपद जो वक्षु के नाम से भी विख्यात था। और वक्षु नामक नदी के तट पर स्थित था।

यतव्रत—सं० पु० [सं०] अत्यंत संयमी। अध्यवसायी।

यथाकामी—सं० पु० [सं०] अपनी

इच्छा के अनुसार काम करने वाला। स्वेच्छा चारी।

यथार्थवाद्—सं० पु० [सं०] साहित्य में आज कल व्यवहृत होने वाला एक सिद्धांत, जिसके अनुसार किसी वस्तु का ठीक उसी रूप में वर्णन किया जाता है।

यांचा—सं० स्त्री० [सं०] माँगने की क्रिया। प्रार्थना पूर्वक किसी वस्तु को माँगना।

यापक—सं० पु० [सं०] भेजी हुई वस्तु का पाने वाला। जिसके नाम से वस्तु भेजी जाय। (एड्रेसी)

यावक—सं० पु० [सं०] १. जौ। २. जौ का सत्तू। ३. महावर।

युगांत—सं० पु० [सं०] १. प्रलय। २. युग का अंतिम समय। ३. किसी चलती हुई परंपरा का विच्छिन्न हो जाना।

यूक, यूका—सं० पु० [सं०] एक प्रकार का कीड़ा जो बालों में पड़ता है। जूँ। ढील। चीलर।

योगकन्या—सं० स्त्री० [सं०] यशोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या जिसे वसुदेव ले जाकर देवकी के पास रख आये थे।

युद्धक—वि० [सं०] १. युद्ध करने वाला। २. युद्ध संबंधी।

योधन—सं० पु० [सं०] १. युद्ध की सामग्री। २. युद्ध। लड़ाई।

योषा—सं० स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री।

योषित्—सं० स्त्री० [सं०] नारी। स्त्री। औरत।

यौतिक—सं० पु० [सं०] विनोद या क्रीड़ा का साथी। नर्म सखा।
वि० जो युक्ति के अनुसार ठीक हो। युक्ति-युक्त।

यौन—वि० [सं०] योनि संबंधी। योनि का।

—❦—

## र

रंगगृह—सं० पु० [सं० रंगभूमि। नाट्यस्थल।

रंगवाति—सं० स्त्री० [?] खराब नम। कच्चा शीशा।

रंगराबटी—सं० स्त्री० [?] रंग-महल। क्रीड़ागृह।

रँगरैनी—सं० स्त्री० [हि० रंग+ रैनी=चुनरी] एक प्रकार की लाल रंग की चुनरी।

रंतिदेव—सं० पु० [सं०] १. एक बड़े दानी राजा जिन्होंने एक बार ४८ दिन के निराहार के बाद भी आए हुए अतिथि को अपनी भोजन-सामग्री देदी थी। २. विष्णु। ३. श्वान। कुत्ता।

रंधित—वि० [सं०] १. पकाया हुआ। राँधा हुआ। २. नष्ट।

रंह—सं० पु० [सं० रंहस] वेग। गति। तेज़ी।

रक्तक—सं० पु० [सं०] १. गुल दुपहरिया का पौधा या फूल। २. कुंकुम केसर।
वि० लाल रंग का २. प्रेम करने वाला। अनुरागी। ३. विनोदी।

रक्त-तुंड—सं० पु० [सं०] शुक। तोता।

रक्त-दृग—सं० पु० [सं०] कोकिल। कोयल।

रक्तांग—सं० पु० [सं०] मंगल-ग्रह। २. मूँगा। ३. लाल चंदन। ४. खटमल।

रक्तोपल—सं० पु० [सं०] गेरू नाम की लाल मिट्टी।

रक्षाप्रदीप—सं० पु० [सं०] तंत्रानुसार वह दीपक जो भूत प्रेतादि की बाधा से रक्षा करने के लिये जलाया जाता है।

रक्षिक—सं० पु० [सं०] बचाने वाला। रक्षक। २. पहरेदार। संतरी।

रक्तचाप—सं० पु० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त का वेग या चाप साधारण से अधिक घट या बढ़ जाता है। (ब्लॅड प्रेसर)

रगड़ी—वि० [हि० रगड़ा + ई (प्रत्य०) रगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

रगा—सं० पु० [देश०] अधिक वर्षा के उपरांत होने वाली धूप।

रजतपट—सं० पु० [सं०] वह पर्दा जिसपर चल-चित्रों का प्रदर्शन होता है।

रजतजयंती—सं० स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति के जन्म या किसी संस्था तथा काम के प्रारम्भ से २५ वें वर्ष पर होने वाली जयंती।

रत्नागरभ—सं० स्त्री० [सं० रत्नगर्भा] पृथ्वी। भूमि।

रतियो—क्रि० वि० [हि० रती] रती मात्र भी। थोड़ा भी।

रसकि—क्रि० पु० [हि० रसकना]

भुनकना। मन में त्रिकुड़ना।
रब्ध—वि० [सं०] आरंभ किया हुआ।
रमेश(रमेश्वर)—सं० पु० [सं०] रमा के पति। विष्णु।
रजवारे—सं० पु० [हि० राज्यवाला] १. रजवाड़ा। राजा। २. राज्य की विधियों का ज्ञाता।
रसवत्ता—सं० स्त्री० [सं०] १. रस युक्त होने का भाव या धर्म। रसीलापन। २. मिठास। माधुर्य। ३. सुन्दरता।
रसाध्यक्ष—सं० पु० [सं०] मादक द्रव्यों की जाँच-पड़ताल करने वाला तथा उनकी बिक्री की व्यवस्था करने वाला प्राचीन काल का एक राज-कर्मचारी।
रसिका—सं० स्त्री० [सं०] १. दही का शरबत। सिखरन। २. वाणी। जीभ। ३. मैना पक्षी।
राजतंत्र—सं० पु० [सं०] १. राज्य का शासन और व्यवस्था। राज्य-प्रबंध। २. वह शासनप्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबन्ध एक मात्र राजा के हाथ में रहता है। शासन-व्यवस्था में प्रजा या प्रजा के प्रतिनिधियों को कोई स्थान नहीं होता।
राजमहिषी—सं० स्त्री० [सं०] राजा की प्रधान रानी। पटरानी। राज-रानी।
राज्यपाल—सं० पु० [सं०] भारत के नवीन विधान के अनुसार प्रांतों के प्रधान शासक। प्रांतपति।
रान्ह—सं० पु० [फा० रान] जंघा। जाँघ।
रिच्छ—सं० पु० [सं० ऋक्ष] नक्षत्र। तारे।
रिलना—क्रि० अ० [हि०] मिल जाना। व्याप्त होना। एक होना।
रुचित—वि० [सं०] अभिलषित। इच्छित।
रुच्य—वि० [सं०] १. रुचिकर। २. सुन्दर। खूबसूरत।
रुजा—सं० स्त्री० [सं० रुज] १. रोग। २. पीड़ा।
रुषित—वि० [सं०] १. क्रुद्ध। २. रंज। दुखी।
रेतस्—सं० पु० [सं०] १. वीर्य। शुक्र। २. पारा। ३. जल।
रेनुका—सं० स्त्री० दे० 'रेणुका'।
रेष—सं० स्त्री० [सं० रेखा] रेखा। चिह्न।
रैसा—सं० पु० [सं० रेष] झगड़ा। कलह। युद्ध।
रैहाइ—क्रि० अ० [हि० रहना] दे० 'रहना'।
रैहर—सं० पु० [सं० रेष] हिंसा। झगड़ा लड़ाई।
रोकड़बही—सं० स्त्री० [हि० रोकड़+बही] वह बही या पुस्तिका जिसमें नगद रुपए का लेन-देन लिखा रहता है
रौदा—सं० पु० [हि०] धनुष की डोरी। प्रत्यंचा। ज्या।
रौरई—सं० स्त्री० [हि०] रोमांच। बेचैनी। व्यग्रता।
रौरी—वि० [हि० रूरी] १. सुन्दर। २. मधुर।
रौहाल—वि० [फा० रहवार] चलने वाला। राही। सं० पु० रूढ़ि से इसका अर्थ घोड़ा होता है।
र्यासद्—सं० स्त्री० दे० 'रियासत'
र्यौरो—सं० स्त्री० दे० 'रेवड़ी'

## ल

लंकाल—सं० पु० [हि०] सिंह। शेर।
लंकिनी—सं० स्त्री० [सं०] लंका में जाते समय हनुमान द्वारा मारी गई एक राक्षसी।
लंब-ग्रीव—सं० पु० [सं] १. ऊँट २. सारस पक्षी।
वि० लंबे गर्दन वाला।
लंभन—सं० पु० [सं०] १. ध्वनि। २. लाञ्छन। कलंक।
लकरी—सं० स्त्री० दे० 'लकड़ी'।
लकुटिया—सं० स्त्री० [सं० लगुड] छोटी छड़ी। पतली लाठी।
लल—वि० [सं०] लाल। सुर्ख।
लक्तक—सं० पु० [सं०] १. आल-ता जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं। अलक्तक। २. बहुत पुराना फटा कपड़ा। लत्ता।
लघुतम समापवर्त्य—सं० पु० [सं० वह छोटी से छोटी संख्या जो दी हुई दो या दो से अधिक संख्याओं से पूरी पूरी विभाजित हो सके।
लघुत्व—सं० पु० [सं०] १. छोटाई। छोटापन। लघुता २. तुच्छता। हल-कापन।
लघुहस्त—सं० पु० [सं०] हाथ के कार्यों में अत्यंत निपुण। शीघ्रता से

अस्त्र चलाने वा ना।

**लड़बावर**—वि० [ सं० लड = लड़कों का सा + बावरा ] १. जिसमें लड़क पन हो। जो चतुर और गंभीर न हो। अल्हड़। २. गँवार।

**लड़बौरा**—वि० दे० 'लड़बावर'।

**लबरा**—वि० [ सं० लपन = बोलना ] झूठ बोलने वाला। गप हाँकने वाला।

**लांगुल**—( लांगूल ) सं० पु० [ सं० ] पूँछ। दुम।

**लिखनि**—सं० स्त्री० [ हि० ] १. लिपि या लेख लिखावट। २. कर्म की रेखा। ३. चित्र।

**लीनता**—सं० स्त्री० [ सं० ] तन्मयता। तत्परता।

**लुँडियाना**—क्रि० सं० [ हि० लुँडी ] सूत या रस्सी को पिंडी के रूप में लपेटना।

**लुढ़कना**—क्रि० अ० [ दे० ] ढुलकना। ढुलना।

**लग्नक**—सं० पु० [ सं० ] जमानत करने वाला। प्रतिभू।

**लभ्यांश**—सं० पु० [ सं० ] क्रय-विक्रय आदि में होने वाला लाभ। मुनाफा।

**लाभांश**—सं० पु० [ सं० ] किसी व्यापार में रुपया लगाने वाले सब भागीदारों को उससे होने वाला लाभ का अंश ( डिविडेंड )

**लिपिक**—सं० पु० [ सं० ] लिखने वाला। कार्यालयों में लिखा पढ़ी का काम करने वाला। लेखक।

**लून**—( लूना ) सं० पु० दे० लोन।

**लूवरा**—सं० स्त्री० [ हि० लोवा ] लोमड़ी।

**लेखन-सामग्री**—सं० स्त्री० [ सं० ] लिखने में काम आने वाली वस्तुएँ। ( स्टेशनरी )

**लेखा कर्म**—सं० पु० [ सं० ] आय व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का कार्य। ( एकाउटेंसी )

**लेखा-परीक्षक**—सं० पु० [ सं० ] आय व्यय के लेखे की जाँच-पड़ताल करने वाला। ( आडीटर )

**लेखा-परीक्षण**—सं० पु० [ सं० ] आय व्यय को अच्छी प्रकार देख भाल करके उसे उचित-अनुचित ठहराने का कार्य। ( आडिटिंग )

**लेले**—सं० पु० [ देश० ] बकरी या भेड़ का बच्चा। मेमना।

**लैंगिक**—वि० [ सं० ] स्त्री० पुरुष की जननेंद्रिय से संबंधित। यौन। ( सेक-सुअल )

**लोक कंटक**—सं० पु० [ सं० ] जन साधारण के लिये कष्टप्रद बातें। जैसे—सड़क पर धुआँ करना। कूड़ा करना।

**लोकसभा**—सं० स्त्री० [ सं० ] प्रतिनिधि सत्तात्मक राज्यों में जनसाधारण द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की सभा। ( हाउस आफ पीपुल )।

**लोर**—वि० [ सं० लोल ] चंचल। चपल।

## व

**वंकनाल**—सं० पु० [ हि० ] शरीर की एक नाड़ी का नाम। सुषुम्ना नाड़ी।

**वंचन**—सं० पु० [ सं० ] धोखा देना या खाना। धूर्तता। ठगी। धोखा।

**वंजुल**—सं० पु० [ सं० ] १. बेंत। २. तिनिश नाम का एक वृक्ष। अशोक वृक्ष।

**वंदनवार**—सं० स्त्री० [ सं० वंदन-माल ] घरों के द्वार तथा मंडप के चारों ओर लगाई जाने वाली माला। धार्मिक कृत्योंमें मंडप के चारों ओर लगाई जाने वाली मूँज में गुँथी आम्र पल्लवों की माला।

**वंदी गृह**—सं० पु० [ सं० ] कैद-खाना। जेल।

**वंदा**—सं० पु० [ सं० वंदाक ] पेड़ों के ऊपर उसके रस से पलने वाला एक प्रकार का पौधा।

**वंशिका**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. बंसी। मुरली। २. पिप्पली।

**वकव्रत**—सं० पु० [ सं० ] बगले की तरह घात में लगा रहने वाला। कपटी।

**वक्रगति**—सं० पु० [ सं० ] १. मंगल। भौम। २. ग्रह लाघ के अनुसार सूर्य से पाँचवें, छठें, सातवें, और आठवें रहने वाले ग्रह।

**वक्रांग**—वि० [ सं० ] जिसका अंग टेढ़ा हो। सं० पु० १. हंस। २. सर्प। साँप।

**वक्रिम**—वि० [ सं० ] टेढ़ा। कुटिल।

वचनीय—वि० [ सं० ] कहने योग्य । कथनीय ।
सं० पु० निंदा । शिकायत ।

वक्तव्यता—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी कार्य के संबन्ध में वक्तव्य या उत्तर देने का भार । उत्तरदायित्व । ( ऐलसरेबिलटी )

वड़वा—सं० स्त्री० [ सं० ] घोड़ी । अश्वा ।

वडिशा—सं० पु० [ सं० ] मछली फँसाई जाने वाली बंसी । कँटिया ।

वत्सतरी—सं० स्त्री० [ सं० ] तीन वर्ष की बछिया

वनद—सं० पु० [ सं० ] मेघ । बादल ।

वनांत—[ सं० ] वन प्रांत । जंगली भूमि या मैदान ।

वन्या—सं० स्त्री० [सं०] १. एक बहुत बड़ा जंगल । अरण्यानी । २. जल-राशि । ३. बाढ़ । ४. नदी ।

वप्ता—सं० पु० [ सं० ] १. बीज बोने वाला । २. पिता । जनक । ३. कवि । ४. नाई ।

वप्र—सं० पु० [ सं० ] मिट्टी का ऊँचा धुस्स । मृत्तिकास्तूप । २. क्षेत्र । खेत । ३. नदी आदि का ऊँचा तट । ४. टीला । भीटा ।

वरज—वि० [ सं० ] ज्येष्ठ । बड़ा ।

वरयिता—सं० पु० [ सं० ] १. वरण करने वाला । २. पति । स्वामी । भर्त्ता ।

वरवर्णिनी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. उत्तम स्त्री । २. गौरी । ३. सरस्वती ।

वरांग—सं० पु० [ सं० ] १. मस्तक २. योनि । ३. पेड़ की टहनी का सिरा ।

वरासन—सं० पु० [ सं० ] १. श्रेष्ठ आसन । ऊँचा आसन । २. विवाह में वर के बैठने का आसन या पाटा ।

वर्चस्—सं० पु० [ सं० ] १. रूप । २. तेज । कांति । दीप्ति ।

वर्णना—सं० स्त्री० [ सं० ] गुण-कथन । यशवर्णन ।

वर्णनाश—सं० पु० [सं०] निरुक्तकार के अनुसार शब्द में किसी वर्ण का नष्ट हो जाना ।

वर्णविपर्यय—सं० पु० [ सं० ] निरुक्त के अनुसार शब्दों में वर्णों का उलट-फेर हो जाना ।

वर्द्धकी—सं० पु० [ सं० ] लकड़ी का काम करने वाला । बढ़ई ।

वशंवद—वि० [ सं० ] १. वशीभूत । वशवर्ती । २. आज्ञाकारी । दास ।

वसुधाधिप—सं० पु० [ सं० ] राजा । नृप ।

वस्तुज्ञान—सं० पु० [ सं० ] १. किसी वस्तु की पहचान । २. मूल तथ्य का बोध । सत्य की जानकारी । तत्त्वज्ञान ।

वहनपत्र—सं० पु० [ सं० ] जहाज के प्रधान अधिकारी की ओर से लदे हुए माल की रसीद के रूप में, माल भेजने वाले को मिला हुआ पत्रक । ( बिल आफ लेडिंग )

वयस्कमताधिकार—सं० पु० [सं०] निर्वाचनप्रणाली में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के समस्त वयस्क निवासियों को बिना किसी प्रकार के भेद भाव के प्राप्त होता है ।

वर्णक—सं० पु० [ सं० ] वास्तविक रूप छिपाने के लिये ऊपर से धारण किया जाने वाला कोई और रूप या आवरण । ( मास्क )

वर्णच्छटा—सं० स्त्री० [सं०] १. नेत्र बंद कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देने वाली किसी वस्तु की आकृति । २. प्रकाश के रंग जो कुछ विशेषण आदि के लिये किसी पर्दे पर डाल कर देखे जाते हैं ।

वहिर्देश—सं० पु० [ सं० ] १. बाहरी स्थान । २. विदेश । ३. अज्ञात स्थान । ४. द्वार । दरवाजा ।

वहित्र—सं० पु० [ सं० ] १. नाव । २. बड़ी बड़ी पालदार नाव ।

वहिर्लंब—सं० पु० [ सं० ] किसी क्षेत्र के बाहर बढ़ाये हुए आधार पर डाला जाने वाला लंब । ( रेखा-गणित ) ।

वहिष्प्राण—सं० पु० [ सं० ] १. जीवन । २. श्वास वायु । ३. अर्थ ।

वाँ—अव्य० [ हि० वहाँ का संक्षिप्त रूप ] उस जगह, उस स्थान पर ।

वाक्चपल—वि० [ सं० ] १. बकवादी । २. मुँहजोर । ३. अपनी कही हुई बात से हट जाने वाला ।

वाक्संयम—सं० पु० [ सं० ] १. वाणी का संयम । अन्यथा बात न कहना । व्यर्थ बातें न करना ।

वागुर—सं० पु० [ सं० वागुरा ] मृगों के फँसाने का जाल । फंदा ।

वागुरिक—सं० पु० [ सं० ] हिरन फँसाने वाला शिकारी । बहेलिया ।

वाणिज्यदूत—सं० पु० [ सं० ] किसी दूसरे देश में व्यापारिक संबंध सुरक्षित रखने और बढ़ाने के लिये नियुक्त किया गया दूत । (कान्सल) ।

वामी—सं० स्त्री० [ सं० ] शृंगाली । गीदड़ी । २. घोड़ी । ३. गधी ।

वाम पंथ—सं० पु० [ सं० ] किसी विषय में उग्र मतावलंबियों का सिद्धांत ( लेफ्ट विंग ) ।

**वायन**—सं० पु० [ सं० ] देव पूजन या विवाहादि मांगलिक कार्यों में उपहार रूप में बाँटी जाने वाली मिठाई या पकवान।

**वायु-पथ**—सं० पु० [ सं० ] १. वायु मार्ग। आकाश। २. हवाई जहाजों के आकाश में आने जाने के रास्ते। ( एयरवेज )।

**वारिचर**—सं० पु० [ सं० ] पानी में रहने वाले जंतु। २. मत्स्य। मछली। ३. शंख।

**वारिधर**—सं० पु० [ सं० ] मेघ। बादल। पयोद।

**वारिनाथ**—सं० पु० [ सं० ] १. वरुण। २. समुद्र। ३. बादल। मेघ।

**वारिनिधि**—सं० पु० [ सं० ] सागर। समुद्र।

**वार्षिक**—वि० [ सं० ] वर्षों से संचित। जैसे, वार्षिक वृक्ष।

सं० पु० [ सं० ] लेखक।

**वायविक**—वि० [ सं० ] वायु संबंधी। सं० पु० [ सं० ] वे बाँस और तार आदि जिनकी सहायता से रेडियो वायु मंडल ( ईथर ) से शब्द, ध्वनि आदि ग्रहण करता है। ( एरियल )।

**वार्षिकी**—सं० स्त्री० [ सं० ] प्रति वर्ष दी जाने वाली वृत्ति या अनुदान। ( एनुइटी ) २. प्रति वर्ष होने वाला प्रकाशन ( ऐनुअल )

**वाष्पीकरण**—सं० पु० [ सं० ] किसी वस्तु को कुछ विशेष प्रक्रिया द्वारा वाष्प के रूप में लाना। ( एवोपोरेशन )

**वास्तु शांति**—सं० स्त्री० [ सं० ] नवीन गृह या मंदिर में प्रवेश करने के समय किये जाने वाले कर्म।

**वाहु**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. हाथ के ऊपर का भाग जो कुहनी और कंधे के बीच होता है। भुजदंड २. गणित-शास्त्र में त्रिकोणादि क्षेत्रों के किनारे ( पार्श्व ) की रेखा। भुजा। ( साइड )

**वाहुल्य**—सं० पु० [ सं० ] आधिक्य। अधिकता।

**विकलता**—सं० स्त्री० [ सं० ] विकल होने की अवस्था या भाव। बेचैनी। व्यग्रता। २. कलाहीनता।

**विकलन**—सं० पु० [ सं० ] खाते या रोकड़ बही में उसे दिया हुआ धन लिखना। किसी के नाम या खर्च की मद में लिखना। ( डेबिट )

**विकल्पित**—वि० [ सं० ] १. जिसके संबंध में निश्चय न हो। संदिग्ध। २. जिसका कोई नियम न हो अनियमित।

**विकासवाद**—सं० पु० [ सं० ] एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक सिद्धांत, जिसमें यह माना जाता है कि आरंभ में पृथ्वी पर एक ही मूल तत्त्व था और सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव, जंतु, मनुष्य आदि उसी से निकले, बढ़े और फैले हैं।

**विक्रयिका**—सं० स्त्री० [ सं० ] ग्राहक को दूकान से नगद माल खरीदने पर मिलने वाला वह पुरजा जिसमें वस्तुओं के परिमाण, दर तथा दाम का ब्योरा होता है। ( कैशमेमो )

**विक्रयी**—सं० पु० [ सं० ] बेंचने वाला। दूकान दार।

**विक्रेता**—सं० पु० [ सं० ] बेचने वाला। विक्रयी।

**विख्यापन**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० विख्यापित ] सब की जानकारी के लिये किसी बात को सार्वजनिक रूप से कहना या प्रकाशित करना प्रसिद्ध करना।

**विगलन**—सं० पु० [ सं० ] १. पुराना या खराब हो जाने के कारण किसी वस्तु का गलना या सड़ना। २. शिथिल हो जाना। ३. बिगड़ना ४. बह कर अलग हो जाना।

**विघन**—सं० पु० [ सं० विघ्न ] अड़चन। कठिनाई। बाधा।

**विचयन**—सं० पु० [ सं० ] १. इकट्ठा करना। एकत्र करना। २. जाँच पड़ताल करना।

**विचरनि**—सं० स्त्री० [सं० विचरण] चलने-फिरने या घूमने की क्रिया या भाव।

**विचिंत्य**—वि० [ सं० ] जो चिंतन करने या सोचने के योग्य हो। २. जिसमें किसी प्रकार का संदेह हो। संदिग्ध। ३. शोचनीय। गिरी हुई।

**विचित्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. संज्ञा-शून्यता। बेहोशी। २. अनमनापन। जिसमें मनुष्य का चित्त ठिकाने न रहे।

**विचित्रशाला**—सं० स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थों का संग्रह हो। अजायब घर।

**विचेता**—सं० पु० [ सं० ] १. जिसका चित्त ठिकाने न हो। उन्मन। २. संज्ञा-शून्य। बेहोश। ३. जिसे किसी विषय का ज्ञान न हो। ४. दुष्ट। कुत्सित विचार वाला।

**विच्छेद्य**—वि० [सं०] १. विभाज्य। अलग करने योग्य। २. काटने योग्य।

**विच्युति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. किसी पदार्थ का अपने स्थान से हट या गिर जाना। च्युत होना। २. गर्भस्राव।

**विजनता**—सं० स्त्री० [ सं० ] १.

विजन होने का भाव। एकांतता। अकेलापन। २. उजाड़।

विजनन—सं० पु० [सं०] १. जनन करने की क्रिया। प्रसव। २. वह जनन प्रक्रिया जो यांत्रिक विधि से हो।

विजोगी—सं० पु० [सं० वियोगी] जिसका अपने प्रिय से बिछोह हुआ हो।

विजृंभण—सं० पु० [सं०] १. किसी पदार्थ का मुँह खुलना। २. जँभाई लेना। उबासी लेना। ३. धनुष की डोरी खींचना। ४. भौं सिकोड़ना।

विज्ञप्त—वि० [सं०] जो बताया या सूचित किया गया हो। जतलाया हुआ।

विज्ञप्तिका—सं० स्त्री० [सं०] १. सूचना। (नोटिस) २. प्रार्थना। निवेदन।

विज्ञापित—वि० [सं०] १. जिसका विज्ञापन हुआ हो। २. जिसकी सूचना दी गई हो।

विज्ञापित क्षेत्र—सं० पु० [सं०] स्थानीय स्वशासन और प्रबंध के लिये निश्चित किया हुआ क्षेत्र। (नोटीफाइड एरिया)

विटपी—सं० पु० [सं० विटपिन्] जिस पेड़ में नई शाखाएं और कोपलें निकली हों। २. वृक्ष। पेड़। ३. अंजीर का पेड़।

वितत—वि० [सं०] विस्तृत। फैला हुआ।

वितृष्णा—सं० स्त्री० [सं०] तृष्णा का अभाव। तृष्णा का न होना।

वित्तविधेयक—सं० पु० [सं०] १. किसी राज्य के आगामी वर्ष से संबंध रखने वाला आनुमानित आयव्यय का विधेयक। (फाइनेंस बिल)।

वित्तीय—वि० [सं०] किसी राज्य के वित्त से संबंधित। (फाइनैंशल)

विद—सं० पु० [सं०] १. पंडित। विद्वान्। २. जानकार। जानने वाला।

विदलित—वि० [सं०] १. जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो। २. रौंदा हुआ। मला हुआ। ३. टुकड़े टुकड़े किया हुआ। ४. फाड़ा हुआ।

विदारण—सं० पु० [सं०] १. फाड़ना। २. मार डालना।

विदारना—क्रि० स० [सं० विदारण] फाड़ना। चीरना। विदीर्ण करना।

विद्विष्टि—सं० स्त्री० [सं०] विद्वेष। शत्रुता। दुश्मनी।

विधायिका सभा—सं० स्त्री० [सं०] किसी राज्य में नवीन विधान बनाने या प्राचीन विधान में संशोधन करने वाली प्रजाके प्रतिनिधियों की सभा, जिसका संघटन लोकतंत्रीय प्रणाली से होता है। (लेजिसलेचर)

विधिक—वि० [सं०] विधानतः उचित। वैध। २. विधि से संबंधित। (लीगल)

विधूम—वि० [सं०] धूम्र रहित। बिना धुएँ का।

विधेयक—सं० पु० [सं०] विधायिका सभा में पारित होने के लिये उपस्थित किया हुआ विधान का प्रस्तावित रूप। (बिल)

विधेयता—सं० स्त्री० [सं०] १. औचित्य। २. योग्यता। ३. अधीनता।

विनिपात—सं० पु० [सं०] विनाश। ध्वंस। २. वध। हत्या। ३. अपमान। अनादर।

विनिमयपत्र—सं० पु० [सं०] किसी आर्थिक देने या पावने का सूचक वह पत्र जिसके द्वारा आपस के लेन-देन का भाव तै होता है। (बिल आफ एक्सचेंज)

विनियंत्रण—सं० पु० [सं०] नियंत्रण का हटाया जाना। (डी-कंट्रोल)

विनियोगिका वृत्ति—सं० स्त्री० [सं०] विनियोग करने में समर्थ बुद्धि या वृत्ति। (डिस्पोजिंग माइंड)

विनिर्दिष्ट—वि० [सं०] विशेष रूप से निर्देश किया हुआ या निश्चित रूप से बतलाया हुआ।

विनिश्चय—सं० पु० [सं०] १. किसी विषय पर होने वाला कोई विशेष ढंग का निश्चय। २. किसी सभा, समिति या न्यायालय में किसी विषय पर होने वाला निर्णय। (डिसीजन)

विनिश्चायक—सं० पु० [सं०] किसी विषय पर विशिष्ट निश्चय या निर्णय करने वाला।

विनीति—सं० स्त्री० [सं०] विनय। नम्रता। सुशीलता। २. शिष्टता। सद्व्यवहार।

विपर्ण—वि० [सं०] पत्र-हीन। ठूँठ। सं० पु० [सं०] रसीद बही का वह भाग जो भरकर किसी को दिया जाता है। (आउटर फाइल)

विपश्चित—सं० पु० [सं०] पंडित। बुद्धिमान्। सूक्ष्म दर्शी।

विभास—सं० पु० [सं०] [क्रि० विभासना] चमक। दीप्ति। कांति।

विभावन—सं० पु० [सं०] १. विशेष रूप से चिंतन। २. साहित्य के रस-विधान में वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र द्वारा प्रदर्शित भाव का श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण के द्वारा भागी होता है।

३. पहचान करना। ( आइडेन्टिफिकेशन )

**विमृष्ट**—वि० [ सं० ] १. जिस पर तर्क वितर्क या सम्यक् विचार हुआ हो। २. जिसकी पूरी आलोचना हुई हो। ३. परिष्कृत।

**वियुग्म**—वि० [ सं० ] १. जो युग्म या जोड़ा न हो। अकेला। २. जो दो से पूरा पूरा विभाजित न हो सके। ३. विलक्षण। अनोखा। ( आॅड )

**विरंजन**—सं० पु० [ सं० ] किसी वस्तु से रंगों को दूर करने की प्रक्रिया। किसी वस्तु को धोकर साफ करना। ( ब्लीचिंग )।

**विरामसंधि**—सं० स्त्री० [ सं० ] युद्ध करनेवालों में होने वाली वह संधि जो पूर्ण संधि के पूर्व संधि की शर्तों के लिए होती है। ( ट्रूस )

**विरोध-पीठ**—सं० पु० [ सं० ] विधायिका सभाओं आदि में राजकीय पक्ष या बहुमत दल के विरोधी लोगों के बैठने का आसन। ( अपोजिशन बेंचेज )

**विलयन**—सं० पु० [ सं० ] १. लय को प्राप्त होना। विलीन होना। किसी में मिल कर अपने अस्तित्व को खो देना। २. विघटित हो जाना। ३. किसी देशी रियासत या राज्य का राज्य या राष्ट्र में विलीन होकर एक हो जाना। ( मर्जर )

**विलयीकरण**—सं० पु० [ सं० ] विलयन कर लेने की क्रिया। किसी राज्य या राष्ट्र का किसी छोटे राष्ट्र को अपने में मिला लेना। ( मर्जर )

**विलोभन**—सं० पु० [सं०] १. लोभ दिखाने की क्रिया। २. मोहित या आकर्षित करने का व्यापार। ३. कोई बुरा कार्य करने के लिये किसी को लोभ दिखाने का कार्य।

**विवरणिका**—सं० स्त्री० [ सं० ] सभा-संस्थाओं या घटनाओं आदि का वह विवरण जो सूचना के लिये किसी के पास भेजा जाय। (रिपोर्ट)

**विवाहविच्छेद**—सं० पु० [ सं० ] पति और पत्नी का वैवाहिक संबंध विधानतः तोड़ना या न रखना। तलाक। ( डाइवोर्स )

**विवेचना**—सं० स्त्री० [ सं० ] देखो 'विवेचन'।

**विशीर्ण**—वि० [ सं० ] १. सूखा हुआ। २. दुबला-पतला। ३. बहुत पुराना। जीर्ण।

**विशोक**—वि० [ सं० ] जिसे शोक न हो। शोक रहित।

**विश्रुति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. प्रसिद्धि। ख्याति। २. किसी बात को सब लोगों में प्रसिद्ध करने या बतलाने की क्रिया। ( पब्लिसिटी )

**विश्रुति पत्र**—सं० पु० [ सं० ] किसी ऋण को नियत समय पर चुका देने के लिए ऋण लेते समय दिया गया लिखित प्रतिज्ञा पत्र। ( प्राॅमिसरी नोट )

**विश्लेषक**—सं० पु० [ सं० ] रासायनिक तथा अन्य किसी भी प्रकार की वस्तुओं का विश्लेषण करने वाला। ( एनालिस्ट )

**विषंग**—सं० पु० [ सं० ] १. आनुषंगिक तत्वों अंगों आदि का अलग या पृथक होना। २. अपने में से किसी को अलग करना।

**विषय-समिति**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी महासभा या संमेलन में उपस्थित किए जाने वाले विषय या प्रस्ताव आदि को निश्चित करने वाली उसी महा सभा के कुछ विशिष्ट सदस्यों की समिति। ( सब्जेक्ट्स कमेटी )

**विषयानुक्रमणिका**—सं० स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई सूची। विषय सूची।

**विसंभूत**—वि० [ सं० ] असंभावित या आशा के विरुद्ध आकस्मिक रूप से होने वाला। ( एमर्जेन्ट )

**विसंभूति**—सं० स्त्री० [ सं० ] अकल्पित और असंभावित रूप से अकस्मात् घट जाने वाली घटना ( एमर्जेन्सी )

**विसामान्य**—वि० [ सं० ] जो सामान्य से कुछ घटकर हो।

**विस्फीति**—सं० स्त्री० [ सं० ] कृत्रिम रूप से फूले हुए पदार्थ या बढ़े हुये मुद्रा के प्रचलन को फिर से पूर्व स्थिति में लाना। ( डिफ्लेशन )

**वेधालय**—सं० पु० [ सं० ] वेधशाला।

**वेध्य**—वि० [ सं० ] १. जिसे वेध किया जाय। २. जो वेध करने योग्य हो।

**वेल्लि**—सं० स्त्री० [ सं० ] वेल्लि। लता। वल्लरी।

**वैचारिक**—वि० [ सं० ] १. विचार संबंधी। २. न्याय विभाग तथा उसकी व्यवहार-प्रणाली से संबंध रखने वाला। ( जुडिशल )

**वैचारिक अवेक्षा**—सं० स्त्री० [सं०] वह विशेष ध्यान जो न्याय विभाग द्वारा किसी विषय पर दिया गया हो। न्याय विभाग द्वारा दी जाने वाली अवेक्षा। ( जुडिशल नोटिस )

**वैचारिक विज्ञान**—सं० पु० [सं०] व्यवहारों ( मुकदमों ) के मूल सिद्धांतों का विवेचन करने वाला विज्ञान।

**वैचारिकी**—सं० स्त्री० [ सं० ] न्याय

विभाग में काम करने वाले अधिकारियों का वर्ग या समूह। (ब्यूरोक्रेसी)

वैत्तिक—वि॰ [सं॰] आय व्यय आदि की व्यवस्था से संबंध रखने वाला। वित्त-संबंधी। (फाइनैन्शल)

वैदग्ध—सं॰ पु॰ [सं॰] विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव। विद्वत्ता। २. पटुता। कुशलता। ३. चतुरता। ४. रसिकता।

वैफल्य—सं॰ पु॰ [सं॰] विफल या निरर्थक होने का भाव। विफलता।

वैभिन्न्य—सं॰ पु॰ [सं॰] विभिन्नता। अंतर।

वैधुर्य—सं॰ पु॰ [सं॰] १. विधुर होने का भाव। २. हताश या कातर होने का भाव। ३. भ्रम या संदेह। ४. कंपित होने का भाव।

वैसर्जन—सं॰ पु॰ [सं॰] १. विसर्जन या उत्सर्ग करने की क्रिया। २. वह जो विसर्जित या उत्सर्ग किया जाय।

व्यंग्यचित्र—सं॰ पु॰ [सं॰] किसी व्यक्ति या घटना का वह चित्र जो व्यंग्य पूर्वक उसका उपहास करने के लिये बना हो। (कारटून)

व्यतिकरण—सं॰ पु॰ [सं॰] १. क्रिया या प्रतिक्रिया के रूप में होना या करना। २. संपादन करना। ३. किसी कार्य के बीच में बाधा के रूप में आ जाना। बाधक होना।

व्यपगत—वि॰ [सं॰] १. असावधानी के कारण छूटा या भूला हुआ। २. ठीक समय पर उपयोग में न लाने के कारण हाथ से निकला हुआ अधिकार या सुभीता। (लैप्स)

व्यपगति—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] १. असावधानी के कारण होने वाली भूल। २. नियत समय तक किसी अधिकार या सुविधा का उपयोग न करने के कारण उसका हाथ से निकल जाना। (लैप्स)।

व्यपेक्षा—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] १ आकांक्षा। इच्छा। चाह। २. अनुरोध। आग्रह।

व्यर्थन—सं॰ पु॰ [सं॰] किसी आज्ञा तथा निर्णय आदि का व्यर्थ कर देना। (नलिफिकेशन)

व्यवच्छिन्न—वि॰ [सं॰] १. अलग। जुदा। २. विभाग करके अलग किया हुआ। विभक्त। ३. निर्धारण किया हुआ। निश्चित।

व्यवसित—वि॰ [सं॰] १. जिसका अनुष्ठान किया गया हो। २. निश्चित। ३. उद्यत। तत्पर।

व्यवस्थान—सं॰पु॰ [सं॰] १. आपस में होने वाला समझौता या संधि। २. संघटित सभा या संघ। ३. प्रबंध। व्यवस्था।

व्यवस्थापन—सं॰ पु॰ [सं॰] व्यवस्था देने या करने का कार्य या भाव।

व्यवस्थिति—सं स्त्री॰ [सं॰] १. स्थिरता। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३. स्थिति।

व्यवहर्ता—सं॰ पु॰ [सं॰] व्यवहार शास्त्र के अनुसार किसी अभियोग का विचार करनेवाला। न्यायकर्ता।

व्यवहार दर्शन—सं॰ पु॰ [सं॰] व्यवहारों या वादों का विचार और सुनवाई करना। (ट्रायल आफ केसेज)

व्यवहार-निरीक्षक—सं॰ पु॰ [सं॰] छोटे या साधारण मुकदमों में सरकार की ओर से पैरवी करने वाला अधिकारी।

व्याकल्प—सं॰ पु॰ [सं॰] १ कुछ निश्चित अवधि तक के होने वाले आय व्यय का आनुमानिक लेखा। आयव्ययक। (बजट) २. आय-व्ययक का अनुमान।

व्याकृति—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] १. प्रकाश में लानेका काम। २. व्याख्या करने का काम। व्याख्यान। ३. वाक्य में शब्दों का क्रम, जिन के आधार पर उनका अर्थ निकलता है। (कंस्ट्रक्शन)।

व्याक्षेप—सं॰ पु॰ [सं॰] १. विलंब। देर। २. व्याकुल होने का भाव। घबराहट।

व्यादन—सं॰ पु॰ [सं॰] खोलना। फैलाना।

व्यापन्न—वि॰ [सं॰] [सं॰ व्यापत्ति] १. किसी प्रकार की विपत्ति में पड़ा हुआ। आफत में फँसा हुआ। २. मृत।

व्यापारचिह्न—सं॰ पु॰ [सं॰] वह विशेष चिह्न जो व्यापारी अपने यहाँ निर्मित माल पर दूसरे व्यापारियों के माल से पृथक् सूचित करने के लिये लगाता है। (ट्रेड मार्क)

व्यावर्त्तन—सं॰ पु॰ [सं॰] पराङ्मुख होना। पीछे की ओर लौटना या मुड़ना।

व्यावृत्ति—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] [वि॰ व्यावृत्त] १. खंडन। २. आवृत्ति। ३. चुनाव। ४. स्तुति। ५. निषेध।

व्यासक्त—वि॰ [सं॰] एक ही वर्ग या प्रकार में आने के कारण परस्पर समान या मिले हुये। (एलाइड)

व्यासक्ति—सं॰ स्त्री॰ [सं॰] एक ही प्रकार या वर्ग के अंतर्गत आने वाली वस्तुओं की पारस्परिक समानता। (एफिनिटी)

व्यासार्ध—सं० पु० [ सं० ] व्यास का आधा भाग। किसी वृत्त के केन्द्र से परिधि के किसी भी बिन्दु को मिलाने वाली रेखा।
व्यासिद्ध—वि० [ सं० ] किसी विशेष कार्य, पद या व्यक्ति आदि के लिये मुख्य रूप से अलग किया या सुरक्षित किया हुआ। ( रिज़र्व्ड )
व्यासेध—सं० पु० [ सं० ] किसी विशिष्ट व्यक्ति, पद, कार्य आदि के लिये मुख्य रूप से अलग करने या सुरक्षित रखने का कार्य। (रिज़र्वेशन)
व्याहृति—सं० स्त्री० [सं०] बाधा। अड़चन।
व्युत्क्रम—सं० पु० [ सं० ] क्रम में उलट फेर होना। व्यतिक्रम। गड़बड़ी।

## श

शंकनीय—वि० [ सं० ] शंका करने योग्य। भय के योग्य।
शंकुर—सं० पु० [ सं० ] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।
वि० भयंकर। भीषण।
शंब—सं० पु० [ सं० ] १. इंद्र का वज्र। २. कमर के चारों ओर पहिनी जाने वाली लोहे की जंजीर। ३. प्राचीन काल की मापने की एक माप।
शंबरी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. माया। २. बगरेंडा नाम का एक वृक्ष।
शंबल—सं० पु० [सं०] १. यात्रा के समय रास्ते के लिये भोजन-सामग्री। संबल। पाथेय। २. तट। किनारा।
शंबु - सं० पु० [सं०] सीपी। घोंघा।
शंस( शंसा )—सं० पु० [ सं० ] १. प्रतिज्ञा। २. शपथ। ३. जादू। ४. प्रशंसा। ५. इच्छा। ६. चापलूसी।
शंसिका—सं० स्त्री० [ सं० शंसा ] आलोचना के रूप में प्रकट किया हुआ किसी व्यक्ति या घटनासंबंधी विचार। ( रिमार्क )
शंस्य—वि० [ सं० ] प्रशंसित। अभिलषित। चाहा हुआ।
शकट-व्यूह—सं० पु० [ सं० ] शकट ( गाड़ी ) के आकार में सेना की रचना करना। सेना को इस प्रकार रखना कि उसके आगे का भाग पतला और पीछे का मोटा हो और वह देखने में शकट ( बैलगाड़ी ) के आकार का जान पड़े।
शकल—सं० पु० [ सं० ] १. खंड। टुकड़ा। २. कमलदंड। कमलनाल। ३. त्वचा। चमड़ा।
शकुतिका—सं० स्त्री० [ सं० ] १. छोटी चिड़िया। २. प्रजा।
शकृत—सं० पु० [ सं० ] १. विष्ठा। मल। २. गोबर।
शक्तित्व—सं० पु० [ सं० ] शक्ति का भाव या धर्म। शक्तिमत्ता।
शक्रचाप—सं० पु० [ सं० ] इंद्र-धनुष।
शक्र-सुत—सं० पु० [ सं० ] १. इंद्र का पुत्र जयंत। २. अर्जुन।
शक्राणी—सं० स्त्री० [ सं० ] इंद्र की पत्नी शची। इंद्राणी। २. निर्गुंडी नाम की लता।
शटा—सं० स्त्री० [ सं० ] सटा। जटा।
शठत्व—सं० पु० [ सं० ] १. धूर्तता। पाजीपन।
शण—सं० पु० [ सं० ] १. सन नामक पौधा। २. इस पौधे से निकला हुआ रेशा। ३. भंग।
शणसूत्र—सं० पु० [ सं० ] कुश आदि की बनी हुई पवित्री जो श्राद्ध तर्पण आदि कृत्योंके समय अनामिका अंगुली में पहिनी जाती है।
शतकोटि—सं० पु० [ सं० ] सौ करोड़ की संख्या। अर्बुद।
शतक्रतु—सं० पु० [ सं० ] १. सौ यज्ञों का कर्ता। इंद्र।
शतधार—सं० पु० [ सं० ] वज्र। पवि।
शतमन्यु—सं० पु० [सं०] १. इंद्र। २. उल्लू। वि०[सं०] क्रोधी। गुस्सा करने वाला।
शतांश—सं० पु० [ सं० ] किसी वस्तु के सौ भागों में से एक भाग। सौवाँ भाग।
शताधिक—वि० [ सं० ] सौ से अधिक। बहुत से।
शतिक—वि० [ सं० ] सौ संबंधी। सौ का।
शत्रुजय—वि० [ सं० ] शत्रु को जीतने वाला। पराक्रमी।
सं० पु० [सं०] परमेश्वर। जैनियों का एक पवित्र तीर्थ।
शत्रुत्व—सं० पु० [ सं० ] शत्रुता। वैर। द्रोह।
शत्रुहंता—सं० पु० [ सं० ] शत्रुघ्न। वि० शत्रु का नाश करने वाला।
शद्रि—सं० पु० [ सं० ] १. मेघ। बादल। २. हाथी।

सं० स्त्री० [सं०] १. खंड। टुकड़ा। २. बिजली।

शपन—सं० पु० [सं०] १. शपथ। कसम। २. गाली। कुवाच्य।

शप्त—वि० [सं०] १. जिसे शाप दिया गया हो। २. जिसके प्रति कुवाच्य कहा गया। हो।

शबर—सं० पु० [सं०] १. दक्षिण में रहने वाली एक पहाड़ी या जंगली जाति,। २. जंगली।

शबरी—सं० स्त्री० [सं०] १. शबर जाति की स्त्री। भीलनी। २. एक विशेष भीलनी जिसका आतिथ्य राम ने स्वीकार किया था और जिस के जूठे बेर खाये थे।

शबल—वि० [सं०] १. चितकबरा। २. रंगबिरंगा। ३ चित्रविचित्र।

शबलता—सं० स्त्री० [सं०] १. चित्र। २. रंगबिरंगापन। ३. मिश्रण। मिलावट।

शबलित—वि० [सं०] १. चित्रित। २. रंग बिरंग वाला। ३. मिश्रित।

शब्दग्रह—सं० पु० [सं०] १ शब्दों को ग्रहण करने वाला। कर्ण। कान। २. एक प्रकार का बाण जो शब्द के अनुकरण पर चलाया जाता है। शब्द-भेदी।

शब्द-चातुर्य—सं० पु० [सं०] शब्दों के प्रयोग करने की चतुरता। बोल-चाल की प्रवीणता। वाग्मिता।

शमनीय—वि० [सं०] शमन करने योग्य। दबाने या शांत करने योग्य।

शय—सं० पु० [सं०] १. शय्या। २. सर्प। ३. निद्रा। ४. हाथ।

शय्यागत—वि० [सं०] जो बीमार पड़ने के कारण खाट पर पड़ा हो। रोगी।

शरट—सं० पु० [सं०] १. गिर-गिट नामक एक जंतु। २. करंज नाम का एक पौधा।

शरणापन्न—वि० [सं०] शरण में आया हुआ। शरणागत।

शरणार्थी—वि० [सं० शरणार्थिन्] शरण चाहने वाला। २. अपनी मातृ-भूमि से बलात् हटाया हुआ, जो अन्यत्र जाकर शरण पाना चाहता हो।

शरणि (शरणी)—सं० स्त्री० [सं०] १. रास्ता। मार्ग। पथ। २. पंक्ति।

शराध—सं० पु० दे० 'श्राद्ध'।

शराप—सं० पु० दे० 'शाप'।

शराव—सं० पु० [सं०] मिट्टी का एक प्रकार का पुरवा। कुल्हड़।

शरीर-संस्कार—सं० पु० [सं०] गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक के आर्यों के सोलह संस्कार।

शल्ल—वि० [सं०] शिथिल। सुस्त। सं० पु० १. चमड़ा। २ वृक्ष की छाल। ३. मेंढक।

शव-परीक्षण—सं० पु० [सं०] शव के परीक्षण द्वारा मृत्यु का कारण ज्ञात करना। (पोस्टमार्टम)।

शवसाधन—सं० पु० [सं०] तंत्र के अनुसार एक प्रकार का साधन जो श्मसान में किसी मृत व्यक्ति के शव पर बैठ कर किया जाता है।

शव-यान—सं० पु० [सं०] अरथी। टिकठी।

शशलांछन—सं० पु० [सं०] चंद्रमा। शशि।।

शशि-प्रभ—सं० पु० [सं०] १. जिसकी प्रभा चंद्रमा के समान हो। २.कुमुद। कोई। ३. मोती। मुक्ता।

शशिलेखा—सं० स्त्री० [सं०] १. चंद्रमा की कला। २. बकुची नाम का एक क्षुप। ३. गुरुच।

शष्कुली—सं० स्त्री० [सं०] १. पूड़ी। पकवान। २. कान का छिद्र।

शष्प—सं० स्त्री० [सं०] १. नवीन घास २. हरी भरी फसल।

शस्ति—सं० स्त्री० [सं०] स्तुति। प्रशंसा। वंदना।

शस्त्रीकरण—सं० पु० [सं०] सेना या राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सजाना।

शांतिभंग—सं० पु० [सं०] जन साधारण के सुख और शांति-पूर्वक रहने में बाधा डालने वाला अनुचित कार्य या उपद्रव।

शांतिवाचन—सं० पु० [सं०] किसी मांगलिक कार्य के प्रारंभ में ग्रह, प्रेत बाधा, पापादि होने वाले अमंगल को दूर करने के लिये किया जाने वाला मंगल पाठ।

शाकुनी—सं० पु० [सं०] १. बहे-लिया। २. मछली पकड़ने वाला। ३. सगुन विचारने वाला।

शाबर—वि० [सं०] दुष्ट। कपटी। सं० पु० [सं०] १. बुराई। हानि। दुःख। २. एक प्रकार का तंत्र। विशेष।

शाबल्य—सं० पु० [सं०] १. कई रंगों का मिश्रण। चितकबरापन। २. एक साथ कई भिन्न वस्तुओं का मिश्रण।

शारीरित—वि० [सं०] शरीर के रूप में लाया हुआ। जिसे शरीर का रूप दिया गया हो।

शालि-ग्राम—सं० पु० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति जो काले पत्थर की होती है तथा गंडकी नदी में पाई जाती है।

शालार—सं० पु० [सं०] १. हाथी

का नाखून । २. सीढ़ी । सोपान । ३. पक्षियों के रहने का पिंजड़ा । ४. दीवार में लगी हुई खूँटी ।
शाब—सं० पु० [ सं० ] १. बच्चा । शावक । २. शव । मृतक । ३. सूतक । ४. मरघट । श्मसान ।
शासनिक—वि० [ सं० ] १. शासन संबंधी । शासन का । २. शासन विभाग का ।

शास्त्रीकरण—सं० पु० [ सं० ] १. किसी विषय को शास्त्रीय रूप देना । २. किसी विशिष्ट विषय या पदार्थ-समूह के सम्बन्ध के समस्त ज्ञान को क्रम से संग्रह करना ।
शास्य—वि० [ सं० ] १. शासन करने के योग्य । २. दंड देने योग्य । ३. सुधारने योग्य ।
शिंजित—वि० [ सं० ] १. झंकार करता हुआ । २. बजता हुआ ।
शिक्षण-विज्ञान—सं० पु० [ सं० ] पढ़ने लिखने आदि की विवेचना तथा तत्संबंधी सिद्धांतों का निर्माण करने वाला विज्ञान ।
शिक्षण-विद्यालय—सं० पु० [ सं० ] जहाँ शिक्षण संबंधी ज्ञान की शिक्षा दी जाती है ।
शिक्षा-परिषद्—सं०स्त्री० [सं०] १. वैदिक काल की शिक्षा-संस्था या विद्यालय जो एक ऋषि या आचार्य के अधीन होता था । २. शिक्षा संबंधी प्रबंध करने वाली सभा या समिति ।
शिखामणि—सं० पु० [ सं० ] १. वह रत्न जो शिर पर पहिना जाय । वि० श्रेष्ठ ।
शितद्रु—( शतद्रु ) सं० स्त्री० [सं०] सतलज नदी ।
शिरसिज—सं० पु० [ सं० ] केश । बाल । शिरोरुह ।
शिरोगृह—सं० पु० [ सं० ] १. अट्टालिका । २. कोठा ।
शिली—सं० पु० [सं०] १. बाण । २. भाला । ३. मंडूक । मेढ़क ।
शिल्प-शाला—सं० स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर तरह तरह की वस्तुएँ बनाते हों । कारखाना ।

शिल्पिक—सं० पु० [ सं० ] वह जो शिल्प द्वारा निर्वाह करता है । कारीगर ।
शिवंकर—सं० पु० [ सं० ] १. मंगल करने वाले शिव । २. तलवार ।
शिवंसा—सं० पु० [ सं० शिव + अंश ] नई कटी हुई फसल की अन्न राशि में से शैव साधुओं के लिये निकाला हुआ अंश ।
शिवनामी—वि० [ शिव + नाम + ई] शिव नाम का छपा हुआ कपड़ा ।
शिवारुत—सं० पु० [ सं० ] गीदड़ के बोलने का शब्द, जिससे यात्रादि के समय शुभाशुभ का विचार किया जाता है ।
शिष्टमंडल—सं० पु० [सं०] किसी विशिष्ट कार्य के लिये भेजा जाने वाला कुछ विशिष्ट लोगों का एक दल ।
शीकर—सं० पु० [ सं० ] १. वर्षा की छोटी छोटी बूँदें । फुहार । २ जल-कण । ३. तुषार । ओस ।
शीघ्र-पतन—सं० पु० [ सं० ] स्त्री सहवास के समय वीर्य का शीघ्र स्खलित हो जाना । स्तंभन शक्ति का अभाव ।
शीत-तरंग—सं० स्त्री० [ सं० ] शीत काल में किसी स्थान पर बहुत अधिक ठंढ या तुषार-पात होने के कारण उसके प्रभाव से अत्यंत ठंढी शीत की लहरों का पैदा होना, जिससे दो चार दिन के लिये सरदी अधिक बढ़ जाती है । ( कोल्डवेव )
शीर्ष-नाम—सं० पु० [ सं० ] लेख्य विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरंभमें रहता है । सिरनाम ॥ ( टाइटिल )

शीतांशु—सं० पु० [सं०] १. कपूर । २. चंद्रमा ।
शुंडाल—सं० पु० [ सं० ] हाथी । हस्ती ।
शुकनलिका न्याय—सं० पु० [सं०] तोता जिस प्रकार फँसाने की नली में लोभ के कारण फँस जाता है वैसे ही फँसना । सूर, तुलसी इत्यादि ने इसे 'नलिनीके सुअटा,' के रूपमें कहा है ।
शुक्लता—सं० स्त्री० [ सं० ] १. शुक्ल का भाव या धर्म । २. सफेदी । श्वेतता । उज्ज्वलता ।
शुभ-स्थली—सं० स्त्री० [ सं० ] १. मंगल भूमि । पवित्र स्थान । २. यज्ञ भूमि ।
शुल्कशाला—सं० स्त्री० [ सं० ] वह स्थान जहाँ किसी भी प्रकार का महसूल चुकाया जावे ।
शून्याशून्य—सं० पु० [सं०] मोक्ष । जीवन्मुक्ति ।
शूरण—सं० पु० [ सं० ] सूरन । ओल । जिमी कंद ।
शूलिनी—सं० स्त्री० [ सं० ] १. दुर्गा । चंडी ।
शैक्षिक—सं० पु० [ सं० ] शिक्षा के विषय को जानने वाला । शिक्षा-शास्त्री । वि०-शिक्षा संबंधी ।
शोधनी—सं० स्त्री० [सं०] मार्जनी । झाड़ू बुहारी ।

**शोधनीय**—वि० [ सं० ] १. शुद्ध करने योग्य। २. चुकाने योग्य। ३. ढूँढ़ने योग्य।

**शोभ**—वि० [ सं० ] शोभा युक्त। सुन्दर। सजीला।

**शौक्तिक**—सं० पु० [ सं० ] शुक्ति (सीपी) से उत्पन्न होने वाला मोती। मौक्तिक।

**श्यामला**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. असगंध। २. जामुन। ३. कस्तूरी। मृग-मेद।

**श्रम-साध्य**—वि० [ सं० ] जिसके संपादन में श्रम करना पड़े। जो सहज में न हो सके।

**श्रमिक संघ**—सं० पु० [ सं० ] श्रमिकों के हितों की रक्षा तथा उनकी अवस्था के सुधार के उद्देश्य से बनाया गया उनका एक संघ।

**श्रावित**—वि० [ सं० ] १. सुना हुआ। २. सुन कर मान लिया गया हुआ। ३. वह पत्र जिसपर लिखने-वाले ने अपनी स्वीकृति के सूचक हस्ताक्षर कर दिए हों। ( एटेस्टेड )

**श्रेणीकरण**—सं० पु० [ सं० ] १. बहुत सी वस्तुओं को अलग अलग विभागों में बाँटना या रखना। २. व्यापारियों के संघ या संस्था आदि को विधानतः श्रेणी का रूप देना। ( इनकारपोरेशन )

**श्रेणीकृत**—वि० [ सं० ] वह संघ या संस्था जो विधानतः श्रेणी के रूप में आ गई हो।

**श्रेणी धर्म**—सं० पु० [ सं० ] व्यवसायियों की मंडली या पंचायत का नियम।

**श्रोणी**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. कटि। कमर। २. चूतड़। नितंब। ३. मध्य भाग।

# स

**संकर चौथ**—सं० स्त्री० [ सं० संकर चतुर्थी ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चौथ। तिलचौथ। इस दिन गणेश जी का व्रत किया जाता है।

**संकरित**—वि० [ सं० ] मिश्रित। मिला हुआ।

**संकुचन**—सं० पु० [ सं० ] संकुचित होने की क्रिया। सिकुड़ना।

**संकेतचिह्न**—सं० पु० [सं०] वाक्य, पद, नाम आदि के सूचक सांकेतिक रूप। संक्षिप्तक। ( एब्रीवियेशन )

**संकेतलिपि**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी कथन या भाषण को बहुत शीघ्रता से लिखने के लिये किसी लिपि के अक्षरों के सांकेतिक चिह्न बनाकर तैयार की हुई लेखप्रणाली।

**संकोचन**—सं० पु० [ सं० ] सिकुड़ने की क्रिया। खिंचाव।

**संक्रम**—सं० पु० [ सं० ] कष्ट या कठिनता पूर्वक बढ़ने की क्रिया। २. पुल आदि बना कर किसी स्थान में प्रवेश करना। ३. पुल। सेतु। ४. प्राप्ति।

**संक्षिप्तक**—सं० पु० [ सं० ] किसी शब्द या नाम के अभिसामयिक सूचक वे अक्षर, जो उसके आरंभ के अक्षर होते हैं। जैसे पंडित जी का पं०।

**संक्षिप्तालेख**—सं० पु० [ सं० ] किसी बड़े लेख, भाषण आदि का संक्षिप्त रूप ( एब्रीवियेचर )।

**संक्षिप्ती करण**—सं० पु० [ सं० ] किसी विषय, कथन आदि को संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव।

**संक्षेपतया**—अव्य० [ सं० ] थोड़े में। संक्षेप में।

**संक्षोभ**—सं० पु० [ सं० ] १. चांचल्य। चंचलता। २. कंपन। काँपना। ३. गर्व। अभिमान। ऐंठ।

**सखम**—सं० पु० [ ? ] चकवाक। चकवा।

**संख्याता**—सं० पु० [ सं० ] किसी प्रकार के आय-व्यय का लिखने वाला। ( एकाउंटेंट )

**संख्यान**—सं० पु० [सं०] आयव्यय तथा लेन-देन का लिखा हुआ हिसाब। ( एकाउंट )

**संख्यानक**—सं० पु० [ सं० ] आय-व्यय या लेन-देन के लिखने का कार्य। ( एकाउन्टेंसी )।

**संख्यालिपि**—सं० स्त्री० [ सं० ] एक प्रकार की लेखनप्रणाली, जिसमें वर्णों के स्थान पर संख्या सूचक चिह्न या अंक लिखे जाते हैं।

**संगाती**—सं० पु० [ हिं० संगाती ] साथी। मित्र। दोस्त।

**संगीति**—सं० स्त्री० [सं०] वार्तालाप। बात-चीत।

**संगोपन**—सं० पु० [ सं० ] छिपाने की क्रिया। छिपाव। दुराव।

**संगोप्य**—वि० [ सं० ] छिपाने के योग्य। गोपनीय।

**संग्रहण**—सं० पु० [सं०] १. बलात्

स्त्री का अपहरण करना। २ ग्रहण। ३. नगों की जड़ाई। ४ मैथुन। ५. व्यभिचार।

**संघट्टित**—वि० [ सं० ] १. एकत्रित। २. गठित। निर्मित। रचित। ३. घर्षित।

**संघवृत्ति**—सं० स्त्री० [सं०] १. साथ काम करने के लिये एकत्र होने या संमिलित होने की क्रिया। सहयोग। २. एक संघ में रहने वालों की संमिलित जीविका।

**संघातक**—सं० पु० [ सं० ] १. घात करने वाला, प्राण लेने वाला। २. विनाशक।

**संघात्मक साम्राज्य**—सं० पु० [सं०] प्राचीन भारतीय राज्यतन्त्र में वह साम्राज्य जिसके अंतर्गत कई एक-तंत्र राज्य होते थे।

**संचयन**—सं० पु० [सं०] संचय करने की क्रिया। एकत्रीकरण। २. राशि। ढेर।

**संचयी**—सं० पु० [ सं० ] १. संचय करने वाला। जमा करने वाला। २. कृपण। कंजूस।

**संचान**—सं० पु० [सं० श्येन] श्येन। बाज। शिकरा।

**संचलन**—सं० पु० [ सं० ] १. हिलना-डोलना। २. चलना फिरना। ३. काँपना। गतिशील होना।

**संचिका**—सं० स्त्री० [ सं० ] कागज-पत्रों को एकत्रित करके एक स्थान में रखने वाली नत्थी। ( फाइल )

**संज्ञप्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. मार डालने की क्रिया। हत्या। २. कोई बात लोगों पर प्रकट करने की क्रिया। विज्ञप्ति।

**संतुष्टीकरण**—सं० पु० [सं०] किसी को संतुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

**संतुलित**—वि० [ सं० ] १. वह दो वस्तुएँ जो भार में समान हों। एक सम। २. तुलना की हुई।

**संदर्शन**—सं० पु० [ सं० ] १. अच्छी तरह देखने की क्रिया। अवलोकन। २. परीक्षा। जाँच। ३. ज्ञान।

**संदिष्ट**—वि० [सं०] कहा हुआ बतलाया हुआ।

सं० पु० १. वार्ता। बात चीत। २. समाचार।

**सँधउरा**—सं० पु० [सं० सिंदूर पात्र] सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र। जिसे सौभाग्यवती स्त्री अपने पास रखती है। ( विधवा होने पर इसे पति के शव के साथ जला देते हैं। )

**संधिक**—सं० पु० [सं०] एक प्रकार का संनिपात रोग।

**संपत्ति कर**—सं०पु० [सं] संपत्ति या जायदाद पर लगाया जाने वाला कर।

**संपरीक्षक**—सं० पु० [ सं० ] संपरीक्षण करने वाला। ( स्क्रूटिनाइजर )

**संपरीक्षण**—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्य, तथा लेख आदि के संबंध में अच्छी तरह देख कर यह जाँचना कि वह ठीक या वैध है या नहीं। ( स्क्रूटिनी )

**संपाद्य**—वि० [ सं० ] संपादनीय। १. जिसका संपादन आवश्यक हो। २. विचार पूर्वक ठीक सिद्ध करने योग्य सिद्धांत।

**संपै**—सं० स्त्री० [ सं० संपत्ति ] १. ऐश्वर्य। वैभव। २. धन।

**संप्रेक्षक**—सं० पु० [ सं० ] संप्रेक्षण करने वाला। आय-व्यय इत्यादि की जाँच करने वाला। ( आडिटर )।

**संप्रेक्षण ( संप्रेक्षा )**—सं०पु० [सं०] आय व्ययादि का लेखा जाँचने का कार्य। निरीक्षण। ( आडिटिंग )।

**संप्रेक्षित**—वि० [ सं० ] जिस आय-व्यय की जाँच हो चुकी हो। जाँचा हुआ। ( लेखा )।

**संभरण**—सं० पु० [सं०] १. पालन-पोषण। २. संचय। ३. भरण-पोषण की व्यवस्था या सामग्री।

**संभरणनिधि**—सं० पु० [ सं० ] १. वृद्धावस्था के भरण-पोषण के लिये संचित की गई निधि। २. वैतनिक कर्म चारियों के वेतन में से कुछ भाग काट कर तथा संस्थाद्वारा उसमें कुछ मिला कर संचित किया हुआ धन, जो कार्यकाल की समाप्ति पर कर्म चारी को भृति के रूप में दिया जाता है। ( प्राविडेन्ड फंड )।

**संभारि**—सं० स्त्री० [ हि० संभाल ] देख रेख। सेवा।

**संभेद**—सं० पु० [सं०] १. शैथिल्य। ढिलाव। २. वियोग। ३. विभेद। नीति। ४. तत्वों, पदार्थों आदि का अलगाव।

**संभ्रांति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. घबराहट उद्वेग। २. आतुरता। हड़बड़ी। ३. चकपकाहट। ४ सज-नता। प्रतिष्ठा।

**संभृति**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. भरण पोषण की क्रिया। २. भरण पोषण की सामग्री। सामान। ३. एकत्री-करण। ४. भीड़। राशि।

**संमति**—सं० स्त्री० [ सं० ] राय। विचार।

**संयुक्तक**—सं० पु० [ सं० ] दूसरे पत्र आदि के साथ लगा दिया जाने वाला कागज पत्र। ( एनेक्चर )।

**संयोजक**—सं० पु० [ सं० ] १. किसी सभा-समिति का वह मुख्य सदस्य, जो उसकी बैठक बुलाने और

उसके अध्यक्ष के रूप में उसका काम चलाने के लिये नियुक्त होता है।

**संलेख**—सं० पु० [सं०] विधिक क्षेत्र में नियमानुसार लिखा हुआ ठीक और प्रामाणिक माना जाने वाला लेख। (वैलिडडीड)।

**संरुद्ध**—वि० [सं०] १. भली भाँति रोका हुआ। घेरा हुआ। २. अच्छी प्रकार बंद। ३. वर्जित। ४. आच्छादित।

**संरोध**—सं० पु० [सं०] १. रोक। रुकावट। २ सेना आदि को चारों ओर से घेरना। ३. सीमा।

**संवलित**—वि० [सं०] १. मिला हुआ। २. जुटा हुआ। ३. मिला हुआ। ४. युक्त। सहित।

**संवास**—सं० पु० [सं०] १. साथ साथ बसना या रहना। २. परस्पर संबंध। ३. सहवास। प्रसंग। मैथुन। ४. वह खुला हुआ स्थान जहाँ लोग विनोद या मन बहलाव के लिये एकत्र हों। ५. समाज। सभा। ६. सार्वजनिक स्थान। ७. मकान। घर।

**संविदा**—सं० पु० [सं०] किसी कार्य के बारे में कुछ निश्चित शर्तों के आधार पर होने वाला समझौता। ठेका।

**संविदापत्र**—सं० पु० [सं०] वह पत्र जिस पर संविदा (ठेके) की शर्तें लिखी हों।

**संविधानसभा**—सं० स्त्री० [सं०] वह परिषद् या सभा जो किसी राष्ट्र, जाति या समाज के राजनीतिक शासन की नियमावली प्रस्तुत करने के लिये संघटित या निर्वाचित की गई हो। (कांस्टीट्यूट एसेंबली)।

**संविधि**—सं० स्त्री० [सं०] १. विधान रीति। २. व्यवस्था। प्रबंध।

**संवृद्धि**—सं० स्त्री० [सं०] १. बढ़ने की क्रिया या भाव। आधिक्य। २. समृद्धि। वैभव। ३. किसी वस्तु के बाह्य अंगों में बाद में या निरंतर होने वाली वृद्धि। (एडीशन)।

**संवेदन-सूत्र**—सं० पु० [सं०] स्पर्श, शीत, ताप, सुख, पीड़ा आदि का अनुभव या ज्ञान कराने वाला संपूर्ण शरीरमें प्रसरित तंतुओं का जाल। स्नायु।

**संशित**—वि० [सं०] १. सान पर चढ़ाया हुआ। २. उद्यत। उतारू। ३. पटु। दक्ष। ४. कठोर। अप्रिय।

**संशुद्ध**—वि० [सं०] १. विशुद्ध। २ शुद्ध किया हुआ। ३. चुकता किया हुआ। ४. परीक्षित।

**संसक्त**—वि० [सं०] १. किसी सीमा के साथ सटा या लगा हुआ। २ संबद्ध। ३. किसी की ओर अनुरक्त या प्रवृत्त। ४. किसी कार्य या विचार में लगा हुआ।

**संसद्**—सं० स्त्री० [सं०] किसी देश के प्राचीन विधान में संशोधन तथा राज्य कार्य में सहायता देने के लिये प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित परिषद्। (पार्लमेंट)।

**संसर्गरोध**—सं० पु० [सं०] किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिये बाहर से आने वाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखने की व्यवस्था। २. इस प्रकार के लिये अलग किया हुआ स्थान। (क्वारंटाइन)

**संसार-यात्रा**—सं० स्त्री० [सं०] १. जीवन यापन। निर्वाह। २. जीवन।

**संस्कृति**—सं० स्त्री० [सं०] १. किसी राष्ट्र, जाति, व्यक्ति, आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास का सूचक होती है।

**संस्तरण**—सं० पु० [सं०] १. बिछाने या फैलाने का कार्य। २. बिखेरने का काम। ३. बिस्तर। शय्या।

**संस्थिति**—सं० स्त्री० [सं०] १. खड़े होने का भाव। २. ठहराव। जमाव। ३. दृढ़ता। धीरता। ४. व्यवस्था। ५. क्रम।

**संहृष्ट**—वि० [सं०] १. रोमांचित। पुलकित। प्रफुल्ल। २. भीत। डरा हुआ।

**सउजा**—सं० पु० [सं० शावक] आखेट करने योग्य जंतु। शिकार। साउज।

**सक्का**—सं० पु० [अ० सक्का] १. पानी भरने वाला। भिश्ती। २. घूम घूम कर मशक से पानी पिलाने वाला।

**सकारा**—सं० पु० [सं० स्वीकरण] महाजनी में वह धन जो हुंडी सकारने और उसका समय फिर से बढ़ाने के लिये लिया जाता है।

**सकाश**—अव्य० [सं०] पास। निकट। समीप।

**सकुचीला**—वि० [हि० सकुच + ईला (प्रत्य०)] अधिक संकोच करने वाला। संकोची। लजालु।

**सकेती**—सं० स्त्री० [हि०] १. कष्ट। विपत्ति। दुःख। २. निर्धनता।

**सक्थी**—सं० पु० [सं० सक्थिन्] १. हड्डी। अस्थि। हाड़। २. उरु। जंघा।

**सखीभाव**—सं० पु० [सं०] वैष्णवों की भक्ति का वह प्रकार, जिसमें

भक्त अपने आपको अपने उपास्य देव की पत्नी या सखी मान कर उसकी उपासना या सेवा करता है।

**सगलत**—सं० स्त्री० [ सं० सकल ] संपूर्णता। समष्टि।

**सगलो**—वि० दे० 'सगरो'।

**सचिवालय**—सं० पु० [ सं० ] वह भवन जिसमें किसी राज्य, प्रांतीय सरकार, अथवा किसी बड़ी संस्था के सचिवों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते हैं। (सेक्रेटरियट)

**सज्जक**—सं० पु० [ सं० ] १. सज्जा। २. सजावट। सजाने वाला।

**सटा**—सं० स्त्री० [सं०] १. शिखा। २. जटा। ३. घोड़े या शेर के कंधे के बाल। अयाल। केशर।

**सत्यापन**—सं० पु० [सं०] १. मिलान या जाँच करके किसी वस्तु को ठीक ठीक समझने की क्रिया। (वेरीफिकेशन) लेख्यादि पर उसके ठीक होने की बात लिख कर हस्ताक्षर करना। (ऐटस्टेशन)

**सत्र**—सं० पु० [ सं० ] १. वह नियत काल जिसमें कोई कार्य एक बार आरंभ हो कर कुछ समय तक बराबर रहता है। (सेशन) २. वह नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है। (टर्म)।

**सत्र न्यायालय**—सं० पु० [ सं० ] किसी मंडल के न्यायाधीश का वह न्यायालय, जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों पर विचार होता है। (सेशन्स कोर्ट)

**सत्रावसान**—सं० पु० [ सं० ] विधायिका सभाओं आदि के किसी अधिवेशन का अधिकारिक रूप से स्थगित किया जाना। (प्रोरोग)

**सत्रिक**—वि० [ सं० ] १. किसी सत्र या नियत काल पर होता रहने वाला। (पीरियॉडिक)। २. किसी सत्र या नियत काल तक बराबर होता रहने वाला। (टरमिनल)।

**सद्**—सं० पु० [सं० शत] सौ। सैकड़ा अव्य० [ सं० सद्यः ] शीघ्र। जल्दी।

**सदन**—सं० पु० [ सं० ] १. वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार करने या नियम विधान आदि बनाने वाली सभा का अधिवेशन हो। २. सभा के लोगों का समूह।

**सधर्म**—वि० [ सं० ] १. समान गुण या क्रिया वाला। एक ही प्रकार का। २. तुल्य। समान।

**सन्नयन**—सं० पु० [सं०] किसी लेख द्वारा संपत्ति, विशेषतः अचल सम्पत्ति का दूसरे के हाथ में जाना। अंतरण। (कन्वेयन्स)

**सन्निधाता**—सं० पु० [सं०] प्राचीन राज्यव्यवस्था में राज-कोष का प्रधान अधिकारी।

**सन्निरोध**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० सन्निरुद्ध ] १. रोक। रुकावट। बाधा। २. दमन। निवारण। ३ संगी। संकोच।

**सबदी**—सं० [ सं० शब्दी ] गुरु के शब्दों। [ ज्ञानोपदेशों ] में विश्वास रखने वाला।

**सबूरी**—सं० स्त्री० [ अ० सब्र ] १. धैर्य। सहनशीलता। २. संतोष।

**सभतनु**—क्रि० वि० [ सं० सर्वतः ] १. सब प्रकारसे। २. चारो ओरसे।

**सभिक**—सं० पु० [ सं० ] लोगों को जुआ खेलाने वाला। द्यूत शाला का मालिक।

**समंजन**—सं० पु० [ सं० ] [ वि० समंजित ] १. ठीक करना। बैठाना। २. लेन-देन का हिसाब ठीक करना। (ऐडजस्टमेंट)

**समनुज्ञा**—सं० स्त्री० [ सं० ] [ वि० समनुज्ञात ] किसी विषय की पुष्टि करते हुए उसे मान्य और अधिकारी-पयुक्त करना। (सैंकशन)

**समय सारिणी**—सं० स्त्री० [ सं० ] तालिका के रूप में समय समय पर होने वाले कार्यों की विवरण कोष्ठिका। (टाइम टेबुल)

**समरज्जु**—सं० पु० [सं०] बीज गणित की वह रेखा जिससे दूरी या गहराई जानी जाती है।

**समर्पिती**—सं० पु० [ सं० ] १. जिसे कुछ समर्पित या भेंट किया जाय। २. जिसके नाम कोई वस्तु भेजी जाय। (कनसाइनी)

**समवलंब**—सं० पु० [सं०] वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी दोनो लंबी रेखायें समान हों।

**समसरि**—सं० स्त्री० [सं० समानता] १ बराबरी। तुलना। २. समानता।

**समाख्या**—सं० स्त्री० [ सं० ] १. यश। कीर्ति। २. संज्ञा। नाम।

**समाख्यान**—सं० पु० [सं०] क्रमशः किसी घटना की मुख्य बातों का कथन। (नैरेशन)

**समादेशक**—सं० पु० [ सं० ] १. किसी कार्य का आदेश देने वाला। २. सेना का प्रधान अधिकारी। (कमांडर)।

**समापत्ति**—सं० स्त्री० [ सं० ] युद्ध, दंगों या दुर्घटनाओं आदि के कारण प्राणों या शरीर पर आने वाला संकट। (कैजुएलिटी)।

**समापन**—सं० पु० [ सं० ] किसी कार्य को समाप्त या पूरा करना।

(विस्तोभाल) २. किसी विशेष कथन द्वारा वाद-विवाद का अंत करना।

**समापन्न**—सं० पु० [सं०] मार डालना। हत्या करना। वध करना। वि० १. समाप्त किया हुआ। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३. क्लिष्ट। कठिन।

**समायुक्त**—वि० सं० [सं०] आवश्यकता के अनुसार दिया हुआ या पहुँचाया हुआ।

**समायोग**—सं० पु० [सं०] आवश्यकीय वस्तुओं के समान रूप से वितरण की की गई उचित व्यवस्था। (सप्लाई)

**समीक्षण**—सं० पु० [सं०] १. अच्छी प्रकार देखने का कार्य। २. अनुसंधान। अन्वेषण। ३. आलोचना।

**समुन्नयन**—सं० पु० [सं०] १. ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २ उन्नति। लाभ।

**सयानप**—वि० [हि० सयानपना] चतुराई। चातुर्य। कुशलता।

**सरजीवन**—वि० [संजीवन] १. संजीवन। जिलाने वाला। २. हरा भरा। उपजाऊ।

**सरता बरता**—सं० पु० [सं० वर्तन, हि० बरतना + अनु० सरतना] बाँट। बँटाई।

**सरबंग**—क्रि० वि० [सं० सर्वांग] सब प्रकार से। पूर्णतः।

**सरावन**—सं० पु० [सं० सरण] जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।

**सरेव**—सं० पु० [सं० सरोवर] तालाब। सर।

**सर्पिस**—सं०पु० [सं०] घृत। घी।

**सर्म**—सं० पु० [सं० शर्म्म] १. सुख। आनंद। २. गृह। घर।

**सर्वशः**—अव्य० [सं०] १. पूरा पूरा। २. समूचा। पूर्ण रूप से। ३. सब ओर से।

**सलाकना**—क्रि० अ० [सं० शलाका + ना (प्रत्य०)] सलाई या और इसी तरह की किसी वस्तु से किसी दूसरी वस्तु पर लकीर मारना। सलाई की सहायता से चिह्न करना।

**सलार**—सं० पु० [फा० सालार] १. मार्गदर्शक। नेता। नायक। २. सेनापति।

**ससा**—सं० पु० [सं० शशा] १. खरगोश।

**सहगान**—सं० पु० [सं०] कई मनुष्यों का एक साथ नाचना गाना (कोरस)।

**सहवासी**—सं० पु [सं० सहवासिन्] साथ रहने वाला। संगी। साथी। मित्र।

**सहहु**—सं० पु० [फा० सह्व] भूल चूक। गलती।

**सहोवर**—सं० पु० [सं० सहोदर] सगा भाई। एक माता के पुत्र।

**सांसद**—वि० [सं० संसद] संसद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल। (पार्लमेंटरी)।

**सांसदी**—सं० पु० [सं०] संसद के व्यवहारों का ज्ञाता। (पार्लमेंटेरियन)।

**साचिव्य**—सं० पु० [सं०] १. सचिव का भाव या धर्म। मंत्रित्व। २. सहायता।

**साझापाती**—सं० स्त्री० [सं० साहार्घ्य] १. साझा। २. सहकारिता।

**साट**—सं० पु० [?] व्यापार। विक्रय। सट्टा।

**साथरु**—सं० पु० [सं० स्तरी] १. बिछौना। २. कुश की या किसी प्रकार की चटाई।

**साधारणीकरण**—सं० पु० [सं०] एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट तत्वों के आधार पर कोई ऐसा सिद्धांत स्थिर करना जो उन सब तत्वों पर प्रयुक्त हो सके। २. गुणों के आधार पर समानता स्थिर करना। (जेनरलाइजेशन)। ३. साहित्य शास्त्र में निर्विकल्प ज्ञान का होना, जहाँ रस की सिद्धि होती है।

**साधिका**—सं० स्त्री० [सं०] वह लेख या पत्र जिस पर किसी देने या पावने अथवा भेजे हुए माल का पूरा विवरण हो। (वाउचर)।

**साधनिक**—वि० [सं०] किसी राज्य या संस्था के प्रबंध या शासन के साधनों से संबंधित (एक्जिक्यूटिव)

**साधनिकी**—सं० स्त्री० [सं०] १. विधि-विधानों आदि का पालक तथा पालन कराने वाला राजकीय विभाग (दि एक्जिक्यूटिव)। २. उक्त विभाग के अधिकारियों का समूह।

**सामंतवाद**—सं० पु० [सं०] राज्य प्रणाली का एक प्राचीन स्वरूप जिसमें समग्र राज्य कई टुकड़ों में बँटा होता था और उन टुकड़ों के एक एक सरदार होते थे, जो राजा के प्रतिनिधि होते थे।

**साम्या**—सं० स्त्री० [सं०] सामान्य न्याय के अनुसार सबके साथ समानता का किया जाने वाला व्यवहार। (इक्विटी)।

**सारसन**—सं० पु० [सं०] स्त्रियों का एक आभूषण। रसना। किंकिणी। २. चंद्रहार। ३. तलवार की पेटी। कमर बंद।

सार्वजन्य--वि० [सं०] १. सब लोगों से संबंध रखने वाला। २. सब लोगों को लाभ प्रद।

सासिगिरासो--सं० पु० [सं० शशि-ग्रसन] चंद्र ग्रहण।।

सिंघिनी--सं० स्त्री० [सं०] नासिका। नाक।

सं० स्त्री० दे० सिंहिनी।

सिँचौनी--सं० स्त्री० [हि० सींचना] सींचने की क्रिया। सिंचाई।

सिकदारा--सं० पु० [अ० सिकः] बलवान तथा विश्वास योग्य रक्षक।

सिडिया--सं० स्त्री० [देश०] १. सिंगा नाम का एक बाजा। २. शराब खींचने की नली। (कबीर ने इसका रूपक इला नाड़ी से दिया है।)

सितली--सं० स्त्री० [सं० शीतल] अधिक पीड़ा या बेहोशी के समय निकलने वाला पसीना।

सिदरी--सं० स्त्री० [फा० सेहदरी] तीन द्वारों वाला कमरा या बरामदा। तिदुवारी दालान।

सिदिक--वि० [अ० सिद्क] सच्चा। सत्य।

सिरतान--सं० पु० [सं०] १. असामी। काश्तकार। २. मालगुजार।

सिरवार--सं० पु० [दे०] जमींदार का कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबंध करता है।

सिविका--सं० स्त्री० [सं० शिविका] पालकी। डोली।

सिहलाना--क्रि० अ० [सं० शीतल] १. सिराना। ठंडा होना। २. शीत खा जाना। सील खाना। नम होना। ३. ठंढ पड़ना। सरदी पड़ना।

सीमाशुल्क--सं० पु० [सं०] वह शुल्क जो आने जाने वाले पदार्थों पर किसी देश की सीमा पर लगता है (कस्टम ड्यूटी)।

सुधारालय--सं० पु० [हि० सुधार + सं० आलय] अपराधी बालकों का वह कारागार, जहाँ उनकी नैतिकता के सुधार का उद्योग किया जाता है।

सुन्न--सं० पु० [सं० शून्य] १. शून्य। रिक्त। २. ब्रह्म। ३. ब्रह्म रंध्र जो सहस्र दल कमल के भीतर होता है।

सुरासार--सं० पु० [सं०] कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भभके की सहायता से निकाला हुआ मादक तरल पदार्थ (अल्कोहल)।

सुहेला--वि० [देश०] संभ्रांत। मान्य।

सूचा--वि० [सं० शुचि] शुद्ध। पवित्र। जो जूठा न हो।

सेवापञ्जी--सं० स्त्री० [सं०] वह पंजी जिसमें सेवकों की सेवा काल की मुख्य मुख्य बातें लिखी जाती हैं। (सरविस बुक)।

सोधी--सं० पु० [हि० सोधना] अन्वेषक। खोज करने वाला।

सोनकिरवा--सं० पु० [हि० सोना + किरवा] एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पन्ने के रंग के चमकीले होते हैं।

सोपाधिक--वि० [सं०] १. जिसमें कोई प्रतिबंध या शर्त लगी हो। (कंडिशनल) २. किसी विशिष्ट सीमा, मर्यादा, व्याख्या आदि से बँधा हुआ (क्वालिफाइड)।

सोरण--वि० [सं०] कुछ कसैला, मीठा, खट्टा और नमकीन। चरपरा।

सोल्लास--वि० [सं०] उल्लासयुक्त। प्रसन्न। आनंदित।

क्रि० वि० उल्लास के साथ।

सोवड़--सं० पु० [सं० सूत] वह कोठरी जिसमें स्त्रियाँ बच्चा जनती हैं। सूतिका-गृह। सौरी।

सोवनी--सं० स्त्री० [सं० शोधनी] बुहारी। झाड़ू।

सौंधी--वि० [?] अच्छा। उचित। ठीक।

सौत्रिक--सं० पु० [सं०] १. जुलाहा। तंतुवाय। २. सूत से बनी हुई वस्तु।

सौदर्य--वि० [सं०] सहोदर या सगे भाई से संबंधित।

सं० पु० [सं०] भ्रातृत्व। भाईपन।

सौनिक--सं० पु० [सं०] १. मांस बेचने वाला। कसाई। २. बहेलिया। व्याध।

सौहार्द--सं० पु० [सं०] सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री।

स्कंधक--सं० पु० [सं०] विक्रयादि के लिये अपने पास बहुत सी वस्तुएँ रखने वाला। (स्टाकिस्ट)।

स्कंधपाल--सं० पु० [सं०] किसी भंडार की देख रेख करने वाला।

स्तनपायी--सं० पु० [सं०] माता का दूध पीकर पलने वाले जीवजंतु।

स्थगन--सं० पु० [सं०] १. कुछ समय के लिये रोकना या टालना। २. अवरोध। ३. आच्छादन।

स्थपति--सं० पु० [सं०] १. राजा। सामंत। २. शासक। ३. भवन-निर्माण कला में निपुण। वस्तु-शिल्पी।

स्थानिक परिषद्--सं० पु० [सं०] किसी स्थान के निवासियों द्वारा निर्वाचित वह परिषद् जिस पर कुछ विशिष्ट लोकहित संबंधी कार्यों का भार हो। (लोकल बोर्ड)

स्थानिक स्वशासन--सं० पु० [सं०]

१. नगरों और ग्रामों को सरकार की ओर से प्राप्त शासन संबंधी कुछ अधिकार। २. इस अधिकार के अनुसार अपना शासन आप करने की प्रणाली।

**स्नुषा**—सं० स्त्री० [ सं० ] पुत्रवधू। पतोहू।

**स्नेहन**—सं० पु० [ सं० ] १. चिकनाहट उत्पन्न करना। चिकनाई लाना। २. शरीर में तेल लगाना।

**स्पर्शन**—सं० पु० [सं०] १. छूने की क्रिया। स्पर्श करना। २. दान। ३. लगाव।

**स्पर्शरेखा**—सं० स्त्री० [सं०] गणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक बिंदु को स्पर्श करती हुई खींची जाय।

**स्फीति**—[सं० स्त्री०] वृद्धि। बढ़ती।

**स्मय**—सं० पु० [ सं० ] गर्व। अभिमान। शेखी।

वि० अद्भुत। विलक्षण।

**स्मरण पत्र**—सं० पु० [ सं० ] किसी को कोई बात स्मरण कराने के लिये लिखा जाने वाला पत्र। (रिमाइंडर)

**स्मारिका**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी को किसी कार्य, वचन या अन्य किसी भी बात को स्मरण कराने के लिये लिखी गई पत्रिका। (रिमाइंडर)।

**स्मृतिपत्र**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी विषय की मुख्य बातों को स्मरण कराने या रखने के विचार से एकत्रित उस विषय से पत्र या पुस्तिका। २. किसी संस्था आदि से संबंधित ऐसे पत्रों की संचित पुस्तिका। (मेमोरेंडम)

**स्यंद**—सं० पु० [ सं० ] १. टपकना। चूना। रसना। २. गलना। पानी हो जाना।

**स्वर्णजयंती (स्वर्णिका)**—सं० स्त्री० [ सं० ] किसी व्यक्ति, संस्था, आदि के जन्म से पचासवें वर्ष में होने वाली जयंती।

**स्वांगीकरण**—सं० पु० [सं०] १. किसी वस्तु को आत्मसात कर लेना। २. अपने अनुकूल बना लेना। (एसिमिलेशन)।

## ह

**हँकराया**—सं० पु० [ हिं० हँकारना ] १. बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। २. बुलावा। निमंत्रण। ३. शिकार खेलते समय कुछ लोगों का हल्ला करना, जिसे सुन कर जानवर निकल आते हैं।

**हंडना**—क्रि० अ० [ सं० अभ्यटन ] १. घूमना। २. व्यर्थ इधर उधर फिरना। ३. इधर उधर ढूँढना।

**हचकना**—क्रि० अ० [ अनु० हच-हच ] झोका खाना। बारबार हिलना। धक्के से हिलना डोलना।

**हचका**—सं० पु० [ हिं० हचकना ] धक्का। झोका।

**हचना**—क्रि० अ० [ अनु० हच ] किसी काम के करने में आगा पीछा करना। हिचकना।

**हनुल**—वि० [ सं० ] पुष्ट या दृढ़ दाढ़ वाला। मजबूत जबड़े वाला।

**हरिआना**—क्रि० अ० [ हिं० हरिअर ] हरा होना। लहलहाना। पल्लवित हो उठना।

क्रि० सं० हरा करना।

**हरिवाहन**—सं० पु० [ सं० ] १. गरुड़। २. सूर्य का एक नाम। इंद्र का एक नाम।

समाप्त

# परिशिष्ट-( ख )

## भारतीय संविधान-परिषद् द्वारा स्वीकृत संविधान शब्दावली

### अ

अक्षम—Incompetent
अक्षमता—Incompetency
अग्रिम धन—Advance
अतिक्रमण—Violation
अतिरिक्त न्यायाधीश—Judge, extra
अतिरिक्त लाभ—Excess profit
अधिकरण—Tribunal
अधिकार—Right
अधिकार-अभिलेख—Record of rights
अधिकार-पृच्छा—Quo warranto
अधिग्रहण—Requisition
अधिनियम (n)—Act
अधिनियम (v.)—Enact
अधिपत्र—Warrant
अधिभार—Sur-charge
अधिमान—Preference
अधिवक्ता—Advocate
अधिवास—Domicile
अधिवासी—Domiciled
अधिष्ठाता—Presiding officer
अधिसूचना—Notification
अधीक्षक—Superintendent
अधीक्षण—Superintendence
अधीन—Subject
अधीन अधिकारी—Subordinate Officer
अधीन न्यायालय—Subordinate Court
अध्यक्ष—Speaker
अध्यादेश—Ordinance
अध्यासीन होना—Preside
अनन्य क्षेत्राधिकार—Exclusive Jurisdiction
अनर्हता—Disqualification
अनर्हीकरण—Disqualify
अनियमितता—Irregularity
अनुकूलन—Adaptation
अनुच्छेद—Article
अनुज्ञप्ति—Licence
अनुज्ञा (v.)—Permit,
अनुज्ञा (n.)—Permission
अनुदान—Grant
अनुदेश—Instruction
अनुन्मुक्त—Undischarged
अनुपाती प्रतिनिधित्व—Proportional representation
अनुपूरक—Supplementary
अनुपूरक अनुदान—Supplementary grant
अनुमति—Assent
अनुमोदन (v.)—Approve
अनुमोदन (n.)—Approval
अनुशासन—Discipline
अनुशासन सम्बन्धी—Disciplinary
अनुरक्ति—Adherence
अनुष्ठान—Exercise
अनुसमर्थन ( n. )—Ratification
अनुसमर्थन (v )—Ratify
अनुसंधान (v.)—Investigate
अनुसंधान(n.)—Investigation
अनुस्मारक—Reminder
अनुसूचित क्षेत्र—Scheduled area
अनुसूचित जनजाति—Scheduled Tribe
अनुसूचित जाति—Scheduled Caste
अनुसूची—Schedule
अन्तर्ग्रसन—Involve
अन्तर्ग्रस्त—Involved
अन्तर्देशीय जलपथ—Inland waterway
अन्तर्राष्ट्रीय—International
अन्तःकरण—Conscience
अन्य-देशीय—Aliens
अन्य-संक्रामण (v.)—Alienate

अन्य-संक्रामण (n.)—Alienation
अपमान लेख—Libel
अपमान-वचन—Slander
अपमिश्रण—Adulteration
अपर-न्यायाधीश—Additional-judge
अपराध—Crime
अपराध—Offence
अपराधी—Criminal
अपवर्जन( v. )—Exclude
अपवर्जन ( n. )—Exclusion
अपात्र—Ineligible
अपात्रता—Ineligibility
अपील—Appeal
अपीलि न्यायालय—Court of Appeal
अप्रवृत्त—Inoperative
अभिकथन—Allegation
अभिकरण—Agency
अभिकर्त्ता—Agent
अभिप्राय—Opinion
अभियाचना—Demand
अभियुक्त—Accused
अभियुक्ति—Charge
अभियुक्ति—Prosecution
अभियोग—Accusation
अभियोजन—Prosecution
अभियोज्य दोष—Actionable wrong
अभिरक्षा—Custody
अभिलेख—Record
अभिलेख न्यायालय—Court of record
अभिशस्त—Convicted
अभिशस्ति—Conviction
अभिसमय—Convention
अभ्यर्थी—Candidate
अमान्य—Invalid
अयुक्त प्रभाव—Undue influence
अर्जन—Acquisition
अर्जी—Petition
अर्थ करना—Construe
अर्थ दण्ड—Fine
अर्हता—Qualification
अल्पसंख्यक वर्ग—Minority
अल्पीकरण—Derogation
अवधिदान—Adjourn
अवमान—Contempt
अवयस्क—Minor
अविभक्त कुटुम्ब—Joint family
अविभक्त परिवार—Joint family
अविश्वास-प्रस्ताव—Motion of no confidence
अवैध—Illegal
अवैधाचरण—Illegal practice
असमर्थता—Incapacity
असमर्थता-निवृत्ति वेतन—Invalidity pension
असैनिक—Civil
असैनिक शक्ति—Civil power
अहितकारी—Detrimental
अंकन—Endorse
अंकित—Endorsed
अंग—Unit
अंश—Share
अंशदान—Contribution

### आ

आकलन (v)—Credit
आकस्मिकता निधि—Contingency Fund
आचार—Custom
आजादी—Freedom
आजीविका—Callings
आजीविका-कर—Callings tax
आज्ञप्ति—Decree
आदेश—Order
आदेशिका—Process
आनुषंगिक—Consequential
आपराधिक—Criminal
आपात—Emergency
आपाती—Emergent
आपात की उद्घोषणा Proclamation of emergency
आभार—Obligation
आय-कर—Income tax
आयात-शुल्क—Import duty
आयुक्त—Commissioner
आयोग—Commission
आरक्षक—Police
आरक्षक बल—Police Force
आरोप—Allegation
आरोपण करना—Impose
आरोपण—Levy
आर्थिक—Economic
आर्थिक क्षेत्राधिकार—Pecuniary jurisdiction
आवर्त्तक—Recurring
आवारागरदी—Vagrancy
आवेदन-पत्र—Application
आस्ति—Property
आहिंडन—Vagrancy
आह्वान—Summon
आंक—Estimate

### इ

इच्छा-पत्र—Will
इच्छा-पत्रहीन—Intestate
इच्छा-पत्र हीनत्व—Intestacy

### उ

उगाहना—Levy (v.)
उच्चतमन्यायालय—Supreme Court

उच्चन्यायालय—High Court
उत्तराधिकार—Succession
उत्तराधिकार-शुल्क—Successionduty
उत्तराधिकारी—Successor
उत्तरदायिता—Liability
उत्पादन—Production
उत्पादन-शुल्क—Excise duty
उत्प्रवास—Emigration
उत्प्रेषण-लेख—Certiorari
उद्ग्रहण—Levy ( n. )
उद्घोषणा—Proclamation
उद्भव—Descent
उद्यम—Enterprise
उद्योग—Industry
उधार—Loan
उधार-ग्रहण—Borrowing
उन्मत्त—Lunatic
उन्माद—Lunacy
उन्मुक्ति—Immunity
उपकर—Cess
उपक्रमण—Initiate
उपचार—Remedy
उपजीविका—Occupation
उपदान—Gratuity
उपदेश—Advisory
उपनिर्वाचन—Bye-election
उपनिवेशन—Colonization
उपबन्ध—Provision
उपभोग—Consumption
उपराज्यपाल—Lieutenant Governor
उपराष्ट्रपति—Deputy President
उपराष्ट्रपति—Vice President
उपलब्धि—Emolument
उपविभाग—Sub-division
उपवेशन—Sitting
उपविधि—Bye-law
उपसभापति—Deputy Chairman
उपस्थित हाना—Appear
उपाध्यक्ष—Deputy Speaker
उपायुक्त—Deputy Commissioner
उपायोजन—Employment
उपार्जित—Accrued
उम्मेदवार—Candidate
उल्लंघन—Contravention

## ऋ

ऋण—Debt
ऋणग्रस्तता—Indebtedness
ऋण-पत्र—Debenture

## ए

एकक—Unit
एकल निगम—Corporation, Sole
एकल संक्रमणीय मत—Single transferable vote
एकस्व—Patent

## क

कटक—Cantonment
कथाङ्क—Account
कदाचार—Misbehaviour
कब्जा—Possession
कम्पनी—Company
कर—Tax
करार—Agreement
कर्तव्य—Duty
कर्तुमभिप्रेत—Purporting to be done
कर्मचारी-वृन्द—Staff
कानून सम्बन्धी—Legal
कारखाना—Factory
कारबार—Business
कारागार—Prison
काराबन्दी—Prisoner
कारावास—Imprisonment
कर्मिक संघ—Trade Union
कार्य—Business
कार्यकारा—Acting
कार्यपालिका शक्ति—Executive power
कार्यपालिका—Executive
कालदान—Adjourn
कावल—Custody
कांजी हौस—Cattle pound
किराया—Fare
किसान—Tenant
कुर्की—Attach.
कृति स्वाम्य—Copyright
कृत्य—Function
केन्द्रीय गुप्त-वार्ता विभाग—Central Intelligence Bureau
कैद—Imprisonment
कैदी—Prisoner

## क्ष

क्षति—Injury
क्षतिपूर्ति विल—Bill of indemnity
क्षमताशाली—Competent
क्षमा—Pardon
क्षेत्र—Area
क्षेत्राधिकार—Jurisdiction

## ख

खनिज—Mineral
खनि-बसति—Mining settlement
खनिज-सम्पत्—Mineral resources
खर्च—Cost
खंड—Clause

ग

गजट—Gazette
गणना—Account
गणनानुदान—Vote on account
गणना-परीक्षा—Audit
गणपूर्ति—Quorum
गवेषणा—Research
गूढ़ पत्र—Ballot
ग्राम-परिषद्—Village Council
ग्राह्य—Admissibel

घ

घोषणा—Declaration

च

चट्टम—Act (n.)
चर्चा—Discussion
चल अर्थ—Currency
चलावणी—Currency
चित्तविकृत्ति—Unsoundness of mind
चिह्न—Mark
चुकती—Agreement
चुने हुए—Elected
चुंगी—Octroi
चैक—Cheque

छ

छावनी—Cantonment

ज

जगह—Post
जनगणना—Census
जन-जाति—Tribe
जनजाति-क्षेत्र—Tribal Area
जनजाति-परिषद्—Tribal Council
जल-दस्युता—Piracy
जल-प्रांगण—Territorial waters
जामिन—Bail
जांच करना—Inquire
जिला—District
जिला-गण—District Board
जिला-निधि—District Fund
जिला-न्यायालय—District Court
जिला-परिषद्—District Council
जिला-मंडली—District board
जीविका—Livelihood
जुआ—Gambling
जुर्माना किया—Fined
जेल—Prison
ज्वार-जल—Tidal waters

ज्ञ

ज्ञाप—Memo
ज्ञापन—Memorandum

ट

टंकण—Coinage
टांच—Attach
ट्राम—Tramway
ट्रामगाड़ी—Tramcar

ड

डिक्री—Decree

त

तत्समय—For the time being
तत्स्थानी—Corresponding
तदर्थ—Ad hoc
तोर्ण—Passed
तीर्व—Assessment
तृतीय पठन—Third reading
त्रैवार्षिक—Triennial

थ

थाना—Police Station

द

दत्तक-ग्रहण—Adoption
दत्तक-स्वीकरण—Adoption
दस्तकारी—Handicraft
दस्तावेज—Document
दंड देना—Punish
दंड-न्यायालय—Criminal Court
दंड-विधि—Criminal law
दंड-संबंधी—Criminal
दंडादेश—Sentence
दंडाधिकारी-न्यायालय—Magistrate's Court
दाखला—Entry
दातव्य—Charities
दाय—Inheritance
दायित्व—Liability
दावा—Claim
दिवाला—Bankruptcy
दिवाला—Insolvency
दीवानी—Civil
दीवानी-अदालत—Civil Court
दृष्टांक—Visas
देय—Fee
देशीयकरण—Naturalisation
दोघरा—Bi-cameral
दोष-प्रमाणित—Convicted
दोष-सिद्धि—Conviction
दोषारोप—Charge (Cr.)
द्यूत—Gambling
द्विगृही—Bi-cameral
द्वितीय-पठन—Second reading

ध

धन—Money
धन-विधेयक—Money-bill

धर्म—Faith
धर्मस्व—Endowments
धंधा—Occupation

न

नक्श—Design
नगरक्षेत्र—Municipal area
नगर-ट्रामवे—Municipal Tramway
नगर-निगम—Municipal Corporation
नगर-पालिका—Municipality
नगर-रथ्यायान—Municipal Tramway
नगर-समिति—Municipal Committee
नागरिकता—Citizenship
नाम-निदर्शन—Nominate
नावधिकरण—Admiralty
निकाय—Body
निक्षेप-निधि—Sinking Fund
निखात-निधि—Treasure trove
निगम—Corporation
निगम-कर—Corporation tax
निगमन—Incorporation
निगम-निकाय—Body, Corporate
निदेश—Direction
निधि—Fund
निबद्ध—Registered
निबन्धन—Registration
निबन्धन—Term
नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक—Comptroller and Auditor-General
नियन्त्रण—Control
नियम—Rule
नियुक्ति—Appointment
नियोजक-उत्तरदायिता—Employer's liability
नियोजक-दातव्य—Employer's liabilty
निरसन—Repeal
निराकरण करना—Abrogate
निरोध—Custody
निरोधा—Quarantine
निर्णय—Judgment
निर्णायक मत—Casting vote
निर्देश—Refereene
निर्धारण—Assessment
निर्बन्धन—Restriction
निर्माण—Manufacture
निर्यात—Export
निर्यात-कर—Export tax
निर्यातशुल्क—Export duty
निर्योग्यता—Disability
निर्वचन—Interpretation
निर्वसीयत—Intestate
निर्वसीयता—Intestacy
निर्वहन—Discharge
निर्वाचक-गण—Electoral college
निर्वाचक नामावली—Electoral rolls
निर्वाचन (v.)—Elect
निर्वाचन (n.)—Election
निर्वाचन-अधिकरण—Election Tribunal
निर्वाचन-आयुक्त—Election Commissioner
निर्वाचन-क्षेत्र—Constituency
निर्वाचित—Elected
निर्वासन—Transportation
निर्वाह मजूरी—Living wage
निलम्बन (v.)—Suspend
निलम्बन (n.)—Suspension
निवारक-निरोध—Preventive detention
निवृत्त होना—Retire
निवृत्ति—Retirement
निवृत्ति-वेतन—Pension
निषेध—Forbid
निषिद्ध—Forbidden
निष्ठा—Allegiance
नौंदना—Register (v.)
नौकरी—Employment
नौकरी-कर—Employment-tax
नौकाधिकरण—Admiralty
नौ-परिवहन—Navigation
नौ-सेना सम्बन्धी—Naval
न्यस्त करना—Entrust
न्यायपालिका—Judiciary
न्यायाधिकरण—Tribunal
न्यायाधिपति—Justice
न्यायाधीश—Judge
न्यायालय—Court
न्यायालय-अवमान—Contempt of court
न्यायिक-कार्यरीति—Judicial proceeding
न्यायिक-कार्यवाही—Judicial proceeding.
न्यायिक मुद्रांक—Judicial stamps
न्यायिक शक्ति—Judicial power
न्यास—Trust
न्यूनन—Abridge

प

पक्ष—Party
पण लगाना—Bet
पण क्रिया—Betting
पण्यचिह्न—Merchandise Mark
पत—Credit (n.)

पत्तन-निरोधा—Port quarantine
पथ-कर—Toll
पथ-नियम—Rule of the road
पद—Post
पद—Office
पदच्युत करना—Dismiss
पदत्याग—Resignation
पदधारी—Incumbent of an office
पदाधिकारी—Officer
पदावधि—Tenure
पदावास—Official residence
पदेन—Ex-officio
परकीकरण—Alienation
परमादेश—Mandamus
परन्तु—Provided
परमिट—Permit (n.)
परामर्श—Consultation
परित्यजन—Abandonment
परित्याग—Abandonment
परित्राण—Safeguard
परिपालन—Implement
परिप्रश्न—Inquiry
परिलब्धि—Perquisite
परिवहन—Transport
परिवहन—Carriage
परिव्यय—Cost
परिषद्—Council
परिषद्-आदेश—Order in Council
परिसीमन—Delimitation
परिसीमा—Limitation
परिहार—Remission
परिहार विधेयक—Bill of Indemnity
परोक्षनिर्वाचन—Indirect election
पर्यवेक्षण—Inspection
पर्यालोचन—Deliberate
पशु-अवरोध—Cattle Pounds
पंचाट—Award
पंजी—Register
पंजी—Registered
पंजीबन्धन—Registration
पंजीयन—Registratron
पात्रता—Eligibility
पात्र—Eligible
पारपत्र—Passport
पारण—Pass
पारित—Passed
पारितोषिक—Reward
पारिश्रमिक—Remuneration
पावती—Receipt (paper)
पीठासीन होना—Preside
पीठासीनपदाधिकारी—Presiding officer
पुनरीक्षण—Revision
पुनर्विचार-न्यायालय—Court of Appeal
पुनर्विलोकन—Review
पुरःस्थापन—Introduce
पुरःस्थापना—Introduction
पूर्त—Charity
पूर्त धार्मिक धर्मस्व—Charitable and religious endowment
पूर्त संस्था—Charitable institution
पूर्व मंजूरी—Previous sanction
पूर्व सम्मति—Previous consent
पूंजी—Capital
पृष्ठांकन—Endorse
पृष्ठांकित—Endorsed
पेशगी—Advance
पेशा—Profession
पोषण—Maintenance
पोषण करना—maintain
पौरत्व—Citizenship
प्रकट करना—Discovery
प्रकाशन—Publication
प्रक्रिया—Procedure
प्रख्यापन—Promulgate
प्रग्रहण—Arrest
प्रचलित—Current
प्रचार करना—Propagate
प्रतिकर—Compensation
प्रतिकूल असर डालना—Affect prejudicially
प्रतिकूलता—Contravention
प्रतिकूल प्रभाव—Prejudice
प्रतिकूल प्रभाव डालना—Affect prejudicially
प्रति-कृति—Copy
प्रतिज्ञान—Affirmation
प्रतिनिधि—Representative
प्रतिनिधित्व—Representation
प्रतिपत्री—Proxy
प्रतिपालक अधिकरण—Court of wards
प्रतिभूति—Security
प्रतिरक्षा—Defence
प्रतिलिपि—Copy
प्रतिलिप्यधिकार—Copyright
प्रतिवेदन—Report
प्रतिव्यक्ति-कर—Capitation tax
प्रतिषिद्ध—Prohibited
प्रतिषेध—Prohibition
प्रति-शुल्क—Countervailing duties
प्रतिषेध लेख—Writ of prohibition

प्रतिसंहरण—Revoke
प्रत्यक्ष निर्वाचन-Direct election
प्रत्यय—Credit
प्रत्यय-पत्र—Letters of credit
प्रत्ययानुदान—Votes of credit
प्रत्यर्पण—Extradition
प्रत्यभूति—Guarantee
प्रथम पठन—First reading
प्रथम-सदन—Lower House
प्रधान-मंत्री—Prime Minister
प्रपत्र—Form
प्रभाव—Influence
प्रभु—Sovereign
प्रभुता —Sovereignty
प्रमाण-पत्र—Certificate
प्रमाणीकरण-Authentication
प्रमोद-कर—Entertainment tax
प्रयुक्ति—Application
प्रयोग—Application
प्रयोग—Exercise
प्रविलम्बन—Reprieve
प्रवर-समिति—Select Committee
प्रविष्टि—Entry
प्रवेश—Access
प्रवेशन—Accession
प्रव्रजन—Migration
प्रशान्ति—Tranquillity
प्रशासन—Administration
प्रशासन—Administer
प्रशासन कार्यक्षमता—Dfficiency of administraton
प्रशासन कार्यपटुता-Efficiency of administration
प्रशासनीय—Administrative
प्रशासनीय कृत्य—Administrative functions
प्रशासित—Administered

प्रशिक्षण—Training
प्रसंग—Conlext
प्रसारण—Broadcasting
प्रसूति साहाय्य—Maternity relief
प्रसूति सहायता—Maternity relief
प्रस्ताव—Motion
प्रस्तावना.—Preamble
प्रस्थापना—Proposal
प्राक्कलन—Estimate
प्रादेशिक आयुक्त—Regional Commissioner
प्रादेशिक क्षेत्राधिकार—Territorial jurisdiction
प्रादेशिक निधि-Regional Fund
प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्र—Territorial constituency
प्रादेशिक परिषद्—Regional Council
प्रादेशिक भार—Territorial charges
प्राधिकार—Authority (ab.)
प्राधिकारी—Authority (con.)
प्राधिकृत—Authorised
प्रान्त—Province
प्रापण—Accrue
प्राप्त होना—Accrue
प्राप्ति—Receipt
प्रामिसरी नोट-Promissory note
प्रासंगिक—Incidental
प्रोद्भवन—Accrue
प्रोद्भूत—Accrued

## फ

फरियाद—Complaint
फारम—Form
फीस—Fees

फेडरल न्यायालय—Federal Court

## ब

बटवारा—Allocation
बनाये रखना—Maintain (v.)
बनाये रखना-Maintenance(v.)
बन्दी करना—Arrest
बन्दी प्रत्यक्षीकरण—Habeas Corpus
बन्धक—Mortgage
बल—Forces
बहिःशुल्क—Custom duty
बहुमत—Majority
बांट—Allotment
बिल—Bill
बीमा—Insurance
बीमा-पत्र—Policy of insurance
बेकारी—Unemployment
बैठक—Sitting
बैंक—Bank
बोर्ड—Board

## भ

भत्ता—Allowance
भविष्य-निधि—Provident Fund
भर्ती—Recruitment
भागिता—Partnership
भाटक—Rent
भाड़ा—Fare
भार—Charge
भारग्रस्त सम्पदा—Encumbered estates
भारत सरकार—Government of India
भारित करना—Charge
भू-अभिलेख—Land Records

भू-भुक्ति—Land tenures
भू-राजस्व—Land Revenue
भ्रष्ट—Corrupt

म

मजूरी—Wage
मण्डल—District
मण्डल न्यायालय—Court, District
मण्डलाधीश—Deputy Commissioner
मण्डलायुक्त—Deputy Commissoner
मण्डली—Board
मत—Vote
मतदाता—Voter
मतदान—Voting
मताधिकार—Suffrage
मतिमान्द्य—Dullness
मध्यस्थ-न्यायाधिकरण—Arbitral tribunal
मध्यस्थ—Arbitrator
मध्यस्थ-निर्णय—Arbitration
मनोदौर्बल्य—Mental weakness
मनोनयन—Nominate
मनोवैकल्य—Mental defficiency
मन्त्रणा—Advice
मन्त्रणा देना—Advise
मन्त्रणा-परिषद्—Advisory Council
मन्त्रि-परिषद्—Council of Ministers
मन्त्री—Minister
मरण-शुल्क—Death duty
महाजनी—Banking
महाधिवक्ता—Advocate-General
महान्यायवादी—Attorney-General
महाप्रशासक—Administrator General
महालेखापरीक्षक—Auditor-General
महाभियोग—Impeachment
मंजूरी—Sanction
मानदेय—Honorarium
मानव-पण्य—Traffic in human beings
मान-हानि—Defamation
मान्यता—Validity
मार्ग-प्रदर्शन—Guidance
मांग—Demand
मीन क्षेत्र—Fishery
मीन-पण्य—Fishery
मुक्त—Exempt
मुखिया—Headman
मुख्य—Chief
मुख्य-आयुक्त—Chief Commissioner
मुख्य-निर्वाचन-आयुक्त—Chief Election-Commissioner
मुख्य-न्यायाधिपति—Chief Justice
मुख्य-न्यायाधीश—Chief Judge
मुख्य-मंत्री—Chief Minister
मुद्रा—Seal
मुद्रांक-शुल्क—Stamp duty
मूलधन—Capital
मूलधन-मूल्य—Capital value

य

यथास्थिति—As the case may be
यन्त्र-शास्त्र—Engineering
याचिका—Petition
यातायात—Traffic
योगकाल—Joining time

र

रक्षण—Reservation
रक्षाकवच—Safeguard
रक्षित वन—Reserved forest
रथ्यायान—Tramcar
रद्द करना—Annulment
रसीद—Receipt
राजगामी—Escheat
राजनय—Diplomacy
राजस्व—Revenue
राजस्व-न्यायालय—Revenue Court
राज्य—State
राज्य की सरकार—Government of a State
राज्य-क्षेत्र—Territory
राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन—Extra territorial operation
राज्य-निधि—State Fund
राज्य-परिषद्—Council of States
राज्यपाल—Governor
राज्य-सूची—State-List
राय—Opinion
राशि—Amount
राष्ट्र—Nation
राष्ट्र-ऋण—Public debt
राष्ट्रपति—President
राष्ट्रपति-प्रसाद पर्यन्त—During the pleasure of the President
राष्ट्रीय राजपथ—National highways
राष्ट्रों की विधि—Laws of Nations
रिक्तता—Vacancy

रिक्त स्थान—Vacancy
रिक्ति—Vacancy
रिक्थ—Property
रुकावट—Bar
रूढ़ि—Custom
रूप—Form
रूपभेद—*Modification*
रूपांकन—Design
रेल—Railway

**ल**

लगान—Rent
लगाना—Impose
लघूकरण—Commute
लम्बमान—Pending
लम्बित—Pending
लाइसेंस—Licence
लागत—Cost
लागू होना—Application ( n )
लाभ—Profit
लाभांश—Dividend
लिखत—Instrument
लिखित सूचना—Notice in writing
लेख—Writ
लेखा—Account
लेखा-परीक्षा—Audit
लेखानुदान—Votes on accounts
लेख्य—Document
लेना देना—Dealings
लोक—People
लोक-अधिसूचना—Public notification
लोकसभा—House of the People
लोक-समाज—Community
लोक-सेवायें —Public Services
लोक-सेवायोग—Public Service Commission
लोक स्वास्थ्य—Public health

**व**

वकालत करना—Plead
वकील—Pleader
वचन-पत्र—Promissory note
वचन-बन्ध—Engagement
वणिक्-पोत—Merchant marine
वयस्क—Major
वयस्क-मताधिकार—Adult suffrage
वरी—Duty
वसीयत—Will
वस्तु-भाड़ा—Freight
वहन-पत्र—Bill of lading
वंटन—Allot
वाक्-स्वातन्त्र्य—Freedom of Speech
वाणिज्य—Commerce
वाणिज्य-दूत—Consul
वाणिज्य सम्बन्धी—Commercial
वाद—Cause
वाद-पद—Issue
वाद-प्रतिवाद—Controversy
वाद-मूल—Cause of action
वाद-विवाद—Debate
वाद-विषय—Subject matter
वायदा-बाजार—Future market
वायु-पथ—Airways
वार्षिक—Annual
वार्षिक-वित्त-विवरण—Annual financial statement
वार्षिकी—Annuities
विकलन—Debit ( v )
विकृत-चित्त—Unsound mind
विक्रय—Sale
विक्रय-कर—Sales tax
विघटन—Dissolution
विचार—Consideration
विचारार्थ प्रस्ताव—Motion for consideration
वितरण—Distribution
वित्त—Finance
वित्त-विधेयक—Finance bill
वित्तायोग—Finance-Commission
वित्तीय—Financial
वित्तीय भार—Financial obligation
वित्तीय विवरण—Financial statement
विदेशीय कार्य—Foreign Affairs
विदेशीय विनिमय—Foreign exchange
विधान—Legislation
विधान-परिषद्—Legislative Council
विधान मंडल—Legislature
विधान-सभा—Legislative Assembly
विधायिनी शक्ति—Legislative power
विधि—Law
विधि-प्रश्न—Question of law
विधि-मान्य—Legal tender
विधियों का समान संरक्षण—Equal protection of law
विधि सम्बन्धी—Legal
विधेयक—Bill
विनियम—Regulation
विनियमन—Regulate
विनियम-पत्र—Bill of exchange
विनियोग—Appropriation
विनियोग-विधेयक—Appropriation bill

विनिश्चय—Decision
विभाग—Section
विभाजन—Distribution
विभेद—Discrimination
विमति—Dissent
विमान-परिवहन—Air navigation
विमान-यातायात—Air traffic
विमान-बल—Air Forces
विमोचन—Redemption
विमोचन-भार—Redemption charges
वियुक्त—Deprive
विराम—Respite
विरुद्ध—Repugnant
विरोध—Repugnance
विरोध—Repugnancy
विल—Will
विलेख—Deed
विवरणी—Return
विवाद—Dispute
विवाह-विच्छेद—Divorce
विशेषाधिकार—Privilege
विश्वास-प्रस्ताव—Motion of confidence
विश्वास का अभाव—Want of confidence
विषय—Subject
विसर्जन—Disperse
विसंगत—Irrelevant
विस्तार—Extend
विस्फोटक—Explosive
वीसा—Visas
वृत्ति—Profession
वृत्ति-कर—Profession tax
वृद्धि—Interest
वेतन—Pay
वेतन—Salary

वेलाई—Employment
वेला-जल—Tidal waters
वैदेशिक कार्य—External Affairs
वोटदाता—Voter
वंचित करना—Deprive
व्यक्ति—Person
व्यपगत होना—Lapse
व्यय—Expenditure
व्यवसाय—Vocation
व्यवस्था—Order
व्यवहार—Civil
व्यवहार—Dealings
व्यवहार-अदालत—Civil Court
व्यवहारालय—Civil Court
व्यवहार न्यायालय—Civil Court
व्यवहार प्रक्रिया—Civil Procedure
व्यवहार प्रक्रिया संहिता—Civil Procedure Code
व्यवहार लाना—Sue
व्यवहार-वाद—Civil Suit
व्यवहार-विषयक अपकृत्य—Civil wrong
व्यवहार-विषयक दोष—Civil wrongs
व्यवहार-शक्ति—Civil power
व्याख्या—Explanation
व्यापार—Trade
व्यापार कर—Trades Tax
व्यापार-चिह्न—Trademark
व्यापार-संघ—Trade Union
व्यावृत्ति—Savings

## श

शक्ति—Power
शर्त—Condition
शलाका—Ballot
शलाका-पद्धति—Ballot
शान्ति—Peace
शाश्वत उत्तराधिकार—Perpetual succession
शासक—Ruler
शासन—Governance
शासन—Govern
शासन—Government
शासी निकाय—Governing body
शास्ति—Penalty
शिक्षा—Education
शिक्षा—Instruction
शिल्पी-प्रशिक्षण—Technical training
शिविर—Camp
शिशु—Infant
शिस्त—Disciplinary
शुल्क—Duty
शुल्क-सीमान्त—Custom Frontiers
शून्य—Void
शेरिफ—Sheriff
शोधना—Research

## श्र

श्रद्धा—Faith
श्रम—Labour
श्रमिक संघ—Labour Union
श्रेष्ठि चत्वर—Stock-Exchange

## स

सक्षम—Competent
सत्र—Session
सत्र-न्यायालय—Session Court
सत्रावसान—Prorogue
सदन—House
सदस्य—Member

# A

Abandonment—परित्यजन, परित्याग,
Abridge—न्यूनन
Abrogate—निराकरण
Access—प्रवेश
Account—लेखा, गणना, कणक,
Accrue—प्रापण, प्रोद्भवन,
Accrued—प्राप्त, प्रोद्भूत, उपार्जित,
Accusation—अभियोग
Accused—अभियुक्त
Acquisition—अर्जन
Act ( n. )—अधिनियम, चट्टम,
Acting ( e.g. Chairman )—कार्यकारी
Actionable wrong—अभियोज्य दोष
Adaptation—अनुकलन
Addressed—सम्बोधित
Adherence—अनुषक्ति
Ad hoc—तदर्थ
Adjourn—१ स्थगन, अधिदान, २ स्थगित करना, कालदान,
Administer—प्रशासन
Administered—प्रशासित
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनीय,
Administrative functions—प्रशासनीय कृत्य
Administrator-General—महाप्रशासक
Admiralty—नौकाधिकरण, नावधिकरण,
Admissible—ग्राह्य
Adoption—दत्तक-ग्रहण, दत्तक-स्वीकरण,
Adulteration—अपमिश्रण
Adult suffrage—वयस्क मताधिकार
Advance—अग्रिम, पेशगी,
Advice—मंत्रणा, उपदेश, सलाह,
Advise—मंत्रणा देना
Advisory Council—मंत्रणा परिषद्
Advocate—अधिवक्ता
Advocate-General—महाधिवक्ता
Affect prejudicially—प्रतिकूल प्रभाव डालना, प्रतिकूल असर डालना,
Affirmation—प्रतिज्ञान
Agency—अभिकरण
Agent—अभिकर्ता
Agreement—करार, चुकती,
Air force—विमान बल
Air navigation—विमान परिवहन
Air traffic—विमान यातायात
Airways—वायु पथ
Alien—अन्यदेशीय
Alienate—अन्य-संक्रामण
Alienation—अन्य-संक्रामण, परकीकरण,
Allegation—अभिकथन, आरोप,
Allegiance—निष्ठा
Allocation—बटवारा
Allot—बंटन
Allotment—बांट
Allowances—भत्ता
Amendment—संशोधन
Amnesty—सर्वक्षमा
Amount—राशि
Ancillary—सहायक
Annual—वार्षिक
Annual Financial Statement—वार्षिक वित्त-विवरण
Annuities—वार्षिकी
Annulment—रद्द करना
Appeal—अपील
Appear—उपस्थित होना
Appended—संलग्न
Application—१ प्रयुक्ति; २ लागू होना, ३ आवेदनपत्र
Appointment—नियुक्ति
Appropriation—विनियोग
Appropriation bill—विनियोग विधेयक
Approve—अनुमोदन करना
Approval—अनुमोदन
Arbitral tribunal—मध्यस्थ-न्यायाधिकरण
Arbitration—मध्यस्थ-निर्णय
Arbitrator—मध्यस्थ
Area—क्षेत्र
Armed Forces—सशस्त्र बल
Arrest—बन्दी करना, प्रग्रहण
Article—अनुच्छेद
Assemble—समवेत होना, सम्मिलित होना
Assembly—सभा
Assent—अनुमति
Assessment—निर्धारण, तीर्ष
Assignment—सौंपना
Association—संस्था
Assurance of property—संपत्ति हस्तान्तरण-पत्र
As the case may be—यथास्थिति, यथाप्रसंग
Attach—कुर्की, टांच

Attorney-General—महा-न्याय-वादी
Audit—लेखा-परीक्षा, गणना-परीक्षा
Auditor-General—महा-लेखा-परीक्षक
Authentication—प्रमाणीकरण
Authorise—प्राधिकृत
Authority—प्राधिकारी
Autonomous—स्वायत्त
Autonomy—स्वायत्तता
Award—पंचाट

# B

Bail—जामिन
Ballot—१ शलाका, २ शलाका-पद्धति, गूढ़-पत्र,
Bank—बैंक
Banking—महाजनी
Bankruptcy—दिवाला
Bar—रुकावट
Benefit—हित
Betting—पण लगाना, पणक्रिया
Bi-cameral—दोघरा, द्विगृही,
Bill—विधेयक, बिल,
Bill of exchange—विनिमय-पत्र
Bill of indemnity—परिहार-विधेयक, क्षतिपूर्ति-बिल,
Bill of lading—वहन-पत्र
Board—मण्डली
Body—निकाय
Body, corporate—निगमनिकाय
Body, governing—शासीनिकाय
Bona vacancia—स्वामिहीनत्व
Borrowing—उधार-ग्रहण
Boundary—सीमा
Broadcasting—प्रसारण
Business—कारबार
Bye-election—उपनिर्वाचन
Bye-law—उपविधि

# C

Calling—आजीविका
Camp—शिविर
Candidates—अभ्यर्थी, उम्मेदवार
Cantonment—कटक, छावनी
Capacity—सामर्थ्य
Capital—मूलधन, पूँजी
Capital value—मूलधन-मूल्य
Capitation tax—प्रतिव्यक्तिकर
Carriage—परिवहन
Casting vote—निर्णायक मत
Cattle pound—पशु-अवरोध, कांजी हौस,
Cause—वाद
Cause of Action—वाद-मूल
Census—जन-गणना
Central Intelligence Bureau—केन्द्रीय गुप्त वार्ता विभाग
Certificate—प्रमाण-पत्र
Certiorari—उत्प्रेषण लेख
Cess—उपकर
Chairman—सभापति
Charge—भार, भारित करना
Charge ( Cr. )—दोषारोप, अभियुक्ति
Charity—पूर्त, दातव्य
Charitable and religious endowments—पूर्त, धार्मिक धर्मस्व
Charitable institutions—पूर्त-संस्था
Cheque—चेक
Chief—मुख्य
Chief-Commissioner—मुख्य आयुक्त
Chief-Election-Commissioner मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Chief-Judge—मुख्य न्यायाधीश
Chief Justice—मुख्य न्यायाधिपति
Chief Minister—मुख्यमंत्री
Citizenship—नागरिकता
Civil—१ व्यवहार, २ असैनिक
Civil Court १ व्यवहार न्यायालय, दीवानी, २ व्यवहारालय, व्यवहार अदालत,
Civil power—१ व्यवहार शक्ति २ असैनिक-शक्ति
Civil wrong—व्यवहार-विषयक अपकृत्य, व्यवहार-विषयक दोष,
Claim—दावा
Clarification—स्पष्टीकरण
Clause—खण्ड
Code—संहिता
Coinage—टंकण
Colonization—उपनिवेशन
Commerce—वाणिज्य
Commercial—वाणिज्य-सम्बन्धी
Commission—आयोग
Commissioner—आयुक्त
Committee—समिति
Committee, Select—प्रवर-समिति
Committee, Standing—स्थायी समिति
Common good—सार्वजनिक कल्याण
Common Seal—सामान्य मुद्रा, सामान्य मुहर,
Communicate—संचार करना
Communication, means of—संचार साधन
Cmmunity—१ लोक समाज २ समुदाय

Commute—लघुकरण
Company—समवाय, कम्पनी
Compensation—प्रतिकर
Competent—सक्षम, क्षमताशील
Complaint—फरियाद
Comptroller and Auditor General—नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक
Compute—संगणना
Concurrence—सहमति
Concurrent List–समवर्ती सूची
Condition—शर्त
Conditions of servce—सेवा की शर्तें
Conference—सम्मेलन
Confidence, want of–विश्वास का अभाव
Conscience—अन्तःकरण
Consent—सम्मति
Consent, previous–पूर्व सम्मति
Consequential—आनुषंगिक
Consideration—विचार
Consolidated Fund—संचित निधि
Constituency—निर्वाचन-क्षेत्र
Constituency, territorial—प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्र
Constituent Assembly—संविधान-सभा
Constitution—संविधान
Consul—वाणिज्य-दूत
Consultation—परामर्श
Construe—अर्थ करना
Consumption—उपभोग
Contact—संपर्क
Contagious—सांसर्गिक
Contempt—अवमान
Contempt of court—न्यायालय अवमान
Context—संदर्भ, प्रसंग
Contingency Fund—आकस्मिकतानिधि
Contract—संविदा
Contravention—प्रतिकूलता, उल्लंघन
Contribution—अंशदान
Control—नियंत्रण
Controversy—प्रतिवाद
Convention—अभिसमय
Conveyance—हस्तान्तरपत्र
Convicted—सिद्ध-दोष, दोषप्रमाणित, अभिशस्त,
Conviction–दोषसिद्धि, अभिशस्ति
Cooperative society–सहकारी संस्था, समवाय संस्था,
Copy—प्रतिलिपि, प्रतिकृति,
Copyright—प्रतिलिप्यधिकार, कृतिस्वाम्य,
Corporation—निगम
Corporation, Sole—एकल निगम
Corporation, tax—निगम-कर
Corresponding—तत्स्थानी
Corrupt—भ्रष्ट
Cost—परिव्यय, खर्च, लागत
Council—परिषद्
Council of Ministers—मंत्रि-परिषद्
Council of States–राज्य-परिषद्
Council Regional–प्रादेशिक-परिषद्
Council. Tribal—जनजाति-परिषद्
Countervailing duty—प्रति-शुल्क
Court—न्यायालय
Court of Appeal—पुनर्विचार-न्यायालय, अपील-न्यायालय,
Court, Civil—व्यवहार-न्यायालय
Court, Criminal–दंड-न्यायालय
Court, District—जिला-न्यायालय, मंडल-न्यायालय,
Court, Federal—फेडरल-न्यायालय
Court, High—उच्चन्यायालय
Court. Magistrate—दंडाधिकारी-न्यायालय
Court Martial—सेना-न्यायालय
Court of wards—प्रतिपालक-अधिकरण
Court, Revenue—राजस्व-न्यायालय
Court, Session—सत्र-न्यायालय
Court, subordinate—अधीन न्यायालय
Court, Supreme—उच्चतम-न्यायालय
Credit—प्रत्यय, साख, पत
Credit—आकलन
Crime—अपराध
Criminal—१ अपराधी, दंड सम्बन्धी
२ आपराधिक
Criminal law—दंड-विधि
Currency—चल अर्थ, चलार्थपत्री,
Custody—अभिरक्षा, निरोध, कावल
Custom duty—बहिः-शुल्क, सीमा-शुल्क
Custom frontier—शुल्क-सीमान्त
Custom—रूढ़ि, आचार

# D

Dealings—व्यवहार, लेना देना,
Debate—वाद-विवाद
Debentures—ऋण-पत्र
Debit—विकलन
Debt—ऋण
Decision—विनिश्चय
Declaration—घोषणा
Decree—आज्ञप्ति, डिक्री
Dedicate—समर्पण
Deed—विलेख
Defamation—मानहानि
Defence—प्रतिरक्षा
Deliberate—पर्यालोचन
Delimitation—परिसीमन
Demand—मांग, अभियाचना
Demarcation—सीमांकन
Demobilisation—सैन्य वियोजन
Deprived—वंचित करना, वियुक्त करना
Deputy Chairman—उपसभापति
Deputy Commissioner—उपायुक्त, मण्डलायुक्त
Deputy President—उपराष्ट्रपति
Deputy Speaker—उपाध्यक्ष
Descent—उद्भव
Derogation—अल्पीकरण
Design—रूपांकण, नक्श
Detrimental—अहितकारी
Diplomacy—राजनय
Direction—निदेश
Disability—निर्योग्यता
Discharge—निर्वहन
Discipline—अनुशासन
Disciplinary—अनुशासन सम्बन्धी, शिस्त
Discovery—प्रकट करना
Discretion—स्वविवेक
Discrimination—विभेद
Discussion—चर्चा
Dismiss—पदच्युत करना
Disperse—विसर्जन
Dispute—विवाद
Disqualification—अनर्हता
Disqualify—अनर्हीकरण
Dissent—विमति
Dissolution—विघटन
Distribution—वितरण, विभाजन
District—जिला, मण्डल
District Board—जिला-मंडली
District Council—जिला-परिषद्
District Fund—जिला निधि
Dividend—लाभांश
Divorce—विवाह-विच्छेद
Documents—लेख्य, दस्तावेज
Domicile—अधिवास
Domiciled—अधिवासी
Dulness—मतिमान्द्य
During good behaviour—सदाचार पर्यन्त
During the pleasure of the president—राष्ट्रपति प्रसाद पर्यन्त
Duty—१ शुल्क, वरी, २ कर्तव्य
Duty, custom—सीमा-शुल्क
Duty, death—मरण-शुल्क
Duty, estate—सम्पत्ति-शुल्क
Duty, excise—उत्पादन-शुल्क
Duty, export—निर्यात-शुल्क
Duty, import—आयात-शुल्क
Duty, stamp—मुद्रांक-शुल्क
Duty, succession—उत्तराधिकार-शुल्क

# E

Economic—आर्थिक
Education—शिक्षा
Efficiency of administration—प्रशासन-कार्यक्षमता, प्रशासन कार्यपटुता
Elect—निर्वाचन ( v )
Elected—निर्वाचित, चुने हुए
Election—निर्वाचन
Election Commissioner—निर्वाचन-आयुक्त
Election, direct—प्रत्यक्ष निर्वाचन
Election, general—साधारण निर्वाचन
Election, indirect—परोक्ष निर्वाचन
Election tribunal—निर्वाचन अधिकरण
Electoral roll—निर्वाचक-नामावली
Electoral rolls—निर्वाचक-गण
Eligibility—पात्रता
Eligible—पात्र होना
Emergency—आपात
Emergent—आपाती
Emigration—उत्प्रवास
Emoluments—उपलब्धियां
Employer's liability—नियोजक-दातव्य, नियोजक-उत्तरदायिता
Enact—अधिनियम
Encumbered estate—भार-ग्रस्त-सम्पदा
Endorse—१ पृष्ठांकन, २ अंकन
Endorsed—१ पृष्ठांकित, २ अंकित
Endowment—धर्मस्व
Engagements—वचन-बन्ध

Engineering—यन्त्र-शास्त्र
Enterprise—उद्यम
Entitled—हक्क होना
Entrust—न्यस्त, सौंपना
Entry—प्रविष्टि, दाखला
Fquality—समता
Equal Protection of Laws—विधियों का समान संरक्षण
Escheat—राजगामी
Establishment—१ स्थापना, संस्थापन
२ स्थापन करना
Estates—संपदा
Estimates—आंक, प्राक्कलन
Evidence—साक्ष्य
Excess profit—अतिरिक्त लाभ
Exclude—अपवर्जन करना
Exclusion—अपवर्जन
Exclusive jurisdiction—अनन्य क्षेत्राधिकार
Executive—कार्यपालिका
Executive power—कार्यपालिका-शक्ति
Exempt—मुक्त
Exercise—प्रयोग, अनुष्ठान
Ex officio—पदेन
Expenditure—व्यय
Explanation—व्याख्या स्पष्टीकरण
Explosives—विस्फोटक
Export—निर्यात
Extend—विस्तार
External Affairs—वैदेशिककार्य
Extradition—प्रत्यर्पण
Extra territorial operations—राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन, राज्यक्षेत्रातीत वर्तन

# F

Factory—कारखाना
Faith—धर्म, श्रद्धा
Fare—भाड़ा, किराया
Federal Court—फेडरल न्यायालय
Fees—फेय, फीस
Finance—वित्त
Finance bill—वित्त-विधेयक
Finance Commission—वित्तायोग
Financial—वित्तीय
Finarcial obligation—वित्तीय भार
Financial statement—वित्तीय विवरण
Fine—अर्थ-दण्ड, जुर्माना किया
Fishery—मीन-क्षेत्र, मीन-पक्षणे
Forbid—निषेध
Forbidden—निषिद्ध
Forces—बल
Foreign Affairs—विदेशीय कार्य
Foreign exchange—विदेशीय विनिमय
Form—१ रूप
२ प्रपत्र, फारम
Formula—सूत्र
Formulated—सूत्रित
For the time being—तत्समय
Freedom—१ स्वतन्त्रता
२ स्वातन्त्र्य, आजादी
Freights—वस्तु भाड़ा
Frontiers—सीमान्त
Function—कृत्य
Function, administrative—प्रशासनीय कृत्य
Fund—निधि
Eund, sinking— निक्षेप-निधि
Future market—वायदा बाजार

# G

Gambling—द्यूत, जुआ
Gazette—सूचना-पत्र, गजट,
General Election—साधारण निर्वाचन
Govern—शासन करना
Governance—शासन
Government—१ सरकार
२ शासन
Government of a State—राज्य की सरकार
Government of India—भारत सरकार
Governor—राज्यपाल
Grant—अनुदान
Grant-in-aid—सहायक अनुदान
Gratuity—उपदान
Guarantee—प्रत्याभूति
Guardian—संरक्षक
Guidance—मार्ग-प्रदर्शन

# H

Habeas Corpus—बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Handicrafts—हस्तशिल्प, दस्तकारी
Hazardous—संकटमय
Headman—मुखिया
High Court—उच्चन्यायालय
Honorarium—मानदेय, संभावना
House—सदन
House of People—लोक-सभा

# I

Illegal—अवैध
Illegal Practice—अवैधाचरण
Immunity—उन्मुक्ति
Impeachment—महाभियोग

Implementing—परिपालन
Impose—आरोपण, लगाना
Imprisonment—कारावास, कैद
Improvement trust—सुधार-प्रन्यास
Incapacity—असमर्थता
Incidental—प्रासंगिक
Incompetency—अक्षमता
Incompetent—अक्षम
Incorporation—निगमन
Incumbent of an office—पदधारी
Indebtedness—ऋण ग्रस्तता
Industry—उद्योग
Ineligible—अपात्र
Ineligibility—अपात्रता
Infants—शिशु
Infectious—सांक्रामिक
Influence—प्रभाव
Influence undue—अयुक्त प्रभाव
Inheritance—दाय
Initiate—उपक्रमण
Injury—क्षति
Inland waterways—अन्तर्देशीय जलपथ
Inoperative—अप्रवृत्त
Inquiry—परिप्रश्न जांच
Insolvency—दिवाला
Inspection—पर्यवेक्षण
Institution—संस्था
Instruction—१ शिक्षा
२ अनुदेश, हिदायतें
Instrument—लिखत
Insurance—बीमा
Intercourse—समागम
Interest—ब्याज, वृद्धि, सूद
International—अन्तर्राष्ट्रीय
Interpretation—निर्वचन
Intestacy—इच्छापत्रहीनत्व, निर्वसीयतता
Intestate—इच्छापत्रहीन, निर्वसीयता
Introduce—पुरःस्थापन
Introduction—पुरःस्थापना
Invalid—अमान्य
Invalidity pensions—असमर्थतानिवृत्ति वेतन
Investigation—अनुसंधान
Involve—अन्तर्ग्रसन
Involved—अन्तर्ग्रस्त
Irregularity—अनियमिता
Issue—वाद-पद

# J

Joining Time—योगकाल
Joint family—अविभक्त कुटुम्ब, अविभक्त परिवार
Judge—न्यायाधीश
Judge, Additional—अपर न्यायाधीश
Judge, extra—अतिरिक्त न्यायाधीश
Judgment—निर्णय
Judicial power—न्यायिक शक्ति
Judicial proceeding—न्यायिक कार्यवाही
Judicial stamp—न्यायिक मुद्रांक
Judiciary—न्यायपालिका
Jurisdiction—क्षेत्राधिकार
Justice, Chief—मुख्य न्यायाधिपति

# L

Labour—श्रम
Labour Union—श्रमिक संघ
Land records—भू-अभिलेख
Land revenue—भू-राजस्व
Land tenures—भू-धृति
Law—विधि
Law of nations—राष्ट्रों की विधि
Legal—विधि सम्बन्धी, कानून सम्बन्धी,
Legislation—विधान
Legislative power—विधायिनी शक्ति
Legislative Assembly—विधान-सभा
Legislative Council—विधान-परिषद्
Legislature—विधान मण्डल
Letters of credit—प्रत्यय-पत्र
Levy—१ आरोपण
२ उद्ग्रहण, उगाहना
Liability—दायित्व
Libel—अपमान-लेख
Liberty—स्वाधीनता
Licences—अनुज्ञप्ति, लाइसेंस
Lieutenant Governor—उपराज्यपाल
Limitation—परिसीमा
List—सूची
List, Concurrent—समवर्ती सूची
List, State—राज्य-सूची
List, Union—संघ-सूची
Livelihood—जीविका
Loans—उधार
Local area—स्थानीय क्षेत्र

Local authorities—स्थानीय प्राधिकारी

Local board—स्थानीय-मंडली स्थानीय गण,

Local body—स्थानीय निकाय

Local Government—स्थानीय शासन

Local Self Government—स्थानीय स्वशासन

Lock up—बन्दीखाना

Lower House—प्रथम सदन

Lunacy—उन्माद

Lunatic—उन्मत्त

# M

Maintain—१ पोषण २ बनाये रखना

Maintenance—पोषण

Major—वयस्क

Majority—बहुमत

Mandamus—परमादेश

Manufacture—निर्माण

Maritime shipping—समुद्र-नौवहन

Maternity Relief—प्रसुति-सहायता, प्रसूति-साहाय्य

Member—सदस्य

Memo—ज्ञाप

Memorandum—ज्ञापन

Memorial—स्मारक

Mental deficiency—मनो-वैकल्य

Mental Weakness—मनोंदौर्बल्य

Merchandise marks—पण्य चिह्न

Merchandise marine—वणिक-पोत

Message—संदेश

Migration—प्रव्रजन

Military—१ सेना २ सैनिक

Mind unsound—विकृत-चित्त

Mineral—खनिज

Mineral resources—खनिज-सम्पत्

Mining settlement—खनि-बसति

Minister—मंत्री

Minor—अवयस्क

Minority—अल्पसंख्यक-वर्ग

Misbehaviour—कदाचार

Modification—रूपभेद

Money—धन

Money bill—धन विधेयक

Money-lender—साहूकार

Money lending—साहूकारी

Morality—सदाचार

Mortgage—बन्धक

Motion—प्रस्ताव

Motion for Consideration—विचारार्थ प्रस्ताव

Motion ef Confidence—विश्वास प्रस्ताव

Motion of No-confidence—अविश्वास-प्रस्ताव

Municipal area—नगर-क्षेत्र

Municipal Committee—नगर-समिति

Municipal Corporation—नगर-निगम

Municipality—नगर-पालिका

Municipal tramways—नगर-रथ्यायान, नगर-ट्रांवे

# N

Nation—राष्ट्र

National highways—राष्ट्रीय राजपथ

Naturalisation—देशीयकरण

Naval—नौसेना सम्बन्धी

Navigation—नौ-परिवहन

Newspapers—समाचार-पत्र

Nominate—नामनिर्देशन, मनोनयन

Notice—१ सूचना २ सूचनापत्र

Notice in writing—लिखित सूचना

Notification—अधिसूचना

# O

Obligation—आभार

Occupation—उपजीविका, धंधा

Octroi—चुंगी

Offence—अपराध

Office—पद

Officer—पदाधिकारी

Official residence—पदावास

Opinion—अभिप्राय, राय

Order—१ आदेश २ व्यवस्था

Order in Council—परिषद् आदेश

Order standing—स्थायी आदेश

Ordinance—अध्यादेश

Organization—संघटन

Own—स्वामी होना

Owner—स्वामी
Ownership—स्वामित्व

## P

Pardon—क्षमा
Parliament—संसद्
Party—पक्ष
Partnership—भागिता
Pass—पारण
Passed—पारित, संमत*
Passport—पारपत्र
Patents—एकस्व
Pay—वेतन
Peace—शान्ति
Pecuniary jurisdiction—आर्थिक क्षेत्राधिकार
Penalty—शास्ति
Pending—१ लम्बित
२ लम्बमान
Pension—निवृत्ति वेतन
People—लोक, जनता
Permission—अनुज्ञा
Permit—अनुज्ञा, परमट
Perpetual succession—शाश्वत उत्तराधिकार
Perquisite—परिलब्धि
Person—व्यक्ति
Personal law—स्वीय विधि
Petition—याचिका, अर्जी
Piracy—जल-दस्युता
Plead—वकालत करना
Pleader—वकील
Police—आरक्षक
Police Force—आरक्षक बल
Police Station—थाना
Policy of insurance—बीमा-पत्र
Port quarantine—पत्तन निरोधा
Possession—स्ववश, कब्जा
Posts—१ पद
२ स्थान, जगह
Power—शक्ति
Preamble—प्रस्तावना
Preference—अधिमान
Prejudice—प्रतिकूल प्रभाव
Preside—पीठासीन, अध्यासीन
President—राष्ट्रपति
Presiding officer—अधिष्ठाता
Preventive detention—निवारक निरोध
Prime Minister—प्रधान मंत्री
Prison—कारावास, जेल
Prisoner—काराबन्दी, कैदी
Privileges—विशेषाधिकार
Procedure—प्रक्रिया
Process—आदेशिका
Proclamation—उद्घोषणा
Proclamation of Emergency—आपात की उद्घोषणा
Production—उत्पादन
Profession—वृत्ति, पेशा
Profit—लाभ
Prohibited—प्रतिषिद्ध
Prohibition—प्रतिषेध
Prohibition, writ of—प्रतिषेध-लेख
Promissory note—प्रामिसरी नोट, वचन-पत्र
Promulgate—प्रख्यापन
Propagate—प्रचार करना
Property—१ सम्पत्ति;
२ रिक्थ, आस्ति
Proportional representation—अनुपाती प्रतिनिधित्व
Proposal—प्रस्थापना
Prorogue—सत्रावसान
Prosecution—१ अभियोजन
२ अभियुक्ति
Provided—परन्तु
Provident fund—भविष्य निधि
Province—प्रान्त
Provision—उपबन्ध
Proxy—प्रतिपत्री
Publication—प्रकाशन
Public debt—राष्ट्र-ऋण
Public demands—सार्वजनिक अभियाचना, सरकारी अभियाचना
Public health—लोक स्वास्थ्य
Public notification—सार्वजनिक अधिसूचना, लोक अधिसूचना
Public Order—सार्वजनिक व्यवस्था
Public Service Commission—लोक सेवायोग
Public Services—लोक-सेवाएं
Punish—दंड देना
Purporting to be done—कर्तुमभिप्रेत

## Q

Qualification—अर्हता
Quarantine—निरोधा
Question of Law—विधि-प्रश्न
Quorum—गणपूर्ति
Quo warranto—अधिकार-पृच्छा

## R

Railway—रेल
Ratification—अनुसमर्थन
Ratify—अनुसमर्थन
Reading, first—प्रथम पठन

Reading, second—द्वितीय पठन
Reading, third—तृतीय पठन
Receipt—प्राप्ति
Receipt ( paper )—पावती, रसीद
Recommend—सिफारिश करना
Recommendation—सिफारिश
Record—अभिलेख
Record, court of—अभिलेख-न्यायालय
Record of rights—अधिकार अभिलेख
Recruitment—भर्ती
Recurring—आवर्तक
Redemption—विमोचन
Redemption charges—विमोचनभार
Reference—निर्देश
Reformatory—सुधारालय
Refundable to—लौटाये जाने वाली
Regional Commissioners—प्रादेशिक आयुक्त
Regional Councils—प्रादेशिक-परिषद्
Regional Fund—प्रादेशिक निधि
Register—पंजी
Registered—१ पंजीबद्ध
२ निबद्ध, नौदना
Registration—१ पंजीयन
२ पंजीबन्धन
३ निबन्धन
Regulate—विनियमन
Regulation—विनियम
Relevancy—सुसंगति
Relevant—सुसंगत
Remedy—उपचार
Reminder—अनुस्मारक
Remission—परिहार
Removal—हटाना
Remuneration—पारिश्रमिक
Rent—भाटक, लगान
Repeal—निरसन
Report—प्रतिवेदन
Representation—प्रतिनिधित्व
Representative—प्रतिनिधि
Reprieve—प्रावलम्बन
Repugnance—विरोध
Repugnancy—विरोध
Repugnant—विरुद्ध
Requisition—अधिग्रहण
Research—गवेषणा, शोधन
Reservation—रक्षण
Reserved forest—रक्षित वन
Resignation—पदत्याग
Resolution—संकल्प
Respites—विराम
Restriction—निर्बन्धन
Retire—निवृत्त होना
Retirement—निवृत्ति
Revenue—राजस्व, आयम
Review—पुनर्विलोकन
Revision—पुनरीक्षण
Revoke—प्रतिसंहरण
Reward—पारितोषिक
Rights—अधिकार
Rule—नियम
Rule of the road—पथ-नियम
Ruler—शासक

## S

Safeguard—रक्षा-कवच, परित्राण
Salary—वेतन
Sale—विक्रय
Sanction—मञ्जूरी
Sanction, previous—पूर्व मंजूरी
Savings—व्यावृत्ति
Schedule—अनुसूची
Scheduled area—अनुसूचित क्षेत्र
Scheduled Caste—अनुसूचित जाति
Scheduled Tribes—अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित आदिम जाति
Seal—मुद्रा
Seats—स्थान
Sections—विभाग
Security—प्रतिभूति
Sentence—दंडादेश
Service—सेवा
Service charges—सेवा-भार

Session—सत्र
Share—अंश
Sheriff—शेरीफ
Single transferable vote—एकल संक्रमणीय मत
Sinking Fund—निक्षेपनिधि
Sitting—उपवेशन, बैठक
Slander—अपमान-वचन
Social-custom—सामाजिक रूढ़ि
Social Insurance—सामाजिक बीमा
Social Service—सामाजिक सेवा
Sovereign—प्रभु
Sovereign Democratic Republic—संपूर्ण-प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
Sovereignty—प्रभुता
Speaker—अध्यक्ष
Speech, freedom of—वाक्-स्वातन्त्र्य
Staff—कर्मचारी वृन्द
Stamp duties—मुद्रांक-शुल्क
Standing orders—स्थायी आदेश
State—राज्य
State funds—राज्य-निधि
Stock exchange—श्रेष्ठि-चत्वर
Sub-division—उपविभाग
Subject—१ अधीन, २ विषय
Subject matter—वाद विषय
Subordinate officer—अधीन अधिकारी
Succession—उत्तराधिकार
Successor—उत्तराधिकारी
Sue व्यवहार लाना
Suffrage—मताधिकार
Suit, Civil—व्यवहार वाद
Summon—आह्वान
Superintendence—अधीक्षण
Superintendent—अधीक्षक
Supplementary—अनुपूरक
Supplementary grant—अनुपूरक अनुदान
Supreme Command—सर्वोच्च समादेश
Supreme Court—उच्चतमन्यायालय
Suspend—निलम्बन
Suspension—निलम्बन

## T

Taxes—कर
Tax, Callings—आजीविका-कर
Tax, Capitation—प्रतिव्यक्ति-कर
Tax, Corporation—निगम-कर
Tax, Employment—नौकरी-कर
Tax, Entertainment—प्रमोद-कर
Tax, Export—निर्यात कर
Tax, Profession—वृत्ति-कर
Tax, Income—आय-कर
Tax, Sales—विक्रय-कर
Tax, Terminal—सीमा-कर
Tax, Trades—व्यापार-कर
Technical training—शिल्पी प्रशिक्षण
Tenant—किसान
Tender, legal—विधि-मान्य
Tenure—पदावधि
Term—निबन्धन
Territorial charges—प्रादेशिक भार
Territorial Jurisdiction—प्रादेशिक क्षेत्राधिकार
Territorial Waters—जलप्रांगण
Territory—राज्य-क्षेत्र
Tidal waters—वेला-जल, ज्वार जल
Title—हक
Tolls—पथ-कर
Trade—व्यापार
Trademarks—व्यापार चिह्न
Trade Union—कार्मिक संघ, व्यापार संघ
Traffic—यातायात
Traffic in human beings—मानवपणन
Training—प्रशिक्षण
Tramcar—रथ्यायान, ट्रामगाड़ी
Tramway—ट्राम

Tranquillity—प्रशान्ति

Transfer—१ स्थानांतरण,
२ हस्तान्तरण

Transition—संक्रमण

Transport—परिवहन

Transportation—निर्वासन

Treasure troves—निखात-निधि

Treaty—सन्धि

Tribal Area—जनजाति-क्षेत्र

Tribe—जन-जाति

Tribunal—न्यायाधिकरण

Triennial—त्रैवार्षिक

Trust—न्यास

# U

Undischarged—अननुमुक्त

Unemployment—बेकारी

Union—संघ

Unit—एकक

Unsoundness of mind—चित्त-विकृति

# V

Vacancies—रिक्त स्थान

Vacancy—१ रिक्ति,
२ रिक्तता

Vagrancy—आकिंचन, आवारागर्दी

Validity—मान्यता

Vice-President—उपराष्ट्रपति

Village Coucils – ग्राम-परिषद्

Violation—अतिक्रमण

Visas—दृष्टांक, वीसा

Vocation—व्यवसाय

Void—शून्य

Vote—मत

Vote, casting—निर्णायक मत

Voter—मतदाता, वोट-दाता,

Votes on account—लेखानुदान,
गणनानुदान

Votes of credit—प्रत्ययानुदान

# W

Wage—मजूरी

Wage, living—निर्वाह-मजूरी

Warrant—अधिपत्र

Will—इच्छा-पत्र, विल, वसीयत

Winding up—समापन

Writ—लेख